# उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाहियों

की

# **अनुक्रम**ियका

--:0;---

खण्ड २११

----:0:----

बुववार, ६ मार्च, १६६० से शुक्रवार, २४ मार्च, १६६० तक



### मुहकः

मधीक्षक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन-सामग्री (लखनऊ), उत्तर प्रदेश, भा १६६०

> मूल्यः बिना महसूल २४ नये पैसे, महसूल सहित ३१ नये पैसे । वार्षिक बन्दाः बिना महसूल १० रुपये, महसूल सहित १२ रुपये ।

# विषय स्मी

# ब्धवार. ६ मावं, १६६०

বিশ্য	पारु है। १
उर्पास्थत सदस्य	9-7
प्रक्रनोत्तर	4-26
ताराकित प्रश्न ३६-३७ से सम्बन्धित व्यक्तिगत ध्वनपूरक प्रश्नो को कायबारा से निकाल देने की प्रार्थना	ب بي ـ ت ره
नियम ५२ के ग्रन्तगंत ध्यान ग्राकर्षणाय विषया की गूचनाए	<b>√</b> 2
श्री राजनारायण द्वारा श्रपने श्रत्पसूचित ताराकित प्रश्न क सम्बना म जानकारी की माग	<i>य</i> ः
श्री गोविन्दसिह विष्ट द्वारा नियम ५२ के ग्रन्तगंत दिये गय त्रिषय के लम्बना मे जानकारीकी माग	5-51
१७ फरवरी, १६६० के तारांकित प्रश्न ३-४ से सम्बद्ध ग्रनपुरक प्रश्न के उत्तर	२⊏-२६
का सोधन	<b>5</b> C
१८६०-६१ के स्राय-व्ययक की मागो पर विधादात्र निश्चित कायत्रम में प्रि वतन करने पर श्रापत्ति	२६- , =
संख्या ३४—लेगा शीषक ५० —सावर्जानक निर्माण काप्र प्रोर ५०— क— -राजस्व से धित्त पाधित नागरिक निर्माण-काया पर पर्जा की लागत, प्रमदान संख्या ३५— -तथा शोषक ५० —नागिरक निर्धाण-हार्य — कन्द्रीय संउक निधि से धित्तीय सहायता, श्रमदान संख्या २६—लेगा शीधक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य ग्रीर ६१—-राजस्य लेग से बाहर नागिरक निर्माण-कार्या को प्रजी का लेखा तथा श्रमदान संख्या ५ लगा शीर्षक ६१—-राजस्य लेखे क बाहर नागरिक निर्माण-कार्या का पजी लेखा (जारी)	≐€ €≂
नित्थिया	yo -33
बृहस्पतिवार,१ ० मार्च, १६६०	
उपस्थित सदस्य	१०७–१११
प्रश्नोत्तर	१११-१३=
प्रकोत्तर क सबध मे श्रापत्तिया .	83=-880
कार्य-स्थान प्रस्तावो के संबंध में सूचनाये (प्रस्तुत करने की श्रनुज्ञा नही दी	
गया)	880-888
नयम ५२ हे अन्तर्गत ध्यान आकर्षणार्थ विषयो के सबंध में सूचना	१४१-१४२

	विषय					पुण्ठ मानवा
१६६०-	संख्या ३४ फराजस्व	-व्ययक में अनुवानं लेखा शीव हे ५० । से विना पाखित न या ५४लेखा शी	सार्थज्ञनिक गरिक निर्माण-	्निमणि-कार्यथ कामपिकगुनीक	14 9 0 1 4184	
	सड़क निध ५०नार्ग नार्गारक नि	संवितीय सहाय रिका निर्माण-कार्य माण-कार्यों की प्र इंदरराजस्य हे	ता, ग्रन्दान स प्रारेग = १ तो का लेखा तथ	त्या ३६ - अस्यः -राजस्य अस्य र राजस्यान सत्या	र जाले <i>र</i> र <i>साहर</i> प्रक्र	
श्चन्दान	पूंजी लखा ( मंस्या ४७—	(स्वीकृत) लेखा झीपंक ६:	 =सिसाई, न	 भाक्षमः साधः च	रियानी	* 4 * \$ + 4
•	शीलंक १७,	संबंभी कार्या क १८ भ्रोर १६-व्य गर्य तथा भ्रनवान-	रामस्य म	किय जान वान	भिभाद	
		तिसाई स्थापना प		v s Seas Assault & Mak	* * *	8 8 M M 8 W
नित्यपां	* *			* *	*	* <b>११</b> * * *.
		शुक्रवार, ११	मार्च, १६६०	•		
उपस्थित	। सबम्य	* *	w H	# X		~~~~ 4 3 3
प्रश्नीलर		* *	* *	* *	t	¥204-
कायं-स्थ	गन प्रस्ताव । दो गई)	के सम्बन्ध में सूर •••	तमा (प्रक्तृत	करने की समुद	ila ani	
प्रवेश में	३ वर्षकी वि	डवी कोमं के सम्ब	ष में नियम ४	२ के प्रमानि	पृष्ठ मधी	
	का जनसब्द	4 H	* *	X x	* *	ウスカーラスと
		या याणिका के सम्ब				W # %
<b>१€</b> ₹०-	संबंधा ४७ पानी के निर् लेखा शीर्षक सिचाई के वि	व्ययक में प्रमुबानों -लेका शीवकः कास सम्बन्धी काः १९७, १८ प्रीर नर्माण कार्य तथा।	६८निवाई, प्री का निर्माण, १६-कराज प्रमुबान संक्या	नीकालन, व प्रमुशन सम्बद्धाः स्य संक्रिये त ११लेका बीर	थियाः १० लियाने	
भनुदान		८६५—सिचाई रू —सेका गीर्वक रेकत )			नयांच्य)	
प्तनुदान	संख्या २७— की स्थापना विद्युत योज	-लेका शीर्षकः पर म्यय तथा धनुः नाम्रो परपूंजी की	तम संख्या ५१	लेका शीर्वेकः	K 2 W	<b>465</b>
	(स्वीकृत)		* *	* *	* *	505-86A
		शुक्रवार, १=	माच, १६६०			
डपस्थित	सबस्य	* *	* *	Ne da	* *	25x-25x
भूक्तीला	τ	• •	• •	• •	* *	124-14 X
						7 7

वि	ाषय					पूच्छ	संग्या
श्रल्पसूचित र	तारांकित प्रश्नों पन के संबंध में श्राप	के उत्तर न पि पत्ति	रलने तथा कार्य- ··	सूर्ज। में ऋषिक • •	प्रक्त		३६६
	विनाञ श्रोर भूमि जोधन (मेजपरर		क्षापत्ती, १६४२ • •	≀कंश्रधीन प्रा 	याक्ति •••		३६७
	हर् <mark>यक्या</mark> लय के उ सम्बन्धमं याचिक			प्रमाद की निर •••	र्गवत		३६७
लखनऊ ि।	ध्य <b>विद्या</b> लय के उप स्वरास कार्य स्था	-कुलपति <b>ग</b> ः	पर श्रीका शिक्ष				• •
	ो गयी )		• •				150
प्रक्तों का उ	उत्तर न मिलने पर	श्रापति					444
बाराबकी	जिलें में एवं तियो	सं उत्पन्न प	रिश्वित पर का	यं-त्थान प्रस्ताः	य ची		
Ŧ	जिना (प्रस्तत कर	न की श्रनशः न	हा दी गर्थी )	* *			\$ <b>5</b> ==
नियम ५२	के श्रन्तगंत ग्यान श्र	तकलंणार्थं विक	त्याको सूचनाय '	W AL	* *		444
समितियो	कं निर्वाचन के सम्ब	क्षमं सूचना	* *	* *			3+6
भ्रत्प-सूकि	र ताराषित प्रदन व	ा उत्तर न मि	लने के सम्बन्ध मं	रे प्रापन्ति			448
<b>च</b> स	न्दान मन्या ३१— १९४८न, श्रन्दान स्वन्धी सुधार पर १४८ के दूसरे निर्मा	राल्या ५२- पृ <b>णीकी</b> लार	-लया द्रीयंक. १मसभा⊏२	७०— - जन र राजस्य स्तर्भः	87 <i>5</i> ° + 22	J&E-	
नन्धियां	• •	• •	• •	• •	ж	よりゴー	-43E
		द्यानिवार,	१६ मार्च, १	६६०			
उपस्थित स	बम्प	• •	* *	* *	* *	4 4 6 -	- K K K
प्रकासर	* x	* *	* *	W 44.		ALX-	. 4 A O
नियम ५२	के धन्त्रगंत ध्यान	माकर्षणार्थ वि	वरों की सूचनायं	1	* *		4 % 0
	लार न मिलने की		е и	W	N .A		* 1 3
१६५०-६	१ के श्राय-व्ययक जिल्ला सनुवानां पर	म धन्दानी । विकासको स	हें स्थित संगो पा वय निर्धारण	r मत्राम	* *		«X ę
	न्या ३नेत्वा शी			(स्वीकृतः)		*X 6-	
	व्या ४ लेखा जी				* *	¥44-	
	या ४१लेखार्डा					•	., ,
	स्वीकृतः)	N H	v #	****	<b>*</b> *	X08-	- <b>५१</b> २
	सोमवा	र, २१ मार	¥, १६६०				
उपस्थित स	प्रस्य	* *		* *	* *	X ? 9-	w y x
प्रकाशिक		• •		**	. 4	X?u-	KAE

विषय				पण्ठ-मण्या
प्रश्नों के सम्बन्ध में शिकायत 🕠		* *	* *	X X o
कार्य-स्थान प्रस्तावों के सम्बन्ध में स्	चिनाये	• •	* *	o y y
मलियाना शुगर मिल, मेरठ, को म	त्तियाना गांव की	भूमिका बनपूर्व	क पुलिस	
द्वारा कब्जा दिला रेके सम्ब	त्यमें नियम ४२ व	धन्तर्गत ग्रूमना	•	XX ~~ XX 2
श्रागामी कार्यक्रम के सम्बन्ध में जान	कारी की मांग			445
१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रन्	रानो के लियं मांगी।	रर सतदान स	महान सम्बद्धा	
४२लेखा शीर्षकः ४७- शीर्षक २४गांत्र सभागें	प्रकाण व्यय तथा कोक्संक्रमञ्जू / स्वीर	कानुबास सम्पा ८००)		*****
नित्ययां .	arte a record ( e. a.)	×,		1015-67E
	•	4 *	• •	Maria man Maria
मगलवार,	२२ मार्च, १६६	Ö		
उपस्थित सदस्य	<b>A</b> A	N A		498-6-3
प्रक्तोत्तर	<b>8</b> 6			· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
यू० पी० मोटर वेहिकिल्स रूस्स, १६	४० में प्रत्यापित स	शोधन (मजपर	कर्मा गर्म )	1.43
प्रक्तोत्तर के संबंध में ग्रापत्ति	**	x 4	r 4	**3
भी टीकाराम पुजारी के निलम्बन को	समाप्त करने का	मुकराम		643-645
सहारनपुर म्युनिसिपल बोडं द्वारा ल	तज्ज स्वीकर सं <mark>वर</mark> ि	ात समायं गय स	ाई मान	
के संबंध में कार्य-स्थगन प्रस्र	त्रव की सूचना (प्रक	मुल करणने की कर	~	
वी गयी) मिश्रिक्त में भी दशीवनाथ के मेले में	······································	·		143-146
शाय में कभी के संबंध में निय			मान <b>मु</b> रस्य स	£ fc
नियम ४२ के घरतगंत विये गये विषय		**		478
सहारनपुर म्यानिसिपल बोर्ब द्वारा ला		· · · ·	MY W	4 " \
संबंध में कार्य-स्थान प्रस्ताव		* *	* *	337
नियम ५२ के भ्रम्तर्गत विये गये विषय	ों को संबंध में आगम	वरी .	, ,	446-675
१६६०-६१ के झाय-व्ययक में झन्		<b>पर मतदाम</b>	-furfaces	•
भ्रमुवानीं के लिये समय निध		* *	* *	**
इन्तुवान संस्था ३७लेखा शीर्वकः ४	०नागरिक निम	नि-कार्यों के निय	'	
धनुवास (स्वीकृतः)	* *	* 4		114-502
धनुवान संख्या ३२लेका शीर्वक ४	७स्वमा संबाध	ान कार्याणय (स्व	ੀਦੂਰ) (	Feb-Xe
गम्में के क्य मूल्य से संबंधित व मार्च,	१६६० को काल्य सूचि	त सार्थिक प्रश	1 X-4	
के विजय पर विवाद	* *	4 4	٠. ٠	300-50
मुधवार, २३	मार्च, १८६०			
उपस्थित सदस्य	• *	* *		>tt
प्रक्रमोसार				
प्रक्तों के सम्बन्ध में स्पतस्था की बांग	₹ #	N W	* * *	31c-25t
marked in the chamber of more district the selfet.	* *	N 6		<b>以本书</b>

विषय		पृष्ठ-संस्य ।
हाई स्कूल ग्रोर इन्टरमीडियेट बोर्ड के इम्तहान के कारण मसलमान परी को जुमा की नमाज से वंचित करने के सम्बन्ध में नियम ५२ के		
सूचना	• •	७३६
पूर्वी जिलों में श्रोला वृष्टि के सम्बन्ध मे वक्तव्य की मांग 🦾 .		01E-050
मिलयाना शुगर मिल, मेरठ, को मिलयाना गांव की भूमि का बलपूर्वक द्वारा कब्जा दिलाने के सम्बन्ध में नियम ५२ के श्रन्तगंत गृह उप		
वक्तव्य		980-088
२१ मार्च, १६६० तक स्राय-व्ययक पर वाद-वित्राद के भावणों का विवरण		984-988
श्रनुदानों से सम्बन्धित साहित्य के समय में वितरण की मांग		<b>9 4 8</b>
१६६०-६१ के आय-व्ययक मे अनुवानों के लिये मांगी पर मतवात	-ग्रनदान	
संख्या १ — तेला जीवंक ४ — वृहत जीतकर की उगाही	परं व्यय	
(स्वोकृत)	* *	22x-32X
अनुवान संख्या ३८- लेखा शोवंक ४४ बुभिक्ष सहायता तथा अनुवा	न मंत्र्या	
२लेखा शोर्षक ७भू-राजस्व (मालगुजारी) (म्बीकृत)	, ,	736-75C
नित्थयां	* *	402-330
बृहस्पतिवार, २४ मार्च, १६६०		
उपस्थित सदस्य		20x-20 £
	* *	
प्रदनोत्तर	• •	E (0-E 1 )
प्रतिनिहित विधायन समिति का चतुर्थ प्रतिबेदन (प्रस्तृत किया गया)	* *	c * i - c * 3
सवस्यों के सवन से बले जाने पर जनके प्रवनों के लिये जाने के सबंध में क	वस्था	けみな しけもれ
कार्य-स्थान प्रस्ताव तथा नियम ५२ ते अन्तर्गत सूचनायें	<b>b</b> 8	c < c
सवस्यों को पार्टी के अनुपात तथा जनकी संख्या के अनुगार बोलने का अब	सर देने	
ने संबंध में व्यवस्था		E ¥ E
मिश्रिल में भी वधीचनाथ के मेले में धर्नाधकुत सिनेमा शां के कारण क ग्राय में कभी के संबंध में नियम ५२ के ग्रन्तगंत मृख्य मंत्री का ब		<b>444-44</b>
मुल्य मंत्री के विशव प्रक्ती का उत्तर जिलम्ब से देने पर विशेषाधिकार ।	ती प्रय-	
. हेलना का प्रदन उठाने की सुकता		εχο
कार्य-क्रम के संबंध में जानकारी	* *	€¥ o
सहारनपुर नगरपालिका द्वारा लाउड-स्पीकरों के प्रयोग पर प्रतिकर	थ भरे	•
संबंध में स्वायस शासन उपमंत्री का बक्तव्य		EX\$EX?
उत्तर प्रवेश जिला परिषद् विशेषक, १९५१, पर संयुक्त प्रवर सर्वित प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की सर्वाय में वृद्धि का प्रस्ताव (स्वीकृत)		<b>~</b> ¥~~ <b>~</b> \$~
१६६०-६१ के भाय-स्थयक में भन्दानों के लिये मांगों पर मलदान	यनशास	
संख्या २१ लेका वीवंक वेय चिकित्सा तथा वामुदान संख्या	73-	
		#44-£01
मस्यियां		B = 0 B %

# शुक्रवार, २५ मार्च, १६६०

विषय				वृत्क-संस्था
चपस्थित सदस्य	• •		* *	x = 3-9 + 3
प्रश्नोत्तर				903-253
उत्तर प्रदेश सरकार के विनियोग लेखे	१६५७-५= त	गालेला परीका प्र	निवेदम,	•
१६५६ पर लोक लेखा समिति			-	१७३
दितीय विषान सभा की आश्वासन समि	,	•	ग्या गया)	. १७२
उत्तर प्रवेश श्रविकतम जोत सीमा ग्रारो	पण विषयम, १	£XE	a 4	१७३
् (संयुक्त प्रवर समिति का प्रति	थेवन प्रस्तत कि	या गया)		
श्री मोतीलाल अवस्थी को सदन के बाहर			* *	203-203
सिंचाई विभाग, मिर्जापुर, के ४०० मजहू	रो की खटनी के	कारण भी रमार्पा	ल बुझ	
द्वारा श्रमशर्म के सम्बन्ध मं			* * *	とゆう―モロギ
तात्कालिक प्रक्तों के लिये जाने के मा	म्बरधर्म स्पबस्य	at	* *	ZOY-EOX
इंटरमीक्यिट कोई के इम्तहान के कार नमाज से बंजित करने के सम्ब	ण मुसलमान गम्ध में नियम	परीक्षाणियों को 1 ५२ के सम्मर्गेत रि	तथा भी शक्षा उप-	
मंत्रीकावस्तव्य	* N		* *	y v s
म्रागामी कार्यक्रम के सम्बन्ध में सूत्र	нт	* ¥		₹ UX
विकास तथा नियोजन स्थायी समिति, र	गोक-लंखा समि	ति तथा प्रावकनन	ninin	
क लिये निर्वाचित सबस्यो के न	ामों की घो इक	f ,.	* *	202-EUS
२६ फरवरी, १६६० को तारांकित प्रक्रम	. RR 46	से सम्बद्ध एक धा	<b>नगरकः</b>	
जेक्न के उत्तर के सम्बन्ध में गृह	उप-मंत्री का ब	क्लक्स	• •	204-200
१८६०-६१ के ब्रोध-व्ययक में प्रमुखान	ों के लिये मांगे	ं पर मलहान	धन् दान	
सक्या १६——लंबा शर्विक २५	म्बाय प्रश	ासन (स्वीश्वास)		Kan-fex
धनुवान संक्या ४४ लेका दीवंक ४७		याण (स्वीकृत)	# m	CEX
भ्रमुदान संक्या १७—लेका दीर्वक २८.	जेल (स्वीष्ट	m)		#x-1=22
वरार प्रवेश विविधोग विवेदण, १८६०	(पारित)	*		41-tolk
Alterat ? "		er te		********

# शासन

#### राज्यपाल

# श्री बराहगिरि वेक्टगिरि

# मंत्रि-परिषद्

# मंत्री (जो मंत्रिमंडल के सवस्य हं)

श्राबटर सम्पूर्णातस्य, बी० एस-मी०, विधान-सभा-सवस्य, मन्य मत्री, उद्योग, श्रम, सामान्य प्रशासन एवं नियोजन मत्री ।

श्री हुकूमसिह विसेन, बी० ए०, एल-एल व् बं०, विश्वान सभा सनस्य, न्याय, स्वारध्य, राजस्व, सहायता तथा पुनर्वासम भन्नी ।

भी गिरधारीलाल, एम० ए०, विधान-सभा सबस्य, सार्वजनिक निर्माण, सिचाई तथा विदात मत्री ।

श्री में ।व श्राली जहीं न, बार ऐंट-ला, विधान-गभा सवस्य, जिल तथा वन मत्री । श्री कमलापति त्रिपाठी विधान सभा सबस्य, गृह, शिक्षा हरिजन कत्याण तथा सबना मत्री । श्री विचित्रतारायण शर्मा, विधान-सभा सबस्य, स्वायण शासन मत्री । श्री मोहनलात गौतम, विधान-सभा-गवस्य, कृषि तथा शहकारिता मत्री ।

# मंत्री (जो मंत्रिमंडल के सबस्य नहीं है)

क्षावदर सीलाराम, एम० एस-सी० (बिस), पी०-एब० क्री०, विधान मभा-सवस्य, मावक-कर तथा परिवर्तन मनी ।

भी जारमोहन सिंह नेगी बी० ए० एल-एन० बी०, विधान सभा सबरम, बाद्य मनी। भी लक्ष्मीरमण दावार्य, विधान-सभा सबस्य, समाज बन्धाण मनी।

## उप-मंत्री

भी सुत्तान धालम तां, विधान-सभा-सबस्य, नियोजन उपमत्री ।
भी वलनेवसिह धार्य, विधान सभा-सबस्य, स्वास्थ्य उपमत्री ।
भी हेमबतीनस्वन बहुगुणा, विधान-सभा-सबस्य, भम उप-मत्री ।
भी पामस्वक्य यावव, विधान-सभा-सबस्य, गृह उपमत्री ।
भी वीरेना वर्मा, विधान-सभा-सबस्य, सहकारिता उपमत्री ।
भी अपराम वर्मा, विधान-सभा-सबस्य, स्वायल शासन उपमंत्री ।
भी महावीरप्रसाव शुक्ल, विधान सभा-सबस्य, राजस्य उपमत्री ।
भी वीनवयालु शास्त्री, विधान-सभा-सबस्य, शिक्षा उपमत्री ।
भी कालीवरण धरवाल, विधान-सभा-सबस्य, हिंद्य उपमंत्री ।
भी कालीवरण धरवाल, विधान-सभा-सबस्य, संस्वीय विध्यक उपमंत्री ।
भी महावीरसिंह विध्य, विधान-सभा-सबस्य, संस्वीय विध्यक उपमंत्री ।

# सभा-सचिव

मृत्य मंत्री के सभा-सचिव

भी कृपार्शकर, विधान-सभा-सदस्य । श्री राजविहारीसिट, विधान-समा-सदस्य ।

सार्वजिनक निर्माण मंत्री के सभा-मित्रव भी धर्मसिह, विधान-सभा-सवस्य ।

परिवहन मंत्री के सभा-सन्तिव भी धमंत्रल बंद्य, विधान-सभा-सदस्य ।

गृह मंत्री के रम्भा-संस्वय भी इस्तफा हुसेन, विधान-सभा-सदस्य ।

विस्त मंत्री के सभा-सचिव की महम्ब सली का, विभान-सभा-सदस्य ।

# सदस्यों की वर्णात्मक सूची तथा उनके निर्वाचन-क्षेत्र

## ऋम- सदस्य का नाम संख्या

# १--- प्रक्षवर्रासह, श्रो

२--म्रजीम हमाम, श्री ३--म्रतीकुल रहमान, श्री

४--- ग्रनन्तराम वर्गा, श्री

५—म्बर्कुल रऊफ लारी, श्री ६—म्बरकुल लतीफ नोमानी, श्री

७--ग्रब्दुरसमी, श्री

६--म्रमरनाथ, श्री

१०—-ग्रमरेशचन्द्र पश्चिम, श्री ११—-ग्रमोलावेबी, श्रीमती

१२--मयोध्याप्रसाव प्रायं, श्री

१३--मलो जर्रार जाकरो, श्री

१४--प्रली जहीर, भी संयव

१५--- प्रवर्धेशकुमार सिनहा, बास्टर

१६--ग्रवयेशचन्द्रसिंह, भा

१७---ग्रवषेशप्रताप सिन्न, भी

१८-- शसलमतां, श्री

१६--महमद बल्या, श्री

२०-- प्रत्माराम गोविग्द खेर, श्री

२१--भारमाराम पांडेय, औ

२२--प्रवितराम सिघल, श्री

२३---मानन्बन्नस्पशाह, भी

२४--प्राचेर संा० प्राइस, भी

२५--- इन्दुस्तण गुप्त, भी

२६--इरतजा हुसैन, श्री

२७--इस्त्दा हुसैन, श्री

२८-- उप्रसेन, भी

२६--जब्यशंकर, भी

३०--- उबेबुर्हमाम, भी

३१-- जमादांकर जुक्ल, भी

३२--- उल्फलसिंह, भी

३३--- क्रबल, श्री

३४--एस० घहमब हसन, श्री

३५--मॉकारनाथ भी

३६--कर्ह्यालाल बाहमीकि, भी

३७--कमवद्दीन, श्री

३ --- कमलकुमारी गोईबी, कुमारी

## निर्वाचन-क्षेत्र

.. पिपराइस

.. कंतिन

.. नजीयाबाद

. अस्तीगक

.. विनायकपुर

.. कीपार्गज

.. बरोसा

.. जलवंतनगर

.. महराजगान

.. मिजीपुर

.. गठहा

.. सलमपुर (पूर्व)

. उतरीला

.. लग्बन अक्षा (परिवास)

ं स्थितिका

.. भोजपुर

.. न्यांकापुर (पूर्व)

. रामपुर

. . जानगढ

.. mielt

. . मंबपुर

. स्रागरा शहर

. राबट सर्गज

. . नाम निर्वेशित (शाल-भारतीय)

• सगरी

. . सियामा

.. गोरलपुर

ः मलेमपुर (पश्चिम)

. . .

.. बाली (पूर्व)

. कामपुर शहर

. सहस्रवाम

गार्थ चन्द्रवस्य वस्त्र वस्त्र । ...चेच

. . कोमासमा

. . कानपुर वाश्र

.. स्मार

· SIIRIMIN

. मुधना

. . करसम्ब

<b>कम-</b> सवस्य का नाम	निर्वाचन-भेत्र
संख्या	
३६कमलापति त्रिपाठी, श्री	चन्दौली
४० कमलेशचन्द्र, भी उपनाम कमले	पुबामा
४१कल्याणचन्द मोहिले, श्री उपनाम छन्नन गुरु	-
४२कल्याणराय, श्री	शाहाबाद
४३ काम्ताप्रसाव विद्यार्थी, श्री	महाइच
४४कालीचरण अग्रवाल, श्री	कास्यज
४५काशिप्रसाव पांडेय, श्रो .	कादीपुर
४६—किशनसिंह, श्री	ठाकुरद्वारा
४७कुंबरकृष्ण वर्मा, श्री	स्त्नानपुर
४५केशभान राय, श्री	म्गहर
४६केशव पांडेय, श्री	मनीराम
५०	विनीतो <u></u>
५१कैलाशकुमारसिंह, श्री	इस्माभनगर
५२कैलाशनारायण गुप्त, भी	इलाहाबाद बाहर (उत्तर)
४३केलागप्रकास, श्री	में रठ शहर
५४—-कॅलाशवती, श्रीमती	विद्रारम् पुर
४५कोतवार्लीसह भवीरिया, श्री ४६कुपाइंकर, श्री	हिष्मर । सन्द
	न्तर
५७ सजानसिंह, चौघरी ५८ समानीसिंह, ग्रावटर	34414
१६क्यालीराम, भी	मुराबाबाब (बेहाल)
	मोहनमानगंब
a to marking and	पिष्मी गामक
at the same of the same and the	<b>थामपुर</b>
as viverence of full to	
६४गंगप्रसाद वर्गा, भी (एटा)	गोंका (विकास)
६४ -गंगाप्रसावसिंह, भी	प्टा
६६—-गजेन्द्रसिंह, श्री	रसरा
६७ — गरम्याम, भी	विष्ता समितपुर
६= -गणेशमसाव पांडेय, भी	मासना <b>म</b>
६६गर्नेशचन्त्र कास्त्री, श्री	भौगांच
७०गर्नशीलाल श्रीबरी, श्री	जिस्मा विस्मा
७१एयात्रसाव, श्री	स् <b>वक्षा</b>
७२गयावक्वासिष्ठ, श्री	इसीली
७३गयूर शली शां, श्री	મુજાર <b>મેંગ્ર</b> મ
७४गरीबबास, श्री	कालपी
७४ गिरवारीलाल, भी .	<b>भामपुर</b>
७६गुप्तारसिंह, भी	सरेंगी
७७गरमसार्थित्र, श्री	मुसाफिरकाना
७=गुलाबसिंह, भी	
७६विवर्षनी, भीमती	वालीलाबाद
८०वंबासिह, भी	पवरीना (पूर्व)
प१गोशुल प्रसाव, भी	बायल
दरगोपानी, भो	wat
र कु पर्य समारवाह्न ग्राव है हैं	-1 -41

#### निवस्तिन-क्षेत्र सदस्य का नाम ऋम-संख्या **८३--गोपीकृष्ण प्राजाव,** श्री साराधनी द४--गोवंदनारायण तितारी. श्री ना नीन **८५--गोविंदसहाय,** श्रो नगरमा द=-गोविवसिंह विरट, शा ष्प्रतस्त्र हे हैं । ८७--गौरीराम ग्रत, श्री फरंदा (पांध्यम्) यानि. दद--गौरीशंक्य राध श्री, **८६--धनश्याम क्रिमरी, श्रां** जर्दीमा । ६०--घासीराम ज≀टव, श्र≀ भगपना स्राहरम्य तथ्यावः स्राहरम्याः ६१--- चन्द्रजीत यादव, श्रा गन्त्रकेला ( :१४ ) ६२--चन्द्रदेव, श्री ६३-- चन्द्रसली शास्त्री ब्रह्मकारी, श्री क्रियाम्स्या । ६४--चन्द्रसित्ररावत, श्री भी दा ६४ -- चन्द्रहास मिश्र, श्री क्षिः नगर (क्ष নি প্ৰীন ६६--चन्द्रावतो श्रामती ६७--सन्त्रकाप्रसाद, श्री बाद्याया ६ -- चरणसिंह, श्री 佛神神 ६६--चिलरसिंह निरंजन, श्री काभ १००--चिरंजीलाल जाटव, भी मनमग १०१---- खलरसिंह, भी my my f श्रीमारा 'स्र र १०३——छेडीलाल, श्री WALLASS A. १०४--- ह्योटेलाल पालीवाल, श्री रिक्रम्य रा १०५---जंगबहाबुर धर्मा, श्री RETTE १०६--जगबीशनागयण, भी बियम् र में माहरमदी १०७--जगबीवानारायणवस्त्रीत्रह, श्री १०८--जगबीवात्रलाव, श्री KUNUT १०६--जगदीवादारण ध्रप्रवाल, श्री वर्गभी जामक ११०--जगसाय, चौबरी विवाद्यास्य सम्बद्धाः १११---जगन्नायप्रसाद, भी MITTER ११२ ---जरासाय लहरी, व्या TOS TITLE THE ११३ -जगपिलिसिस्, भी MEAL ११४ - जनमोहनसिंह नेगी, भी miller. He is ११५--जगबीरसिष्ट, श्रां MAINI ११६--जनुनासिह, भी वक्षा । ११७---जयंगीपाल, ज्ञाक्टर PFIFE ११८-- जयवेषसिष्ठ भावं, औ lar. ११६--जयराम बर्मा, भी टाका १२० -- जरगाम हैवर, भा संयव सहराहम (उसर) १२१ - -जबाहरलाल, की मंभागपुर १२२ -- जवाहरलाल रोहल्यो, आकरण ब्यानपुर वाहर १२३ - जागेश्वर, को क्रिकामध्य र १२४--- जिलेग्रप्रतापसिंह, भी कांठ १२५--- जुगलकिवीर, काकार्य

१२६--जोवाई, भी

गोबर्धम

मेका

#### निर्वाचन-क्षेत्र ऋम-सदस्य का नाम संख्या १२७--ज्वालाप्रसाद कुरील, श्री घाटमपुर १२८--सारखंडराय, श्री घांसी १२६---दम्बरेश्वरप्रसाद, श्री खेराबाद १३०---दोकाराम, श्री बवाय् १३१--टीकाराम पुजारी, श्री सावाबाद १३२---इंगरसिंह, श्री राठ १३३--ताराचन्व माहेश्वरी, श्री सिषाली मिक्याह १३४--तारावेवी, डाक्टर १३४---तिरमलसिंह, श्री सहावर १३६---लेजबहादुर, श्री लानगंज १३७--तेजासिंह, श्री गाजियाबाव १३८---त्रिलोकोसिष्ट, श्री लावनऊ-शहर (पूर्व) १३६--वल, भो एस०जा० कालपुर -शहर १४०--वर्शनसिंह, श्री वाहजहांपुर १४१---बदारयप्रसाव, श्रो अन्तर सम्बद्ध १४२---वालाराम, चौधरी 神野草 १४३--- बीनवयालु करण, श्री बलगमपुर १४४--बीनबयाल् शर्मा, श्रो **ध्रत्पकाष्ट्र**ण १४५--वीनवयाल् शास्त्री, श्रा सम्बद्ध १४६---बीपंकर, बाजार्य बक्रीत १४७--बीपनारायणमणि त्रिवाठी, भी वेवरिया (बीक्षण) १४८--दुर्योधन, श्री महाराजनं ज १४६---बेबकीमन्वम विभव, भी कागरा शहर १४०---वेजवससिंह, भी टप्पल १४१--- देवनारायण भारतीय, श्री जमीर १४२--वेबराम, भी चावियाबाब १५३---देवीत्रसाव मिख, औ सक्तरपुर १४४--द्वारकाप्रसाव मिलल, श्री मुजयकरमगर १४५---द्वारिकाप्रसाव, श्री ममीज १५६---द्वारिकाप्रसाव पांडेय, श्री फरेंबा (पूर्ण) १५७---श्रनीराम, श्री लाखा ज १४८-- अनुवधारी पांडेय, श्री महली १५६---मर्नवस बैद्य, भी सिरीली १६०--मर्मपालसिंह, भी **तुललीपुर** १६१--मर्नसिंह, भी सन्पदाहर १६२--नत्याराम रावल, औ वारावनी १६३--- नम्यूसिंह, घो (बरेला) करीवपुर १६४--नत्यूसिह, यी (मैनपुरी) करहल १६४--नग्वकुमारदेव वरदिएक, स्री हाय रस १६६--नन्यराम, भी गुज्या १६७-- नरदेवसिंह दलियानवी, श्री चांबपुर १६व---नरेन्द्रसिंह भंदारी, श्री क्यारमाम १६६—वरेन्स्रसिष्ट विष्ट, भी पिथी रागव १७०-सम्बन्धियोर, श्री मामला

ऋमं-	सदस्य का नाम			निर्वाचन-क्षेत्र
संख्या				
808	–नागेश्वरप्रसाद, श्री	• •		गरवारा
	–नारायणदत्त तिवारी, 🌯	री		नेनीताल
803-	-नारायणदास पासी, श्री			बोकापुर (पश्चिम)
808-	–निरजर्नासह, श्री	• •		पोलोभीत
	-नेकराम शर्मा, श्री	• *		<b>ग्रतरोली</b>
808-	-पद्माकरलाल श्रीवास्तव,	भी	• •	<b>अत्</b> रोलिया
200-	-पब्बरराम, श्री	• •		गाजीपुर
805-	-परमानन्व सिनहा, श्री			सोराव (पश्चिम)
-308	-परमेश्वरदीन वर्मा, श्री		• •	पुर्वा
250-	-पहलवानसिंह, चौधरी	* *	* *	मीवा
2=2	-प्रकाशवती सूब, श्रीमती			मेरठ (ह्याबनी)
१८२-	-प्रतापबहादुरसिंह, श्री	# *	• •	फाबरपुर
१5३	-प्रतापभानप्रकाशीसह, श्रं	t		सहरपुर
ξ=x	-प्रतापसिह, भी	• •	• •	टनकपुर
₹ <b>5</b> X	-प्रभावती मिध्र, श्रोमती	* *	* *	लम्भुद्धा
	-प्रभुवयाल, श्रो	• •	~ *	बातगंगा (पदिवस)
	-फलेहॉसह राणा, श्री	• •	* *	सरबना
\$ 55 m	-बंशीघर गुक्ल, भी		* *	भीम्गर
	-बलदेवसिंह, श्री	* *	4 *	महबेबा
	-बलदेवसिह भाय, श्री		* *	साहाबाब
	–बसन्तलास, श्री			लक्षमक (स्वावनी)
	–बादामसिह, श्री		• •	विकारपुर
463-	-बाबूराम, भी		• •	भोजीपुरा
	-बाबलाल कुसुमेश, श्री		* *	प्रताबग <b>ज</b>
	-बालकराम, भी		* *	तिसहर
	–बालेववरप्रसावसिंह, श्री		₩ ₩	बुर्मारमागण (बक्षिण)
₹ E'9-	-बिन्दुमतीबास, भीमती		* *	प्रसा नगज
	–विशम्बरसिंह, श्री		* *	हस्तिमापुर
\$EE-	-बिहारीलाल, श्री		* *	बीस्लपुर
₹00-	-बुलाकीराम, भी		* *	हरवोर्च
	-बुद्धीलाल, भी		# W	नानपारा
₹०₹-	-बुद्धीसिंह, भी		* *	महाभाष
₹0₹-	-मुजबासीलाल, धी		* *	बीकापुर (परिवम)
£08-	-बुजरानी मिक्र, भीमती		4 *	विस्तुरिष
20X-	मधनराम, भी		4 4	मामपुर
20K-	-वेषमराम गुप्त, भी		* *	मानपुर
300m	बेमीबाई, शीमती		* *	426
	-बेजूराम, भी		* *	सियोसी
	-मजनारायण तिबारी, 📽	ħ	* *	पुक्ररीमा (पश्चिम)
780-	-मजभूषणदारण, भी		* *	बेह्रायन
<b>366</b> -	-त्रहाबंस वीकित, भी			कालपुर बाह्य
787-	-मगबलीप्रसाव दुवे, भी			भाषापुर
₹१३	-मगबलीअसाव शुक्त, अ			प्रसापगढ़ (शक्तिन)
568-	-भगवतीसिह विद्यारव, व	(t)		मनवासम्बद्धाः

क्रम- सदस्य का नाम	निर्वाचन क्षेत्र
संख्या	
२१५भगौतोप्रसाद वर्मा, श्री	बारावकी
२१६—भजनलाल, श्रो	भीरंगा
२१७भीवासाल, श्री	. हसनगज
२१८—भवनेशभूषण शर्मा, श्री	इटावा
२१६भूपिककोर, श्री	. भ्रासीयज
२२०मंगलाप्रसाद, श्री	मेजा
२२१मंजरुलनबी, श्रो	सहारनपुर
२२२ मधुराप्रसाव पाडेंग, श्री	ः नौग\$
२२३मर्बनगोपाल वंद्य, श्री	. भगोसन
२२४मदन पांडेय, श्री	. तिलपुर
२२५मदनमोहन, श्री	. फॅलाबाब
२२६— मस्रालाल, श्री	मोहमदी
२२७मलकानसिंह, श्री	सिमान्यगागाम
२२८—र्माललानसिंह, श्री (मैनपुरी)	. मेमपुरी
२२६महमूब ग्रली ला, कुंबर (मेरठ)	कासमा
२३०महमूब ग्रली ला, भी (रामपुर)	स्थान दाश
२३१महम्ब भली गा, भी (सहारतपुर)	. मुजपकराजाव
२३२महसूद द्वसंत खा, श्री	सम्भाष
२३३महावेबप्रसाव, श्री	फलरम्र
२३४महाबीरप्रसाब शुक्ल, भी	ः भोगाई
२३४महाबीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री	लक्षमक वाहर (मध्य)
२३६—महीलाल, श्री	बिलारी
२३७महेंद्ररिपुदमनसिंह, राजा	बाह
२३८—महेशसिंह, भी	. शरबोर्ड
२३६माताप्रसाव, भी	गाहराज
२४०मान्यातासिंह, श्री	कोपाचील
२४१मिहरबार्गासह, भी	भरवामा
२४२मुबुटविहारीलाल प्राचलल, श्री	धर्मीशी
२४३मृबिसनायराय, भी	गोपालपुर
२४४म्बप्सार हसन, भी	श्रावस
२४५गुनोन्द्रपालसिंह, भी	बीसल
२४६मुबारक चली लां, भी	जसेहट
२४७मरलीबर, बी	माह्य
२४ मरलीयर कुरील, भी	विल्हीर
२४९मुल्लाप्रसाव 'हंस', भी	સપ્તીપુર
२५०मुहम्मद शब्दुस्समद, श्री	• • वाराजनी वसुर (जनर)
२५१महम्मद फाक्क चिदली, भी	वेवस्या(उसर)
२४२ मुहस्सव सुलेगान श्रवानी, श्री	मामगंगा (पूर्व)
२४३ मुहस्सर हुसान, स्रा	बरेनी सावनी
२५४मृलकाय, भी	मिसरिया
२४४मोलीलाल प्रवस्थी, श्री	कानपुर (बेहास)
२४६—मोहनलाल ,श्री	• • महोबा
२५७महमलाल गातम, भा	कोयल
२५५—मोहनलास वर्मा, श्री	सन्दीका
·	

#### निवचिन-क्षेत्र सबस्य का नाम संख्या २५६--मोहर्नासह मेहता, श्रो वानपुर रायबरेली (उत्तर) २६०---यमुनाप्रसाव शुक्ल, श्री २६१--यमुनासिह, श्री शावियाबाब २६२---यशेपालसिंह, श्री देवसम् ४ २६३—यशोवादेवी, श्रीमता बांसगांब २६४---यावये प्रवस दूबे, राजा जीनपुर २६४--रकफ़ जाफ़री, श्री महत्ना दाहर २६६ - -रघुनायसहाय यावव, श्री **किशनपर** २६७--रघुरनतेजबहादुरसिंह, श्री उपनाम लाल साहब साबुल्ला नगर २६८---रघुराजसिंह चौधरी, श्री क । नन्त्र छाहार २६६--रघुवीरराम, श्री मोहस्मवाबाद २७०---रघुवोर्रासंह, श्री (एटा) THAL २७१--रघुवीरसिंह, श्री (मेरठ) वागपन २७२--रणबहादुरसिह, श्री हरगा (पश्चिम) २७३---रमाकातसिह, श्री प्रमेठी २७४---रमानाथ जैरा, श्री मलितपुर २७५---रमेशचन्त्र शर्मा, भी बरमाधी २७६—–राघबराम पाँडेय, श्री गापा (बक्षिण) २७७--राघवेन्द्रप्रतापसिह, श्री मनवः।ग् र २७८--राजिकशोर राव, भी उक्तीला २७६---राजवेब उपाध्याय, श्री HUBIRIANI २८०--राजनारायण, श्री कस्वरसरकारी २८१--राजनारायणसिंह, श्री WATTE २=२--राजविहारीसिह, भी merme eini २८३---राजाराम शर्मा, श्री वानीत्नावाद २८४---राजेम्ब्रकिशोरी, श्रीमती इमरियागत (जलर) २८५—राजेन्द्रकुमारी, भीमली HIVE २८६---राजेग्ब्रदल, श्री विकारपुर २८७--राजेन्द्रसिंह, भी गोहाबा २८८--राजेग्ड्रसिह बावब, श्री वामसामाय २८६--रामग्रवार तिवारी, श्री प्रतापगढ़ (उसर) २६०—रामधभिलाक, श्री गोंबा (जलर) २६१---रामकिकर, भी पट्टी २६२---रामकुमार बैद्य, श्री समरोहा २६३--रामकुष्ण जैसवार, भी मेरित २६४--रामकृष्ण सारस्वत, औ पार्वसामाय २६४--रामचन्त्र जनियाल, भी रमाई २९६---रामचन्त्र विकल, औ सिकाम्ब राजाब २६७-रामजीलाल सहायक,धी सरक्ता २६=--रामजीसहाय, भी **स्मित्**ड २६६--रामदास मार्य, जी वागस १००--रामदीम, सी **FUR** २०१---राममाच पाठक, औ

क्रम- सवस्य का नाम	निर्वाचन-क्षेत्र
संख्या	
३०२रामनारायण त्रिपाठी, भी	<b>गुरहरपु</b> र
३०३—रामपाल त्रिवेदी, श्री	मलीहाबाद
३०४रामप्रसाव, श्री	मलोन
३०४—रामप्रसाव वेशमुल, श्री	कोपल
३०६रामप्रसाव नीटियाल, भी	लंसकाउन
३०७—रामबली, श्री	म्माकिरम्यामा
३० =राममात, श्री	सरे शी
३०६रामरतनप्रसाव, श्री	रमना
३१०- रामरतीवेवी, श्री	ध्रकास रापुर
३११रामलक्षण तियारी, भी	बासक्रीत पूर्व)
३१२रामलवन, श्री (वाराणसी)	<b>भवो</b> -न
३१३रामलखन मिश्र, श्री	बामी (परिचम)
३१४रामललनांगह, श्री	<b>रा</b> ची
३१५रामलाल, श्री	नगर
३१६रामवसन यावव, ओ	माहुत
३१७रामशरण यादव, श्री	माह-त्यात्म ह
६१८रामसनेही भारतीय, श्री	મહે જ
<b>३१६रामसमगावन, श्री</b>	मोदा हा १
३२० — रामसिंह भौतान वंदा, भी 🕟	रम्भवाषपुर
६२१राममुन्बर पांडेय, श्री	म/बापुर
३२२रामसूरतप्रसाद, श्री	विषयाहम्
३२३रामस्वरूप यादव, भी	असरा-ग
३२४रामस्वरूप वर्मा, श्री	भोगनीपुर
<b>३२५रामहेत</b> िसंह, श्री	स्ताना
६२६रामायणराय, श्री	पदरीना (वशिषा)
३२७रामेश्वरप्रसाव, भी	माद्रुरा शो
३२ द रक्तनुहीन ला, भी	महोत्रप्रीम्
६२६ हमसिंह, श्री	लेरा सजेहरा
६६० — लक्ष्मणवस्य भट्ट, श्री	ना गीपुर -
३३१लक्ष्मणदाव सदम, भी	गरोषा
३३२लक्ष्मणसिंह, भी	रानोमेत (वश्वम)
३३३लक्मीनारायण, भी	पहाइपुर
३३४लक्ष्मीनारायण बंतल, श्री	फलेहाबाद
३३५ — लक्ष्मीर्मण प्राचार्य, श्री	माह
३३६ललमीसिह, श्री	इंगलास
३३७लायकसिंह, चौभरी	शिकोहाबाब
इइ नालबहादुर, भी	विवपुर
६३६लालबहादुरसिंह, श्री	भीराकत
३४० पुरम अली लां, भी	हापुड़
३४१लोकनायसिंह, श्री	कटहर
इ४२ श्रारंगविहारीलाल रावत, श्री	<b>हेकरगढ़</b>
इ४३—विशष्टनारायण शर्मा, श्री	जमानिया
३४४वसी नकावी, भी	रोसा
३४५वासुवेव वीकित, भी	भागा

क्रम- सदस्य का नाम	निर्वाचन-क्षेत्र
संख्या ३४६विचित्रनारायण शर्मा, श्री	मोवीनगर
३४७—विजयशंकरसिंह, श्री	. मुहम्मवानाः
३४=—विद्यावती याजपेयी, श्रीमती	· गुलुगावावात
३४६विनयलक्मी सुमन, श्रीमती	देवप्रयाग
३५०—विशालसिंह, श्री	. भिटोली
३५१—विश्रामराय, श्री	. भाजमगढ
३५२—विश्वनापसिंह गौतम, श्री	कर्
३५३—विश्वेश्वरानन्व, स्वामी	. फलेहपुर-सीकरी
३५४—वीरसेन, श्री	•
३५५—वीरेन्द्र वर्मा, श्री	· सम्बद्धः · कराना
३५६—वीरेन्द्रविकमसिंह, श्री	अवस्यादन (लिशिय
३४७—वीरेन्द्रशाह, राजा	• कामधी
३४८वजगोपाल सक्सेना, श्री	
३४६—- व्रजविहारी मेहरोत्रा, श्री	- महोबा
३६०—शंकरलाल, श्री	. माटमप्र
३६१—शकुन्तलादेवी, श्रीमती	- कावोपुर
३६२—वाब्बीर हसन, श्रो	हरीरा
	<b>ग</b> र्मा
३६३—शमसुल इस्लाम, श्री ३६४—शम्भुवयाल, श्री	निष्णपुर
३६४शांतिप्रपन्न शर्मा, श्रो	अंगीला
३६६——शातप्रयम्भ शमा, श्राः ३६६——शिवगोपाल तिवारो, श्रोः	男で((すぞ
	मर्कापुर
३६७—शिवप्रसाव, श्री (वेर्वारया)	ািশ্য নাৰ্শা
१६८—शिवप्रसाव नागर, श्री (कीरी)	समीयो
६६६—शिवमंगलसिंह, श्री	बांसडीह (पविषय)
३७०—शिवमूर्ति, श्री	फ्लपुर
१७१—शिवरोजबलीसिंह, श्री	• फलेहपुर
३७२—शिवराजबहादुर, बी	- नवास्योत
२७३ शिवराजसिंह यावव, भी	बिसीमी
१७४शिवराम, भी	अफजलगढ़
३७५—विवराम पाँडेय, श्री	. क्षेत्रापुर -
३७६ शिववचन राव, श्री	सम्बद्धाः (बाक्स्म)
३७७—शिवशंकरसिंह, भी	. मलगढ
१७५शिवशरणलाल भीवास्तव, भी	ः समीना
३७६—दीतलाप्रसाब, भी	. तरकांज
६८०—सोभनाष, धी	- रासर्व्सगंज
१८१व्याममनोहर्मिश्र, श्री	ः लालक (खामना)
१८२—च्यामलाल, श्री	मार
१८३ध्यामलाल यावव, भी	मुगलगराध
८४ मदावेबी गास्त्री, कुमारी	. कियोर
= ४श्रीहण्ण गोमल, श्री	• जमानी
द=६भीकृष्णवस्त पालीबाल, भी	. असंस्थाकु
१८७भीनाथ, भी	- माहम्मवाबाद वीहाः
रेययभीनाच मार्गेष, ची	. मच्या
१८कीनिवास, भी	यानिक

ऋम- सदस्य का नाम	निर्वाच	ন-জন
संख्या		
३६०श्रीपालसिंह, कुंबर	जाहगंज	
३६ ८ संग्रामसिह, श्री	मोरांव	(प्यं)
३६२ मईव ग्रहमद ग्रंसारी, श्री	उवालाप	
३६३ मजीवनलाल, श्री	हमनग्ज	•
३८४ सत्यवतोदेवा रावल, श्रीमती	वावरी	
३६५ सम्पूर्णानन्द, डायटर		र्गाञ्चम (विश्वापा)
३८६ सरस्वतोदव। गुक्ल, श्रीमती	•• सरज्	
३६७सियाबुलारी, श्रोमती 🕠	कानकी	
३६ = श्रीताराम, इ।क्टर	मिलहर	• •
३६६ सोताराम जनल, श्री	हरेया (	
४०० मुक्बनलाल, श्री	इस्मपुर	
४०१प्रवशनीदेवी, श्रीमती	फनेहपुर	
४०२ - मुक्राम वास् अी	टॉका	
४०३ सुंब्लाल, श्री	भीरया	
४०४ पुँखीराम भारतीय, श्री	फूलय्र	
८०५ पुँदामाप्रमाद गोर गामी, श्री	43	
४०६ - पुनीता चौहान, श्रीमती	. सर्वान	
४०७ मुन्बरसाल, श्री	. फरीवयुः	
४०६ पुरथबहाबुरशाह, श्री	. निद्यास	
४०६ - मुरेन्द्रवस वाजायी, श्री	• हमीरपुर	•
४१० सुरेन्द्रसिंह, राजनुमार	पुनाया	
४११सुरैंगप्रकाशांतह, भी	विसर्वा	
४१२सुल्लान शालम सा, भी	. ना पमर्ग	with
४१३मूरतबन्धरमोला,भी	देहरी	
४१४ सूर्यबली पांडेय, श्री	हाटा	~ <b>4</b> \
४१५ — मोहनलाल मुसिया, श्री	बांसी (	スペノ
४१६हमीबुरुला स्ना, श्री	सारदा	
४१७हरकेशबहादुर, श्री ४१८हरक्यालीतह, श्री	पद्दी जलाला	
४१६हरवयालींसह पिपल, श्री	. हार्यरस	44
४२०हरवेबसिह, भी	. वेयसण्य	
४२१हरिवल कांग्रपाल, श्री		र (उसर)
४२२हरित्रचन्त्रसिंह, भी	. बालागंज	
४२३हरिहरवदशसिंह, भी	पाली	!
४२४हरिइचन्द्र श्रव्हाना, श्री	सीलापुर	•
४२५हशीसह, भी	कियीर	
४२६हलीमुद्दीन (राहत मौलाई), भी		ार शहर
४२७हिम्मतसिंह, श्री	. विवाह	
४२६ दृकुमसिंह विसेन, श्री	. कंसरगंग	<b>T</b>
४२६ हमनतीनन्दन बहुगुणा, श्री	. मंझनपु	
४३०होरीलाल यादव, भी	क्योज	-

# उत्तर प्रदेश विधान समा

# <sup>के</sup> पदाधिकारी

### ग्रध्यक्ष

श्री ब्रात्माराम गोविन्द लेर, बीठ ए०, एल-एल० बीठ।

## उपाध्यक्ष

श्री रामनारायण त्रिपाठी, बी० एस-सी०।

सचिव, विधान मंडल

क्री कपसन्त्र, एस० जे० एस० ।

सचिव, विधान सभा

भो देवकीनन्दन मित्यल, एम० ए०, एल-एल० बी० ।

सहायक सचिव

श्री रामप्रकाश, बी० काम०, एल-एल० बी।।

कमेटी प्राफिसर

भी भोलावल उपाध्याय।

पाधीक्षक

भी महीन्द्रनाथ मित्र।

भी श्रीपति सहाय, बी० ए० ।

भो गिरवारीलाल, बी० ए० ।

# उत्तर प्रदेश विधान समा

# बुषवार, ६ मार्च, १६६०

बिवान सभा की बैठक सभा-मण्डप, लखनऊ में ११ बने दिन में अधिकाता, भी बेचनराम गुल, की अध्यक्षता में आरक्भ हुई।

## धपस्थित सदस्य---३६४

धक्षयवरसिंह, श्री श्रजीज इमाम, श्री ग्रतीकुल रहमान, भी मनन्तराम वर्मा, श्री भारतूल एऊफ लारी, श्री भारतुल लतीफ़ नोमानी, भी घक्तुस्समी, श्री म्राभयराम यावव, श्री भ्रमरनाय, श्री ग्रमरेशचन्त्र पांडेय, श्री ध्रमोलावेबी, श्रीमती श्रयोध्याप्रसाव श्रार्य, श्री भवषेशकुमार सिनहा, बार्टर धवषेशचन्द्र सिंह, भी धवषेशप्रताप सिंह, श्री ब्रात्माराम पश्चिम, भी इन्द्रभूषण गुप्त, श्री इरतका हसेन, थी उप्रसेन, थी उदयशंकर, भी उबेद्रंहमान, भी उल्फ़लसिंह, भी अवल, श्री एस० घहमब हसन, थी। र्धोकारनाय, भी कन्हेयालाल वाल्मीकि, भी कमशहील, श्री कमलकुमारी गोईंबी, कुमारी) चमलेशचन्द्र, भी कल्याणकम्ब मोहिले, भी षस्याणराय, श्री नामलाञसाब विद्यार्थी, भी

काशीप्रसाव पश्चिम, श्री किशनसिंह, श्री कूपाइंकर, श्री केंद्रभानगय, श्री केशव पश्चिम, की कंशवराम, भी चेलाशकुमारसिंह, भी कैलाशनागयण गुप्त, भी कैलाशप्रकाश, श्री फेलाशवती, श्रीमती कोतवालिमह अदौरिया, भी सजानतिह सोधरी, भी समानीमिह, काषटर स्रयालीराम, श्री न्युशीराम्य, भी का करियान, क्यी गंगामर जाटन, भी गंगाप्रसाद बर्मा, श्री (एटा) गंगाप्रसार्वासह, श्री गजेन्द्रस्तिह, स्ती गजजुराम, भी गणेशप्रसाद पहिया, भी रानेपाध्यम्ब काम्ही, स्वी गलेशीलाल चौचरी, धां ग्रमुर भली सां, भी रापीयवास, श्री गिरवारीमाम, भी गुप्तारसिंह, भी गुरुप्रसावसिंह, भी गुलावस्तिष्ठ, व्यी गेंबाबेबी, बीबली गेंबासिष्ठ, बी

गोकुलप्रसाद, श्री गोपाली, श्री गोपीकुरण श्राजाद, श्री गोविन्दसहाय, श्री गोविन्दसिंह, विष्ट, श्री गौरीराम गुप्त, श्री गौरीशकर राय. श्री धनश्याम डिमरी, श्री घासीराम जाटव, श्रो चन्द्रजीत यादव, श्री चान्द्रदेव, श्री चन्द्रवली शास्त्री ब्रह्मचारी, श्री चन्द्रसिंह रावत, श्रो चन्द्रहास मिश्र, श्री चन्द्रावती, श्रीमती चन्द्रिकाप्रसाद, श्री चरणसिंह, श्री चित्तरसिंह निरंजन, श्री चिरंजीलाल जातव, श्री छत्तरसिंह, श्री ख्रेदोलाल, श्री छोटेनान पानीवान, श्री जंगबहाद्र वर्मा, श्री जगदोशनारायण, श्री जगदीशनारायणदर्शासह, श्री जगन्नाय चौधरी, श्री जगभाषप्रसाव, श्री जगधाय लहरी, श्री जगपतिसिंह, श्री जगमोहन सिंह नेगी, श्री जगवीरमिष्ट, श्री जमुनासिष्ठ, श्री (बदायूं) जयगोपाल, दावटर जयदेवसिंह ग्रायं, श्री जयराम वर्मा, श्रो जवाहरलाल, श्री जवाहरलाल रोहतगी, जाक्टर जागंदवर, श्री जुगलकिशोर, श्राचार्य जोखई, श्री ज्वालाप्रसाव क्रोल, श्री भारखंडराय, श्री टम्बरेश्वरप्रसाव, श्री टीकाराम, श्री (बदायूं) टीकाराम पुजारी, भी साराचन्व माहेश्वरी, श्री

तारादेवी. दावरर तिरमलसिर, श्री नेजबहादर, भी ने जामित, भी दल, भागपल जीव वशर गयसाद, भा दानाराम चौ रगा. भी दीन :यान करण, आ कोन रक्षा र सम्बो, श्वर वानवान सम्बन्धा था। बीपंकर, यानाप वाय-वारायणभीगा विभाग करा र रो रन्त, श्रो देवदशीमार, आ इंबनारायण भारताय श्रा दशराम आ द्वार का नस्या : स्थिन र १ व्हा (स तपक र नया र ) हारिक्तपमाद का (फर्नकाबार) हारिकाधकरादयास्य भ्यो (योगक्यर) षनीराध, श्रा खगंदन केल, भार धर्भागत, भा तत्याराम रायत, भा नत्यभितः श्री (बर्गा) नःयोगहः, भा (भन्तरा) नन्दक्षाप्येत्र वाशिष्ठ, श्रा नन्दराम, धा नरवेथांसह वाल्यानवा, श्रा नरेन्द्रीयह भक्षारी, श्रा नरेण्डामिह थिरट, धा नवनिकतार, धा नागेरवरप्रमात, श्रा नागयणवास वासी, औ निरंतनभिन्न, श्री नेकराम शर्मा, श्रां पद्माकरनात श्रीवास्तव, श्री परमानन्द सिनहा, श्रा परमेश्वरबीन वर्मा, श्री पहलवार्गातह कोधरी, श्री प्रकाशवली गुव, श्रीमती प्रतापबहाद्गीमह, श्री प्रतापभानप्रकाशसिंह, श्री प्रतापसिंह, श्री प्रभावती मिश्र, श्रीमती प्रभुवयाल, श्री फलेहसिंह राणा, भी

बंशीधर शक्ल, श्री बलदेवसिंह, श्री बलदेवसिंह ग्रार्थ, श्री बसंतलाल. श्री बादामसिंह, श्री बाबुराम, श्री बाबुलाल कुसमेश, श्री बालकराम, श्री बालेश्वरप्रमादसिंह, श्री बिन्दमतो दास, श्रीमती बिशम्बर्रासह, श्री बिहारीलाल, श्रो बद्धालाल, श्री बुद्धीसिह, श्री बलाकोराम, श्री बंजबामीलान, श्री बजरानी मिश्र, श्रीमती बेचनराम, श्री बेनीबाई, श्रीमती बंजराम, श्री ब्रजनारायण तिवारी, श्रो ब्रजभवणशरण, श्री ब्रह्मदत्त वोक्षित, श्री भगवतीप्रसाद वर्षे, श्री भगवर्तासिह विशारद, श्री भगोनीप्रसाद वर्मा, श्री भजननान, श्रा भीग्वानाल, श्रो भवनेशभवण शर्मा, श्री भूपिकशोर , श्री मंगलाप्रसाद, श्री मंजुरुलनबी, श्री मदनगोपाल वंद्य, श्री मदन पांडेय, श्री मदनमोहन, श्रो मन्नालाल, श्री मलखानसिंह, श्री मलिखानसिंह, श्री (मनपूरी) महमूद भ्रली लां, कुंबर (मेरठ) महमूद ग्रली खां, श्री (रामपूर) महमूद हुसंन खां, श्री महावेव प्रसाद, श्री महावीरप्रसाव शुक्ल, औ महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री महोलाल, श्री महेन्द्ररिपुवमन सिंह, राजा

महेशसिंह, श्री मानाप्रयाद, श्री मान्धानामिह, श्री मिहरबार्नान्ड, भी मक्टबिहारीलाल श्रद्रवा न, श्री मुक्ति राय राप, श्री मनप्फर हसन, श्री मबारक प्रकी था। भी मार्लाहर, भी मरलावर क्रील. आ महम्मदाय हुर तस्तः श्रा महाभारतनगान प्रामी औ महस्मा हर्यन, श्रा मानवन्द, श्रा मार्नालाल यस्या, या महिनाता । यह माहन ना र पी मि. श्रो मोहलमिह मह स. भा यसनावयात वास्त, ध्वा यशपानिकार भा यावनेन्द्रपत्र देशे, राजा रक्त है नएहरते जो रमनस्य छप्य यहत्रः, ऋ रध को र राभ, भा। चप रीर्थस्तर, श्री (सर्हा) नहरं बार्जन्स्स्स, प्याः (अस्त्रकः) रण बहाब संसहर, श्वर रमाका तंग ', आ रम्भान्य द्वारात्री, श्रा ગામ દેશામ પાર્ય, શ્રો राधवन्त्र बनस्परियष्ट, भार रहर्माकशार रहर, ध्या राजरेर उपाध्याय, श्रा या मनायागम, न्येर रा ननारायणीयहर, और रा गविहासीसह, श्वर राजागम असी, ह्या रा ते-वीकशारा, श्रीम हे राज-दक्षारा, श्रामना राजन्द्रवस, भा राष्ट्र-द्रीसह, व्या राजन्द्रसिंह याबव, और रामध्यपार विकारी, श्री रामग्रीभागाल, সর্বা रामविकार, रामकृतम जंगवार, भी

रामचन्द्र उनियाल, श्री रामचन्त्र विकल, श्री रामजीलाल सहायक, श्री रामजीसहाय, श्री रामदास द्यार्य, श्री रामवीन, श्री रामनाय पाठक, श्री रामपाल त्रिवेबी, श्री रामप्रसाद, श्री रामप्रसाव देशमुख, श्री रामप्रसाद नौटियाल, श्री रामबली, श्री राममुति, श्री रामरतनप्रसाव, श्री रामरतीवेवी, श्रीमती रामलक्षण तिवारी, श्री रामलखन, श्री (वाराणसी) रामलखन मिश्र, श्री रामलकार्निह, श्री (जीनपुर) रामलाल, भी रामवचन यादव, श्री रामदारण यादव, श्री रामसनेही भारतीय, श्री रामसमझावन, रामसिंह चौहान वैद्य, भी रामसुन्दर पांडेय, श्री रामसूरतप्रसाव, भी रामस्वरूप वर्मा, भी रामहेतसिंह, श्री रामेक्बरप्रसाद, भी क्मसिंह, श्री लक्मणबल भट्ट, भी शक्यणराज कवम, श्री लक्मणसिंह, भी लक्नीनारायण, श्री सक्सीनारायण बंसल, भी लक्मीरमण प्राचार्य, भी लक्षमी सिंह, श्री लालबहाबुर, भी लालबहादुरसिंह, भी लुक्फ घली सां, भी लोकनापसिंह, भी बजरंगबिहारीलाल रावत, भी विशिष्ठनारायण शर्मा, भी वसी नक्की, भी बासबेब बीकित, भी

विचित्रनारायण शर्मा, श्री विजयशंकरसित, श्री विद्यावती वाजयेषी, श्रीमती विनयनक्मी स्मन, भीमती विश्रामराय, श्री विद्ववेदवरानन्द, स्वामी वीरसेन, श्रो वीरेन्द्रशाह, राजा व्रजगोपाल सक्तेना, भी वजविहारी मेहरोत्रा, श्री शंकरलाल, भी शकुनलावेबी, श्रीमती शक्बीर हसन, श्री शमसुल इरलाम, भी शम्भुबयाल, श्री शांतिप्रवस शर्मा, श्री शिवगोपाल तिवारी, भी शिवप्रसाद नागर, भी (कीरो) शिवमंगलसिंह, भी शिवमृति, श्री शिवराजबहाबुर, भी विवराजसिंह यादव, भी विवसास, भी शिवराम पांडेय, भी शिववचनराव, भी शिवशंकरसिंह, भी शिवशरणभास श्रीबास्तव, श्री धीललामसाब, भी शोभनाय, भी वयाममनोहर मिश्र, भी इयामलाल, भी च्यामलाल यादव, श्री श्रदावेशी शास्त्री, कुमारी भीकृष्ण गोयल, भी श्रीकृष्णवस्य पालीबाल, श्री श्रीनाय, भी (प्राजनगढ़) श्रीमाय भागव, भी (मंबुरा) संप्रामसिह, औ सईव प्रहमव प्राप्तारी, भी सजीवनलाल, भी सत्यवतीचेची रावल, भीमती सम्पूर्णानम्ब, डामदर सरस्वतीवेवी शुक्ल, बीमसी सियाबुलारी, कौमली सीताराम शुक्ल, भी स्वजनलाल, भी

सुसरानीदेवी, श्रीमती
सुसरामवास, श्री
सुस्रामवास, श्री
सुस्रामय शास्तीय, श्री
सुवासाप्रसाव गोस्वामी, श्री
सुनीता चौहान, श्रीमती
सुन्वरलाल, श्री
सुर्यबहादुरशाह, श्री
सुरेन्द्रदल वाजपेयी, श्री
सुरेन्द्रसिंह, राजकुमार
सुद्रतान श्रालम खां, श्री
सुर्यवली पांडेय, श्री
सोहनलाल घुसिया, श्री

हमीबुल्ला खां, श्री
हरवयालसिंह, श्री
हरवयालसिंह पिपल, श्री
हरवेवसिंह, श्री
हरिवत्त काण्ड्रपाल, श्री
हरिवत्त काण्ड्रपाल, श्री
हरिवत्त काण्ड्रपाल, श्री
हरिवर्वक्शसिंह, श्री
हरीशत्तन्त्र ग्रष्ठाना, श्री
हरीसिंह, श्री
हलीम्हीन (राहन मोलाई), श्री
हिम्मतसिंह, श्री
होरीलाल मावन, श्री

मोट:--सार्वजनिक निर्माण, उपमंत्री, श्री महाबीरसिंह भी उपस्मित थे।

# प्रश्नोत्तर

# बुधवार, ६ मार्च, १६६० तारांकित प्रक्त

[विवान सभा की प्रक्रिया तथा कार्यसंचालन नियमावली के नियम ३० (४) के सक्तर्गत]

\*१--श्री उग्रसेन (जिला बेबरिया)--[हटा विया गया ।]

[६ मार्च, १६६० के लिए निथारित तारांकित प्रवन]

पंचायत इंस्पेक्टरों को प्रधिक समय तक एक स्थान पर न रखने का सुझाव

\*१---श्री गर्नेदाचन्द्र कारही (जिला मैनपुरी)--क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि क्या उसके ऐसे बावेश हैं कि पंचायत इंस्पेक्टर एक स्थान में तीन साल से ब्रविक समय तक नहीं रह सकते ?

स्वायल शासन उपमंत्री (भी जयराम वर्मा)--- जी नहीं ।

\*२--श्री गलेशकान्त्र कास्त्री---यदि हो, तो क्या सरकार उसकी एक प्रति सक्त की बेच पर रक्तने की क्रुपा करेंगी ?

भी जयराम वर्गी-प्रक्रत नहीं बठता।

भी गर्नेशचन्त्र काछी ---- क्या सरकार इस पर विचार करेगी कि पंचायत इसपेक्टले जिला किसी कारण के लगातार एक स्थान पर सीन साल से अधिक न रहने पादा करें ?

श्री जयराम वर्मी---ऐसा करने की बाबवयकता नहीं हैं। ग्रभी तक ऐसा किया गया है कि वह सावारणतया ४ वर्ष से ज्यावा किसी एक स्थान पर न रहें।

श्री गजजूराम (जिला शांसी)— क्या सरकार बतावेगी कि जो वंशावत इंक्वेक्टर जिल जिले के रहते वाले हैं वह वपने ही जिले में उस जगह पर कार्य कर सकते हैं ?

# हस्तिनापर नगर प्रशासन कार्य

१३--श्री ताराचन्द्र माहेरवरी (जिता सीतापर) - त्रपासरकार का का प्रकास समिति कि हस्तिनापुर नगर के प्रशासन को राज्य सरकार न कब संघान हो रास ते तिपा है

श्री जयराम यर्मा--हस्तिनाप्र नगरक प्रशासन को राज्य सरकार न ज्यान १६४६ से अपने हाथ में ले लिया है।

\*४---श्री लाराचन्द माहेट्यरी---त्र्यासरकार ना ना गाः पाना कि त्रेत्रसपुर नगर के प्रशासन के लिये किसी विकास जो कि गाउन का ना गांच विकास के की कीन-कोन सबस्य श्रीर पेसीहर हो :

श्री जयराम वर्मा- त्रित्नायर नगर दिशान भक्षत वर्ष गेन्यम । । १ ० प्र० प्रिक्षित्यम मं ०१४,१६५६६०) को पारा २ वे १ १११०। । १११ वर्ष प्र गेन्यम का प्राप्त ४ की उपयास (१) के प्रान्तिय विकास प्रिक्तियम कि । विकास वितास विकास व

(१) ब्राय्का मेरद्राक मन्द्र

वारमंत्र

- (२) श्री एम० त० शासराय, सारा सरवार क पातासत । सारा विभाग के चनुसन्ति
- (३) श्री पी० शार० मत्याम्यः भारत सम्बन्धः तासः विभाग के सहायक दिलाग पराभनोताः

11111

(४) श्री एम० समा उदान, राज्य सरक र करवे पार भागत रिभाग के सम्बन्ध समित

47 78 17

(४) किलाधीश, संरह

11:17

"प्र--श्री ताराचन्द माहेश्यरी प्रधासरकार जर जवा वार करणांक दिन समय भारत सरकार ने हस्तिनायर नगर का प्रधासन रहार सरक रव स्थार कि हा अस्ताय वीनी सरकारों में प्रधासन के निमल शाधिक सहायश दिया जनक समझीत का भूगा भग्य धार क्या है ?

श्री जियराम यमी-- होत्रवापूर जवत क प्रशासन क निधन श्रीधन शत पतः विव जाने के समझौते की मुख्य मुख्य भूग्य भार्त निधनोत्सीक र हे

भारत सरकार राज्य सरकार का निर्दा तिवन क्यान्त प्रशासन स्थायन स्थायन स्थायन स्थायन की वेक्साल (ma c · ) व्यक्तियर संस्थित है गाँउ प्रशासन स्थाय स्थाय स्थाय (recurring) स्थाय के बाब का कथा का प्रांत के रूनु गा

१६४६ ५० वेनर कर सन्ध्य पना स्थाप क माच का कर्मा पोर्टी क हतू. यूनर भन भी ५६,००० र० व माधिक न हा।

१६६०-५१ । ५६,००० १ राज्यात क्या या व्याप के जाव का नागांवक कसी का इत्यास्त्राक का जा कर्य हो।

१६६१ -६६ - ५६,००० कः छ। जन्म को वा प्रत्या वस वस्त्र को का की का

हेर ६ में - ६ व व्याप्त कर का लगर का फास नवा वसाय के मी नाम्त्रांकिक करने का पर अभियान भा भी क्षा को ।

प्रश्तोत्तर ७

## १६६४-६५--कोई म्रायिक सहायता नहीं ।

- (१) उपर्युक्त व्यय के भ्रतिरिक्त नगर के संबंधी भ्रीर कोई व्यय भारत सरकार बहन नहीं करेगी।
- (२) उपर्युक्त धन का व्यय भारत सरकार की संपत्ति जो नगर में है जैसे स्कूल की इमारत बस स्टंड, प्रशासकीय इमारतें उत्थादि तथा मकानों को वेखभाल (muntenance and unkeep) पर भी विया जायगा । इस संबंध में भारत सरकार कोई व्यतिरिक्त धन नहीं वेगी ।

श्री ताराचन्द माहेश्वरी—स्या मानतीय मंत्री जी बताने का करा करने कि तरिननापुर नगर प्रशासन कार्य को जिले से सम्बद्धित न किये जतने का क्या कारण है ?

स्वायत्त शासन मंत्री (श्री त्रिचित्रनारायण शर्मा) -- श्रीमन्, गारण ता यति है कि वहां पर श्रभी नुकसान होगा श्रीर वह सरकार में निया जाता है इसिनए तार पर किया या को नहीं विया गया।

श्री ताराचन्द माहेरवरी—क्या माननीय मंत्री जी को जात है कि धनपर है वजर १६४६-६० के अनुदान संख्या ४१, पृष्ठ ४० में स्पट्ट नित्या गया है कि भारत सराहर का र तीन साल तक ही राज्य सहायता देगी जब कि उत्तर में पाच मान राज्य महायता पाए र होगी बताया गया है, तो इसके बदल जाने का क्या कारण है ?

श्री विचित्रनारायण शर्मा--इसका विशेष कारण बिना वेले में नहीं बना महना।

श्री गेंदासिंह (जिला देवरिया)--श्या यह मही है कि यहा के प्रवन्ध म का ठी रुप्तां की गड़बड़ी थी श्रीर उस गड़बड़ी की कीई जान पड़तान भा हो रहा गों ?

श्री विचित्रनारायण दार्मा—सूचना को जरूरत होगी।

लड़कियों श्रीर महिलाग्रों के श्रनैतिक द्यापार निरोधक श्रीधनियम का कार्यान्वयन

'६—श्रीमती राजेन्द्रकिशोरी (जिला बस्ती) — स्या सरकार बताने का कृषा करेगी कि राज्य में लड़कियों श्रीर महिलाश्री के श्रनेतिक स्यापार के दमन व उन्म नजर ए बनाये गये कानून के कार्यान्वयन की क्या प्रगति है ?

संसदीय विषयक उपमंत्री (श्री नरेन्द्रसिंह विषट)—वादित मृतना मनान है। (वेलिये नत्यी 'क' आगे एष्ट १६ पर)

\*७--श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी--श्या यह गरकार बताने की कथा करेगी कि उपरोक्त ग्रनैतिक व्यापार में जिलाबार कितनी लड़कियों व भहिलाजा का उजार किया गया ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट—सब तक केवल ३७ जिलों में मृचना प्राप्त हो सका है जिनमें से निम्नलिखित ७ जिलों में कुल ३१६ लड़कियों और महिलाओं का उदार किया गया है.——

/ m N				
(१) लखनक (२) खेरर	• •	* *	» w	X :
( ) 1 1 10	* *	• •	* *	ų o
(x) wante		• •	₩ ₩	EX
1. 3. 44.13.	• •	4 6		<b>5</b> . 4
रुप्र) वारायसा	* *	* 4	* *	4
(६) वेहरावृत (७) गाजीपर	+ *	• •	W W	\$ \$
(७) गामिपुर	* *	Westernament Special Control Control	ર	
			यांग	386
			THE RESERVE THE PARTY OF THE PA	

\*=-श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी--क्या सरकार ने उन्हें फिर से जीवन नये ढंग से शुरू करने व जीविकोपार्जन के लिये कुछ श्रायिक या श्रीर किसी भी प्रकार की महायता बेने का विधान रला है? यदि हां, तो उसका व्योग क्या है श्रीर यदि नहीं, तो क्या उस दिशा में सरकार कुछ करने का विचार करेगी?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट — जी नहीं, परन्त न्यायालय के श्रादेशानसार अनेतिक त्यापार निरोधक श्रीधिनयम के श्रन्तगंत बरामद की गई लड़िक्यों के श्रन्तगंत विभाग द्वारा संज्ञानित ''प्रोटेक्टिव होम्स" में रख दिया जाता है तथा उनके प्तर्वास के लिये उन्हें सामान्य शिक्षा तथा व्यवसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है।

श्रीमती राजेन्द्रकिशोरी--ाया सरकार बताने हो कपा करेगी कि निकट भारिय म प्रवेश के जिलों में यह श्रीधनियम लागु किया जायगा? यदि हो, तो कब श्रीर करा-हरा पर रे

समाज कल्याण मंत्री (श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य) - - वेसे तो श्रीपित्यम की भारा १ पहले सभी जिलों में लागू की गयी थी श्रीर उसके बाद श्रीपित्यम की श्रीय पारण भी सब जिला में लागू की गयी। लेकिन इसको कार्योन्वित करने के लिए बहुत बड़े रण्य की अन्यत पड़ी है श्रीर कुछ श्रीर भी कठिनाइया होती है जैसे स्पेशन प्रान्त श्रकसरों की निया का अन्य का कठिनाइयों को देखते हुए श्रीर व्यय को देखते हुए श्रीर बीर इसको जिलों में लागू करने का विचार है। श्रभी ६ जिलों में इसको कार्योन्वित किया गया है। श्रभ इस समय हमार विचाराधीन ६ जिले श्रीर है जिनमें कि इस श्रीधित्यम को कार्योन्वित किया जायगा। उसके बाद बीरे-धीरे जैसे-जैसे श्रीर कही से श्रथं लाभ होगा श्रीर जिलों में कार्योन्वित करने की चेव्हा करेंगे।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल (जिला श्रागरा) — प्रया माननीय मंत्री महायय यह बताने की कृपा करेंगे कि पांचीं महानगरियों में यह लागू कर विया गया हूं या नहीं और श्रगर किया गहा-नगरी में नहीं लागू किया गया है तो वह फीन सी है श्रीर श्रागे जो नी जिले नेना नाहने हैं उनमें महानगरियों को सीस्मलित करने की योजना है ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य — श्रव तक यह केवल जलनक महानगरी म कार्यान्वल किया गया था। जो शेष चार महानगरियां है उनमें कार्योन्वित करने के लिए श्री ६ जिल ३म माल विचाराचीन है, उनमें यह शेष चारों महानगरियां है।

श्री प्रताप सिंह (जिला नैनीताल) - - क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृषा करों में कि जिल ३१६ लड़कियों का उद्धार किया गया उनमें से, जिन लोगों ने उन सहकियों को बेना था, कितनों को सजा वी गयी श्रीर कितने पकड़े गये ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--इसकी तो सुचना इस समय मेरे पाय नहीं है।

श्री शिवप्रसाव नागर (जिला लीरो)—प्या मंत्री की की यह पता है (क जिन ३१६ सड़कियों के बारे में जिल्लाकिया गया है, उनके बारे में यह भी कीई गर्वेक्षण करवाया है कि किन कारणों से उन्हें अनीतिक क्यापार करने की आवश्यकता पड़ी ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--विभाग की ग्रीर से तो कोई सर्वेक्षण नहीं हुया है, मिकन वैसे यूनिवर्सिटी में भ्रीर कुछ ग्रीर दूसरे विद्यालयों में ग्रीर कुछ दूसरी गंग्यामी में इस प्रकार के भामतीर से सर्वेक्षण हुए हैं ग्रीर उससे कुछ बोड़े से परिणाम निकास गए हैं।

श्री देवनारायण भारतीय (जिला शाहजहांपुर) -- त्रया सरकार बताने की हृपा करेगी कि जो ३१६ महिलाय या लड़कियां पकड़ कर के प्रोटेक्टेड होम्स में रखी गई है उनमें से कुछ ने हाई कोर्ट में श्रपने पकड़े जाने के खिलाफ कोई रिटया मुकदमा भी बायर किया है ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--जी हां, सही है।

श्री गेंदासिह—क्या यह सही है कि प्रवेश के सभी जिलों में से प्राथिक लड़ कियों के बेचने का व्यापार देवरिया ग्रीर गोरलपर के जिलों में होता है ? यदि हो, तो इस बात का कोई ग्राषार रखा गया है कि यह जो होम खोले जाये वह केसी नगहों पर खोले. जाय ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--पहगोरपवरश्रीर वेशिया है बारे में हार इति वासभ नहींथी। श्राज माननीय देवरिया के सदस्य ने बतलावा है तो उसके सम्बन्ध में शिवार शरूपा श्रीर जहां तक श्रोटेक्टिव होम्स का प्रदन है तो वह गोरपवर में ता रशाएक होने है।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल--त्रया मानतीय समान सरक्षा मही यर उत्तान का कृपा करेंगे कि जब तक जिन लड़कियों का उद्धार क्रिया है उनके जोत्रन को नय उन से दिशन का प्रबन्ध नहीं किया जायगा तब तक वे क्या करेंगा है

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य — सही है। जना को काणिय में है। प्रितंत पार्णकार होम्स है इन सबसे भी एक प्रकार का काद प्रशिक्षण बेने का योजना है पीर उस पीत तम है। ए बी कार्य किया जाना चाहिए था वह सम्पन्त हो चका, परा हो नका है। उसर अंत्राहर होम बेहराइन में है उसमें बह यहां से भेज बो जाती है श्रीर क्या पर ना के इ इसा प्रश्नार की योजना कार्यान्वित की जा रही है।

श्री राजनारायण (जिला बाराणमी) - उसी वेर के बाद खापका श्राम केंच कर पापा श्रीमन्, क्या मानतीय मन्त्री जी यह बताने की कथा करेंगे कि दाराणका जिस का की द्व लड़कियों के उद्धार की बात बताई गई है उसमें टाशा जिला के ताबाव की की की दे दकी जी

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--इससमयती स्वतानही हे मेर पास। बन्दियों की श्रपराधी मनोवृत्तियों में सुधार करने पर विचार

\*६--श्री मुक्तिनाथराय (जिलाश्रातमगढ़) हारागारा म स रार सम्बन्धे के दिसम्बर १६५६ के ताराकित प्रदन सम्मा १० के उत्तर के कम में क्या समात सुरक्षम राजाल कृषा करेंगे कि केदियों के रहन-सहन में सपार करन के श्रीतीरका क्या गरकार मनोवंकी द्वारा श्रवराधी केदियों की श्रपराधी मनोवंकियों का पता तमाकर उनकी श्राराधी मनोवंकि में सुधार करने की किसी योजना पर विनार कर रहा है ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट -जीहा, यह समस्या सरकार के प्यान में है

\*१०--श्री मुक्तिनाथराय- पांद हा, ता वह या जना र गा है 🔧

श्री नरेन्द्रसिंह विष्टः - प्रभी कोई निश्चित योजना नहीं बनी है। संस्थार इस समस्या पर सम्जित विचार करने के लिए सामग्री एकपिन कर रहा है। इसके बाद हो कोई निश्चित कार्यक्रम निर्मारन किया जा सकता है।

श्री मुक्तिनाथराय -- क्या समाज कल्याण मन्त्रा ता बनान को कवा करते कि सर कार किस प्रकार का सामग्रा एकत्रित कर रही है और यह सामग्री कर्ज तक एकीचा हो तायसी र

श्री नरेन्द्रसिंह बिटट- - इस विषय म शाई० जा० प्रिजन स कई विश्व का बात पृथी गई है ताकि कोई एक योजना बनाई जा सके। असर श्राप जानना जाह जो क्या पृक्ष भवा है इस पर भी में प्रकाश श्रान सकता है। इसके भनावा सरकार का विजार यह जा है कि एक जेल इजेल्य्एशन कम ही बनायी जाय, यह भी इस बात पर विनार कर। यह सब जब एक जिल हो जायगा तभी प्रस पर कार्य कप म कोई कार्य किया जायगा।

श्री व्यजिवहारी मेहरोत्रा (जिला कानपूर) श्रा माननीय भन्ना श्री सत्तान का कृषा करेंगे कि जेल मैन्युक्रल में जो संशोधन होते वाला था वह कर तक हा आयता ? श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट--जेल मैन्युग्रल के बारे में माननीय सबस्य को यह बतलाना चाहता हूं कि केन्द्रीय सरकार की तरफ से एक कमेटी उसमें विचार कर रही है। उसका बिचार हमारे पास जब ग्रा जायगा तब उस पर विचार किया जायगा।

श्री देवनार।यण भारतीय-- त्र्या सरकार बनाने को कृश करेगी कि क्या सरकार इस विषय पर भी विचार कर रही है कि जब से कैदियों के रहन-सहन में सुत्रार हुन्ना है तब से प्रान्त में जुर्मों की संख्या बहुत श्रधिक बढ़ गई है ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--इस प्रकार की एक विचारधारा हे भीर में उस विचार-धारा से सहमत नहीं हूं।

\*११-१२-श्री ऊदल (जिला वाराणती)--[२३ मार्च, १६६० के निये म्यागत किये गये।]

# श्रर्द्ध कुम्भी मेला, इलाहाबाद में दी गई टीन

\*१३—-श्री कल्याणचन्द मोहिले (जिला इलाहाबाद)—-त्रया सरकार ज्ञा कर बतायेगी कि इलाहाबाद के श्रर्द्ध-कुम्भी के मेले में कि ानी टीन सरकार ने मेना एश्या के / लिये सप्लाई की है ?

श्री जयराम वर्मा--४५० टन ।

\*१४--श्री कल्याणचन्द मोहिले--श्या सरकार कृया कर बनायेगी कि प्रद्धं-कृश्भ के मेले में कितने ब्रादिमयों को टीन के परिमट कितने-कितने वजन के एक-एक ब्रावमा का दिय गय र

श्री जयराम वर्मा -- २३८ व्यक्तियों एवं संस्थाओं को १/४ दन मे ३ दन तक की परिमार्टे उनकी श्रावश्यकतानुसार वी गईं।

\*१५--श्री कल्याणचन्द मोहिले-- त्रया यह सही है कि बहुत में नागी ने टोन का परमिट लेने के बाद उसका उपयोग मेले में नहीं किया? यदि हो, तो नया सरकार उनका नोच करवायेगी?

श्री जयराम वर्मा--जो नहीं। प्रक्त नहीं उठता।

श्री कत्याणचन्द मोहिले—क्या यह सही है कि यह जो टीम बी गई इसके क्यि पहल से सूचता वहां के मेलाधि कारियों को दी गई भी कि यहां क्षेत्र मार्केटिंग हो रही है और उन्होंने मुझे अववासन दिया था कि इसकी जांच हम खेने वालों के बीच में करंग यांव हां, तो उन्होंने इसकी जांच कराई ?

श्री जयराम वर्मा—इसके लिये नोटिस की ग्रावदयकता होगी।

श्री शिवप्रसाद नागर---क्या माननीय मंत्री जी बताने की कुत करंगे कि यह १५० टन टीन जो वहा २३८ भाविमयों को बांडी गई, तो वह डीन २ १/२ डन प्रश्येक दुकानदार को बांडी गई । क्या यह सही है कि छोडे-छोडे दुकानदारों को वह डीन नहीं दी गई और बड़े-बड़े ब्लैक मार्केडीयरों को वी गई ?

श्री विचित्रनारायण द्यामी—जी नहीं।

श्री गेंदासिह—सरकार की इसमें क्या कठिनाई है कि जब मोहिले साहब की इस बात की शिकायत है और इस बात की जानकारी है कि ऐसी बलेक मार्केंडिंग हुई ती उसकी जांच करने में क्या विककत है ?

श्री विचित्रनारायण दार्मा -- मगर समय से मालून होता तो पहले ही रोक लेते सूचना बाद में माई है। मगर जांच की मावद्यकता होगी तो बाच करा लेते। श्री कल्याणचन्द मोहिले--क्या यह सही है कि वहां के मेला श्रिकारियों ने सरकार के पास यह लिखकर भेजा है कि मेले में बहुत सी टीन इस्तेमाल नहीं हुई है ?

श्री विचित्रनारायण शर्मा--इसके लिये सुचना की जरूरत हं।

# गोरखपुर नगरपालिका का स्पेशल श्राडिट

\*१६—श्री गौरीराम गुप्त (जिला गोरखपुर)—क्या सरकार ने गोरखपुर नगरपालिका के १६५७-५८, १६५८-५६ व १६५६-६० के हिसाब का स्पेशल ग्राडिट कराया है ? यदि हां, तो स्पेशल ग्राडिट का क्या फल हुआ। ?

श्री जयराम वर्मी -- जी नहीं। वूसरे भाग का प्रदन नहीं उठता ।

श्री गौरीराम गुप्त-क्या सरकार क्रा कर बतलायेगी कि पिछानं वर्षों में गोरखपुर नगरपालिका के हिसाब-किताब का कोई स्पेशन आदिट हुआ हे ? क्या इसकी जानकारी सरकार को है और अगर नहीं है तो सरकार इसकी जानकारी प्राप्त करके सबन को सूचना देगी ?

श्री जयराम वर्मा--जी हां. स्वेशल मादिट हुमा है लेकिन इन वयो का नहीं हुमा है जिन वर्षों के बारे में प्रश्नकर्ता ने पूछा है। स्वेशल भाडिट भ्रावेन, ४३ से मार्च, ४६ सक के हिसाब-किताब का हुमा है।

# मऊ पालिकाध्यक्ष श्री हिफजुर्रहमान का त्यागपत्र

\*१७—कुंबर श्रीपालसिंह (जिला जीनगर) (ध्रन्यस्थित)—क्या सरकार बताने की कृग करेगी कि क्या यह सत्य है कि मऊ झाजमगढ़ के पालिकाझध्यक्ष श्री हिफज्रं-हमान झन्सारी ने त्यागपत्र विया है? यिव हां, तो उसके क्या कारण भे तथा क्या उनका त्यागपत्र मंजूर कर लिया गया है?

श्री जयराम वर्मा-जी हां। श्री ग्रन्सारी ने ग्रन्तं त्याग-पत्र का काई विशेष कारण नहीं दिया जनका त्याग-पत्र मंजूर कर लिया गया है ?

श्री श्रीकृष्णवत्त पालीवाल--श्या माननीय मंत्री जी यह बतायेंगे कि उन्होंने अपने त्यागपत्र में अगर कारण नहीं विया है तो कुछ तो लिखा ही होगा ?

श्री जयराम वर्मा--काम से मुक्ति दी जाय, यही लिखा है।

श्री प्रतापसिह—क्या माननीय मंत्री जी बतायेगे कि ये प्रध्यक्ष महोदय किस दल से संबंध रखते थे ?

श्री विचित्रनारायण [शर्मा-इसके लिये सूचना की जकरत होगी।

श्री गौविन्दसिंह विष्ट (जिला घटनोड़ा) — क्या मंत्री जी यह बतायेंगे कि त्यागपत्र देने के पूर्व वे कोई पत्र सरकार की वे बुके में वहां की समस्यामी के बारे में लेकिन सरकार ने उस पर विचार नहीं किया?

श्री जयराम वर्मा — समस्या के बारे में सूचना की आवश्यकता है। यह तो पहले भी वे लिय चुते में कि वे काम नहीं करना चाहते, लेकिन उस समय उनसे यही कहा गया था कि अगर ऐसा है तो वे कायवे से त्यागपत्र वें। उसके बहुत विनों के बाब उन्होंने यह त्यागपत्र वे विया।

नोट--तारांकित प्रका १७ भी भीकृष्णवत्त पालीबाल ने पृद्धा ।

श्री प्रतापसिह—क्या यह सही है कि उनके खिलाफ कोई चार्जेज में जिनसे बचने के लिये उन्होंने त्यागपत्र दे दिया ?

श्री जयराम वर्मा--सूचना की ग्रावश्यकता है।

श्री क्रजनारायण तिवारी (जिला देवरिया)—उक्त अध्यक्ष कितने दिनों तक अपने पद पर काम कर चुके थे ?

श्री जयराम वर्मा — उन्होंने भ्रगस्त ५६ में त्यागपत्र विया तथा चुनाव के समय सं इस वक्त तक काम कर रहे थे।

# श्राजमगढ़ महिला मंगल योजनान्तर्गत कार्य तथा कर्मचारी

\*१८-शी चन्द्रजीत यादव (जिला ग्राजमगढ़)--व्या सरकार यह बताने की कृषा करेगी कि ग्राजमगढ़ जिल में महिला मंगल योजना के ग्रथीन इस समय कितन बेतानक अथवा श्रवेतनिक व्यक्ति कार्य कर रहे हैं ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट---म्राजमगढ़ जिले में महिला मंगल योजना के म्रातगंत इस सभय १४ वैतनिक तथा २३ अवैतनिक व्यक्ति कार्य कर रहे हैं।

\*१६—श्री चन्द्रजीत यादव—क्या सरकार यह बताने की क्रुया करंगी कि क्या उपस्कृत योजना के श्रन्तर्गत जो कर्मचारी कार्य कर रहे हैं उनके लिये कार्यालय धीर धावास-गृह का निर्माण हो चुका है ? यदि नहीं, तो कब तक, कितनी लागत से धीर किन-किन भवनों के निर्माण की योजना है ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट—उपर्युक्त योजना के झन्तर्गत जो कर्मकारी कार्य कर रहे हैं उनके लिये कार्यालय और भ्रावास-गृह का निर्माण नहीं हुआ है और किसी प्रकार के भवन निर्माण की योजना भी नहीं है।

\*२०—श्री चन्द्रजीत यादव—क्या सरकार यह बतानं की क्रपा करेगी कि झाजमगढ़ जिला, महिला मंगल योजना के संरक्षण में गत एक वर्ष में कौन-कौन ग मुक्स कार्य किये गये हैं ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट-वाधित सूचना संलग्न है।

(देखिये नत्थी 'ख' झागे पृष्ठ १०० पर)

श्री चन्द्रजीत यादय—क्या मंत्री जी बतलाने की क्रुपा करेगे कि महिला मगस योजना में जो महिला कर्मचारी काम करती है उनको भावास भीर गृह प्राप्त करने में पूरी कठिनाई होती है तो उनके लिये बिल्डिंग बनाने पर सरकार विचार करंगी?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—इस प्रकार की कोई योजना सरकार के विचाराबीन नहीं है। इसका कारण धनाभाव है। एक बात भौर भी है कि यवि इनके भावास के लिये प्रश्न उठे तो फिर कहीं उसका अन्त न हो।

श्री प्रतापसिह—क्या माननीय मंत्री जी इस बात को ध्यान में रखते हुये कि इन महिलाओं को देहात में जाकर काम करना पड़ता है और जनके सामने बड़ी कठिनाई होती हैं तो सरकार तीसरी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार से इस बात की सिकारिश करेगी कि इनके अवास के लिये रुपया दिया जाय जिससे उनकी दिक्कत हमेशा के लिये पिड सके ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—महिला मंगल योजना के भ्रत्तगंत उनको गांव में भ्रष्का श्रावास मिल जाता है श्रीर श्रामतौर पर ऐसा मिलता है कि जो सुरक्षित हो भीर जिसमें सम्मानित ढंग से रह सर्के । जहां तक तीसरी पंचवर्षीय योजना में किसी सिफारिश करने का प्रश्न है मैं समझता हूं श्रव तो उसका समय निकल गया।

श्री उग्रसेन--क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की क्रुरा करेगे कि श्राजमगढ़ } जिले में महिला मंगल योजना के प्रति तहसील किनने केन्द्र खुले हुए हैं ?

केन्द्र का नाम	ब्लाक का नाम
<b>३</b> —ठाकुर गांव	वोहरोघाट
२—चिरियादन्त	बदरांव
३मानिकपुर	बदरांव
४डांडी	कोपागंज
५—नागपुर	मुहम्मदाबाद
६—कोलिया	रानी की सराय
७—सैथवल	रानी की सराय
<b>प्र—कने</b> री	फूलपुर
६—धनस्त्रु,ला	घजमतगढ
१०	धजमतगढ

श्री चन्त्रजीत यादव—क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि धात्रध-गढ़ में जिन महिलाओं को गृह उद्योग की शिक्षा वी गयी है और जो गामानों का निर्माण वहां हुआ है और इस प्रदेश में जो शिका दी जाती है धीर जो उत्पादन होता है उसकी बेचने की और उनको काम दिलाने की क्या कोई व्यवस्था की गयी है सरकार की धोर से ?

श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्यं महिलाओं को काम विलाने का तो प्रक्रन नहीं पेवा होता, क्योंकि जो महिलायें इन छोटे-मोटे उद्योग-वंधों में काम करती है वह धाम तौर पर ग्रामों की गृहस्थ महिलायें होती हैं और वे इस वृद्धि से कार्य भी नहीं करती कि उनको कोई काम करने को मिले। जहां तक इस बनी दुई बस्तुयों की विकी का प्रकर है, जहां तक मेरा क्याल है, कहीं-कहीं विकी हो जाती है और कहीं नहीं होती और कोशिया रहती है कि हो।

श्री प्रतापसिंह— वया मानतीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि जैसा उन्होंने उत्तर में कहा कि बेहात में इन महिलाओं को मकान मिल जाता है और उनको किराया भी देना पड़ता है, तो वया भनिष्य में उनके किराये की ब्यवस्था सरकार करने आ रही है ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य बहुत बार किराया नहीं देना पड़ता धीर किराया हेना भी पड़े तो उसकी स्पवस्था का प्रदन सरकार के विवाराचीन इस समय नहीं हैं।

### जेलों के लिये निषेध समाचार-पत्र

\*२१—श्री रामस्वरूप वर्मा (जिला कानपूर)—क्या गमाज कत्याण मंत्री कृपया बतायेंगे कि ऐसे कितने दैनिक समाचार-पत्र है, जिन्हें उत्तर प्रदेश की मेला म मगानं का निषेष कर दिया गया है ?

# श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट--चार ।

\*२२ श्री रामस्वरूप वर्मा व्या यह सही है कि कानपुर से प्रकाशित होने वाले दैनिक 'सियासत जदीव' व हिन्दी दैनिक 'जागरण' को जलों के भन्दर मगाने का निषंध है ? यदि हां, तो उसके कारण क्या है ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट—दैनिक सियासत 'जदोब' पर निषेध हे परन्त दोनक 'हागरण' पर नहीं है। इसका कारण यह है कि सरकार की राय में 'सियासत प्रदीय' कतन सम्प्रदाय विशेष का प्रतिनिधित्व करता है।

श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या माननीय मंत्री जी, जिन कार भनकारों का उत्तर प्रतंश की जेलों में जाने का निषेध है, उनके नाम बतलाने की कृपा करगे ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट-सियासत जवीव, उदं देनिक, कानपूर, प्रभान, किर्मा वेनिक, मेरठ, हिन्दू, हिन्दी दैनिक, मेरठ ग्रौर पैगाम, उद्दं देनिक, कानपुर ।

श्री शिवप्रसाद नागर—क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृषा करग कि 'सियासत' के बारे में जो साम्प्रवायिकता का धारोप है, तो मंत्री जी क पाग क्या असकी कोई प्रति है जिस में कोई साम्प्रवायिक लेख हो या धौर कोई शिकायत हा धौर जिससे मंत्री जी को पता लग सके कि यह साम्प्रवायिक है धौर इसलिये उसका निषध किया गया है ?

श्री न्रेन्द्रसिंह विष्ट—इसमें यह है कि 'सियासत' देनिक कानपुण म प्रकाशित होता था, वह बन्द कर दिया गया और यह नया दैनिक 'सियासत जदीद' के नाम में कान्य किया गया। इसकी टोन और पालिसी जो पहले 'सियासत' कानपुर की बी, बहा को प्रोण इसलिये उस पर यह प्रतिबन्ध लगाया गया।

श्री रामस्वरूप वर्मा ज्या माननीय मंत्री जी बतलाने का कब्द करेगे कि वह कौन-कौन से श्राधार हैं कि जिनके शनुसार इन चार श्रवशारों को जेलों में जाने से नियंश किया गया है ?

शी लक्ष्मीरमण ग्राचार्य श्रीमन्, मैंने तो ग्रभी बताया कि को भी यह बार ग्रावार ग्रभी बतलाये गये उन सबके विरुद्ध यह ग्रारोप है कि यह साम्प्रदायिकता का प्रचार करने हैं ग्रीर इसीलिये इनका जेलों में मंगाना ग्रवांछनीय है।

श्री उग्रसेन—क्या माननीय मंत्री जी बताने की क्रुपा करेंगे कि जब देनिक 'सियासत जदीव' व ग्रौर ग्रसकार साम्प्रदायिक हैं तो इनको खायने के ग्रावेश क्यों विये गये हैं।

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—यह बहुत कुछ जिलों के ग्रधिकारियों पर निर्भर करता है। वैसे ग्रगर कोई ग्रखबार साम्प्रदायिक है तो उसका इसी कारण छापना बन्द कर दिया जाय ऐसा तो कोई नियम मुझे मालूम नही है। लेकिन वह कुछ स्थानों के लिये ग्रौर जैस जैसे स्थानों के लिये ग्रवांछनीय जरूर है।

\*२३—-श्री दीपनारायणमणि त्रिपाठी (जिला देवरिया)—[२२ मार्च, १६६० के लिये प्रश्न ८८ के ग्रन्तर्गत स्थानान्तरित किया गया।

देवरिया नगरपालिका की दीवानी कचहरी की इमारत के लिए मांग

\*२४--श्री दीपनार।यणमणि त्रिपाठी--क्या देवरिया में परानी दीवानी कचहरों को नगरपालिका देवरिया ने पब्लिक लाइक्रेंगे एवं हाल के लिये मागा हं ?

श्री जयराम वर्मा -- जो हा ।

श्री दीपनारायणमणि त्रिपाठी—क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृषा करगे कि इसके लिये नगरपालिका देवरिया ने ३-४ वर्ष पहले जब लिखा था ता इमको कार्यान्वित करने में इतनी देर क्यों हुई ?

श्री जयराम वर्मा--इस विषय में न्याय विभाग से लिला-पढ़ा हो रही है।

श्री गेंदासिंह—क्या सरकार बताने की क्रुपा करेगी कि यह प्रार्थना-पन्न कब आया था और इस समय सरकार क्या यह आह्वासन देने की स्थिति में है कि वह जमीन उसकी दे दी जायेगी?

श्री जयराम वर्मा --- कोई ज्यादा विकत तो नहीं मालम पहती है। एप्रोमेन्ट से वाम भी तय हो गये हैं। ग्रब चृक्षि यह न्याय विभाग की जमीन है इसलिये उनसे इजाजत तो लेनी है।

श्री शिवप्रसाद नागर—श्रीमन्, मेरा व्यवस्था का प्रदन है। एकेन्द्रे में लिखा हुन्ना है कि प्रदन संख्या २३ निर्माण मश्री से संबंधित आठवें मगलवार के लिये स्थागत कर दिया गया है। फिर यह प्रदन क्यों हो रहे हैं?

श्री अधिष्ठाता—प्रदन संख्या २३ का जवाब नही विया गया है। वह स्थागत है। प्रदन संख्या २४ पर अनुपूरक प्रदन हो रहे हैं।

(भगला प्रक्त सिए जाने पर)

श्री राजनारायण--श्रीमन्, हम सप्लीमेन्द्री प्रक्षन प्रकृता चाहतं ये । भ्रापनं इस पर समय ही नहीं विया ।

श्री ग्राधिष्ठाता-माननीय गेंदर्शतह जी ने पूछ लिये है ।

# गोरखपुर नगरपालिका को अनुवान तथा ऋण

\*२५-श्री गौरीराम गुप्त-स्या सरकार यह बताने की क्रूपा करेगी कि सन् १६५० से माज तक गोरखपुर नगरपालिका को प्रतिवर्ष कितना रुपया सरकार ने भनुवान या कर्ज के रूप में दिया है और इस समय कितना रुपया कर्ज का बकाया है?

श्री जयराम वर्मा—नगरपालिका गोरसपुर को सरकार द्वारा सन् १६४० से ब्राज तक जो धनराशि अनुदान तथा कर्ज के रूप में दी गई है वह इस प्रकार है:---

वर्ष		7.1 (114)
	<b>ग्र</b> नुदान	ह्य
१६५०-५१	<b>46</b>	₹ <b>%</b> ,00 <b>१</b> ′00
१ <b>६</b> ५१–५२		€ ₹, € == ₹. ₽ 0
१ <i>६</i> ५२–५३	•	¥₹, <b>~</b> ¥¥ <b>.</b> ¥
१९५२—५४ १९५३—५४		१,६१,२५५ ६१
<i>१६५४-</i> ५५		8,00,607.80
१ <u>६</u> ५५–५५ १ <u>६</u> ५५–५६		\$, <b>७७,६</b> ४२.००
१७ <b>५५—</b> ५५ १ <b>९५६—</b> ५७		१,२६,४२६,००
१६ <u>५७</u> –५७ १६ <u>५७</u> –५=		4,89,444,00
१६५५-५६ १६५५-५६		4,66,668.69
१७ <b>५६–६०</b> १९५६–६०		30,683.00
46x6-40	<b>प्रमु</b> ण	
१६५०-५१		<b>₹</b> χ,000
१ <u>६</u> ५०—५२ १६५१—५२		
१६ <b>५२—५</b> ३ १६ <b>५२—</b> ५३		2,40,000
• • • •		4,00,000
\$6X <b>3-</b> XX		£'14'1£6
\$6XX <b>-</b> XX		\$4,74,000
<b>१६५५-</b> ५६		(4,44,000
१६५६-५७		# *
१६५७-५८		• •
१ <b>६५५—५</b> ६		W #
१६५६६०	6	

इस समय नगरपालिका को सरकार का कुल २४,४७,६२७ ४३ नये पैने कर्ज ग्रदा करना बाकी है।

श्री गौरीराम गुप्त-व्या सरकार यह बताने की क्रया करेगी कि को अनुवान स्रोर ऋण दिया गया था वह किस किस कार्य के लिए दिया गया ?

श्री जयराम वर्मा—१६५१ में ३० हजार वपया सड़कों की मरम्मत के लिए ।
१६५३-५४ में १ लाल वपया सड़कों की मरम्मत के लिए । १६५४-५५ में ३,२०० वप्या लेल कूद के सामान हेतु । १६५४-५५ में २५,००० व० स्वीपर्स क्वार्ट्स के निर्माणां और उसी वर्ष में ७७,६०० वपया मरम्मत सड़क । १६५५-५६ में ६६,६०० वपया मरम्मत सड़क तथा मवन को बाइ से क्वात-प्रस्त हुए । १६५६-५७ में ४३,७५० वपया सड़क मरम्मत हेतु । १६५७-५६ में ६०,४०० वपया सामान सड़क मरम्मत हेतु और २४,४०० वपया निर्माण सड़क तथा मवन को बाइ से क्वात्प्रस्त हुए हैं । १६५७-५६ में ही २,०४० वपया निर्माण सड़क तथा सड़क मरम्मत और ६६५८-५६ में ४७,००० वपया सड़क मरम्मत और ६०,००० वपया सड़क मरम्मत और १,६००वण्या लेल-कूद के सामान हेतु ।

श्री उग्रसेन—क्या माननीय मंत्री जी बताने की क्या करेंगे कि उन्हें इस बात की सूचना है कि जिन विशेष कार्यों के लिए नगरपालिका गोरकपुर को क्यों दिये गये उसमें से बहुत से कार्य ग्रभी श्रभूरे हुए हैं?

श्री जयराम वर्मा---ऐसी सूचना तो नहीं है।

प्रक्नोत्तर १७

श्री केशव पांडेय (जिला गोरखपुर)—क्या मंत्री जो बतायेंगे कि जो अनुवान विया गया बा म्युनिमिपैलिटो को उसके मृताबिक कुछ काम हो जाने के बाद सरकार कभी देखने की चेष्टा भी करती है कि क्या-क्या काम हुआ उन अनुवानों के आधार पर?

श्री जयराम वर्मा—जो रुपया दिया जाता है उससे जो काम होने है, बराबर उसकी रिपोर्ट श्रातो रहतो है। जब तक कोई खास शिकांयत न श्रावे तब तक कोई खास जांच कराने की श्रावश्यकता मालूम नहीं होती।

श्री रामसूरतप्रसाद (जिला गोरखपुर)—क्या मंत्री जो बतायेगे कि स्वोधसं क्यार्टसं बनाने के लिये जो रुपया दिया गया है उससे भवन का निर्माण कर दिया गया है यदि हो, तो उसमें कितने स्वोधसं रह रहे हैं, उसकं। सूचना सरकार देने की कृषा करेगी?

श्री जयराम वर्मा-- तूचना की मावश्यकता है।

मऊरानीपुर नगरपालिका की जल-कल योजना

\*२६—श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी (जिला झांमी)—क्या सरकार यह बनाने का कृपा करेगी कि मऊरानीपुर नगरपालिका (जिला झांसी) के लिये जल कर योजना का प्रोजेक्ट तैयार हो गया है? यदि हां तो इस सम्बन्ध में प्रव क्या कार्यवाही का जा रही है?

श्री जयराम वर्मा—जो हां, मुख्य श्रभियता ने श्रपनो स्वोक्कात प्रदान कर योजना का प्रोजेक्ट श्रवंक्षण श्रभियंता शागरा को भेज विया है और उन्हें निवेशित किया है कि नियमान्तार नगरपालिका स्टेट हेल्थ बोर्ड की प्रशासकीय स्वीकृति प्राप्त करके स्काम का प्रोजेक्ट रचयं श्री स्वीकार करे।

इस योजना के लिये केन्द्रीय दा सन के स्वास्थ्य मंत्रालय में भी धनुमात लेन, पहेगी !

\*२७—श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी—क्या सरकार ब । ने को कृषा करेगं। कि मऊ-रानोपुर नगरपालिका में पोने के पानो के कल्ट के सम्बन्ध में ६ सि । स्वर, १६५६ को एक प्रार्थ । - पत्र दिया गया था, जिसमे उक्त योज ।। को पूरा कर ने के लिये तालिका को धन्दान धीर ऋण देने को सरकार से प्रार्थना की गई थी? यदि हां, तो उस पर क्या कार्यवाही की गई?

श्री जयर।म वर्मा--जो हो, इन योजनाओं के लिये सरकार केवल ऋण स्वरूप सहायता देती हैं। इत कारण नगरगालिका से इस सम्बन्ध में श्राय्वत सोसी खंड द्वारा योजना के कार्याख्यत करने हेतु ऋण के लिये प्रार्थना-पत्र मंगा लिया गया है जो कि गरकार के विकासधान है।

श्री सुदामात्रसाव गोस्वामी—क्या माननीय मंत्री जा यह बताने की कृपा करेंगे कि मुख्य ग्रीमयंता ने सरकार को लिखा है कि उक्त योजना पर अर्था श्रीधक पड़ेगा, इसिनये रेट १.२५ रुपये पर गैलन आयेगा इसिनये भरकार रेट कम करने के लिये नगरपालिका को अनुवान देने की कृपा करे?

श्री जयराम वर्मा-जो नहीं।

रेलवे स्टेशनों से गांव वालों को पानी वेने की प्रार्थना

\*२८—श्री गौरीर।म गुप्त—क्या नश्कार केन्द्रीय सरकार में सिफारिश करेगी कि रेलवे स्टेशनों पर जो नलकूप लगे हुये हैं उससे ग्राम-वासियों को पंतने के लिये जल देने की स्पन्नस्था की जाय ?

श्री जयराम वर्मा—सरकार इस प्रकार की सिफारिश करना उचित नहीं समझती। श्री गौरीराम गुप्त—सरकार को क्या विकास है सगर सिफारिश करे कि गांव को स्वक्ष पानी मिले? श्री विचित्रनारायण शर्मा—विकान यह है कि सरकार राहा रपयं गास गारे। रेलवे डिपार्टमेंट को श्रगर खर्च करना पड़े तो उसे मंजूर नहीं करेंगे श्रोर श्रगर सरकार को करना पड़ेगा, प्रावेशिक सरकार को तो उसके लिये हमारो दूसरो योजना है. उन पर रिनार कर सकते हैं।

श्री रामसूरतप्रसाद--क्या गांव वालों को इस ने स्वश्क पानो सिन नक इस सम्बन्ध में सरकार सिफारिश करना श्रनुचित समझतो है ?

श्री ग्रिधिष्ठाता--मेरे खयाल में इसका जवाब दे दिया गया है। जेलों में 'मानवोचित सुधार' करने की जानकारी

\*२६--श्री उग्रसेन--क्या समाज कल्याण मंत्री क्रूपया बनायंग कि राज्य गरकार के समक्ष जेल मैनुत्रल में संशोधन की योजना विचाराचीन हैं? यदि हो, ना उस विचय मं कौन सो कार्यवाही की जा चुकी हैं?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट-जी नहीं।

\*३०—श्री उग्रसेन—क्या समाज कल्याच मंत्री कीवर्षे की गुरुका, गुन्च ग्रीवधा की ध्यान में रखते हुये, 'मानवोचित सुबार' प्रवेश को जेसों में लाग करन के नियं किसे धर श्रीव्योग अपराध तिरोधक सम्मेलन में प्रस्ताव के क्य में पास किया है कवम उठावंग ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट---उत्तर प्रदेश की जेलों में बन्दियों के प्रांत 'मानवांचन मुचार' के लिये कदम उठाये जा चुके हैं।

श्री उग्रसेन—श्रोमन, ग्रभी माननीय मंत्री जी ने अपने उत्तर में बनाया है कि जंन मैनुग्रल के संशोधन के सम्बन्ध में केंद्रीय सरकार ने कोई कमेदी बनायी है और उनकी रिपोर्ट ग्राने के बाद यह सरकार कदम उठायेगा और फिर कहते हैं कि 'की नहीं'। ना इन बंकों में के कौन सा सही हैं ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट-वही उत्तर इस क्वेडकन का में हेने भी का गहा हूं कि केन्द्रीय सरकार ने सारे ग्राई० जी० प्रिजन्स जो प्रवेशों के हैं उनकी एक कपटा बनायों है ग्रीर वे एक स्केलेटन मंनुगल पर विचार कर रहे हैं। जब इस कपेटी की रियोर्ट इम मनकार के पास ग्राजायेगी तभी उस पर विचार किया जायगा और इसलिये प्रान्तीय सरकार ग्राभी जेन मनुगल पर कोई विचार नहीं कर सकती।

श्री प्रतापसिंह—क्या माननीय मंत्री जी इस बात को बेलते हुये कि जल मंत्रुधन बिटिश जमाने का है, जेलों में िशिश प्रकार के अपराय करने बाले केंद्री होते है, उस कमेटी से सिफारिश करेगो कि शोधातिशोध संशोधन कर दिया जाये जिससे उसे मनोबृत को, जिसके लिये हाउस में कहा गया है, बदलने के सम्बन्ध में कार्यवाही की का सका?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट---इस कमेटी से सभी सिफारिश करने का प्रकृत नहीं उठता। कमेटी को पहले राय हमारे पास सा जाय तब विचार करने की संशोधन उचित होंगे किये आयंगे।

श्री गोविन्वसिंह विष्ट --- वया मानतीय मंत्री औ बतायेंगे कि 'मानवोश्वित नुवारी' के बारे में सरकार क्या करने जा रहा हूं?

। श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट--'मानवीश्वित सुवार' कई किस्म के किये का शुके हैं कैसे कि कोई कैदी ग्रार उसके यहां शादी वगैरा हो, तो उसको देशेल पर छोड़ विया जाता है, जब कंग्य में जाते हैं तो वहां उनसे काम लिया जा रहा है, श्रीर इसके लिये उनको बेकेक विकास है, यहां तक कि चुके सीमेंट फैक्टरी में उनको मेजा गया, साशुन, तेल वगैरा की सुविवाय उनको वी जा रही हैं, पुस्तकालय से पुस्तकें उनको वी जाती हैं, यही काई किस्स के काम है जिनकों किया जा रहा है।

प्रक्तोतर १६

श्री राजनारायण--क्या सरकार स्पष्ट करेगो कि केंद्रीय सरकार ने जो सारे देश की जेलों के सम्बन्ध में नियम बनाने की व्यवस्था की है वह कब की है धौर उसमे जो तमाम देश के खाई० जी० की मीटिंग हुई थो वह कब हुई थी?

श्री लक्ष्मीरमण श्रीचार्य—कब का तो में इस समय सही उत्तर गही दे सहूंगा लेकिन मेरा खयाल है कि दो वर्ष के लगभग हुये या फुछ ज्यादा हुआ हो श्रीर उसमें सभी प्रदेश के श्राई० जी० प्रिजन्स इकट्ठा होते हैं। काफो बड़ा काम है सब को मिला कर इकट्ठा बैठने में काफी कठिनाइयां श्राती है लेकिन उसमें बड़ी तेजों से काम हो रहा है श्रीर ऐसी श्राशा है कि यह काम बहुत जल्दी ही सम्पन्न हो जायगा।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल--क्या मानवोचित सुषारों में कैवियों को जेल मे यिवाहित जीवन बिताने के लिये भी सुविधायें दो जा रही है ?

### (हंसी--उत्तर नहीं विया गया)

श्री राजनारायण—क्या सरकार स्पष्ट करेगी कि सन १६५६ में ललनऊ में एक बन्दी सम्मेलन हुन्ना था जिसमें विभिन्न जेलों से बन्दी लोग ग्राये थे ग्रीर उसमें बन्दियों के जीवन से सम्बन्धित बहुत से सुघार सम्बन्धी बातें हुई थीं, तो उस पर यया कार्यवाही हुई ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—उसकी तो बहुत लम्बी सूची है घौर उसमें से बहुत सी ऐसी है जिनको सरकार ने स्वीकार किया है। श्रीर कुछ ऐसी है जिनपर विचार होता रहा है। मैं केवल इतना ही कह सकता हूं कि उनमें जितनो सिफारिशों को स्वीकार कर सकना सम्भव था उनको स्वीकार किया गया है ग्रीर स्वोकार करने की चेष्टा की जायगी जो ऐसी होंगी।

श्री केन्हैयालाल वाल्मीकि (जिला हरवोई)—क्या समाज कस्याण मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि जब से जेलों में कैदियों को श्रीधक सुख सुविधाय देने का प्रबन्ध किया जा रहा है तब से श्राने प्रदेश में श्रापराधों की संख्या कुछ घटी है ध्रथवा नहीं?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--मे यह तो नहीं कह सकता कि संस्था घटी या बड़ी हैं लेकिन जो श्रांकड़ें सामनें श्राते हैं वह कोई बहुत बढ़ें हुये मालूम नहीं होते। जेल के सुवारों का इससे कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है।

\*३१--श्री रूर्मासह (जिला ज्ञाहजहांपुर)--[२३ मार्च, १६६० के लिये स्पगित किया गया।]

\*३२--राजा वीरेन्द्रशाह (जिला जालीन)---[२३ मार्च, १६६० के लिये स्पिगित किया गया।]

## महापालिकाश्रों के नगरप्रमुखों, उपनगर प्रमुखों का बेतन, भक्ता तथा आगरा महापालिका कर में बृद्धि

\*३३—श्री देवकीनन्दन विभव (जिला ग्रागरा) (ग्रनुपस्थित)—स्या स्वायस शासन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि प्रदेश की विभिन्न नगरपालिकाओं में नगर प्रमुक्ती और उपनगर प्रमुक्तों को क्या वेतन, एलाउन्स, सवारी भीर ग्रावास-गृह सम्बन्धी भसे नियत हुये हैं ?

श्री विचित्रनारायण दार्मा—उत्तर प्रवेश नगर महापालिका समित्रियम, १६६६, में नगर प्रमुखों तथा उप-नगर प्रमुखों को बेतन दिये जाने का को प्राविधान नहीं है। जहां तक भलों का सम्बन्ध है, ये प्रश्निनयम की घारा १८ के धन्तगत नगर प्रमुखों को स्वीकार किए जा सकते हैं। नगर महापालिका मागरा, के प्रस्ताव पर शासन ने नगर प्रमुख, भागरा, को निम्म-लिखित भले व सुविधाय स्वीकार की है:—

(१) प्रमुख व्यक्तियों तथा अतिथियों के साकार एवं पत्रकार सब्नेका करने आवि हेतु अम्यागत भक्ता (Sumptuary Allowance) १,००० व० प्रतिवर्ध ।

- (२) सवारी के लिये एक एम्बेसेडर कार, उसके लिये ड्राइवर तथा पेट्रान एव मोबिस-श्रायल ऋय करने के लिये, कार-भत्ता १४० र० मासिक तक।
- (३) महापालिका के कोष से नगर प्रमुख के निवास स्थान पर एक रूलीकान लगनाया जाना एवं उनको एक स्टेनोग्राकर तथा वो साइकिल ग्रर्थेली विया जाना।

दूसरी महापालिकाओं के प्रस्ताव अभी नहीं आए है अतग्व उनके यान पर गिनार किया जायगा।

\* ३४--श्री देवकीनन्दन विभव (धनुपस्थित)— ह्या म्बायन झामन मर्शा कप्या बतायेंगे कि विभिन्न महापालिकाश्रों में गत वर्ष कीन कीन से नयं देका भगाय गयं धयवा पुराने देक्सों में वृद्धि की गयी ?

श्री विचित्रनारायण शर्मा—नत बर्त १६५६ में किया भी नगरमराणांसका में कोई नया टैक्स नहीं लगाया गया। जहां तक पुराने टैक्सों में बूदि का सम्बन्ध है कतान धागरा नगरमहापालिका में टर्मिनल टैक्स तथा टर्मिनल टोल की बरों में बूदि का गई।

\*३५--श्री देवकीनन्दन विभव (ग्रनुर्यास्थम)--[मामके गामाण, का गाप प्रवस ५१ के प्रन्तर्गत स्थानान्तरित किया गया ।]

वाराणसी नगरमहापालिका के निर्वाचन पर अग्रय

\*३६—श्री ऊदल—क्या सरकार बताने की कृता करेगी कि वाराणगी तरारमहा-पालिका का चुनाव जो अक्तूबर ५६, में हुआ था उसके आवश्यक बेलर पेयर तथा कालब छपाई का काम किन-किन प्रेसों को बिया गया था और कितन किनन रवा वारका अलग-अलग दिया गया?

श्री जयराम वर्मा--वाराणसी नगर महापालिका के विश्वांचन से सम्बोधन चेसर गणर तथा अन्य कागजों को छपाई का काम जिन प्रेसी को दिया गया था उनक नाम इस प्रकार है:

श्रनन्त प्रिटिंग प्रेस,

हिन्द ग्रार्ट काटेज, सुलेमानी प्रेस,

अनन्त मुद्रालय प्रेस, और

सर्वोदय प्रेस ।

इनमें से "अनन्त प्रिटिंग प्रेस" को ६,२०० रुपये १३ मये पैसे का "दिन्य घाटं काडण" को ८४६ रुपये ४४ नये पैसे का "सुलेमानी प्रेस" को ६६४ रुपये ४ मये पैसे का, "अन्त मुझानय प्रेस" को २१४ रुपये १३ नये पैसे का और "सर्वोवय प्रेस" को ३२३ हुपये ड४ नय पेसे का कार्य दिया गया।

\*३७—श्री ऊदल—जाराणसी नगरमहापासिका के बुनाब में सरकार का कितना रुपया खर्च हुआ ? क्या श्रध्यापकों च लेखपालों को जो बुनाब में बुलाय गये वं उनका टी॰ ए०, डी॰ ए॰ दे दिया गया?

श्री जयराम वर्मा—वाराणसी नगरमहापालिका के निर्वाचन में सरकार को सब तक लगभग ३१,३०० रुपया व्यय हुआ। संभव है कि न चुकार्य गर्य जिलों की प्राप्ति पर कुछ श्रीर व्यय हो।

अध्यापकों और लेखपालों के टी॰ ए॰, डी॰ ए॰ के बिल जो जिला निर्वाधन कार्यालय में आये थे वे सभी बिल पास होकर तत्सम्बन्धित कार्यालयों में भुगतान के लिये भेज विये गये हैं।

श्री ऊदल वया माननीय मंत्री भी बताने की हुपा करेंगे कि भागव प्रिटिंग प्रेस और ग्रानन्व मुद्रणालय प्रेस जो हैं वह एक ही व्यक्ति के हैं तथा भागव प्रिटिंग प्रेस को ६,२००'१३ न० पैसे के सबसे ज्यावा रेट पर क्यों विधा गवा?

ा गोरखपुर तथा वाराणसी डिव *३८श्री मुक्तिनायराय- पुर और बनारस डिवीजनों में १-१-१ राज की नियमायली की घारा १७४ के विभाग से अलग किये गये?	ा होगा इसि * * गिजनों से प क्यास्वायर १७ से ३१ ग्रनुसार एक	लये वियो गय  " ] चायत सेकेट त शासन मंत्री बर -४६ तक कितने माह की नोटिस	होगा। रियों का ताने की फ़ुष रेपंचायत व देकर प्रत्ये	हटाया ह त करेंगे कि हे सेकेटरी क जिले में	नाना गोरख- पंचायत पंचायत
श्री जयराम वर्मा—इस भ्रवि के १८ पंचायत सेकेटरी निकाले गर्ये	ध म गारसपुर है। जिलेखाः	ाडवाजन कर सचना इस प्र	२ आरवा कार हैः~∽	- -	<b>डवाण</b> न
गोरलपुर	* *	. <b>64</b>			१
बस्तो			• •		ŧ
त्राजमगढ़	4 *			* *	Ę
वेवरिया					ৼ
मिर्जापुर	• •		* *		8
गाजीपुर			• •	* *	₹
बलिया					१६
"३६श्री मुक्तिनाथराय क्या सरकार यह बताने की शृता करेगी कि निकाले गये व्यक्तियों की सिवस की श्रवधि पंचायत विभाग में कितने-कितने वर्षों की रही है ? श्री जयराम वर्मानिकाले गये व्यक्तियों की सेवा की श्रवधि इस प्रकार है :					
सेवा की भवींध	and seems group grieve stores against grieve areas	a juum muda ering oliegi birdi; mena jirdi, didib Am	ab Leville, tipled stated world product Plant	निकासे पंचायत रियों की	सेश्रेट-
\$ The court was about man going man and should be court with man and should be court of the court was a should be court of the court of the court of the court was a should be court of the court o	and another and the state of th	pod month) minch grant abilité diviné proprié se que com	the state of the s	A reason special and the special applications and the special applications are not applications.	Υ
१ वर्ष से कम	* ¥		1 1		3
१ वय से २ वयं तक	H W	* *	* *		3
३ वय से ४ वयं तक		м ж			8
<b>५ दर्ष से ६ दष सक</b>		* *	* *		*
६ वर्ष से ७ वर्ष तक	* *	* *	* *		₹
७ वर्ष से = वर्ष सक					¥
द वर्ष से <b>६ वर्ष तक</b>	5 A				e
६ वर्ष से १० वर्ष सक					¥

नोद-- भी मधिष्ठाता की मात्रा से [\* \* \* \* ] मंश निकाला गया।

श्री मुक्तिनाथराय---जो पंचायत मंत्री निकाले गर्ये क्या उनकी नगहा पर पुन: नियुक्तियां हुई या वे जगह रद्द कर दी गईं?

श्री विचित्रनारायण शर्मा—उन स्थानों पर नियुक्तियां हुईं।

श्री गोविन्दिसिह विष्ट---ग्रगर ये ५ साल से ग्रधिक सबिस वाले लाग भी निकाले गये है ग्रनक्वालीफाइड थे तो इतने वर्ष क्यों रहने विये गये ग्रीर जब इतनी लम्बी सीवग थी तो निकाले क्यों गये ?

श्री विचित्रनारायण शर्मा—प्रनक्त्रालीफाइड नहीं थे। बहुन में सागा को भौका विया जाता है ब्रगर पहली साल में ही मालूम हो जाता है कि पूरा काम धनम्त्राव तनक है तो तभी निकाल दिया जाता है। बार्डर का केस होता है तो दूसरे माल निकाल किया जाता है।

श्री प्रतापसिंह—क्या मंत्री जी ग्रवने पहले ग्राव्यासन को कि पंचायत संकटने शौर पाम सेवक के काम मिले-जुले होने के कारण इन जगहीं को मिला दिया जायता, उसे कार्यान्वित करने की कृपा करेंगे ?

श्री विचित्रनारायण शर्मा -- कोशिश की जा रही है।

श्री गेंदासिह--क्या सरकार एक्सपेरीमेंट करने में करा कय समय समायंगी लाकि जनता के घन का प्रपच्यय न हो सके ?

श्री विचित्रनारायण शर्मा—जितना उत्तित समय या उतना हो लगा।

श्री मुक्तिनाथराय—उत्तर से मालूम होता है कि ये ३० क्यांवर निनाने गये, इनमें से २३ की सर्वित ४ साल से श्रधिक है। तो क्या सरकार काई ऐसी पातना करने जा रही है कि १७४ धारा के सम्बन्ध में ऐसी व्यवस्था करें कि ४ साल से उत्तर की सीवत बाले व्यक्तियों का काम श्रसन्तोषजनक होने पर उन पर चार्ज शीट बर्गेन्ह लगाई साम १

श्री विचित्रनारायण शर्मा—जी नहीं।

महिला बन्दियों की जिलेबार संख्या

\*४०-श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी-श्रम सरकार यह बनाने की क्रा करनी कि ३१ विसम्बर, १६४६ को राज्य में महिला कैवियों की जिलेबार संक्या क्या की ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट ... यह सूचना संसान तालिका में बी हुई है।

(देखिये नत्थी 'ग' झागे पुष्ठ १०१ पर)

\*४१—श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी—श्र्या सरकार बताने की कृषा करेगी कि उपगक्त में से कितनी राजनैतिक कैदी थीं और कितनी प्रनैतिक तथा सतामाजिक सपराधी के का वश्यक्रय सजा पायी हुई थीं ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट—सभी भनेतिक तथा असामाणिक भवराओं के फलस्वकप सभा

\*४२-श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी-स्या सरकार राज्य की जेलों में ३१-१२-५६ की १८ वर्ष से कम ग्रवस्था के कैवियों की संख्या जिलेबार बताने की कृपा करेगी ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट---१८ वर्ष से कम श्रवस्था की महिला बन्वियों की संख्या निम्नलिखित थी---

इलाहाबाद		* *	• •		Ç
2.1.6	• •	* -	* *	• •	,
<b>स्त्रीरो</b>	• •	• •	• •	• •	8
झांसी	• •	* *	• •	• •	१
गोरखपुर	• •	• •	• •	• •	१
मुजफ्फ्रनग	र	• •	* *	* *	8
रायबरेली		• •	• •	• •	8

श्रीमतीराजेन्द्रिकिशोरी—प्रक्त ४२ में मेरा मतलब स्त्री ध्रौर पुरुष बोनों से था। श्री नरेन्द्रिसहिविष्ट—प्रक्त ४० ध्रौर ४१ केवल महिलाध्रों के बारे में था, वैसे ही ४२ को भी समझ कर उत्तर दिया गया है।

\*४३-४४--श्री प्रतापसिंह-- हटा विये गये।]

गोरखपुर जिले को समाज कल्याण कार्यों के लिये प्रन्दान

\*४५--श्री श्रब्दल रऊफ लारी (जिला गोरलपुर)--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि गोरलपुर जिले को वित्तीय वर्ष १६५४-५५ से १६५६-५६ तक समात्र कल्याण विभाग द्वारा कितनी-कितनी धनराशि वी गई श्रीर वह कहा-कहा लच्चे की गई ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट--वाछित सूचना संलग्न है।

(देखिये नत्थी 'घ' स्रागे पुष्ठ १०२-१०१ पर)

<sup>अ ४६—-भी भ्रद्रुल रऊफ लारी—क्या सरकार बताने की कृषा करेगी कि फरेग्बा तहसील में उपर्युक्त विभाग द्वारा कहां-कहां क्या काम हो रहे हैं ?</sup>

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट—इस समय इस विभाग द्वारा फरेंदा तहसील में कोई काम नहीं हो रहा है।

श्री श्रद्ता. रऊफ् लारी--श्या मंत्री जी बताने की कृषा करेंगे कि २०,७०,००० क्षये में से कितना शहरों में श्रीर कितना बेहातों में खर्च हुआ है ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट--शहर और देहात का अलग-श्रलग विवरण नहीं है। आपने जिले का मांगा था वह दिया गया है।

एटा नगरपालिका के निकाले गये कर्मचारी

\*४७--श्री गंगाप्रसाद वर्मा (जिला एटा)--क्या स्वायत शासन मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि मास अक्टूबर, १६५६ से दिसम्बर, १६५६ तक म्युनिसियन बोर्ड एटा से कितने कर्मचारी निकाले गये हैं? यदि हो, तो इसका क्या कारण है?

श्री जयराम वर्मा- तीन।

कारणों का विवरण नत्थी तालिका में विया है।

(देखिये नत्थी 'इ' धागे पुष्ठ १०४ पर)

श्री ' गंगाप्रसाद वर्मा—चया बाब्राम कर्मवारी ने खेयरमेन ग्रीर भ्रम्य उड्ड ग्रांब-कारियों के विरुद्ध श्र'टाचार के ग्रारीय की शिकायत सरकार की भेजी भी ?

श्री जयराम वर्मा-स्वना की झावव्यकता है।

श्री प्रतापिंसह—जिन ३ श्रादिमयों को नगरपानिकार्या सहास महा विध्या गया है वे कितने सालों से काम कर रहे थे ?

श्री जयराम वर्मा--सूचना की ग्रावश्यकता है।

गोरखपुर व वाराणसी डिबीजनों में महिला मंगल योजना के काम तथा कर्मनारी

\*४८--श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी--श्या मरकार कपमा घर बतापमा कि मोरतपुर व वाराणसी कमिश्नरी में जिलाबार महिला संगल योजना के झन्तमंत थिताना महिता र संवारी ३१-१२-५६ को थीं?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट--गोरलपुर व वाराणमी कमिइनरों में . १-१,-५८ हा निये-बार महिला कर्मचारियों की संख्या निम्नप्रकार थी--

गोरखपुर कमिवनरी				
				9 7
(१) गोरखपुर (२) देवरिया				१२
(३) बस्ती	· ·	• •	•	? :
(४) श्राजमगढ़				१५
वाराणसी कमिक्नरी				
(१) जीनपुर	* =			9 -
(२) मिर्जापुर	• •			80
(१) जीनपुर (२) मिर्जापुर (३) बलिया				9.
,				agine arises processors references
	योग	1,0		7, 1,
				-

बाराणसी तथा गाजीपुर जिलों में महिला मंगल योजना सनानित तहा है।

\*४६--श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी--क्या सरकार कृषया व सवर्गा (क. १९४१) महिला कर्मचारियों में कितनी महिलायें पिछड़ी जातिया की थी।

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट--उपर्युक्त महिलाग्रों में ११ महिलायं गिरहण जातिया गा था।

\*५०--श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी--ध्या सरकार कृष्या बतायंगी कि १६४६ के अन्य तक जिला बस्ती, गोरखपुर व देवरिया में महिला मंगल योजना के अन्तर्गत क्या-ध्या आये हुआ है ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट—बांछित सूचना संलग्न है। (देखिये नत्थी 'च' ग्रागे पृष्ठ १०५ पर)

ं श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी--क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृता करता कि दून की हुई महिलाओं को कोई साधन देने की योजना सरकार के पास है ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य-ऐसी कोई योजना नहीं है ।

श्री गेंदासिह---यह बनारस के ऊपर इतनी क्यों लफ़गी है कि माननीय मंत्री तो की सिफ़ारिश के बावजूद भी महिला मंगल योजना का काम वहां शुरू नहीं किया गया ?

प्रश्न तर २४

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—सफगी की कोई बात नहीं है। चिक वह मस्य मंत्री जी का जिला है, इसलिये उसे विशेष स्थान नहां दिया गया।

श्री गोविन्दींसह विष्ट—स्या मंत्री जी ने जाच कराई है कि महिला मगल योजना में महिलाग्रो का मंगल हुन्ना ग्रोर क्या मर्द भी इसमें रलेगये?

### (उत्तर नहीं दिया गया)

श्री शिवप्रसाद न।गर—महिला मंगन योजना में मधरा का महत्व सब से प्रारक तने हुये श्रावश्यक था कि सब से पहले बहा यह योजना चाल को जाती। बहा न लाग करन के क्या कारण है ?

### (हसी--उत्तर नही विया गया)

श्री उग्रसेन-- महिला मंगल योजना में वाराणसी ग्रोर गोरपापुर कमिल्लों में जितनी पिछड़ी जाति की महिलायें काम कर रही है उनमें कितनी हिराजन है '

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--ग्रवग सचना नहीं है।

श्री प्रतापिसह—स्या माननीय मंत्री जी इन प्रश्ना की पृष्ठभूमि में, सं बात को त्यान में रखते हुए कि जो महिलाये श्रपने जिना में बाहर जाती हैं, उनका दिक्शत होती हैं, इसलिये यह श्रादेश जारी करने की कृषा करेंगे कि श्रापर उन्हीं, को जिना में रणने सं काम जग सकता हो तब तक बाहर के जिनों में उनकों सं भंजा जाय ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--इसका बहुत त्यान रुपा जाता है।

श्री राजनारायण——पत्रा जो ने ब्रभी कहा या कि क्यां कि सावनीय मन्य मना भा बाराणसी जिले के हैं इसिताचे उसकी जिस्स पर नहां रात गया। भ्या सरकार न होगी कोई नीति बना ली हैं कि माननीय पस्य मंत्री जी के जिले का जो ध्यायध्यक स्वित्राय है । सी न दी जायं?

श्री अधिष्ठाता--जन्हाने कहा था कि कोट बिरोप मी त्या वहीं दी गर्वा ।

श्री राजनारायण—म प्रद्वा है कि गया सरकार माननीय मन्य मंत्री के जिल का ब्रायश्यक सुविधा भी देने का तथार नहीं है ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचायं--बिलकत तयार है।

नगरमहापालिकात्रों तथा नगरपालिकात्रों के उपटेशन पर लिय गय सर्पारटेंडेन्ट

ेप्र--श्री पद्माफरलाल श्रीवास्तव (जिला ग्राजमगढ) -- ध्या स्वायन शासन मश्रो कृपा कर बतायेंगे कि प्रदेश के किन-किन नगरमहापालिकाग्रा तथा नगरपालिकाश्रा स्थाफिस सुपरिन्टेन्डेन्ट के पद पर कार्य करने वाले कितन एसे व्यक्ति है जो (सर सरकारी विभागी से डेपुटेशन पर लिये गये हैं?

श्री जयराम वर्मा--स्वना एकत्र की जा रही है।

\*५२--श्री पद्माकरत्नाल श्रीवास्तव--श्या ग्यायत शामन मंथी कृषा कर यह बतायेंगे कि उक्त डेपुटेशन में कार्य करने वाले सभी कर्मचारिया का राज्य सरकार ने अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी है ?

श्री जयराम वर्मा---सुचना प्राप्त होने पर जाच की आवेगी।

\*४३—श्री पद्माकरलाल श्रीवास्तव—क्या म्वायस शासन मंत्री ऐसे कर्मभातियों की सूची सदन की मेज पर इस सूचना तक साथ रखेंगे कि उनमें से प्रस्येक कितने दिनों से किस सरकारी विभाग से डेपूटेशन पर सिया गया है ?

श्री जयराम वर्मा---सूचना एकत्र की जा रही है।

श्री पद्माकरलाल श्रीवास्तव--श्या माननीय मंत्री जी बनायेगे कि धव तक मूचना एकत्रित क्यों नहीं हुई ?

श्री जयराम वर्मा--- समय की कमी की वजह से ऐसा नहीं हो पाया। कृष जिलों से सूचना श्रा गयी है श्रौर कुछ से नहीं श्रायी, इसलिये यकताई मृष्या नहीं ही जा गकी।

श्री पद्माकरलाल श्रीवास्तव—सूचना पूरी प्राप्त हो जाने पर ग्या माननीय मंत्री जी उत्तर वेंगे?

श्री ग्रधिष्ठाता-वह तो दिया ही जायगा ।

#### श्रतारांकित प्रक्त

# बदायूं जिले के पंचायत सेकेटरी

१--श्री उल्फलसिंह (जिला बदायं)--वया सरकार बताने की कृषा करनी कि बदाय जिले में ऐसे पंचायत सेफेटरी कितने हैं जी। अपने सकार में २४ मोल स कम पूरी पर है ?

श्री विचित्रनारायण रार्मा--१०७।

२-५--श्री मुक्तिनाथराय-- २३ मार्च, १६६० के लिये स्थानक विष्य गर ।

# तारांकित प्रश्न ३६-३७ से संबंधित व्यक्तिगत प्रत्परक प्रश्नों को कार्यवाही से निकाल देने की प्रार्थना

ं। श्री श्रीकृष्णवत्त पालीवाल (जिला ग्रागरा) — ग्रांबरुतता महारात, में प्रदेश के सम्बन्ध में एक व्यवस्था का प्रदन उठाना चाहता हूं ग्रीर वह यह है कि जा धर्मा ध्रायन व्यवस्था देने की कृपा की कि जिस प्रकार का प्रदन मानलीय नेता समाजवादी दल के बार मानली प्राप्त गया, उस तरह का प्रदन यहां नहीं पूछा जाना चाहिये ग्रीर याद एका भी गया ता रावशे धार आपका व्यान नहीं गया। तो क्या इस व्यवस्था को प्रयान में रावने हुए भ्रापने भावेश के विचा है कि वह प्रदन कार्यवाही में न लिखा जाय? श्रीर यदि नहीं दिया है तो क्या ग्राप एका भावेश देन की कृपा करेंगे?

श्री श्रधिष्ठाता—पालीवाल जी, में उसको देख लूंगा और यां बह हागा ना उसे निकलवा दूंगा।

श्री राजनारायण (जिला वाराणसी) में प्रजं करना चाहना हूं कि हमारा सामाजिक जीवन स्वस्थ और स्पष्ट हो और लोगों में विश्वास जमा सके। नो में प्रापक हारा माननीय पालीवाल जी से निवेदन करना चाहता हूं कि हम लोग व्यक्तिगत करके प्रश्नों की न टाला करें। ग्रार राजनारायण वोषी हैं तो उसके बारे में सबन में बहुस होनी चाहियं और श्रार श्री सम्पूर्णानन्द व श्री कमलापित त्रिपाठी वोषी हैं तो उनके बारे में भी सबन में बहुस होनी चाहिये जिससे हमारा सामाजिक जीवन स्वस्थ हो। ऐसे प्रश्नों की बबाने से कोई मजा नहीं आयेगा। बहुत से लोग कई तरह के होते हैं, जैसे कोई माननीय सबस्य विधान सभा के सेन्वर भी हैं और किसी स्कूल के मैनेजर भी हैं जो यहां से भी तनक्वाह लेते हैं और मैनेजर होकर स्कूल से भी पैसा वसूल करते हैं। [.....]

नोट-- श्री ग्रधिष्ठाता की ग्राज्ञा से [.....] ग्रंग निकासा गया ।

श्री श्रिधिष्ठाता--राजनारायण जी, श्राप तो बहुत कह चुके।

श्री राजनारायण—-ग्रगर ग्रापसे कोई प्रश्न पूछा जायगा तो ग्राप उसे एलाउ कर देंगे ? ग्रगर ग्राप एलाउ करें तो उसका स्पष्टोकरण होना चाहिये।

श्री श्रिधिष्ठाता—में उसको देख लूंगा ग्रौर प्रोसीडिंग से निकलवा दूंगा। इससे श्रिषक क्या हो सकता है?

श्री राजनारायण—यह ध्रापकी मेरे ऊपर कोई बड़ी कृपा न होगी। जो सोना है वह सोना ही रहेगा श्रीर जो पीतल है उस पर का पानी झड़ जायगा, जो चादी है उस पर का पानी झड़ जायगा। पीतल पोन न रह जायगा, चांबी चांबी रह जायगी, सोना सोना रह जायगा।

राजस्य उपमंत्री (श्री महावीरप्रसाद शुक्ल)--श्रामन्, मेरा एक व्यवस्था का प्रक्त है।

श्री श्रिधिष्ठाता-राजनारायण जी, श्राप बैठ जायं।

श्री राजनारायण--- प्राप उनसे बैठने के लिये कहे क्योंकि से बोल रहा है।

श्री महावीरप्रसाद श्वल-भेरा प्रक्त है कि वया कोई सदस्य व्यवस्था का प्रक्त उठा कर भाषण दे सकता है?

श्री राजनारायण--व्यवस्था का मेरा प्रश्न यह है कि क्या कोई सदस्य व्यवस्था का प्रश्न किया गया हो, फिर भी बोलता चला जायगा?

श्री श्रधिष्ठाता--जी नहीं।

श्री राजनारायण—तो ऐसी रियनि में क्या ये दिन्दी सिनिस्टर होन याग्य ह ? श्रभी वे पालियामेटरी पद्धति पढ़े।

श्री श्रिष्ठिता--जो बात श्रापके निये कही गयी है यही बात श्राप पूसरे के निये कहें जा रहे हैं, क्या यह उचित है ?

श्री राजनारायण--मेहाउसके पत्रेशन मेथा भ्रीरश्रापकी इताप्रत से एका हा हर बाख रहा था, फिर ये बीच में टपक पड़े।

श्री रूमिल (जिला शाहजहांपुर) ---- प्रश्ना के सम्बन्ध में भे कहना नाहना है कि बार-बार मेरे प्रश्न स्थाित हो जाते हैं। मेरे बहुत से सवालों में में मृश्कित से धात्र एक सवाल धा पाया घीर उसकी भी २३ के लिये स्थाित कर विवा गया। ध्रापर इस तरह से मेरे प्रश्न स्थाित होते रहे तब तो कोई भी सवाल मेरा यहां नहीं धा पायेगा।

श्री श्रिधिण्ठाता--इस सम्बन्ध में भ्राप मुझसे बाद में बात कर लें।

श्री समिति—-प्राप्तिर किस तरह में कहा जाय श्रीर किससे कहा जाय जब कि सम्बन्धित सवाल स्थागत कर विये जाते हैं। इस सम्बन्ध में में भ्रापकी व्यवस्था चाहता हूं कि यह किस तरह से हो।

श्री श्राधिष्ठाता--में उसकी जानकारी कर लूगा, उसके बाव उसकी क्यवस्था की श्रामगी ।

श्री राजनारायण-- प्रव में भ्रपने मूल व्यवस्था के प्रदत पर भ्रा रहा हूं :

श्री अधिष्ठाता--मभी मेरे पास नियम ५२ के झन्तर्गत प्रदन है।

श्री राजनारायण---इंक है, नियम ५२ वाला बत्म कर लें।जिये।

# **9** =

# नियम ५२ के अन्तर्गत ध्यान आकर्षणार्थ विषयों की सृचनाये

श्री अधिष्ठाता—मेरे सामने नियम ५२ के झन्तर्गन ५ प्रश्न धाय है किनाम म दा ना पुराने हैं जिनको मेने पहले भी अस्वीक्तर कर विधा था और जिनको माननाय उपार यह माननीय भी अस्वीक्तर कर चुके हैं। बार-बार उन्हीं प्रश्नों को भेजा जाता र. इसिल म माननीय सदस्यों से कहूंगा कि ज्यादा अच्छा यह होगा कि झाप लोग उसक बार म दार नारिस क्याद मन पूछ लिया कर बजाय इसके कि उसे नियम ५२ क झन्तर्गत बार-बार अर्थक महात्य का प्रभ जा। इसके अलावा ३ और प्रश्न आये हुए हैं। उनमें से एक प्रक्रन ना १ फिरबार का हो नमको मेने अस्वीकार किया है, बहु इसलिये कि उस की कीई अर्थी नहीं र मार्ग दार प्रमूप पुलिस विभाग के खिबेट के समय यह जीज आ सकरी था इसिलय धव इसकी कीई अर्थीन ही रह गई है। विष्ट जी अत्य धर्मी बैठ, उसित होगा ना स आप का सोका दुगा। दूसरी बात यह है कि पुलिस खिबेट के बक्त मीका था आर मार्गा का मार्गा गाय स्थाप का सोका जी का ध्यान दिला सकते थे। इन कारणों से मंत्र अब उसकी आर्थना विभाग।

दूसरा प्रश्न है, बस्ती में जो पत्यर पड़ा है उसके बार मा। इस सम्बन्ध मा माननाय कृषि मंत्री जी एक बार्ट नोटिस क्वेश्चन के सम्बन्ध में एक स्टेम्स्ट हता, जनमा प्रायन, बालगा कि वह उसी में बस्ती जिले के बारे में भी स्थिति स्टिश कर दें, वह मा जनक पास नाम कि ब्रीर कोई सहत्व का नहीं है इसलिये में ने इन तिनंद की घरबीकार कर विधाह ।

# श्री राजनारायण द्वारा श्रपने श्रल्पसूचित तारांकित प्रदन कं सम्बन्ध में जानकारी की मांग

श्री राजनारायण (जिला वाराणनी)—श्रीब्या महीव्य, मरा निवदन है कि पन दक्ता पर के रूप में एक प्रवन रखने की कीशिश की श्रीर कार्य-स्थान प्रस्ताव के का का ना निवतन है की कीशिश की श्रीर कार्य-स्थान प्रस्ताव के का का ना ना ना की की कोशिश की कि मुगलसराय के पास नानागर्गर ये प्रथम महावया की मत्त्र हो गई। हमें इस सम्बन्ध में माननीय उपप्रयक्त महावया का मान मान में सलाह वी कि ग्राप शार्ट नीटिस क्वेश्चन पृष्टिये, उसका जवाब हम जन्द के जन्द सामकार मगल तक मंगा लेंगे। उसके बाद हमने ग्रत्य स्थित तारांकित प्रयन पृष्टि कि जन्दों की कार्यकार मान तक मंगा लेंगे। उसके बाद हमने ग्रत्य स्थित तारांकित प्रयन पृष्टि कि जन्दों की कार्यकार मान सामकार की वह प्रा जाय, सोमबार बीत गया नहीं शायी मंगल हुग्रा, नहीं ग्राये ग्रीर ग्राज बुद्ध हो गया फिर भी नहीं ग्राये। श्रीमन, भ्रायक ग्रायन प्रथम कभी माननीय श्रध्यक्ष विराजमान होते हैं, कभी उपाध्यक्ष जी विराजमान होते हैं श्रीर मंगी श्राविष्ठाता विराजमान होते हैं। तो क्या कभी श्रध्यक्ष, उपाध्यक्ष ग्रीर ग्राबिश्वात की स्थापकार होते हैं। तो क्या कभी श्रध्यक्ष, उपाध्यक्ष ग्रीर ग्राबिश की व्या कभी ग्राविष्ठाता विराजमान होते हैं। तो क्या कभी श्रध्यक्ष, उपाध्यक्ष ग्रीर ग्राविश्वात को परा कराया जायगा या नहीं?

श्री ग्रधिष्ठाता--मै उसको देख लूंगा।

# श्री गोविन्दसिंह विष्ट द्वारा नियम ४२ के अन्तर्गत विधे गये विषय के संबंध में जानकारी की मांग

श्री गोविन्दसिंह विष्ट (जिला अल्मोड़ा)— अधिष्ठाता महोदय, अर्भा यह अक्ष उठा कि पुलिस डिबेट में वह प्रक्त का सकते थे लेकिन हमने उस समय बोलने की कोशिश की लेकिन बोलने को नहीं मिला। मेरा जो प्रक्त है वह भीवण है और में उसकी अर्जेमी समझाता चाहता हूं। मवाना, जिला मेरठ की बात है कि एक हरिजन करवा ईस छोलकर अपने घर वापस जा रही थी कि रास्ते में एक गुंडे ने उसके साथ रेप किया और जब उस का बाप अरे कुड़ा के लिये आया तो उसने उसका भी कत्ल कर विया और उसके बाप की लाश.....

श्री श्रिधिष्ठाता—मं श्राप की स्टेटमेंट का मोका नहीं बूंगा, श्राप बठे। मंने धापको २ कारण बता दिये हैं। एक तो यह कि यह १० फरवरी का वाकया है, श्रव इसकी कोई श्रजेंन्सी नहीं रह जाती श्रोर द्परे पुलिस विभाग के डिबेट में माननीय गह मंत्री का ध्यान इस तरफ विलाया जा सकता था। श्रव वह दोनों स्टेज बीत चुके, श्रव में कुछ सुतना नहीं चाहता।

श्री गोविन्दसिंह विष्ट--माननीय मृत्य मंत्री व माननीय गृहमंत्री दोनों को लिखित रियोर्ट दी गई है लेकिन युलिस मृहदमा नहीं चला रही है, हम चाहते हैं कि फोरन म हदमा चलाया जाय । यह बात डिबेट में भी श्राई । इस तरह में हरिजनों के साथ व्यवहार किया जाम जिनकी हम उत्थान की बात करने हैं, इस तरह से देव किया जाय. . .

श्री प्रधिष्ठाता--प्राप यही बात फिर कह रहे हे....

श्री गोविन्दसिंह विष्ट--इस तरह से वहा पर हरितनों की लड़कियों से व्यवहार किया जाय, खराब काम किया जाय श्रीर बाप बचाने ताय तो उसे भी मारा जाय. . . .

श्री ग्रधिष्ठाता--कृत्या श्राप बंडे।

श्री प्रतापसिंह (जिला नेनीताल)--श्रीमन्, २ मिनर मध दिए जाय. इस सम्बन्ध म नहीं कहना है. . . .

श्री ग्रधिष्ठाता -- जी नहीं, किसी सम्बन्ध म नहीं ।

# १७ फरवरी, १६६० के तारांकित प्रक्रन ३-४ से सम्बद्ध श्रनुपुरक प्रक्रन के उत्तर का शोधन\*

संसदीय विषयक उपमंत्री (श्री नरेन्द्र सिंह विष्ट)—विनोक १७ फरवरी, १६६० को श्री तारावन्द माहेदवरी द्वारा पछे गये प्रश्न संस्था ३-५ के प्रत्नरक प्रश्न का उत्तर देन समय यह कहा गया था कि "काफी लम्बी लिस्ट हैं। प्रत्र प्राप कहे तो में सबक पन पढ़ दू कि किस किसकी भेजी गई है यह किताबें।" यह उत्तर गनत था। सही उत्तर निम्न प्रकार है:

"उक्त प्स्तिका श्रमी विदेशों को भेजी नहीं जा सकी है। इसके भेजने के लिय श्रावचयक कार्यवाही की जा रही है। श्राशा है कि निकट सीयध्य में यह प्रितका विदेशा को भेज दी कायसी क

२--इसके आगे श्री श्रध्यक्ष का कथन तथा उसका उत्तर भी मतन की कायेवाही से निकाल दिया जाये क्योंकि उक्त संशोधन होने के पहलाल ये श्रथेहीन है।

३--- उक्त प्रवन ग्रीर उसका उत्तर भी संलग्न है।

# १६६०-६१ के ग्राय-व्ययक की मांगों पर विवादार्थ निश्चित कार्यक्रम में परिवर्तन करने पर ग्रापत्ति

श्री राजनारायण (जिला वाराणमी)—श्रीमन्, हमारा नियम १८६ यह है कि मार्गों पर मतवान (१) अनुवानों के निये मांगों पर ऐंगे दिनों म (श्री कोबील दिनों में अधिक अहोंगे) मत लिये जायेंगे, जिनहीं इस अभिशाय के लिये अन्यक्ष सवन-न तो ने परामर्श करका नियस होंगे) मत लिये जायेंगे, जिनहीं इस अभिशाय के लिये अन्यक्ष सवन-न तो ने परामर्श करक हमारें सामन यह कार्यक्रम अस्ति पार्वशी हो गई। अध्यक्ष ने नेना मदन में परामर्श करके हमारें गामन यह कार्यक्रम अस्ति करा विया विधान सभा के मिचव औ जिल्लान जी के अस्ति में शो बंबकीनग्रम यहां पर विराजनान है, आपके यहां भी होगा देल लीजिये। १० फरवरी की जी बंबकीनग्रम मित्यल जी के नाम से नीटिस निकला है उसमें आज का कार्यक्रम विया हुआ है, ६-१०-१६-३७

<sup>\*</sup> १७ फरवरी, १६६० की कार्यवाही में सबनुसार संशोधन कर विधा गया है।

[श्री राजनारायण]

मार्चका। स्राज्ञ हहा एक तो व्यवस्यायान्तः, संस्था करूंगा, अगर हमको आपके मचिवालय स कोई भागर नार र र र प को बिना सदन की सर्वसम्मति क परिर्वातित शिया गणा हो । अर्थ १००० र ४ । १००० विक वर्तित हुन्ना। ७ मार्च, को जो ह्रपाह उसम काप्यम क्रियारक के 🔧 🔻 जब माननीय लक्ष्मीरमण श्राचार्य जी न सरशारी पास्त हरूप मा हारा वह बहुत चाहते थे कि मैं उस पर यस्तागत कर । अगर हमा कर पा पर मारा कर कर कर है उसके अनुसार अगर माननीय मस्य मत्री जी दार्थित रूप होता । ११ ११ ११ । ११ । १४ । होता। मैने नही किया। लेकिन में उतना जरूर समझ राष्ट्र शिम राज्यार प्रवक्ता के रूप में बोलते हैं, मज्जन ग्रादमी है, ग्रंपनी बार पर रूप राजा। तथा । अस्या का आदर किया और फोन पर कह दिया कि अगर गनी दता के नाग न न कर कि महा आपीन नहीं होगी। बाद में जब उन्होने बात की तो मन कहीं त्या कि न र र विकार के विकास हमें कहते हैं उससे पीछे नहीं हटगे। श्रय जो संबक्ती सहमति स कायक मानि । हक चीर जो ७ मार्च की नोटिस सचिव की ग्रोर से निकली उसम १० पर भागपाण (; तर्तनशारण।सम्भाग) फिर विद्युत योजनात्रों की स्थापना पर व्यय, विद्युत योजनात्रों एर पूजी की उस्से राजरें लेखे के बाहर सिचाई निर्माण-कार्य का सम्पादन, राजम्य म वि । नान पा विश्व पा व निर्माण कार्य, सिंचाई स्थापना पर व्यय, इसके बाद चौतीसदा आया साम जीन के स्थित व माय जो राजस्व से पूरे किये जाते हैं, फिर ३५ वा यातायान क माधना मा मधार फिर उमर बाः दसरी बातें आईं। जो कार्यक्रम छपा ७ तारीम को इसमें भी यह निश्चित ह कि किना दे आहे के कार्यक्रम में स्राना चाहिये था। स्रख दो कार्यक्रम हुए । एक् राप्त फश्यरा का यौर इसरा ७ मार्च का जो स्नापके कार्यालय से छ्रपा । फिर जेब यह नारिया स ज का नन गया था श्रीर जिसके बारे में में स्पष्ट कर दूं कि सिवाय टीकाराम प्रभारी ना क राप्य : स पर रख नागा ने भ्रपनी सहमति दे दी थी, यद्यपि प्जारी जी न इसका यहां पर्वाशाधिक का पा कीर मरा अपना मत है कि अगर में उपाध्यक्ष या अधिकाता होता तो में ए बारी तो को एक राय की कर करता। कभी-कभी राजनीतिक दलों में भी ऐसी स्थित था ना । ह

श्री ग्रधिष्ठाता—संक्षेप में कहिये।

श्री राजनारायण—में थोडे में ही कह रहा है। तो काण क्षत्रगर ता होग, कागर विशी कमेटी की मीटिंग में भी एक झावमी किसी कार्यक्रम क बन आतं के बार परिशान करता है तो उसको नहीं माना जाता है, सबंगर्थन क्षार ही आया कि शो होक है उसे लोग मान जाते है। अब में जानना चाहता हूं कि जो काल कार्यक्रम बार हम कि शो हम के झन्तर्गत बंटा और इस कार्यक्रम को बाटने की क्या झावद्यक्ता है है दूसक बार भ, सम्भवत ज्ञायद आप कल सदन में न रहे हो, यहा पर क्या हुई....

श्री ग्रिधिष्ठाता-में सदन में था।

श्री राजनारायण-एक बात शायद भ्रापको न मालूम हो । एक प्रशास भागनीय नरेन्द्र सिंह विष्ट जी ने उपाध्यक्ष महोदय को पहले ही दें दिया था । महा भागूम नहीं कि उन्होंने किस हैसियत से प्रस्ताव विया था . . . .

संसदीय विषयक उपमंत्री (श्री नरेन्द्रांसह विष्ट)—वाइंट ग्राफ ग्राइंट गरा जो माननीय राजनारायण जी कह रहे हैं कि मैंने प्रस्ताव दें विया था यह विस्तृत गलत है, मैन कोई प्रस्ताव नहीं दिया था।

श्री राजनारायण—ग्रगर वह कहते हैं तो ठीक है। मैं गलत हैं, मुझे धर्मा गलती कबल करने में हठवादिता का परिचय नहीं देना चाहिये। श्री देवकीनग्रत मिरयस की अगह को दूसरे सज्जन बैठते हैं, उनका क्या नाम है, श्री राम प्रकाश, वह वही प्रस्ताव हमकी साकर विकाय कि क्या इसी प्रस्ताय को छाप मान्यता दर, है ' तह तही प्रस्तार या जो नरन्द्र निर्हा कि ने दिया था छोर जो उपान्यक्ष महोदय न पढ़ तर गनाया । म नाए नानत उपा यक्ष महोदय ने कैसे करा कि चीफ यह प्रमाननीय नरन्द्र सिह जिएत जी न एक सम्मान्त प्रमार पास भजा ते छाप कर्न की कार्यवाही पढ़ उसमें उपाध्यक्ष म नेदय न रहा ति हा हाम हो हिए तो जरफ स् छीर जहां तक माने स्मरण है उन्तोन नरन्द्र सिह लिट जी का नाम । या जा कि पान कि पान विद्या है । मार छाज जह कन्त ह कि हमन उपाध्यक्ष महोदय हो नहीं दिया । तो पाना जह जोने छावभी जाने कि कीन कितना सत्य छोर असत्य ह, इसम म नहीं पाना चाला । उपाध्यक्ष महोदय ने कहा कि जो मझे जान कारी मित्री माननीय नरन्द्र सिह जिल्ला ना कार । उपाध्यक्ष महोदय ने कहा कि जो मझे जान कारी मित्री माननीय नरन्द्र सिह जिल्ला कार साम या मसविदा भेजा है तमाम विरोधी दलों क नता छाज की सममित तक्ष म उसकी पड़ रहा । जमको भी छाप जानकारी की जिये कि उपाध्यक्ष को प्रमार माननीय नरन्द्र सिह लिए जो न कार माननीय नरेन्द्र सिह विष्ट जी का नाम मनमान उस से लिया, जो कि छमत्य का स्थान अणा म जाता ह, तो से समझता ह उन्होंने छमयदित पाम किया है।

श्री श्रिधिष्ठाता—मझे सचिव से मालम हुन्ना कि कोई प्रस्ता व नहीं चाया है। उन्होंने यही कहा था कि न्नगर ऐसा हो जाय तो ज्यादा न्नन्त्रा है। एक सचना उन्हों व उपा यक्ष महो व को दी थी, कोई प्रस्ताव नहीं भजा था।

श्री राजनारायण--मं मर्लाववा कह रहा ह ।

श्री ग्राधिष्ठाता--कोई मर्मावदा भी नहीं या।

श्री राजनारायण—माननीय रामनारायण त्रिपाठी न उपाध्यक्ष भी हसियत स जो कहा है उसे पढ़ दिया जाय।

श्री श्रिधिकाता—पह इस प्रकार या "यह सदन को मानम है हि ११ तारोख को सप्त की बैठक होगी, श्रीर ६, १० श्रीर ११ को सदन का एक, एक घटा समय बह जायगा। श्रनपानी के सम्बन्ध म ६, १० व ११ मार्च, १६६० का कार्यक्रम जो श्राज सप्तयों को जिल्हा हु श्राह असे कुछ श्रम हो जान की सम्भावना है क्योंकि उसमें जिस प्रकार पहन से श्रमपानों को लिए जान का विचार या उसी क्रम में वह दी गई है, लिकन मझ वाप्रस प्रत के सचतक सामा मा हुआ है कि उन्होंने विरोधी दत्त के नेताओं से परामश करक यह तय किया है कि उन्होंने विरोधी दत्त के नेताओं से परामश करक यह तय किया है कि उस से सावजीन कि निर्माण विभाग सम्बन्धी ४ श्रमवान श्रयान श्रादान सन्या ३८, ३४, ३६ ४ ४० वा जायगी श्रीर अन पर विवाद १० तारीन को २ बजे तक नलेगा" इसने साफ यह प्रकट होगा कि वाई प्रकार माननीय विषट जी ने उपाध्यक्ष महोदय हो नहीं दिया ।

श्री राजनारायण—माननीय नरन्त्र सिंह विष्ट ने धार मीरियत कहा था तो गन्न उसका ज्ञान करा विया जाय। उस मीरियत क्यन को फिर लखबद्ध विसन क्या? उस लेखबद्ध कागज को पढ़ा गया था श्रीर श्रगर नरन्त्र सिह विष्ट का वह लियबद्ध कागज नहीं था तो राम प्रकाश जी वह लेखबद्ध कागज कहा से लाय थ ? राम प्रकाश जी का स्टामन यहा होना चाहिये।

श्री श्रिधिष्ठाता--- त्याहट ग्राफ ग्राडंर म क्या यह भी है कि इसकी शहावत ली जाय ग्रीर उसकी शहावत ली जाय?

श्री राजनारायण—श्रीरामप्रकाश जी ने हमारे सामने एक व्यक्तित काग अपर समित्रवा रखा श्रीर उन्होंने कहा कि यह निश्चय हुश्रा है। मैंने इकार कर दिया कि मैं इसे कर्वा नहीं मानता। फिर वे हमारे परम मित्र प्रताप सिंह जी के पास गर्य। प्रताप निष्ठ जी न उसे पढ़ा श्रीर उसी पर कल वैधानिक प्रश्न उपस्थित किया गया। मैंने उपाध्यक्ष महोदय स कहा

#### [श्रीराजनःरायण]

कि आपके सचिव, जब माननीय बहुगुणा जी एक महत्या एं प्रश्न पर भान रहते । सान हरान की कोशिश कर रहे हैं, यह अनुचित है और इसक रोक्याम करना जातिया। सानन य गान्ध्यक्ष महोदय ने उस पर कुछ कहा और अब मेरा यह कहना है कि आता है के । जिस्सा ने अपनी और से कोई प्रस्ताव लिखित नहीं दिया तो यह लाक कहा में धाया। स्वाप पानमा बाहता है कि १७ फरवरी को एक कार्यक्रम बट गया और १० फरवरी के यायका का परिवर्णित किया गया ७ मार्च के कार्यक्रम में तो फिर ७ मार्च के बार क्या की से परिवर्णित किया गया जब कि सदन में सर्वसम्मित नहीं थी।

दूसरी बात यह कहना चाहता हं जहां तक संगी जानकारों है गायद विशा निया ने गर गर नहीं कहा कि पीठ डब्ल्यूठ डीठ को पहले लिया जाय । वहां पर रहकारों गक्ष के पान गायद की श्री कि सीचार्य जानकी हम लोग इज्जत करते हैं और कि होने हम लोग से पान गायद की बातचीत की थी और दूसरी बात कह श्री गिरखारी जाल जी ने । अब सरकार पक्ष की गायद की गायद की गायद की लोग सीचार की लोग माना जायगा ? क्या बे नेना की होगयत रक्षत है, क्या निर्माण पद पर माना जायगा ?

तीसरे प्रताप सिंह जी बोले। मैं नहीं जानता कि प्रताप सिन्ता नहां ने हा एक हैं या द्विप हैं प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के ? द्विप नेता की सत्यक स्वात करहा है और नहां के गैर मौजूदगी में किर ह्विप नेता की तरह बात करेगा। उपाध्यक्ष महात्र्य । का कि सरकारी पक्ष और विरोधी दल इसे मान रहा है इसलिये में इसे मान रहा है।

श्री श्रिधिष्ठाता—वेखिये राजनारायण जी, मैन श्रामका समानव ग्रह शक्का कि कार जब सदन सहमत नहीं हुआ तो माननीय उपाध्यक्ष महोबय को क्या धांभकार का कि ता एक पहल से आर्डर बना हुआ था उसको उन्ह ने चेंज करने का निर्णय वे विद्या ?

श्री राजनारायण—जो हां। वसरा प्याइट यह है कि राजा पाववर्त वर्णा ब अपनी सहमति प्रकट कर चुके ये कि कल सिंकाई ली जाय, हमने श्रानी गहमांत प्रशासा वा कि कल सिंचाई ली जाय और माननीय प्रतार्णमह मी न भी पहल करा। का श्री उससे ही अपनी सहमति प्रकट की यी कि कल सिंचाई ली जाय।

श्री ग्रधिष्ठाता--उन्होंने कहा था कि कल ले लिया जाय ।

श्री राजनारायण—ठीक है। इसके बाद माननीय गिरधारील म आ उट । में श्रापके द्वारा निवेदन करूंगा कि सध्यक्ष महोदय या उपाध्यक्ष जो भी बंदे हो उनक कान तक हमारी ग्रावाज पहुंचे ।

श्री ग्रधिष्ठाता--ग्राप तो भाषण दे रहे हैं।

श्री राजनारायण—इसको पंचायती कोड्रा त बनाया जाय । कांग्रेस कामः अग का दफ्तर न बनाया जाय ।

श्री श्रिधिष्ठाता—यह श्रापके मुखारविन्द से श्रक्ता नहीं मालम होता है। श्राण एक दल के नेता है।

श्री राजनारायण—इसीलिये श्रीमन्, में कह रहा हूं कि सबन की मर्याबा कायम रहनीं चाहिये। कल माननीय मंत्री जी ने कहा कि हमारे कमंचारी दिल्ली जाने बाले हैं तो क्या मंत्री जी के कमंचारियों के मातहत यह सबन चलेगा? धगर कमंचारी हैवराबाव, अन्यद्वे भीक दिल्ली वगरह जांय तो क्या हम सरकारी कमंचारियों के गुलाम है ? क्या सबन का कायकम उन कमंचारियों की इच्छा पर चलेगा?

श्री ग्रधिष्ठाता—ठीक है।

श्री राजनारायण—श्रीमन्, यह तमे बहुत बडी जेम पत्ताई गहिते कि तमारे कर्मचारी बिल्ली जा रहे हैं इसलियें सबन का गायंकम स्थापत कर दिया जाप श्रीर मृत श्रकसाम है कि. . .

श्री अधिष्ठाता--राजनारायण जी, श्राप तो भाषण दे रहे हैं । में श्रापता णाद्य समझ गया ।

श्री राजनारायण—श्रीमन् एक प्याइट तो हमारा उपस्यक्ष मी समाधित है, परा सरकारी पक्ष से सम्बन्धित है श्रीर तीसरा विरोधी बना से सन्धानि है। पा में जिल्ली है। पा में जिली है। पा में जिल्ली है। पा में जिल्ली है। पा में जिल्ली है। पा म

श्री श्रधिष्ठाता—राजनारायण जी, श्रापको भाषण उन का यनभी वर्ष न । ।।।।

श्री राजनारायण-मं भाषण तही दे रहा है।

श्री अधिष्ठाता—मै यापका प्रक्त समझ गरा इसस्य मास्य यापका बोलासा है। नहीं वे सकता है।

श्री राजनारायण—ठीक है, में भाषण नहीं बेना नहारा है किया माहा है किया पारवर्शी है श्रीर हमारे दिल की बात समझ गये हैं ।

श्री श्रिधिष्ठाता--विन की बात का प्रान नहीं है।

श्री राजनारायण—मंजो बात कह रहा : जाको श्राय नहीं समगा है माना । श्री श्राय नहीं समगा है माना । श्री श्री कह तने दिया जाय।

श्री प्रविष्ठाता-प्रकी बात है।

श्री राजनाराण — देखि जिस तरा से सरकार ए उसी तरा से दिना । . . र हे । में पालियामें ही पहित के अन्यार इस बात को रणना चाहता । दिसाए। । म सान है और श्रीमन, दोनों के लिये पालियामें ही मान्यता एक ले नात्यो। मान र जार कारा पात को सरकार हट जाय और विरोधी वन सरकार बनाय तो क्या पात साथी एक पार अपना सरकार बना सकती है ? नहीं बना सकती है गयोंकि उसकी शिवान में जारिटा नहें है । दिरोधी जा में उसकी एकसोल्यट मैं जोरिटी नहीं है । पीठ एमठ पीठ क कार हह समस्य । अर्थी रा यह कह देना कि जिरोधी वल तैयार है और सरक से पक्ष और विरोधी वा मान गय है और उपाध्यक्ष जी ने भी कह दिया कि वोनों मान गये है तो यह ठीक नहीं है । हम पाय से मन पाय से अर्थ उनम से ४० श्रावमा है अगर उनम से ४० श्रावमी यहां मेंज वें और कह वे कि हमारा वन प्रप्तिशीन काम्रेमी हो गया और सरकार का समर्थन करना शुरू कर दिया जाय यह जनता के नियं वन नाक साथित होगा। इसीनये में चाहता है कि श्रार एक ही पार्टी की राय को नेकर ही उपाध्यक्ष महोवय का प्राना सम्मिन शी बो तो इससे पूर्व माननीय नक्षीरमण जी को, हमकी, पार्लीयान भी को को स्वां नाहता है । एक बार और कहना चाहता है . . . . .

श्री श्रीधष्ठाता—नहीं, श्रव में इजाजत नहीं गूंगा ।

श्री राजनारायण—प्रतार्पामह जी ने भी नहीं कहा था, जर्म तक मेरी जानकारी है, स्नात पी० डस्ट्य० डी० का श्रादान (लया नाय ।

श्री ग्राधिष्ठाता—उन्हों। कहा या ।

श्री राजनारायण-पढा जाय, श्रीमन ।

### श्री स्रधिष्ठाता—स्राप बैठ जाइये, पढ़ा जायगा ।

श्री गौरीशंकर राय (जिला बिल्या) — प्रिष्ठिता महोदय, माननीय राजनारायण जी ने जो व्यवस्था का प्रश्न उठाया है उसमें बहुत सारी श्रावश्यक बाते ग्रा गई ह जिनमें ए सम् क्लेनेशन की श्रावश्यकता है। इसके संबंध में उन्होंने प्रजा मोशिनम्ह पार्टी का नाम निया श्रीर कहा था कि विरोधी दलों में किसी पार्टी की ज्यादा संख्या होने में कोई बात नहीं है ग्राकरती है। मैं नहीं जानता कि वह कहां की बात करते हे? सार देशों में प्रवित्त यह चीज ह कि विरोधी दलों में जो सबसे बड़ा संगठित दल होता है वही मुख्य बिरोधी दल होता है। (अप रात) सूट करने की बात नहीं है। माई राजनारायण जी को स्ट करें या किनी जो मट करें, पह बात नहीं है। सत्य सत्य ही रहेगा। वह न विल्लाने से बदलना है ग्रीर न शीर्या न करने से बदलता है।

दूसरा निवेदन मुझे यह करना है कि प्रजासो गिलस्ट पार्टी के ने ना फ्रोर उपने ना कल उपस्थित नहीं थे ग्रीर ग्राज भी उपस्थित नहीं है । भाई प्रतापित जी ने नो बान प्रनासी गिलस्ट पार्टी के नेता ग्रीर उपनेता की जगह पर कही है उसकी प्रनासो गिलस्ट पार्टी सन पर्ने में कि स्थारी तरफ से बात कही है ग्रीर ग्रागर प्रजा सोगलिस्ट पार्टी की विरोधी वन के ने ना का प्रविभाग प्राप्त है तो वह ग्रीधकार माननीय प्रतापितह जी को था।

जहां तक राजनारायण जी की व्यवस्था का प्रश्न है कि सर्व सम्मर्शित है। एए पर नदना जाय या रोज कार्यक्रम बदला जाता है इस सम्बन्ध में मेरा कोई मत नहीं है। उरह सम्बन्ध में

श्राप जैसी चाहें व्यवस्था दें।

राजा यादवेन्द्रदत्त दुवे (जिला जौनपुर)—उपाध्यक्ष महो स्य. यह पन्त जी गान से चल रहा है में समझता हूं कि इसके कई श्रंग है। पहली बात तो यह हो कि में समझता हूं कि सब तरफ से गलतफहमी हुई है। पहले दिन जो बात तय हुई थी यह यह ना कि इसी ना पहले हो, उसके बाद पी० उन्त्यू ० डी० हो श्रौर फिर पावर हो। उपार से श्रोर विस्तार दनों ने सर्वसम्मति से यही तय किया था। हो सकता है कि कोई गलतफहमी हुई हो। श्रम्या होना श्रमर कल श्राचार्य जो इसको स्वष्ट कर देते श्रौर उसके बाद माननीय विस्थान का श्रानी परिवार नाई बतलाते तो में समझता हूं कि उनकी इच्छा को एकोमोडेट कर लेने ।

दूसरा प्रश्न यह है जो अभी राजनारायण जी ने और माननी र गीरं हों हर रा र ते ने कहा । में पाजियामेंटरी प्रैक्टिस में तो जाता नहीं । यह बिलकुन ठीक मान हे कि पाठ एमठ पाठ की तरफ से अगर कोई बात कहता है तो वह पीठ एसठ पीठ की बात है, यह गर रहे । यह भी सत्य है कि विरोधी दलों में उनकी संख्या श्रिधिक ह । इसिलये में या विरोधी वला महि । परन्तु व्यावहारिकता की दृष्टि से जब सब पार्टीज रेकगनाइ न हे और सब वनों का स्थान प्राप्त है तो अभी तक प्रथा यही रही है कि सब विरोधी वल आपस में भिन कर जो बात कि पान कर है तो अभी तक प्रथा यही रही है कि सब विरोधी वल आपस में भिन कर जो बात कि पान कर है तो अभी तक प्रथा वही रही है कि सब विरोधी वल की बात माना जाता था । अगर उस दृष्टि से उपार यक्ष महोदय ने अपनी व्यवस्था दो होती तो ज्यादा सुन्दर होता । में उनकी एमरम्या की चलें ज नहीं करता हूं, उसकी मान्य करता हूं। परन्तु फिर भी व्यावहारिकता की दृष्टि में, जब गब विरोधी दल रेकगनाइज हैं तो अगर सब आपस में विचार करके कोई बात तथ कर तो ज्यादा अच्छा होगा । यह मेरा निवेदन है। थोड़ी सी गलतकहमी है, उसकी अब रयान न विषय जाय तो ज्यादा अच्छा है।

श्री चन्द्रजीत यादव (जिला श्राजमगढ़)—शाननीय श्रीयण्ठाता महोवय, कन जी माननीय विष्ट जी ने सदन में कहा था कि प्रोग्राम में जी परिवर्तन उन्होंने किया है सभी पार्टियों के नेताओं से राय लेकर, सम्मति लेकर किया है यह बिलकुल गलत बात है।

श्री श्रिधिष्ठाता — त्रह तो ग्राचार्य जी ने कह दिया कि गलती उनका थी । उस पर श्राप मत कहिये। श्री चन्द्रजीत यादव—मै समझता हूं कि वह उचित बातें नहीं थीं। जहां तक श्रौर बात है राजनारायण जी ने काफी विस्तार के साथ रख दिया है। माननीय गौरीशंकर रााय जी के कथन से जो गम्भीर व्यवस्था का प्रश्न उठता है उस पर श्राप स्पष्ट व्यवस्था दें। हमारी नियमावली के नियम १८६ में इस बात को स्पष्ट कहा गया है कि जो भी व्यवस्था होगी वह नेता सदन श्रौर विरोधी दलों के परामर्श से होगी। हमारे यहां परम्परा यह रही है कि नेता विरोधी दल जो भी कार्यक्रम निर्धारित करते रहे हैं वह सभी विरोधी दल की पार्टियों के नेता श्रो से राय लेकर करते रहे हैं। वह परम्परा तोड़ी गई। नम्बर १, नम्बर २ नेता विरोधी दल श्रौर उपनेता विरोधी दल सदन में मौजूद नहीं थे।

श्री ग्र्यधिष्ठाता--माननीय राजनारायण इसको कह चुके ।

श्री चन्द्रजीत यादव—माननीय गौरीशंकर राय जी यह कहते है कि जिस बात को सदन में कल माननीय प्रतार्णिसह जी ने कहा वह प्रजा सोशिलस्ट पार्टी का ग्राधिकारिक मत था, उसको उन्होंने व्यक्त किया । उसमे माननीय प्रतार्णिसह जी की हैसियत एक माननीय सदस्य की हो सकती थी।

श्री श्रिधिष्ठाता--माननीय राजनारायण जी इस प्वाइंट की कह चुके है ।

श्री चन्द्रजीत यादव—इस बात को उन्होंने पहले नहीं कहा था। यह एक नई बात पैदा होती है। श्रव माननीय गौरीशंकर राय जी यह कहते है कि हम इस बात का श्रधिकार देते हैं कि श्रधिकृत रूप से उन्होंने प्रजा सोशिलस्ट पार्टी की बात कही थी। तो न तो वह नेता थे, न उपनेता थे, न ह्विप थे और उनकी बात को मानकर के कार्यक्रम निर्घारित कर दिया गया सदन का और उस कार्यक्रम के निर्धारण के बाद उनको प्रथाराइज कर दिया जाय कि उन्होंने श्रपोजीशन की श्रथारिटों के साथ यह बात कही थी, इस बात पर में श्रापसे स्पष्ट व्यवस्था चाहूंगा कि इस तरह से सदन का कार्यक्रम श्रगर निश्चित किया जायगा तो सदन का कोई भी कार्य सुचार रूप से चलना श्रत्यन्त दुरूह हो जायगा। इस पर श्राप स्पष्ट व्यवस्था दे कि इस तरह का कार्यक्रम जो निश्चित किया गया वह कहां तक उचित हैं?

श्री श्रिधिष्ठाता—(श्री उग्रसेन के खड़े होने पर) श्राप कृपा करके बैठिये। मैने माननीय लक्ष्मीरमण श्राचार्य को काल कर लिया है।

समाज कल्याण मंत्री (श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य) —श्रीमन्, मेरा नाम बार-वार श्राया श्रीर वह एक प्रकार से ठीक श्राया। यह जो रूल १८६ का जिक्र किया गया, में चाहता नहीं था कि सदन में इस रूल को पढ़ता श्रीर वैसे बहुत स्पष्ट है—

"Voting on demands for grants shall take place on such days not exceeding 24 days as the Speaker may in consultation with the Lead of the House allot for the purpose."

इसमें लीडर ग्राफ दी श्रोपोजीशन का भी जिक नहीं है श्रौर केवल लीडर श्राफ दी हाउस श्रौर स्पीकर का प्रश्न श्राता है।

एक सदस्य--जरा हिन्दी कर दीजिए।

श्री ग्रधिष्ठात।—कर रहें है वह ।

श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य—मै यह कह रह था कि यह जो श्रनुदानों पर मतदान है वह २४ दिन तक हो सकता है और २४ दिन या उससे कम जितने कि स्पीकर, नेता सदन से सम्मित लेकर तय कर दे। तो मै केवल इतनी सी बात कहना चाहता था कि कुछ तय हुआ। तय होने के बाद मे कुछ यहां सदन के बहुत से लोगों ने, माननीय सदस्यों ने नेता सदन के पास में जाकर यह कहा

### [श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य]

कि यदि ११ से १५ तक की खुट्टी होली की बढ़ाकर १२ से १७ कर दी जाय तो सबको सह लियत होगी। उस चीज को दृष्टि में रखते हुए नेता सदन की ब्राज्ञा से मैने यह उचित समझा कि जो विरोधी दल के नेतागण है उनसे इस संबंध में चर्चा कर ली जाय। स्रीर में केवल इतना सा ही कह सकूंगा कि इससे बड़ी मुझे कोई प्रसन्नता नहीं हो सकती कि इस संबंध में विरोधी दल के प्रत्येक नेता महोदय ने मुझे सहयोग दिया और उन्होंने भी सहमति प्रकट की। मैंने कल भी इसका जिन्न किया था, वह यह कि पहले सिचाई विभाग का ग्रनुदान लेने की बात थी या पी० डबल्यु ॰ डी ॰ को लेने की बात थी ग्रौर दरग्रस्ल मुझसे हो गलती हुई क्योंकि में ऐसा खपाल करता हूं जैसो कि स्रभी माननीय यादवेन्द्र दत्त जी ने कहा स्रौर सबने कहा कि वहां पर कुछ चर्चा हुई थी कि पहले सिचाई विभाग को ले लिया जाय ब्रीर फिर उसके बाद में सार्वजनिक निर्माण विभाग को लिया जाय, लेकिन क्योंकि मेरे मस्तिष्क में ऐसी बात थी कि बोनों के लिए एक सा समय निर्वारित है इसलिए ज्यादा ध्यान मेंने उस पर नहीं दिया । मैने इस हो कल स्वीकार किया भौर श्राज भी स्वीकार करता हं श्रीर यह कहना चाहता है कि यदि इसमें सचमुच रहीं भी कोई गलतफहमी हो तो उसको स्पष्ट कर लेना चाहिए। एक बान श्रीर भी स्पष्ट कर देना चाहता हुं कि मेरे इस सदन में यह स्वीकार कर लेने के बाद में माननीय सिवाई मंत्री जी ने जो यह करा कि उनके विभाग के कुछ लोग बाहर चले जायेंगे ग्रौर कल चले गए ग्रौर इस के संपंप में यि सिचाई विभाग की मांग पीछे ले ली जाय तो उचित हो, कब इस तरह की बात उन्होंने कही, तो में रे उनसे कल बातचीत की थी। उन्होंने बताया कि उन्होंने केवल ग्रपनी कठिनाई सदन के सामने रखी थी। इसके आगे कोई उनकी मंशा नहीं था। ऐसी बात नहीं थी कि कहीं किसी प्रकार का मोटिव उनमें हो या उनकी श्रीर मेरी कोई इस पर चर्चा हुई हो श्रीर फिर पीछे मैंने गलत तरीके से कोई चीज रखी हो, जिससे कि मैं प्रत्येक रूप से गलत समझना हं, कोई सबटरप्यूजिंग तरीके से कोई बात कही हो, रेसी बात नहीं है।

मैने बिलकुल इसी तरीके से कि जैसे ग्रन्छे लोग काम िया करते है, उसी तरह से यह मांग बदली थी। मैं सदन से इस बात पर आग्रह करना चाहता हूं कि कुपा कर श्रपने मस्तिष्क में पह इस प्रकार की बात न रखें बिलक इसके विपरीत इतना ही हुआ कि माननीय सिचाई मंत्री ने उस समय प्रपनी सहलियत का जिक्र सदन में किया और माननीय उपाध्यक्ष जो यहां पर मोजूद थे, उन्होंने माननीय प्रताप सिंह जी के कहने से इस प्रकार स्वीकार कर लिया। में यह निवेदन करना चाहता हूं श्रापके जरिये से माननीय राजनारायण से, उनके साथियों से श्रीर सदन के ग्रन्य सदस्यगण से कि इतना वह विश्वास कर लें कि इसमें किसी प्रकार की नीयत किसी दल की तरफ से नहीं है। यह बहुत स्रष्ट बात है, उसमें जो निर्णय हो गया वह इसी प्रकार से हो गया, उसमें किसी प्रकार की नीयत कम से कम नेता सदन या उघर के बैठने वाले या इघर के बैठने वाले दल की नहीं थी, बिलक इसके विषद्ध जो प्रश्न है उसमें इतना कहूंगा कि हम लोग कोई हस्तक्षेप नहीं करना चाहते और न उसे हमें यहां करना चाहिये। जो वैधानिक स्थिति है उसको सवन में श्राप के द्वारा में ऐसा विश्वास करता हूं कि शायद पहले ही निर्धारित किया गया है श्रीर पहले भी उसके सम्बन्ध में माननीय श्रध्यक्ष ने एक या दो बार चर्चा किया है। वह केवल माननीय विरोधीदल के नेतागण श्रीर श्रापके बीच का प्रश्न है कि जैसा कुछ उचित समझे वह निर्णय वें।

श्री चन्द्रजीत यादव—म कुछ कहना चाहता हूं....

श्री भ्रधिष्ठाता—जी नहीं।

श्री राजनारायण—में एक स्पष्टीकरण चाहता हूं....

श्री श्रिधिष्ठाता—जी नहीं, श्रब में उस पर निर्णय देने जा रहा हूं।

श्री चन्द्रजीत यादव---१८६ घारा में इसको देख लिया जाय।

श्री म्रधिष्ठात(----ग्रब भ्राप बैठ जायें।

श्री राजनारायण—मै लक्ष्मीरमण श्राचार्य जी से एक स्पष्टीकरण चाहता हूं। ग्राचार्य लक्ष्मीरमण जी, जो सरकारी प्रवक्ता के रूप में बोले हैं, यहां पर उन्होंने स्पष्ट कहा है कि सिचाई मंत्री जी ने कल यहां पर कोई प्रस्ताव नहीं किया था कि कल सिचाई न लिया जाय या कौन सा अनुदान लिया जाय बित्क कल यहां उन्होंने अपनी किठनाई का वर्णन किया था। यह बात अभी जो कही गई, उसका यह स्पष्ट अर्थ होता है। फिर माननीय उपाध्यक्ष ने यह स्वेच्छा से निर्णय कर दिया, नयोंकि सरकारी पक्ष से तो केयल यहां रह कठिनाई का वर्णन किया गया...

श्री श्रधिष्ठाता--फिर ब्राप भाषण दे रहे ह?

श्री राजनारायण--हम यहां ग्राते है किस लिये भाषण देने के लिये ही तो ग्राते है ?

श्री श्रिधिष्ठाता---- ग्राप सदन का समय बरबाद कर रहे है।

श्री राजनारायण—मेरा कहना यह है कि जब सरकार की श्रोर से कोई प्रस्ताव नहीं था तो वह प्रस्ताव उपाध्यक्ष महोदय ने किस हैसियत से रखा?

सार्वजनिक निर्माण मंत्री (श्री गिरधारीलाल)—यह प्रक्त यहां पर जो चल है, इसमे कुछ गलत फहमी है। मै एक दो बात कहना चाहता हूं। वास्तव मे कुछ पता नहीं था। कल या परसों प्रोग्राम मे पहले पी० ड ब्ल्यू० डी० था, उसके बाद सिचाई का ग्रनुदान था ग्रौर उसके बाद पावर का श्रनुदान था। कल शोम के वक्त जिस वक्त मै यहां पर सदन में श्राया तो मुझे यह पता लगा कि इस तरह से बदल रहा है। बदलने के पहले ही कुछ सरकारी कर्मचारी, जिनको देहली जाना था एक बहुत जरूरी काम से, वह चले गये। उनको उस वक्त रोका नहीं जा सकता था। वह श्रपनी दिक्कत यहां पर मैने रखी। माननीय राजनारायण जी यह बात कहते हैं कि सरकारी कर्मचारियों को रोका जा सकता था। हम श्रपने ही भरोसे इस सदन में काम करना नहीं चाहते है। मै बतलाता हूं कि यहां पर जो बहस होती है उसको हम भी सुनते है स्रौर जितने उस विभाग विशेष से सम्बंधित कर्मचारी होते है वह भी सुनते है। वे भी यहां पर इम्प्रेशन लेते है, सबक लेते है श्रीर उसके हिसाब से श्रपना काम पूरा करने की कोशिश करते है। इन बातों के साथ साथ में यह भी बताऊं कि श्राज भी मेरे सामने कठिनाई है। मैने कल कहा था कि वह चाहे तो सिचाई विभाग ले ले। मुझे कोई दिक्कत नहीं होगी। ग्राप चाहे जो विभाग लें, लेंकिन जिन कर्मचारियों को यहां बैठना चाहिये सिंचाई विभाग के ग्रौर उनको यहां बैठ कर जो इम्प्रेशन लेना चाहिये अपने महकमें को ठीक से चलाने के लिये वह उसे नहीं ले सकेंगे। उनको राजनारायण जी श्रौर उनके दूसरे दोस्तों की बात सुनने का मौका नहीं मिलेगा। यही मैने कहा था।

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)--एक मिनट, श्रीमन्।

श्री ग्रिधिष्ठाता—जी नहीं, ग्राप कृपया बेठ जाइयें।

सदन की एक ऐसी परिपाटी रही है कि सदन का कार्यक्रम विरोधी वल के नेताओं से सलाह लेकर निश्चित किया जाता था और हमेशा ऐसा होता रहा है। मगर कल कुछ ऐसी बात मालूम होती है कि कुछ गलतफहमी पैदा हो गई जिसकी वजह से ही राजनारायण जी को यह व्यवस्था का प्रक्र उठाना पड़ा।

प्रथा की बात तो मैंने श्राप से निवेदन कर दी कि सरकारी पक्ष में जो व्हिप है वे विरोधी दलों के व्हिपों से सलाह लेकर के एक कार्यक्रम निश्चित किया करते थे श्रौर यही प्रथा चली श्रा रही थी। मगर जहां तक नियमों का सवाल है, जिनका हवाला माननीय राजनारायण जी ने श्रौर माननीय लक्ष्मीरमण श्राचार्य जी ने दिया है, नियम १८६ के उप नियम (२) में, जिस को उन्होंने नहीं पढ़ा, लिखा है कि श्रनुदानों के लिये मांगें ऐसे क्रम से उपस्थापित की जायेंगी

### [श्रो ग्रधिष्ठाता]

तया दाद विवाद उपनियम (१) के अन्तर्गत नियत काल के भीतर उतने समय तक जारी रहेगा जैसा कि नेता सदन विरोधों दल के नेता से परामर्श करके निश्चित करें। इसमें स्पष्ट है कि विरोधी दलों के नेता प्रों से परामर्श करने की बात नहीं लिखी है, केवल विरोधी दल के नेता से परामर्श करके निश्चित करने की बात लिखी है। इसके ग्रलावा में माननीय राजनारायण जी का ध्यान दिलाना चाहता हूं नियम २५ की तरफ जिसमें लिखा है कि ग्रध्यक्ष चाहें तो केवल नेता सदन से सलाह करके सदन का बिजनेस बदल सकते हैं। नियम २५ में लिखा है कि उनको विरोधी दल के नेता से भी सलाह करने की जरूरत नहीं है। ग्रगर १८६ ग्रौर २५ नियमों को एक साथ मिला कर पढ़ें तो स्पष्ट हो जायगा कि स्पीकर को ग्रधिकार है कि वह केवल नेता सदन से सलाह लेकर के ही बिजनेस को चला सकता है श्रौर इस वास्ते कल माननीय उपाध्यक्ष महोदय ने रूलिंग दो कि मैं तो देखता हं कि विरोधों दल के नेता की भी यही राय है कि यह श्राज नहीं लिया जा सकता है । इस वास्ते माननीय राजनारायण जी ने यह भी कहा कि प्रताय सिंह जी ने यह बात नहीं कही थी। मैं इसको पढ़ कर सुना देता हूं। उन्होंने कहा था "जैसा कि सिचाई मन्त्री जी ने कहा कि मजबूरी है, मैं समझता हूं कि विरोधों दल को उनकी बात मान लेनी चाहिये।" तो इससे साफ हो जाता है कि माननीय प्रताप सिंह जी ने माननीय मंत्री जी की बात को स्वीकार कर लिया था और इस वास्ते यह निश्चित किया गया कि आज पी० डब्लू० डी० के ऊपर बहस होगी, सिचाई विभाग पर नहीं।

श्री राजनारायण—वह कहते है कि मैने नहीं कहा ' ' '

श्री ग्रिधिष्ठाता—उन्होंने कहा था। मै इसको फिर से पढ़ कर मुना देता हूं। "जेसा कि सिचाई मंत्री जी ने कहा कि मजबूरी है, मैं समझता हूं कि इस पर माननीय विरोधी उल को उनकी बात मान लेनी चाहिये"। साफ कहा है उन्होंने।

श्री राजनारायण—विरोधी दल ने उनकी कठिनाई मानी, जो उनकी काठनाई श्री ::

श्री श्रिधिष्ठाता—मान करके ही उन्होंने यह स्वीकार किया था कि श्राज के विन जो बहस होगी वह सार्वजनिक निर्माण विभाग पर होगी न कि सिचाई विभाग पर श्रोर इसके बारे में माननीय उपाध्यक्ष महोदय ने एक निर्णय दे दिया है, जिसको मे रिवाइज नहीं कर सकता। इसलिये जो कार्यक्रम छुपा है श्रौर निश्चित हो चुका है उसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। श्रय सार्वजनिक निर्माण मंत्री श्रपना श्रनुदान पेश करेंगे।

श्री राजनारायण—मं केवल एक चीज कहना चाहता हुं.....

श्री स्रधिष्ठाता—जी नहीं। मैं माननीय मंत्री जी को बुला चुका हूं। श्राप कृपया बैठिये।

श्री गिरधारीलाल-में राज्यवाल महोदय की सिफारिश में ...

श्री राजनारायण—श्रीमन्, हमें नहीं बोलने दिया जायगा ....

श्री गिरधारीलाल--में राज्यपाल महोदय · · · ·

श्री राजनारायण—श्रीमन्, मुझे बोलने का मौका तो दिया जाय · · ·

श्री ग्रधिष्ठाता—जी नहीं, ग्राप कृपया बेठिये।

(व्यवधान)

१६६०-६१ के म्राय-व्ययक मे म्रजुदानों के लिये मांगों पर मतदान-- म्रजुदान संख्या ३४-- लेखा शीर्षक ५०-- सार्वजनिक निर्माण-कार्य ग्रौर ५०-- क-- राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यो पर पूंजी की लागत, म्रजुदान संख्या ३५-- लेखा शीर्षक ५०-- नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, म्रजुदान संख्या ३६-- लेखा शीर्षक ५०-- नागरिक निर्माण-कार्य ग्रौर ८१-- राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यो की पूंजी का लेखा तथा म्रजुदान संख्या ५०-- लेखा शीर्षक ८१-- राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदानग्रनुदान संख्या ३४-लेखा शीर्षक ५०-सार्वजिनक निर्माण-कार्य
ग्रीर ५०-क-राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर
पूंजी को लागत, ग्रनुदान संख्या ३५--लेखा शीर्षक ५०नागरिक निर्माण कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय
सहायता, ग्रनुदान संख्या ३६-लेखा शीर्षक ५०नागरिक निर्माण-कार्य ग्रौर ८१-राजस्व लेखे से
बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का
लेखा तथा श्रनुदान संख्या ५०-लेखा शीर्षक
८१-राजस्व लेखे के बाहर नागरिक
निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

सार्वजनिक निर्माण मंत्री (श्री गिरधारीलाल)—मं राज्यपाल महोदय की सिफारिश से प्रस्ताव करता हूं कि ग्रनुदान संख्या ३४—सार्वजनिक निर्माण कार्यों पर व्यय, जो राजस्व में पूरे किय जाते हैं—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य ग्रौर ५०—क—राजस्व से बित पोषित नागरिक निर्माण कार्यों पर पू जी की लागत के अन्तर्गत ६,०५,७४,१०० रुगये की मांग वित्तीय वर्ष १६६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय ।

श्री ग्रधिष्ठाता--पार दूपरा भी उरस्थित कर दीजिये।

श्री शिवप्रसाद नागर (जिला खोरी)—श्रीमन्, मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है। ग्रांट नं० ३४ में इस प्रकार लिखा हुग्रा है—१६ जनवरी, १६५० को राष्ट्रपति द्वारा जारी किये गये सामान्य प्रादेश के ग्रनुसार उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के ग्रावास गृहों के सम्बन्ध में ग्रानुरक्षण, सुधार, नवीकरण या प्रतिस्थापन सम्बन्धी व्यय किसी भी वर्ष २,२४,००० रुपये से ग्राधिक नहीं होना चाहिये, यह बात इसमे स्वीकार की गई है। यह राष्ट्रपति का जनरल ग्रादेश है यानी यह सभी राज्यों में लागू समझा जायगा। यह ग्रादेश है कि २ लाख २४ हजार से ग्रिधिक कोई ग्रांट नहीं होगी।

श्री श्रधिष्ठाता—यह ग्राप कहां से पढ़ रहे है ? श्राप का प्वाइंट ग्राफ ग्राडंर क्या है ? यह कोई प्वाइन्ट ग्राफ ग्राडंर नहीं है।

श्री शिवप्रसाद नागर—श्रीमन, मैं बजट से पढ़ रहा हूं यह जो ग्रान्ट माननीय मंत्री जी ने प्रस्तुत की है यह उससे ज्यादा है। श्री ग्रिधिष्ठाता—इसके लिये माननीय मत्री जी ग्रपने भाषण म बतायेगे। ग्रभी तो उन्होंने यह कहा है कि ६,०५,७४,१०० रुपये का ग्रनुदान स्वीकार की जाय। उसका विवरण माननीय सार्वजनिक निर्माण मंत्री ग्रभी देगे। ग्राप कृपया बैठ जाये। यह कोई व्यवस्था का प्रश्न नहीं है।

श्री शिवप्रसाद नागर—श्रीमन्, मैं स्पष्टीकरण तो कर दूं। मेरी पूरी बात तो सुन लीजिये। जब तक ग्राप पूरा मौका ही नहीं देगे तब तक प्वाइट ग्राफ ग्रार्डर समझ में कैसे ग्रायेगा? ग्राप देखे कि इसी में ग्रागे लिखा है—"विशेष मरम्मतों के, जिसके लिये ६५ हजार रुपए की व्यवस्था की गई है, प्रारम्भ करने के पूर्व राष्ट्रपति का ग्रनुमोदन प्राप्त कर लिया जायगा।" यह इसमें लिखा हुग्रा है। कोई भी खर्चा उससे ग्रधिक यह नहीं कर सकते। बजट में लिखा गया है, प्राप्त कर लेगे, तो श्रीमन्, पता नहीं प्राप्त हुग्रा या नहीं। बजट श्रा चुफा है, हमें इसकी जानकारी नहीं है। इसलिये मेरा व्यवस्था का प्रक्त है . . . . . .

श्री ग्रिधिष्ठाता—मै ग्रापका प्वाइंट समझ गया। श्राप कृपया बैठिये। माननीय सार्वजिनक निर्माण मंत्री कृपया ग्रपना भाषण जारी रखें ग्रौर जो प्वाइंट उठाया गया ह उसको भी स्पष्ट कर दे।

श्री राजनारायण (जिला वाराणसी) --श्रीम न्, मै ग्रयनी एक बात स्पष्ट कर दूं . . . . .

श्री श्रिधिष्ठाता—माननीय मंत्री जी को श्रनुदान पेश कर देने दीजिये, श्राप फिर श्रपनी बात कह सकते है।

श्री राजनारायण--श्रीमन्, मेरा व्यवस्था का प्रक्त हे . . . . .

श्री ग्रिधिष्ठाता—जी नहीं, ग्राप कृपया बैठिये।

श्री राजनारायण—श्रीमन्, मैने कल इस सदन मे एक घोषणा की थी। मेने कल यह कहा था कि ग्रगर इस तरह की कार्यवाही इस सदन की चलेगी तो हो सकता है कि हम भाग न ले सके। तो मै ग्रापके द्वारा इस माननीय सदन से यह निवेदन करना चाहता हूं, क्योंकि लक्ष्मीरमण ग्राचार्य जी ने जो ग्रपना स्पष्टीकरण किया है ग्रौर जो हमारे पत्र के उत्तर में उन्होंने लिखित हमकी भेजा है उसमें जो उन्होंने हमारी सहायता चाही है तो चूंकि उनका प्रश्न साफ हो गया है, श्रौर सरकार सिंचाई ग्रनुदान भी लेने को तैयार है इसलिये हम यहां बैठ कर कार्यवाही मे भाग लेगे।

श्री म्रिधिष्ठाता—यह कोई व्यवस्था का सवाल नहीं है।

श्री राजन।रायण—नहीं यह हमारी घोषणा थी श्रौर में यह बतला रहा हूं कि हम क्यों उसके विरुद्ध जा रहे हैं। क्या कोई सदस्य ग्रपनी घोषणा के विरुद्ध बैठेगा? में पूछना चाहता हूं कि जब सरकारी पक्ष दोषी नहीं था, माननीय मंत्री जी ने कोई प्रस्ताव नहीं किया था तो माननीय उपाध्यक्ष ने ऐसा निर्णय क्यों दिया? ऐसी कार्यवाही चेयर की श्रोर से नहीं होनी चाहिये।

श्री ग्रधिष्ठाता—कृपया ग्राप बैठें।

श्री शिवप्रसाद नागर—हमारी व्यवस्था पर रूलिंग नहीं दी।

श्री श्रिधिष्ठाता—ग्रभी श्रापकी व्यवस्था का वक्त श्रावेगा। माननीय मंत्री जो को सुन लूंगा, तब व्यवस्था दूंगा।

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—भ्रनुदान संख्या ३४—लेखा शीर्षक ५०—सार्वजनिक निर्माण-कार्य श्रौर५०-क-राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यो पर पूंजी की लागत, भ्रनुदान संख्या ३५—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, श्रनुदान संख्या ३६—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य श्रौर ६१—राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा श्रनुदान संख्या ५०—लेखा शीर्षक ६१—राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

\*श्री गिरधारीलाल—राज्यपाल महोदय की सिफारिश से मै प्रस्ताव करता हू कि श्रनुदान संख्या ३५—यातायात के साधनों पा सुधार (केन्द्रीय सड़क निधि के लेखे से वित्त पोधित)—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण कार्य—केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता के श्रन्तर्ग ५७२,२२,४०० रुप ने की मांग वित्तीय वर्ष १६६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय।

मै राज्यथाल महोदय की सिफारिश से प्रस्ताव करता हूं कि स्रनुदान संख्या ३६— सार्वजनिक निर्माण—कार्य स्थापना पर व्यय——लेखा शीर्षक ५०——नागरिक निर्माण-कार्य ग्रें।र ८१——राजस्व लेखे से वाहर नागरिक निर्माण कार्यों की पूंजी का लेखा के स्रन्तर्गत १,०१,१४,८०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १६६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय।

मै राज्यपाल महोदय की सिफारिश से प्रस्ताव करता हू कि श्रनुदान सख्या ५०— राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों पर लागत—नेखा शीर्षक ८१—–राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा के श्रन्तर्गत १२,१६,५०,४०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १६६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय।

श्रध्यक्ष महोदय, में इस सिलसिले में इस वक्त सदन का ज्यादा समय नहीं लूंगा। जहां तक श्रभी हमारे दोस्त ने एक प्रदन यहां पर उठाया तो उसके सिलसिले में यह कह देना चाहता हूं कि गवर्नमेंट हाउस का जो खर्चा होता है वह सबजेक्ट टु वोट नहीं खर्चा होता। वह तो बजट मे जाहिर कर देने हैं, लेकिन वह यहां के डिस्कशन से बाहर की चीज है। इसलिये इसके सिलसिले में कुछ नहीं कहता।

अन्य बातों के सिलसिले में सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि यह हमारी आखिरी किस्त है द्वितोय पंचवर्षीय योजना की, और इस विभाग में हमें यह देखना है कि जिस वक्त १९४६ से पहले हमारे प्रदेश में ६,३४५ मील पक्की सड़के थीं....

श्री शिवप्रसाद नागर—श्रभी श्रापने कहा कि गवर्नमेट हाउस का जो भी खर्चा होता है वह न यहां पर पेश होता हैन इजाजत होती है बहस की, तो वह किस नियम के श्रनुसार होता है ?

श्री श्रिष्ठिता—वह तो चार्ज्ड श्राइटम है, वोट नहीं होगा, बहस हो सकती है। श्री शिवप्रसाद नागर—एक व्यवस्था का प्रश्न है। यह किसी पार्टी या दल से सम्बन्धित नहीं है, बिल्क प्रदेश के धन श्रीर जन से इसका सम्बन्ध है श्रीर उस पैसे से इसका सम्बन्ध है जो कि किसान की नस से खिच कर श्राता है। राष्ट्रपति महोदय का जो श्रादेश है उसको लांध करके श्रगर यहां पर कोई बात कही जाय श्रीर में कोई व्यवस्था का प्रश्न उठाऊं श्रीर श्राप व्यवस्था न दें....

श्री श्रिधिष्ठात।—कृषया बैठ जाइये। श्रभी श्रापने एक प्वाइंट श्राफ श्राइंर उठाया था जिसके बारे में मेंने कहा था कि में माननीय सार्वजनिक निर्माण मंग्नी को सुन कर व्यवस्था दूंगा श्रीर में उसी व्यवस्था के लिये खड़ा हुन्ना था, लेकिन श्राप सुनना केहीं चाहते थे श्रीर फिर दूसरी व्यवस्था के लिये खड़े हो गये। जो श्रापने प्रश्न उठाया है उस पर मैं व्यवस्था देना चाहता हूं कि वह जिसको कि श्रापने कहा है २ लाख रुपये की रकम, वह चार्ड श्राइटम है ग्रीर उत पर बहुत हो सकती है लेकिन वोटिंग उस पर नहीं होगी। मगर माननीय मंत्री जी को श्रिधकार है कि उसको वह श्रपने बजट में शामिल कर सकते हैं श्रीर उसको उन्होंने सही शामिल कर लिया है।

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वोक्षण नहीं किया।

श्री शिवप्रसाद नागर—मेरा दूसरा सवाल है श्रीमन्, कि जो जनरल ग्रांडर है राष्ट्र 4ित का उसका उल्लंघन तब तक नहीं किया जा सकता जब तक कि उसके लिये विषेष ग्राज्ञा न प्राप्त कर ली गई हो। नीचे इसी पुस्तक में लिखा है कि राष्ट्र पित की विशेष ग्राज्ञा प्राप्त कर ली जायगी तो जब तक विशेष ग्राज्ञा न प्राप्त कर ली जाय तब तक जनरल ग्रांडर को डिसग्रोबे करना क्या इस राज्य के मंत्री के लिए उचित है ग्रौर क्या उसको ग्रिधकार है या सदन को क्या इसका ग्रिधकार है? मैं समझता हूं कि ऐसा ग्रिधकार नहीं है कि राष्ट्र ति के ग्रादेश का उल्लंघन करे इस उम्मीद में कि बाद में ग्रादेश प्राप्त कर लिये जायेंगे। यहां पर राष्ट्र पित के ग्रादेश प्राप्त करने के पहले ग्रांट ले ग्रायी गयो है। तो मैं जानना चाहता हूं कि क्या इस प्रकार का ग्रिधकार सरकार को है ?

श्री राजनारायण—जो माननीय नागर जी ने प्रक्त उठाया है उसी के सम्बन्ध में में अपनी सम्मति देना चाहता हूं।

श्री ग्रधिष्ठाता--ठोक है, दीजिये।

श्री राजनारायण---श्रब मै ग्रयनी राय जाहिर करना चाहता हूं। माननीय नागर जी ने जो प्रश्न उठाया है इसका अध्ययन हमने भी किया था और माननीय रामस्वरूप वर्मा जी ने भी इसका गहन अध्ययन किया है। वास्तव में प्रश्न यह है श्रोर वह बहुत ही उचित हे श्रोर जायज बात भी है कि क्या किसी ऐसी रकम को जिस रकम को खर्च करने का अधिकार हमें न हो तब तक जब तक कि राष्ट्रपति की श्राज्ञा प्राप्त न कर ली जाय, म उसको यहां पर बजट में शामिल कर सकते है? क्या यह राष्ट्रपति महोदय का श्रथमान नहीं है ? क्या यह संविधान की हत्या नहीं है ? हमे चार्ज्ड श्रौर अनचार्ज्ड के प्रश्न पर नहीं जाना चाहिये क्योंकि चार्ज्ड रकम बेया है उसे है लिये एक निविचा रकम बतायी गर्या है ग्रीर इसमें पृष्ठ १०३ पर स्प्पट लिखा हुम्रा है। इसमे १६ जनवरी, १६५० की याज्ञा है म्रोर इसी भ्राज्ञा का पालन सर्वदा इस हाजूस में हुन्रा है। ूड्सके मुताबिक जैसा पृ०्१०३ पर है "१६ जनवरी, १९५० को राष्ट्रपति द्वारा जारी किये गये सामा य श्रादेश के श्रनुसार उत्तर प्रदेश के राज्यभान के <del>श्रावीसगृहों के सम्बन्ध में श्रनुरक्षण, सुधार, नवीकरण या प्रतिस्थापन सम्बन्धी व्यय</del> किसी भी वर्ष २ लाख २५ हजार से अधिक नहीं हो सकता।" यह राष्ट्रपति का अधिक है श्रीर इसी राष्ट्रपति के ग्रादेश को हन सर्वदा मानते रहे हैं। श्रब यहां कहा गया है कि नहीं अर्ब ज्यादा धन हमको दो। मंत्री जी का जो अनुदान पेश है उसमें ६५ हजार की वृद्धि फरने की मांग वह रखते है। यह अनियमित है। मंत्री जी जब यह मांग रहे है ती उनके दिमाग मे भी यह साफ बात है कि यह अनियमित है लेकिन चाहते है कि यह रकम सबन हमको दे दे, हम इसको रखे रहेगे और तब तक खर्च नहीं करेंगे जब तक कि राष्ट्रपति का आदेश हम प्राप्त न फर लेंगे। यह एक साफ बात है। सरकार की श्रोर से तो फिर हमारे सामने प्रक्त यह है कि राज्युवित यह श्रादेश देते है या नहीं। इसकी कल्पना पहले से कर लेनी कि राष्ट्रपति हमें ग्रादेश दे ही देगे इसलिये सन् ५० के आदेशों के विपरीत काम कर लेना में समझता हूं कि राष्ट्रपति के प्रति अनादर का भाव पैदा करना है या राष्ट्रपति से कुछ ऐसी आज्ञा या कामना कर लेना है जो वह नहीं करेंगे। तो फिर सरकार इस रकमको जो ६४ हजार से बढ़ाना चाहती है यह किस नियम के मुताबिक है कि जितनी चार्ज्ड रकम है उससे बढ़ा कर ली ज य।

दूसरा प्रश्न यह है कि अगर राष्ट्र भित श्राज्ञा दे दें कि कोई चार्ज्य रकम बढ़ाई जा सकती है, तो उसके बारे में फिर यहां सदन में अनुपूर्क बजट में मस्विदा के रूप में पेश किया जा सकता है लेकिन आज तक चूंकि राष्ट्र भित का आदेश प्राप्त नहा है इसलिये और माननीय मंत्री जी ने जो रकम बढ़ाकर पेश की है वह अनुचित है, गैरकाननी है, अवैध है। में आपसे नियेदन करूंगा कि माननीय नागर जी ने जो व्यवस्था का प्रश्न उठाया है उसकी मान्यता दी जाय और आज इस अनुदान को पेश करने क आज़ा न दी जय।

श्री गिरघारीलाल—मैने तो जैसा शुरू में कहा, यह जितने भी इस प्रकार के खर्चे है वह सबजेक्ट श्राफ टु नहीं है। १६६०-६१ के स्राय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--ग्रनुदान ४३ संख्या ३४--लेखा शीर्षक ५०--सार्वजनिक निर्माण-कार्य स्रौर ५०--क-- राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, श्रनुदान संख्या ३५--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्यों—केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, श्रनुदान संख्या ३६--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य स्रौर ८१--राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की यूंजी का लेखा तथा स्रनुदान संख्या ५०--लेखा शीर्षक ६१--राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी-लेखा

श्री ग्रिधिष्ठाता——मै जानना चाहता हूं कि यह ६५ हजार सबजेक्ट टू वोट है या नहीं ?

श्री गिरधारीलाल—जी नहीं। मै तो यह अच्छा समझता था कि यह जितनी भी चीजें थीं उन पर माननीय सदस्यों के जो भी विचार हों वह जब कि पूरे अनुदान के अपर बहस होगी, तब रख सकते हैं और जहां और चीजों का जवाब दिया जायगा वहां इन बातों का भी जवाब दिया जा सकता है।

इसके अलावा जहां तक इस अनुदान की बात है, इस सम्बन्ध में मुझे अधिक समय नहीं लेना है। मैं यही कह रहा था कि हमारे सूबे के अन्दर स्वांत्रता प्राप्ति से पहले ६३८७ मील पक्की सड़कें थीं . . . . . .

श्री रामस्वरूप वर्मा (जिला कानपुर)—माननीय मंत्री जी ने तो श्रनुदान पर भाषण श्रारम्भ कर दिया। श्रापकी ग्राज्ञा से मै यह कहना चाहता हूं कि इस सम्बन्ध में जो थोड़ा-सा भ्रम है वह साफ हो जाय। बात यह है कि यह बात माननीय मन्त्री जी स्वीकार करते हैं श्रीर श्रीमन्, ग्राप भी स्वीकार करते हैं कि यह चार्ज्ड एकाउन्ट है, इस पर वोट नहीं होगा। तो मेरे कहने का मतलब यह है कि जब माननीय राष्ट्रपति ने ग्राज्ञा ग्रभी नहीं शे है उसके पहले ही हम उस पर विवाद करे ग्रीर इसको स्वीकार कर लें तो क्या इससे सदन का समय बर्बाद नहीं होता? एक बात। ग्रीर दूसरी यह कि क्या इससे राष्ट्रपति का ग्रथमान नहीं होता? ग्रगर सदन ने पहले ही इस पर विचार कर लिया तो इससे राष्ट्रपति पर थोड़ा-सा दवाव पड़ सकता है क्योंकि वह सोच सकते हैं कि सदन है इस पर विचार कर लिया है ग्रीर इसे स्वीकार कर लिया है। तो इससे राष्ट्रपि के ऊपर ग्रप्रत्यक्ष रूप से दबाव पड़ सकता है ग्रीर उनका ग्रामान भी होता है ग्रीर किर जब यह चार्ज्ड एकाउन्ट है तो इसको बाद में भी लिया जा सकता है। इस समय इसको बजट में क्यों शामिल किया गया है?

श्री श्रिधिष्ठाता—मंने इस प्रश्न पर विचार किया श्रौर जैसा कि संविधान के श्रन्त्छेंद २०२ (३) से मालूम होता है माननीय राज्यपाल के श्रावास के लिये जो कुछ भी खर्ची होगा उस पर वोट नहीं होगा। माननीय नागर जो ने जैसा कि प्रश्न उठाया वह खर्ची इसमें शामिल भी नहीं है श्रौर न उस पर वोट ही होगा, सिर्फ माननीय । दस्यों को सुविधा के लिये कि इस पर भी बहस-मुबाहसा हो सके उसे इसमें शामिल कर लिया गया है। इस पर सिर्फ बहस-मुबाहसा होगा, वोट नहीं होगा। इसलिये इसमें कोई श्रापत्ति की बात नहीं है। माननीय मंत्री जी ने उसको इसमें इसलिये दिखला दिया है ताकि श्राप यह न कह सकें कि कोई चोज छुपाकर की जा रही है।

श्री गिरधारीलाल—में यह कह रहा था कि आज जो योजना इस वक्त चल रही है उर में जहां तक पुलों की बात है उनके लिये हमारे सूबे के अन्दर १३ करोड़ द ३ लाख रुपये की योजना है। ११३ बड़े पुल हे, ७३ झूलेवाले पुल हैं और २४ किश्तो के यानी पौतटून क्रिज हैं। मथुरा में जमुना के ऊपर जो पुल बन रहा है, उस पर काम चल रहा है। पानीपत के पास जमुना नदी पर भी पुल बन रहा है। बेतवा नदो पर बनाये जाने वाले पुल का भी जिन्न इस बजट लिटरेचर में है।

### [श्री िरघारीलाल]

एक ब्रोर जहां यह विभाग सड़कों का काम करता है, वहां दूसरी ब्रोर भवन निर्माण का भी काम करता है। इस योजना काल के अन्दर कुल मिलाकर इसने ३० करोड़ रुपये के भवनों का निर्माण किया। इसमें खास तौर से उल्लेखनीय, विधान भवन का एक्सटेंशन तथा बनारसी बाग में जो म्यूजियम है, वह है। लखनऊ का स्पोर्ट स्टेडियम भी है। इसके अलावा एप्रीक्ल्च ल यूनिविस्टी का रुद्रप्र में निर्माण किया जा रहा है। १२५ लाख के भवनों का निर्माण भी इसी विभाग द्वारा हो रहा है। इसी तरह से कुछ लेबर हाउसिंग स्कीमा भी है जिनमें में कुछ गवर्न देट की है. कुछ इंडस्ट्रीज की सहायता से चल रही है, उनका भी काम पी० डब्ल्यू० डी० के द्वार हो रहा है। इन्डस्ट्रियल स्टेट्स भी हमार प्रान्त में कई स्थानों पर कायम हो रही हैं, जैसे—मेरठ, सहारनपुर और श्रागरा में, वे भा इस विभाग के ही द्वारा बन रही है।

इसके श्रलावा इस देश और प्रदेश की बड़ो-बड़ी सडके जिनको नेशनल हाई रेन कहते हैं व १३६७ मी तहें जिन पर इस या उनकाल में २,१७,१४ हजार रुपया खर्व किया गया है। जिसमें उनका सुधार, उनको चौड़ा करना उनका पनरुद्धार तथा बहुत से स्थानों पर शहरों से बाहर सड़कों को ले जाना, रेलवे लाइनों के नीचे श्रथवा ऊपर से पुलों के द्वारा सड़कों का निकालना श्रादि कार्य इस धन के द्वारा किये गये हैं।

पलड प्रोटेक्शन के कार्य भी इस विभाग के द्वारा हुए हैं। बनारस के घाटों के श्रतिरिक्त श्रौर भी बहुत से कार्य इस विभाग के द्वारा हुए हैं।

श्रव ६०-६१ म जिन सड़कों पर काम होने जा रहा है उनमे पक्की सड़कों है ४३७ मील श्रीर कच्ची सड़कों है ११८ मील जिसका प्राविधान इस बजट लिटरेचर में किया गया है। पक्की सड़कों का माडर्नाईजेशन १०४ मील, कच्ची पगडंडियों या सड़कों जिनका सधार किया जा रहा है १८१ मील है। इसके अलावा माडर्नाईजेशन के लिये ११५ मील का प्राविधान इस बजट में किया गया है। ४६ पुलों का भी प्राविधान किया गया है जिनको यह स्वन मंजूर करेगा।

मैं इतना श्रौर सदन की जानकारी के लिये बता देना चाहता हूं, जैसा कि पहले भी कहा गया था कि हमारी यह पालिसी रही है कि हम सड़कों के बारे में लखनऊ में ही बैठ कर लाइन न खीं ख दें कि फलां जिले में सड़कों को बढ़ाया जायगा या किसी श्रादमी के श्राकर कहने पर कि उन सड़कों का प्रोग्राम तय कर लें, इससे श्रच्छा हमने यह समझा है कि सरकार की श्रोर से एक श्रादमी हर जिले में जाय श्रौर वहां पर जनता के जितने नुमायन्दे हैं, चाहे एम० एल० एज० हों. चाहे एम० पीज० हों चाहे म्य निसिपल बोर्ड, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड या टाउन एरियाज के चेयरमैन हों, यानी जिले के जितने भी शासन संचालन करने वाले हों, पुलिस सुपारटेंडेंट व डिस्ट्रिक्ट में जिस्ट्रेट उन सब की सलाह से सड़कों की प्रायरिटी नं० १, २, ३ के हिसाब से तय कर दी जाय श्रौर सरकार से जितना बन उपलब्ध हो उस के हिसाब से इन चीजों को बनाया जाय। मैं साझना हूं कि उससे बहुत श्रच्छी तरह से बैलेंस्ड श्रौर प्लान्ड तरीके से तथा वैज्ञानिक तरीके से सड़कों का निर्माण होगा।

इस बात के ग्रलावा में इस वक्त सदन का ज्यादा समय नहीं लेना चाहता हूं लेकिन इतना बतला दूं कि इस साहित्य के ग्रन्दर एक सर्वे डिवीजन का भी जिन्न किया गया है। हम इस बात की जरूरत बहुत पहले से महसूस करते रहे हैं कि जो बहुत सी शिकायतें इस काम के सिलसिलें में होती है कि इतना रुपया खर्च करने का एस्टीमेट इस काम के लिये था तो इतना ज्यादा खर्च कैसे हो गया, इस शिकायत को दूर किया जाय। मसलन कोई एस्टीमेट १० लाख का है तो उस पर १५ लाख कैसे खर्व हो जाता है? तो इस डिवीजन के जिरये हम देखेंगे कि वह चान्न ग्राहिस्ता-ग्राहिस्ता कम होती जा रही है।

जब हम युद्ध के बाहर श्राये तो उस वक्त हमको एकदम से यह सब काम सम्भालना पड़ा श्रोर जनता की जरूरतों को पूर्ति के खयाल से बहुत काम काफी जल्दी में उस दक्षत हुए। इस वक्त हमारे पास पूरे सूबे की सड़कों का हिसाब है लेकिन उन सड़कों पर कितना खर्चा १६६०-६१ के श्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदान ४५ संख्या ३४--लेखा शिर्षक ५०--सार्वजनिक निर्माण-कार्य ग्रौर ५०--क-- राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, श्रनुदान संख्या ३५--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, श्रनुदान संख्या ३६--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य ग्रौर ५१--राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा श्रनुदान संख्या ५०--लेखा शिर्षक ६१--राजस्व लेखे के बाहर भागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

होगा, किस तरह की सड़कें बनेंगी श्रीर पुल कैसे बनेंगे श्रीर कितना उन पर खर्चा होगा, इसके तमाम डिटल्ड एस्टीमेंट्स श्रभी तक हमारे यहां तैयार नहीं हुआ करते थे। य नी ह्म नक्या देख लिया करते थे कि इस हिस्से से इस हिस्से तक सड़कें ब ानी हैं श्रीर इनमें २५ हजार या ५० हजार की मोल के हिसाब से खर्चा होगा, इसका अन्दाजा लगा लिया करते थे। लेकिन उसमें कहीं-कहीं बड़ी गलती होती थी। मसलन झांसी में एक स्थान पर उन्होंने नक्शा देख कर यह अन्दाजा कर लिया कि यहां नहरे या सड़कें बनेंगी। लेकिन जिस वक्त उन्होंने जिसे लोदेना शुरू किया तो नीचे से राक निकलना शुरू ही गयी जिसमें साधारण तरीके से दुगना, तिगुना और चौग्ना तक खर्च ही सकता है। यही बात पहाड़ों के अपर भी होती है श्रीर इसी प्रकार की बातें पुलों के सिलसिले में भी हैं। तो इन तमाम बातों के अपर सरकार को पहले से पूरा अन्दाजा एस्टीमेट का हो सकेगा कि कितना हमको खर्च करना है, इन तमाम बातों को मद्देनजर रखते हुए एक सर्वे सर्किल की स्थापना की गयी है जो इस बात का पूरा प्रयत्न करेगा कि जितनी प्रान्त की सड़कें हैं उनका डिटेल्ड एस्टीमेट पहले से तैयार करे और जिस दिन बजट पास हो जायगा उसके बाद इन सड़कों पर कार्य चालू करने में कोई दिक्कत न होगी। यह दिक्कत व परेशानी तो रहेगी ही कि महंगाई बढ़ जाने से परसेटेज में कुछ फर्क पड़ जाय या श इसकी वजह से खर्ची कुछ परसेन्ट अपर या नीचे हो सकता है।

श्रभी तक हालत यह है कि हम लोग यहां से बजट पास करते हैं तो पास होने के बाद भी ६-- महीने तक का समय उस सड़क या पुल की योजना कार्यान्वित होने में लग जाया करता है पहले वर्ष में हो। उसमें खास ँतौर से दिक्कत यह होती है कि जिस वक्त बजट यहां से पास होता है उसके बाद वह जिले में प्रश्न जाता है श्रीर वहां पर उसका सर्वे होता है भ्रौर फिर उसका डिटेल्ड एस्टीमेट स्राता है। वहां से फिर हमारे यहां श्रौर फाइनेंस डिपार्टमेन्ट में श्राता है , उसके बाद इजाजत मिलती है कि इस योजना पर काम चालू किया जाय । मैं समझता हूं कि इतने से माननीय सदस्यों को विवाद में काफी सहायता मिलेगी। इसके श्रन्दर एके ग्रौर विशेष बात है वह यह कि श्रक्सर कहा जाता है कामों के संबंध में कि हमें कोशिश करना चाहिये कि काम ठेकेदारों के प्रलावा किसी दूसरी एजेंसीज से भी कराये जारं। मैंने इस विषय में पहले भी कहा था श्रौर इस साल किर हमने कोशिश की है कि सहकारी समितियां जहां भी बनें उनको छोटे-छोटे काम दिये जायं श्रीर कुछ स्थान ऐसे हैं कि जहां मजदूरों ने श्रपनी समितियां बनाई श्रौर वहां उन्होंने छोटे कामों को बहुत श्रच्छे तरीके से किया । जरूरत इस बात की है कि इस तरह की समितियां हर जगह बनाई जायं श्रीर उन को हम एक हद तक ७, ८, १० हजार तक के काम देने के लिये तैयार है श्रौर श्रागे श्रगर वह काम प्रच्छा करगी तो वह हद बढ़ाई भी जा सकती है। इन बातों के प्रलावा इस स्टेज पर डिमान्ड्स के संबंध में में श्रधिक कहना नहीं चाहता। बाढ़ वगैरा के बारे में मैने बता विया कि हुम इस तरह से चल रहे हैं। ग्रब में ग्रधिक न कह कर माननीय सदस्यों की वार्ता को सुनूंगा और बाद में जरूरत होगी तो उत्तर दूंगा।

(इस समय १ बजकर २ मिनट पर श्रिषिष्ठाता, श्रीमती चन्द्रावती पीठासीन हुई ।) श्री गोविन्दिसिंह विष्ट (जिला ग्रत्मोड़ा)—श्रिधिष्ठाता महोदय, में श्रापकी श्राज्ञा से श्रनुदान संख्या ३४—सार्वजिनक निर्माण कार्यो पर व्यय जो राजस्य से पर किये जाते ह-लेगा शिर्षक ५०—नागरिक निर्माण कार्य श्रीर ५०—क राजस्य से वित्त पोषित नागरिक निर्माण कार्यो पर पूंजी की लागत के ग्रन्तगंत प्रस्ताय करता हूं कि संपर्ण प्रनदान के श्रदीन मांग की राशि घटा कर एक रुपया कर दी जाय।

कमी करने का उद्देश्य नीति का ब्योरा जिस पर चर्चा उठाने का प्रांभप्राय है। सङ्कों, पुलों इत्यादि के निर्माण में किये जाने वानी पक्षपातपूर्ण नीति पर चर्चा करना ग्रौर उनमें फैले भ्रष्टाचार की चर्चा करना; श्रोर

मैं श्रापकी श्राज्ञा से श्रनुदान संग्या ३५--यातायात के साधनों का सपार (केन्द्रीय सड़क निधि के लेखे से वित्त पोषित) लेखा जीवंक ५० नार्गार कि निर्माण कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता के श्रन्तर्गत प्ररताय करता है कि संपूर्ण श्रनदान के श्रधीन मांग की राशि घटा कर एक रुपया कर दी जाय।

कमी करने का उद्देश्य नीति का ब्यौरा जिस पर चर्चा उठाने का श्रामिश्रा है।

विभागीय भ्रष्टाचार , कामचोरी तथा सीमा सरक्षा रेन रास्कार का ययण्ट ध्यान न देना; श्रौर

में ब्रापकी ब्राज्ञा से ब्रनुदान संख्या ३६—सार्वजनिक निर्माण कार्य स्थापना पर व्यय-लेखा जीर्षक ५०—नागरिक निर्माण कार्य ब्रोर ६१—राजस्य लेखे से बाहर नागरिक निर्माण कार्यों की पूंजी का लेखा के ब्रन्तर्गत प्रस्ताव करता हूं कि संपूर्ण ब्रन्यान के ब्राप्टीन माग की राज्ञि घटा कर एक रुप्या कर दी जाय।

कमी करने का उद्देश्य नीति का व्योरा जिस पर चर्चा उठाने का श्रांगप्राय ह

विभाग के सभी श्रस्थायी कर्मचारियों को स्थायी करना तथा नतथं श्रेणी के कमंनारियों के वेतन में भेदभाव को दूर करना श्रीर बढ़ाकर एक स्तर पर करना ; श्रीर

मैं ग्रापकी श्राज्ञा से श्रनुदान संग्या-५०-राजस्य नेरां ये बाहर नागरिक निर्माण कार्यो पर लागत लेखा शीर्षक ८१-राजस्य लेखे के बाहर नागरिक निर्माण कार्या का पूंजी लेखा के श्रन्तर्गत प्रस्ताव करता हूं कि संपूर्ण श्रनुदान के श्रन्तांन मांग की राशि में सौ रुपए की कमी कर दी जाय।

कमी करने का उद्देश्य विशिष्ट शिकायत जिस पर चर्चा उठाने का श्रांनश्राय है। विभागीय भ्रष्टाचार व ग्रामीण जनता की उपेक्षा का थिरोप ।

श्रिष्ठाता महोदय, श्राज एक बड़ा बाद-विवाद श्रादरणीय सकत में 3ठ गया हालांकि में उससे सबसे श्रिष्ठक श्रफेक्टेड हुआ। पहले यह तय था कि यह श्राप थाने श्रन्वान बाद में लिये जायंगे। मैंने इन दिनों में श्रपना प्रोग्राम रायबरेली का लगाया था लेकिन वहां से श्राने के बाद ही मुझे मालूम हुआ कि यह श्रनुदान श्राज ही लिये जायंगे। इमिन्ये में मानगाथ मंत्री जी में श्रीर सदन से क्षमा चाहूंगा कि में श्रिष्ठक न्याय इनके साथ न कर सक्ता।

सड़कों का जिक हम सबसे पहले रोमन काल में पाने हैं. ३१२ बीठ सीठ पें करीब। उस समय हम देखते हैं कि एपीयन वे मशहूर थे। हमारे यहां मोहन-जोदड़ो श्रीर हड़प्पा में श्राज से साढ़े तीन ब ढाई हजार बयं पूर्व मान्तम होता हैं कि काफी चौड़ी सड़कें यहां थीं श्रीर चन्द्रगुप्त के काल में मुख्यतः सब पहले सड़गों के नियम बने। लेकिन बात यह हुई कि हमारे यहां सड़कें इतनी पुरानी हाले हुए भी बहुत कम बन पाई। इसका कारण यह रहा हो कि हमारा किसान पहले गाड़ी पर बढ़ कर भी कम जाता था। खासकर सेना को जकरत पड़ सकती थी पर वह पहिचंतार रथों पर बाद में बहुत कम चलती थी। ज्यादातर घोड़े पर, हाची पर या पैवल चलते थे।

४७

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-- स्रनुदान संख्या ३४--लेखा शीर्षक ५०--सार्वेजनिक निर्माण-कार्य ग्रौर ५०--क--राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यो पर पूंजी की लागत, श्रनदान संख्या ३५--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, अनुदान संख्या ३६--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य श्रौर ८१--राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यो का पूंजी का लेखा तथा श्रनुदान संख्या ५०--लेखा जीर्वक ८१--राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पंजी लेखा

उसके बाद जब श्रंग्रेज श्राये तो उन्होंने कोशिश की कि रेल का विस्तार ज्यादा हो। उन्होंने सोचा कि शायद रेल को ग्रधिक सड़कों से नुकसान पहुंचे। तो इन सब कारणों से सड़कों की प्रगति बहुत कम हो पाई।

ब्रिटेन में जहां ३.२४ मील सड़क फी स्क्वायर मील भूमि पर सड़क है ग्रीर यह १६४३ में २.०२ मोटर लायक थीं जब कि भारतवर्ष में ग्राजकल ें २४ मील पर स्ववायर मील है श्रौर सन् ४३ में २२ थीं। इसकी दो तिहाई कच्ची सड़के है। विक्व के एक बड़ें सड़कों के विशेषज्ञ ने लिखा है कि डैजर्ट में यूनोइटेड स्टेट्स मे .३ मील पर स्क्वायर मील सड़के हैं। तो मब्भूमि के लिये जो वहाँ मापदन्ड रखा गया है उससे भी कम हमारे यहां स्राबादी के लिये है। इसके बाद भी हम स्रपने लक्ष्य की पूरा करने से दूर ही नहीं है बल्कि कुछ एक छोटे प्रान्तों को छोड़कर हमारा प्रान्त सड़कों में सबसे पिछड़ा हुम्रा है, जनसंख्या के हिसाब से भ्रौर क्षेत्रफल के हिसाब से। नागपर में एक कांफ्रेस हुई थी उसमें कुछ श्रांकड़े तय किये गये, उनमें मै नहीं जाना चाहता। लेकिन जो हमारा स्राल इंडिया टारगेट था उसको हमने नीचा किया है। प्लानिंग बोर्ड की एक ऐसी रिपोर्ट है, उसमें यह साफ लिखा है।

सेकन्ड प्लान की बात ले लीजिये। इस प्लान के लिये हमें जो रुपया मिला था वह करीब १६.११ करोड़ था। उसमें से ६.५ करोड़ पुराने काम करने के लिये था। करीब १७६ करोड़ उनके रख-रखाव का। ७.८८ शेष रह गया। यह भी जो शेष रहा इसमें कितना काम हुन्ना है यह देखने की बात है। विभाग की स्रोर से जो पुस्तिका सप्लाई की गई है इसमें जो चालू योजना थी उसमें ४४७ मील सड़क इस बीच में कवर करना था ग्रौर हम केवल ३५२ मील ही कवर कर पाये। नव निर्माण जो है वह १,०३७ मील सड़क का होना चाहियेथा। यह लेकिन केवल ५७१ मील हुंग्रा। इसी तरीके पर पुनर्निर्माण जो है जिसका मतलब रिपेयर्स से है, ग्रगर इसके सही माने मैने लगाये है, वह १,३१० मील में होना चाहियेथा , लेकिन २०० मील ही हुन्ना यानी स्रोरीजनल का १५.२ परसेन्ट ही हुन्ना। स्रौर बाद के घटे लक्ष्य के स्रनुसार यह प्रतिशत कुछ बढ़ गया है ग्रौर खर्चा जो पहले श्रॉका गया था उसमें से ६४.७ लाख खर्च हुग्रा बाकी रुपया लैप्स हुन्रा। इतना माइलेज कवर करने के लिये ५१.७ लाख से श्रधिक खर्च नहीं होना चाहिये था।

१६५७-५८ का बजट देखा जाय उसके लेखा शीर्शक ४७ --नागरिक निर्माण कार्यजो राजस्व के बाहर से पूरे किये जाते हे के ग्रन्तर्गत करीब ६,००,००,००० का रु० श्रन्दान था उसमें करोब ३,००,००,००० ६० की बचत हुई। हो सकता है विभाग इसके कोई कारण देकि सैक्शन नहीं मिली, जमीन ऐक्वायर नहीं हुई, इत्यादि। लेकिन कुछ भी कारण हों इतनी सेविंग इस ग्राइटम पर खासकर उस समय जब कि निर्माण कार्यों के लिये सरकार जनता पर टैक्स लगा कर रुपया लेती है, उसमें भी ५० फीसदी की सेविंग होती है और डेफिसिट बजट दिखाकर ग्रन्त में बजट सरप्लस होता है, यह कुछ उचित नहीं है। एक तरफ हम जहां जनता की गाढ़ी कमाई से वसूला गया रुपया इस तरह से खर्च नहीं कर पाते हैं ग्रौर उससे ग्रधिक टैक्स लेते है तो दूसरी तरफ कुछ ऐसी भी दुखद घटनायें है, जिनके बारे में मुझे ग्रभी जांचे करने पर मालूम हुन्ना। नेता सदन अनसर ेकहते है कि भ्रष्टाचार की बातें नहीं कहनी चाहिये लेकिन

[श्री गोविन्दसिंह विष्ट]

भगर न कही जायं और ऐसे भ्रष्टाचार श्रगर छिपे रह जायंगे तो उनसे श्रीगें को भी शित्साहन मिलेगा। एक तो यह विभाग पहले से ही बदनाम हैं। माननीय गांविन्द सहाय जी के शब्दों में यह "plunder with out danger' वाला विभाग है। श्रव सबान यह होता है कि हो सकता है कुछ श्रफसर खराब हों श्रीर कुछ श्रच्छे भी हा लेकिन श्रव यह विभाग कुछ ऐसी सांस लेने लगा है कि हम ही श्रकेले भ्रष्ट चार की केंद्रगरी में नार रह गये श्रीर दूसरे विभाग भी हैं। विद्युत व सिचाई भी इस श्रेणी में श्रा गये। पूलिन तो पहले से ही बदनाम है, लेकिन हमें इससे संतुष्ट नहीं होना चाहिये। मेने गत वर्ष मांग की थी—ऐसी कमजोरियों के लिये एक ऐंटी करण्यान कमेटी सुपरिन्टेडिंग इंजीनियर की श्रव्यक्षता में बैठती है। में जानना चाहूंगा मंत्री जी से कि उसने किनने ऐसे मामनों में जा को श्रीर कितने मामलों में सजाये हुई।

मैंने गत वर्ष माँग की थी कि एक टेक्निकल सी० आई० होन साहिये जो खुद चुपचाप हर जगह जायं और नमूना ले कि कितना सीमेट है, कितनी अगरा है और उसके ले कर टेस्ट करें, और जहां कमी पायी जाय तरका यहा जात हो। उसमें मैं किसी व्यक्ति की शिकायत नहीं कर रहा हूं, एक बुनियादी उस्त होना चाहिये ताकि दोबारा लोगों को ऐसी हरकत करने की हिम्मत नहीं।

इस विभाग के लिये सड़कों के लिये बड़ी विक्कत है। श्रीर यह यह कि फाउनेंस डिपार्टमेन्ट में प्रोपोजल्स जब जाते हैं तो वह कहता है कि यह तो अनुप्रा है। दन ग्राइटम है, इसके लिये पैसा कहां से दें? वह सोचता है कि सावंजित निर्माण विभाग व सीघे सीचे कोई फायदा नहीं होता इसलिये इसकी पैसा नहीं देना ना हियं। ता गह भारणा गलत है। श्रगर योजनाये चलानी है, देश को श्रागे बढ़ाना है तो मुद्र में पहली प्राप्त इस बात की है कि यहां यातायात के प्रच्छे साधन हों। इस बात की माग काइ नहीं करता कि इस विभाग का बजट सब से अधिक बढ़ना चाहिये ताकि सकते बरे। सहसी से प्रत्यक्ष ग्राय भले ही न हो लेकिन श्रप्रत्यक्ष रूप से देश श्रामे बहुना है नेस की के लिये ग्रन्छे ग्रन्छे ग्रीजार किसान के घर पर मुहैया करा सकते ह, फरटी पाउनर दे सकते हैं। भूमि संरक्षण की बड़ी समस्या प्रवेश में है वह भी गएकां म, पनिया के बनने से, कलवर्ट स के बनने से कुछ कम होती हैं, कई जगह फटार बना है। इनक श्रलावा जो सूचनायें सरकार भेजना चाहती है स्वास्थ्य के बारे में या ग्रन्य किना बारे में उनकी मोबाइल टीम्स गांवों में जा सकती है। गांव गांव में जायं, गुलना दी जाय सारी बातों की श्रीर जानीपार्जन हो, इसके लिये सहकों की जिल्ल है। जहां सड़कें होती हैं वहां शिक्षालय खुलते है श्रीर लोगों के बच्चों का मानावार्त्रन बढ़ना शरू हो जाता है।

बंगाल में प्रकाल का कारण यह भी हुन्ना कि वहां य तायात कं साधन बहुत रही थे। इसलिये सड़कों के लिये रुपया प्रधिक रखा जाना हर प्रकार प्रावश्यक है। जोवन स्तर की उन्नित के लिये जरूरी है सड़कों का होना।

बम्बई में कुछ गांवों का सर्वे हुन्ना था। उसमें यह बतलाया गया कि १०० क्या राष्ट्रक पर खर्च किया जाता है तो उस स्थान की जनता की न्नाय २६७ क्याये सहक पर होने वाली की '१०० रुपये पर बढ़ती है। तो सरकार को यह नहीं सोचना चाहिये कि सहक से स घे हमारी जंब में पैसा नहीं न्नाता। जितनी योजनायें हैं वे जनता के लिये हैं। जनता का जिस कार्य से भला होता है जनता की न्नामबनी बढ़ती है उसने सरकार का भी हित होता है।

इसके ग्रतिरिक्त जो टार्गेट्स हैं, उनको एचीय करना है। आज सीमा पर एक बड़ी विपत्ति ग्रा गयी है। हम बेल बर सोये हुए हैं ग्रीर ग्रभी ठीक करम नहीं उठाया है। जिलों के टुकड़े करने से कोई फायदा नहीं होगा भले ही श्राप इंटेग्रिटी भंग कर हैं। हमारी जो मनी वैज्ञानिक एकता है उसे नहीं टूटना चाहिये। लिहाजा जिलों के टुकड़े करने से कोई फायदा

RE

१९६०-६१ के प्राय-व्ययक में प्रनुदानों के लिये मांगों पर अतदान-प्र नुदान संख्या ३४--लेखा शीर्षक ५०--सार्वजनिक निर्माण-कार्य और ५०--क--राजस्थ में वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, प्रनुदान संख्या ३५--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य-केर्द्राय सड़क निथि से वित्तीय सहायता, प्रनुदान संख्या ३६--लेखा शीर्षक ५०-- नागरिक निर्माण-कार्य ग्रीर ६१--राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्य ग्रीर ६१--राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा ग्रनुदान संख्या ५०--लेखा शीर्षक ६१--राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

नहीं हो सकता। न इससे सीमा की सुरक्षा हो सकती है। लेकिन कछ गलत कब्स सार्वजनिक निर्माण विभाग उठा रहा है। कभी-कभी हम सोचते हैं कि पत्थरों से बहुत काम पड़ता है तो क्या सरकार ग्रीर विभाग दोनों पत्थर हो गये?

श्रत्मोड़े जिले का प्रक्त लूं। वहीं का केवल एक जिले का प्रक्त नहीं है। इसको सड़क केवल पहाड़ की सड़कों नहीं हैं, ये सारे भारत की रक्षा की सड़कों है श्रीर भारत की भाग्य रेखायें है। वहां जो जरूरी सड़कें है वे तो नहीं ली जाती हैं। ली जाती है बेकार का श्रीर खतरनाक टनकपुर का मार्ग है, उसमें खतरा है, वह कच्चा भी है श्रौर कभी भी वह घोखा दे सकता है। उसको लिया जाता है। क्छ महानुभाव जिले के केन्द्र से बात करके श्राये श्रीर उन्होंने निर्णय कर लिया कि टनकपुर को मार्ग ठीक है। कभी-कभी जिले वाले गलत खदर भी देते है। बागेश्वर पर पुल बनाने की सोची जहां सरकार का दूना खर्च हो ग्रीर कल्जोर हो । वहां सरकार ने नहीं जाना, ठीक किया। सीपुलेक तथा कालापानी सड़कों के लिये ५० हजार रुपये का ग्रनदान इस वर्ष रखा गया है ताकि चीनी जल्दी थ्रा सकें । लेकिन हम घारचूले से थ्रागे नहीं जायंगे क्योंकि वहां से आगे सड़क नहीं है । चीनियों के नापाक कदम इस पवित्र भूमि पर पड़े ऐसा न हो, लेकिन जिन सड़कों को लिया जा रहा है उसका नतीजा यही होगा कि दुश्मन की सेना तो थ्रा सके लेकिन हमारी सेना स्रागे न जा सके । उनके लिये मार्ग पहले बन जाय । हम यहां से सब ल फरते हैं तो माननीय मंत्रो जी कहते हैं कि जोपेबिल रोड है। ऐसी जीपेबिल हम नहीं चाहते कि दुरमन को कोई मौका मिले यहाँ भ्राने का। कोई सवाल इसलिये नहीं पूछा ज ता कि हमेशा हमार यह मंशा होती है कि गृह यद्ध हो। लेकिन देश के मामले में जहां ग्राप भी कहते है कि पार्टी लेविल से ऊंचे उठकर हमें काम करना चाहिए, फिर ग्राप एक नजर से क्यों नहीं देखते है ? श्राज श्रापके इंजीनियर्स ठेकेदारों को बहुत परेशान कर रहे है । उनके बिल नहीं बने पा रहे हैं । जैसे मान लीजिये श्रापके प्लान में १० फीट चौड़ी कोई चीज है श्रीर श्रगर वह १५ फीट निकले तो उसके लिये महीनों लग जाते है। इस तरह से कैसे काम चल सकेगा। यह बात मेरी समझ में नहीं श्राती है। पहाड़ों में बाइडिल सड़के हैं जो केवल ६ फीट चौड़ी है उनको ४३४ मील लम्बी बनाने का श्रापका लक्ष्य था लेकिन केवल ४५ मील हो बनाई गई श्रीर वह भी सड़कें बनी हुई थीं केवल उनकी मरम्मत होनी थी। मुबारफ हो श्रापक विभाग को कि इतना लक्ष्य उसने प्राप्त किया है। फिर भ्राप कैसे कहते हैं कि हमने बड़ी तरक्की की है। नतीजा यही हुन्रा कि खोदा पहाड़ श्रौर निकली चुहिया।

मोटर की सड़कों का जो इसमें लक्ष्य रखा गया था वह बिल्क ल पूरा नहीं हो पा रहा है। उदाहरण के लिये देखिये इस पुस्तिका के पृष्ठ ७ पर छुपा हुआ है कि कच्ची ब्राइडिल सड़कें २३ मील श्रीर नई मोटर सड़कें ६८ मील बनानी थी जिनमें खर्चा एक लाख ७५ हजार रुपया हुआ। इतनी जागरूक है हमारी सरकार। दुश्मन ने हजारों मील लम्बं: सड़क बना ली, जब कि उससे पहले हम स्वतंत्र हुये थे। यदि यही हमारी प्रगति है श्रीर इसी तरह ले हम चलेंगे तो देश के साथ एक तरह का घोखा देंगे। यह न सोचिये कि चाऊ-एत-लाई के मुहब्बत भरे पत्र श्राने लगे हैं। इससे श्राप बेहोश न हो जाइये। Keep your powder dry. दुश्मन पर विश्वास नहीं करना चाहिये। राजीनामा कर लें, लेकिन निर्माण-कार्य को न छोड़ें क्योंकि हम भूखें रह सकते हैं, हम नंगे रह सकते हैं लेकिन हम यह नहीं सह सकते हैं कि कल दुश्मन श्राये श्रीर फतह का डंका बजाये। श्रार हमें श्रपने देश का नवनिर्माण करना है तो

[श्री गोविन्दांसह विष्ट] सोमान्त इलाके के लिये विशेष प्रयत्न करना चाहिये। मैंने कहा था कि श्रगर हमारी सेवा चाहिये तो हमें श्रसेम्बली की मेम्बरी नहीं चाहिये श्रीर हम इस्तीफा दे सकते हैं। लेकिन कौन सनने वाला है?

एक बात में मानता हूं कि माननीय मंत्री जो का ध्यान गया था श्रौर उन्होंने उपमंत्री जी को तकलीफ भी दो थी कि हुम से बात कर लें। लेकिन फिर न जाने क्या हुआ? भगवान जाने श्रीमती, जहां सारी बात हो रही हैं वहां में सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं कि इस श्रोर ध्यान दिया जाय कि एक एस० ई० मौक पर जायं श्रौर वहीं वैरीफाई करके सेंक्शन वें चिट्ठियों के श्राने जाने में तो महोनों लग जायंगे। इस डिपार्टमेंट के श्रनसचिव का बहुत श्रच्छा सुझाव था। में यह मानता हूं कि पी० डब्ल्यू० डी० में योग्य श्रादमी हैं। जैसे कार्तिकी प्रसाद, इंजीनियर बहुत योग्य श्रौर ईमानदार हैं। ऐसे इंजीनियरों को तैनात किया जाय श्रौर ठेकेदारों से काम न करा कर विभाग से कराइये जो कुली रखे जायं उनको ३ क्पये मजदूरी दी जाय, कपड़ा दिया जाय। (लाल बत्ती जलने पर) श्रीमन्, मेरे ४ मिनट श्रौर हैं।

श्री ग्रधिष्ठाता--ग्रापके दो मिनट ग्रौर हैं।

श्री गोविन्दिंसह विष्ट---२५ मिनट रोज मिलते हैं। यह तो डेढ़ विन का धनवान है, इसलिये ५ मिनट और वीजिये।

श्री श्रधिष्ठाता--श्रच्छा बोलिये श्राप।

श्री गोविन्दिसिंह विष्ट--में देश की बात कर रह हूं छोटी-छेटी बात नहीं करना चाहना हूं। डिस्ट्रिस्ट बोर्ड के कुलियों की तनख्वाहें नहीं बढ़ी है। साढ़ें तेतिस रुपये उनकी मिलते हैं। वह भी इंसान हैं, उनके भी बच्चे हैं, उनको खाना चाहिये श्रीर उनके बच्चों को शिक्षा चाहिये, उनकी स्थायी सर्विस भी नहीं है। उनके माथे श्रीवरिसयरों का बोझा ढोना है। उनको इन बातों से बचाइये।

दूसरी बात यह है कि हमारी एक गलती हो रही है। श्रगर किसी की पहुंच है तो एक स्रोवरिसयर एग्जिक्यूटिव इंजीनियर हो जाता है। जिसने पांच साल तक रड़की में घास छीली है उसको कुछ नहीं मिलता। तो श्रापस में मनमुटाव होता है। में यह नहीं कहता कि स्रोधरिस्यर को न दीजिये। लेकिन जो योग्य हो उसको दीजिये। नैनीताल में जो घटना हुई, कुछ साल पहले उससे बहुत से लोगों का मन मर गया। श्रंग्रेज क्या करते थे? बहुत हु प्रा स्रोवरिसयर को एस० डी० ग्रो० बना दिया या राय साहब बना दिया। श्राप भी ऐसा हो क्यों नहीं करते? श्रापने भी खिताब शुरू कर दिये हैं।

एक बात श्रीर । इंजीनियरों की प्रार्शी की जांच होनी चाहिये । ईमानदार लीग इसका स्वयं स्वागत करेंगे क्योंकि बदनाम लोगों के साथ ईमानदार भी बदनाम हो रहा है । भ्रष्टाचार तब तक नहीं मिट सकता जब तक विभाग के अंबे से अंबे श्रीक हारी ठीक नहीं है । १६४७ में २० टरस खरीदे गये कि यह बाढ़ में काम श्रायेंगे । कोई योजना नहीं बनाई गई श्रीर २४ हज र क टग के हिसाब से खरीद लिया । किसी इंजीनियर से सलाह लिये बिना, बा कोई योजना बनाये बिना चूंकि एक माननीय मंत्री को श्राने साथी को, जो पाकिस्तान तशरीफ ले जा रहे थे, शौकत उमर जो पाकिस्तान के एक प्रमुख निर्माता इस्कृतानी के नौकर ये उनकी मदद करनी थी। इसलिये ४ लाख द० हजार रुपये के टग खरीदे गये। जबाब सलब हुआ तो चूंकि मिनिस्टर साहब ने श्रपने हाथ से श्रांडर दिया था उसमें हो ही क्या सकता था मगर डिपार्टमेंट को कुछ न कुछ जवाब देना ही था। खरीद के वक्त यहां तक हुआ कि कलकत्ता के एक इंजीनियर साहब थों ही भेजे गये। चूंकि मिनिस्टर साहब का मामला था इससिये उन्होंने रिपोर्ट दे दी कि मामला मेकेनिकली ठीक है। उनमें से तीन काम में श्राये श्रीर बाकी बेकार पड़े रहाँ।

१६६०-६१ के म्राय-ध्याक में प्रनुदाती के लिय मागी पर मतदान-- भ्रनुदान नख्या ३४--लेखा शीर्थक ५०--सार्वजनिक निर्माग-कार्य और ५०--क--राजस्व स वित्त पीतित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, भ्रनुदान सख्या ३५-- लेखा शीर्थक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, भ्रनुदान संख्या ३६--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य भीर द१--राजस्व लेखे से बाहर नागरिक गिर्माण-कार्यों की शूंजी का लेखा तथा भ्रनुदान संख्या ५०--लेखा शीर्षक द१-- राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी---लेखा

श्रम परिस्थिति यह है कि ७० हजार में ६ कि । जा कहा गया कि यह इस्तेमाल क्यों नहीं होते तो कन्ते हैं कि श्रव पुल बहु । यन गये हैं । इन लिये इन की जरूरत नहीं हैं । लेकिन पता लगा कि वह यहा की निर्धि में का अर तक रेगोग्य नहीं है, वरन स्थिर जल के लिये बन ये । बहु ता स्थुद्र हे िये बने थे। लेकिन चूंकि एक दोस्त की भदद करनों भी इसलिये ४ लाख द० हजार रूपया बरबाद कर दिया गया।

रायत होटल की कीनत ३ गांव बताई गई। लेकिन उमें बढ़ा कर गवा जात लाल कर मालिक को ग्रदा किया। ग्या। ऐसी भ्रष्टाचार की ग्रनेक घटनाये हैं जो तर्वोच्च पद पर ग्राक्षोन लोग करते रहें हैं। जब तक विभाग का ऊंचे से ऊंचा ग्रादमी ऐसा करेगा तब तक भ्रष्टाचार जिसी तरह से दूर नहीं हो मकता। छोटो में किसी ने सी लिये, किमी ने हजार या दो हजार ने लिये यह तो बुरा है ही। लेकिन जब बड़े लोग ताखों ग्रोर करोड़ो का वारा न्यारा करने लगें ग्रोर जनना की खूा पसीने की कमाई की बटाई उनके दोस्तों में हो, ग्रीर कोई जाख न हो तो यह एक गंधेर की बात है। इसकी जांच करवायें। ग्रगर कपया वसूल न होगा तो कत को हम या ग्रीर कोई ग्रायों। हम इसको भून नहीं सकते। देश की जनता के पैसे का दुक्पयोग होना हम भूल नहीं सकते। एक एक फाइन निकलवायेंगे ग्रीर देवेगे। भगवान करें ग्राज के शासक ल ग उस दिन जिंदा रहें। कहीं किसी ने खुदागंज का टिकट जटा लिया तो हमें निर्णय में बड़ी मुक्किल होगी।

रामगंगा पुल के लिये २१०० र० की रिनग फुट के हिराब से मागा गया। उसकी सेंड केसी है, राक कैसी है फितने बड़े श्राचं है इसका कोई ध्यान नहीं रण्ला गया। कितने कलवर्ट बने थे ? क्या स्ट्रेस ग्रौर क्या स्ट्रेन होगा ? लेकिन कोई संतोषजनक जवाब नहीं विया गया। कहा गया कि साइट पर कोई जगह नहीं थी। इसलिये श्रस्थायी विल्डिंग बना वी हमने। श्रांडिट का श्रांडिंगकान श्राया। ७५ हजार रुप्या हैते श्रापने बिना लेजिस्लेचर के संकान के खर्च कर विया ? यह भी तो नहीं कहा जा सकता कि यह तो टैम्पोररी बिल्डिंग्स थीं। न यह उसी २१०० रुप फी रिनंग फुड़ के हिसाब के श्रंदर श्रा सकती थीं। श्रीर बड़े ताज्जुब की बात यह है कि जनता से कहा गया कि पुल इंजीनियरों के बंगलों से ५ मील के श्रंन्टर है लेकिन उसे ५ मील से थोड़ा बाहर बनाया गया। इसलिये कि ५ मील के भीतर भत्ता नहीं मिलता। ये सब खुले श्राम काम है श्रीर ऐसे एक नहीं श्रानेक काम हैं। उसमें एस० डी० श्रो० के क्वार्टर श्रीर श्रीर बहुतरे क्वार्टर ह जो पक्ष बने हुये मौजूद है। जिनका पता मैंने मौके पर जाकर लगाया। तो ऐसी गलत बाते नहीं की जानी चाहिये। इन शब्दों के साथ मैं श्रावरणीय सदन से प्रार्थना करूंगा कि में इस कटौती के प्रस्ताव को वह स्वीकार करे।

श्री गोविन्दसहाय (जिला बिजनौर)—श्रिविष्ठात्री महोवया. म श्रापका श्राभारी हूं कि श्रापने इस महत्वपूर्ण विषय के ऊपर मुझे श्रपने विचार व्यक्त करने का मौका दिया। जहां तक पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट का ताल्लुक है उस मुहकमें के बारे में पिछाने दस, बारह साल से काफी याते हम सुनते श्रायें है श्रोर काम इस मुहकमें ने इस माने में भच्छा किया है मगर बदकिश्मती है कि नाम इसका कुछ ज्यादा बदनाम है। मुस्तिलिफ नामों से इस सदन के इधर श्रौर उधर होनों तरफ बैठने वाले लोगों ने इसको पुकारा है। किन्हीं का क्याल है कि यह पब्लिक वेस्ट

[श्री गो।वन्दसहाय]
डिपार्ट मेंट है, कोई कहता है कि प्लंडर विदाउट उंजर है। मुस्तिनिफ उपाधियां इवर श्रीर उबर से दी गई। लेकिन में ऐसा नहीं समस्रा। इस मुहक ने बहुत काफी श्राप्ते गम्म भी किये है। सगर इसकी कुछ समस्यापें हैं, कुछ बातें है जिनके वारे में भारा परता हूं कि हमें सोचना होगा और उन श्रुटियों को दूर करना होगा। में उन्हें चार हिन्सों में गारता हूं। चार समस्यायें इसकी में मौलिक रूप से समझता हूं।

पहली तो है देरी की समस्या। वुकानिक वक्त यह कहा गया कि का ।। इस्तेमाल नही किया जा सकता। चाहे रुपया सेन्द्रत गर्नाभेट मे श्राक्ष, गाहे यह रुग्या इस स न ने भास किया,लेकिन उस रुपये को हेम खर्च नहीं करणाते। तो विकित नात दें कि तमे का समले पर वीच वा पड़ेगा कि इस देरी की समस्या पर कैं। तृत्वी रुप्रा जाय । पे सोचता हूं के देवा ह भारण जो है बहु हमारी काम करने की जो प्रगानी है उसे या तो उपने पारा न ही है सा अप के उपर मजबूती के साथ में उसे बदजने में जटे नहीं हैं। जी पुष यहा प पास होता जो प्रोगी जल्स पास होते है बर्इंजीनियरिंग के भुहकमे पे जब जाते है तो फिर वहा से लौट कर फाउँ र र र र है। एक, डेंढ़ जहीं ने बाद तो कागन चलता है, फिर वहां जाता है। जरा से फिर उर एक ग्राइ अ फाइनेस डियोर्टमें इसे जाता है। यानी पहले श्रेपने मुहकेने म जाता है प्रीर फिर फ इनेंग डिपार्टमेंट में जाता है। फिर उसका एक ऐउपिनिस्ट्रेटिव प्रार्ड र होता है। इस लग्ह से पात्र, छः महीने का समय निकल जाता है और बा की जो चार-पाच अहीने बचने है उसमें सिर पर अन सदार होता है कि काम जल्दी खत्म करना है, कैने खत्म किया जाय ? उस यक्त भाग दाउँ मचनी हैं कि जल्बी से जल्दी इसे खत्म कर डाली। मुझे बड़ी खुनी नुई कि श्रमी हमारे म री महोदप नै यह कहा कि इस मसले पर वह गौर कर रहे है और इप केमी की पूर करने भी मीजिया पर रहे मगर म्राजकल स्पीड का जमाना है। ते ती से कार्य करने ही होशिश भार नहीं तरेगे भ्रौर तेजी से गीर करके उसे नहीं बदलेंगे तो हालात भ्रापको बदल पेंगे । अन्य के एटामिक एज में बुलक कार्ट थिकिंग काम नहीं दे सकती। अलक पार्ट की स्पीड की भार गन्नार है तो उससे काम नहीं चतेगा। में समझता हं कि इम देरी पर की ठावी हुन्ना जाय, ऋभी तक संजीदगी के साथ जुटकर इसके अपर गौर नहीं किया गया है । मेरा ऐसा रेपान है कि या एक प्रोसीजर की बात है। कुछ ऐसा प्रोमीजर सिम्प्लीफाइड बनाया जाय जिसमें कि रक्षीम लारी तीन महीने में मंजूर हो जाय ग्रौर बाकी ६ भड़ीने कांस्ट्रक्शन हो । मिनिस्टर महोदय ने कहा हूं कि इस पर भी वह रोशनी डाले कि किस तरह से इस देरी के प्राव्यम पर यह हानी जोना वाहते हैं।

वूसरा प्राब्लेम करण्डान का है। मेरे खयाल में किसी महक में में करण्डान लीगलाइज नहीं है। करण्डान के लिये लोग यह समझते हों कि इसका करना पाप नहीं है ऐसा कोई महकमा नहीं है। सारे महकमों में इसको एक पाप समझा जाता है। पर उस पर हावी नहीं हुआ जाता। इस चीज ने महकमों में लोगों के कांडोन्स को कित कर दिया है। लोग यह महसूस करते हैं कि ५ परसेन्ट, २।। परसेन्ट ठेके दे।र से भोवरसियर को दिलाना और ओवरसियर का इंजीनियर को देना यह कोई करण्डान की प्रीक्टस नहीं है। यह एक रोटीन है। यह खतरनाक मर्ज है। इस महक में यह मर्ज कानिक हो गया है जिसको करने में उनको कोई बुराई नहीं मालूम होती है और उनके जीवन की यह एक साधारण कार्य प्रणाली है। में समझता हूं इसके ऊपर काफी सन्जीदगी के साथ गौर करना होगा। इसके वास्ते मेरा ह्याल है कि ठेके दारे का क्या इन्टरेस्ट है? ठेके दार का इन्टरेस्ट उसका प्राफिट है। वह प्राफिट के बीछे जाता है। उसके सामने कोई भावशं नहीं है। उसके सामने बही इन्टरेस्ट रहता है कि किस तरह से बहु भएने प्राफिट की बढ़ाये? अपने इस प्राफिट की बढ़ाये है। अपने इस प्राफिट की बढ़ाये?

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-भ्रनुदान ५३ संख्या ३४--लेखा द्वीर्यक ५०--सार्वजिनक निर्माण-कार्य भ्रोर ५०--क-- राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, भ्रनुदान संख्या ३५--लेखा द्वीर्थक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रीय सड़क निष्ध से बितीय सह,यता, श्रनुदान संख्या ३६--लेखा द्वीर्थक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य और ६१ --राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा भ्रनुदान संख्या ५०--लेखा द्वीर्थक ६१-- राजस्व लेखे के वाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी--लेखा

महीं करता है बिल्क सारे एडिमिनिस्ट्रेशन को भी करण्ट करता है और नये नये तरीके से उसके असरात शासन में आते हैं। में समझता हूं इस बीच की ठेकेंदार की एजेन्सी को इस मुताित्वक इस्तेमाल करने की जरूरत नहीं है चाहं भाप कोग्रापरेटिय को या किसी और एजेन्सी को यह काम देना चाहें तो वें। आपका महकमा इस बात को सोचे लेकिन में यह समझता हूं कि बहुत ही सन्जीदगी से आपको यह सोचना पड़ेगा। कोग्रापरेशन को अगर ही इन्ट्रोड्यूस करने की जरूरत है तो इस महकमें को सब से ज्यादा जरूरत है। कोग्रापरेटिय को या और नान-आफिशियल एजेन्सी हो, जिनको आप पसन्य करे, यह काम दिया जाय।

साथ ही में यह भी समझता हूं कि श्रापका महकमा उस नये तरीके को विफल हानाने में कोई कमी नहीं एखेगा । जाहिए बात है कि जो सिस्टम बन जाता है फिर वह दूसरे सिस्टम के पैर नहीं जमने देता है क्योंकि जिन लोगों को उससे फायदा होता है वह उसको विफल बनाने में पूरी मदद करते हैं। पुते यह मालूम हुआ है कि इस तरफ कुछ कोशिश की गई लेकिन कोशिश कामयाब नहीं हुई। यही तरीका होता है किसी चीज को विफल करने का। ऐसे हालात पैदा कर दिये जाते है कि वह विफल हो। में यह भी मानने के लिये तैयार नहीं हूं कि इस महकमें में ही करण्यान है। वूसरे महकमों में भी करण्यान है। इस महकमें में कम है थ्रौर दूसरे महकमों में ज्यादा ह या इस महकमें में ज्यादा है और उसमें कम है में इस बहस में जाना नहीं चाहता। लेकिन यह अर्ज करना चाहता हूं कि यह हमारे सोचने का विषय है। इस महकमें में करण्यान को करण्यान नहीं समझा जाता है। वहां पर करण्यान जिन्दगी का जुज समझा जाता है जो कि एक बहुत खतरनाक चीज है। इसलिये इन चीजों की तरफ श्रापको कोई कदम बहुत तेजी से उठाना पड़ेगा क्योंकि यह रोग पुराना हो गया है और श्रासानी से नहीं जायगा। "Chronic descare requires radical operation" वनकते ले जाम नहीं चले। जैसा यह मर्ज है वैसी ही इसके लिये दवा सोचने की जङरत है। इसके लिये रेडिकल ट्रीटमेन्ट की जरूरत है । में उम्मीद करता हूं कि इस सिम्त में कुछ कदम उठाये जायगे।

तीसरी चीज इस महकमे में कंस्ट्रकान कास्ट की है कि इसको कैसे कम किया जाय ? में कोई टेक्निकल श्रावमी नहीं हूं लेकिन इतना जरूर समझता हूं कि हमारे जो इंजीनियर है उनके खयालात श्राज की बुनिया में कुछ ऐन्टीक्वेटेड से हो गये हैं। उनका कुछ पुराने तरीके से सोचने का ढंग है। श्राजकल टेक्नालाजी में जिस तरह से बुनिया तरक्की कर रही है उसमें इंजीनियर बहुत कुछ सोच रहे हैं कि किस तरह से कास्ट श्राफ कंस्ट्रकान को कम किया जाय श्रीर किस तरह से मेंटीरियल को बचाया जाय। इंजीनियरों को इस पर गौर करना होगा कि किस तरह से लोहे के इस्तेमाल को बिल्डिंग में कम करायें। स्टील को खरीदने के लिये हमको एक्सचेन्ज की जरूरत पड़ती है। कंस्ट्रकान कास्ट को २,४ नौकरों को कम करके कम नहीं किया जा सकता है। इसमें हमारे इंजीनियरों को देखना होगा कि मौजूदा जमाने में इंजीनियरिंग दुनियां में किस तरह से स्टील को रिप्लेस कर रहे हैं। उसके श्रन्वर उनको होशियारी दिखानी होगी ताकि यह कास्ट आफ कस्ट्रकान कम हो ताकि देश का फायदा हो। जो इंजीनियर इस तरफ रिसर्च करें उनको प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये।

### [श्री गोविन्दसहाय]

चौथी चीज में यह समझता हूं कि इजोनियर्स का प्राकित्तर न काई रवल नहीं है। जब में दारूलशफा की इमारत देखता हूं तो भालूम होना है कि उस त फ उत्तर का विकास नहीं है। इापिकल कंट्रीज के लिये कसे मकान होने चात्रिये इप तरफ उन्होंने सोचा तो नहीं है। यह मकान ठंडे मुल्कों के लिये हैं। इसमें हम अपने बीजा बच्यों को नती रण सकते हैं। एक कबूतरखाना बना हुआ है, हमारी स्वायल के नजदीक हमारा आफिटेक होना जाहिये, जिसका वास्ता हमारी कल्चर से, अपनी हमारी रोजमर्रा की जिन्दगी में हो। कम में न यह प्राली शान इमारत द्रापिकल कंट्रीज के लिए तो आउट आफ हे हा। मनाम का परना वहा की जागरफिकल कंडीशन्स से, बनाइमेंट से होना चाहिये, चेकि हा कि तर कार परना वहा की हमारे इंजीनियर्स ने कोई कंट्रीव्यूशन नहा दिया है। उत्तर्भ कर कार पर परने से सकती है, केसे वे हमारी आबोहवा के अनु गर बन, इन बात का परने ना ना ना निह्मा

श्राखिरी बात में रुडकी यूनिर्वासटी के बारे में कहरा गा, ता ह पाठणका के टेक्निकल साइड में में नही जाता लेकिन लडको का जो गा रहा गहा है, जो उनका थिंकिंग प्रोसेस है वह वही है जो अप्रेजों के जमाने में था। जो सा जो की नारोम वहा पहले होती थी, वही आज भी उसी तरह से चल रही है। यगर हम याजावी के इन १०, १२ सालों में कोई इंपेक्ट अपना उन शिक्षा के स्थान पर गहा ज़ानियम बनते हैं, प्रगण नहीं कर पाये हैं तो हमारा कोई कंट्रीब्यूशन उसमें नहीं हैं। यही पन पा मन जर देने से ही कोई कंट्रीब्यूशन नहीं होता? रुपया जिस के पाम हो बही पन पा पर मुण्णिर के ता है। तो में चाहुंगा कि रुड़की यूनिर्वासटी इस दिशा में कुन्न सबक तो।

\*राजा वीरेन्द्रशाह (जिला जालीन)—जो ध्रनदान सरणार गा प्रार स पराह स उसके समर्थन में खड़ा हुआ हू। श्रीमन्, में समझता हू कि यह रिरास मा श्रनदान प्रांधक से ध्रिषक होना चाहिये। जो कार्य किये गये हैं, वे सराहनीय हु श्रीर उन में रिष्य म मानतीय मंत्री जी को बधाई देता हूं, लेकिन देहात के लिये कहना चाहता हूं कि उसकी नीति उपेक्षा की रही है। जो पुस्तिका बाटी गयी है उसमें बीफ इजीनियर साहच न रिराह कि यानायात की सुविधायें नहीं है और उन से खाद्य पदार्था की उन्तित का बाधा पहुनती ह और यह सब कृषकों पर एक प्रकार से प्रहार करता है। ता श्रगर इन मगरा पर पहले ध्यान दिया जाय तो प्रधिक उत्तम होगा।

में श्रपने जिले की ही बात बतलाऊ। वहां सरकार थी नांति प्रेशत क प्रांत उदामीनता की रही है और में बतलाना चाहता हूं कि जब तक वहा यातायात का स्पार थीर विस्तार नहीं किया जायगा तब तक वेहात की उन्नति नहीं हो सकती थ्रोर न प्रान्त गा पत्याण हा सकता है। मेरे जिले में एक सड़क द्वारा उरई श्रीर राठ को श्रापने मिलाया। उरई का इलाका हमीरपुर से मिला हुश्रा है। उस सड़क को ग्रापने ले लिया। श्रगर श्राप उस सड़क को न लेकर ऐसी सड़क लेते जो ४२ मील को बूरी पर ह जिता म ता श्रीक फायदा होता। मुझे बड़े युख के साथ कहना पड़ता है कि पहली पचवर्गीय योजना में जो सड़क ली जाने वाली थी वह दितीय योजना में भी पूरी नहीं हुई श्रीर शायद तोसरी योजना में भी पूरी हो इसका भगवान ही मालिक है। उसके लिये हमने श्रमदान किया ४३ हजार रुपया कंट्रीच्यूशन का जमा है विभाग में इन सब के होते हुये श्रीमन्, इतनी प्रगति हुई कि मुक्किल ने दो मील लम्बी सड़क बन पायी है। यह श्रापकी प्रगति हुई है। इसे देख कर श्रीमन्, दुख होता है। पुस्तको में यह लिख दिया जाता है कि इतनी मील लम्बी सड़के बन पायी है। यह श्रापकी प्रगति है है। इसे देख कर श्रीमन्, दुख होता है। पुस्तको में यह लिख दिया जाता है कि इतनी मील लम्बी सड़के बन गयी है लेकिन जो हालत है उसकी चेख कर बुख होता है। श्रगर श्राप चाह ती जितना श्रमुदान श्राप पास करते है उसी में ग्रगर श्राप वहां के लोगों से श्राय लेकर उनके ती जितना श्रमुदान श्राप पास करते है उसी में ग्रगर श्राप वहां के लोगों से श्राय लेकर उनके

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण मही किया।

हिसाब से कार्य करें तो श्राप बहुत कुछ कर सकते हैं। इसके लिये माननीय मंत्री जी बतायें कि श्रापने क्या तरीका रखा हं? एक साहब एक बार श्रंतरिम जिला परिषद् में श्राये श्रीर वहां के लोगों से कुछ राय मशितरा किया श्रीर उनसे उनकी राय मांगी। लेकिन श्रंतरिम जिला परिषद् ने जिस सड़क के लिय राय दी थी मदारीपुर से कालपी की सड़क के लिये उसकी श्रापने नहीं मानः। श्रगर श्राप वहां पर सड़क बना बेते तो वहां यातायात को सुविधा होती श्रीर ला एन्ड श्रार्डर को मेन्टेन करने में जो परेशानी होती है वह भो न होती। लेकिन उस तरफ श्रापने कतई ध्यान नहीं दिया। में जानता हं वहां से कुछ पास होकर श्राता है श्राप उसमें परिवर्तन कर देते है।

एक बान मैं पुलों के बारे में कहना चाहता हूं। जालौन जिले में एक गांव गोपालपुर है जो मध्य प्रवेश के बार्डर पर है। उस तरफ मध्य प्रवेश से एक सड़क आ गयी है बो मील की। वहां पर एक नहर पर पुल बनाने की आवश्यकता है। अगर वह पुल बन जाय तो उससे यातायात की सुविधा हो सकती है और उससे फिर जितना वहां का रोजगार है वह हमारे जिले में होगा। ला ऐन्ड आर्डर की जो दिक्कत होती है वह भी नहीं रहेगी। अगर वह पुल बनाया जा मतो उसमें मध्य प्रवेश की सरकार भी आपको कुछ सहायता दे सफेगी। इसलिये यह पुल बनना चाहिये।

एक बात श्रीमन्, में यह कहना चाहता हूं जेसा कि माननीय गोविन्द सहाय जी ने कहा है हमारा जो काम होता है उसमें देरी होती है। मैं, श्रीमन्, यह चाहता हूं कि जब बजट घाता है छौर उसमें जिस स्कीम को ग्राप लाना चाहते हैं उसका पहले ग्रापको ऐस्टीमेट मंगा लेना चाहिये। ग्रापको तैयार हो कर ग्राना चाहिये पहले से कि इन इन चीजों को ग्रापको लेना है। इसलिये जैसे हो वह रकम पास हो फौरन ही फाइनेन्स डिपार्टमेन्ट को भेज देनी चाहिये ताकि उस पर तुरन्त कार्यवाही हो सके। ग्रापके यहां यातायात की कनी है ग्रीर इसके लिये बम्बई के एक एक्सपर्ट की राय है कि ग्रापके यहां यातायात की कभी के कारण ग्रापको प्लानिंग की बहुत सी चीजे पूरी नहीं हो सकती। इसलिये में यह फहना चाहता हूं कि जित्र समय भो ग्राप कोई ग्रान्ट लायें उस समय यह देखें कि ग्रापकी स्कीम्स पूरी तरह मुकम्मिल हों। ग्रान्ट ग्राप तभी पेश करें जब ग्रापकी स्कीम्स पूरी तरह मुकम्मिल हों।

इन हे अन्या जंसा कि माननीय गोविन्द सहाय जी ने कहा हमारे यहां बहुत से ऐसे ठेकेदार मौजूद मुँ जो अच्छा अच्छा काम कर सकते हैं। तो क्यों नहीं उन पर आप इतिमनान करते? उनका नियंत्र ग कीजिये और उनको ठे हे पर बीजिये। सारा काम शिमाग से होना असंभव भी हैं। क्योंकि अंग्रेजों के जसाने मे थोड़ा काम होता था। अब ऐसा की जिये कि लोगों को जिससे उत्साह मिने। को आपरेटिव सोसाइटियां है, उनको भी दीजिये, में यह नहीं कहता कि न दीजिये, लेकिन यह कहना कि फाम नहीं होता तो इसिनये नहीं होता कि वह ही नहीं, और जितनी स्कीमें हमारे जिले में बनीं बुर्माग्य से समक्षिये कि बुंदेलखंड में सबसे कम सड़कें और सब से कम पुल बने हे और उतनी ही तकलीफ जनता को हं जितनी कि स्वतन्त्रता के पहले थी। में आशा करता हूं कि हमारे यहां के डिज्टी मिनिस्टर भी हं, वह इसका ख्याल करेंगे कि बुंदेलखंड के लिए ज्यादा सहायता दी जाय।

श्री चन्द्रसिंह रावत (जिला गढ़पाल)—पान नीया प्रविष्ठात्री महोवपा, पै परतृत स्रमुदानों का समर्थन करता हूं श्रीर माननीय मंत्री जो का ध्यान पहाड़ो क्षेत्र का श्रोर श्राकृषित करना चाहता हूं। क्योंकि उस पहाड़ के श्रंवल में यातायात की प्रमुतियायें इ ारी अधिक है कि वहां के लोग वरसात के दिनों में नदों के वार-पार बस्तियां होंते हुत्रे भी ६-६ गही रे तक एक दूसरे से न तो मिल पाते हैं श्रोर जाना हुत्रा तो २४-२४ मील एक कि नारे होकर, चीतिया दूने श्रड़तालीस मील की दूरी तय करके उस गांव के पार पहुंच पाते हैं। इनो प्रकार मड़कों की इ नी श्रमुविधायें है कि श्राज के जमाने तक जहां श्राप लोगों को गेहूं १६ हपया मन सिल ता है, में श्राप को बताना चाहता हूं कि हमें की सन पर कहीं किराया ढुलाई १२ कपया, कहीं १६ राया, कहीं १८ राया, कहीं १८ राया, कहीं १८ राया श्री के पार की समक्ष प्रकार है।

यहां पर शायद मंत्री महोदय श्रीर दूसरे लोग यह सकतो है कि ये लोग केवल इसेलिये चिल्लाते हैं कि ये श्रश्चिक चाहते हैं। मैं श्राप से ीिहाया प्रदब के साथ यह दरख्वास्त करना चाहता हूं कि मैंने श्राज नहीं, १० या पहले इस जगह से यह प्रार्थना की थी कि ग्रांव हमें यह बता वाजि है कि हमोरे विकास की घड़ी कौन होगी, कीन सा महीता, कीन सो तारोय होती? २-२ सौ साल तक बेट कर सकते हैं तो श्रीर दो, चार साल बेट कर सहने रूं। १० सान बेट किया, लेकिन ग्रभी तक सरकार ने यह नहीं बताया कि हमारी मुपीबतों का समाप्त करने के निये कौन सी घड़ी होगी ? में क्यों इस बात को कहता हूं ? इसलिये कि सरकार अहसूत नहीं फरती है। यह जरूरों नहीं है कि यह सरकार फिर हुतूमत करे, का दूबरो ग्रा सकती ह न्रीर उसकी प्लानिंग दूसरी तरह की ही सकती है और हम फिर ग्रोर श्रिधिक पीछे जिख्ड सकते हैं। श्राज जो यह सरकार समझती है कि हम कर ही लेंगे, यह जो श्राय के दिमाग ने के उना है यह बिलकुल गलत है। हमारी बहुत सी मुसीबतों की तरफ जी १० साल से चल रा ग्रामंहर, सरकार का ध्यान ग्रभी तक कतई उस ग्रोर गया नहीं है । हमारे पहाड़ी प्रान्त में हमारे चार्क उंजानियर डिस्ट्रक्ट इंजीनियर रहे हैं। उनको मालूम है कि एक क्षेत्र है यहां जिसको राठ कहा जाता है। उस स्रोर से स्रगर हमें स्रल्मोड़ा जाना होता है तो स्रल्मोड़ा स्रोर गढ़ गल का पहले डायरेक्ट यातायात का साधन था, लेकिन भ्राज भ्रत्नोड़ा पहचने के लिये जोकि हमारे बगल में ही है, हमको ६ जिले पार करके सातवें जिले श्रहमोड़ा में जाना पट्ना है । मैने सैंकड़ों बार इस सदन में मंत्री महोदय से प्रार्थना की कि श्राप को इस क्षेत्र का तरक श्रवश्य घ्यान ले जाना चाहिये। मैंने इसके मुत्ताल्लिक एक पत्र पंडित जवाहरलाल नेहरू की लिखा श्रीर उनका पत्र मेरे पास भ्राया कि वह पत्र उन्होंने डाक्टर सम्पूर्णानन्द को को भेत दिया। डाक्टर सम्पूर्णानन्द जी का लिखा मेरे पास मौजूद है। उन्होंने कहा कि मैने भाननीय गिरपारी लाल जी से इसके मुत्तािल्लक कह दिया है श्रीर वह सड़क की व्यवस्था कर देंगे। लेकिन मुते खेंद है कि स्राज तक उस परकोई कार्यवाही नहीं की गयी। हमारी मातास्रोंस्रोरबहुनों ने जब उनकी श्रनाज की कमी हुई तब कुदाल, सबल और गैती लेकर सड़क का निर्माण किया श्रीर बांधाट से लेकर पौड़ी तक २६ मील की सड़क है, जो चीफ इंजीनियर इस प्रदेश के है उनकी पता है, उस सड़क की वाइडेन फरके मोटरेबिल बना दिया गया है। हम लोग सरकार की तरफ मे जनता में प्रचार करते हैं कि लोगों को श्रमदान करना चाहिये। में कहता हूं कि यह कितने दाम का बात है कि हम लोगों से तो श्रमदान-श्रमदान की बातें करते हैं ग्रीर जब जनता श्रमदान करती है तो सरकार उस श्रमदान के कार्य को सम्हाल नहीं सकतो। यह कितने दुख को बात है। श्रास्त्रिर हम लोग जो मुल्क को सम्हालना चाहते हैं उन्हे अपने दिमागों और दिलों को भातो देखना चाहिये। जी मुल्क की सम्हालना चाहते हैं वे पहले श्रयने की खुद सम्हालें। श्रयर हम खुद अपने को नहीं सम्हाल सकते तो इस मुल्क को सम्हालने के काबिल नहीं है। इसलिये में निहायत श्रदब से दरस्वास्त करूंगा कि हमें बताया जाय कि हमारो उन मुसाबतों के श्रन्त के लिये कौन सी घड़ी है, हम को यह सदन में बताया जाना चाहिये।

हम स्वतन्त्र मुल्क के नागरिक हैं, हम गुलाम नहीं हैं। जो कोई हमको गुलाम समझता है वह हमारे मुल्क के साथ अन्याय करता है, भारतवर्ष के संविधान के प्रति अन्याय करता है, १९६०-६१ के म्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--भ्रनुदान संख्या ३४--लेबा शीर्बक ५०--सार्वजनिक निर्माण-कार्य भ्रौर ५०--क--राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, श्रनुदान संख्या३५--लेबा शीर्बक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, श्रनुदान संख्या ३६--लेबा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य श्रौर द१--राजस्व लेबे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा श्रनुदान संख्या ५०--लेखा शीर्षक द१--राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी लेखा

वह जुर्मदार है और उसकी ट्रायल होनी चाहिये खुली श्रदालत में। हम यहां बकने के लिये नहीं श्राये हैं। हम इस सदन के सदस्य हैं और मुल्क की समस्याओं पर प्रकाश डालते हैं। यह कोई पागलखाना तो है नहीं, यह कोई बरेली और श्रागरे का जेल नहीं है श्रीर श्रगर यह जेल नहीं है तो मैं पूछना चाहता हूं कि जो यहां पर किमयां दिखाई जाती हैं उन पर सरकार की ध्यान देना चाहिये या नहीं ? श्रगर दिया है तो उसका क्या नतीजा हुआ। यह हमको श्राज तक क्यों नहीं बताया गया ?

श्रव में बताना चाहता हूं कि हमारे यहां डेमोकें ती है, हमारे यहां पंवायतराज है। ठीक है, किताब में लिख दिया, कानून बना दिया डिमोकेंटिक किस्म का लेकिन श्रनिडमोकेंटिक श्रने बिहेवियर में हों तो मुझे बड़ी ग्लानि होती है इस देश की जहनियत के ऊपर कि किस तरह से पढ़े लिखे लोग बरताव करते हैं। जब मैं माननीय मंत्री जी के नास गया श्रीर मैने माननीय मंत्री जी से श्रनी मुसीबतों का जिक किया तो में श्रापके पास डिमोकेंटिक किस्म का मनुष्य समझ कर गया था लेकिन ऐसे डिमोकेंटिव गवर्नमेंट के मिनिस्टर साहब के श्रनिडमोकेंटिक बर्ताव के ऊपर में प्रकाश डालना चाहता हूं। मुझसे कहा गया कि नहीं यह काम नहीं होगा, नहीं किया जायगा।

"It is most undemocratic shameful for the Government, shameful for the Country."

जिसको हम ग्रौर कोई पसन्द नहीं करते। हम इस प्रकार किसी मंत्री के ग्रान्डेमोकेटिक बिहेवियर को बर्दाश्त नहीं कर सकते। हम स्वतन्त्र भारत के नागरिक हैं। हम इस माननीय सदन के सदस्य है जो हमसे इस तरह से मंत्रियों के बर्ताव को टालरेट करने को कहते हैं वे मुल्क के साथ ग्रन्याय करते हैं, हमारे साथ भी ग्रन्याय करते हैं। तुम यदि मुल्क को भूल सकते हो तो भुल्क तुमको भूल जायगा। हम कहते हैं कि ग्राज की रिपोर्ट में यह लिखा जायगा कि यह मुल्क तुमको भूल जायगा। यह बड़े दु ख की बात है कि पंडित जवाहरलाल नेहरू की हुक्मस में होते हुये दिल्ली में हमारी पालियामेंट होते हुये, स्वतन्त्र भारत के नागरिक होते हुये, हम लोगों के साथ यह ग्रत्याचार कि हमको गुलाम समझा जाता है ग्रौर हमारे त्याग ग्रौर तपस्या के ऊरर कुठाराघात किया जाता है। में बताना चाहता हूं कि तुम ने कांग्रेस को मुर्दा बना दिया है ग्रौर देश का ग्रादमी जब तुम से बदला लेगा तब तुम्हारी हुकूमत टिक नहीं सकती। ग्राज तुमने कांग्रेस की जड़ों को हिला हिला कर खोखला कर दिया। कोई भी मंत्री हो, कोई भी ग्राफिसर हो जो इस प्रकार का बर्ताव करता है वह इस मुल्क की ग्रौर जम्हूरियत की जड़ों को खोदता है ग्रौर इस मुल्क को गुलाम बनाता है।

में इस प्रकार के विहे वियर को कन्डेम करता हूं, उस ताकत से जो कि भगवान ने हमको इन्साफ करने के लिये वी है। हम इस सदन में देश के साथ इन्साफ करने के लिये बैठे हैं। हम सर का घ्यान देश की मुसीबतों की तरफ दिलाते हैं। हमारे यहां पौड़ी में लोगों को पीने का पानी नहीं मिलता है, श्राठ श्राने का एक घड़ा खरीदना पड़ता है श्रीर श्रव मई, जून का महीना फिर श्राने वाला है। क्या हम सूरत दिखाने के लिये इस सदन में श्राते हैं? या हम इस सदन में सरकार की सूरत देखने के लिये श्राते हैं? हरिंगज नहीं। जो मुक्क के साथ इन्साफ नहीं करना चाहता वह हट जाय, उसको हमारे मुक्क में जगह नहीं मिलनी चाहिये। जो कोई भी हमको कुचलना चाहेगा हम उसको टालरेट नहीं करेंगे। जो कोई भी हमारी देश के प्रति श्रम्छी भावनाश्रों श्रीर प्रम को खत्म करना चाहता है उसको हम टालरेट नहीं करेंगे।

\*श्री शिव प्रसाद नागर—प्रिघ्छात्री महोदया, मैं माननीय गोविन्दिसिह विष्ट के कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करते हुये निवेदन करना चाहता हूं कि ग्राज इस समय इस सदन में मैंने माननीय चन्द्रितिह रावत का जो भाषण सुना—जोिक कांग्रेस के एक कर्मठ ने ना है—उससे ऐसा मालूम हुग्रा कि इवर से जितनी बातें हम लोग कहा करते थे वही ग्राज सच्चाई के रूप में उघर से छा रही हैं। इन सब बातों के साथ-प्राथ में निवेदन करना चाहता हूं कि जिस समय हमारी केन्द्रीय सरकार ने इन विकात योजनाग्रों के ग्रन्तर्गत पी०डब्लू ०डी० के काम पर प्रकाश डांत्रा तो उन्होंने एक जगह पर कहा है: "यह सम्भव है कि ज्यों-ज्यों योजना का काम ग्रागे बढ़े, त्यों-त्यों नीति ग्रीर वृष्टिकोण की बजाय प्रशासन ग्रीर संघटन के विश्व में कठिन प्रश्न पेश ग्राते रहेंगे। दूपरी पंचवर्षीय योजना काल में प्रशासन के मुख्य कार्य यह है (१) प्रशासन में ईमानदारी की स्थापना ...." तो इस तरक सदन का ध्यान ग्रा क्वित करते हुये ईम।नदारी के बारे में इस विभाग के कुछ मामलात ग्रापके सम्मुख रखना चाहता हूं।

प्राक्कलन सिमिति की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि एक सड़क जो कि चुर्क सीमेट फैस्टरी के पास बनाई गई थी वह केंवल तीन मील की थी। तो उस तीन मील की सड़क के उपर सिर्फ ६३ हजार रुग्या फी मील के हिसाब से एस्टीमेट रखा गया था। मगर किसी वजह से मार्गबदलना पड़ा ग्रौर जब मार्ग बदला गया तो ग्राधा मील सड़क बढ़ गई। फिर उस सड़क पर १ लाख १५ हजार रुग्या ग्रिधिक खर्च किया गया। तो ६३ हजार रुप्या तो उस समय खर्च किया गया फी मील के हिसाब से जबिक तीन मील सड़क बनाई गई लेकिन जब साढ़े ४ फर्लांग श्रौर वह सड़क बढ़ाई गई तो उस पर १ लाख १५ हजार ग्रौर खर्च किया गया जब कि ६३ हजार का ग्राधा खर्च होना चाहिये था यानी साढ़े ४६ हजार रु०। तो उस साढ़े ४६ हजार के स्थान पर १ लाख १५ हजार रुग्या खर्च किया गया, यह इस विभाग की ईमानदारों का द्योतक है। यह प्राक्कलन सिमिति की रिपोर्ट है जो कि राबर्ट सगंज की सड़क के बारे में साफ साफ कहती है कि ऐसा किया गया। उस कमेटो ने इस विभाग की ईमानदारी ग्रौर अध्टाचार के बारे में यह रिपोर्ट दी है।

इतके स्रागे श्रोमन्, स्रापके द्वारा बताना चाहता हूं कि यहां पर श्रमदान की बात बहुत स्रातो है स्रौर कहा जाता है कि स्राप लोग श्रमदान की तरफ ध्यान दें। यू०पी० में हजारों मील सड़के श्रमदान से बनाई गई लेकिन उस तरफ कोई तवज्जह नहीं दी जाती है, उनकी मरम्मत वगेरह के बारे में। जब हम डिपार्टमेन्ट से कहते है तो वह कहने है कि यह श्रमदान की सड़क है, हमसे क्या मलतब। तो हम तो श्रमदान करें, मेहनत करें स्रौर कोई ध्यान सरकार देती नहीं बिल्क स्राज श्रमदान की सड़कों से नफरत की जाती है। विभागीय कर्मचारी श्रमदान की तरफ स्रांख उठाकर नहीं देखना चाहते है।

म्राडिट रिपोर्टों को देखने से मालूम होता है कि इस विभाग में प्रथाह भ्रव्टाचार का सागर है। इस म्राडिट रिपोर्ट में लिखा है कि सार्वजिनक निर्माण विभाग में ५,५६,३४,६५३ रुपये की धनरािश का निराकरण नहीं किया गया। ग्रगर भ्रव्टाचार का सबसे बड़ा ग्रखाड़ा है तो यह विभाग है। सन् १६५६ की यह एक ग्राडिट रिपोर्ट है। इसमें एक जगह कहा गया है कि लेखा— परोक्षा विभाग ने यह संकेत किया कि विनियोग लेखों के उप—शिर्वकों में से कुछ उप—शिर्वकों के ग्रधीन स्तम्भ ४ में ग्रौर महत्वपूर्ण निर्माण—कार्यों पर व्यय के क्योरेवार विवरण-पन्नों के स्तम्भ ६ में न्यूनाधिक-ताग्रों के लिये स्पष्टीकरण देना सम्भव नहीं हो सका। जब-जब पूछा गया तो यह बतलाया गया कि वाऊचर ग्रौर रसीद नहीं है ग्रौर किसी चीज को साफ-साफ विभाग के सामने नहीं रखा जा सका।

एक सड़क सीतापुर जिले में बनाई गई। इसके लिये लिखा है कि भवन तथा सड़क डिबोजन में एक सड़क के नबीकरण ग्रौर ग्रनुरक्षण पर, जो कि राज्य सरकार की नहीं थी, १६४८-४६ से १६४१-४२ तक २७,४४४ रुपया व्यय हुग्रा। जब इस सड़क पर निमित एक पुल के लिये

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्शीक्षण नहीं किया।

प्रयुक्त किये गये सामान की उसका मालिक श्रक्तूबर, १६५१ में उठा लेगिया तब यह पना चला कि यह सड़क किसी स्थानिक जमीदार की थी। रुग्या हमारा खर्ची हो रहा है, सड़क दूसरे की हे। माले मुफ्त दिले बेरहम। बिना एस्टीमेट के सैकड़ों काम कर डालेगये। उनमे किनने धन की बरबादी की गई, उसका स्रनुमान नहीं है।

इस विभाग का एक सबसे बड़ा नमूना हमारे सदन में मौजूद है। हाथ कंगन को आसीं क्या? फिताबों में कुछ लिखा है, हम कुछ पढ़ सकते है। मौके पर कुछ हुआ हे, हम कुछ कह सकते है। लेकिन यह चीज सदन में मौजूद है। सन् १९५७ से पहले इसका एडवांस दिया गया, कम्पनी नदारद हो गई। हाउस में जब हो—हल्ला मचा तो ये खम्भे हमारी छाति ग्रें पर लगा दिये गये है। लाखों रुपया इसमें बरबाद किया गया। लेकिन यह बोल ना नहीं ह, न द भके आवरसियर और इंजीनियर बोल पाते है। इस लिये यह अध्याचार का सबसे बड़ा द्योतक है।

ग्रागे क्या बताऊं? बार्डर पर जो रफम सड़कों के बनाने के लिये दी गई थी, जहां कि सुरक्षा का सवाल है, वहां भी ६०,००,००० रुपया सरप्लस रह गया ग्रौर लैप्स हो गया। कितनी शर्म की बात है इस महकमें के लिये? इस महकमें को ग्रपने गरेबान में मुंह डाल कर दखना चाहिये।

एक ग्राडिट रिपोर्ट में है कि ४,६६,६४,७४८ रुपये की बचन हुई प्रोर वह ले'स हो गया। यह एक ग्रनुदान ८,०७,४१,६०० रुपये का ग्रान्तिम मतदेय था। कौन इंजीनियर या एक्स्पर्ट हे ऐसे, किस विलायत से वह पढ़कर ग्राये हे, जिनको इस बात का खयाल नही है कि हम १ रुपये का सौदा लेने चलें, ८ ग्राने का सौदा ले ग्राये ग्रौर ८ ग्राने वापिस ले ग्राये ग्रौर काम पूरा न हो ? उनकी ग्रयोग्यता पर रिमार्क देना चाहिये। एक सिद्धात मान लिया गया हे कि सड़के क्यों बनाई जावेगी। इस रिपोर्ट में दिया हे कि जिन क्षेत्रों में यातायात के साधन नहीं हे खाद्य पदार्थों की उन्नति में बाधा पड़ती है, वहां सड़कों का ग्रमाव वहां के कृषि करने वालों पर प्रहार होता है। वहां सड़कों बनाई जावेगी श्रवश्य। इस बात को ध्यान में रखते हुए में बतलाऊंगा कि लखीमपुर से शाहजहांपुर तक १४० मील लम्बी सड़क हे। सारा शरीर सुन्दर है मगर नाक नहीं है। इस सड़क पर लखीमपुर के पास केवल ७ मील टुकड़ा कच्चा है। तिकुनियां मंडी लखीमपुर में नैपाल का गल्ला इम्पोर्ट करती है। यह बहुत इम्पार्टेट मंडी है। बिरलायन ग्रौर तिकुनियां के बीच में ५ मील कच्चे टुकड़े को क्यों नहीं बनाया जाता हे जबिक वहां के डिप्टी कमिश्नर, जिला परिषद् इत्यादि सब इसकी सिफारिश कर चुके है।

सार्वजनिक निर्माण विभाग के काम क्यों नहीं पूरे हो पाते है ? क्यों सरप्लस रह जाता है ? इसका कारण यह है कि ठेकेदारों के साथ तय नहीं हो पाता ह कि कितना कमीशन मिलेगा स्रौर इसलिये काम उन्हें नहीं दिये जाते है या उनका काम फेल कर दिया जाता है स्रौर उन्हें तबाह व बरबाद किया जाता है।

अश्री गज्जूराम (जिला झांसी) — प्राटरणीय ग्रध्यक्षा, में प्रस्तुत अनुदान का समर्थन करता हूं। बड़े श्राक्चर्य की बात है कि कटौती का प्रस्ताव पेश किया जाता है जब कि यह

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

## [श्री गज्जूराम]

श्चनदान सार्वजनिक हित के लिये है। गरीबों के फायदे के लिये यह है श्रीर श्रमीर भी फायदा उठा सकते हैं, किसान भी ले सकते हैं श्रौर व्यापारी भी ले सकते हैं। इसमें किसी का व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं है। सरकार की मशीनरी के लिये भी काम करने की ग्रावागमन के रास्ते ठीक होना ग्रावश्यक है। जैसा राजा साहब ने श्रभी कहा, बुन्देलखंड के लिये में कहता हूं। मेरे जिले में केवल ३ मील सड़क बनी है, बाकी के लिये नहीं कह सकता। सन् १६४७से जबसे हमारी जन-प्रिय सरकार ने ज्ञासन लिया है सैदपुर फार्म की सिर्फ ३ मील सड़क बनी है। कई बार डकैतियों की समस्या पर प्रकाश डालते हुए यह बताया गया कि भ्रावागमन के रास्ते जब तक ठीक नहीं हो जावेंगे तब तक डकैती की समस्या हल नहीं हो सकती चाहे कितनी ही पुलिस श्रौर पी० ए० सी० वहां भेज दी जाय श्रौर लाखों रुपया खर्च कर दिया जाय। बन्देलखंड का क्षेत्रफल ग्रन्य जिलों के क्षेत्रफल से ज्यादा है, ग्राबादी जरूर कम है। वह अबड़ खावड़ ग्रीर जंगली इलाका है। वहां की डकैतियां तब तक कम न होंगी जब तक कि वहां पर ठीक रास्ते महीं होंगे। किसान भी गल्ला पैदा करे तो बाजार को कैसे ले जाय? बरसात में न तो बैलगाडी भ्रौर न ट्रक ही बाजार तक गल्ले को बगैर रास्ते के लेजा सकती है। कोई बीमार श्रादमी दवाइयों की स्विघा, रास्ता न होने से, न पा सकने के कारण मर भले ही जाय लेकिन बिना सड़कों के वह वहां तक नहीं पहुंच सकता जहां सरकार ने चिकित्सा का प्रबन्ध किया है। माननीय गंत्री जी ने पूरे बुन्देलखंड का निरीक्षण किया है। माननीय महावीर सिंह जी का रास्ता जाना हुआ है और वे जानते हैं कि बुन्देलखंड की क्या समस्यायें हैं। में श्रापके द्वारा यह निवेदन करूंगा कि लेलितपुर सब-डिवीजन से वहां के जिला परिषद् ने एक सुझाव भेजा है तथा वहां के श्रिधिकारियों ने भी उसका समर्थन किया है श्रौर श्रिष्ठिकारियों ने भी श्रिपनी तरफ से भेजा हे श्रौर उन्होंने कहा है कि डकैती की समस्या श्रौर पिछड़े इलाके की समस्या तब तक हल नहीं हो सकती जब तक रोस्ते न बन जायेंगे। उन रास्तों में निम्नलिखित रास्ते बताये गये हैं — लिलतपुर से कानपुर, ललितपुर से जखौरा, ललितपुर से राजघाट, ललितपुर से देवगढ़, महरौनी से मदनपुर, मदनपुर से नाराच।

वहां पर कुछ नये थाने भी इसलिये कायम किये गये कि डकैतों की समस्या हल हो सके। लेकिन जब तक रास्ते नहीं है तब तक उन थानों से कोई लाभ नहीं हो सकता। े एक थाना बना है सौजना में । लेकिन सौजना से महरौनी तक कोई सड़के नहीं है। यह ठीक है कि दो, तीन, चार महीने वहां पैदल जाया जा सकता है लेकिन बैलगाड़ी या मोटर नहीं जा सकती । एक थाना ग्राह में है लेकिन ग्राह से सौजना तक कोई सड़क नहीं है। एक रास्ता महरोती से कानपुर को भी बनना है। दितीय पंचवर्षीय योजना में दो रास्तों का बनना तय हुन्ना था। एक बांसी से जखौरा और दूसरा कैलमो को। जिसमें पहला रास्ता बनना तो शुरू हो गया है लेकिन दूसरा शुरू नहीं हुन्रा। मैं माननीय मंत्री जी का स्राभारी हूं कि उन्होंने नौरपाट पुल बनाने के लिये २४ लाख रुपया मंजूर किया है। लेकिन ऐरिच घोट पर कोई व्यवस्था नहीं है जिससे झांसी से गरौठा जाने का कोई मार्ग नहीं है, ४० मील का चक्कर लगा कर जाना पड़ता ऐरिच घाट के लिये जरूर कोई व्यवस्था होनी चाहिये। इसके साथ ही साथ में निवेदन कर्ङगा कि मऊ से गरौठा को भी एक सड़क होनी चाहिये। वहां पर बहुत गल्ला पैदा होता है ले किन उसकी उपज बाजार तक नहीं जा सकती। रास्ता न होने के कारण गल्ला कहीं नहीं जा सकता। इसके लिये एक वर्ष से प्रयत्न हो रहा है, सरकार से प्रार्थना भी की गयी लेकिन रास्ता नहीं बना। एक बार सरकार से स्रादेश भी हुन्ना कि इस रास्ते को बनाया जाय। त न लाख रुपया भी दिया गया लेकिन उसको वहां से निकाल कर किसी दूसरे रास्ते में लगा दिया गया। कुछ दूर तक मंत्री जी उसको देख भ्राये हैं। तो मैं इन शब्दों के साथ जो माननीय मंत्री जी ने बजट पेश किया है उसका स्वागत करता हूं श्रौर श्राखिर में यह ध्यान दिलाता हूं कि ललितपुर इलाका जो बहुत पिछड़ा हुआ है उसको देखते हुए वहां श्रधिक सड़कें जल्द से जल्द बनाने की क्रपा करें।

१६६०-६१ के म्राय-व्ययक में म्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—ग्रनुदानसंख्या ६१ ३४--लेखा शीर्षक ५०--सार्वजनिक निर्माण-कार्य ग्रौर ५०--क--राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यो पर पूंजी की लागत, ग्रनुदान संख्या ३५--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, ग्रनुदान संख्या ३६--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य ग्रौर ६१-- राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा ग्रनुदान संख्या ५०--लेखा शीर्षक ६१--राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी--लेखा

श्री जंगबहादुर वर्मा (जिला बाराबंकी)—प्रिष्धिकात्री महोदया, जो कटौती का प्रस्ताव पेश किया गया है, मैं उसका समर्थन करने के लिये खड़ा हुया हूं। माननीय मंत्री जी ने जो यह ग्रमुदान मांगा है, मैं उसका विरोध करता हूं क्योंकि यह पैसा जो माननीय मंत्री जी इस प्रदेश में खर्च कर रहे हैं वह बड़े-बड़े शहरों में श्रीर बड़े-बड़े श्रादिमयों, मंत्रियों तथा राज्यपाल श्रीर बड़े-बड़े नौकरों के ऐशो-स्राराम के साधन जुटाने में खर्च कर रहे है। १७ फीसदी जनता जो शहरों की है उनके हित में इस रुपये की यार्च कर रहे है श्रीर द शिपति। जनता ग्राज गात्रों में सड़ रही है। शहर ग्राज बढ़ रहे हैं जब कि गांव से टैक्स ग्राता है ग्रीर गांव के सारे के सारे साधन शहरों में उपलब्ध होते है, जब कि इस पुस्तिका में लिखा हुग्रा है कि यातायान के साधनों से खाद्य पदार्थ ग्रीर कृषि की उन्नति ग्रीर देश की सुरक्षा, तमाम चीजों की सुविधा मिलेगी।

मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि खेती में उत्पादन श्रौंर उन्नित शहरों में होती है या देहातों में होती है ? श्राज देहात वाले तो इस तरह से हैं जैसे समुद्र के बीच में एक टापू हो। पुराने जमाने में जिस तरह से लोग कालापानी की सजा होने पर श्रंडमन- निकोबार श्रादि भेजे जाते थे उसी तरह से श्राज गांव के लोग टापू की तरह समुद्र के बीच में काले पानी की तरह पड़े हुए हैं। श्राज मंत्री महोदय राज्यपाल के भवन के लिये श्रौर विधान मंडल के सदस्यों के लिये तथा कानपुर, श्रागरा, बनारस, लखनऊ श्रौर बरेजी ऐसे बड़े-बड़े शहरों को सजाने के लिये उद्यत है श्रौर श्राप देखें कि बनारस की तरफ माननीय मंत्री जी का बहुत बड़ा ध्यान है। जितने भी निर्माण कार्य किये गये है उनमें ज्यादा से ज्यादा निर्माण- कार्य बनारस में ही हुए है क्योंकि माननीय मंत्री जी, माननीय मुख्य मंत्री के चंगुल में फंसे हुए हैं श्रौर इसलिये डरते है कि श्रगर ऐसा न करें तो शायद निर्माण मंत्री के पद पर नियुक्त न किये जायं।

श्राप वहीं पर श्राप्रोध्या को ही देख लीजिये जो इतना बड़ा तीर्थ स्थान है लेकिन उसके घाटों को बनवाने की तरफ तरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया है श्रीर उसी तरह से श्रयोध्या में जो पुल बनने वाला है उसकी तरफ भी कोई विशेष ध्यान नहीं है। शायद वह श्रव बन्द ही कर दिया गया है। लेकिन वहीं पर बनारस को देखिये कि वहां सारी की सारी चीज़ें बनती जा रही है। श्राज श्रधिक से श्रिधक पैसा बड़े-बड़े श्रकतरों के ठहरने के लिये बंगलों पर खर्च किया जाता है तथा उनके लिये ज्यादा से ज्यादा पैसा शहरों में भी खर्च किया जाता है। इसका कारण यह है कि शहरों में बड़े श्रादमी बसते हैं, वहां पर बड़े-बड़े कल-कारखानों के मालिक लोग रहते हैं इसलिये उनकी सुख-सुविधा के लिये विशेष पैसा खर्च किया जाता है। इसके श्रलावा मंत्री लोग श्रपने श्राने-जाने के साधन के लिये सारी की सारी चीज़ें वहां मुहैया करते हैं।

जब कि हजारों वर्ष से हम लोग यह देखते श्राये हैं कि जितने राजे, महाराजे थे उन्होंने भी श्रपनी शक्ति के श्रनुसार सड़कें बनावयीं, श्रंग्रेजों ने भी बनवायीं लेकिन पिछले १२ वर्ष से जब कि इनका राज्य हुश्रा है, जो पुरानी सड़कों थीं, वे भी बर्बाद होती जा रही है, नयी सड़कों का तो कुछ कहना ही नहीं है। बाराबंकी जिले की सड़कों की हालत ही में श्रापकी बतला दूं।१-बाराबंकी, जैदपुर, सिद्धोर, देबीगंज, सुबेहा, २--बाराबंकी, कोठी हैदरगढ़, ३--हदौली, रेछघाट, सुबेहा, हैदरगढ़, ४--हदौली, महमूदाबाद, ५--मवई, सेल्हौरघाट, सुबेहा, हैदरगढ़, ७--हेदरगढ़ से राय बरेली श्रोर हैदरगढ़ से महाराजगंज, ८--मोहम्मदपुर, मऊग्वारपुर, ६--गनशपुर, भिटोली १०--गनशपुर, महादेवा, ११--मरकामऊ,

[श्री जंगबहादुर वर्मा]

महादेवा, सूरतगंज, फतेहपुर, मोहम्मदपुर १२——३ उवल, फने एगुर, बेहरा-मह । दावाद १३—— बदोस्यार, किन्तूर, १४—— बदोसराय, सेदनपुर, सफ दरगंज, जेदगुर, सतिरिल १४—— देवां, कुर्मी, महमदाबाद, १६—— देवां, चनहट, १७—— बाराबंकी, जहांगी राबाद १८—— जड़ागांन, बाया, सम्रा-दत्तांज, १६—— मेलसर, ६दौली, २०—— दियाबाद, टिकेसनगर, २१—— रामनगर, व्यादतगंज परसा की यह जो पुरानी सड़के थीं आज उन की हारत काच्ची महकों में भी बदार है प्रोर जो कच्ची सड़के हैं उन में तो धान उगते हैं। वहीं जो पुरानी परको सहके हमारे जिले में पहले में थीं वहीं अब भी है। इन सड़कों के किनारे गल्ला स्टोर, बनाक, ग्रीर अर रनाल नगरा नाथे जाते हैं, सुसज्जित बाग लगा रखे हैं, जब कि गांव के लोग उमी परे जाने में ह जिला में पहले ते, ग्रानेजाने के कोई साधन उनके लिये नहीं है तो किस तरह से वह उन रहेरों में बीज ग्रीर गाद वगरा ला सकते हैं, कैसे वह अपना माल बाजार में बेचने जा सकते हैं?

इसी तरह से पुलिस के लिये और जनता के लिये कोई जाने म्राने के साधन नहीं ह मोर इसी कारण से म्राये दिन करल, डकैतियां, चोरी होती है, मारपीट होती है मोर गरीयों के येत छीने जा रहे हैं और कोई उन की मुनवाई करने वहां नहीं पहुंच पाता। इस तरह से जब देश की म्रान्तिरक नीति खराब है तो उसका देश की बाहरी नीति पर भी जहर म्रमर प्रेग मोर यही कारण है कि म्राज देश की सीमा पर चीन का म्राक्रमण हुम्रा है। म्रगर हमारी म्रान्तिरक नीति म्राच्छी होती, देश में गरीबों के हित की बात होती तो चीन की कभी हिम्मत नहीं होतो कि यह देश पर म्राक्रमण की बात सोचता। में मंत्री जी से म्राशा करता था, यह हरिजन हे, इस्तिये गरीबों की मुरक्षा की बात सोचेंगे लेकिन वह तो म्रमीरों की गोद में खेल रहे है, उन्हीं की भेवा में लगे हुये है।

मै माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि ग्राज उन के विभाग में कितने हरिजन हे ? बाराबंकी के ग्रस्पतालों के भवनों की दशा बहुत ही खराब है, न चहां दया है न सामान ह । मोतिकपुर, सुबेहा ग्रौर सिद्धौर के ग्रस्पतालों में इमारत नहीं हे ग्रौर बहुत खराब हालत है, किराये की इमारतों में गन्दी जगहों पर यह ग्रस्पताल चल रहे हैं । स्कूलां का भी यही हाल ह कि वहां पर बैठने तक की जगह नहीं है, पढ़ने की तो कौन कहें । स्कूल वह बना रहे हे ललनऊ म, बरे-बरे शहरों में बड़े ग्रादिमयों के बच्चों को पढ़ने के लिये बनवा रहे हैं। कर्मचारियों के लियं ग्रौर विधानसभा के सदस्यों के लिये भवन बन रहे है, जो ग्रच्छे ग्रच्छे स्थान हे जिन में पहने जमीदार-ताल्लुकेदार कबजा किये थे उन मे ग्रब मंत्रीगणों का कब्जा हे।

श्राज मंत्रीगण श्रौर उन के बड़े-बड़े नौकर लोग सारे शहरों में ज्यादा से ज्यादा जमीन की जमींदारी बना कर कब्जा किये है श्रौर मकान बनाये है। प्रगर सोशिलस्ट पार्टी का बम चलेगा तो एक श्रादमी के पास एक मकान से ज्यादा न रहेगा श्रौर जो मकान इस प्रकार हम्तगत होंगे उन में श्रस्पतालों, स्कूलों श्रौर गरीब जनता को रहने का स्थान मिलेगा। माननाय मंत्री जी श्रपनी पुरानी याददाश्त को ताजा रखें श्रगर भूलते हैं तो प्रदेश की जनता श्रंगड़ाई लेगी। श्राज सरकार ५,००० में कच्ची सड़क बनाती है, कंकड़ की दस हजार में बनाती है। सोशिलस्ट पार्टी का कहना है कि श्राप तब तक के लिये शहरों का उठाना बन्द कर दें श्रौर पहले सारे प्रदेश में कच्ची श्रौर कंक है की सड़के बना दे श्रौर उस के बाद डामर श्रौर रबर को श्राप बनायें। श्राज तक तो श्राप गांवों के साथ सौतेले भाई का सा व्यवहार कर रहे हैं, श्रगर श्राप को देश को खून खराबी से बचाना है तो श्राप पहले द३ प्रतिशत देहात के लोगों को ऊपर उठायें श्रौर इस तरह से इस ४० करोड़ के देश को बनायें।

\*श्री काशीप्रसाद पांडेय (जिला सुल्तानगुर)—श्रधिष्ठात्री महोदया, जो श्रनुदान इस सदन में प्रस्तुत है उसके लिये मैं माननीय मंत्री जी को बधाई देता हूं श्रीर जो कटौती का प्रस्ताव

**<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।** 

६३

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक मे भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--भ्रनुदान संख्या ३४--लेखा शीर्षक ५०--सार्वजिनक निर्माण-कार्य भ्रौर ५०--क-- राजस्य से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यो पर पूंजी की लागत, प्रनुदान संख्या ३५--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, श्रनुदान संख्या ३६--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य भ्रोर ६१--राजस्य लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यो की पूंजी का लेखा तथा भ्रनुदान संख्या ५०--लेखा शीर्षक ६१--राजस्य लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यो का पूंजी--लेखा

माननीय गोविन्द सिंह विष्ट ने रखा है उसका विरोध करता हूं। यह ऐसा अनुदान है जिस् पर किसी किस्म का बहस मुबाहिसा नहीं होना चाहिए था। यों ही इसमें घनराशि बहुत कम है। सदन के सभी माननीय सदस्य इस बात को चाहते हैं कि अधिक से अधिक सड़के और पुल बने। लेकिन जब इतना घन नहीं है तो कैसे बन सकते हैं? इसलिये मेरी राय तो यह है कि चाहे इधर के बैठने वाले हों या उपर के, सब एक स्वर से गाननीय मंत्री जी से, वित्त मंत्री से और केन्द्रीय सरकार से इस बात को कहे कि अधिक से अधिक धन इस मद मे देना चाहिए। जब तक देश मे और प्रदेश में सड़ के नहीं बनती तब तक विकास का काम पूर्णरूप से नहीं हो सकता। में अनुरोप करना चाहता हूं माननीय मंत्री जी से कि जो काम आपके प्रदेश में हो रहा है उसमें पुलों की ज्यवरथा अवश्य होनी चाहिए। जब तक सड़के और पुल नहीं बनेगे तब तक अधिक अन्य उपजाओं आन्दोलन का भी उतना असर नहीं होगा। शान्ति और व्यवस्था के लिये भी सड़कों की उतनी ही आवश्यकता है।

मेरा सुझाव है कि चाहे बुद्देलखंड हो, चाहे पिछड़ा हुम्रा क्षेत्र हो, या कोई भी इलाका हो, पूरे प्रदेश का सर्वे कराके, हर जगह की जो ऐसी सड़के हैं जो कई जगहों को मिलाती है उनको म्रवस्य ले लेना चाहिए। गांव की सड़कों के लिये जो रुपया छोटे दुकड़ों पर दिया जाता है उस रुपये को श्रमदान की सड़कों पर लगाने की योजना बनाई जाय। गांव वालों का उत्साह बढ़ाने के लिये श्रमदान की सड़के ग्रवश्य लेनी चाहिए। मेरे जिले सुल्तानपुर मे लोगों ने ३६ मील सड़क ४ महीने मे श्रमदान से बनाई। खुशी है कि माननीय मंत्री जी ने उसे ले लिया। लेकिन तीन वर्ष हो गये, जो पुल बनना था, उसमे ग्राज तक काम शुरू नहीं हुम्रा।

श्रमवरपुर से पट्टी जाने वाली जो सड़क है उसमे गोभती नदी का पुल पड़ता है। यिद वह पुल नहीं बनता है तो जो सड़क नेपाल से इलाहाबाद का कनेक्शन मिलाती है वह श्रधूरी रह जाती है। इसी तरह में सुल्तानपुर से सिमरी बाजार तक तो पक्की सड़क हे, लेकिन सिमरी बाजार से श्रागे श्रमवरपुर तक जो जाती है, वह पक्की होनी चाहिए। श्रगर यह टुकड़ा पक्का कर दिया जाय तो कानपुर से सीधा संबंध स्थापित हो जाता है। कूड़ेगार से मझवारा तक जो सड़क है उसे हिलयापुर तक मिला दिया जाय तो बाराबंकी का वह क्षेत्र जिसके बारे में वर्मा जी कह रहे थे, वह खुल जाएगा।

जहां विकास के संबंध में चर्ची होती है वहां यह होता है कि स्रिधिक स्रन्न उपजास्रो स्रान्दोलन में रुपया जाना चाहिए, खड़ं जों या नालियों के लिये जाना चाहिए। में प्रार्थना करना चाहता हूं कि यह रुपये जो खड़ं जे या नालियों में लगाये जाते हैं, उसमें से लेकर विभाग के द्वारा सड़कों पर लगाना चाहिये क्यों कि जब तक सड़के नहीं बनेगी देश की तरक की नहीं होगी स्रोर साथ ही उन सड़ तों पर जो स्रापकी बसे चलती है वे भी जल्दी टूटने से बच जायंगी। लखनऊ से सुल्तानपुर की जो सड़क है उसके बीच में १०, १५ मील का टुकड़ा कं कड़ का रह जाता है स्रगर उसे भी स्राप इसी तारतम्य में सीमेटेड करा दे तो स्रच्छा होगा।

जिलों में जो सार्वजिनिक निर्माण सिमितियां बनी है उनको कियाशील करे। जितने भी ठेके दिये जाते है, कं कड़ की खुदाई का ठेका दिया जाता है तो ठेकेदार कं कड़ ला देता है, स्रोवर-सीयर ठेकेदार से मिला होता है जिसके कारण वह स्रच्छा कं कड़ नहीं लाता स्रौर वह जल्दी ही दूट जाता है। विधान सभा के सभी सदस्य उस कमेटी के सदस्य है। स्रगर उनको इस बात का स्रधिकार दे दिया जाय कि वे लोग उन जगहों पर हर क्षेत्र में जाकर देखें स्रौर रिपोर्ट

[श्री काशीत्रसाद पांडेय]

दे और मंत्री जी उस पर कार्यवाही किया करें तो बहुत सुधार हो सकता है। मेरे क्षेत्र में लरानऊ से बिलया जाने वाली सड़क मैंने स्वयं देखी, उसके मील ११३ से ११४ के ऊरर रही करड़ रखा गया है। लेकिन चूंकि हमें कुछ श्रधिकार नहीं है, हमारी श्रांग्यों के सामने प्रोवरसीयर श्रौर ठेकेंद्रार खराब माल लगाते रहते हैं और श्रथनी मनचाही करते ह। ध्रगर इन समितियों को अधिकार दे दिये जायं तो वे श्रधिक सहयोग दे सकती है और कियाशील हो सकती है। इस लिये मेरा श्रुरोध है कि उन समितियों के द्वारा टेडर मांगने, कामों का निरीक्षण करने, सड़कों के किनारे की जमीन के पट्टे श्रौर उसकी नीलाम श्रादि देने का ग्रंतिम निर्णय जिला परामर्गदात्री सिमिति को दे दे तो काम श्रग्छा हो सकता है। इन शब्दों के साथ म श्रग्दान का सम मन करता हूं श्रौर श्राशा करता हूं कि जो काम हमारे जिले मे हो रहे हे उन्हें श्रयदय पूरा कराया जायगा।

श्रीमती राजेन्द्र कुमारी (जिला हमीरपुर)—श्रापने मझे इस महत्वपूर्ण श्रनदान पर बोलने का मौका दिया इसके लिये में श्रापकी श्राभारी हूं। सड़कों श्रीर पलो के न होने में श्राज देहातों में बड़ी परेशानी हो रही है, एक ही जिले में नहीं हर जगह। पात्र समस्या के बारे में जो सरकार कहती है उसके लिये में थोड़ा बता दूं कि वे चीजे देहातों में सब होती ह श्रीर वहां सड़ के नहीं है जिससे लोगों को लाने में बड़ी कठिनाई होती है। में तो श्रपने जिले में दराती है कि वहां पर सड़के नहीं है श्रीर जब किसान गल्ला ले कर जाते हैं तो उनको बड़ी ममीबत होती है। मेरा जिला हमीरपुर है जहां शायद सब से कम सड़के होगी। गात्रों के रास्ते एमें पराब है कि किसानों की गाड़ियां तक टूट जाती है। जिस सड़क के लिये हम २, ३ साल से मंत्री जी से प्रार्थना कर रहे थे वह इस साल बजट में श्रायी, मोदहा से कपसा श्रीर मोदहा से बिमार। इसके लिये में मंत्री जी को घन्यवाद देती हूं।

लेकिन में इतना भी कह दूं कि हमीरपुर जिले के एक तरफ जमुना हे श्रोर दूसरी तरफ बेतवा और बीच में हमीरपुर टापूँकी तरह है। जिले की तमाम जनता बरमात में हेण्यवादर होने के नाते वहां भ्राती है तो उनको बड़ी मुसीबनें उठाना पड़ती है। म बजर मे देलती रही कि हमारे यहां भी कोई पुल निर्माण की योजना है? लेकिन मुझे इस सम्बन्ध में निराशा हुई। पर जब सड़क की देवा तो श्राशा हुई कि अगर इस साल नही तो तीसरी योजना मे इस पुल को रखेगे, श्रौर यह तो फिर हर साल घटता-बहुता रहता है। तो ५ साल के श्रन्दर मानतीय मंत्री जी हमारे यहां पुल का निर्माण करेगे बरसात के दिनों में हमारी बहने बच्चों को लेकर वहां जाती है तो न इघर कोई रुकने का स्थान होता हे ग्रीर न कोई उधरर कने का स्थान होता है जिससे बच्चों को निमोनिया ग्रौर बुखार हो जाना है। बरसात के दिनों मे बड़ी तकलीफ होती है। इसलिये मेरा सुझाव है कि हमीरपुर मे पुल का निर्माण जरूर किया जाय क्योंकि उसके बगैर बड़ी तकलीफ उठानी पड़ती है। बरसात के दिनों मे, वैसे तो हमेशा ही तकलीफ रहती है, लेकिन जब में जाती थी तो जमना से बेतवा तक इतने नाले ही नाले पड़ते थे कि हर गांव में नाले दिखाई देते थे। वहां कोई समतल जमीन नहीं है और अगर समतल जमीन होती तो वहां भूमिहीन नहीं रहते श्रीर जो मकानी के लिये वहां भूमिहीन रो रे रहते है वे न रोते। मेरा माननीय मंत्री जी से सुझाव है कि बहा जरूर ही जमुंग श्रीर बेतवा पर पुल का निर्माण करना चाहिये ताकि जैत, के श्राराम व राहत मिल सके।

हमारे यहां बुन्देलखंड मे झांती, बांदा, जालौन तथा हमीरपुर से ज्यादा गहला मिलता है लेकिन बरसात के दिनों मे जब सरकार को जरूरत पड़ जाती है तो बतलाइये वे कहां से गाड़ी लेकर निकले। इसलिये मेरा यह सुझाव है कि वहां पर सड़ हों का निर्माण किया जाय तथा जमुना स्रौर बेतवा पर पुल बनाया जाय।

श्री तिरमलिंसह (जिला एटा) — श्रिधिष्ठात्री महोवया, मै जो भ्रतुवान सदन के समक्ष पेदा है उसका समर्थन करता हूं। यह भ्रतुवान जो पेदा है यह निर्माण कार्यों के लिये हैं, चाहे इधर

ξX

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--भ्रनुदान संख्या ३४--त्रेखा शीर्षक ५०--सार्वजनिक निर्माण-कार्य भ्रौर ५०--क--राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, भ्रनुदान संख्या ३५--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, भ्रनुदान संख्या ३६--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य भ्रौर ८१-- राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा भ्रनुदान संख्या ५०--लेखा शीर्षक ८१--राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी--लेखा

के बैठने वाले हों चाहे उधर के बैठने वाले हों सभी निर्माण चाहते हैं। लेकिन सवाल यह है कि जो रकम रखी गयी है, वह बहुत कम है, इससे दूनी होनी चाहिये थी। लेकिन खैर जितनी भी है वह ठीक है। हम यह मांग करते हैं कि इस अनुदान में और पैसा मिलना चाहिये ताकि सड़कों का निर्माण हो सके। निर्माण से जो फायदे हैं वे भी सभी लोग जानते हैं कि खेती को फायदा है यातायात बढ़ाने से। प्रशासन अच्छा चलता है, चोरी, डकैती रुकती है। ये सब इतनी महत्वपूर्ण बातें हैं कि इनके लिये जितना भी पैसा मिले उतना ही थोड़ा है।

श्रव सवाल यह श्राता है कि पूरे बजट में निर्माण के लिये क्या बचता है ? पूरे बजट के श्रन्दर ग्रगर मेरी याददावत सही काम करती है तो ४७ करोड़ के लगभग रुपया सरकारी प्रशासन में खर्च होता है ग्रौर १६ करोड़ रुपया श्राकिस्मिक व्यय में रखा गया है। १५ करोड़ रुपया के लगभग कर्जा ग्रौर व्याज में है। श्रव ५० करोड़ के लगभग बचता है जिसमें से करीब सभी विभागों को निर्माण करना है। श्रव सड़कों के लिये जो कि ज्यादातर गांवों से ताल्लुक रखती

हैं उनके लिये बहुत कम रुपया रखा गया है।

में माननीय मंत्री जी व सरकार से प्रार्थना करूंगा कि वे इस बजट में ग्रीर पैसा बढ़ावें चाहे और किसी मद से काट कर पैसा दें और सड़कों के निर्माण के लिये भ्रधिक से श्रधिक धन दें ताकि देश की म्रार्थिक दशा में सुधार हो। इसके म्रलावा जो निर्माण कार्य होते हैं उनमें थोड़ा में उसके लिये ज्यादा न कह कर यह श्रवश्य कहूंगा कि इसके लिये सा बिलम्ब हो जाता है। पूरे प्रयास किये जायं ग्रौर जो भी कठिनाइयां होती है उनको दूर किया जाय। मैं में में बताया कि वित्त विभाग में कागज अटके रहते हैं लेकिन मंत्री जी ने कहा है कि उसके लिए वह प्रयास कर रहे हैं भ्रौर कार्य जल्दी ही होगा। दूसरी श्रोर से जो यह कहा गया कि विकास नहीं हुन्ना यह गलत है लेकिन जितना होना चाहिए था उतना नहीं हुग्रा। यह भी कहनाठीक नहीं है कि काम नहीं हुग्रा। काम हुग्रा ग्रौर जो पस्तिका है उसके ब्रांकड़े के ब्रनुसार, जो पारसाल छपी थो ब्रीर इस साल भी छपी है, काफी कार्य हुन्ना ग्रीर हर जिले में सड़कें बढ़ी हैं। स्वराज्य से पहले की सड़कें दिखाई गई हैं भ्रौर बाद की भी संड़कें दिखाई गई हैं। यह कहना निरर्थक है कि सड़कें नहीं बनी हैं। का निर्माण हुआ है लेकिन कहीं-कहीं इसकी ग्रधिक उपेक्षा कर दी गई है जैसे मिसाल के तौर पर मैं जिस जिले से भ्राता हूं उसको जितनी सड़कें मिलनी चाहिये थीं वह नहीं मिली हैं। पहली पंचवर्षीय योजना में केवल २६ मील सड़क मेरे जिले एटा को मिलीं ग्रीर दूसरी योजना में केवल ३६ मील सड़क मिलीं। मैं मंत्री जी से कहना चाहुंगा कि जो सरप्लस जिले हैं, जहां सड़कें ज्यादा बनी हुई है उनमें ग्रौर सड़कें बनाने का प्रयास न करें बल्कि जो पिछड़े हुये जिले हैं उनमें ही ज्यादातर सड़कें बनाई जायं और श्रिधक सरकार सड़कें बनाकर जनता को राहत दे, यही मेरा कहना है।

इसके भ्रलावा मंत्री महोदय ने कहा कि १३ करोड़ ६३ लाख रुपये से सूबे में पुल बनाये गये लेकिन जिला एटा में एक भी पुल नहीं बन सका। ३० करोड़ के जो भवन बनाये गये हैं, वह उद्योग विभाग के या पी० डब्लू० डी० या ग्रन्य विभागों के हो सकते हैं लेकिन उनके संबंध में मुझे कुछ नहीं कहना है। लेकिन जहां तक पुलों का सवाल है वह यह है कि भ्रन्य जिलों में काफी पुल बने हैं। इससे मेरा मतलब यह नहीं हैं कि वहां पुल क्यों बने हैं? लेकिन में प्रार्थना करूंगा कि इसी योजना में काली नदी पर मुहारे के घाट पर पुल बनाने की व्यवस्था की जाय। बजट के साहित्य से मालूम होता है कि हमारे यहां सड़कें दी गई हैं लेकिन केन्द्रीय निधि से जो पोषित सड़कें हैं उनमें से एक भी सड़क हमारे जिले को नहीं दी गयी। इसके

# [श्री मुक्तिनाथराय]

किन्त हम यह कह सकते हैं कि इस डिपार्टमेंट ने जनता की भावनाओं को समझने की कोशिश की है और हमारी सरकार इस तरफ काफी प्रयत्नशील है कि जनता की भावनाओं को देख कर, जनता की भ्रःगे क्या जरूरत है उसके हिसाब से विकास का श्रायोजन किया जाय। हमारे यहाँ प्रत्येक जिले में सड़के बनाई जाने वाली है। मंत्रीजी ने श्रपने भाषण में कहा है कि ग्रब हम नहीं चाहने है कि एक जगह बैठकर सड़क बना ले बाल्क हर जगह जाकर वेजना होगा। मेरे जिले में यहां से पीठ डब्नूठ डीठ के सेकेटरी महोदय गये थे वहां हम भ्रौर अन्तरिम परिषद् के तमाम श्रिषकारी थे। जिने की श्रावश्यकता को वेखते हुय कहां-कहां पर यातायात की सुविधा नहीं है, कौन-कीन पुल बनना चाहिये हम सबसे पूछकर एक योजना बनाई गई है और उसको प्राथमिकता दो जानी चाहिये, यह चीज होना चाहिए वह हमने किया। इसमें कोई दो रायें नहीं है कि सरकार हमारी श्र वश्यकताओं को समझ कर, कहां-कहां क्या-क्या होना चाहिये, जान कर चल रही है उसी हिनाब से, भ्रौर वह जनता के लाभ का ध्यान रखती है।

स्रिजिङ्गात्री महोदया, में स्रापके द्वारा सरकार का ध्यान एक बात को स्रोर दिलाना चाहता हूं। हम लिस्ट देखते हैं किताब में कि प्रत्येक जिले में इतने मील सड़के बनायी गयों । जिले, जिने में जहां सड़कें कम हो शि हैं वहां ज्यादा सड़कें बनायी जाता है श्रीर हर जिने की सड़कों के हिसाब से ग्राप वहा का प्रोग्राम बनाते है। भ्राजमगढ़ या दूसरे जो पूर्वी जिने है उन हो देखने से मालून होगा हि माइनेज के हिसाब से वहा ज्यादा सड़कें बनी है ब्रौर कुछ पिछड़े हुए जिले बुन्देललंड के या पहाड़ी जिले जो है वहां कम सड़कें बनी हैं श्रीर इसका नतीजा यह होता है कि उन पिछड़े जिलों में ज्यादा सड़कें बन जाती है हालांकि ग्राबादी कम है। मेरा निवेदन है कि माइलेज का लिहाज नहीं करना चाहिये बल्कि यह देखना चाहिये कि कहां भ्राबादी ज्यादा है भौर सड़को की भ्रावश्यकता कहां ज्यादा है। कहां सड़कें बनाने में कम पैसा खर्च होगा, कहां पुल तथा प्रिया बनाने में कम पैसा खर्च होगा श्रौर हम कम से कम पैसे में ज्यादा से ज्याया संड्रकों का निर्माण इस हिसाब से श्रपनी नीति श्रपनायी जानी चाहिये । श्रगर ऐसी नीति ग्रपनायी जाय तो में मिसाल के लिये ग्राजमगढ़ की बात कहता हूं कि वहां श्रिथिक फायदा हो सकता है ग्रीर पैसा कम ही खर्च होगा । में माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि मेरे जिले में माइलेज ज्यादा है, लेकिन सारी सड़कें श्रंग्रेजी राज्य में बनायी गयी है ग्रौर जब से स्वराज्य हुग्रा है, उस समय से बराबर शिकायत रही है कि सड़कें कम बन रही है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना काल में केवल ६ मील की संदर्भ मऊ से यूसुफपुर तक की बनायी गयी है और उसमें कुछ श्राजमगढ़ में श्राती है श्रोर कुछ गाजीपुर तो पूर्वी जिलों मे जहां यातायात के साधनों की कमी है, उनको बढ़ाया जाय। का पैसा भी कम खर्च होगा श्रीर थोड़े पैसे में ज्यादा निर्माण करने में सरकार कार्य हो सकता है।

दूसरी चीज, हमारे जिले में बहुत-सी सड़कें ऐसी है कि जिनका निर्माण कराना है। कहां-कहां पर सड़कें बनें यह प्रोग्राम जब सरकार ने पी० उब्लू डी० की दिया तो उन्होंने एक नकशा बनाया ग्रीर उसमें हमने सलाह दी थी। हमारे जिले में बहुत सी सड़कें ऐसी है कि जिनको ग्रंतरिम परिषद् ने बनाया है, कल्बर्ट बना लिये है, कंकड़ पड़ गया है, ग्रंथ वर्क हो गया है, ग्रीर ग्रगर श्रव यह सार्वजनिक निर्माण विभाग उनको देख ले तो थोड़े में ही काफी सड़कों का पुननिर्माण हो सकता है ग्रीर उस जिले की समस्या काफी दूर तक हल हो सकती है। वहां का काफी हिस्सा ऐसा है कि जहां पहले से सड़कों बनी हं, एक जि

उन सड़कों से दूर हे और जहां सड़कों की बड़ी श्रावश्यकता है श्रीर वहां सड़कों नहीं है। जो लोग कच्ची सड़कों की धूल फांकते हैं उन्हें सरकार की ज्यादा सड़कों बनाने की बात पर

33

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--भ्रनुदान संख्या क्ष ३४--लेखा शीर्षक ५०--सार्वजानक निर्माण-कार्य भ्रौर ५०--क--राजस्व से वित्त पोधिक ५०--सार्वजानक निर्माण-कार्य भ्रौर ५०--क--राजस्व से वित्त पोधिक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रीय सड़ार निधि से वित्तीय सहायता, भ्रनुदान संख्या ३६--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य में भ्रीर ६१--स्वास्थ्य लेखे के बाहल नागरिक निर्माण कार्यों की पूंजी का लेखा तथा भ्रनुदान संख्या ५०--लेखक शीर्षक ६१-- राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा

विक्वास नहीं होता है। भ्राजमगढ़ जिले में काफी घना क्षेत्र है ग्रौर इसलिये सरकार ग्रगर थोड़ा-सा ध्यान उस की तरफ दे दे तो काफी निर्माण थोड़े से पैसे में हो सकता है ग्रौर जनता का ग्रधिक हित हो सकता है। जिले की सगड़ी तहसील में सड़कें बहुत ही कम हैं। इस तरफ विशेष ध्यान देकर सड़कों का निर्माण कराना चाहिये।

में इस राय का हूं कि बहुत से बड़े-बड़े निर्माण-कार्य, भवन निर्माण ग्रादि के जो शहरों में किये जाते हैं, वह देख-समझ कर किये जाने चाहिये। यह सही है कि वे होने चाहिये, लेकिन पहले कौन चीज बहुत जरूरी है इस तरफ ध्यान देना चाहिये। शहरों में बड़े बड़े भवन बनाने का काम यदि कुछ दिनों के लिये स्थिगत कर दिया जाय तो कोई बहुत बड़ा हर्ज न होगा। वही पैसा बचाकर देहातों के अन्दर सड़क निर्माण के कार्य में लगाया जा सकता है। उस पैसे से हमारे प्रदेश के जितने पिछड़े हुये इलाके हैं उनका हित किया जा सकता है। इसलिये में अनुरोध करूंगा कि शहरों में भवन निर्माण कार्य से पैसा बचाकर इस तरफ लगाया जाय।

दूसरी बात में ठेकेदारों के संबंध में कहना चाहता हूं। उनमें ईमानदार लोग भी होते हैं श्रौर कुछ खराब भी होते हैं। इस श्रोर जो हमारे माननीय मंत्री जी ने विशेष ध्यान दिया है उस है लिये मैं उन्हें धन्यवाद देता हूं। इसके लिये जो वह व्यवस्था करने जा रहे हैं कि कोश्रापरेटिव सिमितियां होंगी श्रौर उनके द्वारा यह कार्य होगा वह एक उचित व्यवस्था है।

हमारे जिले में पी० डब्लू० डी० परामर्शदात्री सिमितियां बनी हुई हैं। मेरा सुझाव है कि उन सिमितियों की जो सिकारिशें हों उनको सरकार माने । इस संबंध में एक दूसरा सुझाव में माननीय मंत्री जी को देना चाहता हूं ख्रौर वह यह है कि वे इस प्रकार के ग्रादेश दें कि इन सिमितियों की मीटिंग कम से कम हर दूसरे, तीसरे महीने ग्रवश्य हों। इन सिमितियों को सरकार को पूरा श्रधिकार भी देना चाहिये। इन शब्दों के साथ में इस श्रनुदान का समर्थन करता हूं।

श्री जगन्नाथ लहरी (जिला श्रागरा) — ग्रिंबिकात्री महोदया, सदन के सम्मुख सार्वजिनक निर्माण विभाग से संबंधित जो कटौती का प्रस्ताव है उसका में समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं। माननीय गोविन्द सहाय जी चले गये उन्होंने यह कहा था कि कुछ बन्धुओं ने इस विभाग को पिंक्लिक वर्क्स डिपार्टमेन्ट की जगह पिंक्लिक वेस्ट डिपार्टमेन्ट कहा है, यह उचित नहीं है। इसके लिये में उनको दावत देता हूं, माननीय निर्माण मंत्री भी मेरे बोलने से पहले चले गये, वे चलें श्रौर चीफ इंजीनियर महोदय चलें कोई बहुत दूर चलने की जरूरत नहीं है, दस कदम चल कर यहीं दारुलसफा में देखें कि किस तरह से पैसा वेस्ट हुआ है। श्राज से १० वर्ष पूर्व दारुलसफा के सामने कुछ सड़क बनाई गयी थी तथा श्रभी दो महोने भी नहीं हुये हैं एक नया टुकड़ा श्रौर बनाया गया है। इन दोनों सड़कों को श्राप देखें। जो सड़क १० वर्ष पूर्व बनी थी वह जहां बिलकुल ठीक हालत में है, वहां वह सड़ ह जो श्रभी दो महोने पूर्व बनाई गयी है उसमें कितने हु। गड़ डे हो गये है। लेकिन दुख इस बात का है कि माननीय निर्माण मंत्री और चीफ इंजीनियर महोदय को प्रदेश के इन निर्माण कार्यों को तो क्या नाक के नीचे लखनऊ कही निर्माण कार्यों को देखने तक की इतनी फुर-सत नहीं कि वे इन निर्माण कार्यों को स्वयं देख सकें। क्या श्रापको इतनी फुरसत होगी कि श्राप

[श्री जगन्नाथ लहरी] दारुलसफा में जा कर देखें श्रौर इस दास की आंच पराये कि इस राराब साफ़ के बनाने की जिम्मेदारी कि की है ?

मैं भ्राप के सामने दूसरा उदाहरण रखता हूं। दारुलसफा के दोनों ब्लाकों के कामन रूम्स के लिये द तख्त भ्रोवरितार ने इसी महीने में सप्लाई किये है। वे बहुत ही खराब हालत में है भ्रीर जिनको जम्बाई चोड़ाई केवन एक चारपाई के बराबर है। तख्ते विलकुल खराब हैं भ्रीर जो बाजार में २०/२५ रुपये में मिल सकते हैं। लेकिन सरकार ने उनको १४०, १४० रुपयों से रारीदे हैं। श्राप इमको देस्ट डिपार्टमेन्ट नहीं कहेगे।

में ब्रागरे से ब्रा रहा हूं। ब्रागरे जिले के पीठ उदल् र्दिशार्टमें इसे पास १४,००० दन से ब्रिधिक ब्राज कोयला पड़ा हुआ है, जिसका कोई उत्तीन नहीं ही रहा है ब्रोर जबिन सारे प्रवेश में कोयले की कमी है। पीठ उबल् रिवाग के पास इतना फोयला क्यां पड़. ह? इसिनाए पड़ा है कि ब्रिधिकांत्र कोयला पत्थर है। लाखों क्या हमारा इस कोयले में लगा हुआ है जो बिन्धन बरबाद हो रहा है, इसकी जिम्मेदारी किस पर हे? यह पिजनक बेस्ट हो रहा ह या नहीं? यह वो उदाहरण ही काफी है। इंजीनियर महोदय ब्रोर किनिय्टर महोदय जरा इसकी जांच करा ले ब्रौर उसके बाद उत्तर दे। स बाहता हूं कि मंत्री महोदय अन्य ज्ञाब देने से पूर्व मेरे इन एलिगेशंस के जवाब में पिधान कना में रक्ष्ट उत्तर देने की श्रवस्य छुपा करें।

मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि इन किर्वाण योजात्त्रों को बनाने की क्या जरूरत है जब इन पर श्रमले ही नहीं होते है। इस पुस्तिका में जाकि जिलेबार निर्माण कार्य में नयी संडुकों की तालिका दी गयी है उसमे सबसे पहले ३४ पृष्ठ पर श्रागरा जिला श्राया है। क्या मंत्री महोदय या चोफ इंजीनियर महोदय यह बतला सक्ते कि श्रागरा जिले के लिए इस सार्वजनिक निर्माण विभाग की पुस्तिका भे जितनी सङ्ग्री का लक्ष्य राया गया उसमें से एक मील भी नयी सड़क आज तक बन गयी है या नहीं ? क्यों नहीं बनायी गयी, इसकी जिम्मेदारी किस पर है ? इस प्रकार से योजना काल में लक्ष्य रखकर लोगों को घोला लेकिन जहां आगरे में एक मील सड़क बनाने के लिए कभी जरूरत ह्रेने से क्या लाभ ? नहीं हुई तो वहां मंत्री महोदय का जिला बिजनौर इस विभाग की निगाह में क्यों श्रा गया? मंत्री महोदय के जिले में १०० मील से ग्रधिक नयी सड़के इस योजना काल में रखी गयीं। क्या बतला सकते हैं कि बिजनीर जिले में योजना के श्रन्तर्गत एक भी सड्क श्रध्री छोड़ी गयी है जो पूरी न की गयी हो? अगर एक मिनिस्टर के हाथ में एक दिगार्टमेंन्ट है तो विभाग के लोग उसकी इतनी खुशामद श्रवश्य करेंगे कि उसके जिले की सारी संड्कें उस निर्माण काल में पूरी कर दी जायं, जेसा कि निर्माण मंत्री के जिला बिजनीर के लक्ष्य को पूरा करके दिखाया है। लेकिन दूसरे जिले को सङ्कों को पी० उब्लू० डी० वाले छुपेगें भी नहीं। इससे ज्यादा लज्जा की बात स्वयं एक मंत्री के लिये श्रीर क्या हो सकती है कि 'श्रंथा बांटे रेवड़ी फिर फिर घर को देय'। श्रापके जिले के लक्ष्य परे किये जाते हैं लेकिन श्रापको इतनी फुर्सत नहीं कि श्राप पंचवर्षीय योजना के श्रन्तर्गत दूसरे जिलों के निर्माण-कार्यों को देख भी सकें, पढ़ भी सकें तथा विभाग धार्तां से पूछ सकें कि उनके लिए कहीं कोई काम भी शुरू हुन्ना है या नहीं। रावत जी ने म्नाज सदन में जिन शब्दों में मंत्री जी के लिए फटकार लगायी, और कोई पानीदार आदमी हो तो दो चुल्लु भर पानी में उसे डूब कर मर जाना चाहिये। मंत्री जी डूबेंगे नहीं तो कम से कम मंत्रिमंडल से उन्हें इस्तीफा श्रवश्य दे देना चाहिए। में समझता हूं कि जिस सदस्य के ऊपर धनशासन को तलवार लटक रही हो, उस अनुशासन की परवाह न करते हुए जो सदस्य भरें सदन में मंत्री महोदय को फटकार लगा सकता है, उससे ज्यादा शर्म की बात एक मंत्री के लिए ग्रीर कोई हो नहीं सकती

श्राज हमारे चीफ इंजीनियर महोदय ने जो रिपोर्ट वी है उसके प्रथम पृष्ठ के भारत वर्ष की • • • • किस लक्ष्य तक पहुंचना है को नोट कर लिया जाय, जिसमें विखाया गया है कि सड़कों १६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदान संख्या
३४--लेखा शीर्षक ५०--साईज नेक जिर्नाण-कार्य ग्रीर ५०--क--राजस्व से
बित्त पोशित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, श्रनुदान संख्या ३५-लेखा शीर्षक ५०--ना गरेक निर्माग-कार्य-केन्द्रीय सड़क निष्धि से वितीय
सहायता, श्रनुदान संख्या ३६--लेखा शीर्षक ५०--न.गरिक निर्माणकार्य श्रीर ८१--राजस्व लेखे से बाहर ना रिक निर्माण कार्यों की
पूंजी का लेखा तथा श्रनुदान संख्या ५०--लेखा शीर्षक ८१-राजस्व लेखे ने बाहर नागरिक निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा

के निर्माण की स्रावश्यकता है, विशेष रूप से खाद्योत्पादन के लिए सड़कों की स्रावश्यकता है। रोडवेज से ग्रामदनी ग्रधिक करने के लिए सड़कों की जावश्यकता है, ग्रपन्यय की रोकने के लिए भी ब्रावर कता है ब्रौर साथ ही साथ ब्रापने लिखा है कि जिस गति से हमको ब्रपने देश की उन्नति करनी है उसके ग्रनुसार नागपर योजना के श्रन्तर्गत निर्वारित सड़कों के विकास के लक्ष्य बहुत नीचे सिद्ध हुये हैं। हमारी आज की प्रगति नागपुर योजना के लक्षय तक भी नहीं पहुंची है। यही उपयुक्त समय है कि हम विषेचना कर लें कि हमको भविष्य में किस लक्ष्य तक पहुंचना है। एक तो नागपुर भें ही उसे कम रखा गया था लेकिन आप वहां भी नहीं पहुंच पाये हैं। में आपसे फिर कहता हूं कि आलीशान भवनों के निर्माण को रोक दौजिये। श्राज श्राप बैलों का नारा लेकर यहां बैटे हुये है लेकिन श्रापने बैलों को छोड़कर श्रब हवा के साथ उड़ना शुरू कर दिया है ग्रीर बैलों को बिलकुल भूल गये हैं। कम से कम उन किसानों के रास्तों को भी सोचिये जहां उनकी बैलगाड़ी चलती है । स्राज उन बैलगाड़ियों के बैल हाहाकार कर रहे हैं श्रौर कह रहे है कि सड़को की दुर्दशा के कारण हमारी टांग टूट रही है। जाने निकल रही है, उनपर स्रादमी पैदल भी नहीं चल सकता लेकिन श्राप तो हवा में सफर करने लगे हैं। श्रापको उनकी श्रा क्या चिन्ता है। ग्रधिष्ठात्री महोदया, मैं एक बार, फिर सरकार को चैलेंज करता हूं कि पहली तथा दूसरी पंचवर्षीय योजनायें खत्म हो गयीं, क्या मंत्री महोदय या कोई भी सरकार का व्यक्ति हाउस में यह कहने का साहस कर सकता है कि भ्रागरा जिले की फिरोजाबाद तहसील में इन दोनों पंचवर्षीय योजनात्रों में एक इंच भी सड़क या नहर का निर्माण हुन्ना है ? श्राप मखील करते हैं श्रीर केवल श्रपने जिले में निर्माण कराते हैं ग्रीर दूसरे जिलों को छोड़ते चले जाते हैं।

में ब्राप से कहना चाहता हूं कि ब्रगर ब्राप ब्राप उत्पादन को बढ़ाना चाहते हैं तो ब्राइये श्रालीशान भवनों को छोड़िये, ग्रामीण जनता का ध्यान रिवये, जन-जन तक ग्रयनी योजनाग्रों को पहुंचाइये, सड़कों का निर्माण की त्रिये, सहरों और गांत्रों को निला दीजिये जिससे ग्राम जनता यह समझ सके कि सबसूच हमारे प्रदेश में श्रांज िकास योजना का कोई काम हो रहा है। जैसे किसी शरीर के संवालन के जिये, उतको जोतित रख ने के लिये, नसों में खन का संचालन श्रावस्यक है उसी प्रकार देश श्रौर समाज को उन्नति के निये देश के श्रावागमन के साधनों का समुचित विकास श्रौर संचालन होना श्रावश्यक है। इस प्रदेश के सफल संवालन के लिये, ग्रामों ग्रीर शहरों को जोड़ने के लिये, ग्रधिक ग्रन्न उत्पादन के निये ग्रापश्यक है कि प्रत्येक कोने की सड़कों द्वारा एक दूसरे से जोड़ दिया जाय । या सीमेंट की सड़कें बनाइये, मत डामर की सड़कें बनाइये, कंकरोट की ही बना दीजिये लेकिन लोगों को विश्वास दिला दीजिये कि हां, सचमच श्राप देश का विकास करना चाहते हैं । लेकिन थ्राप ऐता नहीं करेंगे, यह मैं जानता हं क्योंकि श्रापको उस साइनबोर्ड की जरूरत है जिसमें जब श्रापं उथर से गुजरे तो लिखा हो कि फलां भवन का निर्माण या उद्घाटन फर्ता मंत्री जी के हाथों हुन्ना या उसका निर्माण फलां इंजी-नियर के हाथों हुआ। आप शाहजहां श्रोर श्रकबर की तरह से अपने श्रमर स्मारक बनवाने में लगे हुये हैं। अापको जनता का ध्यान नहीं है। अगर आप श्रपना अमर स्मारक ही शाहजहाँ और अकबर की तरह से बनवाना चाहते हैं तो श्राप श्रपना पैसा खर्च कर के स्वयं श्रपने भवनों को स्मारक स्वरूप बनवा दीजिये कि जिससे ग्रानके ग्रागे ग्रानेवालो सन्तति ग्रापको याद रखें कि जब उत्तर प्रदेश में भ्रष्टाचार का बोलबाला था तब हमारे एक पूर्वज मिनिस्टर थे स्रौर उन्होंने यह श्रालीशान भवन बनवाया था और फिर उससे ग्रापकी सन्तित ग्रापको शाहजहां [श्री जगन्नाथ लहरी]
श्रोर श्रक बर को तरह याद करती रहें लेकिन प्रदेश की जनता के ऊपर इम तरह के भार को श्रोर श्रक बर को तरह याद करती रहें लेकिन प्रदेश की जनता के अतिनिधि है, श्राप के नल लादने का श्रापकों कोई श्रधिकार नहीं है। श्राप प्रदेश की जनता के श्रितिनिधि है, श्राप के नल बिजनौर जिले के प्रतिनिधि नहीं है। लेकिन श्राप करते क्या हे श्रीपकी दृष्टि सिर्फ बिजनौर की तरफ जाती है श्रीर श्राप दूसरे ग्रामों श्रीर नगरों श्रीर जिलों का क्यों भूल जाते है श इन शब्दों के साथ मैं कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री । हरिइचन्द्रसिंह (जिला बदायूं) —माननीय श्रिविष्ठाता महोदय, मेने पहले श्रापका ध्यान श्रपनी श्रोर श्राक्षित करने के लिये कहा है, उसके लिये में क्षमा चाहता हूं ।

माननीय मंत्री जी ने जो सदन के सम्मुख श्रनुदान रखे हं मे उनका समर्थन करता हूं। जो कटौती के प्रस्ताव रखे गये है में उनका विरोध करता हूं । हमारे बजट का बहुत बड़ा हिस्सा माननीय मंत्री जी के ग्रधिकार में है ग्रौर इस डिपार्टमेंट का नाम भी ग्रब सार्वजनिक निर्माण पहले तो पी० डब्रू० डी० कहलाता था। ग्रब तो सारी जनता का निर्माण इसी डिपार्टमेंट को करना है, इसलियें में मंत्री जी से एक प्रार्थना करूंगा कि श्रव तो कमर कस कर बैठने की जरूरत है, वरना यह सब जनता का निर्माण सम्भव नहीं होगा क्योंकि, जसा मुझे कुछ तजुरवा है, जैसा कुछ मैने देखा है, मेरा श्रवना विचार यह हं कि रुपये में १० श्राने सरकार का काम होता है अधिक से अधिक, और ६ आने तो चले ही जाते है। अगर आप ६ आने में से ४ आने और बचा सकें किसी तरकीब से तो श्रापका काम सवाये श्रौर ड्योढ़े तक पर्च जायगा। मेरा तात्पर्य यह कभी नहीं है कि इस डिपार्टमेन्ट में ईमानदार श्रादमियों की कमी है, ईमानदार भी है और बेइमान भी हैं लेकिन इतना जरूर मेने देखा है कि ईमानदार श्रोर बेइमान की रंस में बेइमान ही जीते है, गवहें और घोड़ों की रेस में गवहें ही भ्रागे निकल गये ह; यारतय में जो श्राच्छा काम करने वाले श्रादमी हैं वे पीछे रह गये हैं, इसका ध्यान मंत्री जी को होना चाहिये। में इस बात को बिना किसी आश्रय के या बिना किसी मिसाल के नहीं कह रहा हू। मने मना है कि यहां पर एक चीफ इंजीनियर थे जो कि १,५०० रु० तनस्वाह पा रहे थे, उनके लिलाफ शिकायतें थीं श्रौर उन शिकायतों के श्राधार पर यह तय हुन्ना कि वह खुट्टो पर चले जाय श्रीर उस वक्त तक छुट्टी पर रहें जब तक कि वह रिटायर न हो जांय लकिन श्रव मेंना यह है कि वही सहव २,२०० हुँ पर कहीं जा रहे हैं। यह चीज है जिस पर में मंत्री जी का ध्यान विलाना चाहता हूं कि कहीं ऐसा ने हो जाय कि गदहों स्रौर घोड़ों की रेस में गदहे सागे निकल जाय स्रौर घोड़े पीछे रह जायं ।

दुसरी चीज जिस पर में आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं वह यह है कि आज जरूरत इस चीजे की है कि हम अपना उत्पादन बढ़ायें क्योंकि इसके बिना न तो यह विभाग चलंगा ग्रीर न कोई दूसरा विभाग चल सकता है। यह कर्ज का रुपया है जिससे भ्राप बड़े बड़े निर्माण के कार्य और ऊंची अट्टालिकायें बना रहे हैं। इस कर्ज के रुपये से काम नहीं चलेगा बल्कि हमको उत्पादन बढ़ाने के वास्ते गांव की तरफ जाने की जरूरत है। ग्रगर हम गांव में सडकें और बिजली के कुंवे और उत्पादन के साधन नहीं बना सकते तो हम वारतव में निर्माण का कार्य नहीं कर रहें हैं बल्कि हम वह रुपया खर्च कर रहे हैं जो हमने बाहर कर्ज लिया है। निर्माण के लिये जो मुस्तिकल होगा उसके लिये उत्पादन की जरूरत होगी। में मंत्रीजी का ध्यान इस स्रोर स्राक्षित करना चाहता हूं कि जिस क्षेत्र से में स्राया हूं उसका रकबा तीन सो मील है श्रीर पौते दो लाख की उसकी श्र बादी है श्रौर जिस रोज से में इस सदन में श्राया हं उस रोज से बराबर कह रहा हूं कि वहां पर एक सड़क साढ़े ६ मील १८६६ में बनी थी, उसके बाद श्राज तक उस इलाके में जिसमें पौने दो लाख श्रादमी रहते हैं, एक सड़क भी नहीं बनाई गई है। वहां के ब्रादमी टैक्स नहीं देते ? वहां पर इस सड़क की इसलिये भी ब्रावश्यकता है ताि वहां पर ला ऐन्ड ग्रार्डर की व्यवस्था ठीक हो सके। वहां पर एक-एक महीने में ग्राठ-ग्राठ कत्ल हुये हैं, डैकेतियों की सख्या की कमी नहीं है। कारण यह है कि याने तक पहुंचने के लिये कोई सड़क नहीं हैं और पुलिस भी वहां पहूंच नहीं सकती।

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--- अनुदान संख्या ३४-- लेखा शीर्षक ५०-- सार्वजनिक निर्माण-कार्य ग्रौर ५०-- क-- राजस्व से वित पोषित नागरिक निर्माण-कार्यो पर पूंजी को लागत, अनुदान संख्या ३५-- लेखा शोर्षक ५०-- नागरिक निर्माण-कार्य- केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, अनुदान संरया ३६-- लेखा शीर्षक ५०-- नागिरक निर्माण-कार्य ग्रौर ५१-- राजस्व लेखे से बाहर न गरिक निर्माण-कार्यो का पूंजी का लेखा तथा अनुदान संख्या ५०-- लेखा शीर्षक ६१-- राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों का पूंजी-- लेखा

मं माननीय मंत्री जी का ध्यान इस ग्रोर दिलाना चाहता हूं कि क्या बात है कि इन १२ वर्षों में मेरे क्षेत्र ग्रौर तहसील का नम्बर सड़क के लिये नहीं ग्राया-हम क्या करे? सब जगह, सब ग्रादिमयों से कहा जाता है तो यही जवाब मिलता है कि जब नम्बर ग्रायेगा तब किया जायगा।

जब हम ग्रापने क्षेत्र में जाते हैं ग्रोर वहां के लोगों से सपर्क ग्राता है तो लोग यही कहते हैं, जैसा कि प्रश्न मैने माननीय मंत्री जी से किया, कि इस इलाके में, १२ साल के ग्रंदर, जब कि दो योजनाये पूरी हो चुकी है, क्या बात है कि कोई चीज नहीं हुई जिससे हम यह कह तके कि स्वराज्य हो गया—कोई सड़क नहीं बनी, कुंग्रा नहीं बना, शिफाखाना नहीं बना, कोई स्कूल नहीं खुला, एक भी हाई स्कूल पूरे क्षेत्र में नहीं हुग्रा, पारसाल जबर्दस्ती एक खुला है—ग्रब बताइये कि क्या चीज निर्माण की हुई है ? में माननीय मंत्री जी से प्रार्थना कढ़ंगा कि उस पिछड़े हुए क्षेत्र का भी ध्यान रखें। कहीं न कहीं तो उसका नम्बर ग्राना ही चाहिये था।

इसके अलावा एक प्रार्थना श्रोर करूंगा। हमारे यहां इंजीनियर्स ठेका युग मे एक बाबू क्लास बन कर रह गई है। वे केवल दफ्तरों में बैठकर काम करते है, यह नहों जानते कि मोके पर पहुंच कर कैसे काम करते है। मुंह से शायद बता सके लेकिन करके नहीं दिखा सकते। चाहे वह इंजीनियर का काम हो या यूनिवर्सिटी की ऐजुकेशन हो, हम आज पुस्त क के एक ग्रंग बन कर रह गये है। मैनपुरी में मेरी एक जर्मन इंजीनियर से बातचीत हुई थी, मैने उसको देखा था उसका कहना था कि उनका मुख्य कार्य प्रैश्टिकल काम करना है और आवश्यकता के समय काम में जुट जाता था। इन शब्दों के साथ मै माननीय मंत्री जी से प्रार्थना करूंगा कि वह उस इलाके का खयाल रखे, जिसका मैं रहने वाला हूं।

श्री भगवतीसिंह विशारद (जिला उन्नाव)—ग्रिधिकात्री महोदया, ग्राज हमारा देश ग्रीर प्रदेश योजनाकाल से गुजर रहा है। इस समय हम सबका यही उद्देश्य है कि हम ग्रपने प्रदेश को ग्रिधिक से ग्रिधिक समृद्धशाली ग्रीर ग्रिधिक से ग्रिधिक सम्पन्न बनाये जिससे हमारे प्रदेश की हालत ज्यादा से ज्यादा ग्रच्छी हो सके। लेकिन में देखता हूं कि सार्वजनिक निर्माण विभाग ग्रपने इस उत्तरदायित्व को ग्रच्छी तरह से नहीं निभा रहा है। इस योजना के समय में सबसे विश्वत रूप ग्रगर किसी विभाग का देखने को मिला हे तो वह सार्वजनिक निर्माण विभाग है। होना तो यह चाहिये था कि पिल्लिक हेल्थ डिपार्टमेंट, शिक्षा, कम्पूनिकेशन्स, कृषि ग्रीर उद्योग, इन सब चीजों का समानान्तर गित से विकास हो जिससे हम ग्रपने प्रदेश को बहुत ग्रच्छी तरह से समृद्धशाली बना सकते। लेकिन सार्वजनिक निर्माण विभाग ने ग्रपने कार्यकाल में जो कुछ भी नहीं किया है, यह बात इससे साबित होती है कि हमारे प्रदेश मे एक वर्ग मील मे २ ३ फर्लाग से भी कम सड़क हर जगह है। ग्रीर जब जब इस बात की ग्रावश्यकता महसूस करायी गयी कि सड़कों की वृद्धि होनी चाहिये, तब-तब सदैव उसकी उपेक्षा की गयीं है।

कहा यह गया है कि हम प्रदेश को दिन पर दिन श्रच्छा से श्रच्छा बनाना चाहते है, श्रावागमन के साधन देना चाहते हैं, ऊपज बढ़ाने के लिये कृषि की जितनी भी सहूलियतें हो सकती है देना चाहते हैं, इंडस्ट्रियल तरक्की के लिये श्रावश्यक काम काज का ज्यादा से ज्यादा प्रसार कर रहे हैं। लेकिन में यह दावे के साथ कह सकता हूं कि जब तक कम्यूनिकेशन के साधन इस प्रदेश में नहीं बढ़ाये जायेगे तब तक न तो कृषि की उपज श्रच्छी हो सकती है श्रौर न इंडस्ट्रीज का ही विकास हो सकता है।

## [श्री भगवतींसह विशारद]

मान्यवर, हमारे सार्वजितिक निर्माण विभाग के लेया शीर्षक ५० में ६ कराउ ५ लाख रुपये की मांग इस बात के लिये की गयी हे कि नागरिक निर्माण कार्य प्रोर राजरा में उत्त पोषित नागरिक निर्माण कार्यों पर पूंजी की लागत के प्रन्तर्गत ब्यय किया जायगा। लेकिन जब हम इसको देखते हे तो हमको प्रतीत होता है कि ३ करो ३ ११ लाग ग्यमा तो रो उस के रिपेयर पर ब्यय होगा और १५ लाख रुपया बिल्डिंग्स रिपेयर्स पर व्यय होगा। तो जित गा बजट उस मद के लिये है उसमे से ५० प्रतिशत तो रिपेय्स के लिये हे प्रौर ५० प्रतिशत व्यय हे लिये, कही पर बिजली लगाने के काम के लिये, किसी तहसील में बम्बे लगाने के लिये, किसी तहसील में एक कोठरी बनाने के काम के लिये, यानी छोटी किस्म के कामों के लिये ल रहा। उससे कोई निर्माण हो ही नहीं सकेगा, यह रुपया तो बहुत छोटे-छोटे कामों के लिये रहा। गया है।

श्रावश्यकता इस बात की है कि सबसे पहले, जमा कि मने शर म ही निवेदन किया, हमकी पिंडलक हेल्य के साथ, शिक्षा के साथ, उद्योग के साथ, कृषि के साथ कम्यान है हाना है भी साधन बढ़ाने पड़ेगे और तभी प्रदेश समृद्धिशाली हो सकता ह। जब तक श्राप एमा नहीं करगे तब तक प्रदेश समृद्धिशाली नहीं हो सकेगा। इस डिपार्टमेंट में सबसे ज्यादा दिलल्लग्य बात यह है कि जो शेड्यूल्ड रेट बना हुग्रा है उससे ४ में लेकर ६ परसेट कम पर ठक मज़र किये जाते हैं। यह इस बात का द्योतक है कि या तो इस विभाग के जितने भी इंजीनियमं र जिन्हाने शे प्यूल श्राफ रेट्स तय किया है वे श्रयोग्य है, जिनकों इस बात का ज्ञान नहीं ह कि शहपट रेट कितना होना चाहिये श्रीर कितने में वह काम हो सकेगा या यह इस बात का श्रोतक है कि देश प्रभाग में इतना ज्यादा अउटाचार हे कि शेड्यूल्ड रेट से ४ से लेकर ६ परसेट कम पर ठेके मज़र किये जाते हैं, उसके ऊपर १० परसेट इन्कम टक्स देना पहला ह और १० में १५ परसेट तक ठेके-दारों के निजी ज्याय के लिये रहता है। यानी, इस तरह में दोड्यूल्ड रेट से २५ परसेट कम पर इस विभाग का काम होता है।

यह इस बात को प्रमाणित करता है कि इस विभाग का जो शे श्वल्ड रेट ह वह बहत ही गलत है। ग्राज ग्रावश्यकता इस बात की है कि शेड्यूल्ड रेट को फिर रियाइज किया जाय। जब तक शेड्यूल्ड रेट का रिवीजन नहीं किया जायगा तथ तक में दावे के साथ कह सकता है कि इस विभाग में जो अव्हाचार है, जो वेस्टेज है उसे किसी तरह से नहीं रोका जा सकता ह। इमलिये, मान्यवर, ग्रापके द्वारा में माननीय मंत्री जी से श्रनुरोध करूंगा कि वह सबसे पहले ग्राज इस बात की घोषणा करे कि इंजीनियर्स, विभाग के ग्रिधिकारी तथा ग्रीर सरहारी प्रतिनिधियों का एक कमीशन बनावेंगे ग्रीर कमीशन इस बात की जांच करेगा कि शेड्यूल्ड रेट यथा होना चाहिये ग्रीर किन शेड्यूल्ड रेट के मातहत ठेके दिये जायं जिससे सरकार के निर्माण कार्य को ग्रागे बढ़ाया जाय।

मान्यवर, को आपरेटिव की मार्फत काम कराने की बात मैंने माननीय वित्त मंत्री की बजट स्नीच में भी सुनी थी और आज माननीय सार्वजनिक निर्माण मंत्री ने भी अपने भाषण में उसे कहा है । मैं को आपरेटिव द्वारा काम कराने का हामी हूं लेकिन में माननीय मंत्री जी से अनगध करूंगा कि वह जरा करल की तरफ भी देखे जहां को आपरेटिव सो साइटीज की मार्फत काम कराये गये और वहां पर पोलिटिकल ढंग के अध्टाचार फेल गये। तो में उनको आगाह कर देना चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश में भी वह उस अध्टाचार को फेलने से रोक नहीं सकेंगे। यदि वह यहां भी पोलिटिकन अध्टाचार फेलाना चाहते हैं तो ठीक हैं, को आपरेटिव की मार्फत वह काम दे। लेकिन में उनसे अनुरोध करूंगा कि वह खुद को आपरेटिव्ज बनाने की को शिश्चा न कर, जब उस के लिये मजदूर, मिस्त्री स्वयं तैयार हो जायं कि वह मिलकर अध्याचार बढ़ेगा और उनकी मार्फत काम कराया जाय, वरना इस देश में पोलिटिकल ढंग का अध्टाचार बढ़ेगा और उस को सरकार रोक नहीं सकेंगी और सरकार को पार्टीबाजी में पड़कर अधने लोगों को ठेके देने पड़ेगे। इस तरह से सहक रो सिस्टम बदनाम होगा और उस अध्टाचार के फलस्वरूप सहकारिता की गति गद हो जायगी। इसलिये मंत्री जी जो कुछ केरल में हुआ है उस प्रयोग की तरफ भी ध्यान दें ले। पी० ड ब्लू० डी० के इंजीनियर....

७५

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में श्रनदानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनदान संख्या ३४--लेखा शीर्षक ५०--सार्वजनिक निर्माण-कार्य ग्रौर ५०-क--राजस्व से वित पोजित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पंजी को लागत, श्रनुदान संस्या ३५--लेखा शीर्षक ४०--नागरिक निर्माण-कार्य--केन्द्रीय सडक निधिसे वित्तीय सहायता, ऋनद≀न संख्या ३६--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य श्रीर दूर--राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण कार्यों की पंजी का लेखा तथा श्रनुदान संख्या ५० -- लेखा शोर्षक ८१--राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों का पंजी-लेखा

श्री राजदेव उपाध्याय (जिला देवरिया)--मैं व्यवस्था का प्रक्त उठाना चाहता हं। माननीय राजनारायण जी सो रहे हैं, क्या यह सदन में उचित है ?

श्री राजनारायण--मैं किताब पढ़ रहा है लेकिन अन्धों के लिये सो रहा है।

श्री भगवतीसिंह विशारद--में यह निवेदन कर रहा था कि पी० डब्लू० डी० के इंजीनियर्स जो है वे इस द्निया में नहीं रहते, वे किसी दूसरे लोक में ही विचरते हैं। इस ही मिसाल सबसे श्रधिक जो दारुलशफा में माननीय सदस्यों के कमरे है उनकी श्रोर ध्यान देने से मालूम होगी । हमारे खयाल से उनके दिमाग में यह बात नहीं ब्राई कि वह यह सोचते कि इन कर्मरों में जो लोग रहेंगे उनके साथ परिवार भी रहेगा, उन के दिमाग में यह बात भी नहीं ग्राई कि उनके परिवारों को इस बात की भी आवश्यकता होगी कि वह अपने लिये भोजन आदि की भी कोई व्यवस्था करेंगे । उनका खयाल शायद रहा होगा कि वह या तो हजरतगंज के होटलों में खायेंगे या चने चबा कर रहेंगे । कोई बीच का रास्ता उन की समझ में नहीं श्राया श्रीर इस लिये उन्होंने ऐसा कोई बन्दोबस्त वहां नहीं किया कि भोजन कहां बने । मैं नहीं कह सकता कि यह उनके दिष्टकोण का दोष है या उनकी श्रयोग्यता है या वह इसकी श्रावश्यकता नहीं समझते कि हमें इसकी पति करनी चाहिये थी।

इसके ग्रलावा इस विभाग की जो सबसे बड़ी खराबी है वह यह है कि बजट का इस्तेमाल बड़े गलत ढंग से होता है, ६ मास तो योजना के बारे में पत्र व्यवहार में निकल जाते हैं, देर हो नाती है ग्रौर उसको कोई ग्राखिरी रूप नहीं दिया जाता, उसके बाद रुपया सैन्कदान होता है, फिर वह जिलों में पहुंचता है श्रौर कहीं जाकर श्राखिरी ३ मास में सही ढंग से काम होता है श्रौर मार्च में यहां से तार जाते है कि जल्दी खर्च करो श्रौर नीचे से भी खबर श्राती है कि जल्दी से खर्च करने की ग्राजा दी जाय । मेरा विचार है कि इस तरह की बेतरतीबी को दूर किया जाय, ग्राज्ञा है कि माननीय मंत्री जी इस तरफ ध्यान देंगे श्रौर इस कमी श्रौर खामी को दर करने की कोशिश करेंगे।

इसके साथ-साथ उन्नाव में ग्रन्तरिम जिला परिषद् की एक बैठक हुई थी । उसमें विभाग के डिप्टी सेकेटरी भी गये थे, उन्होंने एक सड़क विकमपुर रुझियाई-बक्सर रोड का निरीक्षण भी किया था। वह सन् १६५२ में इस विभाग में ली गई, फिर वापस की गई। इस तरह से जो सडक ली जाती है श्रौर वापस की जाती है उस सड़क की बड़ी छीछालेदर हो जाती है । हैं कि मंत्री जी मजबूत इरादे से सड़कों को लिया करें ग्रौर पवकी करके उनको छोडा ेकरें वर्ना कोई उनका पूछने वाला नहीं रहता । उनकी हालत यह हो जाती है कि उनमें जूता पहन कर चलो तो जूता फंस कर रह जाता, कोई भी सामान लेकर चलो एक बार फंस जाय तो फिर उससे निकलने वाला नहीं है। इसलिये मेहरवानी करके मंत्री जी गांवों की सड़कों की तरफ भी देखने की कृपा करें ग्रौर जनता की ग्रसविधाग्रों का विभाग लयाल करे ।

श्री व्रजविहारी मेहरोत्रा (जिला कानपुर)—-प्रधिष्ठात्री महोदया, जो प्रनुदान माननीय निर्माण मंत्री जी ने पेश किया है उसका समर्थन करने के लिये में खड़ा हुआ हूं। एक जमाना था जब इस पी० डब्लू० डी० को लोगों ने पब्लिक वेस्ट डिपार्टमेंट कहा था। ग्राज भी श्रगर उस व्यवस्था को मान लिया जाय तो में समझता हूं कि कोई फर्क नहीं पड़ता है। में इस ध्यवस्था में न जाकर, यह कहना चाहता हूं कि जिस जिले से ग्राता हूं वह एक बदिकस्मत जिला है

[श्री वर्जावहारी मेहरोत्रा]

जिसमे पिछले १२ वर्षों से कोई भी नई सड़क का निर्माण नहीं हुन्ना ह, वह है कानपुर। जब वहां किसी सड़क के बनाने का सवाल श्राता है तो कहा जाता है कि वह तो सराजम जिला है। कित शे इंडस्ट्री है, कानपुर में कितनी गाडियां दौड़ती है, इसका लयाल नहीं है। दितीय पंचवर्षीय योजना में यह निर्णय हुन्ना कि कुछ सड़के बनेगी।

(इस समय ४ बजकर ६ मिनट पर भ्रधिष्ठाता, श्री बेचनराम गुन, पुनः पोठापीन हुए।) हमारे यहां प्लानिंग कमेटी में इस विभाग के सेनेटरी महोदय पथारे श्रोर बहुत बड़े विचार विमर्श के बाद ६ मील सड़क लेने की बात तय हुई। लेकिन द्वितीय पंचवर्षीय योजना समाप्त होने जा रही है, उप सड़क पर एक कंकड़ भी श्राज तक नहीं पड़ा। समझ में नहीं श्राता, योजनाएं हों, योजनाश्रों के लिये इतनी कशमकश हो श्रीर कम से कम सटक बनने वानी हो श्रीर वह भी न बने, तो किस मर्ज की दवा है यह विभाग ? कैसी प्लानिंग हे ?

एक सड़क बनी थी १२ वर्ष पहले, बेल विधूना रोड । श्रिष्ठकतर उसके मील ऐसे हैं जहां कंकड़ नाम की कोई चीज नहीं रह गई है। जो उधर जाता है वह गाड़ी की लर मनाना हुन्ना जाता है। श्रभी उसमें एक पुल पाण्डु नदी पर बन रहा है। मालम निर्णा कब बन कर तथार होगा। १२ वर्षों के बाद यह नौबत श्राई। में चाहता हूं कि विभाग उधर प्यान दे। जो सड़क इटावा से कानपुर को मिलाती है, श्राज से १२ वर्ष पहले उसकी बनाना तय किया था, कुछ बनी भी थी। उसे पूरा किया जाय।

कातपुर जिले मे प्रथम पंचवर्षीय योजना में कछ सहके ली गई थी। उनमे एक थी। भोगनीपुरअमरीधा-ग्रमरीधा-पिपली योजना कई वर्ष तक चलती रही। फिर ये सहक बिना कछ किये
जिला बोर्ड को वापस कर दीं। उसके बाद जिला बोर्ड सालाना मरम्मन करा दिया करता था।
जरूरत पड़ने पर जिला बोर्ड ने पुलिया भी बनवाई। श्रम फिर विभाग ने यह महके ले ली है।
ग्राज दो वर्ष हुए पिपली-ग्रमरीधा में कंकड़ इकट्ठा कर दिया गया हे लेकिन उसे कटने
की नौबत नहीं श्रा रही है। जो हमारे जिले में एकजीक्यूटिय इंजीनियर रहने हैं उनमें प्रार्थना
की। उन्होंने कहा कि देखेंगे कि क्या बात है। दुबारा जिल ग्राया जिला परिषद में तो बताया
कि जितना रुपया था उसका कंकड़ खरीद लिया गया, कटाई के लिये हमारे पास रुपया नहीं है।
तो उतना कंकड़ ही खरीदतें जो कूटा जा सकता। श्रम खरीदा हुग्ना यह ककड़ पडा हुग्ना बरबाद
हो रहा है। फिर कभी नौबत ग्रायगी कूटने की तो वह कंकड़ कम पड़ जारेगा। यह र फलरंग
सड़क है। जो कंकड़ उस पर पड़ा हुग्ना है, उसकी कुटाई में मुक्किल से ४—५ हजार रुपया पड़ेगा।
सरकार कुपा करके सड़क पर उसे कुटवाने की व्यवस्था कर दे। श्रीर ग्रगर इनना रुपया
न हो सके तो मैं दावत देता हूं कि हमारी गांव सभा ग्रमरीधा को ढाई हजार रुपया दे दे, यह कटवा
कर सड़क बना देगी। इन दोनों शर्तों में से जो सरकार को मंजूर हो, उसा के श्रनुसार
श्रादेश प्रदान करें।

एक सड़क हमारे जिले में नेशनल हाईवेज के नाम से बनी है, बारा-सिकन्वरा। उसमें बहा अन्थेर हुआ है। उप-मंत्री महोदय ने उसे स्वयं देखा है, नक्शा कछ है और सड़क कछ और है। किसानों के चिल्लाने के बाद भी ऐसा मोड़ दिया गया है जो नक्शें में कही नहीं है। केवल इसलिये कि जिन्होंने विरोध किया था उनको नुकसान पहुंचाने की गरज से सड़क को टेढ़ा किया गया। जब उपमंत्री महोदय ने इंजीनियर का ध्यान आकृष्तित किया तो उन्होंने कहा ठीक है हम इस मोड़ को थोड़ा कम कर देंगे; लेकिन वह भी अभी तक नहीं हुआ।

इंजीनियर्स की जो बटालियन इस विभाग में है इसके बारे में जो लोगों की राय है वह सब जानते हैं, उसको कहना में यहां मुनासिब नहीं समझता। नमूने के तौर पर बारलशफा को हो लिया जाय, इसके बनने में लाखों रुपया खर्च हुआ। लेकिन जितने शौचालय बने हैं उनमें अजीब तरह का प्लास्टर हुआ है। कोई शौचालय ऐसा नहीं है जिसमें लोना न लग रहा हो, जिसका प्लास्टर झड़-झड़ कर न गिरता हो। मालूम नहीं किसकी निगरानी में उसकी

७७

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में प्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--ग्रनदान संख्या ३४--लेखा शोर्षक ५०--सार्वजनिक निर्मण-कार्य श्रौर ५०--क--राजस्व से वित पोषित नागरिक निर्माण-कायों पर पंजी की लागत, ग्रनदान संख्या ३५--लेखा शोर्षक ५०--नागरिक निर्माग-कार्य--केन्द्रीय सडक निधि से वितीय सहायता, ग्रनदान संख्या ३६--लेखा शोर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य ग्रौर द१--राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पंजी का लेखा तथा ग्रन्दान संख्या ५०—लेखा शीर्षक ८१—– राजस्व ले बे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों का पंजी-लेखा

सालाना पुताई होती है! पहले खिड़िकयों भीर दरवाजों पर वानिस होती है, उसकेबाद में पुताई होती है और फिर उसे कोई देखता नहीं कि जो वानिश हुई है वह कैसी होती है, किससे होती है। फिर श्रगर इसे विभाग को पब्लिक वेस्ट डिपार्टमेंट कहा जाय तो गलत ने होगा।

माननीय मंत्री जी, में श्रपने क्षेत्र मुसानगर की तरफ ग्रापका ध्यान श्राकर्षित करता है। यह यमना के किनारे मंडी है श्रौर हमीरपुर जिले से मिलती है। तो जमुना पर गैर बरसात के दिनों के लिये मंत्री जी पैन्ट्रन बिज बनवा सकें तो भ्रच्छा होगा, इससे हमीरपुर जिले का जो पिछड़ा हुन्ना हिस्सा है उसका भी भला होगा । मूसानगर ग्राम में एक थाना है लेकिन उसकी कोई इमारत नहीं है। जिन लोगों से हम सुरक्षा ग्रौर व्यवस्था का काम लेता चाहें उनके रहने का ग्रगर ठीक प्रबन्ध न हो तो वह कहां तक उचित काम कर सकते हैं, यह जरा सोचने की बात है। इन शब्दों के साथ मैं अनुदान का समर्थन करता हूं।

श्री बंशीधर शुक्ल (जिला खोरी)—-प्रधिष्ठाता महोदय, बड़ी उदारतापूर्वक श्रापने मुझे बोलने का मौका दिया; इसके लिये धन्यवाद।

सब अपने-अपने जिले की बात कर रहे हैं। मैं भी श्रपने लखीमपुर जिले की बात कहना चाहता हं जिसमें ग्रंग्रेजों ने एक सड़क बनायी थी ग्रीर वही पक्की सड़क है, दूसरी कोई नहीं। ११० मील का क्षेत्रफल निवासन तहसील का है, उसमें एक भी पक्की संड्क नहीं । एक कच्ची सडक ग्रंग्रेजों ने बनायी थी, उसके ऊपर से भी श्रगर बरसात में कोई निकल जाय तो डुब जाय। उसी जिले में जंगल के क्षेत्र में जंगल विभाग की सड़कों का जाल बिछा है। अपर को ई उधर से निकल जाय तो गिरफ्तार कर लिया जाय। तहसील लखीमपुर में पक्की एक भी सड़क नहीं है। श्रंग्रेजों की बनाई कच्ची ३० सड़कें हैं जो सभी बिना मरम्मत पड़ी हैं। लखीमपुर तहसील ८० मील लम्बा एरिया है जिसमें एक भी सड़क नहीं है। तहसील निघासन में कोई भी सड़क नहीं है। नैपाल का किनारा है। एक सड़क नैपाल के किनारे तक बना दें तो सरकार की श्रामदनी बढ़ जाय श्रौर प्रांत की तरक्की हो जाय। सारदा नहर पर एक पीपों का पूल बनाया जाता है, दो तीन महीने चलता है श्रीर फिर टूट जाता है। वुलिया का पुल शारदा नहर का चौड़ा करने के लिये रेलवे वालों से कहा गया लेकिन वह भी चौड़ा नहीं किया गया। बहुत बार लिखा गया कि पुलिया का पुल चौड़ा कर दिया जाय, जिसमें लारी ग्रीर बस निकल जाया करें लेकिन कुछ नहीं हो रहा है। हर साल रुपया वापस हो जाता है भ्रौर रेलवे वाले कुछ नहीं करते। गांव समाज सड़क बनाता है, पी० डब्ल्यू० डी० सड़क बनाता है, डिस्ट्विट बोर्ड सड़क बनाता है, गन्ना सोसाइटी सड़क बनाती है लेकिन जब बनाना होता है भ्राप बिना-पढ़े लिखे ठेकेदारों को ठेका दे देते हैं भ्रौर उसमें हिस्सा बटाते हैं--ठेकेदार गरीब मजदूर से का लेता है। इन इंजीनियरों को क्यों रखा गया है? इन बेईमानों को निकाल क्यों नहीं दिया जाता ? इनसे कोई तरक्की न हुई है, न होगी।

श्री अधिष्ठाता--यह 'बेईमानों' शब्द पालियामेंटरी नहीं है। वापस लें।

श्री बंशीधर शुक्ल-- खेर, ग्रापकी राय मानता हूं। मेरा कहना यह है कि ग्राप ग्रगर कलंक दूर करना चाहते हैं तो इन इंजीनियरों से काम न लें और यह जो ठेके की परम्परा है तत्काल इसे तोड़ें श्रौर विभाग के जितने नौकर हैं उनसे कहिये कि खुद संडक बनावें श्रौर मजदूरों को लगा कर काम लगार्ये।

[श्री बंशीयर श्वल]

लखनक से जो सड़क टिकैतगंज होकर सीधे बाग हा, जिना मीतापुर-महम्दाबाद होकर पिलया कटौल तक और हल्हानी तक नली जातो है उस गड़क की ती प्रकार कर दिया जाय तो बहुत बड़ा काम हो जाता है। यह शेरशाह सूरी की बन गई है। एतम हमारे जिले की तरककी, सीतापुर और लखनक की भी तरककी होगा। मोहम्मदी तहसील में एक भी पक्की कच्ची सड़क नहीं है। वहां भी कृपा की जाय। हमारे यहां गोला मिल और हरगांव मिल वाले पैसा देते हैं कि हम सड़कों में योगदान वें लेकिन गन्ना मोमाहरों योगदान नहीं देती और कहा जाता है कि अभी प्लान नहीं बना है और मामला कका पड़ा है। सड़के तो नहीं वनतीं लेकिन अभी लखीमपुर में ४४, ४४ हजार के ७ रेस्ट हाउसेज बनाये गये हैं जिनमें इंजीनियर बगैरह आकर ठहरते हैं। तो इसके लिये काया मिन जाता है, मगर जनता के नियं नहीं। यह क्या है?

श्राप ११ हजार रुपया प्रति मील तारकोल को सरक पर, ७१ हजार रुपया पनि मील सीमेंट की सड़क तथा ३५ हजार रुपया प्रति मील कंकड़ की सहक पर पार्च करते है। इतना रुपया खर्च नहीं होता। ३ ४ रुपया इंजीनियरों की जेबों में जाता है। अगर गांव के प्राविमयों को ही आप सड़क बनाने को दे दें तो। बहुत गस्तो सहके बन जायंगा। ये के गेरार मजदरों को प्रति खन्ती यही ६ प्राने देते हैं। लेकिन इंजीनियर श्रौर ठेतेदारों की जी परम्परा है वह चनी जा रही है। रिश्वत चल रही हैं। इसको बन्द करिये। आपको यह परम्परा तो उनी पहेगी। नहीं तोड़ने की हिम्मत हो तो बैठ जाइये। में इस काम को यहत अलदी तरह में कर सकेंगा। जो तनस्वाह मिलती है वह श्राप लेते जाइये। बंगला य मोटर श्रापके ही पास रहेगा। मुझको तो जो २०० रुपये भी सरकार तनस्याह देती है इसे भी में बाद देता है। महो पैसे की जरूरत नहीं है। में ब्राह्मण श्रादमी हूं। केवल ६ महीने के निष्टे मही श्राप वे दीजिये। जो इंजीनियर श्रापके रिक्वत लेने हैं, मैं इन सबको ठीक करके दिलाऊंगा। ऐसी दशा में श्रगर श्राय नहीं तोड़ सकते हैं तो कोई पैदा हो जायगा इनको लोड़ने वाला। र्जगलों में जो सड़कें हैं उनके लिये आप कृपा करके हिदायत दे दें कि उनमें में आविमियां हो निकलने दिया करें। श्रगर कोई उधर से निकल जाता है तो उसको गिरफ्तार कर लेते है श्रीर उसमें केनगाड़ी छीन लते हैं। दो तीन सड़कें ऐसी हैं जिन पर लोगों का निकलना यंसे ही यन्द हो गया है। जो हरिजन भ्रापने बसाये हैं उनमें हबूड़े वगैरह हैं। उनके भ्रातंक के कारण लोग उगर से नहीं निकलते हैं। दिन में सब लूट लेते हैं, एक सड़क तो अम्बारा रोड हं श्रीर दूसरी अलीगंज रोड है। श्रम्बरा रोड पर एक सरदार जी ने एक दैक्टर निकाल विया तो वहां का पल हो तोड़ दिया गया। एक सड़क हमारे यहां फर्दहन से निकल कर मुहम्मदपुर जाती है; उसकी भ्रभी तक नहीं बनाया गया है। इसी तरह से उल्ल नदी पर पुल नहीं बनाया जाता है। एक नक्क लग्योमपुर को तरफ से श्रलीगंज बिजुशा भीरा तक जाती हैं। उस पर सात पुलियां बननी है। उसका प्लान भी बन गया है लेफिन उनके बनने की नौबत नहीं स्राती है। यह क्या है?

मेरे जिले की दशा ऐसी है कि कुदरत ने उसको भुला रखा है। ऐसी दशा में में कहूंगा कि आपके इंजीनियरों ने आपको दह खत करने के लिये एक अत बना रखा है। आप केवन अंगूठा लगाते हैं और अगर उनसे कोई गलती हो जाय तो आप उनकी तरफ से मख्त्यार बन कर जवाब दें कि मेरे लला ने माखन नहीं खाया। हम लोगों ने इसित्ये आपको नौकर नहीं रखा है कि आप नौकरों के नौकर बनें। आप हमारे मंत्रो हैं और मह स्मा गांधी जी के नाम को आप उज्जवल करने वाले हैं। फिर आपको क्या जरूरत है कि आप इस तरह से अपनी कीर्ति निष्ट करें, और हमारी रही सही निष्ट करें और सदन की मर्यादा निष्ट करें? इसित्ये आप इस चीज को छोड़ दें और इन इंजीनियरों को हटावें अथवा कंट्रोल करें।

मैंने दरख्वास्त दी थी कि जो तारकोल के ड्रम होते हैं उनको कीमत से दे दिया करें। हमारे यहां श्रक्सर श्राग बहुत लग जाती है। वह ड्रम से श्रपना छप्पर बना लेंगे। मैंने प्रक्र भी पूछा। लेकिन कुछ पता नहीं है, क्या हुग्रा ? इसलिये उतना ही काम करे जितना श्राप कर १६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—अनुदान संख्या ७६ ३४—लेखा शीर्षक ५०—सार्वजिनक निर्माण-कार्य और ५०—क—राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, अनुदान संख्या ३५— लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, अनुदान संख्या ३६—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य और ८१—राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण कार्यों की पूंजी का लेखा तथा अनुदान संख्या ५०—लेखा शीर्षक ८१— राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों का पूंजी—लेखा

सकते हों और जहां तक देख सकते हों श्रीर श्रागर श्राप नहीं कर सकते हैं नहीं देख सकते हें तो चुपचाप बैठ कर भगवान का भजन करिये क्योंकि बुढ़ापा श्रापका भी श्रा गया है श्रीर मेरा भी श्रा गया है। श्रापके पड़ोस पहाड़ है श्रोर मेरे पड़ोस जंगल।

\*श्री लालबहादुर (जिला वाराणसी)—माननीय ग्रिधिष्ठाता महोदय, सबसे पहले में ग्रापको धन्यवाद दे दूं कि चार दिन से उठने बैठने के बाद मुझे ग्राज मौका मिला है। निर्माण मंत्रो जो ने जो ग्रनुदान रखा है मैं उसके समर्थन के लिये खड़ा हुग्र। हूं। हमारे ग्रादरणीय मित्र विष्ट जो ने बड़ा लम्बा चौड़ा इतिहास सुनाया, भोहिन जोदड़ों का इतिहास बताया भोर रोमन साम्राज्य का इतिहास बताया। में मानता हूं कि भोहिन जोदड़ों था ग्रीर जरूर था। लेकिन ग्राज उसकी क्या यूटिलिटी है, ग्राज रोमन साम्राज्य की क्या यूटिलिटी है। जो चीज उस समय होती रही वह श्रव नहीं हो सकती है। उस समय सड़कें जमीन पर बनती थीं ग्रीर रोमन साम्राज्य उस समय लड़ रहा था। लेकिन यहां का मानव ग्राज के युग में चन्द्रमा, सूरज ग्रीर मंगल तक जाने की चेष्ट में लगा हुग्रा है। इसलिये इन पुरानी बातों को सोचना गलत चीज है।

कहा गया है कि सारे काम बनारस में ही रख दिये गये हैं। मै उन मित्रों को निमंत्रण दूंगा श्रीर पैसा दूंगा वह बनारस चल कर देखें कि वहां की पब्लिक प्लेमेज ऐसी हैं जो कि बनारस के लोग नहीं, श्रिखल भारतीय श्रीर इंटरनेशनल लोग इस्तेमाल करते हैं। एक पंचकोशी सड़क है, जिस पर श्रिखल भारतीय लोग तो श्राते ही हैं, कई इंटरनेशनल लोग, जो हिन्दू धर्म में विश्वास रखते है, श्राते हैं।

मान्यवर, मैं माननीय मंत्री जी को एक बात के लिये यथाई देता हूं। उन्होंने यह घोषणा की है कि ग्राठ या दस या कितने हजार के कामों को ठेकेदारों से न करवा कर कोग्रापरेटिव सोसाइटियों से करावाएंगे। मैं दावे के साथ कहूंगा कि यह समाजवादी समाज की तरफ एक ग्रीर, कदम हैं। लेकिन उसके साथ-साथ में एक निवेदन ग्रीर करूंगा कि ग्राप एक्स्पेरीमेंटल तरीके से यह ग्रीर करें कि इतने रुपये तक जो काम होंगे वह खुद ग्राप के विभाग द्वारा होंगे, ठेकेदारों के द्वारा नहीं होंगे। यह ग्रव कतई वरदाकत नहीं किया जा सकता कि इतनी लम्बी चीड़ी रकमें ठेकेदारों के घर जायं। ठेकेदार इनकम टैक्स भी बचाते हैं ग्रीर मुनाफा भी लेते हैं। इस तरह यह दोहरा फायदा उठाते हैं।

कहा जाता है कि जिलों में काम नहीं हुन्रा। यह जो एक लिस्ट दी है उसमें ५१ जिलों का व्योरा है। कमोबेश सभी जिलों में काम हुन्रा है। ऐसी बात नहीं है कि पी० डब्ल् डी० निक्म्मा विभाग है। सिद्धांत की बातें कहीं गयीं कि हमारा दृष्टिकोण नहीं बदला है। मान्यवर, श्राज जनता के सामने प्रत्यक्ष उदाहरण है कि जरूर दृष्टिकोण बदला है। क्या इंजीनियर वही है जो १६४० के पहले थे। उनमें भी यह एहसास ग्राया है कि हम एक स्वतन्त्र, प्रजातांत्रिक देश के नागरिक हैं। हम प्रजातंत्र ग्रौर समाजवादी समाज का निर्माण करने के लिये श्रागे वढ़ रहे हैं। ग्रभी श्री हरिश्चन्द्र साहब ने जो कि रिटायर्ड जज हैं, किसी इंजीनियर की तरफ इशारा किया कि बहुत गंदे ग्रादमी थे,

<sup>\*</sup> वक्ताने भाषण का पुनर्वोक्षण नहीं-किया।

[श्री लालबहादुर]

उनको फिर एक्सटेशन देने जा रहे हैं। मैं निषेदन करूंगा कि प्रगर कोई श्रादमी गंदा हो तो एक्सटेशन की बात तो अलग, निकाल देने की बात अलग, उसका नहर प्रामीक्यशन होना चाहिये। अब यह समाज इसको बर्दाश्त करने के लिये तथार नहा है। लेकिन इसके विपरीत सभी लोग जानते हैं कि बड़े अच्छे अच्छे दर्जानियर भा है, जिन को देश की लगन है। जहां तक यह प्रश्न हैं कि कौन बेईमान है और की द्रिमानदार है, जंसा समाज होता है उसी समाज का रिफलेक्शन गवर्नमेन्ट होती है। उसा गर्यनेमेन्ट का एक श्रंग निर्माण विभाग भी है। जैसे जेरी पेसे की महत्ता कम होती जा रही ह उसे यस हम चरित्र निर्माण की श्रोर श्रागे बढ़ रहे है।

मान्यवर, दो-एक बातें मुझे बहुत जरूरी कहनी है। बनारम की जो हालत है, कहने को तो यहां बहुत कुछ कह दिया जाता है क्यों कि यम बचन की मान्यता है करने को दरिद्रता। लेकिन जो हालत बनारस की है वह हमें मान्य है। दिन भर हाउस में सुनते-सुनते ऊब जाता हूं, कि मुख्य मंत्री वहां के हैं, इसलिये बड़ी प्रायारिटी यी नाता है। प्रगर वहां सड़के कहीं इधर-उधर बन गयी है या एक पुन जिसका बहुत जिल्क विया गया, वहां की पब्लिक की यूटीलिटी जरूर हैं लेकिन जो वह बना, इंटरनशनल लागा को दस मील घूम कर जाना पड़ता था, इसलिये वह पुल बनाया गया। इसिनये नहीं बनाया गया कि कि बनारस के लोग उसका यूटिलाइजेशन करेगे। ग्राज जरर यह इसका उपभोग कर रहे हैं।

मान्यवर, कहा गया कि अन्तिरम जिला पियदों ने फान-फान सह का बात कही और नहीं बनाया, तो मेरी राय तो यह है कि सर्वे कमीदान से ता काग चान नहीं, क्यांकि हम सब एक ही जगह के रहने वाले हैं, जिला परित्रदों पर किनना भार है। यह उम सबको मालूम है, इसी सदन के अधिकतर मेम्बर बल्कि सभी मेम्बर जिना परिषय है मेम्बर है, कुछ लोग पिछले बोर्डों में भी रहें हैं, वे जानते हैं कि उनको उनना गंगियी नहीं है कि वहां वह कुछ काम कर सकें।

मानतीय मंत्री जो को चाहिये, ग्रौर सदन के सम्मानित सदस्यां की चाहिये कि ग्रपने-श्रपने जिलों की जो मुख्य-मुख्य सड़ में है उनकी वह माननाय मंत्री जा की बतादें श्रीर माननीय मंत्रीजो उनकी एक-एक करके लेकर बनयाने का प्रयन्थ करे। लेकिन उसके साथ-साथ एक काम यह करना जरूरी है। जैया कि यहा यहा जाता है श्रमदान के बाबत, तो यह श्रमदान वगैरह इस देश में कुछ बहुत सामेशक र नहीं हुआ। वह तो खाली इस सरकार की एक मंत्रा थी कि श्रमदान का एक भावना लीगी में पैदा हो जाय, लेकिन मेरी समझ में तो कुछ श्राया नहीं कि यह श्रमदान को भावना कुछ बहुत जागृत हुई हो। उसका एक-ही कारण है और वह यह कि संक हैं। यो की गुलामी का जो नतीजा है वह हमको भ्राज भुगतना पड़ रहा है। श्रोर में भ्राज इस सदन में चेतावनी देता हूं कि हमेशा यही भावना कि इधर से काई भा चाज पेश हो, कोई भी अनुदान आये, तो उधर से जरूर उसका विरोध होना चाहिये। अरे भाई, इस को बन्द कीजिए, नहीं तो इतने दिनों तक जो गुलामी की भावना बनी हुई है उसमें रिशेष की हो एक भावना पदा करेगे और फिर देश गड्डे की तरफ बढ़ जायगा। जो खराब बात हों, उनका जरूर विरोध कोजिए। लेकिन जो प्रच्छी बाते हों, उनका तो ग्राप समर्थन कीजिए। मै बराबर देख रहा हूं जितने बिल आये, जितने अनुदान आज तक आये, विरोधी पार्टियों ने बारी-बारी से एक-एक करके विरोध शुरू कर दिया, कोई पार्टी तो ऐसी होती जो किसी एक अनुदान को भी तो यह कहती कि यह अनुदान अच्छा है श्रीर इसको पास किया जाय, इस पर हम समय नहीं लेंगे।

मान्यवर, जो सदन का इतना समय बरबाद होता है एक एक अनुदान के लिये, अगर हम सारे अनुदानों को एक हफ्ते में मास कर देंते तो कितना क्यमा पब्लिक १६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--भ्रनुदान संख्या
३४--लेखा शीर्षक ५०--सार्वजनिक निर्माण-कार्य ग्रीर ५०--क--राजस्व से वित्त
पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, श्रनुदान संख्या ३५-लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय
सहायता, श्रनुदान संख्या ३६--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य
श्रीर ८१--राजस्व लेखे से बाहर न गरिक निर्माण कार्यों की पूंजी का
लेखा तथा श्रनुदान संख्या ५०--लेखा शीर्षक ८१--राजस्व
लखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पंजी---तेखा

का बच जाय और कितना काम बच जाय! अपने अपने क्षेत्रों में जाकर हम लोग पिंडलक का कुछ काम करें। लेकिन हम लोग तो ख्वात्रख्वाह के लिए पिंडलक के रुपये का मिस्यूज करते हैं और अपने काम का हर्ज करते हैं, खाली इसिलये कि विरोध करना ही है। भाई, विरोध इसिलये नहीं करना चाहिये कि ख्वामख्वाह जो भी अनुदान आये वह बड़ा खराब है। मान्यवर, मैं पूछाा हूं कि पी० डब्जू० डी० माना कि निकम्मा महकमा है लेकिन यह जो अनुदान है, इन्हें क्या पास नहीं करना है, कुछ काम नहीं करना है? लेकिन अभी देर में कोई साहब कहेंगे कि घंटी बजा दोजिए, हाथ उठवाइए, और कोई साहब कहेंगे कि लांबी में चिलिए। तो यह सब क्या है? रोजमर्रा के जो अधिकार हमको मिले हुए है उनका उपयोग की जिये, दुरुपयोग मत की जिये। यह आप सब लोग इस बात को जानते हैं। मैं कोई आपको उपदेश नहीं दे रहा हूं।

थ्रब मैं, मान्यवर, कुछ एक दो बनारस की सड़कों के बारे में कहना चाहता हूं। एक सड़क है यूनिव्यसिटी से रामनगर को जाने वाली सड़क; यह इंटरनेशनल इम्पार्टें सकी सड़क है लेकिन उस पर ग्राप जाकर देखिए नावें चलती हैं।

चीन की बात भी कही गई। माननीय विष्ट जी ने चीन की बात कही। मैं विष्ट जी को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि स्राथ इतना विश्वास रिलए कि संग्रेज जो स्रयनी बिटिश एम्पायर यहां पर कायम किये हुए थे उनको जब हमने निकाल दिया तो चीन क्या हस्ती रखता है? स्राप लोग पहाड़ के रहने वाले हैं लेकिन हम स्रापको विश्वास दिलाते हैं, स्राप घबड़ायें नहीं, हम स्रापके साथ कन्धे से कन्धा भिड़ाकर स्रापके एक बूंद खून के साथ अपना बीस-बीस बूंद खून गिरा देंगे।

श्री रामस्वरूप वर्मा — प्राननीय श्रिधिष्ठाता महोदय, मैं श्रभी माननीय सदस्य वाराणती को सुत रहा था। ऐता मालूप पड़ता है कि जो माननीय सदस्य वाराणती से श्रा रहे हैं उन्होंते कभी संसदीय प्रणाली का श्रथ्ययन नहीं किया श्रीर शायद वह सदन की उस परम्परा से श्रवगत नहीं है ....

श्री लालबहादुर--ग्रब ग्रापसे कुछ सीखेंगे।

श्री रामस्वरूप वर्मा—ठीक है, सीखिए। हम तो कहते हैं कि सीखे रहिएगा तो ग्रच्छा रहेगा। श्रगर वह ज्ञान—ली—इविद्याध है तब तो उनको इस तरह से समझाना कठिन हैं श्रीर श्रगर ज्ञान—ली—इविद्याध नहीं हैं तो उनको श्रीर कुछ श्रासानी से सिखा सकते हैं। यह उनको मालूम होना चाहिये कि प्रजातन्त्र में जितने दिन ज्यादा श्रसेम्बली चले उतने दिन ही जनता के श्रधिकारों की सुरक्षा होती है। उसमें जनता की भावनाश्रों का प्रतिबिम्ब होता है। इस दर्पण रूप सदन में जनता के सुख-दुख का प्रतिबिम्ब पड़ना चाहिये। श्रगर उनकी बात को माना जाय तो वह यह भी कह सकते हैं कि गवर्गर का शासन हो जाय, इससे पैसे की बचत होगी श्रीर जो रुपया सदन चलाने में बेकार खर्च होता है वह बच जायगा।

में यह कहना चाहता हूं कि प्रस्तुत विश्य बहुत गंभीर है। माननीय मंत्री जी ने इस संबंध में श्रपनी नीति को स्पष्ट नहीं किया है। उन्होंने राज्य के लिये सड़कें बनाने की बात कही। श्रच्छा राज्य हो या खराब राज्य हो, सड़क तो बना करती हैं श्रोर विभाग

## श्री रामस्वरूप वर्मा]

स्रभी कुछ लोग मेडिकन कालेज कानार को रार पार १ उनकी पना होगा कि वहा पर ८०० रुवये कर एक एक पर्या का गार । ना साम जीन ह निर्माण विभाग को पहले यह करना चाहिरे कि वह सीना जित रूप स एक प्याना गान बतावे स्रीर किर उसके लिये काय है हो । स जारता ह कि इर पार स सर पार एक परतक है, ली फ्यूचिन की लिखी हुई, उसकी स्राय दातें का के गार कर । बरा नान सजी उनकी पहली पंचवर्षीय योजना हुई थी, तह उस रहें पार का मिना कि के गेर समे थे। जो जो काम चीन स हुन्ना था उसके साथ से उन्हों का ना का किराह के गेर समे थे। जो जो काम चीन स हुन्ना था उसके साथ से उन्हों का ना का किराह क्र समस पर भी कहा था कि हमारी इकनामी है, हाके रावस पर का लिए कि ना का स्थान की निर्माण कार्य है कि जहा तक हमारी इकनामी है, हाके रावस पर का लिए कि हमारा जो निर्माण कार है जा हमारे पर का हमारा का स्थान कर सका निर्माण करे। हम बेचों ह कि जीन स द्वार मार स स्थान तोर से ध्यान दिया गथा है।

"Showy buildings naturally seem to require shows furniture and other interior appointments. Hence the growing fashion of buying such havines as rugs and sofas. All this extravagant non-productive building is undesirable, because it does not conform to the principles of our overflet in distribulization. It is clear that by reducing needless expenditure in the building of such non-productive projects and eliminating other types of waste, we will be able to save very large amounts."

तो श्रीमन् देखे इस बजट को िक इसमें यहा दम प्रकार में दुरुनामां की गई हा इस बजट से स्पष्ट है कि झाज तक इस तरह का काई नहां मही बनाधा गया हो के हमारी पुलिस के थाने केमें बने, उनका क्या स्टेंड हो, नह िक नरारे से बा श्रीर कम से कम पैसे में ज्यादा से ज्यादा बन सकें। इस तरह का बाते इसमें नहीं है। श्रीमन, हर एक विभाग के संबंध में कैसे क्या बनना चाहिये, इसका कोई योक में गमान नहीं है। अगर किसी ने अपनी बात मनवा ली तो उनके यहा ज्यादा भागाया बाम हो गया और दूसरे के यहां वही भवन सादा रह गया। मेरे कहने का मानवा पहा हो ज्यादा की आज तिर्माण विभाग के पास कोई निश्चित निर्माण के शिक्षान्त नहीं है। हमारे देश में अगर स्कूल बनेगे तो किस तरह से बनेंगे, अगर विधायकों के स्वावास कि राने कीमत पर बनेंगे तो कितने और कहां पर बनेंगे, मंत्रों लोगों के स्वावास कि राने कीमत पर बनेंगे वा पुलिस के थाने बनेंगे तो किस कीमत पर बनेंगे, इस प्रकार का कोई मुनियोगित एक सी योजना नहीं है।

जरा बजट को देखे। जालीन में सिविल सर्जन का बंगला ३३,२०० राग्रे में बन रहा है। श्रीर जज जो उसी के बराबर तनख्वाह का श्रादमी होता है उसके लिये एक जगह ३५,४००० ६० लिखा है। बिलया के जज का ४२ हजार का बन रहा है। वेशिरया के दीवागी न्यायाधीश के लिये २६,४०० रुपये, बस्ती के जज के लिये ३२,४०० रुपये श्रीर मेरठ के जिला

53

१६६०-६१ के आय-व्ययक मे अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—अनुदान संख्या
३४—लेखा द्यार्थक ४०—सार्वजनिक निर्माण-कार्य और ५०—क—राजस्त्र से
वित्त पोषित गागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, अनुदान संख्या ३५—
लेखा द्यार्थक ४०—नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय
सहायता, अनुदान संख्या ३६—लेखा द्यार्थक ५०—नागरिक निर्माणकार्य और द१—राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की
पूंजी का लेखा तथा अनु गत संख्या ५०—नेखा गीर्षक द१—
राजस्व लेखे के बहर नागरिक निर्माण कार्यों का पूंजी—लेखा

न्यायाधीत के लिये ५२,००० हाये। पांच जिनों पे विभिन्न प्रकपरों के लिये, जो एक ही श्रेणी के है, किसी के बंगले के लिये २६ हनार है ग्रौर किमी के लिये ५२ हजार। यह प्रवृत्ति सब जगह है। साल एवेन्यू पे मिनिस्टर्स के लिये बंगले बन रहे है जिनने एक एक बंगले की कास्ट ५८ हजार रुपये के लगभग होगी। १८ हजार ३०० मे विश्वायकों के निवास बनेगे, पुलिस के एक से थानों का निर्माण ५५ हजार से लेकर ८२ हजार तक पहुंवा है। वही सिशाही ग्रौर दरोगा हर जगह रहते हैं, लेकिन उसके बाद भी कोई यूनिफार्मिटी नहीं है। जो जिया सरकार ने उसे मंजूर कर दिया। सबसे पहले सरकार की एक स्टेडर्ड निश्वत करना चाहिये। एक निश्वत कैशेण्टी के दियाब से सब जगह इग्रारते बनाना चाहिये, यह नहीं कि कहीं २३ हजार रुपया लगे ग्रोर कहीं ४ हजार मे ही उसी काम के लिये स्कून बन जाय। इसी बिबमता के कारण ही ग्राज प्रदेश में हर जगह स्कूज नहीं बन पा रहे है। जहां बनते हैं वे ऐंग्याशी के साथ बनते हैं ग्रौर नहीं तो बनने ही नहीं। मेरा निवेदन है कि सरकार को इन प्रवृत्ति को तिलांजनी देनी चाहिये। इसी सिलसिने में में श्री ली प्रमुचिन की उपगुक्त किताश से दो लाइने ग्रौर पढ़ देन। चाहना हूं:

"To demand modern living standard without modernized industry as a foundation and without modernized agriculture means is, in effect, to delay industrial modernization."

भ्रब इसको ध्यान से देखा जा ग्रिक नरे फिस्म की बनावट वाली चीने ग्रगर हम पिछडे भौद्योगिक भ्रौर खेनी वाले देशों में करने की की शिश करेगे तो परिणाम यह होगा कि हम उसको कभी ऋष्वितक तौर पर ऋौबोगिक नहीं बना पायेगे। देखा जाय कि जेहां मिनिस्टरों के बंगलों के लिये ५८,००० रुपया खर्न किया जा रहा है श्रीर विधायकों के लिये १८ हजार, वहां गरीओं के लिये कुछ नहीं हो रहा है। सरकार कहती कि वह समाजवादी व्यवस्था लाता याहती है। इन तीलि में, इन प्रवृत्ति में सुवार होना चाहिये। एक तरह के लोगों के जिये एक तरह की व्यवस्था होनी चाहिये; एक्स्टा-वैगेन्स जो बढ़ गयी है, वह रुकनी चाहिये। इसके कारण जरूरी चीजों का ध्यान भला दिया जाता है। विद्यने साल भी किसी माननीय सदस्य ने कहा था और जब १६५७ में मैयहां भ्रायातो जैने भी कहाथा कि दारुजशका में भव्यश के कारण किचेन नहीं है क्यों कि वह तो शौक के लिये बनायी गयी थी। कैने लोग रहने वाले ग्रायेगे उनमे, उनकी क्या अवश्यकताये होंगी, उनकी तरफ इंजीनियर्स का ध्यान नहीं गया। ध्यान इस बात पर है कि वे इमारते कैने भव्य मालूम पड़े। इसके बाद पिछने वर्ष रायल होटल के विधायक नित्रास बने तो भो किचन गायब। पर कार ने पहले से कुछ सी बा नहीं ग्रौर राय न होटल में बने विघायक निवास के संबंध में जो रही इमारत व सामान की शिकायत है वह भी श्रास्त्वर, १६५६ में मैंने पत्र द्वारा मानतीय मंत्री जी के पास भेज दी थी लेकिन श्रेब तक कोई जांच नहीं हुई। श्रीमन्, मुझे ५ मिनट का समय श्रीर दे दिया जाय।

श्री ग्रधिष्ठाता--न्ने हो मिनट श्रौर दे दूंगा।

श्री रामस्वरूप वर्मा -- मैंने शिकायत तो भेज ही दी थी। श्राग तौर पर किचेन का प्राविजन होना चाहिये जो नहीं होता है। इमारतें जल्दी में बनाने की कोशिश की

[श्री रामस्वरूप वर्ग]

जाती हैं ग्रौर जो उससे कंजेशन हो जाता है, काम की चीजे छ जाती है, उसकी तरफ ज्यान नहीं किया जाता। रायल होटल के वियापक नियाप में श्रगर कुछ लान होता को वह कुछ खूबसूरत हो जाता, लेकिन पंसा तो बेनहाशा पर्ना ग्रोर हुमा कुछ नहीं। ऐसा कंजेशन हो गया है कि मालूम पड़ता है कि जेल में बन्द कर दिये गये हों। वंसे जेलों में भी कंजेशन नहीं होना चाहिये, लेकिन है।

मैं आपके द्वारा सरकार से निवेदन करना चाहना हूं कि सरकार के ये तमाम कार्य जो बिना सीचे समझे हो रहे हैं इससे प्रदेश तबाह हो रहा है, जनता का पेमा बरबाद हो रहा है। जिन कार्मों के लिये पैसा चाहिये और जिन कार्मों को होना चाहिये वे नहीं हो रहे हैं। कम से कम जो इंटरनेशनल महत्व की जरूरी महरें हैं, उनका निर्माण होना चाहिये। बनारस जिले में बनारस से से बापुरी जाने वाली महर का बनना बहुत जरूरी है। चार साल से वह सड़क बनने की पड़ी हुई है और उसमें गर्डे हो गये हैं। उसका पानी नहीं निकल पाता है। उससे यातायात में बड़ी तकलीफ होती है।

श्री ग्रधिष्ठाता--वह सड़क तो बन गयी है।

श्री रामस्वरूप वर्मा—प्रभी नहीं बनी है। मुन्ने, श्रीमन्, मानूम है। उस ही तरफ ध्यान नहीं दिया जा रहा है। वह एक तीर्थ केन्द्र बना हुआ है, उस सड़क के बनने की बहुत जरूरत है। मेरा सरकार से निवेदन है कि वह ५०-५० यो जनायें सालून करें। उसके पास जितना स्टाफ है, जितना सामान है, जितने साधन हैं, उसी प्रकार उन योजनाश्रों को श्रीर उतनी लें जिनको वे समय के श्रन्दर पूरा कर सहें। जब राष्ट्र का घन श्रनेक श्रवेश योजनाश्रों में खर्च कर दिया जाता है तो उससे येश का लाभ भी नहीं होता, रिर्टन नहीं मिलता श्रीर रुपया द नकड़ हो जाना है, इस चीज को ध्यान में रखना चाहिये।

इसके ग्रलावा हमारी सरकार की एक नीति यह होनी चाहिये कि जो ग्रंतर प्रदेशीय सड़कें हैं उनकी मिलाया जाय। इटावा कानपुर के दक्षिण जालीन व मध्य भारत है जिसके बीच में जमुना ग्रा जाती है, इसके लिये शेरगढ़ में एक पुल बनाया जाय तो जालीन इटावा मिल सकते हैं। इस पुल के बनने से बड़ा काम हो सकता है। लेकिन इस ग्रोर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। इस लिये मेरे कहने का मतनब यह है कि जो ग्रत्यन्त ग्रावश्यक सड़कें हैं सरकार उनका सर्वे कराये ग्रीर उनमें संबंध जरूरत के जिल्लाज से कायम करें। तमाम जो प्रदेश के ग्रन्दर पुत्र हैं उन को बनाया जाय। इसकें लिये 'ले ग्राउट कन्ट्री ग्रोपेन' प्रिन्सिपल को ग्रयनाया जाय।

दूसरा निवेदन में माननीय मंत्री जी से यह करना चाहता हूं कि आज प्रदेश भर में जो सर्वेक्षण कराने के काम हो रहे हैं, तथा जो और निर्माण संबंधी कार्य हो रहे हैं, उनके खर्चे में कट करें। निर्माण संबंधी कामों में वह एक रूपता लावें। उसका एक स्टैन्डर्ड कायम करें।

इसके अतिरिक्त एक निवेदन में यह करना चाहता हूं कि सार्वजनिक निर्माण कार्य जो राजस्व से बाहर किये जाते हैं उनको निम्नतम किया जाय। अगर ऐसा नहीं किया गया तो हमारा प्रदेश तबाह हो जायेगा। जो राजस्व से आमदनी होती हैं उसी के अनुसार हमें खर्चा करना चाहिये। आज १२ करोड़ से ज्यादा के काम राजस्व से बाहर हो रहे हैं। मेरा यह निवेदन है कि इस तरह से कम से कम खुदा के लिये प्रदेश का दिवाला न निकालें क्योंकि अगर मुसीबत आयी तो इस प्रदेश की एक-एक इमारत भी अगर बिक जायेगी तब भी पैसा नहीं मिलेगा। इन शब्दों के साथ, में इस कटौती के अस्ताव का समर्थन करता हूं।

१६६०-६१ के आय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—अनुदान संख्या
३४—लेखा शीर्षक ५०—सार्वजनिक निर्माण-कार्य थ्रौर ५०—क—राजस्व से
वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यो पर पूंजी की लागत, अनुदान संख्या ३५—
लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण—कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय
सहायता, अनुदान संख्या ३६—लेखा शार्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य
श्रौर ८१—राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यो की पूंजी का
लेखा तथा अनुदान संख्या ५०—लेखा शीर्षक ८१—राजस्व लेखे
के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यो का पूंजी—लेखा

श्री ताराचन्द माहेश्वरी (जिला सीतापुर)--श्रीमन्, मै प्रस्तुत ग्रनुदान का समर्थन करने के लिये खड़ा हुन्ना है। यह विभाग प्रदेश के महत्वपूर्ण विभागों में से है। विभाग पर प्रदेश की संस्कृति, उसका विकास ग्रीर उसकी तरक्की का बहुन कुछ दारोमदार है। प्रदेश के अन्दर आवागमन के साधनों को बनाना, लोगों की एक स्थान से दुसरे स्थान पर ले जाने के लिये सड़कों की बनाना चाहिये, गह इन जिसाग का काम है। बाबजूद इसके मुझे यह कहना है कि इसके सं 15न में कुछ कमियां है और उन कमियों को स्रोर में स्रापका ध्यान स्राक्षित करना चाहता हूं। जैसे तमाम विभागों की जरूरतें इस विभाग की पूरी करनी पड़ती है, भवन इत्यादि का निर्माण करना पड़ता है, बजट धन का भ्रालाटमें न्ट होता है, लेकिन मैं यह नहीं कह सकता कि क्या विभाग के पास ब्रादिमयों की कमी है। उस सारे धन का उपयोग वित्तीय वर्धी में समाप्त क्यों नहीं हो जाता? बहुत से भवनों का निर्माण, बहुन-सी सड़कों का निर्माण हो ही नहीं पाता ग्रौर वित्तीय वर्ष समाप्त हो जाता है। मान लोजिये कि ग्रापके पास संगठन की कमी है तो अपने संगठन को बढ़ाने की कृपा करें। यह इपलिये निवेदन कर रहा हूं कि यदि ग्रलाटेड सड़कों को ग्राप बना न पाने तो उससे सड़कों के बनाने में ही नहीं, तमाम तरह की तरिक्कयां रुक जाती है। जहां पर सड़कों का निर्माण नहीं हो पाया है, वहां पर जुनों की बाढ़ रहती है, करन और डकेती हुआ करती है और कोई जांच के लिये पहुंचता नहीं। इसी प्रकार वह क्षेत्र डाक्टरों से भी महरूम रहता है, वैद्य नहीं पहुंचते, बीमार इलाज के बिना ही मर जाता है। इसलिये मेरा निवेदन है कि यदि ग्रावश्यकता हो तो संगठन में लोगों को बढ़ावें, ग्रोर जितना कार्य ग्रापको दिया जाय उसको पुरा करने की कृपा करें।

एक निवेदन मुझे और करना है। विभाग के ४ या ६ अधिकारी मुख्य रूप से कहे जाते है एक चोफ इंजीनियर, सुर्पारंटेडिंग इंजीनियर, एग्जिक्यूटिव इंजीनियर, डिस्ट्रिक्ट इंजीनियर और अधिकारी मुख्य रूप से केंद्रेडिंग इंजीनियर और प्रकार है विभाग का। इसमें दो पद बिलकुल निरर्थक है एक तो सुर्पारंटेडिंग इंजीनियर का और एक असिस्टेंट इंजीनियर का। ये केवल डाक का अधान-प्रदान करते है। यही नहीं, इनकी वजह से काम में बाधा भी उत्पन्न होती है, देरी भी होती है। इसलिये जहां एक और आपको जो धन दिया जाता है उसकी आप पूरा इस्तेमाल नहीं कर पाते, दूसरी ओर इन पदों के निर्माण में अनावश्यक तौर पर धन खर्च होता है। अगर इनको तोड़ कर दूसरे कामों में लगायें तो अधिक काम होगा और काम में दिक्कत भी नहीं पड़ेगी।

मेरा एक निवेदन श्रौर है। इस डिपार्ट मेन्ट को चाहिए कि प्रदेश का सर्वे करके एक मास्टर प्लान बनाने की कृपा करें। इस में किसी हद तक सत्यांश है कि यहां पहले तो योजनाएं बनती है, कहा जाता है कि ये योजनाएं बड़ी प्रमुख है, उनका निर्माण श्रगर किया जायगा। फिर उन योजनाश्रों में तब्दीली श्रा जाती है श्रौर वे पूर्ण छोग नहीं चल पातीं। क्या वजह है ? या तो किसी का दवाव पड़ता है, या कोई श्रौर कारण है। में उस मी गहराई में जाना नहीं चाहता, मगर मेरी प्रार्थना है कि जिला स्तर से लेकर सूबा स्तर तक एक श्रापका मास्टर प्लान बना हुश्रा हो, उससे देहात में श्राप यह फैनला कर लें कि श्रुमको इत-इन जगहों में सड़कों या पुलों का निर्माण करना है श्रौर फिर श्राप

[श्री तारा बन्द माहेश्वरी]

अपनी सामर्थ्य के अनुसार इन कामों को हाथ में लेले। में पत्याना आहा हूं कि द = ३ - ६० की इस माननीय सदन में मेरे प्रश्तों का उत्तर दिया गया ता ४ - ४ नवम्बर के प्रश्त थे, जिनतें जब मैं ते तूरक प्रश्त प्रकार को कार्यों में के तान को का नवा कारण है, कार्य शुरू ही न होने का क्या कारण है तो कहा गया कि कुरू शाम हा गजतियां और कियां थीं, उनकी पूरा किया गया। मेरा नम्म निर्देश हैं कि अतिर जब आपने काम करने के आदेश दिये तो जब बहु मारों गामित कार्य कहीं ही चुकी थीं तो आपने किस आधार पर आदेश दिया। आपके पाप ना कार्य के बार होगी, उनकी मानने रख कर आदेश दिया, लेकिन किए टेकिन कार्य के बार वाका रह गयी। तो मेरा निवेदन हैं कि इन किमों की आर गया हो की अवस्थान हो की अवस्थान ही कि स्थान कियां की आप गया हो की अवस्थान है ।

इसी तरह थोड़े दिन पहले, ३ मार्च, की मेरे पश्रों के उत्तर में जी कि ८, ४, ६ नम्बर के थे, बनाया गया कि ३३ लाख रुपों की पर्यक्षेत्र किलीं की कि एक योजना सड़कों श्रीर पुलों की बनाने की थी श्रीर उस प्रशाशित में से एक भाषेता जाने नहीं हुआ। श्रीखिर इस तरह की योजनाएं बनाने का मनलब ही का कर कि योजनाएं बनाने का मनलब ही का कर का प्रीय काम की हाथ में नहीं लेना चाहिये था।

एक तरफ में श्रीर श्रापका ध्यान ले जाना चाहता हूं। मेरे यहां एक रून बनाई गई। उसके सम्बन्ध में भी मेरा एक प्रकृत मार्च को था। उस चौहिया हुन के जवाब में कहा गया कि दो मील ड्रेन को गवाब में कहा गया कि दो मील ड्रेन बना दी गई। श्रीमन्, में बड़ो नम्रतापूर्वक श्रापक द्वारा मदन का त्यान इस श्रोर श्राकित करना चाहता हूं कि किस तरह से इंजीनियर महोदय ने काम क्या। जो क्या ड्रेन ६ मील श्रीर कुछ फर्लांग लम्बी थी। श्राप देखें कि वह ठात की तरफ में नहीं बनाई गई बित्त जो अंची साइड थी उन साइड से उसको बनाया गया श्रीर वो मील जनाकर ही विया गया। इसका नतीजा यह हुशा कि जब पानी श्राया तो उसने बहिया का रूप धारण कर लिया। में श्रीर तहसीलदार साहब वहां मौके पर गये तो वहां नहर काटकर पानी को निकल प्राया। उनने वहां पर मकानों श्रीर फसल को बड़ा नुकसान हुशा। मैं समझ नहीं पा रहा हुं. . . .

श्री गिरधारीलाल—ग्राज पी० डब्लू० डी० पर बहस हो रही है, इसिनये इर्रीगेशन से सम्बन्धित चीजों को श्रगर इर्रीगेशन के बजट के मौके पर कहा जाय तो उससे ज्यादा फायदा हो सकता है।

श्री श्रिधिष्ठाता--माननीय सदस्य पी० डब्लू० डी० के सम्बन्ध में ही आयण दें।

श्री ताराचन्द माहेश्वरी--ग्राधिष्ठाता महोदय, ग्रक्सर मौका मिला नहीं करता, इसलिये मैंने सोचा कि ग्राज ही कह दूं।

श्री ग्रिधिष्ठाता--ग्रापको तो श्रक्सर मौका मिला करता है, ग्रापको इसको शिकायत नहीं होनी चाहिये।

श्री ताराचन्द माहेश्वरी—श्रीमन्, में सड़कों के निर्माण पर एक सुझाब देना चाहता हूं। सड़कों की बड़ी ग्रावश्यकता है, सभी सदस्य इस बात को महसूस करते हैं। मेरा निवेदन यह है कि जिस तरह से हावड़ा में पुल का निर्माण हुग्रा था, प्राइवेट व्यक्तियों के द्वारा श्रीर किर उस पर मामूली टैक्स लगाया गया था श्रीर उस टैक्स के द्वारा कुछ वर्षों में उस पुल की लागत वसूल हो गई थी, उसी तरह से क्या प्राइवेट लोगों को सड़कों के निर्माण का कार्य यहां नहीं विया जा सकता। ग्रगर सरकार उनके सिपुर्द यहां भी यह कार्य कर दे और उनकी पूंजी इस कार्य में लगे ग्रीर गवर्नमेंट इस बात को निश्चित कर दे कि इतने ग्रसें के बाद वह सड़क सरकार की हो जायगी तो ग्राज देहातों में जो छिपी हुई पूंजी है उसका इस्तेमाल इस मच्छे काम में हो

१६६०-६१ के आय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—अनुदान संख्या ३४—लेखा शीर्षक ५०—सार्वजिनक निर्माण-कार्य और ५०—क राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, अनुदान संख्या ३५—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, अनुदान संख्या ३६—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य और ८१—राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा अनुदान संख्या ५०—लेखा शीर्षक ६१—राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी—लेखा

सकता है और हर गांव किसी न किसी सड़क से कनेक्ट हो जायगा। मेरा निवेदन है कि सरकार इस ग्रोर भी ध्यान देने की कृपा करे।

अन्त में मैं सरकार का ध्यान महमूदाबाद-सिधौली रोड की तरफ ले जाना चाहता हूं। सिधौली से महमूदाबाद जाने वालो सड़क पर अधिक गमनागमन होता है। इसकी जांच सन् १९५६ में पी० डब्लू० डी० सीतापुर के द्वारा की जा चुकी है, मगर अभी तक उस सड़क को डामर की सड़क बनाने की कोशिश नहीं की गई है। मेरी प्रार्थना है कि उस तरफ आपका ध्यान जाना चाहिये। सन् १९५२ से बराबर में महमूदाबाद-तम्बौर की सड़क जो, कि एक गांजर का पिछड़ा हुआ इलाका है, की तरफ सरकार का ध्यान ले जा रहा हूं। उसका सर्वे भी इस साल शुरू हो गया है लेकिन मेरा निवेदन यह है कि कहीं उसका सर्वे ही होकर न रह जाय, उस सड़क को पश्का बनाने का कार्य भी जल्द शुरू किया जाय। इन शब्दों के साथ, में प्रस्तुत अनुदान का समर्थन करता हूं।

\*श्री भुवनेशभूषण शर्मा (जिला इटावा) — अधिष्ठाता महोदय, जो कटौती का प्रस्ताव माननीय गोविन्द सिंह विष्ट जी ने प्रस्तुत किया है, उसका समर्थन करने के लिये में खड़ा हुआ हूं। श्रीमन्, यह सार्वजिनक निर्माण विभाग जितना महत्व रखता है उसी दृष्टि से अगर इसका काम भी होता तो आज अपने प्रदेश की हालत ही कुछ और होती। मान्यवर, जिस वक्त योजना बनाई जाती है उस वक्त न मालूम कहां से एक्सपर्ट आते हैं, न मालूम कैसे-कैसे एक्सपर्ट से सरकार योजना बनवाती है! श्रीमन्, उनका लक्ष्य कुछ और होता है। श्रीमन, जो रुपया वे तय कर लेते हैं उसका हुत बड़ा हिस्सा वर्ष की समाप्ति पर लैप्स हो जाता है, जितना रुपया लैप्स हो जाता है उसका चौथाई या दसवां हिस्सा भी काम वह नहीं कर पाते। अगर इसी तरह से कार्य हुआ तो मैं समझता हूं कि निकट भविष्य में जो काम होता भी है वह भी समाप्त हो जायगा। कारण यह है कि सरकार की योजना होती है कि अमुक जगह २० मील सड़क बनने वाली है। लेकिन जब योजनाकाल समाप्त हो जाता है उसके बाद मालूम होता है कि वह सड़क नहीं बनी इसके अलावा जहां कहीं कोई सड़क बन भी जाती है उसकी बाद में मरम्मत तक नहीं होती है।

मान्यवर, सरकार ने ऐसी श्रमिलाषा जाहिर की कि सड़कें श्रधिक से श्रधिक बननी चाहियें क्योंकि वेहातों में सड़कें न होने के कारण किसान का गत्ला ठीक भाव पर नहीं दिक पाता है। यह विचार तो श्रच्छा तभी हो सकता है जबिक माननीय मंत्री जी श्रौर उन हा विभाग भी सिक्रय दृष्टि से तोचें। बड़े दुल की बात है कि काम शुरू होता है, श्राधा बनता है ग्रोर बरसात ग्रा ती है श्रोर वह बह जाता है। पुरानी इमारतें ग्रौर पुल खड़े हैं लेकिन वे जुम्बिश नहीं खाते हैं श्रौर श्राजकल के बने हुए पुल श्रौर इमारतें दरार ला जाते हैं। इटावे में एक पुलिया बनी जो ३ दिन में ही लत्म हो गई ग्रौर पता नहीं चला कि थों ऐसा हुग्रा। मंत्री जी श्रौर उनके विभाग के उच्चाधिकारियों को चाहिये कि १ बाई १ स्ववायर फुट किसी भी हिस्से से कटवा कर कैमीकल टेस्ट करावें कि जैसा मसाला लिखा है वैसा लगा है या नहीं। जो काम बनाया जाता है, दोशरा बनने की उसकी नौबत जल्दी तो श्राती नहीं है, इसलिये ठोस श्रौर टिकाऊ काम होना चाहिये।

कुछ में श्रपने जिले इटावे की बात कहना चाहता हूं। यह जिला मध्य प्रदेश से मिलता है। डाकू समस्या वहां बनी रहती है। कोई दिन सौभाग्यशाली होता होगा कि डकेंती न

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

### [श्री भुवनेशभूषण शर्मा]

55

पड़ी हो या कत्ल न हुन्रा हो। इसके लिये केन्द्रीय सरकार श्रौर उत्तर प्रदेश की तथा मध्य प्रदेश की सरकारें हुत चिन्तित भी रहती है। इटावा जिले के चम्बल श्रौर जमुना के बीच के भाग में श्रगर राजघाट का पुल बन जाय तो डाकू समस्या बहुत कुछ हल हो जाय। ठीक समय से न वहां मिलीटरी पहुंच पाती है श्रौर न ग्रामीणों की रक्षा हो पाती है। उस पार पट्टी क्षेत्र में श्रभी कुछ दिन हुये एक परिवार के ७ व्यक्तियों को डाकुश्रों ने एक घंटे में कत्ल कर डाला। पास ही मिलीटरी पड़ी थी लेकिन नहीं पहुंच सकी वयों कि नदी को पार करने में ४, ४ श्रौर ६, ६ घंटे लग जाते हैं। उस पुल के लिये कितनी ही योजनायें बनों श्रौर केन्द्रीय सरकार से भी हुग्रा, मैने माननीय मंत्रीजी से भी कहा श्रौर श्री डी० डी० श्रग्रवाल, सेकेट्री, के पास भी गया। उन्होंने कहा कि हम चाहते तो है कि यह पुल उने श्रौर सेंट्रल गवर्नमेंट ने भी चाहा है लेकिन उत्तर प्रदेश की सरकार ने कहा है कि चूंकि यह जिला मध्य प्रदेश से मिलता है श्रौर पुल बनने पर उसका श्राधा फायदा मध्य प्रदेश को भी होगा, उन्हों भी रुपया देना चाहिये।

पांच मील भें इटावा मे जमुना नदी हैं, भिन्ड ग्रौर इटावा के बीच की सड़क हैं, चम्बल नदी हैं ग्रौर उधर कुग्रारी हैं। कुग्रारी का पुल तो मध्य प्रदेश की सरकार ने बना दिया हैं। चम्बल का पुल तीनों सरकारों ने मिलकर बना दिया है। ग्रब रहा जमुना का राजघाट का पुल जिसकें लिये हमारी सरकार कहती है कि मध्य प्रदेश की सरकार भी रुपया दे। तीन हिस्से बराबर कर दिये ज यं ऐसा इस सरकार का कहना है, क्योंकि इस पुल के बनाने से ज्यादा फायदा मध्य प्रदेश को होगा। लेकिन मध्य प्रदेश की सरकार कहती है कि हमने कुग्रारी पर पुल बना दिया है, चम्बल वर्योंकि हमारे इलाके में बहती है इसलिये उसका ग्राधा रुपया हम दे बेंगे लेकिन यमुना का पुल तो यू० पी० मे पड़ता है, उसका भार उसकी ही वहन करना चाहिये। ग्रग्रवाल साहब से कहा तो उन्होंने कहा कि ग्रगर इसी प्रकार के पुल बनाने होंगे तो बहुत से पुल बना लेंगे। थोड़े से रुपये के लालच के लिये न जाने कितने कत्ल हर साल डाकुग्रों द्वारा होते हैं। यदि यह पुल बना दिया जाय तो डाकुग्रों की समस्या जिस पर सरकार का हर साल करोड़ों रुपया खर्व होता है, हल हो जाय, लोगों की जानमाल की हिफाजत हो ग्रौर उस क्षेत्र की तरक्की हो सके।

उस क्षेत्र में एक सड़क बनायी जा रही है। उसको चौड़ा किया जा रहा है। वह दाह से ग्रोही को जाती है। लेकिन एक स्थान पर उस सड़कर को छोड़कर पास हो दूसरे स्थान से १०० फीट चौड़ी सड़क बनायी जा रही है जो गरीबों के खेतों को काटती हुई जाती है। समझ में नहीं ग्राता कि जो सड़क थी उसके ग्रास-पास ही से क्यों नहीं ग्रौर जमीन लेकर उसको चौड़ा कर लिया गया है। सड़क भी चौड़ी हो जाती है ग्रौर गरीबों का नुकसान भी न होता। कितने लोग तो ऐसे है जिनके सारे के सारे खेत ही चले गये। माननीय मंत्री जी ने भी उसको देखा है कि किसानों का कितना नुकसान हो रहा है।

मेरी प्रार्थना है कि माननीय मंत्री जी उस राजघाट के पुल को तृतीय पंचवर्षीय योजना में अवश्य रखें। अभी माननीय राज्यपाल जी इटावा गये थे। उन्हें इटावा के नागरिकों ने एक मानपत्र भेंट किया था और उसमें उन्होंने अपनी इस मांग को भी रखा था। उन्होंने आश्वासन दिया था कि तृतीय पंचवर्षीय योजना में इसको रखा जायगा। माननीय मंत्री जी अपने तथा राज्यपाल महोदय के आश्वासन को देखकर इसको तीसरी योजना में रखने की कृपा करें।

म्हुत दिनों से एक सड़क लखना-सिंडौस बन रही है लेकिन श्रभी तक बन नहीं पायी। मैं चाहूंगा कि माननीय मंत्रीजी श्रपने विभाग को कसें या चीफ इंजीनियर साहब यहां बैठे हुए हैं वे भी देखें कि यह निर्माण कार्य शोध्र पूरा हो जाय और सरकारी रुपया भी बरबाद न हो।

श्री वासुदेव दीक्षित (जिला फतेहपुर)—मान्यवर श्रधिष्ठाता महोदय, माननीय सार्वजनिक निर्माण मंत्री जी ने जो श्रनुदान सदन के समक्ष प्रस्तुत किया है, मै उसका समर्थन करने के लिये खड़ा हुश्रा हूं। मैं एक छोटे से जिले से श्राता हूं जो कि एक बहुत पिछड़ा हुश्रा जिला है १६६०-६१ के श्राय-व्ययक में श्रनुवानों के लिये मांगों पर मतदान—ग्रनुवान संख्या

३४—लेखा शीर्षक ५०—सार्वजनिक निर्माण-कार्य श्रौर ५०-क—राजस्व से
वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, श्रनुवान संख्या

३५—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि
से वित्तीय सहायता—ग्रनुवान संख्या ३६—लेखा शोर्षक ५०—नागरिक
निर्माण-कार्य श्रौर ८१-राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों

की पूंजी का लेखा तथा श्रनुवान संख्या ५०—लेखा शीर्षक ८१—

राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा

जहां पर यातायात के साधन बिल्कुल नहीं है। वैसे तो एक बड़ी सड़क ग्रांड ट्रंक रोड उस जिले के बीच से जाती है लेकिन उत्तर श्रीर दक्षिण दोनों भाग वैसे ही रह जाते हैं। यह जिला गंगा श्रीर यमुना के बीच में स्थित है । उत्तर की ग्रोर गंगा ग्रौर दक्षिण की ग्रोर यमुना विराजती है लेकिन श्राने-जाने का कोई साधन नहीं है । जिले के उत्तरी भाग से रायबरेली उन्नाव होकर लखनऊ मिल जिला श्रन्तरिम परिषद्, फतेहपुर ने श्रपने एक प्रस्ताव को लिखकर सार्वजनिक निर्माण विभाग को भेजा था कि डलमऊ घाट पर एक पुल का निर्माण किया जाय । यह मार्ग ऐसा है जो लखनऊ, फतेहपुर, बांदा-सागर होता हुआ बाम्बे को जाता है । जो मार्ग देश के उत्तरी भाग को दक्षिणी भाग से मिलाता हो, उसका होना श्रत्यन्त श्रावश्यक है। श्रीर वैसे ही माननीय मंत्री जी से जिला रायबरेली, बांदा ग्रौर फतेहपुर के विधायकगण मिले थे जिनमें मैं भी था श्रौर उनसे यह प्रार्थना की थी कि इस पुल का बनना नितान्त श्रावश्यक है । वैसे माननीय मंत्री जी से यह भी ज्ञात हुआ है कि हरद्वार का जो पुल बनने वाला है और जो नयी योजना में श्रा गया है, वहां तब तक पीपे का पुल ही लगा दिया जाय जब तक कि इस नये पुल का निर्माण न हो जाय । इससे जनता का बहुत ही हित होगा । वैसे चेलातारा में यमना जी पर नाव का पुल बनता है लेकिन जिला फतेहपुर में इस पुल का भी निर्माण होना नितान्त श्रावश्यक है । यदि यह पुल बन जाता है तो दक्षिणों भाग श्रौर उत्तरी भाग जो बिलकुल सड़क से शुन्य रहेता है उसकी पूर्ति हो जाथगी। इसी तरह से पुराना मुख्य रोड का एक बहुत बड़ा भागे छुट गया हैं। वह संड्क इटावा से फतेहपुर, जहानाबाद को जाती है। इस जिले में १४ मील की सड़क हतगांव-विलंदा छूट गई है जिसमें से साढ़े ४ मील सड़क तो बन रही है लेकिन फिर भी द मील श्रागे श्रीर सड़क छूट जाती है । यदि यह सड़क बन जाय तो विलन्दा, कड़ा होते हुये तथा हुसेनगंज-कड़ा होते हुये प्रयागराज को यह सड़क चली जाती है। कड़ा एक तीर्थ स्थान है जहां हिन्दू लोग देवी जी के दर्शन के लिये लाखों की तादाद में श्राते है श्रीर उर्स के मौके पर, जो माघ के महीने में होता है, ५, ७ जिलों से लाखों की तादाद में मुस्लिम तीर्थ यात्री भी श्राते हैं। इसलिये इह सड़क का बनना बहुत ही जरूरी है।

इसी तरह से धाता बहुआ रोड फतेहपुर से जिला इलाहाबाद को मिलाती है। तृतीय पंच-वर्षीय योजना में इस सड़क को ले लिया गया है और आशा है कि वह सड़क तृतीय या चौथे स्टेज में जरूर बन जायगी। अगर यह सड़क बन जाती है तो इस जिले के बहुत बड़े भाग में यातायात के साधन उपलब्ध हो जाते है और इस तरह से बांदा जिले से अन्न के आने जाने में भी सुविधा हो जायगी। इस योजना काल में जबिक दूसरी योजना समाप्त हो रही है केवल ४ मील के टुकड़े को छोड़ कर और कोई भी दुकड़ा नहीं लिया गया है। इसलिये में माननीय मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि किसी भी देश या प्रदेश की तब तक उन्नति नहीं हो सकती जब तक कि वहां यातायात के साधन सुलभ नहीं होंगे। इसलिये मेरी प्रार्थना है कि जिला फतेहपुर जिले की तरफ विशेष ध्यान दिया जाय। क्योंकि यह जिला दो बड़े-बड़े जिले इलाहाबाद तथा कानपुर के बीच में किचित सा पड़ता है। वैसे माननीय हाफिज जी भी जब इस विभाग के मंत्री थे तो वे भी हमारे जिले में पधारे थे। और मैने जिस सड़क कड़ा-हथगांव का जिन्न किया उस का उन्होंने बादा भी किया था, वह शायद किसी उप चुनाव के वक्त की बात है, यह ठीक है कि अक्सर चुनावों के वादे सत्य नहीं होते लेकिन फिर भी मैं माननीय मंत्री जी से प्रार्थना कर्षण कि वह अपने पूर्व वादे को और वहां की जनता की भावना का खयाल करते हुये वहां के लिये यातायात के साधन कराने की कुपा करें।

[बी वासुरेव दीक्षित]

इसके ग्रलावा वहां कच्ची सड़कें भी बहुत कम है, ग्रभी पारसाल श्रमवान से एक साढ़ें भ्र मील की सड़क बनी है। श्रीमती इन्दरा गांधी की पैदल यात्रा के समय में २ मास के बीच में श्रमदान द्वारा वह बनी थी। मेरी प्रार्थना है कि उस सड़क को सार्वजनिक विभाग ले ले, पहले मैंने लिखा था लेकिन उस का नकारात्मक उत्तर यहां से मिला। गाजीपुर श्रीगासी रोड के निर्माण की बात बजट में है वह न रह जाय। उम्मीब है कि वह बन जायेगी श्रीर वही कुल झायद द मील का दुकड़ा रह जाता है वह भी ले लिया जाय। इस के बाद बातें तो बहुत हैं लेकिन याचना थोड़ी ही करना चाहिये ताकि वास्तविक सिद्धि प्राप्त हो सके।

श्री द्वियापालींसह (जिला सहारनपुर)—माननीय ग्रधिष्ठाता महोदय, श्राप के व्यारा में माननीय सार्वजितक निर्माण मंत्री जी से कुछ निवेदन करना चाहता हूं श्रीर कुछ ठोस सुझाव देना चाहता हूं जिन को में ग्रभी ग्रापके सामने पेश करूंगा । यह मान लेना कि सभी इंजीनियर्स बेईमान हैं यह तो अन्वल हमारी सदन की मर्यादा के विषद्ध हैं श्रीर इस देश के प्रखलाक के भी खिलाफ है, हम तो यह मानते हैं कि श्रेष्ठता बेईमानी को फतह कर सकती हैं "Good is more than a match for bad"।

श्री ग्रिधिष्ठाता--शब्द बेईमानी पालियामेंटरी पद्धति के विरुद्ध है ।

श्री यशपाल सिंह—इसीलिये तो में उस के खिलाफ बोल रहा हूं क्यों कि वह श्रनपालिया-मेंटरी है हम इस सिद्धान्त को मानते हैं कि चिरत्र की श्रेष्ठता किसी भी बुराई को जीत सफती है। जो दिक्कत इस विभाग के इंजीनियर्स की है वह में श्राप के सामने रख दूं कि एक चीफ इंजीनियर साहब अपने मातहत को समझते हैं कि वह श्रच्छा काम करता है, वह मातहत भी समझता है कि उसका सर्वाङ्गेट श्रच्छा काम करता है, उनका जो नया श्रश्रेन्टिस है उसके बारे में यह सबाद्धिनेट भी समझते हैं कि वह श्रच्छा काम करता है लेकिन उस की दिक्कत यह है कि जब श्रप्याइंटमेंट के लिये उसे इन्टरच्यू में भेजा जाता है तो वहां जो दूसरे लोग होते हैं वह उस को वूसरे प्याईट श्राफ व्यू से देखते हैं। हमारी मंत्री जी से दरख्वास्त है कि किसी केन्डीडेट का युनियसिटी रिकार्ड है, यदि किसी ने दिक्वविद्यालय में उंचे नम्बरों में परीक्षा पास की है, श्रपने क्लास में टाप किया है, क्या श्राव्यकता है कि उसे इन्टरच्यू के लिये एक बन्द कमरे में भेजा जाय। इस तरह से बन्द मकान में इन्टरच्यू के लिये श्रन्दर बला कर उन लोगों को श्रेष्ठता दी जाती है जिनकी सिफारिश होती हैं श्रीर जिनकी सिफारिश नहीं होती उनको रिजेव्ट किया जाता है। इसलिये मेरा मुझाय यह है कि ऐसे इन्टर च्यू में केवल वह चीफ इन्जीनियर सुपरिन्टेन्डिंग इन्जीनियर श्रीर एिजक्यूटिव इन्जीनियर ही रहें श्रीर केवल उन्हीं से पूछा जाय।

माननीय सदन के कांग्रेसी सदस्य गोविन्द सहाय जी ने जो बात कही में उनसे मुलिफ नहीं हूं, कर्त्वई सहमत नहीं हूं। उन्होंने पी० डब्लू० डी० का अर्थ बतलाया "प्लंडर विदाउट डेन्जर", में इस बात को नहीं मानता। हमें प्रपने महान देश का निर्माण करना है। उसके लिये कोई भी एक ग्रादमी जिम्मेदार नहीं है, उसके लिये सारे देश को अपने को कटिबद्ध करना होगा, धार्मिक शिक्षा के द्वारा, मारल टीचिंग्स के द्वारा अपने अखलाकी मियार को ऊंचा करना होगा। तभी वह जिम्मेदारी हम पूरी कर सकते हैं, एक दूसरे पर इल्जाम लगाकर या झूठा, रिश्वतखोर किसी को कहकर हम उसे पूरी महीं कर सकते । मेरी दरख्वास्त हैं कि हम खुद अपने घर में बैठ कर प्रतिज्ञा करें कि हम रिश्वत नहीं देंगे चाहे हमारा काम कितना ही खराब क्यों न हो जाय। ग्रंग्रेजों ने हम पर कातिलाना हमला किया हमें डक तों के बीच में रखा। सालीटरा सेल्स में रखा हमने कसम खाई भी कि हम हरगिख रिश्वत नहीं दें। हमने रिश्वत नहीं दी श्रीर ग्रंग्रेज चला गया। श्राज भी कोई बेईमान रिश्वतखोर, रिश्व मांगता है तो हमारा फर्ज है कि हम न दें।

१९६०-६१ के आय-व्ययक में अनुवानों के लिये मांगों पर मतदान—अनुवान ६१ संख्या ३४—लेखा शीर्षक ५०—सार्वजिनक निर्माण-कार्य और ५०—क— राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, अनुदान संख्या ३५—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण—कार्य— कन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, अनुदान संख्या ३६—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्यं और ६१—राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा अनुदान संख्या ५०—लेखा शीर्षक ६१—राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी-लेखा

दूसरा सूप्ताव मेरा यह है कि जिस वथत बिल्डिंग्स बनती है, कम से कम हमारे मंत्री जी, उनमंत्री जी, पालियामेन्टरी सेकेंग्री श्रीर सारे माननीय सदस्यों का यह फर्ज है—सब लोगों का देग है, किती के नाम गिरवीं नहीं है सब लोग मौते पर जाकर देशे कि कितना सीमेन्ट लग रहा है, कितना रेत लग रहा है श्रीर किस तरह काम हो रहा है। में यह श्राद्यासन देना चाहता हूं कि मेरी कांस्टीट्यूएं तो में जो काम हो रहा है में खुद देखता हूं। मेरी जिम्मेदारी है। में प्रपत्ते इंजीनियर्स से बार-बार परामर्श करता हूं, राय देता हूं श्रीर राय लेता हूं। एक श्रादमी को बेईमान कहने से श्रीर रिश्वतखोर कहने से स्थला हल नहीं हो सकता।

दूसरी दिक्कत मेरे जिले की हिंडन नदी का पुल न होना है। इस वक्त गर्बनंमेन्ट की एक हमारा पुल न होने से ४० लाख र० साल का घाटा होता है। देवबंद से ननौता की जो सड़क जाती है उस पर हिंडन नदी का पुल मंजूर हो चुका है, लेकिन पता नहीं कौन बीच में रोक लेता है। इससे ४० लाख का घाटा सेन्ट्रल गवर्नमेन्ट को होता है चूंकि उससे तीन गन्ना मिलों से ताल्लुक है। या तो मंत्री जी उत्तर में कहें कि हमने उसे मंजूर नहीं किया ग्रौर ग्रगर मंजूर किया है—देवबंद से ननौता जाने वाली सड़क पर सातवें मील पर वह पुल है, जिसका डिजाइन हो चुका है, जिसकी गर्वनंमेंन्ट सर्वे ग्रौर सेक्शन हो चकी है, तो बीच में क्या गोलमल हुग्रा? उसकी वजह से सेन्ट्रल गवर्नमेंट को ४० लाख का घाटा है ग्रौर देहात की जनता को भी परेशानी है चूंकि १५–१६ मील की जगह पर घूमकर ८० मील तय करके जाना पड़ता है। मवेशी भी सबाह होते है। पब्लिक को भी दिक्कत है।

मेरी दरख्वास्त है कि पालिटिक्स से अपर उठकर निर्माण कीजिये। यह पवित्र चिरत्र से हो सके ।। दूसरों के अगर इल्जाम लगाने से नहीं होगा हमारा सबका कर्लच्य है कि हम देखें कि कहां कमी है, उसको प्रेम से समझाएं। जब तक प्रेम से कार्य नहीं करेगे तब तक सफल नहीं हो सकते। भद्रता से, श्रेष्ठता से, ईम।नदारी से हम श्रपने देश के करण्शन को दूर कर सकते हैं, हम कोई डिक्टेट शिप को मानने वाले नहीं हैं। नैपेटिज्म को मानने वाले नहीं हैं। हमने जनतंत्र के रास्ते को श्रपनाया है। हरएक को मौका मिलना च।हिये कि वह श्रपनी पवित्रता श्रीर चरित्र को अंचा उठाकर इस देश के निर्माण में सहयोग दे।

रह ही यूनिवर्सिटी में इस वक्त जितने इंजीनियर तैयार हो रहे हैं, वर्ल्ड में उसके मुकाबले का इंजीनियर नहीं है। सारा विश्व इस बात को मानता है कि रह की यूनिवर्सिटी ने इतनें अंचे इंजीनियर पैदा किये हैं जिन्होंने भाखड़ा जैसा डैम खड़ा किया है। अंचे से अंचे क्रादमी हैं। इंजीनियर्स को बेईमान कहा जाता है। किन्तु इंजीनियर्स में हो ए० एन० खोसला, जिनकी ईमानदारी देवताओं जैसी है एस० थ्रार० सिंह ग्रीर श्रार० एस० चतुर्वेदी जैसे भी ध्यक्ति हैं...

श्री ग्रधिष्ठाता—कृतया नाम न लें।

श्री यशपालसिंह—मेरी प्रार्थना है कि रहकी यूनिवर्सिटी को अंचा उठाने के लिये सबसे पहली जरूरत है कि गरीब काश्तकारों के बेटों को पढ़ने का मौका दिया जाय। हमारे माननीय मंत्री जी का ताल्लक सीवा रहकी यूनिवर्सिटी से है। गरीब किसानों के लड़कों के लिये, गरीब मजदूरों के लड़कों के लिये, गरीब मजदूरों के लड़कों के लिये, हरिजनों के लड़कों के लिये कोई चान्स नहीं है। जो अच्छे नम्बरों से पास होते हैं, कम्पटीशन में पास होते हैं, उन मजदूर श्रीर किसानों के लड़कों को जरूर मौका मिलना चाहिए। उन्हें सरकार को श्रीर से शाबिक सहायता मिलनी चाहिये।

### [श्री यशपालसिंह]

बाहर से जो हम इंस्ट्वशंस लेते हैं उससे भ्रच्छे डायरेक्शंस हमको हमारे इंजीनियर्स दे सकते हैं। इसलिये बाहर की इमदाद को बन्द करके हम श्रयने पैरों पर खड़े हो जायं श्रीर अपना निर्माण अपने हाथों से करें। चरित्र का मसला प्रत्येक नागरिक का, सारे प्रदेश का मसला है, किसी एक व्यक्ति का मसला नहीं है। जो सड़के म्राज बनती है वे दो दिन बाद टूट जाती हैं। हमारे ही रास्ते में एक पुल बना, दो दिन पहले बना श्रीर बारिश में टट गया। हमको खेद है। हम सब इसके जिम्मेदार है, हमे खुद यह काम देलना चाहिये। श्रंग्रेजों के जमाने में रूहाने का पुल बनाथा उसमें से एक ईंट भी नहीं निकली है। रहेकी का जो नहर का सबसे बड़ा श्रायोजन है उसके बारे में बड़े से बड़े इंजीनियर्स फहते है उसके पूलों के एक घनफुट की तोड़ने में इतनी मेहनत करनी पड़ती है जितनी कि बीस घन फुट नए बनाने में होती है, एक घनफुट को तोड़ने में काफी महनत करनी पहती है। देवरिया, गोरखपुर में जो ४० साल पुरानी सड़कें है उनका एक किनारा भी नही दृटा। लेकिन श्राज की सड़के बनती हैं, पुल बनते हैं और फौरन ही टूट जाते हैं। यह काम हम सबका है। चाहंगा सब लोग मिल कर अपने प्रदेश का निर्माण करें श्रीर ज्यादा से ज्यादा पवित्रता के साथ श्रौर जो पुल रुके हुए हैं उनको बढ़ाया जाय जनता हर तरह का सहयोग करने के लिये तैयार है। केवल सरकार गफलत छोड़ दे तो जनता कंधे से कंधा मिला कर देश में सड़कों श्रीर पुलों के निर्माण में सहयोग देगी।

श्री बेचनराम (जिला वाराणसी)—मान्यवर, में ग्रापका बहुत शुक्रगुजार हूं कि ग्राज ग्रापने मुझे बोलने का मौका दिया। में इस ग्रनुदान का समर्थन करता हूं।

न्नाज में सुबह से बैठा भाषण सुन रहा था श्रौर कई बार प्रयास भी किया, उठा, बैठा श्रौर निराज्ञ हो रहा था कि ज्ञायद समय न मिले लेकिन श्रापकी क्रुग हो गई, इसके लिये धन्य-वाद।

मैंने माननीय सदस्यों के भाषण सुने जिनमें कुछ सुझाव भी दिये गये श्रीर जिकायतें भी हुई। मैं वाराणसी जिले का रहने वाला हूं, मैने माननीय निर्माण मंत्री जी से जबानी भी कहा, लिख कर भी दिया मगर बनारस की हमारे क्षेत्र की जनता यह विश्वास नहीं करती थी कि तम हमारे प्रतिनिधि हो, हमारी श्रावाज को सरकार तक पहुंचाते हो या नहीं, श्रववार पढ़ने को नहीं मिलता। तो में मजबूर हो गया कि भ्राज बोलूं। ३ ९ ४ १ – ४२ के चनाय के बाद भ्रयने क्षेत्र में कोशिश करके माननीय निर्माण मंत्री जी को ले गया थ्रौर धनतुलसी-जंगीगंज सङ्क जो बन चुकी है उसके लिये घन्यवाद है। में जो किताब निर्माण विभाग से छपी है जिसमें कर्मनाशा पुल का जित्र माया है कि वह बन के तैयार है उसके लिये में चिकया की जनता मौर भ्रयनी भ्रोर से मंत्री जी को धन्यवाद देता हूं। १९५७ के बाद के जो काम श्रयूरे है उनके लिये मिल करके, लिख करके व प्रस्ताव के जरिये कई बार कोशिश की। सौभाग्य की बात है कि हम ग्रीर ग्राप म्राविष्ठाता महोदय, एक ही क्षेत्र से म्राते है म्रौर एक ही नाम है। म्राप भी सहमत होंगे कि मान-पुर डिग्री कालेज की वजह से ज्ञानपुर-दुर्गागंज-भदोही की सड़क का २० मील का टुकड़ा सहुत जरूरी है जिसके बन जाने के बाद प्रतापगढ़-जंघई की सड़क का मेल हो जाता है। प्रभी हम लोग प्रतापगढ़ के बजाय श्रायोध्या या बनारस तथा इलाहाबाद हो कर मिर्जापुर जाते है तो १०० मील का चक्कर लगाना पड़ता है और प्रतापगढ़-जंबई रोड बन जाने के बाद हमारा कम से कम ५० मील का अन्तर कम हो जाता है। अभी २ जनवरी को माननीय निर्माण मंत्री जी जानपुर गये थे वहां की जनता ने प्रबल शब्दों में उनसे मांग की थी, प्रस्ताव पास किये थे इस सम्बन्ध में। मेरा नम्न निवेदन है कि वह इस तरफ ध्यान दें और इसी अविध में इस सड़क की बनवाने का कष्ट करेंगे।

मुझे यह भी निवेदन करना है कि मिर्जापुर एक ऐसा महत्वपूर्ण शहर है जो गंगा के तद पर बसा है। निर्माण के काम वहां काफी हो रहे हैं। रिहन्द डैम व चुर्क फैक्ट्री बन रही है जिसमें

१६६०-६१ के आय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—अनुदान संख्या ३४—लेखा शीर्षक ५०—सार्वजनिक निर्माण-कार्य और ५०—क— राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, अनुदान संख्या ३५—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहावता, अनुदान संख्या ३६—लेखा शीर्षक ५०— नागरिक निर्माण-कार्य और ८१—राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा अनुदान संख्या ५०— लेखा शीर्षक ६१—राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी-लेखा

कई करोड़ रुपया खर्च हुम्रा। वहां जाने के लिये इलाहाबाद से जाइये या बनारस होकर जाइये। लेकिन म्रगर मिर्जापुर का पुल बन जाय तो करीब १०० मील का चक्कर कम पड़ जायगा ग्रीर यह पुल जौनपुर, मिर्जापुर ग्रीर बनारस तीनों जिलों को मिलाने वाला होगा। सड़क के साथ-साथ पुल भी बहुत जरूरी है। यह भी मालूम हुम्रा है कि सेट्रल गवर्नमेट कुछ मदद कर सकती है बशर्ते कि प्रान्तीय सरकार कुछ ध्यान दे।

विलीन बनारस स्टेट में ज्ञानपुर स्थान पर एक बहुत बड़ा तालाब है। लाखों रुपयों की लागत से वह बना था। उसकी मरम्मत होनी मुश्किल हो गयी है। उसका पानी खराब हो गया है। जनता की मांग है कि उसकी सफाई व मरम्मत की जाय। उसका पानी सिंचाई के काम में ले श्राया जाय श्रीर इस तरह से पानी की सफाई कर दी जाय ताकि फिर पानी की सुविधा वहां की जनता को हो जाय। श्राञ्चा है माननीय मंत्री जी पुल, तालाब व सड़क की मांग की श्रोर ध्यान देंगे श्रीर यह काम जरूर किया जायगा।

मैं माननीय मंत्री महोदय को हृदय से धन्यवाद देता हूं कि वे इस विभाग के मंत्री हैं। सभी उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। जो मंत्री महोदय का स्वभाव है, जो मिलनसारिता है उसे सभी जानते हैं। १६५१-५२ में जब ज्ञानपुर गये थे तब से वहां कई सड़के बनीं ग्रौर लोगों को विश्वास है कि ग्रगर निर्माण विभाग उनके हाथ में रहा तो जनता का काम ग्रवश्य होगा। इसी ग्राधार पर मेरा विश्वास है कि जो मेरे जिले व क्षेत्र की मांग है वह ग्रवश्य पूरी की जायगी।

मेरा नाम बुलाने पर श्री राजनारायण जी हंसे श्रीर उन्होंने कहा कि श्री बेचनराम व श्री बेचनराम गुप्त नाम से मैने फायदा उठाया, क्योंकि वह श्रध्यक्ष है। १६५१-५२ से लेकर देखा जाय तो हजारों बार वे बोले होंगे श्रीर मुझे पहली बार बोलने का श्रवसर मिला है। दावे के साथ कह सकता हूं कि वे विरोधी पार्टी के नेता है लेकिन दिल से माननीय मंत्री जी की प्रश्नंसा ही करते है, यहां खड़े होकर भले ही विरोध करे। मुझे श्राशा है कि उनके जरिये बनारस जिले का लाभ ही होगा। श्रन्त मे पुनः धन्यवता देता हूं श्रीर प्रस्तुत श्रनुदान का समर्थन करता हूं।

श्री द्वारिकाप्रसाद (जिला फर्रकाबाद)—माननीय श्रिधिष्ठाता महोदय, जो सदन के सामने कटौती का प्रस्ताव पेश हुश्रा है उसका मैं समर्थन करता हूं। श्रिधिष्ठाता महोदय, श्राप देखे कि सार्वजिनक निर्माण का जो महत्व है वह अविष्य में श्रीर भी बढ़ जायगा। इस विभाग में जो कर्मचारी श्रभी तक कार्य करते श्राय है वे मुस्तिकल नहीं किये गये इसिलये मेरी श्रापसे यह प्रार्थना है कि बेलदार तथा जितने छोटे-छोटे जो कर्मचारी है उन सबको मुस्तिकल कर दिया जाय। श्राप देखेगे कि ज्यादातर गरीब ही श्रादमी सड़कों या बड़ी-बड़ी नहरों मे काम करने के लिये लगाये जाते हैं जैसे हिरजन या पिछड़े हुए लोग। इसिलये मेरी करबद्ध प्रार्थना है कि इन गरीब लोगों की तरफ जरूर ध्यान दिया जाय।

दूसरी बात यह है कि आज कल जो ओवरसियर है उनकी ठेकेदारों से साठगांठ रहती है। कंकड़ पास करने के लिये तथा सड़क पास करने के लिये उनका ५ या शायद १० प्रतिशत तय होता है। इसलिये इसकी खत्म करने की तरफ ध्यान दिया जाय। में चाहूंगा कि ठेकेदारी प्रथा को खत्म किया जाय। एक तरफ तो ठेकेदारी प्रथा को खत्म किये जाने के लिये कहा जाता है और दूसरी तरफ अभी आठ दिन हुये इसी लखनऊ के अन्दर पूरे प्रवेश के ठेकेदारों को बुलाकर एक मीटिंग की गई जिसका उद्घाटन माननीय मंत्री जी ने किया। ऐसी खुल्लम

### [श्री द्वारिकाप्रसाद]

खुल्ला खूट दी जाती है और इस तरह से अध्याचार का झड़ा बनाया जाता है। इस तरह की बातों को कभी भी स्वप्न में नहीं सोचा जा सकता था। झब में ज्यादा न कह कर आपके जिये अपने जिले की समस्याओं की ओर ध्यान दिलाना जाहता हूं।

श्री ग्रिथिष्ठाता--माननीय सदस्य का कौन-सा जिला है।

श्री द्वारिकाप्रसाव—फर्वलाबाद श्रीमन्, तिरवा से इन्द्रगढ़ सौरिण तक सड़क बनाने के लिये जनता ने काफी समय से दरख्वास्तें दी है। लेकिन १२ साल हो गये उधर कोई ध्यान नहीं दिया गया है। यहां पर दो थाने हैं। एक दूसरे में श्राने-जाने के लिये कोई सागन नहीं है। इसलिये इस २० मील के इकड़े को श्रवश्य बनवा दिया जाय। श्रापको मालूम होना चाहिये कि हमारा जिला उपजाऊ है इसलिये सड़क बन जाने पर दूसरे जिलों में गल्ला भेजा जा सफता है। हमारे जिने में महीने ने ६, ७, ६० कत्ल हो जाते हैं। दूसरी सड़क ठिट्टा-मृहनपर सड़क को बिल्हौर में मिला दिया जाय। कन्नोज में राजधाद पर पुन की बहुत जरूरत है। ग्रापर यह बन जायगा तो पी नीभीन श्रीर जालौन वगैरह कवर हो जायेगे। इनका सर्वे भी हो चुका है श्रीर श्राचा है कि मंत्री जी इनको शीध्र बनवाने की छुपा करेगे।

हम मंत्री जो से स्राज्ञा करते थे कि वह बैक वर्ड क्लास के लोगों को उनके परसेटेज के स्रनुसार जगह दिलाने का प्रयत्न करेंगे सौर हम उनका नाम स्रास्तर लिया करते थे। लेकिन इधर उन्होंने कोई घ्यान नहीं दिया है। पता नहीं मंत्री जी क्यों हिचकते हैं? इनको खुल्लम ख्ला काम करना चाहिये वह चाहे जिस पार्टी के हों हम स्रपने स्नादमी को चाहते हैं। में स्नापके द्वारा मांग करूंगा कि परसेंटेज के स्ननुसार हमको जगहें वी जायं। स्नाज स्राष्ट्रतों की बड़ी बुरी बजा ह इसलिय इनको भुलाया न जाय।

श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन (जिला टेहरी-गढ़वाल) — श्रिष्ठाता महोदय, में श्रापकी श्राभारी हूं। श्राज जो श्रनुवान प्रस्तुत है में उसका समर्थन करने के खड़ी हुई हूं। यह जो सार्वजिनक विभाग है, यह मुख्य चीज है। इसके बिना हम उन्नति नहीं कर सकते जब तक कि जिलों में सड़कों की श्रावश्यकता की पूर्ति नहीं होती है। हम श्राग नहीं बढ़ सकते, हमारे विकास कार्यों में सार्वजिनक विभाग का प्रमुख सहयोग है। विकास में सड़कों ने बड़ा योग दिया है। हमारे यातायात के सावन धीरे-धीरे बढ़ रहे है। यही जरूरत भी है क्योंकि हमारा उत्तर प्रदेश बहुत सालों से पिछड़ा रहा है। उसकी एकदम से उन्नति होना बहुत कठिन है। लेकिन धीरे-धीरे उन्नति होगी। हमको निराशा नहीं है। हमारा सार्वजिनक निर्माण विभाग धागे श्रवश्य उन्नति के पय पर जायगा। पहले मुसाफिरों को बड़ी कठिनाई होती थी। उसमें यातायात के साधन बढ़ने से कमी हुई है। पहले हरिद्वार में श्राकर बैठनापड़ता था। इसी प्रकार लखनऊ से सीथे रोडवेज की सुविधा हो गयी है। पहाड़ों में भी रोड बन रही है। वंसे हमारे यहां कुछ सड़ के पहले की बनी हुई है। कुछ श्रमदान से बनी है। लेकिन जब से हमारी सरकार ने कार्यभार संभाला है तब से यह काम धीरे-धीरे श्रागे बढ़ रहा है। हम श्राशा करते है कि हमारी सरकार इस दिशा में ग्रीर भी तेज गित से कदम उठायेगी।

हमारे देहरी गढ़वाल जिले में जो भागीरथी पर पुल था उसके लिए पहले भी खपया रखा गया था लेकिन बीच में गड़बड़ी के कारण वह बन नहीं पाया। इस साल फिर उस पर काम चल रहा है। इसी प्रकार कोटेश्वर पुल के लिए एक बार १४ हजार का अनुवान रखा गया था लेकिन वह जिले के अधिकारियों के ढीलेपन के कारण नहीं हो पाया। इस साल हमारी सरकार ने उसको स्वीकार किया है। पर्वतीय जिलों में बहुत कुछ होने जा रहा है। मुझे पूर्ण आशा है कि हमारी सरकार दूसरे जिलों में भी इसी प्रकार का कार्य करती रहेगी।

अधिष्ठाता महोदय, निर्माण कार्य के लिए घन की बड़ी आवश्यकता होती है। हम गरीब देश के लोग है। हमारे पास इतना घन नहीं है कि हम सारी जगहों पर सड़कों का जास १९६०-६१ के ग्राय-व्ययक में प्रनुवानों के लिये मांगों पर मतवान—ग्रनुवान संख्या
३४—लेखा शीर्षक ५०—सार्वजनिक निर्माण-कार्य ग्रौर ५०-क—राजस्य से विस्त
पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, ग्रनुवान संख्या ३५—लेखा
शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, ग्रनुवान संख्या ३६—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य
ग्रौर ८१—राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी
का लेखा तथा ग्रनुवान संख्या ५०—लेखा शीर्षक ८१—राजस्व
लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी-लेखा

बिद्धा वे। कुछ जिले बहुत पिछड़े है, जैसे गोरखपुर या पर्वतीय क्षेत्र ग्रौर उत्तराखंड के जिले है, जब तक इन पिछड़े जिलों को आगे बढ़े हुए जिले ग्रथने साथ नहीं लेगे तब तक प्रदेश की उन्नति नहीं हो सकती। तभी ग्राप भी उनको साथ लेकर ग्रागे चल पायेगे। वरना एक भाई ग्रगर सब से नीचे है श्रौर दूसरा भाई ऊपर है तो वह यह सोचेगा कि ये भाई मेरी मदद नहीं करना चाहता।

म्राज जबिक हम समाजवादी ढंग से चल रहे है श्रौर हमारी सरकार समाजवाद की तरफ कदम उठा रही है तो इस चीज को याद रखना जरूरी है कि हम लोग समाजवाद समाजवाद चिल्लाते तो रहते है लेकिन समाजवाद की भावना अन्दर नहीं रहती है और जब तक समाजवाद की भावना नहीं आयेगी तब तक हम उन्नति नहीं कर पायेगे। समाज क्या है ? वह एक-एक व्यक्ति से हो तो बनता है। इसलिए जब व्यक्ति व्यक्ति में सुधार होगा तभी समाज में सुवार हो सकता है। इसी प्रकार से में कहती हूं कि हमारी जो समाजवादी सरकार है वह तभी उन्नति कर सकतो है जबकि हम एक-ए है व्यक्ति को सुधारेंगे श्रौर एक एक व्यक्ति के **भ्रन्दर** यह भावना श्रायेगी कि हम सबको मिलकर श्रागे बढ़ना है। बहुत देर से मै बड़े ध्यान से ग्रथने भाइयों के भाषण को जो इघर से भी हए ग्रौर उधर से भी हुए है, सुन रही मैंने देखा कि हमारे बरत से इधर के भाइयों ने भी बड़े कठोर भाषण दिये हैं। यह सुनकर श्राक्ष्वर्य हुन्ना कि जब बड़े बड़े शहरों मे रोड नहीं है ग्रौर वहां गाड़ियां रुक जाती है, बड़े बड़े शहरों का जब यह हाल है, तो पहाड़ों श्रौर पिछड़े इलाकों का क्या हाल होगा ? जिस पहाड़ पर ए ह मील चढ़ने मे दो दो घंटे लगते है वहां के लिए भी तो कुछ सोचना चाहिए। तो श्रापको प ले श्रपने मन को टटोलना चाहिए कि हम जो दूसरों के श्रवगुण निकालते हैं, पृले ग्रपने ग्रन्दर उन सात गुणों को तो पैदा करें। इन शब्दों के साथ में माननीय मंत्री जी का ग्राभार प्रकट करती हूं ग्रौर जो उनका श्रनुदान पेश है उसका समर्थन में करती हूं।

श्री टीकाराम पुजारी (जिला मथुरा)—श्रीमन्, बड़ी काफी देर हुई निर्माण के ऊपर चर्चा करते करते लेकिन इसकी तह पर कोई नहीं पहुंचा। सन् १६४७ में जब निर्माण हो रहा था तभी गलत निर्माण हुआ। अंग्रेजों की झाड़ो को तो हमने साफ कर दिया, लेकिन उस झाड़ो के जो ठूंठ रह गए वह हरे होकर फिर थ्रा गए थ्रौर सरकार के ऊपर छा गए। जब तक उन ठूंठों को उखाड़ कर फें ह न दिया जायगा तब तक देश का निर्माण न ग्राज हो सकता है श्रौर न कल हो सहता है। ग्रापके हारा में ग्रर्ज करूं।, सड़कों के ऊपर बात हो रही है। सड़कों का निर्माण हो, पुल का निर्माण हो, नदियों का निर्माण हो, फलां चीज का निर्माण हो, लेकिन पहले श्रपना-ग्रपना निर्माण तो कर लो। जब हमारा पूरा निर्माण हो जायगा तब देखा जायगा। जो दल रहेंगे देश के ग्रन्दर जिन्होंने कुर्बोनियां की शृं है, जिन्होंने ग्राजादी की कीमत दीन्हीं है उनको पता है ग्रौर एक दल लूटने वाला है ग्रौर लूटने वाला ही दल इंजीनियरिंग दल है कर्मचारियों का वल है, ग्रौर त्यागियों को जिन्होंने कीमत दीन्हीं है ग्राजादी की उन्हे कौन पुछता है? श्राज प्रतिक्रियावादी, ग्रवसरवादी, निकम्में जो लोग थे ग्रंग्रेजों के रखे हुए ग्रौर उनकी जड़ में पानो देने वाले, उन्हीं के नाती ग्रौर बेट इंजीनियर ग्रौर कलेक्टर ग्रौर कप्तान है, तो फिर कैसे निर्माण हो सकता है? क्या निर्माण होगा इस देश का? इसीलिए हमने यह सब किया था?

"लंक बहन कर दोऊ वलन पर

[भी टीकाराम पुजारी]

भाषु खेत रावण को वल ग्रमर बनायो ॥ को जनन जानकी जनता श्रग्नि फसौटी पर धनमायो ऐसो क्या श्रपराध कियो प्रभु तऊ तुम बनवास पठायो ॥ सुधरे सब उपजे बोये रघुपति राघव राजाराम बिलेक बढ़ावे सीताराम ॥

द्यापका नाम तो गिरधारी है। एक गिरधारी ने तो पर्वत उठाया था श्रौर गिरिवर उठाकर बहुत जनता की रक्षा की थी। पर श्रापक इस विभाग में क्या हो रहा है? पहले जमाने में जब गिरधारी के नाम पर भगवा। ने रक्षा की थी तो उस समय लोग श्रन्न खाते थे श्रौर श्राज क्या होता है। श्राज श्रापके विभाग में लोग लोहा खाते हैं, सीमेन्ट खाते हैं। यह क्या हो रहा है। जनता इस सब को देख रही है। श्राप याद रखें सन् १६६२ में जनता श्रापका कल्याण करेगी श्रौर श्रापको इन कुस्यों से श्रलग करके फेक देगी। निर्माण की बात तो जरूर सरकार करती है पर यह निर्माण किसका करती है। यह तो श्रपना निर्माण कर रही है। यहां पर सदन में ये चीजे लगाई जा रही हैं। क्या इससे देश का निर्माण होगा। गिरधारीलाल जी में तो श्रापसे निवेदन करता है कि श्राप पित्वमी जिले से श्राते हैं श्रौर डाक्टर सम्पूर्णानन्व पूर्वी जिले से श्राते हैं तो हमारे बचने की कहां गुंजायश है। राम बचावे तो बचे नहीं तो हमारी खैर नहीं है। हम तो बीच में श्रा गये किर बचना मुक्किल है।

हमारे जिले मथुरा में सादाबाद से राया जाने वाली सड़क जो कि करीब १८ मील का रास्ता है, जब वहां पर बाढ़ श्राती है तो लोगों के श्राने-जाने के लिये कोई रास्ता नहीं रहता है। सब जगह पानी भर जाता है। दो-दो महीने तक किसान नहीं जा सकता है। वहां का सारा रास्ता बन्द हो जाता है। जिस सड़क की बहुत बड़ी जरूरत है। हम चाहते हैं कि गिरधारीलाल जो मथुरा जिले की इस सड़क को चल कर देख ले कि वहां पर लोग कितने परेशान रहते हैं। नाम तो श्रापका बहुत श्रच्छा है। नाम तो रख दिया धनपित, मुंह देखा तो ये गित पर कंगाल ही मालूम होते हैं। श्रंग्रेजी राज्य के जो ठूंठ श्रभी बाकी है पहले उनको साफ करो। तब तो बात बनेगी श्रीर नहीं तो नहीं बनेगी। श्राप उन लोगों को भूल जाते है जिन्होंने देश के लिये काम किया है श्रीर यहां से श्रेग्रेजों को भगाया है।

श्राज श्राप टीकाराम को विरोधी समझते हैं क्यों कि वह श्रापको बहुत भलें की बात कहता हैं श्रीर जिन्होंने देश के साथ गद्दारी की हैं उनको मिनिस्टर बना विया गया है। जिन्होंने यहां से श्रंग्रेजों को निकाला है उनको श्राप कहते हैं कि विरोधी है। श्राप श्रपने साथी, श्रपने भाई, श्रौर साथ मरने वाले को तो विरोधी कहते हो श्रौर जो वास्तव में विरोधी हैं उसे कंठ लगाये जा रहें हो। इसलिये जवानो उठो। नव युग का निर्माण करो श्रौर श्रपने हकों के उपर कुछ श्रौर श्रभी बिलदान करो। यहां लाखों श्रान पर मरे हैं श्रौर श्रपनी भरी जवानो को बर्बाद किया है। लेकिन इसके बाद भी भूलना नहीं हमारी सादाबाद वाली सड़क को, वहां की जनता बड़ी परेशान रहती है। इस विभाग में जो रुपया दिया जाता है उसका तीन हिस्सा तो लोग खा जाते हैं श्रौर एक हिस्सा निर्माण के काम में लगाया जाता है। तो इससे निर्माण क्या होगा। जब हमारा श्रौर श्रापका दिल सच्चा होगा तभी निर्माण हो सकेगा, तभी हमारा उद्धार हो सकेगा। तो हमारी सादाबाद-सेराया जाने वाली सड़ क का ध्यान रखें। हमारे यहां से १६ मील मथुरा की मंडी श्रौर २२ मील हाथस्स की मंडी है जिससे किसाणों को बड़ी परेकानी होती है।

१९६०-६१ के स्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान----श्रनुदान संख्या ३४--लेखा शीर्षक ५०--सार्वजनिक निर्माण-कार्य श्रीर ५०-क--राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी को लागत, ग्रनुदान संख्या ३५--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रीय सर्डेक निधि से वित्तीय सहायता, श्रनुदान संख्या ३६——लेखा शीर्षक ५०—— नागरिक निर्माण-कार्य श्रौर ८१--राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा ग्रनुदान संख्या ५०---लेखा शीर्षक ८१--राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों का पंजी-लेखा

श्री अधिष्ठाता--समय समाप्त हो गया।

श्री खूर्बीसह (जिला बिजनौर)--श्रोमन्, सारे देश की प्रगति उस देश की सड़कों पर मनहसिर होती है श्रीर यह हमारे लिये खुशी का मौका है कि जहां तक सड़कों का ताल्लुक है, हमारे सुबे ने काफी प्रगति की है ग्रौर यह भी संतोष की बात है कि जो विभागीय लोग है, उनके काम में पहले जितने दोष निकाले जाते थे वह भी इस बार कम सुनने में थ्रा रहे है । जितना रुपया सडकों के निर्माण के लिये दिया जा रहा है उसमें भी मोहकमे ने काफी बचत दिखलायी है श्रौर काम के स्टैंडर्ड में भी पहले से ज्यादा सुधार हुन्ना है। पांच-छः साल पहले, जैसा कि मैने एक सुझाव रखा था, उसके श्रनुसार सरकार ने इस किस्म की एक एजेन्सी बना दी है कि जो काम किया जाय वह उसको देखे, परखे श्रौर तहकीकात करके रिपोर्ट दे कि काम दुरुस्त हुन्ना है या नहीं।

चेयरमैन महोदय, यूं तो किसी महकमे के कामों पर धूल फेंकना मामूली खेल हो गया है श्राजकल का, लेकिन श्रगर गौर से देखा जाय तो हमें इस बाते पर खुशी होनी चाहिये कि पी० डब्ल्यू० डी० भ्राज सूबे की सच्ची सेवा कर रहा है। मुझे शायद ४ ही मिनट मिलें....

श्री ग्रधिष्ठाता--जी नहीं। कल भी ग्राप बोलेगे।

श्री खुबसिह--तो में एक बात की तरफ सरकार की तवज्जह दिलाना चाहता हूं। ठाकुरद्वारा से सुहारा तक इंटर डिस्ट्रिक्ट रोड है।

श्री ग्रिधि ठाता--शापके जिले में काकी सड़कें बनी है।

श्री खूर्बिसह --चेयरमैन साहब, चंिक ग्राप कुछ ऊंची जगह बैठे हैं इसलिये शायद कुछ कम सुनने में आ रहा है। मै मुरादाबाद की बात कह रहा हूं, बिजनौर की नहीं। ठाकुरद्वारा को कालापानी कहा जाता रहा है ग्रौर बिजनौर के ग्रिफजलगढ़ को भी कालापानी कहा जाता रहा है।

श्रभी भी वह कालापानी है। मैं सरकार का ष्यान शिहारा-ठाकुरद्वारा सड़क की श्रोर दिलाना चाहता हूं। यह मुरादाबाद जिले की सड़क हैं श्रीर कुछ हिस्सा इसका बिजनौर में भी है इस सड़क पर पुलों का बनना निहायत ही जरूरी है। लेकिन इस सड़क पर पुल श्राज तक नहीं बन पाए। हालांकि कई बार इसके लिये माननीय मंत्री जी की तवज्जह दिलाई गई। मैं माननीय मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि ज्ञिहारा-ठाकुरद्वारा सडक पर फीका नदी पर पुल बनाया जाय। इसके भ्रलावा एक लिंक रोड ठाकुरद्वारा-ज्ञिहारा भ्रौर ज्ञेरकोट-श्रफजलगढ़ को मिलाने के लिये दी जाय तो यह रोड १२ महीने चल सकती है श्रौर इससे काफी फायदा लोगों को हो सकता है। मेरा यह सुझाव है जिसे मैं माननीय मंत्री जी के सामने काफी दिनों से रखता चला आ रहा हूं और इस तरफ माननीय मंत्री जी को तवज्जह देनी चाहिये। इस साल जो बजट भ्राया उसमें भी इसके लिये मुख नहीं किया गया है। बेहतर तो यह होता कि थोड़ा बहुत काम इसी साल शुरू कर विया गया होता। में नहीं जानता ग्रगली तीसरी योजना में भी इसको लिया जा सकेगा या नहीं। इसका बनना निहायत जरूरी है श्रीर मुनासिब है। में प्रपत्ने जिले की बात कहता हूं। दूसरे जिलों में बहुत ग्रच्छे काम हुये हैं। ग्राज मेरे जिले

[श्री खुबसिह]

की हालत यह है कि कहों पुल है तो सड़क नहीं हूं श्रीर कहीं सड़क ह तो पुल नहीं ह। बूसरे जिलों में १०-१० फुट चौड़ी सड़कें बनाई जा रही है श्रीर इससे भी ज्यादा चौड़ी मगर बिजनौर मे तो बहुत सी सड़कें ६-६ फिट चौड़ी बनाई गई है।

श्री ग्रिधिष्ठाता—ग्रब ग्राप ग्रपना भाषण कल जारी रखे। श्रब हम उठते है ग्रौर कल ११ बजे फिर बैठेगे।

(इसके बाद सदन ६ बजे अपले दिन के ११ बजे तक के लिए स्थिगत हो गया।)

वेवकीनन्वन मित्थल मचिव, विधान सभा, उत्तर प्रवेश।

लखनऊ; ६ मार्च, १९६०।

## मत्थी 'क'

(देखिये तारांकित प्रश्न ६ का उत्तर पीछं पृष्ठ ७ पर)

लडकियों और महिलाओं के अनैतिक व्यापार निरोधक अधिनियम को निम्नलिखित ६ जिलों में कार्यान्वित किया जा रहा है:

- (१) श्रत्मोड़ा, (२) देहरादून,
- (४) लखनऊ,

- (४) मेरठ,
- (३) गोरखपुर,
- (६) वाराणसी।

इन छः जिलों में उक्त अधिनियम की धारा १३ (१) के अन्तर्गत कुल १४ स्पेशल पुलिस श्राफिसर नियक्त किये गये हैं।

निम्नलिखित ६ नये जिलों में इस म्रधिनियम के कार्यान्वयन के म्रादेश १३ फरवरी, १६६० को जारी किये गये है:

- (६) कानपुर,
- (१) ग्रागरा, (२) ग्रलीगढ़,
- (७) मथुरा,
- (३) इलाहाबाद, (६) मुरादाबाद,
- (४) बरेली,

(६) सहारनपूर।

(४) इटावा,

सामाजिक एवं नैतिक ग्रारोग्य तथा उत्तर रक्षा सेवायें योजना के श्रन्तर्गत स्थापित १२ जिला शरणालयों एवं प्रवेशालयों तथा उद्धार गृह देहरादून की उपर्युक्त श्रिषिनियम की धारा २१ के अन्तर्गत "प्रोटेक्टिव होम्स" के रूप में प्रयोग में लाया जा रहा है।

## नत्थी 'ख'

(देखिये तारांफित प्रश्न २० का उत्तर पाछ वाठ १२ गर)

न्नाजमगढ़ जिले में महिला मंगल योजना के म्नन्तगत शिताय वर्ष १६५८-५६ व ते पुरुष-मुख्य कार्य किये गये उनका विवरण निम्न प्रकार है.

(१) बच्चों की संख्या जिन्हे बलबाड़ी में शिक्षा	बाराई ,.५१
(२) महिलास्रों की संख्या जिन्हे प्रोढ़ शिक्षा २।	गर्ः • • ३,८१०
(३) महिलाश्रों की संख्या जिन्हें हस्तकला में दि	तदार्वागः . २,८.१
(४) महिलास्रों द्वारा हस्तकला मे निर्मित को	•
की संख्या	ৼ,ৼৢৢৢ৽
(५) चर्ले तथा तकलियों से काती गई सूत की गृ	[डिपो की सल्या ह, १३७
(६) महिलाग्रों की संख्या जिन्हे गृह उद्योग में ि	बाक्षा दी गर्ज १.५३५
(७) महिलाओं द्वारा गृह उद्योग मे निर्मित की	गई वस्तुप्री
की संख्या	٠. ٧, ټو ډ ټو
(८) रोगियों की संख्या जिनकी प्रारम्भिक चि	कत्सा की गई ४,०५०
(६) प्रसव के पूर्व तथा पश्चात् सम्बन्धी उपः	वारों में संबा
की गई महिलास्रों की संख्या	• १, ২৩६
(१०) शारीरिक शिक्षा में भाग लेने वाले बच्चं	किसम्या ३,२१५
(११) सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने बाली मा	हलाश्रों की सस्या ४,०४६
(१२) महिलाओं द्वारा निर्मित की गई क्यारियों	की संध्या जिल्हों
साग-सब्जी श्रादि बोई गई । .	

नत्थी 'ग' (देखिये तारांकित प्रश्न ४० का उत्तर पीछे पृष्ठ२२ पर) ३१ दिसम्बर, १९५६ को राज्य में महिला कैदियों की जिलावार संख्या

জি ক	ाला का नाम जहां ो जेलों में बन्द हैं		कैदियों की संख्या		जिला का नाम की जेलों में बन	जहां द हैं	कैदियों की संख्या
_							१७६
\$	इलाहाबाद	• •	३ ३	२३	फैजाबाद		Ę
?	लखनऊ	- •	৬ ধ	२४	गाजीपुर	• •	Ę
£,	श्रागरा —	• •	ጸ	२४	गोंडा		१३
ሄ	<b>ग्रलीगढ़</b>	• •	8	२६	गोर्खपुर		१५
ሂ	ग्रल्भोड़ा	• •	8	२७	हरवोई		8
Ę	ग्राजमगढ़		२	२८	द्यांसी	• •	ন্
9	बहराइच	• •	ጸ	38	कानपुर		3
5	बलिया	• •	ጻ	३०	<b>खीरी</b>		Ę
3	बांदा	• •	8	₹ ₹	मैनपुरी		१
१०	बाराबंकी	• •	ሂ	३२	मेरठ	٠.	१०
११	बरेली	• •	२	33	मिर्जापुर		६
१२	बस्ती	• •	5	३४	मुरादाबाद		१
१३	वाराणसी	• •	૭	३५	मथुरा		৩
88	बिजनौर	• •	२	३६	मुज <b>प्फ</b> रनग <i>र</i>		₹
१५	बदायूं	• •	8	३७	पौलीभीत		२
<b>१</b> ६	बुलन्देशहर	• •	<b>`</b> ₹	३८	त्रतापगढ्		१
<b>१</b> ७	देवरिया	• •	5	3 €	राय <b>बरे</b> ली		৩
१८	देहरावून	• •	२	४०	रामपुर		२
38	एटा	• •	૪	<b>&amp;</b> \$	शाहजहांपुर	• •	8
२०	इटावा	• •	₹	४२	सहारनपुर	• •	8
२१	फर्रखाबाद			8,3	सीतापुर	• •	<b>ર</b>
	(फ्तेहगढ़)	• •	₹	88	सुल्तानपुर		Ę
२२	फतेहपुर	• •	२	४४	उसाव ँ	• •	8
		_			`		للتهد والتحيد مسميد وشعده وبانبيد فلنسبد المتالات الأوادة
			<b>१</b> ७६		योग	• •	२८६

# मस्यी 'घ'

# (देखिये तारांकित प्रक्त ४५ का उत्तर पीछे पृष्ठ २३ पर)

# प्रदन सं० ४५ का संलग्नक

	F14-1 (1-4	~ ~ (			
					£o
\$EXXXX · ·	• •	• •	• •		<b>ሂ,</b> २० <b>६.</b> ४४
१६५५-५६	• •	• •	• •		२२,३०५.१४
१९५६-५७	• •	• •	• •		४४,४३⊏.३२
१ <b>६</b> ५७—५=	• •	• •	• •		<i>५७,४०६.६२</i>
१९४५-४६	• •		• •		35.087,00
समाज कल्याण में व्यय किया गया उस	विभाग के श्रन्तर्ग का व्योरा इस प्रक		जिलेमं जो धन	ा जिस मध	पर उक्त वर्षी
१९५४-५५			1		
महिला मंगल	योजना पर व्यय	• •	• •		४,२०६.४४
१६४४-४६					
१—महिला	मंगल योजना प	र व्यय	• •		१३,६७६.७१
२कःयालय	समाज कल्याण श्र	धिकारी, गोर	खपुर पर व्यय		१,१६
३श्रशासकी	य संस्थाग्रों को वि	ये गये भ्रनुवान	r • •		४,२७१.००
४—लावारिस	मुदौं के वाह संस्थ	हार के लिये ह	ी गई घनराशि	* *	8,860.00
	योग		* *	garang par-Magangan	२२,३०८.१४
१ <b>९</b> ५ <b>–</b> ५७					
-	ांगल योजना पर क । सहायक समाज ध		 हारी, गोपसक्क	• •	₹₹,₹०€.%€
पर व्य		• •	• •	• •	४,७६०.६२
३—-स्रशासर्क	<mark>ाय संस्थाम्रों को</mark> वि	ये गये श्रनुदा	<b>7.</b> .		8,400.00
४नगर सम	ाज फल्याण समि	ते	• •		₹,५००.००
५लावारिस	। मुदौं के दाह संस्	कार के लिये	श गई धनराधि	• •	7,860.3X
६बाल दिव	स समारोह	• •	• •	• •	१,०१⊏.२४
७राजकीय	भ्रन्घ विद्यालय, ग	रिखपुर	• •	• •	४,१४२.३१
				***************************************	
		योग	• •		88'R \$4' \$5

\$£ <b>X</b> 9- <b>X</b> 5		रु०
१महिला मंगल योजना पर व्यय		१६,६६८.७६
२––कार्यालय सहायक समाज कल्याण श्रधिकारी, गोरर	ब्रपूर	
पर व्यय	• •	५,४७१.१७
३—-श्रशासकीय संस्थाश्रों को दी गई श्रनुदान 🕠	• •	४,४००.००
४—नगर समाज कल्याण समिति	• •	00.00×,F
५——बाल दिवस समारोह	• •	२३०.६५
६लावारिस मुर्दो के दाह संस्कार के लिये दी गई धन	राशि	2,888.00
७—-राजकीय श्रन्थ विद्यालय, गोरखपुर	• •	२२,६०१.५७
८——जिला शरणालय एवं प्रवेशालय (महिला)	• •	१,६१६.७७
योग		५७,४०१.६२
<b>१६</b> ५८—५६		
१—महिला मंगल योजना पर व्यय	• •	२३,२३८.६२
२कार्यालय सह।यक समाज कल्याण श्रविकारी, गोर	खपुर पर व्यय	३,५२४.४६
३ श्रशासकीय संस्थाश्रों को दी गई श्रनुदान	••	٤,٥٥٥.٥٥
४—नगर समाज फल्याण समिति	• •	३,५००.००
५—बाल दिवस समारोह	• •	२,१६६.१२
६लावारिस मुर्दों के दाह-संस्कार के लिये दी गई धन	राशि	२,६६२.००
७—-राजकीय ग्रन्थ विद्यालय, गोखपुर	• •	२६,७६५.७०
८जिला शरणालय एषं प्रवेशालय (महिला)	• •	38.520,5
योग		<u>७७,६४०.३</u> ६

# 'नत्थी 'ङ' (देखिये तारांकित प्रक्रन ४७ का उत्तर पीछे पृष्ठ २३ पर) तालिका

ऋम- संख्या	कर्मचारी का नाम	पद	पव से पूथक (dismiss) होने का दिनांक	कारण
8		चपरासी . एकाउ	१६ स्रक्तुबर, १६५६ । व्हेंट १४ न <del>पस्ब</del> र, १६५६ ।	(१) अनुशासनहीनता (In subordination) (२) कार्य में अनुपस्थिति (absence from duty), (३) शिक्षा अधीक्षक तथा सहायक उपस्थिति अधिकारी (Inducation Superintendent and Assistant Attendance Officer) द्वारा स्पष्टीकरण मौगने पर इन अधिकारियो पर भूठे दोषा-रोपण करना(Ialse accusation and insimuation) । (१) For press misconduct delinquency and neglect of duty (कार्य में खराबी तथा सापरवाही), (२) बोर्ड के खाते (accounts) या तो रखे नहीं गये या गस्त हंग से रखे गये,
ensk mandelskipe	श्रीरफस उल्लाह <b>व</b>		द्यवी- १६५६	

निवयां

१०५

### नत्थी 'च'

### (देखिये तारांकित प्रश्न ५० का उत्तर पीछे पृष्ठ २४ पर)

#### जिला बरती

बरतः जिले में महिला मंगल योजना के ग्रन्तगंत १,४०१ बच्चों को बालबाई। में ग्रौर ४६६ महिलाग्रों को प्रौढ़ शिक्षा में शिक्षा दो गई। १,५२६ महिलाग्रों को हस्तकला में प्रशिक्षण दिया गया जिनके द्वारा ६६४ वस्तुएं तैयार की गईं। चर्ले तथा तकलियों से ३६७ गुंडी सूत ग्रामःण महिलाग्रों द्वारा काता गया। ४३८ महिलाग्रों को गृह उद्योग में शिक्षा दी गई जिनके द्वारा ४५६ वस्तुएं तैयार की गईं। ६५६ रोगियों को चिकित्सा ग्राम सेविकाग्रों द्वारा की गईं। १,३३३ बच्चों ने शारीरिक शिक्षा में ग्रौर १,०७६ महिलाग्रों ने सास्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया। ग्रामोण महिलाग्रों द्वारा ३५८ क्यारियों का निर्माण किया गया जिनमें साग-सन्जी ग्रादि बोई गई।

### जिला गोरखपुर

गोरखपुर जिले मे २,३२२ बच्चों को बालबाड। श्रोर २,६१७ महिलाश्रों को प्रौढ़ शिक्षा में शिक्षा दी गई। ४,३०० महिलाश्रों को हस्तकला में शिक्षा दी गई जिनके द्वारा ६,४४६ वस्तुएं तैयार की गई। चर्खें तथा तकलियों से ४,६०३ गूंडी सूत ग्रामीण महिलाश्रों द्वारा तैयार किया गया। १,५३४ महिलाश्रों को गृह उद्योग में शिक्षा दी गई जिनके द्वारा १,६१३ वस्तुएं तैयार की गई। १,०१३ रोगियों की चिकित्सा ग्राम सेविकाश्रों द्वारा की गई श्रौर ६८८ महिलाश्रों को प्रसव के पूर्व तथा पश्चात् श्रावश्यक सुझाव दिये गये। १६२४ बच्चों ने शारीरिक शिक्षा में श्रौर ३,५६२ महिलाश्रों ते सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया। ग्रामीण महिलाश्रों द्वारा २०४ क्यारियों का निर्माण किया गया जिनमें साग सब्जी श्रादि बोई गई।

#### जिला देवरिया

देवरिया जिले में ३,२८४ बच्चों को बालबाड़ी में श्रौर २,७७० महिलाश्रों को शौढ़ शिक्षा में शिक्षा दी गई। ७,४७३ महिलाश्रों को हस्तकला में शिक्षा दी गई जिनके द्वारा ४,६६१ वस्तुएं तैयार की गई। ३,१५७ महिलाश्रों को गृह उद्योग में शिक्षा दी गई जिन्होंने २,७२२ वस्तुश्रों का निर्माण किया। ३,०५० रोगियों को दवा दी गई श्रौर १६५ महिलाश्रों को प्रसव के पूर्व तथा पश्चात् श्रावश्यक उपचारों के सम्बन्ध में शिक्षा दी गई। ग्रामीण महिलाश्रों द्वारा ४,८३७ गंडी सूत काता गया तथा ६०२ क्यारियों का निर्माण किया गया जिनमें साग-सब्जी श्रादि बोई गई।

# उत्तर प्रदेश विधान सभा

## बृहस्पतिवार, १० मार्च, १९६०

विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ, में ११ वर्षे दिन में श्रिधिकाता, क्षो बेचनराम गुप्त, की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

### उपस्थित सदस्य--३७४

ग्रक्षयवर्रासह, श्री ग्रजीज इमाम, श्री भ्रतीकुल रहमान, श्री ग्रनन्तराम वर्मा, श्री ग्रब्दूल रऊफ़ लारी, श्री ग्रब्धूल लतीफ़ नोमानी, श्री श्रब्ध्स्समी, श्री श्रभवराम यादव, श्री ग्रमरनाथ, श्री ग्रमोलादेवी, श्रीमती स्रयोध्याप्रसाद स्रार्य, श्री **ग्रवधेशकुमार सितहा, डाक्टर** म्रवधेशचन्द्रसिंह, श्रवधेश प्रताप सिंह, श्री ग्रहमद बल्हा, श्री ग्रान्माराम पांडेय, **श्री** ग्रान∙द ब्रह्मशाह, श्र<u>ी</u> इन्द्रभूषण गुप्त, इरतजा हुसैन, श्री इस्तफा हुसैन, श्री उग्रसेन, श्री उदयशंकर, श्री उमाशंकर शुक्ल, उल्फर्तासह, श्री ऊदल, श्री एस० ग्रहमद हसन, श्री श्रोंकारनाथ, श्री कन्हैयालाल वाल्मीकि, श्री कमरुद्दीन, श्री कमलकुमारी गोइँदी, कुमारी कमलापति त्रिपाठी, श्री

कमलेशवन्द्र, थी कल्याणचन्द गोहिले, श्रो कल्याणराय, श्रो कामतामताह विद्यार्थी, श्री काशीत्रसाद पांडेय, श्री किशनसिंह, कुंबर १६ण वर्मा, श्री हुप≀शंकर, केशभान राव, श्री केशव पांडेय, श्री केशवराम, कैलाश कुमार, श्री कैलाशप्रकाश, र्थाः रोना शवती, श्रीमती कोतवालसिंह भवीरिया, श्रो खजानसिंह चौधरी, श्री खमानीसिंह, डाक्टर खयालीराम, श्री खुशीराम, श्री खबसिंह, श्रो गंगाधर जाटव, श्री गंगात्रसाद, श्री (गोंडा) गंगाप्रसाद वर्मा, श्री (एटा) गंगात्रसादसिंह, गजेन्द्रसिंह, गज्जूराम, श्री गणेशप्रसाद पांडेय, श्री गनेशचन्द्र काछी, थी गनेशीलाल चौषरी, श्री गयाप्रसाद, श्री गयाबख्दासिह, श्री

ग्रायर ग्राली खां, श्री गरीबदास, श्री गिरधारीलाल, श्री गुप्तारसिंह, श्री गुरुप्रसादसिंह, श्री गुलाबसिंह, श्री गेदादेवी, श्रीमती गोकुलप्रसाद, श्री गोपाली, श्री गोपी हुण स्राजाद, श्री गोविन्दसिंह विष्ट, श्रो गौरीराम गुप्त, श्री गौरीशंकर राय, श्री घनश्या र डिमरो, श्री घासे राम जाटव, श्री चन्द्रजीत यादव, श्री चन्द्रदेव, श्री चन्द्रबली शास्त्री ब्रह्मचारी, श्री चन्द्रसिंह रावत, श्री चन्द्रहास मिश्र, श्री चन्द्रावती, श्रीमती चित्रकाप्रसाद, श्री चरणसिंह, श्री चित्तरसिंह निरंजन, श्रो चिरंजीलाल जाटव, श्री छत्तरसिंह, श्री छेदीलाल, श्री छोटेलाल पालीवाल, श्री जंगबहादुर वर्मा, श्री जगदोशनारायण, श्री जगदीशनारायणदत्तसिंह, श्री जगदोशप्रसाद, श्री जगदोशशरण ग्रम्भव(ल. श्री जगन्नाय चोधरी, श्री जग राथ प्रसाद, श्री जगन्नाथ लहरी, श्री जगपतिसिंह, श्री जगमोहनसिंह नेगी, जगवीरसिंह, श्री जमुनासिह, श्री (बदायूं) जयगोपाल, डाक्टर जपदेविनह ग्रार्य, श्री जयराम वर्मा, श्री जवाहरलाल, श्री जवाहरलाल रोहतगी, डाक्टर जागेइवर, श्री

जानकिशोर, ग्रानापं जोलई, श्रा ज्वालाप्रसाद प्रशील, श्रा झारखंडराय, श्री टीकाराम पुजारी, शा टोकाराम, श्री (बदायूं) इंगर्रासह, श्री ताराचन्द माहेश्वरी, श्री तारावेवी, डाक्टर तिरमलोशह, श्री ने नयहादुर, आं। ते नासिह, श्री दत्त, श्री एस० जीव दशरथप्रसाद, श्री द ताराम चोधरी, श्रा दानदयाल करण, श्री दीनदयालु शर्मा, श्री दोपङ्कर ग्रानायं, दोपनारायणमः गित्रपाठी, श्री ष्र्रोजन, श्रो देवदत्तसिंह, श्री देवनारायण भारतीय, श्री वेत्रराम, श्री द्वारकाप्रसाव मिलल, श्री (मुजक्करनगर) द्वारिकात्रसाद, श्री (फर्रेवाबाद) द्वारिकात्रसाव पाडेय, श्री (गोरलपुर) धनीराम, श्री घनुषधारी पांडेय, श्री धर्मदत्त वैद्य, धर्मपालसिंह, श्री धर्मसिह, श्रो नत्थाराम रावत, श्री नत्यूसिंह, श्री (बरेली) नत्यूसिंह, श्री (मैनपुरी) नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ, श्री नन्दराम, श्री नरदेवसिंह दतियानवी, श्री नरेन्द्रसिंह भंडारी, श्री नरेन्द्रसिंह विषट, श्री नवलिकशोर, श्री नागेश्वरप्रसाद, श्री नारायणदत्त तिवारी, श्री नारायणदास पासी, श्री नेकराम शर्मा, श्री पद्माकरलाल श्रीवास्तव, श्री पब्बरराम, श्री

परमानन्द सिनहा, परमेश्वरदीन वर्मा, प्रकाशवती सद, श्रीमती प्रतापबहादुर्रासह, श्री प्रतापभानप्रकाशसिंह, श्री प्रतापसिंह, श्री प्रभावती मिश्र, श्रीमती श्री प्रभुदयाल, फतेहसिंह राणा, श्री बंशीवर शक्ल, श्री बलदेवसिंह, श्री बलदेवसिंह ग्रार्य, श्री बसंतलाल, श्री बादामितह, श्री बाब्राम, श्री बाबूलाल कुसुमेश, श्री बालकराम, श्रो बालंश्वरप्रसादसिंह, श्री बिशम्बरसिंह, श्री बिहारीलाल, बुद्धीलाल, श्री बुद्धीसिंह, बुलाकीराम, श्री बुजबासीलाल, श्री बुजरानी मिश्र, श्रीमती बेचनराम, श्री बेचनराम गुप्त, श्री बेनीबाई, श्रीमती बेजुराम, श्री ब्रजनारायण तिवारी, श्री ब्रह्मदत्त दीक्षित, श्री भगवतीप्रसाद द्वे, श्री भगवतीसिंह विशारद, भगौतीप्रसाद वर्मा, श्री भजनलाल, श्री भोखालाल, श्री भुवनेशभूषण शर्मा, श्री भूपकिशोर, श्री मंगलाप्रसाद, मंजूरलनबी, श्री मयुराप्रसाद पांडेय, श्री मदनगोपाल वैद्य, मदन पांडेय, श्री मदनमोहन, श्री मन्नालाल, श्रो मलखानसिंह, श्री मलिखानसिंह, श्री (मैनपुरी)

महमूद ग्रली खां, कुंबर (मेरठ) महमूद ग्रली खां, श्रो (रामप्र) महमूद हुसैन खां, श्रो महादेव प्रसाद, श्रो महावीरप्रसाद शुक्ल, श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री महोलाल, श्री महेन्द्ररिपुदसन सिंह, राजा महे शिंसह, श्री मालात्रसाद, श्री मान्धातासिह, मिहरबार्तासह, श्री मुक्टविहारीलाल अग्रवाल, श्री मुक्तिनाथ राय, श्री मुजयफ़र हसन, श्री मुबारक ग्रली खां, श्री मुरलीवर, श्री मुरलीधर कुरील, श्री मुल्लाप्रसाद 'हंस', श्री मुहम्मद सुलेमान ग्रधमी, श्री मुहम्मद हुसैन, श्री मूलचन्द, मोतीलाल ग्रवस्थी, श्री मोहनलाल, श्री मोहनसिंह मेहता, श्री यमुनाप्रसाद शुक्त, श्री यशपालसिंह, श्री यशोदादेवी, श्रीमती यादवेन्द्रदत्त दुबे, राजा रऊफ जाफरी, श्री रघुनाथसहाय यादव, श्री रघुरनतेजबहादुरसिंह, श्री रघुवीरराम, શ્રી श्री रघुवीरसिंह, (एटा) रघवोर्रासह, श्री रणबहादुरसिंह, श्री रमाकांतसिंह, श्रो रमेशचन्द्र शर्मा, श्री राघवराम पाण्डेय, श्री राघवेन्द्रप्रतापसिंह, श्री राजिकशोर राव, राजदेव उपाध्याय, श्री राजनारायण, श्रो राजनारायणसिंह, श्री राजाराम शर्मा, श्रो राजेन्द्रकिशोरी, श्रीमती राजेन्द्रक्मारी, श्रीमती

राजेन्द्रदत्त, श्री राजेन्द्रसिंह, श्री राजेन्द्रसिंह यादव, श्री रामग्रधार तिवारी, श्री रामग्रभिलाख, श्रो श्री रामकिकर, रामकुमार वंद्य, श्रो रामकृष्ण जैसवार, श्री राम ह्राण सारस्वत, श्री रामचन्द्र उनियाल, रामचन्द्र विकल, श्री रामजीलाल सहायक, श्री रामजीसहाय, श्री रामदास ग्रार्थ, श्री रामदीन, श्री रामनाथ पाठक. श्री रामपाल त्रिवेदी. रामप्रसाद, श्री रामप्रसाद देशमख, श्री रामप्रसाद नौटियाल, श्रो श्री रामबली, राममूर्ति, श्री रामरतातप्रशाद, श्रो रामरतीदेवी, श्रीमती रामलक्षण तिवारी, श्री रामलखन, श्री (वाराणसी) रामलखन मिश्र, श्री रामलखनितह, श्री (जौनपूर) रामलाल, रामवचन यादव, श्री रामशरण यादव, श्री रामतनेही भारतीय, श्री रामसमझावन, श्री रामितह चौहान वैद्य, श्री रामस्न्दर पांडेय, श्री रामसूरतप्रसाद, श्री रामस्वरूप वर्मा, श्री रामहेतसिंह, श्री रामायणराय, श्री रामेश्वरप्रसाद, श्रो रूमसिंह, श्री लक्ष्मणदत्त भट्ट, श्री लक्ष्मणराव कदम, श्री लक्ष्मणसिंह, श्री लक्ष्मीनारायण, श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य,

लखमीसिंह, श्री लालबहाद्र, शी लाजबहादुर्गभट, श्री लत्फ्र शली खां, श्रा लोक्त(थसिट, श्री वजरंगविष्ठारीलाल गवत, र्था वसी नकवा, श्ची नामुदेय द:क्षिन, न्री विचित्रनारायण शर्मा, श्रो विद्यावती वाजपेयी, श्रीमती विनयस्थमी सुमन, श्रीमनी विशालिंसह, ןt विश्रामरागः. rát विद्वेदवरानस्य. रयामी वीरसेन, श्रां र्वःरेन्द्रशाह, राजा यजगोपाल सक्सेना, श्री व्रजविहारी मेहरोत्रा, श्री शंकरलाल, शक्तिला देवी, श्रीमर्ता शब्बीर हसन, श्री शमसुल इस्लाम, श्री शम्भुदयाल, श्री शांतिप्रपन्न शर्मा, श्री शिवगोपाल तिवारी, श्री शिवप्रसाद नागर, श्री (खोरा) शिवमंगलिंसह, श्री शिवमृति, शिवराजबहादुर, श्री शिवराम, श्रो शिवराम पाडेय. श्री शिववचनराव. शिवशंकरसिंह, श्री शिवशरणलाल श्रीवास्तव, श्री शोतलाप्रसाद, श्री शोभनाथ, श्री व्याममनोहर मिश्र, श्री श्यामलाल, श्रो श्यामलाल यादव, श्री श्रद्धादेवी शास्त्री, कुमारी श्रीकृष्ण गोयल, श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, श्री श्रीनाथ, श्री (श्राजमगढ़) श्रीनाथ भागव, श्री (मथुरा) संग्रामसिंह, श्री सईद ग्रहमद ग्रन्सारी, श्रो

मजीवनलाल, श्री सह्यवतीदेवी रावल, श्रीभती सरस्वतीदेवी शुक्ल, श्रीमनी सियादलारी, श्रीमती सीताराम, डावटर सीताराम शुक्ल, श्री सुक्वनलाल, श्री सूखरानीदेवी, श्रीमती सुखरामदास, श्री सुखलाल, मुखोराम भारतीय, श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी, श्री सुनीता चौहान, थीमती सुन्दरलाल, श्री **मुरथबहादुर**शाह, श्री स्रेन्द्रदत्त वाजपेयी, श्री गुरेन्द्रसिंह, राजकुमार

सुल्तान श्रालम खां, श्री सूर्यबली पांडेय, श्री सोहनलाल घुसिया, श्री हमीदुल्ला खां, श्री हरदयालसिंह, हरदयालसिंह पिपल, श्री हरदेवसिंह, श्री हरिदत्त काण्डपाल, शो हरिश्चन्द्रसिंह, श्री हरिहरवक्शिंसह, श्री हरीशचन्द्र ग्रष्ठाना, शी हरोसिंह, हलीमुद्दीन (राहत मौलाई), श्री हिम्मतसिंह, श्री हुकुर्मासह विसेन, श्री होरीलाल यादव, श्री

नोट--- सार्वजनिक निर्भाण उप-मंत्री, श्री महाबीरसिंह, भी उपस्थित थ।

### प्रक्नोतर

## बृहस्पतिवार, १० मार्च, १६६०

# ग्रल्प सूचित तारांकित प्रक्त

सहायता तथा पुनर्वास विभाग में श्री प्रभुलाल शर्मा की पुनर्नियुक्ति

\*१—श्री गौरी शंकर राय (जिला बिलया)—क्या न्याय मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि उनके सहायता तथा पुनर्वास विभाग में कोई ऐसा भी श्रिधकारी है जो ६० साल के कारण रिटायर किये जाने के बाद, अवैतिनक रूप से फिर रख लिया गया है ? यदि हां, तो क्या सरकार बताने की जपा करेगी कि ऐसा क्यों किया गया है ?

स्वास्थ्य उपमन्त्री (श्री बलदेविंसह ग्रार्य)—जी हां। श्रिधकारी श्री प्रभुलाल शर्मा हैं। श्री शर्मा AGUP के कार्यातय में DAG के पद पर थे। वहां से जब उनकी सेवायें समाप्त हो गयों तो सहायता तथा पुनर्वास विभाग ने उनको सहायता तथा पुनर्वास ग्रायुक्त के वित्तीय परामर्श दाता के पद पर पुनः नियुक्त किया। किन्तु जब उनकी अवस्था ६० वर्ष की हो गयी तो उनकी सेवायें ३१ दिसम्बर सन् १६५७ में समाप्त कर दी गयीं। इस ग्रविध में शर्मा जी की सेवायें इस विभाग के लिये बहुत लाभप्रद साबित हुई अतः यह विचार किया गया कि ऐसी स्थित में जबिक यह विभाग समाप्त होने की दशा में हैं ऐसे अनुभवी तथा कुशल व्यक्ति की अत्यन्त आवश्यकता है। इसलिये शर्मा जी को अवैतिक रूप से इस विभाग की सेवायें करने का आग्रह किया गया। श्री प्रभुलाल जी तैयार हो गये और उनकी अवैतिक रूप से नियुक्ति के आदेश नियुक्ति तथा वित्त विभाग की अनुमित से जारी किये गये।

\*\*२--श्री गौरीशंकर राय--उपरोक्त श्रधिकारी या श्रधिकारियों पर भता, देलीफोन तथा श्रन्य रूप से कितने रुपये श्रब तक सरकार के व्यय हुए? श्री बलदेव सिंह स्रार्य—सभी तक स्रप्रल, १६५८ से फरवरी, १६६० तक इन पर कुल लगभग ४६०० रुपये का व्यय हुस्रा है।

श्री गौरी शंकर राय—क्या यह सही है कि उक्त विभाग का हेडक्वार्टर लावनऊ में है श्रौर इन श्रवैतनिक सेवा करने वाले सज्जन का हेडक्वार्टर उलाहाबाद में है?

न्याय मंत्री (श्री हुकुम सिंह विसेन) — नोटिस की जरूरत है, इत्तला मझे ठीक नहीं है।

श्री गौरी शंकर राय—कौन सी उनको टेक्निकल योग्गता है जिसके कारण उनकी सेवा के बिना मुह्कमे का काम चलाने में कठिनाई होती ह ?

श्री हुकुम सिंह विसेन——िंडण्टी एकाउंटेट जनरस रहे हैं, समझ लीजिये क्यायोग्यता होगी। फाइनेंस के बारे में बड़ी भारी उनकी जानकारी है।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीबाल (जिला ग्रागरा)—क्या मंत्री महोवय बताने की कृपा करेंगे कि पुनर्वास विभाग समाप्त किया जायगा उनकी सेवाग्रों को समाप्त करने के लिये या उनकी सेवाएं समाप्त जब होंगी तब पुनर्वास विभाग समाप्त होगा ?

श्री हुकुमसिंह विसेन—इनकी सेवा पहले समाप्त होगी, पुनर्वास विभाग बाव को। श्री पद्माकरलाल श्रीवास्तव (जिला ग्राजमगढ़)—मंत्री महोवय कृपा कर बतायेंगे कि क्या वजह है कि इन्हीं को रखा गया है, दूसरे को नहीं?

श्री हु कुर्मासह विसेन—जो काम वह कर रहे हैं उससे वह बड़े उपयोगी मा बत हो रहे हैं। थोड़ा काम श्रीर बाकी रह गया है, बहुत-सा उन्होंने बड़ी खबसूरती के साथ हल कर दिया है, इस वास्ते उनको रखने की जरूरत समझी गयी।

श्री प्रताप सिंह (जिला नैनीताल)—क्या माननीय न्याय मंत्री श्रपती नीति को स्पष्ट करेगे कि जिस तरह से शर्मा जी की बिशेष योग्यताएं रखने के कारण पुनः सिवस में रखा गया, अन्य विभागों में अगर ऐसे लोग हों तो उनको भी इसी प्रकार रखा जायगा?

श्री हुकुम सिंह विसेन—ग्रगर कोई इंडिस्पेंसेबिल हुए तो पिक्लिक इंटेरेस्ट में रखा जायगा।

श्री गौरीशंकर राय—क्यायह सही है कि यह विभाग काम की कमी की वजह में तोड़ा जाने वाला है ? तो जब काम कम हो गया तब फिर एक ग्रधिक ग्रादमी की जकरत क्यों पड़ गयी ?

श्री हुकुम सिंह विसेन-मोदीनगर कालोनी का हिसाब किताब एंड जस्ट हो रहा ह। बहुत कुछ हो चुका, थोड़ा-सा बाकी है। उनको मार्च तक कंटीन्यू करके ग्रलहुदा कर दिया जायगा।

### तारांकित प्रश्न

[उत्तर प्रदेश विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन नियमावली के नियम ३० (४) के श्रन्तर्गत ]

बिजली काटन प्राइवेट लिमिटेड मिल, हाथरस, के श्रमिकों श्रौर सेवायोजकों के मध्य समझौता

\*१--श्री नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ (जिला ग्रलीगढ़)--श्या मुख्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि क्या बिजली काटन प्राइवेट लि॰ मिल, हायरस, के मालिकान पर

श्रीमकों के विवाद सं० २८।४८, ७७-४८ व १३-४६ पर श्रम न्यायालय, मेरठ तथा श्रीद्योगिक न्यायाधिकरण, इलाहाबाद द्वारा दिये गये निर्णयों का पालन श्रभी तक नहीं हुग्रा है ?

समाज कल्याण मंत्री (श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य)—जी नहीं, इस प्रतिष्ठान से संबंधित २८/५८ का कोई विवाद नहीं है। ग्रीद्योगिक न्यायाधिकरण वस्त्रोद्योग उत्तर प्रदेश का ग्रिभिदेश सं०२। बी०५८ तथा श्रम न्यायालय मेरठ के ग्रिभिदेश सं०७७-५८व १३५६ के ग्रिभिवर्णय कार्यान्वित नहीं हुए थे। परन्तु १७-२-१६६० को श्रिमिकों ग्रीर सेवायोजकों के मध्य समझौता हो गया है जिसकी प्रति सदन की मेज पर रख दो गई है।

### (देखिये नत्थी 'क' ग्रागे पृष्ठ २११-२१२ पर)

\*२--श्री नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ--क्या मुख्य मंत्री यह भी बताने की तिपा करेगे कि उक्त मिल के मालिकान प्रतिमास की १० तारीख तक मजदूरों का वेतन कभी नहीं बांटते जब कि श्रमिक न्यायालय ने शीझ पालन के ब्रादेश जारी कर दिये हैं ? यदि हां, तो सरकार ने इस संबंध में क्या कार्यवाही की हैं ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—िकसी श्रम न्यायालय ने वेतन बांटने के संबंध में कोई श्रादेश नहीं दिया है। परन्तु फरवरी, श्रप्रैल, जून व जुलाई, १६५८ में वेतन समय से न बांटने पर पेमेन्ट श्राफ वेजेज ऐक्ट के अन्तर्गत मैजिस्ट्रेट के यहां चार केस दायर धुए थे जिसमे श्रदालत ने बकाया वेतन बांटने का हुक्म दिया श्रीर हर केस में ३० ६० जुर्माना किया। नवम्बर व दिसंबर, १६५६ का वेतन भी समय-समय से नहीं बांटा गया था जिसका भुगतान २३-१-१६६० को कराया गया।

\*३—-श्री नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ--- त्रया मुख्य मंत्री को ज्ञात है कि उक्त मिल के मजदूरों में तीन महीने का बोनस न मिलने श्रीर समय पर वेतन न मिलने के कारण बड़ा स्रसंतोष है श्रीर वहां पर कितने ही मजदूर भूख-हड़ताल कर रहे हैं तथा उनके स्वास्थ्य की स्थिति बिगड़ती जा रही है ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—जी नहीं। इस समय कोई भूख-हुड़ताल नही चल रही है। १७-२-६० को दोनों पक्षों में श्रापसी समझौता हो गया है।

श्री नन्दकुमार देव वाशिष्ठ—क्या माननीय श्रम मंत्री जी बतलायेगे कि ग्रीशीगिक न्यायाधिकरण के निर्णय के बाद भी मिल मालिकों ने मजदूरों की बकाया रकम की ग्रदायगी कई वर्षों से नहीं की है ग्रीर क्या सरकार इसको कार्यान्वित कराने के लिये कोई योजना बना रही है ?

श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य—इस प्रकार के निर्णयों की जब मान्यता नहीं प्रदान की जाती है तो उस पर सूचना मिलने पर यह कोशिश की जाती है कि उसको जल्द से जल्द कार्यान्वित किया जाय।

श्री नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ — क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृषा करेगे कि सन् १६५ के ४ महीनों का वेतन क्यों रोक दिया ग्रौर उसकी ग्रदायगी ग्रब तक क्यों नही हुई?

श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य--मालिकों ने रोका था। जब ग्रदायगी नही हुई तो उस पर कार्यवाही की गयी।

## [१० मार्च, १६६० के लिये निर्धारित तारांकित प्रकत]

\*१--३--को लक्ष्मणराव कदम (जिला पांनी) --| र गान १८०० छ तिथे स्थमित क्रिय गरे।|

\*४-६-श्री ताराधन्द माहेश्वरी (१४२) संतिषुर)--|रागि।।१३ गया) बसों में पंखे लगाना

\*७--श्री गनेशचन्द्र काछी (जिला मनपुरी)--स्या सरकार यया म परा लगः िने जाने के विषय में विचार करने की फूरा करेगी?

परिवहन मंत्री के सभा-सचिव (श्री धर्मदत्त वेष्ठ) -- तंत्रात्या क लिये ४ बसों में पंचे लगाए गये है।

श्री गनेशचन्द्र काछी--क्या सरकार बताने की कथा करेगी कि निस्तामा गणातक पंखा नहीं लगा है उनमे कब तक लगा दिया जायगा?

श्री धर्मदत्त वैद्य-प्रयोग के लिये ४ बसों में लगाया गया है। गर्मा ११ मा १ वहीं है कि सब में लगा दिया जाय।

श्री चन्द्रजीत यादव (जिला श्राजमगढ़) --- प्रयोग के नियं जिन बसो भ पर लगे है वे कहां चलती है और उनके प्रयोग के फलस्वरूप सरकार ने क्या गर्नाजा नियागा ह ?

श्री धर्मदत्त वैदा--ग्रागरे क्षेत्र में दो लग्जरी बरोज में श्रीर राजन इस्ता मार पथम श्रेणी की बसों में लगाये गये हैं। उनके उपयोग में कितना लाभ होता है। पर पर्याप्तण विधा जा रहा है।

श्री मुवनेशभूषण शर्मा (जिला इटावा)—क्या सरकार बतायमा १, १ म बमा म ये पंखे लगे हैं उनके किरायों में भी कुछ वृद्धि की गई हैं ?

श्री धर्मदत्त वैद्य--जी नहीं, कोई वृद्धि नहीं की गई।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल—क्या मानतीय परिवहन मंत्रं बताल को गुना करणीय उन पंत्रों से कितना लाभ हुग्रा, इसका हिसाब लगाने के लिये क्या प्रमाना उन्होंने मारर हर. रहे

(हंसी--उत्तर नहीं दिया गया ।)

श्री झारखंडेराय (जिला श्राजमगढ़)—क्या मंत्री जी बतलान का गुणा रणाक इन बसों में पंखे लगाने का काम श्रागरे की ही श्रोर क्यों हो रहा ह ?

(हंसी--- उत्तर नहीं विया गया।)

श्री मदन पांडेय (जिला गोरखपुर) -- ये जो पंखे लगाये गये ह ये श्रार श्रीर लेखिंग दोनों ही क्लासेज में लगाये गये हैं या किसी एक खास क्लास में ?

श्री धर्मदत्त वैद्य--यह जो लग्जरी बसेज होती है यह प्रथम श्रेणो की ही बस होती है, उनमें लोग्नर क्लास होता ही नहीं।

श्री मदन पांडेय -- क्या माननीय मंत्री जी कृपा करके लोग्नर क्लारोज में भी इसका

श्री हुकुम सिंह विसेन-कृश करके लोग्नर क्लास को लाजूरियस न बनाइये।

श्री राजनारायण—श्रारम्भ में जो लग्जूरियस बस चलती थीं उनका किराया श्राधिक या श्रीर श्रभी सरकार की श्रीर से उत्तर मिला कि किराये में कोई फर्क नहीं हूं ती श्रपर क्लास श्रीर लग्जूरियस बस के किराये का फर्क जो मिटाया गया वह कब से सिटाया गया श्रीर कब तक फर्क रहा?

श्री धर्मदत्त वैद्य--इसके लिये नोटिस की ग्रावश्यकता है।

### मद्य निषेध संबंधी भ्रभियोग

\*द--श्री गनेशचन्द्र काछी--क्यः सरकार २-४-५६ के ग्रतारांकित प्रवस्त संख्या २ के उत्तर के कन ने कृपया बतायेगी कि क्या वांछित सूचना ग्रब उपलब्ध हो गई है ?

श्री धर्मदत्त वैद्य--जी हां।

श्री गनेशचन्द्र काछी — क्या सरकार जो सूचना उपलब्ध हो गई है उतको पढ़ कर सुनाने की हुना करेगी?

श्री धर्मदत्त वैद्य--ऐसे जिलों मे सन् १६५८ में चलाये गये मुकदमों की संख्या ५३१७ है।

श्री गनेशचन्द्र काछी --सरकार की सूचना को जानकर ऐसा लगता है कि वहां नशाबन्दी कानून कामयाब नहीं हो रहा है श्रीर बराबर शराब खींची जा रही है, ऐसी सूरत में क्या सरकार चहां से इस कानून को हटा लेने की कुना करेगी?

श्री धर्मदत्त वैद्य--ऐसा कोई निचार नहीं है।

### हैण्डीकापट शो रूम, श्रमीनाबाद, लखनऊ, की जांच

\*६--श्री मदन पांडेय--क्या यह सही है कि अप्रैल सन् १६५७ में गवर्नमेट यू० पी० हैन्डी का रद्स श्रतीतावाद शो रूम की वार्षिक जांच होने पर सभी सामानों को सही रूप से स्टाक वैरोकाईंग श्राफिसर के समक्ष नहीं रखा गया ? यदि हां, तो क्यों ?

श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य --जी नहीं। स्टाक वैरीकाइंग ग्राक्तिसर ने सम्बन्धित माल रजिस्टर ग्रांदि की ग्रावश्यक जांच की थी।

\*१०--श्री मदन पांडेय --त्रया सरकार द्वारा गवर्नमेट यू० पी० हैन्डीकाफ्ट्स के सान तों हो वार्षित नाव सही सही होने के लिये स्टाक वैरीफाइंग श्राफिससं को सम्पूर्ण सामानों की जिस्ट हिने ही वितरित कर देने ही योजना विचाराधीन ह ? यदि हां, तो इस प्रकार की लिस्ट हिन से कन हिनन दिन गहल स्टाक वैरीफाइंग श्राफिससं को मिलने की व्यवस्था की जा रही है ?

श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य--ऐसी कोई योजना विचाराधीन नहीं है।

श्री मदन पांडेय—क्या मंत्री जी बताने की क्रुग करेगे कि जो स्टांक वेरीफिकेशन हुआ। उनके फनस्त्र रूटाक में कोई घटती या बढ़ती हुई? यदि हां, तो कितनी?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य-- ए० ६९४-९-४ की घटती पाई गई थी लेकिन जो छूट दी गई, उसका दिन व लगाने के बाद ३७९-१२-३ की घटती पाई गई।

श्री शिवप्रसाद नागर (जिला खीरी)—क्या सरकार को यू० पी० हैण्डीकाफ्ट्स शो इम, प्रमोत प्रको जो वार्षिक जांच होती है उसका कोई प्रतिवेदन प्राप्त हुन्ना है?

श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य --इस सबय मेरे पास कोई सूचना नहीं है।

श्री गौरीशंकर राय--क्या सरकार का ध्यान भूतपूर्व स्रिसस्टेंट फाइनेन्शियल काड्रोन एप्राफ इन्डाइरोज नं० ३ (श्रो एप्र० सी० पांडेय) की किसी ऐसी रिपोर्ट पर गया है जिसमें उन्होंने लिखा है कि:--

"The above position clearly speaks itself, that absolutely a wrong position of stocks was put up before the stock-verifying officer. The state of affairs, i. e. leaving shortages and excesses within the period from 20-4-57 to 22-7-57, the date of formal handing of charge to Sri Azhar, which is still incomplete, gives weight to the mode of and creation of grounds for misappropriation."

यदि हां, तो सारा शार्टेज "दंडित भूतपूर्व श्रतिस्टेन्ट मेनेजर, श्रमं नाबाद शो रूम" से न लेकर श्रमीनाबाद के शेष कर्मचारियों से क्यों जबरन वसूल किया जा रहा है ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—यह तो बहुत ब्योरे की बाते है। किसी व्यक्ति विशेष की जांच की रिपोर्ट पर क्या कार्यवाही हो रही है, उसकी सूचना इस समय मेरे पास नही है।

राजा यादवेन्द्रदत्त दुवे (जिला जीनपुर) -- क्या सरकार बताने की गृपा करेगी कि जो शार्टेज है उसकी जिम्मेदारी किसकी थी श्रोर उसके ऊपर क्या कार्यवाही हुई?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--यह प्रश्न देखा जा रहा है। जो कमी ह वह निश्चित रूप से सम्बन्धित श्रीधकारियों से वसूल की जायगी।

श्री मदन पांडेय—उक्त स्टाक वेरीफिकेशन के तीन महीने बाद श्रीसस्टेट फाइनेशल कंट्रोलर ने जो फिर से वैरीफिकेशन कराया उसके मुताबिक ४६२७ ६८ के का शाटेंज हुआ, इसकी रिपोर्ट उन्होंने सरकार को दी थी?

श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य--बिल्कुल भिन्न सवाल है। सूचना चाहिये।

श्री रामस्वरूप वर्मा (जिला कानपुर) — क्या माननीय मंत्री जी को दिकायत मिली है कि कंज्यूमर्स के बिना दस्तखत कराये रसीदें थीं श्रीर उन पर कटौती मागी गई है?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--इस समय इसकी सूचना नही है।

तिब्बत भारत सीमावर्ती भागों में विकास-कार्यों को बढ़ाना

\*११—श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल—क्या सरकार कृषया यह बतायेगी कि तिब्बत के साथ व्यापार व्यवस्था में गड़बड़ी हो जाने के फलस्वरूप तिब्बत ग्रीर भारत की सीमा पर रहते वाली जनता के लिये जो ग्रायिक संकट पैदा हो गया है उसे दूर करने के लिये सरकार ने क्या उपाय किये ग्रीर भविष्य में क्या उपाय करने जा रही हैं?

नियोजन उप-मंत्री (श्री सुल्तान श्रालम खां) - सरकार ने इस क्षेत्र में विकास कार्यों को श्रविक सघन किया है श्रौर पर्याप्त मात्रा में विकास कार्यों के लिये धन का प्रबन्ध किया है। यह श्राशा की जाती है कि व्यापार में गड़बड़ी हो जाने के कारण जो संकट पैदा हो गये हैं। उसकी पूर्ति श्रविकतर इस क्षेत्र के लिये सरकार द्वारा व्यय किये गये धन से प्राप्त होने वाली बढ़ी हुई श्राय से हो जायगी।

\*१२--श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल--क्या इस सम्बन्ध में सरकार की केंद्र से कोई सहायता मिली है ? श्रगर हां, तो वह क्या है श्रीर कितनी ?

श्री सुल्तान श्रालम खां—-राज्य सरकार को केन्द्र से सीमावर्ती क्षेत्र में साल किये गये दिशेष बिकास कार्यों पर होने दाले व्यय का ७५ प्रतिशत प्रनुदान तथा २५ प्रतिशत ऋण के रूप में मिलता है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना काल के लिये यह सहायता लगभग १ करोड़ कपया होगी।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल--जिन विकास कार्यों को सघन किया गया है क्या माननीय मंत्री जी को इनसे श्राय में इतनी वृद्धि की श्राशा है कि यह श्राधिक संकट दूर हो जायगा ?

श्री सुल्तान श्रालम खां—बार्डर एरिया को उन्नत करने के लिये गर-मासूली कोजित की जा रही है। ७४,००० रुपये तो इस साल के बजट में इसलिये रखा गया है कि बी० डी० श्रोज के जरिये इन लोगों को कर्जा दिया जाय। भोटियों को तिजारत में हानि न होने के लिये सरकार कोजिश कर रही है। भेड़ों की श्रच्छी नस्लों की तरफ तदण्जह दी जा रही है श्रीर अन का स्टाक जमा किया जा रहा है। छोटी काटेज इंडस्ट्रीज, जैसे हार्टीकल्बर, एनीमल हसबँड़ी हैं, इनकी तरफ भी तवज्जह की जा रही है ताकि तिब्बत क व्यापार में जो कठिनाई हो रही है उससे उनकी हालत पर बुरा श्रसर न पड़े।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल—क्या द्वितीय पंचवर्णीय योजना के श्रन्त तक इतनी वृद्धि श्राय में हो सकेगी कि उनके ऊपर श्राया द्वश्रा श्रार्थिक संकट दूर हो जाय ?

श्री सुल्तान श्रालम खां--ग्राशा तो यही है कि द्वितीय योजना में ही उनकी ग्राथिक हालत सम्भाल लेंगे, लेकिन यह सिलिसला उसके बाद भी जारी रहेगा ताकि उनकी हालत पहले से भी बेहतर हो जाय।

श्री झारखंडे राय--क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि इस तिब्बत के साथ व्यापार की श्रव्यवस्था से हमारे प्रदेश के कितने लोग प्रभावित हुये हैं ?

श्री सुल्तान श्रालम खां--यह कहना बड़ा मुक्किल है। लेकिन बार्डर एरिया के ४ बनावत से ही तिजारत ज्यादा होती थी, उनके नाम हैं मुन्सियारी, धारचूला, जोशीमठ श्रौर भटवारी।

राजा यादवेंद्रदत्त दुबे—क्या सरकार का ध्यान इस स्रोर गया है कि जो उद्योग बताया उसमें तो समय लगेगा, इसलिये कैरियर ट्रेड के संगठन श्रौर बढ़ाने की दृष्टि से कदम उठाये जाने चाहिये ?

श्री सुल्तान श्रालम खां— ६६ फीसदी लोग ऊन की तिजारत करते थे, हमने ३१,००० पौंड ऊन श्रास्ट्रेलिया से मंगाई है श्रौर १,००,००० रुपया श्रच्छी भेड़े खरीदने के लिये इस बजट में रखा गया है।

श्री नारायणदत्त तिवारी (जिला नैनीताल)—तिजारत में इन भोटिया व्यापारियों को कितने रुपये की हानि हुई है, क्या सरकार कृपया बतायेगी ?

श्री सुल्तान ग्रालम खां--ऐसे ग्रांकड़े मेरे पास नहीं हैं।

श्री रामस्वरूप वर्मा -- तिब्बत से किन-किन चीजों का व्यापार होता था ग्रीर इस क्षेत्र को उससे कितनी भ्राय होती थी?

श्री सुल्तान श्रालम खां--खास तौर से ऊन का व्यापार था। श्राय के श्रांकड़े मेरे पास नहीं है।

श्री गोविन्दिसिह विष्ट (जिला ग्रत्मोड़ा) — क्या मंत्री जी को जात है कि पहले वहां के लिये ६० लाख रुपया ग्रीर फिर ३६ लाख रुपया लैप्स हो गया? यदि हां, तो मंत्री जी क्या व्यवस्था कर रहे हैं कि ग्रब रुपया लैप्स न हो?

श्री सुल्तान श्रालम खां—पहाड़ पर मैटोरियल पहुंचाने में कठिनाई के कारण रुपया बच कर लैप्स हो जाता है । लेकिन जिस रुपये का मैंने जिक किया है इसके लैप्स होने का कोई सवाल नहीं है ।

श्री प्रतापिसह—क्या मुख्य मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि उनके पास इंडो-तिब्बत बार्डर एरिया ले जिस्लेटर्स एसोसियेशन के मंत्री का खत है, जिसकी नकल पंडित जवाहर लाल नेहरू को भेजी गई थी, जिसमे था कि ४०,००० भोटियों पर ध्रसर पड़ा है ग्रौर जो खेती करना चाहते हैं उन्हें तराई भावर में बसा दिया जाय? यदि हां, तो इस २ महीने पहले दिये खत पर सरकार ने क्या कार्यवाही की है?

श्री हुकुमिंसह विसेन-- खत के कंटेन्ट्स तक हमारे मित्र की मालूम हैं, इसलिये उनकी हमसे ज्यादा इत्तला है।

श्री झारखंडेराय--क्या माननीय मुख्य मंत्री इस समय हमारे प्रदेश व तिब्बत के व्यापार की पोजीशन बताने की कृपा करेगे?

श्री हुकुर्मासह विसेन--माननीय झारखडेराप जी को ज्यादा इत्तला होगी।

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)—-अपा मा ननीय मारे इसकी स्वरंश करेगे कि तिब्बत की सीमा के व्यापारियों की कोश्रापरे। दव बनार्थी जाये और उनकी व्यापार के लिये श्रन्दान दिया जाय?

श्री हुकुर्मीसह विसेन-- हर प्रकार से जवान किया जाया।

\*१३--श्री प्रतापसिंह--[हटा दिया गया।]

\*१४-१५-श्री प्रताप सिंह--[बारहवे मंगलबार के लिये पश्त ६-१० हे प्रत्यांत स्थानान्तरित किये गये।]

# मथुरा संग्रहालय में महात्मा गौतम बुद्ध की बहुम्लय मूर्ति

\*१६—श्री गनेशीलाल चौधरी (जिला सीतापुर) — क्या सरकार बताने की प्रधा करेगी कि क्या यह सत्य है कि मथुरा के प्रजायबंधर में महात्मा गीतम बाद्य की एक मित की की वत एक अमरीकन ने ४,००,००० डालर लगायी ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--पूर्तिकीकीमत पाच नाम नहीं, किन्तु प्रक नाम लगाई गई थरे।

\*१७--श्री गनेशीलाल चौधरी---प्रवि हां, तो क्या सरकार बनाने की कृपा करेगी कि यह मूर्ति सरकार ने क्यों नहीं बेची ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य---तंग्रहालय में रखी हुई वस्तुयें बिकी के लिये नहीं होतीं ।

श्री भुवनेशभूषण शर्मा—क्या सरकार बतायेगी कि संग्रहालय मे जब मूर्ति बेचने के लिये नहीं रखी जाती है तो फिर मूर्ति की कीमत लगायी कैसे गयी ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—श्रमेरिका टैक्साज की श्रायल फर्म का एक मालिक संग्रहालय देखने श्राया था। उसने मूर्ति को देखकर कहा कि यदि श्राप इस मूर्ति को दे सकें तो इसके लिए ५० लाख डालर दिये जा सकते हैं। इस संग्रहालय के श्रीधकारियों ने उनसे कहा कि संग्रहालय में रखा हुई चीजें बेचने के लिये नहीं होती।

श्री झारखण्डेराय—क्या माननीय मंत्री जी यह बतायेंगे कि यह मूर्ति किस चीउ की उनी है श्रौर उसके कितने दाम लगाये गये ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--वह सोने की नहीं है, केवल लाल पत्थर की है।

ड्राइवरों व कण्डक्टरों के लिए बस-स्टेशनों पर विश्वाम-गृह न होना

\*१८—श्री ग्रब्दुल रऊफ लारी (जिला गोरखपुर)—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि रोडवेज कन्डक्टर व ड्राइवर जो रात को स्टेशनों पर रहते हैं उनके ठहरने, सोने ग्रौर रहने के लिये कोई मकान रहता है ? यदि नहीं, तो वे कहां सोते हैं ?

श्री धर्मदत्त वैद्य--कुछ मुख्य स्टेशनों पर रोडवेज कंडक्टर व ड्राइवर के लिये विश्राम गृह बने हुये हैं। श्रन्य स्टेशनों पर उनके ठरहने के लिये श्रस्थायी प्रवन्य कर विया गया है। जहां पर श्रभी उनके ठहरने की कोई व्यवस्था नहीं की जा सकी है वहां वे श्रन्य सरकारी कर्मचारियों की तरह स्वयं प्रबन्ध करते हैं। \*१६—-श्री ग्रब्दुल रऊफ लारी--क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि इस समय कितने A. T. I. ऐसे हैं जो कन्डक्टरों को प्रोमोशन देकर नियुक्त किये गये हैं ?

श्री धर्मदत्त वैद्य--तीन।

श्री ग्रब्दुल रऊफ लारी--क्या माननीय मंत्री जी यह बतायेंगे कि जहां कोई व्यवस्था रहने की नहीं की गयी है तो क्या वहां पर उनको कोई मकान का किराया दिया जाता है?

श्री धर्मदत्त वैद्य--रात्रि के निवास का कंडक्टरों श्रौर ड्राइवर्स को एलाउन्स दिया जाता है। इसके श्रतिरिक्त कोई भत्ता नहीं दिया जाता।

राजा यादवेन्द्रदत्त दुबे--जहां मकान की व्यवस्था नहीं है वहां ठहरने का जो एलाउन्स दिया जाता है, वह कितना है ?

श्री धर्मदत्त वैद्य--ड्राइवरों के लिये १ रुपया श्रीर कंडक्टरों के लिये १२ श्राना।

श्री उग्रसेन--क्या माननीय मंत्री जी को इस बात की सूचना है कि सन् ४० के बाद ऐसे भी कंडक्टर्स को प्रमोट कर ए० टी० श्राई० बना दिया गया है जो सीनियारिटी में बहुत पीछे थे ?

श्री धर्मदत्त वैद्य — जी नहीं। ऐ रा है, श्रीमन, कि पहले सन् ४० में ऐसे श्रादेश हुए कि कुछ कन्डक्टर्स को ए० टी० श्राई० के पद पर पदोन्नित दे दी जाय। फिर उस श्रादेश में परिवर्तन कर दिया गया। श्रब ट्रान्सपोर्ट किमश्नर विचार कर रहे हैं कि किस प्रकार से कंडक्टर्स में से ए० टी० श्राई० बनाये जायं श्रीर कितने फीसदी बनाये जायं।

श्री झारखंडे राय—क्या माननीय मंत्री जी यह बतायेंगे कि उनके विभाग का लक्ष्य क्या है कि हर स्टेशन पर ऐसी व्यवस्था की जाय जहां कंडक्टर्स श्रीर ड्राइवर्स ठहर सकें श्रीर उनको श्रन्य जगहों पर न जाना पड़े ?

श्री धर्मदत्त वैद्य--जी हां, लक्ष्य यह है कि कंडक्टर्स ग्रौर ड्राइवर्स के विश्रामगृहों की सब जगह व्यवस्था हो जाय। मुख्य-मुख्य स्थानों पर तो विश्रामगृह बने हुए हैं लेकिन प्रयास यह हो रहा है कि उनको ग्रौर स्थानों में भी बढ़ाया जाय।

राजा यादवेन्द्रदत्त दुबे—माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि यह एलाउन्स जो दिया जाता है वह उनके खाने के लिये दिया जाता है या उनको मकान न देने के कारण दिया जाता है ?

श्री धर्मदत्त वैद्य--रात्रि निवास के लिये हा लिटग एला उस दिया जाता है।

\*२०-२१--श्री मोतीलाल श्रवस्थी (जिला कानपुर)-- २ मार्च, १६६० को प्रक्त ३४-३५ के श्रन्तर्गत उत्तर दिया जा चुका है।]

श्राजमगढ़ तथा बलिया की गन्ना सोसाइटियों का फालतू गन्ना

\*२२--श्री रामसुन्दर पांडेय (जिला ग्राजमाइ)--क्या मुख्य मंत्री बताने की कुपा करेंगे कि विल्थरा रोड एवं किड़िहड़ापुर रेलवे स्टेशन पर ग्राजमगढ़ तथा बिलया की गन्ना सोसाइटिथों से गत सीजन वर्ष १६४८-४६ में ग्रलग-ग्रलग कितना-कितना मन गन्ना दिया गया था ?

330,35

80,080

१---बिल्थरारोड यूनियन (ब्रलिया)

२--कमल सागर भेंडार (ग्राजमगढ़)

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—१६५६-५६ सीजन में जिला श्राजमगढ़ तथा बिलया की गन्ना सो गाः दियों ने बिल्थर। रोड एवं कि ड़िहड़ापुर रेल सेटर्स पर श्रलग श्रलग जितना मन गन्ना दिया था उसका विवरण इस प्रकार है:

केन यूनियन का	नाम	केन्द्र का नाम व सण्लाई किये गये गर की मात्रा		
بالهجها بحملنا يخطأ يحطا فحما فحما وججا بحمان بالمان وسنا وحمانا جمانا فخما لندا	والمحمد فالمدمل والبادية والبادية ويتبدئنا ومدينا المديدة والمدانية والمدانية والمدانية والمدانية ويهدونها ويهدونها	Thomas bedays the Say Tourist strong about serving revenue realing serving survival hazards realings and	المقاديسة والمرابعة والمناف والمناف والمناف والمناف والمناف والمناف والمناف	
		बिल्थरारोड मन	किङ्हिडापुर मन	

६२,७२६

83,025

\*२३—-श्री रामसुन्दर पांडेय—वया मुख्य मंत्री बताने की कृता करेगे कि ग्राजमगढ़ तथा बलिया की गन्ना सोसाइटी ने इस वर्ष भटनी मिल को गन्ना देने का ग्राफर ग्रलग-ग्रलग कितने मन गन्ने का दिया था ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--वर्तमान सीजन में जिला ग्राजमगढ़ तथा बिलया की गला सोसाइटियों ने भटनी मिल को गल्ना देने का श्राफर ग्रलग-श्रलग जितने मन का विया है उसका विवरण इस प्रकार है:

केन यूनियन का नाम	• केन्	को सात्रा (लाग	कर किये गये गन्ते र मनों में)
		बिल्परारोड	किड़िह्डापुर
१––बिल्थरारोड (बलिया) २––कमल सागर (थ्राजमगढ़)	• •	२,५०	₹.५०
रयनल सागर (आजमगढ़)		२.३७	१.५७

श्री रामसुन्दर पांडेय—न्या माननीय मंत्री बतलाने का कथ्ट करेंगे कि इन केन सोसाइटीज ने जो भटनी मिल को श्राफर दिया है, उस श्राफर के मुताबिक उनको वैगन्स दिये गये हैं कि नहीं दिये गये ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—वैगन्स की जानकारी तो नहीं है सेकिन इतना में समझता हूं कि जो इन्होंने श्राफर दिया है उसके श्रनुसार ही शायद ये गन्ना दे रहे हैं।

श्री उग्रसेन—इस बात को देखते हुए कि जितना गन्ना देने के लिये उन सोसाइदियों ने श्राफर दिया है उतना गन्ना मिल द्वारा लेने के बाद भी श्रभो उनका बहुत गन्ना फा नत् बन जायगा, क्या माननीय मंत्री जी उस गन्ने को दूपरी मिलों को दिलाने की कुग करेंगे ताकि उनका सब गन्ना ले लिया जाय?

श्री लक्ष्मीरमण स्राचार्य—एेसोसम्भावना मालूम नहीं होतो, नाँकि पहले रेसवे साइडिंग छोटो थो जिसे स्रब बड़ा कर दिया गया है इसलिये इसकी कोई सम्भावना इस समय तो नहीं मालूम होती। प्रश्नोत्तर १२१

श्री रामसुन्दर पांडेय—श्राफर स्वीकार हो जाने के बाद भी जो मिलें उस श्राफर के मुताबिक गन्ना नहीं लेंगी, तो क्या माननीय मंत्री जी गन्ना सूख जाने के बाद उन मिल मालिकों से उसका नुकसान दिलाने का प्राविजन करेंगे ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य — ऐसी कोई सम्भावना कम से कम इस समय तो मालूम नहीं होती है। श्रब श्रागे के लिये इस समय कुछ कहना मुश्किल है कि उस समय हम क्या करेंगे।

श्री शिवप्रसाद नागर—माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि इन सोसाइटियों का जितना सट्टा शुरू में हुग्रा था उसके ग्रनुपात से ग्रब तक कितना गन्ना क्रींशग के लिये मिलों में सप्लाई हो चुका ग्रौर कितना ग्रभी बाकी है ?

श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य--इस समय इसके श्रांकड़े मेरे पास नहीं हैं।

\*२४-२६--श्री मुक्तिनाथ राय (जिला म्राजमगढ़) --[२४ मार्च, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।]

### चीनी मिलों में गन्ने की खपत तथा चीनी का स्टाक

\*२७--श्री ग्रमरनाथ (जिला गोरखपुर)--त्रया सरकार बताने की कृपा करेगी कि प्रदेश के सभी चीनी मिलों ने भ्रलग-भ्रलग कुल कितना गन्ना पिछले सीजन में पेरा श्रौर इसमें कितना गन्ना बाहरी जोन का था ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—१६५८-५६ सीजन में इस प्रदेश की सभी चीनी मिलों ने अलग-अलग जितना गन्ना पेरा तथा इसमें जितना गन्ना बाहरी जोन का था उसका विवरण संलग्न तालिका में दिया हुन्ना है।

(देखिये नत्थी 'खं ग्रागे पृष्ठ २१३-२१४ पर)

\*२८--श्री ग्रमरनाथ--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि राज्य के श्रलग-श्रलग चीनी मिलों के पास वर्तमान समय में कितने-कितने मन चीनी मौजूद है ?

श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य--यह प्रश्न केन्द्रीय सरकार से संबंधित है श्रतएव श्रल्प समय में राज्य सरकार द्वारा इसका उत्तर दिया जाना संभव नहीं है।

श्री श्रमरनाथ——जो यह सूचना दी गयी है उसको देखने से यह पता चलता है कि बाहरी जोन का गन्ना इसके श्रन्दर नहीं दिखलाया गया है, तो माननीय मंत्री जो बतलाने की छुपा करेंगे कि इसके श्रन्दर बाहरी जोन का गन्ना कितना था श्रौर किस रेट से रेल पर श्रथवा गेट पर खरीदा गया श्रौर कांटे पर कितना गन्ना लिया गया ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--श्रीमन्, ३ प्रश्न एक साथ हो गये, जहां तक यह बाहरी जोन का सम्बन्ध है इसमें रेल केन दिखाया है, इसका श्रर्थ है कि स्टेशन पर जो केन श्राया वही लिया गया श्रीर जो स्टेशन पर लिया गया वह बाहरी जोन का है। रेट्स के बारे में मेरे पास सूचना नहीं है।

श्री भ्रमरनाथ--श्रीमन्, बाहरी जोन का कुल कितना भ्राया इसकी सूचना नहीं मिली ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—रेल गेट वाला बाहरी जोन का है, उसके जो श्रन्तिम श्रांकड़े हैं वह दिये हुये हैं, जो उसका योग है वह भी िया हुग्रा है श्रीर में क्या बता सकता हूं। गोरखपुर, देवरिया तथा श्राजमगढ जिलों में नियोजन विभाग के पराने कर्मचारी

\*२६--श्री ग्रमरनाथ--क्या सरकार बताने को क्रुया करेगी कि गोरखपुर, देवरिया तथा ग्राजमगढ़ जिलों के नियोजन विभाग में कुल कितने ग्रधिकारी तथा कर्मचारी ऐसे हैं जो क ही स्थान पर तीन वर्षों स ज्यादा से पड़े हैं ? श्री सुल्तान ग्रालम खां--तीन सौ चार।

श्री ग्रमरनाय—क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि यह जो सूचना में दिया गया है इसमें कितने ५ साल से ग्रविक के कर्मचारी है ग्रीर साथ हो क्यों उनका तबादला ग्रभा तक नहीं किया गया ?

श्री सुल्तान ग्रालम खां—यह जो ३०४ की बात है इसमें से सिर्फ एए बी० छी० ग्रो० कैंप्टेनगंज, देवरिया के ऐसे हैं जो वहां ५ साल से ग्रधिक से हैं ग्रीर कोर्क उन्होंने वहां गैर-मामूली तौर पर श्रच्छा काम किया इसलिये उन को वहां श्रपना काम जारी रखने का श्रीर बेहतर काम करने का मौका दिया गया।

(श्री श्रिधिष्ठाता द्वारा प्रश्न ३०-३२ के उत्तर पढ़ने के लिये कहा गया।)

श्री शिवप्रसाद नागर—व्यवस्था का प्रश्न है कि जिस प्रश्न का उत्तर मागा गया था वह उत्तर नहीं मिला श्रौर उत्तर मिलने के पहले ही श्राप ने दूसरा नाम पकार दिया, तो प्रश्न का उत्तर तो मिलना श्रावश्यक ही था। पूछा गया था कि तबादला को नहीं किया गया, इसका कोई उत्तर नहीं मिला कि ३ साल के बाद क्यों रखा गया?

राजा बीरेन्द्रशाह (जिला जालौन)—श्रिषष्ठाता महोदय, सवालो के बोच मे इन व्यवस्था क प्रक्तों पर जो हमारा समय नष्ट होता है इसको श्राप रोकें।

\*३०--श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी (जिला बस्ती)--क्या सरकार कृपया ब गयेगी कि लखनऊ की श्रमिक बस्ती में रहने वाले ऐसे allottees (जो सरकारी संस्थानों में काम करते हैं) के १९५९ के उत्तराई में किराया बढ़ाये जाने की नोटिस के उत्तर प्राप्त हुये हैं?

श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य—जी हां।

\*३१-श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी-क्या सरकार कृपया बतायेगी कि उन उत्तरों के फलस्वरूप इन allottees से पुरानी दर पर ही मासिक किराया जमा किया जा रहा है ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--जिन किरायेदारों ने नोटिस पर श्रापत्ति को है या जिन्होंने नोटिस का उत्तर नहीं दिया है, उन से फिलहाल पुरानी दर पर ही किराया लिया जा पहा है।

\*३२--श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी--क्या सरकार कृपया बतायंगी कि लगनऊ की श्रीक बस्तियों में कितने क्वार्टर रूरकारी संस्थानों में काम करने वाले श्रीमकों के नाम बीठा है और कितने क्वार्टर गैर-सरकारी संस्थाश्रों में काम करने वाल श्रीमकों के नाम बीठा है ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—लखनऊ की श्रमिक बस्सियों में ३३१ ववार्टर सरकारी संस्थानों (Government factories) में काम करने वाले श्रमिकों के नाम तथा ४६१ क्वार्टर गैर सरकारी सस्थानों (private factories) में काम करने वाले श्रमिकों के नाम एलाट हैं।

श्री गोविन्द सिंहविष्ट--क्या यह सही है कि यह श्रमिक बस्ती मिलों से बहुत दूर बनी है इसलिये श्रमिक लोग नहीं रहे श्रौर खाली थों इसलिये बाहर वालों को बसाना पड़ा? यि हां, तो कितने क्वार्टर्स ऐसे हैं जिनमें श्रमिक नहीं रहते ?

श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य—यह बात सही नहीं है, इसलिये दूसरा हिस्सा उठता नही। श्रीमती राजेन्द्र किशोरी—जो नोटिस दिये गये है क्या उनको बापस लेने के लिये सरकार विचार कर रही है ?

श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य--जी नहीं, उन उत्तरों को देखा जा रहा है।

प्रक्तोत्तर १२३

\*३३--श्री रामसुन्दर पांडेय--[सहकारिता मंत्री से सम्बन्धित तेरहवें सोमवार के लिये प्रकृत ५ के ब्रन्तर्गत स्थानान्दरित किया गया।]

## सकरार में ताड़गुड़ सहकारी सिमति का निर्माण

\*३४—श्री गज्जूरामं (जिला झांसी)—क्या सरकार कृपा करके बतायेगी कि जिला झांसी के सकरार गांव में ताड़—गुड़ सहकारी समिति का निर्माण हुआ है? यदि हां, तो समिति में कितने गुड़ का माहवारी उत्पादन है?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य-(क) जी हां ।

(ख) सिमिति ने ग्रभी तक ३ मन गुड़ बनाया है।

\*३५—श्री गज्जूराम—क्या सरकार कृपा करके बतायेगी कि इस ताड़-गुड़ सहकारी समिति को कितना कर्जा एवं श्रनुदान दिया गया है।

श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य--उक्त समिति को राज्य ताड़-गुड़ सहकारी संघ लिमिटेड द्वारा ८०० रुपये का ग्रनुदान दिया गया है ।

श्री गज्जूराम-- उक्त समिति के सदस्य ग्रौर पदाधिकारी कौन-कौन है ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य-इसकी सूचना इस समय नहीं है।

श्री मदन पांडेय— उस समिति के द्वारा यह तीन मन गुड़ कितने दिनों में तैयार किया गया है, यह बतलाने की कृपा करेंगे ?

श्री लक्ष्मीरमण स्राचार्य—नवम्बर, १६५६ में यह सकरार में समिति बनी है स्रौर दिसम्बर, १६५६, में कार्य करना प्रारम्भ किया है। स्रभी तो बने हुए ज्यादा दिन नहीं हुए। स्रभी जो टैपर्स हैं उनकी ट्रेनिंग भी समाप्त नहीं हुई है, इसिलये इस बीच में जो कार्य हुस्रा वहीं है। इसके स्रलावा १८ मन नीरा भी उत्पादन किया है। उसका समय पर गुड़ बन सकेगा, ऐसी स्राज्ञा है।

श्री गज्जूराम——उक्त समिति में गुड़ बनाने में सरकार के कितने कर्मचारी श्रौर श्रीधकारी काम कर रहे हैं ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—सरकार का तो कोई कर्मचारी या श्रधिकारी काम नहीं कर रहा है, केवल कुछ टैपर्स के प्रशिक्षण का प्रश्न है। जो गुड़ सहकारी संघ है उसकी श्रोर से कुछ ट्रेनिंग दी जाती है।

श्री भुवनेशभूषण शर्मा—जो यह सिमिति का निर्माण हुन्ना है इसके बारे में सरकार के पास ऐसी शिकायतें ब्राई हैं कि यह व्यक्ति श्रक्सर ऐसी सिमितियां बनाकर सरकार से काफी रुपया ले लेता है ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—मेरे इल्म में तो नहीं है। श्रगर वह कहते हैं तो इसके लिये सूचना की श्रावश्यकता पड़ेगी।

श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी (जिला झांसी)—क्या उक्त समिति के एक पदाधिकारी ऐसे भी हैं जिनकी लक्ष्मी व्यायामशाला, झांसी के प्रति गबन श्रादि की रिपोर्ट श्राडीटर ने की थी ?

श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य--सूचना की ग्रावश्यकता है।

श्री चन्द्रजीत यादव—जब सरकार ने समिति को ८०० ६० का श्रनुदान दिया तो इस सम्बन्ध में किसी श्रिधकारी से जांच-पड़ताल कराई थी कि जो व्यक्ति समिति बना रहे हैं वह विश्वसनीय हैं ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—यह रुपया दिया गया है, उसके पूर्व जो श्रावश्यक जांच थी वह जरूर की गई थी।

श्री गोविन्दसिंह विष्ट-सिमिति को ग्रनुदान देने की क्या व्यवस्था हे ? श्रनुदान को धनराशि निर्धारित करने के लिये क्या-क्या फैंक-से देखे जाते है ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य — में तो पूरी बात समझा नहीं, अगर तात्पयं यह है कि अनुदान देते समय किन बातों को सोचते हैं तो मोटी-सी बात यह है कि जो योजना है ता क़-गुड़ बनाने की उसके अन्तर्गत जो सोसाइटीज कार्य करना चाहती हैं उनके प्रार्थन -पत्र आते हैं, फिर देखा जाता है कि कहां तक ठीक हैं, फिर उसके बाद अनुदान दिया जाता है।

\*३६-३८--श्री गेंदासिह (जिला देवरिया)--|स्थिगत किये गये ।]

\*३६-४०--श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन (जिला टेहरी-गढ़वाल)--[२४ मार्च, १६६० के लिये स्थिंगत किये गये।]

नरेन्द्रनगर में टेक्निकल स्कूल खोलने की प्रार्थना

\*४१--श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन--श्या मुख्य मंत्री कृपया बतायेंगे कि क्या सरकार टिहरी-गढ़वाल के नरेन्द्रनगर नामक स्थान में एक टेक्निकल हाई स्कूल खोलने के प्रस्ताव पर विचार करेगी ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—इस समय टिहरी-गढ़वाल जिले के टिहरी नामक स्यान में एक सरकारी प्राविधिक संस्था है जहां पर श्रन्यान्य विषयों को पढ़ा ने के ध्रतिरिक्त बुनाई तथा काष्ठकला में हाई स्कूल (टेक्निकल) सार्टिफिकेट स्तर का प्रशिक्षण विया जाता है। टिहरी की संस्था से फिलहाल टिहरी-गढ़वाल जिले की समस्त हिस्सों की साभ पहुंच रहा है। ध्रतः नरेन्द्रनगर में कोई दूसरा टेक्निकल हाई स्कूल खोलने का सम्प्रति प्रयोजन नहीं है।

श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन--मेंने पोलीटेक्निक के लिये प्रक्त नहीं किया था, बल्कि किया था टेक्निकल हाई स्कूल के लिये, लेकिन उत्तर मिला है पोलीटेक्निक के संबंध में ।

श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य-ग्रब टेक्निकल हाई स्कूल की कोई ब्सरी योजना हो उसकी इस समय तो मेरे पास सूचना नहीं है। लेकिन जो पोलीट क्निकल इस्टीट्यूट टिहरी में है उसका जिन्न किया है।

श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन--मंत्री जी मेरे प्रश्न को सूचना मानेंगे भौर वहां टेक्निकल हाई स्कूल खोलने की कृपा करेंगे ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--इसका उत्तर तो मैंने प्रश्न में भी दिया है कि क्योंकि पोली-टेक्निकल इंस्टीट्यूट है इसलिये हाई स्कूल खोलने की कोई श्रावश्यकता नहीं हैं। तृतीय पंच-वर्षीय योजना में इसकी श्रागे बढ़ाने की योजना है जिससे सारे क्षेत्र को फायबा पहुंचेगा।

बुन्देलखण्ड में उद्योग चलाने की प्रार्थना

\*४२—श्री गज्जूराम--क्या यह सही है कि तृतीय पंचवर्षीय योजना में सरकार बुन्देलखंड को पिछड़ा हुन्रा खंड मानकर सरकार वहां वृहत् स्तर पर किसी उद्योग के चलाने की योजना बना रही है ? यदि हां, तो किन-किन स्थानों पर एवं कौन-कौन से उद्योग ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--उद्योग संबंधी तृतीय पंचवर्षीय योजना सभी निश्चित नहीं हुई है ।

श्री गज्जूराम--तृतीय पंचवर्षीय योजना बनाते समय बुन्देललंड का सरकार विशेष-कर ध्यान रक्खेगी जिससे वहां की बेकारी दूर हो सके ? प्रक्तोत्तर १२५

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—सही बात है सभी क्षेत्रों का श्रपेक्षाकृत जैसी श्रावश्यकता होगी ध्यान रक्खा जायगा ।

#### विकास कार्यों पर जिलेवार व्यय

\*४३--श्री गौरीराम गुप्त (जिला गोरखपुर)--श्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि प्रथम पंचवर्षीय योजना में तथा ३१ दिसम्बर, १६५६ तक दूसरी पंचवर्षीय योजना में सरकार ने प्रत्येक जिले में कितना-कितना रुपया विकास कार्य में खर्च करने के लिये दिया है ?

श्री सुल्तान स्रालम खां--प्रथम तथा द्वितीय पंचवर्षीय योजना में विकास कार्यों के लिये दिये गये धन की कोई जिलेवार सूचना उपलब्ध नहीं है।

श्री गौरीराम गुप्त--मंत्री जी १५ दिन के श्रन्दर हर जिले से संख्यावार सूचना एकत्रित करके बतलाने की कृपा करेंगे ?

श्री ग्रिधिष्ठाता--मंत्री जो ने कहा, उपलब्ध ही नहीं है ? जिससे मालूम होता है सम्भव हो नहीं हो सकता।

श्री सुल्तान श्रालम खां—इसिलये मुमिकन नहीं हो सकता कि हमारे यहां प्लान में जिलेवार श्रलोकेशन नहीं होता है श्रीर खासतौर पर पहली प्लान में डिस्ट्रिक्ट प्लान भी श्रलहदा नहीं बनाई गई थी श्रीर प्लान का खर्चा मुख्तिलफ मुहकमों में बांट दिया जाता है। श्रगर सब जगह से इसकी सूचना मंगाई जाय तो बहुत बड़ा काम हो जायगा श्रीर उससे उतना लाभ नहीं होगा जितना कि जवाब के देने में जरूरत होती है।

#### तहसीलदारों व डिप्टी कलेक्टरों की पदोन्नति

\*४४—-श्री गयाप्रसाद (जिला प्रतापगढ़) (श्रनुपस्थित)—-क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि उत्तर प्रदेश सरकार ने जनवरी सन् १९५६ से दिसम्बर, १९५७ तक कितने व्यक्ति तहसीलदार से डिप्टी कलेक्टर बनाये गये श्रौर उनमें से क्रमशः कितने परिगणित तथा पिछड़े वर्ग के थे ?

मुख्य मंत्री (डाक्टर सम्पूर्णानन्द)--कुल ३० बनाये गये जिनमें कोई भी परिगणित श्रयका पिछड़े वर्ग का न था ।

\*४५--श्री गयाप्रसाद (नुपस्थित)—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जनवरी, १६५६ से जनवरी, १६५८ तक कितने डिप्टी कलेक्टर से कलेक्टर बनाये गये श्रीर उनमें से कमशः कितने परिगणित तथा पिछड़े वर्ग के थे ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--४४ डिप्टी कलेक्टर स्थानापन्न या स्थायी पदोन्नत किये गये । इनमें कोई भी परिगणित ग्रथवा पिछड़े वर्ग के न थे ।

\*४६-४७--श्री शिवप्रसाद नागर--[२४ मार्च, १६६० के लिये स्थगित किये गये।

\*४८-४६--श्री ऊदल (जिला वाराणसी)--[२१ मार्च, १६६० के लिये प्रश्न ७६-७७ के भ्रन्तर्गत स्थानान्तरित किये गये । ]

\*५०--श्री गौरीराम गुप्त--[१८ मार्च, १९६० के लिये प्रश्न ८९ के श्रन्तर्गत स्थानान्तरित किया गया।]

\*५१-५२--श्री ब्रजनारायण तिवारी (जिला देवरिया)--[२४ मार्च, १६६० के लिये स्थगित किये गये ।]

\*५३--श्री उग्रसेन--[२४ मार्च, १६६० के लिये स्थगित किया गया।]

## बस्ती जिले के कुछ स्थानों पर भारी उद्योग चालू करने की प्रार्थना

\*५४—श्री उग्रसेन—क्या मुख्य मंत्री कृपया बरहज-तमकृही रोड, नौतनवां, बढ़नी तथा नौगढ़ श्रादि नगरों में जूट, कागज तथा रोलिंग मिल चालू करने की योजनाग्रो पर विचार करेंगे ?

श्री लक्ष्मीरमण त्राचार्य—यदि कोई साहसी enterpreneur इन स्थानों पर कोई मिल खोलने के लिये लाइसेन्स प्राप्त कर के हेतु प्रार्थना-पत्र देगा तो सरकार उस पर विचार करेगी।

श्री उग्रसेन--मंत्री जी बतायेंगे कि सरकार ने इस किस्म की कोई योजना बनाई है कि इन उद्योगों की सम्भावना है, उसका कोई सर्वेक्षण इन जिलों के लिये करवाया है ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य --जी हां, कराया है। हैवी इंडस्ट्रीज प्लान कमेटी इस समय प्रवेश में कान कर रही है ग्रीर उसकी रिपोर्ट भी प्राप्त हुई है।

श्री उग्रसेन--क्या माननीय मंत्री जी बतलायेंगे कि जो रिपोर्ट उन्हें प्राप्त हुई हे उसमें गोरखपुर, देवरिया, बस्ती ग्रादि पूर्वी जिलों में किन-किन विशेष उद्योगों की स्थापना के लिये सुझाव दिया है ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—ग्रभी पूरी सूचना में नहीं वे सक्ता, लेकिन जहां तक जूट का प्रश्न है जो हैवी इंडस्ट्रीज कमेटी ने इस सम्बन्ध में विचार किया उसके ग्रनगार जूट की कोई मिल वहां खोलना उपयुक्त नहीं होगा श्रीर न शायद संभव होगा श्रीर इसी प्रकार से यह रोलिंग मिल का प्रश्न है, उसके बारे में भी यही सम्मति है।

\*५५-५७--कुमारी श्रद्धादेवी शास्त्री (जिला मेरठ)---[२४ मार्च, १६६० के लिये स्थिगत किये गये। ]

\*५८-श्री गुप्तार्रासह (जिला रायबरेली)-[२४ मार्च, १६६० के लिये स्थिगत किया गया ।]

#### कानपुर की कुछ मिलों में भ्रभिनवीकरण

\*५६—श्री ऊदल—नया सरकार कृपया बतायेगी कि क्या एलगिन मिल, कानपुर ने बिना सरकार की श्रनुमति लिये ७० फीसवी तक श्रभिनवीकरण कर लिया है ? तथा कानपुर की श्रौर मिलों ने भी ३० फीसवी से ७० फीसवी तक श्रभिनवीकरण कर विया है यिव हो, तो सरकार ने उन मिलों के खिलाफ क्या-क्या कार्यवाही श्रब तक की है तथा कानपुर की श्रौर मिलों के नाम क्या-क्या हैं जिन्होंने ३० फीसवी से ७ फीसवी तक श्रभिनवीकरण कर लिया है ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—यह सही नहीं है कि एलगिन मिल में ७० प्रतिशत श्राभनवी-करण हुआ है किन्तु दो और मिलों ने ३० प्रतिशत से ७० प्र तंशत तक श्राभनवीकरण किया है । इन मिलों के नाम इस प्रकार है :

- (१) कानपुर टेक्सटाइल्स लि०।
- (२) ऐथर्टन वेस्ट कम्पनी लि०।

इन मिलों के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की गई है।

श्री चन्द्रजीत यादव—कानपुर टेक्सटाइल मिल लिमिटेड और एथर्टन वेस्ट मिल कम्पनी लिमिटेड ने जो ३० से ७० फीसदी श्रीभनवीकरण किया तो बिन्वबासिनी प्रसाद कमेटी की रिपोर्ट के श्रनुसार पहले उन्होंने लेबर डिपार्टमेंट से इसके लिये पीमशन ली और यांव हां, तो फिर सरकार ने छटनी किये हुए मजदूरों के लिये फिर से एम्पलाइमेंट देने के सिये क्या व्यवस्था की थी?

प्रश्नोत्तर १२७

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य — जहां तक ग्रभिनवीकरण का प्रश्न है बिन्दबासिनी प्रसाद कमेटी ने यह रिपोर्ट की कि हड़ताल के दौरान में किये गये श्रभिनवीकरण के बारे में कोई कार्यवाही नहीं की जानी चाहिये। जहां तक मजदूरों के पुनर्वास का प्रश्न है, मेरे पास इस समय इसकी सूचना नहीं है कि किसी मजदूर ने इसके लिये ग्रावेदन-पत्र दिया या नहीं दिया श्रौर यदि दिया होगा तो उस पर श्रवश्य कार्यवाही की होगी।

श्री मोतीलाल श्रवस्थी—क्या माननीय मंत्री जी बतलायेंगे कि कानपुर टेक्सटाइल मिल तथा एथर्टन वेस्ट मिल में श्रभिनवीकरण किया गया श्रौर वहां इसके फलस्वरूप मजदूरों में कुछ छटनी भी की गयी है ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--मेरे पास इस समय इसकी सूचना नहीं है ।

श्री ऊदल -- जैसा कि माननीय मंत्री ने बतलाया कि एलगिन मिल ने ७० प्रतिशत तक श्रभिनवीकरण नहीं किया है तो फिर कितने प्रतिशत किया है ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--एलगिन मिल में १६ फीसदी हड़ताल के दौरान में श्रौर १६ फीसदी हड़ताल के बाद श्रभिनवीकरण किया गया ।

श्री नारायणदत्त तिवारी—जिस कार्यवाही का जिक्र माननीय मंत्री ने श्रपने उत्तर में किया है वह कार्यवाही क्या है ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—इसमें उत्तर यह है कि कार्यवाही नहीं की गयी है । में नहीं समझा कि किस उत्तर से श्रापका तात्पर्य है ?

श्री नारायणदत्त तिवारी—बिन्दवासिनी प्रसाद कमेटी की रिपोर्ट जो ग्रब तक लागू नहीं की गई है श्रौर उसे लागू करने के निश्चय को वेखते हुये जैसा कि माननीय मंत्री जी ने कल निर्णय किया है, क्या माननीय मंत्री यह श्राश्वासन देंगे कि ग्रब उस पर कार्यवाही करेगे ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—िबन्दबा सनी प्रसाद कमेटी की रेपोर्ट के बारे में निवेदन किया था कि उन्होंने यह सुझाव दिया है कि हड़ताल के दौरान में जो श्रभिनवीकरण हुआ है उसके बारे में कोई कार्यवाही न की जाय।

श्री राजनारायण (जिला वाराणसी)—सरकार ग्राभनवीकरण का क्या ग्रर्थ समझती हैं ग्रीर जो यह बतलाया गया सरकार की ग्रोर से कि हड़ताल के बाद १६ फीसदी ग्रिभ-नवीकरण केया गया तो इसका तात्पर्य १६ फीसदी छड़नी से हैं या ग्रिशनवीकरण का जो सही ग्रर्थ हैं उससे सम्बन्धित हैं ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य — ग्रितिवीकरण का वही श्रर्थ सरकार समझती है जो कि माननीय राजनारायण जो समझ हे हैं, उन प्रर्थ के समझने में कोई गतती नहीं है। केवल प्रश्न इतना है कि श्रिभनवीकरण के सम्बन्ध में कितनी कार्यवाही हि स कार कर सकती है या करेगी, वही विचाराधीन है।

\*६०-श्री गयाप्रसाद-[१८ मार्च, १६६० के लिये प्रकृत २३१ के ग्रन्तर्गा स्थिगत किया गया । ]

\*६१—श्री उग्रसेन—[२४ मार्च, १६६० के लिये स्थगित किया या।] इन्दारा में चीनी मिल की ग्रावश्यकता

\*६२-श्री झारखंडेराय तथा श्री चन्द्रजीत यादच-न्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि क्या इंदारा (ब्राजमगढ़) में ची हि नेल खोले जाने का ब्रेटिन हिर्णय ले लिय गया है?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—जी नहीं।

\*६३--श्री झारखंडे राय तथा श्री चन्द्रजीत यादव-यदि हां, तो वह निर्णय क्या है ? श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य---प्रक्त नहीं उठता ।

श्री झारखंडेराय—क्या मुंय मंत्री जी बतायेंगे कि इन्दारा में चीनी (मन खोले जाने के तिलिक्षले में कोई भी कार्यवाही ग्रब तक हुई है ? यांव हुई है तो क्या ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—इसके सम्बन्ध में विचार विनिमय हुआ है श्रीर इन्दारा के सम्बन्ध में भी कुछ ऐसा प्रश्न सरकार के सामने हैं कि वह भी एक स्थान हो सकता है जहां पर इस प्रकार की मिल खोली जाय। इस पर विचार हो रहा है।

श्री चन्द्रजीत यादव क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि इन्दारा में जो एक मिल खोलने का सरकार का इरादा है और जिस सम्बन्ध में जांच-पड़ताल भी हो रही है, क्या यह सही है कि वह मिल सरकारी श्राधार पर खुलने जा रही है और लगभग ११ लाल क्पये की लागत से वह खुलेगी?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—सरकारी श्राधार का प्रक्त नहीं है, केवल कोग्रापरेटिय शुगर फैक्टरी का प्रक्त है। श्रव उसमें कितनी लागत लगेगी, उसके इस समय मेरे पास कोई श्रांकड़े नहीं है।

# वहा एवं सुखनी नालों पर पुल बनाने की सिफारिश

\*६४—श्री जगन्नाथ प्रसाद (जिला खीरी) (ध्रनुपस्थित)—क्या यह सत्य है कि जिलाधीश खीरी ने घौरहरा कलां ब्लाक जिला खीरी में स्थित वहां एवं स्थानी नालों पर पुल निर्माण के हेतु डेवलपमेंट किमश्नर महोदय की सरकारी सहायता के लिये निया है? यदि हां, तो इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही हुई ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—जी हां। निर्धारित मात्रा में जनता का प्रनुदान उपसब्ध न होने के कारण सरकारी सहायता प्रदान करने में ग्रसमर्थता प्रकट की गई हैं।

प्लास्टिक ट्रेनिंग सेण्टर, इटावा के परिगणित जातीय छात्रों को छात्रवृत्ति मिलने में विलम्ब

\*६५-श्री सुखलाल (जिला इटाबा) (श्रनुपस्थित) - वया सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि गवर्नमेंट प्लास्टिक ट्रेनिंग सेंटर, इटावा में इस समय कुल कितने छा । ट्रेनिंग पा रहे हैं ? इनमें से कितने छात्र परिगणित जाति के हैं ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—१६ । इनमें ४ छात्र परिगणित जाति के हैं ।

\*६६—श्री सुखलाल (ग्रनुपस्यित)—क्या इन सबको छात्र-वृत्तियां मिल रही है ? क्या यह सही है कि इनको (परिगणित जातीय ग्रौर दूसरे छात्रों) ग्रसग-ग्रलग विभागों से छात्र-वृत्तियां मिल रही हैं ? यदि हां, तो ऐसा क्यों ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—जी हां। यह संयोग की बात है कि उपरोक्त केन्द्र में परिगणित जाति के छात्रों को हरिजन सहायक विभाग द्वारा छात्र-वृत्तियां मिल रही हूं भीर दूसरे छात्रों को उद्योग विभाग द्वारा। कारण यह है कि परिगणित जाति के छात्र हरिजन कल्याण विभाग की सिफारिश पर केन्द्र में दाखिल वियोगये थे उस समय जब कि केन्द्र की छात्र-वृत्त्यों की निर्धारित संख्या पूरी हो चुकी थी।

\*६७—श्री सुखलाल (ग्रनुपस्थित)—क्या यह बात सही है कि उपर्युक्त पि गणित जातीय छात्रों को जनवरी के अन्त तक इस वर्ष छात्र-वृत्त भ्रदा नहीं हो सकी है जब कि दूसरें छात्रों को प्रत्येक मास की छात्रवृत्ति हर मास नियमित रूप से प्राप्त हो रही है ? डाक्टर सम्पूर्णानन्द—जी हां। हरिजन कल्याण विभाग के स्वीकृति पत्र में विलम्ब होने के कारण इन छात्रों को छात्रवृत्ति जनवरी के ग्रन्त तक न दी जा सकी। ग्रावश्यक स्वोकृति ग्रब प्राप्त हो गई है ग्रतः इनकी छात्रवृत्तियां नियमित रूप से मिला करेंगी।

## गवर्नमेंट टेक्निकल इंस्टीट्यूट, लखनऊ के विद्यार्थियों की शिकायत

\*६८-श्री रामस्वरूप वर्मा--क्या मुख्य मंत्री कृपया बतायेगे कि क्या उनके पास कोई शिकायत जनवरी, सन् १६६० या फरवरी, १६६० के प्रथम सप्ताह में गवनंमेंट टेक्निकल इन्स्टीट्यूट, लखनऊ के इले क्ट्रिकल इंजीनियरिंग सेक्शन के विद्यार्थियों को निर्धारित पाठ्य-क्रम की शिक्षा न देने के सम्बन्ध में ग्राई है? यदि हां, तो इस विषय में सरकार । ने ग्रब तक क्या कार्यवाही की?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य -- जी हां। सरकार ने उनकी शिकायतों की दूर किया है

श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जो शिकायतें पाठ्य-क्रम को न पढ़ाने की थीं श्रीर विद्यार्थियों को उतने दिन तक पाठ्य-क्रम नहीं पढ़ाया जा सका जिससे परीक्षा पर प्रभाव पड़ा उसके लिये सरकार ने क्या प्रयत्न किया जिससे विद्यार्थियों में उतनी योग्यता श्रा जाय श्रीर उनको परीक्षा के लिये समय मिल जाय?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य --सरकार की राय में कोई प्रभाव परीक्षा पर नहीं पड़ा।

श्री मोतीलाल श्रवस्थी—क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि एलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की जो पढ़ाई नहीं हो सकी इसका कारण क्या था, क्या उसके लिये प्रोफेसर नहीं था?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--कहा यह जाता था कि जितना पढ़ाया जाना चाहिये था उतना नहीं पढ़ाया जा सका ग्रौर जो शिकायत ग्रायी थी वह भी इसी प्रकार की थी। तो उसके लिये प्रबन्ध कर दिया गया।

श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या जो सरकार ने प्रबन्ध किया है उसमें विद्यार्थियों को जितने घंटे निर्धारित है उससे ज्यादा घंटे पढ़ाने की बात की गयी है या कोई दूसरा प्रबन्ध किया गया है ?

श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य--प्रबन्ध यह किया गया है कि परीक्षा के लिये जितना श्रावश्यक है उतना पढ़ा दिया जाय।

#### श्रायल मिल्स एसोसिएशन का स्मृति-पत्र

\*६६--श्री मदन पांडेय--क्या यह सत्य है कि कानपुर में गत प्र फरवरी, १६६० को स्रायल मिलर्स एसोसियेशन की स्रोर से उद्योग उप-मन्त्री, श्री बहुगुणा को प्रदेश की तेल मिलों की दिक्कतों के सम्बन्ध में कोई स्मृति-पत्र दिया गया था? यदि हां, तो क्या सरकार उक्त स्मृति-पत्र में की गई मांगें तथा उनके प्रति सरकारी दृष्टिकोण सदन के सम्मुख रखेगी?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—यू०पी० श्रायल मिलर्स एसोसियेशन की श्रोर से एक स्मृति-पत्र दिनांक १६ फरवरी, १६६० को प्राप्त हुश्रा है जिसमे एसोसिएशन ने श्रपनी कठिनाइयों का विवरण दिया है, जिसकी सूची संलग्न है। यह स्मृति-पत्र सरकार के विचाराधीन है।

#### (देखिये नत्थी 'ग' ग्रागे पृष्ठ २१५ पर)

श्री मदन पांडेय--संलग्न सूची मे ७ वीं मांग श्रम कानून लिखा हुन्ना है। तो क्या माननीय मंत्री जी बतायेगे कि श्रम कानून के सम्बन्ध में मालिकों की तरफ़ से क्या मांग की गयी है?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य — वह तो एक लम्बी-सी चीज है, प्रगर श्रात श्राजा दें तो यहूं? लेकिन श्रम कानून के सम्बन्ध में मोटे तौर पर यह मांग की गशी हे कि इनमें इन प्रकार के परिवर्तन किये जायें कि जिससे मिलिंग के कारोबार को लाभ हो सके।

श्री मदन पांडेय—व्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेगे कि जो मांग मालिकों की है इस सम्बन्ध में वहां के श्रीमकों से भी जांच करेगे जिनका यह हहना है, जहां तक मेरी सूचना है, कि मालिक श्रम कानून के प्रनुसार जो सुविधा उन हो मिलनी चार्षिय वह नहीं देते ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--जब इस पर विचार किया जायमा तो जो श्रमिक लोग है उनके दृष्टिकोण पर भी विचार किया जायमा ।

\*७०-७२-श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी--[२४ मार्च, १६६० के लिये स्यिगत किये गये।]

#### कुदौरा, कुठौंद एवं रामपुरा विकास खंडों का व्यय

\*७३—-राजा वीरेन्द्र शाह—क्या सरकार कृष्या बतायेगी कि विकास लंड, कुबौरा, जिला जालीन में सन् १६५६ में क्या-क्या विकास हुये, कितना क्ष्या द्वा पड़ को दिया गया, उसमें से कितना किस-किस मद में खच हुया श्रीर कितना खर्च न हो यहा तथा किन कारणों से?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--वांछित सूचना संलग्न सूची (क) मं वी हुई है। (देखिये नत्थी 'घ' ग्रागे पृष्ठ २१६-२१= पर )

\*७४—-राजा वीरेन्द्रशाह—क्या सरकार कृपया बनायेगी कि विकास कर, कुठींव जिला जालीन में सन् १९५९ में क्या-क्या मुख्य विकास के कार्य हुये, कितना कराया द्वा खंड को दिया गया, उसमें से कितना इस क्षेत्र में लगा श्रीर कितना बच गया? जी काम नहीं लग सका वह किन कारणों से ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--वांछित सूचना संलग्न सूची (ख) में वी हुई है। (देखिये नत्थी 'ङ' श्रागे पृष्ठ २१६ पर)

\*७५--राजा वीरेन्द्रशाह--क्या सरकार कृपया बतायेगी कि विकास खंड रामपुरा, जिला जालीन में जब से यह खंड शुरू हुआ तब से १६५६ तक किनना काया म तूर हुआ, उसमें से किन कामों में कितना रुपया लगा और कितना बच गया, तथा क्यों?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--वांछित सूचना संलग्न सूची (ग) में दी हुई हैं (देखिये नत्थी 'च' ग्रागे पृष्ठ २२० पर)

श्रसरकारी प्रतिनिधियों, ग्राम एवं ब्लाक नेताश्रों के लिये प्रशिक्षण योजना

\*७६--श्री नारायणदत्त तिवारी--क्या सरकार के पास सामुदाधिक विकास प्रशासन तथा नियोजन विभाग, भारत सरकार की श्रोर से गैर-सरकारी प्रतिनिधियों तथा ग्राम एवं ब्लाक नेताश्रों श्रादि को प्रशिक्षण दिये जाने के सम्बन्ध में कोई योजना श्राई हं? यि हां, तो क्या सरकार उक्त योजना के मुख्य-मुख्य तथ्य सवन को बताने की कुवा करेगी?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--जी हां। तथ्यों के सम्बन्ध में सूचना संलग्न है। (देखिये नत्थी 'छ' ग्रागे पृष्ठ २२१-२२२ पर)

नोटः --तारांकित प्रश्न ६९ के उपरान्त प्रश्नोत्तर का समय समाप्त हो गा।

\*७७—-श्री नारायणदत्त तिवारी—क्या सरकार कृपया यह भी बतायेगी कि उक्त योजना को परिवालित करने हेतु वह क्या कार्यवाही कर रही है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--पोजना के अन्तर्गत जो उप-योजनाये है वे सभी भिन्न-भिन्न तिथियों से वालू की जा चुकी है। सूची देखे।

(देखिये नत्थी 'छ' ग्रागे पृष्ठ २२१-२२२ पर।)

#### घोसी-मझवारा सड़क पर बस सर्विस न होना

\*७८--श्री झारखंडेराय--क्या मन्त्री परिवहन कृपया बतायेगे कि घोसी से मझवारा (जिला ग्राजमगढ़) जाने वाली पक्की सड़क पर कब तक रोडवेज बस चलाने का सरकार का विचार है?

परिवहन मंत्री (डाक्टर सीताराम) -- यह प्रश्न विचाराधीन है।

\*७६--श्री रघुरनतेजबहादुर सिंह (जिला गोंडा) -- [हटा दिया गया।]

#### टीकरी में सट्टेबाजों की गिरफ्तारियां

\* दिंग को प्रांत की पंकर (जिला मेरठ) — क्या सरकार को ज्ञात है कि गत १२ जनवरी को मेरठ के एस० पी० ने टीकरी ग्राम में सट्टा खेलने के श्रारोप में गिरफ्तारी कर के श्रीर गिरफ्तार व्यक्तियों के मुंह काले करके पहले तो उन्हें गथों पर चढ़ाकर जलूस निकाला, फिर सरेग्राम जूतों श्रीर बेतों से पीटा?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द-- गत १२ जनवरी को टीकरी ग्राम में सट्टा खेलने के श्रारोप में गिरफ्तारियां अवस्य हुईं, किन्तु लगाए गए श्रारोपों मे कोई तथ्य नहीं है।

\*=१--श्राचार्य दीपंकर--प्रदि हां, तो पूर्वोक्त पुलिस प्रधिकारी के विरुद्ध सरकार क्या कार्यवाही कर रही है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--प्रश्न नहीं उठता।

## हरदोई व बाजपुर चीनी मिलों की रिकवरी

\* द२--श्री मोहनलाल वर्मा (जिला हरदोई) -- क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि सीजन १६५६-६० में प्रदेश की चलने वाली गन्ने की मिलों को सेस में कितनी छूट किस ग्राधार पर दी गई?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--कुछ नहीं।

\*द३--श्री मोहनलाल वर्मा--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि १६५६-६० में प्रवेश में गन्ने की मिलों में नवम्बर, दिसम्बर, जनवरी तथा फरवरी में शुगर की recovery क्या रही तथा लक्ष्मी शुगर मिल, हरदोई की recovery ग्रौर बाजपुर Co-operative Factory की recovery उपरोक्त महीनों में श्रलग-श्रलग क्या रही?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--वर्तमान सीजन में इस प्रदेश में नवम्बर, दिसम्बर, जनवरी तथा फरवरी (७-२-६० तक) में चीनी मिलों की साम्हिक शुगर की रिकवरी तथा हरदोई व बाजपुर चीनी मिल की उक्त महीनों में जो रिकवरी रही, उसका विवरण संलग्न तालिका में दिया हुआ है।

(बेखिये नत्थी 'ज' म्रागे पृष्ठ २२३ पर।)

#### भटनी छाया क्षेत्र

\*=४-श्री दीपनारायणमणि त्रिपाठी (जिला देशिया) स्था सरकार बताने की कृपा करेगी कि देवरिया जिले में भटनी छाया क्षेत्र जो सन १६५६ में प्रभाव क्षेत्र घोषित होने वाला था, उसे प्रभाढ़ क्षेत्र बनाना क्यों स्थिगित कर दिश गया, उस छाया क्षेत्र को श्रव किस वर्ष में प्रभाढ़ क्षेत्र घोषित किया जायगा तथा प्रथम सोगान में यव परिणन होगा?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द— वेश भर में सामवाधिक विकास योजना धीमी हो जाने (staggering) तथा ब्लाकों को खोलने के नियमों में परिवर्तन हो जाने से कारण, देवरिया जिले के भटनी छाया क्षेत्र को पूर्व-प्रगाढ़ क्षेत्र (pre-extension block) धीपत करना प्रभी संभव नहीं हो पाया है। इस समय यह बतनाना भा संभव नहीं हो कि उपरोक्त क्षेत्र कब पूर्व-प्रगाढ़ क्षेत्र घोषित किया जा सकेगा प्रथवा प्रथम भोगान में यह कब परिवर्तित होगा।

#### झांसी-माताटीला बस सींवस

\*द४--श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी--क्या गरकार यह बनाने की कृषा करेगी किझांसी जिले में झांसी से (सुकुवां-ढुकुवां,विधी, हसार होंकर) माताटीना को नये व्यक्तिगत, कितनी बसें (लारियां) चलती है श्रीर उनके चलने का प्रतिदिन का ममय नया है?

डाक्टर सीताराम—सांसी से माताटीला, मुकुयां, ढक्या, विधी, हमार हाकर चार गाड़ियां चलती है। इस मार्ग की तथा झांसी माताटीला वाया बरीरा मार्ग की सम्मिलित समय-सारिणी है जो संलग्न है।

#### (देखिये नत्थी 'झ' ग्रागे पुष्ठ २२४ पर)

\*द६-श्री देवकीनन्दन विभव (जिला ग्रागरा)--[ग्राठये खुपयार के नियं प्रक्त १६ के ग्रन्तर्गत स्थानान्तरित किया गया ।]

\*८७-८८-श्री त्रिलोकोसिंह (जिला लखनऊ)-- ।२२ मानं, १८६० के प्रदन ८३-८४ के प्रन्तर्गत स्थानान्तरित किये गये।

# फरेंदा तहसील में भारी उद्योग चालू करने की प्रार्थना

\*दश्-श्री गौरीराम गुप्त-क्या सरकार कृपा कर बतायंगी कि प्रवनकर्ता ने दिनांक १६ दिसम्बर, ४८ को उद्योग मन्त्री को गोरखपुर जिले की फरेदा तहमील में किसी बड़े उद्योग के लिये, कारखाना खोजने के लिये पत्र दिया था? यदि हा, तो उस पर ग्रव तक क्या कार्यवाही की गयी?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--वहाँ किसी बड़े उद्योग के खुलने की व्यवस्था नहीं हो मकी। \*६०-६२--श्री राजनारायण--[२४ मार्च, १६६० के लिये स्थागत किये गये।]

सचिवालय में तीन वर्ष से भ्रधिक कार्य करने वाले सेक्रेटरीज तथा डिप्टी सेक्रेटरीज

\*६३--श्री भुवनेशभूषण शर्मा--क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि सरकारी सिचवालय में कितने सेकेटरीज तथा डिप्टी सेकेटरीज ऐसे हैं जिन्हें तीन साल से श्राधक समय सिचवालय में कार्य करते हो गया है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द-- ऐसे सेकेटरीज तथा डिप्टी सेकेटरीज की संख्या क्रमश ६ व १३ है।

प्रश्नोत्तर १३३

#### बरेली रोडवेज क्षेत्र के कुछ कर्मचारियों को टी० ए० न मिलना

\*१४--श्री हरदयाल सिंह (जिला शाहजहांपुर)-- क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि क्या गवर्न मेंट रोडवेज रीजन, बरेली के कर्मचारियों को सितम्बर, सन् १६४६ से अब तक टो० ए० का भुगतान नहीं हुआ है ?

डाक्टर सीताराम — यह कहना ठीक नहीं है कि बरेली क्षेत्र के कर्मचारियों के टो॰ ए॰ का भुगतान सितम्बर, १६५६ से अब तक नहीं हुआ है। वास्तव में कुछ टो॰ ए॰ बिल्स जो जनरल मैनेजर, बरेली के कार्यालय में दिसम्बर, १६५६ व जनवरी, १६६० में प्राप्त हुये थे उनके भुगतान में कुछ विलम्ब हुआ।

\*६५--श्री हरदयाल सिंह--यदि हां. तो भुगतान न होने के कारण क्या है?

डाक्टर सीताराम--बजट में धनराशि की कमी के कारण।

## बस्ती जिले के पुराने पुलिस श्रधिकारी

\*६६--श्री कन्हैयालाल वाल्मीकी (जिला हरदोई)--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि बस्ती जिले में पुलिस के ऐसे कितने उच्चाधिकारी है जो वहां तीन वर्ष से ग्रिधिक से कार्य कर रहे है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--क्रेवल एक।

#### गोला तथा हरगांव चीनी मिलों के गन्दे पानी के प्रबन्ध के लिये एफलुयेंट बोर्ड की स्थापना

\*६७--श्री बंशीधर शुक्ल (जिला खीरी)-- क्या सरकार कृपया बतायेगी कि सीतापुर जिले के गोन नदी श्रौर लखीमपुर जिले की सरायन नदी, दोनों में गोला तथा हरगांव के मिलों का जो गन्दा पानी बहता है सरकार ने इस मामले में क्या कदम उठाया है श्रौर उसमें कहां तक प्रगति हुई?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--कारखानों के गन्दे पानी के व्ययन के प्रबन्ध के संबंध में सरकार ने एफलुयेन्ट बोर्ड की स्थापना की है। यह वोर्ड गन्दे पानी के व्ययन सम्बन्धी मानचित्र, व जांच रिपोर्ट (analysis report) कारखानों से प्राप्त करता है ग्रौर नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करता है।

कथित मिलों के मामलों में जो कार्यवाही हुई है उसका विवरण संलग्न तालिका में दिया गया है ।

## (देखिये नत्थी 'ङा' स्रागे पृष्ठ २२५ पर)

\*৪८--श्री श्रनन्तराम वर्मा (जिला श्रलीगढ़)--[छठ शुक्रवार के लिये प्रश्न ११४ के श्रन्तर्गत स्थानान्तरित किया गया।]

# म्रलीगढ़ बस स्टेशन के खजाने की सुरक्षा के लिये पुलिस बुलाना

\*६६--श्री श्रनन्तराम वर्मा--क्या बस के श्रधिकारियों ने उक्त घटना के पश्चात् ग्रपने खजाने की सुरक्षा के लिये स्थानीय पुलिस से कोई गारद मांगी है? यदि हां, तो क्या उस दिन किसी गिरोह द्वारा उसके खजाने लूटे जाने की कोई श्राशंका की सूचना थी?

डाक्टर सीताराम—सुरक्षा के लिये सशस्त्र पुलिस की नियुक्ति के लिये पुलिस ग्रियकारियों से श्रनुरोध किया गया था। किसी गिरोह द्वारा रोडवेज के खजाने की लूटे जाने की कोई श्राशंका या सूचना नहीं थी।

# बुलन्दशहर के मैजिस्ट्रेट से स्पष्टीकरण की मांग

\*१००-श्री कल्याणचन्द मोहिले (जिला इलाहाबाद)--प्या सरकार को पता है कि इलाहाबाद हाई कोर्ट के माननीय न्यायाधीश ने ग्रपने ५ फरवरी १६६० के फेसले को जो बुलन्दशहर के मैजिस्ट्रेट के विरुद्ध था सरकार के पास मेजिस्ट्रेट के विरुद्ध पायंगाही बरने के लिये भेजा है? यदि हां, तो सरकार ने उस पर क्या कायंवाही की?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द — उक्त मैजिन्ट्रेट के विश्व हाई कोटं का १ फरवरी, १६६० का एक फैसला सरकार को प्राप्त हुआ हो, जिसके आधार पर मैं निन्ट्रेट का जवाब तलब किया गया है।

\*१०१--श्री रामलखन मिश्र (जिला बस्ती)---[२४ माच, १६६० के लिये स्थिगत किया गया।]

मोतीलाल नेहरू पार्क, इलाहाबाद में मालवीय जी की मूर्ति स्थापित करने की मांग

\*१०२—श्री कल्याणचन्द मोहिले—दिनाक ११ फरवरी, १६५० क नाराकित प्रक्ष संख्या ८१ के उत्तर के संदर्भ में क्या सरकार कृपया बतायेगी कि क्या उस के पास भिन्न-भिन्न जिलों से राष्ट्रीय नेताश्रों की मूर्ति रखने के लिये माग श्राई ह ? यदि हा, तो किन-किन जिलों से श्रीर किन-किन मूर्तियों की स्थापना के लिये?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—मांगी गई सूचना संलग्न सूची में नेगी जा गणती है। (देखिये नत्थी 'ट' ग्रागे पृष्ठ २२६ पर ।)

\*१०३—श्री कल्याणचन्द्र मोहिले—क्या सरकार के पास इलाहाबाद में महामना मालवीय जी की मूर्ति रखने के लिये मालवीय स्मारक निष्य ने कोई लिखा पढ़ी की है ? यदि हां, तो क्या?

डाक्टर सम्पूर्णानन्व—जी हां। उसमे यह प्रस्ताव किया गया था कि इलाहाबाद के एत्फ़्रेंड पार्क जिसका नाम श्रव मोतीलाल नेहरू पार्क हो गया है, में महामना पंडित मदन मोहन मालवीय की मूर्ति स्थापित की जाय।

विरनो थाने पर रोडवेज बुकिंग म्राफिस न होना, म्राजमगढ़ क्षेत्र में बस कण्डक्टरी के प्रार्थी

\*१०४—श्री यमुनासिंह (जिला गाजीपुर)—क्या सरकार गाजीपर जिले के विरती (थाने) पर रोडवेज बुकिंग ग्राफिस खोलने के प्रश्न पर शीध विचार करने की कृपा करेगी? यदि हां, तो कब तक?

डाक्टर सीताराम--यहां ग्रभी बुकिंग ग्राफिस खोलने का विचार मही है।

\*१०५--श्री यमुना सिंह--वया सरकार बताने की कृपा करंगी कि इस समय स्राजमगढ़ रीजन में बस कंडक्टरी पाने के लिये कितने प्रार्थना-पत्र बेटिंग लिस्ट में हैं?

डाक्टर सीताराम—शावश्यक सूचना एकत्रित की जा रही है। सीतापुर—हरदोई सड़क पर बस सीवस की ग्रावश्यकता

\*१०६—श्री मूलचन्द (जिला सीतापुर)—मंत्री परिवहन बताने की हुन करेगे कि नया सी नापुर से हरदोई जाने वाली सड़क पर सरकार सरकारी बसों के खलाने का विचार रखती है ? यदि हां, तो कब तक श्रीर यदि नहीं, तो क्यों ?

डाक्टर सीताराम—-ग्रगले वित्तीय वर्ष में इस मार्ग के राष्ट्रीयकरण का कोई प्रस्ताव नहीं है।

## श्रम निरीक्षकों के रिक्त स्थान

\*१०७--श्री रामदीन (जिला मैनपुरी)--क्या मुख्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि प्रदेश में लेबर इन्स्पेक्टरों की कितनी जगह खाली हैं?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--पांच।

\*१०८—श्री रामदीन—क्या मुख्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि इस समय प्रदेश में कितने लेबर इन्स्पेक्टर हैं, तथा उनमें कितने हरिजन हैं?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--- ५४ इन्सपेक्टर हैं। इनमें तीन हरिजन हैं।

\*१०६--श्री रामदीन--क्या मुख्य मंत्री यह बताने की फुपा करेंगे कि जो जगहें खाली हैं उनको क्यों नहीं भरा गया है?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—खाली जगहें विभागीय पदोन्नति के लिये सुरक्षित हैं। उन्हें भरने के जिये कार्यवाही हो रही है और पदोन्तित किये जाने दाले द्यक्षियों की चरित्र पंजियां लोक सेवा ग्रायोग के विचाराधीन हैं।

# टेक्निकल इंस्टीट्यूट्स खोलने की योजना

\*११०—श्री चन्द्रजीत यादव—सरकार यह बताने की क्रुग करेगी कि क्या राज्य सरकार ने केंद्रीय सरकार तथा नियोजन आयोग के पास प्रदेश में कुछ टेक्निकल इन्स्टी-ट्यूट्स खोलने का प्रस्ताव भेजा है? यदि हां, तो क्या उस प्रस्ताव की एक प्रति सरकार सदन की मेज पर रखने की क्रुपा करेगी?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—जी नहीं। प्रश्न ही नहीं उठता। इस संबंध में माननीय सदस्य को यह सूचित करना है कि केंद्रीय सरकार तथा नियोजन भ्रायोग की सहमित से प्रांतीय सरकार बरेली, झांसी, कानपुर, फैजाबाद तथा मिर्जापुर में सिविल, इलेक्ट्रिकल तथा मैकेनिकल इंजीनियीरंग की नेशनल सार्टिफिकेट कोर्स में प्रशिक्षण देने के लिये इन्स्टीट्यूट्स खोलने का निश्चय कर चुकी है।

# रीजनल ट्रांसपोर्ट भ्राफिस, लखनऊ के गजटेड भ्राफिसर्स

\*१११—श्री शिवप्रसाद नागर—क्या सरकार बताने की क्रुपा करेगी कि रीजनल मोटर ट्रांसपोर्ट श्राफिस, चारबाग रोड, लखनऊ में कितने गजटेड श्राफिसर्स हैं श्रीर उनमें से कितने ऐसे हैं कि जिन्हें इस समय तक रीजनल श्राफिस, लखनऊ में कार्य करते तीन वर्ष पूरे हो चुके हैं?

डाक्टर सीताराम—रीजनल ट्रांसपोर्ट श्राफिस, लखनऊ में ३ गजटेड श्राफिसर्स हैं। इनमें से केवल एक ऐसा है जिसको श्रपनी वर्तमान जगह पर काम करते ३ वर्ष पूरे हो चुके हैं।

#### प्रशिक्षित ग्राम सेवक

\*११२—श्रीमती सरस्वतीदेवी शुक्ल (जिला गोंडा)—क्या मुख्य मंत्री कुरया बतायेंगे कि सन् १६४७-४८ ई० में प्रशिक्षित ग्राम सेवक जो बी० एवं सी० श्रेणी में उत्तीर्ण हुये थे, उनको भ्रभी तक नियुक्त नहीं किया गया ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—१९५७-५८ में प्रशिक्षित "ल" श्रेणी के केवल १९० तथा "ग" श्रेणी के, परिगणित जाति के प्रशिक्षितों को छोड़ कर शेष ७६ प्रशिक्षितों को ग्रभी तक ग्राम सेवक पद पर नियुक्त नहीं किया जा सका है। उक्त"ख" श्रेणी के १९० प्रशिक्षित दूसरे विभागों में नियुक्त हैं। "ग" श्रेणी के समस्त परिगणित जाति के प्रशिक्षितों की नियुक्ति कर दी गई है। \*११३--श्रीमती सरस्वतीदेवी शुक्ल--क्या यह सटी ह रि १६५८-५६ में उत्तीर्ग ए श्रेगी के ग्राम सेवकों को नियुक्त किया गया ह ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--जी हां।

#### रोडवेज में लिये जाने वाले मार्ग

\*११४—श्रीमती सरस्वतीदेवी शुक्ल—अया मनी परिकास राजशीय रोडवेज के लिये वित्तीय वर्ष १६६०—६१ में विचाराधीन मागी की सूनी सदस की मेज पर स्वतं की कुरा करेगे?

डाक्टर सीताराम—वांछित सूचना सबन की मेत्र पर रण की की है। (देखिये नत्थी 'ठ' ग्रापे पृष्ठ २२७-२२८ पर ।) प्रान्तीय रक्षक दल के ग्रस्थायी कर्मचारी

\*११५—श्री गौरीशंकर राय—क्या मुख्य मंत्री कृत्या बतायेने कि क्या यह सत्य है कि प्रांतीय रक्षा दल में कार्य करते वाले पिछले १२ मान में शामकीय मना में रहते हुए स्राज भी स्रस्थायी हैं?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--जी नहीं। ११६ कर्ममारी १ श्रप्रेग्न, १६५५ में स्थायी किये जा चुके हैं।

\*११६—श्री गौरीशंकर राय—क्या यह भी सत्य है कि प्रातीय रक्षक वल के कर्मचारियों के संबंध में यह परम्परा है कि प्रति वर्ष २१ मार्च को उनकी सेवाय समात कर दी जाती हैं और १ अप्रैल को पुनः चालू की जाती हैं?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द-जी नहीं।

## कानपुर-कालपी सड़क पर बस दुर्घटना

\*११७—कुंवर श्रीपालींसह (जिला जौनपुर)—क्या सरकार बताने की कृषा करेगी कि ६ फरवरी, १६६० को कानपुर-कालपी रोड पर कानपुर से १५ मील दूर पर जो रोड वेज बस दुर्घटना हुई, उसका कारण क्या या तथा उसमें कितने क्यक्ति हताहत हुये ?

डाक्टर सीताराम—६ फरवरी, १६६० को रोडवेज बस मंक्या यू० पी० ग्रार० ११६/५३६७ घाटमपुर होती हुई पुखरायां जा रही थी। जब यह बस कथरवा के निकट पहुंची, जो कानपुर से लगभग १६ मील की दूरी पर है, सामने से ग्राती हुई दूरारी रोष वेज बस से टकरा गई। दुर्घटना का कारण यह था कि एक ट्रक रोडवेज बस के ग्रागे बहुत धूल उड़ाती जा रही थी। इसके ग्रातिरिक्त कुछ बैलगाड़ियां भी ग्रागे जा रही थीं। बस के चालक ने बैलगाड़ियों को बचाने का प्रयत्न किया परन्तु उड़ती घूल में उसे सामने से ग्राती हुई दूसरी बस दूर से दिखाई नहीं पड़ी। दूसरी बस बहुत निकट ग्राने पर दिखलाई पड़ी ग्रीर तब टक्कर से रोकना ग्रसम्भव हो गया। इस दुर्घटना में २६ यात्री घायल हुए।

# सीमेंट का नया कारखाना न खुलना

\*११८—श्री चन्द्रजीत यादव—सरकार यह बताने की छपा करेगी कि क्या राज्य में सार्वजनिक क्षेत्र में कोई श्रौर सीमेंट का कारखाना खोलने पर सरकार विचार कर रही है? यदि हां, तो कब तक, कितनी लागत से श्रौर कहां?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द-जी नहीं।

\*११६-श्री मन्नालाल (जिला खीरी)--[छठें शुक्रवार के लिये प्रक्ष १२१ कें प्रन्तर्गत स्थानान्तरित किया गया]

# \*१२०-१२१--श्री जगदीशशरण ग्रग्नवाल (जिला बरेली)--[स्थिगत किये गये।] ऋशरों पर गन्ने का मूल्य निर्धारण करने की प्रार्थना

\*१२२—श्री रामदास श्रार्य (जिला मुजफ्फरनगर)—क्या सरकार को ज्ञात है कि प्रदेश में कशरों पर किसानों का गन्ना मिल में दिये जाने वाले गन्ने के भाव से कम दर पर तथा भिन्न-भिन्न दरों पर लिया जा रहा है ? क्या सरकार कशरों पर लिये जाने वाले गन्ने का भाव निश्चित कराने का विचार रखती है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—(क) क्वारों पर स्थानीय ग्राव्यकतानुसार गन्ना खरीदा जाता है। कहीं गन्ने का भाव मिल में दिये जाने वाले गन्ने के भाव से कम ग्रीर कहीं ग्रधिक होता है।

#### (ख) जी नहीं।

\*१२३-१२४--श्री रामदास श्रार्य--[२४ मार्च, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।]

\*१२५—श्री दीपनारायणमणि त्रिपाठी—[२४ मार्च, १६६० के लिये स्थिगत किया गया।]

\*१२६-१२८--श्री हरकेशबहादुर (जिला प्रतापगढ़)---[२४ मार्च, १६६० के लिये स्थिगित किये गये।]

\*१२६--श्री रामदीन--[२४ मार्च, १६६० के लिये स्थगित किया गया।] सुजानगंज बस स्टेशन के निर्माण का ग्रायोजन

\*१३०—श्री नागेश्वरप्रसाद (जिला जौनपुर)—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि सुजानगंज (जौनपुर) का बस स्टेशन कब तक बन जायेगा? श्रब तक इस दिशा में क्या प्रगति हुई है?

डाक्टर सीताराम—बस स्टेशन ग्रगले वित्तीय वर्ष में बन जायगा। इसके लिये भूमि ली जा चुकी है ग्रौर निर्माण-कार्य के लिये ८,००० रुपये की स्वीकृति दे दी गई है।

#### यूसुफपुर-कासिमाबाद बस-सर्विस, गाजीपुर बस-स्टेशन पर मुसाफिरखाना बनाने की योजना

\*१३१—श्री रघुवीर राम (जिला गाजीपुर)—क्या मंत्री परिवहन बताने की कृपा करेंगे कि जिला गाजीपुर में कस्बा युसुफपुर से जो सड़क गांव गंगवली कासिमाबाद, बहादुर गंज होती हुई मऊ को जाती है उस पर बस कब से चल रही है श्रीर किस स्थान से किस स्थान तक?

डाक्टर सीताराम—इस सड़क पर केवल यूसुफपुर से कासिमाबाद तक रोडवेज की बसें दिनांक २१ श्रक्तूबर, १६५६ से चल रही हैं।

\*१३२—श्री रघुवीरराम—क्या मंत्री परिवहन बताने की कृपा करेगे कि उपरोक्त सड़क पर किन-किन स्थानों पर बस-स्टेशन बनाने की योजना है ?

डाक्टर सीताराम-ऐसी कोई योजना इस समय विचाराधीन नहीं है।

\*१३३—श्री रघुवीरराम—क्या मंत्री परिवहन बताने की कृपा करेंगे कि क्या सरकार गाजीपुर बस स्टेशनों में यात्रियों के लिये मुसाफिरखाना बनवाने की योजना पर विचार करेंगी? यवि हां, तो कब तक? डाक्टर सीताराम—जी हा, श्राता ही जाती ह कि १६५०-६१ में निर्माण-कार्य स्नारम्भ हो जायगा।

तिकया में रोडवेज बुिंकग श्राफिस खोलने की योजना

\*१३४—श्री भगवतीसिंह विशारद (जिला उन्नाय)—मनी परिग्रहन यह बताने की कृपा करेंगे कि क्या उन्नाय जिले के निक्या नाम मन्थान पर जो उन्नाव मार्ग पर पड़ता है, रोडवेज का बुकिंग स्नाफिस स्थापित करने की मार्ग क्षानीय जनता की स्नोर से गत वर्षों से स्ना रही है?

डाक्टर सीताराम-जी हां।

\*१३५—श्री भगवतीसिंह विशारद—याद हा, ता मती परिश्रहण यह भी बताने की कृपा करेंगे कि इस संबंध में विभाग की श्रोर से गया कार्यश्राही की गयी है?

डाक्टर सीताराम-बुकिंग श्राफिस योजने का प्रक्न विचाराधीन है।

\*१३६—श्री काशीप्रसाद पांडेय (जिला सुल्तानगर)— श्राठवं वधवार के लिये प्रश्न २६ के अन्तर्गत स्थानान्तरित किया गया।

बुनकर एसोसिएशन, जिला बुलन्दशहर का रिवेट

\*१३७—-श्री हिम्मत सिंह (जिला बुलन्दशहर)—वया गरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जिला बुलन्दशहर में बुनकर एसोसिएशन का रिबंट कब म बाकी है ग्रौर कितना बाकी है तथा श्रब तक क्यो नहीं दिया गया?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—जिला बुलन्दशहर के बुनकर एसोसिएशन कं नाम से कोई रिबेट की दरस्वास्त संचालक, उद्योग विभाग को प्राप्त नहीं हुई ह। प्रत रिबेट बंटने, बाकी होने अथवा अब तक न दिये जाने का प्रक्त नहीं उठता।

## श्रतारांकित प्रक्न

१—श्री उल्फर्तासह (जिला बदायूं)—[२४ माचं, १६५० के लिये स्थिगत किया गया।]

# प्रक्नोतर के सम्बन्ध में श्रापतियां

श्री दीपनारायणमणि त्रिपाठी (जिला देवरिया)—श्रीमान्, मेरा कहना यह है कि श्रापकी कृपा दृष्टि शुक्र श्रीर शनि की तरह से एक पक्ष की श्रीर ही पड़ती है, इस पक्ष की तरक नहीं पड़ती है। में जानना चाहता हूं कि मेरे बार-बार उठने पर भी मुझे समय नहीं मिला तो इसके लिये क्या व्यवस्था होगी?

श्री श्रिधिष्ठाता—माननीय सदस्य जानते है कि इतना बड़ा हाउस है श्रोर इतने माननीय सदस्य बैठे हुये है, तो जिधरमेरी निगाह चली गई उसको मेने बुला लिया। इसके लिये हार्ड एन्ड फास्ट रूल्स भी नहीं है। लिहाजा यह कहना कि मेरी श्रोर शुक्र श्रोर शनि की दृष्टि उधर ही पड़ती है, गलत है।

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)—माननीय श्रिषिष्ठाता महोदय, इस पर व्यवस्था देने की कृपा करें कि क्या कोई माननीय सदस्य चेयर से यह कह सकते हैं कि शुक्र और शनि की वृष्टि उधर नहीं पड़ती है ?

श्री ग्रिधिष्ठाता--कह सकते है।

श्री राजनारायण (जिला वाराणसी)—श्रीमन्, प्रक्त २७ से २६ तक वेले जायं प्रक्त यह है कि—"क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि गोरलपुर, देवरिया तथा।

ग्राजमगढ़ जिलों के नियोजन विभाग में कुल कितने ग्रधिकारी तथा कर्मचारी ऐसे हैं जो एक ही स्थान पर तीन वर्षों से ज्यादा से पड़े है ?" इसका उत्तर सरकार ने दे दिया कि ३०४, ग्रब इस पर जो हमारी समझ में वैलिड सप्लीमेंटरी हो सकता था वह यह कि इतने समय तक क्यों रखा गया ?

श्री ग्रधिष्ठाता--उन्होंने इसका जवाब तो दे दिया ।

श्री राजनारायण—नहीं दिया, ग्रगर उन्होंने जवाब दिया है तो कृपया बतला दें, हम ग्रपने को संशोधित कर लेंगे ।

नियोजन उप-मंत्री (श्री सुल्तान श्रालम खां) — मैंने उसी वक्त इसका जवाब दे दिया था। मैंने कहा कि जो बी० डी० ग्रोज (गजटेड ग्रिधिकारी) होते है उनके लिये तय किया गया है कि स्टेट वन ग्रौर दू के जो ब्लाक हो गये है उनमें उनको तीन साल रखते है ग्रौर खास सूरतों में ज्यादा बढ़ा सकते है ग्रौर चूंकि उसने श्रच्छा काम किया था इसलिये लोकल ग्रफसरान ने सिफारिश की थी कि उनको वहां कुछ दिन ग्रौर रखा जाय। यह मै कह चुका हूं।

श्री राजनारायण—दूसरी बात प्रश्नों के बारे में यह थी कि ऊदल जी के प्रश्न में था कि स्रिभिनवीकरण हुन्ना या नहीं। सरकार कहती है कि १६ प्रतिशत स्रिभिनवीकरण कर दिया है तो हुनिया कहेगी कि उत्तर प्रदेश की सरकार ने बड़ा श्रच्छा काम किया है; लेकिन केवल वर्तमान स्रिभिनवीकरण से छटनी से ही उसका संबंध है। इससे जनता में श्रम होगा। इसमें चार चीजें श्रातो हैं, मैन, मनी, मैंशिरियत श्रीर मैंनेजनेंट (मजदूर, पूंजो, मशीन, श्रौर प्रबन्ध) श्रादि। मेरा प्रश्न यह है कि जब प्रश्न किया गया तो श्रापने एक भी सप्लीमेंटरी हमें नहीं करने दिया कि श्रभिनवीकरण की कौन सी योजना लागू हुई? क्या मजदूरों की छटनी करना ही श्रभिनवीकरण है? मैं कहता हूं कि प्रश्नों के ऐसे उत्तरों से श्रम पैदा होता है। इसलिये मेरी प्रार्थना है कि प्रश्नों के उत्तर ऐसे होने चाहिये जिससे जनता में श्रम न हो।

श्री श्रिधिष्ठाता—प्रश्नों के उत्तर के बारे में कई दक्षा माननीय श्रध्यक्ष ने यह साफसाफ कहा है कि प्रश्नों के जो उत्तर हों उसके लिये किसी माननीय मंत्री जी को मजबूर
नहीं किया जा सकता कि उसी प्रकार से वह उत्तर दें जिस प्रकार से माननीय सदस्य चाहते
है। माननीय सदस्य श्रगर नियमों को पढ़ें तो देखेंगे कि श्रगर माननीय सदस्य जवाब से
श्रसंतुष्ट है तो उसके लिए श्राध घंटे का समय बहस के लिए मांग सकते है। यह श्रध्यक्ष
को श्रधिकार है कि वह किसी श्रनुपुरक प्रश्न की श्राज्ञा दें या न दें। श्रध्यक्ष की किटनाई को भी
श्राप सोचेंगे। श्राज १४२ से भी ज्यादा प्रश्न श्रजेंडा पर एनलिस्टेड है श्रौर जिन प्रश्नों का
उत्तर सदन में नहीं दिया जा सकता उन पर श्रनुपूरक प्रश्न नहीं हो पाते श्रौर वे यों ही कार्यवाही में छप जाते है। उसके लिए भी श्रध्यक्ष का ध्यान रहता है। मैने इस बात की को शिश्च को कि जो सचमुच में महत्वपूर्ण प्रश्न है उन पर जहां तक हो सका मैने समय दिया।
सम्भव है कि माननीय राजनारायण जी किसी प्रश्न के बारे में संतुष्ट न हों तो वह श्राघे घंटे
का समय बहस के लिए मांग लें, जिस पर विचार किया जायगा श्रौर यदि नियमपूर्वक
हुश्रा तो उसके लिए इजाजत हो जायगी श्रौर माननीय सदस्य को संतोष हो जायगा।

श्री रामसुन्दर पांडेय (जिला ग्राजमगढ़)—मै यह जानना चाहता हूं कि मेरा ग्रत्मसूचित सवाल स्वीकृत किया गया था ग्रौर ६ तारीख निर्धारित की गयी थी कि इसकी सूचना सदन में दे दी जाय। माल मंत्री ने १०के लिए मुकर्रर किया। १० तारीख भी खत्म हो गयी। क्या उसकी सूचना सदन को मिलेगी या नहीं, इसकी जानकारी जाटना हं ?

श्री राजनारायण--वनारम मी १।

न्याय मंत्री (श्री हुगुर्मासह विसेन)-- ग्राजमन क आर म म जरु प्रजं

एक सदस्य--किन-किन जिलो मे गर्रे थं ।

श्री ग्रिधिष्ठाता---कल पूछ लीजियेगा ।

श्री राजनारायण--जनारस की लबर मंग्या ता

श्री शिवप्रसाद नागर (जिला गारी) )——गाँ आ मा मा मा प्राप्त कर्म में यह कहना चाहता हूं कि १८ फरवरो, १६६० का मन एक कार्ना कर्मात प्रश्न प्रश्न दिया। उसके बाद फिर मने २४—२—६० का प्रश्न क्रिया क्रिया। जिक्न किमी भी प्रत्यम् । कि कार्य का उत्तर नहीं ग्राया। कोई कारे का प्रश्न नहीं है। के कार्य कार्य के कार्य में सम्बन्धित है। मामूली सो बात हे जिसको देखीकोन से मगाया जागर गर्म कि का प्रत्य नहीं मिला। जब हम एतराज करते ह तो जय द मिनना है कि अपार कर्म के प्रश्नित ताराकित प्रश्न करे या न करे ग्रीर ग्रापर हम करे तो हमें समय से उत्तर विवा कार्य

श्री श्रिधिष्ठाता—जहां तक इसका सम्बन्ध है, हम माननीय गर्ना में। मान नहीं कर सकते हैं कि उसका जवाब दे। जवाब देना चाहों तो देने, नहीं नेत का ना नहीं देन। श्रमको जानकारी हासिल करनी है तो विधान सभा के सीचय में मान हिन्दी है। सन् करनी है तो विधान सभा के सीचय में मान हिन्दी है। सन् करनी है

श्री बंशीधर शुक्ल (जिला खीरी)—यह तो उत्तर दे दे कि हम उत्तर नहीं देगे। श्री अधिष्ठाता—यह ग्राप सचिव से पूछ ले।

# कार्य-स्थगन प्रस्तावों के सम्बन्ध में सूचनायें

श्री श्रिधिष्ठाता—-तीन कार्य-स्थमन प्रस्ताय मेरे पास श्रामे हार है। ये नीनो न तो श्रजेंट है न पब्लिक इम्पार्टेस के है, इस व स्ते मेने श्रस्वीकार कर दिये है।

श्री हरदयाल सिंह (जिला शाहजहांपुर)—बता दिया जाय कि क्या क्या है। श्री श्रिधिकाता—नहीं।

श्री बंशीधर शुक्ल (जिला खीरी)--मुख्य-मुख्य बाते बता दीजिये।

श्री स्रिधिष्ठाता--ग्राय कृपया बैठ जायं । वै प्रकाश नहीं डालूंगा । मंने कहा ह कि मैंने स्रह्मीकार कर दिया है ।

श्री बंशीधर शुक्ल-म्यों ग्रस्वीकार कर दिया है ?

श्री श्रिधिष्ठाता—वह यूनिर्वासटी के इंटर्नल मैटर में बारे में श्रापका कार्य-स्थान प्राताव है। उससे गवर्तमेट से कोई वास्ता नहीं है। इस वास्ते मैने श्रस्वीकार कर दिया।

श्री हरदयाल सिंह--जरा इसी प्रकार से मेरा प्रस्ताव भी पढ़ दीजिये।

श्री ग्रिधिष्ठाता—ग्रागर माननीय सदस्य इस प्रकार से व्यवहार करेंगे तो मुझे बाध्य होकर के कार्यवाही करनी पड़ेगी। उनका प्रस्ताव मैने इस वास्ते थोड़ा-सा बता दिया कि वह थोड़ा महाय पा था।

## नियम ५२ के अन्तर्गत ध्यान श्राकर्षणार्थ विषयों के सम्बन्ध में सूचना

श्री श्रिधिष्ठात(——नियम ५२ के अन्दर ये ५ प्रश्न मेरे पास श्राये हुए थे स्वीकृति के लिए जिसमें एक प्रश्न जो है यह कई माननीय सदस्यों के दस्तखत से श्राया हुश्रा है। लेकिन वह यूनिविसिटी से सम्बन्ध रखता है, उसके इंटर्नल जैटर से, जो उसके कैम्पस के श्रन्दर बातें हो रही है उसते उसका सण्यन्य है। सरकार से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है, इसलिए मैने उसको भी श्रश्नीकार कर दिया है और बाकी बार को तो मैने श्रस्कीकार कर ही दिया था।

श्री राजनाराध्य (तिला नारायसी)—एक व्यवस्था का प्रश्न इस सम्बन्ध में है कि कार्य-स्थान प्रस्तान के सम्बन्ध में तो ग्राम यह कह सकते हैं कि कार्य-स्थान इस सम्बन्ध में नहीं होगा। मगर क्या इस प्रदेश में कोई भी घटना घटे चाहे वह किसी विश्व-विद्यालय के ग्रन्तर्गत हो या किसी श्रन्य तंस्था के ग्रन्तर्गत हो, ग्राम उसकी जानकारी यह सदन चाहता है तो तरकार मेरी समझ से बाध्य होती हैं कि उसकी जानकारी कराये ग्रोम माननीय ग्रम्यक्ष महोदय ने यहां पर यह बात कहीं थो। इसी सदन में एक म्युनिसिवैलिटी की बात ग्रायो थी। सरकार ने कह दिया कि वह स्यायत्त शासन की बात है, सरकार से उसका सम्बन्ध नहीं है, लेकिन ग्रध्यक्ष महोदय ने कहा कि उसकी जानकारी ग्रामको करानी चाहिए। तो विश्वविद्यालय में मान लीजिए कोई घटना हो जाय ग्रीम वहाँ पर सरकार पी० ए० सी० भेजती है . . . .

श्री ग्रधिष्ठाता--ग्रगर सरकार ने भेजा होता तो . . . .

श्री राजनारायज — कल जिञ्चित्रज्ञालय में मारपीट हुई श्रीमन्, दो विद्यार्थी घायल हुए । यह ला ऐड श्रार्डर का सवाल है । यहां पर कोई श्राफत ग्रा जाय तो सरकार स्वना भी नहीं देगी ?

श्री ग्रिधिष्ठाता—ग्रा। हुत्या बँठ जांय, मैने पहले ही कहा कि मैने इस प्रश्न पर विचार किया। ग्रांगर वहां पुलिस गई होती श्रीर पुलिस ने कोई बात की होती, तो मैं जरूर उस प्रश्न की ग्रानुमित दे देता। यगर मैने पढ़ कर के देखा। उसमें पुलिस वहां कहीं नहीं गई, बिलकुल यूनिवर्सिटी का ग्रान्दरूनी मामला है, उनके कैम्पस के ग्रान्दर का मामला है। इसिंगए मैंने उसे श्रस्वीकार कर दिया है। श्रगर पुलिस ने कोई कार्यवाही की होती, लाउड-स्पीकर तोड़ा होता या ग्रांर कोई कार्य किया होता तो मैं उसकी स्वीकृति दे दिये होता।

श्री राजनारायण—माननीय कमतापति जी यहां पर मौजूद है श्रीमन्, इसी सदन में यह घोषणा हुई है, जरा देखा जाय कि एक दिस्वविद्यालय कमीशन बैठेगा श्रौर विश्वविद्यालय से सम्बन्धित सारी बाते उसमें श्रावेंगी। तो मान लीजिए कि विश्वविद्यालय के किसी प्राध्यापक के बारे में कोई ऐसी श्रापित्रजनक बातें थीं श्रौर उस प्राध्यापक को वाइस-घांसलर बना दिया गया तो क्या दह चीज उस कमीशन के सामने नहीं श्रायेगी . . . .

श्री प्रधिष्ठाता--जी नहीं, श्रब माननीय खूबसिंह जी श्रपना भाषण जारी रखेंगे।

श्री गौरीशंकर रायां (जिला बिलया)—प्रधिष्ठाता जी, एक व्यवस्था का प्रश्न है। श्रभी ग्रापने जो व्यवस्था दी है वह शिरोधार्य है। मगर्र एक जानकारी यह करनी है कि ग्राज की ग्रापकी व्यवस्था सही है या श्रध्यक्ष महोदय की उस दिन की व्यवस्था सही है जोन्होंने दफा ५२ में ब्राप्ये हुए श्रथ्यर साहब के इस्तीके की सूचना के सम्बन्ध में दी

[श्री गोरीशंकर राय]

थी। जब एक विश्वविद्यालय के वाइस-चांसलर के इसीफ का पान या या सकता है तो ब्राज किसी सज्जन की वाइस-नामलर के पर पर निया कि सम्बन्ध में उस प्रश्न को न लेना कहां तक उचित है ? यह प्रणात मापाय का पान मही हथा ब्राज की व्यवस्था सही है ?

श्री ग्रधिष्ठाता--यह श्रध्यक्ष महोदय श्रायेगे तो उनम प्रियमा ।

(श्री हरदयाल सिंह के उठकर कुछ कारने की नेग्ना करने पर) 'स (रा से माननीय सदस्य मुझे बाध्य करेंगे कोई न कोई कार्ययाणी करने पर ।

श्री हरदयालींसह (जिला बाहजहांपुर)—भेरा स्यास्ता का परनार । श्री ग्रिधिक्ठाता—मेने व्यवस्था के प्रश्न का उत्तर देशियार ।

१६६०-६१के ग्राय-व्ययक में ग्रमुदानों के लिये गांगों पर मतदान—
ग्रमुदान संख्या ३४—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य
ग्रीर ५०-क—राजस्व से वित्तपोषित नागरिक निर्माण-कार्यो
पर पूंजी की लागत, श्रमुदान संख्या ३५—लेखा शीर्षक ५०—
नागरिक निर्माण-कार्य, केन्द्रीय सड़क निष्य में वित्तीय
सहायता, श्रमुदान संख्या ३६—लेखा शीर्षक ५०—
नागरिक निर्माण-कार्य श्रीर ६१—राजस्व लेखे से
बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पंजी का लेखा
तथा श्रमुदान संख्या ५०—लेखा शीर्षक ६१—
राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्य।
का पूंजी-लेखा (क्रमाणक)

श्री; खूर्बीसह (जिला बिजनौर)—माननीय श्राध्याराता महाया. ता श्रनयान पेश है श्रौर जिस परविचार किया जा रहा था, उस पर बोलते हुए भेर थे। तारता ते पिक्तिक वषर्ष डिपार्टमेंट जो ये तीन शब्द है, उनके माने तो इ मरोर वर इस तरह से सदन में व्यक्त किये हैं जिससे इस डिपार्टमेंट की इंडजल पर एक हमारा करने की नायन समझी जाती है। दुनिया में मुख्तलिफ . . . . . .

श्री राजनारायण (जिला वाराणसी) — मेरा वंगानिक प्रश्नात महापक्ष यह है कि माननीय सदस्य यह कह रहे हैं कि जो सदस्य यहा पर प्रश्नात रहे हैं उससे उनका किसी विश्वविद्यालय के उपकुलपित की निर्मातन से बांग्याय है जिसकी वह निन्दा करना चाहते हैं। क्या हमारे ऊपर किसी माननीय सारम्यका इसप्रशाद मारिय इस्प्यूट करते का श्रीधकार है? क्या कोई भी सदस्य कियी श्रीन्य मार्य के निये ऐसा कह सकता है?

श्री श्रिथिष्ठाता—(श्री लूबसिंह से) कृषया ग्राप किसी के मीरिया पर रामता न करें। श्री हरदयालसिंह—श्रीमन्, मेरा भी वैधानिक प्रक्ष है।

<sup>\*</sup> ६ मार्च, १६६० की कार्यबाही से ।

१६६०-६१ के म्राय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—अनुदान १४३ संख्या ३४—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य भ्रौर ५०-क— राजस्व से वित्तपोषित नागरिक निर्माण-कार्यो पर पूंजी की लागत, अनुदान संख्या ३५—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य, केन्द्रीय सङ्क निधि से वित्तीय सहायता, अनुदान संख्या ३६—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्ये भ्रौर ८१—राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यो की पूंजी का लेखा तथा अनुदान संख्या ५०—लेखा शीर्षक ८१— राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण केला

श्री ग्रिधिष्ठाता--मै फहता हूं कि ग्राप बैठ जाइये।

श्री हरदयाल सिंह--मेरा भी जरूरी प्रश्न है। मेरी बात भी सुन ली जाय...

श्री अधिष्ठाता - - प्राप कृपया बैठ जांय। मैने उस प्रश्न की इजाजत नहीं दी।

श्री हरदयालींसह--हम जनता की ग्रावाज को उठाने के लिये यहां पर ग्राते है . . . .

श्री स्रधिष्ठाता--न्नाप नियम का उत्रवंघन कर रहे है।

श्री हरदयालसिंह--मेरा भी नियम ५२ के अन्तर्गत एक प्रस्ताव था • • •

श्री ग्रधिष्ठाता --- ग्रब ग्राप कृपया सदन का त्याग करें । ग्रब मै यह ग्रादेश देता हूं।

श्री राजनारायण—श्रीमन्, इस सम्बन्ध में में यह निवेदन करूंगा कि श्रभी एक व्यवस्था के सम्बन्ध में श्रापने श्रयनी सम्मित दी। यह हो सकता है कि उस सम्मित को, जिस समय श्रापने दी, उसकी हमने न सुना हो। किसी व्यवस्था पर जब श्राप श्रपनी सम्मित देने लगे हों तो उस समय माननीय सदस्य ने कोई प्रश्न उठा दिया हो। इसलिये में समझता हूं कि कृपया श्राप उनको यहां पर बैठने की इजाजत दे दे।

श्री नारायणदत्त तिवारी (जिला नैनीताल)—श्रीमन्, श्रभी माननीय राजनारायण ने जो श्रापसे श्रनील की में भी उससे सहमत हूं श्रीर श्रायसे प्रार्थना करता हूं कि यहां पर दिशेष स्थित होने पर उनको श्राप बैठने का मौका दे दे। मुझे भी खेद है कि गाननीय खूबसिंह, जो एक पुराने पालियामेटेरियन है, उन्होंने फिर इस प्रश्न को उठाया इसलिये यह बात उठी।

श्री श्रिधिष्ठाता—मै श्राज्ञा देता हूं कि माननीय सदस्य को बैठने की श्रनुमित है। माननीय खूर्बीसह से भी कहूंगा कि श्राप कृपया किसी माननीय सदस्य की नीयत पर हमला न करें।

श्री खूर्बीसह—श्रीमन्, मैने तो कुछ कहा ही नहीं। श्राप ग्रन्दाजा लगा सकते हैं कि जो मै कहता हूं उसके माने क्या है। मैने यह कहा कि सार्वजनिक निर्माण विभाग तीन लफ्जों से मिलकर बनता है। इसके उलटे माने लगाना दुखजनक बात है ग्रीर ग्रकसोस की बात है। इस किस्म का हमला किसी विभाग पर नहीं करना चाहिये।

जहां तक मेरा ताल्जुक है, मेरा निजी जिचार यह है कि कब्ल इसके कि किसी व्यक्ति पर या किसी महकमे पर उसकी इज्जत लेने के वास्ते हमला करूं, मैं यह देखने की कोशिश करता हूं कि मेरे कहने में कहां तक सच्चाई है। कई दफा मैंने यह देखा कि मैंने कई लोगों पर कई किस्म के ग्रारोप लगाये। जब मैंने रात में विचार किया कि मैं कहां तक जिस्टफाइड हूं तो मुझे पता लगा कि मैंने उनके ऊपर ज्यादती की। यह मेरी गलती थी ग्रोर उसमें कोई सार नहीं था। मेरा खयाल है इस तरह से दूसरे लोगों को भी, जो इस किस्म की नुक्ताचीनी करते हैं, उनको पहले ग्रपने चिरत्र पर खयाल करना चाहिये जैसा कि मैं करता हूं। मैं यह कह देना मुनासिब समझता हूं कि यह सार्वजितक निर्माण विभाग, खुशी को बात है, कि ग्रच्छे ग्रादिमयों के चिरये से चल रहा है ग्रौर उन सब लोगों की यह ख्वाहिश है कि विभाग में कम से कम खर्च में ज्यादा से ज्यादा काम

[श्री खुर्बामह]

एक चीज यह अर्ज करनी है कि जितने श्रीमर्थिय यह प्रतिष्ट अर्ज निस्त्त रहे है उनमें से बहुत कम की अल्ज काम नित्र परिताह । गांगा ना प्रति । अर्जनीयों को नोकरी नहीं मिल पाली। मेरा सुझाय उपिएमें लाग का प्रति । नारा त्रक दी जाय और अगर वह उसमें अपने को क्याचीकाई पर का वासास । अर्थन प्रति । जाय। इस तरह से अन्दम्प्लाएड की सादाप बड़ान ठाए ना ।

श्रीमन्, एक बात यह भ्रार्ज करना चाएता हा, उने हो या न दा विभाग में खास ताल्लुक नहीं रखती, लेकिन . . . .

श्री अधिष्ठाता—जब इस विभाग से तात्लुक नहीं रणारी ती ...

श्री खूर्बीसह -- ताल्लुक रखनी भी है। लेकिन मा मार पण (स्मात से मी ताल्लुक रखनी है। हमारे जो श्राफिसर्स या काम करन पा, पश्चार रा गानी कात है तो उसका खिभियांजा उनको भुगतना पड़ता हु। उनको रजा किराक सुबह बरखास्त होते है, उनका इंकीमेट रोक दिया जाता है, या श्रार त्रारी रचा अन्ते ही जाती है। मेरा खयाल है कि यह काफी नहीं है। हमें एक निवर्ग रही है : न कोर्स अपने विभागों में जारी करना चाहिये श्रीर पीर डेक्ट्यू र डील में भाग गाम रना चारिये ताहि जितने इम्पलाईज है वे श्रमनी हैबिद्स को दुरुस्त करेगे के निया, सक्काई एए सायर मारनके लिये और अपने फरायज को अच्छे तरीके पर डिस्चार्ज करन है नियं ए है ता रीक्ट सिन कर सके । इस सिलसिले में में माननीय मंत्री जी ने यह नियंदन करता न गाह कि मास्को मे एक फ्रेंडशिय यूनिवसिटी अभी कायम होते जा रही है मार उपसे प्रकात, एशिया और इसी से मिलने जुनते जो मुल्क है उन हो बायत दी जाय है कि या सम जायं और जाकर इस यूनिवर्सिटी में अपनी टेक्निकल नालें न में इन फा रें अपर गाय-साय इलनाकी प्रगति की जो बाते हैं उनमें भी ट्रेनिंग हासिल करें। मेरा पुछात ह कि पी० डब्ल्यू० डी० के वजीर साहब ग्रीर दूसरे वजरा साहबान ग्राने भाग मना का गी।नगर अर्थाफ नर्स को ट्रेनिंग हासिल करने के लिये वहां भे में अर्थर वे लोग आर्था हा सदम रिहर्क लिटेट करने के लिये जो कुछ वहां सीजें उस कोर्स की यहा चनाया जाय ग्रन्थ कर्मचारियों के लिये । इस तरह की कोशिशों से हम ऐसा कर सकते हैं कि निसमें हमारा मयार ऊंचा हो सके ऋरेर ऐसा होने पर करण्यन की जिकायते भी कम सुनन में पायेगी।

इन शब्दों के साथ, चूंकि समय कम है, मैं कोई नया प्वाइंट नही उठाना हूं श्रीर इस श्रनुदान का समर्थन करता हूं। १६६०-६१ के ग्राय व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—अनुदान संख्या १४५ ३४—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य ग्रीर ५०-क—राजस्व से वित्तपोधित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, अनुदान संख्या ३५— लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य, केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, अनुदान संख्या ३६—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण कार्य ग्रीर ८१—राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा अनुदान संख्या ५०—लेखा शीर्षक ८१—राजस्व लेखें के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

\*श्री कल्याणचन्द मोहिलें (जिला इलाहाबाद)—माननीय श्रिधिष्ठाता महोदय, जो श्रमुदान सदन के समक्ष पेश है वह एक घंटे बाद पास तो हो ही जायेगा, किन्तु इसके सम्बन्ध में में सरकार से पूछना चाहता हूं कि जो अनुदान यहां पर पास हो जाता है उसका खर्च प्रदेश में किस तरह से हो रहा है। इस विभाग द्वारा जो इमारतें बनाई जाती हैं, जो पुल बनाये जाते हैं बे कुछ ही समय बाद कैंक हो जाते हैं श्रीर कुछ श्रधूरे ही रह जाते हैं।

मै, चूंकि समय कम है, इसलिये अपने जिले की बाबत कुछ कहना चाहता हूं। हमारे यहां निट्न बिज है, हर शाल काफी रुपया उस पर मरम्मत में खर्च किया जाता है। मने कई बार यह चेंच्ट. की कि वहां पर एक नया पुल बना दिया जाये। वह पुल टूट गया है और उस पर लाखों रुपया प्रति वर्ष खर्च किया जाता है। उसके कारण सैकड़ों अविमयों की जाने तक चली गयी है, किंतु अभी तक उसका निर्माण नहीं हुआ है। उसी के पास रेलवे बिज की बगल में एक पगडन्डी बनाई गयी है जिस पर सरकार का ५ लाख रुपया खर्च हुआ है, लेकिन वह कार्य नहीं किया गया है। अपको मालूम है कि प्रयाग में अर्ध कुम्भी और कुम्भ होते हैं और लाखों रुपया उसके लिये खर्च किया जाता है। तो मैं यह चाहूंगा कि सरकार इस पुल को बनवाये और कम से कम तृतीय पंचवर्जीय योजना में इसको अवश्य बनवा दे।

दूसरी बात में मेडिकल कालेज के बारे में कहना चाहता हूं। मेडिकल कालेज बनाने की हमारे यहां सरकार की योजना थी, किन्तु वहां पर वह नहीं बनाया गया भ्रौर कानपुर में मेडिकल कालेज खोला गया। श्रव वहां पर एक श्रस्पताल बन रहा है जिस पर २० लाख रुपया खर्च होगा। ये इसके लिये सरकार से कहूंगा कि वह जांच करें कि किस प्रकार से उसमें रुपया खर्च हो रहा है श्रौर वह किस तरह बन रहा है।

तीसरी बात मैं यह कहूंगा कि हमारे यहां जो घाट नागबासू है जिस पर ४ लाख रुपया व्यय हुग्रा है उसकी भी सरकार लाकर देखे। यह घाट बना तो, लेकिन वह काफी खराब हो चला है। मैं चाहूंगा कि उसकी किस प्रकार भरम्मत कराई गयी है उसकी जांच की जाय। वहां पर श्राज च्रारदीयारी नहीं है, उसकी सरकार बनावे।

श्री रामवचन यादव (जिला ग्राजमगढ़)—ग्रिधिष्ठाता महोदय, श्रापने मुझे इस अनुदान पर बोलने के लिये मोका दिया, इसके लिये में ग्रापको धन्यवाद देता हूं। मुझे पहले अपने जिले ग्रोर क्षेत्र के बारे में कहना है। ग्राजमगढ़ जिला एक बहुत बड़ा जिला है ग्रीर सरकार की यह नीति है कि जो पिछड़े हुए इलाके है वहां पर सड़कें इत्यादि पहले बनाई जांय। में चाहता हूं कि उस जिले में सर्कूलर रोड बनाई जांय जो कि ग्राजमगढ़ शहर से ज्यादा दूर पड़ती है ग्रीर वही सबसे पिछड़ा हुआ इलाका है। इसिलये ग्राजमगढ़ जिले में यह सड़क बननी चाहिये। उसका यह कारण कि जब ग्राजमगढ़ से एक तरफ जो जाता है ग्रीर फिर दूसरी तहसील में जाना चाहता है तो ग्राजमगढ़ जाकर फिर लौट के ग्राने में दूना तिगुना सफर करना पड़ता है। इसी तरह फूलपुर तहसील के दक्षिणी इलाके में सुल्तानपुर सड़क ग्राती है ग्रीर उधर जो जौनपुर सड़क जाती है, दोनों सड़कों को मिलाने के

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

#### [श्री रामवचन यादव]

के लिये एक सड़क दीदारगंज से बरदह तक गयी है। गगर उसको मिला किया जाय तो उस इलाके का लाभ होगा जो सबसे पिछड़ा हुआ है। माहिनगंज का क्षेत्र दलाक का क्षेत्र है और वहां पहुंचने के लिये गान में ६ महीने को है भी उपाय नहीं है— बरसात में और बरसात के करीब दो महीने बाद तक। तो उम सड़क के लिये जो माहिनगंज होकर जाती है, मेरा सुझाव है कि तीसरी पंचवर्षीय योजना में उसे ले निया जाय। पिछली बार भी ख्रंतरिम जिला परिषद् से उसको प्रमुखता दी गयी थी ख्रोर उस धार में समाता हूं वह तीसरी पंचवर्षीय योजना में के लिया जायगा। दीवारगंज से बरहार ज्यादा नहीं है, १०-१४ मील है। ख्रगर यह दुकड़ा जोड़ दिया जाय तो गुल्नानपुर वाली सड़क प्रोर जीनपर जाने वाली सड़क से कनेक्शन हो जायगा।

दूसरी बात मुझे कहनी है कि जो पी० उद्ध्यु० ठी० की कर्मीट्यां बनत्यी गयी उनमें ऐसा हुआ कि हमारे अधिकारी महोदय की यह नीति रही कि या तो ऐसे मोके पर रही कि जब सबस्य लोग पहुंच न सकों श्रोर जब कभी सदस्य लोग पहुंचे तो हमारे श्राधकारो नहीं परंचे । तो उन कमेटियों को ऐसे समय पर बुलाया जाय कि इनकों बेठक हो सके श्रार सदस्यों में भी भर। श्रनरोध है कि इन कमेटियों में दिलचस्पी लेकर जिले में बेठे क्योंकि इस रिभाग में अल्टाचार के सम्बन्ध में एक प्रथा बड़ी प्रचलित है। हमारे इंजीनियरों श्रोर श्रायरां स्वा परसंदेज का ऐसा हिसाब बन गया है कि जो कंट्रेक्टर न देना चाहे तो उसके पेमेट में दिले की जाती है, तरह-तरह की बाते निकाली जाती है और जो परसेटेंज दे देता है उसका बिल नट से पाम हो जाता है और उसका काम अच्छा हो जाता है। तो मेरा सुझाव है कि माननीय मंत्री जी एक सीर प्राईट डीट रखें श्रीर वह पता लगाते रहें कि कीन-कीन अफसर परसटेज लेने के श्रादी है श्रीर जिसकी उचित समझें यानी ऐसे लोग जो इस व्यवस्था को चालू रखते ह उनकी तरक्या में राक लगावें। में अपने जिले की बात बताना चाहता हूं कि इसके पहले कुछ इंजीनियर थे जो कि परसेटेज नही लेते थे, मगर फिर जब उनका तबादला हो जाता है, दूसरे ग्राते हैं तो यह फिर चाल कर देते हैं। तो देश की भलाई के लिये पता लगाना चाहिये कि कौन लोग अस व्यवस्था की नहीं रोक रहे हैं। जो न रोकें उनकी तरक्की बगैरह रोकी जाय भ्रीर साथ ही यह भी पता लगाया जाय कि कौन से लोग नहीं लेते हैं, उनको तरक्की दी जाय श्रीर श्रागे बढ़ाया जाय, तभी भ्राटाचार में कुछ रकावट हो सकती है।

तीसरी बात मुझे कहनी है माननीय मंत्री जी से हरिजनों के सम्बन्ध में, क्यों कि यह बड़ी विलचस्पी रखते हैं। हरिजनों के लिये १८ फीसदी नौकरियों में संरक्षण है। श्रार चप्ररासियों की जगह में १८ फीसदी श्रभी तक नहीं मिले हैं, तो मेरा उनमें निवंदन है कि श्रौर लोगों की भर्ती रोक दें श्रौर जबतक उनका १८ फीसदी चपरासियों में पूरा न हों जाय तबतक उनको ही स्थान दिया जाय। क्योंकि चपरासियों से लोग पीने का पानी, भोजन मंगाने हैं, श्रौर जो छुश्राछूत मानते हैं वह चाहते हैं कि ऐते श्रादमी रहें जो भाजन श्रोर पानी दे सहीं प्रोर इस प्रकार से १८ फीसदी वाला परसेंटेज पूरा नहीं होने वेते। तो सरकारी नीति का श्रीधकारी लोग पालन नहीं कर रहे है। श्रगर कोई श्रीधकारी छुश्राछूत बरतता है तो उसको ग्राप कहिये कि श्राप हट जाइये, मुल्क में श्रौर काम है, श्रगर नौकरी करनी है तो ख़्राछूत को खत्म करना पड़ेगा। श्रगर चपरासियों में भी १८ प्रतिशत स्थान हरिजनों को नहीं मिलता श्रीर उनकी भर्ती पूरी नहीं होती तो यह हमारे लिये बड़े लज्जा की बात है।

एक बात मुझे श्रौर कहनी है कि हरिजन लोग श्रोबरिस परी में या इंजीनियरी में बहुत कम पढ़ पाते हैं। सरकार की यह नीति है कि श्रगर कोई हरिजन उम्मेदवार न मिले तो एक साल तक जगह खाली रखी जाती है। में कहता हूं कि चाहे इसको एक साल रखा जाय या वो साल, श्रगर हरिजन मिलते हैं तो उसको श्रवश्य रखा जाय। श्रगर हरिजन नहीं मिलते हैं तो सवाल उठता है कि किससे भरा जाय। सरकार की नीति है कि पिछड़े सोगों को प्रिफरेंस

१६६०-६१ के आय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—अनुदान संख्या १४७ ३४—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य और ५०-क—-राजस्व से वित्तपोषित नागरिक निर्माण-कार्यो पर पूंजी की लागत, अनुदान संख्या ३५— लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य, केन्द्रीय सङ्क निधि से वित्तीय सहायता, अनुदान संख्या ३६—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य और ६१—राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यो की पूंजी का लेखा तथा अनुदान संख्या ५०—लेखा शीर्षक ६१—राजस्व लेखे के बाहर निर्माण-कार्यो का पूंजी लेखा

विया जाय । मै चाहता हूं कि इन खाली जगहों पर प्रिफरेंस पिछले वर्ग को दिया जाय । कहा जाता है कि इससे हरिजन सदस्य नाराज होते हैं । मुझे विश्वास है कि हरिजन सदस्य कभी नाराज नहीं होंगे जो समझदार है । जब हरिजन उम्मेदार नहीं मिलते और जब उन्नतवर्ग से भरी जानी है तो हरिजन को क्या मिलता है, इसलिये वे पिछड़े दर्ग से ही भरी जायं ताकि सरकार की नीति कामयाब हो । अगर कोई हरिजन सदस्य यह कहता है कि नहीं साहब, उन्नतवर्ग से ही भरी जाय तो मेरी समझ में नहीं आता कि उसकी कैसी नीति है । लेकिन यह अवश्य होना चाहिये कि जब तक हरिजन स्रोवरिसयर या इंजीनियर मिलता है तब तक उनमें उसकी हो मौका दिया जाय ।

पी० उब्ल्यू० डी० में कुछ ऐसी सड़कें है जो पिछली बार ली गयीं, फिर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड् स को वापस कर दी गयीं। मेरा यह सुझाव है कि इस बार जहां तक हो सके उन्हीं सड़कों को पी० डब्ल्यू० डी० मे लेकर बनान। चाहिये श्रीर इस बात का घ्यान रखा जाय कि जहां लाक्स खुलने वाले हैं इन दो तीन वर्षों में श्रीर उघर सड़क नहीं गयी है तो उसको प्राथमिकता दी जाय ताकि जो ब्लाक खुलें वह अच्छी तरह से काम कर सके श्रीर पी० डब्ल्यू० डी० की सड़क वहां पर पहुंच जाय। ऐसे इलाकों की तरफ ध्यान देने की जरूरत है। यही मेरी प्रार्थना है कि उधर ध्यान दिया जाय।

एक बात कमेटी के सिलसिले में मुझे कहनी है कि तीसरी पंचदर्वीय योजन। के बनाने के सिलसिले में विधायकों को एक बार बुलाकर उनकी सलाह से सड़कों को शामिल किया रया है। मैं कहता हूं कि जब श्रन्तिम रूप दिया जाय तो उनमें फिर उस वक्त इस पर गौर करा लिया जाय ताकि एक ठोस योजना जिलों की बन सके।

पी० डब्ल्यू० डी० में सड़के बढ़ी है श्रीर बढ़ रही है, इसके लिये धन्यवाद है सरकार को, मगर इस बार खास करके इस बात को देखना है कि कौन से ऐसे इलाके है जहां विकास सम्बन्धी, खेती सम्बन्धी श्रीर हाई स्कूलों तक जानेवाली सड़कों की सुविधाश्रों सम्बन्धी कार्य होना चाहिये। उस तरफ अवश्य ध्यान दिया जाय । इतना कहकर में माननीय मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि मेरे सुझावों को स्वीकार करने की छना करें।

श्री ग्रिधिष्ठाता -- ग्रब रामदीन जी, श्राप केवल १ मिनट बोलेगे।

\*श्री रामदीन (जिला मैनपुरी)—-इसरों के लिये १० मिनट, मेरे लिये ५ मिनट, यह क्यों ?

श्री भ्रधिष्ठाता—प्रापके सचेतक से बातचीत हो गयी है कि कल्याणचन्द जी श्रौर श्राप केवल ५ मिनट ही बोलेंगे। श्राप फिर बीच में बेकार बोलते है।

श्री रामदीन—ग्रधिष्ठाता महोदय, मैं जो यह उपस्थित ग्रनुदान है उसका विरोध करने के लिये श्रीर कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं। विरोध क्यों करना पड़ रहा है ? मैंने देखा है जहां तक घूमिफर कर, इस विभाग में जो कुछ ग्रनुदान यहां से मंजूर होता है वह ज्यादातर बड़े-बड़े शहरों में ही खर्च किया जाता है। वहीं पर ग्रच्छी

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

[श्रं। रामदीत]

प्राच्छी इमारतों का निर्माण होता है, वहीं पर प्राच्छी ग्राच्छी सहके बनाई जाती है। श्राज जो रुपया सड़कों पर खर्च किया जाता है, उसका ज्यादातर हिस्सा ठेकेदार ग्रीर श्रिष्क कारियों की जबों में चला जाता है। श्राप देखेंगे कि श्राज जितनी सहके बनती है वह एक वर्ष से श्रिविक नहीं चलती। कच्चा कंकड़ लाकर सड़कों पर डाज दिया जाता ह श्रोर इंजीनियर तथा श्रोवरियर उसको पास करके ठेकेदार को पेमेन्ट करा देते है श्रोर उसमें उनका परसेन्टेज जो तय होता है वह उनको ग्रवश्य मिल जाता है क्योंकि बिना किसी मुसीबत श्रौर काम किये ठेकेदार को पेमेन्ट मिल जाता है। इसलिये जैसा कि मैने पहले भी कहा था, किर कहता हूं कि सरकार कागजों की तरफ न देख कर के उस काम को देखें जिसके लिये यहां से एपया मंजूर होता है। केवल कागजों में ही छप जाता है लेकिन काम नहीं होता है श्रीर हमारे उच्चाधिकारियों श्रौर सरकार से दस्तखत करा लिये जाते है कि काम सही है।

ग्रब श्रीमन्, में सरकार का ध्यान फर्छ बाब तथा इटावा, जहां वो प्ल बनने हैं. उस तरफ विलाना चाहता हूं। इटावा ऐसा जिला है जो वो प्रवेशों से मिलना है ग्रोर फर्ण्याबाद भी ऐसी जगह है जहां से पीलीभीत, बरेली की तरफ जाने वाली मवारियों को लखनक होकर जाना पड़ता है जिसके कारण ४०-५० मील के स्थान पर वो ढाई सो मील का फामला तय करना पड़ जाता है। में चाहूंगा कि सरकार इस तरफ ध्यान वे श्रीर यदि चालू योजना में न हो सके तो श्रगले २-३ वर्षों में सरकार इन वोनों पुलों का जरूर निर्माण करें। इनमें एक नं। फर्म्याबाद में गंगाजी का पुल है श्रीर इटावा में जमुना जी तथा चम्बल का पुल है। इनमें वहां की जनता का बहुत बड़ा लाभ होगा। श्रब में सरकार का ध्यान जिला मैनपुरी की तरफ विलाना चाहता हूँ ....

श्री श्रिधिष्ठाता --मैं जानना चाहता हूं कि माननीय सदस्य किस जिने से श्राते हैं, क्योंकि श्रापने श्रभी इटावा, फर्श्लाबाद का जिक किया श्रीर श्रब मेनपुरी का जिक कर रहे हैं ?

श्री रामदीन—मैनपुरी से। पुलों के सम्बंध में मैने उन जिलों की तरफ सरकार का ध्यान दिलाया। श्रव में मैनपुरी के सम्बन्ध में कुछ कहना चाहता हूं। श्रंश्मन्, जब श्राजादी की लड़ाई हुई थी......

सार्वजिनक-निर्माण मंत्री (श्री गिरधारीलाल) -- में यह कहना चाहता हूं कि जब डिमान्ड का विरोध किया जा रहा है ती फिर पुलों श्रीर सड़कों का सवाल ही कहां उठता है?

श्री रामदीन—श्रीमन्, मेरे समय का ध्यान रखा जाय । डिमान्ड का विरोध इसलिये किया गया क्योंकि यहां का व्यया सीधे-सीधे लोगों की जेबों में चला जाता है श्रीर श्रससी काम नहीं हो पाता । सरकार को इस तरफ ध्यान देना चाहिये।

श्रीमन्, जिला मैनपुरी के बारे में मै कह रहा था कि यह जिला हमेशा हर एक लड़ाई में श्राये रहा है श्रीर वहां के तीन व्यक्ति श्राजादी की लड़ाई में बिलदान भी हुए है। मैं सरकार से पूछता चाहत। हूं कि श्राजतक सरकार ने वहां पर कौन सा निर्माण का कार्य किया, कौन सी सड़क बनाई, कौन सी इमारत बनाई। श्राजतक वहां कोई भी निर्माण का कार्य नहीं किया गया। यहां पर बहुत दूर तक कोई सड़क नहीं है। इस श्रोर में मंत्री जी का ध्यान श्राकुष्ट करना चाहता हूं। एक सड़ ह मैनपुरी-करहल-इटाया की है जो बहुत पुरानी है, इस पर कार्य भी हो रहा है। इस पर कार, मोटर श्रौर बसों का जाना तो दूर रहा साइकिल भी नहीं चल सकती है, तांगा श्रगर जाय तो पलट जाय। तीन वर्षों से प्रश्नों द्वारा इस श्रोर ध्यान श्राकुष्ट किया जा रहा है लेकिन जिस तरह से कार्य तेजी से होना चाहिये, वैसा नहीं हो रहा है।

दूसरी सड़क है घरोर-जसराना, जो मुक्ताबाद-एटा से सम्बन्ध रखती है। इस सड़क पर तहसील जसराना है जिससे श्रावागमन बहुत रहता है। यह सड़क बहुत गंदी है श्रीर १९६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—स्रनुदान संख्या १४९ ३४--लेखा शोर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य स्रौर ५०-क--राजस्व से वित्रगोबित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, स्रनुदान-संख्या ३५---लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य, केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, स्रनुदान संख्या ३६--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य स्रौर ८१--राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा स्रनुदान संख्या ५०--लेखा शीर्षक ८१--राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

कम चौड़ी हैं। जब कोई सवारी उस पर चलती है तो सवारियों को नीचे उतरना पड़ता है। इसको चौड़ी करा कर अच्छी तरह से बनवा दिया जाय ताकि जनता को सुविधा हो सके।

फिर म्राती है, घरोर-कुरावली, करैर-घरौर, सवान-भामत, इन स्थानों से मैनपुरी जाने के लिये कोई यातायात का साधन नहीं है। २०-३० मील का चक्कर लगा कर जाना पड़ता है। मैं सरकार से दरख्वास्त करूंगा कि ये सड़कें जल्द से जल्द बनायी जा i। म्रागर ये बन जायंगी तो बहुत-सा फासला कम हो जायगा।

छुठी सड़क ग्राती है जो जसराना-कुरावली होती हुई बड़े गांव को जाती है। इस पर कई बड़े स्थान हैं-जसराना, घरोर, कुरावली ग्रोर मैनपुरी। किसी भी बाजार को जाने के लिये गांवों से रास्ता नहीं है। बीच में दो निदयां पड़ती है। बरसात के दिनों में किसानों को बहुत परेशानी होती है। वे ग्रपना सामान बाजार में नहीं ले जा सकते।

इसके म्रलावा इटावा, म्रागरा, कानपुर मौर मैनपुरी के बीच में वो निवयां—सरसा भ्रौर सेंगर पड़ती हैं जो बरसात के समय बहुत बड़ी हो जाती हैं। कारण यह है कि जो पुल निवयों के बने हैं, वे बहुत छोटे हैं। भ्रगर उन पुलों को तुड़वा कर बड़ा करवा दिया जाय तो लाखों एकड़ फसल, जो हर साल बाढ़ के कारण बरबाद हो जाती है, वह बच जायगी। इसके लिये सरकार से कई बार प्रार्थना की गयी, सुझाव भी दिये गये ग्रौर ग्रिधकारियों ने भी लिखा, लेकिन ग्रभी तक ये पुल चौड़े नहीं किये गये हैं।

श्चन्त में मैं यही कहना चाहता हूं कि मैंने जो सुझाव दिये हैं उन पर सरकार ध्यान दे। इन शब्दों के साथ मैं कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री खुशीराम (जिला श्रत्मोड़ा)—श्रिघळाता महोदय, में श्रापका श्राभारी हूं कि आप ने मुझे इस अनुदान पर बोलने का मौका दिया। मान्यवर, जो यह श्रनुदान पेश किया गया है, उस से सारे देश की भलाई है श्रौर सारे देश के लोगों को इससे सुविधा होगी। में केवल पहाड़ों की ही बात कहूंगा। वहां पर सड़कों के बन जाने से जो कुछ भी वहां के जनसमूह को लाभ हुआ है, उनके कारबार में जो मदद पहुंची है यानी जो चीजें वे पैदा करते हैं श्रालू वगैरह, उनके बाहर भेजने में सुविधा हो जाने से, वहां की जनता को फायदा हुआ है, उस के लिए में इस विभाग और माननीय मन्त्री जी को धन्यवाद देता हूं। यह बहुत ही उपकार का काम हो रहा है श्रौर आगे जो कुछ करना है, उस के लिए भी मुझसे पूर्व श्रौर वस्ताओं ने भी मांग पेश की है श्रौर उसका हो जाना श्रनिवार्य है। इस वक्त वंसे तो तिब्बत की सीमा पर सरकार की तरफ से विकास का कार्य करने की कोशिश हो रही है। श्रगर वह किया गया तब तो सब कुछ हो सकता है, वरना कुछ नहीं हो सकेगा। इसलिए कृपा करके उन कार्यों को यथाशीझ करवा दिया जाय।

मुझे एक सुझाव यह देना है कि इस डिपार्टमेंट की कई सड़कें बहुत दूर तक गयी हैं श्रौर उन सड़कों के किनारे कुछ जगहें ऐसी हैं, जिनको वहां के लोग श्रपनी जरूरत के लिए लेना चाहते हैं, परन्तु वे उन्हें नहीं मिल पाती हैं। श्रगर वे जगहें वहां के लोगों को मिल जायें तो वे श्रपनी छोटी-छोटी दूकाने तथा कल कारखाने बना कर खोल सकते हैं। उदाहरणार्थ में बतलाड़ कि गरम पानी में एक आदमी जो बहुत ही गरीब है, वह ६, ७ साल से इस बात का प्रयत्न कर रहा है कि उसे वह जमीन दे वी जाय जिसके दक्षिण तरफ बदरीदत्त की दूकान है। वह जमीन

[श्री खुतीराम]

पी० डब्ल्यू० डी० की है लेकिन उसे नहीं मिलनी है। यें में में भी इस के लिए कहा था तो जंगलात विभाग कहता है कि यह पी० डब्ल्यू० डी० की जमीन है और पा० उद्ध्य० डी० के यहां जाने पर वह कहता है कि जंगलात विभाग की जमीन है। इस सम्बन्ध म सार्वजिनिक विभाग से मेरी प्रार्थना है कि जिस कार्य से वहां की जनता का हिन हो वह कार्य उस करना चाहिए। अगर उन लोगों को २५-३० फीट जमीन भी नहीं मिलती है ता यह बड़े दृण का बात है। माननीय मन्त्री जो से मेरी प्रार्थना है कि इस सम्बन्ध में वे प्रपन कार्य करता था कर लोगों को का इस बात की सलाह दे दे कि ऐसी मूमि वहां की जनता का ने दिया कर लोक उन लोगों को ज्यादा तकलीफ न होने पाये। इसके सिवा और कोई तुमरी सूरत नहीं हा सकती है, और डिपार्टमेट से तो वहां की जनता को उतना फायदा नहीं है लेकिन कम से कम ग्राप का जो डिपार्ट मेट है, उससे वहां के लोगों को कुछ थोड़ा-सा फायदा ही सकता है ग्रीर उन की प्रार्थिक हालत में कुछ सुधार हो सकता है। मुझे आशा है कि इस के लिए उन लागा का प्रवश्य मीका विया जायगा।

इस के श्रलावा कुछ सड़कें ग्रामों में ऐसी है जिनके िनए काकी निया पर्णा भी की गयी है श्रीर जिनके सम्बन्ध में जिला परिषव् द्वारा भी मांग की गयी है, उन सहका का प्रथाशीन्न बनना श्रानवार्य है। इस के श्रलावा श्रलमोड़ा, पनार में कुछ पुल श्रीर सहका का कार्य होना बहुत श्रावश्यक है। इस सम्बन्ध में यह भी नियदन है कि जा निमाण कार्य श्रभां हो रहे हैं, उन की तरफ भी पहले खयाल होना चाहिए ताकि बहां का जनता को काई तक्षणिक न हो। इसी उद्देश्य से संविधान के श्रनुसार इस राज्य की स्थापना हुई है कि जनता की भलाई के लिए, जो श्रावश्यक कार्य है, उनको जल्दी से जल्दी किया जायगा। इन शब्दा के साथ में प्रस्तृत शन्दान का हुदय से स्वागत करता हूं श्रीर उसका समर्थन करता हूं।

श्री दुर्योधन (जिला गोरखपुर)— ब्रावरणीय श्राधिष्ठाता महा । प्राप्ति श्रन्त श्रन्वात पर, जो कटौती का प्रस्ताव है, उसका समर्थन करने के लिए म लड़ा हुआ है। श्रीधिष्ठाता महोवय, श्राज निर्माण के सम्बन्ध में सरकार की जो नीति चल रही है, वह सूत्र का बहुरास्पर जनता के साथ कुठाराधात कर रही है, क्योंकि जहां ६० फीसवा श्राजमा बसन है, उनके लिए बहुत ही कम रुपया खर्च किया जाता है। ज्यावातर क्या दाहरों को सड़क नौरी करने के लिए श्रीर सड़कों को सजाने के लिए खर्च किया जाता है। इसके लिए कहा पह बहुत निर्माण की लिए खर्च किया जाता है। इसके लिए कहा पह बहुता पर फून लगाय जाते हैं श्रीर न जाने क्या-क्या किया जाता है लेकिन गांवों की तरफ तर । र का ध्यान नहीं है, जब कि सरकार जानती है कि वेदा की तरक्की तभी हो सकता है जब गांव श्रीर नगरी का स्थानदरपत का सम्बन्ध सुचार रूप से हो।

में सरकार को बताना चाहता हूं कि जो कायं निर्माण विशान के हो रहे हैं वे इतने कमजोर होते हैं कि वह आज बनते हें और कल ट्रिंग जाते हैं। जितने भी पुल बने हैं उनमें श्रिषकतर पुलों की यही हालत है। हमारी तहमील में नारायणी नहर पर जितने पुल छोटे-छोटे बने हैं, जो बांच शाखाये हैं, उन पर जा पुल बनायें गयं है वह भी ट्रिंग नजर आते हैं। हमारे यहां निचलौल से इंडीबारी को जो सड़क जाती है वह नेपाल भारत की सीमा को मिलाती है, उसके लिए पचामों हजार रुपया मंजूर हुआ है, लेकिन वह इस तरह से बनायी जाती है कि साल भर भी नहीं चलती और ट्रूट आली है, जब कि सरकार यह भी जानती है कि वे नेपाल और भारत के बोच में ऐसी सड़क के बन जाने से धान, लकड़ी और बेत के ज्यापार में बड़ी भारी तरक्की हो सकती है, लेकिन वहां के इ-ब्रानियर लोग ऐसे पुल बनाते हैं जो एक साल बनते हैं और बरसात में बाद आती है और बंट्र जाते हैं। इमी तरह से नौतनव'-ठूंठीबारी सड़क पर २ लाख रुपया कर्च हुआ। उस पर कच्ची मिट्टी अली गयी और बीच में जो रोहिन, बचेल और प्यास निद्यां पड़ती है, उस पर पुल न होल से सारा यातायात बन्व हो जाता है और नतीजा यह होता है कि २ लाख रुपया क्या हमने पर भी बरसात में कोई काम नहीं हो सकता।

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिये मागों पर मतदान—ग्रनुदान संख्या १५१ ३४—लेखा द्वार्थक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य ग्रीर ५०-क—राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, ग्रनुदान संख्या ३५—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य, केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, ग्रनुदान संख्या ३६—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य ग्रीर ६१—राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा ग्रनुदान संख्या ५०—लेखा शीर्षक ६१—राजस्व तेखे के बाहर निर्माण-कार्यों की पूंजी लेखा

हमारे क्षेत्र में दो तीन गन्ने की मिलें हैं, जहां पर गन्ना पहुंचाने के लिए सड़कें इतनी खराब हैं कि सीजन में कम से कम दस जोड़ी बैलों की टांगें टूट जाती हैं लेकिन सरकार का उधर कोई ध्यान नहीं है कि जिन सड़कों से जनता का इतना सम्बन्ध है, उसके बैल हिफाजत से रहें। सरकार यह भी जानती है कि ग्राज डेढ़ हजार रुपयों में बैल की जोड़ी लग रही है ग्रौर किसान का एकमात्र साधन बैल ही है ग्रौर सरकार का चुनाव चिन्ह भी वही है लेकिन फिर भी सरकार को उन बैलों पर दया नहीं ग्राती। इसलिए में सरकार से कहूंगा कि महराजगंज—घुघली सड़क जरूर बनवा दी जाय ताकि काश्तकार मिलों में गन्ना ठिकान से गिरा सकें ग्रौर उनके गाड़ी ग्रौर बैल हिफाजत से रह सकें। एक सड़क ग्रौर है जो शिकारपुर चौराहा से सिन्दूरिया तक नेपाल की सीमा को मिलाने वाली सड़क के बीच में है। यह सड़क पक्की बन गयी है केवल ५ मील का टुकड़ा कच्चा रह गया है। सरकार को वक्त जरूरत को देखते हुये ग्रौर किसानों की सुविधाग्रों को देखते हुये उसको ग्रवस्य पक्का बना देना चाहिए।

सरकार के निर्माण विभाग ने गोरखपुर में एक काम श्रौर किया है कि जितने छोटे-छोटे कर्मचारी थे जैसे मेट, कुली वगैरह जो १०-१० वर्ष से सड़क पर काम कर रहे थे, उनको करीब करीब २०० की संख्या में गोरखपुर जिले में निकाल दिया है। हम चाहते हैं कि उन सड़कों पर काम करने वालों को, जिनको सर्विस १० वर्ष की हो चुकी है, मुस्तिकल कर दिया जाय। यह जो भी पी० डब्ल्यू० डी० की सड़कों हैं उन पर थोड़ी-थोड़ी दूर पर मालियों की तैनाती कर ही जाय तो वह काम में भी लगे रहेंगे श्रौर पेड़ों की हिफाजत भी हो जायगी।

जब ग्रंग्रेज हुकूमत करते थे, उनके जमाने में जिस सड़क की पिटाई होती थी, कच्चे कंकड़ों से वह ६ साल चलती थी तो ग्राज की हालत यह है कि बड़ी मुक्किल से २ साल चलती है। उसी साल बनती है शौर बरसात ग्राते-ग्राते उसमें गड्ढे पड़ जाते हैं। कारण यह है कि जो पिटाई होती है, उसमें ग्रधिकतर मिट्टी का हिस्सा मिलाकर पीट दिया जाता है। ईमानदारी का स्तर इस तरह से गिर गया है कि पैसा ले लेते हैं ग्रौर सड़क को पास कर देते हैं। इस तरफ सरकार को कड़ी नजर रखनी चाहिए। ग्रगर यह काम ठीक न हुग्रा तो सरकार की बदनामी होगी। ग्राज की ही नहीं बिल्क ग्राने वाली संतान भी कोसेगी ग्रौर न जाने क्या क्या कहेगी।

श्राप जानते हैं कि खेती-बाड़ी का काम तभी श्रच्छा हो सकता है, जब किसानों के पास सारी चीजें जल्दी से जल्दी पहुंच सकती हैं जब गांवों से ज्यादातर सम्बन्ध सड़कों का हो जाय। ठेकेदारी प्रथा जो श्राज कायम है, इसके लिए माननीय मन्त्री जी से कहूंगा कि . . .

श्री श्रिधिष्ठाता--कई माननीय सदस्यों ने कहा है इसके बारे में, उसको न दोहरायें।

श्री दुर्योधन—ग्रब में सरकार से सिफारिश करूंगा कि सरकार गांव में ठेके देकर, जहां से जो सड़कें निकलती हैं वहां के इदं-गिर्द के लोगों को ठेके देकर, उस सड़क का निर्माण करावे और ग्रपने ग्रोवरिसयर्स को रखकर काम करावे। छोटी-छोटी सड़कें जो हैं वह गांव सभा के सुपुर्द की जायं ग्रौर उनको पैसा दिया जाय ताकि वह ग्रच्छी से ग्रच्छी सड़कें बनवा सकें। कुछ ऐसे लोग रखें जायं जो इन कामों को घूमकर देखें। एक्सपर्ट लोग रखें जायं जो जिले के काम को ठीक से देखें। इन्जीनियर्स ग्रौर ग्रोवर्भियर्स के ऊपर ऐसे ग्रिधकारी रखें जायं।

[श्री दुर्योधन]

रिहाब हमारे यहां एक नदी पड़ ती, है जिससे पचासों हजार जनता बरमात के दिनो मे ग्रलग हो जाती है। उस पर पुल बना दिया जाय तो जनता को सहू लियत होगी श्रोर ग्रिधिक से श्रिधिक लकड़ी का व्यापार हो सकता है।

श्री ग्रधिष्ठाता—समय समाप्त।

श्री शिवशरणलाल श्रीवास्तवं (जिला बहराइच)—माननीय श्रीधष्ठाता महोदय, मैं प्रस्तुत अनुदान के समर्थन में खड़ा हुआ हूं। इसमें दो रायें नहीं हो सफती कि किसी भी देश की उन्नति के लिए सड़कों का होना नितांत आवश्यक है। और इस आर सरकार ने अपना कदम बढ़ाया भी है। बहुत कुछ हुआ और बहुत कुछ होने को बाकी है। लेकिन कल से में इस विवाद को सुन रहा हूं। एक लम्बी लिस्ट इस सदन में माननीय मन्त्री जी यो पड़कों की दी गयी कि वे इन तमाम सड़कों को बताबे। लेकिन किसी भी माननीय सदस्य ने यह देवने की परवाह नहीं की कि प्रथम पंचवर्षीय योजना में फण्ड का कितना परसेट ज महका को बताने के लिए एलाट किया गया और दूसरी पंचवर्षीय योजना में कितना दिया गया थे जो पहली योजना के लिए एलाट किया गया और दूसरी पंचवर्षीय योजना में कितना दिया गया सर्वों के निर्माण के लिए दिया गया और दूसरी योजना में लगभग ४ फी सदी। आप मान्न गव ने ह कि इतने रुपये में हम कितनी सड़कों बना सकते हैं? बाबजूद इसके एक सम्बी लिएट दो गया। लेकिन किसी भी माननीय सदस्य ने यह नहीं कहा कि केन्द्रीय सरकार ५ र इस बात का जोर इाला जाय कि आने वाली तीसरी योजना में हमें अधिक से अधिक रुपया विया जाय ताकि हम प्रदेश की माग, जो सड़कों के लिए है, उसे पूरा कर सकें।

(इस समय १ बजकर ७ मिनट पर ग्राधिष्ठाता, श्री वीरसेन, पीठामीन हुए।)

फिर भी जो कुछ हुन्ना काफी हुन्ना। में यह भी कह सकता हूं कि जहा दल्ली सरकों की मांग की गयी यह बड़ा मुदिकल होगा किसी भी सरकार के लिए कि उन राग्न का पूरा करा सके। लेकिन फिर भी विभाग का न्नार मन्त्री जी का यह कलंक्य है कि कम स वम दे रारकें, जो कि न्नाव्यक है, उनको बनाने में प्राथमिकता दे। यही नहीं बल्क उन सहके का भी जिन्न किया गया जहां पर दूसरे यातायात के साधन मौजूद है। म तो उस सहक का जिन्न कहगा, जो डेढ़, दो लाख न्नावादों के लिए केन्नल एक ही सड़क है, न वहा कोई रेल है, न काई दूसरा रास्ता है। में मन्त्री जी का न्नाभारी हूं कि न्नभी हाल ही में उन्होंने रवय जा कर उस केन्न में उस सड़क की दशा देखी न्नौर जनता की न्नावश्यकता को समझा मौर उन्होंने इस ग्रांत का एलान किया कि यह सड़क जरूर बनेगी। में न्नपने क्षेत्र की जनता की तरफ में और न्नावी तरफ से उनको धन्यवाद देता हूं। लेकिन यह कह देना कि कुछ हुन्ना नहीं गलत है। यह सही है कि किसी काम में देर हुई हो, यह सही है कि कोई काम हम किसी कारण से न कर सके हो, बाह खप्ये की कमी हो या कुछ विभागीय दिक्कते हों जैसे एस्टिमेंट्स के संबन्नन होने में देशी मावि। उनको तो मन्त्री जी ने नोट कर लिया होगा।

मै उनका ध्याम बहराइच-निमगा रोड पर एक पुल की झाबदयकता की श्रोर विलास चाहता हूं। वह है भकला पुल। मुझे मालूम हुआ है कि उस पर लोहे के पीयो का पुल का विचार किया जा रहा है। लेकिन वह पुल वहां की जनता की झावदयकताओं को पूरा च कर सकेगा, क्यों कि बरसात में वह पुल नहीं रहता श्रौर बरसात में उस विद्या की जो बद्या है उसकी देखते हुये वहां पर पक्के पुल की सख्त झावदयकता है। मुझे यह भी मालूम हुआ है कि साढ़े तीन लाख रुपया इस लोहे के पीयों के पुल पर खर्च होगा। इस के साथ-साथ कुछ अपनी बचत से लगा करके पक्के ही पुल का निर्माण झगर शुक्त कर वें तो जनता की तकलीफ दूर हो जायगी श्रौर साथ ही साथ ग्रासानी भी है। यदि गाइड बंध बना करके उस पर काम बालू कर दिया जाय तो मेरा अनुमान है कि ६, १० लाख रुपये में पक्का पुल संयार हो जायगा जिससे जनता को काफी सुविधा हो जायगी जब कि उस पुल और उस रास्ते के झलाबा और कोई बूसरा

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—स्रनुदान १५३ संख्या ३४—लेखा शीर्षक ५०— गगरिक निर्माण-कार्य स्रौर ५०-क— राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, स्रनुदान संख्या ३५—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य, केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, स्रनुदान संख्या ३६—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य स्रौर ८१—राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्य स्रौर ८१—राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा स्रनुदान संख्या ५०—लेखा शीर्षक ८१— राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

रास्ता नहीं है। यह मैने इसलिए कहा कि कल से जो मै बहस सुन रहा हूं उनमे, उन सड़कों का भी जिन्न किया गया, जो सड़के केवल सड़कों के लिए मांगी गयी है, जहां ग्राने-जाने के दूसरे साधन है, रेल भी जाती है और फिर भी उन सड़कों की मांग है। मै माननीय मन्त्री जी से कहूं का जिन्न जब वे तृतीय पंचवर्षीय योजना को रूपरेखा बनाना शुरू करे तो इस बात पर विचार रखें कि किन-किन सड़कों को प्राथमिकता दी जाय। एक सिद्धान्त के ऊपर तृतीय पंचवर्षीय योजना पर विचार किया जाय इससे बहा कुछ सुविधा हो जायेगी।

इसके श्रतिरिक्त जिले में जो परामर्शेंदात्री समिति बनाथी गयी है उस श्रोर मै उनका ध्यान दिलान। चाहता हूं। मै नहीं समझ पाया कि इस परामर्शदात्री समिति का क्या कर्त्तव्य है श्रौर क्या उसके श्रधिकार है? केवल बैठ कर थोड़ी देर किसी बात के ऊपर चर्चा कर लेना सिनित का कर्तव्य नहीं हो सकता। उसको कुछ काम सौपना चाहिए श्रोर कुछ मुपरवाइजरी पावर्स उसको देना चाहिए जिससे वे तमाम शिकायते जो सदन मे हम सुन रहे ह उनका मौका न हो। यह भी है कि शिकायते जितनी बढ़ा-चढ़ा कर की गयी है, उतनी है नहीं। जिन दिककतों के श्रन्तर्गत रह कर विभाग को काम करना पड़ता है श्रगर उनको समझा जाय तो फिर शायद इतनी शिकायत करने का मौका उनको नहीं होगा। यह सही है कि एक काम करने का ढंग होता है। लेकिन जब हम देखते है कि छोटी-छोटी बातों पर श्राब्जे।शन लग जाता है तो श्रोसीजरल डिलेज जो होती है, उनमे दिक्कत होती है श्रौर जनता को कठिनाई का सामना करना पड़ता है। लिहाजा कुछ ऐसा किया जाय कि जो एस्टिमेट्स को सैक्शन करने का प्रोसीर है, उसमे डिले न की जाय। कार्यशैली कुछ इस तरह से निर्धारित की जाय।

इसके अलावा हमारे जिले की दशा कुछ अजीव सी है। नेपाल की तराई मे पड़ा हुआ। तथा नेपाल बार्डर से मिला हुआ यह जिला है। वहां पर सड़कों की अधिक आवश्यकता हे और बहुत सी ऐसी सड़के है जो नेपाल बार्डर को मिलाती है। उन्ना बनना इस त रते अ वश्य क है कि वे रूपरे मुलक को मि नात: है। जो बहराइच-भिंगा रोड है, उसको सिरसिया तक बढ़ा दिया जाय, तािक जो नो मैन्स लैण्ड है उससे वह मिल जाय और राजनीतिक तथा प्रशासकीय दृष्टिकोण से भी इसकी आवश्यकता है। ग्रब दूसरी सड़क है बहराइच-मल्लीपुर, उसे भी बनाने की आवश्यकता है। तीसरी पंचवर्षीय योजना की एक फेहरिस्त तैयार की गयी है, लेकिन हमें यह देखन। होगा कि प्राथमिकता किसको दी जाय? जो सड़के बहराइच जिले की है उनको मेहरबानी करके अन्तरिम जिला परिषद् को फिर से भेज दिया जाय तािक उन सड़कों की प्राथमिकता को निर्धारित किया जा सके।

यह कहना कि कुछ काम नहीं हुआ है यह तो वास्तव में सच्चाई पर घूल डालने के बराबर है। थोड़ी सी जो हमारी कठिनाइयां है, उनकी तरफ भी ध्यान देना है। हमारे पास कितनी शिक्तिहै, उस पर भी ध्यान रखनाहै और उन तमाम कायां की ग्रोर ध्यान देना है जिनके कारण प्राज हम यह कह सकते है कि जो कुछ हमारी सरकार ने किया है वह कम नहीं है। ग्रोर इन सब बातों की देखते हुये ग्रवश्य ही सदन के सभी माननीय सदस्थों को इस ग्रनुदान को स्वीकार कर लेना चाहिए।

श्री गोविन्द सिंह विष्ट (जिला श्रत्माड़ा)—माननीय श्रिधिकाता महोदय, मै उन सब माननीय सदस्यों को जो चाहे कांग्रेस पार्टी कें हों, चाहे विरोधी दलों के हों, जिन्होंने मेरे कट-मोशन के समर्थन में या उसके विरोध में जो कुछ कहा है, बड़ा श्राभारी हूं कि उन्होंने बड़े सुन्दर सुझाव भी दिये हैं जिससे कई बातों पर रोशनी पड़ी।

[श्रा गोबिन्दसिंह विष्ट]

श्रीमन्, मुझे इस विषय में कुछ श्रिविक कहने की जरूरत नहीं वयोंकि इधर श्रीर उधर दोनों तरफ के बैठने वालों में प्रायः सभी ने मेरा समर्थन किया। एक श्राण दाने कुछ भाइयों ने शायद मोनोटनी तोड़ने के लिये कहीं। एक भाई ने कहा कि गोहिनजोदड़ों श्रोर हरणा का इतिहास पुराना है, उसमें श्राज का कोई ताल्लक नहीं। में तो महा रोड विकास के नाते यह सब कह रहा था लेकिन एक बात उससे जरण उठनी है कि राष्ट्र है हजार वर्ष पूर्व जो सड़के बनी थीं उनके भी श्राज चिह्न मोजूद हैं। एक श्रीय न कहा ह

"A thing of beauty is a joy for ever."

तो एक तरफ यह चीज है और दूसरी तरफ आज ही सदन में कई माननीय सारियों ने कहा कि कई जिल्डिंगे हाल में बनीं नहीं कि दूर गयीं, जेमें नेनीताल में जियी कालेंग की छत बनते ही दूर गयी थी या शल्मोड़े जिने में भूकम्प आया भी नविभित्त कर की राज का मान ही कई बिल्डिंगें दूर गयी जब कि देहात के मकान वैमें ही रहें। तो आज का या हालक है। इस के अलावा, मेरा खवाल है कि भाननीय मंत्रीजी ने कहा सालट डालने किये ही पर गात वहीं होगी, नहीं तो वह बकील आदमी हैं ऐसा कैसे कह सकते थे? कहा गया कि आगर प्रांट बढ़ाने की बात है तो फिर करमोशन क्यों और यह बिरोध नयों? में वस बताई यह तो संसदीय पद्धित है। अगर हम यह करमोशन न लाते तो फिर आप हमें रहने कि हमारे यहां की सड़के बनाओ, पुलिया बनाओं और मंत्री जी कैसे बताने कि हमारे यहां की सड़के बनाओं, पुलिया बनाओं और मंत्री जी कैसे बताने कि हमारे यहां की सड़के बनाओं, पुलिया बनाओं पक्ष की जरूरत ही क्या है। साम बगर हमारे रहे आपके गुणों की परख कीन करेगा?

'हमीं जब न होंगे तो क्या रंगे महफिल किसे देख कर ग्राप शर्माइयेगा।'

प्रगर हम यह न करते तो स्वयं उन सदस्यों को, जो कांग्रेस के होते हुए श्रयनी मांग राप गये, बोलने का मौका ही नहीं रह जाता श्रीर दिल के श्ररमान दिल ही में रह जाते ।

माननीय खूबसिंह ने कहा कि पी० डब्लू डी० के यह माने नहीं हैं जसा विरोधी कहते हैं। हम लोग उनमें से नहीं हैं कि जो पी० डब्ल्यू० डी० के गलन माने अपने तक से लगायें। यह नामकरण "Plunder without danger" माननीय गोविन्द सहाय जी ने किया है, हमने नहीं। अब एक बिजनौर के माननीय सदस्य एक प्रांथ लगाये और दूसरे बिजनौर के माननीय सदस्य दूसरे अर्थ लगायें, इसी तरह कामों के बार म बनारस के कांग्रेसी सदस्य झगड़ें तो यह बिजनौर और बनारस के झगड़ें हैं, इनमें हम नहीं पहेंगें।

एक बात यह कही गयी कि शहरों की तरफ सरकार की ज्यादा तयज्जह है। यह जात दोनों तरफ के बैठने वालों ने कही। में माननीय मंत्रीजी का प्यान दिसाना चाता है कि शहरों की बिल्डिंगे चाहे जितनी बड़ी हों उनके बनवाने में जरा देर नहीं लगर्ता लेकिन देशत की बहुत जरूरी सड़कें पड़ी रह जाती हैं।

एक बात ग्रोर कह दूं ग्राजकल वेस्टेज विधायक निवासों में बहुत हो रता है। ग्रोल्ड कॉसिलर्स रेज़ीडेन्स में हाल ही में बाथ रूम बने उनमें, नया प्लास्टर चढ़ाया गया ग्रोर एक महीना भी नहीं हुन्ना कि उसे उखाड़ कर ग्रब मोजेक चढ़ाया जा रहा है। इसके लिये सबूत की जरूरत नहीं है एक बार तशरीफ ले जाइए।

एक बात और कहना चाहता हूं कि पी० डब्लू० डी० मैन्ग्रल पुराने जमाने का है ग्रीर श्राज के विकास के युग की उसमें कोई बात नहीं हैं। इसिल्ये इसमें परिवर्तन की बहुत ग्रावश्यकता हैं। इसके ग्रलावा जो सड़कें बगैरह बनता है उसमें जब हम लोग कुछ कहते हैं तो इंजीनियर लोग कहते हैं कि तुम लेमेंन हां, क्या जानो लेकिन हम देखते हैं कि एक ग्राध फर्लांग चक्कर जरूर ज्यादा लगता है जबकि कम चक्कर से सड़क ग्रासानी से जा सकती थी।

१९६०-६१ के ब्राय-व्ययक में ब्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—प्रमुदान संख्या १५५ ३४--लेखा शोषक ५०--नागरिक निर्माण-वार्य ब्रौर ५०--क-राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, ब्रनुदान संख्या ३५-- लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य, केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, ब्रनुदान संख्या ३६--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य ब्रौर ८१--राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा ब्रनुदान संख्या ५०--लेखा शोषक ८१--राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा

इसके श्रलावा सुर्पारंटींडग इंजीनियर की पोस्ट्स के बारे में बहुत से दिनों से कहा जा रहा है कि एक शोभा की वस्तु है महज पोस्ट ग्राफिस का काम यह करते है। सभी की राय है कि यह एक Superfluous post है, इसकी श्रावश्यकता नहीं है। इस बात के लिये में जरूर धन्यवाद देता हूं कि कम से कम इस एक ही विभाग में ४-४ चीफ इंजीनियर नहीं रखे गये हैं। मगर इन S.E.S. का रक्खा जाना इस दिशा की श्रीर एक पग है। इसके श्रलावा श्रीमन्, देखा गया है कि श्रोवरसियरों का बनाया हुश्रा ही ऐस्टीमेंट श्रारंभ से श्रन्त तक चलता है। उसी पर श्रिसस्टेंट इंजीनियर, एक्जीक्यूटिव इंजीनियर, एक्जिक्ट्रोसे इंजीनियर की सैक्शन की मुहर लग जाती है श्रीर वही विभाग द्वारा फाइनेन्स को भेजा जाता है श्रीर उसी की संक्शन मिलती है मरे कहने का मतलब यह है कि इंजीनियरों की Higher Technical Knowledge का उपयोग क्यों नहीं किया जाता है? इस कमी को पूरा किया जाय।

श्रीमन्, एक बात ग्रौर है कि मार्च में सारे खर्च होने लगते हैं। इसलिये मैं कहूंगा कि रुपया लैंग्स न हो इसके लिये कोई ऐसा फंड बना दिया जाय जिसमें वह रुपया जमा हो जाय ग्रौर तीन साल तक लैंग्स न हो ग्रौर ए० जी० की तरफ से जवाब तलब न किया जाय। ग्राप ग्रन्त समय में रुपया दे देते हैं। बेचारा इंजीनियर क्या करे ? श्रीमन्, उचन्त की बात ग्राती है। ससपेस के नाम से बड़ी गड़बड़ी होती है। इसकी जांच की जाय ग्रौर ए० जी० से लिखा-पढ़ी की जाय। स्टाक का वेरीफिकेशन नहीं होता है जिससे सामान चोरी से बिकता है। सीमेन्ट जब खुले बाजारों में नहीं मिलती थी तो घरों में उन दिनों भी ग्रत्यिक सीमेन्ट कहां से लगाई गई ? यह ग्रांखों से देखने की बात है क्योंकि सरकार तो उस समय परिमट देती नहीं थी। उस समय घर कहां से बन रहे थे स्टाक के वेरिकि हेशन व कामों के sample-analysis के न होने की वजह से यह चीज हुई।

श्रीमन्, जिलों में जो श्रापकी पी० उष्ट्यू० डी० की कमेटियां हैं, उनके बारे में कहना चाहता हूं कि वह एक शोभा की चीज ही रह गई हैं। उनमें ज्यादातर एम० एल० एज० श्रीर एम० एल० सीज० ही हैं ग्रीर ऐसे मौके पर मीटिंग होती है जब हम नहीं जा सकते हैं। में माननीय मंत्री जी से कहूंगा कि इनको खाली शोभा की चीज न बनाकर सुपरवाइजरी पावसे भी दी जायं। जैसे किसी ठेकेदार की नाप पूरी न हुई हो तो श्रदायगी रोकी तो नहीं जाती, श्रादि कार्य उसे देखने का श्रधिकार इस कमेटी को होना चाहिए। इकरारनामा हिन्दी में छापा जाय। ठेका बिलकुल डिपार्टमेन्ट के पक्ष में होता है। ठेकेदार से होनेवाले इकरारनामें ग्रंपेज के जमाने के बने हैं जब परिस्थित एकदम दूसरी थी। वह एकतरफा है। उसमें सारी शर्नें ठेकेदार के खिलाफ होने से उसे,सही या गलत, हर मामले में दबना पड़ता है। इससे अष्टाचार बढ़ता है। श्रगर ठेकेदार १० प्रतिशत न दे तो वह हर समय विभाग के श्रधिकारियों के चंगुल में रहता है। इसलिये में चाहता हूं कि इकरारनामें में जो शर्तें हों उनमें बराबरी के श्रधिकार दोनों को हों ताकि उसकी दबना न पड़े।

अर्त में में पूछना चाहता हूं जो मैने कल भी कहा था कि उस बात का पता लगाया जाय कि जो २० बारजेज खरी दें गये थे क्या वह नदी के लायक नहीं थें ? में यह कहना चाहता हूं कि ४७-४६ में ....

सार्वजिनिक निर्माण उप-मंत्री (श्री महावीर सिंह) --श्रीसन्, पी० ए० सी० में यह मामला श्रंडर कंतीडरेशन हैं श्रीर में समझता हूं कि ऐसी हा त में जब कि इसकी सनवाई होती है तो यहां पर इसको उठाना कहां तक उचित होगा, इसके लिये श्राप व्यवस्था दे ।

श्री गोविन्द सिंह विष्ट-शीमन्, मै तो फेक्टस बता रहा हूं, यह जनता कह रही है। I am not commenting but only putting the facts."

श्री ग्रिधिष्ठाता—मै कहता हूं कि जो मामला पी० ए० सी० के विचाराधीन है, उस पर माननीय सदस्य न बोले ।

श्री गोविन्दिंसह विष्ट--इतना मै जरूर कहूंगा कि मंत्री जी एक त्रिविलेज के पीछे जारहे हैं। लेकिन यह किसी में हिम्मत नहीं हैं कि वह माई का लाल ग्रागे ग्राये ग्रोर कह दें कि उस मंत्री ने ४.८० लाख का भ्रष्टाचार नहीं किया हैं।

इधर पहाड़ों की ओर श्राज विशेष रूप से तवज्जुह देने की जरूरत है। इसलिये नहीं कि वहां पर डेवलपमेट की जरूरत हैं बिल्क इसलिये कि चीनी एक जायं। श्राज हम देखते हैं कि श्रद्धव मार्ग के लिये बहुत सा रुपया रुखा गया है। तमाम जगह मोटर मार्ग बन रहे है तो श्राज के युग में घोड़ का मार्ग बनाना यह कोई माने नहीं रखता है

श्रत्मोड़ा-बाड़ेछीना–झूलाघाट श्रश्व मार्ग बन रहा है इस प्रकार पहले श्रश्व मार्ग बनाएं श्रौर फिर मोटर मार्ग बनाएं, यह डुप्लीकेशन नहीं होना चाहिये । वोड़म भनाली,

पौघार, देवीधुरा-जैती मोरनोफा मार्गी ला शौध्र बनना जरूरी है ।

श्रन्त में में सभी माननीय सदस्यों को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने मेरी बातों का समर्थन किया। मेने माननीय मंत्री जी से भी ज्यादा नहीं कहा है। यह श्रपनी तरफ बैठने वालों का ही जवाब दे दें तो काफी है।

\*श्री गिरधारीलाल—-प्रध्यक्ष महोदय, मैंने कल से बहस सुनी। मैं सभी वयताओं का ग्राभारी हूं कि उन्होंने इस विभाग के ऊपर एक वर्ष के बाद ग्राज फिर ग्रगने तजुर्वे से फायदा पहुंचाने की कोशिश की।

इसमें कई एक चीजें है। यहां पर टर्म्स के बारे में एक प्रश्न उठाया गया। पहले में उस सम्बन्ध में इतना कह देना चाहता हूं कि यह प्रश्न इस प्रकार है, जिसकी फाइल पिन्तक एकाउ द्स कमेटी ने तलब की है। मेरे दोस्त माननीय गोविन्द सिंह बिष्ट भी उस कमेटी के मेम्बर हैं। वह जब तक उस प्रश्न को वहां पर हल न कर लें तब तक उसको यहां पर लाना मुनासिब नहीं था। वह ले आये लेकिन भेरी हिम्मत नहीं है कि उस सिलसिले में कोई बात मैं यहां कहं।

जहां तक ग्रन्य बातें हैं उनके सिलसिले में कई प्रकार की बातें कही गयीं। एक बात यह कही गई कि जो काम हमारे प्रान्त में हो रहा है उसे बजाय ठेकेंदारी प्रया के सरकार खुद ग्रपने ग्राप करें। में उस राय से बिलकुल सहमत हूं जहांतक ख्वाहिश की बात है लेकिन जिस वक्त उस चीज को कार्यान्वित किया जायगा तो यह सोचने की चीज है कि हम कहां तक सफल होंगे। मैने पहले भी मिसाल के तरेर पर यह कहा था कि हमारे दोस्त छोटे ग्रीर बड़े सब तरह के काम करते हैं। ग्रगर कुछ कामों की हम ग्रपने नौकरों पर छोड़ वें ग्रीर यहां ग्राकर श्रसम्बली में या बाहर काम करें तो में जानना चाहूंगा कि उनको कहां तक सफलता मिलेगी?

<sup>&</sup>lt;sup>\*</sup>वक्ताने भाषण का पुनर्वीक्षग नहीं किया।

१६६०-६१ के आय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—अनुदान १५७ संख्या ३४—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य और ५०-क— राजस्व से वित्तपोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, अनुदान संख्या ३५—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य, केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, अनुदान संख्या ३६—लेखा शीर्षक ५०— नागरिक निर्माण-कार्य और ६१—राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्य और को लेखा तथा अनुदान संख्या ५०—लेखा शीर्षक ६१—राजस्व लेखे के बाहर नागरिक-निर्माण-कार्यों को पूंजी का लेखा हर नागरिक-निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

मैने खेती-बारी के सिलसिले में सुना है कि नौकरों के जरिये से खेती कभी नहीं होती। उसकी वजह यह है कि जो नौकर काम करता है, उसका पर्सनल इसेंटिव कुछ नहीं होता है। उसको श्रपनी मजदूरी से मतलब है, काम चाहे जैसा हो। इसी प्रकार श्रगर हम मशीन से काम करवाएं तो इसके बहुत खतरे हैं। मैने बतलाया कि एक तरीके मैनेजमेंट है। इस युग के श्रन्दर, चाहे इसको कैपिटलिस्टिक समाज कहिये या कुछ कहिये, इसको हम डिस्इंटरेस्टेड सिस्टम कहा करते हैं यानी काम के संचालन में कोई व्यक्तिगत हित नहीं होता है। वह दस बजे ग्राये ग्रौर चार बजे चले गये। बिगड़ रहा है या क्या हो रहा है इससे मतलब नहीं है। दुनिया भर में हर स्थान पर जितने भी बड़े-बड़े काम है, सब इसी तरीके से होते हैं। वह सरकार की श्रोर से या पार्टी की तरफ से चुनौती होती है कि जो कोई भी इस काम को करने के लिये तैयार हो वह श्रागे बढ़ें। जो भी कोई चाहता है, वह श्रागे श्राता है, उस काम को श्रपने हाथ में लेता है और बहुत से लोग आते हैं। कम्पटीशन उनमें होता है, जिसको वह पार्टी मुनासिब समझती हैं, काम से कम दर के ऊपर उसको वह देती है श्रौर इस तरह से काम होता है । तो इस ठैंकेदारी प्रथा को एक नेसेंसरी इविल समझ करके चलाना पड़ता है । इसके सिलसिले में में एक बात और भी कह दूं कोश्रापरेटिव सोसाइटीज का िस्सा, जैसा मैने पहले भी बताया, वही तरीका थोड़ा बहुत हो सकता है। उसमें भी यहां पर हमारे भाई इस वक्त नहीं हैं उनको तो उसमें भी खतरा कालूप हुआ। उन्होंने कहा कि केरल के अन्दर एक पार्टी का ऐसा प्रभत्व उसके ऊपर कायम हो गया जिससे उनको खतरा मालुम पड़ने लगा । तो मैं उनको इत्मीनान दिलाना चाहता हूं कि उनको इस बात से घबड़ाने की कोई जरूरत नहीं है। हमने बहुत स्लो और स्टेडी तरीके से,प्राहिस्ते-श्राहिस्ते इसको चलाना शुरू किया है और इसी वास्ते छोटे छोटे काम, दो हजार से लेकर सात या भ्राठ हजार रुपये तक के काम उन सोसाइटीज को दिये जाते हैं श्रौर कुछ जिलों में जहां पर कि ऊपर के कर्मचारियों ने दिलचस्पी ली वहां पर उस तरह से कार्य हुया श्रौर उसके श्रन्दर सफलता हुई, मजदूरों का फायदा हुया। मजदूर श्रपने पावों पर खड़ा होना सीखे श्रौर स्वावलम्बी तथा सफल हुए ।

इन बातों के अलावा भाष्टाचार और करण्यान के सिलसिले में कई एक बात कही गई। बहुत दूर तक कुछ लोगों ने कह दिया और कुछ अमित प्रकार के लोगों ने तो जैसे एक मदारी किसी मरे हुए सांप को जिन्दा करने की कोशिश करता है उसी प्रकार विभागों की आत्माओं को कभी इघर खड़े होकर, कभी उघर खड़े होकर जिन्दा करने की कोशिश की। लेकिन इस तरह से चारों कोनों से कोई आत्मायें जिन्दा नहीं हुआ करतीं। आत्मायें जिन्दा हैं। जिन्दा हैं तभी वह आत्मायें विभागों के साथ चलती हैं। मैं इस बात को बतला देना चाहता हूं कि आज भी जो खामियां और कमजोरियां हैं उसके लिए हुकूमत पूरी तरह से सतक है और सजग है और उनको दूर करने की कोशिश कर रही है। उसमें वह सफल भी हुई है। मेरा दावा है कि जहां तक इस विभाग का ताल्लुक है, मैं यह नहीं कहता कि उसमें कोई कमियां और खामियां नहीं हैं। उलैकशीप्स हमेशा होती है, लेकिन में समझता हूं कि कम से कम आज यह सब की सब खराबियां हैं। टेकिनकल शेल अपर रखे गए। इसके वो काम हैं। इस प्रकार के देकिनकल शेल से मैं समझ ता हूं कि बहुत-सी खराबियां व् रैं हुई और हो रही हैं। यह सही है कि बहुत से ठेकेदार और बहुत से लोग इस बात को कहते हैं कि आपको शिड्यूल रेट्स बढ़ाने

# [श्री गिरधारी लाल]

पड़ेंगे। तो इसकी मुझको कोई चिन्ता नहीं है। मै चाहता हूं कि काम सफाई के साथ हो। इस प्रकार इस टेक्निकल रोल से बहुत काफी फायदा हुआ है। यह इस प्रकार की व्यवस्था है जो कि श्रव्टाचार को बहुत दूर रखती है। इसके श्रलावा और कुछ खराबियां है जिनके लिये मैंने श्राप से कहा कि कोई मुझे इसका इलाज श्राप बताइए। सरकार इसके लिये श्राप की एहसानमन्द होगी और सरकार ही नहीं पूरा समाज एहसानमन्द होगा, क्योंकि वह तो मर्ज है एक इस प्रकार का। मै इस बात से सहमत हूं कि उसके लिए मेजर श्रापरेशंस की जरूरत है। लेकिन वह श्रापरेशन कैसे होगा? कौन लोग करेंगे?

इसके श्रलावा हमारे दो एक साथियों ने यह भी कहा कि प्लानिंग सड़को के मामले में समझता हूं इस विभाग के श्रन्दर जिस खूबसूरती के साथ, जिस सुन्दरता के साथ प्लानिंग होनी चाहिए उसी खूबसूरती और सुन्दरता के साथ प्लानिंग हुई है। आपका मतलब था कि सड़कें एक जिले से दूसरे जिले तक सम्बन्धित हों, और सूबे का एक कोना दूसरे कोने से सम्बन्धित हो। उसके बाद एक जिले का हेडक्वार्टर है, वह हर तहसील से सम्बन्धित हो ग्रौर हर तहसील अपनी गांव सभा से या जो वहां के ब्लाक्स वगैरह है, उनसे सम्बन्धित हो ग्रीर उसी हिसाब से उसकी प्रायोरिटी होनी चाहिये। जितनी सड़के हेमारे प्रान्त में बन रही है, वह इसी प्रयोरिटी से चल रही है। इसमें १४ प्रायोरिटीज है। पहले इन सड़कों को बनाया जा रहा है। कुछ श्रीर कृषि क्षेत्र में या श्रीद्योगिक क्षेत्र में या गन्ना मिल क्षेत्रो में ब्रावश्यक सड़कें है, उन सड़कों को बनाया जा रहा है। यह नहीं कि किसी मेरे वोस्त ने सिफा-रिश कर दी श्रौर हमने उसको उठाकर उसमें रख दिया श्रौर उसके हिसाब से काम चलने लगा। ऐसी बात नहीं है। डेमोकेसी में तो यह सदन हर क्षेत्र की नुमायन्दगी करता है। हर एक जिले की श्रपनी जरूरत है। उन जरूरतों को देखते हुए हम इस काम की करते हैं। प्रान्त में सड़कों की कमी है। हम चाहते है कि जितनी सड़कों की कमी है वह दूर हो। इस तरीके से हमारे पूरे प्रान्त के अन्दर यह सड़कें फैली हुई हे श्रीर बन रही है। इसके अन्दर ऐसी बात नहीं है कि कोई अनप्लान्ड चीज हो।

यहां पर बिल्डिंग श्रौर भवनों के निर्माण के सम्बन्ध में कहा गया तो मै नहीं समझा कि स्टैडर्डाईजेशन का क्या मलतब है। हमारे यहां २, ३ तरीके से स्टेडर्डाईजेशन होता है। सूबे में जितने श्रस्पताल है, जितने कालेज है, जितने स्कूल है, जितने थाने है, उन सब के दिजाइन बने हुये है । उसमें उस स्थान के हिसाब से थोड़ी बहुत कमी-बेशी करके बनते है । हूं जिस हिसाब से यह बन रहे हैं उस को यह सबन मन्जूर करेगा और इससे सहमत होगा। इसके श्रलावा जितने भवन है, सरकारी श्रफसरों के लिये वह उनके वेतन के हिसाब से है। जैसा सरकारी श्रफसर है, हेड श्राफ डिपार्टमेंट है तो उसका भवन उसी हिसाब से होगा भौर उसी प्रकार से बनेगा। उसी तरीके से वह नीचे की तरफ ग्राता चला जाता है। समाजवाद में भी बूढ़े और बच्चे बराबर नहीं हो सफते है। जो बड़ा श्रफसर होगा उसके ऊपर ज्यादा जिम्मेदारी होगी और जो छोटा होगा उसके ऊपर कम जिम्मेदारी होगी। अगर हमारे बोस्त इसमें कोई फर्क नहीं करना चाहते है तो यह बात मेरी समझ में नहीं ब्राई । जैसे सिविस सर्जन के लिये स्टैडर्डाईज्ड कास्ट ३६ हजार रुपया है। डिस्ट्रिक्ट जर्ज के लिये ४२ हजार है और सिविल जज के लिये २७,३०० रुपया है। इस बात पर मतभेद हो सकता है कि रुपया कम ज्यादा होना चाहिये लेकिन जहां तक स्टेडर्डाइज्ड करने की बात है उसमें दो रावें नहीं हो भुकती है। इसलिये मेर् निवेदन है कि इस तरीके से इन तमाम बातों क सम्बन्ध में जो भ्रम है, वह दूर कर देना चाहिये।

एक बात यह कही गई कि जो रुपया भवन निर्माण के कार्य में लगता है वह सब सब का सब रुपया वहां से हट कर सड़कों के ऊपर श्रा जाय। मेरी ख्वाहिश है कि ऐता हो लेकिन जैसा सब को भालूम है भवन दूसरे विभागों के होते है यदि कोई ग्रस्थताल है १६६०-६१ के श्राय-व्ययक में श्रनुदान के लिये मांगों पर मतदान-श्रनुदान संख्या ३४-लेला शीर्षक ५०-सार्वजनिक निर्माण-कार्य श्रौर ५०-क- राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत; श्रनुदान संख्या ३५-लेखा शीर्षक ५०-नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता; श्रनुदान, संख्या ३६-लेखा शीर्षक ५०- नागरिक निर्माण-कार्य श्रौर ८१-राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण कार्यों की पूंजी का लेखा तथा श्रनुदान संख्या ५०-लेखा शीर्षक ८१-राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों का पूंजीलेखा

बह ठाकुर साहब के विभाग से सम्बन्ध रखता है। कोई कालेज है तो वह एजू केशन डिपार्ट मेंट से ताल्लुक रखता है। उनका विभाग जिप चीज की जरूरत है और जिस चीज की जरूरत को प्रेस करता है पहले उसका डिजाइन मन्जूर कराते है, फिर जाकर निर्माण करते है। वह रुपया केन्द्रीय सरकार से या और कहीं से आता है। जिस तरीके से वे बनते जाते हैं उसी तरीके से खर्च होता चलता है। उसमें हम दखल नहीं दे सकते। जिस स्थान पर उसकी जरूरत है, वहां पर उसका निर्माण हो रहा है।

एक बात यहां पर यह कही गई कि जैसे यहां पर नीचे तकलीफ होती है तो पहाड़ों पर भी शायद उसी तरह की तकलीफ हो। इस सम्बन्ध में विष्ट जो ने कहा कि जो इन तीन जिलों को ख्रलग कर दिया गया है इससे तकलीफ सम्भवतः वहां पर हो। वास्तव में ख्रलग करने का संबंध डिफेस डिपार्ट मेंट से है। उनका यह ख्रादेश हमारे यहां ख्राया ग्रौर उसके हिसाब से हमने उसका इंतजाम किया। लेकिन ग्रादेश उनका है ग्रौर उसमे हम कोई दखल नहीं दे सकते। लेकिन यह जरूर है कि इसके जिये से वह इलाका जो सही मानों में एक ख्रखू त इलाका बना हुन्ना था, जैसे हिन्दू समाज में पिरगणित जाति है उस तरह से, वह ग्रब सुधरेगा ग्रौर उन्नत होगा ग्रौर में समझता हूं कि ३० या ३५ करोड़ रुपया वहां भवनों ग्रौर सड़कों के निर्माण पर खर्च होगा। इस तरह वहां काम हो रहा है ग्रौर वहां के रेट्स रिवाइज करने की जो बात की गयी, वह वहां की पिरस्थित के हिसाब से जरूर रिवाइज किये जायंगे।

इसके अलावा मे दो एक बातों पर और रोशनी डालना चाहता हूं। एक बात यह कही गयी कि इस विभाग में परिगणित जाति के लोग क्यों नहीं रखे गये। यह भी कहा गया कि चपरासी क्यों नहीं रखे गये। हमारे यहां से इस बात की हिदायत दी गयी है कि जो स्थान भी खाली हों उन पर परिगणित जाति के लोगों को रखा जाय। मझ को पता नहीं कि ५०० या १,०००, कितने चपरासी काम करते हैं, लेकिन उनको निकाल कर ग्रंथने लोगों को नौकरी दिलाना महज इसलिये कि मै ग्रपने दोस्तों को दिखला दूं कि हम हरिजनों के खैरख्वाह है, यह नहीं किया जा सकता। परसेन्टेज पुरा किया जायगा श्रीर उसके लिये हम जिम्मेदार है। (व्यवधान) मुझे खुशी है कि उनके लिये ग्रापको दर्द है लेकिन जितना दर्द ग्रापको है उतना ही कम से कम मुझे भी है और उनके लिये कोशिश की जा रही है। इस विभाग के साथ ही और दूसरे विभागों में भी भ्रौर जो भ्रापके घरों में कर्मचारी है उनके ग्रंदर भी यह समाज पहुंचे ग्रौर सब को सेवा करे, इसके लिये को जिल्ला है। जैला कि स्राय लोगों को मालुम होगा, एक कमेटी बैठी है, पहले भी जित्र किया गया था, कि जो नौकरियां पन्लिक सर्विस कमीशन के बाहर की हैं वह किस प्रकार हम इस वर्ग के लोगों को दिलाये, इस पर विाचार हो रहा है। इसी बहाने से इस प्रश्न पर विचार किया गया ग्रौर प्रकाश पड़', यह ग्रच्छी बात है ग्रौर गरोबों का इससे फायदा होगा। हम लोग इस दिशा में काफी सजग है, सचेत है और पी० डब्ल्यू० डी० में ग्रौर इरिगेशन में श्रौर दुसरे महकमों में भी इसके लिये कोशिश की जा रही है।

एक बात कुंछ गलतफहमी के फ्राधार पर कह दी गयी ग्रौर उसका मुझे दुख है। मेरे दोस्त श्री चन्द्रसिंह रावत से मेरी मुलाकात शायद एक वर्ष से नहीं हुई। एक बार शायद वह श्रौर में किसी दोस्त की दावत में मिले थे ग्रौर वहां दुग्रा बंदगी हुई थो, लेकिन इस बीच में शायद मेरी उनकी मुलाकात नहीं हुई। श्री चन्द्रसिंह रावत (जिला गढ़वाल) — स्वेश्चन। एक साथी यहां बेठे हं, मं उनके साथ मिला था।

श्री गिरधारीलाल--मंते जैसा कहा, मुझे यही याद पड़ता है। श्रगर श्राप पहुंचे थे तो मुझे उसके लिये दुख है। बाकी श्राप किमिनल ला के बकील है। श्रगर वह मेरा इम्पीचमेंट करना चाहते हैं तो घर में, पार्टी में बैठकर कर सकते हैं श्रीर बड़ी खुशी के साथ कर सकते है। इसके श्रलावा श्रीर भी कई बातें कही गयीं।

श्री प्रतापिसह (जिला नैनीताल) — में एक सवाल पृष्ठता चाहता हूं। लीपूलेक से काला पानी तक जो सड़क बन रही है उसके बारे में श्राप क्या सफाई वेते हुं?

श्री गिरधारीलाल—लीपूलेक श्रीर कालापानी वाली सहक का जिक किया गया, तो वह सड़क भी थी लेकिन पहले ब्राइडल पाथ हमारे प्रोग्राम में थी। उस तरफ का हिस्सा खराब था श्रीर उसको साफ कराया गया। इसमें थोड़ी सी गलती जरूर हुई लेकिन उधर से जब यह सड़क बनेगी तो बीच में श्रगर इस प्रकार का कोई दुकड़ा पड़ा हुआ है तो उसको भी माफ कर दिया जायेगा।

एक बात यह कही गयी कि फलां जिले में तमाम राष्ट्र में बन गयीं प्रोर फलां जिले में नहीं बनीं। पुलों के लिये भी कहा गया। इस सिलिसले में में श्रापको बताऊं कि यह कहना गलत है, जहां जहां काम होने चाहिये हमें उसका ध्यान है श्रीर करते हैं। श्रथ पुलों का धिजाइन वर्गरह गवर्न मेंट श्राफ इंडिया पास करती है श्रीर ज्यों ही वह जत्वी से जल्दी श्रायेंगे काम शुरू किया जायेगा।

दारलशफा के बारे में भी कुछ माननीय सदरयों ने कहा। मुझे तो यह दलता मिली है कि वहां पर कुछ नहीं है, वहां कोई इस प्रकार की सड़क नहीं है जो हु एहें होते हैं और उनले बोच यह जरूर है कि वहां जो सीमेंट पाथ बना है उसमें ३०-३० फुट के टु एहे हीते हैं और उनले बोच में तारकोल लगा दिया जाता है। वैसे तो जबान में शिवत है, जो चाहे आप कह दर्तिजए, उसकों कोई रोक नहीं सकता, किन्तु अगर वहां पर कोई ऐसी बाल थो, तो आप भी उस सबन के माननीय सदस्य हैं, आप ही वहां पर रहते हैं, आपकी भी काफी अधिकार है, आपकों लाहिये था कि उन किमयों को आप संबंधित अधिकारियों के सामने लाते। आपको स्टेट आफितर की नोटिस में वह बातें लानी चाहिये थीं। हर वक्त आपका उनका साथ रहता है, आप उन लोगों को अच्छी तरह जानते हैं। आप उस चीज को उनकी ने टिस में ला सकते थे।

यह भी कहा गया कि जो बिल्डिंग्स बनती हैं उनके ग्रन्वर नथा करद्रीक्यू जन श्राकीटेक्बर का नहीं है। में इस बात से सहमत नहीं हूं। जितने भी हमारे प्रान्त के ग्रन्वर भयनों का निर्माण हुआ है वह वहां की जरूरतों के हिसाब से हुआ है और ग्राधुनिक श्राकीटेक्ट के हिसाब से हुआ है। बगैर उसके निर्माण नहीं हुआ है।

दूसरी बात यह कही गयी कि उसमें काफी सस्ता करने की जरूरत है। में इग संबंध में यह कहना चाहूंगा कि जितना सस्ता करना मुनासिब था श्रीर हो सकता था उतना किया गया है। दीवालें जो हैं वे पतली कर दी गयी हैं। उसकी चुनाई जो हैं वह पहलें बने और यजरी से होती थी, श्रव उसके स्थान पर वह गारे से की जाती है और ऊपर से प्लास्टर कर दिया जाता है। उसके बरामदें भी छोटे कर दिये गये हैं। उसके हर कमरें में जो मार्जिक का काम होता था यह भी बन्द कर दिया गया है श्रीर साधारण सीमेंट का हो फर्स बना दिया जाता है। इस जरह से जितनों किफायतशारी की जा सकती है उतनी की गयी है श्रीर की जा रही है।

एक बात बार बार यह कही गयी कि अंग्रेजों के जमाने की जो इमारतें है, जो पुल हैं, वे अभी तक चल रहे हैं। उनकी मिसाल वी गयी है। उनके जमाने के पुल अभी तक टिके हुये १९६०-६१ के स्राय व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—स्रनुदान संख्या १६१ ३४-लेखा शीर्षक ५०-नागरिक निर्माण कार्य स्रोर ५०-क-राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण कार्यों पर पूंजी की लागत, अनुदान संख्या ३५-लेखा शीषक ५०-नागरिक निर्माण-कार्य केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता अनुदान संख्या ३६-लेखा शीषक ५०-नागरिक निर्माण कार्य स्रोर ६१-राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों की पूंजी का लेखा तथा अनुदान संख्या ५०-लेखा शीर्षक ६१ राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा

हैं लेकिन भ्रापके जमाने में जो मकान बनते हैं, पुल बनते हैं, वह जल्दी ही गिर जाते हैं। उन्होंने उसकी मिसाल दे दी। लेकिन वे कितने थे? इस लखनऊ के अन्दर सैकड़ों मकान होंगे। श्रव उसके अन्दर दो एक मकानों की मिसाल दे दीजिये कि यह जो आपकी इमारत है और इसी प्रकार श्रीर दो चार इमारतें होगीं, वह हजारों वर्ष चलेंगी। यह ठीक है। इन्हीं चीजों को लेकर उस वक्त के लोग शायद इस बात को कहें कि यह पुराने जमाने के मकान तो अपनी जगह पर कायम हैं और आज के बने हुए गिर पड़े। तो मैं यह कह रहा था कि हम जो भी बात कहें उस पर थोड़ा सा श्रीर विचार कर लिया करें तो उससे काफी मुहकमे के कर्मचारियों की हिम्मत बढ़ सकती है।

रिसर्च इंस्टीट्यूट के सिलसिले में भी कुछ कहा गया। रिसर्च इंस्टीट्यूट हमारे प्रान्त के ख्रान्दर निर्माण के काम के लिए और सड़कों के निर्माण के जितने भी काम हैं उसके लिए हर तरीके से विचारता है और रिसर्च करता है। उसकी देखने के बाद जितने भी तजुर्बे होते हैं उनके ख्रादेश ख्रयने तमाम सरकारी कर्मचारियों को देता है, उसके हिसाब से हर साल काम होता है। हमारे एक दोस्त ने कहा था कि उसकी जानकारी उन्हें भी होनी चाहिए। मैं इस बात से बिल्कुल सहमत हूं। वह रिसर्च इंस्टीट्यूट यहां पर है, गवर्नमेंट हाउस के ठीक सामने; मेरी दावत है कि वह किसी भी वक्त उसको जाकर देख सकते हैं। वहां इस प्रकार के बहुत से काम हैं जिनको देख कर हमें काफी लाभ होगा।

किसी साहब ने मुकहमें के ग्रन्दर जो कर्मचारी हैं उनको स्थायी करने के विषय में भी कहा। सो, मैंने जैसा पहले कहा कि यह जितने भी इंजीनियरिंग विभाग हैं, यह एक्सवैंडिंग विभाग हैं, ग्राज उनमें काम है, कल को सम्भव हो सकता है कि उनमें काम न हो। तो ऐसे कामों के लिए तो सोच-समझ कर ए ह कैंडर मंजूर करना पड़ता है ग्रीर जो परमानेंट कैंडर होता है उसके हिसाब से लोगों को मुस्तिकल किया जाता है, बाकी सब गैर-मुस्तिकल, ग्रस्थायी हुआ करते हैं।

यही बात वर्क चार्ज की है। उसका जो एस्टैब्लिशमेंट है, में यह बताना चाहता हूं कि जितन गैंग वगैरह काम करते हैं उनके कोई सैलरी बिल ऐसे नहीं होते जैसे कि श्रौर सरकारी कर्मचारियों के होते हैं। जैसे कि सड़कों की देखभाल के लिए ३ करोड़ रुपया मंजूर हुश्रा, या उसी तरीके से श्रौर कामों के लिए कुछ धन मंजूर हुश्रा, उसमें से मजदूरों के लिए भी पंसे की जरूरत होगी, वह पैसा उसमें से निकाल दिया जाता है श्रौर हर एक एक्जीक्यूटिव इंजीनियर मजदूरों पर उसको खर्च करता है। ऐसा भी हो सकता है कि दूसरे वर्का पर पैसा कम हो जाय तो मजदूरों को कहना पड़ेगा कि श्रब पैसा नहीं है श्रौर न काम है, इसलिए इस वक्त हम श्रापकी सेवाश्रों को नहीं ले सकेंगे। लेकिन फिर भी में इतना बतला दूं कि जो पुराने कर्मचारी हैं, जो पुराने मेट के गैंग में काम करने वाले हैं उनके लिए कोशिश की जाती है कि रखा जाय श्रौर इस वक्त जो रिश्रागें नाइजेशन कमेटी है वह इस मसले पर विचार कर रही है श्रौर उसने विचार किया है। जितना भी ज्यादा से ज्यादा जो कुछ हो सकेंगा वह किया जायगा।

बहुत से कामों के लिये कहा जाता है कि डिले हो जाती है, इससे में भी सहमत हूं । इसमें भ्रब ग्रागे के लिये काफी सुधार किया जा रहा है, जैसा कि यहां पर किसी साहब ने जाहिर किया कि फाइनेंस डिपार्ट मेंट या ऐडिमिनिस्ट्रेटिव डिपार्ट मेंट है या कोई ग्रौर डिपार्ट मेंट है जिनके पास कागज दौड़ते रहते हैं, तो यह ट्यवस्था है, उसके हिसाब से काम होता है । उसमें देरी भी लगती है, [श्री गिरधारी लाल]

लेकिन ग्रागे को इस बात की कोशिश की जा रही है कि इसमें कम से कम समय लगे । इसके लिये ग्रब एक तो जहां तक सड़कों की बात है, उसमें यह किया जा रहा है कि हम जितने भी एस्टीमेटम वगैरह है उनको हिदायत पहले ही लोगों के पास भेज देने है कि वह उसका तमाम प्तान, एस्ट्रीमेंट वगैरह-डिटेल में बनाकर रख दें; जितनी जल्दी पहुंच जाय उतना ग्रक्ता है ग्रीर जेसे ही बजह यहां से मंजर हो जाय उसके बाद जल्दी से जल्दी उसकी अपूत्र करने की हम कोशिश करेंगे। श्रीर जैसे ही बजट मंजूर हो जाय उसके बाद जल्द से जल्द उसको प्राप्त करने की की शिश करेंगे। जहां तक भवनों की बात है, उसमें कोई वजह है जो इतनी देर होती है। अगर कि नी विभाग से ब्राता है कि हमारे लिये बिल्डिंग की जरूरत है तो बजट में उन है लिये लाल, दो लाल, ५ लाल, जैसा होगा, रखा जाता है। श्रब उसके बाद इंजीनियर पहुंचते हैं, जब बनाने के लपा नसे, तो वहां पता नहीं है कि कहां बनेगा। मान लीजिये कोई श्रराताल बनना है तो यहां के सिविल सर्जन तक को पता नहीं है कि कहां बनेगा। वह कभी इथर बननाना है कभी उधर बन नाता है। उसके बाद साइट एक्वायर करना, और फिर वहां के लोगों से तमाम सनाह-मशिवरा करके डिजा-इन्स वगैरह तैयार करना, यह सब काम इतने होते हैं कि उनमें समय लग जाता है। श्रव इन बातों को ठीक किया जा रहा है कि पहले वर्ष में जो रुपया रखा जाता है उसको कम रखा जायगा और दसरी तरफ साइट वगैरह पहले विभाग अपने आप तय कर लेगा श्रीर हमारे शिमाग के सहयोग से उसको एक्वायर करायेगा। उसके बाद लेजिस्लेचर से मंजूर होकर काम चाल होगा। इस तरीके से मैं यह समझता हूं कि श्रब इसके श्रन्दर कोई ऐसी विशेष बात नहीं रही जिस पर में कुछ ग्रर्ज करूं।

एक बात सिर्फ यह और अर्ज करनी है कि तीन चार यां हुए गहां एक काने ही की स्थापना हुई कि वह थोड़ा बहुत काम पी० डब्लू० डी० का जिले के रतर पर करने लगे । अब उसके बारे में मेंने यह भी सुना कि हमारे बहुत से साथी उसमें दिलचर री नहीं ले के। उनमें मेरीबातें हुई तो उन्होंने मुझे बतलाया कि सरकारी कर्मचारी जो है उनमें बहुत लापरयाही करते हैं। लेकिन आगे इस बात की तरफ अब देखा जायगा और जितना मुपार सम्भव होगा, करने की कोशिश की जायगी।

इसके अलावा, यह कहा गया था कि गढ़वाल में सड़ हैं नहीं बनों तो मंने पिछले वर्ष भी कहा था और इस बार में फिगर्स ले आया हूं। सन् १६४७ में वहां १६६ मील लम्बी सड़कें थीं, सन् १६४६ में २३३ मील हो गर्भी, सन् १६४८ में २६४ मोल श्रीर सन् ६१ में उम्मीद है कि ३४१ मील हो जायंगी। तो इस तरह से कहना कि कोई काम नहीं हुआ है, बहुत उचित नहीं है।

श्री चन्द्रजीत यादव--ग्रान ए प्वाइंट ग्राफ परसनल एक रालेनेशन । क्या यह बात सही है कि जो तखमीना सड़कों का बताया गया है उसमें पी० डब्ल्यू० डो० ने डिस्ट्रक्ट बोर्ड की जो सड़कें ले ली हैं, वह भी शामिल है ?

श्री गिरधारीलाल—सङ्कें वह जमीन पर ही होंगी, ग्रासमान से तो ग्रायेंगी नहीं। उन सङ्कों के बनाने की जिम्मेदारी ग्रयने हाथ में पी० डटल्यू०डी० ने ले ली है ग्रीर जिस तरह से डिस्ट्रिक्ट बोर्ड उनको बनाना चाहता था उनको बन्या देंगे। सूचे भर में जो १४, १५ हजार मील की सड़ हैं बतायों हैं, उनमें बहुत सी सड़ हैं डिस्ट्रिक्ट बोर्ड से लो गया है ग्रीर लेकर उनका माडनीइजेशन किया जायगा।

तो इन शब्दों के साथ, इन तमाम बातों को सकाई वेते हुए, में अपने दोस्त श्री गोविन्द सिंह विष्ट से उम्मीद करता हूं, श्रीर खास तौर पर इनितये कि श्रगर यह दाया नहीं वें ते तो वो-चार सड़कों श्रीर दूसरी चीजों का जो जिक्र कि गा वह कै ते बन सकेंगो, वह श्राप्ते कटमीशन को वापिस लेने की कृपा करेंगे श्रीर इन श्रनुदानों की मंजूर करने की मेहरबानी करगे। १६६०-६१ के भ्राय-व्ययक मे भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदान १६३ संख्या ३४-जेला शोर्षक ५०-तागरिक निर्माण कार्य भ्रौर ५०-क-राजस्व से वित्तपोषित नागरिक निर्माण कार्यो पर पूंजो को लागत; श्रनुदान संख्या ३५-जेला शोर्षक ५०-तागरिक निर्माण कार्य-केन्द्रोय सड़क निधि से वितोय सहायता; श्रनुदान संख्या ३६-जेला शोर्षक ५०-तागरिक निर्माण-कार्य भ्रौर ८१-राजस्व लेले से बाहर नागरिक निर्माण कार्यों को पूंजो का लेला तथा भ्रनुदान संख्या ५०-जेला शोषक ८१- राजस्व लेले के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों का पूंजी की लेला

श्री शिवप्रसाद नागर (जिला खीरी)—मैं मंत्री जी से एक सूचना चाहता हूं ग्रीर बहु यह कि उन्होंने ग्रथने भाषण में एक चीज पर प्रकाश नहीं डाला, शायद वह भून गये, जिसका जिक दोनों तरफ से किया गया कि इंजीनियर ग्रीर ग्रोवरियर का जी परसेन्टेज पांच या दस परसेंट होता है उनकी वजह से विशाग के कार्य की प्राति में बाधा पड़ नी है। क्या ग्राय माननीय मंत्री जी की इस विषय पर प्रकाश डालने के लिये २ मिनट ग्रीर देने की कृपा करेंगे?

श्री श्रिधिष्ठाता--मंत्री जी ने जिस बात का जवाब देना उचित समझा, वह दे दिया ।

श्री राजनारायण—-श्रीमन्, मेरा एक वैधानिक प्रश्न है कि इन श्रनुदानों के लिये ग्राज २ बजे तक का समय निश्चित था। श्रव दो बज चुके है, मंत्री जो ने इतना समय ग्राने जवाबों में ही ले लिया, इसलिये ग्रव इस पर बहस नहीं होनी चाहिये।

श्री श्रिधिष्ठाता--वहस नहीं हो रही है, में वोट के लिये रखने जा रहा हूं।

श्री राजनारायण--यह भी नहीं होना चाहिये।

श्री श्रिधिष्ठाता—जी नहीं, ऐसा कोई हार्ड ऐण्ड फास्ट रूल नहीं हो सकता । नियम हाउस के प्रोसीजर को चलाने के लिये होते हैं, उसको रोकने के लिये नहीं होते हैं। श्रगर दो बजे तक का समय था तो उसका मतलब यह नहीं कि एग्जैश्ट दो बजे तक ही चलेगा।

श्री राजनारायण—-यह तो ग्रापने ठीक कहा कि सदन के काम को रोकने के लिये नियम नहीं होते, लेकिन वह ग्रनजस्ट ग्रीर इल्लीगल काम को रोकने के लिये तो होते हैं। कोई ग्रनुचित बात हो तो उसको रोकने के लिये भी नियम होते हैं।

श्री म्रधिष्ठाता--यह कोई म्रनुचित कार्य नहीं है। स्पीकर को प्रोग्राम के एडजस्ट करने का स्रधिकार होता है।

श्रब में पहले सदन के समक्ष कटौती का प्रस्ताव पेश करता हूं।

प्रदत यह है कि सम्पूर्ण अनुदान संख्या ३४ के अधीन मांग को राशि घटाकर एक रुपया कर दी जाय। कनो करने का उद्देश्य --नोति का व्योरा जिस पर चर्चा उठाने का अभिप्राय हैं-

सड़कों, पुलों इत्यादि के निर्माण मे की जाने वाली पक्षपातपूर्ण नीति पर चर्चा करना ग्रौर उनमे फैले भ्रष्टाचार की चर्चा करना ।

(प्रक्न उपस्थित किया गया ग्रौर ग्रस्वीकृत हुन्ना।)

श्री स्रिधिष्ठाता—प्रश्न यह है कि अनुदान संख्या ३४—- सार्वजनिक निर्माण कार्यो पर क्यय, जो राजस्व से पूरे किये जाते है—- तेखा शीर्षक ५०—- नागरिक निर्माण-कार्य श्रीर ५० क —- राजस्व से वित्तपोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत के अन्तर्गत ६,०५,७४,१०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १९६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय ।

(प्रश्न उपस्थित किया ग्रौर स्वीकृत हुग्रा।)

श्री ग्रिधिष्ठाता—प्रश्न यह है कि सम्पूर्ण श्रमुदान संख्या ३५-के श्रिथीन माग की राज्ञि घटा कर एक रुपया कर दी जाय—कमी करने का उद्दश्य—नीति का व्योरा जिस पर चर्चा उठाने का श्रभित्राय है—

विभागीय भ्रष्टाचार, कामचोरी तथा सीमा सुरक्षा हेतु सरकार का यथेष्ट ध्यान न देना।

(प्रश्न उपस्थित किया गया श्रौर श्रस्वोकृत हुन्ना।)

श्री श्रिधिष्ठाता—प्रकृत यह है कि श्रनुदान संख्या ३४ —यातायात के साधनो का सुधार (केन्द्रीय सड़क निधि के लेखे से वित्त पोषित)—लेखा शीर्षक ४०—नार्गारक निर्माण कार्य, केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता के श्रन्तर्गत ७२,२२,४०० रुपये की माग वित्तीय वर्ष १६६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय।

(प्रक्त उपस्थित किया भ्रौर स्वीकृत हुम्रा ।)

श्री श्रिधिष्ठाता—प्रश्न यह है कि श्रनुदान संख्या ३६—सार्वजनिक निर्माण-कार्य स्थापना पर व्यय-लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण कार्य श्रीर ६१—राजस्व लेखे से बाहर नागरिक-कार्यों की पूंज का लेखा के श्रन्तर्ग । सम्पूर्ण श्रनुदान के श्रधीन माग की राशि घटाकर एक रुपया कर दी जाय ।

कमी करने का उद्देश्य--नीति का व्योरा जिस पर चर्चा उठाने का धाभप्राय है--विभाग के सभी ग्रस्थायी कर्मचारियों को स्थायी करना तथा चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के वेतन में भेदभाव को दूर करना और बढ़ाकर एक स्तर पर करना।

(प्रदेत उपस्थित किया गया और भस्बीकृत हुआ।)

श्री ग्रिधिष्ठाता—प्रदन यह है कि भ्रनुवान संख्या ३६—सार्वजनिक निर्माण—कार्य स्थापना पर व्यय—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण—कार्य ग्रौर ६१—राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण कार्यों की पूंजी का लेखा के श्रन्तर्गत १,०१,१४,६०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १६६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय ।

(प्रश्न उपस्थित किया गया श्रौर स्वीकृत हुन्ना 🕻)

श्री श्रिधिष्ठाता—प्रश्न यह है कि श्रनुदान संख्या ५०—राजस्व लेखे के बाहर नाग-रिक निर्माण-कार्यों पर लागत—लेखा शोर्षक न१—राजस्व (Revenue) सेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा के श्रन्तर्गत स पूर्ण श्रनुदान के श्रधीन मांग की राशि में १०० रुपये की कमी कर दी जाय। कमी करने का उद्देश्य—विशिष्ट शिकायत जिस पर चर्चा उठाने का श्रभित्राय है—विभागीय भ्रष्टाचार व ग्रामीण जनता की उपेक्षा का विरोध ।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और ग्रस्वीदृःत हुग्रा।)

श्री श्रिधिष्ठाता—प्रश्न यह है कि श्रनुदान संख्या ५०—राजस्य लेखे के बाहर नागरिक निर्माण—कार्यों पर लागत—लेखा शीर्षक ६१—राजस्य (Revenue) लेखे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों क पूंजी कः लेखा के श्रन्तर्गत १२,१६,५०,४०० रुपये की मांग विस्तीय वर्ष १६६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय।

(प्रक्त उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुमा 🕻

१६६०-६१ के भ्राय व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान— १६५ अप्रुदान संख्या ४७—-चेबा क्षोर्यक ६८—-सिंचाई नौ-चालन, बांध ग्रौर पानी के निकास सम्बन्धों कार्यों का निर्माण; श्रनुदान संख्या १०—लेबा क्षोर्यक १७, १८ ग्रौर १६-च-राजस्व से किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण कार्य तथा श्रनुदान संख्या ११—जेबा क्षोर्यक १७, १८ ग्रौर ६८-सिंचाई स्थापना पर व्यय

श्चनुदान संख्या ४७—लेखा शीर्षक ६८—सिचाई, नौ-चालन, बांध श्चौर पानी के निकास संबंधी कार्यों का निर्माण; श्चनुदान संख्या १०—— लेखा शीर्षक १७, १८ श्चौर १६-ख--राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण-कार्य तथा श्चनुदान संख्या ११—— लेखा शीर्षकः १७, १८, १६ श्चौर ६८—— सिचाई स्थापना पर व्यय

श्री गिरधारीलाल—ग्रधिष्ठाता महोदय, में राज्यपाल महोदय की सिफारिश से प्रस्ताव करता हूं कि अनुदान संख्या ४७—राजस्व लेखें के बाहर सिंचाई निर्माण-कार्य का सम्पादन [स्थाप 11 व्यय (Establishment charges) सम्मिलत नहीं है ]—लेखा-शीर्षक ६८— सिंचाई, नौचालन (Navigation), बांध (Embankments) ग्रौर पानी के निकास संबंधी कार्यों (Drainage works) का निर्माण के ग्रन्तगंत, ७,८६,६८,८०० रुपये की मांग विसीय वर्ष १६६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय।

श्रिष्ठिता महोदय, में राज्यपाल महोदय की सिफारिश से प्रस्ताव करता हूं कि श्रनुदान संख्या १०—राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण कार्य (स्थापना ध्यय सम्मिलित नहीं है )—लेखा शीर्षक १७, १८ श्रौर १६—ख के श्रन्तर्गत ५,२२,०८,५०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १६६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय।

ग्रिविष्ठाता महोवय, में राज्यपाल महोवय की सिफारिश से प्रस्ताव करता हूं कि ग्रनु-दान संख्या ११—िसचाई स्थापना पर व्यय—लेखा शीर्षक १७,१८,१९ ग्रीर ६८—के ग्रन्तर्गत ४,७८,०४,६०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १९६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय।

श्रीघष्ठाता महोदय, मुझे इस विभाग के श्रनुदानों के विषय में कोई बहुत ज्यादा बात नहीं कहनी है। सब से पहले में यह बता देना चाहता हूं कि जिस वक्त हमारे देश में योजनाओं की शुक्शात हुई उस वक्त यह तय हुश्रा कि कम से कम ४० प्रतिशत इलाका हमारे सूबे का ऐसा होना चाहिये जो इर्रीगेटेड हो। श्राज पूरे सूबे का वह इलाका जिसमें खेती होती हैं ४ करोड़ एकड़ से कुछ ज्यादा है। उस वक्त करीब ७८ लाख एकड़ इर्रीगेविल था। वास्तव में ७१ लाख एकड़ की सिचाई होती थी। पहले से लोगों का यह खयाल रहा कि सूबे को सूखा और कहत से बचाने के लिये जरूरी है कि कम से कम इतना इलाका जरूर सिचित होना चाहिये। श्रपने साधनों को देखते हुए जितना हो सकता था वह हमने किया। यह ७१ लाख एकड़ जमीन भी प्रान्त के पश्चिमी व मध्य के इलाके में थी। बाद में जब बाढ़ श्रौर सूखे से श्रन्न की कमी हुई तो प्लान में बहुत मजबूती के साथ पूर्वी जिलों को भी रखा गया श्रौर उस समय ज्यादा से ज्यादा सिचाई करने की कोशिश की गयी। पहले प्लान में करीब ६६ लाख एकड़ जमीन ऐसी थी जिसे सींचने के साधन उपलब्ध कर दिये गये थे। खास काम उस समय श्रजुन बांध, माता टीला स्टेज १, सिरसी बांध, वेलन व टोंस कैनाल, चन्द्र प्रभा व नौगढ़ डैम थे।

**न्वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नही किया।** 

[ब्री गिरघारी गल]

बात गंगा कैनाल, दोहरीबाट पन्प कैनाल, नाराप्रणी गन्छक पोत्ररा नहर, सारदा कैनाल स्टेज १, ग्रांगरा व ईस्टर्न ग्रोर ग्रांगरा कैनाल का भी पुनकद्वार किया गया। योजना की यह ग्रांखिरी किश्त है ग्रोर जितनी योजनाते चन रही थी. जिनकी सदन ने स्वीकार किया है जनके जवे हुए काम की खासनीर से रला गया है। वेहिरीबाट ग्रोर टांडा पम्प कैनालों का काम फारेन एक्सवेज की दिश्कती के कारण कक गया था, क्योंकि पम्प नहीं मिले थे। हमें जम्मीद है कि वे श्रव जल्दी श्रा जायेगे ग्रीर सन् ६१ के मार्च के श्रव्त तक ये कैनाल श्रवना काम पूरी जावित के साथ करने लगेगी। ईस्ट जमुना कैनाल ग्रीर ग्रांगरा कैनाल का रिमार्डीलग का काम भी उस वर्ग में पूरा हो जायगा। इसी तरीके से जिरगो, वाल्मीकि, तुमरिया व ग्रवर खजूरी रिजवियर में काम भी इस साल में पूरा हो जायगा।

इस योजना काल मे १,४०० ट्यूबवेल तय हुए थे। उनमें ने ६७० ट्य्रनेल ग्राथिक दिक्कतों के कारण पूरे हुए श्रौर उसके बाद इसी वर्ष में जो चन रहा है, ३४० ट्यूबवेल उसके साथ शरीक कर लिये गये। हमें श्राक्षा है कि जल्दी ही इनमें द्विलना व बोरिन्ग का काम हो जायगा श्रौर बहुत से ट्यूबवेल पूरे तौर पर काम भी करने लगेंगे।

पहाड़ी इलाके में—-नैनीताल, ग्रस्मोड़ा, टेहरी-गढ़वाल श्रीर देहराद्य में भी, बहुत से पिछड़े इलाकों में, कुछ काम चल रहे थे श्रीर उनकी भी पूर्ति होगी। बहुत-सा छोटा-छोटा काम, माइनर इर्रोगेशन का—इस योजना में चल रहा या श्रीर हम उम्मीब करते हैं कि वह भी इस वर्ष में पूरा हो जायगा। इनमें एक माट बाच है, श्रीनगर ताल श्रीर बागला टेक हैं। इस तरीके से इस वर्ष में हमारा खयाल है कि मूबे भर में करीब ६,४०० ट्यूबबेल तैयार होंगे श्रीर २५,४०० मील चैनत्स तैयार हो जावगी जो कि श्राबपाशी का काम करने लगेंगी। इसके जिय्ये से जो इर्रोगेशन का पोटेन्शियल होगा वह १ करोड़ २१ लाख का होगा जितमें से १ करोड़ एकड़ में वास्तव में सिचाई की जायगी। इस योजना के श्रन्त तक ४० प्रतिशत का खयाल था, लेकिन २७ धोर ३० प्रतिशत ऐसा इलाका होगा जितको हम लोग कवर कर पायेंगे। उपरोक्त टागेंट हमने १५-२० सालों के लिये बनाया था।

प्रोटेक्शन का भी काम इस विभाग के द्वारा होता है। बहुत सी निवयां बाढ़ से बहुत से शहरों को नुकसान पहुंचाती है, इनमें मुख्य कर से गंगा भ्रोर कोसी निवयां हैं। उतसे बचाने का रामपुर में काम हुग्रा। लखनौती स्पिल, कलवान ताल, गौरी ताल तथा चन्दौली चिकया में भी प्रोटेक्शन का काम हुग्रा है जो सन् ६१ तक पूरा हो जायगा।

इन शब्दों के साथ में अपने इस अनुदान को रखता हूं। यह बहुत सादा-सा अनुदान है और मुझे उम्मीद है कि इसको यह सदन मंजूर करेगा।

श्री रामस्वरूप वर्मा (जिला कानपुर)—माननीय प्रधिष्ठाता महोयय, मं प्रस्ताव करता हूं कि सम्पूर्ण प्रनुदान संख्या ४७ के प्रश्रीन मांग की राजि घटा कर एक व्यया कर दी जाय ।

कमी करने का उद्देश्य—नीति का व्यौरा जिस पर चर्चा उठाने का श्राभिप्राय है— सिचाई के कार्यों में लगे धन के दुरुपयोग की श्रालोधना करना। अनुदान संख्या १० के संबंध में मेरा प्रस्ताव इस प्रकार है— सम्पूर्ण अनुदान के अवीन मांग की राशि में १०० रुपये की कमी कर दी जाय। कमी करने का उद्देश्य—विशिष्ट शिकायत जिस पर सर्वा उठाने का श्रमिप्राय है— १६६०—६१ के ग्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान— १६७ ग्रनुदान संख्या ४७—लेखा शीर्षक ६८—सिचाई, नौ-चालन, बांघ ग्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण; ग्रनुदान संख्या १०—लेखा शीर्षक- १७, १८ ग्रौर १६—ख—राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण-कार्य तथा ग्रनुदान संख्या ११—लेखा शीर्षक १७, १८, १६ ग्रौर ६८—सिचाई स्थापना पर व्यय

सिचाई विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार, श्रवैधानिक्ता एवं श्रनुत्यादक व्यय की श्रोर सरकार का ध्यान श्राक्षित करना।

अनुदान संख्या ११ के संबंध में मेरा प्रस्ताव निम्न प्रकार है-सम्पूर्ण अनुदान की अवीन मांग की राशि घटा कर एक रुपया कर दी जाय।

कमी करने का उद्देश्य—नीति का व्यौरा जिस पर चर्चा उठाने का ग्रिभिप्राय है। राज्य सरकार द्वारा बाढ़ नियंत्रण एवं कटाव निरोधक योजनाश्रों की बन्दी पर स्रालोचना तथा जलकुंडी, घाघरा कटाव निरोधक योजना की मांग करना।

श्रीमन्, मैने माननीय मंत्री जी की विरुदावली को सुना। उन्होंने जिस खूबी के साथ ग्रपने विभाग की कमजोरियों को छिपा कर, ग्रपने यहां की योजनाश्रों को रखा, उस पर मुझे ग्रादचर्य हुग्रा; क्योंकि वस्तुस्थित कुछ ग्रौर ही थी, जिसका उन्होंने कतई वर्णन नहीं किया। ग्रब श्रीमन्, मं वस्तु स्थित की ग्रोर इशारा करना चाहता हूं ताकि सदन ग्रवगत हो जाय कि यह सरकार जिन विरुदाविलयों का बयान करती है, जरा गरेवां में मुंह डाल कर तो देखें कि ग्राया प्रदेश की उन योजनाश्रों से तरक्की हुई है या वह ग्रौर पीछे पहुंचा है। इस बात को देखने के लिये हमे दूसरे प्रान्तों की हालत को भी देखना होगा।

हमारे प्रान्त में जिस नदीं से सब से ज्यादा सिंचाई होती है वह गंगा नदी है। उसी प्रकार तामिलनाड में कावेरी नदी हैं जिसमें १२ मिलियन एकड़ फिट पानी है, जब कि गंगा में ४०० मिलियन एकड़ फिट पानी है। ग्रंब देखना यह है कि इस सरकार ने कितना काम किया है। ये तमाम योजनायें जो बनी हैं उनको मिलाकर यह सरकार ५६ मिलियन एकड़ फिट पानी को ही बांघ पायी है जब कि तामिलनाड में ६.६ मिलियन एकड़ पानी को बांघ लिया गया है। यानी उन्होंने ग्रंपनी नदी का इतना उपयोग किया है कि उसके दे फीसदी पानी को बांघ दिया ग्रीर हमारे प्रदेश में, जहां गंगा ऐसी महानदी है, जिससे तमाम प्रदेश की सिंचाई हो सकती है, उसके केवल १४ फीसदी पानी को ही बांघ पाये हैं। में तामिलनाड से इसलिये मुकाबला कर रहा हूं कि वह भी सघन बसा हुग्रा है ग्रीर हमारा प्रदेश भी सघन बसा हुग्रा है ग्रीर हमारा प्रदेश भी सघन बसा हुग्रा है। तो तामिलनाड में सिंचाई के लिये जितना जल उपलब्ध है उसका ६० प्रतिशत उन्होंने बांघ रखा है ग्रीर हमारे प्रदेश ने केवल ६ प्रतिशत पानी को ही बांघ पाया है। ग्रंगर पानी उपलब्ध नहीं होता तो मंत्री जी कह सकते थे कि पानी उपलब्ध ही नहीं है तो हम कहां से लावें, लेकिन पानी उपलब्ध होते हुए भी उन्होंने उसे बांधने का प्रयत्न नहीं किया जिसे बांध कर हमारे प्रदेश की ४ करोड़ १० लाख एकड़ जमीन सींची जा सकती थीं।

श्रीमन्, कहा जता है कि सरकार की सम्मिलित जिम्मेदारी है। ग्रिधिक गल्ला पैदा करने के खयाल से घृषि विभाग की तरफ से रबी ग्रिभियान ग्रीर खरीफ ग्रिभियान चले ग्रीर खल रहे हैं। श्रीमन्, ज्यादा गल्ला पैदा करने के लिये चार ही तरह की योजनायें हैं। एक तो यह कि इंटेंसिव खेती हो, दूसरे यह कि ग्रच्छे बीज दिये जायं, तीसरे यह कि बोने के पुराने तरीके को बदला जाय ग्रीर चौथे यह कि रासायनिक खाद दी जाय। सघन खेती के लिये भी सिचाई की ग्रावश्यकता है, ग्रच्छे बीज के लिये भी सिचाई की ग्रावश्यकता है, ग्रच्छे बीज के लिये भी सिचाई की ग्रावश्यकता है, ग्रच्छे बीज के लिये भी सिचाई की ग्रावश्यकता है, नये तरीके की बोग्राई जैसे ईख ग्रागर ट्रेंबेज में बोग्री जाय तो उपज

## [श्री रामस्वरूप वर्मा]

तिगुनी ? चौगुनी तक हो सकती है; लेकिन इस म्राष्ट्रिनक तरीके से बोने पर १४,१५ पानी देने पड़ते है जब कि पुराने तरीके से बोने पर ४,५ पानी देना ही पर्याप्त हो गा तो इस म्र बुनिक विश्व के लिये भी पानी की म्रावश्यकता है, रासायनिक खाद देने पर भी श्रीमन्, म्रश्विक से म्रश्विक पानी देना जकरी होता है। तो जि विभाग द्वारा जो इन चार ची बों का प्रचार किया जाता है उसके लिये बहुत पानी की जरूरत है मौर उन सबका परिणाम यह है कि सिवाई साथ में की कभी से हम म्रपने यहां उतना पानी नहीं दे पाते, मुश्किल से १५ फोसदी भूम सरकार म्रपने साथ नों से सींचती है। प्राइवेट कुमों से बो नोग सिवाई करते हैं, उनको तो छोड़ ही दीजिये, वे तो म्रपने बल पर, पे ग खर्च करके, जो कुछ करते हैं वह करते ही हैं, इसमें सरकार की क्या बहबूदी या मेहरबानी है ? सरकार के द्वारा दिये हुए पानी से तो के बल १५ फीसदी जमीन ही सींची जाती है।

श्रीम, जब कोई योजना बनायो जाती है तो वह पहले उन कामों के लिये बनायो जाती है जिन पर खर्व करने के बाद पैसा वापस हो जाय ताकि उस पैसे को श्रावश्य करानुतार दूतरी योजनायों में लगाया जा सके जिससे निरन्तर उत्पादन हो। श्रीमन्, उत्पादक नहरें ६ बनों। श्रीमन् सन् ४४ – ४६ की प्रशासिक रपट से मैं तोड़ कर रहा हूं, नयों कि इससे बाद की सूबना उपलब्ध नहीं है। इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। में पहले ही बतला दूं कि माननीय मंत्री जी इसके लिये मुझे दोष न देंगे। नयों के यह उन के विभाग की लापरवाही है जिसकी वजह से विभाग की प्रशासनिक रपड़ ४४ – ४६ से बाद को श्रव तक वक्त कि हो सकी है। श्रवेत्र तो श्राना बोरिया बंबना लेकर ४४ – ४६ में चने गवे लेकिन कुद्ध वोवें ऐनी है जो श्रवी तक उसी तरह से वन रही हैं। ४४ – ४६ में हन ६ उत्पादक नहरों को लम्बाई, डिस्ट्रिब्यूटरीज श्रीर चैनेल्स को मिला करके १४,०१८ मील थी।

श्रीनन्, मंत्री जी हे त्रिभाग ही तरक से जो पुस्तकें इस समय बांटी गयी है उनमे सारी विषयावनी दो रहती है और वे एक पक्षीय है, उन में वस्तु स्थिति की कोई मूचना नहीं हो ती, श्रीर पिछने चार साल की यानी ४८-४६ है बाद कोई प्रशासनिक रिपोर्ट नही छनी हैं, लिहाजा हमने ५५-५६ की प्रशासनिक रप में दिये हुए श्रांकड़ों का ही इस्तेमाल किया मानतीय मंत्रो तो उपर्युक्त श्रीकड़ों को देशे कि ३७० मील कुल उत्पादक नहरें डिश्दीव्यूटरीज व चैरेटस १० साल में बढ़ सहीं। इसी तरह से ४५ -४६ में ट्यूबवेल सिर्चित क्षेत्र को छोड़ कर कुल ४२,०८,६३१ एकड़ की सिचाई हुई थी। ४४-४६ में विद्युत कूर-सिचित क्षेत्र को छोड़कर कुल सिचाई हुई ५२,५४,०१६ यानी ४४,३८८ ए रुड़ क्षेत्र की अविक सिचाई सभी नहरों से हुई। इस तरह से २.६ रतिशत नो हेरत उत्पादक नहरों की लम्बाई बढ़ी सीर १ प्रतिशत आप जानते हैं कि उत्पादक व अपनुत्पादक नहरों को मिजाकर सिचित क्षेत्र बढ़ा। में इस वक्त खूंकि सता कन है, उन हे पानी हे डिसवार्ज के बारे में नहीं कहूंगा, लेकिन इतना जरूर कहूंगा कि नी सिविन क्षेत्र समी नहरों का है उसमें बहुत ही नेगलिजिबल बढ़ोत्तरी हुई है। वह लम्बाई हेवल ३७० मीन उत्पादक नहरों ही है, हुई जिसमें छोटी नालियां जी सिच।ई को है, वे भी शामिल है जिनसे व बढ़ी हुई भ्रनुत्पादक नहरों की मिलाकर केवल ४५,३८८ ए हेड क्षेत्र ज्यादा सों वा गया है। इस तरह की जो सिचाई व्यवस्था है उस पर स्रारध्यान दिया जाय तो मानूत होता कि कितना इन्द्रशक्तियेंट स्टाफ है स्रीर क्या यह उन ही ग्राग्यता का परिचायक नहीं है ? इस नगण्य सिचित भूमि की बढ़ोत्तरी में भी एक राज है, वह यह कि जब पनेशा का वक्त होता है, तब नहरें ६ सप्ताह तक चला दी जाती हैं और उस हे बोद जब खेतों नें क्रताज सूबता है तो पलेबा किए हुए खेतों व क्रस्य फसलों

१६६०-६१ के श्राय-व्ययक में श्रनुवानों के लिये मांगों पर मतवान-- १६६ श्रनुवान संख्या ४७-ने वा शोर्षक ६८-सिचाई, नौ-चालन, बांच श्रौर पानी के निकास सम्बन्धा कार्यों का निर्माग; श्रनुवान संख्या १०-लेखा शोर्षकः १७, १८ श्रौर १६-ब-राजस्व से 'किये जाने वाले सिचाई के निर्माण-कार्य तथा श्रनुवान संख्या ११-लेखा शोर्षकः १७, १८, १६ श्रौर ६८-सिचाई स्थापना पर व्यय

को पानी नहीं मिलता, एकड़ों मटर श्रीर धान सूझता रहता है। इस तरह से श्रगर श्राप दें बें तो ४५-४६ में २६,४६७ एकड़ जमीन पानी न मिलने से मेंस्ता हो गयी श्रीर सन् ५५-५६ में ४१,३१८ एकड़ जमीन सोस्त हुई। इस तरह से ि शई का माइलेज बढ़ा, लेकिन ५५-५६ में १४८२१ एकड़ श्रधिक जमीन सोस्त हुई, यानी उसमें वक्त से पानी नहीं पहुंचा। श्रभी माननीय मंत्रों जी कहेंगे कि हमने तो बड़ी तरक्की की श्रीर हमारे यहां गल्ले की पैदावार बढ़ गयी, वह सदन में वस्तुस्थित नहीं रखते बल्कि हर साल नई किताबें छापकर हम पर जादू डालने की कोशिश करते हैं ताकि हम मान लें कि तरक्की हो रही है। सिचाई कम हुई, माइलेज उत्पादक नहरों का नगण्य रूप से बढ़ा, सोस्ता जमीन ज्यादा हुई। मैं उसमें नहीं जाता कि पलेवा हो गया श्रीर बाद में पानी नहीं मिला, इससे सूख गई, इस पर भी में नहीं जाता कि सोस्ता कितनी कम लिखी जाती है। में बाद में यह बताऊंगा कि इस कमी के क्या कारण हैं लेकिन हम इससे यह कैसे समझ लें कि हमारी प्रोडक्टिय नहरों में तरक्की हुई है?

श्रीमन्, जरा यह भी दे हें कि इस प्रकार की सिचाई से फसलों के उत्पादन में भी वृद्धि हुई है या नहीं ग्रौर हुई है तो कितनी? सन् ४५-४६ में सिचित भूमि की फसल की कीमत **७३ करोड़ रुपए लगाई गई थो श्रौर ५५-५६ में १९६ करोड़ की कीमत की फसल** श्रांकी गई। इस तरह से अ।प देवें कि फसल की कीमत २.७ गुना बढ़ी जब कि मूल्यों में तीन-साढ़े नीन गुने की वृद्धि हो गई। इसका साफ मतलब यह है कि ठीक तरह से पानी नहीं पहुंचा। पत्रेबा तो दुग्रा, लेकिन बाद में समय से पानी खेतों में नहीं पहुंचा। नतीजा यह हुन्ना कि फप्तल की नैदावार घट गई, फनतः गल्ले ही ही मत भी कम हुई । ऊपर मैंने उत्पादक नहरों की बात कही है। मैंने माननीय मंत्री जी से भी व्यक्तिगत रूप से कहा भ्रौर उन्होंने विशान परिषर् में प्रक्तों के उत्तर में भी कहा था कि श्रप्रैल, मई ग्रौर नवम्बर के मासों में १५ हजार क्यूसेक्स पानी गंगा का वह जाता है ग्रौर दस हजार क्यूसे ग्स गंगा नहर में जाता है। मैने उनको सुझाव भी दिया था कि श्रद्रैल, मई व नवम्बर में जिस वक्त किसानों को पलेबे के लिये पानी की जरूरत पड़ती है, पानी उपलब्ध हो ।।, यदि दस हजार क्यूसेक्स उपर्युक्त फालतु पानी को प्राप गंगा नहर में नहर चौड़ी करके मिला दें या कोई और पैरेलल चेनल बना दें, जिसमें भी कम कीमत लगे ग्रौर श्रच्छा श्रसर हो, इस तरह का कोई तरी हा इस्तेमाल किया जाय। जो १० हजार की वर्तनान कै रेसिटी है उसकी २० हजार कर सकते हैं। मंत्री जी कहेंगे कि वह पानी भ्रागे भ्राकर हिंडन नदी में गिराया जाता है भ्रौर लोभ्रर गंगा नहर में प्रयुक्त होता है ? कम हो सकता है। तो मैं इस संबंब में इंजीनियसे की राय बता दूं। जब नदी का वाट्र लेविल नीवे चला जाता है तो नदी में सब-स्वाइल वाटर ज्यादा तेजी से श्राने लगता है। १५ हजार न श्रावेतो १२ हजार से कम न श्रावेगा। गंगा के पानी को बढ़ाने का दूसरा तरी का यह हो सकता है कि जिस तरह से नांगल और भाखरा डैम हैं, गंगा में भी ऐपी पासिबिलटी है कि बांध बांध कर गंगा नहर की कैपेसिटी बहुत बढ़ाई जा सकती है प्रीर इस प्रकार स्थात्रीरूप से पानी उपलब्ध हो सकता है। हो सकता है कि तब रामगंगा बांध की जरूरत न पड़े। उस क्षेत्र के लिये जिसका किसान इतना सजग है, प्रफीट प्रति एकड़ पानी गंगा की नहर में है जब कि २ फीट प्रति एकड़ सारदा की नहर में मिलता है, लेकिन सरकार कोई ध्यान उत्पादक नहरों को बढ़ाने की ग्रोर नहीं देती।

[श्रीरामस्यङ्यवर्मा]

श्रव में श्रनुत्पादक नहरों की श्रोर ध्यान दिलाना चाहता हूं। श्रनुत्पादक की तो धुश्रांघार वृद्धि हो रही है। सन् ४५-४६ में नहरों की लम्बाई कुल ६,७३८ मील थी श्रौर ५५-५६ में १५,४३४ मील। टघूबवेल सन् ४५-४६ में १,८८८ मील थे श्रौर ५५-५६ में ४,८४८ मील। सरकार को इंजीनियर्स जैसी सलाह देते हैं वही सरकार करती है, मंत्री जी को तो कोई विशेष ज्ञान हैं नहीं। जो उत्पादक हो उस पर पहले ध्यान होना चाहिए श्रौर जो श्रनुत्पादक हो उस पर बाद में। इस तरह से श्रीमन्, एक बात तो साबित हो गयी कि इतनी बड़ी घटी जो सरकार उठा रही हैं वह उसकी नीति की खराबी है कि उत्पादक नहरों को न बढ़ाकर सनुत्पादक को बढ़ाया जाय।

दूसरी बात श्रीमन्, इन तमाम कामों से सरकार को मुनाफा कम हुश्रा, सरकार की रेवेन्यू कम हुई। सन् ४५-४६ में शुद्ध लाभ १ करोड़ द० लाख ५६ हजार ७१ द० था। ५६-६० में अनुमानित था २।। करोड़ से कुछ श्रिष्ठिक, लेकिन हुश्रा कुल द४ लाख २८ हजार ८०० र०। सन् ६०-६१ में १ करोड़ द४ लाख ५५ हजार २०० र० का श्रनुमान कर रहे हैं। तो लाभ में कही नहीं बढ़ रहे हैं श्रीर प्रदेश का किसान कर भार से मरा जा रहा है, उसकी तरक ध्यान दिया जाय। साढ़े ३ हजार लोग सोशलिस्ट पार्टी के सन् १६५४ में जेल गये थ। सिचाई की बेतहाशा बढ़ी दरों को कम कराने के लिए सोशलिस्ट पार्टी ने सत्याग्रह किया था।

समय कम है म्रतः म्रावश्यक बातें ही कहूंगा। श्रीमन्, ग्रब जरा रेट बेलें। १६४५-४६ में ईख-कर भ्रपर गंगा में १० ६० व लोग्रर गंगा में ६ ६० था, इस समय है ३२ ६०। धान का साढ़े ७ रुपया था श्रपर गंगा का श्रोर ५ रुपया था लोग्रर गंगा का, ग्रब हो गया १८ रुपया। सब्जी का ६ रुपया था ग्रोर ग्रब १४ रुपया हो गया। खरीफ की भ्रन्य फसलो का ३ रुपया था, श्रब ७ रुपया हो गया। मटर म्रावि म्रन्य रबी की फसलों का ४ रुपया था जो ६ रुपया हो गया। रेट हुगने, तिगुने भ्रोर साढ़े तीन गुने तक बढ़ गये, लेकिन मुनाफे में घटी हुई। ४५-४६ की ही मुनाफ की स्थित रहती तो वह १ करोड़ ८० लाख था। भ्रब रह गया ८५,००,००० रुपया। मुनाफे में पीछे श्रोर कर में तिगुने ग्रागे बढ़ गये। कैसे वेश की तरक्की हो सकती है? एक बात ग्रोर कह वूं। यह खराबी क्यों है, मुनाफे की कमी क्यों है, जमीन क्यों सींचने से रह गई? एक ग्रांकड़ा वेखा जाय नहरों के जो डिजाइन किये हैं कि इतने प्रतिशत सीचना चाहिये, किन्तु उतने प्रतिशत नहीं सींचा जा रहा है। रामगंगा नहर से ४७ प्रतिशत की का चाहिए लेकिन सींचती है २५ प्रतिशत। राज्य के ट्यूबवेल की डिजाइन ४२ प्रतिशत क है लेकिन सीचते हैं ३२ प्रतिशत। तो जहां जो साधन उपलब्ध है उनका ही उपयोग नहीं होने विया जा रहा है।

दूसरी कमी क्या है? टच्बवेगों में बेतहाशा घटी चल रही है। सरकार एक टच्यूबवेल १८,००० रु० में बनाती है और ६०,००० रु० तक उसकी लाइन बनाने में और इंजीनियर्स की सुख-सुविधा में खर्च होता है। परिणाम यह है कि इस बजट में टच्यूबवेगों में २,३२,३२,००० रु० की हानि है। रेवेन्यू में जितना भ्राया उतना बिजली और भ्रापरेटरों की तनस्वाह में खर्च किया जा तो ४४,००,००० रु० का मुनाफ होता। लेकिन खाऊ लोग जो बेठे हुए है, मुनाफ़ा कैसे हो? रेट जरा देखा जाय, ११,००० गेलन पर एक रुपया है, वाष्प से चालित पर भौर १६,००० गेलन पर १ रुपया विद्युत से चालित पर पिछले साल टच्यूबवेल में १०७ लाख रुपया सूद का देना पड़ा, इस साल ११४ लाख देना पड़ेगा।

इसिलये भी घाटा हो रहा है कि पूंजी व्यय में वृद्धि भौर सुधार पर भ्रिषक सर्च नहीं किया जाता है भौर जहां वृद्धि भौर सुधार में पूंजी व्यय बढ़ना चाहिये उसमें कभी हो गई। जहां १९४९-६० में ३४२ हजार पूंजी व्यय था, ग्रब २७६ हजार रह गया।

श्रनुरक्षण पर श्रनाप-शनाप खर्च हो रहा है। १६५८-५६ में ३५५ लाख था १६६०-६१ में ३८६ लाख हो गया। श्रनुरक्षण के नाम से जो रुपया खर्च किया जाता है वह इंजीनियर्स १९६०-६१ क म्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदार--म्रनुदान संख्या ४७--त्रेला शोर्वक ६८-सिचाई, नौ--चालन, बांध म्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण; ग्रनुदान संख्या १०--त्रेला शोर्वकः १७, १८ म्रौर १९-ल--राजस्व से किये जाने वांले सिचाई के निर्माण-कार्य तथा ग्रनुदान संख्या ११--त्रेला शोर्वकः १७, १८, १६ म्रौर ६८--सिचाई स्थापना पर व्यय

की सुख-सुविधा के लिये ही किया जाता है, उनके बंगले, मोजेक के फर्श के लिये। ऐसे-ऐसे इंसपेकान हाउसेज हैं जिनमें १० दिन भी लोग नहीं ठहरते होंगे,लेकिन बने हुए हैं। यही नहीं, इंजीनियर्स के साथ-साथ बरकंदाज लोग तम्बू वगैरह लेकर चलते हैं लेकिन उसमें रहते नहीं, रहेंगे बंगले में ही। ४७ नम्बर की ग्राण्ट में कई इस तरह के श्रलग-श्रलग मकान बनाये गये हैं। मुजफ्फरनगर से काम नहीं कर सकते तो शामली में जायेंगे। उत्पादक नहरें नहीं बढ़ी हैं, लेकिन डिवीजन बढ़ते चले जा रहे हैं। श्रुफसरों पर चार गुना खर्च...
(लाल बत्ती जलने पर) श्रभी तो मेरे सात मिनट बाकी हैं।

श्री ग्रधिष्ठाता--जी नहीं, केवल दो मिनट बाकी रह गये।

श्री रामस्वरूप वर्मा--इस समय मुझे थोड़ा समय दे दिया, जाय बाद में जब मैं बोलूंगा उसमें से मेरा समय काट लिया जाय।

तो में कह रहा था कि अफ़सरों पर खर्च चौगुना बढ़ गया है। अपव्यय का नमूना देखें। नैनीताल जिले के बनबसा में श्रोमबाग और लक्ष्मण बाग हैं, जिनमें तमाम किस्म के पेड़ श्राम, लीची श्रादि हैं हैं, लेकिन वहां के सब फल इंजीनियर्स खा जाते हैं या डालियों में लग कर लखनऊ की श्रोर श्राते हैं विनका कोई नीलाम नहीं होता। बाराबंकी में भी तमाम इस तरह का खर्च हो रहा है। जो नहर की पटरियों की घास है उसका तो नीलाम विभाग फौरन करता है और ऊंचे दामों पर करता है लेकिन इनका नहीं; क्योंकि अगर नीलाम कर दें तो खायें कैसे, डालियां कैसे लगेंगी।

श्रव में संक्षेप में सुझाव देना चाहता हूं। ट्यूबवेल सिंचाई समितियों को दे विये जायं श्रौर सरकार जिस रेट पर बिजलो लेती है, उसी रेट पर श्रगर समितियों को बिजली दी जाय तो ट्यूबवेल फायदे में चतेंगे श्रौर पूरी सिंचाई भी हो सकेंगी। सरकार इस खर्चे व नुकसान से बच जायगी। (२) सिंचाई विभाग में ६० प्रतिशत इंजीनियीरंग पर श्रौर ४० प्रतिशत रेवेन्यू पर खर्च होता है। श्रगर वाटर सप्लाई ठीक तरह से हो जाय तो रेवेन्यू को तोड़ा जा सकता है श्रौर फिर उसी हिसाब से लगान सिंचित भूमि का बढ़ा दिया जाय। इस प्रकार सिंचाई का लगान श्रलग कायम कर दिया जाय। रेवेन्यू का फिर स्टाफ भी नहीं रहेगा, लेकिन उसमें पानीं की सप्लाई निश्चित होनी चाहिये। (३) इसके साथ ही साथ एक बात श्रौर कह दूं, हर जगह श्रोसराबन्दी होनी चाहिये। (४) कम से कम २० वर्ष का जो श्रनुभव सरकार को है जिससे पता चल जाता है कि किन दिनों में किसान को पानी की विशेष रूप से श्रावश्यकता होती है, उसके श्राधार पर कृषि वर्ष के पूर्व यह डिक्लेयर कर दिया जाया करे श्रौर गांव सभाश्रों को सूचित कर दिया जाया करे कि हमारी फलां नहर इतने दिनों तक इन हफ्तों में, फलां महीने में चलेगी ताकि किसान खेत तैयार करले श्रौर पानी के लिये जो लाठी डंडे चलते हैं वह न चले श्रौर किसान को सहूलियत मिल जाय श्रौर कोई झगड़ा न हो।

इसके श्रतिरिक्त निर्माण कार्यों को लिया जाय तो उसके दो हिस्से होते हैं। एक तो यह कि माताटीला के बारे में श्रौर शारदा सागर के बारे में मुझे यह कहना है कि ये इतने डिफेक्टिय बांघ हैं, ब्रींग्रें होने से कारण माताटीला का एक भाग बह गया है। माताटीला बांघ में डाउन स्ट्रीम प्रोटेक्शन वर्क्स, जो १० लाख रुप्रये की लागत का विगत मई-जून में बना या श्रौर उसके बारे में कई बार हाउस में कहा जा चुका है, विगत जुलाई में ही वह गया था।

#### [श्री रामस्वरूप वर्मा]

नारायणी नहर को देख लीजिये। ४७ लाख का एस्टिमेट था श्रीर बनी कितने में ? १ करोड़ २० लाख में भी श्रव तक नहीं बनी, यानी पूरी नहीं हुई। उसमें एक घोबिहा साइफन बनाना था १७,००० ६० से। उस पर ३५ हजार खर्च हुआ श्रीर तीन दफा बह गया। ये हमारे इंजीनियर हैं जिनकी हमारे माननीय मंत्री जो बड़ी तारीफ करते हैं। उसमें एक्जिक्यूटिव इंजीनियर मुश्रत्तल किया गया। मुझे यह डर है कि जिस तरह हाइडल के ची ६ श्री मायुर के विरुद्ध मेरे द्वारा हाउस में शिकायत करने के कारण, उनकी पदोन्नति हो गयी श्रीर वे स्टेट तथा केन्द्र के बीच में लियांजा श्राफिसर हो गये, इसी प्रकार इन इंजीनियर महोदय की बुराई करने का नतीजा यह न हो कि उनकी भी माननीय मंत्री जो पदोन्नति कर वे श्रीर जो श्रादमी निर्दोष है—एकाउन्टेंट—उसे मामला उभाड़ने के कारण मार दिया जाय। माननीय मंत्री जी के पास जा शिकायतें द्याती हैं तो उनको बड़ी परेशानी होती है कि यह रामस्वरूप वर्मा जी को कहां से खबर मिल जाती है श्रीर वे समझते हैं कि कोई ब्लेक शीप है। श्रगर राष्ट्र के हित में कोई कार्य करें तो ब्लेकशीप, श्रीर जो राष्ट्रद्रोह करे उसके प्रति हमदर्वी दिखाई जाती है।

माननीय मंत्री जी को ज्ञात होगा कि पहाड़ी जिले में एक तुमरिया बांध बन रहा है श्रीर जिस प्रकार उसका डिजाइन किया गया है उससे इतना पानी नहीं मिलने का है जिससे सिचाई हो सके। १० मील लम्बी लोढ़ा नदी इतना पानी नहीं वे सकेगी जिससे सिचाई हो। वह बांध बिलकुल मंच्योर नहीं हो सकेगा। पानी जब निकलेगा नहीं तो सिचाई हो नहीं सकेगी श्रीर सारा रुपया बरबाद जायगा। श्रतः पास की दूसरी नदी से पानी लेने का प्रयत्न किया जाय।

एक प्रनित्म बात शारदा सागर बांध के स्कैंडल के बारे में प्रौर निवेदन कर देना चाहता हूं; में माननीय मंत्री जी से बात करना चाहता था, लेकिन नहीं हो सकी, हाउस में उसे बतला देना चाहता हूं ताकि तमाम माननीय सदस्यों को भी उसकी जानकारी हो जाय। एक सिस्टम होता है फिल्रूटो डालने में सिंगिल्स व प्रिग्नेबिल लगाने का। वह, यह पत्थर नदी से निकाला जाता था। नदी से पत्थर निकालने के लिये फारेस्ट डिपार्टमेंट रायलटी लेता था। फारेस्ट डिपार्टमेंट, जिसके यहां से पत्थर निकाला गया वह तो कहता है कि कम पत्थर निकाला गया थानी कम रायल्टी मांगता है; लेकिन पेमेंट करने वाले कहते हैं कि ज्यादा पत्थर निकाला गया, ज्यादा रायल्टी सो। तो पत्थर उतना न मौके पर श्राया, न वहां से लाया गया थ्रौर न वहां खोदा गया; लेकिन कहा गया कि ज्यादा पत्थर खोदा गया। हुश्रा यह कि प्रिग्नेबिल में शारदा सागर में ट्रक के फेरे गिने गये थ्रौर प्रि ग्रेबिल का घनफुट नहीं गिना गया। इसलियें पेमेंट श्रिधिक करना पड़ा थ्रौर माल कम श्राया।

एक बात श्रौर इंजिन तथा बिजिलियों के बारे में कहना चाहता हूं। शारवा सागर में न जाने कैसी नयी बैटरियां लग वैसे ४-४ साल की मियाव होती है, लेकिन ३ महीने में T. D. No. 24 पर ४-४ दो बार व एक एक बार बैटरियां ईश्यू हुई।

माताटीला बांध में, जिसकी चर्चा में सदन में कर चुका हूं, जो मिका और बिका हुई है, इससे जनता का सिंकग हो गया है। इसलिये तमाम बातों का सिहावलोन करते हुए में ग्रादरणीय सदन से निवेदन करूंगा कि जो हमारा कटौती का प्रस्ताव है वह सरकार की सिचाई विभाग में नीति के विषय में हैं जिसमें वह बिलकुल ग्रसफल हुई है। उसमें सरकार ने जनता का खून चूसा है और प्रदेश को तबाह किया है। इसलिये इन कटौती के प्रस्तावों को स्वीकार करके सरकार को ग्रायदस्य करना चाहिये।

१६६०-६१ के स्राय व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-- १७३ स्रनुदान मंख्या ४७-त्रेला शोर्षक ६८-सिचाई नौ चालन, बांध स्रौर पानी के निकास सम्बन्धो कार्यों का निर्माण, श्रनुदान संख्या १०-लेला शोर्षक १७, १८ स्रौर १६-त-राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण कार्य तथा श्रनुदान संख्या ११-लेला शोर्षक १७, १८ १६ स्रौर ६८-सिवाई स्थापना पर व्यय

\*श्री रामचन्द्र विकल (जिला बुलन्दशहर)—ग्रादरणीय ग्रिधिष्ठाता महोदय, में ग्रापका श्रनुगृहीत हूं कि इस म इत्वपूर्ण श्रनुदान पर बोलने का ग्रापने समय दिया। में माननीय मंत्री जी का हृदय से घन्यावद करता हूं, इस श्रनुदान के लिये जो उन्होंने सदन के सम्मुख रखा है। साथ ही में भाई रामस्वरूप जी वर्मा की उस ग्रालोचना से सहमत नहीं हूं जो उन्हों रे ग्रपने भाषण के प्रारम्भ में कहा कि सिचाई योजनाश्रों से इस प्रदेश की श्रवनित हुई है। यह एक ऐसी श्रालोचना है कि जिससे इघर बैठे हम जैसे छोटे-मोटे ग्रादमी भी सरकार की यदि कोई समालोचना करें तो उन सब का स्थान समाप्त हो जाता है। समालोचना, वहीं तक स्थान रखती है ग्रौर उससे सुधार भी होता है किसी सरकार का या विभाग का, जिसमें कुछ तत्व हो। यह में ही नहीं, इस सदन का शायद कोई भी सदस्य मानने के लिये तैयार नहीं है कि सिचाई योजनाश्रों से प्रदेश की ग्रवनित हुई है। यह एक ऐसी ग्रतिशयोक्ति है, जिससे, में समझता हूं, कि न सिचाई विभाग पर कोई ग्रसर होगा, न माननीय मंत्री जी पर ग्रसर होगा ग्रौर मेरा ग्रपना ख्याल तो यह भी है कि जनता पर भी इसका कोई ग्रसर नहीं होगा जिस खयाल से उन्हों। यह कहा।

उन्होंने बड़ी भारी तुलना की, कावेरी नदी की और गंगा नदी की । मैं ग्रपने मित्र को यह बातना चाहुँगा कि क वेरों नदी की स्थिति मैंने थोड़ी बहुत देखी है। रिजरवायर बनाने या पानी को रोकने की जो योजनायें हैं, मैं बहुत टेक्निकल ग्रादमी तो नहीं हूं, लेकिन मैं इतना जरूर समझता हूं कि मैदानों में यह कभी भी बहुत सफल नहीं होती। कावेरी नदी जिन जिन जगहों में रोकी गई है वहां वह नदी चारों तरफ पहाँड़ों ते घिरी हुई है । वहां उस नदी को रोक कर कुँछ रिजरवायर बनाये गये हैं, श्रौर उससे, में यह जरूर मान सकता हूं कि, उस नदी की कै रेसिटों के मुकाबले में कुछ ग्रधिक पानी रोक रखा गया है। यदि वह गंगों नदी को देखें तो मै एक उदाहरण दूं। हमारे यहां गाजियाबाद के पास एक हिंडन नदी है। वहां सरकार ने एक स्कीम बनायी कि श्रागरा श्रौर मथुरा को पानी देंगे। २७ गांव वहां उठाये जा रहे थे। जनता ने उसका विरोध किया श्रौर यहाँ तक विरोध हुश्रा कि सरकार को वह योजना स्थिगत करनी पड़ी श्रौर एक दूसरी योजना चाल करनी पड़ी। यदि गंगा नदी को कावेरी नदी की तरह रुकवाना चाहें तो में माननीय मंत्री जी से प्रार्थना करूंगा कि हरद्वार से लेकर मेरठ, बुलन्दशहर, नुजफ्फरनगर तक कहीं भी यह उचित नहीं होगा। माननीय रामस्वरूप जी ने जो यह कहा कि कानपुर में गंगा को रोक कर बरसाती पानी जमा कर लेंगे, तो मेरी समझ में नहीं श्राया कि मैदान में गंगा जैसी बड़ी नदी को बरसात में रोक कर कितना फायदा वह कर सकते हैं। मैं समझता हूं कि कावेरी श्रौर गंगा नदी की स्थितियों को एक साथ मिला कर कुछ ज्यादा श्रच्छी बात उन्होंने नहीं की। हां, यदि सिचाई के साधन, निदयों से, ट्यूबवेल्स से या और छोटी छोटी योजनाओं से, माननीय मंत्री जी श्रौर सरकार बढ़ा सके, तो उसके लिये में भी प्रार्थना करूंगा श्रौर हर विरोधी दल के सदस्य से कहूंगा कि वह ऐसे सुझाव दें कि ये योजनायें बढ़ायी जानी चाहिये।

उन्होंने जो थोड़ी सी चर्चा की है मैं इस सम्बन्ध में भी थोड़ा सा कहूंगा। सिंचाई विभाग जिससे यहां नहरें बढ़ायी गर्यों, ट्यूबवेल बढ़ाये गये भ्रौर जो छोटी योजनायें किसानों को तकावी कि शक्ल में रुपया देने की हैं, व्यक्तिगत तौर पर किसानों को सरकार ने सहायता दी है। मैं समझता हूं कि इससे बहुत बड़ा हित हुग्रा है किसानों का तथा भ्रौर लोगों का; भ्रौर में यह मानने के लिये तैयार नहीं हूं कि सिंचाई योजनायें घाटे में चली हैं। कोई भी स्कीम जो चालू हो उसका मुना का भ्रौर नका अल ही नाप लें, यह कोई श्र च्छी बात नहीं है। जो ट्यूबवेल्स लगाये मये हैं

<sup>\*</sup>वक्ताने भावण का पुनर्वी अण नहीं किया।

[श्री रामवन्द्र विकल]

श्रौर नहरे निकाली नयी है, उनको श्राज भी मुना हे की शक्ल में देग्या जाय तो मुर्गी के पेट से श्रंडे निकालने के श्रमावा दूसरी बात नहीं हो सकती है।

हमारे यहां एक ईस्ट जमुना कैनाल है। जब से यह बनी है, श्राज तक वह मना है की नहर है स्रौर किसानों की दिष्ट से, जब वह नहर स्थापित की गई थी तो उससे बहुत थोड़ा रकबा सींचा जाताथा त्रार स्राज उत्कारक व कई गुना बढ़ गया है। मुझे या तक बताया गया है कि शक में केवल दस हजार एकड़ भूमि सींची जाती थी श्रौर श्रांज उसी से ४ लाख एकड़ भिम सींची जाती है। भाखरा डैम की चर्चा की गई है। उसकी स्थिति ऐसी है कि वहां पर कच्चे पहाड हैं लेकिन जो डैम सिचाई के लिये बन रहा हो, चाहे वह रिहन्द हो या चाहे कोई ग्रौर योजना हो, उनका मुना का स्राज ही देखा जाय जो १०० वर्ष तक काम देंगे, वह ठीक नहीं है, बल्कि उनका मनाफा इस दष्टि से देखा जाय कि श्रागे उसका क्या ग्रसर पड़ेगा। ग्राज जो ट्यबवेल्स लगते हैं, वह मंहर्गे मालूम पड़ते है; लेकिन इसके पीछे दूसरी चीज है कि जो योजना हमने किसानों के हित के लिये चलाई है वह व्यापारिक भ्राषार पर नहीं चलाई है। भ्राज जो तकावी किसानों को कुंए के लिये दी जाती है उससे सूद नहीं ले पाते है , चाहे उससे उसका फायदा हो ।। है । श्रगर किसान यह सोचने लगे कि उसे फायदा नहीं होता है तो वह तकावी क्यों लेगा नहर का पानी नहीं लेगा ग्रौर वह दूसरे तरी हे से ग्रपना काम चलायेगा। हमारी योजनाग्रों पर चाहे लागत ज्यादा श्राती हो. लेकिन उससे जनता का हित होता है, किसान का हित होता है, इसलिय हम इन योजनाओं को व्यापारिक दृष्टि से नहीं नापते हैं। मै इतना ही कहूंगा कि सिचाई विभाग के लिये यह कहने से कि हमारा प्रदेश इसमें पीछे गया है, मुझे बड़ी तकलीफ हुई है।

में माननीय मंत्री जी श्रौर सरकार का ध्यान दो तीन बातों की तरफ दिलाऊंगा कि सिचाई विभाग से जनता की एक बड़ी भारी मांग है कि जहां किसानों की जमीन निदयों के दोनों तरफ है वहां पर पुल बनवा दियें जायं। श्राज तरक्की का युग है, किसान भी श्रागे बढ़ना चाहता है, पहले वह रास्ते की दिक्कतों को बरदाश्त कर लेता था, लेकिन श्राज का किसान, जो श्रन्न की पैदावार बढ़ाता है श्रौर खेती की उपयोगिता समझ बैठा है, वह बरदाश्त नहीं कर सकता है। जो पुल बने हुए है श्रौर थोड़ी लागत से चौड़े किये जा सकते है, उनको करा दिया जाय। सरकार की तरफ से इजाजत दे दी जाय तो छोटे-मोटे पुलों को वह स्वयं श्रपने खर्चे से बनाने के लिये तैयार है। उसकी इजाजत दे दी जाय, क्योंकि यह देश के हित में है। माइनसं इस हिसाब से बना दें कि कोई दिक्कत न हों।

दूसरा सुझाव यह है कि जहां पर यातायात के साधन बहुत कम है वहां नहरों की पटिरयों को यातायात के लिये खोल दिया जाय और पुस्ता कर दिया जाय। मंत्री जी के पास इस समय दोनों विभाग है। बहुत सी नहरें ऐसी है जहां शिई सड़क नहीं है, वहां पर जनता के लिये पटिरयां खोल दी जायं। अगर मंत्री जी इसको मंजूर कर लेंगे तो सरकार की बचत होगी और यातायात का फायदा होगा। एक खतरा जो बताया जाता है, वह यह कि नहर की पटिरयों पर खतरा हो जायगा। हिरद्वार से लेकर रुड़ की तक नहर की पटरी पर काफी बड़े मार्ग हैं जिनसे यातायात का काम लिया जाता है; जब कि हिरद्वार और रुड़ की के बीच में चलने वालों को कोई खतरा महीं होता तो मैदानों में तो उससे और सुविधा होगी।

एक सुझाव मुझे और देना है, वह मेरे इलाक से बास्ता रखता है। पहले माट बांच हमारे जिले और अलीगढ़ के कुछ हिस्से को पानी देती थी, लेकिन मयरा को पानी पहुंचाने के लिये हमारी नहर को खारिज कर दिया गया। सरकार का यह आदबासन था कि जहां खारिज कर दिया गया। सरकार का यह आदबासन था कि जहां खारिज कर दिया गया है वहां इतने ट्यूबवेल लगवा देगे कि सिचाई के लिये पानी मिल जायगा, परातु चार वर्ष हो गये, जो पहले नहर का रकबा था, और माननीय मंत्री जी की जिम्मेदारी थी, उसको पानी नहीं दिया जा रहा है। ट्यूबवेल इतने ऊंने स्थान पर लगा दिये गये है कि नया रकबा उतसे जरूर सींचा जा रहा है, लेकिन माट बांच का जो पहले का रकबा था उसमे पानी

१६६०-६१ के ब्राय-ज्ययक्र में ब्रनुदानों के लिये मागों पर मतदान--१७५ ग्रनुदान संख्या ४७-लेखा शीर्षक ६८-सिचाई, नौ-चालन, बांध ग्रौर पानी के निकास सम्बन्धो कार्यों का निर्माण, श्रनदान संख्या १०-जेला शोर्षक १७. १८ ग्रौर १६-ख-राजस्व के किये जाने वाले सिचाई के निर्माण-कार्य तथा ग्रनु ान सं्या ११-लेखा कोर्ष र १७, १८, १६ भ्रौर ६ द-सिचाई स्थापना पर व्यय

नहीं जा रहा है, जिसमें पानी देने के लिये ग्राह्वासन दिया था। मै फिर मानयीय मंत्री जी को धन्यबाद देता हं।

श्री होरीलाल यादव (जिला फईबाबाद)-- माननीय श्रीविष्ठाता महोदय, अभी बुलन्दशहर के मानतीय सदस्य यह कह रहेथे कि सरकार की सिचाई की योजनाये व्यापारिक दॅष्टिकोण से ही नहीं चलायी जाती है, किसान के हित के द्ष्टिकोण से चलायी जाती है। यह उनका खयाल है। पर सरकार के' ऐसी नीति नहीं है। मै उसकी इस बात से साबित करना चाहता हं कि प्रत्येक्र जिले में तिचाई कमेटियां बनी हैं। मेरे जिले में सिचाई कमेटी की बैठक १३ सितम्बर, १९५८ को हुई थो। उसमें बनाया गया था कि उमरन महिनर बनने वाली है, उसमें कहा गया था कि उस के जिये पया मुकर्रर कर दिया गया है। मैं ने सदन में एक प्रश्न के जरिये से यह बात जानती चाही थी कि क्या सरकार उस माइनर की बनाने जा रही है, तो उसका जवाब मिला कि म।इनर का सर्वे इत्यादि कराने से ज्ञात हुन्ना कि माइनर की लागत तथा वार्षिक रखरखाव का खर्चा ग्रिविक पड़ता है; इसलिये उसको निर्माण करने का विचार छोड़ दिया गया है। इससे साबित होता है कि जब तक रखरखाव का खर्चा न पूरा हो श्रीर सरकार को लाभ न हो, तब तक सरकार माइनर नहीं बनाती है। ताज्जुब यह है कि दूसरी जगह माइनर बनायी जाती है, वह ऐ भी जगह पर बना दी जाती है जहां पर दो-चार फर्ली। पर दूसरी माइनर होती है। मिसाल के तौर पर उती विकास क्षेत्र में मोंगरा ग्रौर लानपुर माइनर होते हुए सरसई माइनर पास ही निकाल दी गयी है। माननीय मंत्री जी ने कहा कि किसी व्यक्ति विशेष के लाभ के लिये कोई काम वह नहीं करते है, लेकिन यह जो दूसरी माइनर, सरसई है यह केवल एक व्यक्ति के लाभ के लिये बनायी गयी है। उसमें जितना पानी बह रहा है, सारा बेकार चला जाता है। सरसई माइनर के सम्बन्ध में नुप्ते कमेटी में बताया गया कि इस माइनर की चार मील बढ़ाने के लिये सर्वेक्षण करायः जा रहा है। मैंने जब सदन में पूछा कि उतका सर्वेक्षण करायः गया है, तो मुन्ने जवाब मिला कि कोई सर्वेक्षण नहीं करवाया गया। में कहना चाहता हूं कि उस माइनर का जो पानी बेकार जाता है, उसकी देल को एक दो मील और बढ़ा दिया जाय तो बहुत-सा रकबा उसके कवर हो जायगा और जो टेल से पानी बह कर जाता है और काश्तकारों की फसल को नुकसान पहुंचता है, उससे वह बच जायगी।

मान्यवर, एक यह भी सरकार की तरफ से कहा जाता है कि खांदियां बहुत ज्यादा हो जाती हैं। उस हे सिलसिलें में मैं यही कहूंगा कि पानी ठीके समय पर, ग्रगर माइनर से बहाया जाये, रजबहें में पानी पूरे लेबेल पर छोड़ा जाय तो यह चीज न हो। भ्राज होता यह है कि कहने के लिये तो माइनर चनायी गयी, मगर जिस लेबेल पर पानी छोड़ना चाहिये या उस लेवेल पर नहीं छोड़ा गया। कह ने यह है कि कारत कारों ने पानी लेने से इन कार किया, वह दूसरे काम में लगा हुआ था। लेकिन वहां तो हुन वे में पानी ही नहीं निकला। रजबहा बराबर चलता रहा ग्रौर दोष किसान पर लगाया गया कि उसने पानी नहीं लिया। इसलिये जब किसान को पानी की जरूरत हो तब र नबहे में पानी छोड़ा जाय और पूरे लेबेल से छोड़ा जाय तो यह चीज न हो। मेरा तो यह सुत्राव है कि बन्बे प्रौर रजबहे की पट्टी की सुरक्षा का जो काम है यह काम गांव सभाश्रों के सुपुदे किया जाय। इस से बहुत हद तक खांदियां होना बन्द हो जायगा।

इस हे साथ-साथ में यह भी कहना चाहता हूं कि नहर का जो कानून है वह बहुत पुराना हो गया है। इसमें हुछ परिवर्तन होने चाहिये। ग्राज का कानून ऐसा है कि ग्रागर झील के कहीं एक कोने में भी पानी पहुंच जाय तो पूरी झील का रकबा उसमें भर लिया जाता है। सिचाई का रक्या केने बढ़ाया जाता है, वह माननीय रामस्वरूप वर्मा जी ने श्रमी बता दिया है।

# [श्री होरीलाल यादव]

पहली वार्टारंग कराने की पूरी कोशिश की जाती है। दूसरी वार्टारंग हो न हो, इसकी कोई चिन्ता नहीं की जाती। एक बार सिंचाई हो जाय, पतरोल के कागज में उसका रव बा भर जाय, बस वही काफी है। ग्राबप शो का एक रेज उसके कागजों से बढ़ जाना ही, बस उस महन में के लिए जरूरी है। फसल को दूसरा पानी मिल पाये या न मिल पाये, इसकी कोई चिन्ता नहीं होती है। तो मैं यह मंत्री जी से कहना च हता हूं कि केवल सिंचाई का रक्षबा बढ़ाना ही मुख्य उद्देश्य नहीं होना चाहिये। फसल को दूसरा ग्रीर तीसरा पानी न मिल सके ग्रीर पैदावार घटती चली जाय तो इससे कोई लाभ नहीं होगा। जितना पानी दिया जाय उसका सदुपयोग ठीक ढंग से किया जाय। बहुत सा पानी, मान्यवर, टेल का जो बरसातियों से होकर बह जाता है उसमें भी काश्तकार को पानी लेने की मनाही होती है। इसलिये मान्यवर, में कहूंगा कि इस कानून में तब्दीलों की जाय ग्रीर किसान ग्रगर किसी रजदहे का पानी बरसातियों में खारिज होकर जा रहा है तो उसे बांध कर, इसलिये नहीं कि बरसाती को बिलकुल खत्म कर दे बिलक ठीक ढंग से ग्रगर पानी ले लेता है तो उस पर कोई मुकदमा नहीं चलाया जायगा इस बात की उसे छट मिलनी चाहिये।

दूसरी बात यह भी है कि रजबहे श्रीर माइनर्स जो है उनके गृलों की ठीक समय पर सफाई नहीं होती है। बरसात खत्म होने पर सबसे पहले सर्विस रोड की सफाई होती है श्रीर रजबहों की सफाई तब शुरू होती है जब फसल को पानी की जरूरत रहनी है। में यह निवेदन करना च हता हूं, मान्यवर, कि सर्विस रोड्स की सफाई तो कुछ बाद में भी हो सकती है, इंजीनियर साहब घोड़े पर भी जा सकते है, सबसे पहले तो इन रजबहों की सफाई होनी चाहिये। में जिस क्षेत्र से म्राया हूं वहां पर जो खैरनगर रजब्हा बना है, मै साइकिल से उसके किनारे किनारे घुमा हुं, उसमें कई जगह रेत के टीले मैने देखे जिससे पानी का वहाव रुका हुन्ना था। इसलिए में यह कहना चाहता हूं कि रजबहों की सफाई ठीक ढंग से ग्रौर समयानसार होनी चाहिए, ताकि पानी क्रासानी से और ठीक से आगे बढ़ सके। इसी रजबहें के आखीरी हिस्से तक इस बार पानी नहीं पहुंच सका है और काक्तकारों वे मांग की है कि लोग्नर गैजेज कैनाल के पथ्वे मील पर जो चन्द रोजा कुल बा लगा हुआ है उसको परमानेन्ट (स्थायी) कर दिया जाय ग्रीर उस टेल के कुछ गहरा कर दिया जाय तब पानी श्रागे काफी तादाद में पहुंच सकेगा। धान की फसल में कुछ पानी देने की कोशिश की गई और इप साल रबी की फसल में पानी उस रजबहे की टेल तक नहीं पहुंचा जिससे सिचाई पूरी नहीं हो सकी। पिछली बार पीछे माइनर रोककर टेल तक पानी पहुंचाने की कोशिश की गई, तब पानी बढ़ पाया। सरकार की कारगुजारी बढ़ाने के लिये आबपाशी को बढ़ाने की कोशिश की गई, लेकिन पूरी सिचाई तब भी नहीं हो पायी, सिर्फ ग्रन्त तक पानी पहुंचाने की कोशिश ही की गई है ताकि िसान शिकाय ( न कर कें ) में इन सुझावों को सदन के सामने रखता हुआ। इस कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री मुरलीधरा (जिला श्राजमगढ़)—श्रिष्ठाता महोदय, मुझे खुशी है ग्रीर में श्रापका बड़ा श्राभारी हूं कि श्रापने मुझे ऐसे श्रनुदान पर जिसका सम्बन्ध न केवल खेती से ही है बल्कि सारे समाज से है, उस पर बोलने ना श्रवसर दिया, क्योंकि किसी देश का कल्चर उसके एग्रीकल्चर पर ही निर्भर करता है। एग्रीकल्चर की तरक्की के लिये ग्रगर कोई तरीका है तो वह किसानों के लिये उचित समय पर पानी देना है श्रीर पानी की व्यवस्था करना है। पानी भी उनको ठीक रेट पर मिले यह सब बातें इस श्रनुदान के श्रन्दर श्राती हैं। में श्रभी इस कटौती के प्रस्ताव को सुन रहा था श्रीर सुन कर मुझे बड़ा श्रक्तोस हुआ कि प्रदेश की गरीबी को वेखते हुये जहां पर नित्य मारे ।उ के श्रन्दर प्रस्ताव श्राते हैं कि हम श्रोला से बरबाद हो गये, सूखें से बरदाद हो गये, बाढ़ से बरबाद हो गये श्रीर हमारे यहां पैदावार कम हुई है, किसानों को राहत वी जाय, तब भी ऐसे प्रस्ताव श्राते हैं। में देखता हूं कि ऐसे समय पर जब देश में श्रीर प्रदेश में पैदावार कम हो रही हो, किसानों की हालत दयनीय हो रही हो, उस वक्त ऐसे कटौती के प्रस्ताव पर प्रस्ताव यहां श्रा रहे हैं। खुशी तो तब होती कि दमारे साथी इस पर हमारा साथ देते श्रीर इस

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रतुदानों के लिये मांगों पर मतदान-- १७७ स्रतुदान संख्या ४७-लेखा शोर्षक ६८-सिंचाई, नौ -चालन, बांघ स्रौर पानी के निकास सम्बन्धो कार्यों का निर्माण, स्रतुदान संख्या १०-लेखा शोर्षक १७, १८ स्रौर १६-ख-राजस्व से किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण कार्य तथा स्रतुदान संख्या ११-लेखा शोर्षक १७, १८, १९ स्रौर ६८-सिंचाई स्थापना पर व्यय

श्रनुदान में कुछ वृद्धि की मांग करते श्रौर सरकार के इस काम में जितना ज्यादा धन हो सकता उसको पास करके इस काम में बढ़ावा देने की कोशिश करते, लेकिन ऐसा नहीं हुश्रा।

श्रभी रामस्वरूप वर्मा जी ने श्रपने भाषण के श्रन्त में बताया कि हमारे प्रदेश में पैदावार घटी है। मुझे श्रफसोस है कि उन्होंने प्रदेश की पैदावार के श्रांकड़े किस कागज से लिये हैं, मुझे मालुम नहीं है। इस पैदावार का बढ़ना या घटना खाली सिचाई की व्यवस्था पर नहीं है बल्कि सारे प्रदेश में ग्रौर सारी जनता की यह परिस्थित रही है कि हमारे प्रदेश को ग्राजादी मिलने के बाद बराबर कितनी बार श्रोले श्राय हैं, बाढ़ श्राई है श्रौर सूखा पड़ा है। यह सब जितने भी विघ्न हो सकते हैं वह यहां पर श्राये हैं। इस वजह से हम श्रपनी पैदावार को श्रागे नहीं बढ़ा पाये हैं। लेकिन जहां तक मारे यहां सिचाई का रकबा बढ़ने की बात है, वह रकबा बढ़ा है। मुझे खुशी है कि हमारे पूर्वी जिलों में सिचाई का काफी प्रबन्ध हुआ है। मैं मंत्री जी का और उनके विभाग का बड़ा श्राभारी हू कि हमारे पूर्वी जिले, जो सूखे से मेशा पीड़ित रहते थे, जिन को घान की पैदावार इसलिये मर जाती थी कि पानी नहीं मिल पाता था, वहां पर ध्रनेक पानी की योजना बना कर सरकार ने पानी देने का प्रयत्न किया है और लोगों ने वाफी पारी ाया इसके लिये में उनका स्राभारी हूं स्रौर वे बघाई के पात्र हैं। साथ ही जो दो रीघाट या टांडा नहर में कमी की बात है उसके लिये इस ाउस को विदित ही है कि केवल फ रेन एक्सचेन्ज के कारण ही मशीन में देरी हो रही है जिसकी वजह से यह योजना पूरी कामयाब नहीं हो पायी ह । यह बात तो प्रश्नोत्तर में सरकार ने सदन को बताई थी । लेकिन मुझे विश्वास है कि मंत्री जी का प्रयत्न है कि मशीन जल्दी म्रावे म्रौर उन खेतों को जल्दी से पानी मिले म्रौर खेति<sub>ट</sub>र मजदूरों की पैदावार बढ़े।

साथ ही जहां तक ग्रापने मुनाफे की बात कही है मुझे ताज्जुब हुन्ना व्यापारिक दृष्टिकोण की बान सुनकर । जहां वेलफेयर स्टेट बनाने की बात हो रही हो, समाज के कल्याण की बात हो रही हो वहां केवल ब्याज खाने की नीयत से कोई काम नहीं किया जा सकता। श्रापको यह सुनकर खुशी होगी कि हमारे माननीय मंत्री जी जिनके बारे में कहा गया कि वे किसानों की तकलीफ नहीं जानते, खेतिहर किसानों और मजदूरों के समाज में किस ग्रग में दर्द है, उसकी जानते हैं और इसी वजह से जब उन्होंने देखा कि ट्यूबवेल बनाने में ६०,००० रुपया लगता है, स्राजादी के बाद यहां ४,२०० ट्यूबवेल बने हैं जिन पर ६ करोड़ 🖘 लाख रुपया लग गया है श्रौर उस रुपय पर साढ़े ४ रु० प्रतिशत के हिसाब से १ करोड़ ८० लाख रुपया ब्याज निकलता जा रहा है, तो वे इस नतीजे पर पहुंचे कि इससे हमारे प्रदेश का कोई विशेष लाभ नहीं हो रहा है। इसी वजह से हमारे मुख्य मंत्री जी ने श्रौर विभ ग ने यह निश्चय किया कि ट्यूबवेल नहीं बेल्कि हम छोटी सिंचाई योजनायें चलायेंगे, श्रीर श्रापको इस बात की जानकारी है कि किसानों को पक्के कुएं बनाने और र ट लगा कर सिंचाई करने के लिये तकावी देने का इंतजाम किया गया श्रौर श्राज लाखों रुपये हर जिले में इसके लिये दिया जा रा है ताकि किसान श्रपनी खेती बढ़ाने के लिये तकावी लें। यह इसलिये भी किया जा रहा है कि जो किसान श्रीर मजदूर ट्यूबवेल लगने से बेकार हो जाते हैं, वे बेकार न होने पायें, श्रीर साथ ही मेरा यह भी विश्वास है कि यह इसलिये किया गया है कि ट्यूबवेल के कारण को रोज भ्रष्टाचार की शिकायत हुआ करती थीं श्रीर जिससे सारे प्रदेश की सर्विसेज को डिमारेलाइज किया जाता था, वह न होने पाये। श्रिधिष्ठाता महोदय, जब छोटी सिंचाई योजनाश्रों पर काम होगा श्रौर गांव-गांव में श्रपने पक्के कूएं होंगे, सिवाई के लिये रहट होंगे तो अष्टाचार श्रौर शिकायत की बात न होगी श्रौर न एफीशियेन्सी के घटने की बात होगी और न मजदूर ही बेकार होंगे। इस तरह से सरकार का [श्री गुरतिधर]

प्रयत्न है कि किसान ग्रौर मजदूर ज्यादा से ज्यादा फायदा उठा सकें ग्रौर उनका प्रोडक्शन बढ़ सके।

में माननीय मंत्री जी को एक दो सुझाव भी देना चारता हूं। १००० ग्रीर १८३० में जब ईस्टर्न ज नुना ग्रीर लोग्रर गंगा कैनाल बनों, उस समय देश में चांदी की करेंसी थे। ग्रीर ठेतेंदारों को पैसा बांटने के लिये बरकन्दाज रखें जाते थे तािक वे बड़े बड़े बनसे उठा कर ले जायं ग्रीर मजदूरों को पैसा बांटा जा सके। ग्राज ठेकेंदारों को पेमेंट चेक द्वारा हो रहा है ग्रीर इसिलये वे बरकन्दाज ग्रीर दफादार, जिनकी तनख्वा र २०० रुपया माहवार होती थी सारे प्रदेश के ३०० डिवीजनों में जिन पर सालाना ७ लाख २० हजार रुपया खर्च हो रहा है, ग्रेर १ नख रुपया भत्ता उनके दिया जाता है वह में समझता हूं माननीय मंत्री जी बचत करने की सोचेंगे। एक बरकन्दाज कम करके इस ग्रोर कदम उठाने की उन्होंने कोशिश की है। ग्रफसरों के लिये यह निजी ग्रादमी न रखे जायें ग्रीर इनकी ग्रावश्यकता ग्रागे नहीं पड़ेगी एंसी ग्राशा है।

साथ ही मंत्री जी का ध्यान में इस ग्रोर दिलाना चा ता हूं कि डियोजनों में जो ग्रोवरिसयर रखे गये हैं, वह जिं। जरूरत हो वहां ही रखे जायं। एक ग्रोवरिसयर पर ३०० रुपया लग जाता है ग्रोर या १०० के करीब जरूरत से ग्रधिक हैं। इस तरह से इन पर ३ लाग ६० हजार रुपया ज्यादा खर्च हो रहा है। इसको कम किया जाय।

साथ ही में माननीय मंत्री महोदय से यह निवेदन करूंगा कि इस विभाग में हरिजनों का प्रतिनिधित्व एक परसेन्ट भी पूरा नहीं हो पाया है। मुन्ने ताज्जुब है, बड़े बड़े इंजोनियर्स ग्रौर एक्जीक्यूटिव इंजीनियर्स ग्रगर नहीं मिल सकते हैं तो क्या चपरासी, पतरौल ग्रौर कामदार ग्राहि पदों के लिये भी हरिजन एक परसेन्ट भी नहीं मिल सकते हैं ? इसिलये मेरा निवेदन है कि माननीय मंत्री जी इसके लिये उचित व्यवस्था करने की कुपा करें।

साय ही एक बात टेलीफोनों के बारे में कहना चाहता हूं। इन विभाग के पास टेलीफोन श्रपने हैं जो विभाग तथा श्राफिसरों के काम के लिये हैं। श्रगर वे टेलीफोन जनता के निये भी खोल दिये जायें तो इससे रेवेन्यू भी बढ़ेगी श्रीर जनता को फायदा भी पहुंचेगा। इससे विभाग को कोई नुकसान नहीं होगा श्रार न ही उसका काम रुकेगा।

एक बात में द्यूबवेल श्रापरेटर्स की तब्दीली के बारे में श्रौर कहना चाहता हूं। मेरा यह सुझाव है कि श्रगर उनकी तब्दीली का समय ज्यादा से ज्यादा दो साल कर विया जाय श्रौर इसी समय के श्रन्दर उनकी तब्दीली हो जाया करें तो इसमें जनता की ज्ञिकायतें कम होंगी श्रौर विभाग की बदनामी भी इस संबंध में कम होगी। इन शब्दों के साथ में इस श्रमुदान का समर्थन करता हूं।

\*श्री बलदेविंसह (जिला गोंडा) — प्रधिष्ठाता महोदय, में कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करना चाहता हूं। जितने लेगों ने भी इस अनुदान के संबंध में भाषण किये, इश्वर से भी और उधर से भी, सभी ने कुछ न कुछ खामियां बताई हैं। यह तो कहा गया कि मांग उगादा होती चाहिये लेकिन उन्होंने एक लिस्ट खामियों की बताई। में इस संबंध में विस्तार में न जाकर अपने ही जिले गोंडा की कुछ बातों को कहना चाहता हूं। यूं तो उस जिले में न कोई नहर है, न कैनाल है, और न कोई सिचाई की बड़ी भारी योजना है। उस जिले में तिचाई के साधन इन कम हैं कि जिनकी तरफ सरकार का ध्यान जाना चाहिये। यह वास्त्रविक बात है कि जब तक खेत खेत में पानी नहीं पहुंचेगा तब तक न तो इस देश की उन्तित ही होने वाली है और न किमान का ही कुछ भला होने वाला है। किसान को हालत तभी सुबर सकतो है जब उसके खेत के लिये पानी का प्रबन्ध हो। हमारे जिले में सरकार की तरफ से कुछ करने का प्रशास अवस्थ किया गया है और खास तौर से वहां कुछ डैम्स बनाये गये हैं जैसे—-खैरमान, कोहरगड़ी, बघेलखंड, गिरगिटही

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

१६६०-६१ के ब्राय-व्ययक में ब्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-- १७६ ब्रनुदान संख्या ४७-लेखा शीर्षक ६८-सिचाई, नौ-चालन, बांध ग्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, ग्रनुदान संख्या १०-लेखा शीर्षक १७, १८ ग्रौर १६-अ-राजस्व के लिये जाने वाले सिचाई के निर्माण-कार्य तथा ग्रनुदान संख्या ११-लेखा शीर्षक १७, १८ ग्रौर ६८-सिचाई स्थापना पर व्यय

स्रौर पचपेड़वा स्रादि, जिसमें कि दो करोड़ के करीब रुपया सरकार का खर्च हुस्रा। लेकिन इतना खर्च होने के बाद भी यह निश्चित है कि जब सिंचाई का समय स्राता है तो उपमें पानी नहीं रहता है। फरवरी के बाद उन बंधियों में एक कतरा पानी भी नहीं रहता है। तो इतना रुपया खर्च किया जाय स्रौर उससे सिंचाई की योजना को कोई बल न मिले तो इस स्रोर मानिय मंत्री जी का ध्यान जरूर दिलाना चाहता हूं। इन बड़ी बड़ी योजनास्रों से यह उम्भीद होती है कि जब बरसात होगी, नालों में पानी रुकेगा, स्रौर उससे कुछ फायदा होगा। लेकिन सगर बूहों ने नालों को कहीं पर काट दिया तो पानी सब निकल जाता है। तो इतनी बड़ी वड़ी योजनास्रों से कोई फायदा नहीं हो रहा है।

हमारे गोंडा जिले में छोटी छोटी योजनायें सफल हुई हैं। वहां पर लोगों ने छोटे-छोटे ट्यूववेल बनाये हैं जिसमें ६०-७० एकड़ की सिचाई हो सकतो है। तो अगर इस जिभाग ने बड़ी बड़ी योजनाओं के स्थान पर छोटी छोटी योजनायें बनाई होतीं, तो में निश्चित रूप से कह सकता हूं कि काफी फायदा हुआ होता और इससे चौगुनी आबपाशी हो जाती और उनके खेतों को पानी पहुंच जाता लेकिन उस तरफ ध्यान नहीं दिया गया। ये योजनायें बड़ी भारी बनायीं और छोटी योजनाओं की तरफ ध्यान नहीं दिया गया, नहीं तो ज्यादा से ज्यादा खेतो की सिचाई हो सकती थी।

एक मुझे और निवेदन करना है मंत्री महोदय से कि इसमें बड़े बड़े रकवे लिये गये, फितनी काश्त छुड़ाई गयी, उनकी खेती खड़ी थी, अब वहां अधिकारी अपनी खेती कराते हैं, अरहर लगी है, फसल लगी है, और जिन गरीबों के खेत हैं वह दूर से देखा करते हैं। तो इसना बड़ा एरिया ले लिया गया और मुआवजा देने के लिए आज तक ३-३, ४-४ वर्ष हो गये, वह चाहें अजदूरी का बहाना हो, चाहें उनकी हालत कितनी गयी गुजरी हो गयो हो, कितने हो बेघरबार के हो गये हों, उनको कम्पेंसेशन मिलना नामुमिकन हो गया और अगर मिलता भी है तो अगर २-४ बीघे का खेत हो तो सरकारी शेड्यूल रेट से १०-१५ हपया बीघा उनको मिल जाता है और अगर उसे लेने के लिए ४ मतंबा गोंडा आया तो जितना कम्पेंसेशन मिलना है वह उसी में सब खर्च हो गया। तो में मंत्री जी का ध्यान दिलाऊंगा कि जो इस तरफ कम्पेंसेशन बाकी पड़ा हुआ है, जिसके लिए एक प्रश्न भी आया था कि उनको दिलाकर या दूसरी जगह जमीन दिलाकर बसाने की कृपा करें, तो वह किया जाय।

एक बात और निवेदन करनी है कि वहां बड़े-बड़े राजकीय ट्यूबवेल बने हुए है जो कि १०० के करीब हैं। एक को मिसाल बताऊं कि करीब दो हाई वर्ष हुए गांव मे ट्यूबवेल बना था, पंपिग सेट भी नहीं आया था और नहर तजवीज हो गयी कि खोदी जाय। वह काक्षतकार हमारे पास आया कि इसमें तो सैकड़ों बीधे खेत खुद जायगा, अगस्त का महीना है, मक्का की फसल तैयार है, एक आध महीने की मोहलत दे दी जाय ताकि हम अपनी फस्ल काट लें। तो मैंने वहां के इंजीनियर साहब से प्रार्थना की, लेकिन उन्होंने कहा कि सरकार का हुक्म है कि इसको जल्दी तैयार किया जाय। हमने कहा कि अभी तक तो आपका पंपिग सेट भी कुएं पर नहीं है, चलेगा कैसे? तो उन्होंने कहा कि नहर पहले बनायी जाती है। आखिर उनकी फसल खुद गयी, उसका कम्मेंसेशन नहीं दिया गया और आज तक वह नहीं बन पायी। एक और इसी तरह ट्यूबवेल है, ३ वर्ष से बह कुआं बना है, १४ नवम्बर का राजकीय ट्यूबवेल है नबावगंज के पास। यहां पर उच्चाधिकारी मौजूद हैं, वह तजुबें के तौर पर जाकर देख लें कि उसके बनने में ४०—६० हजार दपया सरकार का खर्च हुआ। फिर बिजली की लाइन वहां पहुंच गयी, लेकिन उससे मुक्किल से १०० एकड़ खेता की सिचाई

### श्री बलदेवसिंही

हो गती है। मैने जब बहां के अधिकारियों में पूछा तो उन्होंने बाएगा कि अब तक गूल बनाने को पैसा नहीं जा, भने हा विद्वी को काट कर चाना जाता हो ने किन दूनरे बेन में गानी नहीं जाता, इसिए नामला गड़बड़ हो जाता है। तो अनिन्, मैनहीं करण कि आपको योजनाएं गलत है, ये बहु गही है प्रोर इनकी जरूर बनना चाहिए प्रोर नम के चेतों ने गानी पहुं बना चाहिए, लेकिन इसकी देव नाल और इसका अवरइ बना कमप इना है विषे पान ने गाव गाऊ? उच्चाधिकारी देवितकल प्राद में है, हम लोगों को बहुं ब भो नहीं है, ने किन इना में शिक्त जानता है कि गांव में किन स्थान से पाने हर जगह पहुं ब सकता है वह हमने जगदा कोई नहां जाता। गाव याले जिनने सुन्दर तोर से उ को जानते हैं कि हमारा गान कहा फंचा है, कहा नीचा है उससे ज्यादा होई नहीं लावता, लेकिन कोई ऐडवाद ब नहीं लो जानी। जन कर करने ह नी उनकी बात मुने नहीं जाता। दो एक इन्नु बचें के बारे में तो तो स्वर्ग कहा, लेकिन नहीं माना। जहां मा किना था उसी जाह पर बचाना गान और बाते हैं कि नोचे हिस्से पर पड़ गान, अवें पर पानो नहीं नहां।

तो यह जिला बड़ा बदि जिला है। प्रायका है। प्रायका है। सम प्रवर पर्दु शा है। सड़कों के सामले ने भी में कुछ कहने बाला था, प्रवत्तर नहीं मिना, हिन्द को गरी साहब उथर जा चुके हैं, सुभक्तिन है कि छवा करें। वहा जायकी पिचाई गैं। ता भी इसा प्रशब है कि उप जिले ने छेंडे जिलों में यहा से दुगते शिनुने राजको प्रद्यूप्र में ते, विज्ञ गोंडा में इसी कम संख्या में निचाई के साधन है जिला कि लिये क्या कहा जाय। जो अने बलने ह जनमें जिले को लाभ नहीं होता।

स्रगर कोई डेन बने, जै ता मेने सुना है कि कोई तजवीज है, नो बगर पहले उन हा उने किये हुये न चालू किया जाय। क्योंकि मुझे मालूम है कि जो पांच नान इस प्राप्ते तनाये हु उन उर जो खर्चा स्टाफ नौ रह पर हो रहा है उससे ४०, ४० हनार कार्य मा । हा नाटा ही ग्रा । तो चे न सरकार के स्रोप न जनना के ही उतन काम कहा। चाहिये ए ना कि साइम पर पाना नहुंच जाय स्रोर हमया भी बकार न जाय।

मे रिकार से प्रार्थना कर्षणा कि जिन हा सुप्रावजा प्राप्ती हु उन हे आर्थित करा हर है । उपका मुगावणा दिना दिया जाय तो प्रह् बहुत क्ल्याण हर है। । अरा दे । इंद्रेगा कि हु गरे पिछड़े जिले गोंडा की सिचाई की स्रोर प्राधिक ब्यान दे कर उमका उप हार करें।

श्री सुखलाल (जिला इटावा)—माननीय श्रीयण्ठ ता महोदग, मात ता पहन प्रानारी हूं कि प्रान्ते गुने अपने विचार प्रकट करने का अप रिदिश है। न रंशान शाण परा वा ता का सर्व कर ने के निये वड़ा है गहें। उत्तर प्रदेश में एकार निर्माण परा वा ता का सर्व कर ने के निये वड़ा है गहें। उत्तर की विचार का प्रान्त कर नहें, गुजरों तारा-कार का में गवार बड़ है। लेकिन में गाननीय मंत्री जो का ध्यान इटावा कि का पर कर गान वाहता हूं। हमारे यहां आनाता झील से जो नाली निकालों गयो है उपसे इनारां एक उनमें निकल अयो है और उपने लाखों भन गल्ला पैदा होने लगा ह। इनके विवे मात्र गान हुन धन प्रान्त है। श्रीर उपने लाखों भन गल्ला पैदा होने कर वो जाय तो का से कम बें। गो एकड़ जमीन श्रीर निकल सकती है जिसमें हजारों मन गल्ना पैदा हो सकता है।

सन् १६५२ ने बम्बे का सर्वे हो चु हा है और उसके निये रिपोर्ट भी माननीय मंत्री जो के गस स्रा चुक र वे जिन सभी तक उसे स्वाकार नहीं किया गया है। इसलिये प्रार्थना है कि उसे स्वीकार शीख करें।

हमारे जिले में कोई ऐसा ट्यूबवेल नहीं है जिससे सिचाई हो। उसी जिले मे ग्रौरेया तहसील में यमुरा, चम्बल के बीच में श्राज तक कोई सिचाई का प्रबन्ध नहीं किया गया है ग्रौर न कोई वहां पर रोजगार है, न कोई उद्योग-धंधे हैं जिनसे जनता को फायदा हो। इसके कारण वहां बेकारी बहुत है, जनता में ग्रसंतोष बहुत है ग्रौर यही कारण है कि उस क्षेत्र में १६६०-६१ के ग्राय-ब्व्यक पर ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान- १८१ ग्रनुदान संख्या ४७-लेखा शीर्षक ६८-सिचाई, नौ-चालन, बांध ग्रौर पानी के निकास सम्बन्धो कार्यों का निर्माण, ग्रनुदान संख्या १०-लेखा शीर्षक १७, १८ ग्रौर १६-ख-राजस्ब से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण कार्य तथा, ग्रनुदान संख्या ११-लेखा शीर्षक १७, १८, १६ ग्रौर ६८-सिचाई स्थापना पर व्यय

डाकू या बोर ही जाते हैं और इटावा से आगरे तक वे धावा मारते हैं और गिरफ्तारियां होती हैं। वहां हजारों गांवों में पुलिस सरकार ने लगा दो हैं। जितना रुपया पुलिस पर खर्च किया जाता है अगर वही रुपया सिचाई के कार्यों में लगा दिया जाय तो वहां की पैदावार बढ़ सके और चोर और डाकुओं का अतंक भी कम हो जाय क्योंकि सबके लिये काम हो जाय और बेकारी कम हो जाय।

्रिजनों के पास सिंचाई के लिये कोई साधन नहीं है। इतने खेत भी हरिजनों के पास नहीं हैं जिनसे उनकी जीविका चल सके। न उनके पास कुएं बनाने के लिये तकावो है जिससे कुएं बना सकें। इसलिये मेरी सरकार से प्रार्थना है कि हरिजनों के पास बहुत कम जमीन है, उनके पास पैसा नहीं है, मैं सरकार से निवेदन करूंगा कि हरिजनों को कम जमीन पर भी कुएं के लिये तकावी दी जाय ताकि वह कुएं बनाकर अपनी सिंचाई का प्रबन्ध कर सकें। मैं ग्राञा करता हूं कि मेरे इन सुझावों पर सरकार उचित ध्यान देने की कुपा करेगी। श्रन्त में मैं पुनः प्रस्तुत श्रनु-दान का समर्थन करता हूं।

श्री हिम्मतिंसह (जिला बुलन्दशहर)—माननीय श्रिष्ठिंदाता महोदय, कटौती के प्रस्ताव का समयंन करते हुये में मंत्री जी का ध्यान इस श्रोर श्राकृत्ट करना चाहता हूं कि इरींगेशन, एग्रीकल्चर श्रौर प्लानिंग विभाग एक ही मन्त्री के श्रन्तर्गत होने चाहिये जिससे इन विभागों में श्रापस में कोग्राडिनेशन हो सके श्रौर यह पता चल सके कि कहां किस जिले में किस स्थान पर पानी की श्रावश्यकता है। श्रीमन, जो बजट हम लोगों को बांटा गया है उसके खंड ३ के पृष्ठ ४०-प पर इस बात का जिक है कि सिचाई विभाग ने पूर्वी जिलों में सिचाई के साधनों का विकास किया लेकिन वहां के लोग उन साधनों का पूरा उपयोग नहीं कर रहे हैं। तो श्रगर माननीय मंत्री जी सिचाई विभाग के साथ साथ एग्रीकल्चर विभाग के भी मन्त्रो होते तो व उस श्रोर ध्यान रखते कि बुन्देलखंड में जो भी जिले श्राते हैं वहां के लोग श्रगर सिचाई के साधनों स्थान पूरा उपयोग नहीं कर रहे हैं तो वहां सन्भवतः यह इस चीज को नहीं बनने देते। तो श्रापके द्वारा मन्त्री जो से मेरा श्रनुरोध है कि वे सिचाई विभाग के साथ-साथ कृषि विभाग को भी ले लें जिससे एक दूनरे में कोग्रा- डिनेशन होता रहे।

श्रव में मन्त्री जी का ध्यान श्रांकड़ों की पुस्तक की श्रोर ले जाना चाहता हूं जिसके द्वारा प्रतीत होता है कि पिश्चमी जिलों के किसान श्रधिक पानी का उपयोग करते हैं। उसके पृष्ठ ११ पर लिखा हुन्ना है कि पिश्चमी जिलों में नहरों द्वारा सिचाई की दरें पूर्वी जिलों की दरों को श्रपेक्षा ग्रधिक होने के कारण प्रदेश को निर्धारित मालगुजारी में वृद्धि हुई। इसमें दिये गये श्रांकड़ों से मालूम होता है कि सार १६५७-५८ में ८,०४७ हजार एकड़ जमीन की सिचाई की गई श्रोर ७७,१८६ हजार रुपये की निर्धारित मालगुजारी श्राई। इसी प्रकार से १६५८-५६ में ७,५३२ हजार एकड़ जमीन की सिचाई की गई श्रोर ८३,७६६ हजार रुपये की िधारित मालगुजारी श्राई। इस प्रकार से ६,६१० हजार रुपये की सिचाई की मालगुजारी में बढ़ोत्तरी हुई। तो पश्चिमी जिलों के किसान जो कि पानी चाहते हैं ग्रीर उसके लिये मारे-मारे फिरते हैं उनके लिये सिचाई की दरें बढ़ा दी गईं, में माननीय मन्त्री जो से निवेदन करना चाहता हूं कि वहां पर श्रव भी श्रप्रार्थित मात्रा में पानी दिया जा रहा है।

पूर्वी जिलों के लिये कहा जाता है कि वहां के लोग पानी नहीं लेते, वहां के लोग स्वयं खेती भी नहीं करना चाहते लेकिन हमारे पिक्चिमी जिलों में लोग ग्रपने हाथ से खेती करते हैं इसलिये पानी भी लेते हैं। तो जो पानी लेता है, मेहनत करता है, मशक्कत करता है, वहां का एरिया सरप्लस एरिया भी कहलाता है, उस इलाके को मन्त्री जी कुछ छूट ग्रौर दें जिससे वहां के किसान उठ कर [श्री हिम्मर्तासह]

खड़े हों सके। मैं श्रापके द्वारा मन्त्री जी को बताना चाहता हूं कि जहां पहले गेहूं का सिचाई का रेट रिबेट काटकर साढ़े ४ रुपये था वह श्रव १२ रुपये हो गया है, ईख का जहां पहले १० रुपये था श्रव ३२ रुग्ये कर दिया गया है, चावल जहां पहले ६ रुपये था श्रव १४ रुप्ये कर दिया है। तो इस प्रकार से पिश्चमी जिलों में पहले से बढ़े हुये रेट्स को श्रौर बढ़ा दिया गया है। श्राखिर वहां के लोग इस प्रकार की द्विभांति की नीति के क्यों शिकार किये जा रहे है। में श्राशा करता हूं मंत्री जी इस श्रोर ध्यान देने की कृपा करेंगे।

श्रव मेरा जिला एक ऐसा जिला है जहां ट्यूबवेल का कमांड है श्रौर नहर की टेल वहां पर खत्म होती है। वहां के किसानों ने टेल के पानी के लिये मंत्री जी को श्रौर कृषि मंत्री जी को कई बार दरस्वास्तें दीं कि हमारा नहर महकमें से कमांड कर दिया जाय श्रौर ट्यूबवेल से पानी दिया जाय जिससे सिंचाई हो सके। लेकिन श्रभी तक माननीय मंत्री जी ने कोई ध्यान नहीं दिया है। माननीय मंत्री जी इसको नोट कर ले—-डिबाई, जिला बुलन्दशहर में बुढ़ानपुर खुदं गांव है। वहां ठीक प्रबन्ध की व्यवस्था करके वहां के लोगों को सुविधा देने की कृपा करे। इसके श्रतिरिक्त डिबाई परगना में कूप की भी बहुत जरूरत है।

बड़ी-बड़ी योजनायें चल रही है, वे पूरी नहीं हुई, मध्यवर्ती योजनाये भी पूरी नहीं हुई तथा छोटी-छोटी योजनाओं के अन्तर्गत जो कुओं की स्कीम थी, वह भी पूरी नहीं हुई है। इसी पुस्तिका के पृष्ठ २२ से २३ पर बताया गया है कि २,६७० ऐसे कुएं है जो अभी तक नहीं बनाये गये है। पूर्वी जिलों वाले पानी नहीं लेते है, सिचाई नहीं करते है और कहते है कि दरें बहुत है लिहाजा में मंत्री जी से प्रार्थना करूंगा कि वे अधिक से अधिक कुएं पिडचमी जिलों मे बनयायें तांकि वहां के लोग अधिक से अधिक अपन पैदा कर सकें।

श्री गौरीराम गुप्त (जिला गोरखपुर)—श्रिष्ठाता महोवय, प्वाइन्ट श्राफ श्राईर। माननीय सदस्य हर समय यह क्या कह रहे हैं कि पूर्वी जिलों की उपेक्षा की जाय श्रोर पश्चिमी जिलों को दिया जाय। वे बराबर पूर्वी श्रौर पश्चिमी का सवाल उठा रहे है।

श्री श्रधिष्ठाता---यह प्वाइन्ट ग्राफ ग्रार्डर नहीं है।

श्री हिम्मतिंसह—माननीय ग्रिधिंडाता महोदय, मैंने पूर्वी, पिश्वमी जिलों का खयाल नहीं किया। पिश्वमी जिलों के लोग मेहनत करते हैं ग्रौर ग्रपनी मशक्कत से २४ घंटे काम करके ग्रन्न पैदा करते हैं ग्रौर पूर्वी जिलों को देते हैं। सरकार द्वारा दी गयी किताबों में स्वयं लिखा है कि पूर्वी जिलों के लोग पानी नहीं लेते हैं। जिन माननीय सदस्य ने यह प्रश्न उठाया है वे बजट के खंड ३ के पेज ४०-प को देखें। उसमें लिखा हुग्रा है कि वहां के लोग पानी का इस्तेमाल नहीं करते हैं। इसलिये में माननीय मंत्री जी से प्रार्थना करूंगा कि जो लोग मेहनत करने वाले हैं उनके लिये पानी का प्रबन्ध करें, इसका उन्हें ग्रधिकार भी है। पिश्वमी जिलों में सिचाई के नाम पर टैक्स क्यों लगाया जाता है। जब ग्राप उनसे टैक्स लेते हैं तो ग्राप उनके लिये सिचाई का प्रबन्ध करें। उनके लिये ग्रिधक से ग्रधिक ग्रन्न उपजा सकें। पानी का कमान्ड उतना ही रखा जाय जितना पानी ग्राप सप्लाई कर सकें, उससे ग्रधिक कमांड न रखा जाय। इससे किसानों को नुकसान होता है।

एटा जिले के अलीगंज क्षेत्र के हजारों काश्तकारों की एप्लीकेशन माननीय मंत्री जी के पास आयी है। वे कह रहे हैं कि हमारे माननीय मंत्री जी कुएं बनायें। कई स्थानों पर जहां कुएं फेल हो गये है वहां पर सरकार को पानी का दूसरा इन्तजाम करना चाहिये। बड़े सिंचाई के साधन न हो सके तो छोटे साधनों से किसानों को सहायता पहुंचानी चाहिये। इस विभाग के पतरौल और ट्यूबवेल आपरेटर लोगों को तंग करते हैं। आशा है माननीय मंत्री जी उन पर कड़ी निगरानी रखेंगे।

१९६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--स्रनुदान १८३ संख्या ४७-लेखा शीर्षक ६८-सिचाई, नौं-चालन, बांध स्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, अनुदान संख्या १०--लेखा शीर्षक १७, १८ स्रौर १६-ख-राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण कार्य तथा अनुदान संख्या ११-लेखा शीर्षक १७, १८, १६ स्रौर ६८-सिचाई स्थापना पर व्यय

भारतीय जनसंघ ने बार-बार कहा है कि किसानों के लिये छोटे-छोटे कुएं बनाग्रो। श्रगर ग्राप बड़े-बड़े ट्यूबवेल्स नहीं बना सकते हैं तो उन लोगों को छोटे-छोटे कुएं श्रौर रहट लगा कर पानी देने का प्रबन्ध करिये ताकि काश्तकार सिंचाई कर सकें ग्रौर श्रन्त पैदा करके देश को दे सकें। जब खरीफ की फसल कटती है तो नहरों से पानी नहीं मिल पाता है। पानी न होने से रबी की फसलें, गेहूं, जौ, चना श्रौर मटर श्रादि रह जाती हैं। इसलिये पानी का इंतजाम ठीक ढंग से किया जाय।

नरौरा क्षेत्र के श्रन्दर मेरठ डिवीजन का कुछ भाग मिला दिया गया है, लेकिन उसके साथ ही साथ उस क्षेत्र को पानी नहीं दिया गया है। उनके लिये भी पानी की सुविधा होनी चाहिये। इन शब्दों के साथ मैं कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री रामलखन सिंह (जिला जौनपुर)—माननीय श्रधिष्ठाता महोदय, मै श्रापका बहुत श्रमुगृहीत हूं कि श्रापने मुझे इस महत्वपूर्ण श्रमुदान पर बोलने का मौका दिया। मतनीय मंत्री जी ने सिचाई का जो श्रमुदान रखा है, में उसके समर्थन में खड़ा हुश्रा हूं श्रीर कटौती का प्रस्ताव जो श्री रामस्वरूप जी ने रखा है, उसके विरोध में बोल रहा हूं। श्री रामस्वरूप जी ने जो कटौती का प्रस्ताव रखा है उसको देखने से श्रीर उनके भाषण से ऐसा मालूम होता था कि सिचाई विभाग बिलकुल बेकार-सा है श्रीर उसमें सब श्रवनित के काम किये गये हैं। यदि कोई श्रजनशी श्रादमो श्राज इस सदन में होता तो जो रामस्वरूप वर्मा ने कटौती का प्रस्ताव रखा है उसे सुनकर बड़ा ताज्जुब होता। श्राज सिचाई जैसे महत्व के श्रमुदान में किसी किस्म की कटौती का प्रस्ताव नहीं रखा जाना चाहिये था। हमारा देश कृषि प्रधान देश है. . . .

श्री नन्दराम (जिला प्रतापगढ़)—श्रीमन्, व्यवस्था का एक प्रक्षत में रखना चाहता हूं। इस माननीय सदन का नियम है कि जब किसी माननीय सदस्य के बारे में कोई बात कही जाती है तो उसक पहल श्रादरसूचक शब्द लगा कर उनका नाम लिया जाता है, लेकिन हमारे ट्रेजरी बेंच के सदस्य उस नियम का उल्लंघन कर रहे हैं। इस पर मैं श्रापकी व्यवस्था चाहता हूं।

श्री श्रिधिष्ठाता--ठीक है, माननीय सदस्य भविष्य में इसका ध्यान रखें।

श्री रामलखन सिंह—-ग्रादरसूचक जितने भी शब्द लग सकते हैं उन सब को उनके नाम के पहले लगाने के लिये में तैयार हूं।

स्रिष्ठिता महोदय, जो सिंचाई का अनुदान है वह बड़े महत्व का अनुदान है। इस कृषि प्रधान देश में सिंचाई के बिना खेती की पैदावार नहीं बढ़ सकती है, जिसके बिना आर्थिक व्यवस्था खराब होती है। इस सदन तथा इस प्रदेश के रहने वालां की यह ाय कभी भी नहीं ह' सकती कि सिंदाई के लिये अनुदान न दिया जाय और उसके लिये व्यवस्था न की जाय। आज से कई हजार वर्ष पहले भगीरथ नाम के व्यक्ति हमारे उत्तर प्रदेश में हिमालय से पानी की घारा लाये जो आज गंगा के नाम से प्रचलित है, और जिसकी आज पूजा होती है तथा उसके बारे में पुराणों में भी बड़ी कथा है। तो हमारे यहां यद्यपि उन्नीसवीं शताब्दी में ही सिंचाई की व्यवस्था प्रारम्भ हो गयी थी लेकिन हमारी लोकप्रिय सरकार जब से, १६४७-४६ से इस प्रदेश में राज्य कर रही है, तब से सिंचाई की व्यवस्था पहले से ज्यादा अव्छी और बढ़िया ढंग से चलाने के लिये बहुत-सी योजनायें चलायी गयी हैं और उसका नतीजा यह है कि हमारे पश्चिमी जिलों में चाहै पहले नलकूप रहे हों लेकिन हमारे जिले के लोग जो पश्चिमी जिलों में या बाहर नहीं गये थे उन्होंने प्रथम पंचवर्षीय योजना में ही नलकूप के दर्शन किये। तो ये जो नलकूप

[श्री रात्रलखन सिंह]

-बनाये गये हैं, उनसे जो पानी की व्यवस्था की गयी है उससे काफी सिचाई हुई श्रौर बहुत-सा कृषि का उत्पादन बढ़ा।

उसी तरह से नहरें भी बनायी गयी हैं, किन्तु उसके लिये कुछ थोड़े से सुझाव मुझे श्रापके क्षामने देने हैं। खास तौर से मैं माननीय मंत्री जी का ध्यान अपने जिले जौनपुर की तरफ आकर्षित करना चाहता हूं। जौनपुर जिले में जितने नलकूप प्रथम पंचवर्षीय योजना में होने चाहिये थे उतने नहीं बन सके। उस जिले के लोगों ने इसे बात की बड़ी आजा की थी कि हमारे यहां काफी नलकूप हो जायंगे और जौनपुर जिला जो अस के मामले में डेिजिसट एरिया है, उसकी तिचाई के द्वारा तरक्की होगी ग्रौर वहां गल्ले की पैदायार पढ़ जायगी। लैकिन ग्रफसोस कि वह ग्राशा नहीं पूरी हो सकी। द्विलीय पंचपर्षीय योजना से वहां कोई भी नलकुप नहीं बनाया गया। श्रभी उस जिले में नलकूपों की बहुत कपी है। बहुत से वहां ऐसे स्थान हैं जहां नहरें नहीं पहुंच सकती है ग्रीर जहां सिचा को की दें दूसरी च्यवस्था नहीं की जा सकती, वहां नेलकूपों का होना बहुत जरूरी है। हमारा क्षेत्र जोनपुर में रारी क्षेत्र के नाव है। एक हूर है। उस क्षेत्र में तहत सी निविधा है जैसे- मांगतः, सई, वरुणा, यसुही भ्रौर पीली भ्रादि। नदियों के किनारे जितने गांव है उनके श्रन्दर रिजाई की कोई यवस्था श्राज तक नहीं हुई है। मैं श्राप के द्वारा मंत्री जी से प्रार्थवा व लंगा कि नदी के किनारे के गांवों की सिंवाई की जो भी व्यवस्था हो सके वह की जा'।। अगर वह नहीं होती है तो नदी के किनारे के बहुत से गांव ऐसे है जहां सिचा की व्यवस्था न होने के कारण जो दूसरे लोग सिवाई के साधनों से लाभ उठा रहे है वह वहां के लोग नहीं उठा पाते भ्रौर कराहते रह जाते है भ्रौर तकलीक में रह जाते है।

इसी तरह से कई स्थान ऐसे हैं कि जहां नहरों की व्यवस्था तो है या प्लान भी है कि वहां महरें बनें लेकिन वहां ग्रभी तक या तो नहरें नहीं गई हैं श्रौर श्रगर गई है तो थोड़ी सी लेती बनी है श्रौर बाकी नहीं बनों श्रौर पानी नहीं पहुंचा। जब नहरों के लिये सर्वे ह्रग्रा श्रौर नहरों की व्यवस्था की बात चली तो लोगों को श्राशा हुई थी कि नहरें बनेंगी श्रोर सिचाई का प्रबन्ध होगा श्रौर पैदावार में उन्नति होगी, लेकिन भाज तक यहां नहरों की ऐसी ध्यवस्था नहीं हुई है कि लोग श्रपने खेतों की ठीक से सिचाई कर सकें। इससे बहां बड़ी निराशा छाई हुई है, मंत्री जी इस तरफ ध्यान दें। जो नई जमीन तोड़ कर खेती किये ह वहां भी श्रगर दूर तक पानी का प्रबन्ध कर दिया जाय तो उनकी खेती भी लाभप्रद हो सके। हमारे यहां जौनपुर में सिगरारे के पास चांदपुर का पानी नहर काट कर जाता है। यह फैलता रहता है, मंत्र इस सम्बन्ध में इंजीनियर्स का ध्यान भी श्राकृष्ट किया, चिट्ठी भी लिखी, लेकिन पानी गिरता ही रहता है जिससे २५–३० बीघा जमीन पानी से लबालब भरी रहती है श्रौर जाड़ा गर्मी बरसात किसी मौसम में वहां कोई खेती नहीं हो सकती, बराबर पानी भरा रहता है।

नलकूपों के सम्बन्ध में भी मेरा कहना है कि जो उनके आपरेटसें हैं वह वक्त से पानी नहीं देते और उनको जितनी परवाह होनी चाहिये वह नहीं करते बल्कि उनके बारे में लोगों का जैसा अनुमान है, उनमें अष्टाचार है। इन सब चीजों को अगर दूर किया जाय तो सिचाई विभाग जो काम कर रहा है वह आगे चल कर बहुत अच्छा होगा और उससे इस कृषि प्रधान देश की तरककी हो सकेगी। इन शब्दों के साथ में इस कटौती के प्रस्ताव का विरोध करता हूं और माननीय मंत्री जी ने जो अनुदान मांगा है उसका समर्थन करता हूं।

श्रीमती राजेन्द्रकुमारी (जिला हमीरपुर)—ग्रिष्ठिला महोदय, में ग्रापकी बहुत ही श्राभारी हूं कि इस श्रनुदान पर श्रापने मुझे बोलने का समय दिया। मेने बजट को देखा तो उत्तर प्रदेश के दिक्खनी भाग के लिये केवल ३ लाख रुपया रखा गया है। माननीय मंत्री जी से मेरी यह करबद्ध प्रार्थना है कि बुन्देलखंड के लिये यह रकम बहुत ही कम है। कम से कम उनको वहां के लिये २०-२४ लाख रुपया रखना चाहियेथा। हमारे माननीय मंत्री १६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--ग्रनुदान १८५ संख्या ४७-लेखा द्योर्बक ६८-सिंचाई, नौचालन, बान्ध ग्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, ग्रनुदान संख्या १०-लेखा द्योर्बक १७, १८ ग्रौर १६-ख-राजस्व से किने जाने वाले सिंचाई के निर्माण कार्य तथा ग्रनुदान संख्या ११-लेखा द्योर्बकः १७, १८,१६ ग्रौर ६८-सिंचाई स्थापना पर व्यय

जी को मालूम है कि वहां पर नलकूप भी नहीं चल सकते, इंजीनियर्स का कहना है कि वह वहां काम नहीं दे सकते। इसलिये वहां छोटी-छोटी बन्धियों की बहुत जरूरत है और उनके लिये यह ३ लाख रुपया नहीं के बराबर है। इसलिये मेरी उनसे प्रार्थना है कि बुन्देलखंड पर उनकी हमेशा कृपादृष्टि रहती है, लेकिन मुझे यह पता नहीं है कि यह केवल चार जिलों के लिये है या और जिले भी हैं। भारत सरकार ने पिछड़े जिलों के लिये द लाख रुपया रखा है, मैं यह जानना चाहती हूं माननीय मंत्री जी से कि उस द द लाख में से क्या बुद्धेलखंड को भी कुछ मिलेगा?

हमारे यहां पहले कुछ स्कीमें भी चली थीं। कुछ बंधे भी बने हैं, बंधियां भी बनी हैं, लेकिन दो-तीन साल से ऐसा हो गया है कि बन्धी बनाना बिलकुल बन्द हो गया है। अब जानते हैं कि बुन्देलखंड में ऊंची-नीची और रूखी जमीन है। वहां बंधी नहीं होंगी तो बिल जुल पैदावार नहीं होगी। वहां गांव में छोटे-छोटे नाले हैं। जब उनमें पानी भ्राता है तो मिट्टी बह जाती है भ्रीर कंकड़ रह जाते हैं। इसलिये वहां पर बन्धे और बंधियों की सख्त जरूरत है। भूमिहीन हरिजन भाई भ्राज मकान बनाने के लिये परेशान हैं, भ्रगर वहां पर छोटी-छोटी बंधियां डरुवा वें तो काफी जमीन निकल सकती है।

हमारे यहां नाले हर गांव में करीब-करीब हैं। इंजीनियरों से हम लोगों ने कहा कि बन्धी डलवा दो तो जमीन समतल हो जाय। उन्होंने कहा कि हमको सरकारी श्राज्ञा नहीं है, केवल २०० रुपया एकड़ के हिसाब से हमें मिलता है। मेरी प्रार्थना है कि जहां गहरे नाले है वहां के लिये कम से कम ४-५ सौ रुपया रखना चाहिए ताकि बंधी पड़ सकें श्रीर ज़मतल जमीन हो जाय।

हमारे यहां बंधे भी हैं। झांसी में दो हैं—कमला सागर श्रौर गोविन्द सागर। मंत्री जी हमारे यहां गिरधारीलाल सागर बंधा हमीरपुर जिले में बनवाने की जरूर कृपा करें। श्रागे श्राने वाली संतान गुणगान करेगी। इसलियं मैं करबद्ध प्रार्थना करती हूं कि हमारे यहां श्रपने नाम से बंधा जरूर बनवाएं।

बुन्देलखंड एक ऐसा पिछड़ा क्षेत्र है, वहां खेत में इतनी रुखाई रहती है कि पानी न दिया जाय या बरसात न हो तो बितकुल गल्ला नहीं पैदा होता। मैं समझती हूं कि करीब-करीब सभी हमारे मंत्री महोदयों की कृपा दृष्टि है। मैं उनकी ग्रालोचना नहीं करती इसलिये कि ग्रभी थोड़े दिन तो उनकी हुए ही हैं श्रीर शायद ग्रागे चल करके बंधे बंधियां डलवायेंगे। जिस प्रकार उन्होंने इस साल हमारे मौदहा की सड़क को लिया है, जहां भी खराबी देखें, सरकार का कर्तन्य है कि वह जनता की परेशानियों को दूर करे।

श्री रघुवीरसिंह (जिला एटा)—मुझे श्रीमन् यह निवेदन करना है कि संख्या के श्रनुपात से हमारी पार्टी को समय नहीं मिल पाता है।

श्री ग्रिधिष्ठाता-नै यत्न करता हूं कि ग्रापकी पार्टी को समय मिले।

\*श्री महमूद श्रली खां (जिला मेरठ)—श्रिष्ठाता महोदय, में श्रापका शुक्रिया श्रदा करता हूं जो श्रापने मुझे मौका दिया। साथ ही मैं अनुदान का समर्थन श्रीर कटौती के प्रस्ताव का विरोध करने के लिये खड़ा हुआ हूं। इस सूबे की ७५-७६ फीसदी श्राबादी खेती पर डिपेंड

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री महमूद ग्रली खां]

ि करती है श्रौर जो श्रनुदान सिंचाई के सिलसिले में पेश किया गया है इस पर कटौती का प्रस्ताव श्राना मेरी समझ में कुछ बात नहीं श्रायी।

इन्सान की जिन्दगी के लिये खूराक की जरूरत हे श्रौर खूराक के लिये पानी की जरूरत है। तो प्रदेश के लिये सब से श्रहम जो श्रनुदान है वह सिचाई का है। जो कुछ सरकार ने सिचाई के सिलिसले में किया है वह बहुत ज्यादा है। खास तौर पर ट्यूबवेल्स की जो स्कीम सरकार ने चलायी है उससे देहातों के श्रन्दर बिजली नजर श्राती है श्रीर तरह-तरह की इंडस्ट्रीज भी खोली जा रही है। यह सब सिचाई विभाग की बदौलत नजर श्रा रहा ह। इस सिलिसले में मुख सुझाव देना चाहता हूं श्रौर वह यह कि सिचाई तीन तरीके से होती है, नहर, ट्यूबवेल श्रौर छोटे-छोटे कुश्रों श्रौर रहट वगैरह से।

नहरों के सिलिसले में यह कहना है कि चूंकि इस वक्त इंटेसिय कल्टीवेशन श्र् हो गया है, श्राबादी सूबे की बढ़ रही है जिसकी वजह से खूराक की समस्या हे, वेजीटेबिल्स की काश्त की जा रही है, सीलिंग हो जाने से भी इंटेसिय कल्टीवेशन बढ़ जायगी, तो इम सिलिसले में एक जनरल सब नहरों का किया जाय कि जहां-जहां नहरों का पानी दिया जाता है यह देखा जाय कि हेड और टेल पर किस तरह पानी दिया जाता है। चूंकि नहरों में पानी तो बढ़ाया नहीं जा सकता, लिहाजा हेड पर जितना ज्यादा से ज्यादा पानी दिया जा सकता हं और जितनी उस इलाके को जरूरत हो उसको तो रख लिया जाय बाकी तमाम एरिया को टच्चबवेल के श्रन्दर दे दिया जाय। और एक नई स्कीम तमाम सूबे में चले तािक ट्यूबवेल ज्यादा से ज्यादा लगा सके।

दूसरा सुझाव यह है कि हमारे प्रदेश में श्रौर देश में यातायात के साधनों की बहुत कमी है। उस सिलसिले में माननीय विकल जी ने कहा था। लेकिन में उसमें जरा-सी तरमीम यह करना चाहता हूं कि कैनाल्स पर जो पटिर्या है वह बहुत कम इस्तेमाल होती है। सरकारी श्रफसरान कभी-कभी जाते है दौरे पर लेकिन उनके रखरखाव पर खर्च बहुत होता है। तो उत खर्च को देखते हुए श्रौर यह देखते हुए कि पटिरयों से नेशन को कोई फ़ायदा नहीं है इस लये नहर की पटिरयों को जनता के लिये खोल दिया जाय।

तीसरा सुझाव टच्बवेल्स के सम्बन्ध में है। ट्चूबवेल्स पर सिंवस रोड्स है। एक विकत जरूर है कि सिंवस रोड्स जो बनायी गयी है वे कम चौड़ी हे लेकिन उनमें रक्षवा जाफी धिरा हुम्रा है। उसकी हालत यह है कि बहुत कम इस्तेमाल होते हैं। साल, छ. महीने में कोई प्रफसर चला जाता है, सरकार का तमाम रुपया खर्च होता है लेकिन पिक्लिक का कोई फायदा नहीं होता। कैनाल एक्ट का सेक्शन ७० जो है उसके मातहत ग्रगर कोई किसान उस पर गाड़ी ले जाता है तो उसको सजा मिलती है। ऐसी सूरत में इन सरकारी रोड्स को डबल कर दिया जाय कच्चा ही ग्रौर इनको भी ग्रोपेन कर दिया जाय। इससे हमारे सूचे में जो कम्युनिकेशन का मामला है खास तौर से देहात का, वह हल हो जायगा। जितने टच्बवेल्स बनाये गये है वे देहातों में है ग्रौर उनसे जब छोटी-छोटी सड़कें ने नेक्टेड होंगी तो उनको पंचायतें श्रमदान से बना सकती है।

ट्यूबवेल्स पर एरिया बहुत ज्यादा है। इससे किसान को नुकसान पहुंचता है। किसानों को जमीन के हिसाब से घंटे मिलते है। ५० बीघा जमीन है तो ३ घंटे मिले। इसमें किसान क्या कर सकना है? रात को वे ३ घंटे पड़े ग्रौर नाली खराब हो गयी तो वह पानी नहीं पा सकेगा। मेरा सुझाव है कि ३०० एकड़ से ज्यादा किसी ट्यूबवेल पर रकवा न रखा जाय।

हमारे जो सिचाई मंत्री है वे पात्रर के भी मंत्री है। इरींगेशन के लिये जो प्राइवेट टचूबवेल्स लोग बनाना चाहते है उसमें इरींगेशन डिपार्टमेंट की तरफ से सबसिडी होना चाहिये श्रौर ऐसी सबसिडी होना चाहिये जिससे किसानों को श्रासानी से ट्यूबवेल्स बनाने में मदद मिल सके। इससे बड़ा फायदा होगा श्रौर लास तौर से ऐसे इलाकों में जहां सस्ते टघबवेल्स १९६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--भ्रनुदान १८७ संख्या ४७-लेखा शीर्षक ६८-सिचाई, नौचालन, बान्घ श्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, श्रनुदान संख्या १०-लेखा शीर्षक १७, १८, १९-ल-राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण-कार्य तथा ग्रनुदान संख्या ११-लेखा शीर्षक १७, १८, १९ ग्रौर ६८-सिचाई स्थापना पर व्यय

केबिटी सिस्टम पर बन सकते हैं जिनकी लागत ८,६ हजार होती है उनके लिये गवर्नमेंट सबसिडी दे। इससे काश्तकारों को फायदा होगा श्रौर स्टेट को भी फायदा होगा।

एक सुझाव और दूंगा। वह यह है कि किसानों को जो बिजली मिलती है सिचाई के सिलिस में उनसे जो २६ रुपये माहवार लिये जाते हैं लाइन के सिलिस में वह बिलकुल न लिये जायं। अन्त में मैं माननीय मंत्री जी व यू० पी० गवर्नमेंट को मुबारकबाद देता हूं जो उन्होंने सिचाई के सिलिस में काम किये हैं और इस कटौती के प्रस्ताव की मुखालिफत करता हूं।

श्री श्रीकृष्ण गोयल (जिला बदायूं)—एक व्यवस्था का प्रश्न है। विशिष्ट गैलरी में एक सज्जन पैर ऊपर करके बैठे हुए हैं। मैं श्रापकी व्यवस्था चाहता हूं कि जो लोग सदन में श्राकर बैठें वे जरा सदन की मर्यादा का खयाल रखें।

श्री श्रधिष्ठाता--ग्रापने ठीक कहा। किसी विजिटर को इस तरह नहीं बैठना चाहिये।

श्री ग्रब्दुल रऊफ लारी (जिला गोरखपुर)—माननीय श्रिष्ठाता महोदय, माननीय रामस्वरूप जी वर्मा ने जो कटौती का प्रस्ताव पेश किया है मैं उसका समर्थन करने के लिए खड़ा हुग्रा हूं। माननीय मन्त्री जी ने जो अनुदान स्वीकार करने की मांग की है उसके सम्बन्ध में यह अर्ज करना चाहता हूं कि सिचाई श्रपने प्रान्त के लिए एक बहुत जरूरी ग्रौर ग्रावश्यक साधन है, मान्यवर, इसमें किसी की दो राये नहीं हो सकतीं। इसमें भी दो राय नहीं है कि सिचाई के साधन बहुत कुछ इवर बढ़े हैं। लेकिन में माननीय मन्त्री जी से यह जानना चाहूंगा कि इस विभाग में जब से वह ग्राये है या जब से स्वतंत्रता प्राप्त हुई है जितना रुपया खर्च हुग्रा है क्या उतना निर्माण कार्य मी हुग्रा है ग्रौर जितना निर्माण कार्य हुग्रा है क्या उस हिसाब से जनता को कायश पहुंच रहा है? जरा ग्रपने दिल पर हाथ रख कर वह सी वे! मैं कहूंगा कि यह कदायि नहीं हुन्ना है।

भ्रष्टाचार के बार में तो पी० डब्स्यू० डी० के भ्रनुदान पर बोलते हुये उन्होंने यह सिटफि हेट दे दिया है कि मैंने इस में बहुत सुन्नार कर दिये है और भ्रब कोई भ्रष्टाचार नहीं रह गया
है। तो श्रष्टाचार तो उन्होंने खत्म कर दिया, ठीक है। श्रब मै जरा यह पूछना चाहता हूं
कि उन के विभाग में जो निर्माण कार्य भ्राज हो रहा है। जिसमे भ्ररबों रुपये लग रहे हैं वह काम
कितना सजबूत हो रहा है इसका भी एक सिटिफ केट मन्त्री जी भ्रब की जवाब देते वक्त दे देंगे।
इस सम्बन्ध में मै उनका ध्यान विधायक निवास की तरफ ले जाना चाहता हूं जहां पहले
की सीनेंट की बनी हुई सड़क मौजूद है भीर जो भ्रब बनायी गई वह भी मौजूद है, पहले के बने हुये
कमरे भी मौजूद है श्रीर जो ए० बलाक के ऊपर भ्रब बनवाये गये है वह भी भीजूद है। दोनों
को देख लें, पता लग जायगा। इसी तरह से नहर विभाग के भी काम हुये है।

श्रीमन्, ग्राज एक बहुत ही सुन्दर किताब इस विभाग द्वारा सदन में बांटी गयी है। इसको मैंने बड़े गौर से देखा है। इसमें जो बाते मुझे मिलीं उनको देख कर मुझे बड़ा ग्रचम्भा हुग्रा। क्या माननीय मन्त्री जी की मन्त्रा यह है कि वे हमें ग्रांकड़ों के जाल में डाल कर ग्रसिलयत से दूर रखना चाहते है या उनके विभाग ने स्वयं माननीय मन्त्री जी को घोखे भे रखने की कोशिश की है? इसमे सन्, १६५७-५८ में सबसे ज्यादा सिचाई हुई है ८०,३४,०१५ एकड़ जबिक सन् १६५५-५६ में कुल ६३,८४,३०२ एकड़ भूमिकी सिचाई हुई थी। इस तरह से करीब साढ़े १६ लाख एकड़ जमीन में ज्यादा सिचाई दिखलायी गयी है। लेकिन जब मैंने बजट के पन्ने उल्टे ग्रौर उसमें ग्रामदनी देखी कि वाकई ग्रामदनी भी सिचाई का रकबा बढ़ने से बढ़ी या नहीं तो वहां मुझे उख्टा नजर ग्राया। ग्राप देखें कि सन् १६५७-५८ में ग्रामदनी है २,१६,१८,४८,४५७ व्यये

## [श्री ग्रब्दुल रऊफ लारी]

की ग्रौर सन् १९५५-५६ में ग्रामदनी है २,६१,२६,३०८ रुपये की। तो एक तरफ सिचाई का रक्तवा तो करीब १६ लाख एकड़ ज्यादा हुन्ना मगर म्रामयनी में यारीब ७२ लाख रुपये की कमी हो गयी। तो आखिर यह क्या बात है, माननीय मन्त्री जी जराइस को दताने की क्रवा करेगे कि यह क्या गोरखबन्या है? जहां तफ इस त्रिभाग में अस्टान्सर पारणाय है, इस जिभाग के एक कर्मचारी श्री० पी० एच० पंजाबी ने हमारे गोरखपर जिले के एक वहत **ब**डे भावताचार का भंडाफोड किया था और उस के साथ ही श्रवना उस्तीका भी भेव दिया था। मानतीय चरण सिंह जी उस समय इस विभाग के मन्त्री थे। उन्होंने नय मामन को देखा भ्रौर देख कर उसके इस्तीफे को वापस किया स्रोर उसकी जांच करायी। यदी कि पूर से रखेड हुये । दो इन्जीनियर मुद्रारा है । लेकिन श्रापको ताज्जब ोगा, क्रिन् यह दे । वर कि मानवीय चरणसिंह जी के हटने ही १५ रिन के श्रन्दर जिसते. भ्रष्ट चार का इसन ट**ा स**ाफोड उसको मुश्रराल कर दिया गरा। वह श्राज तद नशना , , क वाचे भयो स्रोर यह नहीं कि उसके चार्जेज गलत हों, सन्कार ने यद बहु कि कि कर के नार्जेज बहुत सही पाये गये। जब कि उस जी रिपोर्ट पर इस पिलन्सिल में एक ए जीवयों व उन्हीं-नियर मश्रत्तल हुना, दो श्रसिस्टेट इन्जीनियर मश्रतल हो, गोर 🖒 🗸 🗸 ग्रीपरतायरो 😘 प्रतिस केस कार्यम होने ज रहा है, 🔝 लेकिन रसका फल पंजाबी को यह मिला फि श्राब 🛷 ६ महीने से मुक्रताल है, उसके बच्चे भूषों भर रहे हैं। यहां पर प्रगर सवाल रठका जाक होते हैं तो रहेता उत्टा-र्ताया उत्तर वे दिया जाता हे त्रोर टाल तिया जाता है। प्रकार यह देखने थे र का है कि यहां जिनके खिलाफ भ्रष्टावार की शिकायत उठाई जातः है उनको यह सरकार फौरने तरक्की दे देती है। इस से हमे डर होता हे क्योंकि जहां वह कर श्रादिश्यों को न करान एक जाता है ग्रगर हम उसकी शिकायत करें तो सरकार उसको ग्रौर ऊंची जगह पर पहला दें कि ताकि वह पूरे प्रान्त को तकलीफ देने लगे। इस डर से हम यहां श्राज कोई मामना भ्राट चार का नहीं रखना चाहते है। हम उन्हों पर छोड़ देते हैं कि वह श्रपने दिल की आम रुप देने कि उनका विभाग फितना अच्छा काम कर रहा है।

माननीय सिचाई मन्त्री जी ने इस बात को मंजूर किया है कि देग की पद कर में बढ़ोत्तरी इसी पर निर्भर करती है कि खेती बढ़िया हो ग्रीर खेती बढ़िया होने के लिए यह फर रंक्षी कि चाई े मै श्राप के जरिये उन से पूछना चाहुंगा कि कितने सतो है ि ५ ८ लोने के साधन ग्रन्छे हों। सिचाई का साधन तैयार कर दिया है। में भ्रपने जिले की तरफ जाता हू तो मालूम होता है कि वहाँ पर कुल खेत का दसवां हिस्सा भी ऐसा नहीं है जहां सिघाई हो सके। मेरी या सर्ट ट्याएनी के अन्दर दो नदियां पड़ती है--डांडा और रोहिन। उनसे बांध बांधकर हर सक्त विकार प्राप्ती सिचाई किया करते थे। इस से उन को बड़ी फ्रासानी थी। लेकिन हमारी सन्यान ने उसी जगह पर बांध लगा दिये। इसमे कई लाख रुपये लगे। मै पूछना चारता ह ि स्था इस से वहां की जनता को कुछ फायदा हो रहा है ? मैने इस साल सर्वाल किया या ती उसक जयाव मिला कि खरीफ में रोहिन से दो एकड़ श्रीर डांडा से एक एकड़ भी सिन्नाई नहीं हुई। जानना चाहुंगा कि इसका क्या कारण है कि फसल सूख गयी, बरबाद हो गयी। जब पि टह पानी मिलने से ठीक हो सकती थी तो क्यों सिचाई न हो सकी ? मुझे उम्मीद है कि यह बात अन्त्री जी श्रपने विभाग से पूछेगे श्रीर बतावेंगे कि उपरोक्त नहरों से खरीफ की फसल की श्रव की साल पानी क्यों नहीं मिला।

(लाल बत्ती होने पर)

मान्यवर, मुझे दो मिनट श्रीर दे दिये जायं क्योंकि हमारा बहुत पिछड़ा हुशा इलाका है। लेकिन इसकी समस्या हल हो सकती है। हमारे यहां ६० फीसवी जड़ान की फसल होती है। यह यदि बहुत श्रच्छी फसल हो, लेकिन हथिया नक्षत्र में झगर पानी न बन्में तो यह वरवाद हो जाती है। इस कमी को पूरा करने के लिए सरकार उस क्षेत्र में यदि एवं लाख वपया लगा है तो इसी साल एक लाख मन गल्ला ज्यादा पैदा हो सकता है। लेकिन सरकार

१५६

१९६०-६१ के ग्राय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर सतदान--ग्रनुदान संख्या ४७--लेखा शोर्षक ६८-निचाई, नौ-चालन, बांध ग्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यी का निर्माण, ग्रनुदान संख्या १० - लेखा शीर्षक १७, १८ ग्रौर १६-ख-राजस्व से किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण-कार्य तथा अनुदान संख्या ११-लेखा शीर्षक १७, १८, १६, श्रौर ६८--सिचाई स्थापना पर व्यय

ध्यान नहीं देती है, पता नहीं उसकी मंशा क्या है ? मैं किसी की नीयत पर हमला करना नहीं चाहता। इतना कान हो रहा है, नीयत अरूर ग्रच्छी होगी, रान्त्रो जी को या तो सही राय नहीं देते हैं या उनकी जानकारी नहीं है या उन्होंने समझ रखा है कि हम लोग बुरे है। हम बुरे नहीं है हम श्चापकी उप सड़ी उंगली को बताने वाले है हि इसे बक्त पर कटा दी िये जिससे जार में पूरा जिस्म न फटाना पड़े। हनारे यहां छोटे-छोटे वालों पर फाटकदार पुल बना दिये जायं। इस से ४-४ ६- हजार रुग्या लगेगा। योड़ी सी भट्य कर दी जाय तो जो बांध हर सन्न वह जाता है इससे तीन फायदे है। रबी की फसल की शिचाई हो सहेगी, खरीफ की वह रुक जायगः। सिचाई होगी और ग्राने जाने के साधन जेन क्षेत्र में हो त्यायेगे। उसके निए ब्लाक ने प्रस्ताव भेजा है, कितिक्तर ने रिपोर्ट भेनी है, मैने मन्त्री जी के करारे में भी जिक्र किया लेकिन कोई ध्यान नहीं दिया गया। मै कैने कहं कि यह करोड़ों ग्रीर भ्रश्नों स्वयः प्रश्न की बढ़ोनरी के लिए खर्च किया जाता है, किसानों को अंचा उठाने के लिए किया जाला है। मै लहुंगा कि इवर के बैठने वाले लोगों ने जो एक सुझाव दिया था, मन्त्री जी को, कि शह सह उहिता के द्वारा वार्य करवाये। मुझे बैठे-बैठे हंसी या रही थी। सहकारिता से कर्प राज्यी जी काम ले मकते हैं ? अगर अन्त्री जी सच्चाई से लेना भी चाहें तो में गारन्टो के स थ कह ।। हं कि उनका विभाग नहीं वजने देगा । उसका पेंभेट नहीं होगा। बीस तरह के पखने डाले जायेगे। गिरवा फर कहा जायगा कि फिर से बनायों ग्रौर फिर वही ठेकेदार जो बड़े-बड़े जलसों में सन्त्री जी को उनके विभाग को हजारों रुपये के हार पहनाते है, दल दस हजार की अक्रतरों को दावत देते हे, यहां काम करेगे श्रीर यही सुवार श्रीर शब्से माने जायेगे। मैं साननीय भन्त्री जी का ध्यान दि गाना चाहता हं कि उन के विभाग में जो लाखों की बरवादी हो रही है उस को रोकें। अध्यान, गोरखपुर से, नीचे के हिस्ते में पार्टी विशेष का अधियत्य है, यहां पर निध्यों से नीचे बांज बांज दिया जाता है श्रीर ऊपर पुल खुला पड़ा है। जहां श्रगर एक तस्फ बांध बांध किया जाय तो यानी जंगा की तरफ जा सकता है, वहां कोई काम वहीं होता है। नीचे बांघ बांघ दिया जाता है, वह उसी प्रकार है, जैसे ऊपर से थाली का पानी गिराया जाय स्रौर नीचे कटोरा लगा दिया जाय नी नाजिमी है कि नोचे पानी फैलेगा। पजड रिलीफ बोर्ड ने, ऊपर से एक स्कीय बनागी थी, अपर दा हिस्मा छोड़ दिया गया ग्रार नीचे बांध बांध दिया गया, जित के कारण १५,१५ दिन तक वाढ़ का पानी ऊपर एक जाता है, सारी फसार बरबाद हो जाती है। भाननीय भरत्रें जी कृपा करके फरेदा तहसील पर नजर करें स्रोर यहां के लोगों को जीने का मौका दें।

श्री गणेराप्रसाद पांडेय (जिला गोरखपुर)--माननीय ग्रविष्ठाता महोदय, भै ग्राव को भन्यवाद द्ंगा कि श्राव ने इस श्रवसर पर मुझे बोलने का मौका दिता।

मै भाननीज सिचाई मन्त्री को भी धन्यसाद दूंगा कि उन्होंने हजारों ट्यूबवेल बना कर ऋौर सैकड़ों मील नहरे निकाल कर प्रदेश में सिवाई का साधन जुटाश है। में गानता हूं कि बहुत कुछ कमा है। लेकिन उस के लिए यह नहीं कहा जा सकता कि उन्होंने कुछ किया ही नहीं। देस-पांच वर्षों में सारी कभी पूरी नहीं हो सकती। अगर ऐसा होता तो पंचवर्षीय योजनाएं बनाने की भ्रावश्यकता ही नहीं होती। यह काम जीवन भः रहेगा। लेकिन श्रयनी विसीय श्रवस्था को देखते हुये पर्याप्त उन्नति हो रही है। उस में अराबियों को दूर करने के लिए ग्रगर हम सब मिल कर सहयोग करें ग्रौर जितना नुक्ताचोनी में समय खर्च करते हैं उतना सहयोग करने में करे तो बहुत जल्द बहुत कुछ सफलता प्राप्त हो सफती है।

में सरकार का ध्यान श्रपने क्षेत्र की कुछ सिचाई सम्बन्धी कार्यों की श्रोर ले जाना चाहता हुं क्योंकि हमारी बांसगांव तहसील के प्रन्दर, सारे भु-मण्डल में सब से प्रधिक मनुष्योंका भोक्ष

#### [श्री गणेश प्रसाद पाण्डेय]

पड़ता है। एक वर्ग मील में, कहीं दो सो, कहीं तीन सो, कहीं चार सो, पांच सो की श्राबादी है, लिकन बांसगांव तहसील में एक वर्ग मील में ११-१२ सो फी वर्ग मील का श्रोसत श्राया है। वहां एक इंच भी रेलवे नहीं है जिस के कारण कोई भी कत कारणाने या विकास के बड़े कार्य नहीं हो सकते हैं। वहां के श्रधिकांश लोग कुली बन कर दुनिया के हर हिस्से में जा कर मजदूरी करते हैं श्रोर श्रपना पेट भरत ह, लेकिन सरकार श्राज तक उस पिछड़े हुये क्षेत्र की तरफ जसा ध्यान देना चाहिए, वेसा नहीं दे पायो है। उस सहसील में सड़कों की भी बड़ी कमी रही है श्रोर श्रब भी हे। एक बार श्री लक्ष्मीरमण जी श्राचार्य ने कृपा करके वहां का दौरा किया श्रोर देखा कि यू० पी० भर मे सबसे खराब सड़क वहां पर थी। उन्होंने एक सड़क बनवा दी है जो कि ४६ मील लम्बी है श्रोर चार जिलों को मिलाती है। श्राज उस पर १४ लारियां चल रही हे श्रोर जनता को उससे विशेष सुविधा प्राप्त हुई है। वही एक चीज है जिससे कि जगता समझती हं कि नयी सरकार से उसे कुछ लाभ पहुंचा है।

यों सिचाई के साधन कुछ दिये गए है, लेकिन उन्हीं एरियाज में ट्यूबबेल दिये गए है, जहां पोखरे भी थे, कुएं भी थे, नदियां भी थीं। मगर उन एरियाज मे जहां कि बिलकुल उसर है श्रौर हजारों एकड़ जड़हन की खेती श्रगर बारिश हो जाय तो होती ह, एक भी ट्यूबवेल नहीं दिया गया है । बारिश न होने पर फसल वहां सूख जाती है श्रौर नतीजा यह होता है कि नेपाल से श्रौर उत्तरी गोरखपुर जिले से धान श्रौर चावल लाकर सारी तहसील के लोग श्रपनी गुजर करते है । कंट्रोल होने के नाते या ट्रांस-राप्ती एरिया होने के नाते डर के मारे इस साल वहां से धान भी नहीं श्रा सका । इसलिये बांसगांव तहसील के लोगों को एक तरह से बज़ी दिवकत का सामना करना पड़ रहा है। कंट्रोल की दुकानों से बाजरा खरीदकर श्रोर उसे खा ला कर लोग दिन काट रहें है । चावल इसलिये नहीं मिल सका कि ट्रांसराप्ती एरिया कंट्रोल के ग्रन्दर श्राता है, कोई खरीदकर लादकर के ले नहीं जा सकता है । ११ ग्राद[मयो पर जार्ल। मुकदमा चलाया गया जो कि घान ला रहे थे, यद्यपि घान पर कोई मनाही नहीं है। उन पर जुर्माना हो गया, वे परेशान हुए। इससे हजारों गाड़ीवान धान के लिये इच्छा रखते हुए भी श्रीर उसके लिये कोई मनाही न होने पर भी डर के मारे उसे लेने नहीं जा रहे हैं। बरी दिस्कत हो रही है। मैने जिला मैजिस्ट्रेट से कहा कि एक नोटिस छपाकर बांट दीजिय कि नोई मनाही धान पर नहीं है। पर यह करने के लिये वह तैयार नहीं हुए। नतीजा यह हुआ **यि उसे** तहसील के लोग बाजरा खा खा कर दिन काट रहे हैं, चावल नहीं खरीद पा रहे हैं।

सरकार का ध्यान में इस तरफ ग्रार्काषत करूंगा कि उस असर एरिया में जहां ग्रगहनी फसल, लेट पैडो, हुग्रा करती है, वहां दस पांच ट्यूबवेल लगवाने की कृपा करें। यह उलाका उच्चा बाजार के पूरव ग्रौर ककरही से पिक्चम है। उसे सकरदेइया का असर वहते ह। वहां प्रधान गांव हरपुर, भताड़ी, गजपुर, घरिहरा ग्रौर गउर ग्रादि है। वहां कोई २४ हजार एकड़ जमीन ऐसी है जिसके अन्दर असर है, लेकिन उसमें एक एकड़ भी जमीन ऐसी नहीं ह जो परती पड़ी हो। सब खेत बने हुए है। सब में अगहनी फसल होती है, लेकिन जब बारिश होती है तभी। बारिश न होने पर वह फसल सूख जाती है। एक छटांक भी ग्रग्न होना मुश्किल हो जाता है। उस एरिया में दस-पांच ट्यूबवेल बना देना चाहिये था जिससे वहां के लोगों को ग्रगहनी की फसल में भी लाभ होता ग्रौर दूसरी फसलें भी वहां हो सकतीं, लेकिन अफसोस है कि सरकार के इंजीनियर लोगों का ध्यान उस असर को तरफ नहीं गया ग्रौर उसको असर जानकर छोड़ दिया गया। उसको उपजाऊ बनाने के लिये किसानों की तरफ से तो प्रयास किया गया, लेकिन उसको उपजाऊ कायम रखने के लिये सरकार की ग्रौर से कोई प्रयास नहीं किया गया। इसलिये में ग्रापके द्वारा माननीय मंत्री जी का ध्यान ग्राक्षित करूंगा कि उस कुंसेत्र में जरूर ट्यूबवेल लगा दिये जांय।

१३१

१६६०-६१ के श्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनदान संख्या ४७-लेखा शीर्षक ६८--सिचाई, नौचालन, बांघ ग्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, ग्रनुदान संख्या १०-लेखा शीर्षक १७, १८, ग्रौर १६-ख--राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण-कार्य तथा ग्रनुदान संख्या ११-लेखा शीर्षक १७, १८, १६, श्रौर ६८—सिचाई स्थापना पर व्यय

इसके ग्रलावा एक दूसरा क्षेत्र है बेलघाट द्वाबा का जो कि कुग्रानो ग्रौर घाघरा नदियों के बीच में पड़ता है। शाहपुर से कूरी बाजार तक, ५० हजार एकड़ का एरिया वह भी श्राबाद हो सकता है। नहीं तो, हर साल एक फसल तो बाढ़ में चली जाती है, दूसरी फसल में सिचाई का साधन न होने के कारण ग्रच्छी फसल नहीं हो पाती । इसलिये वह इलाका श्राज तक पिछड़ा हुन्ना है। गरीबी का बोझ ग्रपने सिर पर ढोते हुए वहां के लोग देशविदेशों में जाकर किसी तरह से श्रपना पेट पालते हैं। इसलिये मै सरकार का ध्यान उस तरफ श्राक-र्षित करूंगा ग्रापके द्वारा कि उस द्वाबे की तरफ भी विशेष ध्यान सरकार दे। वह कुन्रानो श्रौर घाघरा निदयों के बीच में पड़ता है। इस साल घाघरा के पेट में चार, पांच गांव मुसल्लम चले गए हैं। हजारों मकान नदी के पेट में समाप्त हो गए ग्रौर वहां के निवासी बाहर श्राकर सड़कों के किनारे या पेड़ के नीचे छप्पर डालकर पड़े हुये हैं, लेकिन सरकार की तरफ मे न कोई सहायता पहुंचाई गई ग्रौर न पुनर्वास के लिये लकड़ी की मदद या गल्ले की मदद किसी तरह से सरकार ने पहुंचाई। इस उपेक्षा के लिये में सरकार से कहंगा कि यह बड़ी भारी भूल है। जब स्राप शरणाथियों को शरण देते है, मकान देते है स्रौर पढ़ने लिखने का सामान देते हैं, दवाई का इन्तजाम करते हैं तो उन चार गांवों के शरणार्थियों के लिये ग्रापने इस तरह से उपेक्षा क्यों की ? उसके लिये में सरकार से कहंगा कि इस कमी के लिये पश्चाताप करना चाहिये श्रौर तत्काल ही उनको सहायता पहुंचानी चाहिये।

इसके म्रलावा में यह निवेदन करूंगा कि ट्यूबवेल जहां जहां लगाये गये हैं वहां नालियां इतनी कम बनाई गई हैं कि सैकड़ों बीघा खेत बिना सिचाई के रह जाते हैं। नालियों को मिट्टी डालकर बनाया गया है उनको खोदा नहीं गया है जिसकी वजह से किसानों के खेत चौपट हो गये हैं। सिंचाई का जो लाभ होना चाहिये वह लाभ नहीं हुन्ना है। ट्यूबवेल बेकार पड़े हुए हैं। यह जरूर है कि १०, २० एकड़ की सिचाई हो जाती हो मगर उससे हजारों एकड़ की सिचाई हो सकती थी, लेकिन वह नहीं की गई। इसलिये में सरकार से निवेदन करूंगा कि श्राज वे ट्यूबवेल नालियों की हालत खराब होने के कारण बेकार पड़े हुये हैं। उन नालियों को दुरुस्त करने का प्रयत्न तत्काल होना चाहिये जिससे सरकार का लाभ हो श्रीर जनता के पैसे का भी सद्पयोग हो सके। इन शब्दों के साथ में इस सरकारी अनुदान का समर्थन करता हं श्रौर कटौती के प्रस्ताव का विरोध इसलिये करता हूं कि उन्होंने घटाकर एक रुपये कर देने को रखा है। अच्छा होता अगर वे इसको और बढ़ाने का प्रस्ताव करते।

श्री ऊदल (जिला वाराणसी)—-ग्रधिष्ठाता महोदय, मैं कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं। मान्यवर, सब से पहले मुझे यह बात कहना है कि भ्राज सिचाई के क्षेत्र में काफी विस्तार होता चला जा रहा है थ्रौर हमारी सरकार काफी रुपया खर्च कर रही है, लेकिन उन सब के बावजूद भी जब हम इस बात को देखते है कि सियाई का जो क्षेत्रफल है वह जिस श्रनुपात से नहरों की लम्बाई बढ़ रही है श्रौर ट्यूववेल बढ़ रहे हैं, बान्ध श्रौर बन्धियां बनती जा रही हैं, उस अनुपात से सिचाई का क्षेत्रफल नहीं बढ़ रहा है। इसलिये में सरकार का ध्यान इस तरफ श्राकित करना चाहता हूं कि श्रभी तक जो मैने समझा है इसका एक ही कारण देखने को मिलता है श्रौर वह यह कि सिचाई के रेट ज्यादा हो गये हैं। किसान न ट्यूववैल का पानी लेता ह ब्रोर न नहर का पानी लेता है क्योंकि उसके ऊपर इतना भार पड़ता है कि वह इस रेट से इतना परेशान हो जाता है कि वह श्रदा नहीं कर पाता है। श्राप देखेंगे कि श्राज से पहले सन् १६४४–४५ में जैसे हमारे यहां सिचाई के साधन थे उससे हमारी श्राय १९४४-४५ में १८२ लाख रुपये थी

[श्री कदल]

ब्रौर १९४५ –४६ में भी वह १८१ लाख रुपये थी लेकिन जब से यह सरकार श्राई है तब से श्राप देखें कि—

१६५०-५१ में २६७ लाख .. १६५५-५६ में ७३८ लाख । १६५३-५४ में ४४० लाख .. १६५६-५७ मे ७६७ लाख । १६५४-५५ में ४८४ लाख .. १६५७-५८ मे ८२१ लाख ।

इसका नतीजा यह होता है कि ग्राज जो सिचाई के रेट है वह दुगने ग्रीर ढाई गुने हो गये हैं जिसकी वजह से किसान परेशान ह।

दूसरी बात मुझे यह कहना है कि ट्यूबयेल के बारे में में मंत्री जा से जानना चाहता है कि क्या कारण है कि ग्राज किसान नहरों श्रीर ट्यूबो। से पान नहीं लेना चाहता है? वह हिचिकचाता क्यों है ? इसका कारण वह बतलाये। एपि में सिवाई का संबंध बहुत गहरा है श्रीर किसान इस सिचाई से श्रपना फायदा नहीं महमूस कर रहा है। सन् १६४५-४६ में जब ग्रंग्रेजों का राज्य था यहां पर उस समय ५६,५३,००० एकड़ क्षेत्र में सिचाई होती थी ग्रीर १६५१-५२ में यह ७१,०५,००० एकड़ क्षेत्र में हुई, १६५३-५४ में यह ६७,२५,००० एकड़ में, १६५४-५५ में दह,०६,००० एकड़ क्षेत्र में श्रीर १६५५-५६ में ६३,६३,००० एकड़ क्षेत्र में हुई। इधर एक-दो साल के ग्रांकड़े मेरे पास नहीं है, लेकिन देखा जाय कि हमारा सिचाई का क्षेत्र बढ़ा नहीं है श्रीर घटना जा रहा है। तो में जानना चाहता हूं कि ग्ररबों रुपया खर्च करने के बाद भी क्या कारण है कि किमान पानी लेने में हिचिकचाता है ?

तीसरी बात यह कि जो ट्यूबवेल लगाये गये हैं, उनकी क्षमता जो श्रांकी गयी थी, उस श्रनुपात से काम नहीं कर रहे हैं श्रीर इसके कारण बिजली श्रांव मे रार्च ज्यादा श्रा जाने के कारण किसान पर रेट ज्यादा पड़ जाता है श्रीर इसके कियान परेशान है।

में सिंचाई विभाग के चीफ इंजीनियर श्रीर माननीय मंत्री महोदय से भिन चुका हूँ। मेरे क्षेत्र में शारदा सागर कैनाल का एक ट्रक्ड़ा है, उपका कृद्ध हिस्सा जीनपर से बनारस में जाता है। वहीं नाय नदी एक पड़ती है। मेने कहा तो कहा गया कि चूंकि नहर का पानी वहां जायगा इसिजये ट्यूपवेज का श्रीशान गरां के निये बत्म कर दिया गया। लेकिन छोटे-छोटे कुलाबे भी वहां नहीं रामाणे गये श्रीर नतीं जा यह है कि पवासों गांव सिंचाई से महरूम है श्रीर वहां किमानों को परेशानों है। श्राशा करता हूं कि माननीय मंत्री जो इस श्रीर ध्यान देने की कृपा धरेंगे।

एक बात की श्रोर में माननीय मंत्री जी तथा विभाग के यहे श्रिकितारियों का ध्यान श्राक्षित करता हूं। कोई काम शुरू करने से पहले उनका पूरा ज्वान नहीं बनाया जाता, न कोई नक्शा बनाया जाता है जिसका नतीजा यह होता है कि जो इस्टीमेंट बनाया जाता है, काम शुरू होने पर वह दुगना, तिगुना श्रीर जीगना होता जाता है। उदाहरण के रूप में श्रापके सामने टांडा पूर्प कैनाल को रवना चाहना हूं जो फैजाबाद में बनने वाली है। श्राप देखें कि उसका एक हिस्सा जिसमें दो पम्प लगने वाले ये श्रीर १६५७ तक जिसको पूरा हो जाना चाहिये था श्रीर जिसमें १६,५०,००० रूपये का खर्च का श्रंदाज था, उसमें उसके बाद कुछ सिचाई के महानुभाय थे, वे गये श्रीर उन्होंने एक दूसरी योजना तैयार की ४५ लाख २५ हजार रूपये का श्रीर उसे प्रस्तुत किया सरकार के सामने। पहली योजना से सिचाई होती थी २२,२२३ एकड़ श्रीर दूसरी योजना से श्राप देखें कि सिचाई होगी ४४ हजार दृहर एकड़ । फिर दोनों योजनाशों को एक में मिलाया गया श्रीर श्राप ताज्जुब करेंगे कि दोनों को मिलाकर ६५ लाख ५ हजार

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में प्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--ग्रनुदान संख्या ४७---लेखा शीर्षक ६८--सिंचाई, ने-वालन, बांध ग्रोर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, प्रनुदान संख्या १०--लेखा शीर्षक १७, १८, ग्रौर १६-ख--राजस्व से किये जाने वाले दिचाई के निर्माण कार्य तथा ग्रनुदान संख्या ११---लेखा शीर्षक १७, १८, १८ ग्रौर ६८---सिवाई स्थापना पर व्यथ

की योजना श्राती है। इसमें ६ पम्प लगने थे। श्रब इस योजना में द्र पम्प लगने की व्यवस्था उन्होंने की श्रौर नतीजा यह हुश्रा कि ६४ लाख की जगह यह द० लाख ६८ हजार की व्यवस्था की गयी। इसके बाद श्रव तीसरी योजना खड़ी की गयी। सिर्फ ४ मील की लम्बाई बढ़ी है श्रौर १०८ लाख कुछ प्वाइंट रुपया इस पर खर्च होने जा रहा है। श्रभी काम नहीं शुरू हुश्रा श्रौर ४ पम्प के लिये जर्मनी की एक कम्पनी को श्रार्डर दिया गया है। मैं उनको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि ये पम्प सन् १९६१ की मार्च तक उम्मीद है कि श्रायेंगे। तो यह एक योजना पर जो इस तरह से रुपया बढ़ता जाता है इसकी श्रोर में माननीय मंत्री जी का ध्यान श्राक्षित करना चाहता हूं। पहले मौके पर जाकर नक्शा बनाने की जरूरत है। मेरे पास करोड़ों रुपये के श्रांकड़े हैं, समय की कमी के कारण में उन्हें नहीं बता रहा हूं। इन शब्दों के साथ मैं इस कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

\*श्री रामलक्षण तिवारी (जिला बलिया)—मुझे खुझी है कि मुझे इस सिचाई विभाग से संबंधित श्रनुदान पर बोलने का श्रवसर मिला है। हमारे देश में जब श्रंग्रेजों का राज्य था तो हमारी बहुत बड़ी इच्छा यह थी कि कब हमारा देश भ्राजाद होगा श्रीर कब हम आजाद होकर अपने देश में सिचाई के साधन बढ़ाने का प्रयास करेंगे । मुझे याद है कि हमने प्रानेक बार सम्मेलनों में बराबर यह कहा कि हमारे जिलों में, हमारे प्रदेश में, सिचाई के साधनों को बढ़ाया जाय। लेकिन उस समय तक इस भ्रोर ध्यान नहीं दिया गया जब तक वह सरकार यहां बनी रही। जब से कांग्रेस की हुकूमत हुई, उसने सब से ज्यादा ध्यान सिचाई के विस्तार के साधनों की ग्रोर दिया। सिचाई के विस्तार के प्राथनों के लिये बड़े-बड़े इंजीनियर्स लगाये गये, सारे प्रदेश का सर्वे कराया गया और यह मालूम किया गया कि कहां-कहां कितनी सिचाई को भ्रावश्यकता है भ्रौर उसकी पूर्ति किन साधनों से की जा सकती है। इस श्रोर हर प्रकार के प्रयास किये गये। हमारे पास जितने भी उपयोगी साधन थे श्रीर जिनका हम उपयोग कर सकते थे, उनका पूरा-पूरा उपयोग किया गया। दूसरे मुल्कों से भी ग्रार्थिक सहायता लाकर प्रदेश को समृद्ध बनाने की चेष्टा की गर्यो । हिन्दुस्तान राजनीतिक दृष्टि से श्राजाद था, ग्राजाद होकर भो कांग्रेस ने सर्वदा इस बात की घोषणा की कि हमारा देश ग्रभी श्रार्थिक भ्रौर सामाजिक दृष्टि से पूर्ण रूप से भ्राजाद नहीं हुत्रा है। उसने बारबार यह कहा कि श्रायिक ग्रौर सामाजिक श्रोजादी के लिये हमारे लिये ग्रावश्यक है कि हम श्रायिक कान्ति श्रपने देश में उत्पन्न करें। श्राज सिचाई के जो भी साधन हारे यहां है उन सभी साधनों को फैलाकर हमने यह स्राज्ञा की है कि हम अपने प्रदेश में एक स्रोधिक कान्ति उपस्थित करेंगे। श्राधिक ऋान्ति उसी समय सम्पन्न होगी जब हम सभी लोग पूर्ण रूप से हर मानी में सम्पन्न होंगे ।

हमारा यह प्रदेश कृषि प्रधान पर्देश है, कृषि का उत्पादन बढ़ाना हमारा सबसे ग्रावश्यक ग्रिनिवार्य कर्तव्य है जिसको इस राज्य ने समझा है ग्रीर उसको पूरा करने के लिये सही कदम उठाया है। मैं जानता हूं जब हम लोग मुल्क की खिदमत करने वालों में गिने जाते थे इसलिये कि ग्रंग्रेजों की मुखालिफत करते थे, लेकिन ग्राज वह समय ग्राया है जब कि मुल्क की खिदमत करने वालों में से हम लोगों का नाम इस माने में कट चुका है कि हम उत्पादन की वृद्धि में कोई काम नहीं कर रहे हैं। हमें उस व्यक्ति की पापी समझना चाहिये

<sup>\*</sup>वनता ने भागण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री रामलक्षण तिवारी]

जो इस प्रदेश के धन को धन न समझकर, उत्पादन के काम में किसी न किसी प्रकार से सहयोग न करता हो। श्राज एक श्रोर हम यह कहते हैं कि हमारे पास बड़े-बड़े दिमाग वाले हैं, इंजीनियर्स हैं, वैज्ञानिक है श्रौर हम उनको प्रोत्साहन देते हैं, उनसे कहते हैं कि श्रब देश की सेवा का भार तुम्हारे उपर हैं, तुम देश की सेवा करने वाले हो, तुम्हारी खिदमत से ही देश की तरक्की हो सकती हैं, किन्तु दूसरी श्रोर यह भी कहना शुरू करते हैं कि यह नीच हैं, ये पांतत हैं, ये बेईमान है, ये निकम्मे हैं, चोर हैं, ये निर्म्थक हैं। यह दोनों चीजें नहीं चल सकती हैं। या तो श्रापको मल्क की तरक्की करनी हे तो जितनी जीनियस है, प्रतिभा है, जो भी मेधा है, जो भी शक्ति है उसको सम्भाल करके श्रामे लाना होगा, उसको उपयोग करने की शक्ति श्रपने भीतर पदा करनी होगी, श्रपने देश को ठीक करना होगा जिससे कि लोग उन स्थानों पर जाकर श्रपने सर को उच्चा कर सकें, लेकिन केवल यह कहना कि इंजीनियर चोर हैं, बेईमान है श्रोर हम ईमानदार है, यह चीज जरा भी शोभा नहीं देती। मुझे रवीन्द्र ठाकुर का एक ग्रंथ देखने का श्रवसर प्राप्त हुआ था, जिसमें उन्होंने लिखा था कि जिस तरह की प्रजा होगी, राजा भी उसी तरह का होगा। हमारे श्रन्दर श्रगर दोष विखलाई देता है तो यह हमारे समाज का दोष है।

श्राज हमारे वेहातों में चले जाइये। कोठियां वेल करके लोग उधर अस जाते है। यह नहीं पता लगाते कि यह कैसे बनीं। सामाजिक मान्यता उन कोठियों को प्रदान कर बी गयी है। समाज श्राज श्राथिक समाज हो गया है। जिसके पास श्राहि उस की प्रतिष्ठा की जाती है। एक तरफ श्रर्थ की प्रतिष्ठा बढ़ती जाती है, व्सरी सरफ श्रथं संचित करने के खिलाफ श्राप श्रान्वोलन करते हैं। ये दोनों चीजें नहीं सल सकती।

राज्य में एक चीज हमने देखी है। हमारे कमंचारियों में थोड़ी पी कमजोरी है। जब उनको गालियां दी जाती हैं, वह उनको सुनकर के थोड़ा-पा यय जाते हैं प्रीर उनका थोड़ा श्रिषक लिहाज करते हैं, यह जिकायत हमारी है और में यह गगका है कि बहुत से लोगों का यह स्टंट है कि किसी मुहकमें से श्रगर काम लेना हो तो उस हे लियाफ एक नारा लगा दो कि बड़ा बुरा मुहकमा है, लगब हं, यहे लगाब लोग है, पितत है, जिससे उनकी भावनाश्रों को ठेस पहुंचे, नौकरी की भावना में देशे हुई उनकी श्रात्माएं उभरें और जो हम कहें उसे जो कमजोर लोग हं वह मान लिया करें। तो हमारी सरकार को उनको भी बल प्रदान करना चाहिये कि श्रगर त्महारे लियाफ कोई नारा लगाता है तो तुम नारे की परवाह न करो। तुम समझो कि हम देश को सेया करने याले और खिदमत करने वाले हैं। श्रपने भीतर पित्र रहो। श्रगर तुम कि हम को लेहां को तहीं हो तो तुमहें डरने की जरूरत नहीं है।

(इस समय ४ बजकर ४३ मिनट पर ऋधिष्ठाता, श्री बेचनराम गृग्त, ग्न: पोठासीन हुए।)

कारवां जाता है और कुत्ते भूकते रहते हैं। उसी तरह से यह इनक्याय का कारवां हैं जिसके तुम अप्रणीय हो। तुम काम करते रहो, फिर जितने भी भूकने वाले हैं यह अपने मुंह को बन्द करेंगे। समय बतलायेगा कि कौन इस मुल्क की क्वियत करने वाला था। देश के निर्माण के लिये जिन लोगों ने खून और पसीना विधावह लोग भी कुछ थे, यह समय बतलायेगा। लेकिन मैं यह कहूंगा कि हम लोगों को थोड़ा-सा ठंडे हो कर अपने की रखना चाहिये और विचार करना चाहिये इसी वृष्टि से कि देश का निर्माण कैसे होगा। क्या गाली देने से होगा? या अपने देलेंट को, मेधा और प्रतिभा को इकट्ठा करने से होगा? मैं इतना ही कहने के लिये आज खड़ा हुआ था।

मै समझता हूं कि सिचाई की भ्रोर हमारी सरकार की नीति भ्रत्यन्त प्रगतिशील है भ्रौर किसी भी प्रदेश से हम पीछे नहीं है। हम भ्रागे बढ़ते जा रहे है भीर जो कुछ हम करते १६६०-६१ के म्राय-व्ययक में म्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--म्रनुदान १९५ संख्या ४७--लेखा शीर्षक ६८--सिचाई, नौ-चालन, बांघ ग्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, ग्रनुदान संख्या १०--लेखा शीर्षक १७, १८ ग्रौर १६-ख--राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण-कार्य तथा ग्रनुदान संख्या ११--लेखा शीर्षक १७, १८, १६ ग्रौर ६८--सिचाई स्थापना पर व्यय

हैं हम अपने राज और देश के उत्थान के लिये ठीक ठीक कर रहे हैं। त्रुटियां होती हैं, खामियां होती हैं, हमें संतोष नहीं है। अगर हम संतुष्ट हो जायं कि हम जो कुछ करते हैं अब इससे अधिक नहीं करने को तैयार हैं तो हम दोषी हो सकते थे, क्योंकि तरक्की के काम करने में संतोष नहीं होना चाहिये। उत्थान और इनक्लाब करने वालों का संतुष्ट हो जाना उनकी सब से बड़ी खामी हुआ करती है शासन की। आदमी भी बहुत किस्म किस्म के हैं। कोई बुरा होता है, कोई भला होता है, लेकिन सारी जमाअत को एक स्वर से बुरा कहते जाना और लगातार बुरा कहते जाना, यह बुराई को कम करने वालो चीज नहीं है। में बार-वार कह चुका हूं। में ने एक बार पहले कहा था कि स्वामी रामतीर्थ ने कहा था कि "बुरा वह है जो बुराई का प्रचार करता है। इससे अधिक बुरा वह है"

श्री म्रधिष्ठाता--समय समाप्त हो गया।

श्री राम लक्षण तिवारी—तो में ग्रनुदान का समर्थन करता हूं ग्रीर कटौती के प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

श्री नन्दराम--ग्रादरणीय ग्रधिष्ठाता महोदय, मुझे हर्ष है कि सिचाई जैसे महत्वपूर्ण विषय पर ग्रपने दल के उपनेता मानतीय रामस्वरूप जी द्वारा प्रस्तुत कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिये खड़ा हुग्रा हूं।

श्रीमन्, जहां तक सिचाई विभाग का संबंध है, मानव जीवन के जितने भी उपयोगी साधन हैं, सिचाई विभाग उन सब में एक बहुत ही महत्वपूर्ण साधन है क्योंकि मानव जीवन के लिये खाना श्रीर कपड़ा दोनों चीजें बहुत श्रावश्यक है श्रीर ये दोनों ही चीजें कृषि की उपल से पैदा होती हैं श्रीर कृषि की उप्लित, उत्पादन की उपलि सिचाई विभाग के सही ढंग से होने पर ही निर्भर है, लेकिन दुःख है कि जो सिचाई विभाग इतना महत्वपूर्ण है, इतना श्रावश्यक है उसीविभाग में श्राज जितनी श्रव्यवस्था, श्रित्यमितता, श्रव्यावहारिकता श्रीर श्रष्टाचार फैला हुश्रा है, उससे हर मानव का हृदय दुखी होता है श्रीर लज्जा से सिर झुक जाता है। लेकिन में नहीं कह सकता कि हमारे सिचाई मंत्री का हृदय किस पत्थर से बना हुश्रा है कि उनको श्रपने विभाग के श्रष्टाचार, श्रित्यमितता श्रीर श्रव्यवस्था पर दुःख नहीं होता।

माननीय ग्रिधिक्ठाता महोदय, में बहुत ज्यादा श्रांकड़ों में नहीं जाऊंगा क्योंकि इस पर हमारे मतनीय उपनेता रामस्वरूप जी काफी बोल चुके हैं। मुझे कुछ श्रपने क्षेत्र की समस्या श्रीर दूसरी बातों की चर्चा करनी है।

श्रिष्ठाता महोदय, जहां तक सिंचाई का संबंध है उसके दो सावन हैं, गवर्नमेंट की तरफ से एक तो नहर श्रौर दूसरा ट्यूबवेल। तीसरा सावन जनता की तरफ से होता है तालाब या कुएं श्रादि। जहां तक नहर की दशा है, उसके बारे में में श्रामतौर से कह सकता हूं कि उसमें बहुत ही श्रिनयमितता श्रौर भ्रष्टाचार है। जहां तक पानी का संबंध है जिस वक्त पलेवा होता है उस समय तो पानी दे दिया जाता है। में प्रतापगढ़ से श्राता हूं। वहां शारदा नहर है श्रौर काफी पानी है, लेकिन वहां पर भी ऐसा है कि जब किसान पलेवा करता है तब तो पानी दे दिया जाता है श्रौर बाद में पानी छोड़ा नहीं जाता है। हर साल ऐसा होता है श्रौर किसानों की रबी श्रौर खरीफ की दोनों फसलें सूख जाती हैं। वह मेरा क्षेत्र ऐसा है जहां सूखा पढ़ जाय तब मुसीबत श्रौर श्रीष्ठक पानी बरस जाय तब मुसीबत क्योंकि उससे बूड़ा श्रा जाता है। तो खरीफ डूब

### [श्री नन्दराम]

गयी। हम।रे यहां घान की खेती भ्रधिक होती है। इस वर्ष सिचाई विभाग ने श्रूक में पानी तो दे दिया, लेकिन जब बारिश नहीं हुई तो पानी नहीं दिया भौर क्वारी घान सब सूख गया। माल विभाग की तरफ से छूट भी दी गयी, लेकिन नहर विभाग की तरफ से कोई छट नहीं दी गयी। जिन खेतों को नहर से सींच लिया गया उनके लिये माल विभाग से भी छट नहीं मिली।

इसी तरह की श्रौर भी बहुत सी बातें है जिनमें श्रनियमितता होती है। की गलती और कुछ कर्मचारियों की गलती। किसानों ने अगर कुंग्रों से या तालाबों के पानी से नहर की नाजी से सिचाई कर ली उसका भी खेत वर्ज कर लिया जाता है और उससे भी सिचाई की वसूली होती है। किसान रोता है पीटता है, लेकिन कोई मुनयाई नही होती। ऐसा भी हो 11 है कि अगर कोई किसान दूसरे किसान की नाली में अपने खंत में पानी ले जाता है तो उस बीच के किसान का खेत भी सिंचाई में दर्ज कर लिया जाता है। श्रीमन, पींचयां कर बांटी जाती है? नियम यह है कि जिस दिन परची बटे उस दिन से एक महीने के प्रतर किसान उज्जदारी कर सकता है, लेकिन देखा यह जाता है कि परची उस समय बाटी जाती है जबिक उज्जदारी का समय निकल जाता है या लगभग समाप्त होने को होता है। इसके प्रलाव श्रीमन, एक घांघली श्रीर है कि हमारे यहां वारबन्दी नहीं है। नहर में पानी काफी है, लेकिन नहर से सिचाई बहुत कम होती है और उसका कारण यही है कि वहा पर वारबन्दी नहीं है। एक मसल जो पहले से रही है वही। श्राज भी। वहां है कि जिसकी लाठा। सकी भेस । श्राज श्राजही के जमाने में गरीबों की मदद होनी चाहिये थी, लेकिन जैसा कि भृतपूर्व भू-स्यामी नीची घोती वाले बाम्हन, ठाकुर हमेशा गरीब लोगों को दबा करके लाठी के बल पर प्रान्याय करते रहे उसी तरह से ग्राज नहर विभाग से या ट्यूबवेल विभाग से भृतपूर्व भरवामी नीकी धोती वाले बासत ठाकुर पानी ले लेते है श्रौर अंची घोती वाले, पिछड़े वर्ग व हरिजनो को समय पर पानी नहीं लेने देते ।

एक सदस्य-यह ऊंची और नीची घोती क्या होती है?

श्री ग्रधिष्ठाता—उन्होंने बतला तो दिया।

श्री नन्दराम-श्रीमन्, मुझे समय ग्रधिक मिलना चाहिये वयोषि में प्रक्रिक्षित ग्रादमी हूं।

श्री श्रिधिष्ठाता--श्राप सबसे श्रिधिक शिक्षित मालूम होते है ।

श्री नन्दराम — मालूम होता है माननीय सदस्य ऐसे समाज में रहे है जहां उन्होंने ऊंची धोती वालों को देखा ही नहीं। श्रीमन, मेरे विखारों की श्रांतमा की कड़ी तो टूट गई। तो श्रीमन, अष्टाचार की जहांतक बात है, बड़ी-बड़ी जगहों में तो वह है ही, संकिन छोटी-छोटी जगहों में भी मेरा यह अनुभव है कि बिना एक रुपया लियं परची नहीं दी जाती। ऐसा भी होता है कि अगर किसी किसान पर अमीन या पतरौस नाराज हो गये या कोई बड़ा आदमी उन पर नाराज हो गया तो उनकी गलत सिचाई बजं कर दी जाती है और उनकी पर्चा या तो दिया ही नहीं जाता या अगर दिया गया तो जब उज्यदारी की श्रवांथ निकल जाती है तब दिया जाता है।

नहर विभाग के बारे में मुझे यह भी कहना है कि हमारे क्षेत्रों में नयी नहरें निकली हैं। वह इलाका एक नीचा इलाका है। वहां पर बहुत जगह ऐसा होता है कि गांबों के अन्दर का पानी नहरों की पटरी की रोक से निकल नहीं पाता और अधिक बरसात में बुड़ा आ जाता है। मजबूरी में लोग नहर की पटरी को काट देते हैं जिससे उनपर मुकबमें चलते है। इस संबंध में में मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि वह इसका सर्वे करायें और जहां पर ऐसे रथान हों जहां बुड़ा आ जाता हो और गांव इब जाते हों, उन इबे हुए गांबों की जमीन को बचाने के लिये नहरों के नीचे से सीयन निकालने का अबन्ध किया जाय ताकि वे गांव इबने से बच जावें। मेरे

१६६०-६१ के थ्राय-व्ययक में थ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—- थ्रनुदान १६७ संख्या ४७--लेखा शीर्षक ६८--सिचाई, नौ-चालन, बाँध थ्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, श्रनुदान संख्या १०, --लेखा शीर्षक १७, १८ श्रौर १६-ख--राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण-कार्य तथा श्रनुदान संख्या ११--लेखा शीर्षक १७, १८, १६ श्रौर ६८--सिचाई स्थापना पर व्यय

जन्म-स्थान जिले बुलन्दशहर में ट्यूबवेल ग्रुप जहांगीराबाद में बहुत से किसानों ने ६२ नम्बर ट्यूबवेल पर श्रमदान से नाली बनाई है, लेकिन गवर्नमेंट ने उसे पक्का नहीं कराया है। विद्युत् भी मंत्री जी के पास है। खरीफ की सिंचाई में ग्रुप जहांगीराबाद के ट्यूबवेल में विद्युत् बहुत कम गई श्रौर सिंचाई न होते हुए भी किसानों से सिंचाई वसूल की गई यद्यपि फसल मारी गई। इटावा जिले में जमुना श्रौर चम्बल की घाटी में कई हजार बीघे जमीन बिलकुल बेकार पड़ी हुई है। वहां पर एक श्रौर इलाका भोगनी डिवीजन है जहां नहर का पानी न मिलने से लाखों मन मटर की फसल सूख गई। ऐसी श्रवस्था में सरकार को चाहिये कि हर जगह सर्वे करावे श्रौर जहां नहर की सिंचाई काम नहीं देती है वहां ट्यूबवेल से सिंचाई करावे।

एक माननीय सदस्य ने कहा कि किसान पानी नहीं लेता है। इसका मुझे विश्वास नहीं है। हां, सिचाई की दर इतनी महंगी है कि किसान के लिये पानी लेना श्रसम्भव सा हो जाता है। लेकिन चूंकि मरता क्या न करता, वह पानी लेता है वरना उसके बच्चों की जीविका या पालन कैसे हो? मगर श्रफसोस है कि नहर श्रौर ट्यूबवेल दोनों से पानी समय पर नहीं मिलता है। मैंने देखा है कि बहुत से पतरौल श्रौर श्रमीन भी नीची धोती वालों की, जिनका मैंने श्रभी जिन्न किया, पार्टीबाजी में पड़ जाते हैं।

श्री नवलिकशोर (जिला बरेली)—श्रिधिष्ठाता महोदय, में सिंचाई सम्बन्धी श्रनुदान का समर्थन करता हूं। इसमें दो राय नहीं हो सकतीं कि श्राजादी के बाद हमारे प्रदेश में सिंचाई के साधनों में काफी उन्नित हुई है। हमारे यहां ट्यूबवेल की तादाद भी बढ़ी श्रौर नहरों की लम्बाई भी बढ़ी। मगर हमको देखना पड़ता है कि जितना पैसा हम खर्च करते हैं उसके श्रनुपात से लाभ होता है या नहीं। बहुत पिछले सालों के श्रांकड़ों पर नहीं जाना चाहता हूं। मैं मंत्री महोदय का ध्यान सिर्फ ग्रान्ट नम्बर १० श्रौर ४७ की श्रोर ले जाना चाहता हूं। ग्रान्ट नम्बर १० में प्रोडिक्टव कामों पर १,७६,८४,००० रुपया श्रौर श्रन-प्रोडिक्टव कामों पर ३,१२,८१,००० रुपया हम खर्च करने जा रहे हैं। ग्रान्ट नम्बर ४७ में प्रोडिक्टव कामों पर सिर्फ ३६,२८,००० रुपया श्रौर श्रन-प्रोडिक्टव कामों पर ६,६३,७१,२०० रुपया खर्च करने जा रहे हैं। श्रगर दोनों को जोड़ दिया जाय तो प्रोडिक्टव मदों के खर्चे की तुलना में श्रन-प्रोडिक्टव मदों का श्रनुपात १ श्रौर ५ का श्राता है।

मान्यवर, यही नहीं, एक क्रोर प्रश्न उठता है। मैं श्रायके सामने लिस्ट पढ़ना नहीं चाहता हूं। श्रन-प्रोडिक्टव वक्सं जो पेज नम्बर ४०३ पर वाल्यूम ४ में दिये हैं, उनसे साफ है कि जितने काम ग्राजादी के बाद इस प्रदेश में हुये हैं, उनमें से ६६ फीसदी कामों के नाम उसमें मौजूद हैं। जैसा कि मेंने श्रपनी जनरल डिबेट की स्पीच में कहा था श्राज मैं फिर श्रायके द्वारा माननीय मंत्री जी से दुबारा इस बात की मांग करूंगा कि वे मेहरबानी करके इस प्रदेश के श्रन्दर एक हाईपावर कमीशन बैठायें श्रौर वह दो बातों को देखें। पहली यह कि सन् ४७ के बाद कितने काम इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट ने टेकश्रप किये, उनमें से कितने प्रोडिक्टव पहले बताये गये थे जो बाद को श्रनप्रोडिक्टव हो गये श्रौर कम से कम एक दो नाम ऐसे बतायें जो सन् १६४७ के बाद सही मानी में प्रोडिक्टव हुशा हो। डिपार्टमेंट ने जो एस्टीमेट श्रौर टाइम उस काम के लिये दिया था, क्या वह काम उतने समय में श्रौर उस ऐस्टीमेट में पूरा हुशा ? श्रगर नहीं हुशा, तो क्यों नहीं हुशा? माननीय मंत्री जी इस बात को मालूम करने की भी कोशिश करें कि इस तमाम श्रपन्यय की जिम्मेदारी किस पर है।

मान्यवर, मुझको इस बात का पता चला है कि सरकार ने माताटीला, सपरार श्रीर श्रर्जुन बांध तथा शारदा पावर हाउस के सिलसिले में कोई इंक्वायरी कमेटी बिठाई हैं। माननीय मंत्री जी [भी नवलिकशोर]

इस हाउस को विश्वास में लें भ्रीर हमको बतायें कि उसका क्या परिणाम हुन्ना था। सरकार ने उस पर किस तरह से भ्रीर क्या कार्यवाही की।

मान्यवर, जहां तक स्टाफ का सम्बन्ध है मुझे बुख है कि चाहे वर्कलोड बढ़े या न बढ़े, लेकिन स्टाफ पर खर्चा बढ़ता ही जाता है। यह खर्चा १६४६-४६ में ४,१२ लाख था, १६४६-६० में ४,४६ लाख हुग्रा, लेकिन इस साल ४,७६ लाख हो गया। इघर एक ग्रीर खर्चा बढ़ता जाता है वहां दूसरी ग्रीर ग्रामदनी को देखिये जो इसी बजट में बतायी गयी है। वह १६४७-४६ में १४४ लाख थी, ४८-४६ में १,६० लाख हुई, लेकिन सन् १६४६-६० में वह ६४ लाख हो रह गयी। एक साल के अन्वर एक करोड़ से ज्यादा कम हो गयी। यही नहीं यवि सिचित क्षेत्र को भी दें लें तब सरकारी पुस्तिका के ग्रांकड़ों के ग्रनुसार शुरू के सालों में वह घटी है ग्रीर बाद को भी क्याय के ग्रनुपात से नहीं बढ़ी है।

मान्यवर, मेरे एक दोस्त ने उपदेश दिया कि निन्दा नहीं करनी चाहिये। में १०० प्रतिशत उनसे इत्तफाक करता हूं। में चाहता हूं कि हमारे प्रदेश को इस बात का गौरव हो कि हमारे प्रदेश के इंजीनियर बहुत योग्य हैं, क्षमतापूर्ण हैं। लेकिन में उनसे आपके द्वारा जनतंत्र और जन-कल्याण के नाम पर अपील करना चाहता हूं कि इस देश और प्रदेश की प्रगति की नाव उनके हाथ में है, वह चाहें तो इसको पार लगा सकते हैं और चाहें तो इस्तो सकते हैं। मेहरबानी करके वह इस देश और इस प्रदेश की गरीब जनता, जिसको आज भी दो समय सही ढंग से खाना नसीब नहीं होता है, उसकी गाढ़ी कमाई के साथ खिलवाड़ न करें। उनका फर्ज है और में चाहता हूं कि उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा ज य। हमको इन बातों से ज्यादा खुशी होने वाली नहीं है, लेकिन एक अजीब तमाशा मालूम होता है कि ऐस्टीमेट विया जाता है २ करोड़ रुपये का कि इसमें माताटीला बांघ बन जायगा। यह ऐस्टीमेट वे विशेषज्ञ देते हैं जिनके हाथ में हमने इस प्रदेश के तमाम साधन सौंप दिये हैं। वे कहते तो है कि माताटीला बांघ २ करोड़ रुपये में बन जायगा और उस पर खर्च हो गये १२ करोड़ रुपये और फिर भी पावर हाउस का नाम निशान तक नहीं है। मान्यवर, इन बातों से मुझे बड़ी तकलोफ होती है। क्या फर्क रह जाता है विशेषज्ञ और साधारण व्यक्ति में?

मान्यवर, ग्रब में ट्यूबवेल्स के बारे में बतलाऊं कि हमारे यहां हजारों ट्यूबवेल्स बने, लेकिन किस कीमत पर बने, कितने पैसे उस पर खर्च करने पड़े ? श्रीमन्, सब से बड़ा कंडेमनेशन तो इरींगेशन डिपार्टमेंट का ग्रापके इस बजट में ही किया गया है। इरींगेशन एक्सटेशन सर्विस के नाम से एक नयी सर्विस की स्थापना इस बजट में हुखि विभाग के झन्तर्गत की गयी है जो किसानों को पानी इस्तेमाल करने के साधन बतलायेगा। एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट का कहना है कि इरींगेशन विभाग ने पानी तो हमको दिया, लेकिन पानी के इस्तेमाल करने के साधन उनके ग्रिकारियों ने नहीं बताये जिससे पानी का इस्तेमाल नहीं हो सका। यह विभागीय जहित्यत का भी द्योतक है।

स्टाफ के सम्बन्ध में मैंने पहले भी कई बार कहा था और इस समय भी एकाध बात में कहना चाहता हूं और वह यह है कि स्टाफ बढ़ा। कई बार इस बात के लिये शिकायत की गयी एस्टीमेट कमेटी ने भी कहा कि विभाग के पास इसकी कोई साइंटिफिक बेसिस नहीं है कि एक इंजीनियर का क्या विका लोड होना चाहिये या है। पी० डब्ल्यू० डी० ने अपने यहां की इस सम्बन्ध में एक रिपोर्ट दी थी, लेकिन में नहीं जानता कि इरींगेशन डिपार्टमेंट ने इस सम्बन्ध में क्या किया। में चाहुंगा कि माननीय मंत्री जी मेहरवानी करके हमें इस बात को भी बतला दें कि उनके यहां सिचाई विभाग में इसका क्या आधार है कि एक इंजीनियर के ऊपर इतना वर्क लोड होना चाहिये। उनकी श्रेणियां भी बहुत हैं, असिस्टेंट इंजीनियर, एक्जीक्यूटिव इंजीनियर, सुपीरटेंडिंग इंजीनियर, डिप्टी चीफ इंजीनियर, एडिशनल चीफ इंजीनियर, चीफ इंजीनियर। ठीक है, बहुत अच्छी बात है, यह अंग्रेजी समय में सही हो सकती थी। पर आज के जनतंत्र के युग में यह बहुत जरूरी है कि हम छोटी श्रेणी के अफसरों पर विश्वास करें। अगर हम उनके

338

१६६०-६१ के म्राय-व्ययक में म्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--म्रनदान संख्या ४७--लेखा शीर्षक ६८-- तिचाई, नौचालन, बांध ग्रोर पानी के निकास सम्बन्धा कार्यों का निर्माण, श्रादान संख्या १०-लेखा शीर्षक १७. १८ ग्रीर १९-ख-राजस्व से किये जाने वले सिचाई के निर्माण-कार्य तथा अनुदान संख्या ११--लेखा शीर्षक १७, १८. १९ और ६८--सिचाई स्थापना पर व्यय

क्रपर ब्रविश्वास करेंगे तो कोई भी काम सफल नहीं हो सकेगा। यानी ब्रगर सब देश की सेवा करने की भावना से, जिम्मेदारी से काम करेंतो में समझता हं कि स्टाफ के ग्रन्दर कमी हो सकती है 📰 र कोई वजह नहीं है कि स्टाफ के श्रन्दर कमी न हो। 🎿

टचबवेल्स बन जाते हैं परन्तु गुलें नहीं बन पातीं जिससे उनका इस्तेमाल नहीं हो पाता। मझे ग्रपता प्रतुभव है ग्रौर इस सम्बन्ध में मैंने पहले वाले सिचाई मंत्री जी से कहा भी था ग्रौर श्रापके मंत्रित्व काल में भी श्रापसे तो नहीं मिला हूं, लेकिन इस सम्बन्ध में इंजीनियर श्रादि को चिट्ठी भेजता रहा हूं, लेकिन उस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। श्रगर ट्यूबवेल्स बन जाते हैं तो बिजली नहीं मिलती श्रौर श्रगर बिजली भी मिल जाती है तो उसका पानी ही काफी तौर से डिस्चार्ज नहीं होता। बाढ़ सम्बन्धी कामों में सरकार का है करोड़ रुपया खर्च हो चका है. लेकिन उसका लाभ बहुत कम प्राप्त हो सका है। माननीय मंत्री जी से मैं इतना कह सकता हं कि जितनी बंगींलग स्त्रीर स्रपन्यय इस शाखा में हुस्रा है उतना शायद ही किसी स्त्रीर स्थान में हो। में चाहंगा कि माननीय मंत्री जो इस बात का लंडन करें।

श्री ग्रधिष्ठाता--वह कौन विभाग है?

श्री नवलिकशोर--एक बाढ़ निरोधक संगठन बना था। साथ ही इस बात की भी बहुत शिकायत है कि काश्तकारों की जमीन ले ली जाती है, लेकिन उनका कम्पेनसेशन पे नहीं हो पाता। मान्यवर, मुझे याद है कि हमारे दोस्त श्री सुदोमा प्रताद गोस्वामी जी तो माता-टीला बांध के पानी में ही जाकर इसी बात पर बैठ गये थे कि पानी श्रायेगा तो मुझे बहा कर ले जायगा श्रीर फिर बड़ी मुश्किल से वहां किसानों को पेमेंट हुश्रा। श्राज भी ऐसी बहुत सी मिसालें मिल सकती हैं कि तीन-तीन भ्रौर चार-चार साल पहें जमीन तो ले ली गयी जिसका लगान भी काश्तकार को देना पड़ता है, लेकिन उसका कम्पेनसेशन पेमेंट नहीं हुआ। तो में चाहंगा कि श्रधिकारीगण इस पर विशेष रूप से ध्यान देने की कृपा करें।

मुझे खुशी है कि माइनर इरींगेशन के सम्बन्ध में श्रापने श्रपनी नीति बदली है। लेकिन इस बात से मुझे बहुत दुःख है कि जहां माइनर इर्रीगेशन का काम नियोजन विभाग के श्रन्तर्गत होता है वहां उसके लिये श्रलग से इंजीनियर की मांग की जाती है। यह हालत है कोग्रार्डिनेशन की कि इर्रीगेशन स्टाफ मौजूद है, इर्रीगेशन डिपार्टमेंट मौजूद है, लेकिन माइनर्स के लिये काम हो तो प्लानिंग के लिये श्रलंग से इंजीनियर नियुक्त करने की मांग की जाती है। डिपार्टमेंटलिज्म की इससे बढ़ कर कोई दूसरी गलत मिसाल नहीं हो सकती। मेरे क्षेत्र में पिछली पुस्तिका में श्ररल नदी पर एक छोटें बांघ की बात थी, इस वर्ष वह उस किताब में नहीं है।

कोग्रापरेटिव ट्घुबवेल्स के सम्बन्ध में भी बातें कही गयीं। एक जमाना पूर्व कोम्रापरेटिव के जरिये सैकड़ों ट्यूबवेल्स बने । उससे लोगों ने पानी नहीं लिया। कोग्रापरेटिव ट्यूबवेल्स का विरोधों नहीं हूं। मगर वह सफल नहीं हुये श्रौर श्रधिकांश बेकार पड़े हैं । े मुझे ख़ुशी है कि सिचाई विभाग ने तय किया है श्रौर माननीय मंत्री जी ने भी कि हम इन कोग्रापरेटिव नलकुपों को लेंगे। में चाहता हूं कि ग्राप उन्हें ले लोजिये चाहे पेमेंट जब कभी भी हो क्योंकि इनेका जो वाटर पोटेन्शियल ग्रापके प्रदेश में है उसकी श्राप सही मानों में इस्तेमाल कर सकते हैं। ग्रभी ग्रापने ३०-३६ लिये हैं कुछ ग्रौर लेना चाहते हैं,

[भो नवलिक्शोर]

इसमें कोई तकल्लुफ़ की खात नहीं है, जैसे जमींवारी के बान्ड्स विये गये उसी तरह से ग्राप इनको भी ले लीजिये थ्रौर जितनी जल्दी हो सके मेरी राय में उनको लें लेंना चाहिये।

कुछ में लेबर कोन्नापरेटिटज के बारे में भी कहना चाहता हूं। मझे लाशी है कि हमारे मंत्री जी इस बात के हानी हैं और उन्होंने वादा भी किया है कि न्रगर इस प्रदेश में मज़र्शे के कोन्नापरेटिटज संगठित हो सकें तो वह उनको काम देगे। मझे इस बात की लाशो है, लेकिन जो हमारा कान्ट्रेक्ट सिस्टम है उसके बारे में काफी चर्चा हुई, लेकिन ग्राज तक उसमे कोई तरमीम नहीं हुई। में चाहता हूं कि स्पेसिफिकेशन का बज़्द्र ग्रीर बेहतर तरीका हो, उनको ग्राप ठीक करें। ग्राबिर में में भ्रष्टाचार की बात नहीं कहना क्योंकि मेरे एक भाई ने कहा है कि में उसको न कहूं।

श्री ग्राधिष्ठाता--ग्राप ग्रपनी प्राइवेट बातों को न कहा करे।

श्री नवलिक्शोर--- डीक है, मुझे श्रकसोस है मेरे मृह से ऐसा निफल गया, लेकिन मे एक बात जरूर कहंगा जिसकी मुझे तकलोफ है और वह यह है कि बढ़ा महिकल होता है कि भ्रष्टाचार ऊंचे स्तर पर पकड़ा जाय परन्तु यदि कभी कोई ऐक्शन ले भी निया जाय भौर उनको उस स्थान से हटाया भी जाय मगर यदि बाद में उनको ह्वाइटवाश कर दें तब इसका तमाम सर्विसेज पर बहुत बरा असर पहुता है। मेरा स्पर्ट संकेत हार्डाडल विभाग के चीफ इंजानियर की श्रोर है, जिनके विषय में सरकार के उस समय के एक मंत्री महोदय ने जिनके ऊपर इस विभाग का पहले भार या, कुछ ग्रारोप लगाय थे, जिनका में सदन में चर्चा करना उचित नहीं समझता श्रीर न िशेष जानकारी है। है। लेकिन उनके उपर एक्शन हुन्ना श्रीर वह छुट्टी लेकर भी गये श्रीर यह श्रादवासन था कि तह फिर वापस नहीं भ्रायेंगे, लेकिन ऐसा नया तरीका इस्तेमाल किया गया जैगा कि नीकरशाही का कावता होता है, एक नई पोस्ट किएट की गई, जिसकी आफिसर ब्यान रपेशन इघटो या लियाजां श्राफिसर कहते हैं या सम्पर्क श्रधिकारी कहते हैं। उस जगह पर उनको अन्ताइंट किया गया। अच्छा होता कि पहले इस बात की घोषणा होती कि उने पर सन्देह निराधार है और उनको उसके बाद चीफ इंजीनियर की पोस्ट पर ही यापस किया जाता, लेकिन यह कछ न करके एक नई पोस्ट कियेट की गई। इस लग्ह की गलत परम्पराध्यें की हमें प्रश्रय नहीं देना चाहिये, इसका बुरा ग्रसर श्रनुशासन पर भी पड़ता है श्रीर विभाग की कार्य क्षमतो पर भी पड़ता है। अन्त में मै केवल एक सेन्टेन्स कह फर अपनी बात जन्म करूंगा कि मैने जो सुझाव विभाग के सम्बन्ध में विये हैं, उनको मंत्रा जो गही स्प्रिट में लेने की चेष्टा करें। मै यह भी समझता हूं कि हमारी श्रद्धा, विक्लान श्रीर प्रशंना कर्मचारियों के लिये होनो चाहिये, लेकिन उनको भी यह समझना है कि हमारे प्रदेश की जनता उनसे क्या आज्ञा करतो है और आज के विकास यग में उनका क्या उत्तरदायित्य है।

श्री रघुवीरसिंह (जिला एटा)—प्रधिष्ठाता महोवय, में इस ध्रान्यान पर कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं। मैंने माननोय निनाई मंत्री जी के भाषण को बड़े ध्यान पूर्वक सुना। यद्यपि उन्होंने बड़ो योग्यता के साथ ध्रपतं ना रण को प्रस्तुत किया परन्तु वास्तविकता नहीं छिप सकी। पहली बात तो यह कि पहला पंचवर्षीय योजना में जो काम धिर्पित किये गये ये वह अब तक दूसरा पंचवर्षीय योजना में भा पूरे नहीं हो सके हैं। दूसरो बात यह है कि जितनी प्रगति के साथ, जितनी लेजी के साथ हमारे प्रदेश में सिचित क्षेत्र बढ़ना चाहिए था, उतना नहीं बढ़ सका। यह निविवाद है कि जहां हमारे प्रान्त की जनसंख्या उत्तरोत्तर बढ़ती चली जा रही है, बहुं ठोक उसो भांति हमारी प्रति एकड़ पैदावार कम होती जा रही है। इस कारण धाज खाद्य समस्या का समाधान हमारे लिये एक बड़ी चिन्ता का विषय बन गया है और उसके निराकरण के लिये धावश्यक है कि खेती की उपज को बढ़ाया जाय। चूंकि सिचाई खेती की उपज को जान है या एक प्रमुख साधन

१९६०-६१ के ब्राय-व्ययक में ब्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—ग्रनुदान २०१ संख्या ४७—लेखा शीर्षक—६८ सिचाई, नौचालन, बांध ग्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, श्रनुदान संख्या १०—लेखा शीर्षक १७, १८ ग्रौर १६—ख राजस्व से किये जाने वाले सि ग्रई के निर्माण-कार्य तथा श्रनुदान संख्या ११—लेखा शीर्षक १७, १८, १९ ग्रौर ६८—सिचाई स्थापना पर व्यय

कहना चाहिए। इसलिये जब तक हम श्रपने सिचित क्षेत्र को नहीं बढ़ा लेंगे श्रौर समुचित मात्रा में नहीं बढ़ा लेंगे तब तक कृषि का उत्थान श्रसम्भव है श्रौर जब तक कृषि का उत्थान नहीं होता, उसमें कार्य करने वाले ५५ परसेंट किसानों का उत्थान नहीं होता तब तक हमारे प्रदेश का उत्थान नहीं हो सकता। जब तक किसान धनी नहीं होगा, उसकी ऋय शक्ति नहीं बढ़ेगी तब तक जितना भी उद्योग श्रापके यहां खड़ा है उसकी उपज की कोई खपत नहीं होगी श्रौर सब चौपट हो जाएगा। श्रापका नियोजन किताबों में ही रह जायगा।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना का श्रन्त होने को है। श्रव तक सिंचाई में क्या प्रगति हुई? एक श्रांकड़े की जो पुस्तिका मिली है उसमें देखने से मालूम होता है कि सन् ४८-४६ तक हमारो सरकार ने — जो श्रपने श्रापको प्रगतिशील सरकार कहती है— केवल १४ परसेंट भूमि को सिंचित किया है। श्रौर साढ़े १५ परसेंट भूमि किसान ने श्रपने जन धन से सिंचित बनाई है। मुझे एक भ्रम है में उसका समाधान करना चाहता हूं। सिंचाई पित्रका में ऐसा गोलमाल लिख दिया है, में उसको पढ़ देना चाहता हूं, लिखा है: "श्राशा है कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना काल के श्रन्त तक प्रदेश की १२१.१५ लाख एकड़ भूमि को सिंचन सुविधाएं प्राप्त होंगी,जो श्रुधि योग्य भूमि की ३० परसेंट होगी।" यह साफ नहीं किया कि यह केवल सरकारो कार्यकलायों में से होगी या किसानों श्रौर सरकार दोनों को मिला कर होगी। उस पर माननोय मंत्रो महोदय प्रकाश डालने को कृपा करें। वैसे उनके श्राकड़ों को, जो किताब है, उससे साफ है कि १४ परसेंट्ट सरकार ने किया है श्रौर साढ़े १५ परसेंट्ट किसानों ने। सिंकन ३० परसेंट के लिये स्वयं ही श्रेय लिये ले रहे हैं।

प्रथम पंचवर्षीय योजना में १५३ करोड़ रुपया व्यय किया गया ग्रौर द्वितीय पंचवर्षीय योजना में २५३ करोड़ रखा गया। प्रथम योजना में सिचित क्षेत्र बढ़ाने का कितना लक्ष्य था ग्रौर द्वितीय में कितना लक्ष्य है ग्रौर प्रत्येक में कितनी सफलता मिली, यह माननीय मंत्री जी जवाब में बताने की कृपा करें।

दूसरी बात मुझे यह कहनी है कि श्रव तक सिंचाई में सरकार द्वारा जो प्रगति हमको मालूम हुई है वह यह है कि ग्रंग्रेजों के चले जाने के बाद इन्होंने केवल ४ परसेग्ट भूमि का सिंचन बढ़ाया है। उसके लिये मेरा ग्रनुमान है कि २ परसेग्ट इन्होंने बढ़ाया होगा ग्रीर २ परसेग्ट किसान ने . . . . .

श्री श्रिधिष्ठाता--ग्रापका ग्रनुमान कुछ गलत सा मालूम होता है।

श्री रघुवीर्रासह — उस पर तो मंत्रो जो प्रकाश डालेंगे। ग्रभी थोड़ी देर पहले यह चर्चा चली थी कि पूर्वी क्षेत्र, पिश्चमी क्षेत्र, उत्तरी क्षेत्र या दक्षिणो क्षेत्र। इसके लिये भी में सरकार को दोषी समझता हूं कि वही यह प्रवन पैदा कराती है। में देख रहा हूं कि हमारे सूबे में एक ही सरकार है, लेकिन उत्तरी क्षेत्र में ग्रावपाशी की दर कुछ ग्रौर है, दक्षिणो क्षेत्र में कुछ ग्रौर, पूर्वी क्षेत्र में कुछ ग्रौर पश्चिमी क्षेत्र में कुछ ग्रौर है। जब एक तरह का शुल्क है ही नहीं तो लोगों को कहने का मौका मिलता है इसके लिये सरकार दोषी है ग्रौर में जानना चाहता हूं क्या कारण है कि पश्चिमी जिलों में ग्रावपाशी की दर सबसे ज्यादा है? किसी काम के लिये कहा जाय तो सरकार कहती है कि धनाभाव है लेकिन सरकार यह नहीं देखती कि फिजूल खर्ची को कैसे रोका जाय। सिचाई विभाग को लीजिये इसमें तीन उप विभाग हैं एक नहर विभाग, एक द्यूब वेल विभाग ग्रौर एक ड्रेनेज विभाग ग्रौर सब के ग्रलग ग्रलग इंजीनियसं

[भी रघ्वीर्विह]

तथा श्रन्य कर्मचारी हैं। में अपने एटे जिले का उवाहरण वेता हूं। हमारे जिले में पांच क्षेत्र नहर के ऐंग्जीक्यूटिव इंजीनियसं के पड़ते हैं, २ क्षेत्र ट्यूबवेल इंजीनियसं के पड़ते हैं और २ क्षेत्र ड्रेनेज ऐंग्जीक्यूटिव इंजीनियसं के पड़ते हैं। इस प्रकार ६ ऐंग्जीक्यूटिव इंजीनियसं के क्षेत्र हैं। इस प्रकार ६ ऐंग्जीक्यूटिव इंजीनियसं से बात करें तब अपनी किसी समस्या को हल करा सकते हैं। इसिल्ये मेरा सुझाव हैं कि जब आप गरीब हैं तो गरीबों की तरह रहिये, प्रत्येक जिले के स्तर पर आपको एक ऐंग्जीक्यूटिव इंजीनियर रख वेना चाहिये। जहां तक मेरा अपना विचार है में जानता हूं इनमें से किसी भी विभाग के ऐंग्जीक्यूटिव इंजीनियर कला एवं विज्ञान की विष्ट से एक सी जानकारी रखते हैं। इसलिये जिले के प्रत्येक सिचाई विभाग के कार्य को वेल सकते हैं फिर क्या कारण है कि उप विभाग स्थापित कर इतने इंजीनियर रखे जायं और हमारे जिले में एक भी नहीं ? अगर ऐसा किया जायगा तो खर्चा भी कम हो जायगा और वह सुचाल ल्य के काम भी कर सकते हैं क्योंकि अधिकार क्षेत्र छोटा हो जायगा और जो बन्ने-बन्ने भसे विये जाते हैं उनको हमारे यहां वौरा करने पर उसकी भी बचत हो जायगी। इसलिये में चाहता हूं सरकार हमारी इस बात को मान ले।

सरकार ने प्रान्त के स्तर पर ही नहीं जिले के स्तर पर भी प्रजीब भेवभाव को नीति प्रप्ता रखी है। हमारे जिले एटे में अलीगढ़ डिवीजन में निर्वयों की आबपाशों लो जाती है, लेकिन उसके बाद ज्यों ही निर्वयों मैंनपुरी डिवीजन में आ जाती हैं वहां कोई आबपाशों नहीं ली जाती। मैंने पिछले साल भी मंत्री जी से कहा था कि यह न्यायसंगत बात नहीं है। निर्वयों की कहीं आबपाशों नहीं ली जाती है तो अलीगढ़ डिवीजन में ही क्यों है निर्वयों में प्राकृतिक रूप से पानी आता है, आप न तो उनकी सफाई करबाने पर खर्च करते हैं और न अन्य किसी तरह से तो फिर आबपाशों क्यों लेते हैं निर्वयों से सिचाई करना उसके पानी का इस्तेमल करना हमारा मौलिक अधिकार है। इसलियें निर्वयों की आबपाशों से हमें मुक्त किया जाय। जब निर्वयों की आबपाशों किसानों को देनी पड़ती है तो वह अक्सर कहते हैं कि इसले तो अंग्रेज सरकार अञ्जी थी कि उस समय निर्वयों की सिचाई की आबपाशों नहीं ली जाती थी आज अपनी सरकार में ली जाने लगी है।

श्री श्रधिष्ठाता-हर गंवार ग्रावमी ऐसा कहता है।

श्री रघुवीरसिंह—जो सच्ची बात थी वह मंने बता दो। त्मारी सरकर को नाले बनाने की बड़ी श्रादत पड़ गई है। में मानता हूं कि नालों की जरूरत है, लेकिन एंसी छोटी निवार में २०, २० नाले डाल विये गये है कि उनमें पानी ले जाने की अमता नहीं है श्रीर नतीजा यह होता है कि उनमें बाढ़ श्राजाती है। छोटी निवयों के किनारे जो जमीन उपजाऊ होनी है उस पर खेती होती है लेकिन नालों के पानी के कारण बहु पैदाबार गल जाती है। कहीं कही एस श्रानादश्य नाले बनाये जाते हैं जिनसे जनता को कोई श्रपेक्षाकृत लाभ नहीं है। उदाहारण के लिये जिला एटा में गोकनी ड्रेनेज, जिसका श्राज कल सर्वे हो रहा है, बहु पान्न मील लम्बा नाला बनाया जा रहा है। मेंने स्वयं देखा है कि उस नाले के निकलने से जयादा से जयादा १०० एकड जमीन बच सकेगी, लेकिन रास्ते में १ मील के दौरान में उससे तिगुनी, श्रीगनी कृष्य योग्य भूम बर्वाद होगी। हजारों रुपया खुदाई में लगेगा तब नाला बनेगा और जिस नदी में श्राला जायगा आगे चल कर वह बाढ़ का कारण बनेगा।

एक बात यह कहनी है कि भ्राज जितना भी विकास हो रहा है वह विकास ऐसा है जैसे वृक्ष की जड़ में पानी न देकर पत्तों को सींचा जा रहा है। ऐसा विकास किया जाय जो बास्तविक विकास हो। भ्रभी में ने इस किताब में पढ़ा कि रामगंगा योजना भीर उसके साथ साथ छोटी छोटी योजनाश्रों को इसलिये स्थिगित कर विया गया कि पैसे का भ्रभाव है। में माननीय मंत्री महोदय से यह जानना चाहता हूं कि जब ४ भ्ररव रुपया हमारी दोनों पंचवर्षीय योजनाश्रों में

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-ग्रनुदान २०३ संख्या ४७--लेखा शीर्षक ६८--िचाई, नौचालन, बांघ ग्रीर पत्नी के निकास संबंधी कार्या का निर्माण, ग्रनुदान संख्या १०--लेखा शीर्षक १७, १८ ग्रीर १६-ज--राजस्य से किये जाने वाले त्वाई के निर्माण कार्य तथा ग्रनुदान संख्या ११--लेखा शीर्षक १७, १८, १८ ग्रीर ६८-सिचाई स्थापना पर व्यय

खर्च हो गया श्रौर उनसे कोई वास्तिवक लाभ नहीं हुग्रा, तो क्या उस धन से यह योजना चालू नहीं की जा सकती थी जिससे श्रपर तथा लोग्रर गेंजेज नहरों में पानी पहुंचा दिया जाता? इससे हजारों एकड़ जमीन की सिंचाई हो सकती थी जिससे किसान की पैदावार बढ़ती श्रौर प्रदेश का लाभ एवं उत्थान होता।

में यह कहना उचित समझता हूं कि हमारी सरकार ने सिचाई विभाग को बड़ी उदासीनता से देखा है, उसके साथ बड़ी उपेक्षापूर्ण नीति बरती है श्रौर उसकी कोई श्रावश्यकता नहीं समझी है। इन शब्दों के साथ मैं कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं श्रौर माननीय मंत्री महोदय से पुनः निवेदन करता हूं कि मेरे सुझावों पर सरकार विचार करेगी।

\*श्री काशीप्रसाद पांडेय (जिला मुल्तानपुर)—ग्रिधिष्ठाता महोदय, में ग्रापका बहुत ग्राभारी हूं जो ग्रापने इस ग्रनुदान पर मुझे कुछ कहने का ग्रवसर दिया है। जो ग्रनुदान इस सदन में प्रस्तुत है उसके लिये में माननीय मंत्री जी को बधाई देता हूं ग्रौर माननीय रामस्वरूप वर्मा जी ने जो कटौती का प्रस्ताव रखा है उसका विरोध करता हूं। माननीय वर्मा जी गंगा नदी में बांध डाल कर पूरे प्रदेश को सिंचाई से लाभान्वित करना चाहते हैं ग्रौर जब गंगा में बांध बांधना चाहते हैं तब भी कटौती का प्रस्ताव लाते हैं यह बात न्याय संगत नहीं है।

श्रीमन, स्वतन्त्रता मिलने के बाद से प्रदेशीय सरकार ने सिंचाई की श्रोर जो प्रगित की है वह किसी से छिपी नहीं है। श्राज चाहे ४ फीसदी या २ फीसदी की बात कही जाय, लेकिन हमारे प्रदेश के कोने कोने में कोई न कोई काम जरूर हुश्रा चाहे वह छोटी सिंचाई की योजना हो चाहे नहर की योजना हो, चाहे ट्यूबवेल की योजना हो। श्राजादी मिलने के बाद ही पहले पहल सरकार ने सिंचाई की सुविधा देने के लिये किसानों को लोहा दिया, सीमेंट दिया श्रीर उसके बाद ही प्रदेश की श्राणिक स्थित सुधरी। साथ ही सिंचाई के नलकूप श्रीर नहरों की योजना का जाल बिछ गया।

में पूरे प्रदेश की बात न कह कर ग्रंब ग्रंपने जिले की बात कहता हूं। सुल्तानपुर जिला प्रदेश का सबसे पिछड़ा जिला है। राजनीतिक दलबन्दी में पड़ कर दूसरे जिले चाहे ग्रंभावग्रस्त न रहे हों, लेकिन ग्रंधिक शोर मचा कर वे ज्यादा पिछड़े हुए माने गये चाहे पूर्व के जिले हों या पश्चिम के जिले हों। ग्रंगर सन् ४७ के पहले के ग्रांकड़ों को देखा जाय तो सुल्तानपुर सबसे ग्रंधिक दिखा हुग्रा जिला है श्रौर सबसे ग्रंधिक घना श्राबाद है। वहां खेती के ग्रंलावा कोई दूसरा साधन नहीं था। ग्रंजादी मिलने के बाद वहां गोमती नदी के दक्षिण व उत्तर में नहरों का जाल बिछ गया ग्रौर ट्यूबवेल वहां काफी बना दिये गये जिससे काश्तकारों की ग्रांधिक स्थित ग्रंच्छी हो गयी। वहां बाढ़ व सुखे का ग्रंब प्रकोप नहीं होता ग्रौर गन्ने की फसल.एक ऐसी फसल है जिससे ग्रांज वहां का काश्तकार जिल्दा है ग्रौर वह ग्रंपने कपड़े व खाने का इन्तजाम कर लेता है।

छोटी योजनाश्रों की बड़ी चर्चा की जाती है। मैं भी चाहता हूं कि छोटी योजनायें जरूर चलाई जायं, लेकिन पूरे प्रदेश में भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न स्थित है। कहीं गहराई पर पानी होता है श्रौर कहीं १०,१५ फुट पर पानी होता है। हमारे जिले में गोमती नदी के किनारे ६०, ७० फुट पर पानी होता है। इसलिय वहां नलकूप की योजना का होना परमावश्यक है। मेरे जिले में नलकूप लगे हैं। वहां बिजली की लाइनें भी पहुंच गयी हैं।

[श्री काशीत्रसाद पांडेय]

न्द्रौर यहां तक कि मेरे जिले में ट्यूबवेल से प्रदेश में पड़्ले नम्बर की सिचाई हो ब्री है, लेकिन चूंकि एक-एक ट्यूबवेल का कमांड एरिया हजार-हजार श्रोर पन्द्रह-पन्द्रह सौ एकड़ रख दिया गया है इसलिये पूरी पूरी सिचाई उनसे नहीं हो पाती ।

कहा गया कि सिंचाई में घाटा हो गया। माननीय प्रज्वल रऊफ लारी ने ग्रौर एक ग्रांघ दूसरे माननीय सदस्यों ने इसका बड़ा जिन्न किया कि सिंचाई में गयनंमेंट की घाटा हु ग्रा। में उनको बताना चाहता कि यह गवनंमेंट कोई बिनयागीरी नहीं करती जो सिंचाई से मुनाफा उठाना ही उसका ध्येय हो बिल्क वह कितानों की महायता करना चाहती है श्रौर लोगों को ग्रन्न देना चाहती है। उसके लिये या ग्रावश्यक है कि मुनाफ की ग्रोर ध्यान न दिया जाय। हमारे प्रदेश में जब सूबे की लार ग्रायी तो माननीय मंत्री जी इस बात के लिये बधाई के पात्र हैं कि उन्होंने सिंचाई की वर कम कर के बहुत बड़ी संग्रयता किसानों की शो श्रौर इसीलिये सिंचाई की श्रामदनी में कमी हुई। वेसे तो संकट के काल में पूरी सिंचाई मुपत करने की श्रावश्यकता होती है, लेकिन ग्रगर माननीय मंत्री जो ने एक-तिहाई सिंचाई ही ली तो भी वे सराहना के पात्र हैं।

श्राज ज्ां सारे प्रदेश श्रीर देश में श्रीधक श्रश्न उपजाश्रों की बात कही जाती है उसके लिये में मंत्री जी से प्रार्थना करूंगा कि जो किसान गर्भ के श्रलावा कोई तीसरी फसल अपने खेत में पैदा करना चाहें गरमी के दिनों में जबकि जमीन वाली रहती है तो उनसे एक-तिहाई या मा ाूली सिंचाई ही ली जाय श्रीर उसमें नके की बात न मोची जाय ।

बहुत से माननीय सदस्यों ने कहा कि सिवाई का तरीका सिखाने के लिये ऐप्रीकल्चर डिपार्टमेंट में एक विभाग खोला गया है। हो सकता है कि इसके लिये कोई विभाग खोला गया हो, लेकिन यह कोई ऐसी बात नहीं है जिस पर एतराज किया जाय क्योंकि किसानों को यह सिखाना आवश्यक है। बहुत से किसानों ने ट्यूबबेन्स को देला तक नहीं है। उन्हें नहीं मालूम कि उससे कितना पानी देना आवश्यक है। यही कारण है कि पहले पहल बहुत से किसानों ने अपने गेहूं के खेतों में ट्यूबबेल्स से बहुत ज्यादा पानी दे दिया जैसे कि गम्ने के खेतों में देते हैं। नतीजा यह हुआ कि पदावार ज्यादा होने के बजाय कम हो गयी, गेहूं में गेरुई लग गयी । इसलिये किसानों को सिवाई का तरीका सिलाना आवश्यक भी है, लेकिन मैं यह कहना चाहता है कि जिलों में सिवाई के महकमें याने जो थोड़े से कर्मचारी होते हैं ये पूरे जिले के किसानों को यह तरीका बताने के लिये काफी नहीं है।

साथ ही साथ ट्यूबवेल की गूलों के बारे में मुझे थोड़ा काना है। कभी कभी ऐसा होता है कि काइतकार अपने खेत में हो कर आगे पानी देना नहीं चाहता और येसे पानी चढ़ नहीं पाता जिससे दूसरे किसानों को बड़ी विकात होती है। इसलिय मेरा सुझाव है कि बीच-बीच में गूलों से मिली हुई छोटी-छोटी नालियां विभाग की और से बनवायी जाये और थोड़ा-थोड़ा पानी ट्यूबवेलों के जरिये से सींचा जाय।

इसके अलावा मेरा माननीय मंत्री जी से अनुरोध है कि जैसे पानी पीने के कृये के लिये ७—द सौ रुपये मुफ्त में विये जाते हैं अगर यह सहलियत सिखाई के लिये दी जाय, चाहे पानी पीने के कुंये के लिए थोड़ी कम भी सहलियत दी जाय तो कुछ अधिक अनुचित न होगा। साथ ही साथ में अपने जिले मुल्तानपुर की बात विशेष रूप से क ता हूं कि जी ४—१० नल ट्यूबनेल से पीने के पानी के लिये विये जाते हैं अगर उनकी संख्या बढ़ा दी जाय क्योंकि हमारे जिले में पानी बहुत गहराई में होता है तो उससे लोगों को पीने के पानी के सम्बन्ध में बहुत सहलियत हो जायगी।

श्रीमन्, में श्रापके द्वारा माननीय मंत्री जी से श्रनुरोध करना चाहता हूं कि मुल्तानपुर ऐसा जिला है जहां जमीन हर प्रकार के श्रश्न पैदा करने की दशा में है। व.र की धाबहुश ऐसी है कि कपास की खेती बहुत श्रन्छी हो सकती है श्रीर किसान उससे लाभ उठा सकते हैं। इन जगहों पर यानी लखनऊ-बलिया रोड के दक्षिण की तरक सुल्तानपुर जिले में श्रौर ट्यूबबेल्स लगवा दिये जायं । इन शब्दों के साथ में इस श्रनुदान का समर्थन करता हूं।

श्री जगन्नाथ लहरी (जिला श्रागरा)—श्रावरणीय श्रिष्ठिता महोदय, सिर्चाई श्रमुदान के संबंध में जो कटौती का प्रस्ताव पेश किया गया है में उसका समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं। श्रनेक माननीय सदस्यों ने यह पूछा है कि सिर्चाई जैसे अनुदान के लिये कटौती का प्रस्ताव क्यों प्रस्तुत किया गया है में माननीय सदस्यों की सेवा में सरकारी श्रांकड़े प्रस्तुत करना चाहता हूं श्रीर मंत्री महोदय से पूछना चाहता हूं कि वास्तविकता क्या है हे हमें बताया गया है कि हमारे प्रदेश में १६४६ तक १,८४७ ट्यूबवेल्स थे श्रीर १६४६ तक ४,२४३ श्रीर लग गये। इस तरह से प्रदेश में ६,१०० ट्यूबवेल्स श्रीर लग गये। इस सिर्चाई विभाग की पुस्तिका के श्रातिम पृष्ठ पर लिखा हुआ है कि ४६-४७ में हमारे प्रदेश में जहां ट्यूबवेलों से ७,७६,०६४ एकड़ भूमि की सिर्चाई होती थी वर्ं १६५७-५८ में १६,६३ ७२५ एकड़ हो गई है। ४६-४७ से हमारे प्रदेश में ४,२४३ ट्यूबवेल्स श्रीर बढ़ गये श्रीर सिर्चाई का क्षेत्र भी १० लाख एकड़ के लगभग बढ़ गया। लेकिन ट्यूबवेल्स से श्रामदनी होने के बजाय हमारे प्रदेश में १२८ लाख की हानि हुई है श्रीर ब्याज की भी हानि देखी जाय तो २३७ लाख की हानि हुई है।

श्रिषठाता महोदय, हम पिंडचमी जिलों के रहने वाले हैं श्रौर हमारे यहां ट्यूबवे लों की बहुत मांग है। हमारे यहां सिचाई के पानी के लिये कत्ल हो जाते हैं। श्रगर २४ घंटे ट्यूबवेल्स चलाये जायं तो भी लोग वहां पानी लेने के लिये तैयार हैं। जहां पर ट्यूबवेल्स की मांग है श्रौर लोग श्रपना खून बहा देते हैं वहां की मांग को ठुकराकर ट्यूबवेल्स ऐसी जगहों में लगा दिये गये हैं जहां पर श्रामदनी न होकर सरकार को उल्टे घाटा हो रहा है। क्या बतायेंगे पिंडलक वेस्ट डिपार्टमेंट के मिनिस्टर साहब, जैसा कि मैंने कल कहा था कि करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति लगाने के बाद जनता का पया क्यों इस तरह से बरबाद किया जा रहा है कि जहां सिचाई की दस लाख एकड़ भूमि तो बड़ जाय वहां १२६ लाख रूपये की हानि क्यों हुई ?

इसी प्रकार से में आपके सामने नहरों के आंकड़े पेश करना चाहता हूं । इस पुस्तिका में लिखा हुआ है कि १६४६ तक हमारे प्रदेश में १७,८२४ मील लम्बी नहरें थीं और १६६० तक वह २४ हजार मील हो गई यानी ७,१७४ मील नहरें बढ़ गई और सिचाई का रक्ता भी बढ़ गया। आज जहां नहरों से किसानों को लाभ हुआ है वहां नहरों स आमदनी हुई है उसका एनुअल रिटर्न देखा जाय तो २१३ लाख है। इंटरेस्ट भी अगर लगाया जाय तो इस में १३७ लाख का घाग है। आज जिस इलाके में नहरों और ट्यूबवेलों की मांग है वहां न बनाकर उन स्थानों पर नहर और ट्यूबवेल बनाये जा रहे हैं जहां एक ट्यूबवेल से तीन रुपये साल की भी आमदनी नहीं होती है और उस पर एक लाख रूपया व्यय कर दिया जाता है। अगर आप व्यापारी होते तो इस प्रकार का घाटा देख कर आपका हार्ट फेल हो जाता । में व्यापारी हूं और में जानता हूं कि रुपये की वया कीमत है। आपको तो जनता का रुपया मिला हुआ है, आपको मंत्री पद मिला हुआ है, आप रुपये को बरबाद करने में क्यों हिचकेंगे क्योंकि पिलक वेस्ट डिपार्टमेंट के मंत्री बने हुये हैं।

श्री अधिष्ठाता-माननीय लहरी जी, मंत्री जी का हार्ट कमजोर है ।

श्री जगन्नाथ लहरी-कोई चिन्ता की बात नहीं है। जैसे कि मैने कल भी मांगकी थी, आज में पूनः मांग करता हूं कि मंत्री महोवय इस प्रवेश के ऊपर कृपा कीजिये। जब आप में इतनी क्षमता और योग्यता नहीं है कि इस पिन्लक वेस्ट डिपार्टमेंट की बरबादी को रोक सकें श्रीर प्रदेश की जनता की भलाई कर सकें तो आप अपने पद से त्याग-पत्र दे कर ग्रलग हो जाइये और किसी ऐसे व्यक्ति को चार्ज वीर्जिये जो इस बरबावी को ग्रच्छी तरह रोक सके।

मर्ज बढता गया ज्यों ज्यों दवा की । १६४४-४६ में हमारे प्रदेश में जहां ६३ लाख द इ हजार ३०३ एकड़ जमीन की सिचाई हुई थी वहां १६४७-४८ में भ्रापके श्रांकड़ों के मुताबिक ८० लाख ३४ हजार १५ एकड् जमीन की सिचाई हुई । १६४४-४६ में जहां २ करोह हुर लाख २६ हजार ३ सौ ८ रुपये की ग्रामदनी हुई वहां १६५७-५८ में २ करोड़ १६ लाख १८ हजार ४ सौ ५७ रुपये की श्रामदनी हुई । यदि श्राप के श्रांकड़ों को देखा जाय तो इस प्रदेश में १९४५-४६ के मुकाबले में साढ़े १६ लाख एकड़ जमीन की सिचाई बढ़ गयी, लेकिन प्रदेश की ग्रामदनी ७२ लाख १० इजार ६ सौ ५१ रुपये कम हो गयी। १६५६—५७ में ६५ लाख ३१ हजार ६०२ एकड की सिचाई की गयी श्रीर श्रामदनी २ करोड़ १६ लाख ६ हजार २२१ हुई । १९५७-५८ में १२ हजार ३३६ रुपये ग्रामवनी ज्यावा है जब कि सिचाई १५ लाख रे हजार ११३ एकड़ ज्यादा की गयी। अब अगर एक एकड़ की सिचाई पर एक रुपया भी लें तो श्रापकी ग्रामदनी १९४४-४६ के मुकाबले में १९४७-४८ में कम में कम १४ लाख रायें बढ़ जानी चाहिये थी, लेकिन केवल १२ हजार ३३६ बढ़ी । यह क्या गोरखधंधा है? अपने इंजीनियरों से पूछिये । श्रालीशान भवनों में बैठ कर श्रापकी फुरसत नहीं है कि इन जगहों में जाकर मुख्रायना करें कि छापको नाक के नीचे क्या हो रहा है। मैने पी॰ डब्लू० डी० बजट के ऊपर श्रापको इस बात की वावत वी थी कि श्राप की नाक के नीचे वारल-शफों में श्रापके इंजीनियरों ने क्या गढ़न किया है, लेकिन मुझे जी कुछ बेख पड़ा दुख है कि श्रापके एक श्रसिस्टेंट इंजीनियर तो जरूर गये श्रीर दो मिनट देख कर चले गये। श्रापके चीफ इंजीनियर श्रीर एग्जिक्यटिय इंजीनियर को इतनी हिम्मत नहीं है कि जा कर कम से कम उस गडबडघोटाले को देख सकते । भ्रापकी भ्रांखों के नीचे गबन होता रहे, लेकिन श्राप कुछ न कर सकें। मै चाहता हूं कि आप चल कर वादलदाफा में जो नयी बिल्डिंग बनी है जिसको बने एक साल भी नहीं हुन्ना है, उसका देखिये, उसका मीमेंट गिरने लगा है। पता नहीं एक-बीस का सीमेंट लगाया गया है या क्या है। जहां इस तरह की बेईमानियां. . . .

#### श्री श्रधिष्ठाता--माननीय सदस्य सिचाई विभाग पर भा जायं।

श्री जगन्नाथ लहरी--उसी पर बोल रहा हूं। अष्टाचार और बेईमानियां फैली हुई हैं वहां श्रापको यह फुर्सत नहीं है कि श्राप उसको देखने के लिए जा सकें, तो में श्रापसे निवेदन करना चाहता हूं कि भ्राप भाइए प्रवेश के उस भाग में जहां सचमुच लोग सिचाई की भावश्यकता महसूस करते हैं, जहां ट्यूबवेल और नहरों से पानी लेने के लिए किसान तैयार है, जहां आपको घाटा नहीं हो सकता है, उन स्थानों पर ग्राप द्यूबवेल ग्रौर नहरें बनवाइए, लेकिन ग्राप सिर्फ कागजी कार्यवाही करते हैं, उन इलाकों की जनता की ग्राप योजनावद्ध कागज पर दिखा देते है, काम नहीं करते। मैंने कल चुनौती वी थी और धाज फिर वेता हूं, क्या भाप बता सकते है कि पहली पंचवर्षीय योजना में लिखा गया था कि फीरोजाबाद तहसील के इलाके में ट्यूबदेल लगवाने की भावश्यकता है, द्वितीय पंचवर्षीय योजना में भी यह रखा गया, लेकिन भावने एक इंच भी जमीन वहां पर नहर से या ट्यूबवेल से सीचने का प्रवन्ध किया है ? मैदानी इलाका है, समतल जमीन है, वहां का किसान उसके लिए हाहाकार कर रहा है, लेकिन भाषको फुर्सत महीं। फुर्सत भाषको क्यों मिलेगी ? क्योंकि आपके इंजीनियर महोवय, चीफ इंजीनियर महोवय जहां उपये का सन्धी तरह से गबन हो सकता है, जहां कोई देखने वाला न हो, जहां उनकी कोठियों भीर तिजोरियों में १६६०-६१ के ग्राय-क्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--ग्रनुदान २०७ संख्या ४७--लेखा शीर्षक ६८--सिचाई, नौचालन, बांध ग्रौर पानी के निकास सम्बन्धो कार्यों का निर्माण, ग्रनुदान संख्या १०--लेखा शीर्षक १७, १८ ग्रौर १६-ख--राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण कार्य तथा ग्रनुदान संख्या ११--लेखा शीर्षक १७, १८, १६ ग्रौर ६८--सिचाई स्थापना पर व्यय

रूपया भरा जा सके, ऐसे स्थानों की योजना बनायेंगे। दूसरे स्थानों की योजना वह कैसे बना सकते हैं?

श्री रामलखन मिश्र (जिला बस्ती)--ग्रादरणीय ग्रधिष्ठाता महोदय, जब तक प्रोग्रेसिव इकोनोमी को समझ न लिया जाय तब तक सिचाई विभाग के बारे में एक ग्रक्षर भी समझ में न यह कभी हो नहीं सकता कि भ्राज का बनिया कल का सेठ। भ्राज हम पैसा लगायें द्यौर कल ही हमको जाकर के लाभ हो जाय। यह हमारा मूल तत्व है, जिसको हमको समझना होगा। ग्रभी हमारे प्रदेश का किसान एक मौसमी किसान था। केवल ट्यूबवेल लगा देने से भ्रौर नहरें बना देने से ही कोई काम नहीं चलेगा। वह एक भाग्यवादी किसान रहा है। पानी से खेती करना हमें इस प्रदेश के किसानों को समझाना है। ग्राज कितने किसान हैं, कितनी उनकी वंशपरम्परागत बातें हैं, ऐसे किसान कितने हैं जो श्रच्छी तरह से श्रौर पूर्ण रूप से वैज्ञानिक दिष्टिकोण से पानी लेना जानते हैं ? मेरे पास कोई दिव्य दुष्टि या गिद्ध दुष्टि तो नहीं है, लेकिन में पर्वी जिलों के दुष्टिकोण से बताता हूं कि हमको इस बात का प्रयत्न करना चाहिए, इस बात का हमको प्रचार करना होगा, तब वह किसान यह समझ पायेगा कि हमको इतने घंटे ट्यूबवेल से पानी लेना होगा, जितने में कि ट्घूबवेन म्रात्मनिर्भर हो जायगा । सरकार का यह प्रयस्न बहुत प्रशंसनीय है भ्रौर इस सिचाई विभाग का भविष्य बहुत उज्ज्वल है । कटौती का प्रस्ताव उपस्थित करते हुए प्रस्तावक महोदय ने जिन शब्दों का प्रयोग किया कि सरकार रक्त चुस रही है भ्रौर उससें मोटिव को ग्रटैच किया, उसको सुनकर के मुझे बहुत ही ग्राश्चर्य ग्रौर दुख हुग्रा। कटौती का प्रस्ताव उपस्थित करके एक वृहत् चर्चा सिचाई विभाग पर की जाय यहां तक तो ठीक है, क्योंकि यह होना भी चाहिए। प्रजातांत्रिक प्रणाली के श्रन्तर्गत कोई चुपचाप से काम नहीं चल सकता, उसकी श्रनेक बातों पर हमको विचार करना होगा श्रौर करना चाहिए। लेकिन सरकार के ऊपर एक मोदिव ग्रदैच करना श्रौर उसमें कोई तथ्य जब न हो, तो यह एक ग्राश्चर्य की बात है। उससे एक भ्रष्टाचार का प्रचार हम एक दूसरे तरीके से करेंगे।

सिचाई विभाग बहुत महत्वपूर्ण विभाग है। खेती में उत्तम बीज हो, उत्तम भूमि हो, उत्तम साधन भी हों, लेकिन यदि सिचन कार्य ठीक न हो तो सब ध्रपूर्ण हो जायगा। इसीलिए संस्कृत में जल को एक रस कहा है—-रसो वै सः कहा है। एक ध्रादमी के दारीर के ध्रन्दर भी ७० से ५० प्रतिदात जल का ध्रंश होता है ध्रीर जल एक बहुत ही प्राण की-सी चीज है। इसका एक नाम नारायण भी है। इसलिए सिचाई विभाग को हमें किसी हल्के दृष्टिकोण से नहीं देखना होगा।

श्रादरणीय श्रिषठ्वाता महोदय, हमारे यहां एक बानगंगा की नहर बनाई गई। तो क्या में यह समझूं कि वह नहर श्रनुद्देश्यपूरक है। इससे सरकार ने रक्त चूस लिया है। द्यूबवेल से श्रार एक बीघे खेत के श्रान्दर पानी लिया गया श्रीर उस पर हम शिड्यूल ए, बी, सी, डी, चार में से किसी भी रेट से ले लें तो उसमें पानी का जो एक बीघे गन्ने का दाम है वह कम या श्रिषक हो सकता है। इस पर हमें श्रनेक दृष्टि से विचार करना होगा, लेकिन केवल पाखंडवाद को यहां पर प्रस्तुत करके हम चाहते हों कि एक दम बादल खेतों के ऊपर कर दें तो इससे काम चलने वाला नहीं है।

जहां तक लघु सिंचन योजना का प्रश्न है, सिंचाई विभाग का ध्यान उस तरफ गया है। उसको जो प्राथमिकता वी गई है यह बहुत प्रशंसनीय कार्य है क्योंकि इस प्रदेश में लघु सिंचन योजना से कार्य सिद्ध होगा और हमको इस बात पर ग्राना चाहिये। जहां पर द्यूबवेल नहीं जाते हैं तो वहां पर यह लघु सिंचन योजना कार्य कर सकती हैं। यह बहुत प्रशंसनीय कार्य है।

#### [भी रामलखन मिश्र]

मे इस अवसर पर कुछ सुझाव भी देना चाहता हूं। में अपने सिचाई मंत्री से यह कहना चाहता हूं कि श्रापको प्रदेश के हर भाग की प्लानिंग की जानकारी रहनी चाहिये कि किस जिले के भूभाग में कितने सिचाई के साधन है या नहीं है या कहां पर सिचाई के साधन हो सकते है ताकि हम जनता को बता सकें कि यहां क्या होने को है। वहां पर सरकार क्या करने वाली उसका इस प्रकार का रूप नहीं होना चाहिये कि जिस किसी ने कह दिया या जो करा लें गया तो उसका काम हो गया श्रौर बाकी वेसे ही रह गये। ऐसा नही होना चाहिये। मे बस्ती जिले के डुमरियागंज के उत्तर भाग की तरफ सरकार का ध्यान दिलाना चाहता है। वहां पर चरनहवा की जो योजना थी वह फाइल में पड़ी हुई है। सरकार ने उसको पास कर दिया था और पास करने पर वहां इंजीनियर जा चुके थे। इटें गिर चुको थी और कोयला जा चुका था श्रीर कार्यारम्भ हो चुका था, लेकिन वह फाइल में योजना पड़ी हुई ह। श्रभी तक उसकी तरफ कोई दृष्टि नहीं गई है। में सरकार का ध्यान उस तरफ दिलाना चाहता हूं कि इस पर सरकार को अपनी दृष्टि करनी चाहिये। वहां की जनसंख्या बहुत बड़ी है जो सिचाई के बिना तड़प रही है। कोई साधन वहां पर सिचाई का नहीं है। वहां पर ट्यूबवेल नहीं है। सरकार की तरफ से एक जलकुण्डी योजना चली थी । उस ट्रांसराप्ती एरिया में कुछ काम होने को था लेकिन वह जलकुन्डी योजना छिन्न भिन्न हो गई। उस योजना का नैपाल सरकार द्वारा बहुत विरोध हो रहा है। वहां पर जो नैपाल के एम० पी० भ्राते है उनसे सुना है कि उस जलकु हो योजना का नैपाल सरकार से सम्बन्ध था, लेकिन वह ग्रभी होने नहीं जा रही हैं। सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि उस भूभाग के ऊपर कोई न कोई प्लानिंग होनी चाहिये। श्राखिर हम जनता को जाकर क्या बताये ? श्रभी एक वहां पर किसान मेला था । में जनता बहुत यो और कुछ लड़के भी कालेजों से आये थे। वह बारबार हमने प्रदन कर रहे थे कि हमको यह बताइये कि सरकार यहां के लिये क्या योजना करने जा रही है। यह जलकुण्डी योजना तो जलकुण्डी में चली गई पर श्रीर दूसरी योजना होनी चाहिये।

दूसरी बात यह कहना चाहता हूं कि इससे सिंचाई विभाग को थां का-मा इनिशियेटिव लेना चाहिये। ग्रगर किसी तरीके से कोई सामाजिक काम हो, ट्यूबवेल को गूल बने या नहर बने तो उसके लिये कष्ट सारे गांव वालों को बरवाइत करना चाहिय। यह ग्रावइयक हे ग्रौर में समझता हूं इस सम्बन्ध में ग्रगर कोई लेजिस्लेइान लाया जाय तो उचित होगा। ग्रगर किसी किसान का एक बीधा खेत है ग्रौर उस खेत के ग्रन्वर से गूल निकल गई तो वह बिलकुल ही मर जाता है। इस प्रकार का कोई लेजिस्लेइान लाना चाहिये ग्रौर यदि किसी गांव के ग्रन्तगंत कोई इस प्रकार की बात हो तो वह सब को सहन करनी चाहिये। यह ग्रावइयक खीज है ग्रौर इसको इसके ग्रन्वर ले ग्राना चाहिये क्योंकि यह काम सिंचाई विभाग के ग्रन्तगंत है। इसी प्रकार ने कहीं न कहीं कोई नदी है यदि उनको बांध दिया जाय तो उससे सिंचाई की समस्या हल हो सकती है। उघर सरकार का ध्यान जाना चाहिये। वैसे विकास विभाग की ग्रोर से ग्रोर दूसने विभाग को ग्रोर से नलकूप तालाब को गहरा बनाने के काम होते रहते है, लेकिन सिंचाई विभाग का इसके जपर पूरा नियंत्रण होना चाहिये। सिंचाई विभाग को उघर भी ध्यान हेना चाहिये ग्रौर नलकूपों का जो क्षेत्र है उसे मर्यादित करना चाहिये। यह बहुत ज्यादा है, इसे कम किया जाय। यह उद्देश्यूरक है ग्रौर इससे हमारी समस्या हल होगी।

\*श्री मिलिखानोंसह (जिला मैनपुरी)—मानतीय ग्राधिष्ठाता महोवय, श्राज इस अनुवान पर जो वाव-विवाद हो रहा है उस सम्बन्ध में प्रस्तुत कटौती के प्रस्ताव का में समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं। मेर साथिय। ने इस विभाग से संबंधित श्रीकड़ें प्रस्तुत किये। में श्रीकड़ों में नहीं जाता, कारण कि इस विभाग का सम्बन्ध देहात, की जनता से श्रीधक है और इस प्रवेश की खाद्य स्थित और जो ग्रन्थ आवश्यक वस्तुयें हैं वे इस विभाग पर निर्भर करती है। यदि यह विभाग ढंग से काम करें तो यह जो प्रदेश में खाद्य ग्राव्हीलन होता है या दूसरे ग्रान्दोलन होते हैं

<sup>🍍</sup> वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

१९६०-६१ के स्राय व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--स्रनुदान २०६ संख्या ४७--लेखा शीर्षक ६०--सिचाई नौ चालन, बांध स्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, स्रनुदान संख्या १०--लेखा शीर्षक १७, १८ स्रौर १६-ख--राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण कार्य तथा स्रनुदान संख्या ११--लेखा शीर्षक १७, १८ १९ स्रौर ६८--सिचाई स्थापना पर व्यय

या जो देवी श्रापदायें ग्राती हैं, सूखा ग्रादि पड़ता है, उन सब पर हम ग्रपना नियंत्रण रख सकते हैं। लेकिन मेंने देखा कि नहर का विभाग, कम से कम पिट्टिमी जिलों की बाबत में जानता हूं कि एक योजना है ग्रीर वह योजना यह है कि वह ज्यादा से ज्यादा इरींगेटेड एरिया दिखा देना चाहते हैं चाहे पानी काश्तकारों को एक बार ही मिल पाये। कागजों में इरींगेटेड एरिया बढ़ जाना चाहिये ताकि हमारा रेवेन्यू बढ़ जाय। यह विभाग श्रपनी मालगुजारी बढ़ाने की तिकड़म में रहता है, लेकिन यह ध्यान नहीं देता कि काश्तकार को रबी की फसल में कितने बार पानी की जरूरत है। यदि गेहूं के लिये ३ या ४ बार पानी की जरूरत है तो मैने देखा है कि यह नहर का विभाग समय पर पानी नहीं दे पाता है ग्रीर पानी उत्पादन के लिये प्रमुख वस्तु है। इसके श्रलावा विभागीय इंजीनियरों की तरफ से यह भी कह दिया जाता है कि चूंकि बर्फ नहीं पिघ नी इसलिये नहर में पानी नहीं है ग्रीर इसलिये हम ज्यादा पानी नहीं दे पायेंग। ग्रार ऐसा हो तो काश्तकार को पहले से ही खबर भेज देनी चाहिये ताकि काश्तकार ग्राप पर निर्भर न रहें ग्रीर स्वा-लम्बी बनें ग्रीर ग्रपने पैरों पर खड़े हो कर ग्रपना उत्पादन बढ़ा सकें। यह विभाग गर्मी में, जब ईख ग्रादि की फसल होती है उस समय यह कह कर टाल देता है कि इस समय हमारे पास पानी नहीं है ग्रीर हम एरिया बांट देंगे ग्रीर एक-एक महीने के बाद पानी मिलेगा। इससे प्रदेश के किसानों पर ही नहीं वरन सम्पूर्ण देश की इकोनामिक स्थित पर ग्रसर पड़ता है।

इस के बाद ड्रेनेज का ठीक इंतजाम नहीं है। नहरें श्राप श्रपने प्लान के हिसाब से बनाते हैं, लेकिन जहां-जहां नहरें बनी हैं वहां वहां पानी जो ज्यादा हो उसके निकलने के साधन नहीं रखे गये। पिट्यमी जिलों में पिछले तीन सालों का हम को तजुर्बा है, शायद पूर्वी जिले वालों को उसका शिकार नहीं होना पड़ा। सैलाब का हमको शिकार होना पड़ा है। श्रीमन्, इसमें पानी नीचे से ऊपर श्रा जाता है श्रीर खेत में पैदावार नहीं होती। यह गलत प्लानिंग ड्रेनेज न रखने के कारण होता है श्रीर पिश्चमी जिले वालों की बड़ी भारी समस्या है। यह नहरों की समस्या सहारनपुर से ले कर कानपुर तक है श्रीर श्राप देखें कि वहां इस के कारण उत्पादन कम होता जा रहा है। इसका कारण नहरों का पानी ऊपर श्रा जाना ही है। विभाग इसकी कोई व्यवस्था नहीं कर पाया।

में खाने-पीने की चीज पर बहस नहीं करता। यह कहना चाहता हूं कि नहरों को तभी बढ़ाया जाय जब कि यह देख लिया जाय कि हम पिछले एरिया में पानी समुचित रूप से दे पाये हैं या नहीं। ग्राज शिकायतें ग्राती हैं। पीछे के कुलाबे चार-चार इंच के हैं, लेकिन उनको नहीं बढ़ाया जाता है। प्लान यह बनता हैं कि नहर ग्रागे बढ़नी चाहिये ताकि हम प्रति एकड़ सिंचाई बढ़ा दें। जिससे हमारा रेवेन्यू बढ़ जाय क्योंकि नहर का पानी चाहे ग्राप एक बार दें लें, दो बार दें लें, ४ बार दें लें, या दस बार दें लें, रेवेन्यू एक ही बार जितना लगेगा उतना ही तब भी लगेगा। इसलिये में यह कहना चाहता हूं कि यह ग्रामदनी बढ़ाने की तिकड़म में रहते हैं। इस विभाग ने जो काम किये हैं वह ग्रोवरसियराना तौर के सोचने के हैं न कि उत्पादन बढ़ाने के लिये। इस विभाग के हमेशा वह काम रहे हैं जिससे जनता को कायदा नहीं पहुंचता है।

श्री श्रिधिष्ठाता--क्या श्राप श्रभी श्रीर समय चाहते हैं?

श्री मलिखानसिंह --जी हां, में ग्रभी ग्रीर समय चाहता हूं। मुझे थोड़ा-सा समय

श्री श्रिधिष्ठाता--तो ग्राप कल ग्रपना भाषण जारी रखें। (इसके बाद सदन ६ बजे ग्रगले दिन के ११ बजे तक के लिए स्थगित हो गया।

लखनऊ; १० मार्च, १६६०। देवकीनन्दन मिल्पल, सचिव, विधान सभा, उत्तर प्रदेश।

### नत्थी 'क'

(देखिये तारांकित प्रक्त १ का उत्तर पीछे पृष्ठ ११३ पर)

### समझौता

बिजली काटन मिल्स, हाथरस के मालिक तथा हाथरस मजदूर पंचायत के मध्य दिनांक १७ फरवरी, सन् १६६० को निम्नलिखित फैसला हुग्रा—

१—सन् ५६ के बोनस मसले को मालिक लोग मजदूरों से आपस में फैयला कर लेंगे, मालिक लोग एक नोटिस द्वारा सभी मजदूरों से आज से एक सप्ताह के अन्दर ५ नुमाइन्दों के नाम मांग लेंगे, नाम आ जाने के बाद दोनों यूनियनों तथा १ हाथरस मजदूर पंचायत के सेकेटरी अथवा प्रेसीडेण्ट, २ कांग्रेस मजदूर संघ के सेकेटरी अथवा प्रेसीडेण्ट नुमाइन्दों को लेकर सन् ५६ के बोनस के मसले को आपस में तय कर लेंगे। यह कार्यवाही उपरोक्त समय के २१ दिन के अन्दर सम्पूर्ण होगी। उपरोक्त फैसला दोनों यूनियनों को मान्य होगा। तिरफहा हो जाने के बाद मालिक लोग सन् ५६ के बोनस के ससले सभी अदालतों से वापस उठा लेगे। दोनों यूनियनों को इस पर किसी प्रकार की आपत्ति न होगी। इस प्रकार १६५६ के अभिनिर्णय संख्या २—बी का प्रतिपालन हो जावेगा। बोनस के बांटने की अविध भी मजदूरों के नुमाइन्दों से तय कर ली जावेगी।

२—इसी प्रकार सन् ५७,५८,५६ के बोनस के मसलों को भी उपरोक्त विधि से ग्रापस में तय कर लिया जायगा, यदि ग्रापस में तिस्फिहा हो जाता है तो दोनों पक्ष ग्रदालतों के समक्ष लगे मुकदमों में इसी राजीनामे को पेश कर देगे ताकि तदनुसार ग्रभिनिर्णय हो सके

३—-- प्रभिनिर्णय संख्या १३/५६ कं सम्बन्ध में दोनों पक्षों ने यह तय कर लिया है कि मजदूर पंचायत हाथरस एक मुक्त (दस हजार रुपया) १०,००० रु० लेकर मजदूरों को वितरित करवा देगी। जो फेहरिस्त मजदूर पंचायत, हाथरस मालिकों को देगी उसी के अनुसार मालिकान रुपया बांट देंगे। मालिक इस तस्फित के अनुसार सभी व्यक्तियों को जो अब तक नौकरी पर नहीं लिये गये हैं उनको दिनांक २२-२-६० से नौकरी पर वापस ले लेवेगे तथा फैसले के मुताबिक वे लोग कार्य पर बहाल किये जावेंगे। इनको पुराने स्थानों पर रखने के मसले को भी मक्दूर पंचायत से आपस में बैठकर मालिक लोग निश्चित कर लेंगे, उनकी नौकरी अटूट रहेगी यानी कन्टीन्युटी आफ सर्विस भी उन्हें प्राप्त होगी, जो धन मालिक लोग देवेंगे वह नौकरी पर न रहने के दिनों का वेतन स्वरूप होगा। इस प्रकार अभिनिर्णय संख्या १३ ५६ का पूर्ण पालन माना जावेगा, और मालिक लोग प्रत्येक अदालत से तत्सम्बन्धित मुकदमें वापस उठा लेवेगे।

४——ग्रिभिनिर्णय संख्या ७७/५८ जो कि कोन वाईडिंग से सम्बन्धित है उस में दोनों पक्षों ने यह फैसला किया है कि कोन वांइन्डरों को तनस्वाह २—६—० प्रति सैकड़ा पाउन्ड माल पर दी जावेगी। यह वेतन फैसले के ग्रनुरूप पिछली बकाया का भी भुगतान मालिक लोग करेंगे, इस प्रकार इस ग्रिभिनिर्णय का प्रतिपालन किया जावेगा ग्रीर प्रत्येक ग्रदालत से मालिक लोग तत्सम्बन्धित मुकदमों को वापस ले लेंगे।

५—उपरोक्त तस्फिहे में जितनी देय धनराशि होगी उसको ३ किस्तों में मजदूर पंचायत के परामर्श से मजदूरों को वितरित कर दी जावेगी। पहली किस्त मार्च

में होली से पूर्व दे दी जायेगी। दूसरी प्रतिगरा किरत प्रथेल प्रस्ते में भगतान का दी जावेगी जो कि चुक्ते के रूप में होगी।

ह० भगवान दास, ता० १७-२-६०। हरू भनेतिम डाइरेक्टर, किजनी काटन मिल्स प्रार्गाल, हाथरसः

हर मंत्री

मंत्री, हाथरस मजदूर पंचायत, हाथरस। १७-२-६० कान्नेस समतूर संध, रायरसा

सत्यापित ह० प्रभाकर तिवारी, १७-२-६० सहायक श्रमायुपत, ग्रागरा प्रदेश, ग्रागरा।

दिनांक हाथरस; १७-२-६० ई०

नत्थी 'ख'
(देखिये तारांकित प्रक्त २७ का उत्तर पोछे पृष्ठ १२१ पर)
तालिका जिसमें १९४८-४९ सीजन में इस प्रदेश की सभी चीनी

मिलों ने म्रलग म्रलग जितना गन्ना पेरा म्रौर इसमें जितना बाहरी जोन का था उसका विवरण दिया हुम्रा है

ऋम	ची गै मिल का नाम			पेरा गया गन्ता (लाख मनों मे)			
संख्या	चाना भिल का	नाम		गेट केन	रेल केन (बाहरी जोन)	कुल पेरा गया गन्ना	
8	इकबालपुर			<b>४.</b> २२	78.60	३५२१२	
२	<b>दु</b> इंडाला	• •		१०.५३	<i>દ.</i> હપ્ર	२०३८	
₹	देवबन्द			५७.५७		<b>५</b> ७.७	
४	लक्सर			६.७०	२८.२१	३४.६१	
ሂ	सहारनपुर			<b>१</b> २.३ <b>४</b>	३ <b>१.</b> ५७	४३.६२	
Ę	मंसूरपुर		• •	६२.२६	5.5 \$	७ <b>१.</b> ०७	
હ	<b>खतीली</b>	• •	• •	४२-१३	२४.३३	६६.४६	
5	रोहाना			२८.२८	१७.२१	3૪.૪૪	
3	शामली			५७.७५	<b>६२.६१</b>	<b>१</b> २०.३६	
१०	सर्वोती	• •	• •	२१.३७	१०.३०	३१.६७	
११	दौराला			५४.७६	• •	५४.७६	
१२	जसवन्त	• •		५१.३४		५१.३४	
१३	मोहिउद्दीनपुर			३४.३०	• •	38.30	
88	बेगमाबंद	• •	• •	३६.४४		३६.४४	
१५	<b>सिम्भौली</b>		• •	४८.८७	• •	४८.८७	
१६	मवाना	• •		४४.७४	• •	४४.७४	
१७	बुलन्दशहर			३२.४६	• •	३२.४६	
१८	काशायुर			₹8.50	न.६ <b>१</b>	४३.४२	
38	बाजपुर			११.०६	• •	११.०६	
२०	न्योली	• •		₹0.3	<b>द.१</b> ८	१७.२१	
₹	ग्रनरोहा			१५.०३	38.8€	88.38	
२२	बिलारो	• •		४४.६७	٥.४5	४५.१५	
₹ ₹	बहेरी	• •	• •	<b>३</b> ५.५५	<b>इ.७</b> ८	४२.३३	
२४	बरेंली		• •	38.78	१७.०१	२८.३०	
२५	पीतीभीत	• •		२१.१५	१७.३६	३८.५४	
२६	धामपुर			₹७.१=	-	₹0.55	
२७	सिवहारा	• •		37.78		€0.90	
२५	बिजनौर	• •	• •	२२.७८	• •	ર્ફશ.૬૧	
રેદ	रोसा	• •		.૪૨.		१७.५३	
₹0	बुलन्द			२४.३६	•	₹0.€0	
३१	रजा	• •		રે હ. શેર	• "	३१.०३	
<b>३</b> २	हरदोई			30.88		32.68	
<b>३३</b>	हरगांव			३६.००	•	६१.०३	
રૂં ૪	महोल <u>ी</u>	• •	• •	7 €. ४ ७		<b>રે</b> ફ.૪७	

क्रम				पेरा गया ग	न्ना (लाग मनों	मे)
ांख्या	चीनो (मन का न	ाम	محاورة ومدين تستون	गेट हेन	रल केंन (बाहरा जोन)	कुल पेरा गया गन्ना
	गोला			४२.११	५३-२७	६५.३=
<b>३</b> ५				38.88	• •	38.85
३६	एरा बारावंकी			२१.३२	<b>= = </b>	25.88
₹ <i>७</i> ¬-	बह्बल	- •		६.४२	<b>૨.</b> ૪ <b>ૄ</b>	११.५२
३८	<sub>ष्</sub> ृष्ण मसोघा			१६.६६	ह.६⊏	२६.६५
3€ ~~	निसाया बिसवां			v3.3	६.०७	१६.०४
۸0 هم	ाबसपा शाहगं <i>ज</i>			१६.१०	<b>१</b> २. <b>१</b> ७	२८.२७
४१	<sub>साहग</sub> ुन्य खलीलाबाद			१७.६५	ત. રૂ ર	१८.२७
४२	संदेरवां			२२.६६		<b>२२.६६</b>
४३	नुदरपा बस्ती			४३.६४	• •	३३.६४
ጸጸ	बन्तः वाल्टरगंज			30.98	२.८८	₹₹.€७
ሄሂ ህር				२४.६६		२५.६६
४६	बभनान नवाबगंज			१६.६१	₹.8≒	२६.५६
४७	नवायाण तुलसीयुर			<b>5. ¥</b> ₹	8 4.0X	२ <b>१</b> .५८
४८	-			<b>የ</b> ሂ.ሂሂ	Ę. <b>ę</b> E	२१.७४
38	बलरामपुर जरवल रोड			ं ≒.२१	<i>દ.</i> ૪૪	१७.६५
ሂዕ				२६.०४		२६.०४
ሂየ	परताबपुर			३०.६३	০.৩৩	₹8.४०
<b>५</b> २	बेतालपुर गौरीबाजार	• •		२६.१०		२६.१०
ሂ३	नारात्राजार देवरिया			३२.२=	٥.३४	३२.६३
አጸ	कप्तानगंज	• •		२८.२७	<b>इ.१</b> ७	३६.४४
ሂሂ	खडडा			38.88	* *	२६.४६
४६	ख रूडा छिनीनी			₹१.२४		३१.२१
४७	तक्ष गाना लक्ष्मीगंज			२२.५७	७०.६	74.87
ሂማ	रामकोला (पी)			४४.०६		88.09
₹£	रामकोला (क)			74.68	२.०२	₹5.€
६०	पडरोना			37.78		<b>३२.</b> २
६१ ६२				२२.६२		₹₹.€
६२ ६३	~ ~ ~	• •		₹8.3€		४०.२
		• •		१८.६३		9.39
६४ ६४				50.XX		<b>≒0.</b> ¥
५५ ६६	•	• •		३८.३४		३⊏.३
Ę				३६.४४		३६.४
ور و ا	20			१५.२६		२ ≒. ६
ξ.8			• •	२८.६२	8.88	₹₹.0
	योग (पूर्वी उ० प्र	o)		द६३. <i>६७</i>	१०६.ह६	१.०७३
	योग (पश्चिमो उ	उ० प्र०)	• •	₹,०८€.३	६ ४५६.६२	8,484.0
	योग (सम्पूर्ण रा	<b>इ</b> य)		٥,٤٤٦,٥	६ ४६३.४८	२,५१६.

28%

# मत्थी 'ग'

(देखिये तारांकित प्रदन ६६ का उत्तर पीछे पृष्ठ १२६ पर)

१--सेल्स टैक्स।

२--रिजर्व बेंक श्राफ़ इंडिया द्वारा सब श्रायलसीड्स पर हाय**र मार्जिन का लगाया** जाना ।

३--सीड मार्केट में ग्रधिक पल्क्च्युएशन।

४--एक्साइज ड्यूटी।

५--फ्रंट कन्सेशन।

६--- ग्रायल उद्योग को ग्रायिक सहायता दिया जाना ।

७--श्रम कानून ।

### नत्थी 'घ'

(देखिये तारांकित प्रक्त ७३ का उत्तर पीछे पण्ड १३० पर)

### सूची "क"

कृषि एवं भूमि संरक्षण में वर्ष १९५६ में विकास तण्ड तटोरा में निम्ही शितत विकास कार्य हुये:

७,७१८ मन २३ सेर उन्नतिशील बीज का वितरण हुन्ना। १६० ए एट महरी खाद का प्रयोग किया गया। १८३ मन ७ सेर रमायनिक पादों का दितरण हुन्ना, ४६४ उन्नित्शील कुनि विधिकों के प्रदर्शन हुन्ने, ७४४ एक उसे से स्वार की स्वारों से प्रार्टिक एक उसे जापानी हंग से थान लगाथा गया। १५ एक इसे थान की कतारों से वर्व ई की या, ११२१.५० एक इसे उत्तर प्रदेशीय हंग से गेहूं की खेती की गई, २,६६८ फादार यक्ष तहा ६२४ ईंधन के वृक्ष लगाये गये, ३४४ उन्नतिशील कुथियन्त्र वितरित किये गये।

१,१७८ एकड का भूमि संरक्षण कार्य होत सर्वेक्षण किया गया जिसके प्रतारंत ८५५ एकड में मेंड्बन्दी व डालबन्दी का कार्य हुम्रा, २ पानी के एक के निकास तने, १,२०० एट मेटी पर घास व २६ एकड़ में पर्टीदार खेती की गई, १२,६६४ क० भाग संरक्षण नार्यों के लिए १७३ कृषकों को जितरित किया गया, १६ म्राम सहायक जितिर समान्न हुये, जिल्मे १,२०४ माम सहायकों ने भाग लिया। कृषक समाज के ४०५ साधारण स्वरूप तथा ३२ म्राजीयन सदस्य बनाये गये।

पशुपालन--२,६१४ पशुप्रों की विकित्सा की गई, ६८ बख़रे बितया हुये, २६० देशी मुर्गे हटाये गये, १५ पशु गोसदन भेजे गये तथा व्रपश् प्रदर्शनियां प्रायोजित की गई।

जनस्वास्थ्य— मनवीन श्रादर्श क्यों का निर्माण हुन्ना, मपुराने कृन्नों का जीलींद्वार हुन्ना, २३३ कुवे कीटाणु रहित किये गये, २६५ पानी के सीख्ने बने, ३१६ मकानी का सुधार किया गया, २७४ रोशनदान लगे, ३,६१६ घरों में डी० छी० टो० का छि काब दुन्ना, २५ गड़न्जे व नालियां बनीं, ११ टट्टियों व १६४ धूम्न रहित चूल्हों का निर्माण हु म, ३,०५४ रोगियों की चिकित्सा ग्राम सेवकों द्वारा की गई।

सहकारिता—१६७ नये सदस्य भर्ती किये गये, १३,६०८ र० हिम्मे की प्ंजी तथा १२,००० श्रमानत को पूंजी जमा की गई, ३,१४,६०० र० श्रटण वितरित किया गया तथा २,४७,४६० र० कर्जे की वसूली की गई। प्राम रामपुर में ४ हिम्जिनों की गृठ निर्माण हेतु ६०० र० श्रमुदान दिया गया तथा १ गृह उद्योग समिति की स्थापना की गई।

पंचायत—-१३,३४०.१८ रु० पंचायत कर की वसूली हुई, ३६ मील १ फर्नांग सड़क की मरम्मत की गई, ८४४ पंचायतों की बैठकें हुई।

शिक्षा एवं समाज शिक्षा—तीन बाल-क्रीड़ा केन्द्र, ७ सामाजिक मिलन केन्द्र, १० प्रौढ़ स्कून, ३ पुस्तकालय एवं वाचनालय, १ नाद्य मंडली, ४ युवक दल की स्थापना की गई। ग्राम शहीद नगर में भारत सेवक समाज का एक सप्ताह का शिविर चलाया गया, ५२ ग्राम सहायक व ४ महिलाओं को दृक्ष्य-दर्शन के हेतु इटावा, मयुरा, श्रागरा, सहारनपुर ग्रादि जिलों में ले जाया गया।

श्ररूप बचत योजना--प्रत्प बचत के ग्रन्तर्गत ४०,१८६ रु० जमा कराया गरा जिसमे ४७,००० रु० बाल बचत के ग्रन्तगत जमा हुन्ना।

" नत्थियां

विकास खंड कदौरा के लिये जो इस वर्ष धन का प्राविधान किया तथा वर्व किया गया इसकी तालिका निम्न प्रकार से है:

मद मद	प्रावि <b>था</b> न	धन जो खर्च हुग्रा	टिप्यणी 
	रु०	₹ο	
१वेतन तथा भत्ता	४७,३३०.००	३४,०९७.६४	जनस्वास्थ्य, पशु- पालन, महिना मंगत ले कार्य- कर्ताम्रों को विजम्ब से नियु- क्रिन के कारण धन व्यय नहीं हो सका।
२विदिध प्रामंगिक	४,२६४.००	४,२६४.००	4-
३कृषि श्रनादर्तक प्रासंगिक	₹,०००,००	२,०००.००	
४पशुपालन ग्रनाव्रतंक	३,०००.००	કે,૦૦૦૦૦	
५ऋण यरुर्यामचाई योजना	₹७,०००.०० 	२७,०००.००	४६ व्यवितयों को बन्धो पींम्गंग सेट व कूप निर्माण हेतु धन दिया गया।
६—-जनस्वास्थ्य प्रासंभिक 🕠	8,000.00	8,000.00	
७जिला प्रासंगिक तथा म्रान-			
रेरिया	११,२००.००	१०,०००.००	शेष धनराशि शोघ्र हो व्यय हो ज(ने की संनावना है।
८—समाज शिक्षा प्रासंगिक तथा ग्रानरेरिया	१२,६६०.००	१०,००७.०७	
६लघु उद्योग	3,000.00	8,800.00	, ,, ,,
योग	१,२५,७५५.००	६७,२६२.६४	_

### अनुवान की विविध मदों पर जो व्यय हुआ उसकी तालिका :

मद		प्राविधान	धन जो खर्च हुग्रा	टिप्पर्ण
المناسبة بينية منطقة طبيعة وينشية لتحميم الكلفية المناسبة فينيف فينفط طبيعة كلفية منطقة المناسبة وينيف عليك طب		<b>হ</b> ৹	₹०	
१कृषि		४,०००.००	• •	
२पशुपालन	• •	२,०००.००	• •	
३ प्रत्प सिचाई योजना	• •	१,०००.००	• •	
४जनस्वास्थ्य	• •	9,000.00	२१,३४७.००	
५स्कूल एवं पंचायत घर	• • .	४,०००.००	₹,१≂६.००	
६यातायात	• •	٧,000.00	४,२३४.००	
योग	• •	28,000,00	२६,७६८,००	ع شبح هجمه وحمد ه

कृषि तथा पशु-पालन हेतु कोई प्रार्थना-पत्र प्राप्त नहीं हुये, इसलिये कोई भी व्यय सम्भव नहीं हो सका, इस दिशा में भी प्रयत्न किया जा रहा है और प्राशा है कि शीघ्र ही उक्त मवों का धन सामुहिक उद्यानों, वनों, कृषि यन्त्रों, कुक्कुट शालाओं ध्रादि पर व्यय हो जावेगा। जन-स्वास्थ्य तथा यातायात में प्राविधान से ग्रधिक जो व्यय हुन्ना है वह पूर्व वर्षों के प्राविधान से किया गया है। पंचायत घर व स्कूल हेतु शेश धन का भी व्यय ग्रतिशीघ्र हो जावगा। नित्थयां २१६

# (देखिये तारांकित प्रक्त ७४ का उत्तर पीछे पृष्ठ १३० पर)

### सुची ''ख''

विकास खंड शुठौंद, जिला जालौन में सन् १६५६ में मुख्यतः खरीफ व रवी स्रभियान चलाया गया जिसके छन्तर्गत ६ सामूहिक धान के पौध गृह लगाये गये। १२ स्रादर्श कुयें बनवाये गये, २ पुलियों का निर्माण फिया गया, १५ बहुबंधी भवनों का निर्माण शुरू कराया गया एवं सामूहिक वाग तग्याया गया, १ खड़ंजा पूरा कराया गया, ३ पक्की नालियां बनवाई गईं तथा ४ सामूहिक पशुरात्नायें पूर्ण कराई गईं। इसके स्रक्षाया स्रत्य कराई योजना हे स्रन्तर्गत ६७ बंधियां बनवाई गईं। १ सिंचाई के कुयें का निर्माण व १ की घरम्स्रत कराई गई।

इस िकास खंड को जन् १९५६ में अनुदान के कार्यों के लिये ४८,००० ६० प्राप्त हुआं श्रीर दिसम्बर, १६५६ तक २०,२६२ ६० अनुदान के कार्यों में खर्चा हुआ, जिसमें से ७,४२७ ६० ४८,००० ६० में से खर्च हुए और १२,८६१ ६० पिछले शालों के बचे हुए धनराशि से खर्चा किये गये। सन् १६५६ की धनराशि में से दिसम्बर सन् १६५६ के अन्त तक ४०,५७३ ६० शेष रहे। इसका फारण घह है कि यह धनर दि जून के दूसरे पखवारे में प्राप्त हुई जबकि काश्तकार खरीफ के कार्य में व्यस्त हो चुके थे सथा नवस्वर, १६५६ तक व्यस्त रहे। दिसम्बर से नये कार्य लिये गये और उल्मीद है कि इन बित्तीय वर्ष के अन्त एक इसमें से काफी धनराशि व्यय हो चुकेगी। सन् १६५६ ई० में जो २०,२६२ ६० खर्च हुये वह मुख्यतः पिछले अधूरे कार्यों को पूरा कराने में खर्च हुए।

सन् १६५६ ई० में १६,००० ६० श्राल्य सिंचाई योजना के श्रन्तर्गत ऋण के रूप में बांटे गये तथा २५० ६० की सिंवर्जः सिंचाई के कुछें पर दी गई। इसके श्रलावा इस वर्ष ४,२०० ६० इस कार्य के लिये श्रीर प्राप्त हुये, जिनकें से दिसम्बर सन् १६५६ तक कोई खर्च नहीं किया जा सका क्योंकि जिन कार्यों के लिये कर्जा बांटा गया था वह नवम्बर तक पूर्ण नहीं कराये जा सके, उनकी पूर्ति के प्रमाण-पत्र दिसम्बर, १६५६ प जनवरी, १६६० में प्राप्त हुए श्रीर श्रब मार्च सन् १६६० तक यह सम्पूर्ण धनराज्ञि व्यय होने की श्राज्ञा है।

### नत्थी 'च'

(देखिये तारांकित प्रक्त ७५ का उत्तर पीछे पुष्ठ १३० पर)

# सूची "ग

विकास क्षेत्र रामपुरा का उद्घाटन १-४-५६ को हुन्रा, इस समय में इस क्षेत्र को २४,००० क० ग्रल्प सिंचाई साधनों के हेतु कर्ज के रूप में एत्र २४,५०० क० ग्रनुदान स्वरूप विभिन्न कार्यो जैसे २,००० क० कृषि, ५०० क० पशुपालन, ७,००० क० स्वास्थ्य एवं सफाई, ४,००० क० शिक्षा, १,००० क० समाज शिक्षा तथा १०,००० क० यातायात साधनों के हेतु प्राप्त हुन्रा।

२४,००० रु० जो कर्ज के रूप मे प्राप्त हुये उनमें से २२,७०० रु० ६५ बन्धी निर्माण हेतु एवं १,३०० रु० सिंचाई कूप निर्माण हेतु दिसम्बर, १९५९ तक खर्च किया गया।

जहां तक प्रश्न श्रनुदान को धनराशि का है ए०जी०, यू०पी० से इस रुपये को व्यक्तिगत लेखे में डालने की श्राज्ञा माह नवम्बर के श्रन्त में श्राई श्रतः इसका खर्च माह दिसम्बर तक नहीं हो सका फिर भी निम्न कार्यों के हेतु धनराशि स्वीकृत हो चुकी थीः

				स्वीकृत धनराशि
				₹०
खाद के गड्ढे	••	50	••	२,०००.००
मुर्गी पालन केंद्र	••	२	**	800.00
कूप निर्माण एवं जीर्णोद्धार	**	१०	••	9,000.00
बहुषंधी भवन हेतु	••	१	**	8,000.00
स्कूल भवन	**	४	••	8,000.00
पुलिया निर्माण	••	હ	**	४,००० ००
नाली निर्माण	••	१	••	850.00
			योग	<b>१</b> ६,5२०°००

चालू वित्तीय वर्ष ३१ मार्च, १६६० में समाप्त होगा। ग्रतः दिसम्बर, १६५६ में क्षेत्र की बची रकम का उपभोग मार्च, १६६० तक करने की चेष्टा की जायगी। **म**िथ्यां

२२१

# नत्थी 'छ'

(देखिये तारांकित प्रश्न ७६-७७ का उत्तर पीछे पृष्ठ १३०-१३१ पर) भारत सरकार द्वारा भेजी गई योजना के मुख्य तथ्य तथा चालू किये जाने की सूचना

१—उपाध्यक्ष ग्रन्तरिम जिला परिषद् व क्षेत्र विकास समिति के उप समितियों के ग्रध्यक्षों के ग्रध्ययन शिविर—

इस प्रदेश के उपाध्यक्ष ग्रन्तरिम जिला परिषद् व क्षेत्र विकास समिति की उप-समितियों के ग्रध्यक्षों को भारत सरकार के केन्द्रों पर समय-समय पर प्रशिक्षण हेतु भेजा जायगा । प्रशिक्षण की ग्रविध ६ दिन की है। यात्रा व्यय तथा रहने व भोजन इत्यादि की व्यवस्था भारत सरकार द्वारा की जाती है। इसका एक शित्रिर जो प्रथम था ३ फरवरी सन् १६६० से देहरादून केन्द्र पर किया गया था, जिसमें इस राज्य सरकार के ३ उपाध्यक्षों ने प्रशिक्षणपाया।

२--खंड विकास समितियों के गैर सरकारी सदस्यों का प्रशिक्षण--

यह योजना इस प्रदेश में १७ नवम्बर, १६५६ से चालू की गई है। खंड विकास सिमितियों के समस्त गैर-सरकारी सदस्यों के प्रशिक्षण निमित्त इस वित्तीय वर्ष में १५ प्रशिक्षण केन्द्र राज्य की विभिन्न गैर-सरकारी संस्थाय्रों में खोले जा चुके हैं। इन प्रशिक्षण केंद्रों पर १७ नवम्बर, १६५६ से इन सदस्यों का प्रशिक्षण बराबर चल रहा है और ११ मार्च, १६६० तक चलता रहेगा। इस ग्रविध में लगभग ११ शिविर प्रत्येक संस्था में होंगे। प्रत्येक शिविर दिवस का होगा। ग्रव तक लगभग ५,००० सदस्य प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके है।

३--संसद के सदस्यों तथा विधान सभा व परिषद के सदस्यों के ग्राध्ययन शिविर--

इस योजना के ग्रन्तर्गत संसद के सदस्यों व विधान सभा व परिषद् के सदस्यों के ग्रध्ययन के निमित्त शिविरों (स्टडी कैंम्प) का ग्रायोजन किया जायगा। इसके ग्रितिरिवत भारत सरकार ने सरकारी तथा गैर-सरकारी कार्यकर्ताग्रों के ग्रिभिनवीकरण (ग्रोरियन्टेशन) प्रशिक्षण एवं स्टडी कोर्स की ग्रत्पकालीन योजना का ग्रायोजन किया है।

इन योजनाम्रों के म्रन्तर्गत सरकारी कर्मचारियों के साथ-साथ म्रन्तरिम जिला परिषदों के म्राध्यक्षों, खंड विकास समितियों, सहकारी समितियों, पंचायत समितियों भ्रौर विधान सभा व विधान परिषद् तथा संसद के ऐसे सदस्यों को भी प्रशिक्षण शिविर में सिम्मिलित करने का विधान रखा गया है जो विकास कार्यों के प्रति रुचि एवं उत्साह रखते हैं।

श्रोरियन्टेशन कोर्स का समय १।। मास श्रौर स्टडी कोर्स का समय ३ सप्ताह का रखा गया है। यह कोर्स भारत सरकार के विभिन्न श्रोरियन्टेशन सेंटर्स पर श्रायोजित किये जाते हैं। इन शिविरों का मुख्य उद्देश्य सामुदायिक विकास योजना के सिद्धांत, दर्शन, कार्य-कम श्रौर नवीनतम कार्य प्रणाली से गैर-सरकारी सदस्यों को श्रच्छी प्रकार परिचित करा देना है। सरकारी श्रौर गैर सरकारी कार्यकर्ताश्रों को वहां साथ-साथ मिल बैठ कर बात करने, सोचने-विचारने श्रौर श्रनुभवों का श्रादान-प्रदान करने का श्रवसर मिलता है।

इन शिविरों में सिम्मिलित होने वाले गैर-सरकारी सदस्यों को भारत सरकार द्वारा प्रशिक्षण केंद्रों तक जाने श्रीर वहां से लौटने के लिये यात्रा भत्ता दिया जाता है श्रीर शिविर की श्रविध में उन्हें १०० रु० प्रतिमाह प्रासंगिक भत्ता भी दिया जाता है। ट्रेनिंग पाने वाले गैर-सरकारी कार्यकर्ताश्रों की संख्या समय-समय पर केंद्रीय सरकार का सामुदायिक विकास व सहकारिता मंत्रालय ही निर्धारित करता है आँ। र उसी के अनुमार उन्हें विभिन्न केंद्रे। से भेजने की व्यवस्था विकास आयुक्त द्वारा की जाती है। शिविर की प्रवर्ग ने ति गर क्रियारी कार्यकर्ताओं को अध्ययन आदि के लिये बाहर ले जाने काशी कि क्रिया कार्यकर्ताओं मार्ग व्यय भी इन्हें दिया जाता है।

इस प्रकार के इस वर्ष दो ऐसे श्रोरियन्टेशन श्रार दो या । सं राजाता (जिसमें गैर-सरकारी सदस्यों को भेजा गया था।

### ४--योजना संख्या १ के तारे गे---

जिला परिषद् के उपा क्षी व क्षेत्र विकास माजिया है तर हो। हाथ यक्षी की एक पत्र भेजा गया ह जिसमे रास प्रशिक्षण के जारे के लिए कार माता करी है। जिन जिन सदस्यों की राय प्राती जाती ह उनकी एउ स्विति हार है। हा कार कर असे-ासे भारत सरकार द्वारा इन सदस्यों के भजारे के निमित्त अविकास त हरा अ त करों पितिशण हेनु भेज दिया जायगा।

### ५--योजना संख्या २ व ३ के बारे रो---

समस्त दल के नेता प्रो को एक था। शासकीय पान ना री (नियान) में इस्ताक्षरों से नाम मागने के लिये सेजा जा चुरा है कि वे प्रथने दावे से जा नाम जो उन को सेंस में भाग लेना बाहे भेज दे। दून रार्ड-शा ती पित्र कि प्रश्नित कि प्राप्त के रामस्त जिलाधोशों, समस्त प्रतिरिद्ध जिलाधोशों (नियोज ।), िता नियो के प्रिमारिया को भेजा गया है। इन जिलो से जो नाम प्राप्त हुये ह इनकी एक लिस्ट तैयार भी गई है भ्रोर इस लिस्ट से सदस्य प्रशिक्षण में भेजे जाते है।

नत्थी 'ज' (देखिये तारांकित प्रश्न ८३ का उत्तर पीछे पृष्ठ १३१ पर)

तालिका जिसमें वर्तमान सीजन में इस प्रदेश में नवम्बर, दिसम्बर, जनवरी व फरवरी में चीनी मिलों की सामहिक रिकवरी तथा हरहोई स्प्रौर बाजपुर मिलों की उपरोक्त महीनों में स्रलग-स्रलग रिकवरी का विवरण दिया गया है।

ऋम-	<b>5</b>	रिकवरी का ।तिशत नवम्बर,	दिसम्बर,	जनवरी,	फरवरी,१६६० (७ फरवरी,
संस्था		3838	१६५६	१६६०	१६६० तक)
	ন্য	، سے کا جب سے نیں میں ہوتا سے سے پہ		ر میں میں سی سی سے سے	والمراجعة والباد الثلثاث فيشر وبين رسي سبق وسند الانت
मिलों की सामूहिक		इ.२७	इ.६२	€.3∘	<b>দ.३</b> ७
२हरदोई		દ.૧પ્ર	१७.3	6.55	x3.3
३बाजपुर		5.35	<b>द.३२</b>	5.50	द. <i>७३</i>

### नत्थी 'झ'

# (देखिये तारांकित प्रश्न ६५ का उत्तर पीछे पृष्ठ १३२ पर) समय सारिणी, झांसी-माताटीला बांध

गाड़ी संख्या यू ०एस०जी० १७६६, यू ०एस०जी० ११५८, यू ०पी० ग्रार० ३६७५, यू ०एस० जी० १४१२, यू ०पी०पी० ५७६, ग्रौर यू ०एस०जी० १३४१।

झांसी छूटना	माताटीला पहुंचना यदि बस बरोरा होकर पास ह	यदि बस सुकतान होकर पास ह
५,०० ए०एम०	११.३० ए०एम०	१२.०० दोपहर
११.०० ए०एम०	२.३० पो०एम०	३.०० पी०एम०
१२.३० पी०एम०	४.०० पो०एम०	४.३० पी०एम०
२.३० पी०एम०	५.०० पो०एम०	प्र.३० पो०एम०
४.३० पी०एम०	<b>८.०० पो०एम०</b>	<b>५.३० पीर्णम</b> ०

### म।ताटीला-झांसी

माताटीला छूटना	श्चांसी पहुंचना	श्रगर बरा सुकवान होकर, जाना स्वीकृत (पास) है
७.०० ए०एम०	१०.३० ए०एम०	११.०० ए०एम०
७.४५ ए०एम०	११.१५ ए०एम०	११.४५ ए०एम०
<b>८.१५ ए०एम०</b>	११.४४ ए०एम०	१२.१५ पी०एम०
२.३० पी०एम०	६.०० पी०एम०	६.३० पी०एम०
४.३० पो०एम०	८.०० पी०एम०	द.३० पी०एम <b>०</b>

झांसी-माताटीला वाया बरोरा या सुखवा डुखवा की सारी गाड़ियां बारी-बारी से उपरोक्त समय पर चलेंगी।

इस समय सारिणी की एक प्रतिलिपि गाड़ी के ग्रन्दर रखी जायगी।

#### नत्थी 'ङा'

### (देखिये तारांकित प्रक्त ६७ का उत्तर पीछे पृष्ठ १३३ पर)

- १—- प्रवध शुगर मिल्स, हरगांव से निकलने वाले गन्दे पानी की जांच रिपोर्ट से बोर्ड को ज्ञात हुआ कि उसमें Bio-Chemical Oxygen Demand (B. O. D.) की मात्रा Factory Effluents Enquiry Committee द्वारा अभिस्तावित मात्रा से बहुत अधिक है। फैक्ट्री को B. O. D. कम करने को लिखा गया। फैक्ट्री के प्रबन्धकों ने गन्दे पानी की पुनः जांच करके एक जांच रिपोर्ट (analysis report) फरवरी मास में भेजी है जिस पर बोर्ड अपनी अगली बैठक में विचार करके आवश्यक कार्यवाही करेगा।
- २--हिन्दुस्तान शुगर मिल्स, गोला के प्रबन्धक ने भी गन्दे पानी के व्ययन का मानचित्र व जांच रिपोर्ट बोर्ड को भेजा था। उससे यह पता चला कि फॅक्ट्री का एपलुयेट ठीक नहीं है। फॅक्ट्री के प्रबन्धकों ने बोर्ड को यह बताया कि एपलुयेट (Fffluent) को ठीक करने (treat) के लिये Tarula Yeast Plant वे शीझ लगाने जा रहे है जिससे Effluent ठीक हो जायेगा श्रौर हानिकारक नहीं रहेगा। इस पर विचार करने के बाद बोर्ड ने निश्चय किया कि फॅक्ट्री को शीझ Tarula Yeast Plant लगाने को कहा जाय। कुछ कठिनाइयों के कारण कारखाना के प्रबन्धक Plant नहीं लगा सके श्रौर उन्हें कुछ श्रौर मुहलत दी गई है।

नत्थी 'ट' (देखिये तारांकित प्रक्त १०२ का उत्तर पीछे पृष्ठ १३४ पर)

जिले का नाम		उन नेताश्रों के नाम जिनकी मूर्तियां स्थापित करने की मांग सरकार के पास श्राईं
~ १झांसी	• •	महारानी लक्ष्मीबाई
२कानपुर (बिठूर)	• •	नाना साहब
३कानपुर	• •	तात्या टोपे
४इलाहाबाद	• •	१——चन्द्र शेखर श्राजाद, २—–पं० मदन मोहन मालवीय।
५वाराणसी	• •	राजा चेत सिंह
६—–बलिया	• •	श्री मंगल देव पांडे
৩ <del></del> -ভন্নাব	• •	श्री राव राम बख्दा सिंह
द्र––कानपुर (शिवराजपुर बिल्हौर) ।	••	राजा सती प्रसाद
६म्राजमगढ़	• •	१——महारानी लक्ष्मीबाई, २——सुभाषचन्द्र बोस
१०—फतेहपुर (खागा)		ठाकुर दरियाव सिंह

नत्थियां

### नत्थी 'ठ'

(देखिये तारांकित प्रक्त ११४ का उत्तर पीछे पृष्ठ १३६ पर) १६६०-६१ के दौरान में रोडवेज द्वारा स्ननन्य रूप से गाड़ियां चलाने के निमित्त ग्रिधिकार में लेने के लिये स्वीकृत मार्गी की सूची

### श्रागरा रोजन

- (१) एटा-मैनपुरी (क) एटा-पैवारा ।
- (२) भ्रलीगढ़-खैर-टप्पल (क) सोमना-खैर-गोमट-नौझील।
- (३) मथुरा-कामा-कोसी ।
- (४) मथुरा-ग्रलवर ।
- (५) सादाबाद तथा जलेसर होकर एटा-मथुरा।
- (६) देवई होकर श्रलीगढ़-श्रनूपशहर ।

### इलाहाबाद रीजन

- (७) मिर्जापुर-घोरावल ।
- (८) सुल्तानपुर-कोरोपुर।
- (६) जौनपुर-शाहगंज (क) जौनपुर-रामनगर।
- (१०) जौनपुर-केराकत ।
- (११) राबर्ट्सगंज दुधी-विध्ययगंज।

### बरेली रीजन

(१२) धनेटी तथा शाही होकर बरेली-शीशगढ़।

### गोरखपुर रीजन

- (१३) बहराइच-जरवल ।
- (१४) श्राजमगढ़-श्रजमतगढ़।
- (१५) भ्राजमगढ़-निजामाबाद।
- (१६) शाहगंज-दोस्तपुर।

### कानपुर रोजन

- (१७) कानपुर-वेला-विधूना।
- (१८) राठ-हरपालपुर।
- (१६) कानपुर-राठ
  - (क) चरलारी-हमीरपुर वाया-मश्करा,
  - (ल) चरलारी-हमीरपुर-वाया गहरोली-इमीलिया, (ग) राठ होकर् मझगांव-हमीरपुर,

  - (घ) मशकरा होकर राठ-मौदहा।
- (२०) महोबा-खजराहो ।
- (२१) महोबा-चयक्ताकी-।

## लात्य- मीत्रा

- (२२) इचोई-इस
- (२३) \_ान्त-स्य तर
  - ( ं) वारावर्का-रुगाः,
  - ( । ) बाराव भे- । ने शप्र,
  - (ग) नाराव हो-वटादेवा ।
- (२४) नानक्र नाराना

# उत्तर प्रदेश विवान सभा

# शुक्रवार, ११ मार्च, १६६०

विधान सभा की बैठक सभा-मण्डप, लजनऊ में ११ बजे दिन में उत्ताध्वक्ष, श्री रामनारायण त्रिपाठी, की ग्रध्यक्षता में ग्रारम्भ हुई।

### उपस्थित सदस्य---३६७

श्रक्षयवर्रासह, श्री ग्रजीज इमाम, श्री श्रतीकुल रहमान, श्री भ्रनन्तराम वर्मा, श्री श्रब्दुल रऊफ लारी, श्री ग्रब्दुल लतीफ़ नोमानी, श्री ग्रब्द्रस्समी, श्री श्रभयराम यादव, श्री ग्रमरनाय, श्री श्रमोलादेवी, श्रीमती श्रयोध्याप्रसाद ग्रार्य, श्री श्रवघेशकुमार सिनहा, डाक्टर श्रवधेशचन्द्रसिंह, श्री श्रवधेशप्रतापसिंह, श्री ग्रहमद बख्रा, श्री म्रात्माराम पांडेय, श्री इन्दुभूषण गुप्त, श्री इरतेचा हुसैन, श्री इस्तफ़ा हुसैन, श्री उग्रयन, श्री उदयशंकर, श्री उमाशंकर शुक्ल, श्री उल्फर्तासह, श्री ऊदल, श्री एस० ग्रहमद हसन, श्री श्रोंकारनाथ, श्री कन्हेयालाल वाल्मीकि, श्री कमरुद्दीन, श्री कमलकुमारी गोईंदी, कुमारी कमलापति त्रिपाठी, श्री कमलेशचन्द्र, श्री

कल्याणचन्द मोहिले, श्री कल्याणराय, श्री कामताप्रसाद विद्यार्थी, श्री काली वरण ग्रगवा न, श्री काशीत्रसाद पाडेय, श्री किशनसिंह, श्री कूंवरकृष्ण वर्मा, श्री कृपाशंकर, श्री केशभान राम्भी केशव पांडेय, श्री केशवराम, श्री कैलाश कुनार सिंह, श्री कैलाशनारायण गप्त, श्री कैलाशप्रकाश, श्री कैलाशवती, श्रीमती कोतवालसिंह भदौरिया, श्री खजानसिंह चौघरी, श्री खमानी सिंह, डाक्टर खयालीराम, श्री लुशीराम, श्री खुर्बासह, श्री गंगाघर जाटव, श्री गंगाप्रसाद, श्री (गोंडा) गंगाप्रसादसिंह, श्री गजेन्द्रसिंह, श्री गज्जुराम, श्री गणेशप्रसाद पांडेय, श्री गनेशचन्द्र काछी, श्री गनेशीलाल चौधरी, श्री गयात्रसाद, श्री गयाबस्शसिंह, श्री

ग्रयर ग्रली खां, भी गरीबदास, श्री गिरघारीलाल, श्री गुप्तारसिंह, श्री गुरुप्रसादसिष्ठ, श्री गुलाबसिंह, श्री गेंदादवी, श्रीमती गोकुलप्रसाद, श्री गोवाली, श्री गापीकृष्ण श्राजाद, भी गोविन्दींसह विष्ट, श्री गौरीराम गुप्त, श्री गौरीशंकर राय, श्री घनक्याम डिमरी, श्री घासीराम जाटव, श्री चन्द्रजीत यादव, श्री चन्द्रदेव, श्री चन्द्रबली शास्त्री ब्रह्मचारी, श्री चन्द्रसिंह रावत, श्री चन्द्रहास मिश्र, श्री चन्द्रावती, श्रीमती चन्द्रिकाप्रसाद, श्री चरणसिंह, श्री चित्तर्रासह निरंजन, श्री चिरंजीलाल जाटव, श्री छत्तरसिंह, श्री छेदीलाल, श्री छोटेलाल पालीवाल, श्री जंगबहादुर वर्मा, श्री जगदीशनारायण, श्री जगदीशनारायणदत्त सिंह, श्री जगदीशप्रसाद, श्री जगदीशशरण ग्रग्नवाल, श्री जगन्नाथ चौघरी, श्री जगन्नाथ प्रसाद, श्री जगन्नाथ लहरी, श्री जगपतिसिंह, श्री जगमोहनसिंह नेगी, श्री जगवीर्रासह, श्री जमुनासिह, श्री (बदायूं) जयगोपाल, डाक्टर जयदेव सिंह ग्रार्य, श्री जयराम वर्मा, श्री जवाहरलाल, श्री जवाहरलाल रोहतगी, डाक्टर

जागेश्वर, श्री जगलिकशोर, श्राचार्य जोखई, श्री ज्वालाप्रसाद कुरील, श्री झारखंडेराय, श्री टीकाराम, श्री (बदायूं) टोकाराम पुजारी, श्री ड्ंगरसिंह, श्री ताराचन्व माहेश्वरी, श्री ताराबेकी प्रावटर तिरमर्लासह, श्रो तेजबहावुर, श्री तेजासिंह, श्री दत्त,श्री एस० जी० दशरयप्रसाद, श्री वाताराम चोधरी, श्री दोनदयालु करण, श्री दीनदयालु शर्मा, श्री बीनदयाल शास्त्री, श्री दीपंकर, श्राचार्य वीपनारायणमणि त्रिपाठी, श्री वुर्योधन, श्री वेवनारायण भारतीय, श्री वेवराम, श्री वेवीप्रसाद मिश्र, श्री द्वारकाप्रसाद मित्तल, श्री (मुजयफरनगर) द्वारिकाप्रसाद, श्री (फर्रुखांबाद) द्वारिकाप्रसाद पांडेय, श्री (गोरखपुर) धनीराम, श्री धनुषधारी पांडेय, श्री धर्मदत्त वैद्य, श्री धर्मपालसिंह, श्री धर्मसिह, श्री नत्थाराम रावत, श्री नत्यूसिंह, श्री (बरेली) नत्थूसिह, श्री (मनपूरी) नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ, श्री नन्दराम, श्री नरदेवसिंह दतियानवी, श्री नरेन्द्रसिंह भंडारी, श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट, श्री नवलकिशोर, श्री नागेश्वरप्रसाद, श्री नारायणदत्त तिवारी, श्री नारायणवास पासी, श्री

नेकराम शर्मा, श्री पद्माकरलाल श्रीवास्तव, श्री पव्बरराम, श्री परमानन्द सिनहा, श्री परमेश्वरदीन वर्मा, श्री प्रकाशवती सुद, श्रीमती प्रतापबहादुर्रासह, श्री प्रतापभानप्रकाशसिंह, श्री प्रतापसिंह, श्री प्रभावती मिश्र, श्रीमती प्रभुदयाल, श्री फर्तेहसिंह राणा, श्री बंशीघर शुक्ल, श्री बलदेवसिंह, श्री बलदेवसिंह ग्रार्य, श्री बसंतलाल, श्री बादामसिंह, श्री बाबुराम, श्री बाबूलाल कुसुनेश, श्री बालकराम, श्री बालेक्वरप्रसादिसह, श्री बिन्दुमती दास, श्रोमती बिशम्बर्सिह, श्री बिहारीलाल, श्री बुद्धीलाल, श्री बुद्धीसिंह, श्री बुलाकोराम, श्री बुजबासीलाल, श्री बुजरानी मिश्र, श्रीमती बेचनराम, श्री बेचनराम गुप्त, श्री बेनीबाई, श्रीमती बेजूराम, श्री ब्रजनारायण तिवारी, श्री ब्रह्मदत दीक्षित, श्रो भगवतीप्रसाद दुबे, श्री भगवतीसिंह विद्यारद, श्री भगौतोप्रसाद वर्मा, श्री भजनलाल, श्री भीखालाल, श्री भुवनेशभूषण शर्मा, श्री भूपकिशोर , श्री मंजूरलनबी, श्री मयुराप्रसाद पांडेय, श्री मदनगोपाल वैद्य, श्री

मदन पांडेय, श्री मदनमोहन, भी मन्नालाल, श्रो मलखा । सिह, श्री मलिखानसिंह, श्री (मैनपुरी) महमूद ग्रली खां, कुंबर (मेरठ) महसूद ग्रली खां, श्री (रामपुर) महमूद हुसैन खां, श्री महादेवप्रसाद, श्री महोलाल, श्री महन्द्ररिपुदमर्नासह, राजा महेर्शासह, श्री माताप्रसाद, श्री मान्धातासिंह, श्री मिहरबानसिंह, श्री मुकुटिबहारीलाल ग्रग्रवाल, भी मुक्तिनाग राय, श्री मुबारक प्रली खां, श्री मुरलोधर, श्रो मुरलीघर कुरील, श्री मुल्लाप्रसाद 'हंस', श्री मुहम्मद सुलेमान श्रधमी, श्री मुहम्मद हुसैन, श्री मृलचन्द, श्री मोतोलाल ग्रवस्थी, श्री मोहनलाल, श्री मोहनलाल वर्मा, श्री मोहर्नीसह मेहता, श्री यमुनाप्रसाद शुक्ल, श्री यम् नासिंह, औं (गाजीपुर) यशपालतिह, श्री यशोदादेवी, श्रीमती यादवेन्द्रदत्त दुबे, राजा रऊफ जाफरो, श्री रघुनाथसहाय यादव, श्री रघुरनतेजबहादुरसिंह, श्री रघुवीरराम, श्री रघुवीरसिंह, श्री (एटा) रघुवीरसिंह, श्री (मेरठ) रणबहादुरसिंह, श्री रमाकांतसिंह, श्री रमानाथ खंरा, श्री रमेशचन्द्र शर्मा, श्री राजकिञ्चोर राव, श्री राजदेव उपाध्याय, श्री

राजनारायण, श्री राजनारायणसिंह, श्री राजिबहारीसिंह, भी राजाराम शर्मा, श्री राजेन्द्रकिशोरी, श्रीमती राजेन्द्रकुमारी, श्रीमती राजेन्द्रवत्त, श्री राजेन्द्रसिंह, श्री राजेन्द्रसिंह यादव, श्री रामग्रभिलाख, अ) रामिककर, भी रामकुमार वैद्य, श्री राम 🗠 ष्ण जैसवार, श्री राम इंडण सारस्वत, श्री रामचन्द्र विकल, श्री रामजीलाल सहायक, श्री रामजी सहाय, श्री रामदास श्रार्थ, श्री रामदीन, श्री रामनाथ पाठक, श्री रामपाल त्रिवेदी, श्री रामप्रसाद, श्री रामप्रसाद नौटियाल, श्री रामबली, श्री राममृति, श्री रामरतनप्रसाद, श्री रामरतीदेवी, श्रीमती रामलक्षण तिवारी, श्री रामललन, श्रो (वाराणसी) रामलखन मिश्र, थो रामलखर्नांसह, श्री (जौनपुर) रामलाल, श्रा रामवचन यादव, श्री रामशरण यादव, श्री रामसनेही भारताय, श्री रामसमझावन, श्रो रामसुन्दर पांडेय, श्री रामस्रतप्रसाद, श्री रामस्वरूप यादव, श्री रामस्वरूप वर्मा, श्रा रामहेर्तासह, श्री रामायणराय, श्री रामेश्वरप्रसाद, श्री रूमसिंह, श्री लक्ष्मणराव कदम, श्री

लक्ष्मणसिंह, भी लक्ष्म ना ायग, श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य, श्री लखमासिंह, श्री लालबहादुर, श्री लालबहाव्रसिंह, श्री लत्फ श्रली खा, भी वजरंगबिहारीलाल रावत, श्री वसी नक्वो, श्रो वासुदेव दाक्षित, श्री विचित्रनारायण शर्मा, श्री विद्यावती वाजपेयी, श्रीमती विनयलदमी समन, श्रीमती विशालसिंह, श्रा विश्वेश्वरानन्द, स्वामी वीरसेन, श्रा वीरेन्द्रशाह, राजा **त्र**जगो**न**ाल सक्ष्येता, ध्रो वजिवहारी मेहरोत्रा, श्री शंकरलाल, श्री शकृतलावेवी, श्रीमती शब्बीर हसन, थी शमसुल इस्लाम, श्री शम्भदयाल, श्रो र्घातिप्रपन्न दार्मा, श्रो शिवगोपाल तिवारो, श्री शिवप्रसाद नागर, श्री (खीरी) शिवमंगलसिंह, श्री शिवमूर्तिसिंह, श्री शिवराज**ब**हादुर, श्री शिवराम, श्री शिवराम पांडेय, श्री शिववचनराव, श्री शिवशंकरसिंह, श्री शिवशरणलाल भीवास्तव, भी शीतला प्रसाद, श्री शोभनाथ, श्री वयाममनोहर मिश्र, श्री श्यामलाल, श्री इयामलाल यावव, श्री श्रद्धा देवी ज्ञास्त्री, कुमारी भीकृष्ण ग्रेयल, भी श्रानाय, श्रा (ग्राजमगढु) संग्रामसिंह, श्री सईद ग्रहमद ग्रन्सारी, श्री

सजीवनलाल, श्री सत्यवती देवा रावल, श्रामती सम्पूर्णानन्द, डाक्टर सरस्वतीदेवो शुक्ल, श्रीमती सियादुलारी, श्रीमती सीताराम, डाक्टर सीताराम शुक्ल, श्री सुक्लनलाल, श्रा सुबराना देवी, श्रामती सुखरामदास, श्रः सुंखलाल, श्रं। सुंबीराम भारतीय, श्रा सुदामात्रताद गोस्वामी, श्रो सुनीता चोहान, श्रामतो सुन्दरलाल, श्री सरयबहादुरशाह, श्रं। सुरेन्द्रदत्त<sup>ं</sup> वाजपेयी, श्री सुरेन्द्रसिंह, राजकुमार

सुल्तान श्रालम खां, श्रो सूर्यंबली पांडेय, श्री सोहनलाल घुसिया, श्री हमीवुल्ला खां, श्री हरकेशबहादुर, श्री हरदयालसिंह, श्री हरदयाल सिंह विपल, श्री हरदेवसिंह, श्री हरिदत्त काण्डपाल, श्री हरिशचन्द्रसिंह, श्री हरिहर बख्श, श्री हरीशचन्द्र ग्रष्ठाना, श्री हरोसिंह, श्री हलीमुद्दीन (राहत मौलाई), श्री हिम्मत सिंह, श्री हुकुर्मासंह विसेन, श्री होरीलाल यादव, श्री

नोट :--सार्वजनिक निर्माण उप-मंत्री, श्री महावीरसिंह, भी उपस्थित थे ।

## प्रश्नोत्तर

## शुक्रवार, ११ मार्च, १६६० ग्रल्पसूचित तारांकित प्रक्न

लच्छीपुर, जिला वाराणसी में कुये से लाशें निकालने में विलम्ब होना

\*\*१—श्री लक्ष्मणराव कदम (जिला झांसी) तथा श्री राजनारायण (जिला वाराणसी—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि ग्रभी हाल ही में ग्राम लच्छीपुर (वाराणसी) में एक कुयें में कुछ मजदूरों के दब कर मर जाने की जो दुर्घटना हुई है उसकी लाशें कब निकाली गईं?

स्वायत्त शासन उपमंत्री (श्री जयराम वर्मा)—लाशें १ मार्च, १९६० को निकाली गर्यो।

श्री राजनारायण—श्रीमन्, मैं एक स्पष्टीकरण चाहता हूं। इसमें माननीय लक्ष्मणराव कदम श्रौर हमारा भी प्रक्षन मिला दिया गया है। मैंने श्रपने प्रक्षन में दिया था गांव न्यायपुरा, पोस्ट धनसरा, क्या यह उसी प्रक्षन से सम्बन्धित है?

श्री उपाध्यक्ष--हां, यही समझकर मिलाया गया है, मेरा ख्याल है।

श्री जयराम वर्मा—इसमें लच्छीपुर लिखा हुन्ना है। यह गांव लुच्चेपुर है या लच्छीपुर है, भटौली के पास गांव है।

श्री राजनारायण—यानी २० तारीख को कुग्रां खोदते समय जो वाराणसी में हरौवा के पास श्रादमी दब गये थे, उन्हीं से सम्बन्धित है ?

श्री जयराम वर्मा--जी हां।

श्री राजनारायण---क्या सरकार स्पष्ट करेगी कि २० फरवरी को श्रीहमी बहां पर दबे उनको निकालने में १ मार्च तक की देरी क्यों हुई ?

स्वायत्त शासन मंत्री (श्री विचित्रनारायण शर्मा)—वह लोग जो कुएं के अन्दर दबे थे करीब २५ फिट मिट्टी के नीचे दब गये और कुयें में चारों तरफ से मिट्टी थ्रा गयी जो ज्यादातर रेतीली थी थ्रौर जिसमें पानी भी मिला हुआ था। काफी कोशिश की गयी निकालने की और परिश्रम करने के बाद ये निकल सके, जिसमें कि कई रोज तक काम किया गया एक दूसरा रास्ता बनाकर निकालने की कोशिश भी की गई। मिट्टी ज्यादा थी। सौभाग्य से वाराणसी जाने का मौका मिला और मैने डी० एम० से पूछा तो उन्होंने बताया कि काम ज्यादा जल्दी हो ही नहीं सका, जितनी मिट्टी निकालते थे उतनी हो और थ्रा जाती थी।

श्री राजनारायण—क्या सरकार को जानकारी है कि जब सही तरीके से काम किया जाना श्रारम्भ हुन्ना, उसके २४ घंटे के ग्रन्दर ही लाश निकल गर्यों?

श्री उपाध्यक्ष--सही तरीके से क्या मतलब हे?

श्री राजनारायण—-२० तारीख को श्रादमी दबे, तो जिस समय वहे थे, मुक्किल से ७ हाथ मिट्टी थी। सरकारी कर्मचारियों ने निकालने के बजाय पटवा विया।

श्री उपाध्यक्ष--- ग्राप यह पूछिये कि सरकारी कर्मचारियों ने कब कब काम जुह

श्री राजनारायण——जब २० तारीख को वह ग्रावमी वसे तो क्या यह सही है कि दमकल के कर्मचारियों ने कुएं के ग्रन्वर जाने से इनकार कर विया?

श्री विचित्रनारायण शर्मा--इसकी सूचना हमारे पास नहीं है।

श्री गौरीशंकर राय (जिला बिलया)—सरकार कृपया यह बतायेगी कि जैसा मंत्री की ने कहा कि बगल से दूसरी जगह से खोद कर निकालना पड़ा तो बगल से खोद कर निकालने का प्रयास किस तारीख को प्रारम्भ हुन्ना?

श्री विचित्रनारायण शर्मा--यह तो श्रीमन्, ३-४ विन के बाद करना पड़ा।

श्री लक्ष्मणराव कदम—क्या मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि उक्त मजदूरों के वारिसों को मुग्रावजा दिलाने की क्या व्यवस्था की गयी?

श्री विचित्रनारायण शर्मा—इसके लिये डी० एम० को कहा गया है। डी० एम० को सिफारिश करेंगे उस पर विचार होगा।

श्री शिवप्रसाद नागर (जिला खीरी)—माननीय मंत्री जी ने बताया कि ७०, ७४ फीट गहरे में से लाशें निकाली गईं। तो क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि वहां पर कितना गहरा वाटर लेविल है?

श्री विचित्रनारायण दार्मा---२५ फीट के करीब जमीन में वह दबी हुई थी थ्रौर जो जमीन दबी हुई थी वह काफी ज्यादा थी। पानी का लेविल ४०, ४५ फीट के करीब होगा।

श्री ऊदल (जिला वाराणसी)—माननीय मुख्य मंत्री जी ने कहा था कि इस पर १ हजार रुपया व्यय होगा। तो श्रब इस पर कितना रुपया व्यय हो चुका है, १ हजार ही या उससे ज्यादा?

श्री विचित्रनारायण शर्मा--उसका हिसाब ग्रभी नहीं ग्राया।

श्री राजनारायण—क्या सरकार इसको स्पब्ट करेगी कि जो दूसरा रास्ता बनाया गया वह किस तारीख को ग्रीर क्या उसमें किसी मशीन की ग्रावश्यकता पड़ी थी या वहां के लोगों ने, किसानों ने मिल करके, उस रास्ते को बना दिया?

श्री विचित्रनारायण शर्मा--श्रीमन्, मैंने कह दिया कि दूसरा रास्ता बनाने की कोशिश की गयी।

श्री उपाध्यक्ष--वह पूछते हैं कि किसने बनाया?

श्री विचित्रनारायण शर्मा--जो लोग वहां पर थे, श्रीमन्, उन्होंने बनाया। ग्रब किस ग्रावसी ने किया, यह कहना मुक्किल है।

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)——वे कौन-कौन मजदूर थे जिनकी दबने से स्रकाल-मृत्यु हो गयी।

श्री विचित्रनारायण शर्मा—इसका उत्तर में उसी रोज दे चुका था कि जो लोग कुग्रां लोद रहे थे उन्हीं में से मरे।

श्री उपाध्यक्ष--वे नाम श्रौर उनका पता पूछना चाहते हैं?

श्री विचित्रनारायण शर्मा--उनका नाम इस समय मालूम नहीं है।

श्री मदन पांडेय (जिला गोरखपुर)—क्या यह सत्य है कि कुन्नां जिस ढंग से खोदा जा रहा था वह डिफेक्टिव था श्रीर यदि यह सत्य है तो क्या मंत्री जी जांच करा कर कोई कुन्नां खुदवाने की नयी प्रणाली की रिसर्च करावेंगे?

श्री उपाध्यक्ष--यह लिखकर भेज दीजियेगा।

श्री राजनारायण—क्या सरकार को इस बात की जानकारी है कि मैं राजनारायण, स्वतः उस स्थान पर गया हुन्ना था श्रीर वहां की सारी घटना को जानकारी करके हमने सारी रपट की कि कौत-कौन लोग मरे श्रीर कित-किन के परिवार में कितने-कितने श्रीर कौन-कौन श्रादमी हैं, सब लिखकर गृहमंत्री जी को दे दी है?

श्री विचित्रनारायण शर्मा—श्रीमन्, राजनारायण जी से मुझे तो कोई प्रकाश नहीं मिला है।

श्री धनुषधारी पांडेय (जिला बस्ती)—क्या यह सही है कि पी० डब्लू० डी० के कुलियों के प्रयत्न से वह लाशें निकाली गई?

श्री विचित्रनारायण शर्मा--जी हां।

श्री गौरीशंकर राय—क्या मंत्री जी कृपया बतायेंगे कि पहले ४ दिन में जब जमीन खोदने में ग्रसमर्थता रही तो उसके बाद ४ दिन तक प्रतिक्षा होतो रही ग्रौर कोई प्रयास नहीं किया गया उस समय तक जब तक कि दूसरा रास्ता निकाला गया?

श्री विचित्रनारायण द्यमी—प्रतीक्षा तो नहीं की गयी। शुरू से ही कोशिदा की गयी श्रीर जब पहले तरीके में कामयाब नहीं हुए तो दूसरा तरीका श्रपनाया गया श्रीर पैसा मांगा गया। उसी वक्त यहां से उसको भेजा गया। वास्तव में कामयाबी नहीं हो सकी, यही दिक्कत है।

श्री रामस्वरूप वर्मा (जिला कानपुर)—क्या यह सही है कि जब सरकार का पहला तरीका कारगर नहीं हो सका श्रौर दमकल का इस्तेमाल नहीं हो सका तो तीन, चार दिन तक काम नहीं हुश्रा? श्री उपाध्यक्ष--वह तो कह ही रहे हैं कि प्रयत्न जारी रहा। श्री रामस्वरूप वर्मी--माननीय मंत्री उसको स्पष्ट कर दे।

/ श्री विचित्रनारायण | इार्मी — श्रोमन्, मैने बहुत स्पष्ट कह दिया है कि जब दमकल काम नहीं कर सका तो यहां से दूसरे तरीके के लिये पांच हजार रूपया जसे ही मागा गया भेजा गया। जो प्राइवेट पार्टी लगायी गयी वह भी कामयाब नही हुई। फिर पी० डबल्यू० डी० ने काम किया। सबने मिलकर काम किया उससे सफलता मिली।

## पूर्वी जिलों में श्रोलावृष्टि से क्षति

\*\*२-श्री रामसुन्दर पांडेय (जिला श्राजमगढ़), श्री काशीप्रसाद पांडेय (जिला सुल्तानपुर), श्री उग्रसेन, श्री प्रभुदयाल (जिला बस्तो), श्री ग्रमरनाथ (जिला गोरखपुर) तथा श्री ऊदल--क्या न्याय मन्त्री बताने की गृपा करेंगे कि प्रदेश के पूर्वी भाग में विशेषतः जौनपुर, श्राजमगढ़, बिलया श्रादि में ६-३-६० को भीषण श्राधी, पानी एवं श्रोला-वृष्टि से रबी की फसल बर्बाद हुई है?

स्वास्थ्य उपमंत्री (श्री बलदेवसिंह श्रार्य) — प्रदेश के कुछ पूर्वी जिलों में मार्च ६, १६६०,को तेज हवा के साथ कुछ पानी बरसा व कही-कहीं श्रोले पड़े जिसमें रबी की फसल को सरसरी जांच के फलस्वरूप कही कम कहीं ज्यादा नुकसान हुआ है जिसकी सहीतीर पर जाच पड़ताल की जा रही है।"

श्री रामसुन्दर पांडेय—क्या न्याय मंत्री जी बताने का काट करेंगे कि किन-किन जिलों में ज्यादा श्रोलें श्रीर बारिश से क्षति हुई है श्रीर क्या उनमें से कुछ स्थानों में जाने भी गई है, पशु श्रीर श्रादिमयों की ?

न्याय मंत्री (श्री हुकुर्मासह विसेन)—श्राजमगढ़ में श्रोले पड़े हे, नुकसान हुन्ना है। जौनपुर के एक हिस्से में श्रोर बलिया की एक तहसील के थोड़े हिस्से में, बस्ती के जिल में श्रौर वाराणसी में नुकसान हुन्ना है।

श्री रामसुन्दर पांडेय—कितनी जाने गई श्रीर कितने पशु मरे, इसकी सूचना नहीं बताई गई।

श्री हुकुमसिंह विसेन—बस्ती जिले से रिपोर्ट श्राई है कि चार श्रादमी मरे है श्रीर डेढ़ सौ के करीब जानवर ।

श्री उग्रसेन—क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि इन जिलों में ६ तारीख को कितने इंच वर्षा हुई ?

श्री हुकुमसिंह विसेन—कहीं पौन इंच, कहीं दो इंच, एक इंच, ग्राथ इंच, मुख्तिलफ जिलों में इस तरह से बारिश हुई। श्राजमगढ़ की लालगंज तहसील के एक हिस्से में दो इंच के लगभग बारिश हुई।

श्री नारायणदत्त तिवारी (जिला नैनीताल)—श्रीमन्, कल ग्रापको याद होगा कि मंत्री जी की ग्रोर से इस सम्बन्ध में बयान ग्राने वाला था, तो ग्रगर उनका बयान हो जायगा तो ऐसे प्रश्नों की संख्या बहुत कम हो जायगी। इसलिये उचित होगा कि ग्राप इसको ग्राखिर में लें लें ताकि मंत्री जी ग्रपना बयान भी दे दे।

श्री हुकुमिंसह विसेन—मुझे कोई दिक्कत नहीं है बयान देने में लेकिन चूंकि नियम ४२ के अन्तर्गत इसको मंजूर नहीं किया गया था श्रीर शार्ट नोटिस क्वैश्चन में तो सिर्फ सप्लीमेन्टरीज ही होते है ।

प्रश्नोत्तर २३७

श्री उपाध्यक्ष-मंत्री जो ग्रगर संक्षेप में स्पष्टीकरण करना चाहे तो कर दे।

श्री हुकुर्मासह विसेन—कब्ल इसके कि मै श्रौर श्रजं करूं, मै यह कह देना श्रपना फर्ज समझता हूं कि ६ तारील को कहीं-कहीं पर बारिश हुई श्रौर श्रोले पड़े, उसकी लबर हमको ७ तारील को मिली। ७ तारील को मैन दस, ग्यारह बजे रात तक तमाम कलेक्टर्स को कन्टैक्ट किया श्रौर उसी वक्त मैने तय किया कि मै सुबह जाऊं श्रौर द तारील को सुबह द बजे मे रवाना हो गया। मै फँजाबाद, जौनपुर श्रौर श्राजमगढ़ पहुंचा श्रौर श्राजमगढ़ में जब रात होगई तो वहीं रह गया श्रौर सबेरे बिलया, गाजीपुर से होता हुश्रा श्राया। तो मै समझता हूं कि रेवेन्यू डिपार्टमेन्ट की तवारील मे इतनी जल्दी काम शायद ही कभी हुश्रा हो। बिना किसी माननीय सदस्य के श्राग्रह के मैने स्वयं तय किया कि मै जाऊं श्रौर श्रपनी श्रालों से देलूं। वहां हम जब गये तो हमको कोई एम० एल० ए० न इस तरफ के न उस तरफ के ही मिले श्रौर तनहा मुझे काम करना पड़ा, दौड़ना धूपना पड़ा। कुछ लोगों ने शिकायत भी की, जैसा कि मैने सुना कि हमारे मिनिस्टर भता श्रा तो गये लेकिन एम० एल० ए० न मालूम कहां है। तो ऐसी बात वह कह रहे थे।

वहां मैने, दो रोज में जो कुछ देख सका, देखने की कोशिश की, इंन्टीरियर में भी गया श्रौर बाहर भी गया। जौनपुर जब मैं गया तो वहां की शाहगंज तहसील चूंकि फैजाबाद के बाद शुरू में ही पड़ती है इसलिय सीधा शाहगंज तहसील गया। वहां पर कलेक्टर भी थे श्रौर दूसरे श्रफसरान भी थे उनसे पता चला कि कुल २४३ गांव शाहगंज में ग्रफेक्टेड हैं जिसमें १६८ गत्वों को लगभग दो श्राने का नुकसान हुग्रा था श्रौर ४५ गांवों में ४ श्राने से १२ श्राने तक का नुकसान हुग्रा। कुछ दो, चार गांवों को मैंने भी देखा लेकिन यह तो सम्भव नहीं था कि मैं २४३ गांव देखता क्योंकि श्रौर जिलों में भी जाना था। फिर उसके बाद केराकत में पहुंचा। वहां पता चला कि १६० गांवों में नुकसान हुग्रा। उसमे से दो, तीन गांवों, सोहनी, बेहडा श्रौर गोंबरी में बारह श्राने का नुकसान हुग्रा। वहां पर सड़क के किनारे कुछ गांवों को मंने देखा भी बाकी में ८ श्राने के लगभग नुकसान बताया गया। यह सरसरी श्रन्दाजा है। फाइनल श्रन्दाजे के लिये मैंने श्रार्डर दे रखा है श्रौर सब मालूम कर रहे है। हर खेत का इतनी जल्दी श्रंदाजा होना सम्भव नहीं है।

वहां से मै श्राजमगढ़ गया। लालगंज तहसील कैराकत के बार्डर पर है। वहां १०, १२ मील इंटीरियर मे-गांव का नाम तो मुझे याद नहीं है, बड़ा टेढ़ा-मेढ़ा नाम है-हमने देखा कि काफी नुकसान हुन्ना। वर्षा भी वहां ज्यादा हुई। तहमील हेड क्वार्टर में तो कम हुई लेकिन ६, ७ मील पर हमने देखा कि २ इंच से ग्रधिक वर्षा हुई । ऊसर जमीन मे काफी पानी भरा था। घोसी तहसील मे १७ गांव श्रफेक्टेड बताये गये। द गांवों मे द ग्राने से १० भ्राने तक हानि, ६ गांवों मे ३६ ३७ नये पैसे हानि बताई गई। सदर तहसील मे २५० गांवों पर ग्रसर है। ४० गांवों मे ६ क्राने से ८ ग्राने तक, २१० गांवों से ३६ ३७ नये पैसे भर हानि से । लार्गज तहसील में ३८१ गांवों ग्रफेक्टेड बताये गये। २० गांवों मे १२ ग्राने या श्रधिक हानि हुई, ४ मे १० श्राने से १२ श्राने तक, १४ में ६ श्राने से ¤ श्राने तक ग्रौर ३४३ में ३६/३७ नये पैसे भर हानि है। फूलपुर तहसील मे ४३७ गांवों पर ग्रसर है। ५० गांवों पर १० भ्राने से १२ भ्राने तक, ६ गांवों पर ८ भ्राने से १० भ्राने तक ग्रौर ३६ गांवों पर ६ भ्राने से ८ ग्राने तक हानि का ग्रसर है। इतनी ही इत्तला ग्रभी हमारे पास है। यह सब ग्रन्दाजे है, जैसा मै पहले कह चुका हूं। मोहम्मदाबाद गौबरा मे ५० गांवों पर सब मे ३६/३७ नये पैसे ग्रसर है। सगड़ी में गया नहीं। लेकिन वहां के कुछ गांव ग्रफैक्टेड जरूर है। ज्यादा हानि नहीं है ।

श्री इन्दुभूषण गुप्त (जिला स्राजमगढ़)——बहुत नुकसान है। यह कटिंग मौजूद है।

श्री हुकुर्मासह विसेन--गाजीपुर मे सदर, जमानिया श्रौर सैदपुर में नैग्लीजिबिल लास कहा जाता है। मोहम्मदाबाद मे २ श्राने से कुछ कम है। गाजीपुर मे कुछ पत्रकार श्रीर [श्री हुकुमसिंह विसेन]

श्रकतर भी मिले श्रौर दूसरे लोग भी मिले। एन० एल० ए० कोई नही मिला। वहां कुछ नुकसान श्राम के बौर को जरूर बताया गया। लेकिन फसल के बारे में भगवान की दया से कृपा हुई।

फैजाबाद की सदर तहसील में लगभग ३६ गांवों पर कुछ श्रमर है। श्रकबरपुर में ५२ गांवों का पता चला है लेकिन जलालपुर में जो बहुत इंटोरियर में हे, में नहीं जा सका। मैं श्रार्डर दे रखा है कि वहां का पता लगाकर मुझे बताया जाय। पना चला ह कि वह फूलपुर के बार्डर पर है।

बस्ती में रुदौली के इर्द-र्गिर्द ७,८ सक्वेयर मील म काफी नुकमान हुन्ना है। ४ ब्राह्मी मरे हैं श्रीर १५० जानवर भी मरे है।

वाराणसी में ज्ञानपुर तहसील में ४० गांवों में सरसो श्रीर बारली पर श्रसर ह श्रोर १०० गांवों में १ श्राने से २ श्राने तक श्रसर हैं। चन्दौली में १२४ गांवों पर श्रसर ह २ श्राने से ६ श्राने तक हानि का। चिकया में, हिली एरिया में ४० गांव श्रक रहेड हे, बारली श्रीर ग्राम को लगभग द श्राने तक तुकसान बताया जाता हैं। प्लेन में १२४ गांवों पर २ श्राने से ४ श्राने तक हानि हैं। तहसील सदर में ७६ गांवों में ४० से ७४ नये पर्मे तक हानि बताई जाती हैं, गेहूं, बारली, ग्राम श्रीर सरसों को। लेकिन ११ गांवों में गेहूं बच गया ह। बाकी गांवों में लगभग २ श्राने के नुकसान हुश्रा हैं।

सुल्तानपुर में कादीपुर तहसील में कुछ गांव अफेक्टेंड है। यह कहा जाता ह कि २ आने से १० आने तक नुकसान हुआ है।

भाई उग्रसेन जी के लिये देवरिया श्रौर बहराइच में भगवान की दया में श्रोला नहीं गिरा। पानी दोनों जगह बरसा है जिस हे कुछ नुकसान हो गया होगा।

बलिया मे रसरा तहसील में १५० गांवों मे श्रसर है जिनगे से १५ गांवों मे १२ श्राने के लगभग नुकसान कहा जाता है। बाकी में ६ श्राने से द्र श्राने तक ह।

जो इत्तल। मेरे पास है वह मेने सदन को दे दी।

श्री धनुषधारी पांडेय—िशक्षा मंत्री जी बस्ती जिले में मये थे। जो कृछ उन्होंने वहां देखा हो उसे बतला दे तो बड़ी कृपा होगी।

श्री उपाध्यक्ष—स्रापने मंत्री जी की रिपोर्ट सुन ली। जहां कही श्रापकी जानकारी में ज्यादा नुकसान हुआ है वहां के प्रश्न मंत्री जी को लिखकर भेज दे त कि नियमानकल कार्यवाही हो सके। इसमें ज्यादा पूरक प्रश्न करने से कोई लाभ नहीं होगा।

राजा यादवेन्द्रदत्त दुबे (जिला जौनपुर) -- बस्ती मे कितने मकानो की क्षति हुई ?

श्री हुकुर्मासह विसेन-यह इत्तला मेरे पास नहीं हैं।

श्री मदन पांडेय--गोरखपुर की श्रोला-वर्षा की भी सूचना टेलीफीन में मंत्री जी प्राप्त कर लें ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--मुझे वहां सब कल्याण ही कल्याण सुनाई पड़ा है।

श्री नारायणदत्त तिवारी—माननीय मंत्री जी के स्वयं की जांच के प्रशंसनीय कार्य को देखते हुये वह बता। की कृश करेंगे कि छूट और तकावी के लिये उन्होंने क्या ग्रादेश जारी किये है ?

श्री हुकुर्मासह विसेन—मैने क ने कर मुताल्लिका को यह कहा है कि जहां द्र ग्राने से ग्रधिक हानि हुई है वहां मालगुजारी ग्रौर तकावी की वस्लयाबी रोक दें। श्री उग्रसेन क्या मंत्री जी गोरखपुर ग्रौर देवरिया की भीषण वर्षा की रिपोर्ट मंगाने की कृपा करेंगे ताकि वहां सहायता दी जा सके ?

श्री हुकुमसिंह विसेन—जहां नुकतान हुन्ना है वहां हम जरूर कुछ न कुछ करेंगे लेकिन कब्त स्रजबक्त कुछ नहीं कर सकते हैं।

श्री ऊदल--जालगंज श्रीर केराकत तहसीलों को मंत्री जी ने देखा तो वहां मकानों की क्षति किस श्रनुपात से हैं ?

श्री हुकुमसिंह विसेन--हमको खपरेल फूटी हुई नहीं दिखाई पड़ी।

श्री राजनारायण—-प्राननीय मंत्री जी ने कल ही स्पष्ट कर दिया था कि वह दाराणसी नहीं गये थे। इसलिये वाराणसी की खबर उनको सही नहीं मिली। कसवार सरकारी श्रीर कसवार राजा के परगने बहुत ही ज्यादा क्षति ग्रस्त है . . . . . .

श्री उपाध्यक्ष--ग्राप भाषण त दें, प्रश्न पूछे।

श्री राजनारायण — ग्रन्तिम रूप सवाल का होगा। कोई ग्रादमी ग्रयने क्वेडचन का रूप पहले रख देता है ग्रोर कोई ग्रादमी उसको बाद में रखता है। माननीय मंत्री जी ने एक विषद काल्यान दे दिया। इसलिये पहले मेरा प्रदन सुन लिया जाय।

वाराणसी में जहां पर सरकार को यह पता लगा है कि म स्राता की क्षति हुई है, क्या सर-कार वहां पर फिर से जांच करायेगी ?

श्री हुकुमसिंह विसेन-- प्रह तो हमारे स्टैं डिंग ग्रार्ड सें है कि पूरी जांच करके नक्कों बनाकर भेजें जांय ।

श्री इन्दुभूषण गुप्त--त्रया माननीय मंत्री जी कृपापूर्व क इस बात पर विचार करके कि जिस क्षेत्र का उन्होंने दौरा नहीं किया यानी जीतपुर श्रौर राजघाट के बीच के क्षेत्र में मंत्री जी फिर से जांच करने की व्यवस्था करेंगे ?

श्री हुकुमसिंह विसेन--जांच तो सभी जिलों में हो रही है।

श्री राजनारायण--क्या सरकार को जानकारी है कि कसवार राजा ग्रौर कसवार सरकारो के क्षतिग्रस्त राजा तालाब क्षेत्र में कितनी क्षति हुई है ?

श्री हुकुमसिंह विसेन-- उन्होंने इकट्ठा दिया है, ग्रगल-ग्रलग नहीं बताया। ग्राम पंचायतों को नवीन ग्रधिकार

\*\*३--श्री प्रतापिसह (जिला नैनीताल)--त्रया स्वायत्त शासन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि वे निकट अविष्य में ग्राम स्तर के सभी ग्रिधिकार (विकास व प्रशासन के) ग्राम पंचायतों को देने जा रहे हैं? यदि हां, तो उसकी क्या रूप-रेखा होगी?

श्री जयराम वर्मा—प्राप्त पंचायतों को भ्रश्नैल १, १६६० से कुछ महत्वपूर्ण भ्रधिकार दिये जा रहे है, जिनका विवरण संलग्न † परिपत्रों में दिया गया है।

† परिपत्र छापे नहीं गवे।

श्री प्रतापिसह—-परिशिष्ट १ मे विकास के विषय, कृषि, पशुपालन, सिंचाई, निर्माण कार्य, सामुदायिक संगठन, युवक कार्य, महिला तथा शिशु कार्य, शिक्षा श्रीर समाज शिक्षा, जनस्वास्थ्य तथा सफाई, ग्रामीण गृह निर्माण, यातायात तथा निर्माण कार्य जितने भी कार्य ग्रव तक जिला स्तर पर होते थे, १-४-६० से पंचायतों को दिये जा रहे हैं। तो क्या मंत्री जी यह बतायेंगे कि यह ग्रधिकार जिला अन्तरिम परिषद् ऐक्ट के मातहत दिये जा रहे है या तब तक जब कि जिला परिषद् ऐक्ट ग्रा जायगा ?

श्री विचित्रनारायण शर्मा--जिला परिषद् ऐक्ट का श्रभी कोई सवाल नहीं है। यह श्राज्ञा दे दी गयी है। इसके लिये प्लानिंग से पंचायतों को पैसा दिया जाता है।

श्री उपाध्यक्ष--पह ग्रादेश ग्रापने प्रशाकीय ग्रधिकार से दिया है ?

श्री विचित्रनारायण शर्मा--जी हां।

श्री शिवप्रसाद नागर—क्या मंत्री जी यह बतायेंगे कि ये श्राधिकार शीव्र ही दिये जायेंगे या नये चुनावों के बाद दिये जायेंगे ?

श्री उपाध्यक्ष--ये ब्रादेश तो वे दे चुके है।

श्री प्रतापिसह—क्या माननीय मंत्री जी इस बात को स्पष्ट करेगे कि इस ऐक्ट के मातहत श्रिधकार नहीं दिये जा सकते। लेकिन जब सारे श्रिधकार ग्राम पंचायतों को दे दिये जायेगे तो डिस्ट्रिक्ट कौंसिलों का क्या रूप रह जायगा?

श्री विचित्रनारायण शर्मा—मैने यह नहीं कहा कि जिला परिषदों की ये श्रिधिकार नहीं दिये जायेंगे। श्रभी वर्तमान जो कान्न हैं उसके मातहत दिये जा रहे हैं। जब जिला परिषद् ऐक्ट बनेगा, उसमे भी इसका प्राविधान रहेगा। ये श्रिधिकार उससे सगत होंगे।

\*\*४--कुंवर श्रीपालसिंह (जिला जौतपुर)--[स्थगित ।]

## ग्राम पंचायतों के निर्वाचन के लिए श्रादेश

\*\*५--श्री मदन पांडेय--क्या यह सत्य है कि सरकार ने ग्राम पंचायतों के चुनाव के लिये जिलाधिकारियों को श्रादेश जारी कर दिये हैं ? यदि हां, तो क्या सरकार कृपया बता-येगी कि यह चुनाव कब तक सम्पन्न हो जाने का निश्चय किया गया है ?

श्री जयराम वर्मा — यह सत्य है कि सरकार ने यह निर्णय किया है कि गांव सभाग्रों का ग्रागामी सामान्य निर्वाचन यथा समय करा दिया जाय तथा तदर्थ कार्रवाई करने के लिये जिलाधिकारियों से पत्र-व्यवहार हो रहा है। ग्रागामी निर्वाचन की तिथियां ग्रभी निश्चित नहीं की गई है।

श्री मदन पांडेय—क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेगे कि गत पंचायत चुनावों के श्रनुभव के श्राधार पर वर्तमान चुनाव प्रणाली में कोई परिवर्तन करने पर सरकार विचार कर रही है जिससे कि कुछ पदों के लिये गुप्त मतदान कराया जाय?

श्री जयराम वर्मा -- जी हां, प्रधानों का चुनाव गुप्त मतदान के द्वारा कराया जायगा।

श्री रामसुन्दर पांडेय—माननीय स्वायत्त शासन मंत्री बतलाने की कृपा करेंगे कि क्या यह सही है कि जिला श्रधिकारियों को जो श्रादेश भेजा गया है उसमें यह बात उल्लिखित है कि १५ दिसम्बर, सन् १६६० से १ ली जनवरी, सन् १६६१ तक चुनाव हो जायेंगे ?

श्री विचित्रनारायण शर्मा--श्रीमन्, श्रादेश यह है कि चुनाव कि तिथि ऐसे वक्त पर रखनी चाहिये ताकि जनगणना का जो काम होगा उससे उसकी कोई टक्कर न पड़े, बस इतनी बात है।

श्री मदन पांडेय—-प्रातनीय मंत्री जी जैता कि प्रवान तथा उप प्रवानों के लिये गुप्त मतदान की बात सोच रहे हैं, उसी तरह का एक श्रादेश श्रन्य सदस्यों के चुनाव के लिये भी गुप्त मतदान कराने के सम्बन्ध में देने के प्रश्न पर विचार करेगे ?

श्री विचित्रनारायण शर्मा -- उस पर विचार करके ही हमने समझा कि उसमें खर्चा बहुत है तथा विकात तलब भी है, इसलिये उसे छोड़ दिया गया।

श्री माताप्रसाद (जिला जीनपुर)—न्या मानीय मंत्री महोदय द्यागामी पंचायतों के चुनाव के पूर्व ग्राम सभाग्रों तथा न्याय पंचायतों की सीमा के क्षेत्र में परिवर्तन करने के प्रश्न पर विचार करने की कृपा करेंगे ?

श्री जयराम वर्मा -- उसके सम्बन्ध में कार्यवाही की जा रही है।

श्री राजनारायण——गत पंचायतों के चुनाव के श्रवसर पर जो लिस्ट के बारे में बहुत से स्थानों से शिकायतें श्रायी थीं, तो क्या सरकार लिस्ट को प्रिपेयर करने की कोई विशेष व्यवस्था करेगी जिससे कि लोगों को शिकायत न हो ?

श्री जयराम वर्मा--संशोधन के लिये ग्रादेश जारी कर दिये गये हैं, उस सम्बन्ध में कार्यवाही हो रही है।

श्री राज नारायण—-श्रीमन्, गत वर्ष ऐसा हुग्रा था कि चुनाव के मौके पर ही सेके-टरी लोगों ने लिस्ट सबिमट कर दी तो में जानना चाहता हूं कि चुनाव से कितने समय पूर्व कोई ऐसी व्यवस्था माननीय मंत्री जी करेंगे ताकि सब को लिस्ट मिल जाय।

श्री जयराम वर्मा--प्रमय तो निश्चित कहना सम्भव नहीं है लेकिन काफी पूर्व वह लिस्ट निश्चित हो जायगी जिससे किसी को श्रमुविधा न हो।

शाहजहांपुर जिले के ग्रभाव ग्रस्त क्षेत्र में मालगुजारी में छूट देने का ग्राश्वासन

\*\*६--श्री रूमिंसह (जिला शाहजहांपुर)-- क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जिला शाहजहांपुर में श्रभाव-प्रस्त क्षेत्र में लगान इत्यादि स्थिगत करने के लिये जिलाधीश ने सरकार को जनवरी, फरवरी, सन् १६६० में लिखा है? यदि हां, तो उस पर क्या कार्यवाही की गई?

श्री बलदेविसिंह श्रार्य--जिलाघीश, शाहजहांपुर ने दिनांक १०-२-१९६० को एक पत्र जिले में ग्रभाव की स्थिति के सम्बन्ध में लिखा था। रबी की फसज की क्षति पूरी तरह से श्रांकी जाने पर जहां ग्रावश्यकता होगी, नियमानुसार मानगुजारी में छूट दी जायेगी।

श्री बालकराम (जिला शाहजहांपुर)—न्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि इसकी जांच कब तक हो जायगी?

श्री हुकुर्मासह विसेन—श्रभी तो फतल तैयार हो रही है, जांच के बाद सब का भ्रन्दाजा हो जायगा ।

श्री रूमिंसह—- उस पत्र में जिलाशीश ने क्या लिखा है, क्या लगान वगैरह स्थगित करने की सिफारिश की थी ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--उन्होंने लिखा है कि यहां ग्रभाव-ग्रस्त क्षेत्र है इसलिये लगान क्लक्शन में दिक्कत पड़ती है। मैंनें उनको लिख दिया है कलेक्शन का ग्रापको पावर है, जहां कहीं मुनासिब समझें वहां स्टे कर दें।

श्री बालकराम -- क्या माननीय मंत्री जी को मालूम ह कि आपके उस श्राडर के बावजूद भी रबी तक का नगान श्रभी वसूल हो रहा है ?

श्री द्रुकुर्मासह विसेन--यह हमे नही मालूम ह।

\*\*७--श्री लक्ष्मणराव कदम--[१८ मार्च, १६६० के लिये स्थगित किया गया।]

# कार्य-स्थगन प्रस्ताव के सम्बन्ध में सूचना

श्री उपाध्यक्ष—मेरे पास एक कार्य-स्थान प्रस्ताव श्राया है। यह मसला ग्रभी विचाराधीन है इसलिये ग्राज उस पर कोई निर्णय नहो दिया जायगा।

## प्रदेश में ३ वर्ष के डिग्री कोर्स के संबंध में नियम ५२ के श्रन्तर्गत गृह मंत्री का वक्तव्य

श्री उपाध्यक्ष—श्री राजनारायण जी ने एक दका ५२ का प्रदन उपस्थित किया है उसे में पढ़े देता हूं। "लोकसभा में कल तारीख १० मार्च को एक प्रदन के उत्तर में दिक्षा मंत्री डा० के० एल० श्री माली ने कहा कि उत्तर प्रदेश की सरकार ३ वर्ष का डिग्रीकोर्ग करने के लिये इच्छक है बशतें केन्द्र उसके श्रावर्तक तथा श्रनावर्तक खर्च का सारा भार जो ४३७.५ लाख रुपया पड़ेगा उसे दे। प्रान्तीय सरकार ने इस प्रकार हायर सेकेन्डरी तथा एम०ए० कोसं में बिना परिवर्तन किये हुये ३ वर्ष का डिग्री कोसं कर श्रिषक खर्च बढ़ाने का जो प्रस्ताय किया है उससे प्रारंभिक शिक्षा की श्रोर सरकार की उपेक्षा प्रतीत होती है और श्रनावश्यक ढंग पर पढ़ाई का खर्च भी बढ़ता है। हम सरकार का ध्यान उस श्रोर श्राक्षित कर स्पष्टीकरण चाहते है जिससे प्रदेश में गरीबों पर शिक्षा का खर्च भार श्रीर श्रिषक न बढ़े श्रीर ब्यापक शिक्षा का प्रसार हो।"

इसर् सम्बन्ध में माननीय राजनारायण जी स्पष्टीकरण चाहते हैं। में माननीय शिक्षा मंत्री से निवेदन करूगा कि यदि श्राज वह इस सम्बन्ध में स्थिति स्पष्ट कर सकें तो कर दें।

गृह मंत्री (श्री कमलापति त्रिपाठी) — उपाध्यक्ष महोदय, यह प्रश्न इस सरकार के सामने गत दो, तीन वर्ष से हैं। माननीय राजनारायण जी ने जो लिखा कि उत्तर प्रदेश की सरकार ३ साल का डिग्री कोर्स कराने की इच्छुक है, जैसा कि समाचार-पत्रों में छपी हुई रिपोर्ट के ग्राघार पर उन्होंने लिखा है । इस सम्बन्ध में में स्पष्ट करना चाहता हूं कि यह सरकार इच्छुक तो नही है लेकिन जब कुछ इतों के साथ यह प्रक्न उसके सामने पेरो किया गया तो उसने अपनी सहमति प्रकट कर दी। २ साल पहले शिक्षा मंत्रियों का एक सम्मेलन दिल्ली में हुन्ना था उस यक्त यह प्रश्न पहले पहल सामने स्राया कि ३ साल का डिग्री कोर्स हो स्रौर विशेष रूप से यूनिवर्सिटी प्रान्ट्स कमीशन ने इस बात की सिफारिश की थी। उत्तर प्रदेश की तरफ से यह कहा गया कि हमारे सामने इस प्रस्ताव को स्वीकार करने में कठिनाइयां है। पहली कठिनाई यह है कि हमारे यहां सन १६२२ से ही माध्यमिक शिक्षा का एक कम चल रहा है जिसको आज ३८ वर्षे हो रहे हैं भौर तब से यह कम सफलतापूर्वक चला है। किसी भी डिग्री कोर्स को घटाने बढ़ाने से हमारा माध्यमिक शिक्षा का कम प्रभावित न हो, उसमें प्रस्ताव था कि हाई स्कूल में कक्षा १० ग्रीर ११ कर दी जाय और इंटर की १२ वीं कक्षा डिग्री कोर्स में जोड़ दी जाय यानी ११ का हाईस्कूल और ३ साल का डिग्रीकोर्स हो जाय । इससे हमें माध्यमिक शिक्षा के कम में एक साल ग्रौर जोड़ना तो हमने इस बात को स्वीकार नहीं किया, हमने कहा कि हमारे यहां ३८ साल से एक कम बड़ी सफलतापूर्वक चल रहा है। इतना ही नहीं राधाकुरणन और मुबालियर कमीशंस ने भी फहा कि दस साल का हाई स्कूल ठीक नहीं है उसको बढ़ाना चाहिये ताकि युनिवसिटी में जाने

### प्रदेश में ३ वर्ष के डिग्री कोर्स क संबंध मे नियम ५२ के द्रन्तर्गत गृह मंत्री का वक्तव्य

से पहले विद्यार्थी परिपक्व हों। सेडलर कमीशन की रिपोर्ट के ग्रनुसार यहां जो प्रयोग हुग्रा वह ग्रिथिक प्रिय रहा है यह सब मानते हैं। तो हम उस चीज को स्वीकार करने में ग्रसमर्थ है कि जिस से हमारा वर्तमान कम ही परिवर्तित हो जाय ।

वूसरी बात हमने यह कही कि हमारे पास इतना पैसा भी नहीं है कि हम ३ साल के डिग्री कोर्स का व्यय उठा सकें ग्रौर इस प्रदेश की एक विशेष स्थित इस माने में भी है कि चार-चार हमारी पूनिविसिटियां हैं ग्रौर भी एक, दो खुल सकती हैं जिनके प्रस्ताव हमारे सामने हैं। इस समय प्रदेश में ४ यूनिविसिटीज हैं। इनके ग्रलावा डिग्री कालेजेज बहुत हैं, इस समय सम्भवतः १२४ डिग्री कालेजेज हैं ग्रौर एक साल डिग्री कोर्स बढ़ा देने के माने यह हैं कि हम पर बहुत बड़ा व्यय का भार पड़ जायगा ग्रौर हम एक पैसा भी इस समय प्रदेश के सार्वजनिक कोष से नहीं लगा सकते। यह दो बातें हमने उनसे कही थीं। इस पर उन्होंने हमसे खर्चे का व्योरा मांगा ग्रौर यह राय दी, लिखा उन्होंने, कि जितना भी नान—रेकीरंग खर्ची है वह हम सब उठा लेंगे ग्रौर जो रेकिरंग खर्ची है उसका भी ग्राधा हिस्सा वह उठाने को तैयार हैं। ग्राप इस कोर्स को ग्रव लागू करें ग्रौर इंटरमीडियट के पैटर्न को हम ग्रापक स्पर्श नहीं करेंगे। यानी एक शर्त उन्होंने मान ली कि १२ साल का माध्यिमक शिक्षा का जो कम चल रहा है उसको परिवर्तित नहीं करेंगे ग्रौर दूसरे यह कि डिग्री क्लासेज में तीन साल का कोर्स कर देने के लिये जो खर्च बढ़ेगा उसका नान—रेकिरंग सब ग्रौर रेकिरंग का ४० परसेंट देने की तैयार हैं।

हमारे सामने यह प्रश्न है, हम उन्हें यह लिख रहे हैं श्रौर लिखा भी है कि रेकरिंग का ५० फीसदी भी उठाना हमारे लिये सम्भव नहीं होगा। श्रौर जो श्रखबारों में रिपोर्ट है उसमें भी केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मंत्री जो ने कदाचित यह कहा है, जहां तक मुझे स्मरण श्रो रहा है, इस प्रस्ताव को भी उन्होंने यूनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन के विचारार्थ भेज दिया है। यह स्थिति श्रभी है। तमाम देश के अन्य प्रदेश करीब-करीब तीन साल के डिग्री कोर्स को मंजूर कर रहे हैं। जो भारत सरकार की यूनिवर्सिटीज हमारे प्रदेश में हैं, अलीगढ़ श्रौर बनारस, उन दोनों ने तीन साल का डिग्री कोर्स स्वीकार कर लिया। श्रौर प्रदेश भी उसको स्वीकार करते चले जा रहे हैं। श्रौरों के लिये एक बात यह थी कहीं १० साल का हाई स्कूल श्रौर कहीं ११ साल का हाई स्कूल रहा है। एक साल का डिग्री कोर्स बढ़ा करके तीन साल कर देना था। यह जरूर सरकार समझती रही है कि अगर डिग्री क्लासेज में एक साल श्रौर बढ़ा, बी० ए० के पहले एक प्रीलिमिनरी, तो उससे विद्यार्थियों में एक परिपक्वता श्रावेगी। परन्तु उसका खर्च हम कर्तई नहीं उठा सकते श्रौर यही हमने उनसे कहा श्रौर वह इस पर विचार कर रहे हैं। हमारी यह दो शर्ते श्रब भी जहां की तहां हैं। इन दो शर्तों को स्वीकार करें तो फिर हम इस योजना को अपने प्रदेश में लागू कर सकें।

माननीय राजनारायण जी ने एक बात ग्रौर कही है कि इसका जो खर्चा बढ़ेगा उससे हमारी प्रारंभिक शिक्षा पर असर होगा। श्रब ऐसी बात न हो पायेगी इस माने में कि प्रारम्भिक शिक्षा के विस्तार के लिये भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय से हमारी विशेष योजनायें चल रही हैं जिसके लिये वह रुपया दें ताकि हम अपने प्रदेश में निःशुक्त शिक्षा को इस प्रकार बढ़ा सकें कि ५० से ५५ फीसदी विद्यार्थी, लड़के ग्रौर लड़कियां, सब प्रदेश की प्रारंभिक शिक्षा की सुविधा प्राप्त कर सकें। उसके लिये अलग से उनसे बातचीत भी हो रही हैं, जैसा मैंने बजट के अवसर पर भी निवेदन किया था। हमने स्कीम भेज दी हैं ग्रौर वह भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि उत्तर प्रदेश की सरकार पर बोझ इतना अधिक है कि जब तक हम विशेष उनकी सहायता न करें तब तक इस चीज को वह लागू नहीं कर सकते हैं। जो डिग्री क्लासेज के लिये ग्रान्ट मिलेगी वह यूनिय-सिटी ग्रान्ट्स कमीशन से मिलेगी ग्रौर यूनिर्वासटी ग्रान्ट्स कमीशन से मिलेगी ग्रौर यूनिर्वासटी ग्रान्ट्स कमीशन से नहीं मिलने वाला है। प्रारंभिक शिक्षा के लिये कोई रुपया हमको यूनिर्वासटी ग्रान्ट्स कमीशन से नहीं मिलने वाला है। तो बिलकुल बो भिन्न चीजें हैं। उसका कोई असर नहीं होगा हमारी प्रारंभिक शिक्षा पर।

### [भी कमलापति त्रिपाठी]

हमारी जो वो घातें आरम्भ से रही है उन्हें हम बार-बार भारत सरकार से निवेदन कर रहे हैं उन्होंने कुछ बातें स्वीकार कर ली है और कुछ जो रखी हैं उनके लिये आराह कर रहे हैं। हमारी लाचारी है कि इस काम में खर्च करने के लिये हमारे प्रदेश के साधन हमारी कोई सहायता नहीं कर सकेंगे और यह भी हमने उनको लिखा है कि उतना कर दें। लेकिन यह जो भार उन्होंने उठाने को कहा है वह केवल थर्ड प्लान में। थर्ड प्लान के बाव कहां यह भार पड़ेगा? थर्ड प्लान में हमारे बहुत से डिग्री कालेजेज बढ़ेंगे यूर्निवसटीज बढ़ेंगी तो उस हिसाब से खर्चे बढ़ेंगे तो यह सब विस्तार की बात है। इस सम्बन्ध में उनसे बातचीत हो रही है और में समझता ह कि जब वहां से अन्तिम निर्णय यह हो जाय कि तीसरे प्लान का खर्चा तो उठायेंगे ही लेकिन जो हमारी वृद्धि होगी उसका भी खर्चा उठायेंगे और फिर पूरा-पूरा खर्चा हमको देंगे तब कही इस विषय पर भागे कोई निर्णय लिया जा सके।

श्री नारायणदत्त तिवारी (जिला नैनीताल) — क्या शिक्षा मंत्री जो इस बात को बेखते हुये कि यह प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है श्रीर उत्तर प्रदेश में शिक्षा की धलग व्यवस्था है, केवल १२ साल तक हाई स्कूल तथा इंटरमीडियेट, फिर दो साल डिग्रीकोर्स, तो क्या वे इस प्रश्न पर पुनः विचार करेंगे श्रीर ३ वर्ष का डिग्री कोर्स लागू कराने के सम्बन्ध में धपनी स्वीकृति नहीं देंगे ?

श्री कमलापित त्रिपाठी—मंने तो निवेदन किया कि हमारी नीति यह रहो है कि हम तीन साल का कोर्स स्वीकार कर सकते हैं श्रीर सहमित हो सकी हैं उस प्रस्ताव से भारत सरकार के यदि हमारे माध्यमिक के क्रम पर कोई उसका श्रसर न डाला जाय कमती या बेशी करने के बारे में श्रीर उसका वह भार भारत सरकार स्वयं उठाये क्योंकि उस खर्चे को उठाने में हम श्रपने को समर्थ नहीं पा रहे हैं।

श्री राजनारायण (जिला वाराणसी)—हमारे नियम ५२ के श्रन्तर्गत ही एक और प्रक्र था श्रीर माननीय मंत्री जी ने इस वक्त सब प्रक्तो का उत्तर दिया है, एक प्रक्र का उत्तर नहीं दिया है वह यह है। प्रान्तीय सरकार इस प्रकार हायर सेकेंडरी तथा एम०ए० कोर्स में बिना परिवर्तन किये हुये तीन वर्ष का डिग्री कोर्स कर दे श्रीर श्रीवक खर्च बढ़ाने का जो प्रस्ताव ह जो परीक्षार्थी होंगे, उन पर भी तो खर्चा बढ़ेगा।

श्री उपाध्यक्ष---ग्राप पूछिये ऐसा है या नहीं । लेक्चर देने की व्यवस्था नही है ।

श्री राजनारायण ----ग्रापको तो भ्रम हो जाता है मेरे बारे में। में ग्रापसे निवेदन कर रहा हूं कि ग्राप उस भ्रम को निकाल दें क्योंकि इससे ग्रापको ग्रनावश्यक परेशानी होती है।

श्री उपाघ्यक्ष---ग्राप किताब स्रोल रहे थे।

श्री राजनारायण—में प्रक्त हो कर रहा था और वह यह कि प्रान्तीय सरकार इस प्रकार हायर सेकेन्डरी तथा एम०ए०कोर्स में बिना परिवर्तन किये हुये जो भ्रधिक सर्चा विद्यार्थियों पर बढ़ा रही है उसका क्या उत्तर है ?

श्री कमलापित त्रिपाठी—मुझे खेद है कि उसका उत्तर में नहीं दे सका। राजनारायण की के प्रश्न का यह श्रयं होगा कि १२ साल इघर हो जायेंगे। ३ मौर २ साल उघर हो जायेंगे यानी १७ साल। एक साल बढ़ जाता है। यह भी एक भौर प्रश्न हमारे सामने है। दूसरे प्रदेशों में कुछ ऐसी व्यवस्था कर रहे है कि पोस्ट प्रेजुएट क्लास १ साल का, ३ साल का बिग्री कोर्स हो। श्रगर हमने इसको स्वीकार किया और उन्होंने हमारी सहायता की, क्पया पैसा हमको दे दिया तो कुछ इस प्रश्न पर विचार करना पड़ेगा कि विद्याणियों के समय पर और ग्रिभभावकों पर जो बोझ पड़ता है वह न पड़ने पाये और किस तरह से वह एडजस्ट इसमें हो सकता है।

श्री नारायणदत्त तिवारी--क्या सरकार इस प्रश्न को जो एजूकेशन कमीशन बनाया जाने वाला है उसकी राय के लिये भेजेगी ?

#### प्रदेश ३ वर्ष के डिग्री कोर्स के सम्बन्ध में नियम ५२ के श्रन्तर्गत गृह मंत्री का वक्तव्य

श्री कमलापित त्रिपाठी — जो हां, यह विषय उनको दिया जा सकता है। हमने टर्म्स श्राफ रिफरेंस श्रभो बनाये नहीं लेकिन अपने प्रदेश की यूनिविसिटियों से इस बारे में राय ली थी श्रीर उन्होंने इससे सहमति प्रकट की थी श्रीर यह भी कहा था कि जब सारे देश में इस प्रकार की योजना लागू हो रही हैं श्रीर अपने प्रदेश में भी दो, दो यूनिविसिटीज में योजनायें लागू हो रही हैं तो इस प्वाइंट श्राफ ब्यु से इससे लाभ भी हैं कि तीन साल का कर दिया जाय, लेकिन जैसा कि राजनारायण जी ने कहा इस प्रश्न पर भी विचार कर लिया जाय कि उसका जो बोझा पड़ेगा श्रिभावकों पर श्रीर विद्यार्थियों का जो समय जायगा वह इतना श्रत्यिक न हो जाय कि वे उठा न सकें।

श्री दीपनारायणमणि त्रिपाठी (जिला देवरिया) -- केन्द्र द्वारा प्रस्तावित माध्यमिक शिक्षा में एक वर्ष कम करने का था और डिग्री कोर्स तीन वर्ष का करने की योजना थी। तो जी स्रभिभावकों का खर्चा बढ़ जायगा और छात्रों का एक वर्ष और बढ़ रहा है और माध्यमिक शिक्षा में स्राप कोई परिवर्तन नहीं कर रहे हैं तो क्या मानगीय मंत्री जी इस पर भी विचार करेगे कि स्रभिभावकों की दृष्टि से स्रोर छात्रों की दृष्टि से उस पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

श्री उपाध्यक्ष -- इसका उत्तर दे चुके है।

श्री चन्द्रजीत यादव (जिला ग्राजमगढ़)—जब माननीय मंत्री जी समझते है कि इस योजना के लागू करने से लाभ होगा ग्रीर पूरे मुल्क में एकरूपता हो जायगी, केवल खर्चे की दिक्कत है तो क्या सरकार ने इस पुकार का एस्टीमेट लगवाया है कि इससे कितना खर्चा बढ़ जाता है ग्रीर केन्द्रीय सरकार ग्रागर ग्राधा रेकिरग खर्चा देने के लिये तैयार है तो कितना ग्रीर खर्चा दहन करना पड़े।?

श्री कमलापित त्रिपाठी——जो ग्राज हमारे कालेजेज और यूनिवर्सिटी है वे तो प्रति वर्ष बढ़ते हैं ग्रीर सन् ६० में फिर २-४ की तादाद बढ़ेगी, लेकिन जो ग्राज है उन पर ३,३६,४२,००० रुपये ग्रावर्त्त ह खर्चा ग्रीर ३,२२,५०,००० रुपये ग्रावर्त्त क खर्चा, यानी ६,६१,६२,००० रुपये रेकिरिंग ग्रीर नान— रेकिरिंग एक्सपेन्डीचर का हिसाब लगाया है। तब वह योजना लागू हो सकती है। जैसे जैसे कालेजेज ग्रादि की संख्या बढ़ेगी वैसे वैसे यह खर्चा भी बढ़ेगा। यह खर्चा तो केवल इस फाइव इयर प्लान के पांच साल का है।

श्री रामस्वरूप वर्मा (जिला कानपुर) - न्त्रया यह सही है कि सरकार यह योजना इसलिये लागू करने जा रही है कि उच्च शिक्षा को हतोत्साहित किया जाय ?

श्री कमल।पति त्रिपाठी—इससे शिक्षा हतोत्साहित तो होती नहीं बल्कि इसमें तो कुछ प्रोत्साहन मिलता है कि इंटरमीडियेट के बाद एक साल प्रिलिमिनरी रहा ग्रौर फिर तीन साल डिग्री कोर्स के लिये होगा।

श्री राजनारायण--क्या सरकार इस शक्त पर भी विचार करेगी कि स्राचार्य नरेन्द्र देव कमेटी स्रौर डाक्टर राधाकृष्णन कमीक्षन दोनों की रपट जो स्राज केन्द्रीय सरकार की प्रस्ताबित योजना है स्रौर जिसे यह सरकार स्वीकार करने जा रही है उससे भिन्न है ?

श्री कमलापित त्रिपाठी—मै समझता हूं कि राधाष्ट्रिज्णन् कमीशन् श्रीर ग्राचार्यं नरेन्द्रदेव कमेटी, इन दोनों की रिपोर्ट से हमारे इंटरमीडियेट के मैटर्न का तो समर्थन होता ही है श्रीर इसीलिये हमने इस बात पर जोर दिया कि हम ग्रपने इंटरमीडियेट के पैटर्न में किसी तरह की तब्दीली नहीं करेंगे। डिग्री क्लासेज के बारे में जो उनका सुझाव है वह तो श्रापने बताया ही है।

श्री रामायणराय——जिन कठिनाइयों की श्रोर मंत्री जी ने ध्यान ग्राकाँवत किया है उन कठिनाइयों का श्रन्त कब तक हो जायगा इसके लिये क्या सरकार कोई सिक्रय कदम उठा रही है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी--जब वह रुपया देना स्वीकार कर लेंगे तो उस किठनाई का हल हो जायगा नहीं तो तब तक जैसे चल रहा है वैसे चलेगा।

श्री रामस्वरूप वर्मा—इस बात को देखते हुये कि इंटरमीडियेट के बाद तीन साल का कोर्स होगा ग्रौर विद्यार्थियों को दो साल का खर्च देना मृश्किल था तो तीन साल का खर्च बर्दाक्त नहीं कर पायेंगे ग्रौर वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये हतोत्साहित होंगे; क्या सरकार इस स्कीम को खत्म कर देगी ?

श्री उपाम्यक्ष-- प्रहतो उत्तर दियाजाचुका है।

श्री शिवश्रसाद नागर (जिला खोरी) —— नया मंत्री जी के विचार में कोई ऐसी योजना विचाराधीन है कि इस प्रकार की योजना लागू होने के बाद जो मध्यम श्रेणी ग्रौर निम्न श्रेणी के लोग है वह ग्रपने बच्चों को पढ़ानें में ग्रसमर्थ रहेंगे, तो क्या यह इस पर विचार करेंगे कि यह योजना लागू न की जाय?

श्री कमलापित त्रिपाठी—में समझता हूं कि इसका कोई ऐसा ग्रसर नहीं होगा बिल्क जिन लोगों को उच्च शिक्षा मिलनी चाहिय उनके लिये लाभकर होगा कि वह एक साल का ग्रौर प्रिलिमिनरी कोर्स पढ़ें क्योंकि यूनिवर्सिटी के वातावरण में वो साल में शिक्षा की वृष्टि से देखें तो हाई स्कूल से विद्यार्थी इंटर में जाता है ग्रौर फिर दो साल के लिये वह यूनिवर्सिटी में गया तो वहां रह कर जो वहां के वातावरण का ग्रसर रह सकता है उसमें ग्रार एक साल का ग्रौर इजाफा हो तो उसके मस्तिष्क के विकास में ग्रौर वहां के वातावरण के प्रभाव में रहकर उच्च शिक्षा की ग्रोर जाने में सहायता मिलेगी ग्रॉर में समझता हूं कि शिक्षा की वृष्टि से तीन साल का डिग्री कोर्स होना ग्रनुचित नहीं है बशरते कि प्रदेश की स्थित को वेखत हुए हम उसका भार उठा सकें।

## कार्यस्थगन प्रस्ताव तथा याचिका के सम्बन्ध में जानकारी की मांग

श्री राजनारायण (जिला बाराणसी)— उपाध्यक्ष महोदय, ग्रभी ग्रापने बताया था कि एक कार्य-स्थान प्रस्ताव ग्राया श्रीर वह विचाराधीन है तो क्या वह हमारा ही प्रस्ताव ह ?

श्री उपाध्यक्ष--जी हां।

श्री गौरीशंकर राय (जिला बिलया) — उपाध्यक्ष महोवय, मेने विधान सभा के २४ सदस्यों के हस्ताक्षर से लखनऊ विश्वविद्यालय के उपकुलपित के हटने के संबंध में एक याचिका दी थी।

श्री उपाध्यक्ष--यह प्रदन माननीय ग्रध्यक्ष के विचाराश्रीन है। निणंय बाव में विया जायगा।

श्री राजनारायण--श्रोमन्, वह तो हमारा प्रस्ताव विचाराधीन है।

भी उपाध्यक्ष--वह भी है।

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान— ग्रनुदान संख्या ४७—लेखा शीर्षक ६८—िंसचाई, नौचालन, बांध ग्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, ग्रनुदान संख्या १०—लेखा शीर्षक १७,१८ ग्रौर १९—ख—राजस्व से किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण-कार्य तथा ग्रनुदान संख्या ११—लेखा शीर्षक १७,१८,१६ ग्रौर ६८—िंसचाई स्थापना पर व्यय (क्रमागत) रं

श्री उपाध्यक्ष--प्रव सिचाई विभाग के अनुदान पर वाद-विवाद जारी होगा।

\*श्री मिलखानींसह (जिला मैनपुरी)—माननीय उपाध्यक्ष महोदय,में कल इस बात पर प्रकाश डाल रहा था कि अपने प्रदेश में सिचाई विभाग जनता से अधिक पैसा किस तरह से प्राप्त हो इसी उधे ड़ बुन में लगा रहता है और वह यह नहीं सोचता है कि किसानों को कितनी सुविधा दें, कितना पानी दें जिससे वह अपना उत्पादन बढ़ाने में सफल हो सकें। जहां तक इस विभाग के व्यभिचार या अध्याचार के बारे में जो भी प्रश्न उठाया है उसके बारे में यहां इसलिये कुछ कहना नहीं चाहता हूं कि यह मनुष्य के कैरेक्टर पर निर्भर करता है। जब हमारे माननीय मंत्री जी सदन में इस बात को मान बैठे हैं कि अध्याचार समाज की देन है और जब तक यह समाज में रहेगा तब तक हम इसको दूर नहीं कर सकते है तो इस तरह से यह जो सिचाई विभाग है इसके इंजीनियर्स जो हैं ....

श्री उपाध्यक्ष-- भवन में काफी बातचीत हो रही है। मैं देख रहा हूं कि माननीय सदस्य लाबी का काम सदन से लेना चाहते हैं, ऐसा अनुचित है।

श्री मिलिखानीं सह — मैं यह कहूंगा कि या तो मंत्री जी इतने योग्य नहीं हैं श्रीर यिद हैं तो टैक्नीकल एक्सपर्ट नहीं हैं श्रीर उनको इंजीनियरिंग के बारे में कुछ मालूम नहीं हैं। इसिलये इनके विभाग के इंजीनियर्स उनसे यह कहकर कि यह टैक्नीकल बात है, ग्राप लिख दीजिये, हम बाद में देख लेंगें, ग्रयना काम निकाल लेते हैं। जो इस विभाग के इंजीनियर्स हैं वह सही एस्टीमेट न बनाकर मनमाना पैसा वसूल किया करते हैं। इसका ज्वलंत उदाहरण श्राज के प्रकृत में हैं जो स्थिगत किया गया है श्रीर लिलतपुर के बांध से संबंधित है। मुझे मालूम है कि वहां के लिये कुछ उल्लू पाले जा रहे हैं। वहां के इंजीनियरों ने बताया कि उल्लू इसिलये पाले जायें जिससे चूहे इसमें सूराख न कर सकें। मुझे बड़ी हंसी ग्राई कि यह उल्लू पालक विभाग है या सिचाई के लिये किसानों को समुचित मात्रा में पानी देने वाला विभाग है।

श्रब इस विभाग में जो श्रनियमित काम हो रहे हैं उन पर प्रकाश डालूंगा। किसान बिना-पढ़ें लिखे हैं। इनके पतरौल और झमीन हमेशा तोड़ श्रीर डाल का गड़बड़ कर देते है।

\*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया । †१० मार्ज, १६६० की कार्यवाही से ।

## [श्री मलिखान सिंह]

तोड़ खेत की सिचाई ज्यादा होती है इतिन जिन्ना उल होता ह उसको तोड लिख देते हैं क्योंकि उत्पर से यह ग्रार्डर है कि किनी तरह से रेजेन्यू प्रदायी जाय। मैने इस संबंध में कई बार सदन में कहा कि ग्रागर प्रभान इन प्रकार के सभा खेनों का शिकायत एक साथ लिख कर इंजीनियर के पास भेज दे तो वह सान ली जा। चे किन इजीनियर कहा है कि एक एक व्यक्ति जिसका नुक्सान होता है यह अनग प्राग ग्राग ग्रागी उज्यदारी करे। किसान इतना पढ़ा लिखा नहीं है कि वह रजिस्ट्री करने उस जिनाग को मेजे।

इंजीनियर लोग पानी की कभी की छिताना चाहने है। भंग तियम त्री जो में चाहूंगा कि वह इस पर प्रकाश डाले। मैनपुरी लिबीजन या पिष्टचिमी जिला। 1 1.3 रे फ्रोर बभ्ने काट दिये जाते हैं। उसका एक मात्र कारण यह है कि उस क्षेत्र में पानी। भं। ने किन यह विभाग नहरों क्रोर नालियों को बढ़ाने में सबैब श्रयं सर रहना है। था गर्भा नहीं माचा गया कि यह नहरे काट दे ते हैं तो इस्ता करा कारण हैं? इस पर प्रकाश न उस कर उन्हें उन काश-कारों को परेशान करने के लिये विभागीय नोकरों द्वारा भूक ने चताति है जिस पर सबन में कई बार प्रश्न प्राया कि नहर विभाग के मुक्स में स्थानों प्रमान है। किसानों को परेशान करने के लिये दोरे पर मुक्द में लिये जाते हैं जिसने स्थान सके। जाय श्रीर इन की नौकरशाही की जी हज़री बकाते हुए कुछ न कर सके।

कल जब माननीय हिम्मा विह जी माण ग दे रहे ये ता उघर से एक माननीय मदस्य ने कहा कि ऋष्य पूर्वी और पश्चिमी जिलो का सात नड़ा ते । हम लोग पूर्व और पश्चिम में विश्वास नहीं करते। हम लोग पूर्व और पश्चिम में विश्वास नहीं करते। हम ता एक हम ह तागत चाहने हैं जियमें राष्ट्र की भावना हो और प्रातीयता की भी भावना खत्म हा। लेकिन यह भरकार पूर्व और पश्चिम की भावना पैदा करना चाहती हैं, जिसका एक उदाहरण यह ह कि पूर्वी जिलो में तिचाई की दरें कम हैं और पश्चिमी जिला में तिचाई की दरें बहु। ज्वादा ए। इसके लिये जनता ने कई बार एजिटेशन किया और प्रतिहिक्त पार्टियों के द्वारा सरकार के पाम जनता ने अवनी आवाज भी पहुंचायी।

तीन रुपये बीघा श्रौर सात रुपये बीघा श्राज सिचाई ह, जब कि पहने १२ श्राने श्रौर एक रुपये बीघा थी। मेरी मुख्य मंत्री जी से परसनन बा चात हुई, जाना की पूरी कार्यकारिणी बँठी हुई थी। उस समय माननीय मुख्य मंत्री जो ने कहा कि हम तोग इस पर विचार कर रहे हैं। वास्तव में लिचाई की दरे ज्यादा है। लेकिन श्राज कि उम पर केंद्र कार्यवाही नहीं की गयी। में यह देख रहा हूं कि सिचाई की दरे उत्ता जाता है कि जब गतना सस्ता हा जाता है तो पिक्चमो जिलों के किसानों में इतनों मामर्थ्य नहीं हैं कि नह उनकी अदा कर सके वयों कि नहरों का पानो ऊगर श्राने के कारण उत्पादन दिन पर दिन कम होता जा रहा है श्रौर जब उत्पादन कम होगा तो स्यामाविक है कि हम इनका टेक्स जो हं नहर का या लगान श्रोर इंडाइरेक्ट टेक्स जो हं उनकी किस तरह बरदाइत करें? इसमें पिक्समी जिने के किसानों का कचूमर निकलता जा रहा है। लेकिन यह सरकार श्रवने टेक्स बढ़ाती चली जा रही है। वह यही चाहती है कि किस। तरह से श्रिधक से श्रिधक टेक्स का रुपया उसके पास श्राये। तो में माननोय उपाध्यक्ष महोदय, श्रायक सामने माननोय मंत्री जी का यह बता देना चाहता हूं कि वह तुरंत इस बात की व्यवस्था करें कि यो बढ़े हुए जी सिचाई के कर ह वह कम किये जायं श्रौर उसके बाद यह भी वत्रस्था करें कि पानी में काई सीमा दे दें। उपाध्यक्ष महोदय थोड़ा समय श्रीर दे दें।

श्री उपाध्यक्ष--दो मिनट है ३ भी।

श्री मिलिखानिसह--तो मै यही कहना चाहता हूं कि सरकार इस तरह की कोई व्यवस्था करें कि एक पानी भी द या तीन तक का कोई रेशियो | दे दे श्रौर उसके बाद जो ज्यादा

१६६०-६१ के भ्राय-व्याक मे श्रानुहानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुहान २४६ संख्या ४७--लेबा शीर्षक ६८--सिवाई, नौवालान, बांध श्रीर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, श्रनुदान संख्या १०--लेबा शीर्षक १७, १८ श्रीर १६-ख--राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण-कार्य तथा श्रनुदान संख्या ११--लेबा शीर्षक १७, १८, १६ श्रीर ६८--सिचाई स्थापना पर व्यय

पानी ले उसके लिये स्रधिक टैक्स हो, न कि एक पानी दे उसके लिये भी वही टैक्स स्रौर जो चार पांच या छः पानी दे उसके लिये भी वही टैक्स। इस तरह से एक पानी स्रौर दो पानी या तीन पानी के चक्कर में डालकर सरकार जनता का नुक्सान कर रही है क्योंकि साइ कालाजी से उस जिले का किसान कुद्र कर नहीं पाता। वह सोचना रहना है कि जब पानी स्रायेगा तो पानी देंगे, उसके लिये वह स्रथने दूनरे काम भी छे इकर बैठा रहना है। माननेत्य मंत्री जी से जब कहा जाता है तो वह कहते है कि वहां से एस्टोनेट स्रायेगा, इंजानियर पास करेगा, उसके बाद हमारे पास स्रायेगा तो हम देख लेगे। लेकिन इंजीनियर क्या भेजेगे स्रौर क्या एस्टोमेट स्रायेगा यह उनको चाहे न मालूम हो, हभ लोग पहले से हो बता देने हैं कि वहां से यह रिपोर्ट स्रायेगी। उन्होंने सर्वे कराया, उस सर्वे के कराने के बाद कम से कम चार साल लग जाते हैं, तब कहीं किसी का कोई काम हो पाता है।

में पूछना चाहता हूं कि रामगंगा प्रोजेक्ट ग्राज तक पूरा नहीं हुग्रा ग्रौर उस प्रोजेक्ट के पूरा न होने के कारण पिश्चमी जिलों में ग्रागरा डिवीजन के जो जिले हैं, उनमें पानी नहीं पहुंच पा रहा है जिससे वहां का उत्पादन घटता चला जा रहा है। यह ग्रब तक पूरा क्यों नहीं हो पाया?

जहां तक ट्यूब वेल का प्रश्न है, ट्यूबवेल का कमांड एरिया इतना ज्यादा रख।
गया हे कि एक ट्यूबवेल उस कमांड एरिया को समुचित रूप से पानी नहीं दे पाता और
उस एरिया के काइतकार ट्यूबवेल के पानी के लिये परेशान होकर के अन्त में
एक-एक महीने लेट पानी अपने खेतों भे देगे तो उसका नतीजा क्या होगा? उसका एकमात्र
नतीजा यही होगा कि फसल सुख जायगी और दीमक लग जायगी, पैदावार कम हो जायगी।

\*श्री गज्जूराम (जिला झांसी)—-ग्रादरणीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं ग्रापका बड़ा ग्राभारी हूं कि ग्रापने मुझे सिंचाई के ग्रनुदान पर बोलने का ग्रवसर दिया। जो ग्रनुदान ग्राज उपस्थित है सदन में में उसका समर्थन करता हूं। सिंचाई मंत्री जी का बुन्देलखंड ग्राभारी रहेगा कि जो सिंचाई के साथन बुन्देलखंड के हर एक जिले में बनाये गये ग्रीर ग्रन्न की पैदावार को बढ़ाया गया। इसके साथ-साथ झांसी सेमरदा बांध के बारे में मुझे कुछ निवेदन करना है। जबिक किसानों को तीन पानी देने के बाद उनसे ग्राबयाशी टैक्स लेना चाहिये वहां पर एक पानी ही किसानों को मिलता है ग्रीर उससे उतनी पैदावार नहीं बढ़ सकती जितनी कि बढ़नी चाहिये। लेकिन टैक्स उनसे बराबर लिया जाता है। ग्राबपाशी बराबर ली जाती है। मैंने कई बार इंजीनियर महोदय से यह निवेदन किया कि जब एक पानी मिलता है तो उनसे ग्राबपाशी टैक्स पूरा नहीं लेना चाहिये। लेकिन इंजीनियर महोदय का यह कहना है कि यहां बांध के ग्रन्दर पानी कम है इसलिये तीन पानी न मिलकर एक ही पानी मिलेगा। इसलिये वहां पर सिंचाई के कर में कुछ कभी होनी चाहिये। ग्राबपाशी टैक्स या तो एक तिहाई लेना चाहिये या ग्राधा लेना चाहिये।

दूसरा निवेदन मुझे यह करना है कि जैसा कि माननीय सदस्यों का श्रौर कुछ जनता का माताटीला के करण्यान के बारे में विचार था कि माताटीला के कर्मचारियों श्रौर श्रधिकारियों ने करण्यान किया। मैं माननीय सिंचाई मंत्री का श्राभारी हूं कि उन्होंने एक कमेटी उसके लिये बैठाली जो कि श्रव उसकी जांच करने जा रही है। जब लोगों का यह कहना हो कि

<sup>\*</sup>वक्ताने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

## [क्षी गज्जूराम]

सरकारी कर्मचारियों में थ्रौर ध्रधिकारियों में करण्दान है तो उस बात की सरकार को जांच [करनी चाहिये थ्रौर जांच करने के बाद ध्रगर सरकार किसी निर्णय पर पहुचे तब तो माननीय सदस्यों को संतोष होना चाहिये। लेकिन श्रगर बारबार हम श्रधिकारियो पर थ्रौर कर्मचारियो पर ऐसे लांछन लगाते चले जायं या उनको बुरे बताते चले जायं तो हो सकता है कि वे बजाय इसके कि श्रच्छा काम करे उसको खराब भी कर सकते हैं क्योंकि उनके हाथ में सारी चीजें हैं।

में कुछ थोड़ा-सा ग्रवने ललितपुर सब-डियीजन के बारे में ग्रावके द्वारा निवेदन करना माताटील। बाध से ललितपुर सब डिवीनन मे एक इंच भी मिचाई नही हो सकती पानी की सिचाई नीचे की तरफ कुछ गरौठा तहसीन में फ्रांग कुछ पर तहसील में श्रौर बाकी हमीरपुर में चली जाती है। वहा रालितपुर सब-दिवीजन में सिनाई के साधन नही जमीन भ्रच्छी है और उपजाऊ है परन्तु वह लाखो एफर जमीन बेकार पनी हुई है। श्रगर वहा पर मिचाई के साधन हो जायं तो वहा की भुग्यमरी दूर हो सकती है। वहां पर लाखों की तादाद में गरीब किसान लोग दूगरें प्रतेशों में चले जाते हैं ग्रौर वहां जाकर फसल काटने का काम करते हैं। कुछ तो मध्य प्रदेश की तरफ चले ब्राते है श्रीर कुछ उत्तर प्रदेश की तरफ चले थ्राते ह। ग्रगर वहा पर सिचाई के साधन बन जाय तो लाखो की तादाद में किसान बाहर न जाय। हम लोग बुन्देल एक के रहनेवाले इस बात को बार-बार कहने में दार्म महसूस करते हैं कि इस एरिया में भुलमरी है श्रीर गरीयं। है। वहा के लोगो ने श्राजादी की लडाई के लिये सब से पहले श्रपना कदम उठाया था श्रीर तलवार के नीचे श्रपना सर झुकाया था, परन्तु दूसरे की गुलामी को मजूर नही किया। म श्रापके द्वारा माननीय मंत्री जी का ध्यान भाकर्षित करता हूं कि यहा पर नायो की तादाद मे, ७४ फीसदी लोग ललितपुर सब-डिवोजन के महुद्रा ग्रॉर बेर खाकर दिन गुजारते है। पर सिचाई के साधन पेदा हो जायं तो वह जमीन काक्त के काबिल हो सकती है भ्रोर उस ८५जऊं जमीन में अन्न भी अधिक पैदा हो सकता है जिससे श्रन्न की समस्या इल हो सकती है।

वहां पर सरकार की तरफ से सर्वे हो रहा है श्रीर उसके बाद वहा पर कुछ काम किया जायगा। में यह समझत। हूं कि सिचाई के लिये बाध या छोटे छोटे तालाब बनाये जायं तो उनसे सिचाई श्रधिक हो सकती है। वहा पर एक जामुनी नदी ह श्रगर उस पर मौटा बाध बना दिया जाय तो वह ऐसी नदी है कि उसकी नहर से महरोनी तहसील का तहत एरिया सींचा जा सकता है। एक नारायणी नदी ग्राम पिपरई में है जिसका सर्वे हो चका ह श्रोर उसके लिये कुछ रूपया भी खर्च हो चुका है। श्रगर उस पर भी बाध बना दिया जाय तो सिचाई की समस्या हल हो सकती है। में मंत्री जो से निवेदन करूंगा कि श्रगर इन दानी बाधो को तीसरी पंचवर्षीय योजना में ले लिया जाय तो वहां की पानी की समस्या हल हो सकती है।

लितपुर सब-िडवीजन के पाठागौरी गांव में बांध बनाया गया था जिसकी बने हुए ६,७ वर्ष हो गये हैं। वहां पर जो बांध टूट गया था उससे गौला किसान का बहुत नुवसान हो गया था। उसको ग्रभी तक मुग्राविजा नहीं मिला है। मैं माननीय मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि उसका मुग्राविजा शीघ्र दिलाया जाय।

मुचेरा तालाब के लिये बजट में रुपया दिया गया है। सरकार से उसकी मजूरी हो चुकी है और उसके लिये एस्टीमेट भी हो चुका है पर उस पर श्रभी काम शुरू नहीं हुआ। है। में चाहता हूं उस पर जल्दी से काम शुरू करा दिया जाय। मैं, जो अनुदान सरकार की तरफ से पेश किया गया है, उसका समर्थन करता हूं।

\*श्री टीकाराम पुजारी (जिला मथुरा) —श्रीमान् जी, जब पानी नहीं है तब तो पानी बरसता है। चैत फागुन में पानी बरसता है। ऐसी इस सरकार की खीज है कि जब पानी की जरूरत पड़ती है तब पानी नहीं मिलता है और जब पानी की जरूरत नहीं तब पानी मिलता है। इसी तरह से सरकार की तरफ से रजबहे धक्टूबर में खलते हैं। यह सरकार

<sup>\*</sup>वक्ताने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

१६६०-६१ के आय-ध्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—सनुदान २५१ संख्या ४७--लेखा शीर्षक ६८--सिचाई, नौचालान, बांध मोर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, प्रनुदान संख्या १०--लेखा शीर्षक १७, १८ श्रौर १६-ख--राजस्य से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण-कार्य तथा ग्रनुदान संख्या ११--लेखा शीर्षक १७, १८, १६ श्रौर ६८--सिचाई स्थापना पर व्यय

ऊंचे दिमाग की बन गई है। 'ग्रन्धे के ग्रागे रोना ग्रौर ग्रपनी ग्रांखें खोना' बस यही बात है। यह सरकार भी ग्रंथी है ग्रौर हम भी श्रन्थे हैं, न इधर के लोगों को सुझता है न उधर के। हमारे यहां का रजवाकुरसंडा, सादाबाद, जिला मथुरा सिर्क श्रक्टबर के महीने में चलता है श्रौर उस समय भी किसान को एक पानी के बाद कोई पानी नहीं मिलता है। इस के कारण वे लोग पहले जो कुंए से सिचाई करते थे, वह भी बन्द हो गयी है और ग्राबपाशी पूरी ली जाती है। इसलिये मेरा अनुरोध है कि वहां पिछले ५ साल में जो पूरी आबपादी ली गयी है सरकार उसे वापस करने की मेहरबानी करे। हमारी तनख्वाह में ग्रगर बाढ़ ग्राये, ग्रोला पड़े, सूखा पड़ जाय, वह दो सो रुपये से घट कर १०० रुपया रह जाय तो हमें मालूम पड़े कि किसान की क्या हालत होती है। 'जाको न फटी पैर बेवाई, वा का जाने पीर पराई'। सरकार में ही पानी नहीं हैं तो नहरों में पानी कहां से ग्रा सकता है। मेरा ग्रनुरोध है कि रजवाकुरसंडा, सादाबाद, जिला मथरा में ५ साल से जो ब्राबवाशी ली जाती है उसमें से ब्राधी किसानों को वापस की जाय ग्रौर नहीं तो उसे बराबर कर दिया जाय। हम कोई गुरेज नहीं करेगे। हम भले ही कुंए से सिचाई कर लें, लेकिन उसके भरोसे नहीं रहेंगे। ग्रंभी हम न इसमें ग्रौर न उसमें। हम कुछ कहना चाहें तो ५ मिनट बोलें ग्रौर ज्यादा कहें तो निकल जाग्रो, ग्रौर वे लोग बोलें तो कुछ नहीं। किसान को बोलने के लिये मिलें कुल ५ मिनट। यह क्या सदन की मर्यादा है। हम ज़ेरों को जो श्रंग्रेजों को सदा ठोकर मारते रहे उनको तो बोलने के लिये ५ मिनट यें जो सियार शेर बने बैठे हैं उन को २५ मिनट दिये जाते है। बड़े ताज्जुब की बात है! में श्राप के द्वारा श्रनुरोध करता हूं कि श्रगर नहर में पानी समय से नहीं चलता है तो सरकार उसे बन्द कर दे, किसान श्रपनी सिंचाई जैसे चाहे करालेगा । श्रगर सरकार निकम्मी हो जायगी तो लोग निकम्मे नहीं बने रहेंगे।

## श्री उपाध्यक्ष—समय समाप्त ।

श्री गयूर ग्रली खां (जिला मुजफ्फरनगर)- -उपाध्यक्ष महोदय, मैं ग्राप की ग्राज्ञा से रामस्वरूप वर्मा जी के कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिये खड़ा हुग्रा हूं। श्रीमन्, इस बात को कौन नहीं जानता कि हमारे देश ग्रौर प्रदेश की गिजाई सूरते हाल एक नाजुक दौर से गुजर रही है। इन हालात का मुकाबला करने के लिये ग्रौर गिजा की पैदावार बढ़ाने के लिये यह जरूरी हो जाता है हमारे लिये कि हम ग्रपनी खेती की पैदावार में इजाफा करें। मान्यवर, हमारे देश ग्रौर प्रदेश की ७५ फीसदी ग्राबादी इसी खेती पर मुनहसर है। इन लोगों के स्तर को ऊंचा करने के लिये यह जरूरी है कि हम ग्रपनी खेती की पैदावार को बढ़ावें ग्रौर गिजा के संकट को जिससे हमें रोज-रोज दो चार होना पड़ता है खत्म करें।

श्रीमन्, खेती का सबसे जरूरी श्रंग सिचाई है। श्रगर सिचाई के साधन श्रव्छे नहीं हैं श्रीर पानी मयस्सर नहीं है तो खेती की पैदावार को बढ़ाना नामुमिकन है। हमें काश्तकारों को सिचाई के साधन देने के लिये या तो नहरों की तरफ देखना पड़ेगायाद्यूबवेल्स का श्रासरा करना पड़ेगा। लेकिन चूंकि हमारे प्रदेश में सिचाई के साधन बहुत कम हैं श्रीर तकरीबन १५ फीसदी रकबा इस प्रदेश का ऐसा है जिस पर सिचाई हो सकती है। सिचाई के लिये हमें नहरों या द्यूबवेलों पर ही मुनस्सर रहना पड़ता है। लेकिन होता क्या है ? जब नहरों में ही पानी न श्रा रहा हो, द्यूबवेल ही न चल रहे हों, तो काश्तकार कैसे श्रवनी फसलों के लिये पानी पा सकता है ? श्रवसर काश्तकारों की फसलें पानी न मिलने के कारण ही खराब होती हैं।

[श्री गयूर ग्रली खां]

श्रीमन्, मैयह श्रर्ज करूंगा कि हमारे यहां जो नहर जमन शर्की ह, उस नहर मेपानी बहुत कम श्राता है। उसमें ६-६ श्रीर ४-४ हफ्ते पानी नहीं श्राता है श्रीर बड़ा नुकसान होता है। जतीजा यह होता है कि खेती सूख जाती ह। श्रीमन्, मै श्रापके जरिये से माननीय मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि वे इस तरफ काफी तवज्जह दे श्रीर इस नहर को चौड़ा भी कराये। इसके श्रलावा इस नहर के किनारे-किनारे ट्य्बवेल्स लगाये जायं ताकि वहां पर जो चोश्रा है वह खत्म हो सके श्रीर नहर का पानी बढ़ सके।

श्रीमन, हमारे इस इला के में बहुत से पुराने कुंग़ पड़े हुने है जो नहर की वजह से बिल्कूल बेमरम्मत है और चंकि पानी की बहुत ज्यादा कमा है इसलिय यह जरूरी हो जाता है कि इन कुन्नों की तरफ तवज्जह दी जाय ताकि इनसे आपवाशी का काम लिया जा सके। मान्यवर, इसके श्रलावा नये कुंग्रों की भी बहुत ज्यादा जरूरत ह हम।रे इलाके में क्योंकि तकावी देते वक्त अक्सर सरकारी कर्मचारी यह कहते है कि जो रकबा नहर से सीचा जाता है उसके लिये तकावी नहीं दी जा सकती। मैं, श्रीमन्, गुजारिश करूंगा कि इस तरफ काफी ध्यान दिया जाय । भान्यवर, जब मै शिकायत करता हूं कि नहरों से पानी नहीं मिल रहा है, फसलों को नुकसान हो रहा है, तो यह जवाब दिया जाती ह कि दिन्या पानी नहीं दे नहीं है या यह कि दिल्ली शहर के लिये पानी की जरूरत है। इसलिये पानी नहीं दिया जा सकता लेकिन क्या हालत होती है उन किसानों की जिनकी खड़ी फसने बरबाद हो जाती इसलिये मै गुजारिश करूंगा कि सरकार नहर में पानी बढ़ाने के लिये कोई न कोई प्रयत्न करे । श्रीमन्, श्राजादी मिलने से पहले बड़े-बड़े नेताग्रों से श्रवसर यह कहते हुये सुना कि गंगा हमारी है, जमुना हमारी है । गंगोत्री से यह नदियां निकलती है। श्रीर जिन मदानों से होकर ये बहती हैं, वह भी हमारे हैं, तो श्रंग्रेजों के मुताल्लिक वहा जाता था कि उनको श्राबपाशी लगाने का क्या हक है ? लेकिन में देखता हूं कि हिन्दुस्तान भ्राजाद हो गया भ्रौर भ्रब भी न्नाबपाशी के महसूल में दुगुनी, तिगुनी तरक्की हो गयी है, कोई कमी नहीं हुई । मै यह न्नर्ज करूंगा कि वह अपने पुराने वायदों को याद रखें और महसूल में तावफीक करें ताकि काइतकारों की भलाई हो सके ग्रौर ग्राबपाशी की ३ ग्राने रुपये की जो छट दी है उसको हमेशा के लिये मस्तकिल कर दें।

मान्यवर, ऐसे बहुत से ट्रिय्बवेल इस वक्त तक है जिन में भ्राज तक बिजली नहीं पहुंच सकी ग्रोर नतीजा यह हुन्ना कि वह भ्रव तक वैसे ही पड़े हैं। इसलिए में गजारिश करूंगा कि इन ट्यूबवेल्स में बिजली देने की कुपा करे ताकि वह काम में भ्रा सके ग्रौर उनसे फस्लों को फायदा हो सके ग्रौर पैदावार में इजाफा हो सके।

मान्यवर, हमारे इस विभाग में काफी श्रखराजात हो रहे हैं श्रौर गैर-उक्षरी पोस्ट्स बहुत सी बढ़ा दी गयी हैं। इसमें कई कई चीफ इंजीनियर रख दिये गये हैं जिनकी कोई जकरत नहीं। में समझता हूं कि जब हमारे माननीय मंत्री जी कई विभाग के मंत्री रह कर उनको चला सकते हैं तो क्या वजह है कि इस विभाग में एक ही चीफ इंजीनियर रखकर काम नहीं चलाया जा सकता।

मान्यवर, बड़े-बड़ें वेगंस ग्रौर गाड़ियां इस विभाग के लिए जो फराहम की जाती है, इकोनामिक कमीशन की यह रिपोर्ट है कि ये वापस की जायं ग्रौर यह स्टाफ गाड़ियां वापस की जायं ताकि जनता के ऊपर ग्राबपाशी के जरिये इस कदर बोझ न पड़ें जितमा कि श्रब पड़ रहा है।

इन अल्फाज के साथ में कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

सार्वजिनिक निर्माण मंत्री के सभा-सचिव (श्री धर्मसिह)—उपाध्यक्ष महोदय, जहां तक सिंचाई विभाग के अनुदानों का सम्बन्ध है, कल से इस पर बहस ही रही है और जी मामनीय बर्मा जी ने कटमोशन यहां पर पेश किया है में उसका विरोध करता है।

१६६०-६१ के आय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदान २५३ संख्या ४७--लेखा शीर्षक ६८--सिचाई, नोवालान, बांध और पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, अनुदान संख्या १०--लेखा शीर्यक १७, १८ और १६--ख--राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण-कार्य तथा अनुदान संख्या ११--लेखा शीर्षक १७, १८, १६ और ६८--सिचाई स्थापना पर व्यय

उयर के बैठ ने वालों ने और इधर के बैठने वालों ने ज्हुत सी बाते कहीं । संक्षेप में मैं उन पर प्रकाश डालना चाहता हूं । माननीय वर्मा जी ने निवेदन किया कि जब से हम स्राजाद हुए है तब से लेकर स्राज तक प्रथा पंचवर्षीय थोजना के स्रन्तर्गत, द्वितीय पंचवर्षीय योजना के स्रन्तर्गत इस प्रदेश से जहां तक भ्रावपाशी के साधनों का सम्बन्ध है यह प्रदेश पीछे गया है, स्रागे नहीं । मान्यवर, यह बात गतत है । स्रगर हम स्रांकड़ों को देखे तो १६४६ में १७,८२५ मील के करीब चैवल्स थे सौर १,८४७ के करीब स्टेट ट्यूबवेल्स थे । उसके बाद प्रथम पंचवर्षीय योजना बनने से पूर्व ७८ लाख एकड़ के करीब स्रावपाशी के सावन उपलब्ब हुए, जिसमे कि ७१.०५ लाख के करीब इर्रोगशन हुसा स्रोर बहुत सी स्कीनें लागू हुई । प्रथम पंचवर्षीय योजना के स्वत्रंत ४,००० मील नयी चैवल्स बनायी गयी स्कीनें लागू हुई । प्रथम पंचवर्षीय योजना के स्वत्रंत ४,००० मील नयी चैवल्स बनायी गयी सित्रंत पंचवर्षीय योजना के स्वत्रंत दे,००० मील नयी चैवल्स बनायी गयी सित्रंत पंचवर्षीय योजना के स्वत्रंत पंचवर्षीय योजना के स्वत्रंत के स्वत्रंत के स्वत्रंत के स्वत्रंत के स्वत्रंत के स्वत्रंत हुई है । इसलिये पह कहना कि पिछले पांच या दस साल के दौरान में इस प्रदेश में कुछ भी नहीं हुमा स्रोर स्रावपाशी के साधन धट है, गलत बात है ।

कल माननीय रघुबीर सिंह जी कह रहेथे कि ३० प्रतिशत द्वितीय पंचवर्षीय योजना में ग्राबाशों के साथन बढ़ तो जायों लेकिन वह सरकार के द्वारा नहीं। सरकार के द्वारा तो केवल १७ प्रतिशत ही बढ़ा बाकी किसानों ने प्रथन लिये ग्रयने प्राय पैटा किया है। उन्होंने इस बात को नहीं सोचा कि हमारे यहां पिछजे वर्ष ग्रौर इन वर्ष भी छोटी-छोटी स्कीने लागू की गर्भों ग्रौर किसानों के लिये तकावी का इंतजाम किया गया, छोटे-छोटे कुंग्रों से ग्राबाशों का इंतजाम किया गया, कम्युनिटी ब्याक्स, इंटेरिव ब्लाक्स इत्यादि के जरिये से काम जो हुन्ना है पिछजे दो तीन सालों के दौरान में उसका ग्रन्दाजा नहीं लगाया जा सकता। जो कम्युनिटी डेवलपमेट्स को पैसा दिया है वहां पर गूल वगैरह बनाने के लिये जो छोटे-छोटे सिचाई के साधन हो सकते हैं उनको ठीक करने के लिये तो वह पेसा भी किसानों का नहीं हं सरकार के द्वारा दिया गया है, तो यह कहना कि वहां सिर्फ १५ या १७ फीसदी सरकार के द्वारा बढ़ाया गया, गलत है।

दूसरे यह कहा गया कि इस दौरान में प्रोडक्शन बिल्कुल नहीं बढ़ा। मेरे पास मांकड़े हैं। हमारे प्रदेश में गेहूं और चावल का प्रोडेक्शन बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है यद्यपि शुगरकेन भी है, लेकिन में जो यहां भ्रांकड़े दे रहा हूं वह टन्स में दे रहा हूं। सन् १६५०-५१ में ह्वीट २६.७६ था, राइस १६.६७, और दूसरी फसले थीं ६५.६५। सन् १६५३-५४ में जब कि यह योजनाये चल रही थीं ह्वीट ३१.०५ हो गया, राइस २२.५५ हो गया ग्रीर जो दूसरी फसलें थीं उनमें ६६.६४ के कर बहो गया। ५८-५६ में ह्वीट ३०.३६ रहा, चावत २६.६४ हों गया। इस प्रकार में निवेटन करना चाहता हूं कि अगर १६५०-५१ श्रोर ५८-५६ के म्रांकड़ों को देखा जाता है तो ह्वीट और राइस दोनों में काफी पैदावार हुई। श्रव पैदावार तों गई लेकिन यह क्या कभी सोचा गया कि किस तरह से इस दौरान में म्रांबादी बढ़ी है ? क्या पाकिस्तान बनने के बाद लोग उधर से इथर नहीं श्राये, क्या इस तरीके की चीजे नहीं पैदा हुई? तो यह कह देना कि प्रोडक्शन घटा है और पैदावार नहीं हुई बिल्कुल गलत है। इस दौरान में ग्रांबाशि के साधन ग्रीर पैदावार दोनों बढ़े हैं। इतना

### [श्री घर्मासह]

ही नहीं, पोटैटो भी प्रोडक्शन में शामिल है तो ४०-४१ में वह ६२० लाग टन था प्रब ४८-४६ में ७१४४ लाख टन के करीब उत्पादन हुन्ना ह। इतना ही नहीं, प्रायल सीड ७.६७ पैदा होता था वह प्रब ६.६६ लाख टन के करीब पदा हुन्ना। ल्ट में इन्जीज हुन्ना इतना ही नहीं, शूगरकेन में भी १७१३० लाख टन का प्रोडिशन चढ़ाहा। लिहाजा यह कह दिया गया कि गवर्नमेंट का बहुत पैसा प्रावपाशी के साधनो पर लग गया फिर भी पंदावार नहीं बढ़ी, लेकिन वह यह कहना भूल गये कि इन टोरान में प्रावादी भी बढ़ी। इसी तरह से म्राप देखेंगे कि एग्रीकल्चरल इम्प्लीमंड्स जोकि किसानों के कम में म्रातं ह उनमें भी ४० फीसदों बढ़ों नरी हुई है।

एक बात यह कही जाती है कि ट्यूबवेल से ज्यादा श्रापवाशी नहीं होती, उसमें नकसान हो रहा है और नहरों में भी नुकसान हो रहा है। श्रीमन्, द्युववेत का पहले सर्वे किया जाता है, फिर बोरिंग में टाइम लगता है स्रोर उसके बाद विजली का भी प्रबन्ध करना पड़ता है और उसके लिए गूल वगैरह भी बनवानी पड़ती है। इन सारी चीजों में समय लगता है। शुरू में काफी पैसा लगता है श्रोर उसके बाद में शिचाई होती है। एक टयबवेल का रिटर्न ४-७ साल के बाद मालूम हो सकता है । लिहाजा यह कह देन। कि जितने भी सिचाई के साधन उपलब्ध किये गये है उनमें घाटा ही घाटा है, ठोफ नहीं है । जो नहरें ३० या ४० साल पहले बनाई गई थीं वह भ्राज भी चली भ्राती है श्रोर उनसे श्राज भी सिंचाई होती है । लिहाजा रिटर्न का पता एकपम नहीं मालुम हो सकता है। प्रथम पंचवर्षीय योजना में सिचाई के साधनों पर बहुत पैसा स्ववं फरना परा श्रोर कुछ योजनाश्रों को द्वितीय पंचवर्षीय योजना में भी ले जाना पड़ा। इनमें कही पर ए।वीजिशन की दिक्कत श्राती है श्रौर दूसरी तरह की दिक्कतें भी होती है जिनकी धजह से फाफी समय लग जाता है। प्लान का पैसा हमको भारतीय सरकार के द्वारा मिनता है, फभी उसके मिलने में भी दिक्कतें स्रा जाती है। दोहरीघाट स्रोर टांडा पमा फंनाल, जिनका कि जिक किया गया, उनके सम्बन्ध में फारेन एक्सचेंज की भी विकात रही । कही पर एक्यीजिशन के कागजात बनने में देर हो जाती है श्रीर कहीं पर मजदूर नहीं मिलते । मान्यवर, मे निवेदन करना चाहता हूं कि इन तमाम दिक्कतों के होते हुये भी जहां तक सम्भव हो सका बहुत से प्रोजेक्ट्स को समय के अन्दर ही समाप्त करने की कोशिश की गई।

जैसा कि श्री नवल किशोर जी ने जिक किया कि कुछ प्रोजेग्ट्स से ग्राधिक धन लगा, माताटीला का भी जिक किया ग्रीर कहा कि समय भी श्राधिक लगा, उसमें मध्य प्रदेश से कुछ झगड़े थे, कम्पेन्सेशन के भी कुछ मामलात थे ग्रीर उसमें इतना पैराा क्यों लगा, इसके लिये एक इंक्वायरी कमेटी बिठाई गई है। जहां तक इस सरकार का सम्बन्ध है उसने सिचाई के मामले में कोई उदासीनता नहीं दिखाई है। जह तक वहां ज्यादा रुपया लगने का सवाल है उसके लिये हमारा फाइनेन्स डिपार्टमेंट है, इर्रीगेशन का ऐडिमिनिस्ट्रेटिय डिपार्टमेंट है ग्रीर वहां पर कितना रुपया लगा, उसके क्या कारग थे इस सम्बन्ध में कमेटी ने रिपोर्ट दे वी है ग्रीर वह सरकार के विचार धीन है। उस पर सरकार पूरे तरीके से छान-बीन कर रही है ताकि इस तजुर्बे से सरकार श्रागे फायदा उठा सके। सम्भव है चूंकि यह रुपये पैसे का सवाल है इसलिये इस रिपोर्ट को फाइनेन्स डिपार्टमेन्ट को रेकर करना पड़े।

मान्यवर, यह कहा गया है कि बाढ़ से संबंधित मामलों में बंगीलग हुई, कम से कम में इसको मानने के लिये तैयार नहीं हूं। पिछले ४-५ सालों की अगर हमारे प्रदेश की हालत को देखा जाय तो और जो पूर्वी जिलों के रहने वाले माननीय सदस्य है यह इस बात को जानते होंगे कि प्रदेश बर्बाद हो गया, इतनी ज्यादा वर्षा हुई जितनी पिछले २०, २५ और ४० सालों में भी नहीं हुई थी। इस प्रदेश के इंजोनियरों ने रातदिन खड़े होकर काम किया। और इस तरह की बहुत सी स्कीमों को यहां पर लागू किया गया। उदाहरण

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--ग्रनुदान संख्या ४७--लेखा शीर्षक ६८--सिचाई नौचालन, बांघ ग्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, ग्रनुदान संख्या १०--लेखा शीर्षक १७, १८ ग्रौर १६-ख--राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण कार्य तथा ग्रनुदान संख्या ११-लेखा शीर्षक १७, १८, १६ ग्रौर ६८--सिचाई स्थापना पर व्यय

के लिये बाढ़ निरोधक जलाशयों की स्कीम, गांवों को ऊंचा करने की स्कीम, छोटे-छोटे पुलों, जिनके नीचे से पानी निकलता था ग्रौर गांव डूब जाते थे, उनको ऊंचा किया गया, ग्रामों का रेजिंग (ऊंचा करना) किया गया। यह काम पूर्वी जिलों के ग्रलावा कहीं-कहीं पिन्छिमी जिलों में भी किया गया। इसके बावजूद भी हो सकता है कि थोड़ी बहुत गड़बड़ी कहीं हुई हो, लेकिन यह कहना कि जितना भी पैसा खर्च हुग्रा है उसमें सब में गड़बड़ी हुई है, यह गलत है। कटाव से भी रक्षा की गई ग्रौर इतना ही नहीं इसी तरह से प्रदेश में जितनी भी बाढ़ या ड्रेनेज स्कीम्स थीं उनका बहुत कुछ काम हुग्रा है। चाहे हम महसूस करें या न करे केवल पिछले साल ही वर्षी नहीं हुई जैसी कि पहले होती थी ग्रौर गांवों के चारों ग्रोर पानी इकट्ठा हो जाता था। इन सारी दिक्कतों को दूर किया गया है ग्रौर लोगों को लाभ पहुंचा है।

इसके अलावा यह भी कहा गया कि अष्टाचार बहुत है। इघर से उत्तर भी दिया गया। मैं निवेदन करूंगा कि जहां तक इस विभाग का सम्बन्ध है पिछले ३ साल में किन्हीं इनएफी- शिएन्सी, आष्टाचार या अन्य कारणों से, कहीं सरकार को कोई कमी नजर आई कि कुछ गड़बड़ी है, तो सरकार ने उनके खिलाफ कार्यवाही की। इस सम्बन्ध में १२ गजटेंड अधिकारी मुअतल किये गये है और ४८ नान—गजेंटेड अधिकारी मुअतल हुये है, इस तरह से कुल ६० गजेंटेड व नॉन-गजेंटेड अधिकारी अष्टाचार या इनएफीशियेन्सी वगैरा के सम्बन्ध में हटाये गये हैं।

एक सवाल यह भी उठाया गया कि प्रदेश में जितनी भी नहर की या नलकूपों की कच्ची पटिरयां हैं वह सब पक्की करा दी जायं, हम तो खुद यह काम कराना चाहते है, इसका सर्वे भी हम कराया। केवल पक्की कराने का एस्टीमेट ४७ करोड़ का है। यह ठीक है कि उससे लाभ होगा श्रौर स्टैडर्ड ग्राफ लिविंग बढ़ जायगा, लेकिन वह ४७ करोड़ रुपया कहां से ग्राये यही सवाल है।

श्री होरीलाल जी ने कहा कि जहां तक गूलों की सफाई का सम्बन्ध है वह समय पर नहीं होती। मैं निवेदन करूंगा कि सफाई श्राम तौर पर समय से होती है, श्रगर वह किसी खास गूल का किसी गांव, तहसील या हेडक्वार्टार की गूल का जिक्र करते कि वहां पर फलं गूल की सफाई नहीं हुई श्रौर गड़बड़ी है तो में उसको दिखा लेता, लेकिन जनरली कह देना कि गूल की सफाई कहीं नहीं होती श्रौर उनका रेत नहीं निकाला जाता, यह बात गलत है।

इसके बाद मैं गंडक योजना के बारे में भी थोड़ा निवेदन करूंगा। यह योजना ३ सूबों से सम्बन्धित है और ग्रब यह भारत सरकार को भेजी गई है, इस बजट में उसके लिये १५ लाख के करीब रखा गया है। और ५,००० के करीब रुपया सपलीमेंटरी बजट में भी सर्वे ग्रादि के लिये रखा गया था। इसकी लम्बाई द० मील के करीब होगी। ११ मील तो नेपाल में होगी ग्रौर ६६ मील यू०पी० ग्रौर बिहार में होगी। धान की सिंचाई उससे ३,७०,४६४ एकड़ में होगी। रबी में ७४,०६७ एकड़ की ग्राबपाशी होगी ग्रौर गन्ने की १,४६,१६४ एकड़ की सिंचाई होगी। जहां तक पैसे का संबंध है यू० पी० ग्रौर बिहार का सिम्मिलत २,६६२ १७ लाख रुपया के करीब व्यय होगा। जिसमें यू० पी० के द्वारा १,४४७ ४१ लाख ग्रौर बिहार के द्वारा १,४१४ ७ ४१ लाख व्यय होगा। इस योजना से गोरखपुर ग्रौर देवरिया में काफी ग्राबपाशी होगी ग्रौर ग्राशा की जाती है कि सिचाई के मामले में दोनों जिले हेल्फ सफीशियेंट हो जायंगे।

[श्री धर्मसिह]

मान्यार, एक माननीय सदस्य ने यह कहा कि प्रान्यायकता उस बात की है कि पिश्चमी जिले में सिंचाई के साधन कम दिये गये हे थ्रीर पूर्वी जिलों में ट्यूबवेल ग्रादि ज्यादा बनाये गये हे। यह बात बिल्कुल समझ में नहीं ग्रायी। उन्होंने यह भी कहां कि पूर्वी जिलों में उनसे बहुत थोड़ी श्राबपाशी हो रही है दमलिये पश्चिमी जिलों में ज्यादा बनाने चाहिये। यह ठीक है कि इस समय बहां कम प्रावपाशी हो रही है, लेकिन जब ये साधन वहां बन गये हैं श्रगर श्राज कम होती है तो श्रागे श्रीयक होगी। पूर्वी जिलों का यदि इतिहास देखा जाय तो पहले वहां ये साधन बहुत कम थे, न यं कोई रजबहा था श्रोर न वहां कोई ट्यूबवेल ही था। इसलिये वहां इन स धनों की बहुत ग्रावश्यकता है। यह भी ठीक है कि पश्चिमी जिलों में श्रोर भी होने चाहिये, उस है लिये हम प्रयत्न कर रहे हैं।

एक माननीय सदस्य ने कहा कि जोनपुर जिले में होई दुयुववेरा नहीं बना । बने है वहां काफी श्रीर भी ग्रावश्यकता है, थर्ड फाइव ईयर प्लान में उने हे बारे में मोचा जा सकता बुन्देलखंडके लिये भी कहा गाया कि वहा साधन बहुत कम है। बहा पर ४१के करीब माइनर स्कीम्स लागु की गयी ह। भाताटीला योजना तो उस क्षेत्र के चार जिलों के लिये इसी सिलसिले में एक पंजाबी क्लर्क का भी जिक्र किया गया। एक बहुत छोटी सी बात को बड़ी भारी बंगलिंग का रूप दिया गया । कहा गया कि पंजाबी क्लर्क ने सरकार को शिकायत की थी, इसलिये उसको निकाल दिया गया । वह एक प्रनक्वालीफाइड क्लर्क था। उसकी शिकायत करने के बाद सरकार ने उस पर पूरी तरह से विचार किया श्रीर लोगों को मुम्रितिल किया। उसको तो वो ही पहले ही नोटिस मिलने नाला था, शिकायत उसने की इसलिये नहीं मिला। जिनको यह तहकीकात वर्तरा सुद्ध की गयी थी, श्री प्राम नारायण जी, उन्होंने कुए कि इसको मुस्रतिल कर दिया जाय, सरकार ने उनको मस्रतिल नही किया बल्कि उसको मौका दिया। वाद में रिपोर्ट इस प्रकार की श्रायी कि जहाँ तक तहकीकात है उसमें उसकी ग्रावश्यकता नहीं है, यह बिना उसके ही हो सकती है। रवयं ही उसकी इंक्वायरी की जा सकता है। इसको बहुत से लोगों ने बताया कि २२ करोड़ का गयन हो गया, यह बात नहीं है। पंजाबी के खिलाफ भी शिकायते थी। समय की कमी के कारण इस समय मे बता नहीं सकता । उन्होंने नियमों का पालन नहीं किया। उन हे खिलाफ २१ ऐसी क्षिकायतें थीं जो मुहकने के कर्मचारी के खिलाफ नही होनो चाहिये।

श्रन्त में मान्यवर, एक माननीय सदस्य ने यह कहा कि यह विभाग उल्लू भी पालता है। जहां तक बुन्देलखंड डिवीजन को बात है, कोई उल्लू नहीं पाला गया। मान्यवर, यह बिल्कुल गलत बात हे, माताटोला में वूहें बहुत है श्रोर उन चूहों की मारने के लिये सरकार ने जैसा कि मेने कहा कोई उल्लू नहीं पाल रखा है, लेकिन एक एक दो दो फर्लींग पर बांस की कुछ छतिरयां खड़ी कर दी है जिन पर उल्लू अपने प्राप श्राकर बंठ जाते है श्रोर श्रपने श्राप उड़, भी जाते हैं। इसमें सरकार का किसी प्रकार का कोई खर्चा नहीं है। सिर्फ बांस की छतिरयां खड़ी करने पर एक एक दो दो फर्लींग पर एक या दो दो रुपये का खर्चा है। ऐसे माताटीला बांध को जो चूहे काटते हैं, इन उल्लुश्रों की वजह से उस बांध को लाभ ही होता है क्योंकि वे चूहों को मार कर खा जाते हैं। लेकिन यह कहना कि सरकार ने उल्लू पाल रखे है, यह बिल्कुल गलत है।

श्री उपाध्यक्ष—इसका मतलब है कि उल्लूभी सरकार की मदद करते हैं। (हंसी)

\*श्री रूर्मांसह (जिला शाहजहांपुर)—मान रीय उपाध्यक्ष महोदय, श्री रामस्वरूप वर्मा ने जो कटौती का प्रस्ताव पेश किया है, उसका में समर्थन करने के लिये खड़ा हुन्ना है। म्राज सिंचाई के प्रनुदान पर वहस हो रही है। सिंचाई मोटे तौर पर तीन चार तरीकों से होती है। नहरों से, ट्यूबवेल्स से, छोटे-छोटे कुम्नो से ग्रौर ताल पोखर वर्गरा से। ग्राज इस कांग्रेसी सरकार

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

२५७

१६६०-६१ के ब्राय-व्ययक में ब्रनुदानों के लिये मांगी पर मतदान--- ब्रनुदान संखरा ४७--लेखा शीर्यंक ६ -- सिचाई, नौचालन, बांध स्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यो का निर्माण, श्रनदान संख्या १०-लेखा शीर्षक १७, १८ ग्रीर १६-ख-राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण-कार्य तथा भ्रनुदान संख्या ११-लेखा शीर्षक १७, १८, १६ ग्रोर ६८–सिंचाई स्थापना पर व्यय

ने सिचाई के इन छोटे छोटे साधनों की तरफ से अपनी आंखें मुंद रखी हैं। यों तो सिचाई मंत्री जी निर्माण विभाग के भी मंत्री हैं। इत्रलिये मै उनकी सुझाव देता हूं कि वे ज्यादा से ज्यादा पैसा इन म्रनुदानों पर खर्च करें म्रौर मंत्रियों म्रौर बड़े बड़े श्रफतरों के रहने के लिये मकान बनवाने में ज्यादा पैसा न लगायें। महात्मा गांधी ने तो यहां तक कहा था कि कांग्रेस सरकार के वजीरों को झोपड़ी में बैठ कर हुकुमत करनी चाहिये, लेकिन ग्राज महात्मा गांधी की बात को उनके चेले भूल गये हैं ग्रौर वे मंत्रियों तथा वड़े बड़े ग्रफसरों के रहने के लिये ६०-६० ग्रौर ७०-७० हजार के मकान बनवा रहे है।

श्री उपाध्यक्ष--इस ग्रांट से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है, श्राप सिंचाई पर ही बो नें।

श्री रूमसिंह--मेरा मतलब यह है कि निर्माण विभाग से रुपया निकाल कर इस भ्रनुदान पर ज्यादा खर्च किया जाय। श्रीमन्, सिंचाई मंत्री जी से मेरा सुझाव है कि मंत्रियों तथा बड़े-बड़े ग्रफसरों के लिये ६०-६०, ७०-७० हजार के बंगले न बनाकर उधर का रुपया बचा कर इधर लगाया जाय । यानी बड़ी-बड़ी योजनाय्रों की तरफ कम तवज्जह दें भ्रौर सिचाई की छोटी-छोटी योजनाम्रों की तरफ ज्यादा तवज्जह दें। श्रीमन्, किसान नहरें और ट्यूबवेल्स की स्राज्ञा में छोटे छोटे कुस्रों स्रीर ताल पोखर से सिचाई करना ही भूल गये। देहात में किसानों को ऐसा कुछ सहारा हो गधा है कि हमारे यहां भी ट्यूबवेल्स बनेगे, हमारे यहां भी नहरें बनेंगी, लेकिन वे सब ग्रंभी तक नहीं बनीं। इस सरकार का ग्रंपने ग्रफसरों पर कोई नियन्त्रण नहीं है। सरकार छोटे छोटे कुग्रों के लिये जिले में कुछ तकावी के पैसे बांटती है, लेकिन वहां पर जो हाकिम परगना या जो अधिकारी होते हे वे काश्तकारों को पैसा देते नहीं हैं स्रौर ऐसी हालत में वह पैसा व्यपगत हो जाता है। तो माननीय मंत्री जी से मेरी प्रार्थना हैं कि वे बड़ी-बड़ी योजनाम्रों के बदले छोटी-छोटी योजनाभ्रों की तरफ ज्यादा तवज्जह

श्रीमन्, मैं शाहजहांपुर जिले की एक बात कहना चाहता हूं। शाहजहांपुर में बदायूं जिले से एक नदी का सोता स्राता है जो बहुत कम चौड़ा है। वहां पर कई साल से एक पक्को बांध बंधवाने की योजना चल रही है, लेकिन ग्राज पांच साल के बाद भी वह बांध नहीं बन पाया है। पिलुग्रा टिंडई में भी एक पक्का बांध बन जाय तो उससे बहुत एकड़ जमीन सींची जा सकती हैं। किसान कभी कभी कच्चा बांध बनाकर अपना काम चलाते है, लेकिन सरकार को चाहिये कि इस बांध को पक्का बना देने की तरफ तवज्जह दे ताकि हजारों एकड़ जमीन की सिंचाई की जा सके। इससे हमारे देश में ग्रन्न की पैदावार भी बढ़ सकती है। उसी के दूसरी तरफ लक्ष्मणपुर एक गांव है, वहां भी ऐसी व्यवस्था करें तो बहुत सा अन्न पैदा हो सकता है। ये सारी दिक्कतें वहां सिचाई की व्यवस्था न होने की वजह से ही हैं। ज्ञाहजहांपुर में सूखा पड़ गया, लेकिन सिचाई का कोई बन्दोबस्त तक नहीं है (लाल बत्ती जलने पर) अभी तो श्रीमन, समय होगा?

उपाध्यक्ष--समय कम है, ७ मिनट में ही कह लें।

श्री रूमिंसह--पुला पड़ गया फतल मारी गई। हमारे न्याय मंत्री कहते है कि हमने कलेक्टर को आदेश दे दिया है कि वह लगान इत्यादि की वसूलयाबी को मुलतवी कर दें। लेकिन वहां के श्रमीन जबर्दस्ती श्रभी का ही नहीं बल्कि रबी तक का लगान वसूल करते हैं। तो मेरा [श्री रूमसिंह]

निवेदन यह है कि सिचाई मंत्री जी छोटी-छोटी योजनाग्नों की तरफ ज्यादा तवज्जह दें। बड़ी-बड़ी योजनात्रों की तरफ से कम करें। तभी पैदायार बढ़ सकती है श्रीर सिचाई का क्षेत्र बढ़ सकता है।

सिचाई विभाग में बहुत धांधली चल रही है। एक हरिजन भाई है। उनका नाम है खरगी। उतरिद्या में रहते हैं। परगना बिजनीर, तहसील मोहनलालगंज श्रौर जिला लखनक हैं। उनके पास ५ बीधा जमीन थी। सिचाई विभाग ने ६-७ साल का श्रसी हुग्रा ले ली थी। लेकिन श्राज भी उस बेचारे पर लगान पड़ता है। मुग्नावजा बहुत कम दिया गया है श्रौर दूसरे को दे दिया गया है। उसने सब जगह श्रपनी श्रावाज पहुंचाई, लेकिन कोई गुनवाई नहीं हुई। इस तरीके की घांधली को खत्म किया जाय श्रौर गरीब श्रादिमयों के ऊपर जो बेजा वजन पड़ रहा है उसे दूर किया जाय। श्रन्त में में किर प्रार्थना करूंगा कि छोटी-छोटो योजनाश्रों पर ज्यादा तवज्जह देनी चाहिये। छोटे छोटे कुश्रों के लिये, तकाबी के लिये ज्यादा श्रनदान रूपा जाय ताकि हर क्षेत्र में सिचाई का बन्दोबस्त हो सके। श्राबपाशी का रेट बहुत बढ़ गया है उसे भी कम किया जाय।

\*श्री जगवीरसिंह (जिला बुलन्दशहर)—उपाध्यक्ष महोवय, मं श्रापका श्राभारी हूं कि श्राप ने मुझे धर्मसिंह जी के बाद बोलने का समय विया ।

श्री उप।ध्यक्ष--यह बात सही नही है। रूर्मासह जो बीच मे बोल चुके है।

श्री जगवीर सिंह—मुझसे पहले वह बोल खुके है। मैंने धर्म सिंह जी को बहुत गौर से सुना मुते श्राशा थी कि एक—दो बात यह अपने भाषण में जरूर कहेंगे, लेकिन मुझे बहुत तकलीफ है कि उन्होंने जिन्न नही किया। इतना मंकेंत जरूर फिया कि ट्यूबनेल के बनने में कुछ समय लगता है। श्रगर यह बतला दिया होता कि एक ट्यूबनेल के बनने में कितना समय लगता है तो में श्राभारी होता। मुझे मालूम है कि उनके महक में के ट्यूबनेल जो ७- द साल पहले बन चुके थे, बिजली न पहुंचने की वजह से काम नहीं कर रहे है। श्रगर यही रखेया रहा तो मुझे श्राशा नहीं है कि प्रदेश के किसानों को राहत मिलेगी...

श्री उपाध्यक्ष--कहां का है ?

श्री जगवीर सिह—गुलावटी का है। कई वका सवास भी कर चुका हूं। सरकार कहती है कि हर चीज के लिये समय की श्रावद्यकता है। मुझे विद्वस्त रूप से माल्म हुशा है कि हमारी सरकार को माल्म नहीं है कि वह ट्यूबवेल किस महकमें से श्रीर किस तरीये से बना दिया गया। माननीय मंत्री जी बतावें कि वह ट्यूबवेल किस महकमें से श्रीर कैसे बनाया गया श्रीर क्या कारण था कि ७ साल तक इलेक्ट्रीकाई नहीं हो सका ?

हमारे पालियामेंटरी सेकेटरी जब बोल रहे थे तो कृद्ध उन्होंने श्रांक हों के जाल की बात की। कहा कि प्रोडक्शन बढ़ा है। मेरा कहना है कि जब से हमारी कांग्रेस मरकार का रिजीम श्राया है, प्राडक्शन घटा है, बढ़ा नहीं। श्रगर भ्रम हो तो में श्रांक हे दिला दूंगा। श्रगर बहुत श्रावश्यकता हो तो पिछले वर्ष की मेरी कृषि की स्पीच पढ़ ली जाय। जहां तक इरिगेशन की बात है में दो, तीन बातें कह देना चाहता हूं। हमारी सरकार का ध्यान बड़ी रकीम्स की तरफ ज्यादा है, छोटी स्कीम्स की तरफ ज्यादा है, छोटी स्कीम्स की तरफ उसका ध्यान नहीं जाता। सरकार को चाहिये कि छोटे-छोटे कुश्रों की तरफ, जो पुराने खराब हालत में श्रीर कच्चे पड़े हुये हैं उनके लिये किसान को कृद्ध सश्रीरडी देकर किसान को इस लायक बनाये कि वह नहर या ट्यूबवेल के श्रापरे न रहें स्वयं उन कुश्रों से पानी लेकर सिचाई कर लिया करें। इस तरह से खेती की पैदावार बढ़ सकती है।

श्राज सदन में रेट्स का बड़ा जिक सुना। में उन श्रभागे पित्रचमी जिलों से श्राता हूं जिनकों बहुत ही मालदार कहा जाता है श्रौर समझा भी जाता है। हर सामले में कहा जाता है कि बहुत

<sup>\*</sup> वक्ताने भवण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

१६६०-६१ के म्राय-व्ययक में म्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--म्रनुदान संख्या ४७--लेखा शीर्षक ६८--सिंचाई, नौचालन, बांध म्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, म्रनुदान संख्या १०-लेखा शीर्षक १६, १८ म्रौर १६-ख-राजस्व से किये जाने वाले सिंचाई निर्माण-कार्य तथा म्रनुदान संख्या ११-लेखा शीर्षक १७, १८, १६ म्रौर ६८-सिंचाई स्थापना पर व्यय

मालदार हैं, मालूम नहीं उनसे कितना ले लिया जाय। मेरी समझ में नहीं श्राता किस तरीके से उन जिलों में कुछ श्रौर टैक्स है श्रौर दूसरे जिलों में कुछ श्रौर है। मुझे श्रापत्ति नहीं हमारे पूर्वी जिलों में टैक्स माफ हों, या वहां कम लिये जायं, लेकिन जिस पानी के लिये जितना टैक्स प्रान्त के किसी भी कोने में हो दूसरी जगह भी उतना ही टैक्स होना चाहिये। यही मेरा श्रनुरोध है।

सरकार का स्रजीब तरीका है कि ट्यूबवेल के पानी का स्रसेसमेन्ट किसी श्रौर तरीके से श्रौर नहर के पानी का स्रसेसमेंट किसी श्रौर तरीके से। टैक्स इस बात का होना चाहिये कि पानी कितना किसान को मिला श्रौर किस वक्त मिला। पानी छोड़ा जाता है जब देख लिया जाता है, हमारे श्रिधकारी सोच लेते हैं कि श्रब तो पलेवा का समय श्रा गया है लेकिन यह ध्यान नहीं रखा जाता कि जिस चीज का पलेवा हमने कराया है उसको पूरा पानी दे सकते हैं या नहीं। इससे किसान को बढ़ी तकलीफ होती है। में बताना चाहता हूं ऐसा होता है, में नहर गंग का जिक कर दूं कि ४,६ हफ्ते रजबहें बन्द हो गये फसल के पकने के वक्त। श्राखिर क्यों? हमारा मंशा यह तो नहीं है कि एकरेज दिखाने के लिये सिर्फ पानी दे दें श्रौर फिर उसका खयाल न रखा जाय। मंशा तो हमारा यह है कि पैदावार बढ़े। लेकिन पैदावार बढ़े कैसे? जिस समय किसान को पानी की जरूरत होती है उस वक्त पानी नहीं नहर में दिया जाता। में कहता हूं कि किसान को श्रगर पैदावार बढ़ाने के लिये श्रब्छे साधन समय से मिल जाते है तो १०० फीसदी तक पैदावार बढ़ जाया करती है।

दो, तीन बातों का और नहर के मुताल्लिक जिन्न करना चाहता हूं जो कि बिल्कुल किसान की बातें हैं श्रौर उनका जिऋ ग्रभो तक नहीं किया गया । एक चीज ध्रोसराबन्दी होती है । मालूम नहीं किस कानून से श्रोसर(बन्दी की जाती है ? एक किसान का खेत बिल्कुल टेल पर है लेकिन पानी लेकर श्राता है बिल्कुल रजबहे के मुंह से श्रीर जितना उसको वार मिलता है उतना पानी रास्ते में ही खत्म हो जाता है। मुझे जी० के० ग्रग्रवाल जी का वह भाषण याद ग्रा गया जो उन्होंने बख्शी के तालाब पर दिया था जिसमें कहा था कि बडे लीगल तरीके इस्तेमाल करते हैं कुछ मामलात में । मैं जानना चाहता हूं कौन-सा इंसाफ ह श्रापका, गांव में उसे बराहशामिल कहते हैं, ग्रगर मेरा श्रौर श्रापका खेत मिला-जुला है श्रौर श्राप श्रपने खेत की श्राबपाशी करने के लिये पानी लाते हैं और मैंने तमाम साल में एक दफा भी ग्राबपाशी नहीं की, सिर्फ दूसरे के खेत से मिला हुन्ना खेत होने का गुनाहगार हुं, तो मेरे ऊपर भी श्राबपाशी लग गई। में नहीं समझता कि जब ब्राबपाशी नहीं की तो टैक्स क्यों लगाया जाय ? में चाहंगा कि मंत्री जी इस ब्रोर ध्यान सीधे सादे किसान इस कानून के शिकार होते हैं, उनको बड़ी परेशानी होती है। वक्त श्रमीन जाता है या पतरौल जाता है तो कहते हैं कि इसको हम बचा सकते है श्रगर श्राप हमसे कुछ हिस्सा बांट लें। करण्यान शुरू होता है वहां से जिस समय कि पर्ची बंट जाती है और फहा जाता है यह पर्ची गलत बाट दी। ठीक कराना है तो उसके लिये पैसा दे दिया जाय। किसान अगर पैसा नहीं देता है तो उसको १ के बजाय २ रुपये देने होते हैं। मंत्री महोदय इन दो बातों की ग्रोर विशेष कर ध्यान देंगे।

श्री श्रबदुस्समी (जिला सुल्तानपुर)—उपाध्यक्ष महोदय, दो बातें मुझे कहनी हैं। एक तो यह कि जो सिचाई वाली किसाब मिली है इसको पढ़ कर मुझे बड़ा श्रफसोस हुश्रा कि सुल्तान-पुर जिले को उसमें कोई जगह नहीं दो गयी। लेकिन इससे पहले इस सिलसिले में वहां कई चीजें

### [श्रीग्रब्दुसामी]

द्या चुकी है। पुराने जो मिनिस्टर थे राममूर्ति जी वह राद सुन्तानपुर गये थे ग्रोर वाज जगहों को उन्होंने खुद देखा था स्रोर इस नर्ता जे पर वे पहुंचे थे कि यहां द्य्यवेल होना जर रो है। लेकिन इस किताब में हमारे यहां कोई द्यूवतेल्स नहीं ररो गये हु। इसलिये मेरी दरस्वास्त है कि हमारे जिले को ट्युबवेत्स जरूर दिये जाय ।

हमारा जिला कोई बड़ा शहर नहीं है। मुल्यानपुर शहर की श्राबादी कल २०, २२ बाको श्राबादी देहात में निखरी गड़ी है। इसलिये जो जमीन फास्त के लिये मिलती है वह बेहद कम मिराती है। कोई तीन एका फी कानदान तमारे जिले में जमीन पढ़ती है। हमारे जिले में कोई सनश्रत, दलकारी या उशोग नती है। शिर्फ गेली पर गृतर होती है। एक जरिया था फीजो मुलाजिमत । बद्दिकम्मती ते प्रश्नमं तहत हद तक राम हो गया है। हमारे यहां ५० हजार बीघा जमीन बेकार पड़ी है। बाउस तरत से कि बरे बने तालाब है हजार बीवा, डेढ़ हजार बीवा के। उनमें पानी की निकास नती है और बरसात में पानी इकट्ठा हो जाता है और वह तालाब की जाता खराब हो जाता ह और जगीन पानी के नीचे देव जाती है और फसले तबाह हो जानी है। श्रार नार्तिया निकाल दी जाय जिनसे पानी निकाला जा सके तो २०,२५ हनार बीघा जमीन तो ताताबों से निका बागे स्रोर जो जोती बोई जाती है वह भी काम में आ जाय। तो इस तरह से ५० ह ।। र बीया जमान हमारे जिले को मिल सकती है श्रौर जो भूमि हीन है उनको काफी गवद भिल सकती है श्रोर जिले का एक बहुत बड़ा सवाल हल हो सफता है। वहां दो बाते गुरे कहना थी।

श्री जगन्नाथ चौधरी (जिला बिलया) -- मान्यवर, मै श्रापका श्राभारी हूं कि कई दिनों के प्रयत्न करने के बाद भ्राज मुझे इस सदन में बोलने का मौका मिला श्रीर में माननीय मंत्री जी के इस श्रनुवान का समर्थन करता हूं। सभी लोगों को विदिल है कि हमारा देश कि यहां की श्रिधिकांश जनता कृषि पर ही अपना जीयन मनहसिर करती है। श्रपने देश में श्रश्न इतना कम है कि जब कभी सुला पड़ जता है तो श्रन्य देशों से श्रश्न मंग ना पड़ेसा है। इसलिये श्रन्न के उत्पादन को बढ़ाने के लिये सरकार का कर्त्तव्य है कि वह जनता की ज्यादा से ज्यादा सहायता करे। में माननीय मंत्री जी को बधाई देता हूं कि १२ वर्ष के श्रन्दर सिचाई की व्यवस्था में काफी तरक्की हुई है। श्रंग्रेजों की हुकूमत जब थी तो ये सारी मुविधाग नहीं मिली उस समय न कुए खुँदवाने की सुविधा थी, न द्यूबवेल लगाने की सुविधा थी, न इतनी नहरें बनी थीं। लेकिन सरकार धन्यवाद की पात्र है कि १२ वर्ष के श्रन्दर उसने काफी प्रगति सिंचाई के सम्बन्ध में की है।

इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता कि कृषि के उत्पादन को बढ़ाने के निये सरकार ने प्रदेश के कोने कोने में, प्रत्येक गांव में सिचाई के लिये कुये की व्यवस्था की है। इससे भी कोई इन्कार नहीं कर सकता कि सरकार ने सिचाई की सुविधा के निये काकी र्यु बबेल्स की व्यवस्था की है। यहीं नहीं, एक बड़ी लम्बी चौड़ी स्कीम सरकार ने महर की मिकाल दी है। इस मबसे किसानें। को काफी सुविधा मिलेगी। लेकिन मुझे दुः ख के साथ कहना पड़ता है, यह बात छित्री हुई नहीं है कि भ्रापका बलिया जिला, जिसने स्वतंत्रता संग्राम में काफी भाग लिया, नये-नये निर्माण के कायाँ में उतना ही सबसे पीछे रह गया है। इसके लिये में माननीय मंत्री जी से प्रार्थना करूंगा कि इस बात की श्रोर विशेष ध्यान रखें कि राजधानी से जो भी स्कीमें हर जिले के निये निकालो जाती है मेरा खयाल है कि लखनऊ से चल कर बलिया के पूर्वी क्षेत्र में पहुंचते पहुंचते वह सारी स्कीमें समाप्त हो जातो है ग्रौर बनिया जिला उन सारी सुनिधान्नों से वंचित रह जाता है। मंत्री जी बिलिया जसे पिछड़े जिले की तरफ विशेष घ्यान रखे ताकि वह जिला उपेक्षित न रह जाय।

इसके साथ-साथ मै एक त्रौर प्रार्थना करता हूं कि हमारे जिले के उत्तरी छोर में श्रोनगर-तुरतीपार बांध और घाघरा के बीच स्थान में सैकड़ों गांव बसे हैं, लेकिन उनकी सिवाई के लिये

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-ग्रनुदान संख्या ४७--लेखा कीर्षक ६८--सिंचाई, नौचालन, बान्ध ग्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, ग्रनुदान संख्या १०--लेखा कोर्षक १७, १८ ग्रौर १६-ख--राजस्व के किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण-कार्य तथा ग्रनुदान संख्या ११--लेखा कीर्षक १७, १८, १६ ग्रौर ६८-सिंचाई स्थापना पर व्यय

सरकार की तरफ से कोई व्यवस्था नहीं है। न तो वहां द्यूबवेल की व्यवस्था है, न नहर की व्यवस्था है ग्रौर न समुचित क्य्रों की ही व्यवस्था है। इसलिये सरकार से प्रार्थना है कि इस ग्रीर ध्यान देकर उन गांवों में सिचाई का प्रबंध करने की कृपा करे।

इसके स्रलावा घःघरा के किनारे कठौरा एक गांव है जहां एक इतना जबरदस्त नाला पड़ता है कि वह स्रकेले १४ गांवों की फसलों को बरबाद करता है। सरकार की रिपोर्ट है कि उस बांध के टूट जाने से लाखों उपये की क्षति होती है। स्राज मै तीन साल से उस बांध पर रेगुलेटर लगाने के लिये सरकार से प्रार्थना कर रहा हूं लेकिन मुझे दुः खहै कि स्रभी तक सरकार ने इस स्रोर कोई घ्यान नहीं दिया। मै माननीय मंत्री जो से स्ननुरोध करूंगा कि इस बरसात के पहले उस रेगुलेटर को बनवा देने की कृपा कर ताकि उन १४ गांवों के लोगों को राहत मिल सके।

इन शब्दों के साथ मै प्रस्तुत ग्रनुदान का समर्थन करता हूं।

\*श्री रामकुमार वैद्य (जिला मुरादाबाद) — श्रादरणीय उपाध्यक्ष महोदय, में सिंचाई पर कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करने खड़ा हु श्रा हूं। श्रीमन्, मेरा उद्देश्य इस सम्बन्ध में नीति का व्योरा देना अथवा समालीचना करने का नहीं हैं। समय अपर्याप्त है किन्तु फिर भी आपने जो समय मेरे लिये निर्धारित किया है उसी में कुछ सामान्य मुझाव अपने क्षेत्र के सम्बन्ध में आपके द्वारा माननीय मंत्री जी के सामने रखना चाहता हूं। में मुरादाबाद जिले के अमरोहा क्षेत्र से आता हूं। दुर्भाग्य से अमरोहा सन् ५४-५५, ५५-५६, ५६-५७ और ५७-५८, इन वर्षों में निरन्तर बाढ़ और अतिवृद्धि से पीड़ित रहा हैं। दुर्भाग्य से मेरा क्षेत्र बिजनौर जिले की भूमि से कुछ नीचे पर है जिसके कारण अमरोहा और बिजनौर में जब साथ-साथ अतिवृद्धि होती है तो बिजनौर जिले का बहुत-सा पानी अनियंत्रित रूप से बहुता हुआ अमरोहा के सकड़ों गांवों को दुबा देता है और इस तरह निरन्तर चार वर्षों से, इस वर्ष को छोड़ कर, हमारे क्षेत्र में बहुत बाढ़ आती रही है।

विछले सिंचाई मंत्री, माननीय चरणिंसह जी सन् ५८ की बाढ़ के बाद उस क्षेत्र में गये थे त्रौर उन्होंने एक इस तरह का त्रादेश दिया था कि उस क्षेत्र का, बिजनौर ग्रौर मुरादाबाद के कुछ भागों का सवैं किया जाय। वह सवें हुग्रा भी ग्रौर जहां तक मुझे ज्ञात हुग्रा एक योजना वहां के लिये थी कि एक कच्चा नाला बना दिया जाय जिससे कि क्षेत्र का ग्रधिक पानी बहता हुग्रा निकल जाय ग्रौर किसी नदी में गिर जाय। में नहीं जानता कि इस योजना का क्या हुग्रा? मुझे ग्राशा है कि माननीय मंत्री जी इस पर ग्रवश्य ध्यान देगे ग्रौर इस तरह की व्यवस्था कर दी जायगी जिससे उस क्षेत्र में जो बाढ़ का पानी ग्राता है उसके निकासी का प्रबंध हो जाय।

दूसरी बात यह है कि ५७-५८ में मुरादाबाद जिले में बड़ी भयंकर बाढ़ ग्राई थी ग्रौर ट्यूब-वे लों का नालियां टूट गई थीं। उनके टूट जाने से ट्यूबवेल्स के होते हुये भी किसान पानी नहीं ले पाता है। इसलिये कि ग्रगर कोई नहर एक भील लम्बी है ग्रौर वह २०० गज टूट गई है तो उसको मरम्मत नहीं कराई गई है। मैने मुरादाबाद जिले के सिंचाई इंजीनियर से कहा ग्रौर एक सज्जन को मौका दिखाया। उन्हाने बताया कि हमारे विभाग से इस काम के लिये रुपया ग्राया है कि नई नहरें बनाई जायं लेकिन मरम्मत के लिये कोई ग्रादेश नहीं हैं। एक तरफ तो सिंचाई के साधन बढ़ाये जा रहें है, नये नये कुयें स्थापित किये जाते है लेकिन जो पुराने टूट गये

## [श्रीरामकुमार वैद्य]

है उनकी मरम्मत नहीं करायी जाती है। इसने किसान को तो नुकसान होता ही है साथ-साथ सरकार की भी नुकसान होता है क्योंकि सिंचाई के रूप में जो पैसा सरकार को मिलता उससे वह वंचित रह जाती है।

एक बात श्रीर में निवेदन करना चाहता ह कि मेरा क्षेत्र ६ प्राकृतिक भागों में हे श्रीर उसमें तीन निवयां बहती हैं। जब वर्षा श्रधिक होती हैं तो पानी बहने लगता ह श्रीर जसा कि मेने पहले निवेदन किया कि जो पानी बिजनौर से श्राना हे वह मेरी तहसील को ही नहीं बल्कि हसनपुर तह-सील के एक बहुन बड़े भू-भाग को डूबा देना हे श्रीर उससे सारी फमन नष्ट हो जाती है श्रीर दूसरी फसल की बुग्राई भी नहीं हो पाती है। इस लिये माननीय मंत्री जो को उम श्रोर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिये। इस पर करोड़ों रुपये के व्यय का प्रश्न नहीं हे बल्कि एक कच्चे नाले के रूप मे व्यवस्था की जा सकती है। में समझता हूं कि माननीय मत्री जी श्रावश्यक कार्यवाही करने के लिये श्रिषक उदारता दिखायों।

माननीय मंत्री जी के पास सौभाग्य से दोनो विभाग ह इसिनये में उनसे प्रार्थना करूंगा कि बिजली देने में जो कृपणता का व्यवहार किया जा रहा ह वह उसमे पिरवर्तन करें। इसिलये कि यदि हम सोचते हैं कि जगह-जगह सिचाई की व्यवस्था होनी चाहिये तो हमें उदारता-पूर्वक सिचाई के लिये बिजली देनी चाहिये। लेकिन सरकार की पालिसी इसके विपरीत है। श्रीद्योगीकरण के लिये तो बिजली दो जाती हैं लेकिन सरकार यह क्यो नहीं सोचती हैं कि श्रीद्योगीकरण भलोभाति तभी हो सकता ह जब श्रम्म का उत्पादन श्रीधक हो। इसके बिना श्रीद्योगीकरण की सारी योजनाय रखी रह जायगी। इनिलये में श्रानके द्वारा माननीय मन्नी जी से प्रार्थना करूंगा कि कम से कम सिचाई की उपयोगिता के लिये जल्दी से जल्दी उदारतापूर्वक बिजली दिलागे की भी व्यवस्था करें।

श्री रामस्वरूप वर्मा (जिला कानपुर)—माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो में उन सभी माननीय सदस्यों के प्रति श्रपना श्राभार प्रगट करता हूं जिन्होने सीधे या येनकेन प्रकारेण हमारे कटौती के प्रस्ताव का समर्थन किया है।

श्रीमन्, में खास तौर से माननीय नवलिकशोर जी का ग्राभारी हूं जो हमारे ग्रांकड़ो की पूरी तरह से पुष्टि करके, उन्ही तथ्यो पर पहुंचे।

कल मैंने जो सरकार की शक्ल रखी थी वह बहुत श्रच्छो बना कर रखी यो क्यों कि मैंने उत्पादक नहरों की कम वृद्धि पर श्रधिक जोर न देकर श्रनुत्पादक नहरों की बेतहाशा बृद्धि को साधारण तरी के से वर्णन किया। जब हमने यह श्रांकड़े लिये कि कितनी जमीन पर सिचाई बढ़ी तो उसमें से ट्यूबवेल का क्षेत्र इसलिये निकाल दिया कि ट्यूबवेल से सिचित क्षेत्र खर्च के हिसाब से बहुत कम होता है। इस प्रकार मैंने बहुत सौहादंपूणं चित्रण करने का प्रयत्न किया है। जब हमने श्रामदनी ली तो ट्यूबवेलों की श्रामदनी भी जोड़ दी, क्योंकि ट्यूबवेल से सिचित भूमि पर कीमती फसल पैवा होती है। इस प्रकार जो पिक्चर मैंने सरकार की खीची है वह बहुत शब्छी बना कर रखी है, फिर भी जो भद्दी शक्ल है वह भद्दी तो रहेगी ही। जो शास्त मैंने रखी है उसी से सदन के माननीय सदस्य श्राश्वस्त हो गये है श्रीर यह बात स्पष्ट हो गयी है कि सरकार इस सम्बन्ध में कर्तई श्रसफल रही है, सिचाई के साधनों में कोई श्रेयस्कर वृद्धि नहीं हुई है, जिससे प्रदेश की जनता आश्वस्त हो कर सरकार की श्रोर निगाह लगा सके।

एक बात में इस सम्बन्ध में श्रौर कह दूं। मेंने जो इतनी श्रम्झी पिक्चर खीची यो उसमें मेंने प्रशासन की जो रिपोर्ट थी उससे श्रांकड़ दिये थे उसमें मेंने १६४४-४६ के नहरी क्षेत्र से १६५४-४६ के क्षेत्र में बढ़ोत्तरी दिखायी है। इस प्रकार मेंने सरकार की शक्ल को कोई भद्दी करके नहीं रखा था बल्कि जितनी वह खूबसूरत बनाई जा सकती थी उतनी खूबसूरती के साथ मेंने सदन के सामने रखा था। उसी से सदन श्राश्वस्त हो गया कि सरकार की शक्ल भद्दी है। मेंने दिखाया कि ४४ हजार एकड़ क्षेत्रफल बढ़ गया है। लेकिन एक किताब मेरे सामने हैं

२६३

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--ग्रनुदान संख्या ४७--लेखा शोर्षक ६८--सिचाई, नो चालन, बांघ ग्रीर पानी क निकास सम्बन्धी कार्यो का निर्माण, ग्रनदान संख्या १०-लेखा शीर्षक: १७, १८ ग्रौर १६-ख--राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण-कार्य तथा ग्रनुदान संख्या ११--लेखा शीर्षकः १७, १८ १६ ग्रीर ६८--सिचाई स्थापना पर व्यय

जो कि सरकार ने निकाली है, उसके अनुसार १६४५-४६ में ५१ लाख ७२ हजार ५ सौ ८७ एकड़ क्षेत्र फल सिचित हुन्ना था और १९५५-५६ में ५१ लाख ४३ हजार ४ सौ ४३ एकड़ यानी ४४-४६ में काफी कम है। लेकिन मैने अपने को प्रशासन की रिपोर्ट पर कायम रखा और ग्रच्छी पिक्चर यहां खींची लेकिन पिक्चर ग्रपनी जगह पर रही ग्रौर इस सदन के माननीय सदस्य जो प्रदेश के सभी हिस्सों से ब्राते हैं वह सब इस बात से मृतमईन है कि सरकार इस सम्बन्ध में कोई तरक्की नहीं कर पायी तथा अनुत्पादक नहरों को बढ़ा कर नहरों के निर्माण और मरम्मत में फिज़्ल खर्चा करके, इंजीनियरों की सुख सुविधा की सामग्री जुटा करके, गलत किस्म के बांध बना कर, प्रदेश को बहुत नुकसान पहुंचा है ।

ग्रब दो-तीन बातें ग्रौर निवेदन करना चाहता है। माननीय धर्मींसह, जो कि इस विभाग के पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी हैं, उन्होंने जब यह देखा कि सिचाई विभाग के ब्रांकड़े तो ऐसे हैं नहीं, जिससे साबित किया जाय कि सरकार ने सिचाई में उन्नति की है, तो उन्होंने पूरे प्रदेश की खेती की पैदावार के म्रांकड़े ले लिये म्रौर कहा कि खेती की पैदावार बढ़ी है। लेंकिन म्रगर खाकी इलाके में पैदावार बढ़ गयी तो उससे हमारा कोई झगड़ा नहीं है समस्त कृषि की पैदावार से यह कैसे मालुम हो गया कि सिचित जमीन की पैदावार ज्यादा हुई, उसका तो वैलुएशन होता है। उसको हमने सामने रखा। फिर भी इस प्रकार की बात एक सचिव कहते हैं। न सोचते हैं, न समझते हैं भ्रौर बक जाते हैं।

श्री उपाध्यक्ष--"बकना" शब्द ग्राप वापस लीजिये।

श्री रामस्वरूप वर्मा -- तो ग्राप इसको ग्रनपालियामेंटरी डिक्लेयर कर दें।

श्री उपाध्यक्ष--मेने ग्रनपालियामेंटरी डिक्लेयर कर दिया है इसीलिये वापस लेने को कह रहा हूं।

श्री रामस्वरूप वर्मा--तो मै वापस ले लूंगा।

श्री उपाध्यक्ष--"ले लिया" कहिये।

श्री रामस्वरूप वर्मा -- वापस ले लिया। मेरा कोई निरादर का मतलब नहीं था। माननीय सिंचाई मंत्री जी जब अपना भाषण देंगे तो जरूर वह कहेंगे कि भ्रष्टाचार व गबन की यह छोटी-छोटी बातें हैं, बांधों के बारे में जो हमने गबन ग्रौर घपले की बातें बतायीं, उसके लिये वह कह देंगे कि कुछ तो नुकसान होता ही है। तो मैं उनका ध्यान चीन की प्रथम पंचवर्षीय योजना के समाप्ति पर लिफ् चिन की एक किताब की तरफ ले जाना चाहता हूं जोकि चीन की पहली पंचवर्षीय योजना की समीक्षा करते हुये उन्होंने लिखी है। चूंकि समय कम है इसलिये में उसका हिन्दी ग्रनुवाद ही सदन के सामने रख देना चाहता हूं ताकि समय बच जाय। यह पृष्ठ ११३ पर माननीय मंत्री जी देखेंगे । उन्होंने लिखा है---

हमें इस विचार की भी ग्रालोचना करनी चाहिये कि निर्माण-कार्यों में हमारे ग्रनुभव की कमी को दृष्टि में रखते हुये कुछ मात्रा में हानि श्रनिवार्य है। यदि निर्माण-कार्य के उत्तरदायी व्यक्ति इस विचार को श्रपने मस्तिष्क में रखते है तो वह वास्तव में श्रनिवार्य हो जायगा।

उसी पृष्ठ पर पांचवें पैराग्राफ में श्राप देखें, उसमें वे कहते है कि हमें इस विचार की श्रालोचन<sup>ा</sup> करनी चाहिये कि ऐसी हानि छटफुट श्रीर छद्र है। किन्तु एक छोटी सी हानि भी यदि बेरोकटोक' [श्री रामस्वरूप वर्मा]

होने दी जाय तो वह बहुत बड़े नुकसान में परिवर्तित हो जायगी। तो श्रव इन शब्दों के जरिये से जो वहां के बहुत जिम्मेदार प्लानिंग कमीशन के चेयरमैन थे उन्होंने इसे महसूस किया।

में श्रब श्रापके सामने कुछ बाते रख देना चाहता हूं। श्रीमन्, शारदा सागर के बारे में बड़ी बातें चलीं श्रौर माताटीला के सम्बन्ध में तो सरकार ने कोई कमेटी बैठायी है। मुझे मालूम नहीं कि किन लोगों की कमेटी वह है, कौन-कौन से इंजीनियर उसमें हे श्रौर किनके श्रंडर में वह काम कर रही है क्योंकि मै श्रापक। बता दूं कि चीफ इंजीनियर भी उससे संबंधित हे जिनकी सुपुर्दगी में यह काम है श्रौर जो खास तौर से डिजाइनिंग के लिये जिम्मेदार थे। इसलिये में चाहता था कि कोई उच्च-स्तरीय निष्पक्ष जांच होती, जो कुछ मैंकेनिकल सहायता वह चाहते, वह तो वे ले लेते लेकिन श्रादमी उसमे निष्पक्ष होते तो जांच श्रधिक सफल होती।

माताटीला में श्रीमन्, हिन्दुस्तान कार्माशयल कारपोरेशन ने तारों की सप्लाई का काम किया था। मैने सदन में भी उस बात को कहा था खराबी क्या हुई है श्रीमन्, कि यह कम्पनी यहां के एक विशेष मंत्री से सम्बन्धित थी। उसका फल यह हुन्ना कि उसकी सप्लाई में बहुत काफी घपला हुन्ना। मैने उसके बारे में एक नौ सूत्री पत्र भी लिखा है माननीय मत्री जी को, सबसे बड़ा प्रमाण उसका कि कैसे इन्फ्लुएंस किया उन माननीय मंत्री जी ने उस घपले को, यह है कि जितने भी ठेके होते हैं उनकी २० परसेट रकम बाद में श्रदा होती है श्रौर उसमें से भी दस परसेंट रकम रीटेन कर ली जाती है ६ महीने के लिए बतौर जमानत के। जब ६ महीने बीत जाते हैं श्रौर देख लिया जाता है कि कोई खराबी ठेके के माल में नहीं है तब यह पैसा खापस दे दिया जाता है। इस हिन्दुस्तान कार्माशयल कारपोरेशन का यह पैसा छः महीने बीतने से बहुत पहले दे दिया गया। डाइरेक्टर श्राफ इंडस्ट्रीज, कानपुर ने उनको शारदा सागर के इंजीनियरों को लिखा श्रौर छः महीने से बहुत पहले ही उनका पेमेंट कर दिया गया श्रोर वह भी हिन्दुस्तान कार्माशयल कारपोरेशन को नहीं बल्कि डाइरेक्टर श्राफ इंडस्ट्रीज कानपुर को क्योंक उस कम्पनी के डाइरेक्टर थे एक माननीय मंत्री जी के सुपुत्र। इसलिये कोई कात्न उनके लिए नहीं रहा, सिक्योरिटी की रकम जो जमा थी वह बहुत पहले श्रदा कर दी गई। उनके नाम।

सार्वजिनक निर्माण उपमंत्रीं (श्री महावीर्रासह)—भेरा एक व्यवस्था का प्रश्न हैं। क्या रिप्लाई देते वक्त माननीय सदस्य को यह श्रिधिकार हैं कि उन प्रश्नों का जवाब वह दें, जो प्रश्न कि उठाये गये हैं या कोई नयी चीज भी वह श्रपनी बहस में यहां रिप्लाई देते वक्त ला सकते हैं? नमूने के तौर पर में श्रापका ध्यान इस श्रोर श्राक्षित करना चाहता हूं कि जो यह प्रश्न माताटीला का श्रव उठाया जा रहा है, कहीं भी श्रपना कटौती का प्रस्ताव रखते वक्त माननीय सदस्य ने इस बात को इस सदन में नहीं कहा था।

श्री रामस्वरूप वर्मा—श्रीमन्, शारदा सागर के बारे में प्रश्न उठा था। यहां पर कहा गया उसके लिये कि उसमें कोई गबन नहीं है श्रीर यह बात गलत है, तो मैं उसका प्रमाण दे रहा हूं। श्रब हम यह नहीं कहेंगे .....

श्री उपाध्यक्ष--(श्री महावीर सिंह से) में श्रापसे सहमत हूं कि जवाब देते वक्त कटौती के प्रस्तावकर्ता कोई भी बात कहते हैं तो उसमें नयी बात वह कोई नहीं ला सकते। जो बातें पहले वादिववाद में कही जा चुकी हैं उन्हीं प्रश्नों पर वह राथ दे सकते हैं।

श्री र मस्वरूप वर्मा—कटौती का प्रस्ताव भी श्रीमन्, इस सम्बन्ध में था— श्रष्टाचार के बारे में-ग्रौर उन्होंने जो जवाब दिया है धर्मीसह जी ने, तो कहा था कि यह बातें गलत है ग्रौर कोई निश्चित प्रमाण उसके लिये नहीं हैं। तो मै निश्चित प्रमाण दे रहा था।

श्री राजनारायण (जिला वाराणती)—-ग्रापने माताटीला कह विया था। वह शारदा सागर है।

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--ग्रनुदान २६५ संख्या ४७--लेखा शीर्षकः ६८--सिचाई, नौचालन, बांध ग्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यो का निर्माण, ग्रनुदान संख्या १०--लेखा शीर्षकः १७, १८ ग्रौर १६-ख--राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण-कार्य तथा ग्रनुदान संख्या ११--लेखा शीर्षकः १७, १८, १८ ग्रौर ६८--सिचाई स्थापना पर व्यय

श्री रामस्वरूप वर्मा--ठीक है। मैं शारदा सागर के बारे में कह रहा हूं।

्र श्री धर्मासह—शारदा सागर में, जिस तरह क्षेश्राप जिक्र कर रहे हैं, वहां पर कोई इस तरह की बात नहीं हुई है।

श्री रामस्वरूप वर्मा - में यह कह रहा हूं कि ज्ञारदा सागर में . . . . .

श्री महावीर्रिसह—श्रीमन्, यह प्रोसीडिंग से देख लिया जाय। उस समय कोई भी ऐसा प्रश्न प्रस्ताव करते समय इन्होंने नहीं उठाया था जिस चीज को ग्रव वह पेश कर रहे हैं। मैंने सिर्फ इतना पूछा कि क्या रिप्लाई देते वक्त कोई नया प्रश्न उठाया जा सकता है या नहीं तो श्रीमान् ने कहा कि नहीं उठाया जा सकता। इसलिये में श्रर्ज करता हूं कि ग्रव कोई नया प्रश्न माननीय सदस्य न उठायें।

श्री राजनारायण-मेरा एक प्वाइंट स्राफ स्रार्डर है?

श्री उपाध्यक्ष --मैंने भ्रापको भ्रादेश नहीं दिया। इस समय कोई भी प्वाइंट भ्राफ भ्राईंर मेरे सामने नहीं है। जो था उस पर मैं व्यवस्था दे चुका हूं। यह एक भ्राप्स में उनकी बातचीत हो रही है। उस पर प्वाइंट भ्राफ भ्राईर का प्रश्न पैदा नहीं होता।

श्री राजनारायण--उनका प्वाइंट ग्राफ ग्राडंर तो समाप्त हो गया।

श्री उपाध्यक्ष--जी नहीं।

श्री रामस्वरूप वर्मा—तो मैं यह कह रहा था कि शारदा सागर में भयानक भ्रष्टा-चार है . . . . . . .

श्री महावीर्रासह—मैं ग्रापकी निगाह इस तरफ खींचना चाहता हूं कि जहां तक मैं समझता हूं वर्मा जी ने यह ग्राश्वासन इस सदन में दिया था कि वह जवाब में केवल ४ मिनट लेंगे। ग्रब उनको बोलते हुए लगभग १० मिनट हो गये हैं।

श्री उपाध्यक्ष—माननीय रास्वरूप वर्मा ६ मिनट बोल चुके हैं श्रौर श्रब उनका एक मिनट बाकी है। वह एक मिनट श्रौर बोल लें।

श्री रामस्वरूप वर्मा—में यह कह रहा था कि इस तरह की बातें देखकर कुछ माननीय सदस्यों ने यहां पर यह कहा कि भ्रष्टाचार के श्रारोप नहीं लगाना चाहिये। में यह निवेदन करता हूं कि प्रदेश की हालत को देखकर जब हमारे पास ऐसे ज्वलन्त प्रमाण हैं तो फिर कैसे उनको छिगाया जा सकता है। शारदा सागर में गलत ब्लंकेट को ठीक करने के लिये मिट्टी डालने के लिये एक मोटर बोट १६ हजार में खरीदी गई थी लेकिन श्राज क्या हो रहा है ? श्राज उस पर बड़े-बड़े इंजीनियर बैठकर सैर करने जाते हैं। जो नुकसान होता है श्राप उसकी ताईद करते हैं ग्रौर फिर श्रिधिकारियों के साथ पक्षपात बरता जाता है। यह क्या ज्वलन्त प्रमाण नहीं है ? हमारे जो बांध श्राज बन रहे हैं उनमें करोड़ों रुपया खराब किया गया है। एक करोड़े रुपया मताटीला बांध में गवन है। पचास लाख का शारदा सागर में गवन है। इससे कम वहां पर नहीं है। इन शब्दों के साथ मैं इस कटौती के प्रस्ताव को पेश करता हूं श्रीर श्राशा है कि श्रादरणीय सदन के सब लोग उसका समर्थन करेंगे।

\*सार्वजितिक निर्माण-मंत्री (श्री गिरधारीलाल)—उपाध्यक्ष महोदय, कल से श्राज तक यह बहस सुती श्रीर जैसा कि तमाम बहस से लाभ होना चाहिये वह लाभ होगा। जहां तक कटमोशन का सम्बन्ध है उसके विषय में मेरे से कुछ समय पूर्व मेरे साथी श्री धर्मीं सह जी ने पूरी तरह से जवाब दे दिया फिर भी दो एक बाते मेरे लिये कहना इस सिलसिले में जरूरी सा हो जाता है।

एक बात स्रामतौर पर यह उठाई गई कि इस सिचाई विभाग के स्रन्दर जो काम हुन्ना है इस वजारत के जनाने में वह स्रन्नोडिक्टव काम हुन्ना है यानी स्नन्रेम्यूनरेटिव काम हुन्ना है। जो पहले काम हुन्ना है वह प्रोडिक्टव काम हुन्ना है। सो मेरे पास इस बात का बहुत साधारण सा जन्नाब यही है कि स्राज की स्टेट बिनय की दुकान नही है। इसका काम पेसे की शकल में लाभ को गिनना नहीं है। इस राष्ट्रीय सरकार के स्नाने के पहले जो पुरानी सरकार थी वह सूने में इस बात को देखती थी। उन्होंने जब यह देखा कि मिन्नाई का प्रबन्ध भी हो सकता है स्नीर उसके साथ नका भी हो सकता है तो उन्होंने उस काम को स्नप्ने हाथ में लिया स्नीर इसी तरी के से उन्होंने गंगा स्नीर जन्ना कैनाल स्नादि निकाली स्नीर सचमुच उन नहरों से बहुत काफी लाभ हुन्ना, जहां तक रुपये की बात है उस दृष्टिकोण से। लेकिन जैसा कि मेनें कल कहा था हमारे सामने लक्ष्य है स्नकाल से स्नपने प्रान्त की रक्षा करने का स्नीर इसके लिये जरूरी है कि जितने ज्यादा से ज्यादा साधन हम सिचाई के महेंग्या कर सके, करे। इसी लक्ष्य को ले कर हम स्नागे बढ़ रहे है स्नीर स्नभी तक बढ़े है। मेने जैसा कहा इस प्रकार के जितने रिम्यूनरेटिव स्नीर प्रोडिक्टव काम हो सकते थे वह पहले हो चुके स्नीर इसके मायने यह नही है कि हम सब कोई सिचाई का प्रबन्ध न करे।

हम श्रहसानमन्द होंगे उन दोस्तों के जो हमको बतलायेगे ऐसी स्कीमें जो ज्यादा रिम्यू-नरेटिव श्रीर प्रोडक्टिव हों। में उनके सुझाव का स्वागत करूंगा। लेकिन श्रभी तक हमारे विभाग के जो रहनुमा रहें है ग्रौर मेरे से पूर्व जितने संचालक थे उनकी देखरेख में जो स्कीम चली है उनका संचालन ग्रीर संगादन हमारे प्रान्त में हुग्रा है। वह स्कीमे उस माने में तो प्रोडविटव नहीं है कि ग्रगर उनमें हमने १० रुपया लगाया तो उससे हमारी वसूली भी १० रुपया हो गयी हो, लेकिन यह जरूर है कि ग्रन्न का उत्पादन उस से ग्रबन्य बढ़ा है ग्रौर ग्रकाल की रक्षा करने में उससे काफी मदद मिली है। इस वर्ष जब खरीफ के समय सूखा पड़ रहा या उस समय न्नायकी नहरों ग्रौर ट्यूबवेल्स से किसानों को काफी लाभ पहुंची है ग्रौर हम उस नवशें से बच गये जो कि इन की गैरहाजरी में यहां हो सकता था। इस वक्त सरकार का मंजा है कि कम से कम ४० फीसदी अपने प्रान्त में हम सिचाई का इंतजाम कर लें, अभी तक ३० परसेंट एरिया को ही हम इरिगेशन में ला पाये है। पश्चिम, मे, मध्य में ग्रौर दक्षिण में ग्रौर यहां तक कि पहाड़ों पर, जहां भ्रासानी से प्रबन्ध नहीं हो सकता, वहां भी हमने सिचाई का प्रबन्ध किया है। भने ही रुपये की शकल में हमको इससे लाभ न होता हो, लेकिन दूसरा फायदा हुआ है और वह यह कि जिस समय अकाल पड़ता है उस समय हमको १५ या २० करोड़ रुपया लगान में छूट देना पड़ता है, जो उस समय सप्लाई करते है उसे सब्सीडाइज करना पड़ता है, उस सब को देवते हुए, में समझता हूं कि कोई भी स्कीम अनुप्रोडिक्टिय नहीं है। सबकी सब प्रोडक्टिव हे।

दूसरी बात यह कही गई कि हमारे यहां निदयों श्रौर खास तौर पर गंगा श्रौर जमुना को हम पूरा-पूरा इस्तेमाल नहीं करते। कल इसका जवाब दे दिया गया था, फिर भी में कुछ रोशती इस पर डालना चाहता हूं। जो निदयाँ उत्तर में हिमालय से निकलती है उनके लिये यह बात लागू हो सकती है, लेकिन दक्षिण में जो निदयां है उन के लिये यह बात लागू नहीं होती रिहन्द श्रौर मातादीला उम बने हैं श्रौर इसी तरीके पर हमने कई रिजर्बायर बनाय है। यह दिशा का तमाम पहाड़ कचवा पहाड़ है। जैसा कि माखरा के सिलसिले में बहुत से साथियों

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वोक्षण नहीं किया।

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—श्रनुदान २६७ संख्या ४७—लेखा शोर्षकः ६८—िंसचाई, नौचालन, बांध ग्रौर पानो के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, ग्रनुदान संख्या १०—लेखा शोर्षकः १७, १८ ग्रौर १६-ख—राजस्व से किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण-कार्य तथा श्रनुदान संख्या ११—लेखा शोर्षकः १७, १८ ग्रौर ६८—िंसचाई स्थापना पर व्यय

ने पढ़ा होगा वहां पर लोगों ने यह स्रथनी राय दी कि वह पहाड़ कच्चा है। नये डैम्स बनान की जो सलाह दी थी वह भी इसी लयाल से छोड़ दी गयी क्योंकि जो इस बक्त दुनिया के बड़े-बड़े एक्सपर्ट्स हमारे उत्तर प्रदेश में हैं, उनसे भी सलाह ली गयी उन्होंने भी यही राय दी कि चूंकि वह पहाड़ कच्चा है इसलिये हो सकता है किसी मौके पर वह नुकसान दे। इस वजह से उसकी छोड़ दिया गया।

इसके श्रलावा एक श्रौर राम गंगा प्रोजेक्ट की योजना हमारे सामने है। जो पानी ऊर से श्रा रहा है उसको कालागढ़ मे रोक कर श्रौर उस पानी को एक तरफ करके जिन इला कों में बाढ़ श्राती है उनको सुरक्षित रखा जा सकता है श्रौर जिस ववत जहां पानी की जरूरत होती है वहां उसको काम में लाया जा सकता है श्रोर काफी सिंचन का कार्य किया जा सकता है। इस तरह से, जैसा मैने बताया, जहां तक जितना हो सकता है, उससें कमी नहीं की गयी है।

जहां तक इस सिलसिले में माननीय सदस्यों की यह राय है कि हमकी बड़ी-बड़ी योजनाएं लेनी चाहिये, कुछ साहबान की राय है हमकी छोटी-छोटी योजनायें लेना चाहिये, कुछ साहबान चाहते हैं कि द्यूबवेल श्रिविक बनने चाहिये। मैं इतना ही इस सम्बन्ध में कहना चाहता हूं कि सभी श्रपने श्रपने स्थान के लिये ठीक हैं। जैसा कि इस वक्त लक्ष्य है हमें ग्रपने प्रान्त के श्रन्दर ज्यादा से ज्यादा सिचन के साधनों को उपलब्ध करने के लिये जहां पर जो भी तरीके ग्रासानी से ग्रौर सस्ते उपलब्ध हो सकते हैं उन साधनों को हम बढ़ा रहे हैं ग्रौर उसके लिये कोश्चिक्ष की जा रही है। उन इलाकों में जहां पर नहर का पानी नहीं लाया जा सकता है, वहां द्यूबवेल्स बनाये जा रहे हैं, जहां पर द्यूबवेल्स सफल नहीं हो रहे हैं वहां पर छोटे-छोटे कुएं बनाये जा रहे हैं। इस तरह से जहां भी जिस चीज की जरूरत है उसकों किया जा रहा है ग्रौर जनता को फायदा पहुंचाया जा रहा है। उन कुग्रों के लिये प्लानिंग कमेटी के जरिये से तकावी भी देने का प्रबन्ध किया जाता है। तो यह कोई बात नहीं है कि छोटो स्कीमों को छोड़ा जा रहा है।

जनुना की स्कीम के सिलसिले में भी एक श्राध बात कही गयी है। इस सम्बन्ध में एक बात तो यह कहूंगा कि उसमें पानी की कमी है। मैं इससे सहमत हूं कि उसमें पानी की कमी है। वह नहर ६०-७० साल पुरानी है श्रौर उसका पानी यू० पी० श्रौर पंजाब के श्रन्दर बटा हुग्रा है। दूसरी बात यह है कि बीच में यह योजना थी कि किस तरह से इसके पानी को इकट्ठा करके इसकी शक्ति को बढ़ाया जाय लेकिन बाद में वह चीज किसी तरह से सम्भव नहीं हुई। उसे भी, मेरा खयाल है छोड़ दिया गया।

पलावे के सिलिसले में भी एक बात कही गयी। यह कहा गया कि पलावे से जो पानी दिया जाता है उसके चार्जेज ज्यादा हैं। यह गलतफहमी है, मैं यह कहूंगा कि उसके चार्जेज ज्यादा नहीं हैं, उसके चार्जेज ग्राबपाशी के चार्जेज से कम हैं ग्रौर वह सिर्फ ३ रुपया फी एकड़ लिया जाता है। इसके ग्रालावा जहां पर पलावे की जरूरत होती है वहां पलावे दिये जाते हैं।

कुछ म्राफिसरों के विषय में शिकायत की गयी कि जो म्राफिसर्स हैं वह पूरे तरीके से पानी नहीं देते हैं। यह ठीक हैं कि कुछ इलाके ऐसे हैं जहां भ्रगर कम से कम कुछ पानी मिल जाये तो उससे वहां की खेती को बड़ा भारी लाभ हो सकता है, लेकिन हम वहां पर पूरा पानी नहीं दें पाते। इसका कारण यह है कि हमारे पास पूरे साधन नहीं हैं जिससे हम पूरा पानी दे सकें। हमने नहरें खोद लीं भ्रौर उनसे जोकि बरसाती पानी है उसकी लेकर हम भ्रक्तूबर में पलेवा

## [श्री गिरघारीलाल]

का पानी दे देते हैं, उससे वहां पर काफी लाभ होता है श्रौर जितना भी कम से कम इस काम के लिये कर सकते हैं वह हमने वहां पर किया है।

इसके ग्रलावा ग्रब दो एक बातें ग्रौर हुईं। एक तो कुछ एस्टीमेट्स के सिलसिले में कहा कि एस्टोमेटस बढ़ जाते हैं। सो इसमें मै इतना बतला हूं कि इसमें ग्रभी तक श्राबपाशी का जो काम हुआ, जब हम एक युग से निकले, इस युग में श्राये तो हमारे प्रान्त पर श्रन्न की कमी का बड़ा भारी सवाल श्रांकर पड़ गया श्रौर इस प्रकार की समस्याएं श्रा गयीं जिनको हल करने को लिये वार लेविल पर हमें ग्राबपाशी के प्रबन्ध को हाथ में लेना पड़ा। जिस वेक्त वह काम लिये तो हो सकता है कि हमारे बहुत से एस्टीमेट्स इस तरीके से बढ़े हों। श्रवतक ऐसा होता था, जैसे कि माताटीला की मिसाल है। एक दिन बात हो रही थी तो नकशे में उसको देखा कि इतना बड़ा इलाका है श्रौर यहां पर इस तरीके से डैम बन सकता है। उसका एक हिसाब लगाया और लोगों ने बतला दिया कि ४ करोड़ रुपये में बन जायगा--इंजीनियर्स ने कहा। मुमकिन है ग्रगर हम उस स्थान पर बैठे होते तो में कहता कि ४ करोड़ बहुत है, इसकी कम किया जाय। कागजों में कम कर देते, लेकिन जबकि मौके पर पहुंचे, वहाँ देखा श्रीर जिस वक्त सर्वे होने लगा तो मालूम हुन्ना कि ४ करोड़ में नहीं बन सकेगा श्रौर इस तरीके से उसका एस्टीमेट तो मैं यह बतेला रहा था कि इस तरीके से एरटीमेंट्स बहुत से बढ़ गये हैं। इन चीज का इन्तजाम करने के लिये यह किया कि एक सर्वे का इनवेस्टिगेशन सर्किल इस विभाग के मातहत खोला गया है जिसका यह काम होगा कि जितनी योजनाएं हमारी लाग होंगी उनका पहले से सर्वे हो जाय, पूरे तौर पर वह चल जायं, पूरे तौर पर उनका परीक्षण श्रौर नाप-तौल हो जाय तो उसका जो तेखमीना है उसको हम सदन के सामने मंजुरी के लिये रखें। मैं समझता हं कि इस तरीके से करने से श्रागे की इस प्रकार की शिकायतें नहीं मिलेंगी और मिलेंगी भी तो बहुत कम।

एक बात यहां पर यार्ड स्टिक के सिलसिले में कही गयी कि पी० डब्लू० डी० में जो काम होता है उसकी एक यार्ड स्टिक हुन्ना करती है, इरिगेशन में इस प्रकार की नहीं है। में समझता हूं यह गलतफहमी है। मिसाल के तौर पर जैसा कि एग्जिक्यूटिय इंजीनियर का डिवीजन है वह ८०० से हजार मील तक का है न्नौर जहां तक कि निर्माण का सम्बन्ध है १८ से २० लाख रुपये तक का है। इसी तरह से न्निसंस्टेंट इंजीनियर, श्रोवरसियर, श्रौर इसी तरीके से नीचे के कर्मचारियों का है। चीफ इंजीनियर का भी है। तो मेरे लायक दोस्त श्रपनी गलतफहमी दूर करेंगे।

एक बात और यहां पर कही गयी—वो दफा कही गयी। पहली बात तो पंजाबी के सिलिसले में, जिसका कि अभी जवाब दिया गया, कही गयी। बार-बार बात श्रा रही है, कई दफा सवालों के सिलिसले में भी बात श्रायी, मैं श्राज उस बात को फिर दोहराये देता हूं कि यह बात ठीक है कि एक साहब ने शिकायत की—पंजाबी उनका नाम था—अपने सरकारी कर्मचारियों के विरुद्ध, श्रौर उसके बाद उस शिकायत को मान कर श्रागे बढ़ाया गया, एक चीफ इंजीनियर प्रागनारायण ने उसको हाथ में लेकर श्रागे बढ़ाया। श्रौर उन्होंने देखा कि यह सब चार्जेज गलत हैं। मैं उस रिपोर्ट की दो तीन लाइनें पढ़ दूं:——

"He has not been able to prove any of these allegations and in my opinion deserves suspension for this as well as for the fact that his behaviour throughout the enquiry was not as it should be towards his superior officers. Also one witness Shri Ram Adhar Singh, Contractor, has stated that Shri Punjabi has caught him drunk."

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)--पहले निकाला ग्रौर फिर क्यों रख लिया गया?

श्री गिरधारीलाल--जैसा मैने पहले भी कहा था कि इस कर्मचारी की कुछ शिकायतें थीं इसलियें पहले मैने यह मुनासिब नहीं समझा लेकिन दोबारा जब यह ग्रपनी ग्रादतों से बाज नहीं भ्राया तब यह करना पड़ा। वह उस वक्त इस बात को समझता था कि वह समय भ्रा रहा है जब वह निकाल दिया जायगा तब उसने यह चार्जेज लगाकर यहां पर भेजे। तो मैंने उस वक्त एक कर्मचारी को जिसको हमारे बहुत से सदस्य समझते हैं कि वह जो कुछ काम करते थे बहुत ही इंसाफ के साथ करते थे उनके सुपुर्द यह काम किया भ्रौर उन्होंने जो रिपोर्ट दी उसकी कुछ लाइनें पढ़कर मैंने सुना दी हैं उनकी रिपोर्ट थी कि यह चार्जेज एक भी सही साबित नहीं होते हैं श्रौर सब के सब निर्मूल हैं।

श्री उग्रसेन--वह क्यों पहले ही नहीं निकाला गया?

श्री उपाध्यक्ष--यह बार-बार प्रश्न करना अनुचित है।

श्री उग्रसेन--यह हमारा हक है।

श्री उपाध्यक्ष--हक नहीं है। मैं ग्रापको इजाजत नहीं देता हूं, ग्राप बैठिये।

श्री उग्रसेन--पह तो हमारा हक है ही।

श्री उपाध्यक्ष---नहीं, श्राप कृपा करके श्रपना स्थान ग्रहण कीजिये।

श्री उग्रसेन--स्थान तो मैं ग्रहण कर रहा हूं लेकिन ग्राखिर जनता ने हमको इसी के लिये यहां भेजा है।

श्री उपाध्यक्ष--ठीक है, ग्राप बैठ जाइये।

श्री गिरघारीलाल—दूसरी बात उसमें यह भी लिखी है कि इस व्यक्ति का एन्क्वायरी के मौके पर किसी भी कर्मचारी के साथ श्रव्छा व्यवहार नहीं था, उचित व्यवहार नहीं था, बदतमीजी का था इसलिये इनको यहां से निकाला जाय। तो मैने जैसा कहा कि उनको इसलिये मुख्रत्तल किया गया श्रीर जो चार्जेज उन्होंने लगाये थे वह सबके सब निर्मूल सिद्ध हुए हैं।

एक बात में श्रौर बता देना चाहता हूं। एक सरकारी कर्मचारी जो इस विभाग के नहीं, हाइडेल विभाग के हैं उनके सिलसिले में कुछ बातें कहीं गयीं। बात यह है कि उस कर्मचारी के खिलाफ कुछ गुमनाम शिकायतें श्रायीं। एक बार प्रश्न भी हुग्रा था। मैंने बतलाया था कि उन शिकायतों की जांच हुई। श्रौर उसकी बातें निर्मूल सिद्ध हुई। फिर भी जिस कर्मचारी के खिलाफ शिकायतें थीं वह छुट्टी पर गया हुग्रा था श्रौर उसने कुछ ऐसे भाव दिये थे जिससे यह प्रकट होता था कि वह जब तक रिटायर नहीं होता तब तक छुट्टी पर रहेगा। किसी भी कर्मचारी को छुट्टी लेने के बीच में काम पर वापस श्राने का पूरा श्रधिकार है। लेकिन मैं उस वक्त इस चीज को किसी भी हालत में मुनासिब नहीं समझता था। मैंने उस वक्त यही मुनासिब समझा कि पहले इसकी परीक्षा की जाय श्रौर उसके लिये हमने सूबे के एक ऊंचे श्रधिकारी, श्री के० पी० भागव, जो पहले चीफ सेकेटरी थे, श्रौर श्री सतीश चन्द्र, जो इस वक्त डेवलपमेंट कमिश्नर हैं, इन दोनों ग्रादिमयों की एक एन्क्वायरी कमेटी बैठाई श्रौर उसने छानबीन की। उन्होंने सारे चार्जेज को निर्मूल पाया सिवाय एकाध बातों के जिसके लिये उन्होंने कहा कि इनकी इन्क्वायरी बाद को हो सकती है लेकिन उन चार्जेज की बिना पर किसी क श्राप सस्पेंड नहीं कर सकते, किसी ग्रादमी को नौकरी से बिल्कुल मुग्रत्तल नहीं कर सकते। तो यह सब बातें थीं। उस वक्त मेरे लिये या जो कोई मेरे स्थान पर होता उसके लिये सिवाय इसके कोई बूसरा चारा उस वक्त मेरे लिये या जो कोई मेरे स्थान पर होता उसके लिये सिवाय इसके कोई बूसरा चारा

## [श्री गिरधारीलाल]

नहीं था जो कि किया गया। यह कहा जाता है कि उस कर्मचारी को किसी ऊंचे पद पर रखा गया। यह बात भी निर्मूल है। यह भी कहा जाता है कि उस सरकारी कर्मचारी को जो तनख्वाह पहले मिलती थी उस से ज्यादा पर रखा गया। यह बात भी गलत है। जो तनख्वाह उसकी पहले थी उसी वेतन पर उसको रखा गया। श्रौर उसको इस वक्त जैसा परसों में बतला रहा था, हमारे प्रान्त में केन्द्रीय सरकार से श्राजकल इरिगेशन श्रौर बिजली के कामों में दिन रात सम्बन्ध स्थापित होता है, उसके लिये हमको एक सरकारी कर्मचारी जोकि हर वक्त इन कामों को करता रहे ऐसे श्रादमी की जरूरत थी, उस स्थान पर हमने उसको रखा। श्रौर वह हमारे इन कामों में सहायक हो रहा है।

श्री राजनारायण -- कोई दूसरा श्राप को नहीं मिल रहा था ?

श्री गिरधारीलाल—इस समय बड़े-बड़े प्रोजेक्ट्स श्रौर दूसरे बड़े-बड़े काम चल रहे हैं जैसा कि कुछ योजनाश्रों के विषय में मैंने बतलाया श्रौर श्रखबारों के जिरये भी मालूम हुग्रा, इन तमाम कामों में इसकी जरूरत है। वूसरे, एलेक्ट्रिसटी बोर्ड श्रौर सरकार के बीच में भी एक ऐसे व्यक्ति की जरूरत थी, इसिलये उसकी रखा गया। इसके श्रलावा जब तक वह रिटायर नहीं होता, हमारे लिये दूसरा चारा नहीं था। तो जब चारा नहीं था तो उसको रखा श्रौर रख कर उस से इस काम को ले रहे हैं। यह कहा जाता है कि उसको चीफ इंजीनियर के पद पर क्यों नहीं रखा गया। में इसके लिये बताना चाहता हूं कि इस वक्त बीच में जब हमारा एक काम चालू हो गया श्रौर एक चीफ इंजीनियर उसको करने लगा तो वह भी मुनासिब नहीं था कि हम उस समय के अन्दर उसमें किसी प्रकार का विष्न डालते। इस वजह से हमने उसको इथर रखा यरना इ र न रखकर वूसरी तरफ भी उसको रख सकते थे। इन शब्दों के साथ में उम्मीद करता हूं कि जो मार्गे मैने हाउस के सामने रखी है उनको सदन मन्जूर करने की मेहरबानी करेगा।

श्री राजनारायण—माननीय मन्त्री जी एक बात का स्पष्टीकरण कर दे। जिस पद पर माथुर जी को सुद्दोभित किया गया वह पद नया ऋएट किया गया है या पहले से या? भ्रगर नया ऋएट किया गया तो उसकी क्या श्रावदयकता पड़ी?

श्री गिरधारीलाल--मैने स्रायक्यकता तो बता वी स्रभी स्रौर यह पव नया है।

श्री राजनारायण--भ्रष्टाचार को बढ़ाने वाला ग्रौर खिलाने वाला।

श्री रघुवीरसिंह (जिला एटा)—मेने जो कल कहा था उस सम्बन्ध में पालिया-मेन्टरी सेक्रेटरी ने मेरी बातों को गलत बताया श्रीर श्रांकड़ों को गलत बताया, इसलिये में कुछ स्पष्टीकरण करना चाहता हूं।

श्री उपाध्यक्ष—प्राप बैठिये, इसका स्पष्टीकरण नहीं होता। श्रांकड़ों के सम्बंध में स्पष्टीकरण नहीं होता। श्रांकड़े तो न मालूम कितने रोज दिये जाते है, उसमें न मालूम कौन सही है श्रौर कौन गलत है, इस बारे में कोई फैसला नहीं हो सकता। श्रगर उन्होंने श्रापका नाम ले कर कहा हो कि श्रापन ऐसी बात कही श्रौर वह बात गलत हो तो उसका श्राप स्पष्टी-करण कर सकते है कि मैने ऐसी बात नहीं कही।

श्री रघुवीरसिंह--माननीय मन्त्री जी इस बात का स्पष्टीकरण करवें कि श्रंग्रेजी ज्ञासन के बाद जनतांत्रिक सरकार ने कितनी फीसवी भूमि की श्रधिक सिंचन किया?

श्री उपाध्यक्ष--इसका जवाब वह दे चुके हैं।

श्री उग्रसेन—में जानना चाहता हूं कि नारायणी कैनाल के स्कैंडल के सम्बन्ध में कि क्या जो एंग्जीक्यूटिव इंजीनियर श्रीर सहायक इंजीनियर मुश्रसल किये गये थे वह भी बहाल करक नये पदों पर रख गय ह ?

श्री गिरधारीलाल--इसके लिये प्रश्न किया जाय तब मैं जवाब दे दूंगा। नोटिस की श्रावश्यकता है।

ग्राचार्य दीपंकर (जिला मेरठ) -- मैं माननीय निर्माण मन्त्री जी से स्वव्हीकरण चाहता हूं, उन्होंने यह बात कही कि पूर्वी जमन नहर के बारे में जो सुझाव रखे गये वह व्यवहार में नहीं ग्रा सकते, तो क्या उस सवाल को ग्रव, यह समझ कर कि पूर्वी जमन नहर जैसी की तैसी रहेगी, छोड़ दिया गया है ?

श्री गिरधारीलाल—इंजीनियर्स के विभागों में जो चीज जैसी होती है वैसी कभी नहीं छोड़ी जाया करती है। जैसा केस होता है उसके मुताबिक लोग सतर्क रहते हैं।

श्री उपाध्यक्ष--प्रश्न यह है कि श्रनुदान संख्या ४७--राजस्व लेखे के बाहर सिचाई निर्माण-कार्य का सम्पादन में सम्पूर्ण श्रनुदान के अधीन मांग की राशि घटाकर एक रूपया कर दी जाय। कभी करने का उद्देश्य--नीति का व्यौरा जिस पर चर्चा उठाने का श्रभि-प्राय है -- सिचाई के कार्यों में लगे धन के दुरुपयोग की श्रालोचना करना।

(प्रश्न उपस्थित किया गया ग्रौर हाथ उठा कर विभाजन होने पर निम्नलिखित मतानुसार श्रस्वीकृत हुग्रा: ---

> पक्ष में--३४, विपक्ष में--१२६।)

श्री उपाध्यक्ष--प्रश्न यह है कि श्रनुदान संख्या ४७--राजस्व लेखे के बाहर सिचाई निर्माण-कार्य का सम्पादन [स्थापना व्यय (Establishment charges) सिम्मिलित नहीं है]--लेखा शीर्षक ६८--सिंचाई, नौचालन, (Navigation) बांव (Embankment) श्रीर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों (Drainge works) का निर्माण के अन्तर्गत ७,८६,६८,८०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १६६०-६१ के लिये स्वीकार की जाय।

(प्रश्न उपस्थित किया गया ग्रीर स्वीकृत हुन्रा।)

श्री उपाध्यक्ष--प्रश्न यह है कि श्रनुदान संख्या १०--राजस्व से किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण-कार्य में सम्पूर्ण श्रनुदान के श्रवीन मांग की राशि में सौ रुवये की कनी कर दी जाय। कमी करने का उद्देश्य --विशिष्ट शिकायत जिस पर चर्चा उठाने का ग्रमित्राय है--सिंचाई विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार, श्रवैधानिकता एवं श्रनुत्पादक व्यय की श्रीर सरकार का ध्यान श्राक्षित करना।

(प्रश्न उपस्थित किया गया भ्रौर हाथ उठा कर विभाजन होने पर निस्नलिखित मतानु-सार श्रस्वीकृत हुन्नाः——

> पक्ष में--३४, विपक्ष में--१३६।)

श्री उपाध्यक्ष — प्रदन यह है कि ग्रनुदान संख्या १० — राजस्य से किये जानेवाले सिचाई के निर्माण-कार्य (स्थापना व्यय सिम्मिलित नहीं है) — लेखा शीर्षकः १७, १८ ग्रीर १६ — ख के ग्रन्तर्गत ४,२२,०८,४०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १६६० — ६१ के लिये स्वीकार की जाय।

(प्रश्न उपस्थित किया गया श्रीर स्वीकृत हुआ।)

श्री उपाध्यक्ष — प्रश्न यह है कि ग्रनुदान संख्या ११ — सिंचाई स्थापना पर व्यय के ग्रन्तर्गत सम्पूर्ण श्रनुदान के ग्रधीन मांग की राशि घटाकर एक रुपया कर दी जाय। कमी करने का उद्देश्य — नीति का व्यौरा जिस पर चर्चा उठाने का श्रभित्राय है — राज्य सरकार द्वारा बाढ़ नियंत्रण एवं कटाव निरोधक योजनाश्रों की बन्दी पर ग्रालोचना तथा जलकुंडी, घाघरा कटाव निरोधक योजना की मांग करना।

(प्रश्न उपस्थित किया गया श्रीर ग्रस्वीकृत हुस्रा । )

श्री उपाध्यक्ष--प्रक्त यह है कि अनुदान संख्या ११--सिंचाई स्यस्पना पर व्यय--लेखा क्षीर्षकः १७,१८,१६ और ६८ के अन्तर्गत ४,७८,०४,६०० रुपये की मांग क्रितोय वर्ष १६६०-६१ के लिये स्वीकार की जाय।

(प्रश्न उपस्थित किया ग्रौर स्वीकृत हुग्रा।)

## म्रनुदान संख्या १२-लेखा शीर्षक १८-म्रिभियंत्रण (इंजीनियरिंग) संस्थायें

श्री उपाध्यक्ष--मै समझता हूं माननीय मंत्री जी श्रन्दान संख्या १२ की पहले ले ले क्योंकि उस पर बहस नहीं होना है।

श्री गिरधारी लाल—उपाध्यक्ष महोदय, माननीय राज्यपाल महोदय की निकारिश से मैं यह प्रस्ताव करता हूं कि अनुदान संख्या १२—प्रभियंत्रण (इंजीनियरिंग) संस्थाये—लेखा शिर्षकः १८ के अन्तर्गत ३१,३३,४०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १६६०—६१ के निये स्वीकार की जाय।

श्री उपाध्यक्ष--प्रकृत यह है कि श्रनुदान संख्या १२--ग्रमियंत्रण (इंजीनियरिंग) संस्थायें--लेखा क्षीर्षकः १८ के श्रन्तर्गत ३१,३३,४०० रुपये की मांग विसीय वर्ष १६६०-६१ के लिये स्वीकार की जाय।

(प्रश्न उपस्थित किया गया श्रौर स्वीकृत हुआ।)

## श्रनुदान संख्या २७-लेखा शीर्षक ४१ श्रौर ८१-क-विद्युत योजनाश्रों की स्थापना पर व्यय तथा श्रनुदान संख्या ५१---लेखा शीर्षक ८१-क-विद्युत योजनाश्रों पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय को छोड़कर)

श्री गिरधारीलाल—मान्यवर, में राज्यपाल महोदय की सिकारिश से यह प्रस्ताव करता हूं कि ग्रनुदान संख्या २७—विद्युत योजनाग्रों की स्थापना पर ग्यय—लेखा शोर्षकः ४१ ग्रीए ८१-क के ग्रन्तर्गत १,४४,३२,४०० रुपये की मांग विसीय वर्ष १६६०-६१ के लिये स्वीकार की जाय ।

उपाध्यक्ष महोदय, मै राज्यपाल महोदय की सिकारिश से यह प्रस्ताव करता हूं कि श्रनुदान संख्या ५१—विद्युत योजनाओं पर पूंजी की लागत (स्थापना क्यय को छोड़कर)—लेखा शीर्षकः ८१-क के श्रन्तर्गत ६,०८,०१,००० रुपये की मांग विसीय वर्ष १६६०—६१ के लिए स्वीकार की जाय।

१९६०-६१ के ब्राय-व्ययक में ब्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-स्त्रनुदान सख्या २७३ २७--ले**ला शोर्षकः ४१ श्रोर ८१-क-**-विद्युत योजनाश्रों की स्थापना पर व्यय तथा श्रनुदान संख्या ५१--लेखा शीर्षकः ८१-क--विद्युत योजनाश्रों पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय को छोड़कर)

श्री प्रतापिंसह (जिला नैनीताल)——माननीय उपाध्यक्ष महोदय, में स्रापकी स्राज्ञा से स्रनुदान संख्या २७——लेखा शीर्षक ४१ स्रौर ८१-क में कटौती का प्रस्ताव रखना चाहता हूं।

सम्पूर्ण अनुदान के भ्रधीन मांग की राशि में सौ रुपये की कमी कर दी जाय।

कमी करने का उद्देश्य--विशिष्ट शिकायत जिस पर चर्चा उठाने का अभिश्राय है।

जनता की महंगे दर पर बिजली देकर रिहन्द बांध की बिजली की बिड़ला ब्रादर्स को सस्ते दाम पर देने की घोषणा की श्रालोचना करना।

इसके म्रतिरिक्त दूसरा कटौती का प्रस्ताव म्रनुदान संख्या ५२ मे इत प्रकार ह— सम्पूर्ण म्रनुदान के म्रधीन मांग की राशि में सौ ६ पये की कमी कर दी जाय। कमी करने का उद्देश्य——विशिष्ट शिकायत जिस पर चर्चा उठाने का म्रभिप्राय है। ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युत संस्थाम्रों का निर्माण न करना।

(इस समय २ बज कर १४ मिनट पर श्रो उपाध्यक्ष चले गये श्रौर श्रिषठाता, श्रीमती चन्द्रावती, पीठासीन हुई ।)

माननीया, हमें उम्मीद थी कि हजारों वर्ष से ग्रंधकार के गर्त में पड़े हुए गांवों में पर्वत की घाटियों और उपत्यकाओं को भ्रालीकित करने और हजारों और लाखों बेरोजगारों को जो देहातों में रहते हैं, उनको रोजी के साधन देने का उद्देश्य इस विभाग का है, वह इसको ठीक ं श्रगर इस दिशा में हम देखते हैं तो हमें पता चलता है कि इस प्रदेश में जहां रोज मर्करी का प्रकाश प्रस्फूटित होता है वहां तो ग्रौर प्रकाश पहुंचाने का प्रयत्न किया गया है ग्रौर प्रान्त के गांवों में जहाँ पहले से ही ग्रन्थकार फैला हुग्रा है वहाँ ग्रौर ग्रन्थकार फैनता जारहा है। इसी रोशनी में हम यह भी समझते थे कि गांवों को ग्रौर सर्वसाधारण को सस्ते दामों पर बिजली मिलेगी लेकिन श्राज हम देखते है कि बिड़ला को तो सस्ती बिजली देने का प्रबन्ध किया गया है लेकिन ग्राम जनता का कुछ ख्याल नहीं रखा गया है । सन् ५६-५७ में १,२०२.६६६ लाल रुपया इस योजना के लिये रखा गया था जिसमें ३२ पावर हा उस बनाने की बात थी लेकिन मुझे ताज्जुब इस बात का है कि ६७४.३७२ लाख रुपया केवल उन कामों के लिये जो पहले से चल रहे थे, उनको चालू रखने के लिये रखा गया था ग्रौर २२८.२६४ लाख रुपया नये काम को चालू करने के लिये रखा गया था लेकिन बाद में यह एस्टीमेट बढ़ कर ११४१.६५८ लाख हो गया। तो इन सब को देखने से पता चलता है कि केवल १४ स्कीम्स ही ब्राज तक पूरी हो पायों ब्रौर उसमें भी कहीं कहीं अधी स्कीम रह गयी ब्रौर कहीं कहीं श्रभी पूरी होने को बाक़ी है।

श्री गिरधारीलाल—स्त्रान ए प्वाइंट स्त्राफ स्राइंर। स्रिधिष्ठात्री महोदया, मुझे यह कहना है कि जिस वक्त मैंने स्नुदान रखा था तो मैंने समझा कि माननीय सदस्य इसकी समझते होंगे। यह जो स्नुदान है यह रिहन्द स्नौर हमारे जो इन्त्रवेक्टोरेट है उनके लिये रखें गये हैं। बाकी बिजली के जितने काम है उन सब को इलेक्ट्रिल्टी बोर्ड को सौंग दिया गया है। स्नब वही उसकी देखरख करता है स्नौर हमारे यहां से लोन की शकत में उसकी पैसा दिया जाता ह, तो उन्हीं दो स्नाइटम्स पर यहां बहस होनी चाहिये।

श्री नारायणदत्त तिवारी (जिला नैनीताल)—प्राधिकात्री महोदया, इस सम्बन्ध में पुन्ने कुछ नियंदन करना है। इस समय माननीय मंत्री जी ने जो स्पष्टीकरण दिया उसे सुन कर मुझे आक्वर्य हुया। माननीय विद्युत मम्त्री जी ने यह निवेदन स्वयं किया। श्रगर कोई दूसरे माननीय सदस्य यह निवेदन करते तो मुझे श्राक्चर्य नहीं होता। उनका कहना है कि वृंकि रिहन्द परियोजना सम्बन्धी बिजली खर्च को छोड़ कर बाकी सब इनेक्ट्रिसिटी बोर्ड को ट्रांसकर कर दिया गया है इसलिये उस सम्बन्ध में श्राज यहां चर्चा न की जाय। तो मैं जानना चाहता हूं कि जो बोर्ड है वह पिबलक सेक्टर में हैं श्रीर जो राज्य के श्रिषकारी है केवल वे ही। उस हे रादस्य है। श्री बी० बी० लाल, सेकेटरी पावर व इर्रोगेशन उस बोर्ड के चेयरमें हैं श्रीर सभी वह बजट स्वीकार भी नहीं हुआ है, वह सभी श्रागे श्राने वाला है। जब वह बजट भर्जी पूरी तरह से स्वीकृत भी नहीं हुआ है तो माननीय मंत्री जी से मेरा निवेदन है कि वे इस सदन की बात मान कर कम से कम अपने इस एतराज को वापस लें श्रीर नहीं तो बोर्ड पर वाद विवाद के लिये कोई दूसरा दिन रखें। श्रगर इस पर विवाद नहीं होता है तो इसका भतलब यही मालूम होता है कि इस वर्ष इस पर कोई विवाद ही न हो। इसलिये मेरी श्रापसे प्रार्थना है कि सारे बिजली विभाग के ऊपर जिसमें इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड भी हैं, पूरा विवाद होना चाहिये।

श्री राजनारायण—ग्रिधिकाता महोवया, इस सम्बन्ध में मेरी एक श्रापित है। में नहीं जानता कि भाननीय मंत्री जी इस पर विवाद को रोक कैसे सकते हैं। मान लीजिये कि हमारी सम्पति पें यह जात श्रायी कि जिस प्रकार से इस बिजली बोर्ड का कांस्ट्रकान हुग्रा है वही गलत है श्रीर ६० करोड़ खप्या जो उसको दे रहे हैं, उसका दुख्योग होगा, तो इस श्रमुदान पर हमें पूरा श्रधिकार है कि उस पर हम श्रमुखी तरह से वाद विवाद करें। इसलिये में समझता हूं कि जो माननीय मंत्री जी की वैधानिक श्रापित है यह महत्यहीन श्रीर शून्य है श्रीर इसलिये उसको महत्व नहीं देना चाहिये।

श्री म्रिधिष्ठाता—इस सम्बन्ध में माननीय मंत्री जी की क्या कहना हं?

श्री गिरधारीलाल—मुझे यह कहना है कि श्री नारायणदत्त तिवारी ने कहा कि या तो कोई दूसरा दिन रखें श्रीर या इस वक्त पूरी चीच पर प्रकाश डालने का मौका वें, इस खयाल से बहस करना चाहते है तो मुझे श्रापत्ति नहीं है लेकिन वोटिंग तो केवल २ श्रनुवानों पर होगा श्रीर बाद में किसी दूसरे दिन की जरूरत फिर नहीं होगी।

श्री श्रिधिष्ठाता--में समझती हूं कि बहस तो हो सकती है श्रीर वोटिंग तो जैसे श्राप चाह रहे हैं वेसे ही होगी।

श्री प्रतापिंसह--महोदया, जो मेरा समय इस बेकार के वैधानिक प्रक्त में लग गया वह मुझे मिलना चाहिये।

श्री श्रिधिष्ठाता--श्रवश्य मिलेगा।

श्री प्रतापिसह—जिन सवालों का जवाब माननीय तिवारी जी ने विया उस के समर्थन में यह भी कहना चाहता हूं कि जो कटौती के प्रस्ताव हमने रखे हैं उन के २ ध्येय है। एक तो रेहन्ड डैन के बारे में हैं श्रीर दूसरा वेहातों में बिजलों के बारे में हैं। जब मेरे उद्देश्य ही यही हैं तो किस तरह से यह वैधानिक प्रश्न संगत हो सकता हैं? श्रब श्राप देखें कि इतने साल हो गये श्रीर दस साल भी यह प्रदेश बिजली में सेन्फसफीशियेन्ट न बन सका। सन ६० तक केवल साढ़े ३ लाख यूनिट बिजली दी गई जब कि श्रावश्यकता साढ़े ६ लाख की है। मैं जानना चाहता हूं मंत्री जी से कि श्राज बिजली की कितनी महता है उस को वह

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-- २७५ स्रनुदान संख्या २७--लेखा शीर्षकः ४१ स्रौर ८१-क--विद्युत योजनास्रों की स्थापना पर व्यय तथा स्रनुदान संख्या ५१--लेखा शीर्षकः ८१-क-विद्युत योजनास्रों पर पूंजी की लागत (स्थापान व्यय को छोड़कर)

कहां तक समझते हैं ? थोड़ी देर के लिये सोच लिया जाय आज सारी विजली की हम वापस भी लें तो सारे देश का क्या होगा ? क्या कभी इस तरफ मंत्री जी ने ध्यान दिया कि आज बिजली की कितनी जरूरत हैं ? मैं आप की आज्ञा से जो वाटर पावर कमीशन है उसकी ४ लाइन पढ़ दूं।

"Electricity has become so indispensible at the present time that it is no longer considered a luxury, but it is an economic necessity not only for affording living comforts but also in promoting agricultural and industrial development."

इसका ग्रथं है कि बिजली श्रव महज रोशनी या रेडियो के लिये एक सुख-सुविधा की चीज नहीं रह गयी है बिल्क श्रव वह छिषि श्रौर उद्योग को बढ़ाने के लिये भी बहुत सहायक हो सकती हैं। मैं जानना चाहता हूं मंत्री जी से कि उनका इस श्रोर क्या प्रयास हुआ है? ठीक है किसी इंजीनियर को रखा हो या कोई इन्क्वायरी कमेटी बिठाई हो या माताटीला डैम के बारे में ऐसा कोई काम हुआ हो लेकिन श्राज तक छुषि श्रौर उद्योग के विकास के लिये विजली का क्या इंतजाम किया गया है?

दूसरी चीज जो इस सम्बन्ध में मुझे सदन के सामने रखनी है वह यह है कि रिहन्द डैम के बारे में २६ अक्तूबर, ४६ को समझौता हुआ, जिसको बिरला जी की कम्पनी कहा जाता है, उससे। यह समझौता २५ साल के लिये हुआ है। १.६६७७ या कुछ पर बिरला जी को बिजली दी गई है जब कि नलकूपों को बिजली दी जाती है २.५ पर किलोवाट क ज्यूम्ड के हिसाब से। जिस समय यह रेट १७५ रुपया प्रति किलोवाट के बिरला जी से तय किये गये उस दक्त क्यों नहीं हाउस को कानफिडेंस में लिया गया, बिना किसी से पूछे इतने सस्ते रेट पर बिरला को बिजली का ठेका दे दिया गया और इस तरह से सारे प्रदेश के उद्योग और कृषि धंधों को धक्का पहुंचाया गया है। जो बिजली पूर्वी जिलों को दी जाने वाली थी और जो हमारे डेफिसिट इलाके हैं चाहे वह पूर्वी इलाके हों या पहाड़ के इलाके हों जहां आप सस्ते गल्ले की दूकानें खोलते हैं उन तमाम इलाकों की सारी औद्योगिक और कृषि सम्बन्धी उन्नति को और वहां की सारी एकानामी को फेड कर दिया गया है। जिस इलाके का हमें जीवन स्तर उठाना है कृष्टि के विकास हारा, रोजगार द्वारा, उद्योग-धन्धों द्वारा उस इलाके को हमें सब से पहले इन कामों के लिये बिजली उपलब्ध करनी चाहिये थी।

माताटीला का बहुत वर्णन हुन्ना है जिसकी चतुर्मुखी योजना बताई गई है। यह पहले १६० ६८ करोड़ का था। यह सरकार की किताबें हैं, मेरे पास समय नहीं है कोई चुनौती दे तो मैं कोट कर सकता हूं। यह १२ करोड़ की रह गई। उसमें यह कहा गया था कि बिजली पैदा करेंगे। श्राज कहा जाता है कि कुछ दिक्कतें श्रा गई। प्रिन्सिपल श्राफ प्रायरटी देखना चाहिए। मैं चाहता हूं कि जिस तरीके से बिजली से श्रंधकार मिटता है उसी तरीके से इस विभाग के जो श्रधिकारी, कर्मचारी श्रौर मंत्री हैं उनको भी इसी लाइट में काम करना चाहिए।

श्रीमन्, चर्चा होती है कि बड़े बड़े श्राफिसर बड़े बढ़िया तरीके से काम करते हैं। खटीमा पावर हाउस है मेरे इलाके में। उसकी गाथा बड़े बड़े श्राफिसरों की नैग्लीजेंस का इतिहास रही है। में ही नहीं कह रहा हूं, एक रिपोर्ट है। ७ करोड़ ४८ लाख रुपया जिस इमारत पर लग रहा हो, ४१ हजार ४०० किलोवाट बिजली पैदा हो रही हो, उसका हाल देखिये। जिस समय पन्त जी ने उसके कंट्रोल रूम का उद्घाटन किया, उसके दो महीने बाद कंट्रोल रूम गिर जाता है। श्रंग्रेज के जमाने में एक पावर हाउस बना था, एक दीवार तब बनी थी, वह ऐसी लगती है कि कल ही बनी हो। लेकिन हमारी जो करोड़ों की स्कीमें हैं उनका काम किस

## [श्री प्रतापसिंह]

तरह से हो रहा है, कैसी नेग्लीजेंस है, उसके बारे में मैं इलैक्ट्रिसिटी एडवाइजरी बोर्ड, पार्ट १, खटीमा इलैक्ट्रिसिटी जेनरेटिंग स्टेशन ग्राफ दि सारदा ह इड्रो इलैक्ट्रिक प्रोजेक्ट—इसकी जो रिपोर्ट है उसको पढ़ना चाहता हूं। जनरल रिमार्क्स में हैं:—

"Loss due to the delay in commissioning of the plant—The delay in the commissioning of the plant is naturally resulting in a loss of revenue to Government as no commercial load of importance can be taken due to the uncertainty of firm supply from this source. It is difficult to make an assessment of this loss. It may, however, be mentioned that the yearly interest alone on the capital investment of Rs.7.5 crores at 4 per cent per annum comes to Rs.30 lacs a year."

तो केवल व्याज में ही ३० लाख की हानि श्राती है। कोन जिम्मेदार हे, वह भी पढ़ देना चाहता हैं: --

"Site supervision by Electricity Department—The Board noticed that throughout the period of construction even an officer of the status of the Executive Engineer did not have his headquarters at Khatima. For the greater part of the erection period the Superintending Fingineer was as far as Lucknow and Executive Engineer at Bareilly."

खटीमा में पावर हाउस बनता है, सुपरिटेंडिंग इंजीनियर श्रौर एंग्जीक्य्टिव इंजीनियर रहते हैं लखनऊ श्रौर बरेली में। क्या यह उपेक्षा नहीं हैं?

एक छोटे से ठेकेंदार को भी श्राप ठेका देते हैं तो पेनाल्टी कनाज रायते हैं। श्राप्ते विदेशी कम्पनी को ठेका दिया। उसमें कोई पैनाल्टी क्लाज था? यह लाखों, करोड़ों का घाटा श्राप उनसे वसूल कर सकते हैं? कौन जिम्मेवार हैं? जिसने ठेका दिया। उत्तर प्रदेश की सरकार ने दिया। में जवाब तलब करता हूं।

मेरे एक दोस्त है इंजीनियर, उनसे बात हुई। सीभाग्य से गयनेमेंट में सर्विस नहीं करते, उन्होंने कहा कि गवर्नमेंट को चेतना चाहिए, खटीमा का पावर हाउस १०-१५ साल बाद नहीं रहेगा।

श्रीमन्, लोक लेखा समिति क्या कहती है ? "समिति की राय में इतनी बड़ी परियोजना के सम्बन्ध में सर्वेक्षण, भूमि-परीक्षण श्रीर तत्वमीने त्यार करने के विषय में योजना श्रारम्भ करते समय ही यथोचित साबधानी बरती जानी चाहिए थी।" श्रीमन्, मदरास के गोताखोर को बुलाया गया गेट्स को खोलने के लिये श्रीर १०० रुपया रोज वर्च किया गया, ये सारी चीजें खटीमा पावर हाउस के बारे में हैं। जो लोक लेखा समिति ने कमेटी बनाने के बारे में कहा है क्या विभाग ने उस पर श्रमल किया श्रीर नहीं तो उसका जयाब हमको मिलना चाहिए।

उद्योग-धंधों के बारे में कहा जाता है। माननीय मुख्य मंत्री जी बार-बार सदन में श्रीर बाहर यही कहते हैं कि उद्योग-धंधे हमारे प्रदेश के लिये जीवन मरण का प्रवन है। लेकिन वह क्या हाथ से चलेंगे। चर्ला कातने का श्रव जमाना चला गया। श्रव तो विजली से चलने चाहिये। लेकिन सरकार ने क्या किया? इस सम्बन्ध में में सदन का श्रींधक समय न लेते हुये जो फ़ैक्ट फ़ाइन्डिंग कमेटी की रिपोर्ट है उस में से कुख पढ़ना चाहता हूं। ताज्जब इस बात का है कि यहां बिजली के जो रेट्स हैं वह पहले से ही ज्यादा थे श्रीर उसके उपर उपरो ज्यादा वी। बाम्बे, यू० पी० श्रीर मैसूर में ब्यूटी ली जाती है लेकिन इस प्रदेश में सब से ज्यादा ली जाती है।

"Electricity duty and the Rates—One of the major hindrances in the development of industries is the high electricity rates and the duty prevailing in the State......The duty on industrial consumption of electricity is levied only in U. P. Bombay and Mysore. Bombay City—

- (a) For electric furnaces . . 3 pies for every five units.
- (b) For other purposes .. 3 pies for every two units.

## उत्तर प्रदेश में २५ परसेंट श्रौर मैसूर में १० परसेंट ।

"It would thus be observed that the Bombay rate is negligible and all other States like Bihar, West Bengal, Punjab, etc. charge no duty on industrial energy."

तो मैं मंत्री जी से पूछना चाहता हूं रोज श्राप दावा करते हैं कि प्रदेश बहुत सी चीजों में श्रागे है, लेकिन जब ग्राप जानते हैं कि खेती के बाद प्रदेश का भला उद्योगों से हो सकता है तो कौन से कारण हैं जिससे श्रापने ड्यूटी बढ़ाई ?

"The existing electricity rates in U. P. are quite high and they are deterrent to the development of industries in the State."

यह रेट्स उद्योग धन्धों के लिए बाचक हैं। ग्रौर फिर उसी कमेटी ने कहा है:

"From all accounts it appears that the electricity rates are higher in U. P. than those in other States and the electricity duty of 25 per cent on industrial energy further increases the burden."

## तो उसकी सिफारिश है कि:

"We, therefore, recommend that the State Government should seriously consider this matter and take steps so that cost of electricity to industry is placed at par with that obtaining in States like West Bengal and Bombay. For this purpose, the duty on industrial energy should be abolished and the rates brought down to lower levels."

जैसे मैसूर श्रौर बम्बई में है वैसे ही एक तो यहां रेट्स कम होने चाहिये श्रौर ड्यूटी खत्म होनी चाहिये। यही नहीं प्लानिंग कमीशन ने भी लिखा है:

"Electricity is assuming growing importance for agricultural pumping and dewatering. Also, cottage industries can be developed on an economic basis by the use of electrically worked appliances or small units of machinery. For this purpose, electricity needs to be extended to rural areas."

श्री मोतीलाल स्रवस्थी (जिला कानपुर)—माननीया, सदन में कोरम नहीं है। (घंटी बजायी गयी श्रौर गणपूर्ति होने पर कार्यवाही पुनः श्रारम्भ हुई।)

श्री प्रताप सिंह—मैं ग्रापसे कह रहा था कि प्लानिंग कमीशन ने जो रिपोर्ट दी है इर्रीगेशन श्रौर पावर के सम्बन्ध में उसमें भी इस बात पर जोर दिया गया है कि देहातों की तरफ बिजली के साधन बढ़ने चाहिये।

में एक उदाहरण देना चाहता हूं इस सम्बन्ध में कि १० साल पहले जो सब स्टेशन बने हैं, गरम पानी श्रौर बेताल घाट के, उनमें खटीमा से बिजली जाने में कितना समय लगेगा।

लखनऊ में देखें श्रालमबाग वाली जो सड़क है उस पर श्राज तक बिजली नहीं है। हमारे मंत्री जी जब हबाई जहाज पर चढ़ने जाते हैं तो उसी रास्ते जाते हैं लेकिन ग्राज तक बहां बिजली क्यों नहीं दी गई ? [श्री प्रतागसिह]

श्रव में कुछ सुझाव देना चाहता हूं कि पायर श्रौर इरींगेशन डेवलामेंट फंड का निर्माण होना चाहिये। वह इसलिये कि बहुत-सा रुपया लैंग्स हो जाता है। इस तरह का फंड बना रहेगा तो किसी भी स्कीम के कार्योग्वित करने में बाधा नहीं पड़ेगी। एक इवेस्टिगेशन होना चाहिये निवयों का जेसे अनुबन्दा श्रौर मंदाकिनो का श्रीर इस नताजे पर हम पहुंचे कि कोन-कौन नये पावर रहेशन खोले जा सकते है। इलेक्ट्रिसेटी बोर्ड का तजिकरा हुआ। इंडियन इलेक्ट्रिसिटी ऐक्ट की घारा ३७ में यह लिखा हुआ। ह कि इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड रूस बनायेगा श्रौर उन रूल्स को सदन में लाने की जरूरत नहीं ससझ। गयी। श्रगर यह चीज कहीं नहीं लिखी है तो क्या नई परम्परा कायम नहीं की जा सकती। उन रूल्स को सदन में वेश किया जाना चाहिये ताकि हम कुछ सुझाव पेश कर सके।

जो श्रांकड़े हमको दिये गये हैं सन् ४७ से ले कर के श्राज तक के उनमे हम देखेंगे यह लिखा हुश्रा है कि ४६-४७ में ७,४६,७३२ हजार यूनिट बिजला गदा हुई श्रीर ६,००,८४१ हजार यूनिट बिजलो खर्च हुई तो १,४८,८८१ हजार यूनिट बिजलो बेकार नुं, उसका कोई हिसाब नहीं है। उसमें एक टिप्पणी दी हुई है कि रनम्भ २ श्रोर ५ में विये हुए श्रांक्डो का श्रन्तर पावर स्टेशन सहायकों में खर्च हुई बिजली, भेजने तथा बितरण में एव श्रम्भ प्रकार में जिमका कोई हिसाब नहीं रवा जा सकना, न ट हुई बिजली का योग ह। तो म यह प्रजं करना चाहता हू लाखों यूनिट बिजली हर-साल यो ही खर्च हो जाते ह जिसका कोई हिमाब नहीं दिया जा सकता। में मानता हूं कि ग्राप के विभाग में बड़े-उड़े ज्योतियी ह, गणित क विहान है। में देखता हूं कि यह भी करण्यान का जरिया है। ६६ से लेकर ५६ तक जो श्रांकड़े हैं १,६८,७३७ हजार यूनिट बेकार हुई श्रीर उसके बारे में कोई हिमाब नहीं दिया जा सकता।

एक चीज और कहना चाहता हूं कि उत्तर प्रवेश सारे देश में बिजली में सबसे पीछे है। एक प्रावित्शियल इंडस्ट्रियल कमेटी बनी उसकी रिपोर्ट में यह लिखा हुन्ना है।

"That India is far behind other nation, in the generation and consumption of electrical energy"

प्राविन्ति उस इंडस्ट्रीज कमेटी की रिपोर्ट के पृष्ठ १५ पर आंकड़े विये हुं है उनको में पढ़ देना चाहता हूं। इंडस्ट्रियल परपजेज के सिये दूसरी स्टेट्स में जो बिजली खर्च हुई उसके श्रांकड़े इस प्रकार है — बम्बई ६६६,३१५, बंगाल ४६७,६६४, मदास १६२,४२६ श्रौर उत्तर प्रदेश १७०,६२४। यह कहा जायगा कि ये ४६ के श्राकड़े हैं। भारतवर्श को पावर और वाटर कभीशन हे वह कहता है १० साल में १३६ फीसबी की बृद्धि हुई है। तो ये सार चीजे है जिनकी श्रोर में श्रापका ध्यान दिलाना चाहता हू। श्रगर हमारा ध्यान इबर नहीं गया तो हमारा जो इरावा है उद्योगों की श्राग बढ़ाने का वह पूरान हो सकेगा।

यह भी कहा जाता है कि हम दूध की तरह धुले हैं। इस विभाग में एक ऐसा कलंक लगा है कि जा ग्रन्छे-ग्रन्छे ग्रफ्सर है उनका सर लड़ना से भुक जाता है। करमचन्द्र थाएड़ एंड बदर्स की एक कोयले की कम्पनी कनकते में हे ग्रीर वह कोयने का बिजनेंस करती है। एक इंज नियर महत्वय ने इस कम्पनी को ठें का दिया कोयल। सप्लाई करने के लिये। तीन तन्ह का कोयला होता है ग्रीर कम्पनी ने ही सी क्लास का कोयला सालाई किया ए क्लास की जगह ग्री इस तरह इन इंजीरियर महोदय ने लाखों क्या, कमाये। पार्टिं एक्लास की जगह ग्री इस तरह इन इंजीरियर महोदय ने लाखों क्या, कमाये। पार्टिं एक्लिस के ग्रनुस र में उन महानुभाव का नाम नहीं लें सकता, लेकिन मेरी उनसे कं ई बुदमनी नहीं है, लेकिन इन प्रकार का कार्य ग्रगर कोई रिवतेंदार भो करता तो उनको विभाग में नहीं रखना चाहिये। ग्रगर विभाग में उनका रखते हैं तो दूसरे लोगों को शह मिलनें, है ग्रीर जो ईमानदार इंजीनि सं है वे सोचने लगते हैं कि जब लाखों, करें.ड्रों क्यें का करण्यन करने वाले के लिये एक म्पेशल पोस्ट कियें का जा सकती है तो हम लोग ही क्यों ईम नदार, से काम करें।

इसके बार में मानतीय मंत्रो जी से यह जानना चाहता हूं कि १२ साल की साजादी के बाद जिलने प्रतिशत बिनली प्रामों के उसी में के लिये दी गयी। इसके प्रकट्टे हमकी प्राज १९६०-६१ के श्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगो पर मतदान—श्रनुदान संख्या २७---लेखा शीर्षकः ४१ श्रीर ६१-क--विधुत योजनाश्री कीर भापना पर व्यय तथा श्रनुदान संख्या ४१--लेखा शीर्षकः ६१-क--विधुत योजनाश्री पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय को छोड़ार)

तक नहीं मिलते हैं। मैं चाहूंगा कि मानवीय मंत्रे जी अवनी पालिसी स्वष्ट करे। जब खेती के बाद उद्योगों की ही हम स्थान देते हैं तो इत सम्बन्ध में एब तक दया किया गया।

इसके प्रलावा में खालतौर से बार्डर के इलाके के लिये कहना चाहता हूं। वहां सीभाग्य से निवयां भी है। प्रगर वास्तव में यह सरकार चाहती है कि बार्डर एरियाज की तकृद्धि ठीक हो तो वहां को निवयों पर बांय बांच कर उनसे बिजली पैका करने की बोजना बनाये।

अन्त में में जो लोग हमारी बोजनाओं में काम करने हैं उनके ारे में अहना चाहता हूं।
यह ठ.क है, स कार कहती है कि पता नहीं वह योजनाये कव तक चले तिहाजा उनको स्थायी
कसे किया जाय, लेकिन श्रंग्रेजों के जमाने में भी अस्थायी कर्मचारी एटते थे नवर उनको निकालः
नहीं जाता था लेकिन श्राज १२-१५ साल मे जो मेकेनियन श्रोर श्रावरेटर कान कर रहे हैं -यह ठीक है कि सांव । कहस नहीं दने हैं, लेकिन करा यह उचित है कि उनको निकाला जाय,
कई जगहों से उनको निका ए गया है, मैं नाम नहीं लेना चाहता होकिन में सावनीय मंत्री जो
से चाहूंग। कि वह अपने श्रीधकारियों से कहे कि मानवीय वृष्टिकोश से उनको रखा जाय।

भारतीय गिरधारीलाल जी यहां महीं हैं, ये मानशीय अंत्री जी को समय पर श्रागाह करता चाहता हूं कि बहुत से श्रिधिकारी मंत्री जी की सीवाई का बेजा फायदा उठाना चाहते है इसिलये श्रगर हमको जनतंत्र की बचाना है तो श्रफसरशाही के ऊपर जन प्रतिनिधि का श्रंकुश रहना चाहिये। इन शब्दों के साथ में श्रपने कटौती के प्रस्ताव को सदन के लामने रखता हूं। श्रीर सदन से यह श्रपील करता हूं कि वह गेरे इस प्रस्ताव को स्वीकार करें।

श्री श्रीकृष्ण गोयल (जिला बदायूं)--माननीया अधिष्ठात्री महोदया, मै श्रापका श्राभारी हं कि आवने मुझे इस अनुदान पर बोलने का समय दिया। माननीय सिर्चाई मंत्री जी ने जो अनुदान पेश किया है उसके समर्थन के लिये मैं खड़ा हुआ हूं और जो विरोधी पक्ष की श्रोर से कटौती का प्रस्ताव ग्राया है उसके विरोध में हूं । इसमें कीई दो राये नहीं हो सकतीं कि हमारा प्रदेश उद्योग के मामले में दूसरे प्रदेशों से बहुत पिछड़ा हुआ है। यह भी सही है कि इंड स्ट्री को आगे बढ़ाने के लिये पावर बहुत ही आवश्यक जीज है। अभी हजारे भाई श्री प्रतापसिंह ने जो लार्ज स्केत इंडस्ट्रीज फैक्ट फाईडिंग दासेटी बैठी थी उसकी रिपोर्ट की ग्रोर सरकार का घ्यान भ्राकित किया भ्रौर बताया कि दूसरे प्रदेशों के मुकाबले में हमारे यहां बिजली महंगी है। यह सही है कि हमारे यहां बिजली महंगी है श्रीर जब तक ड्यूटी लगी हुई थी त ब तक श्रीरभी ज्यादा महंगी थी। सरकार यही सोच कर कि इंड स्ट्री को किस प्रकार बढ़ावा दिया जाय ग्रभी थोड़े दिन पहले एक बिल लायी थी जिसमें उसने २० परसेंट ड्यूटी हटा दी थी। उस व कत विरोधी पक्ष की स्रोर से यह एतराज किया गया था कि ड्युटी हटा कर सरकार इंडस्ट्रियलिस्ट्स को फायदा पहुंचा रही है और भ्राज उसी चीज के बारे में जिसे सरकार इतने दिन पहले कर चुकी है सरकार का ध्यान श्राकींवत कराना चाहते है । मै तो इससे यही समझता हूं कि विरोधी पक्ष का केवल एक ही काम है श्रौर वह है सरकार के हर काम में बुराई निकालना चाहे जितना श्रच्छा काम वह क्यों न करे।

जो श्रांकड़े हमको इस साल मिले हैं उनके देखने से पता लगता है कि ४६-५७ के मुकाबिले में ४८-५६ में बिजली का उत्पादन ड्योढ़ा हो गया। लेकिन इंड स्ट्रिशल कंजम्पशन उस प्रोपोर्शन से नहीं बढ़ा। इससे साफ जाहिर है कि इंड स्ट्रियल कंजम्पशन में जितना बढ़ावा सरकार को देना चाहिये श्रौर जिस इफरात से लोगों को लोड मिलने चाहिये वह नहीं मिल रहे हैं।

इंडस्ट्री से थोड़ा-सा संबंध मेरा भी है। इसलिये में कह सकता हूं कि इंडस्ट्री वालों की किस तरह की दिक्कतें इनसे पहुंच रही हैं ग्रौर उनकी ग्रोर माननीय मंत्री जी का ध्यान दिलाना चाहता हूं। एक तो यह कि एक-एक दिन में ५०-५० इंटरपग्रन्स होते हैं। ग्राप ग्रंदाजा करिये

[श्री श्रीकृष्ण गोयल]

कि जब ऐसा होगा तो कैसे मशीन चल पायेंगी। भले ही ग्राइल मशीन हों, कोल्ड स्टोरेज की मशीनें हों या रेफ़ीजरेटर्स हों जब इस तरह से इंटरपशन्स होंगे तो बड़े-बड़े ब्रेक डाउन्स हों ग्रीर प्रोडक्शन ग्रीर रेफ़ीजरेशन में लासेज हों ग्रीर कोई चीज नहीं हो सकती है। इसकी कितनी भी शिकायतें की जायं लेकिन कोई सुनवाई नहीं होती।

हमारे मुल्क को श्राजाद हुए १४ साल हो गये है लेकिन इन प्राइवेट इलेक्ट्रिक कम्पनियों को नेशनेलाइज नहीं किया गया है। उनके स्विच बोर्डों की हालत देखें तो मालूम होगा कि वह एक पैसा भी उन पर खर्च करने के लिये तैयार नहीं है। उनको लोगों की मुसीबत से कोई मतलब नहीं है। उनको काफी रुपया कमीशन के रूप में सरकार से मिल जाता है। पता नहीं किस तरह से वह श्रपने खर्चे दिखाते है श्रीर किस तरह से इलेक्ट्रिक रेट्स भी बढ़वा लेते हैं। इस संबंध में जांच होने की श्रावश्यकता है।

श्राज कल देखा जाय कि लोड पर रेस्ट्रिक्शन्स है। कहीं पर १० घंटे के लिये बिजली बन्द रहती है, कहीं चार घंटे के लिये श्रौर कहीं ६ घंटे के लिये बन्द रहती है। श्रक्सर ऐसा होता है कि इन कम्पिनयों के जो रेजीडेंट इंजीनियर्स है वह लोगों से १००-५० रुपये माहबार लेते हैं श्रौर रुपये लेकर उनको चलाने देते हैं। इस प्रकार से जो ईमानदार है श्रोर पंसा नहीं देना चाहते हैं उनको यह लोग परेशान करते हैं। ख्रिपार्टमेंट से उतनी ही बिजली दो जाती है लेकिन श्रोवरलोड के कारण इंटरपशन्स बढ़ जाते हैं। उनकी शिकायत करने पर कोई सुनने वाला नहीं है।

बदायूं में जो प्राइवेट बिजली की कम्पनी है उसकी भ्राम ज्ञिकायत है श्रौर गवनंमेट के पास भी रिप्रेजेंटेशन्स श्राये हैं। उत्तर प्रदेश में वहां सब से ज्यादा मिनिमम चार्जेज हैं। वहां ५ इपये मिनिमम चार्जेज हैं। पता नहीं किस तरह से उन्होंने इतना बढ़वा लिया है। इसके लिये कई बार रिप्रेजेंटेशन्स भी किये गये श्रौर हाफिज जी से भी कहा गया, दूसरे विद्युत मंत्री जी से भी कहा गया, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। जहां तक मुझे पता है वह यह है कि इस कम्पनी के मालिकान श्रौर श्रक्सर कहते हैं कि हमारी पहुंच सरकार में इतनी हैं कि श्राप लोग चाहे जितनी शिकायत करें, लेजिस्लेचर में भाषण दें लेकिन हमारा कुछ होने बाला नहीं है। इसके श्रलावा यह प्राइवेट कम्पनियां वही इंडस्ट्रीज चलाती है जो दूसरे लोग चलाते हैं। उनके चलाने से दूसरे लोगों को बड़ी दिक्कतें होती हैं। मान लीजिये एक श्रादमी कील्य स्टोरेज की इंडस्ट्री चला रहा है श्रौर वह भी चला रहे हैं तो घंटे दो घंटे के लिये उसका प्लांट बन्द कर देना मामूली बात है।

इसके म्रालावा जो लाइसेंसीज हैं उनको कितने लोड का कनेक्द्रान मिला हुम्रा है मौर कितना यूज कर रहे हैं यह मालूम होना बड़ा मुक्किल है क्योंकि वही देने वाले है भौर वही यूज करने वाले हैं। में चाहूंगा कि जितने भी प्राइवेट लाइसेंसीज है भौर जितना उनको कनेक्शन मिला हुम्रा है उसकी जांच होनी चाहिये। किसी भ्रादमी को भेजकर इस बात की जांच कराई जाय कि कितना लोड उनको संक्शन है भौर कितना वह इस्तेमाल कर रहे हैं? मेरा जहां तक ख्याल है वह यह है कि इसमें बड़ा भारी गोलमाल है। उसका कारण यह है कि बिजली की कमी है और इंडस्ट्रीज हर साल बढ़ती जाती है भौर वह भ्राइल इंजिन लगाते नहीं हैं तो जरूरी बात है कि वह कुछ न कुछ गोलमाल करके भ्रपना काम चलाते हैं भौर गलत तरीके से बिजली इस्तेमाल करते होंगे में एक भौर चीज की तरफ ध्यान विलाना चाहता हूं। हमारे हलके में एक गांव शेखूपुर है। वहां के प्रधान ने डेढ़ साल हुए एक प्रस्ताव पास करके भेजा था कि उनके ग्राम में बिजली लगा दी जाय। बहुत भ्रच्छा गांव है, पुराने जमींदार हैं। इस तरफ कुपा माननीय मंत्री जी ध्यान दें।

\*श्री मोतीलाल श्रवस्थी--माननीया, में प्रस्तुत कटौती के प्रस्ताव समर्थन में खड़ा हूं।

<sup>\*</sup> बक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

र्१६६०-६१ के श्राय-ध्ययक में श्रनुदामों के लिये मांगों पर्यक्षतदान--श्रनुदान २८१ संख्या २७--लेखा बीर्षकः ४१ श्रीर ८१-क--विद्युत योजनाश्चों की स्थापना पर व्यय तथा श्रनुदान संख्या ५१--लेखा बीर्षकः ८१-क--विद्युत योजनाश्चों पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय को छोड़ कर)

मैं विद्युत में लगे हुये कर्मचारियों के बारे में श्रपना दृष्टिकोण रखना चाहता हूं। हमारे कानपुर में केसा में भी यह कर्मचारी कई हजार हैं। इसके श्रलावा श्रन्य जगहों पर हायिड ल विभाग में हैं। उनकी पुकार मैं इस सदन में उठाना चाहता हूं। थर्ड श्रौर फोर्थ डिवीजन के कर्मचारी, रड़की सर्किल की बात है, १६४८ से इनका बहुत सा एरियर पड़ा हुग्रा है, श्राज तक सरकार ने नहीं दिया। रिप्रेजेंटेशन किये गये लेकिन सुनवाई नहीं हो पायी। इन कर्मचारियों का यह भी कहना है कि न इन्हें बोनस मिलता है, न क्वार्टर मिलता है, न टी० ए० मिलता है श्रौर न प्रोमोशन श्रौर परमानेंसी के रूत्स हैं। यहां बीस-बीस साल से नोकरी करने वाले मौजूद हैं जिन्हें कनफर्म तक नहीं किया गया है। १६४६ से श्राज तक काम कर रहे है।

इनमें से कुछ कर्मचारी ऐसे हैं जिनके संबंधियों की दुर्घटनान्नों से मृत्यु हो गयी। विद्युत कार्य में श्रक्सर दुर्घटनायें होती रहती हैं। सरकार को नियमानुकूल उनके संबंधियों को कुछ न कुछ देने की बात सोचनी चाहिये। होता यह है कि परिवार के लोग कुछ कर नहीं पाते हैं श्रौर कर पाते हैं तो १०,१० साल तक निर्णय नहीं होता है।

इस विभाग के जो ऊंचे श्रफसर हैं उनके भ्रष्टाचार की भी कोई जांच-पड़ताल नहीं होती। हर्दुश्रागंज श्रलीगढ़ में है, उसके रेजीडेंट इंजीनियर साहब श्रगर श्राप कहें तो में नाम भी ले लूं।

श्री ग्रधिष्ठाता--नाम ग्रगर न लें तो ग्रच्छा है।

श्री मोतीलाल श्रवस्थी—उनके बारे में निश्चित शिकायतें हैं। कई साल हो चुके, उनकी जांच-पड़ताल नहीं हो पायी। बुंदेलखंड के एग्जीक्यूटि व इंजीनियर साहब के खिलाफ श्रष्टाचार की शिकायतें श्रायों। उनका तांता में बढ़ाना नहीं चाहता। हमारे मंत्री जी श्रा गये हैं। एक चीज नोट करवा दूं। इनके नीचे के श्रफसरान हम लोगों की बड़ी बेकद्री करते हैं। मुझे इसका व्यक्तिगत श्रनुभव है। कानपुर के सीकल के सुपरिटेंडिंग इंजीनियर से श्रपने हलके की बात कहना चाहता था। मैंने सूचना भंजी तो कहा कि चाय पी रहे हैं। मैंने कहा कि दस पांच मिनट के बाद मौका मिले तो फिर कह दीजियेगा। जब मैंने फिर कहा कि मेरी बात सुन लें तो उन्होंने कहा कि वह घूमने चले गये। मैंने कहा जरा कि हिये कि मैं एक मिनट बात करना चाहता हूं। जवाब श्राया कि वह कहते हैं कि दूसरे दिन श्रा कर मिल लेंगे। मुझे बहुत जल्दी थी श्रपने हल्के में जाने की। यह सुपरिटेंडिंग इंजीनियर, स्किल २ का व्यवहार है। वह हमारी बातें तक सुनना पसन्द नहीं करते। इसके संबंध में श्रष्टाचार की बातें बतायी जायं तो सारा दिन लग जाय। कहा जाता है कि श्राप लिख कर दें। इससे ज्यादा क्या लिख कर दें, जब हाउस में कह रहा हूं? श्रपनी बीती, श्रीर नाम लेकर बता रहा हूं।

कर्मचारियों के प्रति जो व्यवहार केसा में या ग्रन्य जगहों पर हायडिल विभाग में है उनकी कहानी जगह-जगह उनकी यूनियनों के द्वारा हमको सुनने को मिलती हैं ग्रौर यह भी में जानता हूं एक ग्रन्थाधुंघ मची हुई है। ग्रभी कानपुर में एक नयी लाइन जी० टी० रोड पर ले ग्राउट हुई है। कहा यह गया था कि ३१ मार्च तक उसके ग्रन्दर एप्लाई करने की तारीख है लेकिन मुझे पता लगा कि ग्रभी तक उनकी एप्लीकेशंस नहीं ली जा सकीं जिनको कि वाकई जरूरत थी। किसान ग्रपने रहट वाले कुग्रों के लिये बिजली लेकर बिजली से उसे चलाना चाहते थे लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। एक मेरे पास शिकायत मौजूद है बरहज नगरपालिका के बारे में। २० हजार की वहां श्राबादी है। वहां पर बिजली के लिये बार-बार कोशिश की गई कि बिजली वहां पहुंच जाय, लेकिन इस ग्राधार पर बिजली बहां नहीं दी जा रही है कि बहां के प्रतिनिधि कोई सोबलिस्ट हैं ग्रीर ग्रगर वहां बिजली दे

[भी मोसीलाल ग्रवस्थी]

वी गई तो उससे उस सोझालिस्ट प्रतिनिधि को कुछ महत्व मिल जायगा। मे जानना चाहूंगा कि बड़े-बड़े हाई पालिसी के जो नियम बिजली के बारे मे बनाये गये, उनका क्या ग्राधार है? ग्राभी हाल ही में हमको बताया गया कि बिरला कम्पनी को जो कि एक विदेशी कम्पनी के साझे में तैयार हुई है उसको बड़े सस्ते रेट पर बिजली दी गई ग्रौर ऐसी हालत मे दी गई जबकि पूर्वी जिलों में बिजली की बहुत ग्रावश्यकता थी।

श्री रामायणराय (जिला देवरिया) -- एक व्यवस्था का प्रकृत ह। सदा का कोरम इस समय नहीं है।

(घंटो बजायी गई स्रौर गणपूर्ति होने पर कार्यवाही प्न. प्रारम्भ हुई ।)

श्री मोतीलाल श्रवस्थी— मं यह कहने जा रहा था कि ाह परने रेट से हमारे बड़े-बड़े प्ंजीपितयों को बिजली देने के ठेके विये जाते हे श्रीर लम्बे श्ररमे नक के ठेके होते हैं, पच्चीस-पच्चीस साल के। लेकिन किसानो को जिस रेट पर बिजली उनको मिल रही है वह कई गुना तेज है, तीन-तीन गुना तक तेज हे श्रीर उनके लिये किसी गिरम की कमी नहीं की जा रही है। श्राज बिजली की बहुत ज्यादा माग ह कि इस बिजली का फलाव गांवों तक मे हो, जिससे कि उद्योग-धंघे हमारे वहां बढ़ पायें, लेकिन मुझे कानपुर के बारे मे श्रनुभव है। कानपुर मे बिजली बढ़ने की बात बहुत दिन मे हम सुनते श्रा रहे हैं। दो तीन जगहों पर जसे पुखरायां की तरफ श्रीर जी० टी० रोड पर बिजली ले श्राउट हुई। लेकिन उनका श्रभी तक किसी रूप मे उपयोग जनता के लिये नहीं हो पाया।

उद्योगों के संबंध में यह कोशिश थी कि बिजली इस रोड पर पहुच जायगी तो उद्योग-धंधे देहातों में फैल जायेंगे। लेकिन वह बात होती दिखाई नहीं पड़ती है, क्यों कि उद्योगों के बारे में जो सरकारी नीति है उसके संबंध में उसके अनुदान के समय हमने बनाया था कि उद्योग जो कुछ मिलते हैं वह शहरों को ही मिलते हैं, देहातों के लिये कोई अनदान नहीं मिल पाता है। तो अगर उसके लिये वहां अनुदान नहीं मिलेंगे तो यह बिजली अगर फलेंगी भी तो किस काम आयेंगी? अतः आवश्यकता आज इस बात की है कि बिजली अगर वहां जाय तो उसका रेट वहां के अनुरूप हो और उद्योगों के संबंध में अनुदान की वृद्धि हो। इमके अनावा बिजली के उपयोग के संबंध में लोगों को जानकारी भी दी जाय।

कानपुर में जी० टी० रोड पर जो लाइन डाली गई वहां के ऐडिमिनिस्ट्रेटर से मने बात की थी कि ग्राप हमें भी श्रपने रूत्स ऐड रेग्युलेशन्स बीजिये ताकि हम उसे ग्राम समाजों की बतायें, तो उन्होंने कहा कि हमकी इसकी कोई जरूरत नहीं है, प्रचार करना हमारा काम नहीं है, जिनको कोई जरूरत हो वह हमारे दफ्तर में श्रायें। श्रब उनका दफ्तर ऐसी जगह पर है जहां किसान पहुंच भी नहीं पायेगा, तो जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक वह बिजली का उपयोग करेंगे कैसे? कानपुर के पास बिठ्र में बिजली दी गई है। लेकिन जो बिजली वहां दी गई है वह सड़क के किनारे-किनारे कुछ लोगों को मिल गई है।

जरूरत द्भुस चीज की है कि बिजली से उद्योगीकरण हो सके ग्रौर उस उद्योग से जनता लाभ उठा सके। सरकार इस बात की जिन्ता नहीं करती है। बिजली बेने के साथ कुछ ग्रौर साधन सुलभ ग्रगर यह सरकार कर वे तो वहां के स्थानीय लोग कुछ उद्योग लगा सकते हैं ग्रौर बिजली का सबुपयोग हो सकता है। इससे ग्रपने प्रवेश में उद्योग बढ सकेगा क्यों कि इसके साथ उसका लगाव है। ग्रगर केवल बिजली को रोशनी के लिये दिया जायगा तो लोग इसका उपयोग नहीं ले सकेंगे। होना यह चाहिये कि इसके साथ-साथ उनको उद्योग की वृद्धि क लिये साधन उपलब्ध किये जायें।

इसके साथ-साथ मुझे यह भी कहना है कि यहां पर कहा गया कि बिजली के बोर्ड की नीति के बार में अभी कुछ न कहा जाय परन्तु उसके संगठन के विषय में मुझ थोड़ी भी प्राशंका

१६६०-६१ के ग्राय-श्ययक में ग्रनुवानों के सिये मांगों पर मतवान-- २८३ ग्रनुदान संख्या २७-सेखा शीवंकः ४१ ग्रीर ८१-क-विद्युत योजनाग्रों की स्थापना पर व्यय तथा ग्रनुदान संख्या ५१-लेखा शीवंकः ८१-क-विद्युत योजनाग्रों पर पूंजी की लागत (स्थापना व्ययको छोड़ कर)

है। में इस बात को समझ नहीं पाया कि इस बोर्ड को जिम्मेदारी देने के बाद सरकार अपनी जिम्मेदारी से कैसे बरी हो जायगी। इनके कहने का क्या यह तात्पर्य होगा कि इस बोर्ड को यह सारा काम सुपूर्द करने के बाद अपनी जिम्मेदारी से बरी हो जायगी। इस बोर्ड के अन्तर्गंत या विभाग के अन्तर्गंत जो अधिकारी हैं वे सभी सरकारी हैं। उनके सारे कार्यकलाप को ध्यान से देखना होगा कि यह अपने प्रदेश की समृद्धि में कहां तक साथ देते हैं और इनके प्रयत्न के परिणामस्वरूप क्या लाभ होता है। मैं समझता हूं अगले वर्ष में मंत्री जी इस बोर्ड की नीति के बारे में अधिक ध्यान वेंगे तो उचित ही होगा। तब लोगों को मालूम होगा कि इस बोर्ड ने देश में क्या उन्नति की है। तब सरकार अपनी तरफ से बात रखेगी और हम भी अपनी बात रखेंगे और देखेंगे कि इस बोर्ड ने क्या काम किया है। में समझता हूं कि इस अनुदान के अन्तर्गत कुछ और बिजली के कर्मचारी हैं जो बिजली के उद्योग में लगे हुये हैं, उनके साथ वह नियम लागू नहीं किये जाते हैं, जो अन्य कर्मचारियों के साथ लागू हैं। उनको न कोई बोनस मिलता है और न किसी प्रकार की वृद्धि मिलती है और न सहलियत ही उनको कोई मिलती है। में आशा करता हूं कि उन कर्मचारियों की तरफ सरकार ध्यान देगी और उनकी किठनाइयों को इस अनुदान के अन्तर्गत बूर करेगी।

श्री ताराचन्द माहेश्वरी (जिला सीतापुर)—माननीय ग्रिधिकाशी महोदया, में प्रस्तुत ग्रनुदान पर बोलने के लिये खड़ा हुग्रा हूं। म इस विभाग के या दूसरे विभाग के फल हुए अब्दाचार का जिक्र नहीं करना चाहता। मेरा मत धीरे-धीरे यह बन गया है कि अब्दाचार की ग्रिधिक चर्चा करके हम ग्रपने पक्ष को कमजोर करते चले जाते हैं। ज्यों-ज्यों हम अब्दाचार की ग्रिधिक चर्चा करते हैं, त्यों-त्यों सामाजिक मान्यता इसको प्राप्त होती जाती है जो अब्दाचारी लोग नहीं है उनको भी ऐसा महसूस होने लगा कि चर्चा तो थोड़ी होती ही रहती है। वह भी ग्रपनी जगह से कुछ विचलित होते नजर ग्राते है। इसलिये में अब्दाचार के संबंध में न कह कर ग्रयने क्षेत्र के संबंध में बिजली की बाते कहंगा।

मेरे क्षेत्र में एक कस्बा महमूदाबाद है। मैं इस बिजली को बेकारी से जोड़ना चाहता हूं। यदि बिजली का प्रसार हो तो बेकारी के घटने में सहायता मिलेगी ऐसा मेरा स्थाल है। मेरे निर्वाचन क्षेत्र में महमूदाबाद है वहां पर पुराने जमाने मे राजा साहब महमूदाबाद वहां के रहने वाले रहे हैं जिन्होंने इस प्रदेश में ही नहीं बल्कि इस देश में मुसलिम लीग का बड़ा भारी साथ दिया है ग्रौर साथी रहे हैं। उनका बड़ा भारी श्रमला वहां पर काम करता रहा जमींदारी उन्मूलन के बाद उसमें से बहुत से लोग लखनऊ भागकर भ्राये भ्रौर बहुत से पाकिस्तान चले गये ग्रौर बहुत से ग्रभी भी वहां पर हैं। वह एक प्रकार से राजा साहब के साथ अपनी जिन्दगी बिताते थे। जमींदारी चिनाश के बाद जो दूसरी व्यवस्था स्थापित हुई तो उसमें उनको श्रपनी जिन्दगी चलाना मुक्तिकल पड़ रहा है। उसका परिणाम यह हो रहा है कि वहां पर कम्युनिष्म का प्रचार हो रहा है और फैल रहा है। मै तो यहां तक कहने की हिम्मत करता हूं कि उस कस्बे में बहू बेटियों की इज्जत भी श्राज हिफाजत में नहीं है वह एक बेकारी का विषय है? आदमी मरता क्या न करता वाली उनकी दशा है। १६५६ में इस सदन में जब हाफिज साहब मंत्री थे, तो उन्होंने ग्राइवासन दिया था ग्रीर यह कहा था कि सिधौली कस्बे का बिजलीकरण अगले वित्तीय वर्ष में हो जायगा और उसके पश्चात् महम्दाबाद को भी बिजली दी जायगी। १९५६ के बाद १९६० ग्रा गया, लेकिन भ्राज तक वह भ्राक्वासन पूरा नहीं हुआ और न पूरा होता नजर भा रहा है। मैं सरकार के प्रधिकारियों ग्रीर माननीय मंत्री जी का ध्यान इस ग्रीर प्राकृषित करना बाहता हूं कि सिथीली में विजली पहुंचे या नहीं, महमूबाबाद में विजली अवस्य पहुचनी चाहिये ताकि वहाँ के लोगों को रोजी रोजगार मिल सके और वे लोग जो पाप कर रहे हैं, जीविका के लिये झानक

## [श्री ताराचन्द माहेश्वरी]

बेंच रहे हैं वह रके। मुझसे कल चीफ इंजीनियर साहब से बात भी हुई ग्रीर उन्होंने ग्रपनी परेशानी बतलायी। लेकिन किसी तरह पर हमें वहां के लिये बिजली का प्रबन्ध करना चाहिये ग्रीर सरकार को इस ग्रीर ध्यान वेना चाहिये।

बिजली का संबंध उद्योग धंबों से भी है इस से कोई इंकार नहीं कर सकता। मेरे साथी सरकार की बड़ी कटु ग्रालोचना करते है जब उद्योग-धंधों को बिजली दी जाती ह। ग्रार उद्योग धंधों के लिये बिजला न दी जायगी तो काम कैसे चलेगा, यह नहीं समझ में ग्राता, जैमा इबर के एक भाई ने कहा कि विरोधियों का एतराज तो सरकार के हर काम के लिये रहता है ग्रीर इसलिये वह सरकार के ग्रच्छे कामों को देख नहीं पाते। यदि ग्रापको प्रदेश का ग्रीधोगी करण करना है तो हमें उद्योगपितयों को बिजली देनी ही पड़ेगी ग्रीर ऐसा करने में हम उन के साथ कोई मुख्वत नहीं करते। वह बिजली तो हम इसलिये देते हैं कि उन उद्योगों में हमारे गरीब भाई लग कर ग्रयना पेट पाल सकें ग्रीर इसी नीति के तहत ग्रगर हम उनको बिजली दे तो कुछ ग्रवुचित न होगा।

श्री प्रतापिसह—श्रीमन्, में एक्सप्लेनेशन देना चाहता हू । माननीय सदस्य ने कहा कि विरोधी दल के लोग एक तरफ तो यह कहते हैं कि उद्योगों को बिजनी न दी जाय और दूसरी तरफ रोजगार देने की बात कहते हैं। श्रापने श्रपने श्रासन से इस बात को सुना था। मैने कहा था कि उद्योगपितयों को बिजली इसिलये दी जाय ताकि लोगों को रोजगार मिले और में चाहता हू कि माननीय सदस्य इसी लाइट में बोलें।

श्री ताराचन्द माहेरवरी—मंने यह नहीं कहा कि इसी बक्त यह बात कही गयी है। मैं तो कहता हूं कि कही गयी है यह बात श्रीर झगर झाप चाहेंगे तो में झापको यह बात साबित भी कर दूंगा कि कब कही गयी है।

श्रीमन्, मै यह कह रहा था कि जहां हम उद्योगपितयों को बिजली वे ने की बात कहते हैं वहां साथ-साथ मेरी प्रार्थना यह भी है कि बिजली का प्रसार प्रामीण क्षेत्रों में भी किया जाना चाहिये और हमारे प्रामीण क्षेत्रों में बिजली का प्रसार किये जाने में पक्षपात बरता जा रहा ह इसको कहने में मुझे कोई संकोच नहीं हैं। ग्रगर यह पक्षपात न बरता जाता होता तो क्या वजह थी कि १६५६ का वायदा, जो उस समय के विद्युत मंत्रों ने किया था, ग्राज तक पूरा नहीं हुगा। हम देखते हैं कि हरदुग्रागंज में नया वाष्प बिजली घर बनाने के लिये १६५६—६० के तलमीने में १४ लाख ३० हजार रखा गया है, फिर २ लाख १६ हजार हुग्रा ग्रीर १६६०—६१ में बह १ करोड़ ७३ लाख की योजना हुई। इस तरह नये-नये बिजलीधरों का बनाया जाना जारी है तो क्या वजह है कि सिबौली ग्रीर महमूदाबाव के लिये कोई प्रबन्ध नहीं हो सहा। वहां के लिये कहा जाता है कि द्रांसफार्मर नहीं मिल रहा है। में ग्रजं करना चाहता हूं कि १६५६ से १६६० तक देखा जाय कि कितने ट्रांसफार्मर ग्राये ग्रीर कितने बिजली घर बनाये गये। इसको देखने की कृपा करें तो पता चलेगा कि उस बात में कितना दम है।

इसके साथ ही में अर्ज करना चाहता हूं और जैसा मैंने पहले भी कहा था कि यदि हम की प्रदेश की तरकी करनी है तो हमको एक मास्टर प्लान की भ्रायश्यकता है। इस बिजली के लिये भी एक मास्टर प्लान बनना चाहिये। यदि पहले से इसको नहीं बना लेते हैं तो फिर लोगों के प्रभाव में अन्तर, लोगों के दबाव में आकर उन योजनाओं में बाद में तरदीली की जाती हैं जो कि पहले से नंजूर होती है और नयी योजनाओं को चालू किया जाता है। इसलिये मेरी प्रार्थना है कि यदि जनतंत्र में आपको लोगों का विश्वस पैदा करना है तो उसका यह भी एक तरीका है कि अप की योजनाये पहले से निश्चित तरीके पर बनी हुई हो। और पहले उन योजनाओं को धीरे-घीरे बढातें चले जाइये तभी जनता का विश्वस प्राप्त कर सकते हैं। जलदी जलदी जो योजनायें चलाई जाती हैं उनका प्रभाव यह होता है कि यह अधूरी रह जाती हैं अने पर खर्च किया गया सारा स्पया बरबाद चला जाता है। उवाहरण के लिये

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-- २८५ स्रतुदान संख्या २७-लेखा शीर्षकः ४१ स्रौर ८१-क-विद्युत योजनाम्रों की स्थापना पर व्यय तथा स्रतुदान संख्या ५१-लेखा शीर्षकः ८१-क--विद्युत योजनाम्रों पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय को छोड़कर)

बस्ती बभनान लाइन एक योजना चलाई गयी उसमें १६-१७ लाख रुपया नलकूपों में चला गया,। वह स्रभी तक वसूल नहीं हो रहा है। इसलिये मैं निवेदन करूंगा कि महमूदाबाद क्षेत्र में स्नाप्त बिजली देने की कृपा करें क्योंकि इसकी वहां पर बहुत स्नावश्यकता है। स्नगर वहां बिजली पहुंच गयी तो वहां पर छोटे-छोटे बहुत से उद्योग धंधे शुरू हो सकते हैं स्नौर वहां के लोग स्नपनी जिन्दगी स्नच्छी तरह बसर कर सकते हैं। इन शब्दों के साथ मैं इस स्ननुदान का समर्थन करता है।

श्री यशपालसिंह (जिला सहारनपुर)—माननीया अधिष्ठात्री महोदया, मै प्रस्तुत अनुदान पर कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं। सरकार से मेरा आग्रह यह है कि इस समय जनता बहुत संकटकालीन दौर से गुजर रही है। इतना भारी संकट हमने इसक पहले कभी नहीं देखा है। खेती की पैदावार के लिये खिजली की सबसे अधिक आवश्यकता है। आज बिजली बेकार के कामों में दी जाती है, लेकिन ट्यूब वेल्स के लिये इरींगकान के लिये या ऋशर के लिये, जिसके लिये लोग एक एक हार्स पावर के लिये तरसते हैं, बिजली नहीं दी जा रही है। यह बड़े शर्म की बात है कि हमारा देश इन सालों में अरबों रुपयों का अन्न बाहर से मंगा कर खा रहा है। अगर इस बिजली को अन्य कार्यों से बचा कर खेती के कामों में इसको अब तक लगाया गया होता तो हमारी सारी दिक्कत हल हो गयी होती। उत्तर प्रदेश सोना उगलने वाला प्रदेश है। लाखों लोग आज बिजली के लिये तरसते फिर रहे है मगर उनको बिजली नहीं मिलती। सिनेमा के मालिक चाहते है तो उनके यहां २४ घंटों के अन्दर बिजली की फिटिंग हो जाती है, दूसरे बेकार के कामों के लिये तुरन्त बिजली की फिटिंग हो जाती है, लेकिन किसान के लिये वह नहीं मिल पाती आज तक सरकार की यह पालिसी डिक्लेयर नहीं हो पायी है कि किस वक्त किसान को बिजली दी जायेगी।

मैं चाइना की बात नहीं कहंगा । मैं दूसरे मुल्कों की, श्रमेरिका, श्रादि की, बात भी नहीं कहंगा, लेकिन में कांग्रेस गवर्नमेंट की बात कहुंगा। पंजाब की जो हालत है, वहां के किसानीं की जो हालत है, कम से कम उस हालत तक तो हमेको लाया जा सकता है। वहां पर भी तो कांग्रेस का राज्य है । यहां पर भी कांग्रेस का राज्य है । लेकिन पंजाब के काश्तकार जहां १०० फीसदी फायदा उठाते हैं वहां हम ३३ फीसदी भी फायदा नहीं उठा पाते है । मै माननीय यादव साहब से कहना चाहंगा, मैं निर्माण कार्यों का विरोधी नहीं हूं किन्तु यह जरूर चाहता हूं कि बिजली की जहां जरूरत है वहां बिजली दी जानी चाहिये ग्रौर जहां बिजली की जरूरत नहीं है वहां बिजली बेकार नष्ट नहीं की जानी चाहिये। जब हर चीज का कोटा फिक्स है तो कम से कम खेती के लिये भी बिजली का कोटा नियत होना चाहिये। श्राज जिस रेट से बिजली ट्यूबवेल्स के लिये दी जाती है उसी रेट से हमारे पश्चिमी जिलों के लोग बिजली लेने को तैयार है। लेकिन वहां के लोगों की दो-दो सालों से दरख्वास्तें लगी हुई है ग्रौर उनको बिजली नहीं मिल पायी है। ग्राज किसान को बिजली के लिये ५०-५० मील से श्रांकर क्लर्कों की खुझामद करनी पड़ती है, उनको इस दिक्त से बचाया जाय। उनको यह बताया जाय कि फलां वक्त तुमको बिजली मिलेगी ग्रौर उस समय उनको बिजली मिलनी चाहिये एग्रीकल्चरल वर्क के रेट्स इंडस्ट्रियल के मुकाबिले में कम होने चाहिये। इसी संबंध में मैं श्रापके सामने श्रांकड़े पेश कर रहा हूं कि श्रगर हमने बिजली का इंतजाम नहीं किया तो हमारी क्षति कितनी होगी। सन् १६२६ में हमारे प्रदेश में ७ लाख ८० हजार ६२६ मैसनरी बेल्स थे, लेकिन १६५६ में हमारे प्रदेश में २,२१,५३६ मैसोनरी वेल्स रह गये हैं। उनसे २० फीसदी से ज्यादा पैदावार होती थी, लेकिन चूंकि किसान को वक्त के ऊपर तकावी नहीं मिल सकी है किसान उन कुर्झों को कायम नहीं रेख सका है । दूसरी दिक्कत यह हुई कि जमींदारियां छिन गयीं जिससे कुयें जमींदारों के पास ग्रीर जमीन काइतकार के पास रह गयी। जमींदार काइतकार को कुयें इस्तेमाल

[श्री यशपालींसह]
नहीं करने देते ग्रौर खुद उन कुग्रों को किस चीज के लिये डेवलप करें, क्यो करे ? ग्रच्छा
हो कि सरकार की तरफ से ऐसे लाखों कुग्रों को मृग्रावजा देकर काश्तकारो के हक में दखल दिया
जाय जिससे काश्तकार उनसे फायदा उठा सके।

दूसरे, मैं बहुत विनम्न झन्दों में यह म्रर्ज करना चाहता हूं कि मुझे यह कहते हुए बड़ी खुशी होती है कि इंजीनियर्स हमारे देश के निर्माता है। कई लोग जो गर जिम्मेदारी से यह कह देते हैं ३ दिन से चर्चा चल रही है, यह कहा गया कि सभी इंजीनियर्स बेईमान है, इससे हमारे राष्ट्र की तामीर को घनका लगता है। इंजीनियर हमारे निर्माता है। में कहता हूं कि जो बेईमान ह, करण्ट है उनको सजा दी जाय, लेकिन हर एक इंजीनियर बेईमान है, यह कहने से हमारे देश को हनं क लगता है। अगर इंजीनियर्स न होते तो यह सिवलीजे तन सो गयी होती, यह शिल्प केंद्र खडहर हो जाता। इंजीनियर न होते तो यह संगीत सूरा जाता, इंजीनियर न होते तो यह सम्यता पंगु हो जाती, इंजीनियर न होते तो म्राज यह म्रसेम्बली हाल यहा एग्जिस्ट न करता, बल्कि यहां एक कूड़े का ढेर पड़ा होता। जरूरत है कि विद्या, बुद्धि म्रीर प्रतिभा की इज्जत की जाय,

"हजारो साल निंगस श्रयनी बेनूरी पे रोती है, बड़ी मुक्किल से होता हे चमन मे दीवावर पेदा।"

जहां विद्या, बुद्धि ग्रोर प्रतिभा की इज्जत नहीं होती वहा समाज बुझ जाया करता है, वहां की सिवली जेशन श्रोर कल्चर मिट जाया करती है। माननीया, मानव धर्मशास्त्र में लिखा है, "ग्रार्ज्या यत्र रूज्यन्ते पूज्या ना च व तिक्रम, त्रीणि तत्र जायन्ते दुर्भिक्ष मरणं भयम " जहां काबिले एहतराम लोगो को ग्रादर ग्रौर सम्मान नहीं मिलता उस देश के ग्रन्दर दुर्भिक्ष श्राया करता है, श्रोले पड़ते हैं, टिड्डी दल ग्राया करते हैं, मरण होता है, भय होता है। इसलिये हमें योग्य इंजीनियरों का मान करना चाहिये साथ ही हमारा सब का प्रयत्न होना चाहिये कि हमारे देश में से भ्रष्टाचार दूर हो ग्रौर यह इंडिविजुवल कैरेक्टर को देवलप करने से दूर हो सकता है।

मैं उस रुड़की में रहता हूं जो बिजली का सबसे बड़ा सेटर है। रुड़की से दो भील के फासले पर जो गांव है वह ग्रंथेरे में पड़े हुए हं, लेकिन रुड़की के छोटे से कस्बे मे ३ सिनेमा चलते हैं। पहले जहां एक सिनेमा चलता था, श्रव ३ चल रहे है। जिस देश के श्रन्दर करोड़ों श्रादमी भूखे पड़े हों, लाखों श्रादमी सड़को पर श्रीर भटिठयों के साप चिपट-चिपट कर रातें काटते हों, उस देश के लिये शोभा नहीं देता कि नाचने गाने पर, लग्जरी में इतनी बिजली खर्च की जाय। गवर्नमेट को ग्रयनी पालिसी डिक्लेयर परनी चात्ये, ऐलान करना चाहिये कि फर्स्ट प्रायोरिटी जो दी जायगी वह ऐग्रिकल्चर के लिये दी जायगी। जब तक ऐग्रिकेल्चर तरक्की नहीं करेगा तबतक हमारा देश तरक्की नहीं कर सकता। जो ढाई करोड़ आबादी का मुल्क मिस्र है वहां ४० मन फी एकड़ पैदावार होती है श्रीर हमारे देश का श्रौसत श्रभी तक भन की एकड़ भी नहीं है। श्रौर वह एक रेगिस्तानी मुल्क है। वहां नील का वाटर है तो उससे ज्यादा पैदा करने वाला गंगा का पानी है, उसमें ज्यादा मिनरल्स है, ज्यादा खाद्योज्य है, ज्यादा से ज्यादा नाइट्रोजन है जोकि हमारी फंसलो की बढ़ा सकता है, लेकिन बड़े श्रकसोस की बात है कि गवर्नमेट इस तरफ कोई तेवज्जह नहीं दे रही है। में बड़ी नम्रता के साथ यह भ्राग्रह करता हूं कि कम से कम ऐग्रिकल्चर के लिये इसी सन् ६० के भ्रान्दर इतनी बिजली जो पैदा हो रही है वह सब से पहले कुन्नों को दी जाय, वरना दिक्कत यह होगी कि जहां हम ग्राज से ४० साल पहले थे वहीं ग्राज होंगे। ग्रगर पैदावार का रकबा न बढ़ा, श्रगर प्रोडक्कान न बढ़ा तो दूसरे मुल्कों की हमें गुलामी करनी पड़ेगी भ्रौर माननीया स्रिविष्ठात्री महोद रा, में स्रापके जरिये से स्राज फिर यह कह देना चाहता हूं कि हम इनवाइट करेंगे दुसरे "इज्म" को हम इनवाइट करेंगे लाल ग्राधियों को, कम्युनिज्म को तो हमारे देश का जो

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिए मांगों पर मतदान--- स्रनुदान संख्या २८७ २७--- लेखा शीर्षकः ४१ स्रौर ८१-क--- विद्युत योजनास्रों की स्थापना पर व्यय तथा स्रनुदान संख्या ५१--- लेखा शीर्षकः ८१-क--- विद्युत योजनास्रों पर पूंजी की लागत (स्थापना-व्यय को छोड़ कर)

एक्स्प्लायटेंड मास जो बोषित वर्ग है वह कभी देश के प्रति वकादार नहीं हो सकता। उन्हें हमारी कला श्रौर संस्कृति श्रच्छी न लगेगी।

"बुभुक्षितैः व्याकरणं न भुज्यते, पिपासितैः काव्यरसो न पीयते।"

जनता जनार्दन श्रौर उसकी गरीबी का यह तकाजा है कि खेती के कामों पर बिजली को खर्च किया जाय । खेती की पैदावार जब तक न बढ़े तब तक सिनेमाघरों, नाचने गाने के क्लबों भ्रौर लग्जरी के स्थानों से बिजली को एकदम रोक दिया जाय। श्रुगर मेरे इस श्राग्रह को यह सरकार मान ले तो मैं विश्वास दिलाता हूं कि सन् ६० में ही हम सेल्फ सफीशियेंट हो जायेंगे थ्रौर हमें बाहरी श्रनाज की जरूरत नहीं होंगी। जिस देश की हम "सुजलां, सुफलां, मलयज-शीतलां" भूमि कहते थे, यह कहते थे कि यहां की भूमि रतन उगलती है वही भूमि श्राज दाने दाने के लिये दूसरों की मुक्ताज है यह बहुत बड़े फर्फ की बात होगी अगर हमारे मंत्री जी आज सिर्फ तीन चीजों का एलॉन यहां पर कर दें। पहला एलान यह कि काइतकारों के लिये जो बिजली दी जायगी वह बहुत सस्ते दामों पर दी जायगी। दूसरा एलान यह कि फर्स्ट प्रायरिटी खेती के कामों के लिये दी जायगी और तीसरा एलान यह है कि बिजली के मुहकमे के जो छोटे छोटे ग्रापरेटर्स हैं, लो पेड सर्वेन्टस हैं, जो हमारे मैकेनिक काम करते हैं जिनकी तनख्वाहें कम हैं उनकी तनख्वाहें किसी की भी सौ रुपये से कैम न होंगी। पंजाब एक छोटा सा प्रदेश है श्रौर कांग्रेस से ही गवर्न्ड है, लेकिन वहां किसी भी बिजली के कर्मचारी की तनस्वाह सौ रुपये माह-वार से कम नहीं है। लेकिन हमारा इतना बड़ा प्रदेश है यहां किसी छोटे कर्मचारी की तनख्वाह सौ रुपये तक नहीं पहुंचती है। प्रगर मंत्री जी ने यह तीनों एलान कर दिये तो में समझंगा कि जिस कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करने में खड़ा हुआ हूं वह पूर्ण हो गया। गवर्नमेंट को सद्बुद्धि स्रावे स्रौर उसको प्रभु सत्पर्य प्रदान करें जिससे वह इस प्रदेश की सेवा कर सके।

श्री दीपनारायणमणि त्रिपाठी (जिला देवरिया)—माननीय श्रिधिकात्री महोदया, यह प्रदेश एक कृषि प्रधान प्रदेश है जहां करीब ८० फीसदी जनता कृषि पर जीवित है, उसको प्राथमिकता बिजली में देने के लिये, सस्ती बिजली देने के लिये जो बात मेरे पूर्ववक्ता ने कही है वह बहुत उत्तम है श्रीर जितना हो सके बहुत श्रन्छा है। साथ ही सौ रुपये से कम तनख्वाह न हो तो सौ रुपये क्या दो सौ रुपये भी उनकी तनख्वाहें हो जांय तो ज्यादा श्रापित्त की बात नहीं है लेकिन साधनों की देखते हुये श्रगर कोई सुझाव दिये जांय तो बात समझ में श्रावे लेकिन केवल "वचनस्य का दरिद्रता" जबानी जमाखर्च करना है तो बात दूसरी है। वास्तविकता यह है कि दो सौ रुपया किया जाय तो दैक्स लगे श्रीर फिर विरोध हो। इसलिये ऐसे प्रस्ताव श्रन्छे तो हैं लेकिन जबानी जमाखर्च ही है क्योंकि उसमें बहुत ज्यादा तत्व नहीं है।

श्रब जहां तक बिजली के उत्पादन का सम्बन्ध है उसके लिये हमारे पास विवरण है। जो पुस्तिका प्रस्तुत की गई है सरकार की श्रोर से उसके कुछ श्रांकड़े में श्रापके सामने रखना चाहता हूं। उस पुस्तिका में बिजली के उत्पादन श्रोर वितरण के विवरण इस प्रकार हैं—१९५६—५७, ५७—५८ श्रोर ५८—५८ के श्रांकड़े में रख रहा हूं जो फिगर्स इन हाजार यूनिट्स हैं। कुछ उत्पादन जो हुश्रा हैं वह कमशः ६ लाख ७२ हजार, ७६४ हजार यूनिट्स, ७ लाख ६६ हजार ५८६ हजार तथा उसके बाद ७ लाख ७६ हजार यूनिट्स। इस प्रकार तीन वर्षों में करीब डेढ़ दो हजार या इससे ज्यादा यूनिट्स का उत्पादन हमारे यहां बिजली का बढ़ा है। तो जिस कम से बिजली का उत्पादन बढ़ा उस कम में कृषि श्रोर श्रोद्योगिक कामों में बिजली नहीं दो गई, ऐसा मालूम होता है। में मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि प्रदेश के लोगों का जीवन-स्तर उठाने के लिये यह श्रावश्यक है कि कृषि में श्रोर उद्योगों में सस्ती बिजली दी जाय। इससे जो श्रनएकोनामिक होल्डिंग्स हैं उनको भी सहायता पहुंचेगी श्रीर किसानों का जीवन स्तर भी अंचा होगा।

[भी दीपनारायणमणि त्रिपाठी]

एक बात में श्रौर निवेदन करना चाहता हूं। रिहन्द डैम के सिलसिलें मे श्री प्रतापांतह ने श्रौर दूसरे लोगों ने भी कहा श्रौर उसके साथ में बिजली परिषद् की भी बात है। हमें जो बजट साहित्य मिला है उसके भाग दो के पृष्ठ ६६ श्रौर १२७ की तरफ ध्यान श्राकांषित करना चाहता हूं। पेज ६६ पर लिखा हुग्रा है कि जितना हमारा बिजली का कारोबार है वह किस तरह से विद्युत परिषद् को दे दिया गया है। विद्युत परिषद् में सरकारी कर्मचारियों की सेवायें दान्सफर कर दी गई है। यह एक ऐसी संस्था है जैसे कि लोकल बाडीज होती है....

# श्री प्रतापसिंह--मेने यह नहीं कहा था।

श्री दीपनारायणमणि त्रिपाठी—ठीक है। तो पेज ६६ पर श्राप देखे उसमे स्पष्ट लिखा हुन्ना है कि हमारी प्रदेशीय सरकार का कहां तक उस विद्युत् परिषद् से सम्बन्ध है। रिहन्ड डैम के बारे में जो टीका-टिप्पणी की गई वह चूंकि प्रशासन के श्रन्तर्गत श्रातो है इसलिये वह करना जायज है। रिहन्द की बिजली किसानों की न देकर बिरला को श्रलम्यूनियम फेस्टरी के लिये दी गई श्रौर सस्ते दर पर दी गई, यह कहा गया। इस सम्बंध में में बताना चाहता हूं कि भौद्योगीकरण में दो सेक्टर है, प्राइवेट सेक्टर भ्रौर पब्लिक सेक्टर । श्रगर हमको कृषि पर ही निर्भर नहीं रहना है श्रौर श्रपने प्रदेश में बड़े-बड़े उद्योगों को भी चलाना है तो यह श्रावश्यक है कि हम पूंजीपतियों को प्रोत्साहित करें। हमें उनको बिजली भी देनी पड़ेगी। उसी रूप में बिरला को वहां पर बिजली दी गई। वह वहां पर ग्रलम्यूनियम का कारग्वाना लगा रहे है। इस कारखाने से हमारे हजारों ख्रादिमयों को फायदा पहुंचेंगा ख्रौर फारेन एक्सचेन्ज की भी तो मुझे कोई ऐसा तर्क नहीं दिखाई देता जिसमे इसका विरोध किया जा सके। यह आप श्रवदय कह सकते हैं कि किसानों को बिजली नहीं मिली। इस सम्बन्ध में हमारे माननीय मुख्य मंत्री कई बार कह चुके है कि मऊ, सोहावल ग्रीर गोरावपर के जो पावर हाउसेज हैं बिजली के उन तीनों को वह एक प्रिड बनाना चाहते हैं श्रौर ग्रिड बना करके तीनों स्थानों पर जो मशीनें खाली है उनको रिहन्द से कनेक्ट कर देंगे। उसका परिणाम यह होगा कि उससे इतनी बिजली हो जायगी कि हमारी सारी जरूरते पूरी हो जांय। तो हमारे पास जो पावर हाउसेज है उनमें थोड़ा सा नियोजन करके हम अपना काम निकाल सकते है। इसके श्रतिरिक्त ज.ब हमारी मिक्स्ड एकोनामी है तो उसमें श्रगर हम बिरला को विजली न देते तो किसी दूसरे को देते। बिना किसी व्यक्ति के तो कोई चीज संचालित नहीं होती है। इसलिये में समझे नहीं पा रहा हूं कि किस दृष्टिकोण से इसकी टीका-टिप्पणी की गई। हां, उनको बिजली देने से ग्रगर वहां पर ग्रौरों के लिए बिजली का ग्रभाव रहता तो यह बात मुझे भी खटकती। लेकिन जब उसके लिये दूसरी व्यवस्था की जा रही है तो फिर उस टीका-टिप्पणी का ग्राघार क्या है।

दो एक बातें में श्रौर कहना चाहुता हूं। में यह जरूर मानता हूं कि श्रगर श्रौद्योगीकरण के लिये बिजली पब्लिक श्रौर प्राइवेट संक्टर में दी जाय तो वह श्रच्छा होगा, उससे प्रदेश की श्राधिक स्थिति ऊंची उठेगी।

जहां तक ट्यूबवेल्स का सवाल है, पिछले सालों में दो काई सौ ट्यूबवेल प्रति जिले के हिसाब से सारे प्रदेश में लगाये गये हैं। यह सही है कि ट्यूबवेल का रेट १५-२० ६० की एकड़ पड़ जाता है जो कि किसान की शक्ति के बाहर पड़ जाता है इसिलये हमारा उत्पादन का जो लक्ष्य है वह पूरा नहीं हो पाता। कभी-कभी जब सूखा पड़ता है और पानी की माफी या सला देने की बात होती है तो कानूनी दिक्कत पड़ती है। लाखों रुपये की तकावी थ्रोर छूट थ्राप देते है तो क्या यह संभव नहीं है कि किसानों को श्राप सस्ती बिजली दें और जो सब्सीडी श्राप देते हैं, उसमें श्राप उसको एडजस्ट कर दें। इससे किसानों की स्थित ऊंची होणी श्रीर उनको बिजली इस्तेमाल करने की श्रादत भी पड़ेगी।

१६६०-६१ के ग्राय-ध्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—ग्रनुदान संख्या २८६ २७—लेखा शोर्षक ४१ ग्रीर ८१-क-विद्युत् योजनाग्रों की स्थापना पर व्यय तथा प्रनुदान संख्या ५१--लेखा शीर्षकः ८१-क--विद्युत् योजनाग्रों पर पूंजी की जागत (स्थापना व्यय को छोड़ कर)

कुछ साथियों ने कहा कि ट्यूबवेल्स के पानी का इस्तेमाल नहीं होता है। उसका भी कारण यह है कि बिजली महंगी पड़ती है इसिलये जो सीमित साधनों वाले किसान है उसको इस्तेमाल नहीं कर पाते हैं। ट्यूबवेल के पानी के बजाय वे समझते हैं कि कुएं का ही पानी ठीक है। इसिलये में माननीय मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि वे बिजली को किसानों के लिये सस्ती हैं।

दूपरी बात यह है कि देवरिया में जो बिजली दी जाती है न जाने क्यों वहां पर बल्व बहुत प्यूज होते हैं। न जाने बिजली की मशीनरों में कोई खराबी है या श्रीर कोई बात है। लोग इस वजह से बिजली से घडराने लगे हैं कि बिजली से बहुत से स्थानों में श्राग लग गयी है। ३६ हजार रुपये का सामान एक व्यवसायी का जल गया। पिछले ६ महीनों में ३ बार इस नगर में यहां श्राग लग चुकी है। इसकी बाबत मेंने शिकायत भी की थी। जब हमें वहां के लोगों को बिजली के प्रयोग के लिये श्रादी बानना है तो इसके लिये जरूरी है कि वहां के कर्म-चारियों को इस बात की हिदायत दी जाय कि वे लोगों को उसके तौर तरीके बतायें श्रीर उनकी तकली को दूर करने का प्रयत्न करें जिससे लोग ज्यादा से ज्यादा तादाद में बिजली के श्रम्यस्त हो सकें। मेरा विश्वास है कि इस साइंस के जमाने में हम श्रपने उत्तरदायित्व को निभा पायेंगे।

दूसरी बात यह है कि देवरिया ग्रीर बरहज में बिजली के खंभों की बहुत शिकायत है। माननीय उग्रसेन जी इस समय यहां नहीं हैं वे बार-बार सदन में इसके बारे में प्रवन उठाया करते हैं। मेरी सरकार से प्रार्थना है कि बिजली के खंभों की शिकायत को दूर करने की कृपा की जाय। हमारे यहां एक छोटे से नगर में ऐसी शिकायत है तो उससे में ग्रन्दाजा लगा सकता हूं कि ग्रीर स्थानों पर भी ऐसी शिकायतें होंगी। सरकार इस प्रकार की कठिनाइयों को दूर करने की कृश करें। इन बातों से माननीय मंत्री जी को बिजली के प्रसार ग्रीर प्रचार में सुविधा मिलेगी। इन शब्दों के साथ में इस ग्रनुदान का समर्थन करता हूं।

\*श्री शिवराज बहादुर (जिला बरेली)—सदर साहिबा, ग्राज बिजली के ऊपर बहस हो रही है। किसी भी मुल्क के लिये ग्राज की दुनियां में जब कि विज्ञान का जमाना है, बिजली की बड़ी जरूरत हैं। हम पिश्चमी देशों की तरफ देखें, वहां जो काश्तकार लोग हैं उनके नौकर भी मोटरों में फिरा करते हैं। उसके बरग्रक्स ग्रगर हम ग्रपने हिन्दोस्तान ग्रौर यू० पी० को देखें तो इसमें कोई शक नहीं कि इस माने में हमारा यू० पी० काफी पिछड़ा हुग्रा है। ग्रभी इससे पहले भ्रष्वाटार के बारे में कहा गया, इसके बारे में में कुछ कहना नहीं चाहता, सिर्फ एक बात कहंगा—

जो करो नजर वह है हर जगह, जो हो बेबसर तो कहीं नहीं, मुझे ग्राज तक न खबर हुई, वह कहां है ग्रौर कहां नहीं।

जो देखता है उनकी नजर में भ्रष्टाचार होगा। ग्राज तो इस बिजली का सवाल है। हम देखते हैं कि दिल्ली में ट्राम्स चलती हैं बिजली के जिरये चलती हैं लेकिन ग्राज लखनऊ में ट्राम्बे नहीं है। तो ग्रगर ग्राज हम देहली से मुकबला करें या कि शिकागो, लंदन ग्रादि बाहरी मुक्कों से ग्रपना मुकाबला करें तो उससे बहुत पीछे है। देहली से लखनऊ बहुत पीछे है। में जिस इलाके से ग्राया हूं वहां पर बहुत ज्यादा तादाद में गन्ना पैदा होता है। तो में माननीय मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि वहां पर गन्ना का काम बहुत होता है। तो इस जमाने में जब कि गुड़ देहातों में बिकता है ग्रौर बनता है, ग्रगर वहां बिजली मिल जाय तो ज्यादा से ज्यादा

[भी शिवराज बहादुर]

मशीनें वहां चलायी जा सकती है। वहां धान बहुत ज्यादा पैदा होता है, ग्रगर वहां बिजली मिल जाय तो धान कूटने की मशीनें लग सकती है। इसके श्रलावा श्राटे की मशीनें लग सकती है।

इस जमाने में जब कि लोग तरक्की कर रहे है, हमारे यहा पानी की कमी है, बारिश की कमी से बहुत ज्यादा पैदावार नहीं हो पाती । लेकिन श्रमेरिका में श्राज यह हालत है कि वहां के किसान जब चाहें पानी बरसा लिया करते हैं। श्राज वहां विज्ञान की इतनी तरक्की है कि बिजली के जरिये श्रन्न की पैदावार बड़ी तेजी श्रौर सह्लियत के साथ बढ़ा ली जाती है, इसी तरह से यहां भी श्रन्न की पैदावार बढ़ायी जा सकती है।

बिजली से कई फायदे हैं, जैसे ग्रगर बिजली के जिरये कोई काम किया जाता है तो वक्त की बचत होती हें, जो काम कई ग्रादमी मिल कर घटों, दिनों तथा महोनों में कर पाते थे उनको चन्द मिनटों में पूरा कर लिया जाता है। इसके ग्रनावा कम से कम लागत में ज्यादा से ज्यादा पैदावार हो जाती है। ग्रगर कोई काम ऐसा हो जिसे हजारों ग्रादमी भी मिल कर नहीं कर सकते थे उस काम को भी मशीनों के जिरये कम लागत में बड़ी ग्रासानी में किया जा सकता है।

इस विज्ञान के युग में विज्ञान श्रौर बिजली से सही श्रौर गलत दोनो काम लिये जा सकते हैं। जैसे इंजीनियर लोग श्रगर वैज्ञानिक तरीके से श्रपने श्रक्ल को लगावें तो उससे देश की बड़ी तरक्की हो सकती हैं। वहीं पर श्रगर उन्हें गलत विञ्ञा में ले जायं तो एटम बम तैयार किया जाता है। जिससे वृत्तिया के लाखों श्रौर करोड़ों श्राविमयों का खून होता है। तो दोनों चीजे हैं, श्रगर दिमाग को डिस्ट्रक्शन की तरफ लगायें तो उससे न कसान भी बहुत होता है लेकिन श्रगर दिमाग को कंस्ट्रक्शन तरफ लगावें तो इन इंजीनियरों के द्वारा हमारा देश श्रौर प्रदेश बहुत श्रागे बढ़ सकता है।

में उन लोगों में नहीं हूं जो कहते हैं कि इंजीनियरों की तनख्वाह कम की जाय, या उनकी रहने के लिये मकान न दिया जाय या उनको श्रच्छा खाना न मिले। में तो इस राय का हूं कि जितने हमारे इंजीनियर्स है उनको तनख्वाह भी श्रच्छी मिलनी चाहिये, उनके रहने के लिये इमारत भी श्रच्छी होनी चाहिये तथा खाने को भी श्रच्छा मिलना चाहिये ताकि उनका दिमाग रुपये की कमी की वजह से कही दूसरों तरफ न लग जाय। वरना हां सकता है कि वे ख्ये के लिये कोई दूसरा तरीका पैदा करें। इसके साथ ही साथ इन इंजीनियर्स का भी फर्ज है कि वे श्रपनी श्रक्ल से जो यू० पी० की इतनी बड़ी श्राबादी को हैजान है, परेशानी है, जो उनकी गरीबी है, मुफलिसी है उसको दूर करें श्रीर हजारों लाखीं श्रादमी जो काम के लिये मारेमारे फिरते है उनको कोई न कोई काम मिल सके।

श्राज बहुत से श्रादमी शिक्षित है, पढ़े-लिखे है मगर बेकार है। श्राज हर श्रादमी को शेट वर्ष से ज्यादा उम्र का है उसे कोई न कोई काम मिलना च हियं ता कि वह काम करके अपने देश श्रोर प्रदेश को श्रागे बढ़ावे, देश की पैदावार को श्रागे बढ़ावे तथा कोई श्रादमा खाली न रह सके। क्यों कि जब श्रादमी खाली रहता है तो उसका दिमाग बुरी बाती को तरफ जाता है, ऐडवर्स कीटिसिज्म करता है। श्राज यह हमारे लिये कितनी लज्जा की बात है कि सैकड़ों नौजवान हमारे यहां बेकार भरे हुए हैं श्रोर उनको कोई काम नहीं मिलता। इस वास्ते इस तरफ भी ध्यान देने की जरूरत है कि हम ऐसी नथी-नथी मशीने बनायें जिससे उन लोगों को काम मिले। श्रापका ध्यान सिर्फ ४,६ शहरों की तरफ ही रहने से काम नहीं चलने वाला है। जैसा कि प्रताप सिंह ने कहा, यह सही है कि श्राज यह जमाना है जब कि जो डाउनट्राडेन है, जो बहुत ज्यादा गरी है, पीड़ित श्रोर कमजोर है जिन पर हमारी जिन्दगी का इन्हसार है, जिन पर हमारे प्रदेश की उन्नति का वारोमदार है उन देहात की तरफ भी व चले श्रोर इस बिजली को गांव गांव में, देहातं-देहात में हर जगह फैलावें।

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतक्षत—प्रनुदान संख्या २६१ २७—लेखा शीर्षकः ४१ ग्रीर ८१-क--विद्युत् योजनाग्रों की स्थाप त पर व्यय तथा श्रनुदान संख्या ५१--लेखा शीर्षकः ८१-क--विद्युत योजनाग्रों पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय को छोड़ कर)

एक वक्त था जब कि हमारे यहां साइंस श्रौर बिजली की चीजें ग्रायों मोटर ग्रौर रेलें ग्रायों तो उसे देख कर लोग भागते थे ग्रौर घबड़ाते थे। म्युटिनी भी इसी वजह से हुई थी। जब साइंस की चीजों का ईजाद हुग्रा तथा बिजली की नयी-नयी चीजें ग्रायों तो चूंकि लोगों का उससे कोई सम्पर्क नहीं था, इससे वे घबड़ा गये ग्रौर उनमें भ्रम पैदा हो गया जिससे प्तिपाहियों ने बगावत शुरू कर दी। तो हम उस चीज को जिसे पहले बुरा समझते थे ग्रच्छा समझने लगे ग्रौर इस्तेमाल करने लगे, पहले लोग बिजली लेना पसन्द नहीं करते थे, उसके जिये कारखाना चलाना, चक्की चलाना लोग पसन्द नहीं करते थे। ग्रवजो उस की जरूरत को लोग महमूत करते हैं तो यह सन्तोष की ग्रलामत है, ग्राज देहात में भी उसकी मांग है, ग्राज लोग चाहते हैं कि छोटे से छोटे काम के लिये भी बिजली मिले ग्रौर गांवों तक में बिजली का इंतजाम हो। ग्रगर देहात में बिजली पहुंच जाय तो वहां के लोगों की बहुत सी जरूरत ग्रौर ग्रुसीवतें दूर हो जायं ग्रौर उस का नतीजा यह हो कि लोगों की गरीबी ग्रौर इफलास दूर हो जाय। जिस तरह से हम यहां देखते हैं कि बिजली का बटन दबाने से पंखे चलने लगते हें या रोशनी हो जाती है उसी तरह से देहात के ग्रौर कस्बों के लोग भी चाहते हैं कि उन को बिजली मोहेया कराई जाय। ग्राज लोगों की जो रोज की जरूरतें हैं वह तकाजा कर रही हैं कि जिस तरह से भी हो ऐसे साधन मोहेया कराये जायं कि जिस से ज्यादा बिजली गैवा हो सके।

यह ठीक है कि श्रब बिजली पहले से ज्यादा पैदा हो रही है। हमारे बरेली के पावर-हाउस को कोयले की कमी की वजह से भट्टे वालों से कोयला कर्ज दिलाया गया, मेरे पास भट्टे वालों ने श्राकर शिकायत की कि हमारा कोयला पावर हाउस से वायस नहीं कराया जा रहा है। जब मैंने डी० एस० ग्रो० से कहा तो उहोंने बताया कि कोयले की कमी है श्रौर पावर हाउस को कोयले की जरूरत थी इसलिये उसे दिलाया गया था। इसलिये हमारे यहां जो कोयले की कमी है जिसकी वहज से बिजली पर श्रसर पड़ता है वह दिलाया जाय। गंगा जमुना जिन की हम पूजा करते हैं उनके पानी से, दिखाश्रों के पानी से, कोयले से जिस तरह से भी बिजली पैदा हो सके वह पैदा की जाय ताकि देहातों श्रौर कस्बों के भली-कूचे में भी बिजली पहुंच सके। देहातों में उद्योगों के लिये श्रौर खंडसारी वाले शकर के कारखानों की, धान व श्राटे की मशीनों के लिये बिजली दिलाई जाय, हमारे यहां लकड़ी के कारखानों श्रौर श्रारे की मशीनों के लिये भी बिजली की दिक्कत हैं, लोहा ढालने वालों को भी बिजली की जरूरत है श्रौर देहातों के तमाम तरह के कामों के लिये बिजली की बहुत जरूरत है।

श्रीमती विद्यावती वाजपेयी (जिला हरदोई)—माननीया ग्रिधिष्ठात्री महोदया, में ग्रापकी ग्राभारी हूं कि ३ दिन से बराबर प्रयत्न करने पर भी बोलने का ग्रवसर हम महिलाग्रों को नहीं मिला था, ग्राप बैठी हैं तो समय मिला वैसे ग्रायद न मिलता इसकी मुझे श्रिकायत है। इस विषय पर बोलने की मेरी जास इच्छा तो नहीं थी लेकिन दो तीन दिन से बराबर प्रयत्न कर रही हूं, सार्वजिनक निर्माण का बहुत महत्वपूर्ण विषय था उस पर भी में ग्रपने विचार प्रकट करना चाहती थीं।

लेकिन भ्रब पहले मैं भ्रपने हरदोई जिले की बात कहूंगी कि वहां बिजली का इतना बुरा प्रबन्ध है कि वहां बिजली लक्ष्मी शुगर मिल को ठेके पर दी गई है, वह सन् ६० तक का ठेका है, सब से ज्यादा तेज बिजली वहां पर है, जब कि यहां ६ पैसे यूनिट बिजली है हरदोई में ७— द श्राने यूनिट बिजली है। इतनी उन्नति होने पर भी श्रभी तक वहां पर हाइड्रोएलेक्ट्रिक का प्रसार नहीं है यद्यपि दूसरी जगहों से हरदोई में बिजली तेज पड़ती है श्रीर मिलती भी बहुत मुश्किल से हैं श्रीर इसी कारण से हमारे जिले में कोई भी उद्योग बिजली से नहीं चलाया जा सकता। घर-घर में गिमयों के दिन में बिजली के पंखे चलते हैं पर हमारे जिले में पंखे नहीं चलते। श्रब

[श्रीमती विद्यावती वाजपेयी]

नि साल तो पहले से ग्रन्छी हालत है, इस वक्त ग्रन्छी सुविधा है। ग्राज्ञा है सरकार इसे ग्रपने हाथ में लेने की कृपा करेगी ग्रौर वहां की बिजली ग्रौर जगहों की तरह ग्रन्छी ग्रौर सस्ती मिलने लगेगी।

कृषि, सिचाई ग्रौर बिजली इन तीनों का बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है। पहले यह योजना थी कि झोपड़ी-झोपड़ी में बिजली का प्रचार होगा। १०-१२ वर्ष हो गये, श्रीर चीजों में काफी उन्नति हुई, लेकिन बिजली वाले मसले में हम बहुत पिछड़े हुए है। हमारे हरदोई जिले में मोपड़ी तो क्या श्रभी हम बहुत दूर है जब कि उद्योग भी बिजली के जरिये से श्रच्छे किये जा सके। इतनी कमी है। इस विज्ञान के जमाने में जब कि दूसरे देश चन्द्रमा तक जाने की बात सोच रहे है, उस समय तो बिजली का इतना इंतजाम होना चाहियें कि श्रच्छे-श्रच्छे कारखाने ग्रौर उद्योगे बिजली के जरिये चल सकें श्रीर कृषि में भी उन्नति हो सके। हमारे जिले में कम से कम ६ ट्युबवेल ऐसे है जो बिजली के न होने के कारण बेकार है, कोई लाभ उनसे उठाया जा नही सेकेता, गवर्नमेंट का बहुत सा पैसा उनमे लगा है। जहां पर ट्यूबवेल बने हुए है उधर से भी श्चगर बिजली निकल जाय तो भी वह ट्यूबवेल काम में श्रा जाते हैं, लेकिन सुना यह गया है कि जिवर ट्युबवेल बने है उसका छोड़कर दूसरी जगह से लाइन निकाली गई है। शिरोमननगर के पास केहीं पर एक ट्यूबवेल बना हुआ है, बिजली ४-६ मील अलग से निकाली गई है, या ज्यादा दूर से निकाली गई है, वहां तक नहीं पहुंच पाई। वह ट्यूबवेल प्रब भी वैसा ही पड़ा है, ५०-६० हजार रुप । उसमें लगा है। तो जहां पर ट्यूबवेल बने है वहां से बिजली निकाली जाय । दूसरी बात यह है कि पहले बिजली हो तब ट्यूबवेल बनाया जाय तो ज्यादा ग्रन्छा होगा, वरना ट्युबवेल में पैसा बेकार खर्च होता है।

श्राजकल जब इतनी श्रावश्यकता बिजली की है, जबिक हमें इतना कड़ा मुकाबला दूसरे देशों से करना है श्रोर दूसरे देशों में इतनी उन्नति हो रही है बिजली के जिरये से तब इतनी धीमी प्रगति से हम लोग चल रहे हैं। इस विषय में ज्यादा ध्यान देकर छोटे-छोटे उद्योग-धंघों श्रोर कारखाने वगैरह बिजली से चलाए जायं जिससे जनता का हित हो श्रोर सिचाई श्रोर कृषि में उन्नति हो।

यह भी नहीं कि कुछ काम नहीं हुन्ना है। हुन्ना जरूर है। शाहाबाव, पिहानी वर्गरह में बिजली पहुंच गई है। लेकिन श्रभी बहुत कुछ होना है।

यह कहा गया कि इंजीनियर्स में बड़ा भ्रष्टाचार है, रुपया लाते है, यह करते है वह करते है। भ्राज हमारे प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल जी जहां भी लड़े होते हैं यही कहते हैं कि इंजीनियर्स श्रीर श्रोवरिसयर्स की ज्यादा जरूरत है, भारत के भावी निर्माण के लिये बहुत श्रावर्यकता है। जो हमारे लड़के पढ़कर निकलते हैं वह बड़ी मेहनत के बाद इस डिपाटंमेंट्स में श्राते है श्रीर उसके बाद यह कहा जाता है कि बड़ा भ्रष्टाचार है, इतने इंजीनियर्स क्यों रखे गये, इतनी जरूरत नहीं है। लेकिन सब काम एक श्रावमी थोड़े ही कर सकता है। ग्रगर एक ग्रादमी बीमार है तो डाक्टर से ही श्रच्छा होगा। उसको कोई दूसरा श्रादमी ग्रगर जाकर दथा दे तो वह मर जायगा। इसी तरह से ग्रगर कोई मकान बनाना है, कारलाना बनाना है, बांध बनाना है, पावर हाउस बनाना है तो उसे इंजीनियर ही बनायेंगे। तो जहां जिसकी श्रावश्यकता होती है वहीं उसकी लपत होती है। इसलिये हर एक श्रादमी पर ग्रारोप नहीं लगाना चाहिये।

श्रव रही बात भ्रव्टाचार की तो श्रगर कोई दोषी है उसकी जरूर जांच होनी चाहिये श्रौर सख्त सजा उसे दी जानी चाहिये। हमारी एक बहन पर्चा दे गई है जिसमें लिखा है कि बिठ्र, जिला कानपुर में तो बिजली पहुंच गई है, चौबेपुर ब्लाक में भी किसानों के लिये बिजली की ह्यवस्था सरकार करें। इन इाब्दों के साथ में श्रनुदान का समर्थन करती हूं। १९६०-६१ के भ्राय व्ययक में भ्रतुदानों के लिए मागों पर मतदान-भ्रनुदान संख्या २९३ २७--लेखा शीर्षकः ४१ भ्रीर ६१-क-विद्युत् योजनाश्रों की स्थापना पर व्यय तथा श्रतुदान संख्या ५१--जेखा शीर्षकः ६१-क-विद्युत् योजनाश्रों पर पंजी की लागत (स्थापना व्यय को छोड़ कर)

\*श्री टोकाराम (जिला बदायुं)—में कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता है । बिजली से सस्ती किसी भी चीज में इक्ति नहीं है। इसलिये जरूरत है कि बिजली ज्यादा से ज्यादा पैदा भ्रगर हम रहट से पानी देते हैं, भ्रगर बिजली से पानी देते हैं तो बिजली वाला पानी सस्ता पडता है, एक बीधे में १ रुपया पड़ता है ग्रौर वैसे ५ रुपया पड़ता है । जब में ग्रांकडे देखता हूं तो लाखों युनिट बिजली बेकार जाती है जैसा कि इस तालिका से विदित है । ५७ में ७४,६७,३२ हजार युनिट बिजली तैयार हुई। श्रीद्योगिक द्यक्ति के रूप में ३२,४१,०८ हजार यनिट बिजलो काम भ्रायी, भ्रन्य प्रयोजनों में २७,६७,४३ हजार यनिट काम भ्रायी । १६५७–५८ में ८७,२०,०८ हजार यनिट बिजली बनी, ग्रौद्योगिक इक्ति के रूप में ३५,०६,०२ हजार यनिट काम में श्रायी थ्रौर श्रन्य प्रयोजनों में ४०,२६,३३ हजार युनिट बिजली काम में तो स्राप देखें कि कितनी बिजली बेकार गई। १६५६-५७ में १४,८८,८१ हजार यनिट बिजली बेकार गई । १६५७–५८ में ११,८७,७३ हजार यनिट बिजली बेकार गई । भ्रेन्य प्रयोजनों में जो बिजली बेकार गई उसमें सिचाई, घरेल काम, संडकों की बत्तियां, व्यापार के लिये ग्रौर छोटे-छोटे व्यवसाय ज्ञामिल हैं। तो ग्रन्य प्रयोजनों में इतने काम क्षामिल हैं उनको तो १९५६-५७ में २७,६७,४३ हजार युनिट बिजली दी गई श्रौर बड़े-बड़े उद्योगों के लिये ३२,४१,०८ हजार युनिट बिजली दी गई। तो बड़े कामों के लिये ज्यादा श्रौर छोटे कामों के लिये कम । इस तरह से हमारे देहातों में बिजली बहुत कम गई है । कुएं बनाये हैं तो उनके लिये बिजली नहीं मिल रही है। एक कुंग्रा मेरे गांव में लखनपुर का बना है, उसके लिये खम्भे लग गये, कनेक्शन के लिये १२ मई से दरख्वास्त पड़ी है, लेकिन बिजली नहीं मिली। जितना काम है हम ग्रपने निजी कूएं पर बिजली लेकर चला सकते हैं उतना ट्यूबवेल से नहीं कर सकते ।

नम्बर ३६ श्रौर नम्बर ८५ दो हमारे यहां ट्यूबवेल हैं। तो नम्बर ३६ कुएं से पक्के बीचे की श्राबपाशी ३६ रुपये पड़ती है श्रौर घरेलू कूएं की श्राबपाशी ५ रुपये की बीघा से ज्यादा नहीं पड़ रही है। किसान भागता है इस कुंयें से सिचाई कर दो लेकिन कमांड कम है। १ हजार एकड़ बिजली के कुएं का कमांड रखा गया है, लेकिन ५०० एकड़ सींचता नहीं। लिहाजा मेरी तो यह दरस्वास्त है कि ज्यादा से ज्यादा बिजली के कुएं बनाये जायं श्रौर किसानों को बिजली दी जाय बजाय इसके कि श्रहम्युनियम के कारखाने के लिये दी जाय।

करोड़ों रुपया बिजली पर खर्च हो रहा है। उस बिजली का इस्तेमाल यह किया जाय कि हर ५० थ्रौर ६० एकड़ पर एक कुर्रा बना कर सहकारी सिमितियों के जिम्मे कर दिया जाय थ्रौर बिजली उसे दे दो श्रौर कह दो कि हमारा इतना रुपया लगा है, तुम इतना श्रदा कर दो तो कुर्रा फिर कमेटी का हो जायगा। इस तरह से श्रगर श्राप व्यवस्था करेंगे तो सिचाई की योजना चल सकेगी। इससे उपज बढ़ जायगी थ्रौर हजारों श्रादमी उद्योग में लग जायेंगे।

श्राज जहां बड़े कारखानों की श्रोर निगाह रखते हैं वहां किसानों को बिजली देने की तरफ भी ध्यान दिया जाय। त्रिपाठी जी ने कहा कि श्रगर बड़े कारखाने न खोलें तो हमारे पहां बड़े उद्योगों की बढ़ोत्तरी नहीं होगी। पहले रोटी खाने को मिले तो दूसरे काम श्राप कर सिकयेगा। श्रगर पेट भूखा हो श्रौर गल्ला पैदा न हो तो बड़े कारखानों का क्या होगा? इस लिये में चाहता हूं कि पहले नाज पैदा किया जाय श्रौर इसके लिये जितना श्राप कुंएं बनाने तथा बिजली लगाने में खर्च कर देंगे उतना ही श्रापका फायदा होगा, देश का फायदा होगा श्रौर श्रापको बाहर से नाज नहीं मंगाना होगा श्रौर श्रापके उद्योग में तरक्की होगी। इसलिये सबसे पहले किसानों को सिचाई के लिये कुएं दिये जा । श्रौर उनके लिये बिजली दी जाय। गन्ने से राब, फिर शकर निकाली जाती है। इसके लिये बिजली की मशीनों की

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

## [श्री टीकाराम ]

श्रावक्यकता होती है । लिहाजा इसके लिये भी बिजली दी जाय । इस तरह से देहात में छोटे उद्योगों का जाल बिछ जायगा श्रौर इससे बेकारी की समस्या हल होगी ।

श्री धर्मसिह—मान्यवर, इस श्रनुदान पर माननीय प्रतापिसह जी ने जो कटौती का प्रस्ताव पेश किया है उसका में विरोध करता हूं। कटमोशन को पेश करते हुए जो बातें कही गयीं में संक्षेप में सभी का उत्तर देने की कोशिश करूंगा।

बिरला बादर्स का जिक्र किया गया। कहा गया कि जो छोटे-छोटे उद्योग-धन्धे हैं उनके लिये बिजली नहीं रह जायगी। दूसरे जिस रेट पर बिजली दी गयी है उनको वह बहुत कम है श्रौर ट्यूबवेल का जो रेट हैं वह बहुत हैं। श्रीमन्, इस प्रदेश में जो श्रत्यमीनियम का कारवाना बना है उसको जो बिजली दी गयी है उस समय भी यह प्रश्न रेट का सरकार के विचाराधीन था। में सदन को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि जहां तक सरकार का सम्बन्ध है उसमें मरकार को लास किसी प्रकार का नहीं हैं। पहले थोड़ी सी गलनफहमी हो रही थी। जो प्रोजेक्ट है उस पर करीब ४६ करोड़ के खर्च होगा। ३१ करोड़ के कर्राव, ट्रान्सिमशन लाइन्स को छोड़ कर, जो श्रसली प्रोजेक्ट है, पावर हाउस है, उस पर खर्च होगा। तो बिड़ला बदर्स को जो बिजली दे रहे हैं वह ट्रांसिमशन लाइन्स लगा कर नहीं दे रहे हैं बिहक पावर हाउस के गेंट्स की तरफ, बाहर की तरफ बिजली दी जा रही है श्रौर उस रेट में इंप्रिशियेशन कास्ट, इंटरेस्ट, सेल्स टेक्स के चार्जेंज, मेन्टिनेन्स इत्यादि के जितने चार्जेंज श्राते हैं वे सब पूरे तरीके से सिम्मिलत कर लिये गये हैं।

बिजली का किस्सा कुछ इस प्रकार का है कि मान लीजिये ट्यूबबेल को ६ मील के लिये बिजली देनी पड़ती है तो उसका रेट स्वयं ही ऊंचा हो जायगा क्योंकि ट्रान्सिम्झन लाइन बनाने में उस पर ज्यादा कास्ट पड़ जाती है और जितना कम लोड किसी स्थान पर खर्च होता है उतने ही अधिक उसके चार्जेंज होते हैं। तो ५५ हजार किलोबाट के करीब एक रथान पर जो दी गयी है यह आगे चल कर प्रोडक्टिब होगी और इस में किसी प्रकार से भी लाम होने वाला नहीं है। इसलिये यह कहना कि सरकार ने कोई जालसाजी करके या रेट को इधर-जधर करके विड़ला-बाद के साथ कोई गलत रियायत की है यह बात बिल्कुल गलन है। जब अल्युमीनियम फेक्ट्रो लगाने की बात हुई तो केन्द्रीय सरकार ने उत्तर प्रदेशीय सरकार से पूछा कि तम बिजली देने के लिये तैयार हो या नहीं। उसमे जो रेट मुकर्रर है वह तो ५ या ७ परसेट के करीब और ज्यादा है। मैं यह निवेदन कर देना चाहता हूं कि इसमें आगे चल कर जो दूसरे लेगों को बिजली दी जायगी उसका रेट अधिक हो सकता है। ट्यूबवेल का तो आटोमेटिकर्ला अधिक होता ही है क्योंकि एक ट्यूबवेल पर अधिक से अधिक १० हार्स पावर ही लोड खर्च होता है और उसमे भी द घंटे चले, १२ घंटे चले। तो आंकड़ों को जब हम देखते है तो इसमें किसी प्रकार से लास नहीं है।

दूसरी बात यह कही गयी कि सब की सब बिजली दे दी गयी। तो भ्राज तो ईस्टनं पावर प्रोजेक्ट के नाम से तीन पावर हाउसेज गोरखपुर, सोहावल भ्रौर मऊ में बने हैं भ्रौर सिद्धान्ततः यह बात मान ली गयी है कि इन तीनों ग्रिड्स को एक जगह मिला विया जाय भ्रौर उसके। रिहन्द से कनेक्ट कर विया जाय। में इस सवन को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि भ्राज भी पावर की कमी वहां पर नहीं है भ्रौर यह हो जाने के बाद तो फिर कमी का सवाल ही नहीं पेदा होता। इसके म्रलावा थर्ड फाइव इयर प्लान में मिर्जापुर में सिगरौली के भ्रासपास जहां कोयला भ्रासानी से मिल सके एक थर्मल स्टेशन लगाने का इरादा है। लिहाजा यह कहना कि विड्ला अव्वर्श की बिजली देने के बाद उत्तर प्रदेश बिल्कुल बरबाद हो जायगा, कोई बिजली बाकी नहीं बचेगी, सही नहीं है, बिजली की किसी प्रकार की कमी नहीं रहेगी।

एक बात यह कही गयी कि इस प्रदेश में बिजली का उत्पादन कम हुन्ना। तो कम तो रहेगा ही, मांग तो हमेशा रहेगी। लेकिन जहां तक बिजली विभाग का सम्बन्ध है कई मोजनान्नों को कार्यान्वित किया गया। ३६ टाउन्स के एले क्ट्रिफिकेशन की स्कीम लागू हुई, सबके सब एले क्ट्री-फाई हो गये। पहले जब यह प्रोजे क्ट बनाया गया था मान्यवर, तो यह स्कीम १ करोड़ की थी और यह ग्राशा थी कि प्रत्येक टाउन और विलेज जिसकी ग्राबादी १ हजार तक है उसकी एले क्ट्रिफाई कर सकेंगे लेकिन द्वितीय पंचवर्षीय योजना में इसमें केवल एक करोड़ रुपया ही रह गया है और उसमें से भी ६०-६१ लाख रुपया खर्च हो चुका है और ग्रब जो थोड़ा सा पैसा रह गया है उसमें एक ग्राघ टाउन एले क्ट्रिफाई किया जा सकेगा। इसी दौरान में बहुत से टाउन इले क्ट्रिफाई किये जा सहें हुए हैं, ठीक नहीं है। मैं इस बात को मानता हूं कि लोगों के स्टैंडर्ड ग्राफ लिंविंग के बढ़ जाने के कारण ग्राज प्रत्येक गांव में बिजली के पहुंचाने की ग्रावश्यकता है। लेकिन इधर पैसे की कमी है तो मान्यवर, उसके लिथे प्रयत्न किये जा रहे हैं।

माननीय प्रतापिसह जी ने माताटीला का जिक्र किया। मैं उनको बता देना चाहता हूं कि यह मल्टी परपज स्कीम है श्रौर कुछ फारेन एक्सचेंज के कारण यह स्कीम बीच में समाप्त हो गई थी। श्रब इसको फिर से ले लिया गया है श्रौर श्रगले वर्ष भी काम होगा श्रौर तृतीय पंचवर्षीय योजना में इससे ३० हजार किलोवाट बिजली प्राप्त हो जायगी।

मान्यवर, रेट्स के बारे में यह कहा गया कि हमारे यहां रेट्स ज्यादा हैं। जहां तक हाइडिल विभाग का सम्बन्ध हैं उसके रेट्स और सूबे से ऊंचे हैं ऐसी बात नहीं है। हां, प्राइवेट कम्पिनयों के रेट्स ऊंचे हो सकते हैं लेकिन हाइडिल विभाग के १ प्र घंटे प्रति दिन २०० दिन तक का रेट १००३ पाई प्रति यूनिट, पंजाब का ११.१ पाई, प्रांध्र का १६ पाई, देहली का १२.२१ पाई, मद्रास का १०.८५ पाई और दामोदर वैली का १२.४५ पाई प्रति यूनिट है। बम्बई और कलकत्ते का हमारे यहां से कम है। इसमें दो रायें नहीं हैं। ग्राप कह सकते हैं कि लखनऊ के मुकाबले में कानपुर का रेट कम क्यों है? मान्यवर, जहां ज्यादा लोड होगा वहां उतने ही ज्यादा कारखाने होंगे। बम्बई, कलकत्ते में सब से ज्यादा कारखाने हें इसलिये वहां के रेट्स कम हैं। बम्बई का रेट द.५७ पाई और कलकत्ते का ५.७ पाई प्रति यूनिट है। इसकी वजह वहां का लोड फैक्टर है और वहां बहुत ज्यादा कारखाने हैं जिनकी वजह से ट्रांसिमशन ग्रीर सद-स्टेशन्स वगैरह के बनाने में कम खर्च पड़ता है। इसलिये वहां रेट्स कम हैं। ग्रगर ज्यादा दूर बिजली ले जायेंगे और इंडिस्ट्रियल परपज के लिये इस्तेमाल करेंगे तो उसमें रेट ग्रिधिक होगा। जो ग्रांकड़े मैंने सदन में उपस्थित किये हैं उससे स्पष्ट है कि बम्बई ग्रीर कलकत्ता को छोड़कर हमारे सूबे के रेट्स कम हैं।

इसके बाद लखनऊ में एक सड़क का जिक्र किया गया कि वह एलेक्ट्रिफाई नहीं की गई यहां पर प्राइवेट कम्पनी है और उसके कायदे कानून बने हैं कि किस तरह से कोई लोकेलिटी एलेक्ट्रिफाई होती है। यह नोटकर लिया गया है और इसको देखा जायेगा।

एलेक्ट्रिसिटी बोर्ड स के रूत्स के बारे में कहा गया। यह पिछले साल एक अप्रैल से ही बना है और यह मामला सरकार के विचाराधीन है। इसमें जल्दी करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हम परम्परायें बनाने जा रहे हैं, हम इस कार्य को इस बोर्ड को ठीक तरीके से लाने के बाद ही करना चाहते हैं।

कई माननीय सदस्यों ने ट्यूबवेल्स के रेट्स के बारे में भी कहा। जहां तक खेती के काम को प्रायितिटी देने की बात है उसके सम्बन्ध में इधर के बैठने वाले और उधर के बैठने वाले माननीय सदस्यों ने कहा। मान्यवर, विभाग के द्वारा किस प्रायोतिटी से बिजली दी जायगी, एक लिस्ट तैयार की गई है उसमें सरकारी कामों को छोड़कर जिसमें सरकारी ट्रेनिय स्कीम्स, स्टेट इंडस्ट्रीज श्राती हैं, इन दोनों चीजों को छोड़ कर तीसरा नम्बर ट्यूबवेल्स का स्राता है।

## [श्री वर्गसह]

पिश्वमी जिलों के माननीय सदस्यों को याद होगा १५ मई, १६५६ से पहले इंडिस्ट्रियल और एग्रीकल्वरल परपज के लिये १० हार्स पावर तक परे तौर से डिकंट्रोल था। इस दौरान में बहुत से ट्यूबवेल बने और सरकार की तरफ से यह भी आदिशासन दिया गया है कि १५ मई से पहले जिन लोगों ने अपना इनवेस्टमेंट कर दिया था, ऐग्रीकल्वरल या इंडिस्ट्रियल परपज के लिये, या मशीनें इत्यादि खरीद ली थी, ग्रिड और शारदा वगेरह मे, या अपना पेमा खर्च कर दिया था या विभाग ने एक तरीका बनाया था कि २५ रुपया किसी ने जमा कर दिये थे और मशीन इत्यादि के लिये आईर दे दिये थे तो जो विभाग का वादा था वह आज भी दिया जा रहा है। लिहाजा प्रायारिटी स्वयं है। जहां-जहा और जिस प्रकार बिजली उपलब्ध होती है उसमें कोई दिक्कत नहीं है।

मान्यवर, ग्रभी ग्रवस्थी जी ने डे साहब का जिक्र किया।

श्री मोतीलाल श्रवस्थी--मेने नाम नहीं लिया था। श्रापने नाम ले लिया।

श्री घर्मीसह—एक कर्मचारी जो कि हरवुग्रागंज पावर हाउस में थे, उनके खिलाफ शिकायतें श्रायीं। उसके उत्तर में में उनको बता देना चाहता हूं कि एक साल के करीब उनको हो गया सरकार ने उनको नोटिस दे दिया। वह रिटायर हो गये।

इसके बाद कम्पनीज के रेट्स के बारे में कहा गया। यह भी कहा गया कि वह कम्पनीज जो मुनाफा उठाती है वह ज्यादा है। उनको नेशनलाइज कर दीजिये। एलेक्ट्रिसटी बोर्ड बनने के बाद मुरादाबाद श्रीर बिजनौर की तरफ की जो कम्पनीज हायडिल डिपार्टमेंट से बल्क सप्लाईज लेती थीं श्रीर जनरेट नहीं करती थीं, उस एजेंसी को गवर्नमेंट ने ले लिया। श्राज नोति यह है कि जो कम्पनियां बिजली पैवा नहीं करती है केवल वितरण की एजेंसीज है, उनके लाइसेंस इक्सपायर होने के बाद, उनको ले लिया जाता है।

इसके अलावा एक बात श्री गोयल जी ने बदायूं के बारे में कही। यह बात ठीक है कि पाँच रुपये वहां ज्यादा लिये जाते थे। शिकायत होने के बाद उसकी छानबीन करवाई गयी देनिनकल बातों के आधार पर। गवर्नमेंट आफ इंडिया की तरफ से कुछ हिदायतें है। पत्र-व्यवहार करने के बाद गवर्नमेंट किसी नतीजे पर पहुंचेगी।

इसके बाद उन्होंने एक बात यह कही कि कोई रेस्ट्रिक्शन ही नहीं है बिजली के मुहक में में । यह दिक्कत जरूर है। बिजली का एक स्विच बोर्ड होता है। वह भारतवर्ष में नहीं मिलता हैं। लिहाजा इस बात की कोशिश की जा रही है कि जहां पर बहुत ज्यादा लोड हं, जैसा कि में बता देना चाहता हूं गाजियाबाद की तरफ एक लाइन देंगे जिसका केवल एक ही स्विच हो और वह स्विच जो घंटे निर्धारित है यदि ग्राठ घंटे का टाइम है तो ग्राठ घंटे के बाद केवल एक ही लाइन के स्विच को दबा दिया जाय तो सब के सब जितने भी कारखाने है जो ग्राठ घंटे से ज्यादा काम करना चाहते है ग्रोर ज्यादा कन्जम्पशन चाहते है, उसको खत्म कर दिया जाय ग्रोर उसमें दिक्कत ग्राकर के न पड़े। इस तरीके से इस पर रेस्ट्रिक्शन या चेक हो सकता है।

एक बात यह कही गई कि जहां तक एलेक्ट्रिसिटी डिपार्टमेंट का सम्बन्ध है कोई किसी भी प्रकार का इन्वेस्टीगेशन नहीं होता। तो प्रथम पंचवर्षीय योजना श्रौर द्वितीय पंचवर्षीय योजना में जितना यहां पर बिजली का उत्पादन हुआ तो श्राज तो सर्वे के लिए यहां भी इन्तजाम है, जहां-जहां पर श्रावश्यकता इस बात की पड़ती है कि हम इस तरह के साधन इस प्रदेश में श्राधक से श्रीधक पेदावार बिजली की करने के लिए ढूंढे, उसको इंवेस्टीगेट करते हैं श्रौर जहां-जहां भी श्रावश्यकता पड़ती है जिस जिस प्रकार से पैसा मिलता है उसी तरीके से होता है। एक माननीय सदस्य ने देवित्या के एलेक्ट्रिफिकेशन के लिए श्रौर महमूदाबाद श्रौर सिंगरौली वगैरह का जिक्र किया। तो सरकार तो चाहती है सभी टाउन्स को एलेक्ट्रिफाई करना। लेकिन थोड़ी-सी जो मैने दिक्कश बशायी वह यही है कि हमारे पास में जो पैसा था प्लान में वह दूथ लाख के करीब समाप्त

हो गया। थोड़ा बहुत श्रौर पैसा है। उनको यकीन रखना चाहिए कि तृतीय पंचवर्षीय योजना के श्रन्तगंत उन पर पूरे तरीके से विचार किया जायगा। इन शब्दों के साथ जो माननीय प्रताप सिंह जी ने कटमोशन पेश किया है मैं चाहता हूं कि सदन उसको स्वीकार न करे श्रौर जो माननीय मंत्री जी ने यह श्रनुदान पेश किये हैं उनको सदन स्वीकार करे।

\*श्री मलिखानिंसह—माननीया श्रिधण्ठात्री महोदया, श्राज जो माननीय प्रतापिंसह जी ने कटौती का प्रस्ताव रखा है इस श्रनुदान पर उसका समर्थन करने के लिए में खड़ा हुश्रा हूं। माननीय सभा सिवव जो विद्युत के हैं उनके भाषण से हमारी जो शंकायें थीं वह स्पष्ट हो गईं कि यह सरकार जो है वह पूंजीपितयों का पोषण करना चाहती है। श्राज जो श्रपने प्रदेश में खाद्य संकट खड़ा हुश्रा है श्रीर गल्ले की समस्या प्रमुख रूप में आज हमारे सामने हैं उसमें ट्यूबवेल को तीसरी केटेगरी में रखा है। ट्यूववेल को बिजली देने के लिए प्रायरिटी के लिहाज से तीसरे नम्बर पर रखा है। इससे श्राज इस सदन को यह स्पष्ट मालूम हो जाना चाहिए कि यह सरकार जो है वह ट्यूबवेल्स के लिए बिजली न देकर सिर्फ पूंजीपितयों को बिजली देना चाहती है जो कि बड़े-बड़े कारखाने चलाते हैं।

इसके बाद में माननीय हाफिज जी के सन् १६५७ के बजट भाषण को यहां बताना चाहता हूं। उन्होंने यह कहा था, जिस तरह से माननीय सिचव ने कहा, कि हम ५ हजार के ऊपर की आबादी के जितने गांव होंगे या टाउन होंगे उनको इस द्वितीय पंचवर्षीय योजना में एलेक्ट्रिफाई कर देंगे। श्राज भी उत्तर प्रदेश में ७५ टाउन एरियाज ऐसी हैं जिनमें यह सरकार बिजली देने में असमर्थ रही है। तो आज इस घोषणा को में झूठी घोषणा समझूं या यह समझूं कि सरकार वायदे तो बड़े-बड़े करती है और सब्ज बाग भी दिखाती है, लेकिन बाद में कहती है कि मेरे पास पैसा नहीं है, हम पैसा कहां से लायें? इसलिए हम यह नहीं कर सकते।

(इस समय ४ बजकर १८ मिनट पर श्री उवाध्यक्ष पुनः पीठासीन हुए ।)

इसी तरह से गांवों में हम यह देखें कि जितनी शहर में इंडस्ट्रीज दही हैं उनकी तो ये बिजली देने को तैयार हैं, लेकिन शहर के पूंजीपतियों पर जो बिजली के टैक्स का रुपया बकाया है उसको लेने के लिए तैयार नहीं हैं श्रौर गांवों में जो बिजली के जाने की प्रमुख श्रावश्यकता है, गांवों में जो पढ़े-लिखे लोगों की बेकारी दूर करने के लिए वहां काटेज इंडस्ट्रीज बढ़ाने की जरूरत हैं, उसके लिए बिजली नहीं दी जायगी। बिरला जी को बिजली दी जायगी श्रल्यूमिनियम का कारखाना चलाने के लिए। श्राज प्रदेश की बेकारी श्रापको दूर करनी है, प्रदेश की गरीबी मिटानी है तो गरीबी, चन्द पूंजीपतियों के द्वारा शोषण करके या हजार दो हजार पढ़े लिखे लोगों को काम देकर या कुछ इंजीनियरों को काम कराकर दूर नहीं होगी बल्कि बेपढ़े लिखे लोग या छोटे-छोटे कारीगर जब काम पर लगेंगे या गांवों में काटेज इंडस्ट्री होगी तो उस समय बेकारी दूर होगी। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यह सरकार, चन्द पूंजीपतियों को या जो बड़े-बड़े श्रादमी हैं, उनको ही जितनी बिजली है, देना चाहती है।

जो पुराने पावर हाउस हैं और भ्राज काम कर रहे हैं में उनके बारे में भ्रापको बताऊं कि उनके जो इंजीनियर हैं वह बहुत गड़बड़ी कर रहे हैं। मैंने भसीन साहब को खुद दिखाया कि मैनपुरी पावर हाउस में कोयले का गबन हो रहा है और कोयला चोरी जा रहा है। छिपकर भट्ठों पर जा रहा है। भसीन साहब को दिखाया भ्रौर वह खुद भी गये, लेकिन भ्राज तक उन इंजीनियर महोदय के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की गई। मैंने पर्सनली जाकर बताया कि इस तरह से इस विभाग के कारखानों में गबन हो रहा है। इसी तरह से जो कनेक्शन दिये जाते हैं उनमें जो एरिया का इन्सपेक्टर होता है, वह गड़बड़ी करता है। विशेष रूप से

#### [भी मलिखानसिंह]

कर्माशयल विभाग से सम्बन्धित बिजली के कनेक्शन हैं श्रौर दूसरे जो लाइट श्रौर फैन के कनेक्शन हैं उनको मन्जूर करने में बीच में वह बहुत रोड़े श्रटकाते हैं। बीच में पैसा तय करते हैं जिससे वे बेचारे गरीब व्यक्ति कनेक्शन लेने में इतने श्रसमर्थ हो जाते हैं कि वे बिजली लेने का नाम नहीं लेते हैं। इस विभाग में जो भी काम चल रहा है वह इसी तरह से है। श्रार दूसरे का जरूरी काम होता है तो उसको बुलाकर कह दिया जाता है कि यह टैकिनकल बात है। फिर उसको खत्म कर दिया जाता है।

श्रमी रबी की फसल में जब कि जाड़ा पड़ रहा था तो उस समय फसल खड़ी हुई थी। उस समय बिजली तीन दिन के लिये चली गई तो ग्राप समझ सकते हैं कि ट्यूबवेल से कैसे पानी मिलेगा। वहां पर खेत सूख जाते है। ट्यूबवेल के जो मेड़ निकाले जाते हैं वह इस प्राधार पर निकाले जाते हैं कि जितने गांव के किसान है वह अपने क्यें से सींच नहीं सकते। आपकी बिजली तीन दिन तक गायब रही तो इस प्रोडक्शन को कम करने का कौन जिम्मेदार है। क्या इसका जिम्मेदार श्रापका विद्युत विभाग नहीं है ? यह विद्युत विभाग इस प्रदेश में एक प्रमुख स्थान रखता है क्योंकि एक तो नहर श्रीर दूसरे बिजली। बिजली के बगैर ये ट्यूबवेल चल नहीं सकते हैं। बिजली के बगैर कोई कारखाना भी चल नहीं सकता है। इन सब बातों पर मंत्री जी गौर करें। श्रगर इतना रुपया व्यय करके भी उतना लाभ नहीं मिल पाता तो कहीं पर गलती जरूर है। मैं चाहता हूं कि माननीय मंत्री जी इन चीजों को गम्भीरता से देखें श्रीर गम्भीरता से देखने के बाद इस पर विचार करे श्रीर विचार करने के बाद देखें श्रौर सोचें कि वास्तव में यह सब किमयां कैसे दूर की जा सकती है। जहां तक मैने सुना है पहले सरकारी उद्योग को बिजली दी जायगी तो इसी कारण में ट्यूबवेल का प्रमुख स्थान रखता श्रगर द्युबवेल को बिजली मिल जाय तो उससे श्रापकी फूड समस्या हल होगी। इस समस्या को ही प्रमुख समस्या मानता हूं। उत्पादन बढ़ाने के लिये पानी सब से प्रमुख चीज है। इसलिये मेरा निवेदन है कि पहले ट्यूबवेल को प्रायीरिटी दी जाय।

उपाध्यक्ष महोदय, एक बात यह कहना चाहता हूं कि पावर कनेक्शन सब रोक दिये गये है। मैन और बिनली कन्पनी को सरकार ने श्रयने हाथ में लिया था। वहां के एक पूंजीपित श्रयने पैसे के बल पर एक साल से उस हे लिये कोर्ट में रिट दाखिल किये हुंथे है। मैम, ननीय मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि उस केत में उन्होंने क्या प्रयत्न किया है? श्राप हे लीगल एड वाइ जरों ने उस केत में क्या किया इसका श्राज तक पता नहीं है? मैनपुरी बिजली कन्पनी श्राज भी उसी व्यक्ति के हाथ में है जिस कन्पनी को सरकार ने एक साल पहले श्रयने हाथ में निया था। यह विभाग उस बिजली कन्पनी से मिल कर बीच में फायश उठाना चाहता है जिससे यह पूंजीपित फायदा उठायें। इसी वजह से उस पूंजीपित ने रिट दाखिल किया है। यहां पर कहते हैं कि बिजली सस्ती देते हैं, लेकिन वहां पर द श्राना, ६ श्राना के हिसाब से बिजली देते हैं। मै माननीय मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि वह सदन में इस पर प्रकाश डालें कि उस कन्पनी ने जो रिट दायर कर रखा है उसमें क्या हुगा? श्रापके रेट जो इतने हाई है, वह क्यों है?

तीसरी चीज, मैनपुरी पावर हाउस से जो कोयला चोरी जाता था छोर जिसकी मैने हिाकायत की थी उसके बारे में क्या हुआ, पता नहीं चल सका। ट्यूबवेलों के कनेक्शन देर में दिये जाते हैं और वे नहीं चलते इस पर भी मंत्री जी प्रकाश हालने की छुपा करें। इसके अलावा बिजली जो ३, ३ दिन तक चली जाती है उसका कारण भी वे बतलायें। इसके अलावा मैने हरदुआगंज के लिये कहा था। पहले मैने ही प्लानिंग कमेटी से प्रस्ताव पास कराया कि हमारे जिले मैनपुरी में करहल, बेवर और भोगांव टाउन एरियाज को एलेक्ट्रिफाइड किया जाय। उस समय इसका आश्वासन भी दिया गया था, लेकिन उस पर आज तक कोई कार्यवाही नहीं हुई। कुरावली में चूंकि टच्चबवेल को कम बिजली मिलती है इसलिये वहां ट्रान्सफार्मर लगाने के लिये वहां के आफिसर ने लिखापढ़ी की कि वहां एक बड़ा ट्रान्सफार्मर दिया जाय, सेकिन ३ साल हो गये,

घहां कुछ नहीं हुन्र। । सरकार इन बातों की सफाई दे श्रौर इन शब्दों के साथ में कहना चाहूंगा कि यह सरकार देहात की तरफ उपेक्षा करके बड़े-बड़े लोगों को देखना चाहती है । इतना कह कर में ग्रयना भाषण समाप्त करता हूं ।

\*श्री तेजासिंह (जिला मेरठ)—माननीय उपाध्यक्ष महोदय, में श्रापको घन्यवाद देता हूं कि श्रापने कुछ विचार प्रकट करने के लिये मुझे समय दिया। जो श्रनुदान मंत्री जी ने पेश किया है में उसका समर्थन करता हूं श्रीर इसके साथ ही गाजियाबाद के सम्बन्ध में जो कुछ दिक्कतें हैं उनको श्रापके सामने रखना चाहता हूं।

गाजियाबाद एक श्रौद्योगिक केन्द्र बन गया है श्रौर बनता जा रहा है। कई बार इस चीज का जिक हुन्र। है श्रौर श्रखबारों में भी काफी चर्चा इस बात की हुई है। पिछले साल पंडित जवाहरलाल नेहरू जी वहां तशरीफ लाये थे श्रौर उन्होंने भी उन फारखानों को देख कर उनकी तारीफ की। बावजूद इसके कि कारखाने वहां रोज बरोज बढ़ते जा रहे हैं, विभाग की तरफ से बिजली का लोड वहां बढ़ाने के लिये कोई खास कोशिश नहीं की गई है। कई बार यहां भी कहा गया, कई डेपुटेशन भी मिनिस्टर साहब से मिले, चीफ इंजीनियर साहब से मिले, लेकिन कोई तसल्ली बख्श इन्तजाम वहां के लिये नहीं किया गया। जितना लोड विभाग की तरफ से बढ़ाने की कोशिश की जातो है श्रौर जितनी देर में वह इन्तजाम होता है उतनी देर में वहां की जरूरत दुगनी हो जाती है। इस वक्त भी गवर्नमेंट के पास ३, ४ सौ के करीब प्रार्थना-पत्र वहां के पढ़े होंगे जिन पर गवर्नमेंट गौर कर रही है।

पहले मुरादनगर में एक डिस्ट्रिब्यूटिंग स्टेशन था, वहां एक टावर लाइन लायी गयी, लेकिन लाइन कम्प्लीट होने के पहले ही जितनी जरूरत थी, वह दुगनी हो गयी। ग्रभी भी उस दिन माननीय धर्मीसह जी ने कहा था कि वहां एक थर्मल-स्टेशन, डिजल इंजन लगाया जा रहा है ग्रौर लोड बढ़ाया जा रहा है, लेकिन जितने प्रार्थना-पत्र इस समय भी पड़े हैं, उनका हिसाब लगा कर ग्रगर वह देखें तो जितना लोड वह बढ़ायेंगे वह जरूरत को देखते हुए कम है ग्रौर नेग्लिजेबिल है जरूरत को देखते हुए। इसलिये में सरकार से प्रार्थना करता हूं कि वहां लोड बढ़ाने के लिये वह जल्दी ही कोई इन्तजाम करें।

कुछ साथियों ने यह भी शिकायत की कि द्यूबवेल्स को पहले बिजली मिलनी चाहिये। यह ठीक है कि अन्त पैदा करना पहली बात है और यह पहले होना चाहिये, लेकिन अगर सरकार इन्तजाम करे तो दोनों ही जरूरतें हल हो सकती है। जितने लोड की आवश्यकता है अगर उतना लोड गाजियाबाद को दे दिया जाय तो में उद्योगपितयों की तरफ से यह वचन देता हूं कि वहां जितने भी पिंग्पा सेट्स लगाने की जरूरत होगी उनके लिये इंजिन गाजियाबाद सप्लाई कर सहिया यह बहुन डिजन इंजिन तैयार इर रहा है और बहुन सस्ते तामों पर सप्लाई कर सहिता है बदातें कि जितने लोड की हमको आवश्यकता है उतना दे दिया जाय। हम इंजिन सस्ते देंगे और उसके साथ-साथ जो वहां की दस्तकारी है उसको भी उससे फायदा होगा।

इसके साथ-साथ वहां ट्रान्सफार्मर लगाने का एक कारखाना लग रहा है। तो अगर उनको बिजली मिल जाय तो यह भी वहां पर तैयार हो सकेंगे। आज अक्रीका से लोग आकर वहां पर कारखाने लगाने को तैयार हैं। कुछ लोग कहते हैं कि यू० पी० में बिजली की दरें ज्यादा हैं। ज्यादा दरों के होते हुये भी लोग गाजियाबाद में आकर अपने कारखाने लगाना चाहते हैं। अक्रीका में जो पंजाबी लोग हैं, और लोगों को भी, उनको अपने देश में वापस आने के लिये मजबूर किया जा रहा है वहां की हुकू सत द्वारा। वे लोग गाजियाबाद में आकर कारखाने खोलना चाहते हैं क्योंकि वह एक सेन्टर बन चुका है और वहां पर कारीगर वगैरा मिल सकते

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

## [श्री तेजासिह]

हैं। श्राज ध्रगर यह सरकार या इनके चीफ इंजीनियर यह घोषणा कर वें कि जितने लोड की ध्रावश्यकता होगी उतना लोड दिया जावेगा तो में कह सकता हूं कि वहां एक साल के भ्रन्दर सैकड़ों कारखाने भ्रौर खुल जायेंगे। वे इस इन्तजार में हे कि यू० पी० सरकार बिजली का इन्तजाम करे भ्रौर हम भ्रपना काम शुरू करें। डायर मेकिन वाले वहां पर श्रोवल्टीन भ्रौर हसरी चीजों के लिये एक कारखाना ३ करोड़ की लागत का लगाना चाहते हैं। कलकत्ता के एक सज्जन ट्रान्सफार्मर के लिये कारखाना लगाना चाहते हैं। इसिलये में यह कहना चाहता हूं कि गाजियाबाद की तरफ भ्राप विशेष ध्यान दें भ्रौर वहां जितने लोड की भ्रावश्यकता है उतना वहां दें।

श्रव वहां पर विजली की क्या हालत है इसके बारे में भी बतलाना चाहता हूं। श्रगर चीफ इंजीनियर महोदय या मंत्री महोदय गाजियाबाद जायं श्रीर ६ बजे से १० बजे के बीच वहां रहें तो देखेंगे कि वहां पर हर श्राधे घंटे के बाद, १४ मिनट के बाद, लाइट श्राफ हो जाती है श्रीर कभी-कभी तो १४-१४ मिनट तक श्रीर श्राधे-श्राधे घंटे तक नहीं श्राती है। श्रव में यह नहीं कह सकता कि इसमें हाइडिल वालों का दोष है या मार्टिन कम्पनी का दोष है। लेकिन यह सच है कि वहां बहुन जल्दी-जल्दी बिजली फेल होती है। यह लोड के कमजोर होने की वजह से हो, या मोटर खराब होने की वजह से हो, किसी भी वजह से हो। इससे काम नहीं हो पा रहा है श्रीर काम में रुकावट होती है। गाजियाबाद के पास एक गांव है वहां ४ ट्यूबवेल्स बोर हुये, लेकिन पता नहीं वे क्यों नहीं चलते। वे बेकार पड़े हुये है।

एक बात में यह श्रीर कहना चाहता हूं। मोहम्मदपुर पावर हाउस जो है सि। के पास एक मोहम्मदपुर गांव भी है। शायद एक फलाँग पर भी नहीं है, लिकन उस पायर हाउस में बिजली चल रही है श्रीर गांव में एक बसी भी श्रब तक नहीं लग सकी। में नहीं कहता कि वह लोग उस बिजली को नहीं चाहते या विभाग वाले नहीं देते। एक फर्नांग भी फारला नहीं होगा, श्रगर वहां वालों ने गलती की है तो श्रापको नहीं करनी चाहिए कि श्राप यहां से बिजली पैदा करें, बाकी कस्बों को दें, लेकिन जिस जमीन पर बिजली पैदा करते हैं वहां वालों को न दें।

गाजियाबाद के पास ही एक सुन्दरपुरी गांव है, स्टेशन से लगा हुआ। नाम तो गांव है, लेकिन वहां ज्यादातर रेलवे के जो रिटायर्ड श्रिधकारी हैं उन्होंने मकान बनाये हुये हैं। उस गांव के खरंजों, नालियों श्रीर वहां की सफाई को देखने के लिए मेनन साहब श्राये थे, श्रीर धर्म सिंह जी को मेने लिख कर दिया था कि उसका सर्वे करवा लो कि इस पर कितना लर्चा श्रायेगा, लेकिन वह सर्वे हुआ या नहीं हुआ, उस गांव को बिजली नहीं मिली।

## श्री उपाध्यक्ष--वक्त खत्म हो गया।

श्री रामस्नित्र पांडिय (जिला श्राजमगढ़)—माननीय उपाध्यक्ष महोवय, मैं कटीती के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं। यह सबन के हरएक माननीय सबस्य की जाहिर है कि श्रपना प्रवेश को कृषि प्रधान प्रदेश है इसकी बेकारी की समस्या को हल करने के लिए श्रगर कुछ (शक्ति) बिजली को बढ़ा करके काम में लायी जाय तो यह शायद हल हो सके। बिना इसके में समझता हूं कि श्रपने प्रवेश में जो बेकारी की कीज हर साल लाखों की तादाद में खड़ी होती जा रही है उसके समाधान का कोई और तरीका नहीं है। लेकिन में जब इसको इस कसौटी पर कसता हूं कि क्या प्रवेश की सरकार विद्युत को लेकर श्रपने प्रवेश में बेकारी श्रीर श्रम्न की समस्या जो बढ़ती जा रही है उसको हल करने में समर्थ हो सकेगी, तो श्रीमन, में इस नतीजे पर पहुंचता हूं कि शायद जो गित श्राज है चलने की उससे १०० वर्ष से ऊपर लगेंगे तब शायद बेकारी की समस्या हल हो सकेगी।

रिहन्द बांध की चर्चा इस सदन में परसों से हैं श्रौर माननीय मुख्यमंत्री दुर्भाग्य से सदन में मौजूद नहीं हैं। उन्होंने कई बार इस सदन में श्राक्ष्वासन दिया कि रिहुण्द बांध के पूरे हो जाने १९६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर सतदान-स्रानुदान संख्या ३०१ २७--लेबा बीर्बक ४१ स्रौर ८१-क--विद्युत योजनास्रों की स्थापना पर व्यय तथा अनुदान संख्या ४१--तेखा बीर्बक ८१-क--विद्युत योजनास्रों पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय को छोड़कर)

के बाद पूर्वी जिलों की समस्या विद्युत की हम हल कर देंगे। श्रफसोस होता है कि भूखे श्रादमी को श्राश्वासन तो बहुत दिनों से दिया जाता है श्रीर जब थाल में हर तरह की भोजन सामग्री तैयार हो कर उसको खाने का वक्त श्राता है तो ऐसे श्रादमी के सुपूर्व कर दिया जाता है जिसको इस देश से मुहब्बत नहीं है।

सभा सचिव, धर्मींसह ने कहा कि बिरला बदर्स को जो रिहंद बांध की बिजली दी गयी है, सरकार बतावे स्पष्ट शब्दों में कि उससे उसको सालाना कितने की ग्रामदनी होगी? श्रीर दूसरी तरफ़ जो पास के जिले हैं जिनमें ट्यूबवेल के लिए हजारों रुपया खर्च किया गया ग्रीर सैकड़ों की तादाद में श्रीमन्, ग्रापको जानकारी है कि ट्यूबवेल बिना बिजली के बन्द पड़े हैं। जिनके नाम पर यह सरकार जिन्दा है—गांधी जी—उन्होंने कहा था कि बड़े बड़े कारखानों का ग्रीद्योगी-करण मत करो, विकेन्द्रीयकरण करो, छोटे-छोटे कारखाने खोलो। में ग्रापके जित्ये जानना चाहूंगा कि पूर्वी जिलों में कितनी बिजली छोटे-छोटे उद्योग-धंधे जो गांव में फैले हुए हैं उनके लिए सरकार ने दी है ?

में अवब के साथ कहूंगा कि फैक्टरी से जो श्रामदनी होगी वह सरकार की जेब में तो जायगी नहीं, वह जनता के खजाने में न जाकर किसी व्यक्ति विशेष के खजाने में जायगी और इससे प्रदेश की जनता का भला नहीं होगा और गरीबी का हल नहीं होगा बल्कि कुछ लोगों के हाथों में शिक्ति का केन्द्रीकरण होगा। में सरकार से यही कहूंगा कि इस इरादे से सरकार को हटना चाहिये और जनता में इस तरह की भावना पैदा करना चाहिये कि जनता की भलाई के लिये सारे साधन सुलभ किये जा रहे हैं।

श्रीमन्, श्रापको जानकारी होगी क्योंकि श्रापका वहां निवासस्थान भी है, मैं समय श्रधिक नहीं लेना चाहता हूं, लेकिन एक बात कहूंगा कि सरकार पता लगाये कि कितने ऐसे श्रष्टाचार के श्रारोप होते हैं जिनको सरकार के श्रधिकारी स्वयं जांच करके पता लगाते हैं। मेरा यह विश्वास है कि सौ में एक दो होते हों, लेकिन ६८, ६६ फीसदी श्रष्टाचार के श्रारोप जो इनके श्रधिकारी नहीं है, बाहर के हैं वे सरकार को बताते हैं।

मऊ पावर हाउस के सम्बन्ध में हमारी स्रोर से बीसों प्रश्न हुये कि भ्रष्टाचार है, सरकार का ध्यान ही नहीं जाता था, लेकिन श्रीमन्, स्रापने देखा कि बहुत प्रयत्न करने के बाद भी स्रभी कुछ स्रधिकारियों को सजायें हुई। तो यह इरादे की बात है। सरकार को उद्योगशील होना चाहिये। इधर के बैठने वाले सारे लोग सारे श्रधिकारियों के विरुद्ध नहीं है, सभी को बेईमान नहीं समझते। सरकार की यह भावना होती जा रही है कि हम सभी स्रधिकारियों के दुश्मन हैं स्रोर जो कहते हैं सब गलत कहते हैं स्रोर उधर के सब लोग बिलकुल सही कहते हैं। इस इरादे को कम करना चाहिये स्रोर स्रपने मन में यह सोचना चाहिये कि इपर से कहने वाले भी सही कहते हैं।

में एक देहाती कहावत कहूंगा "विराग के तले ग्रंधेरा" माननीय मुख्य मंत्री जी ने कहा था कि मऊ, सोहावल ग्रादि विद्युत केन्द्रों को ग्रारम्भ कर देंगे तो समस्या हल हो जायगी। इसी बात को धर्मी सह जी ने ग्रभी दोहराया है। कहा जाता था रिहन्द बांध के लिये कि वह तैयार कर लें तो समस्या हल हो जायगी बिजली की, लेकिन जो तैयार होता चला जा रहा है वह ग्राप दूसरों के सुपुर्द करते जाते हैं ग्रौर फिर तैयार होने की बात कह दी जाती है। में मऊ ग्रौर कोपागंज करने की बात कहता हूं गाजीपुर के करने ग्रौर बिलया के करने जो मऊ से दस दस ग्रौर पन्द्रह पन्द्रह मील के क्षेत्र में ग्राते हैं वहां ग्रंधेरा है जो लोग छोटे-छोटे कारखाने लगाकर काम करते हैं उनके लिये मेरे पास हजारों दरख्वास्ते हैं मऊ पावर हाउस में उनकी दरख्वास्तें पड़ी हुई हैं, ग्राजमगढ़ में पड़ी हुई हैं मगर बिजली का सम्बन्ध नहीं मिलेगा। वह बिजली का सम्बन्ध बिलया जायगा, ग्रकवरपुर जायगा, दूर दूर जायगा, सड़कों के किनारे दिखाने के लिये

[श्री राम गुःदर पाडेय] लेकिन जहां बहुत से गरीब लोग बसते हैं, जहां पिछड़े उद्योग-अंधे हैं उनके लिये श्राप शक्ति देने मे श्रसमर्थ हे ।

मै निवेदन करूंगा कि बिजली को एक श्रामदनी का जरिया नहीं मानना चाहिये। इस सरकार के, श्रीमन्, जितने विभाग हैं, जितने भी इसके काम होते हैं उन सब को यह श्रामदनी का जरिया मानती है। श्रब यह फैसला करना पड़ेगा कि कुछ ऐसी चीजे हैं जिनको श्रामदनी का जरिया नहीं मानना चाहिये, उसमें बिजली भी श्राती हैं। जो पिछड़े हुये क्षेत्र हैं, जहां उद्योग-धंधे पिछड़े हुये हैं,जहां गरीबी हैं,जहां श्राबादी ज्यादा हैं, जहां के लोग उद्योग-धंधे चलाना चाहते हैं, श्राप तो बारबार यह कहते हैं कि पिछड़े हुये लोगों को उद्योग-धंधे देने के निये, गरीबी मिटाने के लिये बिजली लगा रहे हैं, लेकिन जब बिजली पैदा होती हैं, गरीबी मिटाने के लिये बिजली लगा रहे हैं, लेकिन जब बिजली पैदा होती हैं, गरीबी मिटाने का एक हल सामने ग्राता है तो सरकार उम रास्ते को भूलकर दूसरी तरफ चली जार्त हैं। इसके ग्रितिस्क वह बहुत महंगी पड़ती हैं जै सा कि श्राप देखेगे बजट में भी कहा गया है कि दोएरीबाट एम्प निर्स से श्राजमगढ़ जिले में कुल दो हजार एकड़ रबी की सिचाई हुई।

मेने इस सम्बन्ध में जानकारी हासिल करनी चाहिए कि श्राग्विर बात क्या है जब किसान पानी लेना चाहता है, वह अधिक गल्ला पैदा करना चाहता है किर भी इतनी कम सिचाई क्यों हुई? उसका कारण यह है कि पानी इतना महंगा पड़ता है जिसको पूर्वी जिले के किसान दे नहीं सकते । अधिकारियों से मैने कहा कि रेट कम की जिये तो उन्होंने कहा कि सन्ता कैसे करें, बिजली का रेट इतना ज्यादा है कि अगर उसको हम देने लगे तो मारा घाट में ही चला जायगा, नफा होने की तो कोई बात ही नहीं उठती। तो मेरा सुझाय है कि गरकार को इस तरफ ध्यान देना चाहिये और जहां पर गरीबी ज्यादा है वहां पर रेट कम किया जाय।

श्राज कानपुर श्रौर श्राजमगढ़ में बिजली के क्या रेट हैं? कानपर से श्राजमगढ़ में बिजली का रेट शायद बूना है। एक तरफ श्राप बिजली पैदा करें श्रौर उसकी कोई ले नहीं श्रौर एक तरफ कोई मांगता हो उसकी मिन्ने नही, इसका क्या कारण है? सरकार को इस तरफ ध्यान देना चाहिये। में कहना चाहता हं कि जय तफ बिजली सस्ती नहीं होगी तब तक इस समस्या का कोई हल नहीं होगा। इमलिये बिजली रस्ते होनी चाहिये श्रौर वह श्राम जनता को सुलम होनी चाहिये। जब तक ऐसा नहीं होता तब तक में समझता हूं कि खाली शहरों में श्रौर सड़कों के किनारे बिजली लगा देने से कोई समस्या हन नहीं होगी। साथ ही साथ सरकार को भ्रष्टाचार को रोकने के लिये तत्पर श्रौर सजग रहना पड़ेगा। इन शब्दों के साथ में कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री उदयशंकर (जिला बस्ती)—उपाध्यक्ष महोदय, दोनों पक्षों के जो भाषण इस प्रनुदान पर हुये वे इस बात ने प्रतीक हैं कि बिजली के उत्पादन की ग्रावश्यकता इम प्रदेश में बहुत ज्यादा है ग्रीर प्रायः प्रत्येक व्यक्ति ने जो कुछ कहा उससे यह नतीजा निकलता है कि इस मद में पैशा कुछ ज्यादा ही खर्च किया जाना चाहिये। फिर माननीय प्रतापिसह की तरफ में गह प्रस्ताव ग्राना कि सम्पूर्ण ग्रनुदान के ग्रधीन धन की राशि घटा कर एक रुपया कर दी जाय, मेरी समझ में नहीं ग्राया।

श्री प्रतापसिंह—मैंने एक रुपये का प्रस्ताव नहीं रखा है, मैंने यह प्रस्ताव किया है कि सम्पूर्ण घनराशि में १०० रुपये की कमी कर दी जाय।

श्री उदयशंकर—खेर, श्रापने बड़ी उदारता की कि सिर्फ १०० राये की कमी करने की बात छही। तो जहां तक बिजली के उत्पादन के बढ़ने की बात है, प्रत्ये क सदस्य की यह मांग है कि प्रदेश की यह सबसे बड़ी श्रावश्यकता है।

मुझे इस विभाग के प्रशासन के सम्बन्ध में कुछ बातें श्रापके जरिये मन्त्री की की सेया में प्रस्तुत करनी है। देखने में यह श्राता है कि इसके प्रशासन पर जी पैसा खर्च होता है वह कुछ

ठींक ढंग से नहीं हो रहा है। आज इस प्रदेश और देश के अन्दर मध्यम वर्ग असंतुष्ट है, शिक्षित होते हुये भी और हमारी जो पीजेन्टरी है वह दुखित है, पीड़ित है। सरकार की जिम्मेदारियों में से एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी यह भी है कि वह उन सारे उपायों को काम से लावे जिनसे इन दो वर्गी का कल्याण हो और उनकी दिक्कतें दूर हो सकें।

हमारी सरकार को जो रेवेन्यू मिलता है वह भी ज्यादा तादाद में इन्हीं दो दगों से ही मिलता है। इसके बाद भी अगर ठीक ढंग से खर्च न किया जाय तो यह कोई अच्छी बात नहीं है। मैं इस सिलिसिले में मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि सारदा पावर हाउस इन्वायरी कमेटी का क्या हश्च हुआ ? उसने रिपोर्ट क्यों नहीं दी और वह कब तक आवेगी ? केसा का सामान का आर्डर जिस कम्पनी को दिया गया है उसके लिये निश्चित रूप से बताया गया कि वह स्टैंग्डर्ड के मुताबिक नहीं था। तो उस कम्पनी से क्या दोस्ती है कि रिहंड का आर्डर भी उसे ही दिया गया ? यह रहस्य समझ मे नहीं आता। अभी हमारे सभा सचिव श्री धर्मीक्षह जी ने कहा कि बिरला कम्पनी को जो बिजली दी जायगी उसमे ट्रांसिमशन लाइन का खर्चा निकाल दिया गया है और तब हम घाटे में नहीं पड़ते है। आखिर, ट्रांसिमशन लाइन की जरूरत ही क्यों पड़ी ? और अगर लगाई तो ट्रांसिमशन लाइन का खर्चा निकाल देने के लिये, क्यों निकाल देते है ? अगर नहीं जरूरत थी तो आपके इंजीनियर्स क्यों नहीं पहले ही इतना इमेजिन कर सके कि इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी और उसका खर्चा हमें शामिल नहीं करना होगा ? जितना पैसा इस पर लग रहा है और जिस भाव पर बिजली दे रहे है, उसका सूद भी नहीं आता है।

श्राज उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत परिषद् के वार्षिक लेखे की यह किताब मिली है। इसमें दिया है कि कार्य-सम्पादन का कुत व्यय ५६-६० में ३६६.७३२ लाख रुपये था, दोहराया तखमीना ४१६.६३६ लाख रुपये था। श्रगले बजट का तखमीना ४४३.८११ लाख रुपये है। वास्तविक प्राप्तियों को देखें तो ११५.७५६, ५६-६० मे, दोहराया गया तखमीना १२३.८५४ लाख रुपये श्रौर बजट का तखमीना है १२३.४०१ लाख रुपये। इसका नतीजा यह है कि १३७.२१४ लाख रुपये का घाटा होगा जिसकी पूर्ति राज्य सरकार द्वारा दिये जाने वाले सबवैद्यन से होगी। बड़ी श्रच्छी बात है, हमारी वेलफेयर स्टेट है श्रौर इसे सबवैद्यन देना ही चाहिये।

में सरकार का ध्यान जरा सरकारी अन्डरटे किंग्स की ओर ले जाना चाहता हूं। कृषि के फार्म आप चलावें, वहां घाटा। सिचाई की योजनायें आप चलावें, वहां घाटा। और बिजली की योजनायें चलावें, वहां घाटा हैं। तो होना क्या है इस प्रदेश का? श्रापकी इस अकल और हिम्मत से जिससे हर पैसा जो आप लगावें वह घाटे में जावे, इस प्रदेश की इकानामी का क्या बनना है? मैं निहायत अदब से गुजारिश करूंगा कि जरा इस ओर भी ध्यान दी जिये। लोगों की गाढ़ी कमाई का जो पैसा है वह ठीक ढंग से खर्च होना चाहिये। उसको आप इस कायदे से खर्च करें कि जो भी अन्डरटे किंग्स आप लें वे मुनाफे की लें।

इन्डस्ट्रीज को बिजली दिये जाने में मुझे कोई एतराज नहीं है, लेकिन श्रभी हमें १३-१४ श्ररब रुपया गल्ले के लिये खर्च कर देना पड़ा। उस रुपये से श्राप बहुत से ऐसे प्रोजेक्ट्स तैयार कर सकते थे, लेकिन जब उस क्षेत्र को श्रापको बिजली देनी होती है तो श्राप कहते हैं कि सस्ती बिजली वनेगी तो हम बिरला जी को देंगे, श्रगर खेती वाले लोगों को बिजली की श्रावश्यकता होगी तो कहा जायगा कि तुमको डीजल की देगे। मैं पूछता हूं कि यह पक्षपात क्यों है श्राखिर लोग श्रापके इस पक्षपात को श्रापका कौन-सा जेस्चर समझे? इससे एक ही नतीजा निकलता है कि श्रापका पीड़ित वर्ग की तरफ झुकाव नहीं है, श्राप उन लोगों के साथ पाश्यितिटी बरतते है जो बेहतर कंडीशन्स में है। मैं सरकार से निवेदन करना चाहूंगा कि वह श्रपनी बेसिक पालिसी को बदले श्रीर इस तरह बदलें कि खेती की उन्नति के लिये,

[श्री उदय शंकर]

े उद्योगों की उन्नित के लिये सस्ती बिजली सरकार दे श्रीर उनके घरों मे सरकार ज्यादा पैसा लाने की को जिला करे। सबवेशन दे तो सरकार उन छोटे काश्तकारों या छोटे उद्योग घंघों को दे जिनके पास पैसा नहीं है, जो बड़े उद्योगपित है जो थोड़ा घाटा भी बरदाश्त कर सकते है उनको यह न दीजिये।

श्री ऊदल (जिला वाराणसी) — भान्यवर, जो कटोती का प्रस्ताव माननीय प्रतार्पासह जी ने रखा है, में उसका समर्थन करता हूँ। श्रीमन्, श्राज बिजली की कितनी श्रावश्यकता है, यह दोनों ग्रोर के माननीय सदस्यों ने जो भाषण किये, उसमे जाहिर हो गया ह कि उसकी बहुत ज्यादा श्रावश्यकता है। लेकिन उसमें श्राज जो प्रगति हो रही है, वह उस श्रनपात में नहीं हो रही है। जैसा कि बहुत से माननीय सदस्यों ने कहा कि कृषि के क्षेत्र में बिजली की बहुत स्रावश्यकता है। स्राज जो कुछ थोड़ी बहुत बिजली ट्यूबवेल्स को मिलती ह यह इतनी महंगी है कि किसान की पानी लेने की हिम्मत नहीं पड़ती। किसान उसका रेट नहीं चका पाता। नतीजा यह होता है कि किसान को जितना पानी लेना चाहिये वह घबरा कर नहीं लेता ह। प्राज श्रावश्यकता इस बात की है कि कृषि श्रौर उद्योग धंधों के उत्पादन में हम ऐसी छलांग लगागे कि दूसरे देशों से आगे बढ़ जायं। हमारे यहां लाखां करघे वाले हैं जिनको पावर नही मिलती है। नितीज। यह होता है कि वे पुराने ढंग से ही करघे चलात है। मेहनत भी उनको काफी परती है, लेकिन उससे उनको प्राफिट बहुत कम होता है। बंगलीर में करघों को पायर महेया किया गया है। नतीजा यह है कि उनकी हालत श्रव्छी है। मैं चाहूंगा कि श्राप श्रपने यहाँ के इंजीनियस की बंगलौर भेजे कि वहां उनको किस प्रकार से बिजली संग्लाई की जाती है श्रीर यह यहां संभव है या नहीं इसको देखें। जो ये गांवों में लाखों की तादाद में बनकर मजदर है उनको बिजली सप्लाई करके तरक्की के रास्ते पर उनको ले जाया जा सकता है।

श्राज जरूरत इस बात की है कि देहाती क्षेत्र के किसान जो सदियों से इस बात की श्राज्ञा लगाये हुए थे कि हमारे यहां देवी मोती के रूप में बिजली श्रायेगी श्रीर हमारे यहां जो श्रन्धेरा है वहां उजाला करेगी श्रीर जिसे सरकार श्रब तक पूरा नहीं कर सकी है कि उनको बिजली देती जब कि श्राज विज्ञान इतना श्रागे बढ़ गया है। तो विद्युत विभाग के इंजीनियर लोग उसके सम्बन्ध में सोचें श्रीर यहां पर कोई चीज न मिले तो विदेशों में जाकर देखें कि कौन-कौन सी चीजों से सस्ती मशीनें लगायी गयी हैं श्रीर किस-किस चीज से सस्ती बिजली बनायी जाती है। श्राज के जमाने में तो श्रगर कहीं पानी बहता है तो उस थोड़े पानी से भी ५,१० किलोबाट बिजली पैदा की जा सकती है श्रीर दूसरी जगहों में की जाती है। श्रगर इस तरह से बिजली पैदा कर किसानों को मुहइया करने की बात बिजली विभाग सोचे तो में समझता हूं कि छोटो-छोटो यूनिटों से बहुत-सी बिजली पैदाकर खेती तथा छोटे-छोटे उद्योग-खंधों के लिये दी जा सकती है।

मेंने पढ़ा है कि वायु से भी बिजली तैयार की जाती है तो यहां भी हया से बिजली तैयार की जा सकती है। साथ ही माथेन से भी बिजली तैयार करने के प्रक्त पर विचार करना बहुत जरूरी है। जो लोग बड़े-बड़े प्लाण्ट लगा कर बिजली पैदा करने की जरूरत महसूस करते है, में समझता हूं कि बड़े-बड़े प्लाण्टों से जल्दी छोटे-छोटे प्लाण्टों को लगाकर बिजली देनी चाहिये। दो-लीन मीटर प्रति सैकड़े तथा तीन चार मीटर प्रति सैकड़े से ज्यादा जहां वायु की गित हो उससे बिजलीघर बनाथे जा सकते है। मैंने यह भी पढ़ा है कि प्रादमी के पाखाना, गोबर ग्रीर कीचड़ की घारा से भी गैस पैदा करके बिजली के प्लाण्ट लगाये जाते है श्रीर लगाये जा सकते है। इसलिये में चाहता हूं कि गांवों में जहां पर कि कोयले नहीं है श्रीर पानी की कमी है वहां इस तरह के बिजली घर बन सकें तो बड़ा श्रच्छा होगा।

दूसरी बात यह है कि बहुत से माननीय सदस्यों ने बिजली विभाग में भ्रष्टाचार की बात भी कही, लेकिन मालूम होता है कि भ्रष्टाचार की बात कहने से सरकार

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिए मांगों पर मतदान-- स्रनुदान संख्या ३०५ २७-लेखा शीर्षकः ४१ भ्रौर ८१-४-- विद्युत् योजनाओं की स्थादना पर व्यय तथा अनुदान संख्या ५१--लेखा शीर्षक ८१-क-- विद्युत् योजनाओं पर पूंजी की लागत (स्थापन व्यय को छोड़कर)

चिढ़ती है। इसलिये में केवल हस्तिनापुर बिजली घर की बात ही कहना चाहता हूं कि उसकी जांच होनी चाहिये। ग्राप उसकी लागत को देखें तो हर साल उसमें बढ़ोत्तरी होती गयी है। सन् ५७ में लागत १,१८,३५४ रुपयें थी ग्रौर प्राप्त हुई |२७,२२६ रुपये तथा घाटा हुम्रा ५१,६२५ रुपये। इसी तरह से काशीपुर रुद्रपुर, बिजली घर की भी जांच होनी चाहिये। मैं तो माननीय मंत्री जी से चाहूंगा कि इसके लिये वे एक कमेटी बैठावें जो इस बात की जांच करे कि क्या कारण है कि इन तमाम जगहों मे घाटा ही घाटा हो रहा है? इसी तरह से सन् ५८–५६ में जो रुपया विभाग को दिया गया था खर्च करने के लिये, उसमें बहुत काफी बचत हो गयी। मैं चाहता हूं कि विभाग इस तरफ ध्यान दे कि यह बचत क्यों हुई?

एक बात मै श्रौर कहना चाहता हूं कि बिजली उद्योग के राष्ट्रीयकरण बिना हमारे प्रदेश के लोगों को बिजली मिलना असंभव है। जहां जहां बिजली सस्ती मिलती है उसे तो लेकर सरकार प्राइवेट लोगों को दे देती है श्रीर जहां बिजली महंगी मिलती है उसको वह स्वयं खर्च करती है। मैं चाहता हूं कि सरकार जो ठेकेदारों को सस्ते दर पर बिजली देती है उसके ऊपर भी सोचे। ५४-४६ में सरकार ने ठेकेदारों को कम भाव पर विजली देने का समझौता किया जिसका नतीजा यह हुआ कि ठेकेदारों ने म्राम जनता से ६ म्राने = म्राने फी युनिट के हिसाब से वसुल किया। इसलिये मैं च।हता हूं कि इसका राष्ट्रीयकरण हो । दूसरी बात यह है कि मार्टिन कम्पनी के ऊपर सरकार ने २२ मुकदमे चलाये, लेकिन न मोलूम क्या हुआ कि उन सब को सरकार ने वापस ले लिया। कम्पनी की तरफ से गलितयां भी हुई, लेकिन फिर भी सरकार ने मुकदमे वापस ले लिये ग्रौर करोड़ों रुपया कम्पनी का विस्तार करने के लिये कर्ज दिया गया। ग्राप देखते है कि किसानों की बकाया वसूलने में कोई कसर नहीं की जाती, लेकिन पंजीपितयों से कहीं सख्ती की गई हो बकाया की वसूली में इसकी एक भी मिसाल नहीं है। कानपुर की एक स्वदेशी काटन मिल के ऊपर २८ लाख रुपया बिजली का बेकाया है ग्रौर बहुत से पुंजीपितयों पर सरकार का ग्रौर मजदूरों का, किसानों का करोड़ों रुपया बेकाया पड़ा है, लेकिन सरकार उनके खिलाफ कभी कोई कार्यवाही नहीं करती।

मुझे एक बात श्रौर कहनी है मजदूर के बारे में कि उन्हें पहाड़ों पर भेजा जाता है श्रौर केवल १ रूपया एलाउन्स उनको मकान का मिलता है, उनको वहां मकान नहीं मिलता श्रौर वह बहुत परेशानी में रहते हैं, उनको स्थायी नहीं किया जाता श्रौर तरह तरह से सताया जाता है। जो नीचे के चौथे दर्जे के कर्मचारी हैं उनके बारे में सरकार विचार करे श्रौर मकान के लिये जो उन्हें मिलता है उसमें वृद्धि करे। इन शब्दों के साथ में कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता है।

\*श्री गोविन्दिंसह विष्ट (जिला ग्रल्मोड़ा)—उपाध्यक्ष महोदय, इस सारे डिबेट का ग्रगर निचोड़ किया जाय तो वह संक्षेप में यह रहा कि सरकार के पास २ पैमाने हैं, एक गरीबों के लिये ग्रौर एक ग्रमीरों के लिये। जहां तक गरीबों का सवाल हैं, नलकूप में या दूसरी चीजों में देखा जाय रेट्स ऊंचे रखे गये है ग्रौर जहां पर बड़े पूंजीपितयों ग्रौर सेठों का सवाल हैं तो उन्हें सरकार ने सस्ती बिजली दी है। यह केवल बिजली देने का ही सवाल नहीं है बिल्क जैसे कि माननीय सदस्यों ने यहां बातें कहीं ग्रगर उनका विश्लेषण किया जाय तो बिजली की बकाया की वसूली के लिये यहां बिल भी ग्राया ग्रौर बड़े जोर से सरकार की तरफ से कहा गया कि लोग पैसा नहीं देते उनके

[श्री गोदिन्दीं सह दिए हैं]

उपर हमें सख्ती करनी होगी कि वह जल्द वसूल हो जाय। लेकिन एक भी ऐसी मिसाल हमारे सामने नहीं ग्राई कि कभी भी वह उपाय जो सरकार ने बनाया था किसी बड़े डिफाल्टर के खिलाफ उपयोग में लाया गया हो। किसानों के खिलाफ जो लगान वसूली में या तकावी दगैरह की वसूली में उपाय बरते जाते हैं वह बहुत दूर तक नीलाम व कुर्की की बात होती है, लेकिन दूसरी तरफ कानपुर में ६—६ लाख रुपए की बकाया कम्पनियों पर है ग्रौर दो तीन कम्पनियों पर है, लेकिन दह दसूल नहीं की जाती। इन दो पैमानों की दजह से लोगों को ज्यादा शिकायत है।

दूसरी तरफ यहां कुछ ऐसे काम इस बीच में हुए है जैसे खटीमा पावर हाउस के विषय में यहां बड़ा विवाद चला ग्रीर ग्राज तक मुझे खयाल है ग्रगर मे ठीक कहता है, श्रव भी उसमें सिल्ट श्राता है श्रीर जहां पर तेल नहीं श्राना चाहिये वहां श्रायली सब्सरेंस निकलता है स्रोर वह ठीक नहीं काम कर रहा है। पावर हाउस बना है थोड़ा बहुत, लेकिन जो बातें वहां होनी चाहिये थीं वह ख्वाब हो गई। उस पर सिद्दीक हसन कमेटी बैठी तो उस कम्पनो के लिये जितना खराब लिखा जा सकता था उतना खराब उसने लिखा कि कम्पनी ने शुरू से अ। खिर तक गलतियां ही गलतियां की है। जो एक्सपर्ट थे यु० पी० गर्बनमेन्ट के ही थे श्रीर अगर बाहर के भी होते तो उस कमेटी में वह शायद श्रीर बातें मालुम पेड़तीं, लेकिन नाम न लेकर में इतना श्रर्क करूंगा कि सिद्दीक हसन कमेटी ने जब बहुत कंडेम किया कि यह कम्पनी किसी काम की नहीं है: ग्रभी रिपोर्ट में यह भी देखने की मिला कि भविष्य में इस कम्पनी की कोई काम न विया जाय तो हमारी समझ में नहीं श्राता कि उसके बाद रिहन्द में उसी कम्पनी को क्यों काम दिया गया ? कानपुर एलैक्ट्रिक सप्लाई कम्पनी के बारे में भी ग्रभी कहा गया। उदयशंकर दुवे जी ने ज्ञायद कहा था। तो यह क्या बात है कि जिस कम्पनी के बारे में बहुत ज्यादा खुद सरकार की बिठाई हुई कमेंटी ने कहा श्रीर सब लोगों ने शिकायत की कि उसका काम ठीक नहीं है तो भी बार-बार उसको ही काम विया जाय। यह एक गहरा संदेह पैदा करती है।

भ्रष्टाचार के बारे में तो ज्यादा नहीं कहना चाहता। लेकिन इतना जरूर कहूंगा कि अगर किसी के भ्रष्टाचार के बारे में कहा जाय, खासकर पावर डिपार्टमेन्ट के बारे में, श्रौर अगर जांच भी हो जाय श्रौर उसके बाव यह तय हो जाय कि इसके बाव वह बापस नहीं श्राएंगे, लेकिन माननीय मंत्री जी के जाते ही फिर लिया जाय श्राफिसर बनाकर कर १,८०० रुपरे की जगह २,२०० रुपये की तमख्वाह पर रख लिया जाय, तो क्या यह उचित है? इसके माने तो यह हुए कि अगर किसी की तरक्की करानी है तो शिकायत कर दो श्रौर....

श्री उपाध्यक्ष—सदन में शान्ति नहीं है।

श्री गोविन्दिसिह विष्ट—श्रीमन्, ग्रपनी ग्रानेस्टी के लिये जो यू० पी० में सबसे मशहूर है, मुझे दुःख होता है, ऐसे श्रावमी के किये हुए काम को उलट देना ईमानदारी को खत्म कर देना है इस देश में। कल माननीय सम्पूर्णानन्द जो की जगह सी० बी० गुप्ता श्रा गये तो जो श्रादमी श्राज श्रष्टाचार में निकाले गये हैं, वह रख लिये जाएंगे। यह तो बहुत गलत प्रथा है। तो इस तरह से मिनिस्टीरियल लेकिस का स्तर मीचे गिरता है।

कुछ सामान इस डिपार्टमेन्ट में ग्रंथाधं घ खरीव लिया जाता है। रिहन्द बनाने के लिये एक केन खरीदी, बार डिस्पोजल में मिल रही थी, शायव १ लाख रुपये की है। ग्रंभी तक पड़ी है। सन् ४८ में खरीदी थी ग्राज तक काम नहीं ग्राई। कहते हैं खड़ी करने में ३५ हजार रुपया पड़ेगा। वह बन्द पड़ी है। कहते हैं कि कोई ऐसे हो ले जाय।

१६६०-६१ के श्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिए मांगों पर मतदान—श्रनुदान संख्या ३०७ २७—लेखा शीर्षक ४१ ग्रौर ६१-क-विद्युत योजनाओं की स्थापना पर विद्य तथा श्रनुदान संख्या ५१—लेखा शीर्षकः ६१-क—विद्युत याजनाओं पर पुंजी की लागत (स्थापना व्यय को छोड़कर)

एनुग्रल वैरीफिकेशन के बारे में कहना चाहता हूं। इस डिपार्टमेन्ट में बहुत कम हुग्रा करता है ऐसा मेरा ग्रन्दाज है। सस्पेंस का जो एकाउण्ट है, जो एक लिमिटेड से सान है, उससे ज्यादा उचन्त में रखना, यह ग्रन्छी चीज नहीं है।

सरप्राइज चेकिंग जरूर होनी चाहिये। ऐसा कहा जाता है कि लखनऊ में कोई एंजिन खरीदा गया। नये की कीमत दी गई, पुराना लगाया गया। तो ऐट रैन्डम चेकिंग की जाय कि जहां-जहां काम हो रहा है, ठीक हो रहा है या नहीं, ठीक माल लगा है या नहीं। तो ऐसे टैक्नीकल ग्रादमी होने चाहिये। इसके ग्रलादा में ग्रयने इंजीनियर साहबान की तब तारीफ करूंगा जब वह चीपेस्ट बिजली प्रदेश में पैदा करें ग्रीर जनता को दें। वैसे यह प्रदेश भारत में सब से ग्रागे माना जाता है, लेकिन बिजली के मामले में सबसे पीछे है। दक्षिण में हाइडल की बिजली सस्ती पड़ती है, लेकिन उत्तनी सस्ती हमारे यहां क्यों नहीं बनती जब कि हमारे यहां निवयां हिमालय से निकलती है ग्रीर उनमें गीमयों में भी पानी रहता है, बिल्क बढ़ भी जाता है। इसलिये में मंत्री जी को सुझाव दूंगा कि डैम्स बनाये जायं ग्रीर इस तरह काफी बिजली पैदा हो सकती है। ग्रीर एक प्रयोगशाला ऐसी होनी चाहिये जो यह खोज करे कि जो चीजें हमको बाहर से मंगानी पड़ती है उनको ग्रयने यहां ही बनाया जाय ग्रीर साथ ही कर्माशयल फर्म्स को 'टेक्नीकल नो हाऊ' भी दें।

श्राजकल हमारे इंजीनियर्स के पास कागजी काम बहुत बढ़ गया है, वह एक डिगनी-फाइड क्लर्क की तरह काम करते हैं श्रीर उनकी बुद्धि का उपयोग पूर्ण रूप से नहीं हो पाता जो कि होना चाहिये। मंत्री जी इस तरफ भी ध्यान दें।

हमारे इंजीनियर्स का बड़ा नाम था, लेकिन इधर श्रास्ट्रेलिया में जो हमारे विद्यार्थी जाते हैं तो उनकी रिपोर्ट देखकर शर्म श्राती है, यह नहीं कि हमारे यहां के लोगों का स्टैन्डर्ड नीचे गिर गया है दिक्क उसका कारण यह है कि सेलेक्शन ठीक नहीं होता। जिनकी सिफारिश होती है उन्हीं को ट्रेनिंग के लिये भेजा जाता है। इससे सारे देश का नुकसान होता है।

इस विभाग में छटनी हो रही हैं, छोटी-छोटी जगहों पर काम करने वालों को, करीब २४० श्रादिमयों को नोटिस देकर श्रलग किया गया है। मैं मंत्री जो से कहूंगा कि उन लोगों के बाल बच्चे हैं श्रौर श्राजकल काफी गिरानी है, तो इस तरह से एकदम उनको रिट्रेन्च न किया जाय इतने साल नौकरी कर लेने के बाद। इन शब्दों के साथ में कटौतों के प्रस्ताव का समर्थन करता हू।

श्री प्रतापिसह—उपाध्यक्ष महोदय, मैं उन सभी सदस्यों का श्राभारी हूं जिन्होंने मेरे प्रस्ताव का समर्थन श्रौर विरोध करते हुए इस विषय पर रोशनी डालने का प्रयत्न किया। मान्यवर, मुझे प्रमन्तता है कि माननीय धर्म सिंह जी ने मेरे कटौती के प्रस्ताव में जो सवाल थे उनका जवाब देने का प्रयत्न किया। लेकिन दुख के साथ कहना पड़ता है कि मेरे सवाल जहां के तहां मौजूद है। उन्होंने जवाब दिया कि जो बिजली सस्ती बिड़ला को दे रहे हैं उसमें ट्रांसमिशन के दाम नहीं लिये जायंगे। मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि जो कांट्रेक्ट दोनों के बीच में हुआ उसका वह पैरा पढ़ने की कृपा करें। मैं आपकी श्राज्ञा से, मान्यवर, उसे फिर से पढ़ देना चाहता हूं:——

"The Company shall take electrical energy for a period of 25 years at the rate of naye paise 1.997717 per K. W. consumed."

श्रव इसमें कहीं नहीं लिखा है कि कौन-सा दाम घटाया जायगा ग्रौर कौन-सा बढ़ाया जायगा । तो मेरा सबसे बड़ा चार्ज है कि पूंजीपतियों के लिये यह सरकार साँपट [श्रो प्रताप गिह ]

कार्नर रखती हैं। जो ३०,००,००० रुप्ये का घाटा सालाना ब्याज के रूप मे होता रह। श्रौर ७,४८,००,००० रुप्ये को जो योजना थो उसके निर्माण के समय जो एक्जोक्यूटिव श्रौर सुपरिर्टेडिंग इंजीनियर सुपरवीजन के लिये वहां नहीं रहे उनके खिलाफ सरकार ने क्या कार्यवाही की

में एक गलतफहमी उधर के लोगों की दूर करना चाहता हूं। वे बहुत बड़े हिमायती बनते हैं उन लोगों के जो देश का निर्माण करते हैं। मैं उन तमाम इंजीनियरों की कद्र करता हूं श्रौर उनसे कन्धे से कन्धा भिड़ा कर देश की तरक्की के लिये योग देने को नैयार हूं, लेकिन ऐसे इंजीनियरों, मंत्रियों के साथ कोई हमदर्श नहीं है जो इस मल्क को िया कर श्रपनी कोठियां बनाना चाहते हैं जिसका उदाहरण भूतपूर्व मिनिस्टर ने दिया श्रौर उन्होंने बार बार एक इंजीनियर के बारे में लिखा जो कि हाइडल के चीफ थे। उनको एक मंत्री लिखकर जायं कि दोबारा इस विभाग में उस व्यक्ति को न लिया जाय, लेकिन उसके लिये एक प्रिविलेज पोस्ट कियेट की गयो। मझे देख कर तकलीफ होती ह। मुल्क का निर्माण करने के लिये श्राप रहे या न रहें, लेकिन हम तो रहेंगे ही।

दूसरो बात कही गयी कि बड़ी संजोदगो के साथ तथा इत्मीनान के माथ विभाग कार्य कर रहा है। इस संबंध में में बतलाऊं कि इस विभाग ने बहुत से ऐसे कार्य किये जिनकी संकान नहीं लो गयो। १,१८६६ कार्य इस विभाग ने ४७ में किये थ्रौर ६,६१,०२,१३५ रुपया बिना संकान के खर्च किया। ३१ मार्च, ४८ तक १,६२८ कार्य किये गये जिममें ७,८३,४५,६१८ रुपया बिना संकान के खर्च किया गया। इस पावर विभाग में खास तौर से ऐसा लगता है कि १ रुपये का एक पैसा नजर थ्रा रहा है क्योंकि बिना संकान के लाखों रुपया खर्च किया जाता है थ्रौर यह कहा जाता है कि विभाग बहुत श्रच्छी तरह से चल रहा है।

रिहन्द उँम के बारे में ध्यान दिलाया गया। खटोमा के संबंध मे जो कमेटो बैठी उसने सरकार का ध्यान ध्राकांबत किया। मैं चाहूंगा कि जब माननीय मंत्री जी जगब दें तो इसे साफ करें :---

"We have mentioned in the body of the report that the absence of the penalty clause in the Khatima agreement has left the department with no remedy against the contractor and we are strongly of the view that such provision must be made in the case of Rihand."

तो यह पैनाल्टी क्लाज जो है रिहन्द का ठेका जिसको दिया गया है उनके साथ है या नहीं ?

तीसरे यह भी है कि हम ४५ हजार किलोबाट बिजली देंगे। लेकिन उसी एग्रीमेंट में यह भी है कि ग्रगर एक्सेस बिजली लेंगे तो ४० रुपये पर किलोबाट चार्ज किया जायगा। बिड़ला जैसे लोगों के लिये रुपये कोई बहुत बड़ी चीज नहीं हे, ४० रुपये पर किलोबाट के हिसाब से एक्सेस पेमेंट कर देंगे। फिर २५ साल का एग्रिमेंट है। २५ साल किसी देश के निर्माण के लिये बहुत बड़ा टाइम होता है। यह बहुत गलत बात की इसका स्पष्टीकरण सरकार दे।

चौथे, मान्यवर, पेकेंड फाइव ईयर प्लान में सरकार खुद इसे मानती है:---

"Planned development of an under-developed agriculturist economy as in Uttar Pradesh, cannot be completed in the agriculture sector alone. Diversification of trade and industrialization, with special emphasis on the employment potential is essential. In the modern age this is closely related to the availability of cheap electrical power."

१६६०-६१ के भ्राय-द्ययक में भ्रनुहानों के लिये मांगों पर मतदान--म्रनुहान ३०६ संध्या २७--लेबा शीर्षक ४१ भ्रोर द१-क--विद्युत योजनाम्रों की स्थापना पर व्यय तथा भ्रनुहान संख्या ५१--तेबा शीर्षक द१-क--विद्युत योज-नाम्रों पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय को छोड़कर)

कृषि से ही हमारे प्रदेश का भविष्य उज्जवल होने वाला नहीं है। इंडस्ट्रीज को बढ़ाना है नौकरियां देनी है। इसके लिये हमें नये पावर हाउसेज बनाने गे।

श्रभी जो जवाब दिया सभा सचिव महोदय ने उसमें उन्होंने यह कहीं नहीं बतलाया कि कितने प्रतिशत बिजली वे देहातों को दे रहे हैं। लघु उद्योग-धन्धों को दे रहे हैं। हमारे जिले की श्रोर माननीय मंत्री ध्यान दें। हमसे बार-बार यह कहा जाता है कि हम रुपये का इस्तेमाल नहीं कर पाये। मेरा सुझाव यह है कि डेवलपमेंट फंड बनायें श्रौर जो रुपया नहीं इस्तेमाल होता है वह डेवलपमेंन्ट फंड में ट्रान्सफर हो जाना चाहिये। सेंट्रल वाटर ऐड पावर कमीशन ने सिफारिश की है कि जितनी भी नई नदियां हैं कोई नदी ऐसी नहीं रहनी चाहिये जिसका इन्वेस्टिगेशन न हो। इस श्रोर हमारी सरकार ने क्या प्रयास किया?

देश का निर्माण एक ग्रहम सवाल है। जो हमारे मेकैनिक्स हैं, ग्रापरेटर्स हैं उनकी सर्विसेज के बारे में ग्रब तक कुछ नहीं किया गया। १५–१६ साल काम करने के बाद उनको निकाल दिया जाता है ग्रौर डेली वेजेज पर उनसे काम लिया जाता है। इंजीनियरों की जहां हम कद्र करते हैं वहां उनसे यह उम्मीद करते हैं कि वे विभाग को सलाह दें कि ऐसे लोगों की सर्विसेज को रेगुलेट किया जाय।

इन शब्दों के साथ में फिर उस सवाल को दोहराता हूं कि विरोधी दल, खास तौर से प्रजा सोशलिस्ट पार्टी देश का निर्माण करने वाले लोगों के कन्धे से कन्धा मिला कर उनका हमेशा साथ देगो, लेकिन ऐसे श्रकसरों को कभी बरदाश्त नहीं करेगी जो मुल्क के निर्माण में मुल्क का निर्माण न कर के श्रपना निर्माण करते हैं।

इसके श्रलावा मैं चाहता हूं कि माननीय मंत्री जी स्पष्टाकरण करें कि क्यों सरकार के दिल में बिड़ला के लिये एक साफ्ट कार्नर है श्रौर क्यों यहां के लोगों को सस्ते दामों पर बिजली नहीं देना चाहते।

मंत्रों जो ने कहा कि यह कहना गलत है कि हमारे यहां बिजली श्रिष्ठिक दामों पर मिलती है। में फैक्ट फाइन्डिंग कमेटी की रिपोर्ट पढ़ चुका हूं। उसमें तो यह भी कहा गया है कि एलेक्ट्रिसटी का दाम ज्यादा है, लेकिन ड्यूटी का प्रक्षन है। इसलिये मेरा सुझाव है कि इंडस्ट्रियल परयजेज के लिये ड्यूटी को खत्म कर देना चाहिये ताकि हमारे प्रदेश का श्रौद्योगोकरण हो सके। किसी देश में बिजली का उपयोग उस देश के श्राधिक ढांचे का माप-दंड होता है श्रौर उद्योगीकरण पर ही देश की जनता का लिविंग स्टेंडर्ड निर्भर करता है। इन तमाम चीजों को देशते हुए मुझे उभ्मोद है कि मंत्री जी श्रपनी पालिसी को बतायेंगे श्रौर यह ड्रिफ्टंग फ्राम वन ब्लन्डर टु ऐनग्रदर, एक गलती के बाद दूसरी गलती करते जाना नहीं होना चाहिये। हम एक डेफिनिट पालिसी चाहते है। यही मेरा सुझाव है। मुझे उम्मीद है कि हमारे जो मासूम सुझाव है माननीय मंत्री जो उनको मान लेंगे।

\*श्री गिरधारीलाल—उपाध्यक्ष महोदय, मुझे खुझी है कि ग्राज इस विभाग के ऊपर पूरे तौर पर रोझनी डाली गयी । जैसा मैने २ बजे के बाद कहा था कि इस वक्त जो वोटिंग होने वाली है वह रिहन्द पर ग्रौर जो छोटा-सा स्टाफ है उसके सिलसिले में जो ग्रनुदान है उन पर होगी। मैं इस वक्त विशेष तौर पर रिहन्द बांघ के सिलसिले में कुछ बात कह देना चाहता हूं। हालांकि इस विषय पर मेरे से पहले

### [श्री गिरवारीलाल]

इधर से रोशनी डाली जा चुकी है, लेकिन फिर भी मैं इस बात को साफ कर देना चाहता हूं। रिहन्द बांध के बार में एलर्जी है हमारे कुछ दोस्तों को महज बिड़ला के नाम से। प्रगर हम यह कहें कि एक प्रत्यू नीनियम फैक्टरो वहां पर हम खोल रहे हैं ग्रौर उसमें ४५ हजार किलोवाट बिजली खर्च होगी तो शायद इतना एतराज न हो। खेर, मैं तो इतना कहना चाहता हूं जैसा कि इसी सदन में मुख्य मंत्री जी पहले बता चुके है कि वह इस प्रान्त के लिये किसी तरीके से इस प्रोजेक्ट को लेकर श्राये ग्रौर उसके लिये जो भी उनकी तजवीज थी उसके हिसाब से उसको वहां पर लगाने की बात हुई।

जहाँ तक बिजली के रेट्स की बा। है, मैं ने स्रभा देखा कि में जहां-जहां भी स्नित्म्यीनियम फैस्टरीज हैं केरल को ले लीजिये, उड़ीसा को ले लीजिये या बंगाल को ले लाजिये हर जगह के रेट्स हमारे यहां से बहुत कम हैं। दूसरी बात यह कि यह रेट्स तमाम डेप्रिशियेशन चार्जें वगैरह निकाल कर प्राफिट के ऊपर हैं। पहले भी एक प्रश्न के उत्तर में मैंने यह बताया था।

तीसरी बात एक ग्रौर में बता देना चाहता हूं कि जैसे हमारे दोस्तों की ख्वाहिश ग्रौर जजबात हैं मैं भी उन बातों से खाली नहीं हूं । ेजिस वक्त यह प्रश्न उठा था श्रौर वह देल यहां श्राया श्रीर उससे बातचीत हो रही थी तो मेरे मन में यह ख्वाहिश पैदा हुई कि जो हमारे टर्म्स हैं उनके ऊपर हमको भ्रड़ना है भ्रोर उन टर्म्स पर भ्रगर वह हमसे बिजली चाहते है तो ले वरना नहीं। वह बातचीत हो हा रही थी मैंने दूसरे दिन शाम को जो हमारे साथी कर्मचारी थे इस विभाग मे जोकि उसके एक्सपर्टस है उनसे पूछा कि यह ५५ हजार किलोबाट बिजली वह है जोकि वहां पर भ्रौर भ्रन्य कामों में लगाना है तो सन् १६६२ के बाद कितना समय लगेगा इसके लोड को बिल्ड करने में। उन्होंने बताया कि कम से कम तीन वर्ष लगेगे जितने समय में हमारी जनता इतनी बिजली को इस्तेमाल कर सकेगी। इन तमाम बातों को सामने रखते हुए जैसा कि पहले बताया गया था कि गोरखपुर, मऊ श्रौर सोहावल पावर स्टेशन्स को इंटरलिक करके प्रिड में डाल दिया जाय तो शायद ३०,३५ हजार किलोबाट बिजलो सरप्लस हो जाती है ग्रौर में समझता हूं कि हमें सफर नहीं करना पड़ेगा । मेरे दोस्तों ने कहा कि हमारे ट्यूबवेलों के लिये बिजली नहीं मिलती श्रोर एत्यमीनियम फैक्टरी को दी जाती है। मैंने कहा कि उस इलाके में ट्यूबवेल के लिये थ्राज भी बिजली मिल सकती है श्रीर इस प्रकार के घंत्रों के लिये बिजली कम नहीं होगी । इस तरीके से वहां पर १९६२ में जब बिजली हमें देनो है तो बिजली की कमी नहीं होगी श्रौर हमारे लिये बिजली की जितनी जरूरत होगो उतनी हमें मिलेगी।

मैंने जैसे कहा कि तीन वर्ष लोड बिल्ड करने में लगेगे। श्रगर ३२ करोड़ का प्रोजेश्ट है तो श्राथा सुस्त पड़ा रहे यह कहां तक मुनासिब है श्रौर तीन वर्ष में हमे उम्मीद है १६६४-६६ तक जैसे कि माननीय मुख्य मंत्री जी ने बताया कि सिगरौली में इतनी बिजली होगी कि उनका इस्नेमाल करने के लिये सवाल खड़ा हो जायगा। मैं इस विषय में सिर्फ इतना हो बताना चाहता हूं।

यह कहा गया कि इससे फायदा क्या हुन्नारे समाज का, हमारे राष्ट्र का या हमारे सूत्रे का। जहां तक म्नामदेनी की बात है तो साफ जाहिर है कि न्नौर जैसा कि सभा सिविव ने बताया कि यह बिजली रिहन्द डैम पर ही दी जायगी। हम जो २,४ १० मील के फासले पर बिजली सप्लाई करते हैं तो जितनी बिजली ट्रांसिमिशन लाइन्स में चली जाती है वह बच जायगी जैसे किसी नहर का पानी जब हम नालियों के द्वारा कहीं ले जाते हैं तो बहुत-सा पानी जमीन सोख लेती है उसी तरह से ट्रॉंसिमिशन लाइन्स से बिजनी ले जाने में बिजली खर्व होती है। इन तमाम बातों से हम बचे। वह भ्रपनी लाइन लगाकर बिजली ले जायंगे ग्रौर इस्तेमाल करेंगे। सवाल यह है कि फायदा क्या हुन्ना? भ्रगर इसकी पोलिटिकल इश्यू बनाया जाय तब तो बात दूसरी है, लेकिन

१६६०-६१ के श्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिय मंगों पर मतदान—ग्रनुदान संख्या ३११ २७-लेखा शीर्षक ४१ ग्रोर ८१-क—विद्युत योजना को स्थापना पर व्यय तथा श्रनुदान संख्या ५१--लेखा शीर्षक: ८१-क—विद्युत योजनाग्रों पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय को छोड़ कर)

हमारे राज्य को ३० लाख टन एल्यूमें नियम की जरूरत पड़ती है जिसके लिये हमारा राया बाहर जाता है। इससे फारेन एक्सचेंज के बचाने में मदद मिलेगी। यह कोई कम चीज नहीं है।

यह प्रश्न उठा था कि बिड़ला जी ने क्या किया? वह भ्रपने काम को भ्रौर बढ़ाने जा रहे हैं। इसके लिये उनकी ख्वाहिश है कि वह स्वतंत्र पावर स्टेशन लगायें जिसके जिरये से वह भ्रातो भ्रग तो मांग को पूरा करेंगे। इसलिये किसी को घबड़ाने की जरूरत नहीं है। यह जरूर है कि रिहन्द के बनने से भ्रौर इस फैस्टरी के कायम होने से वहां पर भ्रौर इंडस्ट्री क कायम होंगो भ्रौर वह इलाका चमकेगा भ्रौर राजनारायण जी के पड़ोस में है, वहां काकी रोशनी होगी भ्रौर उनकी तबीयत खुश करने के लिये वहां एक भ्रच्छा सामान मौजूद हो जायगा। इस विषय में भ्रब मुझे ज्यादा कहने की जरूरत नहीं है।

दूतरो बात खडीमा के बारे में कही गई । किसी भाई ने गलतफहमी से यह कह दिया कि उद्यो कम्पनी को कैता का काम दे दिया गया। मेरी इत्तला में ऐसा नहीं है, लेकिन रिहन्द का काम जरूर दिया गया था। इस से पहले सिद्दीक हसन कमेटी ने जिस वक्त काम चालू किया या चालू करने जा रही थी यह सवाल हुन्ना कि इतनी देरी क्यों लगी कोई वहां पर मोजू इथा या नहीं, किसके मातहत यह बना यह सब देखने के लिए एक कमेटी बिठायी गयी। उस कमेटी ने उसका पूरी तौर पर परोक्षण किया। इसी समय जब वह काम हो रहा था दूसरी तरफ रिहन्द डैन का ठेका दे दिया था उसके बाद उस कमेटी की रिपोर्ट सरकार के सामने न्नायी। जब वह रिपोर्ट सरकार के सामने न्नायी तो उस वक्त वहां पर जिस चीफ इंजोनियर ने न्नाने मातहत उस काम को करवाया था उसके ऊपर भी कार्यवाही की न्नीर उसको पेंशन वगैरह सब हको पड़ी है। उस पर एक सिवेश्कर कमेटी बैठायी गयी इसी बात को देखने के लिये कि जब वह काम इस तरी के का था तो ठेका क्यों दिया गया। उस कनेटी की न्नान्ति रिपोर्ट बहुत जल्द सामने न्ना जायगी।

श्री राजनारायण—सिवेश्कर कमेटी की रिपोर्ट क्या है?

श्री गिरधारीलाल--रिपोर्ट बहुत जल्द सामने श्रायेगी श्रौर उसको हर एक माननीय सदस्य देख सकेंगे ।

एक सवाल यह उठाया गया कि इंडस्ट्रीज को कितनी बिजली दी गयी और कितनी ट्यूबवेल्स को दी गयी। उसका असली मतलब यह था कि ट्रांब को नजरन्दाज किया जा रहा है और पूंजीपितयों को बिजली दी जा रही है। लेकिन में आप को बता दूं जितनी बिजली हमारे सूबे के अन्दर पैदा होती है उसमें २४ प्रतिशत बिजली ट्यूबवेल्स और पम्प कैनाल्स पर खर्व होती है। बड़ी इंडस्ट्रीज पर १० प्रतिशत खर्च होती है और छोटी और बीच को इंडस्ट्रीज पर ३० प्रतिशत बिजली खर्च होती है। बाकी कामों पर ३६ प्रतिशत खर्च होती है। इस प्रकार से जो करीब ६६ करोड़ २६ लाख ६२ हजार ७१६ किलोवाट बिजली है वह वितरित होती है। कुछ हाइडिल से बिजली पैदा होती है कुछ स्टोम स्टेशन्स से पैदा होती है। जैसा उसका खर्चा होता है उसी हिसाब से उसके रेट्स हैं।

एक साहब ने कहा कि ड्रा्टी नहीं लगानी चाहिए, तो माननीय सदस्यों ने खुद झभी एक यहां पर ऐक्ट पास किया था जिसके जिरये से उस वक्त मुस्तसना किया था एग्जम्पट किया था जितनी भी इस प्रकार की ड्र्य्टी या चार्जेज इंडस्ट्रीज के ऊपर हुआ करते थे उनसे और जहां तक कि पृष्टि की बात थी इसके ऊपर तो पहले से ही किसी प्रकार की कोई ड्र्यूटी या टैक्स नहीं लगा करता था। (व्यवधान)

### [श्री गिरघारीलाल]

जहां तक ग्रमो किर वह बात उठायी पी० डब्ल्यू ० डी० के समय वही बात उठायी गई। इर्रोगेशन के वक्त भो उसकी उठाया गया ग्रीर भ्रांज किर कुछ लोगों के सिर पर जैसे भूत सवार होता है उस तरह से वह चीज नीच रही है। लेकिन मुझको तो धूनी देनी होंगी उसका श्रातर कहीं होगा कहीं नहीं होगा । जैसा मैने पहले बताया था कि एक यहां से छ टटो लेकर गया और यह ठीक है कि उसने छटटी लेते वक्त यह कहा था कि जब तर्म ै रिटायर होता हूं मै वापस नहीं फ्राना चाहूंगा े लेकिन सरकार को किसी भी कानन से अगर वह पहले वायस आना चाहे तो मना करने का कोई भ्राधिकार नहीं है। जहां तक चार्जेंज श्रौर एलीगेशन्स की बात है उसके खिलाफ जितने भी एर्नागेशन्स भ्राये थे मैंने पहले भी एक बार एक प्रश्न के जवाब मे कहा था कि वह सीडोनामस थे ? मैने उन बातों को देवा श्रीर देवने पर जब मझे उसमे कोई चीज नहीं मिली तब वापस न्नाने का प्रश्न न्नाया। यह समस्या बहुत सी बातों की वजह से मेरे सामने रही न्नोर इसको बहुत सोचने समझने के बाद में यह तय किया गया कि के पी े भार्गव जो यहां के चीफ में केटरी थे पहले स्रोर दूसरे श्री सतीक्ष चन्द्र जो कि डेवलपर्मेंट कमिक्नर है उनके सुपूर्व यह चार्जेज सब जो कि सीडोनामस थे किये गए। उन्होने उन चार्जेज को देखा ग्रोर देखने के बाद मे उस व्यक्ति से भी उसकी छानबोन की श्रौर श्रन्त में इस नतीजे पर ग्राये कि कोई भी ऐसे चार्जेज नहीं है जिन चार्जेज के ऊपर इस व्यवित को किसी भी हालत मे वापस छाने से रोका इ पित्र जहां तक उसके वापस भ्राने की बात थी उसकी नहीं रोका गया। रहा यह प्रक्त -- जो कुछ गलतफ हमो इस बारे में है कि उसकी किसी बड़े पद पर रखा गया या ज्यादा तन्हवाह पर रखा गया तो बड़ा पद या ज्यादा तनस्वाह दोनों शायद एक ही चीज है। में यर बतनाना चाहता हूं कि कोई ज्यादा तनस्वाह देकर नहीं रखा गया है जितना वेतन पहले था उतना हो वेतन श्रव भो रहेगा।

एक सदस्य--पहले के मिनिस्टर ने कार्यवाही क्यों की थी, यह बता दीजिए जरा।

श्री गौरीशंकर राय (जिला बिलया )—युराने मिनिस्टर से पूछिए कि चार्जेज ये या नहीं ?

श्री गिरधारीलाल—मं समझता हूं कि वह पहले हमारे साथ श्रा ले। श्रा कर के इस घर के श्रन्दर बैंड जायं, तब बात करे तो ज्यादा श्रज्छा हो। पहले कौन था श्रोर श्रव कौन है? मिनिस्ट्री एक ही है श्रीर यह कोई न समझे चाहे वह इधर बैंडे, या उधर बैंडे, उसमें कोई फर्त नहीं पड़ता है। श्रीर यह जो पोलिटिकल दल है यह बुजुर्ग दल है इसका कोई भी सदस्य पूरी मैंज्योरिटी रखता है तो उस पर इन सब बातों का कोई श्रसर पड़ने वाला नहीं है।

श्री नारायणदत्त तिवारी—श्रीमन्, मै चाहता हूं कि स्रभी जो माननीय मंत्री जी ने खुइ उत परिच्छेद को उठाया श्रौर कुछ उल्लेख यह किया किसी चीफ इंजीनियर महोदय का मै चाहता हूं कि माननीय मंत्री जी इसकी इतने हल्केपन से न ले। मै उनका श्राभारी हूं कि उन्होंने कुछ थोड़ी सी सफाई करने की कोशिश की, लेकिन ग्राज इसमे सभी लोग बड़े चिन्तित हैं श्रगर इस प्रकार के गम्भीर मसले स्पष्ट नहीं होंगे श्रीर इस तरह से उनकी लिया जायगा, मै मांग करूंगा माननीय मंत्रीजी से कि इस सम्बन्ध मे जो रिपोर्ट हैं भागवा साहब की वह सदन के सामने रखी जाय।

श्री गिरधारीलाल—मैंने जैसा बतलाया तो इस तरीके से इन बातों का इस पर कोई असर नहीं पड़ता । रही मिनिस्ट्री की बात तो वही मिनिस्ट्री पहले भी थी भ्रौर भ्राज भी वही है। पार्टी वही है। भ्राज में इसमें यहां हो सकता हूं कल को दूसरा हो सकता है, मेरे स्थान पर कल कोई दूसरा श्रा सकता है। तो इसमें किसी को परेशान होने की बात नहीं है। (ब्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष -- ग्रब ग्राप लोग कान्त रहे। बहुत ती बातों का जवाब हो गया।

श्री गिरधारीलाल--एक बात मैनपुरी की एलेक्ट्रिस्टी कम्पनी के नेशनलाइजेशन के विषय में कही तो उसमें यह ठीक है कि १६५८ में उसका राष्ट्रीयकरण किया जा रहा था उसमें वह हाईकोर्ट में पहुंचे और वहां जाकर एक रिट दाखिल कर दिया। इसलिये वह मामला बीच में रुका पड़ा हुआ है।

एक बात ग्रौर बतलाना चाहता हूं कि बिजली की कमी हमारे प्रान्त के ग्रन्दर बहुत काफा है। खासतौर से पश्चिमी जिलों के अन्दर इस प्रकार की इंडस्ट्रीज है जिनमें बिजली की मांग बहुत ज्यादा है। तो उस कमी को पूरा करने के लिये इस वर्वत हर प्रकार की कोशिश की जा रही है। उसके लिये जितने डिजिल सेटस किसी कीमत पर भी मिल सके लेने की बात है ग्रीर उनको लेकर जिजनी गैदा करने की मन्द्रा है जिससे हमारे यहां इस प्रकार की कमी न रहे और जिससे कोई ट्यूब्जेल या इंडस्ट्री न एकी रहे। इस कात को महेनजर रखकर छोटे या बड़े सेट्स को लेकर हमने मुहैया किया है ग्रौर उससे कछ प्लाण्ट को चलाया है ग्रौर कुछ चलाये जा रहे हैं। उसमें ख.सतौर से एक तो मेरठ में एक्सटेन्झन किया गया ६०० कि० बा० का। एक ग्रलीगढ़ से २०० कि० बा० का एक्सटेन्शन किया गया। बलरा में ४०० कि० वा० का, हापुड़ मे ३०० कि० वा० का, ठकराती में १,००० कि० वा० का, गाजियाबाद में १,६०० कि० बा० का ए६स्टेन्झन इसी प्रकार के सेंड्स लगाकर पुरा किया जा रहा है। शारदा देवा फ डिर मे जो वहां नहर है उसमें पानी की कमी है। भ्रगर उसमे पानी बढ़ जाय तो ४,००० कि० बा० उससे बिजली बढ़ सकती है। उसके लिये एक वहां पर नदी है उसका पानी लेकर उसमे पानी डालेंगे। इस तरह से उस ४,००० कि० वा० बिजली पैदा करके इस कमी को पुराकियाजायगा ।

मार्टिन कम्पनी के साथ मुकदमें चल रहे हैं। इसके लिये जो सरकार सतर्क श्रौर सचेत हो तो वह श्रपनी समझदारी से उस मुकदमें को चलायेगी श्रगर उन मुकदमें में बगैर किसी परेशानी के ही सही नतीजा मिल जाता है तो हम उसको वापस लेने के लिये तैयार हैं। श्रभी तक एक भी मुकदमा वापस नहीं हुआ है, लेकिन श्रगर जरूरत हुई तो ऐसा किया जायगा। पहले उनके पास धन की कमी थी। श्रब वह कमी उनकी बहुत कुछ पूरी हो रही है। मुमकिन है वह दिक्दत उनको न हो। तो इस रोशनी में सरकार को श्रगर वे विश्वास दिलाये कि श्रागे इस प्रकार से गलती नहीं होगी तो सरकार इसके उत्पर विचार करेगी कि जो मुकदमें चल रहे हैं वे मुकदमें वापस लिये जांय या नहीं। इन शब्दों के साथ मैं श्रपने श्रनुदान को दोबारा रखता हूं श्रीर उम्मीद करता हूं कि प्रताप- सिंह जी श्रपने कटमोशन को वापस ले लेंगे नहीं तो दल इसको मन्जूर करेगा।

श्री उपाध्यक्ष—प्रश्न यह है कि सम्पूर्ण ग्रनुदान २७ के ग्रधीन मांग की राशि में सौ पये की कमी कर दी जाय। कभी करने का उद्देश्य—विशिष्ट शिकायत जिस पर चर्चा उठाने का ग्रभित्राय है। जनता को महंगे दर पर बिजली देकर रिहन्द बांध की बिजली को बिड़ला ब्रदर्स को सस्ते दाम पर देने की घोषणा की ग्रालोचना करना।

(प्रश्न उपस्थित किया गया ग्रौर ग्रस्वीफ़ुत हुग्रा।)

श्री उपाध्यक्ष ——प्रक्त यह है कि ग्रनुदान संख्या २७——विद्युत् योजनाग्रों की स्थापना पर व्यय——लेखा शीर्षक ४१ ग्रीर ८१-क के ग्रन्तर्गत १,४४,३२,४०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १९६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय।

( प्रक्त उपस्थित किया गया ग्रौर स्वीफ़ुत हुग्रा।)

श्री उपाध्यक्ष --- प्रक्त यह है कि सम्पूर्ण श्रनुदान संख्या ४१ के श्रधीन मांग की राशि में सौ राये की कनी कर दी जाय।

कमी करने का उद्देश्य--विशिष्ट शिकायत जिस पर चर्चा उठाने का श्रभिश्राय है। ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युत् मं-थाग्रों का निर्माण न करना।

( प्रश्न उपस्थित किया गया ग्रौर श्रस्वीकृत हुन्ना।)

श्री उपाध्यक्ष --प्रश्न यह है कि श्रनुदान संख्या ५१--विद्युत् योजनाप्रों पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय को छोड़ कर)- रेता शीर्षक ८१-क के श्रन्तर्गत ६,०८,०१,००० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १६६०-६१ के लिये स्वीकार की जाय।

(प्रक्त उपस्थित किया गया ग्रीर स्वीकृत दुन्ना।)

(इसके बाद सदन ४ बनकर ४४ मिनट पर शुक्रवार, १८ मार्च, १६६० के ११ बजे दिन २४ के लिए स्थानित हो गया।)

लखन**ऊ,** १**१ मार्च, १६**६० । देवकीनन्दन मित्थल, सचिव, विधान सभा, उत्तर प्रवेश।

# उत्तर प्रदेश शिवान समा

## शुक्रवार, १८ मार्च , १६६०

विधान सभा की वेठक सभा-भण्डय, लदनङ भें ११ बजे दिन में उपाध्यक्ष, श्री रामनारायण त्रिपाठी, की ग्रिज्यक्षता में ग्रारम्भ हुई।

## उपस्थित सदस्य--३२६

श्रक्षयवर्रासह, श्री ध्रजीज इमाम, श्री श्रतीकूल रहमान, श्री म्रनन्तराम वर्मा, श्री ग्रब्दूल रऊफ़ लारी, श्री ग्रब्दूल लतीफ़ नोमानी, श्री श्रव्दूस्समी, श्री श्चभयराम यादव, श्री ग्रमरनाथ, श्री म्रमोलादेवी, श्रीमती स्रयोध्याप्रसाद स्रार्य, श्री अली जर्रार जाकरी, श्री श्रवधेशकुमार सिनहा, डाक्टर ग्रवधेशचन्द्रसिंह, श्री ग्रहमद बल्हा, श्री ग्रात्माराम पांडेय, श्री श्रार्थर सी० ग्राइस, श्री इन्दुभूषण गुप्त, श्री इरतजा हुसैन,श्री इस्तफ़ा हुसैन, श्री उग्रसेन, श्री उदयशंकर, श्री उल्फ़र्तासह, श्री ऊदल, श्री एस० श्रहमद हसन, श्री भ्रोंकारनाथ, श्री कन्हैयालाल वाल्मीकि, श्री कमलकुमारी गोईंदी, कुमारी कमलापति त्रिपाठी, श्री कमलेशचन्द्र, श्री कल्याणचन्द मोहिले, श्री कल्याणराय, श्री

कामताप्रसाद विद्यार्थी. श्री कागीप्रवाद पांडेय, श्री किशनसिंह, श्री कुं भरकृष्ण वर्मा, धो केशव पांडेय, श्री केशवराम, श्रो कैलाशकुमार सिंह, श्री कैलाशनारायण गुप्त, श्री कैलाशवती, श्रीमती कोतवालींसह भदौरिया, श्री खजानसिंह चौधरी, श्री खना नी।संह, डाक्टर खयालीराम, श्री खुशीराम, श्री, खुर्बासह, श्री गंगाधर जाटव, श्री गंगात्रसाद, श्री (गोंडा) गंगाप्रसाद वर्मा, श्री (एटा) गलेन्द्रसि , श्री गज्जूराम, श्री गणेशप्रसाद पांडेय, श्री गनेशचन्द्र काछी, श्री गनेशीलाल चौधरी, श्री गयाप्रसाद, श्री गयाबस्शसिंह, श्री ग्रपूर म्रली खां, श्री ग़रोबदास, श्री गिरधारीलाल, श्री गुप्तारसिंह, श्री गुरुप्रसादसिंह, श्री गुलार्बासह, श्री गेंदासिह, श्री

गोकुलप्रसाद, श्री गोपाली, श्री गोपीकृष्ण श्राजाद, श्री गोविन्दनारायण तिवारी, श्री गोविन्दसहाय, श्रो गोविन्दसिंह विष्ट, श्री गौरीराम गुप्त, श्री गौरीशंहर राय, श्री घासोराम जाटव, श्रो चन्द्रदेव, श्री चन्द्रहास मिश्र, श्री चन्द्रावती, श्रीमती चन्द्रिकाप्रसाद, श्री चरणसिंह, श्री चिरंजीलाल जाटव, श्री छत्तरसिंह, श्री छत्रपति ग्रम्बेश, भी छेदीलाल, श्री जंगबहादुर वर्मा, श्री जगदीशनारायण, श्री जगवीशनारायणदत्त सिंह, श्री जगदे शप्रसाद, श्री जगदोशशरण ग्रग्रवाल, श्री जगन्नाय चौधरी, श्री जगन्नायप्रसाद, श्री जगन्नाथ लहरी, श्री जगपतिसिंह, श्री जगमोहनसिंह नेगी, श्री जगवीरसिंह, श्री जयगोपाल, डाक्टर जयस्वसिंह श्रायं जयराम वर्मा, श्री जवाहरलाल, श्री जवाहरलाल रोहतगी, डाक्टर जुगलिकशोर, ग्राचार्य जोखई, श्री ज्वालाप्रसाद कुरील, श्री टीकाराम पुजारी, श्री ड्रंगरसिंह, श्री ताराचन्द माहं वरी, श्री तारादेवी, डाक्टर टोकाराम,श्री (बदायूं) तेजबहादुर, श्री दत्त, श्री एस० जी० दशरथप्रसाद, श्री द्याताराम चौधरी, श्री

दोनदयालु करुण, श्री दोनदयालु शास्त्री, श्री दोपंकर, ग्राचार्य दोपनारायणमणि त्रिपाठी, श्रो दर्योघन, श्रो देवन।रायण भारतीय, श्री देवराम, श्री द्वारकात्रसाद भित्तन, श्री (मुजफरनगर) द्वारिकाप्रसाद, श्री (फर्हलाबाद) द्वारिकाप्रसाद पांडेंठ, श्री (गोरखपूर) घतीराम, श्री धनुषयारी पांडेय. श्री धर्मदत्त वेद्य, श्री धर्मपालसिंह, श्रो नत्थाराम रावत, श्रो नत्यू सिंह, श्री (बरेली) नत्थासह, श्रो (मेनपूरी) नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ, श्री नन्दराम, श्री नरदेर्शसह दितयानवो, श्री नरेन्द्रसिंह भंडारी, श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट, श्री नवलिकशोर, श्री नागेश्वरप्रसाद, श्रो नारायणदत्त तिवारी, श्री नारायणदास पासी, श्री नेकराम शर्मा, श्री पब्बरराम, श्री परमानन्द सिनहा, श्रो परमेश्वरदोन वर्मा, श्रं। प्रकाशवतीसुद, श्रीमती प्रतापबहादुरसिंह, श्री प्रतापभानश्रकाशसिंह, श्रो प्रतापसिंह, श्री प्रभावतो मिश्र, श्रोमती प्रभुदयाल, श्री फर्तेहसिंह राणा, श्री बंशीधर शुक्ल, श्रा ब तदे शींसह, श्री बलदेवसिंह ग्रार्थ, श्री बसंत गल, श्री बादामसिंह, श्री बाबुराम, श्री बाबूलाल कुसुमेश, श्री बालकराम, श्रो बिन्दुमती दास, श्रीमती

बिहार लाल, श्रो बद्धीर्जह, श्री बुजाकी राम, श्री बंजवाती तल, श्री बंजरानी सिश्र, श्रीनती बेवनराम, श्री बेबनराम गुप्त, श्री बेनीबाई, श्रीतनी बैजूराम, श्री ब्रजनाराज्य तिवारी, श्री श्रजभुषणज्ञरण, श्री ब्रह्मदत्त दीक्षित, श्री भगवतीत्रसाद दुबे, श्री भगवतीप्रसाद शुक्ल, श्री भावतीं सह विशारद, श्री भगोतीप्रताद वर्मा, श्री भजनलाल, श्रो भीखालाल, श्री भुवनेशभूषण शर्मा, श्री भूपकिशोर, श्री मंजुहलनबी, श्री मयुराप्रसाद पांडेय, श्री मदनगोपाल वैद्य, श्री मदन पांडेय, श्री मन्नालाल, श्री मलखार्नासह, श्री मलिखार्नासह, श्री (मैनपुरी) महमूद ग्रली खां, कुंवर (मेरठ) महादेवप्रसाद, श्री महावीरप्रसाद शुक्ल, श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री महोलाल, श्री महेशसिंह, श्री मातात्रसाद, श्रो मान्धातासिह, श्री निहरबानसिंह, श्री मु कुटविहारीलाल ग्रग्रवाल, श्रो मुजफ्फर हसन, श्रो मुरलीवर, श्रो मुरलोधर कुरोल, श्री मुहम्मद हुसैन, श्रो मूलचन्द, श्री मोतीलाल ग्रवस्थी, श्री मोहनलाल, श्रो मोहनलाल वर्मा, श्रो मोहनसिंह मेहता, श्री

यमुनाप्रसाद शुक्ल, श्री यमुनासिह, श्री (गाजीपूर) यशोदादवी, श्रीमती रघुनायसहाय यादव, श्री रघुरनतेजबहादुर सिंह, श्री रघुवीरसिंह, श्री (एटा) रवुवीरसिंह, श्री (मेरठ) रणबहादुर्रासह, श्री रमाकांतसिंह, श्री रमानाथ खैरा, श्री रमेशचन्द्र शर्मा, श्री राघवराम पांडेय, श्री राजिकशोर राव, श्री राजदेव उपाध्याय, श्री राजनारायण, श्री राजनारायणसिंह, श्री राजबिहारीसिंह, श्री राजाराम शर्मा, श्री राजेन्द्रकिशोरी, श्रीमती राजेन्द्रकुमारी, श्रीमती राजेन्द्रदत्त, श्री राजेन्द्रसिंह, श्री राजेन्द्रसिंह यादव, श्री रामग्रभिलाख, श्री रामकिंकर, श्री रामकृष्ण जैसवार, श्री रामकृष्ण सारस्वत, श्री रामचन्द्र विकल, श्री रामजोलाल सहायक, श्री रामजीसहाय, श्री रामदास ऋार्य, श्री रामदीन, श्री रामगल त्रिवेदी, श्री रामप्रसाद, श्री रामप्रसाद देशमुख, श्री राप्तप्रसाद नीटियाल, श्री रामबली, श्री राममृति, श्री रामरतीदेवी, श्रीमती रामलक्षण तिवारी, श्री रामलखन मिश्र, श्री रामलबनसिंह, श्री (जौनपुर) श्रो रामलाल, यादव, श्री रामग्ररण रामसनेही भारतीय, श्री रामसमझावन, भी

रामसिं; चौहान वैप्र, श्री रामसुन्दर पाउँय, शी रामस्रतप्रसाद, श्री रामस्वरूप यादव, ओ रामस्वरूप वर्मा, श्री रामायणराय, श्री रामेश्वरशसाद, श्री **पक**नुद्दीन खां, श्री **मक्ष्मणराव फदम,** श्री लक्ष्मणसिंह, श्री लक्ष्मीनारायण, श्री लक्मी सिंह, श्री लायकसिंह चोवरी, श्री मानबहादुर, श्री सुत्फ प्रली खां, श्री लोकनार्थासह, श्री वजरंगबिहारीलाल रावत, 'हि विधान्डनारायण शर्मा, 'शी यसी नकवी, श्री वास्देव दीक्षित, श्री विचित्रनारायण प्रापी, श्री विद्यावती वाजरेवी, श्रीगती विनयलक्ष्मी सुमन, श्रीमती विद्यालसिंह, श्री वीरसेन, श्री वीरेन्द्रशाह, राजा त्रजगोवाल सक्तेता, श्री व्रजविहारी मेहरोत्रा, श्री शंकरलाल, श्री शकुंतलादेवी, श्रीमती **ग्र**बीर हसन, श्री श्रमसुल इस्लाम, श्री शम्भुदयाल, श्री ज्ञिवगोपाल तिवारी, श्री ज्ञिवप्रसाद, श्री (देवरिया) ज्ञिवप्रसाद नागर, श्री (खोरी) शिवमूर्ति, श्री शिवराजबलीसिंह, श्री ज्ञिवराजसिंह यादव श्रो शिवराम पांडेय, श्री शिववचनराव, श्री

णिवशंकरसिट, भो त्रिपशरणलाग श्रीयर तत्र श्री गोतना प्रसाद, धी शोनवथ, श्री व्यामारनोहर भित्र, श्री કરો श्याननाल, श्यामनाल यात्य, श्री श्रीकृष्ण गोपल, श्री श्रीनाथ, भी (प्राजमगढ़) श्रीपानिह, यूंवर संग्राम(तह, श्री पर्द प्रहमद मन्तारी, श्री स नीवनलाल, सत्यवर्तादेशी रावल, श्रीमती सरस्वतीदेवी शक्ल, श्रीमती सियादुलारी, श्रीमती नीसाराम, डाक्टर सामननाल, श्री न तरामदास, श्री स्यलान, धो सुयोराम भारतीय, श्री ग्दामाप्रसाद गोस्वामी, श्री सुनीता चोहान, श्रीमती सुन्दरलात, श्री स्रथबहादुरज्ञाह, श्री सुरेन्द्रदत्तं वाजपेयो, श्री सुरेन्द्रसिंह, राजकुमार सुल्तान भ्रालम खां, श्री सूर्यबली पारंय, श्री सोहनलाल धुनिया, श्री हमीदल्ला खां, श्री हरदयालिंगह, श्री हरदयालसिंह पिपल, श्री हरदेर्जासह, श्री हरिदल काण्डपाल, श्री हरी प्रचन्द्र ग्रष्ठाना, श्री हरीसिंह, श्री हलीमुद्दीन (राहत मौलाई), श्री हुकुर्मासह विसेन, श्री होरीलाल यादव, श्री

नोट---सार्वजनिक निर्माण उपसंत्री, श्री महाबीरसिंह भी उपस्थित थे

### प्रश्नोत्तर

## शुक्रवार, १८ मार्चे, १६६०

# श्रल्पसूचित तारांकित प्रश्न

## लितिपुर बांध पर उल्लुग्रों का कथित ग्रड्डा

\*\*१---कुंवर श्रीपार्लीसह (जिला जौनपुर)---क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि झांनी डिवीजन के लितपुर बांय पर कितने उल्लू पाले गये हैं तथा उनको किस विशेष कार्य के निमित्त पाला गया है और उन पर कितना व्यय किया जा रहा है ?

सार्वजनिक निर्माण उपमंत्री (श्री महावीरसिंह)-एक भी नहीं।

कुंवर श्रीपालिसिह—क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि ग्रगर पाले नहीं गये हैं तो क्या उनके रहने की व्यवस्था की गई है उस जगह पर ?

श्री महावीरसिंह--जो व्यवस्था होनी चाहियेथी, वह कर दी गई है।

श्री गौरीशंकर राय (जिला बिलया)—क्या यह सही है कि उस व्यवस्था के बावजूद भी उल्लू इसिलये नहीं गये क्योंकि लखनऊ के बड़े बंगलों में रहने के लिये ग्रधिक उल्लू नहीं हैं ? (हंसी)

न्याय मंत्री (श्री हुकुमसिंह विसेन) - वह सब बिलया चले गये। (हंसी)

श्री रामायणराय (जिला देवरिया)—क्या यह सही है कि चूंकि होली के ग्रवसर पर यह प्रश्न पूछा गया है इसिलये इसे नम्बर अन दिया गया है ?

श्री उपाध्यक्ष--यह होली के अनुरूप ही था।

श्री उग्रसेन (जिला येवरिया)---क्या माननीय मंत्री जी इस बात को देखते हुयें कि बहराइच में इनकी जरूरत है, बिलया से बहुराइच ट्रान्सफर करने की कृपा करेंगे ?

श्री हुकुर्मासह विसेन-देवरिया से मंगा लेंगे । (हंसी)

श्री दीपनारायणमणि त्रिपाठी (जिला देवरिया)—क्या सरकार ने उल्लूओं के बसेरों के लिये कोई स्थान बना रखा है ?

श्री उपाध्यक्ष--जी स्थिति हो स्पष्ट कर हैं, शरमाने की क्या जात है। (हंसी), (कोई उत्तर नहीं दिया गया।)

श्री इन्दुभूषण गुप्त (जिला ग्राजमगढ़)—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जो श्राइडे बना लिये गये हैं, जैसा कि सिंचाई के ग्रानुदान के संबंध में भाषण के समय माननीय मंत्री जी के कहा था, उन पर किसना क्या हुआ है ?

श्री महावीरसिंह-दो रुपये से तीन रुपये तक।

कुंवर श्रीपाल सिंह—क्या माननीय मंत्री जी वनायेगे कि उन ग्रड्डों पर कितने उल्लू बैठे हैं । (हंसी)

## (कोई उत्तर नहीं दिया गया ।)

### विधायकों को रोडवेज बसों के पास देने की योजना

\*\*२--श्री लक्ष्मणराव कदम (जिला मांसी)-- त्र्या मरकार यह बताने की कृपा करेगी कि क्या विधायकों को रोडवेज वसों के पास प्रदान किय जान के संबंध में Members Emolument Act में संशोधन होना ग्राव-यकीय है ? यदि हां, तो उसमें ग्रभी तक न किये जाने के क्या कारण है ?

स्वास्थ्य उपमंत्री (श्री बलदेवसिंह स्रार्य)—विधायकों को रोडवेज बसों के पास प्रदान करने के संबंध मे पूरी योजना की रूपरेखा सभी तैयार नहीं हुई। जब तक यह योजना स्रन्तिम रूप से तैयार नहीं होती यह कहना संभव नहीं है कि इसके कारण UP Legislative Chambers (Members Emoluments Act) में संशोधन करने की स्रावश्यकता होगी या नहीं।

श्री लक्ष्मणराव कदम—न्त्रया माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेगे कि उनको पता है कि पास जारी करने के निये महामान्य राज्यपाल महोदय ने श्रपने भाषण में २७ जुलाई को यह घोषणा की श्री श्री स्परकार ने भा प्रपने एक पिन्पत्र द्वारा श्रगस्त, १६५६ में इस संबंध में माननीय सदस्यों से उनके फोटो भी नंगाये थे, तो फिर इस योजना में देगी होने का क्या कारण है ?

श्री हुकुर्मासह विसेन—खाली फोटो से ही काम नही चलता ह श्रोर भी चीजे होती है जिनको देखना पडता है। चूंकि माननीय सदस्यों को इसमें जत्दी ह, इसलिये इस सबंघ में जितनी जल्दी हो सकेंगी, उसको उतनी जल्दी किया जायगा।

श्री गोविन्दिसिह विष्ट (जिला श्रत्मोड़ा)—वया माननीय मंत्री जी इस बात को देखते हुये कि इससे लोगो में बहुत कीटीसिज्म बढ़ रहा है, इस स्कीम को वापस लेने की कृपा करेगे ?

श्री उपाध्यक्ष--ग्रभी तो यह स्कीम जारी ही नहीं हुई हे।

श्री गोविन्दिंसह विष्ट-शीमन्, जनता मे यह भ्रान्ति फली हुई है।

श्री हुकुमसिंह विसेन-मेरे कान तक तो ग्राज बात ग्रायी, पहले एक बार भी नहीं कहा गया मुझ से ।

श्री भगवती प्रसाद शुक्ल (जिला प्रतापगढ़)—क्या माननीय मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि इस योजना में जो विलम्ब हो रहा है इसका कारण यह तो नहीं है कि बुछ विदेशों के एक्सपर्द स से राय मांगी जा रही है ?

### (उत्तर नहीं दिया गया ।)

## उत्तर प्रदेश तथा हिमांचल प्रदेश की हदबन्दी का मामला

\*\*३—श्री गुलार्बासह (जिला देहरादून)—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि उत्तर प्रदेश सरकार श्रीर हिमांचल प्रदेश सरकार के प्रतिनिधियो की देहरादून में बौदरी डिस्पियूट के विषय में मीटिंग १८ मार्च, १९६० को होने वाली है ?

राजस्व उपमंत्री (श्री महावीर प्रसाद शुक्ल) -- जी नहीं

\*\*४--श्री गुलाबसिंह--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि उस मीटिंग में कौन-कौन से विवादग्रस्त क्षेत्रों के विषय में वार्ता होगी ?

\*\*५—क्या सरकार देहरादून जिले के चकरौता तहसील के विवादग्रस्त क्षेत्र के विषय में भी वार्ता करेगी ?

श्री महावीरप्रसाद शुक्ल--प्रक्त नहीं उठता ।

श्री गुलाबींसह—न्या सरकार के पास ऐसी शिकायत देहरादून के जिलाधीश से श्रायी है कि हिमाचल प्रदेश की सरकार ने चकरौता तहसील के कुछ गांव अपने रेकार्ड्स में दर्ज कर लिये हैं और उनसे रेवेन्यु वह ले रहे है ?

श्री हुकुम सिंह विसेन—ऐसी जि़कायत तो नहीं ग्रायी है, लेकिन सरहद पर पिलर्स गिर गये हैं, उनको रिप्लेस करने के लिए कारेस्पांडेंस हो रहीं है।

श्री प्रतापिसह (जिला नैनीताल)—क्या यह सही है कि हिमांचल प्रदेश ने उत्तर प्रदेश के सरहद के इलाके ग्रयने कब्जे में कर लिये हैं श्रौर वहां रेवेन्यु उत्तर प्रदेश सरकार को न मिलकर हिमांचल प्रदेश को मिल रहा है ?

श्री हुकुमसिंह विसेन-- कुछ ग्रेजिंग डिस्प्यूट्स थे, वे तय हो रहे हैं।

श्री गुलाबसिह—क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि यह जो डिमार्केशन का मसला है इसका कब तक फैसला हो जायगा ?

श्री हुकुर्मांसह विसेन—तारील निश्चित नहीं की जा सकती, लेकिन जल्दी हो जायगा। ग्राजमगढ़ जिले में टेस्ट वर्क्स चार्ज ग्राफिसर्स कम होने की शिकायत

\*\*६—श्री रामसुन्दर पांडेय (जिला झाजमगढ़)—क्या न्याय मंत्री दिनांक ४ मार्च, १६६० के तारांकित प्रश्न संख्या १६० के उत्तर के कम में बताने की कृपा करेंगे कि सगड़ी, सदर स्रोर घोसी तहसील में टेस्ट वर्क कम खोलने का कारण क्या है ?

श्री महावीरप्रसाद शुक्ल—उक्त तहसीलों में क्रमज्ञः ४, ५ तथा ३ टेस्ट वर्क चल रहे थे जो कम नहीं कहे जा सकते ।

\*\*७—श्री रामसुन्दर पांडेय—क्या न्याय मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि उनकी श्रोर से ग्रभी हाल में जिलाधीश, श्राजमगढ़ को टस्ट वर्क पर काम कराने वाले ग्रिधिकारियों को कम करने के लिये कोई श्रादेश गया है ? यदि हां, तो क्यों ?

श्री महावीरप्रसाद शुक्ल—टेस्ट वर्क पर काम कराने वाले कर्मचारियों की संख्या घटाने का कोई सामान्य श्रादेश जारी नहीं हुग्रा है, केवल टेस्ट वर्क के चार्ज श्राफिसरों की जो संख्या जिलाधीश ने प्रस्तावित की थे। वह मजदूरों की कामों पर उपस्थित को ध्यान में रखते हुये श्रधिक थी, श्रत: उनकी मांग से कम इन पदों की स्वीकृति दी गई।

श्री रामसुन्दर पांडेय—क्या न्याय मंत्री जी बताने का कष्ट करेंगे कि कितने टेस्ट-वर्क्स के चार्ज श्राफिसर उस वक्त थे ग्रौर इस वक्त कितने हैं ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--६ की ही नियुक्ति हुई, कम कौन किया गया ?

श्री रामसुन्दर पांडेय—क्या मंत्री जी बताने का कच्ट करेंगे कि जिलाधीश ने कितनों की मांग की थी और सरकार ने कितनों की स्वीकृति दी ?

श्री हुकुम सिंह विसेन--१६ चार्ज श्राफिसरों की मांग की थी, ६ की संक्क्षन दी गई, क्योंकि ६ पर्याप्त थे, १६ बहुत ज्यादा थे ।

श्री रामसुन्दर पांडेय—नया सरकार यह बताने की छुवा करेनी कि जब जिले भर में १९ जगह काम हा रहे थे तो केवल ६ ही का ग्रादेश देने का कारण क्या थ। ?

श्री हुकुमसिंह विसेन—एक श्रफसर एक तहसील में ४-५ टेस्ट वर्श की निगरानी कर सकता है, इसी वजह से ६ रखे गये।

### बाढ़ नियंत्रण बोर्ड

\*\* - श्री केशव पांडेय (जिला गोरखपुर) -- तारांकित प्रश्न संख्या १६, दिनांक द-३-६० के उत्तर के संदर्भ मे क्या सरकार कृषा कर बतायेगी कि उसने राज्य की निष्यों को बाढ़ से नियंत्रित करने के लिये क्या-क्या योजना बनाकर केन्द्रीय बाढ़ नियंत्रण बोर्ड या केन्द्रीय नियोजन श्रायोग को श्रपना सुझाव भेजा है ?

श्री मह।वीरसिंह--ग्रभी तक कोई ऐसा सुझाव नहीं भेजा गया।

\*\*६--श्री केशव पांडेय--क्या सरकार कृपया बतायेगी कि राज्य की निदयों के बाह नियंत्रण पर प्रदेशीय बाढ़ नियंत्रण बोर्ड ने कितने धन के खर्च का सुझाव दिया है ?

श्री महावीरसिंह—इस सम्बन्ध मे राज्य बाढ़ नियंत्रण बोर्ड से ग्रशी कोई ग्रन्तिम सुझाव प्राप्त नहीं हुन्ना है।

श्री केशव पांडेय-क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेगे कि इस सम्बन्ध मे राज्य बाढ़ नियंत्रण बोर्ड मे कभी कोई बात उठाई गई थी या नहीं ?

श्री महावीर्रासह—स्थायी कार्यक्रम ग्रधीक्षण ग्रिभियन्ता, सिंचाई विभाग द्वारा बनाया गया था, वह पेश है बाढ़ नियंत्रण बोर्ड के सामने ।

श्री उग्रसेन--क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेगे कि कुछ प्रमुख बाढ़ नियंत्रण की योजनाओं का सर्वेक्षण कराया जा चुका है ग्रौर वह राज्य बाढ़ नियंत्रण बोर्ड के विचारागीन है ?

श्री महावीरसिंह—लिस्ट के लिये तो ग्रावश्यकता होगी देखने की, ऐसी तो धहुत सी चीजे विचाराधीन है।

श्री केशव पांडेय—क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेगे कि राज्य बाढ़ नियंत्रण बोर्ड ने राप्ती, घाघरा श्रीर नारायणी निव्यों की बाढ़ का नियंत्रण करने के लिये कुछ योजना ऐसी बनायी थी कि जिसमे कहा गया था कि इतने लाख एकड़ जमीन बाढ़ से बरबाद होती है श्रीर उसको बचाने के लिये जो उपाय होगा उससे कितना बचाव हो सकेगा ?

श्री महावीरसिंह—जैसा मैने श्रभी श्रर्ज किया, जो स्थायी कार्यक्रम बनाया गया है उसमें बहुत सी योजनाये सम्मिलित की गई है।

श्री मदन पांडेय (जिला गोरखपुर)—क्या सरकार को ज्ञात है कि उसके पास कई बार ऐसे सुझाव ग्राये हैं कि घाघरा ग्रीर राप्ती के नियंत्रण के लिये वहां पर बहुधंधी नदी घाटी योजना चालू की जाय ? पिंद हां, तो उस सम्बन्ध में सरकार क्या कार्यवाही कर रही है ?

श्री महावीरसिंह—मैने जैसा ग्रर्ज किया कि सुझाव ग्राये है, जिनके द्वारा ग्राये है वह भी बता दिया गया ग्रौर यह सब चीजें बाढ़-नियंत्रण बोर्ड के विचाराधीन है।

# लखनऊ में होली के भ्रवसर पर धमिकयों से भरे गुमनाम-पत्र

\*\*१०— कुंवर श्रीपालिंसह—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि क्या यह सत्य है कि लखनऊ के कितपय मोहल्लों में होली के ग्रवसर पर उपद्रव की धमकियां देने का पत्र किसी संस्था की ग्रोर से वितरित किया गया है ? यदि हां, तो ये लोग कौन है तथा इनके विरुद्ध क्या कार्यवाही की जा रही है ? गृह उपमंत्री (श्री रामस्वरूप यादव) — इस प्रकार के गुमनाम पत्र, राजाबाजार तथा बाग मक्का के निवासी दो व्यक्तियों को मिलने की सूचना प्राप्त हुई थी ।

जांच से मालूम हुम्रा कि ये गुमनाम-पत्र हिन्दू भ्रौर मुसलमानों के बीच वैमनस्य फैलाने के लिये भेजें गये थे । पत्र भेजने वालों का निश्चित पता न लग सका । परन्तु पुलिस ने होली के भ्रवसर पर काफी सतर्कता से काम लिया ।

कुंवर श्रीपार्लासह—क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जो धमकियों वाले पत्र थे उनमें क्या-क्या धमकियां थीं ग्रीर वह किन-किन के पास भेजे गये थे ?

श्री रामस्वरूप यादव—एक पत्र ब्रजबिहारीलाल रस्तोगी, राजाबाजार को लिखा गया था कि पिछले वर्ष श्रापकी बन्दूक से मेरा बहुत नुकसान हुग्रा है इसलिये इस वर्ष श्रापसे बदला लिया जायगा श्रौर दूसरा पत्र रामिकशोर, निवासी कोठी बाग मक्का को लिखा था कि श्रापके भाई श्रौर लड़के ने पिछले साल बहुत हिस्सा लिया जिससे मुझे बहुत नुकसान हुग्रा, इस साल उसका बदला लिया जायगा।

### तारांकित प्रक्न

[उत्तर प्रदेश विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली के नियम ३० (४) के अन्तर्गत]

## नेता जी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म-दिवस मनाने के लिए ग्रपील

\*१—श्री मदन पांडेय, श्री रामसिंह चौहान वैद्य (जिला ग्रागरा) तथा श्री कल्याणचन्द मोहिले (जिला इलाहाबाद)—क्या मुख्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि डाक्टर एस० पी० झा, एक्स-प्रेसीडेण्ट, फारवर्ड ब्लाक तथा श्रीमती राजकुमारी उपाध्याय, उपाध्यक्ष, भूतपूर्व फारवर्ड ब्लाक तथा उनके कुछ ग्रन्य साथियों ने इस बात की ग्रपील की है कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म दिवस २३ जनवरी, सरकार की तरफ से उसके महत्व को देखते हुये उपयुक्त ढंग पर मनाया जाना चाहिये ?

श्री रामस्वरूप यादव-जी हां।

\*२—श्री मदन पांडेय, श्री रामिंसह चौहान वैद्य तथा श्री कल्याणचन्द मोहिले—क्या सरकार को यह पता है कि पिक्चमी बंगाल तथा श्रन्य प्रदेशों में यह दिवस सरकारी ढंग पर सरकार की तरफ से मनाया जा रहा है ? यदि हां, तो उत्तर प्रदेश सरकार ने इस सम्बन्ध में क्या निक्चय किया ?

श्री रामस्वरूप यादव—-उत्तर प्रदेश शासन को नेता जी श्री सुभाषचन्द्र बोस के प्रति श्रद्धा है, किन्तु राष्ट्रीय पर्वों की संख्या श्रौर बढ़ाना कठिन है ।

श्री मदन पांडेय—क्या सरकार को ज्ञात है कि ग्रपने ही देश की बंगाल जैसी सरकार ने इसे राष्ट्रीय पर्व घोषित किया है, उसको ध्यान में रखते हुये यहां की सरकार को उसे राष्ट्रीय पर्व घोषित करने में क्या कठिनाई है ?

गृह मंत्री (श्री कमलापित त्रिपाठी)—हमारे यहां तीन ही राष्ट्रीय पर्व मनाये जाते हैं, एक दो श्रक्तूबर को, एक स्वतंत्रता दिवस श्रौर एक गणतंत्र दिवस। श्रब इनमें कोई वृद्धि करने की श्रभी कोई इच्छा नहीं है।

श्री शिवप्रसाद नागर (जिला खोरी)—न्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि इन तीन पर्वों के ग्रलावा जो ग्रौर बहुत से पर्व बहुत से नेताग्रों की जन्म तिथियों के ग्रवसर पर मनाये जाते हैं उसी प्रकार से क्या नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की जन्म तिथि मनाने के सम्बन्ध में सरकार विचार कर रही है ? यदि नहीं, तो इसके मनाये जाने में क्या ग्रापत्ति है ? श्री कमलापित त्रिपाठी—-ग्रापित कोई नहीं है। मनाई जानी चाहिये जैसे कि श्रौर नेताश्रों की मनाई जाती है।

श्री गौरीशंकर राय--जिस तरह से श्रन्य नेताओं के जन्म दिवस श्राफिशियल तरीके से मनाये जाते है उसी तरीके से इसको मनाने में क्या श्रापत्ति है ?

श्री कमलापित त्रिपाठी---ग्राफिशियल तरीके से तो एक बाल दिसव मनाया जाता है ग्रौर एक संयुक्त राष्ट्र दिवस मनाया जाता है । उनमें कोई छुट्टी नहीं होती, ग्राफिशियल तरीके से ऐसे ही मना दिये जाते है ।

श्री राजनारायण (जिला वाराणसी)—बाल दिवस कौन सी बला है ? इसमें क्या होता है श्रौर क्या मनाया जाता है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी—बाल दिवस १४ नवम्बर को मनाया जाता है। उस दिन पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्म दिवस भी है। ग्रौर संयुक्त राष्ट्र दिवस २४ ग्रक्तूबर को पड़ता है।

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी (जिला कानपुर)—क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जिस प्रकार से ग्रभी तीन राष्ट्रीय पर्व मनाये जा रहे हैं उनके साथ एक सुभाषचन्द्र बोस दिवस भी ग्रगर मना लिया जाय तो इसमें सरकार को क्या बाधा है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी—-श्रापत्ति की कोई बात नहीं है । राष्ट्रीय पर्वों के रूप में श्रभी तक इन्हीं तीनों दिवसों को मनाने का निश्चय है ।

श्री राजन।रायण — क्या सरकार स्पष्ट करेगी कि १४ नवम्बर पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्म दिवस के रूप में क्यों न मनाया जाय श्रौर बाल दिवस क्यों उसका नाम रखा गया है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी-केन्द्रीय सरकार की राय थी कि बाल दिवस मनाया जाय ।

\*३-४--श्री केलाशप्रकाश (जिला मेरठ)--[स्थगित किया गवा ।]

[१८ मार्च, १९६० के लिये निर्धारित तारांकित प्रक्त]

\*१--श्री लक्ष्मणराव कदम--[७ ग्रप्रैल, १६६० के लिए स्थगित किया गया।]

रायल होटल के नवीन विधायक निवास में चीड़ के किवाड़

\*२—श्री लक्ष्मणराव कदम—क्या सरकार को पता है कि रायल होटल के नये सदस्य निवासों के तीसरी मन्जिलों के कमरों में बीच में लकड़ी के Pressed बुराद के ऊपर दोनों तरफ सरेस से चियकाये हुये चीड़ की लकड़ी के शिटों के किवाड़ लगाये जा रहे हैं? यदि हां, तो सागीन श्रावा श्राय मजबून लकड़ी के किवाड़ों की श्रवेक्षा उक्त कियाड़ों के लगवाये जाने का क्या कारण है और सागीन के किवाड़ों के मुकाबले में उनका क्या मूल्य है ?

श्री रामस्वरूप यादव — इन कमरों में लगाये जाने वाले दरवाजे Sitaboard Flush door कहलाते हैं जो कि श्रमनी सुन्दरता एवं मजबूती के कारण प्रसिद्ध होते जा रहे हैं। इनके श्रन्दर बुरादा नहा होता बल्कि ठोस लकड़ी के दुकड़े होते हैं इन दरवाजों को एक खास तरीके से बनाया जाता है। इन दरवाजों का दाम ४.० रुपये प्रति वर्ग फुट है तथा सागीन का ४.७५ रुपये प्रतिवर्ग फुट है।

\*३—श्री लक्ष्मणराव कदम—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि क्या उक्त प्रकार के किवाड़ों को दूनरी इमारतों में कहीं प्रयोग (experiment) किया गया है? यदि हां, तो कहां-कहां, किन-किन इमारतों में तथा कब? श्री रामस्वरूप यादव--इस प्रकार के दरवाजे लखनऊ में नीचे लिखी इमारतों में लगाये गये हैं:

 १ — स्पोर्ट स्टैडियम
 १६५६

 २ — सचिवालय के क्वार्टर, महानगर
 १६५६

 ३ — ग्रफसरों के मकान, दिलकुशा
 १६५६

 ४ — सचिवों के मकान, माल एवन्य
 १६५६

इसके श्रातिरिक्त इनका इस्तेमाल दिल्ली, कलकत्ता , बम्बई तथा श्रन्य शहरों की बड़ी-त्रड़ी इमारतों में हुन्ना है।

श्री गोविन्दिसिंह विष्ट--क्या मंत्रो जो के पास ऐसे म्रांकड़े हैं कि साधारण लकड़ी लगाने से कितना कम खर्च होता ?

श्री रामस्वरूप यादव-- सागौन ग्रौर शीशम की लकड़ी कीमती होती है।

श्री प्रतापसिंह--इन दरवाजों की कीमत क्या है ?

श्री उपाध्यक्ष--उन्होंने ७५ रुपये की दरवाजा कहा।

श्री रामस्वरूप वर्मा (जिला कानपुर)—क्या सरकार ने कोई एक्सपर्ट राय ली है कि ये किवाड़ सागौन श्रौर शोशम के किवाड़ों से कितने कम चलेंगे ?

श्री कमलापित त्रिपाठी—ये कमरे एक्सपर्ट ही बनाते हैं श्रीर पी० डब्लू० डी० के श्रवीन बनते हैं। इमारत बनाने में वे विशेष ज्ञान रखते हैं, ऐसा मान कर ही उनकी काम दिया जाता है।

### बाछेमई निवासियों की सी० भ्राई० डी० इन्स्पेक्टर, श्री भ्रतर्रासह के विरुद्ध शिकायत

\*४—श्री गनेशचन्द्र काछी (जिला मैनपु ी)—क्या सरकार बतायेगी कि वर्तमान सी० ग्राई० डो० इन्स्पेक्टर, ग्राई० बी० ब्रांच, ग्रागरा एवं कुछ ग्रन्य पुलिस ग्रधिकारियों, जो जिला मैनपुरी के निवासी हैं, के विरुद्ध ग्राम बाछेमई, थाना सिर्सागंज, जिला मैनपुरी के निवासियों की ग्रोर से कोई शिकायती—पत्र दिनांक ५ ग्रक्तूबर, १६५६ तथा ३१ दिसम्बर, १६ १६ तथा उसके बाद दो या तोन रिमाइन्डर मुख्य मंत्री तथा ग्राई० जी० पुलिस को प्राप्त हुये ?

श्री रामस्वरूप यादव--श्री ग्रतर्रात्तह, इन्सपेक्टर सी० ग्राई० डी०, ग्राई० बी० बांच के विरुद्ध केवल दो शिकायती पत्र दिनांक ३१-१२-५६, ४-१२-५८ के प्रान्त हुए थे। दिनांक ५-१०-५६ का कोई शिकायती-पत्र प्राप्त नहीं हुन्ना।

\*५—श्री गनशचन्द्र काछी—प्रदि हां, तो क्या सरकार बतायेगी के उक्त पत्रों में क्या-क्या शक यतें श्री स्रो . उन पर क्या कः र्यवाहो की गई ?

श्री रामस्वरूप यादव--शि हायतों की सूची संलग्न है :

इन म्रारोपों के मंबंब में सो० म्राई० डी० के उच्च म्राधिकारियों द्वारा जांच की गई परन्तु भ्रारोप सही नहा पर्येगये।

(देखि रे नत्थी 'क' ग्रागे पृष्ठ ४२३ पर )

श्री गनेशचन्द्र काछी --क्या सरकार बताने की कृया करेगी कि जांच खत्म होने के बाद एक श्रवबार "देवा-सखा" मैनपुरी ने यह लिखा है कि यदि ये श्रारोप गलत हों तो मुझ पर मुकदमा चलाया जाय ?

श्री उपाध्यक्ष -- श्राप इसकी सूचना, श्रलग प्रश्न के रूप में, मंत्री जी की दे दें।

### लड़िकयों की शिक्षा के लिए केन्द्रीय योजना का कार्यान्वयन

\*६—श्री ताराचन्द माहेश्वरी (जिला सीतापुर)—क्या गृह मंत्री बताने की कृषा करेंगे कि लड़िकयों की शिक्षा के प्रसार ग्रौर महिला ग्रध्यापिकाग्रों के प्रशिक्षण के लिये केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रवर्तित किसी योजना पर, वित्तीय वर्ष १६५६—६० मे राज्य सरकार द्वारा कार्यान्वित किये जाने के प्रश्न पर विचार किया जा रहा है ?

शिक्षा उपमंत्री (श्री दीनदयालु शास्त्री)—प्रश्नगत योजना इस वर्ष कार्यान्वित की जा चुकी है

\*७—श्री ताराचन्द माहेश्वरी—यदि हां, तो क्या गृह मंत्री बताने की कृपा करेगे कि उक्त योजना के श्रन्तर्गत जिन उपयोजनाश्रों को वित्तीय वर्ष १९४९-६० में कार्यान्वित किया जायगा उन पर कितना रुपया खर्च होगा तथा इस योजना की मुख्य-मुख्य बाते क्या है ?

श्री दीनदयालु शास्त्री--योजना पर कुल १४ लाख रुपये का व्यय स्वीकार किया जा चुका है।

उप योजनाग्रों का विवरण संलग्न है।

(देखिये नत्थी 'ख' म्रागे पृष्ठ ४२४ पर )

श्री ताराचन्द माहेरवरी—क्या इस परिवर्तित योजना में ६ से १४ वर्ष के सभी बच्चों के लिये निःशुल्क एवं ग्रनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था है ? यदि हां, तो यह कब से कार्यावित की जायगी ?

श्री कमलापित त्रिपाठी—निःशुल्क है, लेकिन श्रनिवार्य नहीं है। श्रनिवार्य करें या नहीं श्रीर श्रगर करें तो किस सीमा तक वह संभव है, यह प्रश्न तीसरी योजना में विचाराधीन है, जिसके विषय में बजट के श्रवसर पर कह चुका हूं।

श्री मोतीलाल श्रवस्थी—क्या श्रनिवार्य शिक्षा में लड़िकयों के लिये कुछ परिवर्तन करने की सरकार सोच रही है ?

श्री कमलापित त्रिपाठी—प्राइमरी शिक्षा सारे प्रदेश में श्रनिवार्य नहीं है। श्रनि-वार्य करने के मानी है कि ६ वर्ष से ११ वर्ष तक के सभी लड़के स्कूलों मे जावे श्रौर जो न भेजे उन पर मुकदमा चले। यह बात लागू नहीं है।

श्री ताराचन्द माहेरवरी—क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेगे कि प्राथिमक स्कूलों ग्रौर जूनियर हाई स्कूलों की ग्रध्यापिकाग्रों के लिये बनवाये जा रहे ३४८ भवनों का, ग्रध्यापिकाग्रों से रहने का, शुल्क तो नहीं लिया जायगा?

श्री कमलापति त्रिपाठी—में तफसील से इस समय नहीं बता सकता। लेकिन नियमों के ग्रनुसार सम्भवतः कुछ लिया जाता है।

श्री रामसूरत प्रसाद (जिला गोरखपुर)—जो योजना लागू की गयी है इसमें महिलाश्रों के प्रशिक्षण के लिये प्रत्येक जिले में नार्मल स्कूल और कमिश्नरी हेडक्वार्टर पर जे० टी० सी० स्कूलों की व्यवस्था है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी--योजना बजट में भी वी हुयी है। हर जिल में खोलने की व्यवस्था नहीं है। ४८ नये रकूलों में ६ बालिकाग्रों के लिये है।

\*८-६--राजा यादवेन्द्रदत्त दुबे (जिला जौनपुर)--[माननीय सदस्य की प्रार्थन? पर २४ मार्च, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।

प्रश्नोत्तर ३२७

### कन्नौज के एक बालिका विद्यालय से संगीत भ्रध्यापक को हटाना

\*१०—श्री मोतीलाल श्रवस्थी—क्या गृह मंत्री यह बताने की हुना करेगे कि क्या कन्नौज के कुछ बालिकाओं के माध्यमिक विद्यालयों के संगीत श्रध्यापकों द्वारा उन्हें किसी राजाज्ञा के आधार पर इस कारण हटा दिये जाने के सम्बन्ध में कि वह पुरुष वर्ग के है, जिला इन्स्पेक्टर आक स्कून्स, फर्रबाबाद के पास कोई रिश्रेजेन्टेशन भेजा गया है ? यदि हां, तो उस पर क्या कार्यवाही की गयी है ?

श्री दोनदयालु शास्त्री—जी हां, केवल एक विद्यालय के एक श्रध्यापक को निकाला गया था परन्तु श्रध्यापक का कोई रिश्रेजन्टेशन जिला विद्यालय निरीक्षक, फर्रेलाबाद को नहीं मिला।

श्री मोतीलाल स्रवस्थी—क्या कथित स्रध्यापक ने शिक्षा सिचव के पास इस तरह का स्रावेदन-पत्र भेजा है कि इंटरमीडियेट एजू केशन ऐक्ट के स्रवीन २४ नवम्बर, १६५६ को जारी हुए विनियमों के २१ वे विनियम में टिप्पणी लिखी है कि ३१ मार्च, १६५७ के पूर्व लड़ कियों के स्कूल में कार्य करनेवाले पुरुष संगीत शिक्षक किसी भी शिक्षा संस्था में संगीत शिक्षकों के पदों के पात्र समझे जावेगे; किन्तु प्रतिबन्ध यह है कि नियुक्ति के समय उनमे बोर्ड द्वारा निर्धारित न्यूनतम स्रह्ताये हों स्रौर . . . . . .

श्री उपाध्यक्ष--श्राप प्रश्न पूछें।

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी—थोड़ा ही था। इस टिप्पणी को देखते हुए क्या सरकार ने उनके प्रार्थना-पत्र पर कोई कार्यवाही की हैं ?

श्री दीनदयालु शास्त्री--एक सज्जन श्री गादे पढ़ाते थे जिनकी सेवार्ये श्रस्थायी श्री । प्रबन्ध-कर्ता ने उन्हें हटा दिया।

श्री उपाध्यक्ष--उन्होंने पूछा है कि सचिव के पास शिकायत श्राई श्रौर क्या कार्यवाही की गयी।

श्री दीनदयालु शास्त्री—हमने जवाब दे दिया कि हमको कोई श्रनौचित्य प्रतीत नहीं होता ।

श्री मोतीलाल श्रवस्थी—क्या मंत्री जी उनकी सन् १९५७ से पहले की नियुक्ति को देखकर श्रीर यह देखते हुए कि ३ वर्ष सेवा में वह रह चुके है, इस पर फिर से विचार करने की कृपा करेंगे ?

श्री कमलापित त्रिपाठी—श्रीमन्, यह एक नीति का प्रश्न है श्रीर नीति ऐसी है कि जो बालिका विद्यालय है उनमें कोई पुरुष श्रध्यापक न रहे श्रीर यथासंभव स्त्री श्रध्यापिकाश्रों को रखा जाय श्रीर संगीत इत्यादि सिखाने के लिये भी यदि स्त्री श्रध्यापिकाएं मिलती हों तो उन्हीं को रखा जाय, ऐसा शासन का विचार था। श्री गादे जी संगीत के श्रस्थायी श्रध्यापक थे। वहां के प्रबन्धकों को प्रशिक्षित महिला श्रध्यापिका मिल गयी। इसलिए उन्होंने उनकी सेवाश्रों को नोटिस देकर समाप्त कर दिया श्रीर शासन को भी उनकी सेवाश्रों के समाप्त करने में कोई श्रनीचित्य दिखाई नहीं दिया।

# कानपुर जिले के परिवाद ग्रधिकारी को दिये गये परिवाद-पत्र

\*११—श्री मोतीलाल ग्रवस्थी—क्या गृह मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि जिला कानपुर में कितने परिवाद (Complaints) परिवाद ग्रिशकारी [Dy. S. P.(Complaints)] के पास सन् १९५७-५८ व १९५८-५९ में दाखिल हुए ग्रीर उनमें कितने में कार्यवाही हुई ?

श्री रामस्वरूप यादव—जिला कानपुर मे परिवाद श्रिधकारी के पास वित्तीय वर्ष १६५७-५८ तथा १६५८-५६ मे कमशः २०७ तथा १५७ परिवाद-पत्र पहुंचे । उन सभी मे जांच की गयी श्रौर उनमे से क्रमशः ५६ तथा ४० के श्राधार पर संबंधित श्रिधकारियों के विरुद्ध कार्यवाही की गयी ।

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी—क्या मानतीय मंत्री जी यह बतायेगे कि १६५८-५६ में जो ५६ ग्रीर ४० पर कार्यवाही की गयी, इन केसेज में पुलिस के संबंध में कितने हैं ग्रीर उनके संबंध में क्या-क्या कार्यवाही की गयी है ?

श्री रामस्वरूप यादव --श्रीमन्, ४३ दोषी कर्मचारी दंडित हुए, उनका विवरण इस प्रकार है---

सब- इंसपेक्टर	हेड- कानिस्टिबिल	कानिस्टिबल रिमार्क्स	
0	<u> </u>	३ बरखास्त किये गये ।	-
१	¥	प्त तनज्जुल किये गये ।	
२	o	<ul> <li>को इचार्ज थाना से श्रफसर दोयम के स्था पर तनज्जुल किया।</li> </ul>	न
o	8	प्ट ईमानदारी का प्रमाण-पत्र रोका गया।	
3	Ę		
<b>5</b>	<b>ર</b>	<ul><li>६ दुराचरण दिया गया ।</li><li>चेतावनी दी गयी ।</li></ul>	

तेरह कानिस्टिबलों को ग्रर्वली के रूप में दलेल दी गयी। १ कानिस्टिबलों को, जिन जारों पर उनके जिल्लाक को जार करें ने जार कराया कि गया। पुलिस को दलेल दी गयी।

यह तो सन् १९४८ का बताया। १९४९ में इसी तरह से भिन्न-भिन्न प्रकार की सजाये दी गर्यी ।

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी—क्या माननीय मंत्री जी यह बतायेंगे कि यह जो कार्यवाही की गयी उनमें कोई ऐसा भी कर्मचारी है जो गजटेंड श्राफीसर हो ग्रौर जिसको डिसमिस किया गया हो या सस्पेंड गिया गया हो ?

श्री कमल।पति त्रिपाठी--डी० एस०पी० कंपलेन्ट्स के पास गजटंड श्राफीसर्स की शिकायत नहीं जाती है। प्रश्नकर्ता ने डी० एस० पी० कंपलेन्ट्स के बारे में पूछा था लेकिन गजटेड श्राफीसर्स उनके ज्यूरिसडिक्शन के बाहर है।

### श्राजमगढ़ जिले के प्रधानाध्यापक श्री भागवतलाल व श्री सरजूसिंह के प्रार्थना-पत्र

\* १२—श्री रामसुन्दर पांडेय - न्क्या गृह मंत्री बताने कि पा करेंगे कि ग्राजमगढ़ जिले के जूनियर हाई स्कूलों के कौन-कौन ज्येष्ठ प्रधान ग्रथ्यापक ग्रगस्त, सन् १६४५ से १६५० के बीच सब-डिप्टी इन्स्पेक्टर के पद पर काम करते रहे ?

श्री दीनदयालु शास्त्री--(१) श्री भागवतलाल ।

(२) श्री सरजू सिंह।

\*१३—श्री रामसुन्दर पांडेय—क्या गृह मंत्री बताने की कृषा करेगे कि उक्त वर्षीं में काम करने वाले उमेछ प्रधानाध्यापक जो सब-डिप्टी इन्स्पेक्टर के पद पर थे उनमें से किनको-किनको वार्षिक वृद्धि नहीं मिली है और क्यों ?

श्री दीनदयालु शास्त्री-- किसी को नहीं।

\*१४—श्री रामसुन्दर पांडेय—क्या स्वायत्त द्यासन मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि क्या यह सही है कि उक्त पदों पर काम करने वाले व्यक्तियों ने वार्षिद वृद्धि हेतु सन् १९४९ से श्राज तक कई बार जिला विद्यालय निरीक्षक, श्राजमगढ़; उप शिक्षा संचालक, गोरखपुर एवं वाराणसी मण्डल को भेजे, पर श्रव तक कोई सुनवाई नहीं हुई है ?

श्री दीनदयालु शास्त्री---जि हां। प्रार्थनत-पत्र प्राप्त हुए ग्रौर उन पर कार्यवाही . हो रही है।

श्री रामसुन्दर पांडेय—-क्या भाननीय मंत्री जी यह बतायेगे कि १५ साल तक वार्षिक बढ़ोत्तरी न होने का कारण क्या है ?

श्री दीनदयालु शास्त्री-- उसका कारण यह है कि दोनों सज्जनों ने जो बिल भेजें वे सही नहीं भेजें ग्रौर वे ग्रभी तक भी सही नहीं बन सके हैं।

भी रामसुन्दर पांडेय— क्या उन लोगों को यह बतलाया गया कि भ्रापके बिल गलत है इसलिए उनको सुधार दीजिये ?

श्री कमलापित त्रिपाठी—श्रीमन्, मै कृतज्ञ हूं प्रक्ष्मकर्ता महोदय का कि उन्होंने इसकी स्रोर हमाराध्यान श्रक्षित किया। इस दिषय मे क्ही न वहीं भूल मालूम पड़ती है कि श्रभी तक उन को १५ वर्ष मे प्रनोशन नहीं मिल पाया। में इसकी जांच कर रहा हूं।

\*१५-१६--श्री प्रताप सिंह--[७ ब्रक्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।] इटावा जिले में चकों पर श्रिधकार

\*१७--श्री भजनलाल (जिला इटावा) (ग्रनुपस्थित)--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि तहसील ग्रौरेया, जिला इटावा के श्रन्तर्गत १२ सितम्बर, १९४६ से २० दिसम्बर, १९४६ तक कुल कितने ग्रामों में चकों पर कब्जा दिया गया ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--इस म्रविध में जिला इटावा की तहसील ग्रौरैया के कुल ७ ग्रामों में चकों पर कब्जा दिलाया गया था।

\*१८--श्री भजनलाल (ग्रनुपस्थित)--क्या सरकार कृपया बतायेगी कि उपर्युक्त तहसील में ग्रौर कितने ग्रामों में चकों पर कब्जा ग्रब तक नहीं दिया गया है ?

श्री हुकुम सिंह विसेन--उपर्युक्त तहसील में दिनांक ३१ जनवरी, १९६० तक द्र प्रामों में चकों पर कब्जा नहीं दिलाया गया था।

\*१६--श्री भजनलाल (ग्रनुपस्थित)--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जिला इटावा के ग्रन्तर्गत ग्रब तक १२ सितम्बर, सन् १६५६ से कितने ग्रामों में चकों पर कब्जा दिया गया ?

श्री हुकुम सिंह विसेन—१२ सितम्बर, १९४९ से ३१ जनवरी, १९६० तक जिला इटावा के कुल १३ ग्रामों में चकों पर कब्जा दिलाया गया था।

### उन्नाव जिले में स्वास्थ्य विभागान्तर्गत मैटरनिटी सेण्टर तथा श्रक्तूबर के वेतन—श्रादेश का पालन

\*२०--श्री भीखालाल (जिला उन्नाव) (ग्रनुपित्यत)--त्रया सरकार बताने की कृषा करेगी कि मेटरितटी सेन्टर, नवाबगंज, जैतीपुर, सोहरामऊ, चमरौली जिला उन्नाव मे पिछली बार कब दवाइयों की सप्लाई की गयी थी ?

### श्री हुकुम सिंह विसेन--

१—-न्वाबगंज	• •	• •	• •	२२-१-१६६०
२—जैतीपुर	• •	• •	• •	११–४–१९५६
३सोहरामऊ	• •	• •	• •	3239-5-5
४चमरौली	••	• •	• •	8X-8-8EXE

\*२१—-श्री भीखालाल (भ्रनुपस्थित)—-त्रया सरकार बताने की कृपा करेगी कि उन्नाव जिले में जुनाई व भ्रास्त, १९५९ में कितनी मिडवाइफों के तबादले किस स्थान से कित स्थान को किये गये ?

श्री हुकुर्मीसह विसेन--कुल दो निडवाइफों के तबादले किये गये थे-एक गोसाईगंज (लखनऊ) से नवाबगंज (उन्नाव) व दूसरी नवाबगंज (उन्नाव) से सोहरामऊ (उन्नाव)।

\*२२--श्री भीखालाल (ग्रनुपस्थित)—नया सरकार बताने की कृपा करेगी कि उसने इस प्रकार का ग्रादेश जारी किया था कि ग्रन्तूबर, सन् १९५९ का वेतन नान-गजटेड कर्मचारियों को २८ ग्रन्टूबर को बांट दिया जाय? यदि हां, तो क्या उन्नाव जिले में सार्वजितक स्वास्थ्य विभाग ने इस ग्रादेश का पालन किया? यदि नहीं, तो क्यों?

श्री हुकुर्मासह विसेन—जी हां, सरकार ने ऐसी श्राज्ञा जारी की थी। जहां तक उन्नाव जिले के जन स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों का सम्बन्ध है, केवल थोड़े से कर्मचारियों को छोड़कर सब कर्मचारियों को उसी तिथि को वेतन मिल गया था।

# इटावा जिले में भारतीय दण्ड विधान की धारा ११० के कथित मुकदमे

\*२३—-श्री भुवनेशभूषण शर्मा (जिला इटावा)—-क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जिला इटावा में सन् १९५८ तथा सन् १९५९ में थानेवार कितने व्यक्तियों पर ताजीरात हिन्द की घारा ११० में मुकदमें चलाये गये?

## श्री रामस्वरूप यादव-किसो पर भी नहीं।

\*२४—श्री भुवनेशभूषण शर्मा—स्या सरकार यह भी बताने की कृवा करेगी कि जो मुकदमें ताजीरात हिन्द की घारा ११० में सन् १६५८ तथा १६५८ में जिला इटावा की पुलिस ने चलाये उनमें कितने ग्रभियुक्तों को ग्रवालत से वारन्ट लेकर गिरफ्तार कर जेल भेजकर मुकदमा चलाया गया ग्रौर कितने ऐसे ग्रभियुक्त है जिन पर उपरोक्त घारा में मुकदमा चलाया गया पर वारन्ट लेकर गिरफ्तार नहीं किया गया ?

## श्री रामस्वरूप यादव—प्रक्त नहीं उठता।

श्री गोविन्दिंसह विष्ट--- ज्या माननीय मंत्री जी यह बतायेंगे कि इस दौरान में जाब्ता फौजदारी की धारा ११० के मातहत कोई मुकदमा चलाया गया ?

श्री रामस्वरूप यादव—श्रीमन्, ताजीरात हिन्द के बारे में प्रक्त किया गया था, उसी का उत्तर भो दिया गया था।

प्रक्तोत्तर ३३१

### जमींदारी उन्मूलन के फलस्वरूप शेष लगान की वसूली

\*२५—श्री भुवनेशभूषण शर्मा—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जमीं दारी उन्मूलन के पश्चात् उत्तर प्रदेश के किसानों से लगान वसूल किया गया है उसमें भूल से कुछ रुपये लगान के कम वसूल होते रहे और सन् १६५६ में किसानों को जो लगान श्रदा करने के सूचना-पत्र दिये गये उनमें वह बकाया रकम लगान की जोड़ दी गयी है ?

श्री महावीरप्रसाद शुक्ल—जमींदारी उन्मूलन के पश्चात् भूमि-सम्बन्धी ग्रभिलेखों में काफी परिवर्तन करने पड़े जिनके कारण कुछ अशुद्धियां रह गयीं और सम्बन्धित काश्तकारा से कम लगान वसूल होता रहा ग्रथवा किसी भू-भाग का लगान वसूल होने से ही रह गया। इन ग्रशुद्धियों को शुद्ध करने का प्रयत्न किया गया है ग्रौर जिन लोगों पर मालगुजारी बकाया निकली, उन्हें सूचित कर दिया गया है व किया जा रहा है। इस बकाया को पूरा इसी साल वसूल नहीं किया जा रहा है, वसूली किस्तों में होगी ग्रौर पहली किस्त में वर्तमान मांग के ग्रलावा केवल एक साल का ही बकाया वसूल किये जाने के ग्रादेश है।

श्री भुवनेशभूषण शर्मा—क्या सरकार बतलाने की कृपा करेगी कि यह जिन लोगों की मालगुजारी बकाया निकली, ऐसे कितने व्यक्ति उत्तर प्रदेश में है श्रीर ऐसी कितनी धनराशि है ?

श्री हुकुर्मासह विसेन-—बड़ी लम्बी तादाद है, बड़ी रकम है, उसका डिटेल हम इस वक्त नहीं बतला सकते।

\*२६-२७--श्री श्रमरनाथ (जिला गोरखपुर)--[१ अप्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किये गये ।]

## सगड़ी तहसील में ग्रायुर्वेदिक ग्रौषघालय खोलने की प्रार्थना

\*२८—श्री मुक्तिनाथ राय (जिला श्राजमगढ़) (श्रनुपस्थित)—क्या न्याय मंत्री बताने की कृपा करेगे कि १६५८ व १६५६ में श्राजमगढ़ जिले की सगड़ी तहसील में दिवारा श्राराजी श्रमानी व दिवाराजदीद (जोड़बाबर) में एक-एक श्रायुर्वेदिक डिस्पेन्सरी खोलने के निमित्त सरकार को श्रावेदन-पत्र दिया गया था?

श्री हुकुर्मासह विसेन--जी हां।

\*२६—श्री मुक्तिनाथ राय (श्रनुपिस्थित)—यदि हां, तो उस पर श्राज तक क्या कार्यवाही की गयी?

श्री हुकुर्मासह विसेन—इस सम्बन्ध में श्राख्या मांगी गयी है । बोर्ड की परीक्षा में विद्यार्थियों की श्रसफलता में वृद्धि

श्री मोतीलाल श्रवस्थी- - उथा गृह मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि बोर्ड ग्राफ हाई स्कूल ऐण्ड इन्टरमीडिएट एजूकेशन, यू० पी०, इलाहाबाद द्वारा संचालित परीक्षाग्रों में पिछले पांच वर्षों में कितने विद्यार्थी (१) पंजीकृत हुए, (२) परीक्षाग्रों में प्रविष्ट हुए ग्रौर (३) उत्तीर्ण हुए?

श्री दीनदयालु शास्त्री---सूचना संलग्न तालिका में दी गयी है। (देखिये नत्थी 'ग' ब्रागे पृष्ठ ४२५ पर)

श्री मोतीलाल श्रवस्थी—क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि सन् ४८ में हाई स्कूल परीक्षा में करीब १ लाख ६७ हजार विद्यार्थी पंजीकृत हुए, जिनमें से ६८ हजार उत्तीर्ण हुए श्रौर सन् ५६ में २ लाख से कुछ श्रिषक विद्यार्थी पंजीकृत हुए, जिनमें से केवल ८७ हजार विद्यार्थी ही उत्तीर्ण हुए। इन दोनों सालों का मुकाबला किया जाय तो ४८ से ४९

में पंजीकृत विद्यार्थियों की संख्या श्रिधिक होते हुए भी उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या कम है। ऐसी हालत में क्या सरकार यह बतलाने की कृपा करेगी कि ग्रिधिक संख्या में विद्यार्थियों के श्रनुत्तीर्ण होने का कारण क्या यह नहीं है कि या तो पर्चे कठिन थे या वे उनके पाठचक्रम के बाहर के थे ?

श्री कमलापति त्रिपाठी--मान्यवर, श्रगर श्रापने कुछ समझा हो तो बतला दें।

श्री उपाध्यक्ष—उनका मतलब यह है कि सन् ५६ में विद्यार्थियों के ज्यादा फेल होने का कारण क्या यह है कि पर्चे कठिन थे या ऐसे क्वेश्चन्स थे जो पाठश्वक्रम से नहीं थे ?

श्री दीनदयालु शास्त्री--जैसा ग्रवस्थी जी का सवाल है, वेसे ही वे प्रश्न भी थे।

श्री उपाध्यक्ष—-ग्रगर गृह मंत्री जी को जानकारी हो तो बतला दे कि क्या ये कारण हैं जिनसे लड़के ज्यादा फेल हुए , नहीं तो कह दें कि यह गलत है।

श्री कमलापित त्रिपाठी—विद्यार्थियों के फेल होने के कारण तो कई हो सकते हैं। श्रिधक-तर विद्यार्थी श्रंग्रेजी श्रीर गणित में फेल होते हैं। सम्भव है कि श्रंग्रेजी का स्टेन्डर्ड कुछ नीचे गिर रहा हो श्रीर लड़के इंटरमीडिएट स्टेन्डर्ड तक उसे पिक श्रप नहीं कर सकते हों, यह भी उसका एक कारण हो। गणित में भी काफी लड़के फेल होते हैं; फिर यह भी सम्भव है कि लड़कों की साधारण तादाद श्राज स्कूलों में बढ़ रही है श्रीर जो विद्यालय है, वे पूरी तरह से साधन सम्पन्न न हो, जिससे ठीक तरह से शिक्षण का काम चल सकता हो, यह भी एक कारण हो सकता है। हम इसकी छानबीन करने की चेष्टा कर रहे हैं। यह भी कारण विखाई देते हैं कि विद्यार्थी साधनहीं हैं, संस्थाश्रों के पास भी साधनों की कमी है, श्रध्यापक भी ठीक नहीं है कि ठीक से पढ़ाई हो सके, इन सब बातों से जो स्तर गिरता है उसी कारण से वह फेल श्रधिक होते हैं।

श्री गोविन्दिंसह विष्ट—क्या इन कारणों में से एक कारण यह भी है कि जब चूंकि ग्रध्यापकों के लिये विधान सभा भी खुल गयी है इसलिये वहां के जो ग्रच्छे ग्रध्यापक थे वे सब दलों में घुस गये ग्रौर ग्रब वहां ठीक प्रबन्ध शिक्षा का नहीं रहा ?

### (हंसी-, उत्तर नहीं दिया गया)

श्री गौरीशंकर राय-परीक्षा फलों की इस उत्तरोत्तर ध्रधोर्गात को रोकने के लिये सरकार क्या प्रयत्न करने जा रही है?

श्री कमलापित त्रिपाठी—सहसा तो मै श्रिधिक नहीं बता सकता लेकिन यह बहुत बड़ा प्रश्न है और विद्यार्थियों की परीक्षा में श्रसफल होने की संख्या इस तरह से बढ़ना कोई श्रन्छी बात नहीं है, उसको रोकने के विषय में बहुत से सुझाव है, उन पर यहां की सरकार श्रोर केन्द्रीय सरकार के एडवाइजरी बोर्ड के द्वारा विचार हो रहा है।

श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या यह सही है कि उत्तरोत्तर परीक्षार्थियो की श्रसफलता में जो वृद्धि हो रही है वह खास तौर से श्रंग्रेजी में है जिसके पढ़ाने वाले श्रध्यापक काफी उपलब्ध है, तो क्या सरकार इसके कारणों पर विचार करेगी?

श्री कमलापित त्रिपाठी—मैने निवेदन किया है कि ग्रंग्रेजी की जो पढ़ाई नीचे से होती है उसमें ग्रौर इंटरमीडियेट में जो ग्रंग्रेजी विद्यार्थियों को लेनी पडती है, उसमें कुछ सामंजस्य कम है; ग्रौर यह बात सही है कि बच्चे जो ग्रसफल होते हैं उनमें ग्रंग्रेजी में ग्रसफल होने वालों की तादाद सब से ज्यादा है। यह प्रक्ष्म केन्द्रीय सरकार के एडवाइजरी बोर्ड के सामने हैं कि इन्टरमीडिएट एजूकेशन में कैसे सुधार किया जाय, जिससे यह चीज रोकी जा सके।

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी -- प्रश्न यह है कि सन् ५६ में ५८ के मुकाबले में जो विद्यार्थी प्रविष्ट हुए उनकी संख्या भी ग्रधिक है ग्रौर पास होने वाले विद्यार्थियों को संख्या पिछने माल से कम है, यह उल्टा कम इसी साल होने का क्या कारण है?

श्री उपाध्यक्ष--काफी स्पष्टीकरण हो चुका।

## उर्दू शिक्षा के लिए पृथक अनुदान देने की प्रार्थना

\*३१--श्री स्रमरनाथ--क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि सरकार ने उर्दू शिक्षा के लिये खुले स्कूलों को वित्तीय वर्ष १६५६-५७, १६५७-५८ तथा १६५८-५६ में कुल कितना स्रनुदान दिया है, जिसमें शिक्षा तथा भवन निर्माण के सम्बन्ध में स्रलग-स्रलग कितनी रकम दी गयी है ?

श्री दीनदयालु शास्त्री--उर्दू शिक्षा के लिये शासन द्वारा कोई पृथक स्कूल नहीं खोले गये हैं, ग्रतः ग्रनुदान देने का प्रश्न नहीं उठता।

श्री जगन्नाथ लहरी (जिला ग्रागरा)—क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि एक निश्चित संख्या में उर्दू के विद्यार्थियों के किसी स्कूल में प्रविष्ट होने पर, वहां जो उनकी उर्दू की पढ़ाई होती है, उसके लिये राज्य सरकार की तरफ से क्या ग्रनुदान दिया जाता है?

श्री दीनदयालु शास्त्री--ग्रन्तिरम जिला परिषद् ऐसे स्कूलों की व्यवस्था करती हैं, जहां उर्दू के विद्यार्थी ग्राना चाहते हैं ग्रौर कहीं पर प्रबन्ध नहीं होता तो हम ग्रन्तिरम जिला परिषद् को ग्रनुदान देते हैं ग्रौर वे स्कूलों को चलाती हैं।

श्री ग्रमरनाथ—क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि उर्दू शिक्षा के लिये पृथक से स्कूल न खोलने का क्या कारण है ग्रौर जो स्कूल निजी तौर से उर्दू शिक्षा के लिये खुले है उनको श्रनुदान न देने का क्या कारण ह ? क्या भविष्य में प्रदेश की इस जरूरत को देखते हुए सरकार की तरफ स श्रनुदान दिये जायंगे ?

श्री कमलापित त्रिपाठी—ग्रलग से स्कूल खोलने का प्रश्न इसलिये नहीं उठता कि हमारे यहां शिक्षा का एक कम है, बेसिक पाठशालायें हमारे यहां खुलती हैं। ग्रब उनमें यदि कहीं हमारे बच्चों की तादाद ऐसी है कि जो उर्दू पढ़ना चाहते हैं, जिनकी मातृभाषा उर्दू हो, तो उनका प्रबन्ध हम उसमें कर देते हैं। इसके ग्रलावा जो हमारे इस्लामिया स्कूल ग्रौर मकतब चलते है वह तो मौजूद हैं ग्रौर उन्हें सरकार की तरफ से कई लाख रुपया ग्रान्ट भी मिलती है।

श्री गौरीशंकर राय—क्या सरकार को मालूम है कि जिला परिषद् द्वारा संचालित स्कूलों में उर्दू पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिये श्रिधकांश जिलों में सुविधा नहीं हो सकी?

श्री उपाध्यक्ष--ग्राप कोई खास मामले की सूचना दें, तब कार्यवाही होगी।

श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या मंत्री जी बतायेंगे कि इस्लामिया स्कूल जी प्रदेश में हैं उनको कुल सरकारी ग्रान्ट पिछले दो सालों में भ्रलग-ग्रलग कितनी दी गयी है ?

श्री दीनदयालु शास्त्री--पिछले साल इस्लामिया स्कूलों को ५,४६,३१० रुपया ग्रौर इस साल ५,६१,५१० रुपया दिया गया।

श्री रामायण राय—मकतबों को जो सहायता दी जाती है उसकी रकम में इस साल क्यों कमी हो गयी?

श्री कमलापति त्रिपाठी—सम्भव है कुछ मकतब टूटे हों, इसके ग्रलावा ग्रौर कोई वजह नहीं है। श्री ऊदल (जिला वाराणती) ——जैती कि ग्रमी मरकार ने उर्दू के बारे में ग्रमती नीति बतायी है उसकी देखते हुए, जहां ४० बच्चे उर्दू पढ़ने वाले होंगे, क्या वहां सरकार ग्रमती तरफ से कून खोलने पर विचार करेगी?

श्री कमलापित त्रिपाठी—न्येसिक पाठशालायें, जिला परिषद श्रोर नगरपालिकाएं खोलती हैं। सरकार को श्रोर से उनको श्रानुदान मिलता है। बेसिक पाठशानाश्रों मे यदि कहीं बच्चे ऐसे हों जो उर्दू पढ़ना चाहते हों तो उसका प्रान्य किया जाय इन तरह के श्रादेश जा चुके हैं श्रीर बराबर इस की श्रोर ध्यान श्राकृष्ट किया गया है।

\*३२-३४--श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी (जिला बस्तो)--[७ प्रजैन, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।]

श्री शिवप्रसाद गुप्त चिकित्सालय, बाराणसी में बहरापन दूर करने के कार्य

\*३५—श्री मुक्तिनाथ राय (स्रनुरस्थित)—-३१—3—५६ के तारांकित प्रश्न संख्या दिं व दूर के उत्तर के ऋत में क्या सरकार बताने की क्या करेगी कि श्री शिवस नाद ग्रंत चिकित्सालय, वाराणती के कर्ण, कंड एवं नासिका रोग के विशेषज्ञ चिकित्सक, डाक्टर शिवरतन सिंह, ने बहरापन दूर करने का जो सक न श्रापरेशन किया श्रीर तीन मरीज श्रच्छ हुए, इमके बाद इस कार्य की बढ़ाने के लिये सरकार ने क्या कार्यवाही की है?

श्री हुकुमसिंह विसेन-- प्रहरापन दूर करने के कार्य की बढ़ाने के लिये विशेष प्रकार के यंत्रों की तथा ग्रंबेरे कमरे (dark room) की साउन्ड प्रूफ (sound proof) कमरे में बदलने की ग्रावश्यकता है। इन दोनों का प्रबन्ध करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

## बड़ागांव, पिंडरा तथा सिंघोरा श्रस्पतालों के लिए इमारतें न होना

\*३६--श्री **ऊदल--**न्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि बड़ागांव, परगना कोल श्रसला, जिला वाराणधी में जो राजकीय श्रस्पताल खुला है उसकी इमारत के लिये कितना रुपया मंजूर हुश्रा है श्रीर इमारत के बनने का कार्य कब से शुरू होगा ?

श्री बलदेविंसह श्रार्य--बड़ागांव के राजकीय चिकित्सालय के भवन निर्माण के लिये कोई घनराशि श्रव तक स्वोकृत नहीं हुई है श्रतः यह प्रश्न ही नहीं उठता है कि इमारत के बनने का कार्य कब से शुरू होगा।

\*३७--श्री ऊदल--त्रया सरकार बताने की कृपा करेगी कि विडरा, परगना कील श्रसला, जिला वाराणती में जो जन्ना-बन्चा श्रस्पताल बनने वाला है उसकी इपारत के लिये कितना रुपया मंजूर हुश्रा है श्रीर श्रस्पताल की इमारत कब से बनना शुरू होगी?

श्री बलदेवसिंह श्रार्य—पिण्डरामें जो ब्रन्तरिम जिलापरिषद् का एलोवेथिक चिकित्सा-लय हैं उसके भवन की प्रगति के लिये ७,००० रुपया स्वीकृत हुन्ना है। इसी धन में से ब्रस्पताल के भवन में एक कमरा जच्चा-बच्चा केन्द्र के लिये बनवा दिये जाने का प्रदन विचाराधीन है।

\*३८--श्री **ऊदल**--श्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि क्या वह सिथोरा, परगना कोल श्रसला, जिला वाराणसी में सरक री श्रस्पताल खोलने पर विचार कर रही है ?

श्री बलदेविंसह श्रार्य--एलोवैथिक चिकित्सालय, ब्लाक के हेड क्वार्टर्स पर प्राइमरी हैल्य यूनिट के श्रन्तर्गत खोले जाते हैं। चूंकि सिन्धोरा किसी ब्लाक का हेडक्यार्टर नहीं है इसलिये वहां एलोवैथिक चिकित्सालय खोले जाने का प्रश्न ग्रभी नहीं उठता है।

श्री ऊदल--त्रया मंत्री जी बतायेंगे कि बड़ागांव में जो राजकीय श्रीववालय एक किराये के मकान में चल रहा है, जिसका सम्भवतः ४४ रुपया माहवार किराया है, इसकी वेखते हुए, वहां जल्दी से जल्दी श्रीववालय की इमारत बनवाने की कृपा करेंगे? प्रश्नोत्तर ३३५

## श्री हुकुर्मासह विसेन--इस पर मुर्ग्हासर है कि पैसा मिल जाय। फरेंदा तहसी कि श्रीनगर ताल का पानी निकालने की प्रार्थना

\*३६--श्री ग्रब्दुल रऊफ लारी (जिला गोरखपुर)--क्या सरकार के पास गोरखपुर जिले की फरेंदा तहसील के श्रीनगर ताल के समीप के सैकड़ों किसानों की शिकायत फसल के नष्ट होने तथा खेत पानी में डूबने के नाते न बोये जाने के बारे में इस महीने मे प्राप्त हुई है ?

श्री महावीरप्रसाद शुक्ल--जी हां। गोरखपुर जिले की फरेदा तहसील में श्रीनगर ताल के समीप फसल को नुकसान पहुंचने तथा खेत में पानी में डूबने के कारण न बोये जाने के बारे में, ग्राम रुद्रापुर शिवनाथ, पिपरा परसौनी, परसौनी, ग्रचलगढ़, कटाईकोट उर्फ मदरहना, रामपुर पंडित तथा महुश्रारी के प्रधानों द्वारा भेजा गया एक प्रार्थना-पत्र जिलाधीश को प्राप्त हुग्रा था।

\*४०—श्री श्रब्दुल रऊफ लारी—न्क्या उपर्युक्त शिकायत की जांच S.D.O., फरेंदा न १७-१८ दिसम्बर को की थी? यदि हां, तो क्या मंत्री महोदय उस रिपोर्ट की एक नकल सदन की मेज पर रखने की कृपा करेंगे?

श्री महावीरप्रसाद शुक्ल — उपर्युक्त प्रार्थना पत्र में की गई शिकायतों के बारे में एस० डी० स्रो० फरेंदा ने १७ — १८ दिसम्बर को कोई जांच नहीं की थी। श्रतः उनकी रिपोर्ट को नकल को सदन की मेज पर रखने का सवाल पैदा नहीं होता है।

श्री उपाध्यक्ष--किसी श्रीर तारीख को जांच की है?

श्री हुकुर्मासह विसेन--उन्होंने नहीं की है।

श्री श्रब्दुल रऊफ लारी——जब इतनी ग्राम सभाश्रों के सभापतियों ने इतनी बड़ी फ़सल के नुकसान होने ग्रौर खेत पानी में डूबे रहने के कारण बोयेन जा सकने के सम्बन्ध में दरहवास्त दी थी तो जांच क्यों नहीं हुई?

श्री हुकुर्मीसह विसेन—जांच हुई लेकिन एस० डी० ग्रो० ने नहीं की। ग्रापने एस० डी० ग्रो० के बारे में प्रश्न पूछा था।

श्री श्रब्दुल रऊफ लारी——तो फिर किस श्रधिकारी ने जांच की श्रौर उसका क्या नतीजा निकला?

श्री हुकुम सिंह विसेन--तहसीलदार ग्रीर नायब तहसीलदार ने की थी।

श्री उपाध्यक्ष --नतीजा क्या हुन्ना?

श्री हुकुर्मासह विसेन--नतीजा यह है कि भ्रभी कुछ हुग्रा नहीं।

श्री अब्दुल रऊफ लारी--जहां इतनी फसल बरबाद हो गई, और खेत पानी में डूबे रहने के कारण खेत परती रह गये, और वह पानी आसानी से नहर का बांध खोल कर निकाला जा सकता था, तो क्यों नहीं निकाला गया?

श्री हुकुर्मासह विसेन-- जिलाधीशने सिचाई विभाग के ग्रिधिकारियों से कांटैक्ट किया है। वे इसके बारे में सोच रहे हैं।

### देहरी-गढ़वाल जिले में नैलचामी, कीर्तिनगर, किलकिलेश्वर सम्बन्धित शिक्षा संस्थायें

\*४१—श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन (जिला टेहरी-गढ़वाल) (श्रनुपस्थित)—
गृह मन्त्री कृपया बतायेगे कि क्या सरकार से श्रनुरोध किया गया है कि वह टेहरी-गढ़वाल
के नेलचामी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का तुरन्त प्रदेशीयकरण करे ? यदि हा, तो सरकार ने
इस सम्बन्ध मे श्रव तक क्या किया है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी-जी नहीं । प्रश्न नहीं उठता ।

\*४२—श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन (ग्रनुपस्थित)—क्या गृह मन्त्री कृपया बतायेगे कि सरकार से ग्रनुरोध किया गया है कि टेहरी-गढ़वाल में खुलने वाला प्रस्तावित दीक्षा विद्यालय इस जिले के सुदूर देहाती स्थान किलिकलेश्वर में खुले ? यदि हा, तो इस सम्बन्ध में सरकार ने क्या किया है ?

श्री कमलापित त्रिपाठी—जी हां, इस श्राध्य का प्रार्थना-पत्र हाल ही में प्राप्त हुश्रा है, जब कि नार्मल स्कूल जहां खुलने थे, खुल चुके थे। श्रतः इस प्रार्थना-पत्र पर विचार नहीं किया गया।

\*४३—श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन (ग्रनुपस्थित)—क्या गृह मन्त्री कृपया टेहरी-गढ़वाल के कीर्तिनगर नामक स्थान में द्वितीय योजना के शेष काल के ग्रन्बर एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खोलने के प्रक्त पर विचार करेगे ?

्री कमलापति त्रिपाठी--जी नहीं।

## कानपुर के एक मुस्लिम व्यापारी की खानातलाशी

\*४४—कुंबर श्रीपालसिंह तथा श्री लक्ष्मणराब कदम क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि क्या प्रदेश की सी० श्राई० डी० ने श्रक्तूबर, १६५६ में ऐसे किसी गिरोह का पता लगाया है जो पाकिस्तानी प्रचार करता था तथा देशद्रोही कार्यों के हेतु घन संग्रह के लिये डाके भी डालता था, तथा जिसका मुख्य कार्यालय कानपुर में किसी मुस्लिम व्यापारी के घर में था? यदि हां, तो इस मामले में कितने व्यक्ति पकड़े गये तथा क्या कार्यवाही की गयी?

श्री रामस्वरूप यादव--जो नहीं। प्रक्त का दूसरा भाग नहीं उठता।

कुंवर श्रीपालिंसह—क्या माननीय मंत्री बतलायेंगे कि क्या यह सत्य है कि पिछले साल बाराबंकी—लखनऊ सड़क पर एक मोटर पकड़ी गयी थी श्रीर उस व्यापारी की थी जिसका जिक इस प्रश्न में किया गया है ?

श्री रामस्वरूप यादव—यह सही है कि लखनऊ—बाराबंकी सड़क पर ३० श्रगस्त, ५६ को एक मोटर पकड़ी गयी थी जिसमें कुछ लोगों के पास कंट्री-मेड पिस्तौल थी। लेकिन जो मालिक था वह मोटर के श्रन्दर मौजूद नहीं था। उसके मकान की तलाशी भी ली गयी श्रौर कुछ सामान कब्जे में किया गया, लेकिन सिद्ध यही हुश्रा कि वह चोरी का सामान नहीं था।

कुंचर श्रीपाल सिंह—क्या यह सत्य है कि जब उस मोटर के मालिक के घर पर पुलिस ने छापा मारा श्रौर तलाशी ली तो वहां पर बहुत-सा लूट का सामान तथा पाकिस्तानी नोट मिले ?

श्री रामस्वरूप यादव--कुछ जेवरात ग्रौर ग्रायरन सेफ में कुछ कपड़ा मिला। लेकिन पाकिस्तानी नोट की मुझे सूचना नहीं है ग्रौर जानकारी यह हुई कि यह चौरी से सम्बन्धित माल नहीं है।

### लखनऊ सेना क्षेत्र से चोरी की रिपोर्ट

\*४५—कुंवर श्रीपार्लीसह तथा श्री लक्ष्मणराव कदम—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि क्या उसे पता है कि जनवरी, १६६० में लखनऊ पुलिस में यह रिपोर्ट की गयी कि लखनऊ सेना क्षेत्र से दो तोपे चोरी चली गयी है? यदि हां, तो उसमें अब तक क्या कार्यवाही की गयी?

श्री रामस्वरूप यादव—कोई तोप चोरी होने की सूचना थाने में नहीं की गयी, परन्तु एक पीतल की बैरल तथा एक डैकोरेशन गन क चोरी होने की सूचनाएं थाने पर ब्रवश्य दर्ज हुईं। पुलिस जांच कर रही है।

कुंवर श्रीपालिंसह—जैसा कि प्रक्ष्त के उत्तर में बतलाया गया है क्या माननीय मंत्री बतलायोंगे कि यह बैरल डी० डी० टी० रखने वाला या तारकोल रखने वाला था श्रीर श्रगर था, तो इसका वजन क्या था ?

श्री रामस्वरूप यादव—सेना के ग्रधिकारी इसे बास बैरल कहतें थे, श्रौर बास बैरल का वजन बहुत काफी होता है।

### जालौन जिले के ग्रस्पतालों में डाक्टरों की कमी

\*४६—राजा वीरेन्द्रशाह (जिला जालौन)—क्या न्याय मंत्री को मालूम है कि जिला जालौन के ग्रामीण क्षेत्र के ग्रस्पतालों में श्रिधिकतर डाक्टर नहीं है ग्रौर केवल कम्पाउण्डर द्वारा काम हो रहा है ?

श्री बलदेवसिंह ग्रार्य--जी हां।

\*४७—राजा वीरेन्द्रशाह—क्या उक्त जिले में ऐसे भी ग्रस्पताल है जहां, जब से ग्रस्पताल खोला गया तब से ग्रभी तक, डाक्टर नहीं पहुंचा है ?

श्री बलदेवसिंह ग्रार्य-जी हां।

\*४८—राजा वीरेन्द्रशाह—क्या सरकार ग्रामीण क्षेत्रों के ग्रस्पतालों में जो डाक्टरों की कमी है उसको शहरों में तैनात डाक्टरों में से देहाती क्षेत्र में मेज कर परा करेगी?

श्री बलदेवसिंह श्रार्य--जहां तक संभव है ऐसा ही किया जा रहा है।

राजा वीरेन्द्रशाह—देहात में जब डाक्टर नहीं जाते तो क्या उनका एलाउन्स बढ़ाने के प्रश्न पर सरकार विचार करेगी ?

श्री हुकुर्मासह विसेन—प्राइमरी हेल्थ सेंटर में बढ़ा दिया है ग्रौर १२० रुपये कर दिये हैं ग्रौर सोच रहे हैं।

श्री गोविन्दिंसह विष्ट—देहात में डाक्टर जायं, इसके लिये क्या सरकार ऐसी कोई व्यवस्था करेगी कि देहात के लड़के मेडिकल कालेज में भर्ती किये जायं?

श्री हुकुम सिंह विसेन—ग्रंडरटेकिंग ली जा रही है कि इतने वर्ष जरूर देहात में काम करना पड़ेगा; लेकिन ५ वर्ष मेडिकल कालेज के ग्लेमर में पढ़ कर वे भी देहात में नहीं जाना चाहते ग्रोर पहाड़ के लोग, जो यहां पढ़ लेते हैं वह भी पहाड़ में नहीं जाना चाहते है।

सी० एल० ग्रार० डी० स्कीम से उन्नाव जिले के राजस्व में वृद्धि

\*४६—श्री भीखालाल (ग्रनुपस्थित)—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि सी० एल० ग्रार० डी० स्कीम द्वारा उत्तर प्रदेश के राजस्व में कितनी कमी या बेशी पानी गयी? श्री हुकुर्मासह विसेन—सी० एल० श्रार० डी० स्कीम के फलस्वरूप श्रव तक राज्य के राजस्व में ५७,४२,६४३ रुपये की वार्षिक वृद्धि हुई श्रोर १३,४७,४१४ रुपये की कमी हुई। इस प्रकार राजस्व की वार्षिक मांग में ४३,६५,१२८ रुपये की वास्तविक वृद्धि हुई। इसके श्रतिरिक्त बकाया राजस्व में ३,१६,४४,२२८ रुपये की वृद्धि श्रोर ७५,४२,४५८ रुपये की कभी का भी पता लगा। इस प्रकार बकाया में २,४०,६१,७७० रुपये की वास्तविक वृद्धि हुई।

\*५०-श्री भीखालाल (अनुपस्थित) — क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि सी॰ एल॰ ग्रार॰ डी॰ स्कीम द्वारा जिला उन्नाव के राजस्व में कितनी कमी या बेशी पाई गई ग्रौर वह प्रत्येक तहसील में ग्रलग-ग्रलग क्या है ?

श्री हुकुर्मासह विसेन—सी॰एल॰श्रार॰ डी॰ स्कीम के फलस्वरूप श्रब तक राजस्व में १,६२,०४७.१२ रुपये की वार्षिक वृद्धि हुई श्रौर ३१,७४६.६० रुपये की कमी हुई। इस प्रकार राजस्व की वार्षिक मांग में कुल १,३०,३१०.५२ रुपये की वाम्तविक वृद्धि हुई। इसके श्रितिरिक्त बकाया राजस्व में ८,१८,३७७.७३ रुपये की वृद्धि श्रौर १,६०,५४८.४४ रुपये की कमी का भी पता लगा। इस प्रकार बकाया में ६,५७,८२६.२६ रु० की वास्नविक वृद्धि हुई। जिले के राजस्व में वार्षिक वृद्धि या कमी तथा बकाया राजस्व में वृद्धि या कमी का तहसीलवार विवरण संलग्न है।

#### (देखिये नत्थी 'घ' ग्रागे पृष्ठ ४२६ पर)

#### गोरखपुर जिले में विचित्र प्रकाश तथा भयानक धड़ाका

\*५१—श्री मदन पांडेय—क्या यह सत्य है कि गत ७-१-६० की रात्रि में गोरखपुर जिले के उत्तरी भाग में भयानक अड़ाका, गड़गड़ाहट तथा विचित्र प्रकाश सेंकड़ों वर्ग मील क्षेत्र में दिखाई पड़ा था जिसकी सूचना प्रश्नकर्त्ता ने माननीय मुख्य मंत्री को भी दी थी? यदि हां, तो क्या सरकार कृपया बतायेगी कि यह प्रकाश तथा गड़गड़ाहट कैसी थी?

श्री रामस्वरूप यादव—इस विषय पर प्रश्नकर्त्ता का एक पत्र माननीय मुख्य मंत्री जी को प्राप्त हुग्रा था। जांच पर ज्ञात हुग्रा कि इस प्रकार की एक ग्रफवाह महाराजगंज तहसील में फैली थी परन्तु ग्रफवाह के सही कारण का पता न लग सका।

श्री मदन पांडेय—क्या सरकार के पास इस श्राज्ञय की सूचना वहां के पुलिस कप्तान श्रीर जिला श्रिवकारियों द्वारा श्रायी है कि बड़ाका, गड़गड़ाहट श्रीर प्रकाज, ये तीनो सही में हुये थे लेकिन उसके कारणों का पता श्रब तक नहीं लग सका है?

श्री रामस्वरूप यादव—कुछ लोग तो यह कहते हैं कि प्रकाश भी था, कुछ कहते हैं कि प्रकेले गड़गड़ाहट हुई लेकिन यह पता नहीं चल सका कि कारण क्या था। श्रन्दाज यह किया जा रहा है कि नेपाल गवर्नमेंट श्रपने क्षेत्र में कोई नहर बनवा रही थी। यह श्रफवाह इस वजह से श्रौर भी फैली क्योंकि चीन श्रौर हिन्दुस्तान के बीच उन दिनों तनाव चल रहा था।

\*५२-५३--कुमारी श्रद्धादेवी शास्त्री (जिला मेरठ)---[१ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।]

## सरेनी थाने के अन्तर्गत घूसखोरी का मुकदमा

\*५४—श्री गुप्तार्रासह (जिला रायबरेली)—क्या गृह मन्त्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जनपद, रायबरेली में थाना सरेनी के अन्तर्गत १ जनवरी, सन् १९५९ से १ जनवरी, सन् १९६० तक कम्प्लेन्ट आफीसर की रिपोर्ट पर रिश्वत सम्बन्धी कितने मुकदमें चल रहे हैं ?

श्री रामस्वरूप यादव-एक ।

\*५५--श्री गुप्तार्रीसह--क्या सरकार यह बतलाने की कृपा करेगी कि जिन पर मुकदमे चले वह मुश्रसल किये गये कि नहीं? ग्रगर नहीं, तो क्यों?

श्री रामस्वरूप यादव-संबंधित व्यक्ति मुग्रत्तल है। प्रश्न का दूसरा भाग नहीं उठता।

प्रक्तोत्तर ३३६

श्री गुप्तारिसिह—क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जो यह एक व्यक्ति है इसके ऊपर कब मुकदमा दायर हुआ और वह मुम्रत्तल किस तारीख को हुआ ?

श्री रामस्वरूप यादव--तारीख मुग्रत्तली के लिये सूचना की ग्रावश्यकता होगी। सीतापुर में पुलिस द्वारा हाइडेल कर्मचारियों का पीटा जाना

\*५६—श्री झारखंडे राय (जिला म्राजमगढ़) (म्रनुपस्थित)--क्या सरकार को तूचना प्राप्त हुई है कि गत ५ फरवरी को सीतापुर झहर में पुलिस ने कतिपय हाइडेल-कर्मचारियों तथा म्राधिकारियों को बुरी तरह से पीटा, जिसके विरोध में सारे झहर में पूर्ण हड़ताल हो गई ?

श्री कमलापति त्रिपाठी--जी हां, ऐसी सूचना प्राप्त हुई है।

\*४७—श्री झारखंडे राय (श्रनुपस्थित)—यदि हां, तो सरकार ने इस मामले में श्रव तक क्या कार्यवाही की है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी --- एक मजिस्ट्रेट इस मामले की जांच कर रहे है। दो सिपाहियों को मुग्रत्तल कर दिया गया है ग्रौर सब-इन्सपेक्टर को स्थानान्तरित कर दिया गया है।

खीरी जिले के सिविल सर्जन तथा इंचार्ज, लेपरासी सेंटर के विरुद्ध शिकायत

\*५८—श्री शिवप्रसाद नागर—क्या सरकार बताने की कृषा करेगी कि क्या उसे खीरा जिले के विघायकों के द्वारा दिनांक २—७—५६ को लेपर सी हास्पिटल श्रौर सदर हास्पिटल के संबंध में कुछ जिकायतें िखित प्राप्त हुई है? यदि हां, तो उनकी जांच हुई या नहीं श्रौर यदि हुई, तो परिणाम क्या हुआ

श्री बलदेवसिंह श्रार्य—खीरी जिले के किसी विधायक द्वारा २-७-५६ को लेपरासी हास्पिटल श्रीर सदर हास्पिटल के संबंध में कोई जिकायत नहीं प्राप्त हुई। श्री ज्ञिव प्रसाद नागर का पत्र दिनांक ६-७-५६ जिसमें उन्होंने सिविल सर्जन, खीरी तथा मेडिकल श्राफिसर इंचार्ज, लेपरासी सेन्टर, खीरी के विरुद्ध कुछ श्रारोप लगाये थे, श्रवश्य प्राप्त हुश्रा। स्वास्थ्य सेवा संचालक ने मौके पर जाकर स्वयं मामले की जांच की जिसके फलस्वरूप कुछ सरकारी कर्मचारियों का स्थानान्तरण कर दिया गया।

श्री शिवप्रसाद नागर—क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेगे कि इस ज्ञिकायत की जांच में जिन कर्मचारियों का स्थानान्तरण किया गया है, वह श्रपराधी पाये गये या नहीं ?

श्री हुकुमसिंह बिसेन—वह तो सब ऐडिमिनिस्ट्रेटिव ग्राउन्ड पर ट्रांसफर किये गये। कोई इनसबाडिनेशन में या डायरी ठीक न रखने की वजह से, इस तरह की बातें थीं।

श्री शिवप्रसाद नागर—जो शिकायत मेरे द्वारा भेजी गयी थी और उसकी जांच हुई, जैसा कि जवाब में लिखा हुम्रा है, श्रौर जांच होने के फलस्वरूप उत्तर यह मिला कि उनका स्थानान्तरण कर दिया गया है श्रौर श्रब जवाब मिला कि ऐडमिनिस्ट्रेटिव कारणों से स्थानान्तरण किया गया, तो क्या वे लोग श्रपराधी सिद्ध हुये या नहीं श्रौर श्रगर श्रपराधी सिद्ध हुये तो उनके साथ क्या कार्यवाही की गयी?

श्री हुकुर्मांसह विसेन—जिनके खिलाफ शिकायत की गयी थी, मेडिकल श्राफिसर, लेपरासी हास्पिटल श्रौर सिविल सर्जन, उनके खिलाफ शिकायत कतई साबित नहीं हुई।

श्री शिवप्रसाद नागर—सिविल सर्जन द्वारा एक दिन पहले जो मेडिकल सिटिफिकेटर दिया गया और दूसरे दिन फिटनेस सिटिफिकेट दिया गया और उसके बाद वह व्यक्ति मर गया उसकी जो श्रटेस्टेड कापी डायरेक्टर महोदय लाये हैं, उसके बारे में श्रव तक मंत्री जी ने क्या कार्यवाही की?

श्री हुकुमसिंह विसेन—सर्टिफिकेट देने के लगभग ५ महीने के बाद वह व्यक्ति मरा था श्रौर श्रापने ज्ञिकायत लिखी थी कि दो दिन के बाद मरा। तो यह ज्ञिकायत गलत पायी गयी।

## दुमरियागंज तहसील में चकबन्दी सम्बन्धी निगरानियां

\*४६—श्री रामलखन सिंह (जिला जौनपुर) (श्रनुपस्थित)—क्या न्याय मंत्री कृपया बतायेंगे कि कितने रिवीजन तहसील डुमरियागंज, जिला बरती के पिछले वर्ष में चकवन्दी कानून की बारा ४५ में डिप्टी डायरेक्टर व जिलाबोज्ञ के यहां दाखिल हुये तथा कितने स्वीकृत श्रौर कितने श्रस्बीकृत हुये ?

भी हुकुर्मासह विसेन—वर्ष १६५६ के श्रारम्भ मे ११६ निगरानियां धारा ४६ के अन्तर्गत जिला बस्ती में विचाराधीन थी। १ जनवरी, १६५६ से ३१ दिसम्बर, १६५६ तक ६४८ निगरानियां दायर हुई थी और इस प्रकार निर्णयार्थ निगरानियों की कुल संख्या ७६७ थी। इसमें से ६६४ निगरानियां निर्दिष्ट वर्ष के अन्दर निर्णीत हुई, जिनमे २२७ स्वीकृत और ४३७ अस्वीकृत की गई।

#### इलाहाबाद में मोतीलाल नेहरू ग्रस्पताल की नई इमारत तथा ग्रांख के ग्रस्पताल को बढ़ाने की प्रार्थना

\*६०—श्री कल्याणचन्द मोहिले (श्रनुपस्थित)—क्या सरकार कृपा कर बतायेगी कि इलाहाबाद जिले के मोतीलाल नेहरू श्रस्पताल की जो इमारत मलाका जेल की जमीन पर श्रस्पताल के लिये बन रही है, उस इमारत में श्रस्पताल कब तक चला जायेगा ?

श्री हुकुमसिंह विसेन—दिसम्बर, १६६० तक इमारत तेयार होने की श्राज्ञा है। इसके पञ्चात् श्रस्पताल नई इमारत में ले जाया जायगा।

\*६१—श्री कत्याणचन्द मोहिलें (ग्रनुपस्थित) — क्या सरकार कृपा कर बतायेगी कि क्या इलाहाबाद के श्रांख के सरकारी श्रस्पताल की इमारत तथा बेड बढ़ाने की कोई योजना सरकार ने बनाई है ? यदि हां, तो वह योजना कितने की है श्रोर कब तक चालू होगी ?

श्री हुकुमिंसह। विसेन--धनाभाव के कारण श्रभी तक तो ऐसी कोई योजना नहीं बनाई जा सही है। हां, वर्तमान माली साल में इस श्रस्पताल को श्रावश्यक साज-सज्जा खरीदने के लिये ३०,००० रु० का श्रनावर्त्तक श्रनुदान दिया गया है।

# देवरिया जिले में टेस्ट वक्स की मजदूरी के सम्बन्ध में शिकायत

\*६२—श्री उग्रसेन—क्या न्याय मंत्री के पास फरवरी, ६० के प्रथम सप्ताह में देविरया के एक विधायक द्वारा इस ग्राज्ञय की ज्ञिकायत ग्राई है कि जिलाधोदा, देविरया ने जनपद में चल रहे ४ सड़कों पर टेस्ट वर्क के १०,००० से ग्रधिक मजदूरों की मजदूरी कम कर दी है? यदि हां, तो उस पर कौन-सी कार्यवाही की गई?

श्री महावीरप्रसाद शुक्ल—जी हां, उनत शिकायत के संबंध में जिलाधीश ने यह सूचना दी कि मजदूरी की दर नहीं घटाई गई थी, बल्कि मजदूरी देने का तरीका बदल दिया गया था, लेकिन जब यह मालूम हुन्ना कि बदला हुन्ना तरीका काम करने वालों के श्रनुकूल नहीं है, तो पुनः गुराने तरीके को लागू कर दिया गया।

\*६३—श्री उग्रसेन—क्या न्याय मंत्री उक्त शिकायत की प्रतिलिपि सबन की मेज पर रखने की कृपा करेंगे ?

श्री महावीरप्रसाद शुक्ल--उक्त पत्र की प्रतिलिपि संलग्न है। (देखिये नत्थी 'ङ' ग्रागे पृष्ठ ४२७ पर) श्री उग्रसेन--क्या यह सही है कि पे रेन्ट का जो तरीका बदला गरा है उससे मजदूरों पर ज्यादा व्यापक पैमाने पर जुर्माना हुआ है?

श्री उपाध्यक्ष—वह तो समाप्त कर दिया गया।

श्री उग्रसेन—क्या मंत्री जी बतलायेंगे कि पहले के जो दर निर्धारित थे, उनमें जो बदला हुन्ना तरीका इस्तेमाल किया गया, उससे मजदूरों पर मास फाइन हो रहा है ?

श्री हुकुर्मासह विसेन—वह तो काहिलों पर ग्रसर पड़ता है। जो नजदूर काम करते हैं, उन पर कोई असर नहीं पड़ता है।

श्री उग्रसेन—जैसा कि माननीय मंत्री जी ने लिखकर दिया है कि प्रति दिन की मजदूरी १० ग्राने, द ग्राने ग्रीर ६ ग्राने है तो माननीय मंत्री जी बतायेंगे कि मिट्टी की पैमाइश वह किस तरह से कराते हैं?

श्री हुकुर्मासह विसेन—मौके पर जो लोग काम करते हैं, वही पैमाइश करते हैं। देहरादून में मुस्लिम परिवारों की पुनर्वासन योजना

\*६४—श्री ताराचन्द माहेश्वरी—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि राज्य सरकार द्वारा वर्तमान वित्तीय वर्ष में देहरादून में मुस्लिम परिवारों के लिये मकानों का निर्माण कराया जा रहा है ? यदि हां, तो बनवाये जा रहे मकानों की संख्या क्या है श्रीर उन पर कुल कितना रुपया व्यय होगा ? क्या यह सारा धन भारत सरकार से सहायता के रूप में प्राप्त होगा ?

श्री बलदेविंसह ग्रार्य—जी हां, देहरादून में मुस्लिम परिवारों के लिये १२० मकानों का निर्माण कराया जा रहा है जिन पर कुल ३,६६,००० क० व्यय होगा ग्रौर यह सारी घनराशि भारत सरकार से ग्रनुदान के रूप में प्राप्त हुई है।

श्री ताराचन्द माहेश्वरी—क्या मंत्री जी बतायेंगे कि जिन मुस्लिम परिवारों के लिये भवनों का निर्माण कराया जा रहा है ये देहरादून में नये बस रहे हैं? यदि हां, तो ये पहले कहां रहते थे?

श्री हुकुर्मासह विसेन—जब बलवा हुन्ना तब ये भाग गये थे । वही वापस त्र्राये हैं । \*६५—कुमारी श्रद्धा देवी ञास्त्री (ग्रनुपस्थित)—[स्थगित किया गया ।]

लालगंज तहसील में हरिजन कल्याणार्थ कथित विशेष ग्रनुदान

\*६६—श्री विश्राम राय (जिला ग्र.जमगढ़) (ग्रनुपस्थित)—क्या सरकार कृपया बतलायेगी कि ग्राजमगढ़ जिले की लालगंज तहसील में हरिजन-कल्याण के हेतु १६५६—६० के लिये कोई विशेष ग्रनुदान दिया गया था? यदि हां, तो श्रब तक यह रकम हरिजन-कल्याण के हेतु किन-किन मदों में व्यय की गई?

श्री कमलापति त्रिपाठी—जी नहीं।

श्रलीगढ़ नगरपालिका का प्रारम्भिक पाठशालायें खोलने के लिए प्रार्थन(-पत्र

\*६७—श्री ग्रनन्तराम वर्मा (जिला ग्रलीगढ़) (ग्रनुपस्थित)—क्या सरकार बताने की श्रुपा करेगी कि क्या ग्रलीगढ़ नगरपालिका ने कोई प्रार्थना-पत्र ग्रपने बढ़े हुए क्षेत्र में प्रारम्भिक पाठशाला खोलने की ग्रनुमित के लिये शिक्षा विभाग को दिया है? यदि हां, तो कितनी पाठशालाग्रों के लिये दिया है? उस पर सरकार ने क्या निर्णय किया है?

श्री कमलापति त्रिपाठी—जी हां, गत वर्ष दिया था १२ पाठशाला त्रो के लिये। म्रायिक कठिनाई के कारण स्वीकार न किया जा सका।

\*६८—श्री श्रनन्तराम वर्मा (ग्रनुपस्थित)—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि क्या श्रलीगढ़ नगरपालिका ने श्रपने क्षेत्र में श्रपने खर्चे पर मान्टेसेरी स्कूल चलाने के लिये शिक्षा विभाग से कोई श्रनुमित मांगी है ? यदि हां, तो सरकार कब तक श्रनुमित देगी?

श्री कमलापति त्रिपाठी--जी नही।

#### फर्इसाबाद जिले में डकेतियां श्रोर कत्ल

\*६६-- श्री कोतवालॉसह भदौरिया (जिला फर्वलाबाद)--क्या सरकार बताने की कुपा करेगी कि फर्वलाबाद जिले में जनवरी, सन् ४६ से ग्रब तक कितने कत्ल ग्रौर उकैतिया बानेबार हुई है ग्रौर सन् ४८ में इनकी संख्या थानेवार कितनी थी?

भी कमलापित त्रिपाठी--वाछित सूचना संलग्न तालिका में वी हुई है। (देखिये नत्थी 'च' आगे पृष्ठ ४२ पर)

\*७०---कु**यर श्रीपालॉसह**---[१ म्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया।]

\*७१-७२--श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी (जिला झासी)---[१ ग्रप्रेल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।]

## बस्ती जिले में डकंतियां तथा करल

\*७३---श्री रामलखन सिंह (ग्रनुपस्थित)-- क्या गृह मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि पिछले वर्ष में जिला बस्ती में किस थाने में कितनी हत्याये ग्रौर डकेंतिया हुई ?

श्री कमलापति त्रिपाठी--वांछित सूचना संलग्न है।

(देखिये नत्थी 'छ' श्रागे पृष्ठ ४२६ पर)

\*७४-७६--श्री जगन्नाथप्रसाद (जिला खीरी)---[७ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किये गये ।]

## लखनऊ मे रायल होटल के विधायक निवास मे खराब सामान लगाने की शिकायत

\*७७—श्वी रामस्वरूप वर्मा—क्या गृह मन्त्री कृपया बतायेंगे कि क्या उनके पास रायल होटल में बने विधायक निवास में घटिया किस्म का सामान लगाने व प्लास्टर भ्रादि खराब करने के सम्बन्ध में कोई शिकायत दिनांक २८ श्रक्तूबर, १९५९ के लगभग प्राप्त हुई थी ? यदि हा, तो इसपर क्या कथर्यवाही की गई ?

श्री रामस्वरूप यादव—जी हां। शिकायत की जांच के लिये मुख्य ग्रिभयन्ता, सार्वजिनक निर्माण विभाग को लिखा गया था जिन्होंने इनकी जांच श्रिधशासी ग्रिभयन्ता, श्रस्थायी खण्ड एवं ग्रारक्षण खण्ड द्वारा करायी।

श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या मन्त्री जी बतायेंगे कि इस जाच के पश्चात क्या परिणाम निकला श्रीर जांच के समय किन-किन लोगों से पूछ ताछ की गई श्रीर सब सामान किन किन सज्जनों को दिखाया गया ?

श्री रामस्वरूप यादव—किन किन सज्जनों से पूछ ताछ हुई इसके लिये तो नोटिस की त्रावश्यकता होगी लेकिन जांच से मालूम हूश्रा कि काम में कोई खास खराबी नहीं हुई। श्री उपाध्यक्ष--ग्राम खराबी क्या हुई वह बतला दें ?

श्री रामस्वरूप य(दव--इसका ग्राशय यह समझा जाय कि कोई खराबी नहीं, हुई।

श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या मन्त्री जी इसकी देखते हुये कि रायल होटल विघायक निवास के बहुत ही निकट है श्रीर जो शिकायतें मेंने भेजी थीं उनके सम्बन्ध में मुझ से कोई पूछ-ताछ नहीं की गई तो क्या वह इस पर पुनः विचार करेंगे या स्वयं देखने का कब्ट करेंगे ?

श्री कमलापित त्रिपाठी—देखने का कष्ट तो श्रीमन, जब वह कहें तभी करलूं। लेकिन एक्जीक्यूटिव इन्जीनियर से इसकी जांच करायी गयी ग्रीर उनकी रिपोर्ट के मुताबिक यह मालूम हुग्रा कि काम में किसी तरह की खराबी नहीं है।

श्री उपाध्यक्ष - - प्रश्नकर्त्ता का कहना यह है कि शिकायतें उनकी थीं श्रीर उनकी जांच के समय बुलाया नहीं गया, तो क्या इसपर वह विचार करेंगे ?

श्री कमलापित त्रिपाठी—हर कम्प्लेंट में बुलाया ही जाय ऐसी बात नहीं होती है। विभागीय जांच होती है ग्रौर जितनो शिकायतें थीं कि लकड़ी ठीक नहीं थी या बालू पर बना दी गयी या प्लास्टर ठीक नहीं हुग्रा, इन के सब के सम्बन्ध में जांच करा ली गयी ग्रौर यह रिपोर्ट मिली कि सब ठीक है।

## देवरिया में हरिजन बस्ती के विस्तार की ग्रावश्यकता 🕕

\*७८—श्री दीपनारायणमणि त्रिपाठी—क्या सरकार कृपया बतायेगी कि क्या देव-रिया में हरिजन बस्ती के विस्तार के लिए कुछ भूमि प्राप्त करने का निवेदन जिलाघी इा देवरिया से दो वर्ष पूर्व किया गया था? यदि हां, तो उस पर ग्रब तक क्या कार्यवाही की गयी है?

श्री दीनदयालु शास्त्री——जो हां। विभागीय योजनाम्रों के म्रन्तर्गत शहरी क्षेत्रों में भूमि प्राप्त करने एवं गृह निर्माण हेतु भ्रतुदान देने की व्यवस्था नहीं है, इसलिए भ्रनुदान स्वीकृत नहीं किया जा सका।

श्री दीपनारायणमणि त्रिपाठी--मान्यवर, यह उत्तर मुझे गृह मंत्री द्वारा मिला है श्रीर में हरिजन कल्याण मन्त्री से प्रक्ष्त पूछना चाहता हूं कि शहरी क्षेत्रों में हरिजन कल्याण के लिए कौन-श्री योजना चालू है श्रीर उनका कल्याण कौन करता है?

श्री दीनदयालु शास्त्री —श्रीमन्, गृह मन्त्रो, हरिजन कल्याण मन्त्री भी हैं, इसलिए मैं उत्तर दे रहा हूं। श्रब तक शहरी इलाके में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है कि हम इस योजना को चालु कर सकें।

श्री दीपनारायणमणि त्रिपाठी—क्या मन्त्री जी नगरपालिका द्वारा विशेष श्रनुदान दिलाकर हरिजनों का उद्घार करेंगे या हरिजनों के लिए कोई कल्याण की योजना इस सरकार के विचाराधीन नहीं है?

श्री दीनदयालु शास्त्री—मैने जैसा बतलाया म्नानी तक द्वितीय पंचवर्षीय योजना में हिरजनों के कत्याण के लिए केवल देहात में व्यवस्था है।

#### हरदोई जिले में विभिन्न श्रपराघों की घटनायें

\*७६—श्री बुलाकीराम (जिला हरदोई)—न्या गृह मन्त्री यह बताने की कृषा करेंगे कि सन् १६५६—६० में जिला हरदोई में कितने ग्रौर किन-किन शहरों की बाजारें लूटी गयीं, कितने ग्रौर किन-किन स्थानों के ग्रन्दर चोरियां हुयीं तथा कितने ग्रौर कहां-कहां दिनदहाड़े बाजारों के ग्रन्दर कत्ल हुये ?

नोट--तारांकित प्रश्न ७८ के उपरान्त प्रश्नोत्तर का समय समाप्त हो गया।

श्री कमलापति त्रिपाठी --- उक्त अवधि में केवल कसवा बिनग्राम के बाजार में तारील २=, २६ दिसम्बर, १६५६ की रात की एक डकेती पड़ी जिसमें एक मनान व चार दूकानों का माल लूटा गया।

कोतवाली, कासिमपुर तथा सांडी के थानों के श्रहाते में चोरिओं की घटनाये हुयी। बाजार दत्योनापुर, थाना पिहानी में दिन में एक कत्ल दिनाक १५-१२-५६ की हुआ।

#### जिला हरिजन कल्याण ग्रधिकारी

\*=0-श्री खुशीराम (जिला ग्रन्मोड़ा)--क्या गृह मन्त्री यह बताने की कृता करेंगे कि प्रदेश में कुल कितने जिला हरिजन कल्याण ग्रन्थिशारी कार्य कर रहे हैं? इन में में कितने हरिजन हैं?

श्री कमलापति त्रिपाठी--५०। इनमे से १६ हरिजन हु।

#### प्रारम्भिक शिक्षा भ्रनिवार्य करने की योजना

\*८१—श्री जगदीशशरण श्रग्रवाल (जिलाबरेलो), श्री कोतवालिसह भदौरिया, श्री ऊदल, श्री मुक्तिनाथ राय तथा श्री ताराचन्द माहेश्वरी—क्या सार उत्तर प्रदेश मे प्राइमरी शिक्षा श्रनिवार्य करने की कोई योजना सरकार के विवासधीन है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी---जी हां।

#### म्रादिलनगर ग्राम की डकैती

\*द२—श्री राजनारायण—क्या सरकार बताने की छुपा करंगी कि क्या गत ३१ श्रक्तूबर दीवाली की रात ग्राम श्रादिलनगर, थाना महियाहूं, जिला लखनऊ में कोई डकैनी पड़ी थी?

श्री कमलापति त्रिपाठी--जी हां।

\*८३--श्री राजनारायण--यदि हां, तो उसकी रियोर्ट थाने में कब लिखी गयी श्रीर श्रव तक इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही की गयी है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी—रिवोर्ट थाने मे १-११-५६ की सुबह लिखी गयी। पुलिस हारा जांच की गयी किन्तु अगराधियों का पता न चलने के कारण मामल मे अन्तिम रिवोर्ट भेज बी गयी।

\*८४--श्री राजनारायण--क्या यह सही है कि इस घटना की रिपोर्ट पहले बोरी की लिखी गयी थी?

श्री कमलापति त्रिपाठी——जी हां। वादी ने थाने में लिखित रिपोर्ट दी जिस के म्राधार पर श्रपराव धारा ४५७ भारतीय दण्ड विधान के म्रन्तर्गत लिखा गया। बाद में घटनास्थल का निरीक्षण करने पर मामला डकैती का प्रतीत हुग्ना ग्रौर डकैती में परिवर्तित कर दिया गया।

# गोरखपुर तथा देवरिया जिलों में टेस्ट वर्क की मजबूरी की शरह

\* ५५ —श्री उग्रसेन — क्या न्याय मन्त्री कृपया दिनांक २ – २ – ६० के प्रश्न सृख्या ६४ तथा ६४ के उत्तर के कम में बतायेंगे कि गोरखपुर तथा देवरिया में चल रहे देश्ट वर्क पर मजदूरों की मजदूरी इस समय किस रेट से बी जाती है ?

प्रश्नोत्तर ३४५

श्री हुकुर्मासह विसेन—उक्त जिलों में टेस्ट वर्क पर मजदूरी इस समय इस प्रकार ही जा रही है :—

#### विघायक निवासों का बिजली का बिल

\*द६—श्री कल्याणचन्द मोहिले—क्या सरकार क्रुया कर बतायेगी कि लखनऊ में विधायक निवासों में १९४९-६० में बिजली का बिल कितना देना पड़ा?

श्री कमलापति त्रिपाठी--कुल ७८,८६७ रुपये ६६ नये पैसे। स्वतन्त्रता समारोहों पर व्यय

\*=७-श्री देवकीनन्दन विभव (जिला म्रागरा)--क्या गृह मन्त्री यह बताने की क्रुपा करेंगे कि गत ३ वर्षों में २६ जनवरी, श्रौर १५ म्रगस्त के स्वतन्त्रता समारोहों के सम्बन्ध में कितनी धनराशि व्यय की गयी श्रौर वह किस प्रकार व्यय हुई ?

श्री कमलापित त्रिपाठी—२६ जनवरी, १६५७, ५ हतथा ५६ को गणतन्त्र दिवस समारोहों पर कमशः ६३, ४२२ ६०, ६५,६३४ ६० २६ न० पै० तथा ६२,०२६ ६० ६१ न० पै० ग्रौर १५ ग्रगस्त, १६५६, ५७ तथा ५ को स्वतंत्रता दिवस समारोहों पर कमशः १०,१०६ ६० ११ ग्रा० ३ पा०, ४३,१०० ६० १२ न०पै०, तथा ६,८४६ ६० ३६ न० पै० की घनराशियां व्यय की गयी थीं। यह घनराशियां सम्बन्धित समारोहों के लिए निर्वारित कार्यक्रशों को सभी जिलों में तथा मुख्यालय पर श्रायोजित करने पर व्यय की गयी थीं जिन में लोकनृत्य, ढेब्लू, लोकगीत इत्यादि समारोह शामिल है।

## शहपऊ थाने से थानेदारों के तबादले

\*८८—श्री टीकाराम पुजारी—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जिला मथुरा, थाना शहपऊ में पिछले एक साल में कितने थानेदारों का तबादला हुन्ना है ? श्री कमलापति त्रिपाठी—चार।

# गोरखपुर जिले के थानों में टेलीफोन लगाने की योजना

\*८८-श्री गौरीराम गुप्त (जिला गोरखपुर)--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि वह गोरखपुर जिले के किन-किन थानों में टेलीफोन लगाने जा रही है और कब तक?

श्री कमलापित त्रिपाठी—गोरखपुर जिले मे चौरा तथा सहजनवा थानों में टेलीफोन लगाने का प्रस्ताव १६६०, ६१ की नयी मांगों की ग्रनुसूची के द्वारा सरकार के विचाराधीन है श्रीर प्रस्ताव स्वीकृत हो जाने पर श्रागामी वित्तीय वर्ष में ये टेलीफोन लगाये जा सकेंगे।

#### बीरीपुर ग्राम के लेखपाल के विरुद्ध शिकायत

\*६०—श्री रामबली (जिला सुल्तानपुर)—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि ग्राम बीरीपुर, जिला सुल्तानपुर के लेखपाल के ऊपर जो रिक्वत लेने की एक ग्रजीं हाकिम परगना तथा जिलाघीश के पास कई महीने पूर्व दी गयी थी, उस पर क्या कार्यवाही हुई ?

श्री हुकुमसिंह विसेन -- जांच के पश्चात् रिश्वत की शिकायत निराधार पायी गयी।

## मलासा में मवेशी बेचने का रसीदी फार्म न होना

\* १२--श्री उल्फर्तासह (जिला बदायूं) -- क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जिला बदायूं में मलासा में मवेशी बेचने की रसीद से सम्बन्धित फार्म का श्रभाव है? यदि हां, तो क्यों?

श्री कमलापति त्रिपाठी--जी हां, इसका कारण गवर्नमेट प्रेस से ग्रावश्यकतानुसार समय से फामों का न पहुंचना था। इसके लिये ग्रावश्यक ग्रादेश ग्रथीक्षक, लेखन एवं मुद्रण सामग्री को जारा कर दिये गये है।

\*६२--श्री उल्फर्तासह--क्या यह सच है कि पहले जब कभी उपरोक्त कार्म नहीं मिलते थे तो सादा कागज पर फौजदारी की मुहर लगा देने से इन फार्मी के ग्रभाव की पूर्ति हो जाती थी परन्तु श्रव मुहर लगाने की सुविधा बन्द कर दी गई हे ?

श्री कमलापति त्रिपाठी--जी हां।

#### परसेड़ी ग्रामसभा के हरे-भरे पेड़ काटने की शिकायत

\*६१--श्री गनेशीलाल चौधरी (जिला सीतापुर) -- क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि क्या यह सत्य है कि सोतापुर जिले के ग्राम सभा परमेड़ी में हरे-भरे बाग काटे जा रहे हैं?

श्री हुकुर्मीसह विसेन--जी नहीं। केवल ऐसे पेड़ कटे हैं जिन में फल नहीं ग्रातेथे या बहुत कम श्रातेथे श्रीर जो सूखना शुरू हो गयेथे।

## गांव समाज के पृथक, ग्रस्तित्व को समाप्त करने पर विचार

\*६४--श्री गौरीराम गुप्त--क्या सरकार ११-३-४६ के प्रक्रन १०१ के उत्तर के कम में कृपया बतायेंगी कि श्रव तक ग्राम समाज तथा ग्राम सभाग्रों को एक में मिलाने में क्या प्रगति हुई है ?

श्री हुकुमसिंह विसेन—जिला परिषद विषेयक, १६५६ की प्रनुसूची ४ में प्रस्तावित उत्तर प्रदेश जमींदारी विनाश श्रीर भूमि-व्यवस्था ग्रिविनियम, १६५० के संशोधनों के फलस्वरूप उक्त विषेयक के श्रिधिनियम बन जाने के पश्चात् गांव समाज का कोई पृथक श्रक्तित्व नहीं रह जायगा।

## जिला सूचना ग्रधिकारियों का चुनाव

\*६५--श्री शिवराम (जिला बिजनीर)--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि श्रक्तूबर सन् १६५६ के लगभग जो जिला सूचना श्रिधकारियों का चुनाव लोक सेवा श्रायोग द्वारा किया गया है इस में किस-किस योग्यता के व्यक्ति लिये गये है, कुल संख्या कितनी है, श्रीर कितने हरिजन है?

श्री कमलापित त्रिपाठी -- ग्रायोग की सिफारिशें ग्रभी शासन के विचाराधीन है। चुनाव के नतीजें के ग्रनुसार ५१ पद जिला सूचना ग्रधिकारियों के भरे जाने का विचार है।

# बड़ौत-बागपत सड़क पर मोटर वुर्घटनायें

\*६६—- श्राचार्य दीपंकर (जिला मेरठ)—-क्या गृह मंत्री कृपया बतायेगे कि १ मई, १६४६ से दिसम्बर, १६४६ तक बड़ौत से बागपत तक विल्ली-सहारनपुर रोड पर बसों श्रोर द्रकों द्वारा कितनी दुर्घटनायें हुयों, कितने व्यक्ति जान से मरे श्रोर कितने घायल हुये?

श्री कमलापति त्रिपाठी--१० दुर्घटनायें हुईं, जिनमें ७ व्यक्ति मरे ग्रीर ३ घायल हुये।

प्रश्नोत्तर ३४७

\*६७-- श्राचार्य दीपंकर-- त्रया गृहमंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि पूर्वोक्त दुर्घटनान्नों में कितने ड्राइवरों स्रोर मोटर वालों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की गई है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी --३ ड्राइवरों का चालान किया गया।

#### शाहजहांपुर जिले के उच्च पुलिस ग्रधिकारियों को विधान सभा सदस्य द्वारा दी गयी सूचना

\*६८--श्री हरदयाल सिंह (जिला शाह जहांपुर)--क्या सरकार को जात है कि शाहजहांपुर के उच्च जिला पुलिस ग्रिधिकारियों को कुछ कुख्यात गुंडों द्वारा नाजायज हथियार रखने तथा उनके द्वारा घृणित ग्रान्साध होने के सम्बन्ध में गत वर्ष सूचना दी गई थी? क्या यह सूचना स्थानीय सदस्य विधान सभा द्वारा लिखित दी गई थी?

श्री कमलापति त्रिपाठी--जी हां।

\*६६--श्री हरदयालसिंह-- प्रया यह सही है कि उन्हों बदमाशों से पुलिस गवाही का कार्य अन्य केस में लेकर पनाह दे रही है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी -- यह सही है कि इन लोगों ने श्रभियोग पक्ष में गवाही दी परन्तु पुलिस द्वारा पनाह दिये जाने की बात सही नहीं हैं।

# लखनऊ के बलरामपुर भ्रस्पताल में स्थायी दन्त डाक्टर न होना

\*१००--श्री तेजबहादुर (जिला ग्राजमगढ़) तथा श्री जन्द्रजीत यादव (जिला ग्राजमगढ़)— क्या सरकार यह बताने की कृश करेगी कि बलरामपुर ग्रस्पताल, लखनऊ के दन्त विभाग में कोई स्थायी डाक्टर है कि नहीं? यदि हैं, तो कितने, ग्रीर नहीं, तो क्यों?

श्री हुकुर्मासह विसेन -- नहीं हैं। वहां दो ग्रवैतिनक दन्त शल्यक कार्य कर रहे हैं।

\*१०१-१०२--श्री होरीलाल यादव (जिला फर्हखाबाद)--[१ अप्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।]

#### फर्रुखाबाद जिले में डकैती व कत्ल के ग्रभियोग

\*१०३—-श्री द्वारिका प्रसाद (जिला फईबाबाद) — क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जिला फईबाबाद में प्रत्येक थाने में ग्रगस्त, १९५९ से ६ फरवरी, १९६० तक कितनी डकैतियां व कत्ल हुवे ग्रीर उनमें क्या-क्या कार्यवाही की जा रही है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी -- सूचना संलग्न तालिका में दी हुई है।

हर कत्ल व डकैती की घटना की जांच की गई ग्रीर फ तस्वरूप ६ डकैतियां तथा १६ कत्ल के मामलों में ग्रभियुक्तों का चालान किया गया। ६ डकैतियां ग्रीर ५ कत्ल के मामलों में जांच हो रही है। ४ कत्ल के मामले लापता रहे।

(देखिये नत्थी 'ज' ग्रागे पृष्ठ ४३० पर)

#### बिखरा राजकीय ग्रायुर्वेदिक श्रस्पताल के भवन का कथित किराया

\*१०४--श्री राजाराम शर्मा (जिला बस्ती)--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि राजकीय ग्रायुर्वेदिक ग्रस्पताल, बिखरा (बस्ती) के भवन का ग्रबतक कितना रुपया किराया मकान, सरकार की तरफ से दिया गया है?

श्री हुकुर्मासह विसेन--चूंकि यह श्रस्पताल निः शुल्क भवन में स्थापित है, ग्रतः किराया मकान का प्रश्न नहीं उठता।

#### एच० ठी० सी० प्रशिक्षण में हरिजनों व पिछड़ी जातियों का मनोनयन

\*१०५—श्री रामशरण यादव (जिला लखनक)—न्या गृह मंत्री दिनांक १२ फरवरी, १९६० ई० के प्रश्न संख्या १३१ के उत्तर के सम्बन्ध में कृपया बतायेंगे कि ५६-६० वर्ष में एच० टी० सी० प्रशिक्षण के लिये शासन द्वारा नामजब ५०३ श्रम्यियों में से हरिजनों और पिछाड़ी जातियों की संख्या ऋमशः ४० या ५७ से श्रिधक न होने के क्या कारण है?

श्री कमलापति त्रिपाठी -- केवल इतने ही छात्रों का मनोनयन उचित समझा गया।
\*१०६--श्री मूलचन्द (जिला सीतापुर) -- [१ श्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित
किया गया।]

\*१०७-१०८--श्री गनेशीलाल चौधरी--[१ श्रव्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किये गर्ये।]

# बरेली कालेज के बोर्ड श्राफ कंट्रोल के रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए नामावली

\*१०६--श्री ,गोविन्दिसिंह विष्ट--क्या बरेली कालेज के बोर्ड श्राफ कट्रोल के सदस्यों ने बोर्ड के रिक्त स्थान पूरा करने के लिये कोई नामायली (लिस्ट) सरकार की स्वीकृति के लिये भेजी है?

श्री कमलापति त्रिपाठी--जी हां।

\*११०--श्री गोविन्दसिंह विष्ट--क्या सरकार बनाने की कृपा करेगी कि क्या वह बरेली कालेज के बोर्ड ग्राफ कंट्रोल के बहुत काल से रिक्त स्थानों को वाछित योग्यना रखने वाले व्यक्तियों द्वारा पूरा कराने के बारे में कोई विचार कर रही है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी--जी हां।

सीतापुर जिले की हरिजन कल्याण धनुवान वितरण सिमिति

\*१११—श्री मूलचन्द—क्या गृह मंत्री बताने की कृषा करेंगे कि क्या हरिजन कल्याण विभाग, सीतापुर में २८-११-५६ की बैठक में निश्चय किया गया था कि स्वीकृत अनुदान के वितरण न होने के कारण को देखने के लिये चार आदिमयों की एक कमेटी बनायी जावें और जांच के बाद अनुदान वितरण की समुचित व्यवस्था की जाय? यदि हां, तो इस कमेटी में कौन-कौन सदस्य निर्वाचित हुये और कमेटी किन-किन तारीकों में बैठी?

श्री कमलापति त्रिपाठी---जी हां । उप-समिति में निम्नलिखित सबस्य निर्वाचित हुये-

१--भी डल्लाराम ।

२---श्री मुलचन्द्र

३--श्री दामोदरसिंह।

४--नं• दयामबिहारी ।

उप-समिति की कोई बैठक नहीं हुई।

\*११२--११४--श्री उग्रसेन--[७ श्रव्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।] बस्ती जिले में महुग्रापार श्रीर गंगापुर ग्रामीं की सीमा का मामला तथा निवासियों का पुनर्वासन

\*११४——श्री रामलाल (जिला बस्ती)—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि बस्ती जिले के श्रन्तगंत तहसील बस्ती के माझा के ग्राम महुग्रापार श्रीर गंगापुर गत वर्ष घाघरा नदी से कट गये श्रीर उक्त दोनों ग्रामों के बहुत से निवासी बे घर-बार हो गये? यदि हां, तो सरकार ने उनके बसाने के लिये श्रव तक क्या प्रवन्न किया?

श्री हुकुमसिंह विसेन—जी हां, उक्त ग्रामों के १४० घर सन १३६६ तथा १३६७ फसली में घाघरा नदी से कट गये थे। इनमें से ४४ जरूरत मंद परिवारों को ऊंची भूमि पर बसने के लिये ग्राम पिपरा तथा पेरवेला में गांव समाज की १,०१३ एकड़ भूमि वी गयी। शेष परिवारों ने अ५ने अपने खेतों में बसने का प्रवन्ध स्वयं कर लिया।

\*११६—-श्री रामलाल—क्या यह सही है कि जिला व तहसील बस्ती के माझा के ] ग्राम महुश्रापार गंगापुर तथा श्रन्य ग्रामों के घाघरा नदी की जिस धारा ने गत वर्ष काटा था वह श्रब श्रसली धारा में परिवर्तित हो रही है, जिसके कारण इन सभी ग्रामों के श्रब जिला फैजाबाद में जाने का डर है। यदि हां, तो क्या सरकार ने इस सम्बन्ध में कोई जांच-पड़ताल की है, श्रीर यदि की है, तो उसका क्या परिणाम हुआ ?

श्री हुकुर्मीसह विसेन—परगनाधीश बस्ती ने उक्त गांवों का निरीक्षण ४-२-६० को किया था। उन्होंने रिपोर्ट वी है कि इन गांवों के पास घाघरा की पुरानी धारा का बहाव कम हो गया है तथा पहले जो धारा सोती के रूप में थी उसका बहाव तेज हो गया है लेकिन जहां से घारायें विभक्त होती हैं वहां से उनकी पूरी लम्बाई तक सर्वेक्षण के लिये फैजाबाद तथा बस्ती जिले के राजस्व ग्राधिकारी सम्मिलित रूप से पुनः निरीक्षण करेंगे, जिससे सीमा निर्धारक धारा को निश्चित किया जा सके।

\*११७—श्री रामलाल--वया यह सही है कि बस्ती जिले के जो किसान बहुत दिन से इन ग्रामों में खेती करते हैं उसपर ग्रब फैजाबाद के कुछ किसान जबरदस्ती कब्जा करने की कोशिश कर रहे हैं श्रीर फैजाबाद के सरकारी कर्मचारी उनकी मदद भी कर रहे हैं ? सरकार, इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही कर रही है ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--जी नहीं, लेकिन कुछ व्यक्तियों के विरुद्ध इन ग्राम वालों व फंजाबाद जिले के भी कुछ ग्राम वालों को परेशान व रने की शिकायत श्राई है, जिसपर जिलाबीश, फंजाबाद से उचित कार्यवाही करने की कहा गया है।

#### प्रयाग में सीनियर साइकालोजिस्ट का रिक्त स्थान

\*११८--श्री दीपनारायण मणि त्रिपाठी--क्या गृहमंत्री बताने की कृपा करेंगे कि Bureau of Psychology त्रयाग में Senior Psychologist का स्थान रिक्त है ? यदि हां, तो कब से ?

श्री कमलापति त्रिपाठी--जी हां। जनवरी, १६५६ से।

स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक तथा सरकार की ग्रोर से पुस्तकों का प्रकाशन

\*११६--श्री बंशीधर शुक्ल (जिला खीरी)--क्या सरकार कृपया बतायेगी कि स्वतंत्रता संग्राम के सैनिकों से सम्बन्धित कहानी, चरित्र, चित्र, घटनाश्रों के वर्णन पर सरकार से कोई रोक लगाई गई है?

श्री कमलापति त्रिपाठी---जी नहीं ।

\*१२०—-श्री बंशीधर शुक्ल--वया सरकार कृषया बतायेगी कि को पुस्तिका, सरकार, स्वतंत्रता संग्राम के सैनिकों की, निकालने जा रही है, उनमें किन-किन सैनिकों को सैनिक साना गया है? श्री कमलापति त्रिपाठी—सरकार स्वतंत्रता संग्राम के सैनिकों के विषय में कोई पुस्तक नहीं निकालने जा रही है। ग्रतः इस बात का, कि उसमें किन सैनिकों को सैनिक माना गया है, कोई प्रदन नहीं उठता ।

\*१२१—श्री बंशीधर शुक्ल—क्या सरकार बतायेगी कि सन् १९५९ ई० में सरकार की श्रोर से कितनी पुस्तके किन-किन लेखकों की प्रकाशित की गई श्रौर कितने लेखकों की पुस्तके छपवाने में कितना-कितना रुपया दिया गया?

श्री कमलापित त्रिपाठी--सूचना संलग्न तालिकाश्रों (क) तथा (ख) मे दी गई है। (देखिये नत्थी 'झ' ग्रागे पृष्ठ ४३१-४३३ पर ।)

\*१२२-१२३--श्री चन्द्रजीत यादव तथा श्री राजनारायण --{१ ग्रप्रेल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।]

खेरीघाट थाने के स्टेशन ग्राफिसर, श्री लखपर्तांसह के विरुद्ध कार्यवाही

\*१२४--श्रीमती सरस्वतीदेवी शुक्ल (जिला गोंडा)--श्या गृह मंत्री कृष्या बतायेंगे कि स्वर्गीय श्री भगवती प्रसाद शुक्ल भूतपूर्व एम० एल० ए० के हत्यारे श्रभयराज सिंह को फर्जी मुकदमे में फर्जी नाम से चालान का जेल भेजवाने के श्रपराध में थाना खेरीघाट (बहराइच) के तत्कालीन स्टेशन श्राफिसर श्री लखपत सिंह के विरुद्ध जो कार्यवाही शासन के विचाराधीन थी, वह की गई या नहीं?

श्री कमलापति त्रिपाठी--मामला ग्रभी शासन के विचाराधीन है।

\*१२५--श्रीमती सरस्वतीदेवी शुक्ल--क्या गृह मंत्री कृपया बतायेगे कि उक्त मामले में क्या दः इ दिया गया था दिया जाने वाला है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी---प्रश्न नहीं उठता ।

वाराणसी जिले में लेखपाल को जेल भेजने से पूर्व चार्ज न ले सकना

\*१२६—श्री द्वारिकाप्रसाद—क्या सरकार बताने की कृषा करेगी कि १ दिसम्बर, १६५६ से १५ फरवरी सन् ६० तक कितने लेखपालों को दफा २१८ ताजीशत िन्द के श्रन्तर्गत जिला वाराणसी में सजा हुई ? क्या जेलखाना भेजते समय उनसे चार्ज नहीं निया गया ? यदि हां, तो क्यों ?

श्री हुकुम सिंह विसेन—एक लेखपाल को सजा हुई। सजा की सूचना श्राधकारियों को विलम्ब से प्राप्त होने के कारण जेलखाना भेजते समय उससे चार्ज नहीं लिया गया। सूचना प्राप्त होने पर उससे चार्ज ले लिया गया।

\*१२७--१२६--श्री छेदीलाल (जिला खारी)--[७ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।]

#### ग्राजमगढ़ जिले में लगान में छूट

\*१३०—श्री विश्रामराय — क्या सरकार कृपया बतायेगी कि धाजमगढ़ जिले में तहसीलवार इस वर्ष सूखा के कारण खरीफ की फसल की मालगुजारी में कितनी छूट किसानों को दी गई है?

श्री हुकुर्मासह विसेन--तहसीलवार मालगुजारी लगान में छूट देने की जो प्रस्ताबित बनराशियां हैं वे निम्नांकित तालिका में श्रंकित हैं:--

तहसोल का नाम		प्रस्तावित छूट को धनराहि		
		 मालगुजारी	लगान	
		<b>इ० न० पै०</b>	 रु० न <b>्पे</b> ०	
१सदर	• •	२,५७,८३०.२६	न्द्र.७०	
२ फूलपुर	• •	४,५०,३२१.५०	२०६.२१	
३लोलगज		२,७७,६२६.३५	• •	
४मुहमदाबाद	• •	१,६५,२०६.३४		
प्र <b>चोसी</b>		१,३५,४१४.३४	११५.८६	
६सगड़ी	• •	१,२८,८२६.१३	• •	
 योग		?४,१५,५२५. <del>२</del> ५	१,१६१.५	

#### पसगवां में ग्रस्पताल की दवाइयां, दाइयां तथा सेनेटरी इन्स्पेक्टर

\*१३१--श्री मन्नालाल (जिला खीरी) --क्या यह सत्य है कि ग्राम पसगवां के ग्रस्पताल के लिए दवाइयां हेल्थ ग्राफिसर के कार्यालय में पड़ा खराब हो रही हैं? यदि हां, तो उनका उत्तरदायी कौन हैं?

श्री हुकुमिंसह विसेन--पसगवां विकास खण्ड (डेवेलपमेंट ब्लाक) में प्रारिम्भक स्वास्थ्य केन्द्र (प्राइमरी हेल्थ यूनिट) के अन्तर्गत खोले जाने वाले अस्पताल के लिए खरीदी गई दवा यां वहां अस्पताल न खुल सकने के कारण जिला स्वास्थ्य अधिकारी खीरी के कार्यालय में सुरक्षित रखी हैं और उनकी भली-भांति देख-रेख हो रही है। अतः यह दवाइयां खराब नहीं हुई हैं।

\*१३२--श्री मन्नालाल--क्या यह सत्य है कि पसगवां में दाई तथा सेनेटरी इन्सपेक्टर पहुंच गये हैं? यदि हां, तो कब?

ृश्री हुकुर्मीसह विसेन--३ दाइयां मई, १६४६ में श्रौर १ सेनेटरी इन्सपेक्टर मार्च, १६५६ को पसगवां विकास खण्ड में पहुंच गये थे श्रौर वे वहां कार्य कर रहे हैं।

जौनपुर जिले में हरिजंन विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देने के सम्बन्ध में शिकायत

\*१३३——श्री रामसमझावन (जिला जौनपुर)——श्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि क्या जौनपुर जिले में हरिजन कल्याण विभाग की ग्रोर से १० वीं कक्षा तक सन ५६—६० के जिये जो छात्रवृत्ति दी गई है, उसमें कुछ छात्र, जो प्रथम श्रेणी के ग्रौर गरीब हैं, उनको न देकर उनसे कम नम्बर प्राप्त करने वाले छात्रों को दी गई है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी---सूचना एकत्र की जा रही है।

\*१३४--श्री रामसमझावन--क्या इसकी शिकायत डी० श्राई० ग्रो० एस०, जौनपुर से की गयी है ? यदि हां, तो इसमें उन्होंने क्या किया ?

श्री कमलापति त्रिपाठी--सूचना एकत्र की जा रही है।

\*१३५-१३६--श्री रामदीन (जिला मैनपुरी)--[७ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थिगित किये गये।] \*१३७--श्री रामदास स्रार्य (जिला मुजफ्फरनगर)--[१ स्रप्रैल, १६६० के लिये स्थिगित किया गया।]

लहरपुर परगने में भूमिबर काइतकारों के दाखिन खारिज की कार्यवाही

\*१३८--श्री प्रताप भान प्रकाश सिंह (जिला सीतापुर)--श्या मरकार कृष्या बनायेगी कि जिला सीतापुर के लहरपुर परगना में ऐसे किनने काश्तकार है जिनके नाम, भूमिश्ररो दाखिन करने के बाद एक वर्ष के झादर श्रीर किननों के इससे श्रीवक समय में दाखिल सारिज हुई ?

श्री हुकुर्मासह विसेन—सीतापुर के लहरपुर परगना में गत वर्ष १,०५७ काइतकारों ने भूमिबरी का रुपया वालिल करने के पश्चात् मन इ प्राप्त की श्रीर सन इ प्राप्त करने के पश्चात् उसी दिन रिजस्टर वालिल खारिज में उसका श्रमलदरामद कर दिया गया ।

\*१३६--श्री प्रतापभानप्रकाश सिंह--श्या सरकार कृतवा बतायेगी कि ऋविष (बाखित खारिज) के सम्बन्ध में विभागीय श्रावेश क्या है ?

श्री हुकुमिंसह विसेन--ित्त गई बैरामन, बैनामा व ग्रन्य हन्तान्तरण के दाखिल खारिज के लिये सम्बन्धिन व्यक्तियों को ३ माह के भीनर तहनीलदार को प्रार्थना-पत्र देना चाहिये, इसके ग्रातिरिक्त लेख गल का भो कर्ने व्य है कि हर माह में ऐसे दाखिन खारिज को सूचना तहसीलदार को दे।

'१४०--भी प्रतायभानप्रकाश सिह--प्रया सरकार कृष्या बतायेगी कि दाखिल सारिज होने में क्या-क्या सुविवा देने का आदेश है ?

श्री हुकुमसिंह विसेन—मूमिशारों को सनद के दाविन खारिज के लिये काश्तकार को कोई प्रार्थना-नश देने की श्रावश्यकना नहीं है। सनद प्राप्त करते के पश्चान् वाखिल खारिज रिजिस्टर में इनका श्रान्त नशरामद शोश्र कर दिया जाता है श्रीर जब लेलगाल माह में अपना वेतन लेने तहनोंन में श्रान्ता है तो उनको खनौनों में भी श्रान्त दरामद करा दिया जाता है। उत्तरा- विकार के विश्वाद रिहन नामनों को कानूनगों मौ के पर जाकर खुश करता है श्रीर जो हम्तान्तरण के विश्वाद शहन मामने हैं उनके निये यह श्रादेश है कि खंड मंडनाधीश सनाह में दो दिन तहसील में जाकर निपटायें।

\*१४१--१४३--श्री रामकृष्ण जैसवार (जिला फर्रखाबाव)--[१ ग्रर्जल, १६६० के लिये स्थिगत किये गये ।]

वेवकली विकास खण्ड में प्रारम्भिक स्वास्थ्य इकाई खोलने के ब्राविश

\*१४४--श्री यमुनासिंह (जिला गाजीपुर)--त्रया सरकार बतलाने को जपा करेगी कि गाजीपुर जिने में कहां-कहां एजोरंथिक, श्रायुर्वेदिक, यूनानी श्रीवधालय विसीध वर्ष १९४६- ६० में खोले जा रहे है ?

श्री हुकुर्मासह विसेत—िजना गाजोगुर के विकास खंड देवकली में एक प्रारम्भिक स्वास्थ्य इकाई, जिनमें एक एनोनेथिक चिकित्सालय भो सम्मिलित है, स्थापित किये जाने के ग्रादेश नियोजन विभाग द्वारा दे दिये गये हैं। इसके ग्रतिरिक्त ग्रौर कोई चिकित्सालय स्थापित नहीं हो रहा है।

#### नार्मल स्कूल्स

\*१४५--श्री यमुनासिह--त्रया सरकार कृता कर बतायेगी कि प्रवेश के किन-किन जिनों में पहल हो से नामंत्र स्कूल मौजूद थे, तथा किन-किन जिलों में नये-नये नामंत्र स्कूल हाल ही में कोले गये हैं? प्रश्नोत्तर ३५३

श्री कमलापति त्रिपाठी---सूचना संलग्न तालिका में प्रस्तुत है । (देखिये नत्यो 'ङा' ग्रागे पृष्ठ ४३४-४३५ पर । )

#### जौनपुर जिले में बेलवार व सोनहिता में ग्रायुर्वे दिक ग्रौषधालय खोलने की प्रार्थना तथा सुजानगंज ग्रस्पताल का भवन निर्माण

\*१४६—शी नागेश्वरप्रसाद (जिला जौनपुर)—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना के लिये स्वीकृत बे लवार ग्रीर सोनहिता (जिला जौनपुर) के ग्रायु-वेंदिक ग्रीथघालय कब खुलने जा रहे हैं ?

श्री हुकुर्मीसह विसेन--जिला जौतपुर के ग्राम बेलवार ग्रौर सोनहिता के लिये ग्रायु-वेंदिक ग्रौषधालय स्वीकृत तो नहीं हैं पर इन प्रस्तावों पर ग्रगले वित्तीय वर्ष में विचार किया जायगा ।

\*१४७—श्री नागेश्वरप्रसाद—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जौनपुर जिले का एलोपैयिक ग्रस्पताल सुजानगंज का भवन कब से बन रहा है, उस पर कब से काम करना हका हुग्रा है ? भवन कब तक पूर्ण हो जायेगा ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--एलोपैथिक चिकित्सालय सुजानगांव का भवन जनवरी, १६५६ से बन रहा है। निर्माण कार्य इंटों की कभी के कारण सितम्बर, १६५८ से रुका हुन्ना था। ३१ मार्च, १६६० तक पूर्ण हो जाने की संभावना है।

\*१४८--श्री मूलचन्द--[७ ग्रक्षेत, १६६० के लिये स्थिगत किया गया।] वाराणसी जिले के कुछ ग्रीषधालयों के भवनों के सम्बन्ध में जानकारी

\*१४६—श्री लोकनाथिंसह (जिला वाराणसी)—क्या न्याय मंत्री कृत्या बतायेंगे कि ग्राम व परगना जाल्हूपुर, जिला वाराणसी में चल रहे राजकीय दवाखाने के लिये भवन कब तक बनवायेंगे ?

श्री हुकुर्मासह विसेन -- ऐसा कोई प्रस्ताव ग्रभी सरकार के विचाराधीन नहीं है।

\*१५०—श्री लोकनाथिंसह—क्या न्याय मंत्री बताने की कृषा करेंगे कि चौबेपुर, परगना कटेहर, जिला बाराणसी में राजकीय दवाखाना के लिये जो भवन खरीदा गया क्या उसमें दवाखाना चल रहा है ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री हुकुमसिंह विसेन—जी नहीं ? क्रय किया हुग्रा भवन ग्रभी प्रयोग के लिये उप-युक्त नहीं है ।

\*१५१—श्री लोकनाथ सिह—क्या न्याय मंत्री कृपया बतायेंगे कि परगना कठेहर, ग्राम नियार में चल रहे राजकीय दवाखाने के लिये कब तक भवन बनवाने की कृपा करेंगे ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--त्रयोंकि ग्राम नियार, जिला वाराणसी में कोई राजकीय दवाखाना नहीं है, भवन बनवाने का प्रश्न नहीं उठता है।

\*१४२-१५३--श्री गोविन्दनारायण तिवारी (जिला जालौन)---[७ प्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।]

## बस्ती जिले में परिवार नियोजन केन्द्र

\*१५४--श्री सोहनलाल घुसिया (जिला बस्ती)-- त्र्या सरकार कृथया बतायेगी कि बस्ती जिले में फेमिली प्लानिंग के कितने सेन्टर हैं ग्रीर कहां-कहां ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--दो सेन्टर है, जो निम्नलिखित रथानों पर स्थापित है :---

१--- भनवापुर,

२--नगरबहादुरपुर ।

\*१५५--श्री सोहनलाल धुसिया---ग्रभी तक इन सेन्टरों से कितने लोगों ने फायदा उठाने की चेष्टा की है ?

श्री हकूमसिंह विसेन--ऐसे व्यक्तियों की संख्या १७५ है।

\*१५६--श्री राजाराम शर्मा--[२१ मार्च, १६६० के लिये प्रक्त १०७ के अन्तर्गत स्थानान्तरित किया गया ।]

# खीरी जिले में ला ऐण्ड ग्रार्डर सम्बन्धी मीटिंगे

\*१५७—श्री शिवप्रसाद नागर—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि दिनांक १२-२-६० के प्रक्रन नं० २१० के उत्तर के संदर्भ में ग्राई० जी० के सर्कुलर १६५३ में जारी होने के बाद से दिनांक ३१-१-६० तक जिला खीरी में जो ६ बैठकें शान्ति ग्रीर व्यवस्था के सम्बन्ध में हुई है वह कब-कब किन-किन तारीखों में हुई है ?

श्री कमलापति त्रियाठी—श्रावश्यक सूचना संलग्न तालिका मे दो हुई है। ( देखिये नत्थो 'ट' ग्रागे पृष्ठ ४३६ पर )

\*१५८--श्री रणबहादुर सिंह (जिला बस्ती)--[७ श्रश्रेल, १६६० के लिये स्यगित किया गया ।]

\*१५६--श्री शिवप्रसाद नागर--[१ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया।]

सेहरामऊर जनूबी थाना के श्रन्तर्गत विभिन्न ग्रपराध सम्बन्धी श्रभियोग

\*१६०-श्री देवन।रायण भारतीय (जिला शाहजहांपुर)--क्या सरकार यह बताने की कुषा करेगी कि जिला शाहजहांपुर के श्रन्तर्गत थाना सेहरामकर जनूबी में सन् ५८ श्रीर ५६ में पृथक-पृथक कितनी डकेंतियां, राहजनी, चोरी श्रीर कत्ल की वारदातें हुई ?

श्री कमलापति त्रिपाठी--सूचना संलग्न तालिका मे दी हुई है।

( देखिये नत्थी 'ठ' ग्रागे पृष्ठ ४३७ पर )

\*१६१—श्री देवनारायण भारतीय—क्या सरकार कृपया यह भी बतायेगी कि उकत वारवातों में से पृथक-पृथक कितनी घटनाश्रों का पता लगा श्रीर कितने मुकदमें चले श्रीर कितने श्रीभगुक्तों को सजा हुई ?

श्री कमलापति त्रिपाठी--सुचना संलग्न तालिका में दी हुई है।

( देखिये नत्थी "ड" ग्रागे पृष्ठ ४३८ पर )

\*१६२--श्री देवनारायण भारतीय--जन श्रभियुक्तों में कितने जिला शाहजहांपुर के निवासी थे श्रौर कितने पड़ोसी श्रन्य जिलों के ?

श्री कमलापति त्रिपाठी--३४ शाहजहांपुर ग्रौर ४ ग्रन्य जिलों के ।

\*१६३--श्री गज्जूराम (जिला झांसी)---[स्थगित किया गया।]

\*१६४—श्री **बाबूराम** (जिला बरेली)—[१ श्रप्रैल, १६६० के लिये स्थि<sup>गित</sup> किया गया । ] प्रश्नोत्तर ३५५

## पट्टी ग्रौर रामगंज में इण्टर व साइंस कक्षा खोलने की प्रार्थना

\*१६५—श्री हरकेशबहादुर (जिला प्रतापगढ़)—क्या सरकार कृपया बतायेगी कि क्या पट्टी ग्रौर रामगंज, जिला प्रतापगढ़ में इण्टर ग्रोर साइन्स कक्षा खोलने के लिये कोई मांगे शिक्षा मंत्री के समक्ष एक साल के ग्रन्दर की गई है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी—जी हां, माध्यमिक विका परिषद् के पास दोनों विद्यालयों से मान्यना हेतु ग्रावेदन-पत्र प्राप्त हुए हैं।

## नगरों के हरिजनों को सहायता न मिलना

\*१६६—श्री रामदीन—क्या सरकार बताने की हृपा करेगी कि क्या उसने कोई ऐसा ब्रावेदा जारी किया है कि जो हरिजनों को ब्रनुदान—स्कान, कुब्रां ब्रौर उद्योग के लिये, मिलता है, वह ब्रनुदान टाउन एरिया तथा म्युनिसिपैलिटियों के हरिजनों को न दिया जाय ?

श्री कमलापति त्रिपाठी---यह ग्रनुदान ग्रामीण जनता के लिये है । ग्रादेश जारी करने का प्रश्न नहीं उठता ।

\*१६७-१६८-श्री सुखलाल (जिला इटावा)--[१ भ्रप्रैल, १६६० के लिये स्थिगित किये गये।

## मुरादाबाद जिले में शिक्षा विभाग के एस० डी० म्राई०

\*१६६—श्री सुक्खनलाल (जिला मुरादाबाद)—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि मुरादाबाद जिले में कितने एस० डी० ग्राई० दिक्षा विभाग में कार्य कर रहे हैं? उनमें कितने ऐसे हैं जो ३ वर्ष से ग्रधिक समय से इस जिले में कार्य कर रहे हैं?

श्री कमलापित त्रिपाठी—मुरादाबाद जिले में १२ विद्यालय प्रति-उप-निरीक्षक कार्य कर रहे हैं। उनमें से ५ ऐसे है जो इस जिले में ३ वर्ष से ग्रधिक समय से कार्य कर रहे हैं।

\*१७०-१७१-श्री भूपिकशोर (जिलाएटा)--[१ प्रत्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किये गये ।]

\*१७२-१७३--श्री गुप्तार सिंह--[७ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये । ]

\*१७४--श्री रामस्वरूप वर्मा--[७ ग्रत्रैल, १९६० के लिये स्थगित किया गया।]

## भ्रठेहा परगने में चकबन्दी का कार्य रोकना

\*१७५—श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि क्या श्रठेहा (प्रतापगढ़) परगने में चकबन्दी करने का निश्चय किया गया था श्रौर श्रब बदल दिया गया ?

श्री हुकुर्मासह विसेन—िक्ता प्रतापगढ़ की सदर तहसील में, जिसमें एक परगना ग्रिटेहा भी है, चकबन्दी करने का निश्चय कुछ रामय पूर्व किया गया था, जो श्रब बदल दिया गया है।

\*१७६—श्री रामस्वरूप वर्मा—इस सम्बन्ध में ग्रब तक तैयारी करने में कितना बयय हुग्रा ग्रौर चकबन्दी कराने का इरादा क्यों बदला गया ?

श्री हुकुर्मासह विसेन—प्रत्येक परगने में चकबन्दी के खर्चे का ग्रलग-ग्रलग हिसाब नहीं रखा जाता । इसलिये परगना श्रठेहा में हुए व्यय की धनराद्यि निश्चित रूप से बताना सम्भव नहीं है ।

उपरोक्त परगने में चकबन्दी का कार्य प्रशासकीय कारणों से रोका गया था ।

#### जिला ग्रस्पताल, उन्नाव को बढ़ाने की प्रार्थना

\*१७७—श्री भगवतीसिंह विशारद (जिला उन्नाय)—क्या न्याय मंत्री यह बताने की कृपा करेगे कि उन्नाव से जनता तथा सरकारी ग्राधिशारियों द्वारा जिला ग्रस्पताल के स्थान परिवर्तन करने तथा उसके बढ़ाये जाने की मांग सरकार के पाग श्रायी ह ?

श्री हुकुमसिंह विसेन—जी हां । सरकारी श्रधिकारियो से उन्नाव जिला श्रस्पताल के बढ़ाये जाने का प्रस्ताव प्राप्त हुन्ना हे ।

\*१७८—श्री भगवतीसिंह विशारद—स्या न्याय मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि क्या सरकार को ज्ञात है कि उन्नाय जिले के, जिला अस्पताल के महिला विभाग में कर्मचारियों की कमी है और उनकी पूर्ति के लिये अस्पताल के उच्च अधिकारियों ने मांग की है ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--जी हां। सिविल सर्जन, उन्नाय ने वहां के जिला श्रस्पताल के महिला विभाग में एक ग्रांतिरक्त ग्राया तथा एक ग्रांतिरक्त पर महतरानी के सजन का प्रस्ताव भेजा है।

\*१७६—श्री भगवतीसिंह विशारद—क्या न्याय मर्त्रा यह बताने की कृपा करेंगे कि उन्नाव जिला ग्रस्पताल में दवा-दारू पर वित्तीय वर्ष १६४६–४६ ग्रीर १६५६–६० में कितना धन व्यय हेतु स्वीकार हुग्रा था ?

श्री हुकुमिसह विसेन--उन्नाव जिला ग्रस्पताल में दवा-दार पर वित्तीय वर्ष १६४५-४६ ग्रौर १६५६-६० में निम्नलिखित घन व्यय हेनु स्वीकार हुन्ना था:

	१६	58X-8	'६		
	A-4-6-40	-		ন্ত্ ত	
श्रावर्तक			* •	ヲ,ヲマメ	(मूल ग्रनुदान)
ग्रनावर्तक	• •		• •	४,४००	(मूल श्रनुदान) (पूरक श्रनुदान)
		योग		द,द <b>२</b> ५	स् ऽ
	१	EXE-8	Ę o		
	Appen and a			C 7	/
श्रावर्तक्	• •		* *		(मूल ग्रनुवान)
श्रनावर्तक	• •		• •	१७,५००	(पूरक भ्रनुदान)
		_			
		याग	• •	२३,८७०	₹৹
				-	

## मुर्दा ग्रजायबघर व प्रोग्रेस म्युजियम, लखनऊ के भवनों का निर्माण ध्यय

\*१८०-श्री मोतीलाल श्रवस्थी-- त्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि मुर्दा श्रजायबघर, लखनऊ व प्रोग्रेस म्युजियम, लखनऊ की नई इमारतों के निर्माण में श्रनुमानित व्यय क्या था श्रीर उसमें कितना भाग कितने व्यय से पूर्ण हो खुका है ?

श्री कमलापित त्रिपाठी—मुर्दा ग्रजायबघर, लखनऊ व प्रोग्रेस म्युजियम की नई इमारतों के निर्माण पर कमझः १३-४० लाख ग्रौर ४,३४,३०० रुपयों के व्यय का ग्रनुमान था । मुर्दा ग्रजायबघर की इमारत १०,४२,७४३ रु० में बन गयो हैं, परन्तु इसमें कुछ काम शेष हैं। प्रोग्रेस म्युजियम इमारत का एक दो मंजिला ग्रौर एक एक मंजिला खंड तैयार हो गया है। उस पर ग्रब तक ३,६६,४३२ रु० व्यय हो चुके हैं।

प्रक्नोत्तर ३५७

#### त्याग-पत्र देने वाले ग्रध्यापकों का शेष वेतन

\*१८१—श्री वीरसेन (जिला मेरठ)—क्या गृह मंत्री बताने की कृपा करेगे कि कितने व्यक्तियों ने शिक्षा विभाग के ग्रध्यापक वर्ग से १६५७—५८ तथा १६५८—५६ में त्याग-पत्र दिये तथा उनमें से कितने व्यक्तियों की तनख्वाह के शेष धन ग्रभी तक ग्रदा नहीं किये गये ?

श्री कमलापति त्रिपाठी--सूचना एकत्रित की जा रही है।

\*१८२--श्री वीरसेन--क्या गृह मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि उक्त श्रदायगी में देरी के क्या कारण हैं तथा कौन श्रधिकारी उक्त देरी के लिये उत्तरदायी है ?

श्री कमलापित त्रिपाठी --सूचना एकत्रित की जा रही है।

\*१८३—श्री वीरसेन—क्या गृह मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि भविष्य में ऐसी देरी को रोकने के लिये सरकार क्या व्यवस्था कर रही है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी--सूचना एकत्रित की जा रही है ।

#### बुलन्दशहर कलेक्टरी में हरिजन व पिछड़े वर्ग के चपरासी

\*१८४—श्री हिम्मत सिंह (जिला बुलन्दशहर)—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जिला बुलन्दशहर में कलेक्टरी कचेहरी में कुल कितने चपरासी है श्रौर उनमें से कितने हरिजन श्रथवा पिछड़े वर्ग के हैं ?

श्री कमलापति त्रिपाठी--५६५, जिसमें ४६ हरिजन तथा ११० पिछड़े वर्ग के हैं।

## मोहम्मदाबाद-गोहना का नार्मल स्कूल

\*१८५-श्री चन्द्रबली शास्त्री ब्रह्मचारी (जिला ग्राजमगड़)--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि मोहम्मदाबाद-गोहना-ग्राजमगढ़ में जो नार्मल स्कूल खुला है क्या वह उसे वहां से हटा कर कहीं ग्रन्यत्र ले जाने का विचार कर रही है ? यदि हां, तो क्यों ?

श्री कमलापति त्रिपाठी--सम्प्रति नहीं । प्रश्न नहीं उठता है।

#### जौनपुर जिले में हरिजन कल्याण विभाग को कृप निर्माणार्थ ग्रनुदान

\*१८६—श्री माता प्रसाद (जिला जीनपुर)—क्या गृह मंत्री को जात है कि प्रदेशीय हरिजन कल्याण विभाग द्वारा ग्रायोजित १४-१०-५६ को वाराणसी में वाराणसी जोनल हरिजन कल्याण ग्रथिकारियों को मीटिंग में जौनपुर जिले के हरिजन कल्याण विभाग को पानी पीने के कृप निर्माण हेतु ८० हजार रुपये ग्रनुदान देने की मांग की गयी थी ?

श्री कमलापति त्रिपाठी--जी हां।

\*१८७--श्री माताप्रसाद--क्या गृह मंत्री कृपया बतायेंगे कि क्या हरिजन कल्याण् विभाग द्वारा दिये जाने वाले कूप एवं गृह निर्माण हेतु ग्रनुदानों की पहली किस्त, निर्माण-काय शुरू होने के पूर्व हो देने के ग्रादेश विभाग द्वारा जिलों में भेजे गये हैं ?

श्री कमलापति त्रिपाठी -- कूप निर्माण हेतु ग्रानुदान की पहली किस्त को निर्हेष परिस्थितियों में ग्राग्रिम देने के सुझाव जिलों को भेज गये हैं।

\*१८८--श्री मिलिखार्नासह (जिला मैनपुरी)--[१ म्रप्रैल, १६६० के लिये स्थिगित किया गया।]

\*१८६--श्री रामंबीन--[७ प्रव्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया।]

ः १६०--श्री जंगबहादुर वर्मा (जिला बागबको)--[৩ ছেपा, १६६० के लिये स्थिगित किया गया।]

#### बाराबंकी जिले में पुराने डाक्टर व कम्पाउण्डर

\*१६१--श्री जंग बहादुर वर्मा--म्यान्याय पंरी बताने की कपा करेगे कि जिला बाराबंकी के अन्तर्गत कितने ऐने डाक्टर व कम्पाचण्डर हे जो एक की स्थान पर तीन वर्ष से अधिक से कार्य कर रहे हैं?

श्री हुकुर्मासह विसेन—दो पो० एम० एप० द्वितीय (पुरुष) डाफ्टर श्रीर चार कम्पाउन्डर।

\* १६२--श्री हरकेश वहादुर--[७ अश्रेल, १६६० के लिये स्थागत किया गया।] श्रिसिस्टेंट रिजस्ट्रार, कोग्रापरेटिव सोसाइटी, जिला रायबरेली की सुरक्षा व्यवस्था

\*१६३--श्री रामप्रसाद (जिला रायबरेली) - प्रा गह मंत्री चताने की कृषा करेंगे कि जिला रायबरेली में किन-किन ग्रविकारियों की रक्षा हेतु विशेष पुलिस की व्यवस्था की गयी है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी -- प्रसिस्टेट रजिस्ट्रार के श्रापरेटिय से साइटी के लिये सुरक्षा की व्यवस्था की गयी है।

\*१६४--श्री रामप्रसाद--उक्न ग्रथिकारियों की इस व्यवस्था पर सरकार की कितना व्यय करना पड़ रहा है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी - - इस क्ववस्था के लिये कोई व्यय नहीं करना पड़ रहा है।

\*१६५-१६७--श्री रामप्रसाद नौटियाल (जिला गढ़पाल) -[१ अर्थल, १६६० के लिये स्थात किये गये।]

\*१६८-१६६--श्री शिवराजबहादुर (जिला बरेली) -- [१ श्रव्रल, १६६० के लिये स्थिगित किये गर्थे।]

\*२००-२०१--श्री रूर्मासह--[१ श्रप्रैल, १६६० के लिये रथांगत किये गये।] पिसनहरी गांव की झील का पानी निकालने का सुझाव

\*२०२—श्री शिवराजिंसह यादव (जिला बदायूं)—क्या सरकार को ग्राम पिसनहरी (तहसील बिसौली, जिला बदायूं) का झील का पानी निकट की नदी ''सोत '' में नाला खोद कर बहा देने ग्रीर इस प्रकार रिक्त भूमि में खेती करने का कोई सञ्जाव प्राप्त हुग्रा है ?

#### श्री हुकुमसिंह विसेन-- जी हां।

\*२०३--श्री शिवर।जिंसह यादव--प्रदि हां, तो कब ग्रीर ग्रव तक उसमें क्या कार्यवाही को जा सकी है?

श्री हुकुर्मासह विसेन — उक्त सुझाव गत मार्च, १६५६ में प्राप्त हुआ था। सुझाव को कार्यान्वित करने के लिये जिला तथा सिचाई प्रधिकारियों को ग्रावश्यक ग्रावेश तत्काल ही वे विये गये थे। नाले को खुदाई ग्राम मुंडिया तक पहुंचने पर इस भय के कारण कि कहीं भील का पानी मुंडिया ग्राम की ग्रीर बहरी पर उनके खेत बरबाद न हो जाये, मुंडिया ग्रामवासियों ने काफी विरोध किया, फिर नलकूप विभाग ने दो बार सर्वेक्षण भी किया, परन्तु स्थानीय विरोध के कारण मामला हल न हुआ।

जिलाभीता, बवायूं इस प्रदन की सुलझाने का प्रव भी प्रयत्न कर रहे हैं।

# \*२०४--श्री खुशीराम--[७ ग्रद्रैल, १६६० के लिये स्यन्ति किया गया।] दादरी चुनाव क्षेत्र में महिला चिकित्सालय न होना

\*२०५--श्रीमती सत्यवतीदेवी रावल (जिला बुलन्दशहर)--क्या सरकार दादरी चुनाव क्षेत्र में तहसील सिकन्दराबाद, जिला बुलन्दशहर में एक महिला ग्रस्पताल खोलने का विचार कर रही है?

श्री हुकुर्मासह विसेन--जी नहीं।

\*२०६—श्री नारायणदत्त तिवारी (जिला नैनीताल)—[१ भ्रश्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किया गया।]

#### फर्रुखाबाद जिले में कागजात दुरुस्ती के मुकदमे तथा ग्रयने निवास क्षेत्र में काम करने वाले लेखपाल

\*२०७--श्री राजेन्द्रसिंह यादव (जिला फर्डखाबाद)--त्रया सरकार बताने की कृषा करेगी कि जिला फर्डखाबाद, तहसील कायमगंजव सदर तहसील के परगनाधीशों की श्रदालत में कितने मुकदमा कागजात दुरुस्ती के सन् १९५८-५६ में दायर हुए? उनमें कितनों का फैसला हो गया श्रीर कितने श्रव भी शेष है?

श्री हुकुर्मासह विसेन--६८२ दायर हुए, जिनमें से ६६८ का फैसला हो गया श्रौर १४ शेष है।

\*२०८--श्री राजेन्द्रसिंह यादव--क्या सरकार बताने को कृपा करेगी कि फर्रखाबाद जिले में ऐसे कितने लेखपाल है जो श्रपने निवास स्थान के क्षेत्र में हैं: कार्य कर रे हैं ? क्या इन लेखपालों को निवास स्थान क्षेत्र से स्थानान्तरित करने पर वह विचार कर रही है ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--ऐसे १७ लेखपाल हैं। उनका स्थानान्तरण शासन के विचार-णीय नहीं है।

#### बार एसोसिएशन, बदायुं के लिए जमीन की स्वीकृति

\*२०६—श्री टीकाराम (जिला बदायूं)—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि कलेक्टरी कचेहरी, बदायूं की सरकारी जमीन बार एसोसियेशन सरकारी शर्तों के ग्रधीन पट्टे पर चाहता था? यदि हां, तो क्या जमीन पट्टे पर दी गयी या नहीं? यदि नहीं, तो क्यों?

श्री हुकुर्मासह विसेन--जो हां। पट्टे की स्वीकृति सरकार द्वारा दी जा चुकी है परन्तु पट्टे का निष्पादन (Execution) ग्रभी नहीं हुग्रा है, क्योंकि पट्टे में कुछ ग्रलियां थीं ग्रौर उन्हें दुहस्त कराया जा रहा है।

#### हरिजन ए० डी० ग्रो०

\*२१०--श्री रामिककर (जिला प्रतायगढ़)--क्या गृह मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि प्रदेश के किन-किन जिलों में हरिजन कल्याण विभाग की श्रोर से हरिजन ए० डी० श्रो० रक्खे गये हैं?

#### श्री कमलापति त्रिपाठी--निम्नलिखित जिलों में--

१—–ग्राजमगढ़,	७—–सोतापुर,
२बाराबंकी,	८इ लाहाबाद,
३मेरठ,	<b>६</b> —-बस्ती,
४हरदोई,	१०देवरिया,
५गोरखपुर,	११——नैनीताल,
६जीनपूर,	१२०० सहराइम ।

## विश्वविद्यालय पुनस्संघटन योजना

\*२११--श्री देवकीनन्दन विभय--त्रत्रा गृढ मंत्री स्नागरा विश्वविद्यालय को पुनर्सगठित करने पर विचार कर रहे हे ?

श्री कमलापति त्रिपाठी-- जो हां।

\*२१२--श्री देवकीनन्दन विभव - - न्या गृह मंत्री प्रदेश के इंटरमोडिएट श्रीर डिग्री कक्षाओं के कालेजों को पृथक् करने पर बिचार कर रहे ह

श्री कमलापति त्रिपाठी--जो नही।

#### श्रफजलगढ़ परगना निवासी लाला राजाराम की हत्या

\*२१३—श्री शिवराम (जिला बिजनोर)—क्या मरकार यह बताने की कृपा करेगी कि क्या श्री लाचा राजाराम को दिन दहाड़ें गे ली मार कर गत वर्ष परगना ग्रफजलगढ़, जिला बिजनौर में दुकान पर बड़ें कत्ल निया गया ह ? सरकार ने इस सम्बन्ध में ग्रब तक क्या कार्यवाही की हैं ?

श्री कमलापति त्रिपाठी -- जो हा, यह हत्या २० मार्च, १६५६ को शाम के ७.३० को गोली मार कर को गयी थो।

उपर्युक्त ग्रवराध का मुकदमा धारा ३०२ भारतीय दण्ड विधान के ग्रन्तर्गत कायम किया गया। इस भामले में सो० द्वार्ट० डो० द्वारा जांच करायी गयी। कार्यवाही जिनाक्त के परचात् ग्रभिगुक्तों का चालान किया जायेगा।

#### चकबन्दी वाले जिले

\*२१४--श्री ,शीतलाप्रसाद (जिला गोंडा) -- त्रया सरकार बताने की कृपा करेगी कि प्रदेश के कितने जिलें। में चकबन्दी का काम प्रारम्भ किया जा चका है ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--फरवरो, १९६० के अन्त तक प्रवेश के ३४ जिलों में चकबन्दी का कार्य प्रारम्भ किया जा चुका है।

# चकबन्दी रोकने के कथित श्रादेश

\*२१५—श्री सजीवनलाल (जिला उन्नाव)—क्या सरकार बताने को कृपा करेगी कि सन् १९५९ में कु उ समय के लिये चकवन्दी योजना को रोकने के लिये जिलाबी शों को ग्रादेश भेजे गये थे ? यदि हां, तो वे क्या थे ग्रीर इसकी ग्रावश्यकता क्या थी ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--इस प्रकार के कोई भ्रावेश शासन द्वारा नहीं जारी किये गये।

\*२१६—-श्री सजीवनलाल—वया उक्त श्रादेशों को निरस्त करके फिर चकबनी योजना को चालू कर दिया गया है ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--यह प्रश्न नहीं उठता।

# ग्रायुर्वेदिक चिकित्सा ग्रधिकारी

\*२१७--श्री मदनगोपाल वैद्य (जिला फँजाबाद)--क्या सरकार कृपया यह बतायेगी कि देशी चिकित्सा पद्धति के विकास के लिये १९४९-६० के बजट में जो ३६,२०० ६० स्वोक्तत हुआ था, उसका व्यय किस प्रकार किया गया ?

श्री हुकूमसिंह विसेन--ग्रभी कुछ भी व्यय नहीं हुन्ना है।

\*२१८—श्री मदनगोपाल वैद्य--उया यह सही है कि इस समय डिप्टो डाइरेक्टर स्रायुर्वेद, त्रिसिपल स्टेट स्रायुर्वेद कालेज तथा सुपरिन्टेन्डेस्ट स्टेट स्रायुर्वेदिक फार्मेसी के पद पर एनोपैथिक डाक्टर काम कर रहे है ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--डिप्टो डाइरेक्टर (म्रायुर्वेद) के पद के लिये कमीशन द्वारा चुनाव हो चुका है। कमोशन द्वारा चुने हुए व्यक्ति के उत्तर की प्रतीक्षा की जा रही है। जब तक वह चार्ज नहीं लेते है आयुर्वेदिक विभाग के कार्य की देखभाल म्रतिरिक्त स्वास्थ्य संचालक कर रहे हैं।

्स्टेट ग्रायुर्वेदिक कालेज के प्रिसिपल के पर पर इस समय कोई एले पेथिक डाक्टर काम नहीं

कर रहे हैं। अब इस पद पर आयुर्वे दिक के स्नातक काम कर रहे है।

स्टेट आयुर्वेदिक फार्म सी के Superintentdent के पद पर असिस्टेंट ड्रग्स कंट्रोलर काम कर रहे हैं।

\*२१६--श्री टीकाराम पुजारी--[७ म्रजैल, १६६० के लिये स्थिगत किया गया ।] जिला बदायूं की सदर तहसील में चकबन्दी के म्रन्तर्गत लिए जाने वाले गांव

\*२२०--श्री टीकाराम पुजारी--क्या सरकार कृषया बतायेगी कि जिला बदायूं की तहसील बदायूं में कितने गांवों को चकबन्दी में बढ़ाने को रिपोर्ट चकवन्दी श्रकसर ने को है श्रीर उनके बढ़ाने का क्या कारण है ?

श्री हुकुर्मीसह विसेन—जिला बदायूं की सदर तहसील के ६२ ग्रीर गांवों को चकबन्दी के ग्रन्तर्गत जिए जाने की सिफारिश जिले से प्राप्त हुई है क्योंकि ये चकबन्दी के लिये उपयुक्त पाये गये है।

#### मेघराजपुरा में दरयावींसह डाकू को मारने वालों को इनाम

\*२२१--श्री रामस्वरूप वर्मा--क्या गृह मंत्री कृपया बतायेंगे कि क्या जिला सहारनपुर में देवबन्द थाना के ग्राम मेघराजपुरा में कुख्यात डाकू दरयाव सिंह मारा गया है? यदि हां, तो उसके मारने वाले कीन है श्रीर इस सम्बन्ध में क्या कोई शिकायत जनता द्वारा माननीय गृह मंत्री को दिसम्बर के चतुर्थ सप्ताह के प्रारम्भ में प्राप्त हुई है।

श्री कमलापित त्रिपाठी——जो हां, डाकू दरयाव सिंह उक्त ग्राम में ४/५-१२-५६ की रात्रि में पुलिस श्रीर गांव वालों की सिम्मिलित पार्टी से हुई एक मुठभेड़ में मारा गया। इस मुठभेड़ में पुलिस के सदस्य, स्विरिन्टेन्डेन्ट श्राफ पुलिस, सहारनपुर, देयबन्द के थानाध्यक्ष तथा कान्स्टेबिल रूमाल सिंह थे। गांव वालों में मेंघराजपुरा गांव के सर्वश्री गंगाराम, चौहल, भज्जल ग्रीर बुद्धराम थे। इस सम्बन्ध में श्री सत्यनारायण श्रप्रवाल, निवासी गूजर बाड़ा देवबन्द को एक शिकायत जनवरी, १६६० के चतुर्थ सप्ताह में प्राप्त हुई है।

\*२२२--श्री रामस्वरूप वर्मा--क्या उस डाकू के पकड़ ने या मुर्दा लाने के लिये सरकार ने ५,००० रुपया इनाम घोषित किया था? यदि हां, तो वह इनाम किसे दिया गया?

श्री कमलापित त्रिपाठी—-इरयाव सिंह को पकड़ रेया मुदालाने के लिये सिर्फ १,००० रु० का इनाम घोषितथा। यह इनाम सर्वश्री गंगाराम, चौहल, भज्जल ग्रौर बुद्धू राम के बीच २५० रु० प्रत्येक के हिसाब से वितरित किया गया।

#### पीलीभीत जिले में विभिन्न ग्रपराघों में क्षति

\*२२३--श्री प्रताप सिंह--क्या गृह अंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि जिला पोलीभीत व नैनीताल में १ जनवरी, १६४८ से सन् १६४६ तक कितनी डक्तियां व कत्ल हुए ग्रौर उनमें कितने धन, जन व सम्पत्ति का नुकसान हुग्रा ?

## श्री कमलापित त्रिपाठी -- सूचना का विवरण संलग्न हं। (देखिये नःथो 'ढ' श्रागे पृष्ठ४३६ पर)

#### इटावा जिले में टेलीफोन तारों का काटा जाना

\*२२४--श्री भुवनेशभूषण शर्मा--त्रया सरकार बताने का कृपा करेगो कि जिला इटावा में १ जनवरो, १६५७ से ३१ दिसम्बर, १६५६ तक टेलोफोन के तार कितनी बार कार्ट गये ग्रौर तार काटने के जुर्न में कितने व्यक्ति पकड़े गये ?

श्रो कमलापति त्रिपाठी--१० बार। कोई व्यक्ति नहीं पकड़ा गया।

## कन्धरापुर थाने के श्रन्तर्गत विभिन्न श्रपराध

\*२२५—भी मुक्तिनाथ राय—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि स्राजमगढ़ जिले के कन्धरापुर आने में १ जुलाई, १९५९ से ३१ स्रक्तूबर, १९५९ तक कितनी डकैतियां पड़ी ?

#### श्री कमलापति त्रिपाठी--दो।

\*२२६—श्री मुक्तिनाथ राय—क्या सरकार बताने की कृषा करेगी कि उपत जिले के उक्त थाने में १ फरवरी, १६५६ से ३१ दिसम्बर, १६५६ तक कृल कितने कत्ल, डकंतियां, चोरी, राहजनी तथा फसल कटाई की घटनायें हुई ?

श्री कमलापति त्रिपाठी—१ कत्ल, २ डकंती, २० चोरी, तथा २ फसल कटाई की घटनाएं हुई; राहजनी की कोई घटना नहीं हुई।

#### गणेशशंकर विद्यार्थी मेमोरियल इण्टरमीडिएट कालेज, महाराजगंज के हिसाब की जांच

\*२२७—श्री मदन पांडेय—क्या सरकार कृपया बतायेगी कि गोरलपुर जिले के महाराजगंज स्थित गणेदाशंकर विद्यार्थी मेमोरियल इण्टरमीडिएट कालेज में गबन ग्रयत ग्राथिक गड़बड़ियों की जांच हो रही हैं? यदि हां, तो क्या सरकार कृपया बतायेगी कि उस गबन को सुचना कब प्राप्त हुई थी तथा उसकी जांच कब तक समाप्त होगी ?

श्री कमलापित त्रिपाठी--जी हां, विद्यालय में गबन की सूचना १२-६-५६ को मिली तथा पुलिस उस पर जांच कर रही है।

## प्रतापगढ़ जिले में मोटर दुर्घटनायें

\*२२८—श्री हरकेशबहादुर—क्या सरकार कृपया बतायेगी कि १६५६ में तथा १६६० में १५–१–६० तक प्रतापगढ़ जिले में कितनी द्रक भिड़न्त की घटनाएँ हुई है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी---१६४६ में एक घटना हुई व १६६० में (१५-१-६०) तक कोई घटना नहीं हुई ।

\*२२६-श्री हरकेशबहादुर-क्या सरकार कृपया बतायेगी कि १६५६ में प्रतापगढ़ जिले में कितनी बसें श्रयवा सरकारी मोटरों द्वारा दुर्घटनाएं (accidents) हुई है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी—सरकारी मोटरों द्वारा दो दुर्घटनाएं हुई; बसों द्वारा कोई दुर्घटना नहीं हुई ।

## टेहरी-गढ़वाल जिले में वैद्यों को सहायता

\*२३०--श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन (जिला टेहरी-गढ़वाल)--वया न्याय मंत्री कुपया बतायेगे कि विगत पंचांग वर्ष के ग्रन्दर सरकार ने टेहरी-गढ़वाल के किन-किन वैद्यों को ग्राथिक महायता दी है ग्रीर कितनी-कितनी दी है ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--श्री विश्वेश्वर प्रसाद, वैद्य. ग्राम व पोस्ट नगनी को २४० ६० की तथा श्री स्वामी लक्ष्मण दास, वैद्य, झान्तिपुर, तेखला, उत्तरकाशी को ५०० ६० की श्राधिक सहायता दी गई है।

## जुडीशियल सर्विस के अन्तर्गत परिनागित व पिछड़े वर्ग के लोग

\*२३१—श्री गयात्रसंदि—दया सरकार बताने ती हृषा करेगी कि उत्तर प्रदेश सरकार के नीचे लिखे पद पर कितने-कितने व्यवित काम कर रहे हैं श्रीर उनमें से कितने परिगणित तथा पिछड़े वर्ग के हैं ?

- (१) डि स्ट्रिश्ट सेशन जज,
- (२) एडीश्चनल सेश्चन जज,
- (३) सिविल एण्ड सेदान जज,
- (४) जज, स्माल काज कोर्ट,
- (५) सिविल जज फर्स्ड क्लास,
- (६) सिविल जज सेकेण्ड क्लास,
- (७) मुन्सिक (सिटी),
- (=) मुन्सिफ (एडीग्रनल),
- (६) जुडिशियल श्राफिसर ।

श्री हुकुर्मासह विसेन—प्रदेश में जुडीशियल सर्विस के श्रन्तर्गत पदों का वर्गीकरण निम्न प्रकार है। उनमें से प्रत्येक एर जितने श्रफसर इस समय कार्य कर रहे हैं श्रीर उनमें से जितने परिगणित तथा विछड़े वर्ग के है उनकी संख्या उस पद के सामने श्रंकित है:

		श्रफसरों की संख्या	परिराणित जाति	<b>पिछड़े</b> वर्ग
यू० पी० हायर जुडीशियल सर्वि	 ।स			
डि स्ट्रिक्ट सेशन जज		85	शून्य	8
श्रितिरिक्त डिस्ट्रिक्ट सेशन जज		. હ	27	शून्य
सिबिल एण्ड सेशन जज .	•	. ৩६	"	१
यू० पी० सिवित्र सर्विस (जुडी सिवित जज	िहायल ब्रांच)—			
सिविल जज		• ৩ন	शून्य	१
मुन्सिफ	• •	. የሂሂ	ও	२
जुडीशियल ग्रफसर		. २२१	१	ş

<sup>\*</sup>२३२--२३४--श्री गज्जूराम--[स्थगित किये गये।]

<sup>\*</sup>२३५--कुमारी श्रद्धादेवी शास्त्री--[स्थिगत किया गया।]

## इंग्लिश स्कूलों में भर्ती के लिए सुझाव

\*२३६—श्री सजीवनलाल—क्या सरकार की जनवरी, १६६० में इस प्रकार की विकायते प्राप्त हुई हैं कि अंग्रेजी के माध्यम से पढ़ाने वाले हाई रक्लों में गर्ती का आधार न प्रार्थना-पत्रों की प्राप्त के कमानुसार रखा गया है और न छात्रों की योग्यता के अनुसार ही, वरन् उनसें भर्ती का आधार संप्रदाय होता है अर्थात् रोमन कथोलिक स्कूल में रोमन कथोलिक छात्रों को प्राथमिकता दी जाती है और प्रोटेस्टेट स्कूलों में प्रोटेस्टेट छात्रों को ? यदि हां, तो क्या सरकार यह आदेश जारी करने की छपा करेगी कि ऐसे प्रत्ये ह स्कूलों में एक रिजरटर रखा जाय जिसमें प्रत्येक प्रवेशार्थी का प्राप्त कमानुसार नाम दर्ज किया जाय प्रोर अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देने वाले इण्टर कालेजों में भर्ती का आधार हाई स्कूल तथा सीनियर के मिश्र परीक्षाओं में प्राप्तांकों के अनुसार रखा जाय ?

श्री कमलापति त्रिपाठी—सूचना ग्रब भी एकत्रित की जा रही है। उपलब्ध होने पर उत्तर दिया जा सकेगा।

श्रन्तरिम जिला परिषद्, खीरी से पृथक किये गये श्रध्यापकों का शेष वेतन

\*२३७—श्री शिवप्रसाद नागर—क्या सरकार बताने की कृषा करेगी कि जिला खीरी के कुछ ग्रध्यापकों ने सरकार के पास कोई शिकायत भेजी है जिसमें कहा गया है कि ग्रप्रैल, सन् १६५६ श्रीर जनवरी, सन् १६५० के वेतन ग्रन्तिरम जिला परिषद् से निकाले जाने के बाद भी श्राज तक ग्रध्यापकों को प्राप्त नहीं हुए है ? यदि हां, तो इस पर क्या कार्यवाही सरकार की श्रीर से की गयी है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी---जी नही ।

#### कलेक्टरियों के भ्राउट साइडर क्लर्क्स

\*२३८—श्री देवी प्रसाद मिश्र (जिला फंजाबाद)—क्या सरकार ग्रुवया यह बतायेगी कि राज्य में कुल कितने कलेक्ट्री के ऐसे क्ल र्क है जो १० साल या श्राधिक से श्राउट साइड र के रूप में कार्य कर रहे हैं ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--दो सो उनहत्तर (२६६)।

\*२३६—-श्री देवीप्रसाद मिश्र—क्या सरकार इनमें से कुल या क्छ्न के स्थायीकरण पर विचार कर रही हैं ? यदि हां, तो कब तक ?

श्री हुकुमसिंह विसेन—स्थान रिक्त होने पर तीन का स्थायीकरण हो जायेगा, एक का मामला विचाराधीन है।

\*२४०--श्री देवीप्रसाद मिश्र--क्या सरकार इन लोगों को बिना इम्तहान, पेड ध्रयरेन्डिस बनान पर विचार करने की कृपा करेगी ?

श्री हुकुर्मासह विसेन —जी नहीं।

टेहरी-गढ़वाल जिले में शिक्षा विभाग के विलय राज्य कर्मचारियों का महंगाई भत्ता

\*२४१--श्री स्रतचन्द्र रमोला (जिला टेहरी-गढ़वाल)—वया गृह मंत्री कृपया बतायेगे कि टेहरी-गढ़वाल के दिक्षा विभाग के मर्ज्ड स्टेट इम्प्लाइज को सौ रुपये से कम वेतन पाने वाले कर्मचारियों के महंगाई भत्ते में जो पांच रुपये पिछले साल के बजट में व ढाई रुपया चालू वर्ष के बजट में वृद्धि हुई है क्यों नहीं दी जा रही है ?

श्री कमलापित त्रिपाठी—इन कर्मचारियों में से जो उत्तर प्रदेश राज्य की सेवा में विलीन कर लिए गए है उन्हें प्रश्नगत महंगाई भत्ता दिया जा रहा है। जो कर्मचारी श्रभी तक राज्य सेवा में विलीन नहीं किए गए हैं उन्हें उक्त महंगाई भत्ता दिये जाने का प्रश्न सरकार के विचाराथीन है।

#### लखनऊ में बेसिक एल० टी० की परीक्षा

\*२४२——श्री ऊदल—वया सरकार बताने की कृया करेगी कि श्रप्रैल, १६५६ में झिक्षा विभाग की तरफ से बेसिक एल० टो० की परीक्षा लखनऊ में हुई थी ? यदि हां, तो उसमें कितने विद्यार्थी बैठे श्रौर कितने पास **हुए** ?

श्री कमलापित त्रिपाठी --जी हां, ६४ संस्थागत तथा व ग्रांशिक परीक्षार्थी थे, जिनमे ५२ संस्थागत तथा व ग्रांशिक परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए।

\*२४३--श्री ऊदल--श्रा सरकार कृपया बतायेगी कि क्या जो परीक्षा मे उत्तीर्ण हुए उनको जगह दे दी गई है ? यदि हां, तो कहां ?

श्री कमलापित त्रिपाठी—उत्तीर्ण परीक्षार्थियों में से सात (७) को विभाग में नियुक्तियां प्राप्त हो गर्यों हैं जो उनके सम्मुख ग्रंकित है:

नाम

#### नियुक्ति

१—–श्रो ईश्वर दयाल	रा० उ० मा० वि०, मंसूरी ।
२—-श्री मोहन दत्त इार्मा	· · रा० उ० मा० वि०, पोलीभीत ।
३—–कुमारी मधु भटनागर	रा० बा० दी० वी०, फैजाबाद ।
४—-कुमारी कुसुमलता	🙃 रा० बा० उ० मा० वि०, नैनीताल ।
४—श्रीमती शकुन्तला	रा० बा० दी० वी०, बलिया।
६—–कुमारो सरोज कुमारी मिश्रा	·· रा० बा० उ० मा० वि०, ललितपुर (झांसी)
७—कुँमारी पुष्पा झर्मा	· रा० बा० उ० मा० वि०, रामपुर i

#### ग्रतारांकित प्रइन

# १-४---कुंवर श्रीपालिंसह--[७ ब्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।] बदायूं जिले का दहगवां तालाब

५—श्री उल्फर्तासह—क्या सरकार को मालूम है कि जिला बदायूं मे तालाब दहगवां, जो सरकार ने खुद बनवाया था, अब उथला हो गया है और इस कारण उसके द्वारा फसल बरबाद होती है ?

श्री हुकुमसिंह विसेन--(१) जी हां।

(२) किन्तु उसके उथला होने से फसले बरबाद नहीं होती।

६—श्री उल्फर्तासह—क्या इस तालाब से कोई नहर निकालने की योजना उसके विचाराधीन है ? यदि हां, तो कब तक ?

श्री हुकुर्मासह विसेन—(१) जी नहीं। (२) प्रश्न नहीं उठता।

## दहगवां प्राइमरी स्कूल, जिला बदायूं

७—श्री उल्फर्तासह—दहगवां प्राइमरी स्कूल, जिला बदायूं के सम्बन्ध मे १३-२-४६ के श्रतारांकित प्रदन संख्या ४ के उत्तर के कम मे क्या सरकार कृपया बतायेगी कि क्या जिस स्कूल के लिये कहा गया कि स्थान निश्चित नहीं हुआ उसका भवन निर्माण हो चुका है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी—जी हो ।

ल-१--श्री उल्फलसिंह--[७ मर्नल, १६६० के लिये स्थिगत किये गये ।]

## ग्रल्पसूचित तारांकित प्रक्नों, के उत्तर न मिलने तथा कार्य-सूची में ग्रधिक प्रक्त रखने के सम्बन्ध में ग्रापत्ति

श्री उपाध्यक्ष—माननीय सदस्यों से मेने कड़ा था कि एंसी रियति में वह ग्रध्यक्ष को लिखें कि उनके प्रश्न के महत्व पर ध्यान नहीं दिया गया तो म यह गत्मला माननीय गित्रयों के पास भेज दूंगा। ऐसे प्रश्न सदन में उठाने ने काम नहीं चल सकता। म सदन के आगतीय सदस्यों से कहूंगा कि इस किस्म की शिकावत यह मेरे पास निल कर भेजे; माननीय मंत्रिकण से परामर्श कर है उचित ध्यवस्था की जायगी।

श्री देवनारायण भारतीय—मेरा निवेदन यह ह...

श्री उपाध्यक्ष--श्राप बंठे ।

श्री राजनारायण (जिला वाराणसी) — जहां तक इस विशेष प्रकृत का सम्बन्ध है उस सम्बन्ध में मेरा निवेदन यह है कि ११ तारीख को भारतीय जी की तिबयत खराब थी। हमने स्वतः इस प्रकृत को उठाया था। श्राप के कार्यालय से मेरे पाम जिला कर श्राया था कि चूंकि उपाध्यक्ष महोदय बाहर गये थे इसलिए उनके दस्तखत नहीं हो पाये। इसलिए १८ को श्रा जायगा, हमें श्राक्वासन दिया गया था कि १८ को श्रा जायगा।

श्री उपाध्यक्ष---ग्राप लिख कर मेजे। हम देलेगे।

श्राचार्य दीपंकर (जिला मेरठ)—मैं श्राप से यह निवेदन करना नाहता हूं कि जिस दिन प्रश्नों का उत्तर गृह मंत्री जी को देना होता है उस दिन प्रश्न इतने श्रधिक हो जाते हे कि श्राप चाहे जितनी तीव गिन से चले, उन सर्व का उत्तर नहीं मिल सरुता। उत्तर न मिलने से श्राधी समस्याएं उलझी रहती है। इसमें मेरा निवेदन यह है कि चूंकि उनसे पास ज्यादा विभाग इकट्ठें हो गये हैं.....

श्री उपाध्यक्ष--में समझ गया । श्राप बंठिये ।

श्राचार्य दीपंकर-मैने श्रभी प्रश्न ही नहीं किया।

श्री उपाध्यक्ष— ग्रापने कहा कि ज्यादा विभाग इकट्ठे हो गये है, उसका जवाब यह है कि ग्रादेश जारी कर दिये गये है श्रीर व्यवस्था की जा रही है कि एक दिन ज्यादा प्रश्न न हों। यह नई व्यवस्था पहली ग्राप्रेल से लागु हो जायगी।

श्री शिवप्रसाद नागर (जिला खीरी)—मुझे इजाजत वीजिये । मेरे साथ बड़ा भ्रन्याय हो रहा है ।

श्री उपाध्यक्ष--ग्राप पहले बैठ जायं ।

माननीय सदस्यों को काफी श्रसंतोष प्रश्नों के बारे में मालूम होता है । में श्रगर एक-एक सदस्य को समय दूं तो काफी वक्त लगेगा । मुझे इस बात का दुख हं कि माननीय सदस्य लिख कर कोई शिकायत मेरे पास नहीं भेजते । जिनको शिकायत हं उनको चारिये कि वह लिखित शिकायत भेजें । इस सम्बन्ध में में कोई प्रश्नावली की यहां श्राज्ञा नहीं दे सकता।

श्री शिवप्रसाद नागर—इस प्रक्रिया का धनुसरण कर चुका हं।

क्ती प्रयाश्यक्त-जनक तक सायका नाम न पूकारा जाय तब तक साय नहीं बोल सकते।

## जमींदारी विनाश ग्रौर भूमि-व्यवस्था नियमावली, १६५२ के ग्रधीन प्रख्यापित संशोधन\*

राजस्व उपमंत्री (श्री महावीरप्रसाद शुक्ल)—मान्यवर, मे उत्तर प्रवेश जमींवारी विनाश ग्रीर भूमि-व्यवस्था नियमावली, १६५२ मे राजस्व विभाग की विज्ञिष्त संख्या २५८७- श्रार-एस० १-क--३५१५-५६, दिनांक २७ जनवरी, १६६० तथा संख्या यू-ग्रो-४३-- ग्रार-जेड १-क, दिनांक २७ जनवरी, १६६० के ग्रधीन प्रख्यापित संशोधनों को १६५० ई० के उत्तर प्रवेश जमीदारी विनाश ग्रीर भूमि-व्यवस्था ग्रधिनियम की धारा ३४४ की उपधारा (४) के ग्रनुसार सदन की मेज पर रखता हूं।

# लखनऊ विश्वविद्यालय के उप-कुलपित पद पर श्री कालीप्रसाद की नियुक्ति के सम्बन्ध में याचिका\*

श्री गौरीशंकर राय (जिला बिलया) — उपाध्यक्ष महोदय, में ग्रापकी ग्राज्ञा से विधान सभा प्रिक्रया नियमावला के नियम २४३ २३५ के ग्रन्तर्गत श्रादरणीय सदन की सेवा में निम्नलिखित याचिका उपस्थित करना चाहता हूं: —

में प्रोफेसर कालीप्रसाद जी की लखनऊ विश्वविद्यालय के उप-कुलपित पद पर हुई नियुक्ति के सम्बन्ध में याचिका, जिस पर विधान सभा के २५ सदस्यों के हस्ताक्षर है, उपस्थित करना चाहता हूं।

श्री उपाध्यक्ष ---धेने इस याचिका की जांच कर ली हे ग्रौर वह नियमानुकूल है। मैं इस याचिका को पेटीशन समिति के पास भेज दूंगा।

श्री दीपनार।यणमणि त्रिपाठी (जिला देवरिया)—मे एक जानकारी करना चाहता हूं।

श्री उपाध्यक्ष--कोई जानकारी इस समय नियमानुकूल नहीं हो सकती । पेटीशन समिति के सामने स्राप लोग ग्रपनी राय दीजियेगा ।

# लखनऊ विश्वविद्यालय के उप-कुलपित पद पर श्री कालीप्रसाद की नियुक्ति के सम्बन्ध में कार्य-स्थगन प्रस्ताव की सूचना

श्री उपाध्यक्ष—इसी सम्बन्ध में माननीय राजनारायण जी ने एक कामरोको प्रस्ताव दिया था । क्योंकि यह मामला पेटीशन समिति के सामने है इसलिये ग्रब इसकी ग्रावश्यकता नहीं रही ग्रीर में इसको ग्रस्वीकृत करता हूं।

श्री राजनारायण (जिला वाराणसी) -- त्रया यह भी वहां भेज दिया जायगा ?

श्री उपाध्यक्ष — माननीय राजनारायण जी श्रगर चाहेंगे तो स्वयं पेटीशन समिति के सामने हाजिर हो सकेगे। जो माननीय सदस्य इसमे दिलचस्पी लेना चाहते है, जै से माननीय गौरीशंकर राय जी ने किया है, वह भी कर सकते है।

श्री राजनारायण--श्रीमन्, ग्रभी क्या मालूम मुझी को ग्राप उस समिति में रखें...

श्री उपाध्यक्ष --सिमित बनी हुई है, ग्रगर ग्रापका नाम उसमे है तो ग्राप होंगे।

उ मधापे नहीं राजे।

#### प्रक्तों का उत्तर न मिलने पर ग्रापत्ति

श्री टीकाराम पुजारी (जिला मथुरा) --श्रीमान् जी, किसान भी कुछ जानकारी कर सकता है....

श्री उपाध्यक्ष--प्राननीय पुजारी जी, श्राप कृपा करके बठिये, म श्रभी श्रीर कार्यवाही कर रहा हूं।

श्री टोकाराम पुजारी---पेरा प्रश्न श्रीमन्, ग्राज भी रह गया । दिसम्बर से मेरे प्रश्नो का श्रीमन्, उत्तर नहीं मिल रहा ह ।

श्री उपाध्यक्ष--ठीक ह । श्राप श्रपने सवालो के बारे में जो शिकायतें हो, वह लिखकर के दीजिये । श्रव श्राप कृपा करके श्रपना स्थान ग्रहण करें।

श्री टीकाराम पुजारी—-श्रजं कर रहा हूं श्रीमन्, श्रापके द्वारा मुझे कोई उत्तर मिले तब. . . . . .

श्री उपाध्यक्ष -- ठीक है। मैने सुन लिया। श्राप कृपा करके बैठें ... (श्री टोकाराम पुजारी बोलते रहें)

माननीय पुजारी जी, श्राप स्थान ग्रहण करेगे कि नही <sup>२</sup> मैने श्रापसे कहा कि श्राप लिखकर दीजिये । कृपा करके श्रपना स्थान ग्रहण करिये ।

## बाराबंकी जिले में डकैतियों से उत्पन्न परिस्थिति पर कार्य-स्थगन प्रस्ताव की सुचना

श्री उपाध्यक्ष—मेरे पास माननीय जगबहादुर जी ने बाराबंकी जिले में उकतियो की भीषण परिस्थित के बारे में एक कामरोका प्रस्ताव भेजा है। लेकिन यह कोई ऐसा विषय नहीं है कि जिसको कामरोको प्रस्ताव की शक्ल में स्वीकार किया जाय। में माननीय सदस्य को सलाह दूंगा कि ग्रस्पस्चित ताराकित प्रश्न वह इस सम्बन्ध में करे ग्रीर उसके बारे मे में गृह मंत्री जी से व्यवस्था करूंगा कि जल्द से जल्द उसका उत्तर मिल जाय।

## नियम ५२ के ग्रन्तर्गत ध्यान ग्राकर्षणार्थ विषयों की सुचनाये

श्री उपाध्यक्ष- मेरे पास नियम ५२ में भी वो तीन प्रश्न उपस्थित किये गये है। उनके सम्बन्ध में मेरी राय यह है कि वह दफा ५२ में रिट्रक्टली नहीं आते। इसके लिये में पहले भी निवेदन कर चुका हूं कि ऐसे प्रश्नों के बारे में मेने माननीय सबस्यों को सलाह वी है कि वह अल्प्यूचित तारांकित प्रश्न करें और चूकि माननीय मंत्रिगण को इस बात की सूचना हो जाती है, इसलिये में यह चाहूंगा कि उनके अल्प्यूचित तारांकित प्रश्नों के उत्तर, जो तारीख में निश्चित करूं, उस तारीख तक अवश्य दे विये जायं। यह में इसलिये ऐसा कर रहा हू कि इस नियम ५२ के अन्दर तो एक दिन में सूचना एकत्रित करनी पड़ती है और उस तरह से तीन चार दिन का मौका मिल जाता है। माननीय सदस्यों ने मुझसे इस बात की शिकायत की कि उचित ध्यान इस बात पर नहीं दिया जा रहा है, इसलिये में आशा करूंगा कि माननीय मंत्रिगण भी इस सम्बन्ध में चेयर को कोआपरेट करेंगे।

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया) --मं एक निवेदन करना चाहूगा.....

श्री खपाध्यक्ष-अभी मेंने प्रापका नाम नहीं लिया है। जाप बंद जासे अभी ।

# समितियों के निर्वाचन के सम्बन्ध में सूचना

श्री उपाध्यक्ष--सदन को में निम्नलिखित सूचना देना चाहता हूं कि निम्नलिखित सिमितियों में चूंकि जितने सदस्यों की जगह थी उतने ही सदस्यों का नाम रह गया नाम वापसी के बाद, इसलिये ये सिमितियां निर्वाचित समझी जायंगी ।

यातायात स्थायी समिति, शिक्षा स्थायी समिति, रसद स्थायी समिति, सूचना स्थायी समिति, चिकित्सा स्थायी समिति, माल स्थायी समिति, उद्योग स्थायी समिति, पुलिस स्थायी समिति, विद्युत् स्थायी समिति, कृषि तथा पशुपालन स्थायी समिति, हरिजन स्थायी समिति, शरणार्थी स्थायी समिति, स्वशासन स्थायी समिति, राष्ट्रीय एम्प्लायमेट स्थायी समिति, सार्वजिनक निर्माण स्थायी समिति, सहकारी स्थायी समिति, श्रम त्थायी समिति, सिचाई स्थायी समिति, न्याय स्थायी समिति, जेल स्थायी समिति, श्राबकारी स्थायी समिति, समाज कल्याण स्थायी समिति, वन स्थायी समिति, सामान्य प्रशासन स्थायी समिति । कौन-कौन माननीय सदस्य है, इसकी सूचना माननीय सदस्यों को दे दो जायगी।

उपर्युक्त का संख्य। १-२४ को स्थायी समितियां विधिव न् निर्वाचित हो गयी है। विकास तथा नियोजन स्थायी समिति, लोक-लेखा समिति और प्राक्कलन समिति में सदस्यों के नाम ग्राति-रिक्त है। ग्रतः उसने सम्बन्धित मतदान पूर्व स्वीकृत कार्यक्रम के ग्रनुसार दिनांक २२-३-६० को विधान वाचनालय में १२ बजे से ५ बजे तक होगा।

## श्रत्पसूचित\_तारांकित प्रश्न का उत्तर न मिलने के सम्बन्ध में श्रापत्ति

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया) — श्रीमन्, मैने भी श्रपना एक ग्रह्पसूचित तारांकित प्रक्त ग्रापकी ग्राज्ञानुसार किया था। मुझे ग्राज तक उसका जवाब नहीं मिला है। वह एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना के संबंध में था क्योंकि ४५२ गांवों में ग्रोला पड़ा है। उससे तबाही मची हुई है।

श्री उपाध्यक्ष--मै इस संबंध मे ग्रभी कह चुका हूं कि इस संबंध मे सदन के बाहर मेरा ध्यान ग्रर्काषत करे या फिर ग्रल्पसूचित तारांकित प्रश्न यहां पर पूछे।

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान— स्रनुदान संख्या ७—लेखा शीर्षक १२—मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, स्रनुदान संख्या ३१—लेखाशीर्षक ४७—प्रकीर्ण विभाग स्रौर ४४—उड्डयन, स्रनुदान संख्या ५२—लेखा शीर्षक ७०—जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुधार पर पूंजी की लागत तथा ८२— राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा

\*परिवहन मंत्री (डाक्टर सीताराम) — मै गर्वनर महोदय की सिफारिश से प्रस्ताब करता हूं कि अनुदान संख्या ७—मोटर गाड़ियों के ऐक ों के कारण व्यय— लेखा शीर्षक १२—मोटर गाड़ियों पर कर के अन्तर्गत १,४४,७८,३०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १८६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय ।

<sup>k</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[डाक्टर सोताराभ]

में गवर्नर महोदय की सिफारिश से प्रस्ताव रास्ता है कि प्रनदान संस्था ३१--परिवहन विभाग--लखा शार्थ के ४७--प्रकीणं विभाग (Micell near Deputment) प्रोर ४४--उडुयन (Avadion) के अन्तर्गत १३,४६,८६,२०० रणय की मांग विलीय वर्ष १६६०-६१ के लिये स्वाहार की जाय।

में गवर्नर महोदय की निर्फारिश से प्रस्ताव करता है कि प्रनाम सरणा प्रर—कृषि स्रिभियन्त्रण, सरकारी बस सेवास्रो, सहायता तथा पनतासन की के कार्य स्राध्य पर पृजी की लागत-लेखा शीर्षक ७०——जन-रवास्थ्य सरकी मागर पर पर्का का कार्य निर्माण-पायों का पृजी लेखा के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-पायों का पृजी लेखा के जाहर राज्य के दूसरे निर्माण-पायों का पृजी लेखा के जाय।

उपाध्यक्ष महोदय, मुझे इस बजट के लंदंध में ग्राधिक उस बरत हो। हिना हे क्योंकि में समझता हूं कि इस मानलीय सदन के सदस्यगण उत्तरम २, २, ८ ग्रा विक्रित की प्रोर से जो प्रोप्नेस रिपोर्ट छुपी है उसकी पढ़ने का प्रयास करेंगे ता नई मदा विक्रात उनका मालूम होगा कि इस विभाग ने क्या प्रगति की है। फिर भी में श्रापशी श्रापा ने विक्रात की स्वास वातो पर एक विहंगम दृष्टि डालना उचित समझता हूं।

द्रान्सपोर्ट डिपार्टभेट के संचालन हेत ४,६८,००० रण्ये की व्यवस्था है। इस प्रदेश में एक इन्फोसंभेट स्वरंग है जो गाडियों की बेलन करा है। उन्हें का कि प्रवारण के बेलन प्रादि पर ३,६२,४०० रपये दर्च की व्यवस्था है। एक विभानीय तेमाणा इन्होंक्टर होता है जो गाडियों की फिटनेस देखता है, चाहे वह सरकारों गा । तो या पर्वे ने ना या हो, वह सब की फिटनेस देखता है, उस हुउ में २,१८,७०० रपये की व्यवस्था है। रीजिनल ट्रान्सपोर्ट के लिये भी ६,६८,६०० रुपये की व्यवस्था है। बस सित्से ज के अपवर्शन के वि ये ८,८६,७०,१०० रुपये की व्यवस्था है। इसी तरीके से सेन्द्रल वर्ण जाप, नानपर के वि ए ८,८५,४०० रुपये की व्यवस्था है। सेन्द्रल पर्वे पाप में हर साल जो लोगों को ट्रेनिंग कि ता । उसने ट्रेनिंग पाने वाले अभ्याययों को स्टाइपे उदिया जाता है, उस संवध भ २८,६०० रुपये वा उत्तर मही। साथ ही ससपेन्स एकाउन्ट के अन्दर ४,३६,००,००० रुपये की व्यवस्था । इसने विद्रा सिविल अवियेशन के लिये ४,४०,००० रुपये प्राविश्वयल हिन्द पलाइग वस्त्य कर रही सात के सप में दिया जाता है।

श्रीमन् वेखे की रोडवेज विशाग की रथापना १६४७ के मई में नई शी। सन् १६७ में लखनऊ से वाराबं की तक की १८ मील लम्बी सड़क पर ६ वसे पलाई गई थी, त्रायन ब्राज १६६० में बसे। की संख्या २,८०३ हो गई है श्रीर इस साल के वजह ने २४ नये र ट्रम लिये जाने का प्राविजन है। इनको लिये जाने का कारण यह है कि सरकार ने राष्ट्रीयक रण की जानना की प्रपनाया है। ज्यो-ज्यों हमें साधन उपलब्ध होते जापेगे त्यो-त्यों सरकार राष्ट्रा, का पण पण भिकरण करेगी श्रीर इसके श्रनुसार ही २४ नये रूट्स लिये जाने वाने है जिन पर ४४ लात ६० हजार ३०० रुपया १६६०-६१ के बजह में खर्च करने का प्राविजन किया गया है। इसमें करीब ५० लाख २६ हजार ७०० एपये की ग्रास इनकम होगी श्रीर इस तरह से ५ तात्व ६८ हजार ४०० रुपया प्राफिट होगा; साथ ही साथ इससे ४७ लाख ४५ हजार मील कवर होगा।

उपाध्यक्ष महोदय, इस तरह से नेशनलाइजेशन के संबंध में इस सारा ४०० गई बसी के चैसिस खरीवने की ध्यवस्था है और उस पर १ करोड़ ७४ लाख रुपया वर्च होगा, जिसमे १ करोड़ १० लाख रुपया तो कैपिटल एकाउन्ट से ग्रीर ६४ लाख रुपया डिग्रील्येशन एकाउन्ट से हासिल किया जायगा । रोडवेज विभाग की उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है। १६४८—४६ में जहां माइलेज ६०,४१७,४१६ मील के लगभग था, वहां ग्रप्रैल से विसम्बर, १६५६ तक यह ५ करोड़ द६ लाख ३१ हजार ६२५ मील हो गया है और मार्च, १६६० तक प्राप्ता है कि वह करीब द करोड़ मील के लगभग हो जायगा, सारे प्रवेश में इतना माइलेज हमारी रोडयेज की बसें कवर करी । इसी तरह से पैसेंजर्स जहां १६४८—४६ में करीब द करोड़ ५६ लाख ६ हजार

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-ग्रनुदान संख्या ३७१ ७-- लेखा बीर्यक १२-मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, श्रनुदान संख्या ३१-- लेखा बीर्यक ४७-- प्रकीर्ण विभाग ग्रीर ४४-- उड्डयन, श्रनुदान संख्या ३१-- लेखा बीर्यक ७०-- जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी: श्री की लागत तथा ६२-राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

७२१ थे, वहां श्रौर श्रप्रैल दिसम्बर, १६५६ तक ६ महीनों में उनकी संख्या ८ करोड़ ४० लाख ५२ हजार ५६१ हो गई है श्रौर ३१ मार्च, १६६० तक में श्राञ्चा करता हूं कि सारे प्रदेश में साढ़े १० या ११ करोड़ श्रादमी हमारी बसों पर सफर करेंगे। इसी तरह से सब कट करने के पश्चात् इन्कम इस प्रदेश में रोडवेज से १६५८—५६ में १ करोड़ ४८ लाख २ हजार ६०० रुपये की हुई, वह ३१ दिसम्बर, १६५६ तक १ करोड़ ५८ लाख ६५ हजार ६३४ रुपया थी श्रौर में श्राञ्चा करता हूं कि ३१ मार्च, १६६० तक वह करीब २ करोड़ से ज्यादा हो जायगी। इसी तरह से नेशनलाइजेशन की स्कीम में सरकार की श्रोर से भी बहुत से कार्य किये जायेगे। इस वजट में ४४ नये श्राडटम्स हैं श्रौर श्रगर उनको माननीय सदस्यों ने श्रच्छी तरह से देखा होगा तो उन्हें सही निष्कर्ष पर पहुंचने में मदद मिलेगी श्रौर वे जानेगे कि हर साल की श्रपेक्षा इस वर्ष श्रिधक प्राविजन किया गया है।

इसके साथ ही थोड़ी श्रौर बात कहना भी में उचित समझता हूं। १६५० से १६५५ तक इस विभाग में श्रसिस्टेंट बुकिंग क्लर्क्स की नियुक्ति होती थी श्रौर उनका वेतन ४० हपये से ५० हपये तक का था। उनकी कार्य-प्रणाली में बुकिंग क्लर्क्स की कार्य-प्रणाली से कुछ विषमता अवश्य थी लेकिन १६५५ के पश्चात् यह देखा गया कि श्रसिस्टेंट बुकिंग क्लर्क्स श्रौर बुकिंग क्लर्क्स की कार्य-प्रणाली में कोई विशेष श्रंतर नहीं रह गया है। टिकटों का हिसाब रखना, उनको बेचना, हिसाब-किताब रखना श्रौर विवरण-पत्र श्रादि तैयार करना, जो काम थे श्रौर उनको जिस तरह से बुकिंग क्लर्क्स किया करते थे, उसी तरह से श्रिसस्टेंट बुकिंग क्लर्क भी किया करते थे; इसलिये इन कर्मचारियों में जो एक प्रकार की भ्रामक भावना फैल गई है उसको दूर करना सरकार ने उचित समझा है श्रौर इस तरह से करीब ५०२ कर्मचारी ऐसे होंगे जिनको इससे फायदा होगा। वेतनवृद्धि श्रब हमने उनकी जो ४०-८० रुपये थी, बढ़ा कर ६० से १०० रुपये कर दी है। इस तरह से जो ट्रान्सपोर्ट विभाग में श्रिसिस्टेंट बुकिंग क्क्स थे वे भी श्रब बुकिंग क्लर्क्स की तरह से ही रहेंगे श्रौर इसके लिये हमको सन् १६६०-६१ के बजट में करीब ५२ हजार रुपयों की व्यवस्था करनी पड़ी है श्रौर इसके श्रलावा श्रतिरिक्त व्यय भी करीब १ लाख २० हजार ५ सौ रुपये के होगा।

इसके ग्रलावा इस सदन में भी श्रौर इसके बाहर भी यह कहा गया कि यहां इस विभाग में टेम्पोरेरी कर्मचारियों की संख्या श्रधिक है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, में श्रापकी श्राज्ञा से इस सदन के समक्ष यह कहना उचित समझता हूं कि हमने कर्मचारियों की इस समस्या पर श्रच्छी तरह से विचार किया है कि श्रौर हमने यह व्यवस्था की है जो भी कर्मचारी ऐसे हैं, चाहे वह गजेटेड हों या नान-गजेटेड हों, उनकी ३ साल की सर्विस होने पर, ३३ परसेन्ट को स्थायी कर दिया जाय। इससे जिनकी ३ साल से श्रिधिक सर्विस होगी उनको स्थायी किया जा सकेगा। इस तरह से काफी कर्मचारियों को स्थायी करने की व्यवस्था है।

इसके अलावा में एक चीज और सदन की सूचना के लिये आपकी आज्ञा से कह देना उचित समझता हूं कि इसके पहले भी ३३.८ परसेन्ट कर्मचारी परमानेंट हो चुके हैं। उसके अलावा जो और कर्मचारी कार्य कर रहे हैं उनमें से ३३ परसेन्ट और परमानेन्ट किये जायेंगे इनको परमानेन्ट करने में सरकार ने करीब १० लाख २६ हजार १०० रुपये की इस बजट में ब्यवस्था की है जिससे उन कर्मचारियों की काफी परेशानी दूर होगी।

इसके म्रलावा जूनियर स्टेशन इंचार्ज के वेतन स्केल में भी वृद्धि की गयी है। म्रब उनका वेतन स्केल १००--१५० रुपये करके जो एक तरह की एनामली थी उसको दूर करने का बजट में प्राविधान है। १००--१५० रुपये के पे-स्केल में म्रब उनकी सालाना वृद्धि भी बढ़ा कर ५ रुपये कर दी गई है। [डाक्टर सीताराम]

उगाधाक्ष महोदय, हमारे प्रदेश में बहुत से स्टेशन्स ऐसे हैं जिनकी श्रामदनी ३ हजार से श्रिधिक है। बड़े-बड़े शहरों में जो सरकारी कर्मचारी हैं वे भो श्रम्छ रतर के हैं। वहां पर सीनियर स्टेशन इंवार्ज होते थे जिनकी पे १४० रुपये से शुरू होती थी लेकिन वहां की श्रामदनी ३,००० से ज्यादा थी। इसलिये इस बजर में यह व्यवस्था की गयी है कि जिस तरह से रेलवे में बड़े-बड़े स्टेशनों पर स्टेशन सुपरिन्टेन्डेन्ट रखे जाते हैं उसी तरह से परिवहन विभाग में भी स्टेशन सुपरिन्टेन्डेन्ट हों। इस तरह से बजर में १३ सारिन्टेन्डेन्ट की पोस्ट्स किएट की गयी है जिनका बेतन-कम २००-३५० होगा श्रोर १५ रुपये साल की विद्व होगी। इस तरह से इस बजट में करीब २६ हजार रुपये को व्यवस्था की गयी है। यह इस श्राधार पर किया जायेगा कि जहां की श्रामदनी ३,००० से ज्यादा होगी श्रोर जहां उसके साथ ही साथ करीब १५० गाड़े। प्रत्येक दिन या तो पहुंचेगी या रवाना होगी, जहां पर ऐसी व्यवस्था की जायेगी।

इसके श्रनावा जो सोनियर स्टेशन इंचार्ज श्रोर जूनियर स्टेशन इंचार्ज हं श्रोर जिनका कार्य श्रव्छा होगा, जो श्राने कार्य को श्रव्छी तरह से करेगे, श्रोर कार्यकशलता के लिये उनका कार्य परिचायक होगा, उनके लिये भी एक पुरस्कार को उपत्रम्था की गयी ह। इस तरह से १६६०-६१ के बजद मे १६,८०० रुपये की श्रावनंक धनराशि रखी गयो ह जिससे जूनियर स्टेशन इंचार्ज श्रोर सोनियर स्टेशन इंचार्ज श्राने कार्य को श्रव्छी तरह से सपादित करेगे, जिससे उनका भी उत्ताह बहेगा श्रोर सरकार को श्रीर डियार्टमेंट को भी फायदा होगा, वर्योंक जब उनको प्रस्कार निचेगा तो उनके केरेस्टर रोल श्रव्छे लिये जायने श्रीर डियार्टमेंट को भी फायदा होगा। इस तरह से गजटेड श्रांकिनमें को छोड़ करके श्रीर एक श्रांकिस सुपरिन्टेखेन जो कि सवार्डिनेट पोस्ट होता हो, श्रोर जितने सवार्डिनेट कर्मचारी है, जो श्रव्छे कर्मचारी है उनको श्रानरेरियम श्रीर रिवार्ड की इस तरह से उपवस्था कर दी गयी है।

इसके श्रनावा श्राप देखते है कि रोडवेज विभाग में या प्राइवेट श्रापरेटर्स के जिरये भी सड़कों पर प्रायः इस तरह के ऐक्सिडेट हो जाया करते हैं। इस सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार ने एक कमेटी बनायी जिसको मीटिंग इन्दौर में जनवरों, १६५६ में हुई और उसकी संस्तृति पर केन्द्रीय सरकार ने एक एजू के इन किल्म के बनाने की योजना बनायी जिल पर १ लाख कार्य खर्च होंगे। इस प्रदेश का उसमें शेयर क्या होगा उसके लिए १०० रुपये की टोकेन ग्राट की व्यवस्था की गयी है जिससे श्रावश्यकना पड़ने पर उन किल्मों को खरीदा जा सके। उन किल्मों के श्रन्शर दिखाया जायगा कि किस प्रकार सुरक्षा के साथ किस तरफ गाष्ट्रिया चलायी जायं श्रीर पथ-परिवहन में शिष्ट व्यवहार करने के लिए श्रीर उसके राष्ट्रीयकरण करने के सम्बन्ध में जनता में श्रीर खास कर प्रामीण जनता में रोड सेस डेवलप करना होगा कि जिस तरह से हम सड़क पर किस श्रीर चने श्रीर डिपार्टमेंट के कर्मचारियों को श्रीर खास कर श्राइवर्स को फायदा होगा कि हम गाड़ियों को किस तरह से चलावें जिससे हम ऐक्सिडेंट्स को एवायड कर सके।

उपाध्यक्ष महोदय, रोडवेज विभाग ने इलेक्ट्रिक फैन्स के लिए करीब ३०,००० रुपये की व्यवस्था को है जो कि स्टेशनों पर लगायें जायंगे। उससे कर्मबारियों को भी फायदा होगा श्रीर गर्मी के दिनों में मुसाफिर जो जाकर वहां बैठते हैं उनको भी फायदा होगा। इसके लिए भी बजट मे प्रावीजन किया गया है।

श्रभी तक रोडवेज विभाग का प्राफिट ऐड लास एकाउन्ट जो तैयार किया जाता था वह सिगिल एंटरी सिस्टम के बेसिस पर किया जाता था, लेकिन हाउस की जो पी० ए० सी० कमेटी है उसकी रिकमेंडेशन पर श्रौर एकाउन्टेन्ट जनरल के कहने पर श्रव डबल एंटरी सिस्टम से बेलेस शीट तैयार करायी जायगी जिसके लिए इस बजट मे ११,४५,३०० रुपये की ट्यवस्था है।

उपाध्यक्ष महोदय, हम देखते है कि सरकारी कर्मचारियों को, खास करके वर्कशाप में जो काम करते है उनको गर्मी के दिनों में काफी परेशानी पानी के लिए हुम्रा करती थी। इसलिए १६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-ग्रनुदान संख्या ३७३ ७-लेखा शीर्षक १२-मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, श्रनुदान संख्या ३१-लेखा शीर्षक ४७-प्रकीर्ण विभाग ग्रौर ४४-उड्डयन, ग्रनुदान संख्या ५२-लेखा शीर्षक ७०-जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुधार पर पूंजी की लागत तथा ६२-राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

७ रीजनल वर्कशाप्स में ठंडे पानी के लिए कूलर्स लगाये जायंगे, जिसके लिए २०,००० रुपये की व्यवस्था है।

उपाध्यक्ष महोदय, ग्रभो तक इस डिपार्टमेंट की ऐक्टिविटोज के बारे में कोई जरकल नहीं निकलता था, लेकिन यह महसूस किया गया कि जरनल ग्रगर कोई निकलता है तो उससे जनता का ही फायदा नहीं है, बल्कि डिपार्टमेंट के कर्मचारियों का भी फायदा होगा, दयोंकि उसमें ग्रच्छे लेख हुन्ना करेंगे। किस तरह के लेख हों, वह परिवहन ग्रायुक्त तय करेगे, क्योंकि यह काम उन्हीं को तय करना है। इसलिए इसके लिए भी व्यवस्था की गयी है।

बिल्डिंग्स पर करोब २५ लाख रुपये की व्यवस्था की गयी है, जिसमें बस स्टेशन बनेंगे श्रीर साथ ही साथ उसमें रिनग रूम्स की भी व्यवस्था होगी। उसके लिए २५ लाख रुपये की व्यवस्था है। कुम्भ मेले में इस डिपार्टमेंट ने बहुत ही श्रच्छा कार्य किया। कुम्भ मेले में करीब ४३० बसें चलीं। इन बसों ने करीब ६,८२,८६६ मील की दूरी कवर की। इन बसों से करीब ६,८०,८०१ रु० की ग्रास रिसीट्स हुई। इस सम्बन्ध में एक्सपेन्डीचर करीब ४,८१,८५६ रु० हुग्रा। इस तरह से डेप्रीसिएशन वगैरह निकाल कर २,८०,६७० रु० का लाभ हुग्रा। इसके साथ-साथ इन बसों में करीब २,०३४ ग्रादिमयों को इतने टाइम के अन्दर नौकरियां मिलीं। इसके श्रलावा नेशनलाइजेशन स्कीम के श्रन्तर्गत श्रीर सड़कों को लेने पर पांच सात-सी लोगों को श्रीर इम्पलायमेन्ट मिलेगा।

श्रद्ध में सदन का श्रौर समय नहीं लेना चाहता। यहां पर माननीय सदस्य जो सुझाव देंगे उन पर हम विचार करेंगे श्रौर उनसे फायदा उठाने की कोशिश करेगे। इस मांग को पेश करते हुये में माननीय सदस्यों से श्रनुरोध करूंगा कि वह इस पर विचार करके इसको स्वीकार करने की कृता करें।

श्री उपाध्यक्ष--(श्रो उग्रसेन से) श्राप तोनों मांगों पर कटौतो के प्रस्ताव एक साथ पेश करें।

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)—उपाध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि श्रनुदान संख्या ७ में सम्पूर्ण श्रनुदान के श्रथीन मांग की राशि घटा कर एक रुपया कर दी जाय। कमी करने का उद्देश्य—नीति का व्यौरा जिस पर चर्चा उठाने का श्रभिप्राय है। विभाग में श्रपव्यय तथा श्रव्यवस्था पर चर्चा तथा इसके विशय में सुझाव देना।

उपाध्यक्ष महोदय, में प्रस्ताव करता हूं कि ग्रनुदान संख्या ३१ में सम्पूर्ण ग्रनुदान के श्रधीन मांग की राशि घटा कर एक रुपया कर दी जाय। कमी करने का उद्देश्य—नीति का व्यौरा, जिस पर चर्चा उठाने का ग्रभिप्राय है—-परिवहन विभाग में 'रोडवेज ऐक्ट' की मांग करना तथा हाई कोर्ट स्तर के जज की ग्रध्यक्षता में एक पे कमोशन बैठाने का सुझाव देना।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि श्रनुदान संख्या ५२ में सम्पूर्ण श्रनुदान के श्रधीन मांग को राशि में सौ रुपये को कभी कर दो जाय। कभी करने का उद्देय—विशिष्ट शिकायत जिस पर चर्चा उठाने का श्रभिप्राय है—मोटर-गाड़ियों की खरीदारी में भ्रष्टाचार [तथा श्रधिकारियों को श्रनावश्यक गाड़ियों का दे देना।

श्रीमन्, श्रभो मंत्री जी ने श्रपना श्रनुदान पेश करते हुये श्रपने भाषण में रोडवेज की उपलिबयों पर प्रकाश डाला। उससे सदन के सभी माननीय सदस्य श्रवगत हुये होंगे। श्रीमन्, में चाहता हूं कि मुझे कम से कम इतना समय तो मिलना ही चाहिये कि में इन ग्रान्ट्स पर कुछ प्रकाश डाल सकं ...

[श्री उग्रसेन]

ए० जो० एम०, ट्रांसपोर्ट श्रभी बनाये गये है। जब ए० जो० एम० है हो तो फिर ए० जो० एम० टो० को क्या जरूरत है? फिर ट्रासपोट सपरिन्टेन्डेन्ट को भो १३ पोस्ट बनायो गयो है। में चाहता हूं कि माननोय मंत्री जो फाइनेंग डिपार्टमेट से ग्रमेस करावे कि इन जेनरल मैनेजर को हटा देने से रोडवेज का कितना रुपया बच जापगा। ये बिलकुल सुपरपलुद्यस पोस्ट है, इसलिये उनको एबालिश कर देना चाहिये।

माननीय मंत्री जी ने बतलाया कि इस साल रोडबेज को २ करोउ का शह लाभ होने वाला है। इस सम्बन्ध में एक बात में मंत्री जो से कहना चाहता हं जभा कि पिन्लिक एकाउन्द्रम कमेटी श्रौर ए० जी० ने भी कहा था कि एकाउन्द्र में सिंगत एट्रो को जगह डबल एट्रा सिस्टम होना चाहिये। यह भोठोक है श्रोर एक ऐसो चोज हैं जो होनी चाहिये प्रोर श्रभ इबल एट्रो एकाउन्द्रम को देखा जाय तो इतना शुद्ध लाभ दिखाई नहीं देशा। हो सकता है कि मत्री जो २ करोड का शुद्ध लाभ दिखाई नहीं देशा।

सरकार ने एक पुस्तिका दो ह, इसमें कब से कब तक कितना लाभ ह, वह विया है। सन १६४७ -४ में जब रोडवेज पहले चलो ती यह था ४,५५,३३२ रुपया ग्रोर ग्रब है २ करोड रुपया। इन १० साल में जो पूरा लाभ है वह हे ४,१०,७४,०६३ रुपया जो इस रोडवेज के उद्योग से सरकार को हुन्रा है, यह शद्ध लाभ है। जो डिप्रिनियेशन फड म जमा करत ह याजी के बिटल ग्राउट-ले का सूद ेहै उसको निकाल कर यह शद्ध लाभ हुन्ना है। इस तरह से जितनी पुंजी लगाई गई थो वह संब कमा ली गई। इसके लिये ता हर ड्राइयर श्रोर कन्डक्टर एक-एक गोड़ा मुपन हो मागे, तो भो श्रनचित नहीं कम से कम उनका कारपोरेशन बना कर शैयर ही वे वें। मेरा मतलब यह नहीं हे कि वे लोग अपने घर गाड़िया लेकर चले जाय बल्कि मेरा मतलब यह है कि जो प्रदेश के साढ़े १२ हजार लोगों को मेहनत का कमाई है उसमें से उनको भी कुछ विया जाय। यहां के रोडवेज श्राधिकारो श्रीर माननीय मत्री जी जानते हे कि मध्य प्रदेशकी सरकार ने अपने कर्मचारियों को बोनस देकर लाभ का हिस्सा दिया है लेकिन हमारे यहां एक पैसा भो उनको बोनस नही विया गया। मेरी माग है कि यहा भी उनको बोनस विया जाय ग्रीर इसके साथ-साथ एक बात को श्रोर भो क्यवस्था होना चाहिये कि उनका भी दूसरे लोगो को तरह प्राविडेंड फंड एकाउन्ट होना चाहिये, ग्राज तक उनका कोई प्राविडेट फंड एकाउन्ट नहीं है। पहले केवल कुछ स्थायी लोगों का कटता था लेकिन ग्रब नोटिस पहुंचा है कि वह ग्राइन्दा न काटा जाय क्योंकि जब तक पोस्ट पेनशनेबिल होने की गारन्टी न ही नब तक वह नहीं कट सकता। न उनका कोई कन्द्रोब्यूटरो प्राविखेंड फंड ही कटता है। तो वे रिटायर होकर भ्रालिर मे श्राने बरक्या लॅकर जार्य? वे श्राखिर में टो० बो० लेकर जाते है। दस करोड मील का माइलेज हुन्ना है, जो ब्रादमी ७०-८० मील चलाते थे वह ब्रब १५० मील ब्रोर १५२ मील चलाते है लेकिन उनके वेतन में कमी हो गई है। वह लोग १६-१६ घट ड्यूटी करते है। बार-बार सदन में कहा गया कि ड्राइवर्स को स्टोर्यारंग ड्र्यूटी नहीं बलिक रत्रेड ग्रावर ड्र्यूटी मानना चाहिये, लेकिन विभाग कहता है कि ड्राइवर जिस समय खाला रहते है वह समय नही माना जायगा लेकिन श्चगर उस समय भी एक पुरजा भो एञ्जिन का इधर से उधर हो जायगाती जिम्मेदारा उनकी श्रौर भ्रगर खोया जाय तो उसके वेतन से पैसे कट जाते है। इस बात को भ्रसेस कर लिया जाय। एक एक ड्राइवर १६ घंटे की ड्यूटी देता है और १५०-१५४ मील चलता है श्रोर झाखिर मे लेकर जाता हैं टी॰ बी॰। उनके लिये कोई दवादारू की व्यवस्था नहीं है, ग्रगर वह छुट्टी लेकर जाता भी है तो सिविल प्रस्पताल में उसको १७-१८ नम्बर का मिक्सचर या पानी वे दिया जाता है। यह तो उनकी बात है । तो में कहना चाहूंगा कि कम से कम उस लाभ में से उन्हें भी हिस्सा देन। चाहिये छनके प्रावीडेंट फड, ग्रेचुइटी ग्रौर पेंशन देने की व्यवस्था मंत्री जी की करनी चाहिये।

श्रव में सड़कों के राष्ट्रीयकरण के बारे में कुछ कहना चाहता हूं। बड़ी चर्चा की गई, काफी माइलेज लिया गया। मगर में बुंदेलखंड क्षेत्र के बारे में कुछ कहना चाहता हूं जहां सबसे कम राष्ट्रीयकरण हुआ है। कालपी झांसी बांदी-करवी 'ए' क्लास रोड्स हैं मगर छनका राष्ट्रीयकरण नहीं हुआ। लखनऊ से बाराबंकी तक रोडवेज की गाड़ियां चलती हैं, गोरखपुर से फैजाबाद तक रोडवेज की गाड़ियां चलती हैं मगर फैजाबाद और बाराबंकी की सड़क का राष्ट्रीयकरण नहीं होता, वहां उस पर रोडवेज की गाड़ियां नहीं चलती हैं बिलक किसी जनरल मैनेजर की प्राइवेट बस चलती हैं। हजारों रुपया सर्वे वगैरा पर उस सड़क के लिये खर्च हुआ ....

श्री उपाध्यक्ष--ग्राप इस किस्म की ग्रापत्ति न करें तो ग्रच्छा है।

श्री उग्रसेन—ठीक है, श्रीमन, मैं नाम नहीं ले रहा हूं। मगर फैजाबाद श्रीर बाराबंकी रोड का राष्ट्रीयकरण नहीं होता है। मैं चाहता हूं कि बुन्देलखंड में सड़कों का राष्ट्रीयकरण हो श्रीर फैजाबाद-दाराबंकी सड़क का भी राष्ट्रीयकरण हो।

श्रस्थायी तरीके से कुमाऊं रीजन बनाया गया था जिसके बारे में विभाग की तरफ से श्रीर सदन में भी कहा गया कि उस रीजन को स्थायी कर दिया जायगा। लेकिन उस तरफ श्रभी तक कुछ नहीं हुआ। नतीजा यह होता है कि कुमाऊं रीजन के कर्मचारियों को बड़ी तकलीफ होती है, उनके कागज पत्र बरेली से deal होते हैं जिससे बड़ी कठिनाई होती है। इसलिये में चाहूंगा कि कुमाऊं को श्राठवां रीजन शीघ्र ही बना देना चाहिये श्रौर जबिक सीमा क्षेत्र का श्राड़ा चल रहा है सरकार ने वहां तीन तीन नये जिले भी बना दिये हैं, चीनी हमले का श्रंदेशा सदा है। ऐसी परिस्थित में उसको श्रलग स्थायी रीजन बना देना चाहिये।

श्रव में रोडवेज की गाड़ियों के खरीद के बारे में कहना चाहता हूं। गाड़ियां खरीदी जाती हैं श्रीर कहा जाता है बड़ी तरकी हो रही हैं श्रीर तरह तरह के माडेल रिकमेंड होते हैं। एक बड़ी किठनाई पड़ती है, जो पुराने माडेल की गाड़ियां ली गईं उनके स्पेयर पार्ट्स लेने में बड़ी दिक्कत पड़ती है। श्रगर कोई योजना गाड़ी खरीदने की हो जिसके श्राधार पर सिस्टेमेटिक ढंग से गाड़ियां खरीदी जायं तो श्रच्छा रहे। लेकिन ऐसी कोई योजना नहीं है जिसका नतीजा यह होता है कि पुरानी गाड़ियों को स्पेयर पार्ट्स नहीं मिलते हैं श्रीर पुरानी गाड़ियों के पार्ट्स के लिये बड़ी कठिनाई होती है, सेन्ट्रल वर्कशाप का खर्चा बढ़ जाता है।

कर्मचारियों के लिये कितने मकानं बने, इस सम्बन्ध में में सरकार द्वारा दी गई पुस्तक में से दो लाइन पढ़ना चाहता हूं। "रोड वेज में कर्मचारियों के लिये क्वार्ट्स की व्यवस्था करने का प्रयास किया गया। ग्राप्रैल, १६५६ से दिसम्बर, १६५६ तक की ग्रव्विघ में गाजीपुर, श्रागर। श्रीर इलाहाबाद में फोरमैन के लिए तीन क्वार्टर बनाये गए।" इन क्वार्ट्स की हालत में जानता हूं कि गाजीपुर में नहीं बन रहा हैं। १०,००,००० रु० की एक योजना प्रदेश के रोडवेज विभाग की ग्रोर से बनी थी कर्मचारियों के ग्रावास के लिये मगर ग्राज तक उस पर कोई कार्यवाही नहीं हुई। मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि विभाग में साढ़े बारह हजार कर्मचारियों में से एक भी कर्मचारी के लिये मकान की व्यवस्था है। कोई व्यवस्था ग्रभी तक नहीं है। जनता की क्या हालत है? यह ग्राप सोच सकते हैं कि स्टेशनों पर वेटिंग रूम्स का पता नहीं। स्त्रियों के वेटिंग रूम की हर स्टेशन पर कमी है। जो स्टेशन बने हुए हैं उनके नक्शे बड़े खराब हैं। एक बीठ टी० सीठ ग्रार० विल्डिंग पर बनाने में बंगी जंग का चार्ज था लेकिन जिन महाशय ने बनवाई उनको तरक्की पर भेज दिया गया। गोरखपुर ग्रीर देवरिया के बस स्टेशन की हालत यह है कि न शौचालय की ग्रीर न पाखाने की व्यवस्था है। यात्री भीगते रहते हैं फैजाबाद स्टेशन पर पानी का ग्रभाव रहता है। क्लेक्टर ने दूकाने भी हटवा दी हैं, स्टेशनों के नक्शे गलत हैं। बिल्डिंग बन भी नहीं रही हैं। जिसके कारण उनका रुग्या लैप्स हो रहा है।

इसी तरह से हिन्द फलाइंग क्लब है। ३६-३७ से यह फार्मल तरीके से चल रहा है ग्रौर इसे ४ लाख ५० हजार की अनुदान मिलशी है। इसमें ट्रेनिंग दी जाती है श्रौर कहा [श्री उग्रमेन]

गया कि मेरठ में इससे दबाइयां जिड़की गई। वह फेवल दिल वह जाव का यलव है। किसानों के लड़कों को कैसीलिटी दी जातों तो प्रदेश का कुछ भला होता लों कत बड़े सेठों तथा राजा महाराजा के लड़ के उनमें ट्रेनिग पाते हैं। ये गोमती में बोट क्लब में न गये, हिन्द फ्लाइंग क्लब में चले गये। ख्रार उसका सर्वहाराकरण कर दिया जाय तब तो उससे आम जनता को कायदा हो सकता है ख्रोर तब सुझे इस अनुराग में दिये जाने में भी कोई एतराज न हो।

पहले कारों की विकित के सम्बन्ध में डी॰ एस॰ पी॰ श्रीर श्रार॰ टी॰ श्री॰ जाते थे, जिससे दोनों में टक्कर होती थी श्रीर श्रव्धाचार नहीं हो पाता था लेकिन श्रव श्रार० टी॰ श्रो॰ श्रीर ए॰ श्रार० टी॰ श्रो॰ स्वायड कर दिये ह श्रे।र एक तरह ने श्रव विभाग का कम्पेक्ट होगा जिससे श्रव्धाचार को प्रत्साहन (मलेगा।

लखनऊ रीजन के जन रल मेनेजर ने १०,००० ६० एक फर्ना यम्पनी को दे दिया। म्टोर का सामान श्राया ही नहीं। जहां तक अष्टावार का सम्बन्य हे गोरणपुर रीजन में द,१०० ६पये का गबन हुया। ३१ तारील का माहवारी पेरीफि है जन न हा कर पहली तारील को होता था। जिससे वह कई महीने उटेक्ट नहीं हुआ। केश वक पर केवल काश्यर के दम्तलत होते थे, न एकाउंट श्राफिसर के दस्तलत थे श्रोर न जनरल मनजर के दम्तल्यत थे। इसी तरह से बरेली में १०, १२ हजार का गबन था। कानपुर के सेंट्रल वांशान में जा अर्टाचार हे उसके सम्बन्ध में एक महाशय ने १०० पेज का हाई कोर्ट इलाहाबाद र एकी है जिट दे रका है। चारबाग स्टेशन लावनऊ से ५ मन की तिजोरी उठा ली गई श्रोर ५ हजार रुपये उसमें से निकाल लिये गये।

इसलिये मेरे इन मुझावों पर ध्यान दिया जाय कि रोड वेज कर्मचारियों के लिये पे कमेटी बैठाई जाय, उनको बोनस दिया जाय। केसेज की सुन्यायी के लिये एक इंडोपेडेट दिब्युनल बना दिया जाय। जो ब्राइमी डिसिमस करे वही ब्रयील की सुनवाई न करे। रोडवेज की वर्कशाप में फैक्टरी ऐक्ट लागू किया जाय। जब माननीय मंत्री जी काफी रुपया इस विभाग से कमा रहे हैं तो जो यात्री चलते हैं उनके किराये में भी कमी होगी चाहिये। इन इाब्दों के साथ में इस कटौती के प्रस्ताव को रखता हूं।

श्री करेशव पांडेय (जिला गोरखपुर)—माननीय उपाध्यक्ष महोदय, परियहन मंत्री ने जो अनुवान आज प्रस्तुत किया है में उस हा समर्थन करने के लिये तथा मेरे मित्र उपसेन जी ने जो कटोती का प्रस्ताव रखा है उसका विरोध करने के लिये खड़ा हुआ हूं। विरोध का कारण यह है कि भाई ने अपने मयुर भाषण में जिन बातों की बतलाया और परिवतन यिभाग में जिनको शाक्षिल करने के लिये सुझाय दिये उनको देखने से मालूम होता है कि बम में कम उनके लिए लाखों व करोड़ों रुपये की बढ़ोतरी की आवश्यकता होगी लेकिन प्रस्ताय में उन्होंने रखा है कि सब बाट कर एक रुपया कर दिया जाय। इती से मं समझता हूं कि इस बे बुनियाद बात का विरोध होना ही चाहिये।

जहां तक इस विभाग का सम्बन्ध है, मेरा निवंदन है कि सन् ४७ ते लेकर श्राज तक इस राज्य में इस विभाग ने जो काम किया, जो जनता की सेवायें कीं उनसे गांव तथा शहर के रहने वालों को इतना भरोसा श्रवश्य ही हो गया है कि उनको जहां जाना है। श्रामे गंतव्य स्थान पर वे ठीक ढंग से जा सकते है। रेलवे इससे बहुत पहले से चल रही है। लोगां की रेलवे के प्रति ऐसी भावना नहीं रह गई; यह परिवहन विभाग की सेवा का श्रसर है।

माननीय उप्रसेन जी ने जिन बातों का यहां उल्लेख किया उतमें से वो एक बातें उन्होंने ऐसी कहीं कि यदि केवल उनको देखा जाय तो यह मालूम होगा कि परिवहन विभाग इस राज्य का सेवक नहीं बल्कि भ्रष्टाचार, खोखलापन श्रीर श्ररक्षण का जाल सा है। उन्होंने कहां कि ड्राइवर, कडक्टर, श्रीर क्लीनर की तनख्वाहों में कमी बेशी है, एक ही तरह का काम करने वालों के वेतन दो तरह का है। सम्भवतः उन्होंने इस बात को नहीं जाना कि जिस समय रोडवेज विभाग इस राज्य में शुरू किया गया था उस समय इस बात का खयाल नहीं किया गया था कि किस योग्यता के श्रादमी किस जगह पर रखे जायें। भरती हो रही थी, बहुत से लोग उसमें

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-ग्रनुदान ३७६ संख्या ७--लेखा द्यार्थक १२-मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, ग्रनुदान संख्या ३१--लेखा द्यार्थक ४७-प्रकीर्ण विभाग श्रीर ४४--उड्डयन, ग्रनुदान संख्या ५२-लेखा द्यार्थक ७०-जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुधार पर पूंजी की लागत तथा ८२-राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

भरती हुये श्रीर जो तनख्वाह उस समय निश्चित की गयी उस पर सब लोग काम करने लगे। कुछ दिनों बाद जब यह ग्रावश्यक समझा गया कि कुछ शिक्षा की सीमा होनी चाहिये ग्रौर हाई स्कूल से कम के ग्रादमी फलां-फलां जगह पर न रखे जायें उस समय कुछ उनका बेतन भी तय किया गया था ग्रौर उसी ग्राधार पर यह बेतन-कम बना कि इसमें कुछ विभिन्नता रखी जाय। परन्तु जो कर्मचारी उसमें वेतन पाते हैं वे स्वयं विभिन्नता महसूस नहीं करते। उनको मील के हिसाब से भत्ता मिलता है ग्रौर ग्रपने कामकी पूरी मजदूरी मिलती है। यह उन कर्मचारियों ने स्वयं ही, जब विभाग के ग्रधिकारियों द्वारा पूछा गया था कि ग्रापको इस वेतन-कम में रहना है या सरकारी ग्रादेश के मुताबिक फलां समय से सर्विस छोड़ना है, तय किया था कि हम जिस ग्राधार पर चल रहे हैं उसनें इस भत्ते के मुताबिक काम करने में हमें कोई एतराज नहीं है। वस्तुतः उसने कोई पक्षपातपूर्ण बात नहीं है।

एक बात श्रौर उन्होंने कही कि जनरल मैनेजर का पद जो ६—७ रीजन्स में रखा गया है उसे समाप्त कर दिया जाय। इस बात का उत्तर देना मैं कोई श्रावश्यक नहीं समझता क्योंकि इसके पहले उनकी पार्टी का यह भी मुझाव है कि डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट का ही पद समाप्त कर दिया जाय श्रौर ऐसा खयाल है कि कुछ समय श्रगर इसी प्रकार सोशिलस्ट पार्टी की डेमौकेसी पनपती रही तो थोड़े दिनों बाद यह भी कहा जायगा कि किसी प्रकार का नियन्त्रण न रखा जाय सब ऐसे ही काम होने दिया जाय।

श्री उग्रसेन--ऐसा नहीं है ।

श्री केशव पांडेय—ग्रगर ऐसा नहीं है तो तमाम बातों को पूछने की जिम्मेदारी एक व्यक्ति पर रखने के माने यह हैं कि किसी एक जिम्मेदार व्यक्ति को रखना पड़ेगा चाहे उसका नाम ग्राप कुछ भी क्यों न रखें। ग्रगर यह नहीं होना चाि ये तो सोशिलस्ट पार्टी में भी जनरल सेकेटरी या प्रेसीडेंट रखने की जरुरत नहीं है, सब मंत्री हो जायें ग्रौर सारा विधान ग्रपने ग्राप बन जाय। लेकिन ग्रच्छा है, ग्रभी हमारे मुल्क को भाई उग्रसेन जी के कथनानुसार काफी दिनों में देखने को मिलेगा।

दूसरी बात भ्रष्टाचार के सम्बन्ध में उन्होंने कही। मैं समझता हूं कि माननीय उग्रसेन जी का बहुत नजदीकी होने के नाते शायद मैं यह कह सकता हूं कि सम्भवतः उन्हों ने इस बात को कभी देखने की चेष्टा नहीं की। भ्रष्टाचार का समूल उन्मूलन रोडवेज विभाग से हो गया है ऐसा मैं कहता हूं। वरना यह कहा जाता था कि टिकट लेते समय या गाड़ियों में चलने वालों की किसी ग्रीर जगह श्रधिक पैसा देना पड़ता था। लोग भुछ दिन पहले यह कहा करते थे ग्रीर हम लोग भी देशा करते थे ग्रीर ऐसा हो गया था। इस पर इस विभाग का ध्यान दिलाया गया तो विभाग ने ऐसी व्यवस्था कर दी है कि ग्रब नहीं कहा जा सकता है कि वहां पर भ्रष्टाचार होता है। लेंकिन जो लो। हमारी बात को मानना ही नहीं चाहते हैं उनके लिये तो हमारे पास कोई दलील नहीं है। जैसे कि गांव में कहा जाता है कि पंचायत सब मानेंगे लेकिन कीला यहीं गड़ेगा, इसी तरह से उधर से श्रावाज श्राई — "गलत"। जब हमारी बात को सुनने के लिये उधर से दरवाजा बन्द है तो हम भी कुछ कहने के लिये ग्रसमर्थ हैं।

श्रामदनी के सम्बन्ध में माननीय उग्रसेन जी ने स्वयं श्रांकड़े पेश किये हैं कि १६४७ से ग्रब तक दो करोड़ से ऊपर की इस विभाग को श्रामदनी हो चुकी है। श्रभी राज्य की पूरी सड़कें नहीं ली जा सकी हैं। ज्यों ज्यों हमारे साधन बढ़ते रहेंगे त्यों-त्यों हमारी सड़कें भी श्रच्छी होती रहेंगी। जैसे-जैसे लोगों की मांग बढ़ेगी वैसे-वैसे श्रौर सड़कें भी ली जायेंगी। रोडवेज

[श्री केशव पांडे]

को इतनी स्रामदनी होने के बाद यह कहा जाय कि इसको कुछ जनह दान में दे दी जाय तो ठीक नहीं है । जब तक हमारा शरीर काम करता रहता ह तब तक नो ठीक है लेकिन उसके समाप्त होने के समय जो कहा जाता है उसको म यहां कहना नहीं चाहता हूं।

माननीय उग्रभेन जी ने कहा है कि एक कुमार्झ रीजन लोला जाय। हम लोग भी इस बात के समर्थक है। यहां पर एक रोजन खोल कर एक जनरल मने जर रला जाय और श्रन्य रीजने के समान उसकी खोलकर पनपाने की विष्टा करनी चाहिये। म समझता हूं कि जो पुस्तिका इस विभाग का मिली है उस है पढ़ने में माननीय उग्रमेन जी थोड़ा समय लगायेंगे जैसे कि वह श्रीर बातों में अपना समय देते है। श्रीर उन कमंचारियों की खोड़ कर जो बरखास्त होकर बावैला मचाया करते है वह श्रन्य लोगों से बात करगे तें। म समझता है कि वह परिवहन विभाग से संतुष्ट होंगे श्रीर मुझे श्राक्षा ह कि उनका योग इस दिभाग की मिलेगा श्रीर राज्य के श्रन्दर वह उत्तरोत्तर तरककी करता रहेगा।

कुछ जगह नहीं ली जा मकती ह। उनके लिये हम लोग मुझाय देते ह। उसके स्राधार पर इस विभाग का काम स्रार स्रागे बढ़ सकता है। प्रयाग में कुम्भ का मेला लगा था जिसके बारे में राज्य का हर मनुष्य भी स्रव्यार पढ़ता हे या यहा गया था या जिसन लौटने वालों से मुलाकात की होगी तो उसे मालूम हुस्रा होगा कि इस विभाग ने वहा बड़ा भागी काम किया स्रीर इसे तरह से स्रार यह काम के ता रहेगा तो यह सभावताली विभाग हो । में मंत्री जी को एक सुझाव देना चाहता हूं। कभी कभी खुना करने हे, स्रोर लोग कहा धरते ह कि मेटूल गवर्नमें इस विभाग को ले लेने ही इच्छा रखती है। में उनसे सनरोध करांगा कि इस राज्य की जनता यह नहीं बाहती है कि इस विभाग को लेकर रेलवे की तरह से कर दिया जाय। स्राज वहा पर तात्वों की चोरी बन्व नहीं हो पाती ह। इस विभाग को स्रोर प्रभावकारी बनाना है तो इसे राज्य में उसकी पनपने का मोका दिया जाय।

में एक सुझाव और देना चाहता 🛫 · · ·

श्री उपाध्यक्ष--समय समाप्त ।

श्री श्रमरनाथ (जिना गोरखार) - - माननीय उपाध्यक्ष महोवय, मै माननीय उपासेन द्वारा प्रस्तुत कटोती के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए एडा हुआ हूं।

कहा गया कि रोडवेज विभाग में तरकती हुई। इसकी हम मानने के लिए तेयार है कि तरकती हुई। लेकिन साथ ही साथ वहां की कुछ तरकाफों की ग्रोर में ध्यान दिलाना चाहता है। इस विभाग के कर्नचारियों की तनख्वाहें १६४७ में, जबकि यह विभाग बनाया गया था, जो रखी गयी थीं वही ग्राज भी मौजूद है। दूसरे उनके लिए न कोई ग्रभी तक मैनुग्रल बनायी गयी श्रीर न कोई पे कमेटी बनायी गयी कि मौजूदा स्थित को देखते हुए इनको तनखाहें क्या होनी चाहिए। ग्राज की महंगाई देखते हुए ग्रीर इन कर्मचारियों की परेशानी देखते हुए यह विचारणीय हो गया है कि इस विभाग के लिए, चाहे सारे विभागों के लिए, एक पे कमेटी बैठायी जाय। किसी व्यवस्था के चलाने के लिए, उसके प्य-प्रदर्शन के लिए मैनुग्रल बनाने की भी जरूरत है।

दूसरे, इस संस्था के बारे में ग्रभी तक यह नहीं घोषित किया गया कि यह संस्था व्यापारिक है या राजकीय है। हमको जहां तक याद है, हमारे माननीय मंत्री जी ने एक-ग्राध बार इस बारे में कहा था कि यह व्यापारिक संस्था है। लेकिन इसके संबंध में ग्रब तक कोई ग्रावेश सरकार की ग्रोर से जारी नहीं किया गया कि यह व्यापारिक संस्था है। में जानना चाहूंगा कि जो बोनस दूमरी व्यापारिक संस्थाओं में दिया जाता है, ग्रावित इन कर्मचारियों को क्यों नहीं विया जाता। माननीय परिवहन मंत्री जी ने इस सम्बन्ध में ग्रयने बजट भाषण में कोई जिक नहीं किया। इन कर्मचारियों की यह शिकायत है कि ग्रक्छे काम करने में कर्मचारियों को बजाय हनाम देने के गलत इल्जाम से मुग्रसल किया जाता है जबकि भध्य प्रदेश में बाटा होने

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-स्त्रनुदान संख्या ३८१ ७-लेखा शिर्षक १२-मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, स्ननुदान संख्या ३८० ३१--लेखा शिर्षक ४७--प्रकीर्ण विभाग स्त्रीर ४४--उड्डयन, स्ननुदान संख्या ५२-लेखा शिर्षक ७०-जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुधार पर पूंजी की लागत तथा ८२-राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

पर भी कर्मचारियों को बोनस देने की व्यवस्था की गयी है लेकिन हमारे यहां लाभ होने पर भी बोनस नहीं दिया जाता। जहां तक महंगाई भत्ता का प्रश्न है, दिल्ली ट्रांसपे हैं में सेंट्रल बेसिस पर महंगाई का भत्ता दिया जाता है। लेकिन उत्तर प्रदेश में महंगाई भत्ते की कोई गमुचित व्यवस्था नहीं है। नीचे के कर्मचारियों के लिए पांच रुपये और ढाई रुपये की वृद्धि महंगाई के लिए जो व्यवस्था पिछले बजटों में की गयी है, आज की महंगाई को देखते हुए हम उसकी अपर्यान्त समझते हैं।

(इस समय १ वज कर १३ मिनट पर श्रो उपाध्यक्ष चले गर्बे और ग्रिधिष्ठाता, श्री बेचन राम गुप्त, पीठासीन हुए । )

इन कर्मचारियों के रहने की कोई श्राज तक व्यवस्था नहीं हो सकी। हम देखते है कि रोडवेज के ड्राइवरों, कंडक्टरों के लिए इयूटी से लौटने के बाद रहने के लिए स्थान मौजूद नहीं है। मैं जिस जिला गोरखपुर से श्राता हूं वहां की बात कहना चाहता हूं। वहां एक विश्वामगृह किसी प्रकार बना हुश्रा है। उसमें बजाय उनके यानी बस कर्मचारियों को ठहरने के दूसरे लोग उसमें ठहरते हैं श्रीर ठहराये जाने के विरोध पर श्रव तक ध्यान नहीं दिया गया। यह सिर्फ गोरखपुर की ही बात नहीं है। जहां तक श्रावास के न होने का सवाल है, वह सारे प्रदेश का सवाल है श्रीर हमको यह देखकर बहुत दुख होता है कि जिस डिपार्ट मेंट में इतनी श्रामदनी हो उसके कर्मचारियों के लिए श्राज तक रहने की कोई व्यवस्था न की जाय। दूसरी तरफ, श्रीमन्, यह भी देखने को मिलता है कि कंडक्टर्स श्रीर ड्राइवर्स के तो यूनिफार्म बगैरह दिये जाते हैं लेकिन जो सामान्य कर्मचारी हैं, दूसरे कर्मचारी हैं उनको कोई यूनिफार्म वगैरह देने की इयवस्था नहीं है। (व्यवधान) जैसे वहां पर नीचे के जो कर्मचारी है मेहतर श्रीर चपरासो वगैरह या श्रीर इस प्रकार के लोग जो है उनको श्राज तक कोई यूनिफार्म वगैरह नहीं दिया जाता है। (व्यवधान)

एक सदस्य--ग्राप कभी स्टेशन गर्वे भी हैं?

श्री स्रमरनाथ—-जरा सुनिये तो, स्राप । स्राप हो गये हैं स्टेशन तक ? मैं जानता हूं जनको नहीं मिलता है। पता नहीं किस कारण से नहीं मिलता है। हमें दुल है इस बात का।

श्री ग्रिधिष्ठात।--माननीय सदस्य कृपया ग्रापस में बातें न करें।

श्री स्रमरनाथ—दूसरी बात, श्रीमन्, जहां तक उनकी विभागीय पदोन्नति का प्रश्न है, ७५ प्रतिशत से उनकी पदोन्नित कम नहीं होनी चाहिए। यह देखा गया है—नदे स्नित करते वक्त में, क्वां पर पक्षपात किया जाता है, जिनकी स्थायी नहीं होना चाहिए, जिनकी पदोन्नित नहीं होनी चाहिए, दूसरे के बनिस्वत जो योग्य नहीं होते हैं, जो उनके बनिस्वत काम में कुशल नहीं होते हैं उनकी पदोन्नित की जाती है, उनका स्थायोकरण किया जाता है। मगर जिन लोगों को उसके योग्य समझा जाता है और जिनको पदोन्तित जरूरी है उनकी पदोन्नित नहीं की जाती है।

इसके बाद, श्रीमन्, मैं दूसरी तरफ श्रापका ध्यान ले जाना चाहूंगा। श्रभी तक इस प्रदेश में इस विभाग के बारे में कोई पेशन देने की ज्यवस्था नहीं की गई है उन कर्म बारियों को श्रीर उन्हें यह भी नहीं पता है कि उनको ४८ साल के बाद कोई पेशन मिलेगे। या नहीं। दूसरे, इस बात का भी ग्रभाव हमको खटकता है कि जैसे श्रीर विभागों में देखें, लेबर वगैरह में, तो बहां पर इनके झगड़ों का फैसला करने के लिए इंडस्ट्रियल डिस्प्यूट्स ऐस्ट बनाया गया है श्रीर उसके श्राधार पर वहां पर न्यायाधिकरण को नियुक्ति की गयी है, उस

#### [श्री ग्रमरनाथ]

तरह से इस विभाग के अन्दर इनके पगड़ों के फैमले हे निए किसी भी न्यायाधिकरण की व्यवस्था नहीं की गई है। हम माननीय मंत्री महोदय में इस नात की ना का नो कि राज्यों नहीं व्यवस्था की गई और हम यह भी देखते हैं कि जो अिकारी इन पर भक्त वाते हैं, श्रोर जो इन पर अनुशासनिक कार्यवाही की जाती है, उमा फमता प्रता प्रता करने हैं कि जो उनके अपर अनुशासन की कार्यवाही या किसी प्रकार की गांचियों पर मना है। के पी करारी हैं, करते हैं। ऐसी व्यवस्था नहीं होनो बाहिए। इनके पिए भी एक न्याया कि व्यवस्था होनी चाहिए। उसके लिए एक अलग कानन बनवा चारिए विचने ऐसी यहानों स्थापित हो सके श्रीर उचित फैसला कर सके।

श्रव में श्रापका ध्यान इस तरफ दिलाना चाहूगा हि बहुत सी जगरो पर वसी है वलाने की बहुत सख्त जरूरत हु श्रोर उसके लिए कृष्ठ मार्ग मा हो गई गा। या पतार तर हि हमने गोरवपुर से परतावल बाजार होते हुए घघली श्रीर तहा से पिसता बाजार श्रोर नित्तीन ठडीबारी तक बस चलाने की मार्ग की थी लेकिन माननीय मत्री महादय ने याद रामन ३० भी इस पर कोई कार्यवाही नहीं की, खेद के साथ यहना पत्रता है।

सिंवस देने में इस विभाग में जिस प्रकार का पक्ष गान कि गा गय। ए इस है ऊरण में के विशेष कहना नहीं चाहता है। के बल सके त के तोर पर कहना नाह गान कि उप र उप गान को भावना इस विभाग में नहीं होनी चाहिये। हम लेगा इस बात का गाना है कि ए कि भाग में देवरें विभागों की तरह से अब्दावार और बराइया नहीं है। यह भाग दार शिमा र योर इसमें ईमानदारी से काम होता है लेकिन म चाह गा कि जहां पर जिसा गा गा गे वेते को बात हो वहां पर पक्ष पात नहीं होना चाहिये। माननोय मंत्री महोदय हा। इस बात पर ध्यान देने को कृपा करें।

# श्री ग्रधिष्ठाता--समय समान्त हो गया ।

श्री महोलाल (जिला मुरादाबाद) -- प्राननीय श्रीधाटाला महोदय, में माननीय उपसेन के प्रस्ताव का विरोध करने के लिये खड़ा हुंग्रा हूं। इसका कारण यह है ि मानाल उग्रमेनजी ने इस विभाग की नीति से किसी प्रकार से कोई मतभेद प्रकट नहीं किया है। के 14 दिन प्रति दिन के कार्यों में उनको कुछ त्रटिया नजर श्राईं। इस कारणवक्ष उत्राने कटी । वा प्रस्ताव रवा है क्योंकि वह विरोधी दल में बठते हैं। श्रत. उनको कप्र न कछ रियोग में परना हा चाहिये। जब कुछ नही मिला तो छोटो-छोटो बाते दिन प्रतिदिन को कार्यगति श्रोर कार्यविध के मिलसिले में कहकर कडोतो के प्रसाव को रखा। ऐसे विभाग ही आजीनना करना उचित नहीं ह जो प्रत्यक्ष रूप से न केवल हमारी ग्रोर से बल्कि इस प्रत्न की जनता की ग्रार से बलाई का पात्र ह भ्रौर जो विभाग विकास कार्यों के लिये इस प्रान्त की सरकार को जनता पर क्रिना काई उत्तस लगायें हुयें करीब दो करोड़ रुपया देता है। दो करोड़ रुपये की धनराशि जनता के लिये एक विभाग के हारा देना, जनता की तरफ से ऐसे विभाग को जितनो भी बधाई वा जाय थोडो हा। उधर के बैठने वाले माननीय सदस्यों ने भी यह कहा है कि इस विभाग के श्रन्दर दूगरे विभागी की श्रपेक्षा भ्रष्टाचार कम है। माननीय उग्रसेन जी की विचार करना चाहिये था कि इस विभाग के लिये इस कटौतों के प्रस्ताव की स्रावश्यकता है या नहीं। में तो यह समग्रता हूं कि उन्हीं के शब्दों से उनका कटौती का प्रस्ताव अनावश्यक है और उन्हें अपना कटोतो का प्रस्ताव पे में नहीं करना क्योकि मूल रूप से नीति से उन्हें कोई मतभेद नही ह। यह हो सकता है कि वह यह कहते कि इस तरह से नही बल्कि इस तरह से रोड्स का राष्ट्रीयकरण होना चाहिये लंकिन वह नीति से सहमत है और पूर्णतः सहमत है।

श्रव इस सिलसिले में में सबसे पहले माननीय मंत्री जी का ध्यान २, ३ बातो की तरफ दिलाना चाहता हूं। एक तो यह है कि प्राइवेट बसेज जहां पर चलतो है वहा परिमट देते वक्त इस सहकारिता के गुग में सहकारी समितियों को परिमट पूर्वतः मिलनी चाहियें जो कि नहीं मिल १६६०-६१ के ग्राय-व्ययकमें ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-ग्रनुदान संख्या ७--- ३८३ लेखा शीर्षक १२-मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, ग्रनुदान संख्या ३१---लेखा शीर्षक ४७-प्रकीर्ण विभाग ग्रीर ४४-उड्डयन, ग्रनुदान संख्या ५२-लेखा शीर्षक ७०-जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुधार परपूंजी की लागत तथा ८२-राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यो का पूंजी लेखा

रही है। यह कहा जा सकता है कि यह अधिकार सीधे सरकार को नहीं है बिल्क उसके लिये हर डिवीजन के स्तर पर कमेटी बनी हुई है लेकिन कमेटी जो है वह सरकार के अन्तर्गन कार्य करती है। यदि सरकार को आवश्यकता हो तो में इमके लिये सरकार से प्रार्थना करूंगा कि सरकार इस प्रकार का अधिनयम या विधेयक लाये और ऐती व्यवस्था करें कि रोड्स पर गाड़ियां या प्राइवेट कैरियर चलाने के लिये केवल कोआपरेटिव सोसाइटीज को ही अधिकार मिल सके। व्यक्तियों को इसका अधिकार न दिया जाय और वह इमलिये कि आज को खराबियां हमारे इन प्राइवेट आपरेटर्स के द्वारा समाज को भगतनी पड़ती है, उनसे समाज बच सके और मेरा यकीन है कि ऐसा करने से समाज को कष्ट नहीं होगा और वे त्रुटियां खत्म हो जायंगी। इसके अतिरक्त जो हमारा समाजवाद का शिद्धान्त है, वह भी पूरा होगा क्योंकि जो आय होगी वह बहुत से व्यक्तियों में बटेगी बजाय चन्द लोगों की जेबों में जाने के।

इसके स्रलावा जो गाड़ियों द्वारा दुर्घटनाएं होती है, वैसे तो इस विभाग में नहीं स्रातीं परन्तु दिनों-दिन बढ़ती जा रही है और इनको रोकने के लिये सरकार को विशेष ध्यान देना चाहिये। इनको रोकने के लिये या तो हमारे इस यातायात विभाग के हाथ में सीधे सीघे स्रधिकार हो कि जो गाड़ियां नियम भंग करे उनका चालान करने की जिम्मेदारी और स्रधिकार इस विभाग को हो और इमी विभाग को मुकदमा चलाने का भी स्रधिकार हो या कोई स्रौर उचित प्रबन्ध किया जाय ताकि यह बढ़ते हुए एक्सोडेट्स एक सके जो कि बहुत ही दुखदायी साबित हो रहे हैं।

दूसरी बात जो में माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं यह है कि दूसरे विभागों के मुकाबले में ग्रापके विभाग में हरिजन तथा पिछड़ी जातियों के लोगों की नियुक्ति का विशेष ध्यान रखा जाता है। लेकिन फिर भी मैं ग्रापसे यह ग्रनुरोध किये बिना नहीं रह सकता कि इस पर ग्रापको ग्रीर उदारतापूर्वक विशेष ध्यान देना ही चाहिये।

इसके अतिरिक्त माननीय मंत्री जी से मै इतना ग्रौर निवेदन करना ग्राव्यकीय समझता हूं, ग्रौर जिसके लिये माननीय उग्रसेन जी ने भी ध्यान दिलाया, कि ग्राप श्रपने विभाग के नीचे स्वर के कर्नवारियों के लिये ग्रावास की व्यवस्था करे, वह एक साथ संभव नहीं है पर ज्यों-उयों ग्रापके साधन ग्रापको मौका दे, करते जायं।

माननीय स्रिविष्ठाता महोदय, माननीय उग्र पेन जी ने बहुत सी ऐसी बाने भी कहीं जिनका कोई स्राधार नहीं था। उदाहरण के तौर पर, उन्होंने कहा कि गाड़ियों के खरीदने में बहुत स्रिष्टाचार होता है। मैने तुरन्त ही माननीय मंत्री जी से इसकी जानकारों की कि इसका क्या तरीका है। उन्होंने बतलाया कि हमारी केन्द्रीय सरकार द्वारा जो नियम निर्धारित है हम उन्हों के स्रिनुसार गाड़ियां खरीदते हैं स्रीर उसमें हमारे स्रिधकारियों या विभाग के स्रन्य कर्मचारियों को कोई मनमानी करने का मौका नहीं मिलता। इसिलये मैं उग्र सेन जी से यह कहना चाहता हूं कि उन्हें इसकी पूरी जानकारी करने के बाद ऐसी बात कहनी चाहिये थी।

इसके अितरिकत उन्होंने कुछ वेतनों में आपस में विरोधाभास या असमानता की बात कही। लेकिन वह यह भूल गये कि अभी उन्होंने ही कहा था कि १६४७ से इस विभाग ने एक बस से काम शुरू किया था और अभी यह पूरे तौर पर यह विभाग स्थायो नहीं हो पाया है। घीरे-भीरे प्रगति कर रहा है। अपनी बात कहते समय वह यह भूल जाते है कि यदि अधिक काम करने का अवसर कर्मवारियों को आता है तो उसका माइलेज उनको वेतन के साथ मिलता है और या एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें कर्मवारियों को ज्यादा परेशानी का मौका नहीं है। इसके अलावा, माननीय अधिकाता महोदय, समय कम है, मै एक हो वास्य में आपके द्वारा इस विभाग को और इस विभाग के माननीय मंत्री जी को अपनी ओर से बधाई देता हूं क्योंकि जिस प्रकार से

[श्रो महीलाल]

यह विभाग श्रवना कार्य कर रहा हे वह जनता के लिये संतोषपद है। श्राशा की जातो है कि दूसरे विभाग भी इस यिभाग का अनुकरण करेंगे श्रीर जनता के जो आक्षेप हमारे दूसरे विभागों पर होते हैं उनको रोकने का प्रयत्न करेंगे।

\*श्री रामायणराय (जिला देवरिया)—माननीय श्रधिष्ठाता महोदय, मे ऐसा समझता हूं कि ग्रांज जो अनुदान हमारे सामने प्रस्तुत है उस अनुदान के संबंध में ठीक ढंग से विचार करने के लिये हमें इस विभाग का जो जक्ष्य सन् १६४७ में निर्धारित किया गया था उसको देखना होगा और यदि हम ऐसा समझने हैं कि जो लक्ष्य हमने सन् ४७ में निर्धारित किया था उस लक्ष्य में कोई दोव है तो हमें यह देखना होगा कि वह लक्ष्य कैसे पूरा हो समेगा, इन बातों पर भी हमें चर्चा करना चाहिये। जहां तदा में समझता हूं, और यह सर्वमान्य राय है कि, श्रांज इस विभाग से ग्रांथिक क्षेत्र में काफी लाभ राज्यकोष को पहुंचा है। लेकिन जब हम दूनरी दृष्टि से इस विभाग पर विचार करते हैं, जनता की सुख-सुविधाओं की दृष्टि से इस पर विचार करते हैं, तो हम यह पाते हैं कि जहां इस विभाग से हमारे राज्य को बहुत बड़ी ग्रामदनी हुई हैं, जहां इस विभाग ने प्रदेश की बहुत बड़ी बेकारी को दूर किया, वहां इस विभाग द्वारा जनता को जितना सुख मिलना चाहिये था, उन कर्मचारियों को जितनी सुविधायों मिलनी चाहिये थीं, उतनी नहीं मिलीं। इस सब का कारण में यह समझता हं कि हमारा रोडवेज विभाग जो एक तरह से इम राज्य का कमा पूत है, उसे ग्रपना बजट बनाने का स्वयं कोई ग्रधिकार नहीं है। यही कारण है कि हम देखते हैं कि मुनाफा तो बढ़ा है लेकिन जनता को सुल-सुविधाये नहीं बढ़ी हैं। में किसी को नीयत पर शक नहीं करता।

इस विभाग के लोग श्रपनी सीमाश्रों के भोतर श्रिधिक से श्रिधिक सेवा करने के लिये श्रीर सुखसुविधाएं उपलब्ध कराने का प्रयास करते हैं, लेकिन तब तक यह विभाग ठीक ढंग से जनता को
सेवा नहीं कर सकता, जब तक इस विभाग को श्रामदनी पर उसका पूरा नियन्त्रण नहीं होगा।
इसिलये, मान्यवर, में श्रापके द्वारा एक सुप्ताव वेना चाहता हूं माननीय मंत्री जी के सामने, कि
वह सरकार के सामने इस बात की मांग करें कि यह विभाग सही मानी में सेवा करता है।
रेलवे का श्राज स्वतंत्र बजट होता है। रेलवे के यात्रियों द्वारा जो श्रामदनी होती है,
ऐसा नहीं है कि वह श्रीर विभागों पर खर्च कर दी जाती हो, लेकिन यहां उल्टा है। श्रामदनी
तो होती है जनता के द्वारा मिलने वाले पैसे से, कर्मचारियों की सेवाश्रों से, जिनकी भूरि-भूरि
प्रशंसा हम सभी करते हैं लेकिन उसका लाभ दूसरे लोग उठाते हैं। इसमें दो राय नहीं हो सकती
है कि श्रन्य विभागों की श्रयेक्षा इस विभाग में काम करने वाले कर्मचारियों को कम तनखाहें
मिलतो है, या उनकी तनक्वाहों में डिस्पैरिटी जगह जगह मिल सकेगी, लेकिन यह सब कुछ
तभी दूर हो सकेगा जबकि इस विभाग का श्रयना कोई स्वतंत्र बजट हो।

मौजूदा ढांचे में में ऐसा महसूस करता हूं कि जहां तक माननीय मंत्री जी ने जूनियर बुकिंग क्लर्क को कुछ सुविधा दी, मुझे ऐसी आशा थी कि कम से कम इस वर्ष मैट्रिक और नान—मैट्रिक जो कंडक्टर्स हैं इनके विभेद की भी समाप्त करने की वह कृपा करेंगे। मेंने ऐसी आशा की थी कि जहां तक मंत्री जी सरकार के सामने अपनी आमदनी के आंकड़े प्रस्तुत करेंगे वहां सदन में जब इस विभाग का बजट प्रस्तुत करेंगे तो हमको यह बताने की कृपा करेगे कि इस बढ़ोत्तरी से उन लोगों को कितना लाभ हुआ जो इन बसेज में यात्रा करते हैं। किराये में छूट या उनके विश्राम करने इत्यादि को जो सुविवायें हैं, उनके ऊपर भी कुछ प्रकाश डालें कि यात्रियों को उन्होंने इस सम्बन्ध में क्या फाउश पहुंचाया।

में ऐसा समझता हूं कि आज कोई भी आदमी जो बसेज से यात्रा फरता है वह ऐसा मानता कि पुराने ढंग की जो पद्धति थी उससे यह अच्छी पद्धति है, लेकिन एक बड़ा दोष है जिसकी

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-स्रनुदान संख्या ३८४ ७--लेखा शीर्षक १२-मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, स्रनुदान संख्या ३१- लेखा शीर्षक ४७-प्रकीर्ण विभाग स्रौर ४४-उड्डयन, स्रनुदान संख्या ४२-लेखा शीर्षक ७०-जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुधार पर पूंजी की लागत तथा ८२- राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

स्रोर में स्नापके द्वारा मंत्री जी का ध्यान स्नाकित करूंगा। स्नाज टिकट की पद्धति कुछ ऐसी गड़बड़ है कि जिसकी वजह से जितना समय किसी यात्रा को पूरा करने में वांछित होता है उससे स्निधक समय स्नाज लगता है। इसके ऊपर विभाग को विचार करना चाहिये कि जहां २ घंटे वक्त लगा करता था वहां जाने में ४ घंटे लगते हैं, ऐसा क्यों हुस्ना?

विभागीय ईमानदारी लाने के लिये, भ्रष्टाचार रोकने के लिये भ्रनेक ढंग विभाग द्वारा भ्रयनाये गये। रास्ते में छपे हुये टिकट कंडक्टर्स नहीं दे सकते हैं। कंडक्टर को बराबर उस काग़ज को जिस पर नम्बर चढ़ता है गाड़ो के भ्रागे रखना पड़ता है—इत्यादि श्रमुविधायें हैं। में समझता हूं इसके ऊपर कोई विचार होना चाहिये कि भ्राखिर कैसे यात्रियों का समय बचाया जाय? क्योंकि हर एक यात्री यही चाहता है कि सुविधा के साथ भ्रौर समय के भीतर भ्रपनी यात्रा समाप्त कर दे, साथ ही जो इन गाड़ियों में कर्मचारी काम करते हों उनका सद्-व्यवहार उसको प्राप्त हो। निस्संदेह सद्व्यवहार उसको प्राप्त होता ग्रौर मुख प्राप्त होता है, लेकिन समय के भ्रन्दर हमारी गाड़ियां पहुंच पायें, श्रभी इसकी कमी है।

ड्राइवरों के ड्यूटी काल की चर्चा में जरूर करना चाहता हूं, इसलिये नहीं, जैसा कि बहुत से भाई समझेंगे कि शायद कोई ट्रेड यूनिय निज्म की स्पिरिट में ऐती बात कहता हूं, बिक में ऐसा महसूस करता हूं कि ग्रांज जो भी ऐक्सिडेंट्स होते हैं उनके पीछे जहां ग्रौर कारण हैं वहां पर ड्राइवरों का जो काम करने का समय है उसका ज्यादा होना है। कहा जाता है कि स्टियरिंग ड्यूटी द घंटे की है, लेकिन वह ऐक्चुग्रंल ड्यूटी कितनी करता है, ग्रगर उसे देखा जाय तो में ऐसा मानता हूं कि उसको जो उपलब्ध पुविधाएं है या जो उसकी कार्य-क्षमता है उससे उसको ग्रांबक काम करना पड़ता है।

मान्यवर, में चाहूंगा कि तनख्वाहों में जो इतनी बड़ी विषमता है जिसकी चर्चा कई माननीय सदस्यों ने की इसे इघर ग्रौर उघर दोनों तरफ के बैठने वाले शाननीय सदस्य कबूल करेंगे कि इस विषमता को समाप्त किया जाय। इस विभाग को जहां एक तरफ इस बात का श्रेय प्राप्त है, लोग ऐसा मानते हैं, कि ग्रन्य विभागों की श्रयेक्षा इस विभाग में ग्रधिक ईमानदारी है, शिकायतों पर जितनी जल्दी इस विभाग में जांच होती है उतनी शायद ही किसी विभाग में होती हो, इसके साथ-साथ लोग इस बात को भी मानने लगें कि इस विभाग में जो काम करने वाले लोग हैं उनके साथ न्याय होता है ग्रौर उनकी सुख-सुविधाग्रों का ध्यान रखा जाता है।

## श्री स्रधिष्ठाता—समय समाप्त।

\*श्री द्यामलाल यादव (जिला वाराणसी)—माननीय अधिष्ठाता महोदय, इंस विभाग के कार्यकलाप से न केवल हम सदस्यों को ही सन्तोष श्रीर गर्व है बिल्क इस प्रदेश की लाखों की संख्या में जनता जो इसकी सेवाग्रों का उपयोग करती है वह भी नितान्त सुविधा श्रीर सुख का अनुभव करती है। यही कारण है कि श्राज अनेको स्थानों पर रोडवेज श्रीर रेल सर्विस में श्रापस में कम्पटोशन चल रहा है श्रोर उसमें रेल थिछड़ रही है। हमारे जिले में लोग रेल से न चल कर जहां पर कि रोड सर्विस है, बसें चलती हैं, बसों से ही चलते हैं। मुगल सराय श्रीर बनारस के बीच में इसका प्रत्यक्ष प्रमाण मौजूद है। यही कारण है कि श्राज रोडवेज के अन्तर्गत ज्यादा सड़कें ली गई हैं, रोडवेज ने श्रधिक माइलेज कवर की हैं श्रीर श्रधिक बसें बढ़ी हैं। श्राज केवल यही नहीं है कि इस विभाग में श्रधिक बसें बढ़ी हैं, नयी सुन्दर बसें श्राई हैं, यात्रियों की संख्या बढ़ी है बिल्क इसके साथ-साथ इस विभाग ने जो लाभ दिया है उसका उपयोग जनता के विकास के कार्य-कम में किया गया है। यह भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है।

वक्ता ने भाषण का पुनर्वोक्षण नहीं िकया।

श्री इयामलाल यादव

कुछ माननीय सदस्यों ने यह सुझाव दिया कि रेलवे विभाग की तरह से इस विभाग का भी ख्रलग से बजट होना चाहिये। माननीय सदस्य इस बात को ख्रतुभव करेगे कि रेलवे सेकड़ों वर्षों की पुरानी संस्था है और एक लम्बे असें के बाद यह सम्भव हो सका कि उसका ख्रपना ख्रलग बजट बन सका लेकिन यह एक नयी सर्विस हे, नया विभाग हे। इस विभाग मे अभी प्रयोग हो रहे है, यह अनुभव प्राप्त कर रहा है, इस विभाग को स्थिरता प्रदान करनी हे जिससे भविष्य में इसकी तरकती हो सके। आज जहां पर सरकारी रोडवेज चलती है वहा प्राइवेट आपरेटर्स भी कार्य करते है। रेलवेज के सम्बन्ध में जिस प्रकार से उस विभाग को एकाविपत्य प्राप्त है उस प्रकार से इस विभाग को एकाविपत्य प्राप्त नहीं है। इस सर्विस में आज प्राइवेट और पिलक सेक्टर में कम्पीटीशन चल रहा है। आज इसके सामने बहुत सी समस्याये है। आज मान लीजिय एक विभाग ने एक पूरी रोड को नेशन गइज नहीं किया, थोड़ा सा एरिया ही नेशनलाइज किया है तो सवाल उठता है कि क्या वहां पर प्राइवेट आपरेटर्स को काम करने का मोका मिलना चाहिय या नहीं। में समझता हूं कि जहां पूरी रोड न ली गई हो वहां पर देहातो इला के और शहर को सम्बद्ध करने वाले जो प्राइवेट आपरेटर्स हों उनको स्रमुमित मिलनी चाहिये।

जहां तक इस विभाग के कर्मचारियों को तनख्वाह श्रोर दूसरी सुविधाये देने का प्रश्न है, उसमें कोई दो मत नहीं हो सकते। जितनी भी सुविधाये दो जा सकती हों, श्रवश्य दी जायं। लेकिन जिस प्रकार का यह एक नया विभाग है, हम श्रनुभव करते हे कि कर्मचारियों को पर्याप्त सुविधाये दी जा रही है। बोनस देने की भी बात कही गई। में समझता हूं कि माननीय सदस्यों में जो पुस्तक बड़ी हे उसकी श्रोर ध्यान नहीं दिया है। उसके पृष्ठ ६ पर पुरस्कार देने की व्यवस्था है। जिछले श्रमंत्र-दिसम्बर में शा। करोड़ एपया कर्मचारियों को पुरस्कार के रूप में बांटा गया था श्रौर यह बोनस का ही दूसरा रूप हो सकता है। यह विभाग श्रमी तक कारपोरेशन के श्रयीन नहीं है। इसका प्रत्येक कर्मचारी सरकारी कर्मचारियों पर लागू होते हैं वही इस विभाग वालों पर भी होते है।

माननीय उग्रसेन जी ने कहा कि यह विभाग बिना नियमों के काम कर रहा है। सम्भवतः उन्होंने श्रांतिशयोक्ति की श्रीर सही बात नहीं कही। रोडवेंज्ञ को कई बार हाई कोर्ट में श्रौर सुप्रीम कोर्ट में श्र्यनो व्यवस्था कायम रखने के लिये जाना पड़ा। मोटर वेहिकित्स रूत्स बने हुये हैं श्रौर मोटर का चम्का बगैर नियमों के चल ही नहीं सकता है। यह सही है कि उनकी में नुश्रल श्रलग नहीं है लेकिन सरकारी कर्मचारियों की नियमावली साधारणतः उनके लिये भी लागू होती है।

जो स्ववाड प्राइवेट गाड़ियों को चेक नहीं करता था, उसे समाप्त करके ब्रार० टी० ब्रोज० को अधिकार देना भी प्रशंसनीय कार्य है। एक माननीय सदस्य ने कहा कि इससे अव्टाचार बढ़ा। में समझता हूं कि उन्हें पुरानी व्यवस्था से मोह है ब्रौर नयी व्यवस्था से वह घबरात है। पुरानी व्यवस्था को इसीलिय समाप्त किया गया कि उसमे गड़बड़ी थी ब्रीर एनफोर्समेट ब्रफ़सरों के अधीन, जो पब्लिक सर्विस कमीशन की राय से रखे गये है, यह काम ब्रार० टी० ब्रोज० को दिया गया ब्रौर इस व्यवस्था में कोई भी अव्टाचार हमें तो नहीं दिखाई विया। इतना में जरूर कहूंगा कि ब्रार० टी० ब्रोज० को सर्विस का स्कोप कम है। वे ब्रपने रीजन में ही परिवर्तित होते रहते हैं। ब्रगर मैनेजर्स ब्रौर इनकी सर्विस ब्रान्तगामट कर दी जावे तो उनकी सेवाओं का ब्रिवक लाभ उठाया जा सकता है।

हमें प्रसन्नता है कि हरिजन भाइयों के लिये १८ प्रतिशत संरक्षण को पूरा करने का हमारे मंत्री जी, सचिव महोदय, ग्रायुक्त महोदय ग्रीर यह विभाग प्रयत्न कर रहा है। चूंकि यह सर्विस नयी है इसलिये सम्भव है कि १८ प्रतिशत पूरा न हो पाया हो लेकिन हमें ग्राशा है कि यह संरक्षण पूरा हो जायगा। साथ ही साथ, में प्रार्थना करूंगा कि माननीय मंत्री जी पिछड़ी जातियों को भी उचित एजान देने की कृपा करें।

१६६०-६१ के आय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-अनुदान ३६७ संख्या ७--लेखा शीर्षक १२--मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, अनुदान संख्या ३१--लेखा शीर्षक ४७--प्रकीर्ण त्रिभाग और ४४--उड्डयन, अनुदान संख्या ५२--लेखा शीर्यक ७०-जन स्वात्थ्य सम्बन्धी सुधार पर पूंजी की लागत तथा द२--राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

हमारे जिले में, बनारस शहर में, सिटी बस सर्विस बड़े ही ग्रच्छे ढंग से ग्रौर सफलतापूर्वक चल रही है। बनारस से २० मील चन्दौलो ग्रौर मुगलमराय तक वह जनता की सेवा कर रही है। मेरा निवेदन है कि वहां माइनेज बेसिस पर किराया निर्धारित किया जाय। इससे जनता को बहुत सुख होगा ग्रौर विभाग की कठिनाई भी हल हो जायगी।

बस स्टेशन भी ऋधिक बनाने की जरूरत है। मुगलसराय में स्थान न पिलने से बस स्टेशन नहीं बन सका है। लेकिन जड़ां इननी ऋधिक वसें चले वहां जरूर यह काम होना चाहिये।

श्री उग्रसेन जी ने यर् भी एक चलनी बात कर दी कि मैनेजर का पद समाप्त किया जाय। यह उन्होंने स्रपने सिद्धान्त के मुताबिक कहा। मेंगे राय में मैनेजर का पद रहना चाहिये।

वाराणसी में प्राइवेट आपरेटर्स और रोडवेज की इतनी प्रधिक सार्विसेज है कि उसे एक श्रलहदा रीजन करार देना चाहिये जिससे काम में सुविधा हो। में प्रार्थना करूंगा कि मन्त्रनाय मंत्री जी इस बात को त्रिवारे और कहने की कृपा करें।

में यह भी कहे जिना नहीं रह सकता कि इस विभाग के कर्मचारियों में जनता की सेवा का जो भाव है उसकी में प्रशंमा करता हूं। श्रिविकारी न केवल शिकायत को दूर करते है बिल्क यह भी प्रयत्न करते है कि शिकायत-कर्ता सन्तुष्ट हो जायं।

इन शब्दों के साथ, मैं इय प्रनुदान का समर्थन करता हूं।

श्री जंगबहादुर वर्मा (जिला बाराबंकी)—श्रीमन्, में उग्रसेन जी के कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिये खड़ा हुग्रा हूं।

हमारे प्रान्त में मंत्रो जो ने रोडवेज का राष्ट्रीयकरण तो किया ग्रौर इसके निये में उन्हें बयाई देता हूं मगर ग्राज के युग में समाजवादी समाजवाद की ग्रोर जाना है तो उसे राष्ट्रीयकरण नहीं कहा जा सकता, यह तो सरकारीकरण है। मुनाफा होते हुये विकेन्द्रीयकरण या समन्त्रीकरण को ग्रोर जाना नहीं कहा जा सकता। मुनाफ़ा तो बनिया कमाता है। यह सरकार विनया है।

श्री ग्रधिष्ठाता--पह ग्राप बतावें कि रोडवेज का विकेन्द्रीकरण कैसे हो।

श्री जंगबहादुर वर्मा—बतलाऊंगा। जो ज्यादा मुनाफ़ा दिखाया गया है यह कन्डक्टरों, ड्राइवरों श्रीर दूसरे छोटे कर्मचारियों का कमाया हुश्रा है। मुसाफिरों को सुख-सुविधा देते हैं यही लोग, लेकिन इनकी तनख्वाहों की श्रीर सरकार तिनक भी ध्यान नहीं देती। तनख्वाहें बढ़ती है मैनेजरों की, जनरल मैनेजरों की श्रीर दूसरे ऊंचे श्रिधकारियों की। बड़े श्रफसर बढ़ाये जाते हैं। अगर कन्डक्टर श्रीर ड्राइवर इत्यादि मुसाफिरों को इतनी सुख-सुविधा नहीं देते तो इतनी श्रामदनी नहीं बढ़ सकती थी। सरकार को चाहिये कि इन छोटे कर्मचारियों का वेतन १०० रुपये से श्रिधक करे श्रीर किसी का हजार से श्रिधक न हो। लेकिन कन्डक्टर बेचारे को माइलेज का केवल ७ रु० मासिक मिलता है। उसके श्रीर ड्राइवर के लिये न मकान की व्यवस्था है, न दबादाक की श्रलग व्यवस्था है। हमने हैदरगढ़, देवा श्रीर फतेहपुर मे देखा है कि कुत्ते की तरह से जाड़े के मौसम में गुर्गुटी मार कर ये लोग या तो मोटर के नीचे या किसी के छप्पर मे रात बिताते हैं। तमाम तरह का गर्द, धूल वगैरह उनको लगता है श्रीर ड्राइवर का तो पेट्रोल की बदबू से स्वास्थ्य खराब हो जाता है। उनकी जल्दी पेन्शन होनी चाहिये, उनके लिये दवादाक का प्रबन्ध श्रच्छा श्रीर श्रलग होना चाहिये, जैसे रेलवे मे श्रलग श्रस्पताल है। उनके बच्चों के लिये स्कूल होने चाहिये, जैसे कि रेलवे मे है। उनकी पत्नी वगैरह को भी फी श्राने-जाने की सुविधा होनी चाहिये।

[श्री जंगवहादुर वर्मा]

इस विभाग में २,६६३ ड्राइवर और २८५१ कन्डक्टर हैं। मैने प्रश्न किया था कि कितनी संख्या हरिजनों की ग्रोर कितनो पिछड़ी जाित वालों की है। परन्तु श्रलग-ग्रलग व्योरा उन्होंने नहीं दिया। इसमे बहुत राज छिपाया गया है। १८ प्रतिशत का जो नियम सरकार का बना हुग्रा है, उसके ग्र-गुमार भी बस कंडक्टर्स ग्रीर ड्राइवर्स नहीं रखे गये। माननोय मंत्री जी हरिजन हैं ग्रीर हरिजन होते हुए भी वह उस रिपोर्ट को लागू नहीं कर पाये है लेकिन ग्रन्य मंत्रियों को देखिये जो ऊंची-ऊंची जाितयों के हैं, उनके विभागों में ऊंची जाित के ७५ ग्रीर ६० प्रतिशत लोग भरे हुए है। मालूम ऐसा होता है कि इस विभाग में जो ऊंचे प्रधिकारों है वे ऊंची जाित के हैं ग्रीर उनके हाथ में वह काम है इसलिये बैकवर्ड क्लास के लोग ग्रिधक नहीं ग्रा पाये है। वर्कशाप वगैरा में भो जहां पर पढ़े-लिखे लोग नहीं रखे जाते हैं वहां भो बेकवर्ड क्लास के लोग नहीं रख जाते हैं। ग्रगर ग्राप ग्रयने प्रदेश में समाजवादी व्यवस्था लाना चाहते हैं तो हरिजनों ग्रीर पिछड़ो जाित के लोगों को उठाना होगा।

कानपुर ग्रोर बाराबंकी रोडवेज पर वापमी टिकिट दिये जाते हैं। कानपुर में बड़े-बड़े क्यापारी रहते हैं। उनको श्राठ श्राना छ्ट भी दी जाती है। लेकिन गांवों में यह सुविधा नहीं दी जाती है, जहां कि गरीब लोग रहते हैं। न तो वापसी टिकट ही दिये जाते हैं ग्रोर न यह छूट ही दी जाती है।

जहां पर रेल ग्रोर बस की होड़ है वहां पर किराया ६ पाई की मील लिया जाता है ग्रौर जहां होड़ नहीं है वहां पर साढ़े सात पाई लिया जाता है। क्या सरकार होड़बाजी करके बिनयायी व्यवस्था करना चाहती है ? सब स्थानों के लिए एकसां नियम होना चाहिए। लेकिन सरकार इस ग्रोर ध्यान नहीं दे रही है।

जांच-पड़ताल के लिए जो इन्सपेक्टर मुकर्रर होते हैं उनकी हालत यह है मन्त्री महोदय इसकी जांच करा ले, मैं इसकी श्रच्छी तरह से जानता हूं— वे बड़े-बड़े श्राधिकारियों के नातेदार श्रौर रिश्तेदारों को इधर-उधर भेजा करते हैं श्रौर सरकारी श्राय का नुकसान करते ह श्रोर श्रपना टी० ए० चार्ज करते हैं।

कानपुर का बस स्टेशन बहुत ही छोटा है। २०० बसें वहां से रोजाना छूटती है। न तो वहां बसों को खड़े होने का ठीक प्रबन्ध है श्रीर न सवारियों को ठहरने श्रीर छाटवरों श्रादि के रहने का स्थान है। इसका भी सुनासिब इन्तजाम होना जरूरी है।

कन्डक्टर्स जो कि १०५ रुपये पर पहुंच जाते हैं वे क्लर्क बना विये जाते है श्रोर उनको वहां ६० रुपया दिया जाता है। ऐसा नहीं होना चाहिए। बाराबंधी से फेजाबाद, बाराबंधी से बहरामघाट श्रौर बाराबंधी से हैंदरगढ़ जाने वाली सड़कें बहुत श्रव्छी हालत में ह लेकिन बहुत विनों से कहें जाने के बावजूद भी श्रभी इन पर कोई रोड वेज की बसेज नहीं चलायी गयी है। इन सड़कों पर रोडवेज के बड़े श्रधिकारियों के रिश्तेदारों की प्राइवेट बसेज चल रही है। मन्त्री जी इस पर गौर करें। किराया ६ पाई फी मील लिया जाता है। रेट भी एक मुकरंर नहीं है। हैंदरगढ़ से बाराबंधी के १ रु० ६ श्राना लिये जाते हैं जबकि कोटवा से १४ श्राना ले लिया जाता है।

गाड़ियों पर जो नम्बर होते हैं वे ग्रंग्रेजी में डाले जाते हैं। टिकटों पर भी ग्रंग्रेजी में नम्बर डालते है, जिससे यात्रियों को ढूंढ़ने में श्रमुविधा होती है। वह बस ढूंढ नहीं पाता है ग्रौर उसकी गाड़ी छूट जाती है। रेल की तरह से यहां पर भी प्रबन्ध होना चाहिए कि लाउड स्पीकर से एलान कराया जाय ग्रौर टिकिट को रेल की तरह से लौटाने की व्यवस्था की जाय।

गाड़ियों पर जो नम्बर लिखे जाते हैं वे लोकभाषा में होने चाहियें। कई बार ऐसे मौके श्राये है कि ट्रकों द्वारा लोग कुचल डाले गये हैं श्रौर वह ट्रक लेकर भाग गया क्योंकि नम्बर श्रंगेजी में होने की वजह से उसे लोग नहीं पढ़ सके। श्रगर हिन्दी भाषा में नम्बर होंगे तो उसे सभी पढ़ सकें। इस तरह से भक्तर काली होते हैं, जोग द्वारा पीते हैं, इस सब वाली

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-ग्रनुदान संख्या ७-लेखा शीर्षक १२-मोटर गाड़ियों के एक्टों के कारण व्यय, ग्रनुदान संख्या ३१-लेखा शीर्षक ४७-प्रकीर्ण विभाग ग्रौर ४४--उड्डयन, ग्रनुदान संख्या ४२-लेखा शीर्षक ७०-जन-स्वास्थ्य सबंधी सुधार परपूंजी की लागत तथा द२-राजस्व लेखें के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

को ध्यान में रावने हुये सरकार को इस नियम को लागू कर देना चाहिए जिस से कत्ल श्रादि न हों। ज्यादातर ऐश्सी डेट प्राइवेट लारी श्रीर ट्रको द्वारा किये गये है। श्रगर उनके नम्बर हिन्दी में होते तो गांवो की जनता द्वारा उनके पढ़ लिये जाने पर उनका चालान भी हो सकता है। इसलिए नम्बर श्रंग्रेजी में न होकर हिन्दी में ही होने चाहिए।

### श्री ग्रधिष्ठाता--समय समाप्त।

\*श्री रणबहादुर्रांसह (जिला बस्ती)—माननीय ग्रधिष्टाता महोदय, मैं ग्रापका बहुत ग्रनुगृहीत हूं कि श्रापने मुझे इस चलते हुये महत्वपूर्ण विवाद पर बोलने का ग्रवसर प्रदान किया। मान्यवर, परिवहन मन्त्री जो ने जो वक्तव्य दिया उसको मैंने गौर से मुना ग्रौर उस पर विचार किया ग्रौर उसके बाद जो भी माननीय सदस्यों ने श्रव तक ग्रपने विचार व्यक्त किये हैं उनको सुनने से मुझे ऐसा मालूम हुग्रा कि जो यह ग्रनुदान उपस्थित है, कुछ ऐसा है जिस से हर माननीय सदस्य ने जो कुछ भी कहा है उससे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि यह उनका एक सुझाव है ग्रौर इस विभाग द्वारा जो कार्य हो रहा है, वह हर तरह से तो नहीं लेकिन काफी तरह से सन्तोषजनक है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारे भाई उग्रसेन जो ने जो कटौती का प्रस्ताव प्रस्तुत किया, उनका भी जो दृष्टिकोण रहा हो, लेकिन उन्होंने ग्राज बहुत ही रचनात्मक बाते कहने की कोश्चिश्च की है। लेकिन जहां तक मैंने यह समझा कि उन्होंने कुछ ऐसा प्रयत्न करने की चेष्टा जरूर की कि दिल में तो कुछ ग्रौर है ग्रौर दिमाग को उन्होंने कुछ ग्रौर तरीके से बनाने की कोश्चिश्च की।

जैसा कि में जानता हूं, माननीय उग्रसेन जी का सम्बन्ध इस विभाग से बहुत काफी है श्रोर में भी उसी जिले की ट्रांस्पोर्ट यूनियन में काम करता हूं जहां वे करते हैं। उन्हें जब भी मुझसे मिलने का श्रवसर मिला है तो उन्होंने यह भाव जरूर व्यक्त किये कि इस विभाग का काम, तथा इस विभाग क मन्त्री तथा मन्त्रालय का काम तुम्हारी सरकार के श्रौर विभागों में श्रच्छा जरूर है। इस तरह की बाते मेरी उनकी कभी-कभी हुग्रा करती थीं पहले। लेकिन मान्यवर, श्राप जान्ते हैं कि डाक्टर के पास एक श्राला होता है जिस से वह तापमान देखता है। उस श्राले में कोई गर्मी नहीं होती है। उसी तरह से माननीय उग्रसेन जी के बदन में गर्मी तो थी नहीं लेकिन...

श्री अधिष्ठाता—हमेशा उनके बदन मे गर्मी रहती है।

श्री रणबहादुर्रासह—सैर, मै श्रीर बाते न कह कर इतना ही कहन। चाहता हूं कि हमारे भाई रामायण राय जी ने जो दृष्टिकोण हाउस के सामने रखा श्रीर जिन बातों की तरफ माननीय मन्त्री जी का ध्यान स्नाकृष्ट किया वे भी व्यावहारिक है।

श्रीयन्, में यह जानता हूं कि यह परिवहन विभाग दो भागों में बंटा हुन्ना है । एक टेक्निकल साइड है और दूसरा रोड वेज है । तो जहां तक टेक्निकल साइड का सम्बन्ध है, उस में ग्राज जो कुछ काम हो रहा है, में समझता हूं कि वह बहुत ही सन्तोषजनक है । वर्कशाप में कई ऐसी बाते हें जिससे हमारा नुकसान भी हो जाता है, तो जो कुछ भी इस में सुधार करने की ग्रावव्यकता है, उस को करना चाहिए। दूमरी तरफ, मान्यवर, जहां तक रोड्स का सम्बन्ध है, इस में कोई सन्देह नहीं कि जैसे ग्रांकड़े हमारे सामने प्रस्तुत है उन को देखने से हमें ग्राइने-सा ही मालूम होता कि सन् १६४७ में हमारे पास कितने मील सड़के थी ग्रीर ग्राज कितने मील है। तो इस परिवहन विभाग ने जैसी ग्रापनी योग्यता, सुनियोजित व्यवस्था ग्रीर ईमानदारी का परिचय

[श्री रणबहादुर सिंह]

दिया है, इसमें सन्देह नहीं कि वे कर्मचारी जो रोडवेज इचूटी में है—चाहे बन्डवर्ट्स हों, चाहे वृक्तिंग वनक्सें हों, चाहे उच्च श्रविकारी हों, वे सभी प्रशंसा के पात्र ह। मने यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि यह विभाग श्रवनी ईमानदारी के कारण जनता में काफी लोकप्रिय है।

म माननीय उग्रमेन जी की इस बात ने इत्तफाक नहीं करता कि विभाग मे भ्रष्टाचार है, जहा उन्होंने कहा कि स्थायीकरण होना चःहिए स्टाफ का, या कोई भनुश्रल होना चाहिए वह ठीक है। एक भाई ने यह भी कहा कि समय की बचत होती चाहिए, ग्रायद रामायण राय जी ने कहा, निस्सन्देह मन्त्री जी को इस तरफ भी ध्यान देना च।हिए। प्रब जो व्यवस्था हे उस मे घडी लगी रहती है, माइलेज का हिसाब रहता है, ट्राइवर उस के बाहर नहीं जा सकता। समय की बचत की बात ठीक है, जेसे किसी बस का डिपार्चर साढ़े ४ बजे हे लेकिन कन्डक्टर चेक करने ब्राता हे तो उसे २०-२२ मिनट लग जाते है वह समय बचाना चाहिए। जब टिकट इरय हो उसी समय चेकिंग हो जानी चाहिए श्रोर इस तरह से गाड़ी लंट न होनी चाहिए। दूसरे चालान शोट लाकर में रायी जाती है। किसी भी प्रदेश में कही भी यह लाकर का प्रयोग नहीं किया गया है । इस से बहुत लाभ हुआ है, मने इस की पूरी जानकारी हासिल करने की कोशिक भी की है। इस से मालूम होता है कि मन्त्री जी का इरादा साफ है श्रीर वह विभाग से अध्टाचार को दूर करना चाहते हैं। जो ६० प्रतिदात करण्यन था वह इस लाकर के प्रयोग से दूर हो गया। मेरा मकान ट्रांस्पोर्ट बुकिंग श्राफिस से थोड़ा दूर पड़ता है लेकिन म गर्व से वह सकता हूं कि किसी भी दिन, मझे यात्रा करने का काफी ग्रवसर मिलता हे लेकिन मने किसी भी कन्डक्टर को बिना टिकट यात्रा करते हुये नही पाया, इस का सब से बड़ा कारण यही लाकर ह, ग्रगर कोई बिना टिक : सवारी बिठा भी ले, तो चालान झीट लाकर से निकालन में श्रोर उस में नम्बर भरने में काफी समय लग जाता है, दो चार मिनट लग जाते हे श्रोर टिकट नही बनाये जा सकते श्रोर डर रहता है कि चेंकिंग न हो जाय। इसलिए यह लाकर सिस्टम बहुत श्रन्छ। हे।

वेतनक्रम की श्रसमानता के विषय में माननीय उग्रसेन ने कहा, निस्मन्देह इस श्रोर मन्त्री जी को ध्यान देना चाहिए कि एक ही तरह का काम श्रगर कोई कर्मचारी करते हैं तो उन के वेतन में श्रन्तर नहीं होना चाहिए बल्कि उस में समानता होनी चाहिए। दूसरे ट्राइवर्स का माइलेज बहुत कम है श्रौर नाइट—हाल्ट का एक रुपया बहुत कम है। श्राप जानते हे कि जब भी कोई सफर में जाता है तो परदेश में खाने पर दुगना व्यय हो जाता है इस वास्ते यह दस श्राने श्रोर १२ श्राने का नाइट—हाल्ट एलाउन्स बहुत कम है। दूसरी तरफ यात्रियों की श्रीपंधा के बारे में भी ध्यान दिया जाय जैसे टिकट श्रगर इक्ष्य हो जायं श्रौर किसी काण्णवदा बस में वाशी न बेठ पाये तो उन के टिकट की वापसी की सुविधा रेल के श्रनुसार होनी चाहिए, टिकट बेकार नहीं होना चाहिए। वह टिकट रेलवे की तरह १ श्राना या २ श्राना कम करके वापस हो जाना चाहिए या दूसरी गाड़ी से यात्री को जाने की सुविधा होनी चाहिए।

ट्रकों के जो श्रांकड़े दिये गये है उन से मालूम होता है कि १६४७ में जितनी दुके थी उन की संख्या श्राज काफी कम हो गयी है श्रौर दूसरी तरफ प्राइवेट श्रोनर्स इस बिजिनेस पर हावी होते चले जा रहे हैं, यहां तक कि रेलवे विभाग को भी काफी परेशान करते हैं। तो मैं चाहंगा कि ट्रकों की संख्या बढ़नी चाहिए श्रोर उनका माइलेज भी बढ़ना चाहिए। फैंजाबाद की सड़क का भी राष्ट्रीयकरण होना चाहिए।

श्री रामसुन्दर पांडेय (जिला श्राजमगढ़)—श्रिष्ठिता महोदय, में कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं। यह बात सही है कि जिस प्रकार से इस विभाग में घूसाबोरी को रोका गया है उस प्रकार से ग्रगर श्रन्य विभागों में भी भ्रष्टाचार कम हुन्ना होता तो शायद प्रदेश की व्यवस्था दूसरी ही होती। लेकिन इस विभाग के श्रलावा कोई ऐसा विभाग नहीं है जिसने भ्रष्टाचार पर काब पाया हो। इसके साथ-साथ में मन्त्री जी से निवेदन करूंगा कि यह विभाग ग्रपने प्रदेश का नया विभाग है श्रीर इस में कम से कम समाजवादी व्यवस्था झलकनी चाहिए। श्रफसोस है कि उस दिश्रा में कोई पुरजोर कदम नहीं उठाया गया। समाजवादी व्यवस्था में

388

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदान संख्या ७ --लेखा शीर्वक १२--मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, ग्रनुदान संख्या ३१-- नेला शीर्षक ४७--प्रकीर्ण विभाग ग्रीर ४४--उड्डयन, ग्रन्दान संख्या ५२--लेखा शिर्षक ७०--जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुधार पर पुंजी का लागत तथा ८२-- राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पुंजी लेखा

श्रामदनी का ग्रन्तर १ ग्रीर १० से ज्यादा का नहीं होना चाहिए। लेकिन नीचे के कर्मचारी स्रोर विभाग के बड़े से बड़े कर्मचारों के वेतन में बहुत बड़ा फर्क पाया जाता है। में मानने के लिए तैयार नहीं हूं कि यह विभाग भी समाजवादी व्यवस्था को ग्रोर जा रहा है। मैं चाहूंगा कि एक विभाग में तो कम से कम सरकार की स्रोर से ऐसा होना चाहिए जिस से झलके कि एक छोटा कर्तवारो भो ग्राने बच्चों को सारी मुख-मुविधा पहुंचाने में समर्थ है। लेकिन ऐसा नहीं है। मैं चाहुंगा कि १०० रुपये से कम किसी की तनस्वाह नहीं होनी चाहिए।

कन्ड क्टर्स की बात माननीय उग्रसेन जी ने कही बहुत तफसील में, लेकिन एक बात मुझे बहुत खटकतीहै और वह यहहै कि कुछ ऐडीशनल कन्डक्टर्स रखे जाते है और उन की हालत यह है कि सालों साल काम मिलताहै, लेकिन हर साल एक दिन के लिए उनको नौकरी से ग्रेलग कर दिया जाता है। यह प्रथा खराव है। जिस श्रादमी को लगातार काम मिनताहै उस को स्थायी करना चाहिये श्रोर एक दिन के लिये भो साज में उस हो श्रवण नहीं करना चाहिये।

रेल के का जो कर्म वारी है अगर वह अपने घर जाता है छट्टो में तो उसको पास मिलता है, ग्राने बच्बों को भी साथ लेजा सकता है। लेकिन इस विभाग के कर्मजारियों को पास नहीं मिलता। उच्च प्रधि बारो की इच्छा पर है कि वह चाहे तो पास दे दे लेकिन साकार की स्रोर से ऐवा काई आहेश नहीं है कि स्रवर कोई कर्मधारी छट्टा पर जाय तो उसकी पास दिया जा । इस ही व । वस्था अवस्य हो नी चाहिये।

सबसे बड़ी बात किसी विभाग या संस्था में यह होनी चाहिये कि जो कार्यकर्ता हैं वे उस चीज को अपनी चीज समझें, उसकी स्नामदनी को अपनी स्नामदनी समझें। उस काम को जब कार्यकर्ता ग्रपना काम समझता है तो उसको उससे मुहब्बत होती है। जब २ करोड़ की श्रामदनी हो श्रौर कंडक्टर को पास न मिले घर जाने के लिए, यह ताज्जुब की बात है। १५० मील से ऊपर की यात्रा करके कडक्टर एवं ड्राइवर लखनऊ से श्राजमगढ़ जाता है तो श्राप सोच सकते हैं कि कंडक्टर तथा ड्राइवर की क्या हालत होगी ? क्या उसके बैठने या सोने के लिये जगह मिलती हैं ? नहीं मिलती है । लगातार साढ़े ६ घंटे तक गाड़ी को एक नजर से ड्राइव करते जाइये तो ड़ाइवर के हाथ से गाड़ी इधर से उधर हो सकती है। ड्राइवर से इतना ज्यादा काम लिया जाता है कि बसें श्रापस में टकराती है श्रौर फिर काफी नुकसान होता है। इसलिये सरकार को ध्यान देना चाहिये कि काम के घंटे कम किये जायं। ग्राप देखें कि ५,६ घंटे हम बैठते हैं। सिचवालय के बड़े-बड़े कर्मचारी ५, ६ घंटे बैठते हैं श्रौर ग्रध्यापक भी ५, ६ घंटे काम करते हैं, लेकिन बस का ड्राइवर ६,१० घट बस चलाये। यह बहुत ही श्रनुचित है जब कि हम यह मुकाबला करते हैं कि जो पैसा हम उसे देते हैं वह काम के घंटों के मुकाबले में बहुत ही

एक बात रोडवेज में भी हम देख रहे हैं कि रेलवे की तरह उनमें भी यात्रियों की तादाद बढ़ती जा रही है। जो बस ४० की है उसमें ५० तक बैठते हैं। बहुत से स्थानों पर देखा गया है कि लंबा सफर होता है लेकिन बस बीच में खराब हो जाती है। कभी टायर खराब हो गया, कभी पंचर हो गया श्रौर उसका कारण है ज्यादा भार ढोना । इसलिये यात्रियों की संख्या जो निद्यित है उससे अधिक यात्री नहीं ढोये जाने चाहिये। अगर आवश्यकता ज्यादा है तो ज्यादा गाड़ियां बढ़ायी जायें भ्रौर जैसे रेलवे के थर्ड क्लास होते हैं वैसी ही रोडवेज की बसों की हालत नहीं होनी चाहिये। प्राइवेट लारी और सरकारी बसों में यही अन्तर है जिसकी वजह से जनता इस विभाग का समर्थन करती है श्रौर तारीफ करती है। वह श्रन्तर हरगिज नहीं मिटना चाहिये।

## [श्री रामसुन्दर पांडेय]

जब इस विभाग से करोड़ों रुपये की स्रामदनी सरकार को हे स्रोर सदन के बहुत से लोग इसकी तारीफ करने में स्रवाने नहीं तो जो माननीय सदस्य चाहते ह कि उनके यहां बस चलायी जाय, तो उसमें सरकार को ि्चिक्तिचाहट नहीं होनी चाहिये। फिर जो प्राइवेट बसे हे वह भी ज्यादा मुनाफा लेकर स्रपनी जेंब भरती है तो सरकर को कोताही नहीं करनी चाहिये स्रोर जनता की मांग की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये स्रौर स्रावस्यकता की पूर्ति करनी चाहिये।

में समझता हूं कि पींसट देने में भी गड़बड़ी होती है इसकी जानकारी बहुत से माननीय सदस्यों को है। मुझे भी इसकी थांड़ी सी जानकारी है। हमारे यहां ऋजमगढ़-घोसी से बलिया, जाने के लिये पींसट के लिए प्रार्थना पत्र दिए गए है। दो साल, तीन साल हुये गजट किया गया। श्रब बहुत से उम्मीदवारों ने दरख्वास्त दी है। उनमें एक हरिजन कार्यकर्ता भी है। दो साल, तीन साल हो गए, कई बार कमेटी बैठी लेकिन उनकी दरख्वास्त पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। उस मार्ग पर दरख्वास्त देने वाले बहुत बड़े बड़े श्रादमी है जिनके पास १०, १० बसे हे जो पहल से चलती है। उन हरिजन महाशय की दरख्वास्त पड़ी हुई है श्रीर उसकी कोई पूछताछ नहीं हुई। श्रगर यह सही है तो में समझता हूं कि ऐसी शिकायतों को दूर करना चाहिये श्रोर ऐसी भावना पैदा करनी चाहिए कि गरीब श्रादमी के दिल में यह भावना न पैदा हो कि परिवहन विभाग में भी वही दशा हे जो पुलिस या श्रीर विभागों में है। में श्रदब से करना कि राष्ट्रीयकरण की नीति सर्वमान्य होनी चाि ये श्रीर सभी मार्गो पर राजकीय बसे चलनी चाहिये तािक उसका लाभ व्यक्तिगत लोग। को न होकर जनता के खजाने में श्राये।

श्री मुरलीधर (जिला ग्राजमगढ़)—ग्रिधिष्ठाता महोदय, में श्रापका बड़ा ग्राभारी हूं कि मंत्री जी द्वारा प्रस्तुत श्रनुदान पर मत प्रकट करने के लिये ग्रापने मुझे मोका दिया। जैसा कि मंत्री जी ने बताया श्राज इस विभाग में करीब २,८०० गाड़ियां चल रही हैं श्रोर उनकी श्रच्छी व्यवस्था के कारण हो करीब २ करोड़ रुपये की श्रामदनी इस विभाग में होती है। यह बड़ी प्रसम्रता की बात हैं कि २४ नये रास्ते लिये गये हें लेकिन यह दुख का विषय हे कि फेजाबाद, लखनऊ की इतनी श्रच्छी सड़क होते हुये भी नहीं ली गई। शायद इसका एक ही कारण है, जैसा कि हाउस में कई बार का जा चुका है। कि किसी विशेष श्रिधकारी का इसमें हाथ है। श्रतः में निवेदन करूंगा कि लखनऊ से फेजाबाद होते हुये श्राजमगढ़ तक एक बस चलायी जाय।

इसके भ्रलावा मेरा यह कहना है कि श्रामतौर से बस कंडवटर को एक यह बड़ी परेशानी होती है कि श्रगर कोई ढाई टिकट लेकर चलता है, श्रपना, श्रपनी रत्री का श्रोर एक बच्चे का तो रेल की तरह श्राघे टिकट को बैठने के लिये पूरा नहीं समझा जाता बल्कि उसकी श्राघी ही सीट देने की कोशिश की जाती है श्रोर श्राघी सीट किसी दूसरे को दी जाती है। इसके कारण लड़ाई- झगड़े की नौबत थ्रा जाती है जिससे कंडक्टर भी परेशान होता है श्रोर इस विभाग के श्रच्छे इतजाम की बदनामी भी होती है। इसलिये मेरा सुझाव है कि कम से कम बैठने के लिये श्राधा टिकट पूरा ट्रीट किया जाय।

दूसरी बात मैं यह नियेदन करूंगा कि वैसे तो व्यवस्था है हो कि बस पर प्लट भी लगी होती हैं जिससे मालूम हो जाता है कि कौन गाड़ी कहां जा रही है, लेकिन श्रामतौर से होता यह है कि ग्रामीण भाई भागते हुये श्राते हैं श्रीर किसी गलत गाड़ी में बैठ जाते हैं श्रीर बेठने के बाद उनको यह नहीं पता चल पाता कि वह गाड़ी कहां जायगी क्योंकि प्लेट तो बाहर लगी रहती है। इसलिये मेरा सुझाव यह है कि बस के श्रान्दर भी ड्राइवर की सीट के पीछे लिखा होना चाहिये कि वह गाड़ी कर्ग जायगी, उतका क्या नग्बर है। इसके श्राना श्रापर गड़ी छटने के घंटे श्राय घंटे के श्रान्दर कोई श्रादमी श्राना टिकट वापस करता है तो जैसा रेल में है, एक, दो श्राना काट कर उसका टिकट वापस कर लेना चाि ये। श्रापर यह सुविधा हो जायती श्रापके विभाग में चार चांद लग जायंगे श्रीर यात्रियों को भी बड़ी सुविधा होगी।

इसके श्रलात्रा मुझे श्रवने क्षेत्र श्राजमगढ़ के बारे में कुछ निवेदन करना है। श्राजमगढ़ अस स्टेशन एक श्रामदनी का बस स्टेशन है लेकिन वहां यह पता नहीं चल पाता कि १९६०-६१ के म्राय-व्ययक में म्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-म्प्रनुदान ३६३ संख्या ७-- नेला द्यार्थक १२--मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, म्रनुदान संख्या ३१-- लेला द्यार्थक ४७-- प्रकीर्ण विभाग ग्रीर ४४-- उट्डयन, ग्रनुदान संख्या ५२-- लेला द्यार्थक ७०-- जन-स्वास्थ्य सम्बन्धो सुत्रार पर पूंजी की लागत तथा ५२-राजस्व लेले के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेला

किस समय कोई गाड़ी जायगी, क्योंकि वहां घड़ी नहीं है। इसिलये वहां एक घड़ी की व्यवस्था होनी चाहिये। इसके अलावा सरांयमीर ग्रौर फूचपुर टाउन्स में भें एक बुकिन बस स्टेशन खोला जाय तािक वहां यात्री शेंड में खड़े हो सके। इससे पैसेन्जर्न को काफे मुविधा मिलेगी। ग्रंत में में श्रापके द्वारा माननीय मंत्री जो का ध्यान ग्राक्षित करना चाहंगा ग्रौर वह स्वयं उस परिवार के है जिनके लिये में मांग पेश करने जा रहा हूं। श्रिधिकाता महोदय, वह है १८ प्रतिशत ग्रिख्नों के लिये रिजर्वेशन ह . . . .

श्री स्रधिष्ठाता—एक माननीय सदम्य ने उनकी निष्यक्षता पर सर्टिफिकेट दिया है । स्राप चाहते है कि वह पक्षपात करें ।

श्री मुरलीधर—ग्रभी तक विभाग द्वारा १८ प्रतिशत की पूर्ति नहीं की जा सकी हैं। में निवेदन करूंगा कि इसकी पूर्ति की जाय ग्रोर यदि हरिजन नहीं मिलते हों तो बैकवर्ड क्लास के लोगों के द्वारा इसकी पूर्ति की जाय, क्योंकि यह वर्ग भी पिछड़ा हुग्रा है ग्रौर ग्राज हमारे समाज मे चारों तरफ से इसकी मांग है। बैकवर्ड कमोशन की भी रिपोर्ट है तो इस प्रतिनिधित्व का पूरा-पूरा खयाल रखा जाय। इसके साथ हो में माननीय मंत्री जो का ग्राभारी हूं कि उन्होंने लाकर लगाकर ग्रपने विभाग के भ्रष्टाचार को खत्म कर दिया है। ग्राप्त कंडक्टर ग्रौर ड्राइवर बेईमानो करना चाहे तो भी नहो कर सकते हैं। हां, ग्राजमगढ़ में बुकिंग क्लर्क है जो ज्यादा पैसे ले लेता है ग्रौर उसके लिए ए० जी० एम० कुछ नहीं करते है। इसका भो उचित प्रबंध होना चाहिए। मुजिफरों के लिये पेशाबघर तथा पानी को व्यवस्था में जो गड़बड़ी है उसको ठीक किया जाय। इतसे इस विभाग को ग्रौर भी ग्रामदनी बढ़ जायगी। इन शब्दों के साथ में इनका समर्थन करता हं।

साथ ही इस विभाग की जो दो करोड़ रुपये की ग्रामदन हुई है उससे इस विभाग के कर्मचारियों की तनस्वाहों में इनाफा किया जाय, उनको बोनस दिया जाय श्रौर उनके लिये ग्रावास गृह बनाये जानं । श्राज जो फैक्टरी कानपुर में है उसको फैक्टरी ऐक्ट के श्रन्दर लाया जाय ग्रौर उनके लोगों को हर तरह की सुविधाये दो जा । साथ ही जो स्थानीय कारखाने हैं उनके कर्मचारियों के लिये जो में डेकल एड के कभी है उसके लिये समुचित व्यवस्था की जाय । मुझे श्राज्ञा है कि मंत्री जी ग्रच्छी बो चलाकर इस विभाग का ग्रौर ग्रच्छा इंतजाम करेंगे ग्रौर श्रच्छी दवा देकर श्रपने विभाग के लोगों को स्वस्थ ग्रौर मजबूत बनायंगे ।

श्री ऊदल (जिला वाराणसी)—माननीय ग्रितिष्ठाता महोदय, निस्संदेह मैं इस बात को कह सकता हूं कि इस विभाग ने जितनी सेवा इस प्रदेश क जनता को की है उसकी सराहना मैं शब्दों में नहीं कर सकता हूं श्रोर प्रदेश को जनता उसको कर्मा भून नहीं सकती है। हस श्राशा करते हैं कि इस विभाग से जनता की श्रा गें श्रोर भी सेवा होगी। मान्यवर, में इस बात को भी कहना चाहता हूं कि इस विभाग के कर्मचारियों ने श्रीर मंत्री जी ने जिस लगन श्रीर परिश्रम से काम किया है उसके लिये में भी उनको बयाई देता हूं।

मान्यवर, इसके साथ हो साथ में दो तीन बातों की तरफ ध्यान दिलाना चाहता हूं। सबसे पहली बात, जैसा कि माननीय रामायण राय जी ने कहा, यह कहना चाहता हूं कि इस विभाग का स्वतंत्र बजट होना च।हिये क्योंकि इस विभाग से करोड़ों रुपये की क्रामदनी होती है लेकिन यह विभाग स्वतंत्र नहीं है। मुझे ऐसा मालूम हुन्ना कि इस विभाग ने करोड़ों रुपये सार्वजनिक निर्माण विभाग को सड़के बनाने के लिये दिया। मैं समझता हूं कि यह डीक नहीं है। इस विभाग

[श्री ऊदल]

का भ्रानग श्रस्तित्व होना चाहिये। उसको यह पूरा-पूरा प्रियकार होना चाहिये कि यह भ्रपनी श्रामदनी खर्च कर सके।

मैने एक बात ब्राइयरों के संबंध में कई बार माननीय मंत्री जी से कही जोर एक प्रक्त भी किया जितके जवाब में माननीय मंत्री जी ने बताया कि नये द्राइयरों को माइलेज ज्यादा मिलता है। उनको माइलेज जो मिजता है बारह-चोदह प्राने १०० मील पर मिलता है। यह जो नये प्रोर पुराने ब्राइयरों के जित्रे दो ग्रेड जन हुते हें यह एउ जियमता है। ग्रार ग्राम चाहते हैं कि जियमता खत्म हो तो पुराने ब्राइयरों के स्त्री को रिवा प्रोर माइलेज खत्म की जित्रे। इससे वह ज्यादा दक्षता से काम करेगे।

दूसरे, बुशिंग क्लर्क को श्रामिक सुनिया त्रिलनी चाहिये। ढाई पथे के स्थान पर जो सालाना पांच पथे बढ़ाया गया है उसका में स्वागत करता हूं।

मै एक मांग यह करना चाहता हूं कि ए० टी० श्राई० जो हं, जिनके कारण कंडक्टर किसी श्रादनी को फर्नी बेटा कर नहां ले जा सकता है, जो उनको पकड़ने हैं, उनकी तनख्वाह बहुत कम है। इसजिये ए० टी० श्राई० की तनख्वाह बढ़ाने की श्रावक्यकता है। विभाग श्रोर मंत्री महोदय इनके ऊपर सोचे।

इसके श्रीरिक्त ट्रकों की संण्या िरभाग में कम होती जा रही है योर शाइनेट पार्टियों के ठेनों की संख्या बहुत बढ़ रही ह जिनसे इस िरभाग को जो इन कम हो सकती थो वह नहीं हो रही है। से च हता हूं कि यह िरभाग माल के यातायात की प्रणाना की तरफ ज्यादा ध्यान दे श्रोर उसारे बढ़ोत हो करें। शाइवेट ठेनों की वजह से दवंटनाये भी वहुत होती है। दुवंटना श्रों के गंग में गंग कर पत्र भी माननीय मंत्री जी की दिया था, पाव-छः महीना पहले मैंने सबान भी किया था। भारत सरकार ने भीटर बेहिकिल्स ऐन्ट में २ फरवरी, १९५६ की एक संगोधन किया श्रीर उन्होंने सभी राज्यों की लिखा कि श्राने श्रवने यहां कक्स बना लीजिये, श्रीर मीटर बालों की हिद्यायत कीजिये कि वह श्रवनी मीटर गाहियों का बीमा करवा लें, ताकि श्रवर दुरंडना होती है तो उससे मुशावजा दिलाया जा सके। एक क्लेम्स द्रिब्यूनज के जिये भी उन्होंने जिला था, जो दुर्घटना के फनस्वरूप कांम्स की जांच करे। लेकिन इस पर श्राज तक ध्यान नहीं दिया गया। में इस की बहुत जोरदार शब्दों में मांग करता हूं क्योंकि जो गुरो जवाब दिया गया था वह संतोषजनक नहीं हैं। इसिल में कल्स बना कर क्लेम्स ट्रिब्यूनज की स्थापना की जारे।

एक बात ग्रोर कहना चाहता हूं। बहुत से माननीय सदस्यों ने यह राय जाहिर की कि बहुत से स्थानों पर मुसाकिरों के रहने के लिये तथा टट्टी ग्रीर पेशाब के लिये ....

श्री श्रिधिष्ठाता--जो बात श्रीर माननीय सदस्यों ने कही है उसको नहीं दोहराना चाहिये।

श्री ऊदल — यही तो ग्रमली बात है। इसी तरफ ज्यावा ध्यान देने की ग्रावश्यकता है जिससे लोगों को ज्यादा से ज्यादा राहत भिल सके। इसिन्ये में ज्याहता हूं कि माननीय मंत्री जी इसकी तरफ ध्यान दे।

एक बात की तरफ और माननीय मंत्री जी का ध्यान में श्राक्षित करना चाहता हूं क्यों कि श्रांज बहुत सी ऐती सड़ कें है जी कि डामर की नहीं बनी हुई है। उन पर बसे बहुत जल्दी खराब हो जाती हैं जैसे जीतपुर से श्रोराई तक जो सड़क हैं वह श्रांज भी डामर की नहीं है। में उस पर चल कर देख चुका हूं। नतीजा उसका यह होगा कि बसे जो ऐसी सड़कों पर चनती हैं, वह बहुत जल्दी खराब हो जायंगी। तो इसके लिये भी डिपार्टमेंट की देणना चाहिये श्रोर सड़ कें जहां ज्यादा खराब हैं उसके लिये सार्वजिनक निर्माण विभाग की लिखना चाहिये कि वह उसे ठीक करें।

१६६०-६१ के आय—व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—श्रनुदान ३६५ संख्या ७--लेखा द्दार्थक १२--मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, भ्रनुदान संख्या ३१--लेखा द्दार्थक ४७---प्रकीर्ण विभाग भ्रौर ४४---उड्डयन, भ्रनुदान संख्या ५२--लेखा द्दार्थक ७०--जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुधार पर पूंजी की लागत तथा ६२--राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

एक बात ग्रीर कहना चाहता हूं कि हमारे जिले में जैसे कि रोडवेज की जो सर्विस है बनारस से मुगलसराय तक उसमें इतनी भीड़ होती है कि जिसका कुछ ठिकाना नहीं। वह उसी तरह से भीड़ होती है जैसे कि कानपुर से लखनऊ तक होती है। उसका कारण क्या है? उसका कारण यही है कि लखनऊ से कानपुर तक किराया रेलवे से १ रुपया १० ग्राना है ग्रीर रोडवेज से १ रुपया ५ ग्राना है। तो मैं चाहता हूं कि ग्रागर इस विभाग को ज्यादा से ज्यादा उपयोगी बनाना चाहते हैं तो जैसा कि ग्रीर माननीय सदस्यों ने भी कहा, ६ पाई फी मील के हिसाब से किराये को रखने के लिये माननीय मंत्री जी सोचें। ग्राज देखते हैं कि लोग बनारस से मुगलसराय ग्रीर मुगलसराय से बनारस रेल से नहीं जाते, सभी लोग रोडवेज से ही जाना पसन्द करते हैं वह इसीलिये कि उसका किराया कम पड़ता है। इसलिये जनता को जहर किराय में कुछ छ ट मिलनी चाहिये। मैं चाहता हूं कि माननीय मंत्री जी स्वयं ग्रीर विभाग इस पर विचार करे ग्रीर किराया उसी हिसाब से छः पाई फी मील से रखे ताकि जनता को ग्रीविक से श्रिथक फायदा हो। इन्हीं शब्दों के साथ में ग्राखिर में फिर विभाग को ग्रीर माननीय मंत्री जी को बथाई देता हूं कि उन्होंने इस विभाग से करण्शन को खत्म कर दिया।

श्री गंगाप्रसाद (जिला गोंडा)—माननीय श्रधिष्ठाता महोदय, श्राज के श्रनुदान पर जो श्रापने मुझे श्राज्ञा दी है बोलने की उसके लिये में श्रापको हृदय से बघाई देता हूं। जो माननीय परिवहन मंत्री ने श्रनुदान पर जो एक रुपये की बात कही वह एक हंसी की बात रही। जब उन्हें इस विभाग से काफी लगाव है श्रौर उन्होंने देखा कि इस विभाग में न श्रव्याचार है, न बेईमानी है श्रौर न कोई इस किस्म की बात है, तब उन्होंने एक दूसरा पैतरा बदला श्रोर वह पैतरा बदला इसलिये कि कर्मचारियों को खुश करें श्रौर उस कर्मचारी को खुश करें जिसके कि वह श्राज कर्त्ता धर्ता हैं। माननीय श्रिधष्ठाता महोदय, यह विभाग जब से चालू हुश्रा तब से दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करता जा रहा है। एक बात मुझे श्रौर कहनी है श्रौर वह यह कि जहां उपतेन जी इस विभाग के कर्मचारियों की बात करते हैं वहां श्रपने हरवाहे की बात भी कभी कहीं उन्होंने की, श्रौर समाजवाद की बात करते हैं। श्राप वह समाजवाद लाना चाहते हैं जो समाजवाद जर्मनी में हिटलर लाया था.....

श्री उग्रसेन —श्रीमन्, व्यवस्था का प्रक्त मेरा सुन लिया जाय। श्राप इस बात पर व्यवस्था दें कि माननीय सदस्य जो विषय पर बोलते बोलते दूसरे हमारे किसी वक्तव्य की बात कर रहे हैं कि यह नहीं कहा, इस तरह जो हमला वह कर रहे हैं यह क्या उचित है ?

श्री स्रिधिष्ठाता—हमला क्या कर रहे हैं वह तो कह रहे हैं कि माननीय सदस्य समाजवादी हैं, क्वाया इस पर भी ध्यान दें।

श्री उग्रसेन--क्या यह उचित है?

श्री ग्रधिष्ठाता--जी हां। उचित है।

श्री गंगाप्रसाद—माननीय ग्रधिष्ठाता महोदय, भाई उग्रसेन जी चौंकते क्यों हैं। समाजवाद की व्याख्या श्रापने शुरू की श्रौर ड्राइवरों श्रौर कंडक्टरों को लेकर नये समाजवाद की व्याख्या की लेकिन में हिन्दुस्तानी श्रौर गांधी जी के दर्शन के श्रनुसार समाजवाद की व्याख्या कर रहा हूं न कि जर्मनी के हिटलर के समाजवाद की व्याख्या।

श्री ग्रिधिष्ठाता--माननीय गंगाप्रसाद जी, नाराज न हों।

श्री गंगाप्रसाद—नाराज में नहीं हूं। मैं तो कहना चाहता हूं कि समाजवाद श्रागर लाना है और देश के श्रादर एक समानता का का लाना है तो पहले उन बेचारों को देखेंगे जो कलेक्टरी के ड्राइवर हैं, जो कलेक्टरी के चंगरासी हैं, जो नहर विभाग के ड्राइवर श्रोर चंगरासी हैं, जो प्लानिंग के ड्राइवर हैं, वह भी तो २४ घंटे काम करते ह। श्राज जब यह इस जात को उठाते हैं कि रोडवेंज विभाग ने २ करोड़ रुपया पदा किया तो उनकी भी तरफ उन्हें देखना चाहिये श्रीर इनको तो जो ६० पया श्रोर ४५ रुपया पाते ह गाईलेंज भी मिलता है, लेकिन उन बेचारों को क्या मिलता हैं?

मुझे एक बात और कहना है। अभी हम।रे भाई ग्रमरनःथ जी ने एक बात उठाई कि इाइवरों के लिये आवास होने चाहिये। यह विभाग धीरे-धीरे प्रागे बढ़ रहा है। उनके लिये आवास का प्रबन्ध होगा। प्राविडेट फंड श्रीर पेशन का भी उनके लिये प्रबन्ध होगा श्रीर इस तरह की सारी मुवित्रा उनको मिलेगी निकित ये सब समय से ी उनको मिलेगी। इस बात का उनको इतनीनान रखना चाहिये।

उग्रसेन जी मेनुग्रल की शिकायत करते है ग्रीर इसके लिये मंत्री जी की ग्रालोचना करते हैं, लेंकिन उनको मालूम होना चाहिये कि मेनुग्रल बन रहा है। वह इस बात को जानते हैं, लेकिन वह धीरे-धीरे बन रहा हें, ज्यों-ज्यों देश के ग्रन्दर विकास होगा त्यों त्यों उसी तरह की बाते होती जायंगी। मैनुग्रल बनेगा ग्रीर बिना मेनुग्रल के कोई कार्य नहीं हो रहा है, श्रब भी उसी के ग्राधार पर कार्य हो रहा है।

मे माननीय मंत्री जी से यह भी नियंदन करना चाहता हूं कि इस विभाग के क्रान्दर कुछ परिवर्तन करने की जरूरत है। इस विभाग के जो बस स्टेशन ह उन पर क्रांज सकाई नहीं है क्रीर इसके साथ-साथ क्रोरतों के लिये खासकर कोई जगह बैठने के लिये नहीं होती है। गोंडा से लकड़मन्डी वाले रास्ते पर खासतोर से यह परेशानी रहती है। जब बहां पर मेला लगता है तो इतनी धक्का मुक्की होती है कि लोगों को बहुत कब्द होता है। में माननीय मंत्री जी से प्रार्थना करूंगा कि ऐसे मेले के प्रवतर पर पुनिस का या प्रापके विभाग का गार्ड का प्रवन्ध होना चाहिये या कोई स्वयंसेवक वहां पर रहे जिससे वहां पर टिकटों का काफी सुचार रूप से प्रवन्ध हो सके। देवी पादन का मेला प्रदेश का बहुत प्रसिद्ध होता है। वहां के लिये बलरामपुर से बस चलती है। क्रार बलरामपुर से देवीपादन तक बस चलाई जाय तो सरकार को काफी ग्रामदनी हो सकती है क्रीर जनता के क्राने जाने में बहुत सुविधा हो सकती है। जिस तरह से ग्रेभी कुछ माननीय सदस्यों ने लखनऊ से क्राजनगढ़ बस सर्विस की मांग की है उसी तरह से मैं भी माननीय मंत्री जी से मांग करता है कि लखनऊ से गोरखपुर तक बस चलाई जाय। वहां पर बरसात को छोड़कर बस चल सकती है। करीब ग्राठ महीने वहां पर बस चल सकती है, क्योंकि बरसात के दिनों में घाघरा पर गुल न हेने की वजह से उस पार जाना कठिन है।

उग्रसेन जी एक तरक कहते हैं कि जनरल मैनेजर का पद समाप्त कर दिया जाय, क्योंकि इसमें ज्यादा खर्च होता है। उनका खर्च करीब एक लाख उन्होंने बताया, लेकिन दूसरी तरफ वह कहते हैं कि एक ग्रलग से कुमायूं िवीजन को स्थापना कर दी जाय। तो क्या एक ग्रलग डिवीजन के स्थापित करने से खर्चा नहीं बढ़ेगा? एक तरफ तो ग्राप उस पद को समाप्त करने की बात करते हैं ग्रौर दूसरी तरफ डिवीजन को खोलने की बात करते हैं तो यह एक विरोधाभास की बातें है। में समझता हूं यह ठीक है कि जिस तरह से काम चल रहा है उस तरह से चलने दिया जाय।

एक बात यह भी कहना है कि मेले के ग्रवसर पर टिकट ले लिये जाते हैं श्रीर बस स्टेशन पर इतनी धक्का मुक्की होती है कि लोगों को बस नहीं मिल पाती है। ऐसे ग्रवसर पर वूसरी बस का प्रबन्ध किया जाना उचित है श्रीर नहीं तो फिर रेलवे की तरह से एक या दो श्राना काटकर उनके टिकट के वापस होने का इन्तजाम होना चाहिए। श्रभी होली के ग्रवसर पर १३ तारील को गोंडा में करीब २०० श्रादमी कलेक्टरी के, प्लानिंग के श्रीर दूसरे विभागों के श्रथने श्रपने घरों को

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये भांगों पर मतदान-स्रनुदान संख्या ७--लेखा शीर्यक १२--मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, स्रनुदान संख्या ३१--लेखा शीर्थक ४७---प्रकीर्ण विभाग स्रीर ४४-- उड्डयन, स्रनुदान संख्या ५२-लेखा शीर्षक ७०--जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुधार पर पूंजी की लागत तथा ६२--राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यी कापूंजी लेखा

जाने के लिये इकट्ठा हुये। उतरौला के लिये ७।। बजे बस छूटती है लेकिन उनको बस नहीं मिली और वह बराबर खड़े रहे। ५० अादिमयों ने लिखकर दिया कि उनके लिये स्पेशल बस का इंतजाम किया जाय लेकिन जो वहां पर इंचार्ज थे वह तब तक नहीं आये थे। एक दूसरे साहब की ड्यूटी थी वह भी नहीं आये थे। उनकी वहां पर बड़ी कहासुनी हो गई और तमाम झगड़े के बाद १०।। बजे उनको बस दी गई और तब वह घर जा सके। इसलिये छुट्टी के अवसर पर जब आप उनको डबल तनख्वाह देते हैं तो यह हिदायत उनको जरूर होनी चाहिये कि जो इंचार्ज हों वे वहां आये और देखें। इसके साथ ही साथ में आप के द्वारा माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हं कि जनरल मैनेजर की ड्यूटी यह भी हो कि वह यदाकदा हर स्टेशनों पर जाकर जांच करें और शिकायती पत्र जो आहेते हैं उनको देखें और उन पर तुरन्त कार्यवाही करें।

\*श्री शिवप्रसाद नागर (जिलाखीरी)—माननीय ग्रिविष्ठाता महोदय, मैं ग्रापका बहुत ग्रनुगृहीत हूं कि ग्रापने मुझे वक्त दिया।

श्री ग्रिधिष्ठाता--ग्राप को तो हमेशा वक्त मिलता है।

श्री शिवप्रसाद नागर—शुक्रिया। सब से पहली बात तो मैं यह कहना चाहता हूं कि इस रोडवेज की जितनी प्रशंसा इधर से श्रीर उधर से की गयी है उसमें थोड़ा हिस्सा में भी बंटाना चाहता हूं। जो बातें श्रीर लोगों ने कह दी हैं, श्राप की श्राज्ञा है कि वे न कही जायें, इसलिये मैं दूसरी बातें ही कहूंगा।

सब से बड़ी प्रशंसा में यह करंगा कि इस सरकार के किसी भी मंत्री के किसी भी विभाग में अगर कुनबा-परवरी नहीं बरती गयी है तो सिर्फ यह विभाग है। दूसरी बात यह कि, रोडवेज में जो सारे प्रदेश की यह धारणा बन गयी है कि अब्दावार नहीं है तो उसका कारण यह है कि जो एक कम्प्लेंट बुक रख दी गयी है उसका उपयोग होता है। उस पर इंक्वायरी होती है और ऐक्शन लिया जाता है और केवल यही कारण है कि यहां अब्दावार की गुंजायश नहीं है। अगर इसका अनुसरण दूसरे मुहकमें करें, दूसरे मंत्री लोग करें तो शायद यह अब्दावार दूसरे मुहकमों में भी खत्म हो जायगा।

इसके अतिरिक्त मैं कुछ लोगों को प्रशंसा किये बगैर नहीं रह सकता हालांकि बात व्यक्तिगत है । मैंने सुना है, मेरी मुलाकात नहीं हुई, लखनऊ के जनरल मैनेजर अपनी तनख्वाह में से कुछ भाग सरकार को प्रदान करते हैं, पूरी तनख्वाह नहीं लेते या लेते हैं तो शायद एलाउन्स दे देते हैं। अगर वह ऐसा करते हैं तो प्रशंसा के पात्र हैं और एक दिन की बात है, मैं लखनऊ आ रहा था लखीमपुर से, तो रास्ते में मैंने उनकी मोटर खड़ी देखी। मैंने देखा कि उन्होंने मोटरें रोकीं और उनको चेक किया। अगर ऊपर के अफसर ऐसा काम करते हैं तो वह मेरा यकीन है कि अष्टाचार नहीं रह सकता।

लेकिन एक बात है। जब मोर नाचता है और ग्रापने परों को देखता है रंग-बिरंगे, तो फूला नहीं समाता, लेकिन जब ग्रपने पैरों को देखता है तो बड़ा पछताता है ग्रीर सब रंग भंग हो जाता है। एक तरफ तो हम देखते हैं कि रोडवेज ऐसा विभाग है कि उत्तर प्रदेश कौन कहे, सारे देश में एक फख्र का बायस है, लेकिन दूसरी तरफ ग्रार० टी० ग्रो० का दफ्तर है जिसके भ्रष्टाचार को देख कर शमें से गरदन झक जाती है। ग्रार० टी० ग्रो० के दफ्तर में जो क्लर्क मौदूद हैं वे जब से वह ग्राफिस कायम है तब से वहीं हैं। ऐसे गड़े हुए

### [श्री शिवप्रसाद नागर]

हैं कि जैते उस स्राफिस का उनके नाम बयनामा हो गया हो, या उनका बिजनेस हो, उनकी दूकान हो स्रोर वे उरे छोड़ नहीं सकते, चिमगाद हों की तरह से घोंसला बना लिये हैं स्रोर इसी वजह से उसमें भ्रष्टाचार पनपता जाता है स्रोर वहां की सकाई नहीं होती। जिस घर में झाड़ न लगे, सफाई न हो वहां गंडगी होगी, बीमारियां होंगी, रोग होगा, भ्रष्टाचार बढ़ेगा, सिंब कुछ होगा। मैंने एक प्रश्न पूछा था कि वहां ऐसे कितने गजेटेड स्रफसर हैं कि जो तीन साल से श्रधिक से वहां हैं, तो जवाब मिला, एक। सैकड़ों के बाद मेरे प्रश्न की बारी थी, सप्लीमेंटरी पूछ नहीं सका कि यह कीन हैं। लेकिन मालूम हुस्रा कि कोई एक हैं। स्रगर प्रश्न न पूछा जाय श्रीर माननीय मंत्री जी को याद न दिलायी जाय तो हो सकता है कि उनको वहां ६ वर्ष तक भी रहने का मोका मिल जाय। तो जब इस तरह से वे लोग एक जगह श्रड्डा जमायेंगे तो वहां भ्रष्टाचार होगा श्रीर उसे कोई रोक नहीं सकता। एक बात की तरफ श्रीर में माननीय मंत्री जी का ध्यान श्राक्वित करना चाहूंगा मुझे दो मिनट का समय ज्यादा दे दिया जाय जिससे कि में श्रपनी बात पूरी तरह से कह सकूं।

एक बात में यह कहना चाहता हूं कि जितने भी प्रार्थी जब ट्रांसपोर्ट में जाते हैं श्रीर जब लौट कर श्राते हैं तो यही मुझ से कहते हैं "नागर जी, दफ्तर के कर्मचारी हमारे साथ कुत्तों की तरह पेश श्राते हैं।" जिस प्रकार कुत्तों के साथ व्यवहार होता है उसी तरह यह कर्मचारी उन लोगों के साथ व्यवहार करते हैं। उनके पास दो-दो चार-चार ट्रकॅ होती है, हजारों, लाखों रुपये की उनकी हैसियत होती है, लेकिन जब वे ट्रांसपोर्ट विभाग में जाते है तो उनके साथ कुत्तों की तरह व्यवहार किया जाता है। उनका यह व्यवहार बरदाश्त नहीं किया जा सकता।

इसके श्रलावा में एक श्रौर चीज श्रापके सामने रखना चाहता हूं। श्रापके श्रार० टी० श्रो० का जो रेजीडेंस है उसकी चहार दीवारी खींची गयी है। हमने मकान मालिक से पूछा उसने जवाब दिया कि हमने नहीं खिंचवाई है, बजट में उसका कोई प्राविजन नहीं है, पता नहीं फिर कैसे वह चहारदीवारी बन गयी? बाद को पता लगा कि किसी कांट्रेक्टर ने या किसी परिमट होल्डर ने उसको बनवाया है। में पूछता चाहता हूं कि उसका मकान मालिक कौन है श्रौर उसको बनवाने वाला कौन है? यह अब्दाचार का यदि द्योतक नहीं है तो श्रौर क्या है?

दूसरी बात और मैं कहना चाहता हूं और वह यह है कि उनके यहां एक टेलीफोन आफिस में लगा है और एक टेलीफोन घर पर लगा है। उनके क्वाटर और आफिस का उतना ही फासला है जितना कि यहां पर आप का और हम।रा है। तो इतने फ.सले पर जब उनका आफिस है तो दूसरे टेलीफोन की क्या जरूरत है ?

(इस समय २ बजकर ५१ मिनट पर श्री उपाध्यक्ष पुनः पीठासीन हुये।)

क्या दो-वो टेलीफोनों में पैसा बरबाव नहीं होता है। श्रगर वह प्राइवेट टेलीफोन भी है तो क्यों है? यह नियम के विरुद्ध है। इसके श्रलावा श्राप वेखें कि जितनी तनख्याह माननीय मंत्री जी पाते हैं उतनी तनख्याह उनको नहीं मिलती है। फिर भी क्या कारण है कि एक कार उन्होंने सन् १६५२ में खरीवी श्रौर फिर एक कार श्रभी कुछ विन हुए खरीवी है। इस तरह से जब बो-वो कार वे खरीवते हैं तो यह पैसा कहां से श्राता है? माननीय मंत्री जी श्रयनी जेब से एक कार नहीं खरीव सकते, वे वो-वो कार रखते हैं। यह सब भ्रष्टाचार का द्योतक नहीं है तो श्रौर क्या है?

इसके श्रलावा श्राप देखें, श्रीमन्, कि उनके यहां जो फुलवारी लगी रहती है, उसके लिये उनको कोई माली नहीं दिया जाता है। जो चपरासी उनके यहां के होते हैं वही मालो का काम भी करते हैं। दिन भर तो उनको दफ्तर में चपरासी का काम करना पड़ता है और बाद को उनको माली का काम करना पड़ता है। इसलिये सरकार को उनको एक माली दे

33€

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--- प्रनुदान संख्या ७--लेखा शीर्षक १२--मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, **अनुदान संख्या ३१--लेखा शीर्षक ४७--प्रकीर्ण विभाग और ४४--ग्रनुदान संख्या ५२—–लेखा शोर्षक ७०–-जन-स्वास्थ्य** सम्बन्धी सुधार पर पूंजी की लागत तथा द२-राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

देना चाहिये ताकि उन गरीब चपरासियों को कुछ भ्राराम मिल सके। सुबह से शाम तक उनको फिर ग्रगर उनसे घर पर भी यह सब काम लिया जाता है तो यह दफ्तर में ही लग जाता है। उनके साथ अन्याय है।

इस तरह से मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि वहां पर भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार है, वहां ईमानदार श्रादमी नहीं है। वहां पर ईमानदार श्रादमी भी हैं। हम उनकी प्रशंसा भी करना चाहते हैं। एक साहब है, मैं उनका नाम नहीं जानता क्या है, उनकी बड़ी तारीफ लोग करते हैं। जब लोग श्रपनी गाड़ी के फिटनेस के लिये जाते हैं श्रौर श्रगर उनकी गाड़ी किसी तरह श्रनिफट हो जातो है तो उसके लिये उसको दुख भी होता है। वह केवल एक फटो कमोज पहने कर ही दफ्तर भ्राता है। जो कुछ खाली समय उसको मिलता है उसमे वह दवा बांटता है ब्रीर जनता की सेवा करता है। काफी पैसा उसका इसमें लग जाता है। तो ऐसे लोग भी है जिनकी प्रशंसा करना चाहिये। लेकिन जहां भ्रष्टाचार है वहां श्रापको देखना चाहिये, उस स्रोर ध्यान देना चाहिये। प्राज परिमट जो दिये जाते हैं वह जिले के जितने प्रार्थी होते हैं उनको नहीं दिये जाते है क्योंकि उनसे पैसा कम मिलता है, बल्कि दूसरे जिले के लोगों को परिमट ज्यादातर दिये जाते हैं। उनसे ज्यादा फायदा होता है। जिनसे ज्यादा फायदा होता है उनको परमिट दिये जाते हैं जिले वालों को नहीं दिये जाते।

एक बात इसी सम्बन्ध में मैं श्रौर कहना चाहता हं। श्रभी एरारोट से लखीमपुर रोड के लिये एक व्यक्ति को दो परिमट दिये गये। बाद को उनमें से एक परिमट कैन्सिल कर दिया गया। उसका क्या कारण था ? जब बाद को कैन्सिल किया गया तो उसको ईश्यू करने से पहले ही क्यों नहीं सोचा गया ? क्यों ईश्यू करने के बाद कैन्सिल किया गया । फिर वह परिमट जो कैन्सिल किया गया वही इलाहाबाद के एक विद्यार्थी को दिया गया । माननीय मंत्री जो इसकी जांच करायें ।

जहांतक चालान होते हैं, भ्राज ए० भ्रार० टी० भ्रो० चालान करते हैं लखीमपुर, सीतापुर श्रौर बाराबंकी की सरहद में श्रौर मुकदमा होता है लखनऊ में। संविधान कहता है कि न्याय सस्ता होना चाहिये। सस्ता न्याय देने के लिये ग्रापने न्याय का विकेन्द्रीकरण किया, पंचायतों तक न्याय पहुंचाया। वहां न्याय होता है लेकिन लखीमपुर का चालान श्रौर लखनऊ में मुकदमा होता है। क्या लखीमपुर में अदालते नहीं हैं? जिस जिले की सरहद में जो काइम हो उसकी पेशी, उसकी सारी पैरवी वहीं होनी चाहिये ।

एक बात ग्रौर बताऊं, पहले का सिस्टम श्रब बदल गया है। ए० श्रार० टी० ग्रो० श्रब जांच करते हैं, ट्रैफिक चेक करते हैं। जितना वह काम करते हैं, जितने उन्होंने चालान किये हैं उसके लिये उनकी तारीफ की जायगी कि उन्होंने खूब डटकर मुकाबला किया है अष्टाचारियों का, मगर उसका परिणाम यह हुन्ना है कि जब जब लोगों के चालान हुए श्रौर जो लोग माहवारी पेमेंट करते हैं इस दफ्तर में, उन्होंने जब भ्राकर शिकायत की तो बड़े श्रफसर के द्वारा वह ए० भ्रार० टी० भ्रो० कुत्ते की तरह डांटे जाते हैं। क्या यही तरीका है कि भ्रगर कोई पूरी ड्यूटी श्रंजाम दे तो उस पर हंटर लेकर पिल पड़ना, बजाय इसके कि उसको शाबासी दें श्रौर पीठ ठोकें ? पीठ ठोने से उसका उत्साह बढ़ता है, मगर यहां जो भ्रच्छा काम करता है उसे निरुत्साहित किया जाता है। इसलिये में दरख्वास्त करूंगा कि सरकार इस पर विचार करे।

एक बात और कह दूं, लाल बत्ती जल गयी है। सिटी बस चारबाग स्टेशन के ऊपर जब भौरतें भौर बच्चे उतरे, भ्रेंच्छे-भ्रच्छे सुन्दर कपड़े पहने हैं, बसस्टेशन पर खड़े हुए तो न खिपने को स्थान, न बैठने को जगह । बारिश होती है तो कंडक्टर के कागज ग्रौर रजिस्टर भीग जाते हैं। मुसाफिर ग्रौर कर्मचारी बच नहीं सकते हैं ग्रौर जब मई जून में वहां खड़े होते हैं तो तगड़ी [श्री शिवप्रसाद नागर]

धूप होती है और जिस प्रकार से चना भुनता है उभी तरह से फर्मचारी श्रोर मुमाफिर भुनते हैं। मैं दरख्वास्त करूंगा कि इसके लिये जल्दी ही व्यवस्था होनी चाहिये, क्योंकि महीना बहुत सख्त श्राने वाला है। श्रापके घरों श्रोर बंगलों में पंगे श्रीर खस की टिट्यां लगी होंगी, मगर कर्मचारियों श्रीर मुसाफिरों को रोडवेज के सिटी वस स्टेशन पर जाना पड़ेगा श्रोर उन्हें विवित्त का सामना करना पड़ेगा। मैं चाहता हूं कि वह इस श्रोर जर्दी ध्यान दे।

परिवहन मंत्री के सभा सिवव (श्री धर्मदत्त वैद्य) — - ग्रादरणीय उपाध्यक्ष महोरय, जो श्रनुदान इस सदन में परिवहन विभाग में सम्यन्धित प्रस्तुत किया गया है उत्तमें जो विवाद चल रहा है, मैंने उसे बड़ी गम्भीरता के साथ सुना। कटोती का प्रस्ताव माननीय उप्रमेन जो ने पेश किया। में उनकी सराहना करता हूं कि उन्होंने जिस प्रकार से कटोतो का प्रस्ताव रखा है श्रीर जिस भावना से जनतंत्र प्रणाली में शासन को चनाने के लिये उपकी श्रालोचना श्रावश्यक होती है उसको सुझाव के रूप में उन्होंने जिस प्रकार से रखा है वह बहुत ही उचित है। जो बात उन्होंने कहीं उनसे यह स्पष्ट है कि उन्होंने या श्रन्य माननीय सदस्यों ने जो इथर या उधर बैठे हैं, सभी लोगों ने जो सुझाव रखे, में उन सब को सराहना करता हूं श्रीर विशेष रूप से माननीय उग्रसेन जी ने जो सुझाव दिये हैं, में समझना हूं कि उनका फायदा सरकार उठापेगी श्रीर जो कठिनाइयां यात्रियों के लिये हैं या कर्मचारियों के लिये हैं वह उन हे सुझावों में दूर हागी।

मुझे प्रसन्नता है कि इस विभाग के कार्य ग्रौर अष्टाचार को द्र करने के लिये जो परम्पराएं कायम की गयी है या कार्य के ट्यवस्थित रूप से चलाने के लिये जो तरीका ग्रयनाया गया है उससे सभी माननीय सदस्यों को संतोष है। माननीय उग्रसेन जी ने भी यह नहीं कहा कि बसे टाइम पर नहीं चलतीं। उन्होंने यह भी नहीं कहा कि वहां अष्टाचार है, उन्होंने यह नहीं कहा कि यात्रियों को गाड़ियों में बैठने में कठिनाई होती है। लेकिन जो बाते उन्होंने कहीं, में समझता हूं कि कोई भी शासन ग्रौर विशेष तौर पर यह जो पूर्ण उत्तरदायित्व रखता हो ग्रोर जनतन्त्र प्रणाली में विदवास रखता हो, उसके लियें ग्रावश्यक है कि वह ऐसे सुझावों पर ग्रमल करें।

श्रीमन्, शासन चाहता है कि हर बस स्टेशन सुन्दर ग्रौर व्यवस्थित ढंग से बना हो, वहां पर यात्रियों को बैठने की सुविधा हो, पानी पीने की सुविधा हो ग्रौर वहां का वातावारण इतता अच्छा हो कि ग्रगर कोई थका मांदा व्यक्ति भी वहां ग्राये तो उसे शान्ति मिले। हम चाहते हैं कि हर स्टेशन पर ड्राइवरों ग्रौर कन्डक्टरों के रहने की व्यवस्था हो, उनको उचित वेतन मिले, अच्छी वर्दी समय पर मिले। हम चाहते हैं कि ग्रनेक प्रकार की सुविधायें, जो यात्रियों ग्रौर कर्मचारियों को दी जा सकती हों, दी जांय। उन्होंने बहुत से सुझाव रखे हैं, में उनसे निवेदन करना चाहता हूं कि उनके जो बहुत से सुझाव हैं उनमें बहुतों में सम्भवतः उनको जानकारी नहीं है। यह कहना उचित नहीं है कि हमारे यहां कोई नियम नहीं है ग्रौर परिवहन विभाग के कर्मचारियों के बेतन कम किसी नियम के ग्रनुसार नहीं है। यह कहना उचित नहीं है। यह सही है कि ग्रभी रोडवेज ऐक्ट ग्रौर में ग्रम्न नहीं बने हैं, लेकित में उनको बताना चाहता हूं कि इस कार्य के लिये एक उच्च ग्रविकारी की नियुक्ति की जा चुकी है जो इस काम को यथाशोध्र पूरा करने जा रहे हैं। इस समय भी इस विभाग में जो कर्मचारियों के बेतन के स्केल हैं या ग्रन्य सुविधायें देने की जो व्यवस्था है वह, जिस प्रकार से ग्रौर विभागों में दी जाती हैं, उसी प्रकार से यहां भो दी जाती हैं ग्रौर इस बात का प्रयास किया जाता है कि हम ग्रिक से श्रीक सुविधा उनको दें।

हमारे ग्रनेक भाइयों ने यह भी कहा कि ड्राइवर्स के ठहरने के लिये कोई व्यवस्था या विश्राम-गृह नहीं हैं। मैं बताना चाहता हूं कि इस प्रकार की व्यवस्था है कि ड्राइवर ग्रयनो ड्यूटी करने के बाद ग्रयने स्थान पर ग्रा जाय ग्रमेर ड्राइवर ग्रौर कन्डक्टर दोनों शाम को ग्रयने घरों में रहें, किन्तु जहां पर ऐसा करना सम्भव नहीं है या ग्रधिक ड्यूटी के कारण कहीं ठहरना पड़ता है तो १९६०-६१ के म्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदान ४०१ संख्या ७-लेखा द्यिक १२-मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, श्रनुदान संख्या ३१--लेखा द्यार्षक ४७--प्रकीर्ण विभाग ग्रौर ४४--उड्डयन, श्रनुदान संख्या ५२-लेखा द्योर्षक ७०-जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुधार पर पूंजी की लागत तथा ८२-राजस्व लखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

हमारे स्रनेक बस स्टेशनों पर इसकी व्यवस्था है। विश्रामगृह बने हुये हैं जहां बिजली के पंखे लगे हैं, चारपाइयां हैं, फ्लश के लैट्रिन्स हैं स्रौर अन्य प्रकार की दूसरी सुविधायें है। स्रौर जहां पर स्रभी ऐसी सुविधायें नहीं हो सकी है वहां हम सुविधायें देना चाहते है। जिन कर्म-चारियों की बदौलत इस राज्य को इतनी बड़ी स्राय होती है उनको ज्यादा से ज्यादा सुविधायें प्रदान करने की नीति है। हमारा यह लक्ष्य है स्रौर हम चाहते हैं कि जितनी जल्दी हो सके इसको पूरा किया जाय लेकिन माननीय सदस्य इस बात को जानते है कि सरकार के साधन भी सीमित है। दो करोड़ रुपये की स्राय इस विभाग से होती है स्रौर दो करोड़ रुपये प्लानिंग कमीशन के द्वारा प्राप्त होता है। इस प्रकार से चार करोड़ रुपये की धनराशि से इस प्रदेश का विकास का कार्य पूरा किया जाता है। दो करोड़ रुपया जनता पर बिना किती प्रकार के टैक्स का बोझा पड़े मिलता है। हम चाहते है कि जितनी जल्दी हो सके उनको सुविधाये प्रदान की जायं स्रौर उनकी दिक्कतों को दूर किया जाय स्रौर प्रत्येक जगह पर सुन्दर बस स्टेशन बने, वहां हर प्रकार की सुविधा हो, फिर भी समय सम्य पर कुछ न कुछ कठिनाइयां स्राती रहती हैं। प्रत्येक वर्ष के बजट मे रुपया रखा जाता है स्रौर इस बात का प्रयास किया जाता है कि स्रधिक से स्रधिक बस स्टेशन बनाये जायं जहांपर यात्रियों स्रौर कर्मवारियों को भी हर प्रकार की सुविधा रहे।

बहुत से भाइयों ने राष्ट्रीयकरण के सम्बन्ध मे कहा। मै उनका बड़ा श्राभारी हुं जिन्होंने इस सुझाव को रखा क्योंकि राष्ट्रीयकरण की मनोवृत्ति समाजवादी व्यवस्था की ग्रोर लें जाती है ग्रौर सरकार का यह लक्ष्य है कि जितनी जल्दी हो सके हम अधिक से अधिक मार्गो का राष्ट्रीयकरण करें; किन्तु राष्ट्रीयकरण करने में जो कठिनाइयां ग्राती हैं वह सदस्यों से छिपी नहीं हैं। जिन मार्गो पर प्राइवेट ग्रापरेटर्स चलते हैं उन मार्गों के राष्ट्रीयकरण की बात जब आती है तो उनको दूसरे स्थानों पर हटाना पड़ता है। वह लोग हाई कोर्ट तक जाते हैं, रिट दायर करते हैं। इसमें काफी समय लग जाता है। एक एक मार्ग को जहां भ्रावश्यक समझा गया है, ग्रनेक कठिनाइयों को जानते हुये भो उसके राष्ट्रीयकरण करने का प्रश्न विचाराधीन है। श्रेभी जैसा कि माननीय मंत्री जी ने बताया, इस वित्तीय वर्ष में २४ मार्गो का राष्ट्रीयकरण किया जा रहा है स्त्रौर यह इच्छा है कि श्रिधिक मार्गो का राष्ट्रीयकरण किया जाय। जैसे जैसे सरकार के पास धन की सुविधा होती जायगी वैसे वैसे मागा का राष्ट्रीयकरण होता जायगा। केवल राष्ट्रीयकरण की बात कहने से कुछ नहीं हो सकता। एक मार्ग का ही राष्ट्रीयकरण करने से लाखों रुवये का व्यय हो जाता है। ऐसा भी कहा गया कि इस विभाग की श्रामदनी को इसी विभाग पर खर्च किया जाय, इसके कर्मचारियों पर भी व्यय किया जाय। यह किसी हद तक तो ठीक हो सकता है, लेकिन जब हम देश के निर्माण के में चत्र रहे हैं, विकास के लक्ष्य को हमें पूरा करना है तो हमें ग्राय ग्रीर व्यय के साधनों को व्यवस्थित करना होगा।

यह भी कहा गया कि रेलवे की भांति इस विभाग का बजट ग्रलग से पेश किया जाया करे। यह बात कहने में बड़ी ग्रच्छी मालूम होती है, कुछ ग्रंश तक उचित भी है कि जो ग्राय जिस विभाग की हो वह उसी के विकास में खर्च की जाय, लेकिन ग्रभी थोड़ा समय ही इस विभाग को चले हुए हुग्रा है। सन् १६४७ में इस विभाग को शुरू किया गया है ग्रौर धीरे धीरे जो उन्नति हुई है वह ग्रापने देखी है। हमारा लक्ष्य है यात्रियों को तथा विशिष्ट यात्रियों को ग्रौर विदेशियों को जो इन बसेज पर यात्रा करते हैं, उनकी सुख सुविधा का ध्यान रखा जाय। पिछले विनों इस विभाग हारा कुम्भ के मेले में व्यवस्था की गयी। विभाग के कर्मचारियों ने ग्रधिक से ग्रधिक तत्परता के साथ ग्रधिक से ग्रधिक सेवा करने का प्रयत्न किया, ग्राधिक से ग्रधिक

[श्री धर्मदत वैद्य]

गाड़ी चलाने का प्रयत्न किया गया, जिन स्थानों से संभव हो सका, ग्रधिक से ग्रधिक गाड़ी छोड़ने का प्रयास किया गया। में कहता हूं कि इस विभाग का लक्ष्य ग्रधिक से ग्रधिक जनता की सेवा करने का है। इसके ग्रातिरक्त पानी के प्रबन्ध के बारे में, पेशाव उर के प्रबंध के बारे में या ग्रीर कोई जनता की कठिनाई के बारे में माननीय सदस्यों के जो सुझाव होते हैं उनको यथा-संभव पूरा करने का हुन प्रयत्न करते हैं। ग्रधिकांश स्थान ऐसे हैं कि कठिनाइयों को दूर करने में कुछ कठिनाइयां होती है ग्राशा है माननीय सदस्य उन कठिनाइयों को दूर करने में ग्रपना सहयोग प्रदान करेंगे जससे सरकार ग्रपने लक्ष्य को पूरा करने में शीघ्र ही सफल हो सके।

माननीय सदस्यों ने आलोबना की, लेकिन किसी माननीय सदस्य ने यह नही बताया कि कहां पेशाबधर या पानी आदि की व्यवस्था नहीं है या और कोई करी है, और न उन्होंने मंत्री जी की ही इस सब्ध में लिखा। यदि उन्होंने लिखा होता तो उसकी व्यवस्था उसी समय करने का भी प्रयत्न किया गया होता। इसलिये में अन्त में आपके द्वारा यह निवेदन करना चाहूंगा कि जो सुझाव माननीय उपसेन जी तथा दूसरे माननीय सदस्यों ने दिये हैं उनका यथासभव पूरा किया जायगा, उसमें आपके सहयोग की भी आवश्यकता है। अगर आपका सहयोग मिलातो हमें आशा है कि हम अपने लक्ष्य को शीव्रता से पूरा करने में समर्थ हो सकेंगे।

\*श्री भुवनेशभूषण शर्मा (जिला इटावा)— ग्रावरणीय उपाध्यक्ष महोदय, प्रस्तुत ग्राव्दान पर जो कटौती का प्रस्ताव माननीय उपसेन जी ने पेश किया है, उसका समर्थन करने के लिये में खड़ा हुआ हूं। श्रीमन्, श्रभी माननीय डिप्टी मिनिस्टर महोदय कह रहे थे कि विरोध बहुत थोड़ा सा हुआ है श्रीर अगर उसके लिये माननीय मंत्री जी को किसी ने लिया होता तो वे सचमुच ही उसकी व्यवस्था कर वेते। साथ ही साथ उन्होंने इस बात पर भी बहुत प्रसन्नता जाहिर की कि हमारा विभाग काफी मुनाफा कमा रहा है। मान्यवर, सरकार रोडवेज चला कर पहले तो व्यापार करना शुरू कर वेती है श्रीर कहती है कि उसकी लाभ होता है लेकिन सही मानी में लाभ तभी माना जायगा जब कि बराबर के वो चार व्यापारी उसके सामने हों। सरकार राष्ट्रीयकरण करती है श्रीर मनमाने किराये की व्यवस्था करती है। अगर सरकार वाकई जानना चाहती है कि किस प्रकार से मुनाका हो रहा है तो प्राइवेट बसो को भी उसके ता असम चलने की इजाजत वे तब मालूम होगा कि किसमें श्रधिक श्राराम मिलता है है श्रीर किसमें श्रधिक फायदा होता है। श्राप वेलें कि किराये में कितना श्रंतर है। कानपुर का यहा से थर्ड कला का किराया रेल में सवा रुपया है जब कि बस में थर्ड कल हेढ़ रुपया श्रीर श्रपर का सवा वो रुग्या है।

एक बात और कही गयी कि इस विभाग में अध्टाचार बिलकुल नहीं है। सही बात यह है कि इस विभाग के भीतर लोगों को इनर वाकेग्रात में जाने का श्रवसर ही नही मिलता है। इस विभागमें अध्टाचार भी होता है श्रौर जो श्रादमी अध्टाचार को बताता है उसको बंड विया जाता है। श्रभी थोड़े दिनों की बात है, एक एकाउन्टेंट था जिन्होंने बहुत सी ऐसी बातो को पकड़ा था, उसको एपीकल्चर विभाग में भेज दिया गया।

मेरी समझ में नहीं स्राता कि सैकड़ों मोटरें इस विभाग द्वारा प्रति वर्ष खरीवी जाती हैं लेकिन क्यों नहीं डायरेक्ट कंपनी से खरीवी जाती हैं। ये खरीवी जाती हैं किसी डीलर के द्वारा स्रीर उसमें बहुत सा कमीशन उनकी मिलता है। कानपुर रीजन की बात है यहां पर मोटर प्राइवेट कंपनी द्वारा खरीवी जाती थी स्रीर कमीशन स्राता था। जब एकाउन्टेन्ट ने डायरेक्ट लिखा पड़ी की तो टाटा कम्पनी से ३ हजार रुपया मिला कमीशन का। मेरा सरकार की सुझाव हैं कि चाहे मोटर हो या कोई मोटर का स्रीर सामान हो वह डायरेक्ट कारखाने से परचेज करें। इतसे उसकी बहुत से रुपये की बचत हो जायगी।

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

१६:०-६१ के म्राय-व्ययक में म्रनुदानों के जिये मांगों पर मतदान-म्रनुदान संख्या ४०३ ७—लखा शीर्षक १२ -मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के का गा व्यय, म्रनुदान संख्या ३१--लेखा शीर्षक ४७--प्रकीणं विभाग म्रोर ४४--उड्डयन, म्रनुदान संख्या ४२--लेखा शीर्षक ७०--जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुघार पर पूंजी की लागत तथा ६२--राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी, लेखा

पहले गाड़ियां पेट्रोल से चलती थीं लेकिन स्रब डीजल से चलती हैं, लेकिन तब जितना किराया था उतना ही किराया स्रब भी लिया जाता है। उसमें कोई स्रंतर नहीं पड़ा है। एक बात स्रोर है। सरकार कहती है कि फायदा होता है। एक बात माननीय मंत्री जी मानते हैं कि जिन व्यक्तियों द्वारा फायदा स्रिवक हुन्ना है उनको कुछ थोड़ा लाभ पहुंचने दें। माननीय मंत्री जी का यह एक मत है। ठीक है, बड़ी प्रच्छी बात है, लेकिन स्नगर यही बात तो वे हृदय से करें। स्नाप देखें कि जो काम करने वाले कंडक्टर इसमें काम करते हैं या बुकिंग क्लकंस हैं उनके खेड में सरकार ने कितना स्रन्तर रखा है। वहीं कंडक्टर जो हाई स्कूल पास हैं उनका ग्रेड कुछ खोर है और जो हाई स्कूल पास नहीं हैं उनका ग्रेड कुछ खोर है । में नहीं जानता कि क्या हाई स्कूल पास कंडक्टर ज्यादा काम करते हैं। वह तो एक हो तरह का काम है जिसको दोनों करते हैं। इसिलये माननीय मंत्री जी से मेरा निवेदन हैं कि वे, कंडक्टरों में जो इस तरह का भेदभाव है उसको दूर करने की तरफ तवज्जह से क्योंकि सब कंडक्टर्स एक ही काम करते हैं।

मान्यवर, सरकार ऐसा काम करती है जिसे यदि कोई प्राइवेट फर्न करती तो न मालूम कितनी मुसीबत उस पर सरकार हा देगे। नौकर रखते हैं, ड्राइवर रखते हैं, कंडक्टर्स रखते हैं श्रीर एक साल के लिये उनसे लिखा लेते हैं कि हम जगह देते हैं। माननीय मंत्री जी इसकी ढिताई नहीं कर सकते क्योंकि उन्होंने श्रभो ऐसा कहा है। एक साल जहां समाप्त हुपा कि खाटो नेटिकली उनकी सर्विस समाप्त, श्रीर फिर उनका एव्वाइंट मेंट करके उनको एक साल के लिये रख लिया जाता है। उसका कारण यह है कि श्रगर एक साल के बाद उनको नहीं हटाया जाता तो वह परमानेंट हो जाता है श्रीर उसके प्रनुसार उनको काफी पैसा भी मिलता है। इस तरह से उन पर सरकार का ज्यादा खर्च होता। तो मुनाफा दिखलाने के लिये यह सब किया जाता है। एक तरफ तो तारीफ की जाती है कि हमारे विभाग ने तथा उस विभाग के व्यक्तियों ने बड़ी श्रच्छी तरह से काम किया जिससे उसकी श्रामदनी बढ़ी श्रीर दूसरी तरफ उनके पेट भी काटते जाते हैं।

श्रभी कानपुर रीजन के साथ-साथ उत्तर प्रदेश के सभी रीजन्स के कितने व्यक्तियों को निकाला गया श्रौर फिर उनका एटबाइंटमेंट हुप्रा तथा बीच की ३,४ दिन की तनख्वाह उनको नहीं दी गयी। जब इस सम्बन्ध में यहां प्रदन रखा गया तथा सरकार का ध्यान इस तरफ दिलाया गया कि वही प्रादमी जो पहले काम करते थे उन्हों को फिर से रखा गया है तो बाद में यहां स श्रादश द दिये गये कि १ अप्रैल से ४ तारीख तक की तनख्वाह उनको दे दी जाय। श्रौर वह दे दी गयी है। तो उनाध्यक्ष महोइय, श्रापके द्वारा सरकार से मेरी यह मांग है कि वह इस प्रकार से अपने विभाग का फाउदा दिखावें लेकिन गरीब मजदूरों का पेट न काटें श्रौर उनको कंकर्न करें। मेरी बातचीत एक श्रविकारी ते हुई तो मालूम हुग्रा कि इस तरह की चौंस भी दी जाती है कि कंडक्टरों श्रौर ड्राइ रों को हटा कर हम नये श्रादमी रख लेंगे। तो मैं सरकार का ध्यान इस तर ६ दिलाना चाहता हूं कि इस विभाग के बड़े-बड़े श्रीकारियों का भले ही कुछ फायदा हो लेकिन जिन गरीब कंडक्टरों श्रौर ड्राइवरों की छाती पर चढ़ कर सरकार श्रापनी श्रामदनी करती है उनके लिये वह ठीक प्रकार से कोई उचित व्यवस्था नहीं कर पाती है।

सरकार कहती है कि उनके रहने की ब्यवस्था हमने कर दी है ग्रौर जहां नहीं है वहां के लिये एलाउंस देते हैं, लेकिन भता नो ग्राप वहां भी देते हैं जहां कि रेस्ट हाउस हैं। श्राज हालत यह है कि इस सर्दी में भी ड्राइवर्स ग्रौर कंडक्टर्स छतों पर रहते हैं ग्रौर इस तरह से ग्रपना दिन [श्री भुवनेशभूषण शर्मा]

इसलिये सरकार को चाहिये कि वह उनके लिये हर जगह रहने की व्यवस्था व्यतीत करते हैं। करे, उनकी सर्विस परमानेट हो श्रौर जो भेदभाव कंडक्टरों के श्रन्दर हाई स्कूल पास श्रौर न पास का है उसको भी वह दूर करे। ग्राज जितनी ग्रामदनी विभाग को होती है, उसमें से थोड़ा रुपया इन लोगों को भी दे जिससे इनका स्टेंडर्ड बढ़े, श्रगर सरकार चाहती है कि उसके कर्मचारी कोड़े के नाम पर काम करने के बजाय ईमानदारी से तथा श्रपनी ग्रात्मा से काम करें। मुसाफिरों के प्राराम के लिये भी सरकार को विशेष ध्यान देना चाहिये। एक बात प्रौर है कि श्रभी बुकिंग स्टेशन्स वगैरह का प्रबन्ध ठीक नहीं है। कानपुर में कलेक्टरगंज में नहर के किनारे पर रोडवेज का श्राफिस है वहां पर सड़क के किनोरे बुकिंग के लिये हजारों श्रादमियों की भीड़ रहती है श्रौर ट्रेफिक तक होल्ड हो जाता है, नहर को पाटने की भी कोई व्यवस्था सरकार कर रही हो तो करे, लेकिन श्रगर नहीं है तो गवर्नमेंन्ट को चाहिये कि वहां से वह श्राफिस ही हटा श्राज वहां एक्सीडेंट होते हैं श्रोर लोग परेशान होते हैं, श्रगर गाड़ी छट जाती है तो लोगों को स्थान ठहरने को नहीं मिलता। इसलिये मंत्री जी कृपा कर के वहां की शोध्र कोई व्यवस्था करे ब्रौर मुसाफिरों की सुविघा का ब्रधिक ध्यान रखें। घूप से ब्रौर लू से हिफाजत के लिये कोई सुविधा वहां नहीं है। पीने के पानी श्रीर ठहरने का प्रबन्ध ठीक से होना जरूरी है, पालाने वगैरह का भी प्रबन्ध नहीं है। मंत्री जी मुसाफिरों की इन सुविधाओं की तरफ भी ध्यान हैं, भेवल पैदा करने में ही न लगे रहें।

में श्री जगदीश शरणश्रयवाल (जिला बरेली)—शादरणीय उपाध्यक्ष महोदय, श्राम के युग में जब प्रोग्नेसिव नेशनेलाइ जेशन या उत्तरीत्तर राष्ट्रीयकरण के सिद्धान्त की हम स्वीकार कर चुके हैं उसमें प्रस्तुत अनुवान का एक विशेष महत्व है, जब हम अपनी स्टेट अन्हरहोंक्ज या राज्य द्वारा संचालित कार्यों को एक आलोचना की दृष्टि से देखते हैं जो कि हमारा अधिकार भी है, तो मेरा ऐसा विचार हैं, कि किसी राज्य की अन्हरटेकिंग्ज को जांचने के लिये ३ कसौटियां हो सकती हैं। एक तो यह कि उस अन्हरटेकिंग ने अपने पैर पर खड़े होकर अपना कैसा स्थान बनाया है और उसने राष्ट्र की सम्पत्ति को बढ़ाने के लिये क्या कन्ट्रीक्यूशन दिया है। दूसरे यह कि उस में लगे हुये जो कर्मचारी है उन का स्तर कैसा रहा, उनके लिये क्या विशेष सुविधाय दी जा सकी या नहीं वी जा सकीं, और कवाचित् तीसरा यह कि जनता को उसके द्वारा क्या लाभ या सुविधा मिली। यि हम इन तीन कसौटियों से इस रोडवेज विभाग को वेलें तो में समझता हूं कि हम फेल नहीं हुये, जैसा कि माननीय भवनेशभूषण जी कह रहे ये हम इस नतीज पर आते हैं कि हमारी यह अन्हरदेकिंग किन्हीं भी दूसरी अन्हरदेकिंग्ज से अधिक सफल हुई है।

मेरे मित्र प्राफिट की बात कह रहे थे। सन् १६४६-४६ में ४.८१ प्रतिशत प्राफिट रोडवेज का था और यहां लाभ दिसम्बर, १६४६ तक ८.६० प्रतिशत हो गया। सन् १६४६-४७ कोई दूर की बात नहीं है उस के पहले हम प्राइवेट अन्डरटें किंग्जा को अपने यहां बेल चुके हैं, कितना किराया लिया जाता था, कितनी अपुल्लिश मुसाफिरों को होती थी और वह लोग कितना दुरपयोग अपने अविकारों का करते थे। उसके बाद हमने इस व्यवस्था को भी बेला और उसकी सफलता का प्रमाण है कि आप देखते हैं कि जनता की तरफ से कितनी मांग रूट्स के लिये हैं। सम्भव हैं कि हमारे कुछ मित्रों को इससे कब्द पहुंचा हो और वह इस को अब्छा न समझते हों या अपने किन्हों हितों की भी बात हो सकती है, लेकिन जनता की बराबर मांग रही है कि स्थादा से ज्यादा रूट्स को नेशनेलाइज किया जाय और उनको रोडवेज के अन्तर्गत लिया जाय। इससे अच्छा और प्रमाण क्या हो सकता है। में जानता है कि मेरे मित्र इसमें विशेष विल्वस्पी रक्त है, लेकिन और कितने भी हमारे मित्र बोले उन्होंने एक स्वर से समबंग किया है।

बूसरी कसौटी यह हो सकती है कि हमारे जो कर्मचारी है उनकी बशा क्या हम सुवार सके सन् १९४७ के पहले जो प्राइवेट बसेंच के कर्मचारियों की दशा की उसके मुकाबले में ? में १६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--ग्रनुदान संस्था ४०५ ७--लेखा शीर्षक १२--मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, ग्रनुदान संस्था ३१--लेखा शीर्षक ४७--प्रकीण विभाग श्रौर ४४--उड्डयन, ग्रनुदान संस्था ५२--लेखा शीर्षक ७०--जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुधार पर पूंजी की लागत तथा ६२--राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

समझता हूं कि निष्पक्ष व्यक्ति इसी निष्कर्ष पर ग्रायेगा कि प्राइवेट व्यवसाय कितनी सुविधा देता या ग्रीर ग्राज भी जो दे रहा है उससे कहीं ज्यादा सुविधायें रोडवेज दे रहा है। इसका प्रत्यक्ष जमाण यह है कि रोडवेज में ग्रगर ड्राइवर की जगह खाली हो ग्रीर प्राइवेट ग्रादमी के यहां वेकेंसी हो तो रोडवेज की जगह के लिये पहले प्रार्थना-पत्र ग्राते हैं। यह इस बात का सबूत है कि सर्विस में सुविधायें तथा स्टेबिलिटी रोडवेज में ज्यादा है। प्रस्तुत ग्रनुदान में प्रस्तुत वर्ष में इस बात की ग्रोर प्रयत्न किया गया है कि जो हमारे निम्न स्तर के कर्मचारी हैं जिनका ग्रेड ४०-५० रुपये था उसकी खत्मकर के ६०-१०० रुपये का ग्रेड किया जा रहा है। में इस कदम के लिये सरकार को बबाई देता हूं। मेरी तो निश्चित घारणा है कि हमारे देश में किसी भी व्यक्ति की १०० रुपये से कम तनस्वाह नहीं होनी चाहिये। लेकिन वास्तविकता यह है कि साधनों की कमी मजबूर करती है ग्रीर उस लक्ष्य के नच्चदीक पहुंचने में हमें देर लग सकती है। तो उस लक्ष्य की तरफ एक निश्चित कदम बढ़ाया गया है इसके लिये सरकार को बधाई देता हूं ग्रीर में समझता हूं कि ग्रागे क्यों सुविधायें बढ़ती जायंगी हम कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि कर सकेंगे।

तीसरी कसौटी यह हो सकती है कि जनता को कितनी सुविधा मिली है। ग्रगर इस कर्तौटी पर हम रखें तो ग्राज निविचत तौर से बहुत ग्रागे बढ़ चुके हैं ग्रौर जो पहले व्यवस्था भी उससे ग्राज की व्यवस्था में जमीन ग्रासमान का ग्रन्तर हो चुका है। मैं यह नहीं कहता कि इसमें ग्रौर क्यावा सुविधा देने की गुंजायवा नहीं है। मैं मंत्री जी से कहूंगा कि वे दूसरी सुविधायें देने की ग्रोर क्यावा सुविधा देने की ग्रौर इस ग्रनुवान में संकेत है जैसे ठंड पानी के कूलसे लगाना, वोइस लगाना, सीटिंग ग्ररेंजमेन्ट करना ग्रावि। तो यह भी एक ग्रन्छा कदम है। इसके बाद मैं इतना कहूंगा कि उस ग्रन्छाई का ही यह परिणाम है कि इस बजट का यह पहला ग्रनुवान है कि जिसकी एक स्वर से प्रशंसा की गई।

श्रव में ऐक्सीडेंट्स के बारे में कुछ कहना चाहता हूं। पिछले सालों में जो हुर्घटनायें हुई हैं बसेज श्रीर ट्रक्स से उनको रोकने के लिये जो साधन हो सकते हैं उसका सारा उत्तरदायित्व रोडवेज विभाग को श्रपने ऊपर लेना चाहिये। शहरों में रोड सेंस श्रीर रोड साइंस के लिये श्रगर विश्लेष व्यय भी करना पड़े तो उसको किया जाय।

दूसरी बात यह कहनी है कि नगरों में कुछ टैक्सीज की सुविधा होनी चाहिये। जो 'ए' क्लास टैक्सीज नगरों में रखी जाती है उनका प्रयोग या तो मंत्रिगण या उच्चाधिकारी करते हों लेकिन जनसाघारण को उससे पूरा लाभ नहीं मिलता है । उसके लिये छोटी टैक्सी या जीप्स जब हम देखते हैं कि रोडवेज में फ़ायदा है तो यह सुविधा जो जन-की सुविधा होनी चाहिये । साघारण को पहुंचायी जा सकती है साधारण खर्चे ग्रीर कोशिश से तो इसकी ग्रीर ध्यान जरूर दिया जाना चाहिये । श्राखिरी बात यह निवेदन करूंगा कि कुछ ऐसी प्रवृत्ति हो रही है कि टेक्नि-कल श्रनएम्पलायमेंट बढ़ता जा रहा है। हम यह भूल जाते हैं कि हमारे इंस्टीट्यूशन में से जो लड़के निकलें उनको पूरा एम्पलायमेंट मिले । में माननीय मंत्री जी से प्रार्थना करूंगा कि उनके जो वर्कशाप्स हैं उनमें जो ट्रेनीज हों उनके लिये एम्पलायमेंट की तरफ ध्यान रखा जाय श्रौर ऐसा न हो कि जो वहां ट्रेनीज हों उनको भी श्रनएम्पलायमेंट का शिकार होना पड़े, क्योंकि मेरा ऐसा विश्वास है कि टेक्निकल ग्रनएम्पलायमेंट से फ्रस्ट्रेशन बहुत ज्यादा पैटा होता है नौजवानों में। बी॰ ए॰ पास, श्रनएम्पलायड हैं तो बर्दाश्त कर सकता है क्योंकि उसके लिये कई दरवाजे खुले हैं लेकिन एक विशेष लाइन में जाने के बाद, ट्रेनिंग प्राप्त करने के बाद, एक व्यक्ति स्रनएम्पलायड रहता है तो उसे बहुत निराशा होती है। में यह चाहूंगा कि ट्रान्सपोर्ट डिपार्टमेंट तो कम से कम इस प्रकार के अनुप्रम्पलायमेंट को बढ़ाने में सहायक न हो। उसे दूर करने का पूरा यत्न करना चाहिये। इन राज्यों के साथ में प्रस्तुत अनुवान का द्ववय से समर्थन करता हूं।

\*प्राचार दीपंकर (जिला मेरठ)—मान्यवर, में दो तीन सुमाव सरकार हे सामने रखना चाहता हूं घौर यह प्राशा करता हूं कि उन पर विचार किया जायगा। जहां तक विभागीय प्रालोचना का सम्बन्ध है माननीय उपसेन जी ने जी प्रालोचना की है, विशेषकर कर्मचारी विभाग की समस्या को लेते हुये सरकार का जो ध्यान प्राकृष्ट किया है, में पूर्णतया उनका समर्थन करता हूं घौर यह उचित समझता हूं कि उनकी तरफ ध्यान दिया जाना चाहिये था। इसके प्रतावा यह बात भी बिलकुन उचित है कि विभाग के कर्मचारियों के सम्बन्ध में जो सुख सुविधा तथा सहलियतें देने का तरीका सरकार की तरफ से प्रपनाया गया है वह ध्राधिकांशतः प्रशंसनीय है श्रीर जो ग्रागे भी कदम है सरकार का उन सुविधा श्रों को बढ़ाये जाने में उसका भी में स्वागत करता हूं, परन्तु में जनता के वृष्टि कीण से भी दो एक बार्ने सरकार के सामने रखना चाहता हूं।

पहली बात यह है कि प्राइवेट बसें जो पिन्वमी यू०पी० में चलती है उनकी तथा रोड-वेज की एफि कियेंसी में बड़ा फर्क है। पहले भी प्राइवेट बसों में बड़ी प्रव्यवस्था थी, कार्य-कुशलता का ग्रभाव था और एक तरह से ग्रसहनीय था। परन्तु जब से रोडवेज की बसें खालू हुई ग्रीर उनमें जनता की सुख सुविधा के ग्रलावा कर्मचारियों के लिये भी सहलियनें बढ़ाने का तरीका ग्रक्तियार किया गया तो उसका श्रधिकाधिक प्राइवेट बसों ने कम्पीशिक्त किया। में व्यक्तिगत रूप से यह ग्रनुभव करता हूं कि पिक्चिमी यू०पो० में यह स्थिति है कि यिव ग्रामने सामने प्राइवेट बस हो ग्रीर सरकारों बस चालू हो तो उस होड़ में सरकारी बस की स्थित फठिन नजर ग्रायेगी, इसकी कुछ वजुहात है।

इसकी एक वजह यह है कि रोडवेज के कर्म वारियों में एक ऐमी उवामीनता है यात्रियों के प्रति कि कभी कभी तो वह अमहनीय हो जाती है। प्राइवेट बसों के कर्म जारी इसके विपरीत यात्रियों के प्रति बहुत ज्यादा उत्सुकता रखते हैं और उनको अपनी श्रोर श्राकृष्ट करने का प्रयत्न करते हैं। बूसरे रोडवेज की गति बहुत कम है। सहार नपुर से लेकर विल्ली तक १०० मील का सफर है। प्राइवेट बसों की एफिशियेमी को वेखते हुए सरकारी रोडवेज की एफिशियेंसी बहुत गिरो हुई है और मेरठ, मुजफ्करनगर तथा राहारनपुर के बीच में गति इनकी इतनी भीनी होती है कि इन बसों को कहीं भी रोका जा सकता है, यहां तक कि जंगल में भी रोका जा सकता है। लेकिन यह १०० मील का सफर बहुत श्रामानी में प्राइवेट बसें ५ घंटे की श्रविध में पूरा कर लेती है। इसके मुकाबले में जब कि रोडवेज को बसें अपने नियमों के श्रनुसार बहुत लम्बी दूरी के बाद खाती है, जहां कहीं पैमेन्जर उनको रोक नहीं सकते लेकिन फिर भी उनकी गति बहुत कम है। तो इस कमी को दूर करने के लिये सरकार की श्रोर से प्रयत्न होना चाहिये।

जहां तक श्रन्य सुष्टावों की बात है, माननीय उग्रसेन जी ने बड़े तफसील के साथ उनको रखा। इस विभाग में भी पूरी शासन व्यवस्था इतनी टाप हैवी हो गयी है श्रीर ऊपर के मंहगे श्रीर भारी भरकम श्रफसर इस महकमें में इतनी बड़ी तावाद में रख विये गये है फि उनकी उतनी यूटिलिटी नहीं है। इसी तरह से जररल मैं नेजर, उसके नीचे श्रसिस्टेंट जनरल मैं नेजर श्रीर फिर द्रांसपोर्ट कमिश्नर की जो एक कड़ी जोड़ी गयी है उसमें में संबेह में हूं कि इसका जितना बड़ा खर्च है उससे उननी मात्रा में रिटर्स भी श्राते होंगे। इस लिये में इस मांग का समर्थन करता हूं कि टाप हैवी मशीनरी में कमी होनी चाहिये श्रीर थोड़े श्रिवकारी रखे जाने चाहिये।

तीसरी बात यह है कि में यद्यपि इस बात से सहमत नहीं हूं कि इस महक में का अपना न्यारा बजट हो जैसा कि रेलवे में होता है क्योंकि रेलवे की तो अपनी रेलवे लाइन होती है, वे रेलवे लाइन बिछाते है श्रीर अपने पास से सब पैमे की पूर्ति करते है मगर रोडवेज विभाग की वह स्थिति नहीं है। यहां सड़कें दूसरा महकमा बनाता है, उसमें जनता का पैसा लगता है।

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

१६६०-६१ के आय-न्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान — अनुदान संख्या ४०७ ७ — लेखा शीर्षक १२ — मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण ब्यय, अनुदान संख्या ३१ — लेखा शीर्षक ४७ — प्रकीर्ण विभाग और ४४ — उड्डयन, अनुदान संख्या ४२ — लेखा शीर्षक ७० — जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुधार पर पूंजी की लागत तथा ६२ — राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा

श्चगर एक महकने को इतनी बड़ी घनराशि व्यय के लिये दी जाय तो उससे एकोनामी में बैनेन्स लूज होने का डर है। लेकिन फिर भी माननीय सदस्यों ने जो यह सुझाव रखा उसका मन्शा यही था कि श्रामदनी लेने के लिये तो फाइनेन्स डिपार्ट मेंट बहुत व्ययता प्रदर्शित करता है लेकिन इस महकमें में जो त्रामदनी होती हैं उसका जनता श्रौर कर्मचारियों की सेवा श्रौर इस महकमें की उन्नति के लिये उचित मात्रा में श्रंश देने के लिये कंजूसी प्रदर्शित करता है।

इन शब्दों के साथ में सरकार का ध्यान इस स्थिति की स्रोर श्रार्काषत करता हूं कि रोडवेज के नियमों में सुधार होना चाहिये श्रोर परिवहन विभाग के ऐक्ट में तरमीम होनी चाहिये क्यों कि जो दुर्घटनाये होती है जिन में सैकड़ों श्रादपी इस प्रदेश के मारे जाते हैं उनमें बिरले ही किसी ड्राइवर को उसकी गनती के श्रतुमार सजा होती हो बरना सजा होना मुक्किल है क्योंकि नियम ही ऐसे बने हुने हैं। इसलिये उसमें परिवर्तन की श्रावश्यकता है। इसके श्रताचा यह एक पिछड़ा प्रदेश होने के कारण यन्त्रों में श्रच्छी तरह परिचित न होने की वजह से जितनी लापरवाही बरती जाती है मोटर कर्मचारियों की तरफ़ से उसमे कानून में इतनी शिथिलता रखी गयी है कि किसी भी कर्मचारी का उस दुर्घटना के कारण श्रदालत से बण्डित होना बहुत मुक्किल है। यह सुझाव में श्राप के जरिये देना चाहता हूं।

श्री उपाध्यक्ष—माननीय हरीसिंह। श्रव में ४-४ मिनट का समय दूंगा क्योंकि काफी माननीय सदस्य बोलने वाले है श्रीर समय कम है।

\*श्री हरीसिंह (जिला मेरठ)—-उपाध्यक्ष महोदय, जब मेरा नम्बर श्राया तो १ मिनट रह गया। इससे तो न बोलना ही श्रच्छा है क्योंकि १ मिनट तो बातें करने में ही खत्म हो जाते है।

श्री उपाध्यक्ष— माननीय हरीसिंह पर मुझे विश्वास है कि ५ मिनट में काफी काम की बातें वह कह सकते है।

श्री हरीसिंह—म्ब्राप मुझे १० मिनट और दे देंगे तो १५ मिनट हो जायंगे, मेरा काम हो जायगा ।

उपाध्यक्ष महोदय, मं भ्रयने परिवहन मन्त्री को इस भ्रनुदान पर हार्दिक बधाई देता हूं भ्रौर हमारे माननीय सदस्य ने जो कटौती का प्रस्ताव रखा है उसका में विरोध करता हूं। साथ ही में उनसे यह निवेदन भी करना चाहता हूं कि उधर बैठने वाले माननीय सदस्य जो बौछारें करते हैं उनको इधर बैठने वाले सदस्य चुपचाप सहते हैं। तो जब इधर के बैठने वाले सदस्य उत्तर देते हैं——बौछारें तो ये करते नहीं——तो कम से कम उस उत्तर को तो सुनने के लिये उधर के माननीय सदस्य तैयार रहें श्रौर खामोशी से सुनें।

जहां तक इस विभाग का संबंध है, यह मानी हुई बात है कि प्रत्येक वर्ष इसकी प्रशंसा होती है। यह एक ऐसा विभाग है जिसकी कोई बुराई नहीं करता बल्कि इसकी प्रशंसा की जातो है क्योंकि इस विभाग के मंत्री जी ग्रीर कर्मचारी इस योग्य है ग्रीर इतना परिश्रम तथा देखभाल करते है कि जनता को कोई कट न हो पाये। जैसे जनता ग्रीर विभागों से व्याकुल हो जाती है वैसे इस विभाग से नहीं है। इसलिये भी में इस विभाग की प्रशंसा करता हूं कि यह गरीब ग्रीर मजदूरों को रोजी देता है। इस विभाग में कुली भी काफी तनख्वाह पाते हैं। एक ग्रावरणीय सदस्य ने कहा था कि इस विभाग में गबन होता है तो श्रीमन, यह कौन-सी बड़ी

<sup>\*</sup>वन्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[भी हरी सिंह]

बात कह दी। हम जब खेती करते हैं तो चूहे ला जाते हैं। सरकार की तरफ से चूहे मारने के लिये मदद दी जाती है फिर भी नहीं मार पाते हैं। फिर यह तो एक विभाग है। जो गदन करता है उसको सजा मिलती है। ग्राप जो भ्रष्टाचार की शिकायतें किया करते हैं वह इस विभाग में नहीं हैं। ग्राप जहां बुराइयां करते हैं वहां प्रशंसा की जो बात हो उसे भी तो कह देना माहिये।

दूसरी बात यह है कि गरीबों को रोजी मिलती है। श्रीमन्, श्रगर श्राप समय दें तो में परिमट की बात स्पष्ट कर वूं। जिनको परिमट मिल जाते हैं वह तारीफ करते हैं श्रीर जिनको महीं मिलते वह बुराई करते हैं। मुझे परिमट नहीं लेना है इसलिये में ईमानदारी की बात कहता हूं।

(लाल बली होने पर)

भीमन्, दस मिनट भीर दे दें।

श्री उपाष्ट्रयक्ष--समय बहुत कम है ।

श्री हरोसिह—श्रीमन्, मुझे बहुत कुछ कहना है। जिस तरह से जगजीवनराम जी ने हरिजनों के रिजर्वेशन की पूरा किया है उसी तरह से मंत्री जी तथा इस विभाग के धिकारी उसकी पूरा करें।

दूसरी बात यह है कि श्राप परिमट का किस्सा न रखकर फ्री कर बीजिये वरना जो इस काम को करते हैं उन सब को परिमट मिलने चाहिये। जनता श्राज स्वार्थ के वशीभूत हो गई है धीर मना करने पर भी वह रिश्वत दे श्राती हैं। एम० एल० एख० को परेशान किया जाता है कि सिफारिश कीजिये। यह वशा हमारी जनता की हैं। इस समिति में हमारे गेंदासिह की हैं, उनको लोग घेरे रहते हें श्रीर हमें भी परेशान करते हैं यह हाल है। कुछ कहने से पहले श्राप श्रपने की देखिये।

तीसरी बात यह है कि छोटे कर्मचारियों को मुस्तिकल कर विया जाय श्रीर उनकी पे ६० दपये से कम नहीं। में नहीं चाहता हूं कि जी० एम० को रखा जाय श्रीर जो श्रिषकारी हैं वह ठीक हैं, उसी तरह से रहने चाहिये क्योंकि महकमें को हानि लाभ की उनकी जिम्मेदारी हैं। वह दिन-रात परिश्रम करते हैं। इसीलिये इसमें करण्यन नहीं है। यदि इस विभाग में भी ऐसे श्रिषकारी हो जांय जो वपतरों में बैठे रहें तो इसमें भी भ्रष्टाचार हो जायगा।

श्री उपाष्यक्ष--समय समाप्त।

श्री हरीसिंह--वो मिनट श्रीर वे बीजिये।

श्री उपाध्यक्ष--सात मिनट हे विये गये है।

श्री रामस्वरूप वर्मा (जिला कानपुर)—माननीय उपाध्क्ष महोदय, मुसे बोलने की प्रेरणा इसलिये मिली कि उधर के कुछ माननीय सदस्यों ने जो विरवावली गान इस विभाग का किया उससे सत्य छिप गया। जनता को जो सुविवायें हुई, विभाग को जो नुक्सान हुआ तथा वेश की श्रीर जनता की सम्पत्ति का जो ग्रयच्यय हुआ, ये सारी बातें छिप गई। इन तमाम बातों की शिकायतें छिप गयों।

में सबसे पहले इस विभाग की एक किताब बटी है, उसके ऊपर माननीय मंत्री और आदरणीय सदन का घ्यान आकर्षित करना चाहता हूं। परिवहन विभाग की स्वयं की कसौटी है सुविधा पूर्ण सत्वर और दक्षतापूर्ण साधनों की व्यवस्था करने का प्रबंध करना। अब इस कसौटी पर कस लें कि यह विभाग कितना सुविधापूर्ण, सत्वर और दक्ष है। अगर हम इस दृष्टि से तमाम विभाग के कार्यक्रलापों को देखें तो पता चलेगा कि इन तीनों में यह विभाग पूर्णतया असफल है मुझे बड़ा अफसोस होता है उन माननीय सदस्यों पर जिन्होंने इस विभाग के कार्यों पर संतोब

११६०-६१ के ब्राय-व्ययक में ब्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-- ब्रनुदान संख्या ७--लेखा शीर्षक १२-मोटर गाडियों के ऐक्टों के कारण व्यय, मनुदान संख्या ३१--लेखा शीर्षंक ४७--प्रकीर्ण विभाग ग्रौर ४४--उड्डयन, ग्रनुदान संख्या ५२-लेखा शीर्षक ७०--जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुधार पर पूंजी की लागत तथा ८२ -- राजस्व लेख के बाहर राज्य क दूसरे निर्माण-कार्यो का पुंजी लेखा

प्रकट किया है क्योंकि हो सकता है कि एम०एल०ए० को सुलभ सुविधाय्रों के फलस्वरूप वे इस विभाग की सही स्थिति न जान सके हों। जहां तक मुझे ज्ञात है कुछ ऐसे ग्रादेश हैं जिनके द्वारा एम०एल०एज० को कुछ विशेष सुविधायें इस विभाग में प्राप्त है, भ्रगर उन सुविधाओं को ध्यान में रख कर विभाग को देखना है, तो सचमुच सही स्थिति का पता नहीं लगेगा। ज्यादातर माननीय सदस्यों ने इसी मापदंड द्वारा पता लगाया है । लेकिन मेरे जैसे ग्रादमी की तरह, जैसे सभी लोग सफर करते हैं, उस तरह से सुविधाओं का पता लगायेंगे और देखेंगे कि जनता की कितना कव्ट है तो सही स्थिति का पता लगेगा। जैसा कि दूसरे सदस्यों ने कहा अगर इसके बराबर कोई तुलनात्मक रूप में बसें चलती होतीं तो सरकार टिकती ही नहीं क्योंकि विनम्रता श्रौर सत्वरता का इस विभाग में नितांत ग्रभाव है। पांच घंटे में जगह बजगह उतरते चढ़ते दिल्ली, से देहरादून, सहारनपुर का १०० मील का सफर करते हैं। प्राइवेट बसों द्वारा यहां से कानपुर बस जाती है। पौने तीन घंटे में पैसेंजर बस लखनऊ से कानपुर ४५ मील पहुंच पाती है। क्या सुविवा प्रदेश के लोगों को मिली? सब का समय कीमती होता है। उसका कितना बड़ा ग्रपव्यय किया है इस विभाग ने । सात सात, ग्राठ-ग्राठ घंटे १०० मील के सफर में लगते हैं । लोगों के समय की कोई कीमत ही विभाग नहीं समझता। भैंसा गाड़ी की तरह किसी तरह पैंसेंजर को पहुंचा वेते हु ग्रीर ग्रगर बिगड़ जाती हु तो छः घंटे से पहल टिकट का दाम वापस नहीं हो सकता, यह सत्वरता की सुविधा प्राप्त है। छः घंटे के बाद पैसा वापस करने के मतलब यह हैं कि विभाग स्वयं समझता है कि हमारी कमजोरी क्या है। वह समझता है कि छः घंटे में सुविधा प्राप्त करा पार्येगे**।** 

दूसरी तरफ जहां तक शिकायतों का प्रश्न है इस विभाग की हमने एक विशेषता देखी--रेल में ग्रगर कोई शिकायत कर दे तो उसका जवाब ग्रायेगा कि क्या कार्यवाही की गयी लेकिन इस विभाग की कम से कम मैंने १० शिकायतें कीं। मैने माननीय मंत्री जी को तीन शिकायतों का हवाला दिया इस गुस्से में कि भ्रापके यहां कोई कार्यवाही नहीं होती है। टेलीफोन पर कहा। लिख कर दिया लेकिन कोई कार्यवाही नहीं हुई, कोई सूचना नहीं मिली। जब ग्रादरणीय सदन के माननीय सदस्य लिख कर देते हैं तो उनके पास भी कोई सूचना नहीं पहुंचती, कम से कम मेरे पास नहीं पहुंची जबिक में बराबर ध्यान ग्राकृष्ट करता रहता हूं। पता नहीं इसलिये नहीं भेजते हैं कि इनके पास यह रेकार्ड हो जायगा कि इतनी शिकायतें हुई। लेकिन में तो शिकायतें जमा ही करता जाता हूं। यह विभाग की एफीशियेंसी है, यह सुविधा वह प्रदान करता है।

में श्रापको बताऊं श्रभी पिछले महीने का किस्सा है। में ३ या ४ फरवरी को श्रपने क्षेत्र में राजपुर गया था। वहां बस स्टेशन पर कुछ लोग खड़े थे। वहां उनको कुछ श्रमुविघा हुई तो उन्होंने शिकायत की किताब को मांगा । वहां पर जो इंचार्ज था उसने किताब को देने से इन्कार कर दिया। जब इस तरह से उन लोगों को शिकायत की किताब नहीं दी जाती तो फिर शिकायत की किताब रखने से क्या फायदा है। मैने उन इंचार्ज को बुलाया और कहा कि तुमको शिकायत की किताब देनी पड़ेगी, उन्होंने देने से इन्कार किया होता लेकिन जब उसको मालूम हुन्ना कि मै फलां म्रादमी हूं तो उसने दिया। मैंने उस किताब पर यह सब लिख दिया लेकिन उस शिकायत के बारे में मुझे ग्राज तक मालूम नहीं हो सका कि सरकार ने उस पर क्या कार्यवाही की। यह इस विभाग का हाल है। मैं यह समझता हूं कि अगर इस विभाग के लिये प्रशंसा में एक शब्द भी कहा जाय तो यह इस प्रान्त की जनता के साथ ज्यादती होगी, जनता के साथ ग्रन्याय होगा ।

#### [श्रो रामस्वरूप वर्मा]

यह जो किताब बटी है उसमें इस बात का उल्लेख नहीं है कि प्रति वर्ष दुर्घटनाओं की क्या संख्या रही, कितने व्यक्ति हताहत हुये, कितनी सम्पत्ति ा नुकसान हुया। इसके लिये यहां पर वर्णन होना चाहिये था। उन्होंने इन बातों का यहां पर उल्लेख नहीं किया है इससे यही मालूम होता है कि कितनी इनएफिशियन्ट तरीके से यह बसे चलती है तभी दुर्घटनाओं का भंडाफोड़ नहीं किया इसके अन्दर केवल विख्दावली का गान किया गया है कि इतना मुनाफा हुआ है। जब किसी चीज पर मोनोपोली कर ली गई हो तो उसको हम मुनाफ से नहीं जज करेंगे। उसको हम सुविधा से जज करेंगे कि लोगों को कितनी सुविधा दी गई, लोगों को कितना आराम मिला। जब सदस्यों को इन सब बातों की जानकारी होगी कि कितना लोगों को कष्ट हुआ, और कितना आराम मिला तभी माननीय सदस्योंको जानकारी होगी कि यह विभाग किस प्रकार से, एफिशियन्ट या इनएफिशियन्ट तरीके से चल रहा है। इस विभाग को जांचने का यही हमारा आधार हो सकता है। अगर इन बातों को इस पुस्तक में प्रकाशित किया जाता तो हम जान सकते कि यह विभाग किस तरह से काम कर रहा है। मगर उन चीजों को प्रकाशित नहीं किया गया है नहीं तो सरकार के इस विभाग का भंडाफोड़ हो जाता। इससे यह साबित होता है कि सरकारी विभागों में जो इनएफिशियन्ट विभाग है यह उनमें से एक विभाग है।

सब इस बात को जानते है कि इस विभाग के लिये कोई रूल या रेगुलेशन नहीं है। जिस रोड पर श्रपनी मोटर चलाना चाहते हैं उसे पर श्रपनी मोटर चलाते हैं श्रौर उस कट को ले लेते है। जहां पर श्रिक श्रावश्यकता होती है, श्रीक जन संचार होता है वहां पर उस रूट को प्रायः नहीं लिया जाता है। हम इस बात को खूब समझते हैं कि किस प्रकार के सुख श्रौर सुविषा का खयाल करके सरकार रूट को लेती है। यह बात उचित श्रौर श्रावश्यक है कि ज्यादा से ज्यादा सुविधा सरकार को देनी चाहिये जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग बसों में चलें श्रौर सरकार को लाभ हो। यद्यपि इसी सम्बन्ध में यहां पर उग्रसेन जी ने जिक किया लेकिन में उस बातको जोर देकर कहना चाहता हूं कि बुन्देलखंड को देखा जाय, वहां पर इतने लम्बे श्रौर श्रावश्यक रूट हैं लेकिन श्रभी तक उनको नहीं लिया गया है। वहां पर उनमें सरकारो बसेज नहीं चल रही हैं। वहां पर बड़े जोरदार शब्दों में यह बात सुनने में श्राई श्रौर लोगों ने बतलाया कि जब वहां पर रूट को लेने की बात चली तो लोगों ने २, ३ लाख रुपया रिश्वत में विभाग को दिया। वह रुपया कहां गया किसे दिया गया, यह नहीं कहा जा सकता लेकिन इस तरह से वहां पर कहा जाता है कि प्राइवेट बस वालों ने श्रपनी जब से इतना रुपया दिया। श्रगर सरकार को सुविधा का खयाल है तो वह कालपी से शांसी के रूट पर श्रपनी बस क्यों नहीं चलाती है ? चित्रकूट, करवी से बांदा तक बस चला सकती है, यह भी श्रच्छे ए क्लास रूट हैं लेकिन सरकार ने इन को नहीं लिया है।

मुझे इस बातकी सूचना है कि एक स्थान पर जनरल मैनेजर की कुछ बातचीत हो गई प्राइवेट बस वालों से कानपुर में गजनेर रूट पर क्योंकि प्राइवेट बस वाले कच्चे रास्ते पर बस चलाते थे। बस वह रास्ता उन पर नहीं रहने विया और कच्चे रास्ते पर सरकारी बस चला ही और उस रास्ते का राष्ट्रीयकरण कर विया। किन्तु जो १०० या १० मील के रास्ते हैं उनका राष्ट्रीयकरण नहीं किया जाता है, उनको सरकार प्राइवेट कंट्रोल में दे देती है। जहां पर जनता को सुविधा वैता चाहिये था वहां पर उनको सुविधा नहीं दी जा रही है। में समझता हूं कि प्रदेश का सबें किया जाय और जहां पर प्रच्छी सड़कें हैं, ए-क्लास रूट हैं उन पर सरकार को अपनी बस चलाने का इन्तजाम करना चाहिये। बुन्देलखंड का उदाहरण मैंने दिया कि वहां पर बस चलाने की जरूरत है किन्तु वहां पर रूट को नहीं लिया जाता है क्योंकि इसमें अफसरों का भी कायदा है और प्राइवेट लीगों को बसेज चलाने का प्रोत्साहन देकर वोट कांग्रेस को मिल जाता है। इस वजह से उन रास्तों का राष्ट्रीयकरण नहीं होता है। इसलिये में इसको उचित नहीं समझता हूं कि इस विभाग की प्रशंसा में एक भी शबद कहा जाय।

इस विभाग का ग्रजीब हाल हैं। सारे प्रदेश में हिन्दी में काम चल रहा है लेकिन इस विभाग में टिकट नो दिये जाते हैं वह भी ग्रंपेजी में दिये जाते हैं। द्राइवर ग्रीर कंट्रेक्टर ज्यादा ग्रंपेकी १९६०-६१ के म्राय- ययक में म्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-म्रनुदान ४११ संख्या ७--लेखा शीर्षक १२--मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, म्रनुदान संख्या ३१--लेखा शीर्षक ४७--प्रकीर्ण विभाग भ्रीर ४४--उड्डयन, म्रनुदान संख्या ५२--लेखा शीर्षक ७०--जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुघार पर पूंजी की लागत तथा ८२-राजस्व लेखे के बाहर राज्य के

जानते नहीं हैं लेकिन श्रफसर लोग श्रपने हुकुम जो भेजते हैं वह अंग्रेजी में भेजते हैं फलतः अंग्रेजी में रोब दिखाने के लिये कन्डक्टर भी टिवट अंग्रेजी में काटते हैं। यह श्रफसरशाही नीचे से अपर तक है। यह राष्ट्रीयकरण है या नौकरशाही का नंगा नाच जो विभाग में चल रहा है? श्रीमन्, मैंने जिला कानपुर में राजपुर बस स्टेशन पर शिकायती किताब में भी लिखा था,वहां बोर्ड लगे हैं "ड्रिकिंग वाटर हियर"। बेचारा देहात का श्रादमी कुछ जानता नहीं, समझता नहीं और पानी के लिये परेशान होता है। अंग्रेजी के साइनबोर्ड से उसका कोई फायदा होता नहीं। मैंने कई बार विभाग के लोगों का ध्यान इस ओर श्राक्षित कराया, शिकायत भी लिखी, लेकिन कोई काम ठीक ढंग से नहीं हुआ। टिकट बांटने में केवल गांव का नाम लिखना होता है, वह भी श्रंग्रेजी में लिखा जाता है इसलिये कि इसमें उनको रुग्राब दिखाने का मौका मिलता है। ताज्जुब है कि इस के लिये श्राज तक कोई श्रादेश नहीं दिया जा सका।

दूसरे निर्माण-कार्यों का पंजी लेखा

श्रीमन्, देखा जाय कि इस में भ्रपर क्लास भ्राज भी चल रहा है। प्रदेश में देहातों में ही ज्यादा बसें चलती हैं। सिटी में तो किसी में श्रपर क्लास नहीं होता, तो कौर-सी ऐसी खास बात देहात के लिये है कि जिस के कारण अपर क्लास को आज मेंटेन किया जा रहा है। में समझता है कि पैसा कमाने के लिये ही इसकी रखा गया है। इसे रख कर ग्राप समानता कहां दोनों में एक तरह के गहे लगते हैं, एक-सी सुविधा रहती है, फिर क्यों नहीं इस को समाप्त कर एक श्रेणी बना दी जाती ? इन बातों के साथ-साथ ग्रौर बहुत-सी बातें कहनी थीं, लेकिन चंकि समय कम है इसलिये इतना ही कहना चाहता हूं कि हमारे यहां न ठीक से काम हुन्ना है श्रीर न सुविधा ही मिली है। जनरल मैनेजर,कानपुर को भी मैने एक दिन कहा था श्रीर लिखा था कि सहानुभूतिपूर्वक ध्यान रखना चाहिये मुसाफिरों का। मै अपना एक उदाहरण दूं। मझे बलार या स्त्रीर इसलिये मैंने कंडक्टर से कहा कि मुझे यहीं उतार दीजिये। नहीं। मैंने कहा कि केवल में ही अगले स्टाप पर उतरने वाला हूं अतः आपको एक बार ही बस को रोकना पड़ेगा श्रीर उतना ही समय वहां भी लगेगा लेकिन वह मुझे दो मील श्रागे ले गया। म्रकेला में ही उतरने वाला था ग्रीर उसे मेरे लिये एकबार बस रोकनी पड़ी,लेकिन उसने वहां मुझे नहीं उतारा। तो इस तरह के व्यवहार से फायदा क्या। सामान्य जन के साथ व्यवहार ऐसा निर्देय होता है। अप्रगर में कह देता कि मैं एम०एल०ए० हूं तो शायद उतार देता। लेकिन में भ्रयना परिचय इस तरह से कभी देता नहीं। तो इन शब्दों के साथ में इस कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हं।

श्री उपाध्यक्ष-श्री एस०जी०दत्त, ग्राप के लिये ५ मिनट हैं।

\*श्री एस० जी० दत्त (जिला कानपुर)--उपाध्यक्ष महोदय, बहुत सम्भ ग्रौर मेहनत के बाद यह मौका मिला है। सारे दिन उठक-बैठक करता रहा, सारा खाना हजम हो गया ग्रौर मिले हैं केवल ४ मिनट। इसमें मैं क्या कहूं, खैर।

में इस रोडवेज के अनुदान के समर्थन में खड़ा हुआ हूं और माननीय उग्रसेन जी के कटौती के प्रस्ताव का विरोध करता हूं। माननीय उग्रसेन जी ने एक नया तरीका अहितयार किया है। जैसी उनकी आदत है, क्रिटिसाइज तो करना ही चाहिये। लेकिन आज उसका ढंग दूसरा है। आज रोडवेज के मजदूरों, कार्यकर्ताओं और कर्मचारियों के साथ हमदर्दी की बात भी कही गयी। कहां तक यह सच है यह तो में नहीं जान सकता, लेकिन हम की भी उन के साथ हमदर्दी है। जो कुछ आप ने फरमाया वह ही हकीकत नहीं है। मेंने सुना कि यह विभाग ऐसा है कि जो बिना किसी कायदे कानून के चल रहा है। यह बात मेरी समझ में नहीं आयी। हर विभाग

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

### [भी एस० को० दत्त]

में कुछ कायदा कानून होता है और भाप कैसे कहते हैं कि कोई कायदा कानून नहीं है। एक प्लानिग है, बसें रन कर रही हैं टाइम से, सब काम अने कायदे से, अपने समय पर हो रहा है, तनस्वाहें वक्त पर बंट जाती हैं, सब कुछ होता है, और उसके बाद भी श्रापने यह कैसे कहा, यह मेरी समझ में नहीं श्राया और शायद आपकी समझ में भी नहीं शाया होगा। फिर श्रापने कहा कि ए उटी व्याई० तो हैं लेकिन टी व्याई० नहीं हैं। कम से कम ऊपर के अकसर तो हैं। मेरा खयाल यह जरूर है कि टी व्याई० जरूर होंगे। ऐसा नहीं हो सकता कि जब एड मिनिस्ट्रेशन हो तब श्राफिसरान नहीं।

तीसरी बात यह कही गयी कि रोजनल मैने जर रखने की क्या ज करत है। ग्रारे भाई! यह तो जो एडमिनिस्ट्रेशन चलाता है वह जानता है कि ज करत है या नहीं। ग्रापको क्या मालूम ग्रापने कभी एडमिनिस्ट्रेशन चलाया हो तो ग्रापको मालूम हो। ग्राप क्या जानें कि एडमिनिस्ट्रेशन किस बला का नाम है।

यह कहा गया कि लखनऊ सब से छोटा रीजन है। में कहता हूं लखनऊ मेरठ के बाद सबसे बड़ा रीजन है जो सबसे ज्यादा ग्रामदनी देता है। हमारे साथ माननीय घ्रवस्थी जी ग्राते चाते हैं वे जानते हैं कि कानपुर से लखनऊ तक जो बसें ग्राती है वे कितनी भरी हुई होती हैं सवारियों से।

यह कहा गया कि यहां प्राविष्टेंट जंड नहीं है। हो सकता है यह ठीक हो। लेकिन ऐसा है (Rome was not built in a day) बच्चा भी नौ महीने बाव पैवा होता है। लेकिन यह सोशिलस्ट पार्टी वाले हुयेली पर समीं जमाना चाहते हैं। यह कैसे हो सकता है। रेलवे ने कितना टाइम लिया। यह बसें तो सन् १६४ द से चलाई गयों हैं। तो इसमें भी कुछ समय तो लगेगा हो। धापके सामने कम्युनिस्ट भाइयों ने भी इस विभाग की तारीफ की, दूसरे लोगों ने भी तारीफ की। इस विभाग की सबसे बड़ी तारीफ तो यह है कि जो हमारे नौजवान बी०ए० और इन्टरमीडियेट पास होकर घूमते फिरते ये झाज इस विभाग में जल्ब होते जा रहे हैं। इसी रोडवेज के कारण छाज कई सड़कें बनायी गयो हैं। में ऐसा समझता हूं झगर यह सड़कें इस विभाग को वे वी जायं तो ज्यादा झच्छा इन्तजाम इसका हो सकता है। गाड़ियों की रफ्तार के बारे में कहा गया, ठीक है उसकी रफ्तार बढ़ाना चाहिये।

में प्रव कानपुर के बारे में श्रीर कहना चाहता हूं। वहां पर रोडवेज बस सर्विस होनी चाहिये श्रीर श्रगर मुनासिब हो तो यह रिक्शा जो चल रहे हैं उनकी जगह रिक्शा—मोटर चलाई जायं तो बहुत श्रच्छा होगा। इससे श्रनइम्प्लायमेंट कुछ होगा लेकिन उसे किसी न किसी तरह हल किया जा सकेगा। इस पर हमें विचार करना चाहिये।

जो यह कहा गया कि ए० टी० झाई० की तनस्वाह बढ़नी चाहिये, मैं समझता हूं वह भी झाहिस्ता-ग्राहिस्ता बढ़ेगी। में जानता हूं यह विभाग हमारे जिन मंत्री जी के हाथ में है ग्रौर जिन ट्रांसपोर्ट कमिश्नर के पास है वे बहुत लायकवर हैं। उनके हाथों में यह विभाग ग्राने से इस विभाग की काफी ग्रामवनी बढ़ी है।

श्री उपाध्यक्ष-समय समाप्त हो गया।

श्री भगवतीसिंह विशारव (जिला उन्नाव)—उपाध्यक्ष महोदय, उत्तर प्रदेश के परिवहन विभाग ने विश्वान मंडल की स्थायी समितियों के सदस्यों के लिये तथा ईरान के प्रतिनिधि मंडल श्रीर श्राहजनहोवर के श्रागमन के समय चाहे जो सुविश्वायें प्रदान की हों, किन्तु उत्तर प्रदेश के निवासियों के लिये परिवहन का प्रबंध श्रीर उनकी समस्या का हल इस सरकार ने कर लिया हो यह में नहीं मानता हूं। श्रीर जब में उत्तर प्रदेश की बात कहता हूं तो में श्रथने को केवल वहीं तक सीमित रखता हूं जहां कहीं सड़कों का इस विभाग की श्रीर से राष्ट्रीयकरण किया गया है।

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--अनुदान संख्या ७--लेखा शीर्षक १२-मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, अनुदान संख्या ३१--लेखा शीर्षक ४७-प्रकीर्ण विभाग और ४४--उड्डयन, अनुदान संख्या ५२-लेखा शीर्षक ७०-जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुघार पर पूंजी की लागत तथा ६२-राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

मान्यवर, जो विवरण सदन के सम्मुख प्रस्तुत किया गया है उसमें यह बताया गया है कि ७,४१८ मील पर २,८०० बसें चलती हैं। अगर यह अनुपात पहले से देखा जाय तो हमको यह मालम होगा कि जहां पर माज भी प्राइवेट बसेष चलती हैं, उनकी तादाद तया मनुपात इससे ज्यादा होगा-संभवतः वह दो ग्रीर ढाई गुना होगा। प्रव इसके लिये मैं किसी व्यक्ति विशेष को दोबो नहीं मानता, बल्कि सरकार को जो नीति है में उसको इसके लिये दोबी ठहराता हूं। सरकार को जिस समय किसी सड़क का राष्ट्रीयकरण करना हो ग्रौर वहां पर यदि विभाग की स्रोर से बसें चलाई जायं तो सरकार का कर्तव्य है कि जितनी प्राइवेट बसेज उस समय चलती थीं उस रोड पर, उतनी ही सरकारी बसेज चलनी चाहिये। श्रीर यदि उतनी बसें नहीं चलती है तो उस क्षेत्र के रहने वालों की, उस रीजन के रहने वालों की, उस सड़क से यातायात करने वाले यात्रियों के ब्राने-जाने के लिये जो सुविषायें हैं वह हर दम कम रहेंगी। समय के लिहाच से प्राइवेट बसेज जोकि याने में दो-दो घंटे रोको जाती हैं उस समय को यदि निकाल दिया जायतो सरकारी विभाग की छोर से जो मोटरें चलती हैं उनसे एफि शियेंसी में बहुत आगे हैं। उसके साथ ही साथ सरकारी बसों में सिक्योरिटों का जो प्रबंध है वह तो सबसे ज्यादा खराब है। जिस समय किसी बस के भ्रन्दर बैठिये तो पढ़ने को मिलेगा कि सामान को जिम्मेदार रोडवेज विभाग दाम पूरे लेंगे, किराया पूरा हासिल करेंगे, लेकिन हमारे बक्से, बिस्तरे की जिम्मेदारी रोडवेज विभाग की नहीं है। हवाई जहाज से सफर करने वालों का सामान लिया जाता है, उसमें लेखिल लगाया जाता है, कंडक्टर उसको सम्भालता है, आदमी के हवाई अड्डे पर उतरने पर उसको सामान वापस किया जाता है। रेलगाड़ी में सफर करने पर मुसाफिर म्रयना सामान ग्रथने सामने रखे रहता, है, लेकिन रोडवेज की बसेज में सामान साथ रखा नहीं जा सकता भौर अगर रखने पर रोडवेज उसकी जिम्मेदारी लेता नहीं है, यह बड़ी दिक्कत की बात है श्रौर में समझता हं कि डिपार्टमेन्ट को इस तरफ ध्यान देना चाहिये। इसके लिये सबसे ज्यादा जरूरी यह है कि जिस तरह से हवाई जहाज में सफर करने वालों के सामान पर लेखिल लगाया जाता है, उसका एक माना, एक पैता, दो यैसा एक्सट्रा चार्ज किया जाय, लेकिन लेखिल लगाये जायं सामान पर भ्रीर उतरने पर वह सामान वापस किया जाय। भ्राज यदि इस विभाग से पता लगाया जाय तो हर रीजन से दो, चार, दस शिकायतें इस तरह की जरूर भ्राती हैं कि जब बक्स गायब हो जाते हैं, जे बर उठ गया होता है, बिस्तरे और कागजात गायब हो जाते हैं। तो मैं इस श्रोर माननीय मंत्री जी का ध्यान भ्राकवित करूंगा भ्रौर निवेदन करूंगा कि उस तरफ भी ध्यान देने की क्या करें।

मान्यवर, किसी विभाग की सफलता इस बात पर नहीं है कि उसने कितना पैसा कमाया, श्रीर खास तौर से रोडवेज विभाग जोकि श्रव एक तरह से श्रौद्योगिक विभाग की तरह से काम कर रहा है, जिसकी मानोपोली, एकाधिकार है उससे कोई प्रतिस्पर्धा करने वाला नहीं है, तो इसकी कसौटी तो केवल सुख-सुविधा यात्रियों को कितनी मिल रही है इस पर करनी चाहिए। श्राप देखें कि कहीं पर भी बुंकिंग स्टेशंस पर वेटिंग रूम्स नहीं हैं। छोटी-छोटी जगहें हैं, यात्री घूप में खड़े हो जाते हैं, लाइन लगाते हैं तब टिकट मिलता है, तब बस पर जाकर बैठ पाते हैं। श्रावश्यकता इस बात की है कि यात्रियों की सुख-सुविधा को श्रीर ज्यादा बढ़ाया जाय। इस विभाग ने एक नियम बना रखा है नियमों के श्रन्तगत, कि कहीं भी जहां प्राइवेट बसेज चलती हैं उनको ५ साल का लाइसेंस दिया जाता है, लेकिन श्रगर इनकी नियत खराब हुई तो एक ही साल में बसेज चलानी शुरू कर देते हैं। मैं इस सम्बन्ध में मंत्री जी से श्रनुरोध करूंगा कि वह शुरू से श्रपने दिमाग को सही श्रीर साफ रखें। विभाग पहले से जान ले कि किस मार्ग का राष्ट्रीयकरण करना है श्रीर कहां पर सरकारी बसें चलने वाली हैं। जिस मार्ग का राष्ट्रीयकरण करना हो श्रीर श्रपनी बस चलानी हो वहां पर २-४ साल पहले लाइसेंस

[श्री भगवतीसिंह विशारद]

देना बन्द कर दें। यह नहीं होना चाहिये कि अगर कोई आदमी थोड़ी-सी पूंजी लगाकर, का मेकर या कोग्रापरेटिव हंग से मोटरों का लाइसेन्स ले श्रीर प्राइवेट बस चलाये तो एक साल के बाद सरकार नोटिस दे दे श्रीर उसको रोक दें। यह तरीका गलत है, इसको रोकना चाहिये। इसके साथ ही साथ यह डिपार्टमेन्ट टूटने वाला नहीं है, परमानेन्ट डिपार्टमेन्ट है फिर भी श्राजतक इसमें सर्विस रूल्स नहीं बने है। मैं मन्त्री जी से श्रनुरोध करूंगा कि वह जल्द कर्मचारियों के सेवा नियम बनायें। साल भर पहले उन्होंने श्राक्वासन दिया था कि सर्विस रूल्स बन रहे है लेकिन श्राज जिस समय सभा सचिव बोलने के लिये खड़े हुये तो उन्होंने बताया कि इसके सम्बन्ध में एक भ्रधिकारी की नियुक्ति कर दी गई है। में समझता हूं कि श्रोर साल भर के बाद यह मालुम हो कि श्राधिकारी की नियुक्ति कर दी गई, साल भर के बाद यह मालुम हो कि एक कमेटी बिठा दी गई है और साल भर के बाद यह मालूम हो कि सर्विस रूल्स बननें लगे है तो पिछले १२ सालों से तो यह विभाग ऐसे ही चल रहा है और आगे इस प्रकार से कब तक चलता रहेगा, यह कहा नहीं जा सकता।

माननीय दत्त जी ने कानपुर के सिलसिले में भ्रपने विचार व्यक्त करते हुये यह श्रन्रोध किया कि वहां पर सरकारी बसेज चलाई जायं रिक्शों की जगह पर । ग्रगर बस न चल सकें तो मोटर रिक्शे चलाये जायं, में इसका घोर त्रिरोत्र करता हूं और मंत्री जी से अनुरोध करता हुं कि वह इस योजना को कार्यान्वित न करें। इससे वहां पर जो अनइम्पलायमैन्ट फैलेगा उसको किसी प्रकार से हल नहीं किया जा सकेगा श्रौर इस समय लोगों को जो रोजी मिल रही ह बह रोजी भी उनकी चली जायगी।

श्री उग्रसेन--उपाध्यक्ष महोदय, में व्यक्तिगतरूप से सभी माननीय सदस्यों को जिन्होंने इस विवाद में भाग लिया, चाहे इघर के या उघर के, उनका धाभारी हूं। एक बात का मुझे अन्यन्त खेद है कि बहुत से माननीय सदस्य, चाहे वह इघर या उधर बैठते हों, यह समझ बैठे है कि यदि हम परिवहन विभाग का विरोध करेंगे, उस की खामियों ग्रीर भ्रष्टाचार को प्रकाश म **भारोंगें** तो हम माननीय मन्त्री जी का व्यक्तिगत विरोध करेंगे। श्रीमन्, इस बात को देख कर मुझे इनकी बुद्धि पर बड़ा तरस था रहा है। एक दोहा मुझे याव था गयाः

> सचिव, वैद्य, गुरु तीन जो प्रिय बोलिंह भय झास्। राज, धर्म, तनुतीन कर होय बेग ही नाजा।

श्रीमन्, हमारे नेता श्री राजनारायण जी ने इस सदन में एक बोहा कहा था, वह संस्कृत में था वह मुझे याद तो नहीं है लेकिन उसका भ्रयं यह है कि निर्णय की सभा में या तो जाना ही नहीं चाहिये और अगर जाय तो सच बोलना चाहिये क्योंकि जो सभा सद वहां पर सत्य नहीं बोलता है वह पापी होता है। तो श्रीमन्, जब इस कसीटी पर उस को कसता है तो मुझे उनकी बुद्धि पर तरस भ्राता है. . . .

श्री उपाष्यक्ष--में समझता हूं कि झाप सीमा का उल्लंघन न करें। झब झाप और बात करें, इस सम्बन्ध में बहुत हो गया।

श्री उग्रसेन-- अब में दूसरी बात ही कह रहा हूं कि महीलाल जी ने कहा कि हमने नीतियों की चर्चा नहीं की। श्रीमन्, सोशलिस्ट पार्टी एक ऐसी संस्था है, वह क्या चाहती है उसकी क्या नीति है उसके बिल्कुल विपरीत सरकार की नीति है। यह रोडवेज का राष्ट्रीय-करण नहीं है, सरकारीकरण है। जिस प्रकार से इंगलेड में लेबर गवनंमेंट के जमाने में मैनेजोरियल बेसिस पर राष्ट्रीयकरण किया गया था उस प्रकार का भी यह राष्ट्रीयकरण नहीं है बल्कि बिलकुल यह गवर्नमेंट बेसिस पर सरकारीकरण है। केन्द्र में जो भिन्न मसानी कमेटी बैठी उस की रिपोर्ट पर ट्रान्सपोर्ट कमिश्नर्स की कान्फ्रेन्स में विचार हुआ लेकिन उस प्रकार की भी कोई चीज नहीं की गई। ग्राज ट्रान्सपोर्ट का काम चलाने के लिये जो काम शुरू किया गया है उसमें उपभोक्ता का कोई स्थान नहीं है। अगर एक ट्रान्सपोर्ट बोर्ड होता, उसमें

१६६०-६१ के ब्राय-ज्ययक में ब्रनुदानों के लिये मांगों पर मतवान--श्रनुदान संख्या ७--लेखा शीर्षक १२-मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण ब्यय, ब्रनुदान संख्या ३१--लेखा शीर्षक ४७-प्रकीण विभाग ब्रीर ४४-- उड्डयन, ब्रनुदान संख्या ५२--लेखा शीर्षक ७०-जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुघार पर पूंजी की लागत तथा ८२-राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

उपभोक्ता का एक प्रतिनिधि होता कर्मचारियों का एक प्रतिनिधि होता ग्रौर सरकार का एक प्रतिनिधि होता ग्रौर उसके ग्रनुसार सारे देश के ट्रान्सपोर्ट को चलाया जाता तब कहा जा सकता था कि वितरण ग्रौर उत्पादन पर समाज का ग्रधिकार है। ग्राज तो जिस प्रकार से कन्सालिडेशन के कमिश्नर हैं उसी प्रकार से ट्रान्सपोर्ट के कमिश्नर हैं। इस विभाग में उसी प्रकार से एक चपरासी को २२ द क्पये ग्रौर ट्रांसपोर्ट किमश्नर को २,५०० मिल रहे हैं। तनस्वाहों में जहां १०० गुने का ग्रन्तर हो क्या उस को समाजीकरण कहा जायगा?

एक बात में किराये के सम्बन्ध में कहना चाहता हूं। किराये के लिये कहा जाता है कि हमारे यहां बहुत लाभ हुआ। माननीय मंत्री जी दूसरे प्रान्तों के ग्रांकड़े देकर हमारा लाभ ग्रिधिक भले ही दिखाने का प्रयत्न करें लेकिन उन्हें यह नहीं भूलना चाहिये कि दूसरे प्रान्तों में कर फैलाव है, हमारे यहां ज्यादा है। वहां कम पूंजी लगी हुई है, हमारे यहां ज्यादा है, बहां प्राइवेट श्रापरेटर्स को कम डिसप्लेस किया गया है, हमारे यहां ज्यादा डिसप्लेस किया गया है। यहां किराये भी कोई कम नहीं हैं। ग्रब एक पाई की मील भी सरकार कम करने के लिये तैयार नहीं है। फिर, कर्मचारियों को भी कोई सुविधा देने के लिये तैयार नहीं है। हमारे मंत्री जी केन्द्र में तो ट्रांसपोर्ट मंत्री होकर जावेंगे नहीं, क्यों न उन्हें यहीं मुख्य मंत्री बना दिया जाय? देवरिया के रहने वाले हैं। हमें कोई एतराज नहीं है।

श्रीमन्, सीनियारिटी के फ़िक्सेशन के बारे में ग्रभी तक कोई स्थायी नीति नहीं है। सन् १६५१ का जी० ग्रो० है कि डेट ग्राफ नियुक्ति से होगा, सन् १६५३ का है कि मेरिट से होगा, सन् १६५६ का जी० ग्रा० है कि सीरिट से होगा, सन् १६५६ का जी० ग्रा० है कि सीनियारिटी की तरीख़ से होगा ग्रोर सन् ५७ का है कि नियुक्ति की तारीख़ से होगा। ये ५,५ जी० ग्रो० हैं जो एक दूसरे को ग्रोवरलैप करते हैं। प्रदेश के सभी रीजनों में सीनियारिटी क फिक्सेशन ठप्प है। ग्रगर किया जाय तो बड़े डिप्टी ट्रांसपोर्ट किमझ्तर नीचे ग्राजावेंगे। रोडवेज के कन्डक्टरों की कोई लिस्ट नहीं है। मैने ग्रपने यहां के जनरल मैनेजर से कहा कि यह कन्डक्टर तो ५३ से हैं, यह क्यों नहीं रखा गया। उन्होंने कहा कि टाइम-बार्ड हो गया है। कहीं उम्मीदवार भी टाइम-बार्ड होते हैं?

श्री ब्रजिवहारी मेहरोत्रा (जिला कानपुर)--वह डिबेट को वाइन्ड ग्रप कर रहें हैं या नयी बातें पैदा कर रहे हैं? क्या बात है?

श्री उपाध्यक्ष--किसी माननीय सदस्य की बातों का जवाब दे रहे होंगे।

श्री उग्रसेन-श्रीमन्, एक बात ग्रीर निवेदन करना चाहता हूं। ट्रांसपोर्ट पिल्लिक सेक्टर का उद्योग है। कोई श्रम कानून इस पर लागू नहीं हैं। सेंट्रल वर्कशाप में जरूर कुछ कानून लागू हैं वरना कहीं ग्रीर फ़ैक्ट्री ऐक्ट या पेमेंट श्राफ़ वेजेज ऐक्ट लागू नहीं है। जितने श्रम कानून कन्द्रीय ग्रीर प्रदेशीय सरकारों ने बनाये हैं वे सब रोडवेज विभाग के कर्म- चारियों के लिये लागू होने चाहियें।

हिन्दी के बारे में कु अ निवेदन करना चाहता हूं। श्रंग्रेजी से कितना मोह है इस विभाग को? एक यहां से सबर्गुलर गया सिंवस मैनेजर्स को। उसमें लिखा है कि एवरी से किन्ड ईयर कर्मचारियों को डांगरी दी जाय। मगर श्रफ़सर लोग कहते हैं कि २ साल के बाद, यानी एवरी थडं ईयर। नतीजा यह है कि गोरखपुर वर्कशाप के नीचे के कर्मचारियों को डांगरी मिलनी चाहिये थी दूसरे वर्ष लेकिन वहां जर्सी मिलती है हर तीसरे साल। माननीय वर्मा जी ने कहा कि ड्रिंकग वाटर लिखा है। किराये की सूची ७०, ५०फ़ीसदी स्टेशनों पर नहीं हैं जो है भी वह श्रंग्रेजी में। गोरखपुर रीजन का यह टाइम-टेबिल है, श्रक्तूबर का छपा है;

[भ्री उग्रसेन]

इसमें जितना लिखा है, उसमें सें एक भी लागू नहीं है। इस पर कुशी नगर का फोटो छाप बिया जाता है। दो स्नाना इसका दाम है लेकिन वह बदल दिया जाता है स्नौर इसमें बदलाब नहीं होता, नया छापा नहीं जाता। इसमें किराये की दर स्नौर सूची सब स्रंग्रेजी में है। मैं पूछना चाहता हूं कि इस प्रदेश की कितनी जनता स्रंग्रेजी पढ़ी हुई है ?

जहां तक टाइमिंग का सवाल है, प्राइवेट श्रापरेटर्स की बसेज पंजाब से जम्मू तक बाती है लेकिन वे कितने समय से छूटती है। लेकिन यहां श्रगर किसी दारोगा को जाना हुग्रा या किसी श्रधिकारी को जाना हुग्रा तो ३-३, ४-४ घंटे उनका एक जाना मामूली-सी बात है। संभ्रांत लोगों के घरों पर बसें जाती है। यह क्या बात है? प्राइवेट श्रापरेटर्स की बसेज को पिट्यमी जिलों में चलती है वे समय से श्रौर नियमानुसार चलती है। समय से गड़ियां छटती हैं श्रौर समय से श्राती है।

मै एक श्रौर सुझाव टिकट काटने के सम्बन्ध में देना चाहता हूं। श्रगर ब्लैक बुक गायब हो जाती है तो उसका प्रिंटिंग चार्ज कंडक्टर से नहीं लिया जाता है वरन् उससे पूरा पैसा ले लिया जाता है। जिसकी छपाई में मुक्किल से ३ रू० ४ ग्राने खर्च होंगे, उस के लिये उससे ७० ग्रौर ८० रू० तक लिये जाते है। श्राखिर ऐसा क्यों होता है? मेने बम्बई में देखा है जहां कि स्टेट ट्रांसपोर्ट है, वहां पर कंडक्टरों के पास टिकट काटने के लिये एक छोटी सी टिकट प्रिंटिंग मशीन होती है। मोती लाल श्रवस्थी जी बतला रहे हे कि चारबाग में भी ऐसी मशीन है। तो में माननीय मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि कंडक्टर्स को टिकट प्रिंटिंग मशीन दे दी जाय ताकि उसे इस तरह की परेशानियों का सामना न करना पड़े।

एक माननीय सदस्य ने बतलाया कि लॉकर झाने से भ्रष्टाचार दूर हो गया है, लेकिन असलियत यह है कि 'लॉकर' ही बतलाता है कि पहले भ्रष्टाचार कितना था अब कितना है। अगर आप रेवेन्यू को ही देखें तो उससे पता चल जायगा कि पहले कितना फरेब होता था और अब कितना होता है। 'लॉकर' तो इस बात को बतलाता है कि अब इन्सान की ईमानदारी के उपर भरोसा न कर लोहे के अन्दर किया जाय? इसी नागरिक के अधिकार भारतीय संविधान के पन्ने बर पन्ने में भरे पड़े हैं। होता यह है कि वह चालान शीट कंडक्टर रखता है, जल्दी में उसको टिकट बनाना पड़ता है और टिकट उसने ठीक बनाया भी लेकिन चालान शीट भरने से रह गया और इसी बीच में ए० टी० आई० साहब आ गये, जो अपना काम नहीं करते है तो एक महीने बाद नोटिस मिल बायगी। १६५५ के बाद अब तक गोरखपुर रीजन के ४०० आदिमयों को एक महीने की नोटिस दे दी गयी। कोई चार्जशीट नहीं, कोई जवाब नहीं और उनको एक महीने की नोटिस दे दी गयी। कोई चार्जशीट नहीं, कोई जवाब नहीं और उनको एक महीने की नोटिस दे दी गयी। कोई चार्जशीट नहीं, कोई जवाब नहीं और उनको एक महीने की नोटिस दे दी गई। अगर हाईकीट के अन्दर यह मामला जाय तो संविधान के अनुसार यह बिलकुल अवैधानिक हो जायगा। इसी तरह से जो ७ रीजनल कमेटी बनी हुई हो वे भी बिलकुल अवैधानिक हो, उनको तुरन्त भंग कर बेना चाहिये। इन इन्हों के साथ में कटौती के प्रस्ताव को सदन के समक्ष रखता हूं और आशा करता है कि सदन इसको मंजूर करेगा।

<sup>! \*</sup>डाक्टर सीता'राम—माननीय उपाध्यक्ष महोदय, में उन माननीय सदस्यों के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूं जिन लोगों ने इस सदन के डिस्कद्मन में अपना हिस्सा बटाया। कटमोद्मन के सम्बन्ध में मुझे यह कहना है कि माननीय श्री उग्रसेन ने बतलाया कि इस डिपार्ट-मेंट का न कोई कायदा है, न कोई कानून है, न कोई मैनुअल है, न कोई सावस बुक है और न कोई और चीज है। इस सम्बन्ध में मुझे सिर्फ इतना ही कहना है कि इस डिपार्टमेंट का कार्य अन्य डिपार्टमेंट्स की तरह ही होता है और यहां उन्हीं सिवस करस का पालन होता है जिनका कि और डिपार्टमेंट में होता है। मैनुअल का ज़ाफ्ट हो रहा है और उसके लिये एक आफिसर की नियक्ति हो जुकी है।

<sup>\*</sup>वक्ता ने भावण का पुनर्शीक्षण नहीं किया।

१६६०-६१ के म्राय-व्ययक में म्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--म्रनुदान संख्या ७--लेखा शीर्षक १२--मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, म्रनुदान संख्या ३१--लेखा शीर्षक ४७--प्रकीर्ण विभाग म्रौर ४४-- उड्डयन, म्रनुदान संख्या ५२--लेखा शीर्षक ७०--जन-स्वास्थ्य संबंधी सुघार पर पूंजी की लागत तथा ६२--राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा

एक माननीय सदस्य ने प्रदेशीय हिन्द फ्लाइंग क्लब का जिक्क करते हुये बतलाया कि उसमें बहुत बड़े-बड़े श्रादिमयों के बच्चे ही ट्रेनिंग पाते हैं ग्रौर कोई इसमें नहीं ग्राता है ग्रौर साथ ही साथ सरकार ने साढ़े ४ लाख रुपये की सिब्सिडी उसे पारसाल दे दी। इस सम्बन्ध में माननीय सदस्यों को यह मालूम होना चाहिये कि यह फ्लाइंग क्लब जो उत्तर प्रदेश का है वह हिन्दु-स्तान के सभी फ्लाइंग क्लबों के मुकाबले में नम्बर बन का है। मुझे यह घोषणा करते हुये प्रसन्नता होती है कि यहां के फ्लाइंग क्लब के श्रिधकारियों को नेपाल सरकार ने भी मांगा है। इसलिये मांगा है कि यहां का कार्य संचालन ग्रच्छा है। इसमें ए० बी० सी० तीन तरह के लाइसेंस पाने के लिये ट्रेनीज ट्रेंड किये जाते हैं। चाहे वे बड़े घर के हों, चाहे छोटे घर के हों, सब को ट्रेनिंग दी जाती है। सन् १६४७ से लेकर १६५८ तक ४४७ ग्रादिमयों को पाइलट का लाइसेंस मिला। इनमें ए-श्रेणी के ४१०, ए-वन १५, बी-श्रेणी के ७ ग्रौर सी-श्रेणी के १५, डी०-श्रेणी के २ ग्रौर ई-श्रेणी के ३ को लाइसेंस मिले। इसी तरह से यहां जो लोग पाइलट ट्रेनिंग पा चुकते हैं उन्हें ग्रन्य जगहों में, ग्राल इंडिया एयरलाइन्स कार्पोरेशन में तथा भारत के ग्रन्य क्लाइंग क्लब्स में काम दिया जाता है। इस लिये यह कहना कि उसको सिब्सडी जो बी जाती इ वह वेस्ट की जाती है यह निहायत ग्रनुचित बात है।

श्रभी माननाय सदस्य ने कहा था कि इस विभाग के श्रांकड़ों के बढ़ जाने से ही बधाई देना निर्यंक बात है। मैं दथाई की बात नहीं कहता लेकिन मैं दोनों धोर के ही माननीय सदस्यों का श्राभारी हूं कि जिन्होंने इस विभाग के विषय में श्रपनी भावनाश्रों को ध्यक्त किया है।

ग्रभी माननीय उग्रसेन जी ग्रौर माननीय वर्मा जी ने कहा कि बसों के राष्ट्रीकरण के कारण सरकार को प्राफिट होता है ग्रौर दूसरों को मौका नहीं दिया जाता है। उन्होंने यह भी कहा शि भारत के ग्रन्य सूबों में कम बसें चलती हैं ग्रौर इसलिये उनको लाभ कम है। उपाध्यक्ष महोदय, ग्राप की ग्राज्ञा से निहायत श्रदव के साथ में सदन को बताना चाहता हूं कि कई सदस्यों ने बम्बई की बोहाई वी है वहां पर जो नेजनलाइ जेजन है, कारपोरे जान है, बहां का कैपिटल भी १६ करोड़ का है लेकिन उनकी श्राय केवल १ करोड़ ३ लाख की है लेकिन में यह बताना चाहता हूं कि हमारे लिये यह बड़े ही गर्व की बात है कि केन्द्रीय सरकार ने इस बात को समझा है कि इस प्रदेश का परिवहन विभाग देश के समस्त सूबों के ट्रान्सपोर्ट विभाग के मुकाबले में नम्बर बन पर है और यही कारण है कि हमारे यहां के ट्रान्सपोर्ट किमश्नर श्री जी० एस० राठौर देलीगेशन के लीडर बना कर योरोप, श्रमरीका ग्रौर जापान श्रादि देशों में भेजे गये जिन के अन्डर में बड़े-बड़े ग्राई० सी० एस०, ग्राई० ए० एस०, एम० पीज० ग्रौर जनता के प्रतिनिधि रहे हैं। यदि इस विभाग को कार्यदक्षता, कार्य संचालन ग्रौर कार्यक्षमता बेश के ग्रन्य प्रदेशों से अपर न होती तो इस तरह से देश के श्रन्य प्रदेशों के मुकाबले में हमें यह सौभाग्य प्राप्त न होता। हो हमें स्तरह से देश के श्रन्य प्रदेशों के मुकाबले में हमें यह सौभाग्य प्राप्त न होता।

अभी माननीय वर्मा जी ने कहा कि मसानी कमेटी की रिपोर्ट का पालन नहीं किया गया।
मैं निहायत अदब के साथ सदन के सम्मुख कहूंगा कि वही रिपोर्ट है कि जिस के अनुसार इस
विभाग का काम चल रहा है उन्हें स्वयं उस रिपोर्ट की बातें जात नहीं हैं और चले है आलोचना करने
यू०पी० सरकार की। उनकी दलील बिलकुल थोथी है। जो बातें उस रिपोर्ट में हैं उन के
अनुसार ५०-५५ प्रतिशत कार्यवाही इस सुबे की सरकार या यहां का परिवहन आयुक्त पहले से
ही कर रहा है। यह रिपोर्ट इस प्रदेश के लिये कोई नया मंत्र नहीं है हम तो उसके अनुसार
पहले से ही काम कर रहे हैं।

[डाक्टर सीताराम]

इसके बाव यह भी कहा गया कि पे-कमेटी क्यों नहीं बनाई जाती और ब्राइवर्स व कार-क्टर्स का वेतन बहुत कम है। उनका कहना है कि किसी हायर जुड़िशियल प्रकार या किसी हाईकोर्ट के जज के प्रज्ञर में कमेटी बनायी जाय। इस सम्बन्ध में से प्राप की प्राज्ञा से सदन को बताना चाहता हूं कि जहां तक जी० एम० व ए० जी० एम० का सवाल है या प्रत्य नीचे के कमंचारियों का प्रश्न है, देश के समस्त सुर्वों के मुकाबले में हमारे सभी वर्ग के कमंचारियों का पे-स्केल प्रधिक है। यू० पी० सरकार के जो १६४६—१७ के पे स्केल है उन में हमारे गज़टेड प्रकार क्लास २ वाले २४०—-३०० से ५४० ठ० तक वेतन पाते हैं जैसे कि डिप्टी कलेक्ट्स व डी-वाई० एस० पी० वर्गरह पाते हैं और क्लास १ प्रकार जो है जैसा कि एक माननीय सबस्य ने कहा वे कुछ तो १,००० से १,४०० ७० पाते हैं और कुछ को ६०० से १,४०० ६० तक विये चाते हैं। इसी तरह से जनरल मैनेजर्स भी नाई० सी० एस० और ग्राई० पी० के ग्रतावा बूसरे प्रदेशों से यहां प्रधिक वेतन पाते हैं। जहां तक ब्राइवरों की पे की बात है पे कमीशन की रिपोर्ट के श्रनुसार हमारे सुबे में जो वेतन सब विभागों में है उस सब से हमारे ब्राइवरों की पे ग्रधिक है। श्राप पे कमीशन की रिपोर्ट वेखें उस में है।

मेडिकल डिपार्टमेंट के ड्राइवर का पे रकेल ४४—६४ र० हैंड कांस्टेबिल ड्राइवर को ४०—६४ र०, कांस्टेबिल ड्राइवर ३०—४४ र०, मग्रनिवेश विभाग, ऐक्साइन और इंडस्तेन विभाग के पुराने ड्राइवर्स को ४४—६० र० और दूसरा रकेल ४४ —६४ र० है। राशिता विभाग में ४४—६० है। यह तो पे कमेटी की रिपोर्ट के मृताबिक है। इसी तरह से हिन्दुस्तान के श्रीर सूर्वों के ड्राइवर्स की तनस्वाह इस प्रकार है। हिमांवल प्रदेश में ६०—६० र० वन्बई में ४०—६० र०, पंजाब में वो रकेल है एक ४०—६० र० और दूसरा ६०—१२० र७, मैसूर में ४०—५० ग०, उड़ीना में ६०—६० र० श्रीर उत्तर प्रवेश में ४४ —६४ —३—६० र० लेकिन भारत के श्रीर सूर्वों में जो माइलेज मिलता है जिससे कहीं श्रीविक हमारे यहां विधा जाता है। हमारे यहां एक ड्राइवर को जिसकी १ साल की नौकरी होती है ४ र० टेविनकल एलाउन्स विधा जाता है। हमारे यहां एक ड्राइवर को जिसकी १ ताल की नौकरी होती है ४ र० टेविनकल एलाउन्स विधा जाता है। साथ हो साथ प्रतेश के ड्राइवर्स को ड्रेड पाई फी मील के हिमाब से एलाउन्स विधा जाता है। साथ हो साथ प्रतेश के श्रीर सिटी बस सर्विस के ड्राइवर्स के लिये अलग है, लेकिन श्रीसत २४ रववा पड़ता है। तो इस तरह एक ड्राइवर को ४४ र०, २४ र० और १० रवधा मिला कर ६० रवधा पड़ता है। सानरेश श्रीर सानरेशिया तथा D. A. ले कर एक ड्राइवर को १३० रवधा प्रति माह मिनता है।

श्रव जरा कंडक्टर की तनस्वाह भी वेली जाय। हिमाचल प्रवेश में ४०—-१०० ६० क्योंकि पहाड़ी इलाका है। बम्बई में ४०—-७० ६०, पंजाब में ४०—-१०० ६०, मैसूर में २४—-३४ ६० उड़ीसा में ४४—-६४ ६०, हैवराबाव में ४४—-६४ ६० श्रीर उत्तर प्रवेश में वे स्केल हैं। जो हाई स्कूल पास कंडक्टर्स है उनको ,०—-१०० ६० श्रीर नान मैट्रिक को ४०—-७० ६० तो इन की भी पे श्रीर सुबों से उपादा है। तो सरकार एक विभाग के लिये अलग से पे कमेटी बैठाने की बात नहीं सोच रही है क्योंकि इस विभाग में किसी कर्मचारी की पे, चाहे गजटेड हो या नान-गजटेड, श्रव्य विभागों के कर्मचारियों से कम नहीं है।

अदल जी ने कहा कि ऐक्सीडेंट्स बहुत होने हैं, उन हे नियं कनेस दि मूनल नहीं बनाये जाते हैं। इस संबंध में सेंद्रल गत्रनेंमेंट का ऐक्ट है जिसके सेक्शन ११० (ए) में लिखा है:

"The State Government may by notification in the official gazette constitute one or more accident claim tribunals...... इसमें "may" शब्द है। कम्पलसरी नहीं है। अगर कहीं ऐक्सीइंट्स होते हैं तो प्राइवेट लोगों को सुविधा है कि वे सिविल सूद बालिल करें। इस संबंध में १६५३ का ऐक्ट है, १६३६ का नहीं है। वह अमेंडेड ऐक्ट है। दोसपोर्ट कमिडनर तथा सेकेटरी की वो कमेटियां बनी हुई ह, जो ऐक्सिडेंट्स होते हैं उनकी मुआवजा बैने के बारे में बे फैसला करते हैं।

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान - स्रनुदान संख्या ७-लेखा शीर्षक १२-मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, स्रनुदान संख्या ३१--लेखा शीर्षक ४७- प्रकीर्ण विभाग और ४४ - उड्डयन, स्रनुदान संख्या ५२--लेखा शीर्षक ७०--जन-स्दास्थ्य संबंधी सुधार पर पूंजी की लागत तथा द२-राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

माननीय उग्रसेन जी ने बतनाया जिह्मीरपुर ग्रीर बांदा जिले में सड़कों का राष्ट्रीयकरण नहीं हो रहा है। १६६०-६१ में बुन्देलखंड में तीन मार्गी को लेने की व्यवस्था है। इसके ग्रलावा हमीरपुर मे १२ मार्गी का राष्ट्रीयकरण हो चुका है। बांदा तथा हमीरपुर जिलों में १५ मार्गी पर राजकीय गाड़ियां चल रही है।

श्री उग्रसेन-जो सड़कें मैने बतलाई उन पर सरकारी बसें चलेगी?

डाक्टर सीताराम—में सब चीजी पर स्नारहा हूं स्नाप सुनते जाइये। जहां तक झांसी स्नीर जालीन जिलें की बात है उस संबंध में भी भविष्य में व्यवस्था की जायगी।

बोनस के संबंध में माननीय उग्रसेन जी ने कहा कि सरकार रोडवेज के कर्मचारियों को बोनस क्यों नहीं देती, वह बड़ी समाजवादी की हामी है तो मैं उन्हें बतलाना चाहता हूं कि जनतंत्र की भावना ब्रेरित करने के लिये सरकार वे सब कार्य करेगी जो कार्य कि जनता के हित के लिये वांछनीय है। जहां तक बोनस को बात है सरकार नहीं चाहती कि उसके जो कर्मचारी कार्य नहीं करते उनको बोनस दिया जाय। हम तो काम में विश्वास करते हैं श्रोर शायद माननीय सदस्य भी इसमें विश्वास करते होंगे कि जो कमायेगा वह खायेगा श्रीर में भी इसमें विश्वास करता हूं कि जो अच्छा कार्य करता है उसको प्रोत्साहन दिया जाय। इसीलिये सरकार ने इस साल के बजट में रोडवेज के ५ हजार कर्मचारियों के लिये सवा लाख रुपया ग्रानरेरियम नथारित्रार्ड के रूप में रखा है। वीनस तो यह बात है कि वह हर एक कर्म चारी को दिया जायगा चाहे वह ग्रच्छा काम करता हो या खराब। वह हम नहीं चाहते। जिन सरकारों ने बोनस की प्रथा को ग्रपने यहां कार्यम किया है वहां ग्रगर कार्य प्रणाली पर प्रकाश डाला जाय तो श्चाप इसी निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि समाजवाद में धगर निकम्मे श्रादिमयों को खाना दिया जायगा तो समाजवाद नहीं चल सकता। हम काम में विश्वास करते हैं। जो काम करता है उसको श्रागे बढ़ने का हक है और किसी भी प्रकार से उने प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। बोनस की प्रथा हमको बिलकुल नहीं जंची ग्रीर हम उसे मंजूर नहीं करते, बल्कि उसका विरोध करते हैं।

रोडवेज में जी अपि एफ अनहीं कट रहा है। रोडवेज में सी अपि एफ अनहीं कट रहा है, इस संबंध में भी शिकायत की गयी। ए अपि ने इस संबंध में कहा कि जब तक पोस्ट्स पेंशनेबिल न हो जायं तब तक यह न काटा जाय ग्रीर उस सुझाव का हम स्वागत करते हैं।

कुछ माननीय सदस्यों ने कहा कि जनरल मैनेजर की पोस्ट खत्म कर देनी चाहिये। मैं इससे एग्री नहीं करता क्योंकि जनरल मैनेजर की पोस्ट ऐसी है जो सर्विस मैनेजर, श्रिसस्टेंट जनरल मैनेजर, सब को कोश्रांडिनेट करती है। श्राप कहे कि सुपीरियर पोस्ट खत्म कर दी जाय जिससे नीचे के श्रापस में लड़ते रहें यह उचित बात नहीं है।

कुछ माननीय सदस्यों ने श्रीर खास कर माननीय जंगबहादुर वर्मा ने कहा कि हरिजनों का रिजर्वेशन पूरा होना चाहिये। इस संबंध में में बताना चाहता हूं कि ३१ मार्च, १६५७ को हरिजनों का परसेंटेज सर्विसेज में २.७ श्रीर १.२ था। सन् १६५७–५८ में कोई ज्यादा तरक्की इसमें नहीं हुई लेकिन सन् १६५८–५६ में जो कंडक्टर्स नियुक्त किये गये उसमें हरिजनों का परसेंटेज १५.८ पूरा हुग्रा। यानी कुल ६२७ कंडक्टर्स लिये गये जिनमें ६६ हरिजन थे। सन् १६५६–६० में फरवरी तक ६१४ श्रादमी कुल लिये गये जिनमें से १६३ हरिजन थे। इस तरह से १७.५ परसेंद्र, यानी करीब करीब १८ फीसदी हरिजनों का रिजरवेशन कंडक्टर्स की पोस्ट में पूरा हो गया। कलकों की पोस्ट का जहां तक संबंध है १६ ६८–५६ में हरिजनों का परसेंद्रेज १००३ था। यह कम सकद है घोर इसके लिये श्रिक्कारियों को हिवायत की गयी है

#### [डाक्टर सीताराम]

श्रीर में श्रापके जरिये सदन को यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट के कर्मचारी इस बात के लिये सतत प्रयत्नद्याल रहते है कि हरिजनों का रिजर्वेशन पूरा किया जाय जैसी कि सरकार की नीति है। इनिजये प्रफनरों पर यह चार्ज लगाना कि वे हरिजनों का रिजर्वेशन पूरा नहीं करते ठीक नहीं है। वे इस संबंध में सतत प्रयत्नशील रहते हैं।

ड्राइवर्स का जहां तक ताल्लुक है, यह पोस्ट बिल्कुल टेक्निकल है। उसके लिये यह नियम है कि कम से कम ५ साल का ड्राइविंग लाइसेंस जिसके पास हो उसी को रखा जायगा। श्रब इसके अनुसार १०, १४, २०, २४, ४० जितने भी हरिजन वह लाये उनको रख लिया जायगा, उसमें कोई प्रतिबन्ध नहीं है। लेकिन चूंकि ड्राइवर के हाथ मे ४५-४० श्रादिमयों की जिन्दगी होती है श्रगर उसमें निकम्मे प्रादिश आ जायेगे तो बड़े स्वतरे की बात होगी।

### एक सदस्य-- क्या हरिजन निकम्मे होते हैं ?

डाक्टर सीताराम—मेने हरिजनों के लिये नहीं कहा। सभी वर्ग के लोग निकम्मे हो सकते हैं। ग्रगर हरिजनों को मौका मिले तो माननीय सदस्य से भी वे ग्रागे निकल जायेगे समय बड़ी तेजी से बदल रहा है ग्रौर कांग्रेस के जमाने में तो हरिजन जरूर ग्रागे बढ़ेगे। लेकिन मेरे कहने का मतलब यह था कि ग्रगर ड्राइनर की पोस्ट पर उचित योग्नता के ग्रादिमयों को नहीं रखा जायगा, वाहे वह किसी वर्ग के हों, तो वह एक खतरे की बात होगी। जहां तक जनप्रिय सरकार का संबंध है काफी सुविधा हरिजनों को दी जा रही है।

कुछ माननीय सदस्यों ने कहा कि लखनऊ-फैजाबाद रोड पयों नहीं ली गयी। यह भी कहा गया कि इसमें ऊंबे कर्म बारियों का हाथ है, यह कहना गलत चीज है। इसलिये यह रूट नहीं लिया जा सका कि यह फाफं लम्बा रूट है प्रीर रेलये के पेरे नल चलता है। लेकिन चूंकि माननीय सदस्य का कहना है कि जनता की भनाई के निये लेना ग्रावध्यक ह क्योंकि भाजमगढ़, फैजाबाद, बस्ती, सुल्तान ए श्रीर बाराजंकी वगेरह के काफी श्रादमी बसेज में बैठेंगे। इसलिये मेंने ट्रांसप ट किमिडनर तथा सचिय से बातचीत की है श्रीर हम लोग भी इससे सहमत है श्रीर छानबीन कर हे बनेज इस रूट पर चलाने का जल्दी ही प्रयास किया जायगा। इसमें घबराने की कोई बात नहीं है। लेकिन ग्राप जानते है कि कोई भी रूट लेने के लिये काफी रुपया खर्च करना पड़ता है, बसें खरीदकी पड़ती है श्रीर स्टाफ रखना पड़ता है। इसके ग्रावा ग्रावने सीनिन साधनों के ग्रान्तर्गत इन रूट्स को लेना पड़ता है यह एक बहुत लम्बा रूट था ग्रीर इस पर काफी खर्जा करना था इसलिये इस में बेरी हुई।

कुछ लोगों ने कहा कि हमारे सूबे ने फेयर्स दूसरे सूबों के मुकाबले में ज्यादा है। यह बात नहीं है। में आपकी आजा से कहना चाहना हूं कि हमारे यहां फेयर्स ज्यादा नहीं है। पंजाब में मेंटेल्ड रोड पर अपर क्लास का फेयर मंग्जीमम ११.६६ न०पे० और मिनिमम १.३३ न०पे० और लोअर क्लास का द.१७ न०पे० मेंग्जीमम और मिनिमम १२.६३ न०पे० हैं और अनमेंटिल्ड रोड पर अपर क्लास का १४.०० न० पे० और मिनिमम १२.६३ न०पे० और लोअर क्लास का १०.५० न०पे० मेंक्जोमम और जिनिमम १.३३ न०पे० हैं। इसी प्रकार से बम्बई में फेयर वो तरह का है। अपर क्लास का २४.६५ और १६.६ और लोअर का १३.२ और दूसरा ६.२५ न० पे० हैं। और सूबों में जो है उसके बारे में कहना नहीं चाहता हूं। हमारे सूबे में अपर क्लास का १.४५ और लोअर क्लास का ७.६६। कुछ जगहों पर जहां रेलवे चलती है वहां पर किराया ५ पाई प्रति मील हैं। अब प्रक्त होगा कि यह क्यों? यह इसलिये हैं कि जो यात्री रेल मे बैठ जाता है उसको फायदा होता है और जो नहीं बैठ पाता है उसको ले लेने के लिये यह रखा गया है और बसेज इंटोरियर में जाती हैं। इनलिये जनता के लाभ के लिये यह रखा गया है आर बसेज इंटोरियर में जाती है। इनलिये जनता के लाभ के लिये रेलवे के पैरेलल इट पर ५ पाई प्रति मील रखा गया है और ऐवरेज ७ पाई प्रति मील है। इससे स्पष्ट है कि हमारे सूबे में इसरे सूबों के मुक, बले में किराया कम है।

१६६०-६१ के श्राय-ध्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनुदान ४२१ संख्या ७--लेखा शीर्षक १२- मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण ध्यय, श्रनुदान संख्या ३१--लेखा शीर्षक ४७- प्रकीण विभाग श्रौर ४४-- उड्डयन, श्रनुदान संख्या ४२- लेखा शीर्षक ७०- जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुधार पर पूंजी की लागत तथा ८२--राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा

एक चोज यह कड़ी गई कि स्रार०टो०स्रोज्ञ० भें करप्ज्ञन है। स्रध्यक्ष महोदय मैं स्रापकी म्राज्ञा से कहना चाहना है कि म्रार० टो० म्रो० करोड़े का सेकेटरी होता है। म्रार०टी०म्रो० म्राठ रोजन्स में हैं। इसका चेयरमैन आई०ए० एत० या आई सी० एस० का कोई सीनियर म्राफितर होता है। इतके बाद कलेक्टर होता है, पोण्डब्लू व्डीव का इंजीनियर होता है ग्रीर दो सदस्य माननीय सदस्यों में से होते हैं। अब इस कमेटों के लिये यह कहना कि घूस लेकर परमिट दिये जाते हैं । गलत चोज है । माननीय सदस्य इस कमेटो के मेंम्बर होते हैं इसलिये उनके सामने यह बात कहना ठोक नहीं है। यह चीज माननोय सदस्यों के विरोध में जायगी। हम माननीय सदस्यों को प्रतिष्ठा रखना चाते है श्रीर उनको प्रतिष्ठा है इसलिये श्रगर मान लोजिये कि वहां पर किसो तरह से किसो को परिनट नहीं मिलता है क्योंकि परिमट छः हैं ग्रीर दरख्वास्तें है एक हजार तो जिसको परिमट नहीं मिजता है वह एस०टो०ए० में ग्रपील कर सकता है, ट्रिब्यूनल में अपीत कर सकता है जिस में माननीय गेंदासिंह, माननीय नेकराम शर्मा जो मेम्बर हैं। उसके ला डियार्टमेंट के सेकेटरो या डी०एल० ग्रार० चेयरमैन हैं। ग्रागर वहां भो राहत नहीं मिलती है तो हाई कोर्ट में रिट कर सकता है। हाईकोर्ट के बाद वह सुप्रीम कोर्ट में जा सकता है इसलिए यह शिकायत की ग्रार० टी० ग्रो० काफी गलत काम करता है, यह बिलकूल थोयी दलोल है। उसकी ग्रयोल ट्रिब्युतल में हो सकती है है जिसमें पचास-पचास प्रतिशत कांग्रेस ग्रीर विरोधी दल के सदस्य हैं।

एक माननीय सदस्य ने बतलाया कि परचे जेज में गड़बड़ी होती है। परचे जेज गवर्नमेंट आफ इंडिया से जो रेट्स निर्धारित है, उनके मुताबिक होती है। उसमें स्टेट गवर्नमेंट का हाथ नहीं है।

जिन माननीय सदस्यों ने विवाद में भाग लिया है उनके लिये मैं श्रपना श्राभार प्रगट करता हूं। सरकार हमेशा इस प्रकार के सुक्षायों का स्वागत करती है श्रीर यथासंभव कोशिश भी करती है कि उन पर श्रमल हो। मैं खास तौर से श्रो जंगबहादुर वर्मा, नागर जो श्रीर ऊदल जी का बहुत श्राभार प्रगट करता हूं। उन्होंने वास्तव में पथ-परिवहन के उपयोगिताश्रों को समझने का प्रयास किया श्रीर यही कारण है कि उन्होंने इसकी प्रशंसा की।

इन चन्द शब्दों के साथ में श्राशा करूंगा कि माननोय उग्रसेन जी ग्रब भी श्रपने कटौती के प्रस्ताव को वापस ले लेंगे।

श्री उपाध्यक्ष—-प्रश्न यह है कि सम्पूर्ण अनुदान संख्या ७ के अश्रीन मांग की राशि घटा कर एक रुपया कर दी जाय।

कमी करने का उद्देश्य--नीति का व्योरा जिस पर चर्चा उठाने का ग्रभिप्राय है। विभाग में ग्रपव्यय तथा ग्रव्यवस्था पर चर्चा तथा इसके विषय में सुझाव देना। (प्रश्न उपस्थित किया गया ग्रौर श्रस्वीकृत हुन्ना।)

श्री उपाध्यक्ष—प्रदत्त यह है कि ग्रतुदान संख्या ७—मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय—लेखा शोर्षक १२—मोटर गाड़ियों पर कर के ग्रन्तर्गत १,५४,७८,३०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १६६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय।

(प्रश्न उपस्थित किया गया ग्रीर स्वीकृत हुग्रा।)

श्री उपाध्यक्ष—प्रक्त यह है कि सम्पूर्ण श्रनुदान संख्या ३१ के ग्रथीन मांग की राक्षि घटा कर एक रुपया कर दी जाय।

[श्री उपाध्यक्ष]

कमी करने का उद्देश्य--नीति का न्योरा जिय पर चर्चा उठाने का स्रभिप्राय है।

परिवहन जिभाग में "रोडपेज ऐक्ट" की मान करना तथा हाईकोर्ट स्तर के जज की प्रध्यक्षता में एक पे कभीशन बैठाने का सुधाव देता।

(पदन उपस्थित किया गया ग्रोर विजाजन की मांग होने पर घंटी बजायी गयी ।)

श्री एस० जी० दत्त--ौ ग्रापसे यह प्रर्ज करना चाहना हं कि मुझे ऐसा मालूम होता है कि कुञ्ज माननीय सदस्यो को इस हाउस में स्पेशन ग्लासेज की जरूरत है।

श्री उपाध्यक्ष—-प्रकृत यह ह कि सम्पूर्ण श्रनुदान के स्रथीन माग की राक्षि घटा कर एक रुपया कर दो जाय। कमी करने का उद्देश्य--- कीति का व्योरा जिस पर चर्चा उठाने का स्रभिप्राय है।

परिवहन विभाग में "रोडवेज ऐक्ट" की मांग करना तथा हाई कोर्ट स्तर के जज की अध्यक्षता में एक पे कमोशन बठाने था सुआव देना।

(प्रश्न गुनः उपस्थित किया गया स्रोर स्रस्वीकृत हुस्रा ।)

श्री उपाध्यक्ष--प्रश्न यह है कि अनुशन संख्या ३१--परिवहन विभाग--नेखा शीर्षक ४७--पन्नीण विभाग (Miscellaneo is departments) त्रीर ४४-- उद्दुख्यन (Aviation) के अन्तर्गत १३,५८,६८,३०० रुपये को माग विसोध वर्ष १६६०-६१ के लिये स्वीकार को जाय।

(प्रक्त उपस्थित किया गया ग्रीर स्वीकृत हुन्ना।)

श्री उपाध्यक्ष--पश्न यह ह कि सम्पूर्ण अनुदान ५२ के श्रधीन मांग की राशि में सो रुपये की कमी कर दो जाय। कमी करने का उद्देश्य--विशिष्ट शिकायत जिस पर चर्चा उठाने का श्रभिप्राय है।

मोटर गाड़ियों को खरीदारी में भ्रब्टाचार तथा ग्रधिकारियों की ग्रनावश्यक गाड़ियों का दे देना।

(प्रश्न उपस्थित किया गया श्रोर श्रस्वीकृत हुन्ना।)

श्री उपाध्यक्ष — प्रश्न यह है कि ग्रानुदान मंख्या ५२ — कृषि ग्राभियंत्रण, सरकारी बस सेवाग्रों, सहायता तथा पुनर्वासन की योजनाग्रों ग्रादि पर पूंजी की लागत — नेखा शीर्षक ७० — जन-स्वास्थ्य संबंधी सुधार पर पूंजी की लागत तथा ६२ — राजस्व लेखें के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा के ग्रन्तर्गत २,११,५४,२०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १६६० — ६१ के लिये स्वीकार की जाय।

(प्रक्त उपस्थित किया गया स्रोर स्वीकृत हुस्रा।)

(इसके बाद सदन ५ बजे भ्रगले दिन के ११ बजे तक के लिये स्थगित हो गया।)

देवकीनन्दन मित्थल सचिव, विधान सभा, उत्तर प्रदेश ।

लखनऊ : १८ मार्च, १९६० ।

### नत्थी 'क'

(देखिये तारांकित प्रक्त ५ का उतर पीछे पृष्ठ ३२५ पर )

## सूची

- (१) श्री ग्रतर्रासह, सी० ग्राई० डी० इन्सपेक्टर ने ग्रपनी भर्ती के समय ग्रपने ग्रापको एक इयाम सिंह का, जिससे उनको कोई सम्बन्ध नहीं था, संरक्षक बतलाया।
- (२) उन्होंने ग्रपना कार्य करने का स्थान मैनपुरी में बना रखा था जहां सरकारी कार्य न करके निजी मुकदमों की पैरवी करने के लिये जाया करते थे ग्रौर सरकार से सफर भत्ता लिया करते थे ।
  - (३) उन्होंने ग्रवैधानिक रूप से दो लाख से ग्रधिक धन पैदा किया था।

#### नत्थी 'ख'

### (देखि ने तारांक्ति प्रश्न ७ का उत्तरपीछे पृष्ठ ३२६ पर)

# (१) प्राथमिक स्कूलों की ग्रध्यापिकाग्रों के लिए २८८ ग्रावास गृहों का निर्माण

उक्त श्रावास गृहों के निर्माण के लिये कुछ ८,६४,००० रु० का श्रनावर्गक श्रनुदान ३,००० रु० प्रति श्रावास गृह की दर से श्रन्तरिम जिला परिषदों को दिया गया है । इन गृहों मे स्कूलों के लगने की भी जगह होगी ।

# (२) जूनियर हाई स्कूलों की ग्रध्यापिक। ग्रों के लिए ७० ग्रावास-गृहों का निर्माण

उक्त म्रावास गृहों के निर्माण के लिये कुल २,८०,००० रु० का म्रनादर्तक म्रनुदान ४,००० रु० प्रति गृह की दर से दिया गया है। प्रत्येक म्रावास गृह में दो म्रध्यापिकाम्रों के रहने की व्यवस्था होगी।

## (३) दाइयों की नियुक्ति

स्कूलों में ४०० म्रंज्ञकालीन दाइयों की नियुक्ति के लिये ३६,००० रु० का म्रनावर्तक म्रनुदान म्रन्तरिम जिला परिषदों को दिया गया है। इन दाइयों का वेतन १५ रु० प्रति मास है।

## (४) छात्राध्यापिकाग्रों को बुक ऐण्ड के लिए ग्रनुदान

एच० टी० सी०/जे० टी० सी० के प्रथम वर्ष में पढ़ने वाली ८१० छात्राग्रो को १०० ६० प्रति छात्रा की दर से संचालक द्वारा बुक एड दिया जाना स्वीकार किया गया है। एच० टी० सी०/जे० टी० सी० के द्वितीय वर्ष मे पढ़ने वाली ३८० छात्राग्रों को इसी प्रकार ५० ६० प्रति छात्रा की दर से बुक एड दिया जाना स्वीकार हुग्रा है।

# (५) कक्षा ७ से १० तक में पढ़ने वाली बालिकाओं के लिए छात्रवृत्तियां

इस मद में कुल १,२०,००० रु० का व्यय संचालक द्वारा किया जाना स्वीकार हुन्ना है। छात्र वृत्तियों की धनराद्वा ३० रु० प्रति मास है। ये छात्रवृत्तियां केवल उन्ही ह्यात्राश्रों के लिये रवीकार की गई है जो पढ़ाई समाप्त होने पर ग्रामीण क्षेत्रों मे श्रध्यापन कार्य करने का ग्राइवासन दें।

नत्थी 'ग्'

(देखिये तारांकित प्रक्ष ३० का उत्तर पोछे पृष्ठ ३३१ पर )

पिछले पांच वर्षों में बोर्ड की परीक्षाग्रों में पंजीकृत प्रविष्ट तथा उत्तीर्ण छात्रों की संख्या

)				होड	स्मात		इंटरमीडिएट	Ы
	वब ,		पंजो परीक्षार्थी	प्रविष्ट परीक्षार्थी	उत्त <i>ी</i> णं परीक्षार्थी	पजीकृत परीक्षार्थी	प्रविघट परोक्षार्थी	उत्तीर्ण परोक्षार्थो
	~		6٠	         	>	<b>→</b>	J 192	.       9
<b>የ</b> ድሂሂ	:	•	2895	98400C	ca b × a			
१९४६	:	:	१ ५५०३७	525436	70 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0	5 4 6 4 E	oooရရ	34462
গ্রহ	•	:	<b>१</b> वर्ष १ वर्ष	\$ 5 4 7 7 4 \$ 6 6 5 9 9 \$	9 K C X S	* ใ		<u> </u>
१९५५	:	•	१६७२२०	१ - १ - १	* # # # # # # # # # # # # # # # # # # #	1 10 44 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10	७४५० १	ອ ພ ພ ຫ
१६४६	:	<b>:</b>	श्रेट के किया क जिल्ला के किया	१६२४६२	मुक्रम	1440 1988 1988		4 4 6 4 7 7 8 4 8

		कुल वसल करने	مادم ههاما	\$,02,206.20 26,062.6 8,84,068.06 2,53,663.82
ı		बकाया में कमी	w	86,402.85 8,605.85 80.402.20
	पुष्ठ ३३८ पर )	वस्ल करने योग्य बकाया	<b>x</b>	क २,४६,४६०.५६ २६,५५०.४६ १,६४,६५०.४६ ३,७४,३३५.६२ ८,१८,३७७.७३
'घ'	(देखिये तारांकित प्रश्न ५० का उत्तर पाछे	वाषिक वास्तविक बृद्धि	>0	कु ३६,७४१.६५ ४,२६२.५४ ३०,६३४.४५ ४४,६७१.६८
नत्थी 'घ'	रे तारांकित प्रकृत ४ 	m	क० हे,४२६.८३ ४५३.८० ३,६५२.१७ १७,८१३.८०	
	(देखि	मांग में वाषिक वृष्ट	8	क्० ४६,२६५.४६ ४,७१६.३४ ३४.५८६.६२ ७३,४५५.६८ १,६२,०५७.१२
	1			::::::
		तहसील		मुख्त उन्नाव हसनगंज मफीपुर पोग

#### नत्थी 'ङ'

(देखिये तारांकित प्रश्न ६३ का उत्तर पीछे पृष्ठ ३४० पर )

पत्र-संख्या ३१/६०

सोक्षलिस्ट पार्टी, बरहज, (देवरिया)

3-7-9840

माननीय राजस्व मंत्री, उत्तर प्रदेश, लखनऊ ।

प्रिय महोदय,

देवरिया जनपद में बेलडांड, देवरिया रुद्रपुर नगवा, भर्टाभगारी रोड, पगरा-रामबोला तथा बसया तुर्कयही रोड पर गत १ माह से सहकारी आदेशानुशार टेस्ट वर्क चल रहा था, १०,००० से आधिक मजदूर फेम्मिन कोड के अनुसार ६, ८ तथा १० आना प्रति दिन मजदूरी पाते थे और नियत मात्रा में मिट्टी काटकर देते थे।

दिनांक २३ जनवरी को जिलाधीश, देवरिया ने एक श्रादेश देकर प रु० प्रति हजार घनफुट मिट्टी काटने के लिये कहा है। सभी टेस्ट वर्क बन्द हो गये है। १०,००० की रोजी छिन रही है। जिलाधीश का श्रादेश ग्रदेधानिक है। मजदूरों का पुराना पैसा भी नहीं दिया गया है। हाहाकार मचा है। ग्रतः निवेदन है कि ग्राप ग्रविलम्ब हस्तक्षेप कर हजारों ग्रकाल पीड़ितों को भूख से, मरने से बचाये तथा जिलाधीश के उवत ग्रादेशों को रद्द कर दे। ग्रादेश की प्रतीक्षा मे।

क्रापका (ह०) उग्रसेन सदस्य विधान सभा ।

नत्थी 'च'
(देखिये तारांकित प्रक्ष्म ६६ का उत्तर पीछे पृष्ठ ३४२ पर ।)
विवरण-पत्र १-१-५६ से २०-२-६० तक तथा १६५८ में जिला
फर्क्खाबाद में हुए कत्ल तथा डकैतियों की थानेवार संख्या

			कत्ल		डकैती	
ऋम- संख्या	नाम थाना	११५६ से २ तक	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	१९५५	१-१-४६ से २०-२-६० तक	१९५व
8	२		ą	ጸ		Ę
१	फर्रुखाबाद	• •	k	ሂ		
२	फतेहगढ़	• •	१	२		8
₹	ठठियां	• •	ጸ	१	₹	₹
ሄ	सौरिख	• •	7	8	ሄ	7
ሂ	कन्नौज	• •	ሂ	१	द	ş
Ę	गुरसहायगंज	• •	Mind	४	१	7
૭	कमालगंज	• •	ሂ	१	-	;
5	छिबरामऊ	• •	₹	₹	ঽ	Ŧ
3	इन्दरगढ़		Ę	४	libraria .	<b>ş</b>
१०	राजेपुर	• •	Ę	२	२	8
११	शमशाबाद	• •	२	१	ą	-
१२	नवाबगंज	• •	Ę	ą	४	-
₹ ₹	कम्पिल	• •	२		२	
१४	मुहम्मदाबाद	• •	१	४	Ę	8
१५	कायमगंज	• •	5	Ę	ą	<u></u>
	योग	Restrictive de la constante de	38	३८	3 =	<b>१</b> ६

नत्थी 'छ' (देखिये तारांकित प्रश्न ७३ का उत्तर पीछे पृष्ठ ३४२ पर) सन् १६५६ में बस्ती जिले के थानों में जो हत्याएं व डकैतियां हुईं उनका विवरण

ऋम- संख्या		थाने का नाम		हत्य	ाश्रों की संख्या	डकैतियों की संख्या
8	3	· ************************************			₹	8
१	 रुघोली	• •	• •	• •	२	8
२	परसरामपुर	• •	• •	• •	१	२
Ę	पैकोलियो	••	• •	• •	<b>ર</b>	8
४	ढेवखवा	• •	ř. •	• •	१	-
×	बांसी	• •	• •	• •	8	*****
Ę	छावनी	• •	• •	••	२	
ø	चिल्हिया	• •	• •	• •	8	-
द	दुवारा	• •	• •	• •	8	
3	इटवा	• •	• •	• •	8	_
१०	कलवारी	• •	• •	• •	ঽ	-
११	कोतवाली	••	• •	• •	8	-
१२	महुली	• •	• •	• •	२	_
१२	सोनहा	••	• •	• •	×	4000
१४	त्रिलोकपुर	• •	• •	• •	8	-
१५	उसका	• •	• •	• •	8	-
7				-		, <u>1848-1844 - 1848 - 1848</u>
		योग	• •	<b>.</b> •	२४	8

नत्थी 'ज'
(देखिये तारांकित प्रश्न १०३ का उत्तर पीछे पृष्ठ ३४७ पर)
डकेती एवं कत्ल ग्रगस्त, १६५६ से ६ फरवरी, १६६० तक
जिला फर्रुखाबाद—

ऋम- बंख्या	नाम थानः			ड	<b>क्ती</b>	कत्ल
8	5	ingeni jilaphari jagasani tarabay (Primot Indally)	a may be seemed directly principal transfer death to principal transfer death and the seemed transfer death and	ng maning pagging kitaraka apangga paggag di Apanda gangga	n e	8
<del></del> -	कोतवाली फर्रुखाबाद	• •	* *	• •	female .	
ঽ	कोतवाली फतेहगढ़	• •	• •		-	ş
ষ	इन्दरगढ़ ै	• •	• •	• •	nered.	•
४	सौरिख		• •	• •	२	4
ሂ	ठठिया	• •	• •	• •	8	7
Ę	कमालगंज	• •	• •	• •		5
૭	ग्रसहायगंज	• •	• •	• •		-
ಧ	छिबरामङ		• •		१	;
3	कन्नोज	• •	• •	• •	४	;
१०	कायमगंज		• •	• •	२	}
११	राजेपुर	• •	• •	• •	१	4
<b>१</b> २	नवाबगंज		• •	* *	¥	*
१३	<b>मु</b> हम्मदाबाद	• •	• •	* *	१	;
१४	शमशाबाद	• •	• •	* *	२	:
१५	कम्पिल	• •	• •	• •	8	
			योग	America (Alpha	₹ <b>5</b>	21

# नत्थी] 'झ'

# (देखिये तारांकित प्रक्ष्म १२१ का उत्तर पीछे पृष्ठ ३५० पर) तालिका<sup>‡</sup> 'क'

# हिन्दी समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की सूची १९५९

ऋम- संख्या	पुस्तक का नाम		राज्ञ लेखक या स्रनुवादक का नाम
१	जाति विज्ञान का ग्राधार (ग्रनुवाद)	• •	श्री विनोदचन्द्र मिश्र ।
२	संस्कृत नाटककार (मौलिक)	• •	श्री कान्तिकिशोर भरतिया।
¥	राजनय (मौलिक)	• •	श्री राघवेर्द्रासंह ।
४	उर्दू हिन्दी शब्द कोष	• •	स्व० श्री मुहम्मद मुस्तफा खां।
ሂ	शक्ति वर्तमान ग्रौर भविष्य (ग्रनुवाद)		श्री सत्यप्रकाश गोयल ।
Ę	भरत का संगीत सिद्धान्त (मौलिक)	• •	श्री कैलाशचन्द्र देव वृहस्पति।
ও	सूक्ति सागर		श्री रमाशंकर गुप्त ।
5	विमान श्रौर वैमानिकी (मौलिक)	• •	श्री चमनलाल गुप्त ।
3	उद्योग ग्रौर रसायन		डा० गोरखप्रसाद ।

# तालिका 'ख' पुस्तक प्रकाशन सम्बन्धी श्रनुदान

लेखक प्रकाशक का नाम	पुस्तकों का नाम	प्रकाशन श्रनुदान (श्रनावर्त्तक)
१देशबन्धु पुस्तकालय, मथुरा	१ब्रज की रास लीला ] २ब्रज की कला   ३ब्रज की लोक पूजा   ४सूर का वसन्तवर्णन	₹0 १,000
२श्री ब्रजलाल भूषण पांडे <i>य</i> , हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।	भारतीय तत्वचिन्तन	७५०
३—-श्रो भगीरथप्रसाद दीक्षित, डाली- गंज, लखनऊ ।	"पंच प्रज्ञा"	१,२५०
४इथ्नोग्रैफिक एंड फौक कल्चर सोसाइटी,लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।		₹,०००
५श्री राजेन्द्रप्रताप, ५२४, प्रहलाद बाटिका, मेरठ।	स्वस्थ व युवा कंसे रहें	[१,०००
६श्री उपेन्द्रनाथ ग्रहक, ५, खुसक- बाग रोड, इलाहाबाद ।	संकेत उर्वू (हिम्बी)	ৢঽৢ৻ৼ৹৹
७श्री विनोदीलाल, शिंदे की छावनी, लक्कर (मध्य प्रदेश) ।	बिज्ञान विनोद, भाग २	२००
८——समाज विज्ञान परिष <b>व्, काशी विद्या-</b> पीठ, वाराणसी ।	१—भारत में लोक संस्कृत े २—वैविक संस्कृति के तत्व∫	, 2,000
९—संम्यव मुहम्मव मिर्जा, मोहज्जब, लखनऊ।	उर्दू-हिन्दी शब्दों का कोष भाग २ से ४।	[7,000
१०हिन्दी सभा, सीतापुर 🧯 .	श्री कृष्ण बिहारी मिश्र के लेखों के प्रकाशनार्यं।	8,000
११श्री भगवानवास ग्रवस्थी, इलाहाबाद	संसार ज्ञान	8,000

लेखक प्रकाशक का नाम पुस्तको	का नाम	प्रकाशक श्रनुदान (श्रनावर्त्तक)
		₹∘
१२—श्री त्रिवेगीदत्त द्विवेदी, वाराणसी .	. कानूमी शब्दों का श्रंग्रेजी-हिन्दी कोष ।	१,५००
१३िलंग्विस्टिक सोसाइटी स्राफ इंडिया परवदा, पूना ।	(ग्र) वर्ष १६५८-५६ के ग्रनुदान का रिग्रलाटमेन्ट ।	7,000
	(a) (1) Supplement to vol 20 of Indian Lingu- tics (2) Comparative gramm of Indo Aryan (3) Lushai Grammer	uis- i
१४श्री वैक्ट राव रैजम, लखतऊ	श्री भर्त्तहरि वैराग्य शतक	२,५००
१५—-वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, वारःगाती	संस्कृत शब्द कोष]	१२,०००
१६——श्री श्रनन्त कृष्ण शास्त्री, वाराणसी	द्वैत एवं घ्रद्वैत का तुलनात्मक म्रध्ययन ।	्१,०००
१७—श्री श्रमीन सलोनवी	जवाहरात (उर्दू) ••	900
१८——श्री  बाबू राव कुमठेकर, नैनीताल	बच्चन साहित्य परिचय	7,000
	योग ••	४५,१००

नत्थी 'ञा' (देखिये तारांकित प्रश्न १४५ का उत्तरपीछेपृष्ठ ३५३ पर)

जिला			पुराने नार्मल स्कूलों की संख्या	नवीन नार्मल स्कूलों की संख्या	कुल
~~~~ १~~देहरादून		* •	8	<ul> <li>*</li> </ul>	8
२सहारनपुर	• •	• •	१	8	२
३मुजफ्फरनगर	• •	• •	१	२	3
४मेरठ	• •	• •	२	२	ጸ
५—–बुल-दशहर	• •	• •	१	የ	२
६—–श्रलीगढ़	• •	• •	8	8	5 11 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12
७मथुरा	• •	• •	२	8	₹
⊏मैनपुरी	• •	• •	8	8	२
६~ -एटा	• •	• •	ş	8	२
१०बरेली	• •	• •	8	१	२
११—-बिजनौर	* *	• •	१	१	२
१२—-बदायूं	• •	• •	Ą	••	8
१३ —शाहजेहांपुर	• •	• •	8	8	ર
१४मुरादाबाद	• •		ę	• •	8
१५पोलीभीत	•	• •	ě	8	Ŕ
१६रामपुर	4 *		8	••	શે
१७फर्रुबाबाद			ર	8	٠ ૨
१८—इटावा	• •		રે	ર	<b>ર</b>
१६कानपुर			į.	રે	, a
२०फतेहपुर	• •	• •	ફે	Ŕ	<b>ર</b>
२१—=इलाहाबाद	• •		è	ફે	ີ
२२बांदा	• •	• •	9	•	9
२३हमीरपुर			9.	8	, G
२४—–हनार् <b>ड</b> र २४—–जालीन			v 9	8	ສ
२५वाराणसी २५वाराणसी			, 5	8	7. 3
२६——मि <b>र्जा</b> पुर	• •	• •	२ १		<b>ર</b> ર
२७—-जीनपुर २७—-जीनपुर	• •	* *		<b>१</b>	
	• •	• •	ş	*	<i>२</i> १
२८—गाजीपुर	• •	• •	8	• •	\$
२६बिलिया	• •	* *	8	• •	۶ ع
३०—गोरखपुर २० — —	• •	• •	7	ζ	•
३१—देवरिया]	• •	• •	१ १ १	8	3
३२बस्ती	• •	• •	ζ	8	२ २ ३
३ २— <b>अ</b> ।जनगढ़	• •	• •		8	۲
३४—–नैनीताल	• •	* *	₹	8	<b>ર</b>
३ <b>५पा</b> लगोड़ा	. •	• •	8	• •	8

जिला			पुराने नार्नस स्कूलों की संस्या	नवीन नार्मल स्कूजोंकी संस्या	कुल
३६पौड़ी-गढ़वाल	• •	• •	8	8	<del></del>
३७——लखनऊ		• •	२		२
३८—-उन्नाव	•		8	१	२
३६रायबरेली		• •	8	Ş	२
४०सीतापुर	• •		8	१	<b>ર</b>
४१—–हरदोई	• •		8	8	7
४२खीरी	• •		8	8	२
४३गोंडा	• •		\$	१	२
४४बहराइच	• •	• •	8	Ŗ	२
४५—–सुल्तानपुर			8	8	ર
४६प्रतापगढ़			8		77 77 801 801 801 801 801
४७टेहरी-गढ़वाल	• •	• •	8		१
४८श्रागरा	• •	• •	• •	8	१
४६—-बाराबंकी			• •	8	\$
५०फैजाबाद				Ş	१
५ <b>१—–झां</b> सी	• •	• •	• •	8	\$
	योग		ধ্ব	४२	દુષ્ઠ
	बालिक	ाश्रों के न	ार्मल स्कूल		
१मेरठ			<b>.</b>		ş
२बुलन्दशहर	• •		₹	• •	Ę
३श्रागरा	• -	• •	8	• •	8
४बदायूं	• •		8	• •	\$ ? <b>?</b>
५इलाहाबाद	• •	• •	१	<b>†</b> •	8
६मिजोंपुर	• •		8	• •	\$ \$
७गोरखपूर	• •	• •	१	• •	8
<b>५—-स्</b> ोतापुर	• •	• •	१	* *	Ş
<b>९—-फैजाबाद</b>	* *	• •	ę	* *	8
१०==उन्नाव	• •	* *	8		8
११मल्माङ्ग	• •	f ¥	•	1 0	ę
१२सहारनपुर	3 V	v .	v *	ę.	į
<b>३ ३फासपुर</b>		<b>.</b>	÷ a	ę	Ž
३४बाराणसी			6 6	ě	ě
१५गाजीपुर	• •				ě
१६बलिया	• •	• •	• •	ě	8
१७प्रतापगढ	• •	• •	• •	ę	8
_	मीप	 	# P	ing term parameter desir general gener	<b>1</b> 9

## नत्थी 'ट'

(देखिये तारांकित प्रका १५७ का उत्तर पी के पृष्ठ ३५४ पर)

### तानिका

संबंधित ६ बैठकें निम्नलिखित तारीखों को हुई---

१---सारील २४-६-१६५५,

२---तारीख ४-७-३६४६,

३--सारील ३०-१-१६४६,

४--तारीख २७-१२-१६५६,

५--तारील ७-१०-१६५७,

६--सारीख १७-१-१६६०।

नत्थी 'ठ'
(देसिये तारांकित प्रक्त १६० का उत्तर पीखे पृष्ठ ३५४ पर )
जिला शाहबहांपुर के झन्तर्गत थाना सेंहरामऊ, जनवरी में सन् १६५८-५६
में हुई डकेती, राहजनी, खोरी और कत्ल की संख्या नीचे दी हुई है

साम			उक्ती	राहजनी	घोरी	करल
१९५८	• •	• •	¥	?	२२	• •
<b>३</b> ह५ह	• •	• •	<b>\</b>	₹	४१	२

## नत्थी 'ड'

(देखिये तारांकित प्रश्न १६१ का उत्तर पीछे पृष्ठ ३५४ पर) उक्त वारदातों में कितनी घटन।ग्रों का पता चला, कितने मुकदमे चले व कितन ग्रमियुक्तों को सजा हुई, इसका विवरण नीचे दिया गया है

				ाता चला	मुकदमे चले	श्रभियुक्त सजा हुये
डकैती ,,	१६४८	• •	• •	₹	ৃষ	3
	3238	• •	• •	8	₹	• •
राहजनी	१६५८	• •	• •	१	8	8
	3878	• •	• •	٦	₹	8
चोरी	१६५८		• •	3	3	<b>१</b> ३
	१६५६		• •	<i>७ ५</i>	₹ ′9	8 8
कत्ल	१६५५					
	3238	• •		₹	२	

नत्थी 'ढ' (देखिये तारांकित प्रक्ष्म २२३ का उत्तर पीछे पृष्ठ ३६२ पर) १ जनवरी, १९५८ से सन् १९५९ की ग्रविध मे

			संख्या जिनकी		जो नुक्सान हुक्रा		
				र । जनका टिं हुई 	धन व	सम्पति	जन
					হ০ ন	) पें ०	
वोलोभीत .	. डकैती	• •	• •	२४	३०,६५१	.२५	ધ્
	कत्ल	• •		२६	_	_	३२
नेनोताल .	. डकैती		• •	<i>१३</i>	३१,०४=	. o ¥	१
	कत्ल	•	•	४२	-	_	४७
				والمراج والمراج والمراجع ويراجع الماريخ والمراج والمراج والمراج			المدار إلى ومرادات

# उत्तर प्रदेश विधान सभा

# शनिवार, १६ मार्च, १६६०

विधान सभा को बैठक सभा-मण्डप, लखनऊ मे ११ बजे दिन में उपाध्यक्ष, श्री रामनारायण त्रिपाठी, की ग्रध्यक्षता में ग्रारम्म हुई।

# उपस्थित सदस्य--३३८

म्रक्षयवर्रासह, श्री प्रजीज इमाम, श्री श्रतीकुल रहमान, श्री **प्रनन्तराम वर्मा, श्र**ी म्रब्दुल रऊफ लारी, श्री श्रब्दुल लतीफ नोमानी, श्री श्रब्दुस्समी, श्री श्रभयराम यादव, श्री ग्रमरनाथ, श्री श्रमोलादेवी, श्रीमती म्रयोध्यात्रसाद ग्रार्य, श्री भ्रली जर्रार जाफरी, श्री ग्रवधेशकुमार सिनहा, डाक्टर ग्रहमद बल्दा, श्री श्रात्माराम पांडेय, श्री इरतजा हुसैन, श्री इस्तफा हुँसैन, श्री उग्रसेन, श्री उदयशंकर, श्री उमाशंकर शुक्ल, श्री उल्फर्तांसह, श्री ऊदल, श्री एस० ग्रहमद हसन, श्रो श्रोंकारनाथ, श्रो कन्हैयालाल वाल्मीकि, श्री कमरुद्दीन, श्री कमलकुमारी गोईंदी, कुमारी कमलेशचन्द्र, श्री कल्याणचन्द मोहिले, श्री कल्याणराय, श्री कामताप्रसाद विद्यार्थी, श्री कालीचरण ग्रग्रवाल, श्री

काशीत्रसाद पांडेय, श्री किशनसिंह, श्री कुंवरकृष्ण वर्मा, श्री कृपाशंकर, श्री केशभानराय, श्री केशव पांडेय, श्री केशवराम, श्री क लाशकुमार्रासह, श्री कैलाशनारायण गुप्त, श्री कैलाशवती, श्रीमती कोतवाल सिंह भदौरिया, श्री खजानसिंह चौघरो, श्री खमानीसिंह, डाक्टर खयालीराम, श्री खुशोराम, श्री लूबसिंह, श्री गंगाधर जाटव, श्री गंगाप्रसाद वर्मा, श्री (एटा) गजेन्द्रसिंह, श्री गज्जू राम, श्री गणेशप्रसाद पांडेय, श्री गनेशचन्द्र काछी, श्री गनेशीलाल चौधरी, श्री गयात्रसाद, श्री ग्रयुर ग्रली खां, श्री गरीबदास, श्री गुप्तारसिंह, श्री गुरुप्रसादसिंह, श्री गुलाबसिंह, श्री गेंदादेवी, श्रीमती गेंदासिह, श्री गोकुलप्रसाव, श्री

गोवाली, श्री सोवीकृष्ण आजाद, श्रो गोविन्दनारायण तिपाणी, श्री गोविन्दसहाय, श्री गोबिन्दसिह विष्ट, आ गौरीराम गुप्त, श्रो गौरीशंकर राय, श्री घासीराम जाटव, श्री चन्द्रजीत यादव, थीं: चन्द्रदेव, श्री चन्द्रहास मिश्र, श्री चन्द्रावती, श्रीमतो चन्द्रिकाप्रसाद, श्री चिरंजीजाल जाटव, श्री छत्तरसिंह, श्री छंदीलाल, श्री जंगबहादुर वर्धा, श्री जगदीशनाराषण, श्री जगदोशनारायणदत्तरित, श्री जगदीशप्रसाद, श्री जगसाथ चौधरो, श्रो जगन्नाथप्रसाद, श्री जगसाय लहरी, श्री जगपतिसिंह, श्री जगमोहर्नाराह तेगो, श्री जगर्नीरसिंह, श्री जप्रगोपाल, डावटर जयदेवसिंह ग्रार्ग, श्री जबराम बर्मा, श्री जवाहरलाल, श्री जवाहरलाल रोहतगी, जाउदर जागेश्वर, श्री जगलकिशोर, ग्राचार्य जोखई, श्री ज्वालाप्रसाद कुरील, श्री झारखंडेराय, श्री होकाराम, श्री (ब्रदायुं) टोकाराम पुजारी, श्री लाराचन्द माहेश्वरी, श्री तारादेवी, डाक्टर तिरमलसिंह, श्री तेजबहाधुर, श्री बल, थी एस० जी० पर्यागांशम, अर् ष्रारथप्रसाव, श्री बाताराम चौधरी, भी

दीनदयाल् करुण, श्री दीनस्याम सारभी, श्री दीवंकर, भ्रत्यार्थ एयोपिन, धी देव तरायण भारतीय, श्री दे रतम, श्री द्वारकात्रसाद सित्तल, श्री इत्रिकाप्र भट, अर (फर्रुपाबाद) हारिराप्रपाद गाउँय, श्रो (गोरखपर) धनीराम, श्री चनुषधारी पांज्य, शी पर्वदत्त वैग्र, श्रं धर्मपालनिह, श्री नत्थाराम राप्रत, श्री नत्यसिष्ठ, औं (बरेली) नत्यसिंह, श्री (मैनपुरी) नन्दक्तारदेय दाध्यहर, श्रो तन्द्रशम, श्री नग्देशींसह दिविचानवी, श्री नरेन्द्रशित भंडारा, श्री नरेन्द्रसिंह बिन्द, थी। नवलिकशार, श्री तार्गेश्वरप्रसाद, श्री नारायणदत्त तिवारी, श्री नारायण ३.स पापी, श्री नेरुराम रार्मा, श्रां पद्धरराम, धो परमानन्द सिनहा, श्री परमेदारदीन धर्मा, श्री प्रसामयती सुद, श्रामती प्रतापबहादर सिंह, श्री त्रतापभानत्र प्राश्तिह, श्री त्रतापसिष्ठ, श्रं। प्रभावती मिश्र, श्रीमती प्रभदयाल, श्री फनेश्सिह्रराणा, श्री, बंशीवर श्वाल, श्री बनदेवसिह स्रायं श्री, बसंतलान, श्री बादामितह, श्री बाबुराम, श्री बाबुलान कुग्मेश, श्री भारतक राम, भी बिख्यनी बास, श्रीमती बिहारमर्सित, औ बिहारीलाल, भी

ब्द्धींसह, श्रीं ब्लाकीराम, श्री बुजबामीलाल, श्री बजरानी मिश्र, श्रीमती बंचनराम, श्री बेचनराम गुप्त, श्री बनीबाई, श्रीमती बैजूराम, श्री ब्रजनारायण तिवारी, श्री ब्रजभूषण उत्रण, श्री ब्रह्मदत्त दीक्षत श्री भगनतीत्रसाद दुबे, श्री भगवर्तासिह विशारद, श्री भगौतीप्रसाद वर्मा, श्री भजनलाल, श्री भीखालाल, श्री भुवनेशभूषण शर्मा, श्री भूपकिशोर, श्री मंगलाप्रसाद, श्री मंजूरलनदो, श्री मथुराप्रसाद पांडेय, श्री मदनगोपाल वैद्य, श्री मदन पांडेय, श्री मन्नालाल, श्री मलखानसिंह, श्री मलिखानसिंह, श्री (मैनपुरी) महमद ग्रली खां, कुंवर (गेरठ) महमूद ग्रली खां, श्री (सहारनपुर) महमूद हुसैन खां, श्री महादेव प्रसाद, श्री महावीर प्रसाद, शुक्ल, श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री महीलाल, श्री माताप्रसाद, श्री मान्घातासिंह, श्री मिहरबान सिंह, श्री मुकुटविहारीलाल ग्रग्रवाल, श्री मुक्तितनाथ राय, श्री मुजफ्फर हसन, श्री मुबारवा ग्रली खां, श्री मुरलीधर, श्री मुरलीधर कुरील, श्री मुहम्मद हुसैन, श्री मूलचन्द, श्री मोतीलाल ग्रवस्थी, श्री मोहनलाल, श्रो

गोहनलाल बर्मा, धी मोहनसिह येहता, थी र पुन त्रसाद गुवल, श्री य (नासिंह, श्रेः (ग.जेपुर) पराषालिंह, थी यरा वादेवी, श्रीसती या ६ न्द्रदत्त दुवे. राजा रघुनाजनहाय याद्य, र्ऋा रघुंबीरसिंह, श्री (एटा) रघुवीरनिंह, श्री: (मेरर्ट) रमाकांतिंह ह, श्रं: रलावाथ हैरा, की रमेशचन्द्र शर्मा, श्रो राघवरास पा"डेब, श्री राजकिशोर राव, श्री राजदेव उपाध्याय, श्री राजतारायण, श्री राजनारायणसिंह, श्री राजबिहारीसह, थी राजाराग शर्मा, श्री राजोन्द्रकिशोरी, श्रीमती राजेन्द्रकुनारी, श्रीमती राजेन्द्रदत्त, श्री राजेन्द्रसिंह यादव, श्री राम्ब्रभिलास, श्री रानकिकर, थी रामहरूण जैसवार, श्री रामहत्व्य सारत्वत, श्री रामचन्द्र उनियाल, श्री रामचन्द्र विकल, श्री रामजील।ल सहायक, श्री रामजी सहाय, श्री: रामदास ज्ञायं, श्री रामदीन, श्री रामनाथ पाठक, श्री रामपाल त्रिवेदी, श्री रामप्रसाद, श्री रामप्रसाद देशमुख, श्री रामप्रसाद नौटियाल, श्री रामबली, श्री राममूर्ति, श्री रामरतनप्रसाद, श्री रामलक्षण तिवारो, श्री रामलखन मिश्र, श्री रामलखनसिंह, श्री (जीनपुर) रामलाल, श्री

रामवचन यादव, श्री रामशरण यादव, श्री रामसनेही भारतीय, श्री रामसमञायन, श्री रामसिंह चौहान वैद्य, श्री रामसुन्दर पांडेय, श्री रामसूरतप्रसाद, श्री रामस्वरूप यादव, श्री रामस्वरूप वर्मा, श्री रामहेर्तासह, श्री रामायणराय, श्रो रामेश्वरप्रसाद, श्री रुकन्दीन खा, श्री रूर्मासह, श्री लक्ष्मणसिंह, श्री लक्ष्मीनारायण, श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य, श्री लखमी निह, श्री लालबहादुर, श्री लालबहायुर सिंह, श्री लुत्फ ग्रली खां, श्री लोकनाथमिह, श्री वजरंगबिहारी ता रावत, श्री वशिष्ठनारायण शर्मा, श्रो वसी नक्तयी, श्री वासुदेव दोक्षित, श्रो विचित्रनारायण शर्मा, श्री विजयशंकरसिंह, श्री विद्यावती वाजपेयी, श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन, श्रीमती विशालसिंह, श्री वीरसेन, श्री व्रजगोपाल सबसेना, श्री व्रजविहारी मेहरोत्रा, श्री शंकरलाल, श्री शकुतलादेवी, श्रीमती शब्बीर हसन, श्री शमसुल इस्लाम, श्री शम्भुदयाल, श्री शिवगोपाल तिवारी, श्री शिवप्रसाद, श्री (देवरिया) शिवप्रसाद नागर, श्री (खीरी) शिवमूर्ति, श्री शिवराजबलीसिंह, श्री **क्षिवराजसिंह यादव, श्री** 

शिवराम, श्री] शिवराम पाडेय, श्री शिवशरणलाल श्रीवास्तव, श्री शीतलाप्रसाद, श्री शोभनाथ, श्री इयाममनोहर मिश्र, श्री श्यामलाल, श्री इयामलाल यादव, श्रो श्रद्धादेवी शास्त्री, कुमारी श्रीकृष्ण गोयल, श्रह श्रीनाथ, भी (ग्राजमगढ़) श्री गाथ भागव, र्श्नः (मथरा) संग्रामसिह, श्री सईद श्रहमद श्रन्तारी, श्रा सजीवनलाल, श्री सत्यवतीदेवी रावल, श्रीमती सम्पूर्णानन्द, डाक्टर सरस्वतीदेवी शवता, श्रीमती सियादुलारी, श्रीमती सीताराम, द्वावटर सक्खनलाल, श्री सुलरानीदेवी, श्रीमती सुषरामदास, श्री सुखलाल, श्री सुर्वाराम भारतीय, श्री सुदामाप्रसाद गोरवामी, श्री सुनीता चौहान, श्रीमती मृन्दरलाल, श्री सुरथबहादुरज्ञाह, श्री सुरन्द्रवत्त वाजपेयी, श्री सुरेन्द्रसिंह, राजकुमार सुल्तान घ्रालम खा, श्री सूर्यबली पश्चिम, श्री हमीदुल्ला खां, श्री हरदयालसिंह, श्री हरवयालीसह पिपल, श्री हरदेवसिंह, श्री हरिवत्त काण्डपाल, श्रो हरीशचन्द्र श्रष्टाना, श्री हरोसिंह, श्रो हलीमुद्दीन (राहत मौलाई), श्रो हिम्मतिसह, श्री हुकुमसिह विसेन, श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा, श्री होरीलाल यादव, श्री

### प्रश्नोत्तर

### शनिवार, १६ मार्च, १६६०

# श्रल्पसूचित तारांकित प्रश्न

जनसंघ अथवा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संज से सम्बन्धित व्यक्तियों को नौकरी देने में सरकारी नीति

\*\*१--राजा यादवेन्द्रदत्त दुबे (जिला जीरापुर),श्री मञ्चालाल (जिला जीरी), श्री शिवराम (जिला बिजनोर). श्री गोविन्दींसह विष्ट (तिता उन्योडा), श्री भुवनेश-भूषण शर्मा (जिला इटाबा), श्री हिम्मतींसह (जिला बुलन्दशहर)तथा श्री मिलखान सिंह(जिला मैनपुरी)--क्या सरकार बनायेगी कि यह उसकी नोति है कि जनसंब के या राष्ट्रीय स्वयं सेवक संब के सदस्यों को सरकारी नौकरियों मे न लिया जाय? यदि हां, तो कों ?

[मुख्य मंत्री (डाक्टर सम्पूर्णानन्द) — सरकारी नौकरी में नित्रक्ति के पूर्व उम्मीद्यार के चरित्र श्रौर पूर्ववृत के बारे में जाच को जाती है। इनके बारे में नियुक्ति प्राधि कारी के संतुष्ट होने पर ही नियुक्ति की जाती है। किमी भी राजनीतिक दल की सदस्यता ही के कारण गौकरी में न लिये जाने को नीति नहीं है। किन्तु जिन राजनीतिक दलों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात विधि व्यवस्था के विरुद्ध समय-समय पर उग्र श्रान्दोलन चलाये है उनकी सिक्त्य सदस्यता के बारे में नियुक्ति के पूर्व उम्मीदवारों की पूरी जांच करना सरकार का कर्तव्य हो जाता है। इस श्रेणी के उम्मीदवारों के बारे में नियुक्ति प्राधिकारी के संनुष्ट न होने पर इन्हें नियुक्ति के स्रयोग्य भी ठहराया जा सकता है।

दूसरा प्रश्न नही उठता ।

श्री भुवनेशभूषण शर्मी—क्या सरकार बनलाने की कृग करेगी कि सन् १९४७ के पश्चात् जिन राष्ट्रीय पार्टियों ने उग्र रूप से कुछ ऐसा कार्य किया है वे कौन-सी पार्टियां है?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—इस प्रश्न का ठीक उत्तर देना नुश्कित है, लेकिन शायद जनसंघ ने किया हो, सोशलिस्ट पार्टी ने किया होगा, शायद प्रजा समाजवादी पार्टी ने किया हो ग्रीर शायद कम्युनिस्ट पार्टी ने किया होगा ।

श्री राजनारायण (जिला वाराणती) ——"राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के बाद" से सरकार क्या मतलब समझती है ?

डाक्टर सम्पूर्णीनन्द—-पैने शब्द "राष्ट्रीय स्वतंत्रता संप्राम के बाद" का प्रयोग नहीं किया। मैने कहा स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद। उन की बाबत में जानता हूं, लेकिन दूसरा शब्द जिसका प्रयोग माननीय सदस्य ने किया उसकी परिभाषा वह स्वयं ही कर सकते होंगे।

श्री राजनारायण—स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कई प्रकार के संघर्ष हुये है। तो क्या खाद्य नीति को लेकर जो ग्रान्दोलन चला था, श्राबपाशी का कर घटाने का जो ग्रान्दोलन चला था, सोशिलस्ट पार्टी की ग्रोर से जो ग्रालाभकर जोत पर से लगान माफ करने का ग्रान्दोलन चला था, ग्रंग्रेजी हटाने के लिये जो ग्रान्दोलन चला था, इन सब को भी सरकार उस श्रेणी मे लेती हैं?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--जी हां।

श्री झारखंडेराय (जिला ग्राजमगढ़)—माननीय मंत्री जी ने उग्र त्रान्दोलन का जित्र उत्तर में किया, तो इससे उनका क्या मतलब है ? वह किस ग्रान्दोलन को उग्र समझते हैं ग्रीर किस को ग्रउग्र ?

डावटर सम्पूर्णानन्द--इस सदन मे जो बात कही-मुनी जानी ह गह ना अउग्र आन्दोलन है। बाहर श्रवबारों मे जो अर्थिटनल निकाले जाते हैं, सभ प्रे के जानी हैं, यह सब भी श्रउप हैं; लेकिन ऐसे श्रान्दोलन जितने जो बातों का, लूट-पार करने को बात पेरा हैं। प्रोर ऐसे प्रान्दोलन जिनका जिक मानतीय सदस्य ने किया है वह सब उग्र आन्दोलन हैं।

श्री मदन पांडेय (जिला गोर वपुर)—जिन चार पार्टियों हारा पंचारित झान्दोलनों का जिक मानतीय मंत्री जी ने किया है उनसे संबंधित क्या सकी वस सर्वो है। तो हरों में न लिये जाने का खादेश दिया गया है या किया खास पार्टी के वर्शन मों में निये प्रादेश हैं ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द - प्रजन में कहा है कि किसी पा पार्टी के पदगा होने के कारण नौकरी न दी जाय, क्या ऐने अदिश हैं ? ऐसे कोई आदेश पटो हैं, जे का जाय किसा नौकरी पर नियुक्ति की बात आती है तो देवा जाता है कि किसी ऐसी पार्टी से उसका किया बंब पब भी कहां तक है, कितना है। इसके जिये व्यक्ति विशेष की देवा जाता है, पार्टी की नहीं।

श्री गौरीशंकर राय (जिलाबिलया) - जे तमानतीय मंत्री शिलोबल प्राया जिलोकरी देते समय किसी भो व्यक्ति की अराष्ट्रीय या सांत्रशिक्त म गिर्मात वे पर जाता है। तो उसकी ऐसी मनोबृत्ति होते क कारण नोकरी नहीं मिलती अर्था उपा कि राख्यत्य नन में कियो तरह का हिस्सा लेने के कारण नीकरो नहीं मिनती इसकी य जरा रायद कर दे। प्रमाने मनोबृत्ति देखी जाती है अथवा उसका राजन तिक दलों से संबंग ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--'राष्ट्रदायिक मनीवृत्ति ही नहीं। बहता हहा। लेकिन चूंकि प्रश्न पूछा गया था इस विशेष बात की बाबत, इसनिये मैंने इसका जिक किया।

श्री मलिखानसिंह--क्या मानतीय मंत्री जी बताने की कृता करेगे कि जो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ है, इसको भी राजनीतिक दल माना है?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--व्यवहार में तो ऐसा ही सम्प्रा जाता ह ।

श्री देवनारायण भारतीय (जिना शाहनहांपुर)- तथा सरकार प्रया सोशिलस्ट पार्टी के खाद्य ग्रान्दोलन की जिलने गोदामीं के ताले नं हो प्रोर गलना गोदाम ल्हना भी शामिल था, उसकी भी उप ग्रान्दोलन मानती है, या नहीं ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—उसको न मानकर में प्रजा सम।जवाबी पार्टी का प्रयमान नहीं करना चाहता । (हंसी)

श्री राजनारायण-- प्रन् १६५४ में जो स्नाजनारों- हर मृद्धि स्नान्देशन चला था स्नीर जिसमें हाई कोर्ट स्नीर सुन्नोम कोर्ट देशों में सरकार हा हार हुई हु स्नीर सम्मानित उच्चतन न्यायालय ने यह फैसला दिया है कि इस प्रकार के स्नान्दों वन जनाने का जनता की स्निकार है, स्नीर उस सम्बन्ध में सरकार का कार्य गैर कान् नी था, तो सरकार किस तरह से इस स्नान्दोलन को उस स्नान्दोलन समझनी हैं?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--प्रान्दोलन किर भो वह था। इस तरह है जिनने प्रान्दोलन होंगे, उनको उग्र माना जावेगा।

श्री चन्द्रजीत यादव (जिला श्राजमगढ़) -- निया सरकार इन विरोधी गाँठयों के उन श्रान्दोलनों की जिनमें यह घोषणा की जाती है कि वे शांतिपूर्ण तरीके ने श्रान्दो नन करेग श्रोर इस तरह से उनकी जेन जाना पड़ता है, तोक्या इस तरह के श्रान्दोलन की भां उप श्रान्दोलन समझती हैं ? प्रश्नोत्तर ४४७

डाक्टर सम्पूर्णानन्द-- जहां तक मैं जानता हूं, कभो भो कोई श्रान्दोलन ऐसा नहीं हुं श्रा है जिसमें यह कहा गया हो कि हम शांतिपूर्ण तरीके से श्रान्दोलन नहीं करेंगे। किन्तु बाद में बे भो सभी शांतिपूर्ण श्रान्दोलन के नाम से ऐसे हो जाते हैं जिसके कारण उन्हें उग्र मानना पड़ता है।

श्री टीकाराम पुजारी (जिला मथुरा)--न्या सन् १६४७ के बाद कांग्रेस ने भी कोई स्नान्दोलन छेड़ा है ?

(हंसी--उत्तर नहीं दिया गया ।)

श्री टीकाराम पुजारी -- उत्तर नहीं मिला ?

श्री उपाध्यक्ष-- यह सवाल ही ऐसा है कि लोगों को लाजवाब कर दंता है। (हंसी)

श्री झारखंडेराय—-क्या सरकार के विचार में सदत के बाहर किसी प्रकार का कोई ऐसा ग्रान्दोलन भी है जो सरकार उचित समझती है.?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--जी हां, जैसे अनुबत आन्दोलन । (हंसी)

श्री मिलखानसिंह—- जैता माननीय मंत्री जो ने कहा कि श्रार० एस० एस० व्यवहार में ऐसा मालून पड़ता है कि राजनीतिक पार्टी है, तो कोई उवाहरण वह दे सकते हैं कि राष्ट्रीय स्वां सेवक संव ने कोई राजनीतिक ऐसा काम किया जितते भाननीय मंत्री जी ने व्यावहारिक रूप उसका बताया है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—इस प्रकार के प्रश्नों का विवेचन करना सरकार का काम नहीं है, हाईकोट को फुर्सत रहती है, वह ऐसा काम करता है। ये भिन्न-भिन्न पार्टियां ग्रपने श्रपने मैनिफेस्टो लिखा करती हैं। कुछ पार्टियां कोई काम करती हैं, समाज पर उसका क्या परिणाम होता है, यह बेखने की जरूरत है। श्रगर वो पार्टियां एक सा काम करती है श्रौर उसका परिणाम एक-सा होता है, उनमें से एक श्रपने को राजनीतिक कहे श्रौर एक न कहे पर सरकार तो व्यवहार में दोनों को राजनीतिक मानेगी।

### प्रान्तीय रक्षक दल के कर्मचारियों को स्थायी करने में विलम्ब

\*\*२--श्री मोहर्नासह मेहता (जिला ग्रल्मोड़ा)--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जो प्रांतीय रक्षा दल की एक शाखा पुलिस के साथ कार्य कर रही है उसका, मुख्य प्रांतीय रक्षा दल शाखा, जो नियोजन विभाग के साथ है, उससे क्या संबंध है ?

नियोजन उपमंत्री (श्री सुल्तान स्रालम खां)--यह दोनों एक ही संस्था की दो शासायें हैं।

\*\*३--श्री मोहर्नासह मेहता--क्या सरकार कृपया बतायेगी कि प्रांतीय रक्षा दल के कुछ स्थान स्थायी होने जा रहे हैं उनमें प्रांतीय रक्षा दल पुलिस शाखा के कर्मचारी भी स्थायी हो रहे हैं, या नहीं? यदि नहीं, तो क्यों?

श्री सुल्तान श्रालम खाँ—जी हां। ज्येष्ठता तथा कर्मनिष्ठा के श्राधार पर सम्पूर्ण दल में से कर्मचारियों को स्थायी किया जायगा।

\*\*४--श्री मोहनसिंह मेहता--क्या प्रांतीय रक्षा वल पुलिस शाला में कार्य करने बाले छलिस्टेंट डिस्ट्रिक्ट प्रार्गेनाइजरों के स्थायित का कोई विचार है? क्या यह सही है कि उनकी सर्विस १२-१२ वर्ष सक ही चुनी है? श्री सुल्तान श्रालम खां—(क) श्रभी तो श्रिसस्टेट डिस्ट्रियट श्रार्गनाइजरों के पद के लिये स्थायीकरण का विचार नहीं है।

#### (ख) जी हां।

श्री मोहनसिंह मेहता—प्रसिस्टेट डिस्ट्रिक्ट श्रार्गनाइजर के पदों का स्थायीकरण नहीं किया जा रहा है श्रीर उनकी सेवायें १२ साल की हो चुकी है तो सरकार उनके पदों के स्थायीकरण पर विचार करेगी?

श्री सुल्तान श्रालम खां—प्रिंतस्टेंट डिस्ट्रिक्ट श्रार्गनाइजर का पद बाकी नहीं है, पहल था। कुछ श्रर्सा हुश्रा जब तोड़ दिया गया है श्रीर उसमें जो काम कर रहे थे उनको डिस्ट्रिक्ट श्रार्गनाइजर बना दिया गया। ५ पद है, जिनमें से तीन खाली हे, दो पर लोग काम कर रहे है। खाली इसलिये रखे हे कि जिनको तरक्की दी है श्रगर वह वापस श्रा जायं तो उनको रख लिया जाय।

श्री गोरीशंकर राय--माननीय मंत्री जी ने एक दिन एक प्रश्न के उत्तर में बताया था कि एक सौ कुछ लोग ऐसे हैं इस प्रांतीय रक्षा दल में जो स्थायी नहीं हो सके है, तो १२ वर्षों से जो काम कर रहे हैं वह ग्रवतक स्थायी नहीं हुए, इसका क्या कारण हैं ?

श्री सुल्तान श्रालम खां—मने शायद यह कहा होगा, मुझे याद तो नहीं है, कि इससे पहले ११६ हमारे वर्कर मुस्तिकिल हो चके है श्रीर श्रव इस मीके पर हम २०७ को श्रीर कनफर्म करने वाले है।

श्री गोविन्दिसिंह विष्ट--श्या माननीय मुख्य मंत्री जी बताने की ग्रुपा करेगे कि क्या यह सही है कि श्रभी हाल में इस पी०श्रार०डी० के बढ़ाये जाने के श्रार्डसं हो मुके है? श्रगर हो चुके हैं तो कितने बढ़ाये जायेगे श्रौर १२--१२ साल वालों को श्रब तक स्थायी क्यों नहीं किया जा रहा है?

श्री सुल्तान श्रालम खां--पी०श्रार०डी० की ताबाद बहुत ज्यादा तो नहीं बढ़ायी गयी है, श्रलबत्ता एक पुलिस विंग जरूर कायम किया गया है श्रागरा, लखनऊ श्रौर वाराणसी में, श्रौर उसका इसी मेन श्रागेंनाइजेशन से ताल्लुक है, लेकिन वह एक श्रलहदा विंग है।

श्राचार्य दीपंकर (जिला मेरठ)—-क्या माननीय मुख्य मंत्री बताने की कृपा के रेगे कि जब प्रांतीय रक्षक दल ग्रस्थायी विभाग नहीं है, प्रत्युत दूसरे स्थायी विभागों की तरह स्थायी है तो फिर उसके ग्रन्तर्गत कार्य करने वाले कर्मचारियों को स्थायी करने में क्या बाधा है?

श्री सुल्तान श्रालम खां--- सबसे बड़ी दिक्कत रुपये की है। जब किसी जगह को स्थायी बनाना हो तो पहले रुपये का प्रबन्ध करने की जरूरत होती है। इसलिये धीरे-धीरे हम उसकी स्थायी बनाते जा रहे है।

श्री रामस्वरूप वर्मा (जिला कानपुर)—क्या माननीय मुख्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि क्या यह सही है, कि पुलिस विंग में जो काम करने वाले लोग है वह उसी हद के श्रन्दर काम करते है जिसमें प्रांतीय रक्षक दल की दूसरी शाखा काम करती है? तो जब दूसरी शाखा के पद स्थायी किये गये है तो इसके पद स्थायी न करने के क्या कारण है?

श्री सुल्तान श्रालम खां—इसमें कुछ भ्रम है। पुलिस विंग में जो लोग काम करते हैं उनकी यहां से परची उठायी जाती है लेकिन वह इन्सपेक्टर जनरल श्राक पुलिस के मातहत काम करते हैं। उसके लिये जैसे हर जिले में सुपरिन्टेडेंट पुलिस श्रौर सीनियर सुपरिन्टेडेंट पुलिस श्रौर सीनियर सुपरिन्टेडेंट पुलिस है, कमांडेंट भी हैं। जहां तक मस्तिकल करने का सवाल है, दोनों विंग्ज यानी मेन पी० श्रार० डी० श्रौर पुलिस विंग पर गौर किया जाता है।

श्री उपाध्यक्ष --पुलिस विंग वालों का स्थायीकरण क्यों नहीं हो रहा ृ है ?

श्री सुल्तान ग्रालम खां--हम दोनों को स्थायी कर रहे है।

श्री झारखंडेराय—क्या माननीय मुख्य मंत्री जी स्पष्ट करने की कृता करेंगे कि पी॰ग्रार॰ डी॰ के बारे में सरकार की नीति क्या है, टारगेट क्या है? क्या पुलिस के पैरेलल इसको बनाने का विचार है या सप्लीमेंटरी पुलिस के रूप में रखने का है, क्या स्पष्ट रूपरेखा है?

श्री उपाध्यक्ष--इसके लिये दूसरे प्रक्त की सूचना दे।

श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या माननीय मंत्री बताने की कृपा करेगे कि स्थायी किये जाने वाले कर्मचारियों में पुलिस विंग के कितने कर्मचारी है श्रौर दूसरी शाखा के कितने कर्मचारी है ?

श्री सुल्तान ग्रालम खां--नोटिस की ग्रावश्यकता है।

श्री गौरीशंकर राय--क्या माननीय मुख्य मंत्री बतलाने की कृपा करेंगे कि प्रांतीय रक्षक दल के लोगों को स्थायी करने के अबतक कोई निश्चित नियम क्यों नहीं निर्धारित हो सके?

श्री सुल्तान ग्रालम खां—प्रांतीय रक्षक दल जैसा कि माननीय सदस्यों को मालूम है सन् १९४८ से कायम हुग्रा ग्रीर बीच में एक मर्तबा ऐसा भी सोचा गया कि इसको झत्म कर दिया जाय. लेकिन फिर जरूरत महसूस हुई कि हमारे बहुत से कानून जो इस लेजिस्लेचर से सोशल डिसेबिलिटीज वगैरह के पास हुए उनको चलाने के लिये एक पुलिस विग बनाया जाय। इसके भ्रलावा प्रांतीय रक्षक दल ने कुछ दूसरे मुख्तलिफ काम ला ऐड ग्रार्डर को कायम करने के भी किये है।

श्री उपाध्यक्ष--निश्चित नियम क्यों नहीं बने ?

श्री सुल्तान स्रालम खां--प्रभी काम देखा जा रहा है श्रोर तजुर्बे के तोर पर चीज चल रही है। एक दम शुरू में कोई चीज जुस्तिकल नहीं होती। पहले तजु किया जाता है फिर उसकी बिना पर श्रागे काम किया जाता है।

बस्ती जिले में भ्रोला पीड़ितों को सहायता

\*\*५--श्री उदयशंकर (जिला बस्ती)--क्या बस्ती जिले के रुबौली के पास नगभग ३४ गांवों में तारीख ६-३-६० को जबरदस्त स्रोला पड़ने तथा उससे ४ व्यक्तियों की मृत्यु, कुछ पशुस्रों के घायल होने स्रौर फसल के सम्पूर्ण नष्ट होने की कोई सूचना सरकार को मिली है?

राजस्व उपमंत्री (श्री महावीर प्रसाद शुक्ल)--जी हां । ग्रोलों के पड़ने से क्षति की सूचना श्राई है।

\*\*६--श्री उदयशंकर--यदि हां, तो कितने गांवों में यह श्रोलाबारी हुई, नुक्सान क्या हुआ ग्रौर सरकार की श्रोर से क्या तात्कालिक सहायता का प्रबन्ध हुआ ?

श्री महावीरप्रसाद शुक्ल--बांछित सूचना इस प्रकार है:--

- (१) प्रारम्भिक रिपोर्टों के ग्रनुसार उक्त क्षेत्र के ३४ गांवों में श्रोले गिरने के फल-स्वरूप फसल को काफी क्षति पहुंची, ४ व्यक्तियों की तथा लगभग १५० पशुग्रों की मृत्यु हुई।
- (२) बकाया मालगुजारी तथा तकावी की वसूली मुल्तवी कर दी है। क्षतिग्रस्त क्षेत्रों में टेस्ट वर्क्स (Test works) खोलने के भी श्रादेश दे दिये गये है।

श्री उदयशंकर--क्या माननीय मंत्री जी यताने की कृपा करेंगे कि इन ३४ गांवों में क्षतिग्रस्त लोगों की संख्या क्या है ग्रीर टेस्ट वर्क के लिये कितना रुपया सेंक्शन किया गया है ?

न्याय मंत्री (श्री हुकुर्मासह विसेन) -- संख्या बताने के लिये नोटिस की श्रावत्यकता है

श्री उदय<mark>रांकर---श्र</mark>ौर टेस्ट वर्क के लिये कितना रुपया सें**क्**शन किया गया है ?

श्री हुकमसिंह विसेर--उसकी तादाद भी इस समय मेरे पास नहीं है, नोटिस की जरूरत होगी।

श्री उदयशंकर—प्रभुशों के नुक्सान के सिलसिले में श्रीर लोगों के खाने-पीने की समस्या के बारे में बया सरकार का विचार है कि उन लोगों को कोई तकावी प्रभु वगैरह खरीदने के लिये दे या उन गांवों में कोई राशन की दुकान खोले ?

श्री महावीरप्रसाद शुक्ल---म्रावश्यकता पड़ने पर राधन की ट्काने बढ़ा ही जावेंगी श्रौर तकावी का प्रबन्ध कलेवटर की रिपोर्ट श्राने पर किया जायगा। श्रहेत्रक सहायता के लिये कलेवटर के पास कोष रहता है श्रौर वह कार्यवाही कर रहे है।

# नियम ५२ के अन्तर्गत ध्यान भ्राकर्षणार्थ विषयों की सूचनाएं

श्री उपाध्यक्ष — मेरे पास नियप ४२ के श्रन्तर्गत २,३ प्रश्न श्राये हैं। एक श्री टीकाराम पुजारी का श्रीर दूसरा श्री मिलिखानींसह का। ये दोनों शार्ट नोटिस प्रश्न की परिधि में श्राते हैं। तीसरा श्री झजनारायण तिवारी का है सेवहरी शुगर फैक्ट्री के संबंध में। इस बारे में श्री प्रतापिसह जी ने श्री गेदासिह जी के प्रश्न के संबंध में श्राधे घट का विवाद मांगा है। मैने उसे २२ तारीख के लिये रखा है श्रीर उस समय इसका भी जिक हो सकता है। इसलिये इसकी भी मैं इजाजत नहीं वंगा।

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया) -- मैने भी गेंदासिंह जी के प्रक्रन के बारे में विवाद मांगा था।

श्री उपाध्यक्ष--उस समय ग्राप भी हिस्सा ले सकते है।

## प्रक्तों का उत्तर न मिलने की शिकायत

श्री रामसुन्दर पांडेय (जिला श्राजमगढ़)—श्रीमन्, माननीय राजस्व मंत्री जी ने श्रभी श्री उदयशंकर जी के प्रदन के उत्तर में कहा कि वह रुपये की तादाद इसलिये नहीं बता सकते कि उनके पास फाइल नहीं है। प्रदन में स्पष्ट पूछा गया था कि नकसान क्या हुआ और कितनी सहायता दी गई। में समझता हूं कि श्रापकी श्रीर से व्यवस्था होनी चाहिये कि उत्तर साफ हो कि कितनी सहायता किस मद में दी गई। फाइल न होने का उत्तर ठीक नहीं है।

न्याय मंत्री (श्री हुकुर्मांसह विसेन) — उपाध्यक्ष महोदय, मुझे ताज्जुब हुश्रा यह बात सुनकर, श्रपने मित्र की। श्रभी ६ तारील को सारे वाकयात हुय हैं, जांच-पड़ताल हो रही है। इन्टेरिम रिपोर्ट कहीं की श्राई है, कहीं की श्राने वाली है। जब तक मुस्तकिल तौर से पता न हो जाय कि कितनी रकम संक्शन की गई है श्रौर कितनी वे दी गई है हम उत्तर देना मुक्किल समझते हैं। जो इत्तिला हमारे पास होती है उसे देने में हम कभी गुरेज नहीं करते हैं। छमंतर से काम नहीं होता है। कलेक्टर से सारी बातें श्राने पर निक्ष्यय होगा।

# १६६०–६१ के ग्राय–व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान––विभिन्न श्रनुदानों पर विवादार्थ समय निर्धारण

श्री उपाध्यक्ष—श्राज के तीनों श्रनुदानों में किस प्रकार समय-विभाजन होना चाहिये, माननीय सदस्य सुझाव देने की कृपा करें।

# (कोई नहीं उठा)

मैं श्रपनी ग्रोर से यह सुझाव दे रहा हूं कि श्रनुदान संख्या ३---राज्य श्राबकारी-के लिये १ बजे तक का समय रखा जाय, वन का श्रनुदान ३।। बजे खत्म कर दिया जाय ग्रौर बाकी १।। घंटा लेखन सामग्री वाले श्रनुदान के लिये रखा जाय।

एक सदस्य--(सरकारी पक्ष से) भ्राबकारी १२ बजे खत्म कर दिया जाय।

श्री गोविदिसिह विष्ट (जिला ग्रल्मोड़ा)--यह ठीक है।

श्री मोतीलाल श्रवस्थी (जिला कानपुर)—श्राबकारी महत्वपूर्ण है। उसके लिये ज्यादा समय जैसा श्रापने रखा, वही ठोक है।

श्री गोविन्दिसिंह विष्ट--चूंकि श्राबकारी पर समाजवादी दल ज्यादा जोर देता है उनको ज्यादा समय दे दें श्रीर १२ बजे तक खत्म कर दिया जाय।

श्री बंशीधर शुक्ल (जिला खीरी)—वन विभाग के लिये एक दिन पूरा रखा जाय। हमारे जिले में वन श्रविक हैं, उनके जुल्मों का हमे ज्यादा तजुर्बी है।

भी उपाध्यक्ष--१२।। बजे तक श्राबकारी, ३।। बजे तक वन ग्रौर उसके बाद तीसरा मनुदान रहेगा।

श्री राजनारायण (जिला वाराणसो)—हमारे परम मित्र श्री गोविन्दांसह जी ने, पता नहीं सदन की ग्रोर से बताने का ग्रधिकार कैसे रख लिया।

श्री उपाध्यक्ष--इस पर श्रब कोई बहस नहीं हो सकती है ।

श्री राजनारायण—-१२।। बजे श्रापने इस शर्त पर रखा है कि कोई श्रौर नहीं बोलेंगे सिवाय सोशलिस्ट पार्टी के। श्राबकारी को लेकर हम १६३०—-३२ में लड़े श्रौर मई, सन् १६६० में लड़ने जा रहे हैं।

श्री उपाध्यक्ष--ठीक है, वह मैं देख लूंगा।

श्री टीकाराम पुजारी (जिला मथुरा)—मेरे ऊपर, श्रीमन् खयाल किया जाय। हम लोग पीछे वाले रह जायेंगे, ग्रागे के नेता लोग बोल लेंगे।

# **अनुदान संख्या ३---लेखा शीर्षक ८---राज्य आबकारी**

परिवहन मंत्री (डाक्टर सीताराम)—उपाध्यक्ष महोदय, मैं राज्यपाल महोदय की सिफारिश से प्रस्ताव करता हूं कि भ्रनुदान संख्या ३—-राज्य भ्राबकारी—लेखा शीर्षक ८—-राज्य भ्राबकारी के भ्रन्तर्गत ६७,४४,६०० रुपये की मांग, वित्तीय वर्ष १६६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, केवल १ घंटे का समय एलाटेड है। इसलिये मैं चाहता हुं कि पहल माननीय सदस्य बोल लें थ्रौर तब मैं बोलूं। श्री वेवनारायण भारतीय (जिला आहजहांपुर)—माननीय उपाध्यक्ष महोदय, में म्रापकी म्राता से प्रस्तुत स्रतुदान संख्या ३-में कटौती का निम्निः विज्ञात प्रस्ताव पेश करता हूं:—

सम्पूर्ण अनुदान के अधीन मांग की राशि में १०० रुपये की कभी कर दो जाय। कभी करने का उद्देश्य — विशिष्ट शिकायत जिस पर चर्चा उठाने का अभिषाय है - -राज्य सरकार की मद्य-निषेध नीति की असफलता पर विशाद करना।

मान्यवर, मुझे विष्ट जी की, जो जन संघ के नेता हैं, प्रभी यह बात सुनकर बहुत म्राक्वर्य हुम्रा कि म्राबकारी विभाग के विषय पर किसी पार्टी को, सिवाय सोशितस्ट पार्टी के, कोई विलचस्पी नहीं है।

श्री उपाध्यक्ष--में समझता हूं कि सोशलिस्ट पार्टी के सदरत्रों की मस्ती देख कर उनकी कुछ भ्रम हो गया। (हंसी)

श्री देवनारायण भारतीय—हो सकता है। परन्तु हम ग्रापके हारा उनका यह भ्रम दूर कर देना चाहते हैं। यह विषय इतना महत्वपूर्ण है कि पूज्य महात्मा जी ने जब सन् १६२०-२१ में ग्रंग्रेजी सरकार को हटाने का ग्रान्दोलन ग्रारम्भ किया तब उन्होंने नशाबन्दी के प्रश्न को भी बराबर का ही महत्व दिया था ग्रौर सबसे पहले नशाबन्दी की ग्रोर देश की जनता का ध्यान ग्राह छ्ट किया। सन् १६२० से कांग्रेस पार्टी इसके लिये लड़ती रही ग्रौर इसे महत्व देती रही। परन्तु श्राज मद्यानिषय का महत्व इतना कम हो गया है, इस पर मुझे ग्राइनर्य है।

जब से हमें स्वतंत्रता प्राप्त हुई, जब से हम आजाद हुए, ता से अबनक कांग्रेस सरकार ने ११ जिलों में ही मद्य-निषेध लागू किया है। तीन तीर्थ स्थानों पर भी लागू किया है। नेकिन एक तरफ तो मद्य-निषेध की नीति का अनुसरण किया गया और दूसरी और आवकारी विभाग की आमदनी बढ़ाने में भी सरकार ने कोई कदम पीछे नहीं हटाया। ये दोनों बानें साथ लेकर सरकार चलती रही है और उसका परिणाम है कि सरकार एक और आबकारी नीति में असफल रही और दूसरी और मद्यनिषेध में भी सफल नहीं हो सकी। इस तुरंगी चान से किसी काम में भी सफलता नहीं हो सकती। एक और तो सरकार आवकारी नीति का समर्थन करती है और अपनी आमदनी बढ़ाने का प्रयत्न करती है। जब कि ११ जिले शुरुक नहीं फिये गये थे इस आवकारी विभाग से बहुत बड़ी आमदनी होती थी, लेकिन जब से यह शुष्क किये गये हैं करोड़ों रुपये की हानि हो रही है। दूसरी और सरकार का जो उद्देश्य मद्य-निषेध का है उसमें भी सरकार सफल नहीं हो रही है। सरकार की दुरंगी नीति के बारे में एक किये की कल्पना चिरतार्थ होती है। किये ने कहा है:

"जाहिदा तसवीह में जन्नार का डोरा न डाल, या बरहमन की तरफ हो या मुसलमां की तरफ।"

या तो श्राप कि हम श्राबकारी की उन्नित चाहते हैं, हर श्रावमी को नन्नों में मस्त कर देना चाहते हैं। माननीय उपाध्यक्ष महोवय ने कहा कि सोन्निलस्ट पार्टी के लोगों की मस्ती को वेखकर माननीय जनसंघ के उपनेता बहकी बातें कर रहे थे। यह मस्ती माननीय मंत्री जी सारे प्रांत में वेखना चाहते हैं। श्रौर श्रगर सरकार सच्चे दिल से मद्य-निषेध करना चाहती है तो लखनऊ जैसे केंद्र--स्थान से शुरू करे। तीन तीर्थ स्थानों में --श्रुव्वावन, हरिद्वार श्रौर ऋषिकेष में श्रापने मद्य-निषेध कर दिया, लेकिन लखनऊ जो श्राप्त हमारा हर तरह से तीर्थ स्थान है, राजनीतिक चेतना श्रौर हमारी संस्कृति का केंद्र है, वहां श्रापने नराब को प्रोत्साहन वे रखा है, नन्नों बाजों में यहां तरककी कर रहे हैं। उससे श्रामवनी बढ़ाने की कोन्निश कर रहे हैं। जब तक श्राप लखनऊ में नराब पीना बन्व न करेंगे तब तक कानपुर श्रौर श्रश्नोस-पड़ोस के जिलों में भी बन्व करने में सफल नहीं हो सकते। एक श्रोर लखनऊ में श्राप नन्नों बाजी का समर्थन करेंगे, श्रपनी कृपावृध्य से लोगों को नराब पीने के लिये प्रोत्साहित करेंगे श्रौर बड़े बड़े पूंजीपितयों को श्राप नन्नों में महत देखना पसन्त करेंगे, तब तक नन्नाबन्दी दूसरे स्थानों में भी

## १९६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान---भ्रनुदान संख्या ३-लेखा शीर्षक द-राज्य श्रावकारी

श्चाप बन्द नहीं कर सकते। में चाहता हूं सरकार श्रपनी इस दुरंगी नीति को बदले। सरकार एक ही नीति श्रष्टितयार करे। महात्मा गांधी कहते रहे कि इस नहों से जो श्रामदनी होती है उसकी पाप समझ कर सरकार को खत्म कर देना चाहिये। जब तक ऐसी स्पष्ट नीति से श्राप हमारे सामने नहीं श्रायेंगे तब तक सोशिलस्ट पार्टी का समर्थन श्रापको प्राप्त न हो सकेंगा।

म्रतः में यह कहना चाहता हूं कि म्राबकारी विभाग की नीति म्रौर मद्यनिषेध की नीति दोनों परस्पर विरोधी हैं म्रौर एक साथ नहीं चल सकतीं।

मेंने शाहजहांपुर की बाबत आवकारी कमेटी में कुछ बातें कहीं और इस माननीय सटन में भी प्रश्नों के द्वारा और विशेषाधिकार के प्रश्न के द्वारा, एक विषय को उठाया, लेकिन मेरी बात सुनी अनसुनी कर दी गयी। शाहजहांपुर में जो आवकारी विभाग के पर्मचारी हैं वे विभाग की आमदनी बढ़ाने में सहयोग देना नहीं चाहते। वहां ए से जेड तक जितने भी कर्मचारी हैं वे अपनी निजी आमदनी बढ़ाना चाहते हैं। सब के सब इस बात पर तुले हुए है कि नाजायज शराब की उत्पत्ति हो, अफीम, गांजा और दूसरी चीजों की नाजायज बिकी हो। इनको बिक-वाने में उनका हाथ रहता है। अपने नाजायज लाभ के लिये वे इस बात की कोशिश करते हैं कि उनका लाभ हो चाहे सरकारी राजस्व में कमी क्यों न हो जाय।

ज्ञाहजहांपुर जिले में मन्नीलाल नाम के एक तस्कर व्यापारी हैं।

श्री उपाध्यक्ष--जो माननीय सदस्य इस हाउस में ग्रयने श्रापको डिफेन्ड नहीं कर सकते, उनका नाम लेना उचित नहीं है।

श्री देवनारायण भारतीय—में ग्रापकी श्राज्ञा माने लेता हूं, श्रब उनका नाम नहीं लुंगा। लेकिन इसलिये मैंने उनका नाम लिया था कि उनके नाम का जिन्न श्राबकारी कमेटी में तया इस माननीय सदन में कई बार श्रा चुका है, लेकिन श्रव श्रागे नाम नहीं लूंगा। मै यह बात कह रहा था कि उनके तस्करापन के बारे में मैंने घ्रनेक बार माननीय मंत्री जी से प्रार्थना की, लेकिन मेरी प्रार्थना को इस ब्राधार पर कि जिले के ब्रधिकारियों ने मेरे विरुद्ध रिपोर्ट दी है, मेरी सूचना को उन्होंने सही नहीं माना यद्यपि श्रन्त में परिणाम यह हुआ कि कुछ ही समय के पश्चात् जब कि उनके यहां तलाशी हुई श्रौर वह तलाशी श्राबकारी विभाग को वगैर कोई सूचना दिये हुए उससे पहले ग्रनेक बार तलाशी हुई, यह सही है, लेकिन हर भतिबा आबकारी विभाग द्वारा तलाशी लेने की कोशिश की गयी श्रौर उसमें श्रसफलता रही। जिस समय द्याबकारी विभाग को बगैर कोई सूचना दिये हुए पुलिस वहां पहुंच गयी तो वहां उसने तलाज्ञी में नाजायज ज्ञाराब की ढाई हजार बोतलें बरामद कीं। इसके म्रलावा भी मनों भाग, चरस श्रौर न जाने कैसे कैसे जहर जो स्थिट से नाजायज शराब बनाने के काम आते हैं वहां पर बरामद हुए। ग्रौर उतके बारे में जब मैंने यहां प्रश्न किये तो माननीय मंत्री जी ने, न जाने किस श्राचार पर सदन को यह सूचना दी कि श्राबंकारी विभाग ने ही वह तलाशी ली थी श्रीर पुलिस कर्मचारी श्राबकारी विभाग की सहायता के लिये ब्राये थे। पुलिस का कोई मुख्य भाग उस तलाशी में नहीं था। मैंने इस सदन में पहले भी कहा है श्रौर मैं इस बात को फिर दोहराने के लिये तैयार हं....

परिवहन मंत्री (डाक्टर सीताराम)—श्रीमन्, चूंकि यह केस न्यायालय के सम्मुख विचाराधीन हैं, इसलिये उसके बारे में यहां पर चर्चा करना न्यायालय के दृष्टिकोण से ठीक नहीं होगा ।

श्री देवनारायण भारतीय—मैं कोई ऐसी बात नहीं कहूंगा जो कि न्यायालय से सम्बन्धित हो। मैं केवल उन्हीं बातों को कह रहा हूं जो इस सदन से सम्बन्ध रखती हैं।

श्री उपाध्यक्ष—लेकिन अगर आप इस तरह का जिक्र यहां करेगे कि विभाग के लोग तलाशी में गये या नहीं गये, तो इससे केस पर कुछ असर पड़ सकता है। इसलिये उसका जिक्र न करना ही उचित होगा।

श्री देवतारायण भारतीय—मं जो निवेदन कर रहा या वह यह है कि मंने माननीय मंत्री जी के विरूद्ध विशेषाधिकार का प्रश्न उठाने का प्रयत्न किया। मं श्रपनी सत्यता प्रमाणित करने के लिये एफ० श्राई० ग्रार० श्रीर फर्दर इनवेस्टिगेद्दान की रिपोटों की नकले लाया श्रीर उनको माननीय श्रध्यक्ष के सामने उपस्थित किया। मं इस बात को श्रपने पक्ष के समर्थन में स्व भी कहना चाहता हूं कि जो सूबना माननीय मंत्री जी को मिनो थी वह निराधार थी श्रीर जो सूबना मेंने गाननीय मंत्री जी को विश्वी, इस माननीय सदन को नथा पाननीय श्रथक्ष को दी थी वह सर्वथा सत्य थी। उचित्र तो यह था कि जिस श्रादमी ने माननीय पंत्री जी को गलत सूचना दी थी उसको वे मजा देते श्रीर जो गलनवयानी माननीय मत्री जी नं उ। श्रसत्य सूचना के श्रावार पर सदन के श्रन्दरकी थी उसको वायर लेने की कृष। करने श्रीर प्रजातंत्रीय परिपाटी की रक्षा एवं पृष्टि करते। परन्तु ऐसा व नहीं कर सके, इर्गालपे मेन इस प्रश्न को श्राव इस कटौती के प्रस्ताव के द्वारा सदन के सामने उपस्थित करने की को होश्रा मेन

मर्द्यातषेय के नाम पर विभाग की क्रोर से जो रिपोर्ट बांटी गयी हे उस हे पष्ठ ४ पर हवाला दिया गया है कि शाहजहांपुर जिले के ढाईघाट के मेले में मर्जानवेय का प्रचार किया गया। मान्यवर, श्रापके द्वारा में यह कहना चाहता है कि में बाहजहांपर में श्रन्तरिम जिला परिषद का सदस्य हुं, सोजलिस्ट पार्टी का कार्यकर्ता हूं तथा ढाईबाट के हर मेले में उपस्थित रहता है। ढाईबाट में साल मे दो बार मेल। लगता है, एक तो ज्येष्ठ के महीते में श्रीर दूसरी बार कार्तिक के महीने में ग्रीर में दोनों महीनों के मेलो में इस वर्ष उपस्थित रहा है ग्रीर पिछने साल भी उप-स्थित रहा हं। इस रिपोर्ट में दिखलाया गया है कि वहां मेले में मर्शनवेध का प्रचार हुआ। मुझे इस बात का दल है कहने में कि धहां मद्यनिषेध का न कोई प्रचार हन्ना ग्रोर न मद्यनिषे के लिये कोई काम ही हुआ। प्रागर स्विक्तिया तरी हे से किसी रावटी क प्रान्दर बैठ कर किसी से कोई बात कह सुन लो गयी हो तो बात दूसरी है, लेकिन ऐसी बात कि कीई प्लेटफाम बनाया गया हो, जनता की सुचना के लिये तथा जनता में प्रचार करने के लिये कि मर्शनियेध प्रच्छी चीज है, इस तरह का कोई भी प्रचार उस मेले में नहीं किया गया। म प्रान्तीय तथा जिला आबकारी समिति का भी सदस्य हूं, विधान गभा का भी सदस्य ह ग्रीर जिला श्रन्तरिम परिषद् का भी सदस्य हूं, लेकिन मेरी जानकारी में कोई भी मद्यनिवेध का प्रोग्राम हमारे जिले में ढाईघाट के मेने में इस वर्ष नहीं हुआ। मं चाहता हूं कि यह हो। हमारे जिले से मिला हुआ फर्रुखाबाद का जिला है और वहीं पर गंगा के इस पार ढाईगाट का मेला होता ह, उस पार फर्रूखाबाद में शराबबन्दी है, लेकिन मेरी जानकारी है कि ढाईपाट के मेले पर बहुत बड़ी तादाद में नाजायज दाराय ग्रोर नशे की चीजें बेची गई ग्रीर यहां पर राले तौर पर इस तरह की बिकी हुई श्रीर उस में कोई रोक नहीं की गई। इन दाब्दों के माथ में प्रपने कटौती के प्रस्ताव को उपस्थित करता हूं स्रोर मंत्री जी ने प्रार्थना करता है कि या मेरे रामायो पर विचार करे।

भी उपाध्यक्ष---ग्रब माननीय वक्ताग्रों को केंग्रल ४-४ मिनट मिलंगे।

श्री रामसूरतप्रसाद (जिला गोरलपुर)—श्रीमन्, ग्रभी कटौती का प्रस्ताब उपस्थित करते हुयं माननीय भारतीय जी ने पूज्य महात्मा गांधी का नाम लिया। मे ऐसा समझता हूं कि उन को भी इस की जानकारी होगी कि इस जर्नाप्रय कांग्रेस सरकार की जो नीति है वह स्वयं पूज्य महात्मा गांधी के ग्रावशी पर ग्रीर उन के द्वारा प्रतिपादित कायी पर ग्राधारित है ग्रीर यह जनप्रिय सरकार इस प्रदेश में निवास करने वाले समस्त लोगों के सवौगीण विकास के लिये हर तरह से प्रयत्नशील है। यह दूसरी बात है कि हमारी ब्रनियादी बुराई हो ग्रीर वह हम में प्राचीन काल से चली ग्रा रही हो तो उस को तत्काल कोई कानून या दंब व्यवस्था

के द्वारा दूर नहीं किया जा सकता। मद्यपान हो या और कोई बुराई हो उस को दूर करने में समय लगेगा और उस दिशा में हम सतत प्रयत्नशील है। जितने भी हम जनता के प्रतिनिधि है, जनतन्त्र मे उन का कर्त्तव्य है कि वे इस दिशा में सिक्रय कदम उठावे। इन कुरीतियों के विरुद्ध जनता को समझावे भ्रौर श्रपनी भावनाश्रों को व्यक्त करे तभी हम इन कुरीतियों का उन्म-तन करने में सफल हो सकते है श्रौर इस समस्या को जल्द सुलन्ना सकते है। सरकार इस टिशा में प्रयत्नशील नहीं है, ऐसी बात नहीं है। सरकार ने ग्रयनी ग्रोर से हर तरह की योजनाये समाज उत्थान की श्रोर मद्यपान को रोकने की बनाई ह। सरकार ने मद्यपान की वस्तुग्रों पर हैवी डयूटी लगाई है ताकि ग्रासानी से लोग उन का इस्तेमाल न करे। इस के ग्रलावा चेकिना स्क्वेड्स की भी नियुक्ति की गई है जो कि यु० पी० के हर बोर्डर पर कारों तरफ से चेकिंग करते है ताकि श्रन्य प्रदेशों में कोई नशीली चीजे यहा न श्राये। मद्यपान के विरुद्ध प्रचार के लिये समाज उत्थान विभाग भी काम कर रहा है ग्रौर यह विभाग तो कर ही रहा है सभात्रों के द्वारा, सिनेमा के द्वारा, मीटिगों के द्वारा। माननीय भारतीय नी कहते है कि उन के यहां ढाईघाट पर कोई भी मीटिंग नहीं हुई। अगर माननीय सदस्य उस समिति के सदस्य है तो उन का भी कर्त्तव्य था कि अगर वहां इस तरह का कोई प्रचार नहीं हुआ तो वह स्वयं वहां इस प्रकार का काम कर सकते थे ग्रौर जनता को लाभान्वित कर सकते बे, लेकिन खेद है कि ग्रधिकारियो द्वारा जो काम किया गया उस का भी विरोध हुन्ना ग्रौर महा विरोध कर रहे है।

एक सवस्य-- हार्म हार्म ।

श्री रामस्रतप्रसाद—इर्म ग्राप को ग्राती नहीं केवल इाव्द का उच्चारण करना ग्राता है। हमारे माननीय मंत्री जी ने जब से यह कार्यभार सम्भाला है तब से उन्होंने हर प्रकार के सिक्तय कदम उठाये हे ग्रीर विभाग में हर तरह की प्रगति हुई है और मद्यपान की प्रवृत्ति में भी कमी ग्राई है। यह कहना भी अनुचित न होगा कि ग्रभी हाल में १४ ग्रावकारी स्पिरन्टेडेण्ट, १४ क्लर्क ग्रोर २५ ग्रावकारी पियस के स्थान ग्रभी कियेट कराये गये है। इसी उद्देव्य से कि जो ग्रपराथ बढ़ रहे हैं उनको रोका जाय। इस विभाग में ग्रभी तक ऐक्साइज इंस्पेक्टर की तरक्की के लिये कोई रास्ता नहीं था। मंत्री जी ने सुपरिन्टेंडेंट की पोस्ट क्रिएट करके ऐक्साइज इंस्पेक्टर्स को प्रोत्साहन दिया है।

एक प्रोहिबिशन ऐडवाइजरी कमेटी भी सरकार ने नियुक्त की है जिसके म्रध्यक्ष भी रामस्वरूप यादव, उप-मंत्री, गृह विभाग है भीर ४,५ सदस्य है। यह समिति ११ जिलों में खहां मद्यनिषेष है तथा तीन शहरों में जो तीर्थ स्थान है उनकी जांच करके म्रथनी रिपोर्ट देगी कि नाजायज तरीके से जो मद्यपान होता है उसकी किस प्रकार से रोका जाय। इन सब चीजों की म्रोर सरकार का ध्यान गया है।

में मंत्री जी से कहूंगा कि इस विभाग में काम करने वाले जी कर्मवारी है और भ्रन्छे कर्म-चारी है उनकी भ्रोर जब ध्यान भ्राकांवत किया जाता है तो वह स्वयं तो उचित ध्यान देते हैं, लेकिन उनके विभाग के उच्च भ्राधिकारी थोड़ी शिथिनता करते हैं। इसलिये मंत्री जी उधर भी ध्यान दें जिससे भ्राधिक कल्याण हो सके।

\*श्री राजनारायण (जिला वाराणसी) — श्रीमन्, जो कटौती का प्रस्ताव देवनारायण भारतीय जी ने प्रस्तुत किया है, मैं उसका समर्थन करता हूं। इस सदन में कल से एक प्रजीव बातावरण प्रस्तुत किया गया है। श्राज भी में देखता हूं कि कुछ लोग उसके शिकार हो रहें हैं। ग्राबकारी सम्बन्धी सरकार की नीति पर जब यहां विचार हो तो में सदस्यों से कहूंगा कि एक व्यक्ति विशेष, मंत्री के ग्रन्छा या बुरे होने से उसका श्रथं नहीं लगाया जाना चाहिये।

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

#### [भी राजनारायण]

बहुत से लोग ऐसा समझ बैठे है कि अगर सरकार की आवकारी सम्बन्धी नीति की निन्दा धा भत्सेना हुई तो शायद डाक्टर सोताराम जी की व्यक्तिगत निन्दा हो रही हैं। में यहां पर कहना चाहता हूं कि इस सदन का कोई भी सदस्य अगर हरिजन मंत्री को राम्मान देना चाहते हों तो हम किसी से पीछे नही है। हम कई बार कह चुके हैं और कल हमारे उग्रसेन जी ने स्पष्ट ही कह दिया था कि अगर इतना प्रेम हो और हरिजनों को उठाने की बात की जाती है तो क्यों नहीं डाक्टर सीताराम को बुख्य मंत्री दना दिया जाता? में आज भी वही कहता हूं कि यदि डाक्टर सीताराम जी को मुख्य मंत्री बना दिया जाय तो मुझे खुशी होगी।

श्री उपाध्यक्ष-विषय पर द्याइवे ।

## श्री राजनारायण—मे विषय पर ऋा ५हा हूं।

में कहना चाहता हू कि इसी बात को ध्यान में रखते हुए इस पर विधाव हो तो प्रन्ता है। गांबी जी का नाम क्यों न लिया जाय? जो नए नए लोग प्राये हैं उनको गार्था जी के ताम से चिढ़ हो सकती है। मगर महात्मा गांधी का नाम हिन्दुस्तान में हुर सार सम्मत वाला ध्यक्ति लेगा। वह एक प्रतीक हुए है, शराब बंदी प्रान्दोलन उनके नेनृत्य में चला है। तो क्या जब किसी सदन में शराब बंदी पर विचार होगा वहां पर गांधी जी का नाम नहीं लिया जायगा? देखा जाय कि म्राज यहां जिस रूप में कांग्रेस पार्टी बेठी हुई है, कांग्रेस नहीं, वयों कि कांग्रेस सस्वा १९४८ से पूर्व, स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व, कांग्रेस नाम था, उसमें सभी पार्टी ज समिलत श्री, वह एक राष्ट्रीय मंच था भ्रीर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कांग्रेस पार्टी हो गई, एक राजनीतिक दल हो गई जिस तरह से भन्य सभी राजनीतिक दल है। ध्रब उसमें कोई दूसरी राजनीतिक पार्टियों का सदस्य शामिल नहीं हो सकता। इसलिये जो सम्मानित सदस्य या। पर ओले इस पर विचार कर लिया करें कि वे लोग क्या कह रहें है। इसी कांग्रेस सरकार के शासन में अब यहां पर सन् ४८ में बिकी-कर लगाये जाने की व्यवस्था की जा रही थी तो सरकार को भोर से किस उद्देश्य व कारण की घोषणा हुई थी, थोड़े में में उसे म्रंग्रेजी में पढ़ देना चाहता हूं:—

"The following extract from the statement of objects and reasons may be usefully noted:—

State Government have started an extensive programme for economic and cultural development of the State. At the same time owing to prohibition, income from Excise is likely to shrink gradually. For the above two reasons and also due to the expanding activities of Government in other directions which have considerably increased the expenditure, it has become necessary to augment the revenues of the State by additional taxation."

साफ इसमें लिखा गया कि हम विकीकर क्यों लगा रहें हैं। विकीकर इसलिये सरकार लगा रही हैं कि सरकार चाहती है कि प्रान्तव्यापी द्वाराबबन्दी योजना को कार्यान्वित करें। बे पूछना चाहता हूं कि सन् ४५ से जिस उद्देश्य को ले कर । बक्रीकर लगाये जाने की नीति घहां ध्रापनाई गयी उससे क्या दाराबबन्दी से सरकारी धामदनी में कभी हुई? दाराब ध्रागर खराब चीज को एक बारगी सरकार बन्द नहीं कर पा रही है तो उससे ध्रामदनी बढ़ाने का मोह ध्राज इस सरकार को क्यों है और ध्रागर मोह नहीं है तो सरकार गलत कहती है। मेरा कहना है कि सरकार को मोह है और वह इसलिये कि लगातार इस धाबकारी विभाग से सरकारी राजकीय बढ़ता जा रहा है। सरकार की निश्चित रूप से यही पालिसी रही है कि सरकारों कोख में ध्राबकारी से ध्रामदनी बढ़े। यह सरकार निश्चित रूप से महात्मा गांधी के सिद्धान्तों की हत्या करने पर तुली हुई है और उसको कार्य रूप में परिणत करती खली जा रही है। पर साल धीर इस साल का धन्तर देखा जाय तो ५ करोड़ ४६ लाख के बजाय ५ करोड़ ६६ लाख धाधवनी हो गयी है। २० लाख इस साल बढ़ गयी।

#### १६६०-६१ के म्राय-व्ययक में मनुवानों के लिये मांगों पर मतवान--मनुवान संख्या ३-खेखा शीर्षक द-राज्य ग्राबकारी

श्चगर देखा जाय तो श्चाप यही पायेंगे कि हर साल शराब की श्नामदनी बढ़ती चली जा रही है। जहां ४६-६० में राज्य श्नाबकारी देशी शराब ब्यौरेवार लेखा संख्या ध-क के श्रन्तर्गत श्वामदनी ३ करोड़ ३७ लाख थी वहां ६०-६१ मे ३ करोड़ ५२ लाख की श्रनुमानित श्राय होने का प्रस्ताव है। तो हर तरह से सरकार श्वाबकारी के जिरये से सरकारी श्वामदनी में वृद्धि करती चली जा रही है।

कांग्रेस बेचेज की ग्रोर से कहा जाता है कि सरकार कुछ उदाहरण तथा प्रचार के लिये काम करती है तो उन बातों को भी जरा देखा जाय! मेरे पास ५६-५७ ग्रौर ५८ के ग्रांक है। हाइड्रोजिनेटेड ग्रांकोहल जहां ५७ में ५,०५५ हजार गेलन बिका वहां ५८ में १०,६८७ हजार गेलन बिका। इसी प्रकार ५७ में जहां रेपिटफाइड स्प्रिट २,४६१ हजार गैलन बिकी इस्तां ५८ में ३,४६२ हजार गैलन बिकी। जहां ५७ में पोटेबिल स्प्रिट १,१६३ हजार गैलन बिकी वहां ५८ में १,४६६ हजार गैलन बिकी। समस्त टोटल ५७ से १३ ६७६ हजार गैलन था सो ५८ में वह १५,६४४ हजार गैलन हो गया। इतना फर्क हुग्रा। तो लगातार शराब के उत्पादन में वृद्धि होती चर्ला जा रही है।

भाराब के उत्पादन में वृद्धि हो श्रीर यह सरकार यह भी कहें कि हम शराबबन्दी की योजना चला रहें हैं तो यह कितनी बड़ो विडम्बना है, कितना बड़ा परस्पर विरोध ह। श्रागे चल कर वह भी श्राप देखें कि सरकार की श्रीर से एक पुस्तिका बंटी हुई है मद्यानिषेघ की । में जरूर कहना चाहता हूं एक वाक्य"एक हरिजन कांग्रेसी मंत्री श्रीर एक विश्वारों ब्राह्मण कांग्रेसी मंत्री ।' में दाक्टर सीताराम जी से व्यक्तिगत तरी के से कहूंगा । डाक्टर सीताराम जी हपने तबनुरूप ध्यने विभाग को ले चलने में श्रसमर्थ हो रहे हैं । में पूछना चाहता हूं कि हरिजन का उत्यान कराब बढ़ने से होगा या शराब घटने से होगा ? हमें गलत श्रीर भ्रामक श्रांकड़े न दिये जायं । चस्तु-स्थिति का दुराव न किया जाय बल्क उसकी प्रकाश में लाया जाय । सन् १६४२ में कितनी शराब की बिकी थी ? ३ लाख गैलन। सन् १६४६ में १३ लाख गैलन तक हुई । इसके बाद ११ लाख गैलन हुई श्रीर फिर ६ लाख गैलन हुई । सरकार जब तुलना करती है तो सन् १६४६ से करती है जबकि १३ लाख गैलन शराब की बिकी हुई थी । वह लड़ाई का जमाना चाशीर न मालूम किस किस ढंग से शराब की खपत होती थी । तो श्रांकड़े की तुलना जब सरकार करती है तो सन् १६४६ से सन् १६४६—४६ का करती है । क्यों न सन् ४०, ४१, ४२ के श्रांकड़ों से तुलना की जाय श्रीर तब देखा जाय कि उस समय से शराब की बिकी में वृद्धि हुई है या नहीं । श्रीर मेरा कहना है कि ३ गुना वृद्धि हुई है ।

गांजे के बारे में ग्रब जरा देखिये। जहां ४०,२५१ सेर गांजा सन् १६४६-४७ में बिका बहां सन् ४८-४६ में सरकारी ग्रांकड़ों के ग्रनुसार केवल १८५१/४ सेर गांजा बिका। गांजे की बिक्री में इतनी कमी हो गई। में इस विभाग से पूछना चाहता हूं कि वया यह सही है कि ४०,२५१ सेर से गांजे की बिक्री घट कर केवल १८५ सेर ही रह गई? यह दुराव है, यह खिपाव है। इससे भ्रष्टाचारिता को प्रोत्साहन मिलता है। ग्रभी में मिर्जापुर गया था। बहां जो हैविचुग्रल गांजा पीने वाले हैं उनको परिमट से मिल जाता है। में जा कर वहां पास में बैठा तो देखा कि जितना गांजा कोई च।हे ले सकता है। यह में ग्रहरौरा बाजार की बात कहता हूं। जो ग्रखबारों में निकलता है कि इतना गांजा पकड़ा गया ग्रगर उसी को जोड़ा जाय तो न जाने कितना हो जाता है। ग्राखिर वह सब कहां जाता है?

एक बात में ग्रीर कहना चाहता हूं कि में इस सरकार की ग्राबकारी सम्बन्धी नीति के विरोध में सोशालिस्ट पार्टी क्या कदम उठायेगी उससे इस सदन को ग्रवगत करा देना चाहता हूं। हो सकता है कि पहली मई, सन् ६० से हमारे सत्याग्रह का एक यह भी ग्रंग हो कि शराब की मूकानों पर पिकेटिंग करें जैसा महात्मा गांधी के जमाने में करके देश की जनता को जगाया और श्रंग्रेजों के राजमुकुट को गिराया। तो यह भी एक ग्रपना कार्यक्रम सोशलिस्ट पार्टी रखने जा रही है।

श्री उपाध्यक्ष--समय समाप्त हो गया।

मान्धातासिंह (जिला बलिया)--माननीय उपाध्यक्ष महोदय, में जो इस सदम मैं कटौती का प्रस्ताव पेश हुन्ना है उसका विरोध करने के लिये खड़ा हुन्ना हूं। जी ने खड़े हो कर इस सरकार की ब्राबकारी नीति को दुरंगी नीति कहा। उस सम्बन्ध में मन्न यह कहना है कि भारतीय जी को श्रभी विशेष रूप से मालूम नहीं है । में बतला देना चाहता हं कि सन् १६३८ में ही जब लोकप्रिय मंत्रिमंडल हमारे इस प्रदेश में कायम हुपा था उसी वक्त उन्होंने श्रपनी श्राबकारी नीति में एक बहुत बड़ा परिवर्तन किया था श्रीर उसी समय से महात्मा गांधी के बतलाये हुये मार्ग पर कायम रहने के लिये ७ जिलों में नज्ञाबन्दी करने का एलान कर दिया था। उसके बाद से उनके सामने यह चीज कभी भी नहीं है कि हम ग्राबकारी के महकमे से श्रपनी ग्राम-दनी बढ़ायें। इसके बाद जब १६४७ में हमारी लोकप्रिय सरकार कायम हुई भीर देश को ग्राजाबी हासिल हुई उस समा से उसने ग्रपना काम शुरू किया ग्रीर नशाबन्दी के बारे में जो काम किया गया है। वह काफी प्रसंशनीय है। स्रंग्रेजों ने लिंदयों से हमारे देश में स्राबकारी विभाग को श्रामदनी करने का जरिया बना रखा था श्रौर जनता के श्रन्डर नज्ञा पीने की कुप्रशा फैन गई थी, इसलिये जनता के हृदय को परिवर्तित करके, न ो की भ्रादत को दूर करने के निये हमारी सरकार ने ब्रान्दोलन शुरू किया ब्रौर जगह-जगह जैसा कि इस किनाब ने मालूम होत है, यह प्रचार करना शुरू किया ग्रार लोगों को समझाना शुरू किया ि नशाखोरी से मुल्क बरबाद हो सकता है, समाज की व्यवस्था खराब हो सकती है श्रीर लोगों की दशा खराब हो सकता है, इस चीज को सामने रखकर हमारी सरकार ने इस पर ग्रमल करना शुरू किया। यह जो कु गया फैल गई है इसको एक दम बंद कर देना ग्रसम्भव है। श्रभी राजनारायण जी ने बताया कि नैपाल से गांजा श्राता है जो ब्लैक में बेचा जाता है श्रौर इसमें अव्टाचार काफी है इसलिये श्रगर प्र तेबन्ध लगाकर एक दम दुकानें बन्द कर दी जायंगी तो नतीजा यह होगा कि लोग चोरी से पीना शुरू कर देंगे। इसलिये सरकार का यह खयाल है और वह यह चाहती है कि लोगों के बीच में जाय, उनको समझाये और उनके हृदय में परिवर्तन लाकर उनके दिल से नशाबन्दी की पादत निकाल दे। इसको मद्देनजर रखकर सरकार ने काम शुरू किया है।

श्रव रह गया सवाल श्रव्हाचार का। उसके सम्बन्ध में यह है कि मंत्री महोवय को विभाग की सारी बातों को देखने का मौका नहीं मिलता है। उन्होंने नशाबंदी श्रांदोलन में बहुत काम किया है। लेकिन इस विभाग के जो उच्च श्रिष्ठकारी हैं उतकी श्रोर में मंगे जी का ध्यान दिलाना चाहता हूं कि सरकार की जो इस सम्बन्ध में नीति हैं उतको ईमानदारी के साथ कार्यं रूप में यह लोग परिणत नहीं कर रहे हैं जिसते श्रव्हाचार फैन रहा है। जहां तक छोटे कर्मचारियों का सवाल है उनके अपर भी काफी सखती होती है ....

श्री उपाध्यक्ष—समय समाप्त । (श्री गेंदासिंह जी का नाम पुकारने पर) श्रापकी केवल १ मिनट का समय है ।

श्री बंशीधर शुक्ल (जिला खोरी)--- १ मिनट का समय हमें भी वे वीजिये।

श्री उपाध्यक्ष--गेंदासिंह जी की बात सुन लीजिये।

\*श्री गेंदासिह (जिला देवरिया)—माननीय बंशीवर जी, ४ मिनट में हमें ऐसी बाहें कहनी हैं जो ग्रापके इंटरेस्ट की भी है इसलिये ग्रगर ग्राप सुन लें तो ग्रन्छा होगा।

श्रीमन्, में यह कहना चाहता हूं कि किसी मिनिस्टर की सिसियारिटी में डाउट करना या दूसरी बात कहना, हमारा मकसद नहीं है। हमारा कुछ व्यक्तिगत संबंध भी उनसे है, इसलिये में समझता हूं कि में जो भीतरी खयाल रखता हूं उसको न कहूं तो ध्रुच्छा है। लेकिन इतना जरूर कह देना चाहता हूं कि इस डिपार्टमेंट का उनके हाथ में धाने से बिगाड़ नहीं हुआ है

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

मीर ग्रगर कुछ बना हो तो मै उस पर विश्वास कर सकता हूं। यह विभाग उनके हाथ में ग्राने के बाद बिगड़ा नहीं है बल्कि बहुत पहले का बिगड़ा हुग्रा है ग्रीर इसकी बनाने के लिये बहुत कोशिश की जरूरत है ग्रीर साहस की श्रावश्यकता है।

में एक बात जरूर सोचता हूं कि शराब पीने का काम जब गरीब ग्रादमी शुरू करता है यानी शराब पीता है तो उसको शराब पीना कहा जाता है लेंकिन यदि कोई घनवान ग्रादमी पीता है तो इलाज कहा जाता है और ग्रादमी को बुद्धि ग्रौर शक्ति देने वाली चीज कही जाती है, गरीब ग्रादमी जब पीता है तो उतको बरबाद करने वाली चीज कहा जाता है। में समझता हूं कि उधर के बैठने वालों को इस बात को सोचना चाहिये कि यह रास्ता मिंदरा छुड़ाने का नहीं है को रास्ता वह पकड़े हुये है, बिल्क वह रास्ता यह है कि सारे देश के ग्राध्यक ढांचे को बदलना होगा। इस पुस्तिका में भी यह बात लिखी हुई है, जन्म संस्कार के पहले से लेकर ग्रौर मरने तक जो पिछड़े लोग है उन में मिंदरापान ग्राधिक तादाद में पाते है। ग्रगर उनका ग्राधिक उत्यान हो तो वह भी इलाज ग्रहण करने लगेंगे ग्रौर जिस तरह से अंचे लोगों को कोई नीची निगाह से नहीं देखता उसी तरह से वे भी नीची निगाह से नहीं देखे जायेंगे ग्रौर जिस प्रकार सारे संसार में ग्रनेक दृष्टियों से नहीं देखा जाता है सम्भव है कि हमारे देश में भी ग्रनेक प्रकार की दृष्टि से न देखा जाय। में न गांधी जी की दुहाई देना चाहता हूं ग्रौर न किसी की दुहाई देना चाहता हूं। पर मैं समझता हूं कि इस को बिलकुल नय दृष्टिकोण से सोचने की ग्रावश्यकता है।

में एक बात की तरफ माननीय डाक्टर साहब श्रौर सदन का भी ध्यान ले जाना चाहता हूं, इस पुस्तिका में हमेशा शीर की भी चर्चा होती थी कि उत शीर का सरकार किस प्रकार उपयोग करती है। उसमें हम को कुछ ऐसा मोका मिल जाता था, कि हम उस पर कुछ कह सकें। श्रब की मतंबा मुझे नहीं मालूम कि डिपार्टमेन्ट ने यह क्यों मुनासिब समझा कि उस की चर्चा इसमें न करें। में समझता हूं कि उसकी चर्चा करने में कुछ कठिनाई है। में उनके डिपार्टमेन्ट को चार्ज करता हूं कि गत वर्ष, जो वर्ष गुजरा है, इसका बाजार महंगा रहा। बाजपुर कोश्रापरेटिव शुगर फैक्टरी ने डेढ़ रुपया मन शीरा बेचा श्रौर तीन-चार करोड़ मन शीरा पैदा होता है। इसमें से श्राघा शीरा गवर्नमेन्ट ले लेती है श्रौर उसको कंट्रोल प्राइस पर स्पिरिट बनाने के लिये फैक्टरियों को देती है श्रौर श्राघा मिल वालों को छोड़ देती है। इस प्रकार कुछ मोटे लोगों को मुनाफा कमाने का मौका देती है। सरकार को पह साफ करना चाहिये कि डेढ़ रुपये के स्थान पर चार श्राने मन पावर श्रवकोहल बनाने के लिये क्यों दिया जाता है श्रौर इससे क्या फायदा हुगा? जरा डाक्टर साहब इसका स्पष्टीकरण करें। दूसरे यह कि जो शीरा उससे बच जाता है उसका क्या हाल है, उसकी कीमत क्या है?

मै निवेदन करूं, इस शीरे की बिकी से पिछने जमाने में लाखों रुपये इकट्ठे हुये सरकारी स्वाने में। १६५० में बड़ी रकम इकट्ठा हुई थी। ग्रगर साढ़े तीन करोड़ मन शीरा पैदा होता है ग्रौर डेढ़ रुपये के हिसाब से दाम लगायें तो ग्रन्दाजा करें कि कितनी बड़ी रकम होती है। में जानना चाहूंगा कि एक्साइज कमिश्नर साहब की तरफ से पिछले वर्ष कोई सुझाव ग्राया कि इस शीरे का किस तरह से इस्तेमाल किया जाय, किस को रिलीज कर दिया जाय ग्रौर किस तरह से उसका इस्तेमाल किया जाय? ग्रगर मिनिस्टर साहब के पास उनकी तरफ से कोई सुझाव ग्रायाहो तो में जानना चाहता हूं। ग्रगर नहीं ग्राया है तो में शुबहे की दृष्टि से देखता हूं क्योंकि डेढ़ रुपये मन का शीरा चार ग्राने में बिक जाय ग्रौर एक्साइज कमिश्नर साहब को यह पावर हो कि कियी भी फैक्टरी को रिलीज कर दें। मुझे मालूम है कि कुछ फैक्टरियों को शीरा रिलीज हुग्रा। में समय न होने के कारण उनका नाम नहीं ले सकता। इसलिये में जानना चाहूंगा कि पिछले साल कितने शीरे की खपत हुई स्पिरिट बनाने में ग्रौर कितना मिलों के हक में रिलीज किया गया ग्रौर वह क्यों रिलीज किया गया ?

श्रन्त में इतना ही कहकर खत्म करता हूं कि यह इलाहाबाद की हालत, जो मैंने इस किताब में देखी है, मुझे कुछ जंची नहीं। पिछली योजना में इलाहाबाद में जो तय किया गया ग्रीर जो [श्री गेंद्यांसह]

गवर्नमेन्ट की पालिसी है उसके उसटे यह विभाग चलता है। जहां पर प्राइम मिनिस्टर साहब धौर एक्साइज कमिक्नर का घर है वहीं पर क्यों सारे श्रपराध होते है, यह हमकी बताने की जरूरत है।

श्री देवनारायण भारतीय—माननीय उपाध्यक्ष महोत्रय, जित मनस्यों ने मेरे कटौती के प्रस्ताव का समर्थन किया है श्रीर इस कटौती पर बोते हैं, में उत्त सभी का अन्गहीत हूं लेकिन में समझता यह हूं कि जो मेंने कटौती का प्रस्ताव रसा है वह विचाल प्रयमी जगह पर ठीक है। माननीय सदस्य, गोरखपुर ने कुछ बातें कही। में उन्हें यकीन दिनाना चाउना हूं कि में १९४७ के बाद का कांग्रेसी नहीं हूं। सन् १९४७ में यो मेंने कांग्रेत होड़ की। म उत्त लोगों में से हूं जिन्होंने १६२०—२१ में शराब की दुनानो पर पूज्य बागु कि प्राज्ञा स्व विकेश की थी। उसके बाद भी जब-जब शराबबन्दी का भानदोलन चना तो में सब में पार्ग रहा हु। कभी किसी से पीछ नहीं रहा हूं। माननीय मान्धाता सिह ने सन १६३६ की बात कही कि १६२६ में लोकप्रिय सरकार बनी ग्रीर तब उसने ७ जिलों में नशाबन्दी की। में प्राप्त होरा पाननीय सदस्य, बिलया को यह बतलाना चाहता हूं कि में भी उस लोकप्रिय सरकार पा सदस्य था। में भी उन लोगों में से था जिनके हाथ से उन ७ जिलों में नशाबंदी हुई थी। उस समप्र मं भी इस माननीय सदन का कांग्रेसी सदस्य था।

मै समझता हूं कि जिन जिलों में नशाबन्दी लागू की गई है वहां से सरकार की श्रासदनी में तो जरूर कमी हुई है जो कि सरकार के खजाने में श्राती थी लेकिन यहा पर शराब का नाजायज तरी के पर बनना बन्द नहीं किया जा सका, जिससे वहां के श्राबकारी के कमंचारियों को, जितनी राज्य सरकार को श्रामदनी होती, उससे ज्यादा श्रामदनी होने लगी हैं। इसलिये में चाहता हूं कि मद्यनिषेष के प्रोग्राम को मजबूती के साथ चलाया जाय। श्रभी ११ जिलों में शराबबन्दी लागू हैं, परन्तु इतना पर्याप्त नहीं है। इसे श्राप प्रान्त भर में हर जिले में लागू की जिये। श्राबकारी राजस्व की कमी की श्रोर ध्यान न दीजिये। श्रामदनी को सिद्धांत पर कुर्वान कर दीजिये, तभी मद्यनिषेष की नीति में श्राप सफल हो सकेंगे। वहां पर इसको पहले लागू करने की जरूरत हैं। इसमें में लखनऊ का नाम पहले लेना चाहता हूं, जहां की नशाबन्दी को सफलता देख कर दूसरे जिले श्रिक्षा ग्रहण करें। ग्रागर नशाबन्दी करना है तो उसको लखनऊ से श्रक्ष किया जाय। साथ ही इस बारे में तमाम सरकारी कर्मचारियों पर कठोर नजर रखने की जरूरत है जिससे वह स्वयं नशाबाजी श्रोर श्रष्टाचार को पुष्ट करने की कोश्रिश में न लगें श्रोर जो मद्यनियेध का श्रोग्राम है उसको सफल बनाने की कोश्रिश करें। यही मेरे इस कटौती के प्रस्ताव को गेश करने का उद्देश्य था श्रोर इसी पर में फिर बल देता हूं। मुझे श्राशा है कि मेरे कटौती के प्रस्ताव को मंत्री जी स्वीकार करेंगे।

श्री बंदािधर दाुक्ल—मेरा वैधानिक प्रक्त यह है कि हमारे लखीमपुर जिले में सरकार की तरफ से दाराब बनाने की दजाजत है श्रीर उस सम्बन्ध में वहां पर बहुत से लोग गिरक्तार कर लिये जाते हैं। उनकी तरफ सरकार का ध्यान नहीं जाता हं....

श्री उपाध्यक्ष---श्राप कृपया बैठ जाइये। यह प्वाइन्ट श्राफ श्रार्डर नहीं है।

श्री बंदाीघर दाुक्ल-मुझे श्रयने जिले की बात की श्रतेम्बली में कहने का श्रयसर नहीं मिलता है। यहां पर नदााबन्दी की बातें कही जाती है लेकिन मेरे जिले लखीमपुर की बात नहीं सुनी जाती है।

श्री उपाध्यक्ष—ग्राव बैठ जाइये।

\* खाक्टर सीताराम—उपाध्यक्ष महोदय, ग्रभी माननीय सदस्यों की बातें सुनने का मौका मिला, इसके लिये में सदन के प्रति भ्रपना भ्राभार प्रकट करता हूं। कल भ्रोर भ्राज बहुत से भाननीय

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वोक्षण नहीं किया।

सदस्यों ने भ्रयनी श्रच्छी-श्रच्छी बातें यहां पर रखने का प्रयास किया है। विरोधी दल के करीड ६५ फीसदी सदस्यों ने कल से हमारे बजट की श्रन्छी तरह से प्रशंसा की है। हो सकता है कि एक या दो सदस्य ग्रीर हों जिन्होंने कुछ दूसरी तरह से कहा हो, लेकिन उसकी कोई बात नहीं है, में आप के समक्ष साफ शब्दों में कहना चाहता हूं कि किसी भी मंत्री ने लिये जानि का प्रयोग नहीं किया जाता। माननीय राजनारायण जी, जो एक पुराने नेता है श्रीर जिन्होंने देश ग्रीर सभाज के लिये त्याग किया है, उन्होंने जो फलां-फलां हरिजन मंत्री है, श्रादि बातें कही हैं, वह उनकी विचारघारा की द्योतक हैं । जातीयता के नाम पर वह ग्रपनी विचारघारा को यहां रखना चाहते हैं। यह गलत है। भारत के संविधान के अन्तर्गत हरिजन सब्द कहीं भी नहीं लिखा हुआ है। में माननीय राजनारायण तथा श्रन्य दूसरे सदस्यों से श्रनुरोध करूंगा कि हरिजन डाव्ड यहां प्रयोग न किया जाय । केवल परिगणित जाति, शेड्यूल्ड कास्ट का उल्लेख किया जाय । मै नहीं चाहता कि इस प्रकार की भावना फैला कर जनता के बीच में इस प्रकार की बात लायी जाय कि हरिजन इतने नीचे स्तर के हैं। मै सदस्यगण से कहना चाहता हूं कि हमने महात्मा गांधी के नेतृत्व में ग्रयने देश की ग्राजादी हासिल की है। हम डाक्टर सम्पूर्णनिन्द तथा पं० जवाहर लाल जी के ग्राभारी है कि जिनके नेतृत्व में हम हरिजन उंचे उठ रहे है । हमने, किसी से कम रहें हैं ग्रौर न रह सकते है। इंसान को समय मिलना चाहिये। जब इंसान को समय मिलता है, तो उसकी मनोवृत्ति बढ़ती है, वह ऊपर उठने का प्रयत्न करता है और उन्नति करने के लिये सिक्रिय हो जाता

श्री राजनारायण-इसीलिये मैंने कहा था कि मुख्य मंत्री बना दिया जाय।

डाक्टर सीताराम—धन्यवाद! कि म्रापके मुंह से यह बात निकली। मैं सदस्यों को बधाई देना चाहता हूं। जनसंघ म्रादि पार्टियों ने भी परिवहन विभाग की प्रसंज्ञा की, लेकिन भावनाम्रों से म्रोतभोत हो कर जिन माननीय सदस्यों ने म्रपनी विचारधाराम्रों का इस सदन में प्रदर्शन किया है, वह मैं सबझता हूं, बांछनीय नहीं है।

ग्रब मैं विषय पर ग्राता हूं। माननीय सदस्य ने यह कहा कि यह खराबियां है, यह होता है। लेकिन उस के लाथ ही भारतीय जी ने यह नहीं बतलाया कि सरकार ग्राखिर किस पाजिसी को ग्रयनाये। टोटल प्राहिबिधन सरकार करे या न करे। उन्होंने दोनों के लिये कहा कि सरकार ग्रामदनी बढ़ा रही है और इस तरह से प्राहिबिधन की बात नहीं कर रही है (व्यवधान)

श्री राजनारायण—बहुत से प्वाइंट हैं, श्राप . . . .

डाक्टर सीताराम—में एक-एक प्वाइंट पर एक-एक दिन डिस्कशन कर सकता इं....(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष--म्राप बैठिये । राजनारायण जी, म्राप बैठिये।

श्री राजनारायण--हरिजन सहायक विभाग क्यों रखा गया है ? वह इसी सरकार का विभाग है श्रौर श्राप उस के एक मंत्री हैं। उसे समाप्त कर दीजिये।

श्री उपाध्यक्ष---ग्राप बैठिये।

डाक्टर सीताराम—जिस तरह की बात उन्होंने कही है वह हरिजनों की मनुष्यता पर...(व्यवधान)

श्री राजनारायण—-ग्राप मनुष्यता जानते नहीं है ...... (ब्यवधान)

डाक्टर सीताराम--में यह साफ शब्दों में कहना चाहता हूं कि ....

श्री राजनारायण—मेरा एक प्वाइंट श्राफ श्रार्डर ह। माननीय मंत्री जी कहते हैं कि हरिजन शब्द का प्रयोग यहां नहीं होना चाहिये....

श्री उपाध्यक्ष--उनकी राय है कि नहीं होना चाहिये।

श्री राजनारायण-इस सरकार का हरिजन कल्याण विभाग ह या नही ?

डाक्टर सीताराम—में कहन। चाहता हूं कि हरिजन सहायक विभाग हे लेकिन ग्रापने जिस तरह से....

(कई सदस्यों के एक साथ बोलने से सदन मे बड़ा शोर होने लगा।)

श्री उपाध्यक्ष--माननीय मंत्री जी स्नाप विषय पर बोले ।

श्री राजनारायण—विधान की व्याख्या से . . . . . .

श्री उपाध्यक्ष--मंतीन बार कह चुका हूं। बिना इजाजत इस तरह से बो नने का कोई तरीका नहीं है। श्रभी छोड़िये। बाद में देखा जायगा।

श्री राजनारायण—मे यह कहना चाहता हूं कि जो परम्परा रही ह सदन में, बह निभनी चाहिये। श्रगर श्राप चाहते हैं कि श्राप पर जो श्रद्वा ह हम लोगों की, उसकी बिना पर श्राप दबा दे....

श्री उपाध्यक्ष--म बेजा श्रद्धा नहीं चाहता। श्राप श्रपना स्थान ग्रहण करे। इसके बाद में श्रापको कुछ कहने की इजाजत नहीं देता। श्राप श्रपना स्थान ग्रहण करे।

श्री राजनारायण—हम को पर्सनल एक्सप्लेनेशन का हक ह या नही, यह मैं जानना चाहता हूं।

श्री उपाध्यक्ष-शाव बेठे। में उनको भाषण देने के लिये कह नका है।

श्री राजनारायण—मं व्यवस्था के जिये पूछ रहा है। पमन न ए।सप्लेनेझन का श्रवसर हे या नहीं ? (व्यवधान)

श्री एस० जी० दत्त (जिता कानपुर)—मेरा व्यवस्था का प्रदन है। जब एक स्पीकर बोल रहा हो तो क्या बीच बीच में बिना उपाध्यक्ष की म्राज्ञा के कोई इन्टरप्शन पैदा कर सकता है? इनके खिलाफ ऐक्शन लेना चाहिये।

## (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष—श्राप कुपया बैठिये। (श्री राजनारायण से) श्राप कृपया बैठिये।

श्री श्रमरनाथ (जिला गोरखपुर)—में एक व्यवस्था का प्रदन उठाना चाहता हूं। हरिजन कल्याणकारी विभाग पर भाषण क्यों हो रहा है, वह श्रनुदान इस समय कहां है?

श्री उपाध्यक्ष --- ग्राप कृपया बैठिये। माननीय मंत्री ग्रपना भाषण जारी रखें।

डाक्टर सीताराम—उपाध्यक्ष महोदय, तो भविष्य में हमें विषार करना होगा श्रौर जिन बातों को सदन में कहा गया है उनके बारे में कह देना में उचित समझता हूं। यह शराब का पीना किसो भी देश में श्रभिशाप की वस्तु मानी जाती है। जो व्यक्ति मद्यपान करता है वह समाज के लिये ही नहीं श्रपने परिवार के लिये भी श्रभिशाप की वस्तु बन जाता है।

श्री राजनारायण—-ग्रापके मंत्रिमंडल के सदस्य मद्यपान करते हैं। उनकी कारें तक पकड़ो गई है।

(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष--माननीय मंत्री जी श्रपना भाषण जारी रखे। उनकी बातों का जवाब देना जरूरी नहीं है।

श्री राजनारायण—श्रीमन्, श्रापने मंत्री जी से यह क्यों कहा कि इन बातों का ज्ञाब देना जरूरी नहीं है ? श्रापकी श्रोर से यह इशारेबाजी नहीं होना चाहिये।

#### (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष---म्राप कृपया म्रपना स्थान ग्रहण करे। माननीय मंत्री जी म्रपना भाषण जारी रखे। यह श्रनुचित है कि स्राप हर बार बिना स्राज्ञा के बोलने लगते हैं।

डाक्टर सीताराम–केम्रबयह कहा गया कि सरकार को जो नीति है वह श्रसफल रही है। ११ जिलों मे प्राहिबिशन किया गया और तीन धार्मिक स्थानों पर भी किया गया। ६ गजेटेड श्राफिसर भी इसके लिये काम करते है। श्रौर भी कर्मचारी इसमे काम करते है।

मद्य-निषेध योजना के श्रन्तर्गत जो कर्मचारियों ने कार्य किया है उसका ब्योरा भी मे ब्राप के सामने रखना उचित समझता हूं। इस योजना के श्रन्तर्गत सन् १६५८–५६ मे १०,६५७ प्रचार सभाये करके इसका प्रचार किया गया। इसके श्रनुसार ११,७७६ व्यक्तियों ने नहों का त्याग किया ग्रौर इस योजना को कार्य रूप में परिणत किया। संस्थाग्रों द्वारा भी ६८२ मेजिक लैन्टर्न भी दिखाई गई। चल चित्रों द्वारा भी प्रचार किया गया। उसके लिये १०, १५ स्थानों पर कमेटियां बनायी गयीं। २१,१२४ मदिरा पीने वालों से सम्पर्क स्थापित किया गया। कुछ स्थानों पर स्लाइड्स प्राहिबिशन के बारे में दिखाई जाती है जैसा कि म्रापने सिनेमाघरों में देखा होगा। स्कूलों में छात्रों ग्रौर ग्रध्यापकों के द्वारा भी मद्य-निषेघ की नीति को प्रस्तुत किया जाता है। १,३६८ पंचायतों से प्रदेश में सम्पर्क स्थापित कर के इस नीति को श्रागे बढ़ाने की कोशिश की गयी है। श्रमिक बस्तियों में, जैसे कानपुर में, काम हरिधन बस्तियों मे, बार्ल्म कि, हरिजन श्रीर परिगणित जाति के लोगों मे भी किया गया है। काफी प्रचार किया गया है। साधुश्रों से भी सम्पर्क स्थापित किया गया। हरिद्वार जैसे मेलों में साधुस्रों से सम्पर्क स्थापित करके इस कार्य को काफी प्रोत्साहन दिया जाता है। जिलों में मद्यनिघेष सप्ताह मनाया जाता है जिसमें सभाएं करके, जलूस निकाल कर जनता में इस तरह की भावना लायी जाती है कि मद्य निषेध की योजना भी लागू किया जाय।

जहां तक श्रौर जिलों का प्रश्न है, में उस सम्बन्ध में यह कहना उचित नहीं समझता, क्योंकि उसके लिये श्रधिक समय की श्रावश्यकता होगी। भारतीय जी ने बताया कि जिन जिलों में मद्य-निषेध योजना लागू है वहां सरकारी कर्मचारियों की श्रामदनी होती है। उनको में ग्राप के द्वारा यह साफ शब्दों में कह देना चाहता हूं कि जिन ११ जिलों में मद्य-निषेध योजना लागू है वहां पर सिवाय कानपुर के श्रन्य जिलों में मद्य-निषेध के कार्य को देखने के लिए पुलिस डिपार्टमेट है। जहां तक एक्साइज डिपार्टमेट की बात है, कोई भी श्रफसर उस तरह की बात नहीं करता है। में श्राप से स्पष्ट शब्दों में कह देना उचित समझता हूं कि जहां तक मद्य-निषेध योजना की बात है उस सम्बन्ध में श्राप देखे कि १९४६ ग्रौर ४७ में जो केसेज पकड़े गये ११ जिलों में, उनकी संख्या १,४६२ थी, लेकिन १९५६ में वह संख्या ६,३७० है। कारण यह है कि सरकार की यह नीति है कि जो मद्य-निषेध वाले जिले है जब तक उनमें हम पूर्ण रूप से इसको कंसालिडेट न कर ले तब तक श्रागे बढ़ने की नीति ठीक नहीं हो सकेगी, क्योंकि हम नहीं चाहते कि प्राहिबटेड एरिया में स्मर्गालग ग्रौर इल्लिसिट डिस्टिलेशन की बढ़ोत्तरी

<sup>(\*\*\*\*)</sup> नोट--माननीय उपाध्यक्ष की श्राज्ञा से यह श्रंश कार्यवाही से निकाल विया गया।

[डाक्टर जीतारःम]

हो। यह १,५६२ जो केसेज की संख्या है वह उस वक्त को है जब थे ११ जिले रेट्थे, जर कि वहा शराब बिकती थी, श्रब १६५५—५६ में वह वेट्नहीं है, ड्राई है तो ६,३७० केसे उपकड़े गये। कारण यह है कि इन्सान को शराब पोने को भावना एक या दो दिन में नहीं छड़ाई जा सकती। जब तक पूरा समाज उसके लिये सहयोग न करे नब तक यह मद्य-निषेध योजना दुनियां के किसी भो देश में कानयाब नहीं हुई है। यह बड़े ही गर्व की नात है कि हमारे देश के कर्णधारों ने हमारे संविधान मे प्रावीजन रख दिया है कि प्रान्तोय सरकारे मद्य-निषेध योजना को श्रग्रसर करे श्रीर उसी नीति के श्रन्तर्गत श्रोर उन्हीं सिद्धान्तों पर यह सरकार श्रमत सब रही है, लेकिन उसके साथ ही समाज का सहयोग श्रावश्यक है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, श्रापने तो श्रन्य देशों का काकी श्रमण किया है श्रोर उससे श्राप को काकी जानकारों है। में निहायत श्रदब से कहना उचिन समझता हूं कि श्रमेरिका, जहां जननंत्र श्रौर जनहूरियत श्रौर हे गिकेन। का नारा लगाया आता है वहां २० साल तक प्राहिविशन डिक्लेयर रहा, वहां तो इतना रेस्ट्रिक्शन था कि जो शराब पोता था वह चचं में नहीं जा पाता था, उस की शाद नहीं हो सकती थी श्रौर इसके श्रलावा सरकारी कानूनों के जिरये काकी प्रतिबन्ध था, लेकिन फिर भो वहां पर २० साल के बाद वहा की सरकार को इस प्राहिबोशन की पालिसी को स्केश करना पड़ा। श्रमः पारमाल यूनाइटेड नेशंस श्रामंनाइजेशन के प्राहिबोशन रिक्शन के डायरेक्टर जनरल हमारे यहां श्राय थे। उन्होंने यहां की कार्य प्रणाली श्रौर श्रकपरों को फार्यपदुता को देख कर जो प्रशंसा का वह श्रित वांछनीय है। लेकिन मद्यनिषेध के सम्बन्ध में जब तक जनना की भावना को नहीं बदला जायगा तब तक सफलता नहीं मिल सकेगी, कायदे कानून तो केवल रक्षा के लिये बनाये जाते हैं। इम नोति में जनता किस तरह से कोश्रापरेट करे उस के लिये प्रचार को श्रावश्यकता पड़ती है। मानना य सदस्यगण से हम श्रनुरोध करेंगे कि वह श्रमनो कान्स्टोड्स्एन्सी में जनता से कहें कि वह श्रराब न पिये।

एक माननीय सदस्य ने फहा कि गांजे को बिक्री कम हो गई है। उनका मतलब शायब यह था कि जब तस्कर व्यापार बढ़ा तब गांजे को बिक्री कम हुई। यह बात नहीं हे। शायब माननीय सदस्य इस बात को नहीं जानते। में उनको सूचित करना चाहता हूं कि गांजा जो हे...

''श्री राजनारायण—माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरा क्या मतनत्र था उसको ठोक समझकर मन्त्री जी जवाब दें।

श्री उपाध्यक्ष---ग्राप बेठें।

डाक्टर सीताराम उपाध्यक्ष महोदय, १ ग्रप्रैल, १९५६ से गांजा बन्द कर दिया। श्रव यह उन्हीं लोगों को मिलता है जिनको डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट सर्टीफाई करता है, जो उसके मरीज हों। ऐसी स्थिति में जब गांजा बिल्कुल बन्द कर दिया गया तो उस की बिक्री का प्रक्रन नहीं उठाता।

उपाध्यक्ष महोवय, इसी बजट में प्राविजन है कि एक्साइज में स्टाफ बढ़ाया जाय, प्राहिबिशन में भी स्टाफ बढ़ाया जाय थ्रौर कुछ पोस्टें परमानेन्ट की जायं। जहां तक एक्सा-इज स्टाफ का सवाल है, स्मर्गालंग को रोकने के लिये हमारे यहां ५ एन्फोर्समेन्ट स्क्वाड ह। नेपाल या तराई एरिया से जो स्मर्गालंग होती है उस को रोकने के लिये गोरखपुर में हेडक्वार्टर है, मध्य प्रदेश से स्मर्गालंग को रोकने के लिये झांसी में स्क्वाड है, उसी तरह से भ्रलीगढ़ में राज-स्थान से स्मर्गालंग को रोकने के लिये स्क्वाड है थ्रौर बिहार से स्मर्गालंग को रोकने के लिये इलाहाबाद में स्क्वाड है। इस तरह से हमारे ५ स्क्वाड काम कर रहे है। इस साल के बजट में स्क्वाड्स की ऐक्टिविटीज को इन्टेंसीफाई करने के लिये ५ पिक-भ्रप्स की व्यवस्था की गई है ताकि व काफी सतर्कता के साथ काम कर सकें।

एक माननीय सदस्य, श्री शुक्ल जी, ने लखीमपुर खीरी के बारे में कह दिया कि वहां पर शराब बनती है। एक जगह की दुकानों पर जो शराब बिकती है उस एरिया के लोग उस बोतन को दूसरी जगह नहीं ले जा सकते क्योंकि उसमें कर्लारग कर दी जाती है। यह व्यवस्था इसलिये की गई है कि उस एरिया में वही चीज बिके।

श्री भारतीय जी ने कहा कि शाहजहांपुर का किस्सा सबजुडिस है। वह सही है ग्रौर उस सम्बन्ध में में बहुत कुछ कहना ठीक नहीं समझता हूं। यह भी सही है कि उन्होंने कमेटियों में ग्रौर दूसरी जगह इस बात की चर्चा की है। उन्होंने यह भी कहा कि शाहजहांपुर के ढ़ाई घाट के मेले मे ग्राबकारी का कोई प्रचार नहीं हु गा। लेकिन जो रिपोर्ट हमारे पास ग्राई है उसी सरकारी रिपोर्ट के मुताबिक हम कह सकते है। यह सूचना जिला टेम्परेन्स बोर्ड के जरिये से मिली है। जैसा ग्रापने कहा तो यह रिपोर्ट मेरे पास ग्राई....

श्री उपाध्यक्ष--- ग्राप के तीन चार मिनट ग्रौर रह गये है।

डाक्टर सीताराम—माननीय गेंदा सिंह जी ने मोलेसेज के प्रोडक्शन के बारे में कहा। मोलेसेज का प्रोडक्शन १६४४-४६ में १,०४,७३,२०६ मन हुम्रा, १६४६-४७ में १,८६,३०,०६३ मन, १६४७-४८ में ८६ लाख मन म्रीर १६४८-४६ में ८७ लाख मन हुम्रा। इसके लिये इस स्टेट में बहुत ग्रच्छा स्कोप है। इसके बारे में ग्रधिक चर्चा की ग्रावश्यकता नहीं है। १६४६ के ऐक्ट के ग्रनुसार जो मोलेशेज बोर्ड बना हुम्रा है वह उसके डिस्ट्रीब्यूशन के बारे में तय करता है। सदन के माननीय सदस्य भी उसके मेम्बर है।

श्रव रही पावर श्राकोहल की बात। यह मोलेसेज से बनाया जाता है। उसका प्रोडक्शन श्रोर कंजम्पशन दोनों करीब-करीब बराबर है। इस समय तो उसकी कोई कठिनाई नहीं है, लेकिन श्रागे चल कर हो सकती है, क्योंकि बरेली में सिथेटिक रबर फैक्ट्री के लिये काफी एल्कोहल की श्रावश्यकता होगी। बंगाल में भी एक फैक्ट्री लग रही है, उसकी मांग भी गवर्नमेंट के पास श्रायी है। श्रांध्र गवर्नमेंट ने भी लिखा है कि उनके यहां की रेयन फैक्ट्री के लिये पावर एल्कोहल की मांग है। तो श्रागे चल कर इसकी समस्या हो सकती है।

इन चन्द शब्दों के साथ जिन माननीय सदस्यों ने श्रपने सुझाव दिये, उनके प्रति में अपना श्राभार प्रदिश्ति करता हूं श्रीर भारतीय जी से श्रनुरोध करता हूं कि वे श्रपने कट-मोशन को वापस ले लें।

्षा । श्री हरीसिंह (जिला मेरठ)—उपाध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न यह है कि जो लोग शराब पीते हैं उन हो तो नशा श्राता ही है, लेकिन श्राज जो शराब का श्रनुदान प्रस्तुत हुश्रा है उससे ही इतना सुरूर हो गया है।

\*श्री राजनारायण—श्रीमन्, मं श्राप के द्वारा यह निवेदन करना चाहता हूं। मेरा यह पर्सनल एक्सप्लेनेशन हैं। मालूम नहीं मेरे किस वाक्यांश से माननीय सीताराम जी ने यह भाव निकाला कि में हरिजनों को ब्राह्मण या कायस्थों से छोटा समझता हूं। मुझे पता नहीं, लेकिन इसका मुझे दुःख है कि मेरे किसी ऐसे वाक्य का उन्होंने ऐसा श्रर्थ निकाला। में श्रीमन् से निवेदन करूंगा कि मेरे ऐसे वाक्य को श्रगर कोई हो तो उसको कार्यवाही से निकाल दिया जाय। क्योंकि इस हरिजन शब्द का प्रयोग महात्मा गांधी ने किया है। यदि हरिजन शब्द से डा० सीताराम को चिढ़ है तो मुझे श्राश्चर्य है।

श्री उपाध्यक्ष—यह पर्सनल ऐक्सप्लेनेशन नहीं है। इसके बारे में माननीय राजनारायण जी को हमेशा कुछ भ्रम रहता है। पर्सनल ऐक्सप्लेनेशन में यह होता है कि माननीय मंत्री जी ने श्रापके बारे में श्रगर कोई बात कही है या फैक्ट्स के बारे में कही है तो

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री उपाध्यक्ष]

भ्राप यह कह दें कि यह मैने नहीं कहा। हरिजन शब्द के बारे में श्राप की श्रौर उनकी दो राये भी हो सकती है। इस राय के सवाल पर कोई पर्सनल एक्सप्लेनेशन नहीं हो सकता।

श्री राजनारायण—श्रीमन्, जरा देखा जाय, श्राप जब श्रध्यक्ष पद पर श्रासीन है तो इस समय जो श्राप की व्यवस्था होगो वही चलेगी। में समझता हूं कि यदि में श्राप की जगह पर होता....

श्री उपाध्यक्ष—श्रापने बतला दिया, श्रब श्रापका कोई पर्सनल एक्सप्लेनेशन हो तो बतला दें।

श्री राजनारायण—मेरा कहना यह है कि श्रगर मेरे बारे में यहां पर कोई भ्रम उत्पन्न किया जाय तो उस सम्बन्ध में मैं कैसे सफाई दूंगा, इसको श्राप थोड़ा-सा बतला दें।

श्री उपाध्यक्ष-श्राप वही कह देंगे कि मैने ऐसी कोई बात नहीं कही।

श्री राजनारायण—ग्रगर ग्राप सुनेंगे तभी तो ?

श्री उपाध्यक्ष---श्राप कहें।

श्री राजनारायण—में इस बात को साफ कह देना चाहता हूं कि सदन के किसी भी माननीय सदस्य को हमारे किसी वाक्य से यह श्रम नहीं होना चाहिये कि हम हरिजन को किसी से छोटा समझते हैं या जाति पांति की व्यवस्था को कायम करने का तिनक भी प्रयत्न करते हैं . . .

श्री उपाध्यक्ष----श्राप वही रेपिटिशन कर रहे हैं।

श्री राजनारायण—श्रीमन्, स्पीकर वही हैं जो कम से कम बोले। श्रगर हमारे किसी वाक्य से किसी को ....

श्री एस० जी० दत्त (जिला कानपुर) --- श्रीमन्, एक मेरा व्यवस्था का प्रक्त है।

श्री उपाध्यक्ष-ग्राप कृपया ग्रपना स्थान ग्रहण करें।

श्री राजनारायण—दूसरी बात में यह कहना चाहता हूं कि मेने किसी भी स्तर पर यह बात नहीं कही कि माननीय डाक्टर सीताराम चूंकि हरिजन है इसलिये दूसरे मिनिस्टरों से हेय है। फिर श्रगर उन्होंने यह श्रर्थ लगाया तो हमारे साथ श्रन्याय किया।

इसके श्रलावा तीसरी बात यह है कि हरिजन शब्द कहने से श्रगर हमारे कुछ ऐसे सदस्यों को एतराज है तो डाक्टर सीताराम के विभाग की तरफ से ही जो किताब निकली है उसमें बार-बार हरिजन शब्द श्राया है, श्रव्छा हो कि वे उस को उसमें से निकाल दें श्रीर हरिजन शब्द का प्रयोग हमेशा के लिये विजत करा दें। लेकिन हमारी साधुता को दुष्टता न माना जाना चाहिये। मुझे बड़ा दुःख है कि हमने तो प्रयत्न किया डाक्टर सीताराम को बढ़ाने का, लेकिन वे श्रपने को गिराने को तैयार है, तो हम उनको रोक नहीं सकेंगे।

श्री गौरीशंकर राय (जिला बिलया)—श्रीमन्, मै एक व्यवस्था का प्रक्त उपस्थित करना चाहता हूं।

श्री उपाध्यक्ष - स्नाप क्रपया स्रपना स्थान ग्रहण करें। ग्रव में प्रदन उपस्थित करनें के लिये खड़ा हुन्ना हूं।

प्रक्त यह कि सम्पूर्ण अनुदान के श्रघीन मांग की राशि में सौ रुपये की कमी कर दी आय।

कमी करने का उद्देश्य—विशिष्ट शिकायत जिस पर चर्चा उठाने का म्रभिप्राय है। राज्य सरकार की मद्य-निषेध नीति की श्रसफलता पर विवाद करना।

(प्रक्त उपस्थित किया गया स्रौर विभाजन की मांग होने पर घंटी बजायी गयी।)

श्री गौरीशंकर राय-शीमन्, मेरा एक व्यवस्था का प्रक्त है।

श्री उपाध्यक्ष—डिवीजन की घंटी बजने पर कोई व्यवस्था का प्रश्न नही उठाया जा सकता है।

श्री एस० जी० दत्त-शीमन्, इसी बीच में मेरा भी एक प्रश्न ले लिया जाय।

श्री उपाध्यक्ष--ग्राप ग्रपना स्थान ग्रहण करें, इस समय डिवीजन चल रहा है।

(प्रश्न पुनः उपस्थित किया गया श्रौर हाथ उठाकर विभाजन होने पर निम्नलिखित मतानुसार श्रस्वीकृत हुग्रा--

पक्ष मे--४२,

विपक्ष में--१३७।)

श्री उपाध्यक्ष——प्रश्न यह है कि श्रनुदान संख्या ३——राज्य श्राबकारी——लेखा शीर्षक द——राज्य श्रावकारी के श्रन्तर्गत ६७,४४,६०० रुपये की मांग, वित्तीय वर्ष १६६०—६१ के लिये, स्वीकार की जाय ।

(प्रक्त उपस्थित किया गया श्रौर हाथ उठाकर विभाजन होने पर निम्नलिखित मतानुसार स्वीकृत हुग्रा —-

पक्ष मे--१२८,

विपक्ष मे--४३ ।)

श्री गौरीशंकर राय—श्रीमन्, मेरा व्यवस्था का प्रश्न रह ही गया । वह यह है कि स्रभी तक सदन में इस समय तक पीने पिलाने और शराब का मामला चलता रहा और उसके बाद फिर जंगल में जाने की बात है । तो मेरा निवेदन है कि ऐसी श्राप व्यवस्था करे कि जब नशा उतर जाय तब जंगल में जायं क्योंकि शाम को प्रिन्टिंग का श्रनुदान है श्रन्यथा जंगल में ही सब भूल जायेंगे ।

श्री एस०जी० दत्त-मेरा भी व्यवस्था का प्रश्न है। स्राज नशाबन्दी का स्रनुदान था स्रौर बहुत जोश खरोश भी रहा। कुछ माननीय सदस्य ऐसे है जिनको नशा स्रभी तक चढ़ा हुस्रा है। इसलिये मै चाहुंगा कि डाक्टर को बुलवा कर एग्जामिनेशन करवा दिया जाय।

श्री उपाध्यक्ष---ग्राप पहले ग्रपने से शुरू कीजिये । (हंसी)

# **ग्रमुदान संख्या ५——लेखा शीर्षक १०——वन**

श्री उपाध्यक्ष——वन ग्रनुदान के लिये मैने समय रखा था साढ़े बारह से साढ़े तीन बजे तक । लेकिन कुछ लोगों को दिलचस्पी है तो ४ बजे या साढ़े चार बजे तक का समय कर दिया जाय ?

श्री गोविन्दिंसह विष्ट (जिला ग्रल्मोड़ा)—एक घंटा समय ग्रौर बढ़ा दिया जाय क्योंकि इघर कई साल से प्रिन्टिंग पर बहस नहीं हुई है तो उस पर भी बहस हो जाय । श्री उपाध्यक्ष—समय बढ़ाने का सवाल नहीं है श्रभी । इसी में से समय निकल सकता है । इसलिये मैं ४ बजे तक वन श्रनुदान के लिये समय रखता हूं श्रौर ४ बजे से ४ बजे तक प्रिन्टिंग श्रौर स्टेशनरी का श्रनुदान चलेगा ।

संसदीय विषयक उपमंत्री (श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट)—उपाध्यक्ष महोदय, मैं राज्यपाल महोदय की सिफारिश से प्रस्ताव करता हूं कि ग्रनदान संख्या ५— वन—लेखा शीर्षक १०—वन के ग्रन्तर्गत २,८६,५३,५०० रुपये की मांग विलीय वर्ष १६६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय ।

उपाध्यक्ष महोदय, मुझे पूर्ण विश्वास है कि वन विभाग का जब भी बजट सदन में श्राता रहा है माननीय सदस्यों की सहानुभूति रहीं है श्रीर सदा सदन ने यह विचारधारा रखी है कि जितना श्रनुदान वन विभाग की दिया जा रहा है......

श्री राजनारायण(जिला वाराणसी) — मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। मंत्री जी किस हैसियत से वन श्रनुदान प्रस्तुत कर रहे हैं ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट--मुझे मंत्री महोदय ने इजाजत दी है कि में उनके बिहाफ में इस ग्रनुदान को प्रस्तुत करूं।

श्री राजनारायण—श्रीमन्, श्राप जरा उस इजाजत को देख लें क्योंकि उन्होंने कहा है कि लिखित इजाजत दी हैं।

श्री उपाध्यक्ष--उन्होंने कहा है कि इजाजत वी है, लिखित इजाजत के बारे में नहीं कहा।

समाज कल्याण मन्त्री (श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य) -- इजाजत का कोई प्रश्न ही नहीं है। कोई भी हममें से पेश कर सकता है।

श्री उपाध्यक्ष-यह ठीक है। उन्होंने किसी विशेष ग्रावमी से निवेदन किया होगा।

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट—में कह रहा था कि सदन ने सदा यह विचारधारा रखी है कि यह विभाग हमारे देश के उत्थान का विभाग है। इसके लिये जो भी ध्रनुदान दिया जा रहा है वह श्रावश्यकता के मुताबिक बहुत कम है श्रीर इसी विचारधारा के श्रन्तर्गत में सदस्यों को बतलाना चाहता हूं कि इस विभाग से सरकार को ५६२ लाख रुपया सालाना की श्रामदनी होती है श्रीर श्रनुदान केवल २८६ लाख रुपये का मांगा गया है। मुझे विश्वास है कि सदन को इसकी जरूर स्वीकार करेगा।

मगर इस श्रवसर का फायदा उठाते हुये में थोड़ी बातें बताना चाहता हूं। में श्रधिक समय तो नहीं लूंगा क्योंकि श्राञ्चा है कि माननीय सदस्य कई किस्म की विचारधारा सरकार के समक्ष रखना चाहेंगे श्रौर सरकार भी उनसे लाभ उठायेगी। इसलिये में थोड़ी बातें ही बताना चाहता हैं।

माननीय सबस्यों को मालूम होगा कि इस विभाग का निर्माण १८६८ में हुआ। सबसे पहले १८६८ में एक ट्रेंड श्राफिसर वन विभाग का कार्य करने के लिये नियुक्त किया गया। उससे पहले वन विभाग जितना था वह नो मैन्स प्रापर्टी होती थी, कोई नियंत्रण उस पर नहीं था श्रीर जो जितनी वन की सम्पत्ति काम में लाना चाहता था, ला सकता था।

सन् १८७६ में पहले पहल इन्डियन फारेस्ट ऐक्ट पास किया गया। उसके तहत यह विभाग तब से ग्रब तक काम कर रहा है। १०० वर्ष का इस विभाग का इतिहास है। इससे पहले यह विभाग नहीं था ग्रौर न कोई एफारस्टेशन की स्कीम ही चलती थी ग्रौर न साइंटिफिक तरीके से वन विभाग काम करता था जैसे कि ग्राज कर रहा है।

श्रब में सदन का ध्यान इस श्रोर श्राकांषत करना चाहता हूं कि वन विभाग को हमने तीन टुकड़ों में बांटा है जिसमें कि वह काम कर रहा है। हिमालय की जो सबसे ऊंची-ऊंची श्रेणियां हैं वहां जंगल नहीं उग सकते। १० हजार फुट तक की बुलन्दी तक ही हमारे जंगल उगते हैं। हिमालय पहाड़ की जो रेंज ४ हजार से ले कर १० हजार फट की बुलन्दी तक है वहां चीड़ व देवदार, कैलफर, कौनीफोरस वृक्ष लगाये जाते है। इसी भूभाग में हमारे सारे जंगल हैं।

श्राप देखेंगे कि ५१ जिलों में से केवल १७ जिले ऐसे हैं जिनमें जंगल विभाग का काम हो रहा है। बाकी जो जिले हैं उनमें कोई भी जंगल नाम मात्र को नहीं है। इसलिये माननीय सदस्यों की एचि वन विभाग की श्रोर उतनी नहीं है। सिर्फ १७ जिलों के माननीय सदस्य इस विभाग में दिलचस्पी लेते हैं श्रौर श्रधिकांश सदस्य जो यहां थे वे इसीलिये चले भी गये। लेकिन में उनका ध्यान श्राक्षित करना चाहता हूं कि यह बहुत महत्वपूर्ण श्रनुदान है, इससे हमारे देश का भविष्य बहुत उज्जवल व उन्नत हो सकता है। श्रगर रुचि ली जाय तो सारे प्रदेश में जंगल लग सकता है जिसकी नितान्त श्रावश्यकता भी है।

सबसे ग्रधिक जंगल उत्तरी हिस्से में हैं--टेहरी गढ़वाल, गढ़वाल, नैनीताल, ग्रल्मोड़ा जिन्हें उत्तराखंड वगैरह में कुमायूं डिवीजन कहते हैं। फिर तराई व भाबर के जंगल प्राते हैं। गोरखपुर, गोंडा, बहराइच, लखीमपुर-खोरी, पोलीभीत, नैनीताल, फिर तराई भावर में पाये जाते हैं। इन जंगलों में ब्राड लीव्ज के वृक्ष होते हैं जैसे साल वगैरह के। तीसरे प्रकार के जंगल दक्षिणी भाग में पाये जाते है और वह झांसी, बांदा, मिर्जापुर का इलाका कहलाता है। तो इस प्रकार से उत्तर प्रदेश के जंगलों को वितरित किया गया है और इन जंगलों का जो पूरा एरिया है उसे जानकर ग्रापको ताज्जुब होगा कि १३ हजार स्क्वायर माइल्स में हमारे प्रदेश में जंगल फैले हुए हैं और जंगलों की वेल्यूएशन की गयी तो अनुमान यह लगाया गया कि ४०० करोड़ रुपये के दरस्त हमारे जंगलों में हैं। इससे भ्रापको स्वयं मालूम हो जायगा कि यह एक बड़ी धनराशि है जो कि हमारे देश का एक ऐसा धन है जैसे कि रिजर्व बैंक में हमारा सोना हो । इतनी बड़ी धनराशि को हम श्रवहेलना की नजर से कतई नहीं देख सकते। हम लोगों को सोचना होगा कि इतनी बड़ी सम्पत्ति, जो हमारे राज्य की है, उसकी उन्नति हम कैसे करें, उसका संरक्षण कैसे करें, उसका प्रतिपादन कैसे करें थ्रौर उसका सही इस्तेमाल कैसे करें श्रौर उसके केवल ब्याज का उपभोग कैसे करें ताकि मूलधन सुरक्षित रहे। विचारधाराश्रों को लेकर वन विभाग ने कई योजनायें बनाई है। इतना होने पर भी हमें संतोष नहीं है कि हमारे यहां जंगल ५र्याप्त मात्रा में हैं। वन विभाग के एक्सपर्ट्स का कहना है ग्रौर जो कमेटी इस संबंध में बैठी उसका भी सुझाव यह है कि हमारा प्रदेश तब उन्नतिशील प्रदेश कहलायेगा जब कि हमारे यहां ६० फीसदी पर्वतीय भूभाग में श्रौर २० फीसदी मैदानी इलाके में जंगल लगे हों। लेकिन ग्रब तक के जो श्रांकड़े हैं उनसे विदित होगा कि पर्वतीय प्रदेश में ४६, ५० परसेंट ही हमारे पास जंगल हैं । तो वहां भी हमारे यहां श्रभी जंगलों की कमी है । ऐसे ही मैदानी हिस्सों में जहां २० सैकड़ा की श्रावश्यकता है वहां ५ सैकड़ा भी जंगल नहीं हैं । साफ जाहिर है कि जंगलों की काफी कमी हमारे यहां है श्रौर खास करके मैदानी हिस्से जो, गंगा श्रौर यमुना का दोश्राब है, इसमें तो जंगल बिलकुल नहीं हैं। इसलिये जो तृतीय पंचवर्षीय योजना तैयार की जा रही है उसमें एक ऐसी योजना बनाई गई है कि हर ब्लाक में जंगलों को पैदा किया जाय ताकि चरागाह हो सकें, खेती के लिये श्रौजार बनाये जा सकें, इमारती लकड़ी मिल सके और ईधन वगैरह की सुविधा हो सके । तो मैं यह कह रहा था कि हमारे यहां जंगलों की काफी कमी है ऋौर इस कमी में ऋौर भी कमी दिन प्रति दिन इसलिये भी होती जा रही है क्योंकि कई किस्म के नियोजन के काम हो रहे हैं, जैसे रीवर वैली प्रोजेक्टस बने हैं, डैम्स बने है, कैनाल्स व कालोनी बनी है। तो जिस विभाग को जमीन की जरूरत होती है वह हमेशा वन विभाग की तरफ ही नजर लगाता है श्रौर श्रधिकांश जंगल दिन प्रति दिन कटते जा रहे है। श्रापको मालूम होगा कि श्रंग्रेजी हकूमत के जमाने में भी जब लड़ाई का जमाना श्राया तो बेशुमार फेलिंग की गई क्योंकि उनको स्लीपर वगैरह के लिये लकड़ी की बहुत ग्रावश्यकता थी । इसलिये इन सब परिस्थितियों में हम लोगों को गम्भीरता से सोचने का यह विषय बन जाता है कि कैसे हम इन वनों की रक्षा करें थ्रौर कैसे उनको प्लानिंग को जाय ताकि इस सम्पत्ति का हम विकास कर सकें ।

[श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट]

मै ग्रौर भी ग्रांकड़े ग्रापके सामने रखना चाहता हूं कि वन विभाग से ग्रंग्रेजी हकमत में सन १९४७ में सिर्फ २०० लाख रुपये की ग्रामदनी हुग्रा करती थी जबिक स्वतंत्रता के बाद सन १६ पर में ५६२ लाख रुपये की ग्रामदनी इस विभाग से हमारे प्रदेश को हुई । इसके बदले जहां श्रंग्रेजों के जमाने में ७० लाख रुपये इस विभाग पर खर्च होते थे वहां श्राज २८६ लाख रुपये इसके उत्थान हेत खर्च किये जा रहे हे, यानी २७६ लाख रुपये की नेट ग्रामदनी इस विभाग से ह। यह एक ऐसा कामधेन विभाग है कि इसकी जितनी भी सेवा की जाय, माननीय सदस्य मुझसे सहमत होंगे, उतनी ही कम है। इसमें जो भी हम खर्च कर रहे हे वह खर्च नहीं ह बल्कि इन्वेस्टमेन्ट है । उससे हमारे देश को लाभ होगा । जैसे फलों के उत्पादन से हमारे देश को लाभ होता है वैसे ही जंगलों से हमें बड़ी कीमती लकड़ी प्राप्त होती है। जंगलों की उपयोगिता के बारे में मै बतला देना चाहता हं कि उनसे श्राबहवा पर श्रसर पड़ता है, स्वायल इरोजन रुकता है, जमीन में नमी बनी रहती है, जंगलों से इमारती और ईंधन की लकड़ी मिलती है, खती के लिये श्रीजार बनाये जाते हैं, चरागाह मिलते हैं, रेलवे स्लीपर, दियासलाई, प्लाइवुड, पैकिंग केसेज श्रादि सब जंगल की ही लकड़ी से बनते है । इसके ग्रलावा लीसे का व्यापार, रेजिन, टरपेन्टाइन, कत्या, कागज का परूप, बीड़ी के पत्ते, मेडिसिनल प्लांट्स ऐंड हर्ब्स, ये सब जंगलों से ही मिलते है। हमारे यहां द्वितीय पंचवर्षीय योजना में १५ योजनायें इसके लिये रखी गई है। श्रगर मझे श्रभी मौका हुग्रा तो उनके बारे में थोड़ो-सी बातें में कहुंगा। ऐसे ही तुतीय पंचवर्षीय योजना में १,७३४ लाख रुपये की योजना बनाई गई है श्रौर यह श्राशा की जाती है कि इस पंचवर्षीय योजना के काल में ही हमको ६३३ लाख रुपये की श्रामदनी भी हो जायगी। तो श्राप देखेंगे कि दिन प्रति दिन वन विभाग का कार्य कितनी उन्नति की श्रोर जा रहा है श्रौर कितने किस्म का काम यह विभाग भ्रपने हाथ में ले रहा है भ्रौर कितनी बड़ी-बड़ी योजनायें दिन प्रति दिन प्रतिपादित की जारही हैं।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना में जो काम हुन्ना है उसमें कई योजनायें तो बहुत ज्यादा लाभ-दायक सिद्ध हुई हैं। वैसे तो १५ योजनायें कार्यान्वित की गई हैं लेकिन उनमें जो खास-खास योजनायें हैं जिनसे ज्यादा लाभ हुन्ना है उनके बारे में में कुछ बतला देना चाहता हूं; जैसे Plantation of Industrial Impotance, यानी श्रच्छे किस्म के पेड़ों के जंगल लगाये गये हैं जिन से ज्यादा से ज्यादा कारखाने हमारे उत्तर प्रदेश में खुल सकेंगे श्रीर कई प्रकार के हमारे यहां उद्योग-धंघे कायम हो सकेंगे। इस तरह की लकड़ी भी पैदा की जा रही है जिससे हमारे यहां स्पोर्ट गुड़स तैयार हो सकें। इसारती लकड़ी श्रीर कीमती लकड़ी को पैदा करने के लिये हमारे प्रदेश में बड़ी-बड़ी योजनायें चलाई गई है। इस योजना के श्रन्तर्गत इस साल के लिये २२.६५६ लाख रुपया बजट में खर्च करने के लिये रखा गया है।

इसी प्रकार से एक योजना 'Development of Class 1 forests in Kumaun'की चालू की जा रही है। कुमायूं का बहुत-सा मुभाग ऐसा है जिसकी देखभाल जिंदी कमिदनर करते थे और वहां पर जंगलों को कोई महत्व नहीं विया जाता था। इस का कुछ भाग श्रव सरकार ने अपने हाथ में ले लिया है और वहां पर श्रव्छे किस्म के जंगल लगाने की व्यवस्था की गई है तािक श्रव्छे किस्म की लकड़ी पैदा की जा सके। इसके लिये श्रोमन्, में श्रापके द्वारा इस श्रादरणीय सदन के माननीय सदस्यों की बता देना चाहता हूं कि इस साल के बजट में ३.३० लाख रुपया रखा गया है।

इसी तरह से एक योजना 'Development of forest Communications' की है। इसके लिये इस साल की बजट में बहुत बड़ी घनराशि रखी गई है। जंगलों में सड़कों का निर्माण किय जा सके, इस काम के लिये ११.८२५ लाख रपया रखा गया है इसके प्रालावा ग्रीर भी बहुत सी योजनायें है जो इस विभाग द्वारा चलाई जा रही हैं। जैसे जंगलों में ग्रच्छी किस्म के फल पैदा करना, वन कर्मचारियों को वन शिक्षा में ट्रेनिंग देना, लाख का कल्टीवेशन करना, स्वायल इरोजन वगैरह की बहुत-सी योजनायें पर्वतीय प्रदेशों में हैं ग्रीर इन योजनाश्रों के ग्रन्तगंत बहुत से काम इस विभाग द्वारा किये जा रहे हैं।

श्रभी समय नहीं रहा है । यदि नुश्रे मौका मिनेगा तो मै बताऊंगा कि ततीय पंचवर्षीय योजना में भी हमारे विभाग द्वारा बहुत सो योजनाये वलाई जायंगी । कई योजनायें हमारी सरकार ने बनाई है । इसके ग्रलावा जो फारेस्ट डिथार्ट मेंट की पुस्तिका छ्वी है उसको माननीय सदस्यों ने पढ़ा होगा । उससे माननीय सदस्यों को मालून हो गया होगा कि काफी योजनायें हमारे प्रदेश में इस विभाग द्वारा चलाई जा रही हैं ।

इसके स्रलावा पर्वतीय प्रदेश के स्रधिकतर लोगों की मांग थी कि हमारे हक-हक्कों में बड़ी तकलीफ हो रही है। इसके लिये सरकार ने एक फैक्ट फाइंडिंग कमेटी माननीय बलदेविंसह जी की चेगरमैनशिप में बनाई है। उस कमेटी की रिगोर्ट भी सरकार के पास स्रागई है स्रौर सरकार उस पर बड़ी गम्भीरता के साथ विचार कर रही है स्रौर में स्राशा करता हूं कि लोगों को काफी सहूलियतें मिलेंगी। कम से कम सरकार की यह मंशा नहीं है कि जो सहूलियतें उनको स्रब तक मिलती रही है उनमें कोई किसी तरह की बाधा डाली जाय।

इसके श्रलावा एक बात मुझे श्रौर कहनी है। वह यह है कि हमारे प्रदेश में बहुत से इलाके ऐसे है जहां जमींदारी एवालीशन के बाद वहां के लोगों को हक-हक् कों के बारे में तकलीफ हो रही है। ऐसी शिकायतें सरकार के पास श्राई थीं। में उन लोगों को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि वहां सेटिलमेंट का काम शुरू कर दिया गया है। इस काम के लिये १२ श्राफिसर्स भी रखे गये हैं। तावक्ते कि यह काम पूरा हो जाय में यह कह देना चाहता हूं कि वहां के लोगों को कोई तकलीफ नहीं होगी श्रौर जो भी सहूलियतें उनको श्रव तक मिलती श्राई हैं वह सुविधायें उनको भविष्य में भी दो जायंगो। इतना कहकर में अपना भाषण समान्त करता हूं श्रौर सदन का ज्यादा समय नहीं लेना चाहता हूं। में श्राशा करता हूं कि इस श्रादरणीय सदन के माननीय सदस्य अपने श्रमने सुझाव देंगे श्रौर जो सुझाव दिय जायेंगे उन पर सरकार गम्भीरतापूर्वक विचार करेगी श्रौर जो कार्यक्ष्य में परिणित करन क योग्य होंगे उनको कार्य रूप में परिणित किया जायगा। इतना ही कहकर में इस ग्रांट को सदन के सामने उपस्थित करता हूं श्रौर श्राशा करता हूं कि सदन इसे मंजूर करेगा।

श्री उपाध्यक्ष—में समझता हूं कि १५ मिनट प्रस्तावकर्ता को, ग्रन्य सदस्यों को ग्रामतीर से सात मिनट ग्रीर खास तौर पर दस मिनट दिये जांय । यह नियम रखा जाय ।

\*श्री अब्दुल रऊफ लारी (जिला गोरखपुर) -- श्रादरणीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं श्रापकी श्राज्ञा से श्रनुदान संख्या ५ में कटौती का प्रस्ताव पेश करता हूं कि सम्पूर्ण अनुदान के श्राचीन मांग की राशि घटाकर एक रुपया कर दी जाय।

कमी करने का उद्देश्य--नीति का व्योरा जिस पर चर्चा उठाने का श्रभिश्राय है। वन की नीति में श्रव्यवस्था, श्रपव्यय तथा भ्रष्टाचार की चर्चा करना।

मान्यवर, श्रभी मंत्री जी ने श्रनुदान पेश करते हुये जो भाषण दिया उसकी मेंने बड़े गौर से सुना । मंत्रो जो ने भाषण बहुत सुचारु रूप से दिया ग्रौर योजनायें जितनी उसके ग्रन्दर हैं, बहुत ढंग से उनको व्यक्त किया है ।

मान्यवर, इसमें दो रायें नहीं हो सकतीं कि वन देश श्रौर प्रदेश की समृद्धि के लिए बहुत जरूरी है, यहां की उपज के लिए बहुत जरूरी है, रेगिस्तान को रोकने के लिए बहुत जरूरी है। लेकिन देखना यह है कि सरकार इतनी योजनाश्रों को बना कर कहां तक कामयाब हुई है। में सरकारी पक्ष से वितरित पुस्तकों के द्वारा, जो मुझे श्राकड़ें मिले हैं, उन्हीं से सिद्ध करना चाहता हूं कि माननीय मंत्री जो श्रपने उद्देशों में कहां तक सफलीभूत हुये हैं। जंगल का क्षेत्रफल १९४४—१५ में १२ हजार ६ सौ ३५ वर्ग मील था। १९५६—५७ में १३ हजार ६ सौ २० वर्ग मील था। जितना जोर माननीय मंत्री जो बांघते गये रकवा उतना ही घटता गया। मर्ज

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वोक्षण नहीं किया।

#### [भी भ्रब्दुल रऊफ लारी]

बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की। द्वितीय पंचवर्षीय योजना मे २२६.४० लाख रुपये खर्च करने के लिए रखे गये जो साल खत्म होते-होते खर्च भी हो जायेगे। लेकिन मेरी समझ मे नहीं म्राता, इतना रुपया खर्च होता जा रहा है और जंगल की म्रामदनी घटती जा रही है। इसके ग्रंदर कहीं न कही कोई भेद है। मे सानितीय मंत्री जी से ग्रनरोध करूंगा वि यह इसकी देखे कि क्या बात है। सथुरा ग्रागरा श्रीर इटावा मे वन लगाने का प्रवन्ध द्वितीय पंचवर्षीय योजना मे किया गया ताकि बढ़ते हुये रेगिस्तान को राका जा सके। माननीय मंत्री जी बतायेगे कि इसमे कहां तक वह सफनीभूत हुए है।

मान्यवर, इसमें खर्चा बेतहाशा बढ रहा हे। चीफ कंजरवेटर साहब का दफ्तर नेनीताल में रहता था। जरूरत महसूस हुई श्रोर लखनऊ में ग्राफिस बनने लगा। श्रब लखनऊ से लद कर वह नैनीताल जाते हैं श्रोर नैनीताल से लदकर लखनऊ श्राते है। इसमें लाखों रुपये का खर्च होता है। जब डिप्टी कंजरवेटर श्राफ फारेस्ट का दफ्तर वहां हे तो कोई दिक्कत नहीं होगी कि चीफ कंजरवेटर साहब यही से गवर्न करे।

वनों की सम्पत्ति का प्रबन्ध उचित ढंग से नहीं हो रहा है जिसका नतीजा यह है कि जंगलों का ह्नास होता जा रहा है श्रौर काफी गुकसान हो रहा है । पहले जंगलों मे किसी किस्म की चोरी नहीं होती थी । पहले लोग चोरी से बहुत डरते श्रौर घवड़ाते थे । श्राज लाखों रुपये की लकड़ी चोरी हो जाती है। वन विभाग के उच्चाधिकारियों का जानकारी मे होती है। वह जाते है, जांच करते हैं श्रौर लीपापोती कर दी जाती है । नर्ताजा यह है कि लाखों रुपये की चोरी होती है श्रौर श्रिककारी फायदा उठा रहें हैं।

जमीदारी के जंगल इसिलये ले लिये गये कि सरकार उनकी उन्नित करेगी। लेकिन जो श्रीख्तयार वहां के किसानों को थे, श्रास-गास के रहने वालों को थे, उनकी सरकार ने छीन लिया और कोई उन्नित नहीं हुई। कोयले पर छाप होती है श्रीर मोतियों की लट होती है। बड़ी कम्पिनियों को कौड़ी कीमत पर सरकार लकड़ी वेती है। स्टार पेपर मिल को सात पंसे मन पर लकड़ी वेती है श्रीर श्राज तक उसकी मशीन नहीं लगी। इसी सदन में कई मर्तबा सवास उठाये गये, तो जवाब मनमाना दिया जाता है।

वन विभाग में सहयोग से काम होता था। पड़ोस के रहने वाले उसकी सेवा करते ये स्रोर खुद कुछ फायदा उठाते थे। में इस सम्बन्ध में उदाहरण वे दूं कि स्राज हालत क्या है। सिसवा इलाके में सिरु राव जंगल है। जंगल के किनार एक नवी है। वहां लोग मुर्वे की फूंकने के लिये ले जाते थे स्रोर वहां जो सड़ो गली लक हिया मिलती थीं उनसे फूंक देते थे। स्रव यह सरकार वहां उनसे १० कपया एक मुर्वे पर ले लेती है। तो श्रीमान जी, श्राप सोचें कि उन जंगलों के पास रहने वाले किसानों को क्या दिलचस्पी उन जंगलों के लिये रह सकती है? इसका नतीजा साफ जाहिर है कि जंगल में तमाम बरबादी हो रही है। जंगल के पास रहने वाले स्रगर किसी चोरी की खबर देते हैं सरकर को या उसके उच्च स्रधिकारियों को तो उलटे वह खबर देने वाला किसान परेशान किया जाता है, उसकी पीसा जाता है, बर्बाद किया जाता है स्रीर स्रधिकार। जो जंगल के सन्दर रहने वाले है वह कहते है कि स्राग्रोग तो चालान कर देगे श्रीर जो उनकी दरख्वारत होती है उस पर उनका कान तक नहीं हिलता है। बीशों मिसाले इसकी गोरखपर में मौजूद हैं।

श्रीमन्, जंगल को लगाने का काम टांगिया के जिम्मे है। यह टांगिया सैकड़ों वर्षों से खानाबदोदा का जीवन बसर कर रहे हैं। इतने वर्गमील जो जंगल लगाये जाते हैं यह उन्ही की मेहनत का नतीजा है। में यह पूछना चाहूंगा कि क्या यह उचित नहीं है कि उनको कोई ऐसा स्थान दे दिया जाय जहां वह बस सकें श्रीर जहां उनके बच्चों की पढ़ाई-लिखाई हो सके ? दो-चार साल एक जगह रहें, फिर दूसरी जगह चलें गये, इस तरह से न उनके ठीक से रहने का कोई अबन्ध हो पाता है श्रीर न ही उनके बच्चों की शिक्षा हो पाती है। तो में यह सुझाव दूंगा कि

उनको किसी एक स्थान पर बसाया जाय जहां रहकर वह छोटो-मोटी खेती वगै रह का काम करने लगें और उसके बाद फिर जंगल का काम जैसे होता है, वह वैसे हो होता रहेगा, वह उसको करते रहेंगे । साल में एक-ग्राध बार ग्राकर वह ग्रपने बन्चों को देख सकेगे ग्रीर उनकी पढ़ाई-लिखाई का इन्तजाम भी हो सकेगा। इसके ग्रलावा ग्राज जो इन टांगियों से दिनया भर की हरी-बेगारी वगैरह का काम लिया जाता है वह भी बन्द होना चाहिये । जहां वह बसते है वहां न उनके लिये पीने के पानी का कोई बन्दोबस्त होता है, न दवादाक का कोई बन्दोबस्त होता है ग्रीर न कोई राज्ञन का बन्दोबस्त होता है कि वहां से वह राज्ञन ले । पूरी ग्राबाद उनकी एक गांव की जकल में वहां ग्राबाद हो जाती है। तो सरकार को उनके उपर ध्यान देना चाहिये। में तो कहूंग. कि उनकी ग्राम पंचायत बनाकर उन्हें भी ग्रपने हकूक की रक्षा करने का मौका दे ग्रीर उनको जहां वह रहे हैं, वहां रहने का हक दें।

सरकार ने एक कानून बनाया है हरे फलदार वृक्षों को काटने से रोकने का। लिए ग्रधिकारियों से बात की जाती है, जो रेवेन्यू डिपार्टमेंट के है, तो वह कहते है कि कानून इतना झगड़े वाला है और इतना मोटा है कि कुछ समझ में नहीं श्राता कि कैसे इस पर कोई कार्यवाही की जाय। नतीजा उसका यह है कि लाखों वृक्ष जगह जगह कटते चले जा रहे हैं। दरख्वास्तें देते हैं। सभापति त र ग्रीर टेलीफून करते हैं लेकिन ग्रधिकारी यह कहकर कि कानून टेढ़ा-मेढ़ा है कोई कार्यवाही नहीं हो सकती, उसे ट ले देते हैं। श्रगर कोई कार्यवाही नहीं हो सकती तो क्यों नहीं सब के लिए खुला छोड़ देते। जो भी कोई काटना चाहे काटे। लेकिन गरीब किसान ग्रपना एक पेड़ काटना चाहता है तो उस के लिए तो दुनिया भर की परेशानी होती है, वह नहीं काट सकता और दूसरी तरफ बाग के बाग पुलिस को मिलाकर जमींदार लोग काटते चले जाते हैं। मुझे तो ताज्जुब हुम्रा जब मै माननीय मन्त्री जी से मिलने गया ग्रीर उन ने कहा तो उन्हें मालूम भी नहीं था कि कोई ऐसा कानून भी है। उन्होंने श्रपने पी० ए० से बुलाकर पूछ। कि क्या कोई ऐसा कानून है, श्रौर उस ने बताया कि हां है, तब उन्होंने एक बहुत बड़े बाग को काटने से रोका। इसमें कोई शक नहीं कि वह रक गया लेकिन उसी की बगल में सैकड़ों बाग भ्राज काटे जा रहे हैं। मैं माननीय मन्त्री जी से कहुंगा कि एक सर्क्युलर वह जारी करें कि जितने भी इस तरह के बाग काटे गये है, जिनकी निशानी मौजूद है, म्रगर उसका सब्त मिल जाय तो उन काटने वालों के खिलाफ कार्यवाही की जाय।

(इस समय १ बजकर १८ मिनट पर श्री उपाध्यक्ष चले गये श्रीर श्रिषकात्री, श्रीमती चन्द्रावती, पीठासीन हुयीं।)

श्रीमन्, किसानों के पास श्रगर एकाघ एकड़ जमीन भी जंगल की उन के श्रन्दर दब गयी है, तो सरकार उजाड़ देती है उनको, लेकिन दूसरी तरफ हजारों एकड़ जमीन लेकर वह जंगल कटवाती है बंध श्रीर डंम के नाम पर। नानक सागर श्रीर शारदा सागर में हजारों एकड़ जंगल काटे गये श्रीर दहां जो कच्चे बंध बन रहे हैं उनसे क्या फायदा होगा जनता का, वह तो माननीय मन्त्री जी ही जानते हैं श्रीर वहीं बतायेंगे, लेकिन मेरा यह श्रनुरोध हैं कि जहां किसान जीवनोपार्जन के लिए १, २ एकड़ जंगल के किनार ले कर खेती करते हैं वहां पर उनको बेदखल नहीं करना चाहिए बिल्क उन को श्रपनी गुजर के लिए खाने देना चाहिए। उसके बाद श्राप एक पक्की हदबन्दी कर दें श्रीर उस के बाद श्राप कोई बढ़ता है तब श्राप कार्यवाही करें। इसमें कोई एतराज नहीं हो सकता है।

में एक बात की श्रोर माननीय मन्त्री जी का ध्यान दिलाना चाहता हूं। जंगल के किनारे मवेशियों का झुन्ड श्रिधिक रहता है जिसकी वजह से बहुत दूर तक खेती नहीं हो पाती है। इसके लिए पहले भी सुझाव दिये गये हैं, लेकिन श्रभी तक कोई ध्यान नहीं दिया गया है। हरेया गाय श्रीर बैल जंगलों से निकलते हैं श्रीर खेती को खा ड लते हैं। उन को मारा भी नहीं जा सकता है। किसान लोग जब गोल बांध कर चलते हैं तो जंगल के श्रिधिकारी उनको रोक देते हैं।

[श्रो ग्रब्दुलरऊक लारी]

हमारे पहां के डिवीजन के किमश्नर साहब ने यह मांग की थी कि जिस तरह से जंगली गायों भीर बढ़ाड़ों को नी नाम करने के लिए ठेका देने हैं, वह ठेका ठेकेदार को न देकर ग्राम सभा को दिया जो साधन ठेकेदार को दिये जाते है बल्ली या रस्सी के लिए वह सब साधन ग्राम सभा को दिये जायं। ग्राम सभा के ग्रादमी निकल कर उन गाय ग्रीर बछड़ों को पकड़ लेगे। होता यह है कि वे ठेनेदार उन को लेजाकर बेच देते है श्रीर फिर उन गाय श्रीर बछड़ों को वही जंगल मे जाकर छोड़ दिया जाता है और फिर वह किसानों के खेत का नुकसान करते हैं। मै तो यह कहंगा कि सरकार की तरफ से एक तरह से उन लोगों को शेल्टर मिला हुन्रा है। वे गांव बैंन निकल कर किसानों के खेतों को बरबाद करते है। यह सरकार, उन के जो बच्वे होते है, उन को बेवती है **श्रौर बेवकर पैसा कमाती है।** इस से सरकार को श्रामदनी तो हो जाती हे, लेकिन नुकसान वहां पर लोगों का बहुत होता है। इसलिए मेरे इस सुझाव को मान लेना चाहिए कि वह ठेके का काम ग्राम सभा को दिया जाय ग्रीर वहीं ठेकेदार वाली सहलियत ग्राम सभा को दी जाय तो वे जंगली गायों को पकड़ लेंगे श्रीर इस से वहा के लोगों को लाभ होगा। नीलगायों को डराया जा सकता है लेकिन धर्म की मजब्री हमारे सामने कुछ ऐसी है कि जिस से यह सरकार कुछ नहीं कर सकती। वे गांव की खेती को बरबाद करती है श्रीर भाग कर जंगल में चली जाती है। इन शब्दों के साथ में श्रपने कटौती के प्रस्ताव को पेश करता हं और अनुरोध करता हूं कि यह सदन इसको मानेगा।

\*श्री हरिदत्त कांडपाल (जिला ग्रत्मोड़ा)—प्रधिष्ठात्री महोदया, ग्राज फारेस्ट विभाग का जो अनुदान पेश हुन्ना है उसका ज्यादातर ताल्लुक पर्वतीय जिलों से होता है क्योंकि जितने भी कुल जंगल इस प्रदेश में मौजूद है, उसका बहुत काफी हिस्सा पर्वतीय जिलों में ही है। इस फारेस्ट डिपार्टमेंट का पिछले २, ३ सालों में जो रवद्दया रहा है ग्रौर उस से जो जनता में परेशानी फेली है, उसका इजहार इस ग्रसम्बली में हुगा है। इस हाउस के ग्रन्वर माननीय सदस्यों ने कई दफा उसका जिन्न किया है। सवालों के दौरान में ग्रौर ग्रपने भाषणों में भी इन सब बातों का जिन्न ग्राया है। केवल यही नहीं बल्क इस जंगल विभाग के रवद्दये के खिलाफ बाहर पब्लिक में भी एजिटेशन हुग्ना था। यही नहीं कि गैर-जिम्मेदार संस्थाग्रों ने इसके खिलाफ कोई एजिटेशन किया हो बल्कि जिम्मेदार संस्थाग्रों की ग्रोर से, कांग्रेस कमेटियों की ग्रोर से, डेवेल यमेंट कौंसिजों की ग्रोर से, जो कि पर्वतीय जिलों के लिए बनी हुई है, इसके खिलाफ प्रस्ताव पास हुये हैं। जिले के स्तर पर पंचायत की तरफ से भी प्रस्ताव पास हुये हैं। इतना ही नहीं बल्क जो जिले के डिप्टी कमिश्नर होते है, उन्होंने भी इस जंगल विभाग के रवद्दये के खिलाफ ग्रपनी ग्रावाज उठायी है।

इस विभाग से जनता को ही तकलीफ नहीं है बल्कि सरकारी विभागों को भी इस से परेशानी रही है। पी० डब्ल्यू० डो० श्रीर दूसरे विभागों को भी इस बात की जरूरत पड़ी कि वह भी इस विभाग के रवइये के खिलाफ अपना रिप्रेजेन्टेशन भेजें, लेकिन अभी तक उसका कोई नतीजा नहीं निकला। एक फैक्ट फाईन्डिंग कमेटी पिछले साल कायम हुई थी किन्तु उस की रिपोर्ट हमारे सामने नहीं श्रायी। श्राज माननीय मन्त्री जी से यह मालूम हुआ कि वह रिपोर्ट पेश हो चुकी है श्रीर हम श्राशा करते है कि वह हमारे सामने जल्दी ही श्रा जायगी। श्राब्लम का जो अशोच है श्रीर वेखने का जो नजरिया है उसे में एक बात बतला कर साफ करना चाहता हूं। श्रीब्टा्त्री जी, जब में कल फारेस्ट मिनिस्टर साहब के कमरे में गया तो वहां बुझे एक किताब वेखने को मिली—डघुटीज आफ दि फारेस्ट डिपार्टमेंट। उनका कहना है कि देहात के लोग बन की श्रहमियत को जानते ही नहीं, समझते ही नहीं श्रीर चिल्लाते है कि हमारी गायों श्रीर पशुश्रों के चरागाह बन्द हो गये। इसलिए उनका ज्यादा कोश्रापरेशन लेने की, मांगने की कोई खास जरूरत नहीं है। कोश्रापरेशन पर ज्यादा जोर वेसे की जरूरत नहीं है

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

ऐसा उसमें कहा गया है। डेबेल मेंट की बात छोड़ दीजिये, जो यह नजरिया है उस से जनता को क्या राहत मिलेगी यह सोचने की बात है।

मुझे मौलिक रूप से शिकायत है कि गवर्नमेट ग्राफ इन्डिया की जो फारेस्ट पालिसी है ग्रीर यू ०पी० की जो फारेस्ट पालिसी मैनुग्रल. १६५२ के ग्राटिकिल ११० में जिन बातों कः जिन्न है उस की ग्रवहेलना इतनी लापरवाही से की जा रही है कि जिसकी हद नहीं। उतमे साफ लिखा हुग्रा है कि जंगलों के नजदीक जो लोग रहते हैं, उन के हितों को प्रमुखता दी जाय। उन की सहूलियतों का पहले ख्याल रखा जाय। लेकिन यह सहूलियते देना तो ग्रलग रहा, जब वे किसी बात के लिए ग्रावाज उठाते हैं तो उसको रेस्पांड भी नहीं किया जाता। रेस्पांस तो ग्रलग, ग्रगर कोई एजिटेशन या रिप्रेजेन्टशन किया जाता है तो इस विभाग की तरफ से उसे कन्टेम्प्ट की स्पिरट से देखा जाता है ग्रीर उतका जवाब कन्टेम्प्ट की स्प्रिट में मिलता है। जनतंत्र ग्रीर रेस्पांसिबल गवर्नमेंट में जो होना चाहिए वह व्यवहार हम को नहीं मिलता।

श्रभी कोयले श्रौर लकड़ी को कमी हुई श्रौर उस के दाम बेत हाशा बढ़ाये गये, लेकिन उसका कोई जिस्टिफिकेशन सरकार के पास नहीं है। श्रत्मोड़ा, रानीखेत, नैनीताल जो जंगलों के बीच में है, उनमें टिम्बर, इमारतो लकड़ी की कमी कर दी गयी श्रौर यहां तक कि म्युनिसिपै-लिटियों श्रादि को भी तकलीफ हुई, उनके चे प्रमेनों ने कहा, यहां तक कि कि कि मश्तिर ने भी श्रंततोगत्वा कहातब कहीं उस सिंकल के कन्जरवेटर साहब ने माना श्रौर उस पर एक डी० श्रो० चिफ कन्जरवेटर के यहां से निकला श्रौर उस से साफ जाहिर है कि स्थानीय जनता की जो मांगें हैं उनको पूरा नहीं कर सकते। पूरी विट्ठी मेरे सामने हैं श्रौर यह श्रखवारों में छपी है। इन सब बातों का यह नतीजा हुआ है कि लोगों को इस डिपार्टमेंट के ऊपर विश्वास नहीं रह गया है। श्री सी० डी० पान्डेय जो हमारे यहां के एम० पी० हैं उन्होंने एक चिट्ठी भी लिखी जिसमें उन्होंने कहा कि कुमायूं को जनता को इस विभाग पर विश्वास नहीं रहा है। यही नहीं, पिडत पन्त भी, इस विभाग ने जो कार्य किया है, उसे नायसन्द करते हैं हालांकि पब्लिकली वे नहीं कह पाते हैं। इन सब बातों के बावजूद भी जो हालत इस विभाग की श्राज है श्रगर वहीरही, जंगल के मामलों में इसी तरह से इन्टरिफ परेंस हुआ, तो एक समय आ सकता है जब कि बहुत बड़ा श्रान्दोलन हो जाय।

श्रिष्ठात्री महोदया, हम लोग जंगल पर पूरी तरह से निर्भर रहते हैं। श्रभो नवम्बर के महीने में जब चोफ मिनिस्टर साहब नये थे तो उन्होंने स्वयं देखा था वहां की स्थिति को। बहां पर काफी गरीबी है। श्राज जो रुकावटें वहां पैदा हो गयी हैं उन से वहां के लोगों को जिन्दगी बसर करना मुक्किल हो गया है। वहां के लोग श्रगर फल-फूल सकते हैं तो जंगल की बदौलत ही। लेकिन श्राज जो जंगल की सब से बड़ी उपज है उसको लूटा जा रहा है। उस को कम कीमत पर बड़ी-बड़ी फैक्टरियों को दिया जा रहा है। बरेली में जो श्राई० टी० श्रार० कम्पनी है उसको वह काफी रियायत पर दिया जाता है। किन्तु दूसरों को, जो छोटे-छोटे काम करने वाले हैं उन को वह ज्यादा कीमत पर दिया जाता है। यह जाहिर बात है कि छोटी छोटी फैक्टरियों के मुकाबिले बड़ो बड़ो फैक्टरियों में जो माल तैयार होगा उसकी कास्ट कम होगी। फिर भी उन बड़ी-बड़ी फैक्टरियों को तो कम मूल्य पर दिया जाता है श्रौर दूसरे लोगों से जो छोटा-छोटा काम करते हैं उन से ज्यादा दाम लिये जाते हैं। पिछले साल जितना लीसा इस कम्पनी को दिया गया उसके हिसाब से ६० लाख रुपये का मुनाफा होना चाहिए था, लेकिन ३ लाख का मुनाफा दिखाया गया है, बाकी का पता नहीं वह कहां गया, उसका क्या हुश्रा।

इसी तरह जो कत्थे की फैक्टरी है उस को भी कम मूल्य पर माल दिया गया। हमारी आडिट रिपोर्ट में कहा गया है और पब्लिक एकाउन्ट्स कमेटी की भी साफ-साफ रिपोर्टस् हैं। इस तरह से बड़ा नुकसान होता है।

श्री स्विष्ठाता—समय समाप्त हो गया।

श्री प्रतापिसह (जिला नैनीताल)—प्रधिष्ठात्री महोदया, में प्रस्तुत कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए खड़ा हुग्रा हूं। मान्यवर, इस बार मुझे बड़ी खड़ी है कि फारेस्ट मिनिस्टरी ने ग्रपना ग्रनुदान फाइनेंस मिनिस्टरी से ग्रलग करके पेश किया है ग्रौर ग्राशा है यह परम्परा ग्रागे भी कायम रहेगी। लेकिन दुख इस बात का हे कि मिनिस्टर की कुर्सी पर बैठने के बाद इन्सान का नजरिया किस तरह बदल जाता है। एक वर्ष पूर्व जब माननीय विष्ट जी बोले थे तो उनका नजरिया कुछ ग्रौर था ग्रौर ग्राज जब उन्हें फारेस्ट मिनिस्टर का पद मिला तो उन्होंने फारेस्ट मिनिस्टरी का चश्मा लगा कर ग्रपना भाषण दिया।

में यह समझता था कि माननीय मन्त्री जी की तरफ से, जो यह पुस्तिका छपी हे, इस से हमे पता चलेगा कि फारेस्ट डिपार्टमेंट क्या कर रहा है श्रौर दूसरी स्टेट्स के कम्पेरिजन मे हम कहां खड़े हुये है, इस पर प्रकाश डालेंगे। पर न तो किताब से पता लगता है श्रीर न मन्त्री जो के भाषण से है । तो एक जिम्मेदार दल के नाते से हम को उस पर प्रकाश डालना पड़ता है। सब से पहली चीज तो यह है कि सारे देश में २.८१ लाख स्क्वायर माइल सारा फारेस्ट है जो कि २२.३ परसेंट ज्योग्रेफिकल एरिया का पड़ता है, जब कि ३.५ यू० एस० एस० न्नार० में, १.८ यू० एस० ए० मे है न्नौर हिन्दुस्तान में कुल ०.२ हैक्टर्स है। ेदूसरे, जो हमारी प्रोडिक्टिविटी है वह इस प्रकार है—इिन्डिया में २.५ क्यु० फि० पर एकड़, फ़्रांस में ५६.३, जोपान में ३७.०, यू० एस० ए० में १८.० है। प्लानिंग कमोजन ने १६५२ में यह सिफारिश की थी कि जो नेशनल पालिसी बने—एक प्रस्ताव पास हुन्ना था उसमें कहा, गया था कि ३३.३ परसेट, जितना हमारा ज्योग्रेफिकल एरिया है, उस के हिसाब से जंगल होगा श्रौर यह भी कहा गया कि ६० फीसदी जंगल पर्वतीय इलाक में होगा श्रौर २० फीसदी प्लेन्स में होगा। मै माननीय मन्त्री जी से यह जानना चाहता हूं कि रोज बरोज खर्चा बढ़ता जा रहा है। ग्राज भी जो बजट मांगा गया है उसमें पिछले साल की बनिस्बत काफी रुपया बढ़ा हुन्ना है। २४ फरवरी, १६५६ को २,६८,६९,५०० या ग्रोर श्राज २,८६,६९,५०० है। इतना बढ़ने पर भी क्या प्रगति हुई? में समझता हूं इस पर माननीय मन्त्री जी श्रपने भाषण में प्रकाश डालेंगे।

दूसरे, श्रंग्रेज जब यहां हुक्मत करते थे उस वक्त हमारी श्रामदनी १६४६-४७ में १,५१,७३,००० थी श्रीर श्राज १६५६-५६ में ५,३६,५१,६०० हो गयी श्रीर १६५६-६० में ६,०५,३६,००० रुपया हो गयी है, यह में सरकारी किताब से बता रहा हूं। तो में कहना चाहता हूं कि श्रामदनी दिन पर दिन बढ़ रही है, सरकार का मुनाफा बढ़ रहा है श्रीर उधर सरकार जनता के हकों को छीन रही है।

श्रव में श्रापका घ्यान श्रौर दूसरे प्रान्तों की श्रोर ले जाना चाहता हूं। कही भी इतनी श्रामदनी नहीं है। कोई प्रदेश ऐसा नहीं है जहां की श्रामदनी १ लाख हो, खर्चा भी मेंने नहीं जोड़ा है। जोड़ लगाने के बाद पता लगता है कि यहां पर इस साल ३,११,७४,००० रुपये का सरप्लस बजट है श्रौर श्रासाम का है १८,३३,००० का, बिहार का ६७,१६,००० रुपया श्रौर मद्रास का है १,४८,१३,०००, उड़ीसा का है ६७,०१,००० रुपया, बंगाल का है, ४७,०२,००० रुपया। बन विभाग की बचत इस साल तक की ३,११,७४,००० रुपया है। तो में जानना चाहता हूं कि दिनों दिन जब कि प्रगति हो रही है सरप्लस बजट में तो फारेस्ट क्यों घटता जा रहा है? १६५६—५७ में जब कि फारेस्ट का एरिया १३,०५४ वर्ग मील था, १६५७—५६ में १२,६०० मील हो गया है। योजनाएं प्लेन्स में बन एही है जब कि जंगल पहाड़ में ज्यादा है, जहां पर प्लोन्टेशन हो सकता है, जहां पर वर्षों से डिबीएत्स खुले हुये हैं। में जानना चाहता हूं कि प्लेन्स में जहां बाढ़ श्राती है, लोगों को नुकसान होता है वहां क्या प्रगति हुई है? पहाड़ी इलाके में जहां जंगल काफी है श्रौर जहां १६३६ से हिएजनों की समस्या चली श्रा रही है, खुशी राम जी मौजूद है उन्होंने लड़ाई लड़ कर

कांग्रेस गवर्नमेट को ही मजबूत िया है, लेकिन हरिजनों को श्राप एक भूमि का टुकड़ा भी दिलाने म समथ नहीं हुये हैं। मैं कांग्रेस पर यह चार्ज लगाता है।

श्राज जब हम कहते हैं कि चपरासी की तनख्वाह बढ़ायी जाय, फारेस्ट गार्ड की तनख्वाह बढ़ायी जाय तो हम से कहा जाता है कि रुपया नहीं है। में जानना चाहता हूं कि रुपया कहां जाता है। श्राज फारेस्ट डिपार्टमेंट की तरफ से श्राई० टो० श्रार० कम्पनो, बरेलो को १५ रुपये मन लीसा दिया जा रहा है जब कि बाजार भाव ३० रुपये मन का है। ४ लाख मन लीसा उस कम्पनी को हर साल दिया जा रहा है जिस के कारण फारेस्ट डिपार्टमेट को सालाना ६० लाख रुपये के रेवेन्यू का लास हो रहा है। यह जनता का पैसा है। गी शिन्द सहाय जो की इवेलुएशन कमेटी ने भी कहा, प्लानिंग कमीशन ने भी कहा श्रीर लेन्ड यूटिलाइजेशन कमेटी जिसकी बैठक सन् १६५६ में देहरादून में हुई थी उसने भी कहा कि सहकारो समितियां बननी चाहिए श्रीर उन लोगों को काटेज इन्डस्ट्रीज के तरीके पर लीसा दिया जाना चाहिए, लेकिन उन की बात को नहीं सुना जाता है श्रीर हर साल कम्पनी के हित में पब्लिक का ६० लाख रुपये का रेवेन्यू का लास किया जा रहा है। इससे मालूम होता है कि सरकार किस प्रकार से पूंजोपतियों के लिए साफ्ट कार्नर रखती है।

श्रभी कहा गया कि चीफ कन्जरवेटर का दफ्तर यहां लखनऊ में श्रा जाना चाहिए। माननीय, उनका दफ्तर नेनो ताल में है श्रौर कैम्प श्राफिस लखनऊ में है। में नहीं जानता कि इस विभाग के जो हेड श्राफ दि डिपार्टमेंट हैं उनका क्या नजरिया है लेकिन वहां से यहां पर रोज खाली बस्ता लाने में ३० रुपया खर्च होते हैं। यहां पर इस कैम्प श्राफिस के श्रलावा कन्जर-वेटर का हेडक्वार्टर भी कायम किया गया, कन्जरवेटर की एक नयी पोस्ट कायम की गयी है। तो में जानना चाहता हूं कि यहां पर चीफ कन्जरवेटर का कैम्प श्राफिस श्रौर कन्जरवेटर का हेडक्वार्टर दोनों क्यों रखे गये हैं, मन्त्री जी कृपया इसको साफ करेंगे। या तो यहां पर चीफ कन्जरवेटर का कैम्प श्राफिस ही रह या कन्जरवेटर का हेडक्वार्टर ही रहे।

श्रव में सेटिलमेंट के बारे में कहना चाहता हूं। फारेस्ट फैक्ट फाइन्डिंग कमेटो बनी थी तब वहां की साढ़े २२ लाख जनता ने जिस में कि हमारे जिष्ट जो ने भो, जो कि श्राज मिनिस्टर हैं, दस्तखत किये थे, यह कहा था कि वहां पर बहुत सो मुसोबते हैं। जो कुमायूं फारेस्ट कमेटी है, जो माइनर फारेस्ट प्रोडचूस श्रोर चराई के श्रिख्तियार दिये जा रहे हैं वह हक जब छीने जा रहे थे तब माननीय किष्ट जो ने बड़ी जोर की श्रावाज उठायी थी। उस कमेटी की रिपोर्ट को श्राज ६ महीने से ज्यादा हो गये लेकिन यही जवाब मिलता है कि विचार हो रहा है। श्राज पता नहीं किस की राय से फारेस्ट सेटिलमेंट किया जा रहा है। श्राज वहां पर लोगों के हक छीने जा रहे हैं, इस तरफ सरकार को तुरन्त ध्यान देना चाहिए।

में कोयले के दाम के सिलसिले में एक बात कहना चाहता हूं। नैनीताल में श्रौर दूसरी जगहों पर कोयले के दाम में एक रुपये की बढ़ोत्तरी हो गयी है क्योंकि वह क्वालिटी लाना चाहते हैं। विभाग कहता है कि जब चावल खरीदते हैं, श्राटा खरोदते हैं तो उसी के मुताबिक कोयला भी खरीदना चाहिए। जिस प्रकार से कि लोग लखनऊ श्रौर मसूरी में लकड़ी, कोयला लेते हैं, श्रंग्रेज जो विदेशों थे वह भी सोचते थे कि जंगल में रहकर लोग रिस्को लाइफ व्यतीत करते हैं इसिलए उन को कुछ ज्यादा हक मिलना चाहिए। में कोई सेक्टेरियन बात नहीं कहना चाहता, में कहता हूं कि उनका यह हक है, कोई रियासत की बात नहीं है। १६०७ में एक श्रंग्रेज ने कहा था कि कुमाऊं की श्रामदनी का चौथाई हिस्सा वहां के डेवेलपमेंट पर खर्च किया जाना चाहिए। वह श्राज नहीं हो रहा है। कोयले के रेट ऊंचे रक्खे गये। उस के बाद जब रिप्रेजेन्टेशन हुश्रा तो रेट नीचे लाये गये। यह नीति है इस विभाग की। इसी के बारे में यह थोड़ा सा श्रंश में श्राप के सामने पढ़ना चाहता हं:——

The prices were first revised on 1st May, 1958 and increased to Rs. 4.40 par maund and were again brought down o Rs. 3.50. The first revision

## [श्री प्रताप सिंह]

was to bring the rates at parity with those at Namital but on representation from the public they were brought down to Rs 350 as per decision of the meeting held in June, 1958, under the presidentship of Ven Manital

थोड़ी देर के लिए मान लिया जाय कि वन मन्त्री नहीं मिलते है प्रोसाइड करने के लिए, तो क्या होता? क्या तब दाम कम नहीं होंगे? ग्रगर विभाग सही था तो उसे कायम रहना चाहिए था। यह मनमाना तरीका बदलना चाहिए। किताबों में क्या लिखा है ग्रौर क्या नहीं लिखा है, माननीय, इसे छोड़ दिया जाय। विभाग के श्रिधकारियों को ग्रपना रवैया जरूर बदलना होगा। श्राज डेमोकॅटिक सिस्टम पर उन्हें चलना होगा।

रायल्टी की बात लीजिये। नैनीताल में सन् १६४६ में ०.०६ नये पैसे थी ग्रीर ग्रब .६१ नये पैसे ली जाती है, ग्रल्मोड़ा में ०.०६ नये पैसे पड़ती थी जो ग्रब .६६ नये पैसे हो गयी है। रानीखेत में रायल्टी सन् १६४६ में .६३ नये पैसे थी जो ग्रब १.२८ नये पैसे हो गयी हे, पौड़ी में ३.३७ नये पैसे से .७६ नये पैसे हो गयी है।

एक मीटिंग २७ जून, सन् १६४८ को मन्त्री जी के यहां हुई। उस में जिक्र श्राया था कि दमुवाढूंगी में ६६ परिवार रहते हैं, ५०० एकड़ भूमि में, मामुलीवाल में ३०० एकड़ में ५१ परिवार रहते हैं श्रीर बागगाला में २०० एकड़ में ६२ परिवार रहते हैं। एक बार मन्त्री जी से पूछा गया कि छप्परों में श्राग क्यों लगी तो श्राली जहीर साहेब ने उत्तर दिया कि ला श्राफ जंगल चलता है। में चार्ज लगाता हूं इस विभाग के ऊपर कि जब मन्त्री ही ऐसा कहते हैं तो विभाग के श्रिधकारी सब कुछ कर सकते हैं। में चाहूंगा कि जो भूमिहीन लोग उन जमीनों पर बसे हुये हैं उन्हें वह जमीन दे दी जाय।

श्राज मनमाने ढंग से ट्रान्सफर हो रहे हैं। चीड़ के जंगल की बात जानने वाले को श्रगर गोरखपुर भेज दिया जाय तो वह वहां क्या करेगा? गोरखपुर का श्रादमी पहाड पर नहीं चढ़ सकता है, यह सभी जानते हैं। इसलिए इस विभाग का ऐसा वातावरण बनाना चाहिए कि यह विभाग जनता के लिए है, जंगल जनता के लिए है, जनता जंगल के लिए नहीं होनी चाहिये।

प्लान्टेशन के बारे में एक बात कहना चाहता हूं। मुझे फारेस्ट फैक्ट्स फाइन्डिंग कमेटी के साथ घूमना पड़ा। मैंने देखा कि जहां इन्सान खेती कर सकता है, वहां प्लान्टेशन होता है और जहां चोटियां खाली है वहां नहीं हो रहा है। ग्रगर खाली चोटियों पर प्लान्टेशन नहीं होगा, तो मैदान में रहने वालों पर भी बुरा श्रसर होगा क्योंकि बाढ़े बढ़ जायंगी।

इस विभाग के हेड एक म्राई० एफ० एस० सज्जन है। उन को इस पोस्ट पर रखना उनकी बेइज्जती है। यहां पी० एफ० एस० म्राइमी को रखना चाहिए भ्रौर म्राई० एफ० एस० को हिन्दुस्तान के फारेस्ट विभाग में भेजना चाहिए। यह इस देश भ्रौर प्रदेश दोनों के तथा उन सज्जन के भी हित में होगा।

इन शब्दों के साथ में कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं श्रौर मन्त्री जी से उम्मीद करता हूं कि वह इस विभाग की जहां तक हो सके जनतांत्रिक ढंग से चलवायेंगे।

श्री रामचन्द्र उनियाल (जिला टेहरी-गढ़वाल)—-ग्रिषिष्ठात्री महोदया, में प्रस्तुत मांग का समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं।

पिछले साल पहाड़ी जनता की जंगलात सम्बन्धी परेशानियों को वेखकर सभी विधायकों ने इस सदन में श्रावाज उठाई थी। हमारे पहाड़ी जिलों में इस विभाग का रवया लोगों को बहुत परेशान करता था। फलतः गत वर्ष सरकार ने वहां पर एक फारेस्ट फेंक्ट्स फाइंडिंग कमेटी की स्थापना की। उसने वहां की समस्याओं का ग्रध्ययन किया श्रीर श्रपनी रिपोर्ट सरकार को वी। होना तो यह चाहिये था कि वहां के श्रधिकारियों का रवया बदलता श्रीर ठीक होता, लेकिन मुझे श्रावचर्य है कि जांच के बाद भी श्रधिकारियों का रवया बहुत ही कष्टवायक रहा।

इससे म्राम लोगों की परेशानियां ज्यादा बढ़ गई। मैं सरकार का ध्यान इस म्रोर ले जाना चाहता हूं कि वहां लोगों को इमारती लकड़ी तथा चरान चुगांन म्रादि की बहुत परेशानी है। इस कमेटी के पूर्व लोगों को लकड़ी लेने में तथा ग्रन्य सुविधाम्रों में कुछ म्रासानी होती थी, लेकिन मालूम नहीं कि उस कमेटी की जांच के बाद यह समस्या क्यों बढ़ गई। क्यों म्रिधका-रियों ने जनता को परेशान करने का रुख म्रिस्तियार किया।

ग्रिघिष्ठात्री महोदया, हमारे पहाड़ी जिलों के लोगों का ग्रार्थिक स्तर वन-सम्पदा के ग्राधार पर ही ऊंचा हो सकता है। वहां लीसा उद्योग का एक ग्रच्छा रोजगार है किन्तु इसमें भी विभागीय पक्षपात होता है। यह कार्य सहकारी समितियों को न देकर व्यक्तिगत लोगों को दिया जाता है। जिसका उदाहरण गि० सं० संघ, टिहरी-गढ़वाल है बल्कि जिनकी स्वयं की कोई फैक्ट्री नहीं है उन्हें जिलेवार मांग करने पर भी नहीं दिया गया तथा स्त्रियों के नाम पर लीसा दिया जाता है। यह भ्रष्टाचार तथा पक्षपात का ज्वलंत उदाहरण है। इस प्रकार जंगल विभाग का रवैया बड़ा ही गलत है ग्रीर वहां के लोगों का ग्रार्थिक स्तर ऊंचा होना तो दूर रहा लोगों की रोजमर्रा की परेशानी बढ़ गई है।

इसी प्रकार वहां जेंगल विभाग में लीसा, गगन लकड़ी की कटान भ्रादि वन-सम्पदा के काम कोभ्रापरेटिव सोसाइटीज को नहीं दिये जाते हैं। जड़ी-बूटी का काम है, वह भी सहकारी सिमितियों को या वहां के स्थानीय लोगों को न देकर बाहर वालों को दिया जाता है जिससे वहां के भ्राम लोगों को कोई फायदा नहीं पहुंचता है। विभाग को ऐसी नीति भ्रपनानी चाहिये जिससे वहां के लोगों को कार्य मिले भ्रौर उनकी भ्राथिक स्थिति में सुधार हो।

मैंने यह भी अनुभव किया है कि जंगल विभाग के अधिकारियों का रवैया वही सामन्तशाही है। आज के जनतंत्र में उनके रवै में परिवर्तन होना चाहिये। आज फारेस्ट गार्ड से लगाकर ऊपर के अधिकारी तक सब का रवैया हुकूमती है और उनसे जनता को कोई लाभ नहीं हो रहा है। वे जनता को यह भी नहीं बताते कि जंगलात की हिफाजत कैसे होनी चाहिये। आज जरूरत इस बात की है कि लोग फारेस्ट माइंडेड हो अंर अफह रों को जनसम्पर्क की शिक्षा दी जाय।

फारेस्ट फैक्ट्स फाइंडिंग कमेटी के सामने बहुत-सी ऐसी बातें श्राई थीं श्रौर माननीय सदस्यों ने श्रधिकारियों का ध्यान भी इस श्रोर खींचा। लेकिन मुझे दुख है कि उस कमेटी की बात खास कर टेहरी वृत्त के कंजरवेटर ने ठुकरा दी श्रौर उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। यह रवैय्या बहुत खंदजनक है श्रौर इससे श्राम लोगों में बड़ा ही तीन्न श्रसंतोष है। मैंने इस श्रोर विभाग का ध्यान श्राक्षित किया किन्तु श्रास्चर्य है कि मुझे श्रब तक कोई उत्तर प्राप्त नहीं जंगलात कमेटी की भान नहीं, स्थिति बहुत ही श्रसहनीय है में समझता हूं कि सरकार इस

ा में तुरन्त ही कार्यवाही करें जिससे स्थित सुंधर सके। जिस जिले से मैं श्राता हूं वहां पर टेहरी वृत्त के डी॰ एफ॰ ग्रो॰ का कार्यालय टेहरी वृत्त के बाहर रखा गया है जिससे ग्राम लोगों को परेशानी है, जबिक पुरोला ग्रौर ठिडियार इमारतें बनी हुई हैं तो फिर यमुना ग्रौर टोन्स डिवीजन का कार्यालय चकर। ता ग्रौर मंसूरी रखने का क्या ग्रथं है। प्रत्येक महीने हजारों रुपये का खर्चा किराये की इमारतों पर हो रहा है जबिक वहां पर इमारत खड़ी हुई है। एक ग्रोर तो बढ़ाने का सवाल ग्राता है ग्रौर दूसरी तरफ इस प्रकार से बेकार खर्चा किया जाता है। जब चीफ कंजरवेटर साहब या ग्रन्य ग्रधिकारी दौरे पर जाते हैं तो उनके साथ बड़ा भारी ग्रमला ग्रौर सामान जाता है यहां तक की टट्टी के भोगे तक भी नहीं छोड़े जाते। जिस पर बहुत-सा रुपया खर्च हो जाता है। इसलिये मेरा जोरदार सुझाव है कि टेहरी वृत्त का दफ्तर जिले के ग्रन्दर ही रखा जाय तथा डंडियार ग्रौर पुरोला D.F.O. के कार्यालय फौरन ही ट्रांसफर किये जायं। पहले कंजरवेटर साहब नैनीताल में रहते थे फिर देहरादून चले गये। इस प्रकार से नहीं होना चाहिये। जिस क्षेत्र का दफ्तर हो उसी क्षेत्र में होना चाहिये। इस प्रकार जनता के घन का दुरुपयोग विभाग द्वारा नहीं किया जाना चाहिये, इससे मेरे क्षेत्र में बड़ा ही ग्रसंतोष है।

[श्री रामचन्द्र उनियाल]

में ग्रभी ग्रपने क्षेत्र से ग्राया हूं। मेने देखा कि वहां पर कंजरवेटर का रवेया ठीक नहीं है। वन ग्रधिकारियों का ऐंग्राशी व फिजूल खर्चे का एक ज्वलंत उशहरण हे जो गढ़देश में प्रकाशित हम्रा ग्रौर ग्रब तक जिसका स्पष्टीकरण नहीं किया ? पिछले बड़े दिन की छुट्टिशों में टिहरी वृत्त के कंजरवेटर बड़ा दिन मनाने के लिये चीले नामक स्थान में गये। चेपरासियों तथा श्रन्य से साज-बाज का सामान मंगाया गया । बहुत से वन श्रधिकारी उनके भ्रयने साहब की खिदमत में वहां बुलाये गये। खासतौर से ३०-४० मील की दूरी से एक चीड का पेड़ लोया गया। साहब के कोई मेहमान की टोली ग्राई हुई थी जिनके लिये फिसमस मनाने के लिये यह चीड़ का पेड़ लाया गया था। इस प्रकार से पर्वतीय क्षेत्र में लोगों को परेशानी होती है। लिस जिले से में प्राता हूं उसनें जंगलात की विस्कतों के खिलाफ कई ग्रान्दोलन हुवे। ये वनाधिकारी बिलकल सामन्तशाही का नग्न नाच कर, श्रपने श्रधिकारो का दर्स्योग कर, मनमानी तौर पर जनता के पैसे का दुरुपयोग करते हैं। यदि यह धारणा रही हो तो में चाहंगा कि उचित जांच कर श्रधिकारियों पर उचित कार्यवाही तुरन्त की जाय । सन् १६३० में जील विभाग के बारे में तिलाड़ी रवाई में एक श्रान्दोलन हुआ था जो कि प्रमुख था श्रीर कई महीने तक शासन व्यवस्था को जनता ने श्रपने हाथ में रखा था। श्रगर श्रब भी सरकार ध्यान नहीं देगी तो एक बड़ा भारी श्रसंतोष वहां व्याप्त होगा, श्रिषकारियों के रवैये के खिलाफ। तो श्राज बड़ा तीव असंतोष है। जनता श्रभी "फारेस्ट फैक्ट्स फाइंडिंग कमेटी" ने जो रिपोर्ट दी है उस पर सरकार द्वारा फैसले का इंतजार कर रही हैं। माननीय मंत्री जी ने कहा कि वहां के लोगों को जो सुविधा मिलती ग्रायी है वह तो मिलेगी ही, लेकिन ग्रब इस बात का भी खयाल होना चाहिये कि वहां की श्राबावी बढ़ जाने से जरूरते बढ़ गई है। इसलिये उनको श्रधिक सुविधा प्रदान करनी चाहिये। इन बातों की तरफ माननीय मंत्री जी का ध्यान ग्राक्षित करते हुए में इस अनुदान का समर्थन करता हं।

श्री जंगबहादुर वर्मा (जिला बाराबंकी)—माननीया श्रिषिष्ठात्री महोदया, श्राज जो सरकार की यह वन नीति कही जाती है उसके बारे में गांव की जनता का कहना है, जिनके ऊपर की यह सारी बीत रही है, कि सरकार की यह नीति वन नीति नहीं बल्कि जंगली नीति है।

श्रीमन्, मंत्री महोवय ने बताया कि जमींवारी खत्म हुई श्रौर जमींवारों ने तमाम जंगलों को उजाड़ विया, इसलिये जंगलों की सुरक्षा के संबंध में अनुवान देने की श्रावश्यकता है जिससे यहां के जलवायु के ऊपर श्रौर स्वास्थ्य के ऊपर श्रच्छा प्रभाव पड़े। लेकिन इसमें वोध किसका है कि जमींवारों ने श्राज सब जंगल उजाड़ विये। कांग्रेस सरकार की नीति के कारण ही जमींवारों ने सारे के सारे जंगल उजाड़ विये क्योंकि जमींवारी खात्में में सरकार ने वेर लगायी। श्राज वन नीति में जनता की गाढ़ी कमाई का करोड़ों रुपया खर्च किया जा रहा है लेकिन में समझता हूं कि उससे जनता का कोई कल्याण नहीं हो रहा है।

फारेस्ट गार्ड स जो जंगल की सुरक्षा के लिये है, उनकी तनख्वाहों तथा उनके निवास स्थानों को देखें तो मालूम होगा कि उनकी तरफ सरकार का कोई ध्यान नहीं है, जब कि हमेशा जंगली जनवरों से उनकी हर तरह का खतरा रहता है। वहीं दूसरी तरफ नैनीताल में जो बड़े-बड़े ग्राफिसर रहते हैं उनकी तनख्वाहों को देखें कि कितनी बड़ी-बड़ी उनकी तनख्वाहों है तथा उनके रहने के लिये भी कैसे-कैसे श्रालीशान मकान है। उनकी सुरक्षा के लिये तो बड़ी तैयारी रहती है लेकिन जो जंगलात की सुरक्षा करते हैं तथा जिनको बराबर जंगली जानवरों से खतरा रहता है उनकी तादाद भी नहीं बढ़ाते है ताकि ज्यादा लोगों को काम मिले जिससे देश की बेकारी दूर हो तथा जंगलात की सुरक्षा भी हो। सरकार को उनकी तनख्वाह बढ़ाने की तरफ ध्यान देना चाहिये। ग्रायको इस बात पर विचार करना चाहिये कि जमींदार लोग किस तरह से जंगलों की रखवाली करके उसको पनपाते थे। जमींदार लोग किसी ग्रादमी को रखवाली के लिये जंगल सौंप देते थे ग्रौर उसमें से उसे भी कुछ हिस्सा दे देते थे, तब इतने जंगल बढ़े।

मैने बाराबंकी जिले में तथा श्रपने क्षेत्र में देखा है कि सड़कों के किनारे जंगल लगाय गय, तार भी लगाये गये, फाटक बनाये गये, सीनेंट की बुर्जियां बनीं, लेकिन वे बालू की ही निकलीं **ब्रौर वे तमाम बुजियां उलट गयीं तथा तार** भी निकल गय। इस तरह से जेंगल की सरक्षा के लिये जो रकम थी उसको वहां के प्रधिकारी खा गये। पुराने जमाने में जमींदार लोग गाँव के गड़ैत के द्वारा जंगलों की सुरक्षा कराते थे तथा किनारे-किनारे बबूल की बेलें तथा सरपत लगा देंते थे जिससे उसकी सुरक्षा होती थी। हम तो कहते हैं कि पुराने जमाने में बहुत दिनों से लोग जंगलों के किनारे-किनारे खेती किया करते थे, जैसे सुरजपुर, रारी, नैयानाला, पलहरिया तथा भवनियापुर के किसान बहुत दिनों से जमीन जोतते थे जिनको वन विभाग ने उजाड़ दिया। इसी तरह से बाराबंकी-फैजाबाद सड़क पर भी जंगल है जिससे कछ उत्पादन नहीं होता है श्रीर जहां थोड़े से जानवर, कबूतर, चिड़ियां श्रादि है। वहां पर जिले के बड़े-बड़े ग्राफिसर ग्रौर ताल्लुकेंद्रोर हमेशा जाकर शिकार खेश करते हैं। मैने मना भी किया लेकिन बडे-बड़े ग्रधि-कारियों के डर से बेचारे छोटे छोटे श्रधिकारी कुछ कर नहीं पाते । 🛮 कब्रिश्नर, डिप्टी कमिश्नर भी गत वर्ष वहीं शिकार खेलने के निये गये थे । जंगल की सुरक्षा तथा जंगली जानवरों तथा चिड़ियों से ही जंगल की शोभा है, लेकिन जिले के अधिकारी लोग बड़े-बड़े ताल्लुकेदार, और कांग्रेसी नेता वहां जाकर शिकार खेला करते हैं और इस तरह से वह जंगल उनके शिकारखाने का काम देता है श्रौर शिकार भी वे लोग बिना परिमट के खेलते हैं। मैंने गत वर्ष माननीय मंत्री जी से दरख्वास्त की थी ग्रौर ये सब बातें उनसे कहीं थीं लेकिन उस तरफ कोई ध्यान नहीं दिया गया।

बाराबंकी जिले में असर जमीन बहुत है, तथा घाघरा, गोमती ग्रादि निदयों से भी बहुत सी जमीन कट जाती है। तो बाढ़ से बचाने के लिये व निदयों के कटाय से जभीन को बचाने के लिये जंगल का लगाना जरूरी है। मैने गत वर्ष भी यह सुझाय दिया था कि जहां जहां जमीन खाली है वहां पर पेड़ लगा दिये जायं ताकि असर भी न बढ़े ग्रौर जमीन भी न कटे, लेकिन सरकार की कान पर जूं नहीं रेंगी ग्रौर उसने इस तरफ कोई ध्यान नहीं दिया।

एक बात ग्रौर बतलाऊं कि बाराबंकी में एक ट्रैक्टर पेड़ ढोने के लिये रखा गया है। मालम नहीं कि कितने पेड़ उससे ढोये जाते हैं। मुझे मालूम है कि उस ट्रैक्टर से सरकार के कुछ दोस्तों तथा एक भूतपूर्व मंत्री के फार्मी को जोता जाता है स्त्रीर कई जगह वह इसी तरह से मंगनी व किराए में जोती है। सम्भव है कि वह किराए का पैसा भी पाते हों, यह में नहीं कह सकता, लेकिन इस तरह से बाराबंकी के वन विभाग का ट्रैक्टर इस्तेमाल किया जा रहा है। श्री रामस्व रूप वर्मा ने प्रक्त किया था तो बताया गया था कि केवल ४०-५० एकड़ जमीन जोती गई। यह काम है तो वह क्यों वहां रखा गया है ग्रौर उसका क्या काम है ? मैंने भी पारसाल एक सवाल किया था कि पुखरा जंगल सरकार ने ले लिया, लेकिन एक भी पेड़ वहां आज तक नहीं लगाया पया । ४० लाख रुपया बाग लगाने के लिये दिया गया, लेकिन एह तरफ तो बाग कट गंथा श्रीर बुतरी तरक लगता नहीं। लखनऊ निकट है, आप दे वें कि तमाम लकड़ी यहां चली आती है, तमाम फनदार पेड़ कट रहे हैं ग्रीर लखनऊ चले ग्रा रहे हैं ग्रीर वहां पर तहमीलदार ग्रीर गिरदावर, कानुनगो मिल कर परमिट बना लेते हैं स्त्रीर एक बार में केवल ४ पेंड़ों का परिनट बनाते हैं ग्रीर तरकीब यह करने हैं कि एक बार में ४ पेड़ कटते हैं वह जब उठ जाते हैं तब फिर दसरे ४ कट जाते हैं। कोई देवें भी तो कह दिया जाता है कि ४ ही पेड़ तो कटे हैं। इसी तरह से रौनी का बड़ा बाग था जहां लखरेड़ा कहलाता था श्रीर मल्लाह लोग बसते थे, उनको उजाड़ा जा रहा है ग्रौर तमाम पेड़ कट गये हैं, ग्रानेकों प्रार्थना-पत्र दिये गये, लेकिन कोई सुनवाई नहीं।

इसी तरह से इँवन की बात है। पहले जमींदारी के जमाने में ग्रगर शादी व्याह में या खप्पर, हल के लिये लकड़ी की जरूरत होती थी तो मिल जाती थी, लेकिन ग्रव उन बाराबंकी वनमानुष कहे जाने वाले लोगों को बड़ी मुश्किल से ग्रपना जीवन व्यतीत करना पड़ रहा दै। [श्री जंगबहादुर वर्मा]

इसी तरह से हैदरगढ़ तहसील की भ्राप जांच करावें तो वहां भी हजारों बीघा बाग कर गये भीर वहां के बाराबंकी के बड़े-बड़े ताल्लुकेदारों ने ४० हजार रुपया बाग लगाने के लिये लिया। मेंने भ्रन्तरिम जिला परिषद् में भी यह सवाल उठाया कि उन्होंने बाग नहीं लगाये, एक पेड़ भी नहीं लगाया गया भीर कह दिया गया कि पेड़ स्ल गये। मसीली के बड़े-बड़े ताल्लुकेदारों के ५०-५० श्रीर ४०-४० बीघे बाग कर गये भ्रीर कोई बाग नहीं लगाया गया। यह स्थित वन विभाग की है। भ्रगर श्रापको बागों की सुरक्षा करना है तो श्राप गांच समाजों के सुपूर्व इन बागों की सुरक्षा का काम कीजिये ताकि सुवाररूप से यह काम चल सके भ्रीर जब कोई श्राग लगने से, बहिया से या किसी तरह से संकट भ्राये तो ऐसे समय में गरीब लोगों की जंगल से लकड़ी वी जाय भ्रीर हल व जुश्रा बनाने के लिये लकड़ी किसानों को दी जाय। भ्राज सरावन भ्रोर हल तक के लिये समय पर किसान को लकड़ी नहीं मिलती, उन की दरख्वास्त मंजूर नहीं होती।

श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी (जिला शांभी) -- ग्रिषिष्ठात्री महोदया में प्रस्तुत ग्रनुदान का समर्थन केरने के लिये खड़ा हुन्ना हूं। वन विभाग में जब से जमींदारी समाप्त हुई न्निषकतर परती की जमीनें भ्रौर जंगल इस विभाग में भ्रा गईं। पहले पाइवेट जंगल से तमाम किसानों को खेती के लिये हल श्रीर मकानों के लिये लकड़ी मिलती थी, लेकिन श्राज उनके सामने राज्य की व्यवस्था है ग्रौर जो सुविघा पहले उन को उपलब्ब थी वह ग्रब नहीं मिलती । ट्ट गया ग्रौर उसको तत्काल लेकड़ी की जरूरत है तो उस को वह उसी समय नही मिलती ग्रौर २०–२५ मील वर उसको रेन्जर श्राफिस जाना पड़ता है श्रीर श्रगर वहां रेंजर गिल जायं तब फ्हीं थोड़ी सी लकड़ी मिलती है और इस तरह से दस-पांच दिन लग जाते हैं, ननीजा यह होता है कि जो बुवाई या जुताई का वक्त होता है वह निकल जाता है या दूसरा फल इस का यह भी होता है कि इस सै भ्रष्टाचार को बल मिलता है, लोग फारेस्ट गार्ड की एक रुपया देकर एक हल के बजाय ४ हल की लकड़ी ले श्राते हैं । सरकार की तरफ से प्रबन्ध होना चाहिये कि फिलान को समय से लफड़ी मिले। इसी तरह मकान के लिये फोपड़ी की लकड़ी टूट गई हो फ्रीर वर्षा हो रही हो श्रीर उसकी फौरन ही लकड़ी की जरूरत हो तो नहीं मिलती, १०, १५ दिन बाद मिलती है। तो मै चाहुंगा कि किसान की जरूरत का सामान तत्काल मिलना चाहिये। यो ग्रभी तक वह ग्रपनी जरूरत तो पूरी करते ही है, लेविन सरकार द्वारा दी गई सुविधाश्रों से नहीं बल्कि अध्टाचार के जरिये उनको यह करना पड़ता है।

हमारे बुन्देलखंड में वन विभाग में बहुत सी जमीन बेकार पड़ी हुई है जिस पर न तो जंगत है और न उसे खेती करने के लिये ही भूमिहीनों को दिया जाता है, इससे बड़ा नकसान हो रहा है। हमीरपुर जिले में चरखारी रियासत जब मर्ज हुई तो सारी जमीन स्टेट की, परती और जंगल, वन विभाग में चली गई जिसमें हजारों एकड़ भूमि काश्त के लायक पड़ी हुई है लेकिन वह भूमिहीनों को नहीं दी जा रही है। यह तो वन विभाग के कार्यों की हालत है।

सैकड़ों गांव ऐसे हैं कि उनकी सारी जमीन जो जमींदारों के समय परती थी वह वन विभाग में चली गई। श्रव होता यह है कि श्रगर किसानों के जानवर उनमें चले जाते हैं तो श्राये विन उनको विभाग वाले परेशान करते हैं। मैं चाहूंगा कि उनको वे सुविधायें जो पहले थीं, मिलनी चाहिये।

इसी सदन में ला श्राफ जंगल की चर्चा उठ चुकी है। में उसकी दूसरी नजीर पेश करना चाहता हूं। मुझे खेद है कि माननीय वन मंत्री यहां मौजूद नहीं हैं श्रौर वह कानून के बड़े श्रच्छे जाता हैं पर उनके हाथ में यह विभाग रहते हुए कानून की क्या दुवेशा है वह में बताना चाहता हूं। ७ मई को हमारे यहां का एक किसान सेंभर की लकड़ी ले जा रहा था स्टेशन के लिये। वन विभाग के दो कर्मचारी मिलते हैं श्रौर उनसे २५ रुपया रिश्वत मांगते हैं। जिसके न वेने पर चांटा मारते हैं श्रौर रेंज श्राफिस पकड़ कर ले जाते हैं। यह इत्तला कांग्रेस वफ्तर को मिलती है ते कांग्रेस का मंत्री वहां जाता है श्रौर इसकी शिकायत करता है। तब श्रिधकारियों ने कहा कि श्रभी

कागज देख कर छोड़ दे रहा है । रात को ६ बजे २५ रुपये की फर्जी रसीद देकर उनको छोडा जाता है श्रौर यह कहा जाता है कि श्रगर तुम शिकायत करोगे तो हम रुपया वसल कर लेंगे जिसकी रसीद दी है। वह सीधा मेरे पास ग्राया, में सुबह ग्रपने भतीजे की शादी में बाहर जा रहा था। मैने कहा यह मामला ज्यादा न बढ़े इसलिये सुबह मोटर से स्टेशन जाते समय रास्ते में रेंजर के यहां खुद पहुंच गया श्रीर मैने कहा कि इस तरह की ज्यादती नहीं होनी चाहिये। मेरे साथ जो वहां व्यवहार होता है एक ठूट मुहरिर के द्वारा, जो रेंजर का साला है, तो श्राप सोच सकते हैं कि ग्राम जनता के साथ क्या व्यवहार होता होगा। जब मेरे साथ ऐसा व्यवहार हन्ना तो मेने कहा कि मैं इसकी रिपोर्ट डी० एफ० श्रो० की ग्राज फोन से करूंगा । इस पर रेजर दो फर्लॉग तक मुझसे माफी मांगता ग्राया। मुझसे जब तक वायदा नहीं करा लिया कि मै रिपोर्ट नहीं करूंगा तब तक वह ग्रनुनय विनय करता रहा। ग्रौर मेरे माफ करने के बाद साढ़े तीन बजे दोपहर को ३५३ में रिपोर्ट लिखी जाती है कि सुदामा प्रसाद जी ग्राये ग्रौर उन्होंने मारा पीटा, सरकारी कागज पत्र फाड़े । में मध्य प्रदेश गया हुग्रा था, वहां से जब लौट कर ग्राया तो मुझे डी० एफ० ग्रो० का पत्र मिला कि मै उनसे इस सम्बन्ध में मिलूं। इस सम्बन्ध में मैंने १८ मई को माननीय मुख्य मंत्री ग्रौर वन मंत्री को पत्र लिखा कि मै ग्रधिकारी का तबादला नहीं चाहना लेकिन इन्साफ चाहता हं। यदि मैंने एम० एल० ए० के पद पर रह कर गलत काम किया है तो मुझे कहा जाय और यदि ग्रधिकारी इस तरह माननीय सदस्यों के साथ ऐसा बरताव करते है तो जनता के साथ क्या व्यवहार होता होगा यह सोचने की बात है । दो पत्र लिखे, १८ मई ग्रौर १५ जून को, उत्तर मिलता गया कि विचार हो रहा है, जांच हो रही है। १० जुलाई को माननीय वन मंत्री से लखनऊ में मिला और ४-५ प्रक्तुबर को नैनीताल में स्टेडिंग कमेटी में मैंने यह मामला उठाया, लेकिन उसकी रिपोर्ट ग्राज तक नहीं ग्राई । जिलाधीश से कहा तो जिलाधीश ने कहा कि रिपोर्ट मैंने कहा कि मुझ पर मुकदमा चलाया जाय ताकि कोर्ट से इंसाफ मिल सके क्योंकि विभाग इंसाफ करने में लाचार है । े ३१० दिन हो चुके ग्रौर ग्रब तक ६ बार माननीय वन मंत्री से मिल चुका, ६ बार पत्र लिखे, लेकिन श्राज तक इस जंगल विभाग से रिपोर्ट नहीं श्रा सकी । जब विधायक के साथ इस तरह का बर्ताव हो तो इस विभाग से इंसाफ कैसे मिल सकता है ? ३१० दिन के बाद भ्राज तक यह विभाग रिपोर्ट ही नहीं मंगा सका तब फिर मैंने पुलिस स्टेशन से सर्टिफाइड रिपोर्ट ली ताकि कोर्ट मे जा सकुं ग्रौर वहां उचित कार्यवाही हो सके ।

एक बात यह निवेदन करूं कि इसका परिणाम बुरा हो रहा है। इसका श्रसर श्रिधकारियों पर बुरा पड़ रहा है। श्रभी हमारे यहां पवा के भूतपूर्व जमींदार ने एक फारेस्ट गार्ड को कुछ जमीन रिश्वत में दे दी जिसमें धान की खेती होती थी। फारेस्ट गार्ड ने हरिजनों से बेगार ली कि वे उस जमीन को जोतें व बोयें। एक हरिजन ने इन्कार किया तो मेरा सर यह कहते हुए शर्म से झुक जाता है कि उस फारेस्ट गार्ड ने उसके कपड़े उतरवा कर उसके ऊपर थूका। श्रिधकारियों के पास रिपोर्ट हुई तो वह मुझत्तल हुआ, लेकिन क्या कार्यवाही उसके खिलाफ की गयी यह अभी तक पता नहीं। छोटे से छोटा श्रिधकारी जब यह समझ सकता है कि एक विधायक के साथ यह व्यवहार किया जा सकता है तो वह कानून की परवाह नहीं करता और उसकी घज्जी उड़ाता रहता है।

मै यह भी निवेदन करूं कि तालबेहट तथा मंडावरा रेज में हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति का क्या हाल हो रहा है। सैकड़ों हजारों वृक्ष फारेस्ट गार्ड सद्वारा कटवाये जा रहे है ग्रौर वे १०, ५ रुपया रिश्वत के ले लेते हैं। घी व गेहूं की वसूली होती चली जा रही है। इसकी शिकायतें की सयीं, लेकिन सरकार ने इस ग्रोर कतई ध्यान नहीं दिया।

में निवेदन करूंगा कि बुन्देलखंड तथा झांसी डिवीजन की शिकायतों की निष्पक्ष जांच की जाय। ये जंगल हमारे हैं। केवल १०, ५ फारेस्ट गार्ड स या चन्द श्रिकारी उनकी रक्षा नहीं कर सकते जब तक वहां की जनता का पूरा सहयोग न हो। ये जंगल जनता की सम्पत्ति हैं, जो सरकारी मुलाजिम हैं उनकी सम्पत्ति नहीं हैं। वे श्रपने काम का पैसा पाते हैं। इसलिये अगर

### [भ्री सुदामा प्रसाद गोस्वामी]

ग्रापवनों की रक्षा करना चाहते है ग्रीर जनना का सहयोग चाहते है तो जनता के साथ जो बुर्ध्यवरार किया जाना है उसकी स्रोर सरकार को ध्यान देना वाहिये। यह बात बड़े शर्म की है कि जो पार्टी रूनिंग पार्टी हो। उप पार्टी का विधायक होकर मुझे उतके कर्मचारियों के विरुद्धे कोर्ट में जा कर शरण लेता पड़े। लेकिन लावारी है, मजबूरी है कि ६ बार श्रन्तय-विनय करने के बाद न पेरे लि नाफ नुकदमा चलाया जाता है, न उस है विरुद्ध कोई कार्यनाही की जाती है। में निवेदन करना चाहता हूं कि श्रव हमारी सहन शक्ति सीमा को पार कर गयी है। सरकार समय रहते हुए उधर ध्यान दे। कर्मचारी का तबादना कोई सजा नहीं है। मुझे मिले प्रगर मेने जुर्ग किया हो ग्रौर सजा उसे मिले प्यगर उसने जुर्न किया हो। हमारी इज्जल पर जो हमला किया गया है उसकी हम रक्षा करना चाहते हैं। हरिजनों का कपड़ा उतरवा कर नंगे बदन पर युका जाय तो यह बड़े शर्म व लज्जा की बान है, इस छोर अरकार की ष्यान देना चाहिये ग्रीर एक निष्पक्ष जांच कमेटी बैठाई जानी चाहिये।

श्री जगदीश नारायणदत्त सिंह (जिना खोरी)—माननीया प्रथिष्ठात्री सहोदया, को कटौतों का प्रस्ताव पेश हुप्रा है में उसके सप्तर्यन में खड़ा हुप्रा हूं। किसी भी देश के लिये धन ए ह बहुन ही आवश्यक बीज है। मुझे दुः ख है कि अपने यहाँ वन का क्षेत्रफ न दूपरे प्रदेशों के नुकाबले ने बहुत ही कम है। अप्रोजों के जमाने ने भी और प्राज भी जा की तहा बुई शा इ को निर्देश रकार ने बन महोत्यव किये, नवे प्यान्टेशन प्रवासे, लेकिन पै पह घेला गाउँ कि इन में नो तुजारों काथा खार्च किया जाता है। यह ला वे कार जाता है। यों कि उनमें लगाये गेये प्रिक्तिर र्भ वर्बाद हो जाने हैं। इस निनिस्ति में गुन्ने एक बाते स्रीर कहनी है कि जिल यक्त वनों ते हैं है दिने जाते हुं तो ठे है सर वन श्रविकारियों से या वहां के स्थानीय भ्रापिकारियों से निज कर के श्रच्छे-भ्रच्छे वृक्षों पर मार्किंग करा लेते है श्रीर इस तरह से हगारे हजारों श्रच्छे पेड़ कट जाते है ।

इसके बार हमकी कुछ प्राइनेट फारेस्ट्म के बारे में कहना है। खीरी में बहुत से प्राइवेट फारेस्ट्म है जो कि सरकार ने जमींदारी एवालिशन के बाद जे निये। मगर मात्र नक उनका डिमार्केशन नहीं हुमा। जिस नगर यहना नोटिफि हेशन हुन्ना उप वक्त उनका क्षेत्रक न कम था। उस है बाद किर नोटिफ़ि हेदन किया क्रौर जिसका पहले १०० एकड़ क्षेत्रकत या उसमें ६-७ सी एकड़ श्रीर जोड़ दिया। नतोजा उसका यह हुया कि जो काश्तकार उसके श्रासपास जनीन जोते हुवे ये उनकी जुपी-जुताई जमीन जिलने फतने खडी हुई थीं ले ली श्रोर फमल को चरवा दिया श्रोर उसकी बिलकुन बरबाद कर दिया। श्राजतक न तो उन हो कहीं दूपरी जमीन निली न किसी त्रकार का सुग्रायचा दिया गया । जितने चरागह में वे भी सब कब्जें में कर लिये श्रीर इस वक्त जानवरों के निये कोई जगह जिसी भी गांव में नहीं रह गयी है। नतीजा यह होता है कि वे लोगों में खे नों वें घुन जाते है ख्रीर फ न को बरबाद करते हैं। इसके ग्रनावा में यह भी देखता हूं कि ग्राज जहां सरकार के कागजों में जंगन तिखा हुन्ना है वहां खुद म्रपने जिले में और जिस क्षेत्र से ने श्राया हुन्ना हूं में यह बता सकता हूं कि वहां पर कुछ लोगों ने वहां के स्थानोय श्रफसरों को घून देकर सारो जंगन काट लिया है श्रीर फसल बो रहे है। तो जो काक्तकार है उनकी जमीन तो सरकार श्रीर फारेस्ट बाले ले लेते है लेकिन को घूस दे देते हैं वहां जंगल के जंगल साफ हो जाते है श्रीर श्राज भी साफ हो रहे है। मंत्री जी इसको रोकने के लिये भ्रवश्य कोई प्रबन्ध करें।

दूसरी चीज मुझे यह कहनी है कि जिन लोगों को जंगल के पास फार्म्स दिये गये है, जैसे रेपयूजीज है श्रीर बड़ी-बड़ी कालोनाइजेशन स्कीम्स खोली गयी है तो हम लोग तो यह कहते हैं कि वन के जन्तुओं को रक्षा करना हमारा धर्म है लेकिन वहां पर हम देखते है कि उनको बुरी तरह से मारा जाता है। इसके लिये हमारा सुझाव है कि उनको जो लायसेंस दिये जायं बन्दूकों के वह ऐसे दिये जायं जिनकी बैरल झार्ट हो, जिससे वह ऋाप्स का प्रोडक्झन कर सकें भ्रोर जानवरों का स्लाटर न कर सकें। दूसरा सुझाव मुझे यह देना है ग्रौर पिछले साल भी मैने कहा था कि

एल० जी० और एस० जो० कार्टिजेज को बैन कर दिया जाय क्यों कि इनसे बुरी तरह से जानवर मारे जाते हैं ग्रीर जो बड़े जानवर शेर वगैरह हैं वह इनसे नहीं मरते हैं ग्रीर घायल हो जाते हैं जो ग्राहिस्ता-ग्राहिस्ता मैन ईटर हो जाते हैं। तोसरी चीज यह है कि वनों में जब ग्राग लग जाती है या ग्रीर कोई चोज होती है तो उसके ग्रास-पास के गांव वाले ही उसकी रक्षा करते हैं, लेकिन जिस समय कोई मुनाफे की बात होती है तो उस समय लकड़ी काटकर दूर फैक्टरी को भेज दी जाती है ग्रीर वहां के लोग फायदा नहीं उठा सकते हैं। इसलिये भेरा सुझाव है कि जो फारेस्ट प्रोडक्शन से फैक्टरो लगे वह फारेस्ट्स के पास ही लगनी चाहिये ताकि उसके पास के बसने वाले उससे लाभ उठा सकें। मेरे यही सुझाव थे ग्रीर में ग्राशा करता हूं कि माननीय मंत्रो जी इघर ध्यान देने की छुना करेंगे।

श्री नागेरवरप्रसाद (जिला जौनपुर)—माननीय ग्रिधिष्ठात्री महोदया, मंत्री जी ने जो अनुदान उपस्थित किया है में उसका समर्थन कर रहा हूं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि वनों का मनुष्य जोवन में बहुत महत्व है श्रौर यही नहीं किसानों के लिये बाग का जो महत्य है वही सरकार के लिये वनों का कृषि के बाद है श्रौर इसी श्रनुपात में उनके होने की श्रावश्यकता है जिससे राज्य सरकार श्रौर समाज लाभ उठा सके श्रौर देश के विकास में सहयोग दिया जा सके।

वनों को महिमा ग्राज से हो नहीं बिल्क प्राचीन काल से रही है। वैदिक काल में, पौराणिक काल में ग्रौरइससे भो प्राचीनकाल में भी इसकी रक्षा के लिये, इसके प्रसार के लिये सुविधायें दी गई हैं ग्रौरइनके लाभों का ग्रच्छा गुणगान किया गया है। लेकिन जबसे विदेशी शासन हुन्ना इस तरफ लापरवाड़ी हुई ग्रौर दिनोंदिन हमारे जंगल क्षीण होते गये। पिछलो लड़ाई के जमाने में जंगलों को बेनहाशा क्षित पहुंचाई गई ग्रौर ग्राज भी वे बहुत गिरी हुई दशा में हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि स्वाधीनता के बाद हमारी सरकार का ध्यान इधर गया है ग्रौर इनका तेजी से विकास भी किया जा रहा है लेकिन जितना होना चाहिये उतनी प्रगति नहीं हो रही है, जिसमें हमें काफी हानि उठानी पड़ रही है। एक जमाने में निदयों के किनारे जंगल बहुत बड़ी मात्रा में होते थे उनकी खेती के विकास के नाम पर काटा गया। इसका दुष्परिणाम यह हुग्ना कि निदयों के किनारे कट गये। जहां थोड़ो-सो जमीन मिलो वहां ग्रासपास को जमीन लगातार कटती चलो जा रही है। उसकी उपजाऊ शक्ति निदयों के हारा बहुती चली जा रही है ग्रौर पैदावार पर बुरा ग्रसर पड़ रहा है। दूसरी तरफ इन्हीं जंगलों में जंगली जानवर रहते थे जो उसमें रह कर ग्रयना जीवन यापन करते थे। उससे हमारे देश की सम्पत्ति बढ़ती थी। लेकिन वह जंगलों से निकल कर खेती के मैदान में ग्रागये हैं ग्रौर हानि कर रहे हैं, चारों तरफ घुमघाम कर के।

दूसरे, हमारे यहां जो जंगल होते थे, खास तौर से मैदानी इलाके में पलाश या ढाक के जंगल दिखायी पड़ते थे। ये जंगल ग्रामतौर से ऊसर जमीन पर होते हैं। उनको कटवा कर खेती का क्षेत्र बढ़ाया गया, नतीजा यह हुग्रा कि ढाक के जंगल जहां से काटे गये वहां की जमीन फिर ऊसर हो गयी। वहां रेह पैदा होने लगी हैं। इस कारण हम उस जमीन को खेती योग्य नहीं बना पा रहे हैं। रेह पैदा होने के कारण बारिश में वह जमीन कटती जा रही है। ऐसी हालत में में चाहता हूं कि जहां ऊसर जमीन है वहां फिर से जंगल लगाये जायं, खास तौर से पलाश ग्रौर बबूल के जंगल लगाने की कोशिश की जाय जो इस सम्बन्ध में ज्यादा उपयोगी हैं। हमारे पूर्वी जिलों में ढाक के जंगलों में श्रादिवासी जाति के मुसहर लोग रहते थे। उनका काम होता था उन जंगलों से लकड़ी ग्रौर पत्ते ले कर बेचना ग्रौर ग्रयना जीवन यापन करना। लेकिन उन जंगलों के काट देने से उन को नतो पत्तल मिल पाते हैं ग्रौर न लकड़ी प्रिल पाती है ग्रौर ग्राज वह खानाबदोशों की तरह मारे मारे फिर रहे हैं, जिन को बसाने की एक नयी समस्या पैदा हो गयी है। इसलिये जो बड़े-बड़े ऊसर पड़े हुए हैं उनका उपयोग सरकार जंगलों के लगाने में करे।

में सरकार का ध्यान अपने जिले की श्रोर खास तौर से दिलाऊंगा। वैसे माननीय मंत्री जी ने कहा कि सूबे के १७ जिलों में जंगल हैं, ३४ जिलों में बिलकुल जंगल नहीं हैं। यह बड़े

### [श्री नागेश्वरप्रसाद]

दुः खकी बात है। जहां पर जंगलों का इतना बड़ा महत्व है कि हर गांव के थोड़े बहुत जंगल चाहें कागज में दर्ज हों, या न हों, २, ४, १० एकड़ ज़रूर रहे है, वहां श्राज जिले के जिले बिना जंगल के हैं। मै चाहता हूं कि जिस तरह से सरकार विकास के श्रनुपंधान के लिए फार्म खोलती है उसी प्रकार हर बलाक में एक-एक जंगल, जिलना रकबा इसके लिए मिल सके, जंगल लगाने की योजना बनाये जिससे लोगों को लकड़ी ग्रोर पेड़-गौथों का लाभ हो सके ग्रौर वहां पर जो जंगल के जानवर है उनकी सुरक्षित रखने का मोका मिल सके। हमारे जिले में गोमती श्रौर सई नदियां है जो अपने किनारों को बहुत काटती है। उनके किनारे जंगज लगाने के लिये मैने इस सदन में एक बार चर्चा किया था। उसकी कुछ शुक्र्यात भी की गयी लेकिन काम जहां शुरू हुआ था वहां बहुत जगह बन्द कर दिया गरा। बहुत ढिलाई से वला । एक प्राम जनौर है। उस गांव के पास काम शुरू किया गया, पोर्वे लगाये गये, लेकिन बाद में बन्द कर दिया गया। जो सारा लर्चा किया गया वह बेकार हो गया। यहा पर ऐसी जमीन है जिस पर जंगल भ्रगर लगाया जाय तो भांव वालों की जो जमीन कटतो उर रही है उसकी रक्षा हो सके, वहां के लोगों को क्रासानी से ल हड़ी मिल सके, क्रोर वहां के जानवर जो खेतों को नुकतान पहुँचा रहे है, उन जंगलों में रह कर श्राने को सुरक्षित रल करते है । इस तरह से किसान कालाभ हो क्रीर सरकारको भो लाभ मिले क्रोर जो जमीन बे कार बंजर पड़ो हुई ह उस का भी उपयोग हो सके, लेकिन इस तरफ भी कंई सरकार ने विशेष ध्यान नहीं विया। हमारे यहां बसुही नदाहै जिसके थिनारे बहुत खाली जमीन पड़ी हुई है जी खास तौर से ऊपर है। श्चर उसमें ढांक का जंगल लगाया जाय तो खासा लाभ हो संकता है। वैसे ढांक का पेड़ लगाने में कोई ज्यादा मेहनत नहीं है, इतना जरूर है कि उसको सुरक्षिन रखने के लिये थोड़ो-झी व्यवस्था करनी पड़ेगो श्रोर उसका श्रायोजन करना पड़ेगा। श्राम तौर में जो किसान की जमीन न हों, ग्रीर वह गांव समाज की जमीन हो तो ऐसी जमीन में सब किसान पेड़ लगाने के नियेन जाने पार्येगे श्रीर न उनको कोई सुविधा प्राप्त हो सकेगी । ऐसी हालत में श्रगर गांव समाज के माध्यम से या सरकार ग्रयने कब्जे में लेकर उन जंगलों को लगाये तो ग्रधिक से ग्रधिक उसका उपयोग किया जा सकता है। हमारे जिले की शाहगंज तहसील में बड़े-पड़े अनर बेकार पड़े हुए है। उनको भी सरकार लेकर जंगल लगावे तो बड़ा भारी लाभ हो सकता है। तरह से देखा जाय तो जंगलों का उपयोग जमीन के कटाव को रोकने के लिये, इमारतों के लिए, लकड़ी उपलब्ध करने के लिए, ग्रौर दूसरे फलदार वृक्ष लगाकर उनका लाभ उठाने के लिये किया जा सकता है।

जैसा कि मैने कहा, हमारे यहां एक गांव मे इस तरह का काम शुरू करने की सरकार ने व्यवस्था की है। ग्राज भी सई नवी के किनारे भैसा रामपुर, बनवीरपुर, पंढरी, पोलरा, चांवपुर, पियारेपुर, रामपुर, भरथरी, सोनहिता, संकरा रामपुर, कन्धी ऐसे गांव हैं जहां पर ढाक के जंगल श्रौर दूसरे किस्म के जंगल वाली जमोन बंजर के नाम पर पड़ी हुई है। ग्रसल में उसको जंगल के रूप में कागज में दर्ज हो जाना चाहिए, लेकिन सरकारी कागज ऐसे है कि जहां जंगल हैं वहां बंजर लिवा जाता है जिसका मतलब समझा जाता है कि बि कुल खाली जमीन है श्रौर जहां पर ग्राज खेती हो रही है वहां पर भी वही बंजर ही दर्ज हुग्रा है। तो यह जो गलत इन्दराज है, जो कागज ठीक नहीं रखें गए हैं, उनका इन्दराज ठीक हो जाय तो बड़ा भारी काम चले।

पहाड़ी इलाकों में हमने देखा कि बहुत सी जमीन बेकार पड़ी हुई है जहां साखू, सागौन ग्रौर ग्रखरोट तथा दूसरे फलदार वृक्ष लगाये जा सकते हैं। लेकिन उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया गया है। वहां पर खेती उतनी नहीं हो सकती है जितनी कि जंगल लगाकर उसकी लकड़ी को फर्नीचर ग्रौर मकान बनाने के कामों में लाया जा सकता है। इन जंगलों से लीसा वगैरह का भरपूर उपयोग जितना होना चाहिए उतना नहीं हो पाता है। मुझे जानकारी है कि इन जंगलों का जो ग्रांकड़ा विखलाया गया कि इनसे इतना लाभ हो

रहा है, में समझता हूं कि बिना किसी को तकनीफ दिये हुए सावधानी अगर बरती जाय और सरकारी अधिकारी अगर नाजायज तरीके से लकड़ी और दूसरी चीजों को बर्गद न होने हे और सतर्कता से काम करे तो इसका कई गुना लाभ हो सकता है और जो कुछ उससे पैसा मिले उसकी दूसरी तरफ न खर्च करके इन जंगली इलाकों में, इन पहाड़ी क्षेत्रों में सड़कों को निकालने में और जंगलों को सुरक्षित रखने में उसका उपयोग कर सके तो इससे देश की बहुन बड़ी सम्पत्ति बढ़ सकनी है, राष्ट्र की शोभा बढ़ सकनी है और देश का बहुत बड़ा विकास उनके द्वारा हो सकना है। इन शब्दों के साथ में इस अनुदान का समर्थन करता हूं।

\*श्री गोविन्द नारायण तिवारी (जिला जालीन)--प्राननीय श्रीधष्ठात्री महोदया, में प्रापका निहायत शुक्रगुजार हं कि इस बजट सेशन के ३८ वे दिन मुझे वन विभाग के बाबत कुछ बोलनेका मौका मिला। वैसेतो पालिसीज के सुझाव के सिलिसले मे सिर्फ दो बातें प्रर्ज करना चाहता हूं। एक तो यह कि मैं नहीं समझता कि उत्तर प्रदेश में फारेस्ट डिपार्टमेट का एक ग्रलग से पोर्टकोलियो होने की जरूरत है । हिन्दुस्तान मे जो मन्त्रिमंडल है, उसमें श्राप देखे, श्रीमन्, कि कोई भी पोर्टकोलियो फारेस्ट डिपार्टमेंट का नहीं है हिन्दुस्तान के मन्त्रिमंडल में १३ मन्त्री है, लेकिन वन विभाग का कोई भी मन्त्री नहीं हैं। राज्य के स्तर पर इसको देखा जाय तो उड़ीता मे, केरल मे श्रौर जम्मू-काइमीर में वन विभाग का कोई मन्त्री नहीं है । माननीय सुदामा प्रसाद जी की बात सुनने के बाद में इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि इसे उत्तर प्रदेश में इस वन विभाग के मन्त्री की न तो अव-इयकता है और न वन विभाग के मन्त्री महोदय अपने उस ग्रस्तित्व को किसी तरह से जिम्मे-दारी के साथ निबाह ही सकते है श्रीर ग्रगर इस विभाग के ग्रिविकारीगण श्रथवा मन्त्री महोदय भ्रयने कार्य को निबाह नहीं सकते है तो इस पोर्टफोलियो की श्रावश्यकता नहीं है। में अ।पसे यह भी निवेदन कर्ल कि में इसकी निश्चितरूप से सदन का श्रथमान समझता हूं कि जब दो करोड़ से ज्यादा का इस विभाग के श्रनुदान का बजट यहां पर पेश हो-- पुझे माफ किया जाय भ्रगर में यह कहूं --कि नीरो की तरह रोम के भ्रयने महल मे वह बैठा हो श्रीर यहां पर उत्तर प्रदेश के चुने हुए विधायक ग्रयनी जनता की शिकायते सुना रहे हों, बता रहे हों श्रौर उस समय मंत्री महोदय को सदन मे उपस्थित रहने की फुरसत न हो।

दूसरी बात में पालिसी के रूप में इस सदन में श्रापके द्वारा यह निवेदन करना चाहता हूं कि चीफ कन्जवेंटर आफ फारेस्ट पर जो हम एक वर्ष के अन्दर ३३,००० रुपया खर्च करते हैं वह न्यायोचित नहीं है। मेरा यह मुझाव है कि यह पद समाप्त कर दिया जाय। दूसरे विभागों को यह काम देने से इसकी पूर्ति हो सकती है। मेरा निवेदन उप-मंत्री महोदय से हैं जो कि मन्त्री महोदय की प्रावसी कर रहे है कि वह इस पर विचार करें। कोई जरूरत नहीं है कि इस पद को रखा जाय। आज जब कि प्लानिंग के लिये बहुत रुपने की जरूरत और हर रोज इस बात की चेठ्टा की जाती है कि रुपया किसी तरह से बचाया जाय तो कोई जरूरत इस बात की नहीं है कि २,८०० रुपये महीने पर एक आदमी को रखा जाय। ये कोई वन के एक्सपर्ट नहीं है। कोई इंजीनियर भी नहीं है। मेरा निवेदन है कि फारेस्ट डिपार्टमेंट की नौकरी के लिये किसी विशेष क्वालि-फिकेशन की आवश्यकता नहीं है। माना जा सकता है कि इंजीनियर की कोई क्वालिफिकेशन होती है, माना जा सकता है कि एडिमिनिस्ट्रेटर की कोई क्वालिफिकेशन होती है, माना जा सकता है कि एडिमिनिस्ट्रेटर की कोई क्वालिफिकेशन की आवश्यकता होती है, लेकिन जहां इस फारेस्ट डिपार्टमेंट का सवाल है इसके मैनेजमेट के लिये कोई भी एशीकल्चर डिपार्टमेंट का डिप्टी डाइरेक्टर काम कर सकता है। कोई भी रेवेन्य भी एशीकल्चर डिपार्टमेंट का डिप्टी डाइरेक्टर काम कर सकता है। कोई भी रेवेन्य

<sup>\*</sup>बक्ताने भाषण का पुनर्वीक्षण नही किया।

[श्री गोविन्द नारायण तिवारी]

डिपार्टमेट का श्रक्सर इसका कार्य कर सकता है, इसलिये कि यह लेड से सम्बन्धित बात है। राजस्व विभाग के श्रिविकारी याएग्रीकल्चर विभाग के श्रिविकारी इस वन विभाग के काम को बहुत श्रव्छी तरह से देख सकते हैं। इसलिये पालिसी के सम्बन्ध में इस सदन को मेरा यह सुझाव है कि वन विभाग का विलीनोक्षरण राजस्व विभाग में कर दिया जाय या इसका विलीनोक्षरण एग्रोकल्चर विभाग में कर दिया जाय क्योंकि इन दोनों विभागों की समस्या एक सो हो है। इस पुस्तक में यह कहा गया है कि भूमि संरक्षण का जहां तक प्रकृत है वह सब काम एग्रीकल्चर विभाग देखता है। यही दरखत लगाने का काम कारेस्ट विभाग में होता है। इसलिये श्रगर वन विभाग इसके पास श्रा जाय तो वह उस काम को श्रव्छी तरह से देख सकता है। यह मेरा पालिसी के संबंध में दूसरा सुझाव है।

श्रव में श्रवनी स्थानीय वातों के बारे में निवेदन करना चाहता हूं। इस सारी की सारी पुस्तक में २,६६,००,००० रुपये के श्रनुदान के श्रन्तगंत बुन्देलखंड का नाम लेते इस डिपार्टमेंट को शर्म श्राती है। इसी उपार्टमेंट के लोग बुन्देलखंड यालों के साथ कैसा वर्नाव कर सकते हैं यह उन्हीं श्रिधकारियों ने बता दिया। मगर इस सारी की सारी किताब में कहीं कोई जिक्र नहीं है श्रीर बुन्देलखंड के लोगों के मन में यह बात मजबूत होती जा रही है कि क्यों न हमारा एक श्रन्ग प्रान्त हो जाय, क्यों नहीं ऐसे मंत्रियों से, ऐसे श्रिधकारियों से, इस शासन से हम श्रपना संबंध-विच्छेद कर लें श्रीर उन से श्रपना संबंध जोड़ लें जो हमारी भाषा बोलते हैं, हमारा पहनावा पहनते है श्रीर हमारा साथ देना चाहते है। वह कम से कम हमारे ऊपर थूकेंगे नहीं श्रीर हम श्रपना एक ऐसा संगठन बनाना चाहते है कि जो हमारी झोपड़ियों को जलाने को गुस्ताखों करेंगे, जो हम पर गोलियां चलाने की गुस्ताखी करेंगे उनको हम गोली मार सकें। में नहीं देखता कि बुन्देलखंड के जिले जिस परिस्थित में हैं उसमें उनका कल्याण हो सकेगा।

जालौन का इसमें कहीं तजिकरा नहीं। जालौन की दो एक कठिनाइयां में सुनाऊं। फारेस्ट डिपार्टमेंट ने कालपी के बिलकुल किनारे पंडित गोविन्द वल्लभ पंत उद्यान नाम का एक बाग लगाया। उसके लिये जमीन एक्वायर की, जमींदार से। लेकिन उस को एक्वायर करने के बाद यहां के मिनिस्टरों के एक दोस्त को वह एक्वायर की हुई जमीन देदी अपना पेट्रोल टेक लगाने के निये। सोचिये कि जमीन पिलक परपज के लिये एक्वायर की जाती है, लेकिन दे दी जाती है एक इंडिविजुअल को, एक कांग्रेस के प्रमुख आदमी को पेट्रोल टेक लगाने के लिये। कालपी के आउट स्कर्ट्स में नेशनल हाई वे पर वह पेट्रोल टेक मौजूद है। फारेस्ट डिपार्टमेंट का तर अभी भी लगा हुआ है वहां पर ।

यही नहीं फारेस्ट डिपार्टमेंट के लोग अगर नदी गांव के नजदीक जाने की तकलीफ गवारा करें तो देखेंगे कि मकान के आंगन में फारेस्ट डिपार्टमेंट का चीरा लगा हुआ है । एक आदमी अपने मकान में रहता है, उसका जहां खाना बनता है वहां पत्थर लगा हुआ है । फारेस्ट डिपार्टमेंट के लोग उसके मकान के अंदर घुस जाते हैं और यह कहते हैं कि तुमको खाना नहीं बनाने देंगे, मकान खाली करो । वहां कोई सर्वे नहीं हुआ है । पहले वह दितया की रियासत थी । नदी गांव के इलाके के जो कागजात है वे बहुत खराब हैं । खतौनी और खसरे में कोई इंदराज नहीं थे । जहां चाहा फारेस्ट डिपार्टमेंट ने अपनी हद कायम कर ली । जो ४०, ४० साल से जमीन जोतते हैं और राजाओं के युग में दितया की सरकार को लगान दिया करते थे, आज उन से कहा जाता है कि जमीन खाली करो और जब फरियाद की जाती है तो, जैसा सुदामा प्रमाद जी ने कहा, फारेस्ट डिपार्टमेंट वाले जबरदस्ती करते हैं । डिमान्सट्रेशन किये जाते हैं, रिप्रेजेन्टेशन किये जाते हैं, लेकिन सरकार सुनने को तैयार नहीं है । आज नदी गांव के इलाके में बड़ी ज्यादती हो रही है ।

इसी तरह से श्रीधळात्री महोदया, मोहान एक स्थान है मेरी कांस्टोट्यूयेन्सी में श्रौर वहां एक जंगल है। ग्रगर किसी को जाने की फुरसत हो तो मेरे साथ चले। में वहां हजार दो हजार यादमी पेश कर दूंगा जो यह कहेंगे कि सन् १६५७ के चुनाव में जिन श्रादिमयों ने कहा कि हम कांग्रेस को वोट करेंगे उनको खुली छूट हो गयी थी। इस बात की कि जितनी लकड़ी चाहें वे काट ले जायं। में इस बात को दावे के साथ कह सकता हूं कि कम से कम दो हजार गाड़ी लकड़ी उस मोहान के जंगल से श्रनिष्ठत रूप से काटी गयी। लेकिन उसकी बात कोई सुनने वाला नहीं है। बहुतपुर ऊरई के पास एक जंगल हैं। वहां पर श्रगर ५ रुपये फी मवेशी दे दिया जाय तो साल भर मवेशी चर सकते हैं श्रौर श्रगर ५०० मवेशी चराये जाते हैं श्रौर उनको २,५०० रुपये रिश्वत के नहीं दिये जाते हैं तो वे जानवरों को मवेशी खाने में बन्द कर देंगे श्रौर जैसा सुदामा प्रसाद जी ने बतलाया, उन पर ३५३ श्रौर ३३२ के मुकदमें चलाये जाते हैं। श्रगर जालीन की तरफ देखने की फुरसत हो मानवीय मन्त्रिण को तो देखें कि ऐसी जमीन जहां एक एक एकड़ में २० मन श्रौर १० मन गेहूं पैदा हो सकता है, फारेस्ट डिपार्टमेंट लिये हुये हैं। इसलिये यह जो कटौती का प्रस्ताव है, जो बड़ी मजबूरी श्रौर मुसीबत से इस सरकार का ध्यान दिलाने के लिये पेश किया गया है, में उसका समर्थन करता हूं। मुझे श्रोशा है यह सुझाव मैंने देकर श्रपना कत्तंच्य पूरा किया गया है श्रौर इन्हें पूरा किया जायेगा।

श्री खुर्राराम (जिला श्रत्मोड़ा)—श्रिधकात्री महोदया, में श्रापका श्राभारी हूं कि श्राप ने मुझे इस महत्वपूर्ण श्रनुदान पर बोलने का श्रवसर दिया। में इस प्रस्तुत श्रनुदान का समर्थन करने के लिये खड़ा हुश्रा हूं। इसके साथ ही में श्रपने कुछ मुझाव भी रेना चाहता हूं। यह श्रनुदान जो है, वन विभाग का, यह बहुत ही महत्वपूर्ण श्रनुदान है श्रीर इससे हमारे राष्ट्र की तरक्की होती है, उस को तरक्की के बहुत से साधन उपलब्ध होते हैं। इसलिये इस विभाग की रक्षा करना हम सब का कर्सव्य है। यह राष्ट्र की एक तरह से सम्पत्ति है श्रीर इसकी रक्षा होनी चाहिये।

इस विषय में माननीय मन्त्री जी ने तथा श्रन्य दूसरे सदस्यों ने जो कुछ कहा है ग्रीर उसके लिये भी में उनको धन्यवाद देता हूं श्रीर उनकी बातों का समर्थन करता हूं। लेकिन साथ ही श्रपने कुछ सुझाव भी अवदय देना चाहता हूं। मैं यह कहना चाहता हूं कि यह वन तो राष्ट्र की सम्पत्ति हैं ही, लेकिन इसके साथ ही ग्राप की दूसरी सम्पत्ति भी है ग्रौर वह है हमारे प्रदेश का पिछड़ा हुआ अंग। इस समय जो भूमिहीन हरिजन वर्ग है वह भी हमारे राष्ट्र की सम्पत्ति है। इन वनों की तरक्की के लिये उनका सहयोग अनिवार्य है और उनका सहयोग श्राप को तभी मिल सकता है जब श्राप भी उनके साथ सहयोग दें। बहुत समय हो गया, कई वर्ष पहले, मैंने एक सुझाव दिया था, उनके लिये ५० हजार एकड़ भूमि की मांग की थी। इघर से श्रीर उधर से भी कई लोगों ने यही कहा है कि हरिजन भूमिहीनों के लिये भूमि का प्रबन्ध किया जाय। हमको इसका प्रबन्ध करना चाहिये। काफी भूमि जो जंगल विभाग में ले ली गई है उनको दी जा सकती है। जहां तक मुझे मालूम हुआ है करीब ६० लाख एकड़ भूमि कुमायूं की जंगल विभाग के अधिकार में है जब कि केवल ५० हजार एकड़ की मांग भूमिहीनों के लिये पेश हो रही है। मैंने पहले भी कहा था और ग्रब भी कह रहा हूं, उनके लिये भूमि देना ग्रनिवार्य है। ग्राज से १० वर्ष पहले भी मैने यह मांग पेश की थी। पिछले साल एक ग्रार्य कमेटी भी कायम की गई थी। उस कमेटी में कई सदस्य थे--मोहन सिंह, प्रतापिंसह जी, व गढ़वाल के नरेन्द्रसिंह भंडारी वगैरह। तो उसमें जो कुछ उन्होंने देखा भाला उसका जो नतीजा निकलेगा वह तो बाद में पता चलेगा ही, लेकिन इस वक्त क्या पोजीशन है ? मालधन चौर में ३,००० एकड़ भूमि एलाट हुई, लेकिन २,००० एकड़ मिली है। वहां एक क्षोभनाथपुर विभाग के अन्दर है। तो वहाँ के लिये २०० प्लाट ऐलाट हुए, लेकिन मिला कुछ नहीं। वहां लोगों की कोई सुनवाई नहीं होती। मैं मन्त्री की से कहूंगा कि सुनवाई होना श्रनिवार्य है। एक श्रौर जगह है कोटा। वहां के लिये कहा गया कि एक सेटिलमेंट श्राफिसर

### [श्री खुशीराम]

नियुक्त किया गया है। जो वहां बैठे लोग है उनकी हालत को उन्होंने देवा, लेकिन नतीजा तो कुछ नहीं निकला। हां, एक जगह वहां किसी ने दिखाई कि यह गरीब व्यक्ति को दे दी जाय, लेकिन उन्होंने कहा कि यह रिजर्व जंगल लायक नहीं है, वरन् जहां पर उस गरीब की झोंपड़ी थी उसमें ग्राग लगा दी श्रीर उस को निकाल दिया गया। वहां पर लोगों को जूतों से मारने की धमकी दी गयी श्रीर उस बेचारे गरीब से लिखवा लिया गया कि मेरा कब्जा नहीं है।

एक इलाका इसी तरह से चौहान कहलाता है। साथी प्रतापिसह ने भी उसे देखा है। चाहे किसी पार्टी में हों इस वक्त तो यह हरिजनों का मामला है, उन्हीं के लिये उन्हें राय देनी है। वहां पर खतों के लिए जो हाई कास्ट के लोग है उनके लिये तो खुला है श्रीर उन लोगों को जमीत भी मिल जाती है, लेकिन हरिजनों की कोई सुनवाई नहीं होती -- यह मुझे कहते हुए बड़ी क्षमं मालुम होती है कि वहां भी एक हरिजन की सोपड़ी में ग्राग लगा दी गयी श्रीर बुरी तरह से उसकी मारा गया ग्रीर निकाल दिया गया। चुनके-चुनके उससे लिलवा लिया कि गलती से कुछ मामला हो गया था। अब वह रो रहा है। श्रीर भी फेम चल रहे है, लोगों ने दरस्वास्त देरली है। श्रतः पहले जमीन का प्रबन्य होना चाहिये। जो मालयन चौर मे २०० प्लाट म्रालाट हो कर उनको नहीं दिये गये वह उनको म्राबद्य दे दिये जायं। उपरोक्त मांग की पूर्ति हेतु मैने ग्रौर जगह को सूचियां बनाकर देरखी है। उन के मुनाबिक जो हमारी ५० हजार एकड़ की मॉग है, वह पूरी कर दी जाय। यह मांग जब तक पूरी नहीं होगी तब तक यही दशारहेगी। टनक गुरमे साथी प्रताप सिंह जी के क्षेत्र छीनी ग्रादि स्थानों में सैकड़ों ग्रादमी ग्राशा लगाये बैठे हैं कि उनकी मांगें पूरी होंगी लेकिन ग्रभी तक कुछ भी पता नहीं कि क्या हो रहा है। उनसे कहा जाता है कि जुन्हारी बात की सुनवाई होगी लेकिन श्रभीतक कुछ नहीं हुन्ना है। श्राप जो राम राज्य श्रीर समाजवाद लाना चाहते है वह तभी पूरा होगा जब ग्राप इस तरह से जनता की मदद करेंगे।

मैं इन शब्दों के साथ प्रस्तुत ग्रनुदान का समर्थन करता हूं।

श्री दर्शनसिंह (जिला शाहजहांपुर)—प्रिधिक्यां महोदया, मैं ग्राप का बड़ा ग्राभारी हूं कि श्राप ने मुझे भी इस अनुदान पर बोलने का ग्रवसर दिया। जंगन के मताल्लिक ग्रगर में यह कहूं कि "ला ग्राफ जंगल इज प्रिवेलिंग देयर" तो मेरे खयाल से यह गलत नहीं होगा। जंगल में जंगल का कानून रायज है यह बात ग्राज में सदन के समक्ष रखना चाहता हूं ग्रीर सदन को बतलाना चाहता हूं कि यदि ग्राप जंगल डिगार्टमेंट के बिकेंग की वेलें तो ग्राप इस नतीजे पर पहुंचेंगे कि जंगल का कानून जंगल में चल रहा है। में उसके लिये कुछ प्रमाण भी ग्राप के सामने रखना चाहता हूं।

जंगल के लिये सरकार की नीति जो विछले तीन चार साल से रही है वह भी में श्राप के सामने रखना चाहुता हूं। सब से पहले में सन् १६५६ के दिसम्बर महीने के एक जी० ग्री० की ग्रीर ग्राय का श्रीन ग्राकवित करना चाहता हूं जो कि फारेस्ट डियार्टमेंट की तरफ से जारी हुआ था। उसमें यह लिखा हुआ था कि प्राइवेट फारेस्ट की जमीनों पर जो श्रर्स्टव्हाइल जमींवारों की तरफ से जिनको भूमि वी गई है श्रीर जिनको पट्टे विये गये हैं उनके पट्टेमाननीय होंगे श्रीर वह भूमि श्रयने कब्जे में रव सकेंगे। विसम्बर, सन् १९५६ में इस जी० ग्रो० के निक।लने का क्याकारण या, वह भी में ग्रापके सामने इस वक्त पेश करना चाहता हूं। सन् १६५७ में जनरल एलेक्शन होने वाला था। सन् १६५६ में जिस वक्त हमारी सत्ता पार्टी को इस बात की श्रावश्यकता प्रतीत हुई कि हम को बोट हासिल करने हैं, हमारे लिये इस बात की चरूरत है कि हम किस प्रकार से लोगों को घोले में डाल कर वोट हासिल करें तो उन्होंने सन् १६५६ के विसम्बर माह में एक जो० ग्रो० के द्वारा उन लोगों को झूठा श्राश्वासन दिलाया। सिर्फ यही नहीं, बल्कि जितने नोटीफि हेशन्स दफा ४ के मातहत उस समाव किये गये ये वे सब के सब तकरीबन वापिस ले लिये गये। लेकिन बविकस्मती की बात यह कि फिर सभी पार्टी आकर क बिज हो गई। उस पार्टी ने फिर क्या किया? जब उसने भूठे वादे देकर वोट हासिल कर लिये तब सन् १९५८ में जनवरी के महीने में एक

दूसरा जी० स्रो० जारी किया स्रौर उसमे गवर्नमेट ने साफ तौर से लिखा कि जो जी० स्रो० सन् १६५६ में किया गया था वह खारिज किया जाता है। यही नहीं सरकार ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि इस जी० स्रो० को विद रेट्रास्पेक्टिव इफेक्ट्स यानी सन् १६५६ से लागू किया जाय।

जो गवर्नमेट सन् १६५६ मे थी वही ग्राकर सन् १६५८ मे सत्तारूढ़ हुई। जो ग्राहमी जंगलों मे जा कर ग्राबाद हुये, जिन्होंने बड़ी मेहनत के साथ उन जमीनों को ग्राबाद किया, ग्रयनी जान गंवाई, मलेरिया की बीमारी मे मरे, जानवरों के जिकार हुये, ग्रब उन्हों ग्राबादकारों से कहा जा रहा है कि गवर्नमेट की गलती की वजह से नहीं बल्कि ग्राप ग्रयनी गलती से वहां रह रहे है। ग्राप उन जमीनों को छोड़ कर चले जाइये जिसमे ग्राप ने ग्रपना खून पसीना एक किया है। इसके लिये उनको तरह-तरह की तकलीफे दी जा रही है। ग्रापके सामने कुछ ऐसी बाते रखूंगा जिनसे ग्राप को मालूम होगा कि जंगल के ग्राफीसरों की मनोवृत्ति ग्रव जंगली हो गयी है ग्रौर उन्होंने वहां के श्रादिमयों को श्रनेक प्रकार से परेग्रान ग्रौर हैरान किया है। चरखारी स्टेट का मामला तो ग्राप के सामने पेश ही हो चुका है। वहां के लोगों के मकानो मे ग्राग लगा कर उनको वहां से निकाला गया। जिस वक्त यह सवाल माननीय मंत्री जो से किया गया कि क्या कोई ऐसा कानून है जिसमे ग्रधिकारियों को ऐसा ग्रधिकार हो कि जो जंगल की जमीन पर ग्राबाद हो जायं उनके घरों को फूंक दिया जाय उसका कोई उत्तर नहीं मिला। ग्राज उन ग्राबाद कारों की दुखभरी ग्रावाज को ले कर ग्राया हं।

मै जिस जिले से ग्राया हूं वहां के हालात ग्राप के सामने रख देना चाहता हूं। जिन लोगों ने सन् १६४६ मे पुवांया तहसील को ग्राबाद किया ग्रीर डेफीसिट जगह को सरप्लस बनाया, जिन्होंने ग्रयना हजारों रुपया खर्च किया, जिन्होंने ग्रयने घर के सुख ग्रीर संपत्ति को त्याग दिया, ग्राज उन्हीं लोगों से कहा जा रहा है कि ग्राप लोग यहां से निकल जाग्रो।

श्राज जब कि हमारी गवर्नमेट ग्रो मोर फूड के लिये इतना ज्यादा नारा लगा रही है श्रौर एक तरफ उसके लिये वह हजारों रुपया खर्च करती है, तो दूसरी तरफ़ उसके विपरीत उसकी यह कार्यवाही लज्जाजनक है।

श्राज शाहजहांपुर में ऐसे लोगों पर जंगल काटने के मुकदमें चल रहे हैं जो लोग उस दिन श्रदालतों में हाजिर थे, जो बैकों से रुपया विदड़ा करने श्राये थे श्रीर जंगल वाले इन बातों से बाज नहीं श्रा रहे हैं।

बहुत से पुराने जमींदारों ने कजरी, हरीपुर, कजरा श्रौर गहलुइया मे लोगों के नाम पट्टें कर दिये थे। कब्जा काइतकारों ने किया श्रौर उसके बाद उसको श्राबाद किया श्रौर श्राज इतने दिनों बाद जंगल वाले कहते है कि छोड़ कर चले जाश्रो। मैं मन्त्री जी से कहूंगा कि उन लीगली कब्जा करने वालों की श्रोर ध्यान दिया जाय श्रौर उनकी तकलीफों को दूर किया जाय।

श्री गौरीराम गुप्त (जिला गोरखपुर)—श्रिष्ठात्री महोदया, मै श्राप का श्राभारी हूं कि ग्राप ने मुझे इस श्रनुदान पर बोलने का श्रवसर दिया।

श्राज जो श्रनुदान पेश है, मै उसका समर्थन करने के लिये खड़ा हुश्रा हूं। श्राजादी के बाद जब से कांग्रेस सरकार हुई, जंगल विभाग की तरफ से बहुत श्रन्छे-श्रन्छे पेड़ लगाये गये हैं। हमारे ही जिले गोरखपुर में काजू के पेड़ तक लगाये गये हैं। तो इस तरह से जंगल विभाग की तरफ से श्रन्छे श्रन्छे काम हुए है। लेकिन में श्रवने कुछ सुझाव देना मुनासिब समझता हूं।

जिस तहसील से में श्राता हूं उस क्षेत्र में करीब ६६ हजार एकड़ जमीन में जंगल है। जंगल विभाग के श्रिधिकारियों के खिलाफ मुझे कुछ कहना है। जंगल विभाग से सरकार को बहुत श्रामदनी है। मैने गत वर्ष भी क्वेश्चन करके सरकार का ध्यान इस तरफ दिलाया था कि चोरी कर के बहुत से पेड़ काट लिये जाते हैं श्रौर ऐसे पेड़ काटने वाले ठेकेदारों से जंगल [श्री गौरीराभ गुप्त]

विभाग के श्रिधिकारी रुपया वसूल कर के श्रपने लिये रुख लेते ह । मुझे बतलाया गया था कि ठेकेदारों के जिम्मे ६ लाख रुपया बाकी है, पता नहीं वह रूपया वसूल हुआ है या नहीं। जितने रेजर है उनको जंगल के पेड़ नीलाम होने पर ठेमेदारो द्वारा १०० रुपये फी दुक ग ज्यादातर रेजरों को मिलता है। जमींदारी खत्म होने के बाद वन धिमान ये। बहुत से जगल सिल गये, बहुत से घाट मिल गये और बोरो की खेती हो सकती है, ऐसे ताल भी मिले। उसकी श्रामदनी को भी वन विभाग ने ले लिया जब कि उसे जाहिये कि उस धामदनी को वह गाव समाज की सेवा में लगावे। जैसे वहां पूल या सड़को का या और कोई काम नहीं होता। मेरे क्षेत्र में हडह-वाघाट, परगापुर घाट है जिन्हें यन विभाग ने लिया, लेकिन भ्राज तक हडहवाघाट पर पल नहीं बन सका। जिस वंदत नेगी जी वन विभाग के छिन्टी मिनिस्तर थे में इस सम्बन्ध मे बराबर उनसे मिलता रहा श्रीर उन्होने वादा किया था कि श्राप के क्षेत्र में वह पूल बनवा देते. लेकिन वे भी नहीं बनवा सके। फिर मैं न विभाग के दूसरे मंत्री से भी इस सम्बन्ध में मिला ग्रीर दरस्वास्त दी कि वह पुल बनवा दिया जाय। यदि वह पुल न तनवाया जाय तो पुरंदरपुर श्रौर पिचरूबी गांव समाज को उसे वापस कर दिया जाय। कुछ दिनो क बाद मेरे पास जवाब लिख कर श्राया कि टेक्निकल कारणों से गांव समाज को वह वापस नहीं मिल सकता। में श्राप के द्वारा सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि उस क्षेत्र के एम० पी०, एम० एल० ए० या एम० एल० सी० के खानदान के लोगों को ठेका न दिया जाय।

श्रव टांग्या लोगों के बारे में मुझे यह कहना है कि जहां ज्यादातर नसंरी की खेती हैं वहां नाजायज तौर पर काफी तावाव में घराव चुश्राई जाती हैं श्रीर श्राथकारों यिभाग के लोग भी वगैर जंगल विभाग की इजाजत के वहां घुस नहीं सकते हैं। यह ठीक नहीं है। जब तक उनको इजाजत मिलती हैं तब तक घराव यहां से हटा दी जाती है। इसिलये में श्राप के द्वारा वन विभाग के मन्त्री जी से प्रार्थना करूंगा कि उनको स्पेशल तरीके से श्राएं र दिया जाय ताकि श्राराव वगैरह जो वहां चुश्रायी जाती है वह बन्द हो जाय।

वन एरिया में खर वगैरह बहुत होती है जिसको नाजायज तरीके में बेन्न विया जाता है। वैसे उसे बाढ़ एरिया के पशुश्रों के चरने के लिये ही कह कर छोड़ दिया जाता हं, जो एक बहाना मात्र है। बाढ़ के मौके पर पशुश्रों के चरने के लिये उसे चरवाहों को दे विया जाता है श्रौर वह रुपया फारेस्ट डिपार्टमेंट के ग्रधिकारियों के पास चला जाता है फारेस्ट गाईंस की तनस्वाह बहुत कम है जिसे बढ़ाया जाय। साथ ही वहां पर बहुत से लोग निजी पशु चराते हैं जो वन विभाग से ठेका नहीं लेते, बित्क उसके एवज में व बहा के ग्रधिकारियों को काफी तादाद में घी श्रौर वूध वहां की चरवाई में भेजते रहते हैं। श्रीपके द्वारा माननिध्य मंत्री जी से मेरी प्रार्थना है कि यह प्रथा बन्द की जाय।

इसके श्रलावा माननीय मन्त्री जी से मेरी सिफारिश है कि राजनीतिक पीड़ितों, हरिजनों, पिछड़ी जाति के लोगों तथा धौर गरीब तबके के लोगों को मुपत नहीं तो सस्ती कीमत पर लकड़ी देने की कृपा की जाय। धाग लगने वालों को लकड़ी तो दी ही जाती है, लेकिन जब लकड़ी लेने के लिये वे जाते हैं तो बार-बार उनको वापस किया जाता है। कोरो बड़ेर तक के लिये वगैर पैसे खर्च किये लकड़ी किसानों को नहीं मिलती।

हमारे यहां जंगलों के आसपास पहले एक लेहरा स्टेट थी, जो एक श्रंग्रेज की थी। उस जंगल के पास बहुत से लोग प्राइवेट खेती करते थे। उस पर बाद में जंगल विभाग ने कब्जा किया, वहां बहुत से काश्त कारों के नाम खेती है, लेकिन वह श्रव परेशान होते है श्रौर खेती पर कब्जा उन्हें नहीं मिलता। वह मेरे पास श्राते हैं तो में उन को श्राधिकारियों के पास भेज देता हूं, लेकिन उन्हें न्याय नहीं मिलता।

दूसरे जंगलों की जी कच्ची सड़कें है उन्हें पक्का किया जाय। मेरे क्षेत्र में जो सड़क है वह पक्की नहीं है, बल्कि मोटरों के लिये उस सड़क पर इजाज़त है और उस के पास ही एक बैलगाड़ी की सड़क है उस पर भी बैलों का चलना मुश्किल है श्रौर उन की जीभ निकल जाती है चलते-बलते, इस वास्ते उसे ठीक कराया गया श्रौर जंगल की सड़क को पक्का कराया जाय।

मेरे क्षेत्र में जंगल से बहुत श्रधिक श्राय होती है इसलिये मै मन्त्री जी से कहंगा कि इस क्षेत्र में समय से इन पुलों को बनवाने की छुपा करें। इन शब्दों के साथ में कटौती के प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

श्री स्रमरनाथ (जिला गोरखपर)—साननीया म्रविष्ठात्री महोदया, इस वन विभाग के प्रनुदान पर माननीय लारी जी ने जो कटौती का प्रस्ताव प्रस्तुत किया है उसके समर्थन में मैं खड़ा हुग्रा हूं।

में यह कहने में तनिक भी हिचकिचाता नहीं कि न विभाग की जो व्यवस्था है वह सचमुच जंगल में जंगन का कानून लागु है । वहां के टांगिया निवासियों के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाता है इसकी ग्रोर मैं ग्राप का ग्रौर सदन का ध्यान दिलाना चाहता हूं। वह यह है कि फरेंदा तहसील में ग्राज से कुछ दिनों पहले की बात है कि हंडिया कोट नामक टांगिया में किस प्रकार वहां के टांगियो निवासियों के साथ श्रन्याय किया गया, जिस के बारे में प्रोफेसर शिब्बन लाल सक्सेना और श्री नर्रासह पांडेय ने जांच भी की श्रौर रिपोर्ट भी दी परन्त उन दोषी व्यक्तियों के विद्य कोई कार्यवाही करने के बजाय जिन्होंने शिकायत की थी उन व्यक्तियों पर गलत मुकदमें चलाये गये श्रीर शराब बनाने के इल्जाम लगाये गये, उनको लोग्नर कोर्ट से सजा भी कराई गई लेकिन बाद को श्रपील में वह लोग छट गये। जिन लोगों ने शिकायत की उनके घर वालों के साथ जिस तरह का वन कर्मचारियों के द्वारा व्यवहार किया गया, वह कहते हुए इार्म लग रही है। वहां उन लोगों की बहू-बेटियों की इज्जत लूटी गई, उनको मारा गया और शिकायत करने पर उल्टे उन पर ही मकदमें चलाये गये। इतना ही नहीं उन के साथ खेती के म्रलाटमेंट में नी ग्राज कल इस विभाग में भेदभाव बरता गया । इसके ग्रलावा यह भी कहना चाहता हं कि स्थानीय श्रधिकारियों श्रीर कर्मचारी की श्राम बात हो गई है कि जो टांगि । निवासी वहां के कर्मचारियों की खुशामद करते हैं, जो उन की जी हजूरी करते हैं उनको तो जंगल में खेती तथा लकड़ी दी जाती है, ग्रौर जो नहीं करते उन लोगों को नहीं दी जाती है ग्रौर कहा जाता है कि तुमको कैसे मिले, तुप लोग हमारी खुशामद <sup>-</sup>हीं करते । इतना ही नहीं उनके बच्चों की पढ़ाई की व्यवस्था नहीं है ग्रौर न पानी पीने की ही कोई व्यवस्था है साथ ही टांगिया निवा-सियों के लिये राशन की भी कोई व्यवस्था नहीं है, श्रौर न कोई दूकान गल्ले की वहां खोली गई है।

दूसरी तरफ में श्राप का ध्यान श्रौर भी दिलाना चाहूंगा कि जंगलों में जो लोग जमींदारी ग्रंबालीशन के पहले से खेती करते श्रा रहे हैं श्रौर जिनको जमींदारों ने पटटे का श्रधिकार दे रखा है, श्राज उनकी खेती पर जबरदस्ती जंगल विभाग वाले कब्जा कर रहे हैं, श्रौर उनके ग्रधिकार खत्म किये जा रहे हैं। इसके श्रलावा एक बात श्रौर यह है कि टांगिया निवासियों की खेती १ साल के बाद दूसरी जगह बदल दी जाती है। उनको कोई स्थायी श्रधिकार प्राप्त नहीं ह ते हैं। में चाहूंगा कि उनकी खेती स्थायी करते हुए उन्हें श्रधिकार प्रदान किये जांय। श्रौर इन नों में फैले हुए भ्रष्टाचार को जरा देखा जाय कि किस प्रकार से चोरी से लकड़ी बेची जाती है। गोरखपुर जिले के चैक के रेंजर के बारे में शिकायत की गई चोरी से लकड़ी बेचने के बारे में, लेकिन उसके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की गई। इसके श्रतिरिक्त एक बात श्रौर कहना है कि श्राज बाग बुरी तरह से काटे जा रहे हैं। सरकार कहती है कि वन महोत्सव किया जाय। लेकिन जो बाग कट रहे हैं उनके रोकने की कोई व्यवस्था नहीं है श्रौर मवेशियों के लिये जंगलों में मुफ्त चरागाह की कोई व्यवस्था नहीं है, श्रौर उनके लिये श्राज गांवों में जमींदारी टूटने के बाद कोई चरने का स्थान नहीं रह गया है क्यों के जमींदारों के जमाने में जो चरागाह थे उन में बाहुंगा कि जानवरों के लिये गुफ्त चरागाह की व्यवस्था की जाय। क्योंकि वन विभाग के लिये मुफ्त चरागाह की व्यवस्था की जाय। क्योंकि वन विभाग के लिये मुफ्त चरागाह की व्यवस्था की जाय। क्योंकि वन विभाग के लिये मुफ्त चरागाह की व्यवस्था की जाय। क्योंकि वन विभाग के लिये मुफ्त चरागाह की व्यवस्था की जाय। क्योंकि वन विभाग के लिये मुफ्त चरागाह की व्यवस्था की जाय। क्योंकि वन विभाग के लिये मुफ्त चरागाह की व्यवस्था की जाय। क्योंकि वन विभाग के लिये मुफ्त चरागाह की व्यवस्था की जाय। क्योंकि वन विभाग के लिये मुफ्त चरागाह की व्यवस्था की जाय। क्योंकि वन विभाग के लिये मुफ्त चरागाह की व्यवस्था की जाय।

[श्री ग्रमरनाथ ]

कर्मचारियों को जो लोग दूध, दही मुफ्त देते हैं उनके जानवरो के चरने का इंतजाम तो वन कर्मचारी मुफ्त कर देते हैं श्रौर जो लोग नहीं देते हैं उन का बगैर पेसा।दय मवेशी चराने नहीं दिया जाता है तो इसकी श्रोर ध्यान दिया जाय।

हमारे जिले में गन्ना काफी पैदा होता है। डोमाखंड जंगल से सिसवा फेक्ट्री को गन्ना जाता है लेकिन वन विभाग द्वारा वन की सड़कों से होकर जाने के लिये मना किया जाता है। जिससे वहां के गन्ना किसान प्रयना गन्ना फरेंदा ते सि ( ने नहीं गिरा पा रहे हैं। इसी तरी के से तहसील में स्थित ग्रानन्द शुगर मिल को महाराजगंज तहसील का जो पश्चिमी हिस्सा है जहां का गन्ना उस फेक्ट्री में बराबर जाता था प्रब वन के रास्ते से ले जाने से मना कर रहे हैं। इतना ही नहीं वन विभाग की सड़कों से मीटरों द्वारा भी गता ले जाने से ग्रिधकारी रोकते हैं। उन किसानों को मार्ग की सृविधा प्रवश्य मिलनी चाहिए। ग्रीर इसके ग्राला एक बात ग्रीर कहना है कि जंगली पशुग्रों से जंगल के पास की खेती को बड़ा नुकसान होता है। उसके बचाने का उपाय किया जाय क्यों कि जंगलों के किनारे जंगल। पशुग्रों के जंगलों से निकलने पर क्लावट नहीं लगायी गयी है ग्रीर न कोई तार ही लगाया गया है। इसलिये में चाहूंगा कि वहा तार लगाये जांय। एक बात ग्रीर कहनी है कि जमीदारी खत्म होने के पहले जंगलों से लकड़ी लेने की जो सुविधा पहले समीप के लोगो को थी जैसे मुर्दा जलाने के लिये ग्रीर मकान शादि बनाने के लिये, वह प्रब प्राप्त नहीं है। में चाहूंगा कि उनकी मुर्दा जलाने के लिये ग्रीर मकान बनाने के लिये जंगलों से लकड़ी देने की मंत्री जी व्यवस्था करे। इन शब्दों के साथ माननीय लारी जी के कटौती प्रस्ताव का दे समर्थन करता हूं।

श्री राजनारायण (जिला वाराण हो) — अधिष्ठात्री महोदया, में लारी जी के कटौती प्रस्ताव का समर्थन करता हूं। श्रगर न विभाग का श्रच्छी तरह से श्रध्ययन किया जाय तो हर माने में इसमें श्रवनित दिखाई पड़ेगी। सुरक्षित बन को वेलें तो १६५७-५६ में उसका क्षेत्रफल ६२३६ वर्गमील था, १६५६-५६ में भी उतना ही क्षेत्रफल रहा। प्रोटेक्टेड फारेस्ट पहले १११६ वर्गमील था वह ११०६ मील रह गया। यर्ग रहित (श्रनक्लास्ड फारेस्ट) का क्षेत्रफल पहले ३७०१ वर्गमील था वह ३५७५ वर्गमील रह गया। यह १६५६-५७ श्रौर १६५८-५६ का फर्क है।

सरकार की श्रोर से कहा जाता है कि वन विभाग की श्रामवनी बढ़ती जा रही है। श्रव इसको भी वेला जाय। कुल रेवेन्यू १६४६—४७ में ५३१ लाख रुपया हुई। १६५७—४६ में ५३५ लाख हुई शौर १६५६—४६ में ५५६ लाख हुई। निर्विचत रूप में २१ लाख रुपये की वृद्धि १६५७—५६ में १५६ में श्रव लाख हुई। निर्विचत रूप में २१ लाख रुपये की वृद्धि १६५७—५६ में १६६ में श्रव हुई। श्रगर खर्ची वेखा जाय तो जहां १६५ लाख रिवाइज्ड खर्चा होता था, १६५६-५७ में वहां २४६ लाख खर्ची होने लगा। १६५८-५६ में थानी ६१ लाख रुपये का खर्ची बढ़ गया। श्रगर वेखा जाय कि कुल बचत खर्चे की काट कर कहां जा रही है तो जहां ३३६ लाख रिवाइज्ड बचत १६५६-५७ में होती थी वहां १६५८-५६ में ३१० लाख रुपये की बचत हुई। यानी खर्ची बढ़ता चला जा रहा है। थो हो सी श्रामदनी बढ़ी तो उसके मुकाबले में खर्ची चार-पांच गुना ज्यादा बढ़ गया श्रौर बचत ३३६ लाख रुपये की जगह पर ३१० लाख रुपये रह गयी। टोटल मिला कर श्रामदनी में ह्यूास हुश्रा तो फिर किम मानी में यन विभाग चाहता है कि उसकी प्रशंसा की जाय।

क्योंकि समय कम है इसिलये में ज्यादा न कह कर कैवल चिकया के लोगों की वुर्दशा का वर्णन करना चाहता हूं। वहां के जो गरीब किसान है उनके मकानों के ब्रांगन में वन विभाग खूंटा गाड़े हुए हैं। कुमां चारों तरफ से घेरे हुए हैं। न बे पानी खींच सकते हैं, न घर में रह सकते हैं, न पशुश्रों को चरा सकते हैं, पूर्णरूपण जंगल का कानून चिकया के जंगल में इस जंगल विभाग ने चला रखा है। श्रभी श्रभी परसों की बात है। चिकया के किसान श्राये थे। उनके साथ मै जिलाधीश के यहां गया। वे रो रहे थे। उनका कहना था कि साहब, हम कब तक इस तरह की मुसीबत व ग्राफत बर्दाश्त करे। ग्राम समाज कहता है कि यह ग्राम समाज की जमीन है, दन विभाग कहता है कि उसकी जमीन है। वन मंत्री महोदय ने कहा कि ग्राखिर है तो जंगल, जंगल में जंगल का कुछ कानून तो चलता ही है। ग्राखिर जंगल का कानून तो चल ही रहा है। लेकिन जब वन विभाग कहता है कि उसकी जमीन है तो पहले वह उनको डिसपजेस करे, पहले उनको हटाये कानून के जिरये से जिनका पहले से ग्रिधकार है, जिनके पहले से मकान बने हुए है, जिनके चरागाह रहे है, जिनके खिलयान रहे हे, जिनके कुएं व दरवाजे रहे है, पहले उनको कानून के जिरये से हटाया जाय। लेकिन मै देख रहा हूं कि जंगल विभाग निश्चित रूप से जंगल का कानून चलाना चाहता है। इसलिये मेरी यह मांग है कि पहले सरकार चिकया के सम्बन्ध में कोई अंचे स्तर की कमेटी बनाये जो बाकायदा जांच करे।

पहले जंगल में कुछ जातियां रहती थीं। जातियों का नाम लेने से श्राफत श्रा जाती है। यहां जातियां है श्रौर बगर उनका नाम लिये हुए वस्तुस्थित का ज्ञान नहीं हो सकता। श्राज कुछ लोग जो जाति प्रथा को कायम रखना चाहते हैं श्रौर वे पिछड़ी जातियों के अंगाली की कीचड़ में कमलस्वरूप खिलाना चाहते हैं, वे इस नाम से चिढ़ते ह। में बतलाना चाहता हूं कि वह मुसह श्रौर श्रन्य जातियां रहती थी जो जंगल से लकड़ी काट कर श्रपना जीवन निर्वाह करती थीं। उनके जीवनयापन के लिये क्या इंतजाम किया गया? कोई इन्तजाम नहीं किया गया; जिसको चाहा ठेका दे दिया, जिस भाव चाता दे दिया। श्राज वहां श्रराजकता, बदश्रमनी तथा बदइंतजामी है। उसके लिये वन विभाग की जितनी निन्दा की जाय कम है। इन शब्दों के साथ, में इस श्रनुदान में कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

\*श्री श्रब्दुल रऊफ लारी—माननीय ग्रिधिष्ठात्री महोदया, इस ग्रनुदान के सम्बन्ध में जो वादिवाद इस सदन में चला है उसमें जितने लोगों ने भाग लिया है, मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि सभी लोगों ने मेरे कटौती के प्रस्ताव का समर्थन किया है। उस पक्ष के माननीय सदस्यों ने फार्मल तरीके से श्रनुदान का समर्थन किया, लेकिन उन्होंने भी इस विभाग के अप्टाचार तथा ग्रिधिकारियों के दुर्व्यवहार की कटु ग्रालोचना की है। माननीय सुदामा प्रसाद जी गोस्वामी ने श्रपनी दुखद कहानी जो दार्म-दार्म के नारों के बीच में यहां कही है उसके बाद तो दार्म से गर्दन झुक जाती है कि जब एक जन प्रतिनिधि के साथ इस विभाग के कर्मचारियों का यह व्यवहार है ग्रीर जबिक वह जन-प्रतिनिधि उस पार्टी से सम्बन्धित है जिसकी ग्राज यहां पर सरकार है तो किर दूसरे लोगों ग्रीर दूसरी पार्टियों के प्रतिनिधियों के साथ उनका कैसा व्यवहार होगा, यह जरा सोचने की बात है।

(इस समय ३ बजकर ३४ मिनट पर श्री उपाध्यक्ष पुनः पीठासीन हुये।)

यह सिर्फ उन्हीं के इलाके में नहीं, हर तरफ इस तरह का दुर्व्यवहार होता ह ग्रौर जहां कहीं भी इन कर्मचारियों के खिलाफ कोई ग्रावाज उठाता है चाहे वह उस गांव का रहने वाला हो, चाहें नजदीक का रहने वाला, कोई बड़े से बड़ा ग्रादमी हो, चाहें जन प्रतिनिधि हो, चाहें जनसेवक हो, तो उसके पीछे इस विभाग के ग्रधिकारी पड़ जाते हैं ग्रौर ग्रपने कलंक को छिपाने के लिये हर जायज ग्रौर नाजायज तरीके से उसको परेशान करते हैं। इसका नतीजा यह हो रहा है कि इस विभाग में चोरी बहुत ज्यादा बढ़ती जा रहीं है पर किसी में यह हिम्मत नहीं होती कि कोई ग्रावाज उठायें। कदाचित् कोई ग्रावाज उठाई भी जाती है तो यह विभाग, ग्रोर में तो यह कहूंगा कि मंत्री जी भी खुद, इतने खामोश रहते हैं कि कोई हिम्मत नहीं कर पाता। में मंत्री जी से कहूंगा कि यह किसी की निजी सम्पत्ति नहीं है, यह जनसम्पत्ति है, उसके साथ इस तरह का खिलवाड़ करना उचित नहीं हैं। इसी सदन के एक माननीय सदस्य ने बतलाया कि बुन्देलखंड के लोगों के साथ जो दुर्व्यवहार हो रहा है वह ग्रसहनीय हो चुका है ग्रौर हम उनके दुर्व्यवहार का

[श्री ग्रब्दुल रऊ ह लारी]

जवाब बन्दूक से देगे। तो यह छिपी हुई ज्वाला है जो भड़क रही है स्रोर या दिन दूर नहीं है कि स्रगर इसकी तरफ ठीक से फदम नहीं उठाया गया तो यह ज्वाला भड़केगी स्रोर पूरे प्रान्त को बर्बाद कर देगी। इसलिये में मंत्री जी से करूंगा कि वह इन प्रायाओं को सुनने की कोजिन्न करे स्रोर सही कदम उठाये वरना एक दिन स्रायेगा कि इसका नतीजा बहुत बुरा होगा।

में श्रापके द्वारा मंत्रीजी का ध्यान इस श्रोर भी ले जाना चाहना हं कि एक समाजनादी सरकार कहलाने के नाते उनका यह कर्तव्य है कि व किम ताश्वाह पाने वाले कर्मवारियों की तरफ भी ध्यान दें। एक तरफ तो २८ सौ श्रोर ३ हजार ६० तनस्वाह पाने वाने श्रियकारी इस विभाग में हैं श्रोर दूसरी तरफ ३५-३६ रुपये पाने वाले लोग भी मोजूद हैं जो जंगजों ने रहते हैं। बड़ी मुक्किल से २ रुपये की बढ़ोत्तरी हुई हैं, लेकिन श्रव पता चला है कि वह २ रुपये की बढ़ोत्तरी केवल उन्हों को मिलेगी जिनकी तनस्वाह ३५ रुपये तफ हं, ३६ रुपये बाले को वह नहीं मिलेगी। यह नहीं होना चाहिये। जब सरकार का यह येग हैं कि कम में कम १०० रुपये तनस्वाह जरूर होनी चाहिये तो २ रुपये की बढ़ोत्तरी जितने भी १०० रुपये से कम पाने वाले कर्मचारी हों उन मबको मिलनी चाहिये।

बहुत से ग्रादरणीय सतस्यों ने इस जात की ग्रोर भी मंत्री जी का ध्यान दिलाया कि जंगल के कितार के खेतों के बहुत से विवाद उठ खड़े हुये हैं और वहां के किपान बहुत परेशान किये जा रहे हैं। इनी सम्बन्ध में एक सवाल के जनाब में मंत्रीजों ने करा था कि बहुत ली मान्या जला दी गयों ग्रीर जब इका से प्रालीनेटरी क्येश्वत्स होने लगे तो मत्र ग्रूर हो कर उन्हें कड़ना कड़ा कि जंगल में कुछ जंगली कानून भी चला करता ह। में मंत्री जी से कहना चाहता हं कि दहा यह न हो कि यह जंगनी कानून यहां की जनता को जंगनी बना दे। मंत्रीजी कानून ग्राम ग्रापन ग्रापन हो की कि यह जंगनी कानून यहां की जनता को जंगनी बना दे। मंत्रीजी कान्ता के हुल ग्रापन ग्रापन हो है बल्क जनता के हुल दर्द को दूर करने के लिये यहां नहीं है बल्क जनता के हुल दर्द को दूर करने के लिये भी खनको उपाय करना चाहिये।

श्रोमन्, एक फारेस्ट ग्रीवां ज कमेटो बनी थो जिसने सुझाय दिया था कि जहा जंगल हो वहां के लोगों को क्या सुविधा दी जाय। इसमें कुमायूं के रहने वालो को यह सहूर्तियत दी गई थी, जिसको में पढ़कर सुनायें देता हूं। वह इस तरह से हे कि :——

"There shall be no restrictions on the removal of dry 1 eves by my bona fide resident of Kuan tyun" कुमायूं ने रहते वालों को र सहिलयते मिलनी चाहिये। लेकिन घीरे-घीरे यह भी खत्म को जा रही है। यह इसी गयने मेट की बनाई हुई कमेटी का सुझाव है, लेकिन इस पर भी ध्यान नहीं विया जा रहा है बाँतक उल्टे बड़ी बड़ी कम्पनियों की कोड़ी के मूल्य पर सहिलयतें दी जाती है। सान पंपे धन पर स्टार पेपर मिल को लकड़ी दी जाती है और लावों मन लकड़ी दी जा चुकी है और वह ब्लंक मार्केट में बेच दी जाती है। बराबर सदन में मंत्री जी का ध्यान दिलाया गया, लेकिन वह ध्यान नहीं देते है, उल्टे उसकी यकालत करते है, यह निन्दनीय है।

पिछले साल में माननीय गोविन्व सहाय जी को चेयरमैनशिप में एक कमेटी बनी थी, जिसनें.....

श्री उपाध्यक्ष--जवाब देते वक्त जो प्वाइंट न उठाये गये हों उनको उठाना ठीक नहीं है।

श्री श्रब्दुल रऊफ लारी—पहले लोग इस पर बोले हैं, इसिलये इस पर में कह रहा हूं। इसमें इंडिस्ट्रियल प्लाटेशन का जिक आया था कि ऐती चीजें लगाई जांय जिससे हमारे यहां गृह-उद्योग बढ़ सक। में मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि जो सुझाय उस कमेटी का आया था यह कहां तक सफलीभूत हुआ है या कहां तक उस तरफ कदम बढ़ाया गया है। इसमें स्पोर्ट्स, गुइस, ऐग्रीकल्चरल इम्पलीमेंट्स, हैंड मेंड पेपर, बास्केंट मेंकिंग और टीय मेंकिंग वगैरह के बारे में कितना काम हुन्रा है । बीड़ी बनाने का जिक ग्राया है कि इसके लिये पेड़ लगाये जा रहे है । इसके बारे मे नें कहूंगा कि सरकार यहीं पर यह काम कर रही है जहां पर यह है । मैं कहूंगा कि हर ग्राम सभा मे इसका इंतजाम किया जा सकता है ।

निदयों के किनारे जंगल लगाकर भूमि को कटने से रोका जा सकता है लेकिन इधर मंत्री जी का ध्यान नहीं गया है। बड़े-बड़े श्रिधकारी रख दिये जाते है श्रौर उन पर लाखों खर्च किया जाता है। इन शब्दों के साथ, मैं माननीय सदस्यों का श्राभारी हूं श्रौर श्राभार प्रगट करता हूं जिन्होंने इस कटौती के प्रस्ताव का समर्थन किया है।

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट — माननीय उपाध्यक्ष महोदय, में सब माननीय सदस्यों को जिन्होंने श्राज की डिबेट में भाग लिया है श्रपना श्राभार प्रदिश्ति करता हूं। कई किस्म के सुझाव माननीय सदस्यों की श्रोर से श्राये श्रोर उन पर सरकार गम्भीरतापूर्व अवश्य विचार करेगी। जो बातें यहां सदन में रखी गई है मै उनका उत्तर देने का प्रयास करूंगा। लेकिन मेरे लिये यह सम्भव नहीं हो सकेगा कि १५-२० मिनट में सब चीजों का उत्तर दे सकूं। जहां तक सम्भव होगा श्रीर जो प्रश्न यहां पर उठाये गये है उनका उत्तर देने में ही मैं श्रपने को सीमित रखूंगा।

पहली बात यह है कि माननीय थ्रब्दुल रऊफ लारी जी ने जो डिसकिपेंसी थ्रांकड़ों में बताई, वह यह है कि पहले जंगल १३,०५४ वर्ग मील में थे, जो श्रब १२,६०० वर्ग मील में ही रह गये हैं। यह गलत नहीं है बल्कि बिलकुल सही हैं। पहले से हमारे यहां जंगल कम हो गये हैं। इसका कारण यह है कि कई डेम हमारे यहां बन गये हैं थ्रौर कई जगहों पर रिहंबिलिटेशन स्कीमें चालू की गईं। खास कर वाराणसी, मिर्जापुर श्रौर नैनीताल में लोगों को बसाया गया। इसी कारण हमारे यहां जंगल तबाह हो गये। इसलिये जो श्रांकड़े दिये गये हैं उसमें कमी दिखाई गई हैं।

दूसरी बात उन्होंने यह कही कि मै पूछना चाहता हूं कि मथुरा श्रीर श्रागरा में एफी रेस्टेशन श्राफ फारेस्ट्स का काम हो रहा है वह वहां तक कामयाब हुश्रा है। इसके सम्बन्ध में मै उनकी बता देना चाहता हूं कि में स्वयं भी फारेस्ट कमेटी के मेम्बर होने के नाते तथा लैण्ड मैनेजमेन्ट बोर्ड के मेम्बर होने के नाते वहां जाता रहा हूं श्रीर जो जंगलों का वहां काम हुश्रा है उसको मैने स्वयं देखा है श्रीर मुझे बड़ा हर्ष है कि वहां पर बड़ी कामयाबी के साथ जंगल लगाये गये हैं। श्रगर लारी जी की मौका मिला तो उनको उन जंगलों को देखकर संतोष होगा कि यह जो काम किया गया है वह बाकई तारीफ के योग्य है।

तीसरी बात जो उन्होंने कही वह यह है कि तांगिया लोगों को बहुत किस्म की तकलीफों है। उनके पढ़ाई-लिखाई श्रादि की बड़ी श्रमुविधा है। मैंने विभाग के द्वारा मालूम किया है कि इनको काफी सुविधायें दी गयी है। कई स्कूलों की भी व्यवस्था की गयी है। सरकार की यह मंशा नहीं है कि उनको किसी किस्म की तकलीफ दी जाय। जहां तक हो सकता है, उनकी सुख-सुविधा का प्रबंध किया जा रहा है।

एक सदस्य--कहां स्कूल खुले हैं?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट — यह डिटेल तो में दफ्तर से पूछ कर ही बता सकूंगा। श्रापने यह कहा कि जंगली जानवरों से काफी नुकसान हो रहा है। खास तौर से श्रापने यह कहा कि उनको पकड़ने के लिये जो ठेकेदार हैं, इस व्यवस्था को दोषपूर्ण बताया। श्रापका यह सुझाव है कि इस कएम को ग्राम सभाश्रों को दे दिया जाय। लेकिन यह तभी सम्भव हो सकता है जब कि जो मौजूदा ठेकेदार काम कर रहे हैं उनके ठेकों का समय समाप्त हो जाय।

श्रापने यह भी कहा कि स्टार मिल को सस्ते दामों पर लकड़ी दो जाती है श्रौर गरीब लोगों को महंगे दाभों पर दी जाती है। इस पर सदन में कई बार चर्चा हुई श्रौर माननीय मंत्री महोदय ने पूरे विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला है। में श्रापको यह बतला सकता हूं कि जो भी काम किया गया है वह बुरी लिगाह से नहीं किया गया है। सिल्बीकल्चर के जो विशेषज्ञ हैं उनका यह कहना है [श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट]

कि वहां जो पेड़ टेढ़े हो जाते हे, जो डाइंग श्रोर डिकेइंग पेड़ होते हे उनको नष्ट किया जाना चाहिये ताकि नये जंगल पेदा किये जायं श्रोर सुडौल दरस्त पेदा हो। में यह भी बता देना चाहता हूं कि वहां की सारी जनता को तीन नये पेसे प्रति प्यूबि क फुट के हिमाब में लकड़ी दी जाती थी, उस पर भी वह वहां की पूरी लक की का इनोमाल नहीं कर पाते थे।

श्री गोविन्दसिंह विष्ट (जिला ग्रल्मोड़ा)---मंत्री जी स्वीकार कर चुके हे कि रुपया सवा रुपये मन बिकती हे ।

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट—मे रायल्टी की बात कर रहा हूं, वह बाजार भाव की बात कर रहे है। श्रगर वहां से यहां लकड़ी पीठ पर लायी जाय तो चालीस रुपये मे पहुंचेगी। श्राप श्रल्मोड़ा बाजार की बात कर रहे हे श्रौर भे बता रहा हूं जंगले। का भाव।

श्री गोविन्दींसह विष्ट--ग्रापने कभी जंगल देखा हे ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट--जितने जंगल मैने देखें हे शायद ही श्रापने या फिसी ने देखें होंगे।

मे यह बतला देन। चाहता हूं कि इस माभले में अड़ी गलतफहमी हो च्की है कि इसमें किसी व्यक्ति विशेष को बहुत तरते भार पर लकड़ी दे दी गयी है और उसको फायदा पहुचाया गया है। लेकिन वस्तुस्थित यह है कि दो अने फी क्यूबिक फट से ज्यादा लकड़ी बिक नही सकती। इसके अतिरिक्त यहां के लोगों को जलाने को लकड़ी के तिये प्राथमिकता दी जाती है। उसमें ऐग्रीमेट ऐसा है कि जितनो उनको जलाने के लिये लकड़ी की जरूरत होगी, उसको पहल प्राथमिकता दी जावगी और उनके इस्तेमाल के बाद जो लकड़ी बचेगी यह स्टार मिल को दी जावगी। इसलिये कोई शंका नहीं होनी चाहिये कि किसी किस्म की बेईमानी हुई है या बुरी निगाह से कोई काम किया गया है। जाच पड़ताल के बाद जिस ज्यादा से ज्यादा कीमत पर उठाया जा सकता था उसके मुताबिक कंटेक्ट किया गया। और यह कागज का एक कारत्वाना कायम हो, जिससे कि हमारे देश को कागज मिल सके और एक नयी इंडस्ट्री कायम हो सके, उस विचारघारा से यह सरकार ने मंजूर किया है। (क्यवयान)

इसके बाद श्री हरिवत्त कांडपाल जी ने कुछ दांकायें पदा कीं। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष--- शांति रखे, ग्राप लोग । इसके लिये ग्राप प्रश्न पूछें।

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट--उनका कहना था कि पर्वतीय प्रदेश में जनता को जलाने के लिये लकड़ी और कोयले की कीमत में बहुत ज्यादा इजाफा कर दिया गया ह जिससे वहां के लोगों को बहुत ज्यादा तकलीफ पैदा हो गई है। तो इसी मंशा से सरकार ने एक फेक्ट फाइंडिंग कमेटी बनायी और उस कमेटी के पास यह भी उनका कार्यक्षेत्र था कि वह इस बात की पूरी-पूरी जांच करे कि जो लकड़ी जलाने की मिलती है या इमारती लकड़ी मिलती है या कोयला जो वहां के लोगों को मिलता है, उसके तिये क्या कीमते होनी चाहियें और उनको क्या-क्या असुविधाय है, इनकी पूरी-पूरी छानबीन इस फैक्ट फाइंडिंग कमेटी ने की हैं। उसकी रिपोर्ट भी आ चुकी है और उस पर सरकार विचार कर रही है।

इतना में जहर बता देना चाहता हूं कि सरकार ने श्रभी से ही एक श्राईर कर विया है कि जैसी पहली व्यवस्था थी ५२-५३ में जिसमें कि ठेकदारों के लिये जंगल एलाट कर दिये जाते थे, माकिंग हो जाती थी श्रीर लकड़ी सिर्फ उन-उन शहरों में ही वह बेच सकते थे, वंसी ही व्यवस्था फिर से चला दी गई है ताकि जी माकिंग होगी उन जंगलों में वह जैसी जरूरत वहां की जनता को होगी उसी किस्म की कड़ियां, तख्ते वगैरह वह बनायेंगे श्रीर इन शहरों में लाकर कोई सीलिंग उसकी मुकर्रर नहीं होगी, उस कीमत पर वह बेचेंगे। मगर कोयले वगैरह के लिये सरकार का कहना यह है कि इतने ज्यादा जंगल कट चुके है शहरों के नजदीक कि कोई लकड़ी वहां प्राप्त नहीं हो सकती श्रीर ५ मन लकड़ी से एक मन कोयला तैयार होता है। इसलिये कोयले की कीमत ज्यादा

होना ब्रावश्यक हो गया है। फिर भी सरकार की तरफ से कई काम इस सिलसिले में किये गये है। तराई के इलाके से नैनीताल को कोयला दिया जा रहा है और कितने ही ट्रांस्पोर्ट के वेहिकिल्स ठेकेदारों को मुहैया किये गये है ताकि वह कम आड़े से कोयला लाकर वहां दे सके । सरकार चाहती है कि जहां तक हो सके जनता को सुविधा दी जाय। इसलिये ेरे भित्र को इससे ब्रसन्तोष नहीं होना चाहिये। जो यह रिपोर्ट ब्रायी है यह चीफ रंजवेंटर के पास गई है ब्रीर उनसे बहुत जल्दी रिपोर्ट मांगी है। उसके ग्राने पर जल्दी ही उस पर विचार होगा। माननीय प्रताप सिंह जी जैसा कह रहे थे कि छः महीने हो गये शौर कोई कार्यवाही नहीं हुई, तो उनका यह कहना अनुचित सा मालूम होता है क्योंकि वह स्वयं फैक्ट फाइडिंग कंघेटो के मेम्बर है। तीन महीने पहले जरूर कमेटी की रिपोर्ट भ्रायी, लेकिन उसमे श्रंग्रेजी के दहुत रो प्रयन्डिमेज थे। उस पर स्रार्या जी ने यह स्रार्डर दिया कि ऐसे संग्रेजी के अपेन्डिसेज का पहले हिन्दी के प्रनुवाद कर दिया जाय । उसके बाद फिर वह रिपोर्ट प्रेम से वापस ले ली गई और उसके। हिन्दी शनुबाद हुआ । इस तरह से मार्च में जाकर अपेन्डिसेज का हिन्दी अनुवाद हुआ, फिर रिपोर्ट आयी जो कि प्रेन को भेज दी गई। प्रेस के पास उस वक्त हमारे बजट का भी, काम जला गया था और बजट के काम को प्रायोरिटी देते हुये प्रेस ने इन कापियों को नहीं छापा। इमी की वलह से देर हो रही है। श्रब जैसे ही प्रेंस से वह कापियां छप जायंगी, माननीय सदस्यों को भी वह मिलेगी भ्रोर उस पर पूरे तौर से विचार सरकार करेगी, इसका मै श्रापको विश्व स दिलाना चाहता हं। सरकार की यह मंशा कभी नहीं है कि उनको किसी प्रकार की ग्रसुविधा हो। चाहती है कि वहां जितनी भी सुविधायें प्राप्त हो सकें, वे उनको दो जायं।

टर्वेन्टाइन के लिये प्रताप सिंह जो ने कहा कि ग्राई० टी० ग्रार०को लोसा १५ रुपया मन में दिया जा रहा है जबिक बाजार भाव उसका २०,३५ रुपया मन है। यह बिल कुल सही है। सरकार भी इस बात को सोच रही है कि टर्पेन्टाइन फैबटरो को इतना सस्ता लोसा देना कुछ भ्रतुचित सा होगा। मगर बात यह था कि गवर्तमेन्ट के ८० सैकड़े शेयर्स थे स्रोर टर्पेन्टाइन फैक्टरी को इतने सस्ते दामों पर इसलिये दिया गया कि उन हो असमहनी कुछ न ीं भी। भाव कुछ नहीं बढ़ाये थे। मगर अब कं रिवेटर आफ फारेस्ट्स की और दूसरे कर्मचारियों की श्रब निश्चित राय है कि भाव बढ़ाने चाहिये, तो इसी विचारधारा को लेकर, जेसा कि सुझाव दिया है, यह निश्चित है कि भाव बढ़ाये जायेगे। जिन लोगों ने इसका जिक्र किया में उनको बतला देना चाहता हूं कि इसमें १० सैकड़ा लीसा तो पब्लिक श्राक्शन से दिया जाय, १५ सैकड़ा लीसा जो होता है वह कोग्रापरेटिव को दिया जाय और ७५ फोसदी टरपेन्टाइन को दिया जाय, ऐसा सुझाव है। यह जो ७५ सैकड़ा टरपेन्टाइन को दिया जायगा उसमे लिये लएकार को विचारधारा ऐसी है कि उसके दाम बढ़ने चाहिये। वह भाव कहां तक बढ़े, उत्तरे लिये पया फैनला हो, इसके लिये निकट भविष्य में एक कमेटी बुलाई जावेगो । मुख्य सचिव उस श्राई०टी०श्रार० के चैपर मैत हैं। वह इस बात पर फैसला करेंगे और तब यह भाव जल्दो हो बढ़ाये जायंगे ताकि इसकी इसलिये टरपेन्टाइन को जो सस्ता लोसा दिया जाता है उसके दाम ग्रवक्य कोमत बढ़ सके। बढ़ाये जायंगे ।

में गोविदनारायण तिवारी जो को बात का खासकर जिक करना चाहता हूं। तिवारी जो एक बड़े सुलझे हुये श्रादमी हैं, विद्वान् हैं श्रीर काफी पढ़े लिखे हैं। मुझे उनकी बात सुनकर बड़ा ताज्जुब श्रीर दुख हुश्रा। उन्होंने यह कहा कि इस वन विभाग को तोड़ देना चाहिये श्रीर इसकी श्रावश्यकता नहीं है श्रीर इसके काम को एग्रीकल्चर विभाग या राजस्व विभाग कर सकता है। यह भी कहा कि चोफ कंजर्वेटर श्राफ फारेस्ट की कोई श्रावश्यकता नहीं है। मुझे यह सब सुनकर दुख हुश्रा। हां, यह बात उन्होंने सही कही कि जिन मंत्री महोदय का यहां पर बजट चल रहा है उनका श्राज यहां पर उपस्थित होना जरूरी था। मंत्री महोदय ने भी इस बात को माना है कि श्राज उनका यहां पर रहना कर्तव्य था श्रीर जरूरी भी था, लेकिन में नित्रारी जो को यह बतलाना चाहता हूं कि श्राज दिल्लो में डेवलयमेन्ट कौंसिल को मीटिंग थी श्रीर उनका बतौर फाइनेन्स मिनिस्टर उसमें शामिल होना बहुत जरूरी था। इसलिये उनको वहां जाना पड़ा वरना वह ऐसी गलती हुगिक न करते और इस बजट के श्रवसर पर वह यहां पर उपस्थित

[श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट]

रहते। गोविन्द नारायण जो को इस बात का विश्वास होना चाहिये कि मंत्रो महोदय ने स्वयं इस बात को श्रच्छा नहीं समझा। वह एक खास परिस्थिति पेदा हो गई जिसकी चजह से उनको जाना पड़ा श्रौर मुझे इसी कारण से यह मौका मिला कि में श्रापके सामने थोड़ी बहुत बातें कह सकूं।

तिवारी जो ने जो यह कहा कि सेट्रल गवर्नमेन्ट में यह पोर्टफोलियो नहीं है, ऐसी बात नहीं वहां पर एग्रीकल्चर मिनिस्ट्री के अन्दर ही फारेस्ट का पोर्टकोलियो हुन्ना करता है। तिवारी जी ने जो यह कहा कि चोफ कंजवेंटर श्राफ फारेस्ट्स की पोस्ट की एवा लिश कर देना चाहिये भ्रौर एग्रीकल्चर विभाग का डिप्टो डाइरेक्टर इस काम को फर सकता है प्रोर फारेस्ट विभाग कोई टेक्नीकल सबजेक्ट नहीं है तो में उनको यह बतलाना चाहता हूं कि उसके लिये सेले ाटे उ केडीडेट लिये जाते है और देहरादून कालेज में उनको तीन साल तक देनिंग होतो है। नहां पर फारेस्ट सबजन्द, जो एक दैननोकल सबजेक्ट है, उसकी पढ़ाई होती है। उसकी यह पाम करते है। तब उनको जाकर इस सिल्वोकल्चर को जानकारी होती है श्रीर तभी जाकर फारेस्ट विभाग ्रेसो बात नहीं है कि यह फारेस्ट विभाग कोई साधारण निभाग हो । में लोग ग्राते हैं। बहत से टेक्नोकल सबजेक्ट होते हैं। मेरी व्यक्तिगत राय है कि उस फोरेस्ट डिपार्टमेन्ट को एक इतना प्रमुख विभाग बना देना चाहिये कि इसके मुकाबिले में देश में दूसरा विभाग न हो । यह विभाग इतना महत्वपूर्ण हो जाय तो देश जल्दी उन्नति कर सफता हो। फनाना से यह देखा गया है कि वहां पर सब से बड़ा प्रमुख यह फोरेस्ट डिपार्टमेन्ट माना जाता है। कमिश्नर से श्रधिक एक रेजर की इंज्जत होती है। जनता की नजरों में एक रेंजर की वहत ज्यादा इज्जत होती है। उतनी इज्जत किसी ऐडिमिनिस्ट्रेटिव श्रकमर की भी नही होती हैं। मेरे कहने का मतलब यह है कि यदि सही माने में इस विभाग की देला जाग ती इन विभाग का महत्व बहुत ज्यादा बढ़ाया जा सकता है और जितनी भी इंडस्ट्रीज हमारे देश में है, जो एगाइप इंडस्ट्रीज है वे सब अगर फारेस्ट डिपार्टमेन्ट के साथ होती श्रीर यह श्रोर विफासत होता तो जनता को यह प्रधिक सुविधा प्रदान कर सकता था श्रीर जनता श्रीर श्रीधण लाभ इसमे उठा सकती थी।

मुझे माननीय गोविन्दनारायण जी की बातों से दुख हुन्ना श्रीर इसोलिये में उनके ध्यान में ये सब बातें लाना चाहता हूं कि वन विभाग के महत्व को वे कम न समझे। श्रगर उन्होंने इसकी स्टेडी की होती कि किस तरह से यह विभाग काम कर रहा है, कैसे जंगलों का विकाग कर रहा है, तो उनको मालूम होता कि यह विभाग कितना श्रावदयकोय है।

माननीय खुशोराम जी ने कहा कि हरिजनों को बड़ी तकलीफ हो रही है और उन हो बसाने के लिये सरकार कुछ नहीं कर रही है। यह सही है कि हरिजन भूमिहोन है थ्रोर उन हो बसाना सरकार का कर्तव्य है थ्रोर सरकार इसके लिये सोच भी रही है। कई किस्म के कानोनाइजेशन किये गये हैं, मालदन चौड़ जैसे। वहां काफी फैमिलोज को बसाया जा नका है श्रीर इस हे लिये कमेटियां बैठी हैं थ्रौर देखा जा रहा है कि हम कहां जमीन मुहैया कर सकते है ताकि यहां हरिजनों को बसाया जा सके।

राजनारायण जो ने श्रौर प्रताप सिंह जो ने इस बात पर एतराज किया कि यह लर्च फारेस्ट डिपार्टमेन्ट का रोज ब रोज बढ़ता ही क्यों चला जा रहा है। पिछले साल से बजट ज्यादा हुआ है। में उनको बतलाना चाहता हूं कि काफी डेवलपमेंट को स्कीमें हमारे प्रदेश में जारी हुई हैं श्रौर जो द्वितीय पंचवर्षीय योजना है उसमें १४ बड़ी बड़ी योजनाये बनो थीं जिन के मृताबिक काफी सड़कों का निर्माण हुआ, रेजिन टेपिंग काफी बढ़ गया। स्लोपर्स का सेल लाखों रुपये का हुआ है, काफी बढ़ गया है। ऐसे ही कितने माइनर प्रोडेक्ट है फारेस्ट के जिन पर सरकार तवज्जह देने लगी है। मेडिसिनल प्लान्द्स हैं, उनको बढ़ाया गया है। टेलीफोन लाइने हैं जो लगायी गयी हैं, सड़कें जो पहले बिलकुल नहीं बनती थीं या बहुत खराब हालत मे थीं, वे काफी श्रन्छी की जा रही हैं। तृतीय पंचवर्षीय योजना में तो सरकार ने बहुत बड़ी योजना बनायी है जिसके

म्रत्तगत बहुत ज्यादा धनराशि की भ्रावश्यकता होगी। उसके डिटेल्स तो समयाभाव के कारण में नहीं बतलाऊंगा लेकिन वह स्कीम देखने लायक स्कीम है भ्रौर उसके लिये सरकार ने १७३४ करोड़ रुपये की व्यवस्था की है ताकि यहां कई किस्म का उत्थान किया जा सके।

कई मानतीय मित्रों ने कहा कि ३४ जिले में जंगल नहीं हैं। उनको यह जान कर हुषे होगा कि सरकार की यह योजना है कि हर एक ब्लाक में कुछ जंगल का हिस्सा रिजर्व किया जाय। भविष्य में यह होगा और इसी वजह से चीफ कंजरवेटर का भ्राफिस यहां रखना भ्रावश्यकीय समझा गया क्योंकि उनको कई कमेटियों में जाना पड़ता है और विकास का काम जो कुछ जिलों में ही था उनमें ही उसको सीमित न रख कर सारे प्रान्त में यह फारेस्ट डिपार्टमेन्ट श्रवनी एक्टोविटोज बढ़ाना चाहता है। ३४ मैदानी जिले जो मैने बताये, दोग्राब के इलाके में, वहां काऊ डंग से लोग उतना भोजन बनाते थे और इस तरह से खेती की पैदावार में कमी भ्रा जाती थी। इसलिय सरकार ने यह निश्चय किया है कि इन ३४ जिलों में हर ब्लाक में जंगल बनाये जायं ताकि लोगों को चरागाह मिल सकें और खेती के जो हथियार है उनकी लकड़ो उनको मुहैया हो सके और इन योजनाओं को सरकार यहां कार्यान्वित करना चाहती है।

श्री उपाध्यक्ष--प्रकृत यह है कि श्रनुदान संख्या ५--वन में संपूर्ण श्रनुदान के श्रधीन मांग की राशि घटा कर एक रुपया कर दी जाय। कमी करने का उद्देश्य--नीति का व्योरा जिस पर चर्चा उठाने का श्रभित्राय है--वन की नीति में श्रद्यवस्था, श्रव्यय तथा श्रव्याचार की चर्चा करना।

### (प्रश्न उपस्थित किया गया ग्रौर ग्रस्वीकृत हुन्ना।)

श्री उपाध्यक्ष--म्रब प्रश्न यह है कि स्निनुदान संख्या ५--वन--लेखा शीर्षक १०--वन के स्नन्तर्गत २,८६,५३,५०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १६६०-६१ के लिये स्वीकार की जाय।

(प्रश्न उपस्थित किया गया भ्रौर स्वीकृत हुम्रा।)

# श्रनुदान संख्या ४१——लेखा शीर्षक ५६——लेखन–सामग्री श्रीर मुद्रण

श्रम उपमंत्री (श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा)—उपाध्यक्ष महोदय, में राज्यपाल महोदय की सिफारिश से यह प्रस्ताव करता हूं कि श्रनुदान संख्या ४१—लेखन-सामग्री श्रीर मुद्रण—लेखा शीर्षक ५६—लेखन सामग्री श्रीर मुद्रण तथा श्रवमूल्यन रक्षित निधि (Depreciation Reserve Fund) राजकीय मुद्रणालय के श्रन्तर्गत १,४०,७०,५०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १६६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय।

श्रीमन्, इस ग्रनुदान के संबंध में मै इस समय कुछ कहना नहीं चाहता क्योंकि जो बातें माननीय सदस्यों की तरफ से कही जायंगी उनको सुनने के बाद ग्रगर ग्राप १० मिनट का समय दे देंगे तो में उनका बाद में जवाब दे दूंगा।

(श्री गोविन्दसिंह विष्ट तथा श्री मोतीलाल श्रवस्थी के खड़े होने पर)

श्री उपाध्यक्ष-पह कटौती का प्रस्ताव, गोविन्द सिंह जी, श्राप पेश करेंगे? श्राप इसको पेश कीजिये।

श्री गोविन्दींसह विष्ट—वाहता तो में ही था, किन्तु में बाद को श्रपनी बात कह लूंगा, माननीय श्रवस्थी जी को ही पेश कर लेने दीजिये, नहीं तो वह नाराज हो जायंगे।

श्री उपाध्यक्ष-प्रापके लिये कहा गया कि स्राप पेश करेंगे।

श्री राजनारायण—श्रीयन्, मुझे यह पसन्द नहीं। श्राप बार-बार उन्हीं से कह रहे हैं पेश करने के लिये। श्रापको सदन की मर्यादा रलनी बाहिये।

श्री उपाध्यक्ष-पीर्णसर्वार की तरफ से यह कहा गया था कि जन संघ की तरफ से पेश किया जायेगा। मर्यादा तो जब श्राप सब रखेंगे तभी रहेंगी।

श्री राजनारायण लेकिन शीमन्, श्राप हे दारा क्यों प्रेस किया जाता है उनकी कि वही पेश करे ? मैं इसको पसन्द नहीं करता हूं। इससे सदन की मर्यादा कैसे रहेगी?

श्री उपाध्यक्ष-जब ग्राप जैसे लोग सदन में रहेगे तो सदन की मर्यादा कैसे रह

श्री मोतीलाल स्रवस्थी (जिला कानपुर)—श्रीमन्, में श्रापकी श्राज्ञा से प्रस्ताव करता हूं कि सम्पूर्ण श्रनुदान संख्या ४१ के ब्राधीन मांग की राशि घटा कर एक रुपया कर दी जाय। कमी करने का उद्देश्य:—नीति का व्योरा जिस पर वर्जा उठाने का श्रिभप्राय है:— राजकीय मुद्रण कार्याज्ञ्य, लखनऊ तथा इनाहाबाद में कर्मचारियों की प्रमुग मांगों की ब्रोर सरकार का ध्यान श्राकृष्ट करना।

में इस कटौती के प्रस्ताय को प्रस्तुत करते हुये श्रापकी सेवा में कुछ उन तथ्यों को रखना चाहता हूं जिनका मजदूर श्रेणी से भी संबंध है और कुछ श्रन्य बातों से भी संबंध है। पहले तो में श्रापके सामने यह बात रखना चाहता हूं कि इस सदण के संबंध में जो व्यय हो रहा है और इस मुद्रण श्रोर लेखन श्रोर लेखन शाखा में जो सुविधायों मिनती है उनको देगते हुए मेरा विचार है कि इसमें कुछ धन का श्रयव्यय भी हो रहा है। यह १,४० लाख फा जो श्रमदान श्राख पेश है, पिछले सालों से मेंने गौर करके देखा तो यह उत्तरोत्तर बढ़ना हुआ दिशाई पड़ता है श्रोर इसका उसी कम से लाभ हमें नहीं दिखाई पड़ता है। मुझे इस संबंध में जो श्रीर डिपार्टमेंट में कमियां की गयी हैं इकानामी की उसकी कोशिश की गयी है इस का जो मुझे खबर नहीं है, लेकिन में श्रवहय जानता हूं कि श्राज जो हमारे सामने श्रमदान से विस्तृत विवरण बताया गया है उससे इन विभाग में कुछ श्रयव्यय या बरबादी धन की श्रीएक हुई है।

गवर्नमेंट के जो प्रेसेज इलाहाबाद, लखनऊ या ग्रीर जगह चल रहे है ग्रीर जो कार्य हो रहा है उसके अतिरिक्त भी अगर सरकार के पास कार्य पहुंचता है तो सरकार प्राइवेट प्रेसेज में भी श्रपने कामों को भेजती है, जिसके फलस्वरूप उसे ७८,६२,००० रूपये देने पड़ते है। ऐसी हालत में कह सकता हूं कि सरकार के ये प्रेसेज प्रबन्धे रूप में नहीं चल पा रहे है, काम पूरा संभाल नहीं पारहें हैं ब्रीर इनमें जो कार्य करने वाले है उनके साथ भी न्याय नहीं कर पा र हे हैं। जैसे अन्य विभागों का हालत है कि टाप हैवी प्राफिपर्स को ल्युबेटिय पोस्ट्स पर, श्रम्ञी जगहों में रखना, उनके इमाल्युमेंट्स अंचे अंचे रखना, लेकिन उनके साथ जो हमारे निम्न कर्मचारी हैं उनके पे स्केल की श्रीर ध्यान देना, उसी प्रकार से इस विभाग में भी हो रहा है। जो परिचालक हैं रचना शाखा, कम्वीजिंग डिपार्टमेंट के जो कर्मवारी है, जो श्रीर मुद्रण और मशीन में काम करने वाले या लिथोग्राफी में हैं या जिल्द साजी में है, प्रूफ पढ़ने वाले हों सबको हम देखते हैं कि सबकी बेसिक पे २४-३० रुपया है। किसी किसी प्रेफ वाले की ४५ रुपया है। तो यह २५ रुपये की बेसिक पे आज भी मौजूद है जबकि उसी डिपार्टमेंट में जो सुपरिटेंडेंट हैं, ज्वाइंट सुपरिटेंडेंट्स, डिप्टी सुपरिडेंटेंट्स हैं, ग्रासिस्टेंट सुपरिटेंडेंट्स हैं इन सर्वो का पे स्केल ४०० रुपये से लेकर काफी ऊपर तक गया है। तो में यह कह सकूंगा कि जैती हमारी स्नाल इंडिया पालिसी है कि बेसिक पे निम्न कर्मवारियों की बढ़ा रहे हैं स्रोर ७० रुपया बेसिक पे रखी गयो है तो क्या वजह है कि इन कर्म दारियों की बेसिक पे में, जो कभी कभी २४ घंटे भी काम करते हैं, होल टाइम वर्कर हैं, बढ़ोसरी न की जाय? साथ ही विशेष बात यह हैं कि इस डिनार्टमेंट में टेम्पोरेरी हैंड्स अधिक हैं। जहां तक मैंने जांत की, ४८७ हैंड्स ऐसे थे जो टेम्पोरेरी हैंड्स हैं श्रौर इनमें श्राघे से ज्यादा ऐसे हैं जो ५ साल से भी ज्यादा के हैं। इस अनुदान में २८६ श्रादिमयों को जो ५ साल से ज्यादा के थे उनकी परमानेंसी देने के लिये

### १६६०-६१ स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान---स्रनुदान संख्या ४१--लेखा शीर्षक ५६--लेखन-सामग्री स्रौर मुद्रण

कुछ प्रावीजन हैं, लेकिन इसको देखते हुये भी मालूम होता है कि ३०० छोटे कर्मचारी स्रब भी बाकी रह जाते हैं जो कि प्रस्थायी एक साल से ज्यादा वाले या कई साल के जाम करते हुये हैं। तो इनके प्रति न हम बेसिक पे देकर न्याय करा पावें ग्रीर न स्थायित्व दे पावें तो मैं यह कहूंगा कि जब सरकार के इंस्टीट्यूशंस में मजदूरों के प्रति सरकार का यह रख है जो कि डाय-रेक्टली सरकार के मैनेजमेंट में है तो प्राइवेट कंसन्स में कैसे न्याय हो पावेगा।

एक तरफ यह कहा जाता है, जैसा कि मैं गिसाल के तौर पर आप से कहूं, कि सुद्रणालय जो ऐशबाग, लखनऊ में है, वहां १,००० कर्मचारी हैं, कहा जाता है कि यहां काम अधिक है, दूसरे प्राइवेट प्रेसेज को देंगे। दूसरे छायेखानों को काम भेजा भी जाता है लेकिन हमारी भी बहुत सी मशीनें बेकार पड़ी हैं। मैं मानता हूं कि हमारे भूतपूर्व मंत्री ने कुछ बचत की बातें सोची थीं। स्टेशनरी का बहुत सा सामान या तो बिना इस्तेमाल किया रहता था या उसका दुख्योग होता था। अब उसके लिये उन्होंने वाटर मार्क की स्कीम निकाली है। इससे कागज का दुख्योग बन्द हो जायगा और उसके संबंध में १४,००० छपये की मांग भी रखीं गई है। स्टेशनरी का दुख्योग अभी तक होता रहा है और गवर्नमेंट ने इसे माना भी है।

दूसरे, मैं सरकार का ध्यान इस तरफ भी श्राकित करना चाहूंगा कि टाप-हैवी इमाल्युमेंट्स दिये जाने वाले श्रादमी तो वह बढ़ाती जा रही है लेकिन नीचे के कर्मचारियों के वेतन बढ़ाने के जिये वह क्या कर रही है। एक सहायक लेखा श्रिधकारी की नियुक्ति की बात रखी गयी है। उसके ऊपर भी ५६,००० रुपये का प्रावीजन बढ़ाया जा रहा है।

स्टेशनरी श्रीर शिंटिंग विभाग का हमारे माननीय सदस्यों का श्रनुभव यह रहा है कि उनके पास कुछ प्रकाशन जाया करते हैं। उन्हीं के श्रनुभव पर मैं कह सकूंगा कि सरकार वा यह काम कितना ढीला है। श्रपनी प्रक्रिया नियमावली में लिखा है कि ६ या ७ सप्ताह के श्रन्दर हमारे पास यहां की कार्यवाही की प्रतिलिपियां पहुंच जानी चाहिये, मगर नहीं हो पाता है। शायद ही कभी समय के भीतर कोई प्रतिलिपि पहुंची हो। होता यह है कि चौथा या पांचवां श्रंक तो पहले दें दिये जाते हैं श्रीर उससे पहले के श्रंक बाद में दिये जाते हैं। ऐसा मालूम होता है कि वे कम से कभी नहीं छगती हैं। विधान परिषद की कार्यवाही भी हमारे पास जाती है मगर वह ५६ में सन् ५६ श्रीर ५७ की जाती है। पता नहीं यह देर क्यों है।

प्रिटिंग प्रेस का हेड ग्राफिस इलाहाबाद माना गया है ग्रीर वहीं से हमको पि लिकेशन मिलते हैं। मैं ग्रपने निजी ग्रनुभव के ग्राघार पर बताता हूं कि मुझे पुलिस रैग्यूलेशन्स की एक प्रतिलिपि की ग्रावश्यकता पड़ी। पिलस विभाग के सेन्नेटरी ने स्वयं वादा किया था कि वह भेज देंगे, लेकिन वह इस प्रकार भेजी गई कि मैं यहां था ग्रीर मुझे डिलीवरी न होकर बापिस चली गई। मैं कई महीने तक इंतजार करता रहा ग्रीर मुझसे कहा गया कि पोस्टेज मुझसे तलब की जायगी। मैंने कहा कि मैं लखनऊ में था ग्रीर मुझे यहां देनी चाहिये थी। जब हम लोगों को यहां ज्यादा रहना पड़ता है तो ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये कि हमें यहीं से प्रकाशन मिल सकें। हमारे पास ग्रगर लाइन्नेरी उपलब्ध है तो यहां किसी एजेंसी के द्वारा सभी प्रकाशन फ़ी मिलने चाहिये। एजेंसी है, लेकिन इस समय ऐसा नहीं है कि सभी प्रकाशन मिल सकें। मैं चाहूंगा कि सदस्यों की सुविधा के लिये इस विभाग की तरफ से यहां कोई एजेंसी कायम हो जिसके द्वारा हमें यहां हरएक प्रकाशन उपलब्ध हो सकें ग्रीर हमें बेकार का पोस्टेज न देना पड़े।

लखनऊ में जो प्रिंटिंग प्रेस हैं उसमें करीब एक हजार के कर्मचारी हैं। वहां के मजदूरीं का माननीय मंत्री जी से यह विशेष तीर से आवेदन हैं कि मजदूरों के यूनियन के प्रति उपमंत्री जी की कुछ शनि दृष्टि रहती हैं और उनके जो कुछ थोड़े से ऋपापात्र लोग होते हैं उन्हीं का उसके हेंडिंलिंग में हाथ होता है। श्रीर जब कभी मजदूरों के ऊपर जुल्म होता है तो वे हम ही लोगों के साथ खतोकितावत करते हैं। इसी श्राधार पर यह कहा जा सकता है कि ऐशबाग में जो मजदूरों को यूनियन है वह दिखावटी है। यूनियन का चुनाव एक कमरे

### [श्री मोतीलाल ग्रवस्थी]

में बैठकर करा लिया जाता है, खुल कर चुनाव नहीं कराया जाता है श्रीर इस प्रकार से मजदूरों के साथ न्याय नहीं हो पाता है। वहां पर भाई-भतीजावाद का बोल बाल। हे। यह तब तक चलेगा जब तक मजदूरों को खुल कर चुनाव नहीं करने दिया जाता है। में जानता हूं किये चुनाव बड़ी खूबी के साथ करा लिये जाते है। यिशेबतीर से जब ऊपर से उपनेती जी या संत्री का इशारा हो जाता है। कोई भी श्रादमी श्रावाज उस हे खिलाफ उठाता है तो कुचल दिया जाता है। इसके बारे में एक कहावत भी है---गरीब मारा जाय सीर रोवे न पाये।

मै यह भी जानता हूं कि इन कर्मचारियों के बारे मे उनकी जो पालिकी है यह प्रानी है। वे पुराने लेबर लोडर रह चुके हैं और वहां बड़े टेक्टिक्स खेल कर उपमंत्री बने है त्रोर उसी पालिक्षी को वे श्राज भी खेल रहे हैं। उनका यह फेवरिटिज्म का तरीका श्रज्या नहीं है। जब मजदूर श्रपनी दुखभरी श्रावाज उठाते हैं तो हो सकता है कि उस श्रावाज को कुछ समय के लिये कुचला जा सके, लेकिन हमेशा के लिये उसको दबाया नहीं जा सकता।

स्टेशनरी में ६ द, ६ ४ हजार रुपया खर्च करके लेखन सामग्री के भंगर की प्रित्रिया होती है। इसका सदुपयोग होने की श्रावश्यकता है श्रौर तभी श्राप राफल हो सकते है जबिक हमें श्राप रीसेट पिकलकेशन दे सकें। इसके श्रलावा इस विभाग की श्रोप से हमें ये ट छे गाइडेस भी मिलनी चाहिये ताकि सभी लोगों को सुविधा हो सके। हर विभाग के बारे में प्रत्या-प्रत्या नोट तैयार किये जाने चाहिये जिससे हर विभाग की बात समझने का भी का पिल सके। हमारे विभाग की तरफ से एक प्रक्रिया नियमावली छापी गयी है, लेकिन वह सदन की प्रक्रिया नियमावली के बारे में है। मेरे कहने का मतलब यह है कि सदस्यों की गाउडेस के लिये हर विभाग की तरफ से हैं डिबल्स छापे जायं जिससे नये लोगों को विभाग की नागंल विकंग जानने में सहायता हो सके।

प्रत्येक सदस्य के चरित्र श्रीर जीवन के संबंध में हमें यहां साहित्य उपलब्ध कराया गया। उसमें किसी प्रकार से जल्दबाजी की गयी जिसके कारण बहुत से जीवन चित्र हम नहीं पाये। उन लोगों के दिल में रंज है कि उनके जीवन चरित्र नहीं छप पाये। पता नहीं की दूसरा प्रकाशन भी सरकार पसंद करेंगी या नहीं जिसमें सब लोगों की जीवनी श्रा सके। इन सब बातों को ध्यान में रख कर में चाहूंगा कि सदन मेरे इस कटौती के प्रस्ताय की स्वीकार कर ले।

श्री जवाहरलाल (जिला इलाहाबाद)—माननीय उपाध्यक्ष महोदय, श्राज जो अनुदान पेश है, में उसके समर्थन में खड़ा हुश्रा हूं श्रीर उसके साथ ही साथ इस विभाग में जो गवर्नमेंट प्रेस उसके संबंध में कुछ सुझाव भी देना चाहता हूं। हमारे डिएटी मिनिस्टर बहुगुणा जी वहां गवर्नमेंट प्रेस की मजदूर यूनियन के प्रेसिडेट रह च के है श्रीर उस जमाने में बहुत सी मांगें उन्होंने पेश भी की थीं, लेकिन मालूम ऐसा होता है कि मिनिस्टर होकर यहां श्राने पर वह उन सब चीजों को भूल गये। उन्हें इस बात का ध्यान रायना चाहिये कि वहां के मजदूरों से उन्होंने वादा भी किया था श्रीर वे बराबर उनके लिये लड़ाई लड़ते रहे, इसलिय मेरा निवेदन है कि इस बात पर वे ध्यान दें।

१८ कैटेगरीज का मामला वहां पर चला और तीन चार साल हुए गयर्नमेंट प्रेस में हड़ताल भी हुई, तो गुप्ता जी जो उस वक्त मिनिस्टर थे वहां गये, बनारसी दास जी भी यहां पर गये थ्रौर उन्होंने सब चीजों को देला भाला श्रौर उन्होंने वादा किया, लेकिन श्रभी तक कुछ नहीं श्रौर जो कुछ हुश्रा वह नहीं के बराबर हैं। १८ कैटेगरीज के बाद यहां श्रधिकारियों ने ३२ कैटेगरी दिया, लेकिन उसका भी श्राज तक कोई मसला तय नहीं हुश्रा। इस संबंध में हम लोगों के डेपुटेशन ४,५ मर्तबा मिल चुके हैं श्रौर श्रिकारी लोग बराबर श्राश्यासन देते रहे कि हम जल्दी से जल्दी इस मामले को तय कराबेंगे, वहां के मजदूर घबड़ाये हुये हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, श्राप तो जानते ही है कि इलाहाबाद में काफी नेता हैं, वह लीडराबाद तो है ही। वहां मजदूरों में इतने जोरों की परेशानी है कि उन्हें संभालना मुक्किल हो जाता है। मालूम नहीं कि जो मंत्रिमंडल में बैठे हुए हैं उनका ध्यान इस तरफ क्यों नहीं जाता। वहां के मजदूरों में इस वक्त इतनी घबड़ाहट तथा परेशानी है कि वे हम लोगों के लिये मुश्किल कर रहे हैं श्रीर कहते हैं कि श्रगर श्राप इस मामले को तय कराते है तो करावें, नहीं तो हमारी यूनियन से इस्तीफा दें। तो मेरा निवेदन है कि श्राप इस मसले पर जल्दी से जल्दी कोई फैसला करें, नहीं तो ऐसा हो सकता है कि वहां के मजदूर घबड़ा कर हड़ताल भी कर दें। श्रगर सरकार मजबूर करती है तो वे मजदूर हड़ताल करने के लिये भी तैयार हैं। लेकिन इन लोगों को हम शांति देते हैं, श्राश्वासन देते हैं श्रीर समझाते हैं। इसलिये श्रन्त में में माननीय मंत्री जी से निवेदन करता हूं कि जल्द से जल्द इस मामले को तय कराया जाय।

श्री मदन पांडेय (जिला गोरखपुर) -- उपाध्यक्ष महोदय, जो प्रिटिंग ग्रौर स्टेशनरी का प्रक्षन है इस पर इस असेम्बली फ्लोर पर सब से कम बातचीत हुई है और होती है ग्रौर जितना इसमें गड़बड़ घुटाला है वह भी ग्रयने ढंग का बेजोड़ है। जितना हो कम इस विषय पर बात होती है उनना ही ज्यादा इसमें गड़बड़ घटाला है। तीन सरकारी प्रेस हमारे सामने है जिनमे एक इलाहाबाद का है जहां २,५०० कर्मचारी कार्य करते है, दूसरा ऐशवाग, लखनऊ में है जहां १,००० कर्मचारी कार्य करते हैं स्रोर तीसरा रुड़की मे भी एक छोटा-सा प्रेस है जहां ६० कर्मचारी कार्य करते है। बहुगुणा जी जो यहां बैठे हुये है उनका संबंध इलाहाबाद तथा यहां के प्रेस की मजदूर युनियन से रहा है। मुझे इस बात की कहते हुए थोड़ा दर्द हो रहा है जैसा कि मेरे पूर्व वक्ता ने कहा कि उनको हर चीज की जानकारी होते हुये भी पता नहीं क्यों वह यहां पावर में ग्राने पर दरगुजर कर रहे हैं। मै उनका ध्यान कुछ ग्रौर बातों की तरफ भी दिलाऊंगा । इस प्रेस की वर्राकंग कैपेसिटी पर ग्रगर ध्यान दें कि जिसकी पचासों लाख की लागत है तो हमें वर्तमान बजट में एक भ्राइटम बहुत चुभना हुआ सामने दिखाई देता है और वह है ३,४४,००० रुपये की रकम जो अन्य प्रेसों को छपाई के काम के लिये दो जाने वाली है, कुछ प्रेस बनारस के हैं, इलाहाबाद के हैं, लखनऊ के भी है, इन प्रेसों के जो बड़े-बड़े मालिकान हैं वह कि इनकी थैलों के चट्टे बट्टे हैं, यह मंत्री जी जानते है। ग्रगर पचासों लाख रुपया लगा कर भी हमें ३ लाख ४५ हजार को रकम दूसरे प्रेसों को छपाई के काम के लिये देना पड़ती है श्रीर इस तरह से अपने मौजुदा प्रेसों की इन एफीशियेंसी बरदाक्त करना पड़ती है तो यह उचित नहीं है, इसको फौरन खत्म करना चाहिये भले ही इसके लिये हमें दस-पांच लाख रुपया श्रौर प्रेस में लगाना पड़े। हमें श्रयनी कैपेसिटी श्राफ वर्क बढ़ाना चाहिये श्रौर इस तरह से दूसरों को रुपया देना बन्द किया जाय।

दूसरे, हर सरकारी विभाग में यह कायदा है कि गजटेड श्राफिसरों का तबादला ३ साल बाद हो जाता है लेकिन पता नहीं सरकार को क्या मोहब्बत है कि प्रेस में जो वर्तमान गजटेड श्राफिसर हैं वह ६-६ साल तक एक जगह पर रखे जाते हैं! ऐशबाग प्रेस में मौजूदा डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट जो हैं वह दो साल बीच में नहीं रहे बाकी सन् ४६ से श्राज तक ६ साल से यहीं पता नहीं क्यों बने हुए है यह बहुगुणा जी बतायें। यह श्रनुचित है श्रौर उनको हटाकर दूसरों को मौका मिलना चाहिये।

इसके ब्रलावा, जो श्रन्य चीजों की व्यवस्था सरकारों प्रेसों में है उसकी तरफ भी माननीय मंत्री जी का ध्यान दिलाना चाहता हूं। वहां के कमंचारियों के साथ किस प्रकार का पक्षपातपूर्ण ग्रीर भेडभाव पूर्ण व्यवहार होता है? ऐशाबाग प्रेस में किस तरह से पुराने क्वार्टर कहकर छोटे लोगों से खाली कराये गये ग्रीर बड़े वेतन पाने वाले किस तरह से वहां ७-६ साल से बिना किराये के रह रहे हैं? कई साल बजट में उनकी रिपेयर के लिये पैसा रखा गया, लेकिन उनकी मरम्मत इसलिये नहीं कराई गई कि श्रगर मरम्मत हो जायगो तो किराया देना होगा श्रीर श्राज तक जिनके लिये वे क्वार्टर्स थे उनके लिये मकानों का [श्री मदन पांडेय]

कोई ठिकाना नहीं किया गया। मेरा सुझाव है कि ग्रगर वह ववार्टर मरम्मततलब हों तब सो उनकी मरम्मत कराई जाय ग्रौर उनका किराया बाकायदा वसूल किया जाय ग्रौर ग्रगर मुफ्त रखना है तो उनमें कम वेतन वालों को ही रखा जाय।

चीथे जो मजदूरों के ग्रीर मैनेजमेंट के बीच वहां के इंडस्ट्रीयल डिसप्यूट्स हं उनको तय करने के लिये एक नाम मात्र की मेशीनरी वर्स्स को सिल बनाई गई है ग्रीर उसमें ग्राई० एन० टी० यू० सी० के जरिये नामिनेशन कराया जाता है। इस नामजदगी की नीति मंत्री जी भले ही पसन्द करते हों, लेकिन यह वाकका है कि ग्राई०एन०टी०यू०सी० की यूनियन में मजदूरों का विश्वास नहीं है ग्रीर इस तरह से पार्टी बेसिस पर वर्स्स को सिल का निर्माण न होना चाहिये। मेरा सुझाव है कि वर्क्स के लिये चुनाव की बैलट प्रणाली को ग्रास्त्रियार किया जाय ग्रीर मजदूरों का ग्राम मत लेकर इन वर्क्स को सिल का निर्माण किया जाय।

प्रेस की प्रापटीं किस तरह से बरबाद को जाती है इस तरफ भी में सदन का ध्यान दिलाना चाहता हूं। कई साल से जो प्रेस के पास कुछ इमारत के एक्सटेशन के लिये जमीन पड़ी हुई थी जब उसकी बाउन्डरी वाल खींची जाने लगी तब पता लगा कि चटवानी के कारवाने ने जमीन दबा रखी है। ११ साल से जो सुपरिटेंडेंट वहां है उनकी देखरेख में यह जमीन थी, फिर किस तरह से चटखनी मिल या ताला मिल वालों ने वगर उनकी जानकारी के उस पर कब्जा कर लिया ? इस प्रकार के सुपरिटेंडेंट को इस कारण से भी वहां रखना उचित नहीं है। इस पर ध्यान दिया जाय। इसी तरह से एक चोज होती है "मोल्ड" वह १२००-१४०० कि होती है, वह गायब हुई, लेकिन जब सदन में प्रका किया गया तो पुराना मोल्ड रखकर कहा गया कि मिल गया, लेकिन सन् ४६ से जितने मोल्ड ग्राये हैं उन सबके नम्बर इनवायसेज पर लिखे हुये हैं। जिन दो मोल्डों के बारे में बताया जाता है ग्रीर जो पुराने बाजार से खरीद कर रखे गये हैं उनके नम्बर इनवायस से मिलने पर धपला पता चल जायगा ग्रोर जो व्यक्ति इसके लिये जिम्मेदार हों उनके खिलाफ कार्यवाही की जानी चाहिये।

ब्लाक कैमरे के लैंस के संबंध में जब स्टाक टेकिंग श्रफसर, इलाहाबाद, से श्राये तो स्टाक में दो लैन्स फोर्ज्ड पाये ग्रौर वह ग्राज भी मौजूद हैं। इसकी जांच की जाय कि ऐसा क्यों किया गया। श्राखिर प्रेस में भी तो जनता का ही पैसा लगा है।

कर्मचारियों के बारे में मुझे यह कहना है कि लाइनो मोनो श्रागरेटर्स तो ४० के करीब ऐसे हैं जिनको बैटर प्लेस्ड कहा जा सकता है क्योंिफ उनको बोनस मिलता है तथा उनकी तनख्वाह भी श्रच्छी है। लेकिन शेष ६६० कर्मचारियों की हालत श्रच्छी नहीं है, जो तनख्वाह पहले मिलती थी वही मिलती चली श्रा रही है, नहीं उनको बोनस ही दिया जाता है, मैं चाहूंगा कि इनके संबंध में पे कमेटी मुकरंर की जाय जो उनके हर पहलू पर विचार करे श्रोर श्रवनी राय दे जिसे सरकार कार्यान्वित करे, निम्बकर कमेटी की तरह उसे शेल्वन कर दे।

डाकेट सिस्टम स्रापके यहां प्रोवेलेंट हैं जिसकी वजह से जो चीजें छपती है उनका क्या दाम लगता है, इसका कई वर्ष तक किसी को पता नहीं लगता। में चाहूंगा कि जितनी छपाई हो, उस पर कितना पैसा लगा, इसकी सूचना स्रगर साल भर के स्रन्दर मिल जाया करे तो भ्रष्टाचार की गुंजायश कम रहेगी।

इसके अलावा, बाहर के प्रेसेज की सरकार अपने प्रेस से ही छुपाई के लिये कागज देती है और एक्सेस पेपर की वह रिटर्न नहीं करते। जब उनसे मांगा जाता है तो कह देते है कि एक्सेस पेपर के दाम उनसे रिकवर कर लिये जायं और वे प्रेस वाले उस कागज को उलक मार्केट में बेंच देते हैं। इन चीजों की तरफ ध्यान दिलाते हुए में कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

### १६६०-६१ के श्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदान संख्या ४१--लेखा शीर्षक ५६--लेखन-सामग्री श्रौर मुद्रण

श्री लालबहादुर (जिला वाराणतो) — उपाध्यक्ष महोदय, जो अनुदान पेश किया गया है मैं उसका समर्थन करता हूं। मान्यवर, आपकी आज्ञा से अगर में यह कहूं कि इस पर जो बहस हुई वह लेबर के अनुदान पर हुई होतो तो कोई अनुवित न होगा। प्रेस में क्या खामियां है, यह बताना चाहिये था। श्रोमन्, प्रेस को एफोशियेंतो इसो से स्पष्ट है कि सदन का रोजाना का जो काम होता है वह कितनी एफोशियेंटली होता है, मैं उसकी तारीफ किये बिना नहीं रहूंगा।

कहा गया कि लेबर यूनियन नहीं है। स्रवस्थी जो ने कहा कि वहां तो हम यूनियन हो नहीं बना पाते। जब लेबर ग्राप पर विश्वास करेगे तभी तो ग्राप यूनियन बनायेगे। लेबर को मिसगाइड करने से तो काम नहीं चलेगा।

माननीय मदन पांडेय जो ने कहा कि रैफरेंडम होना चाहिये क्योंकि वहां एक ही यूनियन है। स्राप लोग लेबर का काम करते हैं, मैं तो करता नहीं। जब एक हो यूनियन है तो स्राप कैसे रैफरेंडम करेगे? जब दो, चार यूनियन एस्टेब्लिश कर लें तो वोटिंग हो सकेगी, स्रभी तो एक ही यूनियन है।

यह भी कहा गथा कि ६६० की तनख्वाह नहीं बढ़ाई गई, ४० की बढ़ाई गयी। लेकिन ६६० की बीन मन दिया गया होता तो श्रापको एतराज का मौका था। कुछ ऐसे लेबर लाज बन गरे हैं कि तनख्वाह बढ़ावे या न बढ़ावे लेकिन बोनस बढ़ाता कम्पलसरो हो गया है। उसी लासे गाइड होकर बोनस बढ़ा दिया गया है। मंत्री जी इस संबंध में खुद बतलायेंगे।

जहां तक प्रेस का संबंध है, श्राप देखें कि रिपोर्ट्स तथा एजेंडा हमें ठीक समय से मिल जाते है। यह भी कहा गया कि बाहर के प्रेसेज को भी काम दिया गया जैसे बनारस या इलाहाबाद के। श्रगर यहो नाराजगी है श्रौर गोरखपुर के प्रेस के लिये कहिये तो में श्रापके साथ मंत्री जी से निवेदन करूं कि वहां के प्रेसेज को भी काम दिया जाय।

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया) -- फिर बनारस का क्या होगा ?

श्री लालबहादुर—ग्रगर ग्रापको ठीक से काम न दिया जाय तो भी ग्रापको शिकायत होती है। ववत पर काम नहीं दिया जाय तो कहा जाता है कि ग्रापका प्रेस ऐसा है, ठोक वक्त पर काम नहीं देता ग्रोर ग्रगर बाहर से छ्याते हैं तो भी ग्रापको एतराज होता है। एक देहाती ममल है 'हारों तो हरों ग्रौर जोतों तो थूरों।" कहीं तो गवर्नमेंट को तारोफ करिये। जब ग्रयने प्रेस से काम नहीं होता है तो बाहर से काम कराया जाता है ताकि ग्रापको वक्त पर काम मिल जाय। ग्रगर बाहर से काम न कराया जाय तो फिर हमारा प्रेस निकम्मा है।

ग्रापका यह भी सुझाव है कि जो प्रेस के एक्सपर्ट्स हैं उनको एक कमेटो बना दी जाय।
मैं इस राय के खिलाफ हूं। कमेटो ग्रौर कमीशन से में ऊब चुका हूं। मैं काफी कमेटो व कमीशन में रह चुका हूं। जहां कमेटो ग्रौर कमीशन को बात ग्राई तो यह निश्चित हैं कि काम हो नहीं सकता। मुझे ताज्जुब है कि ग्राप इतने बुद्धिमान होते हुए कमेटी ग्रौर कमीशन को डिमांड करते हैं। कमेटो ग्रौर कमीशन झगड़े को जीज है। पिब्लिक का पैसा भी उसमें नाजायज तौर से खर्च होता है ग्रौर उसको बचाने का ग्रापका फर्ज है। लेकिन जब मदन पांडेय जी ने कमेटो को बात कही है तो कुछ न कुछ तो सरकार को सोचना ही पड़ेगा।

यह भो मेरा निवेदन है कि एफिशियेंसी तभी मैनटेन हो सकती है जब हम दोनों मिल कर एक साथ एफिशियेंसी मेनटेन करायेगे। लेकिन श्राप यह तय कर चुके हैं कि जो हम करेंगे उसका ग्राप खामख्वाह विरोध करेंगे तो एफिशियेंसी मेनटेन नहीं होगी। श्रगर ग्राप एफिशियेंसी मेनटेन नहीं होगी। श्रगर ग्राप एफिशियेंसी मेनटेन कराना चाहते हैं तो कहीं न कहीं गवर्नमेंट के साथ कोग्रापरेशन कोजिये, खाली लकीर क फकीर न बनिये कि बजट पेश हुग्रा तो उसका विरोध करना ही है, क्योंकि प्रोसीजर है विरोध

[श्री लालबहाद्र]

करने का। प्रोसीजर यह भी हैं कि कहीं न कहीं तारीफ भी कीजिये। इतने बड़े प्रेस के लिये १,४०,७०,५०० रुपये का अनुदान मांगा गया है। साढ़ें ६ करोड़ इस प्रदेश की आबादी है और अगले सेसस में ७ करोड़ हो जायगी। किर भी सरकार का सारा काम इस प्रेस द्वारा होता है। जब सरकार का कुल काम इसी प्रेस से कंट्रोल होता है तो इस मामले में तो मदद कीजिये और खासकर अवस्थी जो तो मास्टर होने के साथ-साथ मालूम होता है कि प्रेस का भी कुछ काम करते रहें है क्योंकि उनको कुछ तजुरबा है। बस इतना ही मुप्ते कहना है श्रीर इतना कहकर में इस अनुदान का समर्थन करता हूं और अवस्थी जी से कहूंगा कि वह अपने कटोती के प्रस्ताव को वापस लें और इस अनुदान को पास करें।

श्री उपाध्यक्ष—माननीय मोतीलाल ग्रवस्थी। (श्री गोविन्द सिंह विष्ट के खड़े होने पर) ग्रव ग्रापके लिये मोका नहीं है। जब ग्रापका नाम पुकारा गया था तब तो ग्रापने ग्रवस्थी जो को दें दिया। ग्राप कृपा करके बेठे।

\*श्री मोतीलाल ग्रवस्थी--मै ग्रापके द्वारा माननीय विष्ट जी से प्रार्थना करूगा कि जो भी कारण रहे हों उनको स्वीकृति से में खड़ा हूं। उन्होंने श्रयनो स्वीकृति दी थी

उसके लिये में उनके प्रति श्राभार प्रकट करता हूं।

श्राज इस श्रत्दान के संबंध में जो विवाद हुआ उसमें सरकार के पक्ष में दो सज्जन बोले हैं।
१० प्रतिशत तो ऐसा कथन निकला जो सरकार की हो हर बात को काट रहा था, लेकिन
१० प्रतिशत को पूर्ति हमारे माननीय सदस्य वाराणसी ने की । लेकिन उनका कभी-कभी
जो रोल होता है में उसको इस सदन में कामिक रोल से कम नहीं मानता हूं क्योंकि जब वह
बोलते हं तो खूब हंसी भो लेते हैं। लेकिन विशेष तीर से उनके वे शब्द मूग्ने भूले नहीं कि
"भई, कभी-कभी तो सरकार की तारोफ कर दिया करो।"मुत्रे थोड़ा सा श्राश्चर्य हुआ कि जब इतने
सज्जन उनके पक्ष में तारोफ करने वाले बेठे हैं किर भो तारोफ को कभी श्रापको दिखायो
पड़ती हैं, श्रगर कहें तो २-४ श्रादमी किराये के बुला लिया करूं। श्राप कृत्र प्रशंमा के
ज्यादा मूखे हैं। बैसे तो मैंने हमेशा उप मंत्री जो को तारोफ को, उनको रफ्ति श्रीर उत्साह
के बारे में कहा, लेकिन श्राज जो सरकारो पक्ष को तरफ से विवाद हुआ उसमें कुछ ऐसे श्रार्गमेंट्स नहीं मिले जिनका जवाब में दूं। मैं चाहता था कि जो सज्जन बोले वह जरा पढ़ कर
स्राते क्योंकि उन्होंने केवल इतना ही बतलाया कि १ करोड़ ४० लाल क्य्रये की मद हं।

छोटे कर्मचारियों के बारे में मैंने जो शब्द कहें थे वे जानकारी के बाद कहें थे श्रोर उसका हमारे पांडेय जो ने बहुत कुछ समर्थन भी किया। उनके प्रति एक श्रन्याय हो रहा है। यह छोटे कर्मचारियों को कार्य पढ़ता का हो लक्षण है कि श्राज बहुत सो सामग्री हमें सभग्र पर निलती है। वे १२-१२ श्रौर १८-१८ घंटे काम करते हें श्रोर हम लोगों को मदद करते हैं मगर उनको काई सिवधा नहीं मिलती। साल में उनके केवल २,२ १,२ रुपये मृश्किल से बढ़ पाते है। श्रोवरटाइम का उनके लिये कोई प्राविजन नहीं है। उनका कोई स्केल नहीं बढ़ा रहा है, न बेंसिक पे यढ़ने जा रही है। जब सेंट्रल गवर्ने मेंट ने चपरासियों तक का वेतन ७० रुपये रख। हे तो ये प्रेस एम्पलाईज जो हार्ड लेबर करते हैं, ये प्रक रोडर्स जिन्होंने श्रपनो सारो जिन्दगो गंवाई है उनके साथ हमें सही बर्ताव करना चाहिये। इस प्याइंट को में विशेष तौर से प्रेस करना चाहता हूं श्रौर में श्राशा करूंगा कि मंत्री जी इधर ध्यान देंगे।

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—उपाध्यक्ष जो, प्रस्तुत श्रनुदान के सम्बन्ध में माननीय सदस्यों ने श्रने जो विचार व्यक्त किये उसके लिये में सबका श्रनुगृहीत हूं। में सिर्फ दो बातें गवर्नमेंट प्रेस के श्रागेंनाइजेशन के नेचर श्रीर कन्डेंक्ट के बारे में कहना चाहता हूं। हमारा जो बजट है वह किसी एक विभाग का नहीं है। गवर्नमेंट प्रेस के बजट में राज्य सरकार के विभिन्न विभागों का जो छुपाई होती है उसके अनुसार जो मद रखनी होती है उन सबका यह जोड़ है सभी विभागों का जो छुपाई का काम है, उसके सम्बन्ध में जो पैसा चाहिये, उस पैसे को लेकर यह बजट

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

बनता है श्रीर सारे विभागों का काम करने के लिये जितने श्रमिक चाहिये, जितने कारीगर चाहिये श्रीर जितने कार्यकर्ता चाहिये, उनको इम्पलाय किया जाता है। इसलिये बजट के घटने श्रीर बढ़ने का सोबा-सादा संबंध गवर्नमेट प्रेस से नहीं है बिल्क विभिन्न सरकारी विभागों में जितना काम बढ़ना है या घटना है, वह हमारे बजट पर रिफ्लेक्ट होता है यानी हमारे बजट पर उसकी परछाई पड़ती है।

जहां तक इस बजट में ज्यादती का संबंध है, वह यह है कि इस वर्ष में ६ लाख रुपया ज्यादा मांगा गया है। इसमें तीन लाख रुपया कर्मचारियों के इंकीमेंट का होगा। इसके भ्राट्या एक पीस्ट श्रासिस्टेट एकाउन्ट्स भ्राफिसर की ऐशबाग प्रेस में हो रही है। इसकी लेकर यह पैसा बढ़ाया जा रहा है। भ्राव जो तीन लाख रुपया है वह भ्रान्य चोजों के खरीदने के लिये रखा गया है जो मशीन को शक्ल में हो या मजदूरों तथा कर्मचारियों के वेलफेयर सेटर के लिये हो, चाहे मुहर के लिये हो....

श्री मदन पांडेय--वेलकेयर सेंटर कहां है?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—श्रोमन्, मैं निवेदन करूंगा कि १ लाख २४ हजार रुपये की रकम खर्व करने के बाद इलाहाबाद में एक बहुत ही सुन्दर वैलफेयर सेंटर बनाया गया है।

श्री मदन पांडेय--लखनऊ में कहां है?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगु I—मं तो गवर्नमेंट प्रेस की बात करता हूं, लखनऊ श्रीर इलाहाबाद को बात नहीं करता, में रुड़की की बात नहीं करता। इस श्रागेनाइजेशन के चारों हिस्से हैं, में उनकी बात करता हूं श्रीर यहां भी हमने ऐशबाग में काम किया है। में तारीफ़ नहीं करना चाहता हूं लेकिन इतना कहना चाहता हूं कि गवर्नमेंट के श्रंडरटेंकिंग में जो श्रागेंनाइजेशन्स है वहां सारे लेबर लाज इम्पलीमेंट किये जाते हैं जो हमारे यहां लगते हैं हम किसी से न छ टुकारा मांगते हैं श्रीर न किसी कानून से भागते हैं। चाहे प्रावीडेंट फंड हो, चाहे फैक्टरी ऐक्ट की बात हो या वेजेज की बात हो, हम भागते नहीं हैं श्रीर हम श्रयने यहां इंश्योरेंस भी लागू करना चाहते थे, लेकिन मजदूरों ने कहा कि नहीं लगना चाहिये। जब उनकी यह मांग श्राई तो हमने उनका एग्जेम्शन कराया। उनको सारी सुविधायें मिली हुई हैं। में इतना हो कहना चाहता हूं कि सरकार की नीयत में मुनाफाखोरी की बात नहीं है।

श्रव यह भी कहा गया है कि श्रक्तसर बढ़ाये जा रहे है। हमने श्रयने गवर्नमेंट प्रेस, ऐश्रवाग में केवल एक श्रिसिस्टेंट एकाउन्ट्स श्राफिसर को जगह बढ़ाई है। वहां ६०० से लेकर १,००० मजदूर काम करते हैं, लाखों रुपये का पेमेंट होता है, उसका हिसाब रखना श्रीर खरीद-फरोख्त होता है, उस सबका हिसाब रखना होता है। हमारे गवर्नमेंट के किसो भी विभाग में, जो इतना बड़ा श्रार्गेनाइजेसन हो, ऐसा नहीं है कि जहां एक एकाउन्ट्स श्रक्तसर न हो। हमने तो श्रिसिस्टेंट एकाउन्ट्स श्रक्तर ही बढ़ाया है। मेरी श्रपनी फीलिंग यह है कि जो समकक्ष विभाग हैं, उनको इस सलाह पर श्रभी ला नहीं सके हैं, लेकिन मेरा खयाल है कि श्रार एकाउन्ट्स ठीक रखने हैं श्रीर पैसे का सदुपयोग करना है, जिसको पैसे का दुरुपयोग न करना हो तो देखरेख की कसोटी बहुत मजबूत बनानी होगी। एक छोटे-मोटे श्राफिसर के रखने से काम चलने वाला नहीं है। सीनियर श्राफिसर को रखना चाहिये। इसीलिये हमने व्यवस्था की हैं। श्राज ऐश्रवाग प्रेस की नींव डाले हुये दस वर्ष हो गये हैं श्रीर जहां तक श्रक्तर बढ़ाने की बात हैं, मैं इसको सदन के ऊपर छोड़ता हूं।

यूनियन और मजदूरों के सम्बन्ध में कुछ बाते कही गयीं। में गवर्नमेंट प्रेस के मजदूरों की सद्बुद्धि की दाद देता हूं कि उन्होंने हमेशा श्रपने यहां एक मजदूर संगठन रखा। माननीय अग्रसेन जी ने धमकी दी कि वह चार पांच यूनियनें बनायेंगे।

श्री उग्रसेन—जेसा श्रिकार यूनियन बनाने का माननीय बहुगुणा जी को है वैसा श्रिकार उग्रसेन को भो है।

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—द्रेड यूनियन मूबभेट मे परेलल ट्रेड यूनियन को पैरा करने वाला मजदूर श्रान्दोलन का दुश्मन कहलाया है। (व्यवधान) श्राई० एन० टी० यू० सो० ग्रोर दूमरी सर्थाग्रों को जवाब देती है तो कीन सा जुर्म करती ह र एस सगठन ने वहा के मजदूरों को एक सूत्र में बाय रखा ह, म उसकी दाद देता हू। वह बहुत बुरा दिन होगा जब वहा दूसरो यूनियने श्रायेगो। मैं जब गयनंत्रेट प्रेस इम्प्लाईज एपोसि रशन का प्रेसोडेट हुआ था, तो उसके ठीक पहले वहा को यूनियन प्रजा सोशिलस्ट पार्टी के हाथ में थी। वह हिन्द मजदूर समा से श्रकोलिएटेड थी। मैंने कोई दूसरी य्नियन नहीं बनने दी। श्रगर इन यूनियन का ने मृन्य वह बदलना च।हते ह, तो वह बदले, लेकिन इससे मजदूरों का हित नहीं होगा। वह किसा दल पिशेष को यूनियन नहीं है।

मान्यवर, एक बात यह कहो गयी कि ७८ लाख रुपया बाहर छपायी था देने को

है। ७८ लाख का काम हमने १६५७ से म्राबतक नही करवाया।

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी---६५ लाख।

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—६५ लाख भो नही है। १६५६ में २ लाख ७२ हजार १ सो, १६५७—५८ में ३ लाख १० हजार, १६५८—५६ में १ लाख ६६ हजार ग्रोर १६५६—६० में २ लाख के करीब छ्याई का काम बाहर करवाया ह ग्रार पसा दिया ह। पाच-सात साल का भो मिलाकर ७८ लाख नही हो, तो शायद हिसाब लगाने में गलतो हो गयी है।

म सरकार को सारी नीतियों को बाबत विवेचना नहीं करता कि जितने कार्य उसने म्नाज तक किये वह ठोक किये या गलत किये, लेकिन इतना कहता हूं कि उद्योग विभाग की नोति हैं कि प्रिंटिंग इंडस्ट्रो पाइनेंट सेक्टर में फने फूने। हमने म्नाज जो प्रेस बढाया है वह खास खास कामों का करने के लिये बढाया है, जो म्नाबंधकरा के मुनाबिक हमें करने पड़ते हैं। उदाहरण के लिए ले लोजिये कि एक एक्स्ट्राम्नाडिनरी गजट शाम के छ बज तक निकालता है, तो सरकार के पास प्रेस है, मजदूर मौजूद हु। छ बजे तक निकल गया। कास्टर्ली जरूर पड़ेगा। लेकिन प्राइवेट प्रेमों के उपर रहें तो नहां निकलेगा। बजट में हर साल वित्त मत्रो गवर्नपेट के कर्मचारियों को घन्यवाद देने हैं। क्या बात ह विसक्ते प्रति जिस तेजी से म्रीर ग्रव्छाई के साथ वह बजट को छापते हैं वह प्रशसनीय ह। इसके म्रितिस्क म्नाज तक गवर्नमेट प्रेस के इतिहास में कभी लोकेज नहां हुम्रा। भ्रगर यह प्रशसा को बात नहीं ह तो मैं नहों समझता कि इसपे ग्रोर बेहतर क्या बात हो सकती हैं? म समझता हूं कि हमारे भ्रक्तर म्रोर हमारे कर्मचारी जो काम करते हैं दोनो मुबारकबाद के पात्र ह श्रोर घन्यवाद के पात्र है।

कुछ बाते ऐसी कही गईं कि अफसर लोग गड़बड़ करने हैं, अच्छे अच्छे-क्वार्टरों में रहते हैं, तरह तरह को मुविधाये उनकों है। इस सम्बन्ध में में उनका थाद दिलाना चाहता हूं कि जिस वस्त ऐशबाग प्रेस लगाया गया था उस एरिया में सापों का दौर रहता था। कोई मजदूर और कर्मचारी वहा काम करने को तैयार नहीं हो रहा था। मुझे पता है कि किस तरह से इलाहाबाद से उन मजदूरों और कर्मचारियों को हम यहा पर लायें और कर्स उस वक्त सरकार ओर यूनियन, दोनों ने मिल कर उस माहौल में, जो माहौल कि उस यक्त था, उस काम को चालू करने को कोशिश को। उन परिस्थितियों को याद करने के बाद कोई यह कहें कि कियों तरह से कोई खास पक्षात किसी के साथ हो रहा है, यह बात बिलकुल गलत है। अब हम उन सारे क्वार्टरों को मरम्मत करा रहे हैं और मरम्मत के बाद उनका किराया लगाने की बात भो हो जायगी।

इलाहाबाद के जवाहरलाल जी ने श्रौर दूसरे साथियों ने भी कुछ उनके वेतनक्रमों के सम्बन्ध में कहा श्रोर कुछ व्यक्तिगत मेरे हृदय की ठेस लगाने वाली बाते भी कहीं। यह सही

है कि जब मैं यूनियन में काम करता था तो बहुत सारी बाते मैंने कही थीं। लेकिन न कोई मेरी व्यक्तिगत है सियत तब थी खोर न आज कोई मेरी व्यक्तिगत है सियत है। उस समय में जिन कागजों पर हस्ताक्षर करता था वह यूनियन के प्रेसीडेंट की है सियत से करता था खोर आज यहां जो कुछ करता हूं वह एक डिण्टी निनिस्टर की है सियत से करता हूं हमारे और मजदूरों के बीच में जो सवाल हैं उन पर हम गीर कर रहे हैं। और काफी तेजी से हम गीर कर रहे हैं। वहां के एसो सियेशन वाले खोर हम सब निल कर इन तमाम बातों को देख रहे हैं और उनके उपर विचार कर रहे हैं। इस के साथ ही साथ इस से ज्यादा मुबा कबाद की बात और कोई नहीं हो सक गी गवर्न में ट प्रेस के यूनियन और उस के कर्मचारियों के लिए भी कि पिछले दो ढाई सालों में बगावत, हल्ला गुल्ला या गाली गुपता की बात उन्होंने नहीं की। इस के तिए भी मैं उनको घन्यवाद देता हं। पैसे की कमी खाज पूरे प्रदेश मर मे है, केवल गवर्न मेंट प्रेस में ही नहीं है। अकेले गवर्न मेंट प्रेस में पैसे को बढ़ाकर सारे प्रदेश मे कोई समस्या भी हम पैदा नहीं करना चाहते हैं। उनकी कठिनाइयों को हम समझते है और उनसे सहानु भूति भी रखते है।

जिन बराबियों की बातें माननीय मदन पांडेय जी ने कहीं है उनको भी हम देखेगे। उन्होंने बहुत निश्चित रू। से कहा है कि इनके मूल में कहीं कोई खराबी है, तो उसको भी हम देखेगे। लेकिन यह भै कह सकता हूं कि सभी बाते वहां की खराब नहीं है। जैसे सब जगह दो एक बातें खराब हो सकती है। वैसे ही वहां भी हो सकती है। किर भी उनको हम देखेगे। इन शब्दों के साथ, मैं सदन से प्रार्थना करता हूं कि वह इस भ्रमुदान को स्वीकृत करे।

श्री गोविन्दसिंह विष्ट--थोड़ा सा स्पष्टीकरण चाहता हूं।

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—समय कम है, उसका भी ध्यान रहे। फिर समय बढ़ा दिया जाय।

श्री उपाध्यक्ष--- ग्रगर जरूरत पड़ेगी तो १५ मिनट मै बढ़ा दूंगा।

श्री गोविन्दिंसिह विष्ट—मै यह जानना चाहता था कि क्या यह सही नहीं है कि छः छः मशीनें वहां बेकार पड़ी हुई है ग्रौर एक लीनोटाइप हिन्दी की मशीन ऐसी हैं जो सन् ५० के करीब खरीदी कर श्रायी थी ग्रौर ग्राज तक वह इस्तेमाल नहीं हुई हैं ? उन मशीनों के पुर्जे एक-एक करके चोरी चले जाते हैं, यह मैं डिप्टी मिनिस्टर साहब के सामने कैसे कहूं, लेकिन धीरे-भीरे कम होते जा रहे हैं ग्रौर इस तरह वह मशीने बेकार होती जा रही हैं। इसी तरह से मोनोटाइप की जो १४ मशीने हैं उनमे से ग्राधी...

श्री उपाध्यक्ष--ग्रब ग्राप उनको जवाब देने दें।

श्री गोविन्दांसह विष्ट-एक मशीन का सिलेंडर, उपाध्यक्ष महोदय, चोरी चला गया ग्रीर उसको एक दिल्ली के प्रेस ने खरीदा, उसका नाम लेना तो ठीक नहीं होगा, तो इसके बारे में जवाब वह दे दे।

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—मान्यवर, इस तरह की सूचना हमारे पास नहीं है। जहां तक हमारी इस वक्त की सूचना है, वहां पर कोई मशीन खड़ी नहीं रहती है। श्रव कोई क्षेक डाउन हो जाय तो उसकी बात दूसरी हैं। लेकिन श्रगर माननीय सदस्य निश्चित सूचना देंगे तो हम जरूर उसकी जांच करा लेंगे। िश्री उपाध्यक्ष--प्रकृत यह है कि श्रृतुदान संख्या ४१ के श्रृथीन मांग की राशि घटाकर एक रुपया कर दी जाय।

कमी करने का उद्देश्य--नीति का व्यौरा जिस पर चर्चा उठाने का श्रिभिप्राय है।

राजकीय मुद्रण कार्यालय, लखनऊ तथा इलाहाबाद, में कर्मचारियों की प्रमुख मांगों की ग्रोर सरकार का ध्यान श्रानुब्द करना।

(प्रश्न उपस्थित किया गया ग्रीर ग्रस्वीकृत हुग्रा।)

श्री उपाध्यक्ष--प्रश्न यह है कि श्रनुदान संख्या ४१--लेखन-सामग्री ग्रीर मुद्रण लेखा शोर्थक १६--लेखन-सामग्री श्रीर मुद्रण तथा श्रवमूल्यन रक्षित निधि (Depriciation Reserve Fund) राजकीय मुद्रणालय के श्रन्तर्गत १,४०,७०,५०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १६६०-६१ के लिये स्वीकार की जाय।

(प्रश्न उपस्थित किया गया ग्रौर स्वीकृत हुन्ना।)

(इसके बाद सदन ५ बजे सोमवार, २१ मार्च, १६६०, के ११ बजे दिन तक के लिए स्थगित हो गया।)

लखनऊ; १६ मार्च, १६६०। देवकी नन्दन मित्थल, सचिव, विधान सभा, उत्तर प्रदेश।

# उत्तर प्रदेश विधान सभा

### सोमवार, २१ मार्च, १६६०

विजान सभा की बैठक सभा-नंडप, लवनऊ मे ११ बजे दिन में उपाध्यक्ष, श्री रामनाराधण त्रिपाठी, की ऋध्यक्षता में ग्रारम्भ हुई।

## उपस्थित सदस्य-३५६

ग्रक्षयवर्रासह, श्री ग्रजीस इमाम, श्री ग्रतीकूल रहमान, श्री ग्रनन्तराभ वर्मा, श्री ग्रब्धल रऊफ लारी, श्री ब्रब्द्रल लतीफ नोमानी, श्री ग्रब्ध्स्समी, श्री ग्रभयराम यादव, श्री ग्रमरनाथ, श्री ग्रमोला देवी, श्रीमती ग्रयोध्याप्रसाद ग्रार्थ, श्री श्रवधेश कुमार सिनहा, डाक्टर ग्रवधेशचन्द्र सिंह, श्री भ्रवधेशप्रताप सिंह, श्री ब्रात्माराम पांडेय, श्री इरतजा हुसैन, श्री इस्तफा हुँसैन, श्रो उदयशंकर, श्री उबैदुर्रहमान, श्री उमार्शकर शुक्ल, श्रा उल्फर्तासह, श्री अदल, श्री एस० ग्रहमद हसन, श्री श्रोंकारनाथ, श्री कन्हैयालाल वाल्मी(कि, श्री कमरुद्दीन, श्री कमलकुमारी गोईंदी, दुमारी कमलेशचन्द्र, श्री कल्याणचन्द मोहिले, श्री कल्याणराय, श्री कामताप्रसाद विद्यार्थी, श्री काली चरण ग्रग्रवाल, श्री

कार्राप्रवाद पांडेय. श्री किशनरिंह, श्री कुंवर्ुष्ण वर्मा, श्री ्राशांकर, श्री केशभानराध, श्री केशच गांडेय, श्री केशवराम, श्री कैलाशकुमारसिंह, श्री कैलाशनारायण गुप्त, श्री कैलाशवती, श्रीमती कोतवाल सिंह भदौरिया, श्री खजानसिंह चौधरी, श्री खमानी सिंह, डाक्टर खवालीराम, श्री खुर्शाराम, श्री ख्बसिह, श्री गंगाधर जाटव, श्री गंगाप्रसाद, श्री (गोंडा) गंगाप्रसाद वर्मा, श्री (एटा) गजेन्द्रसिंह, श्री गज्जूराम, श्री गणेशप्रसाद पांडेय, श्री गनेशचन्द्र काछी, श्री गयात्रसाद, श्री गधाबख्श सिंह, श्री रायूर ऋली खां, श्री गरीबदास, श्री गुप्तारसिंह, श्री गुरुप्रसादसिंह, श्री गुलाबसिह, श्री गेंदादेवी, श्रीमती गेंदासिंह, श्री

गोकुलप्रसाद, श्री गोपीऋष्ण ग्राजाद, श्री गोविन्दनारायण तित्रारी, श्री गोविन्दसहाय, श्री गोविन्दसिंह विष्ट, श्री गौरीराम गुप्त, श्री गौरीशंकर राय, श्री घासीराम जाटव, श्री चन्द्रजीत यादव, श्री चन्द्रदेव, श्री चन्द्रहास मिश्र, श्री चन्द्रावती, श्रीनती चन्द्रिकाप्रसाद, श्री चित्तरींसह निरंजन, श्री चिरंजीलाल जाटव, श्री छत्तरसिंह, श्री छेदोलाल, श्री छोटेलाल पालीवाल, श्री जंगबहादुर वर्मा, श्री जगदीशनारायण, श्री जगदीशनारायणदत्त सिंह, श्री जगदी शत्रसाद, श्रा जगदी गदारण ग्रग्नवाल, श्री जगन्नाय चौबरी, श्रो जगपति सह, श्री जगमोहर्नासह नेगी, श्री जगवीरांसह, श्री जवगोपाल, डाक्टर जयदेवसिंह ग्रार्य, श्री जयराम वर्मा, श्री जवाहरलाल, श्री जव।हरलाल रोहतगी, डाक्टर जागेश्वर, श्री ज्गलकिशोर, श्राचार्य जोखई, श्री ज्वालाप्रधाद कुरील, श्री झारखंडेराय, श्रो टीकाराम, श्रो टो हाराम पुजारी, श्री ड्रंगरसिंह, श्री ताराचन्द माहेश्वरी, श्री तारादेवी, डाक्टर तिरमलसिंह, श्री तेजबहाषुर, श्री दत्त, श्री एस० जी० दशरथप्रसाद, श्री

। दाताराम चौधरी, श्री दोनदयालु करुण, श्री दोनदयालु ज्ञामां, श्री दीनदयालु शास्त्री, श्री दीवंकर, श्राचार्य दीवनारायणमणि त्रिपाठी, श्री ध्र्योघन, श्री देवकीनन्दन विभव, श्री देवनारायण भारतीय, श्री देवराम, श्री द्वारकाप्रसाद मित्तल, श्री (मुजप्करनगर) द्वारिकाप्रसाद, श्री (फर्रुलाबाद) द्वारिकाप्रसाद पांडेय, श्री (गोरखपर) घनीराम, श्री धनुषधारी पांडेय, श्री धर्मदत्त वैद्य, श्री धर्मपालींसह, श्री धर्मसिंह, श्री नत्थाराम रावत, श्री नत्युसिह, श्री (बरेली) नन्दकुम(रदेव वाशिष्ठ, श्री नन्दराम, श्री नरदेवसिंह दतियानवी, श्री नरेन्द्रींसह भंडारी, श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट, श्री नवलिक्शोर, श्री नागेश्वरप्रसाद, श्री नारायणदत्त तिवारी, श्री नारायणदास पासी, श्री नेकराम शर्मा, श्री पद्माकरलाल श्रीवास्तव, श्री परमानन्द सिनहा, श्रं। परमेश्वरदीन वर्मा, श्री पहलबानसिंह चौनरी, श्री प्रकाशवती सूद, श्रीमती प्रतापबहादुरसिंह, श्री प्रतापभानप्रकाशसिंह, श्री प्रतापसिंह, श्री प्रभावती मिश्र, श्रीमती प्रभुदयाल, श्री फतेहसिंह राणा, श्री बंशीबर शुक्ल, श्री बलदेवसिष्ठ, श्री बलदेवसिंह भ्रार्थ, श्री बसंतलाल, श्री बादामसिंह, श्री

बाबुराम, श्री बाब्लाल कुसुमेश, श्री बालकराम, श्री बिन्दुमती दास, श्रीमती बिशम्भरसिंह, श्री बिहारीलाल, श्री बद्धीलाल, श्री ब्द्धीरंसह, श्री बलाकीराम, श्री बुजबासीलाल, श्री बुजरानी मिश्र, श्रीमती बेचनराम, श्री बेचनराम गुप्त,श्री बेनीबाई, श्रोमती बैजूराम, श्री ब्रजनारायण तिवारी, श्री ब्रजभूषण शरण, श्रो ब्रह्म स्त दीक्षित, श्री भगवतीत्रसाद दुवे, श्री भगवतीं सह विशारद, श्री भगौतोत्रस.द वर्मा, श्री भजनलाल, श्री भीबालाल, श्री भुवनेश भूषण शर्मा, श्री भपकिशोर, श्री मंगला प्रसाद, श्री मंज्रुहलनबी, श्री मयुराप्रसाद पांडेय, श्री मदनगोपाल वैद्य, श्री मदन पांडेय , श्री म इनमोहन, श्री मन्नालाल, श्री मन्नखानसिंह, श्री मिललानसिंह, श्री (मैनपुरी) महमुद ग्रली खां, कुंवर (मेरठ) महमूद हुसैन खां, श्री महावीरप्रसाद शुक्ल, श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री महीलाल, श्री महेर्शासह, श्री माताप्रसाद, श्री मान्घातासिंह, श्री मिहरबान सिंह, श्री मुकुटविहारीलाल ग्रग्रवाल, श्री मुक्तिनाथ राय, श्री मुजफ्फर हसन, श्री मुबारक ग्रली खां, श्री

मुरलीघर, श्री म्रलीधर कुरील, श्री मुल्लाप्रसाद 'हंस', श्री मुहम्मद सुलेमान ग्रधमी, श्री मुलचन्द, श्री मोतीलाल ग्रवस्थी, श्री मोहनलाल, श्री मोहनलाल गौतम, श्री मोहनलाल वर्मा, श्री मोहर्नासह मेहता, श्रो यमुनाप्रभाद शुक्ल, श्री यमुनासिह, श्री (गाजीपुर) यशोदादेवी, श्रीमती यादवेन्द्रदत्त दुबे, राजा रऊफ जाफरी, श्री रघुरनतेजबहादुरसिंह, श्री रघुराजसिंह चौधरी, श्री रघुवीरराम, श्री रघुवीरसिंह, श्री (एटा) रघुवीरसिंह, श्री (मेरठ) रमाकांतसिंह, श्री रमानाथ खैरा, श्री रमेशचन्द्र शर्मा, श्री राघवेन्द्रप्रतापसिंह, श्री राजिकशोर राव, श्री राजदेव उपाध्याय, श्री राजनारायण, श्री राजनारायणसिंह, श्री राजबिहारीसिंह, श्री राजाराम शर्मा, श्रो राजेन्द्रकिशोरी, श्रीमती राजेन्द्रकुमारी, श्रीमती राजेन्द्रदत्त, श्री राजेन्द्रसिंह, श्री राजेन्द्रसिंह यादव, श्री रामग्रधार तिवारी, श्री रामग्रभिलाख, श्री रामकिकर, श्री रामकृष्ण जैसवार, श्री रामकृष्ण सारस्वत, श्री रामचन्द्र उनियाल, श्री रामचन्द्र विकल, श्री रामजोलाल सहायक, श्री रामजी सहाय, श्री रामदास ग्रायं, श्री रामदीन, श्री रामनाथ पाठक, श्री

रामपाल त्रिवंदी, श्री रामप्रसाद, श्री रामप्रसाद देशमुख, श्री रामप्रसाद नौटियाल, श्री रामबली, श्री राममूर्ति, श्री रामरतनप्रसाद, श्रो रामरतीदेवी, श्रीमती रामलक्षण तिवारी, श्री रामलखन, श्री (वाराणसी) रामललन मिश्र, श्रो रामलाल, श्रं रामशरण यादव, श्री रामसनेही भारतीय, श्री रामसमझावन, श्री रार्मासह चौहान वैद्य, श्री रामसुन्दर पांडेय, श्री रामसूरतप्रसाद, श्री रामस्वरूप यादव, श्री रामस्वरूप वर्मा, श्री रामहेर्तासह, श्री रामायणराय, श्री रामेश्वर प्रसाद, श्री रूमसिंह, श्री लक्ष्मणसिंह, श्री लक्ष्मीनारायण, श्री लखमी सिंह, श्री लायकसिंह चौधरी, श्री लालबहादुर, श्री लालबहाष्ट्रर सिंह, श्री लुत्फ ग्रली खां, श्री लोकनाथ सिंह, श्री वजरंगविहारी रावत, श्री विशष्ठनारायण शर्मा, श्री वसी नक्तवी, श्री वासुदेव दीक्षित, श्री विचित्रनारायण शर्मा, श्री विजयशंकरसिंह, श्री विद्यावती वाजपेयी, श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन, श्रीमती विशालसिंह, श्री विश्राम राय, श्री वीरसेन, श्री वीरेन्द्र वर्मा,श्री व्रजगोपाल सक्सेना, श्रो व्रजविहारी मेहरोत्रा, श्री

शंकरलाल, श्री श्कुंतलादेवी, श्रीमती शब्बीर हसन, श्री शमसुल इस्लाम, श्री शम्भदयाल, श्री शिवप्रसाद, श्री (देवरिया) शिवप्रसाद नागर, श्री (खीरी) शिवमूर्तिसंह, श्री शिवराजबलीं 🐧 श्री शिवराजिंसह यादेव, श्री शिवराम, श्रो शिवराम पांडेस, श्रह शिववचनराव, श्रो शिवशरणलाल श्रीवास्तव, श्री शीतलाप्रसाद, श्री शोभनाथ, श्री श्याममनोहर मिश्र, श्री रयामलाल, श्री श्यामलाल यादय, श्री श्रद्धादेव। शास्त्री, कुमारी श्रीकृष्ण गोयल, श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, श्री श्रीनाथ, श्री (ग्राजमगढ़) श्रीनिवास, श्री श्रीपालसिंह, कुंवर संग्रामसिंह, श्री सईद ग्रहमद ग्रन्सारी, श्री सजीवनलाल, श्री सत्यवतीदेवी रावल, श्रीमती सम्पूर्णानन्द, डाक्टर सरस्वतीदेवी शुक्ल, श्रीमती सियाषुलारी, श्रीमती सीताराम शुक्ल,श्री सुक्खनलाल, श्री सुखरानीदेवी, श्रीमती सुखरामदास, श्री सुखलाल, श्री सुखीराम भारतीय, श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी, श्री सुनीता चौहान, श्रीमती सुन्दरलाल, श्री सुर्थबहादुरशाह, श्री सुरेन्द्रदत्त वाजपेयी, श्री सुरेन्द्रसिंह, राजकुमार सुल्तान ग्रालम खां, श्री सूरतचन्द रमोला, श्री

सूर्यंबली पांडेय, श्री हमीदुल्ला खां, श्री हरदयार्लीसह, श्री हरदयार्लीसह पिपल, श्री हरदेवांसह, श्री हरिदत्त काण्डपाल, श्री हरिश्चन्द्रसिंह, श्री हरीशचन्द्र श्रष्ठाना, श्री हरीसिंह, श्री हलीमुद्दीन (राहत मौलाई), श्री हिम्मर्तीसह, श्री हुकुमसिंह विसेन, श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा, श्री होरीलाल यादव, श्री

नोटः --सार्वजनिक निर्माण उप-मंत्री, श्री महावीरसिंह, भी उपस्थित थे।

### प्रश्नोत्तर

सोमवार, २१ मार्च, १६६०

# ग्रलप सूचित तारांकित प्रक्त

किसान कालेज, शामली के लिए गन्ने के मूल्य में कटौती

\*\*१--श्रीमती राजेन्द्र किशोरी (जिला बस्ती), कुमारी श्रद्धादेवी शास्त्री (जिला मेरठ), श्री धनुषधारी पांडेय (जिला बस्ती) तथा श्री मथुराप्रसाद पांडेय (जिला बस्ती) —क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि क्या किसान कालेज शामली, मुजफ्करनगर के लिये शामली (मुजफ्करनगर) में गेट पर गन्ना सप्लाई करने वाले शामली गन्ना सोसाइटी के काइतकारों से एक पैसा प्रति मन चन्दा काटा जा रहा है जिसकी स्वीकृति न तो शामली गन्ना सोसाइटी की जनरल बाडी ने श्रपने ६-२-६० की सालाना बैठक, जिसमें यह प्रस्ताव चन्दा काटने का पेश हुश्रा था, में ही दी थी श्रीर न बाद मे ही, श्रीर न केन किसइनर, उत्तर प्रदेश ने ही कोई मन्जूरी दी थी ?

श्रम उपमन्त्री (श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा)—किसान कालेज, शामली (मुजफ्फरनगर) के लिये शामली मिल गेट पर किसानों से एक पैसा प्रतिमन के हिसाब से उनके गन्ने के मूल्य से की गयी कटौती का रुपया शामली गन्ना सोसाइटी द्वारा एकत्र किया जा रहा है। इसकी स्वीकृति शामली गन्ना सोसाइटी के ६-२-६० की सालाना बैठक में प्रस्ताव पारित करके दी गई थी ग्रौर यह प्रस्ताव गन्ना ग्रायुक्त द्वारा भी स्वीकार किया जा चुका है।

श्री धनुषधारी पांडेय—=क्या माननीय मंत्री बतलाने की कृपा करेंगे कि केन सोसाइटी का प्रस्ताव पास हो जाने के बाद सब किसानों पर वह प्रस्ताव वैधानिक रूप से लागू हो सकता है?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—जी हां। श्राप नियम देखे तो प्रतीत होगा कि नियमा-नुकूल काम हुआ है।

श्री दीपनारायणमणि त्रिपाठी (जिला देवरिया)—क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि इस प्रकार की कटौती किस काम के लिये होती है ग्रौर कब से हो रही है?

श्री उपाध्यक्ष--यह तो ग्राप प्रश्न पढ़ लीजिये, पता लग जायगा।

श्राचार्य दीपंकर (जिला मेरठ)—क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि जब से यह प्रस्ताव कटौती के लिये पास हुन्ना, उसके पहले से ही यह कटौती की जा रही है ? श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—कटौती प्रस्ताव के श्रनुसार हो रही है। एक साल पहले भी उन्होंने ऐसा प्रस्ताव पास किया था। उस साल भी कटौती हुई। वहां किसान इस स्कीम को चलाने के लिये इस पैसे को कटवाते हैं, एक मुनासिब काम के लिये श्रौर में उम्मीद करता हूं कि इन सवालों से ऐसी प्रतिध्वनि नहीं निकलेगी कि जिससे ऐसा श्राभास हो कि किसानो का ऐसा करना श्रहितकर है।

श्राचार्य दीपंकर—क्या यह बात सही है कि किसानो का बहुमत श्रपनी मीटिंग के द्वारा लिखित रूप में यह मांग कर चुका है कि उनसे इस प्रकार की कटौती नहीं की जानी चाहिये ?

श्री उपाध्यक्ष-किस हैसियत से ?

श्राचार्य दीपंकर—क्या जो सोसाइटी के सदस्य है वे लिखित रूप मे इस प्रकार की मांग कर चुके है कि यह कटौती उनको श्रभिप्रेत नहीं है ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—यह बात बिलकुल सही नही है। किसानो ने प्रस्ताव पास किया ग्रौर ऐसा फैसला किया। कोई दूसरा प्रस्ताव पास किया होता तो बात सामने ग्राती, लेकिन हम ने ग्रपने मन से काम नही किया है। सर्वसम्मति से प्रस्ताव हुश्रा ग्रौर श्रगर उसका विरोध कही किसी के मस्तिष्क मे पैदा होता हो तो मुझे नही मालूम, लेकिन वाकयात में कही किसी ने विरोध नही किया।

## कोयले की कमी के सम्बन्ध में केन्द्र से पत्र-व्यवहार

\*\*२—श्री रामसुन्दर पांडेय (जिला श्राजमगढ़)—यया खाद्य मंत्री द-३-६० क श्रत्यसूचित तारांकित प्रक्षन संख्या १ के उत्तर के संदर्भ में दिये गय पूरक प्रक्षनो के उत्तर के सम्बन्ध में बताने की कृपा करेंगे कि मुख्य मंत्री द्वारा कोयले के सम्बन्ध में भारत सरकार के रेल एवं इस्पात मंत्री को लिखे गये पत्र का परिणाम क्या हुन्ना है ?

खाद्य मन्त्री (श्री जगमोहनसिंह नेगी) -- भारत सरकार के इस्पात, खान तथा ईंधन मंत्री ने निम्नलिखित सुचना दी है :

- १—कोयला नियंत्रक, उत्तर प्रदेश के बिजली घरों को तत्काल कोयला सप्लाई करने के लिये श्रावश्यक कार्यवाही कर रहा है।
- २—कोयला चूर की कमी को तुरन्त दूर करने के लिये कोयला नियंत्रक द्वारा यह श्रादेश जारी किये जा रहे हैं कि इस व्यवसाय के सब वस्तु श्रादेश (indents) प्र दिनों तक लगातार पूरे-पूरे मंजूर किये जायें श्रौर वैगनों के एलाटमेन्ट के लिये वस्तु श्रादेश (indents) विशेष (special) शब्द द्वारा चिन्हित किये जायें।
- ३—साफ्ट कोक की कमी तथा निजी उद्योगों में कोयले की कमी को दूर करने के लिये यातायात की श्रपर्याप्तता एक समस्या है। लेकिन इस मामले में रेलवे मन्त्रालय से बातचीत हो रही है श्रौर यह श्राज्ञा की जाती है कि उनकी सहायता से शोध्र ही स्थिति में कुछ सुधार हो जायगा।

श्री रामसुन्दर पांडेय—क्या खाद्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि माननीय मुख्य मंत्री जी के पत्र का उत्तर रेलवे मंत्राणी जी ने कुछ दिया है या नही श्रौर दिया है तो क्या दिया है ?

श्री जगमोहर्नीसह नेगी—चूंकि उन्होंने मुख्य मंत्री जी को यह लिख दिया है कि स्वयं उन्होंने खान मंत्री जी से बातें कर ली है इसलिये उनके पत्र के उत्तर की श्रावश्यकता नहीं है। इस बीच में उनकी बातचीत हो चुकी है।

श्री ब्रजनारायण तिवारी (जिला देवरिया)—क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जो कोयले की कमी हो गयी है उसके लिये सरकार की तरफ से कोई इस बात के आदेश जिले में भेजे गये हैं कि जब तक साढ़े चार सौ रुपये जमानत के जमा न किये जायं तब तक कोयले की व्यवस्था न की जाय?

श्री जगमोहनसिंह नेगी--ऐसी मेरे पास कोई सूचना नहीं है।

श्री गौरीशंकर राय (जिला बिलया)—क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि इस पत्र से इतना तो साफ हो गया है कि यह समस्या रेल के बैगन की है श्रीर कोयले की कमी की नहीं है ?

श्री जगमोहर्नासह नेगी--उनके पत्र से ऐसा मालूम होता है कि यह कोयले की नहीं रेलवे की थी।

\*\* ३--श्री राजनारायण (जिला वाराणसी)--[स्थिगत ।]

### तारांकित प्रक्त

[उत्तर प्रदेश विधान सना की प्रीक्रश तथा कार्य-संचालन नियमावली के नियम ३० (४) के अन्तर्गत ।]

\* १--श्री भूपिकशोर (जिला एटा)--[४ ग्रत्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किया गया।

### राज्य व्यापार योजना का वर्गीकरण

\*२--श्री चन्द्रजीत यादव (जिला भ्राजमगढ़) (अनुपस्थित)--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि गल्ले के राज्य व्यापार के सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार से कोई 'श्रादर्श योजना' था उस सम्बन्ध में विशिष्ट निर्देश राज्य सरकार की प्राप्त हुए है ? यदि हां, तो उनकी मुख्य बातें क्या है ?

श्री जगमोहनसिंह नेगी——जीहां। राज्य व्यापार योजना का केन्द्रीय सरकार ने दो भागों में वर्गीकरण किया है।

(१) अन्तिमं आकार।

(२) श्रन्तरिम योजना, जो राज्य व्यापार के पूरे पैमाने पर चाल् होने तक कार्यान्तित की जायेगी।

अन्तिम श्राकार में यह व्यवस्था होगी कि गांवों में किसानों के पास बचा हुआ खाद्यान्न (farm surpluses) वहां की सेवा—सम्बन्ध सहकारी संस्थाओं (Service co-operatives) द्वारा एकत्रित किया जायेगा श्रीर फिए उस का कर-विकथ तथा वितरण का प्रबन्ध भी उच्च सहकारों संस्थाओं द्वारा होगा।

श्रन्तरिम योजना की मुख्य बातें निम्न प्रकार है:--

- (१) श्रारम्भ में राज्य व्यापार केवल दो प्रवृत्व खाद्यान्नों (गेहं तथा चावल) में लागू करना ।
- (२) सर्वप्रथम राज्य में खाद्यान्नों के थोक व्यापारियों, जिनमें चावल व आटा मिल भी सम्मिलित हैं, अनिवार्य रूप से लाइसेन्स देना।
- (३) लाइसेन्स प्राप्त स्थापारियों के खाद्यान्त्र स्टाक का एक निविचत भाग राज्य सरकार द्वारा नियंत्रिन मस्य पर ले लेना।
- (४) राज्य भर के लिये (बहुतायत तथा कमी वाले क्षेत्रों के लिये अलग-ग्रलग) विधियत् खाद्यात्रों के थोकभाव निर्धारित करना।
- (४) श्रगर किसान निर्धारित सूल्य पर श्रयने खाद्य न को व्यापारियों की न बेच सक तो राज्य सरकार द्वारा किसानों से सीधे खरीदारी करने के लिये व्यवस्था करना ।

#### राज्य व्यापार योजनान्तर्गत खाद्यान्नों के मूल्य का निर्धारण

\* ३—श्री **ब्रजनारायण तिवारी**—न्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि गहले के राज्य ब्यापार को स्थायित्व प्रदान करने के लिये राज्य सरकार ने ग्रब तक क्या प्रबन्ध किया है ?

श्री जगमोहनसिंह नेगी--प्रभी तो के बल उपरोक्त अन्तरिम योजना इस प्रदेश में लागू की गयी है ।

श्री प्रतापसिंह (जिला नेतीलाल)—न्या माननीय मंत्री जी बलाने की कया करेने कि, जैसा कि उन्होंने उत्तर में कहा है स्के ररसिटी एरियात में निश्चित पृत्य निर्वारित करने केसम्बन्ध में, इसके लिये ग्राबार क्या होगा, जिस श्राधार पर यह पुल्न निश्चित करेनी?

श्री जगमोहन सिंह नेगी--इनका ग्रापार यही होना कि कंड्यार्स के चित्रे सी रीज-नेबिल प्राइत हो श्रीर प्रोड्यूसर्त को भी रीजनेबिल प्राइत मिले।

श्री भुवनेशभूषण शर्मा (जिला इडाया) — ह्या सर हार बताने की हुवा करेगी कि यह जो गलना खरीदा गया, सरकार ने बनलाया कि व्यागारियों हो। लाइसेंग्म देहर मरीदा गया और ३५ परसेंग्ट, या जो परसेंग्ट हो, वह मरहार लेगे छोर याकी उनहें बेचने के लिये छोड़ देगी, तो क्या वह उसी रेट पर बेचने जिस पर बेचने के निये सरकार कहनी है या मनमाने दामों पर बेच सकेंगे?

श्री जगमोहनसिंह नेगी—गहां तक गहूं का तालन हते, हमने जिलें। की मकरंर कर दिया है जैसे बिलया, गाजीवुर, जीनपुर, श्रीनलगढ़ श्रीवि, लगा वाले जिलें। मे १३, १४ रुपये मन वे खरीबेगे श्रीर उनकी उपरोक्त जिलों में १५-१७ रुपये मन वे बा जायेगा। बस्ती में ट्रान्सपोर्ट चार्जेज वर्गरा होंगे, इनिलये वहां पर १४-१६ रुपये मन होंगा। इन तरह से गेहूं की कीमत निर्धारित की है। चावन की नहीं की है। चावन जी ५० परसेन्द्र छीं दिया है उसकी उन्हीं पर छोड़ दिया है वे जिस तरह से वाह खेने। नेथिन हमारे भाग स्टाक काफी है और हम श्रवनी फेर प्राहत शास से भी इन कामतों का काबू में हर लेंगे।

श्री रामस्वरूप वर्मा (जिला कानपर) — क्या मंत्री जी स्पाट करेगे कि उन्होंने कहा कि सही कीमत प्रोड्यूनर कें: मिले, ती क्या उन्होंने जानने की ट्य्यर्या की हाकि गहुं या चात्रल के उत्यादन करने में कितना खर्च पड़ता है ग्रीर उसके हिसाब से उनक. कामत सहा ह या नहीं ?

श्री जगमोहनसिंह नेगी--हां, विवार करके जब सही समझा तभी किया।

श्राचार्य दीपंकर—क्या माननीय मंत्रों जी यह बनाने का क्रया करेंगे कि जो व्यापारी गहला बिकों के लिये सरकारी श्राज्ञा प्राप्त है, केवल उन्हीं से यह श्रंग निया जाता है श्रीर जिन्होंने लाइसेंस प्राप्त नहीं किया है, उनसे श्रम का कोई भाग नहीं निया जाता ?

श्री जगमोहन सिंह नेगी---५० मन से अरर श्राल फूड ग्रेन्स के निये हर एक की लाइ-सेंस लेना श्रनिवार्य है। श्रेगर की है नहीं लेना है तो जुर्म करता है ग्रीर पकड़ा जा सकरा है।

श्री रामायणराय (जिला वे अरिया) -- राज्य व्यापार का योजना का पूरं तौर से लागू करने में क्या कठिनाई है माननीय मंत्री जी की ?

श्री जगमोहर्नीसह नेगी--प्राव ग्रगर मदव करें ग्रीर सावत के प्रावरेटिंग ज्यादा तादाद में बन जार्य तो कोई कठिनाई न रहे ।

श्री गौरीशंकर राय--जो लाइसेंस्ड ब्यावारी है उनसे निश्चित कीमत पर अगर गल्ला ल लिया जाता है, तो जो गल्ला आप लेते है वह तो निश्चित कीमत पर होता है, बाकी सभी गल्ला बेचने की स्वतंत्र है, जिस भाव पर चाहें बेचें ?.

प्रक्तोत्तर ५२१

श्री जगमोहनसिंह नेगी—मेहूं पर तो पाबन्दी है, नहीं बेच सकते, चावल हमने छोड़ रखा है, क्योंकि हमारे पास काफी चावल है श्रीर हम ऊंचे भावों को दबा देते हैं।

श्री रामस्वरूप वर्मा—माननीय मंत्री जी ने विचार करके यह भाव तय किये है, मैं जानना चाहता हूं कि जब मंत्री जी ने गेहं ग्रौर चावल के मूल्यों के सम्बन्ध में विचार किया था तो उन्होंने किन संस्थाग्रों के प्रतिनिधियों या किसानों को बुलाकर राज ली थी, या कैसे मूल्य किया था ?

श्री जगमोहनसिंह नेगी—पह सारी चीज नैशनल डेवलपमेट कौसिल के लोगों ने इय की थी। वहां सर्गा वित्रारधारा के लोग है जो हम सभी से ज्यादा जानते है।

# गोरखपुर जिले में धान की गाड़ियों का पकड़ा जाना

\*४--श्री जजनारायण तिवारी--न्या खाद्य मंत्री कृपया यह बनायेगे कि पिछनी जनवरी के ग्रन्तिन सप्ताह में गोरखपुर जिले ये घान सिहत कितनी गाड़ियां पकड़ी गयीं ग्रोर उन गाड़ियों पर कितना घान जनों मे था ?

श्री जगमोहनसिंह नेगी--५४ गाड़ियां। इत पर ७२४ सल २१ सेर द छटांक बान था।

\*५--श्री क्रजनारायण तिवारी--क्या खाद्य मंत्री कृष्या यह भी बतायेगे कि उक्त गाड़ियों के पकड़ने का क्या फारण था और उसते सम्बन्धित कितने लोगों पर मुकदमा चलाया जायगा ?

श्री जगमोहनसिंह नेगी--प्रह गाड़ियां U.P.Paddy and Rice (Restriction on Movement) Order, 1958 के उत्लंबन में पकड़ी गई ग्रीर इन से सम्बन्धित ५५ व्यक्तियों पर मुकदमा चला दिया गया है।

श्री ब्रजनारायण तिवारी—-क्या मंत्री जो को यह मालून हुन्ना है कि देवरिया जिले के लिये जो सामान लाने का मार्ग सय किया गया है उसने ये गाड़ियां पकड़ी गयीं?

श्री जगमोहर्नासह नेगी—मोटे तौर पर वह जगह मालूम है जहां पर पकड़ी गयीं ग्रौर वह किस जिले में कहां पर है, इसके लिये स्वना की ग्रावश्यकता होगी।

श्री ग्रमरनाथ (जिला गोरखगुर) -- तथा मंत्री जी बतायेगे कि जो व्यक्ति पकड़े गये वह किस जगह के थे ग्रौर कहां गल्ला लेकर जा रहे थे ?

श्री जगमोहनसिंह नेगी--वह देवरिया के थे ग्रीर गल्ला लेकर गोरखपुर चल श्रा रहे थे।

श्री रामायण राय—-क्या माननीय मंत्री जी की यह मालून हे कि यह गाड़ियां कितानों की थीं जो अपने खाने के लिये गल्ला ले जा रहे थे, व्यापारियों की नहीं थीं, तो उन्हें क्यों नहीं छोड़ दिया जाता है ?

श्री जगमोहनसिंह नेगी -- उन्होंने कायदे के खिलाफ काम किया। जगह के लिये जो मैं बता रहा था तो वह रमेदपुर घाट ग्रीर कलनाही, इन जगहों में वह पकड़ी गयीं।

# बिलया जिले में कृषि रक्षार्थ चूहे मारने का काम

\*६--श्री गौरीशंकर राय--दिनांक ६--५१६ के प्रश्न ४-६ के उत्तरों के ऋप में क्या सहकारिता मंत्री अपया बतायेंगे कि कृषि रक्षा सेवा केन्द्र द्वारा चूहों के मारने में किस हद ६६ सक्तनता मिली है ? वया यह संकट जिले में सर्वया समाप्त हो गया ?

कृषि उप-मंत्री (श्री कालीचरण श्रग्रवाल) --बिलया जिले में कृषि रक्षा सेवा द्वारा फरवरी, १६६० तक १,७६,१६१.१ एकड़ में चूहों को मारने का कार्य किया गया श्रीर श्रव कोई संकट की स्थिति नहीं है।

श्री गौरीशंकर राय—क्या यह सत्य है कि चूहों का एक जोड़ा एक वर्ष मे ५४५ की तादाद में हो जाता है श्रौर सरकार के मारने की गित से चूहों के पैदा होने की गित कई गुना श्रिषक है? श्रगर हां, तो चूहों की संख्या में वृद्धि हुई है इतना मारने के बाद या कमी?

श्री उपाध्यक्ष—चूहों के संतित निरोधन के विषय में क्या कार्यवाही हो रही हे ? (हंसी)

सहकारिता मन्त्री (श्री मोहनलाल गौतम)—इस सम्बन्ध मे श्री गोरीशंकर राय जी को जितना श्रनुभव है उतना मुझको नहीं हैं। बिलया में लोगों को जो कष्ट हो रहा है उसकी उन्हें श्रधिक जानकारी हैं। जब वह कहने लगतें हैं तो ऐसा मालूम होता है कि कोई किस्सा कह रहें हैं, उस पर विश्वास नहीं होता। बहरहाल बिलया में श्रीर दूसरी जगहों पर इस सिलिसलें में हम जितना कर सकतें हैं, कर रहें हैं; लेकिन बात यह हैं कि जिस सख्या में वह बढ़ते ह उस संख्या में हम मार नहीं पाते। श्रगर बाढ़ श्रा गई होती तो उसमें भी कुछ बह गयें होतें लेकिन वह भी नहीं हुश्रा। लेकिन यह एक सीरियस समस्या हमारें सामने हैं, इस सम्बन्ध में श्रगर हमकों कोई सुझाव दियें जायेंगे तो उन पर भी हम गौर करेंगे।

श्राचार्य दीपंकर—क्या मंत्री जी बतलाने की कृषा करेगे कि प्रति चूहा मारने पर कितना व्यय होता है ?

श्री मोहनलाल गौतम—भिन्न-भिन्न इलाको में ग्रलग-ग्रलग तरीके से होता है, उसका हिसाब रखना मुश्किल हैं।

श्री गौरीशंकर राय—उपाध्यक्ष महोदय, उत्तर में बताया गया कि एक लाल श्रौर कुछ हजार एकड़ में चूहें मारे गये। यह कोई फौज का प्रश्न तो हैं नहीं जो यह कह दिया जाय कि इतनी जमीन से फौज निकल गई। श्रगर एक खेत में चूहें मार दिये जायं तो बगल के खेत से फिर श्रा जायेंगे, इसलिये एकड़ों में जवाब न दिया जाय। में जानना चाहता हूं कि क्या कोई ऐसी व्यवस्था की जा रही हैं जिससे पूरे इलाके से चूहें मारे जा सके ?

श्री मोहनलाल गौतम-जितने साधन है उनका हम प्रयोग कर रहे ह लेकिन समस्या काफी जटिल है ।

[२१ मार्च, १६६० के लिए निर्घारित तारांकित प्रश्न] हरी खाद के बीज वर्द्धन के लिए राज्य सहायता

\*१--श्री ताराचन्द माहेदवरी (जिला सीतापुर)—क्या राहकारिता मत्री बताने की कृपा करेंगे कि वित्तीय वर्ष १६५६-६० में हरी खाद के बीज वर्द्धन के झन्तर्गत सगाये गये नलकूप क्षेत्रों में नलकूपों द्वारा सिचाई सम्बन्धी व्यय के लिये क्या भारत सरकार ने प्रदेशीय सरकार की आर्थिक सहायता दी है? यदि हां, तो यह सहायता किस प्रकार की हे श्रीर उसकी मुख्य-मुख्य बातें क्या है?

श्री कालीचरण ग्रग्नवाल—जी नहीं।

\*२-श्री ताराचन्द माहेदवरी—क्या सहकारिता मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि प्रदेश के वे कौन-कौन जिले हैं जहां हरी खाद के प्रयोग के लिये मूंग की किस्म १ की सिचाई नहर के पानी से की जाती है और ऐसे किसानों को जो उत्तम प्रकार से सिचाई (मग की किस्म १ की सिचाई) करते हैं क्या उनको सरकार से कोई रियायती दर पर बीज दिया जाता है ? यदि हा, तो विचीय वर्ष १६५६-६० में सहायतार्थ दिये गये बीज की बनरािश जिलेबार रुपयों श्रीर वजन में क्या है ? श्री कालीचरण स्रग्नवाल—यद्यपि इस विषय में निश्चित सूचना इस समय उपलब्ध नहीं है, किन्तु जिन जिलों में साधारणतया हरी खाद के लिये मूंग की किस्म १ की सिचाई नहरों द्वारा होती है उनकी सूची संलग्न हैं। कृषि बीज भंडारों से वितरित सभी बीज लागत मूल्य पर नकद दिये जाते हैं स्रथवा विभाग के नियमानुसार सवाई पर वितरित किये जाते हैं। इसके श्रतिरिक्त स्रौर कोई विशेष सहायता नहीं दी जाती है।

(देखिये नत्थी 'क' ग्रागे पृष्ठ ६०६ पर)

\*३—श्री ताराचन्द माहेरवरी—क्या सहकारिता मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि खरीफ १६५६ में हरी खाद के बीज के वर्द्धन हेतु नलकूप वाले क्षेत्रों में भी सिंचाई व्यय के लिये क्या राज्य सहायता प्रदान की जायेगी? यदि हां, तो उक्त सहायता की दर तथा किस तरह से किसानों को प्राप्त होगी?

श्री कालीचरण श्रग्रवाल—जी हां, खरीफ १६५६ में ऐसे किसानों को राज्य सहायता देने का श्रादेश जारी किया गया था, जिन्होंने हरी खाद की फस्लों को उगाने के लिये राज्य नलकूपों से सिंचाई के लिये पानी लिया है। राज्य सहायता की दर इस प्रकार है:——

"३ रु० प्रति एकड़ श्रयवा सिंचाई के पूरे खर्च का ५० प्रतिदात व्यय जो भी कम हो।" यह सहायता किसानों को नकद नहीं दी गयी, बल्कि सिंचाई विभाग को श्रादेश दे दिया गया था कि वे किसानों को दी जाने वाली राज्य सहायता की रकम उनके सिंचाई-कर से काट कर, सिंचाई-कर को वसूल करें।

श्री ताराचन्द माहेश्वरी—क्या मंत्री जी को ज्ञात है कि भारत सरकार ने राज्य को हरी खाद के बीज पर दो रुपया प्रति मन सहायता देने का निश्चय किया है ग्रौर इसी के फलस्वरूप राज्य सरकार ने श्रनुपूरक बजट श्रगस्त, १६५६ में प्रस्तुत किया, उसके पृष्ठ सं० २५ पर स्पष्ट लिखा है कि इस समय राज्य में उन किसानों को रियायती दर पर बीज दिया जाता है जो हरी खाद के प्रयोग के लिये मूंग की किस्म (१) की सिचाई नहर के पानी से करते है श्रौर जो उत्तर दिया गया है उसमें कोई विशेष सहायता नहीं दी जाती, कहा गया है। इसलिये बजट में निश्चित हुये श्रौर दिये गए उत्तर में जो श्रन्तर है उसको मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे?

श्री कालीचरण श्रग्रवाल—भारतीय सरकार का एक जनरल सर्कुलर श्राया था उसमें कहा था कि जो राज्य खाद्य उत्पादन में हरी खाद की मदद करेंगे उनको दो रुपये की मन ग्रीन मैन्योर्स के लिये मदद दी जायगी। प्रक्त सं० १ के उत्तर में, जो मैने कहा वहां सिचाई की बात नहीं है, केन्द्रीय सरकार जो दो रुपये प्रति मन सब्सीडी देना चाहती है उसको हमने मांगा है ताकि इर्रीगेशन पर्यजेज में हम उसको काट सकें।

श्री केशव पांडेय (जिला गोरखपुर)—क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि द्वितीय योजना के वर्ष १६५६–६० में जहां पर नहरी सिचाई होती है वहां पर क्या भारत सरकार ने कोई सहायता दी हैं ?

श्री कालीचरण ग्रग्नवाल—नहरी क्षेत्र में इस तरह का कायदा है। १६ जिले हैं, जिनमें सहारनपुर श्रौर रायबरेली इत्यादि श्रामिल है। उनमें ३ तरह के शेड्यूल है। ए, बी, सी, हरी खाद सी, में श्राती है। फ्लो का ४ रुपये का तथा लिफ्ट का २ रुपये एकड़ का सिचाई दर है श्रौर फ्लो का २ रु० तथा लिफ्ट छा एक रुपया कर दिया है। दूयूबवेल में हम उनसे ३ रुपये फी एकड़ सिचाई लेते हैं या लागत का श्राधा जो भी कम होता है।

श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या यह सही है कि सरकार के ऐसे श्रादेश के बावजूद भी कि सिंचाई से हरी खाद की फसलें बढ़ाई जावें, नहर विभाग द्वारा पानी देने में श्रसमर्थता के कारण, जैसे श्रभी हाल में लोश्चर गंगा के सरक्युलर में श्राया है कि ५ हफ्ते में एकबार नहर चलेगी, फसल नहीं बढ़ रही हैं श्रौर क्या सरकार ने इसका कोई उपाय सोचा है ?

श्री मोहनलाल गौतम-कोजिज्ञ कर रहे हैं कि सिचाई में ज्यादा रुपया लगे।

श्री ताराचन्द माहेश्वरी—िसचाई से उक्त सहायता की रकम को काट कर वसूल किये जाने वालो की संख्या क्या है श्रीर कहा-कहा किसानो को यह रियायत मिली है ?

श्री मोहनलाल गौतम-नोटिस चाहिये।

#### कोग्रापरेटिव सुपरवाइजरों के चुनाव में ग्रलीगढ़ जिले के ग्रधिक उम्मीदवार लेने पर ग्रापत्ति

"४—श्री गनेशचन्द्र काछी (जिला मैनपुरी)—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि सन् १६५६ ई० में कोग्रापरेटिव सुपरवाइजरों का जो चुनाव हुग्रा ह उसके लिये प्रत्येक जिले से कितनी दरख्वास्ते ग्राइंथी ग्रीर प्रत्येक जिले में कितने लोगों को चुना गया ह ?

सहकारिता उप-मन्त्री (श्री वीरेन्द्र वर्मा)—सन् १६५६ के कोग्रापरेटिव सुपर-वाइजरों के चुनाव के लिये प्रत्येक जिले में प्राई हुई दरख्वारतें तथा उनमें से चुने गये लोगों की संख्या सलग्न सूची में दी हुई है ।

(देखिये नत्थी 'ख' स्रागे पृष्ठ ६०७-६० पर)

श्री गोविन्दिंसह विष्ट (जिला श्रत्मोडा)—श्रन्य जिलो से काफी दरख्वास्ने होते हुए भी श्रलीगढ से ही सब से श्राधिक क्यो लिय गये ?

श्री मोहनलाल गौतम—पहली बात तो यह हे कि इसकी भर्ती सरकार नहीं करती है। पाविश्वियल कोग्रापरेटिव यूनियन बिलकुल स्वतंत्र बाडी ह, जिसके इलेक्टेड श्रादमी ह ग्रौर वे उसका चुनाव करते ह। डिवीजनवाइज सख्याये नियत कर दी गयी ह। इसी काग्रज को देखने से मालूम होता हे कि फैंजाबाद डिवीजन से ७५, इलाहाबाद डिवीजन से ६८, बरेली डिवीजन से ६७, गोरखपुर से ८१, लखनऊ से ६२, मेरठ से ७०, बनारस से ६७, ग्रागरा से ७२, योग्यता के हिसाब से परीक्षा लेकर लिये गये। मने इसकी जाच को है। प्रलीगढ से ८५३ ग्राटगी पाम हुये थे जितने किसी जिले से नहीं है। डिवीजनवाइज सख्या मुकर्रर होने से बहुत से डिवीजनों में ४५ फीसदी नम्बर पाने वाले लोग नहीं लिये जा सके जबकि ग्रोर जगह ४३ व ४२ फीसदी वाले लिये गये। मैं स्वागत करूंगा कि जो एतराज हो वह हम चलकर कोग्रापरेटिव यूनियन को उनकी गलती बतलावे। कोग्रापरेटिव विभाग में ग्रभी इसपेक्टर्स की भर्ती हुई, उसमें सरकार बिलकुल देखल नहीं देती है ग्रौर कोई सिफारिश नहीं करती है।

राजा यादवेन्द्रदत्त दुबे (जिला जौनपुर)—क्या यह परीक्षण मैरिट के श्राधार पर लेने के लिये होता है या डिवीजनवाइज कोटा बनाकर लिया जाता है ?

श्री मोहनलाल गौतम--डिवीजनवाइज कोटा बनाकर वह ले रहे है। यह काडर गवर्नमेन्ट का नहीं है।

श्री प्रतापसिह--क्या डिबीजनवाइज क्वालीफिकेशन मे भी श्रन्तर है ?

श्री मोहनलाल गौतम—क्वालिकिकेशन में कोई श्रन्तर नहीं है। सिवाय शैड्यूल्ड कास्ट्स के।

श्री मोतीलाल श्रवस्थी (जिलाकानपुर)—-डिबोजनवाइज कोटा मुकर्रर करते समय युनियन ने परिगणित जातियों के लिये भी कोई कोटा मुकर्रर किया है ?

श्री वीरेन्द्र वर्मा--वह पहले ही १८ फीसबी है ।

श्री श्रमरनाथ — क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि श्रलीगढ़ जिले की खैर तहसील से कितने प्रार्थना-पत्र आये थे और कितने व्यक्ति लिये गये?

श्री उपाध्यक्ष--यह तो उन्होंने बतला दिया है ।

श्री गौरीशंकर राय—क्या मंत्री जी को दूसरी नियुक्तियों में भी मालूम हुआ है कि ब्रागरा डिबीजन में, खैर तहसील में ही सर्वाधिक कुशाग्र ग्रीर कौशल बुद्धि के लोग पाये जाते हैं।

श्री उपाष्यक्ष--- यह सारी स्थिति स्पष्ट कर दी गयी है।

# फास्फेटिक उर्वरक वितरक में छूट

\*५—श्री श्रीकृण्णदत्त पालीवाल (जिला ग्रागरा) (ग्रनुपस्थित)—क्या सरकार कृपया यह बतायेगो कि उसने किसानों को राज्य सहायता प्राप्त दर पर फास्फेटिक उर्वरक वितरण करने की योजना के श्रनुसार,जो यह व्यवस्था की था कि २५ प्रतिशत किसानों को राज्य सहायता के रूप में दी जायेगी, वह दी जा रही है ? यदि नहीं, तो कब से ग्रीर क्यों ?

श्री मोहनलाल गौतम—जी हां, प्रदेश के पूर्वी जिलों के लिये स्वीकृत खाद्योत्पादन बढ़ाने की एक विशिष्ट योजना के श्रन्तर्गत फास्फेटिक उर्वरक (fertilizer) वितरण में २५ प्रतिशत की छूट दी जा रही है। प्रदन के दूसरें भाग नहीं उठते।

\*६---श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल (ग्रनुपस्थित)—क्या सरकार उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से किसानों को उपर्युवत राज्य सहायता देने पर फिर से विचार कर रही है ?

श्री मोहनलाल गौतम—सहायता दी ही जा रही है। श्रतएव फिर से विचार करने का प्रश्न नहीं उठता।

जिला को आपरेटिव बैंक, श्राजमगढ़ से रुपया निकालने में श्रनियमितता

\*७—-श्री रामसुन्दर पांडेय—क्या सहकारिता मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि ग्रामोन्नति सहकारी भंडार, कमल सागर, पोस्ट रामपुर, जिला ग्राजमगढ़ की कार्यकारिणी समिति ने १६-४-५८ की ग्रयनी बैठक में श्रमानत का कितना रुपया वापस करने का प्रस्ताव स्वीकृत किया था?

\* - श्री रामसुन्दर पांडेय - इया सहकारिता मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि उक्त भंडार के १७-१०-५३ के जिला कोग्रापरेटिव बैंक ग्राजमगढ़ से रुपया निकालने की पद्धित की ग्रवहेलना हुई हैं ? यदि हां, तो क्यों ?

श्री वीरेन्द्र वर्मा—जी हां। बेंक से रुपया निकालने के लिये १७-१०-५३ के प्रस्ताव के ग्रनुसार उक्त भंडार के ग्रध्यक्ष एवं मंत्री के हस्ताक्षर होने चाहिये थे, परन्तु जिला सहकारी बेंक ग्राजमगढ़ के पास जब ५,१५ द २५ न० पै० की ग्रमानत पास करने का प्रार्थना-पत्र ग्राया तो उसके साथ यह प्रस्ताव नत्थी नहीं था। इसलिये बेंक ने केवल ग्रध्यक्ष के हस्ताक्षर पर रुपया दे दिया।

\*६--श्री रामसुन्दर पांडेय--क्या सहकारिता मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि श्राडिटर ने उक्त प्रकार की श्रपनाथी गयी पद्धति के विरुद्ध कार्यवाही करने की श्रपील की हैं ?

श्री वीरेन्द्र वर्मा--जी नहीं। केवल एतराज किया है।

श्री रामसुन्दर पांडेय—क्या सहकारिता मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि यह रुपया किसके नाम से ग्रमानत में था, किसने बेंक में प्रार्थना-पत्र दिया ग्रीर किसकी रुपया दिया गया ?

श्री वीरेन्द्र वर्मा---उत्तर में हैं कि ग्रध्यक्ष के हस्ताक्षर से रूपया लिया गया श्रीर कमलसागर भंडार के नाम से जमा है।

श्री रामसुन्दर पांडेय — हमते पूछा है कि किसके नाम से जमा था श्रीर कौन बैक में लें गया श्रीर किसने लिया ? नाम चाहिये?

श्री वीरेन्द्र वर्मा-श्री व्रजविहारी मिश्र, जो कमलसागर भंडार के श्रध्यक्ष हैं, लेने गय ग्रीर उन्हीं को रुपया दिया गया।

श्री रामसुन्दर पांडेय — क्या यह सही है कि सुपरवाइ जर पहले वाले प्रस्ताव को लेकर बैंक गया या खुद व्रजविहारी मिश्र लेकर गये ग्रीर बैंक वालों ने बिना पुरानी प्रतिलिपि को देखे क्यों रुपया दे दिया ?

श्री उपाध्यक्ष-पहतो हर व्यक्ति की साख की बात है।

श्री रामसुन्दर पांडेय—क्या यह सही हैं कि बेक के पास प्रस्ताव की प्रतिलिपि पहले से मौजूद थी तो फिर एक व्यक्ति को श्रवंधानिक रूप से रुपया क्यों दे दिया गया ?

श्री वीरेन्द्र वर्मा—चेंक के पास प्रेसीडेंट साहब खुव गये थे। बैक साख के ऊपर ग्रध्यक्ष को भी रुपया दे सकता है।

# सहकारी संघ, घाटमपुर का विघटन

\*१०—-श्री मोतीलाल श्रवस्थी--- क्या सहकारिता मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि सहकारी संघ, घाटमपुर, लिमिटेड, जिला कानपुर को गत ता० १०-२-४४ से मुश्रत्तल कर दिया गया है ? यदि हां, तो कारण क्या है ?

श्री वीरेन्द्र वर्मा—जी हां। संघ के संवालक मंडल द्वारा संघ का कुप्रबंध करने, हिसाब में गड़बड़ी करने तथा संघ के कार्य का श्रनुत्तरदायी ढंग से चलाने के कारण उसे मुग्रतल कर देना पड़ा।

\*११--श्री मोतीलाल ग्रवस्थी-- क्या सरकार कृपया बतायेगी कि सहकारी संघ, घाटमपुर जिला कानपुर के सम्बन्ध में कोई जांच-पड़ताल हो रही हैं? यदि हां, तो वह किस प्रकार की जांच हैं?

श्री वीरेन्द्र वर्मा---जी नहीं। जांच हो चुकी है जिसके फलस्वरूप संघ को विघटित कर दिया गया है।

श्री मोतीलाल श्रवस्थी—क्या माननीय मंत्री जी यह बतायेंगे कि यह सहकारी संघ घाटमपुर, जो ५ साल पहले विघटित हुग्रा था, उसके पुनः संगठित करने में वया-वया दिक्कतें हैं ?

श्री वीरेन्द्र वर्मा—जब यह देखा गया कि ठीक प्रकार से वह नल नहीं सकता है तो उसको विघटित कर दिया गया।

श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या माननीय मंत्री जी यह बतायेंगे कि यह संघ १९४४ में मुक्रतल किया गया था तो यह विघटित कब हुन्ना? इतने दिन बीच में लगने के क्या कारण हैं?

श्री वीरेन्द्र वर्मा—इसमें देरी ग्रवश्य हुई। इसके लिये जवाब तलब किया जा रहा है।

श्री मोती लाल ग्रवस्थी—यह सहकारी संघ किस तारीख को विचटित किया गया? श्री वीरेन्द्र वर्मा—दिनांक ४--६--५६ को ।

\*१२-१३--श्री गंगात्रसाव (जिला गोंडा)--[४ झप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।]

#### इटावा जिले में भट्ठों को कोयला

\*१४--श्री भुवनेशभूषण शर्मा--क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि इटावा जिले में कितने भट्ठे चल रहे हैं ग्रीर उनमें कितने सहकारी भट्ठे हैं ग्रीर कितने प्राइवेट ?

श्री जगमोहर्नांसह नेगी--४६ भट्ठे, जिनमें ३५ सहकारी है तथा २१ प्राइवेट स्वीकृत भट्ठे हैं।

\*१५--श्री भुवनेशभूषण शर्मा--क्या सरकार यह बताने की कृषा करेगी कि उपर्युक्त भट्ठों में से प्रत्येक को सन् ५६ में कितने वैगन कोयला दिया गया?

श्री जगमोहनसिंह नेगी--पह सूचना संलग्न तालिका "ग्र" तथा "ब" में दी गयी है।

#### (देखिये नत्थी 'ग' ग्रागे पृष्ठ ६०६-६१० पर)

श्री भुवनेशभूषण शर्मा—क्या सरकार यह बतायेगी कि यह जो प्राइवेट भट्ठे ह उनमें १२ ए क्लास के ग्रीर ६ बी क्लास के है तो यह ए ग्रीर बी क्लास के परिमट किन-किन ग्राधारों पर दिये जाते है।

श्री जगमोहनसिंह नेगी--उनके काम करने की क्षमता पर ।

श्री भुवनेशभूषण शर्मा—क्या सरकार बतायेगी कि जिस वक्त एप्लाई किया जाता है उस वक्त माननीय मंत्री जी क पास एसा कौन-सा यंत्र होता है यह जानने के लिये कि उनमें कितनी क्षमता है?

श्री जगमोहन सिंह नेगी—इसके लिये पहले वहां पर क्षेत्रीय कमेटी ग्रर्थात् पहले ग्रन्तिरम जिला परिषद् थी ग्रीर ग्रब फूड ऐडवाइजरी कमेटी है तथा प्राविशियल ग्रायरन ऐ॰ड स्टील कण्टोलर है, जो इसको देखते हैं।

#### गेहं तथा चावल का ऋय

\*१६--श्री ग्रमरनाथ--क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि प्रदेश के ग्रलग-ग्रलग जिलों में राज्य व्यापार योजना के ग्रन्तर्गत योजना के चालू होने से ग्रब तक कुल कितना चावल तथा गेहूं का स्टाक किया गया?

\*१७-- त्रया सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि श्रब तक कुल कितनी रकम का गेहं तथा चावल श्रलग-श्रलग जिलों में उपर्युक्त योजना के श्रन्तर्गत खरीदा गया?

श्री जगमोहनसिंह नेगी--१३ फरवरी, १६६० तक सरकार द्वारा खरीदे गये चावल श्रौर गेहूं की जिलेवार मात्रा तथा उनके मूल्य की एक तालिका सदन की मेज पर रख दी गयी है।

#### (देखिये नत्थी 'घ' ग्रागे पृष्ठ ६११-६१२ पर)

श्री ग्रमरनाथ—-त्र्या माननीय मंत्री जी यह बताने की कृपा करेगे कि किन जिलों से इस बात की शिकायत श्रायी है कि व्यापारियों के श्रतिरिक्त श्रन्य व्यक्तियों से चावल ख्रौर गेहं खरीदा गया ?

श्री जगमोहनसिंह नेगी--ऐसी कोई शिकायत कहीं से नहीं श्रायी।

श्री मोतीलाल श्रवस्थी--क्या माननीय मंत्री जी इस बात को ध्यान में रखते हुए कि कुछ गांव ऐसे हों जो दो जिलों के बीच में है तो क्या उन गांवों के बाक्षिन्दों (किसानों) को गल्ला बिकने की सुविधा देने के लिये सरकार विचार कर रही है ?

श्री उपाध्यक्ष--- दो जिलों के बीच में तो ऐसे बहुत से गांव होंगे।

#### श्री ग्रमरनाथ--यह चाबल ग्रौर गेहूं किन-किन रेट्स पर लरीदा गया?

श्री जगमोहन सिंह नेगी—ग्रेड २—चावल श्ररवा १८.७४ २०, सेल्हा १८.२५ ६०, ग्रेड २ ए०—चावल श्ररवा १६.७५ ६०, सेल्हा १६.२५ १०, ग्रेड २ स्पेशल—चावल श्ररवा ११.७५ ६०, मेल्हा १६.२५ १०, ग्रेड २—चावल श्ररवा ११.७५ ६०, मेल्हा १६.२५ १०, ग्रेड ४—चावल श्ररवा १५ ६० श्रीर सेल्हा १४.५० ६० फी मन । गेहूं बन्वेलराजी क्वालिटी १३ १०, फेयर ऐंड एवरेज क्वालिटी १४ ६० श्रीर फार्म क्वालिटी १५ १० फी मन ।

# गोरखपुर जिले में सस्ते अनाज की दुकाने

\*१८- श्री स्रमरनाथ-- या साध्य मंत्री बत व की क्या रेगे क न् १६५६ में गोरखपर जिले की प्रत्येक तहसील में कितनी-कितनी सरने गलने की काने सोली गर्या है? क्या स्रन्य प्राथियों के मुकाबिले, जिन विशेष योगसास्रों के आधार पर दुःसनटारों की नियक्ति की गयी, उसका विवरण सरकार सदन की मेज पर रक्षोंगी ?

श्री जगमोहनसिंह नेगी--गोरखपर जिले पातहसीला ने यन् १६४६ में खोली गई दूकानों की संख्या निम्नलिखित हः

तहसील का नाम		ब्कानी	रते सख्या
applies realists deales before territor deplote sources opinion formers		Married Statement ordered statement and the statement of	خجت فلنذ سجه مياه وشن متيان شيياء جسب يدينه
१सदर	• •	• •	७२
२—–बांसगांव	• •		७४
३फरेंदा			38
४महाराजगंज	• •		४२
		Specific plants and the	حجيلا خلقاء بمثبة يشتح نجيب فنجت بجيرت ويوس ويوس
		योग	२०५

# बुकानवारों की नियुक्ति से संबंधित विवरण संलग्न है। (देखिये नत्थी 'डः' आगे पृष्ठ ६१३ ५४)

श्री श्रमरनाथ--क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृषा करेगे कि इन दूकानों में से कितनी सहकारी संघ को श्रीर कितनी हरिजनों, बेकवर्ड क्लास कं लोगी तथा राजनीतिक पीड़ितों को दी गयी हैं?

श्री उपाध्यक्ष--यह तो भ्राप भ्रलग से भी पूछ सकते है।

श्री श्रमरनाथ — क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेगे कि जिन श्रिषकारियों के जिम्मे इन दूकानों को खोलने का श्रीषकार दिया गया था उनके विद्ध बहुत-सी शिकायतें श्रायी है कि उन्होंने दूकानों के खोलने में भेदभाव बरता है श्रीर श्रष्टाचार को प्रश्रय दिया है, जिसके कारण गड़बड़ों है श्रीर खाद्य सलाहकारिणी समिति से वहां के सब विधायकों ने इस्तीफा दे दिया है?

श्री जगमोहनसिंह नेगी—जी हां, विया था। में लुव गोरलपुर गया था श्रीर गोरलपुर के डिस्ट्रिक्ट मेंजिस्ट्रेट तथा वहां के विधायकों से मेंने बातकीत की थी सब बातें श्रापस में तय हो चुकी हैं, श्रव कोई इस्तीफा नहीं है।

# गोरखपुर जिला सहकारी फेडरेशन का निलम्बन

\*१६—श्री मदन पांडिय (जिला गोरखपुर)—क्या सरकार कृपया बतायेगी कि क्या गोरखपुर जिला सहकारी फेडरेशन के वर्तमान बोर्ड की निलम्बित किया गया ह? यदि हां, तो क्या सरकार उन कारणों को सदन के सम्मुख रखेगी जिनसे प्रभावित हो कर सरकार को ऐसा निर्णय करना पड़ा है?

प्रक्तोत्तर प्ररेष्ट

#### श्री वीरेन्द्र वर्मा--जी हां।

उक्त फेडरेशन में बहुत सी गडबड़ियां कपड़ा, भट्टा और कोयले के व्यापार में पाई गई। विभागीय अधिकारियों द्वारों फेटरेशन के निरीक्षण-पत्रों में दिये गये सुझावों की बोर्ड ने अवहेलना की तथा ब्राडिट नोट में सकितिक द्रापत्तियों की तामील भी नहीं की । संखालक संडल सहकारी कानन कायदों तथा विभागीय त्रादेशों का भी निरन्तर उल्लंघन करता रहा।

.\*२०--श्री मदन पांडेय--क्या लरकार गोरखपुर के डी०सी०डी०एफ०के निलम्बित पदाधिकारियों की सूची सदन के सम्मख रखने की कृपा करेगी?

श्री वीरेन्द्र वर्मा--पूरी बोर्ड जिलम्बित कर दी गई है जिसमें पदेन चेयरमैन जिलाधिकारी के ग्रातिरिक्त निम्न पदाधिकारी और डाइरेक्टर थे:--

१--श्री राधारमन दास .. वाइस प्रेप्तीडेंट

२—-बौधरी रामलखन चन्द 🙃 सेकेटरी

३—–श्री ए० पी० वर्मा 🔐 डाइरेक्टर

४--श्री ग्रक्षयवर्रासह

५--श्री हारिकाप्रसाद पांडेय

६--श्री गनेश पांडेय

७--श्री देवधारी उपाध्याय

८--श्री भृगुमुनी मिश्र

६--श्री विभूती राम

१८--श्री रमापति ग्रोझा

११--श्री क्यामलाल सिंह

१२--श्री गंगात्रसाद यादव

" \*२१--श्री मदन पांडेय--क्या सरकार यह कृषया बतायेगी कि गोरखपुर डी०सी०डी० एफ० में किसी गबन के खिलसिले में गिरफ्तारियां भी हुई है? यदि हां, तो क्या सरकार बतायेगी कि गिरफ्तार व्यक्ति कौन-कौन है तथा किन किन देफाग्रों के श्रन्तर्गत गिरफ्तार किये गये हैं?

श्री वीरेन्द्र वर्मा--जी हां। गिरफ्तार किये गये व्यक्ति फेडरेशन द्वारा स्थानीय हैदरबा जार में चलाई गई कपड़े की बूकान के भैनेजर श्री महेंद्र सिंह गिल तथा मुनीम श्री कुलन्दन सिंह है। इनकी गिरफ्तारियां किन धाराश्रों के श्रन्तर्गत हुई है इसकी सूचना श्रभी प्राप्त नहीं हुई है।

श्री मदन पांडेय-- त्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि यह जो भट्ठे के कोयले और करड़े के व्यापार में गड़बड़ी की सूचना मिली है वह लगभग कितने रुपये की होगी?

श्री वीरेन्द्र वर्मा--इसके लिये नोटिस की ग्रावश्यकता है।

#### बीज गोदामों में गवन

\*२२—श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी—क्या सरकार क्टाया बतायेगी कि गत तीन३ वर्षों में कृषि विभाग के प्रन्तर्गत कार्य करने वाले बीज गोदामों के संबंध में कितने गडन के मामले रिपोर्ट किये गये और कितने रिजस्टर किये गये?

श्री कालीचरण अग्रवाल--गत ३ वर्षों में कुल १४ मामले रिपोर्ट ग्रथवा रिजस्टर्ड हुए। जिनका विवरण निम्नलिखित है:

१९५६-५७ **そととの一とち** १

**3845-48** 

\*२३—श्रीमती राजेन्द्र किशोरी—क्या सरकार कृपया बतायेगी कि उपरोक्त गबन के मामलों में कितनी रकम गबन की गई?

श्री कालीचरण अग्रवाल--गबन की गई रकम का विवरण निम्नलिखित है:

		60
१९५६–५७	• •	30,886.88
१९५७-५८	• •	१,१३४.००
१६५८-५६	• •	५६,००७.इइ

\*२४--श्रीमती राजेन्द्र किशोरी--क्या सरकार ने इन गबन के मामलों मे श्रव तक क्या कार्यवाही की है?

श्री कालीचरण श्रग्रवाल--एक मामले में विभागीय कार्यवाही द्वारा संबंधित श्रिवकारी बरख्वास्त किया गया तथा हानि का कुछ हिस्सा बच्चल किया गया। सात मामले में विभागीय कार्यवाही हो रही है। छः मामले पुलिस के सुपुर्द है।

। श्री भुवनेशभूषण शर्मा—क्या सरकार बताने की कृता करेगी कि यह जो गबन के मामले दर्ज हुये थे श्रीर उन में जो रुपया वसूल किया गया तो क्या वह केस पुलिस के सुपूर्द किये गये थे?

श्री कालीचरण श्रग्रवाल—ऐसे जितने भी केसेज होते हैं उन मे सब से पहले विभागीय इंक्वायरी होती है श्रीर जहां रुपया चतूल हो जाता है श्रीर जुर्म भी सीरियस नहीं होता वहां विभागीय कार्यवाही करके छोड़ देते है या एन्ट्री वगैरह देते हैं लेकिन जो पुलिस में देने के काबिल होते हैं उन्हें दे भी देते हैं पुलिस में।

#### श्राजमगढ़ जिले में सस्ते श्रनाज की दुकानें बढ़ाने की प्रार्थना

\*२५—श्री मुक्तिनाथ राय (जिला ग्राजमगढ़)—-क्या खाद्य मंत्री बताने की क्रिंग करेंगे कि क्या ग्राजमगढ़ जिला खाद्य परामर्शवात्री समिति ने सितम्बर या श्रम्तूबर, १९५९ में कोई प्रस्ताव पास करके कि श्राजमगढ़ जिले में सौ सस्ते गटले की दुकाने श्रीर बढ़ा दी जायं सरकार के पास भेजा है?

श्री जगमोहर्नासह नेगी--जी हां।

\*२६--श्री मुक्तिनाथ राय--पिंद हां, तो सरकार इस पर क्या कार्यवाही कर रही है ?

श्री जगमोहन सिंह नेगी—उचित ग्रादेश दिये जा चुके हैं।

श्री मुक्ति नाथ राय—क्या मंत्री जी बतायेंगे कि सरकार की तरफ से क्या उचित श्रादेश भेजे गये हैं?

श्री जगमोहन सिंह नेगी---यही श्रादेश हैं कि जितनी दुकानों की श्रावश्यकता हो उतनी दुकानें खोली जायं?

#### श्रागरे में कोयले की कमी

\*२७---श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल (ब्रतुपस्थित)---क्या यह सही है कि ब्रागरा में राशन कार्ड में जो एक मन कोयला मिलता है उसके लिये भी एक दुकान से एक दिन मे सिर्फ २४ कार्ड वालों को कोयला देने की संख्या नियत है?

श्री जगमोहर्नासह नेगी—जी हां। कोयले की कमी के कारण दिसम्बर, १९५९ में १,००० मन से कम स्टाक वाले कोल डिपो होल्डर्स को प्रतिदिन २५ मन या सप्ताह यं १५० मन तक कोयला बेचने का ग्रादेश था। \*२८-३०-श्री गेंदासिंह (जिला देवरिया)--[४ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।]

जालौन जिले में सर्विस कोग्रापरेटिव सोसाइटियां बनने की जानकारी

\*३१--राजा वीरेन्द्रशाह (जिला जालौन) (म्रनुपस्थित)--वया सहकारिता मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि क्या जिला जालौन में (Service Co-operative Societies) बन गई हैं? यदि हां, तो कितनी स्रौर कहां?

श्री मोहनलाल गौतम-जी नहीं। प्रश्न का दूसरा भाग नहीं उठता।

\*३२--राजा वीरेन्द्रशाह (ग्रनुपस्थित)--यदि नहीं बनी हैं तो कब तक ग्रौर कैसो बनायो जायेंगी? क्या वर्तमान सहकारी समितियों को इसी में बदलने की योजना है ?

श्री मोहन लाल गौतम--१६६०-६१ में प्रयत्न किया जायेगा। वर्तमान ऋण सहकारी समितियों को साधन सहकारी समितियों में शर्ते पूरी होने पर बदला जा सकता है।

ब्रजमनगंज बीज भण्डार से वितरित धान के बीज की शिकायत

\*३३—-श्री गौरीराम गुप्त (जिला गोरखपुर)—-दिनांक २४ श्रगस्त, १९४९ के प्रश्न संख्या ३७ के उत्तर के कम में क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि प्रश्न ३७ का जो उत्तर दिया गया है वह किसके द्वारा जांच कराकर दिया गया है?

श्री कालीचरण अग्रवाल--जिला कृषि ग्रविकारी, गोरखपुर द्वारा।

श्री गौरीराम गुप्त--क्या सरकार कृता कर के बतायेगी कि जिस कृषि श्रिधकारी से जांच कराई गई उन्होंने किन-किन गांवों में जांच की श्रौर उनकी जांच के फलस्वरूप क्या-क्या फसल पैदा नहीं हुई ?

श्री कालीचरण श्रग्रवाल—मान्यवर, प्रश्न यह है कि जिनको बीज दिया गया था वह सभी लोग लौटाने श्राये श्रौर उन से पूछा गया तो उन्होंने कोई खास शिकायत नहीं की है, पूरो सूची है, यदि माननीय सदस्य देखना चाहें तो में दिखा दूंगा, इसमें लगभग डेढ़, दो सौ काश्तकार हैं जिन से रुपया वसूल हो चुका है। साधारणतः ६०-७० प्रतिशत वसूलयाबी हो जातो है, इस बार भो ६५ प्रतिशत हुई इससे पता चलता है कि पैदावार श्रौसतन ठीक हुई।

श्रलीगढ़ जिले के लिये ह्वीट फार्मिग पाइलेट प्रोजेक्ट योजना

\*३४—श्री नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ (जिला श्रलीगढ़)—न्या सहकारिता मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि किसी फोर्ड फाउन्डेशन स्कीम के श्रन्तगंत श्रलीगढ़ जिला गेहूं के विशेष उत्पादन तथा कृषि विकास के लिये चुना गया है। यदि हां, तो उसके विकास के लिये तृतीय पंचवर्षीय योजना में कि ने व्यय की योजना है? क्या सहकारिता मंत्री इस योजना के संबंध में कुछ विस्तृत जानकारी सदन को देने की कृपा करेंगे?

श्री कालीचरण श्रग्रवाल--फोर्ड फाउन्डेशन के तत्वावधान में उनके विशेषज्ञों की एक टीम ने भारत का दौरा करके कृषि उत्पादन के उद्देश्य से कुछ सिफारिशें कीं। भारत सरकार ने उस टीम की एक सिफारिश पर देश में सात पाइलेट प्रोजेक्ट स्थापित करने की एक माडल स्कीम तैयार की श्रौर उसी के श्राधार पर हमारी सरकार से भी एक ऐसी विस्तृत योजना बनाने को कहा जिसके अन्तर्गत एक ही उपयुक्त क्षेत्र में कृषि उत्पादन के लिये निर्धारित शर्तों के श्रनुसार श्रीष्ट उत्पादन के लिये निर्धारित शर्तों के श्रनुसार

म्रलोगढ़ जिले में एक पाइलेट प्रोजेक्ट स्थापित करने की योजना बना कर भारत सरकार को भेजा गई ग्रौर प्रभो वह उनके दिचार थोन है। ऐसो स्थिति में ग्रभो उस योजना को रूप-रेखा या उस पर व्यय का ग्रन्मान देना कठिन है।

श्री नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ—क्या मंत्रो जो गुःग्या बतायेगे कि इस विस्तृत योजना को बनाने के पहले श्रलोगढ़ के विधायफ तथा वहां की जिला अन्तरिम परिषद् को विश्वास में लिया गया था और सलाह लो गई थो ? यदि नहीं, तो इसमे क्या एठिनाई थी ?

श्री मोहनलाल गौतम—इस संबंध में केंद्रोय तरकार को तरफ से कुछ क्राइटेरियन श्राये थे कि यह यह शर्ते पूरो होनो वाहिंगे, उसमें कोई सलाह लेने का सवाल नहीं था, जहां शर्त पूरो हो सकतो था उसे देला गया श्रीर इसालिये उस की न्या गया।

श्री गेंदासिह—निया मंत्री जो बताने की छुपा करेंगे कि क्या केद्रीय सरकार की तरफ से यह शर्त भी रखी गई थो कि छुवि मंत्री का उस जिले से प्राना जरूरी है स्रोर उन्हीं का जिला उसके लिये रखा जाय?

श्री उपाध्यक्ष--यह तो ग्रापत्ति है।

श्री गेदासिह—मेद्रोय सरकार ने जिन इतों को रला था यह क्या है स्रोर उन मे जो मैने कहा वह भी है क्या?

श्री कालीचरण श्रग्रवाल—शादरणीय सदस्य की सूचना के तिये में बता दृं कि केंद्रोय सरकार की ७ द्रार्ते थी। पहनो द्रातं यह थो कि जिस जिले में यह श्रप्रणामो योजनाए चालू की जायं वह जिला गेहूं पैदा करने वाला हो, दूसरा नर्त यह था कि रवो की फसल की सिचाई के लिये नहर श्रादि के साधन भलाभांति उपलब्ध हों श्रोर वहा वर्षा भा श्रामतोर पर सभय से होती हो श्रोर वह वर्षा के हिसाब से पिछड़ा क्षेत्र न हो, तावरे नहा पर किसानों के लिये केंडिट फेसिलिटोज भो काफा हों श्रोर उन्हें बढ़ाये जाने क भा सभावना हो। चौथो बात यह थो श्रोर यह भो थो कि वहां पर सोयल ऐने लिसिस को भा सुविधा होनो चाहिये। छठां नात यह थो कि गेहूं को पैदाबार न तो बहुत नावा हो श्रोर व बहुत ऊंची ताकि हम श्रोसतन जगह पर प्रयोग कर सके। मात्रों बात यह थो कि लाइब स्टाक के डेवलपमेट को फेसिलिटो उस जिले में होनो चाहिये। श्रव रही यह बाल कि माननोय मंत्रों का जिला है तो श्रगर यह सारी हातें उस जिले में हों तो उसको इसित्यें कि मत्री जो का जिला है सजा नहीं दो जा सकतो।

श्री चन्द्रजीत यादव—जब राज्य सरकार ने इस योजना को श्रपने यहां लागू करने का प्रस्ताव स्वोकार किया तो भारत सरकार से इस बात का जांच-परताल कर ली थो कि इस संबंध में राज्य सरकार को व्यय का कौन-सा हिस्सा बहन करना पड़ेगा?

श्री मोहनलाल गौतम--जहां तक हमारा खयाल है कि राज्य सरकार को कुछ नहीं वहन करना पड़ेगा, सारो योजना वहीं से फाइनेस होगो।

श्री रामस्वरूप वर्मा—इस बात को देखते हुए कि गेहूं उत्पादन करने वाले दूसरे जिले भी है श्रौर तोन साल से लगातार गेहूं की प्रतियोगिता में प्रथम श्रा रहे है ऐसे जिलों में न खोलने का क्या कारण है?

श्री कालीचरण श्रग्नवाल--केवल एक ही जिला लिया जा सकता था सब जिले नहीं।

\*३४-३७--श्री जगन्नाथ प्रसाद (जिला खीरी)--[४ श्रर्थल, १६६० के लिये स्थगित किय गये।]

# सहकारी समिति श्री कृष्ण इण्टर कालेज, बरहज के हिसाब में गड़बड़ी

\*३८--श्री उग्रसेन (जिला देवरिया) (ग्रनुपिश्वत)--क्या सन्कारिता मत्री बतायेगे कि सहकारी समिति, श्रो ठूष्ण इंटर कालेज, बरहज, जिला देवरिया की स्पेशल ग्राडिट रपट में गत वर्ष में ३०,००० र ये के गोलमाल का चार्च उवत समिति पर लग या गया है? यदि हां, तो सरकार ने उस पर कौन-सी कार्यवाही की?

श्री मोहनलाल गौतम—-जो हां। स्टोर (सिमिति) के मर्गा को ३०-६-५६ ग्रौर १-२-६० को हिसाब में गड़बड़ी करने दाले व्यक्तियों में रुप्या दसूत करने के लिये लिखा गया लेकिन उन्होंने न रुपया दसूरा किया ग्रोर न ही कोई उत्तर दिया। सहकारी निरोक्षक ने स्टोर के हिसाब-किताब की किए में जाब की है। सि के संवालक मंडल को निलंबित करों के लिये तथा बकायेदार सदस्यों पर सालसी कार्यवाही दरने के लिये कार्यवाही वी जा रही है।

\*३६--श्री उग्रसेन (ग्रापिश्यन)--क्या सहकारिता सत्री कृषा कर कं सहकारी सिमिति श्री फूष्ण इंटर कालेज, बरहण, जिला देवरिया की गत वर्व की स्पान्न ग्राडिट रण्ट की प्रतिलिधि सदन की मेन पर रखेने?

श्री मोहनलाल गौतम—कथित ग्रांडिट रिपोर्ट इतनी विस्तृत है कि उसकी प्रतियां तेयार करने में जो श्रम तथा सथय रागेगा, सूचना की उपयोगिता के देखते हुए ग्राद्यक प्रतीत नहीं होता।

# भ्रलीगढ़ जिले के लिए ह्वीट फार्मिंग पाइलेट प्रोजेक्ट योजना

\*४०—-श्री देवकीनन्दन विभव (जिला म्नागरा) (भ्रमुपरिषत)—-पया सहकारिता मंत्री यह बनाने की कृषा करेंगे कि भ्रापेगढ़ में खुलने वाले ह्विट फार्सिंग पाइलेंट प्रोजेक्ट की योजना क्या है ग्रोर उस पर कितना रुपया व्यय होगा?

श्री भोहनलाल, गौतम—कोई फाउन्डेशन के तत्वाध न में उनके विशेषओं की एक टीम ने भारा का दोरा करके कृषि उत्पाद । के उद्देश्य से कुछ सिफारिश की। भारत सरकार ने उस टीम का एक निफारिश पर देश में मात पाइलट श्रोजेक्ट स्थापित करने की एक माइल स्क्राम नैयार का और उसी के आधार पर हमारी सरकार से भी एक ऐसी विस्तृत बीजना बनाने को कहा जिसके आत्रांत एक ही उपयुक्त क्षेत्र में कुछ उत्पादन के लिखे नि श्रीरित शर्ता के आधुक्षार आधिकतम सामन उपलब्ब हों। चुनान्चे उन निर्धारित शर्ती के आधुक्षार आधिकतम सामन उपलब्ब हों। चुनान्चे उन निर्धारित शर्ती के आधुक्षार आधी गई जी के पाइलेड शोगेन्ट स्थापित करने की योजना बगा कर भारत स्वरूप को योजी गई और अभी वह उन हे विचाराधीन है। ऐसी स्थिति में अभी उस योजना को रूपरेखा या उस पर व्यय का अनमान देना कठिन है।

# बेलामूडी तथा बसहरा ग्रामों के बीच ऊसर भूमि

\*४१—श्री कल्याणचन्द मोहिले (जिला इलाहाबाद) (श्र-पिस्थित)—वया सरकार कृता कर बतायेगी कि क्या वह जिला इलाहाबाद, तहसील करछना, परगनः बारा के ग्राम बेलामूडो तथा बसहरा के बीच में जो हजारों बीघा जमीन ऊसर पड़ी है उस को उपजाऊ करवाने के कोई उपाय कर रही है? यदि हां, तो क्या?

# श्री मोहन लाल गौतम--श्रभो तो कोई ऐमी योजना नहीं है। सुल्तानपुर जिले में कोयले का वितरण

\*४२--श्री काशीप्रसाद प्रांडिय (जिला सुल्तानपुर) (ग्रनुपस्थित)--वया खाद्य मंत्री यह बताने की एया करेगे कि १ अप्रल, १६५७ से ३० जून, १६५६ तक सुरतानपुर जिले मे प्रदेशीय सरकार द्वारा कुल कितना कोयला दिया गया?

#### श्री जगमोहर्नासह नेगी-- ६२१ वंगन।

अ४३—श्री काशीप्रसाद पांडेय (ग्रन्पस्थित)—क्या खाद्य मंत्री यह भी बताने की कुना करेगे कि सुल्तानपुर जिले मे श्रप्रेल, १९४७ से जून, १९४९ तक कितना-कितना कोयला सहकारी भट्टों एवं व्यक्तियों वा संस्थाग्रों को दिया गया?

# श्री जगमोहर्नासंह नेगी--सूचना निम्न प्रकार ह:

				वैगन
सहकारी भट्टे	• •	• •	• •	४७७
स्वोक्तत निजो ईंट भट्टे व्यक्तियों एवं संस्थाग्रों	• •	• •	• •	११७
व्यक्तिया एव सस्याम्रा	• •	• •	• •	२७
		_		كالمر خوار والمارة والمارة والمارة والمارة
		योग	* *	६२१

# \*४४--श्री क्रजनारायण तिवारी---[हटा दिया गया। ]

#### राज्य व्यापार योजना पर व्यय

\*४५—श्री क्रजनारायण तिवारी—क्या सरकार कृपया बतायेगी कि राज्य व्यापार योजना मे प्रतिवर्ष कितना व्यय होगा ?

श्री जगमोहनसिंह नेगी—चूंकि राज्य व्यापार योजना श्रभी पूर्णरूप से कार्यान्वित नहीं की गई है श्रतः यह बतलाना सम्भव नहीं ह कि इस पर प्रति वर्ष कितना व्यय होगा।

श्री ब्रजनारायण तिवारी—मंत्री जी बतायेंगे कि श्राशिक योजना मे कितना व्यय हो रहा है?

श्री उपाध्यक्ष--इसके लिये दूसरी सूचना दोजिये।

शाहजहांपुर जिले में कथित डिस्ट्रिक्ट डेवलपमेण्ट कोन्र्यापरेटिव सोसाइटी

\*४६—श्री रूमिसह (जिला शाहजहांपुर)—क्या सरकार बताने की कृषा करेगी कि शाहजहांपुर डिस्ट्रिक्ट डेवलपमेट कोम्रापरेटिव सोसाइटी के मैनेजिंग डाइरेक्टर का चुनाव तारीख ४-२-६० को २ बजे दिन को हुन्ना?

श्री वीरेन्द्र वर्मा—शाहजहांपुर जिले में डिस्ट्रिक्ट डेवलपमेट कोग्रापरेटिव सोसाइटी के नाम की कोई सहकारी संस्था नहीं है।

\*४७--श्री रूमिंसह--क्यायह सही है कि इस चुनाव के एक घंटा पूर्व उसी दिन बिना जिले के सिफारिश के सरकार द्वारा तीन व्यक्तियों को नामिनेट किये जाने की सूचना पहुंची ?

श्री वीरेन्द्र वर्मा--- प्रक्त नहीं उठता।

\*४८-श्री रूम सिंह--क्या एक घंटा यूर्व सूचित नामिनेटेड तीन सवस्य उस दिन चुनाव मे सम्मिलित हुये? यदि हां, तो इतनी शीध्र सूचना उनको किस प्रकार दी गई?

श्री वीरेन्द्र वर्मा---प्रक्त नहीं उठता।

श्री रूमिंसह—मंत्री जी बतायेंगे कि शाहजहांपुर में कोई डिस्ट्रिक्ट डेवलपमेट बैक है श्रीर उसका चुनाव ४-२-६० को हुश्रा था?

श्री उपाध्यक्ष--इसके लिये दूसरी सूचना वीजिये।

\*४६-५१--श्री ग्रब्दुल रऊफ लारी (जिला गोरखपुर)---[४ भ्रप्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।]

\*५२-५४--श्रीमती विद्यावती वाजपेयी (जिला हरदोई)--[४ स्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।]

# राज्य से धान व गेहूं का निर्यात

\*५५--श्री गनेशीलाल चौधरी (जिला सीतापुर) (ग्रनुपस्थित)--क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि सन् १६५६ में कितना धान व गेहूं सरकार ने किसानों से प्रोक्योर किया?

श्री जगमोहर्नीसह नेगी--किसानों से सीधे कोई खरीदारी नहीं की गई।

\*५६-श्री गनेशीलाल चौधरी (ग्रनुपियन)-इसमे से कितना धान सरकार नेभारत सरकार को देश के दूसरे सूत्रों में बांटन के लिये दिया?

श्री जगमोहनींसह नेगी--- प्रश्न नहीं उठता।

\*५७—श्री गनेशीलाल चौधरी (ग्रनुपस्थित)—सन् १६५६ मे प्रदेश मे कितने टन धान की खपत हुई?

श्री जगमोहर्नासह नेगी --प्रदेश में सरकार द्वारा घान त्रितरित नहीं किया गया।

\*५८-६०-श्री विश्रामराय (जिला भ्राजमगड़)--[४ भ्रत्रैल, १६६० के लिये स्थिति किये गये।]

# पीलीभीत उपनिवेशन योजनान्तर्गत ग्रधिगृहीत भूमि

\*६१—श्री बंशीधर शुक्ल (जिला खीरी)—क्या सरकार कृपया बतायेगी कि पीलीभीत उपनिवेशन योजना के श्रन्तर्गत किन-किन गांवों की कितनी-कितनी जमीन एक्वायर की गई है ?

श्री कालीचरण ग्रग्नवाल—पीलीभीत उपनिवेशन योजना के लिये लैन्ड एक्वि-जीशन ऐक्ट, १८६४ के ग्रन्तर्गत ग्रभी तक केवल कबीरगंज ग्राम मे ७०३.५३ एकड़ भूमि एक्वायर करके उस पर ग्रिधिकार किया जा चुका है।

\*६२—श्री बंशीधर शुक्ल—क्या सरकार क्रपया बतायेगी कि इस जमीन की तुड़वाई में कितना पैसा खर्च किया गया है श्रीर कितने एकड़ जमीन कितने दिनों में तुड़वाई गई?

श्री कालीचरण श्रग्रवाल--इस ७०३.५३ एकड़ भूमि मे से लगभग ३०० एकड़ भूमि तुड़वाई जा चुकी है जिस पर ५५ रुपया प्रति एकड़ के हिसाब से १६,५०० पया व्यय हु श्रा है। यह ३०० एकड़ भूमि मार्च, १९५९ से मई, १९५९ तक तोड़ी गई।

श्री वंशीधर शुक्ल--श्या सरकार बतायेगी कि जो जमीन ली गई है यह किसानों की यी परतो थी या ग्रीर किसी की थी?

श्री कालीचरण ग्रग्रव।ल--यह भूनि ग्रधिकतर बड़े-बड़े फारमर्स की थी।

श्री शिवप्रसाद नागर (जिला खोरी)—क्या माननीय मंत्री बतलायेंगे कि जो बड़े-बड़े फारमर्स थे उनम कितने ऐसे थे जो ४० एकड़ से ज्यादा के थे?

श्री कालीचरण श्राग्रवाल—मेरे पास इति। सूचना नरीत कि जिनने फारसंसं ४० एक इसे ऊपर हो ये लेकिन यह बनता सकता है कि रूप कारतकारों ने जमोन सी गयी है श्रीर कुत्र जानि ५०३ एक इसे कि पत्र नगता ज समता है। निवन एक बात यह साहि कि जो १० हजार एक इजने ना गया का कि प्रिकार पन जिसान श्रीर ग्राम नगाज से नो गयी है श्रीर बीच में जो त्यार प्रतिह डाकी एक का भागने के लिये यह श्रावक्षण हो जाता है कि उप जगहों को निया जाय। तो जो काश्तक र बीच में पड़ते थे उन्हों की जनीन जो गती है।

श्री चन्द्रजीत यादव -- गाउगा पिनिति ने रागसर तथा है। गात की सिफारिश की है कि जिया व्यादा मेजा। एर हो राग रागति देशों हुये खे। मा उत्ती लाभप्रद नहीं हु इसलिय उसकी जन्द्र कर दिया जाय तो सा गरकार द्रम कत पर विचार कर रही हु कि उसकी चन्द्रकर दिया जान या उसके प्यास्त को नाम स्था जाय?

श्री मोहनलाल गौतम -- ज्य पर िरात तर तरह के प्रश्नों हो देवना इता। श्रामन नहीं है प्रोंकि हई बर्ग होना होना है कि हुई हजार एकड़ जानेत हमने दिनते न जा, मगर बीलि में क्षेत्र हमने जो श्रामन के हैं एक हमने लोग श्रामन के त्रीर उन हो त्रीर कि है के देवन होता कि क्षेत्र जाने वस के त्रीर हमांव हमारे यहां नहीं होना। लेकिन गर्वते के को देवन हाला कि क्षेत्र की काथरा हुआ। श्रीर जग फार्स्ट हो। में न न न न न हो श्रीर का लाकि जन हो हमसे होई महत्त्व ही सिली।

श्री कालीचरण श्रिग्रवाल—-नियमानसार जो मन्नायजा दिया जाता ह यह जरूर दिया गया होगा या नही दिया होगा श्रोर जिनकी जमीन ली जाती ह उनको जो श्रीधकार होते हैं मिले होंगे।

श्री देवनारायण भारतीय (किला झाहनहां रूर)—साननीय मंत्री जी ने ग्रपने उत्तर में यह बतलाया कि ५५ रुपये की एकड़ उस हे तोड़ने में व्यय हुया ग्रोर २०० एकड़ जमीन तोड़ने में प्रायः १६ हजार क्पया व्यय हुया गौर दूसरी श्रोर माननीय मत्री जी ने यह भी बतलाया कि यह जमीन फारमर्स से लो गयी तो फारनर्स के पास तो तोड़ी हुई जमीन पहले से होगी, उस पर ५५ रुपया की एकड़ व्यय केसे हुया श्रोर १६ हजार व्यय किस काम में किया गया?

श्री मोहनलाल गौतम--यह जरूरी नहीं है कि फारमसं के पास जमीन जो हो वह तोड़ी हुई हो।

लखनऊ में कृषि विभाग के कार्यालयों की इमारते

\*६३—श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी (जिला झांसी)—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि लखनऊ में कृषि विभाग श्रपने समस्त कार्यालयो श्रावि के लिये कितनी, कोन-कौन सी इमारते, कितने-कितने रुपये मासिक किराये पर, किस-किस तारीख से लिये हैं?

# श्री कालीचरण ग्रग्रवाल—वांछित सूचना संलग्न सूची मे दी हुई है। (देखिये नत्थी 'च' ग्रागे पृष्ठ ६१४ पर।)

\*६४-श्री सुदामा प्रसाद गोस्वामी-क्या सरकार यह बताने की कृषा करेगी कि क्या सरकार का विचार उक्त विभागों के लिये श्रयनी इमारते बनवाने का है यदि हां, तो कब तक ?

श्री कालीचरण श्रग्रवाल—जी हां, लगभग १० लाख रुपये की लागत की एक इमारत बनवाने का प्रस्ताव हैं किन्तु धनाभाव के फलस्वरूप उसे फिलहाल मुल्तवी कर दिया गया है।

श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी—क्या माननीय मंत्री बतलायेंगे कि दिसम्बर, ४८ से ५६ तक लगभग ६ इमारनें किराये पर ली गयी है ग्रौर उनका ढाई हजार रुपया किराया विया जा रहा है तो इतना ग्रधिक किराया किस नियम से दिया जा रहा है ?

श्री उपाध्यक्ष--ग्रधिक किराया दिया जा रहा है, यह कैसे साबित हुन्ना ?

श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी—एक इमारत का ८०० ध्पया वार्षिक किराया पड़ता है तो यह हाउस रेट कंट्रोलर की राय से दिया जा रहा है ?

श्री कालीचरण श्रग्रवाल—इस पर मै उत्तर नहीं दे सकूंगा। मेरे खयाल से उस जगह की जरूरत को समझते हुए जो ग्रिअकारियों ने मुनासिब समझा होगा वह किया होगा।

## मऊरानीपुर ग्रनाज मंडी में कथित क्षति

\*६५—श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी—क्या सरकार यह बताने की भी कृपा करेगी कि जनवरी, १६६० के प्रथम सप्ताह में मऊरानीपुर जिला झांसी की गल्ला मन्डी में व्यापारियों ने गल्ला खरीदने से इंकार कर दिया था जिसके कारण किसानों का हजारों मन गेहूं, ज्वार, तिली, बाजरा, ग्रादि गल्ला बाजार में पड़ा रहने से किसानों को हानि व मुसीबत उठानी पड़ी? यदि हां, तो इसका क्या कारण था?

श्री जगमोहनसिंह नेगी---जी नहीं। प्रक्त का दूसराव तीसराभाग नहीं उठता।

श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी—क्या माननीय मंत्री जी को इस बात की सूचना है कि जनवरी के प्रथम सप्ताह में वहां के किसानों का एक डेपुटेशन तौलने वालों के साथ तहसील-दार से मिला था श्रौर तहसीलदार ने प्रयत्न करके श्राधा माल मंडी का उस दिन उठवाया था?

श्री उपाध्यक्ष--इसके लिये ग्रलग नोटिस दीजिये।

### जौनपुर जिले में कोयले की कमी

\*६६——श्री नागेंदवरप्रसाद (जिला जौनपुर)—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जहां पर ईंट के भट्ठें नहीं लगे है, वहां वालों को निजी ईटा पकाने के लिये कोयला देने के सम्बन्ध में क्या व्यवस्था की गयी है ?

श्री जगमोहनसिंह नेगी—ऐसे लोगों को जिले मे समय-समय पर उपलब्ध एडहाक कोटे में से या सम्भव हुन्ना तो जिले के कोटे में से कोयला दे दिया जाता है।

\*६७—श्री ॄनागेदवरप्रसाद—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जिला पूर्ति ग्रिधिकारी, जौनपुर के पास जुलाई, सन् १९५६ से १५ दिसम्बर, १९५६ तक उपर्युक्त निजी कार्यों के लिये कोयला प्राप्ति के कितने ग्रावेदन-पत्र ग्राये ग्रीर उसकी पूर्ति की क्या व्यवस्था की गई?

श्री जगमोहर्नासह नेगी—एसे ८० प्रार्थना-पत्र जिला-पूर्ति ग्रधिकारी के पास वांछित समय में प्राप्त हुये जिसमे से ४ प्रार्थियों को जिले के स्पेशल कोटे में से कोयला दिया जाना सम्भव हो सका।

भी नागेंदवरप्रसाद—क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि दोष व्यक्तियों को कोयला देने के बारे में क्या व्यवस्था की जा रही है ? श्री जगमोहनसिंह नेगी -- प्रभी तक तो कोयला शहरों में दिया जाता वा मगर हमने ग्रव यह किया है कि तर्मीलां में भी एक एक डियो खोलेंगे।

#### खीरी जिले में धान के बीज की वसूली मुल्तवी करने की प्रार्थना

\*६८—श्री शिवप्रसाद नागर—श्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जिला खीरी के श्रिसस्टेंट रजिस्ट्रार कोग्रापरेटिव ने जनवरी, १६६० के प्रथम सप्ताह में डिप्टी रजिस्ट्रार कोग्रापरेटिव को कोई पत्र लिखा है जिसमें धान के बीज की वसूली में सूखा पड़ जाने के कारण किसानों को श्रदायगी के लिये मोहलत देने की सिफारिश की हैं? यदि हां, तो यह मोहलत दी गई या नहीं? यदि गहीं, तो क्यो ?

श्री वीरेन्द्र वर्मा -- जी नहीं । प्रश्न का बूसरा भाग नहीं उठता।

श्री शिवप्रसाद नागर—यह पत्र श्राया है श्रीर मंत्री जी से इसकी सूचना दिया ली गयी है, क्या पुनः मंत्री जी इसकी जांच करने की कृपा करेंगे ?

श्री मोहनलाल गौतम—उम्मीव तो नहीं है कि छिपाने की किसी ने कोशिश की हो। श्रव तक न श्राया हो यह बात दूसरी है या मुनासिब समझा हो तो उसको वहीं हिसपोज श्राफ कर दिया हो। लेकिन यहां में इतना निवेदन कर दूं कि एक बड़ा जटिल प्रश्न है कि जो कर्जा श्रीर तक वी गवर्नमेंट वेती है तो यह तो श्रासान है गवर्नमेंट के लिये कि उसकी वसूली मुल्तवो कर वे या माफ कर वे लेकिन जो कोश्रापरेटिय लोन्स है, चाहे वह काइन्ड में हों या कैश मे हों उनकी मुल्तवी श्रीर माफी में विक्कत यह है कि उसकी तो दूसरे को ले जाकर देना है। रिजर्व बंक से जो रुपया श्रायेगा वह उधार वे विया जायगा किसानों को। श्रव श्रगर किसान की फसल खराब हो गयी श्रीर वह उसे नहीं वे सकता तो श्रगर रिजर्व बंक को वायस नहीं होगा तो फिर वहां से मिलेगा नहीं। श्रसल में यह कठिनाई है।

श्री उपाध्यक्ष—इस बारे में श्राप क्या कह रहे हैं कि पत्र श्रायाया नहीं, इसकी जांच श्राप पुनः करेंगे ?

श्री वीरेन्द्र वर्मा प्रिसस्टेंट रिजस्ट्रार ने डिप्टी रिजस्ट्रर के पास इस ग्राशय का एक पत्र भेजा था कि धान न वसूल किया जाकर नगदी में वसूल कर लिया जाय। माफी के लिये कोई पत्र नहीं भेजा।

श्री शिवप्रसाद नागर—मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जो पत्र प्रश्न लिखा है और जिस पत्र के बारे में ग्रभी ग्रापने बताया है उस पर क्या विचार किया गया है ? उनको मुल्तवी दी जा रही है या नहीं ?

श्री वीरेन्द्र वर्मा—केन्द्र के उप—प्रबन्धक ने जिले के ग्रसिस्टेंट रिजस्ट्रार की मार्फत कोग्रापरेटिव इंस्पेक्टर्स को यह श्रादेश दे दिया है कि जहां बीज भंडार है ग्रौर बीज तकसीम हुग्रा है वहां ग्रगर माल विभाग ने माफी दी है तो उन स्थानों पर यह प्रक्र सोचा जा सकता है, लेकिन माल विभाग ने कहीं माफी दी हो ऐसी रिपोर्ट उप-प्रबन्धक के पास नहीं श्रायी ।

श्री शिवप्रसाद नागर—पैने प्रश्न मुल्तवी का किया है, माफी का नहीं। श्री बीरेन्द्र वर्मा—ऐसी कोई चिट्ठी नहीं प्राप्त हुई।

\*६६-७०-श्री मदनगोपाल वैद्य (जिला फेजाबाव)--[४ ग्राप्रैल, १६६० के लिये स्थिगित किये गय ।]

#### प्रतापगढ़ जिले में खाद्यान्नों का भाव

\* १ --श्री हरकेशबहादुर (जिला प्रतापगढ़) ( ग्रनुपस्थित )-- त्र ना सरकार कृपया बतायेगी कि प्रतापगढ़ जिले में कितना ज्दार १६४८-४६ में सरकारी सस्ते गल्ले की दुकानों को दिया गया था श्रीर कितना बिक. ?

श्री जगमोहनसिंह नेगी—प्रतापगढ़ जिले में १६५८—५६ में सरकारी सस्ते गल्ले की दुकानों को ४१५५ मन ज्वार दिया गया श्रीर उसमें से उपरोक्त वर्ध मे ३०६५ मन २६ सेर १५ छटांक ज्वार बिका।

\*७२—श्री हरकेशबहादुर (ग्रनुपस्थित)—क्या सरकार छपया बतायेगी कि चावल का, ज्वार का ग्रीर गेहूं का प्रतापगढ़ जिले में सरकारी हुकानों के लिये ग्रीर खुले बाजारों में ३१-१२-५६ को क्या निर्ख था ?

श्री जगमोहन सिंह नेगी--३१-१२-१६५६ को प्रतायगढ़ जिले में सरकारी दुकानों के लिये ग्रौर खुले बाजारों में चावल, गेहूं तथा ज्वार के भाव फुटकर में इस प्रकार थे:

Description of the last last last last last last last last		<b>युकानों</b>	पर	खुले	बाजारों में
hang ikuli kentirat, jawa sang unia kenterbanap keneramat kana kenal-kalag lapat dalah kantiratif kenti t		सेर	छ०	सेर	題。
चावल (३) ग्ररवा	• •	२	Ð	२	o
चावल (३) भ्ररवा चावल (३) सेल्हा	• •	२	8	२	१
गेहूं विदेशी गेहूं देशी	• •	२	१०	••	••
गेहूँ देशी	• •	२	Ę	२	8
ज्यार	• •	3	8	₹	5

# बरेली जिले के देहाती क्षेत्र में सस्ते ग्रनाज की दुकानें न होना तथा फूड एडवाइजरी कमेटी की मीटिंगें

\*७३—श्री शिवराज बहादुर (जिला बरेली) (श्रनुपिस्थत)-क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि बरेली जिले के देहाती क्षेत्र में कुल कितनी सस्ते गल्ले की दुकानें हैं ?

श्री जगमोहनसिंह नेगी-कोई नहीं।

\*७४—श्री शिवराजबहाद्र (ग्रनुपस्थित)—क्या सरकार यह भी बताने की कृपा करेगी कि जनवरी, सन् १९५९ से जनवरी सन् १९६० तक बरेली जिले की फूड एडवाइजरी कमेटी की कुल कितनी मीटिंगें हुईं?

श्री जगमोहनसिंह नेगी-तीन मीटिंगें हुईं।

# पूर्ति विभाग, जिला बलिया में नियुक्तियां

\*७५—श्री गौरीशंकर राय—क्या खाद्य मन्त्री कृपया बतायेगं कि बिलया जिले में पूर्ति विभाग में पिछले एक साल में कितनी ऐसी नियुक्तियां हुई जिनके लिये रोजगार बफ्तर से नाम नहीं मांगें गये ?

श्री जगमोहनसिंह नेगी --- बिलया जिले में पूर्ति विभाग में कोई नियुक्ति पिछले एक साल में ऐसी नहीं की गई जिसके लिये रोजगार दफ्तर से नाल न मांगे गये हों।

, ı

श्री गौरोशंकर राय—क्या माननीय मंत्री जी को ज्ञात है कि नाम मांगे गये उसके बावजूद भी मांगे हुये नानों में से न भर्ती करके उनके बाहर में भर्ती हुई है ?

श्री उपाध्यक्ष-पहतो वह कह रहे हैं कि ऐसा नहीं हुआ।

श्री गौरीशंकर राय—श्रीमन्, मैने सवाल पूछा कि नाम मागे गये या भही तो उन्होंने कहा कि जरूर मांगे गये। इस पर मेरा प्रश्नयह है कि नाम मंगाने पर भी उसमें से भर्तीन कर के बाहर से भर्ती की गयी।

श्री जगमोहनसिंह नेगी—जहां पर उस योग्यता के नहीं मिलते वहां पर बाहर के श्रावमी रख लेते हैं।

श्री गौरीशंकर राथ—क्या यह सही है कि जिस मिनिमम योग्यता के लोग मांगे गये थे उस योग्यता के लोग भेजे गये थे लेकिन उनको न रखकर किसी दूसरे को रख लिया है ?

श्री जगमोहनसिंह नेगी--हो सकता है कि पर्तनल इंटरव्यू में कोई श्रावमी उनको ज्यावा श्रच्छा मालूम हुआ हो ।

श्री गौरोशंकर राय--पर्सनल इटरव्यू का प्रश्न ही नही पैवा हुआ।

श्री उपाध्यक्ष--इस तरह से श्रापस में बात करना तो ठीक नहीं है।

\*७६-७७--श्री ऊवल (जिला वाराणसी)--[४ श्रव्रैल, १६६० के लिये स्थाित किये गये।]

#### राशन में भिन्नता

\*७८—श्री कल्याणचन्द मोहिले—क्या सरकार कृपया बतायेगो कि क्या प्रदेश में चलने वाली सरकारी गल्ले की दूकानों पर ढ़ाई सौ (२४०) रुपये मे जिनकी भ्राय ग्रिविक है उनको देशी गेहूं तथा चावल दिया जाता है श्रीर ढाई सौ रुपये से जिनकी भ्राय कम है उनको विदेशी गेहूं तथा चावल दिये जाते हैं ? यदि हां, तो इस भिन्नता के क्या क्या कारण है ?

श्री जगमोहनसिंह नेगी—केवल पंच महानगरों, मेरठ तथा बरेली में २४० रुपये से श्रिषक मासिक श्राय वालों को सरकारी गल्ले की दूकानों से राशन मिलता है श्रौर उनको देशी गेहूं तरा चावल दिया जाता है। उपरोक्त मासिक श्राय से कम वालों को विदेशी गेहूं श्रिष्टा होल मील श्राटा दिया जाता है। इस भिन्नता का कारण यह है कि उपरोक्त नगरों में २४० रुपरे तक की श्राय के व्यक्तियों का राशन केन्द्रीय सरकार देती है इससे श्रिष्टक श्राय के व्यक्तियों को प्रदेशीय सरकार श्रपने स्टाक से कुछ समय से श्रस्थायी रूप से गल्ला दे रही है।

\*७६-८१-श्री नत्यूसिह-[४ अप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।]

\* दर-श्री गौरीशंकर राय-[४ अप्रैल, १६६० के लिये स्थागित किया गया।]

नोट:--तारांकित प्रश्न ७५ के उपरान्त प्रक्रनोत्तर का समय समाप्त हो गया।

# कानपुर जिले में चूहे बढ़ने की शिकायत

\* द ३ -- कुंवर श्रीपाल सिंह (जिला जौनपुर) -- क्या सरकार कृपया बतायेगी कि क्या यह सत्य है कि पिछले साल जित प्रकार चूहों की श्रत्यधिक संख्या बिलया जिला में हो गईथी उसी प्रकार इस वर्ष कानपुर जिले में भी चूहे बहुत बढ़ गये है जिससे वहां की जनता परेशान है ? यदि हां, तो सरकार इसकी रोज-थाम का क्या उराय कर रही है ?

श्री भोहनलाल गौतम--जी नहीं।

\*८४:-८५--श्री होरीलाल यादव (जिला फर्रुखाबाद)--[४ अप्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।]

गन्ना, मूंगफली, गेट्टं, जौ, मक्का, ग्ररहर का उत्पादन

\*द६--श्री देवकीनन्दन विभव--क्या सहकारिता मन्त्री यह बताने की छत्। करेंगे कि प्रदेश में गन्ना, मूंगफली, गेहूं, जौ, मक्का, अरहर का उत्पादन गत ४ वर्ष में प्रतिवर्ष कितना हुन्ना ? वया इन चीजों का उत्पादन प्रति एकड़ गिरा है ? यदि हां, तो क्यों ?

श्री मोहनलाल गौतम—सूचना संलग्न तालिका में दी गई है। जो को छोड़कर ग्रन्य फसलों का उत्पादन १६४६-४७ में प्रति एकड़ बढ़ा। केवल १६४७-४८ में इन फसलों के प्रति एकड़ उत्पादन में कमी ग्राई जो १६४८-४६ में फिर बढ़ी किन्तु गेहूं को छोड़कर ग्रन्य फसलों का प्रति एकड़ उत्पादन कहीं ग्रत्यधिक वर्षा, कहीं सूखा, कीड़े, ग्रोले तया तेज पछुग्रा हवाग्रों के चलने के कारण १६४४-४६ व १६४६-४७ के बराबर न हो सका।

(बेखिये नत्थी 'ब' ग्रागे पृष्ठ ६१५ पर)

\*८७--श्री देवकीनन्दन विभव---[४ ग्राप्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किया गया।]

#### खरीफ म्रिभयान

\*दद—श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल—क्या सरकार छपया यह बतायेगी कि उसके हाल के खरीफ श्रभियान के कौन-कौन से लक्ष्य पूरे हो गये ?

श्री गोहनलाल गौतम—सरकार ने १६५६—६० के खरीफ ग्रिभयान में कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं किये थे। यह कार्यक्रम एक शैक्षिक कार्यक्रम है ताकि किसान प्रगतिशील ढंग से खेती करने का ग्रावी हो सके। कोई लक्ष्य उत्पादन ग्रावि के निर्धारित नहीं किये गये।

\*८८--श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल--क्या सरकार कृपया यह बतायेगी कि उक्त खरीफ ग्रभियान में कुल कितना रुपया खर्च हुग्रा ?

श्री मोहनलाल गौतम—इन ग्रीभयानों पर नियोजन, कृषि, सिंचाई, सहकारिता ग्रौर ग्रम्य संबंधित विभागों में विभागीय बजट के ग्रीतिरिक्त कोई धनराशि नहीं व्यय की। केवल ७७,०१३ रुपये ग्राम सहायक पुस्तिका प्रदर्शन योजना ग्रादि पुस्तकों के मुद्रण में तथा लगभग २४,००० रुपये प्रचार एवं सम्बधित साहित्य पर व्यय किया गया।

\*१०--श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल--क्या सरकार का ध्यान इस रिपोर्ट की ग्रोर गया है कि रबी श्रभियान की सफलता में हमारा प्रदेश ग्रन्य कई प्रदेशों में पिछड़ा रहा? ग्रगर हां, तो क्यों?

श्री मोहनलाल गौतम--ऐसी कोई रिपोर्ट नहीं है।

#### कानपुर जिले के कृषि फार्म

\*६१--श्री मोतीलाल श्रवस्थी--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जिला कानपुर में कितने सरकारी कृषि फार्म है श्रीर उनका निम्नलिखित विवरण सन् १६५२-५३ से सन् १६५७-५६ तक का क्या है?

- (भ्र) उनकी वार्षिक भ्राय,
- (ब) उनका वार्षिक स्थापना व्यय,
- (स) उत्पादित भ्रन्नों की मात्रा?

श्री मोहनलाल गौतम--मुचना एकत्रित की जा रही है।

#### डी० सी० एफ०, ग्राजमगढ़ की जांच रिपोर्ट

\*ह२--श्री रामसुन्दर पांडेय--क्या सहकारिता मंत्री डी० सी० एफ०, ध्राजमगढ़ की स्पेशल ग्राडिट रिपोर्ट के बारे मे २१-१२-५६ के तारांकित प्रश्न संख्या ३ के उत्तर के सम्बन्ध में बताने की कृपा करेंगे कि ग्राडिट की स्पेशल रिपोर्ट का निराकरण संचालक मंडल ने कब स्वीकार करके स्वीकृति हेतु उच्चाधिकारियों के पास भेजा है?

श्री मोहनलाल गौतम--कथित निराकरण श्रभी संचालक मंद्रल ने स्वीकृत नहीं किया है।

\*६३--श्री रामसुन्दर पांडेय--क्या सहकारिता मंत्री द्याडिट की स्वेशल रिपोर्ट सदन की मेज पर रखने की कृया करेंगे ?

श्री मोहनलाल गौतम—पह श्राडिट रिपोर्ट इतनी विस्तृत हे कि जो समय ग्रौर भम इसकी प्रतियां तैयार करने में लगेगा, उसका उपयोग सूचना की उपयोगिता से कहीं प्रविक होगा ।

#### कृषि बीज भण्डार , तालबेहट के विरुद्ध शिकायत

\*६४—श्री सुदामात्रसाद गोस्वामी—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि कृषि बीज भंडार, तालबेहट (जिला क्षांसी) द्वारा बीज पक्षपात से देने ग्रीर बीज की बकाया वसूली के सम्बन्ध में फरवरी, जुलाई, ग्रगस्त ग्रीर दिसम्बर, १६५६ में मल्य मंत्री, कृषि मंत्री, किमिदनर, जिलाधीदा ग्रीर एस० डी० ग्री० के पास पत्र ग्राये हं? यदि हां, तो उन पर क्या कार्यवाही की गई?

श्री मोहनलाल गौतम--जी हां। परन्तु जांच करने पर बीज का वितरण पक्षपात से होना प्रमाणित नहीं हुन्ना।

\*ह५--श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी--त्रया सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि श्रक्तूबर, नवम्बर, दिसम्बर, १६५७ श्रीर फरवरी, मार्च, १६५० में एक ही परिवार के श्री मनीराम, श्री लक्ष्मण प्रसाद, श्री सियाराम, श्री मोतीलाल की ३५० मन बीज दिया गया है ? यदि हां, तो लगातार इतना बीज देने का क्या कारण था ?

श्री मोहनलाल गौतम——प्रक्तबर, नवम्बर, १६५७ में २०० मन बीज सर्वश्री मनी राम, लक्ष्मण प्रसाद, सियाराम, मोती लाल की सर्वाई पर बीने के लिये दिया गया था। सर्वाई पर बीज बटने से बच जाने के कारण फरवरी, १६५८ में १५० मन बीज पर उक्त व्यक्तियों की दिया गया।

\*६६--श्री सुवामाप्रसाव गोस्यामी--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि क्या उवत बीज श्रथवा बीज का रुपया वसूल हो गया है ? यदि नहीं, तो वसूली की श्रव तक क्या कार्यवाही की गई ?

XXI

श्री मोहनलाल गौतम—-कुल ६,८५३.७५ रपया में से २,४३३.७५ रपया मूलभन वसूल हो गया है। इसके स्रतिरिक्त ५६६.२६ रपया ब्याज का भी वसूल किया गया है। जब उक्त बकायादारों ने बीज वापस नहीं किया तो नियमानुसार बकाया बीज की वसूली के लिये उनके नाम भाल विभाग की वसूली करने के लिये भेज दिये गये। फलस्वरूप उक्त रकम वसूल की गई। शेष रफम की सख्ती के साथ वसूल करने के लिये स्रावेश दे दिये गये हैं तथा स्राशा है कि शीझ ही वसूल हो जायगा।

#### सेमिनारों पर व्यय

\*६७--श्री मोतीलाल श्रवस्थी--क्या सहकारिता मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि पंचांग वर्ष १६५६ में रबी व खरीक ग्रिभियानों के सिमिन(रों श्रथ्या श्रन्य सहकारी विभागीय सेमिनारों (Seminars) में जिलेवार कितना व्यय हुश्रा है ?

\*९८--क्या सरकार कृपया यह बतायेगी कि उपर्युक्त सेमिनारों के कुल जिलेवार व्यय में निम्न मदों में कितना व्यय हुन्ना है:

(म्र) यात्रा व्यय, (ब) मंडव (स्थान) साज-सज्जा व्यथ, (स) म्रन्य व्यय।

श्री मोहनलाल गौतम -- त्रांखित व्योरे को प्रत्येक जिले के उन सभी विभागों से एकत्र करना पड़ेगा जिन्होंने कथित सेमिनारों में भाग लिया। जो श्रम ग्रौर समय सूचना के एकत्र करने में लगेगा उसका उपभोग सूचना की उपयोगिता को देखते हुए श्रावश्यक प्रतीत नहीं होता।

# ग्रालू सुरक्षित रखने के लिए कोल्ड स्टोरेज की ग्रावश्यकता

\* ६६--श्री मुक्तिनाथ राय--क्या सहकारिता मंत्री बताने की कृया करेंगे कि प्रदेश के किन-किन ग्रभाव ग्रस्त जिलों में इस समय श्रालू की सड़ने से बचाने के लिये कोल्ड स्टोरेज (Cold Storage) सरकार द्वारा या सहकारी समितियों द्वारा बनाये गये है ?

#### श्री मोहनलाल गौतम--कोई नहीं।

\*१००--श्री मुक्तिनाथ राय--क्या सहकारिता मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि वर्ष १९६०-६१ में किन-किन जिलों में श्राल को सुरक्षित रखने के लिये कोल्ड स्टोरेज बनाने की सरकार की योजना है ?

श्री मोहनलाल गौतम--ग्रभी तो कोई योजना नहीं है।

#### बस्ती जिले की सहकारी समितियों में गबन

\*१०१--श्री रामलखन मिश्र (जिला बस्ती) -- क्या सरकार को जात है कि १६४४ - ४४ ई० में बस्ती जिले की तीन सहकारी समितियों में लगभग पौने दो लाख रुपयों का गबन पाया गया था?

श्री मोहनलाल गौतम--जो हां, मगर उसकी धनराज्ञि ८०,४२६ ६० ३१ न० पै० (ग्रस्सी हजार चार सौ उन्तीस रुपये इक्तीय नये पैसे ) थी।

\*१०२--श्री रामलखन मिश्र--त्रया सरकार को ज्ञात है कि उपर्युवत तीन समितियों में से एक का गवन सम्बन्धी मामला सेशन्स कोर्ट, बस्ती से दिनांक २६ मई, १६५६ को निणित हो चुका है ?

# श्री मोहनलाल गौतम--जी हां।

\*१०३—-श्री रामलखन मिश्र—-त्रया सरकार को ज्ञात है कि कोग्रापरेटिव विभाग के एक उच्च कर्मचारी को दोबी ठहराते हुये तथा एक कर्मचारी को गबन पकड़ने की सराहना करते हुये सेशन जज, बस्ती ने श्रयने निर्णय की एक प्रतिलिपि सरकार की भेजी है ? श्री मोहनलाल गौतम--जी गहीं, पेशन जज के निर्ण । की प्रतिलिपि मंगाई गई है श्रीव्र प्राप्त होने की आशा है ।

#### धान की उपज, कृषि फार्मों का उत्पादन

\*१०४--श्री इन्दुभूषण गुप्त (जिला श्राजमगढ़) -- प्या र रकार २८-१२-५६ के तारांकिल प्रका संख्या १६ के उत्तर के कप में यह बताने की क्रांग करेगी कि प्रवेश में पिछले तीन कमली वर्षों में पृयक-गृथ कथान को उपज कितनी हुई ग्रीर श्रीत एकड़ श्रीसत क्या रहा ?

श्री मोहनलाल गौतम—िश्छने तीन फसली वर्षों से था। की पैदावार तथा प्रति एकड़ श्रौसत उपज के प्रांकड़े इस प्र कार है:

	फसली वर्ष			धान की पंबाबार	धान की श्रीसत उपज मन प्रति एकड़
? <i>E</i> ¥ <i>Ę</i> –¥0	\$ @	4 p	- +	<i><b>\$8,25,</b>85</i>	۶۶.3
१६५७-५८	• •	• •		<b>38,48,443</b>	
8EX=-XE	• •	• •	• •	४४,७६,६७४	११.५६

<sup>\*</sup>१०५-श्री इन्दुभूषण गुप्त--> रा मरकार कृत्या बलावेनी कि क्या प्रदेश का कोई भा ऐना तरकारी फार्च है जिससे लाभ होता ह ? यदि हां, तो उसका प्रति एकड़ वार्षिक सालिम लाम (net profit) क्या है ?

श्री मोहनलाल गौतम--जी हां, बहुत से सरकारी फार्म लाभ पर चल रहे हैं सरकारी फार्मी पर प्रति एक इलाभ ७ नयें पेसे से लेकर ६२४. द रुपये तक हैं।

\*१०६—श्री इन्दुभूषण गुण्त—प्या सरकार प्रवेश में प्रांत विभाग द्वारा संवालित फुषि फार्मी के पिछने तीन वर्षी की फतलों के उत्पारन के श्रांकड़े श्रलग-श्रनग वेने की कृपा करेगी ?

श्री मोहनलाल गौतम—कृषि फामों के पिछ ने तीन वर्षों की फमलों के उत्पादन के श्रांकड़े श्रलग-श्रलग निम्न प्रकार है:

NAME AND POST OFFICE ADDRESS A		the spiles from the man board than some White &	نته خصب بهدم بهيين ليهجو يدبهم يجمعه بمه	بهيو عيسة يعتبو بعيلو لحبيب سية سنب يعنب هيسته لينبر طيعية أنونيج لياميد عامدة شرورو أدامله الله
वर्ष				उत्पादन (मनों में)
りとよモーもひ	• •	* *	• •	७५,६६२१ <b>८</b> ०
7840-45	• •	• •		£7,73880E
3828	• •	• •		50,208 30

#### पीलीभीत उपनिवेशन योजना

\*१०७-श्री राजाराम दार्मा (जिला बस्ती)--नया सरकार बताने की कृपा करेगी कि जिला पीलीभीत में बिना भूमि वाले लोगों की बसाने की जो योजना चल रही थी, उसमें कितने परिवार बसाये गये ? जो लोग बसाये गये उसमें बस्ती जिले के फिलने परिवार हैं ? क्या यह योजना श्रव भी चालू है ?

श्री मोहनलाल गौतम--पीलीभीत उपनिवेशन योजना में अभी तक कोई भी परि-वार नहीं बनाया गना है। यह योजना अभी चालू है और पित्रारों को बसाने का कार्य शीप्र प्रारम्भ कर दिया जायगा ।

# गोंडा जिले में साफ्ट कोल की दुकानें

\*१०८--श्री गंगाप्रसाद -- क्या सन्कार बतलाने की कृपा करेगी कि गोंडा जिले की किन-किन तहसीलों में सापट कोल के डिपो है ?

श्री जगमोहर्नासह नेगी--गोंडा, तरबगंज ग्रौर बलरामपुर । कुछ समय से बल-रामपुर के कोल डिपो होल्डर ने इस्तीफा दे दिया है ग्रौर उसके स्थान पर नियुक्ति करने का प्रदन विचाराधीन है ।

\*१०६-११०--श्री सईद ग्रहमद ग्रन्सारी(जिला सहारनपुर)--[४ ग्रप्रैल,१६६० के लिय स्थगित किये गये।]

# गोरखपुर के पशु-पालन विभाग के उप-संचालक

\*१११—-श्री कोतवार्लासह भदौरिया (जिला फर्रुबाबाद)—-क्या सहकारिता मंत्री कृपया बतायेगे कि क्या यह सत्य है कि गोरखपुर के पशुपालन विभाग के उप-संचाल कि पिछले १८ वर्षों से विभिन्न पदों पर गोरखपुर में ही काम करते रहे है ?

श्री मोहनलाल गौतम--जो नहीं, उप-प्तंवालक, गोरखपुर केवल फरवरी १६, १६५४ से ही गोरखपुर में कार्य कर रहे हैं।

\*११२--श्री कोतवालिंसह भदौरिया--क्या यह भी सत्य है कि उनका स्थाना-न्तरण गोरखपुर सिंकल के ही अन्तर्गत वाराणसी में हो हो रहा है ?

श्री मोहनलाल गौतम--उनके स्थानान्तरण का प्रश्न श्रभो सरकार के विचाराधीन है।

\*११३--श्री मदनगोपाल वैद्य--[४ अप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया।]

#### राजकीय कमयार फार्म

\*११४--श्री सुक्खनलाल (जिला मुरादाबाद)--क्या सरकार यह बनाने की कृपा करेगी कि राजकीय कमयार फार्म कहां है स्रोर कितने एकड़ का है ?

श्री मोहनलाल गौतम--यह फार्म गोंडा श्रीर वाराबंकी जिलों में स्थित है श्रीर इसका क्षेत्रफल २,४०२ एकड़ है।

\*११५—श्री सुक्खनलाल—न्त्रया सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि इस फार्म की वार्षिक पैदावार १६५७—५८ व १६५८—५६ में कितनी-कितनी हुई ग्रौर उस पर कितना-कितना उक्त वर्षों में खर्च हुग्रा ?

श्री मोहनलाल गौतम—इस फार्म को सन् १६५५ से बन्द कर दिया गया है। इसकी कुछ भूमि प्रत्येक वर्ष किसानों को बटाई पर दी जाती है। बटाई के रूप में इस फार्म पर १६५७— ५ तथा १६५८—५६ में कमशः ५६० मन तथा ४२१ मन गल्ला मिला। उपरोक्त वर्षों में कमशः ३,४६१ रुपये ग्रौर ५,०८६ रुपये खर्च हुन्ना।

\*११६—श्री सुक्खन लाल—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि उक्त कम-यार फार्म में कितने सरकारी कर्मचारी हैं और किस-किस ग्रेड के हैं ?

श्री मोहनलाल गौतम—उक्त फार्म यर एक फार्म श्रिसस्टेन्ट रु० १२०-६-२१०-१०-२५० के ग्रेड का तथा दो चौकोदार रु० २२-१/२-२७ के ग्रेड के कार्य कर रहे हैं।

\*११७--ेश्री ऊदल--[४ ग्रत्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया ।]

\*११८—-श्री शीतलाप्रसाद सिंह (जिला गोंडा)--[४ ग्रनल, १९६० के लिये स्थिगित किया गया ।]

\*११६—-श्री होरीलाल यादव—-[२५ मार्च,१६६० के लिये प्रश्न संख्या १२० के म्रन्तर्गत स्थानान्तरित किया गया ।]

# गोंडा जिले में ६० एकड़ के अपर कृषि फार्म

\*१२०—श्री गंगा प्रसाद—क्या सरकार यह बताने की कृता करेगी कि जिला गोंडा में १५ श्रगस्त, १६५६ के पहिले कुल कितने ६० एकड़ के ऊतर कृषि फार्म थे, उन कृषि फार्मों के मालिक कौन थे, उनके नाम श्रौर पते पत्रा है ?

श्री मोहन लाल गौतम--सूचना एक्त्र की जा रही ह।

\*१२१—श्री गंगाप्रसाद—म्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जिलागोंडा में कितने कृषि फार्मों की जो ६० एकड़ के ऊपर के हैं सहकारी समिति के प्राधार पर रजिस्ट्री जनवरी सन् १९५६ से लेकर ३० नवम्बर, सन् १९५६ ई० तक ह<sup>६</sup>? यदि हां, तो उनके कृषि सहकारी समितियों के नाम श्रीर पते क्या हं?

श्री मोहनलाल गौतम--सूचना एकत्र की जा रही ह।

# भूमि बंधक बैंक

\*१२२—श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल — ग्या सरकार कृपया यह बतायेगी कि मार्च, १६५६ में प्रदेश में जो भूमि बन्धक बैंक स्थापित किया गया था उसने २० न गम्बर, १६५६ तक क्या प्राप्ति की श्रीर सोरदारों को गध्यकालीन ऋण दिलाने के लिये सरकार ने क्या व्यवस्था की या क्या व्यवस्था करने जा रही है ?

श्री मोहनलाल गौतम—-भूमि बंबक बेक ने श्रभी कार्य करना प्रारम्भ नहीं किया है।

#### गोपाष्टमी को गो-हत्यायें

\*१२३—-श्री भुवनेशभूषण शर्मा—नया सरकार बताने को कृषा करेगी कि सन् १६४६ में जो गोपाष्टमी मनाई गई उसी दिन उत्तर प्रदेश के कुछ नगरों मे गो-हत्याग्रों को घटनाये घटित हुई ?

श्री मोहनलाल गौतम—जी हां। ये घटनायें राज्य के बुलन्दशहर, पीलीभीत, फर्वलाबाद श्रौर सीतापुर जिलों में घटित हुई।

\*१२४—-श्री भुवनेशभूषण रामी—-त्रया सरकार यह तताने की कृपा करेगी कि जिन गौ-हत्यारों ने उत्तर प्रदेश में गोपाष्टमी पर गौ-हत्यायें की उनये कितने पकड़े गये ग्रौर कितने फरार हैं ?

श्री मोहनलालगौतम--७७ गो-हत्यारे पकड़े गवे श्रौर जो पकड़े गवे उनमें से कोई हत्यारा फरार नहीं है ।

सेवा सहकारी समितियों के कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण पर व्यय

\*१२५—श्री मोती लाल ग्रवस्थी—क्या सहकारिता मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि सेवा सहकारी समितियों में कार्य करने वाले दस हुजार शिक्षांथियों को शिक्षा देने की योजना पूरी हो गई है ? प्रश्नोत्तर ५४७

#### श्री मोहनलाल गौतम-- जी हां।

\*१२६--श्री मोतीलाल ग्रवस्थी--क्या सरकार क्रयया यह बतायेगी कि कितने शिक्षार्थी उपर्युक्त कार्य में लगा दिय गय हैं ?

श्री मोहन लाल गौतम---६,४६४ (नौ हजार चार सौ चौरानवे )।

\*१२७—श्री मोतीलाल स्रवस्थी—क्या सरकार कृपया यह बतायेगी कि उपरोक्त शिक्षाथियों के उन शिक्षण कैम्पों का क्या व्यय रहा है जो स्रक्तूबर व नवम्बर, १९५९ में चलाये गये थे?

श्री मोहनलाल गौतम-- लगभग १,१२,००० ६०।

# कृषि योजनाय्रों के अन्तर्गत रोजगार मिलना

\*१२८--श्री गेंदासिह--क्या सहकारिता मंत्री कृपा करके बतायेंगे कि प्रथम तथा द्वितीय पंचवर्षीय योजना के श्रनुसार कितन व्यक्तियों को रोजगार देने का लक्ष्य कृषि विभाग में निर्धारित किया गया था और उसकी पूर्ति गजेटड तथा नान-गजटेड स्थानों में किस प्रकार की श्रब तक हुई है?

श्री मोहनलाल गौतम— दोनों पंचवर्षीय योजनाम्रों में कृषि योजनाम्रों का लक्ष्य ग्रम्न तथा म्र य भूमि की उपज बढ़ाना है। व्यक्तियों को रोजगार देने का लक्ष्य रख कर कोई योजना नहीं बनाई गई। परन्तु योजनाम्रों को चलाने के लिये जो नियुक्तियां मंजूर हु उनके भ्रांकड़े १६५६–६० तक के निम्नलिखित हैं:

स्थान					संख्याे
गजटेड	• •	• •	• •		११०
नान-गज्रटेड	• •	• •	• •	• •	२,४६३
				_	
			योग	• •	२,६०३
				1	

\*१२६—श्री गेंदा सिंह—-क्या मितव्यियता के प्रथवा दूसरे नाम पर कुछ स्थान रिक्त भी रखे गये हैं ग्रौर कुछ लोगों को नौकरी से ग्रलग भी किया गया है? यदि हां, तो कितने ग्रौर किस श्रेणी के ?

श्री मोहनलाल गौतम--समय-समय पर ग्रावश्यकतानुसार मितव्ययिता तथा श्रन्य कारणवश कुछ पद खाली रहे। परन्तु किसी को नौकरी से श्रलग नहीं किया गया।

#### मार्कीटंग ब्रिधिकारियों में परिगणित तथा पिछड़े वर्ग के लोग

- \*१३०—-श्री गयाप्रसाद (जिला प्रतापगढ़)—- क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि प्रदेशीय सरकार में नीचे लिखे पद पर कितने व्यक्ति कार्य कर रहे हैं और उनमें से क्रमशः कितने परिगणित तथा पिछड़े वर्ग से हैं?
- (क) रीजनल मार्केटिंग भ्राफिसर, (ख) मार्केटिंग इन्स्पेक्टर, (ग) सीनियर मार्केटिंग इन्स्पेक्टर, (घ) मार्केटिंग हेड क्लर्क, (ङ) मार्केटिंग क्लर्क, (च) श्रसिस्टेंट मार्के-टिंग इन्स्पेक्टर।

श्री जगमोहन सिंह नेगी—वांछित सूचना संलग्न तालिका में दी गई है। (देखिये नत्थी 'ज' ग्रागे पृष्ठ ६१६ पर।)

# बाराबंकी जिले मे सहकारी समितियां

१३१--श्री जंगबहादुर वर्मा (जिला बाराबकी)--स्या सहकरिता मन्त्री बताने की कृपा करेगे कि जिला बाराबकी के ग्रन्तगंत प्रत्येक विकास क्षेत्र के ग्रन्दर कुल कितनी किन-किन ग्रामो के नाम से सहकारी मिमितिया बन गयी ह ग्रोर प्रत्येक सहकारी सिमिति कोन सा कार्य कर रही ह तथा उन्हें क्तिने धन व क्सि-किम प्रकार की सहायता दी गयी है?

श्री मोहनलाल गौतम—कुल १,४६७ सहकारी सिमितिया बन गयी ह जिसमें २१८ साधन सहकारी सिमितिया ह । बाकी बहुधधी सिमितिया ह । सलग्न सूची में उनकी संख्या तथा किस्म प्रत्येक ब्लाक में दी हुई ह । ग्रामो के नाम की सूची बहुत लम्बी ह वह सहायक निबन्धन बाराबकी के कार्यालय में देखी जा सकती ह । बहुधधी सिमितिया ज्यादातर ऋण देती ह ग्रौर कुछ ग्रन्य कार्य भी करती ह । साजन सहकारो सिमितिया का कार्य कृषि सम्बन्धी तथा ऋण देना, बीज तथा खाद का प्रबन्ध करना, रिचाई तथा खेती | के उन्नति श्रीजारो का प्राविधान करना पदावार की बिकी इत्यादि ह । बहुधधी सिमितियो को सरकार द्वारा कोई ग्राधिक सहायता नही दी गयी परन्तु इन्हें सहकारो प्रक द्वारा ३०—६—४६ तक १,४६,५७६ (एक लाख छियालीस हजार छ सौ उन्यामी रुपये) ऋण दिया गया। साधन सिमितियो को सौ रुपय प्रति सिमिति को दर से कुत २१,८०० एउये (उक्तीस हजार ग्राठ सौ रुपये) का ग्रनुदान चालू वर्ष में दिया गया।

(देखिये नत्थी 'झ' श्रागे पृष्ठ ६१७ पर ) टाउन बेक, उन्नाव संबंधित कथित प्रार्थना-पत्र

ै१३२--श्री भीखालाल (जिला उन्नाव)--प्रया मरकार बताने की कृपा करेगी कि ग्रसिस्टेट रजिस्ट्रार, सहकारी विभाग, उन्नाव को कोई प्रार्थना-पत्र दिनाक ३-१२-५६ को दिया गया था जिसमें टाउन बक, उन्नाव के सम्बन्ध में गभीर ग्रारोप लगाये गये थे <sup>१</sup>यदि हा, तो उक्त प्रार्थना-पत्र पर क्या कार्यवाही की गई?

श्री मोहन लाल गौतम—जी नही । ग्रतः कथित प्रार्थना-पत्र पर कार्यवाही करने का प्रश्न नही उठता।

#### गन्ने की उपज तथा खपत

\*१३३--श्री गेदासिंह--ज्या सहकारिता मन्त्री फ़ुपा करके एक ऐसी तालिका सदन की मेज पर रखने की कृपा करेंगे कि जिसमें निम्नलिखित सूचनाये उपलब्ध हो सके?

(क) प्रवेश में प्रथम तथा द्वितीय पंचवर्षीय योजना के प्रत्येक वर्ष में गन्ना बोया हुन्रा क्षेत्र श्रौर उसकी उपज, (ख) उक्त वर्षों में गन्ने की खपत किस प्रकार कितनी हुई, श्रर्थात् मिलो में, गुड़ में श्रथवा खंडसार में ?

श्री मोहनलाल गौतम--तालिका सदन की मेज पर रखी ह जिसमे निम्न-लिखित बातो पर सूचना दी हुई है:--

- (क) प्रदेश में प्रथम तथा द्वितीय पंच वर्षीय योजना के प्रत्येक वर्ष में गन्ना बोया हुन्ना क्षेत्र ग्रीर उसकी उपज।
- (ख) उक्त वर्षों में गन्ने की चीनी मिलों में खपत। गृंड ग्रीर खन्नसार के सम्बन्ध में ग्रावश्यक सूचना एकत्र की जा रही है।

(देखि रे नत्थी 'डा' म्रागे पुष्ठ ६१८ पर )

#### सहकारिता विभाग, जिला रायबरेली के सर्वश्री सूरजपाल सिंह तथा रामलखन सिंह की गिरफ्तारी

\*१३४--श्री गुप्तार सिंह (जिला रायबरेली)--क्या सहकारिता मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि जनपद रायबरेली के कोम्रापरेटिव म्रिसस्टेंट रिजस्ट्रार, श्री कमलाकर सिंह, की हत्या करने के षड्यन्त्र में कोम्रापरेटिव विभाग में फरवरी के म्रन्तर्गत कोई गिरफ्तारी हुई है?

# श्री मोहनलाल गौतम--जी हां।

\*१३५--श्री गुप्तार सिंह--यदि हां, तो क्या सरकार उपरोक्त षड्यन्त्र का विवरण सदन की मेज पर रखने की कृपा करेगी ?

श्री मोहनलाल गौतम--विवरण इस प्रकार है। श्री कमलाकर सिंह की हत्या कर ने के षड्यन्त्र में सूरजपाल सिंह, कोग्रापरेटिव बैक के लिपिक तथा राम लखन सिंह मुद्रत्तल विकेता की गिरफ्तारी फरवरी में हुई।

श्री कमलाकर सिंह ने पुलिस में ११-७-५६ को श्री रामलखन सिंह (Salesman, Co-operative Brick Kiln) के विरुद्ध एक रिपोर्ट ग्रन्तंगत घारा ४०८/४२० भा० द० वि० लिखाई तथा उनको मुग्नत्तल कर दिया। ऐसा ज्ञात हुग्रा है कि श्री शिवपाल सिंह नामक व्यक्ति जो बांदा जिला का रहने वाला है, जिला फतेहपुर पुलिस द्वारा घारा १६ ग्राम्स ऐक्ट के ग्रन्तगंत गिरफ्तार किया गया था ग्रीर उसके द्वारा यह पता लगा कि उसे श्री रामलखन सिंह ने ५०० रू० पर श्री सिंह की हत्या करने के लिये नियुक्त किया था तथा १०० रू० ग्राप्तिम धन भी उसे इस कार्य के लिये दे दिया था। इस षड्यंत्र के खुलने के फलस्वरूप श्री रामलखन सिंह तथा श्री सूरजपाल सिंह दिनांक ५-२-६० को ग्रन्तगंत घारा १२० बी० तथा ३०२/५११ भा० द० वि० गिरफ्तार किये गये। जांच जिला फतेहपुर की पुलिस कर रही है। यह भी ज्ञात हुग्रा है कि ग्रब जांच सी० ग्राई० डी० लखनऊ को दे दी गयी है।

#### श्राजमगढ़ जिले में सरिया का वितरण

\*१३६—-श्री मुक्तिनाथ राय--क्या खाद्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि ग्राजमगढ़ जिले में १९४८ व १९४९ में १-१२-४९ तक कितनी-कितनी टन लोहे की सरिया (सींक) जनता में वितरित करने के लिये सरकार द्वारा दी गई।

श्री जगमोहर्नासंह नेगी--सन् १६४८ में २१ टन १६ हं०२ क्वार्टर १० पौं० श्रौर सन् १६४६ में ४० टन १७ हं० २७ पौं० सरिया (सींक), कुल योग ६२ टन १४ हं० ६ पौं० जनता को वितरण हेतु श्राजमगढ़ जिले में प्राप्त हुग्रा।

\*१३७--श्री मुक्तिनाथ राय--क्या खाद्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि उक्त समय में कितने व्यक्तियों ने लोहे की सरिया (सींक) प्राप्ति के निमित्त ग्रावेदन-पत्र दिया श्रौर कितने व्यक्तियों को कितनी-कितनी मात्रा में सरिया दी गई ?

श्री जगमोहर्नासह नेगी—उक्त समय में १७६ श्रावेदन-पत्र सरिया निमित्त जिला पूर्ति श्रधिकारी, श्राजमगढ़ के कार्यालय में प्राप्त हुये जिनमें से १२६ श्रावेदन-पत्रों पर सरिया दी गई जिसका पूर्ण विवरण† संलग्न है।

# प्रश्नों के सम्बन्ध में शिकायत

श्री मोती लाल ग्रवस्थी (जिला कानपुर)—श्रीमन्, ग्राप देखे कि मेरा प्रक्ष ६१ है जो ? महीने से चला ग्रा रहा हे ग्रीर मेने इस प्रक्त को २३-१२-४६ को दिया था।

श्री उपाध्यक्ष--लिखित रूप में श्राप ध्यान दिलाये, तो में देख लूंगा।

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी--श्रीमन्, इसी प्रकार से मेरे प्रका ६७, ६८ है उनको भी देख लें।

श्री उपाध्यक्ष--ग्राप सब के बारे में लिखकर भेज दें। उसकी जांच हो जायगी।

श्री रामस्वरूप वर्मा (जिला कानपुर)—श्रीमन्, श्राज श्री जंगबहादुर वर्मा के प्रक्त १३१ के उत्तर में एक लिस्ट ख्रंग्रेजी में विभाग की श्रीर से श्राई है। हमारे सदन की भाषा हिन्दी है इसलिये हिन्दी में ही लिस्ट ख्रानी चाहिये थी। इसके ऊपर में श्राप की व्यवस्था चाहता हूं।

श्री उपाध्यक्ष--माननीय मंत्री जी को हिन्दी में ही तालिका भेजनी चाहिये थी।

श्री मदन पांडेय (जिला गोरखपुर)-- ग्रब तो नजर पड़ जाय, उपाध्यक्ष महोदय।

श्री उपाध्यक्ष---प्रक्तों के बारे में में जानता हूं कि काफी श्रसंतोष है।

श्री मदन पांड्य--श्रीमन्, में कई दिन से कोशिश कर रहा हूं। मेरे प्रक्ष का उत्तर नहीं मिल रहा है। मेने ऊदल जी के एक प्रश्न के सम्बन्ध में एक सप्लीमेटरी किया था श्रीर मुझे एक ही प्रश्न करने दिया गया। यह प्रश्न बड़ा महत्वपूर्ण है श्रीर गबन का मामला है। इसमें कई मेम्बर इंटरेस्टेड है।

श्री उपाध्यक्ष--मैने श्राप से कह दिया है कि श्राप ज्ञार्ट नोटिस सवाल पूछे। नयी परम्परा बनायी जा रही है इसलिये कुछ दिक्कत हो सकती है श्रीर यह भी हो सकता है कि मै श्रोवरलुक कर गया होऊं।

# कार्य-स्थगन प्रस्तावों के सम्बन्ध में सूचनायें

श्री उपाध्यक्ष--मेरे पास दो कार्य-स्थगन प्रस्ताव स्राये है . . .

श्री जंगबहादुर वर्मा (जिला बाराबंकी)--श्रीमन्, मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है।

श्री उपाध्यक्ष--जब मं बोल रहा हूं तो कोई व्यवस्था का प्रक्त नहीं हो सकता।

मेरे पास दो कार्य स्थगन प्रस्ताव ग्राये हैं। एक रामस्वरूप वर्मा जी का तथा दूसरा बंशीधर जी शक्त का है। मेरी राय में दोनो कार्य-स्थगन प्रस्ताव की शर्ते पूरी नहीं करते इसलिये उनको ग्रस्वीकार करता हूं।

श्री बंशीधर शुक्ल (जिला खीरी)—जरा पढ़ तो दोजिये। (कोई जवाब नही दिया गया।)

मिलयाना शुगर मिल, मेरठ को मिलयाना गांव की भूमि का बलपूर्वक पुलिस द्वारा कब्जा दिलाने के सम्बन्ध में नियम ४२ के भ्रन्तर्गत सूचना

श्री उपाध्यक्ष--- नियम ५२ के श्रन्तर्गत तीन प्रश्न श्राये है। मुझे सबसे महत्वपूर्ण

प्रक्त माननीय रामस्वरूप वर्मा का लगा। वह इस प्रकार है कि-

"मिलयाना शुगर मिल, मेरठ के पास निज की इतनी भूमि है कि पचासों मिल उस पर खड़े किये जा सकते हैं ग्रौर उसके कम्पाउन्डमें भी काफी रकबा खाली पड़ा है। फिर भी उसने मिलयाने गांव के बाड़े की सर्वोत्तम भूमि पर सरकार से साजिश करके श्रनावश्यक

मिलयाना शुगर मिल, मेरठ को मिलयाना गांव की भूमि का बलपूर्वक ४५१ पुलिस द्वारा कब्जा दिलाने के सम्बन्ध में नियम ४२ के अन्तर्गत सूचना

ह्म से कब्जा शुरू कर दिया है जिसमें सरकार ने श्रपनी पुलिस भेजकर श्रनुचित रूप से कब्जा कराने की कोशिश दिनांक १६ व २० मार्च, १६६० को की श्रौर श्रपने उचित श्रधिकार की रक्षा में रत ५० किसानों को गिरफ्तार किया श्रौर महिलाश्रों की बेइज्जती की। जिसके कारण सामान्य रूप से प्रदेश श्रौर विशेष रूप से मेरठ में श्रसंतोष श्रौर रोष का वातावरण व्याप्त है श्रौर एक विषम परिस्थित सरकार के इस काम से उत्पन्न हो गई है।

श्रतः में सरकार से नियम ५२ के श्रन्तर्गत इस सार्वजनिक एवं लोकपहत्व के श्रविलम्बनीय प्रश्न पर स्पष्टीकरण की मांग करता हूं।"

मैं चाहता हूं कि माननीय गृह मंत्री या संबंधित मंत्री इस संबंध में प्रकाश डाल दे।
गृह उपमंत्री (श्री रामस्वरूप यादव)—उपाध्यक्ष महोदय, सूचना प्राप्त करने
का प्रयत्न किया गया लेकिन सूचना नहीं मिल सकी है, इसलिये दो दिन का समय चाहिये।

श्री टीकाराम पुजारी (जिला मथुरा)—श्रीमन्, मेरा निवेदन है कुछ।

श्री उपाध्यक्ष——ग्राप की बात समझ में नहीं श्राती है। ग्राप माइक पर घीरे-घीरे बोलिये।

श्री टीकाराम पुजारी—मै जो निवेदन कर रहा था वह बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि जो नता उपनेता होते हैं उनका नियम ५२ के श्रन्तर्गत श्राप ले लेते हैं, पीछे वालों का कोई खयाल नहीं करते हैं।

श्री उपाध्यक्ष--यह ग्राप....

श्री टीकाराम पुजारी—मेरे जिले मथुरा में चूहों ने फसल को बरबाद कर दिया और घर में भी चैन नहीं लेने देते हैं। पानी श्रौर तूफान से किसानों की रबी की फसल बरबाद हो गयी। किसानों में त्राहि-त्राहि हो रही है। यह दोनों प्रस्ताव मेरे नामंजूर कर दिये।

श्री उपाध्यक्ष---ग्राज इससे क्या संबंध ? मा० सदस्य स्थान ग्रहण करे।

श्री टीकाराम पुजारी—मैं भी विचार करूंगा कि मैं उपनेता बन जाऊं। तो मेरा प्रस्ताव मंजूर हो जायगा।

श्री उपाध्यक्ष-माननीय पुजारी जी जवाब तो सुनियेगा।

श्री टीकाराम पुजारी-चूहों ने सब नाश कर दिया।

श्री उपाध्यक्ष—माननीय पुजारी जी श्रब एक वार्निंग में श्राप को श्रौर देता हूं श्रगर श्रार स्थान नहीं ग्रहण करेंगे तो मैं इंगित करूंगा।

(श्री टीकाराम पुजारी बोलते रहे।)

श्राप स्थान ग्रहण करे। श्राप कृपया स्थान ग्रहण करे।

श्री टीकाराम पुजारी--मै श्रर्ज कर रहा हूं . . . .

श्री उपाध्यक्ष---ग्राप कृपया बैठें।

श्री टीकाराम पुजारी—मै तो बाहर चला जाऊंगा।

श्री उपाध्यक्ष---ग्राप बाहर जायं। माननीय सदस्य कृपया सदन के बाहर जायं।

(श्री टीकाराम पुजारी सदन से बाहर नहीं गये श्रौर बोलते रहे।) माननीय पुजारी जी श्रादेश नहीं मान रहे है इसलिये में पुजारी जी को इंगित करता हूं। मुख्य मन्त्री (डाक्टर सम्पूर्णानन्द)—मझे प्रफमोस हे कि ग्राप के बार कहने पर भी ग्रौर यह कहने पर भी कि सदन के बाहर चले जायं, माननीय पजारी जी ने ग्राज्ञा नहीं मानी। मैं समझता हूं कि यह उनकी भूल है। लेकिन उनके लिये कोई कड़ी सजा देन उचित नहीं होगा। मेरा प्रस्ताव यह है कि दो दिन के लिये यह सदन की सेवा से ग्रलग कर विये जायं।

श्री उपाध्यक्ष-प्रकृत यह है कि माननीय टीकाराम पुजारी को दो दिन के लिये सदन की सेवा से निलम्बित कर दिया जाय।

श्री मोतीलाल श्रवस्थी (जिला कानपुर)--मे इसका विरोध करता हं।

श्री उपाध्यक्ष-इसका विरोध नहीं होता।

श्री मोतीलाल श्रवस्थी--मुझे कहने का मौका दीजिये।

श्री उपाध्यक्ष--कहने का मौका नही मिलेगा।

श्री मोतीलाल श्रवस्थी—एक किसान ग्राटमी को श्रापने कहने का मौका नही दिया। दूसरे लोगों को घंटों देंगे श्रोर दस दस दफा देगे। यह श्रन्याय है।

श्री उपाध्यक्ष--प्रकृत यह है कि माननीय टीकाराम प्जारी दो दिन के लिये सदन की सेवा से निलम्बित किये जायं।

(प्रश्न उपस्थित किया गया श्रोर श्री मोतीलाल श्रवस्थी की मांग पर हाथ उठाकर विभाजन होने पर निम्नलिखित मतानुसार स्वी कृत हुआ:——

पक्ष में—-१४४, विपक्ष में—-१०।)

# श्रागामी कार्य-क्रम के सम्बन्ध में जानकारी की मांग

श्री गौरीशंकर राय (जिला बिलया)—एक बात रह गई थी पूछने को। ईद की छट्टी के दिन की होगी श्रौर श्रगले हफ्ते का कार्यक्रम केसे चलेगा? माननीय भूम्ब्य मंत्री जी श्रंगले सप्ताह का कार्यक्रम श्रौर उससे लगी हुई ईद की छुट्टी कब होगी, यह बता दे तो श्रच्छा है।

मुख्य मंत्री (डाक्टर सम्पूर्णानन्द)—सदन में उपाध्यक्ष महोदय, २५ तारीख तक का कार्यक्रम तो है हो। उसके बाद २६,२७ छुट्टी है शनिवार और एतवार की। इसके अलावा २६ और ३० को ईद की छुट्टी है। बीच में एक २८ तारीख हे। अवसर माननीय सदस्यों की ऐसी इच्छा है कि २८ तारीख को भी छुट्टी रहे। इसलिये ऐसा विचार है कि २६ से लेकर ३० तारीख तक छुट्टी रहे।

श्री नन्दराम (जिला प्रतापगढ़)—एक व्यवस्था का प्रश्न हे, मान्यवर । नियमावली का नियम १६(२) देखा जाय । उसमें है कि जब तक कि सदन श्रन्यथा निश्चय न करे श्रानिवार, रिववार तथा श्रन्य सार्वजिनक छुट्टियों के दिन कोई उपवेशन नहीं होगा। तो चूंकि २५ तारीख को रमजान का श्राखिरी जुमा है श्रीर यह एक सार्वजिनक छुट्टी हे, तो उस दिन कैसे उपवेशन हो सकता है।

श्री उपाध्यक्ष--यह गजटेड हाली डे नहीं है; और इसके ऊपर पहले ही विचार हो चुका है। १६६०–६१ के श्राय–व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदान ५५३ संख्या ४२--लेखा शीर्षक ५७--प्रकीर्ण व्यय तथा श्रनुदान संख्या १५--लेखा शीर्षक २५--गांव सभाएं श्रौर पंचायतें

श्री उपाध्यक्ष—अब माननीय स्वायत्त शासन मंत्री दो ग्रांट्स ग्राज के लिये एक साथ प्रस्तुत करेंगे, ग्रांट नम्बर ४२ ग्रौर १४।

श्री गोविन्दिंसह विष्ट (जिला ग्रल्मोड़ा)—यह एक सूचना चाहता था जरा, कि ग्राखिर में जो श्रनुदान सूचना का छपा है यह श्राज तो नहीं होगा ?

श्री उपाध्यक्ष-यह कल होगा। वह दोनों कल होंगे ग्राधे ग्राधे दिन ।

स्वायत्त शासन मंत्री (श्री विचित्रनार।यण शर्मा) —श्रीमन्, मं राज्यपाल महोदय की सिफारिश से यह प्रस्ताव करता हूं कि ग्रनुदान संख्या ४२—प्रकीर्ण व्यय—लेखा शीर्षक ५७—प्रकीर्ण (Miscellaneous) के ग्रन्तर्गत ५,५६,०४,७०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १६६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय।

श्रीमन्, मै राज्यपाल महोदय की सिफारिश से यह प्रस्ताव करता हूं कि श्रनुदान संख्या १५—गांव सभाएं श्रौर पंचायतें—लेखा शीर्षक २५—सामान्य प्रशासन के श्रन्तर्गत १,६६,११,२०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १९६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय।

श्रीमन्, में इस विभाग की इन दो मांगों को उपस्थित करते हुये बहुत ज्यादा श्राम बातें नहीं कहना चाहता हूं। ज्यादातर जो कुछ घटनायें हैं, या जो कुछ श्रांकड़े हैं उनकी तरफ ही में मान-नीय सदन का ध्यान श्रांकित करूंगा लेकिन फिर भी एक दो बाते निवेदन करना चाहता हूं। साधारणतः श्रांकड़े इस तरह से दिये जा सकते हैं कि जिनसे दोनों बातें साबित हो सकती हैं श्रौर श्रक्सर राजनैतिक जीवन में यह श्राम प्रथा है कि जो जिस पक्ष से सम्बन्ध रखता है वह उसी तरह की चीजें एकत्रित करता है श्रौर वैसे ही श्रांकड़े उपस्थित करता है। में इस लोभ का संवरण करूंगा। में जानता हूं कि इन स्वशासन संस्थाओं के विच्छ काफी श्रांकड़े उपस्थित किये जा सकते हैं कि इनकी वजह से बहुत नुकसान हुशा। कुछ लोगों ने दूसरे श्रादमियों को दबाया, पैसे का दुष्पयोग किया, इस तरह की बहुत-सी बातें कही जा सकती हैं। में स्वयं जानता हूं कि मेरे श्रयन चुनाव क्षेत्र में या दूसरी जगह जब मुझे श्रमण करने का मौका मिलता है तो मुझे ऐसी जगह मिलती है कि जहां ऐसा मालूम होता है कि पंचायतों का शायद बहुत ही कम श्रसर है या कुछ में नहीं के बराबर श्रसर है। ऐसी जगह भी देखने को श्राती है कि जहां पर गांव के श्रन्दर एक नई चेतना मिलती है श्रौर गांव में प्रवेश करने पर पता चलता है कि वहां पर कुछ नया जीवन श्राया है, रचना का काम हुशा है, सड़कें बनी हैं, गांव मे सुधार किया गया है श्रौर श्राम तरह की जागृति दिखाई देती है। तो में जो श्रांकड़े दे रहा हूं उससे यह न समझा जाय कि दूसरी तस्वोर है नहीं।

वास्तव में मेरे श्रांकड़े स्वयं लाखों श्रौर हजारों श्रादिमयों से ताल्लुक रखते हैं श्रौर कहना चाहिये कि प्रायः सारे प्रदेश की जनता से इस विभाग का ताल्लुक है। ७२,४०६ हमारे यहां ग्राम पंचायते हैं। ८,००० से श्रिधक न्याय पंचायतें हैं। १३७ के लगभग हमारी म्युनिसिपैलिटी हैं, टाउन एरियाज हैं, श्रौर नोटीफाइड एरियाज हैं। सारी गांव पंचायतों को श्रगर हम लें श्रौर ७२ हजार गांव पंचायतों के काम के श्रांकड़े में दूं तो वह स्वयं इस बात को साबित करेंगे कि वास्तव में बहुत-सी जगह काम कम हुश्रा है। इसलिये उन श्रांकड़ों से भी यह समझा जा सकता है कि मेरा ऐसा उद्देश्य नहीं कि में यह साबित करना चाहता हूं कि बहुत काया पलट गई है, लेकिन में यह जरूर निवेदन करना चाहता हूं कि श्राज के समाज में हमारे लिये दूसरा चारा नहीं है।

श्रि विचित्रतारायण शर्मा

हमने ग्राने देश में जनतांत्रिक पद्धांत को श्रानाया है और ग्रागर हम जनतांत्रिक पद्धित को कामयां बनाना चाहते हैं तो कोई दूसरा वारा हमारे लिये नहीं है कि हम श्रपनी जनता से कहें कि जिन प्रश्नों का ताल्लक श्रिषकतर उनमें ही है उसका निर्णय वह स्वयं करें और एक स्तर पर जहां इस कि हम के प्रश्न उठ सकते हैं गोर उठते हैं उनके फेमले का श्रिषकार हम उन्हीं लोगों को दे जिनसे उन प्रश्नों का ताल्लुक हे नाकि उनके ग्रन्थ जिम्मेदारी की भावना जागृत हो ताकि वह महसूस कर सके कि ग्रागर गलत निर्णय करते हैं, श्रावेग में श्राकर निर्णय करते हैं, नाजिम्मेदारी से निर्णय करते हैं तो उमका परिगाम उनको हो भगतना परेगा ग्रोर उनके प्रश्न ठीक हल नहीं हो सकते हैं। इसलिये यह लाजिमे हो जाता है कि गांव के रतर पर खंड के स्तर पर श्रोर जिले के स्तर पर जहां इस कि हम के प्रश्न उठ जाते हैं कि जिनका मीधा सम्बन्ध उनसे हें ग्रीर जिनके हस्तान्तरण कर देने से कोई विशोप हमारो राष्ट्राय एकता में, प्रादेशिक एकता में या उसके प्रबंध में कोई बाधा नहीं पड़तो हो तो यह जरना उत्तर ही हे बायजूद इसके कि इसमें गलतियां होंगी, श्राज भी गलतियां होतो है, हमारे पास दूरारा चारा नहीं है। हम न श्राने पड़ोसी देशों का श्रनुकरण कर सकते हैं जहां पर डेमोकेसी खत्म कर दो गयी हे, श्रीर न हम कोई ऐसा श्राधनायक चुन सकते हैं कि जितके हाथ में श्राने भाग्य को हम दे दे।

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी (जिला कानपुर)--विषय पर बोलिये।

श्री विचित्रनारायण द्यामा—--बिल्प्ल विषय पर बोल रहा हूं। यह स्वायत्त शासन का विषय है ग्रोर उसमें जो खतरे हैं उनको तरफ भो में दृष्टि डातना चाहता हूं। में यह कहना चाहता हूं कि ग्रार हम जाहते हें कि हमारे देश के ग्रान्वर रवायत्त शासन, डेमोक्सी, जनतंत्र सफन हो तो उस यातावरण को तथार करने के लिये जो मनोवृत्ति चाहिये, जो दृष्टिकोण चाहिये, जो ऐप्टोट्यूड ग्राफ लाइफ ग्राना चाहिये. . . .

श्री मोतीलाल श्रवस्थी—एक तरक तो श्राप कहते है कि ग्राम सभाये सफल नहीं हो रही है. . . .

श्री उपाध्यक्ष--किस नियम के अनुसार आप यह बोल रहे है। यह ठीक नहीं है।

श्री विचित्रनारायण दार्मा—मैने यह कहीं नहीं कहा कि ग्राम सभाग्नें ग्रसफल हो रही ह। मैने सिर्फ यह कहा कि उनकी श्रसफनता को तरफ भी उंगली उठायो जा सकती है, लेकिन श्राम तौर पर काम श्रन्छा हुश्रा हे। इस से यह न समझा जाय कि में कोई बहुत सुन्दर चित्र खींच रहा हूं और इमीलिये मैने वह बात कही थी कि श्रांकड़ों को देख कर जो काम हुश्रा है, उससे कोई नहीं कह सकता कि यह तरीका बिलकुल श्रसफल हुश्रा है श्रौर इससे लाभ नहीं हुश्रा है। इससे काफी लाभ हुश्रा है, लेकिन जितना लाभ होना चाहिय था श्रौर जितना लाभ हो सकता है वह अभी नहीं हुश्रा हे और श्रार में कहूं कि हुश्रा है, तो में गलती में रहूंगा श्रौर इस माननीय सदन को भी गलतफहमों में रखूंगा। वश्तुस्थित से इनकार करना समझवार इन्सान का काम नहीं है। लेकिन श्रोमन्, यह गांव सभाये सफल होनी चाहिये।

जो डेमोकेंसी की, जनतंत्र की जान हे, प्राण है, वह भावना हमारे ग्रन्दर ग्रानी चाहिये ग्रीर उसकी ग्राशा हम पहिले उन लोगों से नहीं कर सकते जिन लोगों के पास न शिक्षा है ग्रीर न दूसरे साधन हैं। न उनकी प्रश्तर मिलता है कुछ समझने ग्रीर ग्रनुभव करने का। ग्रगर उस वातावरण को हमे श्राने देश में लाना है तो उसकी शुरुग्रात इस ग्रादर गीय सदन से होनो चाहिये। उसकी शुरुग्रात उन लोगों से होनी चाहिये कि जो जनता है नेता होने का वावा करते हैं ग्रीर हमें ग्रानी वृष्टि के ग्रन्दर जो डेमोकेंसी का प्राण है कि एडजस्टमेट के साथ, समझ के साथ, शराफत के साथ, सद्भावना के साथ काम करना है, ग्रीर मिल कर रहना है। उसे सदा ग्रपने समान रखना होगा। ग्रलग होना बड़ा ग्रासान है, ६ पुरबिये ग्रीर ११ चूल्हे की कहावत बहुत पुरानी है।

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-स्त्रनुदान ४४४ संख्या ४२--लेखा शीर्षक ४७-- प्रकीर्ण व्यय तथा प्रनुदान संख्या १५-- लेखा शीर्षक २५--गांव सभाग्रं स्त्रीर पंचायते

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी--पर उपदेश कुशल बहुतेरे।

श्री विचित्रनारायण शर्मा—ग्रगर वास्तव मे यह स्थित हो कि जो में कह रहा हूं वह हम पर लागू नहीं होता ह, तो शायद मुझ इतना दुः ख न होता। म कहना चाहता हूं कि अगर कांग्रेस भी इन सिद्धांतों के मुताबिक चलते। तो मुझे जरूरत नहीं होती, हम कुछ श्रादिमयों की उपेक्षा कर सकते थे जो उपिलयों पर गिने जा सकते हैं, लेकिन श्राज मुझे दुःव के साथ यह कहना पड़ता है कि जो वास्तव में श्रीहंसा, नान-वायलेंस की जान है कि डंडे से नहीं मानव को श्रकल से उसे समझा बुझा कर चलाया जाय, उसको रोजन से झकाया जाय, उसके हार्ट को जीता जाय, फिजिफल श्राघात कर के नहीं, उसके इंटरेस्ट को नुकसान पहुंचाकर नहीं, बिल्क उसको सन्तुष्ट करके समझा कर अपने साथ लेना है। यह वृति कांग्रेस में भी नहीं है तथा दूसरे वलों में भी नहीं है, यह बेसिस डेमोकेसी की है और इसमें हर वह चीज नहीं ग्रानी चाहिये जो मानव के हृदय को स्पर्श न करके उन पर श्राघात करती हो चाहे वह किसी किस्म का कोग्रार्शन हो, धमकी के रूप में हो, या किसी भी तरह का दबाव हो। श्रगर उसके पीछे यह भावना हो कि जो बहुमत ने तय कर दिया है वह चाहे श्रच्छा हो या बुरा, हमे उसको ही मानना है, तो ठीक है लोफ तंत्र चल सकता है।

यह वांछनीय है कि बहुमत भी प्रत्पमत का ख्याल रख कर चले। यह सही है कि हमेशा ग्रत्पमत को उपेक्षा करके बहुमत प्रजातंत्र को सफल नहीं बना सकता ग्रौर न ही वह चल सकता है। लेकिन गलतियां हो सकतो है। ऐसे मौके श्रा सकते है जब ग्रभो बहुमत कोई जिद्द पकड़ जाये। तो ऐसे वक्त ग्रत्थमत का यह धर्म है कि वह बहुमत के सामने सर झुकाये। हम यह मानते है कि साथ रहने को जो वृत्ति है उसे ग्रथने देश में कायम करना है ग्रौर ग्रगर ग्रत्यमत ग्रयने फर्ज को समझदारों के साथ, हिम्मन के साथ करे तो में कह सकता हूं कि उनकी वृत्ति का वहुमत के उपर ग्रसर पड़े बिना नहीं रह सकता है।

यह मूल प्रश्न है और में निवेदन करना चाहता हूं इस माननीय सदन से कि अगर यह भावना हम देश के अन्दर पैदा नहीं कर सकत ह तो सारी स्कीम्स जिनके जीरिये हम अपने देश में परिवर्तन लाना चाहते हैं, जिनसे हम सोचते हैं कि हम कुछ कर देगे, तो ऐसा करना नामुमिकन हो जायगा। तब यह कहा जायगा कि हम एक ऐसे जगत में रहते हैं, और रहने की कोशिश करते हैं, जिस जगत के अन्दर वास्तविकता नहीं हैं। इसलिये मेरा नम्न निवेदन हैं कि हमें इस मौलिक बीज को पकड़ना चाहिये। कभी-कभी जिस तरह से इस आदरणीय सदन का कार्य चलता है उसे देखकर दुख होता है और उस समय हम इन बातों को भूल जाते हैं। इस तरह से क्या हम उन लोगों के लिये उदाहरण पेश कर सकते हैं जिन्हें बहुधा गंवार समझा जाता ह। ऐसे भी प्रधान हैं जो केवल अंगुठा लगाते हैं, पढ़ना लिखना जानते ही नहीं।

भी मोतीलाल ग्रवस्थी--नियम मे होना चाहिये कि वे पढ़े लिखे हों।

श्री विचित्रनारायण शर्मा—नियम में होना चाहिये, लेकिन उससे क्या होता है। दुख तो यह है कि कभी कभी पढ़ें लिखें लोग भी पढ़ें लिखें नहीं होते। सबसे ज्यादा दुख तो इसी बात का है। इसी के लिये में यह श्रर्ख कर रहा था। मान लोजिये, श्रगर दर्जा दो तक उन्होंने पढ़-लिख लिया तो उससे क्या फर्क हो जाता है। उनमें वह मिठास वह मधुरता कभी नहीं श्रा सकेंगी जिसकी श्राशा श्रवस्थी जो में को जा सकती है। यह श्राशा उस व्यदित से नी कर सकते जिसे हम गंवार समझ बैठते है।

श्री रघुवीरसिंह (जिला एटा)—गंवार शब्द है माननीय मंत्री जी का क्या अर्थ है ? क्या किसी को गंवार कहना ठीक है ?

श्री उपाध्यक्ष--(मंत्री जी से) ग्राप ग्रपना भाषण जारी रखे।

श्री नंदराम (जिला प्रतापगढ़) — श्रीमन्, मेरी व्यवस्था का प्रश्न है। मेरा खयाल है ब्राजकल के जमाने में किसी को गंतार कहना उचित नहीं है। माननीय मंत्री जी को यह शब्द वापस ले लेना चाहिये।

श्री उपाध्यक्ष—ग्रापका खयाल यह है, उनका खयाल दूसरा है। किसी के खयालों के बारे में कोई क्यवस्था का प्रकृत नहीं उठ सकता है।

श्री विचित्रनारायण शर्मा—श्रीमन्, मैं तो श्रभी भी श्रपने को भी गंवार समझता हूं श्रीर मुझे सुख होगा श्रगर इस देश के श्रन्दर कुछ हम जैसे थोड़े से ही गंवार रह जाये श्रीर बाकी सब नागरिक सूझबूझ के हो जाये। लेकिन श्रांखे तो गुछ श्रीर नजारा देखती हैं। मैंने गंवार शब्द बहुत मीठे रूप में कहा था।

तो मैं यह कह रहा था कि ग्रगर हम इस चीज को महसूस करे तो एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी हमारे ऊपर ग्राजाती हैं। हम सोच रहे हैं ग्राइन्य के लिये, ग्रगर मेरा सोचना सही हैं, तो ग्राज ही या कल माननीय सदस्यों के पास हमारे विभाग से ग्रीर प्लानिय विभाग से जो सूचनायें निकलती हैं कि किस तरह से ग्रामों को ग्रधिक ग्रधिकार दिये जाये ज्यादा से ज्यादा काम उनके ऊपर छोड़ा जाय, वह पहुंची होंगी।

जिला परिषद् को बनाने का जो बिचार है वह इसी दिष्ट से शुरू किया गया है। कैसे यह होगा ? हम गांव पंचायतों के ऊपर क्या जिम्मेदारी डालें, उनके साधनों में क्या इजाफा करें। किस दर्जे तक हम खंड स्तर पर, बलाक लेबिल पर य दूसरे लोगों पर जिम्मेदारी डालें और उनके साधनों को, उनके उपक्रमों को एकत्रित करें व उन्हें बढ़ायें वह सब इस माननीय सदन के साधनों को, उनके उपक्रमों को एकत्रित करें व उन्हें बढ़ायें वह सब इस माननीय सदन के साधनों को या और जो भी यह सदन निश्चित करेगा वही सरकार को म.न्य होगा। इस विषय में हम किसी पार्टी की वृष्टि से इस सवाल को नहीं देखना चाहते हैं। यह सारे देश का सवाल है और इसी वजह से विरोधी दल के नेताओं से भी मैंने प्रार्थना की थी कि में उनसे विचार-विनिमय कर सकूं। उस समय होली की वजह से लोग घर जाने की जल्दी में थे, वह मीटिंग नहीं हो सकी। अभी फिर में कोशिश करूं और फिर उन लोगों की राय, अपने साथियों की राय और अन्त म जो इस सदन की राय होगी उसके मुताबिक हम काम करेंगे। इसी दृष्टि से हम चाहते हैं कि हमारा काम चले। जो माननीय सदस्य यहां इस विषय पर विचार प्रदिश्त करें यह इसी भूमिका को पीछे रखें तो मेरा खयाल हैं कि हमारे लियें ज्यादा प्रकाश मिल सकेंगा, अपनी गलतियों को सुधारने का और सही रास्ते में आगे बढ़ने का। कोशिश हम यही करते हैं।

म्युनिसिपैलिटीज में ज्यादा से ज्यादा म्युनिसिपैलिटीज को श्रिथकार दिये जाते हैं। वह गलित्यां भी करें, वह करती हैं उससे फायदा उठायें श्रीर हर जगह हम उसमें देखल न करें। श्रवसर माननीय सदस्य श्राते हैं, बाहर के भी श्राते हैं कि म्युनिसि-पैलिटी में बड़ा श्रव्दाचार हुआ, पैसे का गबन हो रहा है, उसको डिजाल्व कर दिया जाय। महीने में एक दो रिश्रेजेंटेशन कभी कभी ऐसे श्रा जाते हैं, लेकिन हम रेजिस्ट करते हैं।

सारे प्रदेश के अन्वर सिर्फ १ म्युनिसिपैलिटीज इस समय सुपरसीड की हुई हैं अगेर वास्तव में बहुत मजबूर होकर हम इस निर्णय पर पहुंचते हैं। कभी कभी यह फैसला लेने में १-१, डेढ़ डेढ़ साल लग जाता है। हम कभी कभी सुपरसीड करते ही नहीं है। जब हम यह देखते हैं कि चीजें नहीं सुधरती है तो फिर मजबूर होकर सुपरसीड करना पड़ता है। यह हमारे लिये कोई खुशी की बात नहीं है। जनता के इस अधिकार को हम छीन लें, यह अच्छा नहीं लगता। जिन लोगों की मार्फत हमें यह काम कराना पड़ता है वह भी

१६६०-६१ के म्राय-व्ययक में म्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-म्यनुदान ४४७ संख्या ४२--लेखा शीर्षक ४७--प्रकीर्ण व्यय तथा म्रनुदान संख्या १४--लेखा शीर्षक २५--गांव सभाएं म्रौर पंचायतें

इतना ग्रच्छा काम नहीं करते हैं कि फिर शिकायत की बात न रहे। तो फिर हमको चुनना पड़ता है कि दो गलतियों में से एक को--दो श्रपूर्ण में से जो कम श्रपूर्ण हो।

एक प्रैक्टिकल दृष्टि से हमको देखना पड़ता है श्रौर में सदन को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि जब हम किसी बोर्ड को सुपरसीड करने की बात सोचते हैं श्रौर इस संभावना का खयाल करते हैं कि हमारे श्रफ्तरान भी गलतियां करेंगे श्रौर जनता को पूर्ण संतोष नहीं दे सकेंगे तो उसकी हमारे सर पर जिम्मेदारी श्रायेगी श्रौर हमारा किटिसिज्म होगा तो हम बहुत मजबूरी की सूरत में ही इस निर्णय को लेते हैं। तो यह सब हम श्रपन सामने रख लेते हैं। श्रन्ततोगत्वा हमें देखना पड़ता है कि हमें तो गाली मिलेगी लेकिन इससे फायदा होगा तो फिर सरकार थोड़ी बदनामी भी सहन करने के लिये तैयार हो जाती है। जनहित में ऐसा बहुत बार करना पड़ता है, बहुत से कड़ये चूंट पीने पड़ते हैं, बहुत सी चीजें करनी पड़ती हैं जिनते फायदा दूसरों का होता है, बदनामी सरकार की।

श्री उपाध्यक्ष—मैं मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि शुरू में वह ज्यादा समय न लें क्योंकि श्रन्त में कम समय रह जायगा।

श्री विचित्र नारायण शर्मा—श्रीमन्, मैंने पृष्ठभूमि बताई, इसके बाद तो श्रांकड़े ही बताने हैं। यह मैंने इसिलये निवेदन किया ताकि इसकी माननीय सदस्य समझकर हमें श्रच्छा प्रकाश दे सकें श्रीर हम री गलतियों को बता सकें। में सदन का ज्यादा समय नहीं लेना चाहता। मैं यह श्रवश्य चाहता हं कि माननीय सदस्य कोई ऐसी गलत बात न कहें जिसका जवाब देना मेरे लिये जरूरी हो जाय। यह मेरे लिये बड़ी खुशी की बात होगी। मैंने यद्यपि श्रभी दो ग्रान्ट्स ही पेश की है लेकिन मैंने सारे विभाग की भूमिका सामने रख दी है ताकि श्रन्तिम ग्रान्ट के समय मुझे कुछ ज्यादा न कहना पड़े।

श्री प्रताप सिंह (जिला नैनीताल)—पहली अप्रैल से जो नये अधिकार दिये जा रहे हैं उनके संबंध में आपने कुछ नहीं कहा ।

श्री विचित्रनारायण शर्मा—वह मैने माननीय सदस्यों के पास भेजवा दिया है, श्राशा है वह उनको मिल गया होगा।

श्री उपाध्यक्ष--कौन से कागजात की ग्राप बात कर रहे हैं?

श्री विचित्रनारायण द्यामी——हमारे डिपार्टमेंट श्रौर प्लानिंग डिपार्टमेंट की तरफ से कुछ सचनायें दी गई थीं।

श्री उपाध्यक्ष--मुमकिन है माननीय सदस्यों के कबूतरखानों में रख दी गई हों।

श्री विचित्र नारायण शर्मा—में चाहूंगा कि माननीय सदस्य उसको देख लें तो श्रच्छा होगा। में समझता हूं कि माननीय प्रताप सिंह को यह बात नहीं कहनी चाहिये थी क्यों कि उन्होंने एक सवाल पूछा था श्रीर उसके जवाब में मैंने इसी श्रादरणीय सदन में कहा था कि इस तरह के प्रबन्ध किये गये हैं कि जो बलाक लेविल का पैसा हो वह जनहित की दृष्टि से उनकी जन संख्या के मुताबिक गांवों को दे दिया जाय श्रीर वह उस पैसे को सिर्फ उन्हीं हेड्स में ही नहीं खर्च करेंगेजिनके लिये कि वह हो बल्कि दूसरे कामों में भी खर्च कर सकेंगे। उन क यों की एक लिस्ट उसी सूचना में दी गई है। इस सूचना की मेरे पास १५—२० कापीज हैं, मैं कम से कम विभिन्न दलों के नेताश्रों के पास भेजवा ही दूंगा श्रीर को शिश करूंगा कि श्रीर प्रतियां भी उपलब्ध हो सकें। तो मैं निवेदन करना चाहता हूं कि गांव वालों को उसमें कोई दिक्कत नहीं होगी। किन-किन चीजों में खर्चा

[श्री विचित्रनारःथण शर्मा]

नहीं हो सकेगा उसकी भी लिस्ट दे दी गई है श्रीर श्रगर उसमें भी वह खर्च करना चाहें तो उसकी परमीशन ले लें, ऐसा नहीं है कि उसमे वह खर्च हो ही नहीं सकेगा। लेकिन साधारण रूप से नहीं होगा। वह भी एक काफी बड़ी लिस्ट है जिसमे कि खर्च किया जा सकता है। श्रंतिम जो ग्रान्ट दी जायगी वह कैसे कार्यों में उपयोग की गई श्रौर कैसा कार्य हुश्रा उसके प्रकाश में फिर उस पर खंडों की तरफ से रिकर्स डिरेशन किया जा सकता है।

द्दिगोशन डिपार्टमेन्ट श्रौर दूसरे डिपार्टमेन्ट की तरफ से भी क्या काम पंचायत की मार्फत क्षों, जैसे श्रोसराबन्दी का काम है श्रौर दूसरे जो छोटे-छोटे काम करने हों, इसकी व्यवस्था की गई है। तो इस तरह से हर चीज को श्राग बढ़ाने की बात हैं। जैसा मैने निवेदन किया कि ज्यादा से ज्यादा शक्ति खंड लेबिल पर, गांव के स्तर पर चली जाय तो श्रच्छा है। उसमें एक खतरा जरूर हैं कि इन सब योजनाश्रों को मनुष्य चलाता है श्रौर मनुष्य की शक्ति गलत भी कर सकती है श्रौर सही भी कर सकती है। उसको कोई कानून रोक नहीं सकता। सही काम करे तो जनमत हम तैयार कर सकता है जिसके लिये मैने माननीय सदस्यों को दावत दी थी, तभी हम उसमें कामयाब हो सकते है। लेकिन श्रगर इसका दुरुपयोग होता है तो प्यतरा इस बात का है कि जहां हम इस समय विकेन्द्रीकरण कर रहे हैं वह श्राफीशियलाइजेशन में परिवर्तित न हो जाय। श्रगर वे लीग जिनको हम ताकत दे रहे हैं वे ठीक प्रकार से उसका उपयोग नहीं करते तो वह ताकत किसके हाथ में जायगी? वह श्रिधकारियों के हाथ में रिलप कर सकती है। हम भी दूर रहेंगे, सदन भी दूर रहेगा, श्रौर जो ताकत को यूज कर सकते हैं वे करेंगे। यानी खतरा बड़ा भारी है। इसलिये ताकत देना ही केवल उद्देश्य नहीं होता उसमें यह भी देखना होता है कि किस प्रकार से ताकत दी जाय।

श्रव गांव पंचायतों का जहां तक ताल्लुक है वे ७२,४०६ है श्रीर न्याय पंचायतें द्र,४८५ हैं। इधर पिछले डेढ़ दो साल से हमारे श्रसेसमेन्ट में भी तरक्की हुई है श्रौर जो पैसा यसूल करना है उसमें भी ज्यादा कामयाबी मिली है। इसी सिलसिले में गांव पंचायतों को एक यह भी श्रधिकार दें दिया गया है कि यदि वे माफी भी देना चाहें तो दें सकती हैं।

श्री नन्दराम--माफी किस मद में दे सकते हैं।

श्री विचित्रनारायण । शर्मा—जो पंचायतों के कर होंगे उन्हीं में वे माफी दे सकेंगे, श्रापके पैसे की नहीं।

इस तरह से ५७-५८ में ४६ लाख ७२ हजार रुपया असेस हुग्रा ग्रोर ५८-५६ में १,३२,५८,००० रुपया असेस हुग्रा है। इसमें भी काफी इजाफा हुग्रा है। कलेकान ५७-५८ में ७५ लाख ८७ हजार ग्रोर ५८-५६ में १,३५,४२,००० रुपया हुग्रा है। सितम्बर ५८ तक ४० हजार रुपये के करीब हुग्रा। ग्रोर इस साल ५४ लाख के करीब हुग्रा है। तो पिछले साल के मुकाबले में इस साल ज्यादा ही प्राप्त हुग्रा है।

पंचायतों की तरफ से जो रचना का कार्य हुआ है उसका भी कुछ दिग्दर्शन करा देना चाहता हूं। १६५६-४६ तक पंचायतघर बने ६६३, दिसम्बर ४६ तक बने ६५०। पक्के कुएं बनाये गये १६५६-४६ तक ६,१५०, दिसम्बर ४६ तक ६,१६६, ये भी करीब दो हजार से ज्यादा है। ड्रेन्स सितम्बर, १६५६ तक बने १७८, दिसम्बर, १६५६ तक बने २३६। पणकी सड़कें सितम्बर ४६ तक ४२० मील और सितम्बर ४६ तक ५५४ मील। जाहबैरी खोली गयीं सितम्बर ४६ तक ६५० और दिसम्बर ४६ तक खुली १,१३१।

रिडयो सितम्बर, १६४६ तक ५७१ लगाये गये थे श्रौर दिसम्बर ५६ तक ७४१। पानी वाले पुराने कुश्रों की संख्या जिनकी मरम्मत हुई सितम्बर, १६४६ तक ६,२५७ श्रौर दिसम्बर ५६ तक १२,३४२ थी।

इसके ग्रलावा कुछ ग्राम सभाग्नों ने कम्युनिटी ग्रारचर्डस, बाग वगैरह भी लगाये जो सितम्बर १६५६ तक १,०६५ एकड़ में लगाये थे ग्रौर दिसम्बर, ५६ तक १,१३४ एकड़ में लगाये थे। जंगल भी सितम्बर १६५६ तक ३३१ एकड़ में लगे ग्रौर दिसम्बर ५६ तक ३४६ एकड़ में लगे। ये ग्रांकड़ें जो मैंने ग्रभी दिये हैं सिर्फ ४५ डिस्ट्रिक्ट्स से ताल्लुक रखते हैं। कुछ के ग्रांकड़ें ग्रभी हमारे पास नहीं ग्राये हैं। न्याय पंचायतों ने जो मुकदमें किये हैं, ५८-५६ के मार्च तक वे थे १,५५,०४५। माल के मुकदमें जो पिछले साल के बकाया थे वे हैं ४६५, दीवानी के १७,०६४ ग्रौर फौजदारी के १६,६६७। इस तरह से ३४,५४६ मुकदमें पुराने ग्रौर नये जो दायर हुए माल के १६० दीवानी के ८६,८१० ग्रौर फौजदारी के ७४,५०२, यानी कुल हुए १,६४,४७२। जो निबटाये गये सुलह से माल के ४४, दीवानी के ३५,४२० ग्रौर फौजदारी के ३२,८८५, इस तरह से कुल ६८,३४६ ग्रौर ग्रन्थ प्रकार से निबटाये गये, माल के २०६, दीवानी के ४४,७३८ ग्रौर फौजदारी के ४१,२३६, इस तरह से कुल ६८,३४६ के ४१,२३६, इस तरह से कुल ४६,१८०।

इसके ग्रलावा जो दूसरी तरह से निबटाये गये माल के २५०, दीवानी के ८०,१५८ ग्रौर फौजदारी के ७४,१२१, यानी कुल योग हुग्रा, १,४४,५२६। निगरानी के मुकदमें जो दायर हुए जिनके खिलाफ प्रयील होती है उनमें माल के मुकदमें थे ६६, दीवानी के २,६७३ ग्रौर फौजदारी के २,६४२, इस तरह से कुल ५,५४४ केसेज दायर हुए। इनमें से जो स्वीकार किये गये, माल के ५२, दिवानी के १,१०५ ग्रौर फौजदारी के १,५६२, इस तरह से कुल २,७१६ हुए। ये कुछ मुकदमें जो निबटाये गये उनका परसेटेज है १.७ यानी इतने मुकदमों का न्याय पंचायतों के श्रन्दर मिस फैरिज श्राफ जिस्टस हुग्रा। कहा जा सकता है यह मुमिकन है कि बहुत से केसेज की ग्रपील न की जा सकी हो लेकिन उसके बरिखलाफ जो मामले सुलह से निबटाये गये उनका परसेटेज भी काफी है जो हमें इस बात की ग्राशा दिलाता है कि इसमें हम सफल होंगे। श्रन्य प्रकार से जो मुकदमें निबटाये गये वे ६८,३४६ है।

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी--ये कब तक के फीगर्स है?

श्री विचित्र नारायग शर्मा — यह सिर्फ ३१-१२-५६ तक का है, कल तक का श्रमी मेरे पास नहीं श्राया है.....

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी--लेकिन किताब में कुछ श्रौर है---

ं श्री विचित्र नारायण शर्मा——तो उसका वह पीरियड भी दूसरा होगा, उसमे काफी सामग्री दी गई है।

श्री उपाध्यक्ष--ग्राप कितना समय ग्रभी ग्रौर लेंगे?

∣ ृं∣ श्री विचित्रनारायण ॄ्रार्मा—म्ब्राप कहे तो श्रोमन्, में श्रभी खत्म कर दूं।

े श्री उपाध्यक्ष -- ग्राप ५ मिनट ग्रौर ने ले, ग्रगर इस समय ग्रधिक समय ग्राप ले लेगे तो ग्रन्त में कम हो जायगा, ग्राप कहे तो में ग्रभी ग्रौर दे दूं। श्री विचित्रनारायण दार्मा—में ग्रब खत्म ही कर रहा हूं, उधर से जो कहा जाय उसके जवाब में बाद में कहना ज्यादा ठीक होगा। मेरे पास तमाम श्रांकड़े हैं कि कितना रचनात्मक काम हुग्रा हे, कितने मकान बने, नालियां सीवेज कितने बने, यह सब है। वह सब में श्रभो रखें लेता हूं, बाद में जब प्रदन उठाये जायगे तो श्रपने उत्तर में वह सब बता दूंगा। जो विभाग को तरफ से रिपोर्ट दी गई हे उसमे तो सब दिया ही है, उसके प्रकाश में जो कुछ कहा जायगा उसका उत्तर म बाद में दूंगा। इन शब्दों के साथ में सदन से प्रार्थना करता हूं कि वह इन दोनों मागों को स्वीकार करें।

श्री गौरीशंकर राय--उपाध्यक्ष महोदय, मेरा समय कितना होगा ?

श्री उपाध्यक्ष---२० मिनट ग्रब ग्रीर १० मिनट बाद मे।

श्री गौरीशंकर राय--मुझे श्रीमन्, १४ मिनट श्रव श्रोर १४ मिनट बाद में हे विये जायं।

श्री उपाध्यक्ष--ठीक है, ऐसा ही कर दिया जायगा।

\*श्री गौरीशंकर राय—उपाध्यक्ष महोदय, श्रापकी श्राज्ञा से में प्रस्ताव करता हूं कि संपूर्ण श्रनुदान ४२ के श्रधीन माग की राशि घटा कर एक रुपया कर दी जाय। कमी करने का उद्देश्य नीति का व्योरा जिस पर चर्चा उनने का श्रभित्राय है— सरकारी गलत नीति व इन जातियों की उपेक्षा पर चर्चा तथा सुधार सबंधी सुझाव देना। संख्या १४—गांव सभायें श्रीर पचायतें के संबंध में मेरा प्रस्ताय है कि सपूर्ण श्रनुदान के श्रधीन मांग की राशि घटा कर एक रुपया कर दी जाय। कम, करने का उद्देश्य नीति का व्योरा जिस पर चर्चा उठाने का श्रभित्राय है— गांव सभाये एवं पंचायतों का विकेन्द्र करण करके उन्हें गांवों के समस्त निर्माण-कार्य तथा मालगुजारो वसूली श्रादि का कार्य सोपना श्रादि के सबंध में चर्चा तथा सुझाव देना।

उपाध्यक्ष महोवय, श्रभी श्रनुवान पेश करते हुए माननीय स्वायत्त शासन मंत्री जी ने जिन प्रजातन्त्र के अंचे सिद्धान्तों की चर्चा की श्रौर उन्होंने जो एक बड़ा भारी उपदेश दिया वह कोई ऐसा विषय नही है जिस पर इस श्रवसर पर विवाद हो सके श्रोर वह कोई ऐसा विषय भी नही है कि जिस पर कोई दो राय रख सके। इसमें भी मतभेद नहीं है कि स्वायत्त शासन की स्थापना ही एक भूमिका है प्रजातन्त्र में विकेन्द्रीकरण की, इसमें भी कोई मतभेद नहीं है लेकिन यह श्रकसोस हमें जरूर है कि मांग पेश करते हुए हम माननीय मंत्री जी से यह श्राशा करते थे कि उनके भाषण द्वारा हमें कुछ मौलिक तत्व श्रौर विचार मिलेंगे जिन पर चर्चा हो हो लेकिन उपदेश-मात्र के श्रवावा हमें कोई तत्व या विशेष जानकारी उनके द्वारा नहीं कराई गई, किन्ही विभिन्न श्रंगों को व्याख्या तथा चर्चा सुनने को नहीं मिली। पता नहीं कि वह कौन सी नई बात करने वाले हैं, यह शायद वह बाद में बतायें लेकिन श्रभी पता नहीं कि वह क्या लाने वाले हैं। इसमें श्राज कई विषयों से संबंधित बातें हैं।

कुछ बाते पहले में गांव सभाग्रों के संबंध में श्रर्ज करना चाहता हूं। गांव सभाग्रों के चुनाव के संबंध में श्राजा थी कि मंत्री जी श्राज घोषणा करेंगे कि गुण्त चुनाव होगा लेकिन ऐसा नहीं हुग्रा। पहले बताया जा चुका है कि हाथ उठाकर चुनाव होने की वजह से गांव में इतने झगड़े श्रीर मनमुटाव बड़े कि पंचायतों की जो मशा थी श्रार उनसे जिस न्याय की श्राशा की जाती थी वह विलीन हो गई श्रीर इसी को दृष्टि में रखकर बारबार श्रयील की गई कि चुनाव की विधि गुण्त तरीके से रखी जाय ताकि मत देने वाले के

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वोक्षण नहीं किया।

बारे में किसी को पता न चल सके। विधान सभा ग्रौर लोक सभा के चुनाव तो काफी विस्तृत क्षेत्र में होते है इति उम्मं दवार हर जगह मौजूद नहीं रह पाता लेकिन गांव सभा के सभापित के चुनाव में सभापित वहीं उपस्थित रहता है ग्रौर उसके सामने उसके विरोध में हाथ उठाने पड़ते हैं तो इससे श्रापसी वैमनस्य बढ़ गया है।

श्री विचित्रनारायण शर्मा--इसका तो जित्र है, श्रापने शायद देखा नहीं ।

श्री गौरीशंकर राय-मंने पहले ही कहा या कि कागज मुझे मिले नहीं। खैर, इसकी मुझे खुशो है कि श्रायने गांव सभाश्रों के सभारतियों के चुनाव के बारे में गुप्त मतदान की नीति को श्रपनाया है। लेकिन पूरी गांव सभा के लिये नहीं। गांव सभा के सदस्यों में से ही न्याय पंचायत के भी सदस्य होते हैं जो न्याय का कार्य करते हैं। तो पूरी पंचायत का का चुनाव श्रगर गुप्त मतदान द्वारा हो तो गांव की व्यवस्था पर ज्यादा श्रव्छा श्रसर पड़ेगा।

मंत्रो जो से कहा गया कि रेत्रेन्य वसूल करने की जिम्मेदारी गांव सभाग्रों को दी जाय। मंत्रो जो के समय-समय पर दिये गये जवाबों से ऐसा लगा है कि जिन गांव सभाग्रों को वसूलो को जिम्मेदारो दो गई उसमें उन्हें कामयाबी हुई है: लेकिन इसके बाद भी ग्रगर उनको यह जिम्मेदारो नहीं दो गई तो क्यों नहीं दो गई? में उम्मोद करता हूं कि मंत्री जी ग्रपने उत्तर में इसको स्पष्ट करेंगे।

श्री विचित्रनारायण शर्मा--माल विभाग के ब्रनुदान पर मंत्री जी ते कहें।

श्री गौरीशंकर राय-हमने तो समझा था कि भाई ज्वाइंट रेस्पांसिबिलिटी है ....

श्री उपाध्यक्ष--ग्राजकल 'भाई' ग्रौर 'वोस्त' शब्द का बड़ा प्रयोग हो रहा है। केवल चेयर को ऐड्रेस करना चाहिये ग्रौर किती को नहीं।

श्री गौरीशंकर राय—मान्यवर, मन्त्री जी "भाई जी" कहलाते हैं इस लिए गलती से निकल गया। तो श्रगर मन्त्री जी यह समझते हों कि माल मन्त्री की जिम्मेदारी है...

श्री विचित्रनारायण शर्मा--माल मन्त्री कठिनाई बता सकेंगे।

श्री गौरीशंकर राय—ग्रौर ग्रधिक ग्रकसोस की बात है कि इस विषय पर ग्राप ने कभी कैंबिनेट लेविल पर इस सम्बन्ध में वार्ता नहीं की। लेकिन जहां वसूलयाबी का ग्रधिकार विया गया था वहां गांव सभाग्रों को कामयाबी मिली है, ऐसे सरकार से उत्तर मिले हैं। उपाध्यक्ष महोदय, सब से बड़ा सवाल जो गांव सभाग्रों के सामने है, या किसी भी स्वायत ग्रासन की इकाई के सामने है वह फाइनेंस का सवाल है कि कहां से पैसा ग्रावे? ग्राज जैसा मन्त्री जी कह रहे हैं म्युनिसिपैलिटियों में बड़ी खामी हो सकती है। तो जितने विकास ग्रौर निर्माण के कार्य हो रहे हैं ग्रौर स्वायत्त ग्रासन की इकाई नीचे की इकाई मानी जाती है तो सदन को व्यवस्था करनी होगी कि उसको कहीं से रुपया दिया जाय।

में किर निवेदन करूंगा कि हमारी जो मालगुजारी है उसका एक चौथाई हिस्सा लोकल यूनिट्स को दिया जाय, वर्ना उनके पास पैसा नहीं होगा तो वे किस तरह खर्च करेंगे। कानून में श्राप ने टैक्स लगाने का श्रधिकार उनको जरूर दे रखा है लेकिन श्राप ने खुद इतने टैक्सेज लगा रखे हैं कि प्रदेश की जनता श्रव श्रधिक टैक्स के बोझ को बर्दास्त नहीं कर सकती। उस में श्रौर श्रधिक टैक्स देने की कैंपेसिटी नहीं रह गयी है श्रौर सरकार जब तक एक हिस्सा रेवेन्यू

[श्री गौरे शंकर राय]

का इन लोकल यूनिट्स को नही देगी तब तक वे श्रपना काम नहीं चला सकर्त। श्रगर श्राप सचमुच चाहते हैं कि वे इकेक्टिव हो, गांव की इकाइयां प्रभावकारी हो तो मेरी समझ में यह श्राता है कि श्राप को उन को यह श्रधिकार देना चाहिए।

एक बात की श्रोर श्रौर में मन्त्री महोदय का ध्यान दिलाना चाहता हू। गांव सभाश्रो के पास कुछ सम्पत्ति है श्रोर इसकी रक्षा करने के लिए कानून बनाया गय। है। सभापित इसका कस्टोडियन समझा जाता है। में व्यावहारिक किटनाई का जरा जिक्र करना चाहता हूं। में गांव सभा के सभापित के साथ श्रमदान करने के लिए गया था द साल पहले। मेरे साथ एक गजेटेड श्राफिसर थे। एक श्रादमी ने रोका कि रास्ता नहीं बनने देगे। एस० डी० श्रो० ने कहा कि ११ द सी के मातहत सभापित से दरख्वास्त दिला दी जाय। वह दरख्वास्त दे वी गयी। गांव सभा के सभापित ने कहा कि हर तारीख के लिए पेशकार को एक रूपया देना पड़ता है तो वह रूपया किस हिसाब में दिखाया जाय। द साल हो गये लेकिन श्राज तक उस मुकदमें का फैसला नहीं हुन्ना श्रौर एक बार तो बीच में फाइल ही गायब कर दी गयी थी।

मैं श्रपने जिले के बारे में जानता हूं कि गांव सभा के वकीलों का यह काम है कि वे दोनों पार्टियों में मुलह करा कर रिक्वत लेते हैं। एक श्रादमी से मुकदमा कराया जाता है श्रोर दूसरे को नोटिस जाता है। दोनों पार्टियां गांव सभा के सभापित को लेकर वकील साहब के दरवाजे पर पहुंचती हैं। वहां मुलह हो जाती है श्रीर दोनों पार्टिया वकील साहब को कुछ न कुछ देती हैं। कुछ पैसा मुकदमें का उन को सरकार की तरफ से मिलता है। सभापित कम पढ़ें लिखें होते हैं। इस तरह से मेरे जिलें में गांव सभा के वकील ने गांव सभा की श्राधी सम्पत्ति नष्ट कर दी। कलेक्टर के पास जाइये तो जवाब मिलता है कि बहुत दरख्वास्ते श्रायी हैं। मेरी समझ में नहीं श्राता कि फिर किस के यहां दरख्वास्त दी जाय। सरकार के पास रिप्रेजेन्टेक्न किया जाता है तो जवाब मिलता है कि विचाराधीन है। पता नहीं कब तक एक मामला विचाराधीन रहता है?

गांव सभाश्रों के वकीलों की गड़बड़ी के कारण उन की सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। कचहरियों मे पैरवी करने तथा कराने के सिलसिले में डबल मैंनेजमेंट है। कुछ स्वायत्त प्रासन विभाग
का तथा कुछ रेवेन्यू विभाग का मैंनेजमेंट है। इस तरह डबल मैंनेजमेंट से भी बड़ी परेशानी होती
है। मामला श्रापका है तो श्रापको ही देखना चाहिए श्रौर श्राप की ही जिम्मेदारी होनी चाहिए।
गांव सभा की सम्पत्ति की रक्षा, उसके मुकदमे की देखभाल, विकास का कार्यक्रम इन सब की
जिम्मेदारी स्वायत्त शासन विभाग की होनी चाहिए श्रौर उस की पूरी छान बीन भी इसी विभाग
को करनी चाहिए। संक्षेप में मैं कहना चाहता हूं कि बलवन्तराय मेहता कमेटी की रिपोर्ट
जो गांव सभाश्रों के बारे मे है उसको मन्त्री जी देखें श्रौर कोशिश करे कि गांव सभाश्रों को वह
श्रिषकार दिये जायं जो बलवन्तराय मेहता कमेटी की रिपोर्ट में है।

जिला श्रन्तिरम परिषद् की बात माननीय मन्त्री जी ने थोड़ी सी बतायी। जिला अन्तिरम परिषद् के बिल को चाहे रिकास्ट करना हो चाहे बदलती हुई परिन्थित में कोई बड़ा सुन्दर रूप देना हो लेकिन श्राज हम यह कहने के लिए मजबूर है कि सरकार की प्रजातन्त्र की उन ऊंची मान्यताश्रों को प्रतिष्ठित करने की इतनी इच्छा रहते हुये भी सरकार ने डेलीबरेटली जिला श्रन्तिरम परिषदों के चुनाव को इतने दिनों तक टाला है श्रीर में सरकार की नीयत पर यह श्रारोप लगाना चाहता हूं कि वह चाहती है कि सन् ६२ के पहले किसी भी प्रकार जिला श्रन्तिरम परिषद् का चुनाव न हो चाहे वह रिकास्ट होने के नाम पर या कोई दूसरा नारा लगाना पड़े। जिला श्रन्तिरम परिषदों का श्राफिशियलाइजेशन हुश्रा। जिस तरह सरकार के श्रीर महकमें हैं उसी तरह से श्राज जिला श्रन्तिरम परिषद् है। में कहना चाहता हूं कि उसको स्वायत्त शासन की इकाई मानना स्वायत्त शासन की परिभाषा श्रीर स्वायत्त शासन का उपहास करना है। श्रभी श्रापने देखा होगा कि जौनपुर जिले के जिला श्रन्तिरम परिषद् ने एक बजट गिरा दिया

१६६०-६१ के आय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-ध्रनुदान प्र संख्या ४२-लेखा शीर्षक ५७-प्रकीर्ण व्यय तथा ध्रनदान संख्या १५-लेखा शीर्षक २५--गांव सभाएं और पंचायतें

मगर सरकार ने उस को आन लिया। किस्सा यह था कि उनके यहां दो दल हैं, एक दल वह है जो राज काज में है श्रौर दूसरा वह जो राज काज में नहीं है। दूसरा दल वहां डामिनेट करता था। इसलिए सरकार ने उस बजट को मान लिया। वह तो संयोग की बात है कि हम लोगों में से कोई वहां हावी नहीं था।

श्री नागश्वरप्रसाद (जिला जौनपुर)——यह गलत है कि श्रापसी दलबन्दी के कारण यह हुस्रा।

श्री गौरीशंकर राय——ग्रगर गलत बात होगी तो मँ सुधार कर लूंगा मगर जो वहां के माननीय माता प्रसाद जी बैठे हैं उनसे पूछ लें कि यह सही है या नहीं। तो जिला भ्रन्तरिम परिषदों का चुनाव जल्द से जल्द कराने की व्यवस्था होनी चाहिए और रिकास्टिंग करना हो या जो भी हो, उसको वार लेविल पर कर के जल्द से जल्द चुनाव कराने चाहिये।

जहां तक भ्रष्टाचार का सम्बन्ध है, भ्रष्टाचार का नाम तो मैं नहीं लेना चाहता क्योंकि हमारे मुख्य मन्त्री जी भ्रष्टाचार के नाम से ऐसे भागते है जैसे लाल कपड़ा देख कर सांड़ भागता है। उनका कहना है कि जितनी बार भ्रष्टाचार का नाम लिया जाता है उतनी बार भ्रष्टाचारियों के संकल्प में एक दृढ़ता ग्राती है। इसलिए मैं भ्रष्टाचार का बहुत जिक्र नहीं करता, क्योंकि मन्त्री जी ने खुद कहा है कि कुछ भ्रष्टाचार है।

एक बात में ग्रौर कहना चाहता हूं कि गांव सभाग्रों के जो एम्प्लाईज हैं उनके सर्विस कन्डीशन्स बड़े विचित्र हैं। गांव सभा का सेक्रेटरी दस साल नौकरी करने के बाद भी एक मिनट में निकाला जा सकता है। उसके प्रामोशन का कोई सवाल नहीं है ग्रौर एक कोई "घ" की दफा है, जिसकी बिना पर जिस दिन चाहें उसको नौकरी से ग्रलग कर सकते है। मैं नहीं कहता कि जो गुनहगार है वे रखे जायं लेकिन उनके सर्विस रूल्स तो होने चाहियें। ग्रौरों के बार में तो कह सकते हैं कि महकमा ही टेम्पोरेरी है, लेकिन क्या ये गांव सभाये भी टेम्पोरेरी है ? इन को ग्राप परमानेंट नहीं बनाना चाहते ? ग्रगर उन को परमानेंट बनाना चाहते हैं तो उनके एम्प्लाईज के टर्म्स ठीक करने में ग्राप को क्या कठिनाई है ?

एक बात मन्त्री जी नहीं बता सके। बड़ी प्रसन्नता हुई होती श्रगर वह यह बता दिये होते कि जितनी सस्पेंडेड श्रौर सुपरसीडेड म्युनिसिपैलिटीज है उन में से कितनी कांग्रेस दल की थीं श्रौर कितनी दूसरे दलों की थीं। म्युनिसिपैलिटीज के सम्बन्ध में श्रागे फिर श्रजं कर्ष्णा। श्रब समय समाप्त हो गया है। में उम्मीद करता हूं कि मेरा कटौती का प्रस्ताव सदन को मान्य होगा।

श्री नवलिकशोर (जिला बरेली)——उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मन्त्री जी ने जो स्वायत्त ज्ञासन के सम्बन्ध में श्रनुदान पेश किये हैं, में उनका समर्थन करता हूं। जिस समय मन्त्री जी श्रपना भाषण दे रहे थे मैंने उसको गौर से सुना। उन्होंने जनतंत्र के जो मूलभूत सिद्धान्त हैं उनका भी प्रतिपादन किया। मैं समझता हूं कि वह इस बात से भी इत्तफाक करेंगे कि जनतंत्र में जो नान-श्राफिश्चल एजेन्सीज हैं उनको श्रधिक बल श्रौर श्रवित मिलनी चाहिए श्रौर यदि यह सही है तो में श्रापके द्वारा उनसे यह कहना चाहूंगा कि श्रन्तरिम जिला परिषद् जिस समय हमारे इस प्रदेश में स्थापित हुश्रा तो उससे बड़ी-बड़ी श्राशायें की गयीं श्रौर यह बताया गया कि नियोजन श्रौर डिस्ट्रिक्ट बोर्डों के कार्यों में समन्वय होगा।

हमारी सबकी बराबर यह मांग रही कि श्रन्तरिम जिला परिषद् का जो सभापित हो वह नान-श्राफिञ्चियल होना चाहिए, गैर-सरकारी व्यक्ति होना चाहिए श्रौर मुझे श्राञ्चा थी कि हमारे इतने बड़े जनतंत्र के प्रतिपादन करने वाले मन्त्री जी इस छोटी-सी मांग को श्रवश्य स्वीकार करेंगे मान्यवर, जिला परिषद् के सम्बन्ध में विधेयक का एक ड्राफ्ट बना श्रौर वह ज्वाइन्ट ,श्री नवपिकशोर]

सेलेक्ट कमेटी में गया। म नहीं जानता कि यह कहा तक सही है। लेकिन हमें श्रव्वारों स मालूम हुप्रा कि गर्वनेट का उरादा इस बिल को जायम लेने का है श्रोप दूसरा बिल श्राने वाला है। में इस बहस में जाना नहीं चाहता हूं कि यह बापस होगा या नहीं, लेकिन एक बात कहना चाहता हूं और वह यह कि चुनाव मन्त्री जी जब नाहें तब कराये लेकिन वह एक बात जरूर कर हे कि श्रन्तरिम जिला परिषद् के चेपरमें हिंग से डिम्ट्रिट मजिस्ट्रट को हटाकर गर-सरकारी व्यक्ति रख दे। प्रगर यह सही है कि श्राप इस बिल को बापस ले कर, बलजतराय मेहना कमेटी की रिपोर्ट के श्रनुसार नियोजन खंडों को प्राथक प्राप्त देने जा रहे हैं तो म रामजना हूं कि श्राप के लिये वह उचित ही होगा और जल्द से जल्द श्रापका दूसरा बिन पेटा करना चाहिए।

मुसे खुशी है कि नियोजन जिमान की तरफ ते गाज सभायों को काइनेट्रायल मैटर्स में एक नयी दाक्ति दी जा रही है जिस के अन्तर्गन ७,४०० कर्य तक की पनराणि को गाव सभा, स्वयं खर्च कर सकती हैं। इस सम्बन्ध से श्राप दो समितिया बना रहे ह—-(१) कृषि समिति, (२) कत्याण समिति। में समप्तता हूं कि श्रापर यह सही तरीके से बनेगी तो गाव सभायों को, गांवों को श्रोर नियोजन विभाग, इन सब को फायदा होगा। मेरे दोस्त गोरीशंकर राय जी ने कहा कि गांव सभायों का चुनाव गुरत रूप से होना चाहिए। मान्य पर, इस सम्बन्ध में श्रिविक नहीं कहूंगा। इसके लिए बजट में ५० लाख रुपया रखा गया है। में समझता हूं कि यह इस से इन्तर्फाक करेगे कि सभापित का पर बहुत यह महत्य का होता है श्रीर उस से शुक्त्यात की गयी है। श्राप मेम्बरों का चुनाव भी बेन! द्वारा रखा जायगा तो खर्चा बहुत बढ़ जायगा श्रीर में समझता हूं कि प्रदेश की वर्तमान स्थिति को देखते हुये यह उचित नहीं होगा।

एक बात जरूर कहना चाहता हूं। मेरे भाई ने नयी न्याय पंचायतो की बात कही। में समझता हूं कि गांव सभाग्रों का समय खत्म होने वाला है ग्रीर नया चुनाव होगा। हमने एक एक्सपेरिमेंट किया था, शुरू में जो पंच होता था उस को वहीं के लोग चुनते थे। बाद में कमेटी बना दी थी जिस में कुछ एम० एल० एज० थे, लेकिन मेरा खयाल यह है कि ग्रच्छा यही हो, चाहे ग नितयां हों, पर यदि पंच का भी चुना जाय तो बेहतर चीज होगी।

श्रव में दो शब्द एल० एस० जी० विभाग के सम्बन्ध में कहना जाहता है। इस विभाग के श्रन्तर्गत एक बहुत बड़ा इन्जीनियरिंग विभाग है श्रीर यह बहुत बढ़ गया है। मेरी शह से ही राय रही है कि स्वायत्त शासन विभाग के श्रन्तर्गत इतने बड़े विभाग की ठोई श्रावश्यकता नहीं है ग्रीर इस के सम्बन्ध में एस्टिमेंट कमेटी ने एक नहीं दो-दो रियोर्ट वंश का है। इसलिए में डिटेल में नहीं जाऊंगा श्रीर मन्त्री जो से दरख्वास्त करूंगा कि वह मेहरबाना कर कर्मन्दी की रिपोर्टों को पढ़ने के लिए समय निकालें। श्रगर वह उनको पढ़ेगं तो मुझे श्राशा है कि वह मझ से इतकाक करेंगे। वह इतकाक करने की कीशिश करेंगं, केवल पढ़ना ही काफी नहीं है. . . . .

(इस समय १ बज कर १५ मिनट पर श्रो उराध्यक्ष चले गये ग्रीर भ्रियिष्ठाता, श्रीमती चन्द्रावतो, पीठासीन हुयों।)

मान्यवर, गौरीशंकर राय जो ने रेबेन्यू कलेक्झन की बात भी कही। मं उनमें सिद्धांततः तो सहमत हूं—मं तो यहां तक कहता हूं कि रेबेन्यू सम्बन्धो ही नहीं शिक्षा सम्बन्धो जितनी भी शिक्तियां दे सके गांव सभाग्नों की दे, लेकिन जल्दी न कर तो ग्रन्छा है। वरां के सिद्धांत की बात एक होती है श्रीर व्यावहारिक बात दूसरी होती है। यह बात सही है कि वह दिन श्राना वाहिए जब कि हमारी गांव सभाएं ग्रामी जगह पर एक ब्रानियादी इकाई बनें, सिर्फ स्वायत्त शासन के लिए नहीं, बल्कि सम्पूर्ण शासन के लिए। उसके लिए पाड़ा-सा समय लगेगा। री श्रामी मालूमात यह है कि कई जगह इस बात का एक्सपेरीमेंट भी किया गया है।

गांव सभाग्रों को रेवेन्यू वसूल करने का काम सौंपा गया। उसका क्या परिणःम हुम्रा यह मन्त्री जी बतायें। यदि उनमे भ्रच्छा काम हुम्रा हो तो कोई वजह नहीं है कि उस काम को दूसरी गांव सभाग्रों को न सौंपा जाय।

म्युनिसिपैलिटीज के बारे में मुझे यह कहना है कि मन्त्री जी ने म्युनिसिपैलिटीज की ए, बी, सी, डी केंट्रेगरीज बनायी है। मुझे अनुभव डी कंट्रेगरीज का है। म्युनिसिपै-लिटीज तो किसी तरह से बन गयों, हालांकि वे नोटिफाइड एरियाज थीं, लेकिन उनकी जो माली हालत है वह श्रच्छी नहीं है। उन की जो श्रामदनी होती है वह भी उन के स्टाफ के लिए काफी नहीं होती है। तिहाजा में मानतीय मन्त्री जी से कहूंगा कि जब श्रापने उन्हें म्युनिसिपैलिटीज बनाया है तो यह भी उचित होगा कि उन को इतना श्रमुदान दें जिससे वे कम से कम अपने छोटे-नोटे काम कर सके। हुश्रा यह कि नगरपालिका बन गयी। स्टाफ बढ़ गया और स्टाफ की तनस्वाहे भी बढ़ गयीं जैसा कि श्राम तौर पर होता है। पर श्राज उन की श्रामदनी इतनी काफी नहीं है कि वह श्रपने स्टाफ को भी तनस्वाहे दे सके। इस नरफ भी में माननीय मंत्री जी का ध्यान दिलाना चाहता है।

एक बात गांव समाज ग्रौर गांव सभा की कही गयी कि इस सम्बन्ध में बड़ा कप्पूजन है।
गोंकि उसकी ठीक करने की बहुत कुछ कोशिश की गयी है, मेरा ग्रप्ता अनुभव है कि जो उन के मुकदमे होते हैं उनकी ठीक से पैरवी नहीं होती है। गांव सभा की प्राप्टी का वास्तव में कोई प्रीप्राइटर ही नहीं है। डी० एम० से किहये तो वह कहते हैं कि में मृह्ई क्यों बनूं। गांव सभा का सभापति बेचारा वोटों से चुन कर ग्राता है, ग्रौर थोड़ी बहुत दलबन्दी तो है ही। जब हम पढ़े-लिखे लोगों में होती है तो देहात में तो ग्रौर ज्यादा होती है। तो हिम्मत उसकी नहीं होती है कि किसी के खिलाफ काम करे, जिसकी वजह से बहुत नुकसान होता है। बेईमानी की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। दूसरे ग्रादिमयों में भी ग्रमंतीष पैदा होता है। यद्यपि ग्रापके कानून में इसकी जिम्मेदारी उसको दी गयी है लेकिन हो नहीं पाता है, इसलिये कोई ऐसा तरीका होना चाहिये जिससे गांव सभा की जमीनों ग्रौर रास्तों ग्रादि पर जो नाजायज कर के हैं, उनको खाली कराया जाय।

एक बात का श्रौर जिन्न किया गया कि एक-चौथाई रेवेन्यू इन इकाइयों को दे दी जाय बात बहुत बढ़िया श्रौर मुनासिब भी है। लेकिन जब तक ऊपर से नीचे हक विकेन्द्रीकरण न हो तब तक जितना पैसा श्राप विकास में देते है यह भी खटाई मे पड़ जायगा। या तो यह हो कि नियोजन का विकेन्द्रीकरण किया जाय जिसका कि केन्द्रीयकरण हो गया है——तमाम इकाइयों को वे श्रिधकार श्रौर उत्तरदायित्व दिये जांय तभी माननीय गौरी शंकर जो की राय उचित हो सब त है। में समझता हूं कि यह उचित हो सकती है। मगर जो मौजूदा सेट-श्रप है उसके श्रन्दर एक-चौथाई वाली बात कुछ बहुत संगत नहीं बैठती है।

श्रन्त में एक ही बात केवल में श्रीर कह देना चाहता हूं। अध्टाचार की बात में भी ज्यादा नहीं कहता इसलिय कि, श्रिष्टात्री महोदया, श्राप भी जानती है कि जब से यह बजट सेशन श्रूष्ट हुश्रा तब से अध्टाचार की बात सनते-सनते में भी ऊब गया श्रीर कहते-कहते भी ऊब गया। (व्यवधान) हमीं कहते है श्रीर हमीं सुनते हैं। तो में केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि जहां तक स्वायत्त शासन की बात है, उस विभाग में कोई विशेष अध्टाचार की बात हो, ऐसी बात तो नहीं कहता लेकिन जिन इकाइयों से श्रापका वास्ता पड़ता है उसके श्रन्दर जरूर अध्टाचार है श्रीर उस अध्टाचार की श्रापका ज एल० एस० जी० (ई०) डिपार्टमेट है, उसके श्रन्दर काफी गजाइश है। उसमें यह है कि जब तक उससे सिटिफिकेट न मिले श्रीर जब तक वह न चाहे तब तक कुछ नहीं हो सकता। तमाम इकाइयों को वह बांध देता है। श्रन्दान देकर सब काम वहां उसके ही द्वारा होता है। श्रिष्ट श्री उनसे श्रपील है कि एल० एस० जी० ई० (ड्रथार्टमट के बारे में ध्यान वें श्रीर श्रन्त में फिर मेरी उनसे श्रपील है कि एल० एस० जी० ई० (ड्रथार्टमट के बारे में

[श्री नवलिशोर]

मेरी जो निश्चित राय है श्रौर माननीय मंत्री जी भी पूर्णतया मुझसे सहमत है, उनकी कुछ कठिनाइयां हो सकती है, विभाग की, लेकिन फिर भी इसको देखते हुए यह कोशिश करे श्रौर इस सम्बन्ध में जो सिफारिशे एस्टोमेट्स कमेटी ने की है उनको वह व बारा देखे श्रौर पढ़े श्रौर उनको कार्यान्वित करने की चेष्टा करे।

श्री जंगबहादुर वर्मा—माननीय श्रिधिकात्री महोदया, उत्तर प्रदेश की ६३ फीसदी जनता इस स्वशासन विभाग को स्वशासन विभाग नहीं कहती है बिल्क वह इसे कुशासन विभाग कहती है। श्राज प्रानगांवों की श्रौर पंचायतों की हालत देखें। सोशिनस्ट गार्टी श्राज कई वर्षों के बराबर यह कहती श्रायों है कि देश में गांवों तक यदि शासन पहुंचाना है प्रौर देश को उठाना है तो देश में चौखम्भा राज्य कायम किया जाय। लेकिन यह कांग्रेसी सरकार श्राज गांवों तक शासन नहीं पहुंचा रही है श्रौर गांव पंचायतों को श्रौर जिना श्रन्तिस्म परिषदों को यह सरकार ही नहीं बिल्क उसकी नौकरशाही तक श्रपने चंगुल के श्रधीन कर रही है। तिनक भी उनको श्राजादी नहीं है। जब कि वह जनता की चुनी हुई परिषदें हं श्रौर उसके मेम्बर जनता के द्वारा चने हुए है, लेकिन तिनक भी ग्रधिकार उनको नहीं है। नह जब चाहें तब उनको खत्म कर सकते हैं।

श्राज श्रगर गांवों को उठाना है श्रौर गरीबों को उठाना है तो जो उनकी पंचायते है उनको श्राप शक्ति वे श्रौर जो गांवों की श्रामदनी है, लगान है, सिचाई हे, श्रौर श्रन्य कर जो है, उनका एक—चौयाई गांवों को िया जाय। बाकी एक हिस्सा जिला को, एक हिस्सा राज्य को श्रौर एक हिस्सा केंद्रोय रिकार को विया जाय। इस तरह से चार हिस्से बराबर-बराबर बांटे जायं। श्राज उठ र से सरकार कानून बनाकर गांव पंचायतों को भेज देती है। गांव में जहरत है कुरां बनाने की, गांव में जहरत है रास्ता बनाने की, लेकिन सरकार यहां से कानून बनाकर भेजनों है कि नहीं गंचायत घर बनाग्रो। तो श्रार गांव पंचायते श्र ने हाथ से कानून बनाकर भेजनों है कि नहीं गंचायत घर बनाग्रो। तो श्रादिमयों की जहरत हैगी श्रौर श्राज जब श्रादमो रचे जातेंगे तो वह उस काम को करेंगे जिसके लिये कि उनको मजदूरी श्रौर तनख्शह भो चाहिये। लेकिन यह सरकार ऐसा नहीं कर रही है। श्रगर ऐसा हो तो गांव पंचायते श्रानो जहरत के मुनाबिक स्कून हं, पाठशालायें है, दवाखाने है, उद्योग-धंधे हैं, कारोबार हैं, यह सब चीजें वह श्रानो जहरत के मुनाबिक करें। लेकिन सरकार ऐसा नहीं चाहती है।

त्राज सारो शिक्त तो केन्द्रीय सरकार ग्रौर प्रांतीय सरकार के हाथ में है। एक लेखपाल, पतरौल, ग्रौर में के उरो ग्रौर ग्रन्य कांस्टेबिल ग्रौर थाने वार जितने सरकारी कर्मचारी ग्रौर नौकर हैं वे गांव पंचायतों है प्रशानों श्रोर पंच को तिनक भी इज्जत नहीं करते। हमने तो जिले के गांवों में देखा है कि पंचों, प्रधानों को तो ये थाने वार लोग वह वह गालियां देते हैं कि जिसका जवाब नहीं। वहां पर रकार के चुने हुये जो व्यक्ति हैं, उनके लिये कुसीं ग्रातो है, चाय ग्राती है ग्रौर बिस्कुट ग्रातो है लेकिन ये लोग ग्राज ठुकराये जाते हैं। जब तक सरकार जनता के सदस्यों के मातहत उन नौकरों को नहीं रखेगो तब तक उनका कोई कारोबार ठीक से नहीं चलेगा।

इसी तरह से जिला परिषद का हाल है। जिला परिषद में ग्राज जो कलेक्टर है वहीं सब कुछ करता है। जो मेम्बर वहां पर होते हैं उनको वह परवाह नहीं करता है। वहां के वायस चेपरमेन या जनता के चुने हुये मेम्बरों की कलेक्टर कर्तई परवाह नहीं करता है। इसिलये में समझता हूं कि कलेक्टर श्रीर जिले के नौकर जिला परिषद के मातहत होने चाहिये। ग्रभी हमने देखा है कि बाराबंको जिले में उम्मेदवारों का चुनाव हुआ था। उसमें लग ग २०० उम्मेदवार चुने गये। वहां पर एक बार चुनाव हो गया, लेकिन कुछ व्यक्तियों का फिर दोबारा चुनाव किया गया ग्रीर जिनके लिये सिफारिश थी ग्रीर जिनको लेना चाहिये था उनको नहीं लिया गया। उंची जाति वालों को लिया गया।

#### १९६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--स्रनुदान संख्या ४२--लेखा शोर्षक ५७--प्रकीर्ण व्यय तथा स्रनुदान संख्या १५--लेखा शीर्षक २५--गांव सभाएं स्रौर पंचायतें

यही हालत हमने उद्योग घंघों के संबंध में देखी है। वहां जो रुपया भेजा गया था वह बड़े-बड़े श्रादिमयों को बांट दिया गया। वह गांव तक नहीं पहुंचा है। उद्योग-घंघे के लिये रुपया दिया गया लेकिन उनमें वह रुपया नहीं लगा। किसो के मकान बने श्रौर किसो ने दूसरे काम में लगाया। इस प्रकार से चलता रहेगा यदि श्राप गंत्रों के हाथ में शक्ति नहीं देंगे। श्राज गरकार उनके हाथ में शक्ति नहीं दें रही है। इस सरकार के ऊपर केंद्रोय सरकार है जो दूसरे बड़े बड़े कार्य करतो है। में ऐसा समझता हूं कि केंद्रोय सरकार से जो हिस्सा रुपये में इस सरकार को मिलता है उससे भो यह सरकार कुछ काम करतो है। में यह समझता हूं कि पुलिस, फौज, सड़क श्रौर दूसरे बड़े-बड़े काम भी इस सरकार को करने चाहिये, लेकिन श्राज ऐसा यह सरकार नहीं कर रही है। छोटे काम गांव पंचायतों को देने चाहिये।

सेन्नेटरी की भी श्राज यह हालत है कि वह कर्तई परवाह नहीं करता है। हमारे जिने में सेन्नेटियों का कई बार तबादला हुआ. लेकिन वह फिर सिफारिश द्वारा उसी जगह पर आ जाता है। उसको दो रुपया सालाना तरक्की मिलतो है लेकिन हमारे जिले में वह तरक्की उसको स्रभो तक नहीं मिलो है। उनको तनख्वाह भी ३ महीने श्रौर ४ महीने के बाद मिलतो है, लेकिन इसको भी कोई परवाह नहीं की जातो है।

श्रदालतो पंचायतों का यह हाल है कि जो जनता की चुनी हुई होनी चाहिये वह उसके द्वारा चुनो हुई न हीं हैं। सका के द्वारा श्रौर जिल्ला श्रन्तिरम परिषद् के द्वारा बड़े बड़े श्रक्त पर्रा को श्रौर श्रदालतो पंचायतों के सरपंच को उस में रख दिया गया है जिसका नतोजा यह है कि वे सरकारो चंगुन में फंग्न गये हैं। जो ऊपर से प्रिकारिश होतो है उसके मुताबिक वह फेग्न करते हैं। यह जनता को चुनो हुई गंस्या न होने के कारण उत्तर प्रदेश में बहुत सी पार्टी-बन्दो हो गई है। लोगों के मकान जलाये गये, लाठो क चलो श्रौर कत्ल तक हो गये हैं। में श्रापको बताऊं कि मबई परगने में एक प्रधान को श्रांख निकाल लो गई। एक श्रादमी जान से मार डाला गया। इनको नामजद रिपोर्ट को गई, लेकिन पुलिस ने श्राज तक कोई कार्यवाही नहीं को। यदि उनको श्रिधकार होता तो इस तरह से नहीं हो सकता था श्रौर न इस तरह की कोई कार्यवाही होती।

इसी तरह से जैसे वन विभाग का मामला है, वन विभाग भी यदि पंचायत के मातहत होता तो आज इतना ज्यादा पैता हमारो सरकार को खर्चन करना उड़ता। जैसे पुराने जमान में जमींदार लोग अपने हल्के के अन्दर वन को सुरक्षा के लिये प्रबन्ध करते थे तो इसी तरह से पंचायत भी उसकी सुरक्षा का प्रबन्ध कर सकती है।

स्राज प्राइमरी स्कूलों की हालत यह है कि उनमें मास्टर पढ़ाने नहीं जाते हैं। ऊपर के लोग जो जिना स्नतिस्म पिराद् के स्रविकारों हैं, या कांग्रेस के नेता हैं वे लोग उनसे कांग्रेस के मेम्बर बनवाते हैं या कुछ स्नौर काम करवाते हैं। फिर उनके लिये क्या चिन्ता हो सकती है चाहे वह स्कूल जांय या न जांय। कोई स्नौर दूसरा देखने वाला नहीं है। इसी तरह से इनके मुस्रायना करने का स्रविकार इनको होता, जो नये नये उद्योग-श्रंथे खुल रहे हैं, नई-नई सड़कें बन रही हैं, गल्ला स्टोर खुल रहे हैं, उन सब के लिये स्रविकार स्नगर इन पंचायतों को होता तो वे खाकर उनका निरोक्षण कर सकते थे। यदि उनके पास उनके निरोक्षण करने का स्रविकार, नौकरों से बरखास्त करने का स्रविकार होता तो में यह कह सकता हूं कि स्नाज यह स्रव्याचार नहीं हो सकता था। में हैदरगढ़ बोज गोदाम के बारे में जानता हूं। वहां से लोगों को गल्ला प्राप्त नहीं हुस्ना स्नौर बहुत-सा वहां से गबन हो गया। जो सरकारी गला स्टोर खुले हुये हैं उनमें भी बहुत गबन च । रहा है लेकिन इसका उनको स्रविकार नहीं है।

म्राज गांव सभाम्रों के जो जंगल, तालाब भ्रौर परती जमीनें हैं उनकी कोई हदबन्दी नहीं की गई है भ्रौर पुराने जमींदार सामन्तशाही के जोर पर उसे मनमाने ढंग से काट रहे हैं। उनके

श्री जंगबहादुर वर्मा]

पास कागजात भी नहीं है । रौनी श्रौर पारा में गांव समाज के कितने ही जंगल काट डाले गये हैं। थानेदार श्रौर तहसीलदार सुनते नहीं, उनको कोई परवाह नहीं है। श्रगर हदबनी होती तो उन लोगों को जंगल काटने को हिम्मत न होती। लेखपालों श्रौर दूसरे श्रधिकारियों ने मिल कर तमाम तरह के गलत पट्टे रिक्यत लेकर कर दिये है श्रौर श्रगर गांव सभा का प्रधान कुछ कहता है तो वे उसका मुश्रायना कर के उसे मुश्रचल कर देते हैं। गांव समाज की तरफ से जो वकील होता है उसे बहुत कम फीस मिलतों है श्रोर वह विपक्षियों से मिल कर मुकदमें उनको जितवा देता है। वहां का दशा खराब हो रही है।

कुंएं का अनुदान हरिजनों का १०, १० वर्ष का बकापा हे और पेनेट नहीं हो रहा है। कितनी ही शिकायते जिला अंतरिम परिषद् और प्लानिंग में दिनवायीं ले जिन कोई परवाह नहीं की जा रही है। एक एक कुएं पर ५०, ५० रुपये रिव्वत देनी पड़ती है। यदि श्राप यह पैसा गांव सभाओं को देवते तो यह कुएं श्रासानी से बन जाते। है दरगढ़ में सब जगह खारा पानी है श्रोर अच्छा पानी न मिजने के कारण वहां की जनता मर रही है। नदी के किनारे सलोर आदि १० गांव है लेकिन उनको स्वच्छ पानी नहीं मिलता और सरकारी श्रीधकारियों को तिक भी परवाह नहीं है। गांव समाज श्रगर रुपया पाता तो श्रच्छी तरह से दन कुश्रों को बनया लेता। जो अनुदान दिया जा रहा है वह उनको मिलना कठिन हो रहा है। सूले या सैलाब की जो रिपोर्ट मंगायी जाती है उसमें श्रीधकारी श्रसलियत को दबा देते है। ग्रगर गांव को प्रिषकार देना है, उस पर विश्वास करना है तो वहाँ के चुने हुये पंचों से श्रापको यह रिपोर्ट मंगवानी चाहिये और उसकी जांच करा कर श्राप देखें तभी श्राप को सही बात का, स्थित का पता चल सकता है।

श्री त्रजिवहारी मेहरोत्रा (जिला कानपुर)—ग्रिधकात्री महोदया, में प्रापका श्राभारी हूं कि ग्रापने इस श्रनुदान पर मुझे बोलने का श्रवसर प्रधान किया। में इस श्रनुदान का समर्थन करने के लिये खड़ा हुग्रा हूं। मेंने माननीय मंत्री जी के व्याख्यान को सुना श्रीर उन्होंने जिस तरह से श्राक्ष्वासन की बातें इस सिलसिले में कहीं वे सचमुच उपयोगी बातें है श्रीर में समझता हूं कि यदि वह कार्यान्वित हुई तो हमारे गांव की इकार्यी की महत्ता बढ़ जायगी श्रीर हम उस के द्वारा जनता की सच्ची सेवा कर सकेंगे।

प्राम सभाग्रों का निर्माण पिछली बार जब हुमा तो चुनाव हाथ उठाकर हुमा था भ्रीर शिकायत है कि इस कारण दलबन्दी बढ़ गयी, काफी कदुता बढ़ी भ्रीर उसके कारण कुछ अपराध भी बढ़े । मुझे जान कर संतोष हुमा कि इस बार जब प्रधान के चुनाव होंगे तो वे हाथ उठाकर नहीं, वरन् बेलट द्वारा होंगे । में समझता हूं कि इस से बहुत कुछ वह सरगर्मी प्रोर जोर जबरदस्ती होती है, वह समाप्त हो जायगी । लेकिन भ्रगर गांव सभा का चुनाव बेलट द्वारा हुमा तो ५० परसेंट बोटर तो ऐसे होंगे कि जो अपना बोट नहीं दे पायगे । गांव सभा के बोटर को गांव की पंचायत के १६, १८ भ्रादमियों के नामों को विमाग में रखना सम्भव नहीं है भ्रीर वह यूं ही विना भ्रयना मत प्रवान किये रह जायगा ।

यह रो सकता है कि वह पार्टी को बोट कर जायं। साधारण व्यक्ति किसी भी पार्टी के उम्मेदवारों को बोट कर सकते हैं, लेकिन में चाहता हूं कि वे िक्सी तरह से खुल कर बोट करे। हम चाहते हैं कि एक दिन इस डर को निकाल दें। हमें इसका डटकर मुकाबला करना चाहिये, सामने आकर छिपकर नहीं। मरदानगी के साथ मुकाबला करना चाहिये। जो हमें दबाना चाहता है उसका हमें मुकाबला करना ही होगा। इस तरह से सभापित को जिसकों कि हम हर काम में प्रमुद्धा मानते हैं उसकी सहायता मिलेगी। गांव सभाग्रों का जब निर्माण होता है तो कई जिम्मेदारी आ जाती हैं, कभी-कभी तो लोगों द्वारा गांव सभाग्रों की भूमि पर नाजायज तरीक से कब्जा कर लिया जाता है। जब गालिब लोग उन जमीनों पर कब्जा कर लेते हैं हो गांव सभाग्रों के अध्यक्षों को अदालतों में दौड़ना पड़ता है, उसमें उनका काफी पैसा

खर्च हो जाता है। यह सही है कि सरकारी वकील होते हैं, उसमें उनका खर्च नहीं होता है, लेकिन ग्राने जाने में तया ग्रीर जो इस संबंध में उनका खर्चा हो जाता है वह उनको नहीं मिलता है। गांव सभा की सम्पत्ति की रक्षा में जब उनको इघर उघर दौड़ना पड़े ग्रीर खर्च करना पड़े ग्रीर उनको सहानुभूति भी न मिले, तो यह सोचने की बात है कि वे कैसे ग्रपने काम को ग्रंजाम ग्रच्छी तरह से दे सकते हैं। वे तभी ऐसा कर सकते हैं जब कि गांव सभा के पास धन हो ग्रीर प्रधानों को सम्मान मिले।

जैसा कि एक माननीय सदस्य ने कहा, में चाहता हूं कि गांव सभाग्रों की ग्रामदनी बढ़े। वह ग्रामदनी कोई नया टैक्स लगा कर नहीं बढ़नी चाहिये, बिल्क जो मालगुजारी से रुपया वसूल किया जाता है, उसका कुछ हिस्सा उनको दिया जाय। मेरी श्रपनी इसला है कि इस मालगुजारी वसूल करने का काम जिन गांव सभाग्रों को दिया गया उन्होंने बड़ी श्रच्छी तरह से इस काम को किया है। में समत्रता हूं इसी तरह से ग्रगर मालगुजारी वसूल करने का काम गांव सभाग्रों को दिया जाय तो इससे खर्चों भी कम होगा ग्रीर लोगों की परेशानी भी कम होगी क्योंकि गांव सभा यह श्रच्छी तरह जान सकती है कि कौन सा श्रादमी दुख-दर्द में फंसा हुश्रा है ग्रौर किससे कब मालगुजारी वसूल की जा सकती है, किससे नहीं। श्रापको इससे कामयाबी ही मिलेगी। ऐसा मेरा खयाल है।

श्रव में टाउन एरिया श्रौर नोटिफाइड एरिया के संबंध में कुछ निवेदन करना चाहता हूं। टाउन एरियाज श्रौर नोटिफाइड एरियाज की श्राज श्रामदनी इतनो कम है कि वे श्राने रोजमर्रा के काम भी श्रच्छी तरह से नहीं कर सकते हैं। रोजाना की सफाई श्रौर रोशनी का प्रबन्ध भी करना उनके लिये मुश्किल हो जाता है। हमारे यहां ऐसी छोटी-छोटी टाउन एरियाज है जहां पर पानी तक का इंतजाम नहीं है श्रौर वहां गर्मी के दिनों में लोगों को एक-एक बाल्टी पानी मोल लेना पड़ता है। बाज-बाज जगह तो ऐसी है जहां पानी १०० फुट से नीचे जाकर निकलता है। हमारे यहां पुलरायां कस्बा ऐसा है पानी वहां गम के दिनों में बिकता है। यहां इन्सान पानी जिस तरह से खर्च करते हैं वहां वे नहीं कर सकते। वहां एक ट्यूब वैल भी बना है लेकिन वह श्रभी काम नहीं कर रहा है। इसलिये माननीय मंत्री जी को उस तरफ ध्यान देना चाहिये श्रौर वहां के लोगों की परेशानी को दूर करना चाहिये। कुपया व्यवस्था करें कि उस ट्यूबवेल का उपयोग होने लगे।

इसके श्रलावा, जैसा मेंने कहा, गांव सभाग्रों की सम्पत्ति के बारे में बड़ा कटु श्रनुभव हुश्रा है। श्रवप्तर लोग जबरदस्ती गांव गभाग्रों की जमीन पर कब्जा कर लेते हैं। वे इसलिये कब्जा नहीं कर लेते हैं कि वे वहां पर कोई बोग्राई या जो गाई करें।। इसिलों वे कब्जा कते हैं कि वे उसमें जो पेड़ वगैरह लगाये वह उनकी मरजी से लगे श्रीर कटे श्रीर जो कुछ हो व हु उन की मां से हो। वे जैसा चाहें वैसा किया जाय। इसिलये कानून में ऐसा परिवर्तन होना चाहिये कि जो भी इस तरह से नाजायज कब्जा करने वाले हों उनकी ऐसी सजा मिले जिससे वे श्रागे इस तरह की हरकत करने में श्रामादा न हों। इस तरह का परिवर्तन कानून में होना चाहिये।

जिला परिषद् के बारे में मेरा ग्रपना निवेदन यह है कि जिला बोर्ड का कानून बहुत पुराना हो गया ग्रीर उसी के जिरये इनकी व्यवस्था हो रही है । मुझे बड़ी ग्राज्ञा थी कि जिला परिषद् का कानून तर्वील होगा ग्रीर उसकी रूप-रेखा ऐसी होगी जिससे विकेन्द्रीकरण होगा । में तो इस खयाल काथा जब में मेहता कमेटी रिपोर्ड ग्रायी कि उसके सुझाव के श्रनुसार सत्ता का विकेन्द्री-करण होना चाहिये ग्रीर ग्रपनी ब्लाक्स कमेटीज को ग्रिधकार मिलना चाहिये। अर मेहता कमेटी की रिपोर्ड के ग्रनुसार ग्रपनी ब्यवस्था बना सके तो में समझता हूं कि बहुत कुछ सत्ता गांव के हाथ में ग्रा जायगी।

[श्री व्रजिवहारी मेहरोत्रा]

नियोजन का काम जिला परिषद को देने का नतीजा यह हुया कि वह ढीला काम हो गया ख्रीर नहीं के बराबर हो पाया जिस काम हो करने के लिये हम प्रलग से ६ घंटे हर मार कम से कम बैठते थे ख्रीर कभी कभी २ बार भी बैठते थे, ख्रब होता पह है कि जिजा परिषद और नियोजन के काम के लिये महीने में चन्द घंटे बैठने दें ख्रीर बटीन के काम में ही सारा वक्त जिला परिषद् का निकल जाता है ख्रीर जो योजनायें दें, परीक या रबी ख्रान्दोलन या दूमरी विकास की योजनाओं पर समय हीं दे पाते। इस प्रकार से नियोजन का काम जिला परिषदों ने रोक दिया तो खब जो जिना परिषदों का ख्रिवित्यम बनें उनमें पह ख्याल रहे कि रूटीन का काम कम लें. निर्माण में ख्रिविक टाइम दे सकें, विचार-विमर्श ख्रिविक हो सके ख्रीर ख्रिविक देर हम बैठ सकें ख्रीर ख्रवी व्यवस्था के लिये स्वच्छन्द हों।

जिला परिषद् की म्रामदनी के लिये ऐसा न करें जैसा कि पिछले बार विधेयक में रखा गया कि, गांव सभा की म्रामदनी का एक जुज उनको दे दिया जाय, यानी—"चौबे जी छन्बे होने गये भ्रीर दुःबे ही रह गये।" यह तो उल्टा हो गया। जिला परिषद् का म्रामदनी का जिर्या म्रालग होना चाहिये भ्रीर गांव सभा को रेवेन्यू में से एक म्रंश दे दिया जाय।

मैंने जो चन्द बार्ते सरकार की सेवा में पेश कीं, मुझे श्राशा है कि इन पर विचार करके उनको कार्य रूप में लाने का प्रयत्न होगा। इन शब्दों के साथ, में इस श्रनुदान का समर्थन करता हूं।

श्री श्रमरनाथ (जिला गोरखपुर)—माननीय प्रिविष्ठात्री महोदया, ग्राज जो श्रनुदान हमार समक्ष प्रस्तुत है ग्रीर जिसके सम्बन्ध में माननीय गौरीशं कर रायजा ने जो कटौती का प्रस्ताव प्रस्तुत किया है उसके समर्थन में में खड़ा हुग्रा हं। हमें वेखना यह होगा कि जो हर वर्ष हम लोग प्रनुदान देने हैं गांव सभाग्रों, नगर पालिकाश्रों तथा स्थानीय निकायों ग्रीर जिला परिषवों के विभागों को उनको व्यवस्था इत्यादि किस ढंग से चलाई जा रही है। श्रीमती जी, सरकार को जानकर इस बात से इन्कार नहीं होगा कि उसमें खास तौर से शासन के श्रिकारियों ग्रीर कर्मचारियों के सहयोग की कमी है। ग्राज जो ग्रिधकारी ग्रीर कर्मचारी उन विभागों को चलाने के लिये रखे गये हैं वे ठीक से श्रपना काम नहीं कर रहे हैं। जो पंचायत मंत्री रखे गये हैं उनका एक काम यही रह गया है कि वह भत्ता लें ग्रीर पंचायतों का काम न करें। वे गांव सभाग्रों में हाजिरी नहीं देते।

ग्राज गांव सभाग्रों का कोई निरीक्षण नहीं हो रहा है। पंचायत इंस्पेक्टर दफ्तरों में बैठकर जिला ग्रिष्धिकारियों को रिपोर्ट भेज दिया करते हैं, गांवों में नहीं जाते हैं और उनका निरीक्षण नहीं करते हैं। न्याय पंचायतों की ग्राज जा कार्य प्रणाली है, उनके कार्य करने का जो हंग है ग्रीर वहां पर जिस प्रकार से नुकदमें होने का तरीका है, श्रगर देखा जाय तो ज्यादातर मुकदमें दलबन्दी के ग्राधा पर श्राते हैं, वहां के न पंग्नी पंग्र एक दूसरे पक्ष से सम्बन्धित होते हैं श्रीर उसी के ग्राधार पर उन पर फंसला होता है। साथ ही साथ निगरानी का जो टाइम होता है उसको वह बर्ड कर देने हैं श्रीर द्सरे पक्ष को मौका नहीं देते कि वह दूसरी श्रदालत में जाकर निगरानी दाखिल कर सके। यह इस बात का प्रमाण है कि वहां पर किस प्रकार की दलबन्दी छाई हुई है।

जिस ग्राधार पर न्याय पंचायतों का निर्माण होता है वही ग्राधार इसका सबसे बड़ा दोष है। सरकार ने गांव गंचायतों प्रधानों के चुनाव के बारे में जो तरीका ग्रपनाने का निश्चय कि । है उससे हमें इन्कार नहीं है उसका में स्वागत करता हूं, लेकिन मेरी प्रार्थना यह है कि ग्रगर उसी ग्राधार पर उप-प्रधान ग्रौर पंचों का भी चुनाव कराया जाय ग्रौर ग्रगर सरकार मेरे हुं स्थाव को मान ले तो बहुत ग्रच्छा होगा । इससे गांवों की दलबन्दी समाप्त हो जायगी ग्रौर जिस उद्देश्य के लिये ग्राप इन संस्थाग्रों का निर्माण करना चाहते हैं उसकी पूर्ति हो सकेगी । हम चाहत है कि गांव के स्तर पर सत्ता का विक्रेन्द्रीकरण हो, गांव वाले खुद ग्रपनी सरकार को चलायें, ग्रपना काम करें ग्रौर ग्रपने ग्रविकारों को बरतें, यह तभी सम्भव होगा जब कि पंचों ग्रौर उप-प्रधानों

## १६६०- १ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--ग्रनुदान संख्या ४२--लेखा शीर्षक ५७--प्रकीर्णे व्यय तथा श्रनदान संख्या १५--लेखा शीर्षक २५--गांव सभारं स्रोर गंचायतें

का भी चुनाव उसी भ्राधार पर करा दिया जाय। इनने वहां पर लोगों ने एक दुनरे के प्रति दुर्भावना नहीं एह जायगी । लोग नहीं जान नारों कि किनने कि नहीं बोट दिया प्रोर किलको नहीं दिया। किर वहां पर दलबन्दों के प्रावार पर न तो कै उने हो किये जायेंगे ग्रीर न इसरे काम ही होंगे।

भ्राज गांत्रों में जिस प्रकार से सार्वजनिक सम्पत्ति की बर्बादी हो रही है इसका एकमात्र कारण यह है के रंबों में शिक्षा को कनो है, उनमें जानकारो को कनो है। वे नहीं जानते कि उनके क्या भ्रिकोर है और कीत-ता सम्पत्ति है। भ्राज गांवों ने तो ते वाल भीर ते के ररी रखे गये है उनका यह काम है कि गांव सम्मत्ति के बारे में गांव सभायों को रिपोर्ट दे कि कीन सो उनकी सम्पत्ति है ग्रीर उन हे कामों में महयोग दें, कागजातों हो ठोक रखें, हिसाब-किताब ठोक रखें, लेकिन प्राज वहां पर इन सब चोजों को कवी पाई जा रही है ।

पंचायतों को किन्हीं क गजातों को जहरत पड़त है, माल विभाग के कागजातों की जहरत पड़ती है तो जे अवाल उन हो देने नहीं, प्रौर न उन हो बैठ हों ने ही जाते हैं। स्रौर सरकारी कर्नचा-रियों की यह क्रम नोति हो गई है कि गंचायतें पनाने न पायें। इसके क्रजावे यह भी कहना है कि पलिस कर्नचारियों को यह श्रियकार है कि गंचायतों को जो श्रियकार मिले हैं उनकी चलाने ने यदि पुलिस के सहयोग को जह रत हो तो दें प्रौर साथ हो वंचायतों वें नो गड़बड़ियां दूसरे व्यक्तियों द्वारा की जाती हों, प्रौर गंवायतों हे माल ब्रौर सम्पत्ति का इहायोग किसो के द्वारा हो रहा हो, अपवा कोई बेईमानी की जा रही हो, या उनकी सम्पत्ति का श्रपहरण किया जा रहा हो तो वे गंचायतों की मदद करे, लेकिन श्राज इस बात की कमी पाई जा रही है, वे कतई मदद नहीं करते।

जहां तक गंवायतों के खर्वे का सवाल है, सरकार ने उनको डैक्स के जरिये कुब प्रामदनी का रास्ता दिया है ने किन गांव वाले डैक्स नहीं दे पाते। उन ही अने हीं प्रकार है डैक्स देने पड़ते हैं, जिला परिषद् हो भो दैक्स देवा पड़ता है, सरकार की भो दैक्स देना पड़ता है, इसलिये गांव वाले रेनो स्थिति ने नहीं है कि वह प्रीर टैक्स हे स हैं। इतिल रे सरकार की रेतो व्यवस्था करनी चाहिये कि जिला परिवदों की आमदनो का जिला परिवद् प्रौर गांव सभायों में बःवारा किया जाय। गांव गंवायतों हो उसनें हिस्सा मिलना चाहिये।

साथ ही साथ सरकार की रेबेन्यू में से कम से कम एक चौथाई भाग पंचायतों की मिलना चाहिये जिससे वे प्रयने खर्वे चला से कें। केवल डैक्स लगाने से, ग्रौर वह भी गांव सभाग्रों की मर्जी पर होगा, उन हो होई भी उन्नति नहीं हो सकती । ग्राज गंचायतों को ग्रविकार की बहुत कती है प्रीर ग्राप हे हों। कि गंबायत राज्य रेक्ट में बहुत-सी खामियां हैं। ग्रगर ग्राप सत्ता का वि हेन्द्रोकरण चाहते हैं, जैता कि जिला परिषद् बिल से जाहिर हो रहा था, तो क्यों आप उसे वापस जे रहे हैं नेता कि तुनने में प्राया है ? प्रगर सरकार गांव नंवाय । स्तर पर या ब्लाक स्तर पर सता का वि ते द्वीय करण करना चाहती है प्रौर इसलिये उस बिल की वापस ले रही है, तब तो हम उपका स्वागत करने हैं; वरना द्वार वह बुगाव टालने के लिये हो वापस लेना चाहुती है तो यह उचित नहीं है। जिस प्रकार के भ्राज जिना भ्रत्तरिम परिवरीं के तौर-तरो के हैं प्रौर तेने नोग वहां बैठे हुने हैं, नेरा मतलब स्रिन करियों से है यद्यनि जन-प्रतिनिधि भी वहां है प्रौर जिस इंग से वहां को व्यवस्था चलाने में वह लोग मनमानो कर रहे है वह देवते हुने सुझे यही कहना पड़ता है कि उसकी जल्द से जल्द समाप्त करने की ग्रावश्यकता है ग्रीर उनके साथ ही ब्रन्तरिम परिषदों का पिन्ड छुड़ाया जाना चाहिये ब्रौर मैं यह भी मांग करता हूं कि झन्तरिम जिला परिवदों के झध्यक्ष पर से जिलाधीश को हटाया जाय।

एक बात में गुजफ्करनगर जिले की कहना चाहता हूं। वहां राजपुर श्रीर छाजपुर का यह कहां तक उचित है जबिक पुल है जिस पर ठे हेशर पैदल यात्रि में से भी शुल्क लेता है। पैदल यात्रियों से कहीं भी देक्स नहीं लिया जाता है ? में सरकार से मांग करूंगा कि वह इसकी जांच कराकर हम लोगों को बतावे कि उसने क्या कार्यवाही की।

### [श्री ग्रमरनाथ]

स्रगर मंत्री जी नाराज न हों तो में यह कहना चाहगा कि जिस तरह से स्राज ये पचायतें कार्य कर रही हैं। उससे प्रकट होता है कि वे केवल सरकार के एजेन्ट के रूप में काम कर रही हैं। स्रगर ऐसा है नी उन्हें नोर देना मुनासिब होगा। स्रगर उनको सरकार ने एजेन्ट के रूप में नहीं रखा हैं स्रोर वह उन्हें ज्यावा से ज्यावा स्रिक्षकार देना चाहती है तो जल्दी उनकी ट्रेनिय की स्रोर उनकी शिक्षा को कार्यवाही की जाय। जैसी स्राज व्यवस्था ह उससे यह जाहिर होता है कि वे पचायते स्राणे बढ़ने वालो नहीं हैं। स्रगर सरकार उनकी मदद कर दे तो निश्चय ही हम जसा जनतत्र चाहते हैं उसमे पंचायतों से बहुत मदद ले सकते हैं।

इन शब्दों के साथ, में माननीय गौरीशकर राय जी के क्टौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री कन्हेयालाल वाल्मीकि (जिला हन्दोई) — माननीय श्रियि ठात्री महोदया, मै श्रापका श्राभारी हूं कि श्रापने मुझे बोलने का श्रवसर दिया है।

माननीया, ग्रभी एक पुस्तिका जो हमें पीजन बक्स में मिली उसे जत्दी-जत्दी देखकर जो बातें समझ में ग्र हैं उन पर में ग्रमने विचार व्यक्त करना चारेता हू। इसमें लिखा ह कि स्वशासन की इकाई का कर्तव्य है कि नगर के रहने वालों की तमाम सुय-सुविधाओं का प्रबच्ध करें। नगर की जनता में एक प्रमुख भाग मेहतरों का भा ह जो यहा की नगरपिलकाओं में ग्रिंथिकतर काम करने हैं। जिस तरह से किसी देश की रक्षा के लिये फीज या पिलस की ग्राव-श्यकता है वैसे ही ठीक नगरों के लिये मेहतर वर्ग की जरूरत हैं। जितना फीज और पुलिस के लिये हमारा ग्रिंथिकारी वर्ग चिन्तित रहता है उतनी ही मेहतर वर्ग की उपेक्षा की जाती हैं। सन् १९४७ में एक कमेटी जिसे खेर कमेटी कहते हैं, बनी थी कि यह मेहतरों की सुख-सुविधाओं के लिये रिपोर्ट दें। ग्राज उसे १३ साल हो रहें हैं। इस समय में बहुत से कानून बने और कितनी ही तब्दीलियां हुई हैं लेकिन वह मेहतर बेचारा वहीं का वहीं पड़ा हुगा हैं। मेने ग्रभी पिलक हैं स्थान में देखा कि सम्भवतः १,०००की ग्राबादी पर ४।। महतर कर्मचारी होने चाहिये। १३ ग्रीर १५ साल पहले से स्थानीय निकायों में मेहतरों की संख्या जितनी थी, ग्राज भी उतनी ही है। ग्राबादी ग्रवश्य बढ़ी हैं मगर मेहतर कर्मचारियों की संख्या उतनी की उतनी ही है। यह किसी तरह से बढ़ाई नहीं गई हैं।

इस गुस्तक में मैंने यह भी पढ़ा है कि वित्तीय वर्ष १६४६-५६ में भारत सरकार ने १,२६,२०० रुपया हमारे प्रदेश के भंगियों की रियित स गारने के लिये दिया। में माननीय म श्री जी से प्रार्थना करूंगा कि वह हमारे शब्दों हो याद रखे और उत्तर देने समय बताने की प्रपा करें कि इस रुप से क्या काम हुआ। मेरी कर्ट ट्रुग्मी हरदे हैं लेकिन में ५१ जिलों में इस सिलिसले में काफी घूमा हूं। कहीं कोई ऐपी चीज नहीं दिखाई पड़ी जिससे हम यह कह सके कि भारत सरकार से अग्ये रुपये से मेहतरों के लिये कुछ किया गया हो। ही सकता ह कि मेरा विवार बड़ा नं हीर्ण हो लेकिन में अगरे दिमाग को किसी स कुचित दायरें में नहीं बाधता। में ने जहां तक देता, मेहतरों की कठिनाइयां बजाय सुलझने के उलझती जा रही है। इसमें ऐसा भी लिया है कि इस वर्ष भी भारत सरकार से कुछ सहायता मिलेगी। इस सिलिसले म म यह निवेदन करना चाहूंगा कि अभी मंहगाई-भत्ता जो दिया गया है उसमें यह प्रतिबन्ध लगाया गया है कि ग्रे समय काम करने वालों को नहीं दिया जायगा। इस सरकार का एक जी० श्री० भी निकला ह कि श्रव मेहतर पूरे समय के लिये रखे जावे।

हमने स्थानीय निकायों के अध्यक्षों से बातचीत की । उनका कहना था कि अगरपूरे समय को लिये गेहतर रखे जायेगे तो मेहतर कम हो जायेगे । में निवेदन करता हू कि पहिलक हेल्थ मेनुअल के अनुसार सर्वे कराया जाय कि कितने लोग पूरे टाइम और कितने लोग पार्ट टाइम काम करने वाले है और अगर उसके अनुसार हिसाब लगाया जाय तो सारे जितने मेहतर आजकल

### १६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में प्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—— ग्रमुदान संख्या ४२——लेखा शीर्षक ५७——प्रकीर्ण व्यय तथा ग्रमुदान संख्या १५——लेखा शीर्षक २५——गांव सभाएं ग्रौर पंचायतें

हैं वे भी खप जायेंगे ग्रौर १०-२० ग्रौर भी रखने होंगे। मैं यह भी जानता हूं कि मंत्री जी चाहते हैं कि मेहतरों की स्थिति में सुथार हो, लेकिन कोई बात वह ऐसी छिपा कर रखते हैं जो हमें मालूम नहीं है। न जाने उसके बताने में क्या किठताई है। मैं निवेदन करूंगा कि उस किठनाई के होते हुये भी मंत्री जी उनकी हालत को सुथारें।

कुछ ही साल पहले, शायद सन् १६५३ में, यह कानून बनाया गया था कि प्राइवेट घरों के कूड़े मैं ते से कम्गोस्ट बनाया जाय। इससे मेहतरों का आर्थिक नकसान हुआ है, मेहतर तबका निर्वत होता जा रहा है। स्रभी भी बीसों ऐसे स्थानीय निकाय हैं जहां प्राइवेट घरों के मैले से मेहतर लोग खुद कम्गोस्ट बनाते है और उसकी किसानों के हाथ बेचते है। इसलिये मेरा निवेदन है कि सारे प्रान्त में यह चीज उनकी फिर से दे दी जाय। जमींदारी स्प्रवालीशन हुई तो उनकी मुग्नावजा दिया गया लेकिन इन लोगों की जो सैकड़ों वर्षों से बकौती थी उसकी बिना एक नोटिस दिये ही छीन लिया गया।

सरकार मेहतरों के क्वार्टर बनाने के लिये काफी प्रयत्न कर रही है लेकिन म्युनिसिपल बोर्ड शाहाबाद, जिला हरदोई, से सन् १९५८ में भी प्रस्ताव पास कराकर भेजा गया और १९५९ में भी भेजा गया कि १५ मेहतरों के क्वार्टर्स बनाये जायं, लेकिन सरकार ने उसकी नामंजूर कर दिया। मैंने उसके बारे में प्रश्न किया था लेकिन उस दिन मैं यहां उपस्थित नहीं था।

हैल्य मैनुग्रन के हिसाब से मेहतरों की संख्या एक तो वैसे ही बहुत कम है, लेकिन नगरपालिका पिहानी से १२ मेहतर गत वर्ष निकाल दिये गये। १५-१६ हजार की ग्र बादी है ग्रौर २५ मेहतर काम करते हैं। ये १२ मेहतर यह कह कर निकाल गये कि बोर्ड की ग्र थिक हालत खराब है, इनके निकालने से बचत होगी। यह मेहतरों पर बड़ा भारी ग्रन्याय हो रहा है। उन्होंने वहां हड़ताल की लेकिन किसी प्रकार उनको ग्राइवासन देकर शांत किया ग्रीर ग्राज उन मेहतरों के परिवार भूखों मर रहे हैं।

नान थारा में मेहतरों की उम्र ४४ साल की बता कर उनको निकाल दिया गया श्रीर सिविल सर्जन ने गलत सिंटिफ केट दे दिया । म्युनिसियल बोर्ड, काशीपुर के जग्गन जमादार की उम्र ४२ साल की है लेकिन ४४ साल का बता कर उसको भी निकाल दिया गया ।

डेवलपमेंट बोर्ड, कानपुर, ने नवाबगंज के वाल्मीकियों की बस्ती को बर्बाद कर दिया। उनकी १००-१०० साल से बनी कबों को उखाड़ कर फेंक दिया। कानपुर में ही व्लाकादेब में बाल्मीकियों का एक मंदिर था। वहां के विकास बोर्ड ने उस जमीन को ले लिया और बाद को उस नंदिर को गुड़वा कर कि हवा दिया। जितना ही ये बाल्मीकि लोग महात्मा गांधी के मार्ग पर चलता चाहते हैं, शांति से रहना चाहते हैं, उतना हो ज्यादा जुल्म हम पर किया जाता है। एसेन्शियल स्विते गुंबट हमारे ऊरर एक कलं ह का टोका है, उस हो हटा दिया जाय। जब इस देश के सब रहने वाले आजाद हो गये तो मेहतरों को भी आजादी से रहने का अविकार दिया जाना चाहिये।

इन शब्दों के लाथ, मैं माननीय मंत्री जी से प्रार्थना करूंगा कि वह स्राने उत्तर में मेहतरों को स्राध्वातन दें स्रौर सूबे के मेहतरों की तकजोकों की दूर करने का प्रयत्न करें, वे मेहतर उनकी स्राधीर्वीद देंगे।

\*श्री नन्दराम—माननीय प्रधिष्ठात्री महोदया, इसमें दो रायें नहीं हैं कि ग्राम पंचायतें जनतंत्र की ग्राधारिशला हैं लेकिन हमारी वर्तमान सरकार वास्तव में जनतंत्र में विश्वास नहीं रखती। कहने के लिये वह भले ही कहें लेकिन उसके कारनामों से, उसकी कार्य प्रणाली से यह सिद्ध हैं कि वह जनतंत्र में विश्वास नहीं रखती है। उसका ज्वलन्त प्रमाण है कि ग्राज हमारी

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

#### [श्री नन्दराम]

सरकार ने ग्रन्तिरम जिला परिषद् का ग्रध्यक्ष एक सरकारी नौकर को बना रखा है ग्रौर उसके हाथ में जिला ग्रन्तिरम परिषद् की लगभग सारी पावर है। उसके ग्रधीन रह कर ही जो हमारे जन प्रतिनिधि एम० पो०, एम० एल० एज० ग्रादि है, उन लोगों को काम करना पड़ता है। ऐसी दशा में हमारी ग्राम पंचायते या न्याय पंचायते जो भी है, वे सभी मृतप्राय है, उनमें कोई जीवन नहीं है।

पहली चीज तो यह है कि सरकार ने जो चुनाव प्रणाली रखी है वह इतनी दोषपूर्ण है, इतनी निकम्मी है कि उस प्रणाली के रहते हुए, उस ढंग के रहते हुए कभी सही चुनाव हो है। नहीं सकता है। ग्रव तक के जो चुनाव है उनमें हर मेम्बर को वोट दिया जाता है ग्रीर उसमें भी कमाल यह कि एक वोटर है ग्रीर तीन उम्मीदवार सभापित के लिये या पंच के लिये खड़े है तो वह तीनों को ही वोट दे सकता है। एक क्षेत्र में ग्रगर ३, ५ या ७ जितने भी उम्मीदवार है उन सबको ही वह वोट देता है, तो इस तरह से कहीं सही चुनाव हो सकता है? सुना जा रहा है, ग्रीर माननीय मंत्री जी ने एक प्रश्न के उत्तर में भी कहा था, कि शायद ग्रव सभापित के चनाव में गुप्त मतदान प्रथा जारी होने वाली है। तो में इस सम्बन्ध में इतना ग्रीर कह देना चाहता हूं कि माननीय मंत्री जो जरा इस बात पर ध्यान करें कि जैसे ग्रव तक एक मतदाता को कई उम्मीदवारों को वोट देने का ग्रधिकार दिया है वैसा ग्रधिकार ग्रव न रखा जाय। एक मतदाता को एक ही उम्मीदवारों को वोट देने का ग्रधिकार होना चाहिये।

दूसरी बात यह है कि भ्रदालती पंचायतों के चुनाव में तो बहुत ही बड़ा भ्रम्थेर हुम्रा है जो कि भ्रप्रत्यक्ष तरीके से हुम्मा है। पहले जो सन् १६४६ में चुनाव हुम्रा उस समय भ्रदालती पंचायतों का चुनाव बालिंग मताधिकार से हुम्रा, उसी तरह से ग्राम पंचायतों का चुनाव भी हुम्रा और फिर उनमें से सरपंचों का चुनाव हुम्रा। लेकिन भ्रबकी बार जो पिछला चुनाव हुम्रा है उसमें ग्राम पंचों को चुना गया भ्रीर उन ग्राम पंचों ने कुछ सरकारी भ्रादिमयों को या शासक पार्टी के भ्रादिमयों को उन पंचायतों में चुना है जो कि गलत भ्रीर भ्रवधानिक चुनाव है। साथ ही एक-एक घर के कई-कई भ्रादिमयों को चुना गया है जो मनमाने ढंग से काम करते है जिसके कारण न्याय पंचायतों से सही भ्रीर सस्ता न्याय लोगों को नहीं मिल रहा है।

जहां तक ग्राम पंचायतों की ग्रायिक स्थित का सवाल है, जब तक उनकी ग्राथिक स्थिति नहीं सुघरेगी, ग्राम पंचायतों कभी सफल नहीं हो सकतीं। यों तो ग्राम पंचायतें हमारे इस चौलम्भा स्कीम का पहला लम्भा है। समाज के चार लम्भे है—ग्राम लम्भा, जिला लम्भा, प्रान्त लम्भा श्लोर केन्द्र लम्भा। ग्रागर इन चार लम्भों में से पहला ही लम्भा, ग्राम पंचायते ही मजबूत नहीं होंगी, जो कि सोशिलस्ट पार्टी की स्कीम के मुताबिक चार लम्भों को मजबूत करना है, तो हमारा समाज ग्रागे नहीं बढ़ सकता है। सरकार उस लम्भे को किसी प्रकार से मजबूत नहीं करना चाहती है। वेहात में एक भद्दी कहावत है "नंगी नहाय, क्या ग्रोढ़े क्या निचोड़े"। जब ग्राम पंचायतों के पास पैसा ही नहीं है, खर्च के लिये, कोई जिरया ही नहीं है तो उनको ग्रधिकार दे दिया गया है टैक्स लगाने का। सरकार का यह घोला है, यह बहकावा है, यह उनकी ग्रायिक स्थिति को जानकर लराब करना है। ग्रगर सरकार ग्राम पंचायतों को चलाना चाहती है तो सोशिलस्ट पार्टी की जो स्कीम है चौलम्भा राज्य की उसकी ग्रमल में लाया जाय।

जो टैक्स जनता से वसूल होता है उसको ४ जगह बांटा जाय। एक भाग उसका ग्राम पंचायतों को दिया जाय, दूसरा भाग जिला परिषदों को दिया जाय, तीसरा भाग स्टेट गवर्नमेंट को दिया जाय ग्रीर चौथा भाग केन्द्र को दिया जाय। यह जो व्यवस्था की गई है कि ग्राम पंचायतें भ्रपना कर लगायें, यह श्रवैधानिक है, सारा कर किसानों पर लगा है जो पहले से कर के भार से दबे हुये है। में तो यहां तक कहूंगा कि किसानों से जो लगान कृषि पर लिया जाता है वही भ्रवैधानिक है, किसी भी धन्धे पर कर नहीं लगना चाहिये बल्कि वह श्राय पर लगना चाहिय। परन्तु कृषि एक ऐसा धन्धा है कि जिस पर कर लगा है चाहे किसी की पैदावार हो या न हो, उसकी श्राय भी नहीं श्रांकी जाती श्रीर नियत लगान ले ही लिया जाता है।

किसान पर प्रव्वल तो कर होना ही न चाहिये, जैसे व्यापारी, वकील श्रौर सरकारी कर्मचारियों से ३,००० की श्राय से ऊपर श्राय-कर लिया जाता है इसी प्रकार किसान से भी लिया जाना चाहिये। इसी तरह से यह पंचायत कर भी गलत है श्रौर यह भी किसान के लगान पर लगता है श्रौर जब किसान पर लगान नहीं होना चाहिये तो पंचायत कर भी नहीं होना चाहिये। जब एक कर जमीन पर लग चुका तो फिर दूसरा कर कैसा? यह श्रवंघानिक है। द्वाउन एरियाज या म्युनिसिपेलिटीज जो शहर या कस्बों में है वहां पर यह नियम है कि केवल एक ही संस्था का टैक्स लग सकता है, या तो म्युनिसिपल टैक्स लगेगा या टाउन एरिया का लगेगा या जिला बोर्ड का ही लगेगा, लेकिन श्रन्थेर है कि ग्रामों में जिनके बल पर हुकूमत चलती है, जिन किसानों की मेहनत पर सारा शासन चलता है उन पर जिला बोर्ड श्रौर ग्रा पंचायत दोनों का टैक्स लगाया गया है। इसको हम न्याय कहें, श्रन्याय कहें, या खुदा की देन कहें या पंचायत राज की बरकत कहें?

इस तरह से यह जो पंचायतों का श्रवंशानिक कर है उसके वसूल करने में भी पंचायतों को परेशानी होती है श्रौर वह कानूनन भी उसकी वसूल नहीं कर सकतीं, हाई कोर्ट का फैसला है कि पंचायतों का टैक्स जबरदस्ती वसूल नहीं किया जा सकता। लेकिन मुझे शर्म के साथ कहना पड़ता है कि पंचायत वाले वसूल करें या न करेलेकिन गवर्नमेंट की तरफ से श्रमीन मुकर्रर हुये श्रौर कुर्की कराई गई श्रौर ए० डी० श्रो० श्रौर बी० डी० श्रो० ने जबरदस्ती मारपीट श्रौर कुर्की के द्वारा वसूली कराई।

कुछ थोड़ में जिला परिषदों के विषय में भी कहूंगा। में प्रतापगढ़ से ग्राता हूं। वहां पर पहले जिला बोर्ड के टाउन स्कूल थे, लेकिन ग्रब वहां एक कम्पनी चल रही है शासक पार्टी को जिसके कुछ ग्रपने स्कूल हे, उस पार्टी को टाउन स्कूलों का सारा सामान ग्रौर फर्नीचर दे दिया गया है, मेंने उसकी जांच कराई थी। ग्रब सुना जाता है कि वह बड़ी-बड़ी इमारतें ग्रौर फर्नीचर केवल २ रुपया किराये पर उन्हें दियें गये हैं। कुंडा में जो स्कूल चल रहा है वहां के मैनेजर ने स्कूल की जमीन को दूकानदारों के हाथ १००, २०० रुपया नजराना लेकर बेचा है, यह ग्रन्थेर हो रहा है। ग्रगर वाकई इन संस्थाग्रों को ग्रधिकार देना है, जनतंत्र को विकेन्द्रीकरण की तरफ ले जाना है तो सरकार का कर्तव्य है कि उन पर से ग्रपना ग्रंकश हटाये।

एक बात से लोगों में बड़ी बुरी भावना फैल रही है कि डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, जिनको श्रब जिला परिषद् कहा जाता है, का चुनाव श्रप्रैल, १६४६ के बाद श्राज तक नहीं हुग्रा। १२ साल हो गये, तो कैसे इसे जनतंत्र कहा जा सकता है? पिछले दिनों में बिल श्राया था उससे कुछ श्राशा हुई थी कि शायद श्रप्रैल या दिसम्बर, १६६० के श्रन्त तक इनके चुनाव हो जायंगे, लेकिन पहले तो वह बिल सेलेक्ट कमेटी में लटका हुग्रा है, श्रौर श्राज जैसा नवलिकशोर जी ने कहा कि शायव सरकार का मंशा उस बिल को वापस लेने का है श्रौर उसकी जगह दूसरा बिल लाये, इससे तो हमारा विश्वास श्रौर भी दृढ़ हो गया कि सरकार सन् १६६२ से पहले जिला परिषदों का चुनाव नहीं कराना चाहती। इससे लोगों में बड़ी निराशा है। यह सरकार श्रपनी सत्ता कायम रखना चाहती है, यह जानती है कि सन् १६६२ से पहले श्रगर इनका चुनाव हो गया तो हम सत्ता में नहीं रहेंगे श्रौर यह सत्य भी है कि श्रगर सन् १६६२ से पहले चुनाव हुग्रा तो निश्चत रूप से सरकार हार जायगी।

\*श्री शिवशरणलाल श्रीवास्तव (जिला बहराइच)—श्रिधिकात्री महोदया, मैं प्रस्तुत श्रनुदान का समर्थन करता हूं। इसमें दो रायें नहीं हो सकतीं कि हमारी पंचायतें शासन की इकाई श्रीर प्रजातन्त्र की बुनियादें हैं श्रीर इसमें भी कोई दो राय नहीं हो सकतीं कि इनकी सफलता पर हमारे देश का भविष्य निर्भर करता है। इनको सफल बनाना है

[श्री शिवशरणलाल श्रीवास्तव]

श्रीर जो बाते इनको सफल बनाने में श्रावश्यक है वे सरकार द्वारा कार्यान्वित की जा रही है। श्रभी-श्रभी उनकी श्रायिक व्यवस्था को ठीक करने के सम्बन्ध में मंत्री जी ने वक्तव्य दिया कि किस प्रकार हम उनको उन श्रनुदानों को देना चाहते हैं जो कि ब्लाक स्तर पर श्राज संचित है श्रीर उसको हिस्से में बांट कर इस काबिल बनाना चाहते हैं कि वे श्रपने क्षेत्र के श्रावश्यक कार्यों को स्वयं करे श्रीर यह भी कहा कि यदि उनसे कोई गलती भी हो जाय तो हमको परवाह नहीं है क्योंकि श्रपनी गलतियों से ही उनको सीखना है श्रीर श्रागे बढ़ना है।

श्री भुवनेशभूषण शर्मा (जिला इटावा) --श्रीमती जी, सदन में कोरम नही है। (घंटी बजाई गई ग्रौर गणपूर्ति होने पर कार्यप्राही शुनः ग्रारम्भ हुई। )

श्री शिवशरण लाल श्रीवास्तव—मं कह रहा था कि यदि ये संस्थायें गलती भी करें तो गलती की तरफ़ से हमको मुंह मोड़ना है श्रीर उनको श्रपनी गलतियों से सीखकर श्रागे बढ़ना है। लेकिन इस श्रवसर पर में मंत्री जी का ध्यान इन संस्थाश्रों के संचालन की श्रोर भी श्राकांवत करना चाहता हूं। कम से कम उनको गांवों की व्यवस्था का ज्ञान है, गांवों की जो हालत है वह किसी से छिपी नहीं है। ऐसे श्रवसर पर इन संस्थाश्रों का संचालन किस प्रकार किया जाय, इस पर भी मंत्री जी को ध्यान बेना चाहिये।

श्राम जित प्रकार का तं वाजन हो रहा है मैं यह कहूगा कि एक तरह से उनके ऊपर ब्यूरं सित लावी गई है श्रीर जिस बेग में प्राचीन काल से यह संस्थायें विद्यान थीं श्रीर इसी सामन्त शाही से टक्कर खा कर समाप्त हो गयीं, श्राज उसी प्रकार का संवर्ष हमारी पंचायतों श्रीर हमारे श्रीधकारियों में चल रहा है। मुझे स्वयं मालूम है कि किस प्रकार से हमारी इन पंचायतों के प्रश्नानों के साथ श्रक्तरों का व्यवहार होता है। मैं कोई श्रालीचना नहीं कर रहा हूं, लेकिन में व्यान दिलाना चाहता हूं कि इन श्रीधकारियों से इन संस्थाओं को, जो श्राज शंशवास्या में है, बचाया जाय श्रीर इनके मान व मर्यावा की रक्षा की जाय। जिस प्रकार डिस्ट्रिक्ट बोर्ड तथा श्रन्तिय जिला परिषद के श्रेतीडेंट, म्युनिसिवेलिटीज तथा नोटिफाइड एरियाज के प्रेतीडेंट की जो वक्त है वह कम से कम हमार्ग गांव सभा के पंच व प्रप्रतों को भी वी जाय।

श्रमी जनर से कुछ पं नायतों के टैक्स के बारे में कहा गया कि सत्ता का विकेन्द्रीकरण किया जाय। मगर जब हम यह कहते हैं कि इन संस्थाओं के। श्रनुदान देकर हम सबल बनाना चाहते हैं तो साथ ही साथ हम उनको स्थावलम्बी भी बनाना चाहते हैं। लिहाजा श्रमनो श्राधिक व्यवस्था की छोटे-छोटे चन्दों के रूप में टैक्स लगा कर वे उसे ठीक करें। उसका ढंग किस तरह का हो, उसका क्ल किस तरह का हो, इस पर माननीय मंत्री महोदय को ध्यान देना चाहिये। श्राज होता यह है कि गलत तरीके से टैक्स लग जाता है। पसंनल लेजर एकाउंट में टैक्स का रुपया जमा है लेकिन कोई निर्माण-कार्य गांव सभाग्रों में नहीं होता है। लोग सोचते है कि जो रुपया टैक्स के रूप में देना होगा उसका कोई फायदा नहीं दिलाई बेता। इसके लिये जिम्मेदार है पंचायत राज्य संचालक, पंचायत राज्य इंस्पेक्टर। उनकी शिथिलता की वजह से यह सब है।

जैता कि मंत्रो महोवय ने कहा, प्रजातंत्र की सक नता के लिये यह ग्रावश्यक है कि हमारा दृष्टिकीण प्रजातंत्रिक ढांचे में ढाला जाय। लेकिन इस ग्रोर क्या प्रयास किया गया, यह में जानना चाहता हूं। इसके लिये क्या प्रक्षिक्षण होता है? कोई चीज इम तरह की नहीं है। क्या उनकी किताबों से या लेक्चर द्वारा पढ़ाया जाय? चाहिये यह कि व्यावहारिक रूप से उनकी सिखाया जाय। पंचायत राज्य संचालक का जो ऊगर से लेकर नाचे तक स्टाफ है उसकी गांव-गांव पहुंच कर उनकी भाषा, वेशभूषा, उनके ढंग से उनकी प्रविक्षण बेना चाहिये ग्रीर जब तक गांव वालों के दृष्टिकीण नहीं बदलते हैं तब तक हमारे सारे प्रयास ग्रसफल ही रहेंगे।

मुझे याद है कि जब १५ श्रगस्त, १६४६ में ये संस्थायें स्थापित हुई थीं तो क्या उत्साह जनता का था। श्राज माननीय मंत्री महोदय बतलायें कि वह उत्साह कहां गया, क्यों खत्म हो गया।

### १६६०–६१ के स्राय–व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—स्रनुदान संख्या ४२—लेखा शीर्षक ५७—प्रकीर्ण व्यय तथा स्रनुदान संख्या १५—लेखा शीर्षक २५—गांव सभाएं स्रौर पंचायतें

इस प्लानिंग के युग में जब भ्रतुदानों को भरमार है हमारी पंचायतें उतना काम नहीं कर पाती हैं जितना कि १६४६ से लेकर दो साल तक बिना किसी इमदाद के किया था । इसका कारण था संचालन । संचालन पर हो इन संस्थाओं को कार्य-प्रणाली भ्रौर कार्यशैली ध्रवलियत है। भ्राय ऐसा डायरेक्टोरेट बनाइये जो गांव के कोने-कोने तक पहुंचे श्रौर श्रापके संदेशों को, जिनका दिग्दर्शन इस सदन में कराया गया है, उन तक पहुंचाये।

इसके अतिरिक्त, कुछ पंचायती अदालतों के बारे में कहा गया। मुझे इस बात का सन्तीष है कि जितनो पंचायती अदालतों को देखने का अवसर मुझे मिला है और जिस वानावरण में वे काम कर रही है उनको में प्रशंसा करता हूं कि वे बहुत अच्छो तरह से कार्य कर रही है। जो उनके चुनाव को प्रणाली कुछ गड़बड़ थी, उसको भी संशोधित करने के लिये आपने कह दिया है। यह बहुत अच्छा है। एक बात यह भी कही गयो कि प्रधान का चुनाव तो गुप्त रूप से हो ही जायगा पंचायतों के सदस्यों का चुनाव भी गुप्त रूप से हो। यह कहते हुये तो बड़ा अच्छा लगता है लेकिन अब आग यह कहें तो जरा बजट का भी ध्यान रखें। ७२ हजार के ऊपर पंचायतें हैं। अगर १ हज्या फी पंचायत भी आप दें तो ७२ हजार कुछ सौ हपये देने होंगे और वह भी नहीं के बराबर होगा। इसमें एक ५० हजार हपये की धनराशि है। तो कम से कम पहले प्रधान का गुप्त चुनाव कराया जाय और यदि हमारी आर्थिक अवस्था ठीक रही तो फिर सदस्यों के भी गुप्त चुनाव करा लिये जायंगे। सरकार की यह इच्छा नहीं है कि वह उनके गुप्त रूप से चुनाव न कराये।

समय कम है, में अन्तरिम जिला परिषद् के सम्बन्ध में भी कुछ कहना चाहता था, लेकिन श्रव मं वह न कह कर सरकार का ध्यान अपने जिले में भींगा नोटिफाइड एरिया की तरफ़ दिलाना चाहता हूं। वहां पीने के पानी की व्यवस्था अच्छी नहीं है। यदि वहां एक टच्चबवेल की व्यवस्था कर दी जाय तो बहुत अच्छा होगा। इसके अलावा थोड़ा-सा अनुदान अगर उनको अपना ड़ेनेज वगैरह ठोक करने के लिये भी दे दिया जाय तो वहां की जनता को बड़ी राहत मिलेगी।

श्री शिवराम (जिला बिजनौर)—श्रिष्ठात्री महोदया, में प्रस्तुत श्रनुदान का विरोध श्रीर कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिये खड़ा हुशा हूं। जहां तक स्वायत्त शासन का सम्बन्ध है, ग्राम सभाश्रों का निर्माण करके जो गांवों के श्रन्दर पारस्परिक मेल-मिलाप श्रीर सद्भावना थी पारस्परिक उन्नति की उसको बहुत क्षित पहुंची है। यह देखने में श्राता है कि चुनाव इत्यादि के कारण बहुत काफी वैमनस्य गांव के लोगों में श्रापस में हो गया है श्रीर जब गांव के श्रादमी पार्टीबाजी में पड़ जाते हैं तो गांव की विशेष उन्नति नहीं हो पाती है। इस कशमकश में ग्राम पंचायतों ने यहां तक कर दिया है कि घास खोदने वाले के खुरपे पर भी टैक्स लगा दिया है जो शायद किसी भी शासन में नहीं लगा था। गांव का श्रादमी यह सोचता है कि यह केश शासन श्राया कि जिसने मेरे घास खोदने के खुरपे पर भी टैक्स लगा दिया। मतनब यह है कि कोई भी व्यक्ति गांव के श्रन्दर ऐसा नहीं बचा, चाहे वह गरीब हो, चाहे बड़ा काश्तकार हो कि उस पर किसी प्रकार का टैक्स न लगाया गया हो।

दूसरी बात यह है कि गरीब मजदूरों की जीवन चर्या का तो बिलकुल खात्मा हो गया। सरकार भी मानती है कि ग्राजकल गांवों के लोग शहरों की तरफ जा रहे हैं मगर इसके कारण की तरफ न ग्राम पंचायतों ने, न सरकार ने, किसी ने ध्यान नहीं दिया। इसका कारण यही है कि ग्राज तक गांव का रहने वाला पशु पालन करके ग्रीर घास खोद करके ग्रपनी जोवनचर्या करता था, लेकिन जब से ग्राम पंचायतें बनीं ग्रीर उन्होंने बंजर भूमि पर ग्रावकार कर लिया तबसे वह वहां से घास भी नहीं खोद सकता, पशुग्रों को खड़ा करने की भूमि भी नहीं छोड़ी ग्रीर काट कर ऐसे टेढ़े-मेढ़े रास्ते निकाले गये हैं कि गांवों में काफी घूम कर जाना पड़ता है। रास्ते इतने तंग हैं कि दोनों तरफ से जब गाड़ियां ग्रा जाती हैं तो उनको बचा कर निकालने में बड़ी

## [श्री शिवराम]

किंठनाई होतो है। तो रास्ते तो काट कर छोटे कर दिये और उसका श्रभित्राय यह निकाला कि इतसे भूमि बढ जायगी और पैदावार में वृद्धि होगों लेकिन इससे गांव के लोग श्राज बहुत परेशान है। श्राज चक बन्दों हो जाने के बाद भी वह कहीं से घास नहीं खोद सकता, पशु भो नहीं पाल सकता। वोट उसको हाथ उठा कर देना पड़ता है जिसके कारण दबाव में श्राकर वोट देते हैं। वह स्वतंत्रतापूर्वक वोट नहीं दे सकते हें शौर ग्राम सभाये जिन मुकदमों में फैसला करती है उनको सुनवाई हाई कोर्ट तक नहीं हो पातो है इसलिये गांव वालों को बड़ो परेशानी हो गई है। ५०० रुपये तक के मुकदमों के भो फैसल करने में बड़ो दिक्कत होतो है और इनमें भी पार्टीबाजी से काम लिया जाता है। जिस पर मुकदमा दायर किया जाता है वह पंचों के पास मारा-मारा फिरता है ग्रौर इसमें भी रिश्वतखोरो चलती है।

इसके श्रलावा, जो भूमि बची हुई है वह गरीब काश्तकारों को नहीं दो गई है। इसका कारण यह है कि ग्राम पंचायतों के प्रधान १० प्रतिशत, १५ प्रतिशत के खक्कर में रहते हैं। इसलिये जितनों भो ऐसो भूमि है वह गरीब मजदूरों को दें दी जाय।

दूसरो बात यह है कि खड़ंजे वगैरह ऐसो बस्तो में बनाये गये हैं जहां ग्रच्छे काइतकार रहते हैं ग्रीर गरोब लोगों का कोई ध्यान नहीं रखा जाता। यद्यपि सरकार से पैसा मिलता है लेकिन गरीबों के मुहल्लों में खड़ंजे नहीं बनाये गये है। ग्रगर पानी का रुख निकाला जाता है तो ग्राबादों के उस हिम्से में निकाला जाता है जहां गरीब काइतकार रहते हैं ग्रीर उससे उनके कच्चे मकानों को नकपान पहुंचता है। मेंने श्रफजलगढ़ में देखा कि कुछ हिस्से में ईंट बिछाई गई ग्रीर कुछ में नहीं बिछाई गई। पूछने पर मालूम हुग्रा कि इन लोगों ने सहयोग नहीं विया। मिट्टो बिछाने को कहा गया या लेकिन नहीं थिछाई गई। वह बेचारे इसमें ग्रसमर्थ रहे तो उनके यहां ईंटें नहीं बिछाई गई। इसलिये जहां दो तोन पार्टियां है वहां गरीब लोग ही पिसते है। इसलिये इनकी तरफ ध्यान दिया जाना चाहिये।

गरोब लोगों को सिचाई नहीं करने विया जाता। इसमें ग्राम पंचायत ग्रडंगेबाजी लगातो है। एक हसीनापुर में नई ग्राबादी बसाई गई है। उसमें तीन करोड़ रुपये के करीब भारत सरकार द्वारा खर्च किया गया है। वहां म्युनिसिपैलिटी भी है ग्रौर बहुत से मकान बनाये गये हैं लेकिन वहां रहने वाला कोई नहीं है। जो दो-तीन दूकानदार है वे भी पश्चाताप कर रहे हैं क्योंकि जो लोग उन मकानों में ग्राये थे वे बेरोजगारों के कारण भी छोड़कर चले गये। वे लोग ग्रपने बच्चों को शिक्षा नहीं दिला सकते। बरसात में तराई भाग में बने बहुत से मकान चौपट हो गये हैं लेकिन किराया वसूल किया जा रहा है। जो लोग लड़ाई वगैरह में मर गये हैं उनके बच्चों को पढ़ने-लिखन के साधन जुटाने चाहिये।

जहां तक मेहतरों का सवाल है, उसके सम्बन्ध में यह है कि उनके लिये मकानों का प्रबन्ध होना चाहिये। गंदो बस्तो के नाम पर गरीब मजदूरों को वहां से हटाया जाता है। उनका श्राबादो का कोई सुआर नहीं किया जाता। जहां वह रहते हैं लखनऊ, बनारस श्रादि नगरों में न बिजलो है, न पानी है, न स्कूल है श्रीर न श्रस्पताल हो है। सुधार यही होता है कि गन्दी बस्तों से उनको हटा दिया जाता है श्रीर श्रन्छे मकान बना कर दूसरे लोगों को दे दिये जाते है।

नौकर पेशा लोग जो बेखारे बाहर से झाते हैं उनको मकान नहीं मिलते हैं। वे मारे मारे डोलते हैं लेकिन मकान नहीं मिल पाते। इसिलये इस तरह के मकानों का निर्माण किया जाय जिससे उनको मकान मिल सके। नौकर पेशा लोग मकान न मिलने के कारण परेशान रहते हैं और इधर-उधर मारे मारे किरते हैं और उन्हें इस प्रकार का एक संघर्ष लेना पड़ता है। स्वायत्त शासन में इस प्रकार को व्यवस्था चल रही है कि वहां सड़कें और नालियां ठोक नहीं है। आमदनी उनको काफी होतो है लेकिन उसका कोई ठीक हिसाब नहीं रखा जाता। उसको सुधारने की आवश्यकता है।

जहां तक डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के स्कूलों का सम्बन्ध है, बिजनौर के इलाके के दारे में मुझे मालूम है, वहां के म्रध्यापकों को जो १६५७-५८ के बाद के हैं उनको तो एफीशिएंसी बार कास करवा दिया, लेकिन जिन लोगों को एफीशेंसी बार ड्यू हो गया है, और १६५७-५८ के हैं, उनको नहीं कास करवाया गया। इन बातों की तरफ स्वायत्त शासन वालों को ध्यान देना चाहिए और पंचायतों को सुधारने तथा उनको गरीब किसान मजदूरों के हित में लाने के लिए भरसक प्रयत्न फरना चाहिए।

श्री ताराचन्द माहेरवरी (जिला सीतापुर)—माननीय ग्रिधिष्ठात्री महोदया में ग्रापको धन्यवाद ग्राखिर में दे दुंगा कि ग्रापने मुझे इस ग्रनुदान पर बोलने का ग्रवसर दिया।

में प्रस्तुत श्रनुदान के समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुग्रा हूं। इसमें मुझे कहने में कोई संकोच नहीं है कि सत्ता के विकेन्द्रीयकरण का जितना श्रभूतपूर्व प्रयोग इस प्रदेश में किया गया है शायद संसार में वैसा प्रयोग कहीं नहीं किया गया है। श्राप देखें कि यहां लगभग एक करोड़ के मतदाता हैं, डेढ़ लाख के लगभग निर्वाचन क्षेत्र हैं, ६ हजार के करीब न्याय पंचायते हैं, ७२ हजार के करीब ग्राम पंचायते हैं। यहां पर चुनाव का प्रबन्ध करना श्रौर ग्राम सभाग्रों का संचालन करना यह बड़ा भारी प्रयोग है। श्रगर इसमें कुछ त्रृटि भी रहे तो वह धीरे-धीरे चल कर दूर हो जायगी। इसलिये इस पर ही विचार व्यक्त करने की श्रावद्यकता है कि उसको कैसे सुधारा जाय।

मैं इस बात के लिए धन्यवाद देता हूं कि ग्रभी निकट में ही पंचायती ग्रदालतों को ग्रधिक ग्रिंधिकार दिये गये हैं। पंचायतघर बनवाया, कुएं बनवाए, नालियां बनवायीं, पंचायती ग्रदालतों के फैसले किये, यह परिचायक हैं विकेन्द्रीकरण का कि नियोजन की जिम्मेदारी भी ग्राम सभाग्रों पर डाली गयी है। मैंने जो कुछ बलाक डेवलपमेंट की मीटिंग में सुना, उसी तरह एक परिपत्र मुझे यहां मिला। इसमें शक नहीं जैसा कि माननीय मंत्री जी ने कहा है कि यदि इस तरह की जिम्मेदारी को प्राप्त करने के बाद भी गांव सभाग्रों ने योग्यतापूर्वक ग्रयने कार्य का संचालन नहीं किया तो जैसा कि मुझे भी सन्देह हैं ग्रौर मैंने भी श्रपनी बलाक डेवलपमेंट कमेटी में कहा था, कहीं इसके पश्चात् डिक्टेटरिशप का उदय तो नहीं होगा। यदि उसका उदय हुग्रा, जैसो कि मुझको सम्भावना लगती है, तो मैं नम्र शब्दों में निवेदन कर्छगा कि मेरे दिमाग में एक शक है। हम यहां पर बैठ कर सरकारी ग्रधिकारियों की बड़ी-बड़ी ग्रालोचना करते हैं। क्या सरकारी ग्रधिकारो वर्ग ने इस तरह का प्रयोग करने के लिए एक योजना प्रस्तुत कर दी थी, जो कि ग्रन्त में ग्रसफल हो ग्रौर उनको डिक्टेटरिशप चलाने का ग्रवसर मिले ? कहीं यह बात तो नहीं है ? यह मेरे दिमाग में शक है जिसे मैंने प्रस्तुत कर दिया।

एक बात ग्रौर। मंत्रियों के तबादलों के सम्बन्ध में श्रापने एक नीति श्रक्षितयार की है कि श्रपने घर से २४ मील के फासले पर रहें। इन मंत्रियों की स्विसेज मुस्तिकल भी नहीं की गर्यों। तो जो टेम्पोरेरी हैं उन्हें २४ मील दूर भेजना ग्रौर उनको उतनो तनख्वाहें न मिलें जिससे उनके परिवार का भरण-घोषण कर सकें, यह बहुत उचित नहीं है। उनकी स्विसेज मुस्तिकल कर दी जायं ग्रौर सरकारी नौकरी की उनकी सब सुविधाएं दी जायं तब उन्हें घर से दूर रखें ग्रौर ट्रांसफर करें तो कोई बात नहीं है।

मेंने माननीय मंत्री जी की स्पीच को इसलिए बहुत गौर से सुना कि एक प्रश्न मेरे दिमाग में चल रहा था ग्रौर उसकी सफाई हो गयी। माननीय मंत्री महोदय ने जिला ग्रन्तरिम परिषद् के विकेन्द्रीयकरण ग्रौर उनके ग्रिधकारों की चर्चा की। यह भी कहा कि यि यह परिषदें कुछ गलत काम भी करें तो भी हम इसको इसलिए काम करने का ग्रवसर बेते हैं कि जिससे यह सीखें। यह विचार जिनके हाथ में यह विभाग है उनके विचारों के उपयुक्त भी है।

# [श्री बाराचन्द माहेश्बरी]

श्रव में भी इन्हों विचारों के तहत में माननीय मंत्री महोदय के सम्मुख एक प्रश्न प्रस्तुत करना चाहता हूं श्रीर मुझे भरोसा है कि उन्हों विचारों के तहत में माननीय मंत्री जी हमारे प्रश्न पर बड़ी सहृदयतापूर्वक विचार करने की कृपा करेंगे। में यह निवेदन करना चाहता हूं कि मेरे यहां जिला श्रन्तरिम परिषद् हैं श्रीर यह जिला श्रन्तरिम परिषद् कई चिकित्सानयों का संचालन करता है। एक चिकित्सालय बाड़ीग्राम में स्थापित था। श्रन्तरिम जिला परिषद् में इसके स्थानान्तरण के सिलिसले में एक प्रस्ताव फरवरी-मार्च, १६५६ में प्रस्तुत हुआ श्रीर यह निश्चय हुआ कि चिकित्सा के विशेषज्ञों की राय जानने के लिये उनके सुपुर्द कर दिया जाय। वह उनके सुपुर्द हो गया। मई १६५६ में श्रस्पताल ऐडवाइजरी कमेटी के सामने यह प्रश्न फिर प्रस्तुत हुपा श्रीर श्रस्पताल ऐडवाइजरी कमेटी के सामने यह प्रश्न फिर प्रस्तुत हुपा श्रीर श्रस्पताल ऐडवाइजरी कमेटी ने सर्वसम्मित से यह फैसला किया कि उक्त श्रस्पताल का स्थानान्तरण श्रीक्षक जनहित को दृष्टि से सिधौली में हो जाना चाहिये। इसके पश्चात् नृन, १६५६ में श्रन्तरिम जिला परिषद् में यह प्रश्न प्रस्तुत हुशा श्रीर श्रन्तरिम जिला परिषद् ने भारी बहुयत से निणंय कि जनहित को दृष्टि से इस श्रस्पताल का स्थानान्तरण बाडी ग्राम से सिधौली कर दिया जाय। इनके पश्चात् मेडिकल डायरेक्टर की कन्सेन्ट प्राप्त करने के न्तिये इस प्रस्ताब को संचालक, जिकित्सा विभाग की सेवा में भेज दिया गया।

श्राप देखें कि जून का प्रदन है, श्रीर नवम्बर में जाकर उसकी कंसेंट प्राप्त होती है, डाइरेक्टर मेडिकल एण्ड हेल्य से। उन्होंने कहा कि कंसेंट भेज वी गयी है श्रीर चिकित्सालय के स्थानान्तरण के कार्य पूरे किये जायं। ३ जनवरी, मन् ६० की श्रन्तरिम जिला परिषव की कार्यकारिणी में यह प्रदन किर उपस्थित हुआ कि श्रस्पताल की जल्द से जल्द सिधीली स्थानान्तरित कर दिया जाय श्रीर पास भी हो गया। ५ जनवरी की श्रस्पताल बाड़ी से सिथीली श्रा गया श्रीर श्रपना फंकान करने लगा, दबाइपां बंटने लगीं। १० जनवरी की श्रनीपचारिक तौर पर उद्घाटन समारोह केवल डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के द्वारा होना श्रेष था। एक विभागीय तार के श्रापार पर उसका उद्घाटन समारोह रोक विया गया श्रीर उसके बाद श्रभी तक वह उसी स्थित में है।

मुने अधिक नहीं कहना है, लेकिन में माननीय मंत्री महोदय का ध्यान इस श्रोर श्राकित करना चाहता हूं कि अन्तरिम जिला परिषद को जो अधिकार आप ने दिये हैं उनका संचालन वह अधिकारी किस तरह से करते हैं। माननीय मंत्री जी का तार पहुंचा, उसका उद्घाटन समारोह रुक गया। अस्पताल स्थानान्तरित हो गया था। उसके पर्चात् स्नाक डेवलपमेंट कमेटी, निधौली, ने एक प्रस्ताव पास किया कि यह अस्पताल यहां स्थानान्तरित हो गया है श्रीर किराये को बिल्डिंग में काम कर रहा है, यहां पर प्राइमरो हेन्य युनिट का स्थापना की जाय। यह प्रन्ताव अन्तरिम जिला परिषद के थ्र श्राना या सरकार के यहां। जब अन्तरिम जिला परिषद में यह प्रस्ताव प्रस्तुत हुशा तो चीक आकिसर साहब कहते हैं कि साहब अभी तक तो गलनेंंट ने इसपर श्राखिरी निर्णय नहीं लिया, इसलिये हम इस प्रश्न को गवनंंंट में मेज ही गहीं सकते। इसे यहां पेश ही नहीं होना चाहिये।

श्रीमन्, श्रन्तिम परिषद् को ग्राप ग्रधिकार देते हैं श्रीर चोफ श्रािकसर उसके यह कहते हैं कि हम गयनं में हैं में में में में में महीं। मुझे लगता है कि ग्रवमंमंट से श्रन्तिम जिला परिषद् के सरकारी श्रिकार्रा डरते हैं। इसिलए तो यह मांग को जाती है कि श्रन्तिरम जिला परिषद् का श्रध्यक्ष चुना हुत्रा व दिन हो। जनता की जरूरतों को श्रन्तिरम परिषद श्रच्छी तरह से जा तो हैं। इसिलये मेरी वि नम्न प्रार्थना है कि श्राप श्रपने उन विचारों को सहत में इस पर गीर करें। यह सारे निर्णय जो जुछ जो हुए, बहुमत से हुए श्रीर कहीं-कहीं सर्वसम्मति से भो हुए। श्रव्यवारों में काफी इस पर टोकाटिर गणा भी हुई। यह में श्रापसे कह सकता हूं कि श्राप चाहे जिस तरह से इसको एग्जािमन करें लेकिन बेरी नम्न राय में शीघ्र से शीघ्र इसे श्राप श्रान्तिम फैसले पर पहुंचा देशें। जब तक खापका श्रान्तिम फैसला नहीं होता तब तक उन श्रिकारियों के हाथ पाव फूले हुए है, वह श्रपनी जगह पर बिलकुल चुप हैं। वहां पर प्रजातंत्र के श्रिकारों को रक्षा नहीं हो रहो है। उनकी रक्षा के लिये भी में श्रापका श्रान इस श्रीर श्राक्षित करना चाहता हूं।

श्चन्त में श्रीमन्, एक निवेदन मैं श्रीर करूं कि न्याय पंचायतों का चुनाव तो मताधिकार के श्रावार पर होता है; इस सम्बन्य में भ ने ही मेरी राय उल्टी जचे, लेकिन मैं इस राय का हूं कि चुनाव के द्वारा न्याय पंचायतों का निर्माण न किया जाना चाहिये।

जहां तक न्याय का प्रश्न है, चुने हुये श्रिधिकारी न्याय के प्रश्न पर वोट का ध्यान रखकर फैसला देंगे श्रीर देते भी हैं। इसलिये यदि न्याय का रक्षा करनी है तो नियुक्त व्यक्तियों के द्वारा न्याय पंचायतों का संचालन किया जाय। यदि वह पूरे तौर पर न हो सके तो मेहरबानी करके सीनित एरिया में इस प्रणाली को लागू करके देखें कि कौन-सी बात वाजिब है।

श्रन्त में यह श्रौर निवेदन करूंगा कि खर्चे का प्रश्न चाहे श्रधिक हो, वैसे तो में श्रधिक खर्च करने की राय का नहीं हूं, किन्तु बुनियादी तौर पर गुष्त मतदान की प्रणालो को श्रपनाया जाय। वैसे श्राप ५०, ६० लाख रुपये प्रधान के चुनाव के लिये रख रहे हैं; किन्तु मेरी प्रार्थना यह है कि चाहे इसमें किफायतशारी करके कुछ खर्चा बढ़ाना पड़े, नगर गुष्त मतदान द्वारा ग्राम पंचायत के प्रत्येक सदस्य का चुनाव कराने की कृपा को जाय। इन शब्दों के साथ में माननीय श्रिष्ठितात्री महोदया, श्रापको फिर धन्यवाद देता हूं कि श्रापने मुझे बोजने का श्रवसर दिया।

श्री तेजबहादुर (जिला श्राजमगढ़)—श्रिष्टात्री महोदया, इस अनुदान को पेश करते वक्त माननीय मंत्री ने जो भाव व्यक्त किये हैं, उनसे मेरा कोई खास विरोध नहीं है । वे सिद्धान्त को बातें थीं और सिद्धांत पर इधर के लोगों को भी कोई विरोध नहीं है । में २, ३ बातें सरकार के समक्ष रखना चाहता हूं । वे ये हैं कि जो ऐक्ट पात हैं, जिनके श्राधार पर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, म्युनिसिपल बोर्ड, टाउन एरिया, नोटीफाइड एरिया और न्याय पंचायतें हैं, उनका अगर श्रध्ययन किया जाय तो सब में यह मिलता है कि अधिकारों को गांव तक यानी उन संस्थाओं तक देने में सरकार को बड़ो हिचक है । यह कहा जाता है कि यह लोकतंत्र की श्राधारमूत संस्थायें हैं परन्तु उनको श्रधकार नहीं दिये जा रहे हैं। लोग श्रब बहुत सिखा-पढ़ा दिये गये हैं, १८५० से सिखाये-पढ़ायें जा रहे हैं।

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और म्युनिसिपल बोर्ड में लोग इतने सीख ग्रीर पढ़ गये हैं कि श्रब उनको श्रिधकार देने चाहिये श्रौर सरकार को हिचक नहीं हो गी चाहिये। में लो गों के भाषण सुनता रहा हूं। कितपय लोगों ने यह कहा कि वहां डिक्टेटरिश्य की बातें श्रा रहीं हैं। श्रापको गांव वाले घुनते हैं तो श्राप डिक्टेटर नहीं हो सकते, मगर जब ग्राप उनको श्रिध तार देते हैं तो श्रापको सन्देह होता है कि वहां पर डिक्टेटरिश्य श्रा जायगी, इसलिये श्रापको हिचक है। मेरा श्रपना खयाल है कि गांव पंचायत को, श्रन्तिस जिला परिषद् हो श्रीर म्युनिसिधंलिटो को जो श्रिधकार विये गये हैं वह नाकाफी हैं। उनके श्रिधकार में इजाफा होना चाहिये।

दूसरी चीज चुनाव की हैं। चुनाव के लिये यह ता हुआ था कि जो सीकेट बैलेंटिंग है, उसके द्वारा जो चुनाव होते हैं, वह बहुत अच्छे हैं। उनका प्रयोग भी हो चुका है। लेजिस्लेटिव असेम्बली और पालियामेंट के जो चुनाव होते हैं वह ठीक प्रकार से सम्पादित हो जाते हैं। इस १६५७ के एलेक्शन में यह देखा गया कि गड़बड़ी बहुत कम हुई। तो जो तरीका हमारा आजमाया हुआ है उसको गांव पंचायत के चुनाव ों उस्तेमाल होना चाहिये। जो खर्चे की बात कही जाती है तो गांव में प्रधान का चुनाव सीकेट कि देंग से आप करना चाहते हैं। उसमें खर्चा पड़ता है। एक बैलेट बाक्स और रखना पड़ेगा। उसका भी चुनाव तब हो जायगा। कुछ बैलेट पेपर को छानने का खर्चा पड़ेगा। मगर एक चुना तो गांव प्रधान का आप सीकेट बैलेंटिंग से करने हैं और वहीं सदस्यों का चुनाव हाय उठ: कर करायें तो यह उचित नहीं मालून होता। प्रधान का चुनाव जो आप सीकेट बैलेंटिंग से चहते हैं उसका लाभ उतना नहीं हो पाता है, क्योंकि हाथ उठ:कर चुनाब करने में जो गड़बड़ी है वह अपनी जगह पर रहेगी।

[श्री तेजबहाद्र]

दूररी बात न्याय गंत्रायतों के बारे में कहना चाहृगा हूं। न्याय गंनाय ने के कैम नों की जी निगरानी होती है वह एस० डी० एम० श्रीर गृन्मिक के यहा ज्यादातर मंजूर होता है। वह श्रो निजर की गन में मंजूर होती है। प्रोसीजर को फानं न में किया जाना। उनकी श्राप उम्मीद करते हैं, ऐसे लोगों से जो पढ़ें-लिले कम है या करई पढ़ें-लिले नह हैं; क्योंकि जिस करत एम० एल० एज० श्रीर जिला बोर्ड के श्रध्यक्ष राय दे रहे थे जिला मंजिर्ट्रेट को तो हम लोगों के सामने हरिजन भाइयों के बहुत से नाम श्राये कि यह पढ़ें लिले नहीं है, लेकिन इनका रिप्रेजेंटेशन होना चाहिये पंचायतों में श्रीर इसका नतीजा यह हृश्रा कि बिना पढ़ें-लिले श्रादमी भी वहां रख लिये गये। ऐसी हालत में श्रव हम उन दिना पढ़ें-लिलों से यह उम्मीद करें कि वे प्रोसीजर फालों करेंगे, यह समभव नहीं है। तो न्याय पंचायतों में श्राप जिन श्रादमियों को भेजे वह खुनाव से न जायं बल्कि मैजिरट्रेट को नामिनेट करने का जो श्रीधकार मिला ह, उसमें एक परिवर्तन होना चाहिये श्रीर वह यह कि जो नामों की लिम्ट उनके पास श्राये, यह उनकी पूरी छानबीन करें श्रीर देख ले कि एक तो जो श्रादमी वहां जाता है वह काकी पढ़ा लिला हो; जो ऐक्ट श्रादि है उनका श्रर्थ लगा सके श्रीर दूसरे वह ईमानदार हो, पार्टीबाजी का उस पर ज्यादा श्रसर न हो। इस तरह के श्रादमियों की न्याय पंचायतों में हमें भेजना चाहिये। उनका गठन चुनाव से नही होना चाहिये श्रीर इस बात का ध्यान, मेरा खयाल हे कि, माननीय मंत्री महोदय रहों।

दूसरी बात टैक्स के सम्बन्ध में है। जब हम मुल्क का किलास करना चाहते है तो लाजमी तौर पर विकास में पैसा लगेगा श्रौर उसके लिये टैक्स लगेगा। टेक्स न लगे, यह नहीं कहा जा सकता; लेकिन ग्राम पंचायतों में जो टैक्स लगता है, जिला बोड़ों में जो टक्स रागता है, वह इतने मनमाने ढंग से लगता है कि उससे लोगो की परेशानी बढ़ जाती है। टैक्स लगाने का जो तरीका है यह भी गलत है और जिन लोगों के हाथ में वह काम है उनको फूर्मत नही ह । मिसाल के तौर पर जिला अन्तरिम परिषद् में असेसमेंट और यसूली का काम ह। इन दोनो कामो के लिए एक समिति है जो श्रसेसमेंट भी करती है श्रीर शाक्जेक्शन्स भी मुनती है। उस समिति के सदस्य राजनैतिक कार्यकर्ता है और उनकी फुर्मत नही रहती, बहुत सारा काम उनके जिस्से होता है श्रीर वह एक दो दिन के लिये ही जाते हैं। नतीजा यह होता है कि श्राब्जेक्शम्स की सुनवायी ठीक ढंग से नहीं होती श्रौर देक्स विभाग में जो लोग काम करते हैं, उनके जरिये ही वह सारा काम होता है और मनमाने तौर पर वे काम करते है। वे पैसा भी उठाते हे और लोगों पर इस कारण गलत टैक्स भी लग जाता है। यह भी होता है कि बहुत से ऐसे लोगों पर टैक्स लग जाता है जो टैक्स कलेक्टर या श्रमेशिय ग्रफसर की खुश नहीं कर पाते । इन सारी बातों की स्रोर विशेष ध्यान देना चाहिये । टैक्स ऐसा होना चाहिए कि जिसका बोझ गांव वालों पर कम हो । गांव वाले जब झहर में ग्रपना सामान खरीदने श्राते है तो यूं ही उन पर शहर का काफी टैक्स लग जाता है श्रीर वैसे भी उनकी श्रादमनी शहर की श्रामदनी से कम है । इस तरह से उनको ज्यादा टैक्स का बोझ उठाना पड़ता है। इन संस्थाओं का टैक्स ऐसा नहीं होना चाहिये कि जो बोझिल सिद्ध हो।

इन सारी बातों के स्रतिरिक्त में चन्द बातें स्रौर कहना चाहता हूं। एक स्रन्तरिम जिला परिषद् के प्रधान की बात है। में इस बात का कतई विरोधी हूं कि इन संस्थाक्रों में भी सरकारी व्यक्ति प्रधान का पद ग्रहण करें। उसके हाथ में सरकार की श्रोर से इतने स्रधिकार दें दियें गये हैं कि वे काम ठीक ढंग से नहीं कर पाते हैं स्रौर लोकतन्त्र में जब हमने मान लिया है कि हम एक्सपेरीमेंट कर रहे हैं तो वहां पर भी लोकतन्त्र के उसूल को ध्यान में रख कर जल्दी से जल्दी यह होना चाहिये कि ओ जिला मैजिस्ट्रेट वहां का प्रेसीडेंट होता है, उसकी जगह जो व्यक्ति उसमें हो उन्हीं को यह स्रधिकार हासिल होना चाहिये कि स्रपना श्रध्यक्ष चुन लें। श्रध्यक्ष को गैर-सरकारी स्रादमी ही होना जरूरा है।

दूसरी बात पंचायतों को मजबूत करने के बारे में कहना चाहता हूं। धभी हाल ही में कोग्रापरेडिक विभाग की तरफ से यह जात कही गयी है कि गांव के क्कूल, पंचायतें बीक १६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-स्त्रनुदान संख्या ४२--लेखा शीर्षक ५७--प्रकीर्ण व्यय तथा स्रनुदान संख्या १५-- लेखा शीर्षक २५--गांव सभाएं ग्रौर पंचायतें

कोग्रापरेटिव संस्थायें, ये तीन ग्राधार हैं जिनके जरिये हम विकास कर सकते हैं। इसिलये इन पंचायतों को जब तक ग्राप मजबूत नहीं करेंगे तब तक, जो ग्राप का हौसला है, वह पूरा नहीं हो सकता । इसिलये गांव सभाग्रों के सदस्यों की ट्रेनिंग के लिये, उनपर सरकारी ग्रफसरों के ग्राधिकारों को कम करना चाहिये ग्रौर उनकी तरफ विशेष ध्यान देना चाहिये। इन बातों के साथ में माननीय गौरीशंकर राय जी के इस कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

स्वायत्त शासन उपमंत्री (श्री जयराम वर्मा) — माननीय श्रिष्ठात्री महोदया, में उन सभी माननीय सदस्यों का बहुत श्राभारी हूं जिन्होंने श्रपने सुझाव दिये हैं श्रीर किमयों की श्रीर हमारा ध्यान श्राक्षित किया है। लेकिन जिन कुछ किमयों की तरफ हमारा ध्यान दिलाया गया है श्रीर जो श्रपूर्ण सूचना पर श्राधारित है या जिनको कार्यान्वित करने में हमारे सामने कठिनाइयां है, उनके बारे में जरूर में कुछ प्रार्थना करूंगा। मुझे इस बात की खुशी है कि सभी भाननीय सदस्य इस बात को मानते हैं कि यह पंचायतें, स्थानीय प्रशासन की सब से छोटी इकाई हैं, इनको जहां तक हो सके मजबूत बनाया जाय और इनको श्रिषक कि ममेदारी दी जाय ताकि वे कार्यकुशल वन सकें श्रीर गांव की बहुमुखी योजनाश्रों में उनका पूरा सहयोग हो सके। इसके लिये उनका पूरा-पूरा पथ-प्रदर्शन किया जाय श्रीर उनको इस योग्य बनाया जाय। ऐस। जब लोगों का खयाल है तो हम समझते हैं कि पंचायतों को श्रागे बढ़ाने के लिये सभी एकमत हैं श्रीर इसमें कोई दिक्कत नहीं है।

पंचायतें ग्रागे बढ़ सकें ग्रौर वे ग्राजा बी के साथ ग्रपना कार्य कर सकें, इसी दृष्टि से न्याय पंचायतों के स्तर पर, ब्लाक्स के स्तर पर, जिला स्तर पर, प्रदेश-स्तर पर, पंचायतों के सम्मेलन किये जाते हैं, जहां कि सदस्य इकट्ठा होते हैं ग्रौर इकट्ठा होकर ग्रपने श्रिचार प्रकट करते हैं; पंचायतों की कठिनाइयों के बारे में विचार करते हैं ग्रौर-ग्रपने ग्रपने सुझाव देते हैं। यही नहीं इसके लिये हमने दोकमेटियां बना दी हैं जिससे कि वे ग्रपने-ग्रपने कामों का बंटवारा कर सकें ग्रौर बंटवारा कर के उसका एक हिस्सा कृषि उत्पादन पर ध्यान दे तथा दूसरा ग्रन्य कल्याणकारी योजनाग्रों को देखें। इस तरह से जरूर उनका काम ग्रच्छा होगा। उनके लिये वहां ट्रेनिंग का भी प्रबन्ध किया गया है जिससे वे ग्रपने कामों को ग्रच्छी तरह से कर सकें।

पंचायतों के चुनाव के बारे में खासतौर से कहा गया है। इस सम्बन्ध में श्रव तक जो प्रणाली थी श्रौर है, हम मानते हैं, वह दोषपूर्ण है। इस तरह से जो हाथ उठाने की प्रणाली है उसके द्वारा कभी-कभी जो सही श्रादमी होते है वे चुनाव में नहीं जा पाते हैं श्रौर जो श्रातंकवादी होते हैं, जिनके डंडे का बोलबाला होता है, वे चुन जाते है। इन्हों बातों को देखते हुए श्रव यह किया गया है कि प्रधान का जो चुनाव हो, वह गुप्त मतदान द्वारा हो। श्रव सवाल यह है कि बाकी चुनाव गुप्त मतदान द्वारा क्यों न कराये जायं ?श्रगर प्रधान का चुनाव इस तरह से कराने में श्रच्छा है तो बाकी कराने में क्या कठिनाई है, उसकी तरफ में कुछ ध्यान श्राकृष्ट करूंगा।

पहली बात तो यह है कि इस मामले में इतने पैसे की जरूरत होगी कि शायद उस खर्चे को बरदाइत करना लोग मुनासिब न समझें। श्रामतौर से श्रगर चुनाव कराया जाय, बगैर गुप्त मतदान के, तो १०-११ लाख रुपया खर्च होता है। इस बार सिर्फ प्रधान का चुनाव गुप्त मतदान से किया जा रहा है श्रौर उसमें ४८,६७,००० रुपया खर्चा होगा, यानी ४८ लाख रुपया श्रधिक खर्च बढ़ा है, सिर्फ प्रधान का गुप्त मतदान कराने में। श्रब जितना पैसा खर्च किया जाय श्रगर उस खर्चे के मुताबिक लाभ होने वाला हो तो वह बरदाइत किया जा सकता है। इसमें बहुत ज्यादा खर्चा होगा, लेकिन श्रगर उसको करने के बाद उतना लाभ होने वाला हो तो उसको इस्तेमाल करने में ज्यादा दिक्कत नहीं होगी। लेकिन सोचना पड़ेगा कि एक बेलट बाक्स रख देने से काम नहीं चलने वाला है।

माननीय सदस्य जानते हैं कि पिछली बार जो चुनाव हुआ था उसमें जो छोटी से छोटी गांव पंचायत थी उससे १७ सदस्य चुने गये थे। तो दो पार्टी अगर गांव पंचायत के चुनाव में [श्री जयराम वर्मा]

हिस्सा लेती है श्रौर हर पार्टी हर एक सीट के लिये श्रपना उम्मीदवार खड़ा करती है तो ३४ उम्मीदवार कम से कम उसमें भाग लेगे। उसके लिये एक बैलट बाक्स रखकर चुनाव करना सम्भव नहीं होगा। साथ ही जब कि वहां की जनता पढ़ी-लिखी नहीं है, श्रोर वह उन ३४ श्रादिमयों के सिम्बल याद रख सकें, यह शायद सम्भव नहीं होगा। जब वे ५-६ लोगों को बोट देने जाते हैं तो नोट करके जाते हैं, तो वे लोग इतने नाम या सिम्बल कैसे याद रख सकेंगे। इस तरह से वह चांस की वीटिंग हो जायगी कि कहीं का कहीं निशान लगा दिया। इस तरह से हाथ उठाकर जहां कोई बोट दे रहा है तो वह समझ-बूझ कर दे रहा है, चाहे थोड़ा-सा घर हो, लेकिन गुप्त मतदान में श्रौर भी खराबी श्रायेगी। उसके लिये यह करना पड़ेगा कि कम से कम ६ टुकड़े कांस्टीटुएंसी के करने पड़ेंगे।

श्री नंदराम——निर्वाचन क्षेत्र तो पहले ही बने हुए है, १०-१० निर्वाचन क्षेत्र है एक एक पंचायत में।

श्री जयराम वर्मा--- ग्रगर १५० बोटर है तो प्रत्येक कांस्टीट्यएंसी में २५ वोटर पड़े। म्रब किस तरह से वोटर लिस्ट बनेगी । १ घर से लेकर १० घर तक एक कांस्टीट्युएंसी, ११ से लेकर २० तक दूसरी, २१ से ३० तक तीसरी बनेगी। प्राम तौर से एक ही खोनदान के लोग १ घर से लेकर १० घर तक होंगे; क्योंकि ज्यादातर गांयो के पास-पास ही खानदान बसे होते हैं, तो उसका परिणाम यह होगा कि जहां पर एक आदमी के अने जाने के लिये जहरत इस बात की थी कि गांव भर के लोग उसको पसन्द करते श्रौर चुनते, श्रब, यि कवल ६ घर पसन्द करते हों तो वह चुन लिया जायगा श्रोर इस तरह से श्रापसी शगड़े बढ़ेंगे श्रीर जातिवाद पर वोटिंग हो जायगी। तो हम नहीं चाहते है कि जहां पर हाथ उठा कर वोटिंग हम करा रहे है उस प्रथा को हटा कर इतना पैसा खर्च करके चुनाव कराया जाय श्रीर चुनाव में सिद्धांत का नाम न रह जाय। कांस्टीट्एसी जितनी छोटो होगो उतना हो सिद्धान्त से परे वहां पर वोटिंग होगी। हम<sup>ें नहीं</sup> चाहते कि सिद्धान्त से परे वोटिंग हो। प्रधान तो गांव भर से च्ना जायगा उसके लिये तो कांस्टीटुएन्सी बड़ी हो जायगी, इसलिये इस पद पर तो लोग सोच समझ कर अन्त्रे श्रादमी को चुन सकते हैं, लेकिन पंचों के लिये अगर कांस्टीटुएन्सी छोटी होगी तब निद्धान्त के हिसाब से उनका चुनाव होना संभव नहीं होगा, इसमें बड़ी फठिनाई ब्रायेगी। जितना ही ब्राप वीटिंग के तरीके को पेचोबा बनायेंगे उतना ही उसका बुरा परिणाम होगा, उतने ही ज्यादा एलेक्शन पेटोशन्स होंगे श्रीर दूसरे झगड़े पैश होंगे। इसलिये बढ़ा से बढ़ी फांस्टोटुएसी में चुनाव हो, वह ज्यावा श्रम्छा होगा। सदस्यों को इस फठिनाई की श्रोर भो ध्यान देना चाहिये। इस पर पैसा भी खर्च किया जाय ग्रीर उसके परिणाम भी ग्रक्छे न हों तो उससे क्या फायवा होगा।

मौजूदा प्रणानी के अनुसार एक आदमी उतने बोट हाथ उठाकर देता है जितने कि उम्मेदबार होते हैं। श्री नह्द राम गुष्त ने एतराज किया, उनका मनन्य शायद यह या कि एक बोटर को एक उम्मोदबार को ही बोट बेना चाहिये। इस सिद्धान्त को अपनाने से बड़ो कठिनाई पैदा हो जायगी क्योंकि आप गिन नहीं पायेंगे और हिसाब नहीं रख सकेंगे कि कितने एक बार बोट दिया और किसने दो बार दिया। अच्छा तो यही है जो मौजूदा प्रणाली है कि हर वोटर हो उतने बोट देने का अधिकार होना चाहिये जितने कि उम्मोदबार हों। अगर यह कर दिया जाय कि एक बोटर एक उम्मोदबार को ही बोट दे तो इससे मामला बड़ा पेचीदा हो जायगा। आज का जो तरीका है वह अच्छा है, इसपर भी आपको अच्छी तरह से गौर करना है।

श्री भूपिकशोर—इस प्रणालों से जो कम तादाव में लोग होते हैं उनका प्रतिनिधित नहीं हो पाता है। इसलिये एक श्रावमी को एक ही कैंग्डोडेंट को बोट करना चाहिये।

### १६६०–६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—स्त्रनुदान संख्या ४२——लेखा शीर्षक ५७——प्रकीर्ण व्यय तथा स्रनुदान संख्या १५—— लेखा शीर्षक २५——गांव सभाएं स्रौर पंचायतें

श्री जयराम वर्मा—इसका परिणाम श्रव्छा नहीं होगा। इसके श्रलावा बैलेट द्वारा वोटिंग कराने पर कभी यह संभव नहीं हो सकेंगा कि एक वोटर ३४ सिम्बल्स को याद रख सकें। उस स्थिति में चुनाव केवल चान्स पर निर्भर करेगा, इत्तफाक से उसने किसी के सामने निशान लगा दिया। किसी प्रकार से यह समझ बूझ कर वोटिंग नहीं हो पायेगी, चान्स की वोटिंग हो जायगी।

श्री नन्दराम—में शायद मंत्री महोदय को ठीक से समझा नहीं सका । मेरा मतलब सभापित के चुनाव से था। ग्राम सभाग्रों के पिछले चुनाव में ऐसा था कि ग्रगर तीन उम्मीदवार हैं तो मतदाता को ग्रिधिकार था कि वह तीनों को बोट दे सके। इसलिये ग्रगर इस बार भी वही प्रथा रही तो उसका बड़ा दुष्परिणाम निकलेगा। गुप्त मतदान में भी कहीं इसो प्रकार को व्यवस्था न रखी जाय।

श्री जयराम वर्मा—गुप्त मतदान में कोई वोटर तीन उम्मोदवारों को कैसे वोट देगा, वह तो एक ही वोट दे सकेगा ।

दूसरी बात यह कही गई कि पंचायतों को श्रिधकार नहीं दिये जाते हैं, उनको निर्माण के काम के लिये पैसा नहीं मिलता है, या पैसा लेने में उनको भ्रष्टाचार का सामना करना पड़ता है। इन कठिनाइयों को दूर करने के लिये एक सक्युं लर निकाला गया है। उसके द्वारा यह किया जा रहा है कि पंचायतों के काम में जो ककावट होती है, वह न हो। १ श्रप्रेल, १६६० से यह व्यवस्था को गयो है कि गांवों की सफाई, स्वास्थ्य, यातायात के विकास संबंधी जो अनुदान हैं; उनको इकट्ठा कर दिया जाय और उसको इकट्ठा करके गांवों की श्राबादी के श्रनुपात में पंचायतों को बांट दिया जाय। जब यह रुपया उनको मिल जायगा तो उनको यह श्रिधकार होगा कि वे उसको चाहे जिन काम पर खर्च करें। जिन कामों की उनको स्वीकृति दी गयो है, उन कामों में से किसी पर भी खर्च करें।

इसके श्रलावा एक दिक्कत यह भी थी कि जो ग्राग्ट उनको मिलती थी, उसके लिये उनको श्रपना मैं विंग कन्ट्रो यूशन भी देना होता था तभी वे उस काम को कर सकते थे। यह दिक्कत भी हटा दी गयी है। श्रगर उनके पास पैसा है तो वह उसके साथ उसको खर्च करें वरना इसी रुपये को खर्च करें। लेकिन यह उम्मीद श्रवश्य की जाती है कि वे चाहें तो पैसे के रूप में या चाहे श्रमदान के रूप में श्राना कंट्रो यूशन श्रवश्य देंगे श्रीर श्राशा है कि जितना पैसा दिया जायगा उससे दुगना काम हो जायगा।

श्रब पहलों साल तो यह रुपया दिया जा रहा है श्राबादी के श्रनुपात से, लेकिन दूसरे साल से यह नियम बना रहे हैं कि १६६१—६२ में जो श्रनुदान दिया जायगा, वह इन बातों को देखकर दिया जायगा कि उन्होंने पिछले वर्ष में कितना काम किया है, कितना पैसा श्रपनी तरफ से लगाया है, उस काम के करने में कितनी दिलचस्पी दिखायो है, हरिजनों श्रौर पिछड़ी हुई जातियों के बारे में कितनी दिलचस्पी दिखायी है श्रौर श्रागे की उनकी क्या योजना है श्रादि बातों को देखकर रुपया दिया जायगा। इससे होगा यह कि जो श्रच्छा काम करने वाली गांव सभायें होंगी उनको श्रगले साल श्रीधक रुपया मिल जायगा श्रौर जो ठीक काम करने वाली न होंगी उनको रुपया कम मिलेगा। इसमें सिर्फ पहाड़ों का इलाका छट गया है, उसके बारे में भी सोचा जा सकता है।

्रिब गांवों में कुछ निर्माण कार्य होते हैं, जैसे–स्कूल की इमारत, पंचायत घर, पुलिया, छोटी-छोटो सड़कें थ्रादि कामों को पंचायतें ग्रब ग्रयने ग्राप ही करायेंगो। ठेकेदार द्वारा काम कराये जाने में जो शिकायतें होती थीं, श्रब वे न होंगो।

श्री भूपिकशोर—जो काम न करे उसको ग्राप रुपया नहीं देंगे, यह तो बात ठीक नहीं है। इससे तो उनका उत्साह श्रौर भी मर जायगा।

श्री जयराम वर्मा—ग्रगर गांव का प्रधान काम नहीं करवाता है तो पंच लोग उस पर दबाव डालें कि वह उस काम को कराये नहीं तो वे बदनाम होंगे। इससे उत्साह भंग होने वाला नहीं है, इस स्कीम से उत्साह ग्रीर बढ़ेगा।

एक बात यह कही गयी कि पैसा लेने में दिक्कत होती है, अष्टाचार होता है। इस दिक्कत को भी दूर किया गया है। गांव पंचायतों का एकाउण्ट पोस्ट श्राफिस सेंविंग बंक में खोल दिया गया है। उनका पर्सनल लेजर में जो रुपया था वह भी इस एकाउण्ट में चला जायगा। इस प्रकार से पैसा मिलने में जो उनको दिक्कत होती थी वह भो दूर हो जायगी। क्योंकि श्रव पैसा ग्राम पंचायतों के ही एकाउण्ट में रहेगा उसमें से वे खर्च कर सकेंगी श्रीर जो दिक्कते हैं वे नहीं रह जायगी। श्रव यह कि पंचायतों का घन कुछ बढ़ाया जाय ताकि वे श्रिधिक से श्रिधिक सेवा कर सके, इसके लिये हमने बतलाया कि यह इन्तंजाम किया जा रहा है कि जो विकास संबंधी ग्रान्ट्स है वे उनको सोवें मिल जायं तो उनके पास पैसा भी बढ़ जायगा श्रोर जो काम वे करना चाहेंगे वह भी श्रासानो से हो जायगा। पैसा बढ़ाने की बात हम ग्रागे भी मोचेंगे, लेकिन पहले जो पैसा मिल रहा है उसका वे सही इस्तेमाल करें तभी हम इस बात को सोचेंगे कि उनको श्रीर पैसा मिले। उस पर विचार भी हो रहा है श्रोर इस तरह का कोई फैसला श्रभी तक किया हो जाया है कि रेवेन्यू में से भी कुछ हिस्सा दिया जाय। लेकिन उस मामले पर कई बार विचार हो चुका है श्रीर श्रागे भी विचार होगा ताकि जितना ज्यादा वे काम करना चाहते हैं, उसके लिये उनको प्रोत्साहन मिले श्रीर उनके काम में हर तरह से मदद को जाय जिससे वे श्रीर श्रच्छा काम करें।

श्री भूपिकशोर—इसको भ्राबादी के हिसाब से रखें श्रीर जो ग्राम पंचायते श्रच्छा काम करें, उनको इनाम दिया जाय।

श्री जयराम वर्मा—श्रगर श्राप श्राबादी के हिसाब से रुपया रखेंगे तो दिक्कत होगी। हां, यह बात सही है कि प्राम पंचायतों की जो जायदाद है उसकी ठीक प्रकार से रक्षा नहीं हो पा रही है। उसकी रक्षा होनी चाहिये, लेकिन उसमें सब के सहयोग को जरूरत है। श्रगर सब लोगों का सहयोग हो श्रीर हम सब लोग मिलकर पंचायतों की मदद करने को तैयार हों तो उनको श्रपनी जायदाद की रक्षा करने में मदद मिलेगी। लेकिन श्रगर हम उनके उपर ही सब कुछ छोड़ देंगे तो उनको दिक्कत होगी श्रीर उन दिक्कतों को सामने रखते हुए वे पंचायतें श्रपने को निस्सहाय महसूस करेगी। उनको जितनी ही मदद होगी उतना ही वे काम श्रच्छा करेंगी श्रीर श्रपनी जायदाद की रक्षा भी कर सकेंगी। हां, उनकी जायदाद की रक्षा के लिये श्रदालतों में जो मामले चलते हं, उसके रास्ते में कुछ कठिनाई हो सकती है श्रीर संभव है कि वकील उस काम में ठीक से दिक्कतों को दूर करने की कोशिश करें तो जरूर ऐसा होगा कि जो सरकारी वकील की दिक्कतें हैं, व दूर हो सकती हैं। श्रगर कोई पर्टिकुलर दिक्कत सामने श्रावे तो उसमें मदद की जाती है लेकिन श्रगर उनकी तरफ ध्यान न देकर सब कुछ पंचायतों के उपर ही छोड़ वें तो कोई काम होने वाला नहीं है।

जहां तक पंचायत मंत्रियों के द्रांसफर की बात है, यह सही है कि उनके द्रांसफर के संबंध में श्रादेश जारी हो चुका है कि साधारणतया वे श्रापने घर के ब्लाक में न रखे जायं श्रीर श्रपने घर से २५ मील की दूरी पर ही रखे जायं। २५ मीन की जगह २४,२३ या २२ मील या २६,२७ मील भी हो सकता है। साथ ही साथ यह भी श्रादेश है कि जिन पंचायत मंत्रियों का काम श्रच्छा है श्रीर जिनके काम को बहुत श्रच्छा समझेंगे, ए० पी० श्रो० या डी० पी० श्रो० तो वे उनको रोकने के लिये भी सिफारिश कर सकते हैं श्रीर रोक सकते हैं। उसमें कोई रकावट या बाधा नहीं है। यह इसलिये किया गय है कि इस तरह की बहुत-सी शिकायतें थीं किये लोग नजदीक रहने से श्रपना

काम ठीक से नहीं करते हैं श्रौर श्रपने घर के काम में लगे रहते हैं। इसी दृष्टि को सामने रख कर यह श्रादेश जारी किया गया है कि जिन पंचायत मंत्रियों का काम श्रच्छा हो उनको नजदीक भी रखा जा सकता है, इसमें कोई रुकावट नहीं है। शिकायत में कहा गया है कि वे लोग दूर रहें जिससे कि उनका काम श्रच्छा हो।

श्री राजनारायण (जिला वाराणसी) -- श्रब इस श्रादेश से शिकायत कैसे दूर होगी?

श्री जयराम वर्मा—जो लोग घर पर श्रिधिक रहते थे वह श्रव नहीं रह सकेंगे, इससे वह काम श्रच्छा कर सकेंगे। यह ठोक है कि श्रभो टैक्स लगाने में श्रीर उसकी वसूलो में कुछ नुक्स है, वह ठोक होने चाहिये। लेकिन श्रांकड़े देखने से पता चलता है कि टैक्स लगाने के संबंध में श्रीर उसकी वसूलो के तरोके में श्रव सुधार हो रहा है श्रीर जो हमारे पंचायत इंसपेक्टर श्रीर सेकेंटरीज हैं उनके काम में भो सुधार हो रहा है।

\*श्री राजेन्द्रसिंह (जिला हरदोई)—ग्रिधिकात्री महोदया, श्रभी सभी माननीय सदस्यों ने माना है कि चुनाव पद्धित दोषपूण है। यह भी बताया गया कि प्रधानों का चुनाव श्रागे बैलट बाक्स द्वारा होगा, लेकिन इसके साथ ही जो न्याय पंचायतों के पंचों का चुनाव है, उसका क्या तरीका रखा गया है? पिछला जो चुनाव हु श्रा उसमें काफी गड़बड़ी रहो, वे चुनाव सेकटरियों, लेखपालों श्रीर हाकिम परगना को सिफारिशों पर कराये गये श्रीर उनमें ऐसे लोग पहुंचे जो एक ही पार्टी से संबंधित थे। जिनकी कोशिशे श्रीर सिफारिशे थीं उन्हीं को वहां पर पहुंचाया गया।

इस तरह से न्याय पंचायतों को जो दशा है वह बहुत ही शोचनीय है श्रौर खास तौर से उस दशा में जब कि उनको श्रिधकार इतने बड़े दिये गये है कि ५०० रुपए तक दीवानी के श्रौर माल के श्रौर फौजदारी के मामले वह तय कर सकते हैं, तो उनके पंचों के चुनाव की भी सही व्यवस्था होनी चाहिये। जिस प्रकार प्रधानों के चुनाव का तरीका बदला गया है इसी प्रकार इन पंचों के चुनाव का तरीका भी होना चाहिये। श्राज गांव पंचायतों के लिये कहा जाता है कि उनको श्रच्छा बनाया जाय, उनको मजबूत बनाया जाय, लेकिन उनके चुनाव में काफी गलत तरीके बरते जाते हैं। श्राज प्रधानों की जगहें एक साल, दो साल श्रौर तोन साल से खालो पड़ो हैं लेकिन वहां चुनाव की कोई व्यवस्था नहीं की जातो है। जालौन में श्रौर हमारे यहां फर्छ खाबाद में भी ऐसी ही शिकायत है कि पंचायतों के रिवत स्थानों की पूर्ति नहीं हो रही है श्रौर न उनको भरने की कोई कोशिश की जाती है। प्रधानों के चुनाव भी उन्हीं पंचों के द्वारा करा लिये जाते हैं।

यह भी कहा जाता है कि शुद्ध जल के कुओं का निर्माण हुआ, यातायात के साधनों को बढ़ाया गया और कर को वस्लो भी अच्छो हुई। ठीक है, शुद्ध जल के लिये अच्छे कुएं बनाये गये लेकिन यदि माननीय मंत्री जी गांव में जाकर देखें तो पता चलेगा कि यह जो गांव है, जहां लोग बसते हैं वहां तो वह बना ही करेंगे, लेकिन जो पिछड़े या तराई के इलाके हैं या निदयों के किनारे बसे हैं, जहां कि आज भो लोग रेतीला पानी पीते हैं, पक्के कुएं नहीं हैं। सेकेटरी वहां रहते हैं लेकिन कभी कोशिश नहीं करते कि वहां अच्छे शुद्ध जल के पक्के कुएं बनाये जायं, गांव वालों को प्रोत्साहन दें, उनसे उस कार्य को करायें। आप ने कहा कि हमने २५ मोल का आदेश दिया है, लेकिन अब भी वे एक-एक दो-दो मोल पर हैं, उनके हैं इक्वार्टर निश्चित नहीं हैं, वहां जाओ तो वह नहीं मिलते। गांव वाले अब भो कहते हैं कि आधा रुपया सेकेटरी से कुओं के लिये मिलता है। हरिजनों को कुआं बनाने के लिये पूरी मदद मिलती है। लेकिन वह कहते हैं किस प्रकार

# [श्री राजेन्द्रसिंह]

हमको पैसा मिले ? हमको कोई दिलाने वाला नहीं है, बतलाने वाला नहीं। ग्रगर सेकेटरो से इस बात के लिये कहा जाय तो वह कहता है कि मैं काजिश करता हूं। सच बात तो यह है कि वह पार्टीबाजो के चक्कर मे रहता है। इसलिये में चाहता हूं कि सरकार जो ग्रादेश करे उसका पूर्णतया पालन होना चाहिये।

यह कहा गया कि श्रम्छा सेकेटरी श्रपने गांव के पास में भी रह सकता है। इससे तो श्रापके श्रादेश का पूर्णतः पालन हो हो जायगा क्योंकि जिसकी वहां के जोरदार लोग चाहेंगे, वह वहां बना रहेगा, चाहे काम करे या न करे। इसलिये श्रापके श्रादेश साफ-पाफ होने चाहिये कि सेकेटरी श्राने गांव से २४ मील की दूरी पर रहे। जो श्रापने छूट दे रखी हैं उसका परिणाम मेरे जिले मे यह हुश्रा कि उसका ट्रांसफर हो गया, लेकिन वहां के लोगों ने दोड़ धूप को ग्रीर उसका तबादला मन्सूख किया गया। इस तरह श्रापके श्रादेशों का पालन नहीं हो सकता। जैसा कार्य श्राप चाहते हैं वैसा नहीं हो पा रहा है। पंचायन सेकेटरी का नवशे देने पड़ते हैं, वह निर्माण कामों में कोई दिलचस्पी नहीं लेता।

न्याय पंचायतें तो पार्टीबन्दी पर चल रही हैं। एक ही पार्टी के सरपंच, सहायक सरपंच श्रीर पंच है। एक हो सरपंच बिना कोई बेंच बनाये श्रकेने खुद फेमला कर देता है। श्रगर कोई श्रादमो निगरानी के लिये जाता है तो उसका काफी पंसा खर्च होता है, काफी परेशानी होते हैं। श्रापे चल कर मुकदमा खारिज भी हो जाता है लेकिन जितने को डिग्रो हुई उससे ज्यादा उसका दौड़ यूप में खर्च हो जाता है। इसलिये इसका खयाल रखा जाय कि श्रच्छे लोगों का चुनाव हो।

मंत्रों जो ने कहा कि पंचायतों को सीधे रुपया देने की बात है। ग्रगर ग्रापके कर्मचारी ठोक रहें तो इससे काफी काम हो जायंगे। ग्रभी तक लोगों को ग्रनुदान ही नहीं मिलता था, खासकर पिछड़े हुए गांवों को—ऐसे गांवों में पीने के पानी की कोई सुविधा नहीं है।

टैक्सों की बात जो कही गई कि टैक्सों में बसूली श्रधिक हुई है, यह श्रच्छी बात है, लेकिन किस प्रकार से हुई इसका पता शायद मंत्री जो को नहीं है। वहां पर पुलिस को से जाकर, धमका कर, जानवरों को खोल कर ८,१० साल के टक्सेज वसूल किये जा रहें है। मंत्री जो ने बताया है कि पंचायतें टेक्स माफ कर सकतो है, लेकिन जंसी क्यबस्था चल रही है उसमें से केटरी प्रधान के पास पहुंचे श्रोर उससे कहा कि टक्स वसूल होना चाहिये तो प्रधान कब कहेगा कि नहीं होना चाहिये। इस लिये सरकार की तरफ से श्रावेश होना चाहिये कि पुराने टैक्सेज वसूल नहीं होने चाहिये।

जिन जिलों में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड तथा पंचायत टैक्स दोनों लग रहे है, जेसे फर्रलाबाद जिला है, वहां लोगों को बहुत परेशानी हो रही है। इसके लिये साफ नीति हीनी चाहिये कि एक हो विभाग के दो-दा टैक्स एक ग्रादमी पर न पड़े। उससे फर्रलाबाद जिले में विशेष परेशानी हो रही है ग्रौर में वाहूंगा कि यह मसला साफ किया जाय।

श्री गुप्तार्रिसह (जिला रायबरेलो) — ग्रावरणाय ग्राधिष्ठात्री महोवया, यह श्रनुदान जो स्वायत्त शासन मंत्री द्वारा प्रस्तुत किया गया है उसका में समर्थन करता हूं ग्रीर उसके लिये में उनको बधाई देता हूं। यह स्वायत्त शासन ही हमारा सरकार में एक ऐसा विभाग है जिसको जनतंत्र प्रणालो विभाग कहा जा सकता है श्रीर वह द्र प्रतिशत जनता, जो देहातों में ग्राबाद है उसको भी इससे कुछ ग्राधिकार प्राप्त हुए हैं। लेकिन इसमें जो श्रनुवान को रकम है उसको देवने से मालूम हुग्ना कि यह विभाग उपेक्षा को वृष्टि से देखा गया है ग्रीर जा ग्रालोचना इसकी हो रही है उसको सुन कर यह मालूम होता है कि महज नाम मात्र के लिये यह जनतंत्र के लाभ का विभाग है। यह सब देख व सुन कर दुख होता है। जहां पर ग्राधिकारों का मामला है, इसको पूर्ण

भ्रधिकार प्राप्त नहीं है। फिर जो कटौती का प्रस्ताव देखा तो ज्ञात हुम्रा कि प्रस्तावक महोदय ने धरती फाड़ दी। इस म्रनुदान में मांग तो यह की जाती है कि म्रनुदान भ्रौर बढ़ाया जाय लेकिन उनका प्रस्ताव है कि उसको कम कर दिया जाय भ्रौर इसकी राशि एक इपया कर दिया जाय। जनता सुनेगी तो उनकी प्रशंसा नहीं करेगी।

इस विभाग में जो वकील ग्राम समाज के मुकदमें करने के लिये रखे गये हैं, वह ग्रिविकार स्वयं ग्राम समाज को मिलना चाहिये था कि स्वयं ग्राम समाज को मिलना चाहिये था कि स्वयं ग्राप्त मुकदमों के लिये जिस वकील को चाहे वह रख ले। उसके ऊपर एक वकील लाद देना कुछ उचित नहीं है। ऐसा वकील दिलचस्पों से काम नहीं करता। उससे कम रकम में भी दूसरा वकील ग्राम समाज को मिल सकता है।

में न किसी का जवाब देने के लिये खड़ा हुन्ना हूं और न विभाग की प्रशंसा करने के लिये खड़ा हुन्ना हूं। इसके जवाब के लिये विभाग द्वारा पुस्तिका छपी है वह पढ़ ली जाय और जवाब देने के लिये हमारे इस विभाग के मंत्री महोदय काफी योग्य है और उनको जनतंत्र में पूर्ण विश्वास है, म्रास्था है, भ्रौर इसके म्रितिरिक्त संपूर्ण ज्ञान है, वे इस सम्बन्ध में कहेगे।

में भ्रपनो एक बात कहने के लिये खड़ा हुआ हूं, वह यह है कि अन्तरिम जिला परिषद् का विधेयक, जैसा कि दूसरे भाइयों ने कहा, सुना जाता है कि वापस लिया जा रहा है; और वापसी के साथ उसमें जो सरकारों अधिकारों हैं उनको अधिकार प्रदान किया जायगा और वह अधिकार यही नहीं कि उनको वोट देने का अधिकार होगा बल्कि वह प्रेसीडेण्ट के ऊपर एक बहुत बड़ा अधिकार रखेंगे और सारा दायित्व डिप्टी किमश्नर के ऊपर ही रहेगा। अगर इसी तरह का गरिषद् जनतानित्रक कहा जात तो यह हमारे और हमारी सरकार के लिये बहुत दुख की बात है। बड़ी आशा थी कि जनतन्त्र प्रणालों के अनुसार जिला अन्तरिम परिषदों का चुनाव होगा और उसके जनता के चुने हुए प्रेसीडेट को पूर्ण अधिकार होंगे। पर अब सुनते हैं कि डी० एम० को पूर्ण अधिकार होंगे, हालांकि मुझे विश्वास नहीं होता कि ऐसा होगा अर्थात् डी० एम० के मातहत प्रेसीडेंट होंगे। लेकिन अगर ऐसा होता है कि सारे अधिकार ज्यों के त्यों डिप्टी किमश्नर के पास बने रहे और डिप्टी किमश्नर की आंखों के इशारे पर मेम्बर चले और उनके आने पर खड़े हो कर उनका स्वागत करें। ऐसे चुनाव से में समझता हूं कि कोई लाभ नहीं है। बांझ अच्छा है, पुत्र न हो तो कोई बात नहीं है, लेकिन अगर पुत्र हो तो योग्य हो।

हमारे यहां ग्राम पंचायतों में द्धारिया कानून है। श्राजतक गांवों मे हमने देखा है कि वही ग्राम सभा है ग्रौर वहीं ग्राम समाज है ग्रौर दो कानून लागू होते है। इसके कारण बड़ी दिक्कत होती है और ग्राम समाज ग्रौर सरकारी ग्रधिकारियों में कभी-कभी बड़ा मतभेद हो जाता है। में एक छोटो-सी घटना बताना चाहता हूं। मेरे पड़ोस में एक गांव मथुरपुर है जहां ५०० बोघे को भ्राराजो है जिसका पूर्ण दायित्व ग्राम समाज के ऊपर है। ग्राम समाज ने प्रस्ताव पास करके उसका वितरण किया । डिप्टी कलेक्टर ने उसमे दखल दिया और कहा कि यह वितरण ठोक नहीं है। उन्होंने कहा कि यह मेरा मत है कि एक दूसरे गांव के श्रादिमयों को ६० बीघे जमोन देदी जाय। ग्राम समाज के लोगों ने कहा कि यह तो प्रस्ताव पास हो चुका है ग्रौर मथुरपुर क भूमिहीनों को जमोन दी जा चुकी है, हम कैसे करे? मुझसे भी उनकी ग्रर्थात डिप्टों क्रिक्नर की बात हुई। उन्होंने कहा कि नहीं, में बात हार चुका हूं। मेने एक वकील को नाम लेकर कहा कि उस ब्रादमों के लिये कह रहे हैं न ? उन्होंने कहा, हां। तो मैने कहा कि वह तो श्रापका रिश्तेदार होता है, श्राप को कोई श्रधिकार नहीं है ऐसा करवाने का कि जमीन दुसरे गांव के भूमि वालों को दे। वह जमीन भूमिहीन लोगों में बांटी गई थी जिन में श्रपवाद के रूप में चाहे दूसरे वर्ण के लोग हों, बाकी सब हरिजन लोग हैं। लेकिन हाकिम परगना के इशारे पर गंडों को इकट्टा करके उन पर हमला किया गया श्रौर हमला ही नहीं हुश्रा बल्कि उनका जो गुल्ला था ४०-५० मन वह वे उठा ले गये, हल उठा ले गये, बेल खेद ले गये। इसकी रिपोर्ट

[श्री गुप्तारसिंह]

थाने में की गयो, कुछ नहीं हुन्रा। डिप्टी कलेक्टर ने कहा कि हमने तो कह दिया था कि म्रार ६० बीघा जमीन गोंडा वालों को न दोगे तो शान्ति न रहेगी। ग्रब सुनता हूं कि किसी व्यक्ति ने एक दीवानों का मुकदमा ग्राम समाज के नाम किया है ग्रौर उसमें डी० एम०, एस० डो० एम० गवाह है। तो इस तरह के भ्रष्टाचार, कुनबापरस्ती ग्रौर ज्यादतों को तरफ में चाहता हूं कि सरकार ध्यान दे। इन शब्दों के साथ में इस ग्रनुदान का समर्थन करता हूं।

श्री गोविन्दिंसह विटट (जिला श्रत्मोड़ा)—श्रिधिष्ठात्री महोदया, यह जो श्रनुदान चल रहा है, इसमें कोई शक नहीं है कि इसके जो इन्चार्ज मिनिस्टर है उनका व्यक्तित्व बहुत ऊंचा है। मुझे ऐसा लगता है कि मन्त्रो जो को श्रपनो सच्चाई के कारण, गांधो जो के साथ रहने के कारण या चरखा संघ में काम करने के कारण इस विभाग में काम करने में श्रड़चन होतो होगो, दिक्कत होतो होगो। श्रक्ल उनकी बहुत बड़ो है, लेकिन वह उसका दृष्टिकोण नहीं पकड़ पाते।

मंत्रों जो ने कोई ऐसी बात नहीं कहीं, जिसकी चर्ची की जाय। सदस्यों के गुप्त चुनाव के बारे में उपमंत्रों जी ने कहा कि उससे खर्ची बढ़ जायगा। लेकिन में इतना हो कहना चाहता हूं कि जब एक सिद्धान्त को श्राप गलत मान चुके हैं श्रौर फिर भी श्राप कहते हैं कि इसमें खर्ची बहुत पड़ेगा, इसलिये उसे नहीं कर सकते, यह गलत है। श्राप का विभाग कमाऊ विभाग नहीं है। जहां पर ४८,६०,००० रुपये के खर्चे की बात कहीं गया है, वहां पर यह भी बजट में दिया है कि ७२ लाख की ग्रामदनों भी होगी। इस तरह से १३,४०,००० रुपये की बचत है श्रौर इसके श्रजाबा जो टिकट सदस्यों के चुनाव के बेचे जायंगे उसकी श्रामदनों कहां जायगी? सरकार कुछ बिनया होतों जा रही है। सरकार चाहती है कि इतना खर्च न हो तो ठीक ह। क्या श्राप यही न्याय देने श्राये है? इससे तो भ्रष्टाचार बढ़ता है। एक तरफ तो श्राप कहते हैं कि वर्त्तमान चुनाव प्रणालों में बुराइयां है श्रौर दूसरी तरफ कहते हैं कि पैसे को कमो है, इसलिये नहीं कर सकते हैं। इसलिये दोनों चोजे एक साथ नहीं चल सकती है।

दूसरी बात यह है कि मंत्री जो कहते हैं कि ३४ उम्मीदवारों के नाम जायंगे, इससे वोटर चक्कर में पड़ जायगा। लेकिन में कहना चाहता हूं कि पिछले नगर गालिक। श्रों के चुनाव में चार पांच पार्टियां श्रायों श्रोर हर एक वार्ड से ४-५ उम्मीदवार थे। हर एक के श्रलग-श्रलग सिम्बल, जैसे-बैलों को जोड़ी चिन्ह में, किसी ने एक चक्कर किसी ने कई चक्कर श्रोर कहीं घन चक्कर थे। चार पांच पार्टियों के बोच में २०-२० सिम्बल थे लेकिन कोई दिक्कत नहीं श्राई तो यहां कैसे श्रा सकतों है। एक-एक वार्ड में चार-चार उम्मीदवार एक पार्टी, खड़े किये थे। श्राप पुराने रिकार्ड स मंगा कर देखें। एक बार गुप्त मतदान का श्राप प्रयोग करके तो देखें कि नतोजा क्या होता है।

में सरकार पर श्रारोप लगाता हूं कि यह सब चतुराई पेट के लिये हैं। यह कानून में खामी हैं, उसे सुधारे। इसी बहाने से श्राप इतने दिनों से चुनाव टालते चले श्रा रहे हैं श्रौर श्राज तक श्रापने जिला बोडों के चुनाव नहीं कराये, इसलिये कि श्राज जो इतने श्रंतरिम जिला परिषद कांग्रेस पार्टी के हाथ में है वह कहीं चले न जायें। इस डर से सरकार चुनाव नहीं करातो है उन्हें यदि श्राप रखना चाहते हैं तो जल्दी करें। जितनो देर करेंगे उतना ही नतोजा श्रच्छा नहीं होगा महानगरपालिकाश्रों के चुनाव में देर की तो उसका नतोजा क्या हुशा? जहां जनसंघ की एक भो सीट पहले नहीं थी वहां श्राज उत्तर प्रदेश की राजधानी में बहुमत से जनसंघ श्राया है। यही नहीं तीन-तीन मिनिस्टर वाराणसी में श्रापके हैं फिर भी वहां १४ सदस्य हमारे हैं श्रौर १७ कांग्रेस के हैं। कोई ऐसा विशेष श्रन्तर नहीं है। जितनो श्राप देर करेंगे उतनो ही जनता भयानक रूप से श्रापको कमी में लायेगी। श्रगर वह च हते है कि बने रहें तो समय पर चुनाव करा लें।

दूसरी बात यह है कि मैं ग्रगर बड़े-बड़े सिद्धान्तों में जाऊंगा तो समय की कमी के कारण उन्हें समझा नहीं पाऊंगा, इसलिये स्थानीय समस्या पर कुछ मर्ज करूंगा। लोक न सेल्फ गवर्नमेंट १६६०-६१ के म्राय-व्ययक में म्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--म्रनुदान ५६१ संख्या ४२--लेखा शीर्षक ५७--प्रकीर्ण व्यय तथा म्रनुदान संख्या १५--लेखा शीर्षक २५--गांव सभाएं म्रौर पंचायतें

विभाग के बारे में कहा गया कि वहां खराब ग्रादमी हैं। यह भी कहा जा सकता है कि वहां ग्रव्छे ग्रादिश भी हैं, लेकिन एक बात की तरफ में माननीय मंत्री जी का ध्यान दिलाना चाहता हूं कि लोकल सेल्फ गवनंमेंट इंजीनियारिंग विभाग में एक भूतपूर्व इंजीनियर हैं जिनके प्रति जनता की हमेशा शिकायत रही है। ट्यूबवेल के मामले में उनके कारण बड़ा घपला रहा। जो जो बातें हुई उनके बारे में में ज्यादा नहीं कहना चाहता हूं क्योंकि ग्राजकलतो कांग्रेस का रवैया है कि जिसकी शिकायत होती है उसको तरक्की कर दी जाती है। इसलिये ग्रब हमें शिकायत करने से भी डर लगता है क्योंकि एक नियम बन गया है कि ग्रगर कोई टीचर हो तो शिकायत होते ही वह वाइस-चांसलर हो जाता है, चीफ इंजीनियर हो तो स्पेशल ग्राफिशर हो जाता है इसलिये हमें डर लगने लगा है। इसीलिये हमने श्रकोड़ा के सहायक पंचायत ग्रिकारी की शिकायत करने की हिम्मत नहीं की। हमने सिर्फ यही कहा कि उनको तीन साल हो गये हैं उनका स्वतः ट्रांसफर कर दिया जाय। लेकिन चूंकि वह यहां के एक गुट के हैं इसिलये वह पांच साल से ग्रल्मोड़ा में बने हैं।

इसी तरीके से मैंने सुना है कि श्राप के सिववालय के कुछ लोग इस बात की कोशिश में हैं कि श्री वर्मा साहब को, जो बड़ी मुश्किल से यहां से डेपुटेशन पर जा सके हैं श्रीर यह ग्रंडर स्टैंडिंग हुई थी कि वह फिर तशरीफ नहीं लायेंगे, में उन तमाम बातों पर प्रकाश डालना नहीं चाहता, फिर वापस बुलाया जाय। मैं मंत्री जी को याद दिलाना चाहूंगा कि ट्यूबवेल में जो गड़-बड़ी हुई, परसेंटेज वगैरा की बात में नहीं कहता, उन के लौटने से फिर भ्रष्टाचार होगा। इसलिए भगवान के लिये उन्हें वापस न लाइये।

मंत्री जी ने स्थानीय निकायों के सुपरसेशन के बारे में कहा। माननीय मंत्री जी बता सकते हैं कि कितने प्रतिशत कांग्रेसी बोर्डों को सुपरसीड किया और कितने प्रतिशत बाकी बोर्डों को सुपरसीड किया ? में बताता हूं। ग्रल्मोड़ा में विरोधी दल का बोर्ड था, इसी प्रकार ग्रनूप-शहर, गाजियाबाद, मिर्जापुर, वृन्दावन, ग्रीर कितने बोर्ड जनसंघ के थे; उनको एक के बाद एक को खत्म करने में ग्राप ने क्या कोई कसर उठाई ? लेकिन याद रिखये, जनता जहां की समझदार होती है, जैसा कि ग्रल्मोड़ा में हुग्रा वहां पहले से ज्यादा विरोधी ग्राते हैं।

ग्रत्मोड़ा जिला बोर्ड में रूई खरीदी गई—-१,३६४ रुपये टेंडर की रकम से ज्यादा दिये गये। मैं पहले सारी बातें कह चुका हूं। जीप की मरम्मत के लिये लखनऊ लाकर इस्तेमाल की गई, काठ—गुदाम में उसकी मरम्मत नहीं करवायी गयी श्रीर उसमें सैकड़ों रुपया ज्यादा खर्च हुए। बोर्ड के बंगलों में १६५७ के चुनाव काप्रचार करने वाले नेता लोग ठहरे, उनका किराया माफ कर दिया गया, बिजली का किराया तक माफ। बिना टेंडर के सामान खरीदा गया, उनमें बहुत सा रुपया गोलमाल हुग्रा, श्रीर बहुत से चार्जेंज हैं, मैंने लिख कर दिये हैं। यहां पर प्रश्न किया जाता है तो जवाब मिलता है कि जिलाधीश की तत्सम्बन्धी रिपोर्ट का सदन में बताना जनहित में नहीं है। क्या मंत्री जी गबन पर परदापोशी करना जनहित समझते हैं?

ग्रलमोड़ा में श्रागलगी। लेकिन वहां पहले भी लगी थी। उससे पहले विथोरागढ़ में श्रागलगी। उसके लिये पहले ही लिख दिया था कि फायर ब्रिगेड होना चाहिये। फिर रानीखेत जल गया। श्रब श्रल्मोड़ा भी फिर जल गया। मंत्री जी से जवाब क्या मिला कि श्रल्मोड़ा में फायरिबगेड रिग्जस्ट करता है। मेरी समझमें नहीं श्राता कि ऐसी-ऐसी गलत बातें कैसे बत नायी जाती हैं। माननीय मंत्री जी की श्राइसोलेटेड मिनिस्ट्री तो है नहीं, उनके मंत्री परिषद् की सम्मिलत जिम्मेदारो है, एक ज्वाइंट रेस्पांसिबिलिटी कैबिनेट की होती है, इस नाते में माननीय मंत्री जी को कहता हूं श्रीर इस बात को दोहराता हूं। एक हमारे यहां किस्सा कहा जाता है। पहले नेपाल का राज्य था वहां। श्रल्मोड़े में एक बार श्रागलगी श्रीर उसकी खबर भेजी गयी तो छः महीने बाद जवाब श्राया कि पानी डालकर श्राग बुझा दो। यह उस जमाने की

[श्री गोविन्दसिंह विष्ट]

बात है जब मोटर, रेल, तार या सड़के नहीं थीं, श्राज वायुयान के जमाने में दो-दो साल तक हमारे खत का जवाब नहीं श्राता, यह शर्म की बात है।

एक बात पंचायत राज्य सेकेटरीज के बारे में कहनी है। जहां तक यह कहा गया कि २५ मील के अन्दर उनका ट्रांसफर हो सकता है, उसके बारे में में यह कहता हूं कि जहां जहां पर जो आदमी प्रभावी है, में अपने जिले के नाम ले लेकर गिना सकता हूं, जो पालिटिक्स में भाग लेते हैं, कांग्रेस पार्टी को वोट दिलाते हैं, वह अपने घरों के नजदीक हैं, जो अच्छे गेट बना सकते हैं, माननीय मंत्री जी का अच्छा स्वागत कर सकते हैं, दावत का अच्छा बढ़िया इन्तजाम कर सकते हैं, वह पंचायन के सेकेटरी, क्या डिप्टी कलेक्टर, तहसीलदार वगैरा सब की तरक्की इस बात पर होती है कि कितनो बढ़िया दावत वह माननीय मंत्रिगणों की कर पाते हैं। यह बिलकुल साफ बात है, कोई छिपी हुई बात नहीं है। इन मंत्रियों को बिना शर्त घर से दूर रखना चाहिये।

श्री गणेशप्रसाद पांडेय (जिला गोरखपुर)—माननीय श्रिधिष्ठात्री महोदया, में श्राप को धन्यवाद देता हूं कि ग्रापने इस अनुदान पर मुझे बोलने का शुभ श्रयसर प्रदान किया। यह जानकर कि माननीय मंत्री महोदय ने सभापितयों का चुनाव श्रप्रत्यक्ष रूप से करने का निश्चय कर लिया है, में उन्हें भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता। लेकिन में श्राशा करता हूं कि गांव सभाग्रों के सदस्यों का चुनाव भी, जहां तक सम्भव हो सरल करने का प्रयास करें। वह भी श्रगर श्रप्रत्यक्ष कर सकें तो बड़ी कृपा होगी। इसके श्रलावा में उनसे निवेदन करूंगा कि गांव सभाग्रों को जो रुपया सरकार की तरफ से मिलता है उसके मिलने में इतनी कठिनाई होती है कि गांव समाज में कोई काम होना मुश्किल हो जाता है। उनको काम हो जाने पर भी रुपया प्राप्त करने में श्रनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उनको काम हो जाने पर भी रुपया प्राप्त करने काम करने का उत्साह नहीं रह जाता। इसलिये वह रुपया बिलकुल उनके हाथ में दे दिया जाय घौर गांव सभाग्रों में बहुमत के द्वारा वह खर्च कराया जाय, तब श्रासानी से कुछ काम हो सकता है। साथ ही यह भी मुहकमे की तरफ से हिदायत भेजी जाय कि इंस्पेक्टर लोग कम से कम महीने में एक बार या कम से कम साल में एक बार हर गांव सभा का मुयायना कर लें श्रीर क्षेत्रटरी लोग महीने में कम से कम एक बार हर गांव सभा में नाइट हाल्ट कर लें श्रीर श्रपने सामने पंचायतों की बैठक करा सकें तो गांवों की उन्नित में ज्यादा सहित्यत पैदा होगी।

बहुत-सी ऐसी गांव सभायें है जो इतनी कम श्रामदनी रखती है कि महीने में जो दो रुपये सेकेटरी को भने के रूप में देना पड़ता है, उतने भर की भी उसकी श्रामदनी नहीं होती है। इसिलये वह भना जो गांव सभाश्रों की तरफ से दिया जाता है उसको भरसक सरकार श्रपनी तरफ से दे श्रीर वह रुपया गांव सभाश्रों की उन्नित के लिए छोड़ दे तो ज्यादा श्रम्छा है; क्योंकि पहले पांच गांव सभायें एक सेकेटरी के श्रीवकार में होती थीं, श्रव दस बारह गांव सभायें एक सेकेटरी के श्रीवकार में होती थीं, श्रव दस बारह गांव सभायें एक सेकेटरी के श्रीवकार में होती हैं, उनमें ढाई सी की श्राबादी वाले गांव भी सेकेटरी के हल्के में है। उनको भी दो रुपया महीना देना पड़ता है। ऐसे छोटे गांव की सारी श्रामदनी सेकेटरी के भन्ने भर को होती है इसिलये गांव की उन्नित करने के लिये कोई पैसा रह ही नहीं जाता। उस गांव में कोई बड़ी दूकान नहीं, कोई रोजगार नहीं, कोई ज्यवसाय नहीं, फिर कौन-सा टेक्स श्रीर बढ़ाया जाय। श्राना रुपया जो कर का होता है वह तो सेकेटरी के भन्ने भर को हो जाता है। इसिलयें वह भन्ना श्रान रुपया जो कर का होता है वह तो सेकेटरी के भन्ने भर को हो जाता है। इसिलयें वह भन्ना श्रान सरकार श्रपने अपर बर्बाइत करे तो गांव की उन्नित में मदद पहुंचेगी।

इसी तरह से गांव समाज का भ्रौर गांव सभा का भेद मिटा करके एक कर लिया जाय तो ज्यादा सहलियत हो। गांव समाज में कुछ भ्रामदनी होती हैं, लेकिन गांव सभा में तो केवल कर का एक हेंड है श्रौर कोई श्रामदनी का जिरया नहीं है। साथ हो में सरकार से यह भी निवेदन करूंगा कि वकील श्रौर म ख्तार गांव सभा के मुकदमें करने के लिये पेड रखें गये हैं सरकार की तरफ से, उनसे मजबूरन गांव सभा का काम कराना पड़ता हैं। वे लोग लालच में श्राकर फरीक से मिल कर श्रपना मतलब सिद्ध करते हैं। गांव समाज से तो उनको रिश्वत नहीं मिलती है लेकिन दूसरे फरीक से मिल जाती है श्रौर उनसे मिलकर वे सरकारी सम्पत्ति की हानि करते हैं।

# १६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनुदान ५६३ संख्या ४२--लेखा शीर्षक ५७--प्रकीर्ण व्यय तथा श्रनुदान संख्या १५--लेखा शीर्षक २५--गांव सभाएं श्रौर पंचायतें

इस तरह से गांव सभा की जो सम्पति थी यानी सरकार की वह घीरे घीरे जनता के अन्य लोगों के हाथ मेंचली जा रही है। वह सुरक्षित नहीं रह पा रही है। इसलिये वकील ख्रीर मुख्तयार को नियत करना सरकार छोड़ दे। यह गांव सभा के सभापति के ऊपर छोड़ दे कि जिस को चाहें और उचित समझें वकील मुख्तयार नियुक्त करे और यह भी कि मेहनताने की रकम सरकार निविचत कर दे जिससे सभापति उस निश्चित रकम के अन्दर उनको मेहताना देकर वहां का काम कराये। इससे कम से कम यह होगा कि जो बेहमानी वह फरीक से मिलकर करते हैं, वह मिट जायगी। साथ ही लेखपाल गांव समाज का सेकेटरी होता है और एक सेकेटरी गांव सभा का होता है। मैं यह समझता हूं कि गांव समाज को और गांव सभा को मिला कर एक कर दिया जाय और इन दोनों के अधिकार अलग ग्रलग न रखकर ज्वायन्ट जिम्मेदारी दे दी जाय। एक को मंत्री, दूसरे को सहायक मंत्री बना दिया जाय, इससे वे एक दूसरे के सहायक होकर गांव की उन्नति का कार्य अधिक सुचार रूप से कर सकेंगे, इस तरह से गांव सभा की विद्रोष उन्नति होगी।

गांव सभा में बहुत से टैक्स पहले के बाकी हैं। गांव वालों को पता नहीं है कि हमारे अपर इतना पहले का टैक्स बाकी है। इसलिये बजट जब पास करना होता है तो पहले गांव सभा को सुना दिया जाय और गांव के सदस्यों के दस्तखत करा लिये जायं कि इतना टैक्स गांव सभा को वे देंगे, तब जाकर बजट पास करें; नहीं तो केवल सेकेटरी और सभापित को पता होने के कारण उन बेचारे गरीब लोगों को हानि पहुंच जाती है। इसलिये पहले से उनकी मंजूरी ले ली जाय कि कितना उन लोगों को देना है। सभापित और सेकेटरी मनमाने तरीके पर टैक्स लगा देते हैं, उस प्रथा को सरकार को समाप्त करना चाहिये। अभी तक जो टैक्स बाकी पड़ा हुआ है, वह वहां की प्रजा के लिये बहुत बड़ा बोझ है। उसको माफ करने का अधिकार गांव सभा को दिया जाय या फिर उस सब को छोड़ दिया जाय। अब उनकी मंजूरी से टैक्स लगे तो ज्यादा अध्छा है। ताकि उन हो मालूम हो कि इतना ही उनको देना पड़ेगा।

इसके म्रालावा गांव सभा के कितने ही लोग चाहते हैं कि हमारे गांव के चारों तरफ सड़क निकाली जाय ग्रीर खासकर यह चाहते हैं कि मेन सड़क से वे गांव मिला दिये जायं, लेकिन रास्तों में कुछ खेत पड़ते हैं जिससे ग्रड़चन पड़ा करती हैं। इस किठनाई को दूर करने के लिये ऊपर के ग्रिंघकारी कम से कम तहसीलदार ग्रीर कलेक्टर साहब उसमें दिलचस्पी लें कि उन रास्तों से सड़क बना दी जाय ग्रीर बाद में मुग्रावजा जो कुछ तय हो जाय वह मुग्रावजा गांव सभा के फंड से उनको दिया जाय। कई वर्षों से गांव सभा को यह ग्रिंघकार प्राप्त है लेकिन ग्राज तक कोई सड़क इवर उघर के लिये नहीं निकल सकी है। गांवों में ग्राने जाने के लिये किठनाई ज्यों की त्यों मौजूद है।

पोखरे श्रोर ताल जो गांव में है, ग्राज भी उनके श्रन्दर पानी भौज्द है, लेकिन लोगों ने ग्रपने कब्जे लिखा लिये है श्रौर वह गलत तरीके से उनका इस्तेमाल करते हैं। सन् १६४६ के बाद ने पोखरों ग्रौर तालावों पर लोगों ने ग्रपने कब्जे लिखा लिये है उनको फिर से वापस लेगे के श्रादेश जारी किये जायं श्रौर उन पोखरों ग्रौर तालावों को गहरा करने के लिये सरकार जो श्रमुदान दे सके वह उसको देना चाहिये। हर ६ एफड़ ५र एक कुएं की योजना बनाकर कुंएं तैयार किये जायं जिससे सिंचाई के काम मे श्रधिक सुविधा पहुंच सके। द्यूबनेन ग्रौर नहरों से गांव की सारी श्रावश्यकता पूरी नहीं हो रही हं, लेकिन छोटे छोटे कुंएं तात्कालिक श्रावश्यकता को पूरा करने मे श्रवश्य सहायक हो सकते है। इन शब्दों के साथ में इस श्रमुदान का समर्थन करता हूं।

श्री भूपिकशोर--श्रीसन्, चेयरमैन साहिबा, श्रापने मुझे जो इस अनुदान पर बोलने का मौका दिया है, उसके लिये में श्रापका बहुत-बहुत शुक्रगुजार हूं। मैं गांवका रहने वाला हूं और [बा भूपिकशोर]

वहां के बावत मुझे कुछ श्रिषक जानकारी है इसिलये में बतलाना चाहता हू कि गाव पंचायतों का चुताव किस तरह से कराया जाना चाहिये।

सरकार ने जो प्रवान चुनने का तरीका बनाया है बैलट बक्स के द्वारा, उसके लिये सरकार काबिले तारीक है। इस से गाव के बहुत से लड़ाई झगड़े, करल श्रादि खत्म हो जायेगे, श्रौर मुकदमेबाजी भी कम हो जायगी। इस बजट सेशन में सब से श्रच्छा सरकार का यह काम हुआ है श्रौर इस के लिये वह तारीक के काबिल है श्रौर इसकी बगेर तारीक किये में नहीं रह सकता।

गाव सभा के चुनने का ढंग बालिगमता िक कार पर है। सब बालिग स्त्री-पुरुष, गाव वाले उस के सदस्य है। गांव पचायत के सदस्य कहीं २० होते हैं, कहीं १४। इनकी चुनने में हमें इम बात का ध्यान रखना चाहिये कि गाव के हर श्रत्पसंख्यक का प्रतिनिधित्व इनमें हो सके। श्रगर एक श्रादमी को एक सदस्य के लिये ही बोट देने का श्रिषकार हो तो यह बात हो सकती है। इस तरह से जिन जातियों की तादाद कम है उनके प्रतिनिधि भी उनमें पहुंच जायंगे। में श्रवसर देखता हूं कि जो कमजोर है, श्रद्धन है उनको लोग बोट नहीं करते। नाई है, वैकवर्ड है, घीमर है उन के प्रतिनिधि सिंगिल ट्रांसफरेबिल बोट से नहीं श्रा पाते हैं श्रोर इमलिये उन को बहुत सी सुविवायें प्राप्त नहीं हो पातों। इसलिये मेरा सरकार से निवेदन हैं कि पंच चुनने के लिये यह तरी का होना चाहिये कि जिसमें एक श्रादमी एक ही उम्मीववार को बोट दे सके। इस तरह से हर वर्ग का पंचायतों में प्रतिनिधित्व हो जायगा और गांव पंचायत की सहुलियतें उनको मिल सकेंगी।

श्रव सवाल श्राता है श्रदालती पंचायत के पंचों को चनने का। इसमे पक्षपात श्रीर लड़ाई श्रादि कम करने का तरीका यह है कि श्रगर न्याय पंचायत के क्षेत्र में १० ग्राम पंचायत है तो उनमें यह तय कर देना चाहिये कि ग्राम प्रवान का बोट जब पड़ेगा तो उस के साथ साथ हो सर्पंच का बोट भी पड़ता जाय। इसमें सरकार का कम खर्च होगा श्रीर सरपच न्याय की दृष्टि से न्याय करेगा। दूसरी चोज, जो बॅचें बनती है, वह श्रत्कावटिकली होनी चाहिये। सरकार द्वारा नियत श्रविकारी, चाहे हो० पी० श्रो० हो, या कलेक्टर हो पहिले हो बंचो को बना दे, सरपंच को उन्हें बनाने का श्रविकार नहीं होना चाहिये।

(इस समय ४ बजकर ४ मिनट पर श्री उपाध्यक्ष पुनः पीठासीन हुए।)

दूसरी चोज, श्रदालती पंचायतों के जो पंच एम० एल० एथों के द्वारा चुने जाते हैं, उस तरी के की नहीं श्रवनाया जाना चाहिये; क्योंकि श्रगर कोई एम० एल० ए० कांग्रेस का है तो कलेक्टर साहब उसे कह देते हैं कि श्रवने क्षेत्र से श्राप एक पंच चुन वीजिये श्रीर श्रगर पी० एस० पी० का एम० एल० ए० है तो वह श्रवने क्षेत्र से श्रवनी पार्टी का पंच चुनता है श्रीर श्रगर जन संघ का एम० एल० ए० है तो श्रवनी पार्टी का पंच चुनता है। इस तरह से पार्टियों के श्राधार पर चुने हुए पंच न्याय नहीं वे सकते। होना यह चाहिये कि पंचों के साथ-साथ श्रदालती पचों के लिये भो वोट ले लिया जाय श्रीर इस तरह से चुने हुए पंच पार्टीबाजी में नहीं पड़ेंगे श्रीर सही न्याय करेंगे।

एक बात में जो गांव पंचायतों को अनुवान विये जाते हैं उनके बारे में कहना चाहता हूं। अभी डिप्टी मिनिस्टर साहब ने यह फरमाया था कि जो पंचायतें गांव में कम काम करें उनको अनुवान नहीं मिलना चाहिये, में इसे किसी हद तक भी ठीक नहीं समझता हूं। उनको भी अनुवान मिलना चाहिये। यह दूसरी बात ठीक नहीं है कि आप उनको कम अनुवान वें। जो ज्यावा अच्छा काम करें उन्हें आप कुछ इनाम आबि के तौर पर कुछ ज्यावा वे वें। आप कुछ रेडियो वगैरा उनके लिये इनाम में रख सकते हैं, लेकिन अनुवान हर एक को बराबर मिलना चाहिये। इससे वे ज्यावा अच्छी तरह काम कर सकेंगी। उनके अनुवान में किसी प्रकार की कमी नहीं होनी चाहिये।

### १६६०-६१ के ग्राय-ध्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदान ४९४ संख्या ४२--लेखा शीर्षक ५७--प्रकीर्ण व्यय तथा ग्रनुदान संख्या १५--लेखा शीर्षक २५--गांव सभाएं ग्रीर पंचायतें

दूसरी चीज यह है कि गांव सभाग्रों की गांव की तरक्की करने के पूरे-पूरे ग्रधिकार होने चाहिये। गांव सभाग्रों की सिचाई की व्यवस्था को ग्रधिकार दिये जायं, खेती के इन्दराज वगैरह करने के ग्रधिकार दिये जायं। जब उनको इन्दराज करने के ग्रधिकार मिल जायेंगे तो इससे मुकदमेबाजी कम होगी ग्रीर सही इन्दराज होगा।

शिक्षा के सम्बन्ध में, प्राइनरी स्कूलों की पूरी जिम्मेदारी गांव सभाग्नों को दी जानी चाहिये श्रीर यह कार्य उनके ऊर ही थोपना चाहिये, वे जिस तरह से चाहें उसका इन्तजाम करें भीर उसके लिये ग्रावश्यकतानुसार इनारतें ग्रादि भी बनवायें। इस तरह से सरकार के ऊर से बोझ कम होगा, ग्रापको कोई दिक्कत भी नहीं होगी ग्रीर शिक्षा का कार्य भी श्रम्छी सरह चल सकेगा।

दूसरो बात एक यह कहना चाहता हूं कि यह जो पंचायतों के ऊपर श्राप डिस्ट्रिक्ट कौन्सिलों को घोपने जा रहे हैं, में इसके पक्ष में नहीं हूं। डिस्ट्रिक्ट कौन्सिल को श्राप उनके ऊपर न थोपिये। जो श्रविकार श्राप इन्हें देने जा रहे हैं वे सब श्राप गांव सभाश्रों को ही दीजिये। यह जरूरी नहीं हैं कि डिस्ट्रिक्ट कौन्सिल गांव सभाश्रों के कार्यों में किसी प्रकार से डिस्टबं करें। डिस्ट्रिक्ट कौंसिलों द्वारा डिस्टबं करने से यह होगा कि डिस्ट्रिक्ट कौंसिलों के सदस्यों के क्षेत्र में, या उनके मित्र के क्षेत्र में या श्रन्य किसी सम्बन्धी के क्षेत्र में तो स्कूल बन जायेंगे या श्रीर काम हो जावेंगे, दूसरी जगह कार्य नहीं होगा। कई तरह की वाहिंगत बातें होती हैं, इनको रोकने के लिये में श्रापसे निवेदन करता हूं कि श्राप इनको कदािंप न थोपिये।

यह जो भ्रापके विकास खंड है इनमें एक प्रधान होता है भ्रीर एक उप-प्रधान होता है। इसके भ्रलावा एक भ्रीर वहां पर ग्राम सभाभ्रों का प्रतिनिधि होना चाहिये जो वहां का सब काम समझ सके। वह चुन कर जाना चाहिये श्रीर योग्य व्यक्ति होना चाहिये, उसकी योग्यता कम से कम मिडिल क्लास तक होनी चाहिये, उससे कम का भ्रादमी विकास खंडों में प्रतिनिधि नहीं होना चाहिये। भ्रगर बगैर पढ़े लिखे भ्रादमी जायेंगे तो वे यह नहीं जान पायेंगे कि किस तरह से काम होना चाहिये।

श्री उपाध्यक्ष--समय समाप्त हो गया। (श्री मुक्तिनाय राय से) श्रापको केवन १ मिनट मिलेंगे।

श्री मुक्तिनाथराय (जिला श्राजमगढ़)—उपाध्यक्ष महोदय, चूंकि मेरे लिये समय कम है इसिलये में बहुत संक्षेप में केवल पंचायत से केटरियों के बारे में ही कुछ कहना चाहूंगा। उनके ऊपर पंचायतों के प्रशासन की जिम्मेदारी होती है। पंचायत का से केटरी सबसे ज्यादा जिम्मेदार कर्मचारी है, जो पंचायत के काम को ठीक तरह से चलाता है। कुछ माननीय सदस्यों ने कहा है कि पंचायत से केटरियों का तबादला २५ मील के श्रन्दर नहीं होना चाहिये। मेरी व्यक्तिगत राय ऐसी नहीं है। मे यह चाहता हूं कि सरकार ने जो पंचायत राज नियमावली बनायी है, उसमें पंचायत के मंत्रियों के कैटेक्टर रोल के सम्बन्ध में, घारा १६१ (२), उस सम्बन्ध में उसमें एन्ट्री गांव सभा के प्रथान एवं सरपंच से भी राय लेकर की जाया करे। किन्तु घारा १७४ के श्रनुसार उनको एक महीने का नोटिस देकर निकाल दिया जाता है, नियमावली का पालन नहीं होता; प्रथानों, सरपंचों को कोई पूछता भी नहीं है।

मै ग्रापके द्वारा सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि जितने पंचायत से केटरी दफा १७४ का नीटिस देकर निकाले गये है, ग्राप देख लें कि एक भी, किसी भी प्रदेश के जिले में इस नियमा-वली की घारा १६१ (२) का पालन नहीं किया गया है। एक प्रश्न के उत्तर में कि कितने पंचायत से केटरी प्रधानों ग्रीर सरपंचों की बिना राय लेकर निकाले गये हैं, कहा गया कि ३० पंचायतों के से केटरी दो वर्षों में गोरखपुर-बनारस डिवीजन में निकाले गये जिनमें से २३ की डियाविध ५ से ६ साल तक से भी ज्यादा थी। तो यह १७४ घारा अष्टाचार को प्रोत्साहन

### श्री मुक्तिनाथराय]

बेती हैं। जो श्रिधिकारियों को खुत रखेगा बही रहेगा ऋिन है के जाम करते उ, लेकिन श्रिष्क कारी को कृपा वृष्टि उन पर नहीं होती ह तो वे निकास दिने जा है। धरा १६१ (२) म लिखा हु प्रा है कि पायतों के से केटरी का कैरेन्टर रोग उना । कपना का राथ से जिला जायगा, लेकिन इसका कहीं भी पासन नहीं है ता है, इनके कराइर दें। जो १०४ के अनुसार एक माह की नोटिस पर निकालें गों उन के बारे में कहीं भा प्रताना का नाथ नहीं जो गई। इस धारा को समाप्त करना चाहिये।

दूसरी चीज, मैं मंत्री जी से यह कहणा कि श्राप गानी ना के एक प्रत्याय। है, प्रजातत्र में श्रापका विश्वाम है तो विधान सभा के सबस्यों की, राना को प्रवाहय हिर्दान्त-वाइज श्रीण उनसे पूछिये कि लोग फिस राय के ह कि श्रगण से के री रूप मान हुए हो ता बाम अच्छा करेगा या २४ मीता से कम दूरी पर ह तब अच्छा का होगा। या प्रप्रते प्रचायत सम्मेलन में श्राजमगढ़ में हर एक प्रचाया सम्मेलन में हर एक प्रिकास खार में, हुनारे श्राली जान परिषद ने भी दो बार प्रस्ताय पास किया है कि जो २४ मीत प्राचा सर तथा प्रावेश ह वह नागन किया जाय। पता नहीं सरकार ने क्या किया। डे मोंकियों नीचे से ना ती शहिर, अगर से नही। आफिश्यल्डम पंचायती पर हावी न हो, इस बात का प्राचान रखना प्राप्त कर राव है। एक व्यक्ति श्रीर विशास खड़ों की, श्रन्तिय जिला परिषद को सरनाओं को दे य हर राव है। एक व्यक्ति की राय पर २४ मील वाला निप्रम पाग कर देना उन्तित नहीं है। हमारा नाक पर गदि मच्छार बंठे श्रीर हमे उसे हटाना ह तो इ को माने यह नहीं ह कि हम ऐसा राय रे जिलमें हमारी नाक ही कट जाय। इ निलए जो कि में के देशी लगाव इ २४ मीत इर भेजा व्या, श्राण उसे बरखास्त कर वीजिये, लेकिन इस प्रकार से एक श्राम श्रावेश वे दिये जाय इ का जसर ह। तो इस श्रावेश की वापस लेना खाहिए।

श्रव में कुछ म्युनिसिपन बोर्ड के ऊचे कामंचारियों के चनाय क बारे म जिल्र करना चाहता हैं। म्युनिसिपल बोर्ड में कुछ जगहें होता ह, जो १३० वपया या उसमें ऊरर के पाने बाले कर्मचारी होते हैं उनका चुनाय वहां का म्युनिसिपल बोर्ड फिल्सा है, इसम अव्याचार श्रीर जातिवाद तथा बिरादरीवाद बढ़ता है। मेरा सरकार से अनराथ है कि एक स्थापल शासन सर्विस कमीशन को नियुक्ति सरकार परे। इसमें १२० रूपमा या इत्तरें ज्यादा पाने वालें जितने कर्मचारी हैं उनका चुनाय उन सम्बन्धित सरयाश्रो द्वारा न हो बिल्क स्वायत्त शासन सिवस कमीशन उनका चुनाय करें। माथ ही यह भी व्यवस्था होना चाहिए कि अपर वह म्युनिसिपल बोर्ड या डिस्ट्रियट बोर्ड चाहे तो ऐसे कर्मचारी जो १२० रूपया या उत्तरें ज्यादा पाते हैं उनका स्थानान्तरण श्रन्य जिलों में भी किया जाय।

इन शब्दों के साथ, में कहूगा कि जो श्रत्य-वेदन भागी पचागा सकेटरा ह उनके अपर विशेष कृपा करें श्रीर वहां की जनता की क्या राय है उसकी जान कर तब रायं ग्रहा वरें। उनका पव स्थायी हो, निश्चित हो, वेतन बढ़ाया जाय।

श्री उपाध्यक्ष —श्री कल्पाणचन्द मोहिले, ग्रायकः श्री गौरीशकर राग के १० मिनट के समय में से ५ मिनट दिये जाते हैं श्रीर बाकी का ५ मिनट का समय उनका रहेगा।

श्री कल्याणचन्द मोहिले (जिला इलाहाबाद)—उपाध्यक्ष महोदय, जहां तक इस अनुवान का सम्बन्ध ह, में क्या कहू ? सरकार जब से श्रायो, वह चाहे नगरपालिका हो, चाहें पंचायत श्रीर जिसके मत्री महोदय हमारे माननीय विचित्रनारायण शर्मा हो उसमें तरकार जनता की ताकतों को, जो ताकत पंचायतों, नगरपालिका श्रीर जिला परिचयों में थी, अपने हाथ में लेती चली जा रही है। अभी महापालिका के खुनाब हुये, म इलाहाबाव में नगरपालिका का १६ वर्ष सवस्य रहा, में कह सकता हूं कि जो ताकत नगरपालिका को यी श्रीर जो कि महापालिका

१६६०-६१ के म्राय-व्ययक में म्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदान ५६७ संख्या ४२--लेखा शीर्षक ५७--प्रकीर्ण व्यय तथा म्रनुदान संख्या १५--लेखा शीर्षक २५--गांब सभाएं ग्रौर पंचायतें

को दी गई है वह नहीं के बराबर है। वहां परपूरी ताकत मुख्य ग्रधिकारी को दे दी गई है। मुख्य ग्रधिकारी वहीं है जो कि पहले एडिमिनिस्ट्रेटर थे जिनके कार्यकाल में करोड़ों रुपये का कर्जा नगरपालिकाओं पर हुआ। श्राज उन संस्थाओं की जो दुईशा है उसे खाप स्वयं ग्रीर माननीय मंत्री जो भी जानते होंगे।

मैं कहना चाहता हूं कि जिस प्रकार से सरकार ने भ्रथने हाथ में ताकत ली है श्रगर यही दशा रही तो इससे प्रदेश की जनता का कुछ भला नहीं होगा। निसाल के तौर पर मैं भ्रापके द्वारा कहना चाहता हूं कि पी० डब्नू० डी० और एल० एस० जी० ई० डी० के द्वारा नगरपालिकाओं में जो कार्य कराया जाता है, उसमें जो लोन दिया जाता है उसका १० परसेट सरकार ही ले लेती है। मेरे यहां इनाहाबाद में एल० एस० जी० ई० डी० के द्वारा २६ लाख रुवये से सीवर बना लेकिन वह चोवड है, काम नहीं वर रहा है किसी प्रकार से जहां तक बुंगी का सम्बन्ध है, लाखों पया लोगों पर पड़ा हुआ है, चूनखोरी बढ़ी हुई है, खुले आम रिश्वत ली जाती है, उसकी कोई चोंकग नहीं होती है क्योंकि वहां के जो चुने हुये लोग है उनको अधिकारों से वंचित रखा गया है।

इसी तरह से भिसाल के तौर पर कहना चाहता हूं कि श्री मोहनलाल गौतम हमारे यहां इलाहाबाद के सदस्य थे; उन्होंने १० रुपये की चोरी पकड़ने की कोशिश की। उसका नतीजा यह हुग्रा कि ग्राज तक उनके ऊपर मुकदमा कायम रहा ग्रीर ग्रभी थोड़े दिन हुवे मुकदमा खत्म हुग्रा। इसिनिये में चाहूंगा कि सरकार इस बात पर गोर करे ग्रीर देखे कि जो ग्रधिकार नगरपालिकाग्रों को दिये गये है वे नहीं के बराबर है। इसिलिये महापालिकाग्रों की ताकत को बढ़ाना चाहिये। ग्रगर ऐसा न हुग्रा तो मेरे यहां इलाहाबाद में काम नहीं चलेगा।

दूसरी बात यह है कि एडमिनिस्ट्रेटर रूल में करोड़ों रुपये का कर्जा नगरपालिकाओं पर हो गया। श्रगर सरकार वास्तव में चाहती है कि महापालिकाओं में सही तौर पर कुद्ध काम हो तो यह करोड़ों पये का कर्जा माफ करे, उनको कर्जों से बिलकुल मुक्त कर दे श्रीर वहां के लोगों की ताकत बढ़ा कर उनको काम करने की सुविधा दे। इन शब्दों के साथ, में कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

\*श्री गौरीशंकर राय—उपाध्यक्ष महोदय, मै चन्द बाते ही कहना चाहूंगा। कोई विशेष जवाब देने की तो बात है नहीं क्योंकि ग्राधिकतर मित्रों ने उन सारी बातों को दोहराया भी है। मै पुनः एक बार ग्रौर ग्रापके जरिये माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं ग्रौर मुझे ग्राशा है कि पंचायत मंत्रियों के स्थायीकरण ग्रौर उनकी सुविधाग्रों की बात माननीय मंत्री जी के दिमाग मे रहेगी। ग्रगर वह चाहते हैं कि वे ठीक से काम कर सके, तो इतने दिन काम करने के बाद उनकी सर्विस मे स्थायित्व होना चाहिये।

दूसरी बात यह है कि लोकल बोर्ड ्स के टीचर्स के ट्रांसफर्स के लिये सख्त क्रायदे होने चाहियें। ऐसा न हो कि साल के बीच में जब चाहा तब तबादला कर दिया या पार्टीबाजी के कारण कर दिया।

सरकार को चाहिये कि वह एक लोकल सेल्फ बोर्ड बनावे जो एक स्वतंत्र बाडी हो श्रोर सरकार का नियंत्रण उस पर न हो। वह इस बात का फैसला करे कि कौन म्युनिसिपैलिटी या टाउन एरिया इत्यादि सुपरसीड किये जावें या नहीं। श्रगर उसमें सरकार किसी जुडीशरी के श्रादमी को रखे तो सरकार की श्रोर ऊंबाई होगी श्रीर वह बोर्ड श्रच्छा होगा।

जैसा माननीय मुक्तिनाथ राय जी ने कहा है, लोकल सेल्फ़ गवर्नमेट सर्वेन्ट्स के लिये एक कमीशन होना चाहिये और ऊंची नौकरियों के लिये योग्यता का मापदण्ड होना चाहिये।

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

### [जो गौरीशंकर राय]

जिला ग्रन्तरिम परिषदों के एग्जीक्यूटिव श्रफसरों का एक जगह से दूसरी जगह ट्रांसफर होना चाहिये वरना वे परिषद् के लिये श्रौर कभी-कभी स्वय के लिये सिर दर्द बन जाते हैं।

गांव सभाग्रों के सभापतियों की शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध होना चाहिये वरना वे श्रपने श्रवि-कारों को ठीक से नहीं समझेगे श्रौर उनका प्रयोग गलत करेगे तथा श्राफीशल्डम के प्रभाव से पंचायतों को नहीं बचा सकेगे।

मैं यह नहीं कहता कि विलेज डिफेस सोसाइटीज पुलिस की पैरेलल हो, मगर उनको भयने यूनिट में शान्ति-व्यवस्था की जिम्मेदारी तथा ह्थियार वगैरह देने के श्रधिकार होने चाहिये।

गांव सभा के लिये जो खड़ा होता है वह एक टिकट खरीदता है श्रीर चाहे वह जीते या हारे, उसका वह पैसा वापस नहीं मिलता है। लोक सभा या विधान सभा क चुनावों मे जमानतें जब्त नहीं होती है तो पया लौट जाता है। चाहे गांव सभाश्रो की रकम छोटी ही है, मगर उसके रखने का कोई श्रौचित्य नहीं है।

पिछड़े इलाकों में या पहाड़ी इलाकों मे पानी पीने की समस्या हल करने के लिये कुछ परसेंटेज लोगों को देना पड़ता हैं। में समझता हू कि इसे २५ से घटा वर १० या कुछ ऐसा करना चाहिये ताकि रुपया लेप्स भी न हो।

शांसी नगरपालिका के विषद्ध शिकायतों की वसियो किताबे श्रीर पर्चे हर साल बटते हैं मगर नहीं मालूम क्यों मंत्री जी उनकी जाच कराके हमको नहीं बताते कि क्या नतीजा हुआ।

श्रन्त में में विश्वास करूंगा कि यद्यपि भ्रष्टाचारी श्रिषकारियों के प्रति सरकार का प्रेम भ्राज कल बढ़ रहा है तो भी इस मुहक्षमें के मंत्री जी वर्मा साहब को, जिनके बारे में बहुत बात हो चुकी है, फिर उनको न बुलावेंगे क्योंकि जिसका हम विरोध करते हैं सरकार उसे बहर प्रेम करती है।

' श्री उपाष्ट्रयक्ष---श्राप नाम लेकर किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में न कहे जिसे यहां उत्तर देने का श्रविकार नहीं हो।

श्री गौरीदांकर राय—उस बारे में काफी चर्चा हो चुकी है। उसके निये वे गालिया भी सुन चुके हैं लेकिन फिर से सुनने की व्यवस्था न करें। इन शब्दों के साथ में उम्मीद करता हूं कि मेरा जो कटौती का प्रस्ताव हैं, उसको स्वीकार किया जायगा।

श्री विचित्रनारायण शर्मा—श्रीमन, माननीय वक्ताश्रों ने जो सुन्वर-मुन्वर, कड़वे, मीठे ग्रीर चरपरे सुझाव विये, उनके लिये में उनको बन्यवाव वेता हूं। माननीय गोविन्द सिंह जी ग्रीर गौरीशंकर राय जी दोनों ने यह पूछा कि जो बोर्ड सुपरसीड किये गये थे उनमें कांग्रेस के कितने थे। मैंने कहा था कि सैकड़ों की ताबाद में केवल ४ बोर्ड सपरसीड किये गये हैं। एक-ग्राथ, भूला भटका ग्रीर होगा। उन्होंने सुझाव विया कि इसके लिये बोर्ड बनाया जाय, सिर्फ यह निर्णय करने के लिये कि किसको स्परसीड करे ग्रीर किसको न करे। यह दिल कुल बेकाए सी चीज होगी क्योंकि उसके पास कोई काम ही न होगा ग्रीर वह बेठा मक्खी मारेगा। जो कुछ मेरी यादवादत है उससे में बताता हूं कि उन बोर्डों में में दो ऐसे हैं जो नान-काग्रेस के कहे जा सफते हैं ग्रीर तीन ऐसे हैं जो प्रीडामिनेंटसी कांग्रेस के कहे जा सकते हैं। मझे मालम है कि उनके लिये कांग्रेस वालों ने मुझ पर कितना प्रेक्षर डाला कि ख्वा के लिये, कांग्रेस के लिये, इनको जब्त न करो। फिर भी मैने कर विया। ऐसी मेरी श्रक्स है, में क्या कर्क?

श्री मोतीलाल श्रवस्थी—में श्रापके द्वारा यह कहना चाहता हूं कि नगरपालिकाओं का जो श्रनुवान है वह तो श्राज नहीं हैं। मंत्री जी उसके बारे में जवाब वे रहे हैं, यह विषया-न्तर हैं। श्री उपाष्यक्ष—बहस के दौरान में यह प्रश्न उठ गया ग्रौर वह बात बहस में श्राती रही। तब तो ग्रापने कुछ कहा नहीं। ग्रब उस बात का जवाब देने के लिये माननीय मंत्री जी को मना कर दिया जाय, यह उचित नहीं मालूम होता।

श्री विचित्रनारायण शर्मा—सच बात को जानने में कुछ बुरा मालूम होता है । मालूम होता है कि वह गलतफहमी को बनाये रखना चाहते हैं और उसके लिये सरकार को गालियां देते रहना चाहते हैं । श्रगर सच बात को सुनने की दिल में हिम्मत हो तो उसकी सुनना चाहिये। जन संघ के बोर्ड का सवाल श्राया। खुदा के फजल से वे हे भी बहुत कम। मरे को क्या मारा जाय? फिर भो एक दो का नवाल श्राया। श्रत्मोड़ा के लिये कहा गया। में समझता हं कि श्रत्मोड़े का बोर्ड सुपरसीड करने के लायक हो था, श्रगर उसकी सुपरसीड नहीं किया गया तो सिर्फ इसलिये नहीं किया क्योंकि वह जनसंघ का बोर्ड था, उसके साथ मेहरबानी की श्रीर रियायत की श्रीर किसी प्रकार उसकी जिन्दा रखा।

बृत्वावन के बारे में कहा गया है। उसकी फाइल मेने देखी। जनमंघ के नेता माननीय विष्ट जी और दुबे जी ने उसका जिक किया था। मेने दुबे जी को बुला कर सारा मामला बताया। उनकी कितनी बार चेतावनी दो गई लेकिन उसके बाद भी बोर्ड के रुपये से उन्होंने प्राइवेट घरों में बिजली लगवाई। ऐसे और भी काम किये। उसकी देखकर वे को कर चले आये और उसके बाद फिर कभी शिकायत भी नहीं की कि उस बोर्ड के साथ हमने कोई अन्याय किया।

एक बात यह कही गई कि सरकार ने कह दिया कि ग्रन्मोड़े में फायर ब्रिगेड रखी गई । बब हमने ग्रन्मोड़ा म्युनिसियेलिटो को लिखा है तो उन्होंने हमें लिखा कि हमारे पास इन्तजाम है । हां, यह समभा जा सकता है कि डिपार्टमेंट को यह मालूम करना चाहिये था कि फायर ब्रिगेड है या कोई ग्रीर इन्तजाम है । यह समझ लेना कि वहां फायर ब्रिगेड है, जरूर गलत हुआ। लेकिन इसके लिये यह नहीं कहा जा सकता कि जानबूभकर मिसइन्टरग्रेट करना चाहते है, यह बात नहीं कही जा सकती।

जिला बोर्ड की बाबत कहा गया । मुझे श्रफसोस है कि जो श्रपीयरेसेंज है वे हमारे खिलाफ हैं, चाहे वे किन्हीं वजह से हों लेकिन श्रपोयरेंसेंज हमारे खिलाफ है श्रीर उसी वजह से हम बाहते हैं श्रीर विरोधी दल को यह सुझाव देना चाहते हैं कि हमारे ऊपर यह इल्जाम न लगाया जाय कि हम इसको परिवचुएट करना चाहते हैं, बिल्क हम तो यह चाहते हैं कि जो प्रेजेंट श्रन्तरिम जिला परिवदें है उनको स्क्रैंप कर दिया जाय श्रोर इनको जगह फें।रन वसरा चुनाव कराया जाय। एक ऐसी शंडरस्टेंडिंग हमारी है कि हम सोचें कि किसी तरह से चुनाव करावें, चाहे ब्लाक लेविल से ही करा लें ताकि यह श्रगड़। जो है वह खत्म हो जाय।

विष्ट जो ने कहा कि यह याद रखें कि जन संघ श्रायेगा, दूसरे श्रायेंगे, तो जो हम यह बेवक्फी करने जा रहे हैं इससे तो उनको खुश ही होना चाहिये क्योंकि इसमे उनका तो फायदा ही है। नुकसान हमारा है तो उनकी छाती में दर्द क्यों हो रहा है, यह समझ में नही श्राता।

• न्याय पंचायतों के वास्ते कहा गया । यह सही है कि जिस तरीके से पिछला चुनाव हुआ बह गलत थ। । उनको भी कटु अनुभव हुआ जिनकी सिफारिश से वह किया गया। उन्होंने अगर १० की सिफारिश की तो ४० का सिफारिश नहीं की और ४० उनसे नाराज हो गये। को लोग उधर बंठे हुये हैं उनको इस बात के लिये शुक्रिया श्रदा करनी चाहिये कि न्याय पंचायतों के चुनाव कराने का बात करके बहुत से आदिमयों की हमने अपना वुश्मन बना लिया जिससे वे यहां आ सके। इस सम्बन्ध में राय अलग-प्रलग हो सकती है लेकिन वह तरीका गलत था। अब रहा यह कि एक बड़ी भारी इन्क्वायरी करायी जाय लेकिन इन्क्वायरी कराने के लिये हमारे पास कोई साधन है नहीं सिवा इसके कि लेखनालों से पूछे, प्रधानों से पूछे और फिर लोग्नर स्टेज कर जाकर हमेशा अच्छी इन्क्वायरी होगी, यह नहीं कहा जा सकता है। इसलिये हम ऐसा सोच

[क्षा विवित्रनारायण न्तर्मा] रहह किन्पाय प्रवापती किन्ये भी बताब इनडाइर क्ट करा द वर्षक्ष ये सारी चीने कम से क्ष्म हो जाय । जित्र प्रकार ते उत्त-प्रवात बतार का चुनाब यो गाय उत्ती तर, ते, वितनी प्रवापतें हैं, उनके प्रतो की मार्फत किच्या करा त जाक ।

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी-इक्हो स्वार उर द।

जी पच नाग होगे, उन्हा ह द्वार नगाय पाता रा पाताहरे प्रमुता नहीं जा गा। हम ऐसा सीच रहे हैं, जपा कि मने अर्ज किया यह बहुत डि हे क्टिब भी ह। एक बात यह भी कही गयो कि जो डीटे-ब्रोटे नुनाव ह उनकी पहले परा ले। उन चुनाव की वी ही। बात ही सकती है कि अगर विरोधी दता के पेता चाहते ह तो जिसने चुनाय है ब नाक लेकिन पर उनकी करा लिया जाय और उनकी मार्फ र यह चुनाव हो सकता है। यह भी हो गकता है कि जो प्रेजेंट बाक्स है उन्हीं में चुनाव करा लिया जाय। लेकिन इनना में साफ तौर पर कह देना चाहता हू कि बिना किसो कानून के हम यह इलेक्शन नहीं करा सकते ह, इस चुनाय के पांजे हमारा यह पवित्र मोटिन ह, इसकों भी श्राप समझ से।

आलगुजारी पचायतों के जिरये बसून करने की बान भी कही गयो लेकिन मंने एक कब भी ऐसा नहीं कहा कि हमने किसी तरह से ऐना प्रयन्न नहीं किया या इनकी काशिज नहीं का गयी। ज्याइट रेस्पासिबिसिटी को बात भी कहीं गयी, मेने उससे कभी इनकार नहीं किया। मेने तो शुरू में ही यह निजेदन किया कि मेरे मित्र इस बात को न समर्थे कि जो कि हाइया है, ये विभाग के अन्दर न रहेंगे। लेकिन जो कुछ भी करना है वह नानवायलेट सरीके से करना है जा कि छेनोकेसी को जान ह। शाराफत से कहते हैं, समक्षा नर कहते हैं। अब यह वूसरी बात है कि मरे अन्दर इतनो अक्त नहीं ह कि उनको समक्षा सकू। इसीलिय मेने निवेदन किया कि जब सदन के सामने वह डिमाड आवेगा इस डिगार्टनेंट की उस सनय समझाने को कोशिश करेगे। भ विश्वास दिला सकना हूं कि मान मत्रा जो इससे प्रिम्शिस्त को कोशिश करेगे। भ विश्वास दिला सकना हूं कि मान मत्रा जो इससे प्रिम्शिस्त को बात नहीं हैं। शरीफ लोगों के बीच का सवान है।

एक मित्र ने कहा कि हमको कुछ दाया सेन्ट्रल गवनं मेंट से मिनता हं इस तास्ते कि हम म्युनिसियं लिटीज से कहें कि मेहतरों को जो सर पर पाखाना ले जाना पड़ता है, वह न ले जाना पड़ और उनके लिये हाथ के ठेले था गाड़ियां बनाई जायं, इतना सुधार हो जाय । में यहीं कह सकता हूं कि इनसे ज्यादा नीच काम हो नहीं सकता और इसकी हम रोक नहीं सकते तो हमारे लिये बड़े शनें को बान यह होगी । लेकिन इसकी जिम्मेदारी सरकार पर उतनी नहीं हैं जितनी कि म्युनिसियं लिटीज को है । इसके लिये ज्यादा से ज्यादा अनुदान दिया जाता है लेकिन इतने पर भी अगर वे यह न कर सकें तो क्या कहा जाय । जो माननीय सदस्य यहा है वे बहुत ज्यादा प्रभाव रखते हैं अपने-प्रयने इलाके में, अपनी-अपनी म्युनिसियं लिटीज को वे प्रभावित कर सकते हैं कि कम से कम यह एक रिफार्य वे कर दें तो हमें खुशी होगी । मेहतरों के क्वादंस वर्गरह के लिये भी ज्यादा से ज्यादा हमारी तरफ से अनुदान, सहायता तथा को आपरेशन विय जाता है ।

श्रव एक बात वर्मा जो की बाबत कही गयी, जो हमारे चीफ इंजीनियर थे। उनकी चाहे और कोई शिकायत रही हो लेकिन मेरे सामने यह शिकायत कभी नहीं श्रायी कि उनकी वजह से गबन हुश्रा या चोरी में उनकी शिरकत हुई। श्रार इस सिलसिले में मरे पास कोई शिकायत मही श्राई कि उनकी वजह से गबन हुश्रा तो में उनकी रोक नहीं सकता श्राने से। एक पोलीभीत का मामला है। डो० एम० के सामने शिकायत की गयी कि द्यूबवेल्स तथा हाथ के पम्पत में बहुत ज्यादा पैसा खाया गया। वर्मा साहब भी डो० एम० के सामने मी जूद थे श्रीर कुछ जिम्मेदार

साहबान एम० एल० एज० भी वहां थे। मैंने डी० एम० से कहा श्रीर वर्मा साहब से कहा कि किसी दूसरे श्रादमी की, जिसने पहले जांच की हो उसकी नहीं, जांच के लिये भेजा जाय श्रीर डी० एम० से कहा कि वे भी भेजे क्योंकि यह हमारे लिये बड़े शर्म की बात है कि इस तरह के श्राक्षेप किये जायं श्रीर उनका जवाब हम न दे सकें।

डी० एम० स्वयं शिकाशत से ऐग्री करते थे। उनसे कहा गया कि इसमें गवर्नमेंट की बदनामी होती है लिहाजा कोई न कोई इम्पाशियल आदमी को वे भेजें इन्क्वायरी के लिये और ग्रापकी श्रुन कर आदवर्य होगा कि शिकायत वह निरावार पायी गयी और साबित यह हुआ कि पैसा ठीक दिया गया। गततफहमी लोगों को इसलिये हुई कि जो स्पेसिफिकेशन्स थे वे हाई थे। काम थोड़ा खराब था, पर उसकी वजह से जायज पैसा काटा गया और कोई गोलमाल नहीं था। ये वाकयात हैं और अगर अब भी उनको न रखा जाय तो कम से कम मुझे जो गांधी जो के नाम से मिलाया जाता है तो उस जगह तो मैं कम से कम बेईमानी नहीं कर सकता। इसलिये में उनको वापिस ग्राने से इनकार नहीं कर सकता हूं।

एक चोज यह भी कही गयी कि यह डाइरेक्टोरेट का जो संचालन होता है, इसकी नीति उसके बरग्रक्स होती है जिस नीति का कि ग्रभिभाषण में थोड़ा-सा जिक किया था, जिसकी ग्रोर इशारा किया था। में व्यक्तियों की बाबत नहीं कह सकता लेकिन यह में कह सकता हूं कि ग्राज जो हमारे पंचायत राज के संचालक हैं वह थू ऐंड थू गांव के दृष्टिकोण के ग्रीर गांव के बातावरण के हैं ग्रीर जो ये सुवार इवर मिले हैं, इसका कारण यही है कि वे पर्सनली इन चीजों में इंटरेस्ट लेते हैं। लेकिन दिक्कत यह है कि बहुत सो पंचायतों में खुद ताकत नहीं है।

जहां ग्रन्छे ग्रादमी मिल जाते हैं वह काम कर लेते हैं, लेकिन जहां यह इनी शियेटिव नहीं हैं, बहां इनी शियेटिव पैदा करने का काम हमारे पंचायत मंत्री ही कर सकते हैं। लेकिन उनके पास द—द, ६—६ गांव हैं। न्याय पंचायत का काम भी उनके पास है। ग्रगर वह बहुत ईमानबारी के साथ काम करें तो भी महीनें में दो, ढाई दिन से ज्यादा एक गांव को नहीं दे सकते हैं। ग्रब ग्रगर इन दो, ढाई दिन में से ग्राने जानेका समय काट लिया जाय तो समझा जा सकता है कि कितन। समय वे उन लोगों को इन्स्पायर करने के लिये दे सकते हैं। इसके ग्रनावा ग्रसिलयत तो यह हैं कि सभी मंत्री सोने के नहीं है। जहां तक यह कहा जाता है कि खास-खास को रखा जाता है, लेकिन ग्रभी मानतीय सदस्यों ने सुना होगा कि हमारे मित्र मुक्तिनाथ राय जी को शिकायत ही यह है कि २५ मोल से दूर रखा जा रहा है। लेकिन वास्तिवकता यह है कि जो तनख्वाह उनको हम देते हैं ग्रीर उनको परमानेण्ट नहीं कर सके हैं यह एक ज्यादती है, इसका कोई जस्टिफ केशन हमारे पास नहीं है। लेकिन साथ ही हम यह चाहते हैं ग्रीर माननीय सदस्य भी चाहते होंगे कि ये मंत्री, सरकार के एजेन्ट नहीं कर, जैसा कि श्रभी कहा गया कि ये पंचायतें भी सरकार की एजेन्ट हैं, पंचायतों के ही हों, उन्हीं से उनको तनख्वाह वगैरह मिले। ये पंचायतों के से केटरी होंगे तो उनको तरकती देने का ग्रीर परमानेन्ट करने का सब काम पंचायतों का होगा।

रिसोर्सेज का सवाल श्राया। मैंने निवेदन किया था कि यह एक बड़ा सवाल है। ऐसा नहीं है कि हम इसकी फौरन हल कर लें। इसीलिये मैंने कहा था कि जो नया इन्तजाम हम करने जा रहे है, जिसमें यह भी एक प्रश्न सोचने का है श्रौर सरकार ऐक्टिवली सोच रही है, माती सहस्य भी श्राना-ग्राना सुझाव देंगे। लेकिन साथ ही प्रश्न यह है कि ऐसा तो है नहीं कि प्रा कहीं रखा हुश्रा है श्रौर सरकार देती नहीं है श्रौर कंजूस की तरह रोज सबेरे गिन लेती है कि इतने जवाहिरात हो गये, इतने गिन्नियां हो गयीं।

बजर सब रोगों के सामने श्राता है। सारा पैसा किसी न किसी काम में लगा हुश्रा है; यहां तक के जो तृतीय पंचवर्षीय योजना बनायो जा रही है उसमें भी कई करोड़ का घाटा है। यह बदिक स्मती इस देश की है। गरीब देश है, साघनों से हीन हैं और ५०-५५ फीसदी श्रादमी इसमें ऐसे जिनसे हमें रक पैसा भी नहीं लेना चाहिये श्रीर हमारी कोशिश यही है कि जो यह ५०-५५

### [भी विचित्रनारायण शर्मा]

फीसदी मादमी बिलो स्टेन्डर्ड भ्रपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं उन्हें हम अपर उठाये भौर इसीलिये हमारी सारी योजनायें है। लेकिन इसके लिये पैसा चाहिये। उस पैसे का प्रबन्ध हम इस ८०-८४ फीसदी जनता को छोड़कर केवल ४-७ फी सदी ग्रादिमयों से, जो सचमुच ऐसे हैं जिनसे कछ लिया जा सकता है भ्रौर जिनसे लिये जाने पर उनको कुछ ज्यावा नुकसान नहीं होगा, कर सकें, यह संभव नहीं है। लेकिन उनसे फितना लिया जा सकता है, यह सोचने की बात है मौर ऐसी हालत मे हमारे सामने कोई दूसरा चारा नहीं है कि जो भूखे, नग श्रीर गरीब है उनसे ही लें। हम लें, गांव पंचयाते लें श्रोर जिला परिषद् ले। (व्यवपान) जी हा, बिलकुल गाधियत अप्रार मेरे पास इतना अप्न नहीं है कि साल भर तक में बच्चों को खिला सकू तो में बच्चों को उतना ही खिलाऊंगा जिससे बीज के लिये ग्रन्न बच सके। यही गायीजम कहता है कि मै बच्चों को भूखा रखूं श्रौर बीज के लिये श्रप्त रखूं। यदि मै सारा श्रप्त सर्च कर दुगा तो बीज का क्या होगा ? हमने तकलीफे सहीं, इस जेनरेशन ने सहीं श्रीर श्रागे भी सहेंगे। यह हमें श्रगर हम थोड़ी तकलीफ उठाकर प्यूचर बना सके श्रीर वह न करे तो हमारे जैसा ग्रभागा दूसरा कोई नहीं होगा। यही गाधीज्म है। इसमें कोई शर्म की बात हमें मोलस जब गांधी जी श्राये थे तो वे हमे जेल ले गये। लोग निहत्ये थे, उनके पास कहा लेकिन फिर भी उन्होंने कहा था कि देश को भ्राजाद करना होगा उसके लिये भी नहीं था। जेल जाना होगा, कष्ट उठाना होगा। वेश के वास्ते ग्राज हम जेल जाने के लिये नहीं कहते है। लेकिन महज कष्ट उठाने के लिये कहते है। हां, यह कहा जा सकता है कि ग्राप भी कल की जिए।

णहां तक इस सिद्धान्त का ताल्लुक है उसके लिये उस समय मौका मिलेगा जब सदन के सामने एक मुकम्मिल बिल ग्रायगा। उस समय इघर के बैठने वाले ग्रीर उघर के बैठने वाले, सबको मौका मिलेगा कि वह ग्रपनं ग्रनुभव से तथा ग्रपनी ग्रमूल्य राय से उस बिल को जितना सुन्दर हो सके बनाने की चेष्टा करे। वह बिल फौरन ग्रा सकता है ग्रीर ग्रगर देर हो तो चुनाव करा लिये जाय। ग्रगर माननीय सदन चाहेगा कि जैसा बिल पेश हुन्ना है वैसा ही पास करें तो इसमें कोई दिक्कत नहीं है ग्रीर वह उसको मंजूर करेगा, जो यह ग्रादरणीय सदन चाहेगा वही होगा। ग्रगर हाउस का प्लेजर यह है कि यह बिल वापस लिया जाय ग्रीर दूसरा बनाया जाय तो इस बदनसीब को गाली देना न्याय की बात नहीं कहलायेगी, समझदारी की बात नहीं कहलायेगी।

हमारे एक मित्र ने ग्रस्पताल का किस्सा सुनाया। शायव बाड़ी ग्रस्पताल था। ग्रवर में सारी बातें सबन के सामने रखूं तो यह सबन को शोभा नहीं बेगा ग्रोर माननीय सबस्यों को भी शोभा नहीं बेगा। में इतना ही कहूंगा कि जिस तरह से मामला चलाना चाहिये था उस तरह से नहीं चलाया गया। ग्रस्तपताल एक जगह से बूसरी जगह ग्राया ग्रोर मील, ढेढ मील का फर्क हो गया, इसके लिये कोई बु:ख नहीं है, लेकिन जिस तरीके से यह सब किया गया उस तरीके को ग्रच्छा नहीं कहा जायगा ग्रोर में इतना ही कहूंगा कि इसका ग्रगर जिन्न न किया गमा होता तो ज्यावा ग्रच्छा होता।

श्री राजनारायण -- जो ग्रभद्र तरीका था वह किसके द्वारा किया गया ?

श्री विचित्रनारायण दार्मा—जिन लोगों ने इसको लाने में दिलचस्पी ली उनके लिये हो सकता है। माननीय राजनारायण जी ने नहीं किया होगा, इतना मै समझ सकता हूं।

श्री राजनारायण—जिलाबीश भी संबंधित है?

श्री विचित्रनारायण शर्मा—जिला परिषद् संबंधित नहीं है।

श्री राजनारायण-अोमन्, मेने जिलाबीश कहा, जिला परिषद नहीं !

### श्री विचित्रनारायण शर्मा--जिलाधीश को भी गलतफहमी में रखा गया।

ग्राम सभाग्रों ग्रौर ग्राम पंचायतों की बात में निवेदन कर चुका हूं कि इन दोनों को एक किया का रहा है ग्रौर जो झगड़ा है, जिसकी वजह से वह गलतफहमी रहती है, वह नहीं रहेगी। लेकिन इसमें यह जरूर है कि जैसे शिक्षा विभाग का संबंध गांव पंचायतों के ग्रन्तगंत शिक्षा ग्राने से नहीं कट जायगा, इसी प्रकार माल के प्रश्नों का ताल्लुक माल से होगा, हमारे विभाग से नहीं होगा। वैसे तो यह विभाग इतना व्यापक है जैसे इस ग्रसम्बली के ग्रन्दर सब चीजे ग्रा सकती है, वैसे ही ग्राम पंचायतों ग्रौर ग्राम सभाग्रों में सभी चीजें होंगी। एक-ग्राध चीज, जैसे रक्षा दल ग्रौर पुलिस वगैरह का ट्रॉस्फर नहीं किया है; बाकी स्वास्थ्य भी ग्रा गया, शिक्षा भी ग्रा गयी। लेकिन चूंकि ग्रलग-ग्रलग विभाग है, उनके ग्रपने नियम है, इसलिये ग्रगर उसका नियंत्रण उसी विभाग से हो तो यह उचित मालूम पड़ता है।

श्री राजनारायण-श्रीमन्, में एक सवाल पूछना चाहता हूं।

श्री विचित्रनारायण शर्मा—बाद में पूछियेगा। पहले में जरूरी बाते कह दूं। उसके बाद श्रगर समय बचेगा तो मुतर्फारक बातों का जवाब दे दूंगा।

विष्ट जी ने एक बात और फरमायी। आपने कहा कि प्रधानों का जो चुनाव बैलट से करवाया गया, अगर वह अच्छा था और सफल था तो बाकी पंचों का भी उसी ढंग से चुनाव होना चाहिए। जब आप मानते हैं कि वर्तमान पद्धित दोषपूर्ण हैं तो पैसे का खयाल क्यों करते हैं। तर्क बड़ा अच्छा हैं। लेकिन बदिकस्मती यह है कि विष्ट साहब खुद इस तर्क पर चल नहीं सकते, उनका जीवन नहीं चल सकता हैं। हवा में बहुत सी अपवित्र वस्तुएं बहती है, गंगा के अन्दर सब तरह का गन्दा पानी बहा हुआ जाता है, इसके लिए वांछनीय है कि उनको साफ किया जाय; लेकिन साधन देखने पड़ते हैं, यह देखना होता है कि जितना पैसा खर्च होगा उतना लाभ होगा या नहीं होगा। सारे आगड़े प्रधान और उप-प्रधान के सिलसिले में होते हैं। बाकी पंचों के पास ज्यादा पावर्स नहीं होते हैं। यह समझना कि में गुप्त चुनाव नहीं करना चाहता हूं, तो इसके लिये में सिर्फ यही कह सकता हूं कि हमें सिर्फ गालियां सुनना अच्छा लगता है, ऐसी अक्त हमारी खराब हो गयी है, ऐसा नहीं सोचना चाहिए। हम अगर नहीं करते हैं तो केवल इसलिए कि उस पर खर्चा बहुत ज्यादा होगा। अगर वह हमें समझा सकें कि खर्चा कम होगा तो हम मानने के लिए तैयार होंगे।

धव चलते-चलते मोहिले साहब को एक दो हाथ ले लूं।

भी उपाध्यक्ष--ग्रमी मोहिले साहब का होली का रंग साफ नहीं हो पाया है। (हंसी)

श्री विचित्रनारायण दार्मा—मोहिले साहब ग्रौर दूसरे मित्रों ने भी एक इल्जाम लगाया है, उसकी गलतफहमी में दूर कर देना चाहता हूं। वाटर वक्सं ग्रौर सीवेज के संबंध में हम लोगों ने जो रुपया दिया है लखनऊ को ४१, सवा ४१ लाख के करीब, ग्रागरा को २४ लाख के करीब, इलाहाबाद को २८ लाख ७० हजार ग्रौर इसी तरह से कानपुर को ६० लाख ८ हजार रुपया ग्रौर वाराणसी को ३८ लाख २५ हजार रुपया, यह कुछ कम नहीं है, काफी ज्यादा है। इस चीज को लोग समझते नहीं है। कहते हैं कि बोझ ज्यादा लाद दिया है श्रौर क्या कर दिया है? लेकिन इसके करने से लोगों को पानी मिला, यह भूल जाते हैं। बड़ा शोर मचता था कि लोगों को पानी नहीं मिलता, लोग तरस-तरस कर रह गये, पानी के लिये। तो इससे उनको पानी मिलने लगा। फिर इसके ग्रलावा उससे ग्रामदनी कितनी बढ़ी बोर्ड की? जितनी ग्रामदनी बढ़ी है, ग्रगर सिर्फ लखनऊ का ले ले तो ५५—५६ में १७ लाख थी ग्रौर यह सब खर्च करने के बाद २८ लाख ३६ हजार हो गयी, यानी करीब-करीब दस-ग्यारह लाख रुपये की ग्रामदनी हर साल की बढ़ गयी। इसके ग्रलावा मकान किये है।

### [भी विचित्रनारायण शर्मा]

कानपुर में मकान बनाये गये स्लम क्लीयेरेस वगैरह करके, उनसे झामबनी होती है। लो इनकम थूप के मकान बनाये। करोड़ो रुपये की संपत्ति दे दी जिसले हर साल भ्रामदनी होगी। उसके लिये कहा जाता हे कि मार दिया, मकरूज कर दिया, बरबाद कर दिया प्रशासकों ने लेकिन इसके बरिखलाफ जो प्रान्ट दी उसको तो कोई गिनता ही नहीं। कानपुर को १२ लाख, ग्रागरा को १३ लाख, सिर्फ एक एक मद्र की में बताता हूं, वाराणसी को १८ लाख, इलाहाबाद को १५ लाख श्रोर लखनऊ को १७ लाख। इसके बाद भी कहा जाय कि सरकार ने तबाह कर दिया श्रीर लूट लिया तो में कहूंगा कि कहने वालों की श्रयल की बलिहारी है श्रीर हमारी मजबूरी हं। इन शब्दो के साथ, म नाहूंगा कि इन दोनों श्रमुदानों को सदन स्वीकार करे।

श्री राजनारायण—एक प्रक्त म यह करना चाहता हू कि माननीय मंत्री स्वायत्त द्यासन विभाग ने यह कहा कि हम तो तथार है श्रगर गांव पंचायतो को रेजेन्यू विभाग मालगुजारी वसूल करने की इजाजत दे दे, तो क्या यह बात सही हे ?

श्री विचित्रनारायण शर्मा—जहा तक मेरा ताल्लुक ह, अन्भव हमारा यह हे कि ७२ हजार पंचायतो में से बहुत थोड़ी पंचायतो ने 'ऐज एक्सपेरिमेट' इस काम को लिया था श्रीर उसका रिजल्ट कोई बहुत ज्यादा एक्करेंजिंग नहीं रहा जब कि माल विभाग की तरफ से खुली छूट थी कि जितना फायदा चाहें उठा सकते हैं। लेकिन उससे फायदा किसी ने नहीं उठाया। श्रव जब उसके बन्द होने की बात चली तो उसके बाद यह शोर होने लगा है।

श्री उपाध्यक्ष--यि ग्रावश्यकता पही तो मं ग्रयने ग्रधिकार से पन्द्रह मिनट समय बढ़ा दुंगा, मतवान के लिये ।

प्रदन यह हे कि सम्पूर्ण अनुवान ४२ के अधीन मांग की राश्चि घटाकर एक रुपया कर वी जाय।

कमी करने का उद्देश्य--नीति का व्यौरा जिस पर चर्चा उठाने का ग्रभिप्राय है।

सरकारो गलत नीति व इन जातियों की उपेक्षा पर चर्चा तथा सुवार संबंधी सुझाव वेना।

(प्रश्न उपस्थित किया गया ग्रीर ग्रस्बोकृत हुआ।)

श्री उपाध्यक्ष--प्रश्त यह है कि ग्रनुदान संख्या ४२---प्रकीणं व्यय---लेखा शीर्षक ५७---प्रकीणं (miszellaneous) के ग्रन्तगत ५,५६,०४,७०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १६६०-६१ के लिये स्वीकार की जाय।

(प्रवन उपस्थित किया गया भ्रौर स्वीकृत हुम्रा।)

श्री उपाध्यक्ष — प्रश्न यह है कि सम्पूर्ण प्रतुवान १५ के ग्राधीन मांग की राशि घटाकर एक रुपया कर दी जाय।

कमी करने का उद्देश्य--नीति का व्योरा जिस पर चर्चा उठाने का ग्रभिप्राय है।

गांव सभाएं एवं पंचायतों का विकेन्द्रीकरण करके उन्हें गांवों के समस्त निर्माण कार्य तथा मालगुजारी वसूली स्राविका कार्य सौंपना स्रावि के संबंध में धर्चा तथा सुझाण देना।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और अस्वीकृत हुन्ना।)

१६६०-६१ के म्राय-व्ययक में म्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—ग्रनुदान ६०५ संख्या ४२--लेखा शोर्षक ५७--प्रकीणं व्यय तथा ग्रनुदान संख्या १५--लेखा शोर्षक २५--गांव सभायें म्रौर पंचायतें

श्री उपाध्यक्ष—प्रकृत यह है कि ग्रनुदान संख्या १५—गांव सभाएं ग्रौर पंचायते—लेखा ं अक २५—सामान्य प्रज्ञासन के ग्रन्तर्गत १,६६,११,२०० रुपये की मांग विस्तीय वर्ष १६६०-१ के लिये स्वीकार की जाय।

(प्रक्त उपस्थित किया गया ग्रौर स्वीकृत हुग्रा ।) (इसके बाद सदन ५ बजे ग्रगले दिन के ११ बजे तक के लिये स्थगित हो गया।)

> देवकीनन्दन मित्थल सचिव, विधान सभा उत्तर प्रदेश।

लखनऊः २१ मार्च, १६६० ।

# नत्थी 'क'

(देखिए तारांकित प्रक्षन २ का उत्तर पीछे पृष्ठ ५२३ पर)

# सूची

जिले जहां नहरों से हरी खाद के प्रयोग के लिये मूंग की किस्म १ की सिचा। साधारणतया की जाती है:

१ <del>—स</del> हारन <b>पु</b> र	२—मुजफ्फरनगर
३—मेरठ	४—बुलन्बद्यहर
५	६मयुरा
७—-म्रागरा	<b>म</b> ─्एटा
६मेनपुरी	१०ववायूं
११पुरावाबाव	१२फर्वसाबाद
<b>१</b> ३—इटावा	१४—-वाराणसी
१४—लक्षनक	१६—-रायबरेली
	* *

नत्थी 'ख'
(देखिये तारांकित प्रश्न ४ का उत्तर पोझे पृष्ट ४२४ पर)
सूची

नाम जिला				नियमानुकूत प्राप्त दर- स्वास्तों की संस्या	चुने गये जम्मीदवारों की संस्था
१—-फेजाबाद				266	१्द
२—-गाँडा	• •	• •	• •	२६६ <b>१५</b> =	₹5
२—-गाउँ ३—-बाराबंकी	•	• •	• •		
	• •	• •	• •	<b>१</b> २७	<del>-</del>
४—सुल्तानपुर	• •	• •	• •	१ <i>६७</i>	१७
५प्रतापगढ़	• •	• •	• •	<b>२२६</b>	११ <b>७</b>
६बहराइच	• •	• •	• •	25 20	و بر
७इलाहाबाद	• •	• •	• •	7£¥	
दफतेहपुर •	• •	•	• •	१ <b>२</b> ५	१४
६इटावा	• •	•	• •	<b>२</b> ८३	२६
१०कानपुर	• •	•	• •	386	2
११फर्रखांबा द	• •		• •	२८७	<b>२१</b>
१२बरेली	• •	•	• •	१५७	१८
१३बदायूं	• •	•	• •	१८७	2
१४रामपुर	• •	•	* *	3 €	2
१५मुरादाबाद	• •	• •	• •	<b>२६२</b>	<b>१</b> 6
१६—विजनोर	• •	• •	• •	३६५	१८
१७—-पीलीभीत	• •	• •	• •	38	*
१८—-शाहजहांपुर	• •	•	• •	११०	Ę
१६गोरखपुर	• •	• •	• •	<b>48E</b>	₹ <b>∘</b>
२०श्राज्मगढ़	• •		• •	३१७	₹०
२१बस्ती	• •	• •	• •	३०४	१४
२२देवरिया	• •	• •	• •	88€	<b>१</b> ७
२३लखनऊ	• •	• •	• •	४२४	२५
२४उन्नाव्	• •	• •	• •	१२०	૭
२५रायबरेली	• •	• •	• •	१४६	3
२६सोतापुर	• •	• •	• •	<b>የ</b> ደ ዩ	5
२७हरदोई	• •	• •	• •	१७३	₹0
२८—खीरी	• •	• •	• •	६६	₹
२६म्रांसी	• •	• •	• •	<i>३७</i>	¥
३०हमीरपुर	• •	• •	• •	४२	ø
३१जालीन	• •	• •	• •	११२	१५
३२ – बांदा	• •	• •		Ęs	२
३३मेरठ	• •	• •	• •	४०६	3₽

नाम जिला				नियमानुकूल प्राप्त दर- ख्वास्तों की संरया	चुने गये उम्मीदवारों की संस्या
	• •		• •	३७६	१०
३५सहारनपुर	• •		• •	१७३	१३
३६——देहरादून	• ~	• •	• •	6.८	_
३७मुज् <b>ष्फ</b> रनगर	•		• •	२५७	5
३८त्राराणसी	•		• •	३७८	१८
३६बलिया			• •	२३१	२०
४०मिर्जापुर		•		१२३	•
४१जीनगुर				२६=	१०
४२गाजीपुर				१८८	<b>१</b> २
४३—–नैनोताल	,	*		७३	१४
४४गढ्वाल				5	personal distribution of the second
४५प्रत्मोड्ग		•	• •	ሂየ	¥
४६–– <u>३</u> हर <sup>्</sup> -गढ़वास				પ્ર	-
४७–– प्रागरा				२१६	Ę
४८ तथ्रा	• •	• •	• •	३२१	3
४६धर्लोगढ़	• •		• •	二义号	ሂ६
५०एटा	• •	• •		२२५	
५१मैनयुरी	• •			308	?

नत्थी 'ग'

(देखिये तारांकित प्रक्त १५ का उतर पीछे पृष्ठ ५२७ पर)

# तालिका "ग्र"

# सन् १६५६ में जिला इटावा में स्थित सहकारी भट्ठों को जो कोयला दिया गया उसका विवरण

ر وين		गर गर	दिया ग
		टन	हं०
१डी०सी० डी० एफ० ''ढ़''		२६४	8
२ ,, ,, "बी"		४५२	१४
३ ,, ,, ''सी''	• •	४२२	શેર
४ ,, ,, भरथना		१८४	ેદ્
५ ,, ,, रुहगंज		३०४	8
६ " " कुकीली		રેરપ	१७
७एस० एस०, ग्रजीतमल		३३५	38
दडी० एच० एस०एस०, <b>ग्रहेरीपुर</b>	٠.	३५२	8
६एस० एस०, श्रवलदा		२७७	१५
१०एस० एस०, एरवा कटरा		<b>२</b> १	3
११ ,, ,, भ्रीरैया	• •	प्र४६	Ę
१२ ,, भ्रात्स्		308	રે
१३ ", ", बलरीय		२४३	<u>`</u>
१४ " ,, बसरेहर		६२१	ą
१५ ", " विघुना		` ' দ	ર
१६ ,, भाग्यनगर		388	ર દે
१७ " " जीवीयापुर (दो भट्ठे)	• •	४७०	१७
१८ ", ", देवरपुर		११६	o,
१६ " " ,, एकदिल		२७५	१५
२० ,, हरचन्दपुर		३०५	`X
२१ ,, जसवन्तनगर		228	3
२२ ,, ,, निवारी कलां		३७५	પ્રે
२३ ,, ,, महेवा	• •	४३४	5
२४ ,, ,, सुरादगंज		308	१५
२४ ,, एक्स सर्विस मेन कोन्रापरेटिव, इटावा	• •	४७६	રેરે
२६ ,, जैमालपुर	• •	833	5
२७पी० एच० एस० एस०, विधुना	• •	`	
२८श्री गान्धी ए० बी० लवेदी	• •	<b>३२०</b>	3
२६जे० भी० बाकेवर	• •	४३२	१७
३०—एस० एस० राहिन	• •	१४८	<b>.</b> 3
३१—-भट्ठा सन्पर	• •	<b>23</b>	5

नाम भट्ठा			कोयला ज गया		
				टन	 हं•
३२एस० एप०, बरलोक गुर	• •	• •		१११	११
३३म्रार० वी० उन्टर काले	ा, फर्फं य	• •	• •	२३	१२
३४उमर सेन्दा	* *	• •	• •	२५०	१४
३५वाहेबर	• •	• •	• •	888	3
		योग	• •	६,६४४	38
			रागम	ग ४३८ वे	गन।

# तालिका "ब"

सन् १९५९ में जिला इटावा में स्थित स्वीकृत ईंट के भट्ठों को जो कोयला दिया गया, उसका विवरण

इटावा जिले के ए बलास भट्ठों वालों की सूची (प्रत्येक को ३४ वैगन)--

```
१--श्री एच० शमी उहीन, मोहल्ला कटरा साहिब खां, इटाया।
  २—–श्री एच०रैसुडीन
 ३--श्रो मोहम्भद ग्रफनल
                                         ,,
 ४--पर्वश्री ज्योति प्रसाद एन्ड कम्पनी
  ५--- सर्वश्री श्रमरजोत ऐन्ड कम्पनी, कटरा सेपक श्रली,
 ६--श्री ग्रमन्तुल्ला, जसवन्तनगर।
 ७--श्रो राजा नरायन प्रताप सिंह भलाजनी पाले ।
  ५--सर्वश्री बच्चन लाल राम चरन, ग्रोरेया।
  ६--श्री राम नाथ दुबे, भरथना।
१०--श्री वृन्दावन दौक्षित, भरथना।
११--श्री दीन दयाल श्रवस्थी, भरयना ।
१२--श्री मघुदास, श्रोरैया ।
इटावा जिले के बी क्लास भट्ठे वालों की सूची (प्रत्येक को २५ वंगन)
```

- १--श्री विश्वन दास, नेविल रोड, इटावा।
- २--सर्वश्री नेवन्द राम श्रघोदास, नेविल रोड, इटावा।
- ३—-सर्वश्री चेजभान गोविन्द राम, जसवन्तनगर।
- ४--सर्वश्री ग्रत्तर चन्द तेजभान, जसवन्तनगर ।
- ५--सर्वश्री सदानन्द ज्ञानचन्द, ग्रीरेया।
- ६--श्री गंगा विदन्, ग्रजितमल ।
- ७--श्री मोहम्मद सईद एन्ड कम्पनी, ग्राञ्जलदा।
- ५-शी राम रतन राम प्रकाश, लखना।
- ६--श्रो होती लाल ग्रग्नवाल, भरयना।

नत्थी 'घं'
(देखिये तारांक्ति प्रस्न १६-१७ का उत्तर पें दे पृष्ठ ५२७ पर)
१३-२-६० तक जिलेबार चाधल तथा गेहूं की खरीद की मात्रा तथा मूल्य
का व्योरा

			4.1 00/1/1		
ऋप- संख्या	जिला			स या स तो क्षे	रूव रुपयों से
	चावल				
१	विजीपुर	• •	• •	२६,८४१	४,६९,५६३
3	गोरअपुर	• •		७०,^६१	१२,११,४४८
₹	वस्तो	• •	• •	२,१६,६२४	४२,०६,२८३
8	गोंडा	• •	• •	६५,६० र	१५,६०,६५४
ሂ	वहराइ व			२,८६,४८४	४ ७,२३,१२९
Ę	वाराण नी	• •	• •	₹2, ₹ ₹ €	४,७३,२२६
હ	জানপু <b>र</b>			१,०७,१६२	१७,६७,३५८
5	फर्वयाद	• •	• •	२२,६७६	३,५२.६०४
3	फ रेह्युर	• •	• •	२,६१,२३०	४७,२१,०४२
१०	बांदा	• •	• •	६,६३,७१६	१,१०,३२,५५७
११	इटावा		• •	च,६५,६५ <b>२</b>	१,४५,५१,६६०
१२	इ शहाबाद	• •	• •	ሂ፡፡ ፡	<b>८,१२</b> ४
१३	<b>देहरादू</b> न	• •	• •	१८,२५५	३,४६,३८३
१४	सहारनेपुर	• •	• •	३,४२.६२३	६७,१२,०५२
१५	म् जेपक रनगर	• •		७८,६१३	१५,४१,१३=
१६	में नपुरी	• •	• •	४,२४,८००	६८,३०,४८८
१७	एटा	• •		१८,७६८	३,०६,८७५
१८	श्रागरा	• •	• •	११,६१३	१,६५,४७१
३६	बारावं तो		• •	१४६	२,१७६
२०	<b>তন্ম।</b> ভ	• •		६,५१८	१,५६,६५५
२१	रायबरेली	• •	• •	१,३१२	२१,६३२
२२	सीतापुर		• •	१,२२६	२०,६१६
२३	हरदोई	• •	• •	४=,८४४	८,८७,००८
२४	रोाह <i>न</i> हांपुर	• •	• •	२,२१,=६=	३७,१६,०४८
रंध	लजीमपूर-जीरी			१,३८,२५६	२,३०,१०,०६८
२६	पोली भीत		• •	४,५४,६३४	७६,१५,११६
ঽড়	बदायूं	• •	• •	१,३६१	२२,५५१
२५	रामपुर			३८,३६०	६,४२,५३०
२६	बरेली	• •	• •	६३,५२१	१०,६३,४८४
₹o	मुरादाबाद	• •	• •	२,८४५	४७,६५८
३१	नैनीताल	• •	• •	१,६१,४४२	२७,०३,७०२
३२	लखनऊ	• •	• •	• •	• •
	कुल योग	• •	tuyari	४७,६२,६५०	द,०६,दद,द४७

# १३-२-६० तक जिलेवार चावल तथा गेहूं की खरीद की मात्रा तथा मूल्य का ब्यौरा

ऋम- संख्या	जिला 	والمراجعة والمراجع والمراجعة والمراجعة والمراجعة والمراجعة والمراجعة والمراج		माता मनों मे 	मूल्य रुपयो मे
	गेहूं				
१	गोंडा	• •		२०,३३७	२,८४,७१
२	बहराइच	• •		६२,०८३	<u>=,                                    </u>
₹	कानपुर	• •		<b>८,३</b> ५३	१,१६,६४:
ሄ	फर्हलाबाद	• •		४,६६८	६५,७७३
ሂ	फनेहपुर	• •		२५१	<b>ቒ</b> ,ሂ የ`
Ę	बांदा	• •	• •	१,७९,५४३	२४,१३,६०
હ	इटावा	• •	• •	२२,६४२	३,२१,३२
5	झासी	• •		२,१६,१२०	₹0, ₹७, ₹ =
3	जालीन	• •		२,१७,२१६	४१,६२,१४
१०	हमीरपुर	• •	• •	२,२७,५२५	₹१,5€,५€
११	सहारनपुर	• •		७,५३२	१,०५,४४:
१२	मु जेपफ रनगर	• •		₹,५€३	४०,३०
१३	र्मनपुरी	• •	• •	६,६१४	8,98
१४	एटा	• •	• •	१०,४०६	१,४५,६८
१५	श्रागरा	• •	• •	१०,२६५	१,४३,७१
१६	मे रठ	• •	• •	६,०५३	<b>54,8</b> 5
१७	बुलन्दशहर	• •	• •	२१,०२४	२,६४,३३१
१८	श्रलीगढ़		• •	<b>१</b> २,१२०	१,६९,६८
38	मथुरा	• •		३,५८०	40,820
२०	बाराबंजी	• •		२	रे
२१	उन्नाव	• •	• •	१२६	१,५०१
२२	रायबरेली	• •	• •	६४२	5,85
२३	सीतापुर	• •	• •	३,०५५	४२,७७०
२४	हरदोई	• •	• •	१,२६१	१७,६५१
२५	शाहजहापुर	• •	• •	8,585	६४,७४१
२६	ललीमपुर-खीरी	• •	• •	339,59	१,८४,७८१
२७	पोलीभीत	• •	• •	359,88	8,53,508
२८	बदायूं	• •		४७०,३६	४,०४,०३१
२९	रामपुर	• •	• •	₹ <i>30,</i>	५३,१०३
ই ০	बरेली	• •	• •	923,5	44,3 87
₹ १	मुरादाबाद	+ +	• •	२०,६०६	२,वद,५२६
३२	नै नीताल	• •	• •	32,088	8,38,8
<b>₹</b> ₹	लखनऊ	• •	• •	३,६०४	¥0,8X8
३४	बिजनौर	• •	• •	४,२७६	५७,८६४
	ą	ुल योग	• •	१२,६४,४९७	=X3,50,00,8

### नत्थी 'ङ'

(देखिये तारांकित प्रश्न १८ का उत्तर पीछे पृष्ठ ५२८ पर)

# सस्ते गल्ले के दूकानदारों की नियुक्ति से सम्बन्धित विवरण

जहां तक सम्भव हो सकता है दूकानदारों की नियुक्ति में निम्नलिखित रूप से प्राथमिकता दी जाती है, यदि प्रार्थी (संस्था ग्रथवा व्यक्ति विशेष) उसी स्थान का है जहां दूकान खोलने का प्रस्ताव हो:

- (१) कन्ज्यूमर्स कोग्रापरेटिव स्टोर्स तथा डिस्ट्रिक्ट कोग्रापरेटिव एण्ड डेवलपमेट फेडरेशन--पदि उनकी ग्राथिक स्थिति सुदृढ़ है ग्रौर वह दूकान को दक्षता से चलाने में समर्थ है।
- (२) शिक्षा संस्थाये—पदि वे स्वयं दूकान चलाने मे समर्थ है ग्रौर उनके विरुद्ध कोई ग्रभियोग नहीं है।
- (३) व्यक्ति विशेश—म्हरिजन, राजनैतिक पीड़ित तथा पिछड़े वर्ग (इस कम से) तथा व्यक्तिगत फुटकर दूकानदार एवं दूसरे श्रभ्यर्थी—पिद वे दुकान को सुचार रूप से चलाने के योग्य है।

उन दूकानों के सम्बन्ध में जो खाद्यान्नों की बिक्री २५ प्रतिशत स्रथवा उससे कम हो जाने के कारण स्वयं बन्द हो गई थीं स्रीर उनको फिर से प्रचालित करने का प्रस्ताव था, पुराने दूकानदारों को, यदि वे उसी स्थान के निवासी है जहां दुकान पुनः स्थापित करने का प्रस्ताव है स्रीर यदि उनका पिञ्जना रिकार्ड स्रच्छा रहा है, तो स्रन्य व्यक्तिगत स्रम्यियों के ऊपर प्राथमिकता दी जाती है।

श्रादेश जारी होने के समय तक जो दूकानदार (संस्था ग्रथवा व्यक्ति विशेष) दूकाने चला रहे थे, उनको उसी प्रकार चलाने की छूट हे, यदि उनकी दूकानें किसी कारणवश रद्द नहीं की जाती श्रथवा उनके स्थान रिक्त नहीं होते।

नत्थी 'खं (देशिये ताराकित प्रक्ष्म ६३ का उत्तर पीछे पट्ट ५३६ पर) कृषि विभाग ने प्रपने भिन्न भिन्न कार्यायों के लिये कुरा द इम रहे किराये पर ले रखी है। उन का उंधा धिनरण इस प्रसार है—

क्रम- संख्या	इमारत का नाम तथा पता	क्तिरात्रेकी भागित धनरान्त्रि	जिस ति । रो किराये पर ह	कार्यात्रय का नाम
8		Facilitative had notice describe several mass and control pass critical elements.	8	A manage human management to to consider withour factors for any investment and present party.
		रु० ग०पै०		
<b>?</b>	पुल्तानपुर मार्ग, दिलकुञा	Ke #3	8 -R- 2E	फसत दक्षित्रविद अर्थात्त्व ।
२ ः	नता निवास, राप विहासी त्याल मार्ग ।	<i>४२४ ७५</i>	31-3-08	जा-वंचागरा, साद एपन् ४२ का
<b>7</b> 2	कोष्ट्रवारा भारत, जलावान	२५० ००	20-X-4E	राज ति अपि मार्के- टिग परिकारी ।
	७, हरिभयन, रानी ता,पी- पाई मार्ग ।	<b>500.00</b>	<b>१</b> ४- <b>१</b> २-४ <b></b> =	१—ाः विकास श्रिकारी, २—कपः३ विकास प्रक्षिकारी, ३—सम्य सारियक, ह्रवि विभाग।
	हरियानाद भयन, राय  बिहारी लान मार्ग ।	५००.००	ex-e-\$6	डा-संत्रातक, भूमि संरक्षण।
	१३, चन्द्र भवन, गोसले मार्ग ।	४०४.५०	<b>チメー</b> チータ	<b>टय-संचालक, उ</b> ग्रान
· e	सन्3ीला भवन, ६,     . कैसरबाग।	२००.००	8-8-XE	उप-मंनालक, लखनऊ मङल, प्लान्ट प्रोटे- यतन सेंटर ।
<b>द</b>	मकबरा बिल्डिंग, हज- रतगंज (स्टोर के लिये)	. ३२५.०० ।	34-6-8	कृषि सूचना ाूरो

नत्थी 'छ' (देखिये तारांकित प्रक्त ८६ का उत्तर पीछे पृष्ठ ५४१ पर ) त में १९५५-५६ सें १९५८-१९५९ तक प्रत्येक वर्षी में गन्न

उत्तर प्रदेश में १६५५-५६ सें १६४८-१६५६ तक प्रत्येक वर्षों में गन्ना, मूंगफली, गेहूं, जौ, मक्का ग्रौर ग्ररहर के उत्पादन की तालिका

फतल		उत्पादन टनों में				
	१९५५-५६	१६५६–५७	१९५७–५८	१६५५-५६		
8			8	X		
गन्ना	२,६३,८६,५३२	३,४६,७३,२१०	३,०७,०२,२७२	३,०७,६४,७००		
मूंगफली	१,३२,८७१	१,७५,६१०	१,४१,८६६	१,४२,५३७		
गेहूं	३०,४१,२३८	३१,१४,८७५	२७,०६,०५०	३०,३६,२७८		
লী	१६,०१,५९८	१४,६६,३८६	१२,५६,=६५	१३,६४,४४६		
मक्का	६,१५,६५०	६,८६,३४१	७,५४,१४१	६,११,२५५		
ग्ररहर	७,८७,५०६	१०,५४,५३८	५,६७,७५८	६,५०,४८०		

नत्थी 'ज' (देखिये तारांकित प्रश्न १३० का उत्तर पीछे पृष्ठ ५४७ पर )

पद का नाम			संख्या	परिगणित जाति	पिछड़ जाति
<b>8</b>	mand human insperi engan kepada dari Tanggaran dari dari dari dari dari dari dari dari		2	<b>3</b>	8
(क) रीजनल मार्केटिंग ग्राफीसर	• •	• •	3		-
(ख) मार्केटिंग इंस्पेक्टर	• •	• •	४२७	४	२४
(ग) सीनियर मार्केटिंग इन्सपेक्टर		• •	१४०	१	ሂ
(घ) मार्केटिंग हेड क्लर्क	• •		brand.	-	-
(च) मार्केटिंग क्लर्क · ·	• •		३६७	Ę	१७
(छ) श्रसिस्टेन्ट मार्केटिंग इन्सपेक्टर	• •		५१	२	ሄ

जगमोहन सिंह नेगी, खाद्य मंत्री ।

नत्थी 'झ' (देखिये तारांकित प्रश्न १३१ का उत्तर पीछे पृष्ठ ५४८ पर ) LIST

Sl.	Name of Blocks		Multi-purpose Societies	Service	Co-operatives
			Number	Number	
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16	Mawai Banikondar Puredali Harakh Dewa Rudauli Masauli Daryabad Bani Ramnagar Haidergarh Suratganj Trivedhiganj Ninodoora Fatehpur Sidhaur		73 74 84 66 76 71 31 86 42 118 87 128 81 95 118	1 17 24 16 27 29 33 35 36 	
	Tota	al	1,349	218 T	otal 1,567

नत्थी 'ञा'
(देखिये तारांकित प्रश्न १३३ का उत्तर पीछे पृष्ठ ५४८ पर )
प्रदेश में प्रथम तथा द्वितीय पंचवर्षीय योजना के ग्रन्तर्गत
पाया गया गर्ने का क्षेत्रफल ग्रीर उपज

पंचवर्षीय योजना	वर्ष	क्षेत्रफल (एकड़ मे)	गन्ने की उपज (टनों में)	गन्ने की चीनी मिलों में खपत (करोड़ टनों मे)
<b>8</b>	2	\$	8	ሂ
	१६५१५२	२९,६५,०४२	३,१६,६२,११४	03.0
	<b>१</b> ६५२-५३	२६,४५,०६१	२,६४,०६,७७३	90.0
प्रथम	<b>そだメーボ</b> &	थह०,६७,३९	२,०७,३२,३०३	०.५६
	<b>१</b> ६५४४-५५	२२,६१,७३६	२,=२,७६,६४६	₹3.0
	१६५५-५६	२७,१६,५५५	7,63,88,432	१.०१
	१६५६-५७	३०,६६,१८६	३,४६,७३,२१०	१.११
	१९४७-४८	३०,३१,१३३	३,०७,०२,२७२	83.0
	384-78	२७,४६,६११	३,०७,६४,७००	0.87

नोट--- ऊपर दिये गये श्राकड़ों में कुमायूं कमिश्नरी के पहाड़ी भागों के श्रांकड़े भी सम्मिलित है।

# उत्तर प्रदेश विधान सभा

### मंगलवार, २२ मार्च, १६६०

विघान सभा की बैठक सभा-मण्डय, लखनऊ में ११ बजे दिन में उपाध्यक्ष, श्री रामनारायण त्रिपाठी, की श्रध्यक्षता में श्रारम्भ हुई।

### उपस्थित सदस्य-३६८

म्रक्षयवर्रासह, श्री श्रजीज इमाम, श्री ग्रतीकुल रहमान, श्री ग्रनन्तराम वर्मा, श्री श्रब्दुल रऊफ लारी, श्री म्रब्दुल लतीफ नोमानी, श्री श्रब्दुरसमी, श्री श्रभयराम यादव, श्री श्रमरनाथ, श्री श्रमरेशचन्द्र पांडेय, श्री श्रमोलादेवी, श्रीमती श्रयोध्याप्रसाद ग्रार्य, श्री म्रली जहीर, श्री सैयद श्रवधेश कुमार सिनहा, डाक्टर म्रवधेशचन्द्रसिंह, श्री ग्रवधेशप्रतापसिंह, श्री श्रसलम खां, श्री श्रात्माराम पांडेय, श्री श्रार्थर सी० ग्राइस, श्री इरतजा हुसैन, श्रो इस्तफा हुसैन, श्री उग्रसेन, श्री उदयशंकर, श्री उबैदुर्रहमान, श्री उमाशंकर शुक्ल, श्री उल्फर्तासह, श्री ऊदल, श्री एस० ग्रहमद हसन, श्री भ्रोंकारनाथ, श्री कन्हैयालाल वाल्मीकि, श्री

कमरुद्दीन, श्री कमलकुमारी गोईंदी, कुमारी कमलापति त्रिपाठी, श्री कमलेशचन्द्र, श्री कल्याणचन्द मोहिले, श्री कल्याणराय, श्री कामताप्रसाद विद्यार्थी, श्री काशीप्रसाद पाडेय, श्री किशनसिंह, श्री कुंवरकृष्ण वर्मा, श्री कृपाशंकर, श्री केशभानराय, श्री केञव पांडेय, श्री केशवराम, श्री कैलाशकुमारसिंह, श्री कैलाशनारायण गुप्त, श्री कैलाशवती, श्रीमती कोतवालसिंह भदौरिया, श्री खजानसिंह चौघरी, श्री खमानीसिंह, डाक्टर खयालीराम, श्री खुशीराम, श्री खुबसिंह, श्री गंगाधर जाटव, श्री गंगाप्रसाद, श्री (गोंडा) गंगाप्रसाद वर्मा, श्री (एटा) गंगाप्रसादसिंह, श्री गजेन्द्रसिंह, श्री गज्जूराम, श्री गणेशप्रसाद पांडेय, श्री

गनेशचन्द्र काछी, श्री गयाप्रसाद श्री गयाबरुशसिंह, श्री ग़युर ग्रली खां, श्री गरीबदास, श्री गुप्तारसिंह, श्री गुरुप्रसादसिंह, श्री गुलाबसिंह, श्री गेंदादेवी, श्रीमती गेदासिंह, श्री गोकुलप्रसाद, श्री गोपीकृष्ण ग्राजाद, श्री गोविन्दनारायण तिवारी, श्री गोविन्दसहाय, श्री गोविन्दसिंह विष्ट, श्री गौरीराम गुप्त, श्री गौरोशंकर राय, श्री घनश्याम िमरी, श्री घासीराम जाटव, श्री चन्द्रदेव, श्री चन्द्रबली शास्त्री ब्रह्मचारी, श्री चन्द्रसिंह रावत, श्री चन्द्रहास मिश्र, श्री चन्द्रावती, श्रीमती चन्द्रिकाप्रसाद, श्री चित्तरसिंह निरंजन, श्री चिरंजीलाल जाटव, श्री छत्तरसिंह, श्री छेदीलाल, श्री छोटेलाल पालीवाल, श्री जंगबहादुर वर्मा, श्री जगदीशनारायण, श्री जगदीशनारायणदत्तसिंह, श्री जगदीशप्रसाद, श्री जगदोशशरण ग्रग्नवाल, श्री जगन्नाय चौधरी, श्री जगन्नायप्रसाद, श्री जगन्नाय लहरी, श्री जगपतिसिंह, श्री जगमोहनसिंह नेगी, श्री जगवीरसिंह, श्री जयगोपाल, डाक्टर जयदेवसिंह श्रार्थ, श्री जयराम वर्मा, श्री जवाहरलाल, श्रो

जवाहरलाग रोहतगी, डाक्टर जागेश्वर, श्री ज् त्लिक्शोर, श्राचार्यं जोखई, श्री ज्वालाप्रसाद क्रोल, श्री मारखंडराय, श्री टीकाराम, श्री (बदायं) डुंगरसिंह, श्री ताराचन्द माहेश्वरी, श्री तारादेवी, डाक्टर नेजबहादूर, श्री तेजासिंह, श्री दत्त ,श्री एस० जी० दशरमप्रसाद, श्रो वाताराम चौधरी, श्री दीनदयालु करुण, श्री दोनवयाल शर्मा, श्रो दोपंकर, श्राचायं दोवनारायणमणि त्रिपाठी श्री वृर्धोधन, श्रो वेवकोनन्दन विभव, श्री वेवनारायण भारतीय, श्री देवराम, श्री द्वारकाप्रसाद मित्तल, श्रो (मजपफरनगर) द्वारिकाप्रसाद पांडेय, श्री

द्वारिकाप्रसाद, श्री (फरंग्वाबाद) (गोरखपुर)

षनीराम, श्रो धनुषधारी पांडेय, श्री घमंदत्त वैद्य, श्री धर्मपार्लासह, श्री धमंसिह, श्री नत्याराम रावत, श्री नत्यूसिंह, श्री (बरेली) नत्यू सिंह, श्री (मैनपुरी) नन्दकुमारदेव वाद्यारठ, श्री नन्वराम, श्री नरदेवींसह बतियानवी, श्री नरेन्द्रसिंह भंडारी, श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट, श्री नवलकिशोर, श्री नारायणवस तिवारी, श्री नारायणवास पासी, श्री नंकराम धर्मा, श्री

पद्माकरलाल श्रीवास्तव, श्री परमानन्द सिनहा, श्री पहलवार्नासह चौधरी, श्री प्रकाश्चवती सूद, श्रीमती प्रतापबहादुरसिंह, श्री प्रतापभानप्रकाद्यसिंह, श्री प्रतापसिंह, श्री प्रभावती मिश्र, श्रीमती फतेहसिंह राणा, श्री बंशीघर शुक्ल, श्री बलदेवसिंह, श्री बलदेवसिंह ग्रार्य, श्री बसंतलाल, श्री बादामसिंह, श्री बाबुराम, श्री बाबुलाल कुसुमेग्न, श्री बालकराम, श्री बिन्दुमती दास, श्रीमती बिशम्बरसिंह, श्री बिहारीलाल, श्री बुद्धीसिंह, श्री बुलाकी राम, श्री बुजबासीलाल, श्री बुजरानी मिश्र, श्रीमती बेचनराम, श्री बेचनराम गुप्त, श्रो बेनीबाई, श्रीमती बॅजूराम, श्री ब्रजनारायण तिवारी, श्री ब्रजभूषण शरण, श्रो ब्रह्मदत्त दीक्षित, श्री भगवतीप्रसाद दुबे, श्री भगवतीप्रसाद शुक्ल, श्री भगवतीसिंह विशारद, श्री भगौतीप्रसाद वर्मा, श्री भजनलाल, श्रो भीखालाल, श्री भुवनेशभूषण शर्मा, श्री भृपकिशोर, श्रो मंगलात्रसाद, श्री मंजूरलनबी, श्री मथुराप्रसाद पांडेय, श्री मदनगोपाल वद्य, श्री मदन पांडेय , श्री मदनमोहन, श्रो

मन्नालाल, श्री मलखार्नासह, श्री मलिखानींसह, श्री (मैनपुरी) महमूद ग्रली खां, कुंवर (मेरठ) महमूद अलो खां, श्री (रामपुर) महमूद भ्रली खां, श्री (सहारनपुर) महमूद हुसेन खां, श्री महावीरप्रसाद शुक्ल, श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री महीलाल, श्री महेद्रासिह, श्री मातात्रसाद, श्री मान्धातासिह, श्रो मिहरबार्नीसह, श्री मुकुटविहारोलाल ग्रग्रवाल, श्री मुक्तिनाथ राय, श्री मुजफ्फर हसन, श्रो मुबारक ग्रली खां, श्री मुरलीधर, श्री मुरलीधर कुरील, श्री मुल्लाप्रसाद 'हंस', श्री मुहम्मद सुलेमान श्रधमी, श्री मुलचन्द, श्री मोतीलाल ग्रवस्थी, श्री मोहनलाल, श्री मोहनलाल गौतम, श्री मोहन लाल वर्मा,श्री मोहनसिंह मेहता, श्री यमुना प्रसाद शुक्ल, श्रो यम्नासिह, श्री (गाजीपुर) यदापालसिंह, श्री यशोदादेवी, श्रीमती यादवेन्द्रदत्त दुबे, राजा रऊफ जाफरी, श्री रघुनाथसहाय यादव, श्री रघरनतेजबहादुरसिंह, श्री रघुराजसिंह चौघरी, श्रो रघुवीरराम, श्री रघुवीर्रासह, श्री (एटा) रघुवीरसिंह, श्री (मेरर्ठ) रणबहादुरसिंह, श्री रमाकांतसिंह, श्री रमानाथ खेरा, श्रो रमेशचन्द्र शर्मा, श्री राघवेन्द्रप्रतापसिंह, श्री

राजिकशोर राव, श्री राजदेव उपाध्याय. श्री राजनारायण, श्री राजनारायणसिंह, श्री राजबिहारोसिह, श्री राजाराम शर्मा, श्री राजेन्द्रिकशोरी, श्रीमती राजेन्द्रकुमारी, श्रीमती राजेन्द्रदत्त, श्री राजेन्द्रसिंह, श्री राजेन्द्रसिंह यादव, श्री रामभ्रघार तिवारी. श्री रामग्रभिलाख, श्री रामकिंकर, श्री रामकृष्ण जैसवार, श्री रामकृष्ण सारस्वत. श्री रामचन्द्र विकल, श्री रामजीलाल सहायक, श्री रामजीसहाय, श्री रामदास ग्रार्य, श्री रामदीन, श्री रामनाथ पाठक, श्री रामप्रसाव, श्री रामप्रसाद देशमुख, श्री रामप्रसाद नौटियाल. श्री रामबली, श्री राममूर्ति, श्री रामरतनप्रसाद, श्री रामरतीदेवी, श्रीमती रामलक्षण तिवारी, श्री रामलखन, श्री (वाराणसी) रामलखन मिश्र, श्री रामलाल, श्री रामशरण यादव, श्री रामसनेही भारतीय, श्री रामसमझावन, श्री रामसिंह चौहान वैद्य, श्री रामसुन्दर पांडेय, श्री रामसूरतप्रसाद, श्री रामस्वरूप यादव, श्री रामस्वरूप वर्मा, श्री रामहेतसिंह, श्री रामायणराय, श्री रामेश्वरप्रसाद, श्री रूमसिंह, श्री

लक्ष्मणीसह, श्री लक्ष्मीनारायण, श्री लक्ष्मीनारायण बंसल, श्री लखमीसिह, श्री लायकसिंह चौधरी, श्री लालबहादुर, श्री लालबहादुरसिंह, श्री लुत्फ ग्रली खां, श्री लोकनाथसिंह, श्री वजरंगबिहारीलाल रावत, श्री विश्वष्ठनारायण शर्मा, श्री वसी नकवी, श्री वासूदेव दीक्षित, श्री विचित्रनारायण धर्मा, श्री विजयशंकरसिंह, श्री विद्यावती वाजपेयी, श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन, श्रीमती विशालसिंह, श्री विश्रामराय, श्री वीरसेन, श्री वीरेन्द्रविक्रमसिह, श्री वीरेन्द्रशाह, राजा व्रजगोपाल सक्सेना, श्री व्रजविहारी मेहरोत्रा, श्री शंकरलाल, श्री शकुंतलादेवी, श्रीमती ज्ञब्बीर हसन, श्रो श्रमसूल इस्लाम, श्री शम्भवयाल, श्री शिवगोपाल तिवारी, श्री शिवप्रसाद, श्री (देवरिया) शिवप्रसाद नागर, श्री (खीरी) शिवमंगलसिंह, श्री शिवमूर्ति, श्री शिवराजबलीसिंह, श्री शिवराजसिंह यादव, श्री शिवराम, श्री शिवराम पांडेय, श्री शिववचनराव, श्रो शिवशंकरसिंह, श्री शिवदारणलाल श्रीवास्तव, श्री शीतलाप्रसाव, श्री शोभनाय, श्री श्याममनोहर मिश्र, श्री श्यामलाल, श्री

#### उपस्थित सदस्य

इयामलाल यादव, श्री श्रद्धादेवी ज्ञास्त्री, कुमारी श्रीकृष्ण गोयल, श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, श्री श्रीनाथ, श्री (ग्राजमगढ़) श्रीनिवास, श्री श्रीपार्लासह, कुंवर संग्रामसिंह, श्री सईद ग्रहमद ग्रन्सारी, श्री सजीवनलाल, श्री सत्यवतीदेवी रावल, श्रीमती सरस्वतीदेवी शुक्ल, श्रीमती सियादुलारी, श्रीमती सीताराम शुक्ल, श्री सुक्खनलाल, श्री सुखरानीदेवी, श्रीमती सुखरामदास, श्री मुखलाल, श्री सुखीराम भारतीय, श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी, श्री

सुनीता चौहान, श्रीमती सुन्दरलाल, श्री सुरथबहादुरगाह, श्रो सुरेन्द्रदत्त वाजपेयी, श्री सुरेन्द्रसिंह, राजकुमार सुल्तान म्रालम खां, श्री सूरतचन्द रमोला, श्री सूर्यबली पांडेय, श्री हमीदुल्ला खां, श्री हरदयालसिंह, श्री हरदयालसिंह पिपल, श्री हरदेवसिंह, श्री हरिदत्त काण्डपाल, श्री हरिश्चन्द्रसिंह, श्री हरोशचन्द्र ग्रष्ठाना, श्री हरीसिंह, श्री हिम्मतसिंह, श्री हुकुमसिंह विसेन, श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा, श्री होरीलाल यादव, श्री

नोट--सार्वजनिक निर्माण उपमंत्री, श्री महावीरसिंह भी उपस्थित थे।

### प्रक्नोत्तर

### मंगलवार, २२ मार्च, १६६०

# म्रल्पसूचित तारांकित प्रक्रन

# नकुड़ में विकास खण्ड भ्रधिकारी की जीप से लड़के की मृत्यु

\*\*१--श्री राजनारायण (जिला वाराणसी)--क्या सरकार को पता है कि गत ५-३-६० को एक लड़का कस्बा नकुड़, जिला सहारनपुर में एस० डी० एम० की कार से दब कर मर गया? यदि हां, तो इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही हुई?

गृह उपमंत्री (श्री रामस्वरूप यादव)—एस० डी० एम० की कार से कोई लड़का दब कर नहीं मरा वरन् विकास खंड ग्रिविकारी नकुड़ की सरकारी जीप द्वारा एक लड़का ग्राहत हुन्ना था, जिसकी मृत्यु ग्रस्पताल में हुई। मामले की जांच हो रही है।

श्री राजनारायण — क्या सरकार बतलायेगी कि उस कार पर केवल बी० डी० श्रो० ही थे या एस० डी० एम० भी थे?

श्री उपाध्यक्ष -- प्रवाल तो यह था कि कार का ग्रोनर कोन था। जिसकी कार होती है चार्ज उस पर लगता है।

श्री राजनारायण—मेरा प्रश्न यह ह कि एस० डी० एम० की कार से दब कर क्या लड़का मर गया? कार तो सरकारी ह श्रीर जब उसमे एस० डी० एम० जाते ह तो वह उनकी होती है...

श्री उपाध्यक्ष ——बी० डी० भ्रो० के नाम जो कार एलाट होती है वह उसकी होती है।

श्री राजनारायण--मेरी जानकारी ऐसी नहीं ह . . . . .

श्री उपाध्यक्ष--म्राप दूसरा प्रश्न पूछे।

श्री राजनारायण—क्या सरकार को इस बात की जानकारी ह कि उस कार की उस समय कौन ड्राइव कर रहा था?

श्री रामस्वरूप यादव---ड्राइवर ही ड्राइव कर रहा था।

श्री राजनारायण——उस कार को बी० डी० श्री० स्वत ड्राइय कर रहे थे जब कि उनके पास ड्राइविंग लाइसेस भी नह! था, क्या सरकार इसकी जाच करायेगी?

श्री रामस्वरूप यादव--मैने बतला दिया कि सूचना यह है....

श्री उपाध्यक्ष--वह कह रहे हैं कि श्राप पता लगा ले।

श्रो रामस्वरूप यादव--पता चना निया जायगा।

### बलिया जिले में उपल वृष्टि से क्षति

\*\*२--श्री गौरीशंकर राय (जिला बिलया)--क्या सरकार को ११ मार्च की संध्या को हुई बिलया जिले में भीषण वर्षा एवं उपल वृष्टि की सूचना है ?

राजस्व उपमन्त्री (श्री महावीर प्रसाद शुक्ल)—बिलया जिले में ११ मार्च की संध्या को हल्की वर्षा तथा सदर व बासडीह तहसीलों में मामूली श्रोले पड़ने की सूचना मिली है।

श्री गौरीशंकर राय--क्या सरकार को सूचना मिली है कि इस वर्षा के कारण मटर, चना, मलूर, प्याज, ग्रालू, की फसल करीब-करोब १२ ग्राना ग्रीर ग्राम तौर पर रबी की फसल की द ग्राना क्षति हुई है ?

न्याय मन्त्री (श्री हुकुमसिंह विसेन) — नुकसान को साने से ६ ग्राम के विस्थान हुन्या।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीबाल (जिला ग्रागरा)—क्या सरकार बतलाने की कृपा करेगी कि उसने हाल में इस बात की सूचना मंगाई है कि किन-किन जिलो में श्रोला पड़ा है ग्रीर उनमें वर्षा स कहा-कहा श्रोर फितनी-कितनी हानि हुई हैं?

श्री महावीरप्रसाद शुक्ल--जी हां, ऐसी सूचना मंगाबी गयी है कुछ जिलों से।

श्री गौरीशंकर राय--क्या यह सही है कि बिलया में मालगुजारी श्रीर तकावी की वसूली जोरों से हो रही है ?

श्री हुकुमसिंह विसेन--जिन हिस्सों में प्रधाने से प्रधिक नुकसान हुआ वहा रोक दी गई है ग्रोर बिकया हिस्सों में वसूली हो रही है।

### तारांकित प्रश्न

[उत्तर प्रदेश विघान सभा की प्रक्रिया तथा कार्यसंचालन नियमावली, १६५८ के नियम ३० (४) के म्रन्तर्गत प्राथिकता दिये गये तारांकित प्रक्षन ।]

\*१-२--श्री कैलाशप्रकाश (जिला मेरठ)---[१२ ग्रप्रैल,१६६० के लिथे स्थगित किये गये।]

\*३-४--श्री गौरीशंकर राय--[१२ श्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।]

\*५-६--श्री रणबहादुर्रासह (जिला बस्ती)--[१२ श्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।]

श्री उपाध्यक्ष--माननीय निर्माण मत्री जी ने प्रार्थना की हं कि वे श्राज उपस्थित नहीं रह सकेंगे इस कारण उनके प्रक्त १२-४-६० के लिये स्थिगत कर दिये जाते हैं।

श्री गौरीशंकर राय — उपाध्यक्ष महोदय, नियम ३६ मे है कि जब कोई विशेष भ्रथवा भ्रप्रत्याशित परिस्थिति हो तभी भ्रध्यक्ष प्रश्नों को भ्रागामी दिन के लिये स्थिगत करेगे, तो मै जानना चाहता हूं कि उनकी भ्रतुपस्थिति का ऐसा कारण क्या है?

श्री उपाध्यक्ष--वे लिख रहे है कि "मुझे भारत सरकार की एक श्रावश्यक मीटिंग मे २१ तरीख को दिल्ली जाना है। संभव है कि उसकी बैठक २२ तारीख को भी चलें ....। अतः श्रसमर्थ हूं।" यह श्रो गिरवारी लाल जी ने लिखा है।

### [२२ मार्च, १६६० के लिए निर्धारित तारांकित प्रक्न]

\*१-२-श्री-रामसुन्दर पांडेय (जिला श्राजमगढ़)--[१२ श्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।]

\*३-४--श्री ग्रब्दुल रऊफ लारी (जिला गोरखपुर)--[१२ श्रप्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।]

\*५-६-श्री भुवनेशभूषण शर्मा (जिला इटावा)--[१२ श्रप्रैल, १६६० के लिये स्थागित किये गये।]

\*७-६-श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी (जिला बस्ती)--[हटा दिये गये। ]

### वन यातायात विकास योजना

\*१०—श्री मदन पांडेय (जिला गोरखपुर)—क्या सरकार कृपया बतायेगी कि राज्य में जंगल का कितना रकबा ऐसा है जिसका उपयोग श्रावागमन के साधनों बिना नहीं हो पा रहा है ? क्या सरकार ने उपरोक्त प्रकार के भूभागों के श्रावागमन के साधनों को दुरुस्त करने के लिये कोई योजना बनाई है ?

संसदीय विषयक उपमन्त्री (श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट)—इस राज्य मे जंगल का २,३८४ वर्गमील रकबा ऐसा हे जिसका उपयोग श्रावागमन के साधनों के बिना नहीं हो पा रहा है। "वन यातायात का विकास" नामक एक योजना द्वितीय पंचवर्षीय योजना के श्रन्तर्गत कार्यान्वित की जा रही है जिसका उद्देश्य वन क्षेत्र मे यातायात के साधनों का विकास करना है। ऐसी ही एक दूसरी योजना प्रस्तावित तृतीय पंचवर्षीय योजना, जो कि इस समय विचाराधीन है, के श्रन्तर्गत रखने का विचार है।

श्री मदन पांडेय—व्या माननीय मंत्री जो बतलाने की छुपा करेगे कि तृतीय पंचवर्षीय योजना के लिये इन श्रनयूटिलाइज्ड वन विभाग को जिन सड़कों को बनाने की योजना विचाराधीन है, उससे क्या यह मुमिकन हो सकता है कि तीसरी पंचवर्षीय योजना के श्रन्तर्गत यह सारा वन हम श्राने इस स्टेट के लिये इस्तेमाल कर सके?

वित्त मंत्री (श्री सैयद श्रली जहीर)—बात यह है कि तीसरी पंचवर्षीय योजना तो श्रभी फाइनल हुई नहीं है नहम को श्रभी यही मालूम है कि कितना पया उस काम के लिये हमें मिलेगा। जाहिर है कि जितना रुपया मिलेगा, उससे ज्यादा से ज्यादा जितनी मील सड़के बन सकेगी, बनायी जायेगी।

श्री गोविन्दिसिंह विष्ट (जिला ग्रत्मोड़ा)—क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना में जो सड़के वन विभाग की बनाने से बाको रह गर्यी, मौजूदा वित्तीय वर्ष में कोई विशेष एफर्ट वे करने की कृपा करेंगे, जिससे ग्रियक से ग्रियक सड़कें बन जायं?

श्री सैयद श्रली जहीर—उपाध्यक्ष महोदय, सूरत यह है कि सन् ५७-५८ में १२६ मील सड़क बनने को थी जब कि १५६ मील सड़क बन गयी है, सन् ५८-५६ में २०६ मील सड़क बनने को थी जिसमें से २०६ मील बन गयी है श्रीर १६५६-६० में २४० मील बनने को थी श्रीर उम्मीद है कि २४० मील बन जायगी श्रीर यह भी उम्मीद है कि सन् ६०-६१ के लिये जो २५० मील बनाने का लक्ष्य है उसे भी पूरा कर दिया जायगा।

श्री मदन पांडेय—क्या मानतीय मंत्री जी बताने की फुषा करेगे कि जो सड़क बनाने की योजना तीसरी पंचवर्षीय योजना के श्रन्तर्गत विचारार्थीन है उसमे ऐसी सड़क बनाने की योजना भी विचारार्थीन है जिसका वन विभाग के साथ-साथ सर्व साधारण भी उपयोग कर सके?

श्री सैयद श्रली जहीर—उपाध्यक्ष महोदय, बन विभाग तो श्रपने इस्तेमाल के लिये ही सड़कें बनाता है। यह श्रीर बात है कि कहीं-कहीं जहां बहुत ज्यादा जरूरत होती है बहां पर कुछ को पब्लिक के लिये भी खोल देते हैं। लेकिन जब वह सड़क बनाता है तो इसी खयाल से कि वन विभाग का काम कम से कम उससे निकल सके।

श्री रामायणराय (जिला देवरिया)—क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि वनों के लिये जितनी सड़कें बननी है उनके लिये कुल कितना खर्चा होगा और कितने मील लम्बी सड़कें बनायी जायेंगी, इसका कोई लेखाजोखा श्रापके पास है?

·श्री उपाध्यक्ष--वे कह चुके है कि ग्रभी निविचत नहीं है कि इसके लिये कितन। पया केन्द्रीय सरकार से मिलेगा।

श्री गोविन्वसिंह विष्ट—क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृषा करेंगे कि क्या यह सही है कि जो सड़कों का माइलेज कवर किया गया है उनमें कुछ ऐसी सड़कों थीं, जो मजूर नहीं थीं, वे तो बन गयीं ख्रौर कई मंजूरशुदा सड़कों नहीं बन पायीं, तो यह देखते हुए कि ये सड़कों छोरिजिनल एस्टीमेट से बहुत कम रुपये में बन गयीं, वे पुरानी मंजूरशुदा सड़कों को बन-वाने की कृषा करेंगे ?

श्री उपाध्यक्ष-इसके लिये ग्रलग से नोटिस दीजिये।

\*११-शो मदन पांडेय-[१२ ब्रप्रेल, १६६० के लिये स्थगित किया गया।]

\*१२-१४--श्री प्रतापसिंह |(जिला नंनीताल)--[१२ अप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।] प्रश्नोत्तर ६२७

\*१५—-श्री **ऊदल** (जिला जाराणसी)—-[१२ श्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया । ]

\*१६-१७--श्री जगन्नाथप्रसाद (जिला खीरी)--[१२ श्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।

\*१८-१६--श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)—[१२ ग्रप्नंल, १६६० के लिये स्थगित क्ये गये । ]

\*२०-२२—श्री गनेशीलाल चौधरी (जिला सीतापुर)—[१२ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।

# गोरखपुर वन खंड में निर्माण कार्य तथा सस्ती लकड़ी

\*२३—श्री गौरीराम गुप्त (जिला गोरखपुर)—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि १९४६-४७, १९४७-४८ में वन विभाग, गोरखपुर ने कितने व्यक्तियों को सस्ती कीमत की लकड़ी दी?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट-गोरखपुर वन खण्ड में १६५६-५७ मे ६७ व्यक्तियों को तथा १६५७-५% में ७ व्यक्तियों को सस्ती कीमत की लकड़ी दी गई।

\*२४—श्री गौरीराम गुप्त—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि वन विभाग, गोरखपुर की तरफ से १९४२-४३, १९४३-४४ व १९४४-४४ में कितने पुल-पुलियों का निर्माण किस-किस स्थान पर किया गया ?

श्री नरेंन्द्रसिंह विष्ट—गोरखपुर वन खंड में १६५२-५३ व १६५३-५४ में कोई पुल-पुलियों का निर्माण नहीं किया गया, परन्तु १६५४-५५ में निम्नलिखित पुल-पुलियों का निर्माण किया गया—

- (१) गुलरिया घाट पुल—यह पुल मधौलिया रेंज में बसौली—मानापुर मोटर रोड पर दो वर्षों, म्रर्थात् १६४४—४५ व १६४४—५६ में बनाया गया।
- (२) तीन पक्की पुलियां—(पहली) मधौलिया रेंज में निचलौल-मधौलिया सड़क पर, (दूसरी) निचलौल रेंज में सिंगहा ताल निचलौल-डोमा सड़क पर श्रौर (तीसरी) चौक रेंज के निर्यात मार्ग पर बनाई गई।

श्री गौरीराम गुप्त-यह जो लकड़ी दी गई है वह किस काम के लिये दी गई है?

श्री सैयद ग्रली जहीर—ग्रध्यक्ष महोदय, यह पुराना तरीका था वन विभाग का कि मुख्तलिफ किस्म की जरूरतों के लिये या कभी-कभी जब किसी को कुछ ग्रार्थिक कठिनाई होती थी या स्कूल के लिये कुछ लकड़ी पी० डी० के ऊपर दी जाती थी लेकिन वह तरीका श्रब दो साल से बन्द हैं ग्रौर श्रव नहीं दी जाती। ग्रव जिसे जरूरत हो वह खरीदे नीलाम से या ग्रौर तरीके से।

श्री मदन पांडेय—क्या इस वक्त भी लकड़ी कुछ लोगों को दी जाती है? यदि हां, ता वह किस श्राधार पर दी जाती है?

श्री सैयद ग्रली जहीर—ग्रब तो सब को नीलाम के द्वारा दी जाती है, खाली कुमायूं में बाज वक्त किसी स्कूल, यतीमखाने या ग्राश्रम के लिये सस्ते दाम पर दे दी जाती है बाकी ग्रामतौर से यह तरीका बन्द कर दिया गया है।

श्री रामसूरतप्रसाद (जिला गोरखपुर)—क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जो मुख्तिलिफ कामों के लिये लकड़ी दी गई उसमें से क्या मकान बनाने के लिये भी दी गई थी और क्या पूर्व प्रथा के श्रनुसार मकानों के लिये श्रागे भी लकड़ी वह देने जा रहे हैं? श्री संयद ग्रली जहीर--ममिकन है कि पिछले २ सालो ५६-५७ ग्रौर ५७-५८ में मकान बनाने के लिये भी दी गई हो लेकिन ग्रब यह प्रथा नही है।

श्री गौरीराम गुप्त—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि गोरखपुर जिले में जहां से वन वि ग की लकडी का नीलाम होता है वहा परगापुर घ.ट का पल बनाने की कृपा की जायगी?

श्री सैयद ग्रली जहीर—यह वही पुल है जिसके मुताब्लिक माननीय सदस्य कई बार बातचीत भी कर चुके ह लेकिन जसा कि मैने बताया था कि जगल विभाग ग्रभी उसे बनाने मे ग्रसमर्थ हे क्योंकि खर्च बहुत ज्यादा हे।

पुरन्दरपुर तथा पिचुरखी ग्राम समाजों को भूमि व जंगल देने की प्रार्थना

\*२५—श्री गौरीराम गुप्त—क्या सरकार कृपा करके बतायेगी कि गोरखपुर जिले के फरेदा तहसील के लेहरा स्टेट के श्रन्तर्गत परगापुर घाट व हडवा घाट श्रोर छिटपुट पेड छोटे जगलो को श्रौर करीब के बजर भूमि को जो लेहरा स्टेट के कब्जे मे जमीदारी उन्मूलन के पहले थी श्रौर श्रब वन विभाग के पास है उसे उसी जिले वह तहसील के ग्राम समाज पुरन्दर-पुर श्रोर पिचुरखी को वापस करने को प्रश्नकर्ता ने ३० मार्च, १६५६ को वन मत्री को लिखा था? यदि हा, तो सरकार को वापस करने मे कौन सी श्रापित है?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट—जाहा, इन जंगलों को ग्राम समाज को दे देना प्रदेश के श्रौर जगलों के हित में न होगा।

श्री गौरीराम गुप्त—वहा पर जंगल को छोड़कर, जिस ताल की मछली का ठेका विया जाता है श्रौर जहा कोदो की खेती होती है, उसको गावसमाज को वापस करने का सरकार विचार कर रही है ?

श्री सैयद ग्रली जहीर-इस वक्त तो ऐसा कोई विचार नहीं है।

\*२६—श्री विश्रामराय (जिला ब्राजमगढ़)—[१२ ब्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया । ]

१२७—श्री देव कीनन्दन विभव (जिला ग्रागरा)—[मुख्य मंत्री से सम्बन्धित सातवे गरवार के लिये प्रदन ४४ के ग्रन्तर्गत स्थानान्तरित किया गया।

\*२८—श्वी देवकीनन्दन विभव—[१२ झप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया । ]

\*२६--श्री बंशीधर शुक्ल (जिला खोरी)--[१२ ग्राप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया ।]

\*३०—३१**—श्री नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ** (जिला श्रलीगढ़)——[१२ श्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।

\*३२—श्री खुशीराम (जिला ग्रल्मोड़ा)—[१२ ग्राप्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किया गया ।]

\*३३-३५—राजा वीरेन्द्रशाह (जिला जालौन)—[१२ भ्रप्रैल, १६६० के लिये स्थिगित किये गये । ]

\*३६-शि देवकीनन्दन विभव--[१२ ग्रप्नैल, १६६० के लिये स्थिगत किया गया ]

- \*३७-३८-श्री झारखंडेराय (जिला श्राजमगढ़)--[१२ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये ।]
- \*३६—श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल--[१२ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया । ]
- \*४०--श्री मुरलीघर (जिला ग्राजमगढ़)--[१२ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया । ]
- \*४१—श्री रघुवीरसिंह (जिला एटा)—[१२ म्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया।]
  - \*४२-श्री राजनारायण-[१२ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया।]
- \*४३-४५-श्री रामिककर (जिला प्रतापगढ़)--[१२ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।
- \*४६-४८--श्री मलिखानसिंह (जिला मैनपुरी)--[१२ श्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये । ]
- \*४६-५१-श्री मुदामाप्रसाद गोस्वामी (जिला झांसी)--[१२ श्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।]
- \*५२—श्री ताराचन्द माहेश्वरी (जिला सीतापुर)—[१२ श्रप्रैल,१६६० के लिये स्थिगत किया गया ।]
- \*५३-५५-श्री रामदास स्रार्य (जिला मुजफ्फरनगर)—[म्राठवे गुरुवार के लिये प्रक्त १२२-१२४ के स्रन्तर्गत स्थानान्तरित किये गये।]

## रजमड़िया भगवन्तपुर में जंगल कटवाने की शिकायत

- \*४६—श्री रूमिंसह (जिला ग्राहजहांपुर)—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि क्या रजमुड़िया भगवन्तपुर, जिला पीलीभीत मे श्रिधकारियों द्वारा जंगल काटने के सम्बन्ध में २०-१-४६ को व ११-२-४६ को वित्त मंत्री को ग्रिकायत प्राप्त हुई थी?
- श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट—जी हां, दिनांक २० जनवरी, १६४६ तथा २१ फरवरी, १६५६ को दो श्विकायते प्राप्त हुई थीं किन्तु ११ फरवरी, १६४६ को जैसा कि प्रश्न में कहा गया है, कोई श्विकायत प्राप्त नहीं हुई।
- \*২৩--প্ৰী रूर्मीसह--यदि हां, तो श्रब तक क्या जांच की गई ग्रौर क्या परिणाम
- श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट—इन शिकायतों पर छानबीन की गई परन्तु वे सब निराधार पाई गईं।
- श्री रामस्वरूप वर्मा (जिला कानपुर)—मंत्री जी बतायेंगे कि शिकायतों की जांच किस ग्रिधकारी ने की ?
  - श्री सैयद ग्रली जहीर—डीं० एफ० ग्रो० ने की थी।
- श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या यह सही है कि जिन पदाधिकारियों के खिलाफ शिकायत थी पत्रों में, उन्हीं से यह जांच करायी गई?

श्री सैयद श्रली जहीर—शिकायत थी रेंज श्रफसरों के खिलाफ श्रौर मुकामी फारेस्टर वगैरह के। जांच की डी० एफ० श्रो० ने।

श्री शिवप्रसाद नागर (जिला खीरी)—क्या मंत्री जी बतायेंगे कि कि जो शिकायते उनको प्राप्त हुई है, उनमें मुख्य-मुख्य क्या है ?

श्री सैयद श्रलीजहीर—कुछ दरख्तों के जंगल नाजायज तौर से काटे गये। नाजायज तरीके से जो दरख्त काटे गये उसके लिये श्रिषकारियों ने कुछ रुपया ले लिया था। गांववालों को जिस लकड़ी के पाने का हक था वह उनको नहीं दो गई। श्रीर चौथी शिकायत यह थी कि बावजूद इसके कई दफा कहा गया लेकिन इन मामलात के ऊपर कोई जांच नहीं हुई। तो इन चारों शिकायतों के ऊपर डी० एफ० श्रो० ने फिर से तहकीकात की जो निराधार पायी गई।

श्री रूमिंसह—क्या यह सही है कि रेंजर से जो लोग वोस्ती रखते है उनको वह बगैर पैसे के लकड़ी दे दिया करते है ?

श्री सैयद श्रली जहीर—यह तो खुली बात है श्रगर सरकार को ऐसी इत्तिला होती तो हम यकीनन रेंजर के खिलाफ ऐक्शन लेते। हमारे पास ऐसी कोई इत्तिला नहीं है।

श्री राजनारायण—जिन नन्हूलाल जी ने शिकायती-पत्र भेजा था श्रीर को जांच करने वाले श्रफसर गये थे उन्होंने श्री नन्हू लाल से इस बात की जानकारी की थी कि किस श्राधार पर उन्होंने शिकायत की ?

श्री सैयद श्रली जहीर—उनको बो बफा कहा गया कि वह तशरीफ लायें श्रीर सबूत वें लेकिन बोनों बफा उन्होंने श्राने से इंकार किया।

श्री शिवप्रसाद नागर—सबूत में शिकायत करने वाले को न बुलाकर क्या किसी जांच करने वाले श्रिषिकारी ने उस सबूत को देखने का कब्ट किया है जो कटे हुए दरस्त के ठूंठ वहां पर मौजूद है ?

श्री सैयद श्रली जहीर—मंने तो बता दिया कि जो शिकायत करने वाले थे उनसे कहा गया कि वह श्रा करके उनको साबित करने की कोशिश करें। लेकिन कोई नहीं श्राया। उसके श्रलावा डी० एफ० श्रो० जो खुद तहकीकात कर सकता या वह का श्रीर वह शिकायतें सही नहीं पायी गईं।

श्री राजनारायण—क्या सरकार को जानकारी है कि श्री नन्तूलाल जी स्वतः यहां पर श्राये थे श्रीर उनकी शिकायतों को मैने स्वतः मंत्री जी से कहा था, मेरा पत्र स्वतः मंत्री जी की सेवा में गया रहा होगा ७-४-५६ को......

श्री उपाध्यक्ष-प्राप मंत्री जी से पूछ लीजिये कि ऐसा हुन्ना कि नहीं, नन्हलाल जी आये थे राजनारायण जी के साथ, मंत्री जी ?

श्री सैयद ग्रली जहीर--मुझे याद नहीं है।

श्री राजनारायण—श्री नन्हू लाल जी ग्राये थे, मंत्री जी से बातें की थीं ग्रीर मंत्री जी से ७-४-५६ को मिलने गये थे......

श्री उपाध्यक्ष-वह कह रहे हैं कि उन्हें याद नहीं। ध्रव इसकी तो कोई रेमेडी नहीं है।

श्री राजनारायण—वे मिलने गये ग्रौर मंत्री जी की शिकायती-पत्र भेजा गया । तो मंत्री जी कैसे कहते हैं कि जब नन्ह्रलाल जी को बुलाया गया तो वह नहीं ग्राये ? प्रक्नोत्तर ६३१

श्री उपाध्यक्ष—मेरा खयाल है श्राप श्री नन्हू लाल जी को फिर से मंत्री जी के पास भेज दीजिये।

श्री गोविन्दिसिंह विष्ट—बुलाने के लिये जो समन्स भेजे गये उसके बाद भी वह नहीं श्राना चाहते थे, ऐसी कोई तहरीर है श्रीर गांव सभापित की या श्रन्य किसी व्यक्ति की उस पर गवाही है ?

श्री सैयद श्रली जहीर—उपाध्यक्ष महोदय, इसकी तो मुझे इत्तिला नहीं है कि किस तरह से बुलाया गया उनको लेकिन जाहिर है कि नन्हूलाल जी को लोग श्रच्छी तरह से जानते हैं। उनको इत्तिला दी गयी श्रीर दो दफा उनको बुलाया गया श्रीर वे नहीं श्राये श्रीर उसके साथ ही साथ हमारे यहां यह भी रिपोर्ट श्राई है कि यह पहली दफा नहीं है, पहले भी वे जंगल के श्रफसरों के खिलाफ इस तरह की शिकायते भेज दिया करते थे श्रीर इसकी बहुत पुरानी रिपोर्ट सन् ४८ की है, उसमें भी उनके मुताल्लिक उन्होंने ऐसी शिकायत की थी श्रीर जब तहकीकात की गयी तो साबित नहीं हुई। तो वे इस तरह से शिकायतें भेजा ही करते है।

श्री उपाध्यक्ष-गोविदसिंह विष्ट जी यह पूछ रहे हैं कि क्या जरिया था नोटिस तामील करने का ?

श्री सैयद ग्रली जहीर—इसकी सूचना नहीं है कि इस पर्टीकुलर मामले में किस तरह से उनको इत्तिला दी गयी।

ग्राचार्य दीपंकर (जिला मेरठ)—माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि उन्होंने जो ग्रपने वक्तव्य में कहा कि वे शिकायतें कर दिया करते हैं तो उन्होंने पहले जो शिकायतें को क्या उनका भी यही नतीजा निकला जो श्राज शिकायतें करने का नतीजा निकला हैं ?

श्री सैयद श्रली जहीर—जी हां, सितम्बर, सन् ४८ का नोट है जिसमे नन्हुलाल जी ने इस तरह की शिकायत की थी। उसे मैं पढ़ कर सुना दूं :---

"As Nanhoo Lal of Pilibhit is in the habit of sending petitions off and on making false allegations against the forest staff. He is a history-sheeter and was fined several times for illicit fillings and illicit export. His previous petitions were deposited as noted on page 2. This may also be deposited."

यह सितम्बर, सन् ५८ में था लेकिन बावजूद इसके कि शिकायत ग्राई मैने उसकी इंक्वायरी कराई ग्रीर को नतीजा है उसे मैने सदन के सामने पेश कर दिया।

श्री राजनारायण—उपाध्यक्ष महोदय, ग्राप ग्राज्ञा दें तो में भी पढ़ दूं। क्या सरकार को यह मालूम है कि श्री नन्ह लाल जी ने ७-४-५६ को माननीय मंत्री, वन विभाग, को यह पत्र लिखा है " महोदय, में ग्रापसे १२ फरवरी, को पीलीभीत वन विभाग में व्याप्त गड़- बड़ी व श्रष्टाचार तथा घांघली व वन के गरीब निवासियों की परेज्ञानियों के सम्बन्ध में श्री राम सिंह जी एम० एल० ए० के साथ मिला था ग्रीर इससे सम्बन्धित समस्त बातें बताई थीं?

श्री उपाध्यक्ष—में माननीय मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि श्रब भी उनको याद श्रा रहा है कि वे मिले थे या नहीं ?

श्री सैयद ग्रली जहीर—मुझ से इतने ग्रादमी मिलते है कि मुझे बिलकुल याद नहीं है कि मिले थे या नहीं।

\*५८-श्री यमुना सिंह (जिला गाजीपुर)-[१२ ग्रग्नैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया ।] प्रह—६१—श्री राजेन्द्रसिंह यादव (जिला फर्रेखाबाद)—[१२] अप्रैल,र्रृ१६६० के लिये स्थगित किये गये । ]

\*६२--श्री लक्ष्मणराव कदम (जिला झासी)--[१२ श्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया ।]

५६३ श्री लक्ष्मणराव कदम [हटा दिया गया।]

\*६४-श्री रामस्वरूप वर्मा-[१२ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्यगित किया गया।]

\*६५-६६-श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल [१२ श्रप्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।]

न्६७--श्री राजाराम शर्मा (जिलाबस्ती)--[१२ श्रप्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किया गया।]

\*६८-श्री लोकनाथरिंह (जिला वाराणसी)—[दसर्वे बुधवार के लिये प्रश्न ४४ के श्रन्तर्गत स्थानान्तरित किया गया । ]

\*६९-७०-श्री मुक्तिनाथराय (जिला ग्राजमगढ़)--[१२ म्रप्रैल, १९६० के लिये स्थिगत किये गये।]

\*७१--श्री राजनारायण--[१२ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया।]

\*७२-७३--श्री बालकराम (जिला शाहजहांपुर)---[१२ श्रर्शल, १६६० के लिये स्थिगित किये गर्ये । ]

\*७४-श्री शिवप्रसाद नागर-[१२ भ्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया।]

\*७५-श्री सुखलाल (जिला इटावा)-[हटा दिया गया।]

\*७६-७७--श्री गज्जूराम (जिला झांसी)--[१२ श्रत्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।]

\*७८-८०-श्री भजनलाल (जिला इटावा)—[१२ अप्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।]

\* द१-द२-श्री चन्द्रजीत यादव (जिला भ्राजमगढ़)--- १२ भ्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।

\*८३८८४—श्री त्रिलोकीसिंह (जिला लखनऊ)—[१२ श्रप्रैल, १९६० के लिये स्थगित किये गये । ]

\*द५-श्री काशीप्रसाद पांडेय (जिला सुल्तानपुर)-[१२ ध्रप्रेल, १६६० के लिये स्थागत किया गया ।

\*=६-=७-श्री रामदीन (जिला मैनपुरी)--[१२ म्रप्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।]

\*प्रप्रमा दीपनारायणमणि त्रिपाठी (जिला देवरिया)—[१२ भ्रप्नेल, १६६० के लिये स्थगित किया गया ।

\*दह-श्री भूपिकशोर (जिला एटा)-[१२ अप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया ।]

\*ह०-ह१--श्री ग्रभयराम यादव (जिला इटावा)---[१२ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये । ] प्रश्नोत्तर ६३३

\*৪२-৪३--श्री भगवतीसिंह विशारद (जिला उन्नाव)--[१२ श्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।]

## पीड़ित जनता संघ, कोटद्वार की मांगें

\*६४—श्री राजनारायण—क्या सरकार के पास पीड़ित जनता संघ, कोटद्वार (गढ़वाल) की ग्रोर से फरवरी, ६० के प्रथम सप्ताह में भूमि हीनों को बसने के लिये फालतू जमीन देने का कोई प्रस्ताव ग्राया है? यदि हां, तो उस पर क्या कार्यवाही हो रही है?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट--इस विषय पर सरकार के पास फरवरी १६६० के तीसरे सप्ताह में एक प्रस्ताव ग्राया है ग्रौर विचाराधीन है।

श्री राजनारायण--क्या सरकार कृपया बतायेगी कि उस प्रस्त व में जमीन के श्रितिरिक्त ग्रौर क्या-क्या मांगें मुख्य-मुख्य थीं ?

श्री सैयद श्रली जहीर—पह प्रस्ताव मुझे श्री हरीराम मिश्र, 'चंवलजी' हैं कोई, उन्होंने भेजा है श्रौर वह गढ़वाल में, जो भूमिहीन हैं उनके बसाने के बारे में कुछ तदबीर की जाय इस संबंध में है। उसी पर विचार हो रहा है।

श्री उपाध्यक्ष--इसके ग्रलावा भी कुछ ग्रौर मांग हं क्या?

श्री सैयद ग्रली जहीर--जी नहीं। खास मांग यही है।

श्री राजनारायण—क्या सरकार को इस बात की जानकारी है कि वहां पर कितने भूमिहीन व्यक्ति हैं थ्रौर कितनी जमीन फालतू पड़ी है जिस पर वह बसाने की मांग कर रहे हैं ?

श्री सैयद श्रली जहीर—उपाध्यक्ष महोदय, फालतू जमीन का सवाल नहीं है, कोई जमीन फालतू नहीं है। लेकिन सवाल यह है कि कितने भूमिहीन वहां पर बसाये जा सकते हैं, उसके लिये विचार हो रहा है श्रौर जब उस पर विचार हो जायेगा तो उसका जवाब दिया जा सकेगा।

श्री राजनारायण—पिंद जमीन फालतू बिलकुल नहीं है तो क्या सरकार इस बात पर भी विचार कर रही है कि किसी दूसरे की जमीन, जिस पर कि वे लोग खेती वगैरह करते हों, उनको दे दी जाय ग्रौर उस पर उनको बसा दिया जाय ?

श्री सैयद ग्रली जहीर—उपाध्यक्ष महोदय, यही सब मामला तो ग्रभी विचाराबीन है कि ग्राप किसको फालतू कह सकते हैं ग्रौर किसको नहीं कहते हैं। यही तो देखना है।

\*६५--श्रीमती सरस्वतीदेवी शुक्ल (जिला गोंडा)---[स्थगित किया गया।]

\*६६--श्री ब्रजनारायण तिवारी (जिला देवरिया)--[स्यगित किया गया।]

\*১৩-১৯- श्री होरीलाल यादव (जिला फूर्फखाबाद)--[स्थगित किये गये।]

\*१०१-१०२--श्री बेचनराम गुप्त (जिला वाराणसी)--[स्थगित किये गये।]

\*१०३--श्री नत्थूसिंह (जिला बरेली)---[स्यगित किया गया।]

बिक्री-कर विभाग के बर्खास्त कर्मचारियों की पुर्नीनयुक्ति

\*१०४--श्री चिरंजीलाल जाटव (जिला एटा)--क्या यह सही है कि बिक्री-कर विभाग में सन् ५८ में १४ ग्रधिकारियों की नौकरी लोक सेवा श्रायोग की सिफारिशों के श्राधार पर समाप्त कर दी गयी थीं श्रौर बाद में ८ ग्रधिकारियों को वापस ले लिया गया? क्या वित्त मंत्री बतलाने की कृपा करेंगे कि इन श्राठों को किन शर्तों पर वापस लिया गया? श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट—जी हां। श्राठ श्रिधकारियों को, जिनकी सेवायें १६५८ में समाप्त कर दी गई थीं, उनके मामलों पर फिर से विचार करने पर, सरकार के उन श्रिधकारियों पर प्रतिकूल प्रभाव डाते बिना, जिनके श्रनुसार उनकी सेवायें एक महीने की सूचना श्रावा सूचना की एवज में एक महोने का वेतन देकर, समाप्त की जा सकती है, वापस बुला लिया गया। उनको यह सूचित किया गया कि उनके काम तथा चरित्र पर दो साल तक दृष्टि रक्षवी जायगी जिसके बाद उनके नौकरी में चलते रहने के प्रश्न पर विचार किया जायगा।

\*१०५--श्री चिरंजीलाल जाटव--क्या यह सही है कि बिक्री-कर विभाग में कुछ ऐ। भी सतायक बिक्री कर अधि हारी अपने पदों पर आज भी काम कर रहे हैं जिनको लोक सेवा श्रायोग ने श्रपने अपने पद के लिये अयोग्य ठहराया? यदि यह सही है तो ऐसा क्यों किया जा रहा है?

श्री नरेन्द्र सिंह विष्ट--कुत्र प्रधि हारियों के विषय में सरकार के पास लोक सेवा भ्रायोग की सिफारिशें भ्राई है, जो विचाराधीन है। उन सिफारिशों का व्योरा देना जनहित में न होगा।

श्री चिरंजीलाल जाटव—क्या सरकार कृपा कर बतायेगी कि यह जो, सिफारिशें श्रायी है वे कब तक विचाराधीन रहेंगी?

श्री सैयद श्रली जहीर--शोध्र ही उन पर फैसला हो जायेगा।

श्री ऊदल—क्या सरकार कृपा कर बतायेगी कि वह सिफारिशें कब भेजी गयी हैं?

श्री सैयद श्रली जहीर--उपाध्यक्ष महोदय, तारीख तो इस वक्त मेरे पास नहीं है फाइल में। वह में यदि माननीय सदस्य मुझ से पूछेंगे तो बाद को बता बूंगा।

श्री भुवनेशभूषण शर्मा—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि लोक-सेवा प्रायोग ने, जिन द व्यक्तियों को प्रयोग्य ठहराया था, उनमें क्या कमी थी?

श्री सैयद श्रली जहीर—श्रध्यक्ष महोदय, वह तो उनका जो करेक्टर रोल वगैरह था वह सब देखा गया धौर उसके बाद यह फैसला किया गया। ध्रब जो उनकी सिफारिश श्रायी है उस पर सरकार विचार कर रही है, फैसला कोई नहीं किया है।

श्री गौरीदांकर राय-क्या मंत्री जी कृपया बतायेंगे कि किस ग्राधार पर ग्रीर किन कारणों से लोक सेवा ग्रायोग ने उन लोगों को ग्रयोग्य ठहराया था ?

श्री सैयद श्रली जहीर—श्रयोग्य करार देने की मुख्तलिफ वजह होती है उनकौ एजूकेशनल क्वालिफिकेशंस, पास्ट रेकार्ड ग्राफ सर्विस, इन सब को देख कर ग्रयोग्य करार देते हैं।

श्री उपाध्यक्ष-इस मामले में क्या खास बात है?

श्री सैयद श्रली जहीर—इस मामले में कोई खास बात नहीं है। जो श्रौरों के साथ हुआ वही उनके साथ भी हुआ। इनकी पास्ट सर्विस श्रौर रेकाई डिपार्टमेंट में वेखा गया, वह श्रच्छा नहीं था। उस पर गवर्नमेंट ने ऐक्शन लिया। श्रब उनकी बोबारा सिफारिश श्रायी है तो हम बोबारा विचार कर रहे है।

कानपुर क्षेत्र में बिकी-कर कार्यालयों के कुछ चपरासियों की बहाली

\*१०६-श्री चिरंजी लाल जाटय-क्या यह सही है कि वर्तमान विकी-कर आयुक्त श्री विजयबहावुर साही के ग्राने के पश्चात् कानपुर क्षेत्र के ग्रन्तगंत विकी-कर प्रश्नोत्तर ६३५

कार्यालयों के कुछ चपरासीगण श्रपने पदों पर पुनः बहाल किये गये श्रौर उन्हें चार्ज लेने की तारीख तक का पूरा वेतन दिया गया, क्या यह पैसा सरकारी श्रादेश तारीख १३-८-५८ के श्रनुसार उन श्रिधकारियों के वेतन में से काट लिया गया जो इन चपरासीगण को निकालने के लिये उत्तरदायी थे?

श्री नरेन्द्र सिंह विष्ट--जो हां, यह सही है कि श्री विजयबहादुर साही, मौजूदा क्रिमिइनर सेल्स टैक्स के श्राने के बाद कानपुर रेंज के १५ चपरासियों को ग्रपने पद पर बहाल किया गया श्रीर उनको निकाल जाने की तारीख से बहाल होने तक की तारीख तक का वेतन व भत्ता दिया गया । चूंकि उन चपरासियों को निकाल जाने का ग्रादेश किसी गलतफहमी की वजह से दिया गया था, इसलिए संबंधित ग्रिधिकारियों से कोई वसूली नहीं की गई ।

श्री चिरंजीलाल जाटव—क्या मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि इन चपरासियों की क्या गलती थी, जिसकी वजह से निकाले गये श्रीर फिर क्यों रखे गये ?

श्री सैयद श्रली जहीर—ये इस वजह से निकाले गये कि रिपोर्ट यह थी कि इनका काम बहुत श्रच्छा नहीं है, तो बजाय इसके कि इनके अपर कोई डिसिप्लिनरी ऐक्शन लिया जाय इनको १ महीने का नोटिस देकर श्रलग कर दिया गया । एक श्रार्डर यह गया हुश्रा था सेल्स टैक्स किमइनर का हालांकि वह ३ वर्ष पुरान थ, लेकिन उस ग्रार्डर में यह था कि एक महीने का नोटिस देकर श्रलग किया जा सकता है, लेकिन जब उन्होंने श्रपील की तो मालूम हुश्रा कि ऐप्वाइंटमें डिपार्टमेंट का एक इंस्ट्राशन यह है कि श्रगर एक टेम्पोरेरी श्रादमी श्रसें से काम कर रहा है श्रौर उसको निकालने की जरूरत हो श्रौर श्रगर उसके खिलाफ कोई खास बात न हो तो इस तरह से निकालना मुनासिब नहीं है। सेल्स टैक्स किमइनर ने कहा कि शायद उस इंस्ट्रक्शन पर अयाल नहीं किया गया श्रौर यह ऐक्शन गलत हुश्रा, तो फिर उनको रेस्टोर किया गया श्रौर फिर वह काम कर रहे है।

\*१०७-१०८--श्री रामस्वरूप वर्मा--[१२ ग्राप्रैज, १६६० के न्विये स्थिति किये गर्थे ]

\*२०६-१११--श्री शिवराजबहादुर (जिला बरेली)--[१२ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थिति फिये गये।]

\*११२--श्री देवकीनन्दन विभव--[१२ म्रश्रेत १६६० के लिये स्थगित किया गया ।]

\*११३--श्रीमती सरस्वतीदेवी शुक्ल--[१२ श्रत्रेत्र, १६६० के लिये स्थिगत किया गया ।]

\*११४-११५--श्री ग्रमरनाथ (जिला गोरखार)--[१२ भ्रप्रेल, १६६० के लिये स्यिगत किये गये ।]

\*११६-११७--श्री मुक्तिनाथराय--[१२ प्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।]

\*११८—-**कुंवर श्रीपार्लासह** (जिला जौनपुर)——[१२ ग्रद्रैल, १६६० के लिये स्थिगित किया गया।]

\*११६-१२०--श्री नारायणदत्त तिवारी (जिला नैनीताल)--[१२ श्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।]

\*१२१—श्री गनेशचन्द्र काछी (जिला मैन्युरी)—[१२ स्रव्रैल, १६६० के लिये स्थिगित किया गया।]

\*१२२-१२३--श्री मोहनलाल वर्मा (जिला हरवोई)--[१२ प्रश्रैल, १९६० के लिये स्थगित किये गये।]

## बांदा वन खंड में तेंदू की पत्ती का नीलाम

\*१२४--श्री जगपतिसिंह (जिला बांदा) --क्या वित्त मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि बांदा डिवीजन वन विभाग में बीड़ी के लिये तेंद्र के पत्तों के नी लाम से १६५७-५८ व १६५६ में ग्रलग-ग्रलग हर साल कितन: ग्रामदनी हुई ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट---१६५७-४८ में ४,२६,३२२ रुपये श्रौर १६५८-५६ में १,४३,४६५ रुपये।

भी जगपतिसिंह—पहले १६५६-५७ के नीलाम के मुकाबले में इस बार चौथाई कीमत श्रायी जंगल की, इसका कारण क्या है ?

श्री सैयद ग्रली जहीर—यह तो नीलाम की बोलियों के ऊपर होता है। इस साल शायद कुछ खराब हो गये थे पत्ते या जो ख़रीदार थे उनके पास पहले का कुछ माल बचा हुआ था। लिहाजा उसकी बोली कम ग्राई ग्रीर उसी पर नीलाम किया गया।

श्री जगपतिसिंह — क्या यह बात मंत्री जी को क्यात है कि भूतपूर्व जमींदारों के नाजायज दबाव के कारण जंगल के ठेकेदारों ने नीलाम में बोली कम बोली ?

श्री उपाध्यक्ष-इसके लिये ब्रापको फिर से नोटिस बेनी पड़ेगी।

\*१२५--श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी---[१२ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया 1]

\*१२६-१२८--श्री चन्द्रबली शास्त्री ब्रह्मचारी (जिला ग्राजमगढ़)--[१२ ग्रग्रेल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।]

\*१२६--श्री गुप्तारसिंह (जिला रायबरेली)--[१२ श्रव्रंल, १६६० के लिये स्थिगित किया गया।]

मैलानी जंगल का हैप्रेस गोदाम

\*१३०-श्री मञ्चालाल (जिला खीरी) (भ्रनुपस्थित)--क्या सरकार को पता है कि मैलानी जंगल में हैं प्रेस गोदाम के लिये वन विभाग ने गत, वर्ष जो रूपया स्वीकार कर लिया था, वह हैं प्रेस के बजाय किसी भ्रन्य कार्य में खर्ज किया गया? यदि हां, तो किस कार्य में और किसके भ्रावेश से तथा कितनी भनराशि खर्च की गई?

भी नरेन्द्रसिंह विष्ट—(१) जी नहीं। (२) प्रक्त नहीं उठता।

श्री गोविन्दसिंह विष्ट--क्या माननीय मंत्री बतलायेंगे कि इस विषय में अधिकारियों को तथा सरकार को शिकायतें भेजी गयीं? यदि हां, तो वे क्या-क्या थीं?

श्री सैयद श्रली जहीर---उपाध्यक्ष महोदय, श्रव्वल तो मुझे शिकायत की इत्तिला नहीं है, लेकिन इसमें श्रव जब सवाल श्राया तो इसकी इंक्वायरी की गयी श्रीर ज्ञात हुश्रा कि जो रुपया, जिस काम के लिये दिया गया था, वह उसी पर सर्फ किया गया ।

श्री शिवप्रसाद नागर--मैलानी में हैप्रेस गोदाम किस जगह बना हुआ है स्रोर बना है तो वह कब तैयार हुआ ?

श्री सैयद ग्रली जहीर--में ठीक से नहीं जानता। वैसे मेरे खयाल से मैलानी में ही बना होगा।

प्रश्नोत्तर ६३७

- \*१३१--श्री मन्नालाल--[१२ अप्रैल, १९६० के लिये स्थगित किया गया।]
- \*१३२--श्री सईद ग्रहमद ग्रन्सारी (जिला सहारनपुर)--[१२ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किया गया ।]
- \*१३३-१३४--श्री शिवशरण लाल श्रीवास्तव (जिला बहराइच)--[१२ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।]
- \*१३५--श्री कोतवालसिंह भदौरिया (जिला फर्रखाबाद)--[१२ ग्रंजैल, १६६० के लिये स्थिगत किया गया।]
  - \*१३६--श्री लोकनाथसिंह--[१२ श्रश्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया।]
- \*१३७--श्री जगन्नाथ चौघरी(जिला बिलया)--[१२ ग्रिप्रैल, १६६० के लिये स्थिगित किया गया।]
  - \*१३८--श्री ऊदल--[१२ म्रप्रैल, १६६० के लिये स्थागिल किया गया।]
  - \*१३६--श्री अदल--[हटा दिया गया।]
  - \*१४०--श्री रघुवीर सिंह--[१२ ब्रव्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया।]
- \*१४१—श्री भीखालाल (जिला उन्नाव)——[१२ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किया गया ।]
  - \*१४२--श्री रामसुन्दर पांडेय--[१२ ब्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया।]
- \*१४३—-श्री रामसुन्दर पांडेय—-[१३ भ्रप्रेल, १६६० के लिये प्रक्रन २६ के श्रन्तर्गत स्थानान्तरित किया गया।]
  - \*१४४-१४६--श्री ऊदल--[१२ अप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किये गये।]
- \*१४७-१४८--श्री रामस्वरूप वर्मा--[१२ ग्रजैल, १६६० के लिये स्थिगित किये गये।]
  - \*१४६-१५०--श्री प्रतापसिह--[१२ श्रद्रैल, १६६० के लिये स्थागित किये गये।]
    लीसा का संग्रह
- \*१५१—श्री देवकीनन्दन विभव—क्या सरकार कृपया बतायेगी कि उसके द्वारा गत पांच वर्षों में लासा के संग्रह में कितनी वृद्धि हुई ग्रौर ग्रागामी पांच वर्षों में कितनी वृद्धि करने का ग्रनुमान है?
- शी नरेन्द्रसिंह विष्ट विभाग द्वारा एकत्रित ग्रांकड़ों के ग्रनुसार निम्नलिखित वर्षों में संग्रहीत लीसे की मात्रा इस प्रकार है :--

वर्ष <sup>े</sup> १६५४–५५		संग्रह (मर्नो में)	
	• •	• •	३,०४,०८०
१६५५-५६	• • •	• •	३,०५,४४०
१६५६-५७	• •	• •	३,२३,२३७-
१६५७-५5	• •	• •	२,६४,७००
<b>१६</b> ५५-५९	• •	• •	メメヨ、シチ、チ

विभाग द्वारा वन क्षेत्रों से श्रिषिक लीसा निकालने के लिये प्रयत्न किये जा रहे हैं श्रीर श्रागामी पंचवर्षीय योजना में प्रतिवर्ष २ से ३ लाख मन श्रीर श्रिषक लीसा निकालने का लक्ष्य है। श्री नारायणदत्त तिवारी--क्या मन्त्री जी बतलाने की कृपा करेगे कि लीसा की वृद्धि के क्या प्रयत्न किये जा रहे हैं ग्रीर ग्रब तक जो वृद्धि हुई है उसके क्या कारण है ?

श्री सैयद स्रली जहीर—इसका मुख्य कारण तो यह है कि जंगलों में कम्युनिकेशन के रास्ते बनने जा रहे हैं। हमें उम्मीद है कि तीसरी पंचवर्षीय योजना में हम जंगलों में कई सी मील का रास्ता श्रीर बना लेंगे। बहुत से हिस्से जंगलों में एसे हैं जहां पर पहुंचा नहीं जा सकता, इसलिये लीसा, लकड़ी श्रीर दूसरी चीजो का निकालना मुमकिन नहीं है। तो श्रसली वजह यही है जिससे बराबर रेश गर बढ़ती चली जा रही है श्रीर उम्मीद है कि श्रीर बढ़ेगी।

श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या मन्त्रीजी बताने की कृपा करेंगे कि इधर पाच सालों में स्रोते की वृद्धि के लिये कितनी सड़कें बनाई गईं ?

श्री उपाध्यक्ष-इसके लिये ग्रापको ग्रलग से सूचना देनी होगी।

श्री देवकीनन्दन विभव—उपाध्यक्ष महोदय, मेरा वैषानिक प्रक्षन है। में इस बात पर श्रापकी व्यवस्था चाहता हूं कि जिसका प्रक्षन हो उसको सप्लीमेन्टरी करने के लिये प्राथमिकता देना श्रावक्यक हैं या नहीं?

श्री उपाध्यक्ष—जहां तक पहले या बाद में साली मेंटरी करने का सवाल है उसके लिये मौका तो दिया ही जाता है, लेकिन कभी कभी प्रदनों के महत्व के अनुसार विरोधी दलों के नेता प्रदन करना चाहते हैं तो उनको पहले मौका दे देते हैं। मैं समझता हूं कि यह तो प्रदनकर्ता के हित में हैं कि उनके प्रदन को इतना महत्व दिया गया और विरोधी दल के लोगों ने उसमें इतनी दिलवस्पी ली। आपको सप्लीमेंटरी करने का मौका मिलेगा, आप वंचित नहीं रहेंगे।

श्री रामस्वरूप वर्मा — क्या मंत्रीजी बतायेंगे कि लीसा की वृद्धि के लिये सड़कों के अलावा कोई श्रौर भी उपाय श्रपनायें गयें हैं ?

श्री सैयद श्रली जहीर—लीते का निकासना स्पेशलाइण्ड काम है और वहां कोग्रापरेटि 1्ज भी बढ़ाने की कोशिश हो रही है।

श्री देवकीनन्दन विभव---मुझे पूरक प्रश्न करने का ग्रवसर पहले न देने के विरोध में में सदन का त्याग करता हूं।

(श्री वेवकीनन्वन विभव सवन छोड़कर चले गये)

श्री गोविन्दर्सिह विष्ट-श्रीमन्, मेरा खयाल है कि सब लोगों को ऐसा लगता है कि जिसका मूल प्रश्न हो उसे उस बात की विशेष जानकारी होती है, तब प्रश्न पूछता है। पहले उसे ही मौका वेना चाहिये।

श्री उपाध्यक्ष—ठीक है कुछ लोगों की यह भी शिकायत है कि उसे क्यों ज्यादा मौका दिया जाता है। नेता, विरोधी दल को प्राथमिकता दी जाती है।

श्री नारायणदत्त तिवारी—इसमें कुछ मेरी भी गलती है। परम्परायह है कि नेता, विरोधी वल बहुत ही कम सवाल करते हैं। इस समय नेता, विरोधी वल की हैसियत रखते हुये मेने उसे निभाने की कोशिश की है। वरना भ्राप जानते ही है कि में कितने ग्रधिक प्रश्न पूछता हूं। भ्रापर विभव जी की शिकायत यह हो कि भ्रापने मुझे मौका विया तो में नहीं जानता लेकिन मुझे ऐसा लगा कि वह खड़े नहीं हो रहे थें।

श्री उपाध्यक्ष—मैने बता विया है कि नेता, विरोधी इस को उनके सड़ा होने पर प्राथमिकता वी जाती है।

- \*१५२-१५३--श्री लोकनाथसिह---[१२ ग्राप्रैल, १९६० के लिए स्थगित किये गये।]
- \*१५४-१५५-श्री उग्रसेन--[१२ श्रव्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।]
- \*१५६-१५७--कुंवर श्रीपालसिंह---[१२ म्रप्रैल, १६६० के लिये स्थानित किये गये ।]
- \*१४८--१५६---राजा वीरेन्द्रशाह (जिला जालीन)---[३० मार्च, १९६० के तिये प्रदन ३१--३२ के श्रन्तर्गत स्थानान्तरित किये गये।]
- \*१६०-१६१-श्री मोतीलाल श्रवस्थी (जिला कानपुर)--[१२ ब्रप्रैल, १९६० के लिये स्थगित किये गये।]
- \*१६२-१६३--श्री ब्रजनारायण तिवारी--[१२ ग्रप्रैल, १९६० के लिये स्थिति किये गये।]

## भागपुर की वन विहोन भूमि तथा छोनी चौकी जंगल के भूमिहीन मचासा शिल्पकार

\*१६४—श्री खुशीराम—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जिला नैनीताल के टनकपुर बनबसा के पास भागपुर नामक जगह वन विहीन कर के साफ किस हेतु की गई हैं ? क्या यह हरिजन भूमिहीनों को दी जायगी ? यदि हां, तो किस प्रतिबन्ध के साथ ? ग्रगर नहीं, तो क्यों ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट--सूचना एकत्र की जा रही है।

\*१६५—श्री खुशीराम—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि इसी टनक-पुर में छीनी चौकी जंगल में करीब १०० मवासा भूमिहीन शिल्पकार (हरिजन) विशेष कठिनाई के साथ वृक्षों के नीचे पड़े हुये हैं ? यदि हां, तो जब तक इनके लिये भूमि का प्रबन्ध न हो जाय तब तक उसी स्थान पर रहने का प्रबन्ध सरकार उनके लिये करेगी ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट—यह कहना सही नहीं है कि छीनी अंगल में १०० हरिजन परिवार पेड़ों के नोचे रह रहे हैं। वास्तव में श्रत्मोड़ा जिला के १०० हरिजन परिवारों ने छीनी अंगल की जमीन पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया है। सरकार उनको वहां रहने की श्रनुमति देने में श्रसमयं है, श्रौर उनको हटाने के लिये कार्यवाही की जा रही है।

श्री खुशीराम—क्या माननीय मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि उनको कहीं बसाने की भी कार्यवाही हो रही है ?

श्री सैयद ग्रली जहीर—वे चाहेंगे तो कोशिश की जायगी ।

श्री गोविन्दिसिंह विष्ट-स्या मंत्रीजी को जात है कि इन हरिजन लोगों को जिस भूमि में वे पहले ग्राबाद थे वहां से हिस्सेदारों ने निकाल दिया ग्रीर श्रब जंगल में से सरकार ने हटा दिया, ग्रीर इसके बारे में सरकार कोई कदम शीघ्र उठावेगी?

श्री सैयद ग्रली जहीर--पहली बात की तो कोई सूचना नहीं है।

श्री प्रतापसिह—क्या माननीय मंत्री जी सरकार की इस नीति को ध्यान में रक्त हुये कि भूमिहीनों को ४ एकड़ के हिसाब से भूमि दी जायगी, भागपुर जगह को जो खाली है, इन लोगों को देने पर विचार करेगे ? श्री सैयद श्रली जहीर—अंगल की सभी खमीन खाली है श्रीर श्रगर उसे देने लगें तो जंगल खत्म हो जायंगे ।

श्री बंशीधर शुक्ल--जो श्रावमी उजाड़े जा रहे हैं ये पहले से श्राबाद थे या सरकार को जंगल पहले मिले थे या उन श्रावमियों के पास जमीन पहले से जुती हुई थी ?

श्री सैयद ग्रली जहीर—ये जबरदस्ती वहां काबिज हो गये थे। पहले बहां नहीं थे।

श्री बंशीधर शुक्ल-सरकार के कब्जे में जंगल ग्राने से पहले काबिज हुये थे या बाद में ?

श्री सैयद ग्रली जहीर—यह दूसरे जिले की बात है । ये ग्रादमी सब ग्रत्मोड़े जिले के हैं । ग्रभी थोड़े दिन हुये, वहां से ग्राकर यहां ग्राबाद हो गये है ग्रीर उनकी हुटाया जा रहा है ।

\*१६६-श्री उग्रसेन-[१२ म्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया ।]

\*१६७--श्री बंशीधर शुक्ल--[१२ म्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया।]

\*१६८-श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी (जिला बस्ती)--[१२ घप्रैल, १६६० के लिये स्थिगित किया गया ।]

\*१६६—श्री रामस्यरूप वर्मा—[१२ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया ।]

\*१७०-भी रणबहाद्रेरिंसह-[१२ श्रप्नेल, १६६० के लिये रियमित किया गया ।]

संशोधित बजट मैनुग्रल की तैयारी तथा कुछ सरकारी कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि

\*१७१-श्री नारायणवत्त तिवारी-क्या सरकार क्रुपया बतायेगी कि तये बजट-मैनुग्रल को तैयार करने हेतु ग्रब तक क्या प्रगति हुई है ग्रीर वह कब तक तैयार हो जायगा ?

श्री नरेन्द्र सिंह विष्ट — संशोधित बजट मैनुग्रल का ग्रालेख्य तैयार किया जा चुका है ग्रीर महालेखापाल, उत्तर प्रदेश तथा कुछ ग्रीर संबंधित विभाग से भी इस सम्बन्ध में परामर्श किया जा चुका है, महालेखापाल ग्रादि की टीका के ग्राधार पर नियमों के परिष्कृत ग्रालेख्य की ग्रन्तिम रूप से परिनिरीक्षा (final scrutiny) की जा रही है। जैसे ही यह परिनिरीक्षा (Scrutiny) कार्य समाप्त हो जायगा नियमों को ग्रन्तिम रूप दे विया जायगा।

\*१७२-श्री नारायणदत्त तिवारी-क्या सरकार ने विसम्बर, १९४९ के प्रथम सन्ताह में कुछ कर्मचारियों के हेतु २ रुपये मासिक वृद्धि की है ? यदि हो, तो क्या सरकार बतायेगी कि उक्त वृद्धि किन-किस निविस्त कर्मचारी श्रेणियों को वी जायगी ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट-जी हां। १ नवम्बर, १६५६ से तनस्वाह में वो रुपये मासिक वृद्धि उन कर्मचारियों को दी गई है जो निम्नलिखित वेतनकर्मों में तनस्वाह पा रहे हैं:---

₹०-१-२४, २०-१-३०, २०-१/२-३०, २४-१/२-३४, २४-१/२-३०-१-३४, २४-१-३४, २४-१-४०, २४-१/२-४० । यह वृद्धि उन वर्कवारुई (work charged) कर्मवारियों की भी दी गई है जो ऐसे ही बेतन कपों में तनस्वाह पा रहे हैं। यह वृद्धि केवल ३५ रुपये तनस्वाह तक ही दी जायगी।

श्री नारायणदत्त तिवारी—क्या माननीय मंत्री जी संशोधित बजट मैनुम्रल के म्रालेख्य यानी ड्राफ्ट की मुख्य-मुख्य बाते बताने की कुपा करेंगे ?

श्री सैयद श्रली जहीर--इस वक्त मै यह बतलाने मे बिल कुल श्रसमर्थ हूं कि उसमें क्या-क्या तरमीमें हो रही हैं।

श्री नारायणदत्त तिवारी -- क्या इसमें फाइनेन्शिल ईयर को पहली ग्रिप्रैल से बदल कर पहली ग्रिक्टूबर से रखने का भी इरादा है ?

श्री सैयद ग्रली जहीर—जहां तक मुझे मालूम है, ग्रभी ऐसी कोई ोति नहीं है।

श्रीगोविन्द सिंह विष्ट -- क्या माननीय वित्त मंत्री जी फुरा करेंगे कि बजट मैनुग्रल इस प्रकार से बने जैसे बम्बई ग्रीर श्रन्य प्रान्तों में हैं, कि कितने नौकर हैं ग्रोर कितनी तनस्वाह है, बजट की पढ़ कर यह सब बाते मालून ही जावे ?

श्री सैयद श्रली जहीर—हमारो कोशिश तो यही होती है कि ज्यादा से ज्यादा जरूरी इतिला बजट के जरिये दी जाय । तरमीमें श्राने पर माननीय सदस्य जो सुझाव देगे उन पर विवार किया जायगा ।

श्री शिवप्रसाद नागर--हपारे देश का फाइनेन्शिल ईयर फसली सन् से शुरू होता है, ता क्या मंत्री जी बजटका अधिवेशन फपली सन् शुरू होने पर रखेंगे?

श्री सैयद श्रली जहीर -- मेरा खात है कि सन् के मामले में फैतला सेट्रल गवर्नमेंट को करना पड़ेगा क्योंकि एक ही सन् तमाम देश में लागू हैं। श्रलग-श्रलग सूबों में श्रलग-श्रलग सन् होने से कनप्युचन हो जायगा ।

श्री नारायणदत्त तिवारी --इस संबंध में किन-किन विभागों से परामर्श लिया गया है और क्या पिंकलक एकाउन्ट्स कमेटी ग्रीर ऐस्टीमेट्स कमेटी से भी परामर्श लिया गया है ?

श्री सैयद ग्रली जहीर--पूजतिक विभागों | ते पूछा गया, कमेटीज से नहीं ।

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी—बजट मैनुग्रल के तैयार करने में किस स्टेज पर ग्रौर किस प्रकार से सदस्यों की राय ली जायगी, जैसा कि मंत्री जी ने ग्रभी कहा था कि उनसे राय ली जायगी ?

श्री सैयद श्रली जहीर--जब भी वे कोई तजवीज देगे वह वेलकम की जायगी ।

श्री नारायण दत्त तिवारी -- क्या माननीय मंत्री जी यह बतायेंगे कि यह वृद्धि सन् ५६-५७ के बजट में दिये गये श्राह्वासन कि दो पया मासिक चौथी श्रेणी के कर्मचारियों को दिया जायगा, उसके श्रनुसार दी जा रही है ?

श्री सैयद श्रली जहीर—यह तो उन लोगों को दिया गया है जिनको ५५ मे वृद्धि नहीं मिल पायी थी । इसलिये उनके लिये यह फैसला किया गया कि उनको ५६ से दिया जाय, जनरल इन्कीमेंट के यह भ्रलावा है ।

श्री नारायणदत्त तिवारी -- कौन-कौन ऐसी श्रेणियां रह गयी थीं जिनमें ४४ का वेतनकत लागू नहीं किया जा सका, उनकी संख्या क्या है ग्रीर इस बढ़ोत्तरी से कितना खर्चा होगा ? श्री सैयद श्रली जहीर—उनकी संख्या तो इस वक्त मालूम नहीं है, लेकिन जो ग्रेड्स है वे जवाब में दिये गये है ।

श्री प्रतापसिंह—क्या यह सही है कि सन् ५६ में सरकार ने जो वायदा किया था कि फारेस्ट गार्ड स को भी यह तरक्की दी जायगी, तो ३५ तक के ग्रेड वालों को तो दिया गया है लेकिन ४० का ग्रेड वालों को क्यों नहीं दिया गया ?

श्री सैयद म्रली जहीर—कहीं न कहीं तो लाइन खींचनी ही पड़ेगो। बताया गया है कि २५—१/१/२-४० म्रीर २५—१-४० की तनख्वाह वालों को भी यह वेतन वृद्धि मिल सकेगी।

श्री झारखंडेराय—क्या माननीय मंत्री जी यह बतायेगे कि क्या यह वेतन वृद्धि म्युनिसियल बोर्ड ग्रीर जिला परिषद् के कर्मचारियों पर भी लागू है ?

श्री सैयद श्रली जहीर—यह वृद्धि तो सिर्फ सरकारी कम तनस्वाह वाले कर्मचारियों को वी गई थी। मार जा वृद्धि महंगाई भत्ते में १६५७ श्रीर १६५६ में की गई उसमें लोकल बांडीज के मुलाजभीन भी शामिल थे। \*

श्री सुरथबहादुरशाह (जिला खीरी)—क्या यजीर यह बताने की जहमत गवारा करेंगे कि वह कीन सी श्रेणियां है जिन पर यह वृद्धि लागू नहीं की गयी थी ?

श्री सैयद ग्रली जहीर—-जवाब में बता विया गया इन लोगों से लागू नहीं हुन्ना था, इसलिये इनको विया गया ।

श्री शिवप्रसाद नागर--क्या माननीय मंत्री जी यह बतायेंगे कि यह जो बढ़ोत्तरी का वेतन हैं वह सन् ४६ से लागू होगा, ४६ से लागू होगा या सन् ६० से मिलगा ?

श्री सैयद श्रली जहीर—यह तो प्रश्न में ही पूछा गया था कि दिसंबर ५६ के प्रथम सम्ताह में कुछ कर्मचारियों की वेतन वृद्धि दी गयी है क्या, उसी के हिसाब से जवाब भी दिया गया था। यह वृद्धि १ नवम्बर, ४६ से दी गयी है।

श्री मदन पांडेय—जिस श्रेणी के कर्मचारियों की इस वक्त के भी श्रावेश कर नहीं करते हैं क्या सरकार उनकी तनस्वाह बढ़ाने पर भी विचार कर रही है ?

भी सैयद ग्रली जहीर--यह तो ग्राम सवाल है। उसके उपर सरकार विवार कर रही है कि उनको किस तरह से फर्दर रिलीफ दिया जा सके।

श्री **झारखंडेराय**---क्या माननीय मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे कि कोई ऐसा विभाग भी है जिसमें ये नियम लागु नहीं होते ?

श्री सैयद अली जहीर---मुझे तो नहीं मालूम में समझता हूं कि सभी जगह इसको लागू किया गया है। अगर कहीं लागू नहीं हुआ तो माननीय सबस्य बता दें।

श्री गोविन्दसिंह विष्ट-क्या मंत्रीजी बतायंगे कि निम्न-वेतन-भोगी कमंद्रारियों के बेतन और बाजार के बढ़े हुए भावों में सामंजस्य स्थापित करने के किसी कमीशन के बैठाने की योजना पर सरकार विद्यार कर रही हैं ?

श्री सैयद ग्रली जहीर—जी नहीं, किसी पे कमीशन की योजना पर विचार नहीं कर रहे हैं। यह जरूर सोच रहे हैं कि चूंकि कास्ट ग्राफ लिविंग बढ़ गयी हैं, इसलिये उनको कुछ सुविधायें दी जायं।

श्राचार्य दीपंकर—क्या माननीय मंत्री जी को जात है कि पी० डब्लू० डी० ग्रौर इरींगेशन विभागों के गैर मुस्तकिल वेतनभोगी कर्मचारियों को यह सुविधा नहीं दी गयी है ?

<sup>\*</sup>३ मई, १६६० को सदन में विये गये वक्तस्य के ग्रमुसार संद्रोधित।

शी सैयद श्रली जहीर—पी० डब्लू० डी० के कर्मचारियों को न देने की कोई वजह नहों है। श्रापने देखा होगा कि यह वृद्धि वर्कचार्ज कर्मचारियों को भी दी गयी है जो इस प्रकार के वेतनकमों में हैं।

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी—क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेगे कि जब इन कर्मचारियों को सन् ५५ के स्केल के मुताबिक सन् ५६ मे ही वेतन मिल जाना चाहिये था श्रौर ग्रब देने जा रहे हैं तो पिछले तीन साल को कम्पेनसेट करने के लिये क्या उपाय सोचा गया है ?

श्री सैयद श्रली जहीर--इसके लिये कोई उपाय नहीं सोचा गया है। यही सोचा गया है कि जितनी जल्दी से जल्दी उनको मिल सके वह मिल जाय।

# यू० पी० मोटर वेहिकिल्स रूल्स १६४० में प्रख्यापित संशोधन\*

परिवहन मंत्री के सभा सिचव (श्री धर्मदत्त वैद्य) — मं ग्राप की ग्राज्ञा से यू० पी० मोटर वेहिकित्स रूत्स, १६४० में परिवहन विभाग की विज्ञित्त संस्था एम० वी० ग्रार० —ए० एम० २६।७७८—बी०——३०——१६——एच०——६०, दिनांक २६ फरवरी, १६६० तथा संस्था एम० वी० ग्रार० (ए० एम० ——२४) ——६८४——बी० /३०——१४०—— एच०——४६, दिनांक २० फरवरी, १६६० के ग्राचीन प्रस्थापित संशोधनों को मोटर वेहिकित्स ऐक्ट, १६३६, की घारा १३३ की उपधारा (३) के ग्रान्सार सदन की मेज पर रखता हं।

## प्रश्नोत्तर के संबंध में भ्रापत्ति

श्री उपाध्यक्ष---ग्रब कार्य-स्थगन प्रस्ताव . . .

भी राजनारायण (जिला वाराणसी)—भीमन्....

श्री उपाध्यक्ष--प्रक्तों के बारे में मै माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि वे मुझे लिखित दें।

श्री राजनारायण---ग्राप सुन तो लीजिये कि कितना ग्रनर्थ हो रहा है।

श्री उपाध्यक्ष--मे इजाजत नहीं दे रहा हूं।

श्री राजनारायण—म्प्राप सुनेंगे भी नहीं। भ्रापने उनको तो पढ़ने की इजाजतः दे दी श्रीर उन्होंने हिस्ट्री-शीटर श्रीर न जाने क्या-क्या कह दिया जो दिलकुल झूठी बात है।

श्री उपाध्यक्ष--यह कैसे कहा जा सकता है कि वह बिलकुल झूठी बात है।

## श्री टीकाराम पुजारी के निलम्बन को समाप्त करने का सुझाव

श्राचार्य दीपंकर (जिला मेरठ)—माननीय उपाध्यक्ष महोदय, में कल की बात के सम्बन्ध में श्राप से प्रार्थना करना चाहता हूं कि माननीय टीकाराम जी पुजारी के सम्बन्ध में जो श्राप का श्रादेश न मानने पर माननीय मुख्य मंत्री जी ने प्रस्ताव रखा था वह हाउस में मान्य हो गया था, यह सोचते हुये कि पुजारीजी इस सदन के बहुत बुजुर्ग सदस्यों में से हैं, में श्राप से यह प्रार्थना करना चाहूंगा कि जो उनको दो दिन के लिये निलंबित किया गया था उसको माफ़ कर दिया जाय।

<sup>\*</sup>छापे नहीं गये।

श्री उपाध्यक्ष --में श्राचार्य जी को याद दिला दूं कि माननीय श्राचार्य जी श्रभी मुझ से मेरे चेम्बर में मिले थे। मेने उनसे कहा था कि माननीय पुजारीजी की तरफ से श्रार वह कुछ लिखवा कर दे तो उस समय उस पर विचार किया जा सकता ह। यह सदन के श्रनुशासन के हित में नहीं होगा कि माननीय पुजारी जी पर तो उसकी कोई प्रतिक्रिया न हो या वह उस ते सम्बन्ध में कु इन कहना चाहते हों श्रीर श्रन्य माननीय सदस्य इस सम्बन्ध में सदन में कोई सुझाव रखे। में समझना हू कि यह सदन के श्रनुशासन के हित में नहीं होगा। इसिलये में श्रन्य माननीय सदस्यों से श्रीर माननीय पालीवाल जी भी कुछ बोलना चाहते हैं इपिलये उनसे भी निवेदन कहा। कि श्रनुशासन के सम्बन्ध में वह चेयर को मदद करे।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल (जिना पानरा) -- उनाध्यक्ष महोदय, ग्रापने जो कुं कहा उससे में सर्वया सहमत हूं श्रीर म समझता हूं कि सदन में किसी प्रकार की श्रव्य-वस्या का होता श्रीर ग्रध्यक्ष, उगाध्यक्ष की श्रासाश्रों का न माना जाना एक ऐसी बात ह जिसकी सब को निन्दा करनी चाहिये श्रीर सब इस बात के पक्ष में हूं कि जो ऐसा करें उनकों दड दिया जाना चाहिये। लेकिन मेरो प्रार्थना यही ह कि दड देने के बाद यदि क्षमा दान किया जाय तो दंड का प्रभाव श्राविक स्थापी होता है। पुजारी जी को दो दिन के लिये निष्काशित किया गया था। उसमे से एक दिन जा चुका श्रीर दूतरे दिन का भी कुछ समय जा चका। श्रव समादान कर दिया जायगा तो मेरी राज में श्रच्छा होगा। श्रीर में इनना श्रीर निवेदन कर ूं कि जहा तक मेरो सूचना है माननीय उपनेना मदन जो कि इस समय नेना सदन है वह भी इस बात के पक्ष में है श्रगर श्राप श्राज्ञा दे तो ऐसा कर दिया जाय। इसके श्रवाचा जहा तक लिखित रूप में कमा याचना वेने का सम्बन्ध हं, तो इस समय तो पुजारी जी है नहीं लेकिन उनकी श्रीर से में कमा याचना करता हू। प्रस्ताव ही क्षमा याचना के रूप में होता है। इसलिये श्रगर श्राप इसे स्वीकार कर लें तो बहुत श्रव्छा हो।

श्री नारायणदत्त तियारी (जिला नैनीताल)—उपाध्यक्ष महोदय, माननीय पालीवाल जी ने जो कुछ कहा वह बिलकुल पालियामेंटरी विवान के स्ननुकूल है। स्नापने जो मर्यादा की बात बतायी तो दूसरा रास्ता जो उन्होंने स्वयं क्षमा याचना का निकाला वह लागू हो या न हो लेकिन इतना तो हो सकता है कि माननीय नेता सदन और यह सारा सदन मिल कर के स्वयं ही उनको क्षमा कर सकता है...

श्री उपाध्यक्ष--जरा फिर से कहिये कि ग्राप ने क्या कहा ?

श्री नारायणदत्त तिवारी—-पंयह कह रहा था कि उस के दो तरीके हो सकते थे। एक तो माननीय टीकाराम जी स्वयं कुछ लिख कर देते ग्रीर ग्राप कहते हैं कि यह ग्रापके पास लिख कर ग्राया है। दूसरा तरीका यह है कि सदन स्वयं ही यह सोच ले कि यह सजा काफी है ग्रीर ग्रव हम उसको निरस्त करते है।

श्री उपाध्यक्ष--यह तरीका तभी हो सकता है जब में उस प्रस्ताव की सनुमति दे दूं। वह मैंने दी नहीं। उसके पहले ही यह बातें हो रही हैं ताकि में सदन की बता दूं कि मेरी प्रतिक्रिया उस सम्बन्ध में क्या है। मैंने स्रभी किसी फार्मेल प्रस्ताव की स्रनुमित दी ही नहीं है। जब तक प्रस्ताव सदन के सामने नहीं होगा स्रब तक स्राय उस पर विचार नहीं कर सकते।

श्री राजनारायण (जिला वाराणसी)—श्रीमन्, मै तो द्याप की द्यांना से एक निवेदन माननीय पालीवाल जी से करना चाहता हूं। जो उन्होंने कहा कि ग्रध्यक्ष ग्रीर उपाध्यक्ष की ग्राज्ञा न मानने का उन्हें स्वयं खेद हैं, पश्चात्ताप है ग्रीर दुख है ग्रीर सभी को मानना चाहिये। इसमें हमारा संशोधन यह है कि ग्रध्यक्ष की वैष ग्राज्ञा मानने से मर्यादा बढ़ती है ग्रीर ग्रवेथ ग्राज्ञा मानने से घटती है...

श्री उपाध्यक्ष--ग्राप कृपा कर के स्थान ग्रहण करें। मैं ग्राप को ग्रागे बोलने की इजाजत नहीं देता।

न्याय मन्त्री (श्री हुकुमसिंह विसेन) --श्रीमन्, मुझसे ग्रौर पालीवाल जी से सीबे-सीघे कोई बात नहीं हुई। ग्रभी श्री बलदेव सिंह जी ग्राये थे ग्रौर उन्होंने कहा कि उवर की राय है कि उनको माफ कर दिया जाय। मेरे दिल में जो बात थी वह यह थी कि ग्रगर उनकी पश्चाताप है तो माफी देने में मुझे कोई एतराज नहीं है।

श्री उपाध्यक्ष--(पालीवाल जी से) म्राप कह रहे हैं कि उनको किसी किस्म का पपत्र्वाता है

ा श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल--श्रीमन्, जब मैने कह दिया कि उनकी ग्रोर से मै क्षमा याचना करता हूं तो मैं भी उसके लिये दोषी श्रीर ग्रपराधी हो सकता हूं ग्रीर उसका दंड सहने के लिये भी तैयार हूं। मानें या न मानें यह श्राप के हाथ है।

श्री उपाध्यक्ष—मेंने विरोधी दल के माननीय नेताओं श्रौर सदन के नेता की भी बातों को सुना श्रौर श्रभी ऐसी स्थित नहीं श्राई है कि इस सम्बन्ध में कोई प्रस्ताव सदन में प्रस्तुत करने की श्राज्ञा दूं। यह श्रनुज्ञासन के हित में है। जहां तक श्रध्यक्ष की वैष श्रौर श्रवंघ श्राज्ञा का सवाल है वह यह है कि चेयर से जो श्राज्ञा दी जाती है वह हमेशा वैद्य मानी जाती है। यदि वैद्य श्रौर श्रवंघ श्राज्ञा का निर्णय करना हर मेम्बर की मर्जी पर छोड़ दिया जाय तो इससे सर्वया एक श्रनाकी फैल जायगी श्रौर इस तरह से सदन का काम नहीं हो सकता। श्रव में कोई वाद-विवाद इस सम्बन्ध में नहीं चलाना चाहता हूं।

श्री राजनारायण—श्रीमन्, मेरा एक वैधानिक प्रश्न यह है कि नियमावली के नियम २६६ का दूसरा प्रोबीजन है कि ' ' '

श्री उपाध्यक्ष--पुजारी जी के बारे में है ?

श्री राजनारायण ——जो नहीं। प्रोवीजो इस प्रकार है कि, "किन्तु सदन किसी समय प्रस्ताव किये जाने पर यह संकल्प कर सकेगा कि ऐसे निलम्बन को समाप्त किया जाय।' यह स्पेशल प्राविजन है, ग्रध्यक्ष किस शक्ति से, जब कि यह सदन में प्रस्तुत हुन्ना तो ग्रमान्य कर सकते हैं।

श्री उपाध्यक्ष — माननीय सबस्य सुझाव देना चाहते थे, लेकिन मेने सभी तक किसी भी प्रस्ताव की स्राज्ञा नहीं दी। जब तक में इजाजत न दूं तब तक सदन में कोई प्रस्ताव नहीं स्रा सकता है। स्थित स्पष्ट है।

श्री राजनारायण--श्रीमन्, हमारा कहना यह है कि....

श्री उपाध्यक्ष-- जी नहीं।

श्री राजनारायण—श्रीमन्, हमारा व्यवस्था का प्रक्ष्त यह है कि हर माननीय सदस्य को हक है कि वह प्रस्ताव कर सकता है कि उनका निलम्बन समाप्त किया जाय बिना सूचना दिये हुये श्रीर सदन में इसका विरोध नहीं हुन्ना है। केवल श्राप विरोध कर रहे है, सदन प्रस्ताव लाने के पक्ष मे है। तो मतलब यह माने जाने चाहिये कि

"No-confidence motion against the Speaker". इसका पद-अर्थ होगा कि सदन का विश्वास आप में नहीं है।

श्री उपाध्यक्ष--ग्रप वेयरपर ही न ग्राजायं।

श्री राजनारायण-- ृम स्यों ग्रा जायं। ग्राय चाहेगे तो ग्रा जायंग्रे।

श्री उपाध्यक्ष—-कहने का मतलब यह है कि चाहे सूचना देकर या बिला सूचना दिये जो भी प्रस्ताव श्रायेगा, श्रध्यक्ष की श्राज्ञा से श्रायेगा जब तक इजाजत न दी जाय तब तक सदन में विचार नहीं हो सकता। वैसे जो कुछ सुझाव दिये गये उन पर मैने विचार कर लिया।

श्री राजनारायण——तो यह बात लिखी जाय कि म्रध्यक्ष के सुप्ताव के विश्व यह सारा । । ।

श्री उपाध्यक्ष--जी नहीं।

श्री राजनारायण-- इयों कि माननीय उपनेता . . .

श्री उपाध्यक्ष—-ग्राप कैसे खड़े हो कर बोनने लगे? एक पहला नियम, नियमा-वली का यह है कि जब कोई माननीय सदस्य खड़े हो कर कुछ कहना चाहें, उस समय ग्रगर माननीय ग्रध्यक्ष उनका नाम पुकारें तो खड़े हो कर कहे। लेकिन खड़े हो कर ही भ्रपना यह राइट समझ लेना ग्रीर बोलना शुरू कर देना यह ग्रान की ग्रादत सी हो गयी है।

श्री राजनारायण--इस सम्बन्ध में एक निवेदन सुन लीजिये

श्री उपाध्यक्ष--मै श्राज्ञा नहीं वे रहा हूं। श्राप कृवा करके बैठे।

श्री नारायणदत्त तिवारी—नं स्पष्टोकरण चाहता हूं। श्रापने जो रूलिंग दी उस पर एक प्वाइंट श्राफ श्राइंर उन्होंने उठाया था कि कोई भी माननीय सदस्य किसी भी समय निलम्बन को रद्द करने का प्रस्ताव ला सकता है। श्रभी लोक सभा में एक ऐसी घटना घटी थी। एक माननीय सदस्य का निलम्बन हुशा। नेता सदन, पंडित जवाहर लाल नेहरू, के कहने पर निलम्बन समाप्त किया गया श्रीर उस पर प्रस्ताव हुशा।

श्री उपाष्यक्ष--उसके लिए मैंने कहा कि जब तक चेयर की अनुमति न हो तब तक प्रस्ताव नहीं श्रा सकता।

श्री राजनारायण—मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। श्रगर श्रध्यक्ष किसी उपयुक्त श्रीर उचित बात को कहने से किसी सदस्य को बार बार रोकता हो श्रीर उचित समय पर प्रश्न उठाने का उसको मौका न बेता हो तो क्या किया जाय?

श्री उपाध्यक्ष—व्यवस्था के प्रश्न को श्रध्यक्ष नहीं रोक सकता। इसी लिये जब भी माननीय सदस्य व्यवस्था का प्रश्न उठाते हैं में उनको सुनता हूं। लेकिन श्रगर कोई माननीय सदस्य यह समझते हैं कि उपयुक्त श्रवसर पर उसको बोलने नहीं दिया जाता है तो वह श्रध्यक्ष के विरुद्ध श्रविश्वास का प्रस्ताव ला सकते हैं।

श्री राजनारायण--वही चाहते है ?

श्री उपाध्यक्ष--में स्वागत करता हूं। एक बार भ्राप के वल द्वारा लाया जा चुका है।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल—में इस बात के सम्बन्ध में ग्राप का निर्णय जानना चाहता हूं कि जब नियमावलों के अनुसार सदस्यों को कोई प्रस्ताव लाने का श्रिषकार है, जैसा कि निलम्बन को रह करने का प्रस्ताव है, श्रीर उपाध्यक्ष महोदय उसको लाने की इजाजत नहीं देते, तो कृशा कर के यह बता वें कि जो सदस्यों का लिखित अधिकार है उसकी इजाजत आप किस कारण नहीं देते हैं, किस नियम के अनुसार नहीं देते हैं। अगर यह हो कि श्रध्यक्ष और उपाध्यक्ष जब चाहें तब प्रश्न न करने वें, नियम के अनुसार प्रस्ताव न रखने वें, तो श्रध्यक्ष और उपाध्यक्ष के, हर एक श्रविकारों की एक सीमा होती है, श्रिषकारों का प्रयोग श्रीचित्य की सीमा के भीतर होना चाहिये। अगर ऐसा नहीं होगा तो विद्रोह के लिये नेवता दिया जाता है।

श्री उपाध्यक्ष—जो प्रश्न माननीय पालीवाल जी ने उठाया है वह बहुत उपयुक्त प्रश्न हैं। यह प्रश्न सदन के श्रनुशासन श्रीर मान का है। श्रध्यक्ष श्रीर उपाध्यक्ष सदन की मान-मर्यावा रखने के लिये, डिग्निटी श्रीर डिकोरम रखने के लिये यहां बैठते हैं। ऐसे हिनों के बारे में सोशलिस्ट पार्टी के द्वारा मेरा खयाल है, पहली मर्तबा कल विभाजन मांगा गया है, क्योंकि ऐसे प्रश्न, निलम्बन श्रादि के सर्व सम्मति से तय होते हैं। इसीलिये मेने

माननीय दीयंकर जी से कहा था कि वह अगर इस सम्बन्ध में बात करना चाहें तो दूपरे दलों से बात कर ले श्रीर जो कुछ निश्चित करे वह मुक्षते मिनकर बता दें कि हमने यह निश्चित किया है श्रीर यह चाहते हैं। पालीवाल जो को श्राज पहली मर्तबा इस तरह का प्रश्न उठाना पड़ा। में समझना हूं कि में हूं या कोई भो चे गर पर हो, वह अगने डिस्कीशन से जो भी मुनासिब समझना है, रादन को कार्यवाहो सुचार रूप से चलाने के लिए, वैना करता है। ऐसे प्रश्नों में श्रार सदन के सभी लोग सहयोग नहीं करेंगे तो काफी गम्भीर परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती है। में पालीवाल जो से स्वयं निवेदन करूंगा कि वह मुक्स मिले श्रीर में समझता हूं कि वह संतुष्ट हो जायंगे कि क्या क्या परिस्थितियां पैदा हो सकती है।

श्री राजनारायण--मे सूचना चाहता हूं।

श्री उपाध्यक्ष --इन समय में काम रोको प्रस्ताव लें रहा हूं।

श्री राजनारायण--इसके बाद लेगे ?

श्री उपायध्क्ष--जी नहीं। इमके बाद भी नही।

**ग्राचार्यं दीपंकर--**पं कुछ निवेदन करना चाहता हूं।

श्री उपाध्यक्ष — प्रब वह समाप्त हो गया। मै समझता हूं कि ग्राप लोग बातचीत करके मुझे कंबिल करे। श्रायिक दंड का जहां तक प्रश्न है वह श्रायिक दंड न हो, उसकी ज्यवस्था बाद मे भो हो सकती है, लेकिन एक श्रनुशासन को बनाये रखने की जो बात है उसमें श्राप लोग चेयर की सहायता करे।

# सहारनपुर म्युनिसिपल बोर्ड द्वारा लाउड स्पीकर संबंधित बनाये गये बाई-लाज के संबंध में कार्य-स्थगन प्रस्ताव की सूचना

श्री उपाध्यक्ष -- माननीय राजनारायण जी ने एक कार्य-स्थगन प्रस्ताव दिया है --

"म्युनिसियल बोर्ड ऐक्ट की घारा २९९ के अनुसार म्युनिसियल बोर्ड राज्य सरकार को स्वीकृति से ऐसे बाई लाज लागू कर सकती है जिनके तोड़ने पर ५ सौ रुप्ता तक जुर्नाना हो सकता है। सहारनपुर को नगरपालिका ने राज्य सरकार की स्वीकृति से एक ऐसा बाई-ला बनाया है जिसके अनु गर बिना नगर पालिका की आजा के लाउड स्पीकर का प्रयोग नहीं किया जा सकता। बिना नगर पालिका की पूर्व स्वीकृति के कोई विषय एलान नहीं किया जा सकता। ६ बजे रात्रि के बाद जन सभा में लाउड स्पीकर का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

राजनारायण जी ने यह भी प्रश्न उठाया है कि सोशिलस्ट पार्टी क ग्रौर लोगों को ग्रौर साथ ही साथ राजनारायण जो को भी इससे काफी ग्रमुविधा हुई। म्युनिसिपल बोर्ड ने यहां तक ग्रिधकार ले रखा है उस बाई लाज में कि वह निर्देश करे कि कौन कौन विषयों पर एलान हो सकता है ग्रौर कौन कौन विषयों पर एलान नहीं हो सकता। तो यह प्रश्न यों तो एक स्वशासन संस्था से संबंधित है। लेकिन चूंकि इस डे गिकेडिट सेट श्रथ में इस प्रकार की कार्यवाही नहीं होनी चाहिये, इसलिये यह एक ग्रावश्यक प्रश्न बन जाता है। तो में इस काम रोको प्रस्ताव की तो इ जाजत नहीं दूंगा लेकिन सम्बन्धित माननीय मन्त्री जी से में चाहूंगा कि वह स्थिति का स्पष्टोकरण करने के लिये बयान दें कि कैते यह परिस्थिति उत्पन्न हुई। क्योंकि इस किस्म की बात ग्रगर है तो प्रजातंत्रीय सेट ग्रय में प्राइमाफेशो यह एक ग्रालत चोज मालूम हो रही है।

स्वायत्त शासन मन्त्री (श्री विचित्र नारायण शर्मा) — श्रीमन्, मुझको तो इसकी सूचना सुबह ही मिलो। वह भो राजनारायण जी से। उन्होंने फोन पर मुझ से कहा था। सहारनपुर से वेरे पास उनके बाई-लाज एत्र्वल के लिये ग्राये या नहीं ग्राये, यह में ग्रभी नहीं कह सकता। मेने पुछ्वाने की कोशिश की थी लेकिन उसमे कृतकार्य नहीं हो सका।

श्री उपाध्यक्ष--तो श्राप समय ले लीजिए।

श्री विचित्रनारायण शर्मा -- नेकिन ने समझता हूं कि बाई लाज मे यदि कोई ऐसी अनुचित चीज होगी तो वह दुरुस्त कर दी जायगी।

श्री उपाध्यक्ष--नहीं, तो श्राव परिस्थिति बता दीजिए।

श्री विचित्रनारायण शर्मा--दो दिन का समय दे दिया जाय।

श्री उपाध्यक्ष --तो श्राव २५ को वे वीजिएगा।

श्री राजनारायण---२४ की तो हम नहीं रहेंगे।

श्री उपाध्यक्ष--नो मानतीय मन्त्री जी २४ को बे वे ।

श्री विचित्रनारायण शर्मा--ने नहीं रहुंगा शायव, लेकिन मेरे उपमन्त्री जी दे देंगे।

श्री राजनारायण--जरा मेरी एक सूबना सुन नो जाय।

श्री उपाध्यक्ष--प्रायक्षरा करके बेठिए। (श्री राजनागयण के खड़े रहने पर) जब चेयर बोल रही है तो श्राप कृषा कर के बंठें।

श्री राजनारायण--चेत्रर तो जब हम कुछ कहना चाहते है तो बोलने लाती है। श्रापको एक गलत सूचना दो गई।

श्री उपाध्यक्ष--श्राप कृवा कर के बंठिए। में नियम ५२ के प्रदन ले रहा हूं।

श्री राजनारायण--तो बाद में मुझे मौका मिलेगा?

श्री उपाध्यक्ष--जब मं चाहूंगा तो यह हो जायगा। स्पष्टीकरण जब वह कर लेंगे तब हो सकता है।

श्री राजनारायण ---हमने कल सूचना दे दो यो मेकेटरी को।

## मिश्रिल में श्री दधीचनाथ के मेले में श्रनिधकृत सिनेमा शो के कारण सरकारी श्राय में कमी के संबंध में नियम ५२ के श्रन्तर्गत सूचना

श्री उपाध्यक्ष ——नियम ५२ के श्रतुसार वो तीन प्रक्त मेरे मामने श्राये हुवे हैं जिनमें से सब से महत्वपूर्ण प्रक्त जो है वह श्री शिवप्रसाव नागर का है जो इस प्रकार है—

"नियम ५२ के प्रनुसार सरकार का ध्यान इस लोक महत्व के प्रदन को घोर प्राक्षित करना चाहता हूं कि जिला सीतापुर के मिश्रिल में होली के घवसर पर श्रो वधी चनाय का जो मेला होता है और ५४ कोस का परिक्रमा के घवसर पर जो कई लाख ध्यक्तियों को भोड़ कई विन तक बराबर रहती है उस घवसर पर मिश्रिल के मेले में चार सिनेमा करीब १५ दिन तक चलते रहे थार न तो उनका कोई लाइसेंस या थार न तो सरकार के खजाने में कोई मनोरंजन कर का एक भी वैसा ही जमा हुआ।" .....इस तरह से नागर जो ने लिखा है कि कई हजार वपये सरकरी धन को हानि हुई है। तो में माननीय मुख्य मन्त्री जो से जानना चाहूंगा कि श्रा परिस्थित है इस सम्बन्ध में स्पष्टीकरण करें।

श्रम उपमन्त्री (श्री हेमवतीनस्वन बहुगुणा)—मान्यवर, यह ग्रमी सुबह के बक्त हमको मिला। बी० एम०, सीतापुर से कहा गया कि इसके पूरे विवरण के साथ में हमारे पास रिपोर्ट भेगें। ज्यों ही रिपोर्ट श्राजायगी उसको में सबन के सामने रख बूंगा। में २४ तारीख तक कोशिश करूंगा कि इस संबंध में जितनी सूचना हो उसको वे बूं।

## नियम ५२ के म्रन्तर्गत दिये गये विषयों के संबंध में जानकारी

श्री रूमिंसह (जिला शाहजहांपुर)—श्रीमन्, मैने भी श्रपना एक बहुत महत्व-यूर्ण प्रस्ताव दफा ५२ के श्रन्तर्गत दिया था ।

श्री उपाध्यक्ष—दका ५२ के ग्रन्तर्गत जो प्रस्ताव थे उनक संबंध में मै ग्रपना निर्णय दे चुका हूं। जो बाकी रह गये वह रिजेक्ट हो गये है।

# सहारनपुर म्युनिसिपल बोर्ड द्वारा लाउड स्पीकर संबंधित बनाये गये बाई-लाज के संबंध में कार्य-स्थगन प्रस्ताव की सूचना (क्रमागत)

श्री राजनारायण—मै यह सूचना वे रहा था कि कल मैने सायंकाल को स्वशासन विभाग के मंत्री से संबंध स्थापित करने की कोशिश की, किन्तु जब वह नहीं मिले तो स्वशासन विभाग के सेक्षेटरी से बात की। उन्होंने बताया, जब हमने उनसे यह कहा कि श्रापने इस प्रकार के बाईलाज को लागू करने की कैसे इजाजत दे दी, तो उ होंने कहा कि हमको कुछ ऐसा स्मरण श्राता है कि शायद दो एक म्युनिसिपैलिटी को हमने इस प्रकार के बाइलाज के लिये मान्यता दीं। वह सूचना यहां पर भी मिल सकती है तो उसके लिये समय लेने की क्या श्रावक्यकता है?

श्री उपाध्यक्ष — श्रब उसके लिये २४ तारीख तक का समय मांगा जा चुका है। उस समय वह श्रापको सूचना देंगे ही। हां, यह ठीक है कि इस प्रकार की सूचना यदि सेकेटरि-येट में मौजूद हो तो उसके लिये माननीय मंत्री जी भविष्य में समय न लिया करें तो श्रच्छा है।

श्री विचित्रनारायण शर्मा—मुझे सवेरे ही मालूम हुन्ना है। पहले से कैसे मालुम हो सकता था कि दफा ५२ के श्रन्तर्गत प्रस्ताव स्रायेगा?

## नियम ५२ के म्रुन्तर्गत दिये गये विषयों के संबंध में जानकारी । (क्रमागत )

श्री गोविन्दसिंह विष्ट (जिला श्रल्मोड़ा)—माननीय उपाध्यक्ष महोदय, श्रापने जो यह दफा ४२ के विषय में व्यवस्था दी वह शिरोधार्य है, वयों कि इस में भी लग्भग बीस हजार रुपये का सरकार का नुकसान हो गया। मेरा निवेदन यह है कि जब श्रोले के संबंध में पूरी सूचना दें माननीय मंत्री जी तो बनारस या दूसरी जगह जहां-जहां पर श्रोले पड़े है उस सब की जानकारी दें। इस संबंध में मेरा श्रौर दशरथप्रसाद जी का प्रस्ताव था तो उस संबंध में भी सूचना दें दें।

श्री उपाध्यक्ष— खासकर श्रोले के प्रश्न को लेकर जब जब माननीय सदस्यों ने श्रत्यसूचित तारांकित प्रश्न का नोटिस दिया तब-तब मैंने माननीय मंत्री जी से कहा श्रीर उन्होंने उसकी सूचना दी। बित्क यहां तक हुन्ना कि वे खुद कई जिलों में गये श्रीर सूचना एक जित की। वह सूचना फिर श्राकर उन्होंने सदन को दी।

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)—जब श्रापने हमसे कहा कि इसके लिये श्रस्पन्तु चित तारांकित प्रदन दो तो हमने ११ तारीख को जबरदस्त श्रोला देवरिया श्रीर गोरखपुर में गिरने के संबंध में श्रत्पसूचित प्रश्न दिये लेकिन उनका उत्तर श्राज तक नहीं मिला। कल भी चार घंटे तक वर्षा हो का वहां का समाचार मिला है। वे हमारे प्रश्न मंजूर नहीं हुये हैं। हमारा प्रस्ताव भी दफा ५२ के श्रन्दर था। इसलिये में यह समझता हूं . . . . .

श्री उपाध्यक्ष—आप यह श्रजीब तरीका ग्रपना रहे हैं। श्रब आप कृपया बैठ जायं। न्याय मंत्री (श्री हुकुमसिंह विसेन)—इस संबंध में में यह कहना चाहता हूं कि नियम ५२ का मंशा सिर्फ इतना है कि हमारा ध्यान उस तरफ दिलाया जाय। तो हमारा ध्यान उस तरफ है . . . .

## (भी उग्रसेन द्वारा व्यवधान)

श्री हुकुमसिंह विसेन---ग्राप तो इस प्रकार बोल रहे हैं जैसे किसी गांव में बोला करते हैं।

श्री राजनारायण (जिला वाराणसी)—प्राप किस तरह से बात कर रहे हैं, यह

श्री हुकुमसिंह विसेन—में इस तरह से बोल रहा हूं जैसे ग्रसेम्बली में बोला जाता है। में यह कह रहा था कि कल शाम भी ग्रोला पड़ा है। यहां भी पड़ा ग्रीर दूसरी जगह भी पड़ा होगा। सब सदस्य यहां पर इकट्ठा थे। हमने भी उसको ग्रपनी ग्रांखों से देखा है। हमारे मित्र तो १० बजे सो गये होंगे लेकिन हम १२ बजे तक रात में खड़खड़ाते रहे ग्रीर कलेक्टरों को ग्रागाह करते रहे कि जितनी जल्बी हो सके वह सारी सूचना इकट्ठा करें। तो हमारा ध्यान उस तरफ है। हां, यह जरूर है कि जो नाटिस वेंगे उनका नाम ग्रखबार में छप जायगा।

श्री नारायणदत्त तिवारी (जिना नैनीताल)—श्रीमन्, में उपनेता सदन से यह कहूंगा कि साधारणतः जब तक कोई इस प्रहार की बात न हो तो इस प्रहार की हलकी बात कह देना उनके लिये शोभा नहीं देता कि श्रवबार में नाम छ । जायगा। में समझता हूं वह श्रपने शब्दों पर पुनीवचार करें।

श्री हुकुर्मासह विसेन---प्राइन्टा से नहीं कहूंगा।

श्री उपाध्यक्ष--नेरा खार है कि मानतोत्र मंत्रो जो चूंकि मजाक में ज्यादा विश्वास करते हैं इ तिलाते ऐसा कह दिया होगा। श्रगर सवनुव में कहा है तो श्रयश्य श्रनुचित है।

श्री उग्रसेन--- नलतऊ में बैठे रह सर ग्रापको वहां के बारे में क्या पता होगा . . . .

श्री उपाध्यक्ष--प्राप बॅठिवे। म्राइंर, ब्राइंर।

श्री राजनारायण--जब कोई सदस्य सोशितस्ट पार्टी का उठता है तो श्राप उसे आर्डर, श्रार्डर कहते हैं। यह क्या है ? हर सदस्य के साथ समान व्यवहार होना चाहिये।

श्री उपाध्यक्ष--कारण यह है कि निर्मोका पात्रन करने में जितनी स्रताववानी सीशलिस्ट पार्टी के सबस्यों से होतो है उतनो स्रीर किसो से नहीं होती।

श्री राजनारायण--जेकिन हम सब के साथ समान व्यवहार होना चाहिये।

श्री उपाध्यक्ष--व्यवहार भी नियमानुकूत होना चाहिये।

श्री राजनारायण--ग्राप के ही दल के है टोकाराम पुजारी जी, श्राप उनकी समझाते हैं....।

श्री उपाध्यक्ष--प्राप बैठिये।

श्रव दूसरा श्रागे का कार्यक्रम है। एक स्वायत्त शासन का श्रनुवान है श्रीर दूसरा सुचना का। में यह जानना चाहता हूं कि . . . .

श्री राजनारायण—मं सदन का त्याग करना चाहता हूं ५ मिनट के लिये। श्रभी श्राचार्य दीपंकर जी ने श्री टीकाराम पुजारी जी के संबंध में प्रस्ताव दिया था श्रीर नियम के मुताबिक उनका प्रस्ताव श्राना चाहिये था। श्रापकी उस व्यवस्था के विरोध में मैं ५ मिनट के लिये सदन का त्याग करता हूं।

(सोशिलस्ट पार्टी के सदस्य श्री राजनारायण के साथ सदन का त्याग कर चले गये। सदन में खूबजोर से तालियां बजीं श्रीर इस पर सदन त्याग करते समय श्री राजनारायण ने भी खूब जोर से मेज पीटी।)

श्री उपाध्यक्ष--मैने इस संबंध में इस बात को पहले ही स्पष्ट कर दिया था कि मेरे सामने कोई फार्मल रेजोल्यूशन नहीं श्राया श्रौर न मैने उसकी इजाजत दी।

# १६६०-६१ के श्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान---विभिन्न श्रनुदानों के लिये समय निर्धारण

श्री उपाध्यक्ष—प्रब मेरे सामन दो श्रनुदान है। एक श्रनुदान संख्या ३७— नागरिक निर्माण कार्यों के लिये सहायक श्रनुदान श्रौर दूसरे श्रनुदान संख्या ३२—सूचना संचालन कार्यालय। इस संबंध में मैं जानना चाहता हूं कि इन के लिये कितना कितना समय रखा जाय। इस समय साढ़े बारह बज गये हैं। मैं समझता हूं कि दोनों को श्राधा-श्राधा समय दे दिया जाय।

श्री शिवप्रसाद नागर (जिला खोरी)—यह तो ठीक है कि श्राधा-ग्राधा समय रखा जाय दोनों के लिये लेकिन पहले श्रनुदान संख्या ३७ ले लिया जाय श्रीर बाद में सूचना का श्रनुदान लिया जाय।

श्री उपाध्यक्ष--तो यह ठीक है। श्रनुदान संख्या ३७ ढाई बजे तक चलेगा श्रीर उसके बाद दूसरा श्रनुदान ले लिया जायगा।

राजा यादवेन्द्रदत्त दुवे (जिला जौनपुर)—श्रीमन्, में एक जानकारी चाहता हूं। यह जो श्रापने व्यवस्था दी है कि यह नागिरिक निर्माण कार्यों का श्रनुदान पहले चलेगा श्रौर सूचना का बाद में तो यह पहला वाला कितने समय तक चलेगा श्रौर कब से दूसरा श्रनुदान लिया जायगा?

श्री उपाध्यक्ष--ढाई बजे तक यह श्रीर उसके बाद सूचना वाला श्रनुदान लिया जायगा।

# श्रनुदान संख्या ३७-लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्यों के लिये सहायक श्रनुदान

स्वायत्त शासन मन्त्री (श्री विचित्रनारायण शर्मा) --श्रीमन्, राज्यवाल महोदय को सिफारिश से मैं प्रस्ताव करता हूं कि ग्रनुदान संख्या ३७--नागरिक निर्माण कार्यों के लिये सहायक ग्रनुदान-लेखा शीर्षक ५०-नागरिक निर्माण कार्य के ग्रन्तर्गत १,०५,१८,००० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १६६०-६१ के लिये स्वीकार की जाय।

श्रीमन्, जो खास-खास बातें श्रयने विभाग के संबंध में कहनी थीं वह मैं कल निवेदन कर चुका श्रीर में समझता हूं कि श्रच्छा होगा यदि में सदन का श्रधिक समय न लूं। बजट साहित्य में इन मांगों के संबंध में काफी श्रच्छी तरह से समझा दिया गया है श्रीर श्रगर माननीय सदस्य बहस में कोई नये प्रश्न उठायेंगे तो मैं उनके लिये बाद में निवेदन करूंगा। इसलिये इस समय माननीय सदस्य श्रयनी श्रयनी बात कहें। मैं इसके साथ ही यह प्रार्थना करता हूं कि सदन इस मांग को स्वीकार कर।

श्री पद्माकरलाल श्रीवास्तव (जिना ग्राजमगढ़)—माननीय उपाध्यक्ष महोदय, में श्राप की श्राज्ञा से प्रस्तुत श्रनुदान में कटौती का प्रस्ताव पेश करता हूं कि सम्पूर्ण श्रनुदान ३७ के श्रधीन मांग की राशि में सौ रुपये की कमी कर दी जाय।

कमी करने का उद्देश्य-विशिष्ट शिकायत जिस पर चर्चा उठाने का श्रिभिप्राय है।

लखनऊ इंपूवमेट ट्रस्ट द्वारा इम्प्रूवमेट स्कीमों से प्रभावित व्यक्तियों के साथ भेद-भाव का बर्ताव करना ग्रौर सरकार द्वारा भी पक्षगत की नीति का बरतना तथा सरकार द्वारा इम्प्रूवमेट ट्रस्ट के ग्रानिकारियों के भ्रष्ट कार्यों का समर्थन करने प्रादि पर चर्चा।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, श्राज मुझे बड़े दुख के साथ कहना पड़ता हे कि समस्त शासन में पार्टी बन्दी के ब्राधार पर ऊपर से लेकर नीचे तक जी व्यवस्था इस सरकार के जमाने में चल रही हे उससे सारी जनता में, इस प्रदेश में क्षोभ है। में विशेषकर स्थानीय निकायों के संबंध में ग्रोर लखनऊ इम्प्र्यमेट ट्रस्ट के बारे में कहना चाहता हूं। लखनऊ इम्प्र्वमेट टस्ट के बारे में कई बार चर्चा इस संदन में हो चुकी है। कितना भेद-भाव वहां पर किया जाता है, कितना नियमों का उल्लंघन वहा पर होता ह, किस प्रकार का अध्टाचार वहा पर खुले स्रोम हो रहा है, कितना पक्षपात वहा पर होता हे, उस रूब की चर्चा में यहा करना चाहता हूं। जमीन के एक्वीजीशन मे, मकान बनाने के लिये इजाजत देने में जितने प्रकार की शर्ते है, उन सब को इस तरह का तोड़ मरोड़ कर जिस व्यक्ति को फायदा पहुंचाना होता है, फायदा पहुंचाया जाता है। ऐग्रीमेंट की शती को तोड़ कर, किसी व्यक्ति विशेष को फायदा पहुंचाने के लिये यह सरकार रचयं आगे बढ़ती है। यह ऐसी शिकायते है जिनके बारेमें माननीय मंत्री जी को स्वयं जानकारी है। मैं कंघारी बाजार के बारे में कहना चाहता हूं। कन्धारी बाजार की बेलफेयर सोसाइटी की जो शिकायते हैं उन्हें कहना चाहता हूं। कई बार उन्होंने श्रपना प्रस्ताव पास करके माननीय मंत्री जी का ध्यान श्राकपित किया हैं। इम्प्रवमेंट ट्रस्ट के ग्रधिकारियों के विरुद्ध, भ्रष्टाचार से सम्बंधित, माननीय मंत्री जी से उनका डेंपूटेशन भी मिला है उसका भी कोई नतीजा नहीं निकला। यहां पर यह व्यवस्था चल रही हे श्रीर इम्प्र्वमेट ट्रस्ट द्वारा उन्हीं लोगों की जमीन दी जाती है तथा मकान बनाने की उन्हों लोगों को इजाजत दी जाती है जिनको श्रधिकारी चाहते हैं। माननीय मंत्री जी से मै निवेदन करूंगा कि वे इसकी जांच करायें। वें इस संबंध में व्यक्तिगत जानकारी करें या अन्य किसी सूत्र से जानकारी करायें कि क्या यह सब सही है कि जो घूस में रकमें वेते हैं उन्हीं को मकान बनाने की इजाजत वी जाती है। दो व्यक्ति मेरी जानकारी में है ऐसे जिनको इम्प्रवमेंट ट्रस्ट ने नाजायज पैसा लेकर जमीन वी ग्रौर वह जमीन पहले इम्प्रवमेंट ट्रस्ट द्वारा एक्वायर की गयी और फिर उस जमीन को उन लोगों को दिया गया। वह जमीन एक्वीजीशन की गई जमीन में शामिल थी। लेकिन बाद की उस जमीन की इसके एक्वायर्ड क्षेत्रफल से भ्रलग कर दिया ताकि उनको जमीन का मुभ्रावजा न देना पड़े। इस तरह को तमाम शिकायतें इम्प्रवमेंट ट्रस्ट के बारे में हैं। में चाहता हूं कि इन सब की जाच हो। इससे जनता में बड़ा ही असंतोष फैला हुआ है।

इसके अलावा यह भी सही है कि वहां पर न कोई नक्शा किसी चीज का है श्रीर न कोई स्कोम ही है कि कहां तक किसी चीज का विस्तार होगा। विधान भवन का कहां तक विस्तार होगा इसका भी कोई नक्शा नहीं है और न कोई योजना ही तैयार है।

इसके अलावा में स्थानीय निकायों को जो सड़कें और पुल आदि बनाने के लिये अनुदान दिया जाता है उस संबंध में कहना चाहता हूं। जो अनुदान दिया जाता है वह बहुत ही कम है। यह बात अपनो जगह पर निविवाद तथा सत्य है कि जो रुपया स्थानीय निकायों को सड़कें बनाने के लिये, पुरानी सड़कों की मरम्मत तथा उनके रख-रखाब के लिये, तथा अच्छी सड़कों को पक्की बनाने के लिये दिया जाता है वह बहुत कम है। उसके कारण आज आप देखने हैं कि जो सड़कों है, चाहे वह स्थानीय निकायों में, जिला परिषदों की हों या नगर निगम

#### १६६०-६१ के म्राय-व्ययक में म्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--ग्रनुदान संख्या ३७--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण -कार्यों के लिये सहायक अनुदान

की हों, या नगर पालिका की हों उनकी हालत क्या है ? उन पर कोई सवारी चल नहीं सकती। वे इतनी गन्दी है कि उन पर चलना मुश्किल है उसमें तमाम गड्ढे हो गये हैं।

श्रव स्थानीय निकायों को जो श्रनुदान दिया जाता है उसका किस तरह उपयोग होता है उस पर भी निगाह डाली जाय। श्रगर श्राप उस पर भी नजर डालें तो श्राप इस नतीजें पर पहुंचेंगे कि स्थानीय निकायों द्वारा पार्टी केग्राधार पर वहीं पर कार्य होता है जहां जिसकी पहुंच होती है। एक जगह तो सड़कों का विस्तार हो रहा है, उसका जाल सा बिछा हुन्ना है, श्रीर दूसरी जगह के लोग उससे बंचित रह जाते है। नगरपालिकाओं में भी यही है, जिसका बहुमत है वह जो जिस निश्चित क्षेत्र में चाहता है विकास कर लेता है, सड़के बना लेता है, सरम्मत भी करा लेता है श्रीर बाकी भाग वैसे ही पड़े रह जाते है।

जहांतक प्राइमरी स्कूलों का संबंध है, जो कि ग्रंतरिम जिला परिषद की देख-रेख में खुले हुए हैं, उनके भवनों की दशा बड़ी चिन्तनीय है। उनका एक सर्वेक्षण करा लिया जाय तािक सारे सुबे के ऐसे स्कूलों की स्थिति का पता चत जाय। मै ग्रंधिक नहीं कहना चाहता हूं, लेकिन २५ फीसदी उनमें ऐसे है जो घराशायी हो चुके हैं। वहां वरसात के मौसम में बच्चों के पढ़ने का कोई ठिकाना नहीं है, पेड़के नीचे बैठकर बच्चे पढ़ते है। कहा जाता है कि उनके पढ़ने का प्रबन्ध है, लेकिन साया भी जब नहीं मिलेगा तो बच्चे क्या पढ़ेंगे?

सड़कों के बारे में मेरा निवेदन यह है कि सारी सड़कों को स्थानीय निकायों के हाथ से निकाल दीजिये और यह दोहरा इन्तजाम समाप्त कीजिये। जो इकानामी कमेटी हमारी बैठी थी उसने यह सिफारिश की है कि लोकल-सेल्फ डिपार्टमेंट का जो इंजीनियारिंग डिपार्टमेंट हैं उसका स्रमलगमेशन पी॰डब्ल्यू॰ डी॰ से कर देना चाहिये। यह सिफारिश श्रवश्य गवर्नमेंट को मान लेनी चाहिये। इसी के साथ साथ स्थानीय निकायों की देख-रेख में जो सड़कों पर पुल या नालों पर पुल हैं उनकी दशा भी बहुत शोचनीय है और जहां नये पुल बनाने की स्रावश्यकता है वहां ये स्थानीय निकायों बनाने में स्रसमर्थ है, क्योंकि स्रापकी सहायता स्रपर्याप्त होती है, इसलिये उनका काम भी पो॰डब्ल्यू॰ डी॰ को दे दिया जाय।

स्थानीय निकायों के डाक बंगलों को भी देखिये। उनकी इमारतों की हालत भी बहुत खराब है। साथ ही ग्रंतिरम जिला परिषद् ग्रौर स्थानीय निकायों के जो ग्रस्पताल हैं उनकी इमारतों की दशा भी चिन्तनीय है। पर्याप्त सहायता उनको नहीं मिलती है ग्रौर उनके पास इतने साधन नहीं है। जो सड़कों ग्रादि के लिये ग्रनुदान दिया जाता है उससे वे जनता की ग्राकांक्षाग्रों की पूर्ति नहीं कर सकते, सड़कों की देख-रेख भी नहीं हो पाती ग्रौर न नव-निर्माण किया जा सकता है। इसलिये मेरा सुझाव यह है कि सड़कों का इन्तजाम पी०डब्ल्यू० डी० को देने के बाद जो रुपया ग्राप का बच जाता है उसको इमारतों के निर्माण के लिये, डाक बंगलों की मरम्मत ग्रौर ग्रस्पतालों की मरम्मत के लिये इस्तेमाल किया जाय।

श्रव मान्यवर, मुहकसे में जो काम करने वाले कर्मचारी, सड़कों पर काम करने वाले जो कर्मचारी है, उनकी जो तनख्वाहें है वह बहुत कम हैं। राज्य सरकार के श्रन्य कर्मचारियों की भांति उनकी श्रपनी समस्यायें है जिनकी तरफ माननीय मंत्री जी का ध्यान जाना श्रावद्यक है।

इन शब्दों के साथ में श्रपना कटौती का प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं श्रौर श्राशा करता हूं कि माननीय सदस्य इसका समर्थन करेंगे।

श्री रयामलाल (जिला मथुरा)—माननीय उपाध्यक्ष महोदय, में श्रापकी श्राज्ञा से जो श्रनुदान प्रस्तुत है उसका समर्थन करना चाहता हूं। वास्तव में पिछले कुछ सालों में नागरिक निर्माण के सिलसिले में शहरों में या देहातों मे जो काम हुए हैं, शहरों में खास

#### [श्री श्यामलाल]

तौर से, गन्दी बस्तियों को साफ करने के लिये जा रुपया खर्च हुआ और नये मकानात बनाने के लिये बहुत सी जगहें एक्वायर की गई श्रोर लोगों को लीज पर दी गई, इससे जनता को निवास करने में और गन्दगी दूर करने में बड़ी सहायता प्राप्त हुई है। यह सही है कि इस काम को करने में बहुत से लोग उजड़े, उन्हें दिक्कत हुई श्रीर उनको उनकी सुविवानुसार श्रम्बी जगह पर नहीं बसाया जा सका लेकिन उसके बाद जो नयी जगहें बनाई गई, नये मकानात बने उससे बहुत से लोगों की कठिनाइयां दूर हुई।

इस संबंब में बहुत सी नगरपालिकाओं को श्रनुदान दिये गये हे श्रोर उनमे काम भी हुए लेकिन कई नगरपालिकाये हमारे यहां ऐसी है जहां पर उचित तरीके से पये की व्यवस्था नहीं की जाती है? इस संबंध में मे विशेषतीर पर माननीय मत्री जी का ध्यान बनारस की रामनगर नगरयालिका की श्रोर ले जाना चाहता हूं। उस नगरपालिका मे एक दल विशेष का बहुमत है जोकि सोशलिस्ट पार्टी कही जाती है जोकि इस प्रदेश में प्रजातंत्र का बहुत ही होंग पीटली है। श्रगर किसी भी माननीय सदस्य को सोशलिस्ट पार्टी के काले कारनामें इस प्रदेश में देखने हों तो वह रामनगर नगरपालिक। की श्रोर पथारे। जिनने भी श्रनुदान रामनगर नगरयालिका को दिये गये उनका एक पेसा भी जनता के हित में नहीं खर्च किया गया बल्कि सारा का सारा पैसा सोशलिस्ट पार्टी के चेयरमैन या उनकी पार्टी के लिये खर्च किया गया। विछने साल जब माननीय यादव जो, उपमंत्री बनारस गये थे तो हमने उनको एक दरस्वास्त दी थी लेकिन हमारे मंत्री महोदय की पालिसी यह है जैसा कि उन्होंने कल इस सदन में प्रदिशत किया कि हर नगरपालिका को मोका देना चाहिये कि वह काम करे चाहे सही या गलत श्रोर जबतक कि ऐसी स्थिति न श्रा जाय कि उसका चलना श्रसंभव हो जाय तबतक वह उसको नहीं छ्वेगे। उसी नीति के ग्राधार पर ग्राज वह नगरपालिका वहां पर सारा रुग्या जो अनुदानों का जाता है या जनता से जो टेक्स वसूल होता है, उसको खत्म कर रही है और जनता को कोई लाभ नहीं हो रहा है। हमारे मंत्री जी ने कहा था कि हमको ऐक्शन लेने में साल भर लग जाता है लेकिन में वेबता हूं कि तीन वर्ष से वह उस नगरपालिका को छोड़े हुये है। वहां पर सड़क के लिये रुपया दिया गया लेकिन न तो सङ्क पर मिट्टी डाली गई, न गिट्टी डाली गई श्रीर न तारकोल ही डाला गया। मैने सार्वजनिक निर्माण विभाग के चीफ इंजीनियर से कहा कि वहां पर कोई काम नहीं हुआ है इसलिये रुपने का भुगतान न किया जाय ग्रौर वह स्वयं उसका निरीक्षण उन्होंने न तो सड़क ही देखी न श्रौर कुछ किया लेकिन पूरा भगतान कर विया। सङ्कें वैसी की वैसी ही है। इसी प्रकार से वहां पर पया दिया गया कि ड्रेन बनाई जायं लेकिन वह भी नहीं किया गया। वहां पर कभी एक क्षेत्र में भ्रौर कभी वूसरे क्षेत्र में लोदा जा रहा है भ्रोर पया जाया किया जा रहा है।

बनारस राज्य में महाराजा के समय में पानी की व्यवस्था थी। जब विलीनीकरण हुआ तो केंद्रीय सरकार ने कहा कि राज्य में जो सुविधाय उपलब्ध हैं वह विलीनोकरण के उपरान्त भी प्राप्त रहेंगी। वहां पर ट्यूबवेल के लिये म्युनिसिपैलिटी को कर्ज दिया गया। लोगों ने अपने पये से ट्यूबवेल बनवाये। वह रुपया नगरपालिका ग्रदा नहीं कर रही है। उस नगरपालिका पर जो सरकार का कर्ज है उस मद में ग्रभी एक रुपया भी वसूल नहीं हुआ है। उसके फंड में ग्राप जिला ग्रधिकारियों से पूछ सकते हैं, ग्राज इतना भी पैसा नहीं है कि ग्रपने कर्मचारियों की तनख्वाह दे सकें। ग्राप के ग्रनुदानों को लेकर वह किसी तरह से ग्रपनी जिम्मेदारी को निभा रही है। वहां पर शिक्षा के लिये, सड़कों के लिये या सफाई के लिये जो रुपया जाता है वह सारा रुपया व्यर्थ जा रहा है। ग्रापने वहां की जनता को ग्राक्वासन दिया था कि वहां पर महाराजा के समय में जिस प्रकार से पानी की व्यवस्था थी वह मिलेगी लेकिन वहां की नगरपालिका सोशिलस्ट पार्टी के तत्वाधान में न तो कर्जा ही ग्रदा कर रही है भीर न उसकी वसूली के लिये

## १९६०--६१ के ब्राय-व यक में ब्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदान संख्या ३७--- लेखा **बोर्धकॅ**५०---नागरिक निर्माण -कार्यो के लिये सहायक श्रनुदान

उसने स्राजतक कोई कदम उठाया है। वहां पर जनता की यह मांग है कि जिस तरह से महाराजा के समय में हमें मुक्त पानी की सुविधा प्राप्त थी वह सुविधा ग्राज भी दी जाय। वै पंत्री जी से नम्रतापूर्वक प्रनुरोध करूंगा कि वह बनारस राज्य के विलीनीकरण की शर्ता को देखे और जनता को जो सुविधाये पहले प्राप्त थीं वह दे। वह चाहे तो बनारस महाराजा से बाह भी करें कि विलीनीकरण के पहले बहां पर क्या सुविधाय प्राप्त थीं ग्रौर उन सुविधाग्रों को देने की कृपा करें।

मान्यवर, इसके पश्चात् मै कहना चाहता हूं कि वहां पर जो पया दिया गया उसका सद्पयोग नहीं हुआ। े नगरपालिका में जो पुरानी पाइपलाइन थी वह सब से शिलस्ट पार्टी के सदस्यों के हाथ मे चली गई श्रीर जो रुपया श्रापका गया उससे नयी पाइप लाइन ली गई। श्रापने बिजली के लिये श्रनुदान दिया। मुझे खेद है कि सोशलिस्ट पार्टी जो दूसरों पर इतने गलत भ्रारोप लगाया करती है, उसके नेता श्री राजनारायण जी श्रपनी पार्टी के कारनामों को बनारस मे नही देखते कि वहां पर कैसे काले कारनामे हो रहे है, दिस तरह से जनता त्रस्त हो रही है । वहां पर राजनारायण जी की धाक जमी हुई हें जिले के श्रिधिकारियों पर श्रौर में समझता हं कि शायद मंत्री जी पर भी धाक जमी हो । . . . . .

श्री उपाध्यक्ष--ग्रापका मतलब स्वायत्त शासन के ग्रधिकारियों से है ?

श्री इयामलाल—जी हां। वहां पर कलेक्टर ग्रौर कमिइनर वगैरह सभी राजनारायण जी से दबे हुये है। वहां पर ग्राज तक जनता के साथ सब गलत काम किये गये श्रीर जनता के पैसे का दुरुपयोग हुआ है। मंत्री जी से मेरा श्रन्रोध है कि श्रब समय श्रा गया है कि वह उस स्रोर तूरन्त घ्यान दे।

श्री शिवप्रवसाद नागर (जिला खीरी) -- उपाध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रक्त है। जो माननीय सदस्य इस समय हाउस मे नहीं है, उनका किसी नगरपालिका से संबंध नहीं है, केवल यहीं के सदस्य है तो क्या उनके बारे में उनकी श्रनुपस्थित में किसी भाननीय सदस्य को ग्राक्षेप करना चाहिये ?

श्री उपाध्यक्ष--माननीय सदस्यों की यह जिम्मेदारी है कि वह सदन की सेवा करे, लेकिन कोई माननीय सदस्य श्रमनी इच्छा से बाहर चले जाते है और वह किसी बात का जवाब देने से वंचित रह जाते है तो उसमे मै क्या कर सकता हं।

श्री स्यामलाल-माननीय उपाध्यक्ष महोदय, में किसी व्यक्ति पर व्यक्तिगत ब्राक्षेप नहीं कर रहा हूं । जो रुपया दिया गया नगरपालिका को कि रोशनी की जाय, उस रुपये के बारे में यह तय हुंग्रों था कि हरिजनों की बस्ती में रोशनी की जायगी लेकिन सोशलिस्ट पार्टी के चेयरमैन ग्रंपने घर तक रोशनी ले गये, हजारों रुपया इस पर खर्च हुग्रा लेकिन हरिजनों की बस्ती तक बिजली नहीं पहुंच पायी। हमने जिला ऋधिकारियों के द्वारा मंत्री जी से अनुरोध किया कि इस बारे में उचित कार्यवाही की जाय। हुमें इसमें कोई एतराज नहीं है कि सोशलिस्ट पार्टी के चेयरमैन वहां रहें लेकिन जनता के धन का दुष्पयोग नहीं होना चाहिये। मै निवेदन करूंगा कि माननीय मंत्री जी इसको देखें कि किस तरह से वहां जनता की सेश होनी चाहिये।

वहां पर चुंगी का बहुत सा रुपया बकाया है। वहां पर चुंगी कमीशन के बेसिस पर उगाही जाती है। वह रुपया एकत्रित करते है। चुंगी ग्रदा नहीं होती है, इसलिये जो ग्रान्ट ग्राप शिक्षा को देते है वह खर्च हो जाती है। जब ग्रधिकारियों से ग्रन रोघ किया जाता है तो कहते हैं कि यह हमें ग्रधिकार है, यह टेक्निकल बातें हैं। शिक्षा के क्षेत्र में जो काम किया गया है वह नगण्य है। प्रारंभिक शिक्षा भी नहीं चल रही है। लड़कियों का एक जूनियर हाईस्कूल था वह भी नहीं चला पा रहे हैं। इसलिये शिक्षा विभाग से श्रनुरोध किया गया। माननीय

#### [श्री श्यामलाल]

शिक्षा मंत्री जी ने कृपा करके शिक्षा विभाग की तरफ से लड़कियों का एक स्कूल खोल दिया है। जितने कर्मचारी नगरपालिका में है उतने ही मोश्रत्तल है। श्रापके जो श्रावेश जाते है उनका पालन नहीं होता है। विश्वनाथ प्रसाद हैंड क्लर्क को मोश्रत्तल हुए दो वर्ष हो गये, इस सोशलिस्ट पार्टी के राज्य में।

श्री उपाध्यक्ष—प्राप बार-बार उसी बात को बुहुरा रहे हैं । श्रगर श्रापके पास श्रौ कुछ बोलने के लिये नहीं है तो खत्म कीजिये ।

श्री श्यामलाल — पंयह निवेदन कर रहा था कि न तो उसको रिइंस्टेट किया गया है श्रीर न उसको तनख्याह ही दी गयी है। मेरा श्रनुरोय है कि मुगजसराय नगरपालिका का शहर बढ़ रहा है, उसकी श्रभी से व्यवस्था होनी चाहिये ताकि भविष्य में कोई समस्या न खड़ी हो सके।

श्री | रघुरनतेजबहादुरसिंह (जिला गोंडा) — प्राननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं श्रापका बड़ा श्राभारी हूं कि श्रापने मुझे इस श्रनुदान पर बोलन का समय दिया है। श्रीमन, जब मैंने इस श्रनुदान को देखा श्रीर पढ़ा तो ऐसा प्रतीत हुशा कि इसमें प्राइमरी स्कूल के भवनों को बनाने के लिये कोई विशेष व्यवस्था नहीं है। श्रीमन, प्राइमरी स्कूलों की इमारतों को श्रार देखा जाय तो उनकी दशा बड़ी शोचनीय है। माननीय मंत्री जो को भी पता है कि वहां बच्चों को पढ़ाने के लिये जगह नहीं है। वे लोग पेड़ो के नीचे बैठ कर पढ़ते है। मिसाल के तौर पर, मेरे क्षेत्र वादुल्लानगर, जिला गोंडा, में बस्ती खास का स्कूल का भवन बिलकुल गिरा हुशा है। में श्रापके द्वारा यह निवेदन करना चाहता हूं कि क्षेत्र के प्राइमरी स्कूलों के बनाने के लिये ज्यादा से ज्यादा श्रनुदान देकर उन गिरी हुई इमारतों को शीझ से शीझ बनवा दिया जाय।

बहुत से स्कूलों में बच्चों के पानी पीने की भी कोई व्यवस्था नहीं है। गोंडा श्रन्तरिम जिला परिषद ने एक प्रस्ताव पास किया था कि कुएं का निर्माण किया जाय या नल की व्यवस्था की जाय लेकिन कोई न कोई बहाना बना दिया जाता है श्रौर वह कार्य श्रभी तक पूरा नहीं हो पाया। में श्रपने जिले की ही नहीं सारे प्रदेश के बारे में कहुंगा कि इसकी जांच करायी जाय कि कहां कहां बच्चों के पानी पीने का प्रबंध नहीं है। जहां नहीं है वहां पानी की व्यवस्था की जाय श्रौर जहां के भवन गिर गये है वहां शिद्धातिशी श्रभवां को बनवाया जाय। उसके लिये प्रदेश से श्रथवा केन्द्र से विशेष श्रनुदान प्राप्त कर यह काम किया जाय। इस तरीके से तमाम स्कूल खोले जा रहे है परन्तु वहां बच्चों के पढ़ने की कोई इमारत नहीं है, इस तरह तमाम चीओं पर रुपये का श्रपच्यय होता है पर स्कूल भवनों की उपेक्षा की जाती है।

श्रन्तिरम जिला परिषद् की सड़कों की दुर्वशा के बारे में में निवेदन करना चाहता हूं कि श्राज १०, १२ साल से हमारे क्षेत्र के श्रन्दर सादुल्लानगर, बूढ़ा पार परगने में सड़कों पर मिट्टी भी नहीं पड़ी है। कई पर तो एक फीट भी मिट्टी नहीं पड़ी है श्रौर यदि कहीं पड़ी भी हैं तो एकाथ फर्ली i पर। गौराचौकी से खोड़ारा श्रौर गौराचौकी से बुकनापुर सड़क पर मिट्टी के कट जाने से श्रौर श्ररसा से मिट्टी न डालने से बरसात में घुटनों तक पानी सड़क में भर जाता है, यहां तक कि जाड़े में भी उस पर पानी भरा रहता है जिससे श्राम जनता का यातायात बिलकुल बन्द हो जाता है। वहां पर यातायात के सुधार की कोई व्यवस्था न तो जिले से ही हुई श्रौर न प्रान्तीय सरकार ने की। इसलिये मेरा निवेदन है कि उन सड़कों को बनाने का शीघ्र से शीघ्र श्रावेश दिया जाय। कोई लम्बा फासला भी नहीं है, एक जगह ५,६ फर्लांग है तथा दूसरी जगह ६,७ फर्लांग है, वहां पर श्रगर मिट्टी पड़ जाय तो ग्रामीण जनता को जिसे गन्ना लेकर मिल में जाना पड़ता है सुविधा हो जायगी श्रौर उनके जो हजारों रुपये के बैल उसमें फंस फंस कर मर जाते हैं, किसी के पर दूट जाते हैं, किसी की बैलगाड़ी उलट जाती है, उससे उनकी जो हानि होती है बच सकती है। माननीय मंत्री जी से मेरा निवेदन है कि इस तरफ कोई विशेष व्यवस्थ करने की वह कुपा करें।

श्रीमन्, जो शहरों के ग्रन्दर गन्दी बस्तियां हैं, जो स्लम्स हैं, उनको साफ करने की व्यवस्था सरकार द्वारा की जाती है परन्तु स्वायत्त शासन विभाग द्वारा कोई ऐसी स्कीम नहीं चलायी जा सकी है कि देहातों में जो हरिजन बस्तियां है या हरिजन लोग जो ग्रयना भवन निर्माण करना चाहते हैं उनको किसी किस्म की सहायता दी जाय। में यह चाहूंगा कि सरकार को इसके लिये विशेष प्रबन्ध करना चाहिये ग्रीर जो विकास सम्बन्धी कार्य है उनके लिये प्लानिंग डिपार्टमेंट या ग्रीर ग्रन्य डिपार्टमेंट्स जो हैं उनसे परामर्श करके वह देहातों में ज्यादा धन देने के लिये व्यवस्था करें तािक जो वहां की गरीब जनता है, जो हरिजन व पिछड़ी जाित के लोग हैं वे भवन ग्रादि बना सके इसकी सुविधा के लिये उनको ग्रनुदान मिले।

श्रीमन्, एक बात में श्रीर श्रापके द्वारा निवेदन करना चाहता हूं कि हमारे यहां श्रम-घटी और सिगारघाट नाम के दो पुल बिसुई नदी पर हैं जिनकी बड़ी खराब हालत है। बनाने का ग्रब तक कोई प्रयत्न नहीं किया गया है। ग्रन्तरिम जिला परिषद् गोंडा ने दो साल पहले इस सम्बन्ध में एक रेजोल्यूशन भी पास किया था। परन्तु ग्राज तक उसकी कोई रूपरेखा हमारे सामने नहीं ग्रायी। न उसने कुछ किया न सरकार ने ही कुछ किया। इस सम्बन्ध में मैंने स्वयं माननीय मुख्य मंत्री के पास प्रार्थनापत्र भेजा परन्तु उसका कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं प्राप्त हुन्रा । रेलवे स्टेशन जाने का एकमात्र साधन सिंगारघाट होकर जाने का ही है उस क्षेत्र के लोगों के लिये, लेकिन वह पुल ग्रभी तक नहीं बना है। मैने उस सड़क के बारे में प्रक्त भी किये थे, छोटे छोटे पुल बना दिये गये हैं और नदी के किनारे की सड़क भी पाट दी गई है लेकिन वह मेन बिज नहीं बना है। जिला बोर्ड का काफी पैसा इस सड़क श्रीर छोटी-छोटी पुलियों के विषय में खर्च हो चुका है लेकिन बड़े पुल के न बनने से सब काम बेकार हो रहा है इसलिये उसके बनाने के लिये शीघ्रातिशोध्र ग्रादेश दिया जाय । मैं माननीय मंत्री जी से नम्रतापूर्वक करवद्ध प्रार्थना करता हूं कि इस स्रोर वह विशेष ध्यान दें। उस क्षेत्र के लोगों के लियें केवल एक ही रास्ता है ऋौरें वहां की जनता जो पैसा टैक्स के रूप में दे रही है उसके एवज में भ्राज तक वह नहीं जानती कि उसे क्या मिला है।

एक बात मुझे सादुल्लानगर के अस्पताल के विषय में भी कहनी है। वहां पर रोगियों के रहने के लिये स्थान की और इमारत की बहुत कमी है। वहां के लिये एक आपरेशन—हाल शल्य चिकित्सा के लिये बनाने की प्रार्थना की गई थी और शायद वहां की अन्तरिम परिषद से भी सरकार के पास प्रस्ताव श्राया है, ६६ स्ववायर मील में वह एक अस्पताल है जिस में कोई चिकित्सा सामग्री का प्रबन्ध नहीं है, रोगियों को बहुत दूर जाना पड़ता है और वहां कोई अच्छा अस्पताल नहीं है, प्लानिंग के अस्पतालों की तो कोई रूपरेखा नहीं है और उनके पास कोई साजसज्जा नहीं है। इसलिये प्रार्थना है कि इस पुराने अस्पताल के लिये शल्य रूप और साजसज्जा का प्रबन्ध किया जाय ताकि आकस्मिक दुर्घटना वाले मरीजों के लिये चिकित्सा का प्रबन्ध हो सके।

प्राइमरी स्कूलों के टीचर्स के वेतन के सम्बन्ध में भी मैं कुछ कहना चाहता हूं, उनका वेतन बहुत कम है और इसी कारण से वे लोग रुचि के साथ अपना कार्य सम्पादन नहीं करते, न वह समय से स्कूल आते हैं, न पूरा समय देते हैं। मैं चाहता हूं कि उनका वेतन बढ़ाया जाय जिससे वह समय से आ सके और पूरा समय दे सकें और जो बच्चे भावी राष्ट्र के निर्माता होंगे उनके द्वारा बच्चों को उचित शिक्षा मिल सके।

ग्राज प्रायः यह देखने में ग्राता है कि स्वायत्त शासन विभाग द्वारा जो ग्रनुमान तैयार किया जाता है उस में ग्रौर पी० डब्ल्यू० डी० इंजीनियर्स द्वारा लगाये गये ग्रनुमान में ग्रन्तर ता है ग्रौर वह बढ़ जाता है। मै चाहता हूं कि इन इंजीनियरिंग विभाग के रेट्स में समानता नी चाहिये ग्रौर शिड्यूल्ड रेट्स यकसां होने चाहिये, दोनों विभागों के रेट्स ग्रौर ग्रनुमान एक होने चाहिये, उनमें ग्रन्तर होना उचित नहीं है। ग्रन्त में मैं मंत्री जी से प्रार्थना करूंगा कि

[श्री रघुरनतेजबहादुरसिंह]

जिन प्राइमरी स्कूल के भवनों, पुलो तथा सड़को का मैंने जित्र किया है उनके लिये रुपया देने तथा उन्हे तुरन्त बनवाने की कृपा की जाय। इन अब्दो के साथ में इस कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री कैलाशनारायण गुप्त (जिला इलाह बाद)—माननीय उपाध्यक्ष महोदय, में श्रापका बहुत श्राभारी हूं, कदाचित यह मेरा पहला श्रसवर है सदन में बोलने का....

श्री उपाध्यक्ष—बार-बार बोलने वालो को भी बहुत बड़ी शिकायत रहती है, ग्राप का तो यह पहला ही ग्रवसर है।

श्री कैलाशनारायण गुण्त—मं श्रपना विशेष श्राभार प्रकट करता हूं। मं मंत्री जी के प्रस्ताव क समर्थन में तथा कटौती के प्रस्ताव के विरोध में खड़ा हुश्रा हूं। माननीय मंत्री जी ने कल जो श्रपना प्रस्ताव रखा था उस में उन्होंने भूमिका के तौर पर बहुत ऊंची बाते कही थी श्रीर बहुत सी बातें भावकता में कही थीं। यद्यपि सभी सदस्यों के लियें उन ऊचाइयो तथा भावनाश्रो तक पहुंचना कठिन मालूम होता है लेकिन फिर भी में श्रपनी श्रोर से श्रीर सदन के श्रिधकाश सदस्यों की श्रोर से उन्हों विश्वास विलाना चाहता हूं कि जितना सीमित हमारा कार्य-क्षेत्र हे श्रीर जितने सीमित हमारे साधन है उनके श्रन्दर मंत्री जी की भावना के श्रनुसार हम चलने की कोशिश करते हैं श्रीर कोई भी ऐसा कार्य नहीं करते जिससे उनको दुख या क्षोभ हो।

इस सिलसिले में उस भूमिका के सम्बन्ध में में एक बात श्रौर कहना चाहता हूं कि श्रगर इस स्वायत्त शासन विभाग का नाम बदल कर स्वायत्त सेवा विभाग कर दिया जाय तो कदाचित ठीक होगा क्योंकि शासन श्रौर सेवा में बहुत श्रन्तर है श्रौर सेवा की भावना से कार्य श्रच्छा हो सकता है लेकिन शासन के नाम से थोड़ी सी हुक्मत की बू श्रा जाती है, उससे हम श्रपनी बात को मनवाने का श्रिषकार सा समझते हैं लेकिन श्रगर सेवा की भावना रहेगी तो विभाग के कार्य में भी श्रन्तर हो जायगा। इस तरह से विभाग जनता के दृष्टिकोण को समझने में भी श्रिषक समर्थ हो सकता है।

हमें दूसरो के दृष्टिकोण को भी समझने की कोशिश करनी चाहिये। मुमकिन है कि हम गलत हो और दूसरे सही हों। तो यह समझना कि दूसरे का दृष्टिकोण सदैव ही गलत है, यह कोई उचित बात नहीं जान पड़ती है। मैंने समय-समय पर जो कमेटीज है उनमें श्रौर जब जब मंत्री जी इलाहाबाद गये वहां उनसे मिला हं श्रीर इलाहाबाद नगर महापालिका की कुछ ऐसी समस्यायें उनके सामने रखीं है। इलाहाबाद नगर महापालिका के श्रन्तर्गत श्रौर खासकर मेरे चुनाव क्षेत्र के ग्रन्वर करोब-करोब ४०,५० गांव ऐसे है जिनमें म्युनिसिपैलिटी की ग्रोर से नहीं के बराबर काम हुन्ना है। कोई-कोई स्थान ऐसा है कि जहा पीने के पक्के कुएं या कच्चे कुएं तक नहीं है, रोदानी के लिये कि रोसिन तेल की बत्तियों तक का कोई प्रबन्ध नहीं है। मैने उनसे कहा कि इन क्षेत्रो का विकास महापालिका की सामर्थ्य श्रौर साधनो के बाहर है श्रौर नियोजन विभाग द्वारा या केन्द्रीय सरकार द्वारा इन गांवो के विकास का प्रबन्ध किया जाय । नियोजन विभाग से कहा कि कुछ मदद की जाय तो उन्होने कहा कि यह सब बाहरी क्षेत्र है इसलिये हम कुछ नहीं कर सकते। लेकिन कुछ न कुछ तो सरकार को करना ही चाहिये, और खासकर जो बुनयादी श्रावश्यकताश्रो की चीजें हैं, जैसे पीने का साफ पानी, रोद्दानी श्रादि का प्रबन्ध, पक्के रास्ते, शौचालय भ्रादि के लिये रुपया जिस मद से भी लिया जा सके ले कर उनको पूरा किया जाय। में मानता हूं कि जितना इसका विस्तार है उसमें महापालिका के साधनों के अन्दर यह असम्भव है कि वह इन कामो को करा सके, इन क्षेत्रो का विकास करा सके। मगर इन बुनियादी चीजों की इन क्षेत्रों में निहायत श्रावश्यकता है।

श्रव में इम्प्र्वमेंट द्रस्ट द्वारा जो स्लम क्लोयरेंस की स्कीम्स चल रही है उनके बारे में कुछ कहता चाहता हूं। में मानता हूं कि स्लम क्लियरेंस होना चाहियें लेकिन उसके श्रांकड़े पहले से तैयार करा लेने चाहियें कि कितने मकान गिराये जायेंगे, कितने लोग बेघरबार होंगे

#### १६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिए मांगों पर मतदार--ग्रनुदान संख्या ३७--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण -कार्यो के लिये सहायक श्रनुदान

श्रौर पहले से उनके बसाने का प्रबन्ध करके, उनको नो प्रोफिट नो लास के श्रनुसार जमीन दे करके तब स्लम क्लियरेंस का काम शुरू होना चाहिये। इस प्रकार की कई-स्कीमें इलाहाबाद महापालिका के श्रन्दर चली है मगर मुझे भय है कि उनका स्वागत होने के बजाय बड़ा विरोध हो रहा है, केवल इसलिये कि उन लोगों का भविष्य श्रिनिश्चत है। वे लोग कहां रहेंगे, इसका कुछ पता नहीं। श्रगर सरकार की श्रोर से उनको कोई श्राश्वासन मिल जाय कि तुमको मुनसिब कीमत पर, नो लास नो प्रोफिट बेसिस (no loss no profit basis) पर मकानों के लिये जमीन मिल जायगी तो जनता एक स्वर से स्लम क्लियरेंस का स्वागत करेगी श्रौर इसका कोई विरोध नहीं रह जायगा।

इम्प्रवमेंट ट्रस्ट से भ्रौर भी मुझको बहुत सी जि़कायतें है। मेरे ही क्षेत्र में कम से कम दस हाउसिंग स्कीम्स है जो कि बिल्कुल श्रनिश्चित ग्रवस्था में पड़ी हुई है। पिछले १५ वर्ष का समय इस देश के लिये एक श्रसाधारण समय रहा है। सन् ३६ में लड़ाई छिड़ी जो सन् ४५ तक चली। इस बीच में तरह तरह के कानून पुरानी सरकार और इस वर्तमान सरकार ने भी लागु किये जिनमें एक रेन्ट कंट्रोल भी है जिसका मतलब यह है कि ग्रपनी स्वेच्छा से कोई ग्रगर चाहे कि कोई घर किराये पर ले तो उसको नहीं मिल सकता, उसको रेंट कंट्रोलर के यहां जाना पड़ेगा और जैसा कि सभी को मालूम है, उसमें कितनी दिक्कतें है। इस दौरान में न मालम कितनी मञ्चरूम बस्तियां प्रयाग नगरमहापालिका के श्रन्दर उभड़ीं। सस्ते दामों पर जमीन मिल गर्यो भ्रौर उन्होंने बिला इस बात का लिहाज किये कि म्युनिसिपैलिटी उनका नक्या मन्जुर करती है या नहीं श्रौर वह स्कीम मन्जूर है या नहीं मकानात बना लिये श्रौर पचीसों लाख रुपये की लागत के मकानात बन गये हैं परन्तु वे स्कीमें मन्जूर नहीं हैं। यह है कि म्युनिसिपैलिटी यद्यपि गृह कर इत्यादि वहां से वसूल करती है पर वहां पर कोई कार्य नहीं कर रही है, न वहां मेहतर झाड़ू लगाता है, न वहां कोई सड़कों पर रोदानी का इन्तजाम है, न सड़कें ब्रौर गुलियां पक्की की जा रही हैं। मंत्रीजी को याद होगा कि पिछली दफा जब वह इलाहाबाद गये थे श्रौर गांधी श्राश्रम में ठहरे थे तो मैने उनसे कहा था कि यह मै मानता हूं कि कानून के विरूद्ध ये बस्तियां खड़ी हो गयी है परन्तु जब राष्ट्र की इतनी लागत उनमें लग चुकी है तो भ्रब उनको बिलकुल नजरम्रन्दाज तो नहीं किया जा सकता। कानून को श्राप कुछ शिथिल कीजिये ग्रौर ये जो ५-१० बस्तियां ग्रनिश्चित ग्रवस्था में पड़ी है उनका भी कुछ ऐसा प्रबन्ध कीजिये कि म्युनिसिपैलिटी की सारी सुख ग्रौर सुविधा मिल सके ।

एक बात में ग्रौर कहना चाहूंगा। जैसा मैने पहले भी इद्यारा किया है कि महापालिका के साधन सीमित हैं, उसकी श्रामदनी भी सीमित हैं, तो श्रापकी तरफ से कुछ उसको प्रोत्साहन मिलना चाहिये, मसलन जो मनोरंजन कर है या मोटर वैहिकिल्स टैक्स है, मेरा श्रापसे यह सुझाव है कि उसका कुछ ज्यादा हिस्सा उनको देने की ग्राप कृपा करें। ग्रगर मे भूल नहीं करता हूं तो इस तरह की मांग महापालिका की तरफ से श्रापके पास ग्रायी होगी ग्रौर में यह समझता हूं कि ग्रापकों इन करों में से कुछ हिस्सा उनको देना चाहिये ग्रौर उनकी यह मांग जायज है। में समझता हूं कि इस पर भी ग्राप ध्यान देने की कृपा करेंगे।

में एक बात मंत्री जो से म्रापके द्वारा ग्रौर कहना चाहूंगा ग्रौर वह यह कि पिछले ४-६ वर्षों से वहां की म्युनिसिपैलिटी सस्पेंडेड थी ग्रौर एड मिनिस्ट्रेटर के जरिये कार्य होता था। एड मिनिस्ट्रेटर द्वारा कार्य होने में बहुत सी गड़बड़ियां हुई। में एक दृष्टांत दे कर इस बात को ज्यादा न बढ़ाऊंगा। इलाहाबाद में कटरा एक मुहल्ला है ग्रौर दुर्भाग्य से वह मेरे ही क्षेत्र में पड़ता है। वहां की सड़क ग्रौर पटरियां दो दफा खुदों। ईट गिराई गयी, फिर उठायी गयी। फिर गिट्टी गिराई गयी ग्रौर उठायी गयी। मेरा खयाल है कि ग्रगर मंत्रीजी इसकी जांच करेंगे तो बीसियों हजार रुपया उस उठाने ग्रौर गिराने में नष्ट हुग्रा ग्रौर साथ ही जनता को इतना कष्ट हुग्रा कि त्राहि नाह गयी। तो मेरा उनसे यह भी निवेदन होगा कि वह इसकी भी जांच करें कि इस कटरा वाले मामले में म्युनिसीपैलिटी को कितनी हानि उठानी पड़ी? ग्रंत में में यह भी कहंगा कि जब तक प्रशासक का कार्य रहा वहां पर, जितने भी ग्रादेश जाते

## [भी कैलाश नारायण गुप्त]

रह, उनको ताक पर रखकर काम होता रहा। वहां पर निम्न वर्ग के कर्मचारी सस्पेंड हुये और जितने समय में इंववायरी करके या तो उनको बरखास्त किया जाता या बहाल किया जाता, लेकिन ऐसा नहीं किया गया बल्कि एक एक केस डेढ़-डेढ़ दो-दो साल तक चला श्रौर निम्न वर्ग के कमचारियों की बड़ी दुर्गति हुई। मुझे श्राशा है कि माननीय स्वशासन मंत्री जी इसका ध्यान रखेगे। इन शब्दों के साथ, में प्रस्ताव का समर्थन करता हूं श्रौर कटौती के प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

श्री बंशीधर शुक्ल (जिला खीरी)—श्रीमान्जी, श्रभी जो हमारी विरोधी पार्टी की श्रीर से कटौती-प्रस्ताव रखा गया है में उसका समर्थन करते हुये कहूंगा कि जो निर्माण कार्य चल रहे हैं सरकार की श्रोर से वे श्रमीरों के परिपालन के लिये श्रीर शहरों के लिये हैं, देहात के लिये कुछ नहीं हैं। देहातों में कुछ भी नहीं हुश्रा है श्रीर श्रगर हुश्रा हे तो ऐसी जगह जहां कोई लीडर, किसी मिनिस्टर का खानदानी कोई सरकारी श्रफ्सर रह रहा होगा, उसके दबाव से हुश्रा होगा। कहीं एक श्राध दरल्त उगा दिया गया होगा। इस तरह के निर्माण कार्य होते हैं। लाखों रुपये लगाये जाते हे श्रीर मुक्किल से हजार पांच सौ का काम होता है। सरकार की तरफ से एक तरफा काम हो रहा है। इसलिये में कहूंगा कि जो रुपया दिया जा रहा हं उससे माननीय सदस्यों को चाहिये श्रगर वह देहातों की बोट से यहां श्राये हैं, तो इस काम को देहातों में होने दे। इसका शहरों से सम्बन्ध न रखा जाय तो ठीक है।

शहर तो, श्रीमन्, जनता का शोषण करने के लिये हैं। उनसे गरीब जनता को कोई लाभ नहीं होता है। शहर भोग भूमि श्रीर गांव कर्म भूमि है, इसिलये गांव वालों के परिश्रम से शहर वाले श्रानन्द करते हैं। श्राज शहर में जायं तो वहां दुकानदार रास्ता देखते हैं कि जो श्रीमान जी के पास हो वह सब यहां रख जाये। इस तरह की उनकी मनोभावना है। इनके ही परिपालन या सुधार करने की बात की जाती है। यही सरकार की रीति हो गई है। यह बड़ा निन्दनीय होगा श्रगर हम इस श्रमुदान की स्वीकार करेगे।

श्रीमन्, हमारा जिला तो कुदरती पिछड़ा हुआ है और यहां पर कोई सुधार नहीं हुआ श्रंगेजी राज्य में ३० सड़कें बनाई गई थीं श्रीर हमारे यहां ३० ही छोटी बड़ी नदियां है। इसिलिये उनके श्रनुसार सड़के बनाई गई थीं जिससे श्राने जाने में बाधा न हो श्रौर पुल भी बन-बाये थे। एक बढ़ई डी हा का पुल बनाया गया था जिसकी हमारी सरकार ने तुड़वा दिया। हमारे परगने श्रीनगर का रास्ता ऐसा है जिसके द्वारा लाखों मन गन्ना, जुट ग्रीर मक्का जाती है। एक गांव ऐसा है जिसकी भ्राबादी ४, ६ हजार है। इस प्रकार का कोई काम सरकार की श्रोर से नहीं होता है। एक हजार से ऊपर हमने दरस्वास्तें दी होंगी लेकिन इंसपेक्टर श्रौर सेकेटरी को रिश्वत नहीं दी इसलिये एक भी नल नहीं लगाया गया। कहती है कि निर्माण करो, निर्माण करो श्रीर हम भी तैयार है, लेकिन क्या करे? किसी भी गांव सभा पर श्राप विश्वास नहीं करेंगे, श्राप तो विश्वास करेंगे ठेकेवार पर। हमारे यहां स्कूल बनाया गया जो हमारी दृष्टि से १२००, १३०० रुपये में बन गया होगा। सरकार का ४, ६ हजार रुपया लगा होगा। ग्रगर हम स्कूल बनाना चाहे तो सरकार हमे पैसा नहीं देती वयों कि हम ठे हे इंट नहीं है। अगर हम ठेका लें तो पैसा मिलेगा। गन्ना सोसाइटियों की श्रोर से गलियारे बनाये जा रहे हैं हमारे फरवहन के सब डाइरेक्टरों ने पास किया कि प्रत्येक डाइरेक्टर के क्षेत्र में सड़क बनायी जाय भ्रीर उस सड़क मे ठेकेदारों से काम न लिया जाय। मगर वहां के भ्रावरेरी सेकेंट्री भ्रौर जो भी भ्रधिकारी है वह स्वीकार नहीं करते। जब स्रोवरिसयर महोदय पास कर देंगे, जो विवाता है, तब करेंगे। जब से स्रोवरिसयर बड़ाये गये हैं तब से काम नहीं होता है। यह काम तभी पास करते हैं जबकि उनकी रिश्वत मिल जाती है। बिना रिश्वत वाला कोई श्रोवरसियर है ही नहीं, चाहे मंत्री जी माने या न मानें। अगर मंत्री जो का कोई रिश्तेवार श्रोवरसियर हो तो पूछ लें कि बेटा बताओ, तुमको कितने रुपये रिक्तव में मिले है, घर का म्रादमी होने से वह बता देगा।

#### १६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिए मांगों पर मतदान-श्रनुदान मंख्या ३७-- लेखा द्यार्थक ४०-- नागरिक निर्माण -कार्यों के लिये सहायक श्रनुदान

मेरे जिले में तीन म्युनिसिपैलिटियां हैं——जिलीमपुर, गोला श्रीर मुहम्दी। मुहम्दी म्युनिसिपैलिटी ने इस्लामाबाद गांव की जमीन श्रपने एरिया में शामिल कर ली हैं। गांव वाले कहते हैं कि यह हमारा एरिया है, हम को दे दिया जाय, लेकिन कोई सुनवाई नहीं। उनकी जमीन पर वाटर वर्क्स श्रीर बिजलीघर बनाया गया है। न उनको मुश्रावजा दिया जाता है श्रीर न उनकी जमीन वापस की जाती है। नगरपालिका को, उस समय एक डी० सी० इस प्रकार का साम्प्रदायिक था, इस ढंग से बना दिया है कि जब चुनाव होगा तो उसी के बिरादरी के लोग कामयाब हो सकते हैं।

श्री उपाध्यक्ष--ग्रधिकारियों के खिलाफ ऐसी बातें नहीं कहनी चाहियें।

श्री बंशीधर शुक्ल—गोला में मिल का गंदा पानी तीर्थ में भर दिया जाता है, जहां पर लाखों ही नहीं करोड़ों श्रादमी पर्नी पर स्नान करते हैं। बार-बार सरकार से कहा गया, सरकार ने यह श्राद्याप्तन दिया कि म्युनिसिवैलिटी श्रीर मिल का गंदा पानी तीर्थ मे नहीं जायगा। लेकिन बराबर गिरता है। कुछ नहीं किया जाता है। इस प्रकार का यह सरकार इंतजाम करती है।

बौरहरा, तिगाही और पिलया—तीन टाउन एरिया बड़ी मुश्किल से बनी हैं, निघासन में। पिलया में बिजलीवर बना है लेकिन टाउन एरिया के किसी भी व्यक्ति को बिजली नहीं दी गयी। सरकारों बंगलों में बराबर जलती है, रेस्ट हाउस और गेस्ट हाउस में बराबर बिजली जलती है। मेरो समझ में नहीं भ्राता कि क्या करूं। यह भ्रसेम्बली छोड़ दूं या शरीर छोड़ दूं, क्योंकि यह चो ज श्रब बरदाक्त के बाहर है। हमारे यहां एक कहावत है—राह पुरानी चलत हैं कायर। कूर, कपूत राह छोड़ तीनों चलें, सायर सिंह, सपूत। श्रापको परम्परा तोड़नी होगी जब हम कोई बात कहते हैं तो मंत्री जी श्रफ तरों के प्रतीक बन कर, उनकी स्रोर से ठाट से उत्तर दे देते हैं। जब श्रकतर कुछ लिख कर भेजते हैं तो यह उस पर श्रंपूठा लगा देते हैं।

मेरे जिले में स्रोयल टाउन एरिया है। स्रभी बहुत थोड़े दिन से बनी है। का काम होता है। सरकार ने कहा कि बर्तनों को बड़ा प्रोत्साहन देना चाहते हैं। बर्तन बनाने का स्कूल भी वहां खोला गया लेकिन उसके द्वारा जितने विद्यार्थी निकले हैं सम्भव है कि सिवा नौकरों के ग्रीर किसी भी काम के नहीं। श्रीएल टाउन एरिया में इतनी बड़ी बस्ती है उसमें ग्रगर एक ही पक्की सड़क बनादी जाय तो बड़ा भारों काम हो सकता है लखीमपुर जिले में एक सड़क ग्रंप्रेजों ने बनायी थी जो लखनऊ से सीतापुर से लखीमपुर होती हुई शाहजहांपुर जाती है। बस, इसके श्रलावा कोई सड़क नहीं है। राजा साहब झंडी जिस समय डिस्ट्रिक्ट बोर्ड लखीमपुर के चेयरमैन थे तो उन्होंने एक सड़क ग्रपने यहां घाटपर तक बनवा दी थी ग्रौर राजा साहब जब चेयरमैन थे तब खमरिया ने भी एक सड़क श्रपनी तरफ से बनवा दी थी। इसके ब्रलावा ग्रौर कोई सड़क नहीं बनी सिवाय पांच सात मील की छोड़ कर। गन्ने की जो सड़ में बनायी जाती है वे ऐसी बनायी जाती है कि जिनकी कोई जरूरत नहीं हमारेयहां एक मालपुर गन्ने का क्षेत्र है जहां का गन्ना गोला मिल को स्नाता है। लेकिन उस जगह का गन्ना इसलिये नहीं लिया जाता कि यह कहा गया कि वहां कोई सड़क नहीं है और यह कहा गया कि बीच में नदी पड़ती है, जबिक वहां कोई नदी नहीं है। बार बार कहा गया, क्तेन कमिश्नर से भी कहा गया, कि ग्राप चलकर देख लें, लेकिन ग्रंभी तक कोई नहीं गया। तो इस तरह के प्रज्ञाच अ बनने से तो काम नहीं चल सकता। ग्राप गांवों के गलियारों तक को बना नहीं सकते। कम से कम उनको दुस्त तो करवा दें। लेकिन भ्राप तो वही गलियारे बनावायेंगे जिसमें से ग्राप को निकलना होगा, ग्रौर जिसमें से सरकारी ग्रफसरों को निकलना होगा। उनके बंगलों के सामने देखिए कि कितनी चौड़ी चौड़ी सड़कें बन रही हैं। बिजली लग रही है, उनके पाखाने देखिए, लेकिन गांवों में क्या किया है ग्रापने समझा? गांवों में ग्रादमी नहीं रहते हैं ? सरकारी नौकरों को तो ग्राप रईस बनाते हैं ग्रौर गांव वालों

## [श्री बंशीधर शुक्ल]

को कंगाल बनाते जाते हैं तो में श्रीमती सरकार श्रालिया के पूज्य मन्त्रीगरण से यह कहूंगा कि श्रब यह परम्परा बन्द कीजिये, यह श्रकसरा विलयों की पालने की परम्परा श्रच्छी नहीं लगती है। श्राज तो यह श्रकसरावली मित्रमंडल के सिर पर बैठी हुई है।

(इस समय १ बजकर १६ मिनट पर श्री उपाध्यक्ष चले गये श्रीर श्रिषिकाता, श्रीमती चन्द्रावती, पीठासीन हुईं।)

एक एक सरकारी नौकर के घर पर जाइए, बाहर श्रापको एक चपरासी बेठा हुश्रा मिलेगा श्रौर वह श्रफसर तो दूर रहे, बीच मे वह चपरासी ही इतने खूंख्वार ढंग मे चिल्लायेगा कि श्राप मारे डर के भाग जायेगे। मे तो इतना डरता हूं इन श्रफसरों से जितना वि कुत्ते श्रौर सुश्रर से नहीं डरता। जिस दिन किसी श्रफसर के यहां जाना होता है उस दिन रमझ लेता हूं कि भगवान के घर चलना है। माननीय मंत्री जी के पास तो चला भी जाता हूं। इसलिय कि यह कम से कम हमको काट तो नहीं खायेगे, पुराने साथी हं, श्रगर नहीं पहचानेगे तो दुत्का-रेगे तो नहीं। मगर यह श्रफसर खूंख्वार बनकर खाने को बेठे रहते हैं। जनता को श्रापने उनके मुंह मे छोड़ रखा है।

किसानों को श्राज श्रापने मरने श्रीर कत्ल होने के लिये छोड़ दिया है। इतने ज्यादा कत्ल ग्रौर डाके ग्राज होते हैं कि जिनको कहा नहीं जा सकता। ये ग्रपने ग्रांकड़े ग्रापरख छोड़िये, सब गलत है। ५ सौ कत्ल रोज और ५० हजार की चोरी डकेनी रोज पूरे सुबे मे होती है । यह श्राप सही मानिये । लेकिन श्राप तो श्रपने कागजों की तरफ देखेंगे थानेदार जो कहेगा उसी पर विक्वास करेगे। सब चीजों को छोड़िए ग्रीर इन कत्लों को रोकिये ग्रीर गांवों का का निर्माण कीजिये। गांव वालों का विद्वास लीजिये। गांव पंचायतों के द्वारा काम बाली नहीं है। इससे आपकी बदनामी हो रही है और आपकी बदनामी के माने सरकार की बदनामी। सरकार पर जनता का विश्वास नहीं रहा। सरकारी नौकरों को कोई ईमान-दार नहीं समझता, उनकी सेवाश्रों को लोग घुणा की दृष्टि से देखते है। जहां तक सवाल है, देहात का कोई भ्रादमी कर्जी चाहता है तो उसे नहीं मिलेगा ; दौड़ते-दौड़ते थक कर बैठ जायगा। हम ही एक ट्यूबबेल बनाना चाहते हैं। वैसे वहां नहर बनाने को जरूरत थी। हमने दरख्वास्त दी। मंत्री जी ने कहा कि नहर नहीं ट्युबवेल फेलिये कही तो हो सकता है। हमने कहा कि चार-पांच ट्यबवेल वहां बन सकते है उनके लिये बिजली ही दें दीजिये, तो वह बिजली भी नहीं मिलेगी, ट्यूबवेल भी नहीं बनेगे, जो मांगों नहीं मिलेगा। यह निर्माण हो रहा है। तो इस तरह क्या निर्माण भ्राप करेंगे? हम पर भ्रापको विश्वास नहीं। में कहता हूं कि श्रगर हम पर श्रापको विश्वास नहीं तो श्रपने सदस्यों पर ही विश्वास इन्हीं की इन्क्वायरी ग्राप एक बैठाइए। ये ग्रापके साथी है, जिनके बल पर श्राप यहां बैठे है। ये जो लिखकर दे दे उसको श्राप बाबा, वाक्यं प्रमाणमं मानकर चलिये। में कहता हूं कि देखिए इससे कितनी जल्दी सुधार होता है। ग्रीर ग्रगर ग्राप इन पर भी विक्वास नहीं करते हैं तो छोड़ दीजिये जनता के ऊपर। जनता इन सरकारी नौकरों को ही नहीं सरकार को भी ठीक कर सकती है। तो किसी तरह से इस खंख्वार श्रफसरावली को ठीक कीजिये। वरना निर्माण कार्य इस तरह से नहीं हो सकता है। इहरों की तरफ श्राप देखते हैं, देहातों की तरफ नहीं देखते। देहातियों के पास भ्राज पहनने को कपड़े नहीं है। वह जब आते है तो शहर वाले बस रापये की चीज का १५ रुपया उनसे ले लिया करते है कुछ न कर सकते तो यह मुनाफालोरी को ही बन्द कर वीजिये। कुछ तो श्रापने किया होता, जिसके द्वारा श्रापका नाम होता श्रौर हम भी कहते कि कांग्रेस की सरकार ने ये ये कार्य किये। इतना कहकर में श्रपने मंत्रों जी से यह कहूंगा कि निर्माण कार्य देहातों में ठीक ढंग से होने चाहियें ।

#### १९६०-६१ के ग्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिए मांगों पर मतदान--श्रनुदान संख्या ३७--ले बा दीर्थक ५०--नागरिक निर्माण-कार्यों के लिये सहायक श्रनुदान

श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन (जिला टेहरी-गढ़वाल)—श्रीमती श्रिधिष्ठात्री महोदया, में श्रापकी श्राभारी हूं कि श्रापन मुझें इस श्रनुदान पर बोलने का समय दिया। में प्रस्तुत श्रनुदान का समर्थन करने के लिये खड़ी हुई हूं। नागरिक निर्माण कार्यों का जो श्रनुदान चल रहा है वह वास्तव में बहुत ही महत्वपूर्ण श्रनुदान है। इस सम्बन्ध में बहुत ज्यादा कार्य हमारे देहातों में श्रीर शहरों में भी हुग्रा है लेकिन श्रभी कुछ उसमें कभी है। मुझे ऐसा लगता है कि धन के कारण ही यह कमी रह गई होगी। जैसा कि हमारे उधर के भाइयों ने कहा कि शहरों में इसका कार्य बिलकुल नहीं होना चाहिये श्रीर गांवों में ही होना चाहिये, मैं यह निर्मूल श्रीर गलत समझती हूं। मेरा विचार यह है कि दोनों जगह पर कार्य होना चाहिये। शहरों में भी श्रीर गांवों में भी कार्य होने चाहियें।

मेरे यहां बहुत सी जगह ऐसी हैं कि जहां पर पानी की बहुत कि ठनाई है। पहाड़ों पर पेय जल को गांव तक लाने में बहुत कि ठनाई होती है। लोगों को पहाड़ों में पेयजल २, २ श्रौर ३, ३ मील से लाना पड़ता है। मेरा स्वशासन मन्त्री जी से श्रनुरोध है कि वह इस श्रोर ध्यान देने की कृपा करें। मेरे यहां देवप्रयाग क्षेत्र में पानी की व्यवस्था के लिए कुछ कार्य किया गया है, उसके लिये में श्राभारी हूं लेकिन श्रव भी बहुत सी जगह हमारे पर्वतीय क्षेत्रों में ऐसी हैं कि जहां पर पेयजल की बहुत कि ठनाई है। लोग गन्दा पानी पीते हैं जिससे उनका पेट खराब हो जाता है। जहां पर अंचाई पर लोग रहते हैं उन पर विशेष ध्यान देने की श्रावश्यकता है।

पर्वतीय जिलों में जहां पर यात्रा-पथ है वहीं ग्रिषिकांश नगरपालिका हैं, वहीं पर पर्यटक भी ग्राते हैं। ये नगरपालिका यें पर्यटकों को ठहरने इत्यादि की सुविधा के लिये भी बनायी गयी हैं किन्तु जब तक उनको श्रिषिक धन नहीं दिया जाता है तब तक वे उनके ग्रावास की ग्राव-श्यकताग्रों को पूरा नहीं कर सकती हैं। इसलिये मेरा स्वशासन मन्त्री जी से ग्रनुरोध है कि जहां पर यात्री लोग ग्राते जाते हों उन नगरपालिकाग्रों को ग्राप थोड़े कुछ ग्रौर टैक्स लगाने की ग्रनुमित देने की कृपा करें जिससे उनको धन की इफरात हो।

में मन्त्री महोदय से यह भी निवेदन करना चाहती हूं कि बहुत से स्कूल ऐसे हैं कि जो जर्जर अवस्था में हैं। वे एक बार खोल दिये लेकिन दोबारा उनकी तरफ ध्यान नहीं दिया गया। उन स्कूलों की तरफ ध्यान देने की आवश्यकता है। जो यह छोटी सी पुस्तक हमको प्राप्त हुई है इसको सारी टटोलती हूं लेकिन हमारे पर्वतीय जिलों के लिये और खास कर टेहरी जिले के लिये कुछ दिखाई नहीं देता है। में इसको देख कर बहुत निराश हुई हूं। पहाड़ों में थोड़ा बहुत कार्य हुआ है लेकिन पूरा कार्य जो होना चाहिये वह अभी नहीं हुआ है। इस-लिये में चाहती हूं कि माननीय मन्त्री महोदय उस और ध्यान देने की कृपा करें।

स्कूलों के जो मास्टर हैं उनका बेतन बहुत दिनों में श्रीर देर देर से मिलता है। उस तरफ भी ध्यान देने की जरूरत है। जो स्कूल जर्जर श्रवस्था में हैं उनकी तरफ तो जरूर ही ध्यान देने की जरूरत है। बच्चों की संख्या वहां पर वैसे ही कम रहती है लेकिन जब पहाड़ों में पानी टपकता रहता है श्रीर बैठने के लिये कोई स्थान नहीं होता तो श्रीर भी बच्चे कम श्राते हैं। इसलिये उनकी इस श्रवस्था की तरफ ध्यान देने की श्रावश्यकता है। वैसे तो में उनसे मिलती भी रही हूं श्रीर कई बार लिख कर भी भेजा है श्रीर उस तरफ श्राप ने ध्यान दिया है लेकिन फिर भी ध्यान देने की जरूरत है।

कीर्तिनगर श्रीर देव प्रयाग में यात्रियों की सुविधा के लिये श्रीर स्थान बनाये जा सकते हैं। किन्तु यह तभी हो सकता है कि जब इनके लिये कुछ श्रीर टैक्स लगाने की श्रनुमित मिले। श्रगर टैक्स बढ़ाया जाय तो तभी ये यात्रियों को श्रधिक सुविधा दे सकते हैं। यदि टैक्स के द्वारा उनका धन बढ़े तभी वे यात्रियों के श्राने जाने तथा ठहरने की सुविधा कर सकते हैं।

## [श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन]

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि हमारे क्षेत्र में जब कि बहुत साल पहले से पानी की बहुत ज्यादा कठिनाई हो रही थी श्रीर श्रव तक उसकी पूर्ति नहीं हुई थी। लेकिन इस साल माननीय मन्त्री जी ने उसके लिये बहुत बड़ी धनराज्ञि दी है श्रीर उस कार्ये की शुरूशात हो चुकी है। मुझे ज्यादा नहीं कहना है। में इस श्रनुदान का समर्थन करती हूं श्रीर श्राज्ञा करती हूं कि मैंने जो सुझाव दिये है माननीय मन्त्री जी उनकी श्रोर ध्यान देगे।

\*श्रीमती राजेन्द्रकुमारी (जिला हमीरपुर)—माननीय श्रधिष्ठात्री महोदया में श्राप की बहुत श्राभारी हूं। जो श्रनुदान पेश हुश्रा है उसके लिये में माननीय मंत्री जी से कहूंगी कि जितने पिछड़े जिले है, चाहे वे पर्वतीय हों चाहे बुन्देलखंड के हों या कोई श्रीर हों, श्राप सब को समानता से दें। तो यह श्रनुदान बहुत ही कम हैं। हमार बुन्देलखंड के जो जिले हैं वहां पर बहुत परेशानी है। माननीय मन्त्री जी ने स्वयं देखा है। वहां पर जो जिला परिषद् के श्रधिकार में सड़के हैं उनकी मरम्मत तो होती ही नहीं श्रीर किसान जब बैलगाड़ी लेकर निकलते हैं तो उनकी गाड़ियां टूट जाती है। इमलिये मेरा श्रनुरोध हैं कि उन सड़कों को जरूर ठीक करवाना चाहिये।

मौदहा के ग्रन्दर पानी की तकलीफ है। जितने यहां के माननीय सदस्य है में समझती हूं कि सबको मालूम है ग्रीर में तो घबराती हूं कि ग्रब गमियां ग्रायी है, क्या पानी की हालत होगी? इसलिये में मंत्री जी का ध्यान दिलाना चाहती हूं कि वहां जरूर नल लगवाने है। मैं यह नहीं कहती कि सरकार कुछ नहीं करती। काम होता है लेकिन फिर भी जितना संतोषजनक होना चाहिये वह नहीं हो रहा है।

इसके ग्रितिरक्त, में एक दिन वहां एक स्कूल में गयी। वहां पर २ सी लड़के थे जब कि वहां १० लड़कों के बैठने की जगह है। लड़के एक पेड़ के नीचे बैठे हुये थे। मैने पूछा कि स्कूल कौन सा है, तो उन्होंने बताया कि यह स्कूल है। वहां पट्टी लाकर, बिछाकर, सिर्फ १० लड़के बैठ सकते थे लेकिन वहां २ सी बच्चे बैठे थे। इसलिये मुझे प्रार्थना करनी है कि इस तरह से वहां का प्रबन्ध करना चाहिये ऐसे स्कूलों में कि बच्चों की तकलीफ दूर हो श्रीर उनकी सेहत हो। मैं सोचती हूं कि माननीय मंत्री जी जरूर ऐसे स्थानों के लिये श्रावेश देंगे श्रीर मेरी प्रार्थना पर उन बच्चों पर उन किसानों पर जो गाड़ी लेकर जाते हैं सड़कों पर, श्रीर जो लड़के स्कूलों में पढ़ते हैं श्रवश्य ध्यान वैंगे। बस, में यही कहने के लिये खड़ी हुई थी।

\*श्री चन्द्रसिंह रायत (जिला गढ़वाल)—श्रिधिष्ठात्री महोदया, में प्रस्तुत अनुदान पर ग्रिपना मत जाहिर करने के लिये खड़ा हुग्रा हूं और माननीय मंत्री जी को बचाई देता हूं जो बजट उन्होंने पेश किया है उसके लिये। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि मेरे शब्दों से माननीय मंत्री जी प्रसन्न हुए हैं।

में मन्त्री जी का ध्यान पहाड़ के छोटे छोटे नगर जो उत्तराखंड में स्थित हैं, उनकी आर ख्राकित करना चाहता हूं, जैसे कोटदार, घुगड़ा, पौड़ी, श्रीनगर, कर्णप्रयाग, रहप्रयाग, श्रीर चमोली हैं। ये छोटे छोटे टाउन्स हं श्रीर उनमें ड्रेनेज की व्यवस्था में बड़ी कमी है। श्रीनगर में हमारी सरकार की श्रोर से कुछ धनुदान जरूर मिला था, लेकिन मैन देखा कि वह बहुत नाकाफी है श्रीर वहां की ड्रेनेज की व्यवस्था बहुत खराब है श्रीर इस श्रोर हमारी सरकार को अवदय ध्यान देना चाहिये। यही हाल पौड़ी का है श्रीर इसी प्रकार कुछ कमियां कोटदार में भी हैं।

दूसरी बात जो में माननीय मंत्री जी से अर्ज करना चाहता हूं वह यह है कि उन स्थानों पर प्राइमरी स्कूलों की उचित व्यवस्था अभी तक नहीं हो पायी है। वे स्कूल ऐसे ही चल रहे

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

#### १६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-स्प्रनुदान ६६५ संख्या ३७--लेखा द्यार्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्यों के लिये सहायक स्पनुदान

हैं श्रौर उनमें कोई सुविधा बालिकाश्रों श्रथवा बालकों को नहीं मिल पा रही है। कहीं चटाई नहीं है, कहीं ब्लैक बोर्ड नहीं है, कहीं बैठने की सुविधा नहीं है श्रौर कहीं श्रध्यापक श्रौर श्रध्यापिकायें ही कम हैं।

इसके साथ साथ जो इन टाउन्स का सेनीटेशन है, खास कर श्रीनगर का, उस थ्रोर सरकार का बहुत कम ध्यान गया है। यात्रा के समय बहुत से यात्री ग्राकर रात में श्रीनगर में ग्राश्रय लेते हैं ग्रीर नदी के किनारे जाते हैं। उनको बहुत सी असुविधायें होती हैं ग्रीर ऐसा कोई उचित स्थान वहां नहीं है कि जहां वे शौचादि कर सकें। इसलिये में माननीय मंत्री से ग्रज करना चाहता हूं कि श्रीनगर के लिये वह जरूर कुछ करें। ग्रगर इस समय हो सके तो बहुत ग्रच्छा नहीं तो ग्राने वाले वर्ष में इसका ग्रवश्य ध्यान रखें ग्रीर वहां सेनीटेशन इम्प्रव करने की ग्रोर श्रवश्य प्रयत्न किया जाय।

हमारे पौड़ी में छोटे बालक बालिकाओं के लिये जो म्युनिसिपल बोर्ड की ओर से इंतजाम हुआ है वह इतना नाकाफी है कि में चाहता हूं कि आप उसकी इन्क्वायरी करें। छोटे बच्चों को बड़ी तकलीफ है। एक किराये की बिल्डिंग में वहां का स्कूल चलता है। में चाहता हूं कि वहां के म्युनिसिपल बोर्ड को अनुदान या लोन दिया जाय, जो भी सुविधा हो सकती हो और किया जा सकता हो, वह अवश्य होना चाहिये।

में देहात के क्षेत्रों की स्रोर भी सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं। मैंने देखा कि यह नागरिक निर्माण-कार्यों के लिये ही स्रनुदान है, लेकिन चूंकि सदन में काफी ऐबसेंट रहा हूं इसलिये यह मौका जो मुझे मिला है उसमें वहां की स्थिति पर कुछ प्रकाश डालना चाहता हूं। यह मेरी गलती न समझी जाय हालांकि वैसे गलती है।

# श्री विचित्रनारायण शर्मा—ग्राज बड़े ठंडे दिल से विचार हो रहा है।

श्री चन्द्रसिंह रावत—यह श्रापका सौभाग्य है कि में बहुत थका हुआ हूं। हमारे देहात में जो सरकार की तरफ से अनुदान भिले हैं उनमें मुझे बहुत कमी मालूम होती है। जैसे मिट्टी के खिलीने और बच्चों को तकली सिखाने के लिये ऊन दिया जाता है, में समझता हूं कि इन चीजों का इस तरह से बटवारा करने से हजारों क्यये का हमारी सरकार का जो अनुदान है वह अच्छे काम में नहीं आता है। मिट्टी के खिलीने ट्रान्सपोर्ट करने में ही टूट जाते है तथा दूसरी जो इसी प्रकार की चीजें होती हैं वे इधर उधर जाने में ही खराब हो जाती हैं। इससे बड़ा नुक्सान होता है। विद्यालयों तक पहुंचते पहुंचते वे चौथाई के करीब ही रह जाती हैं। इसलिये में चाहता हूं कि बजाय इसके अगर इस प्रकार की चीजों की वहीं व्यवस्था हो जाय तो इससे उनकी शिक्षा दीक्षा में बड़ी इमदाद मिल सकती है और यह बेहतर भी रहेगा।

मं एक बात श्रीर कहना चाहता हूं उस मैटीरियल के बारे में जो स्कूलों के लिये खरीदा जाता है। में माननीय मंत्री जी को स्पष्ट बता देना चाहता हूं कि जिस तरह से गढ़वाल जिले में या श्रीर जितने जिले उस तरफ के हैं कुछ जिलों में सेन्टर्स श्राप कायम करते हैं, उन सेन्टर्स द्वारा जो मेटीरियल दिया जाता है वह ठीक तरह से डिस्ट्रीच्यूट नहीं होता है। यह बड़े खेद की बात है कि वह मैटीरियल वाज वक्त पड़:-पड़ा सड़ता रहता है लेकिन बांटा नहीं जाता है। एक बार रहताया के लिये जितनी चटाइयां सप्लाई करने के लिये थीं वे सब बरसात में ही एक जगह पड़े-पड़े सड़ गयीं। उसका न कोई मालिक मालूम होता था श्रीर न कोई उठाने वाला श्रीर न देखभाल करने वाला ही। इसके श्रवावा पिन्डल नदी के किनारे, परगना नारायणगढ़ में, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का काफी सामान जैसा का तैसा पड़ा रहता है श्रीर खराब हो जाता है। इसके लिये डिप्टी किमश्तर महोदय का ध्यान भी श्राक्षित किया गया परन्तु श्रभी तक कोई इस काम के लिये इस्पीडी व्यवस्थ। नहीं की गई। जो मैटीरियल पाठ-शालाओं के लिये खरीदा जाता है वह उन पाठशालाओं तक पहुंच जाय इसकी उचित व्यवस्था होनी चाहिये। में चाहता हूं, कि माननीय मंत्री जी एक श्रार्डर इस बात के लिये निकालें जिससे

## [श्री चन्द्रसिंह रावत]

उनको यह सतीब हो जाय कि जो रुपया सरकार उन पाठशालाग्रों के लिये सामान खरीदने के लिये देती है वह उन तक पहुंच जाय। श्राज कहीं किसी पाठशाला में ब्लैक बोर्ड नहीं है, किसी में चह नहीं है, किसी में यह नहीं हें तो किसी में वह नहीं है। उन सबके लिये सरकार की तरफ से जो श्रनुदान दिया जाता है, यह देखना चाहिये कि उसका ठीक तरह से उपयोग हो श्रीर उस रुपये से वह सामान खरीद कर उन पाठशालाग्रों तक पहुंच सके। जो श्राय-व्यय श्राज श्रनुदान का होता है उसको रोका जाय। जो लेक श्राफ सुपरवीजन है, वह नहीं होना चाहिये। श्रगर सुपरवीजन ठोक तरह से हो तो यह कठिनाई पैदा न हो। श्रापके द्वारा रुपया दिये जाने का क्या फायदा हे श्रगर उसका फायदा स्कूल के उन बच्चों तक न पहुंच सके? हमें देखना चाहिये कि जो लाखों रुपया हम खर्च कर रहे हैं वह ठीक तरह से खर्च हो रहा है या नहीं।

श्री शिवराम (जिला बिजनौर)—माननीया श्रिधिंटाशी महोदया, म प्रस्तुत श्रमुदान का विरोध करने के लिये तथा कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं। जहा तक नगर निर्माण का संबंध है श्रीर इस श्रमुदान का संबध है, बड़े-बड़े शहरों में क्योंकि उनकी श्रामदनी बहुत काफी होती है, उनके निर्माण के फार्य होते ही रहते हैं लेकिन जो श्रमुदान प्रस्तुत किया गया है वह ऐसे ही कार्य में खर्च होना चाहिये, उन जगहों में ही बच्चं होना चाहिये जहा की श्रामदनी कम है। शहरों में जहा गन्दगी पड़ी हुई है, जहां भी कार्य नहीं हुआ है, वहां पर खर्च होना चाहिये। श्रामके सूबे में श्रमेकों ग्राम ऐसे हे जहा की श्राबादी बहुत ज्यादा है, जहां श्रभी तक उनका विस्तार नहीं हुआ है। जो श्रमुदान प्राप्त होता है वह उन्हीं नगरों के हाथ में पहुंच जाता है जहां कि कुछ प्रमुख कार्यकर्ता होते हं श्रीर उन्ही नगरों के कार्यों में वह क्या लगा दिया जाता है। जैसे, मेरा श्रपना जिला बिजनौर है। उसमें कई एक कस्बे इस प्रकार के हैं, तराई भाग में जैसे बड़ापुर है, श्रक जलगढ़ है, नगीना, शेरकोट, मंडावर छोटे-छोटे कस्बे है, इनमें कोई भी निर्माण कार्य गरीब श्राबादी जो वहा है उनके लिए नहीं किया गया। न सड़कें बनायी गयीं, न उनके लिये मालियों का इन्तजाम हुश्रा जब कि इस प्रकार के श्रमुदानों को ऐसे नगरों के उन कोशों में लगाना चाहिये जहां गरीब बस्तियां है तािक उनका सुधार हो सके।

यहां तक देखते में श्राया है कि शहरों के गरीब मोहल्लो में माताश्रों श्रोर बहिनों के लिए शोंचालय का निर्माण नहीं किया जाता। में खास तौर से मंत्री जी का ध्यान देहरादून के मुहल्ला बिहारीगढ़ की तरफ दिलाना चाहता हूं। यह मोहल्ला काग्रेस के प्रमुख कार्यकर्ता स्वर्गीय श्री चौधरी बिहारी लाल जी की यादगार में बसाया गया। इस सदन के माननीय सदस्यों को उनसे जानकारी है। लेंकिन वहां श्रगर देखा जाय तो ठीक प्रकार से रोशनी का भी इन्तजाम नहीं है, न सड़कों ठीक प्रकार से बनी हुई है श्रीर इतना भी नहीं कि टट्टी फिरने के लिये नगर-पालिका की तरफ से कोई लेंद्रीन वगैरह ठीक प्रकार से बनाई गई हों, श्रयांत् निर्माण करा वी जायं। इस तरह से गरीब मुहल्लों की श्रवहेलना को जाती है। न तो सड़के ही बनायी जाती है श्रोर न सफ़ाई शुद्धता पर ध्यान दिया जाता है। तो उनकी श्रोर भी ध्यान दिया जाय ताकि कम से कम उनकी भी सोचने विचारने का मौका मिले कि हमारी मौजूदा सरकार ने हमारी तरफ़ भी तवज्जह वो है।

लखनऊ नगर के मोहलों को वेखा जाय जहां गरीब रहते हैं। श्रागरा जाइये, बनारस जाइये, कानपुर जाइये, इन शहरों में कोई विकास कार्य विखलाई नहीं वेता गरीब मुहलों में। तो जहां तक इस श्रनुवान का सम्बन्ध है, यह इसी प्रकार से खर्च होना चाहिए जिससे गरीब मुहलों का सुधार हो सके। न सड़कें बनती है, न बिजली के खम्में तक लगाये जाते है। तो कहने का श्रभिप्राय यही है कि श्रगर बाटिकाएं बनती है तो छोटे छोटे बच्चों के खेल कूद के लिए बनायी जायं जिससे जनका स्वास्थ्य सुधरे श्रौर वह श्रामोव-प्रमोव का जीवन व्यतीत कर सकें।

इसी प्रकार से उनके लिए स्रौबधानयों का प्रबन्ध होना चाहिए, शिक्षा के लिये स्कूल वर्गरह स्रच्छे होने चाहिये जिससे बच्चे ठीक प्रकार से शिक्षा पाकर के स्रपने जीवन को अंचा कर सर्के।

जो पानी की योजना चालू की गई है, जैसे कि नगीना में, वहां पानी का टैक्स लगाया गया है । हाउस टैक्स भी लगा, वाटर-टैक्स भी लगाते हें ग्रौर उन लोगों पर भी पानी का टैक्स लगा है जो पानी लेते भी नही है, यह परिपाटी खत्म होनी चाहिये। बहुत से लोगों के कोई व्यवसाय भी नहीं है, बाहर जाते हें ग्रौर जीविका कमा कर वहां बैठकर खाते पीते हैं। जहां पर पानी की जरूरत हो वहां इस प्रकार का खर्चा ठीक प्रतीत होता है लेकिन जनता की इच्छा के विरुद्ध इस तरह का खर्चा करना ग्रौर उन पर वाटर टैक्स थोपना उचित नहीं प्रतीत होता। इसलिये मेरा श्रुनुरोध है कि नगर निर्माण कार्यों में जनता के परामर्श से कार्य होना चाहिये। इसके ग्रलावा मेरा सुझाव है कि सरकार श्रधकतर उन नगरों को श्रुनुदान न दे जिनकी पहले से ही श्रधिक ग्रामदनी है ग्रौर जो ग्रपनी ग्रामदनी से ही सड़कों ग्रौर मकानों का निर्माण कर सकते है बल्कि छोटे-छोटे जो पिछड़े हुये बोर्ड है उनको यह धनराशियां दी जायं जिससे उनका विकास हो सके। श्रुन्त में में सरकार का ध्यान श्रुफ्जलगढ़ ग्रौर बड़ पुर जिला बिजनीर स्थानीय संस्थाओं की ग्रोर दिलाना चाहता हूं कि उनको श्रवश्य ग्रुनुदान दिये जायं जिनसे वे ग्रुपने यहां विकास कर सकें।

श्री सईद ग्रहमद ग्रन्सारी (जिला सहारनपुर)—जनाबा मोहतिरमा, स्वशासने मन्त्री जा ने इस माननीय सदन के सामने जो श्रनुदान पेश किया है वह बहुत बड़ी श्रहमियत रखता है। मुझे उम्मीद थी कि इस श्रन्दान के ऊपर चाहे रूलिंग पार्टी के स्वस्य हों या श्रपो- जिशान वाले हों, वे बजाय इसके कि कटौती की बात पेश करते हैं, वे यह कहते कि यह श्रन्दान श्रीर बढ़ाया जाय क्योंकि यही एक ऐसा श्रनुदान हैं जिसके जित्ये पिट्ट के हाथ में पंस पहुंचता हैं। एक तरफ तो यह कहा जाता है कि जो सरकारी कर्मचारों है वे पिट्टि को परशान करते हैं, व्यया बरबाद करते हैं लेकिन दूसरी तरफ श्रापके सामने जो श्रनुदान पेश है जिसको पिट्ट श्रपयों से खर्च करती है, उस पर भी श्राप एतराज करते हैं श्रीर इसमें १०० हपये की कटौती के हित में हैं। यह बड़े दुख की बात है।

म्युनिसिपैलिटी के खास कार्य सेर्नाटेशन, एजूकेशन, पब्लिक हेल्थ, रोड्स, लाइट्स वगैरह होते हैं। इनमें सबसे प्रहम एजू हेशन ग्रौर हैल्थ है। इस सिलिसले में मे मोहतिरमा के द्वारा मन्त्री जी से दर्ख्यास्त करूंगा कि वह हेल्थ श्रौर एजूकेशन की तरफ ज्यादा ध्यान दें क्यों कि श्रमूमन ऐसा देखा गया है कि एजू केशन लाइन जो है वह बहुत ही नीचे जा ही है। हमें चाहिये कि हम अपनी एजू केशन को ठीक करे। एजू केशन के ऊपर ही किसी मुल्क का दारोमदार होता है। एजूकेशन अगर अच्छी है तो मुल्क भी अच्छा होगा और उसका नाम होगा। इसलिये एजूकेशन के लिये काफी से काफी श्रनुदान म्युनिसिपेहिट ज को देना चाहिये ग्रौरखास तौर से जो छोटी म्युनिसिपैलिटीज है उनको देन चाहिये। बड़ी म्युनि-सिपैलिटीज , फर्स्ट क्लास, सेकिन्ड क्लास भ्रोर कारपोरेशन, इनके पास वैसे ही ध्यादा श्रामदनी होती है श्रौर ये श्रपन श्रापको श्रासानी से र्ल.च सकते हैं श्रौर छेटी.-छेट म्युनिसि-पै लिटीज, फोर्थ फिफ्य क्लास, नोटीफाइड एरियाज ग्रॉर टाउन एरियाज जो हैं उनको ज्यादा से ज्यादा अनुदान देने चाहिये जिससे वे अपनी एजूकेशन को और रोड्स और स्ट्रीट लाइट्स को श्रच्छी तरह से मेनटेन कर सके। इस सिलिसिले मे मानर्न्या मेहतिसा के चारिये से मन्त्री जी से दरस्वास्त करूंगा कि वह ज्यादा से ज्यादा इस तरफ तवडजह दें जिससे हमारी गरीब जनता श्रीर जो छोटी.-छोटी म्युनिसिपॅल्टिं च है वे तरवकी कर सके। में महसूस करता हूं कि अगर मन्त्री जी को पता लगे तो वह छोटी म्युनसिपैक्तिटीज की मदद करने की क्षांशिश करते हैं।

|श्री सई इ ग्रहमद ग्रन्तारी]

दम सिनिषिने में में प्रापका श्राभारी हूं कि श्रापने मंगलीर म्युनिसिपैलिटी के लिये १० हजार पया पनड ग्रान्ट इन एड दिया। मंगनीर में मुस्लिम पापुनेशन ज्यादा है श्रीर यहां मजमा काफी जनता रहता है। चूंकि मीट मार्केट नहीं है तो कस ई समझने हैं कि उन्हें काऊ-स्लाटर का हक है। वंदे कातून से तो नहीं है। लेकिन वह बोटी से ऐसा समक्षते हैं। मीट पार्केट होने पर वे ऐसा नहीं समझेंगे। ऐने नौ के भी श्राजाते हैं कि वस:श्रीकात हिन्दू-मुस्लिम झगड़े हो जाते हैं श्रीर उनको रोकने के निये भी मीट मार्केट बहुत जरूरी है। म्युनि-सीपंजिटीज को इसके लिये ग्रान्ट-इन-एड देनी चाहिये।

खाद के जिये यह बात है कि रस्मी तरी के से तो कारातात की लानापूरी कर वी जाती है मगर समस्या हल नहीं होनी है। जो रिबश या कूड़ा होना है यह पजा में या भट्डों को न विया जाकर उपने कम्मोस्ट तैयार कराना चाहिने और उसके लिये लाम निरोक्षण भी होना चाहिये जिपने यह मानून ही सके कि बाकई कम्मोस्ट नैयार हो रहा है या नहीं। छोड़ी म्युनिपिनिटीज के पास इनने माधन नहीं है कि वे अरना कूड़ा यहा पहुंचा सके। इसलिये उनकी ट्रेक्टर के निये सहायना देना जब्दी ही जाता है। गमे पर मंना को ने बिलरता जाता है और उल्टे गन्दगी हो ती है। में चाहूंगा कि बड़ी म्युनिसिनिटीज का या कारपोरेशन्स का सप्या कम किया जाय और छोटी म्युनीसीनिस्टोश को विया जाय जिनसे वे अपना सैनीटेशन ठीक कर सकें।

इपनें दाक नहीं कि रोड ग्रान्ट्म हमारी गरकार म्यूनीसी पैनी ज को देती है लेकिन उसका नाजायज इस्तेमाल ही ता है। इस सिनसिन में मैं ने कई मनैबा मानतीय मंत्री जी से दरस्वास्त की कि नो कन एम० एन० एक० की भी प्रान्ट्स की कापी जानी चाहिये जिससे वे भी जान सकें कि क्या ही रहा है भीर उसे देख सकें।

एक शिकायत मुझे एकल्ट्रेशन के मुनालिलक है। यह एक ऐसी की कर है जिस पर तमाम ने जन का वारो नवार है। एकल्ट्रेशन होता रहेगा तो आने वाली नस्ल कमजोर रहेगी। आज यह हालत है कि लक्तऊ में ही अगर आप सरमों का नेल ले ने जाबें तो असली नहीं मिल सकता, या आटा या मिठाई लेने जाबें तो अक्षी नहीं मिल सकती हैं। अगर जाने की बीजें भी साफ नहीं मिल सकती हैं तो फिर मिनेगा क्या? हमारे बक्बों के विभाग कैसे हींगे और वे कैसे नरक्ती करेंगे? कहों वे लड़ नहीं सकेंगे गौर न बहाइरी विज्ञा सकेंगे। वे फर्स बिशी वात हासिल नहीं कर सकते। मेरी मंत्री जी से वरल्यास्त है कि वे मालूमात करावें कि स्युनिसिवनीटी ज में एकल्ट्रेशन के कितने मुक्बमें कले, कितनों में सजा या जुर्गाने हुये और कितने छट गये और क्यों।

बहुत-सी छोटी म्युनिनिर्यणिटी एमी है जो अपना पानी का, पीने के वासे भी ठीक तरह से इन्तजाम नहीं कर सकरीं। हरिजातों के पानी के कृतें बड़े गन्दे रहते हैं। बाटर-सण्लाई के निये छोटी नगरपालिकाओं को काफी प्रान्ट -इन-एंड देना चाहिए। जिला सहारनपुर में मंगनीर एक फ़ोर्य बनास म्युनिसिपैनिटी जर्ह। वहां के हिजानों के लिये पानी की बड़ी दिश्कत है। इन छोटी म्युनीसीरेनीटी ज के पास रुपया कम होता है जू कि उनकी आम-वनी कम होती है। वे अपनी जनता की बड़न कुछ मदय नहीं कर सकनी है। प्लानिंग का काफ़ी पया देहाती इलाकों की जाता है और बड़ं और फ़ोर्य कनास म्युनिसिपैसीटी ज के हिरजन बहुत परेशान हैं। छोटी म्युनिसीर्यनीटी ज को भी बही इन्तजामात करने होते हैं जैसे बड़ी की। उन्हें भी रोड्स का, सैनीटेशन का, बाटर-वक्स का और दीगर इन्तजामात करने होते हैं जैसे बड़ी की। उन्हें भी रोड्स का, सैनीटेशन का, बाटर-वक्स का और दीगर इन्तजामात करने होते हैं। यह और फ़ोर्य कलास म्युनिसिपैसिटी ज के लोगों की भी इस दुनिया में अधी तरह रहने का मौका देना चाहिये।

यही सब मुझे धर्ज करना था।

श्री पद्माकरलाल श्रीवास्तव —माननीया श्रिविष्ठात्री महोदया, में उन सभी माननीय सदस्यों का श्राभारी हूं जिन्होंन भेरे कटौती के प्रस्ताव का समर्थन िय है। में उनका भी आभारी हूं जिन्होंने इसका विरोध किया क्योंकि उन्होंने श्रनुदान का समर्थन करते हुते भी उन खामियों की श्रोर विशेष ध्यान दिया है जिनकी श्रोर मैंने सदन का ध्यान श्राकाँवत करने की कोशिश की थी।

यह बात श्रानी जगह पर बिलकुल सही है कि स्थानीय निकायों को जो सहायता राज्य सरकार से प्राप्त होती है वह श्रपर्याप्त है। सब इस बात को श्रनुभव करते है कि सरकार बहां भी भेद-भाव करती है। जो स्थानीय निकाय विरोगी दलों के हाथ में हैं उनके साथ दूसरा व्यवहार होता है श्री र जो सलाइ दल वालों के हाथ में हैं, कांग्रेस वालों के हाथ में हैं, उन के साथ दूपरा व्यवहार होता है। विरोधी दल वालों के हाथ में स्थानीय निकायों के विकास कार्यों में कुद्र न कुद्र श्रद्धांग लगाया जाता है। बड़े-बड़े शहरों में, जहां साधन ज्यादा है श्रीर श्रामदनी ज्यादा है, वहां कम सहायता मिलनी चाहिये श्रीर छोटे कस्बों में विकास श्रीर सफाई श्रादि के लिये ज्यादा सहायता मिलनी चाहिये। चाहे वे किसी पार्टी के हाथ में हों। एक तरफ तो यह सरकार प्रजातंत्र का दम भरती है श्रीर दूसरी श्रीर छोटे शहरों के विकास के ऊपर ज्यादा ध्यान श्रापको देना है।

पानी पीने की योजना छोटे शहरों में काफी महत्व रखती है। भ्राजमगढ़ म्युनिसिपल बोर्ड को कुछ कर्जा सरकार ने वाटर सप्लाई के लिये दिया था। कई बार वह नगरपालिका झौर वहां के नगरपालिका की प्रार्थना कर चुके हैं कि वहां की नगरपालिका की ग्रामदनी के साधन बहुत सीमित हैं, उनको देखते हुये श्रीर वहां की गरी हो को देखते हुये, उसको श्रनुदान के रूप में परिणत कर दिया जाय। लेकिन वह कर्जा ज्यों का त्यों लदा हुश्रा है।

यहां ड्रेनेज की कोई व्यवस्था नहीं है। छोटे-छोटे झहरों टाउन एरिया, श्राजमगढ़ श्रौर कस्बों की हालत उसके कारण खराब है, गन्दगी रहती है। बहुत सी सड़कों श्रौर नालियों की हालत भी चिन्ताजनक है। इस श्रोर विशेष रूप से ध्यान दिया जाय श्रौर इसके लिये ज्यादा श्रनुदान स्वीकार किया जाय। यह भी गौर करने की बात है कि जो श्रनुदान दिया जाता है, सरकार उसकी देखे कि वह सही रूप से खर्च किया जाता है या नहीं। जहां पर उसकी ग्रावश्यकता है वहां खर्च किया जा रहा है या किसी दूसरी जगह उसका इस्तेमाल किया जा रहा है। चाहे सड़कों का रुपया हो श्रौर चाहे स्कूलों का रुपया हो, हमें इस बात की श्रोर ध्यान देना होगा।

जैसा कि ग्रंसारी जी ने कहा, हमें यह भी मालूम होना चाहिये कि किस काम के लिये कितना श्रनुदान दिया जा रहा है ताकि माननीय सदस्य यह देख सकें कि सरकार ने जो रुपया दियाहै वह कहां इस्तेमाल हो रहा है।

सरकार के जो श्रादेश िशेष रूप से स्वीपर्स के लिये जारी होते हैं उनका स्थानीय निकाय पालन नहीं करते हैं। उनके हाउस एलाउन्स श्रौर तनख्वाह के बारे में जो श्रादेश सरकार के हुए थे, बहुत-सी नगरपालिकाश्रों ने उनका पालन नहीं किया है। राज्य सरकार ने जो वेतन कम निर्घारित किये हैं, उनकी पाबन्दी होनी चाहिये। इस संबंध में मेरा निवंदन है कि म्युनिसिपल स्वीपर्स के लिये नये वेतन कम निर्धारित किये जाने के लिये एक पे कमीशन मुकर्रर किया जाय ताकि उनके रहन-सहन के स्तर को ऊंचा उठाया जा सके। म्युनिसिपेलिटी के छोटे तबके के कर्मचारियों श्रौर खासतौर से स्वीपर्स के लिये जो नीचा श्रौर छोटा काम करते हैं उनके वेतन-क्रमों को सुघारा जाय। किसी भी म्युनिसिपल बोर्ड में स्वींपर्स के रहने का कोई माकूल इन्तजाम नहीं है। हर नगरपालिका में उनके रहने के लिये क्वार्टरों की व्यवस्था की जाय श्रौर उसका कोई शी पैसा म्युनिसिपल स्वीपरों से न लिया जाय।

## [श्री पर्माकरलाल श्रीवास्तव]

श्रन्त में में इस बात पर जोर नेता हं कि म्युनिसिपल कर्मचारियो , विशषकर स्वीपर्स के ग्रेडस को रियाइज करने केलिये कदम उठ ये जायं। सन् ४६ में जो रिजोत्यूशन हुश्रा था वहीं ग्रब तक लागू हैं। उनको उसी हिसाब से तनस्वाह श्रौर भत्त मिल रहे हैं। बहुत सी नगरपालिकाय सरकार द्वारा निर्धारित दरों से भी वेतन कम नहीं दे रही हैं। यिशेषकर में श्राजमगढ नगरपालिका की श्रोर मंत्रों जी का ध्यान दिलाना चाहता हूं। म्युनिसिपै लिटी में दो प्रकार के मुलाजिम रखें जाते हैं, एक हाफ डे स्वीपर्स श्रौर दूसरे फुल डे स्वीपर्स लेकिन दोनों को काम करना पडता है वह पूरे समय का ही होता है। जब उनसे पूरे दिन का काम लिया जाता है तो उनको वेतन भी पूरा ही मिलना चाहिये। तो उनको पूरे वक्त के मुलाजिम की तनस्वाह श्रौर पूरी सहायता व सहूलियतें मिलनी चाहिये। इस प्रकार की ध्ययस्था की जाय।

लखनऊ की जिस समस्या की तरफ मैंने माननीय सदस्यों का न्यान श्राक्षित किया शा कि लखनऊ इम्प्रव्योंट ट्रस्ट में जो भ्रष्टाचार है तथा जो पक्षपात का वातावरण है उससे श्रत्यिक क्षोभ है। में श्राचा करता हूं कि माननीय मंत्री महोदय इस श्रोर विशेष ध्यान देगे। कई बार उनके पास भी श्रोर इस माननीय सदन में भी इस बात की शिकायत हो चकी है श्रोर में, श्रोर कुछ डेपुटेशन भी उनसे मिला था। उन बातों में क्या तथ्य है, उसकी जाच माननीय मत्री जी स्वयं करें या किसी के सुपुर्व कर दें ताकि लखनऊ इम्प्र्यमेंट ट्रस्ट में जो य्याप्त भ्रष्टाचार श्रोर पक्षपात की शिकायत है, इस सम्बन्ध में लखनऊ के नागरिकों की कोई शिकायत न रह जाये।

प्रामीण क्षत्रों के विकास के लिये, पिछड़े इलाकों के विकास के लिय, खामकर पूर्वी जिलों पहाड़ी जिलों तथा बुन्देलखंड के इलाकों की तरफ सरकार को विशेष ध्यान देना होगा। देहाती क्षेत्रों में आवागमन के साधन विकासत नहीं है, सड़कों की कमी है, निर्यात वहां उप्प रहत है जिससे देहात की ग्रामीण जनता के सामने बड़ी दिक्कत होती है। जिले का जो मुख्य केन्द्र है वहां तक देहात के लोगों को आने में बड़ी कठिनाई का अनुभव करना पड़ता है। मानर्न यमंत्री जी से मेरा विशेष निवेदन है कि वे पहाड़ी इलाकों, बुन्देललंड के इलाकों तथा पूर्वी जिलों की तरफ विशेष ध्यान दें। माननीय उप मंत्री जी बैठे हुये हं उनका क्षेत्र तथा मेरा क्षेत्र कुछ सरहद पर ही पड़ता है, मिला हुआ है जो बहुत पिछड़ा हुआ है। इनके क्षेत्र के लोगों को पहले हमारे क्षेत्र में आना पड़ता है तब वे फंजाबाद पहुंच पाते है। इस्लिये देहाती क्षेत्रों में यातायात के साधन सड़कों के विकास और पुलों के निर्माण होने की बहुत जरूरत है। इन शब्दों के साथ, में आशा करता हूं कि माननीय सदन मेरे कटौती के प्रस्ताव को स्वीकार करेगा।

श्री विचित्रनारायण दार्मा - श्रीधाकात्री महोदया मुझे श्रफसोस है कि श्राम बहुत ज्यादा मसाला मुझे जवाब देने के लिये नहीं मिला। जब मैंने श्रपनी यह मांग पेदा की यी तो में यही सोच कर कुछ नहीं बोला था ताकि ज्यादा से ज्यादा माननीय सदस्यों को शेलने का मौका मिले श्रीर मुझे कुछ सार मिले जिसका में जवाब दे सकूं। श्राम तौर पर इल्जाम लगाये गये - कुछ महादाय यहां है भी नहीं कि में उनका जवाब दूं - कि भव्दाचार है, सरकारी श्राफिसर खराब है, पक्षपात होता है, श्रब इसका क्या जवाब में दूं? में तसलीम करता हूं कि कुछ पक्षपात में जरूर करता हूं लेकिन श्राद्चर्य होगा सुन कर जनसंघ वालों को खासतौर से कि वह उनके पक्ष में ही गया, विपक्ष में नहीं श्रीर श्रगर इसको पक्षपात कहा जाय तो में गुनहगार हूं।

मैंने कल भी निवेदन किया था और ग्रल्मोड़ा के बारे में लासतौर से कहा था। कुछ ऐसे सज्जन है यहां पर जो उनके मुंह में ग्राता है कहते हैं और गलत कहने पर भी कुछ ग्रपने को बुरा नहीं समझते हैं। वे समझते हैं कि गलत बात कह कर वे दूसरे की बेइज्जती कर रहे हैं। वे भूल जाते हैं कि गलत बात जिसके मुंह से निकलती है उससे उसी का नुकसान होता है। कम से कम वे उनसे तो पूछ लेते जो उनके यहां के ग्रथ्यक्ष है, प्रेसिडेंट है, बोर्ड स के कि उनको भी कोई शिकायत है कि इस विभाग में ज्यादा पक्षपात किया गया है, उनकी जायज मांगों को नहीं सुना गया है या उनको जायज मांगों देकरा वी गयी है या उनके साथ ग्रन्थाय किया गया है। ग्रल्मोड़ा

की बाबत में कह सकता हूं कि ग्रगर कुछ किया है तो उदारता की है, ग्रगर कुछ किया है तो नियम को कुछ शिथिल किया है।

वृन्दावन के विषय में कुछ चीजों का कल भी जिक प्राया था ग्रीर म्राज भी में कहना चाहता हूं कि बावजूद इसके कि तमाम श्राक्षेप लगाये गये लेकिन जरा उनके प्रे गैं डेंट से भी पूछ लिया जाता कि जब वह पहां श्राये थे तो कुछ शिकायत ने हर ग्राये थे लेकिन जब लौटे तो वह खुशी-खुशी यहां से लौटे थे। बिना जाने पूछे कहना कि यह ग्रन्याय हो रहा है, बड़ा ग्रन्थाय हो सकती विया जाय तो वहां इस तरह की बाते कही जा सकती है, उस में किसी को शिकायत नहीं हो सकती लेकिन इस ग्रावरणीय सदन में तो ग्राशा की जाती है कि यहां जो कुछ कहा जाय थोड़ो ज्यादा जिम्मेदारी के साथ कहा जाय।

एक बात श्रामतौर से कही गई कि जिला बोर्डों के साधन बहुत कम है। इसको मैं भी समझता हं ग्रौर इसी सदन में न मालम कितनी बार में यह कह चुका हूं कि साधन सचमुच कम है, पंचायतों के भी कम है, जिला परिषदों के भी कम है लिकन वह ऐसी बदिकस्मती है कि साधन इस सरकार के भी कम है और करोड़ों रुपया उधार लेक हम लगाये जाते है, कर्जा हमारे ऊरर लदता जाता है जिसका सूद भी देना हुमारे जिये मुश्किल हो जायगा कुछ दिन बाद, लेकिन हम सोवते है कि कुछ रचनात्मक काम हमारे हो जांय तो ग्रच्छा है, उ से हमारी श्राय, उत्पादन और साधन बढ़ जायंगे श्रीर जो कर्ज िया है उसको चुकाने के साधन भी बढ़ जायंगे श्रीर हु गरी जनता श्रब से कुछ श्रधिक खुशहाल हो जायगी इसलिये ऐसा हम कर रहे है। प्रक्त हमारे सामने यह है कि यह साधन चाहे वह गांव के स्तर के हों, जिला स्तर के हों या प्रदेश के स्तर के हों या केन्द्र के स्तर के, वे बढ़ा। कैसे जांय? इतनी बजट स्पीचेज यहां हुई, इतने विभागों के बजट की समीक्षा यहां हुई ब्रार बजट पास भी हुये, कटौती के प्रस्ताव भी श्राये, वे इसिलये नहीं ग्राये कि सचमुच में उनके पैसे में कमी कर दी जाय बल्कि वह इसिलये ग्राये थे कि कुछ म्रिविक रुपया शिक्षा के लिये और दिया जाय उद्योग में भी ज्यादा खर्च हो, स्वास्य्य में भी ज्यादा व्यय हो, सबके लिये ही मां रेथी कि व्या ा खर्च कि । जाय लेकिन वह साधन कहां से श्रायें, यह बताने की कोई हिम्मत नहीं करता, श्रीर न कोई सुझाव देता है। श्राशा की जाती है कि उसी श्राय में से कोई जादू का बर्वारा हो जाय कि इसी रकम में से सब विभागों को श्रविक से ग्रधिक मिल जाय ग्रौर कहीं भी कमी न रहे। बहुत ध्यान से मै सुनने की कोशिश करता हूं कि यहां से पैसा निकाल कर यहां दे दिया जाय, यहां बेकार खर्च हो रहा है, यहां से हटाकर यहां लगा दिया जाय लेकिन लाख दो लाख के हेरफेर से कोई साधन नहीं बढ़ते, करोड़ों अरबों की बात है, वहां छोटे मोटे सुझावों से कोई लाभ नहीं हो सकता। यह प्रश्न तो हमारे सामने ग्रभी हल करने को है।

कहा गया कि मालगुजारी का भाग उन्हें दिया जाय, सरकार सोच रही है श्रौर जैसा कि मैंने कल निवेदन किया था कि जिस समय जिला परिषद् का बिल इस सदन के सामने श्रायेगा उस समय यह विचार किया जायगा श्रौर जो राय इससदन की होगी वही सरकार के लिये मान्य होगी, उस समय हमें विचार करने का इस पर मौका मिलेगा लेकिन जब तक हम रचनात्मक तौर से कोई चीज नहीं बदलते तब तक ग्रान्ट्स के द्वारा श्राचा करना कि वह काम हो जाय बेकार है। कर्जा भी लेते जायं श्रगर लौटाना न पड़े लेकिन उससे भी काम न चलेगा। जि रा परिषदों श्रौर म्युनिसियल बोडों का भी फर्ज है कि वह कर लगाकर साधन पैदा करें लेकिन वह भी कर लगाना नहीं चाहते, जो उनके लिये लाजमी श्रौर श्रीनवार्य है; वह भी वह नहीं करते श्रौर बार-बार लिख कर भेजते हैं कि यह कर माफ कर दिये जायं। कर माफ करना श्रच्छी बात है, मैने कल भी निवेदन किया था कि इस देश में द०—दूर प्रतिशत श्रादमी ऐसे है जिनको यदि कुछ श्रौर दिया जाय तो वह वांछनीय होगा श्रौर सरकार की कोशिश होनी चाहिये कि दूर फीसदी व्यक्तियों का जीवन स्तर अंचा हो सके। श्रौर हमारी योजनाश्रों का भी यही ध्येय है। कहां तक वे सफल होंगी

[श्री विचित्रनारायण शर्मा] यह श्रभी कहना श्रसम्भव है, लेकिन हम यह मानकर ही चलते है कि देश के बहुत से लोगों का जीवन स्तर ऊंचा होना चाहिये।

श्रीर जो कुछ हुश्रा है वह काफी कम है, यह हम भी मानते हैं, दाव की बात है। लेकिन हम कैसे भूल सकते हैं कि श्रभी इस देश को स्वतंत्र हुये ११,१२ साल ही हुये है ? लाखों श्रादमी पंजाब श्रीर बंगाल से श्राये, श्रभी तक चले श्रा रहे हैं उन हो सबको बसाना पड़ा। जिस समय यहां ला ऐंड श्रार्डर का प्रश्न था सैकड़ों की तादाद में स्टेट्स श्रंपेज सरकार यहां छोड़ कर गई थी, उन सब का विलीत करण हुश्रा। जिन मितिसेज की वजह से इस देश की शाजादी कायम रह सकी उनके लिये तरह-तरह की बातें कही गयी यह सब कठिनाइयां हुई। होई रचनात्मक सुझाव नहीं देता, रचना के काम में मिल कर काम नहीं करना चाहते, एक दूसरे की उन्नति में हम कैसे बाधक हो सकें इसका ज्यादा खयाल रहता है। श्रीर श्राशा की जाती है कि जो काम हों वह जनता के सहयोग से हों यह श्रसम्भव है।

श्राज ही शिकायत हुई कि शिक्षा के लिये यहां से जो श्रन्वान जाता है, रुई श्रीर चलें के लिये जो पैसा जाता है उसका बुरुपयोग होता है, मैन कहा स्थानी पर रुई को देवा वह वासव में कातने लायक नहीं थी। लेकिन श्रफसोस तो तब श्रीर श्रिषक होता है कि जब इन सब के पीछे हमारे सार्वजिनक कार्यकर्ताश्रों की उवासीन । होती है। जिस समय विवेशी सरकार यहां पर थी उस समय हमारे लिये मुम्किन था, हम बहुत-सी कीजें रोक देते थे लेकिन श्राज जब श्रपती सरकार ह, हमार सरकारी श्रावमी है जो कुछ सहयोग ही कर सकते है, कम से कम खुलेतीर से विरोध नहीं कर सकते हैं, वैसी दशा में श्राज हमारे सार्वजिनक कार्यकर्ता श्रपने को श्रसहाय पाते हैं। इसकी क्या कहें सिवाय इसके कि हमारी उवासीनता है? थोड़ा सा भी परिश्र हम नहीं करना खाहते। लेकिन जब तक हम सजग नहीं रहेंगे तब तक इस तरह की चीजें रोकी नहीं जा सकती।

स्वायस शासन का मतलब ही यह है कि ये संस्थायें जिम्मेदारी लें। उनमें कर लगाने की भी जिम्मेदारी है सिर्फ लखं करने ही की जिम्मेदारी नहीं है। श्रीर जब हमसे कहा जाता है कि सरकार बहुत हस्तक्षेप करती है तो बूसरी तरफ हर छोटी-छोटी बातों की शिकायत हमसे की जाती है कि ऐसा हो गया, वैसा हो गया। तो बात बात में सरकार हरतक्षेप करे, यह भी श्राश की जाती है। यह दोनों बातें एक साथ सम्भव नहीं हो सकतों। श्रगर सरकार इजाजत देती है कि इन स्वायस शासन संस्थाओं को वे खुद मुख्तार हो कर काम करें तो इसके ग्रन्दर यह बात निहित है कि ये लोग गपती भी कर सकते हैं भीर जिरहें नये-नये श्रीशकार मिले हैं उनसे शायर गलतियां ज्यादा होंगी। लेकिन ग्रगर हम गलती करने का मौका न वें भीर हर जगह जा कर सुपरसी इकर दें तो वह भी उचित नहीं होगा। इस वृद्धि से ग्रगर हम ग्रपनी जिम्मेदारी समझें तो हमें इन्हीं संस्थाओं की मार्फत ज्यादा जिम्मेदारी का काम कराना चाहिये।

पक्षपात की बाबत में कुछ निवेदन कर चुका हूं। को दिश्य यह की जाती है कि जो अनुवान सड़ को वगेरह के लिये दिये जायं वे हर जगह का माइलेज और जनसंक्या आदि का हिसाब लगा कर दिये जायं। बहुत योड़ा सा पैसा में विशेष अनुवान के लिये रक्षता हूं क्यों कि में महसूस करता हूं कि बहुत सी जगह पुल नहीं है। अगर पुल बन जायं तो जो सड़क है उससे साल भर लोगों को फायदा हो सकता है। में ने पारसाल हर बिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेंट के पास यह दरक्वास्त की भी कि अगर उनके जिले में कोई ऐसा पुल हो जिसके बन जाने से जनता को काफी आसानी हो जाय चाहे सड़क कच्ची ही हो, तो उसके लिये वह सुझाब भेजें। मुझे अफसोस है कि पारसाल कोई भी सुझाव इस तरह का नहीं आया।

एक सदस्य-इस साल ?

श्री विचित्रनारायण शर्मा—इस साल भी सभी तक मेरे पास कोई नहीं धाया। श्री रामसुन्दर पांडेय (जिला साजमगढ़)—हम लोगों से भी पूछा होता।

#### १६६०–६१ के द्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान––श्रनुदान ६७३ संख्या ३७––लेडा झार्बक ५०––नागरिक निर्माण-कार्यों के लिये सहायक श्रनुदान

श्री विचित्रनारायण शर्मा—माननीय सदस्यों से ही मदद लेने के लिये में यह सूचना हाउस को दे रहा हूं। में ज्यादा नहीं दे सकता हूं लेकिन ५,१०,२०,२५ हजार तक दे सकता हूं श्रीर विशेष परिस्थितियों में कुछ ज्यादा भी दिया जा सकता है।

श्री गोविन्दसिंह विष्ट (जिला ग्रहमोड़ा) — देहात के लिये भी मिलेगा?

श्री विचित्रनारायण शर्मा—देहात के लिये ही सब है, शहर के लिये नहीं है। ग्रीर कोई खास छोटी-मोटी सड़क हो तो उसको दिया जा सकता है। तीर्थ स्थान हो, टूरिस्ट प्लेसेज हों जहां पर सिर्फ उस जिले के ही ग्रादमी नहीं बल्कि बाहर के भी बहुत से ग्रादमी ग्राते हों।

श्री ऊदल (जिला वाराणसी) — पंचकोशी सड़क के लिये तो बहुत बार सवाल उठाया गया।

श्री विचित्रनारायण शर्मा—उसके लिये भी पैसा दिया गया है। लेकिन हर मांग मैं पूरी कर सकूंगा, यह श्राज्ञा नहीं रखनी चाहिये। लेकिन श्रगर हर साल १५-२० जिलों को दिया जा सके तो बाई रोटेशन २-३ सालों में हर जिले के छोटे मोटे प्रश्न हल हो सकते हैं।

मेहतरों की बाबत हमारी कोशिश है। रामनगर ते हमारे पास प्रस्ताव श्राया कि वह कुछ क्वार्टर्स मेहतरों के लिये बनाना चाहते हैं। मैंने खुद दिलचस्पी ले कर उसकी कोशिश की श्रीर केन्द्रीय सरकार से भी कुछ सुविधा दिलाने की कोिज्ञा की ग्रौर श्रायन्दा भी श्रगर कोई म्यु-निसियल बोर्ड इस काम को करना चाहे तो उसमें हम भ्राधिक से भ्राधिक सहायता करने की बात सोच सकते है। इसमें काफी पैसा प्रान्ट के तौर पर भी मिल सकता है लेकिन इनिद्यायेटिव लेना होगा म्युनिसिपैलिटीज को। जहां तक हो सकता है, मेहतरों के पक्ष में हम भ्रपना निर्णय देते है। एक ग्रामतौर से हमने यह नीति बना ली है कि कोई भी म्युनिसिपल बोर्ड मेहतरों को ज्यादा सुविधा देना चाहे तो सरकार की तरफ से उसमें निषेध न किया जाय ब्रौर हर ऐसी मांग जो मेहतरों या छोटे कर्मचारियों की सुविधा के लिये हों सरकार उसको प्रायः हमेशा स्वीकार कर लेती है । इस सम्बन्ध में हमने ग्रपनी थोड़ी नीति यह भी बदली है कि जहां पर प्राइवेट घरों के पाखाने का सवाल उठता है वहां भी यह निर्णय किया कि ग्रगर मेहतर लोग उसके डालने का एसा प्रबंध कर सके जो म्युनिसिपल बोर्ड की ग्रापत्ति में न श्राये तो उसका पैसा उनको मिल सकता है और उस पर उनका भ्रधिकार होगा। यह चीज उनके फेबर में की भ्रौर कोशिश यही होती है कि जितना ज्यादा से ज्यादा किया जा सके, किया जाय। लेकिन यह उस समय हो सकता है जब स्थानीय म्युनिसिपल बोर्ड स इसमे सहयोग करें श्रौर हम उनको प्रभावित करें श्रौर माननीय सदस्य भी श्रपने श्रपने क्षेत्र में इसके लिये कोशिश करें। बस इससे श्रधिक में श्रीर कुछ नहीं कहना चाहंगा ।

एक बात इम्प्रवमेंन्ट ट्रस्ट के बारे में कही गई। उसका मै जवाब दे चुका था। कंघारी बाजार की योजना की बाबत बताया गया कि वह सही ग्रौर उचित योजना है ग्रौर वह होनी चाहिये। इसमें इसको कायम रखते हुये ग्रगर कोई सहलियत दी जा सकती है तो वह देना उचित होगा ग्रौर इस पर हमेशा विचार हो सकता है। मै प्रार्थना करूंगा कि माननीय सदस्य इस ग्रनुदान को स्वीकार करने की कृपा करें।

श्री गोविन्दसिंह विष्ट—माननीया, मै एक पर्सनल एक्सप्लेनशन देना चाहता हूं। श्री श्रिधिष्ठाता—कहिये।

श्री गोविन्दिसिंह विष्ट — ग्रिधिष्ठात्री महोदया, मं ग्रनुग्रहीत हूं कि ग्रापने मुझे इसके लिये मौका दिया। ग्राज ग्रल्मोड़े का कर्तई जिन्न नहीं ग्राया ग्रौर न मं बोला। लेकिन इसके बावजूद माननीय मंत्री जो ने कई बाते ग्रल्मोड़ के मुताल्लिक कह दीं। कल जब में बोला था तो उसका जवाब दिया जा चुका था लेकिन पता नहीं ग्राज मंत्री जी को क्या स्वप्न हुग्रा कि उन्होंने इसक सम्बन्ध में दस मिनट जाया किये। ग्रब में दो बातें कहना चाहता हूं . . . . .

श्री श्रिधिष्ठाता—श्रब इतना समय नहीं हु। श्रापके इलाके के ग्रोर लोग बोल खुके हैं।

श्री गोविन्दसिंह विष्ट--बहुत भी बातें कही गई स्रोर किसी ने जिक तक नहीं किया।

श्री ग्रधिष्ठाता--पर्वतीय इलाके के लोग बोल बके हा।

श्री गोविन्दसिंह विष्ट—तो श्राप उनको उसी समय रोक ति। उन्होंने श्रत्मोड़े के सम्बन्ध में श्रोर मेरे सम्बन्ध में कई जाते ऐसी कह दी जिसका मुझे जवाब देना जरूरी है। इसलिये मुझे जबाब देने का जीका दिया जाय।

श्री श्रिधिष्ठाता—श्रब समय नहीं दिया जा राक्ता है। इसके लिये कई बज तक का ही समय है। श्राप श्रासन ग्रहण करने की कृषा करें।

श्री गोविन्दसिंह विष्ट—माननीया, समय बढ़ाया जा सकता रे या फिर सब बातें डिलीट कर दी जायं।

श्री ग्रिधिष्ठाता—ग्राप बाद में गूचना लेल ।

श्री गोविन्दसिंह विष्ट सदन में गलत बातें फही गई होर मझे एक्सप्लेनेशन का मौका भी नहीं दिया जाता है।

श्री ग्रिधिष्ठाता—ग्रब ग्राप श्रासन ग्रहण करें।

श्री मोतीलाल श्रवस्थी (जिला कानपुर)—श्रापकी इधर क्या नहीं हुई श्रीर सोशलिस्ट पार्टी का कोई भी सदस्य नहीं बोल पाया।

श्री श्रिधिष्ठाता--वूसरी पार्टियों के भी सबस्य रह गर्व है।

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी—किसी पार्टी के नहीं रहे।

श्री अधिष्ठाता-कम्युनिस्ट पार्टी में में भी कोई नहीं बोला ।

(कुछ ठहर कर)

भवन यह है कि अनुवान संस्था ३७ में सम्पूर्ण अनुवान के श्राधीन मांग की राज्ञि में सौ रुपये की कमी कर दी जाय ।

कमी करने का उद्देश्य-विशिष्ट शिकायत जिस पर चर्चा उठाने का श्रीभन्नाय है।

लखनऊ इम्प्रूयमेन्ट ट्रस्ट द्वारा इम्प्रूयमेन्ट स्कीमों में प्रभावित व्यक्तियों के साथ भेव-भाव का बर्ताव करना और सरकार द्वारा भी पक्षपात की नीति का बन्तना तथा सरकार द्वारा इम्प्रूयमेंट ट्रस्ट के प्रथिकारियों के भ्रष्ट कायों का समर्थन करने ग्रावि पर खर्षा ।

(प्रदन उपस्थित किया गया धौर हाथ उठा कर विभाजन होने पर निम्निलिखत मतानुसार अस्वीकृत हुन्ना—

पक्ष में---४२,

विपक्ष में--१०७।)

श्री अधिष्ठाता—प्रक्त यह है कि अनुवान संख्या ३७—नागरिक निर्माण कार्यों के लिये सहायक अनुवान—संखा वीर्षक ४०—नागरिक निर्माण कार्य के अन्तर्गत १,०४,१८,००० रुपये की मांग विसीय वर्ष १६६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय ।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।)

# त्रनुदान संख्या ३२--लेखा शोषंक ४७-सूचना संचालन कायालय

गृह उपमंत्री (श्री रामस्वरूप यादव)—श्रिधिकात्री महोदया, में राज्यपाल महोदय की सिफारिश से प्रस्ताव करता हूं कि श्रनुदान संख्या ३२-सूचना संचालन कार्यालय—लेखा शीर्षक ४७-प्रकीर्ण विभाग के श्रन्तर्गत ४२,६२,३०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १६६०-६१ के लिये स्वीकार की जाय।

श्री राजनारायण (जिला वाराणसी)—मेरा एक वैधानिक प्रकृत है यहां पर । सूचना विभाग के मंत्री यहां पर विद्यमान हैं। श्रगर कोई मंत्री नहीं रहते तो वह लिखित रूप में किसी दूसरे को श्रधिकार देते हैं, नियम श्रौर कांस्टीट्यूशन के मुताबिक। लेकिन श्राज मंत्री जी जब यहां विद्यमान हैं तो क्या उन्होंने लिखित रूप में श्रपने श्राप न पेश करके दूसरे के जिरये इस श्रनुदान को पेश करवाने की प्रार्थना श्रापसे की हैं?

श्री ग्रिधिष्ठाता—यह ग्रावश्यक नहीं है कि लिख कर दिया जाय । जब वह बेठे हुये हैं तो ग्रनुमति दे सकते हैं ।

शी राजनारायण—में वह नियमावली का नियम जानना चाहता हूं, कृपया बता विया जाय कि किस नियम के अनुसार ऐसा हो रहा है ? वह न रहते तो दे सकते थे।

श्री ग्रिधिष्ठाता—माननीय मंत्री जी को ग्रिधिकार है कि चाहे लिख कर दें या बैठे द्वये भी दूसरे से पेश करवा सकते हैं।

राजा यादवेन्द्रदत्त दुबे (जिला जौनपुर)—माननीय प्रिषिष्ठात्री महोदया, यह जो ग्रनुदान रखा गया है ग्रापकी ग्राज्ञा से मैं यह प्रस्ताव करता हूं कि इस सम्पूर्ण ग्रनुदान ३२ के ग्रधीन मांग की राज्ञि घटा कर एक रुपया कर दी जाय।

कमी करने का उद्देश्य—नीति का ब्योरा जिस पर चर्चा उठाने का स्रभिप्राय है।

सूचना विभाग में व्याप्त भ्रब्टाचार, श्रपव्यय एवं पक्ष गतपूर्ण नीति की भ्रालोचना करना ।

में यह समझता था कि सूचना विभाग वास्तव में एक पिल्लिक रिलेशन्स ग्राफिस— इस दृष्टि से किसी भी राज्य में हुग्रा करता है । परन्तु में यह देखता हूं कि यह सूचना विभाग, सूचना विभाग न हो कर, केवल पार्टी प्रोपेगंडा के लिए बनाया गया है । यह पोलिटिकल पैट्रोनेज का स्थान हो रहा है क्योंकि इस विभाग के ग्रन्दर जितनी भी नियुक्तियां इसके ग्रन्दर हुई उसमें बहुत-सी नियुक्तियां ऐसी हैं कि जिनमें कभी कांग्रेस पार्टी के सेकेटरी रहे या कोई क्लर्क रहे ग्रौर उनको स्थान देना हुग्रा, तो उनको उन्होंने सूचना विभाग में ला कर रख दिया । में यह मानने को तैयार हूं कि सूचना विभाग के जो ग्रिधकारी हैं डाइरेक्टर महोदय, विद्वान हैं, सज्जन हैं, सच्चिरित्र हैं, परन्तु जर्निलज्म का जो ग्रमुभव उन्हें होना चाहिए था, जो सूचना विभाग का ग्रिघपित होने के नाते, सूचना का, समाचार का, जर्निलज्म का पूर्ण ग्रनुभव होना चाहिए था, उस ग्रनुभव से, वह वंचित हैं ग्रौर केवल ध्यक्तिगत सम्बन्ध हे ग्राधार पर वे इस स्थान पर स्थापित किये गये । इसी प्रकार ग्रगर देखा जाय, में नाम नहीं लेना चाहता, परन्तु सारे ग्रिधकारी ग्रौर कर्मचारी इसी दृष्टि से वहां रखे जाते हैं, ताकि पोलिटिकल पैट्रोनेज हो।

एक सबसे म्राञ्चर्यजनक चीज तो यह है कि लंगड़े, लूले, गूंगे, बहरे लोगों के म्रनाथालय होते हैं, परन्तु उत्तर प्रदेश के म्रन्दर बहरे लोगों के लिए सूचना विभाग ही म्रनाथालय हो [राजा यादबेन्द्रश्त दुबे]

गया है श्रौर पिल्लिक सिवस कमीशन के द्वारा जो वहां पर नियुक्तियां होनी चाहिए थीं, वह श्राज तक नहीं हुई । ऐसे लोग, जिन को कमीशन ने तीन तीन बार रेकमेंड किया कि इनको श्रिसिस्टेट डाइरेक्टर, या जिस पद के लिए उपयुक्त हों, रखा जाय उनको नहीं रखा गया । कहा यह गया कि श्रोवर एज हे । मं नहीं समझता हूं कि श्रोवर एज होना श्रिधिक दोषपूर्ण हे या फिजिकली विकृत होना । शायद सरकार के लिए वहीं कम दोषपूर्ण होगा । श्रभी लोक सभा में मैंने श्राव्वारों में देला, यह चीज श्रायी कि एक विश्वविद्यालय के एक सज्जन जो पैरालिसिस के रोगी थे उनको वाइम चांमलर बना दिया गया । हो सकता है कि इस सरकार ने भी सोचा हो—अह इसो प्रान्त का विश्वविद्यालय है कि हमों क्यों पीछे रहे, सूचना विभाग को बहरों के लिए श्रनाथानय बना दिया जाय । यह जो नियुक्तियां की गई है यह पक्षपातपूर्ण हे । प्रशासन के बारे में इस प्रकार का विश्वास लोगों के श्रन्दर जमना चाहिए कि नियुक्तियां जो होंगी उनमे किसी तरह का पक्षपात नहीं होगा श्रौर मेरिट के अपर वह की जायंगी । लेकिन सूचना विभाग के श्राज तक के कार्यकाष से यह विश्वास जनता में नहीं श्राया।

जैसा मेने पहते कहा, यह पिन्तक लियाजां माफिन होना चाहिए जिससे सरकार भौर जनता में सम्पर्क स्थापित हो भौर सरकार के कार्य का विवरण जनता के सामने स्नाये । लेकिन ध्रगर प्रस नोट्स को ही लेकर वेग्व लिया जाय, १९५६ से १९५८, १९५९ तक के प्रेस नोट्स को प्राप वेखें तो घापको घाइचयं होगा कि सरकारी कार्यों के बारे में प्रेस नोट्स को संख्या घटती ऋली गई है । लेकिन व्यक्तियों के ग्रौर मंत्रियों के प्रचार का काम-मे नाम नहीं लेना चाहता, इस तरह के काम बहुत हुए है। इस तरह के जो कार्य होते हैं और इन्सपाय इंपिलिसिटी का जो कार्य होता है वह गलत चीज है। टैक्स-पेयर के रुपये, करदाता के रुपये का जो उपयोग होना चाहिए, राज्य के कार्यों की वृद्धि की वृष्टि से वह उपयोग नहीं हुआ। । व्यक्तिगत तारीफ के लिये कार्य नहीं होना चाहिये । किसी शादी की तस्वीर खीं बकर प्रलबम दिया गया हो, क्या यह व्यक्तिगत कार्य नहीं है ? यह राज्य का कार्य नहीं कहा जा सकता है। श्रीमन्, इसी पुस्तक में आप देखें कि इसी कार्य के अन्तर्गत आली य वर्ष में शाला के अधिकारी मंत्री महोदयां के ११० दौरों में साथ गये श्रीर उनसे सम्बन्धित भाषण एवं चित्र समाचार पत्रों को प्रकाशनार्थ भेजे गये, यह लिखा है । अब प्रदन उठता है कि मन्त्री महोदय हर जिले में दौरे के लिये जाते हैं। हर जिले में भ्रतकारों के सम्वादवाना मौजूद है। हर जिले में न्यूज एजेन्सी के सम्बाददाता मौजूद रहते है तब भी विशेषाधिकारी मन्त्री महोदय के साथ भेजे जाते हैं। मन्त्री महोवय के भाषण इतने महत्वपूर्ण होते हैं कि सभी समाचार-पत्र उसको चाहेंगे । तो उनकी एजेन्सी बहां पर मौजूब है जिसके प्राधार पर वह उसको पा सकते है फिर सरकारी पैसे का अपब्यय टी० ए० के नाम पर वयों किया गया ? इतना ही नहीं, यह भी देखा जाय कि यह जो न्यूज ब्यूरो, जो सारे समानार देता है, इसके प्रफसर मंत्री महोदय के साथ दौरा करते है। यह स्वाभाविक है कि एक भावमी जब इतने विनों तक १० महोने या ६ महोने, साल भर में बौरा मन्त्री महोवय के साथ करता है तो कुछ वर्षों के बाद उस क्यक्तिगत सम्पर्क के आधार पर एक व्यक्तिगत प्रभाव हो जाता है और मन्त्रिमंडल में जो एक पार्टीबाजी होती है वही न्यूज व्यूरों के भ्रान्वर झा रही है। इसको दिवपाया नहीं जा सकता। सभी जानते हैं कि यह पार्टीबाजी का नतीजा है कि हमारे यहां एफिशियन्सी सफर करती है। जैसा कि मेंने प्रेस नोट के बारे में कहा, वह भी इसी बजह से सफर करती है। जिस मंत्री के लिये जितनी चेव्टा की बावश्यकता है किसी काम को करने के लिये उतनी चेव्टा वह नहीं करता है और अपनी ताकत के बल पर इधर-उधर करता है। में उदाहरण के लिये, यवि चाहें, तो बता सकता हूं। एक पुस्तक लिखी गई भौर छुपी। उसमें भ्रफसरों को धन्यगढ विया जाता है इस कारण कि उस पुस्तक के लिये उन्होंने मन्त्री महोवय को सहायता वी। क्या यह प्रेस ब्यूरो मन्त्री महोवय की पुस्तक लिखने के लिये हैं? क्यों ऐसा किया जाता है?

पिन्तिक रिलेशन का अर्थ तो यह हुआ कि जो सरकारी कार्य है वह नागरिकों तक जाय । समाज के लिये जो कार्य किया जाय उसकी जानकारी जनता को कराई जाय, किन्तु यह जानकारी नहीं कराई जाती है । यह सत्य बात है ।

सीमावर्ती क्षेत्रों के ऊपर जो चीनियों के भ्राक्रमण द्वारा ग्रातंक खड़ा हुन्ना है भ्रीर उसमें जो गलत प्रचार हो रहा है उस गलत प्रचार का खंडन करने के लिये सूचना भ्रधिकारियों ने क्या कार्य किया है इसका विवरण इस पुस्तक में नहीं है । कहां से करें ? सूचना श्रधिकारियों का काम केवल एकमेव जिले के भ्रन्दर यह हं कि वह कांग्रेस की पार्टी पालिटिक्स में श्रधिक हाथ बंटाते हैं श्रीर उसका सारा उपयोग श्रीर उसकी सारी शक्ति का उपयोग केवल पार्टी पालिटिक्स के लिये किया जाता है । में श्रवनी जानकारी से कहता हूं कि उनकी गाड़ियों का उपयोग स्थानीय कांग्रेस एम० एल० ए० की मर्जी पर होता है, कोई जनता का कार्य हो यह मैं नहीं देखता हूं । क्या यह पार्टी के हित का कार्य नहीं हुन्ना ?

इस पुस्तक में आप देखें कि सरकार ने स्वयं स्वीकार किया है कि कांग्रेस के बंगलोर अधिवेशन के अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी में सूचना विभाग ने भी अपना एक कक्ष स्थापित किया था जिसमें प्रदेश में हो रहे विकास कार्यों सम्बन्धी सामग्री इस प्रकार रखी गई कि जिससे प्रदेश में हो रहे विकास कार्यों को प्रगति का परिचय मिल सके । अब प्रश्न यह उठता है कि देश में केवल कांग्रेस ही राजनैतिक दल नहीं है और भी राजनैतिक दल हैं । क्या सूचना विभाग ने इस प्रकार की प्रदर्शनी का और राजनैतिक दलों के सम्मेलनों में कोई अपना कक्ष स्थापित किया ? नहीं किया । यह भी कहा गया कि कांग्रेस दल में ज्यादा लोग आते हैं, लेकिन बंगलोर सेशन के बारे में समाचार-पत्रों में जो बात छ्यी उसको देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। उसमें था कि जनरल सेशन अपने उस पंडाल में न करके सबजेक्ट्स कमेटी के पंडाल में सेशन किया इसलिये कि आदमी वहां पर इतने नहीं आये । यह चीज अखबारों में छ्यी है । टाइम्स आफ इंडिया और हिन्दुस्तान टाइम्स में छ्यी है जिसका पृष्ठपोधण हमारे बहुत से कांग्रेसी मित्र करते हैं ।

श्रीमन्, यह भी देखें कि जो यहां पर युवक सम्मेलन हुआ था उसके विषय में मैंने प्रश्न किया थातो यह बताया गया कि सूचना विभाग ने उसमें काम किया। तो क्या यह सूचना विभाग इसीलिये हैं कि इसका उपयोग यूथ कांग्रेस के लिये हो या ग्रील्ड कांग्रेस के लिये या रिजेक्टेड या डिजेक्टेड कांग्रेस के लिये हो ? इसका उपयोग जनता के लिये होना चाहिये, पार्टी के लिये नहीं होना चाहिये। यह डिसीडेंट्स जनसंघ व ले नहीं हैं बिल्क वे ६० कांग्रेसजन हैं जो उधर बैठे हुये हैं। तो यह जो सरकारी धन का प्रयोग व्यक्तिगत स्वार्यों के लिये हो रहा है यह गलत है और जो विभाग इस तरह के गलत कार्यों को करता है उस विभाग की चालना दीवपूर्ण है और इससे बचा नहीं जा सकता।

जैसा मेंने कहा, पिंडलक रिलेशंस का काम इनका होना चाहिये और इसके लिये आवश्यकता है कि वे एक्सपीरियेस्ड जर्निलिस्ट हों। लेकिन जितने भी सूचना विभाग के अधिकारी आज हैं उनको देखा जाय तो उनमें एकाध को छोड़कर कोई भी एक्सपीरियेस्ड जर्निलिस्ट नहीं है। एक भो ऐसा नहीं है जिसको पिंडलक रिलेशंस का अनुभव हो और जिसको पिंडलक रिलेशंस का अनुभव नहीं है वह क्या काम कर सकेगा? जो एकाध बेचारे दुर्भाग्य से पड़े हुये हैं उनको केवल फाइलें पीसने का काम दे दिया गया है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि उनका जो गुण है उसका उपयोग नहीं किया जाता इसलिये कि कुछ लोगों के मन में यह विश्वास है कि ये हमारे आदमी हैं। यहां तक कि में श्रीमन्, यह सरकार से जानकारी चाहूंगा कि यह सो० आई० डी० की रिपोर्ट है कि इस विभाग में एक कर्मचारी हैं जिनका सम्बन्ध कम्युनिस्ट पार्टी से है लेकिन आज तक उस कर्मचरी को निकालने का

[राजा यादयेन्ददत्त दुबे]

कोई प्रयाम नहीं किया गया श्रोर उप समय तन कि तह हमारे जासने एक कंटक बनकर खड़ी हुई हैं।

श्री **धनुषधारी पांडेय** (जिला वस्ताः) -- अन् तर उन पंत्र का आवसी होता तो श्राप नहीं कहते ।

राजा यादवेन्द्रदत्त बुबे—म्नाप इयर 'प्राफर बीठके ते। अलग पड़े तिक हम क्या कहेंगे । स्रिपट त्री महोदया, क्या फर्स मजबूर हो जाता हूं एक कठता हूं। जब घोड़े के नाल ठ्कती है तो मेडको की टांग में पीड़ा होती है।

श्री श्रिधिष्ठाता--प्राप श्रपने भाषण पर ही रहिये, स्निये कम ।

राजा यादवेन्द्रदत्त दुबे—पजबरी होती है। जब उपरेस कुर्व कहा जायती जवाब देना हो पड़ता है। जब हिरन दिलाई देगा में मोना चनेगी हा च.हे हह काला हो या गोरा।

श्री दीपनारायणमणि त्रिपाठी (जिला देविरणा) — पह कही जीनपुर की बात तो नहीं हैं ?

राजा यादबेन्द्रदत्त दुबे—देवरिया का नहीं है, घन गढ़ में मत । जी कि तो वह जगह हैं जहां की तून से बड़े से बड़े नंत्रा भी घन गते हैं । तो श्राम , दा बात का जानकारी के बाद भी, कुछ लोगों को कृपापात्र होने के नाने रना। अन्ता है, यह अनित नहीं है और मैं इस कार्य को दोबपूर्ण कहता हूं ।

में एक बूसरा उवाहरण दूं। इसी सूचना विभाग में एक श्रीधकारी है जिन्होंने ढाई तीन हजार का एक Leica कैनरा गायब किया श्रीर श्रीज कराब ढाई तीन वर्ष हो गये लेकिन क्या कदम उठाया गया? इस तरह की सरकारों सम्योत्त का बुद्योग करने पर कोई कदम नहीं उठाया गया, यह कार्य बोवपूर्ण है, गजत है श्रीर दूषित है।

श्रिषिष्ठात्री महोतय . . . .

श्री दीपनारायणमणि त्रिपाठी--महोदया कहिये, इधर ग्राधिकात्री की महोदया कहा जाता है, महोदय जनसंघ की तरफ कहा जाता है।

राजा यादवेन्द्रदत्त दुवे—ठीक है महाद्रा उपर रहती है, महाद्रा इसर रहते हैं। में यह समभता था कि में कं कं कं कंटिय कमेटी के मेम्बमं वहां होंगे जो प्रेस में कार्य करने वाले होंगे, लेकिन आज ऐसे लोग भी उस में हे जो साल भर से ए बाटर नहीं रहे, जिनका अखबार बन्द हो गया और फिर भी ने प्रेस कं सल्टेटिय कमेटी म रले गये। इसका एक उवाहरण है यह कि ऐसे ही लोग रखे जाते हैं जो सरकार की हा में हा मिलाते हैं। यह जो प्रेस कं सल्टेटिय कमेटी को बात कहीं गया यह तो अच्छों नहीं लगी, लेकिन एक बात और बताऊं इसी सूचना विभाग की कि जो लोग कल्चरल काम करते हैं, आजकल कल्चरल कार्यक्रम का मतलबत्ती नाचना गाना है, तो उस दुव्टि लंगह नामने गाने वालों का कार्यक्रम है, आखिर उसके पीछे कोई दुव्टिकीण होना चाहिये, कार्यक्रम बनाने के पीछे, उसे रखने के पीछे, देश का, काल का, संरक्षण करने का कोई दुव्टिकीण होना चाहिये (व्यवधान)। आप कहिये, अपनी बात कहिये हिम्मत कर के (व्यवधान)। राजा लोग तो नाचने गाने के शौकीन ये और में भी बीच बोच में आपका नाचना गाना देख रहा है। तो अधिकात्री महोदया, कल्चर के नाम पर जो खेल तमाजा हा रहा है उसके पीछे न कोई योजना है, न दुव्टिकीण, और न उसके संरक्षण का हा कीई कार्य है। किसो विशेष अधिकारी को कोई चीज पसंद आ जाती है कल्बर के नाम पर वही चीज वह शुक्ष

करा देता है । में माननीय मंत्रों जो को सुनात्र दूंगा कि इपक जिये विधायकों की एक कमेटी बनायी जाय, और लोग भी रह सकते हैं उननें, और वह दे हें कि जो कार्यक्रम निर्धारित किये जाते हैं, जिनका समाज में प्रदर्शन किया जाता है, वह कैने हैं, वह उनका मूल्यांकन करे कि वह उचित है अथवा अनुचित । ऐने भो कार्यक र र जो जाते हैं कि जिनकों लोग दे बते ही नहीं। सरकारी पैसा खर्च होता है, प्रोग्राम होता है, लेकिन उसका सद्पयोग नहीं होता । यह पक्षपात्पूर्ण ढंग जो है वह गलत है ।

सूचना विभाग के कार्यों का, जैसा मैंने कहा, श्रविष्ठात्री महोदया, प्रदर्शन, सरकारी श्रीर राजकोय कार्यों का प्रदर्शन समाज में होना चाहिये। लेकिन इंस्पायर्ड पिंबलिमिटी होती है श्रीर यह खतरनाक है। इन विभाग के जो कुरापात्र हैं उनको किसी तरह से पैता दिया ज से हे इनके लिये उनसे लेख लिख त्राये जाते है श्रीर इसका अर्थ यह है कि इंडियेडेंट जर्निन्डम का गला घोंटा जा रहा है। जब विचारक श्रीर लेखक राज्य के श्रधीन हो जायंगे तो स्वतंत्र विचार श्रसम्भव हो जायगा। इंस्पायर्ड पिंबतितटी का दूसरा श्रयं यह होता है कि सत्ता जिसके हाथ में होतो है वह उसके श्राधार पर श्रयने को ईश्वर का स्वरूप बनाना शुरू कर देता है श्रीर इनके द्वारा होरो विश्वय काभो कर खड़ा किया जा सकता है, चाहे उस मनुष्य के पैर कितने हो भिट्टो के बने हुए क्यों न हों। तो इस तरह से इसका दुरुपयोग हो रहा है।

ग्राप श्रीर देखें । हजरतगंज में सूचना कार्यालय है। वहां लिखा हुग्रा है कि पुस्तकें देखी जा सकती है। में वहां की लाइ ब्रेश में गया। मुझे कोई लेडेस्ट पुस्तक वहां नहीं दिखायों दी। जिस के ियं नेने पूछा कि किताब खरोदने के लिये क्या कोई कमेटी हैं श्रीर क्या स्टाक टेकिंग होती है। मेंने पूछा कि किताब खरोदने के लिये क्या कोई कमेटी हैं श्रीर क्या स्टाक टेकिंग होती है ? उत्तर मिला कि न स्टाक टेकिंग होती है श्रीर न कोई कमेटी ही है। तो श्राखिर किस श्राघार पर किताबें मंगायी जाती है। जिसकों जो किताब पसंद श्रा गयो, जिस श्राधिकारों को पसंद श्रा गयो, वही श्रा गयो। वहां स्टेडर्ड वर्क्स श्रीर किताबें होनी चाहिये। उनका संरक्षण होना चाहिये श्रीर वह समाज के लोगों को मिल सकें, उनका सदुपयोग हो सके इसकी व्यवस्था होनी चाहिये। वह किसी की व्यक्तिगत संपत्ति नहीं बननी चाहिये।

किताब छापने के लिये ग्रपने लोगों का पृष्ठगोषण किया जाता है। जिसको पैसा देना है, श्रोबलाइज करना है, जि का मुंह बंद करना है, उसकी किताब छपवा दी या एडवर्टाइजनेंट दे दिया। जिस श्रखबार ने सदन का श्रपमान किया ग्रौर सरकार के खिलाफ खूब लिखा श्रौर जिसे बुला कर यहां तक लाया गया, घुमाया गया, उसी को हजारों रुपये का एडवर्टाइजमेंट दे दिया गया। क्या यह करण्डान नहीं है ? यह दुरपयोग है उस पालिसी का, जो स्वतंत्र विचार रखने वाले समाचार पत्र है, जो सरकार की टीका टिप्पणी करते हैं उनको विज्ञापन न दे कर उनका गला घोंटा जाता है श्रौर उसका नतीजा यह है कि स्वतंत्र जर्नलिज्म देश में समाप्त हो रहा है।

प्रोग्नेस के बारे में विधान परिषद् में काफी चर्चा हो चुकी है। इतनी प्रोग्नेस होती है कि लोग में जीन पढ़ में ही नहीं। में एक बात गृह मंत्री जी से जानना चाहूंगा इसलिये कि वे सूचना मंत्री भी है। पुलिस बजट पर बोलते समय मेंने यह कहा था कि एक प्रधिकारी ने कुछ गड़बड़ी की। में जानना चाहूंगा कि सरकार को क्या पता है कि वही प्रधिकारी महोदय इस छट्टी में फिर से बम्बई गये ग्रीर ग्रगर गये तो क्यों गये? माननीय मंत्री जी इस ग्रोर ध्यानं बें।

श्रंत में में एक सुझाव श्रीर माननीय मन्त्री जी को देना चाहता हू। श्राज इस विभाग के कर्मचारियों में, इस विभाग में, बड़ा द्वेष है, खींचातानी है, बड़ी गड़बड़ी है। श्राज [राजा यादवेन्द्र त्त दुबे]

इस विभाग के लिये जनता में श्रविद्यास की भावना फैली हुई है। इस विभाग के ऊपर जो पैसा खर्च किया जाता है उसका दुरुपयोग होता है। इन सब बातों को देखते हुये श्राज इसकी जांच कराने की श्रावश्यकता है कि यह सब क्यों है? उसका कारण क्या है? इसके लिये में यह मांग करूंगा कि माननीय मंत्री जी एक हाई पावर कमेटी बैठायें श्रीर उसके द्वारा इन सब बातों की जांच कराये ताकि जो भी खराबियां हमारे सामने श्रायें उन पर विचार किया जा सके।

\*श्री राम लक्षमण तिवारी (जिला बलिया)--ग्रिधिष्ठात्री महोदया, मं सूचना विभाग का जो उद्देश्य हैं, उसे समझता हूं भ्रीर वह यह है कि वह राज्य की नीति और रीति को जनता में प्रसारित करे, और जनता इस बात को प्रच्छी तरह से समझती रहे कि सरकार की क्या रीति है, क्या नीति है। उस नीति का पालन करके सरकार जनता को कहां तक लाभ पहुंचा पायी है तथा उसने कहां तक प्रगति की है, इन सब बातों को बतलाना सूचना विभाग का काम है। इन सब बातों को सामने रखकर जब हम सूचना विभाग को कसीटो पर कसते हैं तो यह देखते है कि यह इस कार्य में बिलकुल भ्रसफल हुआ है। हालांकि विरोधी पक्ष के लोगों की दृष्टि में यह विभाग सरकार की नीतिका ही बहुत व्यापक रूप से प्रसार करता रहा है ख़ौर सरकार के ही प्रचार की मशीनरी रहा है ख़ौर मभी राजा साहब ने जितनी बाते कहीं उन सब बातों को सुनने के बाद ऐसा नगा जैसे वह कांग्रेस की मशीनरी ही हो स्रौर कुछ व्यक्तिगत लोगों को तुष्ट करने का ही गाधन हो। लेकिन में इसके विपरीत इस विभाग को यह मानता हूं कि यह विभाग किस हुल एक तरह से लंगड़ा हो रहा है और जो उसका उद्देश्य है उसे वह सिद्ध करने में सफल नहीं हो रहा है। भाज कांग्रेस की जो कुछ नीति है, उसका जो उद्देश्य है, उसी नीति को लेकर शासन चलाया जा रहा है। शासन की नीति में श्रौर कोंग्रेस की नोति में एकता रहना अनिवार्य है और अगर यह एकता है तो जो कुछ भी सूचना विभाग का कार्य होना चाहिये था उसके कार्यों में एकता होनी चाहियं थी। पार्टियां विरोध करेंगी, लेकिन वे ग्रपने उसूल को लेकर विरोध करती हैं। ग्रपनी ीति ग्रीर ग्रपने कार्य-कम को लेकर विरोध करती हैं। उस नीति की भ्रीर उस कार्य-क्रम की हम कहां तक उचित समझते हैं इसका स्पष्टीकरण करना सुचना विभाग का काम होना चाहिये था। सूचना विभाग स्वयं घरितत्व रागता और सरकार की नीति से उत्प्राणित होकर जनता के बीच काम करता तो वह ज्यादा सफल होता।

में प्रधान कार्यालयों की बात तो नहीं जानता, लेकिन जिलों में को तुलना विभाग हैं उनकी बाबत जानता हूं। वहां पर यह विभाग प्रपना प्रस्तित्व समाप्त कर चुके हैं घोर जिलाधीश की पूंछ में बंधे हुये हैं। कहीं पर भी जिलाधीश का दौरा होता है, सूचना विभाग के कर्मचारी उसका प्रचार करते हैं। जिलाधीशों को गाला पहिनाने की व्यवस्था करते हैं, उनके जय-जय कि ने गारों की क्ष्यत्या ग्रीर प्रवश्य करते हैं। इस तरह से सूचना विभाग का जो शसली उद्देश होना चाहिये वह बिलकुल लाम साहो रहा है। ग्रार शाज सूचना विभाग सच्चमच अपना कार्य ठीक दग से करता तो सम्भव है का जनता को िर्याचन के समयों पर कांग्रेस गवर्ममंट की नीति को ने शाने के लिये सरकारी कर्मचारियों को नहीं जाना पड़ता बल्कि सूचना विभाग का ही अचार प्रयस्त पृष्ठ- भि छोड़े रहता जिससे कोई भी यहां बैठा हुआ व्यक्ति अपने प्रचार को लिये सरकारी। दिल ई रेता।

विरोधी पक्ष के लोगों को यही नजर ग्राता है कि सूचना विभाग पार्टी प्रोपेगेंडा में लीन है, लेकिन पार्टी के लोगों को यही हमेशा समझ में भ्राता है कि उसका कार्य विपरीत विशा में है। पार्टी के लोगों के भले ही समझ में न भ्रावे, लेकिन जहां तक में समझता हूं कुछ कमजोरी है ग्रापनी हुकूमत के ग्रन्वर ही कि जब राजा साहब का भाषण होता है, राजनारायण जी का

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्रण नहीं किया।

भाषण होता है तो यहां पर कुछ ऐसा महसूस किया जाता है कि सारा राज-काज विरोधि यों की ग्रालोच नात्रों पर ही ग्रवलिम्बत है ग्रीर ग्रयनी नीति का विरोधि यों की बात सुनने के बाद ही निर्णय किया जाता है। इसी कमजोरी के कारण जो उद्देश्य इस विभाग का होना चाहिये वह नहीं पूरा होता। मैं तो राज संचालन मंत्री महोदय से यह निवेदन करूंगा कि मजबूती के साथ ग्रगर इस विभाग को रखना है ग्रीर कुछ कार्य चलाना है तो जो इसका उद्देश्य है उसको सामने रखकर कदम उठाया जाना चाहिये ग्रीर ग्रगर मजबूती के साथ कदम उठाने में विरोधियों की बातों से कुछ कभी ग्राती है तो विरोधि यों की बातों को सुनकर के ग्रयनी नीति में ही परिवर्तन कर देना चाहिने, यही में सबसे ग्रव्छा ग्राज समझता है। नहीं तो इस विभाग को ग्रार वह ग्रान के में संगदित करने में पूरा पूरा योगदान नहीं कर पा रहा है तो, बन्द करना ही श्रेयस्कर होगा।

जहां तक ग्रतुदान का संबंध है, पब्लिक सर्विस कमीशन की बड़ी दुहाई इस सदन में दी जाया करती है। पिंबलक सर्विस कमीशन से चुने हुए डिप्टी कलेक्टर, कलेक्टर इस प्रदेश में शासन कार्य संवालित कर रहे हैं, लेकिन उसके चल ने वाले लोगों की भी भटर्सना और निन्दा नित्य ही इस सदन में उधर से ख्रौर इधर से सुनने को मिलती है। तो नेरी समझ में नहीं म्राता कि पब्लिक सर्विस कमीशन भगवान से गड़ी हुई जमाम्रत है, या कोई ऐती देवी शक्ति सम्बन्ध जमात्रत है जो चुनाव करती है तो जरूर अच्छा करती है और अगर सरकार के आदमी उसको भ्रच्छा न समझ करके नहीं मानते है तो वह गलत काम कर दिया करते है। श्रदालतों में हाई कोर्ट की रूलिंग पेश की जाया करती है उनी तरह से इस सदन में पब्लिक सर्विस कमीशन की दुराई दी जाया करती है, लेकिन पब्लिक सर्विस कमीशन की ही खुद हम तो कहते हैं कि जांच होनी चाहिये और आज जितने खराब किस्म के अधिकारी चुने जा रहे हैं श्रीर इतने लो स्टैंडर्ड के जो श्रिधकारी जिलों में शासन कार्य संचालित करते दिखलाई देते हैं, क्या क री ऐसे दिखलाई दिये थे? तो में तो यही कहूंगा कि पब्लिक सर्विस कमीशन में बैठे हुये लोगों की ही पहले जांच करायी जानी चाहिये कि उन लोगों का दिमाग ठीक है या नहीं, उसके बाद दूसरों की जांच होनी चाहिये। पब्लिक सर्विस कमीशन कोई बहुत दैवी शक्ति से सन्पन्न ऐती सत्ता नहीं है कि उसका चुनाव बहुत ही श्रेयस्कर होता है। को वह बुरा समझ सकता है और उसी को हमारे सदन में अगर उपस्थित कर दिया जाय तो सारा सदन उसको म्राच्छाभी कह सकता है।

ऐसी सूरत में में तो, राजा साहब ने जो प्रस्ताव रखा है उसका बहुत विरोध करता हूं ख्रीर जो सरकार की ग्रोर से ग्रनुदान रखा गया है, इस सुझाव के साथ उसका समर्थन करता हूं कि सरकार को थोड़ा सख्त होता चाहिये ग्रीर ग्रमती नीति में, रीति में थोड़ा परिवर्तन लाना चाहिये। इस संस्था को बिज कुज स्वतंत्र करना चाहिये ग्रीर स्व नंत्र रूप से कार्य करने का इस को ग्रवसर देना चाहिये ग्रीर इसका सीत्रा नियंत्रण सरकार को ग्रयने हाथ में रखता चाहिये। जिलाबीशों के हाथ में इस चीज को देकर इसको खत्म किया जा रहा है ग्रीर जनता की जो सेवा ग्रमेक्षित है वह उस के द्वारा नहीं हो पा रही है ग्रीर न राष्ट्र की रीति ग्रीर नीति का प्रदर्शन करना हमारा जो उद्देश्य है उसमें कामयाबी मिल रही है।

इन शब्दों के साथ में इस अनुदान का समर्थन करता हूं।

श्री राजनारायण—-ग्रिबब्ठात्री महोदया, जो कटौती का प्रस्ताव दुबे जो ने प्रस्तुत किया है मैं उसका तहेदिल से समर्थन करता हूं। मेरी श्रवनी निजी राय है श्रौर यह राय श्राज की नहीं बहुत पहले से है कि सरकार जिस ढंग से सूचना विभाग को चला रही है उससे न जनता का हित होता है श्रौर न किसी प्रकार की मर्यादा सुरक्षित हो रही है श्रौर न किसी प्रकार से सरकार का ही ब्यापक हित हो रहा है, इसलिये उस विभाग को तुरन्त बन्द कर देन। चाहिये। सरकार की

## [श्री राजनारामण]

श्रोर से एक तर्क प्रस्तुत किया जा सकता है कि प्रांज जब सारी दिनया में सरकारों की श्रायने किये हुए का यो को प्रदर्शन करने की श्रायदेश कर हैं। है तो हम क्यों बन्द कर हैं। कभी-कभी यह तर्क प्रस्तुत किया जाता है कि रूस बहुत क्या पेने में श्रपनी सूचनाश्रों को देता रहा है, रूस की जो किताबें छप रही है वह रा है दानों की होती है। सरकार की श्रोर से ऐसे भी प्रमाण प्रस्तुत किये जा सकते हैं कि श्रमरीका भी बहुत सरती कीमतों पर प्रचार कार्य को चला रहा है। में ज नना चाहता है कि सरकार ने श्रपन सूचना विभाग के जिरिये श्राजतक ऐसे कौन से कार्य किये हैं जिनके बारे में कहा जा सकता हो कि यह कार्य जनता के हित में किया गया है, या किसी सच्ची बात की जानकारी जनता को कराई गई हो सूचना विभाग की श्रोर से।

सूबना विभाग के जरिये आज अव्हानार और कराशन हो रहा है। किसी भी देश के स्वस्थ विकास के लिये श्रीर जनतात्रिक प्रणाली को विकस्ति करन के लिये श्रावश्यकता होती है कि समाचार-पत्रों की स्वतत्रता श्रदाण्य रहे। लेकिन श्र ज हमारे स मने श्रनेकों उदा-हरण प्रस्तुत है कि पत्रकारों को ऋष्ट किया जा रहा है सूचनः विभाग क जरिये ले, पत्रकारों को पैसा दे देकर लेख लिखवाये जा रहे हैं इस विभाग है द्वारा। इसी सबन में जितने भाषण होते है जन है इधर-जधर के श्रांक हों को जेटाकर सूचना विभाग के जरिय स पत्रों म लेख लिखबाये जाते है। श्रालिर यह क्या हो रहा है ? इस र जिया किसका विकास होगा ? यद्यपि समय की कमी है, मगर में याग हे द्वारा, सूचना विभाग न जो कार्याधवरण प्रस्तुत किया है, उस है संबंध में कहना चाहता है कि दबे जी न बहुत राही बात कही कि कला का प्रदर्शन करता सुचना विभाग ने श्रपना काम समझ राया है। काला किसके लिये रे वाला कला के लिये। कला स्वान्तः सुवाय होगी या बहुधन हिताय होगी, इसका ययाद बहुत समय में चलता रहा है। हो सकता है कि सूचना मंत्री जी कहे कि नड़', कन्ता रवान्तः गरीय होते है। मगर क्ला स्वान्तः सुर्वाय तभी होगी, जब कि बहुजन हिताय होकर परस्पर थिभद-म्र थिक ग्रीर सामाधिक मिट जाय।तो कोई ऐसी स्थिति ग्रा सकती है जब कि काना काना के रूप म चरित थे हो सकती हो, मगर ब्राज के जमाने में ऐसा हमने तर्र प्रन्तुत कर दिया तो हो सकता है कि बहुत से लोगो की अम हो, मगर में उनसे निवेदन कळग ---समाजवार्द दोरतो सं श्रीर कम्यनिस्ट वीस्तो से क ग्रार वह मार्क्स के साहित्य का अध्ययन करेंग तो देखेंगे कि इसकी कार्फा अर्जी म बर्ग ने भी की है जब कि उसने इस बात की भी माना कि अगर कम्पानिडम फी स्थापन हो जाय एकाडिग है मार्क्स (श्राजकी कम्युनिस्ट पार्टी का कम्युनिज्य नहीं), उसने द्वि राय सोपान की बात की, उसमें एक ऐसी स्थिति आ सकती है जब कला कला के लिये, ऐसा नतर परितार्थ करना उसमें संभव हो मगर श्राण श्रगर कला स्थान्तः सुलाय की श्रोर अ चर्त हो हमारा दश भ्रत्ट हो जायगा, बर्बाद हो जायगा, रसातल को पहुंच जायगा।

यव में उदाहरण के रूप में कुछ पूछना चाहता हूं। "प्राम्या" एक हिन्दी में प्रितका निकलती है सूचना विभाग की छोर से। हमारी जानकरी है कि इसकी महण्य प्रतियां छुपती है। इसी प्रकार से 'प्रगति' की अंग्रेजी में २५ हजार कापिया छपनी है और इसकी कीमत दो रुपया प्रति कापी छाती है, जब कि इसमें अच्छी प्रविकार्य व जार में खार, छः और आठ छाने में विकती हैं। तो फिर दो पये की प्रतिका कीन करीबेग, ? जब उनकी विक्री महीं होगी तो डाइरेक्टर साहब विचलित होंगे और सूचना आधिकारियों को परेशान करेगे, उनके सम्मुख भाषण देंगे कि इसमें हमारे सम्मान का प्रवन है इनकी गाय सभाकों में मेजो। शाककल गांव सभा हर सरकारी विभाग के विचारों को पूरा करने का साधन बन गयी है। जो भी छुछ किसी विभाग के विमाग में अक धा जाय उसको वे पूरा करने का साधन बन गयी है। जो भी छुछ किसी विभाग के विमाग में अक धा जाय उसको वे पूरा करने का साधन बन गयी है। जो भी छुछ किसी विभाग के विमाग में अक धा जाय उसको वे पूरा करने का साधन बन गयी है। जो भी छुछ किसी विभाग के विमाग में अक धा जाय उसको वे पूरा कर है। करीब १,००० रुपये सूचना विभाग की पत्रिका की विक्री से प्राप्त हुये। बहुत सी पत्रिकायें जिलों को वे वी गर्यों और वहां के सूचना कार्यालयों में पड़ी हुई हैं। उनको कीन लेगा? र रुपया देकर ऐसी पत्रिका को कीन

खरीदना चाहेगा? श्राखिरी पेज पर उसके राधा श्रौर छुटण का गले मिलन है। बाराणसी के घाटों का उसमे वर्णन है। उसके नीचे उर्दू में लिखा हुश्रा है:

अज बनारस नरजम, माबिन्दे श्रस्तईजा , हर बाह्मण पिसरे लक्ष्मणों रामस्त ईजा।

इसका भ्रथें हुम्रा कि मैं बनारस छोड़कर नहीं जाना चाहता क्योंकि यह सभी का घर्म स्थान है। यहां का हर इन्सान इतना पित्र है कि वह राम भ्रौर लक्ष्मण का बेटा मालूम होता है। मुझे तो मालूम नहीं कि बनारस में ऐसी क्या रमणीयता है। बनारस के घाटों की रमणीयता का जहां तक सवाल है, मुझे मालूम नहीं भ्रापने उनको देखा है या नहीं, मैं नहीं समझ सका कि वह क्यों उनको पूज्य हैं। कहा गया कि वहां का हर ब्राह्मण (व्यक्ति) लक्ष्मण भ्रौर राम का बेटा है। लेकिन इसके बावजूद भी भेरी समझ में नहीं भ्राया कि माननीय मंत्री जी यहां क्यों विराजमान हैं? बनारस में क्यों नहीं बैठने ? क्यों नहीं दशाश्वमेघ घाट पर रमणीय पताका के नीचे वे बैठते श्रौर कमंडल लेकर लोगों पर जल छिड़क कर क्यों उनको शुद्ध नहीं करते ? जहां तक मेरी जानकारी है, माननीय डायरेक्टर महोदय भी वाराणसी के ही रहने वाले है जिन्होंने 'श्रगति' के निकालने ग्रौर उसके बिकवाने में वड़ा उत्साह दिखाया। डायरेक्टर महोदय भी बनारस की गलियों को छोड़कर क्यों यहां भ्रा गये ? वहां जाकर क्यों नहीं वे भी भ्रपने कार्यकलाप को चलाते ?

श्रव यह हमारा दुविन कहिये या श्रभाग्य कहिये, देश का या प्रदेश का कि हम किसी बात को उठाते हैं तो उसका श्रर्थ दूसरा ही लगा लिया जाता है। उस दिन से में बहुत डर गया हूं जब से हरिजन शब्द का प्रयोग करने पर समझा गया कि हम उनकी निन्दा करते हैं। हमें चिन्ता हो गयी है कि हम यहां पर कौन सी वाणी का प्रयोग करें। एक मर्तबा १६५५ में यहां डिप्टी डायरेक्टर, इन्फार्मेशन के संबंध में पिब्लक सीवस कमीशन के सामने साक्षात्कार हुग्रा। उसमें तीन नाम चुने गये, उसमें नाम थे—श्री विद्या निवास, श्री रमेश चन्द्र श्रीर श्रो भगवानदास जैन। उनका साक्षात् हो गया उन्होंने इन नामों को दे दिया। सन् १६५५ से लेकर श्रव तक वे नाम टलते चले श्राये। १६५६ में किर एडविट जमेंट हुग्रा। उसमें भी साक्षात् हुग्रा। उसका ऋम इस प्रकार है—मिस सरला सहानी, डाक्टर पी० बी० सिंह, श्री रमेश चन्द, श्री सुरेश जोशी। इस प्रकार से नाम श्राये हैं। श्रव मालूम नहीं इनका क्या होने वाला है। हो सकता है श्रगर वे विभाग के फुपापात्र न हों तो वे भी न लिये जायं।

राम लक्षण जी की नीति का मैं पूर्णतया समर्थक हूं कि पब्लिक सर्विस कमीशन कोई ईश्वरीय देन नहीं है। ईश्वर ने उसको भ्रपने हाथ से गढ़ कर नहीं बनाया है। उसके काम का जरूर निरीक्षण होना चाहिये क्योंकि सरकारी प्रवक्ता की भ्रोर से यह बात उठायी गयी है। इसको समय समय पर हम भी उठाते रहे हैं। राम लक्षण जी जब इस नीति के हैं कि पब्लिक सीवस कमीशन गड़बड़ी कर रहा है भ्रीर वह गड़बड़ी ऊपर से करायी जा रही है तो निश्चित रूप से उसकी जांच होनी चाहिये। फिर यह विभाग रहे या न रहे, उसकी भ्रा- स्यकता है या नहीं, इसको माननीय मंत्री जी देखें।

एक सवाल ब्राज यहां उठ खड़ा हुन्ना है, मगर में सदन की जानकारी के लिये बतला दूं कि उस संबंध में सूचना मंत्री जी से मेरी बात हुई। कुछ सूचना अधिकारियों का मई के महीने में साक्षात्कार होने के लिये प्रार्थना-पत्र मांगा गया, फिर ब्राखिरी तारीख बढ़ायी गयी ब्रावेदन-पत्र देने के लिये साकि जिस व्यक्ति की वहां भेजना था उसका भी ब्रावेदन-पत्र चला जाय। वह समय से नहीं दे पाया इसलिये इशारेबाजी हुई, डोरी खींची गयी, फिर पिडलक सींवस कमीशन से लिखाया गया कि विभाग के बहुत से लीग ब्रावेदन-पत्र नहीं दे पाये है इसलिये और किसी को ब्रावेदन-पत्र भेजना हो तो भेज दें। श्रव नवम्बर में ब्रावेदन-पत्र जाता है, किसका ब्रावेदन-पत्र है, कौने व्यक्ति है, किने-किन कर्मचारियों से संबंधित है, इसकी पूरी जानकारी सदन को करायी जानी शिष्ठियें, सब विभने जाकर शागे का एक कम श्रना चाहिये।

[भी राजनारायण]

एक दिक्कत यहां पेश हुई। यह सही है कि जिन लोगों ने श्रपनी जिन्दगी को खपाया स्व-तंत्रता संग्राम में, जिन्होंने श्रानी कुर्वानी दी है वे श्रनावायक ढंग से सरकारी श्राफिसरों के रोब के सामने नतमस्तक नहीं होते। कुछ राजनीतिक पीड़ित जो मन् १६४७-४८ से सचना विशाग के कार्यों में मं रान रहे हैं, हो संकता ह कि ऐसे राजनीतिक पीडिनो के काम से कभी कभी विभाग के प्रधिकारी प्रसन्न न हों। परन्तू हमारी जहां तक जानकारी हे, उनका जो चरित्र चित्रण (character roll) होत र, उसमें उनके काम को कभी खराब नही नित्या गया हु। लेकिन पब्लिक सिवस कमीशन ने जि । २२ श्रादिमयों को छांटा ह उनमें से करीय, मेरी जानकारी के मताबिक. १८ या १६ ऐसे हैं जो पराने राजनीतिक पीड़ित है। उनमें बहुत में लोग ऐसे हैं जिनके बारे में मेरी निजी जानकारी ह और जो मेरे साथ जेल में रह च है है और उनम में कुत ऐसे भी है जो सरकारी नौकरी में रह कर अपना जीवन-यापन कर रहे हैं। लेकिन मेरे कहने का मतलब यह है कि सन १९४७-४८ से ने हर सन् १९४८-५६ तक जिन ही सेश की हमेदाा प्रशमा हुई, जिनकी सेवा की तारीफ की गयी, जो प्रशंसा के पात्र माने गये हैं, वया करण ह कि प्रव उनकी वहां से हटाया गया है ? मझे सूचना दी गयी है ग्रीर मेरी जानकारी में यह बात करायी गयी है कि यहां के उच्च श्रिधि हारियों ने किसी प्रकार से पब्लिक सियम कमीयन को उस बात के लिये राजी किया है कि ये जो ऐने लोग है जो भ्रयने काम को काम समझते है जो उनके यहा दरबार-गीरी नहीं करते, जो उनके बच्चों को नहीं जिलाते पिलाते, जो उनकी श्रीरतो को मोटर ड्राइवरी नहीं सिखलाते, ऐसे लोगों को निकाल दिया जाय। में जानना चारता ह कि उन लोगों की, जो राजनीतिक पीड़ित है पौर जिनको पब्लिक सर्विस कमीशन ने छोटा है उनकी शिकायती का कम १०,१२ साल के अन्तर्गत क्या रहा है, वह इस गदन के सामने रखा जाय कि किस किस ने किस किस स्थान पर काम किया, उसकी पूरी चर्ना सदन के सामने होनी चाहिये ; राजनीतिक पीड़ितों के बारे में माननीय गुरूप मंत्री ने मंत्री यतलाया, करीब एक हपना पूर्व कि हमने उनके मामले को फिर पब्लिक सार्थिस कमीशन के पास भेजा है कि वह इन है मोमले पर वासतौर से फिर से विचार करे।

इसके श्रतिरिका माननीया, मेरे सामने एक लम्बी लिस्ट है, इस लम्बी लिस्ट की पढ़ने में काफी समय लगेगा। यह सारी सूचना विभाग की गड़बड़ियों के सबा में हे जिसमें श्राप यह देखें कि श्रगर एक इंजीनियर है वाराणसी में तो नियम के श्रनसार वह वाराणमी छियोजन में श्रपने किसी निकटतम संबंधी की उके का काम नहीं दे सकता है। श्रगर कोई सूचना निभाग का बड़ा श्रिकारी हो, डाइरे ट्रर हो या सरकारी सेकेंट्री हो या कोई भी हो, वह उसी जिभाग में निकटतम संबंधी रखें श्रीर उपने साला भी हो, साले का भाई भी हो, सालें का बहनोई भी हो, तो फिर यह क्या चीज हैं? स्मिन कोई मर्यादा बढ़नी नहीं है बिल्क मर्यादा ट्रनो चली जाती है श्रीर फिर हमारे सवन हो, पदेश की श्रीर देश की मर्यादा रह हो नहीं जायगी।

इसके प्रतिरिक्त में यह कहना चाहता हूं, माननीय व्यं जो ने इस पर काफी रोशनी डाली है कि ग्रांखिर यह रेक्या? यह सूचना विभाग काहें को हूं, क्यों हम इसको इस प्रकार से फुरायें-कनायें, खिलागें-ित नारें? क्या इसिलयें कि किसी के जन्मोत्सव पर लहां कयों का नाच कराया जाय? किसी के जन्मोत्सव पर जो वैद्यावृत्ति में लगी हुई वेद्याय है उनका नाच कराया जाता है। इस पूरे प्रदेश में मेरी जानकारी है कि कई जगह के सूचना प्रधिकारी इस प्रकार से वैद्यायों के नाच में लहू है कि जो वैद्याये नाचने गाने में प्रवीण है उनका नाच-गाना सरकारी उत्सवों में कराया जाता है। में माननीय सूचना मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि फिल्म कैसे खींचे जाने हैं, कितना पैसा उनके लिय विया जाता है, उसके क्या रेट्स है श्रौर किन-किन मंत्रियों से संबंधित लोग इस काम में लगाये गये हें? वह एपा कर इसकी पूरी जानक रो सबन को करावें तब कहीं यह मामला हल हो सकता है।

मैंने पहले भी सदन में यह बात कही थी कि सूचना विभाग के सबंध में एक रपेशल भाषिट नियुक्त हो, उस में विधान सभा के सबस्य भी रखे जायं भीर वह तमाम बालों की पूरी

を写义

जानकारी करे तब मालूम होगा कि विभाग में कहां-कहां क्या खराबी है। ऐसे अफसरों को हटाया जाता है जो ईमानदारी से काम करते हैं। एक बार वहां होता टह है कि डाक में एक हजार का नोट आ गया, संबंधित अफसर के दिमाग में पता लगाने की बात आई कि कहां से यह आया ? तब पता लगा कि वह एक ऐसे प्रेस से आया है जिसमें विभाग की छपाई होती हैं। एक लाख पुस्तकों की छपाई का आर्डर हुआ, तो ४,००० छप कर आये और दाम दिये गये एक लाख के। में जानना चाहता हूं कि ऐसा क्यों है? सूचना विभाग की तरफ से जितनी पुस्तके, पित्रकाये छपी हैं उनकी क्या तादाद है, वह कितनी आई, क्या हिसाब उनका है, उनमें से कितनी की बिकी हुई, कितनी मुफ्त बांटी गई, इस का पूरा व्योरा सदन में आना चाहिये। वह जब तक न आये सदन को यह अनुदान पास नहीं करना चाहिये। यह चीज साफ कर दी जाय और विभाग निर्देष साबित हो तो यह जरूर पास होनी चाहिये।

श्री धनुषधारी पांडेय--प्राननीय ग्रिधिकात्री महोदया, जो श्रनुदान मनानीय सूचना मंत्री जी द्वारा प्रस्तुत है उस पर में अपने विचारों को, जो मेरा अनुभव है उसके अनसार, सदन के समक्ष आप के द्वारा रखना चाहता हूं। साथ ही साथ इस अनुदान का समर्थन करते हुये मुझे सब से पहले एक बात की स्रोर सरकार का ध्यान दिलाना बहुत ही जरूरी है। सब से बड़ी बात जो श्राज हमारे सुबे में सूचना विभाग की ग्रोर से हो रही है, हो सकता है कि मंत्री जी को यह पता न रहा हो, कि इस विभाग मे २६-२७ इन्फार्मेशन ग्राफिसर निकाले जा रहे है जिसमें से १५-१६ राजनैतिक पीड़ित है जिन्होंने देश के निर्माण में, आजादी की पुकार में स्वयं श्रीर अपने घर वाल व पड़ोसियों को लेकर देश की कुर्बानी में भ्रपने खुन को देकर भाग लिया भ्रौर देश के निर्माण में लगे रहे। भ्राज १४–१५ साल की सर्विस के बाद यह पब्लिक सर्विस कमीदान द्वारा बेकार साबित कर दिये जाते है, उनकी सीवस भ्राज नहीं रही । साथी राजनारायण जी ने ग्रौर त्रिपाठी जी ने इशारतन ग्रयनी भावनाग्रों को इस विषय मे व्यक्त किया। श्राक्चर्य यह है कि सूचना विभाग के श्रधिकारी भी उस सेलेक्शन कमेटी मे कशीशन के साथ बैठे थे ग्रीर में मंबर थे, लेकिन ५० प्रतिशत इन्फार्मेशन ग्राफिसर बेकार कर दिये गये। मै माननीय मंत्री जी से कहंगा कि वह ग्रधिकारी भी, जिन्होंने उनसे इतने दिन तक काम लिया वह भी इस योग्य नहीं है कि वह पब्लिक सर्विस कमीशन में बैठते। जिन्होंने इतने दिन तक काम लिया ग्रीर रिमार्क दिया कि वह ग्रच्छे है लेकिन कमीशन के साथ बैठकर कहते है कि निकम्मे हैं, बेकार है। भैने तमाम माननेय सदस्यों की भावनात्रों को सुना ग्रौर मै इस निश्चय पर पहुंचा हूं कि कोई भी पार्टी का नेता ऐसा नहीं है जो इस मत से सहमत न हो कि जितने निकाले गये है वह निकम्मे नहीं है। वह पूर्णतया होशियार है ग्रौर उनको रखा जाय। इन सब बातों को देखते हुए में सरकार से कहूंगा कि उनको किर से नौकरो पर रखने का विचार किया जाय और जिस अधिकारी ने इस तरह से उनके अपर कुठाराघात किया है उनके लिये भी उचित कार्यवाही होना जरूरी है।

माननीय यादवेन्द्रदत्त दुबे जी ने कहा कि बंगलोर सेशन में ही नहीं काग्रेस, की ग्रीर सभाग्रों में भी जो बड़ी-बड़ी होती हैं सूचना विभाग को इस्तेमाल किया जाता है। मैं दुबे जी से ही नहीं, पूरे सदन से कहूंगा कि सरकार की सारी नीति को सूचना विभाग प्रसारित करता है, श्रीर जहां भी बड़ी-बड़ी मीटिंग होंगी, जिसमें सरकार सम्मलित होंगी उनमें सूचना विभाग श्रवदय शामिल होगा। यह नीति की बात है। श्राप भी वैसा ही धरेगे।

दुबे जी ने सांस्कृतिक प्रोग्राम के बारे में कहा। इस सम्बन्ध ने मुने यह कहना है कि सांस्कृतिक कार्यक्रम उनकी ग्रगर बुरा लगता है तो शहरों मे जो ग्राजक न सिनेमा का प्रचार है उस पर
भी सरकार का ध्यान दिलाना चाहिये था जिसकी वजह से हमारे बच्चों का ग्राचरण गिर रहा
है। लेकिन उसके बारे में नहीं कहा क्योंकि उसमें वह स्वयं शरीक होते है, बच्चे ग्रोर बुजुर्ग
भी शरीक होते हैं। उनकी सिनेमा का भी विरोध करना चाहिये ताकि हमारी भारतीय
संस्कृति की रक्षा हो सके। ग्राचरण कैसे बनता है यह भारतीय संस्कृति से ही ग्राप सीस

[श्री घनुषधारी पांडेय]

सकते हैं। श्रीमन्, मुझे यह कहते हुए भी जरा हिचक नहीं है कि सरकार हो नहीं, बिक्क सरकार के बनाने वाले स्रोर विरोधो दोनों ऐसी-ऐसी जगहों पर बड़े प्रेम के साथ हथेली मिला कर जाते हैं।

श्रव में श्रपने जिले के मूचना विभाग की श्रीर ध्यान विजाना जाहता हूं। बस्ती जिला श्रान्त में ही नहीं, सारे हिन्दुस्तान में सबसे बड़ा जिला है। यहां ये। श्री कारी रये गये हैं लेकिन सालों गुंधर गये श्राज तक विभाग के लिये सबारों को ध्यायरया नहीं हुई जो कि श्रविलम्ब होनी चाहिये जिससे प्रवार के काम में गहूजियत हों। चलते कि गो सिनेमा वगरह की मीटर गाड़ी नहीं यो गई। सूचना श्रीधकारियों को खराबी की तरफ धना गया, उनकी निकाल दियागया क्योंकि वह राजनीतिक पीड़ित थे, एम० ए० तक पढ़े थे, १६ गान की नौकरों के बाद भी निकाल दिया जब कि उनका करेक्टर रोज बहुत श्ररहा रहा। लेकिन इधर ध्यान नहीं गया कि बस्ती जिले में विभाग के काम के लिये गाड़ी वा जाय। श्रापका लक्ष्य तो दूसरा था कि राजनीतिक पीड़ित इस विभाग में न रहने पाये क्योंकि यह श्रीना स्वाभिमान नहीं लोगों, उसकी रक्षा करेंगे श्रीर उसकी रक्षा करने हुये वेश का रक्षा करेंगे। यो तो एक तरह है वेश की हुकूमत राजनीतिक पीड़ितों के हाथ म हे लेकिन गाम चलान थाली फड़ियां दूसरी जाह पर जोड़ा गयी है श्रीर श्राप उनकी श्रीकाना चाहने हैं मगर यह श्री में लेगे तेयार नहीं है। हम नहीं समझते थे कि श्रोशों के जमाने की गुलामी वाली चीन कि या रहेगी श्रीर उच्चािषकारियों की जी हुजूरी करायी जायगी। मेने बताया कि इतने यह जिल की श्रीर श्रीपका धान नहीं गया।

मेरे साथियों ने कहा कि इन्फार्मेशन श्रकगर कले कर के पीछे एमने है। इसका तो में विरोधों हूं। जिले से जो भी प्रोग्राम बनता है उसमें इन्फार्मेशन श्रकगर कर रहेगा श्रीर उसका प्रोग्राम एक महीना पहिले सबके पास बितरित होता है। जहां करी भा गरकार जायगी तो उसको सूचना उस क्षेत्र के श्रवर यह देगा। यह तो ठाक है। तो का का जमा मेरे साथों ने कहा कि कलेक्टर के पीछे-पीछे जाते हैं श्रीर यह इस्तना देने हैं कि को कर हा रहे हैं इसका तो में समर्थन नहीं करता; लेकिन हो, प्रोग्राम का सूजना कलेक्टर हो भी देने हैं श्रीर साथ ही साथ जहां तक मेरी यादवाइत है वह प्रान्तीय इन्फार्नेशन विभाग की भी मुखना दता है।

एक बात की तरफ में श्रीर सरकार का ध्यान विनार्जगा कि इस विभाग से जो बुलेटिन खबले हैं शायब यह उनके द्वारा लिखाये जाते हैं जिनकी वेश-निर्माण का जराभी जान नहीं है। जो भी बुलेटिंग सूचना विभाग का श्रीम से ह्वरं, उसने ऐसे लोगों का हाथ होना चाहिये जो वेश का निर्माण करना चाहने हों। इन शब्दों के साथ भे द्वरा अन्यान का समर्थन करते हुए सरकार का ध्यान उन अंदियों का श्रोर विलाङगा जिन है कारण २६-२६ इन्फार्मेशन अफसरों की हत्या होने जा रही है। ऐसा नहीं होना चाहिये।

\*श्रीगोविन्दनारायण तिवारी (जिला जानीन) — प्रात्याद्धां महोत्या, में प्रापका प्रभारी हूं कि प्रापने इस सूचना विभाग के प्रत्यान की दाय परीक्षा गरने के लिये मुझं मौका विया। वैसे तो साढ़ें ४२ साख रुपये का बजट हैं ने किन इस प्रिमाग का रारफ में जो प्रांत प्रकाशित की गयी हैं वह महज = पेज की हैं। जहां तक इस पुस्तका के द्वारा गढन की धार इस प्रदेश की जनता को जानकारी कराने को बात हैं, इस प्रतिका में जो बात लिखी गयी हैं वह इस विभाग की सार्यकता की सिद्ध नहीं करती। क्या इस विभाग की एकिट-विटीज एक वर्ष तक हुई, कीन-कीन से जनता के काम इस विभाग द्वारा हुय इसका कोई वर्णन, इसका कोई प्रकाशन श्रीर इस का कोई सही माने में तजिला हुया है कि इस उद्देश से एक बात जरूर है। इस पुस्तका में प्राक्षिर में विकास हुया है कि इस उद्देश से एक कठपुत्रली पार्जी नियुक्त की गयी जो मूचना विभाग द्वारा तथार किये माटको का प्रदर्शन करती है।

<sup>\*</sup>वयतः ने भारण का पुनर्वीक्षण नहीं (कथा ।

मं यह कहता हूं कि वैसे तो कठपुतली पाटियां इस विभाग की हैं मगर यह कांग्रेस पार्टी भी कठपुतलो है ग्रौर यह विभाग, मौजूदा सरकार ग्रौर उसके प्रमुख मंत्रियों को कठपुतली है।
जैसे कि ग्रभी जौलपुर के माननीय सदस्य ने कहा, केवल कांग्रेस पार्टी का प्रकाशन, कांग्रेस
पार्टी का प्रसार ग्रौर केवल मंत्रियों के फोटो ग्रौर व्यक्तव्य देना, यह सब काम इस विभाग के
द्वारा होते हैं। इस विभाग से उत्तर प्रदेश की जनता का सही माने में कोई फायदा नहीं होता
है। ग्रगर इसको जिला स्तर पर देखा जाय तो में ग्रपने जिले की बात कहता हूं ग्रौर में समझता
हूं कि जैसा जिला जालीन में है वैसा हो दूसरी जगह भी होगा। वह यह है कि ग्रभी तक उत्तर
प्रदेश की जनता को जानकारों में यह नहीं है कि यह विभाग जनता के फायदे के लिये है।
इस पुस्तका में लिखा हुग्रा है कि जिला स्तर पर प्रदेश के प्रत्येक जिले में एक कमेटी बनाई गई।
है। मुझे तीन वर्ष होने को ग्राये ग्रौर मुझे ग्रभी तक यह जनकारी नहीं है कि इस विभाग की
कोई कमेटी जिला जालीन में है ग्रौर में समझता हूं कि माननीय सदस्य मेरी इस बात की ताईद
करेंगे। मुझे यह भी जानकारी नहीं है कि कभी उस कमेटी की मीटिंग बुलाई गई हो या कोई
प्रोग्राम उसके द्वारा किया गया हो। ग्रगर यह सही है तो इस ग्रोर नाननीय मंत्री जी को क्यान
देने की ग्रावश्यकता है।

श्रीमन्, जहां तक रेडियो सेट्स की बात है, उसके सम्बन्ध में मुझे यह कहना है कि मेरी बात-चीत ग्रामसभा के सभापित से हुई। उसने मुझे बताया कि जो रेडियो सेट्स गांव सभाग्रों में लगाये गये हैं उनमें केवल लखनऊ स्टेशन से ही समाचार ग्राता है, ग्रौर स्टेशन वह नहीं पकड़ते हैं। में सोंचता हूं कि क्या सूचना विभाग की ग्राम सभाग्रों के ऊपर ग्रौर जनता के ऊपर इतना भी विश्वास नहीं है कि वह रेडियो सेट्स से दूसरे स्टेशन्स, हिन्दुस्तान के बाहर के स्टेशन्स को भी सुन सकें। इस तरह से इस विभाग द्वारा रेडियो सेट्स केवल इसलिये दिये जाते हैं कि वह मिनिस्टर्स को तारीफ सुना करें या सरकार की बातों को जान लिया करें। इसके सिवाय ग्रौर कोई दुनिया की जानकारी उनको नहीं होती हैं।

इती तरह से भ्रब सवाल यह है कि जिन सिद्धान्तों की बात इसमें कही गई है उनमें शासन सम्बन्धो सूचना भ्रीर समाचार पत्रों की बातों से जनता को भ्रवगत कराना। यह दो उद्देश्य इस विभाग के बताये गये हैं। मेरा निवेदन माननीय मंत्री जी से तथा इस भ्रादरणीय सदन के माननीय सदस्यों से यह है कि जो दो उद्देश्य इस विभाग के बताये गये है वह अपर्याप्त हैं भ्रोर उनको पूर्ति भो सहो माने में नहीं हो सकती हैं। शासन को जो सूचना दो जाती हैं वह भ्रववारों के किंदग के जिरये दो जाती हैं। में जानता हूं कि जहां भ्रववारों की किंदग भेजी गई उसको एक एक वर्ष का समय हो गया, लेकिन क्या कार्यवाही हुई इरा पर सूचना विभाग कोई ध्यान नहीं देता है।

इस विभाग का केवल इतना ही काम नहीं है कि सरकारी बातों को जनता तक पहुंचाया जाय। इसका यह भी काम होना चाहिय कि किसानों को बताया जाय कि उनको तकावी किस तरह से प्राप्त हो सकती है। गवर्नमेंट के सूचना अधिकारियों का कर्तव्य होना चाहिय कि वह गांवों में लोगों के पास जाय और लोगों को सरकारी नियमों तथा फार्मों से अवगत करायें। इसके अतिरिक्त जो कार्में लिटीज होती हैं उनको गांव वालों को बतायें। यही काफी नहीं है कि मंत्री जी ने फलां लेक्चर दिया, या भावण दिया या फलां पुल टूट गया, इसकी सूचना जनता को दो जाय। यह भी लोगों को बताया जाय कि विद्या अयों को वजोफा किस तरह से मिल सकता है। गांवों में लोगों को बताया जाय कि जेतों से कैं। छोड़ दिये जायेंगे, किन को दरख्वास्त देनी चाहिये और किन-किन फार्मों पर देनो चाहिये। यह सब बातें इस विभाग के अधिकारियों द्वारा गांव के लोगों को बताई जानी चाहिये तभी सही माने में इस विभाग का उद्देश्य पूरा हो सकता है और प्रदेश का सच्चा कल्याण हो सकता है।

भ्रब में नागरिकों की दरख्वास्तों के सम्बन्ध में दो जब्द निवेदन करना चाहता हूं। श्रभी यह होता है कि नागरिकों को ग्रोर से जो दरख्वास्तें दो जाती हैं उनका पता नहीं चलता कि उनकी

# [श्री गोविन्दनारायण तिदारी]

दरख्वास्तों पर क्या कार्यवाही हुई। मै सुन्नाय दूंगा कि प्रत्येक जिने के स्तर पर मूबना विभाग में ऐसा एक आफिन होता चाहि। जोकि लोगों की शिकायतों की रिसीव करें। वे दरख्वास्तें उस आफिन के द्वारा सम्बन्धिन अविकारियों या सरकार के। भेज दी जांव और सूचना विभाग पर स्थानीय रूप से इस बान को जिन्नेदारी हो कि जिल्लों दरख्यात्त दी हो उसकी सूचित करें कि उसकी दरख्यास्त पर क्या कार्यशही हुई। श्रार इस प्रकार का कार्य सूचना विभाग करें तो लाभ हो सकता है, नहीं तो जिल्ला तरह से श्राज वह कार्य कर रहा हे, उसते जनता का कल्याण नहीं हो सकता।

रही सूचना विशाग के श्रियिकारियों की बात, उसके विश्व में यह िनेदन करना चाहता हूं कि पहले सूचना विभाग में लिप्नियां कर दी गयीं, राजनीतिक पे हिनों ग्रीर दूसरों की नियुक्तियां कर ली गयीं। जब वे श्राष्ठ-ग्राठ साल, दस-दस साल नौकरी कर च हे तो ग्रिय कहा जाता है कि तुम्हारी नौकरी की जरूरत नहीं है, तुम्हें पिक्लिक सिंदस कमीदान ने पृत्रय नहीं किया। जहां तक मुझे मालून है सूचना विशाग के डाइरेक्टर को भी एर-पाध बार पिक्लिक सिंवस कमीदान ने डिसऐपूव किया था। धब अगर डाइरेक्टर महोदय ग्राज भी सूनना विभाग के डाइरेक्टर बने हुए है तो कोई वजह नहीं मालून होती कि श्रितिरक्त सूचना श्री मारी ग्रीर श्रन्य व्यक्ति, जिन की पिक्लिक सिंवस कमादान ने ऐपूज नहीं किया, उनकी न रला जाय, श्रीर श्रगर उनकी न रखा जाय तो डाइरेक्टर महोदय भी श्रवने पद पर नहीं काम यह नाते हु ?

एक बात श्रौर नियेदन करनी है। दुः खयह है कि स्वना विभाग के मंत्री महोदय एक पत्रकार है। श्राज जो भी श्रवबार सरकारी लाइन पर नहीं चलता ....

श्री ग्रधिष्ठाता--समय समाप्त।

(इस समय ३ बज तर ४५ मिनट पर श्री उपाध्यक्ष पुनः पीठासीन हुए । )

मुख्य मंत्री के सभा सचिव (श्री राजिबहारी सिंह)—उपाध्यक्ष महोदय, में श्रापकी श्राज्ञा से सूचना विभाग का तरफ से जो ग्रांट पेंश को गयी ह उस के समर्थन में खड़ा हुन्ना हैं।

राजा साहब जोनपुर की दो बातों से मैं सहमत हूं। उन्होंने ग्रपने भाषण में कहा था कि वे एक बहुत श्रन्छे शिकारी हैं। दूसरे इन्फार्मेशन डिपार्टमेन्ट को पिलक रिलेशन्स डिपार्टमेन्ट होना चाहिये। जहां तक उनके शिकारी हीने का ताल्लुक हे इम हाउत में कोई भी इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि वह श्रन्छे शिकारी हैं। उनको बड़े-बड़े इनाम भी मिल चुके हैं। इसलिये उसमें कोई दो राये नहीं हो सकतों।

श्री राजनारायण—किस चीज का शिकार करते है?

श्री राजिबहारीसिंह--सब चोज का शिकार करते हैं, जो सामने श्रा जाय।

दूसरी बात जो उन्होंने कही कि पब्लिक रिलेशन्स डिपार्टमेन्ट होना चाहिये, मैं कहता हूं कि इन्फार्मेशन डिपार्टमेन्ट का यही काम है कि वह जनता और सरकार के बोच में एक सम्पर्क स्थापित करे और जनता की भावनाओं का द्योतक हो, और उनकी सरकार तक पहुंचा दे, सरकार को रीति नीति का जनता में ठोक-ठोक प्रचार कर दे। इन दो बातों को अगर आप देखे तो मैं कह सकता हूं कि इन्फार्मेशन डिगार्टमेन्ट ने अपना काम किया है। सरकार की क्या नीति है, सरकार क्या चाहतों है, इसका, प्रचार जनता में अच्छी तरह से किया है जो बुलेटिन बटो है अगर आप अच्छी तरह से उसको पढ़ लें तो साफ जाहिर होगा कि एक-एक सान के भीतर इन्फार्मेशन डिपार्टमेन्ट ने हजारों के करोब प्रेस नोट निकाले हैं। सरकार की नीति के सम्बन्ध में पचासों लेख लिखवाये हैं और दूसरो और ठीक इसके विपरीत जो जनता की भावना है उसको सरकार के पास पहुंचाने का काम भो इन्फार्मेशन डिपार्टमेन्ट ने किया है। अगर इसको पुस्तका को आप देखें सो उसी में आपको मिलेगा कि कई हजार कतरने जिसमें लेख भो रहते हैं, आपकी विचारधाराएं

रहती हैं, बार एसोसियेशन के प्रस्ताव रहते हैं, हर तरह की बातें जो सरकार के खिलाफ होती हैं, उनको सरकार के पास इन्फार्मेशन डिपार्टमेन्ट ने भेजा है। सरकार के पक्ष की बात तो प्रेस नोट में दे दी ग्रौर जो जनता को भावना सरकार के खिलाफ होती है उनकी कतरनें उसने सरकार के पास भेज दीं। इसी पुस्तिका में लिखा हुग्रा है कि ऐसे कितनी कतरनें ग्रौर कितने लेख इन्फार्मेशन डिपार्टमेन्ट ने सरकार के पास भेज हैं। उनकी हजारों की ताबाद है।

दूसरी बात रह गई कि इन्फार्मेशन डिपार्टमेन्ट का काम तो कोई त्रिकास का काम नहीं है। तिवारी जी कह गये कि कोई जनता का फायदा नहीं होता। तो इन्फार्मेशन डिपार्टमेन्ट हाहीं स्कूल नहीं खोल सकता, कहीं ग्रस्पताल नहीं खोल सकता, भोजन नहीं इकट्ठा कर सकता जिससे कि जनता का फायदा हो। उसका तो काम है कि चाहे सरकार ग्राज कांग्रेस की हो, चाहे किसी की हो, उसकी जो नीति ग्राज है उसको वह जनता में प्रसारित कर दें। कल को राजनारायण जो की सरकार हो जाय तो उनकी जो नीति होगी उसको वह प्रसारित कर देंगे। (व्यवधान) जरा सुनिये मास्टर साहब। इन्फार्मेशन डिपार्टमेन्ट तो एक पोस्ट-ग्राफिस है। जैसे पोस्ट ग्राफिस चाहे जिसकी चिट्ठी ग्राजाय, उसको सही व्यक्ति के पास पहुंचा देने का कार्य करता है, इन्फार्मेशन डिपार्टमेन्ट भी बिलकुल ठीक वैसे ही वही कार्य करता है। इन दो-तीन बातों पर चर्वा बड़े जोरों के साथ की गई। वह भी मैं समझता है कि केवल भ्रमवश ऐसी बातें होती हैं।

एक बात बहुन कही गई कि सूचना श्रधिकारी रखे गये श्रौर निकाल दिये गये श्रौर उनमें कुछ राजनीतिक पौड़ित भी थे। लेकिन यह भी श्रापको सोचना चाहिये कि वह राजनीतिक पोड़ित जो श्रयनी जान हथेली पर रख कर स्वतंत्रता संग्राम में लड़े थे, उनको जो रखा गया था, वह किसके द्वारा रखा गया था? इसी सूचना मंत्री के ग्रीर सूचना विभाग के मंत्रित्व काल में उनको रखा गया था । सूचना श्राफिसर कहां थे पहले सन् १६४६ में ? इसी कांग्रेसी सरकार के इसी सूचना विभाग के मैंत्रित्व काल में सूचना श्रधिकारी रखें गये। इसलिये जितनी हमदर्दी भ्रापको है उनसे, उससे ज्यादा हमदर्दी इस सरकार को है । जैसे राजनारायण जी ने स्पष्ट जिक्र किया कि जब सरकार को पता चला कि सूचना विभाग के श्रिथिकारो जो दस-दस श्रौर बारह-बारह वर्ष तक काम किये वह निकाल दिये गये तो सरकार ने तुरन्त ही, जैसा उन्होंने कहा—यूचना मंत्री श्रौर मुख्य मंत्री ने कमीक्षन को लिखा कि उनको दूसरी जगह दी जाय। यही नहीं, चाहे जिस विभाग में वह काम किये हों, कोई कर्मचारी ग्रार श्राठ-इस वर्ष तक काम करता है तो उसको इस तरह नहीं निकाल बहार करते हैं। ठीक यही बात शिक्षा विभाग में हुई थी। सैकड़ों श्रादमी निकाल दिये गये । पिब्लक सर्विस कमीशन के सामने गये। हटा दिये गये। तरन्त ही शिक्षा मंत्री ने लिखा ग्रौर श्रादेश दिया कि जितने श्राप्यापक ग्रौर एस ब्डी० ग्राई० निकाले गये हैं उनको नार्मल स्कूलों में रख दिया जाय । तो जहां तक सरकार का ताल्लुक है, ऐसे जितने कर्मचारो है चाहे वह राजनोतिक पोड़ित हों, चाहे न हों, उन को काम दिलाना सरकार का कर्त्तव्य है । जिस श्रादमी से दस बारह वर्ष तक हम काम करायें उसके जीवन के साथ खिलवाड़ करने वाली सरकार कहां तक टिक सकती है ? इसलिये जितनी हमददीं उनके साथ श्रापको है उतनो ही सरकार को भी है ।

श्रव रही दूनरी बात—राजनारायण जो को राधाकृष्ण के फोटो से बड़ा प्रेम हैं। में समझता हूं कि उनको तो हर धार्मिक पुस्तक से प्रेम होता है। वह हनुमान चालीसा का भो पाठ करने वाले हैं। (व्यवधान) उस पत्रिका की बड़ी चर्चा हुई। राजनारायण जी ने कहा कि कितने रुपये क्या हुये श्रौट पूचता श्रधिकारी उसकी घर-घर बेचते फिरे। यह गलत बात है। वह दो रुपये की पत्रिका, गांव में कौन उसे खरीदेगा श्रौर कौन ऐसा बेवकूफ श्राफिसर होगा जो गांत्रों में उसे बेचता फिरेगा? श्रगर शहर में या दूकानों में बेचने की बात हो, तो वह तो एक बात भी हो सकती है, लेकिन देहातों में उसको खरीदवाते फिरें वह, यह बात गलत है श्रौर न यह हुश्रा है कि वह पत्रिका रही की टोकरी में फेंक दी गयी हो। श्रगर श्राप उस पत्रिका को देखें तो मालूम होगा कि वह एक शब्छी पत्रिका है। युबे जो ने श्रंगेजी श्रखबार का चर्चा किया। जिस शंग्रेजी

[श्री राजिबहारीसिंह]

श्चायबार टाइम्स म्राफ इंडिया का जिक्र किया गया था उनने खुद उपकी पारीफ की है। जहां तक उस पित्रका के छापने की बान है श्वगर वह २४ हजार से कम छापो जातो तो महंगी पड़ती। जिस प्रकार के कागज पर जह पित्रका छापी गई है वह किसो हानन में इनने से कम छापने पर श्रौर ज्यादा महंगी पड़ती । इमिलिये सस्ता करने के लिये उसकी इनना छापना पड़ा।

दूसरी बात यह है कि प्रचार के लिये जो काम होता है, जिय काम को फैलाने की दृष्टि से किया जाता है उसमें हिसाब-किताब नहीं देवा जाता। यह पेसा प्रचार के लिये खर्च होता है। एक बात यह भी कही गई कि क्या बिकों का राया जना किया गया। में ऐसा समझता है कि र्४ हजार पत्रिकाये जो बेची गई है उनका = = ०० रुपया सरकारी खजाने में जमा है। वह कोई छिपी हुई बात नहीं है। उसको देखा जा सकता है। यह भो कहा गया कि जितनो चीजें छपती है वह बिकती नहीं है और उसका हिसाब, किताब क्या होता है। में समझता हूं कि सूचना विभाग से जो प्रकाशन होते है वह बहुत प्रच्छे होते है स्रोर वह काफी विकते हैं। एक इन्फार्मेशन डिपार्टमेन्ट की डायरी छपती है। कोई ऐसा शहर नहीं है जहा पर लोग उसकी न खरीक्ते चाहे हम लोग उसको नहीं खरीदते लेकिन जो पढ़े लिखे नौजयान है श्रौर नौकरी की तलाश में घूमते हैं वे उसको जरूर खरीदते हैं। लोग सूचना विभाग के पंचाग को भी जरूर खरीदते है। वह इसलिये डायरी स्रोर पर्वांग को लरीदते हैं कि उससे उनको जनरल नालेज का पूरा ज्ञान होता है। प्रत्या के बारे में उसमें सारों चीजें रहती है। श्रापको जानकर यह ताज्जब होगा कि ३० हजार डायरी हमारे सूचना विभाग में छपती है और इसमें से २७-२८ हजार विकती यह जरूर है कि इसमें से हजार, दो हजार मगा में बंट जाता है। ६००,७०० तो हम लोग हो है तो लगभग हजार तो ऐसे ही हो गई। इसी तरह से पंचान को बात है। उसकी भी बहुत मांग रहती है। जो पत्रिका निकलती है उसके भीतर श्राप देखे तो पता च नेगा कि उसमें श्रुँखे लेख निकलते हैं। हर पढ़ा निसा लड़का उसको खरीदता है।

यही नहीं, इसके प्रनाया ग्रीर भी इन्फार्मेशन डिपार्टमेन्ट के काम है। जो हमारे पुराने रीति रिवाज है, जो गांव में काम होते हैं विकास के सम्बन्ध में उनके विषय में वह किताब निकालता है। हमारे भाइयों को राजनैतिक पीड़ितों से बहुत प्रेम है। भापने देखा है कि सन् १६२०-२१ में जिन गानों को गांकर हनारे ऊपर डंडे पड़ते थे ग्रीर जेल जाते थे उन गानों का प्रकाशन सुवना विभाग में मौजूव है। पुरानी कहावतें खेती बाड़ी के सम्बन्ध में, जो हमारे यहा प्रचलित यों उन सब का प्रकाशन सुवना विभाग ने किया है। इसो तरह से हमारे यहां जो बड़े-बड़े पुराने किय रहे हैं, बड़े-बड़े लेखक रहे हैं उनके बारे में सुवना विभाग बहुत सी बाते करता है। सहायता देने का काम भी उनके लिये होना है। सरकार की जो नीति होतो है, ग्रह्प बचन योजना, उत्पादन की योजना या इसी प्रकार की जो ग्रीर योजनायें है उन सबकी सुवना जनता को यह सुवना विभाग ग्रपने प्रकाशनों के हारा देता है।

एक बात और कही गई कि सूचना विभाग जनना से सम्पर्क स्थापित नहीं रखता। बहुत-सी पुस्तक सूचना विभाग लिखाता है जिनसे किसानों को लाभ होता है। किस तरह से बोज का प्रयोग होना चाहिये, खाद किस तरह से डालना चाहिये, रबा को फसल किम तरह से बोई जाय, इस सम्बन्ध में बहुत से प्रकाशन सूचना विभाग मिलते हैं। इसके प्रलावा एक बात और है जो में सूचना मंत्री जो से सुझाद के रूप में कहना चाहता हूं। हमारे सूचना मंत्री हिन्दी के कुछ बहुत प्रेमी हैं। सारा सदन यह हिन्दी का प्रेमी है किन्तु कभी-कभो यह प्रेम इतना प्रगाढ़ हो जाता है कि इससे नुकसान होता है। प्रभी दुबे जी ने कहा कि वहां प्रधिवेशन में पंडाल में भीड़ कम थी। में दावे के साथ कहता हूं कि जिस श्रवबार का उन्होंने जिस किया था उसमें यह भी लिखा हुआ था कि कांग्रेस पंडाल में इतनी भोड़ हो गई थी कि वहां पर प्रबंध करना मुक्तिल हो गया था। हमारा सूचना विभाग वहां पर गया था और हमारे प्रदेश में तो हिन्दी चल सकती है लेकिन में सूचना मंत्री की जानकारों के लिये कहना चाहता हूं वे खुद देखने के लिये भी गये थे, सारे प्रदेशों का सूचना कक्ष बहुत श्रवक्षा था लेकिन श्रवमी जसमें जाते बहुत कम में इसिनिये कि बहां पर तमाम बातें हिन्दी में लिखी हुई थीं। मैसूर का रहने वाला हिन्दी नहीं समझ सकता था कि श्रापके यहां क्या होता है। हिन्दी में लिखा हुश्रा मद्रासी तो नहीं समझ पाता। वहां बम्बई मद्रास श्रादि के कक्ष थे जिनमें वहां के कार्यों का विवरण था कि उनके प्रदेश की क्या योजनाएं हैं। वहां श्रंग्रेजी में श्रच्छी खासी तैयारी थी श्रौर इतन श्रच्छे थे वे कक्ष कि उनमें जितना रुपया खर्च किया गया था उनका उपयोग हो जाता था श्रौर प्रदेश की सारी बातें सामने श्रा जाती थीं। तो में यह कहता हूं कि हमारी प्रदर्शनी कहीं पर जाय, चाहे वह कांग्रेस, पी० एस० पी० या जनसंघ कोई भी बुलवाये जो भी मांगे तो हमारे प्रदेश में जितनी चीजें होने वाली हों वह उस भाषा में भी रहे जिसको सभी लोग जानते हों तो श्रच्छा है।

भाई राजनारायण जी ने तो सबके लिये कह दिया। उन्होंने कह दिया कि पिंक्लक सिवस कमीशन में अष्टाचार है, अर्खबार वालों को भी उन्होंने नहीं छोड़ा, और कहा कि वे भी अष्टाचारी हैं और सरकार से पैसा ले कर लेख लिखते हैं, यह बात बिलकुल गलत है। सरकार का प्रेस का सम्बन्ध बहुत अच्छा है। प्रेस और सरकार के सम्बन्ध को अच्छा करने के लिये ही एक प्रेस समिति कायम की गयी है और उसमें ऐसे लोग हैं जो सरकार के इशारे पर चलने वाले नहीं हैं। उसके चेयरमैन ऐसे हैं जिनकी इस प्रदेश और देश में प्रतिष्ठा है और जिनका इस प्रदेश और देश के अखबारों के सम्पादकों, सम्बाददाताओं और मैनेजरों से काफी सम्बन्ध रहा है और उन सबकी हालतों से वे अच्छी तरह से परिचित हैं। सूचना विभाग भी जिनके हाथों में आज है वे ऐसे ही आदमी हैं जो सभी लोगों की हालतों से परिचित हैं।

\*श्री सीताराम शुक्ल (जिला बस्ती)—माननीय उपाध्यक्ष महोदय, . . . , श्री उपाध्यक्ष—में समझता हूं कि सेंट्रल सीट गोविंद सहाय जी, शुक्ल जी के लिये छोड़ दें तो श्रच्छा है क्योंकि शुक्ल जी न विरोधी पक्ष में है श्रौर न कांग्रेस की तरफ।

श्री सीताराम शुक्ल--मेंने पहले ही इसीलिये इनसे प्रार्थना की थी श्रौर वे कृपा करके उथर चले गये। मेंने उनसे प्रार्थना की थी कि मुझे किनारे पर ही रहने दें।

तो हुजूरवाला, कुछ लोगों को यह गलतफहमी है कि यह कांग्रेस के बाहर रह कर भी क्यों कांग्रेस को सपोर्ट करते हैं। में कहता हूं कि में कांग्रेस से कुछ नफरत, घृणा नहीं करता बिल्क में तो यह कहना चाहता हूं कि कांग्रेस ने मुझे कतरे से दिरया बना दिया इसके लिये में श्रहसानमन्द हूं। लेकिन में इसलिये निकला कि श्रब कांग्रेस, सोशलिस्ट हो गयी ग्रौर में खाली कांग्रेसी ही रह गया। उसका वह प्रोग्राम नहीं रह गया जो पहले था। श्रब उसका विरोध करना है, सिर्फ इतना ही मतलब है। एक बात में मानता हूं कि पार्टी राज्य में इससे बढ़िया राज्य नहीं हो सकता, इससे श्रच्छी हुक्मत नहीं बन सकती या फिर में कहता हूं पिक्लिक राज्य, वोटर राज्य हो, लेकिन उसको यहां श्रभी कहना नहीं है।

में माननीय मंत्री जी को इस बजट के लाने के लिये बघाई देता हूं, लेकिन में यहां पर एक घौपाई तुलसीदास जी की कहता हूं: "मिलत एक दारुण दुख देहीं, बिछुरत एक प्राण हर लेहीं।" घानी जब बुरे श्रादमी से मुलाकात हुई तो सारा बदन जल गया श्रौर श्रच्छे श्रादमी का साथ छूट गया तो तकलीफ हुई। लेकिन हमें श्रफसोस है कि श्रच्छे लोग हैं लेकिन इनसे मुलाकात में तकलीफ होती है। बुद्धि है, वक्तृत्वशक्ति है, विवेक है, उदारता है, सब कुछ है, लेकिन जब उनसे मुलाकात होने पर तकलीफ होती है तब मुझे हैरत होती है। इसके साथ-साथ में श्रपने कर्मचारियों को बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने इतनी मेहनत से काम किया। इसके लिये वे मुबारकबाद के पात्र हैं।

मुझे दुबे जी पर जो ग्रटैक हुन्ना उसका जवाब भी देना है ग्रौर जो उन्होंने गलत बात कह दी है उसके लिये भी कहना है। दुबे जी ने कहा कि मंत्री जी के साथ लशकर क्यों जाता है सूचना

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

[श्री सोताराम शुक्ल]

विभाग हा। जिने में तो इंफार्मेशन देने नाने पत्रकार है। हुनूरवाला, श्राप तो राजा है, शानन हरना जानते है। श्राप जानते हैं कि उर पत्रकार का श्रपना व्यु होता ह। सरकार के खिनाफ भी वे सोचने हैं और उस की तरफ भी। प्रगर श्राप चानते हैं कि श्रादमी ठीक-ठीक बाग निखे तो उस के निषे श्राप श्राने को किसी की संधी पर न भेड़िये, ऐसा करना ठीक न डो होगा श्रीर इसनिये यह स्टाफ ले जाना साथ में ठीक ही ह।

दूसरी बात जो शिकार करने की कही गयी, जो श्रटक किया गया, उसके लिये में कहता हूं कि यह वाजे रहे कि शिकारी शेर का शिकार जनता की रक्षा के लिये करता ह। यहा राजा साहब शिकार करते हैं मूर्लता का, खुवगरजी का बेयकूफी का लाकि ये वीज ज्यादा न फैलने पाये। यह मेरी परिभाषा नहीं हूं। राजा साहब बलरामपुर एक बार शिकार खलने गये श्रीर वहां जाकर उन्होंने बंदक उठायी श्रीर रख दी, फिर बद्क उठायी श्रीर रण दी। उनके साथ एक कवि महोदय भी थे। उन्होंने देख कर कहा:

"क्षुधा सिहनी उदर गिरि जीव घरे वर्ष भेष। दागहु नाथ दुनानिका, नप दिग्यिजय नरेश।"

श्रौर इस पर राजा साहब ने उनको २,००० रुपया इनाम का दे विया। नो यह मूर्वता श्रौर श्रयोग्यता का शिकार करते हैं ताकि बुराइया न पैवा हो।

श्रापका विभाग बहुत श्रव्छा काम कर रहा है श्रौर बडी मेहनत कर रहा है, लेकिन नतीजा खतरनाक हो रहाँ है। पिंक्लिक सरकार के खिलाफ होती जा रही ह ग्रौर वह ही नहीं, ग्रापके ग्रफसर ग्रीर कर्मचारी भी ग्राप के बिलाफ है। ग्राप सने कि क्लब में क्या सुचना विभाग का काम, जैसा पालियामेटरो सेकेटरी साहब ने फरमाया, वही नहीं है। उसे हर जगह निगाह डालनी चाहिये श्रौर कहीं भी बात बिगड़ने हो उसे ठीक करना श्रगर ग्राप ग्रपने ग्रफसर ग्रौर कर्मचारियों को ग्रपने साथ न लासके तो श्राप फेल हो रहे हैं। श्रापके कनेक्टरो श्रौर डिप्टी कनेक्टरो को पशकार गानी देते हैं श्रौर यह सर्कुलर भेजने से ठीक नहीं होगा। यहा तो रीजन, दलील काम दगी। विभाग को ठीक करना चाहिये। सरकारी कर्मचारी हडताल करते ह, पिर्काटग करते है। न्नापका यह सूचना विभाग कहा सोता रहता है। यह न्नापका काम ह कि ये हरताल न करें। **जनको बताया जाय कि सरकार हे सामने क्या-क्या दिक्कते है, तनक्याहे क्यो नहीं बढ़ायी** श्रीर यह सब तभी होगा कि जब सरकारी कर्मवारियों की रखते समय साते, बहनोई, रिश्नेदार नहीं देवे जापेंगे, बहिक मेरिटन के छावार पर उनकी निपक्ति की जायगी। पार्टीबाजी से अपर उठ कर ग्रागर ग्राप ग्रादिमियों को जगह दंगे तभी कामहो ठीक सकेगा। मे चाहुंगा कि श्रगर इसके लिये जरूरी हो तो सवियान को बज किया जाय। श्राज इडिसिप्लिन बढ़ती जा रही है। मेरी गुजारिश हं कि हड़नाल करने की इनाजन दीजिये। का नुक्सान होगा। उनको हडतान करने दीजिये, लेकिन जब होई व्याल्यान हो, श्रापके सुचना विभाग का एक त्राफिसर वहा बैठा रहे ग्रीर ज्यों ही उनका भावण लत्म हो, यह उसी ममय उनकी समझाये, उनको जवाब वे कि इसलिये हड़ताल करना ठोक नहीं है। यह उनको समझाया जाय कि इससे उनका ही नुक्सान है। बड़े जोरों से प्रचार किया जाता है कि सेंटर के कर्मचारियों की पे ज्यादा है और यूर्विश के कर्मच।रियों की वेतन कम मिनता है। क्लर्जी वे भी करते हैं, क्लर्की यह भी करते हैं। एक मिनिस्टर माहब के यहा क्लर्की करता हुं, एक किसी दूपरे महाशय के यहां कनर्शी करता है। तो भ्राप के ग्राविमयों की यह समझाना चाहिये कि उप वन की में श्रीर इस वनकी में फर्क है। उस वनकी से नकतान पहुच सकता है इससे नहीं। जो नीननी नाम नरता है उसको ज्यादा तनस्वाह दी जाती है, जो हर हा काम करता है उसको कन दी जाती है। यह आप के आविनियों को समझाना चाहिये। दूसरी बात यह है कि अगर श्राज श्राप ५०० राये एक चपरासी की तनस्वाह कर वें। ठीक है, ग्राप नोट खपवा लीजिये। भाप दें सकते हैं। लेकिन उसका नतीजा क्या होगा? बाजार में ५०० रुपये गज कपड़ा

बिकने लगेगा। जो हालत चीन की हुई, वह हालत यहां हो जायेगी। तो ये बातें हैं जिनकी कि भ्रापके भ्रादिमयों को सनशाना चाहिये। वे लोग इन बातों को सुनकर खुद हड़ताल नहीं करेंगे।

चपरासी कहते हैं हम साहब के लिये चाय नहीं ले जायेंगे चाहे वे खाली बैठे रहेंगे। वे गप्प लड़ाते हैं, खाली बैठे रहते हैं, ताश खेलते हैं, लेकिन यह तय किया कि चाय नहीं लायेंगे। लेकिन भ्राप श्रयनी बात कह नहीं पाते हैं।

कुछ लोग समझते है हमारा मजहब खतरे में है। कुछ लोग समझते हैं हम पर हिन्दी लादी जा रही है। ग्राप जवाब क्यों नहीं देते कि उर्दू पढ़ने पर रोक कहां है? ग्रागर यह ग्राप जवाब दें तो विरोघ क्यों हो?

श्री उपाध्यक्ष--समय समाप्त हो गया।

श्री सीताराम शुक्ल--मुझे केवल ५ शिनट ग्रीर दिये जायं। मुझे एक दो बातें ग्रीर कहनी है। सूचना विभाग का काम है कि वे हमारे वहम को दूर करें। हम तो सरकार की जो खराबी है सुनायेंगे, क्या खूबी है सुनायेंगे; कैसे ठीक किया जाय, यह भी सुनायेंगे:

> स्वराज्य मिल गया लेकिन सुधार बाकी है, ग्रभी बहुत से दिलों में गुबार बाकी है। सही है यह कि बहुत-सी बनी सड़कें नहरें, खेती बारी की तरक्की हुई फसलें लहरें। जमीन जल में हवा में जहाज उड़ान उड़ते हैं, नजारे टेलीविजन में दिखाई पड़ते हैं। मगर गरीबी घुसखोरी कामचोरी के, सुनाई देते हैं किस्से हरामखोरी के। लुटता जाता है कैरेक्टर का खजाना भ्रपना, समझते वे हैं तरक्की का जमाना श्रपना। कम्युनलिज्म व कम्युनिज्म, सोशलिज्म कहीं, दिखाते सब्जबाग श्राइडियलिज्म कहीं। लीडरी के लिये ग्रापस में लड़े जाते हैं, हसद की ग्राग में जल जल के मरे जाते हैं। यह दोनों ही तरफ के लोग ऐसा करते हैं इघर से भी श्रौर उघर से भी। मेम्बरी दिल में जबां से कहें हड़ताल करो, गोली चलने दो मगर ट्रेन को पामाल करो। बेखता इनकी शरारत से सजा पात्रोगे, चाहे जितना भी सियासत से जी चुराश्रोगे। बिरादराने वतन ग्रक्ल संभालो ग्रपनी, सोके जर खो चुके,इज्जत तो बचालो श्रपनी। पहले खुद नेक बनो बाद में तकरीर करो, कबूल कर लो भ्रगर तुम कहीं तकसीर करो। ख्याल गैर का पहले करो पीछे ग्रपना, खिदमते कौम में कुर्सी का न देखो सपना। उनके पीछे तो सीट भ्राप चली भ्राती है, जिस तरह नदी समुन्दर में बही जातो है।

[श्री सीताराम शुक्ल]

तभी गुरबत व जहालत न दिखाई देगी, भाई-भाई में लड़ाई न सुनाई देगी। चमन के फूल सितारों से चमक जायेंगे, हरएक दिल में हमेशा बहार लायेंगे।

श्री गोविन्दसहाय (जिला बिजनीर)—उपाध्यक्ष महोदय, इस अनुदान पर बोलने के लिये मेरी बड़ी ख्वाहिश थी, मगर अपने मित्र की स्पीच सुन कर में अपने आप को कुछ थोड़ा-सा रला हुआ पाता हूं। फिर भी जो कुछ में कहना चाहता हूं वह इम सिलसिले में ह कि आज-कल की दुनिया में कोई भी सरकार, चाहे डेमोकेटिक हो या टोटेलिटेरियन हो, इस बात का गुरेज नहीं करती कि कितना रुपया इस मुहक्षमें पर प्रचार में खर्च होना चाहिये, काफी रुपया खर्च करती है और इस मुहक्षमें का फेलाव किया जाता है। क्योंिक हम जितना रुपया प्रदेश पर खर्च करते हैं, उसके प्रति अगर लोगों की जानकारी नहीं है, लगाव नहीं है, उनमें कोई उमंग नहीं है तो वह रुपया बेकार हो सकता है। इसलिये इन्फार्मेशन डिपार्टमेंट या पब्लिसिटी डिपार्डमेंट एक जरूरी मुहकमा है।

में इस बात से सहमत नहीं हूं कि यह मुहकमा डाकखाने की तरह है, इस माने में कि ग्राज की दुनिया में इसकी एक जिम्मेंदारी है श्रीर उसकी पूरा करने के लिये हमकी देखना है कि क्या हम उस तरफ बढ़ रहेहैं या नहीं ? महकमें में एक चीज श्राती है कि उसकी पब्लिसिटी की टेक्नीक क्या हो। मुझे यहां कला के खिलाफ एक वातावरण दिखलायी दिया, लेकिनकला का जीवन के हर क्षेत्र में एक स्थान है, उसकी पब्लिसिटी की एक टेक्नीक बन गई हं, उससे बचा नहीं जा सकता। सो हमें देखना है कि क्या वह वाकई लोगों की प्राब्लम्स के बारे में जानकारी कराता है, लोगों में उमंग श्रीर लगाव पैदा करता है भ्रीर जो प्राजेक्ट्स है उन पर खर्च करने के लिये कुछ कुर्बानी करने के लिये तरिबयत भी पैदा करता है ? में समझता हूं कि इस मुहकमें का पिछले १० सालों में गैर मामूली फैलाव हुन्ना है स्रौर श्रब्छी चीजें देखने की मिली है । इसका लिट्रेचर लोगों में घर करता जा रहा है, लेकिन फिर भी मैं समझता हूं कि कुछ श्रीर भी करने की काफी जरूरत है। मुझे इनफार्मेशन डिपार्टमेंट के काफी लोगों के कम्युनिटी प्रोजेक्ट के सिलसिले में ए जामिन करने का मौका हुआ धौर मैने उनसे सीधी जानकारी करनी चाही कि हमारे समाज श्रीर स्टेट के क्या ध्येय है श्रीर सरकार की विभिन्न पालिसियां केसे उस ध्येय की तरफ ले जा रही है। मुझे हिचक नहीं है यह कहने में कि मुक्किल से १० परसेट ऐसे इनफार्मेशन श्राफिसर होंगे जिनको व्यवस्थित तरीके से इन चीजों की जानकारी हो। तो मेरा सुझाव यह है कि इस डिपार्टमेंट के श्रन्दर जो लोग काम करें उनको श्राइडियोलाजी की द्रेनिंग वी जानी चाहिये, चाहे डेमोक्रेटिक सरकार हो या टोटलिटेरियनिज्म की श्राइडियोलाजी रखने वाली सरकार हो। जो पालिसी स्टेट की होती है उसकी झलक सब लोगों में पापुलर करनी होती है। तो मेरा इसरार है कि ट्रेनिंग के ऊपर थ्रौर उसमें एक स्पष्ट तस्वीर सामने हो, जैसा कि बहुत-सा लिट्रेचर निकला है। लेकिन कोशिश होनी चाहिये कि एक सहल जबान में हो जिससे एक मामूली श्रादमी समझ सके कि १२ साल के अन्वर जीवन के हर क्षेत्र में व्यवस्थित ढंग से इतनी तरेक्की हुई। मगर ऐसी तस्वीर उसे नहीं मिलेगी तो यह डिपार्टमेंट का कसूर नहीं है। जो हमारे ५०-६० साल से लेखक पैदा हुये हैं, जो सोचने का ढंग पैदा हुआ है व एक मुहकमें का-सा ढंग है । इस् कारण बहुत जरूरी है कि द्रेनिंग काफी हम करें और इनफार्मेशन श्राफिसर का नहीं, सारे मुहक्रम का जो प्रतिक्षण का वायस है उसको बदलना होगा।

मुझे एतराज नहीं कि फोटोज किसी के खींचे जायं। सबही वेशों में लीडर्स के फोटो छपते हैं, उनकी पापुलर बनाया जाता है, लेकिन जो सोशलिस्ट सोसाइटी के माने हैं कि श्राय वर्कर भी ऊपर उठे, उसे समाज से इंज्जत हो श्रोर वह कोई काम करता है तो उसका श्राप काफी प्रदर्शन करें। श्रगर कोई किसान इन्वेन्शन करता है, ज्यादा श्रद्ध पैदा करता है तो श्राप के डिपार्टमेंट का बायस क्या है ? वह किनकी तस्वीरें ज्यादा लेता है ? श्राम वर्कर की लेता है, मजदूर की लेता है, किसान की लेता है, कार्यकर्ती की लेता है था लोहार की लेता है जोकि सोसाइन्टो में बौलत पैदा करते हैं? उनको श्राप पिल्लिसिटी देते हैं या जो बौलत पैदा करते नहीं उनको पिल्लिसिटी देते हैं? में समझता हूं कि सोशिलिस्ट सोसाइटी में श्रीर कैपिटेलिस्ट सोसाइटी में यही फर्क है कि सोशिलिस्ट सोसाइटी कार्यकुशल लोगों को तरजीह देती है श्रीर समाज में श्रास्था श्रीर सम्मान पैदा करती है। इसलिये इसके बायस ही बदलना चाहिये, पिल्लिसिटी का जो बायस हो वह किन लोगों को ज्यादा पिल्लिसिटी दे इस पर योड़ा-सा डाइरेक्शन बदलने की जरूरत है। श्रापकी मौजूदा हालत कोई संतोषप्रद नहीं है। इससे इर्रोटेशन भी होता है। यह बिल्कुल मैकेनिकल प्रोसेस हो गया है इसलिये विभाग को इस तरफ थोड़ी सी तब्दीली करने की जरूरत है।

दूसरी चीज इस विभाग के संघटन के बारे में है। मेरा खपाल है कि इन १०-१२ सालों में हम अपना दिमाग तय नहीं कर पाये हैं। मुझे इसके कहने में भी कोई हिचक नहीं है कि इन्फार्मेशन डिपार्टमेंट सरकार के लिये पोजीटिकल मशीनरी होनी चाहिये, वह अपने आदिमयों को रखें। अमरीका ऐसे बड़े मुल्क में भी इस विभाग का पूरा का पूरा काफिला हुकूमत के साथ बदल जाता है। तो मेरी निश्चित राय है कि इन्फार्मेशन डिपार्टमेंट की मशीनरी की ऐसे लोगों से मैन किया जाय जिनकी प्रेरणा और लगाव हो, जिनको इस बात में आस्था हो।

जहां तक यह बात है कि इस विभाग के लोगों ने १५-१५ साल तक सेवा का उनको कमीशन के सामने जाना पड़ा, में समझता हूं कि जब हमारा १५ साल तक उनका जज करना मानी नहीं रखता तो फिर वह ग्रगर १५ मिनट के लिये कमीशन के सामने गये, चेयरमैन ने गर्वन उठाई ग्रीर कुछ लिख दिया, उसके क्या मानी हो सकते हैं। में चाहता हूं कि कमीशन ने उनके लिये कोई सिफारिश भी की हो तो उसे सरकार को नहीं मानना चाहिये। में इस बात को नहीं मानता कि हम लोग बहुत नोचे हैं, ग्रीर कमीशन के लोगों का स्टेंडंड कोई बहुत हाई है। ग्राखिर डाइरेक्टर कोई सीवस के ग्रावमी नहीं हैं, ग्रगर ऊपर की हेरारकी में ऐसे ग्रावमी रह सकते हैं तो नीचे की हेरारकी में भी रखे जा सकते हैं, हम को उन ग्रावमियों को भी कमीशन की तहत से निकाल लेना चाहिये। फिर हमारी जो पालिसी है उसके हिसाब से कारकुनों को बदलना चाहिये। हमें देखना चाहिये कि किस तरह के प्रश्नों द्वारा दिल ग्रीर दिमाग को मोड़ा जाता है ग्रीर लोगों में ग्रास्था पैदा की जाती है।

उपाध्यक्ष महोदय, सिर्फ एक बात का जवाब एक मिनट में देना चाहता हूं। श्राज मुझे आइचंय हुआ कि यहां पर नृत्य, कला और नाच गाने की तरफ से थोड़ी एवर्सनेस की गई। मेरा खयाल है कि सूचना विभाग ने कल्चरल एक्टीविटीज का जो फैलाव किया है वह श्राज की दुनिया में जरूरी है। वह प्राचीन से टक्कर भी नहीं खाता है। वैदिक काल हो या स्रशोक-काल हो, नाचने और गाने से सबको प्रेम रहा है। थोड़े से पीरियड में धर्म के नाम से इन चीजों को टेबू किया गया था और उस दृष्टिकोण को में ज्यादा मुनासिब नहीं समझता हूं। यह स्राप कह सकते हैं कि कलाकार ऐसे स्टेंडड के हों लेकिन कनटेम्प्ट की जहनियत से इन्हें देखना में स्रच्छ। नहीं समझता। मुझे तो शिकायत यह होती है कि हमारे सोचने के ढंग में हमारी कल्चर भी एग्रीकल्चर में ढक गई है। हमारा नृत्य और गाना कैसा हो, यह हम स्रवश्य बता सकते हैं।

मुझे राजनारायण जी के साथ हमदर्दी है। उन्हों ने कहा कि वह सदन में इतनी श्रच्छी बातें कहते हैं मगर उनकी बदिकस्मती है कि इवर के लोग गलत समझते हैं। में उनको यह दोस्ताना मशिवरा देता हूं कि १० ग्रमृत जैसी बातों में ग्रगर एक या दो बूंद भी जहर की मिला दी जावे तो सारी बात तलख हो जाती है ग्रौर उसका वजन कम हो जाता है। ग्रगर वह तुरशी निकाल कर ग्रामी बात रखें तो उनकी बात ग्रच्छी जरूर हो सकती है।

इस मुहकमें को ट्रेनिंग की बहुत जरूरत है ग्रौर उसे दूसरे सरकारी मुहकमों में भी फैलाने की जरूरत है क्योंकि ग्राज की दुनिया में एक महकमा दूसरे मुहकमों से ग्रलहदा नहीं रह सकता है। ग्रायिक, समाजिक ग्रौर राजनैतिक जीवन जैसे जुड़े हुये हैं वैसे ही विभाग भी ग्रापस में जड़े [श्री गोविन्दसहाय]

हुये हैं। हमारे सिवस वाले लोगों को मौलिक रूप से सरकार की पालिसीज मे विश्वास न होने का एक कारण यह भी है कि हम उनके सामने संयुक्त तस्वीर नहीं पेश करते हैं। में ब्राशा करता हूं कि यह विभाग ऐसा साहित्य श्रीर नजरिया पेश करेगा जिससे लोगों को वस्तुस्थित का ज्ञान हो सके श्रीर सही मानों में श्रपने लक्ष्य की श्रीर बढ़ सके।

\*श्री शिवप्रसाद नागर--उपाध्यक्ष महोदय, में इस फटौती के प्रग्ताय का समर्थन करतें हुए यह जो एक पत्रिका सन् १६६० के बारे में बंटी है, दशमें पत्र-पत्रिकाश्रों के सम्बन्ध में जो सूचना दो है उसके बारे मे दो-एक बाते कप्टना चाप्टता हूं। इसमे लिखा है कि पत्रिकाएं निकराती है——"नय।दौर", 'उसर प्रदेश", श्रीर "ग्र स्था"। स्थार इसमेएक पिथका का, जिसका । जिक र जिलार यण जी ने विस है, न म भी नहीं है। इसे छिपाया गया हो। ''प्रोग्नेस'' नाम की पत्रिका का कोई जिल्ल नर्राहा बहु अंग्रेजी में सन्, १६५६ में अप्रेल के महीने में निकली गई थी। या परा गया का हरतीन महीने बाद यह निकला करेगी मगर एक बार ही नियन कर रह गई, जिसमें ४०,००० प्या लगा जब कि केवल २४,००० प्रतिया इसकी छापी गई। इस में ा,क मोई एड टर है-फुमारी कुसुम। मै व्यक्तिगत श्राक्षेप नहीं करता हू। उनके बारे म मै उम द. नहीं पह रूपता मगर यह जरूर जानता हं कि वह इसका प्रुफ देगान के लिये बम्दर्ध गई प्रीप वह भी। हद ई जहाज से। बम्बई में यह छुपी। श्रव ललनक से बम्बई तक हवाई जहा, हा रेंग् जा. वर्त एम। जहर्द मा जरूरतथी भौर कितना इसमें खर्च हुन्ना होगा ? वया सूचना विभाग में गृहा के ई रोसर मद्रण लय नहीं है ? क्या लगनऊ में, जो उत्तर प्रदेश की राजधानी हैं, वह नहीं छुप संयत्। थी जो कि उसकी बस्बई में छपाया गया। १० पन्ने की किलाब श्रीर उसका दाम रागा गया २ रपया। जब नहीं विकीती यह पत्रिका उन लोगों को दी गयी जिनको रेडियाँ सेंट दिये गये थे। यह श्रंयेजी की पश्चित उन लोगों को दी गई जो कि अंग्रेजी का एक प्रकार भी नहीं जानने थे। उपाराक्ष महोदय, सबसे आदर्जय की बात तो यह है कि जितने भी अन्य विभागी के प्रकाद न हुगे हे उन्हें। इर पेर जो सर्चा भाया है वह चौगुना भठगुना है। में सरकार से पूछना साहता है कि इनना लर्चा क्यों भाषा?

राजा यादवेन्द्रदत्त दुबे—माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मं बहुत हाभारी ह उन माननीय सबस्यों का जिन्होंने इस कटौता के प्रस्ताय का समर्थन किया। मं उनका भी हम री हूं जिन्होंने समर्थन मूल प्रस्ताय का करते हुये भी हमारी ही बातों का समर्थन किया।

में एक सुझाव माननीय मंत्री जी को अवदय देना जाहता हूं। मेन यह अनभव किया है कि विल्ली में, जो देश का केन्द्र है, वहां अन्य-अन्य राज्यों के सुझना विभागों की आंग से एक उच्च अधिकारी उपस्थित है। लेकिन उत्तर अदेश की दृष्टि से बहा कोई भी अनुभवी पत्रकार इस सुबे की सारी गतिविधियों की सुझना देने के लिये नहीं है। में आदा। करता हूं कि वहां पर माननीय मंत्री जी एक अनुभवी पत्रकार रखेंगे।

हमारे मित्र गोविन्द सहाय जी ने कहा कि इनफार्गेंद्र म दिपाइंगर गोर्लादियस होना चाहिये। लेकिन मेरा कहना यह हूं कि अगर सूचना विभाग राजनहिन वृद्धि रे चलाया स्वा तो टोटेलीटेरियन राज्य के निर्माण की पहली मीकी होगी। इंमोर्केटिय राज्य में सूचना विभाग का कार्य तो सरकार के कार्यकलाय की सूचना वेना होता है। लेकिन अगर यह पोलीटिकल विभाग हो गया तो इस प्रान्त का करवाण दसने हो नहीं सकता (ध्यवधान)। हमारे मित्र अमेरिका के बारे में कह रहे हैं। में इन्डो-अमेरिकन नहीं क्षनना चाहता में भारतीय हूं और भारतीय ही रहना चाहता हूं।

हमारे एक मित्र ने कहा कि सूचना विभाग इसलियें होता है लाकि जनमल का पता लग जाय। अगर केवल वह इसलिये होता है तो मेरे विचार से उसकी कोई आवश्यकता नहीं है; क्योंकि ये आन्त के अलबार है किस लियें ? उनकी खबरों में, शीर्षकों में और सम्पादकीय लेखों में और होता

<sup>\*</sup> बनता ने भावण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

क्या है ? उसके निये तो एक प्रेस किटग डिपार्टमेट खोल देना चाहिये जो खबरों को संबंधित मंत्री के पाम भेज दिया करे। मेरे विचार से उसका कार्य केवल यही है कि वह सरकार के कार्यकलाप के बारे पे जनपन को बनाये। परन्तु भ्राज इस कार्य के नाम पर होता यह है कि सरकार के कार्यकलाप के बारे मे तो बनाया नहीं जाता है बिल्क पार्टी के बारे में प्रचार किया जाता है।

कल्चरल प्रोग्राम का जिक हुआ। मेरा खयाल है इस बारे में मैने जो कुछ कहा था उससे मेरे मित्रों को कदाचित कोई गलतफहमी हो गयी। मैं कला के विरुद्ध नईए हूं लिकन मेरा कहना यह था कि यहां इत विभाग की स्रोर से जो कल्चरल प्रोग्रा होते हैं उनसे कोई रीति नीति नहीं है, वे ह्यारे देश स्रोर प्रदेग के लोगों को, स्राशास्त्रों स्रोर स्राकाक्षास्त्रों के प्रोत्साहित नहीं करते हैं जब कि वे केवल भावनास्रों को प्रोत्साहित करने के लिये ही होते हैं। इसलिये मेरा विचार हैं जि उनसे स्वपर एक चेक होना व हिये।

ग्रन्त में मुने ग्राशा है कि कटोती का प्रस्ताव प्रस्तुत करते समय मैने जो बाते कहीं थीं उनकी ग्रोर ध्यान दिया ज'यगा। इन शब्दों के साथ मैं प्रत्यंना करता हू कि मेरा कटौती का प्रस्ताव पास किया जाय।

<sup>4</sup>गृह मंत्री (श्री कमलापित त्रिपाठी)—मान्यवर, यह विभाग पहले जो जनरल ऐडिमिनिस्ट्रेशन का डिपार्टनेट होता है उसी के सम्थ, उसी के हेड में, जहां तक बजट का ताल्लुक है सम्बद्ध था। गत वर्ष ग्रौर उसके एक वर्ष प्रौर पूर्व दिरोधी दल के नेताग्रों की ग्रोर से यह मांग हुई कि इस विभाग का बजट ग्रलग कर दिया जाय। उनके इस ग्रादेश के ग्रनुसार इस बार इस विभाग का बजट ग्रलग कर दिया गया है। मुझे प्रसन्नता है कि ग्रापकी कृपा से दो हाई घंटे इस पर विचार-विमर्श के लिये मिल भी गये।

जहां तक इस विभाग का सम्बन्ध है, मान्यवर, मुझे ऐसा लगता है कि जब इसकी एक निष्ठुर टीका होती है, ग्रगर कठोर टीका हो तो मुझे कोई ग्रापत्ति नहीं है, लेक्नि जब निष्ठुर टीका होती है तो मुझे यह देख कर बड़ा खेद होता है कि यह तो बड़ा बेचारा निर्देख विभाग है, स्वयंसेव कों का विभाग है। इसका कीई ग्रंपना काम नहीं है। दूसरों के काम का प्रचार करना और जो कुछ भी उनके कार्य जनहित से हो रहे हो किसी भी विभाग के, उन कार्यों को जनता के सामने उन तमाम कामों के द्वारा लाना जिससे कि सूचना प्रदान की जा सक्ती हो, यह इसका काम रहता है। हमारे माननीय गोविन्द नारायण तिवारी जी कदा चित है नहीं, वे चले गये, उनको इसका कोई काम दिखलायी ही नहीं देता। विभाग ही ऐसा है कि इसका कोई काम नहीं दिखलायी देता। इसका तो श्रनुभव होता है हृदय मे। जैसे भगवान् दिखलायी नहीं देता, उसका अनुभव हृदय में किया जाता है, उसी तरह से जब इसका अनुभव होता है तो विरोधी दल के लोग पिनपिनाने लगते हैं। यह बात उसमे होती है। यह विभाग ऐसा तो है नहीं कि कहीं पर कोई सड़क बनवानी हो या कोई स्कूल कालेज या यूनिवर्सिटी के सम्बन्ध में शिक्षा विभाग जो कार्य करता है उसको वह करे, या पुलिस की तरह से कोई काम हो, जैसे वहीं डकैती पड़े या किसी का सर फूटे तो वह दफा ५२ के जरिये या ऐडजर्नमेट के जरिये, गिरपतारी के सम्बन्ध में यहां प्रक्त उठाया जा सके। इस विभाग का काई काम है भी नही। यह तो दूसरे विभाग के कामों का प्रचार करता है। जैसे कृषि विभाग है—-श्रन्न का उत्पादन बढ़ाने के लिये वह हर प्रकार से प्रचार करता है, पत्रों के द्वारा, श्रपनी पुस्तिकाओं के द्वारा कि कितना पैदा हो ना है, हमारे प्रदेश में कितने खाने वाले हैं, कितना हमको और पैदा करना चाहिये ग्रौर किन-किन तरीकों से हम पैदाबार को बढ़ा सकते है, यह कार्य वह शुरू करता है। सहकारिता के सम्बन्ध में भी वह प्रचार करता है कि सहकारिता के थ्रावार पर किस तरह से समाज तरक्की कर सकता है। इसी तरह से प्रारम्भिक शिक्षा निःशुल्क हो जाय, इस तरह की बातों का प्रचार यह विभाग शुरू करता है। यह काम है उस विभाग का । फिर वह बेचारा विभाग तो सब की सेवा करता है। जैसे युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ मे श्रीकृष्ण से पूछा गया कि श्रापको कौन काम दिया जाय तो

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

## [श्री कमलापति त्रिपाठी]

उन्होंने कहा कि मुझे चरण धोने का काम दिया जाय। इस तरह में वहा पर जितने राजे महाराजे ख्राये थे उन हे चरण शोने हा का उन्होंने ख्राने ऊपर ले तिया था। उसी तरह से यह विभाग तो सब के चरण धोने की सेवा करता ह। चाहें विरोधी हो, चाहें गेरितरोधी हो, चाहें इस पक्ष के हों, चाहें उस पक्ष के हों, चहें उस पक्ष के हों, चह विभाग सब के चरणों को बोता है और उन की सेवा करता है। फिर उस हे काब करने के ढग में कमजोरी हो खोर उस ही टीक'-टिप्पणी ही जाय तो मुझे कोई ब्रापित नहीं है लेकिन निष्ठुर टोका न की जाय।

राजा साहब जीनपुर के भाषण की मैने सना। में उनका बड़ा सम्मान करता हूं लेकिन मेने देखा कि वे प्रवकी बार नंबार होकर कटीता का परगात पेश करने के गिये नहीं प्राये थे। उन्होंने वही पुरानी बात बोहरा दी जगे ग्रामीकोन में रेहाई हो मूर्व गया उने पर वह पीं-पीं करना शुरू कर देता है उसी तरह उन्होंने भोशर उर्रादया। श्रीमत्, उनक सार्क मसालानही था। तींन चार वर्ष से जो बात वे कहते थ्रा महे हैं, जो या। उन्होंने सर् १६५० में नहीं उसी को किर १९४ म में, १९४९ में कही ब्रार सन् १८५० में भा किर उसा को बार किया है ब्रीर यह लांखन लगाया पार्टी भीरेगैन्डा चलता हो। हमारे भाई गोर्सिन्स्याय जी न करा कि पहें तो पार्टी गवर्तमेन्ड हुं उसका जवाब भी हुआ कि तुम तो प्रीनीटेन्स्ट के भाग है। । एह सहारे से कीन इन्कार करता है कि यह पार्टी गतनमें हैं, अगर हमारे कहा नैशात है तो तर भी हमें रेता करने होंने, उस की भी बुझ कमजीरिया है लेकिन प्रगर उसके देखित म गय हा। की इत में भा काइ जरूर है, काग्रेस गर्वनेतेन्य हो तरक से काद्र प्रचार्त्र काम ना हो है है। इस नता में नाम भी पहुंच जाता है, यह ही सकता है। लेकिन एक प्रमाण भा ऐसा होई नहीं वे सकता कि फायेन पार्टी एज-सच के त्रोपेंगैन्डा में कही भी इस विभाग का प्रयोग किया गया हो। मंत्रियों में सम्बन्ध में समाचार, विये जाते हैं। में तो सूचना विभाग में ही सम्बन्धित हूं लेकिन कोई मेरा पोपेगेन्डा करता हो, जिसनी पबिनसिटी मुक्षे मिलनी चाहिये यह भी मधी ती नहीं गि रती। गरा होई प्रचार नहीं गवर्तमेंट के हर फंक्शन में उसकी पालिसी का अना उत्समत ही जाता है जैसे कोई कनवी में शन ऐड्डेस में कुछ कहें उसको पब्लिसिटो हो पत्रों है द्वारा, परवार जिलों में होते हैं, वह करते हैं, लेकिन बहुत सों के पास साधन नहीं होते, देहान में जात है यह रीग कोश्विश करते हैं कि कौन जो रहा है, सुबना विभाग के प्राधिकारों से उनकी समाचार मिल जाते है, वह दे देते हैं। इसमें कौत-सा पार्टी ब्रीरेगैन्डा चल गया ? ऐसी बात कह वी गई जिसमें मा तुम ही कि न मालूम किस तरह से सरकार लाभ उठा रही है। में निवेदन करना चाहना है कि निनहीं सरकार चलाना पड़ती है, इतना बड़ा मित्रों का दल सामने मौजद है, गभी शरप्रास्त्र से सुप्रान्त्रत, फिर किस की हिम्मत ही सकती है कि कोई कुछ करे, जिसको इतना अक्ति हो कि जहाँ अविका प्रवेश न हो सकता हो वहां मुमल प्रवेश करने की बान सीचं। नहा ऐसे बनशानी लाग हों वहां सरकार को वह जैसे छोड़ सकते है। फिर यह भी मौतना चारिय कि मनना विभाग के ३०-४० भ्रधिकारियों के द्वारा कांग्रेस जैसी इतनी बड़ी संग्या का प्रचार फरक नहां कि लाखें कार्यकर्ता कोने-कोने में मौजूद है उनसे प्रवार हमारा नहीं हो सकता है, १५-२० व्यक्तियों के प्रचार से हमारा बल नहीं बढ़ेगा, हमें भा ४० वर्ष हो गये हम जानत है कि किया गंग्या का बल कैसे बढ़ता है, श्राप की पार्टी श्रमी नई पार्टी बनी है, श्राप श्रमी मीलिये कि रोत बल बढ़ना है। कैवल गलत बात कह कर महज लियटा देने की बात है।

हमारे भाई दुबे जी ने एक-वो बान का श्रीन जिन्न किया। तर रो कर गये लेकिन उसका जिन्न में नहीं करता, किसी श्रधिकारी के बारे में उन्होंने कहा, पनित्य हैं बजट के वक्त भी शायद उन्होंने कुछ कहा था; उसके बारे में नह स्थयं सब कुछ जानते हैं कि किसने क्या किया है और क्या हो रहा है, सब मसाला उनके पास है, क्या बात है हुए बात उन है पात पून्त कम से हं, यह जातते हैं, वह स्थयं नहीं चाहतें कि में उसका जिन्न यहां कहां। इसी नमें जिस सत्य की घोषणा में उनकी भो नियत नहीं है, में न कहूंगा तो श्रवबारों में टोका होगा कि मेंने जिन्न नहीं किया और श्रवर करता हूं तो सत्य की घोषणा के लिये उन ही भी नायत नहीं है। श्रवर प्रवेश

के कल्याण में किसी समय सूचना देने की आजा होगी तो में दे दूंगा लेकिन इस समय उसका जिक करना उचित नहीं है। और हम अगर उसका जिक नहीं करना चाहते तो आपको भी नहीं करना चाहिये। संकेत मात्र से ही सब कुछ हो जाता है। अगर आप स्पष्टतः उस बात को कहें तो उसका उत्तर भी होता है। इसलिये इस तरह का एक गुबार पैदा करने की आबदयकता नहीं होती।

श्रापने श्रधिकतर दो, चार बातें कह दीं कि पार्टी का प्रचार होता है, भ्रष्टाचार फैला हुग्रा है, सब रिक्तेदार भर दिये जाते हेंग्रीर खाली मिनिस्टरों का प्रचार करता है। इन चीजों का कोई प्रमाण नहीं है। एक निर्देख विभाग को इस प्रकार लांछन लगा देना उचित नहीं है। बहरहाल में समझता है इस विभाग के द्वारा जितने माध्यम हैं उनका प्रयोग किया जा रहा है सरकारी नीति के प्रचार के लिये। यह कोई कहे कुछ नहीं हो रहा है, निकम्सा है, यह गलत है। हां साधन इसके पास कम हैं। मैं यह भी कहना चाहता हूं कि दुनिया के किसी देश में इस विभाग की उतनी उपेक्षा नहीं की गई है जितनी हमारे प्रदेश में है ग्रीर वह भी श्राधिक साधन न होने की वजह से। मैं भी जानता हूं दुनिया में किस प्रकार से सरकारें श्रियना प्रचार करती हैं जिन पर काफी धन खर्च हो रहा है। ऐसे देश हैं जिनके सुचना विभाग, पब्लिसिटी ब्युरोज, हमारे देश में मौजूद हैं, दर्जनों देशों में जिनमें हिन्दुस्तान भी एक है। में समझता हूं कि अपने प्रदेश के बजट का भ्राधा तो कम से कम वह भ्रवश्य पिंडलिसिटी पर खर्च करते हैं। लाखों रुपया खर्च करत ह बड़-बड़ स्राधकारियों पर, स्रालीशान इमारतें हैं, तमाम ऐसी पुस्तिकायें ५००, ६०० पृष्ठ की ५, ५ भ्राने में बांटते हैं स्रीर भ्रयनी चीजों का प्रचार करते हैं, भ्रयनी पुस्तकें देते करते हैं बड़े-बड़े स्रधिकारियों पर, ऋालीज्ञान इमारतें हैं, तमाम ऐसी फिरते हैं, जहां बुलाइये वहां दौड़े चले जाते हैं। हमारे देश में पिन्तिसिटी के जो सेन्टर्स हैं, ३०,४० लाख रुपये से जो काम करते है उनको देला जाय। हमारे ब्यूरोज भी हैं, सैकड़ों प्रेस नोट्स निकलते हैं, पचासों पुस्तकें निकाली । रेडियो से हमारे सम्बाद दिये जाते हैं । सायंकाल में जो रेडियो का सम्वाद होता है जिसमें प्रदेश की खबरें होती हैं वह सूचना विभाग की स्रोर से दिया जाता है। पंचायत घर के प्रोग्राम चलते हैं, भ्रच्छे-भ्रच्छे विषयों पर लोगों के रेडियो द्वारा भाषण कराये जाते हैं, कम्युनिटी लिसनिंग की हमारी स्कीम है। श्राज १० हजार से अपर हमारे रेडियो सेट्स लगे हुए हैं जिनके माध्यम से संवादों का वितरण लोगों तक होता है। उनकी मरम्मत के लिये हमारो यूनिट्स बनी हुई हैं, हमारे ६०, ६२ सूचना केन्द्र हैं।

श्री बंशीधर शुक्ल--बाली लखनऊ की खबर सुनायी जाती है।

श्री कमलापित त्रिपाठी—श्रगर ऐसा है कि खाली लखनऊ शहर ग्रौर देहात यहीं की न्यूच श्राती है तो मुझे ताज्जुब है। कभी में सुनकर देखूंगा। यों तो मुझे माननीय सदस्यों की कृपा से कभी खबर सुनने का श्रवसर नहीं मिलता। श्रगर ऐसा होगा तो उसको रोकना चाहिये क्योंकि स्कीम यह है कि हमारे प्रदेश के सम्वाद पहुंचाये जायं ग्रौर रेडियो विभाग इसमें हमारी सहायता लेता है, उनकी श्रयनी कोई एजेंन्सी नहीं है। तो में निवेदन कर रहा था कि सूचना केन्द्र हमारे हैं। पंडित गोविन्दनारायण जी तिवारी कह रहे थे कि यह बताग्रो कि लड़कों की फीस कैसे माफ हो, तकावी कैसे मिले। शायद हमारे सूचना केन्द्रों को देखने का उनको श्रवसर नहीं मिला। इसी दृष्टि से उनकी स्थापना की गयी है कि जो सूचनायें ग्रौर समाचार किसी एक व्यक्ति के लिये श्रावश्यक हों ग्रौर वह कहीं न मिलती हो तो वह सूचना केन्द्र पर चला जाय ग्रौर वहां के श्रधिकारी का यह काम है कि वह सूचना उसको दे। उसे यह पता होना चाहिये कि जिले में ग्रगर कहीं पत्यर पड़ गये हैं तो छूट मिलेगी या नहीं। कहां-कहां देविनकल स्कूल हैं, किस तरह से वहां भर्ती हो सकतो है, यह सारी सूचना देने का उनका काम है। इसलिये यह सूचना विभाग बड़ा लोकप्रिय हो रहा है।

हमारे नागर जी ने बताया कि तीन पत्रिकायें इस विभाग से निकलती हैं, उनका नाम तो इस पुस्तिका में दिया गया है मगर एक चौथी पत्रिका जो निकलती हैं 'शोग्रेस' उसका नाम नहीं

#### [श्री कगलापति त्रिपाठी]

लिया गया। श्रब वह पत्रिका निकलती नहीं है। हमने निकालने की कोशिश की मगर मझे खेद है कि हमें बन्द फरना पड़ा क्योंकि हमारे पास घन का श्रमाव था। उस पत्रिका को इस दृष्टि से निकाला था श्रीर यह समझ कर निकाला था कि उसके ऊर खर्च होगा। इस दृष्टि सै निकाला था कि जो पत्रिकाय आज बाहर से आती है, विवेशा से एमारे वेश और प्रदेश में जो भ्राती है, जो म्रत्यन्त उच्च कोटि की पत्रिकाये होती है स्रोर जिनका बटा स्राक्षण होता है, बड़े-बड़े लोग खरीद कर उनको पढ़ते है स्रीर सस्ती से सस्ती धानी ह स्रीर विदेशों का प्रचार हैं। रहा है। उसी प्रकार हमारी की शिश यो कि हम अपने प्रदेश के नीगों के निये जो लोग बृद्धिजीवी बर्गे के हैं और जिन्हें यह भी नहीं भाव है। पाना कि हुभारे प्रदेश में क्या हो रहाँ हैं, ऐसी सामग्री प्रस्तुत कर सके जिलकी तरफ १० प्राप्तः हों ग्री जी उत्ते गो छक स्वर के अनुकृत हो; उसकी छपाई वेसी ही हो, उसको राज्या व रार्हा हो, उर की पण रचना उपा किस्म की ही। फोटोग्रेफ्योर उस ही छ गई होती ह, बम्बई के स्नाग गेरिस्रो गी छ गई होनी नहीं है। २५ हजार कापिनां छ।वाई थी। ४४-४६ हजार रुपया उस पर हमारा पार्न द्वारा। यदि हम देखते कि इतना धन हम उस पर लगा सकारे ती उस पत्रिका को बन्द न करने। २५ हजार से कम छावाते तो स्रोर खर्चा बढाा। उप पत्रिका ही तारीफ हु है, अप्रेजा पत्रों ने की, हिन्दी पत्रों ने की, उसको तारीक दिल्ली में हुई, दू रावासी में दुई, के उर्ध रायकार ने हुई स्रोप कहा लेगी ने कि सुन्दर चीज है। यह करना कि कोई हवाई जहाँज से बस्विशाया या ति प्रफ देखने, यह निराधार बात है, कोई नही गया था हर्वाई जहाज है प्रफ वे गरे। छपाई में उसना पर्व हुआ श्रीर जमा हमारे भाई राजबिहारां सिंह जी ने कर्प, वह गावों में बिरोमी नहीं, वहा २ रुपये की पत्रिका कोई खरीबेगा नहीं लेकिन हमने ऐपे तिगों को भेजा हु जो उसकी गरीब सपने हैं श्रीर साढ़े इ, ६ हजार क्पये की बिक भी चकी है। हम उम्मीय करते हैं कि श्रीर बिके हो। हमारे पास पैसा होता तो उसको बढ़ाते। उसमे न कीई घाना हे न कोई दिक यी। हमारे भाई राजनारायण जी ने कहा कि तुन उसे तो इ वो। उस निभाग के ऊपर अगर उनकी कृपा होती, कुछ रपया वह भौर देते तो हम उस पश्चिका का निकालने, श्रभी श्रमेजी में ही है फिर हिन्दी में भी निकालते। तो कोई बात उसमे ऐसी नहीं थी। मान्यवर, समय थोड़ा रह गया है। हमारी पत्रिकाये निकलती है। 'ग्राम्या' का काफी सर्कुलेशन है। हम एक पत्रिका निकालते है, "त्रिपयगा"। श्रम यह मानी हुई बात है और इसकी टीकार्ये देख लें जिनमें कहा गया है कि उत्तर प्रदेश में इस विषय को उच्चे शोट की दूसरी पित्रका नहीं है। स्राप कहें कि करूबर का तुम्हारा क्या काम है ? १४ श्रगरत का प्रोप्राम है, २६ जनवरी का प्रोग्राम हे, महात्मा गाधी जी का जन्म-विवस का कार्यक्रम होता है श्रीर बाल-दिवस का कार्यक्रम भी इस सूचना विभाग द्वारा होता है। इसमें सारप्रतिय कार्यक्रम भी रहता है। कभी-कभी विवेशों से भी डेलागेशन्स आते ह। जले रक्षियन करचर का डेलीगेशन बाया, क्रामेटिक पार्टिया ब्राती रहती हं ब्रीर एशियन कल्चर का हे नागेशन ब्रादि श्राते रहते है। अब यह अरते है ती इनका आयोजन भी किया जाता है। हमारा काम ह कि लोगों की विखाय और यह प्रोप्राम हम जलाते है। अब आपने कहा कि खाला उन लोगो का दिलाते है जिनके कपर आपकी कृपा होती है। यह बात नहीं है।

में समझता हूं कि दुबे जो की बहुत सी टोका तो उनके ग्रजान के कारण है। मेरा एक वीय है और में उसकी स्वीकार करता हूं। दुनिया भर में मूचना विभाग प्रचार का काम फरता रहा। लेकिन उसने विधान सभा के माननीय सदस्यों को नहीं बताया कि वह क्या काम कर रहा है। उनको वहां ले जाना चाहिये था। धगर ऐसा होता तो बहुत हां हाये लोगों की दूर हो जाती। मेरे पास राजबिहारी सिंह जी ने कागजात भेजें हैं, में उनको वेलूंगा। में खाहता हूं कि सूचना विभाग वस-वस पांच-पांच ग्राविमयों को ग्रामंत्रित करें ग्रीर उनको विलाय कि वह क्या काम कर रहा है? हम रिहन्द बैम तो विखाने ले जाते हैं लेकिन इस विभाग का काम विखाते नहीं है। श्रकान के कारण बहुत सी टीकार्य की जाती हैं।

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-स्रनुदान सख्या ३२--लेखा शीर्थक ४७--सूचना संचानन कार्यालय

श्री राजनारायण—इसिलये नहीं ले जाते है कि इनका परदा खुल जायगा।
श्री उपाध्यक्ष—पेरा ख्याल यह है कि अपने शरमीलेपन से वह नुकसान उठा रहा है।
श्री कमलापित त्रिपाठी—जितने कम हमारे साधन है उनको देखते हुये यह देखने की आवश्यकता है कि यह कितना श्रविक काम कर रहा है। श्रीमन्, समय कम रहा है। पांच बजने में ५ मिनट बाकी रह जायंगे तो मैं बैठ जाऊंग।

एक बात पढ़्लिक सींग्रत कमीशन की माननीय राजनारायण जी ने कही, इधर ग्रौर उधर के सदस्यों ने भी कही । श्रोमन को स्मरण होगा कि पिछले तीन साल से इसी हाउस में बराबर यह बात चली स्राती है। जब हमने सिलेक्शन लिये पब्लिक सर्विस कर्म शन की कोई सं होत नहीं किया ग्रीर ग्रयना कर्य करते रहे तो यह कहा जाता रहा कि सिलेक्झन पब्लिक सर्विस कभी शन से क्यों नही कराया जाता है। यह इस हाउस में भी ग्रीर प्रदेश के उस हाउस में भी और मेरा खागल है कि प्रक्त भी पूछे जाते थे और कहा जाता था कि अपने आदिमयो को अरने की तिकड़भ होती हैं। हमने सिलेक्शन कमेटी बनाई थी और उसके द्वारा सेलेब्सन होता था श्रीर सुबन। श्रीविहारी भर्ती किये जाते थे। श्रब हमने सारे का सारा काम पब्लिक सर्विस वर्मा इन को दे दिया है। मैं माननीय गोविन्द सहाय जी की बात से सहमत हूं कि इसको सीचना चाहिये कि क्या यह सोचने की बात नहीं है कि इस विभाग में कुछ पोर्ल टिकल पोस्ट्स हों। जिस नीति को सरकार चला रही है, जो उसको समझते हों ग्रौर उससे सहमत हों उनके द्वारा उस नीति को जनता के सामने रखा जाय। दूसरे डाइरेक्टर से लेकर नीचे तक फीटड वर्बर्स की इनसे अलग रखने का भी प्रक्त हो सकता है। यदि ऐसा नहीं होगा तो यह लोग सार्व प्रिक वन का उपयोग करके भ्रपनी पार्टी का प्रचार करेगे। यह दो दृष्टियां है। जिन को हमने रखा उसमें कुछ लोग ऐसे थे जो स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक थे, जिन्होने तकलीफ उठ यो । के लिये कहा गया कि बिना पब्लिक सविस कमीशन के पूछे रख लिया। सिवस कमीशन के पास गये। उसने कुछ लोगों को लिया ग्रौर कुछ को छांट दिया। हम से कहा जाता है कि पब्लिक सर्विस कमें शन ने ठीक नहीं किया, पब्लिक सर्विस कमीशन की बात मत मानो । सरकार के लिये काम करना मुहिक्ल हो जाता है। न ऋगो चलने ेगे, न पीछे चलने देगे। अब क्या सरकार कपूर की तरह एवापोरेट हो जाय, कहां जाय? जी ने पिक्लिक सर्विस कमीशन को लिखा है कि भाई फिर से इन को देखी, आठ-आठ, दस-दस साल की इनकी सर्विस है। कंरेक्टर रोल देखने का मुझे कोई अवसर नहीं मिला। लेकिन में समझता हूं कि बहुतों का कैरेक्टर रोल बहुत ग्रन्छा होगा श्रौर बहुतों के कैरेव्टर रोल मे ऐसी बातें रही होंगी, जिनकी ग्रोर माननीय राज्ारायण जी ने संकेत किया, वयोंकि षोलिटिकल सफरर्स का काम करने का एक ठंग होता है। कोई संदुष्ठ नहीं हुआ उसने टीका टिप्पणी कर दी। लेविन इस्मे सरकार का कोई दोषे नहीं। पत्लिक सर्विस वमीशन को हर्ने रेफर किया। ग्रब उनके अपर है कि चुनें यान चुनें। पहले ग्रापने वहा कि पब्लिक सर्विस कमीशन को दो ग्रौर ग्रब कहते हैं कि पढ़िलक सर्विस कमीशन को क्यों दें दिया?

श्रंत में मे यही निवेदन करूंगा कि यह निरीह विभाग है, यह सब का सेवक है। इसका यही काम है कि जनता की सेवा करे श्रीर उन तक चीजों को पहुंचाने की चेध्वा करे जो उसके कि याण के लिये हो रही हैं। बिलकुल कलात्मक श्रगर कोई प्रोग्राम हो, तो राजनारायण जी ने कहा कि बहुजन हिताय होना चाहिये। में समझता हूं कि स्वान्तः सख य श्रीर बहुजन हिताय दोगों होना चाहिये। श्रगर कोई कला केवल स्वान्तः सख य या केवल बहुजन हिताय होगी तो न तो सत्य ह गी न शिव होगी श्रीर न सुन्दर होगी। जो कला सत्य, शिव श्रीर सुन्दर होगी, वह स्वान्तः सुखाय भी होगी श्रीर बहुजन हिताय भी होगी।

मेरी प्रार्थना है कि दुबे जी, जो इस विभाग के पास थोड़ा सा पैसा है, उसमे कटौती का प्रस्ताव वापस लें। श्री उपाध्यक्ष -- प्रश्न यह है कि सम्यूर्ण श्रनुदान २२ के श्रयीन माग की राशि घटा कर एक रुपया कर दी जाय।

कमी करने का उद्देश्य-नीति का ब्योरा जिस पर वर्चा उठाने का श्रमित्राय है।

सूचना विभाग में व्याप्त ऋष्टाचार, एवं पक्षतातरूर्ण नोति की श्रालोचना करना। (प्रक्रन उपस्थित किया गया श्रीर श्रस्वीकृत हुआ।)

श्री उपाध्यक्ष -- मनदान के निर्वेश्वगर प्रावश्यक हुन्ना तो श्राने विशेषाधिकार से १५ सिनट में से जिनना श्रावश्यक होगा, उतना समय बढ़ा दूंगा।

प्रश्नयह हे कि ब्रनुदान सङ्घ। ३२-पूजना नचालन कार्यालय, लेखा शार्वक ४७- -प्रक्तीर्ण विभाग के श्रान्तर्गत ४२,६२,३०० करने की नाग निर्नोय वर्ष १८६०-५१ कि निर्देशनीकार की जाय ।

(प्रश्त उपस्थित किया गया ग्रीर हाथ उठाकर जिमाज र हो र पर निम्नि । वन मतानुसार स्वीकृत हुग्रा ——

पञ्च से--१४८, विपक्ष मे--३८।

गन्ने के क्रिय मूल्य से संबंधित द मार्च, १६६० क ग्रल्प-सूचित य तारांकित प्रश्न के ४---६ विषय पर विवाद

श्री उपाध्यक्ष — श्रव प्रदेश हो बोनी निनों हे पम्मन्य में श्रावे घटे का नावित्याद होगा।
यह विषय महत्वपूर्ण है श्रीर इप पर माननीय उपनेत हो का भी हु हु एह प्रमात्र या श्रीर वशीषर
शृक्त जी का भी श्रीर प्रताप तिह जो का भी था। तो ऐसी मूरत न मन्य हमारे पाम हे उल श्राषे
घंटे का है। जो भी माननीय सदस्य बोने, या थीड़ा-थोड़ा मन्य ने, हम म कन समय लें,
सभी सबको समय मिल सकता है।

एक सदस्य--समय कुछ बढ़ा विया जाय।

श्री उपाध्यक्ष--ऐसे प्रस्ताव पर समय बढ़ाया नहीं जा सकता।

\*श्री प्रतापसिंह (जिना नैनीनाल) — माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मे श्रापंका श्रत्यत श्राभारी हूं कि श्रापने इस महत्वपूर्ण विषय पर प्रदेश के २० लाख गन्ना उत्ताद कों के काल की प्लीड करने का मौका इस श्रादरणीय सबन के मामने मृत्ते दिया। मान्यवर, में श्राप के द्वारा इस श्रादरणीय सबन के सहत्वों की यह भी याद विनाक कि इसी श्रावरणीय गन्न न सन् १९५७ में एक प्रस्ताव पास किया या जिनमें सर्वसम्मति से यह तय हुशा था कि गन्न के नाम १ प्या १२ श्राने मन कर विये जायं ग्रीर जत के बाद बार बार विरोधी वनों की तरक में लाम नौर से प्रजा सोशितस्व पार्टी की तरक से गन्ना जत्या को के के के की प्रवाद की के के की का बाद विरोधी वनों की विरार श्रीर यू० पी० का है जसकी भी मीटिंग हुई, जत मीटिंग में भी यह तय हुशा कि गन्ने का बाम १ दपया १२ श्राना मन कर देना च।हिये। यही नर्गे, पालियामें इ में जिम समय राष्ट्रीय सरकार की तरक से जपनत्री ने श्राना बयान विया उन्होंने कहा कि जो वाम हम बो या तीन श्राने बढ़ा रहे है वह प्रदेशीय सरकार की राय से हमने बढ़ाया है श्रीर यही नर्गे माननीय मुख्य मंत्री जो का बार बार ध्यान विलाने श्रीर प्रजा सोशित हो ने ने श्री माननीय मुख्य मंत्री जो का बार बार, केन्द्रीय उपमंत्री के बतान है बाद, हनारे उत्तर प्रदेश की मरकार में हुद्ध हलकान मंबी; श्रीर उन्होंने सोला कि अत नत्त है हवा, हनारे उत्तर प्रदेश की मरकार में हुद्ध हलकान मंबी; श्रीर उन्होंने सोला कि अत नत्त है हवा, हनारे उत्तर प्रदेश की सरकार में हुद्ध हलकान मंबी; श्रीर उन्होंने सोला कि अत नत्त है हवा, हनारे उत्तर प्रदेश की सरकार में हुद्ध हलकान सबी; श्रीर उन्होंने सोला कि अत नत्त है हवा हि सो रहा है तो श्री सरकार में हुद्ध हलकान सबी;

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

वह पत्र, जो केन्द्रोय सरकार को लिखा गया था, सदन के सामने पढ़ा। मै मान्यवर, स्नापकी स्नाज्ञा से उसकी दो पंक्ति पढ़ देना चाहता हूं। उन्होंने लिखा है कि :—

"I feel that the recommendation of the two legislatures and of the Joint Sugar Control Board should be accepted by the Central Government. I would request that you may strongly reconsider last year's decision and announce reasonable price much before the crushing season starts in November next."

इसमें माननीय मुख्य मंत्री ने केन्द्रीय मंत्री को यह लिखा कि दोनों विधान सभाग्रों ने इस प्रस्ताव को पास किया है ग्रौर उवाइंट कंट्रोंन बोर्ड ने भी पास किया है त्रौर उवाइंट कंट्रोंन लिखा। लेकिन हम यह नहीं समझ पाये कि जो पत्र में लिखा गया वह उन्होंने कहा भी है या नहीं। वह इस बात से साबित है कि सरकारी पक्ष ने हमको बताया कि इस समय जो चीनी मिल है, मुजपफरनगर, मन्सूरपुर, खतौली, रोहाना, शामली, महौली, देवबन्द, रोसा, सखौती टांडा, मवाना, दरौला, इस बाल पुर, सहारनपुर, मसौधा ग्रौर बुढ़वल, ये मिल १ रुपया १२ ग्राना मन गन्ने का दाम दे रहे हें। ग्रब प्रश्न यह है कि जब हमारी प्रदेशीय सरकार इस बात को चाहती है जिसको कि वह इस सदन को बता चुकी है जब कि मुख्य मंत्री जी को बधाई पत्र पढ़ने के बाद सदन में चारों तरफ से दी गई थी, तो फिर उसके सामने क्या कठिनाई है? मैं यह जानना चाहता हूं कि जब ग्राप केन्द्रीय सरकार को पत्र में यह लिख सकते है कि गन्ने का दाम १ पया १२ ग्राना होना चाहिये तो फिर क्या दिक्कत है? जब विरोधीदल की तरफ से कहा जाता है कि जो ५०, ५४ चीनी मिल है इनको ग्रपने केन कमिश्चर से या ग्रौर किसी एजेन्ट से ग्रांडर दिलाकर १ रुपया १२ ग्राना मन दाम किसानों को मिलने चाहिये तो इसमें कोई ग्रनौचित्य नहीं है। यह सरकार ऐसा नहीं कह सकती है कि जितने चीनी मिल है वह १ रुपया १२ ग्राना मन गन्ने का दाम नहीं दे रहे है।

एक बात जरूर हमको मालूम होती हैं कि यदि सरकार उन मिल मोलिकों के ऊपर बाव डालेगी कि वे किसानों को गन्ने का दाम १ पया १२ छाना दे तो शायद मिल मालिक नाराज हो जायंगे। इसलिये में चाहता हूं कि सरकार इस नीति को स्पष्ट करे। छगर १ रूपा १२ छाना छाप मिल मिलकों से दाम देने की छपील नहीं करते हैं तो फिर किसानों को छूट होनी चाहिये कि वह अपना गन्ना बाहर ले जायं। हमारे किसानों ने छपने यहां खांडसारी बनाकर उन मिलों को मजबूर किया है कि वे किसानों को १ रूपया १२ छाना गन्ने का दाम दे। लेकिन सन् १६५७ में जो प्रस्ताव इस सदन ने पास किया छौर जिसे के विषय में चिट्ठी १६ सितम्बर, १६५६ को यहां पढ़कर सुनाई उसकी इच्छा के छनुसार यह सरकार नहीं करना चाहर्त है। सरकार ने वयों उस प्रस्ताव की उपेक्षा को ? सरकार को इस हाउस को दिश्वास में लेना चाहिये था, जिस प्रस्ताव को इस सदन ने पास किया था। छगर के द्वीय सरकार ने उस प्रस्ताव को माना नहीं था तो उसको सदन को बताना चाहिये था। में छापकी छोर से यह प्रोफेसर की थ के बाक्यों में कहना चाहता हूं:——

"If he cannot keep the confidence of Commons it is clearly desirable that he should resign."

उनको इस्तीफा देना चाहिये यदि हाउस को विश्वास में न लिया जाय। सरकार को बताना चाहिये कि उसकी नीति इस सम्बन्ध में क्या है? आज केन्द्रीय सरकार की इस प्रकार की नीति २० लाख गन्ना उत्पादकों के खिलाफ है, टैरिफ बोर्ड के खिलाफ है और यहां के फैश्ले के खिलाफ है। इन शब्दों के साथ मुझे उम्मीद है कि माननीय मंत्री जी अपने स्टेंड को साफ करेंगे। इसमें कोई बुराई की बात नहीं है अगर वह अपनी नीति को साफ कर है। मैं चाहता हूं कि जो दूसरे मिल मालिक १ रुपया १२ आना गन्ने का दाम नहीं रहे है उनसे सरकार इप ल करें जिससे कम दाम मिलने वाले किसानों को अपने गन्ने की कमाई का पूरा दाम मिल सके।

श्री उपाध्यक्ष — यों तो नियम के अनुसार यह व्यवस्था है कि एक ही सदस्य इस पर अपना मत व्यक्त करे वृक्ति यह प्रकृत विशेष महत्व का है और कई माननीय सदस्यों से सम्बन्धित है इसलिये विशेष परिस्थिति में म थोड़ा-थोड़ा गनय दूपरों की भी दे दूंगा। में माननीय बशीबर जी से कहुंगा कि दो मिनट वह भी ले ले।

श्री बंशीधर शुक्ल (जिना खीरी) -- श्रीमन्, गर्ने की परिस्थिति हमारे यहां विकट है भ्रीर सब से ज्यादा गन्ना करीब १० करोड़ मन गन्ना पूरे जिले मे पैदा होता है। बेलों में जाता है स्रोर बाकी सब गोना मिन में पहुंच जाता ह । गोला मिल बोलों को स्रगर स्वतंत्र कर दिया जाय तो एक रुपया से ज्यादा गन्ने की कीमत किमानों को न दे क्यों कि दूसरा मिल उसएरिया में नहीं है। वहां पर होई सनने प्राला नहीं है। श्राप लोग न जाने क्यों गोला मिल बिस्वा मिन के पास के रन २८ लाख मन गन्ना था, गोला के पास डेढ़ करोड़ मन है, फिर भी वहा बड़ी दुईशा कर दी गई रू। श्राप चन कर देवे तो श्राप को पता चलेगा कि मै कोई बनावटो बात नहीं कर रहा हू। केवल भ्रपनी बात वर रहा हूं। मेरे पान चार एक उका गन्नी इस वर्ष है। सोसाइटी ने सट्टा किया केवल ८०० मन का। मन बहुगणाजी से कहा, म्ख्य मत्री जी से कहा, कि पिछले ५ वर्षों को सप्साई के अनुपार सट्टालिखने ही रोति गलत है। मेरे गन्ने का सट्टा केंत्रन ८०० मन लिला गया है जब कि म उस में से ही १,६८० मन बेच च का हू--१,२०० मन बेच चुका हूं बेन पर, १८ श्राने मन के हिसाब से श्रीर अभी १२०० मन के ऊपर खेतों में खड़ा है जिनको च्हें वा रहे है, लेकिन किसी को परवाह नहीं है। हम प्रपना गन्ना बेचना चाहते हैं लेकिन कोई गाहक नहीं है। गोला मिल के साथ हम लोगों की गर्दन बाध दी गई है श्रीर किसी को हमारी किन्न नहीं है। सरकार को हम लोगों का कोई ध्यान नहीं है। हरगांव मिल की भी यही दशा ह। में महाली मिल का भी जिक कर दूं। वहां भी सट्टा लिखने की यही रीति हं कि ५ साल की सप्लाई के अनुसार सट्टा लिखना गलते हैं। तेखमी ने के अनुसार होता चाहिये। इसासे बहुत बड़ी गड़ बड़ी मजी है।

श्री उपाध्यक्ष--म्राप बेठिये । दो मिनट समय समात हो गया ।

श्री बंदाधिर शुक्ल--में केवल एक मिनट में ध्रपनी बात कह वूंगा। वहां १ पये १२ ग्राने का दाम मिलता है। उसमें लाबीमपुर का जिला भी जामिल है। बाकी हरगांव भीर गोना मिल का दाम १६पया ४ ग्राना ग्रौर दो ग्राने मन का ही है।

श्री उपाध्यक्ष — श्रापका समय समाप्त हो गया। श्राप बैठिए। (श्री उग्रसेन से) श्राप केवल तान मिनट में श्रपनी बात कह दें।

श्री उग्रसेन (निना देवरिया)—माननीय उपाध्यक्ष महोवय, त्रो विषय प्रतापितह जी ने विवाद के निवे प्रस्तृत किया है ग्रीर गेवा सिंह जी ने जो इस सदन के समक्ष रखा वह पूर्वी जिलों के लिये, वहा के कियानों के लिये बड़े महत्व का प्रश्न है। श्रीमन्, सरकार ने स्वयं इस सदन में एक प्रस्ताव पास किया था कि गन्ने का मूल्य १ पर्य १२ ग्राने मन हो। उत्तर प्रदेश ग्रीर बिहार के संपुक्त गन्ना बोर्ड ने भी यह प्रस्ताव पास किया था।

श्री उपाध्यक्ष--समय कम है, इस लिये रिगीडीशन कम होना चाहिये।

श्री उग्रसेन—वहां सोशिलस्ट पार्टी का दो रुपये मन का भी प्रस्ताव था लेकिन वह श्रमान्य कर श्रिया गया । पित्रसम में १५ मिलें एक रुपये ७५ श्रीर ५४ नये पैसे मन का दाम देती हैं तो कोई वजह नहीं है कि गोरलपुर, बस्ती श्रीर देवरिया में जो चीनी मिले हैं श्रीर जिनकी तादाव काफी ज्यादा है, वे कम से कम यह १ रुपये १२ श्राने का दाम न दें।

वूसरी बात, मेरठ की मिलों में जो गन्ना सेंटर पर बिकता है और जो मिलों पर बिकता है, उन वोनों का मूल्य एक हो गया है। मिल मालिक कार्टेज के नाम पर काफी पैसा किसान का काट लेते है, यह नहीं कटना चाहिये। हमारे यहां तो हालत बड़ी खराब है। गन्ने की पर्ची भी नहीं सिल रही है। केन कमिश्नर साहब ने जो बांघली इस मामले में पैवा कर वी है और मिल मालिकों ने जिस प्रकार उपेक्षा की है वह ठीक नहीं है और सरकार की ग्रोर से जो बढ़ावा विया जा रहा है वह भी निन्दनीय

है। मुख्य मंत्री जी ने जो चिट्ठी यहां पढ़कर सुनायी थी जिसमें १ रुपया १२ म्राने के भाव की सिफारिश की गयी थी, माननीय बहुगुणा जी मिल मालिकों से यही क्यों नहीं कहते कि यह भाव ही इनकी दिया जाय। इसके माने यह है कि जो पूरव की तरफ के भिल मालिक लोग म्राते हैं माननीय मंत्री जो के पास तो उनका कान मंत्री जी स्वयं फूंक देते हैं। में साफ-साफ कह देता हूं कि सोशलिस्ट पार्टी का यह निर्णय है कि ध्यं ले साल, जब तक गन्ने का भाव किसानों को २ रुपये मन मिलेगा नहीं तब तक वह गन्ना गिरायेगा नहीं। म्रबचोनी मिलें इसके बिना चलने वाली नहीं है म्रीर किसान म्रयना २ रुपये मन का भाव ले कर रहेगा। में माननीय मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि कम से कम इस बार तो किसानों को १ रुपये १२ म्राने मन का भाव दिलाने की कोशिश करें। यह छोटी सो मांग है जिसको माननीय मंत्री जो को स्वयं करना चाहिये था।

# ( कुछ सदस्यों के खड़े होने पर )

श्री उपाध्यक्ष --मैने उन्हीं माननीय सदस्यों को मौका दिया है जिनका प्रस्ताव था।

श्री व्रजनारायण तिवारी (जिला देवरिया) — श्रीमन्, मेरा भी एक प्रस्ताव था लेकिन श्रायने मुझे मौका नहीं दिया।

श्री उपाध्यक्ष--ग्रापकी पार्टी की तरफ से हो गया।

श्री गेंदासिह (जिला देवरिया) -- हम समझते हें . . . .

श्री उपाध्यक्ष--पहले श्राप खड़े नहीं हुए। मेरी नजर श्राप पर ही थी।

श्री गेंदासिह—वह इसलिये कि मैं यह देख रहा था कि जिनकी दिलचस्पी है उनको श्राप खुद बुला लेते हैं।

श्री उपाध्यक्ष--पहले ग्राप बैठे थे लेकिन ग्राप ग्रब खड़े हो गए।

श्री गेंदासिह--में जिद तो नहीं करता, लेकिन श्राप मुझे एक भिनट दे दीजिये।

श्री उपाध्यक्ष——चूंकि श्रापका मूल प्रश्न था इसलिये में श्रापको मौका दिये देता हूं। ठीक है, बोलिये।

श्री शिवप्रसाद (जिला देवरिया) --हम भी इसमें दिलवस्पी रखते हैं। सिर्फ २ मिनट हमको भी दे दीजिये।

श्री उपाध्यक्ष—यह माननीय मंत्री जी का काम है। उनकी जिम्बेदारी श्राप लोग न लें। (श्री गेंदा सिंह से) श्रव श्राप बोलिये।

\*श्री गेंदासिह—श्रीमन्, मैने प्रस्ताव इसीलिये रखा है श्रीर में समग्रता हूं कि यह गवर्ननेन्द्र को मारल रिस्पांतिबिलिटी है कि काश्तकारों की उपज का ठीक दाम गवर्ननेन्द्र दिलवा दे। इस हाउस के फैनले के मुताबिक, जो उस दिन मुख्य मंत्रों जो ने बताया कि १ रुपये १२ श्राने मन दिलाने के लिये बड़ो कोशिश उन्होंने को है, मैने यही पूछा था कि श्रगर गवर्ननेन्द्र श्रव भी उस निश्चय पर दृढ़ है तो चन्द मिलवालों ने देना शुरू कर दिया है लेकिन जो बाकी रह गये हैं, उनके लिये सरकार ने कार्यवाही नहीं की। उनके लिये कम से कन कह तो दें। कुछ हो मिलें है जैसे खड्डा, देवरिया में मुहीउदीनपुर

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री गेंदा सिह]

श्रीर डोईवाला। यह तीनों मिले हैं श्रीर सरकार के हाथ में है कि उनसे कहे कि २ श्राना मन ग्रीर देना शुरू कर दो। उनको २ श्राना मन देने में कोई दिक्कत नहीं है। में सरकार की मारल रेस्पांसिबिलिटी इसलिये कहता हूं कि श्रागर एक बार यह सरकार उनसे कह देतो उनको देना पड़ेगा श्रीर ग्रागर वह नहीं दंगे; तो हम सरकार से कहना चाहते है कि जिस वक्त मिल वाले न देना चाहें उस वक्त सरकार जिम्मेदारी से बरी हो जाप श्रीर ग्रापने डंडे वापस लेलें श्रीर उसको वापस लेने के बाद निश्चित रूप से गन्ने की कीमत काइत-कार हासिल कर लेंगे।

में एक दूसरी बात कहना चाहता हूं कि श्रगर गन्ना के मिल वाले सरकार की बात नहीं मानते तो सरकार श्रपना डंडा हटा ले श्रीर वह स्वयं कले क्टिय वारगे निग करेंगे श्रीर जो मुनासिब कीमत होगी वह ले लेंगे। में कहना चाहता हुं कि को श्रापरेटिब यूनियन्स बनी हुई हैं श्रीर उन यूनियन्स का हेड केन किमश्नर हे श्रीर जो सरकारी महक्षमें का हेड है। उसके जिरये से को श्रापरेटिब यूनियन्स का गना दबाकर कीमत वह नहीं वे रहे है। श्रब फैसला २४ तारी ख को होने वाला है गालिबन, लेकिन श्रगर वह नभी हो तब भी श्रगर सरकार के फैसले के मुताबिक मिल वाले गन्ने का वाम नहीं वे रहे हैं, तो फिर श्रपना डंडा हटा ली जिये किसान श्रपना वाम खुद वसूल कर लेगा।

श्री राजदेव उपाध्याय (जिला देवरिया) -- मुझे २ मिनट दे दोजिये। श्री उपाध्यक्ष--जी नहीं। श्रव मंत्री जो बोलेंगे।

थम उपमंत्री (श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा) -- उपाध्यक्ष जी, मुझे बड़ी खुशी है कि गेदासिह जी ने पहले भी श्रपने मत को इस विषय में प्रकट किया। राच पृद्धिये तो उनके मत प्रकट करने का ही कारण है जो यह बहस हुई। दो तीन बार इस सदने में, इस संबंध में बात चीत हुई भ्रीर जो नेक सभाव उन्होंने हुमें विये उम पर हमने विचार किया। एक रुपये १२ छाने मन कीमत करने का सम्राव भी ये ये चके है। मुझे दो बातें इस संबंध में कहनी है। पहली बात तो यह कि इस भ्रादरणीय सवन की भावना की मद्देनजर रखते हुए उत्तर प्रवेश की सरकार ने भ्रापने विचारों की, जिस स्थिति में वह थी उन सारी बातों को देखते हुए, गन्ने के दामों के संबंध में, संबंधित श्रीधकारियों के पास श्रयनी मांग भेजी ग्रीर जो राय इस सदन की थी, उसकी भेजा। जो राय हम उनको वे सकते थे वह राय हमने उनको दो। भ्रगर हम इस सदन की भावना के विनाक कोई कार्य करतेती हम बीबी थे। हम जो कर सकते थे वह हमने किया। हमारे बहुत से भाई जो रोजनीतक वलों में रहते हैं, श्रपने विचारों में भिन्नता रखते हैं, फिर भी जो नीति होती है उसका विरोध नहीं करते। हमने इस सदन की राय को उनके (जेन्द्रीय सरकार के ) सामने रखा, यह सब की मालूभ है। जिन लोगों ने संविधान बनाया है और जिन लीगों के हाथ में शक्ति है जब उन लोगों ने तय कर विया कि गन्ने के वाम १ रापया १० ग्राना मन होंगे तो यह सरकार उलट कर यह कहे कि यह नहीं, यह होता चाहिये, ऐसा नहीं हो सकता। हमें अनुशासन में रहना होगा। श्रेगर कोई हर निश्चय क खिलाफ चले तो वह सरकार चल नहीं सकती। इस तरह से न रारकार चला करती है और न चलती है। एक तय हुई बात की हमने मान कर स्रोर यह मानकर कि एक कुलेक्टिय विजडम क सामने हमें प्रपती विजडम को सरेन्ड करता है, हमने उस कलेक्टिय िजिडम के सामने अपने विचार की सरेन्डर किया। सामुहिक विचार के बाद जी चीज सामने उसका हमने समर्थन किया।

ग्रब यह कहा गया कि चूंकि उन्होंने (फेन्द्रीय सरकार) ने ग्रापकी बात नहीं मानी, इसलिये ग्राप चीनी मिल मालिकों के सामने ग्रपनी ग्रपील करते। माननीय गैंदा सिह जी ने ग्रपने भाषण में यह बात छेड़ी कि हम ग्रपील करते। वे समझ गये होंगे कि ग्रपील करने के क्या मानी है। किसी भी सरकार के लिये ऐसी अपील करना, जिसे वह लोगों से मनवा न सके, मैं नहीं समझता, कोई अच्छी बात है। हर मिल मालिक नियमों को अच्छी तरह से जानता है। हम हर अपील के पीछे कानूनी शक्ति नहीं ला सकते। नैतिक शक्ति के आधार पर कोई अपील करके इस अवसर पर न हमें कोई लाभ हो सकता है और न हो होने वाला है, उससे कुछ भी फायदा नहीं होने का। विजनेस करने वाले सभी अच्छी तरह से नियमों को जानते हैं। वे उनसे अनभिज्ञ नहीं होते।

एक सुझाव यह दिया गया कि हम पुलिस का डंडा किसान के सर पर से उठा ने। मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर मीठी चुटकी कोई लेना जानता है तो वह माननीय गेंदासिंह जी जानते हैं। एक ऐसा लान्छन उन्होंने लगा दिया जिसको वे स्वयं ही समझते हैं कि वह लान्छन सही नहीं है। मान्यवर, न पुलिस का डंडा कहीं चलता है और नहीं उसका कोई संबंध है। क्यों कि अगर यही बात सही होती तो जिन जगहों पर किसानों के दाम बढ़े हैं, वे कैसे बढ़ते और फिर वहां पुलिस का डंडा क्यों नहीं रहा? अगर पुलिस के डंडे का ही भय होता तो जहां दाम बढ़े हैं वहां कैसे बढ़ते। डंडे का प्रवन नहीं है। यह तो आधिक खिचाव और तनाव है, जोड़ तोड़ की बात है कि एक जगह के किसानों के हाथ में किन्हीं कारणों से ऐसी अक्ति है कि वह रोक सकते है, रिटेन कर सकते है। मेरठ के किसानों ने मवाना मिल से कहा कि हम गन्ना कम मूल्य पर नहीं बेंचेगे। कोई किसान ककार के पास नहीं गया, उन्होंने तय कर लिया कि चाहे गुड़, खांड न बने, जला देना पड़े लेकिन इतने से कम दाम पर नहीं देगे और इस प्रकार उन्होंने मिल को दवा दिया। जहां इतनी अक्ति नहीं है, उसको हमारे डंडे की अक्ति के नाम पर भुलावे मे डालना कोई खास बात नहीं है। जहां तक गन्ने के दाम का सवाल है हमारा डंडा न किसान के ऊपर है, न मिल मालिक के ऊपर है।

यह कहा गया कि सरकारी मिलों में क्यों नहीं बढ़ाते दाम ? इस सरकार ने मिलों को जिस हालत में लिया उसकी जानकारी गेंदासिंह जी को भी है। उनका द्याधिक ढांचा अस्त-व्यस्त है, उनके मुनाफे की गड़बड़ी, पैसे की खराबी, बैलेंदा-शोट के लासेज, सारी चीजों को मद्देनजर रखते हुए यह देखा गया कि प्राइवेट हाथों में मिल चलने वाली नहीं है तो सरकार ने उछल कर सारी आधिक जिम्मेदारी को अपने हाथ में लिया। हमारी ऐसी स्थिति नहीं है कि हम चेरिटेबिल होना शुरू कर दें। कहना आसान है, लेकिन चेरिटी के लिये हमारे अन्दर शक्ति होनी चाहिये, जो कि इस समय नहीं है।

एक बात कही गयी कि गन्ना मिलों में जो हमारे पूर्व के क्षेत्रों में गन्ना खड़ा है उसका इन्तजाम नहीं हो रहा है। लेकिन हम इन्तजाम कर रहे है। जो हमें गन्ना मिल रहा है उसे हम ऋश कर रहे है। १४ मार्च, ३० अप्रैल, चाहे किसी तारीख में हमारे पास पहुंचे, हम इतना विश्वास दिलाना चाहते हैं कि उसको ऋश करेंगे, लेकिन गर्मी की वजह से अगर रिकवरी कम हो तो कटौती देने का सरकार का कोई इरादा नहीं है, उसी दाम पर गन्ने को ऋश करना पड़ेगा। यह तो बहुत पहले से स्पष्ट हो चुका है, सीधी-सी बात है। पिछले साल २४.१६ करोड़ मन गन्ना पेरा गया और इधर २२ तारीख तक २६.५६ करोड़ मन गन्ना हम पेर चुके हैं। जब मार्च की २२ तारीख तक इतना है तो जाहिर है कि अप्रैल के अन्त तक हम बहुत ज्यादा गन्ना पेर चुके होंगे। यह गन्ना किसानो के खेतों से आया है, इसलिये अगर उनका हित और लाभ नहीं हो रहा है तो किसका हो रहा है? आज अच्छे दाम का लालच देने के बावजूद भी किसान अपने स्थान पर खड़ा रहा है। हमारी लाचारी है कि हम अपनी राय को इसी आघार पर कायम कर रहे है। कोई दूसरी चीज करना हमारे लिये संभव नहीं है।

श्री झारखंडेराय (जिला ग्राजमगढ)—इस बात को रिवर्ते हुए कि गरना मिलों की श्रीर से बार-बार यह कहा ता रहा है कि उनकी केलेखिटी नहीं है कि स्वीरे दे स्पर्ध मन वह दे सके, लेकिन कुछ मिलों के इतना उपस्थेने के बाद यह कि है। गया कि नह दे सकते है, तो सरकार इस तरह की लिफारिझ करने को तथार भारत साकार को कि श्राने वाले सीजन में दाम पौने का रुपये कर दे ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—यशी भे का सम्लग्न भी ल भे गा संभा नहीं है।

श्री रामायणराय (जिला देशिया)— क्या मान पिश गरी ति प्र श्रव्यवस्था श्रीर श्रसंतोष को दूर करने की कृषा करेग जा कि केन करिएटनर के नजीन श्रादेश से तमकुही रोड मिल के कुछ गार्यो—— श्रारमण, नरपहा ए एक विनास करपाना, बिजा, लक्ष्मीपुर, बढ़हरा, श्राहि—को भटनी चीनी मिल को देने में उत्पन्न क्ष्मी, जर्जा करनी चीनी मिल वहां से काफी दूर है ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—मान्यवर, यह गलत तात ह कि हमने किनी को मजबूर किया। उसमें विलिंग ग्रोवस नित्या है। श्रगर फिसान गता न । जाना चाहे तो नले जाय, जब तक वह मिल ऋश कर पायेगा, करेगा।

श्री शिव प्रसाद—मान्यतर, तमकृती शगर मिल में काफी गरना ', या तमय से नहीं पर सकेगी।

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा--श्रगर सब गन्ना निया ा ११२ विन तक प्रतसकेगी।

श्री सुरथबहादुरशाह (जिला लीरी)—क्या सरकार तथन की द्या करेगी कि प्राइस लिकिंग फार्म्ला के प्रनगार सन् १६५८—५६ में जा रेटयटर ता ह्य हे श्रीर जो प्रदेशीय सरकार की जिम्मेदारी हे यह जल्मादको या या नटा शियाण जा का है?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा--केन कमिश्नर की तरफ से सब भिलों को रिश्वरी सर्टिफिकेट इश्यू कर दिया गया है।

श्री बन्शीधर शुक्ल---सट्टे का ढंग बदलेगा या गर्छ प्रोर गाम मिन कब बन्द होगी श्रीर दूसरी मिले कब बन्द कर रहे हैं?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—२४ तारीत्र की गोला मिल बन्द तीर्थी प्रोर २० तारीत्र को हरगांव मिल। सट्दे का हमारा जो पिछले सालों का फार्मला है जिस काइत कार गन्ना कम पदा करें शार अवन अगदा प्राची ।

श्री दीवनारायणमणि त्रिपाठी (जिला तेर्यारया)— नव परकार का यह निश्चित मत है कि गन्ने का मूल्य बढ़ाया जाय तो क्या कोई कमेटी या कमी तन इस संबंध में बनाया जायगा जिसमें गन्ने के उत्पावन श्रीर बिकी दोनों के स्टन्ड रंस निर्णय हो सके?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—गवर्नमेन्ट ग्राफ इंडिया इस संबंध में बैठाने जा रही

श्री श्रमरनाथ (जिला गोरखपुर)—क्या मंत्री जी की माल्म है कि सिसवा मिल में काफी गन्ना है? यदि हां, तो क्या वह केयलापुर में काटा लगाने की व्यवस्था करेंगे ताकि वहां पर गन्ने की स्थात हो सके ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—यह कहना बड़ा मुदिकल ह कि कहा काटा लगवाया जा सकता हे श्रीर कहा नहीं। श्री ब्रजनारायण तिवारी—सेवरही ज्ञुगर फैक्टरी के जोन का गन्ना रामकोला, वंजाबी श्रीर शटनी ज्ञुगर मिल को एलाट किया गया है तो या तो किसानी को वही दाम मिलों जो उनको श्रपने मिल गेट पर मिलता है श्रीर यदि नहीं तो क्या सरकार इस सेवरही क्षेत्र में ऋक्षर्स पर ताइसेन्स लगाने का नियम उठा लेगी ?

श्री हेमदतीनन्दन वहुगुणा—वह गन्ना ले जाने के लिये बाध्य नहीं हैं। इसके श्रलावा लाइसेन्स के हटाने ले इस सीजन में तो कोई फायदा होने वाला नहीं है, श्रगले सीजन में चाहे हो।

श्री उपाध्यक्ष--- ग्रब हम उठते हैं, कल ११ बजे फिर बैठेंगे।

(इसके बाद सदल ५ बजकर ३३ मिनट पर श्रगले दिन के ११ बजे तक के लिये स्थिति हो गया।)

लवनऊ; २२ कार्च, १६६०। देवकीनन्दन मित्थल. सचिव , विघान सभा, उत्तर प्रदेश।

# उत्तर प्रदेश विधान सभा

# बुधवार, २३ मार्च, १६६०

विधान सभा की बैठक सभा-मण्डप, लखनऊ में ११ बजे दिन में उपाध्यक्ष, श्री रामनारायण त्रिपाठी की स्रष्ट्यक्षता में स्रारम्भ हुई ।

#### उपस्थित सदस्य--३८०

श्रक्षयवरसिंह, श्री, ग्रजीज इमाम, श्री श्रतीकुल रहमान, श्री श्रनन्तराम वर्मा, श्री म्रब्दुल रऊफ् लारी, श्री भ्रब्दूल लतीफ़ नोमानी, श्री म्रब्दुस्समी, श्री श्रभयराम यादव, श्रो म्रमरनाथ, श्री ग्रमरेशचन्द्र पांडेय, श्री ग्रमोलादेवी, श्रीमती श्रयोध्याप्रसाद ग्रार्य, श्री श्रवधेशकुमार सिनहा, डाक्टर श्चवघेशचन्द्रसिंह, श्री म्रवधेशप्रतापसिंह, श्री श्रसलम खां, श्री श्रात्माराम पांडेय, श्री इरतजा हुसैन, श्री उग्रसेन, श्री उदयशंकर, श्री उबैदुर्रहमान, श्री उमाशंकर शुक्ल, श्री उल्फ़र्लासह, श्री ऊदल, श्री एस० ग्रहमद हसन, श्री ग्रोंकारनाथ, श्री कन्हैयालाल वाल्मीकि, श्री कमरहीन, श्री कमलकुमारी गोईंदी, कुमारी कमलेशचन्द्र, श्री कल्यापच व मोहिले, श्री

कल्याणराय, श्री कामतात्रसाद विद्यार्थी, श्री काशीप्रसाद पांडेय, श्री किशनसिंह, श्री कुंवरकृष्ण वर्मा, श्री कृपाशंकर, श्री केशभानराय, श्री केशव पांडेय, श्री केशवराम, श्रो कैलाशकुमारसिंह, श्री कैलाशनारायण गुप्त, श्री कैलाशवती, श्रीमती कोतवालींसह भदौरिया, श्री खमानीसिंह, डाक्टर खयालीराम, श्री खुशोराम, श्रो खुर्बासह, श्री गंगाधर जाटव, श्रो गंगाप्रसाद वर्मा, श्री (एटा) गंगाप्रसादसिंह, श्री गजेन्द्रसिंह, श्री गज्जूराम, श्री गणेशप्रसाद पांडेय, श्री गनेशचन्द्र काछी, श्री गनेशोलाल चौधरी, श्रो गयात्रसाद, श्री गयाबस्त्रासिंह, भी ग्रयूर भ्रलो खां, श्रो ग्ररोबदास, श्रो गिरधारीलाल, श्रो गुप्तारसिंह, श्री

गरुप्रसादसिंह, श्री गुलाबसिंह, श्री गेंदादेवी, श्रीमती गेंदासिंह, श्री गोकुलप्रसाद, श्री गोपाली, श्री गोपीकृष्ण प्राजाद, श्री गोविन्दनारायण तिवारी, श्रो गोविन्दसहाय, श्री गोविन्दर्सिह विष्ट, श्रो गौरीराम गुप्त, श्रो गौरोशंकर राय, श्रो घनक्याम डिमरी, श्रो घासीराम जाटव, भी चन्द्रवेव, श्रो चन्द्रवलो शास्त्रो ब्रह्मचारी, श्री चन्द्रसिंह रावत, श्री चन्द्रहास मिश्र, श्रो चन्द्रावतो, श्रोमतो चन्द्रिकाप्रसाद, श्री चरणसिंह, श्रो चिरंजीलाल जाटव, श्री छत्तरसिंह, श्रो छंबोलाल, श्रो छोटेलाल पालीवाल, श्री जंगबहादुर वर्मा, श्रो जगदोशनारायण, श्रो जगदोशनारायणवत्त्रसिंह, श्री जगदीशप्रसाद, श्री जगदोशशरण भ्रप्रवाल, श्रो जगन्नाथ चोधरी, श्री जगन्नायप्रसाव, श्री जगन्नाय लहरो, श्री जगपतिसिंह, श्री जगमोहनसिंह नेगो, श्रो जगबोरसिंह, श्रो जमुना सिंह, श्री (बदायूं) जयगोपाल, डाक्टर जयदेवसिंह ग्रार्थ, श्री जयराम वर्मा, श्री जवाहरलाल, श्री जवाहरलाल रोहतगी, डाक्टर जागदत्रर, श्रो जिलेन्द्रप्रतापसिंह, श्री ' जुगलकिशोर, ग्राचार्य मोक्सई, श्री

ज्वालाप्रसाद कुरोल, श्री झारखंडेराय श्री टोकाराम, श्रो टोकाराम पूजारी, श्रो डंगरसिंह, श्री ताराचन्द माहेश्वरी, श्री तारावेबी, डाक्टर तिरमलसिंह, श्री तेजबहादुर, श्रो तेजासिंह, श्री वत्त, श्री एस० जी० दशरथप्रमाद, श्रो दाताराम चौधरो, श्रो दोनदयाल् करुण, श्री दोनदयाल् शर्मा, श्रो दोनदयाल् शास्त्रो, श्रो दीपंकर, श्राचार्य दोपनारायणमणि त्रिपाठी, श्री दुर्योधन, श्रो वेवकोनन्वन विभव, श्रो वैयनारायण भारतीय, श्रो देवराम, श्रो द्वारकात्रसाव मित्तल, श्री (मुजफ्फरनगर) द्वारिकाप्रसाव, श्री (फर्मखाबाव) द्वारिकाप्रसाव पाडेय, श्री (गोरावपर) घनोराम, श्रो धनवधारी पाष्ट्रेय. श्री धमंदत्त वैद्य, श्रो धर्मपालसिह, श्रो धर्मसिंह, भी नत्थाराम रावत, श्रो नत्यसिंह, श्री (मैनपुरी) नन्वक्मारवेव वाशिष्ठ, श्रो नन्बराग, भो नरदेवसिंह दतियानवी, श्री नरेन्द्रसिंह भंडारो, थी नरेन्द्रसिंह विष्ट, श्री नवलिक्शोर, भो नागेदवरप्रसाव, भी नारायणवस तिवारी, श्री नारायणवःस पासी, श्रो नेकराम शर्मा, श्री पब्माकरलाल श्रीवास्तव, श्री पब्बेरराम, श्री परमाभन्द सिनहा, श्री पहलवानसिंह चौधरी, ची

प्रकाशवती सूद, श्रीमती प्रतापबहादुर्रासह, श्रो प्रतायभानप्रकाशसिंह, श्री प्रतापसिंह, श्री प्रभावतो मिश्र, श्रीमतो फतेहसिंह राणा, श्री वंशीघर शुक्ल, श्री बलदेवसिंह, श्री बलदेवसिंह श्रार्य, श्री बसंतलाल, श्रो बादामसिंह, श्री बाबूराम, श्री बाबूलाल कुसुमेश, श्री बालकराम, श्री बिन्दुमती दास, श्रीमती बिशम्बरसिंह, श्री बिहारीलाल, श्री बुद्धोसिंह, श्री बुलाकीराम, श्री बुजबासीलाल, श्री बुजरानी मिश्र, श्रीमती बेचनराम, श्री बेचनराम गुप्त, श्री बेनीबाई, श्रीमती बेजुराम, श्री ब्रजनारायण तिवारी, श्री ब्रजभूषण शरण, श्री ब्रह्मदत्त दीक्षित, श्री भगवतीप्रसाद दुबे, श्री भगवतोप्रसाद शुक्ल, श्री भगवतीसिंह विशारद, श्री भगौतीप्रसाद वर्मा, श्री भजनलाल, श्रो भोखालाल, श्री भुवनेशभूषण शर्मा, श्रो भूपकिशोर, श्री मंगलाप्रसाद, श्री मंजूरलनबी, श्री मथुराप्रसाद पांडेय, श्री मदन गोपाल वैद्य, श्री मदन पांडेय, श्री मदनमोहन, श्री मन्नालाल, श्रो मलवानसिंह, श्री मलिखानसिंह, श्री (मैनपुरी) महमूद ग्रली खां, कुंवर (मेरठ) । महमूद ग्रली खां, श्री (रामपुर) महमूद हुसैन खां, श्री महावीरप्रसाद शुक्ल, श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री महीलाल, श्री महेर्शासह, श्री माताप्रसाद, श्री मान्घातासिंह, श्री मिहरबान सिंह, श्री मुकुटविहारीलाल श्रग्रवाल, श्री मुक्तिनाथ राय, श्रो मुजफ्फर हसन, श्रो मुबारक ग्रली खां, श्री मुरलीघर, श्री मुरलोधर कुरोल, श्री मुल्लाप्रसाद 'हंस', श्री मुहम्मद सुलेमान श्रघमी, श्री मुलचन्द, श्री मोतीलाल ग्रवस्थी, श्री मोहनलाल, श्री मोहनलाल वर्मा, श्री मोहनसिंह मेहता, श्री यमुनाप्रसाद शुक्ल, श्री यमुनासिंह, श्री (गाजीपुर) यशपालसिंह, श्री यशोदादेवी, श्रीमती यादवेन्द्रदत्त दुबे, राजा रऊफ जाफरी, श्री रघुरनतेजबहादुरसिंह, श्री रघुराजसिंह चौघरी, श्री रघुवीरराम, श्री रघुवीर्रासह, श्री (एटा) रघुवीरसिंह, श्री (मेरठ) रणबहादुरसिंह, श्री रमाकांतसिंह, श्री रमानाथ खॅरा, श्रो रमेशचन्द्र शर्मा, श्री राघवराम पाण्डेय, श्री राघवेन्द्रप्रतापसिंह, श्री राजिकशोर राव, श्री राजदेव उपाध्याय, श्री राजनारायण, श्री राजनारायणसिंह, श्री राजबिहारीसिंह, श्री राजाराम शर्मा, श्री राजेन्द्रकिशोरी, श्रीमती

राजेन्द्रकुमारो, श्रीमती राजेन्द्रदत्त, श्री राजेन्द्रसिह, श्रो राजेन्द्रसिंह यादव, श्रो राम त्रवार तिवारो, श्रो रामश्रमिलाख, श्रो रामिककर, श्रो रामकुमार वंद्य, श्री रामकृष्ण जेसवार, श्री रामऋष्ण सारस्वत, श्री रामचन्द्र उनियाल, श्री रामचन्द्र विकल, श्रो रामजील ल सहायक, श्री रामजीतहाय, श्री रामदास ग्रार्य, श्री रामदीन, श्री रामनाथ पाठक, श्रो रामपाल त्रिवेदी, श्री रामप्रसाद, श्री रामप्रसाद देशमुख, श्री रामप्रसाद नौटियाल. श्री रामबली, श्री राममूर्ति, श्री रामरतनप्रसाद, श्री रामरतीदेवी, श्रीमती रामलक्षण तिवारी, श्री रामलखन, श्री (वाराणसी) रामलखन मिश्र, श्री रामलखर्नासह, श्री (जौनपुर) रामलाल, श्री रामवचन यादव, श्रो रामशरण यादव, श्री रामसनेही भारतीय, श्री रामसमझावन, श्रो रामसिंह चोहान वैद्य, श्री रामसुन्वर पांडेय, श्री रामसूरतप्रसाद, श्री रामस्वरूप यादव, श्री रामस्वरूप वर्मा, श्रो रामहेतसिंह, श्री रामायणराय, श्री रामेश्वर प्रसाद, श्री रकन्दीन खां, श्री रूमसिंह, श्री लक्ष्मणवत्त भद्र, श्री सक्ष्मणराव कदम, श्री

लक्ष्मणरित्स, श्री लक्ष्मोनारायण, श्रो लक्ष्मोनारायण बसल. श्री लग्नमोसित, श्री लायकसिए चो बरो, श्रो लालबहादूर, श्री लालवहार्दुरमित, श्री लत्फ प्रता या, श्रो लोकताथसिट, श्री वजरंगबिहारो ।। न रायत, श्रो यशिष्ठ रारायण शर्मा, श्री वसी नफवी, श्री वासुदेप दाक्षित, श्रो विजयशं कर्रामह, श्रा विद्यायतो वाजपेयो, श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन, शोमती विशालीगढ़, श्रा विश्रामराय, श्रा वीरसेन, श्रो वीरेन्द्रविकर्मामह श्री योरेन्द्रशाह राजा व्रजगोपाल सम्येना, श्रो व्रजविहारी मेहरीत्रा श्री शंकरलाल, श्री शक्तलावेत्री, श्रीमती शब्बीर हसन, श्री शमसुल इस्लाम, श्री शम्भुवयाल, श्री शिबगोपाल तिवारी, श्री शिवप्रसाव, श्रो (देवरिया) शिवप्रसाद नागर, श्री (ग्यीरी) शिवमंगलिंगह, श्रो शिवमृति श्रा शिवराजबलासिष्ठ, श्री शिवराजसिंह यादव, श्री शिवराम, श्री शिवराम पांडेय, श्री शिववचनराव, श्रो शिवशंकरसिंह, श्री शिवशरणलाल भीवास्तव, भी शीतलाप्रसाव, श्री शोभनाय, श्री श्याममनोहर मिश्र, श्रो च्यामलाल, श्रो श्यामलाल यादव, श्री थढावेवी शास्त्री, कुमारी

श्रोङ्गडण गोयल, श्री श्रोकृष्णदत्त पालोवाल, श्री श्रोताथ,श्रो (ग्राजनगढ़) श्रोनःथ भार्गव,श्रो (मथुरा) श्रीनिवास, श्री श्रीपार्लीसह, कुं इर संग्रामसिंह, श्रो सईद ग्रहमद ग्रन्तारी, श्रो सजीवनलाल, श्रो सत्यवतीदेवी रावल, श्रीमती सम्पूर्णानन्द, डाक्टर सरस्वतोदेवो शुक्ल, श्रोमतो सियादुलारो, श्रोमती सोताराम शुक्ल, श्रो सुक्खनलाल, श्री सुखरानोदेवी, श्रोमती सुखरामदास, श्रो मुंबलाल, श्री सुलोराम भारतीय, श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी, श्री सुनोता चौहान, श्रोमती

सुन्दरलाल, श्री सुरथबहादुरशाह, श्रो सुरेन्द्रदत्त वाजपेयी, श्री सुरेन्द्रसिंह, राजकुमार मुरेशप्रकाशसिंह, श्री सुल्तान ग्रालंश खां, श्री सूरतचन्द रमोला, श्री सूर्यबली पांडेय, श्री सोहनलाल घुसिया, श्री हमोदुल्ला खां, श्री हरकेशबहादुर, श्री हरदयार्लासह, श्री हरदयालसिंह पिपल, श्री हरदेवसिंह, श्रो हरिइत काण्डपाल, श्री हरिश्चन्द्रसिंह, श्री हरीशचन्द्र ग्रष्ठाना, श्री हरीसिंह, श्री हिम्मर्तासह, श्री हुकुमसिंह विसेन, श्री होरोलाल यादव, श्रो

नोट--सार्वजनिक निर्माण उप-मंत्री, श्री महावीरसिंह, भी उपस्थित थे।

# प्रक्नोत्तर

# बुधवार, २३ मार्च, १६६०

# श्रल्पसूचित तारांकित प्रश्न कड़सरवा तथा मझौली ग्राम की डकैंतियां

\*\*१—श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)—क्या गृह मन्त्री कुग्या बतायेंगे कि क्या उनके पास गत सन्ताह में इस बात को शिकायत ग्रायी है कि देवरिया जनपद के ग्राम कड़सरवा, थाना खामगर तथा मझौलो, थाना लार में भोषण डकैतियां २७ फरवरी की ग्रर्थरात्रि में पड़ीं? यदि हां, तो क्या गृह मन्त्री उक्त डकैतियों का संक्षिप्त विवरण सदन की मेज पर रखेंगे?

गृह उपमंत्री (श्री रामस्वरूप यादव) — जी हां। प्रश्नकर्ता का एक पत्र इस सम्बन्ध में प्राप्त हुन्ना है।

दोनों घटनाय्रों का विवरण संलग्न है।

(देखिये नत्थी 'क' ग्रागे पृष्ठ ७१६ पर।)

\*\*२--श्री उग्रसेन--क्या सरकार छाया बतायेगी कि उक्त डकैतियों के सम्बन्ध में सरकार द्वारा कौत-सी कार्यवाही भ्रव की जा रही है ?

श्री रामस्वरूप यादव---युलिस जाच कर रही है योर कुछ पागुक्त पकड़े भी जा चुके हैं।

श्री उग्रसेन-प्यायः सहि है किराजन्द्रन, जिस ए राइका पड़ी, प्रथम सूचना रियोर्ड पत्नोनी के टिल्लाई। लग्न चार्तादार है। लिलाकार के उपाका पांती पिपर उसने दस्तवा किया मगर दराम ने उने जाना कर दूपरा 1राई नका ४४७ न लिलायी?

श्री रामस्वरूप यादव-- जनगाने की तो गार नहा है। जान्न के बाद धारा ३६५ में यह ममना दांकिया गया।

श्री उग्रसेन-- त्या मानगीय मन्त्री जी जान परागेने हि सूसरी निरोर्ड दफा ४५७/ ३२५ में निली गर्जी जिने सेटे प्रचार के बाद ३६५ ने बदार गरा ?

श्री रामस्वरूप यादव--जान करा तो जायको ।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल (जिना ग्रागरः)—ह्या मानगय मर्न्या बताने की कुरा करेंगे कि २७ फटारों की मी भागण प्रकालया पड़ी व मिनस वार्

श्री रामस्वरूप यादव-- २ उकान्या के जारेम पत्न पूत्र गणा है। एक श्री राजेख के यहा श्रोर दूपरा श्रा ताल वचन के यहा।

श्री गोविन्दसिंह विष्ट (जिरा श्रहमोट्टा)—इनम जान उभार ही कितनी हानि हुई?

श्री रामस्वरूप यादव-श्री लाल वनन के यहा ,=४४० राये ह कपड़े श्रीर गहने लूडे गये श्रीर चाड अायोड़ी ग्राया, लेकिन वे सब श्रव स्वरा डा दूसरे म ४२७ रुपये की सम्पत्ति लूडी गयी जिनने काड़े श्रीर गहने भी हा।

श्री उग्रसेन--- टार्नेन्द्र पुत्र रघुना के या १० वा सर ४ मिना उसकी का सुबह का समय है या रात्रिका?

श्री रामस्वरूप यादव-- । जहां तर समग्रता ह, गाँउ का 🖰।

श्री रामस्वरूप वर्मा (जिना कानपुर) -- नयर इन एका का रिपोर्ट पहले वका ४५७ में खिली गई और री दे ३६५ में बवना गई या कि राकी पटन हो ३१५ म यर

श्री रामस्वरूप यादय-पन्नात. एक ४५० मणहने ते।

#### तारांकिन प्रक्न

\*१—श्री ताराचन्द्र माहेश्वरी (जिला मोतापुर)--- |१ = मार्च ११६० को प्रश्त ६४ के प्रश्तमंत्र उत्तर विधा गया। |

# पंचायतराज मंत्रियों व सेक्रेटरियों की कथित बहाली

\*२—श्रीमती राजेन्द्रकिशोरी (जिला बन्ता) (श्रातित्त) -- व्या स्वायत शासन मंत्री बताने की छुपा करेग कि १-१२-४६ वे ३१--१२-४६ वत परेश क रामस्त जिनीं से किनते ऐने प्रचायतराज न वो हाई कार्रद्वारा पुनः नोकरी प्रचाय ते कि गय है तो प्रचायतराज विभाग द्वारा सेवा से पूर्वक कि गार्थ में उन्ह कुर्व किनना चेवन एउ हर्जान के रूप में देना पड़ा?

स्वायत्त शासन मंत्री (श्री विचित्रनारायण शर्मा) — होई नहीं।

\*३—श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी (भ्रनुपस्थित)—वया सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि उक्त समय में प्रदेश में किंतने पंचायतराज इंस्पेक्टर ऐसे हैं जो विभाग द्वारा सेवा मुक्त किये जाने पर हाई तोर्ट द्वारा पुनः बहाल किये गये और उन्हें कुल कितना धन, वेतन एवं हर्जाने के छन में सरकार को देना एड़ा?

## श्री विचित्रनारायण शर्मा—कोई नहीं।

\*४—श्रीमती राजेन्द्र किशोरी (छनु गत्थित)—क्या सरकार बताने की छ्या करेगी कि उपरोक्त दोनों प्रश्नों के नुताबिक जो धन सरकार को हर्जाने व वेतन के रूप में देना पड़ा उसमें से कितना सरकार को भुगतना पड़ा और कितना संवन्धित उत्तरदायी ग्रधिकारियों (जिन के ग्रादेश हाई कोर्ट ने स्रवैध कर दिये थे) से recover किया realise किया गया ?

श्री विचित्रनारायण शर्मा--प्रश्न ही नहीं उठता।

#### पंचायत मंत्रियों के स्थानान्तरण के सम्बन्ध में भ्रन्तितम जिला परिषद्, श्राजमगढ़ का प्रस्ताव

\*५—श्री मुक्तिनाथराय (जिला ग्राजमगढ़)—क्या स्वायता शासन मंत्री बताने की हुपा करेंगे कि २६ दिसम्बर, १६४६ को श्रन्तरिम जिला परिषद, ग्राजमगढ़ ने क्या कोई प्रस्ताव पास करके सरकार से अनुरोध किया है कि पंचायत मंत्रिशों का स्थानान्तरण, जो उनके घर से २५ सील के बाहर करने का है उसे लागू न किया जाय?

स्वायत्त शासन उपमंत्री (श्री जयराम वर्मा) -- जी हो।

\*६--श्री मुक्तिनाथराय---यदि हां, तो सरकार इस पर क्या कार्यवाही कर रही है?

श्री जयराम वर्मा—इस मामले में संचःलक, पंचायत र ज के विचार मांगे गये हैं। श्रीर उनका उत्तर प्राप्त होने पर यथासमय निर्णय लिया ज:यगा।

\*७—श्री मुक्तिनाथराय—क्या स्वायत्त शासन मं शि बताने की कृपा करेंगे कि क्या यह सही है कि परिषर् ने प्रस्ताव पास करके सरकार के पास भेजा और प्रस्ताव के बारे में कि शि प्रकार का उत्तर अभी सरकार की ओर से नहीं भेजा गया कि इती बीच में पुनः अधिकारिशों ने रंबायत मंत्रिशों के स्थानान्तरण का अदेश इती मास में दे दिया? यदि हां, तो ऐसा क्यों किया गया?

श्री जयराम वर्मा — चूंकि इस सम्बन्ध में शासकीय स्तर पर श्रब तक कोई श्रादेश प्रतास्ति नहीं किये गये हैं, श्रतः स्थानीय प्रशासन की सुविधानुसार संचालक, पंचायत राज, ने जितायिकारियों की पंचायत संत्रियों का स्थानान्तरण करने की श्रनुमति दी।

श्री मुक्तिनाथराय--श्या मंत्री भहोदय बताने की एपा करेंगे कि सरकार ने संवालक महोदय को ग्रानी राय भेजने के लिये कब शिखा था?

श्री जयराम वर्मा--१६ मार्च, १६६० को यह पत्र उनके पास भेजा गया।

श्री झारखंडेराय (जिला आजमगढ़)—वया सरकार की जात है कि आजमगढ़ जिले में ऐसे भी पंत्रायत मंत्री हैं जो अपने घर से पहले से ही २५ मील दूर थे और उनकी बदली इससे भी अधिक दूर कर दी गई है? यदि हां, तो सरकार इस विश्वय में क्या करना चाहती है?

श्री जयराम वर्मा---ऐसी कोई सूचना नहीं है ।

श्री रामसुन्दर पांडेय (१ जना ग्राजनगढ़)—अब दियग्बर, १६५६ में श्रन्तरिम जिला परिषद् ने प्रमाब पास निष्या ।। सार हार द्वा उद्यादर महानी देर में, मार्च में, पूछने की क्या बजह थी ?

श्री जयराम वर्मा —यह प्रस्ताव तो जरूर २६-१२-४६ को पास हुन्ना, लेकिन जिलाधीश ने इने शासन के पास २७-२-६० को श्रयमास्ति किया ।

श्री मुक्तिनाथराय—क्या नंत्री जी अन्तरिम जिला परिषद् की भावनाश्रों के अनुरूप कार्य करने को लगा करें।?

श्री जयराम वर्मा — सारे प्रदेश के निये नियम समान होगे। सिवाय श्राजमगढ़ के इस प्रकार का विरोध सरकार के पास कड़ी से नहीं श्राया है।

श्री गोविन्दसिंह विष्ट---प्राजमगढ़ के लिये मत्री जी चाहें जो कृष्ण करे लेकिन श्रीरों के लिये क्या पालिसी है ?

श्री जयराम वर्मा —साधारणनया यह है कि वं श्रपने घर के बनाक में न रहे ग्रौर २५ मील को दूरी पर रखे जाव।

श्री शिवप्रसाद नागर (निना भिरो)—स्यायन शासन विभाग के नियमों के श्रनसार प्राचिक लोगन बाड़ी का श्राने जिनाब १० दिन में नरकार की पहुचा देन होते हैं, तो इसमें इननी देर क्यों लगी?

श्री जयराम वर्मा --जिनाबोश ने २७ फरवरी को फारवर्ष किया है। पता नहीं देरी का क्या कारण था।

श्री दीपनारायणमणि त्रिपाठी (जिता देवित्या)—त्रया माननीय भनी बताने को छ्या करेने कि इत तरह का पत्नाय प्रत्निक्स जिला परिषद् के लिये यय या कि तबादले के सम्बन्ध में इन त्रकार का सुन्नाय दे सके?

श्री जयराम वर्मा —इस पर विचार नहीं हिया गया। परन्तु इस पर विचार श्राप्त्य किया जायेगा कि प्रत्नाय ने की गई मांग कहां तक उचित है।

श्री झारखंडेराय — स्या इस बात की देवते हुए, जेमा मंत्रे पूछा कि श्राजमण्ड में कुछ वंबायत मंत्री २४ पील की दूरी पर पहले थे श्रीर उन की श्रिक दूर अज दिया गया है, तो मेरे प्रश्न की सुत्ता मान उर सरकार नह विकात करेगा कि यह ठोक है या नहीं, श्रीर इस बात को रोकने की एपा कर में?

श्री जयराम वर्मा — जो हां, जांब मरा ली जायगी।

#### श्रद्धं कुम्भी मेला, प्रयाग पर व्यय

\* --श्री कल्याणचन्द मोहिले (जिला इ नाहासाव) -- फ्या सरकार छुपा फर बतनायेगो कि इनाहाबाद के श्रद्धं कुम्बो भेने की लगाने के लिने यहां हे जिला नीश ने कितने बन का जजर बा। कर पहिले भेना था तथा श्रद्ध तक किनना धन में गालगाने में व्ययहुत्रा?

श्री जयराम वर्मा -- ३६,६७,००० रुपये का बजट था तथा श्रम तक १४,२१,२२६.६० रुपया व्यय हो जुक्ता है।

\* ह—श्री कल्याणचन्द मोहिले—क्या सरकार कृपा कर बसलायेगी कि इलाहाबाद के प्रर्द्ध फुम्भी मेला क्षेत्र में कितने स्थानों पर मेला के दिनों में घाग लगी घौर प्रत्येक स्थान में सससे कितनी कितनी हानि हुई? श्री जयराम वर्मा—सात स्थानों पर ग्रग्निकाण्ड हुग्रा जिससे हुई क्षति का ब्योरा निम्न प्रकार है:

स्थान			श्रनु	मानित क्षति
- ())				रु०
१—ित्रिवेनी रोड स्थित दूकान	• •	• •	• •	३२४
२—मेलाम्राफिसर, कैम्प	• •	• •	• •	१५०
३—-बाबा निम्बार्क नगर, झूंसी क्षेत्र	• •	• •	• •	५००
४—-बैरागी कैम्प, गंगा पट्टी क्षेत्र		• •	• •	३४
५ अरइल क्षेत्र के वायुयान कर्मचार	ो टेन्ट	• •	• •	900
६—यमुना पट्टी कल्पवासी झोपड़ी	• •	• •	• •	80,000
७—गंगा पट्टी पंडा वाडा	• •	• •	• •	900
		योग	• • •	१२,४१०

श्री कल्याणचन्द मोहिले—क्या सरकार को यह पता है कि मेला ध्रधिकारी ने एक विज्ञप्ति प्रकाश्चित की थी कि ६४ लाख रुपया खर्च हो चुका है, तो क्या वह विज्ञप्ति सही थी या यह उत्तर सत्य है ?

श्री जयराम वर्मा---पिछली बार भी यह प्रश्न पूछा गया था ग्रौर उस बार भी यही जवाब दिया गया था।

श्री कल्याणचन्द मोहिले—क्या यह सही है कि साढ़े पांच टन टीन जो दी गयी वह कल्पवासियों को न दी जाकर, दूसरे लोगों को दी गयी जिन्होंने उसको बाहर ही बेच दिया?

श्री जयराम वर्मा-यह टीन के बारे में है, इसका सम्बन्ध इस सवाल से नहीं है।

श्री उग्रसेन—क्या यह सही है कि जिलाधी च ने जो ६५ लाख रुपया खर्च किया वह दूसरे विभागों का कर दिया?

श्री उपाध्यक्ष—इसके लिये ग्रलहवा से नोटिस दीजिये।

श्री कल्याणचन्द मोहिले—क्या मंत्री जी यह बतायेंगे कि जिन कल्पवासियों की कुटिया जलीं उनके लिये क्या छूट दी गयी?

श्री जयराम वर्मा—उनको कोई छूट श्रभी तक नहीं दी गयी। नगर प्रमुखों की मुख्य मंत्री से भेंट

\*१०—श्री कल्याणचन्द मोहिले—क्या स्वायत्त द्यासन मंत्री कृपया बतायेंगे कि उन्होंने पांच महानगरपालिकाओं के नगर प्रमुख की मीटिंग २० जनवरी, १९६० को लखनऊ में बुलाई थी ? यदि हां, तो उस मीटिंग में कौन से सुझाव ग्राये थे ग्रौर उन सुझावों में कौन-कौन से सुझाव सरकार ने स्वीकार किये ?

श्री जयराम, वर्मी—मुख्य मंत्री जी के यहां यह मीटिंग श्रनौपचारिक रूप से बुलाई गई थी। न इसका कोई कार्यक्रम बना था श्रौर न कोई कार्यवाही लिखी गई थी। इस बैठक में कोई सुद्धाव भी नहीं श्राये थे वैसे ही बातचीत हुई थी।

श्री गोविन्दिसिह विष्ट—क्या माननीय मंत्री जी यह बतायेंगे कि उसमें यह भी बात आयी थी कि महापालिका होने के पहले एडिमिनिस्ट्रेटर के जमाने में कर्जा १८ लाख से करोड़ों में हो गया, लेकिन चूंकि वह कर्जा सरकारी आदमी के द्वारा बढ़ाया गया, इसलिये सरकार उसको राइट श्राफ कर दें?

श्री जयराम वर्मा—बातचीत क्या हुई, इसकी कोई कार्यवाही नही लिखी गयी ग्रौर न ग्रौपचारिक ढंग से किसी मामले पर विचार-विनिमय हुग्रा।

श्री भुवनेशभूषण शर्मा (जिला इटावा)—क्या सरकार बतायेगी कि यह मीटिंग जो बुलाई गई थी, जिसकी ग्रौपचारिक ढंग से कार्यवाही नहीं हुई, तो यह मीटिंग क्यों बुलाई गयी थी श्रौर इसमें कितना खर्च हुग्रा?

मुख्य मंत्री (डाक्टर सम्पूर्णानन्द)—ग्रपने प्रदेश में एक नया नया प्रयोग हुन्ना था ग्रीर पांच महानगरियों में ४ मेयर चुने गये थे। सोचा गया कि उनसे बातचीत की जाय कि नये ढंग से कैसे काम हो, इसलिये ग्रनीपचारिक ढंग से बातचीत हुई। खर्चा कुछ नहीं हुन्ना। चाय पिलाने पर भले ही रुपया दो रुपया खर्च हो गया हो।

श्री कल्याण चन्द मोहिले—क्या माननीय मंत्री जी यह बतायेंगे कि उस मीशि में यह मुझाव श्राया था कि ऐडिमिनिस्ट्रेटर रूल में जो लोन विया गया है, उसको सरकार माफ कर दे?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—जहां तक मुझको याद है ऐसी कोई बात नहीं हुई। गोरखपुर नगरपालिका में जटादांकर पोखरे की खराब हासत

\*११—श्री गौरीराम गुप्त (जिला गोरखपुर)—क्या सरकार यह बताने की कृषा करेगी कि गोरखपुर नगरपालिका के अन्तर्गत जटाशंकर पोखरे में जलकुम्भी ने पानी को घेर लिया है जिससे जनता उसमें स्नान वगैरह नहीं कर सकती?

श्री जयराम वर्मा जी हां।

\*१२--श्री गौरीराम गुप्त--क्या सरकार को यह मालूम है कि उपरोक्त पोखरे में महिलाओं के लिये स्नान करने के लिये जो अलग व्यवस्था थी वह गिर रही है ?

श्री जयराम वर्मा-जी हां।

\*१३-श्री गौरीराम गुप्त-स्या सरकार उपरोक्त बातों पर तत्काल ब्यान वेकर उसे ठीक कराने की कृपा करेगी?

श्री जयराम वर्मा—चूंकि यह किसी व्यक्ति विशेष की सम्पत्ति है स्रतः सरकार द्वारा इसके मरम्मत कराये जाने का प्रश्न नहीं उठता।

श्री गौरीराम गुप्त—माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि वह पोलरा किस व्यक्ति का है ?

श्री जयराम वर्मा वह पोकरा श्री महादेवप्रसाद का है।

श्री गौरीराम गुप्त-क्या सरकार उनको यह हिदायत देगी कि जिस जलकुमी के उस पोखरें में रहने से वहां के लोगों को अपार कच्ट हैं, उसे उस पोखरें से जल्द से जल्द निकल-वाने की व्यवस्था करें ?

श्री उपाध्यक्ष—उन्होंने बतलाया कि वह एक निजी व्यक्ति का है, उनसे ब्राप प्रार्थना कीजिये । सरकार क्या कर सकती है ?

#### गौरा बरहज नगरपालिका में पेय जल योजना लागु करने की प्रार्थना

\*१४--श्री उग्रसेन-क्या स्वायत्त द्यासन मंत्री बतायेंगे कि नगरपालिका गौरा बरहज, जिला देवरिया में पेय जल की नल योजना के सम्बन्ध में कितना वन स्वीकृत हुन्ना है?

श्री जयराम वर्मा—नगरपालिका गौरा बरहज की जल सम्भरण योजना के लिये स्रभी कोई घन स्वीकृत नहीं हुस्रा है।

\*१५—श्री उग्रसेन—क्या स्वायत्त शासन मंत्री कृपया बतायेंगे कि उक्त पेय नल योजना द्वितीय पंचवर्षीय योजना के श्रन्त तक नगरपालिका गौरा बरहज में लागू कर दी जायेगी? यदि हां, तो उस पर कितना घन व्यय होगा?

श्री जयराम वर्मा-जी नहीं।

श्री उग्रसेन—क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेगे कि उनके पास नगर-पालिका गौरा बरहज ने यह श्रावेदन पत्र दिया है कि उनके यहां यह योजना श्रविलम्ब लागू की जाय?

श्री जयराम वर्मा—वह तो चाहती है कि इस तरह की योजना उसके यहां हो लेकिन नियम यह है कि पहले उसका प्रोजेक्ट बनाया जाता है श्रीर प्रोजेक्ट के लिये पहले शुल्क देना पड़ता है। कई बार उस नगरपालिका को लिखा गया कि श्रब श्रावश्यक शुल्क जमा कर दे तब प्रोजेक्ट बनाने की कार्यवाही हो सकती हैं लेकिन वहां से कोई उत्तर श्रभी तक इसका नहीं श्राया है।

श्री उग्रसेन—क्या माननीय मंत्री जी को सूचना है कि उस नगरपालिका के प्रांगण में ही एक नलकूप की बोरिंग हुई है श्रौर उसी तरह से बोरिंग करके छोड़ दिया गया है, श्रागे कोई कार्यवाही नहीं हुई है ?

श्री जयराम वर्मा जी हां, वहां पर एक नलकूप बनाया गया है।

श्री दीपनारायणमणि त्रिपाठी—क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि जब पेय नल योजना चलती है तो उसके साथ-साथ ड्रेनेज योजना भी चलती है, तो जब इस नगरपालिका में पेय जल योजना चलायी जायगी तो उसमें ड्रेनेज योजना को भी श्रामिल किया जायगा?

श्री जयराम वर्मा—यह नगरपालिका के ऊपर है, श्रगर नगरपालिका उसके लिये चाहती है तो उस पर विचार किया जायगा।

# गृह निर्माण योजनान्तर्गत रोजगार मिलने का अनुमान

\*१६—श्री देवकीनन्दन विभव (जिला श्रागरा)—क्या स्वायत्त द्यासन मंत्री ने प्रदेश की बढ़ती हुई बेकारी को दूर करने के लिये गृह निर्माण-कार्यों की क्षमता पर विचार किया है श्रीर क्या व नगर श्रीर ग्रामों में इस सम्बन्ध में कोई विस्तृत योजना बनाने पर विचार कर रहे हैं?

श्री जयराम वर्मा—जी हां। तृतीय पंचवर्षीय योजना मे प्रस्तावित निम्नलिखित गृह निर्माण योजनाम्रों के म्रन्तर्गत २४,४०० म्रादिमयों को रोजगार मिलने की संभावना है :

- १--सब्सीडाइण्ड इन्डस्ट्रियल हाउसिंग स्कीम;
- २--मिडिल इनकम ग्रुप हाउसिंग स्कीम;
- ३--लो इनकम ग्रुप हाउँसिंग स्कीम;
- ४---स्लम क्लियरेन्स स्कीम,

५—विलेज हाउमिंग स्कीम;

६-- प्लांटेशन लेबर हाउसिंग स्कीम; तथा

७--लेन्ड एक्वीजिशन ऐन्ड डेबलपमेन्ट स्कीम।

श्री देवकीनन्दन विभव क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृषा करेंगे कि प्लान्टेशन लेबर हार्जीसग स्कीम श्रीर लंड एक्वीजीशन एंड डेवलपमेंट स्कीम की रूपरेखा क्या है श्रीर श्रब तक इन योजनाश्रों के सम्बन्ध में क्या कार्य हो चुका है ?

श्री जयराम वर्मा—यह तो प्रक्रन से सम्बन्धित नहीं है, यह तो विस्तार की बात है।

श्री उपाध्यक्ष—-म्रापने बतलाया कि योजना है, तो फिर उसकी रूपरेखा क्या है इसे बतलाइये ।

श्री जयराम वर्मा--कोई रूपरेखा इस वक्त तो नहीं है, इसके लिये सूचना की धावश्यकता है।

श्री उपाध्यक्ष—मं मन्त्रीगण से निवेदन करूंगा कि सप्लोमेन्टरी में ऐसे प्रक्त हो सकते हैं, इसके लिये तैयार होकर ग्राना चाहिये, क्योंकि उक्त योजना तो इस प्रक्त की बुनियाद है ही।

श्री देवकीनन्दन विभव—माननीय मन्त्री जी बताने की कृपा करेंगे कि क्या कोई ऐसी योजना भी बनायी गयी है जो बेकारी को दूर करने की वृष्टि से विशेष तौर पर बनायी गई हो ?

श्री उपाध्यक्ष-एक बार कह चुके हैं कि कोई योजना उनके सम्मुख है नहीं।

श्री शिवप्रसाद नागर—श्रीमन्, में एक व्यवस्था का प्रश्न उठाना चाहता हूं। भ्रभी जो भ्राप ने भ्रावेश विया है मिन्त्रियों क बारे में, इससे पहले भी भ्राप कई बार इस तरह के भ्रावेश वे चुके हैं फिर भी मन्त्री लोग भूल जाते हैं। तो क्या श्राप कोई ऐसी व्यवस्था करेंगे कि कोई ऐसा क्लाज बनाया जाय जो उनके गले के नीचे उतर जाय?

श्री उपाध्यक्ष-इतना में कह सकता हूं कि पहले से काफी सुधार हुआ है, श्राप निश्चित रहें ।

श्री रामफुष्ण सारस्वत (जिला फर्वलाबाव)—म्या मन्त्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जो योजना उन्होंने ग्रभी तक तैयार नहीं की है उसे कब तक तैयार करके सबन के सामने प्रस्तुत किया जायगा ?

श्री उपाध्यक्ष-योजना तो यह है, वह सबन में इस समय लाये नहीं हैं।

\*१७-१८-श्री प्रतापसिंह (जिला नैनीताल)--[वसर्वे शुक्रवार के लिये प्रश्न ३२-३३ के अन्तर्गत स्थानान्तरित किये गर्ये ।]

\*१६—श्री लक्ष्मणराव कदम (जिला झांसी)—[६ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थगित किया गया ।]

सोरों नगरपालिका के भ्रध्यक्ष के विरुद्ध भ्रविद्वास का प्रस्ताव

\*२०—कुंवर श्रीपाल सिंह (जिला जौनपुर)—क्या सरकार कृपया बतायेगी कि क्या यह सत्य है कि जिला एटा के सोरों कस्बे की नगरपालिका के ग्रध्यक्ष के विरुद्ध कोई ग्रविद्वास का प्रस्ताव १६ में से १० सवस्यों के हस्ताक्षर से युक्त २४—१—६० को उक्त जिले के जिलाधीश को मिला है ? यवि हां, तो उसमें क्या कार्यवाही हो रही है ?

## श्री जयराम वर्मा -- जो हां।

नगरपालिका की एक बैठक, उसके कार्यालय में मुंसिफ, कःसगंज की श्रध्यक्षता में २६ फरवरी, १६६० को हुई जिसमें श्रविश्वास का प्रस्ताव ७ के विरुद्ध १० वोटों से पास हो गया। श्रध्यक्ष ने त्यागपत्र देन के बजाय यू० पी० म्यूनिसिपैलिटीज ऐक्ट, १६१६ की घारा ४७-ए(१) (श्र) के श्रन्तर्गत शासन से प्रार्थना की है कि वह नगरपालिका को भंग (dissolve) कर दे। उनकी प्रार्थना सरकार के विचाराधीन है।

कुंवर श्रीपालींसह—क्या मन्त्रो जी बताने की कृपा करेंगे कि उस नगरपालिका पर किन ग्रपराघों का ग्रारोप लगाया गया है जिन के ग्राधार पर उसे भंग करने की मांग की गई है ?

श्री जयराम वर्मा—कई ग्रारोप लगाये गये हैं। एक तो यह है कि उनको निकालने के लिये २०,००० रुपया खर्च किया गया। दूसरी बात यह है कि बोर्ड ने अपने कर्मचारियों का वेतन बराबर नहीं दिया। तीसरे बोर्ड ने कर्मचारियों के वेतन से प्राविडेन्ट फन्ड से जो रुपया काटा या न वह जमा किया भौर न अपना हिस्सा हो जमा किया। चौथे ग्रौषघालय के रखरखाव के लिये जो हिस्सा बोर्ड को देना चाहिये वह द वर्ष से नहीं दिया है, पांचवें सरकारों कर्ज जो बाकी है, उसकी किस्तें ग्रदा नहीं हो रही हैं। छठें बिजली के ड्यूज करीब द,००० रुपये के बकाया हैं। सातवें ग्राडिट फी २ साल की बाकी है अदा नहीं हुई है, रहने के मका गों के सम्बन्ध में जो नियम हैं उनको बोर्ड ने लागू नहीं किया ग्रौर उसमें लापरवाही की है ग्रौर इस सम्बन्ध में जिलाधीश व किमश्नर ने जो उसे हिदायतें दी हैं उनकी भी उसने परवाह नहीं की। एक श्रीमती कृष्णप्यारी देवी, हेड मिस्ट्रेस जो डिस्मिस हो गई थीं उनको फिर से अपनी जगह पर रख कर जब कि मामला ग्रभी चल रहा है उनकी सभी वेतन वृद्धियों को देने का फैसला कर दिया है। बोर्ड ने हाउस टैक्स नहीं लगाया, लेकिन : ...

श्री उपाध्यक्ष--श्राप ने मुख्य मुख्य बातें बता दीं, वह ग्रब सन्तुष्ट हो गये होंगे। कुंवर श्रीपार्लीसह--क्या मन्त्री जी बतायेंगे कि इन शिकायतों की जांच की गई? यदि हां, तो क्या वह सही पाई गई श्रौर श्रगर सही पाई गई तो क्या कार्यवाही हो रही है? श्री जयराम वर्मा--इसके बारे में जांच हो रही है, उसके बाद निर्णय लिया जायगा।

#### बीरी जिले के पंचायत मंत्री

\*२१—श्री शिवप्रसाद नागर—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जिला खीरी में ऐसे कितने पंचायत मन्त्री हैं जो कि इस समय ग्रपने निवास-स्थान से २५ मील से श्रिषिक दूर पर हैं?

#### श्री जयराम वर्मा---११६।

\*२२-श्री शिवप्रसाद नागर--क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जिला खीरी में पंचायत मंत्रियों के कितने स्थानान्तरण जुलाई, सन् १६५६ से लेकर जनवरी, १६६० तक किये गये हैं ?

श्री जयराम वर्मा-- ३६।

श्री शिवप्रसाद नागर—क्या मन्त्री जी बताने की कृपा करेंगे कि खीरी जिले के पंचायत मंत्रियों की कुल कितनी संख्या है जिसमें से ११६ का उत्तर मिला है ?

श्री जयराम वर्मा--कुल संख्या १४६ है।

श्री शिवप्रसाद नागर—क्या मन्त्री जी बताने की कृपा करेंगे कि इन १४६ मंत्रियों में से केवन ११६ ही २५ मील से दूर हैं तो बाकी का २५ मील के भीतर रहने का क्या कारण श्री जयराम वर्मा—हो सकता है कि कुछ का काम श्रच्छा हो श्रौर उनका ट्रान्सफर करना मुनासिब न हो।

दूसरे यह कि सभी ट्रान्सफर एक साथ नहीं हुये थे, धीरे-घीरे हो रहे थे। तो जो ट्रांसफर बाकी रह गये थे उनके ट्रांसफर करने के बारे में जिलों से ऐसी प्रार्थना माई कि इघर कर-वसूली का काम हो रहा है, अगर इस बीच में ट्रांसफर किया जायगा तो किताई होगी। इसलिये उनको यह सुझा र दिया गया है कि अगर वे चाहें तो इस वक्त जो बाकी ट्रांसफर रह गये थे उनको न करें और ३१ मार्च के बाद ट्रांसफर करें।

श्री उपाध्यक्ष---राज्यादेश में क्या इस तरह का श्राप्शन है कि २४ मील से कम भी रखा जा सकता है?

श्री जयराम वर्मा--मैने बताया कि ऐसा श्राप्शन हे कि जिन पंचायत मंत्रियों का काम भण्छा है उनको नजबीक रख सकते हैं।

\*२३--श्री टीकाराम पुजारी (जिला मयुरा)--[हटा विया गया।]

\*२४--श्री देवकीनन्दन विभव--[६ श्रप्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किया गया।] सीतापुर जिले के पंचायत राज विभाग में हरिजन कर्मचारी

\*२५--श्री मूलचन्द (जिला सीतापुर)--त्रया स्वायत शासन मन्त्री बताने की कृषा करेंगे कि सीतापुर जिले में इस समय पंचायत राज्य विभाग में कितने पंचायत इन्स्पेक्टर, क्लकं तथा चपरासी है श्रीर उनमें कितने हरिजन इंस्पेक्टर, क्लकं व चपरासी है?

श्री जयराम वर्मा—सीतापुर जिलें में पंचायत राज विभाग के कर्मचारियों में हरिजनों की संख्या इस प्रकार है:——

की संख्या इस प्रक	ार हः	कुल	संख्या	را معمل والمرافع والم	हरिजनों की	संख्या
	निरीक्षक लिपिक चपरासी		१० १० १०		१ १ श्र्न्य	

श्री मूलचन्द---मंत्री जी बतायेंगे कि हरिजन जो पंचायत सिपिक की संख्या १० में १ है तो वह कितने समय से अपने अस्थायी पद पर काम कर रहा है?

श्री जयराम वर्मा---- ग्रसलियत यह है कि एक पंचायत निरोक्षक निलम्बित हैं, उनकी जगह पर एक पंचायत लिपिक को जो हरिजन हैं रख दिया गया है भौर उसी समय से वह काम कर रहे हैं।

#### गांव सभा बार के कागजात की जांच

\*२६—श्री सुदामाप्रसाव गोस्वामी (जिला झांली)—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि ग्राम बार (तहसील महरीती, जिला झांसी) के गांव सभा के प्रधान के विरुद्ध पंचायत के धन का बुरपयोग, गवन श्रीर श्रवैधानिक कार्य करने के सम्बन्ध में बार निवासियों की श्रोर से एक प्रार्थना-पत्र श्रवद्वर, १६५ में बिया गया था, जिसके बाव गांव सभा के समस्त कागज श्रिकशारियों ने श्रवन करजे में कर लिये थें? यिव हां, तो क्या उनत कागजों के हिसाब-किताब का श्राविट करा लिया गया हैं? यिव नहीं, तो श्राविट न करवाने का क्या कारण हैं?

श्री जयराम वर्मा—जी हां, प्रधान गांव सभा, बार, जिला झांसी, के विरुद्ध अस्टूबर, १९४८ में प्राप्त प्रार्थना-पत्र के सम्बन्ध में उक्त गांव सभा क कागजात जांच के लिये ले लिये गये थे। चूंकि उक्त प्रधान के विरुद्ध परगनाधीश, लिलतपुर, ने पंचायत राज श्रिधिनयम की धारा ६४(१)(जी) के अन्तर्गत कार्यवाही की, अतः श्राडिट कराने की अवस्यकता नहीं समझी गई।

श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी—मन्त्री जी बतायेंगे कि जो कागजात जांच के लिये लिये गये ये उनमें क्या-क्या किकायत सही पाई गई श्रौर जो परगनाधीक्ष ने कार्यवाही की है उसका क्या नतीजा रहा ?

श्री जयराम वर्मा -- नतीजा यह निकता कि ३७ पर्ने का अनव्यय किया गया है और यह अरदेश दे दिया गया है कि चूंकि अरव्यय अनिधक्तत था इसलिये इतना रुपया वह जमा कर दे।

## शाहजहांपुर जिला जेल के श्रधीन खेती

\*२७—श्री बालकराम (जिला शाहजहांपुर)—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जिला जेल, शाहजहांपुर के श्रवीन कितने बीघे जमीन पर खेती होती है ? उसकी श्रामदनी वित्तीय वर्ष १६५६—६० में कितनी हुई श्रीर क्या-क्या फसलें पैदा हुई ?

संसदीय विषयक उपमंत्री (श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट) — १०.२५ एकड़ भूमि पर। चूंकि १६५६ — ६० का वित्तीय वर्ष स्रभी समाप्त नहीं हुस्रा है इसलिये पूरी स्रामदनी बताना सम्भव नहीं है। फतलें चरी, स्रालू, कहू, स्रवीं, पेठा, करमकल्ला, गांठ-गोभी, पालक, कुलका, चौलाई, गरम साग, इत्यादि की हुई।

श्री बालकराम—जो रकबा बताया है, १०.२५ एकड़, यह जेल के ग्रन्दर का है या जेल के बाहर का भी है?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट--जेल के ग्रन्दर का सारा रक्तवा १२.३७ एकड़ है, जिसमें २.१२ एकड़ पर ऊसर भूमि है जिस पर कोई खेती नहीं हो रही है। शेष भूमि जो बतायी उस पर कोई खेती नहीं हो रही है। शेष भूमि जो बतायी उस पर सब्जी लगायी जाती है।

#### इलाहाबाद नगरपालिका का वाटर तथा हाउस टैक्स

\*२८—श्री कल्याणचन्द मोहिले—क्या सरकार क्रुपा कर बतायेगी कि इलाहाबाद नगरपालिका को १९५४—५५ से १९५९ -६० तक कितना धन हाउस-उंक्स तथा वाटर-टंक्स में प्राप्त होता या खौर १९६० में जो ख्रसेसमेन्ट हुखा है उसके ख्रनुसार कितना धन हाउस-टंक्स तथा वाटर टेक्स प्राप्त होगा?

श्री जयराम वर्मा— १६५४-५५ से १६५६-६० तक इलाहाबाद नगरपालिका को हाउस-डेक्स तथा वाटर-डेक्स से निम्नलिखित श्राय हुई——

वर्ष		हाउस-देक्स	वाटर-टैक्स
		रुपये	रुपये
8EXX-XX	• •	३,४६,००८	द, १३,४ <b>७</b> ०
१९५५—५६		३,६४,६२४	6,88,588
१९५६-५७	• •	४,२६,३२६	१०,०६,४६७
१६५७-५=	• •	४,३२,५७८	१०,२४,३५४
१६५५-५६		इ,७७,६३६	ह, <u>५६,७७</u> ८
१६५६-६०	;	में फरवरी १९६० र तथा वाटर-टैक्स १२,६६,०६८ रुप	तक हाउस-टेक्स दोनों से कुल

श्री कल्याणचन्द मोहिले—मेरा प्रश्त था कि सन् ६० मे जो एसेसमेट हुआ है उसमे कितनी श्राय होगी ?

श्री जयराम वर्मा—श्रगर श्रापका मतलब ६०-६१ से था, तो मतलब साफ नहीं था। वैसे २ लाख श्रीर श्रामदनी बढ़ने की श्राशा की जाती ह, लेकिन निध्चत रूप से श्रभी नहीं कहा जा सकता। कार्यकारिणी की एक उप-समिति श्रापत्तियों पर विचार कर रही है। जब उन पर निर्णय हो जायगा तभी निध्चित रूप से कहना सम्भव होगा कि ६०-६१ में कितनी वृद्धि होगी।

\*२६--श्री काशीप्रसाद पाण्डेय (जिला सुल्तानपुर)--[सातवे गुण्वार के लिये प्रश्न ७३ के म्रन्तर्गत स्थानान्तरित किया गया।

\*३०-३१--श्री राजनारायण (जिला वाराणसी)--[हटा दिये गये।]

# जेलों में हाथ से चक्की चलाना बन्द करने की प्रार्थना

\*३२—श्री गनेशचन्त्र काछी (जिला मैनपुरी) तथा श्री टीकाराम पुजारी—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि उत्तर प्रदेश में कुल कितनी जेले हैं श्रीर उनमें ऐसी कितनी जेले हैं कि जिनमें कैदियों से चक्की पिसाने का कार्य लिया जाता है?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट--कुल ६३ जेलें हैं। इनमें से ४२ जेलों में कैवियों से विक्ती पिसाने का कार्य लिया जाता है।

श्री गर्नेशचन्द्र काछी—क्या सरकार इस पर विचार करने की कृपा करेगी कि जिन ४२ जेलों में कैवियों से चक्की पिसाने का काम लिया जाता है वहा से चक्की पिसाने की प्रणा हटा ली जाय ? यदि हां, तो कब तक?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट—जी हां, यह सरकार के विचाराधीन है। ग्रभी तक १३ जेलें ऐसी है जिनमें विजली के जरिये या शायल इंजन के जरिये से यह काम लिया जा रहा है ग्रीर बनाभाव के कारण ग्रभी तक ग्रीर जेलों में यह नहीं कर सके हैं। जेल रिफार्म कमेटी जो सन् ४६ में बैटी यी उसने यह कहा था कि जेल के केवियों से जी हाथ की चिक्कयों से काम लिया जाता है वह बन्व कर विया जाय। सरकार के पास धन ज्यों-ज्यों होता जा रहा है त्यों-त्यों यह व्यवस्था की जा रही है।

' आचार्य दीपंकर (जिला मेरठ)—हाथ को चिक्कयां कै दियों से चलवाने का मकसव यह होता या कि उनको शारीरिक बन्द विया जाय। उसके पीछे उनके सुधार का तथा उनकी श्रम शक्ति की शार्थिक उत्पादकता का उद्देश्य नहीं होता था। तो क्या यह जो पुरानी प्रणाली शारीरिक बन्द के रूप में उनको विजित करने की है उसके स्थान पर उनके श्रम से श्रार्थिक उत्पादकता हो सके, ऐसी किसी व्यवस्था पर सरकार विचार करेगी?

श्री उपाध्यक्ष—ग्राप की राय से ऐसा होना चाहिये?

श्राचार्यं दीपंकर—मेरा उद्देश्य है कि उनका श्रम उत्पादक हो, शारीरिक वन्ड देने का उद्देश्य न हो।

श्री उपाध्यक्ष—यानी, इसके ग्रलावा कोई ऐसा काम निकाला जाय, यह मतलब है ? ग्राचार्य दीपंकर—जी हां । प्रश्नोत्तर ७२७

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट—जैसा मैंने श्रभी कहा है, श्राज कल जेलों में इस तरह से काम कराने की विचार धारा है कि जो काम वहां कैदी सीखें उससे कुछ धनोपार्जन कर सकें। यह काम ऐसा समझा गया है कि इसमें उनकी शारीरिक शिक्त जितनी लगती है उससे कहीं ज्यादा लाभ उनकी उस शारीरिक शिक्त से श्रीर कामों में हो सकता है श्रीर इसलिये श्रीर व्यवसाय सिखाये जा रहे है जिनमें शारीरिक शिक्त का प्रयोग किया जा रहा है।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल—इस बात को ध्यान में रखते हुये कि चक्की व्यवसाय कुटीर उद्योग है तो उसको बढ़ाने की दृष्टि से वहां हर कैदी से सेर-सेर या दो-दो सेर श्राटा पिसवाने की प्रथा को सरकार कायम रखेगी?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट—मैने ग्रर्ज किया कि हमारे यहां ग्रभी भी ४२ जेलें ऐसी हैं जहां हाथ से चिक्कियों से पिसाई होती है ग्रीर १३ ऐसी हैं जिनमें ग्रायल इंजन के जरिये या बिजली के जरिये पिसाई का काम हो रहा है।

श्री ऊदल (जिला वाराणसी)—जैसा कि माननीय मंत्री जी ने बताया कि १३ जेलों में तेल की चक्की लगायी गयी है, तो एक तेल की चक्की लगाने में कितना खर्चा बैठता है ?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट-इसके लिये नोटिस की ग्रावश्यकता होगी।

श्री गोविन्दिसिंह विष्ट—क्या माननीय मंत्री जी कृपया बतायेंगे कि जब से जेलों में यह चक्की छुड़ाई गई श्रौर कैदियों को श्राराम दिया जाने लगा तब से उनका डर कम हो गया है श्रौर श्रपराध ज्यादा होने लगे हैं?

न्याय मंत्री (श्री हुकुर्मासह विसेन) -- उसके बाद से जनसंघ के लोग ग्रब जेल नहीं जाते हैं। (हंसी)

श्री झारखंडेराय—क्यासरकार इस बात को देखते हुए कि जेल रिफार्म्स कमेटी की सिफारिश हुए १२ वर्ष से ऊपर हो गये, इस विषय में कुछ तेजी करने की कृपा करेगी?

श्रीर्वनरेन्द्रसिंह विष्ट--मंने म्रभी म्रर्ज किया कि १३ जेलों में तो यह कार्यान्वित भी हो गया है म्रौर बाकी में जैसे धन मिलता जायगा हम करते जायेंगे।

श्री गनेशचन्द्र, काछी--क्या माननीय मंत्री जी कृपया बतायेंगे कि वह कौन-कौन सी जलें है जिनमें चक्की पीसने का काम बन्द कर दिया गया है?

श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट—ग्रागरा, नैनी, वाराणसी, लखनऊ, ग्रलीगढ़, फैजाबाद, गोंडा, हरदोई, कानपुर, मेरठ, सीतापुर ग्रीर उन्नाव। इसके ग्रतिरिक्त चार जेलें ऐसी हैं जहां बिजली की चिक्कियां तो लगी हुई हैं परन्तु कभी ये खराब हो जाती हैं तो वहां हाथ से भी ग्राटा पीसने की व्यवस्था है, ये हैं वाराणसी, गोंडा, हरदोई ग्रीर उन्नाव।

\*३३--श्री प्रतापसिंह--[६ भ्रप्रैल,१६६० के लिये स्थगित किया गया।]

\*३४--श्री नारायणदत्त तिवारी (जिला नैनीताल)--[६ श्रप्रैल, ११६६० के लिये स्थिगित किया गया।]

मैनपुरी जिले के पंचायत विभाग में अनुसूचित जाति के कर्मचारी

\*३५-शी रामदीन (जिला मैनपुरी)--क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जिला मैनपुरी में जनवरी, १६६० में पंचायत विभाग में कुल कितने कर्मचारी किस किस पद पर कार्य कर रहे थे ग्रौर उनमें कितने श्रनुस्चित जाति के थे?

## श्री जयराम वर्मा--वांछित सूचना इस प्रकार है :--

पद	gala med med egel kinn dell 400 gell er	a managangan pangangan pangangangan pangangangan pangangangan pangangangan pangangangan pangangangan pangangan	<b>5</b> 7	न संख्या	धनुसूचित जाति के व्यक्तियों की संख्या
सहायक जिला पंचायतः		* *		<b>१</b>	<ul> <li>A</li> <li>A</li> <li>B</li> <li>B</li></ul>
पंचायत निरीक्षक	• •		• •	=	१
पंचायत लिपिक	• •		• •	૭	Ŗ
पंचायत मंत्री	• •	• •	• •	१३२	Š
पंचायत चपरासी	• •	• •	• •	ဌ	• •
			कुल सं <sup>क्</sup> या	१५६	88

श्री रामदीन—क्या मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि यह सही है कि पंचायत मंत्री तथा चपरासियों की जगहों के लिये जिले के हरिजनों ने बहुत काफी प्रार्थना-पत्र दिये मगर फिर भी उनको नहीं लिया गया?

श्री जयराम वर्मा--ऐसी सूचता तो नहीं है कि उन्होंने प्रार्थना-पत्र विये हों ग्रौर न लिये गये हों।

#### फैजाबाद नगरपीलका के कर्मचारियों का वेतन

\*३६--श्री ऊवल-क्या सरकार बताने की क्रुपा करेगी कि क्या २६ सितम्बर, सन् ५७ के जी० ग्रो० के मुताबिक १ प्रक्टूबर, ५७ से फेंजाबाव नगरपालिका के कर्म-चारियों को ए० ग्रेड का बेतन विया जा रहा है?

श्री जयराम वर्मा—सूचना एकत्र की जा रही है।

श्री ऊवल-स्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जब १ सक्टूबर, १६५७ से उस म्युनिसिपैसिटी को ए ग्रेंड का बना विया गया है तो ग्रब तक वह लागू नहीं हुगा या सूचना नहीं इकट्ठा हुई, इसका क्या कारण है ?

श्री जयराम वर्मा---सूचना मांगी गयी थी, वह धभी तक था नहीं पायी है।

श्री भुवनेशभूषण शर्मा---सूचना चाहे बेर में श्राये लेकिन जब से यह जी० श्रो० लागू हुया है क्या तभी से ये सुविषायें उपलब्ध करायी जायंगी?

१ ' १ ' श्री अयराम वर्मा पूछा यह गया है कि वह वहां लागू हुन्ना है या नहीं। इसके बारे में सूचना अगते ही बतला विया जायगा।

\*३७-३८-श्री शिवराजबहादुर (जिला बरेली)--[७ ग्रप्रैल, १९६० के लिये स्थिगित किये गये।]

# इलाहाबाद नगरमहापालिका में वापसी चुन्गी का बकाया

\*३६--श्री कल्याणचन्व मोहिले--स्या सरकार कृपा कर बतायेगी कि इलाहाबाव की महानगरपालिका में भव तक कितने बुकानबारों के ऊपर वापसी खुंगी का कितना कितना रुपया बाकी है ? प्रक्नोत्तर ७२६

श्री जयराम वर्मा—इलाहाबाद नगर महापालिका के कत्थे के जिन-जिन दुकानदारों पर जितना जितना रुपया बाकी है, वह संलग्न तालिका में दिया हुन्ना है।

(देखिये नत्थी 'ख' ग्रागे पृष्ठ ७६७ पर )

श्री कल्याणचन्द मोहिले—क्या मंत्री जी बतायेंगे कि यह रुपया कितने दिनों से बाकी है श्रीर वसूल क्यों नहीं किया गया?

श्री जयराम वर्मा— यह रुपया तो काफी दिनों से बाकी है। लेकिन इसमें कुछ किताइयां पैदा हो गई थीं। ऐसा हुग्रा था कि कत्थे के व्यापारियों पर जो चुंगी लगाई उसको उन्होंने देना बन्द कर दिया। मामला ग्रदालत में गया। मिलस्ट्रेट के यहां से उनके खिलाफ फैसला हुग्रा। लेकिन दूकानदार सेशंस जज के यहां मामला लगये ग्रौर वहां से उनके माफिक फैसला कर दिया गया ग्रौर कह दिया गया कि कत्थे के व्यापारियों पर यह चुंगी नहीं लगाई जा सकती है। फिर मामला ऊपर गया ग्रौर हाई कोर्ट से फैसला हुग्रा कि चुंगी लगाई जा सकती है। यह हो जाने के बाद जब वसूली की कार्यवाही शुरू हुई तो उन्होंने दरख्वास्त दी कि हमारे ऊपर इतना ज्यादा टैक्स लग गया है जिसकी देना हमारे लिये नामुमिकन है, इसलिये कुछ छोड़ दिया जाय। इस पर से ७५ फीसदी लेना तय किया गया ग्रौर २५ फीसदी छोड़ दिया गया ह। ग्रब कुछ रुपया वसूल हो गया है। जो बाकी है उसकी वसूली की कार्यवाही ग्रदालत हारा की जा रही है।

#### सरायमीरा ग्राम में सार्वजनिक नल लगाने की प्रार्थना

\*४०--श्री होरीलाल यादव (जिला फर्रुखाबाद)--क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि ग्राम सराय मीरा के चौराहे पर एक सार्वजनिक नल लगाने के संबंध में ग्राम सराय मीरा, जिला फर्रुखाबाद, के ग्रामवासियों का ३-४-५८ को भेजा हुग्रा प्रार्थना-पत्र सिंचाई मंत्री को मिला है ? यदि हां, तो उस पर क्या कार्यवाही हो रही है ?

श्री जयराम वर्मा--जी हां। इस पर विचार हो रहा है।

श्री होरीलाल यादव--क्या मंत्री जी यह देखते हुए कि प्रार्थना-पत्र भेजे हुए दो वा हो गये हैं वहां नल शीघ्र लगवाने के लिये विचार करेंगे ?

श्री जयराम वर्मा —हां, इसी भ्रगले साल में इसका प्रबंध हो जायगा ऐसी श्राज्ञा है।
\*४१—श्री रामसुन्दर पांडेय—[सोलहवें बुधवार के लिये प्रक्त १२ के श्रन्तर्गत
स्थानान्तरित किया गया।]

## श्रपहृत महिलायें

\*४२--श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी (ग्रनुपस्थित)--क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि १-१-५६ से ३१-१२-५६ तक की ग्रविध में राज्य में ग्रवहृत (abducted) महिलाग्रों की जिलावार संख्या क्या थी जो recover की जा सकी थीं?

समाज कल्याण मंत्री (श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य)—वांछित सूचना तालिका में दी गई है। केवल श्रल्मोड़ा जिले की सूचना उपलब्ध नहीं है।

# (देखिये नत्थी 'ग' भ्रागे पृष्ठ ७६८ पर )

\*४३—श्रीमती राजेन्द्रिकिशोरी (ग्रनुपस्थित)—झ्या सरकार कृपया बतायेगी कि उपरोक्त संख्या में कितनी अभी समाज कल्याण संस्थाओं में श्रौर सरकार के तत्वावधान में चलने वाले श्रावासों में ३१ -१२-५६ को थीं श्रौर कितनी सामान्य जीवन में (rehabilitate) कर दी गई थीं ? श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—इस संबंध में केवल ४५ जिलों की सूचना उपलब्ध है। इन जिलों में बरामद की गई महिलाश्रों में से २१ महिलाये ३१-१२-५६ को समाज कल्याण संस्थाश्रों श्रीर सरकार के तत्वावधान में चलने वाले श्रावासों मे थीं। १२ महिलाश्रों का सामान्य जीवन मे पुनर्वास कर दिया गया तथा २४५ महिलाश्रों को उनके श्रिभभावकों को वे दिया गया।

¹४४—श्रीमती राजेन्द्रिकिशोरी (श्रनुपरिथत)—क्या सरकार कृपया बतावेगी कि राज्य में उपरोक्त समय में श्रपहृत की जाने वाली महिलाश्रों की सूचना जिलेवार कितनी कितनी सरकार को मिली श्रौर कितनी कितनी प्रट०५० नहीं की जा सकी ?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—वाञ्चित सूचना तालिका "रा" में दी गई है। श्रत्मोड़ा जिले की सूचना उपलब्ध नहीं है।

(देखिये नत्थी 'घ' ग्रागे पृष्ठ ७६६ गर)

#### रामनगर नगरपालिका संबंधित क्वार्टर तथा ऋण

\*४५—श्री ऊदल—क्या सरकार कृपया बतायेगी कि वाटर यक्सं इंजीनियर के लिये व मशीन श्रापरेटरों के लिये सरकार ने क्वाप्टंसं बनाकर नगरपालिका रामनगर को दिया है? यिव हां, तो क्या उसमें म्युनिसिपल बोर्ड का दफ्तर है तथा इंजीनियर तथा श्रापरेटर को न रख कर श्रन्य कर्मचारियों को रखा गया है?

श्री जयराम वर्मा—नगरपालिका, रामनगर, में जल कल श्रभियन्ता तथा मशीन श्राप-रटरों के लिये क्वार्टर्स का निर्माण हुश्रा है। परन्तु श्रव तक कोई जल कल श्रभियन्ता नगर-पालिका रामनगर में नहीं है। इसलिये जल कल श्रभियन्ता के लिये बनाया गया क्वार्टर श्रभी उसे नहीं विया जा सका है। नगरपालिका रामनगर का जल कल विभाग संबंधी कार्य बहु गया है। जल कल श्रभियन्ता का क्वार्टर खाली होने के कारण इस क्वार्टर को उक्त कार्य में प्रयोग किया जा रहा है।

उक्त जल कल के अन्तर्गत केवल एक ही आपरेटर है, जो रामनगर का ही स्थाई निवासी है। उसको एक आपरेटर का क्वार्टर विया गया, पर चूंकि उसका परियार बहुत बड़ा है इसलिय वह अपनी सुविधा के लिये अपने ही मकान पर रहता है। आपरेटरों के ही लिये निर्मित क्वार्टरों में से एक क्वार्टर जल-कल के खौकीदार को विया गया है। दो क्वार्टर जल कल कार्यालय के प्रयोग में है। एक क्वार्टर के बारे में पूर्ण सूचना अभी नहीं मिली है।

\*४६-श्री ऊदल-क्या सरकार कृपया बतायेगी कि म्युनिसिपल बोर्ड, रामनगर, बाराणसी, के ऊपर सरकार का कितना रुपया कर्जा है और वह किस किस मद में दिया गया है?

श्री जयराम वर्मा—नगरपालिका रामनगर पर सरकार का ४,४२,४०० रु० कर्ज है। यह कर जल-संभरण योजना के संबंध में दिया गया है।

भी अवल क्या मंत्री जी बतायेंगे कि यह जल कल ग्रभियन्ता वहां कितने विनों से नहीं है ?

श्री जयराम वर्मा—यह ग्रभी तक रखा ही नहीं गया है श्रीर ग्राज्ञा की जाती है कि वहां जल्दी ही रक्खा जायगा।

श्री उपाध्यक्ष-कितने दिनों से नही है ?

श्री जयराम वर्मा-शीमान् जो, इसकी ठोक सूचना नहीं है।

श्री अवल-जैसा कि मंत्री जी ने बताया कि ग्रापरेटर का परिवार बहुत बड़ा है इसलिये उसने क्वार्टर नहीं लिया, तो क्वार्टर का कुछ एलाउंस दिया जाता है ? श्री जयराम वर्मा—नहीं, एलाउंस सभवतः नहीं दिया जाता है। वाटर वर्क्स, रामनगर से पृथक किये गए कर्मचारियों को प्रतिकर तथा ग्रेचुइटी

\*४७—श्री अदल—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि वाटर वर्क्स, रामनगर, वाराणसी, जिसको सरकार ने श्रक्टूबर, सन् ५० में श्रपने श्रिधकार में ले लिया है, उसके २१ कर्म-चारियों को फरवरी, सन ५२ में कार्य से इस शर्त पर पृथक कर दिया कि उन्हें पेन्शन या मुश्रावजा दिया जायेगा? यदि हां, तो श्रब तक कितने कर्मचारियों को पेंशन या मुश्रावजा दिया गया श्रौर कितनों को देना बाकी है?

श्री जयराम वर्मा—जी हां, ६ कर्मचारियों को प्रतिकर पेन्शन (ग्रेचुइटी) दे दी गई है। ३ ग्रीर कर्मचारियों को प्रतिकर पेन्शन (ग्रेचुइटी) की स्वीकृति हाल ही में दी गई है। शेष ६ कर्मचारियों के मामले भ्रभी विचाराधीन है।

श्री ऊदल—यह मामला बहुत पुराना है ग्रौर शेष ६ कर्मचारियों का जो मामला विचाराधीन है उसके कब तक तय हो जाने की उम्मीद है ?

श्री जयराम वर्मा—हमारा खयाल है कि जल्दी ही तय हो जायगा। उनके मामले में कुछ दिक्कतें थीं श्रीर सूचना इकट्ठी करने में देरी हुई। श्रापित्तयां करीब २ दूर हो रही हैं श्रीर ज्ञायद मामला जल्दी ही तय हो जाय।

#### वाराणसी जी० टी० रोड सीवर लाइन बनाने का ठेका

\*४८—श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या स्वायत्त ज्ञासन मंत्री बताने की कृपा करगे कि सन् १९५५—५६ में स्वायत्त ज्ञासन विभाग द्वारा वाराणसी जी ० टी० रोड सीवर लाइन बनाने का ठेका जिस ठेकेदार को दिया गया था उसका कार्य करने का क्या रेट था भ्रौर प्रति दिन कितनी लम्बाई में सीवर लाइन उसने तैयार की ?

श्री जयराम वर्मा—सन् १६५५-५६ में स्वायत्त शासन श्रभियंत्रण विभाग द्वारा वाराणसी जी० टी० रोड सीवर लाइन बनाने का जो ठेका श्री एस० एन० राय को दिया गया था उसके कार्य करने के रेट की प्रतिलिपि ं संलग्न है श्रौर उसके प्रति दिन सीवर निर्माण का श्रौसत १०-१/२ फुट है।

\*४६—श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या स्वायत्त शासन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि १६५५—५६ में जिस ठेकेदार से वाराणसी में सीवर लाइन बनाने का एग्रीमेन्ट था उसको कैंसिल करके जो दूसरे ठेकेदार से यह कार्य कराया गया उसको क्या रेट दिया गया ग्रौर कितने समय में उसने कितनी लम्बी सीवर लाइन बनाई ग्रौर कितनी लम्बी सीवर लाइन का कुल कितना रुपया इस ठेकेदार को भुगतान किया गया?

श्री जयराम वर्मी—श्री एस० एन० राय, ठेकेदार का ठेका कैंसिल करके सर्वश्री महन्तींसह एन्ड संस को दिया गया श्रीर उसके एग्रीमेन्ट के रेट की प्रतिलिपि संलग्न है। उन्होंने १६२ दिन में २७ इंच व्यास का इँट का सीवर कुल १,६२४ फुट बनाया श्रीर इसके लिये उन्हें कुल लगभग १,२१,५०० इपया भुगतान किया गया है।

श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या सरकार कृत्या बतायेगी कि १६५५-५६, १६५६-५७, ग्रौर १६५७-५८ में ग्रलग श्रलग श्री राय ने कितने कितने फीट सीवर लाइन डाली ?

श्री जयराम वर्मा-इस विस्तार की सूचना नहीं है।

श्री उपाध्यक्ष---श्रगर माननीय सदस्य ऐसे प्रश्नों में इंटरेस्टेड हों तो उनको व्योरे में देना चाहिए ।

<sup>†</sup>रेट की प्रतिलिपि छापी नहीं गयी।

श्री रामस्वरूप वर्मा—हिटेल में दिया था।

श्री उपाध्यक्ष-यह दिया था कि कितने दिन में कितनी लम्बी सीवर बनायी।

श्री रामस्वरूप वर्मा—मै दूसरा प्रक्ष्म पूछता हूं। क्या सरकार कृपया बतायेगी कि श्री महन्त ऐंड संस को ६४ हजार रुपये में १६२४ फीट सीवर लाइन बनाने को क्यों दिया, जबकि श्री राय ने उसी को बनाने के लिये ४० हजार रुपये के रेट दिये थे ?

श्री जयराम वर्मा—इसकी तो निश्चित सूचना नही है। इसके लिये सूचना की स्रावश्यकता है।

श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या यह सही है कि श्री महन्त ऐंड संस ने २२ फीट गहरी खुराई करके १६२४ फीट सीवर लाइन डाली जबकि श्री राय ने ढाई हजार फीट सीवर लाइन ३० फिट गहरी खुदाई करके डाली, तब श्री महन्त एंड संस को पेंचेट क्यों ज्यादा किया गया?

श्री जयराम वर्मा--विक्कत यह है कि इतनी विस्तार की सूचना नहीं है।

श्री राजनारायण--सरकार की स्रोर से जो सूचना दी गयी है क्या सरकार श्रपने उत्तर को देखेंगी कि जो ठेका श्री राय को एक हजार पर तीस रुपये का दिया गया वहीं श्री महत्त को २६ रुपये हजार दिया गया?

श्री उपाध्यक्ष--मं माननीय राजनारायण जी से कहूंगा कि जब विस्तृत सूचना नही है तो फिर से दूसरा प्रक्त पूछ लें।

श्री राजनारायण-उत्तर तो संलग्न है।

श्री उपाध्यक्ष—र्कर ग्राप पूछ लें। उनको भी सुविधा हो जायगी ग्रीर ग्रापको भी जपयुक्त जानकारी हो जायगी।

श्री रामस्वरूप वर्मा एक व्यवस्था का प्रदन है। जो हमको सूची दी गयी है, वह अंग्रेजी में दी गयी है। दुर्भाग्यवदा में योड़ी बहुत श्रंग्रेजी जानता हूं, लेकिन यह प्रथा श्रच्छी नहीं है। एक दिन मैने परिवहन मंत्री जी के उत्तर के संबंध में भी कहा था। जब सदन की भाषा हिन्दी है तो हिन्दी में ही श्रानी चाहिए। इस पर में श्रापकी व्यवस्था चाहता हूं।

श्री उपाध्यक्ष—व्यवस्था पहले भी दी जा चुकी है। धापका एतराज बिलकुल उचित है। मैं माननीय मंत्रिगण से धाग्रह करूंगा कि भविष्य में हिन्दी में ही सूची भेजी जाय।

# मैनपुरी में लगाये गए पम्पों के सम्बन्ध में शिकायत

\*५०-श्री रामदीन-स्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि क्या मैनपुरी शहर, जिला मैनपुरी, में जो सन् १६५६ में पानी पीने हेतु पम्य लगाये गये हैं उनके बारे में शिकायती पत्र सरकार के पास भाये हैं?

श्री जयराम वर्मा—सन् १९५६ में मैनपुरी शहर, जिला मैनपुरी, में स्वायत्त श्रासन भ्राभियंत्रण विभाग द्वारा कोई पम्प पानी पीने के हेतु नहीं लगाया गया है; भ्रतः उसके बारे में शिकायत-पत्र प्राप्त होने का प्रश्न नहीं उठता।

\*४१--श्री रामवीन--यि हां, तो उन पर क्या कार्यवाही हुई ?

भी जयराम वर्मा--उपरोक्त स्थिति में कार्यवाही का प्रश्न नहीं उठता।

प्रक्रोत्तर ७३३

श्री रामदीन—श्रीमन्, मैंने प्रश्न किया था कि सरकार बताने की कृपा करेगी कि क्या मैनपुरी शहर, जिला मैनपुरी, में सन् १९५९ में पानी पीने हेतु पम्प लगाये गये । मंत्री महोदय ने यह उत्तर दिया है कि स्वायत्त शासन विभाग की तरफ से कोई पानी के पम्प नहीं लगाये गये। तो यह मैं जानना चाहूंगा कि वे किस विभाग की तरफ से पम्प लगाये गये ? श्रीर प्रार्थना-पत्र कोई श्राया है जांच-तलब ?

श्री जयराम वर्मा —श्रीमान् जी, वहां पर जल संभरण योजना कार्यान्वित की गई है, लेकिन जो पम्प लगाने की बात कही गई है वह तो नहीं हुई है ग्रौर न कोई उसके बारे में शिकायत श्राई है।

## कानपुर नगरमहापालिका के उद्यान विभाग के कर्मचारी

\*४२—श्री राजनारायण — क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि म्युनिसिषल बोर्ड, कानपुर, के उद्यान विभाग के कर्मवारियों की फरवरी, सन् १६५७ में कोई मेडीकल जांच हुई थी ?

श्री जयराम वर्मा--जी नहीं।

\*५३—-श्री राजनारायण --यदि हां, तो क्या सरकार उक्त कर्मचारियों की लिस्ट व विवरण देने की क्रुग करेगी ? यदि नहीं, तो कब इस प्रकार की जांच सन् १९५४ के बाद श्रब तक हुई जिसके श्राधार पर कर्मचारियों की सर्विस बुक तैयार की गई ?

श्री जयराम वर्मा—सन् १९५४ के बाद इस प्रकार की जांच सन् १९५६ में हुई थी श्रीर उसके बाद सन् १९५९ से पुनः जारी है।

श्री राजनारायण—क्या सरकार बतायेगी कि जो जांच सन् १९५६ में हुई थी उसी के अनुसार वहां सर्विस बुक तैयार की गई है ?

श्री जयराम वर्मा -- हां, उसी के श्रनुसार तैयार की गई है।

श्री राजनारायण—क्या सरकार के पास कोई ऐसी सूचना भी श्राई है कि जो सर्विस बुक तैयार की गई है वह सन् १६५४ की जांच के मुताबिक तैयार की गई है श्रौर उसके बाद श्रभी तक कोई जांच नहीं हुई ?

श्री जयराम वर्मा--हमारे पास तो सूचना यही है कि १६५६ में भी जांच हुई श्रीर १६५६ में भी जांच शुरू हुई थी, वह श्रभी तक खत्म नहीं हुई है, जारी है।

श्री राजनारायण—क्या सरकार स्पष्ट करेगी कि १९५४ में जो जांच हुई थी ग्रौर किर १९५६ में जो जांच हुई, इन दोनों जांचों में क्या फर्क है ?

श्री जयराम वर्मा—ऐसा हो सकता है कि सन् १९५६ में बहुत से नये कर्मचारी हुये हों श्रौर उनकी श्रायु का प्रक्त रहा हो । उनके पास कोई लिखित प्रमाण न रहा हो, तो सिवाय मेडिकल एग्जामिनेशन के कोई श्रौर तरीका है नहीं ।

#### ग्रन्तरिम जिला परिषदों के उपाध्यक्षों के ग्रधिकारों में कमी

\*५४—श्री गौरीराम गुप्त—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि उत्तर प्रदेश के प्रत्येक जिले के जिला बोर्ड का श्रध्यक्ष, जो श्रव ग्रन्तरिम जिला परिषद् में उपाध्यक्ष हैं, पहले जिले की सरकार द्वारा निर्मित जिन बहुत सी कमेटियों का श्रध्यक्ष श्रथवा सदस्य रहा है, श्रव किन-किन कमेटियों का श्रध्यक्ष श्रथवा सदस्य नहीं रहा है ? श्री जयराम वर्मा--- ग्रब तक प्राप्त सूचना के ग्राधार पर उत्तर एक तालिका के रूप में सदन की मेज पर प्रस्तुत है।

(देखिये नत्थी 'ङ' श्रागे पुष्ठ ८००-८०१ पर )

\*५५—श्री गौरीराम गुप्त—क्या सरकार यह बताने की क्रवा करेगी कि जब से अन्तरिम जिला परिषद् का निर्माण हुआ है तब से ३१ दिसम्बर, १६५६ तक किन-किन जिलों के उपाध्यक्षों को अध्यक्षों द्वारा परिषद् का कार्य करने के लिये आदेश दिया गया है ?

श्री जयराम वर्मा— प्रव तक प्राप्त सूचना के श्रनुसार जिला देहरादून, सहारतपुर, मेरठ, बुलन्दशहर, श्रलीगढ़, मयुरा, श्रागरा, एटा, बरेली, मुरादाबाद, शाहजहांपुर, इटावा, कानपुर, इलाहाबाद, बांदा, झांसी, जालीन, वाराणसी, मिर्जापुर, जोनपुर, बिलया, बस्ती, श्राजमगढ़, वेविरया, नैनीताल, गढ़वाल, लखनऊ, रायबरेली, सीतापुर, हरदोई, खीरी, फैजाबाद, बहराइच, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़ तथा बाराबंकी के उपाध्यक्षों को श्रध्यक्षों द्वारा परिषद् का कार्य करने के लिये कुछ श्रिष्ठ कार हस्तान्तरित किये गये हैं। जिला बिजनीर से अभी सूचना नहीं प्राप्त हुई है। जीनपुर के उपाध्यक्ष को सौंपे गये श्रिककार २१-१२-५६ को वापस ले लिये गये।

श्री गौरीराम गुप्त---क्या सरकार यह बताने की क्रुया करेगी कि जब वह जिला बोर्ड का अध्यक्ष था तो बहुत सी कमेटियों का सदस्य था, ग्रीर ग्रब ग्रन्तरिम जिला परिषद् का उपाध्यक्ष है, तो उसकी सदस्यता से वह बंचित कर दिया गया है, तो क्या वह ग्रिककार उसे फिर देने की सरकार कुण करेगी?

श्री जयराम वर्मा---- यह तो ग्रलग-ग्रलग जिलों में ग्रलग-ग्रलग कार्यवाही हुई है। यह उन्हीं के ऊपर छोड़ दिया गया है, जैसा चाहें वे करें।

श्री रामसुन्दर पांडिय--क्या सरकार बतायेगी कि जीनपुर के उपाध्यक्ष से जो प्रविकार छीन लिये गये हैं, उसका कारण क्या है ?

श्री जयराम वर्मा--- ग्रध्यक्ष ने यह महसूस किया कि उपाध्यक्ष उन ग्रधिकारों का उचित प्रयोग नहीं कर रहे हैं।

श्री शिवप्रसाद नागर—क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की क्रा। करेगे कि श्रीर जगह के उपाध्यक्ष श्रविकारों का सद्पयोग कर रहे हे ?

श्री उपाध्यक्ष--जाहिर हं।

श्री गौरीराम गुप्त—क्या सरकार बतलाने की क्रा करेगी कि जिन जिलों में श्रध्यक्ष ने कुछ श्रिकार उपाध्यक्ष को हस्तान्तरित कर विये हैं श्रांर इनके श्रलावा उत्तर प्रवेश में जो जिले बच गये हैं उन जिलों के उपाध्यक्षों को भी मंत्री जी श्रिकार वेने की श्रूपा करेगे?

श्री उपाध्यक्ष--यह उन्होंने बता दिया है कि यह श्रध्यक्ष का श्रक्षिकार है। यदि वें दें तो मंत्री जी उनको मजबूर नहीं कर सकते।

## बरेली जिले में ग्राम पंचायतों व न्याय पंचायतों का निर्माण न होना

\*५६—श्री शिवराजबहादुर (भ्रनुपस्थित)—क्या सरकार यह बताने की क्र्या करेगी कि बरेली जिले में कितनी प्राम सभाग्रों में ग्राम पंचायतों का निर्माण नहीं हुन्ना है ? यदि ऐसा है, तो उनके निर्माण न होने का क्या कारण है, भीर ऐसी ग्राम सभाग्रों का प्रबन्ध किस प्रकार होता है ?

प्रश्नोत्तर ७३५

श्री विचित्रनारायण शर्मा—जिला बरेली की १,३७३ गांव सभाग्नों में २०० गांव सभाग्नें ऐसी है जिनमें गांव पंचायतों का निर्माण नहीं हुआ है। इनमें से १६६ गांव सभाग्नों में प्रधानों का निर्वाचन हो गया है परन्तु गांव पंचायत के लिये इतने सदस्यों का निर्वाचन नहीं हुआ कि कोरम भूरा हो सके। एक गांव सभा ऐसी भी है जिसके प्रधान का चुनाव भी नहीं हुआ है। फलस्वरूप यह गांव सभा कार्य नहीं कर रही है। प्रधानों के द्वारा, गांव सभाग्नों की बैठके न बुन्ताकर, कार्य का प्रबन्ध किया जाता है।

गांव सभाग्रों के निर्माण नहोने का कारण यह है कि दोवारा निर्वाचन कराने पर्भी श्रावश्यक संख्या में लोग निर्वाचन के लिये खड़े नहीं हुये। नाम निर्देशन के लिये भी प्रयत्न किया गया किन्तु सम्बद्व व्यक्तियों के नियत शुल्क न देने के कारण नाम निर्देशन भी पूरा नहीं किया जा सका है।

\*५७-श्री शिवराजबहादुर (श्रत्यस्थित)--नया सरकार यह बताने की छुपा करेगी कि बरेजी जिले में कितनी न्याय पंचायतों का निर्माण नहीं हुस्रा है ? यदि ऐसा है, तो उनके निर्माण नहोंने का क्या कारण है श्रीर जिन स्थानों पर न्याय पंचायतें नहीं हैं उन क्षेत्रों के याय पंचायत सम्बन्धी मुकदमों का निर्णय किस प्रकार होता है ?

श्री विचित्रतारायण शर्मा—केवल एक न्याय पंचायत का निर्माण श्रभी नहीं हुआ है क्योंकि उसमें सम्मिलित गांव पंचायत के निर्वाचित सदस्यों में से पंचों का नाम निर्देशन नहीं हो पाया है। जहां न्याय पंचायत नहीं स्थापित हुई है, वहां के निवासी श्रपने मुकदमे प्रचलित कानून तथा प्रथा के श्रनुसार जिले के न्यायालय में दायर कर सकते हैं।

#### बस्ती तथा देवरिया जिलों में समाज कल्याण कार्यों पर व्यय

\* ५८--श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी (ग्रनुपस्थित)--क्या समाज कल्याण मंत्री कृपया बतायगे कि जिला बस्ती को समाज कल्याण विभाग द्वारा कितनी-कितनी धनराशि सन् १९५४- ५५, १९५५-५६, १९५६-५७, १९५७-५८ में दी गई ग्रीर वह कहां-कहां खर्च की गई?

\*५६—क्या समाज कल्याण मंत्री पुपया बतायेगे कि जिला देवरिया को समाज कल्याण विभागद्वारा कितनी-कितनी धनराशि सन् १६५४-५५, १६५५-५६, १६५६-५७ तथा १६५७-५८ में दी गई ग्रौर वह कहां-कहां खर्च की गई है ?

श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य—वांछित सूचना संलग्न है। (देखिये नत्थी 'च' ग्रागे पृष्ठ ५०२-५०३ पर)

# बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिये ब्राजमगढ़ ब्रन्तरिम जिला परिषद् को दिये गये ब्रनुदान का व्यय

\* ६०—श्री रामसुन्दर पांडेय—क्या स्वायत्त शासन मंत्री बताने की छुपा करेंगे कि श्राजमगढ़ श्रन्तरिम जिला परिषद् की वित्तीय वर्ष १६५३—५४ से वित्तीय वर्ष १६५८—५६ तक क्षति-ग्रस्त बाढ़ पीड़ित क्षेत्र की सड़कों एवं भवनों की मरम्मत के लिये ग्रलग-ग्रलग वर्षों में कितना-कितना श्रनुदान दिया गया है तथा उसका उपयोग किन-किन वर्षों में किन-किन सड़कों तथा किन-किन भवनों की मरम्मत में कितना-कितना पया हुग्रा है ?

श्री जयराम वर्मा—प्रश्न का उत्तर देने के लिये ६ वर्षों के श्रांकड़े एकत्र करना है। यदि दो व्यक्ति केवल इसी कार्य के लिये नियुक्त किये जावे तो कम से कम दो मास का समय लग जावेगा। बहरहाल सूचना एकत्र की जा रही है। उपलब्ध हो जाने पर श्राक्वासन समिति कें देवारा सदस्य महोदय को बता दी जावेगी।

श्री रामसुन्दर पांडेय-- स्या स्वशासन मंत्री बनलाने की कृपा करेंगे कि जो १-३-६० को उत्तर दिया गया था उस हे देलने के बाद क्या यह सही है कि केवन ६ वर्ष का हिसाब नहीं हो। है बल्कि ३ वर्ष का ही हिसाब देना हे श्रीर यह ५ वर्ष का उत्तर विनकुत गनत है ?

श्री जयराम वर्मा--ाह यह चाहते हैं कि इन ६ वर्षों में किन-किन वर्षों में कितना-कितना भन कहां-कहां उसमें सर्च हुआ है । तो यह ६ वर्ष को बात तो है ही ।

### भ्रानन्द बाजार गोदौलिया का नक्जा

\*६१--श्री ऊदल--स्या सरकार श्रानन्त बाजार नं० ४०।२०, ४०।१६ गोदौलिया बाराणसी का जो नक्शा इम्प्रयमेंट दूरट के पास हुआ हे उसे सदन की में जपर रणने को कृपा करेगी?

श्री जयराम वर्मा--प्रास्ट्रित नाहों की प्रतिनिधि । सदन की मेज पर रख दी गई है।

\*६२—श्री ऊदल—नया सरकार लक्सा, जिला वाराणसी, में गुरुद्वारा के पास जो कटरा लोकपति त्रिपाठी का बना है जिसका नक्सा इम्प्र्यक्षट दूरट, वाराणसी, ने पास किया है उसकी सदन की मेज पर रलने की कृपा करेगी ?

श्री जयराम वर्म — पुरद्वारा के पास इम्प्रयमेंट दूरट ने श्री लोकपति त्रिपाठी के नाम का कोई नक्शा पास नहीं किया है।

श्री ऊदल—- १४ माननीय मंत्री जी के पास ऐसी सूचना है कि ४०/२७ और ४०/१६ के लिये जो नक्शा उन्होंने कहा कि हमारे पास नहीं है वह नक्शा मकान मालक न मरम्मत के लिये दिया था? वह मरम्मत न करा कर उस मकान का पूरा नक्शा बदल दिया और मकान को नया क्य वे दिया?

श्री जयराम वर्मा --दम मानिक मकान ने कई बार प्रायंना-पत्र विया। पहली बार प्रार्थना-पत्र ६ जनवरी, ५ द को विया मरम्मन के नियं। जह मन्त्र हो गया और मरमत करा ली। उसके बाव फिर दूसरा प्रायंना-पत्र २७ फरवरी, ५ द को विया कि कुछ एडीजन और शास्टरेशन करना खाहते हैं। उसकी मन्त्र में भी बंबी गई। ऐसा हो जाने के बाद फिर उन्होंने प्रार्थना-पत्र विया जिसमें और तक्वीली की बात कही गई थी। उस तक्वीली को बगर परिमान के ही उन्होंने करा लिया, संकिन जब उसकी जांच की गई का तक्वीली जलार हुई परन्तु वह तब्बीली कुछ ऐसी नहीं थी जो नियम के विवद्ध कही जाय। इस्मियं यह तक्कीनी भी मन्त्र कर ली गई।

श्री राजनारायण--श्या सरकार अतलायेगी कि वह कटरा किसका है श्रीर उसके मालिक कौन है ?

श्री जयराम वम<sup>6</sup>--- यह प्रक्त तो यहां पर नवको के सम्बन्ध में है।

भी राजनारायण-इसमें कहा है कि यह लोकवित विवाठी का कटरा बना है ?

भी उपाध्यक्ष-उन्होंने कहा कि वह उस नाम से पास होने के लिये नहीं भाषा ।

श्री अवस्य-क्या माननीय मंत्री जी मेरी सकता मानकर इस बात की जांच करायें। कि ४०/२७ और ४०/१६ के लिये जिस तकह से उन्होंने बरान्यारम की थी उसी के मनुसार उन्होंने कराया है, इसकी जांच करायेंगे ?

श्री जयराम वर्मी-मैंने बताया कि उन्होंने कई (प्रार्थना-पत्र विये । उनको बार बारवेला गया और शास्त्रित में बर्गर इजाजत के जो तक्की की यो उनको देखने के बाद इस नतीजे पर पहुंचे कि वह नियम विरुद्ध नहीं है ।

<sup>†</sup> नवशे की प्रतिलिपि **प्रा**पी महीं गई ।

### उपाध्यक्ष, ग्रन्तरिम जिला परिषद्, शाहजहांपुर, से श्रधिकार वापस लेने की प्रार्थना

\*६३—श्री रूमिंसह (जिला शाहजहांपुर)—क्या स्वायत्त शासन मंत्री बताने की कृपा करेगे कि जिला शाहजहांपुर में स्नन्तरिम जिला परिषद् के स्निवकांश सदस्यों ने उपाध्यक्ष, स्नन्तरिम जिला परिषद् से स्रिवकार वापस लेने के वास्ते जिलाधीश को फरवरी, १६६० के प्रथम सप्ताह में प्रार्थना-पत्र दिया था ? यदि हां, तो उस पर जिलाधीश महोदय ने क्या कार्यवाही की ?

श्री जयराम वर्मा -- जो हां । उक्त प्रार्थना-पत्र श्रभी जिलाधीश के विचाराधीन है।

# जालौन ग्रन्तरिम जिला परिषद् का ग्रनुदान

\*६४--राजा वीरेन्द्रशाह (जिला जालीन)--क्या स्वायत्त शासन मंत्री बताने की कृया करेंगे कि जालीन श्रन्तरिम जिला परिषद् जब से बनी तब से सन् १९४९ तक कितना रुपया जिला की सड़कों, स्कूल की इमारतों की मरम्मत के लिये ग्रान्ट में राज्य सरकार द्वारा दिया गया श्रीर कितना परिषद् द्वारा तदर्थ खर्च किया गया ?

श्री विचित्रनारायण शर्मा—ग्रन्तरिम जिला परिषद्, जालीन को उसके बनाने की तिथि ३०-५-५८ से ३१-१२-५६ तक सड़कों तथा स्कूलों को इमारतों की मरम्मत के लिये राज्य सरकारद्वारा दिये गये अनुदानों तथा परिषद् द्वारा उन अनुदानों के व्यय से सम्बन्धित सूचना निम्न प्रकार है:

	राजाज्ञा संख्या व दिनांक	श्चनुदान	परिषद् द्वारा व्यय						
	₹	₹	₹						
	(क) सड़कों की मरम्मत ४०४३सी '६-ए—५०-सी-जी (६)-५७, दिनांक ७ स्रगस्त, १६५८	<b>. १३,६२</b> ५ <b>. १</b> ≈,३००	१६,६६५						
	(ख) स्कूल भवनों की मरम्मत								
(₹)	डी॰ ए॰ १(१) बी/२८३८/३१ए-२(४७)-४८- ५६,दिनांक २८ जनवरी,१६५६ ••	३०,०००	१,०००						
(۶)	वी-१६८७/१५, दिनांक १३ मार्च, १६५६ • •	२०,०००	• •						

नोड--तारांकित प्रश्न ६३ क उपरान्त प्रश्नोत्तर का समय समाप्त हो गया ।

नगर महापालिकास्रों तथा नगरपालिकास्रो म उपटेशन पर श्राये श्राक्षि सुपरिण्टेण्डेन्ट

६५—श्री पद्माकरानान श्रीयास्त्य (किता प्राप्तमगत्र)—क्या स्वायत काल मंत्री कृपा कर बतायेंगे कि प्रकृत के कित-कित नगर महापातिकाम्रा तथा नगरपालिकामें श्राफिस सपरिन्टेन्डेन्ट के पद पर कार्य करन क्षा कितन एस त्यक्ति हु जो दूसरे सक्ता विभागों से डेपटेशन पर लिये गय हैं '

श्री विचित्रनारायण शर्मा-- मृतना एका की जा रही है।

'६६—श्री पद्माकरलाल श्रीत्रास्तव - प्यारगान गामन मंत्री कृपा कर य बतायेंगे कि उक्त हेप्टेशन म कार्य करन जा न सनी समनारिया राज्य सरकार ने प्रपत्ती स्वीकृति प्रदान कर दी है ?

श्री विचित्रनारायण शर्मा- - गुचना पान होन पर बान का जाउगी।

\*६७--श्री पव्माकरलाल श्रीयारतय श्रारामन भागन मत्री ऐसे कर्मनित्य की सूची सवन की मेज पर इस मुखना क साम रखा कि उनम स अन्यर कितने विनो से कित सरकारी विभाग से हेपुटेशन पर लिया गया ह ?

श्री विचित्रनारायण शर्मा--मृनना एर व को ना रहा है।

## ष्रतारांकित प्रदन

१-३--श्री गौरीराम गृप्त---'हरा (य गय ) श्राजमगढ़ जिले में पंचायत मान्त्रयों का निलम्बन

४—श्री मुक्तिनाथराय—स्यारदायन दायन सथा बरान को क्या करोंकि आजमगढ़ जिले में १६४८ व १-१-४६ स ११ तदा ११४६ तर कि तनपन्तायत मत्री निलिक्ति हुए घोर उक्त ध्यांष्य में निलिक्बन कितन पनाथर मश्री ध्यान पदा पर बहाल हुए और अभे कितने पंजायन मन्त्रियों के निलम्बन पर काई निलय नहा हुया '

श्री विचित्रनारायण शर्मा—सातमान ति । मान ११४० ११ जनवनी, १६४६ से ३१ जुनाई, १६४६ तक की अर्थाय मान अमदा १४ व १० पनाया मान निर्नामित हुए और उक्त अर्थाय में उनमें से त्रमधा १४ व १० पनाया मान पान वर्षा पर बहाल हुंगे। उनमें से इस समय किसी पनायत माने का मामना अनिवास नाम ।

५—श्री मुक्तिनाथराय—क्या रवायत शासन महा बाल है। ह्या करेंगे कि व्या यह सही है कि ग्राजमगढ़ जिल म कन्द्र पनाया भाषा सन ११४० मानि विश्वत किये गये किनु उनके मामले ग्रभी तक निर्णात नहीं किया गर्भी यो। हा, तो क्या कारण है ?

# श्री विचित्रनारायण शर्मा—जी तहा।

६—श्री मुक्तिनाय राय—क्या स्थायल झासन मनी बताने मी कृता करेंगे कि व्याव् सही है कि आजमनद जिले में पश्चायल के कृद्द मीन्त्रया तथा पथाया निरोधक कार्यालय के कलकों को सन् १६५२ व १६५७ के विधान सभावा के श्रांस था। वे समय का पारिशिक अभी तक नहीं मिल सका है ? यांब हा, का कितने व्यावन्त्रया का और जितना देना वाणी है ?

श्री विचित्रनारायण शर्मा—जी नहीं। इस समय भृगशन के लिये कोई कि। शेष नहीं ह। प्रश्नोत्तर ७३८

७—श्री मुक्तिनाथराय—क्या स्वायत्त शासन मंत्री बताने की कृपा करेगे कि श्राजमगढ़ जिले मे पंचायत निरीक्षक कार्यालयों के लिये प्रति मास तथा प्रत्येक पंचायत मंत्री को प्रति मास कितना व्यय स्टेशनरी के निमित्त दिया जाता है?

श्री विचित्रनारायण शर्मा—पंचायत निरीक्षक कार्यालयो के लिये स्टेशनरी के निमित्त कोई घन नही दिया जाता है तथा पंचायत मंत्री लेखन-सामग्री हेतु प्रत्येक गांव सभा मे ५० नये पैसे प्रति मास सीधे ही प्राप्त कर लेते हैं।

# प्रक्तों के सम्बन्ध में व्यवस्था की मांग

श्री पद्माकरलाल श्रीवास्तव (जिला ग्राजमगढ़)—प्रश्नों के सम्बन्ध में मैं एक व्यवस्था चाहता हूं।

श्री उपाध्यक्ष--मेने म्राप लोगों से सविनय निवेदन किया....

श्री पदमाकरलाल श्रीवास्तव--में एक मिनट में ही भ्रयनी बात कह दूंगा।

श्री उपाध्यक्ष—-ग्राप कृपा कर उसे लिख कर भेज दीजिये। 'ग्राफ हैंड' में उसका क्या जवाब दूंगा? ग्राप मंत्री जी के खिलाफ शिकायत होगी तो में उसे देख लूंगा, ग्राप जिद न करें।

श्री पद्माकरलाल श्रीवास्तव—में लिख कर दे दूंगा, लेकिन सदन में श्राप श्रपनी व्यवस्था दे दीजिये ताकि उसकी पुनरावृत्ति न हो सके। बड़ा हास्यास्पद हो रहा है..

श्री उपाध्यक्ष--ग्राप लिख कर दे दीजिये ग्रौर मेरा निवेदन मानिये।

हाई स्कूल स्रौर इंटरमीडिएट बोर्ड के इम्तहान के कारण मुसलमान परीक्षािथयों को जुमा की नमाज से वंचित करने के सम्बन्ध में नियम ५२ के स्रन्तर्गत सूचना

श्री उपाध्यक्ष—मेरे पास नियम ५२ के श्रन्तर्गत ३ प्रश्न उपस्थित किये गये है, जिनमें सबसे महत्व का प्रश्न में श्री श्रद्धुल रऊफ लारी का समझता हूं। वह इस प्रकार है: "हाई स्कूल श्रौर इन्टरमीडियेट बोर्ड, उत्तर प्रदेश ने इंटर की परीक्षा के दो पर्चे पहली श्रप्रैल व द श्रप्रैल को, शुक्रवार को, ११ बजे दिन से ढाई बजे दिन तक रखे है। इससे श्राम मुसलमान विद्यार्थियों को जुमा की नमाज से वंचित कर दिया जाता है, जिससे श्राम मुसलमानों में बड़ी बेचैनी है।"

में माननीय मंत्री जी से इस सम्बन्ध में स्थिति स्पष्ट कराना चाहूंगा।

शिक्षा उप मन्त्री (श्री दीनदयालु शास्त्री) —श्रीमन्, यह तो ग्राज ही मिला है ग्रीर इलाहाबाद से इस बारे में इसला मंगवायी गयी है। परसों इस सम्बन्ध में बतला सक्ंगा।

श्री उपाध्यक्ष—ठीक है। मैने इसी को सबसे महत्व का समझा, इसलिये ले लिया; श्रौर सब श्रपनी जगह पर रह गये।

# पूर्वी जिलों में ग्रोला-वृष्टि के सम्बन्ध में वक्तव्य की मांग

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया) — माननीय मंत्री जी ने कल सदन में कहा था कि वह सभी जिलों से श्रोला-वृष्टि श्रादि के बारे में सूचना मंगा रहे हैं कि कहां कितना श्रोला पड़ा, कहां कितना नुकसान हुआ। पूर्वी जनपद में इससे बड़ा नुकक्षान हुआ है। तो वया माननीय मंत्री जी इस बारे में कोई व्यक्तव्य देंगे ताकि स्थित स्पष्ट हो जाय? न्याय मन्त्री (श्री हकुमसिंह दिसेन) - ए गारा गाराही रही है। कतई तौर पर अभी नहीं आयी है। अगर आज ही परी हो गरी का याज ही नहीं तो बल या परसों तक, यक्तव्य वे संयूगा।

मिलयाना शुगर मिल, मेरठ, को मिल्याना गांव की भूमि का बलपूर्वक पुलिस द्वारा कटजा दिलाने के राम्बन्ध में नियम ४२ के अन्तर्गत गृह उप-मंत्री का वक्तव्य

श्री उपाध्यक्ष-श्री रामरजरूप वर्मा की मृत्रना पर मिलाना जगर मिल के सम्बन्ध में गृह मंत्री जी श्राज वक्तत्य देने।

गृह उप-मंत्री (श्री रामस्यस्य याद्य) — उपाय गर्गाः, मान्त शगर मिल ने एक नादनं इडिया पेपर मितस मितियाना गार्य में स्थापित १२० मी याजना बनायी है। उसका इम्पोर्ट लाइसेस केन्द्रीय सरकार ने दें रिया है श्रीर उर १ म्पानी १ ४ माइन मारपोरेट हुई। उन्होंने श्रापने गोवाम श्रावि बनान के लिय ४४ बीप्रा जमान नन में एप निर्देश विया। धारा ४, लंड एस्वीजीयन ऐक्ट, के पानमार १२ सितम्बर, १६४ मा समा जिल्ला और २१ जनवरी, १६४६ को धारा ४०, सब सम्प्रान (०) म पानमा मन्य में जिलापोदा में उसकी जांच करायी गयी। जान्य के फ स्थान यह पाया गणा मि समान उन्तित ही है और अन्य कोई स्थान नहीं था जहां पर अर्जात अर्थान करायों न साम ।

इस हे बाव घारा दे, सान् हे द्वान (याई), श्रीर धारा १ (१) । धानार १० श्रक्ट्बर, १६४६ को गजट में उस भूमि है बार म नार्तिफ हड़ान निकास । धानार व सब-सेव्हान (१) के अनुपार १२-१०-४६ का निन सकतना के उपर देखका धारार धाना या पाना उपर नेटिस तामील हुई श्रीर तहसील द्वार के पाप, १४ विन का समय समापन होने पर, धान्या भेज दिये परे कि वह भूमि का पजेहान दे हैं। २४-११-४६ का कि हा के प्रधान है गोगा ने उन्च न्यायालय में एक दे विया गया। उन्होंने उस पर कर्या हर निया। इधर १३ नागा ने उन्च न्यायालय में एक रिट वायर कर विया श्रीर उसम २ -११-४६ का रह श्राणर हो गया। उस बाद ६-२-६० को उच्च न्यायालय द्वारा वह श्रा श्रंर भग कर विया गया। फिर १० २-६० को मिल के श्रीक कारियों ने पुलिस की सहायना मागी किससे कि थे उस भित पर अपना भागा भाग बनाया सके।

२०-३-६० की बाम को बृद लोग जिलाधीय से भी भिरे कोर उन्होंने प्रपत्ती बातों को उनके सामने रखा। उन्होंने एक माग तो यह रखा कि उन खला भ जा पत्सल लड़ी हुई है उसको काटने का उनको क्रांधकार विया जाय और जब तक वह कट न जाय तब तक वहां कोई इमारत न बने। नियमों के अनुसार तो विकाल थी, किन्सू निलाधीय ने उनको यह परामर्श विया था कि यवि कोई क्षगढ़ा न हो, तो जब तक फलाल न कर आयं तब तक के निये उस जगह इमारत न बनायी जाय। यह भी मांग की गयी कि जिन लागा का गिरफार किया गया है उनको छोड़ विया जाय। उसके लिये उन्होंने जो जमानते दीं ये मज़र हो गयी, किन्तु जमानत वालिन नहीं हुई। जमानत वालिन होने पर बे खोड़ विये जायेंग। जिलाधीय के पास और कोई जिकायत नहीं आई कि पुलिस ने ज्यावती की।

#### मिलयाना शुगर मिल, मेरठ को मिलयाना गांव की भूमि का बलपूर्वक पुलिस द्वारा कब्जा दिलाने के सम्बन्ध में नियन ५२ के झन्तर्गत गृह उप-मंत्री का वक्तव्य

श्री रामस्वरूप वर्मा (जिला कानपुर)—क्या माननीय मंत्री जी को ज्ञात है कि जो गत्ता मिन पहाने से मौजूद हैं उसमें वही माल इस्तेमाल होता है जो पेपर मिल में होता है ?

श्री रामस्वरूप यादव--इसके लिये सूचना की स्नावश्यकता है।

श्राचार्य दीपंकर (जिला मेरठ)—क्या माननीय नंबि की को ज्ञात है कि उन किसानों की हालत बहुत खराब है श्रीर इस जमीन के निकल जाने से वे बि कुल बरबाद हो जायेंगे? श्रीर पुलिस का व्यवहार वहां के किसानों के साथ श्रमान्य रहा—क्या यह रिपोर्ट उनके पास श्राई है?

श्री रामस्वरूप यादव—मैने, श्रीमन्, निवेदन किया कि जिलाधीक्ष से २० तारीख़ की शाम को ये तोन मिले थे। उन्होंने कोई दुर्व्यवहार की शिकायत नहीं की। श्रव उनकी स्थित कैसी है, इसकी जानकारी नहीं है। पेपर मिल का बनना जरूरी था, इसलिये भूमि उनको दी गयी।

श्रीमती प्रकाशवती सूद (जिला मेरठ)—क्या सरफार को इस बात की जानकारी है कि उन काश्तकारों के पास श्रपनी रोजी का दूसरा कोई जरिया नहीं है ?

श्री रामस्वरूप यादव-इसकी जानकारी इस समय नहीं है।

श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या यह सही है कि उन कियानों से, जिनकी यह जमीन ली गयी है, श्रीर मिल के मालिकों से कुछ मुश्राहिदा हुश्रा था कि इसके नजदीक जो फार्म लगा हुश्रा है वहां एक सड़क निकाली जायेगी श्रीर उस मिल का गन्दा पानी उनको दिया जायेगा ?

श्री रामस्वरूप यादव--इस मुग्राहिदे की जानकारी इस दक्त मेरे पास नहीं है।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल (जिला श्रागरा)—इस बात को ध्यान में रखते हुए कि देश के संविधान श्रौर कानून की दृष्टि में पुरुषों श्रौर महिलाश्रों में कोई भेद-भाव नहीं है, लेकिन यह यौन के श्राधार पर भेद-भाव क्यों किया गया कि पुरुष गिरफ्तार किये गये श्रौर महिलाएं गिरफ्तार नहीं को गर्यों?

## (हंसी--उत्तर नहीं दिया गया।)

श्री ऊदल (जिला वाराणसी)—क्या माननीय मंत्री जी इस बात की जांच करायेंगे, जैसा कि स्रभी माननीय वर्मा जी ने कहा है, कि इस तरह का समझौता मिल वालों ग्रौर किसानों के दिनयान हुग्रा था, क्या इसकी जांच करा करके उचित कार्ययाही करने की कृपा करेंगे?

श्री रामस्वरूप यादव—जांच की श्रावश्यकता तो नहीं समझी जाती है। श्रगर वहां के लोगों को शिकायत हो तो वह डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के सामने जा सकते है।

श्री हरीसिंह (जिला मेरठ)—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जो उस क्षेत्र के स्थानीय एम० एल० एज० थे उनसे भी पूछा गया था कि कितने झत्याचार काश्तकारों के ऊपर हुए ग्रौर मिल मालिक के पास १,००० एकड़ से ग्रधिक भूमि मौजूद है ?

श्री रामस्वरूप यादव--एम० एल० एज० से तो कुछ नहीं पूछा गया।

श्री राजनारायण (जिला वाराणसी)—क्या सरकार इसका कारण स्पष्ट करेगी कि सरकार ने जो इस सदन में नीति घोषित की थी कि जिन खेतों में किसानों की फसल खड़ी होगी, जब तक वह फसल नहीं काटी जायगी तब तक सरकार नहर के लिए या श्रौर इस प्रकार के कामों के लिये जमीन श्रक्वायर नहीं करेगी, तो उसके विपरीत कार्यवाही क्यों की गमी?

श्री रामस्वरूप यादव — बीमन् एमोजी जन को काप प्रान्ति बहुत पहने से जारी थी। पजे जन भी जो हु प्रार्ट के मेने निवेदन किया कि २० सक्तर, १६४६ को ही चुका था और प्राक् की स्थिति में श्रमर को क्रियान की किया जायमा ना कि कि की किया को परामर्श दियाग्या है कि वह श्रमनी फसन को काए ता।

श्री शिवप्रसाद नागर (जिस गोरो)— तथा भरी जी बराने की छुपा करेंगे कि जिन किसानों की भूमि लें ली गयी है योर उन्हें बेरानगार कर दिया गया है, क्या मिल बालों से ऐसी कोई शतं करने की कृता करेंगे कि उन किसाना का उन मिला म रणने के लिए प्राथमिकता दी जाय और उनके बच्चों को भी बटा एक स्थान दिया जाय ?

श्री रामस्वरूप यादव-ोगी किमी धर्न की श्राम यकता नहीं है, लेकिन जहां मिलें कायम होती है वहा श्रास-पास के लोगा को रोजधार भिक्ता ही है।

श्राचार्यं दीपंकर---वेर इस कथन हा मचना भाग हर हि प्रान्त न उस गाव के किसाते पर जबदंस्त श्रातंक मवाया, स्था मत्री जी इक्यायरी कराने का कृषा करेंगे ?

श्री रामस्वरूप यादव—मेरी सचना होक ऐसी का शिक्षापत जिलाधीश को नहीं की गयी, लिहाजा देववायरो की जरूरत नहीं है। श्रमर व्योध शिक्षाप का शिक्षापत हो तो लिख कर वें, तब जांच करायों जा सकती है।

श्रीमती प्रकाशवती सूद—स्या सरकार कृषा करक यह आच करावेगी कि ज काइतकारों के पास कोई दूसरा जरिया गजर का नहां है। श्रीर यह मन हों हो उसके लिये सरकार कोई प्रबन्ध करावेगी कि उनकी गुनर के लिए कोई प्रनग सरना निकन ?

श्री रामस्वरूप यादव श्रीमन, जब कभी वह एक्तीजीशन म भूमि ली जाती है तो हमेशा यही परिस्थित श्रानी है, भेशिन सरकार का थार म का दूसरा राजगार नही विया जाता, मुख्यांवजा विया जाना है।

श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या सरकार का जात है कि तम मिल मानिक ने इस मिल की स्थापना के लिए भूमि मागी थी तो उसने वह धागार जिल्लामा होगा कि फितनी उसकी भमता होगी ब्रीर कितन रवेंस की जरूरत होगी, तो उस ब्राधार पर भूमि नी गयी है या किसी ब्रोर ब्राधार पर ली गयी है, इसको जान मही जी करायग !

श्री रामस्वरूप यादव—नह ए त्योजीझन ऐवट की कार्यवारी म निया हुआ है कि पहते जरूरियाल को लिख कर भेजले हैं कि यहां गीवाम बनायग, पित उसकी जात के बाव ही जो विक्राण्य होती है, वह निकाली जाती है।

# २१ मार्चे, १९६० तक श्राय-व्ययक पर वाद-विवाद के भाषणों का विवरण

ं श्री उपाध्यक्ष—कल श्री राजनारायण द्वारा इस बात की धार्मात की गई थीं कि उनकी पार्टी के सबस्यों को बोलने का अवसर कम दिया जाता है।

इस तम्बन्ध में मेने जांच कराई जिसमें पता चना कि बजट पर मामाना विवाद एवं प्रनुदानों की मांगों पर विवाद में २१ मार्च, १९६० तक माधाणां की कृत संक्या ४४८ थी।

विभिन्न पार्टियों के सदस्यों की संख्या, पार्टियों के सदस्यों द्वारा दिये गये भाषणों की संख्या तथा उसका श्रनुपात निम्नलिखित हैं:—

पार्टी का नाम	सदस्यों की संख्या	सदस्यों का प्रतिकृत	दिये गये भाषणों की संख्या	भाषणों का प्रतिशत
कांग्रेस	२६२	६७.६	<del></del>	५०.२
प्रजा समाजवादी दल	88	१०.२	६५	१४.५
स्व० प्र० घा० स० दल	२६	६.७	२३	५.१
सोशलिस्ट पार्टी 🕠	२०	<b>૪.</b> ૭	४६	११.०
जन संघ 🕠	१४	₹.३	२६	६.५
कम्युनिस्ट पार्टी	११	२.६	२३	५.१
समाजवादी एकता दल	१२	२.=	₹8	६.५
स्वतंत्र	듁	१.८	Ä	<b>१.१</b>
— योग	४३०	१००	४४८	१००

कुल १६६ माननीय सदस्य बोले और उन सबने ४४८ भाषण दिये। विभिन्न विरोधी दलों के नेताओं द्वारा दिये गये भाषणों की संख्या इस प्रकार है:—

श्री नारायणदत्त तिवारी		• •		₹
श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल	• •	• •	• •	₹
श्री राजनारायण	• •	• •	• •	3
राजा यादवेन्द्र दत्त दुबे		• •	• •	ጻ
श्री झारखंडे राय		• •	• •	२
श्री दीपंकर	• •	• •	• •	ጸ

इन श्रांकड़ों से स्पष्ट है कि सोशिलस्ट पार्टी के सदस्य, पार्टी की संख्या को देखते हुए, श्रन्य दलों के श्रनुपात में सब से श्रिधिक बोले है और उसी दल के नेता, श्री राजनारायण, ने सबसे श्रिधिक भाषण दिये हैं——जिनकी संख्या ६ है।

श्री मोतीलाल श्रवस्थी (जिला कानपुर)—व्यवस्था का प्रक्त है। श्राप ने जो श्रांकड़े दिये उसमें श्रापने उस समय को क्षामिल नहीं किया जो कि कांग्रेस की तरफ से मन्त्रिगण लेते हैं। श्रगर इसमें मन्त्रिगण का टोटल समय मिला लिया जाय श्रौर फिर श्रनुपात देखा जाय तो इस प्रकार का श्रनुपात नहीं निकलेगा। यह श्रनुपात जो निकला है वह गलत है।

श्री राजनारायण (जिला वाराणसी)—श्रीमन्, मै श्रापसे निवेदन करूंगा कि श्रापने जो यह सूची पढ़कर सदन की सुनायी इस के लिए हम श्राप के बड़े श्राभारी हैं, मगर मेरा जो प्रश्न या वह दूसरा था। मैंने निवेदन किया था कि पंचायत विभाग के श्रनुदान पर सम्भवतः मेरे दल के एक व्यक्ति को भी नहीं बोलने दिया गया, एक मेरा प्रश्न यह था। दूसरे मै पुनः निवेदन करूंगा कि विभिन्न दलों के किन-किन नेताश्रों ने कितनी बार बोलने की इच्छा की श्रीर कितने दिनों तक सदन में उपस्थित रहे, उसका श्रनुपात बतावें तब सत्य का उद्घाटन होगा। हो सकता है कि मै हर श्रनुदान पर बोलना चाहूं श्रीर हर रोज सदन में उपस्थित रहूं तो मेरी संख्या श्रवश्य ज्यादा हो जायगी लेकिन इसका यह श्र्यं नहीं होता कि दूसरे लोगों को बोलने नहीं दिया गया श्रीर हम को बोलने दिया गया।

<sup>\*</sup> इनमें श्री टीकाराम पूजारी के ६ भाषण भी सम्मिलित हैं।

श्री उपाध्यक्ष—िकतनी बार कोई माननीय सदस्य खड़े हुए, इसके लिए में माननीय मुख्य मन्त्री जी से निवेदन फरूंगा कि होई ऐनी मशीन लगाने की व्यवस्था करे जिससे इसका पता चल सके तभी, इसका उत्तर दिया जा सकता है। (बहुत जोर की हंसी)

श्री राजनारायण-प्राप हाजिरो देव सकते हैं कि कोन नेता कितने दिन हाजिर रहे।

श्री उपाध्यक्ष-नेकिन खड़े हुत्रे या नहीं, यह कहना बड़ा मुश्किल है।

श्री केशव पांडेय (जिनागोर बाउर)—-उपाध्यक्ष महोश्य, श्रापने जो भाषणों की तालिका बतलायी है, श्रापकी बड़ो कुपा होती श्रगर श्राप यह भी नोट करके बताते कि बीच बीच में कितने विद्युत किसकी ग्रोर से हुग्रा करते हैं।

श्री उपाध्यक्ष--- ने चाहता हूं कि इस किस्म के प्रश्न न उठाये जायं जिस से माननीय सदस्यों के मन में मनमुटाव पैदा हो।

# श्रनुदान से सम्बन्धित साहित्य के समय से वितरण की मांग

श्री गोविन्दिसिह विषट (जिला श्रत्मोड़ा)—उपाध्यक्ष महोदय, में एक चीज की तरफ माननीय मह्य मन्त्री श्रीर श्रन्य मन्त्रियों का ध्यान श्राक्षित करना चाहता हूं श्रीर वह यह कि विभिन्न विभागों की श्रीर से लाखों रुपया किताबों के छापने पर खर्व किया जाता है, मगर हर साल हमें वह माहित्य तब मिलता है जब कि श्रनुदान शुरू होता है श्रीर कभी उस के बाद मिलता है। नतीजा यह होता है कि माननीय सदस्य उनका कोई उपयोग नहीं कर पाते श्रीर कभी कभी कोई कांग्रेम के माननीय सदस्य उन किताबों में नोट भी रख देने हैं जोकि रद्दी में उन किताबों के साथ ही चले जाते हैं श्रीर वापिस नहीं मिलते। में ममझना हूं कि सरकार की भी यही मंद्रा होती है कि हम उस साहित्य का सवुपयोग करे लेकिन हम यह कर नही पाते क्योंकि वह बंडल के बंडल श्राजाते हैं श्रीर विभागों का यह श्रादेश होता है कि श्रगर ता० २५ को उनका श्रनुदान है तो उसकी सुबह ही उसकी बांटा जाय। इससे होता यह है कि सरकार का जो रुपया इन पर खर्व होता है वह बेकार खर्व हो जाता है श्रीर उसका लाभ कोई नहीं उठा पाता; कारण कि जो श्रनुदान जिस दिन रखा जाता है उसका साहित्य श्रगर बाव को मिले तो उसी शाम को भी उसका महत्य खत्म हो जाता है।

मुख्य मन्त्री (डाक्टर सम्पूर्णानन्द)—मुझे इस बात का बुःख है कि जो साहित्य बांटा जाता है वह समय से नहीं मिलता है। हमारी कोशिश जरूर यह रहती है कि जो लेटेस्ट सूचना मिल सके वह इन रिपोर्टों में शामिल कर दी जाय ग्रीर यह भी कि वह काफी समय पहले मेम्बरों को मिल जाय; फिर भी अगर ऐसा नहीं हुग्रा तो इसका मुझे श्रकतोस है। में श्रागे कोशिश करूंगा कि इस किस्म की शिकायत न हो।

# १९६०–६१ के म्राय–व्ययक में म्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—म्रनुदान संख्या १—लेखा शीर्षक ४—वृहत् जोत-कर की उगाही पर व्यय

न्याय मंत्री (श्री हुकुमसिंह विसेन)—उपाध्यक्ष महोवय, में श्री राज्यपाल महोवय की सिफारिश से यह प्रस्ताव करता हूं कि अनुवान संख्या १—वृहत् जोत-कर की उगाही पर अयय—लेखा शीर्षक : ४—निगम-कर और सम्पत्ति शुल्क को छोड़ कर आय पर कर के अन्तर्गत २,६८,१०० वपये की मांग वित्तीय वर्ष १६६०—६१ के लिए स्वीकार की जाय।

# १६६०-६१ के ग्राय व्ययक में प्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-ग्रनुदान संख्या १--लेखा शीर्षक ४--वृहत् जोत-कर की उगाही पर

श्री उपाध्यक्ष — प्रश्न यह है कि स्रनुदान मंख्या १—-वृहत् जोतकर की उगाही पर व्यय —-लेबा शोर्षक : ४—-निगम-कर स्रोर सम्पत्ति शुल्क को छोड़कर स्राय पर कर के स्रन्तर्गत २,६८,१०० रुपये की मांग विलोय वर्ष १६६०-६१ के लिए स्वीकार की जाय।

(प्रक्त उपस्थित किया गया ग्रौर स्वीकृत हुग्रा।)

# ग्रनुदान संख्या ३८——लेखा शीर्षक ५४——दुर्भिक्ष सहायता तथा ग्रनुदान संख्या २——लेखा शीर्षक ७——भू—राजस्व(मालगुजारो)

श्री हुकुर्मीसह विसेन—में राज्यनाल महोदय की सिकारिश से यह प्रस्ताव करता हूं कि स्रतुदान तंश्या ३८—-दुर्भिन्न सहायता—-लेबा शोर्षकः १४—-दुर्भिन्न स्रौर दुर्भिन्न सहायता निवि को संक्रित घतराक्षि के स्रत्यांत ३४,१६,१०० छनये की मांग वितीय वर्ष १९६०-६१ के लिए स्वीकार की जाय।

श्रोमन्, में श्रो राज्यनाल महोदय की सिकारिश से प्रस्ताव करता हूं कि श्रनुदान संख्या २---भू-राजस्व (नान गुनारो)--ने बा शोर्बक ७--भू-राजस्व (मालगुनारी) के श्रन्तर्गत ६,४५,८६,००० रुपये की मांग वितोय वर्ष १६६०-६१ के लिए स्वीकार की जाय।

श्रीतन्, इन श्रनुहानों के सम्बन्ध में केवन इतना कहना चाहता हूं कि में श्राने दिल से तो समझता हूं कि मैं बहुत ठीक तरह से इन्तनाम कर रहा हूं, यही मेरे दिल में खवाल है श्रीर यह सर्वमान्य है कि स्नानो गजती ग्राने को नहीं मालून होतो, इसलिए हम ने यह सोचा है कि हम श्राने माननीय मित्रों की बातें सुनें। में श्राशा करता हूं कि वे श्रच्छे श्रच्छे सुझाव देंगे, जिनसे हम को रोशनी मिने हो, जिनके प्रकाश में हम, शासन में जो गलतियां है, उन को सुभारने की चें हम करेंगे। इसोजिए में इस समय वक्त नहीं लेना चाहता। केवल माननीय मित्रों से मेरो यही प्रार्थना है कि वे ऐसे सुझाव दें जिनसे हम लाभान्वित होकर प्रगति कर सकें। इन बाब्दों के साथ, मैं श्राशा करता हूं कि ये दोनों श्रनुदान पास किये जायेंगे।

श्री उपाघ्यक्ष—में समझता हूं कि इस श्रनुद्दान के लिए पुरानी प्रया ही चालू रखी जाय। नेतागण को २०-२० मिनट श्रीर श्रन्य सदस्यों को १०-१० मिनट का समय दिया जायगा। श्रगर माननीय गेंदासिंह श्रविक समय चाहते हों तो बता दें।

श्री टीकाराम पुजारी (जिला मथुरा)—श्रीमन्, १० मिनट सदस्यों के लिए ग्रौर ३५ मिनट नेताग्रों के लिए रखा जाय जिससे पीछे बैठने वालों को भी समय मिल सके।

श्री उपाष्यक्ष--मैं घीरे-घीरे श्रापको भी पीछे बैठने वालों का नेता मानने के लिए तैयार हो रहा हूं। (हंसी)।

\*श्री गेंदासिंह (जिजा देवरिया)—माननीय उपाध्यक्ष महोदय, में प्रस्तुत दोनों ग्रन्तुता दोनों ग्रन्तुता के प्रताव पेश करता हूं कि ग्रनुदान संख्या ३८—दुभिक्ष सहायता में सम्पूर्ण ग्रनुदान के ग्रवीन मांग की राशि घटा कर एक रुपया कर दी जाय।

कमी करने का उद्देश्य--नीति का ब्योरा जिस पर चर्चा उठाने का श्रभित्राय है:--

टेस्ट वर्क में दी जाने वाली मजदूरी की कमी ग्रौर उसके खोलने में पक्षपात पूर्ण नीति तथा सूखा बाढ़ के श्रवसरों पर प्रभावित व्यक्तियों को सहायता न दिये जाने की चर्चा करना तथा श्रनुदान संख्या २—भू-राजस्व (मालगुजारी) में सम्पूर्ण ग्रनुदान के श्रवीन मांग की राज्ञि घटा कर एक रुपया कर दी जाय ।

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

## [श्री गेंदासिह]

श्रीमन्, माननीय माल मन्त्री जी ने बहुत सादगी के साथ लेकिन प्रभावकारी ढंग से एक दो बाते कही है श्रीर में इस बात को मानने को तैयार हूं कि मालगुजारी विभाग की जानकारी उनको है। उन्होंने उन कमियों को शायद महसूस क्या है लेकिन वह हमारा इम्तहान लेना चाहते हैं कि हमको क्या मालूम है, उन बातों को हम उनकी खिदमत में पेश करे। में उनके जितना श्रनुभवी नहीं हूं, यह पहले कबूल करता हूं। मालगुजारी विभाग का जितना श्रनुभव उनको है उतना श्रनुभव मुझे नहीं है। में उम्मीद करता हूं कि सदन दिन भर में उनको श्रपने श्रनुभवों से लाभ पहुंचाने की चेट्टा करेगा श्रीर उन्होंने जो श्राश्वासन दिया है कि उस से वे लाभ उठावेगे। में उम्मीद करता हूं कि यदि उनको कोई कड़ो बात भी कहे, कोई उनको चिहाने की गरज से भी कुछ कहे उनके विभाग के सिलसिले में, तो वे उसके तत्व को लेगे श्रीर वे नाराज होकर उसका खयाल नहीं करेगे।

मालगुजारी विभाग के मुख्यतः तीन काम है। कुछ जमीन सम्बन्धी कानून बनाना, मालगुजारी वसूल करना ग्रीर जमीन का कागज तयार करना। इन तीनों कामों के सम्बन्ध में में थोड़ी बात कहना चाहूंगा। कानून बनाने के सिलिसिले में में यह कहना चाहूता हूं कि क्रिन्न बनाने का काम जो पिछले १०, १५ वर्ष में जमीन सम्बन्धी हुग्रा है उसमें जमीदारी प्रथा के विनाश का एक बड़ा कदम है। वह बड़ा कदम था, उस बड़े कदम के ग्राधार पर जो कुछ भी कार्यवाही हुई है, यह सोचने की बात जरूर है कि उससे किसानों का हित नहीं हुग्रा है, उससे किसान दिन प्रति दिन तकलीफ महसूस कर रहे हैं। में समझता हूं कि उस पर सोच विचार करना चाहिए।

एक तो यह बात कि प्रदेश भर में श्रनेक प्रकार के जमीन सम्बन्धी कानून रखें गये हैं, में माननीय माल मन्त्री जी का ध्यान थोड़ा-सा उस श्रोर दिलाना चाहता हूं। जीनसार भावर तराई क्षेत्र के लिए एक दूसरा कानून, दुद्धी क्षेत्र के लिए एक दूसरा कानून, रामपुर क्षेत्र के लिए एक दूसरा कानून, नगर क्षेत्र के लिए कोई दूसरा कानून श्रीर सरकारी श्रास्थानों के लिए कोई दूसरा कानून, श्रव इतना तो ममें याद पड़ता है। इसके श्रलावा श्रीर भी कई प्रकार के कानून हैं। इस तरह के कानून भी है जो जमीन जोतन वालों के हकूक को छीनते हैं, में समझता हूं कि उनको बदलना चाहिए ताकि जमीन जोतने वाले श्रादिमयों को श्रपनी जिन्दगी श्रव्छी तरह से बसर करने का मौका मिले।

श्रीमन्, एक ग्लेयरिंग एक्जाम्पुल जमीवारी एकालिशन ऐक्ट की गलती की है। जमीन जोतने वाले को भूमिधर बनने का श्रीधकार दिया गया है श्रीर सीरवार जो है उनकी भूमिथरी का श्रीधकार है। वह श्रपनी जमीन को रेहन न करके बयनामा कर सकता है। श्रगर रेहन करेगा तो कानून में यह गुञ्जाइश है कि रेहन जिसकों करेगा उसी को वह बयनामा समझा जायगा। मेरी समझ में नहीं श्राया कि इस तरह के कानून बनाने का क्या श्रयं है श्रीर क्यों इस तरह का कानून बनाया गया है कि एक श्रादमी भूमिधर है जो इस उम्मीद में श्रपनी जमीन को रेहन लिखना चाहता है कि श्राग चल कर उसके बाल बच्चे रुपया देकर श्रपनी जमीन वापस ले लेगे, उसे सरकार की तरफ से मजबूर किया जाता है कि या तो वह बयनामा करे या श्रगर रेहन लिखना है तो उसे बयनामा समझा जायगा, श्राखिर इसका क्या शर्थ है ? हो सकता है कि माननीय मास मन्त्री जी का ध्यान इस तरफ न गया हो।

श्री हुकुमसिंह विसेन कब्जे वाले रेहन को बयनामा का रूप दिया गया है।

शी गेंदासिह—-ठीक है, में यह नहीं कहता कि वह जमीन सरकार को चली जायगी। सीरदार के लिए यह कानून है कि धगर कोई रहन लिखता है तो वह जमीन से बेदलल हो जायगा धौर वह जमीन गांव समाज को चली जायगी। श्रीमन्, ध्राप समझें कि जब कर्जा देने का बन्दो-बस्त हो सकता है तो वहां पर कर्जा लेने के लिए रहन लिखने की प्रथा है। जिस जिले से मन्त्री जो धाते हैं वहां वह पता लगायें तो उन्हें मालूम होगा कि लाखों धादमी इस तरह के कर्ज

### १६६०-६१ के स्राय-ब्रायक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदात--ध्रनुदान संख्या ३८--- लेखा शीर्षक ५४--- द्विभक्ष सहायता तथा स्रनुदान संख्या २--- लेखा शीर्षक ७--- भू-राजस्व (मालगुजारी)

लेते हैं और रेहनदबनी लिबते हैं, उसमें आज इतना जुल्म हो रहा है कि फर्नी कागजात तैयार हो रहे हैं और तहतीलों में उसके कारण अध्यादार का एक श्रड्डा बना है और हजारों कितान बेहबन किये जा रहे हैं जो हमारी हमदर्दी के पात्र हैं। ऐसे कानून में जितनी जल्दी हो सके हमें परिवर्तन करना चाहिए और ऐसा कानून बनाना चाहिए ताकि उनकी यह तकलीफ रफा हो जाय।

प्राकृतिक त्रापदात्रों के विषय में में कहूंगा कि जो नियम ग्रंगे में के जमाने के बने हुए खले ग्राते हैं, उनमें कोई परिवर्तन नहीं हुगा है ग्रीर जो है भी वह भी ठीक तरह से लागू नहीं है, जो द ग्राने से जगदा के नुकसान की बात है वह फैनला ग्रीर गिनती का जो हिसाब है वह ग्राना पाई कभी ठीक नहीं हो पाता, मालून नहीं कितनी बार इसकी सदन में चर्चा हुई कि फतल खराब होती है लेकिन कलक्टर के यहां से हनेशा नीचे से द ग्राने से कम का हो नुकसान दिखाया जाता है, ग्रानीब बात है कि कभी भी द ग्राने मे ग्रांविक नुकसान नहीं होता, किसान की कमर दूट जाती है लेकिन नुकसान कभी द के नजदीक भी ग्राने पाई में नहीं ग्राता।

श्रव माननीय मन्त्री जी ने कुब्र कलेक्टरों को संकेत किया है लेकिन किर भी श्रगर छूट देनी होती है ग्रीर द श्राने से श्रविक नुकसान दिखाया जाता है तो छूट वगैरा का तमाम काम बढ़ जाता है, इसलिए नीचे से ऊरर तक पटवारी, कानूनगो, तहसीलदार, डिप्टी कलेक्टर सब इस बात की चेंग्टा करते हैं कि यह नुकसान द श्राना से श्रविक न बढ़ जाय चाहे किसान की कमर क्यों न टूट जाय। इसका प्रबन्ध ठीक से होना चाहिए। इस बार ही देवरिया में, गोरखपुर में मेंने देखा है ग्रीर बस्ती के भी कुछ भाग को देखा है। वहां रबी की फसल बरबाद हुई है ग्रीर द ग्राने श्रीर दस श्राने बरबाद हुई है, लेकिन में समझता हूं कि चूंकि माननीय माल मन्त्री ने पत्यर गिरने वाले क्षेत्रों का जिक किया है, इसलिए पत्यर के नुकसान से श्रागे किसी श्रविकारों की श्रांख दूसरी जगह नहीं जायगी। श्री उग्रतेन जी ने सवाल भी किया कि सरकार बताये कि वहां की क्या केंकियत है लेकिन में समझता हूं कि फसल इतनी बरबाद हुई है कि किसान को कुछ राहत मिलनी चाहिए। इस लिए मेरी प्रार्थना है कि प्राकृतिक क्षति के नियम ग्रीर रिलीफ देने का कानून जरूर परिवर्तित होने चाहियें।

श्रव में वसूती के कार्य के बारे में भी कुद्र कहना चाहता हूं। श्रव्वल तो इस विभाग के द्वारा भारत सरकार श्रीर स्टेट गर्वत रेंट की वसूती का काम होता है। में मानतीय मन्त्री जी से पूद्र रा चाहता हूं कि श्रांजिर बड़ी श्राय वालों का जो श्राय-कर है वह इस विभाग द्वारा उनसे कितना वसूत किया गया श्रीर थिद्ध ने साल में इस विषय में विभाग की क्या कारगुजारी रही। मेरी तो यह जानकारी है कि जितने बड़ी श्राय वाले श्रायकर श्रदा करने वाले हैं उनकी मालगुजारी वसूल करने में सरकार की तरफ से लापरवाही बरती गयी है, यह में इन्कम टैक्स की बात कहता हूं जो स्टेट गवर्नमेंट द्वारा वसूल किया जाता है। मेरा कहना है कि जितने भी ऐसे बड़ी श्राय वाले लोग हैं उनके साथ रियायत की जाती है, मैं ठीक तो नहीं बता सकता हूं लेकिन जित भिल मालि कों पर करोड़ों हमया बकाया है उनके ऊर कोई सख्त कार्यवाही नहीं की जाती है।

चोनी निर्तों के मालि हों पर भ्राज ५ साल का के रसे सका रुपया बकाया पड़ा है लेकिन स्नाज तक किसी की कमर में कलेक्टर ने रस्सी नहीं कसी कि रुपया दो, लेकिन हजारों काक्तकारों की कमर में कुर्क भ्रमीन रस्सी कस कर पैसा वसून कर रहे हैं। जब यह बुकलेट छापी जाय तो उसनें कम से कम यह सूचना चाहिए और यह बताया जाय कि इस देश में न्याय के नाम पर बड़े लोगों के साथ क्या हुआ। क्या उन हे साथ सख्ती की गयी? भ्रौर हम लोगों के साथ जो सख्ती होती है उसको भी सून लें।

में स्वयं भुक्तभोगी तो नहीं हूं लेकिन मेरे भाई पर वारन्ट जारी किया गया और श्रव भी ऐसी खबर है, किस वजह से है, यह मैं नहीं कह सकता। मैं तो मालगुजारी देने में नादेहन्दगी नहीं करता श्रीर मैंने तो घर पर कह रखा है कि मालगुजारी देने में कभी भी विजम्ब नहीं

# [भी गेंद।सिंह]

होना चाहिए। मुझसे हो सकता है कि तहसीलदार नाराज हो लेकिन जो लाखों श्रादमी है उनसे तो नाराजगी नहीं हो सकती फिर भी उनको बगर वारन्ट के गिरफ्तार किया जाता है श्रौर उनके माल की कुर्कों की जाती है। कलेक्शन श्रभीन सादा कागज लिये, जिस पर तहसील-दार के दस्तवत होते हे, घूमता है श्रोर जिस वक्त विसी ने उसे रेजिन्ट किया यही उसका नाम भर कर दिखा दिया कि यह देखों, तहसीलदार का वारट है। तो कोई उसमें झगडा नहीं करता, लोग डर जाते हैं। तो भ फट्ता हूं कि श्राज गारपीट, बेइज्जत करना, कुर्की करना, गिरफ्तार करना जारी है। में पूरे सूबे के बारे में तो नहीं कह सकता लेकिन श्रपने यहा के १०० २० गावों के उदाहरण दे सकता हूं जिसकी जाच होनी चाहिए।

श्रभी में देवरिया में सुन कर श्राया हू। यह लंगों पर तो कले स्टर सख्ती नहीं करता, मिल मालिको पर श्राज में। मन सेंस का १ ८ रोड पया वकाया है जबीव क्लेक्टर की जिस्मेदारी है कि साल व साल वह रकम पूरी की पूरों वसूत हो जानी चा, ए; श्रोर दूसरी तरफ गरीब किसानों को इस तरह सताया जाता है।

कने स्टर के ऊपर लार्ज लेन्ड होल्डिंग टक्स की भी जिस्मेदारी है। जो फिताब हमें मिलो है उस हो देख कर श्राद्यंथ होता है। १३६५ फसली में ६६,४०,००० ६० श्रमेस हुन्ना लार्ज होल्डिंग टेक्स का, जिसमें से यसूल हुन्ना ४८,६३,००० ६०। १३६७ फमली में ६६,६४,००० ६० श्रमेस हुन्ना श्रीर वसूल हुन्ना २०,६६,००० ६०। १३६७ फमली में १,४०,६६२ ६० श्रमेस हुन्ना, उस म से यसूल हुन्ना कवल १३२ ६०। तो १३६५ फसली में जो रकम ६६,५०,००० रुपया थी वह १३६७ फसली में १,४०,६६२ रु० रह गयी, जब कि श्रमी सीलिंग फिरस नहीं हुई, तो लार्ज होल्डिंग खत्म तो हो नहीं गयी फिर इस टेक्स की रक्म केसे कम हो गयी श्रीर उस म से भी १,२० ० ही बसूल हुन्ना ? श्रालिर सार्वजितक कोष पर यह डाका कहा पड़ा श्रीर कीन इसके जिम्मेदार हैं? इसके विपरीत मालगुजारी की बकाया का श्रनुपात बहुत ही कम है।

एक बात वसूलों के सिलसिले में और कहनी है। बड़ी चर्चा थी कि जमींदारी प्रथा श्रवालिश करने के बाद पदायतों को यह काम सौंपेगे। ३६ पंचायतों के जिम्मे वसूली का काम किया गया और इन पंचायतों में कोई किसान गिरपतार नहीं हुआ, फर्जी वारन्ट पर बेइज्जत नहीं किया गया तो फिर क्यों न बड़े पंमाने पर यह काम पंचायतों को दिया गया ? क्या वजह है कि इनको न देकर कुछ ऐसे लोग रखें जाते हैं जो यह समझने हैं कि किसान उनके गलाम ह ? में यह कहना चाहता हूं कि वसूली के लिए रेवेन्यू डिपार्टमेंट का कर्मचारी जब जाता है तो वह यह नहीं समझता कि वह अपने श्राका से इपया वसूल कर रहा है, बिल्क वह यह समझता है कि में पुराने जमींदार का बेटा हूं। जने पुराना जमींदार किसान को अपने जूने के नीच रखना चाहता था उसी तरह से वह श्रवने को उसका वारिस समझता है और वह यह समझता है कि किसान उसके जूते के नीच रहने वाला है। इस जहनियत के बदलने की बड़ी श्रावद्यकता है। श्रगर यह जहनियत नहीं बदलती है तो हमारी सारी कार्यवाही बेकार है, सारे कर्मचारी बेकार है। श्रगर उनकी जहनियत बदलने में ठाकुर साहब कामयाब हो सके तो बड़ा भारी काम वह कर देंगे।

भूमि सम्बन्धी कागजात के बारे में ध्रव में कुछ कहना चाहता हूं। जमींवारी प्रवालीशन के बाव जमीन का रकबा बढ़ गया। लेकिन उस जमीन का पता नहीं चला कि वह जमीन कहा से आयी। यह बात लम्बी है, इसको छोड़ देता हूं। इन्तखाब देने का काम लेखपाल करता है। ठाकुर साहब दौरा करने जाय तो सभाग्रों में यह पूछे कि इन्तखाब का क्या भाव है। उनको कहीं सुनने में नहीं मिलेगा कि जो रेट सरकार ने तय कर रखा है उस रेट पर इन्तखाब किसान की मिलता है। प्रशाने, ४ थाने की बात तो छोड़ बीजिये, ध्रगर १ पये में भी इन्त खाब मिल जाय और ठाकुर साहब उसे दिला वें तो में उनको बचाई दूंगा। ४०, २४, २० रुपये में इन्तखाब मिलता है और ४ पये से कम तो सुनना वह पसन्द हो नहीं करता। ध्रगर एक इपये पर ठाकुर साहब उसे दिलावा दें तो में समझूंगा कि बड़ा भारी काम हो गया।

लेखपालों का यह हाल है कि बाप मर जाये तो बेटे का नाम नहीं लिखेंगे। पुराने जमाने के डिण्टी क्लेक्टर, क्लेक्टर और किमश्नर को कुछ घोड़े पर चढ़ने की खादत होती थी, कुछ कमर मरदानी जरूर होती थी। लेकिन श्रव जो क्लेक्टर व डिण्टी क्लेक्टर होते हैं, जो कुछ भी हो, वह घोड़े पर नहीं चढ़ सकते। उनके लिये गाड़ी चाहिये। गाड़ी भी जीप न हो, गाड़ी कुछ ऐसी हो जिसके गद्दों में वे डूब जायें। लेकिन गांव की मेड़ पर यह गद्दे वाली गाड़ी नहीं जा सकती, इसलिये परताल गलत रहेगी। मैंने बड़े बड़े अंग्रेज किमश्नर देखे, वे घोड़े पर चढ़ कर २०, २५ मील सबरे भागते थे और उस वक्त आप देखते कि पटवारी, कानूनगो, तहसीलदार तथा डिण्टी क्लेक्टर की हालत क्या होती थी और कागजात की दुरुस्ती कैसे होती थी।

में ने एक क्लेक्टर से कहा कि नाव पर बैठ जाइये। उन्होंने कहा कि क्या श्राज हो तक श्राप मुझे जिन्दा रखना चाहते हैं। में क्या कहूं, नाम उनका नहीं लेना चाहता। उनके दिल में गड़बड़ी होने लगी। जवाहरलाल जी जिस वक्त नैनीताल गये तो वहां के क्लेक्टर, डिप्टी क्लेक्टर तथा डी० एस० पी० ने श्रपनी जान बचाने की कोशिश की श्रौर यह चाहा कि जवाहर लाल जी उस रास्ते से न जायं, जो घोड़े का रास्ता है, बिल्क उस रास्ते से जायं जिस रास्ते से घोड़ा नहीं जा सकता। तो में जरा उनको मरदाना रखना चाहता हूं। श्राप लोगों को तो में घोड़े पर चढ़ना पसन्द नहीं करता लेकिन मोटर में श्राप लोग चिढ़ये श्रौर गांव जाइये। लेकिन जब तक ऊपर के श्रफसर गांव में नहीं पहुंचेंगे तब तक कागजात दुक्स्त नहीं हो सकते। मेंने बताया कि बाप की जगह पर बेटे का नाम लिखने में ६-६, १०-१० वर्ष लग जाते हैं श्रौर कागजात दुक्स्त नहीं होते। पहले जमाने में बन्दोबस्त होता था जिसकी वजह से ये सारी गलतियां दुक्स्त हो जाती थीं, लेकिन श्रव बन्दोबस्त नहीं होता है। ऐसी हालत में जब ऐडिमिनिस्ट्रेशन ही यह काम करेगा तभी कागजात ठीक हो सकते हैं।

तहसीलों के बारे में में कह दूं कि तहसीलों इस वक्त भ्रष्टाचार का ग्रड्डा बन गयी हैं। सफेद पोश जमीन्दार जो रिहेबिलिटेशन ग्रांट वगैरा लेने जाते हैं ग्राप एक भी जमींदार साबित कर दें कि जिसको बिला नाजायज पैसा दिये वह मिल जाता हो। नहीं मिल सकता। जो लोग तकावी लेते हैं उनसे भी तहसील वाले एक रकम वसूल करते हैं, ग्रौर जब वह तकावी देते हैं तब भी उनको कुछ न कुछ देना पड़ता है। तहसीलदार जमाबन्दी के मुकदमें लेता है, ग्राज लिया कल रद्द कर दिया ग्रौर लिख देता है कि ५ वर्ष पहले से यह कब्जा था। सीलिंग से बचने के लिये यह हरकतें की जा रही हैं। इसको रोकने का बन्दोबस्त होना चाहिये।

काबिज का जो इन्दराज होगा उसके बारे में लेखपाल को हक मिला है। सरकार ने यह जरूर व्यवस्था कर दी है कि गांव समाज के लोग भी उसमें शामिल रहें। लेकिन लेखपाल गांव समाज के मन्त्री होते हें ग्रौर ग्राम तौर पर गांव समाज के सभापित उनसे कम पढ़े लिखे होते हैं जिसकी वजह से लेखपाल उनके ऊपर रोब गालिब करते हैं ग्रौर यह हरकत करते हैं कि उस सभापित को एक न एक मामले में फांस कर फिर फर्जी कागजात पर उनसे ग्रंगूठा लगवाया करते हैं।

इसके ग्रलावा गांव समाज के वकीलों की बाबत भी मुझे कुछ कहना है । गांव समाज की सम्पति ग्राज दुर्बल ग्रादमी की जोरू के समान हो गई है।

श्री उपाध्यक्ष--मसला है कि 'गरीब की जोरू हर श्रादमी की भाभी'।

श्री गेंदासिह—जो हां, यही समिन्नये। इसके ग्रलावा, मैं इस सिलिसिले में दुर्भिक्ष का नाम हटवाना चाहता हूं। हमें ग्राजादी प्राप्त हुए बहुत दिन हुए लेकिन मैं करूं क्या, दुर्भिक्ष है। दुर्भिक्ष के माने यही हैं कि जो मजदूरी लिखी हुई हो उस पर हजारों की तादाद में लौग मिल जायें तो दुर्भिक्ष है। माननीय उग्रसेन जी इस मामले को ग्रक्सर उठाया करते हैं, उनको में घन्यवाद देता हूं। ग्राज देवरिया में हजारों ग्रादमी ४ ग्राने, ८ ग्राने रोज पर मजदूरी करने

[श्री गेंबासिह]

को तैयार है। जब वहां हजारों स्रादमी मजदूरी करने पहुच गये तो वहां के स्रिधिकारियों को खयाल हुस्रा कि इसमें उनकी बदनाभी होगी; लिहाजा यह उपाय कर कि इस तादाद को कम करे उसके लिये उपाय हूं हे गये श्रीर पहले तो उनक मजदूरी कम कर दी गई। लेकिन जब सरकार ने उनको मजदूर किया कि ऐसा काम न करो तो उन्होंने कहा कि दूसरे हथकड़ें से पेश श्रास्रो। उन्होंने जुरमाना करने शुरू कर दिये कि इन्होंने काम नहीं किया श्रीर उस पीरियड में, जिसकी चर्चा उपरोन जी करते हैं, हजारों खादमियां पर जुरमाना हो गया। उनका मतलब था कि यह लोग काम छोड़ कर भागें। वह इमिनये हरकत करते हैं कि लोगों को दयनीय स्थित का दिग्दर्शन न होने पाये। मालगुजारी विभाग गांगों से श्रीर किसानों से सम्बन्धित है। इसिजये श्रगर किसानों का दशा को दृष्टन करना है तो मालगुजारी विभाग को दुष्टत कोजिये। उसके दुष्टत किये जिना गांवां का उद्धार नहीं हो सकता है।

श्री रामनाथ पाठक (जिला बिलया)— प्रावरणीय उपाध्यक्ष महोवय, श्राज माननीय माल मन्त्री जी ने श्रनुदान पेश करते समय अपने कुछ विचार नहीं रागे, जिससे हमें कम से कम दुःख दुशा। श्राज हमें श्राशा थी कि बहुत दिनों के बाद हमारे माल मन्त्री जी ने जो श्रपना पहला बजद प्रस्तुत किया है उस समय वह श्रपने विचार भी रावेंग। शिक्षती बार यह विभाग दूसरे मन्त्री जी के पास था इसलिये भी हम जानना चाहते थे कि उस मन्त्री जी श्रीर श्राज के मन्त्री जी के विचारों में कुछ देर फेर हुआ है या नहीं। लेकिन उनके विचार न मृतकर हमें थोड़ा बुख हुशा। हमें ऐसा लगता है कि हमारे माल मन्त्री जी शायद किमिनल प्रेक्टीशतर थे। किमिनल प्रेक्टीशतर की यह चालाकी होती है कि जब बह संशन्त में जाता है तो श्रपने बिक्त के बाद वह बहस करे। हमारा खयाल है कि हमारे माल मन्त्री जी ने यही चालाकी की है।

इसके बाव माल मन्त्री जी की तत्परता पर, जो उन्होंने पूर्वी क्षेत्रों में ब्रोना ब्रीर बादप्रस्त क्षेत्रों का निरीक्षण करके दिखायी है, उसके लिये हम उनकी बयाई देते हैं। ब्राज यह
एक बड़े संयोग की बात है कि हमारे माल मंत्री जो बही है जिन्होंने जमीन्द्रारी ब्रबालीशन
अपने हाथ से किया था। ब्राज उसकी दस वर्ष का समय गूजर गया। इसके बाद जमीवारी
अवालीशन से हमारे प्रदेश में क्या प्रतिक्रिया हुई, उसकी देखने का उनकी सौभाग्य प्राप्त है।
हम खाहेंगे कि वह कम से कम उन दिनों की याद करें जब उन्होंने जमींदारी ब्रबालीशन के
कानून का मसविदा पेश किया था। उस समय उनके मंसूबे क्या थे जिनकी लेकर उन्होंने उसकी
पेश किया था। हमें ब्राशा है कि उनकी तरफ वह ध्यान देंगे ब्रौर उन ब्ररमानों को देखेंगे
जिनको लेकर उन्होंने जमींदारी ब्रबालीशन किया था ब्रौर एक नई भूमि-व्यवस्था कायम
करने की कोशिश की थी। लेकिन हमारी राय में जिन ब्ररमानों की लेकर उन्होंने नया मसविदा
पेश किया था वह कारगर होता दिलाई नहीं देता है।

हम चाहेंगे कि जिन कियानों को भनाई के निये उन्होंने इन्हों पेश किया था, उनहीं हालत पर वह गौर करें कि जैसी उनहीं वा साल पहने हालन थी आज उनने उनहों हालत अच्छों है या खराब । हम जानते हैं कि उनका सम्बन्ध देहानों में हे और वह कितानों के बीच में जाते हैं। इसलिये हमें आशा है कि वह उनहीं दशा जानने की काश्रित करेंगे। उनहीं जबान से यह सुनकर हमें तकलोफ हुई है कि हमारा इन्त जाम ठीक बन रहा है। भे यह कहने की हिम्मत करता है कि आज का कियान वस साल पहले के कियान से सुन्नों नहीं है। जनीन पर से आज उसका विश्वास हट गया है। इन सबसे कारण क्या हैं? कारण अभौदारों अवालोशन की जुटियां हैं। इसीलिये जनोंवारी अवालीशन बिल में दिस में अमेन्डमेंट हो बुद्दे हैं। आलिरकार यह कित की गलती है? यह फेनर्स की गलती है, जिम्होंने आगे की बात नहीं सोबो। अगर ऐसा कानून बनाना हैं जिसमें दस साल के अन्दर १० अमैडमेंट करते हैं, लो आय विवार करें कि नहीं गलती है।

१९६०-६१ के श्र.य-व्ययक में अनुशनों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदान संख्या ३८--लेखा शीर्षक ५४--दुर्भिक्ष सहायता तथा श्रनुदान संख्या २--लेखा शीर्षक ७--भू-राजस्व (मालगुजारी)

माननीय ान्त्री जी जिस भावना से जमींदारी आबालीशन को लेकर चले थे, उसमें कामयाब हुये या नहीं। किसान बड़ी उम्मीद बांघे हुये थे। कांग्रेस ने मैनिफेस्टो निकाला कि हम
लगान आधा करेंगे। उस हो उम्मीद थी कि जिस वक्त कांग्रेस आयेगी लगान आधा होगा और
उसके नहर के रेट कम होंगे। लेकिन बड़े अफसोस का बात है कि यह कुछ कारगर नहीं हुआ।
दूसरा तरीका निकाला गया कि दस गुना जमा करके सारा लगान आधा हो जायगा। नतीजा
क्या हुआ? जरा परसेंटेज लें कि कितने लोगों ने दस गुना जमा किया और कितने लोगों का
लगान आधा हुआ? इसका मनजब यह है कि जो आपने स्कीम चलायी वह लोगों ने पसन्द
नहीं की। इसका दूसरा नजिर्या यह भी हो सकता है कि उनकी स्थित ऐसी नहीं है कि दस
गुना देकर लगान आधा करा सकें। आपसे में अर्ज कहांग कि आपने जो कानून अपने हाथों
से बनाया है जरा उसका निकाज दे अं और अगर कहीं गड़बड़ी है तो उसकी ठीक करें।

कितान को जो सबते बड़ी परेशानी है वह लेब गालों से है। में जानता हूं कि माल मंत्री जी का भी यही विश्वास है। वह ग्रागे कोशिश करेंगे कि जो तकती में कितानों को लेब गालों के जिएये से हो रही हैं वह किसी न किसी तरह से दूर की जायें। पहने के माल मन्त्री जी ने लेख गालों को हटाया, दूतरे लेब गाल ग्राये; किर पुरानों में से भी कुछ लेब गाल ग्राये। लेकिन मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों ज्यों दवा की। इस लिये में इशारा कहेंगा माल मन्त्री जी से कि वह इस तरफ ज्यान दें तो शायद कुछ तकती में दूर हो सकें।

जैसा कि भाई गेंदा सिंह ने कहा, मालगुनारी वसूल करने का जो गांव सभाग्रों को हक विया गया है—३६ मांव सभाग्रों को—मौर गांव सभाग्रों को भी यह हक दिया जाय। इसका मतीजा बड़ा सुन्दर होगा। इससे लोगों को राहत निनेगी ग्रीर कितानों को जो परेशानियां होती हैं वह दूर हो जायेंगी क्योंकि ग्रमीन की जोर जबरदस्ती से गांव वाला कभी कभी यह कह देता है कि इससे तो हमारे जमींदार ग्रम्खें थे, यह सुन कर बड़ी तकलीक होती है। इसलिये में चाहता हूं कि गांव सभाग्रों को जनादा से ज्यादा हक दिया जाय कि वह ग्रमा लगान बसल करें ग्रीर गवर्नमेंट को दें।

दो शब्द उपनिवेशन के बारे में कहना चाहता हूं।

श्री हुकुमसिह्य विसेन--त्रह प्रांट पास हो गयी।

श्री रामनाथ पाठक—उपनिवेशन इस साहित्य में मौजूद है। अगर वह पास हो गया है तो भी इतना माननीय मन्त्री जी से कहूंगा कि आप जो पंजाब और बंगाल के रिष्यूजीज को अपने प्रान्त में बता रहे हैं यह बड़ी अब्बी बात है, लेकिन आपको अपने प्रान्त की मर्जुम गुनारी पर भी जरा गौर करना होगा। बिलया वह जिता है जिसमें एक वर्ग मीज पर एक एक हजार आदमी बतते हैं। जब आपके प्रान्त में कुछ ऐसे हिस्से ओवरपापुलेटेड हैं जिनमें एक वर्ग मीज पर एक हजार आदमी बतते हों, ऐसी हालत में आप दूसरे प्रान्तों के आदिमयों को लाकर अपने प्रान्त में बतायें, तो यह कुछ ज्यादा जंबता नहीं है। पहले आप अपने घर को ठीक कर लें, किर चाहे जितनी जमीन दूसरों को दे सकते हैं।

अन्त में एक मिनट में और चाह्ता हूं, उनाध्यक्ष महोदय, अने जिले के बारे में थोड़ा सा कहने के लिये। हमारा जिला दो तरफ से बिहार प्रान्त से घिरा हुआ है और उसकी सीमा घाषरा और गंगा नदी है। आज निरन्तर सैकड़ों वर्जों से इन निदयों से यह बिलया जिला कट रहा है और कम से कम उसका एक चौथाई इस तरफ से बिहार प्रान्त को चला गया। इसका नतीजा क्या हो रहा है? जो कानून मिड स्ट्रीन के नाम से मज़हूर है उसका नतीजा यह होता है कि जो जमीन नदी के उस पार चली जाती है वह बिहार प्रान्त की हो जाती है। जमीन बिहार प्रान्त की हो जाय तो कोई हर्ज की बात नहीं है। मगर उस गांव के कि जान भी बहल जाते हैं। बिहार के किसान आकर उस पर कब्जा कर लेते हैं। वहां पर कोई सालाना इन्दराज नहीं होता है। लेकिन इस समय इतनी तेजी के साथ सवें हो रहा है कि जैसे कोई लड़ाई खिड़ गई हो।

[श्री र मनाथ पाठक]

यह चाहते हैं कि उस पर बिहार प्रान्त के लोगों के नाम दर्ज हो जायं, इसलिये कि एक परमानेंट बाउंड्री होने वाली हैं। उसमें इन्दराज न होने से उसका दावा नहीं किया जा सकेगा। हमने बड़ी कोशिश की कि यह तब तक के लिये रोक दिया जाय जब तक कि परमानेंट बाउंड्री न हो जाय। इन शब्दों के साथ मैं इस श्रनुदान का समर्थन करता हूं।

पर प्रस्तुत कटीती का समर्थन करते हुए में कुछ सुझाव सरकार के समक्ष रखना चाहता हूं। सबसे पहले में प्रत्य प्रश्नों पर समय लने की अपेक्षा चकवन्दी के बारे में दो लफ कहना चाहता हूं। सबसे पहले में प्रत्य प्रश्नों पर समय लने की अपेक्षा चकवन्दी के बारे में दो लफ कहना चाहता हूं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि चकदन्दी के काम में पिछले चार-पांच वर्ष की श्रपेक्षा, जो साल भर से या छः महीने से कहूं तो ज्यादा श्रच्छा होगा, काम का तरीका दखतयार किया गया है उससे किसानों के वेचेनी में अपेक्षा कृत कमी श्रा गई है श्रीर उसमें कुछ तरीके जो तब्दील किये गये, वह तरीके इस प्रकार के थे जिनके लाने के निय लगातार जनता की तरफ से श्रीर उनके नुमाइन्दों की तरफ से श्रावाज उठाई गई थी; परन्तु गरकार ने लगातर जिनकी उपेक्षा की थी, उन्हें स्वीकार नहीं किया था। बाद में श्रपने तजुर्वे की बुनियाद पर बहु चीजें रवीकार की गई श्रीर उनकी वजह में चकवन्दी के काम में काफी सुधार हुया है। परन्तु श्रमी तक कुछ चीजें ऐसी है जिनकी पूरी जानकारी सदन को नहीं दिलायी गयी। जिस प्रकार पहले माल विभाग की तरफ से प्रत्येक वर्ष चकवन्दी के कार्य की प्रगति को देखते हुये साहित्य रखा जाता है उसी प्रकार का साहित्य श्रव की मर्त्वा विभाग की तरफ से नही रखा। गया। में समझता हूं कि यह एक गलत बात हुई है श्रीर उसके कार्य की प्रगति का सुवक साहित्य रखा जाना चाहिये था।

में यह अर्ज करना चाहता हूं कि पिछली मर्तबा चकों तक जाने के रास्ते चकरोड़ मुहैया करने का कानून न होने की वजह से जिन जिलों में पुराने कानून को बु नयाद पर चक बनाये गये थे, मुजपफरनगर, सुल्तानपुर, और मेरठ की सरधना तहसील इनमें चकों तक पहुंचने के लिये किसान इतना परेशान होता है कि इस चकबन्दी की वजह से जो सहितयत मिली उसको भी वह भूल गया और नई परेशानी उसके सामने आ गई। सरकार को कोई कानून में इस प्रकार की तरमीम करनी चाहिये कि पुराने कानून की बुनियाद पर बने हुये चकों तक भी पहुंचने का रस्ता मुहैया किया जा सके। पिछली मर्तबा जब एक चकबन्दी की मीटिंग हुई थी तो मैंने उसमें यह अपना सुझाव रखा था और निवेदन किया था तो सरकार की तरफ से यह आपत्ति प्रकट की गई कि कोई ऐसा कानून नहीं है जिसकी बुनियाद पर, इसमें पब्लिक यूटिलिटी का कोई उद्देश्य न होने की वजह से, चकबन्दी रोड को मुहैया करने के लिये किसानों की जमीन को लिया जा सके। में इसको बहुत अर्जेन्ट समझता हूं और इसी कारण सरकार का ध्यान इस और आक्षित करना चाहता हूं।

में देखता हूं कि नये संशोधित कानून के आधार पर नये क्षेत्र में चकबन्दी हो रही है। श्रव चकों को बड़े रूप में निर्धारित किया जा रहा है। सरकार की तरफ से यह आदेश गये हैं कि जहां तक मुमकिन हो ७५,८० फीसदी किसानों को एक चक दिया जाना चाहिये। निःसन्देह पहले की निस्वत इसमें कुछ सुधार है लेकिन में अपनी जानकारी से यह निवेदन करता हूं कि एक किसान को ५,६, और ६ तक चक दिये गये हैं। इस प्रकार की चकबन्दी का पूरा मकसद ही खत्म हो जाता है। मगर इस नई प्रक्रिया के मुताबिक चक अधिकारी दूर के काश्तकारों तक जाने की कोशिश करते हैं और इस प्रयास में रहते हैं कि जहां तक हो सके १०० फीसदी, ५० फीसदी, या ६० फीसदी, या ७५ फीसदी चक एक होनी चाहिये।

में सिद्धान्त रूप में इस बात को स्वीकार करता हूं कि जहां तक मुमकिन हो चक एक होना चाहिये लेकिन मुझे यह जानकारी हुई, किसी की सुनी हुई बात नहीं है, कि जो बड़े किसान

<sup>\*</sup>पदता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

थे, जिनके पास १०० बीघा कच्चा है या १५० बीघा कच्चा है, ऐसे किसानों को यदि वे ४, ५ जगह थे, तो उनको एक जगह लाने की कोशिश की जाती है। इससे एक किसान जो ४, ५ जगह बिखरा हुआ था, वह एक जगह जरूर इकट्ठा हो जाता है परन्तु इससे १०,२० बीघा वाले छाटे छोटे किसान, न जाने कितनी तादाद में वे होते हैं, उन्हें अपनी जगहों से खदेड़कर दूर फेंक दिया जाता है। इसकी वजह से वे लोग परेशान हैं। आपके विभाग की डाइरेक्टिव के मुताबिक यह हो रहा है।

जहां तक मुमिकिन हो, चक एक हो परन्तु पहले छोटे किसानों का चक एक होना चाहिये। उनका चक होने के बाद उनकी सुदिधा को देखते इस बात की सम्मित देना चाहिये। जैसा कि पहले था वैसा ही उनको एक जगह जमा किया जाना चाहिये। बाद में दूसरे बड़ी होल्डिंग वाले किसानों को एक चक मुहैया किया जाना चाहिये। यह बड़ी प्रसन्नता की बात होगी। लेकिन उनकी ही कीमत पर छोटे किसानों को उखाड़ना यह अपनी जगह पर गलत होगा। नई डाईरेक्टिव का नतीजा यह होगा कि छोटे किसान अपनी जगह से उखड़कर कहीं दूर पहुंच जायेंगे और बड़े किसान छोटे किसानों की अच्छी जमीन अपने अधिकार में कर लेंगे। में समझता हूं सरकार इस पर विचार करे।

दूसरी बात में यह म्रर्ज करना चाहता हूं कि मुकदमों का फैसला जो किया जाता है उनमें बहुत समय दिया जाता है जिसके कारण बहुत ग्रन्थवस्थित-सा वह मामला हो जाता है। उस समय जब चकबन्दी कानून लागू होता है तो भूमि सम्बन्धी ग्रन्थ तमाम कानून सस्पेन्ड हो जाते है श्रौर उस सस्पेंशन का नतीजा यह होता है कि चकबन्दी करते समय जितने श्रस्त्यार हें वह सब नायब तहसीलदार के पास कान्सेन्ट्रेट हो जाते हैं वह ग्रौर ग्रन्ततः उनका निर्णय ग्रन्तिम हो जाता है ग्रौर जमीन सम्बन्धी विवादों का निर्णय करते समय हाईकोर्ट तक जाने की बात उसके दिमाग में नहीं रहती है। किसी कांपिटेन्ट एजेन्सी के हाथ में वह मामला जाने के बगैर ही तहसीलदार के ग्रादेश के ऊपर जब निर्भर करता है तो जितनी गम्भीरता से उसको ग्रपनी उन चीजों की छानबीन करनी चाहिये, वह नहीं कर पाता है। इससे में समझता हूं कि किसानों के साथ बहुत ग्रन्थाय होता है।

यह बात जरा बड़ी है श्रौर पता नहीं माननीय माल मन्त्री इस पर क्या सोचेंगे मगर में उनसे यह निवेदन करना चाहता हूं कि जहां तक चकबन्दी कानून को लागू करने की बात है वहां पर दूसरे जमीन सम्बन्धी कानून श्राटोमेटीकली सस्पेन्ड करके श्रदालत के सारे के सारे रास्ते बन्द करना मुझे उचित प्रतीत नहीं होता है। सरकार यह चाहती है कि जल्द से जल्द मुकदमों का निर्णय हो जाय श्रौर जल्दी से चकबन्दी का काम पूरा हो जाय लेकिन इसकी वजह से जो एक मद श्रौर श्रहंकार पैदा होता है सी० श्रो० श्रौर ए० सी० श्रो० के दिमाग में, कि उनका निर्णय श्रोतम होता है, यह गलत है। यह श्रोतिम निर्णय में इसलिये कहता हूं कि कलेक्टरों को घारा ४८ के श्रनुसार रिचीजन सुनने का श्रधकार है, लेकिन वह कुछ सुनते नहीं हैं श्रौर इस प्रकार श्रंतिम निर्णय उन्हों लोगों का होता है। उसका प्रकाशन भी नहीं होता। जब उसके ऊपर श्रपील करने का, श्राब्जेक्शन करने का श्रिक्तियार नहीं है तो उसके प्रकाशन करने का भी प्रश्न नहीं पैदा होता।

कलेक्टर प्रपने प्रस्तियार को कम से कम इस्तेमाल करते हैं। चकबन्दी का काम सेटिलमेंट ग्रफसर भी करता है, लेकिन एस० डी० एम० के दूसरे काम भी करता है और इस तरह से उसे ग्रधिक समय रहता नहीं श्रौर सारा का सारा काम सी० श्रो० श्रौर ए० सी० श्रो० को ही करना पड़ता है श्रौर इस प्रकार उनके फैसले श्रंतिम होते हैं। सारे हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट श्रौर जजी के बड़े से बड़े श्रधिकार नायब तहसीलदार तक ही समाप्त हो जाते हैं श्रौर वह जिस प्रकार लापरवाही से काम करता है उसका श्रनुभव पुराने चकबन्दी के क्षेत्रों का जिनको श्रनुभव है, वे सभी जानते हैं, उनको है। इसलिये में शर्ज करना चाहता हूं कि सरकार [म्राचार्य दीपंकर]

को इस तरफ ध्यान देना चाहिये कि जो फाम्प्लीकेटेड ग्रीर डिस्प्य्टेड प्याइंट्स है उनका फैसला करने के लिये काई ऐसा प्राविज र किया जाय कि वे लोग दूसरी ग्रदालतों तक भी जा सकें ग्रीर वहां पर उनका निर्णय भा पुनी (चार कराया जा सके ।

एक बात में स्राप से सर्ज करूं कि चमबन्दी कर्मवारी ऐसे रास्ते ढूंढ़ते रहते हैं कि जिनमें उनको ज्यादा संसट न हो स्रीर वे कम से कम वस्त में ज्यादा से ज्यादा स्राना काम कर सके सौर स्रपना व्यक्तिगत कैरियर भी बना सहें। इस हे लिये मेरा स्रान्भ हर जिने का, जहां भी में गया हूं, यह है कि जो प्रभावशाली व्यक्ति होते हैं क्षेत्र के, वे उनको स्रपने कांफीडेंस में लेकर काम करते है स्रीर ये प्रभावशाली व्यक्ति, जिनका प्रभाव कई बार प्रापरटी का होता है, कई बार उनका संबंध पुलिस से होता है या वे सरकार के ज्यादा विश्वासगत्र होते हैं, उनसे संबंध कायम कर जब चकबन्दी कराते हैं तो स्रामतौर पर जनता उसमें नुकतान उठाती है स्रीर यह थोड़े से लोग उसका फायदा उठाते हैं। मेरठ, बुनन्दशहर, मुरादाबाद, मुजक्करनगर स्रीर स्रलीगढ़ का यही स्रनुभव है स्रीर में समझता हूं कि जो वहां के माननीय सदस्य बोलेंगे ये इस स्रोर सरकार का ध्यान स्राहु करों। चकबन्दी विभाग से यह स्रादेश है कि स्राम जनता से सम्पकं स्थापित किया जाय लेकिन बनाय इसके, जनता के नाम पर वे कुख़ लोगों के इंक्नूरेंस में रहते हैं स्थीर उनके इंटरेस्ट में ही चकबन्दी का काम करते है।

में सरकार से दूसरी बात यह कहना चाहता हूं कि इस च कबन्दी विभाग में जो च कबन्दी एडवाइजरी कनेटी बनायी गयी है वह स्वागत के योग्य है। में उतका स्वागत करता हूं। इससे जनता को जो दिक्कतें है उनको चेंडोलेट होने का मौका मिन जाता है प्रोर भून पूर्व माल मंत्री जी ने जो यह कइम उठाया था, में समझता हूं कि हमारे नये माल मंत्री जी उतका और १० कदम आगे बढ़ावेंगे। लेकिन इसके साथ ही च कबन्दी में आउ वार को शिकायतों को सुनने के लिये बिकोब हप से एक समिति होनी चाहिये ताकि आम जनता को जो परेशानियां हैं, दिक्कतें हैं, जो अख्दाचार की शिकायत है, उनको रही की टोकरी में न फेंका जा मुंसके और वह समिति उनकी सुने और उन पर कार्यवाही करें।

इसी तरह से में चकबन्दी के संबंध में श्रीर बातें न कह कर एक बात चकबन्दी के मंदारियों के बारे में कहना चाहता हूं। उनकी जिम्मेदारियां बहुत ज्यादा हैं श्रीर इतनी ज्यादा हैं कि जमीन, जो किसान को सबसे ज्यादा श्रजीज है, चकबन्दी कानून लागू होने पर उनके हाथ में चली जाती है। उनका वेतन, डी० ए०, टी० ए०, उनकी रहन-सहन की सुविवाय श्रीर उनका स्थायित्व, ये सब ऐसे प्राब्लम्स हैं कि जो उनके दिमाग में घूमते रहते हैं। निस्संदेह सरकार की जो श्रायिक पोजोशन है, वह सीमित है। लेकिन जिस प्रकार की जिम्मेदारी का काम हम उनसे लेते हैं उसके लिये हमें उनकी कुछ सहलियतें वेना चाहिये। सरकार को उनकी सहिलातों की तरफ ध्यान देना चाहिये। खास तौर से जब कि यह मुहकमा श्रभी २०-२४ वर्ष श्रीर चलने वाला है। तो जो क नेवारी इस सनय कार्य कर रहे हैं उनको स्थायो कर देना चाहिये।

श्रालिरी एक बात यह कहना चाहता हूं जिसकी श्रोर बराबर इस सरकार का ध्यान विलामा गया है। वो समें भाई वाकई श्रानी जमीन हो जोतते हैं——में श्रमने भाई की जमीन का शिकनी हूं, श्रौर यह परम्परा हर जिले में, हर तहसील में, है। जनीन उतकी है जो उते विरासत के रूप में श्रपने बुजागी से मिली है, लेकिन हर जगह लगान चौगुना श्रा करना पड़ता है। बार-बार सरकार के पास इस तरह की शिकायतें श्राई हैं। पता नहीं सरकार क्या सोचती है? इस कानून में यह तरमीन होनी चाहिये श्रौर जो इस तरह की शिका है इसे बूर करना चाहिये।

एक मालिरी बात में मलाभकर जोत वालों के संबंध में मौर कह कर ग्राप्ता भाषण सताप्त करता हूं। जो भी कितान ढाई एकड़ के जोत वाले हैं उत पर पूर्णतया लगान माफ होना चाहिये। १६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—स्रनुदान संख्या ३८—लेखा शीर्षक ४४—चुर्मिक्ष सहायता तथा स्रनुदान संख्या २—लेखा शीर्षक ७—भू—राजस्व (मालगुजारो)

\*श्री उबैदुर्रहमान (जिला बस्ती)—उपाध्यक्ष महोदय, यह माल का मुहकमा सबसे पुराना श्रौर सबसे बूढ़ा मुहकमा है, इसकी उम्र सबसे ज्यादा है। मेरा यह कहना गालिबन गलत न होगा कि अगर में यह कहूं कि यह मुहकमा एक ऐसा मुहकमा है जिसने हिन्दुस्तान की कोई सरे जमीन ऐसी नहीं है जिसकी मिट्टी को चलनी लेकर छाना न हो। हमें यहां के मिजाज को नजर में रखना होगा, अपने काइतकारों के मिजाज को नजर में रखना होगा। हम यह देखते है कि हमारे काइतकार जितना एक तहसीलदार को अच्छी तरह जानते हैं, उससे जितनी अच्छी तरह वाकिफ है; एक पटवारी से, लेखपाल से, डिप्टी कलेक्टर से जितनी अच्छी तरह वाकिफ हैं, उतने अन्य किसी अफसरों से नहीं। जो अभी हाल ही में कायम हुये, जैसे कोआपरेटिव डिपार्टमेंट, प्लानिंग डिपार्टमेंट वगैरह, इनसे वे वाकिफ नहीं है क्योंकि यह नये मुहकमें है।

यह जो हमारा रेवेन्यू डिपार्टमेंट है इस पर हमारे काश्तकारों की नजर बहुत म्रासानी से पहुंचती हैं। इंजीनियरिंग विभाग है इसकी लोग जानते तक नहीं। इस विभाग ने श्रपने मुहकमें के सामने एक ब्रजीब-सा खों खों खड़ा कर दिया है। वह गरीब जानता ही नहीं कि यह क्या बला है ? इससे सड़क दुरुस्त की जायेगी सड़क कूटी जायेगी, या क्या होगा, यह वह जानता नहीं। हमारे यहां इतनी साइन्स की तरक्की नहीं हुई है जिससे कि वह इन सब चीजों से वाकिफ हो। ग्राज की साइन्स से वह वाकिफ है नहीं। ग्रगर तहसीलदार कोई गलती करता है, लेखपाल कोई गलती करता है, तो वह उनकी शिकायत कर सकता है; लेकिन ग्रौर मुहकमों में जो बुराइयां होती हैं, उनको वह इतनी ग्रासानी से नहीं कह पाता है। इसका दूसरे ग्रल्फाज में मतलब यह होता है कि जहां तक बुराइयों का ताल्लुक है कोई खास बात इस मुहकमें की बुराइयों के मुताल्लिक नहीं कही गयी।

करण्यान कोई मोनोपोली इस मुहकमे की नहीं है, वह तो एक इंटरिम पीरियड है जिससे हम गुजर रहे हैं—गुलामी के जाने थ्रौर थ्राजादी के ग्रान के बाद। इसमें मेरे सभी भाई इत्तफाक करेंगे कि काइसिस ग्राफ कैरेक्टर यह है थ्रौर यह बिला सोशल सर्विस के दूर नहीं हो सकता। जब करके, लाठी से, कानून-साजी से करण्यान दूर नहीं हो सकता; हो सकता है, लेकिन किसी हद तक, वक्ती तौर पर; लेकिन वह हिन्दुस्तानियों का मिजाज नहीं बन सकता है। वह क्राइसिस थ्राफ कैरेक्टर सोशल सर्विस से ही दूर हो सकता है जिसमें ट्रेजरी बेंचेज को ही नहीं, बल्कि श्रपोजीशन की हर पार्टी को, सारे मुल्क को लगाये जाने की जरूरत है।

(इस समय १ बजकर २१ मिनट पर श्री उपाध्यक्ष चले गये ग्रौर श्रिघिष्ठाता, श्री लक्ष्मी नारायण बंसल, पीठासीन हुए । )

भीर सही तौर पर यह ग्रहसास करने की जरूरत है। ग्रव वह जमाना श्राया है कि श्रगर हम श्रपने को बचाना चाहते हैं तो हमारा इखलाकी फर्ज होता है कि यह श्रावाज लगाना छोड़ दें कि लाग्रो; बिल्क हमारा फर्ज होना चाहिए कि "दो", कुर्बानी करो, पैसा श्रपनी जेब से निकाल कर श्रपने भाई पर खर्चा करो बजाय इसके कि भाई की जेब से निकाल कर श्रपने ऊपर खर्च करो। ग्रपने हर डिपार्टमेंट श्राफ लाइफ को बदलना होगा, बिला इसके वह इस्लाह नहीं हो सकती है जिसकी बार-बार जरूरत होती है। इसलिए कि पुरानी करें, वैल्यूज, बदल चुकी हैं, नयी बैत्यज श्रा रही है श्रौर यह सोशल रेवोल्यूशन जो हुश्रा है उसमें यह चीज लाजमी है कि रिश्वत-सतानी हो, करप्शन हो। लेकिन उससे घबराना नहीं चाहिए।

में गेंदासिह जो की बात, से इत्तफाक करता हूं कि श्रगर एक लेखपाल इन्तखाब करे, जिससे काइतकार को तकलीफ होती हो तो कानून बना हुश्रा है, कि एक दरख्वास्त ४ श्राने के टिकट लगाकर दे दें; श्रगर फिर भी उसकी तक्लीफ रफा नहीं होती है तो नायब तहसीलदार, तहसील-दार, श्रौर दूसरे जो श्रसर-श्रन्दाज लोग है उनके पास जाता है, शिकायत करता है। वह शिकायत

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

# [श्री उबेंदुर्र, मान]

किसी हद तक रफा हो पाती है, लेकिन पूरे तौर पर रफा नहीं हो पाती है, इमसे हम अपनी श्रांख नहीं बन्द कर सकते है। गुजारिश यह है कि इससे घवराने को कोई बात नहीं है। यह श्रुंटियां, यह लामियां, यह कमजोरियां, ये नकायम श्रम्नी जगह पर है और यह श्रम्ड रस्टेडेबिल है कि हर कौम व मुल्क में इस बौर में ये चोजें रही है ग्रार ग्रार हमने स्टेमिना है, हमनें सोचने श्रीर समझने की सलाहियत मौजूद है तो यह दूर होकर रहेंगी। तो मैं ममझता हूं कि जिस रफ्तार से हम इन खराबियों को दूर कर रहे है यह ऐसी नहीं है कि हमें शरिमन्दा होने को जहुरत है। यह मही है कि हमें बहुत कुछ करना है, जिसकी तरफ इशारा हमारे विरोधी दल के लोगों ने किया है। मैं उनसे इत्तफाक करता हूं। ऐसी हालत में मैं दो-तोन बातों की तरफ मोहतरिम मंत्री जी की तवज्जह विलाऊंगा।

एक तो जमींदारी प्रबालीशन ऐक्ट बहुत-सी दफात का कानून है श्रौर जैसा कि इसकी तरफ इशारा किया गया कि सुबह को कुछ तरमीम श्रायी, वोपहर को कुछ श्रौर शाम को फिर एक तरमीम श्रायी श्रौर फिर उस तरमीम में तरमीम श्रायी। गरज कि एक श्रनसरटेंटो है श्रौर काफी उसकी एक गुंजायश है, श्रौर मजबूरी इसलिये है कि कोई ऐक्ट बनता है सौ, वो सो, चार सौ, दफात का, तो एक तो वह इतना बड़ा कानून श्रौर फिर उसके रूल्स श्रौर रूल्स के पैराग्राफ श्रौर फिर हमारे बदलते हुये हालात, हमारी बदलती हुई पसन्व श्रौर बदलती हुई नापसन्व। जमींदारी श्रौर काश्तकारी के ताल्लुकात टूटे, नये ताल्लुकात पैवा हुए, कुछ जमीन जोती हुई श्रौर कुछ बगैर जोती हुई श्रौर फिर मुख्तलिक सरजमीन, तो यह जो तमाम एडजस्ट नेंन्ट्स है यह होंगे श्रौर इनकी जरूरतें पड़ेंगी। यह श्रलामत इस बात की नहीं है कि कानून बनाने वालों में कोई कमजोरी हो या उनकी जहनियत में कोई कराबी हो। हो सकता है उसमें १६-२० किया जा सकता होता, दोपहर के बदले शाम को तरमीम हुई होती। लेकिन श्रापको देखना यह है कि जा तरमीमात किये गये वह श्रपनी जगह पर कैसे रहे। उनसे हम एक कदम श्रागे बढ़े या श्रागे नहीं बढ़े। तो में गुजारिश करूंगा कि हम जरूर श्रागे बढ़े है।

बिलखुसूस कचहरियों में जो इसका श्रमलदरामद होता हं, मुकदमात जाते है उसका कुछ तजुर्बों में रखता हूं। इस सिलसिल में में मोहतरिम वजोर साहब से निहायत श्रदब के साथ गुजारिश करूंगा कि जमींदारी श्रबालिशन रूत्स की एक मायसूस दफा ११५ (सी) है, जिसमें तहसीलदार को यह श्रस्तियार दिया गया है कि श्रगर गांव समाज की सम्मति, उसकी जमीन या श्रीर दीगर जायदाद पर कोई हमला करें या नुकसान पहुंचाये; श्रीर वह नुकसान ऐसा न हो जिसे उसी शक्त में पूरा किया जा सके तो तहसीलदार को यह हक दिया गया है कि वह उसमें तावान लगा सकता है श्रीर उस तावान की कोई हद मुकर्रर नहीं है, वह पांच सौ भी हो सकता है श्रीर ५ लाय भी हो सकता है। चुनांचे तज्जें में ऐसे केसेज श्राये कि तहसीलदार ने १० हजार का तावान लगा दिया या ५ हजार लगा दिया लेकन फिर उसकी कोई श्रपील श्राये प्रोवाइ डेड नहीं है। में गुजारिश करूंगा कि उसके श्रपील के श्राविजन की जकरत है।

श्राज एक जो मुंसिफ है वह १ हजार से ज्यादा का फैसला नहीं कर सकता जिसकी कि शुरू से कानून समझने की श्रौर उसके जहन की ट्रेनिंग होती है इन्साफ करने के लिये, उसके भी श्रागे सिविल जज शौर इसी तरह से बूसरी श्रदालतें है लेकिन तहसीलदार का वह फैसला फाइनल होता है। यह एक लेकुना है जिसकी तरफ में मन्त्री जी की तवज्जह दिलाना चाहता हूं। उसमें इस तरमीम की जरूरत है इसलिये उसमें श्रपील का प्राविजन कर दिया जाय।

श्री रघुराजिसह खोंघरी (जिला बुलन्वशहर)—माननीय ग्रिथिष्ठाता महोवय, में इस तजवीज की लाईव में खड़ा हुग्रा हूं भौर जो इसके बलायल पेश किये गये है उन सब से इत्तफाक करता हूं। में सिर्फ चन्व बातें भौर कहना चाहता हूं। इस कानून माल के इतिहास से यह नतीजा निकलता है कि यह नाकिस रहा भौर ग्रव भी इसमें नुकायस हैं। धगर में यह कहूं तो बेजा न होगा कि पहले के मुकाबले में यह कानून ज्यादा नाकिस है। में चन्व बातें पुराने और मौजूदा कानून का मुक बला करते हुए दिखाना चाहता हूं। सबसे पहले जो तरीका

वसूलयाबी हैं वह इतना कड़ा कर दिया गया और उसमें वह बातें बढ़ा दी गईं यानी इजाफा किया गया जो पुराने कानून में नहीं था। मसलन पहले कानून में सरकारी मतालबे में किसानों की गिरफ्तारी होती थी। मानता हूं, लेकिन जैसी उघर से आवाज आई कि वाकयात बदले, वक्त बदला, खयालात बदले, इस तौर से उसमें भी तरमीम हुई कि मतालबे सरकारी में किसानों की गिरफ्तारी नहीं की जायगी लेकिन आज जमींदारी कानून के खात्मे के बाद गिरफ्तारी तो होती ही है लेकिन उसके साथ-साथ कुर्की भी होती है और दोनों प्रोसेस साथ-साथ चलते है।

मौजूदा कानून के ज्यादा सखत होने की एक दलील यह भी है कि पहले कानून में किसान के आलात कशा, वरजी व खेती करने वाले मवेशी, मवेशियों के रहने के मकान कुर्क व नीलाम नहीं हुआ करते थे, ये मुस्तसित्यात थीं। आज की जमाना जबिक दौरे जम्हूरियत का हम दावा करते हैं और कहते हैं कि श्रखलाक और तहजीब अगर श्राई है तो आज के ही जमाने में आई है, तो ऐसे जमाने में किसान की गिरफ्तारी मेरे नजदीक बहुत ही बेजा है। जब सरकार के पास और तरीके मौजूद हैं, और जबिक किसान की चल और अचल सम्पत्ति को कुर्क कर के सरकारी मतालबा वसूल हो सकता है, तो ये दोनों प्रतसेस आज इन्साफ पर मबनी नहीं है। इससे उनके जमीर पर बहुत बड़ा वजन पड़ता है। जब हम चर्चा करते हैं कि जेलों में चक्की की मेहनत व मशक्कत खत्म कर दी जाय, तो किर इस कानूने-माल में गिरफ्तारी क्यों मौजूद है ?

श्रेब मैं श्रापके जिरये वजीरे-माल की तवज्जह मसले माफियात की तरफ दिलाना चाहता हूं। जालाबारी श्रौर फ्लड्स में माफी होती है। लेकिन इनके श्रलावा श्रौर भी कुदरत की जानिब से श्राफते श्राती हैं, मस्लन खुश्कसाली, फसल में बीमारी या पाले का पड़ना; लेकिन इन सूरतों में किसान को मालगुजारी में कोई माफी नहीं मिलती है।

# श्री हुकुर्मासह विसेन--नहीं, मिलती है।

' श्री रघुराजिसह चौधरी—ऐसा श्राज तक तो नहीं देखा गया कि पाला पड़ा हो श्रीर माफी दी गई हो। जैसा उधर से भी कहा गया कि जब माफियात के नक्शे बनाये जाते हैं तो कोशिश यह की जाती है कि म् श्राने से कम नुकसान दिखाया जाय श्रीर वह इस वजह से कि म् श्राने से ज्यादा नुकसान पर ही माफी होती है श्रीर उसका भी सिर्फ कुछ प्रोपोर्शन। श्रलावा इसके, श्रानइको नामिक होल्डिंग्स पर लगान की छूट, जिसके लिये यह सरकार कमिटेड है, श्राज तक उन पर लगान चला श्रा रहा है। उनके साथ यह साफ वायदा था कि जिन जोतों में कोई मुनाफा नहीं होगा. श्रीर जो छोटी-छोटी जोतें हैं, उनका लगान हमेशा के लिये माफ किया जायगा। लेकिन वह लगान श्राज तक कायम है। मैं खास तौर से छोटे किसानों की तरफ सरकार को उसके उस वादे की याद दिलाना चाहता हूं श्रीर उसकी बिना पर जायज मतालबा करता हूं कि वह इस पर गौर करे श्रीर जल्द से जल्द उनकी परेशानी को रफा करे। छोटे छोटे किसानों की श्राज हालत यह है कि वे श्रपनी पैदावार का में जिस बाजार में जाती है जिसमें उनकी शादी, गमी, तालीम, बीगरी श्रीर जिन्दगी की सभी जरूरियात श्रामिल हैं। ऐसी हालत में मेरी यह दलील काबिले तस्लीम है कि उनके लगान में जल्द से जल्द माफी देकर उन हैं रिली ह पहुंचाया जाय।

हैरत की बात मुझे एक और नजर भ्रा रही है कि हमारी हुकूमत को कायम हुये काफी श्रसी हो गया, और जैसा उघर से बतलाया गया कि यह महकमा बहुत ही भ्रहमियत रखता है । जमीन के एक-एक जरें को इसने छाना है और एक-एक इंच की पैमाइश की है लेकिन भ्राज तक, एक ही गांव में एक ही किस्म की जमीन पर मेंड़ मिलतो है दो खेतों की, दो शरहें मौजूद हैं। भ्राज तक, इसके लिये कुछ भी नहीं किया जा सका है । जैसा बतलाया गया, जब कोई मर जाता है तो उसकी विरासत के लिये कितनी तवालत उठानी पड़ती है । मुझे नहीं मालूम कि मेरे इस बयाने सदाकत पर यकीन भी होगा या नहीं कि दाखिल-खारिज के मुकदमात में बड़ी-बड़ी रिश्वतें ली जाती हैं।

## [भी रघुराजसिंह चोधरी]

इस करण्डान के बारें में काफी जिन्न हो च्का और श्राज से नहीं बिल्क श्ररसे से । श्रभी मेरे दोस्तों ने बड़े जोरदार श्ररफाज में बतलाया लेकिन श्राज तक इसका दफेया हमको नजर नहीं श्राया। श्रगर यह बीमारी कुछ भी कम होती तो तसल्ली हो सकती थी लेकिन ज्यो-ज्यों दवा की जाती है, बीमारी बढ़ती चली जाती है; या तो हगारी इस तरफ काफी तवज्जह नहीं है या हमारे श्रन्दर वह श्राराम-तलबी श्रा गई हं कि हम इस बात की जरूरत को महसूस ही नहीं करते कि हम को गरीबों की तकलीफ दूर करनी है ताकि करण्डान को बन्द करे। यही दिक्कत दाखिल-खारिजों में श्रीर गलत इन्दराजों मे है। गलत इन्दराजात श्रभी मौजूद है हालांकि श्ररों से इस बारे में ग्रहकामात जारी किये जा रहे हैं श्रीर पूर्व मशीनरी भी मौजूद है। लेकिन श्रभी तक कुछ भी नहीं हो सका है।

ये चन्द नकायस मैने श्रापके जरिये सरकार के नामने रखे ह श्रोर म उम्मीद करता हूं कि मुझे इन का खातिरख्याह जवाब ही नहीं मिलेगा बल्कि में श्राइन्दा मार्रत के साथ उनकी मुबारकबादी पेदा कर सकूं, यह मौका भी सरकार मझका देगी।

इस तरफ से यह भी कहा गया कि जमीदारी खात्में के बाद जो हम मसमझते थे कि किसानों को नफा होगा, वह नही हो सका । किसी ने कहा है:

"खेरे भूले नहीं यह मेरी यफाग्रो को जल्द, यह गनीमत है कि जीर श्रयने उन्हें याद रहें।"

श्री रामलखन मिश्र (जिला बस्ती)—प्रादरणीय श्रधिष्ठाता महोदय, मै श्रापके द्वारा माननीय माल मंत्री जी को तथा सहायक मंत्री जी को, जो ला-प्रेजुएट हे, धन्यवाद देता हूं श्रीर जो प्रगति, वे इस प्रदेश में माल विभाग द्वारा ला रहे हं, उसके श्रनेक श्रंशों पर मै सन्तोष प्रकट करता हूं। इसके साथ-साथ मै कुछ सुझाव भी देना चाहता हूं।

मुझे बड़ा श्राइनर्य हुआ जब माननीय गेंदा सिहजी ने श्रपने भाषण में माल विभाग के ऊपर यह श्रापित की कि वह सीरदारों को रहन व कबता देने का श्राधकार क्यों नहीं देता है। मैं उनकी सेवा में निवेदन करना चहता हूं कि सारी जमींदारी विनादा की भूमि-व्यवस्था ही इस बात पर निर्भर है कि कोई श्रपना खेत स्वयं जोत सकता है, जुतवा नहीं सकता। यदि भूमिधरों को कोई श्रधिकार रहन और कबजे के दिये जाते श्रीर सीरदारों को न दिये जाते तब तो कुछ कहा जा सकता था, लेकिन सारे जमींदारी विनादा कानून की श्राधारिशला ही यही है कि कोई श्रपने खेत को जोतने के लिये दे नहीं सकता है सिवाय शक्षम (डिस !बिल्ड) लोगों के। श्रागे यह कह दिया गया कि सीरदारों को श्रधिकार दे दिये जायं। पता नहीं किस स्वप्नलोक में है। क्या श्राप सारे जमींदारी विनादा के कानून को उल्टा करना चाहते हैं?

देवी ध्रापित्यों के बारे में कहा गया कि द धाना हो छूट दी गई है, ज्यादा होनी चाहिये। लेखपाल छूट कम लिख देता है। मुझे दुःख है कि मेरे मित्र ने कानून का पूरी तरह से श्रध्ययन नहीं किया, क्योंकि सारा जमींदारी कानून ही मैन्युग्रल्स पर बना हुआ है। उन्होंने कोई सुझाब भी नहीं दिया कि छूट की गणना किस प्रकार से की जाय। क्या उनकी इच्छा और सर्वतंत्रमय स्वत्रंतमय वृष्टि से उसकी गणना की जाय, जो कह दिया जाय वही कर दिया जाय। इसलिय ऐसी कोई बात कहने से पूर्व माल विभाग के कानूनों को भलीभांति से श्रध्ययन कर लेगा खाहिये। मेरा तो विद्यास है कि श्रगर कोई उनको पढ़ कर नहीं श्रायेगा तो माल विभाग पर बोल नहीं सकता है। किसी पोलीटिकल स्लोगन की वृष्टि से इस पर बहस नहीं की जा सकती।

एक बात और में कहना चाहूंगा कि जब-जब माननीय मंत्री जी दौरे पर गये है वे कुछ न कुछ सस्पेंड कर देते हैं। ग्रगर ग्राप कानून को पढ़ कर देखें तो ग्रापको मालूम होगा कि यह भी कानून के विरुद्ध होता है। उनको भी बिधि विधान का तरीका फालो करना चाहिये। हर एक खीज प्रतिबंधित है। में ग्रंग्रेजों की प्रशंसा तो नहीं करता लेकिन उन्होंने सब हिसाब लगा रक्सा था कि यदि पाला पड़े तो ६ दिन के अन्दर उसकी जांच होनी चाहिये। इस प्रकार की जो

मैन्युम्रल बनी हुई है वह भी म्राज देखी नहीं जा रही है । इस प्रकार से एक भ्रमपूर्ण रूप से चला जा रहा है । मै प्रार्थना करूंगा माल मंत्री जी से कि माल विभाग के कानूनों का सिंहावलोकन एक कमेटी के द्वारा करायें ग्रौर ऐसा प्रबंध करें जिससे सारा काम विधि-विधान से हो।

लगान वसूली के बाबत लैंड रेवेन्यू ऐक्ट में कुछ घारायें हैं जिनके प्रनुसार जिलाधीश वसूली कराता है। उसमें कितनी सहानुभूति करनी चाहिये, यह जिलाधीश के ऊपर निर्भर करता है। मैं नहीं समझता कि उसमें किस प्रकार से पोलिटिकल स्लोगन्स के द्वारा शैथिल्य लाया जा सकता है। देते वक्त के लिये कोई पार्टी नहीं कहती कि जो दे सकते हैं उनको लगान देना पुष्य कार्य है। जिन लोगों के पास कर देने को है, उनको भूमि करों को ब्रासानी से दे देना चाहिये, ऐसी विचारधारा का प्रचार नहीं किया जाता है। जैसे रोड सेंस के बारे में किसी को बताया नहीं जाता है, जब एक्सीडेंट हो जाता है तब बात उठाई जाती है। इस प्रकार की छोटी-मोटी बातों पर ध्यान नहीं दिया जाता है।

माननीय गेंदासिंह जो ने कहा कि जमींदारी विनादा श्रौर भूमि-व्यवस्था कानून से किसानों को कोई लाभ नहीं हुआ। मैं उनकी इस बात से सहमत नहीं हूं। एक सज्जन ने कहा कि श्रिधवासी को सीरदार बना देने की बात क्या जल्दबाजी की बात नहीं हुई। तो जहां तक इसका प्रकृत है कि हमने जो भी सुधार किये हैं घीरे-धीरे किये हैं श्रौर जिस रास्ते पर चले हैं वह सुन्दर श्रौर कल्याणकारी है, हमें उधर जाना चाहिये था।

मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई जब चकबन्दी के बारे में माननीय दीपंकर ने प्रशंसा की । जब वे खड़े हुये तो में समझा कि वे चकबन्दी की ग्रालोचना करेंगे लेकिन उन्होंने मुक्तकंठ से उसकी प्रशंसा की । ग्राबींट्रेशन बेसिस की उन्होंने ग्रालोचना की । उसके सम्बन्ध में मेरा निवेदन है कि उसमें चकबन्दी ग्रधिकारियों का कोई दोष नहीं है बिल्क उसके लिये इस विधान सभा के सदस्य दोषी हैं, क्योंकि जब चकबन्दी का कानून सदन के सामने श्राया तो उसमें श्राबींट्रेशन का प्राविजन था जिसे यह कह कर निकाल दिया गया कि इससे बहुत विलम्ब हो जायगा ग्रौर जैसे पुराने बंटवारे के मुकदमें में डिप्टी कलेक्टर को ग्रधिकार था कि वह धारा १०६ ग्रौर १११ के सिविल कोर्ट के प्रश्न को हल करता था उसी ग्राधारिशला पर हमने यहां पर भी प्रापर्टी के प्रश्न को, टाइटिल के प्रश्न को, सामने रखा ग्रौर ग्रपील व रिवीजन का ग्रधिकार कमिश्नर को दिया।

श्रभी थोड़े दिन हुये इस सदन ने मुक्तकंठ से उसे स्वीकार किया श्रौर फर गो बैक करे श्रौर श्राबींट्रेटर के प्राविजन को लावें तो यह उचित नहीं होगा । हां, विलम्ब इसमें होता है, पहले भी होता था लेकिन हमने सोच समझ कर विलम्ब करने वाला कानून बनाया है । इसमें चकबन्दी विभाग कुछ नहीं कर सकता है । बहुत सोच समझ कर श्रनुभव प्राप्त करके श्रौर परिणाम को सामने रख कर ही इस पर विचार किया जाय । श्रव तो जमीन के कई वर्गीकरण हो गये हैं । श्रव ए० सी० श्रो० व सी० श्रो० वह नहीं रहे जो पहले थे । श्रव जो जमीन का १६ श्राने, १४ श्राने व १२ श्राने में वर्गीकरण कर दिया गया है श्रौर उसका श्रधिकार गांव में रहने वाली चकबन्दी कमेटी को है, श्रव वह चकबन्दी कमेटी जाग्रत न हो तो बात दूसरी है। उसमें जीवन प्रदान कीजिये नहीं तो एक श्राशंका हो सकती है । बहुत ग्रंशों में तो जमीन का सुधार कर लिया गया है । देर भले ही लगे लेकिन ७०, ७५ फीसदी में चक बन गये हैं ।

यद्यपि पूर्वी जिलों के अन्दर सबसे बड़ा भय था क्योंकि वहां जड़हन के खेत, गोंडैत खेत आदि दो-तीन प्रकार के होते हैं। वहां एक चक लगने में आशंका थी लेकिन अगर मूल्य ठीक लग जाय और मुरब्बा ठीक बन जाय तो जौनपुर व बस्ती जिले में एक चक से भी किसान सन्तुष्ट हो जाने वाले हैं। आगे की बात भगवान् जाने। पर जल्दी में जो कानून लाया गया है वह उद्देश्यपूरक प्रतीत होता है। इस वक्त चकबन्दी का जो सेकेटरिएट गोमती बन्धों पर है उसकी में थोड़ी प्रशंसा करता हूं कि उसने हजारों दृष्टि से अपने विभाग को देखा है। अब रही उसके शासन की कला, उससे मुझे सन्तोष नहीं है लेकिन जहां पर माल विभाग की प्रशंसा की बात है उसकी अवश्य प्रशंसा करता हूं। जमींदारी विनाश के बाद जो रेकार्ड्स में गलतियां थीं,

[श्री रामलखन मिश्र]

लेखपालों के समय न मिलने के कारण या किसी कारण से रेयेन्यू न लिख पाये हो, जो भूमिधरी के खेत थे वे सीरदारी में दर्ज किये गये हे या दर्ज ही न किये गये हो, रान् १६५६ की खतौनी से लेकर सन् १६६२ तक की जो खतौनी है उसमे भूले रह गई हो, उनको सरकारी रेकार्ड के अनुसार, चकबन्दी के जरिये दुरुस्त कराया जा रहा है, जिससे प्रदेश की रेवेन्यू भी बढ़ रही है और यह प्रशंसा की बात है।

कम्पेनसेशन के सम्बन्ध में मुझे यह कहना है कि सरकार प्रपने किसी कानूनगों को वहां न रखें जो उसी तहसील में पहले रहा हो, या जिसको नायब तहगीलदार बना दिया जाय या जिसकी इन्द्रेग्निटी पिछले दस साल में सिटिफाइड रही हो, इस तरफ सरकार को ध्यान देना चाहिये। यद्यपि गवनमेंट प्रेस का भी वोष है लेकिन फिर भी सरकार का कार्य थोड़ा-मा सन्तोषजनक ही प्रतीत होता है।

<sup>४</sup> श्री रूमसिह (जिला शाहजहांपुर)--माननीय ग्रधिष्ठाता महोदय, इस ग्रनदान पर जो कटौती का प्रस्ताव पेश किया गया है उसके समर्थन में में प्रपने विचार पेश कर रहा है। माल मंत्री महोवय की भ्रोर से वुभिक्ष सहायता के लिये १६५८-५६ में १करोड़ ४४लाख रुपयारेखा गया था, १६४६-६०में ६८ लाख रुपया रखा गया था लेकिन इस वर्ष कुल४५लाख की रकम ही रखी गई है। में माननीय मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि इस वर्ष भी काश्तकारों की ग्रोला ग्रौर कम वर्षा से बहुत हानि हुई है । पिछली बार भी जब माननीय मंत्री जी ने नुकसान के बारे में बयान वियाया तो माननीय मंत्री जी बहुराइच के रहने वाले हैं उन्हें पूर्वी जिलो से ज्यादा मोहब्बत है, पच्छिमी जिलों के बारे में उन्होंने श्रपने बयान में कुछ नहीं कहा । शाहजहापुर में सुला, हवा भीर बेवक्त की बारिश से फसल खराब हुई, पिछली बार होली में पहले यहा वर्षी हुई लेकिन मान-नीय मंत्री जी ने शाहजहांपुर के बारे में कोई बयान नहीं विया। वहा के किसान बड़ी मुसीबत में है, ग्रमीन वसूली करने में जबरदस्ती श्रौर ज्यादित्यां करते है, श्रभावग्रन्त क्षेत्र में जाकर वह 🗟 ल खोलकर जबरेदस्ती वसूली कर रहे है इसलिये मंत्री जी हमारे जिले के फिसानों का खयाल रखें। वैसे ही लोग सुखे से परेशान थे जो फसल हुई थी वह भी बरबाद हो गई। से प्रार्थना करता है कि वह कृपा कर शाहजहांपर जिले के लगान स्थगित करने की कृपा करें ग्रीर मुसीबत जवा काश्तकारों को तकावी आवि की सुविधा वेने की कृपा करें।

साथ ही में मंत्री जी से यह भी प्रार्थना करूंगा कि भू-राजस्व की वसूली के प्रशासन में खराबियां बढ़ रही है। श्राप इस वसूलयाबी या उगाही के लिये पौने २ करोड़ रुपया खर्च करते है। श्राप वह चाहते हैं कि हम विकेन्द्रीकरण की श्रोर श्रागे बढ़ें तो मेरा समाय है कि यह रुपया प्राप्त सभाग्रों को श्रनुवान के रूप में िया जाय और वह इस मालगुजारों की वसूली करें तो कम से कम चौलम्भा राज्य के श्राधार पर गांव की जनता भी इसको समझे कि राज्य कार्य में हमें भी हिस्सा मिल रहा है। में वाबे के साथ कहता हूं कि श्राप ग्राम सभाश्रों को श्रिधकार विया जाय तो वसूलयाबी तो बेहतर होगी ही साथ ही गांव सभाश्रों को कुछ श्राय भी हो सकेगी और सरकार की जिम्में वारी भी कम हो जायगी। लेकन सरकार सारे काम श्रपने हाथ में ले लेना चाहती है इससे परेशानी बढ़ती है श्रीर कोई काम ठीक नहीं हो पाता। मेरा सुझाव है है कि प्रजाशंत के श्राधार पर जो सोशासिस्ट पार्टी का चौलम्भा राज्य का सिद्धांन्त है उसके श्रनुसार ग्रामसभाश्रों को यह वसूलयाबी का कार्य बेने की कृपा करें।

साथ ही में माननीय मंत्री जी से यह प्रार्थना करूंगा कि उन्होंने ग्राज तक कोई कान्तिकारी कदम नहीं उठाया। सोशिलस्ट पार्टी इस बात की मांग करती है कि ग्रलाभकारी जोतों से लगान हटाया जाय। सरकार जानती है कि सवा ६ एकड़ जमीन लाभ कर नहीं है ग्रौर ग्रगर वह उससे लगान हटाती है तो केवल १० करोड़ रुपये की हानि होगी ग्रौर उससे लगान ८० प्रतिशत किसानों

<sup>\*</sup> वक्ता ने भाषण का पुनर्वोक्षण नहीं किया।

१६६०-६१ के म्राय-व्ययक में म्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—म्रनुदान संख्या ७६१ ३८--लेखा शीर्षक ५४--दुर्भिक्ष सहायता तथा म्रनुदान संख्या २--लेखा शीर्षक ७--भू-राजस्व (मालगुजारी)

का म फ हो जायगा। श्रगर ऐसा किया जाय तो इससे एक बड़ा ग्रसर किसानों के दिमाग पर पड़ेगा कि हमें सरकार ने कुछ राहत दी है, श्रौर हमारी गरीबी को दूर करने के लिये एक कदम उठाया है। केवल १० करोड़ रुपये का घाटा है श्रौर जो १३३ करोड़ रुपये के बजट में प्रशासन में किफायत करने से पूरा किया जा सकता है।

चकबन्दी कानून के बारे में मेरा यह सुझाव है कि जहां काश्तकार चकबन्दी न चाहे वहां न की जाय क्यों कि इससे बड़े-बड़े काश्तकार ही फायदा उठा रहे हैं, छोटे काश्तकार नहीं। चकबन्दी-कर की वस्त्वयाबी सरकार इकट्ठा करती जा रही है क्यों कि सरकार का कहना है कि हम पिछले सालों की जमांबन्दी नहीं बना पाये हैं इस लिये लगान नहीं वसूल कर पाये हैं। तो इस तरह जो रकम इकट्ठा हो रही है इससे किसानों पर भार पड़ जायगा, वसे ही वह टैक्सों के बोझों से दबे हुये हैं। इसलिये चकबन्दी कर को इक्ट्ठा नहीं करना चाहिये। बिल्क में में तो कहूंगा कि चकबन्दी-कर को काश्तकारों पर नहीं लगाना चाहिये। अंग्रेजी शासन में जिस प्रकार जमीन के बन्दोबस्त का टैक्स किसान से नहीं लिया जाता था उसी तरह से चकबन्दी का टैक्स भी किसानों से नहीं लेना चाहिये।

इसी तरह से कोई भी लगान ठीक तरीके से कागजात में इन्दराज करने पर ज्यादा गौर नहीं किया है। में मिताल के लिये कहता हूं कि शाहजहांपुर जिले के जलालाबाद परगने में शिवपुरी इकोने में मेंने देखा कि कई परिवार ऐसे हैं जिनमें एक ही परिवार के लोगों को एक दूसरे के नाम प्रधिवासी भर रखा है; असली काश्तकार से भी लगान वसूल होता है और प्रधिवासी से भी। इस तरह से दुगना, चौगुना लगान वसूल किया जा रहा है। में चाहूंगा कि एक ही परिवार के अलग-अलग नाम अधिवासी और सीरदारी में भर कर काश्तकारों पर जुल्म न ढायें।

सरकार कागजात का बन्दोबस्त करती है तो जहां लगान बढ़ जाता है उसको तो छट नहीं देती है श्रोर जहां काश्तकार का लगान सिकल रेट से घट गया उसको बढ़ा देती है । ऐसा नहीं करना चाहिये। शाजहांपुर में ऐसे सैकड़ों केसेज हैं श्रसली मौरूसी काश्तकार पर १० रुपया लगान है लेकिन कागज पर ४० रुपया रख दिया। काश्तकार हाकिम परगना के यहां जाता है कि हमारे ऊपर बहुत लगान है तो उसकी कोई सुनवाई नहीं होती। तो जहां सरकार काश्तकारों से इस बात की तवक्को रखती है कि वे श्रदालत में जायं वहां सरकारी कर्मचारियों को इस प्रकार का श्रादेश होना चाहिये कि वे श्रपनी ही तरफ से उनकी दिक्कतों को दूर कर दें जिससे किसान को सहूलियत हो सके।

हमारे जिले के अभावग्रस्त क्षेत्र में अभी तक लगान स्थगित नहीं किया गया है श्रीर न उनको तकावी वगैरह दी गई है । अमीन ज्यादती करता है और जबरदस्ती लगान वसूल करता है। मैं मंत्री जी से कहूंगा कि पहले ही वह अभावग्रस्त क्षेत्र था और इस पानी के बरस जाने से अफीम की कास्त बिलकुल बरबाद हो गई । दो बार पानी बरसा और दो बार अफीम बरबाद हो गई, घुल गई । तो इन तरह से चारों तरफ से कास्तकार के अपर बड़ी मुसीबत आ गई है । शाह-जहांपुर जिले की तरफ मंत्री जी ज्यादा तवज्जह करेंगे और अपने अधिकारियों को यह आदेश देंगे कि अभावग्रस्त क्षेत्रों में तकावी का इन्तजाम किया जाय, लगान मुल्तवी किया जाय और लगान माफी का हुक्म दिया जाय । इन शब्दों के साथ में कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हं ।

श्री शिवराजिंसह यादव (जिला बदायूं)—-श्रिष्ठाता महोदय, प्रस्तुत श्रनुदान का सम्बन्ध सीमा प्रदेश के किसानों से ही केवल नहीं है बल्कि गांव की समस्त जनता से है इसलिये इसके महत्व के सम्बन्ध में दो रायें नहीं हो सकतीं। मुझे संतोष है श्रीर इत्मीनान है कि इतना श्रहम महकमा माल का हमारे वयोवृद्ध नेता श्रीर मंत्री ठाकुर हुकुम सिंह पर है जो तजरबे से भरपूर हैं श्रीर पिक्लिक की शिकायत को बड़ी दिलवस्पी से सुनते हैं श्रीर तत्परता से उनका निवारण करते हैं। में श्राशा करता हूं कि वे श्रयनी छाप श्रयने महकमे के कर्मचारियों पर भी पूरी तरह से डालेंगे।

## [श्री शिवराजसिंह यादव]

भूमि व्यवस्था में जो तरमीमें इस प्रदेश में शुरू हुई, उसका पहला कानून जमींदारी उन्मूलन ठाकुर साहब ने ही इस ग्रादरणीय सदन में पेश किया था श्रीर वह ऐसे ग्रच्छे वक्त में तथा ऐसे ग्रच्छे शक्त से तथा ऐसे ग्रच्छे शक्त में पेश किया गया था कि भूमि व्यवस्था की जो तारीफ इस प्रदेश की है उसका यदि ग्रवलोकन किया जाय तो हमें गर्व होता है। मूझे लुशी है कि भूमि-व्ययस्था की करीब-करीब सभी स्कीमें समाप्त होने जा रही है सिवा चकबन्दी योजना ग्रार सीलिंग के कानून के। ये ही दो योजनाए है जिन हो ठाकुर साहब को पूरा करना है।

भूमि व्यवस्था से जहां पैदावार बढ़ती है श्रौर उससे हमारा सोशन श्रार्डर एक निश्चित रूप का बनता है वहां भूमि व्यवस्था से जो तरमीमें होती है उनसे नुकसान भी होता है। नुकसान यह है कि इससे काश्तकारों के बिलों श्रौर दिमागों के श्रन्दर एक श्रिनिश्चितता श्राती है। उनको इत्मीनान नहीं रहता कि श्रगले वर्षों मे कौन-सा परिवर्तन श्रायेगा जिससे वे श्रपने खेत की उन्नति तथा खेती की पैदावार बढ़ाने में दिनचस्पी नहीं लेते। इसलिये मेरा श्रनुरोध है कि चकबन्दी योजना जितनी जल्दी इस प्रदेश में पूरी कर सके, करें। इसके बाद सरकार की श्रीर से ऐलान होना चाहिये कि श्राने वाल १०-२० वर्षों में हम भूमि व्यवस्था में कोई तरमीम नहीं करने जा रहे है ताकि किसान इतमीनान के साथ भूमि पर उन्नत साथनों के साथ मेहनत कर सके श्रीर श्रपने खेत की पैदावार बढ़ा सके।

वूसरा मुझाब मेरा यह है कि लगान बस्ल करने की जो वरे हमारे प्रवेश में है वे यूनीटरी बेसिस पर है, काश्तकार चाहे लाभकर जीत जीतता हो या प्रलाभकर जीत जीतता हो, चाहें बड़े- बड़े फार्म्स का सवाल हो यह जमीन की किस्म के हिसाब से लगान वेता है। हम बेलफेयर स्टेट बनाने जा रहे है। बेलफेयर स्टेट के मानी है कि जो बेरोजगार है उनको हम रोजगार बेने का प्रयास करते हैं। वूसरे मुल्कों में जहां माधन पर्याप्त मात्रा में है वहां ग्रनएम्प्लायमेण्ट पेंशन तक बेते हैं। लेकिन जब हमारे बिलीय साधन सीमित है तो हमको लगान वसूल करने के लिये स्लैब सिस्टम कायम करना चाहिये।

जो लोग श्रामाभकर जोत जोतने हैं श्रीर श्रद्धं बेरोजगारी के शिकार है उनके खेतों की पैदाबार कम होने का एक कारण यह भी है कि उनकी खेती वित्त पोषित श्रम्छी तरह से नहीं है। फिर श्रम अगर हम उनके लगान के रूप में कुछ पैसा ले लेते है तो हम उनके वित्तीय साधनों को श्रीर भी श्रिषक सीमित कर देते हैं श्रीर इससे उनकी पैदाबार घटती है। इस प्रकार श्रमाभकर जोतों के हृषकों से लगान लेना न न्याय संगत ही है श्रीर न उत्पादन में वृद्धि के ही हित में है। मेरा मारूजा यह है कि उन लोगों से जो, इस प्रदेश में श्रनइकोनामिक होत्डिंग जोतते है, लगान न बसूल किया जाय श्रीर उस कभी को स्लैब सिस्टम द्वारा इकोनामिक होत्डिंग वाले श्रीर बड़े-बड़े काक्तकारों के लगानों से पूरा किया जाय । इस तरह से खेती की पैदाबार बढ़ाने में जरूर महद मिलेगी।

चकबन्दी योजना जिस रूप में हमारे प्रदेश में ग्राज की जा रही है उसमें ग्रीर को प्रापरेटिव फार्मिंग की योजना में मुझे तसाबुम मालूम होता है। ग्राज ग्रगर १-६ श्रावमी मिल कर को प्रापरेटिव फार्मिंग करना चाहें तो उनके खेत फिर से बिखर जायेंगे। जाहिर है कि उनकी जहां-जहां जि नि चक मिले होंगे को प्रापरेटिव फार्मिंग करने पर उनके उतने ही खेत हो जायेंगे। इसलिये ऐसा करना चाहिये जिससे को ग्रापरेटिव फार्मिंग को बढ़ावा मिले ग्रीर उसके फलस्वरूप चकबन्दी नष्टन हो। समय कम हैं, में थोड़े में ही कहना चाहूंगा कि इस प्रदेश के जितने ग्रनहकोनामिक होत्रिंग वाले काश्तकार हैं उनको हर हार में चक एक तरफ सटे हुये मिलना चाहिये। को ग्रापरेटिव फार्मिंग सबैव एक साइज के काश्तकारों में होगी ग्रीर सब से पहले हमारे प्रचार के स्वरूप यदि इस प्रदेश में को ग्रापरेटिव फार्मिंग ग्रायेगी तो वह ग्रनहकोनामिक होत्रिंग वाले काश्तकारों में ही ग्रायेगी। ग्रीर इसकी वजह है। ग्रलाभकर जोत वाले जितने काश्तकार हैं खेती उनकी जिन्दगी का पेशा नहीं बल्कि तरीका बन गया है। लेकिन उनके लिये यह बहुत ही परेशानकुन पेशा ग्रीर सरीका जिन्दगी का है।

उनके पास साधन नहीं हैं। उन साधनों को इकट्ठा होकर हो जुटाने में उनको निश्चित रूप से सहूलियत मिलेगी। उनकी आमदनी बढ़ेगी, खर्च घटेगा। इसलिये चकबन्दी योजना में यह भी आवश्यक है कि अनएकोनामिक होलिंडग वाले काश्तकारों को हम हर हार में एक तरफ इकट्ठा कर दें और हर-हार में एक ही Sequence में उन्हें रखें। ऐसा करने से न केवल एक हार में उनके चक इकट्ठा हो जायेंगे बल्कि हर हार में इकट्ठा हो जायेंगे। मुझे आशा है कि इस पर आदरणीय मंत्री महोदय गौर करेंगे।

चकवन्दी योजना के बारे में सरकार की एक नयी स्कीम है कि अब वह चकों के कोनों पर पत्थर लगाने जा रही है। इसमें मुझे एतराज है। चकवन्दी योजना का खर्च पहले से ही काफी ज्यादा है। पत्थर लगाने से वह खर्च और बढ़ जायेगा। जहां चकों के बहुत से कोने हैं वहां पर आपको बहुत से पत्थर लगाने पड़ेंगे। आज किसानों की ऐसी आर्थिक अवस्था नहीं है कि वह इन पत्थरों का खर्चा दे सके। जाहिर है कि ये पत्थर सीमेंट कांकीट के होंगे। टूटने के पदचात् इनका कोई इस्तेमाल गावों मे नहीं होने का। जहां तक मेंड़ों के झगड़ों क. सवाल है, तो जो काक्तकार मेंड़ तोड़ सकता है वह पत्थर को भी हटा कर दूमरी जगह लगा सकता है। मेरी प्रार्थना है कि सरकार इस योजना को बन्द कर दें।

एक शब्द में वसूलयाबी लगान के सम्बन्ध में श्रौर श्रर्ज करूंगा। लगान की वसूलयाबी में ग्रसुविधायें जमींदारों के जमाने में थीं ग्राज कुछ इस तरह की सहूलियत होनी चाहिये जिससे कश्तकार यह महसूस करे कि लगान की वसूलयाबी में श्रव वह असुविधायें बाकी नहीं रह गई दिसम्बर यो मई के बाद गांव के जितने भी कास्तकारों पर बकाया लगान रह जाता है वें सब बकायेदार करार दें दिये जाते हैं और गांव सभाश्रों के प्रधानों से फर्जी श्रंगूठे लगवा लिये जाते हैं और इस तरह की व्यवस्था कायम की जाती है कि कोई भी काश्तकार कहीं पर भी गिरफ्तार किया जा सकता है । श्रीमन्, मैंने ग्रपनी कांस्टीट्र्यू ऐंसी में देखा है कि गांव के प्रधान जंगल से पकड़ कर बुलाये गुये हैं और हेवालातों में बन्द कर दिये गये हैं। प्रधान इत्यादि की गांव समाज में इज्जत है, उनसे लगान वसूल करने में सरकारी कर्मचारियों को जरूर उनकी इज्जत बकरार रखनी चाहिये। इसके ग्रलावा लगान की फेहरिस्त काफी गलत होती है। उस ग्रोर ध्यान देना चाहिये थ्रौर लगान वसूल करते समय इस बात का व्योरा होना चाहिये कि यह लगान उसके कौन कौन से खेत और खाते का है। केवल एक रकम होती है जो मांगी जाती है और वह किसी किस्म का ब्योरा बताने के लिये तैयार नहीं होते है । इतना ही नहीं जो काश्तकार फर्जी या शिकमी दर्ज हैं उनके लगान में भी बढ़ोत्तरी हो गई है। उन लोगों से लगान वसूल किया जा रहा है जिन्होंने उस जमीन को कभी जोता भी नहीं है। इसिल्ये मेरी मारूजा है कि पहले दुरुस्ती कार्गजात करा ली जाय फिर रकम वसूल की जानी चाहिये।

श्री रघुरनतेजबहादुर्सिंह (जिला गोंडा)—माननीय श्रिष्ठाता महोदय, में श्रापका बहुत स्राभारी हूं जो स्रापने मुझे इस स्रनुदान पर बोलने का स्रवसर प्रदान किया। श्रीमन्, मुझे चन्द बातें श्रापके द्वारा माननीय मंत्री जी से निवेदन करनी है। ग्राज हमारे क्षेत्र में परगना बूढ़ापार, साबुल्लानगर तहसील उत्तरीला है। वहां के काश्तकारों ने दरख्वास्त दी कि दस-साला का रुपया है? उत्तमें रुपये को लगान में मुजरा किये जायं। १८ मार्च, १९५६ को मैंने स्वयं दरख्वास्नें दी जिनकी रसीद मेरे पास मौजूद हैं। लेकिन स्राज तक उनका रुपया लगान में मुजरा नहीं हुन्ना ख्रौर न उनकी जमाबन्दी में दुरुस्ती की गई। उनको बराबर परेशान किया जा रहा है ख्रौर उनके वाउचर्स नहीं मिल रहे हैं। मैंने इसके सम्बन्ध में जिलाधिकारियों से भी कहा लेकिन कोई ध्यान नहीं दिया गया। में श्रापे के द्वारा माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि वह ऐसे स्रादेश दें कि उनके वाउचर्स तुरन्त दे दिये जायं।

दूसरी शिकायत यह है कि जब से जमींदारी उन्मूलन हुआ है तभी से काश्तकारों से सरकार द्वारा लगान वसूल हो रहा है। मैं प्रमाण के तौर पर कह रहा हूं कि एक वहीद खां ग्राम केशव नगर के हैं। उन्होंने भ्रपना लगान १३६० फ० से दिया है और उसकी रसीद

[श्री रवुरनते नबहा बुरसिंह]

भी मौजूद है। लेकिन फिर भी उनसे बकाया वसूल किया जा रहा है श्रौर उनके नाम में बकाया दर्ज है। इस तरह के श्रने को उदाहरण है जिनके बारे में तहसीलदार, उत्तरौला को दरहवास्त दी गरी पर श्रव तक उन काश्तक। रों की जमाबन्दी नहीं ठीक की गई। इसलिये मेरा निवेदन है कि इस तरह की श्रनियमितताश्रों की दुरुरती तुरन्त होनी चाहिये श्रौर तब तक उन काश्तकारों से लगान की वसूली नही।

श्रीमन्, जो जमीन भूदान में दी गई उसकी निशानदेही श्रव तक नहीं की गई है श्रौर जो लेखपाल हैं यह बिना श्रपना शल्क लिये, जाने के लिये तैयार नहीं है। ऐसी हालत में काश्तकारों पर लगान पड़ रहा है जब कि उनको जमीन पर कब्जा श्रव तक नहीं मिला है। दौलतपुर ग्रांट श्रौर केशव नगर ग्रांट तथा क्षेत्र के कई गांवों का वाकया है। वहां पर काश्तकार परेशान है। इसलिये ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये कि उनको जमीन पर कब्जा मिल जाय ताकि वह लगान देते रहें श्रौर इस समय जो उनसे लगान मांगा जाता है रोक दिया जावे।

श्राज रे बेन्यू मैनुश्रल श्रौर तकाबी के कानून में परिवर्तन होने की श्रत्यंत श्रावश्यकता है। यह बहुत पुराने हो गये है श्रोर श्रंग्रेनी जमाने के बनाये हुये है। जहां हमारे माल मंत्री जी ने रे बेन्यू के श्रन्य कामों में सुधार किया है वहां इनमें भी सुधार करें। श्राज पैदाबार की जांच के लिये फसल का जो नक्शा बनाया जाता है उसको लेखपाल या कानूनगो बना देते है, वहीं सही माना जाता है। यह ठीक नहीं है। मेरा निवेदन है कि जिस समय यह नक्शा बनाया जाय तो उस पर गांव के पंच श्रौर प्रधान को तस्वीक कराई जाया करें कि श्राया यह सही है श्रौर किम तरह से नुकसान हुश्रा है। सिर्फ उन लोगों के लिख वेने से लोगों की बरबादी होती है। रेबेन्यू मैनुश्रल में है कि पहले गांव का नुकसान, फिर परगने वार श्रौर तहसीलवार श्रौर श्रन्त में जिलेवार नुकसान का नक्शा बनता है तब उस क्षेत्र के नुकसान के परते का नक्शा बनता है। यह बुब्धेवस्था हटाई जाय श्रोर प्रत्येक गांव के नुकसान के शाधार पर ही छूट दी जाय।

श्रीमन्, श्राज हमारे क्षेत्र में बड़े-बड़े बाग कट रहे है श्रीर फर्जी परिमट बन रहे है। जिला श्रिधकारियों से कहा जाता है लेकिन वह कोई ध्यान नहीं वेते। पता नहीं परिमट कैंसे लेते हैं। उसमें शर्त होती है कि जो बाग काटेगा वह लगायेगा। इसिलये इसकी जांच हो कि कितने बाग कटे श्रीर कितने उन बाग भूमि पर पेड़ लगायेगये। श्राज इस प्रदेश में करीब ६० ला व एकड़ भूमि काश्त के काबिल हैं। उसके लिये कोई खास व्यवस्था रेवेन्यू डिपार्टमेन्ट ने नहीं की है, बल्कि श्रव जमीन पर सीलिंग लगाने की व्यवस्था की जा रही है। सीलिंग में मेरा खयाल है कुल १ लाव एकड़ जमीन मिलेगो। इसके लिये सरकार को पांच, छः करोड़ रुपया मुश्रावजे में वेना पड़ेगा। सीलिंग केवल बेहाती क्षेत्रों पर लगायी जा रही है, शहरों के अन्वर इसकी कोई व्यवस्था नहीं हो रही है, हालांकि जमींवारी श्रवालिशन श्रीर भूमि-व्यवस्था कानून बनाते समय यह शादवासन दिया गया था कि श्रीर भी चीजों को नेशनलाइज किया जायगा। श्रतः में चाहूंगा कि जो शहरों में कई मकान रखे हुए है या बड़े-बड़े कारखानेवार है, उनके अपर भी सीलिंग लगायी जाय श्रीर उनकी चीजों का मी वितरण किया जाय। यह सीलिंग की स्कीम, चीन वगैरह में लोगों के जो डेलिगेशन गये, उन्होंने वहां से श्राकर कहा कि यह बड़ी शब्दी चीज है, उसी का यह परिणाम है। में श्रापकी श्राक्ता से मार्शल टीटो ने १४ जून को लेबिइन में जो बयान दिया है, उसके कुछ शब्द स्वत सुनाना चाहता हूं—

"Marx Engles and Lenin would turn in their graves if they knew what was happening in China."

श्रीमन्, जब कम्युनिस्ट कंट्री का प्रधान यह बात चीन के लिये कह रहा है तो वहां की चीजों को लेकर भारतवर्ष में चलाना कहां तक मुनासिब है ? यह सोचने की बात है ।

चन्द शिकायतें और हैं। वह में श्रापके द्वारा माननीय माल मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हैं। मेरे यहां एक करोड़पति नाम का लेखपाल है . . . . . श्री ग्रिधिष्ठाता--माननीय सदस्य ग्रगर नाम न ले तो ज्यादा ग्रच्छा होगा।

श्री रघुरनतेजबहादुर्रासह—मैनाम वापस लेता हूं। दौलतपुर गेंट का एक लेखपाल है। वहां के किसानों ने इस के खिलाफ शिकायते कीं, उसने रुपया ले लिया श्रीर खेतों को गलत तौर से तरमीम किया है, इसके बारे में में चाहूंगा कि माननीय मंत्री जी जांच करवाएं श्रीर जहां के खेतों को गलत तरमीम किया है वह वहां पर ठीक हो जाय। वह दरख्वास्तें S. D. O. उतरौला के पास मौजूद है।

श्रव में चक्रबन्दी के विषय में निवेदन करना चाहूंगा। चक्रबन्दी की स्कीम हमारे जिले में तरबगंज तहसील में चलायी गयी है। लोग इसके खिलाफ है। कुछ माफिक भी है। मैं निवेदन करूंगा कि जिस गांव या क्षेत्र के ७५ फीसदी किसान यह न चाहते हो कि हमारे गांव में चक्रबन्दी की जाय वहां पर वह स्कीम लागू नहीं की जानी चाहिए।

ग्राज यह जो ग्राये दिन भूमि-व्यवस्था कानून में संशोधन किये जा रहे हैं उससे किसानों में बड़ा ग्रसंतोष फैला हुग्रा है। किसी को यह पता नहीं है कि उसकी जमीन उसके पास रहेगी या नहीं। इससे ग्रन्न उत्पादन में ग्रौर बड़ी बाधाएं पैदा हो रही है। इसलिए सरकार को चाहिए कि एक ऐसी स्कीम बनाये जिसमें १०, २० साल तक एक ही व्यवस्था हो, ग्रौर उसमें किसी किस्म का परिवर्तन न किया जाय। जब भूमिधरी का कानून बना था तो कहा गया था कि किसी भूमिधर के पास से जमीन नहीं निकाली जायगी। ग्रभी हाल में सी० एल० ग्रार० डी० स्कीम सरकार द्वारा स्वीकृत की गयी है। उसके ग्रन्दर भूमिधरी खातों पर जो काबिज है उनका ग्रलग खाता बनाने का ग्रादेश हुग्रा है। इस स्कीम के ग्रन्दर ग्रब उनकी जमीन निकल रही है। जो भूमिधर है। यह बड़े काश्तकारों की जमीने नहीं है। ये छोटे-मोटे काश्तकारों की जमीने है, जिन्होंने ग्रपनी बसर ग्रौकात के लिये ग्रपनी जमीन जबानी रहन कर दी थी या बटाई पर वे दी थी। ग्राज लेखपाल द्वारा पड़ताल करवा कर वह जमीनें भी उनसे निकाली जा रही है। में चाहूंगा कि इन जमीनों को उनसे न निकाला जाय।

जो सवा ६ एकड़ के या इसके कम के खाते है उनका लगान आधा कर देना चाहिये क्योंकि छोटे-छोटे खातों से किसान को ज्यादा फायदा नहीं है। वह ग्रलाभकर जोते है। इसलिये उनका लगान ग्राधा किया जाय। ग्राज जो खेतों के लिये मुग्रावजा सरकार निर्धारित किये हुए है वह बाजार भाव से बहुत कम है। फैक्ट्री बनाने के लिए, नालियों के लिए, नहरों तथा और कामों के लिए जो जमीन सरकार द्वारा ली जाती है उसका मुग्रावजा सौ रुपया श्रौर दो सौ रुपया एकड़ दिया जाता है जबिक गांवो मे एक हजारे या डेढ़ हजार रुपया एकड़ के हिसाब से उसका भाव होता है। मै निवेदन करूंगा कि इस तरीके से जो मुम्रावजे की मौजूदा व्यवस्था है उसमें सुधार होना चाहिए। शहरों की जमीन श्रौर मकानों के मुग्रा वर्जे के लिये तो कांस्टीट्यूंशन में भी निर्धारित है। लेकिन किसान की जमीन के लिये कोई खास व्यवस्था नहीं है। इसलिये उनके लिये भी जो जमीन पर श्राधारित है श्रपनी जीविका के लिये, कोई उचित व्यवस्था होनी चाहिए जिससे कि उनको उसका उचित दाम मिल सके। यह दो तरीके की व्यवस्था ग्रौर दो तरीके का व्यवहार नहीं होना चाहिये कि एक तरफ शहर वालों को ग्रौर कारखानेदारों को तो उचित मूल्य मिले लेकिन दूसरी तरफ किसान को उसकी जमीन का उचित मूल्य न मिले। ग्रतः मेरा सुझाव है कि खेतों का मुग्रावजा कम से कम २,००० फी एकड़ हो। इन शब्दों के साथ में कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हं भीर भ्राशा करता हुं कि माननीय माल मंत्री जी इस पर विचार करेंगे ताकि जनता को कल्याण हो ।

' श्री चन्द्रसिंह रावत (जिला गढ़वाल) — प्रधिष्ठाता महोदय, में प्रस्तुत ग्रनुदानों का हुदय से स्वागत करता हूं ग्रौर जिस तत्परता ग्रौर चतुरता ग्रौर सुन्दरता से माल मंत्रो जी हमारे

[श्री चन्द्रसिंह रायत]

इस विभाग का नेतृत्व करते चले श्राये ह, उसके लिये में उन्हें बधाई देता हूं। परन्तु मुझे इतना श्रवश्य खेद है कि जमींवारी एबालीशन जो कि उत्तर प्रदेश के प्लेन्स के हिरसे में हो चुका है वह कानून श्रभी तक हमारे पहाड़ों। के लिये नहीं बना श्रीर यह बार-बार टलता ही चला जा रहा है। में यह श्राशा करता हूं श्रीर यह प्रार्थना करता हूं माल मंत्री जी से कि इस जमीदारी उन्मूलन बिल को बहुत जल्दी इस सदन में पेश किया जाय श्रीर उसकी पारित कर दिया जाय क्योंकि इस कानून के इस हाउस में देर में पेश किये जाने के कारण यहा के टेनेन्ट्स को बड़ी-बड़ी मुनीबत झेलनी पड़ी है श्रीर बहुत से टेनेन्ट्स की जमीन को उनसे निकाला जा चुका है।

माननीय बलवेव सिंह जी खुद इस जात को जानते हे श्रीर उन्होंने पहाइ के इलाके का वौरा किया है। वहां पर जितने गरीब लोग थे जो उनकी टेनेन्सी होल्डिंग्स थी उनसे उनके हिस्से बारों ने उन गरीबों को महरूम कर दिया श्रीर कब्जा बेव्यल कर दिया। मेने सरकार से बहुत पहले यह प्रार्थना की थी कि ऐसे एक्सट्रीम केम में जहां कि यहुत गरीब लोग है जो कि श्रपनी जमीन के लिये श्रवालत में मुकदमें दायर नहीं कर सकते, न तो उनके पास पैसा हे, न उनके पास कोई गवाह हे श्रीर उन गांबों के जितने ठाकुर श्रीर पंडित है वह उन गरीबों की श्रीर कोई भी ध्यान नहीं देते श्रीर कोई भी उनके मुकदमों में सहायता करने वाला नहीं मिलता, ऐसी हालत में मेने सरकार से दरल्यारत की थी कि कुछ ऐसे स्पेशल श्राफिसर्स तजुर्बेकार होने चाहिए जिनको कि Summary powers for restoration of the land (समरी पावर्स कार रेस्टोरेशन श्राफ दो लेन्ड) हों, उनको इस तरह के हुक्म करने की पावर्स हों।

परन्तु मुझे खेद है कि सरकार ने इस तरह की कोई भी तजबीज हमारे इस सदन में पेश नहीं की जिससे कि उन गरीबों को उनकी जमीन का कब्जा दिलाया जा सके। जहां तक कि सेंटिलमेन्ट ग्रापरेशंस पहाड़ के इनाकों में हुए हैं वहां पर उन गरीबों की जमीन उनसे निकाल ली गई हैं। इसके लिये में नहीं समझ पाया कि श्रव इस सदन के द्वारा श्रीर कौन सी ऐसी तजबीज हो सकती है जो कि रेंगुलर सृद्स के द्वारा उन टेनेंसी होल्डिंग्स के बारे में डिक्री कराकर उन जमीनों पर श्रपना कब्जा करा देते हैं। मुझे खेद हैं कि ग्रगर इस बिल के लाने में देर न होती तो इस कदर उन गरीबों को इन मुसीबतों का सामना न करना पड़ा होता। श्रव मं यह प्रार्थना करता हूं कि इस बिल को पेश करने में ग्रीर पास कराने में ग्रधिक देर न की जाय।

इस हे साथ ही साथ म यह बताना चाहता हूं कि पहाड़ के इलाके में एक जो नयावाद कानून पास हुआ ह उससे जंगनों के उत्तर श्रीर बहुत बहा प्रहार हुआ। श्रीर नई जमीने कुछ पहाड़ों पर दी गई जिससे पहाड़ों के उत्तर लैंड स्लाइड श्रीर इरोजन बड़ें पेमाने पर हुए। उसका नतीजा यह हुश्रा कि हगारे प्लेग्स में बड़ें फ्लाड श्रायें श्रीर खेती की बरबादी हुई। में चाहता हूं कि श्रार सरकार यहां की जमीन को बचाना चाहती ह तो उनको श्रयक्ष्य एक कदम श्रामें बढ़ाना होगा श्रीर पहाड़ों पर ऐसी बीजों को श्रामें से करना बन्द करना होगा जिससे लैंन्ड स्लाइड बन्द हों श्रीर प्लेग्स में पलड का श्रिषक श्राना बन्द हो श्रीर जमीन जो बिलकुल खत्म हो जाती है वह भी बग्द हो सके।

इसी के साथ-साथ में यह निवेदन करना चाहता हूं कि पहाड़ों पर जो पापुलेदान एक्सेस हो गई हैं उसका भार जमीन पर इतना ज्यादा हो गया है जिससे जमीन के श्रन्वर यह ताकत नहीं रह गई हैं कि वह उस पापुलेदान को पैवा करके खिला सके श्रीर उसका गुजर-बसर कर सके। उस पापुलेदान को तराई-भावर के इलाके में जमीन दी जाय जिससे वह उस जमीन को काटकर कोलोनाइज करे। में दरख्वास्त करता हूं कि माननीय मंत्री जी को इस तरह की स्कीम को श्रपने हाथ में लेना चाहिये जिससे एक्सेस पापुलेदान को मदद पहुंच सके ताकि मैदान में श्रीर पहाड़ों में जो नुकसान होता है उससे बच सके।

इसके साथ ही साथ मंने कई बार इस सदन में सरकार से यह प्रार्थना की थी। कि कैले-मिटीज, जो हमारे देश में बराबर श्राया करती हैं श्रौर हर साल चली श्राती है श्रौर जो एक तरह से परमानेन्ट फीचर हमारे उत्तर प्रदेश में हो चुकी है उस तरफ सरकार का ध्यान मै श्राकित करना चाहता हूं। एक दिंभक्ष विभाग हमारे उत्तर प्रदेश में सरकार की तरफ से अवध्य खुलना चाहिये। यह कैलेमीटीज हमारे प्रदेश में बड़े पैमाने पर बराबर चली श्रा रही हैं। मै समझता हूं उस का मुकाबला करने के लिये हमारी सरकार को एक विभाग अवध्य खड़ा करना चाहिये तािक हम लोग उन मुसीबतों पर विजय पा सकें। हम लोग अपने यहां फैमिन रिलीफ फंड बहुत बड़े पैमाने पर चालू करें तािक तुरन्त ही सहायता पहुंचाने के लिये हमारे पास छंड की कोई कभी न रहे। उस स्कीम को भी सरकार चालू करें और उसमें इतना धन उपलब्ध करें कि हमारे प्रान्त के किसी भी इलाके में जहां लोग पीड़ित होते हैं उनको सहायता पहुंचाई जा सके।

यही नहीं बिल्क इसके अलावा में यह भी सरकार से दरख्वास्त करूंगा कि हमारे यहां जो फैमिन रिलीफ फंड होगा उसकी तजवीज हमारी सरकार की ओर से बहुत जल्द आनी चाहिये। मुझे यह मालूम है कि यह डिपार्टमेन्ट बहुत पहले से यहां पर चला थ्रा रहा है लेकिन वह उस जमाने का है जब ५ साल या १० साल में इस तरह की मुसीबतें श्राया करती थीं। तब इतनी खराब हालत नहीं थी। तब ५,७ साल का इन्टरवल हुआ करता था लेकिन श्रब वह इन्टरवल गायब हो गया है। श्रब साल ब साल उस मुसीबत का दौर चला करता है। इसलिये श्रब इसके ऊपर पक्के तौर पर सोचने की जरूरत है श्रौर में समझता हूं कि हमें इसको नजरन्दाज नहीं करना चाहिये क्योंकि हमारी सरकार की श्रोर से फैमिन ग्रस्त एरिया को जो सहायता दी गई वह बिलकुल नामिनल थी। श्रगर सेर, दो सेर श्रनाज किसी गरीब को मिल गया तो में समझता हूं कि उससे क्या लाभ हो सकता है। बड़े खान्दान जिसमें ४,१० बच्चे होते हैं उनकी इससे क्या सहायता हो सकती है।

इसके श्रलावा श्राप जानते हैं कि हमारी मशीनरी में बहुत कमी है। वह बहुत पुराने जमाने से चली श्रा रही है। उस सहायता में छीज हो जाना, चोरी चले जाना श्रौर बटवारे में कमी हो जाना स्वाभाविक बात है। इससे श्राप समझ सकते है कि उस सहायता में उस फैंमिन ग्रस्त एरिया के लिये कमी हो सकती है। इस प्रकार से उनको छोटी मात्रा में सहायता उपलब्ध होती है। इसलिये में यह तजवीज करूंगा कि हमारे देहात के इलाके में जहां पर पलड श्रौर फैंमिन श्राता है वहां पर हमारी सरकार की तरफ से एक ग्रेन स्टोर होना चाहिये। चाहे पलड श्राये या न श्राये लेकिन सुरक्षा के लिये सरकार की तरफ से ग्रेन स्टोर हर साल भरे जाने चाहिये श्रौर ऐसी सुरक्षित श्रौर सेंट्रल जगह पर वह होना चाहिये कि वहां पर पक्की सड़कें हों श्रौर जरूरत पड़ने पर फैंमिन ग्रस्त इलाकों में श्रासानी से सहायता पहुंचायी जा सके।

श्री गोविन्दिंसह विष्ट—माननीय श्रिधिष्ठाता महोदय, मेरा बोलने का मंद्या नहीं था लेकिन चन्द्र सिंह जी ने दो-एक बातें ऐसी कह दी जिससे मुझे ऐसा मालूम हुश्रा कि मुझे लामुहाला बोलना पड़ेगा।

श्रीमन्, कुछ स्लोगन्स बन गये हैं कि कहीं कोई खराबी हो, फौरन ब्राह्मण व ठाकुर को गालियां देना शुरू कर दो। यह ग्राजकल का प्रोग्नेसिविज्म है। चाहे कसूर उसका हो या न हो, लेकिन उसे गाली देना एक फैशन है। ग्रागर कुछ माननीय सदस्य ऐसा नहीं करेंगे तो प्रोग्नेस रुक जायगी ऐसा लगता है। किसी एक ने कसूर किया हो तो सारे लोगों को गिलियाना ठीक नहीं है मगर ऐसी गालियों की बौछार इघर से ग्रौर उघर से, दोनों तरफ से होती है। एक तरफ तो ग्राप कहते हैं कि कुछ लोगों को जाति विषेश के कारण दबाया गया, लेकिन टाइम बेटाइम कुछ लोगों को बिना कारण गालियां देने से तो देश की या पिछड़े लोगों की प्रोग्नेस नहीं होगी। उन लोगों के भी दिल ग्रौर दिमाग हैं। उन्होंने भी दुनिया चलायी है। उन्हों गिलियाने से तो मेल-

[भी गोविन्दसिह विष्ट]

मुहब्बत नहीं बढ़ेगी, देश ग्रागे नहीं बढ़ेगा। इन छोटी चीत्रों में जाति-पांत के सगड़े नहीं उठाने चाहिये। यह देश एक हे, हम सब एक ह श्रीर इर्गानये उस तरह की बात हर समय नहीं होनी चाहिये। रात, दिन गाली स्गते-सुनते मेरे तो फान पक गये।

श्री चन्द्रसिंह रावत—प्वाइंट प्राफ ए सप्लेनेशन । मे कह रहा था . . . .

श्री ग्रधिष्ठाता---ग्रापका व्यवस्था का प्रक्त नहीं है। प्याप बैठिये।

श्री गोविन्दसिंह विष्ट - दूसरी बात येरे मित्र श्री चन्द्र मिह रावत जो ने यह कही कि कुमार्यू जमीदारी एवालिशन बिल नहीं श्राया। या वहा श्रत्याचार हो रहा है। में कहता हूं कि यह सही नहीं है। Kumaon Miscellaneous Provisions Act, 1956 के अनुसार यहां इविक्शन बन्द हे श्रीर श्राप कोर्ड कार्यवाही हो तो दफा ४४७ ता० हि॰ श्रीर श्रूर जा॰ फी॰ के श्रुनुसार कहता वापम मिल सकता ह। श्रार कोई जाने नहीं श्रीर कह दे कि ऐसा कानून नहीं है, तो में कहंगा कि पहले वह कानून पढ़ कर यहां आये, फिर श्रुपनी बात कहे। जहां तक जर्मादारी उन्मलन का सवाल है श्रीर इंट्सी-डिएरीज को समाप्त करने का सवाल है, यह होना चाहियं, लियन कुमाय् में कोई जर्मीवारी प्रधा नहीं है, वहां कोई जर्मीवारी महीं है। कोई बड़ा एकरेज हिस्सवारों के पास नहीं है श्रीर इमलिये में कहंगा कि उसके लिये उल्टा, सीधा कहना भी एक फेशन हो गया हैं। जेरे श्रुन्य बिलों में लामियां पाकर आपने उनको नाथस लिया है, इसको भी श्राप वापस लेने की कृता करें। इससे गरीबों का भला होने याना नहीं है श्रीर जो ताकतवर है उनका ही भला होगा। श्रुगर पिरहु श्रीर गरीब सीयों का भला फरना है, तो वह इससे नहीं होने वाला है। नया बिल बनाइये श्रीर तब जल्द सदन में लाइये।

तीसरी बात, में देल रहा था, एक किताब जो बांटी गयी है इससे पता चलता है कि पैवाबार गल्ले की श्रीसत में गिरी है, कम हुई है, कंडोशन फेक्ट के हिसाब से पैवाबार का प्रतिशत इस प्रकार है: चावल ६ म.६, गेहें मम.३, क्वार ६६.६ श्रावि, तो पैदाबार गिर रही है। दूसरी तरफ पृष्ठ २२ में हम देख रहे है पश्चों की संन्या भी १६४५ के मुकाबले में कम हुई है। दुषार गाय जो १६४६ में ६०,६६,०५० थीं, १६५६ में केवल ५७,६१,२७६ ही रह गयों। इसी तरह से बादा व बादायां जो १६५१ में ५७,६४,४२१ थे, सन् १६५६ में ५३,१७,६४म ही रह गये।

(इस समय २ बजकर २५ मिनट पर भी धन्यक्ष पीठामीन हुए।)

यह सब क्या लिखा है। हमें इसे देखना चाहिये। गी-रक्षा कानून हमने बनाया लेकिन यह प्रयूरा होने से नाकामयाब रहा। गोबन के ह्यान की बनाये बिना भारत में पैदावार क नहीं सकती।

तीसरी बात श्रीमन्, में बन्दोबस्त के बारे में कहना चाहता हूं। कृगायूं में बन्दोबस्त से लोग परेशान है। जिस तरह यहां चकबन्दी में लोग परेशान है, उसी तरह वहां पर लोग बंबोबस्त से परेशान हैं। यहां की तरह वहां भी उसके लिये हाहाकार मचा हुआ है। किसी गांव में अगर टिक्डो आ गयीं तो वह पत्ती या टहनियों की ही नहीं, यहां की खान तक का सफाया कर देती हैं। फसलों की बड़ा नुकसान होता है। इसी प्रकार कुआयूं में अन्दोबस्त के प्रविकारी गांवों को उजाड़ कर दे रहे हैं। यूसबोरी जोरों पर हैं। में चाहता है कि जिस तरह यहां पर चकबन्दी कमेटी होती है उसी तरह वहां के लिये भी अगर संटिलमेट कमेटी बना दी जाय तो अच्छा हो।

ग्राज लोगों को यह पता नहीं चलता कि लोगों के नाम कीन-सा खेत है। वहां तो विन में नकशे बनते हैं ग्रीर रात में रवड़ लगानी पड़ती है, वहां पर कुछ ए० ग्रार० ग्री० भेने गये हैं जो शरीर से बहुत भारी हैं ग्रीर पहाड़ पर चल कहीं सकते। में उनकी नीयत पर कोई शक नहीं करता। वह वहां पर भेजे गये हैं लेकिन वे मौकों पर पहुंच ही नहीं पाते हैं। पूरी तरह से बेरीिक केशन्स होता ही नहीं है। पहाड़ों पर दो-दो मील ऊपर और दो-दो मील नीचे चढ़ना पड़ता है। उनको चढ़े उतरने में तकलीक होती है। नतीजा यह होता है कि वे मौकों पर तो जाते नहीं, अपने यहां ही बैठे-बैठे कागजों में खाना पूरी करते रहते हैं। गलत तरीके से खेत व कब्जे मार्क होते रहते हैं। जो नीचे से लिख दिया जाता है वही ऊपर से पास हो जाता है। उसी पर ऊपर से मोहर लगा दी जाती है। यह मैं सोलह आने ठोक कह रहा हूं। चकबन्दी से जो तकलीक पश्चिमी जिलों में थी, वही तकलीक बन्दोबस्त से वहां पर है।

जित तरह से मेरठ, सहारनपुर वगैरह पश्चिमी जिलों से म्राकर लोगों ने प्रदर्शन किये म्रीर म्रापने किर उसमें कुछ सुवार किया, उसी तरह वहां के लोग भी प्रदर्शन कर सकते हैं। मगर मेरी मांग है यह सुवार बिना प्रदर्शन के किया जाय। में म्रभी गोंडा जिले में गया। वहां के लोग चकवन्दी का घोर विरोध कर रहे हैं। वहां तरबगंज के गांव वालों को मालूम तक नहीं किया गया कि चकवन्दी होने वाली है। वहां पर लोगों को बताया तक नहीं गया। म्रापके म्राकितरों को पता है कि म्राप वे चकवन्दी नहीं करायेंगे तो म्राप नाराज हो जायेंगे। लिहाजा उन्होंने क्या किया? गांव में जाकर एक-दो म्रादिमियों को म्रपनी तरफ मिला कर दस्तवत करा लिये म्रीर कह दिया गया कि वहां पर घोषणा कर दी गयी है। यह लिख दिया गया। बड़ी मुश्किल से कुछ लोगों को बाद में यह मालूम हुम्रा कि उनके गांव में चकवन्दी होने वाली है। उन्होंने दरखास्त दो कि वहां चकवन्दी न की जाय। उनके उन्न जिलाधीश ने समाभ्रत न किए। बांच हजार लोगों ने गोंडा कचहरी में प्रदर्शन भी किया। जब वहां के लोगों को एतराज है तो क्यों वहां पर चकवन्दी हो रही है। सरकार का तो कहना है कि जहां की जनता चाहती है वहां चकवन्दी हो, वहीं पर चकवन्दी की जातो है मगर तरबगंज में वास्तविकता इसके विपरीत है।

श्रव श्रीमन्, चूंकि श्रापने लाल बत्ती जला दी, इसलिये मुझे श्रत्मोड़ा की श्राग की याद श्रागियो। वहां पर हर साल श्राग लग जाया करती है। मगर क्या करें? कुछ राजा का प्रताप होता है श्रौर उसे भुगतना ही पड़ता है। में कहता रह गया मगर कोई सुनवाई नहीं हुई। वियौरागढ़, रानी खेत श्रौर श्रत्मोड़ा के लिये मैंने मांग की कि वहां पर फायरिश्र गेड का प्रबन्ध होता चाहिये। मैंने खत भी उसके लिये बार-बार मुख्य मंत्री को लिखे। उसके बाद वियौरागढ़ में श्राग भी लगी। मैंने कहा कि श्रगर मेरी बात को मान लिया गया होता तो यह श्राग क्यों लगती? मैंने फिर फायरिश्रगेड श्रत्मोड़े व रानी खेत में लगाने की बाबत लिखा। श्रत्मोड़ा में जब दोबारा श्राग लगी—तो मेरे पत्रोत्तर में सरकार कहती है कि वहां फायरिश्रगेड एगिजस्ट करता है। मैंने चैलेंज किया तब दूसरे मंत्री कहते हैं कि गलती से नोर्टिंग हो गयी वह उत्तर गलत था। श्रापकी तो कागज में गलती होती है वहां सब चौपट हो जाता है।

दुः ल तो यह है कि यहां पर लाखों लोगों के रिश्रेजेंडेटिव श्रगर कोई शिकायत करें तो कुछ सुनवाई नहीं होती श्रौर एक पटवारी जो लिख दे वह ब्रह्म-वाक्य श्रौर चित्रगुप्त का लेख हो जाता है। कम से कम हम जो कहें सरकार उसकी जांच तो करा ले, रेफ्यूट तो कर दे। श्रहमोड़े की श्राग में मदद क्या दी गयी? दस, दस रुपया फी श्रादमी। क्या जले पर नमक खिड़का है श्रापने। गोविन्द बल्लभ पन्त जी श्रौर जवाहरलाल जी तो इस सरकार के नहीं हैं, उन्होंने ५ हजार रुपया व ३ हजार रुपया भेजा श्रौर हमारी सरकार ने १०, १० रुपये दे दिये कि मिठाई खाकर खुशी मनाश्रो। तो में सरकार से चाहता हूं कि श्रहमोड़े के श्रीक-पीड़ितों को ज्यादा मदद दे श्रौर घर बनाने के लिये काफी मदद व कर्ज तुरन्त दे।

श्री माताप्रसाद (जिला जोनपुर)—ग्रादरणीय श्रध्यक्ष महोदय, में प्रस्तुत ग्रनुदान का समर्थन करने के लिए खड़ा हुग्रा हूं। में कुछ सुझाव मंत्री जी को देना चाहता हूं। सबसे बड़ी कठिनाई श्राज यह हो रही है कि बैनाम जो हुग्रा करते थे वह पहले तो कानूनणो या श्री मा राप्रसाव

बूसरे लोग जाकर मो हो पर प्राप्ति न-गारित कर प्रिया हराय, ली ल इर समथ उसका निक्ष ऐसा कर दिया गया है कि १-१ सात, के रहा । महत्म कर्नारों महात है और की रिजिस्ट्रार, पान्नगी, कभी लहनी प्राप्त का एक ही के की कि का सानि तारीसों पर तारी है पड़तो है। इस कि लोग बहुत क्या का परणान राक्षी के कि कि कि कर कर मा कि मती जी कोई एसी ट्यारिया करें जिससाय, जना का एक गानि है।

दूषरी लीज संया शाना ना । ना । १०० । १०० है। स्वामनों में ही अञ्चलिया है। कहा पर के १०११ मारे नित्र का १०० है। मारे नित्र किलो से १००० से कामना का दर्गाह है। १०० १०११ मारे नित्र का हिन्द से कामना का दर्गाह है। १००० से १०० से १० से १०० से १०० से १०० से १० से

तीसरी जीज म करा ज त्या हु लारिन राम माम विकास में या प्राप्त वालीय सरकार से इसका सम्बन्ध नहीं है, क्यों प्रमुख से सुन का निर्माण की है। सार वाली प्राप्त की है। सुनाय वे कि बहुत से लीग जी पाकितान कर गान का निर्माण की तो स्वाप्त की है। सुनाय वे कि बहुत की स्वाप्त की प्राप्त की प्राप्त की स्वाप्त की की स्वाप्त की प्राप्त की की स्वाप्त की प्राप्त की प्राप्त की प्राप्त की प्राप्त की की प्राप्त की प्राप्त की स्वाप्त की

लेखपालों के विषय मं यहां सहुत कर कहा गया, श्रीर हे नो नहीं थान. लिक्न एम बात हमें मालूम हुई पूछने से कि लंका है। इसने हैं कि हर है कि हर के का गया का गान एक प्रावमी के प्राप्त संस्थानिक के प्राप्त के प्रीर स्थान के प्रीर स्थान के प्राप्त के प्राप्त के प्रीर स्थान के प्राप्त के कि के प्राप्त के प

मुझे एक कानुनगां न बलनाया कि नरकार मं पृथा गया था है ते हिन्द में मितने मित है और वह सूचना तत्काल मायी गई थी। जन्मान महा दि हम क्या कर धार हम उमकी सही सूचना मगान तो कम स कम १०-१५ में अ एग जान भी र उम बाब म अधून ही जकरी का करने में तो उन्होंने सभी लेखाताों को बुनाया भी क्या मन मान गब्दे पृथ् िया कि अने हत्के प्रक्रित मन्दिर है, इस तरह स ५ मिनह म ही प्र गिर्म के बाव का प्राप्त भीर वह सरकार के पास कले आये। तो कहने का मतत्व प्राप्त का भाग है कि कह सही-सही काम नहीं कर पाल, का भाग ह का का रहा का प्राप्त का मत्व का महिन्द की उठानी पहली है। इस्थाय एसी कावन्य होनी का मिये कि गावों में को पंचायत में के ट्री या बूसरे का का बार ही होत है। उनम भी इन मान या स्पत भी जाय मान ही जाय। इस पर मंत्री जी को सकर हमान बेना का साथ है।

तीसरी चांज मुझे प्रयमं जिलं क बार में कहती है। घर जि । म पूरान सर्वावारों के कृष्ठ ऐसे कारिन्दें हैं जो जमींबारी के जमाने की क्सीबी म प्राप्त भी परता अनीना के पट्टें कर रहें। गांव समाज की जमीन को बह रुपये लकर पुरानी त्नीबा म पहुट कर दा है और उसीद देतेंहैं। भौर जन रसीदों के आधार पर जिसके नाम पट्टा किया आता है यह प्रवानन में जीत जाता है १६६०-६१ के भ्राय-स्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान— भ्रनुदान संख्या ३८--लेखा शीर्षक ५४--दुर्भिक्ष सहायता तथा भ्रनुदान संख्या २--लेखा शीर्षक ७--भू-राजस्व (मालगुजारी)

भौर गांव समाज की जनीन का नुकसान होता है। इस तरह से हमारे यहां लोग नाजायज फायदा उठा रहे हैं। तो इस सम्बन्ध में उन पुराने जनीदारों के कारिन्दों को ऐसा करने से रोकने की कोई व्यवस्था की जानी चाहिये।

चौथी चीज मुझे नागरिक क्षेत्रों के बारे में कहनी है। श्राजकल खासतौर से कस्बों के स्मास-पास रहने वाले काश्तकारों को बड़ी परेशानी उठानी पड़ रही है। उनको तरह-तरह से परेशान किया जाता है। में खासकर मछनीशहर के कसबा धिमुत्रा की स्रोर ध्यान दिलाना चाहता हूं। वहां पर जनींदारी दूटी नहीं है। वहां पर जनींदार उसी तरह से लगान बसूल करते हैं, गांव सभा को कोई भी श्रधिकार प्राप्त नहीं है। तो वहां पर या तो ग्राम सभा ही रहे या कसबा हो, जैसा भी उचित हो किया जाय।

पांचवीं चीज में यह कहना चाहता हूं कि ऐसी भूमि जहां पर लोग बहुत दिनों से आबाद हैं, खास कर हरिजन लोग उनकी जमीन आबादी नहीं लिखी गई है। लेखपाल से कहा जाता है तो वह उसका इन्दराज नहीं करते हैं। इसलिये सरकार की ओर से ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये कि जहां पर भी लोग बसे हुने हों, उनकी जमीन आबादी में जरूर दर्ज होती चाहिये कि उनकी जमीन मिल जाय। आबादी दर्ज न होने के कारण कई ऐसे केने ज चले हैं, हमारे जिले में बहुत दिनों से लोग बसे हुने थे लेकिन वह जमीन जमीं दार या जिसके भी नाम दर्ज थी, उन्होंने मुकदमें चलाये और उसके कारण उनके मकान गिरा दिये गये और वह इस तरह से निर्वासित हो गये। तो इस तरह की कोई व्यवस्था होनी चाहिये कि जो लोग बहुत दिनों से बसे हुने हैं, आबाद हैं उनकी आबादी दर्ज होनी चाहिये।

श्रीमन्, श्राज ग्राम समाज में जो जमीन निकलती है उसके लिये नियम बना हुग्रा है कि वह हीन खेतिहरों को दी जाय लेकिन प्रवान उसका पालन नहीं करते हैं ग्रीर ज्यादातर ऐसे हैं को जाने में दे देते हैं जिनके पास पहले से जनीनें रहती हैं या श्रमने किसी भाई भरीजे या सम्बन्धी को लिख देते हैं। इसलिये सरकार को ऐसी ज्यवस्था करनी चाहिये कि जिनके पास जनोनें नहीं हैं, जो भूमिहीन हैं उनको ही जनीन दी जाय ग्रीर कड़ाई के साथ इसकी जांच कराई जानी चाहिये। इन शब्दों के साथ में इस श्रमुदान का समर्थन करता हूं।

## (श्री ग्रमरनाथ का नाम पुकारे जाने पर)

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी (जिला कानपुर)—मै यह व्यवस्था का प्रश्न उठा रहा था कि परसों के बाद कुछ दिनों के लिये यह हाउस उठ रहा है ग्रौर उसके बाद जब ग्रसेम्बली बैठेगी तो लेजिस्लेशन वर्क शुरू हो जायगा। लेकिन ग्रभी तक हमें यह मालूम नहीं हो सका है कि यह कार्य किस त्रकार से ग्रायेगा। वक्त पर सूचना न मिलने का नतीजा यह होता है कि न हम तैयार होकर हो ग्रा पाते है ग्रौर न वक्त पर संग्रोवन ही ला पाते हैं। नियम के ग्रनुसार तीन दिन पहले सूचना हमें मिलनी चाहिये। ऐसा भी हुग्रा है कि इसके कारण एक-दो बार ग्रसेम्बली को स्थिगत करना पड़ा है।

श्री ग्रध्यक्ष—इस प्रश्न को ग्रापको प्रश्नों के तत्काल बाद हो उठाना चाहिये था क्योंकि कार्यक्रम के बारे में पूछने का वही समय होता है। बीच में इस वक्त कोई जवाब नहीं मिल सकता। इसका जवाब ग्रापको बाद को मिलेगा। जो मंत्री जी इस समय उपस्थित हों वे माननीय मुख्य मंत्री से सलाह कर लें ग्रीर कल, माननीय नेता सदन या उपनेता सदन जी उस समय रहेंगे, वे सदन को सूचना दे देंगे।

श्री कल्याणराय (जिला रामपुर) — मेरा सुझाव यह है कि ३० मिनट के बजाय असिनट का समय कर दिया जाय क्योंकि ग्रभी बहुत से लोग बोलना चाहते हैं।

श्री ग्राध्यक्ष-जब श्रमरनाथ जी बोल लेंगे तब श्रापके सुन्नाव पर विचार होगा।

श्री ग्रमरनाथ (जिला गोरखपुर)—माननीय ग्रध्यक्ष महोदय, जो ग्रनुदान ग्राज प्रस्तुत है उसके सम्बन्ध में जो माननीय गेदा सिंह जी ने कटौती का प्रस्ताव प्रस्तुत किया है में उसका समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं।

माननीय श्रध्यक्ष महोदय, इस विभाग का सम्बन्ध प्रदेश के एक बहुत बड़े समुदाय से हैं। इस विभाग का जो काम करने का तरीका है, उसके बारे में में श्रापका श्रोर सदन का ध्यान दिलाना चाहता हूं। माननीय श्रध्यक्ष महोदय, श्राज जिस प्रकार से प्रदेश में मालगुजारी की वसूली हो रही है, खास कर हमारे जिला गोरखपुर में तो किसानों के साथ बड़ी भारी ज्यादती हो रही है। जो इलाका बाढ़ से तबाह है वहां किसानों को किसी तरह की मदद देना तो दूर रहा उनसे जबरदस्ती मालगुजारी वसूल की जा रही है श्रोर उनके माथ तरह-तरह के हथकं है बरते जा रहे हैं। श्रभी जब में बजट सैशन शुरू होने के पहले गांवों में गया तो किसानों ने बताया कि साल भर की मालगुजारी उनसे एक साथ मांगी जा रही है। श्रगर कोई साल भर की नहीं देता है तो उसको रसीद नहीं दी जाती है श्रीर कहा जाता है कि पूरी मालगुजारी दे दोगे तब रसीद देंगे। इस तरह की एक नहीं श्रनेक शिकायतें है। श्रीर कलेक्शन तहसीलदार से कहा गया तो उल्टे वह उन्ही की तरफदारी करने लगा।

एक केस यह है कि १३६६ फसली की मालगुजारी किसान द्वारा ग्रमीन को वी जा चुकी थी रसीव भी मिल चुकी थी लेकिन स्याहा में यह वर्ज नही हुई। जब दूसरा ग्रमीन १३६७ फसली की मालगुजारी वसूल करने गया श्रीर पुनः १३६६ फमली की मालगुजारी मांगी तो किसान ने रसीव दिखाई ग्रीर कहा मेंने ग्रपनी मालगुजारी वे वी है। मगर ग्रमीन ने उसकी बात नहीं मानी ग्रीर उससे कहा कि ठुमने मालगुजारी ग्रदा नहीं की। जब तक उसने वी नहीं उसकी एक भी नहीं सुनी। २६ जनवरी को जब कि वेश ग्रीर प्रवेश में जनतंत्र विवस मनाया जा रहा था गोरखपुर जिले की फरेंदा तहसील में मालगुजारी वसूल की जा रही थी। में श्रीमन, नाम तो लेना नहीं चाहता। बेसार के ३-४ व्यक्तियों से मालगुजारी वसूल की गयी। उनको भूप में बैठाया गया जब तक कि उन्होंने मालगुजारी नहीं वे वी। स्याहा में मालगुजारी के दर्ज न होने की एक शिकायत नहीं है बल्कि ग्रनेक जगहों से ऐसी शिकायत ग्रायी है। ऐसी भी शिकायत है कि ग्रगर किसानों का ग्रधिक पैसा मालगुजारी ग्रीर तकावी के साथ पहुंच जाता है तो बह वापस नहीं किया जाता है। इसकी शिकायत तहसीलवार से की गयी लेकिन तहसीलवार ने इसकी ग्रीर कोई ध्यान नहीं विया।

हरपुरपकड़ी गांव में भी इसी प्रकार की शिकायत है कि मालगुजारी और तकावी की वसूली में सरती की गई श्रीर साथ ही यह भी शिकायत है कि उन क्षेत्रों में श्राज मालगुजारी और तकावी जोरों पर वस्त हो रही है जहां कि बाढ़ श्रीर सूखा की वजह से किसान तबाह है। बाढ़ श्रीर सूखा के इलाक में मालगुजारी में छूट देने के लिये मालगुजारी की बसूली स्थगित की गयी थी मगर वह इस वक्त वसूल हो रही है। श्रव तक किसानों को छूट का पर्चा भी नहीं बांटा गया है जब कि किसानों को यह बताया गया श्रीर हल्ला है कि मालगुजारी में छूट हुई है। मुझे दुःख है कि श्रव तक न कोई छूट ही दी गयी श्रीर न छूट के लिये पर्चा ही बांटा गया है श्रीर श्रमीन लोग जबरदस्ती जाकर मालगुजारी वसूल कर रहे है।

भ्रष्टाचार की बात कहां तक कहूं ? भ्रष्टाचार-भ्रष्टाचार कहते-कहते हम लोग भी यक गये और सुनने वाले भी यक गये। यह मुहकमा भ्रष्टाचार का श्रष्ट्रा बना हुआ है। यहां भ्रष्टाचार बड़ें जोरों पर फैला हुआ है। इस मुहकमें में कौन ऐसा स्थान नहीं है जहां भ्रष्टाचार का बोलबाला नहीं ? अगर आप माल की श्रदालतों में जाइये, बिना पैसे दिये लोगों को तारील नहीं मिल सकती। बिना पैसे लिये पुनर्वासन अनुदान नहीं मिलता, बिना पैसे दिये प्रतिकर नक्शा नम्बर २७ नहीं मिलता। बहुत से भाइयों ने शिकायत की कि उनको नक्शा नम्बर २७ नहीं मिला जिससे कि उनका पुनर्वास अनुदान निर्धारित नहीं हो सका। लेखपाल कब्जा दर्ज करने के नाम पर सौ-सौ और पचास-पचास रुपये किसानों से सेते है जब कि कानूनी तौर पर कब्जा

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुवानों क लिये मांगों पर मतदान-प्रनुवान संख्या ३८-लेखा शीर्षक ५४--दुर्भिक्ष सहायता तथा प्रनुवान संख्या २--लेखा शीर्षक ७--भू-राजस्व (मालगुजारी)

लिखने का कोई मूल्य नहीं है। तो कैफियत के खाने में कब्जा लिखने की व्यवस्था क्यों रक्खी जाय।

ग्रगर सरकार को केवल ग्रपनी ग्रामदनी बढ़ाने की फिन्न हो या ग्रीर कोई बात हो तो खिवत नहीं है। मैं इसलिए माननीय माल मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि इस कैंफियत में कब्जे के दर्ज करने की पद्धित से ग्रीर मुकदमें बाजों के झंझट से किसानों को छुटकारा दिलाइये। इस कैंफियत के कब्जे से कुछ होने वाला नहीं है। महज कुछ ग्रादमियों का फायदा होगा जो वहां किसानों से कब्जा लिखने के नाम पर काफी पैसा ऐंठते हैं। इसलिये मेरा निवेदन है कि कब्जा लिखने वाली प्रया तुरन्त खत्म को जाय ग्रीर लेखपालों को जो कब्जा दर्ज करने का ग्रिवन्कार दिया गया है उसे लेलिया जाय। ग्रगर प्रसली खाने में किसी का नाम तरमीम करने की जरूरत हो, ग्रीर कोई रहोबदल करना हो तो उसे ग्रदालत के जिएये कराया जाय तो बहुत मुनासिब होगा। कुछ ऐसे भी प्रदेश हैं जहां ऐसी प्रया बिलकुल नहीं है। उदाहरण के तौर पर कहना चाहता हूं बिहार में ऐसा नहीं है, वहां कब्जा दर्ज की बात नहीं है। ग्रीर प्रदेशों में भी इस तरह के उदाहरण मिल सकते हैं।

पहले वाले माल मंत्री जी तो कब्जा लिखने के पक्ष में थे लेकिन में उम्मीद करता हूं कि ग्राज जो माल मंत्री हैं वे इस बात से सहमत होंगे कि जो कब्जा दर्ज करने का झंझट है उसे हटा दिया जाय। लेखपालों के ग्राधिकार में बहुत कुछ कमी हुई लेकिन देहात के किसान समझते हैं कि ग्रब भी उसमें कुछ कमी नहीं हुई है। कब्जे को वे बहुत बड़ी चीज समझते हैं। क्योंकि बहुत से किसानों का नाम शिकमी हो गया, ग्रीर कई साल शिकमी रहने के बाद वह काश्तकार हो गया ग्रीर सीरदार हो गया जिसकी वजह से किसानों के समझ में यह बात फायदे की ग्राई ग्रीर वह लेखपाल के पास दौड़ता है जिससे किसान की समझ में कब्जा लिखा जाना जरूरी हो गया। बहुत जगह तो कब्जा भी सही नहीं है, बहुत से कब्जे गलत लिखे जाते हैं।

ग्रव श्रीमन्, चकवन्दी के बारे में कुछ कहना चाहता हूं। मेरे जिले में भी चकबन्दी हो रही है। चकबन्दी का कार्य मेरी तहसील में तो नहीं हो रहा है लेकिन मेरे जिले में हो रहा है श्रीर उसके सम्बन्ध में मेरी भी कुछ जानकारी है। ए० सी० ग्री० को पावर दी गई है कि वे स्थानीय कैसला कर दें ताकि किसानों का ज्यादा पैसा खर्च न हो सके ग्रीर ग्रदालतों में न जाना पड़े। लेकिन काक्ष्तकारों की शिकायत है कि ग्रच्छा चक देने के नाम पर किसानों से पैसे लिए गये ग्रीर जिनके पास मोटरें थीं उनकी मोटरों से सफर किये गये। ग्रीर उनकी मोटरों से दौरे किये जाते हैं, ग्रीर इस तरह से साठगांठ करके चक बनाये जाते हैं। गोरखपुर की सदर तहसील में ग्रायकोल एक गांव है तथा इसी तरह के ग्रनेक गांव है जहां से माल मंत्री के पास इस प्रकार की शिकायतें ग्रायी है कि बहुत से व्यक्तियों के ग्रधिक खेत एक स्थान पर रहते हुए भी वहां उनको चक नहीं दिये गये जब कि कानून है ग्रीर उन्हें यह सुविधा मिलनी चाहिए मगर ऐसा नहीं किया जाता है। ग्रतः में चाहता हूं कि माल मंत्री की इन शिकायतों की जांच करें ग्रीर इस मसले को तय करें।

फरेंदा तहसील की बात है कि वहां पर एक घोंघी नदी है जिसके बायें किनारे पर एक बन्ध पहले से बना हुन्ना है, जिसकी मरम्मत जरूरी है लेकिन २० हजार रुपये के खर्चे से उसकी दायों तरफ एक और बांध बनाने की योजना बनायी गयी है और काम शुरू है। यह २० हजार ए या इसलिये खर्च किया जा रहा है ताकि एक कांग्रेसी साहब की २०० एकड़ जमीन को बाढ़ से तथा नदी के कटाव से बचाया जा सके। महज एक आदमी की जमीन को बचाने के लिये इतना रुपया खर्च किया जा रहा है, यह कहां तक मुनासिब है जिसकी जिलाधीश से शिकायत भी की गई लेकिन उन्होंने कोई घ्यान नहीं दिया।

एक मामले की तरफ में और सदन का ध्यान दिलाऊंगा कि फरेन्दा तहसील के एक लेखपाल ने गलत कब्जा दर्ज किया, जिसकी शिकायत भी एस० डी० एम० से पीड़ित किसान ने की, एस० डी० एम० ने मामला तहसीलदार के यहां इन्क्वायरी के लिये भेजा, तहसील के कोट में

#### [भी ग्रमरनाथ]

बोनों पक्ष तनब हुए और जिन्ही नारीण रेगागर ने बी, यह तो पान आम शिकायत है कि तारीब पेश हार हेने हैं, उन्होंने उन हो पाने जो तारी य किया गात्रीर ने चपाल को बीधी उसे कियान हो बियक्ष में बदन बी जैपे कि कियान हो बराया गया कि फना नारीब की आता, जब वह उम नारीब हो पहुंचा नो पराया गया कि पुरारी जारी या फनां दिन को थी, फर्व अहुहास को काट कर नारीज बदली गयी है। इस सब की जिहासन तह मीजदार तथा एस० डी० एस० से की गई ने हिन बाज तक हु दून ती हुया। ब्रोर्ट हिमान हे बिगद एक तरफा कार्रवाई कर बी गई। इसकी जांच होनी लाहिए।

यह सभी जानने हैं कि मांत्र यमान को सम्मित का कुम्योग किन तरह ये हो रहा है। आज पंचायत के लोग भी लग यो नमें है कि इस भा नभी गार है प्रीर निय तमत जमीं होते थी और जमीं होती कि मार के प्रीर के जो प्रीर के को प्रीर के प्रीर के प्रीर के लोग की प्रीर के प्रीर के प्रीर के ले हैं प्रीर को चाह करें विवे में हैं उसे ठीक से इम्लेमान करना है पीर साम ही महाने हैं कि मात्र प्राप्त के कर उन्हें विवे में हैं उसे ठीक से इम्लेमान करना है पीर साम ही महाने भी कि एवं प्राप्त के प्राप्त के स्वीर स्वान के लोग के प्रीर साम है को मार के प्राप्त के

श्री खूबसिंह (जिला बिजनीर)--- । मिनद तो श्रीमन् कम होंगे।

श्री ग्रध्यक्ष--चेकिन धाम तौर में सभी ७ मिनट सं महमत है इसलिए ७ मिनट ही धब मिलेंगे।

श्री पव्माकरलाल श्रीवास्तव (जिला धात्रमगढ़)—श्रीमन्, ग्राप की इजाजत से कुछ लोगों को बो, एक मिनट ग्रांथक मिल सकते हैं ?

श्री अध्यक्ष--जीक है, वह भाषकार तो मुझे है ही।

श्री शिवप्रसाव (जिला बेबरिया) — प्रापक्ष महावय, सवन में जो धनुवान प्रस्तुत है उसका समर्थन करने के लिए में लड़ा हुआ हूं। यह बात शिवा हुई नहीं है घीर बहुत ही स्पष्ट है कि यह विभाग एक ऐसे मन्त्री महीवय के हाथ में है कि अन्होन बहुन वर्षों से किमानों के हित में बराबर धनेक काम किये हे घीर उससे अका काफी लाभ हुआ है। उवाहरण के रूप में पिछले सालों में जब सुले का प्रकीय हुआ जिसमें किसान काफी परंशान हुये, मन्त्री महीवय स्वयं गोरवपुर घीर वेयरिया बोनों जिलों के गांप गांव में जिस तरह से घूने घीर वैरा किया उस से किसानों का वहां काफी लाभ हुआ धीर उन्हें यह बात कहने का मौका मिला कि हमारे क्यर जो धापित पड़ी है उसकी हल करने के लिए सरकार धयने मीमित साथनों के अनुसार बहुत तेजी के साथ धार्य बढ़ रही है। वह एक ही दिन में बेवरिया से लार, पढ़रीना घीर पुसीनगर व हाटा, चार-चार स्थानों पर गये घीर उस परिक्रमण के द्वारा जो कुछ तात्कालिक सहायता वहां के किसानों की कर सके, वह उन्होंने की, इसमें काई वा राथ नहीं है। धभी सूबे में घोला पड़ा, मन्त्री जी कुछ धस्वस्थ भी ये लेकिन तत्काल ही उन्होंने उन जिलों में जाकर स्थित का धस्ययन किया धीर जो कुछ बात्कालिक सहायता हो सकतां थी, यह वी गयी है भीर हमें माजा है कि भविष्य में भी उनका ऐसा ही इरावा धवदय होगा।

अब जहां तक अव्टाखार की बाल है में समझता हूं कि कांई भी विभाग ऐसा न होगा की इस से बचा हो। अव्टाखार को दूर करने के लिए हमें काफी मजबूत करम आगे बढ़ाता होगा। परन्तु अव्टाखार को दूर करना केंबल मन्त्री जी का ही काम नहीं है बहिक सुबे के हर नागरिक का और इस सबन के हर सबस्य का भी जतना ही बायित्व है जितना कि सरकार का है। मेरा

#### 

भी कर्तव्य है, हमारा सब का कर्तव्य हो जाता है कि हम सभी मिलकर मजबूती के साथ इसे दूर करें। हमें इसके लिए श्रपने नैतिक स्तर, जीवन चरित्र ग्रौर ग्रात्मबल द्वारा काफी सुवार करना होगा। यह तो बात रही यहां की।

श्रव में श्रपने देवरिया जिले की तरफ ध्यान श्रार्काषत करना चाहता हूं। हाटा तहसील की जनता परेशानी में है श्रौर में समझता हूं सरकार का ध्यान उधर है श्रौर विचार कर रही है। केवल उसमें थोड़ी-सी तेजी श्रगर कर दी जाय। वह प्रश्न यह है कि देवरिया जिले की हाटा तहसील का केन्द्र देवरिया तहसील से बिलकुल मिला हुग्रा है, देवरिया तहसील से केवल २ मील की दूरी पर है।

श्री ग्रध्यक्ष--माननीय गेंदासिंह जी ऐप्रीक्षियेट कर रहे हैं।

श्री शिवप्रसाद—में समझता हूं कि गेंदा सिंह जी भी इससे सहमत होंगे। दो मील की दूरी से ही हाटा तहसील गुरू हो जाती है श्रौर नैपाल के बार्डर तक हाटा तहसील फैली हुई है, करीब ४५ मील उत्तरी एरिया में श्राबाद है, खड्डा के श्रागे नारायणी श्रौर छोटी गण्डक के बी य लोग बसे हैं उन को बरसात में तहसील के केन्द्र पर श्राने में काफी परेशानी होती है; इसलिए श्रगर तहसील का केन्द्र कप्तानगंज में कर दिया जाय तो श्रच्छा होगा।

हाटा तहसील के कुछ गांव ऐसे हैं जो कई मील में बसे हुये हैं, जैसे कौवासार एक गांव है बह ४ मील के एरिया में बसा है ग्रौर कटाई भरपुरवा ३-४ मील के एरिया में है। इनके कागजात कुछ पहले से ऐसे चले ग्रा रहे हैं कि किसानों को उससे बड़ा ग्रसन्तोष है। ग्रगर उन गांवों के कागजात को नये तरीके से ठीक किया जाय तो किसानों को लाभ होगा।

इसके ग्रलावा चकबन्दी जो इस समय चल रही है उसके बारे में पता नहीं लोगों को क्यों एतराज है? वह तो ऐसी योजना है जिससे लोगों को लाभ ही हो सकता है। शुरू में भले ही परेशानी हो लेकिन मैंने स्वयं चकबन्दी के क्षेत्र में जा कर देखा है कि पहले उस क्षेत्र के लोग परेशान थे लेकिन बाद में जब चकबन्दी का काम समाप्त हो गया तो उससे लोगों को लाभ होने लगा ग्रौर वे उस की तारीफ करते हैं। माननीय उग्रसेन जी भी चाहेंगे कि देवरिया जिले में चकबन्दी हो। मेरा तो निमन्त्रण है कि देवरिया जिले में सब से पहले मेरे ही क्षेत्र से चकबन्दी शुरू की जाय। चूंकि गण्डक योजना सरकार चालू करने जा रही है इस वजह से वहां चकबन्दी योजना सरकार ने रोक रखी है। लेकिन जब चालू की जाय तो पहले हाटा तहसील ही ली जाय।

जिन जिलों में चकबन्दी हुई है उनमें हरिजन बस्तियों के श्रास-पास की जमीन उनकी बस्ती के लिए सुरक्षित रखी जाय क्योंकि उन की बस्तियां हर जगह काफी तंग हैं। श्रंग्रेजी झासन में भी श्रौर जमींदारों ने भी उनका झोषण किया है। लेकिन श्राज श्रपनी सरकार है श्रौर सरकार चाहती है कि हरिजनों का कल्याण हो, इस तरफ विशेष ध्यान है श्रौर हो भी रहा है, इसमें कोई सन्देह की बात नहीं है।

श्री पद्माकरलाल श्रीवास्तव- —माननीय ग्रध्यक्ष महोदय, में माननीय शिव प्रसाद जो से इस मानी में श्रागे बढ़ जाना चाहता हूं कि जहां तक माननीय माल मन्त्री का सवाल है उन की योग्यता, श्रनुभव तथा इरादे पर किसी को शुबहा नहीं है। श्रभी हमारे यहां श्रोला पड़ा, बारिश हुई, श्रांची श्रायी उससे रबी की फसल बरबाद हुई। यहां पर सूचना मिलते ही श्रस्वस्थ रहते हुये भी माननीय माल मन्त्री दौड़ पड़े व्यक्तिगत जानकारी हासिल करने के लिए। मुझे कोई तजुर्बा नहीं कि किसी माल मन्त्री ने ऐसा किया हो। इससे माननीय मन्त्री का इरादा साफ जाहिर होता है कि यह भला काम करना चाहते हैं।

में निवेदन यह करना चाहता हूं कि इस प्रदेश की बदिकस्मती है कि इतने दिनों तक ग्रपने देश में ग्रपना राज्य होने के बाद भी भूमि सम्बन्धी कानूनों में एकरूपता ग्रौर सरलता नहीं ग्रा पायी है। जो भूमि सम्बन्धी कानून हैं तथा तत्सम्बन्धी नियम हैं वे बहुत जटिल होते चले जा

[की पद्माकरलाल भी बास्तव]
रहे हैं, उनसे कन्फ्यूजन पैदा हो रहा है और भ्रम पैदा हो रहा है। एक जमाना था, सन्
१९५२ से पहले जब कि हर जिले में भीर सूबे में इने-गिने कुछ व्यक्ति ऐसे थे जिनको लोग
रेवेन्यू ला पर ग्रथारिटी मानते थे, लेकिन ग्राज में चैलेंज करता हूं कि सारे सूबे में हाई कोर्ट से
लेकर जिले के स्तर तक एक भी व्यक्ति का नाम नहीं लिया जा सकता जिसे रेवेन्यू ला पर
ग्रथारिटी कहा जा सके।

जब सुधार के ब्राधार पर भूमि की व्यवस्था हो रही हो, समाजवादी व्यवस्था कायम हो रही हो, ब्रौर हमारी सरकार समाजवादी सरकार होने का दावा करती हो तो लेख टु दि दिलर (Land to the tiller) के सिद्धान्त पर जमीन का पुनः वितरण हो। हम चकवन्दी से घबड़ाते नहीं है। जैसा एक माननीय सदस्य ने कहा कि इससे विरोधी दल को बौखलाहट हो जाती है, में दावे के साथ कह सकता हूं कि हमको चकवन्दी से या सहकारी खेती से बौखलाहट बिलकुल नहीं है लेकिन नाक टेढ़ी न पकड़िये, चकवन्दी से पहले जो ब्रौर काम जरूरी है उनको करके चकवन्दी करिये। पहले जमीन का बट्यारा करिये, भूमिहीनों हो जमीन दी जाय, इन्दराजात की बुरुस्ती की जाय फिर किसी को एतराज नहीं होगा। जो भ्रष्टाचार है, जो ब्रात्याचार है चकवन्दी में उसे पहले रोकि रे तब चकवन्दी करिये। भूमि-व्यवस्था कानून में सरलता लाइये, जटिलता को खत्म । रिये, एकरूपता लाइये तय चकवन्दी करिये।

भूमिषर, सीरवार, श्रसामी इतने क्लांसिफिकेशन नहीं होने चाहिए। एक भूमिषर है, एक सीरवार है, एक श्रसामी है, एक ही किस्म की पैवाबार है श्रौर एक ही किस्म के खेत हैं; लेकिन सिकल रेट श्रलग-श्रलग है। यह विभिन्नता नहीं होनी चाहिए। भूमिषर है तो सिकल रेट ए हिसाब से हैं। यह भेवभाव मेरी समझ में नहीं श्राता कि एक ही किस्म की जमीन का कोई श्राठ श्राने के हिसाब से लगान वे, कोई एक रुपये के हिसाब से वे श्रौर कोई तीन रुपये के हिसाब से। इसलिए यह भूमिषर, सीरवार श्रौर श्रसामी का जो क्लांसिफिकेशन है इसको श्राप समाप्त करिये श्रौर एक प्रकार के टाइटिल-होल्डर बनाइये, सारे सुबे के श्रन्वर। श्रगर भूमिषर रिलये तो सब को भूमिषर बनाइये, सबको जमीन में समान श्रिकार वीजिये।

चकबन्दी में जो भ्रष्टाचार है वह सर्वविदित है। माननीय मन्त्री जी स्वयं इसको मानने के लिए तैयार है। यह तालिका जो इस किताब में दो गयी है कि चकबन्दी सम्बन्धी कितने भ्रविकारियों के विश्व कितनी शिकायतें श्रायी, कितनों के विश्व कार्रवाई हुई, कितनों को सजा दी गयी, कितनी शिकायतें निराधार थीं, इसी से यह साफ जाहिर है कि २५ फी सदी चकबन्दी भ्रविकारियों को कन्सालिडेशन श्रफसर से लेकर चकबन्दी लेलपाल तक को दिष्डत किया गया है श्रीर शिकायतें साधार साबित हुई है। श्रगर इसमें श्रीर व्यापक रूप से जांच हो तो में समझता हं कि ५० फीसदी से अपर वे शिकायतें सही पायी जायंगी।

शिकायतों के ऊपर विशेष ध्यान नहीं विया जाता। उवाहरण के रूप में में कहना चाहता हूं कि माल मन्त्री जी जौनपुर जिले में शाहगंज तशरीफ ले गये थे। यहां के लेखपालों ने इतनी हिम्मत करके एक मेमोरंण्डम दिया था जिसमें लिखा था कि फलां-फलां कान्तगो, नायब-तहसीलवार, तहसीलवार ग्रादि हम से इतना रुपया मांगते हैं और न देने पर हमको परेशान करते हैं। में नहीं जानता कि उस पर क्या हुन्ना लेकिन इतना जरूर जानता हूं कि उन छोटे शहलकारों के ऊपर आज क्या मुसीबत हो रही है, उनमें से कितनों को नौकरी से श्रलग कर दिया गया, कितनों को चकबन्वी से तबादसा करके रेगुलर लाइन में भेज दिया गया श्रीर रेगुलर लाइन वालों को चकबन्वी में भेज दिया गया, इस तरह की धांधलों मची हुई है। तो में माल मन्त्री जी से कहूंगा कि जो शिकायतें उनको मिलें, उन पर उन्हें विशेष ध्यान देना चाहिए।

माल विभाग जनता से बराहरास्त सम्बन्ध रखता है और ग्रगर में कहूं कि यह पब्लिक रिलेशन्स डिपार्टमेंट है तो उपयुक्त होगा। लेकिन देखा यह जाता है कि जो मौजूदा माल

#### १६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुवानों के लिये मांगों पर मतदान--ग्रनुवान संख्या ३८--लेखा शीर्षक ४४---दुर्भिक्ष सहायता तथा ग्रनुवान संख्या २---लेखा शीर्षक ७---भू-राजस्व (मालगुजारी)

विभाग के ग्रफसरान तथा कर्मचारी हैं उनकी मनोवृत्ति, उनका काम करने का तरीका, उनका बरताव ठीक वही है जो ग्रंग्रेजी जमाने का था। मौजूदा प्रजातांत्रिक प्रणाली में वे फिट इन नहीं करते हैं। उदाहरण के लिए में बताता हूं, ग्राजमगढ़ जिले में ६ तारीख को ग्रोले पड़े ग्रोर ५ तारीख को माल मन्त्री जी लखनऊ से वहां पहुंच जाते हैं लेकिन क्या उससे पहले ग्राजमगढ़ जिले के कलेक्टर ग्रपने बंगले से निकल कर उस नुकसान को देखने गये थे? में मानता हूं कि माल मन्त्री जी सूबे के हर गांव को नहीं देख सकते हैं लेकिन जिनको ग्रापने जिम्मेदार बनाया है क्या वे ग्रपना बंगला छोड़ कर निकले? ग्राज २०० बीघे के जोतिया लोग चिल्ला कर यह कह रहे हैं कि साल भर हमारे बच्चे कैसे जिन्दा रहेंगे। क्या कलेक्टर की कोई जिम्मेदारी नहीं है? ७ तारीख को में ग्राजमगढ़ में मौजूद था। जिला परिषद् के एक मेम्बर ने जब इस सवाल को उठाया तो कलेक्टर ने ग्रौर ग्राधकारियों से पूछ ताछ शुरू की . . . .

श्री हुकुमसिंह विसेन--ग्राप भी गये थे?

श्री पद्माकरलाल श्रीवास्तव—में भी हो ग्राया हूं। होली की छुट्टियों में में गया या ग्रीर जिन-जिन हिस्सों में ग्राप गये थे उससे ज्यादा घूम कर ग्राया हूं। हमारे प्रावि न्हायल चेयरमैन, पंडित उदित नारायण हार्मा मेरे साथ उन इलाकों में गये थे। मान्यवर, यह उसी मनोवृत्ति का ग्रसर है। माननीय मन्त्री जी तो श्राजमगढ़ तक चले गये लेकिन उनके जिलाघीहा ग्रपने बंगले तक से नहीं निकल सके। सिर्फ मन्त्री जी के साथ जहां तक गये वहां वे ख लिया। इस के बाद उन्होंने जहमत गवारा नहीं की कि ग्रीर हिस्सों को भी देख लेते।

राजस्व उपमंत्री (श्री महावीरप्रसाद शुक्ल) — माननीय प्रध्यक्ष महोदय, श्राज जिस विभाग के श्रनुदान पर सदन में चर्चा चल रही है उसका सम्बन्ध न केवल इस प्रदेश के, बित्क सारे देश के जनजीवन से इतना घनिष्ट है कि माननीय सदस्यों द्वारा जितने भी सुझाव इस के सिलसिल में श्रायें, उन पर ध्यान देना परम श्रावश्यक है। में यह मानता हूं कि यह विभाग खेसा कि एक हमारे साथी ने कहा कि सब से बूढ़ा श्रीर पुराना है। इस में सन्देह नहीं है कि जितना यह पुराना है उतने ही वृद्धत्व के कारण इसमें दोष या खराबी श्रा जाना स्वाभाविक है। जिसकी परम्परा पुरानी होगी उस की श्रच्छाई या बुराई की परम्परा भी पुरानी होगी। इसको मानते हुये हमें सन्तोष है कि इस वर्ष के बजट के सामान्य विवाद के समय हमारे माननीय सदस्यों ने इस विभाग के ऊपर इतनी कृपा रखी कि उन्होंने इसकी सामान्य विवाद में चर्चा नहीं की, जो इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि उसका कार्य धीरे-धीरे श्रपनी पुरानी परम्परा के बावजूद सन्तोषजनक प्रगति कर रहा है।

श्राज भी जितने माननीय सदस्यों ने चर्चा की है उससे स्पष्ट है कि उन्होंने कोई ऐसी श्राम बात या जनरल बात नहीं कही जिसकी चर्चा उन्होंने इसी वर्ष की हो। विशेषकर दो-तीन-चार बातें कही गयीं। एक तो यह कि इस विभाग के जितने कानून हैं उनमें एकरूपता नहीं है। माननीय गेंदासिंह जी ने इस श्रोर ध्यान दिलाया। यह इतना बड़ा प्रदेश है, इसमें भूमि-व्यवस्था बहुत पुरानी चली श्रा रही है श्रौर इतनी रूढ़ियां हैं कि हम यदि इनमें एकरूपता लाने का प्रयास करते तो कोई भी कानून श्रभी तक पास न कर सके होते, इसलिए हमने जमींदारी विनाश श्रौर भूमि-व्यवस्था का कानून श्रागरा श्रौर श्रवध प्रदेश में लागू करने की व्यवस्था की श्रौर इस दिशा में हमारा प्रदेश श्रागे चल रहा है श्रौर जितने कानून हैं वह सभी सदन के सामने पेश हैं। कुछ पर विचार किया जा रहा है, कुछ कमेटी की स्थित में हैं श्रौर घीरे-घीरे यह पास हो जायेंगे। बो भी सरकार होगी उसका यह प्रयास होगा कि इस प्रदेश में ही नहीं बल्कि सारे देश की राजस्व की व्यवस्था में एकरूपता लाने का प्रयास किया जाय।

माननीय गेंदासिह जी ने यह कहा कि दुर्भिक्ष के सिलसिले में रिपोर्टिंग का जो तरीका है वह पुराना ही चला ख्रा रहा है। में यह निवेदन करना चाहता हूं कि उनको ख्रपनी जानकारी ताजी करनी चाहिये। इसके सम्बन्ध में श्रब पुराने नियम नहीं हैं। आजकल गांव समाज है और उसका प्रधान है और लेखपाल, जो जांच-पड़ताल करते हैं, उसमें प्रधान की सलाह लेते हैं। [भी महावीर प्रसाद शुक्ल]

इसके प्रतिरिक्त हमारे विभाग है उन्तर कर्नवारो तर्गोतहार, एउ० डो० छो० छोर सलेक्टर उनको देवने के निये जाते हैं, ऐने छादेश हैं। इतके प्रतिरिक्त नहर विभाग के कर्मचारी और कृषि विभाग के कर्मचारी भो जाते हैं और उनकी रिगोर्ड करते हैं।

(इरा समय ३ बजकर २४ मिनट पर भी भ्रम्यक्ष चले गये श्रौरश्री उपाध्यक्ष पुनः पीठासीन हुये।)

इसके परिजामस्वरूप सदन को निश्चित है कि इप वर्ष को सरायता दी गई वह कितनी व्यापक रही है।

मैं पात हे हारा माननोत्र सहयों को खनाना चाहना है कि देता श्रानशाशों के सिलसिलें में सरकारी श्रहेत्क परायता तकावों और देन्य वर्क श्रादि के सिर्वान में सरकार को एक करोड़ ३३ लाख करवा व्यत्र हरना पना है। इन हे श्रनावा मानग्रारों में छ्र श्रादि १ करोड़ २७ लाख के करीब दो गई है। यदि रिपोर्ट ठोक नहीं होती तो इतना भार इस प्रदेश पर नहीं पड़ता। यह बान इन ने स्वब्द है कि हमारों रिपोर्ट ठाक है और व्यापक है में निवेदन करना चाहना हूं कि जिन जिनों में इन प्रकर की रिपोर्ट श्राई है, वह ठोक श्राई है और ऐसी कोई रिपोर्ट नहीं श्राई जिनके लिये यह कहा गया हो कि न कपान यथार्थ से कम दिखाया गया है सित्राय इस सरन में जो कहा गया। श्राम विवाद में कोई चर्चा नहीं उठाई गई। इस देश की जनना और इन प्रदेश को जनना जो सहकों श्रांखों से इस प्रदेश के शासन को देख रही है श्रीर जिनकों इन प्रदेश को व्यवस्था के सिनसिले में सहस्य मुखों से बात करने का श्रीवकार है, उसने कभी ऐसी चर्चा नहीं की है।

में सिद्धांतों के विषय में उठायी गयो बातों की ही चर्ना करना चाहता हूं। एक बात उधर से यह कही गई कि अनाभ कर जोतों का लगान माफ कर दिया जाय। यह भी कहा गया कि सबा छः एकड़ तक को जोतों का लगान आधा कर देना चाहिये। इस प्रदेश में अधिकांश खाते ऐसे हैं जिन्हें अनाभ कर कहा जाता है। अगर उनका लगान माफ कर दिया जाय तो इससे कोई लाभ कर जोत भी रह सकेंगो या नहीं, यह मोचने को बात है। जब कि हमने कोई ऐसा कानून नहीं बनाया है, और न बनाने का इरावा है कि होल्डिंग के डिसइंटीग्रेशन को रोक सकें, तो जब परिवारों में बड़वारे होंगे, तो बया कोई लाभ कर जोत रह जायगी? जब हम सीलिंग लगाने जाते हैं तो उधर से कहा जाता है कि यह सब डियइंटीग्रेशन कर रहे हैं। जब लगान माफ करेंगे तो क्या एक भी खाना ऐसा होगा जो लाभ कर होगा? यह केंवल नारे की बात है।

' में दावे के साथ कह मकता हूं कि झगर उघर के माननीय सदस्य इघर बंठ जायं तो वह भी कभी यह मांग पूरी नहीं कर सकते। यह झमम्भव सी बात है। मान्यवर, एक और बत कही गई कि मालगुजारी को वसूलो में खर्जी बहुत पड़ रहा है। में बताना चाहता हूं कि मालगुजारी की वसूलो में केवल ४, ५ प्रतिशत य्यय हो रहा है, जो कि झम्य प्रदेशों के मुकाबले में बहुत कम है और जो इस प्रदेश में जमींदारों से पहले खर्ज होता था, उससे भी कम है। मान्यवर, में यह भो निवेदन करना चाहता हूं कि यह कहा गया कि गांव सभाओं को क्यों नहीं मालगुजारों बसूल करने का झिंबकार दिया जाता है। सरकार की यह हमेशा नीति रही है कि गांव सभाओं को ज्यादा से ज्यादा झिंबकार दिये जायं और जो अन्तरिम जिला परिषद् का विषयक सदन के सामने झाने वाला है उसमें गांव सभाओं के झिंबकारों में वृद्धि की गई है। दूसरी तरफ माननीय श्री झमरनाथ मिश्र और दूसरे मिश्रों ने कहा कि गांव समाज अपनी सम्पति का हुउपयोग कर रही है, झमने कोच का ठोक उपयोग नहीं कर रही है, झगर उचर के सदस्यों का ही यह विचार है कि गांव समाज अपने पूर्ण उत्तरदायित्व का पालन नहीं कर रहा है झौर सार्वजनिक कामों में जितनी जिन् विचारों से काम करना चाहिये उतनी जिन्नेवारों से काम नहीं कर रही है तो इस समय जब कि एक-एक पाई का सबुपयोग करना है हम ऐसा कैसे कर सकते हैं कि प्रदेश का कोच

१६६०-६१ के स्राय-ध्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनुदान संस्था ३८--लेखा शीर्षक ५४--द्विभक्ष सहायता तथा श्रनुदान संस्था २--लेखा शीर्षक ७--भू-राजस्व (मालगुजारी)

संग्रह करने में दिक्कत पैदा होने दें। ऐसी श्रवस्था में यह काम घीरे-घीरे ही हो सकता है। जैसे-जैसे गांव समाज मालगुजारी वसूल करने में समर्थ होते जायेंगे, वैसे-वैसे सरकार इस कदम को धागे उठावेगी।

कुछ सदस्यों ने भ्रष्टाचार की बड़ी चर्चा की। में यह निवेदन करना चाहता हूं कि यह भी नई बात नहीं है। जब से यह देश स्वाधं न हुआ है और स्वल्फ्त्र देश के विधान मण्डल हमारे देश और प्रदेश में मिलने लगे हैं, तब से इस सम्बन्ध में सभी विभागों के सम्बन्ध में चर्चा की जाती है। मैं इस सम्बन्ध में क्या श्रधिक कहूं। हमारे माननीय मृत्य संश्री जी ने इस वर्ष सामान्य विवाद के उत्तर में श्रीर पिछले वर्षों में जो कुछ कहा था उसकी तरफ में ध्यान दिलाना चाहता हूं। श्राज इस विधान मण्डल की गैलरी में श्रगर कोई विदेश का श्रादमी बैठा हो, या वह हमारी रिपोर्ट पढ़े तो वह क्या सोचेगा कि इस देश के विधायकगण जब बोलते हे तो यही कहते हैं कि सर्वत्र भ्रष्टाचार है तो इस देश की क्या श्रवस्था है? इसके कहने से किसका लाभ होता है यह समझ में नहीं श्राता है।

जब सभी विभागों में श्रष्टाचार दिखायी पड़ता है, चाहे वह माल विभाग हो, या कोई श्रन्य विभाग हो, तो क्या यह सरकारी कर्मचारी किसी विदेश से श्राते हैं। हमारे श्राप के घरों के ही लोग सरकारी कर्मचारी हैं। यदि उनमें इस प्रकार का श्रष्टाचार दिखायी पड़ता है, तो यदि उधर के माननीय सदस्य इस बात का जिम्मा लेते हों कि उनके पास ऐसे श्रादमी हों जिनको श्रष्टाचार प्रभावित नहीं कर सकता, तो उनको एक दो वर्ष के लिये इस कसौटी पर किसी विभाग में रखा जाय। श्रगर वह भी श्रष्टाचारी सिद्ध हों तो कहां से श्रादमी श्रायेंगे ? श्राज के समाज में जहां सहस्र नेत्रों व कानों से देखा व मुना जाता हो यह श्रसम्भव है कहीं श्रष्टाचार हो श्रौर दण्ड न दिया जाय।

हमारे समाज में चिरत्र की कमी है। उसका असर हमारे सर्वत्र जीवन में सर्वत्र है चाहे माल विभाग हो या कोई दूसरा विभाग हो। ऐसी अवस्था में हमारा केवल एक ही प्रयास है कि जहां हमारी जानकारी में आये उस पर हम सख्ती से कार्यवाही करें। आज राजस्व विभाग इस दिशा में आगे बढ़ रहा है। हम ने अब्दाचार को रोकने के लियें जितनी सख्ती से काम लिया है उसको थोड़े से समय में बताना सम्भव नहीं होगा। लेकिन सम्भवतः माननीय सस्दयों को हमारे विभाग का कार्य विवरण मिला होगा, जिसमें इस बात की चर्चा है कि कितने तहसीलवारों, कितने नायब तहसीलवारों और अन्य कर्मचारियों के विरुद्ध विभागीय कर्यवाही की गई या और तरह-तरह से उनको दिख्त किया गया।

जिनकी शिकायते श्राती है उनके ऊपर सख्ती से कार्यवाही की जाती है। लेकिन यह मान लेना कि इस विभाग में या श्रोर भी सरकारी विभागों में सिवाय भ्रष्टाचार के श्रोर कुछ नहीं है, तब तो में केवल इतना ही कहूंगा कि जिस प्रकार से श्राप श्रपनी दृष्टि बनायेंगे उसी प्रकार से श्रापको दिखायी पड़ेगा। में निवेदन करना चाहता हूं कि भ्रष्टाचार की चर्चा जितनी हमारे माननीय सदस्य करते हैं उससे उस भ्रष्टाचार को दूर करने में कोई सहायता नहीं मिलती है। श्रिपतु, वह बातें भ्रष्टाचार इस प्रदेश श्रोर देश में बढ़ाने में ही सहायक होती हैं। यह एक साइकोलाजिकल फैक्ट है कि यदि किसी को बीमार बनाना हो तो उसको बीमार कह दो। इसी तरह भ्रष्टाचारी को भ्रष्टाचारी कहें तो उससे भ्रष्टाचार को श्रोर प्रोत्साहन मिलता है। इसलिये यह परम्परा दस-बारह वर्षों के बाद श्रव्ह हम दूर करें तो श्रिषक उचित होगा।

मान्यवर, कुछ इस सदन में चकबन्दी विभाग के विषय में भी चर्चा की गई। माननीय सदस्यों ने चकबन्दी विभाग पर इस वर्ष के विवाद में ज्यादातर कानून के सम्बन्ध में ही और नियमों के सम्बन्ध में ही अपने सुझाव दिये हैं और उसकी कार्य पद्धति के सम्बन्ध में नई कार्य-प्रणाली कितनी प्रभावशाली हुई है उसके सम्बन्ध में उन्हों ने संतोष ही प्रकट किया है। इससे यह जान पहता है कि विभाग ने कुछ अपने कार्य की दिशा में प्रगति की है और सुधार किये

[मराबोर प्रसाद शुक्ल] है। जो मुझार माननीय सदस्यों ने विये हैं उन सुझारों को भी नोट कर लिया गया है और जो उनमें सम्भव श्रोर व्यवहार्य होंगे, उनके ऊपर ष्यान विया जायगा।

जहां तक ि प्राचार्य दोपंकर जो ने कुछ कानून के सम्बन्ध में बात की यी ग्रौर उन्होंने कहा था कि ए० सी० ग्रो० फैनला कर देने हैं उसमें कोई ग्रागे ग्रपील नहीं होतो, ग्रौर कोई सुनमाई नहा होतो तो यह उनकी आंति हैं। में उनका ध्यान इस चकबन्दो कानून की धाराग्रों को ग्रोर दिना चाहूंगा, उनको यहां पढ़ना तो समोचीन भी नहीं है ग्रौर समय भी उतना नहीं है न्नेकिन जो धारा द, १२ ग्रौर २१ है उनकी तरफ वह ध्यान देंगे तो देवेगे कि इस चकबन्दी ग्रीमिनयम में ऐसी ध्यवस्था भी है। हर जगह उसकी रोक हे ग्रौर ग्रगर कोई ग्रावश्यकता हुई तो ऊंचे से ऊंचे ग्रिकिकारों इस बात को देवते हैं। धारा ४ द के ग्रन्तगंत चकबन्दी ग्रायक्त को ग्रिधिकार है बुक्स करने का। फिर यह बात भी ध्यान में रखने की है कि इस दिशा में जितने भी प्रयास किये जाते हैं, भ्रावश्यवार को दूर करने के या निम्नों, कानूनों में एसो ध्यवस्था करने के, वह सब मानवीय प्रयास हैं। मानवीय बृद्धि ग्रौर कल्पना जितनो दूर जा सकती है उतनो हो दूर तक के प्रयास एक समय में हम कर सकते हैं ग्रौर इप प्रयास में सभी पक्षों के सदस्यों की सहायता ग्रोक्षणीय होती है।

मान्यवर, हमें इस बात का सन्तोष है कि इस विभाग के श्रत्वान के सम्बन्ध में श्राष्ठ जैसा वातात्ररण इन सबन के माननाय ावस्थों ने रना है उससे हमको महायना मिलेगो उस काम को करने में श्रीर दढ़ना के साथ उग तरक बढ़ने में जिबर कि माननोय सदस्यों का इशारा है जिप तरक कि वह बाहने है कि हमारे प्रवेश को प्रगति हो श्रीर इन शब्दों के साथ मान्यवर, में यह पाशा प्रकट करता हूं कि माननीय सबस्य जो कुछ भी सुझात्र देंगे वह रचनात्मक होंगे श्रीर व्यवस्था होंगे, केवन इपित्रे नहीं होंगे कि एक श्रालोचना हो या कि उनका एक वल का नारा है तो हर जगह उनको कह विया कर कि श्रताभकर जोतों का लगान माफ हो श्रीर जमीन का बटवारा हो।

जहां तक माल एजारी को वसूनों में सख्ती की बात कही गयी, उसके लिये भी दो बातें कहना चाहना हूं। इस तरह को भो जो बाने कही गई वह व्यक्तिगत या किसो गांव या जिले के किसो हिस्से के बारे में कहो गई। लेकिन यह कहना कि यह बात सर्वव्यापी है श्रीर सारे प्रवेश में इप तरह को सक्नो हुई, यह भो बात सहो नहीं है। हमारे संग्रह विभाग के जो काम करने वाले झावगों है वह झस्यायों हैं। झभो तक उनके स्थायों करने में जो विलम्ब हो रहा है उनका मून कारण यह रहा है कि जो व्यवस्था चनाई गई थी यह परोक्षण में थो। हम इस हो वेल रहे थे कि इपसे काम कितना हो सकता है और इममें काम करने वाले कर्मचारी यवि अव्यक्ति ही ति इनको छोट विया जाय और दूसरे रख विये जायं। इसलिये माननीय सबस्यों को यवि किसो व्यक्ति विशेष से शिकायत हो तो उसकी सूचना वह दें, उस पर तवज्जह वी जायगी और बराबर दो जातो रही है। हमारा कवापि यह उद्देश्य नहीं है कि किसी भो तरह से अव्याचार का पालन-पोषण हो, किसी प्रकार से वेश की जनता का त्राप्त हो श्रीर जनता वृक्षी हो। जो उद्देश्य माननीय सबस्यों को हे वही शासन का भी है और उसो विशा में जाने के लिये हम प्रयत्नशोज हैं। इन शब्दों के साथ में इस झनुवान का समर्थन करता हूं।

श्री ऊदल (जिता वाराणसी)—माननीय उपाध्यक्ष महोवय, जैसा कि बहुत से माननीय सवस्यों ने कहा तथा माननीय पव्माकरलाल जी ने भी कहा कि माल विभाग के इतिहास में जैसा कि अभी हाल ही, में श्रोले, और श्रांथी पानी पड़ा तो माल मन्त्री महोवय ने उन क्षेत्रों का जाकर निरोक्षण किया। में समझता हूं माल मन्त्री इसके लिये बचाई के पात्र हैं और में भी उनको बचाई वेता हूं। इसके साथ साथ में खाहता हूं और यह श्राशा करता हूं माल मन्त्री जी से कि जिस तरह से उन्होंने इस मौके पर तत्परता दिखाई है उसी तरह से वह उन सुझागों को, जो श्राज उनके सामने रखे जा रहे हैं, उनको वह तत्परता के साथ लागु करेंगे।

मुझे माल विभाग के सम्बन्ध में ३, ४ बातें कहना हैं। सबसे पहले में दाखिल खारिज के सम्बन्ध में कहना चाहता हूं। दाखिल खारिज के सम्बन्ध में जो प्रत्येक तहसील में व्यवस्था की गई है उससे किसानों को सन्तोष नहीं है। इसके पहले जो व्यवस्था थी, जिसको हम लोग खराब कहा करते थे, कानूनगो ग्रौर पटवारी ग्रगर किसी का बाप मर जाता था तो उसके लड़के का नाम चढ़ाता था ग्रौर उसको हम खराब कहते थे लेकिन ग्राज पटवारी दाखिल खारिज की रिपोर्ट तहसील में कर रा है। किसानों को ४, ४ तारीख पर तहमील में दौड़ना पड़ता है। प्रधान जाता है, लेखपाल जाता है, ग्रौर लेखपाल को खसरा खतौनो की इन्तखाब दाखिल करनी पड़ती है। इसलियें में चाहता हूं कि माल मन्त्री जी इसके बारे में सोचें। पहले का जो तरीका या वह बहुत बेहतर था। ग्रगर हो सके तो उसी को लागू करें क्योंकि वह लोगों के हित में था। कानूनगो या लेखपाल या प्रधान के हाथ में दाखिल खारिज का ग्रावकार रहे तो बहुत ग्रच्छा है।

दूसरी बात, मान्यवर, जमीं वारी उन्मूलन के सम्बन्ध में निवेदन करना चाहता हूं। बेहाती क्षेत्र में जमीं दारी उन्मूलन बहुत पहले से हो चुका है जिसके लिये माननीय माल मन्त्रों को बचाई दी गई कि उनके हाथों से ही वह कानून बना था। ग्राज हमारे गोविन्द सिंह जी ने कहा कि कुमायूं डिवीजन के ग्रन्दर जमीं दारी उन्मूलन नहीं होना चाहिये। में समझता हूं कि यह बहुत ग्रन्छों बात नहीं है। वहां के किसानों के हक में यह बात है कि जमंदारी का उन्मूलन जितनी जल्दी हो सके वहां पर किया जाय। में समझता हूं माननीय मन्त्री जी सब ग्रीर ज्यादा बचाई के पात्र होंगे। इसके साथ ही नागर क्षेत्र में बहुत मुसीबत है। शहरों के ग्रन्दर, टाउन एरियाग्रों के ग्रन्दर जमीं दारी उन्मूलन जितनी जल्दी हो सके उतने जल्दी माननीय माल मन्त्री बचाई के पात्र होंगे। वहां पर ग्रभी तक जमीं दारी उन्मूलन नहीं हुग्रा है।

एक बात यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि लैंड एक्वीजीशन ऐक्ट बहुत पुराने जमाने का बना हुआ है। आज आये दिन किसानों को जमीन सार्वजिनक कार्य के लिये जैसे स्कूल, नहर, ट्यूबवेत्स आदि के लिये ले ली जाती है। उसका नतीजा यह होता है कि उनको जो मुआवजा मिलता है वह बहुत कम मिलता है। वह कानून इतना पुराना है कि जब जमीन के दाम बहुत कम थे। उस समय १०० रुपये एकड़ या २०० रुपये एकड़ जमीन का दाम था। अब जमीन की कीमत ३ हजार और ४ हजार रुपये एकड़ तक पड़ती है। इसमें परिवर्तन करने की आवश्यकता है। में चाहता हूं कि माननीय मन्त्री जी इसके अपर सोचें और तत्काल अगर कोई रास्ता निकल सकें तो निकालें और उसमें तरमीम करें उससे किसानों को बहुत राहत मिलेगी।

एक बात वृहत जो कि र के सम्बन्ध में कहना चाहता हूं। जिस वक्त यह कानून ग्राया या तो उस समय के माल मन्त्री जो ने यह कहा था कि वृहत जोतकर लगाने का मतलब यह है कि जो बड़े-बड़े भूस्वामो हैं वह देक्स ग्रदा नहीं कर पावेंगे, तो उनकी जमीन बिक जायगी ग्रीर गरीब किसान उसको खरीद लंगे। में यह कहना चहता हूं कि भू स्वामी बहुत तिकड़मी लोग हैं। उनके पास बहुत ज्यादा जमीन रहती है। उसके लिये में ४, ६ उदाहरण ग्राप के सामने बता सकता हूं। कुछ लोगों के बारे में मुझे व्यक्तिगत जानकारी है। उन्होंने ग्रपनी पतोह के नाम, लड़के के नाम ग्रीर लड़की के नाम जमीन करा ली है। वह कर का दपया जमा नहीं कर रहे हैं। उनके पास वसूली की नोटिस जाती है तो वह उसका जवाब लगा देते हैं ग्रीर कहते हैं कि हमारा ग्रलग बैल चन्दी ग्रीर खेत चूल्हा सब कुछ बताते हैं। ग्राज इस तरह के मुकदमें प्रदेश के धन्दर बहुत चल रहे हैं। इसके लिये कोई रास्ता निकालना चाहिये। इस तरह से यह मुसीबत हल होने वाली नहीं है।

[भ्री अदल]

एक बात में जमीन के मुधार के बारे में कहना चाहता हूं। जमीं वारी उन्मूलन के बाद सीरवारों का कानून तना उपने किसानों को बहुत ज्यादा फायदा नहीं हुआ है जो कि होना चाहिये था। में माल मन्त्री जी से कहूंगा कि अगर रिपोर्ट को उठाकर देखें तो मालूम होना कि प्रदेश में लागों किसान इस तरह में बे अवन हो गये हैं। कुछ को अपना राद इस्तीफा देना पड़ा और बहुतों का फर्जीतीर पर इस्तोफा ने निया गया। लागों की तादाद में ऐसा हुआ है जिन्हा नाम ४६ तथा ४६ में बर्ज था यह बेदरान कर दिये गये। कुछ लोग बन्ने हे लेकिन वह बहुत थोड़े हैं। असल में आप की मन्त्रा यह थों कि जो जमीन को जीतता है उसको जमीन मिले और जमीन गरीब को मिले जो हल जीतता है। मैं चाहना हूं कि मन्त्रा जी इसके बारे में सोचें। जब सरकार की मन्त्रा यह थी कि ४६ में, ४६ में जा जाबिज से उनको हक मिले तो उनको हक मिलना चाहिये। मैं चाहता हूं कि इपकी छार उन सब लोगों को हक दिया जाय जो उस कम। काबिज से और मारे इस्तं के रद्द कर विसे जायं।

लगान वसूला के सम्बन्ध में बहुत से सदर पों ने कहा। उसके बारे में में कुछ कहना नहीं चाहता हूं। हमारे प्रदेश में लगान में एक म्पता नहीं है श्रीर लगान कई किस्म का है। में चाहता हूं कि श्राप के करकमलों से ऐसा कोई कान्त श्राये कि जमीन की क्वालिटों के हिसाब से प्रदेश भर में तीन चार किस्म का लगान तय हो जाय। श्राज पूर्वी जिनों में काइतकार तो एक एक इ का थ, ६ श्रीर = रुपये एक इ तक लगान देता है श्रीर जमीवार उसी तरह की जमीन का लगान १२ श्राने श्रीर एक रुपया एक इ के हिसाब से देता है। सरकार इस पर विचार करे श्रीर जल्बी से जल्बो ऐसी व्यवस्था करें कि लगान में प्रदेश भर में एक स्पता श्रा जाय श्रीर वह जमीन को क्यालिटों के हिसाब से हो जाय। इसन सरकार की श्रामदनी भी बढ़ेगी श्रीर एक रूपता भी श्रायेगी श्रीर किसान परेशान नहीं होगा।

दूसरे सीलिंग का बिल जो आने बाला है उस पर बहुत ज्यावा खर्च होने वाला है लेकिन उससे फायवा कम होगा। में नाहता हूं कि अगर आप चाहते हैं कि सचमच में पैवावार बढ़ें और जमीन जोतने वालों को मिले तो आप को पूरे प्रवेश का एक सर्वे कराना चाहिये और वेखें आप कि कहां कौन-कौन खेती के अलावा दूसरा रोजगार करता है। अगर किसी के पास दूसरा कोई रोजगार है तो उसे जमीन रणने का हक नहीं होना चाहिये। ऐसा करने से वेश की और प्रवेश की खाद्य समस्या हल हा सकर्ता है और इसमें किसी को कोई विशेध नहीं होना चाहिये। इसके लिये जो ज्यवस्था हो सकती हो, उसे माल मन्त्री जी सोचे ताकि ज्यावा जमीन निकले और जमीन मुमिहीनों को मिल सके।

इसके अलावा परगना हाकिम और तहसीलवारों के जो वौरे होते हैं उसको मैने वेला है कि वह जिस क्षेत्र में जाते हैं उसके अ नावा बूसरे क्षेत्र वालों के मकदमें वहा लगा विये जाते हैं। बनारस की मुझे जानकारी है, हा सकता है कि और जगहों पर ऐसा न हो। होना यह चाहिये पूरे सुबे के पेमाने पर कि जहां वे जायं उसी क्षेत्र के मकदमें लगाये जायं। बनारस तहसील के तहसीलवार का एक वौरा हुआ था। फूलपुर में तीन विन तक उनका टेन्ट खड़ा रहा,लेकिन वह एक विन भी वौरे पर नहीं आये। समाम किसान वहां आये और परेशान रहे। तो अगर किसी वजह से वह वौरे पान जा सकें तो इस बात की व्यवस्था होनी चाहिये कि किसानों को सुन्वित किया जा सकें ताकि उनको बेकार तकलीफ न हो। इस पर भी ध्यान वेना आवश्यक है।

इसके श्रलावा फँजाबाव जिले में जो खरीफ की छूट मिली है सासकर श्रकवरपुर तहसील में उसकी पिष्यां श्रभी तक किसानों की नहीं मिली है। इसके श्रनावा इस वर्ष गत खरीफ से खसरे के फार्म भी वहां के लेखपालों की नहीं बांटे गये। इससे बहां के जितानो को बड़ी परेशानी हो रही है। श्राशा करता हूं कि माननीय मन्त्री जी इस शोर विशेष ध्यान बेने की कृपा करेंगे।

इन शब्दों के साथ में इस कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री गोदिन्दिंसिह विद्ध (जिला श्रत्मोड़ा)—में जानकारी के लिये एक निवेदन करना चाहता हूं। मैने यह नहीं कहा था कि जुनायूं जनींदारी एवं लिशन बिल नहीं श्राना चाहिये या वहां जर्से दारी एवं लिशन नहीं होना चाहिये। छेने कहा था कि यह वहां के लिये उपयुक्त नहीं है। जैसे मिसाल के लिये उसमें व्यवस्था की गयी है कि सिंघाड़े वाली जमीन या कुवें की। तो पहाड़ पर कुवें को कोई समझता नहीं। तो वने कहा था कि इसमें उचित तरमीम होनी चाहिये श्रीर उसके बाद श्रगर यह यहां श्राये तो ठीक होगा। जब वह सेलेक्ट कमेटी में गया था तो चन्द्रजीत यादव जी, जो कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य थे, उन्होंने इसकी मुखालिफत की यो। लेकिन श्रव शायद पेकिंग से कोई नये लेंन श्रा गये हैं इसलिये उनको कुछ बदल नजर श्राती हैं, कुछ तथ्दीली दिखायी देतीं है।

#### श्री उपाध्यक्ष--ग्रब ग्राप बैठिये।

श्री जगदीशप्रसाद (जिला मुरादाबाद)—उपाध्यक्ष महोदय, मुझे यह कहने की जरूरत नहीं है कि यह विभाग हमारे प्रदेश का कितना महत्वपूर्ण विभाग है। माननीय मंत्री जी ने इसका जिक्र किया, श्रीर भी सदस्यों ने इसका जिक्र किया। इस विभाग का सबसे श्रीधिक जनता के सम्पर्ध में श्राने वाला कर्णवारी लेखपार है। जहां तक इसके महत्व का संबंध है यह बात सत्य है कि इसके बिना कोई कार्य चल नहीं सकता। कोई कागज तब तक श्राणे वढ़ नहीं सकता है जब तक कि लेखपाल उसे न चलाये। मे यह कहने के लिये खड़ा नहीं हुआ हूं कि लेखपाल रिश्वत लेता है या बेईमानी करता है। किन्तु में एक बात श्रवश्य कहना चाहता हूं लेखपाल के कर्तव्यों के बारे में। मैं चाहता हूं कि लेखपाल के कार्यों को वितरित किया जाय।

श्री उपाध्यक्ष--सदन में घोर श्रशान्ति है। लोग बहुत जोर-जोर से बातचीत कर रहे हैं। कृषया शान्ति रखें।

श्री जगदीराप्रसाद—लेखपाल के जिम्मे बहुत से कार्य है। यह नियम में है कि जो लेखपाल एन्ट्री करें उसकी सूचना संबंधित व्यक्ति को दो जाया करे। किन्तु अनुभव ऐसा बताता है कि १ फीसदी भी ऐसा नहीं होता। उन लोगों को सूचना नहीं दो जाती है। यही नहीं बाढ़ आदि के कारण हैं जो लगान भाफ होता है, वह भी लेखपाल के लिखने पर ही होता है। मुझे बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि जो बाढ़ आदि के कारण लगान माफ होता है उसमें भी लेखपाल कहता है कि जब तक रुपये में ४ आना हमको नहीं दोगे, तब तक माफी के लिये हम नहीं लिखेंगे। यदि वह नहीं लिखता है तो लगान माफ नहीं होता है।

जैसा कि ग्रन्य माननीय सदस्यों ने भी कहा है, ग्राप किसी भी काम को ले लीजिये, जब तक लेखपाल नहीं चाहेगा, तब तक कोई काम नहीं होगा। रास्ता ठीक नहीं होगा, खरन्जा नहीं बनेगा, कोई काम नहीं होगा। यह सब काम उसी के जरिये होते है। हमारी प्रदेशीय सरकार ने माननीय गोविन्द सहाय जी की ग्रध्यक्षता में एक मूल्यांकन समिति नियुक्त की। उसका संबंध कहीं भी गरीब लेखपाल से नहीं था। लेकिन उस रिपोर्ट में लिखा है——

"That people have considerable distrust in the agency of the Lekhpal with regard to his method of approach and capacity to implement the Panchayat schemes and further in view of the fact that as Secretaries of the Land Management Committees, they have failed to inspire public confidence, we do not recommend such a merger."

इसमें लेखपाल के बारे में, जनता को उनकी शिकायत के बारे में, उनकी योग्यता के बारे में, उनके काम करने के तरीकों के बारे में विश्वास नहीं है। |ओ जगबीशप्रसाव|

एक ब्सरी जगह कहते हं --

a viceling of distike and distrust which the people in general have against the Lekhpal"

एक प्रविश्वास य नापसन्वगी की भाषना लोगों में लेखपाल के शियय में है। हम वेबते हैं कि प्रापने पटवारियों की तबबीली की और लेखपाला को बनाया। यह सही है कि लेखपाल इस महत्ववृष् विभाग की रीव की हड़ी है प्रीर उनको अलग नहीं किया जा सकता। उसके बारे में यह राय भी वी गयों है कि उनकी इयदीज बहुत अधिक है उन्हें बहुत समय तहतील में रहना पड़ता है। मझे अपने जिले का अनुभव है कि लेखपाल यपन निजा के वर्स रखते हैं। अपना बहुत सा कार्य ये उनमें लेते हैं। अब उनकी तनकार अगरह अकहा में वेते हैं यह जा नहीं। लेकिन उनकी बहुत की इयदीज ऐसी है जिनकी अगद नहीं करते। इसीलि यह जहरी है कि उनकी कार्य की बाद विया जाय और उनके की याव सभा को विया जाय और कहत लेन्ड मेने जमेंट कमेंदी की विविधा जाय और कहत लेन्ड मेने जमेंट कमेंदी की विविधा जाय भीर कहत लेन्ड मेने जमेंट कमेंदी की विविधा जाय भीर अनु से उनके काम को बाद विया जाय और कहत लेन्ड मेने जमेंट कमेंदी की विविधा जाय । एस जरह से उनके काम को बाद विया जाय श्रीर अनु से उनके काम को बाद विया जाय श्रीर काहत लेन्ड मेने जमेंट कमेंदी की विविधा जाय । एस जरह से उनके काम को बाद विया जाय श्रीर काहत है।

उपाध्यक्ष महोदय, श्रम एक द्रारा कार्य द्रम थिना का हमार प्रदा म चक्रवाची का है। इसमें संदेह नहीं कि चक्रवाची एक सायद्रथक योजना थी और उसकी जनता चाहिए। बहें हम उसकी कितनी ही नृक्ताचीनी करें, लेकिन कोई सदर्य यह नहीं नाहता कि हमारे इति में चक्रवाची न श्राये। जेसा कि उपमंत्री भी ने कहा, हम हर यह यह नहीं नाहता कि हमारे इति में चक्रवाची न श्राये। जेसा कि उपमंत्री भी ने कहा, हम हर यह श्राव किन ह उन्हें देव कर मुंहें श्राव है। हम जा करा साम किन ह उन्हें देव कर मुंहें आक्रवाची हुए। मेरे केल में क्कावची नहीं हुई थी, मो लीन यय म अन्य हुई ह और में देव रहा हि चक्रवाची में बाज बाज किसान का भाग्य सक्रवाची न भान वाना उरा यो में मवा के लिए बिसाइ गया। श्रम सक्रवची श्रमसर्थ नाहें तो प्रकार स्वाव कार्य कार्य कार्य कार्य के कार्य के मिल बिसाइ गया। श्रम सक्रवची श्रमसर्थ नाहें तो प्रकार में ने वेव कार्य के बाग कार्य के विवाद के विवाद के कि एक एक सक्रवची श्रमसर्थ में क्या को। एक बार जब कार्य वाल श्रीर मुक्ति मही प्रकार कि कुमने स्थावंशी क्या को। एक बार जब कार्य कार्य होता हो स्वार मुक्ति नहीं हानी काहिए। मुझे कहने की स्वाय करा नहीं है, श्राप खुव पहुंची इसी नतीज पर।

श्रापने जो प्रित्तका विलिश्त की है जिसस राज्य के राजर कार्य का विवरण है, उसों यह दिया हुआ है कि हमारे प्रवेश से १६६ बक्क बढ़ों आफिसर है और दर अफसरों को प्राप्त सजा दी, यानी दे प्रतिशत को सजा दी। हमारे यहां बक्क बढ़ी आंध्यार स्वास बड़ा प्रकिती है और ४१ प्रतिशत को आपको सजा बेनों पड़ी। 'उसमें नीक सा रहारक जक बनी प्रकिती है। वह हमारे यहां ६८० है और ४६६ को सक्ता बेनों पड़ी, पाना माद्र प्रतासिक प्रतिशत को तजा बेनों पड़ी। तो समझिये उपाध्यक्ष महाबय, कि अगर १० कम् र हाते हैं ना उनमें में वम्कित तमाम एक साबित होता है। तो जब ४१ प्रतिशत बक्क बर्ग आंध्यारिया को सजा वेनों पड़ी और उथर साढ़े पेतालीस प्रतिशत सहायकों को सजा बेनों पड़ी पड़ी है। हो कि सहायकों को सजा बेनों पड़ी है। हमारे प्रवेश में कि हमारे स्वास की स्वास है। हो। १ लाल गाव है और हमारे परिस्थित है। हमारे प्रवेश में ६,४३८ गांकों में बक्क बन्दी हुई। १ लाल गाव है और हम अगज इस नतीजे पर पहुंखे हैं कि हमारे ६० प्रतिशत दिए वराब है, तो स्वाप्त प्रवेश के भाग्य का निर्माण ऐसे हाथों में बने जा रहे हैं।

एक और बड़ी विकास है जिसका कई धाननीय सबस्यों ने निक किया, वह है सगान और जसकी वस्त्रायों। जो बसूल करने जाता है जसके पान कोई विवरण नहीं होता। एक योजना जो आपने बनायी है जिसमें एक धावनी कई विभागों की बनायी करेगा, वह धण्डी है, तेकि , धायके पास पूरा विवरण होना चाहिए। आपने एक निवस बनाया कि बागों को काटने के

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान- श्रनुदान संख्या ३८--लेखा शीर्षक ५४--द्वीभक्ष सहायता तथा ग्रनुदान संख्या २--लेखा शीर्षक ७--भू-राजस्व (मालगुजारी)

लिए इजाजत लेनी पड़ेगी, लेकिन बाग इस बुरी तरह से कटे है कि मंत्री जी देखें, कितने कटे हैं क्रौर कितने लगे। स्रब इस स्राज्ञा को वापस ले लें। स्रब बाग काटना या न काटना तहसील-दार की मरजी पर न रहे।

एक बात में श्रौर कहूं। छोटी-सी बात है। यह जो रेवेन्य की हवालाते है तहसीलों की, इनमें ईमानदार व सचित्र श्रादमी श्रा सकते हैं। जिसने कभी कोई बेईमानी नहीं की हो, वह अगर लगान न दें, तो वहां जाना होगा श्रौर जेलखानों की हालत, जहां कत्ल तक के कैदी रक्खे जाते हैं ठीक हो गयी, लेकिन इन हवालातों की भी हुई? मैं हसनपुर तहसील की हवालात की बात कहता हूं कि श्रगर किसी श्रादमी को पेशाब लगता है तो जब वह श्राधा घंटा चिल्लाता है तब श्रादमी बाहर से श्राता है श्रौर ताला खोलता है श्रौर पेशाब कराता है। इस व्यवस्था में परिवर्तन होना चाहिए, यह कोई बड़ी बात नहीं है।

दूसरी बात, जो लोग वहां पहुंच जाते हैं उनके खाने की बड़ी म्रव्यवस्था रहती है। वह लगान न देने के कसूर में म्राते हैं। उनसे कहा जाता है कि १२ म्राने खूराक के पड़ते है, म्रगर १२ म्राने दोगे तो खाना मिलेगा। उसको बड़ी परेशानी होती है। १० रुपया लगान न देने के कारण जब वह बन्द हुम्रा है, जो कि १२ म्राने में सारे खानदान को खिलाता हो वह कैसे दे सकता है? ३-३ रोज तक उसको खाना नहीं मिलता।

श्री उपाध्यक्ष--श्री उग्रसेन, ग्रापको ध्यान रहे कि ग्रापके लिए ७ मिनट का समय है।

श्री उग्रसेन—उपाध्यक्ष महोदय, दो एक मिनट श्रीर दे दीजियेगा। श्रभी प्रस्तुत श्रनुदान के समर्थन में एक माननीय मंत्री जी, जो सदस्य इलाहाबाद हैं, वह भाषण दे रहेथे कि श्रलाभकर जोतों से मालगुजारी हटायी जाय, इसके लिए कोई खास श्रीचित्य नहीं है। श्रीमन, मैं माननीय मंत्री जी को याद दिलाना चाहता हूं कि जमींदारी उन्मूलन कमेटी के समक्ष जो भूतपूर्व राजस्व मन्त्री का वक्तव्य हुश्रा तो उन्होंने श्रपने बयान में माना कि सवा छः एकड़ के खाते श्रलाभकर है। उन्होंने श्रागे यह नहीं कहा कि मालगुजारी जरूर ही लेनी चाहिये।

श्रीमन्, एक मिनट में, प्रदेश की करोड़ों जनता पर जो गुजर चुका है उसे बतलाना चाहता हूं। जमींदारी उन्मूलन के पहले का जरा माननीय मंत्री जी ध्यान रखें। प्रदेश के भूतपूर्व जमींदार जो ग्राज हैं वह पहले २४ करोड़ रुपया किसानों से लेते थे जिसमें से १७ करोड़ रुपया खुद लेते थे ग्रौर ७ करोड़ रुपया सरकारी खजाने में देते थे। जब जमींदारी उन्मूलन विधेयक पेश हुग्रा तो सोशित्सट दल के नेता ने कहा था कि माननीय मंत्री जी केवल ७ करोड़ रुपया ही लें ग्रौर १७ करोड़ छोड़ दें। ग्रगर उसको माननीय मंत्री जी उस समय मान लिये होते तो ग्रलाभकर जोतों की मालगुजारी हट जाती। मन्त्री जी ने कहा कि ७ करोड़ लेंगे ग्रौर १७ करोड़ गांव समाज, जलकर मलकर ग्रौर मछली न मालूम काहे काहे से लेंगे, ग्रौर दो तीन करोड़ रुपया ग्रौर वसूल करेंगे ग्रौर उन्होंने कहा मालगुजारी में जो लीकेंज हैं, उसमें डेढ़ करोड़ लेंगे, इस तरह से करीब करीब २८ करोड़ के ग्रास पास पहुंच गया। पहले ७ करोड़ सरकार पाती थी तो सोशित्सट पार्टी ने सुझाव दिया कि ग्रलाभकर जोतों की मालगुजारी माफ की जाय। पहले ग्रलाभकर जोतों की मालगुजारी साढ़े १० करोड़ ग्रसेस की था। वह ग्रगर निकाल दें, तब भी साढ़े १७ करोड़ ग्रब भी ग्राप पाते है। लेकिन मन्त्री जी का ये बहुत बड़ा है वह ग्रभी ग्रौर लेंगे।

में जानना चाहता हूं कि सरकार जनता पर कौन सा ग्रहसान कर रही है ? मैं याद दिलाना चाहता हूं कि केन्द्र के एक वित्त मन्त्रों ने दक्षिण में एक भाषण में कहा था कि प्राफिटलेस एग्रीकल्चर पर मालगुजारी न हो, यह सिद्धान्त देश ग्रीर प्रदेश में मान्य होना चाहिये। भूत-पूर्व राजस्त मन्त्री ने स्टेटमेन्ट दिया था कि प्रदेश को साढ़े दस करोड़ रुपये की हानि होगी श्रगर [भी उग्रपेत]

अलाभकर जोतो पर से मात्रगण है। जा व ाा पा प्रारण तम हही से मिल जाय तो वह हटाने के निवे नक्षण है। व है राज के राज का कि ने क्षाण तो में बतान चाहता हूं कि वहीं हरारी माना का का का कि कि का रहा है। इसिनये पूर्वे ना कि कि कि कि माना सीर व का कि की की चित्र नहीं विकाह पड़ता।

जा जमीन निवयों में निकान वार इसर उधर जाता है। या गांगा निर्वेकरा रहेहैं। मेरे यहा वना और तेलिया में नर्वहा रहा हु भी रखका मुहदाताना हारहा रहा है। इससे पिसान, गरीब फिसान, पिटे आ रहे हैं।

लगान की बनुकी की बहुर बात आई। नारा क प्राप्टर झालेश बैठे हुने हैं। इन्होंने फहा कि नायब सहसीमनार ने लोगों की रहषू में गृद्ध साव या झीर उनते याते की घाल दी। कानुनार की किता कि किया है। या ना नहीं की घाल दी। कानुनार की बात नहीं कहारा हू क्योंगि में गमाता है कि यह की बड़ गगेत्री खीर जमाति से जमा है। उससे जिये हमारे गहा शाव रहा नहीं है। अव्हाबार की बात फहने से सरकार बुरा भी मान जाती है।

हनार पूत्री जिलों में भूमिहीनों की सारणा का भीर भर सरकार का ध्यान जाना गिर्धे। क्यों नहीं ६०,००,००० एक इं जमी द जो पालनू पड़ा हुई ने कि सरकों। में बाद वेने हैं ' लख दू वी दिन्द (Land to the Tiller) के अवर ध्यार यह विभाग कार्य करे तो इसका सब काम ठीक हो सकता है। वरना तो बड़ी मुश्किल हैं कि धाने खतकर हम किसानों का क्या विवाद दिन्दा उपकार माननीय मंत्री जी धानमें भावण में बलवायेंगे।

११६०-६१ के ग्राय-दायक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--अनुदान मंख्या ३८--लेखा शीर्षक ५४--दुभिक्ष सहायता तथा अनुदान संख्या २--लेखा शीर्षक ७--भू-राजस्व (मालगुजारी)

इन शब्दों के लाय में कटौती के प्रस्ताच का समर्थन करता हूं।

\*श्री गेंदासिह- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैंने यहुत सप्तस बूझ कर देविष्या की बात कहना कम कर दिया है। जिन महानुभावों ने इस विवाद में हिस्सा लिया और जो सुभाव पेश करने की कोशिश की या मेरी थ्रालोचना भी की, मैं उनको धन्यवाद देना चाहना हूं। मुझे माननीय रामलखन जी की उिकतयों से कुछ श्राश्चर्य हुआ। जिस भाष' और टोन ने वह बोल रहे थे श्रामतीर से उस तरह से नहीं बोलते हैं। मैंने देजा कि वह बड़े नाराज मालूम हो रहे थे माननीय माल मंत्री जी के ऊपर। इसलिये नार ज सालूम हो रहे कि माननीय माल मंत्री जी के ऊपर। इसलिये नार ज सालूम हो रहे कि माननीय माल मंत्री जी ने उधर का बौरा किया और उससे कुछ उन्हे ऐना दिखताई दिया कि लोगों को छूट मिल जार्या:। छूट की चर्चा उन्होंने की। छूट उनको जिलेगी जो दाने-वाले को तरसते है श्रीर जिनके तन पर वस्त्र नहीं है, फसल बरबाद हो गई है। उसके बाद भी उनने दिद लोटा- थाली विक्वाकर मालगुजारी लेगे तो वे बड़ी बदद्या देगे।

में समझता हूं इस पर तोचना चाहिये और इसितये नाराज माननीय मंत्री जी से नहीं होना चाहिये। एक बात जरूर हुई कि माननीय मिश्र जी की नाराजगी से माननीय माल मंत्री जी को इयर के लोगों की सहानुभृति अवश्य प्राप्त हो गयी। मैने देशा कि उसके बाद कई माननीय सदस्य अपने को रोक नहीं सके और उन्होंने कहा कि हम माननीय मंत्री जो के काम की सराहना करते हैं। यह बात सही है कि माननीय मंत्री जी ने बड़े साहस से काम किया। उन्होंने सोचा कि आखिर सदन में तो जवाब देना ही पड़ेगा। २-३ विन हाउस से गैर-हाजिर हो जायं। लेकिन यह मैं कह सकता हूं कि उन्होंने अच्छा काम किया।

श्री उपाध्यक्ष—ने भो भाननीय मंत्री जो का श्रनुत्रहीत हूं कि उन्होंने श्रीर मंत्रियों के लिये भी एक उदाहरण प्रस्तुत कर दिया कि ग्रह्पसूचित तारांकित प्रश्नों के उत्तर में कितनी तत्परता दिखायी जा सकती है।

श्री गेंदासिह—जब द्याप ही श्रनुप्रहीत है तब तो सभी श्रनुप्रहीत होंगे ही। उसके विरोध में कोई कैसे कहेगा। लेकिन यह जरूर है कि यह बड़ा पिक्त्र काम हुआ और जिले के अधिकारी उससे सबक लें तो श्रन्छा होगा।

मिश्र जी ने कहा कि कागज त की दुरुस्ती हो रही है श्रीर वह चकबन्दी के जरिये दुरुस्त हो रहे हैं। तो इस प्रकार से तो हमारी श्रीर उनकी जिन्दगी बीत जायगी क्योंकि चकबन्दी तो बहुत दिनों में हो पायेगी। जहां चकबन्दी हो रही है वहां तो कागजात की दुरुस्ती हो रही है तो क्या जहां नहीं हो रही है वहां के लोगों को कागजात की दुरुस्ती कराने का कोई श्रिवकार है या नहीं? इउ पर मिश्र जो को सोचना चाहिये श्रीर सरकार को सलाह देनी चाहिये क्योंकि मिश्र जी को मैं उन मेम्बरों में से समझता हं जिनकी राम की कुछ कद है।

में शुक्ल जो को एक सलाह दूंगा कि वे इस समय जिस तरह की गाड़ी रखे हुए है उस तरह की न रखें। वे लैंग्ड रोवर या जीप रखें और उससे सफर करें। अगर वे लैंग्ड रोवर या जीप में सफर करेंगे तो जिले के आफीसरों से हम कह सकेंगे कि अगर आप घोड़े पर सफर नहीं करेंगे तो निकाल दिये जायेंगे। में मंत्री जी को सलाह दूंगा कि कलेक्टर और डिप्टो कलेक्टर आदि को यह लाजिमी कर दिया जाय कि वे साल में २०० या ४०० मील घोड़े पर अवश्य दौरा करें। अगर कोई अफसर ऐसा न कर सके तो उसको हाँगज भी ऐसी जगह न रखा जाय।

<sup>\*</sup>वक्ता ने भावण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

### [भो गेंवासिह]

शुक्त जी ने कहा कि अध्टाचार की बाबत अगर कहा जायगा तो बाहर के लोग क्या कहेंगे ? वे कहेंगे कि ये सब लोग अध्टाचारी है। लेकिन हम क्या कहें, वे ही हमें रास्ता दिखा दें? लेक्याल चार श्राने के बजाय १०-१० श्रोर २०-२० रुपया वसूल करता है तो क्या कहें कि नहीं वह चार श्राना ही ले रहा है ताकि बाहर के लोग कहें कि वह बडा अच्छा श्रादमी है। लेकिन गायों के आदमा जिनके बोट से हम यहा आते हैं क्या कहेंगे? हमें तो सही तस्वीर ही रखनी चाहिये, गलत नहीं।

मैं यह स्रादर पर्वक कह देना चाहता हूं कि स्रगर स्रपनी सरकार के जमाने में भी हम लेखालों का जहां नियन नहीं बदल पाये तो कर क्या पाये गे। उसकी तो इस काम के लिये हमने रखा है कि वह गांव वालों का लिदमत करें। वे गांव वालों की खिदमत करने के बजाय उन पर स्राना रोब गांलिय करते हैं। मैं इस बात को नहीं पत्तव करते के बजाय उन पर स्राना रोब गांलिय कर। सरकार को उन्हें बतलाना चाहिये कि वे स्रपने को जनता के सेवक समझे। शास्त्र जी इस जहां नियत से मैं समझता हूं कि उनकी रिश्वत लेने में बल निनेगा स्रोर वे लागों का नंग करेंगे।

श्रलाभकर जोनो के बारे में म बहुत नहीं कहूगा, क्यों कि बहुत से लोगों ने उस सम्बन्ध में कहा है। म कुछ श्रोर न कह कर ठाकुर साहब से यह निवेदन करना चाहता हू कि जमीदारी श्रवालेशन कमें तो रिपोर्ट में जो सिफारिश ह उन सिफारिशों को वह देखें तो उनमें लिला हुआ ह कि १० एका से नीचे के किसानों की मालगजरी में छट होनी चाहिये। वह कमेटी कोई हमारी नहीं हैं बिल्क वह उन्हें बजेंगों की हैं जो श्राज यहां से दिल्ली तक बैठे हुये हैं। तो इन बातों को देखकर श्राम सोचे श्रोर क्या करके मालगजारी में छट दें श्रीर दूसरी जगह से उस कमी को पुरा कर ता बहुत श्रन्छा हो।

कृमाय जमीदारी एवालीशन विधेयक के सम्बन्ध में मझं यह निवदन करना ह कि में विष्ट जी ने बिल्कुल डिस्ऐप्री करना हूं और म समझता ह कि जमीदारी का नाम इस देश में कही नहीं रहना चाहिये। कुमाय नमीदारी एबालीशन बिल की जल्दी ने जल्दी लाकर पास करना चाहिये।

तराई भावर ये सम्बन्ध म जरूर कहना चाहता है कि श्रगर वे चाहते है कि वहाके किसान जिन्दा रहे तो, जो सालों से जमीन को जाते हुये है, उसके सम्बन्ध में सरकार को एक निश्चित नीति श्रपनानी चाहिये। उसे घेदराल नहीं करना चाहिये। म समझता है कि जो जमीन जोते उसे जमीन दी जाय इस पर सरकार को जरूर सोचना नाहिये।

श्रन्त में म एक बात जरूर कहना नाहता हूं। एक मत्रान हमने उठाया था उसका कोई जवाब शुक्ल जो ने नहीं दिया। य पृद्धा साहता हूं कि गरीब लोगों की कमर में रसी लगायी गयी परन्तु कितने ऐमें बड़े बहें लोगों की कमर म रस्मी लगाने की धमकी भी दी गई जिनके उपर बड़ी बड़ी रकमें बकाया है? एक भी उदाहरण श्वक जी देदे कि उन्होंने एक भी मिल मालिक के खिलाफ उंगली तक उठाने की ग्रिम्मत की जिनके खिलाफ लाखों और करोड़ों रुपये बकाया ह। लेकिन जो गावा म श्राप के श्रीर शक्त जी के लेरख्वाह लोग लाखों की तादाद में है जिन्होंने उनको बोट दिया श्रीर ग्रंपना प्रतिनिध बना कर यहां भंजा उनकी कमर में जरूर रस्सी लगती ह, उनके उपर मार पड़ती ह, उनके बल खोले जाते हैं श्रीर जब भव्याचार की बात सबन में कही जाती हैं सो शुक्ल जी उसका कोई जवाब नहीं देते। में समझता हूं कि उनको इस पर मोचना चाहिय।

श्री हुकुमिंसह विसेन—माननीय उपाध्यक्ष महोवय, श्राज का विवाद ऐसा हुन्ना है जिसके लिये में गजबूर हूं कि अपने तमाम साथियों, जो इधर बैठे हुए है और उधर बैठे हुये है, उनके प्रति अपना श्राभार प्रकट करूं। हमारे मित्रों ने बड़ी सावधानी के साथ अपने-अपने विचार व्यक्त किये है और ग्राज के विवाद की पिकुलियरिटी यह है जिसे मेरे स्थाल में भाष

१६६०-६१ के भ्राय-भ्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान— ७६६ श्रनुदान संख्या ३८--लेखा शीर्षक ५४--दुर्भिक्ष सहायता तथा भ्रनुदान संख्या २--लेखा शीर्षक ७--भू-राजस्व (मालगुजारी)

ने भी मार्क किया होगा कि यह श्रनुदान शुरू हुआ श्री राज्यपाल के नाम से श्रौर बहस खतम हुई लेखपाल के नाम से। दो ही इम्पार्टेन्ट फीगर्स रहे इस डिबेट में।

हमारे कुछ मित्रों ने करण्यन की बात कही। मैं इस बात का दावा नहीं कर सकता हूं कि इतने बड़े विस्तृत विभाग में जिसमें लेखपाल से लेकर कहां तक के सब लोग काम करते हैं, लाखों की तादाद में काम करते हैं, उनमें सब दूध के घोये हुये नहीं है। उनमें त्रृटियां हैं और उनको हमें और ख्राप को रका करना है। इस बात से तो जरूर सिद्ध हुआ जसा कि सभी एक भाई ने कहा कि यह जो किताब विभाग की तरफ से दी गयी है उसमें लिखा हुआ है कि कुछ लोगों को सजा, तनज्जुली या उनकी सर्विस कम की गई है। तो इस तरह से यह कहा गया कि हमने खुद तसलीम किया है कि हां, है।

हम कब इन्कार करते हैं लेकिन इसकी दूसरी साइड भी है, हम ने खुद साफतौर से बताया है कि कितनों के खिलाफ कार्यवाही हुई, कितनों को वरख्वास्त किया गया, कितनों को रिवर्ट किया गया, कितनों को ससपेंड किया गया, इस सब से इस बात का अन्दाजा हो सकता है कि हमारा प्रयास करण्डान को मिटाने के लिये है। हमारे माननीय सदस्य जैसा कहते हैं कि करण्डान हर विभाग में विकट रूप धारण किये हैं और उनकी बात ठीक है तो वह करण्डान मेरे एक आदमी के हटाने से नहीं मिटेगा। वह मिटेगा तब जब हमारा आप का सब का सहयोग होगा क्योंकि मेरा ऐसा खयाल हे और सही खयाल है कि एक्सटारज्ञान को तो हम रोक सकते हैं लेकिन वालंटरी ब्राइब को हम नहीं रोक सकते। कोई खुले मैदान किसी को झुका कर रिक्वत लेता हैं तो हम मुकदमा चला सकते हैं सावित कर सकते हैं ख़ौर सस्त सजा भी दिला सकते हैं लेकिन जो अपना निजी लाभ उठाने की गर्ज से २ बजे रात को अफसर की जेब में जाकर रुपया डाल आता है, न जिसका जिक देने वाला करता है न लेने वाला करता है उस करण्डान को हम नहीं रोक सकते। कमजोरी वह आफसरों में भी है और देने वालों में भी है।

ऐसे तो हमने बहुत कम देखे है कि जो जेब से रुपया निकाल कर फेंक दें ऐसे तो लाखों करोड़ों में दो चार ही होंगे। इसलिये इस दिशा में हमारा श्राप का सब का प्रयास होना चाहिये, जब तक हमारा श्राम नैतिक स्तर नहीं उठेगा श्रौर लोग खुद ही गलत लाभ उठाने के लिये रुपया देना बन्द नहीं करेंगे चाहे फांसी पर ही क्यों न चढ़ा दिये जायं तब तक हम एक्सटारशन को भले ही काफी हद तक रोक ले लेकिन वालंटरी बाइब को रोकना किसी के काबू की बात नहीं हैं। जिकायत होती है तो इन्क्वायरी बराबर करायी जाती है। यह जो बुकलेट में ब्योरा दिया है कि ऐक्शन लिये गये यह सब शिकायतों पर ही तो हुशा है। बाकी श्रगर शिकायत श्राये श्रौर उसका श्राधार न हो सबूत न हो तब हम क्या कर सकते हैं। ऐसा नहीं होता कि शिकायत हो श्रौर इन्क्वायरी न हो। मैं तो स्वयं सरप्राइज विजिट या दौरा करके मामले पकड़ने की कोशिश करता हूं। क्लेक्टर भी मेरे श्रादेश से करेंगे, श्रगर वह नहीं करते तो मेरे पास दरख्वास्त दी जाय में श्राप को दावत देता हूं।

माननीय गेंदा सिंह जी ने यह जिकायत की कि भूमिधरों को रहन दखली का हक नहीं दिया गया है केवल बैनामा करने का हक है लेकिन वह सबजेक्ट टु सरटेन लिमिटेशन्स है। उस वक्त जब कानून बन रहा था माननीय गेन्दा सिंह भी थे, मै तो था ही, श्रसिल बात यह थी कि जिसकी जमीन है उसके पास रहे श्रीर जमींदारी विनाश इसीलिये किया गया था कि बड़े- बड़े मोटे श्रादमी यह सब जमीन ग्रैप कर लेते हैं श्रीर श्रसिल जोतने वालों के पास कुछ नहीं रहता।

जमींदारी श्रबालीशन इसलिये किया गया था कि जिस के पास जमीन है वह उसके पास रहे, यह सिद्धान्त माना गया था, यहां तक कि शिकमी देने का श्रिवकार भी नहीं रख़ा था, साझे का था केवल। इसलिये ऐसी बन्दीशें की गई थीं कि श्रगर रेहन दखली का हक होगा तो

#### [श्री हुक मीपह विश्व]

राजान के वस्ती कराकिन ने के रायम कि बाउँ बाउँ मिन रोमन है रहती नहीं जगायी गई, अदि दोगों के दगा दो जा कर व जानिता है। से नहीं कि रक्षों नक्षों के साम है। है। है। से नहीं अप के कि क्षा क्षा के कि का मान है। है। है। है। है। से बार मान है व दिन का मान है। का मिन का निवास के लिते हैं। कि साम बेन्स के अर पाना का कि का कि कि है। है। कि समारी पूटी बड़ी पेनकन है। उन्तों पान का साम के अर पाना का कि निवास के कि साम के साम

श्री मोतीनाल ग्रवरयी--- प्राम्बता म रह हर?

श्री हकुम सिंह विस्ति—जा, प्रयम्बारी आर राज्य, दोना मार कर। स्कूल मे रहार नहा। तहाम पाला अवार का किए हो तकतीय पहुंचावा अकित में स्यूटी हमारा हे .....

श्री उपाध्यक्ष—म माननीय सदस्या से कहुंगा कि सन्त्री जी कृद्ध बहुत महत्वपूर्ण घोषणा फरने जाते हैं, यात ताम नाच में राहेंगे ता िकत हार्गा ।

श्री हुकुर्मागह विसेन—॥ र्यूट, बडी पेनफल ह श्रोर ताम कर कुछ जिले ऐसे हं जहां लाग वंना नक्ष जानते। जब २४ लाग राया तका ॥ माफ कर दा गई उसके बाद से जो देने वाल में वह भी गहा दते ह, पर सामते ह कि राके रहें। प्रायद यह भी माफ हो जायगो। तो जब एमा महीवटा हो तो हम क्या कर रे जो लोग बार्ज्य नहीं दे सकते उसकी हम फंसी इन भी करते ह खार जिला माना का एसे प्रावेश भा है। लेकिन जो देने की स्थित में होते हमें भी नहीं दत है ना पारन्द जारी करना प्रावा है।

नोगरा साहब ने कहा प्राने असाने म बड़ा श्रच्छा तराका था। इस वक्त बहुत खराब है। जब जमी-बार ये थोर किसाना को नर्गा खना कर पीठ पर ईटा रख दिया जाता था वह तरोका उन के खयान के श्रन्था था श्रोर जी तराका श्राजकाल ह यह उन्होंने लराज बताया। तो में पुराने तरी है को श्रद्धा नहीं समझ सकता। श्राप बतलाइये, हम तो धास खिलाते थे, तब तो परथर खिराने थे। मेंने सिशीली के मामल की इंयबाधरों कराई, बितकुल निराधार साबित हुई। घान का किस्सा बिनकुल गनत ह। मेरे एक मित्र थ उन्होंने दूसरे के नाम से तकावी ली श्रोर ले ली गुद श्रार जब खुला मामला तो देने से कासिर। तथ परेशानी हुई तो यह लगा दिया कि घास खाली। भला श्राज के जमाने में ऐसा हो सकता है, में कभी यकता नहीं कर सकता। श्रार कोई शब्स करेगा श्रीर हम मान ले कि सही है तो यह सही सलामत श्रपनी जगह पर नहीं रह सकता। में तो वाथे के साथ कह सकता है कि ऐसी बात खेगोकेटिक सेटश्रप में हो नहीं सकती। जरा सी बात पर तो सवाल जयाय होन रागते है। श्राइम मिनिस्टर कोई बात कहने है तो तूमार बन्ध जाता है। फिर हमारे नायब तहसीतवार श्रगाड़ी-पिछाड़ी बांध कर घोड़ा बना कर घास बालें श्रीर खिलायें यह हो नहीं सकता।

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रन्दानों के लिये मांगों पर मतदान-- ७६१ स्रनुदान संख्या ३८--लेखा शीर्षक ५४--द्रुभिक्ष सहायता तथा स्रनुदान संख्या २--लेखा शीर्षक ७--भू-राजस्व (मालगुजारी)

लैंड रिकार्ड के बारे में शिकायत हुई। वाकई लैंड रिकार्ड गलत है। बड़ी शिकायतें हैं जमीन्दारी एबालीशन के सिलसिले में। एक किस्म से कप्रास था। जमीन्दारी टूटने पर ज्यादातर जमीन्दारों ने दूसरों के नामों से अट्टे पट्टे लिखे और काबिज हो गये। वे दुक्स्त नहीं हुपे। चकबन्दी के सिलसिले में एक, एक तहसील में लाखों गलितयां निकलती है। चकबन्दी में करेक्श्चन हो रहा है और लैंड रिकार्ड सर्वे भी हमारा हो रहा है, पहाड़ों में सेटिलमेंट हो रहा है और प्लेन्स में लैंड रिकार्ड आपरेशन कर रखा है। उसके जिरये से करेक्शन हो रहा है। इससे रेकार्ड ठीक हो रहा है।

बहुत सी जमीनें बाग की ऐसी हैं जो बाग नहीं रहीं ग्रौर ७, प्रवर्ष से उनको जोता जा रहा है, फायदा उठाया जा रहा है। मालगुजारी से वे मुस्तस्ना थीं। उनका भी रेकाई हो रहा है ग्रौर मालगुजारी एसेस हो रही है। लेकिन चूंकि उनका ७, प्रसाल का इकट्टा लगान देना मुक्किल हो जायगा इसलिये मैने यह ग्रादेश दिया है कि करेन्ट ईयर का ग्रौर एक साल पिछला बकाया देते रहो। इस तरह से वे घीरे घीरे ग्रदा कर दें तो उनको ज्यादा जहमत नहीं होगी ग्रौर सरकारी मालगुजारी भी वसूल हो जायगी।

श्री रामस्वरूप वर्मा —७ साल बाद कैसे मालूम हुग्रा कि ग्रब बागों पर लगान लगना चाहिये, पटवारी ग्राप के सोते रहे ?

श्री हुकुर्मासह विसेन—जब मालूम हुन्ना तब से एतेस किया। लेखपाल खराब हैं ग्राप ही लोग शिकायत करते हैं। मिला लिया होगा ग्रौर किशे तरह से रेकार्ड नहीं होने पाया। जब चीज मालूम हो गयो तो एतेस किया जा रहा है। लेंड रेकार्ड का काम इस तरह से हो हो रहा है। एक बात ग्रौर कही गयो—भाई उग्रमेन ने नहीं कहा कि टेस्ट वर्क में जुरमाना हुन्ना। यह हमारे भाई गेदासिह ने कहा था। जुरमाना नहीं हुन्ना। शायद उनकी जानकारी में कुछ कमी है। बात यह है कि एक सिस्टम ऐसा था कि १० श्राने रोज बेलदार को, द श्राने रोज मिट्टी डालने वाले को ग्रौर ६ श्राने रोज उन लड़कों को जो काम कर सकते हैं, दिये जायं। एक दूसरा सिस्टम यह था कि ७ रुपया प्रति हजार घन फुट मिट्टी खोदने के हिसाब से दिये जायं। देवरिया ग्रौर गोरखपुर में यह सिस्टम चलाया गया। उसमें यहो होता है कि गांव समाज को रुपया दे दिया जाता है ग्रौर प्रधान के जिरये सब मजमुग्ना नाय कर रुपया बंटवा दिया जाना है। तो देवरिया जिले में कम काम किया गया। उसो हिसाब से उनको कम पेमेंट हुग्ना। कोई जुरमाना नहीं हुन्ना। लेकिन उग्रसेन जी ने शिकायत को तो मैने जांच करवायो थो। मैने देखा कि देवरिया के लोगों को यह सिस्टम सूट नहीं करता है तो मैंने कहा कि वही पुराना तरीका कर दो।

श्री उग्रसेन--ग्रार्डर यही हुन्ना था कि जुरमाना हो।

श्री हुकुर्मासह विसेन--यह तो अनाड़ियों को बात है पढ़े लिखे लोग उसे जुरमाना नहीं कहेंगे ।

एक बात यह कही गयी और उस पर बड़ा जोर दिया गया कि कलेक्शन की एजेन्सी कौन हो। हमने एक्सपेरीमेंट किया था और सन् ५३ में २८७ या कितनी गांव पंचायतों को आफर किया था। उसमें से १२७ या १२६ ने उस आफर को ऐक्ससेट किया था। लेकिन उसके बाद कमशः यह नम्बर कम होता गया। दिर्यापत करने से पता चला कि यह एक 'थें कलेस जाब' है, गांव में अगर कोई अड़ियल असामी हो जाय तो कौन प्रधान मार खाये। बड़ी दिक्कत उसकी पड़ती है। गांव में पार्टीबन्दियां हैं। तो अब्वल तो गांव पंचायतें राजो नहीं होतों और उनको वसूल करने में बड़ो दिक्कतें हैं। और यह एक इतना बड़ा काम है कि इस का एक्स रेशे मेंट करना मुक्कित है और बड़े खतरे का एक्स रेशे मेंट है। ऐसी हालत में जैसा कि मैंने अर्ब किया कि छट के इन्तजार में जो लोग देसकते हैं वे भी

श्री मोतीलाल प्रयस्थी--रेनेप् का 📺 ६ सा भार दौरायतों हो दीजिने।

श्री हुकुमरिंह विसेन—मीका श्रामेगा तो देने योग फिर उनका नो सब हे ही, कोई मेरे श्रीरतयार में ह ?

श्रव इस सिचपेशन का महाबला करना है पौर पर्गों रात को १२ वर्ज तक मैने करायटरों को फोन किया और तार भी चााये। साम हो पौना पर्भार रात को ही मैने खटराटाना शुरू कर दिया तो इतनी जल्दी सबर नहीं पर सकती था। पर्भा तक खबरें श्रा रही है इमलिये में डिटेल में नहीं कह सकता हूं। धों का मेरे कहने हा मतलब यह है कि हमारा प्रयास इधर हुआ। इसमें कोई हैरानो और परेशाना की बात नहीं है। में समझता हूं कि इस भावना को निहाल दिया जाय कि हमारे कलकर और मातहनान नकसान को प्रत्य ऐस्टीमेंट करेंगे। एकन्यून तो कोई नहीं जान सकता क्योंकि नह तो एक गेस वक्त होता है। लेकिन जहां तक होता नह ठीक हो गुक्तान का तामीना करेंगे, कोई खसीस नहीं हूं। यह कंजूसी क्यों करेंगे।

में श्रापको यकीन विलाता हूं कि तह सही तलमाता करेगे । गर्जनगेत नुकसान बरवाइत करने के लिये श्रीर सहायता देने के लिये तैयार है। यह बात में यह सफता हूं। श्राप यकीन करें या न करें यह बात दूसरी है। लेकिन हमने ऐसा किया। में श्रापको यकीन विलाता हूं कि हमारे कलक्टर भी बहुत एकि इन है श्रीर जब मिनिस्टर पहुंच जाता है तो वह इनएक्टिय नहीं रह सकते । यह बात दूसरी है जेमा परमाकर लाल जी ने कहा कि कलक्टर बंगले तक से नहीं निकला। हम कहते है कि यह भी गहीं निकले और वह लखनऊ चले श्राये । हम से जब कसूर हो सकता है तो कलक्टर से भी हो सकता है। श्रार श्रीप गये होते तब तो शिकायत करने का श्रापको हक था कि कलक्टर नही मिला या बंगले से

१९६०-६१ के ध्राय-व्याक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--अनुदान संख्या ३८--लेखा द्यापिक ५४--द्वुर्शिक्ष सहायता तथा अनुदान संख्या २--लेखा द्यापिक ७--भू-राजस्व (दालगुजारी)

नहीं निकला और फ्राय लाउनक बाते गये। जब मैं पहुंचा तो हर एक गांव में वह मेरे साथ गया। नहीं गया कर देवा दूतरी बात है। हम को जिसने कतेक्टर, एस० डी० थ्रो०, तहसीलदार, नायब तहतीलह र थ्रौर कानूनपो मिले सबको स्टिर श्रप कर दिया।

कंतालिडेशन के बारे में बात कहीं गयी। मैं बड़ा श्राभारी हूं, भाई दीपंकर श्रीर श्रपने साथियों का। यह कंसालिडेशन का काज जो है, जब मैं माल मंत्री जुश्रा तो सबसे ज्यादा इस काय से नाव. किफ था क्योंकि मेरी जानकारी भी नहीं थी। लेकिन मेंने ऐक्ट श्रीर रूत्स को पढ़ना शुरू किया। लोगों ने बहुत बहुकाने की कोशिश की कि यह गड़बड़ है, वह गड़बड़र है। जानकारी थो नहीं, तो न हां कहता था, न न कहता था। धीरे धीरे जब मैंने जानकाय हासित करली तो एक साहब श्राये कहने लगे कि हासारे जिले मेरठ में चकवन्दी हुई थी, ती नियम गड़बड़ थे प्रब नियम शब्बे हो गये हैं लिहाजा दोबारा करवा दीजिये। वह एक कालेज के प्रिसिपत थे। श्रवस्थी जी मुन लें। पढ़ से थे, हम को भी पढ़ाने श्राये थे। हमारे देहात में एक मसल है 'गब्रा दर्जी दिन भर सिये और रात भिर उत्हों। हमने चार वर्ष में चकवन्दी की श्रीर किर चकवन्दी करें। यह काम मैं नहीं कर सकता। तब लोग समझने लगे कि इन्होंने जानकारी हासिल कर ली है। श्रव मेरे पास मुश्किल से महीने में दो, एक शिकायतें श्राती हैं।

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी--वह कोई कांग्रेसी होंगे।

श्री हुकुर्मासह विसेन--वह कानपुर के लगभग के थे।

हमारे कुछ भाइयों ने भी कहा है कि शिकायतें कम श्राती हैं। नो न्यूज इज गुड न्युज (No news is good news) नहीं तो ग्राजकत के जमाने में हवन करने लगो तब भी शिकायत कर दें। फिर शिकायतें क्यों कम न श्रायें? हमारे कंसालिडेशन किमश्नर श्रीर उनके यहां का जो ऊपर का स्टाफ हैं बहुत ही योग्य है। दो, एक शिकायतें मेरे पास श्रायीं। मैंने भेजा। वैसे सब जानते हैं कि जुडीशल श्रोसींडिंग्ज हैं। हम कुछ कर नहीं सकते क्योंकि रोज यहां कहा जाता है एक कटमोशन भी रामशरण यादव जी का था। वह कहते हैं कि तमाम लोगों ने श्रफसरों के फैसले के खिलाफ दरख्वास्ते दी हैं। वहां से जवाब श्रा गया मेरे पास (श्री रामशरण यादव के जड़े होकर कुछ कहने पर) जरा सुनिए तो श्रभी मैंने कहा ही क्या। श्रसली बात तो श्रभी कही ही नहीं मैन । श्रव श्राप कहते हैं कि उसमें दखल दीजिए उनके फैसले में श्रीर वह जुडिशियल श्रोसींडिंग है।

यहां रोज नारा लगता है श्रौर परसों लगेगा कि सेपरेशन श्राफ जुडिशियरी ऐंड एग्जीक्यूटिव होना चाहिये। तो यहां तो सेपरेशन श्राफ जुडिशियरी श्रौर एग्जीक्यूटिव का नारा लगाया जाय श्रौर वहां हमसे कहा जाय कि उनकी जुडिशियल प्रोसीिंडंग में ऐज ए मिनिस्टर दखल दीजिए। तो मैं तो उरता हूं कंटेम्प्ट श्राफ कोर्ट से, माननीय राजनारायण जी समझते होंगे, मैं तो उससे उरता हूं। वह प्रैक्टिसिंग लाइयर हैं, शायद न उरते हों लेकिन हम तो उरते हैं भाई। तो इस तरह की बातें हैं। (व्यवधान) हां कंसालिडेशन का भी है। उसमें त्रुटियां हो सकती हैं। यह काम ही कुछ ऐसा मुक्किल है क्योंकि हर एक का श्रपने खेत बाड़ी से श्रसोशियेशन होता है। जब छूटने लगता है तो कहता है कि हमारे द:दा के समय से चला श्रा रहा था। तो काफी दिक्कतें श्राती हैं। श्रौर ७५ फीसदी तो कमी बेसी हो ही सकती है वैल्यूएशन में। ऐसी हालत में कुछ लोगों को नागवार भी गुजर सकता है श्रौर उसका श्रपोजीशन भी हो सकता है। लेकिन उनको समझाबुझाकर के काम किया जा सकता है। मुझे मालूम है मिसाल एक जिले की कि एक साहब ने दरख्वास्त दी थी कि हमको खराब से खराब दे दिया जाय लेकिन एक चक दे दिया जाय। तो उनको नार खोह मिलाकर एक दे दिया गया। ऐंड ही इम्ब्रुट इट (and he improved it)

[श्री हुकुर्मासह विसेत]

श्रब जेता हमारे माननीय रामशरण जी यादव ने कहा -एक कोई सक्सेना थे, कोई सी॰ श्रो० थे या क्या थ, उनका काम राराब था। उनको हमने रिवर्ट कर दिया कि जाश्रो कानूनगोई करो जाकर। उतके बारे में वह कहते हैं कि श्रच्छी एंट्री तो भेजी ही नहीं गई उनको। सब खराब ही खराब भेजो गई। तो हम कहते हैं कि जब सब खराब ही खराब एंट्री होतो श्रच्छी हम कहां से भेज दे। उनके काम की जांच श्रकसरों ने की तो बहुत खराब पाया। तो किर रिमर्सन मही वो क्या तरक ही होगी? जब श्राप मालिक हों तो कर दीजिएगा तरक ही। हम नो यही करेगे।

श्री प्रतापसिंह (जिलाने नोताल) - - गुमापूं जमींदारी एवालीशन का भी कह दीजिएगा।

श्री हुकुर्मामह विसेन - गृनाप्ंजमींदारी एवालीशन बिल हम बहुत जल्दी ला रहे है। श्राप घर नहीं जाने पायेगे ।

श्री गोविन्द सिंह विष्ट--ग्रमेड कर हे लाइयेगा ।

श्री हुकुर्मासह विसेन—श्रमंड ग्राप करेंगे। हम क्यों करें? इतने दिन से एम॰ एल॰ ए॰ हे प्रोर प्रभंड हम करेंगे? जाइंट से नेक्ट कमेटें। से प्रा गया है। श्रव यहां श्रमंड करेंगा तो सदन करेंगा। (व्यवचान) वह तो ह सदन के सामने। उसको जगह नहीं मिलतो ह। श्रव कें। जगह मिलेगो भगवान की दया से। वह श्रा चुका है श्रीर पेश हो नुका है।

श्री उग्रसेन--एजे रेपर हमेशा वह श्रन्त में खपता ह।

श्री हुकुर्मासह विसेन --जी हां, इस चीज को तो श्राप जानते हैं श्रोर हम जानते हैं, श्रीर लोग तो इसको समग्रते नहीं।

इसके बाद रोलिंग वाला बिल जो हं २५ तारीय तक वह भी श्रा जायगा। हमने काम कर दिया है। हमारो तरफ में कोई कोताही नहीं है। श्रगर पास होने में श्राप जल्दी

कर दे तो हम इसी ज्लाई से लागू कर दे ( व्यवधान)।

नगरों के अन्वर जो जमींबोरो ह उसके लिए सारे मुखे में जितनी यूनिट्स है म्युनिसिषल बोर्डो की उनका हम डिमार्केशन करा रहे है और करोब करीब सो या दो सी -श्राप जानते हो है मुझे श्रांकड़ा ज्यादा याद नहीं रहता --नो सो या दो सो के करोब यूनिट्स में डिमार्केशन करोब करोब म्राम्भिल हो गया है श्रोर बाकी का हो रहा है। डिमार्केशन जब तक न हो तब तक हम कुछ कर नहीं सकने। जिन जिस में म्काम्भिल होता जायगा उसमें हम उसे लागू करते जायगे। उसमें श्रोर ज्यादा देर होने की गंजायश नहीं है।

श्री गोविन्दसिंह विष्ट--जैसे चकबन्दी कमेटी बना दी है वैसे ही एक सेटिल-मेंट कमेटी भी बना दीजिए।

श्री हुकुमिंसह विसेन—चन्नबन्दी कमेटी जैसी बनी है उसकी चनने दीजिए। जैसी मैंने कहा सब काम जर सल्लाह चल रहा है। तो उसमें कोई हेरफर में नहीं करना चाहता। इन शब्दों के साथ जिस मूख में हमारा हाउस इस समय है उसकी में बरबाद नहीं करना चाहता। गेंदासिह जो से में यह रिक्वेस्ट करूंगा कि इतने इतने तो काम करने हैं और रुपया कम करते जा रहे हैं तो काम कैसे करेंगे? इसलिये अपनी कटौती को यह वापस लें लें तो अच्छा है।

डाक्टर श्रवधेशकुमार सिनहा (जिला सीतापुर)—में श्रापकी श्राज्ञा से यह स्पष्टीकरण करना चाहता हूं कि माननीय मंत्री जी ने एक ऐसे ढंग से इस श्रावरणीय सदन में भ्रम पैदा करने की चेष्टा की है कि जैसे बड़ी कोई खास बात थी। किसने श्रौर क्यों इस प्रकार की १६६० →६१ के म्राय-व्ययक में म्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान— ७६५ म्रनुदान संख्या ३६——लेखा शीर्षक ५४——दुर्भिक्ष सहायता तथा म्रनुदान संख्या २——लेखा शीर्षक ७——भू—राजस्व (मालगुजारी)

बात पैदा करने की चेष्टा की ? सर्व प्रथम प्रश्न उसमें कार्यकर्ता का है। उसकी भ्राप समझ लें। उन्होंने कोई शिकायत नहीं की थी। पहले वहां पर चमार मारा गया था......

श्री उपाध्यक्ष--बस ग्रापका स्पष्टीकरण हो गया।

श्री रामशरण यादव (जिला लखनऊ)—माननीय मंत्री जी ने जो वक्तव्य दिया मेरी शिकायत के सिलिसिले में तो में उनका ध्यान दिलाना चाहता हूं श्रौर वह श्रपने को सही कर लें । यहां पर पहली दरख्वास्त २३ श्रक्टूबर के पहले श्राई श्रौर उसके बाद २३ तारीख को ग्राई जो ए०सी०श्रो० के खिलाफ थी। यह मंत्रों जी देखें कि उस पर सुनवाई नहीं हुई। उसके बाद दफा ४८ में रिवीजन हुश्रा ? उस वक्त मामला ऊपर श्रदालत में नहीं गया था। माननीय मंत्री जी की इत्तला इस सम्बन्ध में गलत है। उसके बाद १०-१२ दरख्वास्तें दी गई । तब जाकर रिवीजन हुश्रा । जो मेरी शिकायत थी उसके श्रनुसार ही फैसला हुश्रा ।

श्री उपाध्यक्ष——प्रश्न यह है कि सम्पूर्ण अनुदान के अधीन मांग की राशि घटाकर एक रुपया करदी जाय। कभी करने का उद्देश्य——नीति का व्यौरा जिस पर चर्चा उठाने का अभिप्राय है।

टैस्ट वर्क में दी जाने वाली मजदूरी की कमी ग्रौर उसके खोलने में पक्षपातंपूर्ण नीति तथा सूखा बाढ़ के श्रवसरों पर प्रभावित व्यक्तियों को सहायता न दिये जाने की चर्चा करना।

(प्रश्न उपस्थित किया गया श्रौर श्रस्वीकृत हुआ।)

श्री उपाध्यक्ष-प्रकृत यह है कि म्रनुदान संख्या ३८—दुर्भिक्ष सहायता—लेखा शिर्षक ४४—दुर्भिक्ष म्रौर दुर्भिक्ष सहायता निधि को संक्रमित धनराशि के म्रन्तर्गत ३५,१६,१०० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १९६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय।

(प्रदन उपस्थित किया गया ग्रौर स्वीकृत हुग्रा।)

श्री उपाध्यक्ष-प्रकृत यह है कि संपूर्ण अनुदान संख्या २ के श्रधीन मांग की राशि घटा कर एक रूपया कर दी जाय ।

( प्रश्न उपस्थित किया गया ग्रौर श्रस्वीकृत हुग्रा ।)

श्री उपाध्यक्ष—प्रश्न यह है कि अनुदान संख्या २-भू-राजस्व (मालगुजारी)-लेखा शीर्षक ७-भू-राजस्व (मालगुजारी) के अन्तर्गत ६,४४,८६,००० रुपये की मांग वित्तीय वर्ष १६६०-६१ के लिये स्वीकार की जाय।

( प्रक्त उपस्थित किया गया ग्रौर स्वीकृत हुन्ना।)

( इसके बाद सदन-४ बजकर ५५ मिनट पर श्रगले दिन के ११ बजे सक के लिए स्थगित हो गया।)

> देवको नन्दन मित्थल, सचिव, विधान सभा, उत्तर प्रदेश ।

लखनऊ; २३ मार्च, १६६० ।

### नत्थी 'क'

(देखिये ग्रत्प-सूचित तारांकित प्रश्न १ का उत्तर पीले पूष्ठ ७१५ पर)

### ग्राम कड़सखा, थाना खामपार श्रोर ग्राम मझौली, थाना लार की डकैतियों का विवरण

फरवरी २८, १६६० को श्री लाल बचन ग्रात्मज श्री जनन भगत हे मकान पर जो ग्राम कड़ सखा, थाना लामपार में हे एक डाकु ग्रों के गिरोह ने जिस में २०-२५ फ्रांदमी थे, प्रातः काल ७-१५ मिनट पर हमला किया। इन लोगों के पास बन्द्र हे था। इन हों। में चार श्रादमी घायल हुये, जिसने श्री लाल बचन के भाई ग्रोर चाचा भी सम्मिनित थे। इन लोगों को मामूलो चोटे लगों थीं श्रीर श्रब सब स्वस्थ हो गये ह। डाकु ग्रो ने कुन ३८५.५० नये पैते की सम्पत्ति, जिस में कपड़े श्रीर गहने सम्मिलित ह, लूई।

इसो तिथि को १०-०५ मिनट पर श्रो राजेन्द्र स्नातम श्री रघनाथ प्रगाद के घर में जो ग्राम मशीली थाना लार में हे १०-११ स्नादमी गांउदार बांग की श्री गों की गहाजता से बीवालों पर तक कर उतरे स्नीर ४२७) के को सम्पत्ति, जिस में कपारे स्नीर गहने सम्मिलित है, लूट लें गये। इसी समय घर के लोग जग गये स्नोर श्री राजेन्द्र ने बंधी नीतिथा नामक एक व्यक्ति को पकड़ लिया। इन लोगों के पास बन्द्क या पिस्नीन नहीं थी। ये लोग सबरी स्नीर लाठियों से वो व्यतियों को घायल करके भाग गये। घायल व्यक्तियों को हालत सम्तीषजनक है।

नत्थी 'ख'

## (देखिये तारांकित प्रश्न ३६ का उत्तर पीछे पृष्ठ ७२६ पर) तालिका

# कत्थे के व्यापारियों की सूचीमय धनराशि के जिन पर कत्थे की चुंगी बाकी है

क्रम-संख	या नाम व्यापार	ît .		धनराशि जो	बाकी है
		a, 200 km; 4m; 6m² ani (gr. 3m)	ه رخي محد عرب خري ختبه احد		ويور نيميا الزقي هقه ۱۳۷۰
•	मेसर्स सरजू प्रसाद पीतम लाल			रु० न०पे० २८१.२४	
<b>१</b>	मेसर्स सरजूप्रसाद पीतम लाल	• •		<b>६,५०१.</b> ८१	
<b>२</b>	मेसर्स सरजूपसाद पीतम लाल	• •		7X5.X5	
<b>হ</b> <b>&gt;</b>	मेसर्स श्रहण कुमार कैलाश चन्द	• •	• •	<b>१=४.</b> १३	
ጸ	भारत अर्थ कुमार पालास यन्य की ज्ञानामान	• •		१,२३ <i>६.</i> १	
ሂ	श्री जमुनाप्रसाद	• •	• •	03.883	
Ę	श्रीरधुनाय प्रसाद	• •	• •	\$ <b>\$ \$ \$ \$ \$</b> \$ 0	
ø	श्री नारायण प्रसाद	• •	• •	४०२.८३	
5	श्री जगदीशप्रसाद	• •	• •	३४७.४६	
3	श्री सेवक राम	• •	• •		
१०	श्री लक्ष्मी नारायण	• •	• •	<b>१३३.</b> ५६	
११	श्री पूरन चन्द	• •	• •	33.0¥3	
१२	श्री स्रोंकारनाथ नारंग	• •	* *	२ द. १२	
१३	श्री राषेश्याम ••	• •	• •	<b>८</b> २.३७	
१४	श्री मोहनलाल	<b>.</b> •	• •	३४.६8	
१५	श्री सुन्दर लाल ••	• •	• •	१७६.६६	
१६	श्रीदिनेश सिंह 🕠	• •	• •	७८४.७४	
१७	श्री रामचन्द्र 🕠	• •	• •	२४८.४४	
१्८	श्री दिनेश सिंह 🕠	• •	• •	७७१.६२	
३६	श्री रामसुन्दर सिंह ठाकुर	• •	• •	४१७.७७	
२०	श्री राम 🕠	• •	• •	२३०.०६	•
२१	श्री रामलाल · ••	• •	• •	२७.५३	
<b>२२</b>	मेसर्स रामेश्वर दयाल केदारनाय	• •	• •	२२.०६	•
२३	श्री राम सुन्दर ••		• •	१८०.६४	•
२४	श्री मेवालाल ••	• •	• •	५६.०२	
२५	श्री लक्ष्मी नारायण ••	• •	• •	३६३.२=	:
<b>२६</b>	श्री चिन्तामनी ••	• •	• •	<b>३</b> ५५.२५	
२ <i>५</i> २७	श्री हौसला प्रसाद	• •	• •	१६१.६६	
२इ	श्री किशन	• •	• •	340.EG	
		योग	• •	<b>१</b> ५,६६०.७५	

नत्थी 'ग' (वेखिये ताराकित प्रश्न ४२ का उत्तर पीछे गृष्ठ ७२६ पर) तालिका 'क''

श्रपहत श्र महिलाओं की महिल जिले का नाम संख्या जो जिले का नाम संख् बरामद की ब	८६ में पहित पहित नाओं की या जो रामद की जा सर्की ४ ४ ११
महिलाओं की महिल जिले का नाम संख्या जो जिले का नाम संख्या बरामद की जा सकीं : १—ग्रागरा · · ६ २७—मिर्जापुर · · · २—एटा · · - द २५—गाजीपुर · · · ३—इटावा · · १३ २६—ग्रलीगढ़ · · · · ४—फर्रेखान्नाद · · १४ ३०—मथुरा · · ·	नाओं की या जो रामद की जा सर्की ४ ४ ११ ६
महिलाओं की सिहत जो जिले का नाम संख्या जो जिले का नाम संख्या जो जा सकीं जा सकी	नाओं की या जो रामद की जा सर्की ४ ४ ११ ६
जिले का नाम संख्या जो जिले का नाम संख्या जो जा सकीं वा का नाम संख्या जो जा सकीं वा का नाम संख्या जो जा सकीं वा का सकीं वा का नाम संख्या जो जा सकीं वा का सकी का सकीं	या जो रामद की जा सर्कों ४ ४ ४ ११
बरामद की जा सकीं र १—ग्रागरा · · ६ २७—मिर्जापुर · · · २—एटा · · म् २६—गाजीपुर · · · ३—इटावा · · १३ २६—ग्रलीगढ़ · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	रामद की जा सर्कों ५ ४ ११ ६
ह—ग्रागरा · ·	जा सर्कों ५ ४ ११ ६
२—एटा	<b>१</b> १ ६
२—एटा	<b>१</b> १ ६
३—इटावा · · १३ २६—श्रलीगढ़ · · · ४—फर्च्यात्राव · · १४ ३०—मृथुरा · · ·	<b>१</b> १ ६
३—इटावा · · १३ २६—श्रलीगढ़ · · · ४—फर्च्यात्राव · · १४ ३०—मृथुरा · · ·	Ę
	Ę
५ — किन्नी र ६ । ३१ — मैनपरी	•
**************************************	१२
६बदायं १६ ३२बरेली	રે૪
७मुरादाबाद ३४ ३३जाहजहांपुर	२४
६—पौड़ी-गद्रवाल ३४—पोलीमीत	Ę
६गोरत्वपुर . १२ ३४रामपुर	१३
१०-बहराइच १८ ३६-नैनोताल	<b>१</b> ३
११—देवरिगा ६ ३७—कानपुर	₹0
१२ - बस्ती १५ ३५ - हमोरपुर	Ę
१३—गोंडा १३ ३६—शांसी	5
१४-फॅनागाद ११ ४०सयनङ	88
१५—सुल्तासपुर ७ ४१—सीतापुर	२७
१६फॅलेहपुर ४२हरदोई	१४
१७—बांचा ४ ४३—-प्रतापगढ़	3
१८—जालीन २ ४४—सहारनपुर	૭
१६ उन्नाव १३ ४४ बुलन्दशहर	3
२०रायबऍली १२ ४६दिहरी-गढ़वाल	१
२१बीरी २१ ४७बिलया	************
२२—बारागंकी १७ ४८—वाराणसी	3 9
२३—वेहरायून ११ ४६—जौनपुर	5
२४ मुजफ्फरनगर ७ ४० - इलाहाबाद	२३
२४—मेरठ १३ ४१—ग्रल्मोड़ा	-
₹२६—आजग <b>ाउ</b> ४	

नत्थी 'घं (देखिये तारांकित प्रश्न ४४ का उत्तर पीछे पृष्ठ ७३० पर)

## तालिका 'ख'

		<b>ऋ</b> यहृत्	ग्रपहृत			<b>त्रयहृत</b>	ग्रपह <b>त</b> —ि
	स	हिलाग्रों	महिलाग्रों			महि-्	महि-
जिले का नाम		की	की			लाग्रों	्लात्रों
		संख्या	संख्या	जिले का नाम		की	की मंख्या
			जो बरा-			इंस्या	जो बरा-
			मद न				मद न
			की जा				की जा
			सकीं				तकी
१ग्रागरा		5	₹	२७—–मिर्जापुर	• •	ሂ	• ,
२एटा		१०	२	२८—-गाजीपुर		૪	• •
३इटावा		१६	₹	२६ग्रलीगढ़		१५	ሄ
४—–५८।५। ४—–फर्रुखाबाद		ફે હે	3	३०मथुरा		Ę	
५—-बिजनौर		११	રે	३१मैनपुरी		१५	Ę
६—-बदायूं		<b>૨</b> ૧	ų	३२बरेली		३३	3
७मुरादाबाद		४०	Ę	३३शाहजहांपुर		३२	5
5—-पुरायाय इ–-गौड़ी-गढ़वाल			`	३४गीलोभोत		ሂ	Ş
६गोरखपुर		<i>६</i> ८	2	३५रामपुर		१४	ą
१०—बहराडच		રેપ્ર	Ġ	३६—-नैनीताल		१३	• •
११देवरिया		१०	8	३७कानपुर		३ሂ	ሂ
१२—-बस्ती		38	४	३८हमीरपुर		ሂ	२
१२—-बस्सा १३—-गोंडा		१५	<b>ર</b>	३६लेखनऊ		38	ሂ
१२—-५।७। १४—–फजाबाद	• •	१२		४०झांसी		5	• •
	• •	, , e	• •	४१––सोतापुर		३१	४
१५—–सुल्तानपुर	• •	_		४२हरदोई	• •	१७	Ę
१६—-फतेहपुर	• •	٠. بر	<b>१</b>	४३प्रतापगढ़		११	3
१७—–बांदा	••	Ž.	<b>,</b>	४४तहारनपुर		3	२
१८जालौन	• •	કંક	રે	४५—-बुलन्दशहर		१०	8
१६—उन्नाव	• •	१४	٠ ع	४६टिहरी गढ़वा	ल	१	
२०राध बरेली	• •	<b>२३</b>	٠ ٦	४७बलिया		• •	• •
२१—-खोरी	• •	२ २ २०	₹ ₹	४८वाराणसी		२२	¥
२२—-बाराबंकी	• •		٠ ٦	४६जौनपुर		3	
२३—देहरादून	• •	१२	۲ ۶	५०इलाहाबाद		२७	
२४मुजफ्फरनमर	• •	3	8	५१ग्रल्मोड़ा		• -	
२४——मेरठ	• •	<i>६</i> र	<	1 41- Meniki	, ,		
२६-श्राजमगढ़	• •			<u> </u>			

# नत्थी 'ङ'

# (देखिये त। रांकित प्रश्त ५४ का उत्तर पीछे पट्ट ७३४ पर)

And and designed their age, and their designed their and	
जिला	नाम उन कमेटियों का जिनमे भूतपूर्व जिला बोर्ड श्रध्यक्ष, सदस्य, श्रथत्रा श्रध्यक्ष थे, किंग्तु श्रन्तरिम जिला परिषद् बनने के बाद नहीं रहे
१वेहरादून	डिस्ट्रिक्ट लेबर वेजफेपर ऐड्याइजरी कमेटी तथा डिस्ट्रिक्ट पी० डब्ल्यू० डी० ऐडवाइजरी कमेटी।
२—–मुजप्फरनगर	रोडबेज एडपाइ तरी कमेटी, मेरठ, भवन निर्माण सामग्री वितरण समिति, पंचायत पंचों को चुनाव सिमिति, नार्मन रकून के श्रम्यीयों को चुनाव सिमिति, हरिजन सहायक उपसमिति, शुक्रताल मेला सिमिति।
३ग्रलोगढ़	पंचायत मन्त्री चुनाव सिमिति तथा न्याय पंतायत पंचों की चुनाव सिमिति ।
४म्रागरा	जिलापंचायत चुनाय समिति, हरिजन कल्याण समिति, शिक्षा उपसमिति, लंबर येलकेपर कमेटो, महाकल्याण समिति तथा सरोजनी नायडू हास्पिटल, फीरोजाबाद।
५एटा	शिक्षा परामशंदात्री [सिमिति ।
६बरेली	••
७बदायं	
<b>५मुरावानाव</b>	डिस्ट्रियट एवजीनपूटिय रिम्रोरियेन्टेशन स्कीम कमेटी, हरिजन सहायक समिति, डिस्पेन्सरीज ऐड्डयाइजरी कमेटी।
६शाहजांहपुर	समाज कल्याण समिति।
१०पोलोभीत	हरिजन सहायक उपसमिति, पश्पालन उपसमिति, सहकारी समिति, वन विभाग उप समिति, शिक्षा समिति तथा सिवाई उपसमिति।
११रामपुर	पहले जिला बोर्ड ही नहीं था।
१२फर्शनाबाद	जिला भवन सामग्री वितरण परामशंदात्री समिति, पंचायत पंचों के मनौनयन की समिति।
१३इटावा	भूतपूर्व प्रध्यक्ष जिला बोई ने त्याग-तत्र वे विया ग्रस्तु प्रश्न नहीं उठता।
१४कानपुर	सार्वजनिक निर्माण सलाहकार समिति, नहर सलाहकार समिति, चिकित्सालय सलाहकार समिति, मद्यनिषय बोर्ड तथा हरिजन सहायक समिति।
१५वांदा	पलड रिलीफ तथा नेजुरल कैलेमिटी रिलीफ फमेटी।
	श्रवराथ निरोधक समिति, जल बाढ़ समिति, डिस्पेन्सरी ऐडवाइजरी समिति, हास्पिटल ऐडवाइजरी समिति, सीत्जर्स बोर्ड, श्रव्प बचत योजना समिति, हरिजन सहायक समिति, शिक्षा समिति, महर समिति तथा लोक निर्माण ऐडवाइजरी समिति।

जिला	नाम उन कमेटियों का जिनमें भूतपूर्व जिला बोर्ड ग्रध्यक्ष, सदस्य, ग्रथवा ग्रध्यक्ष थे, किन्तु ग्रन्तरिम जिला परिषद् बनने के बाद नहीं रहे
१७—–झांसो	पंचायत मन्त्री चुनाव सिमिति, हरिजन उपसमिति, शिक्षा उपसमिति, एच० टी० सी० चुनाव सिमिति, ऐन्टीकरप्शन कमेटी, सार्वजनिक निर्माण ऐडवाइजरी सिमिति, जे० टी० सी० चुनाव सिमिति तथा डिस्पेन्सरी ऐडवाइजरी कमेटी।
१८जालौन 🕠	स्वास्थ्य सिमिति, हरिजन कल्याण सिमिति, पंचायत मन्त्री चुनाव सिमिति ।
१६मिर्जापुर	जिला बोर्ड भ्रवकान्त था भ्रस्तु प्रश्न नहीं उठता ।
२०जौनपुर	भ्रष्टाचार निरोधक समिति, हरिजन कल्याण समिति तथा रीजनल द्रांस्पोर्ट अथारिटो इलाहाबाद की कमेटी।
२१बलिया	हरिजन कल्याण समिति, पंचायत मन्त्री चुनाव समिति, जिला विद्यालय के जिला कार्यकारिणी समिति (रिस्रोरियेन्टेशन स्कीम)।
२२––गोरखपुर	सार्वजनिक निर्माण परामर्शदात्री समिति, चिकित्सा परामर्शदात्री समिति, कृषि स्कूल गोरखपुर गर्वनिंग बाडी, उद्योग समित तथा हरिजन सहायक समिति ।
२३बस्तो	ऐन्टी ट्यूबरक्लोसिस एसोसिएशन, रीजनल ट्रांस्पोर्ट एथारिटी, हास्पिटल ऐंडबाइजरी कमेटी, श्राई रिलीफ सोसाइटी तथा हरिजन सहायक समिति।
२४देवरिया	रोडवेज कमेटी तथा श्रस्पताल कमेटी ।
२५—-नैनीताल	ऐन्टोकरेप्शन कमेटी, ट्रांस्पोर्ट ऐडसवाइजरी कमेटी, रीजनल कौसिल श्राफ स्पोर्टस्, कोम्रापरेटिव सोसाइटी उपसमिति, उद्योग, एकसाइज, पशुपालन, सिंचाई तथा हरिजन सहायक उप समिति।
२६ग्रल्मोड़ा	डिस्पेन्सरी ऐडवाइजरी कमेटी, ऐन्टी करप्शन कनेटी ।
२७ गढ़वाल	••
२=टेहरी-गढ़वाल	पहले बोर्ड ही नहीं था श्रस्तु प्रश्न नहीं उठता ।
२६उन्नाव	क्षेत्रीय ट्रान्सपोर्ट कमेटी तथा चिकित्सालय परामर्शदात्री सिमिति।
३०रायबरेली	हरिजन सहायक सिमिति ।
३१—–प्तीतापुर	मेडिकल ऐडवाइजरी कमेटी, जिला डिस्चार्ज्ड प्रिजनर्स कमेटी।
३२हरदोई	शिक्षा प्रसार उपसमिति, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य परामर्शदात्री समिति ।
<b>३३</b> र्दारो	हरिजन कल्याण सिमिति तथा उद्योग सिमिति ।
३४फैजाबाद ••	पंचायत मन्त्री चुनाव सिमिति तथा हरिजन कल्याण सिमिति।
३५बहराइच	नार्मल स्कूल ग्रभ्यर्थी चुनाव सिमति, चिकित्सालय परामर्शदात्री सिमति, हरिजन सहायक सिमति तथा पंचायत मन्त्री चुनाव सिमति।
३६सुल्तानपुर	हरिजन कल्याण सिमिति ।
३७प्रतापगढ़	••
३६—बाराबंकी	हरिजन सहायक उपसमिति ।

# नत्थी 'च'

## (दिखये तारां कित प्रक्त ५०-५६ का उत्तर पीछे पृष्ठ ७३५ पर) संगरतक

थ्र--समाज कल्याण विभाग द्वारा जो धनराशि बस्ती जिले को मन् १९५४-५५, १९५५-५६, १९५६-५७ तथा १९५७ ५= में दी गयो उनका विवरण इस प्रकार है:--

५५६, ४६५६४७ तथा १८४७ ४५			₹0
<i>8648 44</i>	• •		२,२६५.००
<i>१६४४ ४६</i> ••			१०,७८५.००
१९४६ ४७	<b>*</b> •		१७,३६२.००
१६५७ ५ =	• •	• •	१४,६८५.००
उपर्युक्त धारर्गाश जिस भव पर व्यय	ता गत्रो उसक	विवरण इस	प्रकार है:
१६४४ १	LX.		
१ - महिला मंगल योजना पर काय		• •	२,२६४.००
<u> १६४५ ५</u>	६		
१- महिला मंगल योजना पर व्यय	• •		६,७६५.००
२ प्रशासकाय लंग्यामी की वी गर्य	भ्रतुशन		8,000.00
	यंश	* *	१०,७==.00
१६४६ ४	(७		
१ -महिला मंतल यंत्जना पर व्यय		• •	१४,४३२.००
२ - प्रशासकाय संस्थात्रां की वो गनी	<b>प्र</b> नुवान		8,840.00
	योग	40 Mb	<b>१६,562.00</b>
<u> </u>	(S		
१विह्ला मंगल योजना पर व्यय			१२,४३५.००
२प्रामीण युवक शिविर पर व्यव	* *	• •	, 640.00
	योग	de de genera	P P , P III V. O O

४६--समाज कल्याण विभाग द्वारा जो घनराशि देवरिया जिले को सन् १६४४-४४, ४४-४६, ४६-४७ तया ४७-४८ में दी गर्भा उसका ब्योरा निम्न प्रकार है: --

				₹0
\$EXX-XX		• •	• •	६,३४३.५५
१९४५—४६		• •		११,२७१.५६
१६५६–५७	• •	• •		२०,२८१.७१
१९५७-५=	• •	• •	• •	२४,३०=.३४
उपर्युक्त धनराशि (	जस <b>म</b> द पर	व्यय की गयी उसव	ना ब्योरा इः	त प्रकार है:
_		१९५४-५५		
महिला मंगल योजन	ा पर व्यय	• •		६,३४३.५५
	<u>:</u>	१६५५-५६		
महिला मंगल योजन	ा प <b>र व्य</b> य	• •		११,२७१.५६
	:	१९५६-५७		
महिला मंगल योजन	ा पर व्यय	• •	• •	२०,२८१.७१
		१६५७-५८		
महिला मंगल योजन	ा पर व्यय			२३,३०८.३४

# उत्तर प्रदेश विधान सभा

### बृहस्पतिवार, २४ मार्च, १६६०

विश्रान सभा की बैठक सभा-प्रष्डप, लखनऊ, में ११ बजे दिन में उपाध्यक्ष, श्री राजनारायण त्रिपाओ, की श्रध्यक्षता में श्रारम्भ हुई।

### उपस्थित सदस्य--४१३

ग्रक्षयवरसिंह, श्री **ग्रजीज इमाम,** श्री ग्रतीकुल रहमान, श्री ग्रनन्तराम वर्मा, श्री ब्रब्दुल रऊफ लारी, श्री ग्रब्दुल लतीफ नोमानी, श्री ग्रब्दुस्समी, श्री ग्रभयराम यादव, श्रो ग्रमरनाथ, श्री श्रमरेशचन्द्र पांडेय, श्री ग्रमोलादेवी, श्रीमती श्रयोध्यात्रसाद ग्रार्य, श्री ग्रली जर्रार जाफरी, श्री ग्रवघेशकुमार सिनहा, डाक्टर ग्रवधेशचन्द्रसिंह, श्री **ऋवधेशप्रतापसिंह,** श्री ग्रसलम खां, श्री श्रहमद बख्श, श्री ग्रात्माराम पांडेय, श्री ग्रानन्दब्रह्मशाह, श्रो श्रार्थर सी० ग्राइस, श्री इन्दुभूषण गुप्त, श्री इरतजा हुसैन, श्री इस्तफा हुसैन, श्री उप्रसेन, श्री उदयशंकर, श्री उबैदुर्रहमान, श्री उमाशंकर शुक्ल, श्री उल्फर्तासह, श्री ऊदल, श्री एस० ग्रहमद हसन, श्री श्रोंकारनाश्व, श्री

कर्हैयालाल वाल्मीकि, श्री कमरुद्दीन, श्री कमलकुमारी गोईंदी, कुमारी कमलेशचन्द्र, श्री कल्याणचन्द मोहिले, श्री कल्याणराय, श्री कामताप्रसाद विद्यार्थी, श्री कालोचरण ग्रग्रवाल, श्री काशीत्रसाद पाँडेय, श्री किशनसिंह, श्री कुंवरकृष्ण वर्मा, श्री कृपाशंकर, श्री केशभानराय, श्रो केशव पांडेय, श्री केशवराम, श्री कैलाशकुमारसिंह, श्री कैलाजनारायण गुप्त, श्री कैलाशवती, श्रीमती कोतवालींसह भदौरिया, खजार्नासह चौथरी, श्री खमानीसिंह, डाक्टर श्री खयालीराम, श्री खुशीराम, श्री खूर्बासह, श्री गंगाघर जाटव, श्री गंगाप्रसाद, श्री (गोंडा) गंगाप्रसाद वर्मा, श्री (एटा) गंगात्रसादसिंह, श्री गजेन्द्रसिंह, श्री गज्जूराम, श्री गणेशप्रसाद पांडेय, श्री गनेशचन्द्र काछी. श्री

गनेशीलाल चौषरी, श्री गयाप्रसाद, श्री गयाबरुशसिंह, श्री रायुर ग्रली खां, श्री रारीब दास, श्री गिरघारीलाल, श्री गुप्तारसिंह, श्री गुरुप्रसादसिष्ठ, श्री गुलाबसिह, श्री गेंवावेवी, श्रीमती गेंबासिह, श्री गोकुलप्रसाद, श्री गोपाली, श्री गोपीकृष्ण ग्राजाद, श्री गोविन्दनारायण तिवारी, श्री गोविन्दसहाय, श्री गोविन्दसिंह विष्ट, श्री गौरीराम गुप्त, श्री गौरीशंकर राय, श्री घनश्याम डिमरी, श्री घासीराम जाटव, श्री चन्द्रदेव, श्री चन्द्रबली शास्त्री ब्रह्मचारी, श्री चन्द्रसिंह रावत, श्री चन्द्रहास मिश्र, श्री चन्द्रावती, श्रीमती चन्द्रिकाप्रसाद, श्री चरणमिह, श्रो चित्तरसिंह निरंजन, श्री चिरंजीनास जाटब, श्री छत्तरसिंह, श्री छत्रपति ग्रम्बेश, श्री छेबोलाल, श्री छोटेलाल पानीवाल, श्री जंगबहाषुर वर्मा, श्री जगवीशनारायण, श्री जगवीशनारायणदस्तिह, श्री जगवीशप्रसाद, श्री जगदोशशरण श्रग्रवाल, श्रो जगन्नाथ चौधरी, श्री जगन्नायप्रसाद, श्री जगन्नाथ लहरी, श्री जगपतिसिंह, श्री जगमोहर्नासह नेगी, श्री जगवीरसिंह, श्री जमुनामिह, श्री (बदायूं)

जयगोपाल, डाक्टर जयदेवसिंह ग्रार्थ, श्री जयराम वर्मा, श्री जरगाम हैदर, श्री सैयद जवाहरलाल, श्री जवाहरलाल रोहतगी, डाक्टर जागेश्वर, श्री जितेन्द्रप्रतापसिंह, श्री जगलकिशोर, ग्राचार्य जोखई, श्री ज्वालाप्रसाद कुरोल, थी भारखंडराय, श्री टोकाराम, श्रो टोकाराम पुजारो, श्री ड्गरसिंह, श्री ताराचन्द माहेश्वरी, श्री तारादेवी, डाक्टर तिरमलसिंह, श्री तेजबहादुर, श्री तेजासिंह, श्री दत्त, श्री एस० जी० दर्शनसिंह, श्री दशरषप्रसाद, श्रो दाताराम चौधरो, श्री बोनदयालु करुण, श्रो बीनदयाल् शर्मा, श्री बीपं १ कर, श्राचार्य वीयनारायणमणि त्रिपाठी, श्री द्रयोधन, श्रो वेवकीनन्दन विभव, श्री बेबनारायण भारतीय, श्री देवराम, श्री देवीप्रसाद मिश्र, श्री द्वारकाप्रसाद मित्तल, श्री (मुजफ्फरनगर) द्वारिकात्रसाव, श्री (फर्कवाबाद) द्वारिकाप्रसाद पांडेय, श्री (गोरखपुर) धनीराम, श्री धन्यधारी पाउँय, श्री धमंदत्त वंद्य, श्री धर्मपालसिंह, श्री नत्थाराम रावत, श्री नत्थूसिह, श्री ( बरेली) नत्यूसिंह, श्री (मनपुरी) नन्दकुमारदेय वाशिष्टः श्री नन्दराम, श्री

नरदेवसिंह दितयानवी, श्री नरेन्द्रसिंह भंडारी, श्री नरेन्द्रसिंह विष्ट, श्री नवलिक्शोर, श्री नागेश्वरप्रसाद, श्री नारायणदत्त तिवारी, श्री नारायणदास पासी, श्री निरंजनसिंह, श्री नेकराम शर्मा, श्री पदमाकरलाल श्रीवास्तव, श्री पब्बरराम, श्री परमानन्द सिनहा, श्रो परमेश्वरदीन वर्मा, श्री पहवलार्नासह चौधरी, श्री प्रकाशवती सूद, श्रीमती प्रतापबहादुर्रासह, श्री प्रतापभानप्रकाशसिंह, श्री प्रतापसिंह, श्री प्रभावती मिश्र, श्रीमती प्रभुंदयाल, श्री फतेहसिंह राणा, श्री बंशोधर शुक्ल, श्रो बलदेवसिंह, श्री बलदेवसिंह ग्रार्य, श्री बसंतलाल, श्री बादामसिंह, श्री बाब्राम, श्री बाब्लाल कुसुमेश, श्री बालकराम, श्री बालेश्वरप्रसादसिंह, श्री बिन्दुमती दास, श्रीमती बिशम्बर्रासह, श्री बिहारीलाल, श्री बुद्धीलाल, श्री बुद्धीसिंह, श्री बुलाकीराम, श्री बजबासीलाल, श्री बुजरानी मिश्र, श्रीमती बेचनराम, श्री बेचनराम गुप्त, श्री बेनीबाई, श्रीमती बैजूराम, श्री ब्रजनारायण तिवारी, श्री क्षजभ्षण शरण, श्रो गहादत्त दीक्षत, श्री भगवतीप्रसाद दुवे, श्री

भगवतीप्रसाद शुक्ल, श्री भगवतीसिंह विशारद, श्री भगौतीप्रसाद वर्मा, श्री भजनलाल, श्री भोखालाल, श्री भुवनेशभूषण शर्मा, श्री भूपिकशोर, श्री मंगलाप्रसाद, श्री मंज्हल नबी, श्रो मथुरा प्रसाद पांडेय, श्री मदनगोपाल वैद्य, श्री मदन पन्डेय, श्री मदननोहन, श्री मन्नालाल, श्रो मलखार्नासह, श्री मलिखार्नासह, श्री, (मनपुरी) महमूद ग्रली खां, श्री कुंवर (मेरठ) महमूद ग्रली खां, श्री (रामपुर) महमूद हुसैन खां, श्री महादेवप्रसाद, श्रो महावीरप्रसाद शुक्ल, श्री महावीरप्रसाद श्रीस्तव, श्री महोलाल, श्रो महेन्द्ररिपुदमर्नासह, राजा महेर्जासह, श्री माताप्रसाद, श्री मान्धातासिंह, श्री मिहरबार्नासंह, श्री मुक्टविहारीलाल ग्रग्रवाल, श्री मुक्तिनाथराय, श्री मुजफ्फर हुसन, श्री मुनीन्द्रपालसिंह, श्री मुबारक ग्रली खां, श्री मुरलीधर, श्री म्रलीधर कुरील, श्री मुल्लाप्रसाद 'हंस', श्री मुहम्मद ग्रब्दुस्समद, श्री मुहम्मद फारूक चिस्ती, श्री मुहम्मद सुलेमान ग्रधमी, श्री मुह्म्मद हुसैन, श्री मुलचन्द, श्री मोतीलाल ग्रवस्थी, श्री मोहनलाल, श्री मोहनलाल वर्मा, श्री मोहर्नांसह महता, श्री यमुनाप्रसाद शुक्ल, श्री

यमुनर्तपह, श्री (गाजीपूर) यराँवालसिंह, श्री यशोदायेत्री, श्रीमती यादयन्द्रदत्त दुवे, राजा रऊफ जःफरी, श्री रपूनः ४ रहाध यादप, श्री रघुराने प्रवहाद्दरसिंह, श्री रघरा शीमह चीवरी, श्री रघवीरराम, भी रघवोर्गमह्, श्रो ( एटा ) रघवं।रमिह, श्री (मेरठ) रणबद्धर्शसत्, श्री रमाकार्तासह, श्री रमानाथ खेरा, श्री रमेशचन्द्र शर्मा, श्री राघवराम पाण्डेय, श्री राघवेन्द्रप्रतापसिंह, श्री रार्जाकशोर राव, श्री राजदेव उपाध्याय, श्रो राजनारायण, श्री राजनारायणसिंह, श्री राजबिहारीसिंह, श्री राजाराम शर्मा, श्री राजेन्द्रीकशोरी, श्रीमती राजेन्द्रकुमारी, श्रीमती राजंग्बदत्त, श्री राजेन्द्रसिंह, श्री राजेन्द्रसिंह यादव, श्री रामग्रधार तिवारी, श्री रामग्रभिलाल, श्री रामकिकर, श्री रामकुमार वद्य, श्री राम हुण्ण जैसवार, श्री रामकृष्ण सारस्वत, श्री रामचन्त्र उनियाल, श्री रामवन्त्र विकल, श्री रामजीलाल सहायक, श्री रामजीसहाय, श्री रामदास श्रार्य, श्री रामवीन, श्री रामनाथ पाठक, श्री रामवाल त्रिवेवी, श्री रामप्रसाद, श्री रामश्रसाद वेशमुख, श्री रामप्रसाद नौटियाल, श्री रामबली, श्री

रामन्ति, श्री राम*'*तनप्रसाद, श्री रामरतीदेवी, श्रीमती रामलक्षत (ति गरी, श्री रामनरान,श्री (बारःणसी ) रामल । न मिश्र, श्री रापलखनसिंह, श्री (जोनार) रामनान, श्रो रामवन्तन यादव, श्री रामशरण यादा, श्री रामगनेही भारतीय, श्री रामगमजावन, श्रो रामसिंह चौहान येय, श्री रामसुन्दर पाडेय, श्री रामसूरतप्रमाद, श्री रामस्वरूप यादव, श्री रामरवरूप वर्मा, श्री रामहेतसिंह, श्री रामायणराय, श्रो रामेश्वरप्रसाः, श्री रकनुद्दीन पां, श्री रूमसिंह, श्री लक्ष्मणवत्त भट्ट, श्री लक्ष्मणराव कदम, श्री लक्ष्मणसिंह, श्री लक्ष्मीनारायण, श्री लक्ष्मीनारायण बंसल, श्री लक्ष्मीरमण ग्राचार्य, श्री लखमीसिंह, श्री लायकसिंह चौबरी, श्री लालबहादुर, श्री लालबहाधुरसिंह, श्री लुत्फ श्रली खां, श्री लोकनाथसिष्ट, श्री वजरंगविहारीलाल रावत, श्री विशिष्ठनारायण शर्मा, श्रो वसी नक्तवी, श्री वासुदेव दीक्षित, श्री विजयशंकरसिंह, श्री विद्यावती वाजपेयी, श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन, श्रीमती विशालसिंह, श्री विधामराय, भी विश्वनाथसिष्ट गौतम, श्रो वोरसेन, श्री वीरेन्द्रविक्रमसिंह, श्री

वीरेन्द्रशाह, राजा व्रजगोपाल सुक्सेना, श्री व्रजविहारी मेहरोत्रा, श्री शंकरलाल, श्री शकुंतलादेवी, श्रीमती शब्बीर हसन, श्री शमसुल इस्लाम, श्रो शम्भुदयाल, श्री शांतिप्रपन्न शर्मा, श्री शिवगोपाल तिवारी, श्री शिवप्रसाद, श्री (देवरिया) शिवप्रसाद नागर, श्री (खोरी) शिवमंगर्लासह, श्री शिवमूर्ति, श्री शिवराजबलींसह, श्री शिवराजबहादुर, श्री शिवराजसिंह यादव, श्री शिवराम, श्री शिवराम पांडेय, श्री शिववचनराव, श्री शिवशंकरसिंह, श्री शिवशरणलाल श्रीवास्तव, श्री शीतलाप्रसाद, श्री शोभनाथ, श्री क्याममनोहर मिश्र, श्री श्यामलाल, श्री श्यामलाल यादव, श्री श्रद्धादेवी शास्त्री, कुमारी श्रीकृष्ण गोयल, श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, श्री श्रीनाथ,श्री (ग्राजमगढ़) श्रीनाथ भार्गव, श्री ( मथुरा ) श्रीनिवास, श्री श्रीपालसिंह, कुंवर संग्रामसिंह, श्री सईद ग्रहमद ग्रन्सारी, श्री सजीवनलाल, श्री

सत्यवतीदेवी रावल, श्रीमती सम्पूर्णानन्द, डाक्टर सरस्वतीदेवी शुक्ल, श्रीमती सियादुलारी, श्रीमती सीतारास, डाक्टर सीताराम शुक्ल, श्री सुक्खनलाल, श्री सुखरानीदेवी, श्रीमती सुखरामदास, श्री मुखलाल, श्री सुखीराम भारतीय, श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी, श्री सुनीता चौहान, श्रीमती सुन्दरलाल, श्री सुरथबहादुरज्ञाह, श्री सुरेन्द्रदत्त वाजपेयी, श्री सुरेन्द्रसिंह, राजकुमार सूरेशप्रकाशसिंह, श्री सुल्तान ग्रालम खां, श्री सूरतचन्द रमोला, श्री बिली पांडेय, श्री धुसिया, श्री हमोदुल्ला खाँ, श्री हरकेशबहादुर, श्री हरदयालसिंह, श्री हरदयालसिंह पिपल, श्री हरदेवसिंह, श्री हरिदत्त काण्डपाल, श्री हरिश्चन्द्रसिंह, श्री हरिहरबख्शसिह, श्री हरीशचन्द्र ग्रष्ठाना, श्री हरोसिंह, श्री ( राहत मौलाई), श्री सिंह, श्री हुकुमसिंह विसेन, श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा, श्री होरीलाल यादव, श्री

नोट--सार्वजिनक निर्माण उपमंत्री, श्री महावीर्रासह, भी उपस्थित थे।

#### प्रक्नोत्तर

## बृहस्पतिवार, २४ मार्च, १६६०

# ग्रलप-सूचित तारांकित प्रश्न सोशलिस्ट पार्टी की मांगें

१ + १ — श्री राजनारायण (जिना चाराणसी) — क्या सरकार कृपया स्पष्ट करेगी कि क्या सोशलिंग्ट पार्टी ने मण्य मंत्री के पास १ मार्च, १६६० तक कृष्ट्र मागों को पूरा करने के लिये निवेदन किया था ?

मुख्य मंत्री (डाक्टर सम्पूर्णानन्द) — जी हा।

\*\*: -श्री राजनारायण—यदि हा, तो वे मागे क्या थी श्रीर उनको पूरा करने में सरकार को क्या दिक्कत है  $^{2}$ 

डाक्टर सम्पूर्णानन्द-वे मागे इस प्रकार हे :--

- १—वाम ऐसे बाघे जायं कि (१) किसी भी अनाज का वाम दो फसलो के बीच १ आता सेर या १६ प्रति इत से अधिक न हो, (२) कारणानों में बनी किसी भी जीवनोपयोगी वस्तु का बिकी दाम लागत लर्च के र्योहे से ज्यादा न हो, और (३) किसान को उसके अनाज और कच्चे माल का ऐसा दाम मिले जो लागत लर्च और जीवन निर्वाह का पुमाये ताकि लेतिहर और औद्योगिक चीजों के दामों में सन्तुलन और समता कायम हो। इसलिये गन्ने का वाम २ रुपये मन और चीनी का दाम ३२ रुपये मन किया जाय।
- २—-अंग्रेजी का सार्वजीनक इस्तेमाल तत्काल बन्द हो—- विश्वायकान्नों, सरकारी वपतरों, क्ष्महरियों, दैनिक श्रलबारों श्रोर नाम पट्टो से—-श्रंग्रेजी की जरूरी पढ़ाई तत्काल बन्द की जाय श्रीर सिर्फ-अंग्रेजी--में--फेस ह्यात्रों की पास किया जाय ।
- ३—जाति प्रथा के नाश के लिये सार्वजनिक जीवन के चार निर्णायक क्षेत्री ग्रर्थात् राजनीति पल्टन, व्यापार ग्रीर अंची सरकारी नौकरियों में कम से कम ६० प्रति शत जगहें ग्रीरत, शूब्र, हरिजन, ग्राविवासी ग्रीर वसे हुये ग्रल्प संस्थको ग्रावि पिछाडी जातियों के लिये स्राधित की जायं।

४—न्याय प्रत कर नीति के लिये बिना मृताफं की खेती से मालगुआरी खत्म की जाय श्रीर खेतिहर मजदूरों की हालत सुधारी जाय ।

४—हिन्द्स्तान की जमीन हमलावरों से वापस की जाय और सीमाओं सहित सारे देश को मजबूत बनाया जाय ।

राज्य सरकार की निर्धारित नीति के धनुसार कुछ मांगो पर कार्यवाही पहिले से ही हो रही हैं । कुछ मांगें केग्बीय सरकार से भी सम्बन्धित है धौर राज्य सरकार इस मामले में कुछ नहीं कर सकती हैं । धाधिकांदा मांगें धाव्यावहारिक है ।

श्री राजनारायण स्या सरकार यह बताने का कब्द करेगी कि राज्य सरकार की निर्धारित नीति के अनुसार वे कौन-कौन सी भागे हैं जिन पर सरकार पहले से कार्यवाही कर रही है ?

डाक्टर सम्पूर्णीनन्द-जैसे हिन्दी के लिये पहले से कीविव की जा रही है।

श्री राजनारायण—स्यासरकार, जैसे कि हमारी दूसरी मांगे है कि अंग्रेजी का सार्वजिक इस्तेमाल बन्द हो, तो इसी अंग्रेजी के इस्तेमाल को बन्द करने के लिये हिन्दी को विकसित करने की कोश्रिया कर रही हैं?

**काक्टर सम्पूर्णानन्द--जी हां, बराबर इसके लिये कोश्रिश जारी है ।** 

प्रश्नोत्तर ६११

श्री गौरीशंकर राय (जिला बिलया)—क्या माननीय मुख्य मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि यह जो सोशिलस्ट पार्टी की मांगें हैं, इनमें कौन-कौन सी ग्रव्यावहारिक मांगे हैं? सरकार किन-किन को श्रव्यावहारिक समझती है?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द-पिंद देखा जाय तो सब की सब मांगें ब्रव्यावहारिक है। (हंसी)

श्री राजनारायण—क्या सरकार इस बात को स्पष्ट करेगी कि जो बिना मुनाफे की खेती है उस पर मालगुजारी खत्म करना राज्य सरकार की दृष्टि से क्यों कर श्रव्यावहारिक है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—पहली बात तो यह है कि इसमें कहा गया है कि "नियत कर नीति"; तो यह सोचने की बात है कि जो चीज ली जाती है वह कर है या नहीं। यह बड़ा भारी प्रश्न है। जब तक यह तय न हो जाय तब तक कहना कठिन है।

श्री शिवप्रसाद नागर (जिला खीरी)—श्रीमन्, जैसा कि उत्तर दिया गया है, हिन्दी के बारे में, कि कोशिश की जा रही है, तो उसमें ग्रब तक कितनी प्रगति हो चुकी है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—यह "िकतनी" एक सापेक्ष ग्रब्द है। हम समझते हैं कि बहुत काफी प्रगति हुई है।

श्री रामस्वरूप वर्मा (जिला कानपुर)—क्या माननीय मुख्य मंत्री जी बतायेंगे कि पहले जो उन्होंने उत्तर में कहा है कि ग्रधिकांश मांगें ग्रव्यावहारिक हैं ग्रौर ग्रब उन्होंने कहा है कि "प्रायः सभी ग्रव्यावहारिक हैं" तो इन दोनों में से कौन-सा उत्तर सही हैं ?

डाक्टर सम्पूर्णीनन्द—"ग्रधिकांग्न" ग्रौर "प्रायः" इनमें बहुत ज्यादा फर्क नहीं है ।

श्री रामायणराय (जिला देवरिया)—ज्या माननीय मंत्री जी को ज्ञात है कि इन्हीं मांगों के सम्बन्ध में दारुलशफा के "बी" ग्रंग में ग्रक्सर मीटिंग होती है, जिसमें नीति के बारे में यह भी चर्चा होती है कि सीता के बाप रावण थे ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—सीता के बाप रावण थे, इसकी चर्चा होती है या नहीं, यह तो में नहीं कह सकता, लेकिन एक चीज मैंने जरूर देखी है। एक किताब दक्षिण भारत के किसी सज्जन ने लिखी है ग्रंग्रेजी में, वह मेरे देखने में ग्राई थी—कितना उसका प्रचार हुन्ना, यह मुझे नहीं मालूम—उसमें यह लिखा है कि सीता बहुत ही दुश्चिरित्र थीं ग्रीर यह कहना कि लब ग्रीर कुश राम के लड़के थे यह गलत है, बिल्क वे रावण के लड़के थे।

श्री राजनारायण—क्या सरकार को इस बात की भी जानकारी है कि सोझलिस्ट पार्टी के द्वारा जो दारुलझफा "बीo" ब्लाक में इन तमाम मांगों से विघायकों को परिचित कराने के लिये गोष्ठी होती है, उसमें एक प्रवक्ता महारार्जीसह जो दक्षिण भारत हो श्राये हैं उन्होंने बतलाया कि एक कथा वहां यह प्रचलित कराई जा रही है कि सीता रावण की लड़की थी और रावण सीता को किस ढंग से ले गया उस पर दूसरी व्याख्या की जाती है जो उत्तर भारत में नहीं है ?

श्री उपाध्यक्ष-क्या मुख्य मंत्री को भी उसमें निमंत्रित किया था ?

श्री राजनारायण—जी हां।

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—सोझलिस्ट पार्टी की तरक से कौन-सी मीटिंग होती है श्रौर उसमें क्या-क्या गलत बातें कही जाती हैं, उसका कोई ज्ञान मुझको नहीं है।

श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या इसमें जो तीसरी मांग है जो नीति के सम्बन्ध में है, उसके सम्बन्ध में जो कहा गया है कि वह प्रायः ग्रव्यावहारिक है, तो कहां तक व्यावहारिक है क्योंकि 'प्रायः' ग्रब्द इस्तेमाल किया गया है, इसको सरकार स्पष्ट करेगी ?

श्री उपाध्यक्ष—में समझता हूं, काफी व्योरे के प्रश्न हैं, यह तो विचार किया जा रहा है।

डावटर सम्पूर्णानन्द—फोज मे प्रधो को हटाकर ६० पर सेट योरते भर्ती कर दी जाय, यह हमारे हाथ की बात नहीं है, भारत सरकार के सोचने की बात ह, क्योंकि पल्टन का इसमें जिक ह। जहां तक व्याणर का सम्बन्ध ह, ६० पर सेट या १०० पर सेट अवर श्रोरते व्यापार करें तो उन्हें कोई रोकता नहीं, सरकार के हाथ में बात नहीं ह। जहां तक राजनीति का प्रक्रन है, जितनी चाहे श्रोरते राजनीति में भाग लें, राजनीतिक लीउर बने श्रोर मोद्यालस्ट पार्टी में तो कोई महिला लीउर दिण्यलाई नहीं देती ह, श्रोर पाटियों में तो है। इस्तिनये राजनीति में भी कोई रुकावट नहीं है, यह सरकार ये करने थी चीज नहीं ह। उन्ती नौकरियों में जितनी श्रोरते चाहे वह श्रा सकती ह। श्रगर उनमें थोग्यता ह, उनको नौकरी भिनतो रहेगी।

श्री हरदयालसिंह (जिना झाहजहांपुर)—पहरो मस्य मंत्री जी ने कहा कि पूर्व निर्धारित मागे ह, उन पर विचार हो रहा है, गया उन मागों में ऐसी भी ह कि योतिहर मजदूरों की दैनिक मजदरी तय करने की काई माग पूरी की जाय

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—लेतिहर मजदूरों है लिये तो हमारे यहा कानून में देनिक मजदूरी पहले हो से निर्धारित है ।

श्री श्रीक्रण्णदत्त पालीवाल (जिला श्रागरा)—स्या मन्य मनी महोदय बताने की कृषा करेंगे कि सोदालिस्ट पार्टी की जो यह माग ह कि महिलाश्रो की ६० प्रतिदात पतिनिधित्व मिलना चाहिये, तो सोदालिस्ट पार्टी की विधान सभा में कितनी महिला सदस्य है

श्री उपाध्यक्ष-माननोय राजनारायण, जवान दीजिये । (हसी)

श्री राजनारायण—श्रीमन्, म श्रापका ब श श्रामारी हूं कि श्रापनं यही व्यवित को इसका जवाब देने के लिये पकारा ह । इसका जवाब दने के लिये हमारी साशित्रिट पाटी को जो माग ह वह तीसरे नम्बर की ह जिसमें जाित प्रथा के नाश के लिये सार्वजितक जीवन के चार निर्णायक स्थानों में—पालीवाल जी सने—सार्वजितक जीवन के चार निर्णायक क्षेत्रों में, राजनीति, पल्टन, व्यापार श्रोर अंची सरकारी नौकरियों में कम से कम ५० प्रति शत जगहों में स्त्री, हरिजन श्रीर दबें हुये श्रला गंत्रक इत्यादि पिछुड़ी जाित के लिये सरकित की जायं। तो यह ६० की सदी जो है वह हरिजन, रत्री, ममलमान, श्रादियांगा, पिछुड हुये लोग, सभी को मिलाकर है, सरकार इस हो केवल श्रीरनों के लिये ह, वर्षों समझती ह ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—मं ममग्रता हू कि मृगलमानों में भी ग्रीरते होती होगी, शूढ़ों में भी ग्रीरते होती होंगी ग्रीर हिरजनों में भी ग्रीरते होंती होगी, इसलिये उबल रंग्रेज-टेशन दिया जाय, यह बात समझ में नहीं ग्राती। जहां तक पलटन का सवाल है, उसमें ग्रीरते हो सकती हैं, लेकिन उसका केन्द्रीय सरकार में सम्बन्ध हैं। राजनीति हमारे हाथ की चीज नहीं ह ग्रीर व्यापार भी किसी है हाथ ही चीज नहीं हैं। जहां तक सरकारी नौकरियों का सवाल है उसमें हरिजन, स्त्री ग्रीर पुरुष मभी की योग्यता के ग्राधार पर जगहें मिलती है।

श्री टीकाराम पुजारी (जिला मथरा)—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जो जनत्वे होते हैं, जो जनाने बरत्र पहनते हैं उनको कियर रखा गया ह, पहलों में रखा गया है या स्त्रियों में रखा गया है ? (हंसी; कोई उत्तर नहीं दिया गया।)

श्री राजनारायण—क्या सरकार इसको स्पष्ट करेगी कि मोशलिस्ट पार्टी की जो पहली मांग है, जिसमें यह कहा गया है कि किसानों को खिलहान के समय जो गल्ला बेचने की दर तय की जाय वह उनकी लागत और उनके जीवन निर्वाह की उठाने की उचित कीमत हो और किसान जिस भाव पर बेचे उससे एक आना सेर से श्रीधक भाव पर बाजार में दो फसलों के बीच वह गल्ला न विक पाये, इसको सरकार अध्यावहारिक कंसे समझती है और इसको कार्यान्वित करने में क्या दिक्कत महसूस करती है ?

प्रश्नोत्तर ५१३

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—गल्ले का भाव इस प्रकार में निश्चित किया जाना कोई स्रासान बात नहीं है। माननीय सदस्यों ने स्रभी नेशनल डेक्लपमेट काउं ितन की कार्यवाही को पढ़ा होगा स्त्रीर उन्होंने देवा होगा कि वहां पर यह सवाल स्त्राया स्त्रीर वहां गल्ले स्त्रीर दूसरी स्नावश्यक चीजों की कीमत को निर्थारित करने के लिये विचार हो रहा है। केन्द्रीय सरकार भी विचार कर रही है। केन्द्रीय सरकार भी विचार कर रही है। केन्द्रीय सरकार भी विचार कर रही है। लेकिन इतनी बात निश्चित है कि जो भो निश्चय होगा वह केवन प्रादेशिक सरकार की स्रोर से नहीं हो सकता। इपका स्त्रविकतर सम्बन्ध केन्द्रीय सरकार से है, इसनिये जब तक सारे देश के लिये ऐसा निर्शारण नहीं होगा, हम स्रकेले कुछ नहीं कर सकते।

## एटा जिले के श्री रवीन्द्रकुमार को मुन्सिफी में न लेना

\*\*३—राजा यादवेन्द्र दत्त दुबे (जिला जौनपुर), श्री मन्नालाल (जिला खोरी), श्री शिवराम (जिला बिजनीर), श्री गोविन्दिसिह विष्ट (जिला ग्रहमोड़ा), श्री भुवनेश भूषण शर्मा (जिला इटावा), श्री हिम्मतिसिह (जिला बुलन्दशहर), तथा श्री मिलखान सिह (जिला वेनपुरी)—क्या सरकार के पास कोई ऐसी शिकायते श्रायीं है कि सब प्रकार से योग्य होने के बाद भी लोगों की सरकारी नौकरियों मे इसलिये नहीं लिया ग्या कि वे जन संघ श्रीर राष्ट्रीय स्वां सेवक तंव के सदस्य थे ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--- जो नहीं।

श्री हिम्मतसिंह -- क्या सरकार बताने की जुपा करेगी कि श्री रवीन्द्रकुमार, जिला एटा, के जो कि मुन्सकी के कम्पीडीशन में पांच्ये नम्बर पर श्राये थे उनकी क्यों नहीं लिया गया ?

श्री उपाध्यक्ष-इसके लिये तापको ग्रजग से नोटिस देनी होगी।

श्री हिम्मतिसह—क्या इस सम्बन्ध मे जनसंघ के नेता मुख्य मंत्री जी से मिले थे कि वह मुन्सफी में इसिनिये नहीं लिये गये क्योंकि वह श्रार० एस० एस० एस० के सदस्य थे ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—बहरहाल, इस सम्बन्ध में दो:-नीन दिन हुने इस सदन में काफी बहस हो च ती है और सरक र ने अपनी नीति स्पष्ट कर दो है। यदि आप आजा दे तो यह भी कह दूं कि जिनका जिक्र किया गया है उन्होंने हाई कोर्ट में रिट भी दाखिल की है, इसलिये इस सम्बन्ध में इस वक्त कुछ कहना असम्भव है।

### सूचना विभाग के कर्मचारी द्वारा चाइनीज कौंसिल को पहाड़ी सीमा प्रबन्ध विषयक सूचना देने की जांच

\*\* ४—-श्री वेचनराम गुप्त (जिला वाराणती) तथा श्री गौरीशंकर राय—क्या यह सच है कि सूचना विभाग के किसी कर्मचारी ने बम्बई मे चाइनीज कोंसिल मे जाकर पहाड़ी सीमा के प्रबन्ध के बारे मे कोई सूचना दी थी ? यदि हां, तो वह कर्मचारी कौन है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द —माननीय श्री यादवेन्द्रदत्त दुबे ने इस प्रकार की शिकायत सभा में की थी। मेरे श्रनुरोव पर उन्होंने कुछ संकेत दिये जिनके ग्राधार पर सो० श्राई० डी० द्वारा जांच की जा रही है। इस समय इससे श्रिधिक सूचना नहीं दी जा सकती।

श्री बेचनराम गुप्त--बावजूद इस बात के कि माननीय यादवेन्द्रदत्त दुबे ने सूचना के ग्रनुदान पर बोलते हुये कहा था कि वह सज्जन होली की छुद्दियों मे बम्बई पुनः गये थे, तो उस व्यक्ति के बारे में सरकार को क्या दिक्कत है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द---मैने म्रभी कहा कि सी० म्राई० डी० द्वारा जांच हो रही है, श्रीर म्रधिक कहना इस समय सर्वथा म्रनुचित होगा। श्री गौरीदांकर राय——जितके लिये माननीय यादवेन्द्रदत्त जी दबे ने कहा था उनके लिये क्या मरकार को मालूम हे कि वह श्री ग्रशोक कुमार नाम के सज्जन उस महकमे मे श्रकप्तर है जो स्टेशन लीव करने की इजाजत लेकर बम्बई गये हैं श्रीर वहीं बम्बई में बिनट्ज ग्रखबार और चीनी दूतावास मे श्राया जाया करते हें ?

डाक्टर सम्पूर्णीनन्द—मझे श्रकपोस हे कि मै नाम लेकर किसी की बाबत इस समय कुछ नहीं कह सकता। जान्न सभी बातों के बारे मे हो रही है।

### तारांकित प्रक्त

[मुख्य मन्त्री की प्रार्थना पर स्थगित १० मार्ख, १६६० के प्रक्त संख्या ५५-५७]

†श्री उपाध्यक्ष--कुमारी श्रद्धादेवी जी की प्रार्थना गर ये प्रश्न वायस लिये गये।

श्री राजनारायण—(श्री उपाध्यक्ष के श्रगले प्रक्रन पकारने पर) श्रीमन्, हमारी वेधानिक श्रापत्ति हैं....

श्री उपाध्यक्ष--बाद में, १२ बजे, वह ली जायगी।

श्री राजनारायण--श्रीमत्,हमारी वैधानिक श्रापित प्रदन नम्बर ५५ से ५७ के बारेसे हैं। बाव में उसका महत्व नहीं रहेगा।

श्री उपाध्यक्ष--वया है ? कदम जी के प्रवनी के बाद कह लीजिये।

श्री राजनारायण-- अव्हाः श्रीमन्, नियमाथली क १५व मके पर नियम ४१ में लिखा है कि कोई भी सबस्य उम उपबेशन के पूर्व जिसके लिये उसका प्रथन स्वीबद्ध किया गया हो, सूचना देकर अध्यक्ष की महमति से कियो भी समय अपन प्रश्न की वापस ले सकेगा, इत्यादि। सबन का उपवेशन शुरू हो जुका है श्रीर हमें इन प्रश्नो में रिलक्स्पी है, ....

श्री उपाध्यक्ष--डोक है, ये प्रक्त लिये जावेगे, मगर बाद में।

[उत्तर प्रदेश विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य-पंचालन नियमावली के नियम ३० (४) के ग्रन्गित]

# बड़ौत तथा हिलवाड़ी में सट्टे के ग्रारोप में गिरफ्तारी

\*१—आचार्य वीपंकर (जिला मेरठ)—मया गृह मंत्री को जात है कि गत ११ जनवरी, को मेरठ के एस० पी० ने बड़ीत, हिलवाड़ी और भन्य कई स्वानों पर रात के समय घरों के ताले तुड़वाकर सद्दे के भारीप में जिन लोगों को गिरफ्नार किया उन्हें बड़ौत थाने में इकट्ठा करके भीर पूर्णतया नंगा करके पीटा?

डाक्टर सम्पूर्णानन्त---वड़ीत तथा हिलवाड़ी में सद्दे के झारोप में गिरफ्तारियां प्रकार हुईं किन्तु लगाये गये झाक्षेयों में कोई तथ्य नहीं हैं।

डाक्टर सम्पूर्णानन्य-प्रवन नहीं उठता ।

इस समय कुमारी श्रद्धावेशी शास्त्री उपस्थित थी।

प्रश्नोत्तर ५१५

श्राचार्य दीपंकर -- क्या मुख्य मंत्री बताने की कृता करेगे कि क्या यह जांच एस० पी० के जरिये कराई गई थी ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--जी हां।

श्राचार्य दीपंकर—क्या माननीय मुख्य मंत्री जो को ज्ञात है कि इन एस० पी० के विरुद्ध उनको शिकायतें मिली है कि इन्होंने बड़ौत के थाने में इन लोगों को पकड़ कर नंगा करा के बुरी तरह से पोटा ग्रीर ग्रासपास के लोगों ने भी उनके कराहने की ग्रावाजे सुनीं ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--मेरे पास ऐतो कोई शिकायत नहीं म्राई। जिनको पोटा कहा गया है, उनमे से किती ने भो, जहां तक मुझे मालूम है, कोई लिखित शिकायत नहीं की।

एक श्रजनबी के सदन में श्राने पर श्रापत्ति

श्री राजिबहारीसिह--प्रेरा वैधानिक प्रश्न है कि ग्रभी एक ग्रजनबी सज्जन सदन में श्राकर ग्राचार्य दीपंकर जो के पीछे से किन्हीं सज्जन को उठाकर ले गरे।

श्री उपाध्यक्ष—देखूंगा, हमारे कर्मचारियों ने कार्यवाही की होगी । उसे देखकर बतलाऊंगा।

[२ मार्च, १६६० के लिए निर्धारित तारांकित प्रक्त]

## ए० डी० एम० (ई०) रखने के कारण

\*१--श्री लक्ष्मण राव कदम (जिला झांसी)--व्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि ए॰ डी॰ एम॰ (ई॰) [Additional District Magistrate (E)] किन-किन जिलों में हैं और उनके रक्खे जाने के क्या कारण है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—जिलों के नाम संलग्न तालिका (१) मे दिये हुए हैं। इन जिलों में उनके रक्खे जाने के कारण ये है कि इन बड़े-बड़े जिलों के जिलाधीश विविध कार्यो से मुक्त होकर कानून तथा शान्ति सम्बन्धी एवं ग्रन्य ग्रावश्यक समस्याग्रों को ग्रौर ग्रच्छी तरह देख सकें।

### (देखिये नत्थी 'क' ग्रामे पृष्ठ ६०२ पर)

\*२--श्री लक्ष्मणराव कदम--- इया सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि क्या ऐसे भी कुछ जिले हैं जिनमें पहले ए० डी० एम० (ई०) रक्खें श्रीर बाद में हुटा दिये गये? यदि हां, तो किन-किन जिलों से श्रीर क्यों?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—जी हां। ऐसे जिलों के नाम संलग्न तालिका(२) में दिये हुये हैं। उनके हटाये जाने का कारण शासकीय व्यय में मितव्ययिता करना था।

(देखिये नत्यो 'ख' म्रागे पृष्ठ ६०३ पर)

श्री लक्ष्मणराव कदम—जिला मैजिस्ट्रेंटों पर जिला परिषदों तथा नियोजन का कार्य-भार ग्रिधिक होने के कारण क्या माननीय मुख्य मंत्री जी प्रश्न नम्बर १ के उत्तर में दिये हुये ग्राधारों पर उक्त जिलों में ग्रीर साथ ही झांसी में भी ग्रितिरक्त जिलाधीश फिर नियुक्त करने की कृपा करेंगे ?

डाक्टर सम्पूर्णीनन्द-अगर काम ज्यादा है तो नियुक्ति हो सकती है।

### सहायक विकास अधिकारियों की पदोन्नति

\*३--श्री गनेशचन्द्र काछी (जिना मैनपुरी)---ाया सरकार बताने की श्रूपा करेगी कि विकास खंडों में जो सहायक विकास प्रविकारी कार्य कर रहे हैं उनकी पदोन्निन मुस्तकिल रूप से करने के लिये सरकार के क्या श्रादेश है ?

नियोजन उप मंत्री (श्री सुल्तान श्रालम खां) ——गण्ड-विकास श्रधिकारियों के पदों की कुल संख्या के ३३ प्रति शत तक पदों पर लोक सेवा श्रायोग की सम्मति से सहायक विकास श्रिधिकारियों की पदोन्नित की जा सकती है।

श्री गनेशचन्द्र काछी—क्या सरकार इस पर विचार करेगी कि भविष्य में ३३ की सवी के बजाय ४० प्रति शत पदोग्नति हुग्रा करें ?

श्री सुल्तान श्रालम खां--सरकार इस पर गीर कर रही है कि बजाय ३३ के ४० फीसदी कर दिया जाय ।

श्री प्रताप सिंह (जिला नैनीताल)—क्या माननीय नियोजन मंत्री बताने की कृषा करेंगे कि प्रशासन की श्रोर से यह सुझाव श्राया है कि नियोजन के कार्य में श्रनभवी लोगों को लिया जाय श्रीर इसलिये बीठ डीठ श्रोजिं में से ७५ फी सदी श्रोर बाहर से २५ फी सदी लिये जावें?

श्री सुल्तान श्रालम खां—मुझे ऐसे मुझाव की सबर नहीं है। उद्योग विभाग से संबंधित सूत का स्टाक बेचने के लिए श्रादेश

ै४—श्री ताराचन्द माहेश्वरी (जिला सीतापुर)—विधान सभा के प्रथम सत्र १६५६ के ४ ये गुरुवार के तारांकित प्रश्न संख्या १४—१५ तथा १६ के लिलित उत्तर के मंदर्भ में क्या मुख्य मंत्री बताने की फ़्रुपा करेंगे कि सूत का म्टाक बेचे जाने के हेतु संचालक, उद्योग विभाग, के पत्र का उत्तर (३ वर्ष ६ महीने १२ दिन) इतने श्रिष्ठिक समय बाद दिये जाने का श्रीर श्रभी तक सूत के न बेचे जाने का क्या कारण है ?

"४-- क्या मुख्य मंत्री यह भी बताने की कृपा करेंगे कि उपर्युक्त जो सूत का रटाक शेष है उसकी कुल चेल्यू और बजन क्या है स्रोर इस समय उक्त सूत का मार्केट रेट क्या है ?

श्रम उप मंत्री (श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा)—सूचना एकत्र की जा रही है। राजकीय मुद्रणालय की इमारतों में बिना किराये के कर्मवारी

'६—श्री ताराचन्द माहेश्वरी—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि राजकीय मुद्रणालय के अन्तर्गत इमारतों की क्या संख्या है और उसमें कितने कर्मचारी कब से बिना किराये के रह रहे हैं और क्या यह सत्य है कि उनमें कर्मचारियों के श्रीतरिक्त भी श्रन्य लोग रहते हैं ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—इमारतों की संख्या ६७ है। उन कर्मवारियों का विवरण, जिनसे किराया बसूल नहीं किया जाता, सदन की मेज पर रक्ला है। केवल ठेकेदार को, जिसे रिवार्शरंग (rewiring) का काम सुपुर्द किया गया है, कार्य-काल की श्रविध तक इलाहाबाद प्रेस में दो कमरे दिये गये हैं। इसके श्रतिरिक्त कोई बाहरी व्यक्ति नहीं रहता है।

(बेखिये नस्थी 'ग' म्नागे पृष्ठ ६०४ पर)

श्री ताराचन्व माहेश्वरी—क्या मंत्री की बतलावेंगे कि इन ४४ कर्मवारियों से किराया क्यों नहीं लिया जा रहा है ?

प्रश्नोतर ५१७

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—क्वार्टर इस हालत में नहीं थे कि उनसे पैसा लिया जाता।

श्री ताराचन्द माहेश्वरी—क्याइन ग्रादेशों के बाजूबद भी कि ये इमारतें टूटी-फूटी होने के कारण इनमें रहना ठीक नहीं है, ये लोग रहे ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—जी हां। उनमें से बहुत सारे लोग श्रपनी तरफ से मरम्मत कराके रहे। इस साल के बजट में हमने उनके बनवाने के लिये पैसा मंजूर किया है।

\*७—श्री लक्ष्मणराव कदम—[चौदहवें शुक्रवार के लिये प्रश्न द के स्रन्तर्गत स्थानान्तरित किया गया । ]

\*८-१०--श्री मदन पांडेय (जिला गोरखपुर)--[स्थगित किया गदः।]

\*११-१२-श्री मोतीलाल अवस्थी (जिला कानपुर)--[३१ मार्च, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।]

### पंडित पुरवा की खांडसारी सहकारी समिति को ऋण

\*१३—श्री गनेशीलाल चौधरी (जिला सीतापुर)—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि क्या यह सत्य है कि पिछले वर्ष सीतापुर जिले की गुड़ एवं खांडसारी सहकारी समिति, पंडितपुरवा, को २,००० हाये का कर्ज दिया गया?

# श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—जी हां।

\*१४—श्री गनेशीलाल चौधरी—पदि हां, तो क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि इस धन का उपयोग सहकारी समिति द्वारा कब किया गया ग्रौर किस प्रकार किया गया?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—समिति उक्त घन से एक खांडसारी शकर बनाने वाला सेन्ट्रीक्यूगल खरीद रही है।

श्री गनेशीलाल चौधरी—क्या सरकार बतायेगी कि यह घन कितने दिनों के बाद उपयोग में लाने की चेष्टा की गयी ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—यह तो समिति के ऊपर था। १६४८-४६ में उनको रूपया दिया गया था। उनको जल्दी से काम में लाना चाहिये था। सहकारी समितियों में कभी-कभी दिक्कत श्राती है कि वक्त पर काम नहीं हो पाता।

## म्राजमगढ़ जिले में सिचाई के कुम्रों का निर्माण

\*१५—श्री रामसुन्दर पांडेय (जिला ग्राजमगढ़) —ग्राजमगढ़ जिले में सिचाई के पक्के कुग्नों के निर्माण के बारे में क्या मुक्य मंत्री १२—३—५६ के तारांकित प्रश्न संख्या ३४—३५ के उत्तर के कम में बताने की कृपा करेंगे कि ३२५ कुग्नों में से ग्राजमगढ़ जिले की प्रत्येक तहसील में ग्रलग-ग्रलग कितने-कितने बनाये जा रहे हैं?

श्री सुल्तान स्रालम खां—स्राजमगढ़ जिले में ३२५ कुओं के बजाय श्रव ४१० कुएं बनाए जा रहे हैं। तहसीलवार व्योरा संलग्न है।

(देखिये नत्थी 'घ' ग्रागे पृष्ठ ६०५ पर)

\*१६—श्री रामसुन्दर पांडेय—क्या मुख्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि उक्त कुओं में से कितने-कितने कुएं ग्रलग-ग्रलग तहसीलों में बन चुके हैं?

श्री सुल्तान ग्रालम खां-तहसीलवार ब्योरे में यह सूचना भी शामिल है।

\*१७—श्री रामसुन्दर पांडेय—क्या मुख्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि प्रन्तिस जिला परिषद्, ग्राजमगढ़ ने मिचाई के कुझों के निर्माण में पूरी ग्रामिक सहायता करने की माग सरकार से की है ?

श्री सुल्तान श्रालम लॉ—श्रम्तरिम जिला परिवर, श्राजमगढ़, ने एक प्रस्ताव में सरकार से कुग्नों के निर्माण के लिय काफी अनुदान स्वीहत करने की प्रार्थना की थी। नियोजन विभाग की योजनाश्रों के अन्तर्गत कुएं बनाने के लिए दिए गए ऋण पर २४ प्रति शत अनुदान दिया जाता है और यह काफी है।

श्री रामसुन्दर पांडेय क्या माननीय मंत्री जी यह बतायेंगे कि प्रत्येक कुएं पर कितना रुपया ऋण दिया जाता है ?

श्री सुल्तान श्रालम खां—किसी को १००० किसी को ७४० धीर किसी को १,००० रुपया वियाजाता है। इस प्रकार कम से कम ५०० धीर ज्यावा से ज्यावा १,००० रुपया विया जाता है।

श्री रामसुन्दर पांडेय — क्या यह सही है कि म्राज से ३-४ साल पहले पूरी लागत का श्राधा हिस्सा छूट दिया जाता था?

श्री सुल्तान श्रालम खां—पहलेकी बात तो माल्म नहीं है, लेकिन श्राजकल ऐसा है कि ग्रगर वक्त पर कुश्रा लत्म हो जाता है तो २४ प्रति शत ख़र वे दी जाती है।

श्राजमगढ़ रोडवेज बस् स्टेशन पर लाउडस्पीकर की श्रावश्यकता

\*१८-श्री मुक्तिनाथराय (जिला भ्राजमगढ़) -- क्या मत्री परियहन बनाने की कृपा करेंगे कि स्राजमगढ़ रोष्ट्रवेज बस स्टशन पर प्रति विन । हाती बस छहती है सीर माती है ?

परिवहन मंत्रों के सभा सचिव (श्री धर्मदत्त येदा)—प्रातमगढ बस स्टेशन से प्रति विन ६० गाड़िया छूटती है और ६० अन्य स्थानों से वहा श्राती है।

ं १६—श्री मुक्तिनाथराय — क्यामत्री परिवर्टन बनान की क्या करेंगे कि गोरलपुर रोडयेज रीजन में श्राजमगढ़ बस स्टेशन से वर्ष १६५६ में सरकार का कुल कितनी श्रामदनी हुई ?

श्री धर्मदत्त वैद्य---६,४४,०५६ न्ययं ३१ नयं पंते।

\*२०-श्री मुक्तिनाथराय-व्यामंत्री परियम्न बतान का कपा करेगे कि क्या रोडवेज बस स्टेशन पर यात्रियों की सुविधा के नियं मूनना आदि प्राप्त करन के निये ध्वित विस्तारक यन्त्र (londspeaker) की व्यवस्था है ? यदि नहीं, तो क्या ?

श्री धर्मवस वैद्य-- भी नहीं। धनाभाव के कारण।

श्री मुक्तिनाथराय—क्या माननीय मंत्री जी यह बतायेगे कि यह देलते हुए कि यहां से ६० गांडिया प्रति दिन छूटती है और ६० प्राती है तो क्या मरकार यावियां की निवधा के लिये लाउडरपीकर की व्यवस्था करने की छुपा करेगी ? यदि हा, ता शब तक ?

श्री धर्मदत्त वैद्य--इस बस स्टेशन पर घंडी बजाकर गाड़ियां के हाटने की इतिला यात्रियों को दी जाती है। जहां तक लाउइस्पीकर लगाने का प्रश्न है, ग्रगले वर्ष में इस पर विचार किया जायगा। श्री मुक्तिनाथराय—क्या सरकार के पास एंसी शिकायत श्रायी है कि लाउड स्पीकर की व्यवस्था न होने से काफी यात्रियों की बसें छूट जाती हैं? ग्रामदनी इस स्टशन से सरकार ने बतायी ६,४४,०५६ रुपया होती हैं, तो क्या सरकार इस बात को देखते हुए लाउडस्पीकर शीघ्र लगाने की व्यवस्था करेगी?

श्री धर्मदत्त वैद्य-पात्रियों की गाड़ियां छटने की शिकायत सरकार के पास नहीं ग्रायी। जहां तक लाउड स्पीकर का प्रश्न है, उस पर विचार किया जा रहा है।

#### खांडसारी कारखानों का लाइसेंस कर

\*२१--श्री ग्रमरनाथ (जिला गोरखपुर) (ग्रनुपस्थित) —क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि प्रदेश में कुल कितने खांडसारी कारखाने हैं ग्रौर उनमें से किन-किन से कितनी रकम लाईसेंस फीस के रूप में सन् १६४८-४६ में वसूल की गई?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द-सूचना एकत्र की जा रही है।

\*२२—श्री स्रमरनाथ (स्रनुपस्थित) — क्या सरकार कृपया यह बतायेगी कि क्या उन ऋशरों पर भी लाइसेंस शुल्क लगाया गया है जो केवल गुड़ बनाते हैं स्रौर चीनी नहीं बनाते हैं ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द---जी हां, केवल उन यंत्रचालित ऋशरों पर जो शकर मिलों के सुरक्षित क्षेत्रों में स्थित हैं।

#### तीसरी पंचवर्षीय योजनान्तर्गत उद्योग

\*२३—श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी (जिला बस्ती)—क्या मुख्य मंत्री कृपया यह बतायेंगे कि तीसरी पंचसाला योजना में बस्ती, गोरखपुर व देवरिया जिलों में कौन से बड़े उद्योग खोलने की योजना है ?

\*२४--- क्या सरकार कृपया बतायेगी कि तीसरी पंचवर्षीय योजना में प्रदेश के उत्तरांचल (टिहरी-गढ़वाल, कुमायूं डिवीजन) में कौन-कौन से बड़े-बड़े उद्योग खोलने की योजना है ?

\*२४—क्या सरकार कृपया बतायेगी कि तीसरी पंचसाला योजना में प्रदेश की वाराणसी कमिश्नरी में कौन-कौन से बड़े-बड़े उद्योग खोलने की योजना है ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—न्तीसरी पंचसाला योजना का निश्चित स्वरूप ग्रभी तैयार नहीं हो सका है, इसलिए ग्रभी इन प्रश्नों का उत्तर देना सम्भव नहीं है।

श्रीमती राजेन्द्र किशोरी—क्या माननीय मंत्री जी यह बतायेंगे कि कब तक सूचना एकत्र हो जायगी?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—काम में लगे ही हुए हैं। प्रशासनीय कार्य हिन्दी में करने का श्रनुरोध

\*२६— श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल — क्या सरकार इस बात का इरादा रखती है कि ३१ मार्च, १६६१ से प्रदेश का सब प्रशासनीय काम हिन्दी में करावे ? यदि नहीं, तो क्यों ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द-इच्छा है, परन्तु उसका पूरा होना कठिन प्रतीत होता है।

\*२७—श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल—न्या सरकार कृपया यह बतायेगी कि ग्रब तक प्रादेशिक प्रश<sup>1</sup>सन का कौन-कौन सा काम हिन्दी में नहीं होता है, ग्रौर क्यों ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--स्थिति संलग्न \*नोट में बता दी गई है।

<sup>\*</sup>नोट छापा नहीं गया ।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल -- प्रया तरकार न पार्रेगी कि मंत्रक नोट में जो स्थित श्रार कठिनाई बतायी गयी है जिन्दी में पूरी तहा से कात ने किये आने के बारे में, उसके श्रातिरिक्त श्रीर कोई कठिनाई तो नहीं हुं?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द---हो सकता ह कि प्रोजनी हो। के फिल्हाल सी यही ध्यान मे स्रायो।

श्री मीतीलाल अवस्थी—ाया माननीय नं ते नित्यत वनापेगे कि हिन्दी के प्रयोग करने के बारे में अभी तक हं त्रा पाफ दि जिपारंभें एग अपने नोट्र पंगर्जा में ही लिखते हैं, तो क्या उनको कोई ने गवनी या सम्बीध दी गयी हां?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—उनको भी वही मजब्री हो पकती है । माननीय सदस्य को हैच्स आफ वि डिपार्टमट शांव के प्रयोग करने में हो सकती है।

श्री हरदयालसिंह—क्या माननीय मंत्री जी यह बतायेंगे कि इन फठिनाइयों को दूर करने के लिये वह क्या कदम उठाना चाहते हैं स्रोर उसके लिये क्या तरीके उन्होंने स्रपनाये हैं?

डाकटर सम्पूर्णानन्द—एक बहुत बड़ी हमारी फिठनाई यह है कि भारत सरकार का निश्चय यह है कि १६६५ तक राजभाषा श्रंग्रेजी रहेगी, उसके बाद क्या होगा, में नहीं जानता। जब तक उनकी भाषा श्रंग्रेजी हे तब तक उनमें निट्ठी-पत्री श्रंग्रेजी में ही होगी। इसके साथ साथ जो हिसाब-किताब के विभाग है, जिनमें ए० जी० झार बित्त विभाग धाते हैं, उनका काम भी ए० जी० के विभाग के कारण श्रंग्रेजी में ही होता है। जहां-जहां रुपये पैसे का सवाल श्राता है, उसको मजबूर होकर श्रंग्रेजी में ही करना पड़ता है। तीसरी कठिनाई हाई कोर्ट की भाषा की बाबत भी होगी श्रीर है।

श्री श्रीकृष्णवत्त पालीवाल—क्या सरकार बतायेगी कि हिन्दी में पत्र-व्यवहार करने का करार जब बिहार, मध्यप्रदेश ग्रीर राजस्थान में हो चुका है तो क्या कारण है कि इस प्रदेश से करार नहीं हो पाया?

डाक्टर सम्पूर्णीनन्द—मेने प्रक्त को समझा नहीं, जो इसमें निका है सम्भव है भाषा ठीक न हो। इसमें लिका है कि हमारा समझौता हुआ है दन सरकारों से। इन सरकारों से जो हम चिट्ठी-पत्री करते है, हिन्दी में करते हैं।

\*२=-२६--श्री प्रतापसिंह--[हटा दिये गये।]

\*३०-३१--श्री गॅवासिंह (जिला देवरिया) (ग्रनुपरिधत)--[३१ मार्च, १६६० को लिये स्थिगत किये गये।]

#### पंचवर्षीय योजनान्तर्गत रोजगार मिलना

\*३२--श्री गेंदासिंह (ग्रनुपरियत)- यया मृख्य मंत्री एक तालिका सवन की मेज पर रखने की कृपा करेंगे जिसमें निम्नलिखित सूचनाय लिलित हो '--

- (क) प्रथम तथा द्वितीय पंचवर्षीय योजनाश्री के श्रधीन कितने व्यक्तियों को सरकार तथा नजी क्षेत्रों में रोजगार देने का लक्ष्य था?
  - (ख) श्रव तक उपरोक्त दोनों क्षेत्रों में श्रलग-श्रलग कितने लोगों को रोजगार विया जा सका है श्रोर कितने लोगों को चालु विसीय वर्ष के बन्त तक मिल जायेगा?
- (ग) लक्ष्य तक पहुंचने के लिये सरकार दूसरी पंचवर्षीय योजना की सर्वाध में क्या कार्यवाही कर रही है और उसमें कितने व्यक्तियों को रोजगार मिल जायेगा?

## डाक्टर सम्पूर्णानन्द-इस सम्बन्ध में सरकार के पास सूचना उपलब्ध नहीं है।

#### उत्तराखंड मण्डल का निर्माण तथा भोटियों की मांगें

\*३३—श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन (जिला टेहरी-गढ़वाल)—क्या मुख्य मंत्री कृपया बतायेगे कि क्या यह सही है कि कुमायूं डिवीजन के श्रन्दर तीन नये जिलों का निर्माण हो रहा है ? यदि हां, तो कुमायूं की किन-किन पिट्टयों को लेकर इन जिलों का निर्माण हो रहा है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—जी हां, कुमायूं डिबोजन के कुछ हिस्सों का एक नया डिबीजन बनाया गया है। जिलेबार पट्टियों का विवरण गजट एक्स्ट्राष्ट्राडिनरी, दिनांक २४-२-६०, में दिया गया है जिसकी \*प्रतिलिपि सदन की मेज पर रख दी गयी है।

\*३४-श्रीमती वितयलक्ष्मी सुमन—क्या मुख्य मंत्री को मालूम है कि कुमायूं डिवीजन की ग्राम जनता ग्रीर उसके विधायक सरकार से दीर्यकाल से मांग कर रहे है कि इस डिवीजन के समूचे पर्वतीय क्षेत्र को सीमान्त क्षेत्र घोषित किया जाय? यदि हां, तो इस मांग की पूर्ति के लिये सरकार ने ग्रव तक क्या किया है?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—कुमायं मंडल के कुछ क्षेत्रों का एक नया उत्तराखंड मंडल आवश्यकतानुसार बनाया गया है; और कोई प्रशासकीय परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं समझी गई।

\*३५—श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन—क्या मुख्य मंत्री कृपया बतायेंगे कि क्या यह सही है कि कुमायूं के सीमान्त निवासी भोटियों ने ग्रपने पुनर्वास की ग्रावश्यकता की ग्रोर सरकार का ध्यान ग्राकिवत करते हुए सरकार के सामने एक प्रतिवेदन पेश किया है? यदि हां, तो क्या सरकार प्रतिवेदन की खास-खास बातों को बताने की कृपा करेगी?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—जी हां, इस प्रकार का एक पत्र प्राप्त हुस्रा है, जिससे स्रावश्यक उद्धरण संलग्न है।

#### (देखिये नत्थी 'ङ' स्रागे पृष्ठ ६०६ पर)

श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन—क्या माननीय मुख्य मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि सीमा से लगे हुए कुछ ऐसे क्षेत्र भी है जिनको देश की सुरक्षा की दृष्टि से भी उत्तराखंड में मिलाना श्रत्यन्त श्रावश्यक है, उनको मिलाने की कृपा करेंगे ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—देश की सुरक्षा की दृष्टि से किसको मिलाना चाहिये, इसका ग्रकेले हम तो निश्चय नहीं कर सकते है। जैसा मैंने सदन में पहले भी निवेदन किया, यह फौज के ग्रिधिकारियों की राय से किया गया है। तो ऐसा मानना चाहिये कि सुरक्षा की बात हमारी श्रपेक्षा वे ज्यादा जानते होंगे।

श्री प्रतापिसह—क्या माननीय मुख्य मंत्री जी इस बात को ध्यान में रखते हुए कि देश की सुरक्षा हो, टेहरी-गढ़वाल, श्रत्मोड़ा श्रौर नैनीताल के उत्तरी क्षेत्र की एक सी श्रायिक तथा सामाजिक परिस्थिति होने के नाते इन तीनों जिलों के साथ चकरौता तहसील को भी बोर्डर एरिया घोषित करने की सिफारिश केन्द्रीय सरकार से करेंगे?

<sup>\*</sup> प्रतिलिपि छापी नहीं गई।

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--जितना आवश्यक था हो चुका। बोर्डर एरिया बाब्द का क्या अर्थ है, में ठीक से पहीं कह सकता कि माननीय तदस्य ने किस अर्थ में उसका प्रयोग किया है। एसिकों में उसका ठीक स्वष्ट उत्तर नहीं दे पर रहा हूं।

श्री गारायणदत्त तिवारी (जिला नेनीताल)—ज्या भावनीय मुख्य मंत्री जी लुमन जी के सुनाब की ध्यान में रखते हुए श्रीर इसके महत्व को देखते हुए जो उत्तराखंड डिबीजन बना हु, भोगोलिक दृष्टि से नक्त्रे को देख कर इस बात की जांच करेगे कि कई पट्टियां तथा दूसरे गांव उत्तरालंड डिबीजन में शामिल किये जा समते है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--एकाध पट्टी के इधर-उधर करने की बात हो तो जरूर देखने की जात है।

श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन—प्रतिवेदन में दी गयी १० मांगों में से किन-किन मांगों की पूर्ति श्रव तक हो चुकी है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—पूरी तरह से किसी की नहीं हुई है, थोड़ी बहुत सबके लिये कोजिया है, लेकिन में श्राज्ञा करता हूं कि नया जिला बनने की वजह से उन सब मांगों की, जहां तक सम्भव होगा, पूर्ति हो जायगी।

श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन--भोटियों को पुनर्वासन श्रनुवान की सहायता देने के क्या-क्या सुझाव है, उन्हें उसे माननीय मंत्री जी बतलाने की क्रुपा करेंगे?

श्री उपाध्यक्ष—यह तो मांग में लिखा ही है।

श्री प्रतापसिह—क्या माननीय मुख्य मंत्री जी के पास यह भी सुझाव श्राया है कि भोटिये जिनकी तादाय ४०,००० के करीब है उनको तराई-भावर क्षेत्र में बसाया जाय श्रौर इस पर क्या विचार किया गया ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—तराई—भावर क्षेत्र की कुछ सीमायें है श्रीर उन्हीं में श्रत्मोड़े के लोग भी बसायें जायं, नैनीताल के भी बसायें जायं, जिल्पकार भी बसायें जायं श्रीर भोटियें लोग भी बसायें जायं, यह उस समय तक सम्भव नहीं है जब तक कि तराई—भावर क्षेत्र को रबड़ की तरह न फैलाया जा सके । श्रीर कोई दूसरा ऐसा तरीका नहीं है।

## लखीमपुर में ग्रस्थायी सिनेमा के लिये स्वीकृति न मिलना

\*३६—श्री शिवप्रसाद नागर—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि लखीमपुर मगर, जिला खीरी, में इस समय कुल कितने सिनेमाघर चल रहे है श्रीर उनमें कितने स्थायी श्रीर कितने ग्रस्यायी है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्व—लखोमपुर नगर (जिला खोरी) में इस समय कुल दो सिनेमा, घर चल रहे हैं, जिनमें से एक स्थायो है और एक अस्थायो।

३७--श्री शिवप्रसाद नागर--क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि इन सिनेमाघरों से सरकार को प्रत्येक सिनेमा से माहवारी कितनी-कितनी ख्राय होती है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द-जनवरी, १९६०, में सरकार को इन दोनों सिनेमाघरों से होने वाली आय का व्योरा इस प्रकार है :--

- (१) स्थायी सिनेमा (श्री कृष्णा टाकीज) ३,५६५ ४० ६८ न० पै०।
- (२) ग्रस्थायी सिनेमा (प्रभात टूरिंग टाकीज) २,६७६ रु० ७० न० पै०।

\*३८—श्री शिवप्रसाद नागर—क्या सरकार कृपया यह बतायेगी कि दिसम्बर, सन् १६५६, में ग्रस्थायी सिनेमा चलाने की कितनी दरस्वास्तें जिलाघीश सीरी की प्राप्त हुई थीं और उनमें कितनी स्वीकृत हुई ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—तीन, जिनमें से एक भी स्वीकृत नहीं हुई।

श्री शिवप्रसाद नागर—-क्या माननीय मुख्य मंत्री जी कृपा कर बतायेंगे कि ये जो ३ दरख्वास्तें खारिज हुई वे किस कारण से हुई?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—सरकार का एक ग्रादेश सारे सूबे के लिये है कि जब तक कोई बहुत विशेष कारण न हो तब तक स्थायी सिनेमा के ग्रलावा ग्रस्थायी सिनेमाओं को इजाजत न दी जाय। जो एक ग्रस्थायी सिनेमा है भी, उसकी भी मियाद ३१ मार्च तक है, उसके ग्रागे उसे भी इजाजत नहीं दी जायगी।

श्री शिवप्रसाद नागर—क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि उससे पूर्व एक प्रश्न के उत्तर में दिया गया था कि २०६ सिनेमा यू० पी० में ग्रस्थायी थे जिनकी ग्राय १,३७,५६,०७५ रुपया थी ग्रौर ग्रब वह १४७ रह गये हैं, इससे करोड़ों रुपये की सूबे की हानि हुई है, क्या सरकार इस पर विचार करेगी ग्रौर उस जी० ग्रो० में कोई संशोधन करेगी?

श्री उपाध्यक्ष--इसका नोटिस दिया जाय, याद रखना कठिन है।

# सिसवा व देवरिया चीनी मिल क्षेत्रों में गन्ने की श्रिधिकता

\*३६—श्री श्रब्दुल रऊफ लारी (जिला गोरखपुर)—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि क्या केन यूनियनों द्वारा सरकार को यह सूचना मिली है कि सिसवा, देवरिया, भटनी तथा श्रानन्दनगर चीनी मिलों में उनके क्षेत्रों का श्रिधिक मात्रा में गन्ना खेतों में पड़ा रह जायेगा?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—१९५६-६० सीजन के दौरान में जिला गन्ना श्रिधकारी, देवरिया, तथा क्षेत्र समीकरण श्रिधकारी, गोरखपुर, से केवल सिसवा व देवरिया चीनी मिलों के क्षेत्रों में गन्ने की श्रिधकता की सूचना मिली थी। इस सम्बन्ध में केन यूनियनों से कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई।

\*४०—श्री स्रब्दुल रऊफ लारी—यदि हां, तो सरकार उसके पेरे जाने के लिये कौन-सा प्रयत्न कर रही है ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—इस श्रधिक गन्ने को श्रन्य मिलों से पेरे जाने की व्यवस्था कराने की चेष्टा की गई है।

श्री ग्रब्दुल रऊफ लारी—माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि क्या ग्रधिकारियों ने सिसवा तथा देवरिया मिल क्षेत्र के गन्ने की ग्रधिकता के बारे में पहले ही रिपोर्ट की थी ग्रौर उसके बाद इन मिलों को चलाने की ग्रीर पूरा गन्ना पेरे जाने की क्या व्यवस्था की गई ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—मंने श्रापसे कहा कि क्षेत्र के गन्ने के मिल चलने के बाद हर १५-२० दिन बाद रिपोर्ट श्राती रहती है श्रौर उन्होंने रिपोर्ट भेजी थी कि कींशा ऐसा चल रहा है कि कुछ गन्ना तो वहीं काम में श्रा जायगा श्रौर जो बचेगा उसमें से कुछ तो दूसरी मिलों को डाईवर्ट हो रहा है श्रौर कुछ के बारे में बातचीत हो रही है कि कहां भेजा जाय।

श्री ग्रब्दुल रऊफ लारी—क्या माननीय मुख्य मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि भटनी मिल क्षेत्र के लार सोसाइटी के डायरेक्टरों ने जनवरी में ही प्रस्ताव भेजा था कि गन्ना श्रिषक है श्रीर श्राघे से ज्यादा गन्ना बाकी रह जायगा?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—ऐसी कोई सूचना नहीं है, लेकिन वह बाकी नहीं रहेगा भौर मई के भ्रन्तिम सप्ताह तक खत्म हो जायगा। श्री गेंदासिह—क्या यह सही है कि गोरखपुर व देवरिया जिलों मे सुरक्षित क्षेत्रों का गन्ना कई फक्टरियों में ज्यादा हे ? यदि हां, तो क्या उसको दूसरी फेक्टरियों में भिजवाने का प्रबन्ध किया जा रहा हे ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—इस गन्ने को दूसरी फेक्टरियो में डाईवर्ट करने की कोिक्षिय हो रही है। में बहुस म तो नहीं जाना चाहता, लेकिन मेंने श्री रामायणराय जी को कल ही कहा था कि श्रगर वह उसको लिए। कर दें, जो किसानों को भी रवीकार हों, तो हम उसको करने को तयार है।

### गवर्नमेंट प्रेस, लखनऊ व इलाहाबाद के श्रस्थायी कर्मचारी

\*४१—श्री कल्याणचन्द मोहिले (जिला उत्ताताबाद)--।पा सरकार कृषा कर बतायेगी कि प्रदेश के इलाहाताद वोर लवनङ के सरकारी प्रेमों में कितने कर्मचारी ऐसे है जो ३ वर्षों ने श्ररथायी है?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—क्रमप्तः ३६७ स्रोर २८८।

श्री कल्याणचन्द मोहिले—सरकार बतायेगी कि इतने लोगों को श्रम्यायी से स्थायी करने मे क्या दिवकत है ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—कोई दिक्कत नहीं है। जेसे-जेसे जरूरत होती है, होते जा रहें है। इस माल भी २६६ क करीब स्थायी किये है।

श्री कल्याणचन्द मोहिले—मं पृद्धना चाहता हूं कि जो ट्लाहाबाद मे ३६७ कर्मचारी विखाय गये हैं उनको स्थायी करने में कौन-सी विकास है ?

श्री उपाध्यक्ष--इसका जवाब तो विया कि जैसे-जैसे घन मिलता जा रहा है स्थायी करते जाते है।

श्री रामस्वरूप वर्मी—सरकार ने कोई प्रति शत तय कर ग्ला है कि सालाना इतने लोग स्थायी करेगे?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—तीन साल सं ऊपर की ६६ की सदी जगहें भर दी जाती ह, ऐसा साधारणतया सरकार न निश्चय कर रखा है सभी कर्मचारियों के सम्बन्ध में। लेकिन गवनमेंट प्रेस के मामले में हम ऐसा करते हैं कि कोई भी श्रस्थायी जगह श्रस्थायी नहीं रह जाती ५वें साल के ऊपर। श्रगर ऐसी कोई पोस्ट्स होती है तो हन्ष्ट्रें पर सेण्ट उन जगहों को भर लेते है श्रीर स्थायी कर देते हैं।

#### वेवरिया जिले के लेबर इन्स्पेक्टर श्राफिस

\*४२—श्री ज्ञजनारायण तिवारी (जिला देवरिया)—क्या मुख्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि देवरिया जिले में कहां-कहां लेबर इन्स्पेक्टर ग्राफिस है ग्रीर कब से ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—देवरिया सदर तथा पडरौना में। देवरिया सदर में ३०-४-४५ तथा पडरौना में ४-३-४३ से यह श्राफिस स्थापित हुए।

\*४३—श्री क्रजनारायण तिवारी—क्या मुख्य मंत्री यह भी बताने की कृपा करेंगे कि वेवरिया सदर में लेबर इन्स्पेक्टर प्राफिस का वार्षिक व्यय कितना है तथा उसमें कौन-कौन कर्मचारी रहते हैं?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा— ६,२४६ दपया । एक लेबर इन्सपेक्टर, एक लिपिक सथा दो निम्न श्रेणी के कर्मचारी रहते हैं। \*४४—श्री वजनारायण तिवारी—क्या यह सही है कि देवरिया सदर में लेबर इन्सपेक्टर श्राफिस पर ग्रब तक लेबर इन्सपेक्टर की नियुक्ति नहीं हुई है ? यदि हां, तो इसका कारण क्या है ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—जी नहीं। लेबर इन्सपेक्टर भ्राफिस स्थापित होने के साथ ही लेबर इन्सपेक्टर की नियुक्ति हो गई थी।

श्री क्रजनारायण तिवारी—जवाब में दिया गया है कि लेबर इंसपेक्टर श्राफिस स्थापित होने के साथ ही लेबर इन्सपेक्टर की नियुक्ति हो गई थी, तो मै जानना चाहता हूं कि क्या इस समय देवरिया में कोई लेबर इंसपेक्टर नहीं है जबकि श्राफ़िस है?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—श्रब इस समय की स्थित का मुझे कोई श्रन्दाज नहीं हो सकता है। सुमिकिन है कि छुट्टी पर हो।

#### कास्ट-ग्राफ-लिविंग इण्डेक्स

\*४५—श्री नारायणदत्त तिवारी—क्या सरकार कृपया बतायेगी कि Cost-of-Living Index को निश्चित करने हेतु प्रदेश के किन-किन शहरों ग्रथवा क्षेत्रों में श्लांकड़े एकत्र किये जाते है श्लीर किन के द्वारा?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—उत्तर प्रदेश के प्रत्येक जिला हेडक्वार्टर से ग्रर्थ एवं संख्या विभाग के ग्रर्थ संख्यान्वेषक मध्यवर्गीय नगरीय उपभोक्ता भाव सूचकांक ( Urban Middle Class Consumer Price Index ) में प्रयोग किये जाने वाले फुटकर भावों को संग्रह करते हैं। ये ही ग्रर्थ संख्यान्वेषक पर्वतीय क्षत्र के प्रत्येक जिले के चार-चार गांवों से ग्रीर श्रन्य प्रत्येक जिले के दो-दो ग्रामों से ग्रामीण फुटकर भाव भी संग्रह करन हैं जो कि ग्रामीण उपभोक्ता भाव सूचकांक (Rural Consumer Price Index) बनाने में प्रयोग किये जाते है।

त्रर्य एवं संख्या विभाग द्वारा बनाये जाने वाले इन उपभोक्ता-भाव सूचकांकों के स्रितिरक्त, श्रमायुक्त, उत्तर प्रदेश, श्रमिक-उपभोक्ता-भाव सूचकांक बनाते हैं जिसमें प्रयोगार्थ वह स्रपने स्रन्वेषकों द्वारा कानपुर शहर के चुने हुये प्रमुख श्रमिक क्षेत्रों से फुटकर भाव एकत्र करवाते हैं।

\*४६—श्री नारायणदत्त तिवारी—न्या सरकार कृपया बतायेगी कि Central Statistical Institute द्वारा उत्तर प्रदेश के सम्बन्ध में प्रकाशित स्रांकड़ों तथा प्रदेशीय Statistics विभाग द्वारा प्रकाशित स्रांकड़ों में वैषम्य दूर करने हेतु वह क्या कार्यवाही कर रही है?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—इन उपभोक्ता-भाव सूचकांकों (Consumer-Price Index) ही को पहले Cost-of-Living Index कहा जाता था। Central Statistical Institute नाम की कोई संस्था देश में नहीं है।

श्री नारायणदत्त तिवारी—-पुख्यमन्त्री जी बतायेंगे कि स्रब कास्ट-स्राफ लिविंग इन्हें के किसको कहा जा रहा है स्रौर उस से प्रदेश भर का सही कास्ट-स्राफ-लिविंग इन्हें क्स का स्रव्हाज लग सके, इस हेतु क्या प्रयत्न हो रहे हैं?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—मैने बताया कि इस वक्त उसकी कन्ड्यूनर प्राइस इन्डेक्स कहते है। बाकी सारे प्रदेश का सही भ्रान्याज लग सके, इसके बारे में निश्चित नहीं कह सकता। वैसे समय-समय पर इस विभाग के केन्द्रीय भ्रीर प्रान्तीय प्रधिकारियों की साल भर में कन से कन एक बार मीटिंग होती है श्रीर उसमें श्रापस में तुलना करते हैं कि किस तरह ने इंडास बताये जायं जिनका सब जगह भ्रयं एक ही हो सके। इसलिए में समझता हूं कि तुनना की जा सकती है। श्री नारायणदत्त तिवारी—क्या माननीय मुख्य मन्त्री इस बात को देखते हुये कास्ट श्राफ-लिविंग इन्डेबस का देहाती तथा शहरी क्षेत्रों में ठीक ठीक निर्धारण करेंगे? क्योंकि इसके लिए वित्त व्यवस्था का ठीक तरह में मूल्यांकन श्रीर मंतुलन करना प्रत्यन्त श्रावश्यक है इसलिए इसके लिए कोई वैज्ञानिक तरीका श्रक्तियार किया जायगा जिससे हम सही नतीं पर पहुंच सके?

डाक्टर सम्पूर्णानन्व—श्रभी हमारे विमाग में कोई चीज नहीं हे, लेकिन इस बात की कोदिश करेंगे कि कोई ऐसी चीज सम्भव है या नहीं।

श्री नारायणदत्त तियारी—मेरा तात्पर्यप्र० सं० ४६ में प्रो० महालोनोबिस की संदूत रटेटिस्टिकल प्रार्गनाइजेशन में था। तो इस जात को वेगते हुये कि मेन्द्रल स्टैटिस्टिकल ध्रार्गनाइजेशन तथा स्टैटिस्टिकल डिपार्टगेट, यू० पी०, के द्वारा जो पर कैपिटा इनकम ब्रादि के बारे में विभिन्न श्रांकड़े निकलते रहते हैं, उनके वेपम्य का दूर करने के लिए मरकार क्या कर रही है?

डाक्टर सम्पूर्णानन्व—प्रोफेसर महालोनोबिस की जो संस्था है उसका नाम है इल्डियन स्टैटिस्टिकल इन्स्टीटचूट, ग्रोर सेन्द्रल स्टैटिस्टिकल प्रामनाइजेशन जो है वह केन्द्रीय सरकार की संस्था है। जहां तक केन्द्रीय संस्था की बात है, उसके श्रीर हमारे यांकड़ों में विरोध नहीं होता लेकिन इन्डियन स्टैटिस्टिकल इन्स्टीटचूट जो है यह गंग-सरकारी संस्था है। उसके ग्रीर हमारे श्रांकड़े हर जगह मिलते रहें, इसके लिए ठीक तरीका क्या बरता जाय, इस सम्बन्ध में में इस समय कुछ नहीं कह सकता।

श्री नारायणदत्त तिवारी—केन्द्रीय सरकार को मेन्द्रन स्टेटिन्टिकल श्रार्गनाइजेशन जो है जिसके द्वारा पर कैपिटा इनकम के झांकड़े पंडित जवाहर नाल द्वारा लोक सभा में उद्गत किये गये हैं, उनमें श्रीर हमारे यहां के श्रांकड़ों में समन्वय लाने के लिए माननीय मुख्य मन्त्री कोई अयत्न करेंगे?

श्री उपाध्यक्ष-लोक सभा में क्या होता है, उसका जवाब नहीं दिया जा सकता।

श्री नारायणदत्त तिवारी—सेन्द्रल स्टैटिस्टिकल श्रागंनाइजेशन द्वारा हमारे प्रदेश के सम्बन्ध में जो श्रांकड़े निकाले जाते हैं उनमें श्रीर यू० पी० स्टैटिस्टिकल डिपार्टमेंट द्वारा निकाल गये श्रांकड़ों में जो वैषम्य होता है उसको दूर करने के लिए क्या प्रयत्न किया गया है?

डाकटर सम्पूर्णानन्त जी हां, कभी-कभी वेषम्य होता रहता है अनेक कारणों से, जैसे परिभाषाओं के सम्बन्ध में। दूसरे यूनिट्स के सम्बन्ध में। सेन्द्रल स्टेटिन्टिकल आर्गता-इजेशन और प्रवेशों के जो अधिकारी होते हैं उनकी एक मीटिंग होती है जिसमें परिभाषाओं, संग्रह तथा संकलन आदि की विधि में एकता लाने की कोशिश होती है और उनके अनुसार काम होता है। टेक्निकल एडवाइजरी कमेटी बनी हुई है जिगमें सबका प्रतिनिधित्व है। में समझता हं कि श्रव कोई वेषम्य नहीं होगा।

श्री राजनारायण—जो कास्ट-श्राफ-ितिया इन्टडेक्स बनता है उसके लिए सरकार कौनसा श्राषार साल मानती है जिस को श्राधार मान कर यह चढ़ाय व उतार का श्रन्दाज करती है?

डाक्टर सम्पूर्णानन्त-पहले तो बराबर १६३६ माना जाता था, श्रव शायद बदल गया है, लेकिन में उसे बतला नहीं सकता।

राजकीय बुनाई शिक्षण केन्द्र, श्रानन्दनगर

\*४७—श्री गौरोराम गुप्त (जिला गोरखपुर)—क्या सरकार कृपा कर बतायेगी कि राजकीय बुनाई शिक्षण केन्द्र, श्रानन्वनगर, जिला गोरखपुर, में ६ विसम्बर, १६५७ से ३१ विसम्बर, १६५८ तक कितने लोगों ने बुनाई की शिक्षा पायी ? प्रश्नोत्तर ६२७

\*४८—क्या यह सही है कि उपरोक्त शिक्षण के लिए १४ माह का कोर्स (टाइस) था जो बीच ही में तोड़ दिया गया? ग्रगर हां, तो क्यों?

\*४६—क्या सरकार यह भी बताने की कृपा करेगी कि उपरोक्त राजकीय बुनाई शिक्षण केन्द्र के ट्रेनिंग में कितना रुपया व्यय हुन्ना है ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा-सूचना एकत्र की जा रही है।

## चीनी मिल मजदूर संघ, कटनी, से समझौता

\*५०-श्री उग्रसेन (जिला देवरिया) ( अनुपस्थित) —क्या पुरुव सन्त्री कृपया बतायेंगे कि क्या चीनी मिल मजदूर संघ, कटनी, जिला देवरिया ने दिनांक २२-१२-४६ की मिल मालिकों को कोई हड़ताल की नोटिस दी थी? यदि हां, तो उनकी मांगें क्या थीं?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—जी नहीं। नया चीनी मजदूर संघ ने दिनांक २४-१२-५६ को एक हड़ताल-नोटिस सेवायोजकों को दी थी जिसमें दी गयी मांगों की सूची संलग्न तालिका 'क' पर है।

(देखिये नत्थीः 'च' त्रागे पृष्ठ ६०७-६०८ पर)

\*५१—श्री उग्रसेन (ग्रनुवस्थित)—त्रया मिल मालिकों एवं 'संघ' में कोई समझौता उक्त हड़ताल नोटिस के दियें जाने के बाद हुग्रा? यदि हां, तो उसकी शर्तें क्या थीं ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द-जी हां। समझौते की शर्ते संलग्न तालिका 'खं पर हैं।

( देखिये नत्थी 'छ' स्रागे पृष्ठ ६०६-६१० पर)

\*५२-५४--श्री देवकीनन्दन विभव (जिला ग्रागरा)--[३१ मार्च, १६६० के लिए स्थिगत किये गये।]

## श्रलीगढ़ जिले में विकास सेवा खण्ड खोलने की योजना

\*५५—श्री नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ (जिला ग्रलीगढ़)—क्या मुख्य मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि ग्रलीगढ़ जिले में श्रागामी ग्रप्रेल मास से कौन-कौन समग्र विकास सेवा खंड खुलेंगे श्रीर शेष कब तक खुल जायेंगे?

श्री सुल्तान ग्रालम खां—वांछित सूचना संलग्न है। (देखिये नत्थी 'ज' ग्रागे पुष्ठ ६११ पर)

श्री नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ—क्या माननीय मुख्य मन्त्री बतलाने की कृपा करेंगे कि कम-संख्या १६-सासनी छाया क्षेत्र में बड़े परिश्रम से सिचाई, कृषि उन्नति, निर्माण तथा विकास कार्यों में सबसे श्रीधक पिछड़े हुये क्षेत्र को विकसित किया है, तो क्या जनता के प्रोत्साहन के लिए इस क्षेत्र को प्राथमिकता देने की कृपा करेंगे?

श्री सुल्तान श्रालम खां—इसके लिए कुछ नियम हैं। जिनको प्रायिष्टी दी जाती है उनके लिए सबसे पहले इर्रीगेशन पोटेंशियल सामने रखी जाती है। दूसरे, यह भी देखा जाता है कि किस जिले में कितने ब्लाक्स खुल चुके हैं। ये तमाम चीजें देखने के वाद नये ब्लाक खोलने का विचार किया जाता है। अगर इन शर्तों को पूरा कर दिया गया तो जरूर खोला जायणा।

श्री नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ—क्या सरकार ने ऐसे ग्रादेश दिये हैं कि जो क्षेत्र सिंचाई ग्रीर कृषि प्रतित में सबसे ग्रधिक विकसित हुये हैं उन क्षेत्रों में विकास सेवा खंड खोलने की प्राथमिकशा दी जाय? यदि हां, तो क्या सासनी उनमें ग्राता है?

श्री सुल्तान श्रालम खां—मंने पहले सवाल के जवाब में भी यह बतलाया था कि जहां इर्रीगेशन पोटेन्शियल ज्यादा है उन ब्लाक्स को खोलने में हम प्रायरिटो देंगे। इसके श्रलावा किस जिले में कितने ब्लाक्स देंगे यह इस चीज पर निर्भर करता है कि वहां कितने खुल चुके है श्रीर कितने खोले जाने हैं। श्रगर ये शर्ते पूरी होंगी तो जरूर ब्लाक खुल जायगा लेकिन इस वक्त में नहीं बतला सकता हूं कि कितने ब्लाक्स खुलेंगे।

\*५६--श्री नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ--[हटा दिया गया।]

\*५७--श्री नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ--[३१ मार्च, १९६० के लिए स्थिगत किया गया।]

### इण्डस्ट्रियल कालोनी, नेनी

\*४=-श्री कल्याणचन्द मोहिले--अया सरकार काया बतायेगी कि इलाहाबाद में (नेनी) उन्हरिद्रयल कानोनी में पित्रने कारणाने प्रोर किन-किन सामानो के बनाने के चल रहे हैं ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा--- श्राह्म त्या संलग्न तः । (देश्यि नत्थी 'ल' प्रागे पण्ड ८१२ पर )

श्री कल्याणचन्द मोहिले—भ्या सरकार वतनाने की क्या करेगी कि नैनी इन्ड स्ट्रियच प्रिया में बहुत स कारणाने ऐ । ह जिन्हाने मशीन पठा नी है और सरकार से लोन भी लिया ह लेकिन अब तक चालु नहीं है ! यदि हो, तो क्यों ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा -- किसी उद्योग है जाने है पहले जिन-जिन चीजों की जरूरत होती है उन सबहे जराने भित्रकार होता है। बिजर्ना की भी पहले वहां पर दिक्कत थी। ऐसे ही फर्ट कारण थे जिन ही बजर स उत्था काम जाता नहीं हुआ। लेकिन श्रव में समझता है कि वहां के करीब-फरीब मनी कारणाने बहुत संद्रित चान हो जायेगे।

श्री करयाणचन्द मोहिले—स्वात्तर गार वास्ति । मा हरेगी कि कितने कारवाने ऐंगे हैं और वे कब तह तान मार्थेंगे ?

श्री हेमजतीनन्दन बहुगुणा ---- श्रीमा, शारता शा है नाम तो जा संनम तातिका मान-नीय सात्रय हो दो गयी है उपमाहिकेता। अब हो। हार माना किस तारीता में चालू होगा यह अन्यन्त्रयन्य कहना निकृत्त ।

### रोजनल ट्रांस्पोर्ट ग्राफिमर्स तथा हरदोई मोटर ग्रापरेटर्स के विरुद्ध शिकायतें

\*५६--श्री मोहनलाल वर्मा (जिला हरदोई)--ग्या सरकार प्रान्त के Regional Transport Officers के नाम तथा कितने बयो से उस स्थान पर है बताने का कव्ट करेगी?

श्री धर्मदत्त वैद्य-वांदित सूनना गंनान है।

(देखिये नत्थी 'ङा' ग्रागे पृत्ठ ६१३ पर )

\*६०—श्री मोहनलाल वर्मा——क्या सरकार के पास हरदोई प्राइवेट मोटर श्रापरेटर्स के विरुद्ध ये शिकायतें श्रायी है कि ५० प्रति शन परिमट किराये पर चलते हे श्रीर एक दो व्यक्ति के पास दस-इस श्रीर पन्द्रह-यन्द्रह परिमट किराये पर है? यदि हां, तो सरकार ने उस पर क्या कार्यवाही की ?

भी धर्मवत्त वैद्य--जी हां। शिकायत की जांच हो रही है।

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी—-क्या माननीय मन्त्री जी बताने की कृपा करेंगे कि कौन से रीजनल ट्रांसपोर्ट ग्राफिसर्स सबसे ग्रधिक ग्रपने स्थान पर हैं ग्रौर कौन रीजनल ट्रांसपोर्ट ग्राफिसर्स सबसे कम समय के लिए श्रपने स्थान पर हैं?

श्री धर्मदत्त वैद्य---सबसे ग्रधिक समय से जो ग्रपने स्थान पर हैं, वे हैं लखनऊ रीजन में सन् ५७ से, ग्रौर जो सब से कम समय के हैं वे हैं गोरखपुर रीजन के जो सन् ६० में नियुक्त किये गये हैं।

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी—क्या माननीय मन्त्री जी बताने की कृपा करेंगे कि ट्रांसपोर्ट नियमों में कुछ ऐसे नियम भी हैं कि एक ट्रांसपोर्ट ग्रफसर ग्रधिक से ग्रधिक समय तक रह सकताहै ?

श्री धर्मदत्त वैद्य——यह जो नियम है, तीन वर्ष तक किसी स्थान पर एक ग्रधिकारी के लिए रखने का प्रयत्न रहता है ग्रौर ग्रधिक रहने पर उसकी वहां से स्थानान्तरित किया जाता है ग्रौर जो तीन वर्ष से ग्रधिक समय से ग्रयने स्थान पर है उनको स्थानान्तरित करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

१० मार्च, १६६० के स्थगित प्रश्न संख्या ५५-५७--(ऋमागत)

(कुमारी श्रद्धादेवी शास्त्री का नाम पुकारने पर ) †

श्री राजनारायण--कुमारी श्रद्धादेवी के प्रश्नों के बारे में हमें विलचस्पी है।

श्री उपाध्यक्ष——ग्रापने प्रश्न उठाया था तो मैंने व्यवस्था दी थी कि प्रश्न लिये जायेंगे। लेकिन नाम पुकारने पर माननीय सदस्या नहीं हैं, तो ऐसी दशा में वे कैसे लिये जा सकते है ?

श्री राजनारायण—श्रीमन्, मेरा निवेदन यह है कि माननीया श्रद्धा देवी जी के प्रश्नों के बारे में हमने, नारायणदत्त जी ने, पालीवाल जी ने, सभी ने लिखकर भेज दिया था कि हमारी दिलचस्पी है।

श्री उपाध्यक्ष——ग्राव बैठिये; मैं ग्रापको बताऊं। इस समय माननीय सदस्या नहीं ह। ग्रनुपस्थित सदस्यों के जो प्रश्न होते हैं वे कार्यवाही में छाप दिये जाते हैं। इसके ग्रनावा उन पर ग्रीर कोई कार्यवाही नहीं होती।

ं श्री रामस्वरूप वर्मा—श्रीमन्, जब ग्रापने बुलाया था तो वह सदन में मौजूद थीं। जब उनको पहली बार पुकारा तो वह खड़ी हो गयीं। इसके माने हैं कि प्रश्न तो हाउस के सामने ग्रा चुका ग्रौर हम लोगों की दिलवस्पी का प्रश्न नहीं है। वह तो ग्रा चुका।

श्री उपाध्यक्ष—जिस समय प्रश्न श्राया तो उन्होंने कहा कि मैं विदड्रा करना चाहती हूं। मैंने कहा कि ठीक है, विद्ड्राभ्रल परिमटेड। राजनारायण जी ने प्रश्न उठाया, तो मैंने कहा कि लिये जायेंगे। लेकिन जब उनकी बारी भ्रायी तो वह ऐबसेंट हैं। ऐसी हालत में वह ऐबसेंटी हो गर्यी।

श्री गोविन्दसिंह विष्ट---यही सवाल हमारे लग चुके हैं, ग्रल्पसूचित तारांकित प्रश्न की तरह। ग्रापके कार्यालय में हम भेज देंगे। वे ले लिये जायं।

<sup>†</sup>इस समय कुमारी श्रद्धादेवी ज्ञास्त्री उपस्थित नहीं थीं।

## |मुख्य मंत्री द्वारः १० मार्च, १६६० के स्थगित प्रक्त| सभा सचिवों के बुलन्दशहर के दौरे पर व्यय

'५५--कुमारी श्रद्धादेवी शास्त्री (जिला मेग्ड) (ग्रनपरियत)--क्या सरकार कृपा कर बतायेगी कि १ सितम्बर,१६५६ से लेकर १५ जनवरी, १६६० तक उत्तर प्रदेश के किन-किन सभा मन्वि। ने ललनऊ से तलन्दशहर का दौरा किया ग्रीर कितना धन दी० ए०, ती० ए० में ग्रलग-ग्रलग प्रत्येक सभा मन्त्रिय पर दण्य हुआ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—वाहित सुन्तना का विवारण नदन हो भेज पर रस दिया गया

#### (देगापे नत्ना 'ख' शागे पाठ ८१४-६१४ पर)

'४६—-कुमारी श्रद्धादेवी शास्त्री (श्रवणित्यत) - - वया रायकार कृपा कर बतायेगी कि राज्य सभा सचिवों ने कितने-कितने दिन जिला धानन्यशहर में १ शिवाबर, १९५९ से १४ जनवरी, १९६० तक सरकारी गाड़ियों का श्रानग-श्रानग उपयोग किया तथा प्रत्येक उक्त गाड़ियों पर, जो सभा सिवयों हे उपयोग में रही, कितना-कितना धन पेट्रोल पर व्यय हुन्ना?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—वाहित मूचना का विवरण सदन की मेज पर रख दिया गया है।

#### (देग्यिये नत्थी 'ट' श्रामे एष्ठ ६१४-६१५ पर )

ै ५७-कुमारी श्रद्धावेवी शास्त्री (ग्रन्पान्थत)—क्या सरकार कृपा कर बतायेगी कि उक्त सभा सच्चि जिला बलन्वशहर में ग्रन्तरिम जिला परिषद के हाक बंगते पर रहे और क्या उन्होंने श्रपने ठहरने का कोई किराया श्रदा किया श्रीर श्रपने ठहरने के दौरान में कितने ट्रंक काल उन्होंने सरकारी लन्नें पर किये?

डाक्टर सम्पूर्णानन्व—शांखित सूचना का वियरण सवन की मेज पर रल दिया गया है।

(देग्विये नत्थी 'ट' भ्रागे पृष्ठ ६१४-६१५ पर )

## तारांकित प्रश्न--(क्रमागत)

### श्रोद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्रों में श्रनुसूचित जाति के प्रशिक्षार्थियों को सुविधाएं

रदश—श्री रामदास श्रार्य (जिला मृजयफरनगर)—गया मृण्य मन्त्री बताने की छुपा करेंगे कि उत्तर प्रदेश में कहां-कहां श्रीद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र है ; उनमें श्रन्स्चित जाति के जिलायियों को क्या-क्या गुविधायं प्राप्त है ?

श्री हेमवतीनन्वन बहुगुणा—श्रीद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र उत्तर प्रदेश के प्रत्येक जिले में स्थापित है, जिनकी 'सूची (सूची नं०१) सदन की मेज पर रख दी गयी है।

जहां तक सृविधाम्रों का प्रश्न है, श्रनुसूचित जाति के शिक्षांथयों को प्रवेश एवं छात्रवृत्ति देने में प्राथमिकता वी जाती है।

\*६२—श्री रामदास श्रार्य—क्या सरकार बताने की कृषा करेगी कि प्रदेश के श्रीद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्रों पर किन-किन उद्योगों की शिक्षा दी जाती है तथा प्रत्येक उद्योग सीखने की भिन्न-भिन्न श्रविष क्या है ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—जिन-जिन लघु उद्योगों में शिक्षा दी जाती है उनकी तालिका (सूची नं०२) सदन की मेज पर प्रस्तुत है। साबुन तथा टाट पट्टी उद्योगों को छोड़ कर जिनका शिक्षण काल ६ मास है, शेष सभी उद्योगों के लिए प्रशिक्षण श्रविध एक वर्ष है।

#### (देखिये नत्थी 'ठ' ऋागे पृष्ठ ६१६ पर)

श्री रामदास श्रार्य--क्या मंत्री जी हरिजनों की श्रार्थिक दशा को देखते हुये उचित समझते है कि उनको रहने श्रीर यातायान की सुविधा दी जाय?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—मान्यवर, जो सुविधायें सबको दी जाती है वे इनको भी दी जाती हैं।

श्री रामदास ग्रार्य--क्या मंत्री जी बतायेंगे कि हरिजन सहायक बोर्ड में श्राद्यासन दिया था कि हरिजनों को २० प्रति शत स्थान प्रत्येक प्रशिक्षण में सुरक्षित किये जायेंगे, उस पर वह विचार कर रहे हैं ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—वह बात तो इंडिस्ट्रियल ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट के सिलिसिले में थी।

\*६३-६५-श्री **ऊदल** (जिला वाराणसी)--[३१ मार्च, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।]

#### ग्रयाना में सेवालण्ड खोलने की प्रार्थना

\*६६--श्री सुखलाल (जिला इटावा)--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जिला इटावा तहसील और या में जो ग्रयाना ब्लाक तोड़ दिया गया है, उसे वह फिर चालू करने का विचार कर रही है? यदि हां, तो कब तक?

श्री सुल्तान श्रालम खां--ऐसा कोई प्रश्न सरकार के विचाराधीन नहीं है।

श्री मुखलाल—क्या सरकार बतायेगी कि जब हर जिले में नये ब्लाक खुल रहे हैं तो श्रयाना में न खुलने का क्या कारण है ?

श्री सुल्तान श्रालम खां—इटावा जिले में १५ व्लाक थे। उनमें से श्रायना व्लाक भी था। बाद में यह खयाल श्राया कि जमुना नदी इसको दो हिस्सों में तकसीम करती है। इसलिये कुछ गांवों को एक ब्लाक में मिला दिया गया श्रीर कुछ को दूसरे ब्लाक में मिला दिया गया। दूसरे, जिला परिषद् ने भी कोई सिफारिश नहीं की कि श्रजसरे नी इसको नया कायम कर दिया जाय। इसलिये ऐसा कोई सवाल सरकार के जेरे गौर नहीं है।

### संचालक, उद्योग विभाग, के कार्यालय से कुछ कर्मचारियों का हटाया जाना

\*६७—श्री गौरीशंकर राय—क्या मुख्य मंत्री बतायेंगे कि पिछले तीन महीनों के ग्रन्दर संचालक, उद्योग विभाग, के कार्यालय में कितने लोगों को एक महीने की नोटिस देकर सेव। से मुक्त किया गया है ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा--सात लोगों को।

\*६८--श्री गौरीशंकर राय--क्या सरकार इन कर्मचारियों की एक तालिका सदन की मेज पर रखेगी कि प्रत्येक कर्मचारी की सेवायें कितने-कितने साल की थीं?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—वांछित तालिका संलग्न है। (देखिये नत्थी 'ड' ग्रागे पृष्ठ ६१७ पर) \*६६--श्री गौरीशंकर राय--त्र्या यह भी सही हे कि श्रक्षिक श्रविध से काम करते हुये लोगों को निकाला गया श्रीर श्रमेक्षाकृत कम दिन से काम करने वाले कार्य कर रहेहें ?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा--जी हां।

श्री गौरीशंकर राय—स्या मंत्री जो बतायेंगे, जेमािक उन्होंने उत्तर मे कहा है, कि कुछ लोग ऐसे हं जिनकी सेवायें ४, ५, ६ साल को है, उनको हटा दिया गया है श्रीर कम श्रविष के लोग काम करते हैं; तो ऐसा क्यों किया गया कि ज्याया श्राध्य के लोगों को हटा दिया गया श्रीर कम श्रविष के लोगों को नहीं हटाया गया ?

श्री हेमबतीनन्दन बहुगुणा — इस र्हा पूरी जिम्मेदारी संचालक उत्तीग की है। इससे उत्तर प्रदेश सरकार का सी या सम्बन्ध नहीं हो। कियी की श्रवं ल श्रायेगी तो उन कारणों की जांच करेगे। इस वक्त हम जरूरी नहीं समझने कि उन कारणों की वंग।

१७०--श्री कोतवालसिंह भवीरिया (जिना फर्गणाबाद) -- | ३१ मार्च, १६६० के लिये स्थागत गिया गरा। |

# उरई-जगम्मनपुर ब्रम सर्विम

े७१—राजा वीरेन्द्रशाह (जिला जालोन) - प्राामंत्रः परिवह्न कृष्या बतायेगे कि जिला जालोन में उरई-जनसमतपर सहक पर चनाने के निये कितनी प्राइवेट बसों को परिमट दिया गया है ?

परिवहन मंत्री (डाक्टर सीताराम) --उन्हें से जनम्यनार के लिये वो स्वीकृत मार्ग हु। इनने से उर्ह-जालीन-पायोगक्-जगम्मनार मार्ग पर ४ प्राइवेट बसों की श्रीर उर्हे, क्ररनांव-श्राहीली-इमरी-जगम्मनार मार्ग पर १ प्राइवेट बस की परीमट वियागवा है।

\*७२--राजा वीरेन्द्रशाह--१या सरकार को जात है कि उपरोक्त बसों में से कितार बसे नित्य उपरी-जगमनवर तक चलती है ? यदि नहीं, तो क्यों ?

डाक्टर सीताराम - -प्रो बसे प्रति दिन उपई में जनम्सनगर, जालोन, मधोगढ़ होकर श्रीर एक बस उपई से जनम्मनगर, करुरगांव, श्रहीलो होकर चलती है।

\*७३—राजा बीरेन्द्रशाह—गा सरकार कृतवा वतायेगा कि क्वा जालीन जिले में जालीन-उमरी सड़क पर पड़ते वाले ग्राम गीवृत के निवासियों ने की दिवस्थारा इम श्राव्य की वे रामी है कि उनके गांव की श्राबाबी ५,००० होते हुवे भी राम पर बस नहीं किनी है? यदि हां, तो का सरकार उक्त सड़क के दल महत्वपूर्ण स्थान पर बस पाड़ी फरने का श्रादेश उक्त पड़क पर बस नाने वालों को बेर्ग ?

**डाक्टर सीताराम** -- जी हो । क्षेत्रीय परिवहन क्रिय गरि गानिपुर इन भामले की जांच कर रहे हैं ।

# श्रनेहरा तथा भैरोंपुर बस स्टाप

\*७४--श्री हरकेशबहादुर (जिला प्रतापगढ़) -- स्था मंत्री परिवहन कृपया बतायेंगे कि श्रतेहरा बस स्टाप प्रतापगढ़-कालाकांकर रूट में कब से चालू हुआ?

डाक्टर सीताराम--जनवरी, १६४८ में हो श्रावित की प्रार्थना-वस-स्टाप घोषित कर विया गया था।

\*७५-श्री हरकेशबहाबुर--श्या मंत्री परिवहन कृपया बतायेंगे कि भेरोंपुर बस स्टाप या स्टेशन प्रनापगढ़-पट्टी रूट पर कितने लोगों को बैठने के लिये मुसाफिरलाना है ? प्रक्रोत्तर द३३

डाक्टर सीताराम--भैरोंपुर में मुसाफिरखाना तो नहीं है, लेकिन यात्रियों की सुविचा के लिये एक कमरा किराये पर ले लिया गया है।

## जुडीशियल मैजिस्ट्रेट्स

\*७६--श्री शिवराजबहादुर (जिला बरेली)--क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि इस वक्त समस्त प्रदेश में कुल कितने जुडोशियल मैजिस्ट्रेट काम कर रहे हैं?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--२११।

\*७७--श्री शिवराज बहादुर--उपरोक्त मैजिस्ट्रेटों में ते कितने ऐमे मैजिस्ट्रेट हैं जो तीन साल से अधिक कार्य करने पर भी अभी तक confirm नहीं हुये है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--२१।

## रोजगार दक्तरों में नामों की रजिस्ट्री

\*७८--श्री कोतवार्लासह भदौरिया--क्या सरकार बताने की छुपा करेगी कि जनवरी सन् ५६ से ३१ जनवरी सन् ६० तक कितने व्यक्तियों ने उत्तर प्रदेश के रोजगार दफ्तरों में नाम रजिस्टर कराया है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--ऐसे व्यक्तियों की संख्या ४,२१,००० हैं।

## पचपेड़वा में सेवा खण्ड खोलने की योजना

\*७६--श्री दशरथप्रसाद (जिला गोंडा) -- क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि क्या जिला गोंडा तहसील बलरामपुर के पचपेड़वा तप्पा में एन० ई० एस० ब्लाक खुलने जा रहा है? यदि हां, तो कब तक ?

**डाक्टर सम्पूर्णानन्द** — जी हां। पचपेड़वा में ब्लाक खुलेगा लेकिन इस समय यह बताना सम्भव नहीं है कि यह ब्लाक कब तक खुलेगा।

## छिबरामऊ ब्लाक की इमारतें न बन सकना

\*८०--श्री [कोतवालसिंह भदौरिया--क्या मुख्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि फर्रुखाबाद जिले में खिबरामऊ ब्लाक को प्रारम्भ हुये ३ साल हो गये है, लेकिन श्रभी तक इसकी इभारत नहीं बनी है, उसका क्या कारण है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—-उचित भूमि जल्दी न मिलने तथा कई बार टेन्डर मांगने पर भी कोई टेन्डर न श्राने व ईंट मिलने में कठिनाई होने के कारणों से छिबरामऊ ब्लाक की इमारतें श्रभी तक बन कर तैयार नहीं हो सकी हैं।

### मिनिस्टीरियल सर्विस ऐसोसिएशन की मांगें

\*द१-श्री कल्याणचन्द मोहिले--क्या सरकार कृपया बतायेगी कि क्या वित्त मंत्री के निवास स्थान पर तारीख २३-२-६० को यू०पी० नान गजटेड कर्मचारियों ने प्रदर्शन किया था? यदि हां, तो इनकी क्या-क्या मांगें थीं तथा सरकार ने उन पर क्या कार्यवाही की ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--उत्तर प्रदेश फेडरेशन श्राफ मिनिस्टीरियल सर्विस एसोसियेशन के कर्मचारियों ने वित्त मंत्री के निवास स्थान पर तारील २३ फरवरी, १९६० की प्रदर्शन किया था। उनकी मांगें निस्नलिखित थीं--

१--द्वितीय वेतन एवं सेवा श्रायोग की स्थापना ;

२--राज्य कर्मचारियों की नौकरी की शतों एवं वेतन ढांचे में बुनियावी परि-वर्तन। ३--- प्रन्तरिम काल में प्रदेश के राज्य कर्मचारियों क महंगाई भत्ते में बृद्धि।

चूंकि उक्त संस्था को सरकार हारा भान्यता नहीं ह. इतिये उसकी मार्गो पर विचार नहीं किया गया।

उत्तराखंड मण्डल का निर्माण तथा सीमावर्ती विधायक संघ के सुन्नाव

\* दर-श्री गोविन्दिसिंह विष्ट--ग्या सरकार बतान की कृषा करेगी कि कुमायूं के तीन नये जिले बनाने का ऋधार का है? इनकी नीमाये क्या है श्रीर क्या सरकार इन्हें बढ़ाने पर विचार कर रही हैं?

डाक्टर सम्पूर्णानन्व—सोमान्त क्षेत्र में प्रशासन व्यवस्था को सब्द बनाने तथा विकास कार्यक्रम की प्रगति के हेन तीन नये जिलों का निर्माण किया गया है। इन जिलों की सीमाओं का विवरण गजट एक्स्ट्राम्नाडिनरी दिनाक २४-२-५० में दिया गया है, जिसकी प्रतिलिप सदन की मेज पर रख दी गयी है। राज्य सरकार का इन जिलों की सीमाओं में भ्रभी कोई परिवर्तन करने का विचार नहीं है।

\*=३--श्री गोविन्वसिंह विष्ट--त्रया सरकार की ज्ञात है कि सीमावर्ती विषायक संघ सर्वदलीय है श्रीर उसने सीमावर्ती जिलों की बाबत सरकार से १६५६ में व १६६० में मांगे पेश की हैं? श्रगर हां, तो वे क्या है ?

डाक्टर सम्पूर्णीनन्व--पीमायती विधायक संघ सर्वयनीय है कि नहीं, इस सम्बन्ध में सरकार के पास कोई स्वना नहीं हु। संघ ने अपने विनाक २४-११-५६ के पत्र में सीमावतीं जिलों की समस्यात्रों के बारे में कुछ स्भाव प्रस्तत किये थे। उक्त पत्र से सुझाव सम्बन्धित उद्धरण संलग्न है।

(बेलिये नत्यी 'क' मार्गे पुष्ठ ६१८ पर)

\* =४--श्री हिम्मतसिह--[दसर्वे बुववार के लिये स्विगत किया गया।]

## मांसी में सब-रीजनल ट्रान्सपोर्ट भ्राफिस खोलने का निर्णय

\*=४--श्री; लक्ष्मणराव कदम--वया सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि उसने श्रीसी में श्रीसस्टेंट ट्रांसपोर्ट श्रक्सर का वक्तर खोलने का निक्तय किया था? यवि हां, तो कब श्रीर धभी तक उसके न खुलने का क्या कारण है?

डाक्टर सीताराम—१ प्रप्रैल, १९५६ से झांसी में सब-रीजनल ट्रांसपोर्ट प्राफिस लोलने का निर्णय किया गया था पर श्रसिस्टेंट रीजनल ट्रांसपोर्ट श्राफिसर (टेक्निकल) के पद के लिये योग्य व्यक्ति न मिलने के कारण श्रभी तक यह दफ्तर नहीं खोला जा सका है। शीघ्र ही श्राफिसर की नियुक्ति का प्रबन्ध किया जावेगा।

### गोरखपुर रोडवेज क्षेत्र में मुझलल कर्मचारियों को बहाल होने पर वेतन

\* द६—श्री उग्रसेन—क्या मन्त्री परिवहन कृपया बतायेंगे कि गोरखपुर रोडवेज क्षेत्र में १-१-४० से ३१-१२-४६ तक कितने मुग्रसल कर्मचारियों को बहाल होने पर मुग्रसली का बेतन मिला है श्रीर कितना? क्या मन्त्री परिवहन कृपया यह भी बतायेंगे कि क्या कुछ ऐसे भी मुग्रसल कर्मचारी उक्त ग्रवधि में बहाल हुये जिन्हें उनका बेतन नहीं मिला है? यदि हां, तो उन्हें वेतन न मिलने का क्या कारण है?

र् प्रतिलिपि छापी नहीं गई।

प्रश्नोत्तर द३५

डाक्टर सीताराम--गोरखपुर रोडवेज क्षेत्र में १-१-५० से ३१-१२-५६ तक १५२ मुम्रत्तल कर्नचारियों को बहाल होने पर ६७,४०८ ६० १४ म्राना ६ पाई मुम्रतानी का वेतन मिला ।

उनत श्रविध में केवल ४ ऐसे मुश्रत्तल करंचारी बहाल किये गये जिन्हें कोई मुश्रत्तली का वेतन नहीं दिया गया। इनमें से ३ ऐसे कर्मचारी थे जिन्होंने बहाली के पहले ही लिखित श्राद्यासन दिया था कि वे श्रयने श्रनुलम्बित समय का वेतन नहीं मांगेगे क्योंकि उक्त समय मे ये लोग दूसरी जगह कार्य करते थे श्रीर वहां से इस विभाग से श्रीधक पैमा पा चके है।

चौथे व्यक्ति को मुग्रसली का वेतन इसलिये नहीं दिया जा सका क्योंकि उसकी बहाली का ग्रादेश कार्यालय को ज्ञात उसके पते पर हस्तगत नहीं हुग्रा।

#### सरकारी बसों के नवीन मार्ग

\*द७--श्री कोतवालिंसह भदौरिया--क्या मन्त्री परिवहन यह बताने की कृपा करेगे कि सरकार ग्रागामी वित्तीय वर्ष में कौन-कौन से मार्गों पर जिनमें प्राइवेट बसें चलती है सरकारी बसें चलाने का विचार कर रही है ?

डाक्टर सीताराम—प्रागामी विसीय वर्ष में जिन मार्गों के राष्ट्रीयकरण का विचार है उनकी सूची संलग्न है।

(देखिये नत्थी 'ण' म्रागे पृष्ठ ६१६ पर)

## नैनीताल जिले में नर-भक्षी चीता ]

\* ८८--श्री प्रतापसिंह--क्या मुख्य मंत्री के पास कोई ऐसी शिकायत ग्राई है कि जिला नैनीताल में कोई Man-Eater लगा है ? यदि हां, तो कब से ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--गत नवम्बर मास से श्रव तक चीते द्वारा मनुष्यों पर दो-तीन हमलों की रिपोर्ट मिली है, किन्तु इस पशु के man-eater हो जाने के विषय में कोई निश्चित प्रमाण नहीं है।

\* ८६--श्री प्रतापिसह--त्रया मुख्य मंत्री कृपया यह भी बतायेंगे कि उपरोक्त मैन-ईटर ने म्रब तक कितने मनुख्यों का संहार किया है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--चीते द्वारा तीन व्यक्तियों के मारे जाने की सूचना मिली है।

\* १०--श्री प्रतापिसह--क्या मुख्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि उपरोक्त मैन-ईटर को मारने की क्या व्यवस्था की गई ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—चीते के मनुष्य पर हमला करने की पहली सूचना मिलते ही उसे मारने की कोशिश की गई और भ्रब वह मारा भी जा चुका है। कुछ ग्रन्य स्थानों से चीतों द्वारा जानवरों को उठा ले जाने की भी सूचना मिली है। वहां भी शिकारियों को लगा दिया गया है। वन विभाग द्वारा भी कार्यवाही की जा रही है।

#### चीनी उद्योग से ग्राय

\*ह१—श्री क्रजनारायण तिवारी—क्या मुख्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि चीनी उद्योग से प्रदेश को पिछले वर्ष में निम्न प्रकार की मदों से कितनी ब्राय हुई ब्रौर चालू वर्ष में कितनी ब्राय होने की संभावना है ——(१) चीनी के उत्पादन शुल्क से, (२) चीनी की एक्साइज ड्यूटी से, (३) खांडसारी के उत्पादन तथा एक्साइज शुल्क से, (४) गन्ना परिषदों को कमीश्चन के रूप में तथा (५) केन सेस के रूप में ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—चीनी उग्रोग रो इस प्रदेश को निर्विष्ट मदों के श्रन्तर्गत सिवाय उन मदों के जो केन्द्रीय सरकार से गंबंधित हैं श्रोर जिनके श्रन्तर्गत होने वाली श्राय की सूचना श्रद्धप समय में देना सम्भव नहीं है, पिछने वर्ष में हुई श्राय तथा चालू वर्ष में होने वाली श्राय का विवरण संलग्न तालिका में दिया हुश्रा हैं।

(देखिये नत्थी 'त' श्रामे पाठ ६२० पर)

#### रोडवेज विभाग में प्रतियोगिता परीक्षा

ैहर—श्री श्रब्दुल रऊफ लारी—निया सरकार वसावे की कृपा करेगी कि रोडवेज विभाग में करडवटर, प्रिंग क्लकं, करांके अवि जगहों के लिये भूनाई, १९५६ में कोई प्रतियोगिता परीक्षा हुई थी ? यदि हां, तो उसमें गुन कितने उम्मीरवार प्रश्ने वे श्रोर कुल कितने उत्तीण हुये ?

डाक्टर सीताराम—एतर प्रवेश राजकीय भाउवंज में जुलाई, १९५६ में कंडक्टर, बुकिंग क्लफं, जूनियर क्लकं ख्रोर क्लीनर हंडक्टरां के पदों के जिये श्रीतारीमिता परीक्षाये केवल दहरात्म, रायबरेगी, जीरो रोड, उलाहाबाद, मराजाबाद डिपंग, आहजहांपुर टिपो ख्रीर गोरखपुर रोजन में हुई थीं।

उपत गरीक्षाओं में जितने उग्मेदबार अरीक हुये श्रोर जो उत्तीर्ण हुये उनकी संख्या निम्न-लिगित हे :

		ञ री	फ होने वालों की संस्था	सफल
(१) जूनियर क्लर्क				
देहरादून	• •	* *	३८६	४२
(२) कंडवटर —				
(भ्रा) राय बरेली	• •	• •	६	Ę
(ब) गोरत्वपुर रीजन	• •	• -	२	१
(स) जीरो रोख	* *	• •	३ ३	२०
इलाहाबाद रीजन —				
(३) क्लीनर-कम-कंडक्टर —				
(ग्र) मुरावाबाद	• •	, .	१५	9
(ब) ग्राहजहांपुर	* *	• •	१२	१२

\*६३—श्री ग्राब्युल रऊफ लारी—क्या मंत्री परिवहन यह बताने की कृपा करेंगे कि उनके उपरोक्त विभाग में इससे पहले उसीण हुये उम्मीदवारों की भी कोई लिस्ट है जो काम पाने की श्राक्षा में श्रव तक बेकार बैठे हैं ? यदि हां, तो वह कितने श्रादिमयों की लिस्ट है श्रीर उनमें से किस विधि से लोग नौकरों में रखे जाते हैं ?

डाक्टर सीताराम—उपरोक्त स्थानों में से केवल रायबरेली धौर गोरखपुर रीजन में क्रमज्ञः १६ और १६२ व्यक्तियों की पुरानी वेटिंग लिस्टें हैं। उनमें से नियुक्ति ज्येष्ठता (सीनियारिटी) के झाथार पर होती है किन्तु परिगणित जाति के स्यक्तियों भौर स्वातंत्र्य संग्राम के सैनिकों को नियुक्ति में प्राथमिकता वी जाती है। प्रश्नोत्तर ५३७

### कानपुर में कलेक्टरगंज रोडवेज बस स्टेशन की स्थिति

\*६४—श्री लक्ष्मणराव कदम—क्या मंत्री परिवहन यह बताने की कृपा करेंगे कि क्या उनके पास इस ग्राशय की शिकायतें ग्राई हैं कि कानपुर में कलेक्टर गंज रोडवेज बस स्टेशन बहुत तंग जगह व बहुत ही व्यस्त क्षेत्र में होने के फलस्वरूप बस के यात्रियों व उधर से ग्राने जाने वाली जनता को बसों के यातायात से बड़ी रुकावट व ग्रमुविधा होती है ?

## डाक्टर सीताराम-जी हां।

#### ावकास ग्रधिकारी

\*६५—श्री गौरीशंकर राय—क्या मुख्य मंत्री कृपया बतायेंगे कि प्रदेश के कितने स्थानापन्न सहायक तथा क्षेत्रीय विकास भ्रधिकारी हैं जो हाई स्कूल पास नहीं हैं?

\*६६—स्या मुख्य मंत्री कृपया बतायेंगे कि प्रदेश में कुल कितने स्थानापन्न सहायक तथा क्षेत्रीय विकास ग्रधिकारी हैं ग्रौर वे कितने-कितने दिनों से कार्य करते ह?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द-- खेट है, सूचना स्रभी एकत्र नहीं हो पाई है।

एक-बुकिंग-क्लर्क वाले फर्रुखाबाद जिले के बस स्टेशन

\*९७—श्री कोतवालिंसह भदौरिया—क्या मंत्री परिवहन यह बताने की कृपा करेंगे कि रोडवेज फर्रलाबाद में कितने ऐसे बस स्टेशन हैं जिन पर सिर्फ एक कर्मचारी (बुकिंग क्लर्क) रहता है ?

डाक्टर सीताराम — इस प्रकार के ६ बस स्टेशन हैं। परिवहन ग्रायुक्त कार्यालय में लिपिकों की परीक्षा

\*६८—श्री जंगबहादुर वर्मा—क्या मंत्री पिरवहन बताने की कृपा करेंगे कि जो पिरवहन स्रायुक्त कार्यालय से विभागीय लिपिकों की परीक्षा १६५६ में हुई उसमें कोई परीक्षा-प्रश्न-पत्र परीक्षा के पूर्व स्राउट हो गया था? यदि हां, तो क्या इस संबंध में कोई जांच की गई थी?

## डाक्टर सीताराम—जी हां।

\*६६—श्री जंगबहादुर वर्मा—क्या मंत्री परिवहन बताने की कृपा करेंगे कि परिवहन श्रायुक्त कार्यालय द्वारा सन् १६५६ में लिपिकों का परीक्षा—फल घोषित होने के उपरान्त कितने श्रनएप्रूच्ड लोग रक्खे गये श्रीर क्यों ?

डाक्टर सीताराम--१०, जिनमें ७ अब भी काम कर रहे हैं। एप्रूटड लिस्ट समाप्त हो जाने के बाद छुट्टी इत्यादि के रिक्त पद भरने के लिये अनएप्रूटड लोगों के रखने की आवश्यकता हुई।

## मेरठ रोडवेज डिवीजन में कण्डक्टरों व ड्राइवरों की सुविधायें बढ़ाने की प्रार्थना

\*१००—श्री गयाप्रसाद (जिला प्रतापगढ़)—क्या मंत्री परिवहन को ज्ञात है कि मेरठ रोडवेज डिवीजन के (ग्र) कन्डक्टरों व ड्राइवरों को रीजनल वर्दी ग्रभी तक नहीं मिली है, (ब) उन्हें न तो पेन्शन मिलती है ग्रौर न फन्ड ही मिलता है, ग्रौर (स) तथा उनके उहने को कोई व्यवस्था भी नहीं है ग्रौर न मकान का भत्ता ही मिलता है?

डाक्टर सीताराम -- (प्र) हेनन कुट नम हाउनले आर कडक्टरों को छोड़कर हो। सभी की विद्या मिली हुई है।

- (ब) प्रदन विचारायीन है।
- (स) अस प्रकार की सर्विता देते का प्रकारिकाराधीन नहीं है।

रोडवेज क्षेत्र, स्राजमगढ़ में कर्मचारियों का बकाया वेतन व भता

\*१०१—श्री श्रीनाथ (जिला श्राप्तमन्त्) -- न्या सरकार बताने की कृपा करेंगी कि श्राजमगढ़ यार्नमेन्द रोज्येज रीजन के कितन कमंचारिये। की वेतन बृद्धि श्रीर यात्र भत्ता कितने ययों ने बकाया हे प्रार प्रयंतक नहीं क्रिया गया ?

। डाक्टर सीताराम—राजकीय रोष्येज प्रायमगढ में ७४ वर्मचारियों की वेतन-वृद्धि तथा २२ कर्माचारियों का याता भसा बकाया है। इसका विवरण निम्न प्रकार है:--

कब में सकाया ह				_ कर्मचारियों की संख्या	
				बंतन वृद्धि	यात्रा भता
	* *	* *	* *	8	
• •	• •	**	• •	3	***
• •	- •	* *	• •	¥.	9
	• •	• •		<b>४</b> ६	१२
	• •		* *	39	ş
		و مرضاح المناول والمناول والمناول والمناولة والمناول المناول المناولة والمناولة المناولة المن	ny privondra Marian — Afer — migra elimpia depaular ay upa.	profile of their species among spinors because annual security sum.	
	त्राया ह  				वितन युद्धि

\*१०२-श्री श्रीनाथ-क्या सरकार बताने की कृषा करेगी कि ये भत्ते ग्रभी तक क्यों नहीं दिये गये ? क्या इसका निबदारा शीध्र करने की व्यवस्था की जा रही है ? यदि हां, तो यह कब तक हो जायगा ?

उाक्टर सीताराम—उक्त कर्मचारियों में से १३ को वेतन यृद्धि का भगतान इसिलये नहीं हो सका क्योंकि उनकी निजी पत्रायली उपलब्ध नहीं थी। जेप ६१ कर्मचारियों की वेतन वृद्धि का भगतान इसिलये नहीं हो सका क्योंकि उनकी निजी पत्रायलियों तथा सर्विस सुकों में कृद्ध कमियां पाई गई।

भत्ते का भुगतान न होने का कारण यह है कि बहुत से कर्मचारियों ने बिल देर में प्रस्तुत किये श्रीर शेष के बिलों में श्रुटियां पाई गई।

इन बिलों के जीव्र भुगतान के निये प्रयत्न किया जा रहा है।

#### फरेंदा मध्य क्षेत्र में विकास कार्य

- \*१०३—श्री गौरीराम गुप्त—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि फरेंदा सहसील (गोरवपुर)में विकास कार्य के बारे में विधान सभा के २४-१२-५३ के तारांकित प्रक्न संख्या ३७ में प्रथम पंचवर्षीय योजना में गोरवपुर जिले के फरेंदा मध्य क्षेत्र में जो निम्नलिखित विकास कार्य होने वाले थे उसमें से ३१ विसम्बर, १६५६ तक कौन-कौन से विकास कार्य हो चुके हैं और कौन-कौन विकास कार्य बाको एह गये हैं:—
- (१) कृषि, (२) पशुपालन, (३) शिक्षा, (४) सार्वजनिक निर्माण,(५) जन स्वास्थ्य, (६) सहकारिता, (७) गृह उद्योग ?

## डाक्टर सम्पूर्णानन्द--वांछित सूचना संलग्न तालिका में दी हुई है।

(देखिये नत्थी 'थ' स्रागे पृष्ठ ६२१–६२३ पर )

## विलय राज्य समथर का कोष तथा बिजली न होने की शिकायत

\*१०४—श्री लक्ष्मणराव कदम—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि समथर (झांसी) उत्तर प्रदेश में कब विलीन हुई थी श्रौर उस समय क्या वहां पर विजली रोशनी चालू हालत में थी ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—समयर (झांसी), उत्तर प्रदेश में दिनांक २५ जनवरी, १६५० को विलीन हुई थी। वहां पर बिजली की रोशनी के संबंध में स्थिति का सत्यापन किया जा रहा है।

\*१०५--श्री लक्ष्मणराव कदम--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि समथर के उत्तर प्रदेश में विलीन होते ही उस इमारत में से एक बिजली का इंजिन जिसमें ग्राज कल थाना है पुलिस उठा ले गई थी ग्रौर उसे ग्रभी तक वापस नहीं किया गया तथा वहां बिजली की रोशनी ग्रभी तक भी बन्द है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--सूचना एकत्र की जा रही है।

\*१०६—श्री लक्ष्मणराव कदम--क्या सरकार यह बताने की क्रुपा करेगी कि उक्त समथर के विलोनी करण के समय उसे वहां के खजाने से कितना रुपया प्राप्त हुन्ना था?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—मांगी गई सूचना एक तालिका में दी गई है जिसकी प्रति सदन की मेज पर रख दी गई है।

(देखिए नःथी 'द', ग्रागे पृष्ठ ६२४ पर)

## गोरखपुर रोडवेज क्षेत्र में नियुक्तियां

\*१०७—श्री मुक्तिनाथराय—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि राजकीय रोडवेज रीजन गोरखपुर में १९४८ व १९४९ में कुल कितने कन्डक्टर, जूनियर क्लर्क, बुकिंगः क्लर्क श्रौर ए० टी० ग्राई० नियुक्त किये गये ?

डाक्टर सीताराम-वांछित सुचना संलग्न है।

देखिये नत्थी 'घ' ग्रागे पृष्ठ ६२५ पर )

\*१०८--श्री मुक्तिनाथराय-उपरोक्त नियुक्तियां कब-कब की गर्यों, कितनी नियुक्तियां चुनाव बोर्ड द्वारा की गर्ड ग्रीर कितनी उच्च ग्रधिकारियों द्वारा ?

डाक्टर सीताराम—उपरोक्त नियुक्तियां जनवरी, १९४८ से दिसम्बर, १९४९ तक विभिन्न तिथियों में की गई ।

सहायक जनरल मैनेजर क्न्डक्टर पद के नियुक्ति ग्रिधिकारी हैं ग्रौर जनरल मैनेजर, जूनियर क्लर्कों ग्रौर ग्रिसिस्टेंट ट्रैफिक इन्सपेक्टरों के नियुक्ति ग्रिधिकारी हैं। उपरोक्त सभी नियुक्तियां सम्बन्धित नियुक्त ग्रिधिकारियों द्वारा की गईं।

\*१०६—श्री मुक्तिनाथराय—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि रोडवेज रोजन गोरखपुर में उक्त पदों के चुनाव करने के लिये चुनाव बोर्ड की कब-कब बैठकें हुई श्रीर उन चुनाव बोर्डों में कौन-कौन सदस्य थे ?

## डाक्टर सीताराम—-प्रांतित सूचना संलग्न है। (देतिये नाथी 'न' प्रागे पण्ड ६२६ पर )

# उत्तर काशी जिले में श्रोद्योगिक श्रास्थान खोलने के श्रादेश 💎

\* ११०—-श्रीमती विनयसक्ष्मी सुमन—क्या गत्य मंत्री रूपया बतायेंगे कि दितीय पंचसाला योजना के दोप काल के अन्वर सरकार का जिला दितरो-गढ़वाल के अन्वर स्थानया उद्योग गोलने का इरादा है प्रोर ये उद्योग गोल-स्थानेंगे ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द- योजना के दोन काल में सरकार देहरी-महत्वाल में एक श्रौद्योगिक श्रास्थान (Industrial Petate ) स्थापित कर रही है, जिसक प्यादश जारी हो चुक है। देहरी-गढ़वाल के उस भाग में, तो श्रव उत्तर कार्या जिल्ला भौतित कर दिवा है, १० जल चर्ला श्रोर चार कलाश्रों में द्रोनग-कम-श्रोद्यशन फन्द्र (Irannor-cum-Production Centre) चालू किये जायेगे। श्रास्थानों का निर्णय श्रभी तही हुआ है।

\* १११—श्रीमती विलयलक्ष्मी सुमन— क्या मन्य मनी कवया बतायेगे कि क्या उनके सामने टिहरी गढ़वान के देवप्रयाग क्षत्र के प्रत्यत कृत न भाग क्यानके का सक्षाय श्राया है ? यदि हो, तो इन साम में की श्रयत मनाने के दिया मन्तर कर कर कर तन क्या किया है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द---अ। हा । "त्योग सन्ताल । इन सम्राज्य पर विचार कर

# नियोजन कार्यालय, खोरी में क्नशं का इण्टरव्यू

्११२—श्री शिवशमाद नागर नागर नागर अनान की कम करेगी कि ज्या जिला जीरी के ज्यानिय जाफिन म दिनाक २६ जन करें। १६६० का वन की का उन्दरत्य हम्राथा? यदि हो, तो कितने प्रायीय फोर डन्टरन्य म रितन नाग न भाग रिया?

जाक्टर सम्पूरणिनन्द-- भी हा। ४५ प्रार्थि भिनम मे ३६ ।।मा ने उन्टरस्यू में भाग लिया।

\*११२--श्री शिवप्रसाद नागर-- स्या सरवार कापना यह अनायेगी कि जनत इन्टरच्यू में कितनों के पास इस्पनायमन्द एक्सचन का कार भा चीर विनेता के पता नहीं है

डाक्टर सम्पूर्णानन्व--१५ हाम्यध्यां के वाल एक्टनायमन्त एक्सचेज का कार्ड या और लेव २४ रूपस नहीं था।

# जंगल बेलवा तथा देशई देविंग्या केन्द्रों में गन्ने की बिकी रकना

\*११८--- श्री सजनारायण तिवारी--- क्या सत्य गर्था यह जनान की कृषा करेंगे कि क्या शुगर सिल, बेलालपुर देवरिया के गन्ना विकास कन्द्र, अंगन थेनचा तथा देवई देवरिया को गन्ना जल्पावकों ने गत ३१ जनवरी से गन्ना बेजना बन्द कर विवा है? यहि हां, लो क्यों ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्त--भी नहीं। गम्ने की बिकी केवान २ फरवरी से १० फरवरी तक बन्द रही।

\* ११५—-श्री अजनारायण तिवारी—-ग्या मध्य मंत्री त्री को इस बात की सूचना है कि उक्त पर्चे जिंग सेस्टर की गर्मा उत्पादकों के गर्मा न बेचने की सचना केन कमिश्तर, उत्तर प्रदेश, को तार द्वारा दी गई हैं ? यदि हां, मो कब और उस पर क्या कार्यवाही अब तक की गई हैं ?

डाक्टर सम्पूर्णीनन्द--जी हां, दिनांक २-२-६० को कथित क्रय केन्द्रों को गन्ना किसानों के गन्ना न बेचने की सूचना गन्ना श्रायुक्त को तार द्वारा प्राप्त हुई थी। लेकिन गन्ना ग्रधिकारी के बीच में पड़ने पर मिल इन कय केन्द्रों पर १२ नए पैसे प्रति मन की दर से शुरू सीजन से ढुलाई कटौती काट कर १ रु० ५० न० ५० प्रति मन के हिसाब से गुन्ने की कीमत दने को राजी हो गई। दोनों केन्द्रों पर ११-२-६० से गन्ना ऋय सुचार रूप से हो रहा है।

## गोरखपुर, देवरिया तथा बस्ती जिलों में खुलने वाले उद्योग केन्द्र

\*११६--श्री उग्रसेन--क्या मुख्य मंत्री कृपया बतायेंगे कि गोरखपुर, देवरिया तथा बस्ती जिले में राज्य सरकार द्वारा द्वितीय पंचवर्षीय योजना में कौन कौन से उद्योग चाल किये गये हैं?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--द्वितीय पंचवर्षीय योजना काल में गोरखपुर, बस्ती तथा देवरिया जिले में उद्योग की उन्नति हेतु खोले जाने वाले केन्द्र निम्नलिखित है:--

१---म्राविकसित क्षेत्र विकास योजना के भ्रन्तर्गत--

- (क) महिला सिलाई केन्द्र;
- (ख) रंगाई छपाई केन्द्र।
- २--सघन विकास योजना के श्रन्तर्गत--
  - (क) बटन उद्योग केन्द्र;
  - (ख) सिलाई केन्द्र।

३--- ग्रौद्योगिक श्लिक्षालय योजना के ग्रन्तर्गत---

- (क) सिलाई केन्द्र;
- (ख) चर्म कला केन्द्र;
- (ग) बटन उद्योग केन्द्र;
- (घ) वस्त्र बुनाई केन्द्र; (ङ) काष्ठ क्ला केन्द्र;
- (च) लोहारी केन्द्र ।

४---खादी उद्योग ।

५--चर्म उद्योग ।

६--हस्त करघा वस्त्र उद्योग।

७--गुड़ उद्योग ।

द--- प्रन्डी रेशम ( Ericulture ) उद्योग ।

६--रेशम उद्योग ( Sericulture ) ।

वस्त्र चिह्नांकन योजना ( Quality Marking Depot for १०—करघा Handloom Fabrics)

११—विभिन्न उद्योगों की सहकारी समितियों का संगठन ।

## रायबरेली जिले में पूराने गजटेड ग्राफिसर्स

\*११७--श्री गुप्तारसिंह (जिला रायबरेली)--त्र्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जनपद रायबरेली में कितने गजेटेड ग्राफिसर ऐसे हैं जिनकी, ग्रवधि राय बरेली में रहते हुये ३ साल या इससे ऊपर हो चुकी है?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द-नौ।

#### चोनी मिलों का उत्पादन

\*११८--श्री उग्रसेन--त्या सरकार कृपया बतायेगी कि प्रदेश की सभी चीनी मिलों में पथक् पृथक् १४ दिसम्बर, १९५९ लगायत २० दिसम्बर, १९५९ तक रोजाना कितना गन्ना अपरीदा गया, कितना गन्ना पेरा गया तथा कितनी चीनी बनी?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द - -सूचना एकत्र की जा रही है। प्रथम तथा द्वितीय श्रेणी के विकास खंडों में प्रारम्भिक स्वास्थ्य केन्द्र

\*११६--श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी (जिला झांसी)--ग्या मरकार यह बताने की कृपा करेगी कि प्रदेश में कौत-कौत स्थानों पर प्रथम प्रक्रम (सध्य विकास प्रक्रम) और कौत-कौत से द्वितीय प्रक्रम (सधनोत्तर विकास प्रक्रम) चल रहे हैं ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—प्रवेश में इस समय जो प्रथम व दितीय श्रेणी के खण्ड चल रहे हैं उनकी सूची (तालिका † "क") मेज पर रख वी गयी हैं।

\*१२०--श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी--श्या सरकार यह बताने के कृपा करेगी कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना के ब्रन्तर्गत कितने प्रारम्भिक स्वारथ्य केन्द्र प्रथम प्रक्रमों में स्थापित करने का निश्चय किया गया था?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--३११ प्रयम प्रकर्ना में प्रारम्भिक स्वारथ्य केन्द्र स्थापित करने का निश्चय किया गया था।

\*१२१--श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी--श्या सरकार यह भ। बताने की कृपा करेगी कि उक्त निश्चय के श्रानुसार किन-किन प्रथम प्रक्रमों में भार मिक रवास्थ्य केन्द्र स्थापित किवे जा चुके है, श्रीर वित्तोय वर्ष १६६०-६१ तक किनने श्रीर किन-किन प्रथम प्रक्रमों में उक्त स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित किये जायेगे?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—१५ प्रथम प्रक्रमों में प्रारम्भिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा १६४ प्रथम प्रक्रमों में एलोविधिक चिकित्सालय (जो कि प्रारम्भिक स्वास्थ्य केन्द्र के ग्रंग है) स्थापित किये जा चुके हैं। शेव १०२ प्रथम प्रक्रमों में वित्तीय वर्ष १६६०-६१ तक एलोविधिक चिकित्सालय स्थापित हो जाने की सम्भावना है। इन खण्डों की एथक पृथक सुचियां (तालिकार्यें ''ख'', "ग" तथा "ध") प्रस्तुत है।

गौड ट्वाय फैक्टरी, फजलगंज, की कर्ज के लिए दरख्वास्त

\*१२२—श्री राजनारायण—क्या सरकार बताने की क्रूपा करेगी कि गौड द्वाय फैक्टरी, फजलगंज, कानपुर, की श्रीर से ४ हजार रुपये कर्ज की परख्वास्त २६-११-५६ की डाइरेक्टर श्राफ इन्डस्ट्रोज की वी गई श्रीर डाइरेक्टर श्राफ उन्डस्ट्रोज की वी गई श्रीर डाइरेक्टर श्राफ उन्डस्ट्रोज के ४ हजार रुपये के कर्ज देने की सिफारिश यू० पी० फाइनेन्शल कार्परिशन, कानपुर, से की, जिसमें कारकाने की इमारत के लिये २० हजार रुपये, मशीनरी के लिये १ द हजार रुप्ये, तथा बाकिंग कीपटल के लिये १० हजार रुपये की की?

\*१२३— क्या यह सही है कि यू० पी० फाइनेन्शियल कार्पोरेशन ने ४८ हजार रुपये के बजाय ३० हजार रुपये का लोन, जिसमें १३ हजार रुपये जमीन व १७ हजार रुपये फेक्टरी की बिल्डिंग के लिये था, मंजूर किया तथा मशीनरी व विका के पिटल के लिये रुपया नहीं मंजूर किया और जमीन वाले १३ हजार रुपये में से ८ हजार रुपया डेंगलपमेंट बोर्ड, कानपुर, की पहले का कर्ज, जो रहाइशी मकान के सम्बन्ध में लिया गया था, सीध वे विया गया?

<sup>†</sup>वालिकायें छापी नहीं गईं।

प्रश्नोत्तर ५४३

\*१२४—-त्रया यह भी सही है कि इस कम्पनी द्वारा ३०-६-५८ को फैक्टरी बिंडिला पूरी करने के लिये एडीशनल लोन का १० हजार रुपये को दरख्वास्त डाइरेक्टर इंडस्ट्रीज को दी गई थी जो स्रभी तक मंजूर नहीं हुई है? यदि हां, तो किस कारण ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--ग्रावश्यक सूचना एकत्र की जा रही है। बढ़नी तथा इटवा विकास खंडों में सिचाई के कार्य

\*१२५—श्री रामलखन मिश्र (जिला बस्ती)—-श्या सरकार कृपा कर बतायेगी कि जिला बस्ती के विकास खण्ड, बड़नी तथा इटवा में सिवाई योजना में कौन-कौन से कार्य स्रव तक किये गये या किये जा रहे हैं?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--मांगी गई सूचना संलग्न है। (देखिये नत्यी 'प' श्रागे पृष्ठ ६२७ पर)

### कानपुर में खनिज परीक्षण केन्द्र तथा ग्रल्मोड़ा में ग्रौद्योगिक ग्रास्थान खोलने की योजना

\*१२६—श्री रामदास स्रार्य—क्या मुख्य मन्त्री के समक्ष कोई ऐसी योजना है जिसके स्रन्तर्गत प्रत्येक जिले में या स्रनुभव के तौर पर कुछ जिलों में घरेलू लघु उद्योग धन्धे जैसे चमड़े, मूत, ऊन, लकड़ी, घातु, कांच, चोनी स्रादि से उत्पादित वस्तुश्रों श्रीर गुड़ के बिक्री केन्द्र खोले जायें जिनमें उनके उत्पादकों को उनकी वत्तुश्रों का ७५ प्रति शत मूल्य वस्तु के केन्द्र पर स्राते ही स्रौर शेष २५ प्रति शत वस्तु की बिक्री के पश्चान् प्राप्त हो सके ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--जहां तक उद्योग विभाग का सम्बन्ध है, ऐसी कोई योजना सरकार के समक्ष नहीं है।

\*१२७—श्री रामदास स्रार्य—क्या यह सही है कि सरकार १६६० व १६६१ में कुछ ग्रौद्योगिक परीक्षण केन्द्र तथा ग्रौद्योगिक ग्रास्थान खोलन की व्यवस्था कर रही है? यदि हां, तो ये कहां-कहां खोले जावेंगे?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--जी हां। सन् १९६०-६१ में खनिज परीक्षण हेतु एक पाइलट प्लाण्ट एच० बी० टी० ग्राई० कानपुर में तथा एक ग्रौद्योगिक-ग्रास्थान ग्रल्मोड़ा में खोलने का ग्रायोजन किया जा रहा है।

# देवरिया जिले में उद्योग विभाग से सहायता

\*१२८—श्री दीपनारायणमणि त्रिपाठी (जिला देवरिया)— क्या सरकार कृपया बतायेगी कि देवरिया जिले में उद्योग विभाग से कितना घन ऋण के रूप में व कितना ग्रनुदान इस वित्तीय वर्ष में दिया गरा है ? यह घन किन-किन व्यक्तियों को कैसे वितरित हुग्रा है और क्या इसकी सहायता से कुछ उद्योग प्रारम्भ हो गये हैं ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द---ग्रावश्यक सूचना एकत्र की जा रही है। प्रतापगढ़ जिले में विकास मेलों पर व्यय

\*१२६--श्री हरकेशबहादुर--क्या सरकार कृप्या बतायेगी कि प्रत्येक विकास मेले में जिला प्रतापगढ़ में १६५६ के सितम्बर माह से फरवरी, १६६० तक कितना व्यय किया गया ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--वांछित सूचना संलग्न सूची में दी हुई है। (देखिये नत्यी 'फ', ग्रागे पृष्ठ ६२८ पर) \*१३०--श्री हरकेशबहादुर--क्या प्रतापगढ़ जिले में किसी छाया क्षेत्र में भी विकास मेला पिछले तीन सालों में लगाया गया?

### डाक्टर सम्पूर्णानन्द—जो नहीं।

\*१३१--श्री हरकेशबहादुर--क्या सरकार कृपया यह भी बतायेगी कि क्या उक्त जिलें के छाया क्षेत्रों में ३१ मार्च, १६६० तक कोई विकास मेला लगाने का विचार है ? यहि हां, तो कहां कहां ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द-जी नहीं ।

रोडवेज विभाग में नौकरी के लिए श्रनुसूचित जाति के उम्मीदवार

\*१३२—श्री रामदीन (जिना मैनप्री)—न्या सरकार यह बनाने की कृपा करेगी कि प्रदेश के रोडवेज विभाग में डिवीजनवार कितने-कितने तथा किम-किस पद के लिये १ जनवरी, १९५९ से ३१ जनवरी, १९६० तक प्रार्थना-पत्र प्रनसूचित जाति के उम्मीदवारों ने दिये ग्रौर उनमें कितने तथा किस-किस पद के प्रार्थना-पत्र कामयाब हुये?

डाक्टर सीताराम-वांखित सूचना । सदन की मेज पर रण दी गई है।

श्राजमगढ़ रोडवेज क्षेत्र में बस कण्डक्टरी के उम्मीदवार

१२३—श्री यमुनासिंह (जिला गाजीपूर)—पय सरकार बताने की छुपा करेगी कि इस समय धाजमगढ़ रोजन में बार कंडक्टरी पाने के लिये कितने प्रार्थना-पत्र वेटिंग लिस्ट में हैं?

डाक्टर सीताराम--१३६।

#### सीतापुर जिले की चीनी मिलों से सम्बन्धित गन्ने की ढुलाई का बकाया

\*१३४—श्री ताराचन्द माहेद्वरी—क्या माय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि सीतापुर जिले के अवस्र वागर मिल, हरगांव, लक्ष्मी शुगर मिल, महोली और सेक्सरिया शुगर फंक्ट्री बिसवां के गन्ने लरीदे जाने के वित्तीय वर्ष १६५७—५५ और १६५५—५६ में ऐसे कितने सेंटर रहे हैं जिनकी ढ़लाई (यातायात कटोती) उपरोक्त मिल वालों को वेनी पड़ी हैं? यह इलाई गन्ना उत्पादकों को कब दी गयी तथा कितनी धनरावि थी?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—गम्ना मिल वालों को दुलाई नहीं वेनी पड़ती बिक किसान जो रोड सेंटर पर गम्ना बेते है उन हे गम्ने के मूल्य से मिल दुलाई काटती है; मतः इस प्रश्न का बूसरा भाग भी नहीं उठता।

\*१३५—श्री ताराचन्द्र माहेदवरी—क्या यह सत्य है कि उक्त तीनों मिलों ने गन्ना के खरीद किये जाने वाले सेंटर से मिलों का फासला कम लिखकर गन्ना उत्पादकों को उक्त वर्ष में दुलाई बहुत कम दी है?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--- यह प्रदन भी नहीं उठता क्योंकि गन्ना उत्पादकों को दुलाई महीं दी जाती ।

<sup>ं</sup> पुचना खापी नहीं गई।

\*१३६—श्री ताराचन्द माहेरवरी—पिंद हां, तो क्या यह सत्य है कि ऐसे सेंटरों की नाप-जोल की गई है जिसके परिणाम स्वरूप लालों रुपये का गन्ना उत्पादकों का उक्त विसीय वर्ष का मिलों पर वाजिब निकलता है जिसे मिल वाले दे नहीं रहे हैं ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—यह प्रश्न भी इस रूप में नहीं उठता। भ्रलबत्ता १९५८-५९ सीजन में केवल हरगांव तया महोली चीनी मिलों ने भ्रपने कुछ रोड सेंटर्स से स्वीकृत दर से भ्रविक संलग्न तालिका में उल्लिखित ढुलाई की कटौती गन्ना किसानों के मूल्य से कर ली थी भ्रौर इस श्रविक कटौती की गई रकम को किसानों को लौटान का प्रश्न सरकार के विचाराधीन है।

(देखिये नत्थी 'ब' म्रागे पृष्ठ ६२६ पर)

#### गुड़, खांडसारी तथा राब उद्योग पर नियंत्रण

\*१३७—-श्री गेंदासिह—न्या मुख्य मंत्रो कृपा कर बतायेंगे कि गुड़, खांडसारी तथा राब उद्योग पर प्रतिबन्ध लगाने वाले सरकारी श्रादेशों के विरुद्ध उच्च न्यायालय में कुछ मुकदमे दायर है।

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--जी हां।

' \*१३८—श्री गेंदासिह—उच्च न्यायालय ने सरकारी आदेश के विरुद्ध जो निर्णय विया है उसको देखते हुये सरकार उक्त उद्योगों का किस प्रकार नियन्त्रण कर रही है?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द---उक्त उद्योगों का नियन्त्रण उत्तर प्रदेश खांडसारी शक्कर निर्माताग्रों को लाइसेंस देने की ग्राज्ञा, १९६० तथा निम्नलिखित ग्रिधिनियमों के ग्रन्तर्गत किया जा रहा है---

१---उत्तर प्रदेश गन्ना उपकर (संशोधन) ग्रिधिनियम, १६६०, तथा

२---उत्तर प्रदेश गन्ना(पूर्ति तथा खरीद विनियमन) (संशोधन) श्रिधनियम, १९६०।

\*१३६—-श्री गेंदासिह—क्या मुख्य मंत्री कृपया बतायेंगे कि जिलाधोशों, किमश्नरों, कप्तान तथा एस० डी० एम० को क्या घोड़े की सवारी करने से मना कर दिया गया है? यदि हां, तो कब से ग्रीर क्यों?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--जी नहीं।

#### खांडसारी का उत्पादन

\*१४०—श्री जगदीशशरण श्रग्नवाल (जिला बरेली)—क्या उत्तर प्रदेश सरकार के श्रन्तर्गत या उनकी जानकारी में केन्द्रीय सरकार के श्रन्तर्गत कोई ऐसी एजेन्सी है या पिछले दस वर्षों में रही है जो उत्तर प्रदेश में प्रति वर्ष खांडसारी शक्कर के उपज के श्रांकड़े रखती रही है?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--जो नहीं।

\*१४१—श्री जगदीशशरण स्रग्नवाल—क्या सरकार उत्तर प्रदेश में पिछले दस वर्षों में प्रतिवर्ष उत्यादित खांडसारी शक्कर का स्रनुमान बताने की कृषा करेगी?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—वांछित सूचना १९४८-४९ से लेकर १९५७-५८ तक की संलग्न है। श्रागे की सूचना उपलब्ध नहीं है।

(देखिये नत्थी 'भ' श्रागे पुष्ठ ६३० पर)

### श्रतारांकित प्रश्न बदायूं जिले में कुग्रों की बोरिंग

१--श्री उल्फर्नासह (जिना बहायं)--म्या सरकार कृत्या बतायेगी कि जिला बदायं ने १९५७-५८ में फितने रुपये कृत्रों का बारिंग्न के लिये श्रीग्रम जमा हुये उनमें से फितने बोरिंग हुये, १९५८-५९ में कितने क्याये जना हुये ग्रोर कितने बोरिंग हो सके?

डाक्टर सम्पूर्णानन्व---पूचना एकत्र की जा रही है।

## प्रतिनिहित विधायन समिति का चतुर्थ प्रतिवेदन "

श्री मदनमोहन (जिना फंनाबाद) -- प्रादरणाय उपाध्यक्ष महोदय, में प्रापकी प्राज्ञा से प्रतिनिहत विधायन समिति के सभागति को हेिनयन ने इस समिति का चतुर्थ प्रतिवदन सदन के समक्ष प्रस्तुन करता हूं।

इस सम्बन्ध में में दो-एक बानें मानतीय सरहयों के समक्ष रखता चा ता है। सबसे पहने तो में श्रांदरगाय सरन का ध्यान इन प्रतिवेदन का श्रोर विवेद कर से श्रांकिवत करूंगा कि ३४ पुष्ठ के प्रतिवेदन में २० पृष्ठ इप सान के सरहयों ने सम्बन्धित ह--- परस्यों ने, मंत्रिमंडल से, श्राध्यक्ष श्रीर उराध्यक्ष से सम्बन्धित है। इस कारण मेरा सदन से निवेदन होगा कि इस प्रतिवेदन का विशेष हर से श्रांच्यत करके श्रांने विचार निदिचन करें।

बूसरी बात यह है कि समिति के सरस्यों की सन्तीय है कि सरकार द्वारा इस समिति के प्रतिवेदनों प्रोर मंन्तुतियों पर विशेष रूप से ध्यान दे कर विवार किया जाता है। संस्तुतियों के सम्बन्ध में गरकार से हमें जो राक्टाकरण प्राप्त हुए है, श्रांक कांग्र में सरकार सहमत हुई है। कुछ संस्तुतियां ऐसा है जिन के सम्बन्ध में सरकार अवहमा है। किन्तु संतीय यह है कि सरकार द्वारा जो उत्तर हमें प्राप्त हुत्रे हैं उनमें सरकार ने सनायान करने का प्रयत्न श्रपने कारणों से किया है, जिसके अवर सिमिति को विवार करना है।

तोसरी बात जो मुसे सरकार से निवेदन करना है वह यह है कि जो संस्तुतियां इस समिति के द्वारा भेजा जाता है सरकार को, उनके स्वब्दाकरण भेजने में बहुन विलस्ब होता है।

श्री उपाध्यक्ष--- प्रदन को बाई तरक, हाल में काका मानतात्र सदस्य लाबो का काम ले रहें,हैं। श्रगर काम ज्यादा हो तो लाबो में चले जायं।

श्री मदनमोहन—श्रोमन्, में निवेदन कर रहा था कि जो संस्तुतियां समिति द्वारा सरकार के पास भेजी जाती हैं उनके उत्तर में स्पष्टीकरण में बड़ा विलम्ब होता ह। इसमें इस बात की ग्राशंका रहती ह कि यदि नियम श्रुटिपूर्ण हों तो दीर्धकाल तक बिना ठीक किय हुए प्रभावी रहते हैं श्रीर हो सकता ह कि उनके कारण कुछ मुक्कदमों में कठिनाइयां पैदा हों या हो सकता है कि जो व्यक्ति उन नियमों से सम्बन्धित हों उनके श्रिषकारों पर उसका कुप्रभाव पड़े। तो मेरा निवेदन है कि चूंकि नियम भी विधि का प्रभाव रखते है ग्रीर गलत कान्न वीर्यकाल तक प्रचलित रहे यह उचित नहीं मालूम होता है, श्रतः सरकार से निवेदन यह है कि शोधातिशोध इन संस्तुतियों पर विचार किया जाय ग्रीर उनका स्पष्टीकरण भेजने की हुपा की जाय।

तीसरी बात मुझे यह कहनी है और वह एक साधारण-सी बात है कि कुछ विभाग ऐसे है जो अपना स्पष्टीकरण अब भी श्रंग्रेजी में ही भेजते हैं यद्यवि हमारी निकारिशें हिन्दी में होती हैं। श्रीमन्, समाज कल्याण मंत्री की श्रीर से श्रंग्रेजी में स्पष्टीकरण श्राये, यह कुछ श्रमंगत-सा मालूम होता है। परिवहन विभाग से भी श्रंग्रेजी में स्पष्टीकरण श्राते रहे है। मेरा

<sup>\*</sup>प्रतिवेदन छापा नहीं गया ।

ऐसा विचार है जब कि कैबिनेट ने भी हिन्दी में ही काम करने की घोषणा की है, इसलिए विशेष निवेदन है कि हिन्दी में हमारे पास सिफारिशों के स्पष्टीकरण ग्रायें तो ग्रधिक उपयुक्त होगा।

ग्रन्त में, श्रीमन्, एक बात ग्रौर कहनी है, ग्रौर वह यह है कि प्रायः जो भी नियम बनाये जाते हैं, वह जिस समय भी गजट में प्रकाशित हो जायं प्रभावी हो जाते हैं। लेकिन सदन के समक्ष वे बहुत विलम्ब से रखे जाते हैं। कुछ इस सम्बन्ध में साहित्य पढ़ते हुए मुझे यह मालूम हुग्ना कि इंगलैण्ड में जैसे, ग्रगर सदन के समक्ष ऐसी विज्ञिष्तियां विलम्ब स ग्राती हैं तो सरकार के लिए यह ग्रानिवार्य होता है कि उस विलम्ब का कारण बताये; ग्रौर यह भी शोचनीय बात हो जाती है जब देर पर देर हो जाती है। कुछ काल विलम्ब से तो सदन के समक्ष वह नियम ग्राते हैं, उसके पश्चात् विधायन समिति के समक्ष समय लगता है, जब संस्तुतियां दी जाती हैं ग्रौर फिर उन संस्तुतियों पर विचार करने में भी दीर्घकाल सरकार को लग जाता है, इसका मतलब यह हुग्रा कि हो सकता है कि नुटिपूर्ण नियम बहुत दिनों तक प्रभावी रहें जो ग्रनुचित है। इन शब्दों के साथ में इस प्रतिवेदन को सदन के समक्ष प्रस्तुत करता हूं।

श्री गोविन्दिसिंह विष्ट (जिला श्रल्मोड़ा)—व्यवस्था का प्रक्त है, माननीय उपाध्यक्ष महोदय। माननीय वर्मा जी ने जो एक बात कही कि इस ३४ पज की पुस्तिका में २० पृष्ठ हम लोगों से, यानी चेयर से, या सरकार से, या माननीय सदस्यों से सम्बन्धि हैं श्रौर सबसे महत्वपूर्ण यह श्राज तक की रिपोर्ट रही है। उन्होंने यह भी निवेदन किया था श्रापसे कि इस पर हम लोग सब विचार करें। तो विचार करने का मौका, श्रीमन्, घर में तो हुआ नहीं करता क्योंकि खुद पढ़ लिया श्रौर खुद विचार कर लिया तो यह तो कोई मानी नहीं रखता। इसलिए चूंकि यह बहुत महत्वपूर्ण रिपोर्ट है, माननीय नेता सदन भी राजी हो जायं तो कोई टाइम एक-दो घंटे का निकाल कर इसके ऊपर विचार करने के लिए दे दिया जाय।

श्री उपाध्यक्ष-- में माननीय मुख्य मंत्री जी से पूछ लूंगा ग्रौर यदि नियमों में कोई व्यवस्था होगी तो इस बात की व्यवस्था की जायगी।

श्री जगवीरसिंह (जिला बुलन्दशहर)— में ग्रापका ध्यान िःयम २१७ (३) की तरफ दिलाना चाहता हूं ग्रौर यह जानना चाहता हूं कि मिनिस्टर कंसर्न्ड जो हैं वह स्टेटमेंट ग्राज देंगे या बाद में देंगे इस रिपोर्ट के सम्बन्ध में ?

श्री उपाध्यक्ष—-ठीक है। यह नियम २१७ (३) में लिखा है जो श्रापने कहा है। मैं इस सम्बन्ध में सम्बन्धित मंत्री जो से जानना चाहता हूं कि वह कोई वक्तव्य श्राज देने के लिए तैयार हैं या बाद में देंगे?

मुख्य मंत्री (डाक्टर सम्पूर्णानन्द) — उपाध्यक्ष महोदय, में समझा नहीं। इसका सम्बन्ध तो शायद सभी मंत्रियों स होगा। तो कौन मंत्री बयान देंगे?

श्री उपाध्यक्ष--मेंने समझा कि माननीय मंत्रि ए को इसकी जानकारी होगी। लेकिन ग्रब चूंकि रिपोर्ट ग्राज ही ग्रायी है, इसका ग्रध्ययन पहले कर लिया जाय कि किसको ऐड्रेस किया जाय और उसके बाद जांच-पड़ताल करने के बाद मुख्य मंत्री से समय तय करके में मौका दे दूंगा।

### सदस्यों के सदन से चले जानें पर उनके प्रश्नों के लिये जाने के सम्बन्ध में व्यवस्था

श्री शिवप्रसाद नागर (जिला खोरी) — उपाध्यक्ष महोदय, मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है। नियमावली के नियम ३७ के अनुसार यदि किसी भी सदस्य की यहां पर उपस्थित प्रदर्शित हो जाय और कमानुसार उसके प्रश्नों की प्राथमिकता भी प्रकट हो जाय और ऐसी स्थित में वह सदस्य,

#### [श्री शिवप्रसाद नागर]

जब उनके ग्रनप्रक प्रश्नों के उत्तर का समय ग्रामे, उठ कर बाहर चले जायं, तो उस समय वह प्रश्न स्थिगित कर दिये जायंगे या वह प्रश्न हाउस में लिये जायंगे, जब कि उपाध्यक्ष महोदय की यह व्यवस्था हो चुकी हे श्रीर हाउस भी इस बात को नान चुका है कि ये प्रश्न सदन में ग्रवस्थ लिये जायंगे श्रीर उन पर श्रनुपुरक प्रश्न होगे?

श्री उपाध्यक्ष--- मं माननीय सबस्य से नियम जानना चाहता हूं कि जिस नियम के मुताबिक माननीय श्रध्यक्ष या उपाध्यक्ष किसी माननीय सबस्य को या सबस्या को बाध्य कर सकते हं कि वह सबन में जरूर मौजूद रहें। मैंने इस सम्बन्ध में व्यवस्था दी थी कि श्राप लोग इस पर पूरा विचार करें तब सब बाते स्पष्ट हो जायंगी।

## कार्य-स्थगन प्रस्ताव तथा नियम ५२ के भ्रन्तर्गत सूचनाएं

श्री उपाध्यक्ष- मेरे पास एक कामरोको प्रस्ताय श्री झारखंडे राय का ग्राया है। इस सम्बन्ध में माननीय झारखंडे राय जी मझ सं मिल ले। इसमें कछ बाते साफ नहीं है। इसको में कल के लिये रख देता हूं, उनसे बात करने के बाद यह लिया जायगा।

नियम ५२ के ग्रन्तर्गत तीन प्रस्ताव मेरे सामने उपस्थित है। उन तीनों प्रस्तावों में से एक भी ऐसा नहीं हैं जिसको स्वीकार किया जा सके। पहली प्रथा के श्रनुसार जेसी मैंने हिवायत वी थी श्रगर माननीय सदस्य श्रल्पमचित तारांकित प्रश्न उपस्थित करेगे तो में उनके लिये जो तारील निश्चित कर्लगा उसके श्रनुसार उस तारील तक श्रवश्य उनको उत्तर मिल जायगा इसके लिये में मंंत्र्यण से निवंदन कर चका हूं।

श्री जगवीरमिंह (जिला बु नवशहर)--- श्रीमन्, मे यह निशेदन · · ·

श्री उपाध्यक्ष --- ग्राप लोग इस पर विचार कर लें। मेरा नियेदन यह है कि उपाध्यक्ष जब एक व्यवस्था वे चुके तो फिर ग्राप विचार कर लें। तब उसके ऊपर विचार हो जायगा।

## सदस्यों को पार्टी के भ्रनुपात तथा उनकी संख्या के भ्रनुसार बोलने का भ्रवसर देने के सम्बन्ध मे व्यवस्था

श्री जगवीरसिंह (जिला ब्लन्वशहर) — श्रीमन्, मेरा निवेदन तो उस चार्ट के सम्बन्ध में हु जिलमें कल समय पार्टियों को बोलने के सम्बन्ध में श्रापने दिया था। समय के बटवार के सम्बन्ध में देखने से साफ जाहिर होता है कि प्रजा मोशालिस्ट पार्टी को, उसकी संख्या को देलने हुये कम समय मिल पाया है और मैंने समय-समय पर इस श्रीर श्रापका ध्यान दिलाया है। में चाहता हूं कि भीयच्य में कम से कम हमारी संख्या को देखते हुए हमको ठीक समय मिला करें।

श्री उपाध्यक्ष-- भ्रापकी मांग उपयुक्त है। में राजनारायण जो का बहुत श्रनुगृहीत हूं कि ऐसा प्रक्त यहां पर उपस्थित करके स्थिति की इस हाउस के सामने रखने का श्रवसर मिला। में भविष्य में इस बात का प्रयत्न करूंगा कि सदस्यों को पार्टी के श्रनुपात से, सदस्यों की संख्या के श्रनुसार, उनको मौका दिया जाय।

## मिश्रिख में श्री दधीचनाथ के मेले में श्रनधिकृत सिनेमा शो के कारण सरकारी श्राय में कमी के सम्बन्ध में नियम ५२ के श्रन्तर्गत मुख्य मंत्री का वक्तव्य

श्री उपाध्यक्ष-- अब माननीय शिव प्रसाद नागर के नियम ४२ के धन्तर्गत २२ मार्च १९६० के प्रत्ताव पर मुख्य मंत्री जी अपना वक्तक्य देंगे।

मुख्य मंत्री (डाक्टर सम्पूर्णानन्द)--उपाध्यक्ष महोदय, मुझको ऐसा लगता है कि माननीय सदस्य ने जो शिकायत की है उसका कारण यह है कि उनको ठीक-ठीक सूचना नहीं मिल सकी। उनका यह कहना सही है कि उस मेले में चार सिनेमा घर थे लेकिन यह उनकी सूचना गलत है कि उन सिनेमाओं से रुपया नहीं लिया गया और सरकार को रुपय का नुकसान हुग्रा, ऐसी बात नहीं ह। पहले नौ घुमते फिरते सिनेमा वालों ने दरस्वास्त की थी उस मेले में इजाजत के लिये लेकिन वक्त पर चार ही उपस्थित हुये। उन चारों को, जो वहां पर मेले के इञ्चार्ज सब-डिवीजनल नैजिस्ट्रेट हैं, उन्होंने डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट की ग्रनुमित ग्राने की ग्राक्षा से खेल करने की इजाजत दे दी। उन चारों से नियम के ग्रनुसार जमानत के तौर पर रुपया जमा करा लिया गया और जहां तक रुपये की वसूली की बात है, एक तो गोपाल सिनेमा था उससे ३०० रुपया जमा करा लिया गया ग्रौर उस पर जो इन्टरटेनमेंट टैक्स का जो ५७३ रुपया होता था वह भी जमा करा लिया गया। वह पुरा वसुल हो गया। जमानत ग्रौर टैक्स सब। एक दूसरा सिनेमा था राजा नाम का उससे ४०० रुपया जमा करा लिया गया। उस पर इन्टरटेनमेंट का टैक्स ६६० रुपया होता था वह पूरा वसूल हो गया। एक है मैजिस्टिक। उससे २०० रुपया जमानत का जमा कराया गया। ३१३ रुपया ७६ नयापैसा उससे इंटरटेनमेंट टैक्स काजो थावह पूराकापूरा वसूल हो गया। इसके प्रलावा एक है परवेश, उससे ५०० रुपये जमानत को जमा कराया गया ६०६ रुपये ४६ नये पैसे इंटरटेन गेंट टैक्स का हुआ। ६४४ रुपये ५६ नये पैसे उससे वसल हो चुना है और इस तरह से उस पर २७१ रुपये ६० पैसे बाकी है। लेकिन उसका ५०० रेपया सैक्योरिटी का जमा है स्रौर इसलिये उसके वसल होने में कोई दिक्कत नहीं होगी।

श्री उपाध्यक्ष—मं माननीय सदस्यों से यह ब्राज्ञा करता हूं कि जिस समय वे नियम ५२ या कार्य-स्थगन का प्रस्ताव यहां प्रस्तुत करें तो कही-सुनी बातों के ब्राधार पर वे प्रवन न उपस्थित किये जायं। माननीय नागर जी मुझसे मिले थे ब्रौर उन्होंने कहा कि २०,००० रुपये का दुरुप्योग किया गया है, तो मैने सोचा कि सचमुच में एक महत्व का प्रश्न है। भें समझता हूं कि इस तरह के जो प्रक्रन उठत है उनकी सच्चाई क बारे में पूरी जानकारी की जिम्मेदारी माननीय सदस्य को लेनी चाहिये।

श्री शिवप्रसाद नागर (जिला खोरी)— उपाध्यक्ष महोदय, प्रश्न यह है कि जब यह सिनेमा वहां लगाये गये तो उस समय उनको कोई परिमशन नहीं मिली थी और जब यह सिनेमा वहां से चले गये तो "बो" फार्म इन सिनेमाओं से इंटरटेनमेंट टैक्स इंस्पक्टर ने खयाल से ले लिया कि अगर कोई एतराज होगा तो "बं" फार्न पर कार्यवाही करके उसे दाखिल कर दिया जायगा। मै माननीय मंत्री जी से यह पूछना चाहता हूं कि जो रकम जमा की गयी है, क्या इंटरटेनमेंट टैक्स ऐक्ट के मुताबिक "बी" फार्म में जिस कम से जमा होनी चाहिये थी उसी कम से जमा हुई है या बाद में जमा हुई है इस प्रश्न के उठने के बाद? और अगर ऐसा नहीं हुआ है तो क्या वे इसकी जांच और उस पर कार्यवाही करने की कृपा करेंगे?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द—मेरे पास लिखित रिपोर्ट भी म्रायी थी पर म्राज सबेरे कलेक्टर से मैंन बातचीत भी की। उन्होंने बतलाया कि जो मैंने पहले बतलाया था, वह सही है। कलेक्टर की म्रनुमित माने से पहले सब-डिविजनल मैजिस्ट्रेट ने इन ऐंटोसिपेशन म्राफ दि सैंक्शन, हर साल जैसे सिनेमाम्रों को परमीशन मिलतो रही है कि कलेक्टर की म्रनुमित म्रा जायगी, म्रपनी तरफ से उन्हें इजाजत दे दी थी। लेकिन इसके म्रलावा म्रौर कोई भी कार्यवाही ऐसी नहीं हुई कि जो म्रिनियमित हो।

मुख्य मंत्री के विरुद्ध, प्रश्नों का उत्तर विलम्ब से देने पर,विशेषाधिकार की प्रवहेलना का प्रश्न उठाने की सूचना

श्री गेंदासिंह (जिना देवरिया) -- श्रोमन्, में दो मिनट में श्रानी बात कह हुंगा, इसफारु से मृत्य मंत्रों जो भा यहां है। में श्रापका श्रोर मृत्य मंत्री जी का ध्यान प्रश्न ३२ की श्रोर दिलाना चाहता हो। यह प्रश्न मेने जहां तक मझे याद हे " श्रल्प सूचित तारांकित" करके लेकिन सरकार ने उसको श्रस्यांकार कर दिया श्रीर १६ फरवरी को श्रापन उसे स्वीकार करके सरकार के पास भेज दिया। श्राज उसका उत्तर यह है, १ महीने प दिन के बाद, कि इस सम्बन्ध में सरकार के पास सूचना उपलब्ध नहीं है। में प्रवन में पूछ रहा हूं कि पंच-वर्षीय योजना में एम्प्लायमेंट का लक्ष्य क्या है श्रीर कहां तक वह पूरा हुश्रा है ? श्रिगर सरकार को यही सूचना देनी यो तो उसे अल्पस्चित तारांकित प्रदन को न तो इन्कार करने की जरूरत थी श्रौर ने यह १ महीने प दिन का समये हो लेने की श्रायक्यकता थी। यह सम्बन्ध रखता है माननीय मुख्य मंत्री जो से। मं बहुत दुःल के साथ इस बात को कहता हूं त्रोर इसके साथ श्राप से रक्षा चाहता हूं इस सदन के श्रीधकारों की। नियम ३१ के अनुसार २० दिन का श्रवसर उत्तर देने के निर्ये मिलना चाहिये सरकार को। श्रगर इस प्रकार को सूचना सरकार को देनी है तो १ महीना = दिन लगाने को श्रीर नियमों की श्रवहेलना करने को श्रावश्यकता नहीं है और अगर माननीय मह्य मंत्री जी का तरफ से नियमों की अवहेलना होती है तो हमारी रका नहीं हो सकती। इमलिये में अलियेस्ट अवार्चानटी लेता हं और माननीय मुख्य मंत्री के विरुद्ध सदन के प्रवमान का प्रदन उठाना चाहता है।

श्री उपाध्यक्ष --में रियात को देख ल्ंगा कि क्या है श्रीर उसके बाद माननाय मुख्य मंत्री से भी जांच पहताल करूंगा कि किन कारणों से इतनी देर लगी श्रीर फिर में सदन की सूचित करूंगा।

श्री नारायणदत्त तिवारी (जिना नैनीनाल)—श्रोमन, इस कार्यक्रम में एक दूसरा प्रकृत भी है जिसकी श्रोर में श्रापका प्यान श्राकवित करना चाहता हं . . . .

श्री उपाध्यक्ष—में माननीय उपनेता विरोधी वल में निवेदन करंगा कि मैने माननीय गेंवासिह जो की काफी व्ययता देली, इसिलये मैने विशेष तौर पर उनकी अनमित दी। मैने माननीय सबस्यों से निवेदन किया है कि वे इस प्रकार के प्रश्न लिल कर दे ताकि मैं फाइल खला कर सरकार से पूछ सकें। यहां इस तरह पर जो बाते ही जाती है वे सब प्रोसीडिंग्स में आ जाती हैं और वह इक महीने बाव छप कर हमारे सामने आती हैं। इसिलये में आपसे निवेदन करूंगा कि आप अपनी बात लिख कर भेज वें।

#### कार्य-कम के सम्बन्ध में जानकारी

श्री मोतीलाल श्रवस्थी (जिला कानपुर)—श्रोमन्, में एक व्यवस्था का प्रश्न उठाना चाहता हूं। में श्रापके द्वारा यह जानना चाहता हूं कि कल तक तो यह हाउस बजट का कार्य करेगा। उसके बाद छुट्टियां पड़ रही है। श्रव उसके बाद सदन का क्या कार्यक्रम होगा वह हमें मालूम नहीं है....

श्री उपाध्यक्ष—द्वाप केंबल सूचना चाहते है तो यह भावण क्यों दे रहे है? ग्राप इपया बैठिये। नियमों का पालन होगा ग्रीर उन हे मुनाबिक सरकार के गाथ जरा भी रियायत नहीं की जाएगी।

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी--श्रीमन्, प्रोग्राम का तो पता चल जाय ताकि हम उसके अनुसार ग्रपनी तैयारी कर सकें।

श्री उपाध्यक्ष—सरकार की तरफ से प्रोग्राम था गया है वह प्रेस छपने गया है। कल सभी माननीय सबस्यों को मिल जायेगा। कल के बाद ५ दिन को छुट्टी पड़ रही है। उसके बाद ३१ को नान-ग्राफिशियल दिन है। इस बीच ग्रापको ग्रपनो तैयारी करने का काफी मौका मिल जायगा।

## सहारनपुर नगरपालिका द्वारा लाऊड-स्पीकरों के प्रयोग पर प्रतिबन्ध के सम्बन्ध में स्वायत्त शासन उप-मंत्री का वक्तव्य

श्री उपाध्यक्ष—मूब माननीय राजनारायण जी के प्रश्न पर, सहारनपुर म्युनिसिपल बोर्ड के सम्बन्य में, माननीय स्वायत शासन विभाग के मंत्री श्रथना स्पष्टीकरण उपस्थित करे।

स्वायत्त शासन उपमंत्री (श्री जयराम वर्मा) -- उपाध्यक्ष महोदय, नगरपालिका सहारनपुर, में ला उड-स्पीकरों के प्रयोग से सम्बन्धित जो विधियां बनायी गयी है उनके सम्बन्ध में यह प्रश्न उठाया गया है। शासन ने नगरपालिकाओं की गाइडेन्स के लिये माडेल बाई लाज बनाये हैं जिनके अनुसार वे अपनी अपनी उप-विधियां बनाती हैं। लाउड स्पीकरों के प्रयोग से रोजमर्रा के कामों में कोई खलल न हो सके। इस उद्देश्य से शासन में ब्रादर्श, उपविधियों में कुछ संशोधन सर्कुलेट किया है जिसके द्वारा लाउड स्पोकरों के प्रयोग पर कुछ रोक लगायी गयी है। लेकिन उसमें यह व्यवस्था रखी गयी है कि पब्लिक मीटिंगों के लिये इजाजत दी जा सकती है और उसमें लाउड स्पीकरों का प्रयोग किया जा सकता है। यह इजाजत नगरपालिका के सेकेटरी और एग्जीक्यूटिव आफिसर दे सकते हैं। इन्हीं संशोधित उप-विधियों के अनुसार नगरपालिका सहारनपुर, ने अपने उपनियम बनाये हैं और उन्हीं के अनुसार वह कार्य कर रही हैं। अपने उन्हीं नियमों के अनुसार नगरपालिकाएँ अपना कार्य करती हैं और उसके लिये सरकार की कोई जिम्मेदारी नहीं है। नगरपालिका ने अपनी उप-विधियों में यह जरूर रखा है कि पब्लिक मीटिस के लिये भी जो इजाजत दी जावेगी वह रात में ६ बजे के बाद के लिये नहीं होगी। श्रब वहां पर इसके लिये जो भी दरख्वास्तें दी जाती है उनको परमीशन दे दी जाती है। उसमें किसी पार्टी के साथ कोई भेद भाव नहीं किया जाता है। माननीय राजनारायण सिंह जी का यह कहना कि उनकी पार्टी को इस मामले में तंग किया जाता है, उनकी तरफ से जो इजाजत मांगी जाती है उसमें उन्हें बड़ी दिक्कत उठानी पड़ती है, ये बातें बिलकुल निराधार हैं। श्रभी तक सिर्फ तोन मामले ऐसे हये जिनमें उनका चालान करना पड़ा। इनमें दो मामले तो ऐसे थे कि उनको इजाजत दी गयी थी रात के ६ बजे तक के लिए किन्तु वे बाद में भी उसका प्रयोग करते रहे। ६ बजे के बाद प्रयोग के लिये उनको पहले मना किया गया। लेकिन जब मना करने पर भी वह न माने तो उनका चालान किया गया।

तीसरा मामला यह था कि इजाजत किसी दूसरे के नाम थी किन्तु उसका प्रयोग दूसरा श्रादमी कर रहा था। जब वह प्रयोग करते हुए पाये गये, उनसे पूछा गया तो दूसरे श्रादमों के नाम जो परमीशन थी वह भी परमीशन उनके पास नहीं थी। इसमें उनका भी चालान किया गया। इन तीनों केसेज में से १ का फैसला हो गया है जिसमें केवल १० रुपया जुर्माना हुन्ना और दो मामले श्रव भी विचाराधीन हैं।

श्री उपाध्यक्ष—नम्बर २ में लिखा गया था कि बिना नगरपालिका की पूर्व स्वीकृति के कोई विषय ऐलान नहीं किया जा सकता, तो वह बाई-ला क्या है, उसको पढ़ दें। ऐसी क्या परिस्थिति उत्पन्न हो गयी थी कि जिससे लाउड-स्पीकर बन्द कर दिये गये?

श्री जयराम वर्मा—यह है कि लाउड स्पीकर का प्रयोग नगरपालिका की सीमा के अन्दर नहीं हो सकेगा, लेकिन प्रतिबन्ध यह है कि पब्लिक मीटिंगों के लिए सेक्रेटरी या एग्जीक्यूटिव श्राफिसर द्वारा परमीशन दी जा सकेगी और सरकारी कामके लिए भी बिला किसी परमोशन के लाउड-स्पीकर का प्रयोग हो सकेगा।

श्री उपाध्यक्ष—प्रश्न संख्या २ में माननीय राजनारायण ने पूछा है कि बिना नगर-पालिका की पूर्व स्वीकृति के कोई विषय ऐलान नहीं किया जा सकता, तो विषय के बारे में कोई बाई-ला है ग्रौर जो ऐलीगेशन माननीय राजनारायण ने लगाया है, वह कहां तक सही है ? श्री जयराम वर्मा--विषय के बारे में नहीं है, लाउड स्पीकर के बारे में है कि बौर परमीशन के उसका प्रयोग नहीं हो सकता।

श्री उपाध्यक्ष— (श्री राजनारायण के एड़े होने पर) श्रापने सुन लिया, श्रव श्राप सोच ले कि क्या तरोका हो सकता है। नियम ५२ के प्रम्ताय की तरह प्रश्नोत्तर नहीं हो सकता किन्तु मने विषय परिस्थित में वह गूचना एकत्रित करायी।

श्री राजनारायण (जिला वाराणसी)—में यूसरी बात कहना चाहता था। मेने आपको एग्जिक्यूटिव श्राफिसर के आईर को फिला विया था और श्रापने देखा कि आपकी जानकारी में माननीय मंत्री जी गलत बोल रहें हैं, अब श्राप निर्णय कीजिये कि कौन-सा तरीका हो सकता है।

श्री उपाध्यक्ष (श्री जयराम वर्मा से)—श्राप बाई-लात की एक कापी जो सरकार ने मंजूर की है, वह सर्टिफाइड कापी माननीय राजनारायण को भेज वीजिये।

## उत्तर प्रदेश जिला परिषद् विधेयक, १६५६ पर संयुक्त प्रवर समिति द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की श्रविध में वृद्धि का प्रस्ताव

\*श्री वीरसेन (जिला मेरह)—-उपाध्यक्ष महोवय, मं प्रस्ताव करता हूं कि उत्तर प्रदेश जिला परिषद विश्रेयक, १६५६, २८ श्रगम्ल, १६५६ को दोनों सबनों की एक संयुक्त प्रवर समिति को निविद्द किया गया था श्रीर उत्तर प्रवेश विश्रान सभा की प्रिश्रया तथा कार्य संचालन नियमायली, १६५८ के नियम २५८ के प्रथम परन्तुक के अन्नार समिति का प्रतिवेदन २७ नवम्बर, १६५६ तक उपस्थित होना चाहिए था; परन्तु चूंकि समिति इस श्रविध में श्रपता कार्य पूरा नहीं कर सकी, श्रतः प्रतिवेदन प्रस्तुत करने को श्रविध २१ विसम्बर, १६५६ को ३१ मार्च, १६६० तक बढ़ायो गया। इस श्रविध में भो कार्य सम्पूर्ण होने की श्राशा नहीं है। श्रतः प्रतिवेदन प्रस्तुत करने को श्रविध ३१ जुलाई, १६६० तक बढ़ा दी जाय।

उपाण्यक्ष महोवय, ग्रांप जानते हैं कि यह विशेषक २ = ग्राग्त को संख्कत प्रवर समिति को भजा गया था और इस बीच में संख्कत प्रवर मामित ने ११ दिन तक इसके ऊपर विचार किया और जब पिछली बार २१ दिसम्बर को मेंने इसकी ग्रंथींथ बढ़ाने को ग्रन्मित प्राप्त की यी तब भी मेंने सदन के सामने यह कहा था कि जो महत्वपूर्ण प्रक्षन समिति के सामने थे उनके ऊपर समिति बड़ी गम्भीरता पूर्वक विचार कर रही थी और समिति का यह इरावा था कि यह ऐसा विल बने जिससे जो जिला परिषद् बन रही है वह सुचार रूप से काम कर सके और उनको बार-बार तरमीम करने की जकरत न पड़े, इस वजह से समिति ने समय मांगा था कि इसकी धाराओं पर पूरी तरह विचार करके एक ग्रव्छी शक्त में ग्रंपनी रिपोर्ट दे सके।

उसके बाद समिति ने इस पर विचार किया, लेकिन इस बीच में जैसा कि माननीय सदस्य इस सदन के जानते हैं और सदन में जिल्ल झा चुका है कि सरकार इस बारे में सोच रही है कि बलवन्तराय मेहता कमेंटो के जो स्झाव है उनके आधार पर और जो सारे देश में जिला परिषदों का एक स्वरूप होना चाहिए उसके अनुसार, हमारे प्रदेश में ये बनायी जायं और उसके सम्बन्ध में माननीय मंत्री, स्वायत्त शासन ने एक पत्र जो इस समिति के चेयरमेंन हैं, उनको लिखा था। उसमें इस बात की वरस्वास्त को गयी कि जब तक सरकार इस बारे में निश्चित न कर ले कि किस प्रकार का स्वरूप हो तब तक समिति इस बारे में विचार न करे। अगर आजा हो तो उसे पढ़ कर सुना दूं।

श्री उपाध्यक्ष--प्रवश्य पढ दीजिये।

<sup>\*</sup> वबता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

उत्तर प्रदेश जिला परिषद् विधेयक, १९४९ पर संयुक्त प्रवर समिति द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत करने को ग्रवधि में वृद्धि का प्रस्ताव

श्री वीरसेन—उपाध्यक्ष महोदय, यह पत्र सभापति, संयुक्त प्रवर समिति (जिला परिषद् बिल) को ऐड्रेस किया गया है, श्री विचित्रनारायण शर्मा, स्वायत्त शासन मन्त्री की ग्रोर से। इसमें लिखा है:

"सम्भवतः ग्राप को ज्ञात होगा कि उत्तर प्रदेश जिला परिषद् विवेयक, १६५६, के सम्बन्ध में, जिस के द्वारा जिला स्तर पर शासन के विकेन्द्रीयकरण हेतु जिला परिषदें बनाने की प्रस्तावना है, कुछ लोगों की यह राय है कि बलवन्त राय मेहता कनेड़ी की रिपोर्ट के ग्राधार पर जैसा कि कुछ ग्रन्य प्रदेशों में किया गया है, जिला स्तर की ग्रमेशा बनाक स्तर पर संगठित समिति को ग्रधिक ग्रधिकार दिये जायं। शासन द्वारा इत सुग्नाव पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जा रहा है ग्रीर यदि ग्रन्ततः उक्त राय के पक्ष में निर्णय हुग्रा तो जिला परिषद् विधेयक में काफी महत्वपूर्ण ग्रीर विस्तृत परिवर्तन करने पड़ेंगे या उसके स्थान पर एक दूसरा विधेयक लाना पड़ेगा। ऐसी स्थित में मुन्ने ग्रापसे यह निवेदन करने का ग्रादेश हुग्रा है कि ग्रच्छा होगा यदि इस सम्बन्ध में शासकीय निर्णय होने तक संयुक्त प्रवर सिमित की बैठक न बुलायी जाय।"

उपाध्यक्ष महोदय, इस पत्र के बाद समिति ने यह समझा कि दो तरीके से इसके ऊपर ऐक्शन लिया जा सकता है, दो ग्राल्डरनेटिक्ज हो सकते हैं—एक तो यह कि सरकार इस विधेयक को सदन से वापस ले ले ग्रौर दूसरे यह कि संयुक्त प्रवर समिति में वह ऐमे संशोधन पेश कर दे ग्रौर समिति हो उन पर विचार करके बिल में तरनीम कर दे। लेकिन दूसरी हालत में प्रवर समिति के लिए सिर्फ यही रास्ता था कि वह तब तक इन्तजार करें जब तक कि वह संशोधन समिति के सामने न ग्रा जायं, सरकार की तरफ से। ग्रगर इसी रास्ते पर चलना है तो संयुक्त प्रवर समिति के लिए जकरी है कि तब तक वह इन्तजार करें ग्रौर सदन से दरख्वास्त करें कि वह उस की ग्रविश्व को बढ़ा दे। में समझता हूं कि इन परिस्थितियों में यह ग्रावश्यक है कि में सदन से दरख्वास्त करूं कि जब तक सरकार इस बारे में निश्चय करें तब तक समिति को कार्य करने की ग्रविश्व बढ़ा दी जाय ग्रौर जैसा कि मेंने प्रस्ताव में ३१ जुलाई तक के लिए कहा है, तब तक इस सिति की ग्रविश्व बढ़ा दी जाय।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल (जिला ग्रागरा)—उपाध्यक्ष महोदय, ग्रनेक महत्वपूणं कारणों से जनिहत में ग्रीर जनतन्त्र के हित में में इस प्रस्ताव का विरोध करता हूं। डिस्ट्रिक्ट बोर्डों के चुनाव का इतिहास इस सरकार का बहुत कालिमापूणं रहा है। डिस्ट्रिक्ट बोर्डों का चुनाव पिछलो मर्तबा सन् १६४८ में हुग्रा था। उन चुनावों को हुग्रे ग्राज १२ वर्ष हो चुके हें ग्रीर राम राम कर के कुछ वर्ष पहले सरकार ने चुनाव न करा कर ग्रन्तिरम जिला परिषद् नाम की एक व्यवस्था की। उसका परिणाम यह हुग्रा कि ग्रन्तिरम जिला परिषद् जिला बोर्डों से ग्राविक प्रतिक्रि यावादी हो गये, उसमें पार्टीकरण भी रहा ग्रीर नौकरशाही पहले से ज्यादा हो गयी। ग्रन्तिरम जिला परिषदों की ग्राज हालत यह है, में ग्रने ग्रनुभव से इतना कह सकता हूं कि उसकी एक बैठक में शामिल होने के बाद ग्रीर उसकी दशा को देखकर में ने उस में जाना छोड़ दिया है क्योंकि में उसनें जाना ग्रने समय को नव्ट करना समझता हूं क्योंकि वहां पर कोई भी काम जनतन्त्र के ग्राधार पर या जनिहत में नहीं होता, सब ग्रधिकार पार्टी विशेष ग्रीर ग्रविकारियों को दे दिये गये हैं। तो इस तरह से ग्रव भी सरकार चुनावों को दालना चाहती है। ग्रीर बलवन्त राय महता कमेटी की जो बात कही जाती है, वह दूसरा महत्वपूर्ण कारण है जिसके कारण इसका विरोध किया जाना चाहिए।

उपाध्यक्ष महोदय, में एक भाषण में कह चुका हूं कि ग्राज योजनाग्रों के ग्राघार पर प्रादे-शिक सरकार जो कि ग्राटोनामस बाड़ी कही जाती हैं उसकी हालत डिस्ट्रिक्ट बोर्डों ग्रीर म्युनि-सिपल बोर्डों से भी बदतर हो गयी है। जिस प्रकार से डिस्ट्रिक्ट बोर्डों ग्रीर म्युनिसिपल बोर्डों [श्री श्रोकृष्णवत्त पालीवाल]

को ग्रान्ट के न्राधार पर प्रावेशिक सरकारें श्रवने हाथ में रत्वती हूं उसी तरह से योजनाग्नों के न्रावार पर केन्द्रीय सरकार ने प्रावेशिक सरकारों को ग्रयना गुनास बना निया है। कनेटी की रिवोर्ट अन्तरिम जिला परिषव् बनने से पहले आ चुकी थी। उस समय प्रादेशिक सरकार ने उसके अनुसार काम करना उजित नहीं सनभा लेकिन प्रव जब प्रवशासन का इंडा श्राया और उस सरकार की मजबूर किया गया तब यह सरकार श्राने प्राने निर्णयों की काट रही श्रीर वह इसलिए क्योंकि इस सरकार की स्त्राधीनता नहीं रह गत्री है, इसकी विवश होकर काम करना पड़ता है। तो सरकार अगर उम विशेषक की वापिस लेना चाहे तो ले ले क्यों कि उसकी जिम्मेदारी सरकार पर होगी, जनमा के सामने उपको करना पहेगा। लेकिन इस प्रस्ताय की बिना विरोध हुये पास होना दूसरी बात होगी। फिर प्रश्न यह होगा कि संपुक्त प्रवर समिति पुरानी ही क्यों रहे। यह भी हो सकता है कि सरकार विवेयक वेज करे क्रीर उस पर जनरल डिस्कशन हो क्रीर फिर दूंगरी संगुका प्रयर समिति बनावी जाव, यह बात समभा में श्राती है। पुरानों समिति की ही श्रात्रीय बढ़ायी जाय, यह बान श्रनचित है। इसके अलाया में कह देना चाहता हूं कि इस प्रश्ताव में बलयन्त राप कमेंटो के बारे में एक श्रापत्ति की है। जहां तक मेरी सूचना है संयुक्त प्रवर समिति ने कुछ श्रव्यी बातें भी रखी है श्रीर बलवन्त राय मेहता कमेटो ने जो यह सुप्राय दिया है कि जिलास लंडों के हाथ में ब्रधिक श्रधिकार रखे जायं, उससे वे सुन्नाव श्रधिक श्रव्हें होंगे।

श्री जपाध्यक्ष---पत्रर समिति के क्या सुप्ताव है, ग्राप इसका जिक न करें।

श्री श्रीकृष्णवत्त पालीवास -- में यह कह सकता हूं कि यत्त्र तरात्र कमेटी की सिकारों हो भात ने के भाते यह होंगे कि श्रिथकारों हिए ग बराबर जारी रहे। जेपा कि हम ने महानगर पालिका के बुतावों में वे बा है, वहां भी नौकरशाही का राज्य रहेगा और विकेत्रीकरण महोकर के ब्रीकरण हो जायगा। मुझे प्राथ्या है कि सबन के सबस्य भी दम बात से सहमत होंगे कि जिला बोडों में प्रधिकारीकरण न रहें भीर जन प्रतिनिधियों के हाथ में प्रधिकार रहें। जो विभागीय प्रधिकारी इसमें काम करें ये कि स्ट्रिक्ट बोर्ड के प्रशीन रहें। श्रगर विकास खंडों के प्रशीन यह काम कर विया जायगा तो प्रशिकारीकरण हो जायगा। इन सब कारणों से में इसका विरोध करता हूं और प्राथ्या करता हूं कि सरकार इसकी वापस ले लेगी। जैसा कि सरकार का विधार है कि वह प्रापस में बातचीत करना चाहती है तो बातचीत करने बिथेयक की वापस ले ले और जो उस बातचीत में निर्णय हो उसकी कार्यान्वित करें।

श्री मोतीलाल स्रवस्थी (जिना कानवुर) ——श्रीमन्, मेरी एक व्यवस्था है। इस प्रस्ताव को पैदा करके एक विवाद को छोड़ विया गया है। इस पर सभी लोग कुछ न कुछ कहना चाहेंगे भीर मेरी भी इच्छा है। अगर इस विवाद को आग बढ़ाया जायगा तो चिकित्सा और जन-स्वास्थ्य का जो अनुदान है उस पर पूरी तरह से हम बहस नहीं कर पायेंगे। इस जिए इस की ४ बजे के बाद रख विया जाय और इस के लिए निदिचत समय कर दिया जाय, व्योंकि इस पर सभी सदस्य बोलना चाहेंगे।

श्री उपाध्यक्त--इस में मुख्य प्रश्न यह है कि प्रवर समिति का समय बढ़ाया जाय प्रयवा नहीं। पालीवाल जी ने मूलभूत बातों को तो कह ही दिया है ग्रीर समय बढ़ाने के प्रस्ताव में भी ग्राम तौर से १४--२० मिनट लग ही जाते हैं। इसलिए में यह निवेदन करूंगा कि एक-एक पार्टी के प्रतिनिधि स्वरूप एक-एक माननीय सदस्य जो कुछ कहना चाहें, कह वें ग्रीर उसके बाद सदन-निर्णय ले लें। इसके पहले यदि माननीय मुख्य मन्त्री जी वा स्वशासन मन्त्री जी बीच में बोलना चाहें तो कर लें ताकि स्मिति स्वष्ट हो जाय, में उनकी बोलने की इजाजत दे सकता हूं।

\*मुख्य मंत्री (डाक्टर सम्पूर्णानन्द)—उपाध्यक्ष महोदय, माननीय पालीवाल जी के भाषण को सुन कर मुझे बड़ा ग्राश्चर्य हुग्रा। मैंने बलवन्तराय मेहता कमेटी के नाम से कसम महीं खायी है। इस सदन में दो बार यह सवाल श्रा चुका है। एक बार जनरल ऐडिमिनिस्ट्रेशन के सिलिसिले में श्रोर फिर एक दिन उस पर प्रश्न हुग्रा था। उस प्रश्न के उत्तर में माननीय स्वशासन मन्त्री ने मेरा हवाला भी दिया। मेंने उसकी स्पष्ट कर दिया था। मेंने केवल इतना ही कहा था कि हमन जो बिल बनाया है वह प्रवर समिति के पास गया हुग्रा है जिसके अनुसार ही जिला परिषदों के हाथ में श्रीधक ग्रीधकार दिये जायगे। जनरल डिसकशन में ग्रीर जनरल ऐडिमिनिस्ट्रेशन के डिसकशन में ऋषिक ग्रीधकार दिये जायगे। जनरल डिसकशन में ग्रीर जनरल ऐडिमिनिस्ट्रेशन के डिसकशन में कई माननीय सदस्यों ने यह खयाल प्रकट किया की यदि लोकतांत्रिक ब्यवस्था को लाना है तो जो ब्लाक्स हुं उनको भी ग्रीधकार देना चाहिए। में समझता हूं कि यह खयाल है, श्रव मेरे दिल में कोई जिद नहीं है। हमने बिल बनाया ग्रीर उसे प्रवर सिनित के पास भेज दिया, लेकिन ग्रगर सदन के ग्रीधकांश सदस्य इस बात को मानते है कि ब्लाक्स के हाथ में ग्रीधकार होना चाहिए तो इस पर विचार करना ठीक है। इस पर सोचा जाय ग्रीर ग्रगर ग्रीधकांश लोगों को यह पसन्द है तो मुझे कोई ग्राग्रह नहीं है कि में कहूं कि एक बिल बन गया है, इसलिए उसे पास करना हो है। उसकी बहस नहीं है।

शायद पालीवाल जी भूल गये, मेरी उनसे इस सम्बन्ध में बातचीत हुई श्रीर में उन की याद दिलाता हूं कि मैंने उनसे कहा कि मैं चाहता हूं कि इसके होने के पहले एक दिन जितने भी सामने दलें बैठे हुये हैं उन सब के नेताग्रों की श्रापस में बात हो जाय । उसके लिए इधर के कई लोग मौजूद नहीं थे। माननीय स्वायत्त शासन मन्त्री ने यह तय किया है कि ३१ मार्च को या पहली ग्राप्रैल को सब लोगों को बुला लिया जाय ग्रीर ग्रापस में बातचीत करके देखा जाय कि **प्र**विकांश लोगों की क्या राय है ग्रौर उसी के ग्रनुसार काम किया जाय। में यह भी याद दिला दुं कि मैंने उस दिन कहा था कि जब तक नया बिल न बने तब तक जो भी शासन का प्रबन्ध हम करें, करना होगा। ग्रगर मौजूदा शासन में ग्राप परिवर्तन करना चाहते हैं श्रौर उसके लिए दूसरा बिल लाना पसन्द करते हैं तो उस में कोई बहस की बात नहीं है, जो तरीका आप पसन्द करें, मुझे कोई जिद्द नहीं है। विकिन यहां तो सवाल यह है कि जो मौजूदा प्रवर समिति है उसको जिन्दगी को ३१ मार्च के बाद बढ़ा दिया जाय। श्राज २४ तारील है जिसमें कुछ बजट का काम होना है, कल भी बजट का ही काम होना है, फिर ५ दिन की छुट्टी है और ३१ मार्च को इस प्रवर समिति को मियाद खतम हो रही है तो फिर स्रागे क्या होगा, स्रगर स्राप इजाजत नहीं देते हैं कि प्रवर समिति की जिन्दगी कुछ दिनों के लिए ग्रीर बढ़ा दी जाय। इस बीच में आप तय कर लें कि क्या नयी व्यवस्था की जाय ? जाहिर है कि जब प्रवर समिति पुरानी है ग्रीर ग्राप ग्रन्तरिम जिला परिषद् से ब्लाक कमेटी को ग्रधिकार देने की बात रखेंगे तो श्रामल परिवर्तन होने को दशा में पुरानी समिति नहीं रहेगी। उसकी जगह पर नयी प्रवर सिमिति बनेगी और मौजूदा बिल को विंदड्डा करना होगा। तो यह सोचने की बात है कि प्रवर सिमिति को जिन्दगी कुछ समय के लिए और बढ़ा दो जाय और ३१ मोर्च को श्राप मिलने पर कोई नयी ब्यवस्था सोचें तो उचित होगा। लेकिन इसके मेरिट पर बहस करना गलत है।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल — उपाध्यक्ष महोदय, मुझे खुशी है कि मेरी बातों से यद्यपि माननीय मुख्य मन्त्री जी को ग्राश्चर्य हुग्रा लेकिन में समझता हूं कि जो चीज में चाहता था उसे मेंने हासिल कर लिया। में यह चाहता था कि प्रस्तावक महोदय ने जो बात कही, वहां बलवन्त राय कमेटी की बात कही, तो मुझे यह देखना था कि सरकार का रख उसके बारे में क्या है। में यह भी चाहता था कि माननीय मुख्य मन्त्री जी से मेरी जो ग्रापस में निजी बातचीत हुई उसकी वे सदन के सामने दोहराते हैं या नहीं जिससे सदन की जानकारी हो जाय कि स्थिति

[थी श्रीकृत्मादत्त पालीवाल]

क्या है, तो मेरा उद्देश्य पूरा हो गया। मेरी बातों से जो अन हो श्राश्चर्य हुन्ना उसके लिए मे उनकी सराहना करता है स्रोर इस है जिए उनकी धरत्यार बना है।

ेश्वी गेदासिंह (जिता वेशीरया) याभन् अभी जो शिवाई माननीय मुख्य मन्त्री जी ने बतनात्रो उसका समझ कर में ऐत्रिजियेश काताह । एक बात यह है कि माननीय प्रशाबक महोदय ने जहा ३१ मार्च तक अभिव बढ़ते का बन्धि हो श्री राग प्रश्नही बतलाया है कि उसके बाद किननी अर्थिय वे स्रोर चाहते हैं।

श्री उपाध्यक्ष -३१ ज्नाई (नणा है।

श्री गेंदामिह यह २१ ज्लाई जो है में समजता हू कि यह एक बहुत लम्बी अविध है और ३१ तारील को अगर बातसीत ही मकती तो उने के बाद तुरन्त ऐसा हो सकता है कि प्रवर समिति की रिपोर्ट श्राये। साज में इन बानों को कहते हुये जरा सो बात श्रीर कहुंगा श्रीर श्रोर उसके मेरिट पर में नहीं जाता, लेकिन मुझे मालूम है कि प्रवर समिति ने कुछ ऐसे संशोधन किये हैं जिन की में चर्चा नहीं कर गा, जो कम से कम इस सरकारी पक्ष को नापसन्द हं श्रीर हमे इस बात का इर है कि यह इसका एक ऐसी श्रवस्था में छोड देगे कि कुछ ने हो, यह चुनाय ४ ८ से ५२ में होते जाहिए थे, लेकिन ५२ से ६० तक कोई राय कार्यम नहीं हुई। अब ऐसी भी कम उम्मीय है कि दस बीस दिन या एक महीने में कोई राय कायम हो जायगी, एसा हम नहीं समझ है। बलवन्त राय मेहता कमेटी की क्या बात है, वह रिपोर्ट तो उस बिल के झाने के पहले ही प्रकाशित हो चुकी थी। झगर मन्त्री जी को कुछ उसी कमेटी से लेना 'पातो उसमें कोई दिवकत नहीं थी, वह चीज पहले भी द्या मकती थी। अन्त में में निवेचन करूंगा कि आप गौर करें कि प्रशासन मन्त्री जी को इस प्रकार का पत्र प्रवर समिति को लिलना क्या उचित है? में समझता हूं कि स्वशासन मन्त्री जी बेहतर होता कि ग्रापको इस प्रकार का पत्र लिखते, बहैगियत चेयरमने सेलेक्ट कमेटी नही, बल्कि बहैसियत अध्यक्ष के और उसमें अपनी विश्कते वह बताते। उन्हें इस श्रीचित्य का भी ध्यान रखेना चाहिए था। में समझता हूं कि इन तमाम कारणों से यह जिला बोडी के चुनाव इतने पुराने पड़ गये है कि अब वेर करना उचित नहीं है। में भी वो तीन मीटियों के बाद नहीं जाता, मंत्रों तो चेतावनी मिली है कि मेरा तो उन मीटिंगों में घाचरण बिगड़ गया है कि ब्रागे से खबरदार भाचरण ठीक करो . . .

श्री उपाध्यक्ष---प्राचरण से श्रंग्रेजी शब्द "कानडक्ट" का श्राशय होगा।

श्री गेंवासिह---मेरा धाचरण लरात हो गया, इसीलिए मुझे खेतावनी मिली, इसलिए में समझता हूं कि अब ऐसा आचरण रवकर जाऊं कि मेरी लबर न ली जाय। इसलिए में समझता हूं कि इन जिला परिववों की ज्यावा विन तक किसी व्यवस्था से निष्क्रिय न रखा जाय।

श्री राजनारायण---श्रीमन्, यह जो प्रस्ताव ग्राया है में इसका विरोध करता हूं ग्रौर मेरे विरोध के कई कारण है.....

श्री उपाध्यक्ष----ग्राप, ३१ मार्च के बाद समय न बढ़ाया जाय, इस पर ही सीमित

श्री राजनारायण—अच्छा है आपने सहारा वे दिया, मुझे वह तारीख याद है, उस समय में कानपुर जेल में बन्द था, सन् ५७ के मई आन्दोलन के सम्बन्ध में। मेरे पास वहां माननीय मुख्यमन्त्री जी की श्रीर से भेजा गया एक आमन्त्रण पत्र गया, उसके सम्बन्ध में माननीय राम-स्वरूप जी मुझसे जेल में मिसने गये। वह पत्र इसा प्रकार का था जैसा कि आज यह प्रस्ताव है।

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

उसमें लिखा था कि २६ नवम्बर को हमारे बंगले पर तमाम विरोधी दलों के नेता एकत्रित हो जायं और इन जिला बोर्डों की क्या व्यवस्था हो, इस सम्बन्ध में हम कुछ विचार विनिमय करना चाहते हैं। उसके बाद २४ मई को में छुटा ग्रौर यहां ग्राया ग्रौर मैंने एक लम्बा पत्र माननीय मुख्य मन्त्री जी को लिखा कि यह-यह बातें हम चाहते है ग्रौर उसमें कहा कि इस ग्राधार पर ग्राप व्यवस्था कर दीजिये, यही बातें मैंने सदन में भी कही हैं उन्हीं के ग्राधोर पर ग्राप कर दें, मुझे श्रापके निवास-स्थान पर ग्राकर श्रापको कष्ट देने की जरूरत नहीं है । ग्रव ग्राप देखें कि सरकार एक समस्या पैदा करती है, जिस समय उलझन में फंसती है तो हमसे कहती है हमारा मार्ग-दर्शन करो। तो हम तब भी मार्ग-दर्शन देने को तैयार हैं। लेकिन यह कौन सी मर्यादा है? क्या यह जनतांत्रिक है, जनतांत्रिक प्रणालीजन्य मर्यादा है ? नहीं, यह तानाशाही मनोवृत्ति की द्योतक है । श्रव की बार भी हमारे मन में इच्छा हुई थी जो ११ तारीख को माननीय मुख्य मन्त्री जी ने श्रपने यहां कमरे में मीटिंग बुलायी थी उस में जायं। शायद ४, ६, श्रादमियों के बीच में मुख्य मन्त्री जी से बातचीत की जाय तो वह ज्यादा सुनें। मगर १० तारील की शाम को एक दूसरा पत्र प्राप्त होता है, पहले पत्र में लिखा था कि ११ तारीख को मुख्य मन्त्री चाहते हैं ग्रपने विधान सचिवालय के कमरे में तमाम विरोधी दलों के नेताश्रों से बात करना इस सम्बन्ध में कि जिला परिषद् की क्या व्यवस्था हो और जो उलझनें सामने थ्रा रही हैं, उन्हें कैसे हल किया जाय । सोचता था कि सारी बातें उनके सामने रखी जायंगी । मगर १० तारीख की शाम को एक दूसरा पत्र मिलता है कि ११ तारीख़ की बैठक स्थगित की जा रही है क्योंकि उस दिन सम्भव है कि बहुत से विरोधी दलों के सदस्य यहां उपस्थित न रह सकें, इसलिए १ ग्रप्रैल को मीटिंग होगी।

श्री उपाध्यक्ष--डेट के बारे में श्रापको कोई एतराज नहीं है।

श्री राजनारायण—सरकार जिस तरह की है उसी तरह की तारीख भी निश्चित की है। मैं पूछना चाहता हूं कि अगर हम लोगों की इस विषय पर सम्मति जाननी श्री तो क्या यह बैठक पहल नहीं बुलायी जा सकती श्री, कल, परसों नहीं बुलायी जा सकती श्री, ३१ मार्च के पूर्व नहीं बुलायी जा सकती श्री और जब ३१ मार्च को सदन की बैठक होने जा रही है तो उस दिन यह प्रस्ताव नहीं आ सकता था? कहने का मतलब यह है मुझे मालूम नहीं किस तरह की परिस्थित में सरकार अपने दिमाग को बनाती रहती है। लेकिन जहां तक मेरी जानकारी है करीब ६० हजार रुपया संयुक्त प्रवर समिति की बैठकों में खर्च हो चुका है और आगे संयुक्त प्रवर समिति बने या प्रवर समिति बने इस पर भी बड़ा विवाद है, मगर उस पर भी तो खर्चा होगा ही। क्या यह सब जनहित में हो रहा है? इस पर भी विवार करना चाहिए। इसलिए भी में इसका विरोधी हूं। यह प्रस्ताव आ रहा है, इसमें प्रस्तावक महोदय ने लिखा है कि के बार इस सदन में प्रस्ताव लाया गया, एक बार, दो बार और अब तीसरी बार आ रहा है। एक चुनाव हो गया जिला परिषद् के द्वारा जो कि पूर्वाखंड है, कांग्रेस का उम्मीदवार जीत गया। कम से कम हर जिला परिषद् में १/३ सरकारी कर्मचारी हैं।

श्री उपाध्यक्ष--माननीय राजनारायण जी संक्षेप में कहिये।

श्री राजनारायण---ग्राप स्वतः जानते हैं कि मैं ग्रपने को चेक कर रहा हूं ग्रन्यथा ग्रब तक तो कहां से कहां पहुंच जाता।

तो में पूछना चाहता हूं कि यह कौन सी आदत है कि माननीय मुख्य मन्त्री जी को माननीय पालीवाल जी की बातों से आइचर्य हुआ, लेकिन उस से माननीय पालीवाल जी को प्रसन्नता भी हो गयी कि उन्होंने सदन में उनसे अकेले में हुई बातचीत को कहला दिया। मगर घोषणा क्या हुई? मुख्य मन्त्री जी ने सिर्फ शब्दावली का जाल रचा। आज सदन में कौन सी निश्चित घोषणा की? इस समय सेलेक्ट कमेटी हो, चाहे सेलेक्ट कमेटी के बाहर की बात हो, दो विचार चल रहे हैं। एक विचार यह कि जिला परिषद् का चुनाव डायरेक्ट तरीके से हो या जिला परिषद् का चुनाव सीधे-सीधे न हो...

श्री उपाध्यक्ष--प्राप तो ग्रब मेरिट्स पर जा रहे हैं।

श्री राजनारायण—मं इसिनए बता रहा हूं कि चनाव किसी तरह नहीं टाला जाना चाहिए। मान लिया जाय में इस मत का हूं कि श्रीर निश्चित हूं जिला परिषद् का चुनाव जनता से सीधे हो। तो क्या ग्रार जिला परिषद् का चुनाव नहीं होगा कमेटी का। जाक लेबिल पर डायरेस्ट चुनाव नहीं होगा कमेटी का। जाक लेबिल पर डायरेस्ट चुनाव हो सकता है, उसमें दूसर लीग जा सकते हैं; जिले के सतर पर डायरेस्ट चुनाव हो सकता है श्रीर उस में दूसरे लीग जा सकते हैं। बीनों के कार्यों का बंदन हो जायगा। जिला परिषद् जिले के रतर पर कौन सा कार्य करे श्रीर ब्लाक बनाक लेविल पर कौन सा कार्य करे, इससे चुनाव प्रणाली में कोई वीप नहीं रिश्मायी देता जिसके लिए माननीय मन्त्री जो ज्यादा समय चाहने हो। मेने उस नियेयक की परा है जो संयुक्त प्रवर समिति में गया था..

भी उपाध्यक्त--उस विधेषक के बारे में मत कहिये। धोड़ा संक्षेप में कहिये।

श्री राजनारायण---में ज्यादा समय नहीं लूंगा। लेकिन द्यापके द्वारा बार-बार टोकने पर समय लग जाता है।

श्री उपाध्यक्ष--वेकता हूं कि कितनी जन्दी ग्राप लरम कर देते हैं।

भी राजनारायण~--बीच में ब्राप टोकते है तो कम दृट जाता है।

श्री उपाध्यक्ष-- क्रम टूट जाता है तब तो यह हाल है, भगर न टूटे सो क्या होगा?

श्री राजनारायण—कहा गया कि ३१ मार्ज की तारी क्षा में की बढ़ा वी जाय। सरकार बायरेक्ट जुनाव प्रणाली को मान ले। जिला परिषव का धनाय कायरेक्ट जुनाव पढ़ित से कराये। बलवन राय मेहता कमेटी की रिपार्ट का हीवा लका किया जा रहा है। इसमें त्या कोई ऐंगे जीज आयेगी जिस की कल्पना नहीं की जा मकती ? ऐंगी बात नहीं है। बलवन राय मेहना कमेटी से अकड़े सुझाव पेश किये गये हे इस मबन में, उन पर विवार फिया जाय। बो दिन और बैठ कर सभी जीज अन्तिम स्वरूप में आ जाती और यह कमेटी अपनी रिपोर्ट पेश कर बेती। इसिलए में कहना चाहता हूं कि अगर सरकार के विमान में उलझन नहीं है और सरकार सीखा जुनाव करा कर कार्य को प्राति में लाना चाहती है तो इस प्रस्ताव को लाने को आवश्यकता नहीं है। वह बायरेक्ट जुनाव को मान ले जिले के स्तर पर और बलाक के सार पर। कार्य का बंटन ही ही जायगा। इसिलए में इसका विरोध करता हूं ताकि धन का बुक्पयोग न हो। जिला परिषव में १/३ से ज्यावा सरकारी कर्मचारी हिस्सा लेते है। अभी पुर्वाकंड में जो विधान परिषव का जुनाव हुआ था उसमें भी वे हिस्सा ले जुन है और आग भी सेंगे। सो यह गैर-जनतांत्रिक अणाली जल रही है। इस हो लक्ष्य प्रवास होना चाहिए। इसके लिए जकरी है कि हम इस विधेयक की अन्तरिम जिला परिणव संयुक्त प्रवर समिति इस विधार करें।

भी आरखं केराय (जिला धाजमगढ़) — उपाध्यक्ष महोदय, में इस प्रस्ताव का विरोध करता हूं। बड़े धाइचर्य की बात है कि १२ वर्ष की धाजादी के बाद भी जिला स्तर पर प्रशासत का क्या हंग हो, उसकी क्या कपरेला हो, उसका फैसला धाज तक नहीं हो सका। यह मृत्य मन्त्री की विद्वता को, उनकी सरकार की सामूहिक समझवारी को, शासन पार्टी की पूरी बुढि मसा को एक खुनौती है। १२ वर्ष के बाद धिलल भारतीय स्तर पर, राज्य स्तर पर, प्राम स्तर पर, शासक का ढांचा एवं प्रकार सब तय हो जाने के बाद बीच की एक जिला स्तर की कड़ी केसी होगी यह तै नहीं हो सका, यह बड़े शर्म की बात है। यह गम्भीर विदय है, इस पर सरकार को उसी कप में सीचना चाहिए। बही दुलमुलपना, वही ग्रासमंगस्यता, वही ग्रांति दिचतता जो पहले थी ग्राज भी है कि खुनाब दायहँकह हो या हन्द्रायरेक्ट हो, सरकारी अधिकारी

उस के मेम्बर रहें या न रहें, उनको वोट का श्रिवकार हो या न हो, विद्यायक और एम० पीज० उस के मेम्बर हों न या हों, जिन प्रश्नों पर पहले विचार हो चुका था उन्हों पर ग्राज भी विचार हो रहा है। में समझता हूं कि इस प्रस्ताव के लाने के बजाय सरकार की ग्रोर से यह प्रस्ताव ग्राता कि वह सिलेक्ट कमेटी में पड़े बिल को वापस कर रहे हैं। उसकी झलक खुद मुख्य मन्त्रों जो के वक्तव्य से हमको एक दिन इसी सदन में मिली थी ग्रौर इसके वापस लिये जाने की सम्भावना की चर्चा बाहरी जगत तथा लाबीज में पहले से उठ न रही थी। तो मौजूदा प्रस्ताव से ग्रच्छा होता कि बिल की वापसी का ही प्रस्ताव ग्राया होता। इस तरह से चीज को ग्रस नंजस में रखना, जैसा ग्राज हम लोग महसूस कर रहे हैं कि १२ वर्ष के बाद भी चुनाव नहीं हुये, यह सत्य है ग्रौर कठोर सत्य है ग्रौर उचित नहीं है। इससे ग्रच्छा होता कि पुरान ऐक्ट के मुताबिक एक बार चुनाव हो गया होता। इन तमाम चीजों की बुनियाद पर में समझता हूं कि इस प्रस्ताव को वापस होना चाहिए ग्रौर इसकी जगह यह बात ग्रानी चाहिए हमारे सामने कि कब तक इसकी पूरी रूपरेखा के साथ चुनाव कराने की बात सरकार सोचती है।

\*ग्राचार्य दीपंकर (जिला मेरठ)--मान्यवर, जिला परिषद् के सवाल को लेकर महज विरोध पक्ष के सदस्यों में ग्रीर ग्राम जनता में यह घारणा बैठी हुई है कि सरकार किसी न किसी तरीके से जिला परिषदों के चुनाव टालने का कोई न कोई बहाना ढूंढ कर लाती है श्रीर इसी बज ह से, चाहे वह कोई अच्छे इरादे से ही कोई प्रस्ताव लाये या किसी जरूरत से प्रेरित हो कर प्रस्ताव लाये, हर समय यही खयाल रहता है कि सरकार जिला परिषदों के चुनाव को टालना चाहती है। एक इन्स्टीटचुरान जो ग्राज से १२-१३ वर्ष पहले संगठित किया गया उसी को बार-बार पैच-श्रंप करके किसी न किसी तरह सरकार चलाना चाहती है। या तो सरकार यह निश्चित कर ले कि जिला परिषदों को भंग करना है, ग्रगर ऐसा करना है तो वह प्रस्ताव भी सदन के सामने स्पष्ट रूप से ग्राना चाहिए। ग्राज सब को इस बात का भय है कि ग्रब ग्रन्तरिम जिला परिषद ग्रप्रत्यक्ष रूप से नौकरशाही के हाथों में सौंप दिये गये हैं ग्रौर उन को किसी भी प्रकार से जिलाधीश या प्लानिंग ग्रफसर की एन्लार्ज्ड बाढी बना कर ग्रन्तरिम जिला परिषद् के रूप में संगठित किया गया है। यदि माननीय मुख्य मन्त्री जी यह समझते हैं कि इस प्रस्ताव के लाने का ब्राह्मय यह नहीं है कि जिला परिषदों के चुनाव को टालना चाहते हैं तो हम लोगों को इसमें कोई भ्रापत्ति नहीं होगी कि थोड़ा बहुत हेर-फेर करके उस चीज को स्वीकार कर लिया लेकिन इस सरकार के ऊपर यह तो किसी भी प्रकार से विश्वास नहीं होता कि वह जिला परिषदों का चुनाव पुराने ऐक्ट के मुताबिक या नया ऐक्ट, जो कभी भी इस सदन में पेश होने वाला नहीं है, उसके मुताबिक करायेगी। जिला परिषदों के चुनाव को किसी न किसी तरीके से स्थिगित करने का जो बहाना ढुंढा जाता है उसके कारण हम समझते हैं कि यह सदन अपना नैतिक समर्थन इस्र प्रस्ताव को पास करके चुनाव को टालने को नहीं दे सकता। इसलिए में इस प्रस्ताव का सख्त विरोध करता है।

\*श्री वीरसेन -- उपाध्यक्ष महोदय, जब मैंने यह प्रस्ताव पेश किया था तो में यह जानता था कि इसका विरोध अवश्य होगा। पिछली बार भी जब मैंने प्रस्ताव किया था तब भी सभी दलों के नेताओं ने उसका विरोध किया था। लेकिन इस बात को जानते हुये भी मैंने यह प्रस्ताव पेश किया। प्रस्ताव पेश करने के सिलसिले में कुछ मजबूरियां हैं। माननीय सदस्यों ने जिन्होंने विरोध किया उन मजबूरियों का खयाल नहीं किया। मैं माननीय सदस्यों को यह बताना चाहता हूं कि जो बिल कमेटी को सुपुर्द किया गया था उसके ऊपर कमेटी ने अपना विचार पूरा कर लिया है और अब तो कमेटी के सामने सिर्फ इतनी बात है कि अन्तिम मीटिंग करके और उसके उत्तर हस्ताक्षर करके सदन में पेश कर दे। अगर समिति इस विषय में यह तय करे कि पेश कर दिया जाय तो आप समझते हैं कि इस मामले में प्रिटिंग वगैरा में काफी खर्च

<sup>\*</sup>वक्तात्रों ने भाषणों का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री वीरसेन]

ही जायगा। यह भी जाहिए है कि सरकार, एक हफ्ते में या जल्दी ही इस प्रश्न पर कोई फेमना नहीं ले सकती। यह प्रश्न बहुन महत्वाणं हे ख्रीर थोड़ी जनता से ताल्लुक रखने वाला नहीं है बल्कि सारे प्रदेश में ताल्लुक रखने वाला है ख्रीर इसके ऊपर सारे प्रदेश का भविष्य निर्भर है। तो इन सब चीजों के ऊपर एक या दो दिन में विचार नहीं हो सकता।

माननीय राजनारायण जी नं शिकाणत की कि समिति की बेठक करके जल्दी से जल्दी क्यों नहीं तय कर लिया गया। में समझना हूं कि इसके बारे में पहले से भी विचार हो जाता या माननीय नेताओं की मीटिंग हो जाती तय भी बिन का चूपर बनाने में वयत जलर लगता। सिर्क दो बातें हो सकतो थीं। एक तो यह कि सरकार तय करनी कि मोजूदा बिल में ही तरमीं कर दी जा है और वह एसी हों जो नेताओं की राय हो। अगर इस प्रकार का सरकार निश्चय लेती तब नो यह कमेटो काम कर सकती थी। अगर सरकार यह निश्चय करती कि नया बिल पेश किया जाय तो किर बड़ी चीज होती बेगा कि भाननीय पानोवान जी ने कहा कि पुरानी समिति की क्या जलरत है? नई समिति की जलरत होती। लेकिन में समझता हूं कि सरकार इस समय फेलना नहीं कर सकती है। इसलिये जलरी हो कि शिटिंग वगेरा का वर्ची रोकना चाहिये और इसके लिये समिति की अवध्य ३१ जनाई तक बढ़ा दी जाय। इसने कोई हानि सदन की नहीं होती है। जो फेनना सरकार करेगा यह सदन के सामने जायेगा और अगर सरकार निश्चय करती है कि इसकी वायस कर लिया जाय तब भी यह सदन के हाथ में होगा कि उसकी माने या न माने।

पालीताल जी में एक बात कही कि केन्द्रीय सरकार की आजा के अनुसार यह सरकार काम करती है। में समझा हूं कि हमारे संविधाल को बात सब जातते हैं कि कोई भी हमारे सवत को या सरकार को आवा-अवग शक्ति है। हर एक राज्य की अवग-अवग शक्ति है। हम कियों की सनाह मान ले यह बात बूमरा है। लेकिन यह कहना कि हम किसी की आजा मानते हैं, में समझना हूं कि इगमें सरकार का अपनान है और सवन का भी अवमान है। में समझना हूं कि और कोई स्थान एंसा नहीं है जिएका में उत्तर तूं। में सवन में वरख्वास्त करूंगा कि इन बातों का ख्यान रखने हुये वह सीमित को अवधि बढ़ाये और इस प्रस्ताव को पास करे।

\*श्री नारायणवत्त तिवारी (जिला नेनोताल) --श्रीम र्, में श्रीधक समय न लेकर केवल आप का ध्यान इस यिषय की श्रीर विलाग चाहूंगा कि प्रश्न यह है कि समिति की अविध ३१ जुलाई तक बढ़ाई जाय .....

श्री उपाध्यक्ष--भाषण देने की इजाजत नहीं हो सकती है, कोई सुझाव दें।

श्री नारायणदत्त तिवारी—श्रीमन्, में मुझाव ही वे रहा हूं,। श्राप पूरा सुन लें तब धाता वें। मेरा निवेदन यह है कि जिन सिद्धान्तों को बात कही गई उन से में पूर्णतया सहमत है। लेकिन जब यह दिखायों देता है कि पांच दिनों में समिति भाना कार्य पूरा नहीं कर सकती है भीर किर माननीय मुख्य मंत्रों जो ने जो घोषणा की उसका श्रम्य यह लगता है कि वह मीटिंग तय करेगी कि जिला परिवदों का क्या स्वरूप होना चाहिये। दूसरा यह कि सभी पार्टियों से राय लेकर समिति तय करेगी कि यह विधेयक वापस लिया जाय या न लिया जाय। श्रीर यह मीटिंग भ्रमेल के प्रथम सप्ताह में हो जायगी। इसलिये मुख्य मन्त्रों जो का स्पष्टोकरण इस प्रकार रहते हुये जेसा कि में कह रहा हूं और इस बात को देखते हुये कि समिति काम नहीं कर सकती है। इसलिये में यह संशोधन पेश करता हूं कि बजाय ३१ जुलाई के ३० श्रवेल, १६६० रखा जाय। मुखे भाशा है कि सभी लोग मेरे इस संशोधन को स्वीकार कर लेंगे। मुख्य मन्त्री जो, जो मेने भाष्य कि या उसको लेकर और इस बात को देखते हुये कि चुनाव इसी वर्ष कराने की उनकी इच्छा है, में समझता हूं कि इसकी स्वीकार कर लेंगे।

**<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।** 

श्री राजनारायण—हमारी शंका यह है जैसा कि नारायणदत्त जी ने स्रभी सुझाव दिया है ३० स्रजैल का स्रौर हमारी जानकारों है कि १७ स्रजैल को विधान परिषद् का चुनाव होगा।

श्री उपाध्यक्ष--१४ म्रप्रैल को होगा ।

श्री राजनारायण—-ग्रौर पहले ग्रा गया। १४ ग्रप्रैल को सरकारी कर्मचारी बोट देंगे ग्रौर उसमें सरकार को क्या करना चाित्ये, यह देखने की बात है। क्या सरकार इस बीच में कोई व्यवस्था कर चुकी है ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--उपाध्यक्ष महोदय, कानून को बदलने का मुझको ग्रधिकार नहीं है। जिसको कानून में ग्रधिकार होगा, वह होगा।

श्री उपाध्यक्ष--नारायणदत्त जी का जो सुझाव है?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द−–त्रह मुझे स्वीकार है, ग्रगर माननीय प्रस्तावक को स्वीकार हो ।

श्री वीरसेन—उपाध्यक्ष महोदय, में तो समझता हूं कि यह वक्त कम है। सान लीजिये कि ३१ जुलाई तक श्रवधि रहेश्रौर इस बीच में पास हो जाय, तो इस सदन को वापस लेने का कोई बन्धन नहीं है। लेकिन माननीय मुख्य मन्त्रों ने स्वीकार कर लिया है, इस लिये में भी 'स्वीकार करता हूं।

श्री उपाध्यक्ष--तो ३० श्रप्रैल रख दिया जाय।

प्रश्न यह है कि उत्तर प्रदेश जिला परिषद् विधेयक, १६५६, २८ ग्रगस्त, १६५६ को दोनों सदनों की एक संयुक्त प्रवर सिमित को निर्दिष्ट किया गया था ग्राँर उत्तर प्रदेश विधान सभा को प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियामावली, १६५८ के नियम २५८ के प्रथम परन्तुक के ग्रनुसार सिमिति का प्रतिवेदन २७ नवम्बर, १६५६ तक उपस्थित होना चाहिये था। परन्तु चूंकि सिमिति इस प्रविध में ग्रयना कार्य पूरा नहीं कर सकतो, ग्रतः प्रतिवेदन प्रस्तुत करने को प्रविध २१ दिसम्बर, १६५६ को ३१ मार्च, १६६० तक बढ़ायो गयी। इस ग्रविध में भो कार्य सम्पूर्ण होने की ग्राशा नहीं है। ग्रतः प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की ग्रविध ३० ग्रयन, १६६० तक बढ़ा दी जाय।

(प्रश्न उपस्थित किया गया श्रौर विभाजन की सांग होने पर घंटी बजायी गयी)

श्री राजनारायण--में एक निवेदन करना चाहता है।

श्री उपाध्यक्ष--जब डिवीजन चल रहा है .....

श्री राजनारायण—डिवीजन के लिये ही मैं क्रापसे यह प्रार्थना करना चाहता हूं कि डिवीजन कैसे हो। श्राप हम पर हावी हो जाते हैं, हम कुछ कह नहीं पाते।

श्री उपाध्यक्ष--म्रापको इतने स्पष्ट रूप से नहीं स्वीकार करना चाहिये।

श्री राजनारायण—जो सत्य है उसको मैं स्वीकार क्यों न करूं? यह मैं चाहता हूं कि यह सदन यह स्वीकार करे कि श्राप हमारे साथ कोई पक्षपात नहीं करते। तो मेरा निवेदन यह है कि जिस तरह से सन् ५७ से लगातार इसमें तिथियां घटाई बढ़ाई जा रही हैं श्रौर माननीय मन्त्रो जो को श्रोर से कुछ ऐसी परस्पर विरोधो बातें कही गईं हैं.....

श्री उपाध्यक्ष--ग्राप चाहते क्या हैं?

श्री राजनारायण—में चाहता हूं कि इसमें लाबी में भेजकर दस्तखत करवा लिया जाय कि कौन किस पक्ष में हैं।

श्री उपाप्यक्ष नमें इस निषय को इतना महत्वपूर्ण नहीं समझता कि उसे लाबों में भौजने का ऋश्वायक राही। इसनिये में दसकी जायों में नहीं भेजता श्रोर हाथ उठवा कर बोट सुंगा।

(प्रक्रायनः उपस्थित क्या गया यार हाथ उठाकर विभाजन होने पर निम्नलिखित मतानुसार स्वकार हहा

पक्षा में -१७४,

विषक्षा में --१४1)

श्री राजनारायण - श्रीमन, इयर १५ ही, काउन्य में गलती हुई है। सुधार करा लिया जाय। इस काई एउरान गृति कार रहे हैं। लॉकन जो भूल हुई उसका सुधार करा लिया जाय।

श्री उपाध्यक्ष प्रवानी वह ही गया। एक में क्या फई पड़ता है ? श्रीर श्रापने समय के श्रन्दर नहीं कहा और शायद एक न हाथ न उठाया हो ।

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनदानों के लिये मांगों पर मतदान— ग्रनदान संख्या २१--लेखा शीर्षक ३८--चिकित्सा तथा ग्रनदान संख्या २२--लेखा शीर्षक ३६--जन-स्वास्थ्य

श्री उपाध्यक्षा माननत्य न्याय मन्त्रा, श्रव श्राप दोनों श्रनुवान एक साथ पेश करें।

न्याय मन्त्री (श्री हकुमसिह विसेन) माननाय उपाध्यक्ष महोत्य, मै गवर्नर महोत्यय का निकारिश में प्रशास करता हूं कि व्यन्दान सम्या २१-चिकित्सा-लेखाशीर्षक ३८ निक्तित्या के व्यन्तर्यंत ४,०२,१५,६०० काये का मांग विसोय वर्ष १९६०-६१ के लिये स्वांकार को जाय।

श्रीमन्, में श्री राज्यपाल महोत्र र की सिफारिश से यह प्रस्ताय करता है कि श्रनुवान संग्ला २२ जन-वास्थ्य - जना शायंक ६६ जन स्वास्थ्य के श्रन्तमंत ३,०१,७४,४०० रुपये का मांग विन्ताय वर्ष १६६० -६१ के लिये स्वाकार की जाय ।

श्रामन्, कल भू-रात्तरप्रश्नोर रहेयर गिरा के अनवानां को वंश करने के सिलसिले में मेने यह कह विया था कि में समझता है कि मेरा इत ताम बहुत अन्दर्श है। इससे हमारे मित्र बालिया जिले के ता है जाको बढ़ा आधाल पहुंचा और किया चोट पहुंची।

श्री उपाध्यक्ष- ग्रापने बनिया जिले को ही क्यों ग्रपना मित्र समझा?

श्री हुकुर्मालह विसेत -- श्रांत्या को रिश्तेदारी कुछ एसी ना नुक हे और क्योंकि उन्हीं को बांद पहुंची भी श्रीर दिल पर सीट पहुंची भी। श्रांत्र कल दिल की बीमारी बहुत बढ़ती जा रही है। तो श्रांत्र में उसे वीहराऊंगा नहीं श्रीर ज्यादा में कोई बात नहीं कहूंगा। मुमिकत है कि उनकी श्रीर ज्यादा श्राधाल पहुंच जाय। दवा हमीं को करानी पड़ेगी। में इतना हो कहना चाहता हूं कि हमारे माननोय गदस्य कुछ इधर बैठने हैं श्रीर कुछ उधर भी बैठते हैं। ज्यादा बो शर उधर की तरफ के हो र ते हैं। वह लोग मुझसे कहा करते हैं कि श्रापक स्वास्थ्य विभाग का श्रीर विकित्सा विभाग का इन्तजाम श्रव्छा है। तो उनकी बात सुनकर में यह नहीं चाहता कि कुछ ज्यादा कहं। श्रांज वंसे हो १ १ ४ घन्टा उस प्रस्ताव में ल म हो गया। श्रव हमारे लिये ३।।। या ३।। घंटा बाकी हैं। इस कारण में ज्यादा समय नहीं लेना चाहता। जैसा मैंने कल कहा था हम श्रपने मित्रों की बात सुनना चाहते हैं। श्रगर हमारे इन्तजाम में कुछ श्रुटियां हैं तो उनकी सुझाए श्रीर सुझाबों को हमको बतलायें। श्रगर माकूल सुझाब होंगें तो उनकी कबूल करने पर विचार किया जायगा श्रीर झगर माकूल नहीं होंगे तो फिर हमारे लिये मजबूरी होगी।

# १६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रतुदानों के लिये मांगों पर मतदान-प्रतृदान संख्या २१--नेखा कीर्षक ३८-चिकित्सा तथा स्रतुदान संख्या २२--नेखा कीर्यक ३६--जन-स्वास्थ्य

हम अगर समझेंगे कि ठीक सुझाव नहीं हैं तो उनको स्वीकार नहीं किया जायगा। लेकिन हम कभी ऐसा खयाल नहीं करते कि हमारे उधर के बंडने वाले सब गलत बातें ही कहते रहेंगे। ठीक बातें भी कहते हैं और उनकी बातों को हम पसन्द्र भी करते हैं। तो इतनी बात कहने के बाद मैं इस्तदुश्रा करूंगा कि सदन इस पर विचार करें और जिस सावधानों के साथ कल वायुनन्डल अच्छा रहा, हम समझते हैं, हाउस का आज भी वायुमण्डल अच्छा रहेगा। लोगों ने बड़ी प्रसन्नता जाहिर की, हमने ही नहीं बिल्क सब लोगों ने कहा कि इस सदन में डिबेट का स्टैंडंड कल अच्छा था। हम आशा करते हैं कि वह डिबेट का स्टैंडंड आज भी कायम रखेंगे और इस अनुदान को स्वीकार करेंगे।

श्री उपाध्यक्ष --में समझता हूं कट त: के प्रस्ताव के लिये, चूंकि समय कम हो गया है, १५ मिनट और माननीय सदस्यों के भाषण के लिये ७ मिनट और विशेष परिस्थित में एक दो मिनट और भी दिया जा सकता है। यह व्यवस्था, मैं समझता हूं, ठीक रहेगी।

श्री रामायणराय (जिला देवरिया) --श्रीमन, मै ग्रापकी श्राज्ञा से ग्रनुदान संख्या २१-चिकित्सा- लेखा शीर्षक ३८ तथा ग्रनुदान संख्या २२--जन-स्वास्थ्य लेखा--शीर्षक ३९ में एक-एक रुपये के कटौती का प्रस्ताव सदन के समक्ष प्रस्तुत करता हूं।

जहां तक इस कटौती के प्रस्ताव का सम्बन्ध है प्रारम्भ में ही में इस बात को स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि जैसा कि ग्रभी स्वास्थ्य मन्त्री महोदय ने इस ग्रनुदान को प्रस्तुत करते हुये कहा कि उधर के लोग बीमार पड़ते हैं ग्रीर बीमारी की हालत में उनके साथ जिस तरह का व्यवहार होता है, उसकी हमसे चर्चा करते हैं। तो केवल इथर के लोगों की बीमारी की ग्रवस्था में नहीं बल्कि उधर के बड़े-बड़े लोगों के बीमार होने पर मन्त्री तक के बीमार होने पर, हमारे चिकित्सकों ने ग्रौर चिकित्सालय में काम करने वालों ने उनके साथ कितनी सतर्कता के साथ काम किया है इसे मैंने स्वयं देखा है लेकिन इसके साथ ही यदि हम ऐसा मान लें कि इस विभाग के उस प्रमुख लक्ष्य में हमने प्राप्त कर लिया है तो शायद यह ग्रात्मश्लाघा होगी ग्रौर सत्य को छिवाना होगा। मैं ऐसा मानता हूं कि राजा को कभी भी ऐसा सन्तुष्ट नहीं होना चाहिये ......

श्री उपाध्यक्ष--माननीय सदस्य कृपया भ्रपना दूसरा कटौती का प्रस्ताव भी पेश कर दें।

श्री रामायणराय—-मैंने दोनों कटौतियों को एक साथ पेश कर दिया है। स्रनुदान २१ स्रौर २२ दोनों पर मैंने कटौती का प्रस्ताव रख दिया है।

(इस समय १ बजकर २५ मिनट पर श्री उपाध्यक्ष चले गये ग्रौर ग्रिधिकाता, श्री वीरसेन, पीठासीन हुये 1)

श्री रामायणराय—में ऐसा समझता हूं कि इस विभाग का लक्ष्य हमारा निर्यारित किया हुया लक्ष्य नहीं है। काफी प्राचीन काल से ऐसा कहा जाता है कि किसी भी स्माज के स्वास्थ्य विभाग का लक्ष्य यह होना चाहिये कि उस समाज में कोई भी व्यक्ति किसी रोग से पीड़ित न हो। उपनिषदों का जो सबसे बड़ा ग्राइशें है वह है 'सर्वे भवन्तु सुखिना सर्वे सन्तु निराभया। इसकी तरफ हम कहां तक गये है। इथर जब हम ध्यान देते हैं तो हमें कुछ किमयां दिखायी देती हैं ग्रीर उनकी ग्रोर में ग्रापके द्वारा माननीय मन्त्री जो का ध्यान दिलाना चाहता हूं। वे काफी उदारतापूर्व हमारे सुझा हों को सुनते हैं ग्रीर में समझता हूं कि वे उन पर ग्रवश्य विचार करेंगे।

सबसे पहली बात जिससे मुझे हैरानी होतो है, यह है कि हमारे सामने जो बजट का साहित्य है उसमें चिकित्सा के बजट में यह दिखाया गया है कि जो पिछले वर्ष हमारा इस विभाग का बजट था उसमें १७ लाख ७५ हजार रुपया खर्च नहीं हो सका। क्षय रोगियों के लिये जो घन श्रि रामायण राय।

श्रि रामायण राय। पह प्रा का पूरा राच नहीं किया जा सका। हम जो योजनाये चला रहे थे,

उन याजा या का जिन्नी तोत्र गा से हमको ने जाना चाहिए था, उनने तीत्र गित में हम नहीं

ले गर्व योग उसका परिणाम यह हथा कि जो भी पन उस रिमाग का मिना था वह खर्च नहीं

हथा। हा सिक में एमा मानता हूं कि यन्य राज्या के मान्य ने महमारे राज्य में इस विभाग

के जिट का जा या है वह बहा ही था पह । त्यान म परे पनट का साढे बारह प्रतिक्षत

इस तिभाग के बजट पर स्वनं होता है, किन हमारे यहा पूरा नजे १३३,२३ करोड़ का है

पीर उसम से महन के करोड़ कर्या हम दा जिनाग पर पन करने जा रहे हैं श्रीर वह भी हम

पूरा का पूरा साल भर में राचे नहीं यर पाने। उससे म तथा एमा समझ ले कि हमारे यहां लेग

बह पेसा राचे नहीं हुया । यह कुत्र भी कहना अतिदायां कि होगी। माननीय मन्त्री जी भी

उसका रताकार करण कि आज गाव के निकत्मालयों को जिनना हमें अन्यान देना चाहिये,

उनकी जो। यावश्यकनाय है, उनवर जनसंख्या का जो भार है उसक अनुपान में हम उनकी

श्रान्द नहीं वे पाते। इस निलक्षिलें में एक अवध बात की अरेर में संकेन करना चाहता हूं।

गाय के चिकित्सालयों में स्रापने ४०, तपये माहबार के रसोई रे की व्यवस्था कर वी है, कहार की भी व्यवस्था कर दी है, लेकिन रोगियों के लिये जहां तक भोजन का प्रकृत है स्वापने पूरे वर्ष को लिये, पूरे प्रस्पताल का लिये ४०, ५० गगये की रकम केंबल रखी है। ऐसे ही बार-बारे इस सदन में चर्चा हातों है, कि क्या कारण है कि राज्य में हमारे जितने भी श्ररपताल खुले हैं उनके निये जित्तन डाहरों की श्रावश्यकता थी यह हमशों नहीं मिल सके। में ऐसा समझता हूं कि इस प्रत्य है साथ या-तीन माटा मोटो बाते लगा हुई है । अगर जन बातो पर यह विभाग धार्त व तो हमार राज्य माजा सबस बड़ा स्वायक्ष्यकता केंबडरा का है यह परी हो सकती है। सबसे पहला बात रा पह ह कि इत डाक्टरों का जिन परिस्थितियां में काम करना पडता ह उन परि स्थितियों का हमें चलना परेगा। साथ हो साथ जा से सबे उन हे हाया संसाधित होती है उनके बदलें में हम उन्हें क्या वरस्कार वें ने हैं, उस वरस्कार पर भी हम ही विनार करना चाहिये बीर उन सेवाक्रा है निये क्या सारत हमने उनहीं दे रुखे र इसही निये सी हमें सी बना चाहिये। ब्राज बाठ एमठ साठ या प्राई ० एमठ साठ पास करने के बाद एक प्रादमो मेरिक न का नेज का विद्यार्थी अनता है। इन परिश्रम करने वाले विद्यापियों की ५ सान का कठित परिश्रम करने के पश्चात् एम० बार बार एस० किया सिनना है। ५ साल बाद वे उस पास कर पाते है। उसने बाद उसका पोर्ण एसर एसर (२) में लिया जाता है और उन्हें २०० काया बेतन निनता है। वोसी रुपयं से इसका तीवन प्रारम्भ होता है। बरिव नाफ इसके जब यह मेडिकल कालेज में भरती होताह, पढ़ रे रु नियं जाताह, ना उस दिन से उस है घरताने यह नमभने हैं कि हुमारा बच्चा इतिना प्रतिभाषाला ह कि जिस विन वह जावन में प्रदेश करेगा उस विन हमारे घर में सीते को वर्षी होता । ताम ऐसा समगता हू कि जी पो० एम० एस० (२) का ग्रेड है यह एवालिश होना चाहिय भीर में यह भाशा करूंगा कि भाज मानतीय मंत्री जो यह स्पष्ट घीवणा करे भ्रानी माति को, क्यंशिक कामून कीई अंथे का लाठो तो है नहीं। माज यावग्र पास मावमी बीवडोवमीर हों जाता है, हाई स्कूल पास भावमी बोठ डोठ ग्रीठ हो जाना है। एक ग्रावमी को इतनी तनस्वाह को जाय और दूसरा जो इतना तगरया करने के बाव एमं बांव वो एसंव हो उसे धननी कुम लनक्वाह मिले यह गलत बात है। में यह कहूंगा कि वह आवमी जो इतना परिश्रम करने के बाद एमं बोठ बोठ एसठ पास करता है वह हमारे समाज का सेता करने के लिये आगे बढ़ता है, वह सारे समाज के कीढ़ की धीने का बोड़ा उठाता है, और अगर वह नाम मात्र का वैसा पाता है तो गलत हो है, यह उचित नहीं कहा जा सकता।

इस हे स्रीतिरिक्त डाक्टरों को कभी को प्राकरने के लिये जहा माननीय मत्रो जी ने प्राश्वासन विया है कि अधिक मेडिकल कालेज खीले जायंगे, वहां में उनसे यह भा कहुगा कि डाक्टरों की जी कंडाशन श्राफ सर्विस है उसकी भो नुवारा जाय। यह समस्या ग्रासानों से मुन हाई जा सकती है। सरकार की इस ग्रोर ध्यान देना चाहिए।

# १६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--- स्रनुदान संख्या २१--- लेखा शीर्षक ३८--- चिकित्सा तथा स्रनुदान संख्या २२--- लेखा शीर्षक ३६--- जन-स्वास्थ्य

दूसरा सुझाव मेरा यह है कि डाक्टरों के नीचे यह जो निसंग स्टाफ है उस की ग्रोर भी ध्यान विया जाय। यह दिखनाया गया है कि हमने नर्सेज को ट्रेनिंग के लिये जितना रुपया रखा था वह खर्च नहीं हो सका क्योंकि हमको जितनी भ्रावश्यकता थी उतनो नर्सेज हनें नहीं मिलों। ऐसा क्यों है ? हमें इस पर भी विचार करना चाहिये। मैं मानता हूं कि निछने वर्ष माननीय मंत्रो जी ने कुछ उदारता दिखलाई ग्रौर उनकी तन ब्वाहों में कुछ वृद्धि हुई। किन्तु वह नाम मात्र हो थो। वस्तुतः जो काम हम उनसे लेना चाहते हैं उसके मुकाबले में उनका पुरस्कार उनको मर्यादा के लिये ग्रौर उनको सेवाग्रों के लिये सनुचित नहीं है।

जहां तक ग्रीवियों का प्रक्त है उसके संबंध में भी मैं स्वब्ट कह देना चाहता हूं कि इस क्षेत्र में एक अजीव बात हमें देखने को मिलती है। इस कटमोशन की तैयारी के सिलसिले में मैने कुछ साहित्य इस विभाग से संबंधित देखा तो मुन्ने ज्ञात हुन्ना कि न्नाज से कुछ वर्ष पूर्व लगभग ५० ऐसे लोग हमारे राज्य में थे जो ऋौबियों का निर्माण करते थे, किन्तु घोरे-घोरे वे काफी तादाद में बम्बई चले गये श्रीर श्रव करीव २० संस्थायें ऐसी है जो हमारे राज्य में श्रौपियां बनातो है। इसलिये मेरा सुझाव है कि समाजवादी समाज को कत्यना करने वालों के लिये जहां भोजन की व्यवस्था करना ब्रावश्यक है वहां चिकित्सा को स्रावश्यकतास्रों को भी पूरा करना स्रावश्यक होता है। विकित्सा स्रौर श्रीषिवयों के क्षेत्र में , खासकर श्रीषिवयों के क्षेत्र में, राष्ट्रीयकरण श्रिनिवार्य है । श्राज बाजारों में असली दवाइयां मुश्किल से मिल पाती हैं। इसके कारण न जाने कितने लीगों के प्राण नहीं बच पाते हैं, क्योंकि उनको जाली दवाइयां भिलती हैं। तो मेरा यह प्रभावशाली सुन्नाव है कि राष्ट्रीयकरण इस संबंध में हो । अगर आप चाहते हैं कि लोगों को सस्ती और अँच्छी देवायें भिल सकें तो इस चोज को ऋाप तुरन्त साहस के साथ ऋनने हाथ में लें । आज बड़ो ग्रव्यवस्था फैली हुई है इस क्षेत्र में । यह मैं मानता हूं कि हम विवायकों के लिये ग्रापने जिला ग्रस्पतालों में एमं एल एए स्टोर्स कायम कर रखे हैं। लेकिन उस पिपुल जन-समाज के लिये जिसके लिये हमने स्रोर स्रापने बोड़ा उठाया है कि हम उनको सेवा करेंगे स्रौर जिनके स्राशोर्वाद से हमें यह सुम्रवसर प्राप्त हुम्रा है कि हम इस भ्रनुदान पर म्राज यहां विचार प्रगट करें उनकी ऐसी मांग है कि ग्रौषिध के क्षेत्र में जो ऐनार्की है हम उसको समाप्त करें ग्रौर वह तब तक समाप्त नहीं हो सकती जब तक उसके उत्पादन श्रीर वितरण का दायित्व सरकार श्रवने कंबों पर लेने के लिये तैयार न हो जाय । यह कोई कहे कि हमारे राज्य को जलवायु उनके अनुकूल नहीं पड़ो इसिलये वे चले गये तो आप जानते हैं कि हम ऐसे प्रदेश के रहने वाले हैं जहां प्रत्येक प्रकार की जलवायु उपलब्ध है श्रौर उनमें से बहुत सी श्रौत्रिधियों के लिये रा मैटिरियल भी मिलता है, पर्वतीय प्रदेश में जड़ो-बूटियां काफी भरो पड़ी हैं। मैंने ग्रयने साथी प्रताप सिंह जी के साथ वहां जाकर देखा कि वहां बहुत सी वनस्पतियां तथा जड़ी बूटियां विद्यमान है जिनके सहारे से हम अपनी आवश्यकताओं का पूर्ति कर सकते हैं। यहां सीमावर्ती क्षेत्र की बहुत चर्ची होती है। क्यों नहीं सरकार ऐसा करती है कि दबाई के कारखाने उन स्थानों में स्थापित करें?

मान्यवर, श्राये दिन डाक्टरों के ट्रांसफर के सम्बन्ध में भी चर्चा सुनता रहता हूं । में बड़ा हैरान होता हूं जब उनके ट्रांसफर को बात कही जाती है, इसिलये कि मैंने थोड़ा बहुत इस विद्या से ग्रन्ना नाता रखा है, थोड़ा बहुत चिकित्सा शास्त्र का ज्ञान मैंने भी हासिल किया है । मुझे मालूम है कि हमारे देश को छोड़ कर दूसरे देशों में फैमिली डाक्टर्स का इंस्टोट्यूशन डेवलप हो रहा है । वहां पर एक खास भू-भाग के निवासियों का सम्बन्ध एक विशेष डाक्टर से हुग्रा करता है । वह डाक्टर जानता है कि किस परिवार के ग्रन्दर कीन सी किमयां हैं । जो लोग ऐसा मानते हैं कि डाक्टरों विद्या कोई ज्योतिष है कि डाक्टर देखते हो समझ जायगा कि कीन सा रोग हुग्रा है, वह लोग तो कह सकते हैं कि डिप्टो कतक्टर को तरह उसको बदलते रहो । भ्राज यहां, कल वहां, परसों पहाड़ पर भेज दो, लेकिन डाक्टरों के मामले में जो यह कानून बना कि

#### |श्री रामायणराय|

३ वर्ष में द्रापकर दोता नारिये, सर्वे राव्ये उसा मात्रसा । समाननीय मंत्री जी से ब्रापह कर्मपा कि दारप्रके द्रारकर के सम्यामें जो शासन का बोर्ड काण ह वह बदलना चाहिये, क्यों कि उनके दरारा ए । कास हा । र जिसके सारण उनका एक स्थान पर रहना जहारी है। हा, श्रापक का क्रियर सामना है ता दसरा बावह ।

मान्य वर, आत इ। जानारा है साथ एह और प्रताय बात ही रहा ह, जिसकी जानकारी, में समझता ह, साल राव गयी जो का आवारा । तहा है नाल है मध्ये जानकर कि बाव अंक्यों के लिए प्रेंग के जान कर कि बाव अंक्यों के लिए प्रेंग के जान कर के साथ अंक्यों के अंक्यों के जीतपुर में एक प्रेंग कानकर से बाद गर्थ से का का कि साथ के साथ के साथ के प्रारं के साथ अंक्यों के कि हाई रका पास आदियों भाव के उठि पाठ के अंक्यों के स्वाय के स्वयं के साथ का साथ

एक सबसे बड़ा बात निसंपर में स्वामों योगा मान तीय मंत्री जो का त्यांन स्राकृषित करता चाहता है, यह है चिकित्सा को नार्धि है पति । अभा आतंस कु व दिन पर्वे यह कहा गया और शापने भाश्रामें बनद भाषण मन्त्रा कहा गांकि सभा प्रकार को पञ्चित प्राएक साथ विकसित हों। में समजताह यह वरिकाण गतानिक नताह । सम्भात कि मेर कथन के कुछ लीग गलत श्वर्थ लगारे, लेशिन मरेद गार कि आन अगर वय भावामार परते हे तो वह एलोपैथिक की शरण में जाते हैं। लायनक हमाने बहु हामियार्गान हाइटर की मंते बेला कि वह यहा के एक उच्च ए नारिशक चिकित्सानय ही झरण में क.फो श्रम तक रही। मैने जब इस पर विचार किया तो मेरे सामने एक ही जात आहे कि यह काई अलोखी बात नही है, इंग्लंड में आर क्षाप वेला या सूर। प के दशर या। स देशे तो अहा पर क्षिकि सक की विद्यी प्राप्त करते के सबसे पत्ने एम० ती० मी० एम० का ज्ञात प्राप्त करना आवश्यक होता इनना ज्ञान प्राप्त करा है नाय यह किया एक विशेष क्षेत्र में कीई श्रवसन्यान सरना च। उते हा, ए ११४ थिक मोडीसन में, यनाना मेडिसन में या होस्यो-पैथिक मेडिनिन में करना चाहन हो तो उसकी कर सकते हैं। श्रान्तिर एम० बो-बी० एस० है क्या ? वहा पर लीगां का एनाटामी, फिजियो नाजी, दारार रखना बताई जातो है, ग्रीविधि का जान कराया जाना हु। ए.स.से एस इतना जान ती हर डाक्टर के अन्दर होना चाहिये। लेकित यहा पर ता लंग दे महाते में सदिकि है। लेकर डाक्टर बन बंडने हैं जिनहीं चिकित्सा करने का जान नहीं होता, लेकिन वह चिकित्सा करने तमने हैं। मानताय में एवं मंत्री ने शायद एक कमेटा बनाकर नेतोतान में विचार विनिमय किया था लोकन मेरो समझ में यह विचार विनिमय एकामी या और वह इसनिये, क्योंकि उसमें केवल यही लीग व नाये गये थे जी एक हो विविक् जानकार थे। यह सहा सलाह क्या वे सकने थे ? यहां पर केवल आयुर्वेद के शास्त्री ही इक्ट्रा किये गर्ये थे। माननाय मुल्य मंत्रा भा थे, लेकिन वहा पर ऐसे विशेषशों का बलाया जाना चाहिये था जो प्रत्येक प्रकार का विधि को जानकारा रखते थे। ऐसा नहीं किया गया। भाज भावश्यकता इस बात का या कि, जेमा कि मेर्ने सन् १६५७ में भारते प्रार्थित भाषण में निदेश किया था, कि हमें तिन्येत्सि करने का काश्चिश करना काहिये थी जिसका प्रयास कुछ पहले किया गया था, लीकन माज वह प्रयास बिलर बना है। होमियो। यी कहीं चलो गई, प्रायुर्वेद कहीं खलागया । आज हमारे बेश में प्रभावकारी आंप्रियों का निर्माण किया गया है । सिन्येसिस का मनलब कभो जोड़ नहीं हुन्ना करता, इसका ऋषे हैं वो प्रकार का खोजां से एक सुवोरियर चोज बने ।

जहां तक स्वास्थ्य विभाग का सम्बन्ध है, उसके सम्बन्ध में भी में कुछ चर्चा करना चाहता हूं। स्वास्थ्य विभाग कुछ काम कर रहा है, मसेरिया कन्द्रोल कर रहा है और फाइलेरिया की समाप्त कर रहा है लेकिन वह इस सम्बन्ध में कितना काम कर रहा है इसकी चर्च करके मैं सदन का समय नष्ट नहीं करूंगा । एक बात जो सर्वमान्य है जिसे मंत्री जो भो कबून करेंगे उसकी ग्रोर में मंत्री जो का ध्यान ग्राहष्ट करना चाहता हूं । क्या यह विभाग इतने वर्षों में भी भोजन की वस्तुओं में जो मिलावट होती है उसको रोकने में समर्थ हो सका है ? मंत्री जी ने अपने विभाग के साहित्य में यह ग्रवस्य लिखा है कि इतने लोग पकड़े गये, इतने लोगों पर मुकदमें चले लेकिन इसका परिणाम क्या हुग्रा ? क्या ग्राज भी प्रदेश को इस राजधानो में भी शुद्ध घो तथा खाद्य पदार्थ कहीं मिल सकता है ? नहीं मिल सकता है । तो मंत्रो जो से भेरा ग्राग्रह है कि इन प्रश्नों पर जो ग्राज के सबसे बड़े प्रश्न हैं स्वास्थ्य ग्रीर चिकित्सा के क्षेत्र में उन पर गहराई से विचार होना चाहिये ।

मुझे और भी सुझाव देने हैं किन्तु समयाभाव से अन्त में में एक मिनट और लेना चाहता हूं। में मंत्रो जो को एक सुझाव दे रहा हूं जिससे उत्तर प्रदेश के सबसे निछड़े हुये भूभाग का संबंध है—यूर्वी उत्तर प्रदेश, जहां की जन-संख्या करीव डेढ़ करोड़ की होगी। उस पूरे प्रदेश के अन्दर एक भी मेडिकल कालेज नहीं हैं। जन-संख्या का घनत्व वहां पर इतना छिषक है, जिसके कारण पेट को बोमारियां, फाइलेरिया और न जाने क्या-त्रया रोग पैदा हो गये हैं। में मंत्रो जो से आग्रह करता हूं, और माननीय सदस्यों ने भी लिखकर मंत्रीजी से आग्रह किया है कि अगलो पंचवर्षीय योजना में मंत्रो जी गोरखपुर में एक मेडिकल कालेज जरूर खोलें क्योंकि वह भी स्वीकार करते हैं कि वहां पर चिकित्सा का अभाव है और इस अभाव को पूर्ति के लिये गोरखपुर का मेडिकल कालेज बहुत सहायक सिद्ध होगा। यह मेरा सबसे बड़ा आग्रह है।

श्री हरिश्चन्द्रसिंह (जिला बदायूं)—माननीय श्रिधष्ठाता महोदय, में जो श्रनुदान माननीय मंत्रो जी ने प्रस्तुत किया है उसका समर्थन करने के लिये खड़ा हुश्रा हूं।

माननीय मंत्री जी ने जिस दिलचस्पी से काम लिया है ग्रौर जिस तत्परता के साथ इस डिपार्टमेंट की शिकायतों को सुना है उसके लिये वह बधाई के पात्र हैं। मैं तो डाक्टरों को ग्रौर इस विभाग के ग्रन्य कर्मचारियों को भी बधाई के पात्र समझता हूं ग्रौर में ग्राशा करता हूं कि वे इस गरीब देश के मरीजों के साथ इसी तरह से सहानुभूति के साथ काम करते रहेंगे जैसे वे कर रहे हैं। जितने ग्रौर विभागों के कर्मचारी हैं उनके मुकाबले में मेडिकल डिपार्टमेंट के कर्मचारियों को कर्टसी, सद्भावना, कार्य-तत्परता ग्रौर संलग्नता ग्रहितीय है। माननीय मंत्री की कर्टसी की छाप उनके ऊपर लगी हुई है ग्रौर ऐसा होना भी चाहिये। मैं यह भी देख रहा हूं कि इस देश में बड़े-बड़े रोग, जैसे कालरा ग्रौर प्लेग, भयंकर रूप में ग्रपना प्रकोप दिखाया करते थे, ग्रब वह बात सुनने में नहीं ग्राती है। इसके लिये भी मेडिकल डिपार्टमेंट बघाई का पात्र है।

जिस चीज की मैं कमी देखता हूं वह यह है कि यहां को जनता द० फीसदी देहातों में रहती हैं। शहरों में केवल द६ या द७ लाख ग्रादमी रहते हैं। जितने शफाखाने शहरों में खुल रहे हैं उनके हिसाब से देहात में खुलने वाले एक तालाब में एक बूंद के समान हैं। शहरों में तो मालदार ग्रादमो रहते हैं। वहां के लोगों की ग्राय प्रति व्यक्ति ग्रिधिक होती है। इसलिये में चाहता हूं कि देहातों में ग्रिधिक शफाखाने खोले जावें।

एक बात मुझे ग्रयने इलाके के बारे में कहनी है। वह यह है कि मैं तहसील दातागंज में रहता हूं, जिसकी ग्राबादा लगभग ३ लाख है। । उस ग्राबादी के लिये केवल ३ शफाखाने हैं। उनमें से दो कस्बे में हैं ग्रौर एक गांव में है। गांव के शफाखाने में, जो १०, १२ साल से खुला है, कुल टोटल मिलाकर शायद हो २ वर्ष से ज्यादा वहां डाक्टर रहा हो। ग्रब द महीने से वहां डाक्टर नहीं है। ग्राजकल चूंकि ग्रौरतों ने घरेलू काम करना, चक्की पीसना बन्द कर दिया है, इसलिये वे बोमार ग्रिक रहने लगी हैं। मेरे क्षेत्र में उनके लिये भी कम से कम एक ग्रस्पताल होना चाहिये। [अ. हरिश्वन्द्रसिंह]

दगरी बान यह है कि गावों में डाक्टर जाना पमन्द न में करने च कि सप के साधन वहा उपलब्ध नहीं है। इसिनये कछ पाक्टर उस न में पडाये जावे कि उनसे मुत्राहिदा करा लिया जावे कि उन्हें गाप से कम से कम ३ या ४ वर्ष नौकरी करनी होगी। उम किस्म के भी कुछ डाक्टर पढाये जावे कि २, २ प्रयंपढ़ने के बाद ये गावों से काम कर सके। यदि ऐसा नहीं होता है तो गावों के शका जाने जाने पडे रहेगे और वहां की पढिनक की कीई कायरा न टी होगा। धन्यवाद।

ेश्री शिवप्रसाद नागर (जिलामीरो) प्राधारता महोदय, मं माननीय रामायणराष जी के महोतं। के प्रस्तात का समंधन करने के लिये गाना हूं।

सबसे पहले म मानतीय मंत्री जो की धन्य शह तो देना चाहता हूं कि वह इस विभाग में बडी तत्वरता से काम लेने हे परन्त म उन्हें बचाई नहीं दे सकता । बचाई इसिन्धे नहीं दे सकता कि जिनता प्रयत्न यह करों हे उत्तरी सकता। उन्होंने प्राप्त नहीं को । इसमें शक नहीं कि उन्होंने सरप्राइन विजिद्ध की प्रोर प्रस्पालों पर प्रात्त होता। उन्होंने द्रापकर करने की सजा नहीं तमझा, चाहे इक्षर के सहस्यों ने श्रोर उचर के सहस्या ने निरेडन क्या हो। उसे उन्होंने न मानकर द्रात कर कर दिये श्रीर कह दिया कि द्रापकर कीई सजा नहीं है। भेरा हृदय कहता है कि में मानतीय मंत्री जो को धन्य याद द्रापरन बचाई नहीं वे राजा नहीं है। भेरा हृदय करता है। म उन्होंने और भो बााई नहीं देना चाहता है कि मेंने नातीमार के सदर श्रस्पताल के बारे में जनाई, १९८६ में एक जिकायन में नो जिसमें भेते रहिस्किए एलोगेशनस लगाये। मगर जब यहा ने मानताय मंत्री जो ने उसको जाच के निये ठाइरेक्टर साहेब को भेजा तो उन्होंने एक दाक बन ने पर महें बनाया श्रीर इस तरह में उसकी जान की। मालम होता था कि वह जान करने नहीं श्राये थे बिह कम्बोम कीट के जज ही सर बहा फेमला करने गरे थे। उन्होंने जाव के समय उन लोगों तक की नहीं बुनाया जिन से जिन ही जाता।

एक बार्ज ब्राइटम नाबर वो पर लगाया गया है। एक सरकारो कर्मचारी को ४ महीते तक यह महिफिकेट दिया जाता रहा है कि इसके बोनो लंगा एक कटेड है, यह तर्गेदिक का मरीज है, काम करने के कांबिल नहीं है। चार महीने के बाद एक दिन यह लिखा गया कि इसकी कंडीशन सीरियस है मगर ठीक वसरे दिन उसके लिये यह लिख दिया गया फिट फार इयूटी है। यह लखीमपर जिले के निकित्सा विभाग के हैड ब्राफ दि डिपार्टमेट की करतून है। यह इयूटी पर जाता है और दूसरे ही दिन उसकी मत्य हो जाती है। इतना बड़ा अवटाचार कि एक ब्रादमी दूसरे ही दिन मौत के मृंह में जाने वाला है उसके लिये जिला जाय कि यह "फिट फार इयूटी" है। जब मैंने उसकी शिकायत की तो विभाग के सबसे बड़े ब्राधकारों ने उसके अपर मोटा हुमा पर्दी डाल दिया और मेरे प्रक्रन का उत्तर दिया गया कि शिकायत निराधार है। यह बड़े शर्म की बात है कि उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा ब्रादिकारी इस प्रकार से सक्ती बीज पर पर्दी बातता है। जिस विभाग के इत ने सबेंट मंत्री है उस विभाग के ब्राबिकारियों हारा इस प्रकार से उनकी ब्राखों में बूल डाली खाती है। इसिलिये यद्याप माननीय मंत्री जी को में बन्यवाद देता हूं कि उन्होंने तरन्त जांच कराई, लेकिन बचाई इसी कारण से में उनको नहीं वे सका कि सच्चाई हाते हुये भी जाच में उसको झूठ कर विया गया।

लखीमपुर से वो मील साढ़े चार फलाँग दूर एक महिलागंज नामक मुकाम है मगर लागनुक में उसके लिये लिखा गया है १४ मील है। यह तो लागनुक में लिखा हुआ है लेंकिन जब उसकी शिकायत की गई तो जबान दिया गया कि शिकायत निराधार है। जो जीज तहरीर में है और शिकायत करने वाला मौजूब है किर भी वह चीज मूठ ठहरा वो जाती है। बड़े-बड़े अधिकारी एक सच्ची बात पर पर्दा डालते है। लखीमपुर से श्रोयल पक्की डामर रोड है जो १० मील है, लेकिन लाग बुक में ४० मील लिखा हुआ है।

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

सबसे बड़ा ग्राम्भा मुझे तब हुग्रा जब कि २३ सि उम्बर, १६५७ के दिन यह लिख दिया गया कि गाड़ी निघा उन गई। में दावा करता हूं ग्रोर मंत्री जी, डायरेक्टर ग्रौर गवर्नर तक से में दावा करता हूं कि ग्रगर सितम्बर के महीने में कोई गाड़ी निघासन चली जाय तो में ग्रथना सारा वेतन ग्रौर एलाउन्स हारने के लिये तैयार हूं। उस समय दिरया ५ मील लम्बा होता है, न साइकिल जा सकतो है ग्रौर न नाव हो चलतो है। जो पैन्टून बिज है वह भी तोड़ दिया जाता है ग्रौर सरकार को तरफ से यह रेस्ट्रिक्शन हो जाता है कि खतरा है, इघर से जाना खतरे से खालो नहीं है। लेकिन वान चली गयी। पांच मील लम्बे क ट को फलांग कर चली गयी। लाग बुक में साफ लिखा हुग्रा है कि २१ सितम्बर को गाड़ी निघासन गयी, इसको सुनकर मुझे हैरत होतो है। उसकी जांच के लिये सबसे बड़ा ग्राफिसर जाता है ग्रौर उस पर एक मोटानसा पर्दा डाल देता है। मुझे शर्म है इस बात पर कि मेंने शिकायत की ग्रौर उसका कोई परिणाम नहीं निकला, ग्रौर मुझे शर्म ग्राती है उन पर जिन्होंने इसकी जांच की ग्रौर जांच करके उस पर बड़ा भारी पर्दा डाल दिया। में इसके लिये मंत्री जो को कुछ नहीं कह सकता हूं क्योंकि उन्होंने तत्परता से काम लिया ग्रौर जांच के लिये फौरन ही ग्रार्डर दिया। लेकिन वे विवश है कि जिस व्यक्ति के द्वारा उन्होंने विश्वास करके जांच करायी, उनका वह विश्वास गलत निकला। इसलिये उनकी इसमें कोई खता नहीं है।

मैं एक बात की तरफ श्रापका घ्यान ग्राकित करना चाहता हूं। २६ सितम्बर, १६५७ की लागबुक में लिखा हुग्रा है निघासन-वीरा रोड, लेकिन जिला खीरी में वीरा रोड नाम की कोई सड़क ही नहीं है। साथ ही लखीमपुर एक मील के रेडियस में बसा हुग्रा है उसके एक मील इधर-उधर कोई माइलेज स्टोन नहीं है, लेकिन लागबुक में लिखा हुग्रा है कि लखीमपुर से बढ़ई के यहां जाने में १० मील की दूरी तय करनी पड़ी।

\*श्री रघुवीरसिंह (जिला मेरठ)—ग्रिधिष्ठाता महोदय, यह स्वास्थ्य और चिकित्सा के सम्बन्ध में जो अनुदान मानतीय स्वास्थ्य मंत्री ने पेश किया है में उसका समर्थन करता हूं। यह जन-स्वास्थ्य और चिकित्सा विभाग एक बहुत ही महत्वपूर्ण और महान विभाग है। कृषि और सिचाई विभाग के बाद में समझता हूं कि हमारे प्रदेश की सबसे बड़ी सेवा यही विभाग करता है और हमारे प्रदेश के लिये सबसे ग्रिधिक लाभदायक है। पिछले १०, १२ साल में इस विभाग ने बहुत बड़ी प्रगति की है, और उसके कर्मचारियों ने प्रदेश की बड़ी महान सेवा की है। मेंने तो यह देखा है कि अब से १०-१२ साल पहले जहां टी० बी० के क्लोनिक शायद ही एक दो जगह ये वहां अब हर जिले के हेंड क्वार्टर में टी० बी० क्लोनिक बने हुए हैं और उस तरह से बहुत बड़ी संख्या में लोग जिला के हेडक्वार्टरों पर इत्राज के लिये जाते हैं। पहले जहां २,४ या १०,१२ मरीजों के रहने के लिये हो जगह थी वहां अब ५०, ५० और १००, १०० मरीजों के रहने के वियद हो जगह थी वहां अब ५०, ५० और १००, १०० मरीजों के रहने की व्यवस्था कर दी गयी है। इस प्रकार हम देखते हैं कि काफी प्रगति हुई है। देहातों में भी काफी ग्रस्पताल खुले हैं तथा स्वास्थ्य केन्द्र भी खुले हैं, हेल्थ यूनिट्स भी बहुत खुली हैं तथा मलेरिया ग्रादि को रोकने के लिये भी बहुत बड़े पैमाने पर प्रबन्ध किया गया है। लेकिन सब से बड़ी कठिनाई जो हम देखते हैं वह यह है कि देहातों की तरफ इस तिलिसले में बहुत कम ध्यान दि ता गया है।

माननीय मंत्री जी देखें कि जन-संख्या के हिसाब से देहातों में इन सब चीजों का प्रबन्ध बहुत ही कम है। ग्राबादी को देखते हुए देहातों में जन-स्वास्थ्य ग्रौर चिकित्सा के जो साधन हैं उनको बढ़ाना चाहिये। एक शिकायत ग्रामतौर पर सब जगह है कि चाहे स्वास्थ्य कन्द्र हों, चाहे ग्रस्पताल हों, वहां डाक्टरों ग्रौर मिडवाइफों की बड़ी भारी कमी रहती है। वहां ग्रस्पताल दवाई होते हुए भी खाली पड़े रहते हैं, बजाय इसके कि वहां की जनता को उससे

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

|श्री रघ्वीर्रासह|

कुछ फायदा पहुंचे इसकी वजह से यहां की जनता में बराबर श्रमन्तोप बढ़ता जाता है। इसके निये सरकार की डाक्टरों तथा मिडवाइफों की तादाद बढ़ानी चाहिये, ज्यादा मेडिकल कालेज स्रोलने चाहिये, यह मेरा स्झाय है।

कुछ लोगों ने यह मझाय विया है कि दालटरों की तनराता बढ़ा दी जाय तो वे देहातों में जाकर रह सकते हैं, लेकिन में इस स्वार को ज्यादा श्रन्छा नहीं समझता। क्योंकि मेंने देखा है कि एक स्कून मास्टर जिसे शहर में १०० के तनण्याह मिलतो है श्र्मर उसे देहात में जाने के लिये १५० के देना चाहने हैं तो वह शहर छोड़ कर जाने के लिये तैयार नहीं है। में अपने तज़र्वें की बात बतला रहा हूं। शहर के पानावरण मोर देहात के वातावरण में बहुत बहा श्रन्तर है। इसलिये में यह सझाय मरकार के सामने रखता है कि श्रायन्दा जो मेंडिकल कालेज लोने जांय वे शहर से बहुत दूर बिलकुन ग्रामीण क्षेत्र में खोने जांय श्रीर उन मेंडिकल कालेजों में जो दाखिला हो उसम ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले लड़कों को प्रिकरेम दिया जाय। इस तरह से बहां का वातावरण बिलकुन गांव बाला होगा। उन लागों को देहातों में नियुक्त होगी तो वह बहां रह सकेंगे। श्रयन क यह कालेज केवल शहरों में रांने जाते हैं जहां का शहरी वातावरण होता है और नतोजा यह होता है कि बहां से पढ़ कर श्रवटर वेहातों में जाना नहीं स्वाहते।

दूसरे, जो श्रह्मनाल देहानों में है भो उनमें बवाश्रों की बहुत कमी है श्रीर श्रक्सर २०-२० श्रीर ३०-३० मील देहात के लोगों को खलकर श्रर्मनाल तक पहुंचना पहता है, कभी-कभी तो श्रावमों सकन बीमार हो जाते हैं श्रीर श्ररपताल तक दूरी के कारण नहीं पहुंच पाते श्रीर रास्ते में या घर पर हो लटम हो जाने हैं। इसके श्रनावा गांव के लोगों को श्ररपताल में दाखिल होने में भी बड़ी दिक्कत होती है, वहां सारी सहालयने पहले शहर वालों की दी जातो है श्रीर गांव वालों का बाव में नम्बर श्राता है श्रीर गरीब लोग लले में, ल, सर्दा में बाहर पड़े रह जाते हैं, बरामवों में पड़े कि सरकार का इस तरफ ध्यान जाना चाहिये कि मेडिकल कालज देशतों में ही खोले जांय श्रीर उन में पढ़ने के लिये देहात के लड़कों को हा शहर के लोगों पर तरजीह दी जाय श्रीर उन के साथ यह कर्त रखी जाय कि जबतक वह पास करने के बावध साल तक देह तक श्रस्पतालों में नौकरी करने को राजी न होगें तब तक उनको वालिल न किया जायगा। इस तरह से खाकटरों की समस्या ह न हो सकती है।

हुमारा मेरठ जिला बहुत बड़ा जिला है और उसके ध्रासपास भी बहुत बड़े बड़े जिले है, वहां की २३ लाख की जनसंख्या है, वहां पर डिग्री कालेज ध्रीर इन्टर कालेज बहुत बड़ी संख्या में हैं। वहां की सारी जनता धौर जिलने वहां के इधर के धौर उधर के सदस्य है, माननीय सवस्य हैं, सभी की यह मांग है कि मेरठ में भी एक मेडिकल कालेज खोला जाय। हुमारी यह जोरवार मांग है कि इन तमाम बातों को प्यान में रलकर शोध हो एक मेडिकल कालेज की स्थापना मेरठ में की जाय और जहां तक हो वह देहात मे ही खोला जाय और वह स्थान शहर से काफी यूर हो।

\*श्री भजनलाल (जिला इटाबा)—माननीय ग्रधिरठाता महोदय, में कटौतो के प्रस्ताव का, जो पेश किया गया है, समर्थन के लिए खड़ा हुआ हूं। आज इस प्रदेश को जन-संख्या ६ करोड़ ४० लाख के करीब है जिसमें से हमारी ५० प्रतिशत जनता देहात में रहतो है, लेकिन जो रुपया इस विभाग के द्वारा मन्त्री जो को तरफ से क्यय हो रहा है उसके श्रांकड़े देखने से पता लगता है कि उससे जनता का ठीक लाभ नहीं हो रहा है। बड़ो दुहाई दो जातो है जनतन्त्र की ग्रीर कहा जाता है कि हम देहातो जनता का इलाज करने में संलग्न हैं, लेकिन इस रकम को देखकर मुझे ताज्जुब से कहना पड़ता है कि शहर में जो १४, १५ प्रतिशत जनता रहती है उस पर ग्रधिक खर्च हो रहा है ग्रीर एलोपेंचिक संस्थाओं में २,३३,११,६०० रुपया खर्च हो रहा है ग्रीर

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

#### १९६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान---स्रनुदान ८७१ संख्या २१---लेखा शीर्षक ३८--चिकित्सा तथा श्रनुदान संख्या २२-लेखा--शीर्षक ३९---जन-स्वास्थ्य

भारतीय चिकित्सा प्रणालियों पर केवल ३६,६६,००० रुपया खर्च हो रहा है। हमारी प्राचीन पद्धति को देखा जाय तो पहले सारे देश में मनुष्यों का इलाज स्रायवेंद चिकित्सा से ही होता था श्रोर बहुत बढ़िया इलाज होता था ग्रौर यहां से बाहर के देशों के लोग भी दवा ले जाकर अपने यहां इलाज करते थे; लेकिन ग्राज विदेशी देवाओं को हम महंगा खरीदते हैं श्रीर म्रायर्वेदिक चिकित्सा को प्रधानता नहीं दे रहे हैं म्रौर उनका प्रयोग दिन प्रति दिन घटता जा रहाँ है ख्रौर सरकार का इस तरफ विशेष घ्यान नहीं है। मैं सरकार से श्रपील करूंगा कि श्रायर्वेदिक चिकित्सा को श्रागे विशेष स्थान दिया जाय तभो देश या प्रदेश की ८० प्रतिशत जनता का कल्याण हो सकता है अन्यया नहीं। इस सम्बन्ध में मुझे यह कहना है कि आयुर्वेदिक चिकित्सा में मैंने देखा ही नहीं है बल्कि मन्त्री जी को पत्र भी मैंने लिखा था कि इस तरह की जो डिस-पेंसरीज देहातों में हैं, उनमें किसी-किसी में जैसे मैनपुरी जिले में हिन्दूपूर डिस्पेंसरी में एक कम्पाउन्डर १२-१३ साल से काम कर रहा है लेकिन वह स्थायी नहीं किया गया है। मेरी समझ में नहीं छाता कि इतना बड़ा समय बिताने के बाद भी एक कर्मचारी को स्थायी न किया जाय तो बड़े दुख की बात है। इस के बाद सरकार ने श्राय की श्रीसत के श्रांकड़े दिये हैं, पहले २७ साल, उस के बाद ३२ साल ग्रीर इस साल ४२ साल का ग्रीसत लिया। लेकिन यह श्रांकड़े बिलकूल निराधार है क्योंकि पता नहीं किस पैमाने पर सरकार ने इसको निश्चित किया में चाहंगा कि तरकार इस ग्रौसत को ठीक करे ग्रौर ग्राधार बताये।

प्रदेश में चार प्रकार की चिकित्सा पद्धितयां चल रही हैं; एलोपैथिक, होमियोपैथिक, आयुर्वेदिक श्रीर यूनानी पद्धित। इस सम्बन्ध में मुझे कहना है कि एलोपैथिक दवाइयों की बिनिस्बत श्रायुर्वेदिक दवाइयों पर, जिसका श्रिधिक सम्बन्ध देहात की जनता से है, ज्यादा रुपया खर्च किया जाय क्योंकि हमारे प्रदेश की श्रिधिकतर जनता देहातों में ही रहती है। देहातों की तरफ सरकार का श्रिधिक ध्यान जाना चाहिए।

ग्रामीण क्षेत्र में ग्रौषधालयों को जो राजकीय सहायता दो जाती है उससे पता चलता है कि सरकार दिन प्रति दिन उस रकम को कम करती चली जा रही है। १६५६—६० में ६,६५,००० ६० देशी ग्रौषधालयों को ग्रामीण क्षेत्र में सहायता दी गयी। ग्रव १६६०—६१ में ६,६१,००० ६० ही दी जायगी। ग्रामीण क्षेत्रों में राजकीय सहायता प्राप्त ग्रौषधालयों को १६५६—६० में १,४५,००० ६० दिया गया, ग्रव १६६०—६१ में १,३०,००० ६०, यानी १५,००० ६० कम दिया जायगा। में मन्त्री जी से कहूंगा कि देहात की जनता के साथ इस प्रकार की ग्रामी भावना जाहिर न करें बल्क उसके लिए विशेष ध्यान दें।

श्राज के युग में कुष्ठ रोग श्रीर फाइलेरिया बढ़ता चला जा रहा है पर उसके लिए रुपया बहुत कम दिया जा रहा है। पिछले साल कुष्ठ रोग के लिए ३,१२,००० रु० दिया गया था लेकिन इस साल २,६४,००० रु० दिया गया।

में मन्त्री जी से कहूंगा कि इस विभाग में कुछ घांघा-गर्दियां भी हुई हैं जैसे सैनिटरी इन्स्पेक्टर, पुखरायां के खिलार्फ सरकारी गबन के सम्बन्ध में माननीय रामस्वरूप वर्मा जी ने शिकायत की थी उस पर ग्राज तक कोई कार्यवाही नहीं की गयी।

देहात की जनता के स्वास्थ्य के लिए विशेष ध्यान रखा जाय। गांव के किनारे जो तालाब होते हैं वहीं पर गांव का कूड़ा-करकट पड़ता है। मेरा सुझाव है कि देहात की सफाई के लिए विशेष ध्यान रखा जाय श्रौर रोगों की रोकथाम की जाय।

ग्रब में इटावा जिले के बारे में कहना चाहता हूं। मैं स्वयं उसका भुक्तभोगी हूं। ग्रभी भ्रभी मेरी स्त्री की तिबयत खराब हो गयी थी। उनको लेकर में जनाने श्रस्पताल में गया ग्रौर देखा कि वहां पर मच्छर बहुत बढ़ गये हैं। मैंने लेडी डाक्टर से पूछा कि श्रापने मच्छर मारने के लिए डो० डी० टो० क्यों नहीं खिड़कवायी? उन्होंने कहा कि मेंने श्रपने पैसे से छिड़कवायी है श्रौर सरकारो पैसा इतना नहीं है कि जो डो० डी० टी० छिड़कवायों। मैं मन्त्री जो से कहुंगा

श्री भजननात्र|

कि जरा उस प्रस्पतान की फ्रोर व्यान दिया जाय। जो मरीज वहा जाते हैं उनको मबेशियों की तरह मच्छदर काटने रहते हैं। ग्रायबेदिक डिस्पेसरीज वहा पर है लेकिन दवा पर उतता पसा लर्च नहीं किया जाता है जितना कि वद्यों तथा कर्मचारियों पर कप्या लर्च होता है। मैं माग करूगा कि ग्रायवेदिक वयादयों पर और डिस्पेसरीज पर ग्रिथिक से ग्रिथिक तादाद में पैता लर्च किया जाय ताकि ५० प्रतिशत जनना का उससे हित हो सके।

श्रीमती विद्यावती वाजपेयी (जिला हरदाई) - माननीय श्रांधव्हाता महोदय, में माननाय मन्त्रा जी द्वारा प्रस्तृत श्रन्दान का समर्थन करने के लिए खड़ी हुई हूं। यह श्रन्दात इसने महत्व का है कि हमारे प्रदेश की श्राबादी को देखते हुये मझे ऐसा प्रतात होता है कि यह बहुत कम है। इस में श्रोर भी ज्यादा रुपया होता तो शायद कुछ हो सकता। १६५६ में बेसी कि गणना हुई है सरकार १ रुपया ३६ पसे श्रीत रुपक्ति पर खर्च कर रही है, तो भी इसने बड़े प्रदेश की देखते हुये यह रकम बहुत शाई। है।

गावों को चिकित्सा के लिये बहुत कुछ कहा गया। यद्यपि इस पुरितका में वेखने से मालूम पहला है कि १६ म् प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र क्लाक लड़ा में लोल जा रहे हैं, यह बड़ी कृती की बात है और इसके लिए में सरकार को बहुत बहुत बयाई देती हूं। महिला चिकित्सालय भो हमारे प्रवेश में बहुत कम है और उनकों वशा भी बहुत बरों है। में प्राप को शाहाबाद के महिला चिकित्सालय का हाल बतलाऊं। वहा पर एक कमरा है भीर दूदी फूटो ४, ६ चारपाइयां है। महिलाय बेचारी जो भातो है वे पयाल जाल कर अमीन पर लेटता है और बहां कोई दबा या लेडी डाक्टर का उचित इन्तजाम नहीं है। हमारो सरकार को महिला चिकित्सालयों के लिए श्राथक धन देना चाहिए। इस साल जो ४ चिकित्सालय मंजूर हुये है, उनमें से कदाचित शाहाबाद से एक झबश्य खुलेगा। बहां ३७ हजार की भावादों है पर एक भी महिला चिकित्सालय नहीं है।

शिश् चिकित्सालय की भीर भी कुछ ध्यान गया है। यद्यपि भ्रभी बहुत कम है, शिष्यु हमारे वेश के भावी नागरिक है श्रीर हमारे राष्ट्र की सम्पत्ति है तो भी हमारे यहां शिशु चिकित्सा की छोर थोड़ा ही ध्यान गया है। लग्बनक मेडिकल कालेज में एक बिल्ड्रेन बिपार्टमेट मोला गया है, जो अभो काफी उन्नत नहीं कहा जा सकता; लेकिन कुछ थोड़ी सी प्रगति हुई है। जल्ला-बल्ला केन्द्र ग्वोल कर गर्भवती रत्रा तथा बल्लों की धोर भी कुछ ध्यान बिया जो रहा है। इस माल ७३८ जक्का-बक्का केन्द्र लोले गये है जो इतने बहे प्रदेश के लिए बहुत कम है। लेकिन इन केन्द्रों की बबीलत पहले जो बचने हमारे यहां बहुत मरा करते थे, प्रसुति-गृह में उनकी संख्या में बहुत बड़ी कभी प्रवद्य हुई है फ्रीर में समझतं। हू कि इस ग्रीर हमारी सरकार ज्याबा से ज्यावा ध्यान बेगी भीर हमारा जो हास्पिटल है चिल्ड्रेन का उसका प्रबन्ध मेडिकल कालेज से अलग हो जायगा जिससे उसकी उर्झात हो सके धीर डाक्टर लोग रिसर्व ग्राबिकरके नयी नयी कीओं का ग्राविष्कार कर सके भीर ग्रव्हें से ग्रव्हा प्रबन्ध स्वाई भीर बच्चों के लिए हो सके। यह सही है इसमें बहुत लर्चा होगा, लेकिन भीर देशों को बेका जाय तो जात होगा कि वहां बच्चों की तरफ कितना लयाल किया जाता है। इंग्लेप में ५ हजार बाइल्ड बेल्फेयर सैन्टर्स है। स्काटलैन्ड में ४३० खाइल्ड वेलफेयर सेंटर्स तथा ६४० जे नर्सरीज है। हमारे यहां तो एक वो ही चाइएड हास्पिटल है। मेरा सुज्ञाव है कि बिल्ड्रेन हास्पिटल मेडिकल कालेज के प्रबन्ध से धलन कर दिया जाय।

दूसरी चीज में यह कहना चाहती हूं कि इस विषय में बहुत-सी बाते इस पुस्तिका में कही गयी है जिनके लिए सरकार बबाई की पात्र है। समय कम है वरना में बतलाती। लेकिन डाक्टरों की कमी के विषय में मुझे थोड़ा-सा घौर कहना है। मेरी समझ में डाक्टर मानव-समाज की सबसे अधिक सेवा करता है घौर डाक्टरों की पढ़ाई में भी सबसे अधिक व्यय होता है और सबसे अधिक समय लगता है। एक डाक्टर करीब ६-- ७ साल के बाद पी० एम० एस० (२) में जाने लायक हो पाता है। लेकिन उनके बेतन वही है जो एक मामूली बो॰ एस-सी॰ बगैरह का होता है। इसलिए मेरी सरकार से यह प्रार्थना है कि पी॰ एम॰ एस॰ (२) के ग्रेड को बढ़ाय। इसके ग्रलावा गांवों में जो डाक्टर्स भेजे जाते हे उनके रहने के स्थान का प्रबन्ध किया जाय ग्रौर उनको कुछ न कुछ ग्राम भत्ता दिया जाय। चिकित्सा की मीटिंग में यह तय भी हुग्रा था। इसके ग्रलावा यातायात का भत्ता भी डाक्टरों को मिलना चाहिए। इस तरह का प्रबन्ध किया जायेगा तो गांवों में डाक्टर्स को जाने मे एतराज न होगा। कम से कम मेरे जिल में द ग्रस्पताल ऐसे हैं जहां डाक्टर ग्रौर लेडी डाक्टर नहीं हैं। मै श्राशा करूंगी कि जल्दी से जल्दी वहां यह प्रबन्ध किया जायगा।

श्री ग्रधिष्ठाता--ग्रापका समय समाप्त हो गया।

श्री यशपालसिंह (जिला सहारनपुर)—माननीय ग्रधिष्ठाता महोदय, ग्रापके द्वारा कुछ सुझाव में ऐसे रखना चाहता हूं कि सरकार को कम से कम १७-१८ करोड़ रुपये सालाना का फायदा हो। यह कुछ ग्रच्छा नहीं लगता है कि बापूजी की इच्छा के विरुद्ध ग्रौर ग्राज जो सन्त विनोबा भावे है उनकी मरजी के खिलाफ यहां से ४-६ हजार मील पर बनी हुई चिकित्सा पद्धित को ग्रब भी यहां कायम रखा जाय। हमें बुनियादी इस्तलाफ है। यह जो करोड़ों रुपया बरबाद हो रहा है यह सिंचाई के काम में भी लगाया जा सकता है ग्रौर राष्ट्र के निर्माण में भी लगाया जा सकता है ग्रौर ग्रगर ग्रह ग्राज न हुग्रा तो फिर कभी नहीं हो सकता।

स्राज स्रगर हम बापूजी के कहने के स्रनुसार स्रश्लील सिनेमास्रों को बन्द कर दें, डाल्डा, कोटोजम को बन्द कर दें तो ये बीमारियां खुद रुक जायंगी। बापूजी ने खुले स्राम कहा था स्रौर 'यंग इन्डिया' में लिखा था 'हरिजन' में भी लिखा था कि जिस तरह से जाली रुपया बनाने वाले को सजा दी जाती है उसी तरह से जाली घी बनाने वाले को भी सजा दी जाय स्रौर कठोर से कठोर सजा दी जाय। मेरी समझ में नहीं स्राता कि एक तरफ तो हम करोड़ों रुपया इस लिए बरबाद करते हैं कि हमारे देश के स्वास्थ्य में सुधार हो स्रौर दूसरी तरफ हम उन प्रथास्रों को जारी रखना चाहते है जिनसे स्वास्थ्य खोखला होता जाता है। एक बर्तन में स्राप घी भरते जाइये लेकिन स्रगर उसकी तली में छेद हो गया है तो वह घी कभी रुक नहीं सकता। हमारे समाज की तली में दो छेद हो गये है। स्रगर स्राप स्रइलील सिनेमास्रों स्रौर डालडा को एक कलम रोक दें तो तो बीमारियां रुक जायेंगी। यह करोड़ों रुपया राष्ट्र निर्माण के काम में लग सकता है।

श्राज हम देखते है कि दिन रात खर्चा बढ़ रहा है। यह कोई बघाई देने की बात नहीं है। श्रगर चिकित्सालय बढ़े हैं, मेडिकल कालेज बढ़े हैं, डाक्टर्स बढ़े हैं श्रौर पेशेन्ट्स की तादाद बढ़ी है तो यह इस बात का सबूत है कि सरकार की पालिसी रोग को रोकने में कामयाब नहीं हुई है। इसलिए यह कोई बधाई की बात नहीं है। श्राचार्य विनोबा भावे के कहने के अनुसार, जो कि श्राप के गुरु हैं, कांग्रेस के गुरु हैं, मेरे गुरु नहीं है, मेरे गुरु तो भगवान राम श्रौर कृष्ण हैं, सुभाषचन्द्र बोस हैं, चन्द्रशेखर श्राजाद हैं, किन्तु श्राचार्य विनोबा जो कि श्रापके गुरु है वे कहते हैं कि इस वक्त जो चिकित्सा पद्धित यूरोप की बनायों हुई है उस को इस देश के भीतर कायम रखना इस देश के अपर सब से बड़ा कलंक है। हमारे यहां तो यह कहा गया है—

युक्ताहार विहारस्य, युक्तचेष्टस्य कर्मसु, युक्तः स्वप्नाव बोधस्य, योगो भवति दुःखहा।

यदि खाने-पीने का सुधार किया जाय, ग्राचार-विचार का सुधार किया जाय, कानून बना दिया जाय कि रात को १० बजे के बाद कोई जाग नहीं सकेगा ग्रौर सबेरे ४ बजे के बाद कोई |श्री यशपालत्सर|

मो नहीं सकेता, प्रगर यह व्यवस्था कायम हो जाप तो करोही रुपया बच सकता है। बाज हम देखते ह कि एक तरफ लाउकों का इस्तान हो रुपा है नमान का वक्त हं, संध्या का सम्प्रहें चित्तत का समय हे यार दूसरी तरफ जिनसा के प्रत्नीत गाने हमारे ऐटमास्फियर में गुंजते हैं, कीई ककावट नहीं है। प्रावमी के पेट में दिशा अकाव वाता मिल्जम है, कत्त करने बाला मिल्जम है वेकित मनक्य के सहाचार को अपमी करने वाला मिल्जम नहीं है। नितक स्वास्थ्य को नरट करने वाला तो सब से प्राचार को अपराध है प्राचार करने वाला मिल्जम नहीं है। नितक स्वास्थ्य को नरट करने वाला तो सब से प्राचार को अपराध है प्राचार करने वाला तो सब से प्राचार का प्रपाप नहीं रह सफता है, हमारे कियाथियों का मौरल कायम नहीं रह सफता है, उनका सदानार कायम नहीं रह सफता है जब तक कि प्रश्लीत सिनेमा बल्प न किये जाय, प्रश्लीत नाच-गान साल न किये जाय। उस समय तक जनता का स्वास्थ्य हर्गाज कायम नहीं रह सकता है प्राचार काता है सकती है। सकती है।

श्राज श्रीमन्, जरूरत इस बात को है कि बाप जो को उतायी हुई पद्धित के श्रनुसार तथा हमारे राष्ट्र ने जो कत्वर रखा है उस के उत्पर हम खोगा का स्थमन करना चाहिए। श्राज हम बेलते हैं कि दुनिया में दूसरे मृत्का का श्रीविध्या के निए कही दूसरी जगह नहीं जाना पड़ता है, रूस श्राज श्रीविध्या कही बाहर से नहीं मंगाता है, श्रमिश्या कहीं बाहर से श्रीविध्यां नहीं मंगाता है, जोकन हमकों श्रीमन्, मामनों इन्जरजना क निए भी दूसरे बेशों पर श्रीक्ष रहना पड़ता है, विबेशों के हम इस मामने म श्रायों रहते हैं यानी साधारण सी श्रीविध्यों के लिए भी हमें विवेशों का एहं नाकना पड़ता है। बाइबिल में बिलकुल रपष्ट लिया हुआ है:——

"We have core thos things which we ought to lave left undone. We have left un to be these things which we ought to have done. So there is no health in "

बीमारियों का कारण यह है कि हमने धमं को द्वाइ कर आगमं का पालन किया, कर्तव्य को रहें। इसर अक्तंत्र्य का पालन किया है। इगीलिए हमार यहा बीमारिया आयी है। मेरा लख्न निवेचन है कि अपने देश में गर्म का कायम किया जाय, किनेगाओं को जल्म किया जाय, अदलील नान गानों को लक्ष किया नाय। आप जो परियार नियों कन कहने है वह परिवार नियों जन नहीं है बिल्क यह क्यां सनार नियों जन है, दुराचार नियों जन है। हम ऋषि मुनियों के देश के हैं। हम बर्थ कर्न्ट्रोल में विश्वास नहीं करने हैं बिल्क हम सेल्फ कर्न्ट्रोल को मानते हैं, हम बहावर्य को मानते हैं, हम गर्भ निरोध को नहीं मानते हैं बिल्क हम आदम निरोध को मानते हैं। यह आ आप की परिवार नियों जन की यों जना है, दुस के द्वारा लूले आम व्यक्तिचार का प्रचार किया जाता है। यह हमारे गांधी जो के देश में नहीं होना चाहिए। यह हमारे गौतम की देश में नहीं होना चाहिए। यह हमारे गौतम की देश में नहीं होना चाहिए। यह हमारे गौतम की देश में नहीं होना चाहिए। यह हमारे गौतम की के देश में नहीं होना चाहिए। यह हमारे गौतम की पर्वाद की संस्कृति के सर्वया विरुद्ध है। बापू जो ने ''यंग इन्डिया'' में कहा था कि यह की परिवार नियों जन है यह दुराचार है, व्यक्तिचार है। यहां तक उन्होंने लिका या कि यह अस्पक्ष व्यक्तिचार से भी उपादा व्यवस्था है।

माज भोमन्, जरूरत इस बात की है कि हम प्रपने देश की संस्कृति की श्रीर बढ़ें। श्राज हमारे देश के जो बच्चे १६-२० साल की उम्र में एम० ए० पास कर लेने हैं, यह देश के लिए फरूर की बात नहीं है, यह देश के लिए गौरव की बात नहीं है, यह देश के लिए प्रभिमान की बात नहीं है। ऐसे छोटे विद्यार्थी या तो निरे बच्चे ही रह जाते हैं या फिर बढ़े हो, जाते हैं, उन के अपर कभी भी सच्चे माने में जवानी नहीं था सकती है। इसलिए मेरा श्रीमन्, भापके द्वारा सरकार से निवेदन हैं कि इसके लिए एक ऐसा कानून बनाया जाय कि कोई भी लड़का २२ साल से कम उम्र का एम० ए० में नहीं बैठ सकता है। जो लड़के २० साल की उम्र में एम० ए० पास कर लेते हैं, उनकी छाती चौड़ी नहीं हो सकती है, उनके प्रम्वर विल भीर दिमाग नहीं रहता है, उनका स्वास्थ्य एक कागजी डिग्नी के पीछे नथ्द हो जाता है। उनकी श्रीरिजिनेलिटी

किताबों की भेंट चढ़ जाती है। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि ऐसा कानून शीघ्र बनाया जाय। देश में कोई रिक्शा न खींच सके। जो खींचते हैं उनको तपेदिक हो जाती है, उनके फेफड़े में बलगम पैदा हो जाता है श्रौर जो रिक्शे में बैठते है उनको मनुष्य की सवारी का पाप लगता है। इस पाप से दोनों बच्दां सकते हैं यदि हमारे माननीय मन्त्री जी, जिनका बड़ा यश है, जिन की बड़ी कीर्ति है, वह एक ऐसा बिल लायें कि कोई भी नागरिक न रिक्शा खींचे और न उस पर बैठे।

\*श्री रमेशचन्द्र शर्मा (जिला जौतपुर) — माननीय श्रियिष्ठाता महोदय, मैं श्रापको धन्य वाद देता हूं कि श्रापने मुझे महीनों के बाद थोड़ा समय देने की कृपा की । मंत्री महोदय द्वारा जो अनुदान पेश किया गया है, मैं उसका समर्थन करता हूं। मैंने अंग्रेजी राज्य भी देखा था श्रीर उस इलाके का मैं रहने वाला हूं जहां भलेरिया का उग्र रूप दिखाई पड़ता था जिसकी श्रंग्रेजों ने भी देखा था। वह इलाका बनारस श्रीर गोरखपुर डिवीजन का था। मैं श्रगर श्रयनी सरकार को धन्यवाद दूं तो यह कोई छोटी बात नहीं हो सकती है, क्योंकि मैंने वहां देखा था कि कोई श्रादमी ऐसा नहीं था जो क्वार श्रीर कार्तिक के महीने में मलेरिया से पीड़िन न रहता हो। ने किन अब केवल रुपये में एक श्राने या दो श्राने रोग चलता रहता है। श्रीर बिक्या रोग इस सरकार की श्रोर से निर्मूल कर दिया गया। श्रंग्रेजी जमाने में जेलखाने से निकल कर १९४२ में जब में गांव गया तो मेरे जिले में श्रीर बनारस किमश्नरी में एक भी ऐसा घर नहीं था जो ताऊन से पीड़ित न हो। श्राज मैं इस सरकार को धन्यवाद दूं, विल्क पूरे देश को सरकार को धन्यवाद दूं कि ताऊन को हमारे इलाके से निकाल कर बाहर किया। क्या यह छोटी बात है?

में प्रायुर्वेद का प्रध्ययन कर रहा था। कहा गया कि धर्म के नाम से ही रोग छूट सकते हैं। मैने भी ग्रायुर्वेद में ऋषियों की जिड़यों का प्रध्ययन किया, चर्क, शुश्रुत ग्रीर नाग्भट्ट की किताबों का ग्रध्ययन किया। मलेरिया को दूर करने की विधि उन ग्रंथकारों ने भी दी है। लेकिन हमें इस दृष्टि से देखना है कि एलोनैथी, होम्योपैथी या श्रायुर्वेद जिससे भी देश को लाभ हो वह करना है। हमें यह चोज नहीं सोचनी चाहिए कि एलोपैथी या होम्योपैथी, श्रच्छी चीज नहीं है, धर्म के नाम पर।

उन्होंने एक चीज उदाहरण में रखी कि स्राज स्रादमी के ऊपर लोग सवारी करते हैं, उस की रोकथाम करें। जे किन बदरीनारायण उन्हीं के घर्म में था, उनके पुराने ऋषियों के घर्म में था। लोग कंघे पर बैठकर बदरीनारायण और केदारनाथ जाया करते थे, जहां इस गवर्नमेंट ने खाली १६ मील छोड़ा है। स्राज की गवर्नमेंट यह घर्म नहीं करती है? हमें बड़ा ताज्जुब होता है जब कहा जाता है कि गवर्नमेंट घर्म नहीं कर रही है, पाप कर रही है।

कोढ़ियों के लिए कहा जाता था उस गवर्नमेंट में जबिक धर्म का नारा लगाया जाता था, कि इनको गांव से बाहर करो नहीं तो संकामक रोग फैल जायगा। भ्राज की गवर्नमेंट कोढ़ियों के लिए श्रस्पताल बना रही है श्रीर उनको श्रच्छा नागरिक बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। समझ में नहीं श्राता कि धर्म श्रीर श्रधमं की परिभाषा है क्या? क्या धर्म के मानी यही हैं कि कुछ बातों को धर्म का नारा लगा कर पुकारते रहें? लखनऊ से पश्चिम में ताऊन का प्रकोप नहीं था, लेकिन बनारस श्रीर गोरखपुर के क्षेत्रों में एक एक झोपड़ी के श्रन्दर लोग जाड़ों के दिनों में यह मनाया करते थे कि भगवान् कब उद्घार हो। लेकिन १३ साल हो गये, उसक्षेत्र में ताऊन का नाम तक नहीं है। इसके लिए सरकार को जितना धन्यवाद दिया जाय, उतना कम है।

हमारे इलाके में फाइने रिया का रोग श्रौर घेघा बड़े उग्ररूप में फैला हुग्रा था। श्राज गोरखपुर, बनारस, गाजोपुर, बलिया, जौनपुर, बस्ती श्रादि के सब लोगों को इस सरकार को

<sup>\*</sup>बनता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

| श्री रमेशचन्द्र शर्मा |

धन्यवाद देना चाहिए कि प्राज फाइनेरिया को रोकते के लिए गवर्नमेंट की कितनी ताकत लगी हुई हे प्रीर यह कक रहा है। यह नहीं है कि कपया बरबाद किया जा रहा है। जो स्था देयय किया जा रहा है उसमें यहा की जनता की फायदा हो रहा है।

एक रांग ने क्रीर देणा। वह पर्वी इलाके मंभी था क्रीर पित्तमी इलाके में भी था जिसकी क्रापके यहां दों व्यां के का लाम दिया जाता है। उसे भी जों रों में रों करें की कोशिश हो ख़ीर वह रक भी रहा ह। रेंगा नहीं द कि के ना पेसा ही पर्व हो रहा हो क्रीर रोग में कोई रोक ने हो रही हो। पान, सात, दस मील के प्रत्दर श्रम्पताल चल रहे हैं। श्रायुर्वेंद के श्रम्पताल चल रहे हैं, एली पेथिक श्रम्पताल चल रहे हैं। रहा यह कि जो धर्म के नाम पर कहा गया, तो पराने समय में धर्म है नाम पर गहि किया बरते थी। जोग पर्म है नाम पर शहित किया बरते थे, होम किया करने थे। जड़ी-प्रतियों की श्रम्म में होम किया करने थे। उसे श्राव भी कीन रोंक रहा है। कहा गयनं में उनकी को देश हो की का का होता था जी कि दयाइयों से हो रहा है।

श्रम मंथोड़ा-सा स्थाय अपने क्षेत्र के लिए माननीय मन्त्री जी की देना चाहताहै। हमारे यहा जीनवर में मांड्याह तहसील के अन्वर एक स्थान बंबेरी हे जहा मछलीशहर और मांड्याह हर जगह से सात मील की दरी है और अभाग्यवश वहां कोई सड़क भी नहीं है। बरसाल में तो बिल कल रास्ता ही बन्द हों जाता है। में उनसे अपील कर रहा हूं कि वहां एक अस्पताल बन्याने की द्या जरूर करें। वहां की जनता करीब ५० हजार के है। उनकी किसी अकार की सुविया नहीं मिलती। और एक व्यार के अध्यानीगंज। वहां भी ६ मील के अन्वर कीई अस्पताल नहीं है। जिले से कई बार लिलकर के अध्या। चाहें आयुर्वेदिक अस्पताल विया जाय, चाहे ए तो रिया जाय, किसी की देन का अस्पताल वहां अवश्य कायम किया जाय। इसके लिए में फिर से उनसे असील करना हूं कि जो ऐसे स्थान है उनकी तरफ जरूर ध्यान विया जाय।

श्री हिम्मतिसह (जिला बुनन्दशहर) --पाननीय श्रीधिष्ठाता महोदय, में कटौती के प्रश्ताव का समर्थन करता हूं। आज हमारे उत्तर प्रदेश में कहा यह जा रहा है कि बहुत वह बड़े योग्य डाक्टर बढ़ने बले जा रहे हैं। लेकिन उनसे जो गरीब जनता है क्या उनका हित होने वाना है? मान्यवर, जिलना बड़ा और योग्य डाक्टर होना उनसी उननी ही बड़ी फीम होनी और उससे मानी यह है कि जो निर्धन है वह उसका कभी उपयोग नहीं कर सकता। आज हर एक आवनी जानता है और यह मानता है कि हमारे समाज के अन्यर गरीबो बहुन बढ़ रही है, भूवमरी बढ़ रही है। तो फिरवह बवा कहां से ले सहेगा? उन बड़े बड़े डाक्टरों का उपयोग वह नहीं कर सकता है। इसलिए मेरा यह मुकाब है कि जो गरीब जनता है उसके लिए कोई न कोई इन्तजाम होना चाहिए।

जो पांच मील के अन्दर की व्यवस्था की बात बतायी जा रही है कि हर पांच मील पर सरकार की तरफ से आयु वें विक सथा यूनानी या हो स्योपे थिक या एलोपे थिक का कोई न कोई अस्पताल का जायगा, वह भी नहीं रखा गया है और खासकर के मेरे केंन्न के अन्दर यह बीज नहीं हैं। तो में इस तरफ व्यान दिला रहा हूं कि इन बड़े-बड़े डाक्टरों से हमारे केंन्न का तो करवाण होने वाला नहीं हैं। इनिसए जो छोटे डाक्टर या बंध है उनकी कम से कम ५ मील की वृशी पर रखने की व्यवस्था की जाय, उनकी वहां भेजा जाय और उनकी दवाइयां दी जायं। ऐसा न हो कि वह हफ्तीं खाला बेंटे रहें और मरीज रोने रहें, उनकी दवा न मिले। आज हमारे प्रवेश के अन्दर जो ए बी सी क्लास के राजस्टर्ड वैद्य या हकीम या हो धोपेय है ये भी एलो- पंथिक नुख्या लिख वे ते हैं, चाहें उसके बारे में कुछ जानसे हों या न जानते हों। जब उनसे पूछने हें तो वह कहते हैं कि लोगों को एलोपे थिक पर विद्वास उपादा है कि वह जल्दी फायर

#### १९६०-६१ के श्राय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदान संख्या २१--लेखा शोर्षक ३८--चिकित्सा तथा श्रनुदान संख्या २२--लेखा शोर्षक ३६--जन-स्वास्थ्य

करती है इमलिए हम लिख देते हैं। नतीजा उसका क्या होता है कि उनका मर्ज बढ़ता चला जाता है, क्योंकि जब वह उस चीज को नहीं जानते हैं और लिख देते हैं तो उससे उनका रोग बढ़ता है और फिर पैमें की खुब तूटपाट होती है। इतना हो नहीं कि जो देहात के रजिस्टर्ड ए बी सी क्लास के गैद्य हकीम है वही यह चीज लिखते हों, बड़े-बड़े जिले के स्तर के या बड़े-बड़े करबों में जो डाक्टर होते हैं उनमें भी यह मर्ज बढ़ता चला जा रहा है। यह स्रांकड़े जो इस स्रांकड़े की गुस्तिका में दिये गए हैं उससे मालूस पड़ता है कि सन् ५९ में सिविल ग्रस्पताल में ४,५९,६५० श्रादमी ट्रोटमेंट में श्राये। उनमें से जो रोगी चले गये उनकी संख्या १,०२,३८७ है। ये लोग श्रापनी इच्छा से चले गये। जो डिस्चार्ज किये गये हैं वे ३६,६८१ हैं। गरज यह कि लगभग २४, २६ फीसदी ऐसे लोग थे जिनको गलत दवाइयां दी जा रही थीं। मैं यह कहता हूं कि अपने निजी लाभ के लिये उनको रिलीव कर दिया गया या उनको दवाई नहीं दी जाती थी या उनको श्रसाध्य रोगी कह कर टाल दिया गया। वह तो यह चाहते हैं कि मर्ज बढ़ता रहे, बीमार होते रहें। इतने रोगियों के चले जाने का दूसरा और कोई मतलब दिखाई नहीं पड़ता है। काफी वड़े बड़े शफालाने हैं। उनमें कम्पाउन्डर जो रहते हैं उनसे वहां का सिविल सर्जन यह चाहता कि यह कम्पाउन्डर इथर उथर जाकर नगर में प्रोपेगन्ड। करता रहे जिससे उनको विजिट करने का अवसर मिलता रहे। यदि इस तरह से वे कम्पाउन्डर न करें तो उनका ट्रान्सफर कर दिया जाता है। खासकर एटा जिले में ऐसा हुआ है। उस ग्रोर में माननीय मंत्री जी का ध्यान **श्राकिषत करना चाहता हूं। में यह सम**ञ्जता हूं कि जो श्रच्छेपोग्य कम्पाउन्डर सिविल श्रस्पतालों में काम करते हैं उनको छोटे-छोटे स्थान पर ट्रान्सफर न किया जाय ।

में माननीय मंत्री जी का ध्यान इसी श्रांकड़ों की पुस्तक में एक बात की श्रोर दिलाना चाहता हं जो कि एपेड़ेमिक के विषय में कही गई है।

(इस समय २ बजकर ४१ मिनट पर श्री ग्रन्यक्ष पीठासीन हुए।)

इसके म्रांकड़ों को "ए रेडेमिक इन उत्तर प्रदेश" के म्रन्तर्गत देखें कि पेचिश, डिसेन्टरी म्रीर डाइरिया बड़े जोरों से बढ़ रही है। इसका कारण यह है कि तेल, दूथ ग्रौर घी इत्यादि जनता की शुद्ध नहीं मिल पाता है। उस सूरत में जनता का पेट खराब हो जाता है ग्रीर इस तरह से यह मर्जबङ्ता जाता है। इसलिये में चाहूंगा कि इस स्रोर स्रधिक ध्यान दिया जाय। जो वैजिटेबिल घी चल रहा है वह बहुत नुक्सानदेह है, यह डाक्टरों की राय है। मानतीय मंत्री जी की मालुम होगा कि इसमें रंग हेने की एक योजना चली थी। पता नहीं उसके विषय में क्या हुआ। योजना सफत हो जाती तो ग्रच्छा था जिससे जो लोग प्योर घी खरीदना चाहते हैं उनको मालूम पड़ जाता कि यह प्योर घो है या नहीं। अगर ऐसा हो जाय तो लोगों को श्रच्छी चोज भिल सकती है। श्राज श्रापके यहां दवाइयों में भी मिलावट है। भी मिलना कठिन सा हो गया है। कम्पनी का लेबिल तो वही लगा रहता है, लेकिन उनमें मिलावट रहती है । इसलिये मै यह निवेदन करना चाहता हूं कि इन चोजों पर प्रतिबन्ध लगाया जाय।

मेरेहीक्षेत्र में गांव के अन्दर एक नदी है जो वहां पर लोगों को रोगी कर देती है। उससे बहुत मच्छर पैदा होते हैं। उससे हैजे और डाइरिया का प्रकोप होता है। वहां पर ग्राने-जाने की । विद्या के न होने के कारण डाक्टर वहां पर पहुंच नहीं पाते हैं। तो वहां के लिये ऐसी व्यवस्था की जाय कि उन जगहों में झाने-जाने की सुविधा हो और लोगों को दवाइयां स्नासानी से जब तक वहां पर यातायात के साधन नहीं पहुंचाये जायंगे तो तब तक लोगों को अगर ऐसी जगहों के लिये इस प्रकार के साधन हो जायं तो यह बीमारी श्रासानी नहीं होगी । को रोकने में सहायक होगा।

ब्राज हम दे बते हैं कि स्कूलों में छोटे-छोटे बच्चे के स्वास्थ्य का निरोक्षण नहीं हो पाता है । जहां पर ग्रास-पास में डाक्टर है उनको कहा जाय कि उन स्कूलों में जाकर बच्चों के स्वास्थ्य [भी टिम्मत मित्र]

. का निरीक्षण करें। उनके बनाय जाव हि क्या परना तयीर क्या नहीं करना है। आज उनके अपर कोई त्यान नरा ज्या जावा है।

गायों मजो ही । उसने बूता क्यां स्थान कर नहीं भरते हा। उसने बूता क्यों राजिया का इसने माति । पह हो । हा हो । हा हो । हा हो । वाहिये जिसने संक्रामक रोग न फनस है। क्यांज टांकि है पर-र कार बोठ हो । क्यांठ के पर वे डाक्टर किये जा रहे हु कोर हु इस क्रोंग भो प्यान येना बहा हिस्से हा।

कुमारी कमालकुमारी गोर्दि (किता इक्तात्वाद) व्यपक्ष महोदय, में ब्राज प्रस्तुत व्यवदान २१ क्रोर २० का समाव करना के निवेदरा (हिंदू)

पहले तो यह कि उसम धन उत्ता कम हो कि उसके तिये करोते। के प्रस्ताव की कहा आवश्यक्ता रह में है। शगर उसमें उस गा। रपया योग होता तो यह भी हमारे इतने बढे प्रदेश के लिये कम ही होता। उसलिये उस हिर्मात करा गया है उसलिये में उसपर कुछ नहीं मालम होती है। यह परम्परा को मालो हुये रखा गया है उसलिये में उसपर कुछ नहीं कहती। सवाल यह है कि उस दिभाग ने सन्तायन कर रक्षों का है या नहीं है अगर इप विभाग को तरका के कि परशाना नाता हो लोग के नाम में त्याया जा मकता है जीवन की प्रशास को अर्था जो निक्त के प्रशास के अर्थ हो है। यह कम है है कि प्रशास के अर्थ हो हमारों कार्यक्षमता का अंबाजा लगाया जा सकता है। यामन, समय कम है इसी तर म के रन प्रश्ने सक्षाव ही दे सकर्ता है स्नारा करती है कि माननीय मन साम उनका श्रीर प्रांग वेंगे।

सब ले बना सवाल दाकरों की कमा का है। उमा ए जगह जगह पर medical outposts लाली नाय। दमरे प्रान्तों म ऐसा होने म काय म सविधा हो गई है। में लाहतों है कि दावरों के दोरे गाया म हम्रा कर, जहा पर कि धाया र प्रांपक है। इस तरह से वे पीरियां किली जा कर यल सक्त मरीजा का, रागिया का ब्रोर जो गरीब ब्राबमी है, जो पसे के कारण बहर तो क्या घर के बाहर भा नहीं निक्रत सकता उन्हें कह कर मदद मिल सकेगी। उसके दरवाजे पर अगर कावटर पहुनियों तो उन्हें बहुत उपाया अग्रान्त हो नायगी और वह ब्राना इलाज करा सकेगे।

मान्यवर, क्षय रोग से पोहित रोगियों की श्रोर माननीय मयी जी का ध्यान दिलाना चाहती हूं। यह ठीक ह कि इस झारान के निये हमारी सरकार धन्यताद की पात्र है श्रीर उसमें १३ लाल ४५ हजार रुपया क्षय रोगियों के लिये रुप्या भी ह लेकिन यह भी देखा जाय कि यह कितता भयानक रोग ह श्रोर कितनी उपादा मण्या में गहा फ न रहा है। इस देखते हुए यह धन श्रीधक नहीं विष्यायों देवा श्रीर इसिलयें मेरा एक नियेवन है। इस ममय २० हजार रुपया प्रि खेड क्षय रोगियों के लिये होता है श्रीर यह होना भी चाहिये, लेकिन उसमें श्राप कितने श्रादियों को जगह वे पाले हैं मौजूदा हालत में, इसका श्राप रवय श्रदाजा लगा सकते हैं। बड़े से बड़े रोग को लियें श्रद्धालयों के जगह मिल सकती है, लेकिन क्षय रोगी की श्रद्धालय में जगह प्राप्त करना बड़ा कठन है। बड़े-बड़े श्राद्धालयों को ही उसमें कठिनाई पहली है, गरीब का तो कहना ही क्या? इसिलयें मेरा सन्ध निवेदन हें कि कम से कम प्रत्येक गांव के बाहर एक ऐसा श्रीपड़ बना दिया जाय कि जिसमें जब तक किसी रोगी को क्षय का बड़ न मिल सके तब तक वह श्रपने कुट्टम्ब से श्राणा वहां रखा जा सके। यह कोई बड़ा कार्य नहीं है श्रीर इस पर श्रीधव धन भी नहीं लगेगा, लेकिन उन गरीबों के लिये बड़ी श्रीज हो जायगी।

तीसरी जीज यह है कि जितने मंडिकल कालेज श्रोर गर्मेंज के इंस्टीट्यूशन्स खुलते हैं वे सब शहर में जुलते हैं। यह ठीक है कि उनकी वेहात में जोलने में बहुत सी कठिनाइया है, लेकिन हुम यहां कठिनाइयों का सामना करने ही तो शाये हैं। हुम ऐसा ध्येय बना लें कि जितने नरें। के इंस्टीट्यू जन्त और मेडि कल कालेज खुलेंगे वे सब देहात में ही खुलेंगे ताकि शहर के ग्रादिमयों को भी देहात में रहने की, वहां के वातावरण की कुछ ग्रादत पड़ जाय ग्रीर वे वहां के जीवन के श्रभ्यस्त हो सकें।

इसके अनावा महिनाओं के अस्पतालों की ओर मुझे मालूम है कि माननीय मंत्री जी का बहुत ध्यान है। मैं चाहती हूं कि नर्सेज से ट्रेनिंग के समय ही ऐसा वादा करा लिया जाय कि अपना कोर्स समाप्त करने के बाद उनको इतने समय के लिये गांव में रहना होगा। ऐसा करने से गांव में कुछ लोग पहुंच सकेंगे।

इतके स्रतिरिक्त कुछ मै स्राने क्षेत्र की बात कहना चाहती हूं। करछना तहसील, इनाहाबाद में बहुत घनी स्राबादी है। वहां २०६ गांवों में हेडक्वार्टर पर एक ही डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का छोटा-सा श्रस्पताल है। तीन चार जगहें ऐसी है कि जहां दूर-दूर तक कोई स्रस्पताल नहीं पड़ता। करमा गांव है, घरवारा गांव है, वहां हजारों की तादाद में स्राबादी है, लेकिन कोई छोटा-मोटा दवाखाना वहां पर नहीं है। इसके लिए मैने लगातार ते नों वर्ष के बजट मे कहा।

दूसरा मेरा सुझात्र है कि डाक्टरों को गांव में पहुंचने के लिये उन्हें यातायात भत्ता मिलना चाहिये। गांव में उनके रहने का भी प्रबन्ध होना चाहिये। जब उनके लिये वहां कुछ प्रबन्ध होगा तो उनसे यह कहा भी जा सकता है कि भाई, हमारे देश की अधिक आबादा गांवों में है, उसका कुछ खयाल करो, और वहां पर चल कर रहो। इन शब्दों के साथ में इस प्रस्तुत अनुदान का समर्थन करती हं।

\*श्री टीकाराम पुजारी (जिला मथुरा)—अन्य है श्रीमान् जी कि ग्रापने ग्राते ही मुझे समय दिया। मैं चाहता हूं कि ग्राप जल्दी से जल्दी ठीक हो जायं ताकि मुझे बोलने के लिये मौका मिल जाया करे। ग्राप कभी भी बीमार न पड़ें, यह मेरा ग्राक्तीर्शीद है। ग्राप खूब रबड़ी मलाई खायं ताकि तन्दुरुस्त रहें।

श्रोमन, मुझे बड़ी खुशी है। दुख की बात तो मै कभी करता ही नहीं हूं, लेकिन प्रजातन्त्र जो है इसमें चार चोजों की मुख्य ग्रावश्यकता है। खाना, कपड़ा, मकान, शिक्षा ग्रौर स्वास्थ्य।

एक सदस्य--यह तो पांच हो गये।

श्री टीकाराम पुजारी—हां, ठीक है। पांच चीजें हैं। इनमें से अगर एक चीज की भी कभी हो गयी तो प्रजातन्त्र कमजोर हो जाता है। प्रजातन्त्र के अन्दर एक दूसरी शिक्त भी होती है जिसे विरोधी पार्टी कहते हैं। जिस तरह से राज्य में एक चपरासी होता है, एक पहरेदार होता है, एक आवाज देने वाला होता है माल की सुरक्षा के लिये, उसी तरह प्रजातंत्र की सुरक्षा के लिये एक विरोधी दल भी होता है। प्रजातन्त्र बिना विरोधी दल के चल ही नहीं सकता है। मेरा निवेदन यह है कि यह डाक्टर जो होते हैं वह तो शहरों में ही होते हैं। गांव में तो उनको कोई जानना तक नहीं। गांव में तो आप दे बेंगे कि नये नये हकीम डाक्टर हो गये हैं। आज वे भी सुई लगाते हैं। वे सुई लगाना नहीं जानते हैं लेकिन फिर भी वह सुइयां भोंकते हैं। ४० सुई अगर लगाते हैं तो २४ सुई तो गजत लगतो हैं और जिसके कारण वे पक जाती हैं और लोग मर जाते है।

स्रव गांव में चूहों के बारे में क्या कहूं। वहां चूहों के मारने के लिये दवाई छिड़की जाती है। उससे चूहे तो नहीं मरे, पर बच्चे मर गये। यह दवाई हमारे बच्चों के लिये बड़ी खतरनाक होती है। मेरा सुझाव है कि यह ऐसी चीज होनी चाहिये जो बच्चों को नुकसान न पहुंचावे।

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री टोकाराम प्रजारी]

श्राज धर्म कहां रह गया? श्राज यह कोई नीज हो नहीं दियाई देती है जिसे हम थाँ कहें। धर्म में जिन चीजों की जरूरत होती है यह श्राज दिखाई नहीं देती—

"धितः क्षमा वसोऽसरेषं शीर्वामन्दिव निग्रतः। धीऽविंशा सत्यमकोरः वशकं धरं लक्ष्यम्।।"

धर्म में तो यह गण होंने चाहिये। आज नातियाद भी कम नहीं हा। सन् १६३२ में और

"आ रहा है कमें यग, काउ कमें करना सीय ली, वेश पर और धर्म पर हम हम है मरना सीय ली। मारते का नाम मन ली, पहले सरना सीय ली, वेश-दुख की प्रमिन में तुम पहले जनना सीय ली।।"

धाज धर्म में यह चीत नही है।

इसके अनावा, श्रीमन्, आज ए० बी० सी० र्यानगर बना विवेगो है। अब सेनी में देखे, भूमिषर, सीरदार, अध्यवासी, आसामी-- नार कीमें उसनें भी कर बी। तो यह कीमें नहीं होनी चाहिए।

मेरा समाव है कि ऊंचा गांव, तहसील साराबार में ६ -६ मीन तक भ्रासणास में कोई भ्रीविध का इन्ताम नहीं है भी गांव निता तो गांव में है ही नहीं, सब प्रांगरा, लवनऊ, बाराबंकी के हिन्से में आ गांवे। हमारी माना-बहिने ती एमा समसा नानी है कि नेसे पशु हों भीर मरी हुई हो। जहां ५५ फोसरी जनना रहे वहां हा मानाभां भी गांविनों हो निर्वाधि इन्तजाम नहीं, यह किनते वृद्ध को बात है। में सरकार से भ्रारों र कर्णना कि गांव है लिए खरान किया जाय। प्रजातन्त्र की व्यवस्था तभी चल सकती है जब दृद्ध के संस्था है तो सब ठीर पर बरसता है। ईश्वर के यहां तो गरीब-भ्रमीर सभी बरावर हो। है। भ्रान गांवों में माताएं, बहिने आहि-वाहि करतीं है, उनहीं भी प्रांथ नहीं मिलनी है। चेनक निराग हो तो उस गांव में देवने के लिए कोई नहीं भ्राता है।

एक अर्ज यह है कि जो जिला परियव् के तहमी न के अरपनाल हं वहां गरीय हो या अमीरही, फौजवारी हो जाय, तो अगर उस के पास वेने के लिए १० काये ही तो साक्टरी हो वरना नहीं होती, न उसकी खोट सिली जाती है। तो द्वार सुभाव की आप जरूर लिलें और इस पर खयान करें।

श्री सर्देव श्रहमव श्रन्सारी (जिला सहारनपुर) — प्रध्यक्ष महोवय, में श्रापका बहुत महाकूर हूं कि श्रापकी ग्रामव से मुझे भी श्राज वहर मिन गया। इसका मिला सुरा श्रापकी यह वे कि श्राप कभी बीमार न हों श्रीर बीमार हों तो जल्बी श्रव्ये हो जायं।

श्राण का जो अनुवान माननीय मंत्री जी ने सदन के सामने पेश किया है, वह बहुत बड़ी अहमियत रखता है और इस अनुवान से हिन्दुरतान का नाम ऊंना उठ सकता ह, लेकिन इस अनुवान के सिलिसिले में भी कुछ माननीय सदस्य यह चाहते हैं कि कटौनी हो जाय, यह बड़े इ: ख की बात है। यह मसला हर्य, तन्बुदस्ती का है। अगर नेशन की तन्बुद्रस्ती ठीक हैती वह मुस्क हर शीब में सरकी करेगा, अयना और कीम का नाम अंवा करेगा।

इसमें कोई शक नहीं कि बहुत से माननीय सदरयों ने कहा है कि धम से बहुन अंबे इलाज हो सकते हैं। भाज भी उनके लिए कोई रकाबट नहीं हैं। धामिक इलाज हर बकत हो सकते हैं। धम की लाइन की हर इनतान हर बकत अपना सकता है, कोई सरकार धम को नहीं रोक सकती। जो पहले इलाज धम से होते ये उनमें दबायें नहीं बहिक दुशाएं काम करती थीं, दबाओं का नाम ही नाम होता था। इसी सिनसिने में यह भी जाहिर है कि इस बस्त जो मौनूश गर्नवेट हैं उसके बनत में इलाज के सिनसिने में जितनी तरक हो हुई है, मेरा बाबा है कि बह सा-मिसाल है और उसे देख कर ताज्जुब होता है। ज्यों-ज्यों हम इलाज के मुताल्लिक मनते हैं श्रौर जिस किस्म की नयी-नयी ईजाद श्रौर ग्रापरेशंस हुए हैं वह हर इनसान को हैरत में डाल देते हैं। हां, यह लाइन ऐसी है कि ग्रगर इसको ईमानदाराना जो डाक्टर हैं वह चलाएं तो वह एक किस्म को पूजा ही कहलाती है ग्रौर इस लाइन से बढ़ कर दुनिया में ग्रौर कोई सोशल सर्विस नहीं हो सकती। लेकिन शर्त यह है कि ईमानदाराना काम करते रहें। इस सिलसिले में एक ग्रर्ज है कि बहुत सी जगहों पर जो हास्पिटल्स हैं उनमें इतने ज्यादा शरीज ग्रा जाते हैं जिससे दवाई काफी नहीं पहुंचती। इसलिये वहां पर ज्यादा से ज्यादा रकम भेजी जाय जिससे सब ग्रादिमयों का ग्रच्छी तरह से इलाज किया जा सके।

दूसरी अर्ज यह है कि बहुत से हास्पिटल्स में ऐसा देला गया है कि कोई गरीब आदमी भरती हो गया लेकिन उसके पास पैसा नहीं है और उसके मोहिलिक मर्ज है जिसके लिये कीमती दवाई की जरूरत होती है। डाक्टर साहब कहते है कि हमारे पास दवाई नहीं है, हम मजबूर हैं तो वह गरीब आदमी क्या करे, सिवाय इसके कि वह हास्पिटल में पड़ा-पड़ा जान दे दे। इसलिय में मंत्री जी से दरखास्त करता हूं कि ऐसे अत्यालों में डाक्टरों को इतना हक जरूर होना चाहिये कि जिस वक्त कोई गरीब मरीज आये, यह जांच कर ले और आकेंट से उस दवाई को लोकन पर्चेज करके उस मरीज का इलाज करे और उस गरीब आदमी की जान बचाये।

एक और सुन्नाव मेरा यह है कि बहुत से गरोब मरीज मोहिलक मरजों में मुब्तिला होकर छों-छोटे ग्रस्पतालों में वाखिल हो जाते हैं लेकिन उन ग्रस्पताल नें उस मर्ज के इलाज का कोई साधन नहीं होता, लिहाजा डाक्टर कहता है कि हम मजबूर हैं, ग्रापके लिये हम कुछ नहीं कर सकते। तो मेरी अर्ज यह है कि इस तरह के जो मोहिलक मर्जों में मुब्तिला मरीज ऐसे छोटे ग्रस्पतालों में पहुंच जायं उनको वह ग्रस्पताल ग्रपने सकें से दूसरे ग्रस्पताल में पहुंचा दे जहां पर कि उस मर्ज का इलाज हो सके, क्योंकि उस मरीज के पास पैसा नहीं होता जिससे वह दूसरे ग्रस्पताल तक पहुंच सके। ऐसी हालत में यह जायज नहीं है कि वह मरीज उस ग्रस्पताल से निकल कर बाहर या ग्रपने घर पर पड़ा पड़ा ग्रपनी जान दे दे। इसलिये उसकी मदद जरूर होनी चाहिये। मुझे बड़ी खुशी है कि इस गवनं मेंट ने मरीजों ग्रीर गरीब ग्रादिमयों को जितना हाया दिया है उतना किसी गवनं नेंट ने नहीं दिया। जिलों-जिलों से ग्रीर गांवों-गांवों से दर्खास्तें ग्राती हैं कि हम गरीब हैं, हमें इलाज के लिये हाया मिलना चाहिये ग्रीर मंत्री जी इस सिलसिले में काफी हपया देते हैं ग्रीर इससे काफी सैटिस्फेक्शन है।

एक दूसरा सुझाव मेरा श्रीर है। जो मेडिकल कालेज हैं वह एक जगह पर ही हैं। मेरी इस सिलिसिले में दर्ख्यांस्त है कि श्राप कम से कम मेरठ डिबीजन श्रीर गोरखपुर डिबीजन में श्रतग-श्रतग मेडिकल कालेज खोल दें जिससे वहां के इलाके के श्रादमी भी सहू तियत से डाक्टरी की तालीम हासिल कर सकें।

एक थोड़ी-सी मेरी अर्ज और हैं। जहां पर शुगर फैक्टरीज हैं वहां पर मुसलसल तौर पर गन्दगी और बदबू रहती है जिससे वहां पर ज्यादा बीमारियां फैन जातो है और किस्म किस्म के मच्छर और जानवर पैदा हो जाते हैं। वह मच्छर अगर काट लेते हैं तो उसका इलाज मुहाल हो जाता है। इसलिये शुगर फैक्टरीज के हल्के में सरकार को मुसलसल पूरी तवज्जह रखनी चाहिये जिससे इस इलाके को गरीब जनता अपनी जिन्दगी आराम से गुजार सके।

श्री रघुवीरराम (जिला गाजीपुर)—मानतीय श्रध्यक्ष महोदय, माननीय रामायण राय जी की तरफ से जो कटौती का प्रस्ताव पेश किया गया है मैं उसके समर्थन में बोलने के लिये खड़ा हुग्रा हूं। हमारी कांग्रेस गवर्न नेंट पिछने बारह वर्षों के शासन काल में श्रव तक इस नीति की साफ नहीं कर सकी कि श्राखिर कौन सी संस्था की दवायें पूरे राष्ट्र के लिये लाभदायक होंगी। श्राज कोई श्रापुर्वेदिक के लिये चिल्ला रहा है, कोई होमियोयेथिक के लिये, कोई एलोयेथिक के [श्री रगुपीरणम]

लिये तो कोई यागनो प्रायो हो कि है। चिना रहा र । तका सरकार श्रमी तक यह तय नहीं पर पार्यी फिकोन सानराका राज का सारहरू र मुख्या।

सरकार हो। एक यह भी साहित हि रर प्रमाह का द्रापर एक प्राप्तान होता। लेकिन हमारे नामीतर नित्त म मोहर भराबाद तह सो हमारे नाम जार गाउन एक बात हा की प्रावादी साढ़े हा हजार की हा, ने किन क्षमात का का कोई प्रमाह हो हो। प्राप्त बात बात स्तापुरा प्रमान हो, को का का रह की प्रमान हो, प्राप्ता का को को साल है। इसिनये में मशी जी से निवेशन कर ना कि नशी के यह हा का द्राप्त का को जाने में खारों और जाने से राग्ते बार हो बारे हैं। बारे हैं, का हुए का प्रमान के ना का का का द्रारा का द्रारा का का स्थान का स्था का स्थान क

अलगमपुर श्रम्पता न कार भे हर पार्टी कारीन जान है ऐन कि यहां पर सारे प्रदेश से स्वीम श्राते हैं। लेकिन बहा पर जिल्हिंग को सभा है, घराजा की रहने की जगह नहीं है। इसलिये में निवेदन करणा कि उसके करोब ही तान पर । इस अलाबिक वनवाई जाय।

तीमरी बात यह है कि मेडिकन का रेग म नो साथ साथ स्थान की बाताया जा रहा है, वह उचित नहीं है। अस्तान अल्डेश डाना नहीं है। बहु की का काइवा बना हुआ है। वहां के कास्टर आइवेट अस्टिस करते है, इस पर पावन्य। हाना नाहिये, क्योंकि इससे मरोजों को अविध्या होती है।

श्रात कर वेता श्रीर नि से म ना इस में होता है उन स्यास ति से मुनाबी रंग छोड़ कर वयाये बनायी जाता है। एक न्यू श्रात श्री नह उसको नवाता है। यहा से ये उन दबाशों की ले जाकर दूसरें (दूकानों पर वाहर वेत वेता है। इस वि से माननीय मंत्रीजी से बासतीर पर अन्तरंथ कर मा कि ये इस पर दान व श्रीर ना कम्या उन्हर के वर्ण के एक एक अस्पताल में पहें हुए हैं उनका तबाइना होना चारिये। बहुत से स्वान में है जहां पर डाक्टर ही नहीं है, बहुत से स्वान पूर्व है जहां इस पर पान पूर्व है अहा पर डाक्टर ही नहीं है, बहुत से स्वान पूर्व है जहां इस पर पान पूर्व है अहा पर डाक्टर ही नहीं है, बहुत से स्वान पूर्व है जहां इस पर पान पूर्व है है, इत्रालये में बास तौर पर माननीय मंत्री जी से लिये हैंन करना है कि दे इन प्रस्थानाना ही तरफ ध्यान वें ताकि वहां बवाइयों का अबन्ध किया जाय। ऐसे इस प्रस्थान जित्र है का अवन्ध किया जाय, उनमें का प्रवास ही विल्डिंग का प्रवन्ध किया जाय। ऐसे इस प्रस्थान जिन्हों आप ही विल्डिंग राही है उनसे फायदा ही क्या है? हर एक अस्पताल में मिडवाइका मही रक सकते तो कम से कम एक न्यूक, यो-बो तो रक्ष ही वें।

स्वास्थ्य उपमंत्री (श्री बलदेर्यासह स्रायं) — प्रः पक्ष महोत्य, विकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के सनुवानों पर अब तक जिन माननाय सवस्यों ने आने रिकार जाहिर किये है उनकी मेने बड़े थ्यान में मृता है। कटौनी का प्रशाय पेश करने वाले माननीय रामायण राय जी ने जो विचार प्रकट किये, उनकी मने बहुत गौर से सना। मेरा अगना ऐसा खयाल है कि उन्होंने जो सुआव विये हैं वे प्रशंतनीय है। यह दूसरी बात ह कि सरकार के सीमित साथनों के होते हुए वे सब पुशाय कार्यान्वत न हो सके, यह एक स्र राय बात है। किन्तु उनके सुआव विचारणीय अवस्य है। वूनरे माननीय सवस्यों ने भी शरकार की जो सुआव विये हैं, में उन सुआवों के लिये उन्हें हुवय से अन्यवाद करता है।

मुझे भी शिव प्रसाव नागर के बिवारों को सुन कर बड़ी तकालीक हुई। उन्होंने माननीय मंत्री जी से कुछ समय पूर्व कुछ शिकायतें खीरी प्रस्पताल के बारे में को। ये स्वयं इस बात को मानते हैं कि सरकार का घोर से तत्परता की गयी, जांच-पड़ताल का गयी घोर जांच के बाव जो नतीजा निकला उसकी भी वे भली प्रकार जानते हैं। उनका शायव यह विश्वास था कि उनकी जो गलत शिकायतें थीं उनको संवालक, स्वास्थ्य विभाग मान लेंगे और वहां के घाषिकारियों के विश्व कोई कायंबाही अवश्य उनको करनी चाहिये थी। में समझता हूं कि

उनका यह खयाल सही नहीं था ग्रौर उनको यहां पर इस प्रकार के सिचार प्रकट करने की ग्रावझ्य-कता नहीं थी। मुझे जहां तक जानकारी है, जो भी शिकायतें लखीमपुर ग्रस्तताल के बारे में उन्होंने कीं, वे सर्वया ग्रातत्य साबित हुई। मुझे उनके विचारों को सुन कर बड़ो तकलीफ हुई।

यहां पर यह कहा गया कि गांवों में चिकित्ता की समुचित व्यवस्था नहीं है। जिन माननीय सदस्यों ने ये विचार जाहिर किये हैं उनसे मेरा यह निवेदन है कि वे चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की जो वार्षिक रिपोर्ट है उसको देखें और अगर वे उसको ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे तो उसके पेज ११ पर वे देखेंगे कि द्विनीय पंचवर्यीय योजना तक ४४६ प्राइमरी हेल्थ सेंटर की स्थापना हो जावेगी और पूरे प्रदेश में टागेंट ८६६ खोनने का है। जब पूरे प्रदेश में एन० ई० एस० बजाक्स इतने हो जावेगे, उसी तादाद में प्राइमरी हेल्थ सेंटर की स्थापना भी हो जायगी। तो यह सारे चिकित्तालय जो ग्रामों नें स्थापित हो रहे हैं, प्राइमरी हेल्थ सेंटरों में, वह सब गांव के लोगों के हित के लिये ही स्थापित हो रहे हैं। मैं समझता हूं कि इन चन्द वयों में ग्रामीण जनता की चिकित्सा तथा स्वास्थ्य विभाग ने जो सेवा की है उसकी माननीय सदस्यों ने प्रशंसा की है और माननीय सदस्यों ने हो नहीं, वाहर की जनता भी उसकी प्रशंसा करती है।

एक शिकायत यह की गई कि ग्रानीण चिकित्तालयों में या दूसरे चिकित्सालयों में उचित मात्रा में ग्रीयियां नहीं पहुंचतीं। में उनसे यह विनम्न ग्रान्थेव करना चाहता हूं कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना में ग्रीतिरिक्त ग्रीविध देने की एक योजना तैयार की गई थी। उसके तहत में ग्रव तक १७,८६,४०० ६० की ग्रितिरिक्त ग्रीविध इस प्रदेश के चिकित्सालयों को दी गई। में नहीं समझता कि माननीय सदस्यों ने कैते ग्रनुमान नगा निया कि हमारे ग्रस्पतालों में ग्रीविधयों की कमी है। मेरा विश्वास है कि जनता में घूमने फिरने ग्रीर ग्रस्पतालों को देखने का मौका हमें भी मिलता है, हमें कहीं भी जनता की ग्रीर से इस तरह की शिकायत नहीं मिली कि ग्रस्पतालों में ग्रीविधयां नहीं है।

यहां पर यह भी चर्चा हुई कि अस्पतालों की स्थापना शहरों में की जा रही है और शहर के अस्पतालों में जब गांव के लोग आते हैं तो उनकी अस्पतालों में जगह नहीं मिलती। मेरा खयाल है कि यह बात सही नहीं है। यहां लखनऊ का ही मुझे रात दिन का अनुभव है और आप सबको होगा कि यहां सूबे के प्रत्येक जिले से रोगी आते हैं और माननीय सदस्यों की भी इसका ज्ञान है। में नहीं कह सकता कि मुझे भी और दूसरे लोगों को कई बार वलरामपुर अस्पताल को टेलीकोन करना पड़ता है कि इन रोगियों को अस्पताल में वाखिल किया जाय और इमी तरह से जो दूसरे अस्पताल हैं उनमें सब को दवा दी जाती है और इलाज किया जाता है। इसलिये यह शिकायत ठीक नहीं है कि गांव के आदमी जब शहर में आते हैं तो उनको शहर के अस्पतालों में जगह नहीं मिलती। मेरे खयाल से जितने भी रोगी किसी अस्पताल में पहुंचते हैं उनको जगह अवश्य दी जाती है, चिकित्सा की जाती है और यदि वह रोगी वाखिल करने योग्य मालूम पड़ते है तो उन को वाखिल कर के चिकित्सा की जाती है।

यह भी कहा गया कि डाक्टरों की कभी है। इसमें कोई सन्देह नहीं है श्रीर सही तथ्य है कि हुनारे यहां श्रस्तालों में श्रभी डाक्टरों की कभी है श्रीर वह कभी तब तक रहेगी जब तक कि हमारे देश में डाक्टरों में श्रीर हमारे मेडिकल कालेजेज से जो विद्यार्थी निकलते हैं उन में गांवों में जाने की रुचि पैदा न होगी। मेडिकल कालेज के वातावरण में रहकर कोई भी विद्यार्थी जो वहां से निकलता है वह गांव में रहना पसन्द नहीं करता। उस के सामने भी फुछ कठिनाइयां हैं। बी० एस-सी० के बाद वह ५ साल तक मेडिकल कालेज में रहता है, वहां के रहन सहन का जो स्टेंडर्ड है उसकी वह गांव में मेनटेन नहीं कर सकता, इस को हम श्राप सभी महसस करते हैं। इसलिये श्रव श्रावश्यकता इस बात को है कि मेडिकल कालेज से श्रव ऐसे

[श्री बलदेगिंत प्रायं]

े किया भी निकार जिनमें गांव में जाकर जन राकी से गांकी किन की और इसी वास्ते श्रव सरकार ने उस पकार का प्रावेश दिया है कि नो भा दिया में मेडिकन काने ज में भर्ती किये जायं उसे एक पूर्वा मेन्द्र किया जाप कि पक्त कर से क्या है सात तक ग्रामी तथा पर्वतीय इलाकों में ग सीमान्त क्षीत में प्रवक्त रहे जाये हैं।

इस बात की भी नर्ना हुई कि भी डाइडर गांव में काम करते हैं या सीमांत क्षेत्र में काम करते हैं या पर्वाण कर है। यह तो माननीय सदस्यों को भनी प्रकार जान है कि राष्ट्रीय प्रमार सेवा लंडों पर जो प्राइमते हैं क्ष्य सोन्द्र गोले जा रहे हैं उनमं जो डाक्टर काम करते हैं जनकी १२० कपया प्रतिस्कित बेता श्रीर भन्ते के क्ष्य में दिया जाता है। इस तरह सं उनके बेचन और एनाउन्मेज में बुद्धि कर वी गई है। में सम्प्रता हूं, इस वृद्धि में प्रावश्यान गांवों की श्रार जाने का होगा और गांवी वालों की जी शिकायत हूं कि डापटर वहां रहता पराव्य नहीं करते, वह शिकायत भी दूर होगी।

माननीय रामायण राय जी ने कहा कि पीठ एमठ एसठ विपतीय श्रीर प्रथम का जो श्रता श्रानम श्रेष्ठ है इसकी समाप्त कर विया जाय । में नहीं कह सकता कि श्राज की परिस्थिति में सरकार उसकी करने के लिये नेयार होगी या नहीं, पर उनका एक सुकाब है उस पर विचार ती किया जो सकता है। नह बात विनारणीय है।

टी० बी० क्लीनियम की क्यों की नर्जा की गई । हमारे प्रवेश में जितने लोग यहां बीमार पहले हे उस अनुपात से हम उत्तकों समृत्ति लिक्टमा की व्यवस्था नहीं वे सकते हैं क्योंकि सरकार के साधन सामित हें और उसमें जो कुछ सरकार कर रामती है वह कर रही है। में आपको बताई, ७ सरकारी संस्थाय है जिनमें ७०२ श्रीयाय है और इतके प्रतिरिक्त ३ प्राइवेट संस्थाय है जिनके पास २७० श्रीयाय है। इसी तरह में और हमारे यहां क्लीनियस है और प्रवेश में रेड़कास सासायही के भी क्लीनियस ह जो जिला अरणतालों स लगे हुये है, यहां भी कुछ बेड़स है और टी० बी० के मरीजों का इलाज होता है। इसके धार्तिरकत न्याय मंत्री के चरिटी फेंड से प्रवेश के मरीजों को कुछ ब्राधिक सहायता वो जाती है जिससे अगर रोगी को किसी प्रस्पताल में जगह न मिले तो बाहर रह कर प्रयना इलाज करा सकता है। ऐसी सहायता बराबर ऐसे रोगियों को वी जा रही है।

एक समस्या श्रम तक सरकार के सामने थी कि जो ठी० बी० के मरीज सैनोटोरियम से निकल श्राले हैं, जिन्हें श्राराम हो जाता है उनके पुनर्शासन का कोई इंनजाम नहीं था। श्रम सरकार ने निक्त्य किया है कि ऐसे रोजियों का रिहे निल्हें उन किया जाय। ऐसे २०० रोगियों को प्रशिक्षण विया जायगा जिसमें टोकरी बनाने की शिक्षा, क्लिनों बनाने श्रीर टेलरिंग श्राविकी शिक्षा वी जायगी, क्यांकि टी०बी०का मरीज कोई हाई काम नहीं कर सकता, इसलिये यह व्यवस्था की जाती है। १००, १०० के बेच में ६, ६ महीने की ट्रेनिंग बी जायगी। इस ट्रेनिंग पीरियड में सरकार की श्रीर से उन्हें स्टाइपेड विया जायगा। ऐसी योजना सरकार के सामने हैं।

यहां पर कुछ परिवार नियोजन की भी चर्चा हुई है। श्री यशपाल सिंह जी ने तो मारेल एं जूकेशन की भोर संकेत किया। इसमें कोई शक नहीं भगर हमारा वेश प्राचीन संस्कृति पर चल लो उनकी शिक्षा, मुमकिन है, हमारे देश के लिये इस समय उचित हो। किन्तु भाज हम यह वेखते हैं कि उस शिक्षा का ग्रसर भाज की वृत्तिया में विलाई नहीं वे रहा है। जो पाश्चात्य सभ्यता है, उसका लोग भिषक भनुसरण किये हुये हैं। हमारे देश में विनों विन जनसंख्या बढ़ती जा रही है। श्रभी हाल में गवनेंमेंड भाफ इंडिया की स्थारण मिनिस्ट्री ने एक परिवार नियोजन की समिति बैठाई थी और उसकी धोमती धनवंतरी रामाराक भ्रष्यका थीं। उन्होंने जो प्रति-वेदन सरकार को दिया है उसमें कहा गया है कि ३० वर्ष में जो मौजूदा जनसंख्या है वह दुग्ती हो जायगी। इसको रोकने का उनका एक सुझाब यह है कि १९८६ सक ५० प्रतिशत जो जनसंख्या

है उसको कम कर देना चाहिये जिससे यहां का ग्रायिक व सामाजिक जीवन ठीक तरह से चल सके। उनका एक सुझाव यह भी है कि परिवार में ग्रीसत ३ बच्चे होने चाहिये। इसके साथ एक सबसे बड़ी बात उन्होंने ग्रयने प्रतिवेदन में यह कही है कि जन्म कर लगना चाहिये, जो ज्यादा बच्चे नैश करें उन पर देक्स लगना चाहिये। में नहीं कह सकता कि केन्द्रीय सरकार उनके इस सुझाव पर कहां तक ग्रमल करेगी, लेकिन इस तरह से हमारे देश में विचार होने लगा है वि हमारे देश की जो जनसंख्या दिनों दिन बढ़ रही है, उसमें कमी होना चाहिये।

हमारे यहां १३ जिलों में फैमिली प्लानिंग की सब कमेटीज बनाई जायेंगी । ग्रभी तक तो जो हमारा फैमिली प्लानिंग बोर्ड है वह सीथा काम करता था लेकिन जिलों में ऐसा बातावरण पैदा करने के लिये ग्रन्तरिम जिला परिषद् के साथ १३ जिलों में ऐसी सब कनेटीज होंगी, फैमिली प्लानिंग कमेटी, जो जिलों में प्लानिंग के कार्य की ग्रागे बढ़ाने की कीशिश करेंगी।

इसके म्रतिरिक्त कुष्ठ रोग निरोयक कार्य भी हमारे प्रदेश में चल रहा है । उनके तिने एक कुष्ठ रोग निरोयक समिति हमारे प्रदेश में कायम है जिनके म्रव्यक्ष स्वास्थ्य मंत्रो तथा सेकेटरी स्वास्थ्य संवालक हैं । हमें यह उम्मीद है कि कुछ वर्षों में हमारे प्रदेश के जिन क्षेत्रों में कुष्ठ रोग म्रिकिता से है वह समाप्त हो जायगा ।

श्री खयाली राम (जिला लखनऊ)—ग्रन्थक्ष महोदय, में श्रापका बहुत ही श्राभारी हूं कि कई बार उठने बैठने के बाद मुझे भी श्रापने इस श्रनुदान पर जो चर्चा चल रही है उससे सम्बन्धित श्रपने विवार व्यक्त करने के लिये श्रवसर दिया । में उस समाज से श्राया हूं जहां की जनसंख्या इस प्रदेश में ५६.३ फीसदी है । सरकार ने श्राज तक स्वास्थ्य से सम्बन्धित जितनी भी सुविवायें दी हैं वे केवल १३.७ फीसदी लोगों के लिये ही दी हैं, जो ज्यादातर शहरों के लिये हैं । श्रीमान ग्राज देहातों की दशा जो है वह दिन ब दिन सीण होती जा रही है । एक तो श्रायक परेशानी की वजह से लोग ज्यादा पीड़ित हो गये हैं श्रीर कोई भी उनके पास ऐसा साधन नहीं है कि वे ग्रयने मर्ज का इलाज करा सकें । वहां पर दवाखाने भी १४, १५ मील या इससे ग्रधिक दूरी पर है । दूसरे वहां ग्रामदरफ्त के साधन नहीं हैं जिससे मरीज को ग्रस्ताल तक ले जाया जा सके । तीसरे वहां पर ग्रत्यिक हो रहतो हैं जिसके कारण देहात को जनता बहुत पोड़ित हैं ।

(इस समय ३ बजकर २६ मिनट पर श्री अध्यक्ष चले गये और श्री उपाध्यक्ष पुनः पीठासीन हुए । )

शहरों में मुझे दो तीत साल रहने का स्रवसर मिला । शहरों में करीब करीब सब जगह स्रस्पताल हैं । दूसरे मरीजवाहक भी यहों हैं जो मरीज को स्रस्पताल तक ले जा सकता है सौर यह मरीज वाहक वहां है जहां पर डामर को सड़कें हैं । देहात में यह मरीज वाहक नहीं मिलेगा जहां स्रामदरफत के स्रच्छे रास्ते नहीं मिलेंगे । में समझता हूं कि जहां पर डामर को सड़कें बनी हैं वहां तो इक्के स्रौर तांगे से भी मरीज स्रस्पताल जा सकते हैं । इसके स्रितिरक्त बीमा इंग्योरेंस कार्पोरेशन है जिसका सम्बन्ध सरकार से हो गया है, इसमें बसों में चलता फिरता दवाखाना होता है । वह भी शहरों में ही है । जहां देहात की गरीब जनता रहती है वहां के लिये ऐसा कोई भी साधन नहीं है जिससे वह स्रपने स्वास्थ्य को सुरक्षित रख सके ।

श्रव में देहातों में जो कुछ श्रस्पताल हैं उनमें डाक्टरों के द्वारा क्या हो रहा है उसकी कुछ चर्चा करना श्रावश्यक समझता हूं। देहातों में जितने भी श्रस्पताल हैं वे श्रद्धाचार के श्रद्धे बने हुये हैं। उनको श्रस्पताल न कह कर श्रार श्रद्धाचार के श्रद्धे कहा जाय तो बेजा न होगा। वहां पर फौजदारी के ३२५ श्रौर ३०७ के मुकदमों को ३२३ लिखना श्रौर ३२३ दका का ३२५ व ३०७ बनाना डाक्टरों का रोज का काम है, लेकिन श्रगर कोई ऐसा केस किसी हरिजन के खिलाफ

### [श्री खयालीराम]

हो तो डाक्टर लोग उसे २२३ के बजाय ३०० श्रीर ३२५ निय वेते ह । मैं गुजारिश कर्ला कि वेहात के डाक्टरो पर यह सरकार ऐसा नियत्रण रखे ताकि जो राष्ट्र पिता बापूजी ने कहा श कि प्रत्येक नागरिक को सरचाई श्रीर त्याग के साथ राष्ट्र के निर्माण में सहयोग वेना चाहिये जिसी उसकी पृति हो सके ।

सरकार की जो यह नीति ह कि १३.0 फीमदी जिन लोगों की भाषावी है उनके लिये प्रमु मात्रा में साधन तथा सिवधाय है, उन्हीं लोगों को मृथिधाय प्रवान करती है उसको वह बदले। में गंगागंत्र के अस्पताल के बारे में बतलाऊ। यहां हरवों इंग्या में एक चमार को एक पंडितजी जबरदस्ती काम पर लिये जा रहे थे। उसन जाने स इन्कार कर दिया, तो उन पंडितजी में ४.-६ भादिमयों को लेकर उसके घर पर हमला कर दिया और उसके छोटे भाई को लाठियों से मार गिराया। यह देल कर उसके तीन भाई भी लाठी लेकर भ्रपने भाई को छुड़ाने के लिये निकल आये। पंडितजी को कुछ चोट भी नहीं आई थीं लेकिन उस पर हमारे लवनऊ जिसे के एक पंडित विधायक वहां पहुंचे और शबटर में ३२५ की दफा लिखवाई। इसी प्रकार दहहर में एक चमार को एक पंडितजी ने कांता मारा था जिसे लाठी की चाट लिए कर ३२३ वर्ष किया। उसमें उसी जिले के पंडित विधायक प्रस्पताल गये थे।

श्री उपाध्यक्ष--श्या शबटर की सलाह से माण था? यह जो ग्राप कह रहे हैं इसका इस ग्रन्दान से क्या सम्बन्ध हैं ?

श्री खयालीराम--- डाक्टर ने जो गलत बफा लिली उसके बारे में में कह रहाया। स्रोकिन मोहनसासगत के डाक्टर ने ३२३ की बफा लिली जबकि ३२४ और ३०७ का मुक्तमा वह बनना चाहिये था।

कुछ माननीय सबस्यों ने कहा कि एक शबटर को लीन साल से श्रव्यक एक जगह पर नहीं रहना चाहिये, यह प्रतिबन्ध सरकार हटा लें। स्वीकन मेरा ऐसा स्वाव है कि एक बार्स को एक साल से अधिक एक जगह न रखा जाय और यह इसलिये कि जब एक साल से अधिक एक जगह पर वह रहता है तो वह पार्टी पोलिटिक्स में पड़ कर इस तरह के धन्याय करता है। बड़ी हरिजन की बात में बतलाऊं जो समेसी का रहने वाला था । वह कई बार बलरामपुर प्रस्थतात ब्राया लेकिन उराकी भरती नहीं हुई। ब्रालिर में जब लड़ झगड़ कर २ मार्च की उसकी भरती हुई तो परसं में समेसी गया था, वहा मैने पूछा कि वह था गया या नहीं तो मालूम हुन्ना कि वह अभी नहीं भाषा । भाज में बलरामपुर भरपताल पता लगाने पहुंचा कि वह भरती है यानहीं तो मुझे मालुम हुआ कि वह २ तारीख की भरती हुआ या और उसी विन निकाल वियागयाया। श्रम तक वह घर नहीं पहुंचा इसका राज मेरी समझ में नहीं श्राता । तो जेता कि उपमंत्री जी ने कहा कि बेहात के लोगो को यहां भरती होने में कोई विकात नही होती, लेकिन में उनसें कहंगा कि जो पनासो केसेज उन्होने टेलीफोन से कहे उनकी भी भरती नही हो सकी भौर जो बी, एक टी॰ बी० के मरीजों के लिये उन्होंने कई बार टेलीफोन किया उस पर भी उनकी भरती नहीं हो सकी घीर वे भर गये। तो बेहातियों के लिये एक तो कोई उचित व्यवस्था नहीं कि वे वेहात में प्रपना इलाज करा सके धीर बूसरे जब वे वेहात से शहर गाते है तो यहां भी उनकी भरती नहीं होती । बेहातों में सरकार को चाहिये कि ऐसे चिकित्सालग कायम करे जिससे जनता का स्वास्थ्य सुरक्षित रह सके या जो जनता बेहात से शहर में आये तो उसके लिये बाक्टरों को ऐसे बाबेश होने चाहिये जिससे उनकी भरती ध्रस्थताल में हो सके ।

डाक्टर जवाहरलाल रोहतगी (जिला कानपूर)—श्रीमान् उपाध्यक्ष जी, में सब्ब का ज्यावा समय लेना नहीं चाहता हू। में समझता हूं कि जो याने अग्रीजीवान की तरफ से या इधर से कही जाती है वह बहुत कुछ सही होती है। आज लोगों को तकलीफ है। लोगों को मर्ज से खुटकारा तभी हो सकता है जब मर्ज २ रहें। जब तक बहु रहेगा तकलीफ भी रहेगी। इतना पैसा नहीं होता है जो अच्छी तरह से इलाज किया जा सके। लेकिन अकमोस इस बात काहें कि हमारा जो मेडिकल का बजट है वह अन्य रियासतों से कम होता है। यहां तक कि १४ वर्ष पहले यह कहा गया था कि १ रुपये १४ आने पर हैंड खर्च होना चाहिये। वह भी नहीं हो सका है और आज मुक्किल से पर हैंड १ रुपये तीन आने या एक रुपये चार आने हो पाता है। हमारे मंत्री जी भी इसको महसूस करते होंगे और ऐसी बातें सुनकर उनको भी तकलीफ होती होगी। वह इतना नहीं कर सकते हैं, जितना हो सकता है उतना वह करते है और कर रहे है और उम्मीद है कि इससे प्रदेश का फायदा होगा।

श्राज के श्रववारों में मैंने देवा है कि सरकार डाक्टरों के लिये शार्ट टर्म को र्स के लिये तजवीज मै मंत्री जी से अर्ज करूंगा कि परमात्मा के नाम पर ऐसा न करे। भी आया था और इसको रिजेक्ट कर दिया गया। मध्य प्रदेश ने भी तजबीज की थी कि चार साल का कोर्सरखा जाय। पहले चार साल का कोर्सथा लेकिन यह तय हो चुका है कि यह कोर्स काफी नहीं है। इसलिये में चाहूंगा कि कोर्स कम न किया जाय। जो कम्प उंडर्स श्रौर फारमा होलाजिस्ट हैं उन हे लिये दो साल का कोर्स रखा गया है, ऐसी हालत में डाक्टरों का कोर्स ज्यादा हो रा चाहिये। साइंस में बहुत ज्यादा चीजें हैं। ग्रापने सुना होगा कि फलां जगह ईथर दे रहे थे कि आदमी मर गया। आपको मालूम होना चाहिय कि जब हवा स्रोर रोशनी जाती है तो ईथर में चेंजेज हो जाती है और वह मुहलक हो जाता है। श्रच्छे साइंटिस्ट नहीं होते तो ऐसी चीजें हो जाती है श्रौर लोगों को यह बात मालूम नहीं है। इसलिये जरूरी है कि कोर्स कम नहीं होना चाहिये। अगर बार्ट टर्म कोर्स रखेंगे तो लोग सर्विस तो कम करेंगे लेकिन जनता में जाकर लोगों को ठगेंगे कि हम इतने दिन सरकारी डाक्टर रह चुके हैं, हमारा इलाज कराम्रो क्योंकि उनके लिये भ्रौर कोई गुंजायश नहीं रहेगी। में समझता हूं कि मेडिकल कालेज का खर्वा ज्यादा है लेकिन जनरल प्रैक्टोशनर्स प्राप निकाल सकते हैं। जैसे दिल्ली में पोस्ट ग्रेजुएट का कालेज हैं, इसी तरह से एक ग्राघ कालेज में कोर्स बना दीजिये जिनमें लोग श्रयने को स्पेशलाइज कर सकें। इन कालेजों से जनरल प्रैक्टीशनर्स निकलने लगें तो खर्चा कम हो सकता है।

दूसरी बात टी० वी० क्लिनिक का जिक किया गया है। उसके लिये गवनं मेंट ग्राफ इंडिया ने कहा है कि इतना रुपया लगा कर बनाया जाय तो इतना तो नहीं है। मेरा खयाल यह है कि जैसा यह रोग है, जब तक यह क्लिनिक्स बनेंगे तब तक हमारे सैकड़ों, हजारों नौजवान खत्म हो जायेंगे। मेरा खयाल यह है कि हम चीप क्लिनिक्स बनायें ग्रौर म्युनिसिपैलिटीज को मजबूर करें कि वह इनको बनायें। एक छुप्पर ही डाल दें ग्रौर नीचे से पक्का कर दें तो हजारों ग्रादिमयों की लाइफ बचा लेंगे। म्युनिसिपैलिटीज के डाक्टर सेंटरों में जाकर देख ग्राया करें।

हमारे यहां रिसर्च का काम कम हो रहा है। ड्रग्स की रिसर्च रिशया, चायना में इस कदर हो रही है, इतनी ड्रग्स निकल रही हैं कि ऐंटी बायोटिक्स से श्रागे जा रही हैं। हमारे यहां रिसर्च वर्क बहुत कम है। सी० डी० श्रार० श्राई० श्रौर मेडिकल कालेज में कुछ होता है लेकिन वह बहुत कम है। इसको बढ़ाया जाय, Scholarships दिये जायं।

फैमिली प्लानिंग के बारे में मैने सुना। मारल टीचिंग बहुत ठीक है। कौन मना करता है ? श्रौर भी ज्यादा हो। लेकिन जो उधर रुजू न हो सकें वह क्या करें ? श्रगर यह नहीं होगा तो जिस तरह से श्राबादी बढ़ रही है श्रौर भी भूखे भरेंगे लोग। इतनी जमीन नहीं है, जितनी श्राबादी हो जायगी। इसलिये फैमिली प्लानिंग पर भी ज्यादा रुपया खर्च करने की जरूरत है।

एक बात ख्रौर मैं हर दफा कहता हूं ख्रौर इस बार भी कह दूं। कम से कम मेडिकल कालेज में प्राइवेट प्रैक्टिस बन्द कर दी जाय। मैंने सुना था कि वह बन्द होने वाली है, लेकिन गैंने स्रभी तक नहीं देखा कि बन्द हुई। टीचिंग इंस्टोट्यूशन्स में प्राइवेट प्रैक्टिस [डाक्टर जबाहरलाल रोहतगी] बन्द होनी चाहिये। वनन कृषु बढ़ाया जाय। अगर बन्द नहीं होगी तो डाक्टर गरीबी को बक्त नहीं दे सकत।

\*श्री बालकराम(तिना शाजहांप्र) — माननीय उपाध्यक्ष महोदय, श्राजका को अनदान चन रहा है दिल तो यह चाहना या कि इपका समर्थन कल लिक्त मजबूर हूं। उसका विरोध इसलिय करना हु .——

"ता लगा सम्मन्त है, पश्या भी त्रीयांनी पे है। या इत्राही लग कर, किइनी किनारे से तम ॥"

सरकार आज अभेरिका और इगनेड के इस पर हिन्दरतान सकास कर रही है। अभी बाक्टर साहब ने नेते करा कि सरकार की यह रकोस ही कि टॉ॰ बी॰ अस्पताल बहुत बड़ा होता बाहिये। न इन्ता पसा सरकार के पास होया और न अस्पताल बन पायमा। दिन पर विन दी॰ बी॰ बढ़ तो जा रही है। न नी जा होगा कि यह और बढ़ तायमी ओर एक दिन ऐसा बायेगा कि बंद कही ने कि करन को अरूरत ही नहीं रहमा। बहु तायमी आर पायमी।

चार तरह से इलाज साम तौर में हिन्दरतान और उत्तर प्रदेश म च नते हैं—एलोपेषिक, होम्पोरेबिक, स्रापर्वे विक सौर पनानी । सरकार एनोपेषि को २६ फीसदी उपया देती है। स्रापुर्वे विक सो लाइ नार फीसदी दर्श हो में सो देश का एप पा हो। स्राप्त हो। सरकार को स्रोप्त को लाह नार पता की हो जरूरत है। सरकार को स्रोप्त नाहिय, जाहे यह बजा हो, नाहे भाषा हो, नाह भाग हो, स्राप्त की सो ही जरूरत है, हिन्दरतानी में कोई मनलब नहीं। जब स्राप्त हिन्दरनान म नहीं ये तो प्रप्रेती हिन्दर की है कि ४२ वर्ष को बनाय ७२, ५२ स्रोप ६२ वर्ष को उस्त्र हो जो ये ते जरूरत इस बात की है कि सरकार प्राप्त विक बवाओं के लिये प्यादा से ज्यादा सवत कर क्यों कि वे सरवी भी ही ही है भीर एक लाप बात होती है। जहां तक में वे द्वाकरों से मालूम किया है, एनोपेबिक इनाज म मर्ज को फीरन तो जरूर प्रच्या कर देवें हैं लेकिन उस मर्ज की जब हो कभी नहीं लो पाने। साल दो साल में मर्ज किर उमह जाता है। स्राप्त विक इनाज म एक लास बात होती है कि जब एक दफा मरीज का मर्ज दूर हो। गया तो किर जिन्दाी भर म द्वारा वह मर्ज नहीं होगा, दूसरा मर्ज वाहें भने ही हो जाय।

श्रम में आपको यह भी बताऊ कि वेरानों से सरकार को कोई वास्ता नहीं है, शहरों से बास्ता है। शहरों में बड़े-बड़े डाकटर है, बड़े पड़े अस्पताल है। सब कुछ है। लेकिन बेहात खाणी पड़े हुउ है। हमारें जिने शाहजाशपुर की तहसील तिलहर के खेराबसेंड़ा परगने में कटरा से लेकर बातागंज तक करीब ३० मील का फामला है जहां शका जाना एक भी नहीं है। बहां तीन-चीन, खार-चार निवया पड़नी है। अब मान्यवर, आप सोचित्रे श्रीर मंत्री जी सोचें कि जहां तीन-चीन, खार-चार निवया पड़नी है। अब मान्यवर, आप सोचित्रे श्रीर मंत्री जी सोचें कि जहां तीन-चीन, खार-चार निवया पड़नी है। अब मान्यवर, आप सोचित्रे श्रीर मंत्री जी सोचें कि जहां तीन-चीन, खार-चार निवया पड़नी है। अब मान्यवर, आप सोचित्र श्रीर मंत्री जी सोचें कि जहां की वेहाती जनता का क्या हाल होते बरसात के मौलम में जब बूड़ी-बुवार खलता है तो किर बहां की वेहाती जनता का क्या हाल होता होगा? इसलिये में माननीय मंत्री जी से बरस्वास्त करूंगा कि कम से कम उस इलाके का जरूर बहु प्यान रहें सीर एक अस्पताल बहां खोलने की कुश करें।

एक बात में और बताऊं। अस्पतालों में लोगों ने कहा कि अव्दाचार होता है। में उसे अव्दाचार कहूं या क्या कहूं ? अस्पतालों के करीब में अक्टर लोग दूकान रखवा वेते हैं दूसरे बाक्टर को नाम से या किसी नाम से और अस्पताल की बबा बिकती हैं उस बूकान पर। अरीज आता है, उससे कहते हैं कि अस्पताल में बबा नहीं है, जाकर फतां दूकान से मोल ले लो। अब भता बताइये कि मरीज तो आता है यह सोवकर कि चत्रं अस्पताल में चलकर बचा कराऊं, अगर उसके पास पैसा ही होता तो क्रिंपर

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

बह प्राइवेट डाक्टर के पास क्यों न जाता ? घ्रस्पताल में तो वह इसी मतलब से म्राता है कि उसके पास पैसा नहों है होता, दवा वहां उसे मुक्त मिल जायगी । लेकिन वहां जाकर फिर उसे वही मुसीबत ग्रा घेरती है कि दवा दूकान से जाकर लो । तो कम से कम इन बातों की ग्रोरतो माननीय मंत्री जी ज्यादा घ्यान दे। तभी देश का उद्धार होगा जब गरीबों की तरफ वह घ्यान रखेंगे ग्रोर शहरों की तरफ से हटकर देहात की तरफ सोचेंगे।

श्रीमती चन्द्रावती (जिला बिजनौर)—माननीय उपाध्यक्ष महोदय, में जैसा कि ग्रापने सुबह व्यवस्था दी थी, दस मिनट लेना चाहुंगी ।

श्री उपाध्यक्ष-- प्रच्छी बात है।

श्रीमती चन्द्रावती--वन्यवाद । ं उपाध्यक्ष महोदय, यह जो स्वास्थ्य मंत्रो जो द्वारा **ग्र**नुदान प्रस्तुत किया गया है उसके समर्थन मे में खड़ी हुई हं । यह स्वास्थ्य विभाग द्वारा जो पुस्तिका बंटी है इसमे सबसे पहले यह लिखा गया है कि जहां पर राज्य की ८० प्रतिशत बनता रहती है वहां जनता को यह सेवायें श्रासानों से सुलभ हो सकें। ८० प्रतिशत जनता का को यह नाम लिया गया है यह ग्रामीण क्षेत्र को संख्या है। उपाध्यक्ष महोदय, में इस बात को निस्संकोच कहती हूं कि जितने भी डिपार्टमेन्ट से कितावें निकलो हैं सबमें ही इस ५० प्रतिशत जनता का उल्लेख मिलता है। जैसे कि रामायण ग्रौर घामिक पुस्तकों को शुख्यात होती है उसी तरह से हरएक विभाग की पुस्तिका में ५० प्रतिशत जनता का उल्लेख मंगलाचरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता ह। यह सही है कि वोट लेना देहाती क्षेत्र से है, किसानों से है इसलिए उसका नाम सब जगह पहले मिलता है। लेकिन ८० प्रतिशत जनता का नारा लगाना दूसरी बात है स्रौर लोक-व्यवहार में जो चीज प्रचलित है वह दूसरी बात है । यहां पर थोड़ों सा उल्लेख में यह कर दूं कि प्रगर प्रत्येक जिले का विवरण हास्पिटल्स का देखा जाय तो सभी जिलों में शहर के हैडक्वार्टर पर हास्पिटत्स खोले गए हैं ख्रौर खोले जायेंगे। ग्रामीण क्षेत्रों में कोई इस तरह से हास्पिटल वर्गरह खोलने की व्यवस्था विभाग द्वारा नहीं की जाती है और नहीं उसका कोई भौचित्य ही समझा जाता है। मेडिकल कालेज कानपुर शहर में खोला गया। ब्रच्छा होता वह प्रामीण क्षेत्र में खोला जाता। में इस विवाद में म्रिभिकन पड़कर यहीं पर इसे खत्म कर देना चाहती हूं।

ग्रागे चलकर इसमें लिखा गया है कि चिकित्सा तथा स्वास्थ्य कार्यक्रम के ग्रनेक प्रन्य मंग है। जैसे रोगों पर नियंत्रण रखना, उत्तम प्रकार की चिकित्सा सहायता ग्रौर मात् तया शिशु स्वास्थ्य सेवाम्रों की जिसमें परिवार नियोजन भी सम्मिलित है व्यवस्था करना । में इन तोनों चोजों को उचित समझतो हूं बशर्ते उसमें पूरा घ्यान दिया जाय। बहुत सा रुपया खर्च करने से एक चीज में सुन्दरता नहीं थ्रा सकतो भेले ही थोड़े देर के लिये उपयोगी सिद्ध हो जाय लेकिन थोड़े पैसे में ज्यादा उपयोगी चोज दिलायें तो कुछ बघाई के पात्र हो सकते हैं। एक चीज यह जो हमारी पुस्तक में है उसमें पिछले दस वर्षों में चिकित्सा तथा जन स्वास्थ्य के कार्यों पर हुये व्यय की प्रगति का विवरण दिया गया है ख्रौर जिसका श्राघार सन् १६५१ से लेकर १६६० तक बताया जाता है ग्रौर जिसमें चिकित्सा, जनस्वास्थ्य, भवन, चिकित्सा तया जनस्वास्थ्य का योग २ से लेकर प करोड़ तक बढ़ता हुआ दिखाया जाता है। यह सही है कि इस विभाग की स्रोर जो व्यय भार बढ़ा है उससे थोड़े से रोगों पर कंट्रोल स्रौर थोड़ी-सी विभाग की खुबसुरती पाई गई है, लेकिन जहां पर ६,३२,३५,४४२ जनसंख्या है वहां पर एक रुपये से भ्रधिक प्रति मनुष्य पर जरूर खर्चा पड़ जाता है किन्तु में यह जानना चाहंगी कि ग्रामीण जनता के ऊपर कितना प्रतिशत इसमें से मिलता है। में यह समझती हुँ कि शहरी क्षेत्र में यह सारी धनराशि व्यय की जाती है। इसमें भी श्रगर श्राप इन्क्यायरी करके घ्रांकड़ें देखे तो कर्मचारियों के लिये जो मुफ्त चिकित्सा की सुविघा दी गई है उसमें

#### |भीमती चन्द्रावनी|

जयादा अय पाया नायगा। में इस प्रान्तर पर एक जात करा नहीं भागी और मानतीय स्त्री ने इप बात की मोने कि प्रार्ने नो यर महत इनान का व्यवस्था कर रखी है इसके न कर के प्रारं उसकी रहा में कि वह अपने नाम को प्रारं एक प्राप्त है कि वह अपने पास से प्रारं कर विवाह में राग ने राग ने हैं। प्राप्त में कि प्राप्त प्राप्त करने कि प्राप्त प्राप्त करने कि प्राप्त में कि प्त में कि प्राप्त में कि प्

द्वरा । । से बर करता चरता र कि प्रांतिक त्र शाया है। प्रणानी सी बन गई है। हम लोगों का कर्में प्रांतिक सामित बन गई है। हम लोगों का कर्मों का प्रांतिक के लिये समाह । जिन्न प्रकार सामित को लिये समाह । जिन्न प्रकार सामित को लिये समाह सामित होना साहित र र

श्री उपाध्यक्ष - -श्राक्षा है विश्वान सभा के सप्तय श्रापक, द्वत बात पर ध्यान देंगे।

श्रीमती चन्द्रावती - - उपाश्यक्ष महाइय, मेरा गणाहा के नियं यहा पर डाक्टर साह्य मौजूद है। में तो इन दणाइया में कामा दर रहता है। में सब में ज्यादा बोमार रहती थी लेकिन एनोर्भेयक दशहदा से में बिलकल जिल्हा माहो गई है।

माननीय उपाण्यक्ष महोत्रप, इस अपत चूंक एक इसका प्रचनन सा बढ़ गया है और सब का नियम सा यन नका है और इसके बगैर हम लोगों का जराभी दिमाग टिकता नहीं है लियन प्रमण बना जाय नो बन्धरमार प्रस्पताल में जो योगिक आसनी का विभाग न ला गया था उसकी प्राथमिकता देनी नाहिए, नत विकत्सा की प्राथमिकता हैने बाहिए जैसा कि और भाइयों ने यहा पर कहा है कि दा प्रशिवक प्रणाली की प्राथमिकता देनी चाहिये, यनानी दात की प्राथमिकता देना नाहिए। इस प्रकार के सस्ते इलाज से बहुत से रीग निर्मल ही गकते हैं।

श्रव में थोड़ा-सा । यान एक श्रीर जीज पर दिलाना जानता है। बैगा कि श्रभी तें न रास्ते जनमें से मान तथा जिल्ला स्वारूक्ष पर युग्य के साथ कहना पड़ता है कि कितना कपया व्यय किया जाता है। महिला विभाग पर कितना अयय किया जाता है ? महिला घरपतालों का यदि मरवाने प्रस्पताल के साथ मिलान किया जाय तो अजट में उनका प्रतिशत बहुर कम पाया जायगा जब कि उनका रोग यह समझना चाहिये कि जो हमारे ग्रागामी पर बतने वाले सार्गारकों घर भागर प्रानेगा । उसके। ज्यादा परवाह करना चाहिये, लेकिन दल है कि मालशक्ति की काद्र न करह इस तरह को शिकायत पकडने पर जिससे भविष्य में सरतान बहुत कमजोर पैका होता है उनके शंग विन व विन बढते चले जाते है। उस पर ध्यान नहीं विया जाता। में चाहता ह कि मानताय मत्रा जा इसे तरफ ध्यान दे लों में अपने डिपार्टमेंस्ट को स्थार के रूप में पा सकते। इस स्थार के विचार से परिवार नियोजन के लिये में भागना एक स्झाव देना चाहता है। परिवार नियोजन को यहाँ बहुत चर्चा है। हर माल इस पर चर्चा होता है। जैला कि मुझे जात है, केन्द्रोय सरकार के द्वारा इसमें कुछ कपया विया जाला है और का इस विभाग से भी विया जाता है जो प्रान्तीय वाखाओं द्वारा वर्ज किया जाता है। में इस प्रदेश का सरकार से प्रतरोध करूंगी कि कछ वपया और मिलाकर गांवों में इस के युनिट ब्लोल विये जाय श्रीर उस के साथ मिडवाइफ रत्व कर एक सेंटर सा खोला जाय। इसमें राया भा कम लगेगा और जन्ना-बन्ना की रक्षा हो सकेगो । इसमें पोड़ा रुपया ही लखं होने का संभावना है। इसके अलावा परिवार नियोजन इस तरह से चलने वाला नहीं है। इसमें रुपया पानो की तरह बहाया जाता है और इससे उचित लाभ नहीं होता। इसमें हर धावमी के लिये एक सर्टेन एज के बाव आपरेशन कराना अनिवार्य कर विया जाना चाहिये, तभी यह सफल हो सकता है। १९६०-६१ के ग्राय-व्ययक मे ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--ग्रनुदान संख्या २१-- ने बा शोर्षक ३८--चिकित्सा तथा अनुदान संख्या २२-- लेखा शोर्षक ३६- -जन-स्वास्थ्य

इस को बढ़ाने के लिये भ्रापको भ्रावश्यक कदम उठाना पड़ेगा और यह कहना पड़ेगा कि एक सर्टेन एज के बाद यह कार्य अनुचित हो जाता है।

इसके साथ ही साथ में यह सुझाव भी देना चाहती हं कि हमारे यहां एक बार बहुत पेनिसिलोन चत्रो और उस समय २० ध्यया तक एक पे नेसिलोन एंजेक्शन पर खर्च किया जाता यह ठीक है कि श्रब वह इतनो श्रधिक श्रपने देश में बन गयो है कि सस्ती हो गयी है लेकिन उसके जो भयंकर परिणाम हो रहे है उनका स्रोर से यह सरकार उदासीन है। दवाई बनाने के लिये जो इंडिविज्अन कैपिटलिस्ट थ्रयने कारखाने बढ़ाते जा रहे है उन पर रोक होनो चाहिये ग्रौर वे कारखाने सरकार के ग्रयोन होने चाहिये। यह इस तरह से जीवन के साथ खेलना है। प्राइवेट कैपिटलिस्ट मिलावट कर हे दवाइयां तैयार कराते हैं जिससे आये दिन हमे देखते हैं कि बुरा रिएक्शन होता है और बहुत सो डेय्स हो जाती हैं।

श्री उपाध्यक्ष--ग्रापका समय समाप्त हुन्ना । श्री राजाराम शर्मा जी, न्नाप केवल ५ मिनट लेगे

श्री राजाराम शर्मा (जिला बस्ती )--माननीय उपाध्यक्ष महोदय, समय कम है श्रौर रुपया भी कम है, लेकिन फिर भी कटौर्ता का प्रस्ताव है।

श्री उपाध्यक्ष--ग्राप माननीय मंत्री जी के बहुत नजदीक है।

श्री राजाराम शर्मा--तो यह उचित नहीं मालूम होता और जो कटौती का प्रस्ताव रखा गया है उसे वापस कर लेना चाहिये । मुझे कुछ जरूरी बातें कहनी हैं, वह सुनें।

एक तो हमारे यहां का ग्रस्पताल हटाकर मुंडेरवा चला गया है श्रौर वहां १० मील के एरिया में कोई अस्पताल नहीं है। इस स्रोर सरकार की ध्यान देना चाहिये। मेंहदावल अस्पताल जो है उसमें सालं भर तक देवाइयां हो नहीं पहुंची। फिर जब लिखा गया तो उसके बाद पता नहीं चलो कि वहां दवाइयां पहुंची या नहीं। मेरा सुझाव है कि दवाइयां समय पर पहुंचनी चोहिए। किसी भी नुस्खे में ४ या ५ दवाइयां पड़ती है। ग्रगर एक भी दवा उनमें से नहीं है तो नुस्ता बेकार हो जाता है। इसलिये हर दवा को समय पर पहुंचना चाहिये।

म्रायुर्वेदिक स्रोर यूनानी दवायें गांव के सस्ते इलाज हैं। मै यह नहीं कहता कि एलोपै-थिक से लाभ नहीं होता यो नहीं हो रहा है, लेकिन साथ ही साथ इस तरफ भी हमको ध्यान देना चाहिये। यह गांव की चीज है, सस्ती चीज है, श्रौर श्रगर श्रस्पताल में दवा न हुई तो वे वैद्य नुस्ला ही लिख देंगे कि इस तरह से यह दवा बना लो ग्रौर उससे लाभ हो जायगा ।

श्री उपाध्यक्ष--सदन में शोर बहुत हो रहा है। मे बार-बार निवेदन करता हूं कि ग्रगर बात करनी है तो लाबी उसके लिये बनी है।

श्री राजाराम शर्मा—हमारे यहां सफाई इंस्पेक्टर है। वह दूध ग्रौर मिठाई पक-ड़ने में ही ज्यादा जोर लगाते हैं, यह नहीं देखते कि गांव में कहां स्रौर कितनी गन्दगी है, सफाई नहीं है। इस तरफ उनका ध्यान नहीं है। दूघ ग्रौर मिठाई पकड़ कर वे कुछ प्राप्ति कर लेते है और उनका काम समाप्त हो जाता है इस तरफ भी सरकार को ध्यान देना चाहिये।

इसके ग्रलावा चेवक के टीके की तरफ सरकार को ध्यान देना चाहिये। ब्लेग फैलता था, हैजा फैलता था। उसी को लोग जानते थे। किन्तु सरकार के प्रयत्नों से ग्रब उस पर काबू पा लिया गया है। अब हैजा और प्लेग आदि बहुत कम सुनाई पड़ते हैं। बच्चे गळते हैं कि प्लेग कौन बीमारी है ? ग्रंब तो चेचक ही सुनाई पड़ती है। इसको हमारे यहां

#### [भी राजाराम शर्मा]

बेबीजी कह कर ही लोग जिन्दा रक्ले हैं। इसके लिये जब लोग खापा लगाने के लिये जाते हैतो गांव बाले अपने बच्चों को घरों में खिपा लेते हैं और खापा लगाने वालों को कुछ 'सीघा' नकद म अनाज वगेरह देकर चलता कर देते हैं। वे इतना उसमें उनने हैं जिसमें कि यह बीमारी फैली चली जा रही है। सरकार को इस तरह का एक अभियान चलाना चाहिये जिसके द्वारा लोगों को टीका लगाया जाय और यह बीमारी खत्म हो।

इसके ग्रालाबा में एक बात भीर यह कहना चाहता हूँ कि बस्ती में फल अनुसन्धानशाला है। यदि उसमें जड़ी-बृहिया भी लगायी जाय ती इसमें हमारे येथीं की भी मदद मिलेगी श्रीर प्रदेश श भी कल्याण होगा। इन शब्दों के साथ में इस ग्रानदान का समर्थन करता है।

श्री सुद्धीरितह (जिला मरादायात)—मं यह नियेयन करना चाहता हूं कि मुमें दो तीन मिनट दें विये जायं, क्यांकि मेरी निजी भायना का कृद्ध सवाल है जिसे मै कहना ' चाहता हूं।

श्री उपाध्यक्ष---प्राप दो-तीन मिनट बोल सकते है।

भी बुद्धीसिह-उपाध्यक्ष महोदय, वैसे तो सरकार स्वारण्य के संबंध में जोकल उठा रही है उसमें उसे सफलता श्रवदा मिली है, इसमें सेदेह नहीं है, लेकिन में समप्तता हें ग्रभी बहुत कृद्ध करना जरूरी है। ऐसी जगह ग्रस्पताल खोलने की जरूरत है जहां पर यातायात के साधन नहीं है धौर न डाक्टर ही है। यहां वहीं परानी सकीर के फकीर है जो उन इसकी में घपनी पुरानी दवादार से इलाज कर लिया करते है। में इस सदन में सन ५७ से साल बसान वेल रहा हं भीर धिकित्सा के सम्बन्ध में मुझे कृद्ध धनुभव भी हुधा है। जो बीमारी मेरे दिसा। में भी न थीं और जिसका नाम भी पहले न सुना था वह झाज सुन रहा हूं। आज बहुत-सी बीमारी वैकानिक ढंग की लोज से निकली है। इन बीमारियों को लोग देहातों में जानते तक नहीं। मेरी स्त्री काफी बीमार हुई, उसको गांव के हकीमों ने पेंट का वदं बलाया। में जब प्रान्दोलन में केल गया था तब वह बीमार हुई थीं। उनकी धसली बीमारी का पता तब चला जब में उसकी असरामपुर धस्पताल लेबाया। यहां बलरामपुर में बाखिल होने के ५० दिन बाद इस बात ही घोषणा की गयी कि कैन्सर की बीमारी है। कैन्सर मून कर मैने यह समझा कि यह कोई नयी बीमारी है। ग्रंत में लाइलाज होने के कारण मेरी रत्री का स्वगंवास हो गया। बेखने मेरी लड़की शाया जाया करती थी। उसी की फिन्न में बह भी ऐसी बीमार हुई कि वह में किकल कालेज में टी० की० से बीमार है। यहां तक कि मै स्वयं भी ऐसी बीमारियों की सुन कर, उनकी मौत को देख कर इतना कमकोर हो गया हूं। मेरी प्रार्थना यह है माननीय मन्त्री जीते कि बेरनी, जिला मुरादाबाद में एक प्रस्पताल लोना जाय। जब जनतंत्रीय सरकार है ते मंत्रियों, मुरूपमंत्री का ब्सान जकर जायगा हर इलाके की शीर । लेकिन जब में देवता हूं प्रपते इलाके और अपने जिले में कि जहां मंत्रियों के दौरे होते हैं, प्रोग्राम रावे जाते हैं जिस जगह प्रारा-तालों की सिफारिया की जाती है वह ऐसी जगह पर की जाती है जहां पर जल्दी से उनकी मोटा पहुंच जाय या उनके स्वास्थ्य विभाग के बड़े झांधकारी पहुंच जायं सीर कागज में रिपेट बेदें कि वह बहुत ग्रच्छे चल रहे है।

लाल बली जल गयी है, अब में सुझाव विये वेता हूं। मंने यह नीयत कभी नहीं रखी कि मेरे यहां कोई अस्पलाल लोला जाय। मंने स्वय एक तजुर्बा किया, मंत्री जी से सहायता त मांगकर अपने ही तौर पर एक अस्पलाल अपने यहां खोला है, किसी से कुछ नहीं मांगा। यह खकर है कि मुरावाबाव के कलेक्टर ने मेरी निजी भावना को वेख कर कुछ रंड- कास से सहायता की और वह कम से कम १२ हजारकी लागत से की, जिससे कलावती प्रसूति गृह का निर्माण हुआ है और वह इसी हपते में बन कर तैयार हो गया है। मेरी निजी भावना यह है कि अगर मंत्री जी प्रान्त भर का सर्वे करा रहे है और ऐसे इलाकों की खोज करा रहे है जहां अपस्तालों की वास्त-विक जकरत है तो माननीय मंत्री का स्थान गांवों की ओर जाना चाहिये जहां पर जो जनने वाली

#### १९६०-६१ के म्राय-व्ययक में मनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--म्रनुदान संख्या २१--लेखा शीर्षक ३८--चिकित्सा तथा मनुदान संख्या २२--जेखा शीर्षक ३९--जन-स्वास्थ्य

स्रोरते हैं, वह परेशानी में हैं। यहां पर दाई स्राकर जंग लगी हुई दराती से बच्चे की नाल काट देती हैं जिससे हजारों बच्चे मर जाते हैं। चन्दौसी स्रौर मुरादाबाद पहुंचने के लिये रास्ते ही में स्रौरतों की मौतें हो जाती हैं। इसलिये सरकार का कर्त्तव्य है कि लोगों को उत्साहित करने के लिये जिससे लोगों में जनतंत्र के प्रति स्रास्था बढ़े तो में दावत देता हूं कि कम से कम उस कलावती प्रसूति गृह को श्राप मेरे गांव में चल कर देख लें श्रौर देखने के बाद में श्राप से यह मतालबा करूंगा कि उसको कुछ मदद देकर उसे श्रौर श्रोगे बढ़ाने का इन्तजाम कर दें। में कोई भीख के तौर पर सहायता नहीं मांगता हूं..

श्री उपाध्यक्ष--ग्राप का समय समाप्त हुग्रा। श्री कल्याण चन्द मोहिले, ग्रापके लिये दो-ढाई मिनट हैं।

\* श्री कल्याणचन्द मोहिले (जिला इलाहाबाद)— दो मिनट में ही समाप्त कर दूंगा।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, में इस सम्बन्ध में याद दिलाऊंगा सरकार को कि जो माननीय खरे जी के सभापतित्व में १६४६ में कमेटी बनी थी जिसमें सरकार ने यह तय किया था कि दो में डिकल कालेज, लखनऊ के भ्रलावा कानपुर भ्रौर इलाहाबाद में बनाये जायं, तो दुर्भाग्यद्द इलाहाबाद का तो पीछे रह गया भ्रौर कानपुर में मेडिकल कालेज बन गया। इस समय वहां पर एक भ्रस्पताल बन रहा है जो द-१० बंड का बन रहा है। में सरकार से कहूंगा कि खेर जी की रिपोर्ट के भ्रनुसार वहां मेडिकल कालेज शी झातिशी झ बनाने की कृपा करें। इन शब्दों के साथ में कटौती का समर्थन करता हं।

श्री रामायणराय—मान्यवर, ग्राज के इस महत्वपूर्ण ग्रनुदान के संबंध में दोनों ग्रोर के माननीय सदस्यों ने काफी गम्भीर सुझाव दिये हैं। हां, इतना जरूर है कि ग्रभी थोड़ी देर पहले उधर की एक सदस्या ने परिवार नियोजन के सम्बन्ध में एक ऐसा सुझाव दिया जिसको सुन कर में तो बहुत घबरा गया। ठाकुर साहब तो वह उम्र पार कर चुके हैं, मुझे ग्रभी काफी दिन इस दुनियां में रहना है। में उनसे ग्राग्रह करूंगा कि ऐसे प्रतिक्रिया स्वरूप मुझाव न लाये जायं तो ग्रच्छा हो। में मानता हूं कि ठाकुर साहब केवल सदस्यों को ही देखने नहीं जाते है ग्रस्पतालों में, गांवों के ग्रस्पतालों को भी जा कर देखा है, लेकिन में उनसे जानना चाहता हूं कि वया कभी उन्होंने यह भी जानने की चेष्टा की है कि उनके विभाग के जो बड़े-बड़े ग्रफसर है उन्होंने कभी श्रहरों को छोड़ कर गांवों में जाने की कोशिश की है? में जानना चाहता हूं कि पिछले १०-१२ वर्षों में कौन बड़े ग्रफसर है उनके विभाग के जिन्होंने गांवों में चिकित्सालयों को दुर्दशा को जा कर देखने का प्रयास किया?

दूसरी एक श्रावश्यक बात श्रापके द्वारा मुझे उनकी सेवा में निवेदन करना चाहता हूं एक नयी प्रकार की व्यवस्था के सम्बन्ध में। श्राजकल उच्च श्रिषकारियों को श्रोर हम माननीय सदस्यों को दवाई के बदले रिइम्बर्समेन्ट की सुविधा हमारी सरकार ने दे रखी है। रिइम्बर्समेन्ट के मामले में मेरा श्रपना खयाल यह है कि श्रगर पैसा न देकर दवाइयां दी जायं तो ज्यादा श्रच्छा होगा। मैं ऐसा सुझाब इसलिये दे रहा हूं क्योंकि कभी-कभी फर्जी कागजात श्राते हैं। जिल में कलेक्टर साहब सोने जैसी कीमती दवा खरीदकर खा जाते हैं, सिविल सर्जन की क्या हिम्म है कि वह इनकार कर सके। मान्यवर, ऐसा भी होता है कि वही दवाई हास्पिटल को कम दाम में मिलती है—यह श्राप मानेंगे—लेकिन प्राइवेट केमिस्ट के यहां वही दवाई हाई रेट पर मिलती है। जो दवाई ७ रुपये में हास्पिटल सप्लाई कर सकता है उसको प्राइवेट केमिस्ट १०-१२ रुपये में देता है। तो श्रिषक पैसा हमारी स्टेट का रिइम्बर्समेन्ट के झगड़े में सर्च हो। जाता है। इसलिये मेरा सुझाव है कि इस को दूर करने के लिये हमारे श्रस्पतालों

<sup>&</sup>lt;sup>क</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्री रागायणराय

को इसाइ के तरम सम्मा काया नाय कार्यकार करनान पर इसाई दी जा सके। पैसे ही समावका नहीं मितना नाजिस।

ग्रामीण प्रत्य ता तो के सम्तन्य में में ऐसा महत्यम करता है जसा कि प्रभी एक माननीय सदरया ने कहा कि क द रोगा में उनको डिस्ट्रिक्ट हास्पिर कि का महह लेना पहली है, लेकिन फील बहात रुपहुन ने रेविये उन रेपास सीई सारन नरा हो विनयस भरीन समाप्त हो जाता है। इसलिये ऐसे अस्पतान शिक्ष अस्पताना से काई सनायक्ता ने सक, उपके नाये आवेश्यक है कि प्रत्येक ग्रामीण प्रस्पताल में एक मोरर गाउ। तरूर होता चारिये। म साथ ही यह भी केहन चाहला हु कि निस्त निरो से भ्रापान स्थापर एक बटा बना प्रस्पता है, उसकी कारोबीर लया आरोगर बहुर बहा है, नेरित बहायर न नाय गर्ना नरह श्रीर न रेडियोलोजिस है। द्याध्वर रेडियोल्नानिस्ट करा स भिल ? इसर बना म रेडियाला निस्ट के लिये त्रह्नुत्रह को . स्थियाये है। यह बना देशिन रूल किन्म ना काम हा। बहुत स लीग नहा जानते होने कि झ पेशों में जो डाक्टर जाता है उसकी आप्तें भाग्न-पो हो सर राह । तुसरे देशा में उसके सीते पर एक यशी लगी रहती है जिमस यह भातम हो जाय कि रहिया मेजीन कितनी एक्सपोल हो, जब यह हट जाय। तो डाक्टर इसमें जान के लिय हिनकते हैं। आज कोई बाक्टर अनेस्योसिया में रपेशेलिस्ट होने को तेयार नहीं होता, क्या इसका कारण जातने की मंत्री जीते कभी कोशिश की 🤨 तो ये एसी सेवाये है जिनक जिना प्रस्पता र प्रधर रहते है। एक सर्जन से कम इम्पाटन्ट श्रतेरथीरट नहीं होता। सन्नां त्री ने रत्रयं कवन किया है कि उनका श्रभाव है जिलनी संस्था में सरकार नाहती ह उतन बह नहीं मिलता अभी एक माननीय सबस्य है भाषण के सर्वाय में माननीय मंत्री जा ने कहा कि यह चाहते हैं कि प्रत्येक जिले में एक प्रची से अन्तर्वा अन्यताल बन, लेकिन बहुत अन्तर्दे अन्यताल कब बनेग, इमको माननीय मंत्री जी खाँ जानते होगे। में सीमित साधनों के घन्तर उनम आग्रह कर रहा हूं कि बलरामपुर जैस अस्पताल भी ता आप गारे जिला के लेन्द्रा म बना व. जिलकी प्रशास दोना तरफ के लोगों ने की है। एकाथ लोगों का याचा बहुत विकायत हो सकती है।

कृष्ठ लोगों ने एलोवियी िरतम के लिलाफ भी प्रयान कर हाला। में जानता हूं कि उनके महें से बहे नेना एलोवियक प्रस्पतालों में भरती हुये हैं। मेरा मतलब समाजवादी पार्टी के एक माननीय सदस्य से हैं। मेरे देखा है कि हिन्दी, हिन्दुस्तान, भारतीय श्रीवधि का ये लोग नारा लगाते हैं, लेकिन जाते हैं एलोवियक धरपतालों में। ज्ञान नाहे ग्रमरीका का हो या रूस का हो, यदि उपावेयता उसमें हो तो उसे लेना चाहिये। ज्ञान में ऐस नहीं भड़कना चाहिये जैसे कि लाल कपड़े में सांड भड़कता है।

धगर मंत्री जी वो एक पालणायं भी कर बे तो में समझ्गा कि धाज के अनुवान के बारे में जो विचार प्रकट किये गये हे वे सफल हुये हैं। माननीय उपमत्री जो ने भी स्वयं कबूल किया कि बे विचार काफी मृत्यवान थे। पहली बात पूर्वी जिलों में गीरलपुर में एक में दिकल कालेज खोलने की कृपा करें। गीरलपुर में इसलिये कह रहा हूं कि वह खें कु करोड़ जनपद के अन्दर एक ऐसा स्थान है जहां इस बात की नितानत आवश्यकता है। में रा लोकल पंद्रियोटिज्म नहीं बोल रहा है। में उस जिले का रहने वाला भी नहीं हूं। माननीय मंत्री जी ने कहा था कि कई मेंडिकल कालेज खोलने वाले हैं, बोई पूरव नें, कोई पश्चिम में। हमारे कोटा का कालेज गोरखपुर में खोला जाय, यह हम चाहते हैं।

दूसरी बात यह है कि केवल मंत्री जी की सिकयता से ही काम बलने वाला नहीं है। जिस लगन से वह इस विभाग को संवालित करने की चेक्टा कर रहें हैं, धगर उन्होंने अपने अफसरों की भी उसी लगन से संवालित किया होता और उन बड़े अफसरों ने गांवा के अस्पतालों को जाकर बेका होता तो जो विकायतें आज उन्हें सुनने को मिली है वे कवापि न मिलती।

श्री हुकुमसिंह विसेन--सब से पहले में भाई रामायणराय जी का शुक्रिया ग्रवा करते हूं और वोनों तरफ़ के भाइयों का भी कि उन्होंने जिस तरह से कल हमारे विभाग के प्रतुवानों पर कृपा दृष्टि रखी वैसी हैं मुझे स्राज भी नजर स्रा रही है। मै समझता हूं कि जिस हंसी खुशी के साथ वे पास हुये वैसे ही स्राज भी होंगे। स्राज एक खूबी मैंने स्रौर देखी कि कुल १ रुपया काटना चाहा है। यह भी खुशी की बात है। मैं स्राशा करता हूं कि रामायणराय जी जो बलराम-पुर स्रस्पताल की ७५ फीसदी दवा खा गये वह कैसे यह कहेंगे कि सारी धनराशि काट कर १ रुपया कर दी जाय। उन्होंने जो रियायत की है उसमे उनका भी स्वार्थ है स्रौर हमारा भी स्वार्थ है, वरना हम कहां से उनके लिये इतनी दवाइयां लाते?

बहुत से सुझाव दिये गये। हमारे एक मित्र ने सुझाव दिया कि हमारे डाक्टर वी० डी० स्रो० के मातहत हो जाते हैं. इससे डाक्टरों में बेचैनी है। मैं भी इसको महसूस करता हूं स्रौर हम भी इस पर विचार कर रहे हैं। हमारा विभाग स्रौर प्लानिंग विभाग इस सम्बन्ध में परामर्श कर रहा है। कोई न कोई इसका हल स्रवश्य निकलेगा।

डाक्टरों के देहात में न जाने की बात भी कही गयी। उस सम्बन्ध में कुछ सुझाव भी विये गये। हम भी उसके बारे में सोचते रहते हैं। मेरे जिले में ६-७ ग्रस्पताल हैं, उनमें से एक भी डाक्टर नहीं है ग्रौर इस वजह से नहीं है कि कहीं कोई यह न कह दे कि पक्षपात किया। इस सम्बन्ध में भी हमने सोचा है। जैसे बार्डर एरिया के लिये २०० रुपया प्रतिमाह का एन्हेंसमेंट किया गया है ग्रौर इसके कारण से बार्डर एरिया में ग्रब डाक्टरों की कमी नहीं है। हमने यह भी सोचा है कि प्राइमरी हेल्थ सेंटरों में तनख्वाह के ग्रलावा ७० रुपया एलाउन्स देंगे ग्रौर ५० रुपया सीनियारिटी के हिसाब से उसकी नान-प्रैक्टिसिंग एलाउन्स देंगे।

कुछ जगह मकानात नहीं हैं। इसमें हमारी दिक्कतें हैं। उसके लिये हमारी स्कीम है कि हम हर साल कुछ ग्रस्पताल, कुछ मकान ग्रौर कुछ क्वार्टर बनायेंगे। इसमें समय ग्रवस्य लगेग', एक दिन में तो यह बन नहीं जायेंगे।

यद्यपि हम अभी नहीं कह सकते कि हम अपने प्रयास में पूर्ण सफल होंगे या नहीं, लेकिन हम यह सोच रहे हैं कि पी० एम० एस० २ का पे स्केल कितना रहे। आज का के जमाने में पैसे से लोग आर्कावत होते हैं। उसको हम इतना रखना चाहते हैं कि लोग उसको पसन्द करें और आर्कावत हों।

इसके साथ-साथ यह भी प्रयास किया है कि हमारे कालेजों में श्रागरा, लखनऊ श्रौर कानपुर में, जो लड़के पढ़ने के लिये श्राते हैं उनसे इस स्टेट में तीन-तीन साल सर्विस करने का बान्ड लिखाते हैं। इसके श्रितिरक्त ऐडिमिशन्स की तादाद भी हमने बढ़ा दी है। श्रागरा में ७५ के बजाय १०० कर दी है। इससे श्राशा है कि हमारे यहां से जो लड़के निकलेंगे वे हमारी उम्मीदों को पूरा करेंगे, श्रगर साथ ही हम उनको कुछ सुविधायें दे दें।

बहुत शोर मचाया गया कि देहात की द० प्रतिशत जनता का खयाल नहीं रखा जाता है। या तो हमारे मित्र ने पढ़ा नहीं या उन्होंने जानकारी हासिल करने की शोशिश नहीं की। में तो कहता हूं कि जितने भी प्राइमरी हल्थ सेंटर्स हैं वे सब देहात में ही खोले जा रहे हैं। उनमें जच्चा-बच्चा केन्द्र, चाइल्ड सेंटर श्रौर एक हेल्थ विजिटर रहेगा। उसमें एक जच्चा-बच्चा केन्द्र वहां रहेगा श्रौर तीन उसी ब्लाक एरिया के श्रन्दर मुख्तिलफ इम्पाटेंट जगहों पर रहेंगे। इस तरह से ग्रगर में कहूं तो फर्स्ट प्लान शुरू होने से पहले एलोपैथिक श्रस्पताल मेल २४६ थे श्रौर फीमेल श्रस्पताल ५१ थे, श्रायुर्वेदिक ४३३ थे श्रौर यूनानी ६१ थे। श्रब फर्स्ट श्रौर सेकेंड प्लान में हमने ३७५ श्रौर खोले हैं मेल के श्रौर फिमेल के ६६ खोले हैं, श्रायुर्वेदिक ५१ खोले हैं श्रौर यूनानी ११ खोले हैं। इस तरह से कुल मिला कर ५३३ देहातों में खोले। इसके श्रलावा सन् १६५८—५६ में १०० प्राइमरी हेल्थ सेंटर मेडिकल डिपार्टमेंट ने खोले श्रौर १०७ सेंटर प्लानिंग डिपार्टमेंट ने खोले, इस तरह से कुल टोटल २०७ हुग्रा। श्रौर ७२८ मेटरनिटी एंड चाइल्ड हेल्थ सेंटर खोले। सन् १६५६—६० में प्लानिंग श्रौर मेडिकल डिपार्टमेंट ने २७४ श्राइमरी हेल्थ सेंटर खोले श्रौर १,०६६ मेटरनिटी एंड चाइल्ड हेल्थ सेंटर खोले श्रौर १,०६६ मेटरनिटी एंड चाइल्ड हेल्थ सेंटर खोले।

[भी हुकुमसिंह विसेन]

सन् १६६०-६१ में प्लानिंग भीर में किकल किपार्टमेंट मिल कर ६७ भीर खोलने वाले हैं। इस तरह से ४४८ भरपताल भीर लुले हैं। इसके बावजूब भी यह कहा जाय कि नहीं साह, बेहातों की उपेक्षा हुई, तो में उसे बहुत ठीक नहीं समझता। भगर रात को रात कहा जाय भीर विन को विन, तब तो लोगा पर भगर पढ़ेगा लेकिन भगर नात को विन भीर विन को ता कहा जाय तो किसी वानिशमन्व पर उमका कोई भगर नहीं पड़ मकता है।

सारी स्विधायं हम देते हैं, लेकिन यह कहा गया कि साहब ववाइयों में बड़ो उपेक्षा की गयी। ध्रव में क्या बतलाऊं, हम सब को पेसा देते हें, टी० बी० वाला भी कोई विमुख नहीं जाता, धोड़ा बहुत जो कुछ होता है उसे विया ही जाता है। देवा के बारे में भी कहा गया, यह दूसी बात है कि कोई कह द कि दवा के बदले में लाल रग हाल विया जाता है। में प्रापको बतलाऊं कि सन् १६५६—६० में ५२,७१,२०० क० की यवाय दी गयों जब कि इस बजट में उसके लिये. ६८,६१,००० क० की रक्तम रखी गया है। कोई १८ लाख क करीब रक्तम इस बजट में बढ़ाये गयी है। तो इस तरह से क्या काम पूरा नहीं होगा? में समझता हूं कि जरूर पूराहों कायगा।

खुराक के सम्बन्ध में भी एक मित्र न कहा कि रसोइयं का तो ब्रापने इसलाम कर िया ब्रीर खाने का पता ही नहीं। तो उसके नियं २५,६३,२०० के की जगह रकम बढ़ा कर २७,४०,७०० के कर वी गयी हैं। इस सरह में ययाइयों घौर खुराक के लिये काटिजेंसी है हमने खर्च करने का प्रयास किया है और अब ब्रागे और बढ़ाने जायेगे। में इस बात से इकार नहीं कर सकता हूं कि हमारे सूबे की जरूरियात बहुत ज्यादा है। श्राबादी बहुत बड़ी है और जितनी जन्दी, जितनी तेजी के साथ लोग श्रम्पताल माई डें ह हुए है उतनी तेजी के साथ हम शर्म घर्मतालों का बेवलपमेंट नहीं कर सकते हैं। में धपने लड़कपन की हालत जानता हूं कि तोग कहा करते थे कि में अस्पताल की दवाये नहीं खाऊंगा, लेकिन ब्राब गांव का हर बादमी, हर फैंसिली का हर बादमी ऐसा खाहता है कि उसका ट्रीटमेंट अस्पताल में ही। बामतौर से तोगें के बच्चे घर हो पर पेवा हु । करते थे, लेकिन ब्राब सब खाहते हैं कि हमारे बच्चे प्रस्थताल में है पेवा हों। किर बच्चा पेवा होने में कभी नहीं है, उसकी रफतार इतनी तेज हैं कि उतनी जली हम मेंटरनिटी ऐंक खाइल्ड हें त्थ सेंटर का बेबलपमेंट नहीं कर पा रहे है। मथुरा में भी बड़ी पेवाबार है।

में यह कहना चाहना हूं कि हम आप सब इस बात को मानेंगे कि हमारी आप की जो पूंजी है वह सीमित है, हमारे अनीतामटेंब सोमेंज नहीं है। में यह भी मानता हूं कि हमारे खें टोटन बजर का प्रतिशत में बिकल पर कम है से कि नम पूर्व पीठ एक एंसा सुबा है जहां यह नपूछिं कि कौन प्रावनम है, बिल्क पह कि हमें कि कौन प्रावनम पहां नहीं है ? निहाजा जहां इतनी प्रावलम हों उनकी मीट करने की जकरत है और सभी मुलतालफ प्रावलम पर काफी वप्या खं किया जाय तो वह वपया आयेगा कहां से? फिर भी जितने हमारे साथन है उनका हम सबुपयोग करना चाहते है और उसका हम ठिकाने से बटवारा भी खाहते है। हम यह नहीं चाहते कि शहर या गांव किसी हों भी उपेक्षा हो, गांव की तरफ हमारी तवज्जह ज्यावा है। अभी लोगों के इस बात का अहसास कम होता है, क्योंकि प्राभीण क्षेत्रों की उपेक्षा हमें शांते होती आई है, उनकी जितनी प्रावलम है, जितनी उनकी जकरत है उनका हम अभी ठीक अन्याजा भी नहीं कर सकते। अगर हम तरकों भी उसमें कुछ करते हैं तो वह प्रयास एसा है कि अभी कुछ विन तक उसका अहसास किसी को न होगा, जब तक बेहात के क्षेत्र में हमारा काम एक सकटेंशियल डिप्री तक नहीं पहुँचेंगा, जब तक काम कामी जहर में न आ जाय तब तक उस का प्रहसास न होगा। इसलिय भले ही कोई कह वे कि बेहाती कित्र की उपेक्षा होती है, लेकिन ऐसा है नहीं।

दाहर में भी टी० बी० की बीमारी होती है और वह बेहातों में भी होती है। लोग कहते हैं कि टी० बी०बढ़ती जा रही है, में कहता हूं कि वह बढ़ नहीं रही है, बल्कि वह घब जहर में ज्यादा आमें लगी है। बेहातों में विक के मरीज पड़े रहते थे, कोई पुरसाहाल न था, लोग घरों में मड़े मर जाते थे, लेकिन अब सब को मालूम है कि सरकार की तरफ से महद भी मिलती है और इलाज भी होता है, रोज मेरे पास बिलया, आजमगढ़, देवरिया, बहराइच और पिक्मि जिलों के लोग आते हैं, में डाक्टर नहीं हूं, लेकिन मेरे यहां लोग आकर फाटक पर चक्कर लगाते हैं। बब उनको लखनऊ जैसे सेन्टर्स पर सब सुविधा मिलती हैं तो वह आते हैं, वह भी जानते हैं कि अब जनता की सरकार है, मंत्री जी भी हमारी मदद करेंगे और काफी लोग मदद पाते भी हैं। इन कारणों से में कहता हूं कि अब बीमारी जहूर में आने लगी है। पहले कोई पुरसांहाल नथा। अब ७०,००० रुपये साल टी० बी० के लिये दे रहे हैं।

कुछ भाई ग्रसन्तुष्ट हो जाते हैं, श्रौर कहते हैं कि जो रकम भी दी जाय वह प्रच्छी तादाद में दी जाय। लेकिन बाकी लोग जो उनसे ज्यादा जरूरतमन्द हैं, उनको फिर हम क्या दें? इस बास्ते हमने एक उसूल बना लिया है कि किसी को २०० ६० से ग्रधिक श्रौर २५ ६० से कम न बेंगे। हम देते सब को हैं, इन रकमों के बीच में कुछ न कुछ, किसी को विमुख नहीं जाने देते श्रौर जिन को देते हैं उनमें श्रधिकांश देहात के लोग ही होते हैं। फिर कैसे कहा जाता है कि देहाती क्षेत्र की उपेक्षा होती हैं? इस तरह से एक संतुलित ढंग से हम काम करते हैं श्रौर किसी की उपेक्षा नहीं होने देते। श्रगर दुख १०० मन हैं, एक मन मिटे श्रौर ६६ मन रह जाय तो पता नहीं चलता कि दुख मिट रहा है। कम से कम १०० मन में से ५० मन दुख मिटे तब पता लगे कि कुछ काम हो रहा है। उसमें श्रभी समय लगेगा श्रौर तब उसका श्रहसास हो सकेगा।

टी० बी० के बारे में मेरे पास बड़ा मसाला है, वह में सब दे सकता हूं। हमारे कई विलिनिक्स चलते हैं, सैनीटोरियम्स हैं जिनके विषय में सभी सदस्य जानते हैं, प्राइवेट एजेंसीज के भी विलिनिक्स हैं जिनको हम सहायता देते हैं, वह सब चल रहे हैं। हम उन सब को ग्रान्ट देते हैं श्रोर हमारी बी० सी० जी० की टीम भी चल रही है, वह भी काम कर रही है। तो इस तरह से टी० बी० का जितना प्रबन्ध हम कर सकते हैं कर रहे हैं, हम हर जिले में टी० बी० कलीनिक लगाना चाहते हैं।

इसी तरह से लेप्रोसी की भी प्राबलम हमारे सामने है, उसकी भी तमाम संस्थायें खल रही हैं। हमने कुछ निवारक संघ को रीकांस्टीट्यूट किया है थ्रौर १,००,००० रुपया उनके डिसपोजल पर रख दिया है to start with । श्रौर ७४,००० रुपया इस बजट में भी प्रोवाइड कर दिया है ताकि उनकी श्रौर ऐक्टिविटीज जारी की जायं श्रौर दुढ़ी में भी कुछ श्राश्रम खोलने जा रहे हैं। इनके जिए से श्राज्ञा है, हमारे प्रदेश में इस सम्बन्ध में कुछ कार्यवाही बढ़ेगी। कुछ श्राश्रम कई हैं, गोरखपुर में भी है, बहुत सुन्दर श्राश्रम हैं श्रौर वहां दवाई का भी इन्तजाम है श्रौर मरीज हैं, वे सब खुद फुलवाई। ठीक करते हैं, श्रलग-श्रलग क्वार्टर हैं जो सुचार रूप से चल रहा है, कोई त्रिपाठी या तिवारी जी उसके संचालक हैं, बाबा राघवदास के समय से चल रहा है। इसी तरह से कई श्रौर श्राश्रम हैं जो चल रहे हैं श्रौर जो संघ हैं उसके जिरये से हम इसके बारे में श्रौर विस्तृत कार्यवाही करना चाहते हैं। झांसी तथा श्रौर कई जिलों में क्लीनिक बने हैं श्रौर मोबाइल वान्स भी गांवों में जा करके काम कर रहे हैं। तो इघर भी जो कुछ हम से हो सकता है, कर रहे हैं।

फ़ाइलेरिया की यूनिटें भी काम कर रही हैं श्रौर मलेरिया तो बिलकुल ही खत्म हो गया। बाज लोगों ने तो कहा है कि प्लेग देखने को तरसते हैं। फ़ाइलेरिया की ८, ६ यूनिटें काम कर रही हैं श्रौर जहां भी जरूरत होगी, बढ़ायेंगे। तो इन सबसे हमारा प्रयास साबित होता है। स्माल-पाक्स के बारे में हम सोच रहे हैं कि उस सिलसिले में कोई न कोई कदम बढ़ाना है।

कुछ मित्रों ने कहा कि मेडिकल कालेजेज देहात में खोले जायं। किसी ने कहा, लखनक मेडिकल कालेज से ग्रस्पताल निकाल लिया जाय। श्रस्पताल निकाल दें तो पढ़ावें कैसे ? तो श्री हक्मसिंह विसे

ब्रस्पताल तो रहेगा, हा, उसके इन्तजाम, देखरेग्य में कुछ सम्ती की जाय तो ज्यादा ब्रच्छा है। लेकिन वह यूनी यसिटी के तहल में है, यहा हमारा कोई दगल नहीं है, हमारा ऐडिमिनिस्टेटिंग चार्ज नहीं हैं इस वजह में में कोई ऐस्योरेंस नहीं दें सकता।

कहा गया, देहात में मेडिकल कालेज रोले जाय। मे पया बतलाऊ मझाव है। में यह भी अरंत नहीं कर सकता कहन की कि यह गयाव वाकपात न जानने पर श्राधारित है। कोई मेडिकल कालेज बिना श्ररपताल के नहीं चल सकता। उसमें है, ६ यूनिट्स होते हैं। हर विद्यार्थी पर १० बेड होने चाहिये तभी तालोम उन की हो सकती है। श्रमर १०० विद्यार्थी श्राप दाखिल करें तो कम से कम १००० बेड का सवाल पड़ता है। तो १००० बेड जहा होंगे वह कितना बड़ा श्ररपताल होगा इसे श्राप श्ररपताल पड़ता कर सकते हो। बिना श्ररपताल के श्रमर किसी गांव में हम १००० बेड्स का श्ररपताल बनाये श्रीर एक मेडिकल कालेज लोले तो बिजली चाहिये, एकसरे प्लांट्स चाहिये, सारे श्रोजार चाहिये। बड़े-बड़े श्रोफेनर जो श्रायंगे वे कच्ची सड़क पर नहीं चलेंगे। तारकोल तथा सीमेट की रोड्स बनानी होगी, श्रच्छे-श्रच्छे बंगले बनाने होंगे। बहु भी एक शहर हो जायगा। श्रमर गांव में कालेज बना दें तो गांव भी शहर हो जायगा। तो फिर श्रपने गांव से भी श्राप हाथ थावे। तो यह तजवीज कुछ ऐबसर्ड मी तजवीज है।

श्री मोतीलाल श्रवस्थी (जिला कानपुर) - ग्रेमे डाक्टर रिवयं जो बंगलों में न रहते हों।

श्री हुकुर्मासह विसेन-एसं शावटर मिलंगं नही, मास्टर मिलंगे।

एक तनवीन और की गयी कि मेरठ में, दलाहाबाद में तथा गोरखपुर में एक मेडिकल कालें लोला जाय। में कहता हू कि बहराइस में खाला नाय, क्यों कि वहां का कोई एम॰ एल॰ ए॰ बोला नहीं। तो हम ही कोल लें। कहा खोलें, कैसे खोलें यह सब अभी यह फाइव ईयर जान में होगा। उसकी पूर्व स्परें जा तथार नहीं। तो हम करई कह नहीं सकते कि कहां बोलें। और कहां नहीं खोलें। जहां कहीं रंग होगा यहां खोलें। कशी कच्चा रंग हो तो वहां लोलेंगे। इस मीके पर यहां कह सकता है।

एक बात ग्रीर कहना चाहता है। हमार रामायण राय जी बहुत चतुर ग्रादमी है। देशियोनाजिस्ट की हमदर्शे हासित की, जितने बतरामपुर में डाक्टर है उन सब की हमदर्शे हासित की, जितने बतरामपुर में डाक्टर है उन सब की हमदर्शे हासित की। यह भी कहा कि बतरामपुर में कुछ येएम श्रीर बढ़ा विये जायं। वहां श्रम जगह ही नहीं है। काफी बंदम बढ़ चूके हैं। ७०, ७५ बंदम है। जहां जगह हागी वहां बढ़ेगे। फिर श्रगर इतने मानिष् सदस्य चाहने हैं तो। बढ़ेंगे। लेकिन इससे मान्य हाता है कि रामायण राय जी ने एक तीर से सबका जितार कर दिया। श्रम रीज चाहें लेट रहिये, कोई परवाह नहीं। इतनी देखरेख व स्वांतर होगी, जितनी श्रांत तक हुई है, उससे धुगनी व चीगनी होगी।

कीं मली त्यानिंग के बारे में हुमारी चन्द्रावती जी ने कहा कि आपरेशन कम्पलसरी करा वें लो रामायण राय बर गये। उन्होंने खुब कहा में नहीं जानता। उनको बरने की जहात नहीं। आपको तो आपरेशन कराने की जनरत नहीं, बरे वह जिनको आपरेशन कराने की जकरत हो।

हमार भाई यहापाल जी ने भी कहा और उन्होंने बड़ी उलझनों में डाला। उन्होंने कहा कि मारेल टीमिंग होना चाहिये, लो हम फीमली एलानिंग में उसे डिबार कब करते हैं ? हम तो इम्मारेलिट। की रोकना चाहने हैं। में यह कहना हूं कि इसमें सब का सहयोग होना चाहिये। सभी भाई इससे इलफाक करेंगे और इसमें कोई दो रायं नहीं हो सकतीं कि हमारे सूबे की आबादी बड़े जोरों के साथ बढ़ रही हैं। चाहे कुछ फीमने गतत हो लेकिन एक दफ़ा मेंने कहीं देखा था तो उसमें यह था कि ४,४०० बच्चे रोज पैदा होने हैं। उसमें मरने की तादाद भी की

१६६०-६१ के म्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतादन--भ्रनुदान ८६६ संख्या २१-- जेबा शीर्षक ३८-- चिकित्सा तथा प्रनुदान संख्या २२-- लेखा शीर्षक ३६-- जन-स्वास्थ्य

२,४०० के करीब दी हुई थी। लड़के ग्रीर बुड्ढे मिला कर। तो २,००० का खालिस मुनाफा रोजाना का है। महीने में ६० हजार हो जायेंगे ग्रीर उसे १२ से जरब दीजिये तो ७ लाख, २० हजार होते हैं एक साल में। है खतरनाक खबर या नहीं?

लाद्य समस्या हमारे और आपके सामने हैं और हम और आप प्रयास भी कर रहे हैं कि प्रोडक्शन बढ़ जाय लेकिन कहीं ओला गिर पड़ता है, कहीं पानी बरस जाता है। होली के बाद ओले ओर पत्यर पड़े तो इन विपत्तियों का भी तो कुछ लयाल करना है। हमने जब सीलिंग का बिल पेश किया या तो किसी ने कहा कि सवा ६ एकड़ बहुत काफी है, किसी ने कहा साढ़े १२ एकड़ बहुत काफी है, मगर ओला पत्थर का हिसाब नहीं लगाया। हम कहते हैं कि ४० एकड़ भी, अगर ओला पत्थर पड़ जाय तो बिलकुल नाकाफी है। तो उधर फूड प्रोडक्शन की यह हालत है और इघर आबादी बढ़ने का यह हाल है। लिहाजा अगर हमें लाद्य समस्या को हल करना है तो दोनों फ़न्ट्स पर हमको और आपको लड़ना पड़ेगा, एक तो लेती की पैदावार बढ़ाने में और दूसरे खाने वालों की तादाद को बढ़ने से भी रोकना है। मैं यह नहीं कहता कि कतई रोक दिया जाय, और यह कानून के जिर्य से हो नहीं सकता, क्योंकि कानून बनाने के बाद उसे इम्पलीमेंट कौन करेगा? एम० एल० एज० के सुपूर्व करें तो ये खुद मुजिरम साबित हों जायेंगे। मैं तो मुजिरम नहीं साबित होऊंगा, लेकिन हमारे सब नौजवान लोग हैं। तो इम्प्लीमेन्टेशन कानून के जिर्य से हो नहीं सकता, मगर आतम संयम के जिर्य से, जैसा कि हमारे भाई यशपाल जी ने बताया और जो माडन मैथड्स बताये जा रहे हैं उनको अमल में लाकर आबादी को बढ़ने को रोका जा सकता है।

हमारे कुछ मित्रों ने कहा कि डाक्टर बड़ा गड़बड़ करते हैं। भई, करते होंगे। इतनी बड़ी फौज हमारे पास है, जो हमारी आंखों से ओझल हो जाय मुमिकन है कुछ कर डाले, लेकिन जिसे हम पकड़ पाते हैं ठीक भी करते हैं। मुझे यह कहने में दुःख होता है, अगर हुक्म हो तो कहूं (किह्ये, किह्ये की अवाजें)। हमारे भाई खयालीराम जी जिन्होंने कहा कि मोहनलालगंज के डाक्टर के कांते से एक आदमी मारा गया मगर उसको ३२३ में लिख दिया। अब में क्या कहूं, हमारे भाई ने बलरामपुर अस्पत ल के सॉजिकल ब्लाक के एक डाक्टर के बारे में शिकायत लिख कर मुझे दी जिसमें कहा कि बहुत गड़बड़ है और यह खराबी है और वह खराबी है। मैंने शिकायत ले ली और फौरन हुक्म दिया कि तहकी कात की जाय। दूसरे दिन आप दूसरी चिट्ठी लिखते हैं कि मेरी वह खबर गलत थी। (हंसी) दोनों चिट्ठियां मेरे पास मौजूद हैं।

श्री खयालीराम ---इसका स्पष्टीकरण में दे दूं।

श्री हुकुमिंसह विसेन—पहले मुझे कह लेने दीजिये, बाद में स्पष्टीकरण दीजियेगः। में ग्रगर एम० एल० ए० की बात न मानूं तो नाजेवा होगा, विवाद में ग्राक्षेप होगा कि हमारी सुनी नहीं जाती है। ग्रपोजीशन के हैं मेरे भाई, हालांकि में तो ग्रपोजीशन ग्रौर ग्रपने में कोई फर्क नहीं समझता, उघर के भाई भी मेरे पास टी० बी० के मरीज लाते हैं ग्रौर इघर के भाई भी लाते हैं। में सब को एक ग्रांख से देखता हूं। एक ग्रांख से देखने के माने यह नहीं हैं कि दूसरी ग्रांख से मुझे दिखायी नहीं देता। (हंसी) में समझता हूं कि में पेशेंट्स की मदद करता हूं चाहे इघर से ग्रायें, चाहे उघर से ग्रायें। हमारे मित्र ने कहा तो हमने कहा कि जब इतने बड़े ग्रादमी कहते हैं तो हमें कुछ न कुछ करना चाहिये। मेंने उसी समय हरा लेबिल लगा कर ग्रांडर किया। दूसरे दिन हमारे सेकेटरी के पास हमारे भाई पहुंचे ग्रौर शायद डाक्टर के साथ पहुंचे ग्रौर दूसरा खत दे दिया कि हमारी खबर गलत थी। ग्रब हम क्या करें, हम कहां डूब मरें? जब हम तहकीकात करते हैं ग्रौर ग्राप मदद न करेंतो हम क्या कर सकते हैं। ग्राप ही शिकायत करें ग्रौर ग्राप ही मदद न करें तो हम क्या कर सकते हैं। ग्रायन्दा न करूं तो कोई भाई बुणान मानें। इसी तरह से एक मिर्जापुर के माननीय सदस्य हैं, उन्होंने हमें चिट्ठी लिखी कि

|श्री हुकुमसिह विसेन|

003

फना ग्रावमी बेईमानी कर रहा है, वया बेन रहा है, हमने उसका तबावना कर विया। चौषेति उन की जिस्की ताई कि हमारी खार गनन की, उस में वही रहने दिया जाय। जब तक ग्राप्त मही जहां कर सकी। हमारी महायता नहीं कर सकी। हमारी महायता नहीं कर सकी। सोहन नानक के बारे में क्षेत्र मान लू कि काने में मारने पर डाक्टर ने २२२ लिख विया। करकी ऐक्शन ले लू तो वह कह वेंगे कि हमारी रावर गात थी। अब में इस तरह से नहीं ग्राप्त करा है। बढ़ी जिसे सकता है। में क्षमा चाहता है, स्थोक हमारी पानी नान बड़ी खरा हो जाती है। बढ़ी जिसे वारी का काम है श्रीर जब ऐसे मामने पैवा हो जाते हैं। तो बड़ी परेशानी उठानी पड़ती है।

में आशा करता हूं कि हमारे साथी हमारा सहया। करेंग और में यकीत विलाता हूं कि हमारा यह अपास रहता है कि हम स्वास्थ्य सम्बन्धी सारी सियधार्य अवेश की जनता को से सहें। लेकिन हमारी इच्चा में, हमारे अपास में शक करने की गुजाइश नहीं है। मझे लुशी है कि बहुत से हमारे अहें इखर के भी और उपर के भी, धर पर और वपपर में आते हैं। भीर कहते हैं कि आफे काफी टोन अप कर विधा है। लेकिन लामियां अब भी है और में परफेश्शन कभी क्लेम तहीं कर सकता। परफेश्शन तो एक ही हस्ती बनम कर सकती है, में नहीं कर सकता है। लेकि इतना कहने का बाबा करता है कि हमने दस विभाग को अवेर हो भी श्रीर नीवें पिले नहीं विधा है। में समझता है कि रामायण राम हो और हारे भाई इसको कबून करेंगे।

ं श्री भजनलाल --पेनीइरी इसवेष्टर प्वराया क विचाह जो शिकायत थी उसका कुछ नहीं बताया।

श्री उपाध्यक्ष -- जब तह वह बेठन नहीं है, तब तह धाप न बोनें।

श्री हुकुमसिंह विसेन—बहुत में मित्र कहने हैं कि श्रम्पनाओं को कमी है। यहां भोकमें हैं और उनके कि में भी कमी है। बहुत दर दर श्रम्पनान है। हमारो योजना चल रही है और पांच मोन पर एक श्रम्पनान हो, इस टारमेट की हम पूरा करेंगे। इस साल पांच श्राय बेंकिक श्रम्पनान जुनने हैं, व जनाने श्रम्पतान क्निरे हैं, इस तरह से हमारे लिमिटेड रिसोंसेंड हैं। हम श्रदेश में जहां मृनासिंह समझेंगे वहां को जन्म के केटा करेंगे और जहां हम न बोल पार्ये उनके लिये हमारे मित्र हमें माफ करने का क्षाय करें व्योक्ति प्रको प्रमें विवाहन करना सहा मृदिकन काम है, ऐसा मैयमेंटिक्स हम पढ़े नहीं है। यह सब हमारी विकास है।

एक बात कार में भूग गया था। जीते कलेक्शन स्टाफ की रेवेन्य डिपार्टमेंट में, १/३ पार राप राग ने हैं किया और १ ३ इस काल कर रहे हैं, ऐसे हा कम्याउन्डर्स का, एक्सरे टेक्नी-शियन्त का, ने बारे हरी अस्टिट्य का (ब्ययसार) इन सबका का स्केल बढ़ा रहे हैं। शायक ७५ से १२० तक हैं।

कहा गया कि सरकार १२ साल में यह तय नहीं कर पायो कि कौन नी पद्धति अपनायों जाय ' यह कोई मरकार तय नहीं कर सकतो। ने वेलना हूं कि हमारे बहुत से मित्र कहते है कि आपूर्वेदिक हो और जाते हैं बलरामपुर में। सरकार नहीं तय करेगो। हम सब यह सथ करेंगे। सरकार इसको रोक नहीं सकतो कि आप फणा पद्धति ने बया न कराएं। हम एलोपेथी, होम्योरेथो, आपूर्वेद और यूनानो सभो को प्रोत्साहन वेते हैं। होम्योपेथो का कालेंब है, उपको बिप्रो कालेंज बनाना चाहते हैं। आगरा से एकोलिएट करने का प्रयास है। तो सरकार किसो सिस्टम को कंडेंम नहीं कर सकती। सब सिस्टम चलते रहें।

इन शब्दों के साथ में, सदन ने मुझे जो शास्तिपूर्वक कहने का मौका विया है, उसके लिए साभार प्रकट करता हूं सौर झाशा करता हूं कि माननीय रामायण राय जो ने जो नयो बात करने केवल एक राये को कटौतों का प्रस्ताव किया है, जब कि सौरों ने बहुत बड़ी रकमें काटने का प्रस्ताव किया था, वैसी ही नयी बात करके बे सपने कटौतों के प्रस्ताव की वापस सँगे।

#### १६६०-६१ **के श्राय-व्ययक** में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—ग्रनुदान ६०१ मंख्या २१--लेबा शीर्यक ३≍--चिकित्सा तथा श्रनुदान संख्या २२--लेबा शीर्यक ३६--जन-स्वास्थ्य

श्री खयालीराम--मुझे ठाकुर साहब को मंशा के बारे में पहले ने हो मालूम था। मने १९५७ में शार्ट नोटिस क्वैश्चन रखा था। चन्द्रावतो......

श्री उपाध्यक्ष--क्षेत्रन उसी घटना के बारे में स्वध्योक्तरण दें जो माननोय स्वास्थ्य मंत्री ने बतायी।

श्री खयालीराम—मेंने सचिव से जो बात कही, मंत्री जी पूछ लें, सचिव से मैने कहा था कि जो लिखा है वह सहो है। लेकिन दो तोन कांग्रेसी विधायक दो-तोन दिन से मुझे घेरे हुए थे। उन्होंने कहा कि यह रिश्तेदार हनारे हैं, उन्होंने कहा कि वह रिश्तेदार उनके हैं। उबर के ही खान्दान के हैं।

श्री उपाध्यक्ष-प्रश्न यह है कि श्रनुदान संख्या २१ को बनराशि में एक रुपये को कमी कर दी जाग ।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और ऋस्वीकृत हुआ।)

श्री उपाध्यक्ष--प्रश्न यह है कि श्रनुदान संख्या २१--चिकित्ता--लेखा श्रीर्षक ३८--चिकित्सा के श्रन्तर्गत ५,०२,१६,६०० रुपये को मांग वित्तीय वर्ष १६६०-६१ के लिए स्वीकार की जाय ।

(प्रश्न उपस्थित किया गया ग्रौर स्वीकृत हुग्रा।)

श्री उपाध्यक्ष--प्रश्न यह है कि श्रनुदान संख्या २२ को घनराशि मे एक रुपये को कटौती की जाय।

(प्रश्त उपस्थित किया गया और ग्रस्बे कृत हुन्ना।)

श्री उपाध्यक्ष—प्रश्न यह है कि श्रनुदान संख्या २२—जन स्वास्थ्य—लेखा शोर्षक ३६—जन स्वास्थ्य के श्रन्तर्गत ३,०१,७४,४०० रुपये की प्रांग वित्तीय वर्ष १६६०—६१ के लिए स्वीकार की जाय ।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुन्ना । ) (इसके बाद सदन ५ बजे अपले दिन के ११ बजे तक के लिए स्थगित हो गया।)

> दंवकीनन्दन मित्थल, सचिव, विधान सभा, उत्तर प्रदेश ।

लखनऊ ; २४ माच, १९६० ।

## नत्थी 'क'

(प्रांतिय ताराकित पक्ष्म १ का उत्तर पाद पाठ ६१८ पर)

# तालिका १

# जिलो क नाम जहां इस समय ए० डी० एम० (ई०) तेनात हं

तिना का नाम			स्स्य	विवरण
१वहरादेख	a st	4 4	٠. ٧	
२मेरत .			٠. ا	
३श्रासरा	• •	٠		हिममें एक ए० डी॰ एम० (ई०) जो १ प्रम्प (ई०) जो १ प्रम्प्यास्य से ३१ मार्चतक प्राठातात्वी का कार्य करसा है, सम्मिलित है।
४वरना	* *	* *	٠. ۶	
५कानगर			٠. ٠	
५इ नागबाद	* *		২	
७ गागणगा	⊁ я		২	
दगारलपुर	• •		٠ و	
६——लबनङ	vi 14	w .	٠. و	

## नत्थी 'ख'

(देखिये तारांकित प्रक्ष्म २ का उत्तर पीछे पृष्ठ ८१४ पर)

### तालिक (२)

जिलों के नाम जहां से ए० डी० एन० (ई०) हटा दिये गये हैं

१---जौनपुर

७—लखनऊ

२--बस्ती

द---सहार**न**पुर

३—-ग्राजमगढ़

६--श्रलीगढ़

४--मेरठ

१०--मुरादाबाद

५---मुजक्फरनगर

११--फैजाबाद

६---ग्रागरा

नोद—मेरठ, ग्रागरा ग्रौर लखनऊ में दो∗दो ए० डी० एम० (ई०) तैनात थे। उनमे से एक-एक हटा दिये गये है ।

## नत्थी 'ग'

## (बेलिये ताराकित प्रश्न ६ का उत्तर पीर्द्ध पर ८१६ पर)

राजकीय कार्य के दिन में राजकीय प्रणा क्यों के निर्मानिकन कर्मचारियों से किराया सूत नहीं किया जाता है:----

- (१) ऐश्याम प्रेस के १४ कर्मना (रयो से जो ६ वर्षी से क्यार्टनों मे रहते है।
- (२) ब्राच प्रेय लगतक हे द चत्रं वर्णा हे हमंचारियों से जो १५ वर्षों से रहते हैं।
- (३) नाजकाय मद्रणालय, इनाहाबाद के फायर फाइटर एवं चतुर्व श्रेणी के २४ कमंत्रारियों से । वे जब से अपने प्रथा पर नियक्त हुए हैं, बिना किराये के रहते हैं।
- (४) राजकाय म्द्रमानय इत्ताहाबार केपर शेकर तथा फायर क्राफिसर से जो १० वर्षी से रहते हैं।
  - (४) ऐशाबाग प्रेम हे बेलफंगर धाफिसर में जा लगभग २-१ २ वर्षों से रहते है।

नत्थी 'घ'
(देखिये तारांकित प्रक्त १५ का उत्तर पीछे पृष्ठ ८१७ पर)

			स्वीर	इत कूपों की	कुएं जो बने
नाम तहसोल			संख्या		
8				5	
१सदर	• •	• •	• •	१४५	37
२मोहम्मदाबाद	• •	• •	• •	३८	२६
३सगड़ी	• •	• •	• •	३३	Ä
४घोसी	• •	• •	• •	१४६	૭૭
५—लालगंज	• •	• •	• •	3 8	२२
६—-फूलपुर	• •	• •	• •	१७	ሂ
				४१०	१७३

#### नत्थी 'ङ'

## (देखिये तार्गाणत पश्न ३५ मा उत्तर पीछे पण्ठ ५२१ पर) सीमान्त निवासी भोटियों से प्राप्त प्रतिवेदन के उद्धरण

- १ - जन व्यक्तिमाँ के पास निजा हिस्सेवारी का भारत है यह उनके श्रपनी जोत के लिये जन्हें पनपंताण करने का कान्त कारा व्यक्तिया का का नाम ताकि के स्वाना हिस्सेवारी भूमिने पनवास कर सके ।
- २ जोहार हे निवास्त सूभि हीन निर्वासों तथा भूमिहीन व्यक्तियों को तराई भावर म बसाने ही हमिन र अवस्था कर दे। जाय । इन लोगों ही घर बनाने हल बेल व कुषि के साक्ष जहाने के नियं पर्यास्त सहायता दी जाय ।
- ३ परवार्यी नोगों की भॉति ही इन्ह सरकारी नोकरिया नथा गह उद्योग के प्रशिक्षण तथा विशेष धावान विषे जाने का व्यासना कर दी जाय । और विशेष तथा सोमावर्ती क्षेत्र की नोकरी म पार्थामका म समावित्यों को नी विया जाय । वर्षों के प्रस्य नोग वहां रहना पसल नहीं करते । तिक्वता भाषा व स्थानीय भाषा की "धनानकारा में उन्हें अमुविषा होती है वहा के रहन-सहन व जनवाय उनको करकार है।
- ४ निशंक्षा संस्थामो में डाक्टरा, पश्चा हरूर, यंज्ञानियरी स्रादि में उनके लिये स्थानसुरू किस किये जाय । व्यावसीलयां उदारताप्यंक यो जाय ।
- ५ -राजकीय शिक्षा संस्थाये इस क्षेत्र म पर्याप्त संस्था में ब्रालिकाओं के लिये ब्रलाव बालकों के लिये ब्रालग कोली जायं।
- ६ - जनो गृह उन्होग के प्रोत्साहन हेनु अनुदान उदारमापूर्वक दिये जायं श्रीर उनके बनाये वस्तुश्रों के विश्वय पर अन्वित भारतीय चर्मा संघ की भांति मादी बीडं से स्विधाएं व रिवेट दिनाने की कृता की जाय ।
- ७--मार्मातयां व गंघ, कृषि बागवानी, ऊती प्रशोग श्रन्य गृह उशीग श्रमिक कर्जा बाटने वाली व बहुधंथी बनाई जाय ।
- द---सरते गल्ले की वो सरकारी गोदाम एक वर्गीठ व एक मनसारी में हो, जहां पर्याप्त मात्रा में ब्रह्म बरमाल श्रारम्भ होने के पहिले ही संग्रह कर लिया जाय। वर्षा होने पर इस ग्रोर यातायात रुक जाता है।
- ६ --- प्रादर्श बस्तियां श्रीजोगिक शिल्पियों को पहाड़ में हो बंजर भूमि व बस्ती से मिल हुए जंगल में बसा दी जाय श्रीर इनको मुविधाओं के लिये सभी संस्थाएं हों।
  - १०--भेड़ पालन के लिये युद्ध योजना यनाई जाय।

#### नत्थी 'च'

(देखिये तारांकित प्रश्न ५० का उत्तर पोछे पृष्ठ ८२७ पर)

## तालिका (क)

#### कर्मचारियों की मांगें

- १—-पिछने साल सीजन में काम करने वाले ग्रादिमयों को शुरू सीजन से ही स्थाई कर्मचारी मानकर सबेतन रखा जावे।
- २--प्राविडेन्ट फंड स्कीम को उसी समय से लागू होता चाहिए, जब से मारे देश में चीती मिनों में लागू हुआ है।
- ३——जो कर्नचारो स्रव तक कैनुस्रल या टैम्पोरेरो र बे गरे हैं उनको स्थाई कर्मचारी सानकर पूरी मुनिया बोह्य हो मिलना चाहिए।
- ४—दवा के सम्बन्ध में डाक्टर श्रौर कम्पाउन्डर २४ घंटा फैक्ट्रो क्षेत्र के श्रन्दर रहना चाहिए। साथ हो साथ दवा का समुचित प्रबन्ध होना चाहिए।
  - ५--- शेल्टर हाउस का शोझातिशोझ प्रबन्ध होना चाहिये।
- ६---कैन्टीन का उचित प्रबन्ध होना चाहिए। जैसे कि ग्रौर मिलों में है। इसक साथ ही साथ इसकी एक कमेटो रहनो चाहिए, जिसके द्वारा प्रबन्ध हो।
- ७—क्वार्टरों की कमी से मजदूरों को इवर उघर भटकना पड़ रहा है। तथा उनके स्वास्थ्य पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ रहा है। प्रांतीय सरकार के स्वीकृति के भरोसे पर मजदूर के संतोष का बांच टूट रहा है। क्वार्टर या मकान किराया मिलना चाहिये।
- द—प्रतिदिन के काम करने वाले तया ठीके पर काम करने वाले मजदूरों को २ ह० ६ ग्राने से कम मजदूरों नहीं दो जाय। ग्रौर जब कभो फैक्ट्रों में स्थाई जगह हो तो इन्हीं वर्तमान मजदूरों को प्राथमिकता दी जावे। तथा उनको ग्रयने ड्युटी के बाद काम लिया जाता है उसकी मजदूरों सिंगल दी जाती है, वह दुगुने के रेट से मिलना चाहिए।
- ६—जिन कर्मचारियों से जनवरो, सन् १६५६ से साप्ताहिक छुट्टो के दिन काम लिया जाना है और २७ सितम्बर तक सिंगल पैसा दिया गया है उसे जोड़कर बाकी पैसा दिया जाय, जैसे भ्रभी दिया जा रहा है। सप्ताह में ४८ घंटा पूरा काम नहीं होने पर जो सिंगल पैसा दिया जाता है उसके बजाय दुगुना मिलना चाहिए।
- १०—-रोटेनिंग पाने वाले कर्मचारियों को जो ग्रन्ड लीव दिया जाता है, तया मिल बन्द होने पर उत्तका पैता देकर रोटेनिंग में कम कर दिया जाता है। वह उतमें कम नहीं होना चाहिए श्रयीत् जित्र तारीख तक उसकी हाजिरों है उसके ठोक दूसरे हो दिन से रोटेनिंग मिलनो चाहिए।
- ११—पह मजदूरों में भेद भाव है कि जिन कर्मवारियों को लकड़ो तथा मिट्टो का तेल नहीं दिया जाता है उन्हें पिछते दिनों से जोड़कर मिलना चाहिए।
- १२—जित कर्मचारियों से मेठ का काम लिया जाता है परन्तु कागज में मजदूर दिखाया जाता है। इसको जांच कर ठोक कर दिया जाये, जित्रसे कि जब से ये काम कर रहे हैं अपने हक को पा सकें।
- १२-- यदि कोई कर्मवारो वर्ष पर्यन्त तक बोनार न पड़ा ख्रौर ख्रकस्मात दूसरे साल के प्रारम्भ में हो कुछ दिन के जिर्बोनार पड़ गया तो उन्नका पैना वेतन से नहीं काटा जाना चाहिए जितना को एक वर्ष बोमारो को छुट्टो मिलतो है।
- १४—यदि कोई कर्नवारी संव के काम से बाहर जाय तो उस ही गैरहाजिरी छुट्टी में नहीं लिया जाना चाहिए बल्कि स्नेशत छुट्टी होती चाहिए।

- १४—- पोटे दोरे एक्टा। देत होन पर, जिसकी विपोर्ट नहीं है. आगर उसका सीक लीवका हक नहीं है जो उस पर पातिसी के दिन का पसा कम्पनी स नहीं मिलना है। उसका की ऐक्सी देंगा जरम कर ह मिलना चाहिए।
- १८-- तो उनी श्रामिक किसी पद पर पिछले १६४६-४६ ई० के सीजन में काम कि। सदि कर पद उस बच भी हो तो यह पद उन्हों हो मिनना चारिए।
  - १७-- के पारानी, भेपलर तथा पाली हो मासिक के उन हालप में ४८ रु० मिलना चाहिए।
  - १ द-- इस्रोरेरी कलना निया की भी भीक जीव तथा कन्छन लीव मिलना चाहिए।
  - १८--श्रोपर राइम सा पेसर प्रति वसत्र विन सिन जाना चाहिए।
- २०— जिन कार्नेवारिया की भिन स क्यार्टर नहीं सिना है उन की क्यार्टर भत्ता मिलता च्यारिए।
  - २१-- जो पोजनल करंबारो बाहर स प्रातं ह उन्हें यात्राल्यय मिलना चाहिए।
  - २ - कर्नशिरियो क बन्नों क पढ़न का अनित प्रबन्ध होता चाहिए।
- २३---फेश्टरी क्षत्र रूपार काम करना अल सिपालिया की फेस्टरी ऐक्ट के ब्रनुसार पुरिवार मिलन, जालिये।
- २४-- मो सर्भवारी प्रांमार पदते हैं और शास के लिए बाहर जाना पड़ता है इस केप्रवस के लिए श्री ध्यारथारक मही ह्या की पार्थना प्राप्त थी श्रमी तक कीई प्रबन्ध नहीं हुआ। इस का राजिन तमा जोध्यानियोध्य प्रबन्ध होना चाहिए।
  - २४---तर कोन्योरमा का भरी युनियन के राय से होना चाहिए।
- २० - अस्पनात म फॉम ना वाले कर्मचारियों ही सुविधा के लिए एक औरत नर्स होना चाहिए।
  - प्रमानामान के निए कोबा-एयन और जिल्ड्रेन-पार्क होना चाहिए।
  - २६ --- हर एक मिलों, में अवन बढ़ाने हो शिष जो लाग है यह यहां भी होना चाहिए।
- २६ -रोटोंनेग पान वान कमंग्रांक्यों की इयूटी पर काम करने के १५ दिन परचात् ही पित्रुच नवं भी रोटोंनग मिन जानी चाहिए।
  - ४०-- प्रत्या क्यादेशों से बिजनी के रोशनी का प्रधन्ध होना चाहिए।
- 3१--प्रिस्तिनात्र लीय जो २० दिन पर एक दिन मिलता है तो, उस में महीने में साप्ताहिक खट्टी एवं सबदेश खट्टी को भिलायार से एन काम किये समें दिन के हिसाब से ही P.L. मिलता है। परन्तु यह लीव उनने दिन का मिलना चाहिए जितने दिन का उसका बेतन मिला हो।

नितययां ६०६

## नत्थी 'छ'

(देखिये तारांकित प्रश्न ५१ का उत्तर पीछे पुट्ट ८२७ पर)

## तालिका (ख)

#### MEMORANDUM OF SETTLEMENT

- 1. The management agrees to distribute seasonal and permanent cards to the workers as given in the Standing Orders. The said cards shall clearly bear the designation of the workman concerned.
- 2. The management agrees to enforce the Employees Provident Fund Scheme in the concern according to the clarification given by the Provident Fund Commissioner, U. P. on the subject, *vide* his letter dated December 10, 1959.
- 3. The management agrees to draw list of casual workers according to their seniority. The said list shall be maintained up to date and future temporary and permanent vacancies in the concern shall be filled up from this list according to precedence.
- 4. The management agrees to allot residential accommodation to the factory doctor and compounder close to the factory. This shall be done at an early date.
- 5. Arrangement for Pual Gadas, Chawkis and benches shall be made in the rest shelter and the same shall be adequately lighted.
- 6. It is agreed that a committee consisting of Sarvsri M. Aslam, S. K. Chowdhury and Labour Welfare Officer shall mannage the affairs of the canteen. The said Committee shall directly supervise the working and control the finance of the canteen. Management shall provide free services of a cook and a kahar, also kitchen utensil, crockery and cutlery shall be provided by the management. The canteen shall continue to draw free fuel and coal from the factory as in the past.
- 7. The management agrees to pay house rent to those workers who live in the rented house in the locality of the factory or in any house which can be secured on rent by the factory. The management also agrees to prepare some huts temporarily in order to accommodate workers.
- 8. The Union shall provide list of the workers who have not been paid minimum wages and have been paid off by the factory and the Labour Inspector shall scrutinize the said list and order the management to pay them the minimum wages of the past. These workmen shall have first preference of appointment in the factory in future according to their seniority in length of service.
- 9. The management agrees to pay double wages to the workers who have worked on their rest days from January, 1959 as per Factories Act.
- 10. The management agrees to pay the deducted amount of retaining allowance for the off-season of 1958 to the workers which was deducted on account of payment in lieu of their unavailed leave with wages.
- 11. The management agrees to give 20 seers of soft coke per month free of charge to its unskilled workmen and two bottles of kerosene oil per month against each lantern issued by the factory to its workers. The other categories shall get coke at one maund per month. This is subject to adjustment of the Wage Board decision.

- 12. Not pressed at present.
- 13. The management agrees to give sick leave due for the year to the workers even in the beginning of the year, i.e. in January and February. The Union assures that the workmen shall not go on sick leave unnecessarily at the end of the year.
- 14. The management agrees to grant leave to the workers of the Union to the extent of four days in a year for enabling them to attend the meetings of their federation. The said leave shall be paid leave.
  - 15. Not pressed at present.
- 16. The manacment agrees to employ old workers working on Boilers Centrifugal machine, Magma and other places who have been replaced by new workers.
- 17. The management agrees to pay minimum wages to sweepers, gardeners and hospital boys in future.
- 18. The management agrees to give easual and sick leave to the temporary workers according to the Standing Orders according to the ratio and proportion of their service in the concern.
- 19. It is agreed that the payment of overtime money shall be made within 10 days of the work taken from the workmen.
- 20. This demand has already been discussed and settled, vide Demand no. 7.
- 21. The management shall continue to pay journey expenses to those employees who were paid the same last year.
- 22. The management agrees to rprovide a primary school teacher for the education of the children of the workers.
- 23. The management agrees to treat the Watch and Ward staff under the Factories Act with effect from January 1, 1960.
- 24. The management agrees to provide common latrines for the workers in the quarters area.
  - 25. Not pressed by the Union.
- 26. The management shall make arrangement for mid-wife for attending maternity and delivery cases in the families of the workers.
- 27. The management is already making arrangement for children park for the use of children of the workers.
- 28. Regarding increase in wages, clarification shall be sought from the Wage Board and the same shall be binding on the management.
- 29. The management agrees to pay retaining allowance to its workmen in the first fortnight of February of each year.
- 30. Regarding inclusion of weekly rest and gazetted holidays in due leave of the workers, the practice shall be followed as per Government orders.
- 31. This demand has already been discussed and, settled vide Demand no. 11.

नत्थी 'ज'

(देखिये तारांकित प्रक्त ४४ का उत्तर पीछे पृष्ठ ८२७ पर) ग्रलीगढ़ जिले के समग्र विकास सेवा खंडों का विवरण

अलागढ़ जिल क तमन्न विकास सवा खड़ा का विवरण						
					परिवर्तन के	
	_			वर्तमान	बाद खंड	<u> टिप्पणी</u>
ऋष	वंड का नाम	किस् श्रेगीका		श्रेणी मे	्किस् श्रेगी	यदि कोई
संख्या		खंड है	खुनने की	परिवर्तन	ने स्रायेगा	हो
			ঁ নিখি	होने की		
				तिथि		
?	₹	₹	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	<u> </u>	<del></del>	9
	`		ے سامی ہے۔ سے بہت سامے			
?	हसायां		२६ <b>-१-</b> ५५	8−8− <i>€</i> 0	हितीय श्रेणी	यह खंड
		कास क्षेत्र				जुलाई,
						१६५६ से
						प्रगाढ़ वि-
						कास क्षेत्र
						के रूपुर्मे
						चल रहा है।
<b>२</b>		रु प्रथम श्रेणी	२—१०—५५	२—१०—६०	े द्वितीय श्रेणी	
₹	गंगेरी		२—१०—५६			
ጸ	गोंडा	प्रथम श्रेणी	२-१०-५६	₹-१०-६१	द्वितीय श्रेणी	
ሂ	इगलास	प्रथम श्रेणी	<b>१</b> –७–५७	<b>१</b> -७-६ <b>३</b>	द्वितीय श्रेणी	
Ę	उतरौली	प्रयम श्रेणी	<i>७५-७-</i> १	<b>१</b> -७-६ र	हितीय श्रेणी	
e)	हाथरस				२ द्वितीय श्रेणी	
5	खेर	प्रथम श्रेणी	<i>१-७-५७</i>	<b>१</b> -७-६३	२ द्वितीय श्रेणी	•
3	टपल	द्वितीय श्रेणी	२६—१–५४	• •	• •	यह खंड
						<i>§−ς−x</i> €
						से द्वितीय
						श्रेगी में <mark>च</mark> ल
					> 0	रहा है।
१०	सिकन्दरा राव	पूर्व प्रसार	8-80-86	१-१०-६	प्रथम श्रेणी	
88	लोधा	छाया क्षेत्र		श्रागामी श्रव	ल मास में खु	लन वाल पूर्व
		_	प्रसार	खडों (	Pre-extension	n Blocks )
<b>१</b> २	मुरसान	छाया क्षेत्र			राघीन है भ्रत	
		_			कम संख्याः	
<b>१</b> ३	चंडौस	छाया क्षेत्र	दिये गर्	्छाया क्षेत्र	गक्ब से पूर्व	प्रसार खडा
		_	के रूप	में काम करने	ने लगेंगे किन्तु प्र	राशा्का जाती
88	श्रकबराबाद	छाया क्षेत्र	है कि	राष्ट्रीय प्रस	ार सेवा योजन र यह समस्त	ाक वर्तमान
		_	कार्यक	म के श्रानुसा	र यह समस्त	् छाया क्षेत्र
१५	घानीपुर	छाया क्षेत्र	ग्रक्तूबर्	र, १६६३ तद	त्युर्व प्रसार खंड इ.स. इ.स. इ.स. इ.स. इ.स.	हों में परिवर्तित
			हो जाय	रेगे ।		
<b>१</b> ६	सासनी	छाया क्षेत्र	-			
१७	बिजोली 🕠		-			
			المنة بالمعربات الحديدي وعد العديبي	ک سیس بھالی ہے۔		الديد المساسات عمر جد البدر المراسا

## नत्थी 'झ'

# (देषिये ताराकित प्रश्न ४८ का उत्तर पीछे पष्ठ ८२८ पर ) नैनी इंडस्ट्रियल कालोनी में निम्नलिखित कारखाने चल रहे हैं

	कारवानों के नाम	उद्योग का नाम (वस्तएं जो बनायी जाती हं )
8	मेसर्स स्वदेशी काटन मिल	स्टेपिल यार्न स्पिनिंग।
२	मेसर्म चेन्त्रियन साइकिल इन्डस्ट्रीज	साइकिल के पुर्जे बनाना, तथा एमेर्म्बॉलग करना।
ą	में मर्म लिप्टन लिमिटेड	टी पेकिंग ऐन्ड बिलेन्डिंग ।
દ	मेसर्स रामा स्टीन वक्सं	स्टील फर्नीचर, श्रालमारी, जाली तथा बक्स श्रादि ।
પ્ર	मेसर्स समाधिया सोप वर्का	सावन बनाना ।
Ę	मेसर्स बेरी केमिकल वक्रवं	मोडियम सिलीकेंट ।
હ	मेससे शिव इन्नीनियरिंग वर्क्ष	बंबी एस्सयेचर, कुट्टी काटने की मशीन, कोन कसर तथा श्रायल मिल मशीनरी पर्ण्डम् ।
독	लाइट इन्डम्ट्रीज	चुनातयासुर्या।
3	में मतोहर श्रायन नित्स	मरमों, तिल्ली तथा रेडी का तेल।
80	मेसर्व जनरल एनेक्ट्रकत कम्पनी	द्रोरकामंर ।
११	मेलर्ग भारत रद्रा बोर्ड ऐन्द्र पवर मिल्स ।	मिल बोर्ड ।
१२	मेनसं कृमार इन्डस्ट्रीज	साइकिल स्पोक एंन्ड याञ्चर इत्यादि।
१ ३	मेससँ किंग्स फारमेस्टिकल	फारमेरिटकल ।
88	मेसर्म नवीन इन्जीनियरिंग वक्ष्मं	रेन वाटर पाइप, कंन फशर श्रीर मन होल करर श्रीर श्रत्य म्यनिसिपल इम्म्लीमेट्स।
१४	मेसर्व ईस्ट इन्डिया द्रेडिंग कम्पनी	साइकिल रटंन्ड ऐन्ड केरियर ।
<b>१</b> ६	मेसर्स ग्रहजा लाइम फंक्टरी	चूनातथा मुर्वी।

नत्थी 'ञा' (देखिये तारांकित प्रश्न ५६ का उत्तर पीछे पृष्ठ ८२८ पर) सुची

मुख्यालय कम मंह्या नाम रीजनल ट्रांस्पोर्ट का तैनाती की		
त्रकतर स्थान तारीब	तैनाती की तारीब	
१ श्री बृजगर्लीतह • लबनक २–१–१ <sup>*</sup> २ श्री डी० डी० बैजन • कानपुर ५–८-१		
३ श्रीजे०पी०चन्द्रा . बरेली २२-७-१		
४ श्रीबी०एन०टन्डन मेरठ २७–१–१ ४ श्रीबी०मुकर्जी आगरा २–७–१	•	
६ श्रीजे०पी० स्रप्रवाल . गोरखपुर ५–२–१ ७ श्रीबी० एस० खन्ना . नैनीताल ६–७–१	-	
द श्रीबी०के०गर्ग इलाहाबाद ,. १६–६–१		

# नत्थी 'ट'

(देखिये ताराकित प्रक्त ५५-५७ का उत्तर पीछे पट ६३० पर)

	والمنافئة والمنا	the state of the s
	ming bayil daga nipakanga wang sumawan da kamp lakan dawa nipaka kana kana dapa daga daga bang	2
१—सभा सचित्र, जिन्होने १ सितम्बर, १६५६ ले १५ जनवरी, १६६० तक ब- लन्दप्रहर का दौरा किया।	श्री धर्मासह	श्रो महमूद श्रली खां।
२-यह श्रवधि जिस में वे श्रपने भिन्न-भिन्न दौरो में ब्लन्दग्रहर में रहे।	६८ दिन	६ दिन ।
<ul> <li>स्वानन्दशहर में ठहरन के सम्बन्ध में लिया गया देनिक भला।</li> </ul>	२०० क०	
ह—रेल को यात्रा सम्बन्धी हिराया जा विभिन्न दौरो की श्रवधि में लिया गया।	४१६ क० ६८ नये पैसे	४३ क० ८७ नये पंसे।
५-सभा सचित्रो द्वारा इस्ते- माल की गयी सरकारी गाड़ियो पर पेट्रोल का लर्जा प्राप्ति।		
(क) सभा सन्तिय द्वारा यात्रिक भले के बिल में लोगयी धनराग्नि।	५०८ रु० १ नये पंसे	६८ र० ६ नये पेसे।
(ल) जिलाधोदा द्वारा उन के श्रिष्कार में रली गयी धनरादा से गाड़ियों पर किया गया व्यय।	१५६ रु० ६ नये पैसे 🕡	
(ग) सभा सन्तियों द्वारा रवयं भ्रयते त्रेय से किया जाने वाला भगतान जो सरकार में नहीं मिलेगा।	<b>४१३ रु० २७ नये पैसे</b>	
६-प्रानी गाड़ियों के उपयोग के लिए यात्रिक भते के बिल में लिया गया सड़क का मोल भत्ता (Road mileage)	कुछ नहीं।	१४६ रु० ७५ नये पैसे।

		در در اروان بروان بروان در در در اروان دروان بروان بروان دروان دروان دروان دروان دروان دروان دروان دروان دروان
( 8 )		_ (२)
७–दिनों की संख्या जब तक सरकारी गाड़ियां सभा सचिवों द्वारा इस्तैमाल	٤٩	אי
की गर्यो।	(७२ दिन सरकारी कार्य पर। १६ दिन निजी कार्यपर)	(सरकारी कार्य पर)।
८–बुलन्दशहर के दौरे में सभा सचिवों का ठहरने का स्थान।	ग्रन्तरिम जिला परिषद् का डाक बंगला ।	श्रन्तरिम जिला परिषद् का डाक बंगला।
६–सभा सचिवों द्वारा म्रन्त- रिम जिला परिषद् के डाक बंगले में ठहरने के सम्बन्ध में किया गया खर्चा ।		
(क) किरायाः (ख) बिजली का खर्चा	कुछ नहीं १०१ ०२५ नये वैसे	कुछ नहीं। २ रु० ६२ नये पैसे
१०-म्र्यन्तरिम जिला परिषद् के डाक बंगले के टेलीफोन से की गयी ट्रंक कालों की संख्या—		र ४८ च्रांथय चला
(क) सरकारी खर्चे पर	_	कुछ नहीं ।
(ख) निजीकामपर	४५ (यह सूचना १५ दिसम्बर तक की है। १५ दिसम्बर से १५ जनवरी के बिल श्रभी टेलीफीन विभाग से नहीं श्राये हैं।)	कुछ नहीं ।
११–ग्रन्य टेलीफोनों से किये गये ट्रंक कालों की संख्या।		
(क) सरकारी काम पर	पब्लिक काल ग्राफिस से २ ट्रंक काल जिन पर २१ ६० १० नये पैसे खर्च हुये।	कुछ नहीं ।
(ख) निजी काम पर	कुछ नहीं	कुछ नहीं ।

नत्थी 'ठ'

(देशिये जाराकित प्रश्न संस्था ६२ का उत्तर पीछे पर ८३१ पर)

सूची सं० २ २४८ पनर्संगठित केन्द्रों में सिखाये जाने वाले शिल्पों का विवरण

कस- संह्या	विलय	¥Î+"	था	कम- सं या	द्याल्प	संख्या
?	सराई बनाई .	i end med ende pas	«	<b>∀</b> 5.	बढ़ईगीरा न दर्श बनाना	9
Ų	कम्बल कलाई व्हाई .		17	र २६	टाउँ साथ दियो सन्ताना	9
4	सम्बल तथा अविषय 💎 .	•	٤	10	लक्षा पर गढाई	,
6	ग नी ना बना 🕻		4	- 8	ाष्ट्र लक्तरिया 🛴 🔑	) 9
У,	कुत्रर इसे उनाइ		ş	1 44	स्था साना	,
<b>t</b> +	ित्या कथाल अस से बे.		z,	2.2	नक्षां क विकास	, ,
•	नग्रा रिमार		Ą	1 38	रातं स्व सामाव	, 9
۳,	स्था ।।। का रच		\$	! <i>44</i>	(परुपा) की सिनाहे	80
₹	परिकिया! .		ئ	24	रिक्या की सिनाई क्लाई	₹६
१०	वरा नग निमार		ę	ن د ا	छकाई एउ स्निशा नार्थ	, ,
8 8	न्धाव पद्रा .		ų.	777	कवाई तथा है। वह	,
१२	हात्रगं		tę	3 .	देवस्तु	ģ
23	रेगाई तथा ख्याई 🗼		¥	80	टार्स्स बनाना	, 8
१४	लार ब्लाई .		१	6.6	मृंत को दोक्षरी बनाना	ع
१५	नाहारगीरा .		44	84	कंत की टाकरी बनाना	,
<del>የ</del> ዩ	लाहारगीरी तथा स्रोजार			4.4	कंस का भाग	२
	वनाना		۶	86	वेत तथा निक्का कार्यः	ą
१७	वार्ध विशे (साइकिन पार्ट	)	8	σX	चर्च	,
84	लाहारगोरी (था। के	•		4 %	भौदों की गरिया	۶
	सवरें) ं .		۶	83	मिट्टी के बर्यन	Ę
39	दीन की लाहारगीरी		२	6 E	ग्रिंगा बनाना	÷
२०	लोहारगिरी तेल के इंजन			46	चोनी मिट्टी के किलाने	8
	तया पम्प की मरम्मत .	•	8	20	संगमरमर	8
₹ ₹	मोटर पम्प की मरम्मतः		8	५१	साम् वडी	8
<b>२२</b>	फिंडर व मेर्शनिक .		3	प्रश	बटनं बनाता	7
२ ३	पीतल के बर्तन .	•	8	X 4	पेयर मशीन	र
२४	बास विलिखा फिटिंग .	<b>b</b> s	ે ર	* 8	अमे कायं	38
<b>२</b>	पीतल की मूर्ति बनाना.	*	8	XX	साबन बनाना	y
२६	बढ़िंगीरी व लोहारगीरी		8	પ્રદ	पहांदी कागज	१
२७	बढ़ईनीरी .	•	3=	X.O	कम्पानिग व धिटग	8

नत्थी 'ड' (देखिये तारांकित प्रक्ष्म ६८ का उत्तर पीछे पृष्ठ ८३१ पर) तालिका

क्रम 	'-संख्या नाम <del></del>		पद		वेतन-क्रम	से 	वार्ये 
						वर्ध	माह
8	श्री ग्रोमप्रकाश वर्मा		रिकार्ड कीपर ए	काउन्टेट			
२	श्री रुद्रबहादुर श्रीवास्तव	• •	, ,		50 <b>–</b> १४०	४	१
३	श्री उदयसिंह		7 7		50-880	ሂ	3
ሄ	श्री एन० के० निगम		, ,		८०-१४०	Ę	११
ሂ	श्री बो॰ पो० शर्मा		नोटर एन्ड ड्राप	टर	<b>५०</b> –२४०	ą	દ્
દ્	श्री ग्रार० सी० शर्मा		टाइपिस्ट		६०-१००	Ę	Ę
હ	श्री स्रोम्प्रकाश		रनर	• •	२७-३२		

## नत्थी 'ढं'

(देखिये तारांकित प्रश्न मह का उत्तर पीछे पुष्ठ महर पर)

# सीमावर्ती विधायक संघ से प्राप्त दिनांक २४-११-५६ के पत्र के उद्धरण

१--जो लोग खेती में रुचि रखते है उनकी सीलिंग हो जान के बाद तराई भावर में जमीन दे दी जाय !

२--नेपाल से व्यापार के नये रास्ते खोले जायं।

- ३--सीमावर्ती इलाके में निर्माण-कार्य के निये भोटियों की खोटी-खोटी सहकारी समिति बना कर उनकी बिना टेण्डर के दम हजार तक के ठेके दिये जाय।
- ४—सीमावर्ती इलाके में जो नई मोटर रोड है श्रयवा बन रही है उन पर भोटियों के यूनियन बना कर भोटिया मोटर यनियन सर्वित चलवायी जाय जिससे सड़कों के बनने में उनका आर्थिक ढांचा श्रस्त-स्थस्त हो गया है वह ठीक हो सके।
- ५--भोदियों के कताई-युनाई वाले घरों में सरकार की श्रोर में चर्ले व ऊन तथा ग्रसली नरूल की भेड़ें वी जायं और उनके द्वारा निर्मित चीजों के लिये बिकी का प्रबन्ध किया जाय।
- ६—-जिन-जिन रकूलो में भोटियो के बच्चे पढ़ रहे हैं। उनकी पूरी फीस माफ की जाय और उनको किलाबो माबि के लिये म्राधिक सहायता वी जाय। जब तक उनकी व्यवस्था ठीक न हो सके।
- ७--सीमावर्ती इलाकों में जो बाहरी श्राक्रमण का श्रातंक छाया हुआ है उसको दूर करने के लिये कुछ सामाजिक कार्यकर्ना वहां भेजे जायं जो वहां रह कर उनके मोरेल को ठीक रखें।
- द---सीमावर्ती इलाकों में नियोजन की छोटो-छोटो इकाइया गोली जायं जिसमे वहां के युवकों को नौकरी वी जाय जिससे इलाके में सुरुपवस्थित तथा सम्जित विकास हो सके।
- ६——४० हजार लोगों को किस प्रकार बसाया जाय श्रीर वहां वास्तविक वस्तुस्थित क्या हं इसके लिये छोडी-सी मूल्याकन समिति का निर्माण शीष्ट्र किया जाय जिसमें भोटिया लोगों की ग्राम सभाशों श्रीर पंचायती श्रदालनों के कुछ प्रतिनिधि तथा गीमावर्ती विधायक संघ के प्रतिनिधियों को भी लिया जाय।
- १०--- मीमावर्ती इलाके की मुरक्षा के लिये पीठ ए० सीठ के श्रांतिरक्त फीज की दुकड़ी भी भेजी जाय।
- ११---पी० ए० मी० के लोग वहां रहते और अग्य कर्मवारियों को जो मीमा के करीब रहते हैं जनको शतअतिशत बोर्डर अलाजन्म विया जाय।

नत्थी 'ण (देखिये तारांकित प्रश्न ८७ का उत्तर पीछे पृष्ठ ८३५ पर) १६६०-६१ के दौरान में रोडवेज द्वारा ग्रनन्य रूप से गाड़ियां चलाने के निमित अधिकार में लेने के लिये स्वीकृत मार्गों की सूची। श्रागरा रोजन (१) एटा-मैनपुरी (क) एटा-बैवारा । (२) अलीगढ़-खैर-टप्पर्ल । (क) सौमना-खैर-गोमट-नौझील । मथुरा-कामा-कोसी । (४) मथुरा-ग्रलवर । (५) सादाबाद तथा जलेसर होकर एटा-मथुरा। (६) देवई होकर ग्रलीगढ़-भ्रनूपशहर । इलाहाबाद रोजन (७) मिर्जापुर-घोरावल । (८) सुल्तानपुर-कोरीपुर । (६) जौनपुर-शाहगंज (क) जौनपुर-रामनगर । (१०) जौनपुर-केराकत । (११) राबर्ट्संगंज-दूधी-विध्यागंज । बरेली रीजन (१२) धनेटी तथा शाही होकर बरेली-शौशगढ़। गोरखपुर रीजन (१३) बहराइच-जरवल। (१४) म्राजमगढ़-म्रजमतगढ़ ।

- (१५) स्राजमगढ़-निजामाबाद।
- (१६) शाहगंज-दोस्तपुर ।

# कानपुर रोजन

- (१७) कानपुर-वेला-विधूना ।
- (१८) राठ-हरपालपुर।
- (१६) कानपुर-राठ--(क) चरखारी-हमीरपुर-वाया-मझकरा । (क) चरखारी-हमीरपुर-वाया-गहरोली-इमीलिया ।
  - (ग) राठ होकर मझगांव-हमीरपुर।
  - (घ) मशकरा होकर राठ-मौदहा।
- (२०) महोबा-खजराहा ।
- (२१) महोबा-चरखारी ।

### लखनऊ रीजन

- २२) हरदोई-उन्नाव ।
- २३) बाराबंकी-रामनगर (क) बाराबंकी-कुतवा ।
  - (ख) बाराबंकी-गनेशपुर ।
  - (ग) बाराबंकी-महदेवा।
- (२४) लखनऊ-नगराम ।

# नत्थी 'त'

# (देखिने ताराकित प्रक्ष्म ६१ का उत्तर पीछे पूष्ठ ६३६ पर) तालिका

वर्ष कम-सरया मय	१६५८-५६ में जो झाय हुई (लाख राज में)	चालू वर्ष १६५६-६० में जो भ्राय होने की सम्भावना है (सास रुपयों में)	श्रभियुगितय।
१ चीनी के उत्पादन श्रृहक से ।	P A	پي ښونون شونه لومټ کبانل پوهنه (انتخا بومټ بومټ بومټ پوهن اومټ انتخا پوهن اومټ انتخا پوه	इस मव के श्रन्तर्गत कोई कर लगाने की व्यवस्था नहीं हैं। मतः श्राय का प्रदन नहीं उठता।
र चीनी की इक्साइज रुयूटी से ।	• •		इस मव के श्रन्तर्गत श्राय केन्द्रीय सरकार को प्राप्त होती है।
३ प्यष्टमारी के (१) उत्पादन झुल्क म	• •	• •	इस मद के श्रन्तर्गत कोई कर लगाने की व्यवस्था नहीं है। श्रतः श्राय का प्रश्न नहीं उठता ।
(२) इत्साइज शुल्क स	• •	••	इस मद के श्रन्तर्गत ग्राय केन्द्रीय सरकार को होती है।
<ul> <li>अस्ता परिषयों को कमीशन के कप मे—</li> </ul>			
(२) षंडसारी कारलान		<i>६४,६३,३१३.०२</i>	
इत्याबि स	श्न्य	8,00,000	
प्रकृत सेस के रूप मे- (१) चीनी मिलों से	945,914 <b>22732</b>	<b>४२०.२१ लाख</b>	
(२) खंडसारी कारखानी इत्यावि से		२,००,०००	

#### नत्थी 'थ'

### (देखिये तारांकित प्रश्न १०३ का उत्तर पोछे पृश्ठ ८३६ पर)

#### तालिका

विवान सभा के तारांकित प्रश्न संख्या ३७ दिनांक २४-१२-५३ के उत्तर में जो निर्वारित लक्ष्य फरेन्दा तहसील के मध्य निर्वाचन क्षेत्र के सम्बन्ध में प्रेषित किया गया था उसमें से निम्नलिखित विकास कार्यों के प्रस्तर में जो पूर्ति हुई है तथा जो कार्य बाकी रह गये है उनका विवरण निम्न प्रकार है:---

१——कृषि	२पशुपालन
३——शिक्षा	४सार्वजनिक निर्माण
५जन-स्वास्थ्य	६सहकारिता
	७गृह उद्योग

#### १--कृषि--

### (म्र) सिचाई---

` /	-		
(१)	सिचाई के नये कूपों का निर्माण	• •	११३
(२)	कूपों की संख्या जिनमें बोरिंग हुई	• •	२१
(३)	पिं-ग सेट की संख्या जो तकावी पर वितरित किये गये	• •	Ę
(8)	रहट की संख्या जो तकावी पर वितरित किए गए		ሂ
(২)	कठकुइयां जिनका निर्माण तकावी के ग्राधार पर हुग्रा।	• •	80

श्रच्छा स्ट्रेटा न मिलने के कारण व्यक्तिगत नलकूरों का निर्माण न हो सका।

चूंकि इस क्षेत्र का स्रिधिकांश भाग तराई में है और यहां पर स्रिधिकतर सिंचाई तालाब एवं गड्ढों से ही की जाती है इसलिये जनता ने बोरिंग कराने की स्रोर ध्यान नहीं दिया, परन्तु गत वर्षों से सूखा पड़ने और उसकी प्रतिक्रिया के कारण लोगों का ध्यान बोरिंग के महत्व पर स्राक्षित हुस्रा है। फलस्वरूप बोरिंग के कारों में प्रगति बढ़ रही है।

#### (ৰ) ৰীজ---

कृषि बीज भंडारों द्वारा ३,२१० मन गेहूं, २,८६६ मन जौ, ७०८ मन चना, ३२६० मन मटर तथा १७,१३७ मन घान का उन्नतिशील बीज वितरित किया गया। इस म्रवधि में फरेन्दा, बृजमनगंज, घानी तथा लक्ष्मीपुर में कृषि बीज भंडार खोले गये। प्रथम पंचवर्षीय योजना में एक बीज भन्डार पुरन्दरपुर में खुलने वाला था। यह बीज भंडार वहां न खुल कर लक्ष्मीपुर में खोला गया है।

#### (स) खाद---

कृषि बीज भन्डारों द्वारा ६७० टन म्रमूनियम सल्फेट तथा १२१ टन फास्फेट खाद की बिकी की गई। इसके म्रतिरिक्त १०२७ एकड् भूमि में हरी खाद का प्रयोग किया गया।

## (ब) उन्नतिशील कृषि यंत्र---

इस म्रविध में ५१ मैस्टन हल, १३६ हैण्डहो, २ सीड ड्रिल, १ कल्टीवेटर, १ भ्रेसर ४ चारा काटने की मशीनों का विकय किया गया।

# (य) कृषि रक्षा-कार्य-

फननो की गुरक्षा हेतु १६६ एकड़ घान के खेतों में गन्धी की रोकयाम हेतु बी० एव० मीठ, ४ प्रतिशत का प्रयोग किया गया। फननों की रक्षा के लिये मुहेमारे गये। सभी बीज भन्डारों को खाउन तथा बीठ एचठ मीठ ४ प्रतिशत का प्रयोग करक गुरक्षित रखा गया। २०० मन गेह तथा जो के बीजों को एग्रोमीन जी-एन द्वारा शोधित किया गया।

## (र) बागवानी-

दम प्रविधि म २,१५० एक इ भूमि म तये बाग लगाए गये तथा १७ एक इ पुराने बागों का जीर्णोद्धार किया गया। ४,४४७ फलवार तथा २,५६७ प्रत्य बक्षों का रोपण किया गया। १४२.५७ एक इ भूमि में तरकारिया बोर्ड गर्ड तथा ६५ पींच तरकारी के बीजों का वितरण हुआ।

# (ल) फसल प्रतियोगिता---

इस अवधि में गांव रतर पर ३,२१०, तहसील रतर पर ३० तथा जिला स्तरपर ६ प्रतियोगयों ने भाग लिया। जिलारतरीय प्रतियोगिता म अब तक ३ प्रतियोगियों को पुरस्कार विया गया है और उसमें से जीनल रतर पर एक प्रतियोगी को पुरस्कार मिला है।

#### २---पश्-पालन---

इस अवधि म परायानन सम्बन्धी कार्य निम्न प्रकार हुय है:---

( 8	) बाइड़ जी बाधिया किय गए	 	२,२६५

- (२) एन० एम० क टीके जी लगाये गए .. १७,७६३
- (३) भ्रार० पी० केटीको जो लगाये गये .. ४६,६५०

# प्रजनन हेतु जो सांड़ वितरित किये गये

(8)	मांड्	* *	* *	* *	=
1-1					<b></b> .

- (२) भंसासाङ् .. .. २
- (३) मर्गे .. .. ४६
- (८) बच्चे निकालने क लिय धन्डों का वितरण .. ४००

#### ३---शिक्षा---

इस प्रविध में २ प्राइमरी स्कूल भवन निर्मित ही चुके हैं। निम्न ५ भवनों का कार्य प्रगति में हे:----

१--मनकट .. निर्माण-कार्य समाप्त के निकट है।

२-- बतुमा . सीमेट ऋष किया जा खुका है।

३---मरहटा .. निर्माण-कार्य झारम्भ हो रहा है।

४---नौसगरा . कार्ये प्रगति मे है।

५-- मृजमनगन्ज .. कार्य प्रगति में हैं।

### ४--सार्वजनिक निर्माण--

इस अवधि में २८७ मील कश्ची सड़कों का सुधार किया गया है तथा ७ मील ४ फ० पक्की सड़क का निर्माण किया जा रहा है। २४ पुलियां बनाई गई है। 

#### ५--जन-स्वास्थ्य---

समस्त कूपों में ब्लीचिंग पाउटर डालकर कीटाणु नष्ट किये गये। एक ग्रविध में प्रथम बार (प्राइमरी वैक्सीनेशन) ३६,२०७ तथा द्वितीय बार १०,२२८ टीके लगाए गए।

## ६--सहकारिता--

इस प्रविध में ८५ नई सहकारी प्रारम्भिक समितियां स्थापित की गईं। इसके अतिरिक्त क्षेत्र के अधिकांश भागों में क्षेत्रीय सहकारी समितियों का जनवरी, १६५८ में निर्माण किया गया जिनका पंजीकरण नई और पुरानी समितियों को मिला कर किया गया। इस अवधि में "श्र" श्रेणी के उन्नतिशील बीज का प्रतिशत रबी में ८० तथा खरीफ में ७६ रहा। भविष्य में "स" श्रेणी का जो बीच वसूल होगा वह बांटा नहीं जायेगा। उसके स्थान पर कृषि विभाग से "अणी का बीज प्राप्त करके बांटा जायगा। इस अवधि में २५० टन अम्नियम सल्फेट वितरित किया गया।

## ७---गृह-उद्योग---

इस श्रवधि में कुल १,२३२ चर्ले तथा १,२३२ धुनकी का वितरण हुन्ना। बाढ़ योजना श्रन्तर्गत ६४६ चर्ला सेट मुफ्त बांटे गये । ४२ सेट चर्ले रियायती दर पर बांटे गए श्रौर श्रम्बर परिश्रमालय योजना के श्रन्तर्गत २२१ सेट श्रम्बर चर्ले कितनों को रियायती दर पर दिये गये ।

चूंकि गुड़ विकास योजना के अन्तर्गत स्टाफ की कमी रही और धीरे-धीरे कर्मचारियों में कमी की गई फिर भी सर्वे कराने से विदित हुआ कि इस क्षेत्र का ६४ से ६० प्रतिशत गन्ना चीनी मिल को जाता है और प्रायः सभी क्षेत्र चीनी मिल निर्धारित क्षेत्र में पड़ता है। अतः इस क्षेत्र में गुड़ विकास सम्बन्धी कोई कार्य नहीं हो सका।

जिले में ग्रम्बर परिश्रमालय की योजना चली। इसके ग्रन्तर्गत श्रानन्दनगर धानी बाजार नं० १ व धानी बजार न० २ में ग्रम्बर परिश्रमालय संचालित किये गये। यह तीनों फरेन्दा के मध्य निर्वाचित क्षेत्र में चलाये गये। खादी बुनाई का एक प्रशिक्षण केन्द्र ग्रानन्दनगर में चलाया गया जो बाद में विभागीय ग्रादेशानुसार बन्द कर दिया गया।

### हरिजन उत्थान--

इस श्रविष में गृह उद्योग के लिये ३,०७४ रु०, गृह निर्माण एवं सुधार हेतु १,४१३ रु० तथा पेय जल की सुविषाहेतु ६,४५० रु० स्वीक्कृत किया गया।

# नत्थी 'द'

# (देलिये ताराकित प्रक्ष्म १०६ का उत्तर पीछे पष्ठ ८३६ पर) विलीनीकरण के समय २४-१-१६४० समथर रियासत के खजानों के धन का व्योरा

		- नकद	टिकट (stam	०५) योग
ومجود ومجود مادن معادة معين بجود الجود	2 Older 100			di consent accident accident consent hacked beneficial accident ac
(क) समयर उप-कोवागार .		१,३४,५५१-५-०	<b>१,</b>	8,30,083-88-0
(स) विभिन्न गाउ		3,347-4-6	From 1980.	२,३५२- ४-६
कल योग		१,३६,२३३−१२−६	8, = 3 ≥ - 1; - 0	१,४१,०६६-२-६

नत्थी 'ध' (देखिये तारांकित प्रश्न १०७ का उत्तर पीछे पृष्ठ ८३६ पर)

ऋम संस	r- या पदनाम 				१९५८	१९५६
१	कंडक्टर	• •	• •	• •	४६	१४०
२	जूनियर क्लर्क	• •	• •	• •	४२	38
₹	बुकिंग क्लर्क	• •	• •	• •	१८	५६
४	ग्रसिस्टेंट ट्रैफिक इं	स्पैक्टर	• •		હ	3

### नत्थी 'न'

(देखिये तारांकित प्रश्न १०६ का उत्तर पीछे पूरठ ८४० पर)

जूनियर पन के, बिंकम बलके श्रीर प्रसिस्टेट हैं फिक इंस्पेक्टर के पदों के चनाव के लिये १४-१-४ द तथा ७-८-४६ को रीजनल सेलेक्टान कमेट। की बठके हुई। कमेटी के सदस्यों के नाम नीचे दिये है--

- १५-१-५= (१) श्री ए० बनर्जी, जनरल मंनेजर, गोरलपुर रीजन .. चेयरमेन
  - (२) श्री बी० मी० पाडेय, जनरल मेनेजर, ललनऊ मेम्बर
  - (३) भी विजय कृष्ण गर्ग, रीजनल ट्रासपोटं श्राफिसर गोरखपुर मेम्बर
  - (४ श्री बी० एस० मल्कानी, सहायक जनरल मेनेजर, सेकेटरी
  - ७--- ४८ (१) श्री श्रार जपी वेश्य, उप-परिवहन स्रायक्त रो सार चेयरमैन
    - (२) श्रो एस० वत्त, जनरल मैनेजर, गोरमपुर मेम्बर

# नत्थी 'प्रं

(देखिये तारांकित प्रश्न १२५ का उत्तर पीछे पूछ ५४३ पर)

जिला बस्ती के विकास खण्ड बढ़नी तथा इटवा में सिचाई योजना में जो कार्य ग्रब तक किये गये हैं या किए जा रहे हैं उनका विवरण इस प्रकार है—

# विकास खण्ड बढ़नी--

- १---बान गंगा नहर की सतह लगभग ६०,००० रुपया खर्च करके ऊंची की गई।
- २---पचास सिंचाई के कुएं बनाये गए।
- ३-- चार पिंम्पग सेट लगाए गए।

#### विकास खण्ड इटवा

- १--एक राजकीय नलकूप बनाया गया है और दो नलकूपों का निर्माण-कार्य चालू है।
- २—चार व्यक्तिगत नलकूपों की बोरिंग हो चुकी है श्रौर दो नलकूपों की बोरिंग हो रही है।
  - ३--- छियासी सिचाई के कुएं बनाये जा चुके है।

# नत्थी 'फ'

(वेंग्विये ताराकित प्रक्रन १२६ का उत्तर पीछे पृष्ठ ८४३ पर) सूची

जिला प्रतापगढ़ में सितम्बर, १६५६ से फरवरी, १६६० तक हुए विकास क्षेत्रों पर किए गए व्यय का विवरण ।

विकास क्षेत्री के नाम	r 			क्षेत्रो की संख्या	क्षेत्रो में ज्ञास- कीय व्यय
					₹०
१—लक्ष्मणपुर	• *	* *		. २	€00
२कालाकांकर	**			. ₹	900
३पट्टी		* *	<b>.</b>	. ૧	5X0
४सागीपुर				. २	०४०
५भवानीगंज कोटा			•	٠	500
६	* *			. १	500
६कुँडा ७खंडवा बन्टिका				. 8	<b>६५४.</b> ४४

नत्थी 'ब

(देखिये तारांकित प्रश्न १३६ का उत्तर पीछे पृष्ठ ८४५ पर) तालिका

तालिका जिसमें सीतापुर जिले की केवल हरगांव तथा महोली चीनी मिलों ने केवल १६४८-४६ सीजन में ग्रपने जितने रोड सेंटर्स से जितना ढुलाई व्यय स्वीकृत दर से ग्रधिक कटौती कर लिया है उनका विवरण दिया गया।

ऋम- संख्य	चीनी मिल का नाम ा	रोड सेटर्स के नाम	म्रधिक कटौती की गई रकम
			₹0
8	हरगांव (सोतापुर)	<ul> <li>(१) लहरपुर</li> <li>(२) टिकरा</li> <li>(३) इमिलिया</li> <li>(४) बेहजम</li> <li>(५) पीपरवाला</li> <li>(६) बरूई</li> </ul>	७,५५.४६ ३,०४०.२३ ३७ <b>८.१</b> ५ २,५३६.४० ३,६४५. <b>९</b> ६
		योग	२१,≂१३.३७
२	महोली (सीतापुर)	<ul> <li>(१) वजीरनगर</li> <li>(२) श्रकबरपुर</li> <li>(३) बड़ागांव</li> <li>(४) मेतौली</li> <li>(५) श्रौरंगाबाद</li> <li>(६) खंजननगर</li> </ul>	१,४२६.६४ १,४४२.=४ १,३११.२६ १,०७६.२२ ६६६.५२ <u>६</u> ६२.५६
		योग	७,०१६.०५
		वृहत् योग	२८,८३२.४२

नत्थी 'भ

(र्दापरे भगकित पश्त १४१ का उत्तर पी ४ पण्ड ६४८ पर) उत्तर प्रदेश में गन १० वर्षों में प्रतिवर्ष खन्डमारी उत्पादन ग्रनमानतः निम्निनिषित हुग्रा---

			854- KE
			१६४६-५० .
•			8840-48 .
	<b>*</b> *		88X8 -X-
• •	* •	•	8EX4-X2 .
	• •	• •	86x4-xx
* *	* *	* *	8EXX-XX
• •			8EXX-X
• •			१६५६-५
ж. ж	ж. ж		= x-0x39
		· · · · · · · ·	

# उत्तर प्रदेश विधान सभा

# शुक्रवार, २४ मार्च, १६६०

विवान सभा की बैठक सभा-मन्डय, लखनऊ में ११ बजे दिन में उपाध्यक्ष, श्री रामन तथाए त्रिपाठी की ग्रध्यक्षता में ग्रारम्भ हुई।

# उपस्थित सदस्य---३९१

ग्रक्षयवरसिंह, श्री श्रजीज इमाम, श्री म्रतीकुल रहमान, श्री श्रनन्तराम वर्मा, श्री ग्रब्दुल रकफ लारी, श्री, ग्रब्दुल लतीफ नोमानी, श्री श्रब्दुस्समी, श्री श्रभवराम यादव, श्री ग्रमरनाय, श्री श्रमरेशचन्द्र पाण्डेय, श्री श्रमोलादेवी, श्रीमती ग्रयोध्याप्रसाद ग्रार्य, श्री घली जहीर, श्री सैयद ग्रवधेशकुमार सिनहा, डाक्टर ग्रवघेश चन्द्र सिंह, श्री ग्रवघेशप्रतापसिंह, श्री श्रहमदबल्श, श्री श्रात्माराम पाण्डेय, श्री श्रानन्दब्रह्मशाह, श्री इरतजा हुसैन, श्री उग्रसेन, श्री उदयशंकर, श्रो उमाशंकर शुक्ल, श्री उल्फर्तांसह, श्री कदल, श्री एस० श्रहमद हुसन, श्री श्चोंकारनाथ, श्री कन्हेयालाल वाल्मीकि, श्रो कमरुद्दीन, श्री कमलकुमारी गोइंदी, कुमारी कमलापति त्रिप ठी, श्री

कमलेशचन्द्र, श्री कल्याणचन्द मोहिले, श्री कल्याणराय, श्री कामतात्रसाद विद्यार्थी, श्री काशीत्रसाद पाण्डेय, श्री किशर्नासह, श्री कुंवर कृष्ण वर्मा, श्री कृपाशंकर, श्री केशव पाण्डेय,श्री केशवराम, श्री कॅलाशकुम।रसिंह, भी केलाशनारायण गुप्त, श्री केलाशवती, श्रीमती कोतवालींसह भदौरिया, श्री खजान सिंह चौवरी, श्री खमानीसिंह, डाक्टर खवालीराम, श्री बुशीराम, श्री ख्बसिंह, श्री गंगाघर जाटव, श्री गंगाप्रसाद, श्री (गोंड़ा) गंगाप्रसाद वर्मा, श्री (एटा) गंगात्रसादसिंह, श्री गजेन्द्रसिंह, श्री गज्जूराम, श्री गणेशप्रसाद पाण्डेय, श्री गनेशचन्द्र काछी, श्री गनेशीलाल चौधरी, श्री गयात्रसाद, श्री गयाबर्ख्यासह, श्री गय्रग्रली खां, श्री

रारीबदास, भी गिरधारीलाल, श्री गुप्तारसिष्ठ, श्री गुरुप्रसादसिंह, श्री गुलाबसिह, भी गेंवासिह, श्री गोक्लप्रमाद, श्री गोपीहरूण प्राजाव, श्री गोविन्व नारायण तिवासी, भी गोविन्व सिंह विरुट, श्री गौरो राम गुप्त, श्री गौरीशंकर राय, श्री घनद्यान प्रिमरो, श्री घासीराम जाटव, भी चन्द्रवेव, श्री चन्त्रबली शास्त्री ब्रह्मचारी, भी चन्द्रसिंह रावल, श्री चन्द्रहास मिश्र, श्री चन्द्राव हो, श्रीमती चन्द्रिका प्रसाव, श्री चरणसिह, भी चित्रपंत्रम् निरंजन, औ जिरणीनान जात्य, श्री खलरसिंह, भी खत्रपति धम्बेदा, श्री खंबीलाल, श्री छोटेलाल पालीबाल, भी जंगबहादुर वर्मा, श्री जगबोदानारायण, श्री जगवीशनारायणवलिम्ह, श्री जगवीश प्रनाव, श्री जगबीदादारण प्रमुखाल, धी जगम्नाथ कोबरो, श्री जगन्नाषप्रसाव, श्री जगन्नाथलहरी, भी जगपलिसिह, भी जगमोहनसिंह नेगी, श्री जगवीरसिंह, श्री जमुनािह, श्री (बदार्य) जयगापाल, शावटर जयवेर्वासम् प्रायं, भी जयराम वर्मा, श्री जरशाम हैवर, श्री संयद जवाहरलाल, श्री जबाहरलाल रोहतगी, डाक्टर जागेश्वर, भी

जिलेन्द्रप्रतापसिष्ठ, श्री ज्यलिकशोर, प्राचार्य जोग्वई, श्री ज्वालाप्रसाव क्रील, श्री शास्त्रवंद्वेगाय, श्री दोकाराम, श्रो टोकाराम पुजारी, श्री बुंगरसित, श्रो ताराचन्व माहेदवरी, भी तारावेथी, क्राक्टर निरमनशिह, श्री तंत्रबहादुर, श्री तनासिह, श्री वल, श्री एस० जीव दशरपप्रसात, श्रो वाताराम क्रेबरी, श्री वीनययाल करण, श्री बोनदयाल शर्मा, श्री बोन बयालु शास्त्री, श्री बीयंकर, ग्रान्तार्य बीपनारायणमणि त्रिपाठी, भी व्योधन, श्री देवकोनन्दन विभव, श्री वेबनारायण भारतीय, श्री वेवराम, श्री बेकोप्रसाव मिश्र, श्रो द्वारकाप्रसाव मिराल, श्री (मुजफ्फरनगर) द्वारिकाप्रसाव, श्री (फर्केलाबाव) द्वारिकात्रसाव पा॰डेय, श्री (गोरखपुर) धनीराम, श्री धन्तधारी पाण्डेय, श्री धर्मपालसिष्ठ, श्री धर्मसिह, श्री नत्थाराम रावत, भी नत्युगिष्ठ, श्री (बरेली) नत्यसिंह, श्री (मैनपुरी) नन्दकुमारदेव वाजिल्ठ, श्री नन्वराम, श्री नरवेवसिंह बतियानवी, श्री नरेन्द्रांसह भंडारी, भी नरेग्ब्रॉसह विष्ट, श्री नवलकिशोर, भी नागंदवरप्रसाव, श्री नारायणदस तिवारी, भी नारायणवास पासी, श्री निरंजनसिंह, श्री

नेकराम शर्मा, श्री <sup>टब्ब</sup>रराम, श्री परमानन्द सिनहा, श्री परमेश्वरदीन वर्मा, श्री पहलवानसिंह चौधरी, श्री प्रकाशवती सूद, श्रीमती प्रतापबहादुरसिंह, श्री प्रतापभानप्रकाशसिंह, श्री प्रतापींसह, श्री प्रभावती मिश्र, श्रीमती प्रभुदयाल, श्री फतेहसिंह राणा, श्री बंशीधर शुक्ल, श्री बलदेवसिंह, श्री बलदेवसिंह ग्रार्य, श्री बसंतलाल, श्री बादामसिह, श्री बाबूराम, श्री बाबूलाल कुसुमेश, श्री बालकराम, श्री बिन्दुमतीदास, श्रीमती बिशम्बरसिंह, श्री बिहारीलाल, श्री बुद्धीलाल, श्री बुद्धीसिंह, श्री बुलाकीराम, श्री बुजबासीलाल, श्री बुजरानी मिश्र, श्रीमती बेचनराम, श्रो बेवनराम गुप्त, श्री बेनीबाई, श्रीमती बंजूराम, श्री ब्रजनारायण तिवारी, श्री ब्रह्मदत्त दीक्षित, श्री भगवतीप्रसाद दुबे, श्री भगवतीसिंह विशारद, श्री भगौतीप्रसाद वर्मा, श्री भजनलाल, श्री भीखालाल, श्रो भुवनेशभूषण शर्मा, श्री भूपिकशोर, श्री मंगलात्रसाद, श्रो मंजुरलनबी, श्री मथुराप्रसाद पाण्डेय, श्री मदनगोपाल वैद्य, श्री सदन पाण्डेय. श्री

मदनमोहन, श्री मन्नालाल, श्री मलखानसिंह, श्री मलिखानसिंह, श्री (मैनपुरी) महमूद ग्रली खां, कुंवर (मेरठ) महमूद म्रली खां, श्री (रामपुर) महमूद हुसैन खां, श्री महावीरप्रसाद शुक्ल, श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री महीलाल, श्री महेन्द्ररिपुदमनसिंह, राजा महेशसिंह, श्री माताप्र-ाद, श्रो मान्धातासिंह, श्रो मिहरबानसिंह, श्री मुकुटबिहारीलाल ग्रग्रवाल, भी मुक्तिनाथराय, श्री मुजफ्फर हसन, श्री मूनीन्द्रपालसिंह, श्री मुबारक ग्रली खां, श्री म्रलीघर, श्री मुरलीधर कुरील, श्री मुल्लाप्रसाद 'हंस', श्री मुहम्मद फारूक चित्रती, श्री मूहम्मद सुलेमान ग्रघमी, श्री मुहम्मद हुसैन, श्री मूलचन्द, श्री मोतीलाल ग्रवस्थी, श्री मोहनलाल, श्रो मोहनलाल गौतम, श्री मोहनलाल वर्मा, श्री मोहनसिंह मेहता, श्री यमुनाप्रसाद शुक्ल, श्री यमुनासिंह, श्री (गाजीपुर) यशपालसिंह, श्री यशोदादेवी, श्रीमती यादवेन्द्रदत्त दुबे, राजा रऊफ जाफरी, श्री रघुनाथसहाय यादव, श्री रघुरनतेजबहादुरसिंह, श्री रघुराजसिंह चौधरी, श्री रघुवीरराम, श्री रघुवीरसिंह, श्री (एटा) रघुवीरसिंह, श्री (मेरठ) रणबहादुरसिंह, श्री रमाकान्तसिंह, श्री

रमानाच खेरा, श्री रमेदाचना दार्मा, श्री राधवराम पाण्डेय, भी राधवेन्द्रप्रतापसिष्ठ, भी राजकिशोर राव, श्री राजवेव उपाध्याय, भी राजनारायण, श्री राजनारायणसिष्ठ, श्री राजविहारीसिह, भी राजाराम शर्मा, थी राजेन्द्रकिशोरी, श्रीमती राजेन्द्रकुमारी, भीमती राजन्त्रवल, भी राजेन्द्रसिंह, श्री रामग्रधार तिवारी, भी रामग्रभिलाल तिवारी, भी रामकिकर, श्री रामकुमार वैद्य, श्री राम हुडण जेसवार, श्री रामचन्त्र उनियाल, भी रामनम्ब विकल, श्री रामजीसहाय, श्री रामवास श्रायं, भी रामबीन, श्री रामनाथ पाठक, भो रामपाल त्रिवंबी, श्री रामप्रसाब, श्री रामप्रताव वेशमुख, श्री रामप्रसाब नौटियाल, श्री रामबली, भी राममृति, भी रामरतनप्रसाव, भी रामर नीवेवी, (भीमती) रामलकाण तिवारी, घी रामलक्षन, भी (वाराणसी) रामलक्षम मिख, भी रामलवानसिष्ठ, भी (जीनपुर) रामलाल, भी रामवजन वादन, भी रामधरण यावव, सी रामसनेही भारतीय, श्री रामसमझावन, भी रामसिंह चौहान बेंच, भी रामसुम्बर पाण्डेय, श्री रामसुरतप्रसाब, भी रामस्बरूप यावव, भी

रामस्वरूप वर्मा. भी रामहेतसिंह, श्रो रामायणराय, श्रो रामेक्ष्वरप्रसाव, श्री कर्मांसह, भी लक्ष्मणवत्त भट्ट, श्री लक्ष्मणराव कवम. भी लक्ष्मणसिष्ठ, श्री लक्मोनारायण, श्री लक्ष्मीनारायण बंसल, श्री लक्ष्मीरमण भावार्यं, भी ललमीसिष्ठ, श्री लायकसिंह चौषरी, भी लालबहावुर, श्री मानबहाब्रसिह, भी लुत्फ भ्रली ला, भी लारुनाथ सिंह, श्री वजरंगिबहारोलाल रावत, भी वशिष्ठनारायण शर्मा, श्री वसी नफवी, भी वास्वेव वीक्षित, भी विजयशंकरसिष्ठ, श्री विद्यादती बाजवेयी, श्रीमती विनयलक्ष्मी सुमन, श्रीमती विद्यानसिंह, श्री विश्रामराय, श्री विद्यनाथितह गौतम, भी बोरमेन, श्री वीरेन्द्र वर्मा, श्री बीरेग्द्रशाह, राजा म्रजगोपाल सबसेना, भी वनविहारी महरोता, भी शंकरलाल, भी शक्तलावेवी, श्रीमती शब्बीर हुसन, श्री शमतुल इस्लाम, श्री वाम्भुवयास, भी शांति प्रयक्त शर्मी, श्री शिवगोपास तिवारी, श्री शिवप्रसाव, भी (बेवरिया) ज्ञिबप्रसाब नागर, भी (सीरो) विवयंगलसिंह, भी शिवम्ति, भी शिवराजबलीसिष्ठ, भी शिवराजवहादुर, श्री विवराजसिष्ठ यावव, भी

विवराम, श्री शिवराम पांडेय, श्री शिववचन राव, श्री शिवशंकरसिंह, श्री शिवशरणलाल श्रीवास्तव, श्री शोतलाप्रसाद, श्री शोभनाय, श्री **क्यामम**नोहर मिश्र, श्री रयामलाल, श्री रयामलाल यादव, श्री श्रद्धादेवी शास्त्री, कुमारी श्रीकृष्ण गोयल, श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, श्री श्रीनाथ, श्री (ग्राजमगढ़) श्रीनाथ भागव, श्री (मयुरा) श्रीनिवास, श्री श्रीपालसिंह, कुंवर संग्रामसिंह, श्री सईद ग्रहमद ग्रन्सारी, श्री सजीवनलाल, श्री सत्यवतीदेवी रावल, श्रीमती सम्पूनर्णान्द, डाक्टर सरस्वती देवी शुक्ल, श्रीमती सियादुलारी, श्रीमती सीताराम शुक्ल , श्री सुक्खनलाल, श्री सुखरानीदेवी, श्रीमती

सुखराम वास, श्री सुखलाल, श्री सुखीराम भारतीय, श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी, श्री सुनीता चौहान, श्रीमती सन्दरलाल, श्री सुरयबहादुरशाह, श्री सुरेन्द्रदत्त वाजपेयी, श्री सूरेन्द्रसिंह, राजकुमार स्रेशप्रकाशसिंह, श्री सुस्तान ग्रालम खां, श्रो सर्यबली पाण्डेय, श्री सोहनलाल घुसिया, श्री हमीवुल्ला खाँ, श्री हरकेशबहादुर, श्री हरदयालसिंह, श्री हरदयालींसह पिपल, श्री हरदेवसिंह, श्री हरिदत्त काण्डपाल, श्री हरिश्चन्द्रसिंह, श्री हरीशचन्द्र ग्रष्ठाना, श्रो हरोसिंह, श्री हुलीमुद्दीन (राहत मौलाई), श्री हिम्मतसिंह, श्री हुकुर्मासह विसेन, श्री होरीलाल यादव, श्री

नोट :--साव अनिक निर्माण उप-मंत्री, श्री मह वीरसिंह भी उपस्थित के।

## प्रक्नोत्तर

शुक्रवार, २५ मार्च, १६६० ृश्रत्पसूचित तारांकित प्रश्न पवा निवासी श्री लाड़ले काछी की शिकायत

\*\*१--श्री सुदामा प्रसाद गोस्वामी (जिला झांसी)-क्या सरकार ७ मार्च, १६६० के तारांकित प्रस्न संख्या ५७ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेगी कि श्री लाड़ले काछी के साथ की गई सख्ती के सम्बन्ध में उक्त सम्बन्धित कर्मचारियों के विरुद्ध क्या कार्यवाही की गई ? सहकारिता उपमन्त्री (श्री वीरेन्द्र वर्मा)-चूं कि श्री लाड़ले काछी पर भी सख्ती की शिकायत निराधार पाई गई इसलिये किसी कर्मचारी के विरुद्ध कार्यवाही करने का प्रक्न नहीं उठता है।

\*\*२--श्री सुवामप्रासाव गोस्वामी--क्या सरकार कृपया यह बतायेगी कि २ विसम्बर, १८५६ को सहकारिता उपमंत्री के पूछिने पर झांसी में जांच करने वाले जिला कोमापरेदिव अधि-कारी ने यह बताया था कि जांच करने की तारी व की या किसी भी प्रकार की सूचना जांच करने के पहिले प्रार्थी की नहीं बी गई और न जांच के सम्बन्ध में लाड़ ले काछी या उसकी पत्नी से कोई पूछ-लाइ, ही की गई हैं?

है। श्री वीरेन्द्र वर्मा--जी नहीं। जिला कोम्रापरेटिव प्रधिकारी ने यह कहा था कि भी लाइले काछी या उसकी पत्नी से कोई प्रवृताख्न नहीं की जा सकी क्योंकि वे जांच के बिन बुलाने पर भपने घर पर नहीं मिले।

\*\*३—श्री सुवामाप्रसाव गोस्वामी—क्या सरकार कृपया यह बतायेगी कि उपमंत्री को उक्त जांच करने वाले इशिकारी ने यह भी बताया था कि जांच के पहले ए० डी॰ ग्री॰ ग्रीर सुपरवाइजर की जिनके विरुद्ध शिकायते थीं, पत्र भेजा गया था कि शिकायत करने वालों को जांच के सम्बन्ध में इकट्ठा करी, ग्रीर लाइले काछी ग्रीर उसकी पत्नी के न ग्राने का कारण उक्त कर्म- वारियों ने यह बताया था कि वह बोनो जंगल में शेर को भगाने गये हैं?

श्री वीरेन्द्र वर्मा—जा नहीं। जांच करने वाले उक्त ध्रधिकारी ने सहकारिता खपमंत्री जी से यह कहा था कि जांच करने की तारील व समय की सचना शिकायत करने वालें को सुपरवाइजर व कामवार के द्वारा कराई गई थी। श्री लाड़ले कारड़ी भीर उसकी पत्नी के जांच के समय उपस्थित न होने के कारणों के सम्बन्ध में जांच ध्रधिकारी की उप मंत्री जो से कोई बात नहीं हुई।

भी सुवामाप्रसाव गोस्वामी--श्यामाननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेगे कि विसम्बर, १९४६ में भी लाइले काछीने कोई प्रार्थना-पत्र भापकी सेवा में बेकर यह प्रार्थना की थी कि उससे कोई जांच-पड़ताल नहीं की गई, इनलिये उसकी पुनः जांच कराई जाय ?

भी वीरेन्द्र वर्मा-- भी हो।

श्री सुवामाप्रसाव गोस्वामी— श्या माननीय मंत्री जी इस बात की जांच कराने की इपा करेंगे कि २ विसम्बर को जिला कोग्रापरेटिय ग्राफिस के भवन में डिनर के समय लगभग २४, ३० व्यक्तियों के सामने उक्त ग्राधकारी ने यह कहा था कि वह लोग इसलिये नहीं ग्रा सके कि जंगल में होर को भगाने गये हैं?

श्री वीरेन्द्र वर्मा--- यह तो प्रश्न के उत्तर में लिखा हुमा है।

भी सुवासा प्रसाव गोस्वामी--मे यह जानना चाहता हूं कि वया माननीय मंत्री जी इसकी सस्पता की जांच कराने की कोशिश करेगे ?

श्री बीरेन्द्र वर्मा--मेरे सामने तो इस बात की वर्षा नहीं थी । धलबत्ता वहां इतने भावनी में जिसमें कि माननीय सबस्य रवयं डिस्ट्रिक्ट कोग्रापरेटिक धार्फिसर से इस विवय में बातचीत कर रहे थे ।

बाराबंकी जिले में कुछ समय तक पुलिस कप्तान का न रहना

\*\*४---श्री जांगबहादुर वर्मा (जिला बाराबंकी)--- त्या मुख्य संश्री बताने की कृषा करेंगे कि जिला बाराबंकी में पुलिस कप्तान कितने विनों से नहीं है ?

मुख्य मन्त्री (डाक्टर सम्पूर्णानन्व)--बाराबंकी में पुलिस कप्तान तैनात है।

श्री जंगबहादुर वर्मा--क्या माननीय मंत्री श्री यह बताने की क्रुपा करेंगे कि २० मार्च से पहले पुलिस कप्तान कितने विनों तक नहीं तैनात थे ? प्रश्नोत्तर ६३७

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--२० मार्च से एक दिन पहले तक तैनात नहीं थे । श्री जंगबहादुर वर्मा--कितने दिनों तक वह वहां नहीं तैनात थे, जगह खाली रही ?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द--ग्रगर २० मार्च की बात न हो तो करीब दो महीने के वह तैनात नहीं थे।

श्री जंगबहादुर वर्मा--त्र्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि करीब दो महीने के अन्दर वहां कितने कत्ल श्रीर डकेंती के मामले हुये ग्रीर खिपाये गये ?

श्री उपाध्यक्ष--उसकी सूचना ग्राप बाद में दीजियेगा ।

# मेरठ में गजटेड पुलिस ग्रधिकारी

\*\*४--- प्राचार्य दीपंकर (जिला मेरठ)-- त्र्या मुख्य मंत्री कृष्या बतायेंगे कि मेरठ में ऐसे कितने गजेटेड पुलिस ग्रधिकारी हैं जो पिछले तीन वर्षों से वहां नियुक्त हैं ?

गृह उपमन्त्री (श्री रामस्वरूप यादव)--कोई भी नहीं।

उप संचालक ग्रायुर्वेद के कार्यालय के कर्नवारियों एवं ग्रायुर्वेदिक कम्पाउन्डरों का वेतन

\*\*६--श्री बिहारीलाल (जिला पीलीभीत)-- श्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि उप-संचालक, श्रायुर्वेद, उत्तर प्रदेश, कार्यालय के कर्मचारियों का देतन संवालक, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य के कार्यालय के कर्मचारियों से कम है ? यदि हां, तो क्यों ?

स्वास्थ्य उपमन्त्री (श्री बलदेवसिंह श्रार्य) -- जी हां, क्योंकि उप-संवालक, श्रायुर्वेद का कार्यालय, संचालक, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, के कार्यालय की तरह Head of Department का कार्यालय नहीं है ।

\*\*७--श्री विहारीलाल-- त्या सरकार बताने की कृग करेगी कि एलोर्नियक कन्या-उन्डरों के साथ ही स्रायुर्वेदिक कम्पाउन्डरों के वेतन की भी १ स्रवैत, १६६० से वह बढ़ाने जा रहे है ?

श्री हुबलदेवसिंह ग्रार्य--जी नहीं।

श्री बिहारीलाल--त्या माननीय मंत्री जी बतलाने की क्रांग करेंगे कि आधुरेंद के वे कौन-कौन सी श्रेणी के कर्मचारी है जिनकी योग्यता मेडिकत तथा स्वास्थ्य विभाग के कर्नवारियों के समकक्ष होते हुये भी उनका वेतन कम है ?

न्याय मन्त्री(श्री हुकुर्मासह विसेन)--इसके लिये नोटिस की म्रावश्यकता है। गोरखपुर विश्वविद्यालय में मेडिकल कालेज खोलने की प्रार्थना

\*\*द--श्री रामसुन्दर पाण्डेय (जिला झाजमगढ़)-- त्या न्यायमंत्री बताने की कृपा करेंगे कि गोरखपुर विश्वविद्यालय में मेडिकल कालेज खोलने हेतु ११ मार्च, सन् १९६० की विषायकों के हस्ताक्षर से कोई प्रार्थना-पत्र उन्हें मिला है ?

श्री बलदेवसिंह ग्रार्य--जी हां।

श्री रामसुन्दर पाण्डेय--न्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि इन विधायकों के स्रावेदन-पत्र पर सरकार ने स्रभी तक कोई विचार किया है ? श्री हुकुर्मासंह विसेन--कई जिलों से ऐसी वरस्वास्तें प्राई है गोरखपुर, श्रांसी, इलाहाबाव घीर मेरठ से; लेकिन जब तक यर्ड प्लान की रूपरेखा न बने तब तक इस पर होई निर्णय नहीं किया जा सकता ।

' श्रो वीपनारायणमणि त्रिपाठी (जिला वेवरिया)—क्या माननीय मंत्री जी बतलागें। क केन्द्रीय सरकार ने उत्तर प्रवेदा में मेडिकल कालेज खोलने के लिये तीसरी पंचवर्षीय योजना में कोई प्रस्ताव किया है ?

श्री हुकुर्मांसह विसेन--प्रभी तक तीसरी पंचवर्षीय योजना बनी नहीं है तो में कैसे बताऊं ?

श्री गेंदासिह (जिला देवरिया) -- श्या गोरलपुर में मेडिकल कालेज खोलने का विचार सरकार के सामने हैं ?

श्री हुकुमसिंह विसेन-- उसके लिये कई जिलों से वरम्बास्तें ग्राई है, ग्रभी क्या कहा जा सकता है।

श्री गेंदासिह—क्या सरकार, जो विचार करने जा रही है, उसमे गोरलपुर की ब्रावध्यकता को, वहां की बीमारी को, उनकी जनसंख्या को भीर वहां में दूसरी जगह जाकर पढ़ने लिखने की असुविधा को भीर उद्योगीकरण की असुविधा को ध्यान में रखते हुये, महानुभूतिपूर्वक विचार करने की कूपा करेगी?

श्री हुकूमसिंह विसेन--हम तो पार्शासटी नहीं करेंगे। सब पर ठीक प्रकार से निष्पक्ष भाव से विचार करेंगे।

श्री झार खंडेराय (जिला झाजमगढ़) -- झभी तक थडं क्लान की कपरेखा तय नहीं हुई है, उस पर झभी विचार होगा। तो क्या सरकार का लक्ष्य उस थड़ं प्लान में इस प्रवेश में कोई मेंडिकल कालेज कोलने का है ?

श्री हुकुमसिंह विसेन-सोच रहे है लेकिन धन मिल जायगा तो करेंगे।

श्री वेंचनारायण भारतीय (जिला धाहजहांपुर) — स्था सरकार बतलाने की कृपा करेगी कि प्रान्तीय सरकार ने केन्द्रीय सरकार की प्रान्त में कोई सेडिकल कालेज लोलने की सिफारिश की है या नहीं ?

श्री हुकुमसिह विसेन--हमारी स्वाहिश है कि कुछ लोलें।

भी उग्रसेन (जिला देवरिया) --- स्था माननीय मंत्री जी बतलायेंगे कि इसके पहले भी माननीय मंत्री की के पास बाबेदन यत्र बाया था कि गोरकपुर में मेडिकल कालेज लोला जाय?

श्री हुकुमसिंह विसेन--प्रावेदन-पत्र की तो मुझे याद नहीं है लेकिन प्रकार गुण्तगू में लोग कहा करते हैं कि गोरकपुर में भी लोला जाय ।

शाहजहांपुर जिला अस्पताल में एक्सरे मशीन न होना

\*\*६--श्री हरवयालसिंह (जिला धाहजहांपुर)--स्या सरकार कृपा करके बतायेगी कि जिला प्रस्पताल, बाहजहांपुर की एक्सरे मधीन लगभग २ वर्ष से बिगड़ी पड़ी है ?

श्री बलवेवसिंह आर्ये--जी हो, करीब १ १/२ साल से बिगड़ी पड़ी है।

भी हरवयालसिह--नया भाननीय मंत्री जी बतलायेंगे कि पिछले दो वर्षों ने लगातार मरीज, जी एक्सरे लेते रहे हैं, वे कहां से लेते रहे हैं ? श्री हुकुमसिंह विसेन—दिक्कत लोगों को जरूर हुई है। लोग कहां से लेते रहे हैं, में नहीं बता सकता। ध्रव मैंने उसे बम्बई भेजा है रिपेयर के लिये। रिपेयर कराई बी, फिर वह बिगड़ गई। ध्रव फिर बम्बई भेजा है, बहुत जल्द आ जायगी।

श्री हरदयालींसह—क्या यह सही है कि वहां एक प्राइवेट प्रैक्टीशनर जयनारायण हैं श्रीर वहां के श्रविकारियों ने उनसे सौदा कर रखा है श्रीर वहीं एक्सरे कराये जाते है ?

श्री उपाध्यक्ष--यह तो ग्रापकी जानकारी में है ही ।

#### विकास खण्ड ग्रधिकारियों के स्थायीकरण पर विचार

\*\* १०— श्री मुक्तिनाथराय (जिला श्राजमगढ़) — क्या सरकार बताने की कुपा करेगी कि विकास केन्द्रों में कार्य करने वाले बी० डी० ग्रीज० व ए० डी० ग्रीज०, जो १६४२ से विभाग में कार्य कर रहे हैं, उन्हें स्थायी करने के बारे में सरकार किसी योजना पर विचार कर रही हैं?

नियोजन उपमन्त्री (श्री सुल्तान श्रालम खां)--जी हां।

\*\*३१--श्रो मुक्तिनाथराय--यदि हां, तो कब तक स्रौर वह योजना क्या है ?

श्री मुल्तान श्रालम खां— खंड विकास ग्रधिकारियों में से कुछ का स्थायीकरण श्रगले वित्तीय वर्ष तक होने की संभावना है। सहायक विकास श्रधिकारियों में से सहायक विकास ग्रधिकारी (समाज शिक्षा) का स्थायीकरण ग्रगले वित्तीय वर्ष तक हो जाने की संभावना है, शेष सहायक विकास ग्रधिकारी का उनके सम्बन्धित विभागों के साथ एकी करण होने जा रहा है। उनका स्थायीकरण उन्हों विभागों द्वारा किया जावेगा।

\*\*१२--श्री मुक्तिनाथराय--यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री सुल्तान श्रालम खां-प्रश्न ही नहीं उठता।

श्री मुक्तिनाथराय—क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कुपा करेंगे कि जिन लोगों का स्थायीकरण ग्रंगले वित्तीय वर्ष में होने वाला है उनकी संख्या क्या है तथा किस श्रावार पर यह स्थायीकरण होगा ?

श्री सुल्तान श्रालम खां--१४७ जगहें बी० डी० श्रो० की, ६४३ जगहें ए० डी० श्रो० की, ४० सोशल एज् केशन (वीमेन) श्रौर १६ जगहें सेनीटरी इंस्पेक्टर्स की ऐसी हैं कि जिनके लिये फैसला कर दिया गया है कि यह मुस्तिकल कर दी जायंगी श्रौर इसके सिलिसले में कार्यवाही हो रही है।

श्री शिवप्रसाद नागर (जिला खीरी)—ए० डी० ग्री० ग्रीर बी० डी० ग्री० का जो स्थायीकरण किया जायगा यह सीनियारिटी के ग्राधार पर होगा या मेरिट के ग्राधार पर होगा या पब्लिक सर्विस कमीशन की सिफारिश पर किया जायगा ?

श्री मुल्तान श्रालम खां—इस सिलसिले में जो १४७ जगहें बी० डी० श्रो० की हैं उनमें एक लिस्ट १६६ उम्मीदवारों की बना ली गई है श्रोर इसको उन लोगों के पास भेजा गया या कि श्रगर वे एतराज करना चाहते है तो कर दें। १५ मार्च तक उनके एतराज श्रा गये हैं श्रोर श्रव इसका फैसला पब्लिक सर्विस कमीशन की सलाह से किया जायगा श्रोर सब बातों पर गौर कर के फैसला किया जायगा।

श्री झारखंडेराय—क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की छुपा करेंगे कि ए० डी० स्रो० स्नौर बी० डी० स्रो० जिन विकास खंडों में काम करते हैं वे क्या परमानेन्ट इंस्टीट्यूशन्स बना दिये जायेंगे ? इसके बारे में सरकार ने कुछ स्पष्ट नहीं किया है कि क्या बात है ?

श्री सुल्तान श्रालम खां—माननीय सवस्य की यह मालून है कि जो कम्युनिटी डेवलपाँट का श्रीग्राम हे वह ११ साल का है। १ साल एक्सटेंशन में रहता है श्रीर ४ साल के लिये फर्स स्टेज होती है श्रीर किर श्रगले ४ साल के लिये से किड स्टेंज होती है। तो इस तरह से ११ साल का तो यह श्रोग्राम ही है।

श्री प्रतापसिंह (जिना नेनीताल) — १९४२ में ये निवृत्त कि रेगवे ये तो प्राजतक इनको स्थायी न किये जाने का कारण क्या सरकार बनलायेगी?

श्री सुल्तान आलम खां—अब तक यह काम एक्सपेरीमेंटल रटेज में ही रहा है और बड़ा काम था। १६५२ से चन रहा है। अभी हाल में फीन ना किया गया है कि इनकी मुस्तिकल कर दिया जाय और उसी के लिने कार्य बाही हो रही है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राक्टर की फर्स्ट क्लास मैजिस्टीरियल पावर्स

\*\* १३—-श्री राजनारायण (जिना वाराणमा)—-मया सरकार बताने की छुना करेगी कि क्या काशी विद्यायिद्यालय के प्राक्टर की तिन्तू विद्याविद्यानय से सम्बन्धिन मामलों के लिये कर्न्द्र कनास में जिन्द्रेट का श्रीक्षकार राज्य सरकार द्वारा दिया गया है ? यदि हां, तो क्यों ?

श्री बलवेबसिह आयं - जी हां। यह इसिन ये किया गया है कि वह अपने पर से सम्बन्धित कर्ने व्यों का आर अधिक सन्कल्प से पालन कर सहें।

श्री राजनारायण — क्या सरकार इसकी रपष्ट करेगी कि यह फर्न्ट क्वास मैजिस्ट्रेट के मिक्रिकार काशी विश्वविद्यात्रय के प्राह्टर की किस नियम के मुशाबिक विये गर्ने हैं ?

श्री हुकुमसिंह विसेन--नियम हे स्राविक ही विशेषके है। किनिनन श्रीतीजर कोड पढ़ लाजिये।

श्री राजनारायण — क्या सरकार किभिनाव प्रोमीजर कोच की वका १० पढ़ने की हुना करेगी जिनमें राजर कहा गया है कि काई करात मी तरहूं हु का पत्र में विकास में अगर विवा जाय ती ऐसे व्यक्ति में प्राप्त जाय जी कि किश्रीय न काम पहाने कर जु है हों क्योंकि उनकी श्रामव रहता है है एक प्राप्तर का कि निकास मंत्र का भी विवासिकानय के प्रवंत में रजता है और वे गेट पर रहत है, जनकी यह पत्र की निवासिका स्था ?

श्री हुकुमसिंह विसेत - - पे. कंड कनाम पावनं थी, तब भी वृद्धिय न वर्क वह फरते थे।

श्री मदन पांडेय (तिना गांस्कार्र)—क्या मानतीय मंत्री जी बतलावेंगे कि यह जो फर्न्ड बनाम मी नरदेश के श्रीयकार प्राप्तर की वित्रे गते हैं बड एकती ह्यूटिव काउत्तिन की किसी संहतुत्ति पर विवे गत्र हुं? यित हा, तो उन मंत्रुत का प्रत्यार क्या बतलाया गया है ?

श्री हुकुमसिंह विसेन--यूनियसिटी के राजिस्ट्रार ने रिकोरट की थी और डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट से कंसरट किया गया, सब यह प्राधिकार विये गये ।

श्री राजनारायण--पेरा प्रक्त यह है कि प्राक्टर महीवय की वे कीत से कर्तव्य पूरे करने होते हैं जिनके लिये उनकी फर्स्ट बनास के मैजिस्ट्रेट की पायर्ग दी गयी है ?

श्री हुकुमसिंह विसेत--ना एन्ड ग्रांडर मेन्टेन करने के लिये।

श्री कल्याण वन्द्र मोहिले (जिना इनाहाबाव) --- न्या माननीय मंत्री जी बनावेंगे कि यह प्रविकार कितने समय के लिये बिये गये हैं ?

श्री हुकुमसिंह विसेत-पह इन्डीविजुद्धली दिवे गये है। जब तह वे इस पर पर कान करेंगे, ऐज ए प्राक्टर, तब तह उनकी ये स्विकार रहेंगे। प्रश्नोत्तर १४१

श्री राजनारायण—क्या माननीय मंत्री जी को जानकारी है कि प्राक्टर महोदय को फर्स्ट क्लास मेजिस्ट्रेट की पावर्स दे देने से काशी विश्वविद्यालय के विद्यायियों में झौर वहां के नागरिकों में काफी ग्रसंतोष है ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--हमें तो इसकी कोई इत्तला नहीं है।

श्री हरदयालिंसह—क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृता करेंगे कि विद्यार्थियों में ग्रन्थाय विरोधी प्रवृत्ति बढ़ने के कारण ऐसा किया गया है ?

श्री हुकुमसिंह विसेन--- प्रब जो माने ग्राप इसके लगाना चाहें लगा सकते हैं।

श्री उग्रसेन-- क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृता करेंगे, जैसा कि उन्होंने उत्तर दिया था कि ला एन्ड ब्रार्डर मेन्टेन करने के लिये, तो इसको पहले से क्यों नहीं किया, ब्रब क्यों किया है ?

श्री हुकुर्मासह विसेन—म्ब जरूरत पड़ी, इसलिये कर दिया गया। ग्रन्तरिम जिला परिषद्, मेरठ के कर्मचारियों का ग्रावेदन-पत्र

\*\*१४——ग्राचार्य दीपंकर—क्या सरकार कृत्या यह बतायेगी कि ग्रन्तरिम जिला परिषद्, मेरठ के निम्न-वेतन जीवी कर्मचारियों का श्रावेदन-पत्र उसे हाल में मिला है जिसमें कहा गया है कि जिस प्रकार सरकार ने जी० ग्रो० नम्बर जी० ग्राई०—३३५/१०——२०६-४५, तारीख २५—४—५५ के ग्रनुसार सिविल कोर्ट ग्रीर कलेक्टरी के ग्रन्य निम्न वेतन जीवियों को २०—१/२—२५ के ग्रेड से २२—१/२—२७ रुपये का ग्रेड दे दिया गया है वैसा ग्रन्तरिम जिला परिषद् के कर्मचारियों को भी दिया जाय ?

स्वायत्त शासन उपमन्त्री (श्री जयराम वर्मा) --- त्री हां। इसी माह की १६ सारीख को उक्त म्रावेदनपत्र प्राप्त हुम्रा है।

\*\*१५--म्राचार्य दीपंकर--यदि हां, तो क्या सरकार क्षत्रया बतायेगी कि उस म्रावेदन-पत्र पर वह क्या कार्यवाही कर रही है ?

श्री जयराम वर्मा--शासन द्वारा उस पर विचार किया जा रहा है।

श्राचार्य दीपंकर—क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृता करेंगे कि जो सुविवायें उन्होंने कलेक्टरी श्रौर दूसरे महकमें के निम्नवेतन जीवी कर्मचारियों को दीं वे उसके साथ ही स्रंतरिम जिला परिखद के निम्न-वेतन जीवी कर्मचारियों को क्यों नहीं दी गयीं ?

श्री जयराम वर्मा--में, श्रीमन्, सवाल समझ नहीं सका।

श्री उपाध्यक्ष--सदन में काफी श्रशान्ति है। प्रश्न श्रौर उनके उत्तर साफ सुनाई नहीं पड़ रहे हैं।

स्राचार्य दीपंकर--क्या माननीय मंत्री जी बताने की क्षया करेंगे कि जो सुविधायें उन्होंने कलेक्टरी ग्रौर दूसरे मोहकमों के निम्न-बेतन जीवी कर्मचारियों को दीं वे उसके साय ही ग्रन्तरिम जिला परिषद् के निम्न-बेतन जीवी कर्मचारियों को क्यों नहीं दी गयीं ?

स्राचार्य दीपंकर—यह सोचते हुये कि उन कर्मचारियों में यह स्रनुभव हो रहा है कि वे उपेक्षित किये जा रहे हैं, तो क्या सरकार इस मामले में बहुत जल्दी सहानुभूतिपूर्वक विचार करेगी?

श्री जयराम वर्मा--श्रीमान् जो, सन् ४४ में जो प्रावेश हुये वे वे सरकारी कर्मचारियों को लिये हुये थे, उनको वेतन-वृद्धि के संबंध में। वे स्थानीय कर्मचारियों के लिये नहीं थे। अब उस पर ज्यान प्राक्त वित किया गया है, तो उस पर गौर किया जा रहा है।

### राज्य में रेलवे लाइन बढ़ाने की प्रावश्यकता

\*\*१६—श्री रामसुन्दर पांडेय—क्या सार्वजनिक निर्माण मन्त्री बताने की कृपा करें। कि प्रदेश में कहां-कहां रेलवे लाइन बिछाने के लिये भारत सरकार से प्रदेशीय सरकार ने हाल में सिफारिश की है ?

सार्वजिनक निर्माण उपमन्त्री (श्री महावीरसिंह)--कोई नहीं।

श्री रामसुन्दर पांडेय—क्या निर्माण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि भारत सरकार के पास प्रदेशीय सरकार कोई निर्फारिश रेल की पटर्ग बिखाने के लिये भेजा करती हैं ? यह हां, तो क्या इस वर्ष भेजी हैं ?

श्री उपाध्यक्ष--मभी उत्तर मिला तो है भावके सवान का कि नहीं।

# पूर्वी जिलों में म्रोलावृष्टि

\* \*१७--शी रामसुन्वर पांडेय--क्या त्याय मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि ११ मार्च, १८६० को भी भाजमगढ़, गाजापुर झावि पूर्वी जिलों में झोलावृद्धि हुई है ?

राजस्व उपमन्त्री (श्री महावीरप्रसाव शुक्ल)-- जा हो।

श्री रामसुन्दर पाँडेय-स्या माननीय मंत्री जो बताने की भूपा करेंगे कि ११ तारीख को भोशाबुंदिर के नमाचार उनके पास जिलाधीशों के पास से भाये हैं ?

श्री महावीरप्रसाव शुक्ल--प्राये है।

श्री रामसुन्दर पांडेय—क्या माननोय मंत्री इचर श्रीष्ट्र ही इत जिलों का स्वयं गैरा करके कुछ बसली पता लगाने की सोच रहे हैं ?

श्री हुकुमसिंह विसेन-पोड़ा बहुत तो पता लग हा रहा है। लेकिन हम इरावा रखते हैं कि चल कर पता लगाया जाय।

भी यमुनासिह (जिला गाजीपुर)—श्या सरकार इन जिलों की अति-वृष्टि और जपस बृष्टि की जो सूचनामें आयी है, वहां के लिये कुछ सहायता वेने जा रही है ?

भी हुकुमसिंह विसेन--जब फाइनल इंटेरिस कम्पेंसेशन के लिए रिपोर्ट झा जायगी तो कायदे के अन्वर विचार होगा।

श्री मदन पांडिय--क्या मंत्री महोदय उन जिलों के नाम बलायेंगे जिनमें पहले श्रोता-बृद्धि नहीं हुई भी, श्रव हुई है ?

श्री उपाध्यक्ष-सबाल पूर्वी जिलों का है, कृपया पूर्वी जिलों के लिए ही बताइये कि कहां पर पहले नहीं हुई थी, बाद में हुई ।

श्री हुकुमसिंह विसेन-देवरिया, गोरखपुर, बहराइच में पहले नहीं हुई थी, श्रव चोड़ी बहुत हुई है।

# कुरावली के थानेदार के विरुद्ध शिकायत

\*\*१८—श्री मिलिखानींसह (जिला मैतपुरी)—क्या गृह मन्त्री यह बताने की कृषा करेंगे कि क्या मैतपुरी जिले में थाना कुरावली के थानेदार ने दिनांक १२ मार्च, १६६० को चार व्यक्तियों को भारतीय दन्ड विचान की घारा १५१/११७ में बन्द किया और १४ मार्च को मौके पर जाकर कहारों के खेत उजड़वा दिये और मारा पोटा जिससे लोग गांव छोड़े हुये हैं तथा जिसकी शिकायत पुलिस कप्तान को भी दो गई है ?

श्री रामस्वरूप यादव—जी नहीं। भारतीय दंड विघान की बारा १५१ ११७ के अन्तर्गत कोई व्यक्ति गिरफ्तार नहीं किया गया, थाने बार द्वारा खेत उजड़वाने और कहारों के पीटे जाने या गांव छोड़कर भाग जाने की बात सही नहीं है। सदस्य महोदय ने एस० पी० से इसका जवानी जिक्र किया था।

\*\*१६--श्री मिलिखानींसह--यि हां, तो क्या गृह मन्त्रो कृपया बतायेंगे कि उस पर क्या कार्यबाही को जा रही है ?

श्री रामस्वरूप यादव---उक्त विषय में कहारों के विरुद्ध ४२७ मा० दं० वि० का मुकदमा न्यायालय में जिचाराधीन होने के कारण जांच स्थगित कर वी गई।

श्री मिलखानिसह—क्या माननीय मंत्री जो यह बतायेंगे कि १६ मार्च को कहारों ने इस तरह का प्रार्थना-पत्र एस० पो० को दिया कि हमारे खेत मौके पर खुद जाकर के यानेदार ने उजड़वाये और हमको मारा पीटा और हमारे परिवार के लोग गांव छोड़े पड़े हैं ?

श्री रामस्वरूप यादव--मेने निवेदन यह किया कि पुलिस ने खेतों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया। जो दरस्वास्त दो है उस पर इसलिए जांच नहीं की जा सकती कि मुकदमा श्रवालत में विचाराधीन है।

श्री मलिखानसिह—क्या माननीय मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे कि जब उन्होंने दरस्वास्त की जांच करायी नहीं तो उनको कैसे मालुम हुग्रा कि यह मामला झूठा है ?

श्री रामस्वरूप यादव-एक सज्जन नत्यू घोबी ने रिपोर्ट की कि उनके खेत को कहारों ने नुक्सान किया, उस पर ४२७ का मुकदमा कायम हुआ। कहारों का कहना है कि पुलिस ने उनके खेत उजड़वाये—इन दोनों में फर्क है, उससे मालूम हुआ कि पुलिस ने कोई नुकसान नहीं किया।

# देवरिया तथा गोरखपुर जिलों में ग्रोला वृष्टि

\*\*२०--श्री उग्रसेन--क्या न्याय मन्त्री कृपया बतायेंगे कि दिनांक ११ मार्च, १९६० को देवरिया तथा गोरखपुर जनपद में भी वर्षा के साथ ग्रोले पड़े ? यदि हां, तो क्या सरकार उसका पूर्ण विवरण सदन को मेज पर रखेगी ?

## श्री महाबीरप्रसाद शुक्ल--(१) जी हां।

(२) विवरण इस प्रकार है-

गोरखपुर—सबर तहसील में कटी हुई फसल को २ आने क्षति हुई व बांसगांव तहसील में गेहं और जो को २ आने और अरहर को ४ आने कति हुई।

देवरिया-स्तेमपुर तहसील के कुछ ग्रामों में नाम मात्र के श्रोले गिरे, जिससे कोई स्रति नहीं हुई । \*\*२१-श्री उग्रसेन-क्या यह सही है कि केवल सलेमपुर तहसील, जिला वेविरया में ११ मार्च, ६० को ४०० गांवों में श्रोले से रबी को फसल को भीषण क्षति पहुंची है, यि हां, तो कितनी ?

श्री महावीरप्रसाव शुक्ल--जी नहीं।

श्री उग्रसेन--क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि सलेमपुर तहसील के किन-किन गांवों में भ्रोले पड़े ?

श्री हुकुर्मासंह विसेन-बहुत एरिया में छोटे छोले पड़े है, एम्जेक्टली बताना मुक्तिल है ।

श्री मदन पांडेय--गोरलपुर जिले में महाराजगंत्र तहसील के किन किन हिस्सों में झोले पड़े हैं ?

श्री हुकुमसिंह विसेन--कुछ हिस्सों में पड़े हैं, गांव की तावाव फाइनल रिपोर्ट आने पर बतलायी जा सकती है।

श्री उग्रसेत--क्या यह सही है कि श्रोलों के माथ गोरवपुर, देवरिया दोनों जिलों में भीषण वर्षा भी हुई श्रीन उससे काफी क्षांत पहुंची?

श्री हुकुमसिंह विसेन--"भाषण" कहते में तो ग्रालग-ग्रामन राय हो सकती है, कुछ भारत जरूर पहुंची हैं।

श्री झारखंडेराय--क्या यह बलाया जायया कि कौन ऐसे जिले हे जहां ११ मार्च की भी झोले पड़े झीन २१ मार्च की भी झोले पड़े ?

श्री हुकुमसिह विसेन -यह किटेन इस धवत बताना तो मृदिकान है, इसके लिए में नोदिस चाहुंगा।

### तारांकित प्रक्न

[उत्तर प्रवेश विश्वान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य-मंत्राध्वन नियमावसी के नियम ३० (४) के प्रन्तर्गत]

# म्राजमगढ़ सदर ग्रस्पताल के नये भवन के लिए भूमि

\*१--श्री विश्रामराय (जिला भ्राजमगढ़) तथा श्री मवन पांडेय--क्या त्याय मंत्री कृपया बतायेंगे कि श्राजमगढ़ सचर भ्रस्यतान के नये भवन के निर्माण के लिये कितने किसानों की जमीन लेने का आयोजन है ?

श्री बलवेवसिंह गार्थ--श्राजमगढ़ सदर ग्रायतान के नये भवन निर्माण के लिए १६८ किसानों की जमीन की जा रही है।

\*२--श्री विश्वासराय तथा श्री सवन पांडिय--क्या सरकार को जात है कि ग्राजमगढ़ सवर श्रस्पताल के लिये ली जाने वाली भूमि के सम्बन्ध में किसानों ने सरकार के पास प्रार्थना-पत्र भेजे हैं? यवि हां, तो उस पर क्या कार्यवाही हो रही हैं?

श्री बलवेवसिंह श्रार्य--जी हो, इस सम्बन्ध में कृत्र प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुए ये जिनमें बही एतराज (objections) किये गये हैं जो पहले किये गये ये ग्रीर जिनकी खारिज कर विया गया।

प्रश्नोत्तर ह४५

श्री विश्रामराय—क्या न्याय मंत्री जी बतायेंगे कि कुल कितनी जमीन ली जा रही है ग्रीर इस जमीन में जो किसान बसे हैं उनमें बहुत से ऐसे किसान जो बहुत गरीब है ग्रीर जिनके मकान बने हैं उनकी जमीन छोड़ने की कोई व्यवस्था है ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--४१ प्वाइन्ट कुछ एकड़ जमीन है जो ली जा रही है। अब इस एरिया में जिसकी जमीन पड़ जायगी उनको कम्पेन्सेशन दिया जायगा।

श्री मदन पांडेय—न्या मन्त्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि जो प्रार्यना-पत्र प्राया है उसमें यह भी लिखा गया है कि जो जमीन ली जा रही है, वह भ्रावश्यकता से भ्रधिक है, इसलिये उसमें से कुछ जमीन छोड़ दी जाय ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--पहले ४२ एकड़ का प्रयोजन था, ग्रव ४० एकड़ कर दिया गया है ।

श्री झारखंडेराय—क्या मन्त्री जी बताने की कृपा करेंगे कि श्राजमगढ़ सदर श्रस्पताल के लिये जो जमीन ली जा रही है उससे पुराने श्रस्पताल का ही एक्सटेंशन किया जायगा या क्या पोजीशन है ? यानी जहां पुराना है वहां भी रहेगा श्रीर जो नया बन रहा है, वहां भी रहेगा ?

श्री हुकुमिंसह विसेन-- बिलकुल नया बनेगा, ७ लाख के ऊपर का यह प्रोजेक्ट है। वहां ग्राजमगढ़ के लोगों की इच्छा है कि क्या ग्रस्पताल बने, इसीलिये बन रहा है। ग्रगर ग्राप जमीन न दिलवायें तो न बनावें।

श्री मदन पांडेय--मौजूदा श्रस्पताल की बिल्डिंग का क्या होगा ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--उसमें हेल्य डिपार्टमेंट की जो श्रौर दूसरी यूनिट्स है फाइलेरिया, मलेरिया वगैरह की वे उसमें रहेंगी क्योंकि वे श्रभी किराये के मकानों में हैं।

# फसलों को दैवी ग्रापत्तियों से बचाने की प्रार्थना

\*३--श्री भूपिकशोर (जिला एटा)--क्या न्याय मन्त्री बताने की कृप्त करेंगे कि इस वर्ष जाड़े के मौसम में बारिश न होने से रबी की फसल को नुकसान हुआ है ?

श्री महावीरप्रसाद शुक्ल--जी हां। इन जाड़ों में वर्षा की कमी से रबी की फसल को कहीं-कहीं हानि हुई है।

श्री भूपिकशोर — क्या मन्त्री महोदय कोई उपाय सोच रहे हैं कि बारिश न होने से जो हानि हो जाया करती है उस हानि से फसल को बचाया जा सके ब्रौर इसमें सरकार कब तक पूर्ण रूप से कामयाब हो जायगी ?

श्री हुकुमसिंह विसेन--इसके लिये इरींगेशन का डेवलपमेंट किया जा रहा है लेकिन यह तो एक नेवुरल कैलेमिटी है, इसके लिये हम कह दें कि हम बिल्कुल बन्द कर देंगे, यह कहना बड़ा मुश्किल है।

श्री प्रतापिसह—क्या माननीय मन्त्री जी के पास यह सूचना श्राई है कि पर्वतीय जिलों में बारिश न होने से रबी की फसल खराब हो जाने के कारण श्रकाल की स्थिति है श्रीर क्या इसकी जांच कराकर वहां पर मदद देने की कृपा करेंगे ?

श्री हुकुमसिंह विसेन--इस वक्त याद नहीं कि वहां से कोई ऐसी शिकायत स्राई।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल (जिला श्रागरा) — इस बात को घ्यान में रखते हुए कि नेचुरल कैलेमिटीज से श्रक्सर फसल को नुकसान पहुंच जाता है, क्या फसल का बीमा कराने की योजना सरकार के विचाराधीन हैं? भी हुकुमसिंह विसेन--ऐसा कोई लयाल प्रभी नहीं है।

श्री टीकाराम पुजारी (जिला मथुरा)-- क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जहां श्रोना, पानी, वर्षा श्रीर तूफान के कारण किसानों की रबी की फमल खत्म हो गई है वहां पर किसानों की मालगुजारी श्रीर श्राबपाशी माफ की जायगी ?

श्री हुकुमसिंह विसेन--जहां जहां पर नुकसान की तावाव कायवे के ग्रन्वर ग्रा

\*४ - -श्री भूपकिशोर---[स्विगत किया गया।]

# जमानियां थाने के हवालाती कैवी की मृत्यु

\*५--श्री गौरीशंकर राय(जिला बिलया) तथा श्री यमुनासिह—क्या गृह मन्त्री कृपया बतायेगे कि क्या यह सहय है कि पिछ नी ७ फरवरी की जमानियां चाने से गाओपुर बेल खे जाने समय किसी हवानाती की मौत हो गई ?

भी रामस्वरूप यावव--नी हो।

\*६--श्री गौरीशंकर राय तथा श्री यमुनासिह--प्रवायह भी सत्य है कि यह मृत्यु पुलिस के मारने से हुई हैं ?

श्री रामस्वरूप यावव ---मंजिरट्रेट की जीन रिपोर्ट में श्रात होता है कि मृत्यु पुलिस के मारने से नहीं हुई।

\* ७---श्री गौरीशंकर राय तथा श्री यमुनासिह--- च्या यह भी सत्य है कि उक्त मृतक हवालावी के उड़ है ने जितायीश की यह प्रार्थना-पत्र दिया था कि जाश की मेडिकल बोर्ड के गामने भेता जाय?

श्री रामस्वरूप यादव-- श्री हो ।

भी यमुनासिह—क्या सरकार इस मामले की जांच सी० धाई० डी० से कराने की कृपा करेगी?

श्री रामस्वरूप यादव-माननीय मुख्य मन्त्री को १६ मार्च को एक प्रार्थना-पत्र विया गया है उस पर विवार किया जा रहा है।

श्री गौरीशंकर राय-क्या यह सही है कि मैजिस्ट्रेंट साहब जांच करने के सिलिसले में मौके पर नहीं गये बॉस्क जेल में कुछ मुल्जिमों के बयान लिये जबकि मुल्जिमों ने यह वरस्वास्त की थी कि उनका बयान जेल के बाहर लिया जाय और मौके पर मामले की जांच की जाय?

भी रामस्वकप यावव-इसके लिए नोटिस की बावश्यकता है।

!' भी गोविग्वसिंह विष्ट (जिला भल्मोड़ा) स्या मन्त्री जी बतायेंगे कि जो व्यक्ति सर गया उसका पोस्ट मार्टम हुन्ना था? यदि हो, तो उसका पया नतीजा है?

' भी रामस्वकप यादव-जी हां, पोस्ट मार्टम हुन्ना था। सिविस सर्जन ने यह रिपोर्ट बी है कि गिरने से उसकी बटक में ऐसी चोट लगी कि ग्रांक से उसकी मृत्यु हो गयी।

श्री गोबिन्बसिंह बिष्ट—बोट किस स्थान पर थी, उसे डेसकाइब करेंगे?

ा पृष्ठ सन्त्री(श्री कमलापति त्रिपाठी)---बतलाया तो कि कूल्हे में थी। वह सीवी से गिरे धीर जाक्टर ने कहा कि उस बजह से यह मरे। प्रश्नोत्तर १४७

श्री गौरीशंकर राय—जब पोस्ट मार्टम के दूसरे ही दिन लाह को मेडिकल बोर्ड के सामने लाने की श्रर्जी दी तो बोर्ड के सामने क्यों नहीं भेजी?

श्री कमलापति त्रिपाठी—सिविल सर्जन ने पोस्ट मार्टम किया था और रियोर्ट वी थी। मैजिस्ट्रेट ने सिविल सर्जन का भी वयान लिया। इससे ज्यादा जरूरन नहीं थी।

## इलाहाबाद में कथित विस्फोट

\* = श्री कल्याणचन्द मोहिले - क्या सरकार कृपा कर बतायेगा कि क्या इनाहण्डाव के नुहल्ला रसूलपुर ने हाल में वित्फोटक पदार्थ के फट जाने के फलस्वरूप बहुत में ब्रादमी जस्मी हुये तथा भरे ? यदि हां, तो घटना क्या थी और उसमें कितने स्रादमी मरे तथा घायल हुये ?

श्री रामस्वरूप यादव—जी नहीं। इस प्रकार की कोई दुर्घटना नहीं हुई। प्रश्न का दूसरा भाग नहीं उठता।

श्री कल्याणचन्द मोहिले—क्या यह सही है कि जिस मोहल्ले का नाम रसूलपुर लिखा है उसे तुलसीपुर भी कहते है ग्रोर यह घटना वहां घटी?

श्री रामस्वरूप यादव--नोटिस चाहिए।

### रायबरेली में पुलिस के विरुद्ध हड़ताल

\*६--श्री रामप्रसाद (जिला रायबरेली) — क्या सरकार यह बताने की कृया करेगी कि क्या दिनांक १४-२-६० को नगर रायबरेली में स्थानीय पुतिस के विरोधस्वरूप पूर्ण हड़ताल मनायी गयी? यदि हां, तो इसका क्या कारण है?

श्री रामस्वरूप यादव—जी हां। उक्त हड़ताल का मुख्य कारण यह था कि रायबरेली नगर में हाल में कुछ डकैती व नकबजनी की घटनाएं हुयी थीं और स्थानीय पुलिस द्वारा अपराधियों का पता न लग सकने के कारण असन्तोष था।

श्री गोविंदिसह विष्ट--क्या मन्त्री जी को यह भी शिकायत मिली थी कि पुलिस के चोरों से मिलने के कारण ज्यादा डकैतियां पड़ों ?

### (उत्तर नहीं दिया गया।)

श्री रामप्रसाद—क्या सरकार बताने की कृषा करेगी कि इस हड़ताल के दिन वहां कोई सार्वजनिक सभा हुई श्रीर उसमें कुछ प्रस्ताव पास हुये? यदि हां, तो वे क्या है?

श्री रामस्वरूप यादव—प्रस्ताव तो पास हुन्ना था लेकिन उसकी प्रतिलिपि नहीं स्रायी। एक रिप्रेजेन्टेशन सरकार के पास स्राया था।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल-जनता में जिन बातों से पुलिस के प्रति श्रसन्तोष था क्या उसे दूर करने के लिए सरकार ने कोई उपाय किया?

श्री रामस्वरूप यादव—पी० ए० सी० लगायी गयी ताकि वह रात में गश्त करे। एक डकैती के सिलिसले में २ व्यक्ति भी लखनऊ के गिरफ्तार हुये। ७ फरवरी के बाद कोई घटना नहीं हुई है। इससे लोगों को कुछ सन्तोष है, उनकी श्रीर मांगों पर विचार किया जा रहा है।

श्री भदन पांडेय—क्या उस प्रस्ताव में एक मांग यह भी थी कि वर्तमान पुलिस ग्रधिकारी का तबादला कर दिया जाय?

श्री रामस्वरूप यादव--प्रस्ताव की प्रतिलिपि प्राप्त नहीं हुई।

श्री भगवनीसिंह विद्याण्य (जिला उन्नाप) -- स्थापाननीय मन्त्री बताने की हुग करेंगे कि पाप के नागानों की प्रत्य मांगे क्या है ?

श्री रामित्यराप यादव ---रता समिति का बनावा वो स्थापित कर दी गयी है। रातको १९ उते । ४ वत तक १८ अ के १८ का विकास तो स्थाप तो स्थापनी सभी जाती है। पेट्रोलिए किया जा हो है। वता को वास तो वसरपादिक से सम्बद्धित है, सरकार से नहीं। मैजिस्ट्रेट वास पट्टोलिंग को प्रांग कुछ अस्ति नहीं। स्वस्ट्रेट

# स्थानीय निकाय के अध्यापकों के महंगाई भत्ते के लिए राजाजा

\*१० - -श्री केलाशप्रकाश (जिला भरठ) (यनपरिवत) - - स्या गृह मन्त्री कृपया बतायेग कि चा की लीप कि १६४४ - ५० में जो अई रुपया मासिक महंगाई भत्ता बढ़ाया गया है, यह रुपालीय विकास के से सापका का भी मिल रहा है सा चहा ?

श्री कमलापति विपाठी--मी सा ।

\*११- श्री कंलादापवादा (ब्रनवस्थित) - यदिता ता तथा गृहमः वी जासकीय श्रादेश की प्रति सदन की मन पर रथन की क्या फरग दें

श्री कमलापति त्रिपाठी - नगम्मन्यतः राजासामा ना प्रतिनिध्यत् प्रस्तृत है। [२४ ) चं, ११६० के लिए निर्धारित ताराकित प्रदम्]

१-: श्री लक्ष्मणराय कदम (जिला कामी)--|१ अप्रेल, १६५० के लिए स्थित किय गया]

त --श्री गनेशाजन्द्र कारदी (जिला भेनपुर्न) --- [१ श्रप्यान, १६६० के लिए स्थिति किया गया ।]

# प्रत्येक जिले में डिग्री कालेज खोलने की प्रार्थना

५--श्री गर्नेशस्त्रन्द्र कार्योः -क्या सरकार व्यवस्ति कृषा करेगी कि जिन जिलों में सरकार के कियी कार्नेत्र न १८०१ अन्य किन-किन से वियो कार्नेत खानने के सम्बन्ध में जनवरी, १६५० ई० के नाम्बर, १८५६ ६० तक सरकार ने विद्यायियानयां ने पत्र द्यायशहर किया है?

जिल्लान्या से कार्र पश्चन्त्री (श्वी वीनवयास्तु झास्त्री)—इस सम्बन्ध म झासन ने विक्र विद्यालया से कार्र पश्चन्यग्रहार नहीं किया है।

श्र्वी गर्नेदान्त्रन्त्र कारदी—क्या सरकार जिन जिना माएक भी डिग्री कालेज नहीं है वहाँ विग्री कालेज स्वान्त्रं की ट्यवस्था करने की कृषा करगी ?

श्री कमलापति त्रिपाठी--जी नहीं। अब सरकार कोई डिग्री कालेज नहीं खोलती है। जो है ये है। नये गोलने की जरूरत नहीं है। श्रगर कही के लोग गोलते हैं तो सरकार नियमानुकृत अनदान इत्यांति देती है।

# पूर्वी पाकिस्तान के विस्थापितों की पुनर्वासन योजना

\*६--श्री ताराखन्त माहेदवरी (जिला मीतापुर)-क्या सरकार बताने की कृषा करेगी कि क्या पी नीभी र रामपुर तथा बिजनीर जिलों में पूर्वी पाकिस्तान से श्राये हुये व्यक्तियों की बताने की कुछ योजनायें चालू विसीध वर्ष में उसके द्वारा कार्यान्त्रित की जा रही है?

श्री बलदेवसिंह प्रार्थ-जी हो।

<sup>&</sup>lt;sup>†</sup>प्रतिलिपियां छापी नहीं गयी।

\*७—-श्री ताराचन्द माहेश्वरी—यिव हां, नो इन योजनाश्चों के कार्यान्टित किये जाने के हेतु कितने कर्मचारियों की किन किन पदों पर वित्तीय वर्ड १६५६—६० से त्युकिनयां की गयी हैं?

# श्री बलदेवसिंह ग्रायं---

कृषि निरीक्षक	• •	• •			ሂ
कोग्रापरेटिव इन्त्रपेक्ट	₹	• •			۶
इन्क्वायरी इन्सरेक्टर	तथा लिपिक		• •		=
ग्रमीन	• •	• •	• •		१८
चेनमैन	• •				35
चपरासी					१२

\*द—श्री ताराचन्द माहेश्वरी—क्या सरकार यह बनाने की क्रुपा करेली कि ३० सितम्बर, १६५६ तक उपरोक्त जिलों में कितने विस्थापित व्यक्ति ग्राकर बस गये हें ?

श्री बलदेवसिंह श्रार्य--७८४ परिवार, जिनमे लगभग ३६२० व्यक्ति हें।

श्री ताराचन्द माहे श्वरी—क्या माननीय मन्त्री बताने की छुपा करेगे कि इस योजना पर कुल कितना घन खर्च होगा ग्रौर क्या यह सारा घन भारत सरकार से मिलेगा?

श्री हुकुर्मासह विसेन--सारा धन भारत सरकार से मिलेगा। कुल कितना धन खर्च होगा, इसके लिए नोटिस चाहिए।

श्री भुवनेशभूषण शर्मा (जिला इटावा)—इस योजना में कितने विस्थापित बसाये जावेंगे?

श्री उपाध्यक्ष--ग्रभी बता दिया गया है।

श्री ताराचन्द माहेरवरी—क्या यह सत्य है कि राज्य सरकार ने भारत सरकार को सूचित किया था कि १४११ विस्थापित परिवारों को जुलाई, ५६ तक ही बसा दिया जायगा? यदि हां, तो सितम्बर, ५६ तक केवल ७८४ परिवार ही बसाने का क्या कारण है?

श्री हुकुर्मासह विसेन—उपयुक्त जमीन नहीं मिल पाती है।

### विदेशों में मान्यता-प्राप्त लखनऊ के श्रांग्ल भारतीय विद्यालय

\*६—श्री मोतीलाल ग्रवस्थी (जिला कानपुर)—क्या गृह मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि लखनऊ में कौन कौन ऐसी शिक्षा संस्थाएं (स्कूल कालेज ग्रादि) है जो विदेशों में मान्यता-प्राप्त किये है किन्तु उन्हें सरकार द्वारा ग्रार्थिक सहायता प्राप्त है?

श्री दोनदयालु शास्त्री—निम्नलिखित पांच ग्रांग्ल-भारतीय विद्यालयः यूनिवर्सिटी ग्राफ कैम्ब्रिज लोकल एक्जामिनेशन सिन्डिकेट, कैम्ब्रिज, इंग्लैण्ड द्वारा स्कूल सर्टिफिकेट एग्जामिनेशन के लिए मान्यता-प्राप्त हैं:—

- (१) ला मार्टोनियर कालेज, लखनऊ।
- (२) लोरेटो कन्वेंट, लखनऊ।
- (३) सेंट फ़ॉसिस हाई स्कूल, लखनऊ।
- (४) सेंट एरनीज लोरेटो हाई स्कूल, लखनऊ।
- (५) ला मार्टोनियर गर्ल्स हाई स्कूल, लखनऊ।

१० . श्री मोतीलाल श्रवस्थी--क्या यह सही। कि उपत संस्थाप्रों में राष्ट्रीय गाव श्रववा बन्दे मा वस्मु गान कभी नहीं होता?

श्री दीनदयाल शास्त्री-- जी नहीं।

श्री मोती नाल अवस्थी---इन गर्ना शासंस्थाओं को सरकार द्वारा कितनी आवर्ष स्रोर कितना अन्तर के सहायना या अन्यान मिलत है ?

श्री कम नापति त्रिपाठी --नोटिंग चाहिए। सीविधान के श्रन्सार इन ऐंग्लो-इंडियन सरवाश्रों के 1ए यन दान विश्व तोर स विषय जाता रहा है। अब वह गारन्टी समाप्त हो रही है। श्राम की बान भारत सरकार के विचाराधीन है।

श्री सोतीलाल श्रवस्थी - क्यायह नहीं है कि उन परवामों हे वाविक उत्सवों ने राष्ट्रीय क्षण गान व सन्दे मानरम गान नहीं होते हैं

श्री कमलापित त्रिपाठी -- नाहतीय विवस मनाये जाते हैं। श्रव विन प्रतिकि में का होता है। इसकी पैने पास सूतना नहीं है। जिस्त उनक यहां होई बखी नहीं है। श्राम बच्दी होनी ना समल्याहों में राहतीय गान न बच्चे मानरम व न गान, लेंगिन वेगाते हैं।

# चक्की भसाडोही के कियानों की अधिकारियों के विगद्ध शिकायते

११ - श्री रामसुन्दर पांडिय - क्या न्याय मन्त्री हेर्निया निन क योजकारियों की कवित्र क्यादी तथी के सम्बन्ध मे ११ -६ -५६ के तारांकित प्रकृत सम्या ११३ के उसर के कम में बताने की कथा करता कि जिलाधीश, आजमगढ़ के द नवाई सन १६५६ के प्रयक्त उत्तर जिलाधीश वेखांत्या ने क्या विया है ?

श्री महावीरप्रसाद शक्त - सूचना संतरन है।

(बीपाये नहवी कि यामें पुरुष १०३५ पर )

११५० की रामसुन्दर परिवेद -- | १० म्रप्रेल. १६५० के लिए स्वर्गत किया गया।

# चक्को भूमाद्रोही और वैवरिया का सीमा विवाद

११३ - श्री रामसृत्वर पांडेय - लया साम मन्त्री बतान की । पा करेगे कि चक्की भूताडोही, जिना ग्राजमगढ़, में वर्शन्या के गीमा विवाद सम्बन्धी निषदार का श्रन्तिम हल सरकार द्वारा क्या निषदार का गया है तथा यह कार्यान्यित कम होगा?

श्री सहायीरप्रसाद शुक्ल - जक्की भूताकारी, किया श्राप्तसगढ़ से दंविष्या के सीमा विवाद सम्बन्धा कि उदार का हुन सरकार द्वारा यह निकाला गा। कि विवाद प्रस्त भूमि में पैमाइश तथा श्राभिलेल कियाये की जायो। ये कियाये की जा रही है। श्राधा है कि चार-श्र सहीतों में यह कार्य समाप्त हो जायगा, जिसके उपरांत उक्त क्षेत्र में वांगों जिलों की सही-सही सीमा शात हो जायेगी तथा इस सम्बन्ध में श्राक्षश्रक शासनावश प्रांवत किये जायेगी।

श्री रामसुन्दर पांजेय-प्या यह सही है कि यह विवाद तीन-भार यह में चल रहा है और सरकार की धोर से जो पेमाइक घोर प्रभिलेख तथार करन के श्रावंश दिय गये थे उनकी धाजमगढ़ जिले की तरफ से बन्द कर विया गया है?

श्री महाबीरप्रसाद शुक्ल-जी नहीं। पेमाइज का काम जानी है। हो सकता है कि जिले के श्राधकारी कुछ प्रस्य प्रावहयक कामों में लगे हुये हों, इसलिए कुछ विन के लिए स्थानित कर विया गया हो।

प्रश्नोत्तर १५१

श्री रामसुन्दर पांडेय—क्या माननीय मन्त्री जी इस बात की जानकारी हासिल करेंगे कि श्राजमगढ़ जिले की श्रोर स जो सर्वे श्रमीन मुकर्रर थे उन से देवरिया जिले के किसानों ने कागजात श्रीर सामान छीन लिया? श्राजमगढ़ जिले के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने बार-बार लिखा लेकिन वे किसान उस काम को करने नहीं दे रहे है?

श्री हुकुर्मासह विसेन—इसका हम पता लगायेगे।

श्री उग्रसेन—जो जांच देवरिया के कलेक्टर श्रीर गोरखपुर के किन्द्रनर के समक्ष हुई श्रीर रेवेन्यू बोर्ड के सामने श्रायी, सरकार ने उस पर कोई श्रन्तिम निर्णय क्यों नहीं लिया जिसका नतीजा यह है कि श्राजमगढ़ श्रीर देवरिया के किसानों मे भोषण विवाद है ?

श्री हुकुर्मासह विसेन—देवरिया के कलेक्टर को ग्रादेश दे दिये गये है कि वे जांच-पड़ताल करें और रिकार्ड ग्रापरेशन्स कराये जायं। यह सब कराया जा रहा है।

### इटावा जिले की प्रदर्शनी पर व्यय

\*१४--श्री भजनलाल(जिला इटावा)--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि उसके द्वारा जिला इटावा की प्रदर्शनी में सन् १६५६ में कुल कितना धन व्यय किया गया है?

श्री रामस्वरूप यादव--जिला इटावा की प्रदर्शनी में सरकार द्वारा कोई घन व्यय नहीं किया गया।

\*१५—श्री भजनलाल—क्या सरकार यह भी बताने की कृपा करेगी कि इस प्रदर्शनी से सरकार को कितना घन प्राप्त हुआ है ?

श्री रामस्वरूप यादव--इस प्रदर्शनी से सरकार को कोई धन प्राप्त नहीं हुआ।

श्री भजनलाल—क्या माननीय मन्त्री जी यह बतायेंगे कि उस प्रदर्शनी में संगीत, नृत्यकला, ग्रातिशबाजी, बिजली की रोशनी ग्रीर ग्रधिकारियों के प्रबन्ध पर जो रुपया खर्च किया जाता है, क्या वह किसी सेठ की तिजोशी से निकाल कर किया जाता है? यह खर्च ग्राबिर कहां से ग्राता है?

श्री रामस्वरूप यादव—इस प्रदर्शनी की एक कमेटी है। वह उस प्रदर्शनी में होने वाली ग्रामदनी से खर्च करती है। यह प्रदर्शनी की कमेटी कुछ टी० बी० ग्रस्पताल श्रादि को दान में भी देती है।

श्री गोविन्दिंसह विष्ट—क्या सरकार बतायेगी कि उस कमेटी को सरकार की तरफ से कोई ग्रनुदान दिया जाता है?

श्री रामस्वरूप यादव--कमेटी को सरकार कोई श्रनुदान नहीं देती।

उर्सला हास्पिटल, कानपुर में नेत्र चिकित्सा सम्बन्धी यन्त्रों की कसी

\*१६—श्री मुवनेशभूषण शर्मा—क्या सरकार यह बतलाने की कृपा करेगी कि कानपुर के उर्सला हास्पिटल के मेडिकल कालेज, कानपुर, के ग्रधीन जाने के बाद ग्रब कितने मरीजों को वारपाइयां उर्सला हास्पिटल के सिविल सर्जन के ग्रधीन है ग्रौर कितनी मेडिकल कालेज के प्रिंसिपल के ग्रधीन?

श्री बलदेवींसह श्रार्य—७५ सिविल सर्जन के स्रघीन हैं ग्रौर १४१ प्रिसिपल, गणेश शंकर विद्यार्थी स्मारक चिकित्सा महाविद्यालय, कानपुर, के श्रघीन हैं। \*१७—-श्री भुवनेदाभूषण दार्मा—क्या सरकार यह बनाने की कृपा करेगी कि उसेंस हास्पिटल, कानपुर, जब से मेडिकल कालेज, कानपुर, के श्राधीन हुन्ना है तब से श्रांस बनाने के झीजार जो उसेंना हास्पिटल के ये वह श्रांख के डाक्टर के पास नहीं है थार जो मरीज श्रांस बनवात है उनके लिए डाक्टर घर से श्रीजार ले जाता है ?

श्री बलवेबसिह श्रार्य—मरीजों की सारपाइयों के सहवार के श्रनुसार श्रांस बताने के श्रीजार भी बांट विये गये थे; २३ श्रीजार कालज की तरफ श्रीर १३ उसेंना श्रस्ताल की तरफ। मेडिकल कालेज के कोई डाक्टर श्रापरेशन के श्रीजार घर से नहीं ले जाते हैं परसु उसेला श्रस्यताल के श्रांत्यों के डाक्टर जो श्रानरेरी है, श्राप बनाने क यपने निजी श्रीजार कतिका लाये हैं क्योंकि वहां पर पूरे श्रीजार नहीं है।

श्री भुवनेशभूषण शर्मा—क्या सरकार बनलान ही छुना हरेगी कि चूंकि ब्रस्पताल में ब्रांग्व बनान है निय ब्रोजार नहीं है इस्तिये उनहीं ब्रांग्न पास स नाना पहता है तो क्या सरकार इस तरह की बीध्र व्यवस्था करेगी कि ब्रांग बनान गांग जो जो तरहे वे जल्द से जल्द बहां पहुंच जायं?

श्री हुकुमसिंह विसेन-- जी हा, कर रहे हा

श्री रामस्वरूप वर्मा--माननीय सर्वा जी न कन्तामः कि ह्यात कजी ह्यानरेरी इत्तरह वे श्राने स्रोजार नात है, वो क्या ये कतनान की कृषा करण कि स्राण के कितने स्नानरेरी इत्तरक उर्वना सरपनान में श्राप है ?

श्री हुकुमसिंह विसेन--इस बवत तो हम एक ही याय है।

श्री मोतीलाल श्रवस्थी -- क्या मानतीय मंत्री बी बतनातं ही क्षम करंगे कि उसी धरनताल में एक श्री बनवारीलाल पाइंग, रचेदालिस्ट भी जात है श्रीर उनके स्पेशलिस्ट होने की बजह में ही उनके पास अधिक मरीज जातं है, तो उनके भी श्रपने निजी श्रीजारका ही इस्तेमाल करना पश्चा है, तभी वे मरीजों के साथ न्याय कर पान है?

श्री हुकुमसिह विसेत--- उर्म ना धरणताल मा जितने धार रे। धावटर काम करते हैं वे सिवित शर्मन के मानश्रत काम करते हैं स्रोर व धपन शोजार का ही इस्तेमाल करते हैं

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी---वे प्रानरेरी प्रापटर नहीं 🖟 ?

श्री हुकुमसिंह विसेन-इसही मुझे कोई जानकारं। यहाँ है।

श्री मोतीलाल श्रवस्थी--- इसकी जांच करा लग?

श्री हुकुमसिंह विसेन--इसकी कोई जरूरत नरी मान्स होती।

भी भुवनेशभूषण शर्मा—क्या सरकार बन्दाने की कृषा करेगी कि उर्मला ग्रस्पताल में भी कोई ग्रानरेरी डाक्टर ग्रांख बनाने के लिये ग्राता है ?

श्री हुकुमसिह विसेन-इगर्से लिये मूचना ही आयङ्गकता है।

सुला पीड़िल क्षेत्रों में छात्रों की फीस माफ करने की प्रार्थना

\*१८--श्री मुलिसनायराय-स्या सरकार जनानं का कृत। फर्ना कि सूवा पीड़ित स्रोत्र के जिन्हों में विद्यापितों की फीस माकी या सहायता की कोई योजना सरकार के विचास वीस है

भी महाबीरप्रसाद शुक्ल-जी नहीं।

\*१६--श्री मुक्तिनाथ राय--यदि हां, तो क्या?

श्री महावीरप्रसाद शुक्ल--प्रश्न नहीं उठता।

श्री मुक्तिनाथराय -- दया मानतीय मंत्री जी इस पर पुनर्विचार करने की क्रुवा करेंगे ?

श्री हुकुमसिंह विसेन--जी नहीं। जरूरत नहीं समझते।

श्री उपाध्यक्ष--में इस बात को निवेदन कर दूं कि माननीय सदन मे शान्ति नहीं है। श्रव क्या उपाय किया जाय मैं माननीय सदस्यों से पूछना चाहता हूं। कृपया शान्ति स्थापित करें, नहीं तो सदन का कान चलना श्रसम्भव हो जायगा।

श्री राजनारायण—मैं उपाय बतलाऊं ? मुझे उपाय बतलाने का कब ग्रवसर दिया जायगा ?

श्री उपाध्यक्ष--ग्राप मेरे चेम्बर में ग्राकर मिल ले।

श्री रामसुन्दर पांडेय—क्या माननीय मंत्री जी ग्रभी हाल में श्रोले ग्रौर वर्षा से हुई क्षिति को ध्यान में रखते हुए गरीब छात्रों की फीस माफी के सम्बन्ध में कुछ विचार कर रहे हैं ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--फिलहाल तो कोई जरूरत मालूम नहीं होती।

\*२०-२२--श्री स्रमरनाथ(जिला गोरखपुर)--[२२ ग्रप्रैल, १६६० के लिये स्थिगत किये गये।]

### इटावा में कम्युनिस्टों की सभा में पथराव

\*२३—श्री भजनलाल—क्या गृह मंत्री यह बताने की कुषा करेंगे कि क्या इटावा शहर में दिनांक २७-१२-५६ को कम्युनिस्ट पार्टी की ग्रोर से सार्वजनिक सभा हुई थी जिसमें पथराव हुग्रा ग्रौर मजबूर होकर जिलाधीश ने धारा १४४ लगाई?

श्री रामस्वरूप यादव--जी हां।

श्री भजनलाल—क्या माननीय मंत्री महोदय बतलाने की कृषा करेगे कि उस सभा में पथराव होने का कारण क्या था?

श्री रामस्वरूप यादव—इटावा नगर की स्थानीय कम्युनिस्ट पार्टी ने भारत चीन सीमा समस्या के सम्बन्ध में ग्रयनी पार्टी नीति के स्पष्टीकरण हेतु श्री बलराम दुबे की ग्रध्यक्षता में २७ दिसम्बर, १६५६ को नगरपालिका कार्यालय में एक सार्वजनिक सभा का ग्रायोजन किया था। श्री शंकर दयाल तिवारी, लखनऊ के उस सभा को सम्बोधित करने वाले थे। जनसंघ के कुछ सज्जन वहां विघ्न डालने के लिये पहुंचे ग्रौर उन्होंने विघ्न डालने का प्रयत्न किया जिसके फलस्वरूप दोनों तरफ से पथराव हुए। इतने में पुलिस वहां पहुंच गयी ग्रौर उसने शान्ति स्थापित की ग्रौर दफा १४४ लागू कर दी गयी।

श्री भुवनेशभूषण शर्मी—क्या सरकार बतलाने की कृपा करेगी, जैसा माननीय मंत्री जी ने कहा कि जनसंघ के व्यक्तियों ने विघ्न डालने के लिये पत्थर चलाया, तो क्या यह जांच करायेंगे कि जनसंघ के व्यक्तियों ने पत्थर चलाया या पहले कम्युनिस्ट पार्टी के व्यक्तियों ने पत्थर चलाया और उसका जवाब जनसंघ की तरफ से नहीं बल्कि जनता की तरफ से दिया गया ?

श्री रामस्वरूप यादव-मैंने कहा कि दोनों तरफ से पत्थर चलाये गये।

श्री रामस्वरूप वर्मा—क्या माननीय मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि क्या कम्युनिस्ट पार्टी को पहले से ही सूचनाथी कि पथराव होगा जिससे उन्होंने पहले से ही पुलिस को सूचना दे दी थी या बाद में पुलिस को सूचना हुई ?

श्री रामस्वरूप यादव - गांत्स हो यह तानकरी में कि सम्भव ह कि वहां कोई भगड़ा हो जाय, उपर्तात राण । स्वान्त में विकार राजवनाव ही जानहारी नहीं थी।

श्र्वी झारखंडेराथ - स्तामा कथानी ता वातनी करा वरणकि इस झगड़े में कितने स्रादकी बावर हुर क्षार किरा का भारपात्र कर के कर राजका स्वर्ध

श्री कमलापति त्रिपाठी-- यांनास्य स तोई अधानतः । तथा पश्चित । काफी सतर्कता अस्ती।

श्री सजनलाल - स्थास का का काल गांक कार्यालर पटिक के देवें तीओं की यह साज्य साथित का पर रहा। जिला प्रारंध करते जाग आहे दुर्वतील के पर्यक्तिक विशेषि हुई सिची की प्रतियासा गांव कालता के अवस्थ के तिविद

श्री भुवनेशभूषण शर्मा - १३१ राजकार बतावर्गा कि वहा के एक कम्मीनस्ट पार्टी के नेता ने भारत दिश्यो भाषण बना शरू किया या पोर करा वा कि भारत ही तिलंगाता बना देगे श्रीर उस पर जन साविषका श्रीर प्यराज हुआ?

श्री कमलापति त्रिपाठी -- नसा धना मान्त हथा कि विश्वास बनादा, तो तिलगाना भी तो भारत का ही अग हा बार्स उन्होंन नया भाषण विधा जासी रिक्सिंग नहीं हुई हा पुलिस सो जब केंग न व जब पहुंची धार उसके पहुंचन पर भीष्ट्र नितर नितर ही गई, उसके बाद सुध्य करने की जकरत नहीं पड़ों।

# हाई स्कूल बोर्ड य इन्टरमीडिएट की परीक्षा में भसफलता सम्बन्धी ग्रावेदन पत्र

"२८—श्री मोतीलाल अवस्थी—-वया गृह मर्चा यह बतान की क्रुया करेंगे कि बोर्ड साफ हाई रक्त पुरुद रूप्यमी शिरू ए प्रकान, यूज की . इताहाशाव द्वारा १९४६ में ली गई परीक्षाओं के निस्तितिकत विवयों में कितने विद्यार्थी उत्तीर्थ हुए, उनका प्रतिशत क्या था—-हाई रक्षत परीक्षा

- (भ) विषय---पंग्रेजी प्रथम व द्वितीय प्रवन पत्र (पृथक्-पृथक्)।
- (व) विवय-वायलोजी, सामाध्य विज्ञान प्रयम वद्गितीय प्रध्न पत्र (पृथव-पृथव्)
- (स) विषय---गणित प्रयम् य द्वितीय प्रदत्त गत्र (पृथक्-पृथक्)। संकेश्व इस्टरमीडित्ट परीक्षा
- (व) विषय--गंग्रेजी प्रथम, हितीय च तृतीय प्रदत्त-पत्र (पृथ ह-पृथक्) ।

भी बीनवयालु शास्त्री---सूचना संलग्न तालिका मंत्री गई ह। (बेलिये नत्थी 'स' भागे पृष्ठ १०३६ पर) श्री मोतीलाल श्रवस्थी—हाई स्कूल परीक्षा सन् १९५६ में ग्रंग्रेजी प्रथम (ग्र) में ५६.२, (ब) में ५५.७ तथा द्वितीय में ४६-६ प्रतिशत ग्रीर जीव विज्ञान में ४८-६ तथा द्वितीय में ५७-३ प्रतिशत उत्तीर्ग परीक्षाियों की लंख्या को देखते हुये यह जो रेप्रेजेन्टेशन किया गया कि इन परीक्षकों ने पाठ्यक्रम के बाहर श्रनगंल प्रश्न किये है. उस पर क्या कार्यवाही सरकार ने की ?

श्री कमलापित त्रिपाठी--मुझे तो मालूम नहीं है कि कोई ऐसा रेप्रेजेन्टेशन श्राया हो । इसका सम्बन्ध इन्टर्नोडिएट बोर्ड से हैं । श्राया होगा तो वह बोर्ड के श्रध्यक्ष केपाम श्राया होगा । उन्होंने क्या कार्यवाही की इसकी भी सूचना मेरे पास नहीं हैं।

श्री मोतीलाल ग्रवस्यी—व्या सरकार प्रश्नकर्ता के प्रश्न को सूचना मानकर फिर से जांच करायेगी कि यदि वह रे श्रेजेन्टेशन बोर्ड के पास ग्राया था तो उस पर क्या कार्यवाही की गई?

श्री कमलापित त्रिपाठी — जी हां, पता लगा लूंगा लेकिन माननीय सदस्य फिर से प्रइन कर दें तो वह सब चीज सदन के सम्बुख भी द्या जायगी क्योंकि द्यापके प्रइन का सम्बन्ध इन्टरनीडियेट बोर्ड के दफ्तर से हैं, उसका वहां पता लगाना पड़ेगा, द्याप प्रइन कर देंगे तो पूरी तकसील मंगा लूंगा।

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी—क्या मंत्री जी इस ग्रोर घ्यान वेंगे कि इंटरमीडिएट परीक्षा में ग्रंग्रेज़ी द्वितीय का जो पद्य का प्रश्न पत्र होता है उसमें केवल ४२ फीसवी विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए हैं तथा हाई स्कून का परीक्षा-कत ४५ फीसवी ग्रीर उस ४५ फीमवी का भी ४२ फीसवी ग्रंग्रेज़ो द्वितीय पद्य पत्र में विद्यार्थी पात हो रहे हैं। इस प्रतिशत को ग्रगर देखा जाय तो १५ फीसवी विद्यार्थी हो सकन होते हैं। इतको वेंबते हुए क्या सरकार इंटरमीडिएट के द्वितीय पत्र के पद्य वाले प्रश्न पत्र के पाठ्यकर को पुत्रः बुक्स्त करने के लिये विचार कर रही है ग्रथवा बोर्ड के पास कुछ श्रपनी सम्मति भेज रही है?

श्री कमलापित त्रिपाठी—ने समझता हुं हमारे श्रादरणीय मोतीलाल जा तो स्वयं श्रध्यायक हैं श्रीर लारो इंटरमीडिएट बोर्ड को विकां तथा उसके नियमों से परिचित हैं। वहां का पाठ्यक्रत्र भी बोर्ड ही बनाता है, पुस्तक भी इंटरमीडिएट बोर्ड चुनता है।

रह गयी फेन होने की बात। जो धांकड़े हमारे पास है उससे स्पष्ट है कि श्रंप्रेजी 'ब' दिनीय में जरूर ४२ परसेंट है। लेकिन श्रंप्रेजी 'श्र' प्रथम श्रीर 'श्र' दितीय में कनशः ४६.५ परसेंट श्रीर ६०.७२ परसेंट है श्रीर श्रंप्रेजी 'ब' प्रथम में ५४.४५ प्रतिशत श्रीर श्रंप्रेजी 'श्र,' 'ब' तनीय में ६६.६ परसेंट है। तो इस तरह से कुछ कम हो गया होगा।

(श्री उपाध्यक्ष द्वारा दूसरा प्रक्त लेने पर)

श्री मोतीलाल श्रवस्थी--श्रीमन्, इतनी मुश्किल के बाद तो यह प्रवन श्राया है श्रीर श्राप मुझे मौका नहीं दे रहे हैं। मैं चाहूंगा कि ग्रावश्यक प्रश्न करने के लिये मुझे मौका दें।

श्री उपाध्यक्ष--माननीय शिक्षा मंत्री ने कह तो दिया है कि श्राप दूसरा प्रश्न कर बीजियेगा। श्रव श्राप कृपया श्रपना स्थान ग्रहण करें।

\*२५-२७--श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी (जिला बस्ती)--[= श्रप्रैल, १६६० के लिखे स्थागत किये गये।]

### म्राजमगढ़ जिले में पुलिस बढ़ाने की मांग

\*२८—-श्री मुक्तिनाथराय—-क्या गृह मंत्री बनाने की कृपा करेंगे कि प्राणसाह के जिला श्रिकारियों ने इप वर्ष ग्रीर पहले भी यक करवे में एक छोटा पिलस लाइन जिले के प्रमुख स्थानों में पृत्तिम को चीकियों नया पृत्तिस को संख्या जिलों में बढ़ाने के निमित्त कोई सुप्राव सरकार के पास भेजा था े यिव हा, तो सरकार इस पर क्या कार्यवाही कर रही है?

श्री रामस्वरूप यावय--नो हां। इस सम्बन्ध में कुछ ग्रावश्यक सामग्री प्रधात पुलिस तिरोक्षक से मंगाई गई है।

श्री मुक्तिनाथराय-- क्या मंत्रो जी बतायेगे कि प्रकान पुलिस निरीक्षक ने क्या रिपोर्ट सरकार को बी हैं?

श्री रामस्वरूप यादव--यह मुक्ताव विया था कि गऊ करने का सब-विवीजन में परिवर्तन कर विया जाय; मऊ में एक खेंटो एजवं पितम लाइन की स्थापना तथा उसके लिये सदास्व पुण्तिस के श्री मान देही हैं है एक खेंटो कि पत्ति के प्राप्त की स्थापना तथा उसके लिये सदास्व पुण्तिस के श्री मान देही हैं है है है के को रहे बिलों के प्रवेश के प्रविवास के पान मुक्ति के प्रवेश के प्रवेश

जहां तक मऊ करवें में सब-ब्रिवी तन रवाधिन करने का प्रदन है, नियुक्ति विभाग उसण् विकार कर रहा है।

### शिक्षा एवं विलौना प्रवर्शनी, वाराणसी के लिए स्वीकृत बन

\*२६--श्री ऊवल (जिना वाराणारी)--एया सरकार बताने की कृपा करेगी कि प्रावेशिक शिक्षा एवं किनीना प्रक्षांत की जिनामांग एंग्नी बंगाली कालेज, वाराणसी में १० जनवरी, सन् १६६० में हो रहा है उसके जिने सरकार ने कितना रुपया विया है?

श्री बीनवयालु शास्त्री -- नगमग ३४,००० रुपया स्त्रीकृत किया है।

श्री ऊत्रल--श्रामंत्री जा बतायेंने कि जो लगभग ३५,००० तपत्रा वियागवाण यह सब त्यं हो गया या उसनें से कुछ वापस हो गया?

श्री उपाध्यक्ष-प्रभी तो धाप नृत हो कह रहे हैं कि हो रही है। लर्च हो गया या नहीं इसके बारे में लो धन्त में जथाब विधा जायगा। धाप दूसरा प्रश्न पृक्षिये।

श्री अवल-न्या मंत्रो जो बतायंगे कि जो ३४,००० दवया प्रवर्शनी को दिया गया पा बह सब खर्च ही गया ?

श्री वीनवयालु शास्त्री--जी हां, सब वर्ष हो गया।

### ताड़ी व अनेई बाजारों में कन्या पाठशाला न होना

\*३०--श्री अवल--क्या सरकार यताने की कृया करेगी कि वह ताड़ी बाजार व अनेर्य बाजार, परगता पन्द्रह, जिना बाराणमी में कन्या प्राइमरी पाठशाना खोलने जा रही है। यह कृति का तक?

भी वीनवयालु जास्त्री--प्रभी निष्णय नहीं हैं।

भी अवल--मंत्री जी बतायेंगे कि ताड़ी और मनेई से क मील के एरिया में कोई कणा बाठकाला नहीं है। वहां पर कन्या पाठकाला खोलने की क्रूपा करेंगे भी कमलापित त्रिपाठी—-प्राइमरी की कन्या पाठशालाये तो बहुत कम है। प्राइमरी स्तर तक के बच्चे ग्रीर बिच्चियां एक स्कूल ही में पढ़ते हैं। तो प्राइमरी स्कूल हैं इन जगहों पर। ग्रापका प्रश्न हैं कि वहां छोटी-छाटी बिच्चियों के लिये ग्रतग से प्राइमरी स्कूल खोला जाय वह सरकार के विवासधीन है। ग्रागले वर्शों में वेजा जायगा।

### वाराणसी अन्तरिम जिला परिषद् के अध्यापकों का शेष वेतन

\*३१--श्री ऊदल--क्या सरकार को इस बात का पता है कि वाराण की अन्तरिम जिला परिषद् के अध्यापकों को ४ महीने से तनस्वाह नहीं मिली? यदि हां, तो इसका क्या कारण है ? क्या सरकार बकाया सब तनस्वाह देने की व्यवस्था कर रही है ?

श्री दीनदयालु शास्त्री—जी हां, परिषद् द्वारा ग्रापना पूरा ग्रंशदान न दिए जाने के कारण कुछ महीनों का वेतन ग्रावशेय रह गया था। सब बकाया वेतन दिए जाने के लिए परिषद् को जो शासकीय ग्राप्तान की चतुर्थ किस्त मिलनी थी उसकी स्वीकृति मार्च ७, १६६० को दी जा चुकी है।

श्री ऊदल—क्या माननीय शिक्षा मंत्री इय बात को ध्यान में रखते हुए इस पर विचार करने की कृपा करेंगे कि बमल में जौतपुर श्रन्तरिभ जिला परिपद् है जो हर महीने श्रध्यापकों को तनख्वाह दे देती है श्रीर वाराणतों में चार-चार महीने तनख्वाह वकाया रह जाती है, तो क्या वे कोई रास्ता निकालने की कोशिश करेंगे कि हर महीने श्रध्यापकों की तनख्वाह मिल जाय ?

श्री दीनदयालु शास्त्री—ऐसा नहीं है कि वाराणसी में चार महीने तनस्वाह नहीं मिली। नवम्बर तक की मिल चुको थी। दिसम्बर, जनवरी श्रीर फरवरी की मिलना बाकी थी क्योंकि वहां की जिला परिषद् ने ठीक ढंग से हिसाब नहीं नेजा था। फिर भी श्रपनी श्रोर से उस परिषद् को रुपया वे दिया ताकि शिक्षकों को तकलीफ नहो।

### बरेली में पटाखे से महिला का घायल होना

\*३२--कुंवर श्रीपालसिंह (जिला जौनपुर)--क्या सरकार कृपया बतायेगी कि बरेली शहर के मुहल्ला शाहाबाद में १-२-६० की रात को जो बम फटा श्रीर जिसनें एक महिला बुरी तरह घायल हुई उस मानले में श्रव तक क्या कार्यवाही हुई?

श्री कमलापित त्रिपाठी—दिनांक १-२-६० की रात को बम फटने की कोई घटना नहीं हुई। दिनांक २६-१-६० को एक ग्रातिशबाजी के पटाखे से एक महिला घायल हुई थी जो बरेली ग्रस्पताल में भर्ती हुई ग्रौर इलाज के बाद डिसचार्ज हुई।

### गोरखपुर जिले की टाउन एरियाओं में जमींदारी समाप्त करने का विचार

\*३३--श्री मदन पांडेय--क्या सरकार कृपया बतायेगी कि राज्य के शहरी क्षेत्रों की जमींदारी थ्रब तक किन-किन टाउन एरियाग्रों, म्युनिसिपल बोडों तथा कारपोरेशनों में समाप्त हो चुकी है तथा वह ग्रन्य शहरी क्षेत्रों में कब तक पूर्णतया समाप्त हो जायगी?

श्री हुकुर्मासह विसेन—ग्रभी तक किसी नागर क्षेत्र में जमींदारी समाप्त नहीं हुई है। प्रदेश में नागर क्षेत्रों की जमींदारी के पूर्णतया समाप्त होने की कोई निश्चित तिथि बताना भी सम्भव नहीं है, क्योंकि ग्रभी इस सम्बन्ध में प्रारम्भिक कार्यवाही की जा रही है।

\*३४--श्री मदन पांडेय--क्या सरकार कृपया यह बतायेगी कि सन् १६६०-६१ में गोरखपुर जिले की कौन-कौन सी टाउन एरियाओं में जमींदारी समाप्त हो रही है ? भी तुकुर्नासह वियोत—- किताराने के कार्याक कर कर परन्तु गोरखपुर जितेका बदन त्यान, नी कवा भी न्याक्षा नाजा दृष्ट्या नाय के किनी परिवासी समाप्त होने की प्राप्त के

### थानो के त्यानाची कींदयो हारा करिया भानमत्त्वा

. ४——कुष्यर श्रीपानिष्ट्- स्था रशार स्थारणाताः । तदारी, १९५६ से स्थर ७ फरारा, १६ ० तर प्रांत र शिति हो। सहार । ११० वन्य व्यक्तियो हे चात्सहत्या का क्वा प्रयास विकास स्थापितन संसप्तार

श्री स्वातायांत्र नियाली—— हर भारति च रिते सह । राजात में भात्महत्या वरने का प्रवास नहां रिया गया ।

भ्राप्त-कृत्वर श्रीपार्जास्य--[१० अत्र १८ १ व व्यापत क्या गया।] रक्जपरना से अस्पुरुथता संस्थन ही कामण

१३७--श्री भीरवातार (१। त उत्तर) -- शा तराः जाताः त कपा करेणे कि विनाय - ४ जनवर्ग सन १६५० यह प्रांश रजनराः वाता तताताः, जिला उन्नव में श्रास्त्रयता विवारण के सम्बन्ध में यापीतात्, वर्गताः वे एत स्वतं विवार प्रवेश सरकार र एक उपमानां भा सम्मिति हुए १, विसा विवादार्ग मताः न गाः गई? यदि हो, तो उस साम र म स्या राख्यारो श्रामन म लाई गई?

श्री रुमनापति त्रिपाठी—सभा म ऐसा गाई पान्ता न । हु । बा. स स्था की सकाई क सम्बन्ध म झागडा हुआ और एक हवाई फायर किया गया। पुरक्ष्मा ।।।। तोकर जाच ही पती है।

#### जिला रायबरेली में चोरिया व हकेतिया

\*३६--श्री गुण्तारसिह (कि स रायवरेका)--।पा गृश्यन का ह बाताने की कृपा करमें कि जनवर सन् १६४६ स १० फरारा सन् १६५० तक जनवा रायवरेको शहर में कितनी कोरियो व कर्मनियां हुई।

श्री कमलापति त्रिपाठी---इन धर्याध स 🕠 चारियां धीर 🕫 इकेती हुई।

\*३६--श्री कल्याणचन्व मोहिले--[= ग्रप्रल, १६५० वे िय स्थिगत किया गया।]

### नये पुलिस थानो की स्थापना

\*४०--श्री कल्याणचन्व मोहिले--प्या सरकार क्याय यतायेगी कि प्रदेश में १६४६-६० में भव तक कितने याने नये कायम किये गये भीर किन-किन जिली में ?

श्री कमलापति त्रिपाठी--इस प्रवेश में १६५६-५० में बार पाने नये कायम किये गर्ये। उनमें से वो नेनीलाल जिले में तथा रामपुर और झासी जिले भ एक-एक पाना स्थापित किया गया।

पब्लिक सर्विस कमीशन द्वारा भयोग्य घोषित जिला सुचना भविकारी

\*४१--श्री सुवासाप्रसाव गोस्वामी--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि धक्तूबर, नवम्बर भीर विसम्बर, १९४९ में जिला सुबना खिशकारियों के पत्रों के बुनावीं

के लिये प्रवेश के पब्लिक सर्वित कमीशन ने उम्मीदवारों के साक्षात्कार के लिये बुलाया था, उनमें कितने मौजूदा जिला सूचना श्रविकारी (जो कान कर रहे ह) साक्षात्कार को बुलाये गये थे श्रौर उनमें से कितने कमीशन द्वारा श्रयोग्य योषित किये गये है ?

\*४२—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि पब्लिक स्विष्ट कमीशन द्वारा श्रयोग्य घोषित किये गये राज्य के मौजूदा सूचना श्रविकारी कितने दिनों से सूचना विभाग में काम कर रहे हैं, श्रौर उनये से कितने राजनीतिक पीड़ित हें?

श्री कमलापित त्रिपाठी--- त्रायोग की सिकारिशे क्रारी शासन के विचाराधीन है। निर्णय हो जाने पर ही सम्पूर्ण सुचना दी जा सकेगी।

\*४३——श्री सुदामात्रसाद गोस्वामी——क्या शरकार यह बताने की कृपा करेगी कि क्या पब्लिक सर्विस कमीशन द्वारा किये गये साक्षात्कार के समय सूचना विभाग का भी कोई ग्रविकारी उक्त कमीशन में बैठा था?

श्री कमलापति त्रिपाठी--जी हां। श्रायोग की सहायतार्थं सूचना संचालक बैठे थे।

गोरखपुर जिले में फलदार श्राम के वृक्षों का काटा जाना

\*४४--श्री श्रब्दुल रऊफ लारी (जिला गोरखपुर)--न्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि गोरखपुर जिले में कितने फलदार श्रामों के पेड़ सरकारी परिमटों द्वारा १ श्रप्रैल, १६५७ से श्राज तक काटे गये है?

श्री हुकुमसिंह विसेन-कोई भी नहीं।

\*४५--श्री अब्दुल रऊफ लारी--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि उपरोक्त समय में कितने फलदार पेड़ों के बाग बिना सरकारी श्राज्ञाओं के काटे गये?

श्री हुकुमिंसह विसेत--उपरोक्त समय में द फलदार पेड़ों के बागों में कुछ पेड़ों को बिना सरकारी श्राज्ञा के काटे जाने की सूचना मिली है।

स्वास्थ्य विभाग की राजाज्ञात्रों को हिन्दी में भेजने की प्रार्थना

\*४६—श्री गौरीराम गुप्त (जिला गोरखपुर)—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि सन् १९४८—६६ तथा १९४९—६० में ग्रगस्त तक सरकार ने जो जी० ग्रो० स्वास्थ्य विभाग के सम्बन्धित जिला कार्यालयों में भेजे वह कितने फीसदी ग्रंग्रेजी में तथा कितने फीसदी हिन्दी में थे?

श्री हुकुर्मासह विसेन—ग्रामतौर से सरकार से जी० ग्रो० स्वास्थ्य विभाग के जिला कार्यालयों में नहीं भेजे जाते हैं।

\*४७--श्री गौरीराम गुप्त--क्या यह सही है कि जो जी० भ्रो० भेजा जाता है वह भ्रंग्रेजी में ही सरकार भेजती है? इसका कारण क्या है?

श्री हुकुमसिंह विसेन---यह प्रक्त नहीं उठता।

\*४५--श्री गौरीराम गुप्त-क्या सरकार तत्काल जी० घो० हिन्दी में भेजने की कूपा करेगी?

श्री हुकुमसिंह विसेन-धह प्रश्न नहीं उठता ।

\*४३-५१--श्री हरस्यालसिंह--[१४ श्रमेत, १८६० से लिये स्विगत किये गर्ये।]

# सोलजर्स योज के कर्मचारियों के स्थायीकरण से सम्बन्धित आवेश

\*४२---श्री प्रतापिंगह—स्या न्याय मन्त्री यह बतान की कृपा करेगे कि माल विभाग क सिचय ने जनवरी २७, १८०० की सेकेटरी यूठ पीठ सीचार में तोई तो एक पत्र लिखा, जिसमें सील वर्ष बोई के कर्मचारियों को सरकार द्वारा जो स्थाय करण का ब्रादेश कुछ माह पूर्व सरकार द्वारा दिया गया था उसको लागू करने को कत्र ? यह हो, तो क्या उपरोक्त ब्रादेश का पालन सेकेटरी, सोलजर्भ बोई ने कर लिया ? यह नहीं, तो क्यों ?

श्री हकुमसिंह विसेन--जी हो। सामधीय ब्रावेशी पा पाला कर दिया गया है।
\*१३-५४--श्री गर्नेशीलाल चौधरी (जिला सीतापुर)--|= प्रवेल, १६६० के
लिये स्थानत किये गये।

सीतापर में प्लिस द्वारा ठाइडेल कर्मवारियों के पीटे जाने की जांच

\*४५--श्री मूलचन्द (जिला सीतापुर)--त्या गृह मन्दी वताने की कृपा करेंगे कि क्या जिला सीतापुर म लालबाग चौराते पर को इसगड़ा ४--- ० ६० को पावर हाउस के कर्मचारियों ने पुलिस के इंस्पैक्टर तथा कांस्टेबिलों से हुआ ? यदि हा, तो कितने ब्रादिमियों को पुलिस द्वारा पीटे जाने की शिकायत सरकार का भिन्त ह :

श्री कमत्नापति त्रिपाठी——४-२-६० को शगश तालवाग चौराह पर नहीं बिक लोहा मन्द्रों क भौरा : पर एक ट्रेंकिक का रहें बिल श्रीर थुद्ध हाइन्डेन थिभाग के कर्मचारियों में हुआ। इस शगश्रे के परचात् पुलिस चौकी थामसनगंज पर तीन आदिमयों के पीटे जाने शे सुचना प्राप्त हुई है।

\*४ २-- श्री सृत्वचन्य--श्या सरकार बास्त को हुश करें। कि उस्त मामले में इस्त तक क्या कार्यक्की ही जकी है और इसक्त के समय कौत-कौत सब-१० पाटर, हेड-कांस्टेबिल, कॉस्टबिल मो के पर मी तब थे, जिस र कितन दोगी ठ, राष्ट्रे क्या यार सक का कारण क्या था?

श्री कमलापति त्रिपाठी-- एक में तरहा द्वार मामता का नाच कर रहे है। दो कांस्टेबिलीं की मुझलान कर विद्या गया है और एक सथ-उत्पेतरर का रवा वान्तरिक गता दिया गया है। हाइडेल विभाग के कर्मवारियों ने दी काश्रादेखियों द्वारा पीट जाने की दिक्कायत निरावाई है। मैजिस्ट्रेट की रिपोर्ट झाने पर दोवियों और क्षार के कारण का पता निर्माट

\*१७-५०-भी प्रतापसिह तथा श्री बंशीधर शुक्ल (जिना लीरी)--[२८ भ्रत्रम, १६६० को निये प्रश्न १५-१६ को भ्रत्नतंत्र स्थानाम्तरित विये गये।

### सर्वे श्रमीनों की नियक्ति

\*४६--श्री द्वारिकाश्रसाव (जिना फर्र पायात)--वया सरकार बताने की छुपा करेगी कि कानुनयी ट्रेनिय म्कूल, स्पर्धाई से १६५४ से १६५५ तक ट्रानिय पाये हुये सर्वे श्रमील से कितने व्यक्तियां की ट्रेनिय के बाव सर्वे अमीनों के पर्वा पर नियुक्त किया गया?

श्री हुकुम सिंहविसेन--- ५४ व्यक्तियों की।

\*६०--श्री कोतवालसिंह भवौरिया (जिला कर्तवावाय)---[१४ ग्रवेल, १६६० के लिये स्थागित किया गया।]

#### सदर तथा छिबरामऊ तहसीलों में चकबन्दी

\*६१--श्री कोलवालसिंह भवौरिया--श्या न्याय मण्डी यह बताने की छुवा करेंगे कि फरेव्याबाव जिले की सबर तहसील में अकबत्बी के कार्य को प्रारम्भ हुये कितने विन हुये हैं भीर कितना कार्य हुआ है? श्री हुकुर्मीसह विसेन--फर्रवाबाद जिले की सदर तहसील में २४५ ग्रामों में चकबन्दी का कार्य ४ ग्रास्त, सन् १६५६ ई० की प्रारम्भ किया गया था। प्रगत्ति का विवरण सदन की मेज पर रख दिया गया है।

(देखिये नत्यी 'ग' श्रागे पुष्ठ १०३७ पर)

\*६२-श्री कोतवालिंसह भदौरिया-- क्या न्याय मन्त्री यह बताने की कृपा करेगे कि फर्श तावाद जिले की तहपील छित्ररामऊ में जहां चकबन्दी हो चुकी है, वहां की इस प्रकार की कोई शिकायत जिती है कि अधिकांश गांवों की खेतों की पूरी पैमाइश नहीं की गई है, जिससे अशान्ति व सगड़े होने की आशंका है? अगर हां, तो उस पर सरकार ने अब तक क्या कार्यन्वाही की है?

श्री हुकुर्मीसह विसेन—इस प्रकार का श्रारोप मरकार की नोटिस मे श्राया है। तहसीन छित्ररामऊ में चक्तवन्दी के श्रन्तर्गत लिये गये प्रायः सभी गांवों में नियमानुसार पैमाइक करा कर चहीं पर कब्जा दिलाया जा चुका है श्रीर इस सम्बन्ध में बाद मे भी काव्तकारों की जिकाय से श्राने पर यथावश्यकता मौके पर पैमाइज्ञ करायी गई है।

## मैनपुरी जिले में श्रनुसूचित जाति के लोगों को बन्दूक के लाइसेंस

\*६३—-श्री रामदीन (जिजा मैनपुरी)—क्या सरकार बताने की क्रुपा करेगी कि जिला मैनपुरी में सन् १९५६ के ब्रारम्भ से जनवरी, १९६० तक कितने बन्दूकों के लाइसेन्स दिये गर्मे हैं ब्रीर उनमें से कितने श्रृतुम्चित जातियों के व्यक्तियों को दिये गये हैं?

श्री कमलापति त्रिपाठी--उक्त भ्रवधि में कुल १,१३३ लाइसेन्स दिये गये जिनमें ३८ भ्रनुसूचित जातियों के हैं।

\*६४—श्री रामदीन—नया सरकार यह बताने की कुना करेगी कि सन् १९५६ के शुरू से जनवरी, १९६० तक बन्दू हों के लाइतेन्स के लिये कितने प्रार्थना-पत्र जिलाघीश, मैनपुरी के विचाराबीन थे और उनमें कितने श्रमुच्चित जातियों के थे?

श्री कमलापति त्रिपाठी—-३,७१५ प्रार्थना-पत्र विचाराघीत थे । चूंकि प्रार्थना-पत्र के रजिस्टर मे जातियां नहीं लिखी जातीं, श्रतएव यह बताना सम्भव नहीं कि उक्त प्रार्थना-पत्रों में कितने प्रार्थना-पत्र स्रनुसूचित जातियों के थे।

### सीतापुर जिले में कत्ल, डाके एवं चोरियां

\*६५--श्री गनेशीलाल चौधरी--क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि सीतापुर जिले में सन् १९५८ ई० में कितने कत्ल, डाके एवं चोरियां हुईं?

श्री कमलापित त्रिपाठी—सन् १९४८ ई० में सीतापुर जिले मे ४१ कत्ल, २८ डाके एवं ६१६ चोरियां हुईं।

### खीरी जिले में मालगुजारी में छट देने की प्रार्थना

\*६६—श्री जगन्नाथप्रसाद (जिला खोरी)—क्या यह सत्य है कि तहसील निघासन, जिला खोरी, में रबी की समस्त फसले पानी न बरसने के कारण नष्ट हो गई हैं?

श्री हुकुमसिंह विसेन--जी नहीं। कुछ ग्रामों मे फसल को कुछ हानि जरूर हुई है।

\*६७--श्री जगन्नाथप्रसाद--यि हां, तो क्या सरकार रवी की मालगुजारी माफ इरने पर विचार करेगी? श्री हुकुमसिंह विसेत - नरास्तः तेष एव प्रत्य की ने परकालग्राही में छूट हैने के प्रका पर निवास किया जाएगा।

\*६७— श्री जगसाथप्रसाद - - धारणा नृति कि छ खाइ ने पंगा नदी के कितारे के कहरी अंत्र संघ. पंचा का का का पासार प्रयोगी का का नष्ट हो गई है? पदि हो, तो क्या सरकार हा ने का राजी की साजवात री साफ गरने घर जिलार करेगी?

श्री हुकुम सिंह विसेत -- 11 तथा। अ श्रीका वर्ष भारती भी समस्त फसलें तथ नहां हुई। सुद्र पहारे के पृद्र तरे एई से के भारत के प्राता प्रशासिक मालगुलारी सहफ फरने के प्रात पर विचार कि स्वास्त्र ।

### शाहगंज की गम्ना हड़ताल में सोशिलिस्टों की गिरफ्तारी

१६६ -- श्री राजनारायण --- स्या सरकार नामन की कुरा करमी कि १६--१२-५६ को बाह्यक, जिला जानार में गक्षा एउवा । के सर्थ प्रिन्य न कृष्य नेकिलस्ट कार्यकर्तात्री को गिरक्षाण किया ना?

#### श्री कमलापति त्रिपाठी--ता हा ।

### इन्दरगढ़ थाना क्षेत्र में पुत्रा डाकू की गिरपतारी

. ७०० - -श्री द्वारिकाप्रसाव - - रशका कार वशके छ । परेगी कि जिला फर्स्साबाद, याना इन्द्रस्तद जर कार की. १००० में पूजा दास् से किया का क्या है विविह्यं, लो जस्त कार्त्व देवीतां स्वक्ति व्यक्तियों की जात ली है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी---नाता। उस्त भाग के शन्तमन १० फरवरी, १६६० की पुत्रा दाकृतिरपार किया नमा। उस्त अध्यान अध्याप के स्थापत्रों की जातें लीं।

१७१---श्वी द्वारिकाश्रसाय - न्या सरावर वना की इया करेगी कि प्राज्ञक को विरम्भार करने हैं निर्दे उसने किना इनाम राग भा दे

श्री कमलापनि त्रिवाठी व्यवस्थात की विजय तथा स्वति संस्थात ने सोई पुरस्कार नहीं राया था?

\*७२--श्री यमुनासिह--[११मानं, ११६० हे प्रियं प्रदेन ७६ के ब्रन्तर्गत स्थानान्तरित किया गया ।]

\*७३--श्री विश्रामराय--[पत्रवे पुषवार के लिए प्रश्ना ६४ के अन्तर्गत स्थानाः स्तरित किया गया ।]

#### नबीन चिकित्सालय खोलने की योजना

\*७४--श्री विश्वासराय--श्या न्याय मन्त्री कृतता बतायेने कि सन् १६६०-६१ में उत्तर प्रवेश में कितने निकित्सालय किल-किल स्थानों पर लोले जायेंगे?

श्री हुकुमसिंह विसेन--तन् १६६०-६१ में प्रदेश में सरकार ने भिन्न-भिन्न प्रतियों के निम्निनिवत चिकित्सासय/ग्रीवधानय खोलने का निश्चय किया है:---

त्रारम्भिक स्वास्य्य इकाइयों के प्रश्तगंत	एलोवैधिक चिकि	स्तालय	७१
घाषुर्वेदिक यूनानी घोषधालय		• • • •	¥,
महिला चिकित्सालय	* *		X,

क्यानों का निर्णय सभी नहीं हुसा है।

\*७५--श्री राजनारायण--[हटा दिया गया।]

\*७६--श्री राजनारायण--[१४ भ्रप्रैल, १६६० के लिए स्थिगित किया गयान]

\*७७-७८--श्री उग्रसेन--[दसवें बुधवार के लिए ४इन ६६-६७ के ब्रन्तर्गृत स्थाना-न्तरित किये गये।]

## प्रतापगढ़ जिले में बागों की मालगुजारी में गलत तशाखीस

\*७६--श्री हरकेराबहादुर (जिला प्रतापगढ़)--क्या सरकार भ्राया बतायेगी कि प्रतापगढ़ जिले में तहसीलवार कितने ऐसे बागों पर जो भ्रब बाग की हैसियत नहीं रखते हैं, ३१ मार्च, १६५६ के पूर्व ग्रीर १ भ्रप्रैल, १६५६ के पश्चात् मालगुजारी तशखीस की गया है?

श्री हुकुर्मासह विसेन—प्रतापगढ़ जिले में ऐसे बागों की तहसीलवार नंख्या जो अब बाग की हैसियत नहीं रखते हैं और जिन पर ३१ मार्च, १९५९ के पूर्व तथा १ अप्रैल, १९५९ के पश्चात् मालगुजारो तशक्षोस को गयो है, निम्नलिखित हैं:——

	तहसील			३१ मार्च, १६५६ के पूर्व		१ श्रद्रेल, १६५६ के पश्चात्	
कुन्डा	• •	• •	• •	१,६२२		२,० <b>५</b> २	
पट्टी	• •	••	• •	१६६	€ •	४,२६७	
सदर	• •	• •	• •	४४२		१,४७१	

<sup>\*=0--</sup>श्री हरकेशबहादुर--कितने ऐसे मामलों में १ अप्रैल, १६५६ के पश्चात्. आपत्ति-पत्र दाखिल हुये और कितना तशखासे निराधार पायी गर्यो ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--१ भ्रप्नेल, १६५६ के पश्चात् ४६ भ्रापत्ति-पत्र दाखिल हुये भ्रौर ११ मामलों में मालगुजारो की तशक्षीसे निराधार पायी गर्यो।

### सदर तहसील में चकबन्दी

\*द१—श्री चन्द्रवली शास्त्री ब्रह्मचारी (जिला श्राजमगढ़)—क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि श्राजमगढ़ जिले की सदर तहसील में जो चक्रब्रन्दों हो रही है वह कब से श्रारम्भ हुई है श्रीर कब तक समाप्त हो जायगी?

श्री हुकुर्मासह विसेन—श्राजमगढ़ जिले की सदर तहुझील में चकबन्दी का कार्य मार्च, १९५५ में श्रारम्भ किया गया था और ग्राशा को ज़ाती है कि इस वर्ष के श्रन्त तक समाप्त हो जायगा।

\*द२—श्री चन्द्रबली शास्त्री ब्रह्मचारी—क्या सरकार यह बताने की कृषी करेगी कि ग्राजमगढ़ की सदर तहसील को चकबन्दों समाप्त होने पर पुनः किस तहसील में चकबन्दी श्रारम्भ होगी ?

श्री हुकुर्मासह विसेन-इस सम्बन्ध में ग्रभी कोई निर्णयं नहीं किया ग्रया है 1

\*= ३-- श्री चन्द्रबली शास्त्री ब्रह्मचारी--- क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि पहले किस तहसाल में चकबन्दी धारम्भ की जाय, इसके निर्णय का धाषार क्या है ?

श्री हुकुमसिंह विसेन - -चकबन्दी के लिए पहले वह तहसील चनी जाती है जहां चकबन्दी करन योग्य क्षेत्रफन प्राथक हो व कार्य करने में प्रशासकीय सुविधायें हों, तथा निकट भविष्य में कोई सिचाई योजना कार्यान्वित होने वाली न ही।

# खीरी जिले में भदान सिमात द्वारा भूमिहीनों को भूमि

\*दश--श्री द्वेदीलाल (जिला लार्रा) - नया सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि लारा जिले म भ्वान म तहसालवार कितनों जमान कित-किन मौजों में दो गयो? क्या उस भूमि पर भ्वान समिति का प्राथकार हो च्का है प्रौरक्या उस भूमि का भूमिहीन काश्तकारों स बटवारा किया जा चका है ?

श्री हुकुमसिंह विस्ति - - निता खोरी की तहसाला क शिभन्न मोनों में २६-२-६० तक भूतान में प्रान्त भूमि की सुनता सलग्त सूची। में वा गयी है जो सबन की मेंज पर रख दी गयी है।

जक्त भूमि पर नशन समिति का श्रीधकार हा खुका है।

भूदान म प्रशन हुन भूमि म से ३,=११.५७ ए १९ भूमि का अध्यारा किया जा चुका है।

\* = ४ - श्री स्ट्रेंदीलाल - त्या यह सन्त है कि जिन भूमिहीन काश्तकारों में जमीत विलोगन का गया है उन्हें अब तक उस जमान पर अधिकार नहीं सिन पाया है और उनसे लगान बसुन किया जाता है ?

श्री हुकुमिरिह विसेन - यह सब नहीं है कि जिन भूमिहीन काइनकारों में जमीन विनिरित की गयी है उन्हें उस भूमि पर श्रीधशार नहीं मिला है श्रीर उनसे लगान लिया जाता है।

#### फर्रुवाबाद जिले में इकंतियां

\*द६ - -श्री होरीलाल यादव (जिला फर्नेलाबाव) - -वया सरकार बताने की कृष करेगी कि फर्नेलाबाव जिलें में ठठिया, कश्मीज श्रीर सीरित यानों के श्रन्तर्गत १ जनवरी है १७ फरवरी, सन् १६६० तक कितनी बक्तीतया पड़ीं? उन प्रकेतियों के पड़ने की तिथि क्या है तथा प्रत्येक में कितना नुकसान हुआ ?

श्री कमलापति त्रिपाठी-इस सर्वाध म २ इक्षीतमा विनांक २२,२३ जनवरी, व २६/३० जनवरी, सम् ११६० को पड़ी जिनमें कमजाः ७६६ व० व १,५३४ व० का माल लूटा गया।

\*=७--भी होरीलाल यादय-- क्या सरकार कृपया बतायेगी कि उपर्युक्त प्रत्येक बर्कती में कितने मनुष्यों की जानें गर्यों ? उनके सम्बन्ध में क्या कार्यवाही की जा रही है?

श्री कमलापति त्रिपाठी---पहली डकेती में २ अर्थावन मारे गये श्रीर दूसरी में किसी की जान नहीं गयी। दोनों मामलों में जोच की जा रही है श्रीर श्रव तक केवल पहली उकेती में ४ व्यक्ति गिरफ्तार भी किये जा चुके हैं।

निर्वल तथा पंतुक रोग-पीड़ित व्यक्तियों में परिवार नियोजन को प्रभावी बनाने का सुझाव तथा लखनऊ में कुत्तों के काटने से मृत्युएं

\*दद-श्री देवकीनन्दन विभव (जिला ग्रागरा)--क्या सरकार इस बात का विचार करेगी कि पैतृक रोग से पीड़ित निर्बल तथा ग्रविकसित व्यक्तियों में परिवार नियोजन को प्रभावी बनाने का प्रयत्न किया जाय? क्या कुछ रोगों से पीड़ित व्यक्तियों को प्रजनन से रहित करने के लिए कुछ उपायों पर वह विचार कर रही है?

श्री हुकुर्मीसह विसेन—प्रश्न तो ग्रवश्य विचारणीय है किन्तु ग्रभी इस पर विचार करना ग्रसामयिक होगा क्योंकि परिवार नियोजन की योजना ग्रभी प्रारम्भिक ग्रवस्था में है, ग्रतः इस योजना के जनप्रिय होने के पश्चात् ही ऐसे प्रश्नों पर विचार करना उपयुक्त होगा।

कुछ रोगों से पीड़ित व्यक्तियों को प्रजनन से रहित करने के लिए ग्रभी कोई उपाय शासन के विचाराधीन नहीं है।

\*द्रह्—श्री देवकीनन्दन विभव—क्या न्याय मन्त्री को यह विदित है कि लखनऊ में बाजारों में कुतों के काटने की दुर्घटनाएं बढ़ रही है? क्या सरकार कृपया यह बतायेगी कि गत वर्ष लखनऊ में कितनी ऐसी दुर्घटनाएं हुई है श्रीर उनमें से कितने व्यक्तियों की मृत्यु हुई?

श्री हुकुर्मीसह विसेन—ऐसी कोई सूचना सरकार के पास नहीं है। १६४६ में लखनऊ शहर में कुल ८७४ रोगी कुते के काटने से पीड़ित श्रपने उपचार के लिए चिकित्सालयों में ग्राये। जिन रोगियों की मृत्यु कुत्ते के काटने से शहर में १६४६ में हुई उनकी संख्या ६ है।

#### गांधी ग्राम श्रौषधालय का स्थानान्तरण

\*६०--श्री राजाराम शर्मा (जिला बस्ती)--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि तहसील खलीलाबाद (बस्ती) के गांधीग्राम (टोला पैलीखास) में कोई राजकीय श्रायुर्वेदिक श्रस्पताल खोला गया था ?

#### श्री हुकुमसिंह विसेन--जी हां।

\*१--श्री राजाराम शर्मा—क्या सरकार को मालूम है कि इस गांव के स्नास-पास ४ मील के घेरे में किसी किस्म का कोई स्रस्पताल नहीं है?

श्री हुकुर्मासह विसेन--गांधी ग्राम से चार मील की दूरी पर मुन्डेरवा ग्राम में एक राजकीय श्रायुर्वेदिक ग्रौषघालय स्थापित है।

\*६२--श्री राजाराम शर्मा--क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि उक्त गांव से श्रस्पताल क्यों हटाया गया ?

श्री हुकुमिसह विसेन—गांघी ग्राम में श्रौषधालय तथा उससे सम्बन्धित कर्मचारियों के निमित्त उचित भवन न उपलब्ध होने के कारण उक्त श्रौषधालय को मुन्डेरवा ग्राम में स्थानान्तरित कर दिया गया।

### सरदहा ग्राम में होमियोपैथिक श्रौषधालय खोलने की प्रार्थना

\*६३—श्रीमती सरस्वतीदेवी शुक्ल (जिला गोंडा)—क्या न्याय मन्त्री फ्रपया बतायेंगे कि बाराबंकी जिले में कितने राजकीय होमियोपैयिक श्रीवघालय कहां-कहां चल रहे हैं? श्री हरूमसिंह जिसेन--- जाराज ही जिने में एक भी राज की र हा निर्दारिय ह श्रीववालय नहीं है।

हर--श्रीमनी सरस्यतीदेवी श्रम-- त्या सरकार सरदण परवता बदोसराय में राजकाव पार्यादक पोर्याक्ष प्रमा अवस्थानियक श्रीरयाक्ष लानने को क्रुस करेगी?

श्री उक्त निव निमेन — द्विमाय यव वर्षीय यो न ना के पन्तर्भ ना की य हो मियोपैथिक श्रीप वात्तर यो न न को छोई यो न ना न ए है। श्रीप श्रीप यो न सर्य ए में राज को या विशेषिक श्रीप वात्तर यो जा को प्रति हो न तो छो है। राज को या पर्या के सम्बन्ध में कोई बाय ना न व प्रति न तो हो हो। यदि स्वित्य में प्रति हो। तो अस पर सरकार विचार करेगी।

### सूचना विभाग की 'प्रोप्रेन'' पत्रिका के प्रकाशन पर व्यय

हथ्— श्री शिवप्रपाद नागरे—-स्थासरकार बतात का करा करता कि सूबना विभाग, जन्मर प्रदेश, जल्पनक के परिनक्षणन ब्रान पं "बाव में नाम का गोर्ट्स का (तकनतो है? यदि हां, तो कब में श्रीर श्रव तक उत्तके कि स्व प्रकेष प्रकाशित हो नुके हरे

श्री कमलापति त्रिपाठी--"त्रावेत" नाम का एक प्रकाशन सन् १६५६ में किया

\*६५--श्री शिवप्रयाद नागर--- क्या सरकार कृत्रवा अवायेगी कि उक्त पत्रिका किवनी संख्या म स्वीर कव-सम्बद्ध साधित होती है स्वीर करा छात्रती है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी---इन प्रशासन की २४,००० प्रशिवा टाइम्न श्राफ इन्डिया प्रेस, बम्बई से एक बार सुरवाई गया था।

\*६७--श्री शित्रप्रपाद नागर--श्या सरकार करता यह भी बतायेगी कि इस प्रतिका के प्रत्येक श्रक के प्रकारन में कि इना व्यय होता है श्रीर कि इतो ग्राय होती है?

श्री कमलापालि त्रिपाठी--इप प्रतातन के महण पर कृत ४५,० ८२ के ५२ तमे पैसे काम हुआ और फरवरी, १८५० तक ८,८१० क्यों का स्नाय हुई।

# द्रंजरी एवं कनेक्टरेट के क्लकों का बेतन]

ैर ६——श्रीमती गेंद्रा वेती (fami बाक्ष) ——श्रा स्वरकार अवावे का क्राकरेगी कि इस समय द्वारा एवं क ने स्ट्रेट क कनकी का इत्तां ज्वान क्या है स्रोर द्वाक दूवे का वह कनशः बंध क्योर २५ के स्वातिक बी?

श्री हुनुमसिह विसेत--इत मनत देनरा एवं शरेश्टरेट के श्वर्श का श्रारम्भिक वेतन ६० का मानिक है। इनके पूर्व दूनरा के श्वर्श का मानिक वेतन ४५ का १६ जनवरी, १६२१ से ३ जुनाई, १६३१ तक रहा। का वेश्ट्रेट के श्वर्श का श्रारम्भिक वेतन २५ का जिल्हाई, १६३१ से ३१ मार्च, १६४५ तक था, शिल्ह्न कार्म का १५ जनवरी, १६२१ से ३१ मार्च, १६४५ तक २५ का भाग था।

# चौरियों के सम्बन्ध में रायबरेजी से श्रावेदन-पत्र

े ६६—-राजा यादवेतात्रतः वृत्रे (तिना जी तपुर) तथा श्री यमुना प्रसाद शुक्त । (जिला रायवरेलो)—-क्या सरकार कृत्या बनावेगो कि क्या २०-२-६० को राय वरेलो के नागरिकों की श्रोर से कोई रिप्रेजेग्टेशन वहां को बढ़नो हुई बारियां श्रोर पुलिस को उन चोरियों को सम्बन्ध में श्राया है? यदि हां, तो सरकार ने उस पर क्या कार्यवाही की? प्रक्तोत्तर ६६७

श्रीकमलापित त्रिपाठी——जी हां। इस सम्बन्ध में एक पत्र २०——२——६० को प्राप्त हुन्ना था। इस पर जिलाधीश से रिपोर्ट मांगी गयी जो सरकार के विचाराधीन है।

\*१००--श्री गुप्तारसिंह--[१४ ग्रप्रैल, १६६० के लिए स्थिगत किया गया।]

### डलमऊ तहसील कार्यालय का स्थानान्तरण न होना

Ţ

\*१०१——श्री गुप्तार्रासह——क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जिला राय-बरेली के ग्रन्तर्गत तहसील डलमऊ की तहसीलदारी का कार्यालय लालगंज में स्थित करने की बह सोच रही है ? ग्रगर हां, तो कब तक ?

श्री हुकुर्मासह विसेन--जी नहीं। प्रश्न के श्रन्तिम भाग का प्रश्न नहीं उठता।

### बंशी बाजार की ट्रक-दुर्घटना

\*१०२-श्री जगन्नाथ चौधरी (जिला बिलया) — क्या सरकार को इस बात की जानकारी है कि बिलया जिले के ग्रन्तर्गत बंशी बाजार में फरवरी, १६६० में कोई ट्रक दुर्घटना हुई है ? यदि हां, तो उसमें कितने ग्रादिमयों की मृत्यु हुई है, कितने घायल हुये है तथा उस ट्रक पर कुल कितने श्रादमी थे ?

हि श्री कमलापित त्रिपाठी—जो हां, ऐसी दुर्घटना ६-२-६० को हुई। ट्रक में कुल ७ ब्रादमी थे जिसमें से केवल दो के चोटें ब्रायीं ब्रौर उनमें से एक की मृत्यु हो गयी।

\*१०३--श्री जगन्नाथ चौधरी-क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि उक्त ट्रक-बुर्घटना होने का कारण क्या था ?

श्री कमलापति त्रिपाठी—ट्रक ड्राइवर के घटनास्थल के पास झपकी लग जाने से दुर्घटना हुई।

### लखनऊ में कलेक्शन ग्रमीनों की नियुक्तियां

\*१०४—श्री रामशरण यादव (जिला लखनऊ)—क्या न्याय मन्त्री कृपया बतायेंगे कि लखनऊ में इसी फरवरी, १९६० में सीजनल कलेक्शन ग्रमीनों की नियुक्तियां हुई हैं ? यदि हां, तो कितनी ?

श्री हुकुमसिंह विसेन-जी हां, ४५ सीजनल भ्रमीनों की नियुक्तियां हुई हैं।

\*१०५—श्री रामशरण यादव-उक्त पद के लिये ग्रलग-ग्रलग कितने हरिजन व पिछडे वर्गों के उम्मेदवार थे ग्राँर कितने-कितने नियुक्त किये गये थे ?

श्री हुकुमसिंह विसेन—प्राथियों ने प्रार्थना-पत्र पर जाति का विवरण नहीं लिखा था जिसके कारण हरिजन व पिछड़े वर्गों के उम्मेदवारों की संख्या उपलब्ध नहीं है। साक्षात्कार के समय ४ पिछड़े वर्ग के उम्मीदवार योग्य प्रतीत हुए जिनकी नियुक्ति की गई।

### फर्रखाबाद जिले में पुलिस कांस्टेबिलों की भर्ती में परिगणित तथा पिछड़ी जाति के उम्मीदवार

\*१०६—श्री राजेन्द्रसिंह यादव (जिला फर्रेखाबाद)—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि क्या पुलिस कांरटेबिले की भर्ती फर्रेखाबाद जिले में सन् १६४६ में हुई? यदि हां, तो उनमें कितने हरिजन ग्रीर कितने पिछड़ी जाति के उम्मेदवार लिये गये?

श्री कमलापित त्रिपाठी——जिला फर्रेखाबाद में सन् १६५६ में पुलिस कान्स्टेबिलों की भर्ती की गई थी। उनमें से २ परिगणित जाति के तथा ६ विछ्डं। जाति के लिये गये। I

\*१०७--श्री बाब्राम (जिला बरेली)--[ प्रप्रेल, १६६० के लिये स्परित किया गया।]

रौनापार थाने में विभिन्न ग्रपराध

श्री कमलापित त्रिपाठी—दिसम्बर, १६५६ में एक नकवजनी तथा जनवरी, १६६० में एक करन नया वो वोरियो की घटनाए हुई । १ फरवरी से १४ फरनरी, १६६० तक बहैती, बोरी तथा करन की कोई घटना नहीं हुई।

ं १०६ — राजा वीरेन्द्रशाह (जिना जालीन) - | द्र ध्रप्रैल, १६५० के लिये स्थिति किया गया। |

### इन्टर कालेंजों के श्राट्स टीचरों का वेतन

े ११० --- राजा यादवेन्द्रदत्त दुबे - - त्रया सरकार कपया बतायेगी कि वह प्रदेश के इंटर कालेंजेज के छाटं स टीजरो का वता प्रत्य विषय पड़ान वाले घर्यापको के नये ग्रेड के समान करने जा रही है ? यदि हा, ना कब से ?

श्री कमलार्पात त्रिपाठी - जी नहीं ।

'१११ - श्री टोकाराम पुजारी(जिला बराय) - [१४ अप्रैल, १९६० के लिये रमगित (स्या गया ) |

\*११२ -११३ - -राजा याववेन्वदत्त दुबे - | ४ मार्च, १६५० को प्रश्न १६-१७ के भन्तर्गत इन प्रश्नों के उत्तर शिये जा नहा है।

# असीगढ़ बस स्टेशन के निकट चाकू भोकने की घटना

\*११४ - श्री सनन्तराम सर्मा(जिलाश्रालीगत) - प्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि श्रालीगढ़ बस रहेशन है कम्पाउन्ह के श्रास्टर दिलाक १२ फरवरी, १६६० की किसी व्यक्ति का साम्यू से पेट फाड़ दिया गर्भाजिय है कारण उस ही मत्य चित्रह्वत हास्पिटल में कुछ देर बाद हो गर्दे व्यासरकार दूस घटना का पूर्ण विश्वरण सदन के सामने रखने की कृपा करेगी? इस सम्बन्ध में कितने व्यक्ति गिरफ्तार किय सम्बे ?

श्री कमलापति त्रिपाठी—-पह घटना बस स्टेशन के कम्पाउन्ह में नहीं बल्कि पास हो में पन्नी सिनेमा के सामने हुई। इस घटना का विवरण मंलान नोट में दिया हुआ है। सभी तक ४ अभियुक्त गिरपतार किय गये है

(बेलियें नत्थी 'घ' झागे पुष्ठ १०३८ पर)

# गोरखपुर में मेडिकल कालेज की श्रावश्यकता

\*११५--श्री गैंदासिह तथा श्री बजनारायण तिवारी (जिलावेवरिया)--तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत में बिकल कालेज कहा-कहां पर खोलने का विचार सरकार रखती है और अब तक किन-किन स्थानों के सम्बन्ध में विचार किया गया है ?

श्री हुकुमसिह विसेन-प्तीय पंचवर्षीय योजना की कपरेखा ग्रभी निद्वित नहीं हुई है और ग्रभी यह नहीं कहा जा मकता कि उस योजना काल में कोई नया मेडिकल कालेज लोला जायगा या नहीं।

\*११६--श्री गेंदासिंह तथा श्री ब्रजनारायण तिवारी--इया गोरखपुर में भी मेडिकल कालेज खोलने का विचार सरकार कर रही है ?

### श्री हुकुमसिंह विसेन-- प्रश्न नहीं उठता।

#### शाहपुर के श्री ग्रली जान का कत्ल

\*११७—श्री हरदयालिंसह—क्या गृह मन्त्री को ज्ञात है कि श्री ग्रलीजान, निवासी बाहपुर, याना जलालाबाद, जिला ज्ञाहजहांपुर का २३-२४ फरवरी, १९६० को फरीदापुर के निकट याना परौर में कत्ल हुग्रा था ?

श्री कमलापति त्रिपाठी---जी हां। २३-२४ फरवरी, १६६० की रात को यह घटना हुई थी।

\*११८—श्री हरदयालींसह—क्या उक्त घटना के पश्चात् थाने दार, परौर घटना-स्थल तथा मृतक के बर पर जांच के हेतु पहुंचे और मृतक की मां ने कातिलों के नामजद नाम रक्खे हैं ? यदि हां, तो श्रव तक उक्त कथित अपराधियों में कितनों को गिरफ्तार किया गया है ?

श्री कमलापित त्रिपाठी—जी हां, थानेदार परोर घटनास्थल तथा मृतक के घर पर जांच के लिए गए थे। मृतक की मां ने थानेदार को हत्यारों के नाम नहीं बताए थे बिल्क उन लोगों के नाम बताए थे जिनके साथ मृतक रात को गया था। इन लोगों की खोज हो रही है।

### पट्टी तहसील में दी गयी सुविधायें

\*११६—हरकेश बहादुर—क्या सरकार कृपया बतायेगी कि प्रतापगढ़ जिले में पट्टी तहसील को सूखाग्रस्त क्षेत्र १९४६-६० में घोषित किया गया था? यदि हां, तो इस सम्बन्ध में क्या-क्या सुविधायें वहां की जनता को दी गईं?

श्री हुकुर्मासह विसेन—जी नहीं। सूखे के कारण पट्टी तहसील में पिछली खरीफ की फसल को हानि श्रवश्य पहुंची है किन्तु वह सूखाग्रस्त क्षेत्र घोषित नहीं किया गया था। वहां की जनता को जो सुविधार्ये दी गई है वे इस प्रकार है:—

- (क) जिन ग्रामों में क्षति की मात्रा रुपये में ४० नये पैसे या उसके श्रिष्ठिक थी उनमें मालगुजारी में २,६८,७२४ रु० ६६ नये पैसे की छूट देने का प्रस्ताव है श्रीर इस मालगुजारी की वसूली फिलहाल निलम्बित है।
  - (स) ६२,३०४ र० की धनराशि तकावी के रूप में बांटी गई।
- (ग) १३ सस्ते गल्ले की दूकानें चालू रखी गईं। मौजूदा रबी की फसल को सूखें से कोई हानि नहीं पहुंची है।

### फर्रुखाबाद जिले में घान का सूख जाना 😘 🕟 🕟 📭

\*१२०—श्री होरीलाल यादव—क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि गत खरीफ की फसल में जिला फर्शवादा के परगना तिर्वा सकतपुर, सकरावा सौरिख में कितने एकड़ धान लगाया गया ? उसमे कितना एकड़ धान सूख गया ?

श्री हुकुर्मासह विसेन—इन परगतों में कुल २७,४५१ एकड़ वान लगाया गया जिसमें २,५५५ एकड़ सूख गया ।

### पसगयां की कथित प्राइमरी हेल्थ युनिट

'१२१— -श्री मञ्जालाल ((जला खीरी)---क्या मरकार यह बताने की कृपा करेगी कि द्वितीय पंचवर्षीय यां जना में जिला खीरी की तहसील मोहस्मदी के ग्राम परागवां में कोई प्राइमरी हेल्य यूनिट (परपताल) खोला गया है? यदि हां, तो वहा दवाइया तथा काक्टर धभी तक क्यों नहीं में जा गया है?

श्री तुकुर्मासह विसेत---जी नहीं। प्रश्न नहीं उठना।

विद्वदेवरनाथ इन्टर कालेज, श्रकबरपुर से हटाये गये श्रध्यापकों का श्रावेदन-पत्र

\*१२२ ---राजा याववेन्द्रवत्त बुबै ---प्रयागरकार बनान की क्या करेगी कि विक्वेत्वर-नाथ इंटर मेडिकन कालेज, प्रकारपर, जिला फेजाबाद के काई पराने प्राप्यापक इस वर्षे छटनी में निकान गये हैं ? यदि हा, ता क्यों ?

श्री कमलापति त्रिपाठी --की हां, विद्यालय की पाबिक दशा मसंतायलतक होते के कारण ३ संवधनों को लाइन का निक्षय किया गया। धनः ४ पायका का हटाया गया।

\*१२३----राजा स्मवसेन्द्रदत्त बुने --- प्रया सरकार कप्या सन्धर्मी कि निकाले हुवे सारदरों ने २४ ध्रमस्त, १६४६ की सरकार के पास काई रिप्रेनेन्द्रशन सेना है ? यदि हां, तो उस रिप्रेजन्द्रशन की मुख्य बाले क्या-क्या है श्रोर सरकार न उस पर क्या कार्यवाही की ?

श्री कमलापति त्रिपाठी---श्रः यापकों का निषेत्रेनेन्द्रंशन २०--७-४६ तथा २८-७-४६ को प्राप्त हुझा जिलमें उन्होंने अपनी पूर्नीत्य्वित के जिय प्रार्थना की । मत्मन में उक्त श्रध्यापकों द्वारा की बनन श्रपीलेट कमेटी में श्रपीलें कर वी गई है।

' बलन्ववाहर जिले के एक भ्रानरेरी मेजिस्ट्रेट के खिलाफ विकायत

\*१२४ - -कुमारी श्रद्धावेबी झास्त्री( किला मेन्छ) - - क्या सरकार क्या करके बतायेगी कि उसे दिसम्बर, १६५६ में प्रश्न कर्ला द्वारा ऐसी झिकायत मिली है कि नकबन्दी प्राफिसर श्री एगठ एनठ सिंह, किला ब्लन्द्झहर में किसी विधान सभा के सबस्य ने किसी मुकबर्ग के बारे में सिकारिश की थी ? यदि हो, तो उस पर क्या कार्यवाही की गई ?

### श्रि श्रि हुकुर्मासह विसेन — की नहीं। ऐसी काई शिकायत सरकार का नहीं मिली।

\*१२५---कुमारी श्रद्धावेयी झास्त्री--क्या सरकार कृषया बतायंगी कि मुख्य मंत्री ।एवं गृह मंत्री का विसम्बर, १६५६ के श्रान्तिम सत्ताह में झिकायत प्राप्त हुई कि जिला बुलव- बाहर के एक श्रान्तरेरी मैं जिस्दूंड कांग्रंस प्रतिनिधि चुनाव के समय किसी अम्बीयवार को गाड़ी से किसी कार्यकर्ता को बलपूर्वक उठा कर ले गये । यांच हो, तो इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही की गई ?

श्री हुकुर्मासह विसेन-जी हा । इस विषय में पृश्वताझ की जा रही है । लिसतपुर सब-डिबीजन में झावर्श हरिजन बस्तियां तथा डाकू सूरतसिंह सलीता का मारा जाना

\*१२६--श्री गज्जूराम (जिला सांसी)-- त्रया सरकार के पास कोई ऐसी योजना विवाराधीन है कि लिलतपुर सब-विवीजन में हरिजन भावमं बस्तियां बनायी जायं? यविहां, सो किन-किन ग्रामों में ?

### श्री कमलापति त्रिपाठी—जी हां।

- १---ग्राम तालबेहट, तहसील ललितपुर,
- २---ग्राम नरहाट, तहसील महरौनी,
- ३--प्राम मऊभाबी, तहसील ललितपुर।

\*१२७—श्री गज्जूराम—क्या यह सही है कि कुल्यात डाकू सूरर्तासह सलीता १३ जनवरी, सन् १९६० को डाकू सूरर्जीसह, निवासी जहाजपुर लिलितपुर, झांसी के द्वारा मारा गया ?

श्री कमलापित त्रिपाठी—डाकू सूरत सिंह सलीता का शव १४–१–६० को प्रातःकाल बरामद हुन्ना । इस मंबंघ में मिजस्ट्रेट की जांच रिपोर्ट हाल ही में सरकार को प्राप्त हुई है श्रीर विचाराधीन है ।

\* १२८—श्री गज्जूराम—क्या यह सही है कि सूरजींसह डाकू उसी के गिरोह का एक सदस्य या ग्राँर १५ जनवरी को उसने जिलाबीश झांसी के समक्ष ग्रात्मसमर्पण किया या ग्राँर वयानात दिये थे ?

श्री कमलापति त्रिपाठी—जी हां। सूरजसिंह ने १७--१-६० की जिलाधीश के समक्ष स्रात्मसमर्थण किया श्रीर बयानात दिये।

\*१२६--श्री गज्जूराम--यदि हां, तो वे बयानात क्या हैं ?

श्री कमलापित त्रिपाठी—क्योंकि सूरजींसह के बयान के पश्चात् पुलिस को श्रितिरिक्त तहकीकात अन्य व्यक्तियों के विरुद्ध भी करनी होगी, इस अवस्था में सूरजींसह के बयान को सदन में बतलाना उचित न होगा। यदि प्रश्नकर्त्ता महोदय या अन्य कोई माननीय सदस्य उक्त बयान को देखना चाहें तो माननीय अध्यक्ष के कार्यालय या मेरे कार्यालय में देख सकते हैं।

#### ग्रतारांकित प्रक्न

१-३-श्री रामदीन-[ प्रप्रंत, १६६० के लिये स्थगित किये गये।] श्री राजनारायण (जिला वाराणसी)-मुझे कुछ निवेदन करना है।

श्री उपाध्यक्ष—चेम्बर में ग्राकर कहियेगा ।

उत्तर प्रदेश सरकार के विनियोग लेखे १६५७-५८ तथा लेखा परीक्षा प्रतिवेदन, १६५६ पर लोक लेखा समिति का प्रतिवेदन†

श्री झारखंडेराय (जिला भ्राजमगढ़)—में ग्रापकी भ्राज्ञा से उत्तर प्रदेश सरकार के विनियोग लेखे १६५७-५८ तथा लेखा परीक्षा प्रतिवेदन १६५६ पर लोक लेखा समिति का प्रतिवेदन प्रस्तुत करता हुं।

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी (जिला कानपुर)—मं यह निवेदन करना चाहता हूं।

श्री उपाध्यक्ष—मैने निवेदन किया कि चेम्बर में ब्राकर कहियेगा । -

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी—चेम्बर में कोई नहीं सुन पायेगा, हाउस में सभी सुन पायेंगे।

भी उपाध्यक्ष---श्राप स्थान ग्रहण करें।

<sup>†</sup> छापा नहीं गया।

# द्वितीय विधान सभा की श्राश्वासन समिति का चतुर्थ प्रतिवेदन।

श्री राघवेन्द्रप्रतापसिंह (जिला गोडा) — में श्रापको श्राज्ञा में श्राद्यासन समिति--जन्तर प्रदश्च दिश्लोय थियान सभा को श्राद्धासन समिति, का चत्रयं प्रतिवेदन प्रस्तुत करताह।

जा प्रतिरेदन पापके सामने प्रस्तत है उसमें २३५ श्राद्यासन है जो पिछले साल विषे समें थे। हम सरकार के तम मण्य मंत्री के श्राभारी है कि पिछले सान जो प्रतिवेदन पेड़ किया गया या उसके बाद सरकार न अवस्य दस तरफ कुछ एयान दिया है। मगर जब हम समय देखते हैं तो लगभग दो वर्ष के हो रहें हैं श्रीर इस बीच में दो तिहाई श्राद्यासनों की पूर्ति हो चुकी है श्रीर एक तिहाई बाकी है। में श्राद्या करता है कि यो बार गान श्रीर दिया जायगा जिसते, जिस उद्देश्य में दम सबन ने यह श्राद्यासन समिति की रथापना की है, उसकी पूर्ति होती रहेगी। इसमें विशेष करना यह है कि एक लालि का हम लोगों न दे दो है श्रीर श्राण्यर में विभागवार इसमें यह दी हुई है कि कि न श्राद्वासन किस विभाग क प्र ह्य है श्रीर किस विभाग के पूरे नहीं हुये हैं। श्रापर मावगण हो यश बैठ हुये है वे उसका श्राद नोकन करने तो इस समिति का ज्यादा उपकार हो जायगा।

# उत्तर प्रदेश श्रधिकतम जोत सीमा श्रारोपण विधेयक, १६५६

श्री राममृति (जिला बरेली) — मं झायकी माजा म, ज्याग्यक्ष महोदय, उत्तर प्रदेश मायकतम जात मीमा भारायण श्रियक, ११५६ पर नियक्त मथकत प्रवर ममिति का प्रतिदेश प्रस्तत करता है।

(बेलिये नत्यो 'इ' प्रामे पुरुठ १०३६ -१०५) पर )

श्री उपाध्यक्ष--इस सम्बन्ध में मुझे माननीय सदस्या का मृतना देनी है कि वह सदनकी मेक पर है लेकिन उसकी कार्षिया श्रेम से आई नहीं है । श्रान पर बरवा दी जायंगी।

श्री मोतीलाल श्रवस्थी को सदन से बाहर जाने का निदेश

श्री मोतीलाल अवस्थी (जिला कानपुर) --- मझ कृष् निवेदन करना है।

श्री उपाध्यक्ष--मं कार्यक्रम ले रहा है । आप क्रपमा बेठे । मं यह प्रया नहीं डालना साहता ।

श्री उपाध्यक्ष—मं माननीय सदस्य से कहूंगा कि जा उन्होंने यह चेयर के लिये कहा है ''भग्याय किया है'', इसे भाप वापस लें।

भी मोतीलाल अवस्थी--मं बायस नहीं लूंगा । आयनं मुझे एलाऊ नहीं किया, में बहुत पीड़ित हो चुका हूं।

श्री उपाध्यक्त----भापने कहा है कि "भन्याय किया है" सेयर के लिये, इसे भाप वापत सें 1

श्री मोतीलाल भवस्थी—में वापस नहीं लूंगा । भ्रायने मुझे एलाऊ नहीं किया है।

श्री उपाध्यक्ष—बार बार पूछने पर भी माननीय सदस्य उन ग्रब्दों को वापस नहीं ले रहे हैं।

श्री मोतीलाल स्रवस्थी—में ऐसे वापस नहीं ले सकता, ग्राप कहें तो में सदन को छोड़कर चला जाऊं।

श्री उपाध्यक्ष—(श्री मोतीलाल ग्रवस्थी के बोलते रहने पर) तो ग्राप कृपया सदन को छोड़कर बाहर चले जायं।

श्री मोतीलाल स्रवस्थी—हां, में जाऊंगा स्रापकी स्राज्ञा से, लेकिन यह स्रन्याय करते हैं स्राप, में फिर कहूंगा ।

(श्री मोतीलाल ग्रवस्थी सदन के बाहर चले गये।)

### सिंचाई विभाग, मिर्जापुर के ४०० मजदूरों की छटनी के कारण श्री रमापति दुबे द्वारा ग्रनशन के सम्बन्ध में नियम ५२ के ग्रन्तर्गत सूचना

श्री उपाध्यक्ष--मेरे पास माननीय झारखंडेराय का नियम ५२ के ग्रन्तर्गत एक प्रक्त ग्राया है, जो इस प्रकार है:—

"सिंचाई विभाग, मिर्जापुर के मेकेनिकल डिवीजन के ४०० मजदूर काम से निकाल दिये गये हैं। इस विषय में मजदूरों के अने कि विद्याब्द मंडल अधिकारियों से मिल चुके हैं। भूत-पूर्व सिंचाई मंत्री, श्री चरणींसह से श्री झारखंडे राय के साथ एक ज्ञिब्द मंडल महीनों पहले मिला था। २४ जनवरी, १६५६ को उत्तर प्रदेश बांध विभाग मजदूर यूनियन के उपसभापित श्री रमापित दुवे ने मिर्जापुर में भूख हड़ताल प्रारम्भ की थी। प्रत्येक अवसर पर यही आइवासन मिला कि 'मामले पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किया जा रहा है'। इन्तजार करते १० माह से ज्यादा हो गये।

श्चन्त में विवश हो कर श्री दुबे ने गत १८ मार्च से विधान भवन के सामने श्चनशन प्रारम्भ कर दिया है । श्चाज उनका ८ वां दिन है । उनकी दशा चिन्ताजनक हो रही है ।

इस लोक महत्व के प्रश्न पर में सरकार का ध्यान म्राकृष्ट करता हूं।" में माननीय सिचाई मंत्री से चाहुंगा कि इस सम्बन्ध में स्थित स्पष्ट करें।

सार्वजनिक निर्माण मन्त्री (श्री गिरधारीलाल) — उपाध्यक्ष महोदय, यह मुझको थोड़ी देर पहले नोटिस मिली है । उनकी भूल-हड़ताल का मुझको दुःल जरूर है, लेकिन इसकी पूरी इत्तला मेरे पास इस वक्त नहीं है। श्रगर मुझको श्रवकाश मिले तो में इस विषय में कह सकूंगा।

श्री प्रतापिसह (जिला नैनीताल)—कल से श्रसेम्बली बन्द हो रही है । मैने भी नियम ५२ के श्रन्तर्गत एक प्रश्न, जो लखनऊ में २५ साल से बने हुये १०० से ऊपर घर गिराये जा रहे हैं इस सम्बन्ध में, श्रापको दिया था . . . . .

श्री उपाध्यक्ष-उसके बारे में भ्राप ग्रत्पसूचित तारांकित प्रश्न दें, उस पर विचार करूंगा।

श्री झारखंडेराय (जिला ख्राजमगढ़)—श्रीमन्, मेरे प्रश्न का कुछ निर्णय ग्रभी तक नहीं हुन्रा ।

श्री उपाध्यक्ष—उनके पास सूचना इस वक्त नहीं है ग्रौर ग्राज विधान सभा का ग्राखिरी दिन है। ऐसी स्थिति में माननीय निर्माण मंत्री शाम तक प्रयत्न करने के बाद ग्रगर सूचना लाकर दे सकें तो में उनको मौका दे सकता हूं, चूंकि विशेष परिस्थित उत्पन्न हो गयी है।

श्री गिरधारीलात -म शोप्ता वरगा लिश्न ग्रमर ग्रान स्वनान ग्रासको तो ३१ या परा। तारात ता ग्रमर थाप मझ मोका र ता म बाता द्वा ।

श्री उत्राप्यक्ष - स्पारह निकासी रासियमा श्रमर श्रानहीं सके तो श्रच्छा है।

# तात्कालिक प्रक्तों को लिए जाने के सम्बन्ध मे व्यवस्था

श्र्वी राजनारायण (निहा हाराणसा) — यहिसदस्य नात्रानिस प्रक्रा के सम्बन्ध स्मेरिको स्वात्नाय सहस्य राह्य प्रथम हिन्द्य निवेदन हरना हो । इन सहन की यह भी प्रथा रही है रिन्ति के निवेदा रास्तिया ताहा । जा रहे है हो नाय साननीय श्रद्धादेवी के प्रक्रना है .

श्री उपस्थान-प्राप्तियान स्तान र न न पार आप क्या जात्व हार

श्री राजनारायण सनातनायत यह साहियां अर प्राप्त प्राप्त प्राप्त व्यवस्था होगी कि हमार अरबर सही जातका कर्ताय तो स रामका सह कि राज अ जे हमार प्रथिकार है जनका समिति राप सहस्य प्रयोग नहीं कर पायगे । एसे। श्रान्य स साज के एक सम्मानित सबस्य को श्राप्त श्राज सहस्य स जाहर जान ही भी श्राजा ३। । अर श्रापको श्राजा का निरोधार्य करक चा गय । ठार रो किया । इस जो प्रस्ता कर करता स्था समक्षत ह

श्री उपा प्रशा — याप । प्रया र शन गरण कर म समा प्रया । यह मैने बार बार आपका हा। ि । है । यह र किसा काम म प्रारं क्या माननाय सहस्य के तर नीफ होती है और बार भार रपता नम म मना श्रा शा है कि से यह उसके नान प्रयास हो कर ने फेल होती है और बार भार राम का मान के स्वा का का का का का का प्रा का का के स्व की कार्य श्री का स्व के स्व का का का का का स्व का स्व की कार्य श्री का स्व के स्व का का स्व का स्

जहां तक प्रदना के बारे म का एक विशाद की प्रधा यहा रही है. म समझता है कि यह और माननीय सदस्यों के हित म नहीं है। इससे सदन का बाफो समय नग नाता है। माननीय सदस्यों से निवेदन हैं कि प्रदनों के सम्बन्ध म मझत खेम्बर म बात व र न या निवंत फर भेज दिया करें, क्योंकि ध्रार माननीय राजनारायण जी का दबत दिया जाय धोर यह प्रधा चल जाय तो ४३१ सदस्य इचदा जाहिर कर सकते हैं। इसलिय चम्बर म ही बात कर ला जाय ना अच्छा है। ध्रार कोई विजम परिस्थित उत्पन्ध हो जाती है तो सबन में भी में मौका दे देता हूं। लेकिन सबन का विकोरम, विसेन्सी धौर जो कायं होता है उसका तम् चित्र क्या निवाह हो नकें, उसके लिये मैंने स्वक्त्या बनाई है। ध्राप लयाल की जिये कि चेम्बर में ध्रार सहदूर नहीं होगे तो में देखूगा।

श्री राजनारायण-श्रीमन्, इसलिये मेने निवेदन किया था ग्रीर ग्रापने रपष्ट कर विया।

श्री उपाध्यक्ष---इस समय श्राप जिला बुलाये बोलने लगे । यह तय हो गया है कि जब तक मैं नाम न लूं शाप न बोलें ।

श्री राजनारायण—इसी तरह से सदन के बहुत से सदस्य बोलते है ग्रीर ग्राप एलाऊ कर देते है ।

श्री उपाध्यक्ष—सदन की मर्यादा की सुरक्षा के लिये ग्रच्छा हो कि ग्राय कृतया बैठें। श्री राजनारायण—श्रोमत् इसी के लिये हम ५ मिनट के लिये सदन का त्याग करेंगे। श्री उपाध्यक्ष—ग्राय सहर्ष कर सकते हैं, मैं क्या कहं?

(समाजवादी दन के लोग सदन से वाहर चने गये।)

### इण्टरमीडियेट बोर्ड के इम्तहान के कारण मुसलमान परीक्षार्थियों को जुमा की नमाज से वंचित करने के सम्बन्ध में नियम ५२ के अन्तर्गत शिक्षा उपमन्त्री का वक्तव्य

श्री उपाध्यक्ष—-तैने श्री ग्रब्दुल रऊफ लारी के प्रश्न के संबंध में माननीय गृह मंत्री से कहा था कि वह वक्तब्य दें। कुनया वह ग्रनना वक्तब्य दें।

रिक्षा उपमन्त्री (श्री दीन दयालु शास्त्री) —श्रीमन, श्री ग्रब्दुलरऊफ लारी जी ने जो सवाल उठाया है उसके सम्बन्ध में निवेदन है कि इंटरमीडियेट की परीक्षा का कार्यक्रम जनवरी में बना था ग्रौर वह १६ जनवरी को गजट में प्रकाशित किया गदा था। इसके बाद ग्रखबारों में प्रकाशित किया गया। कहीं से कोई एतराज नहीं ग्राया ग्रौर किसी भी माननीय सदस्य ने माननीय लारी जी से पहले एतराज नहीं किया, तो हमने समझा कि कार्यक्रम ठीक है। लेकिन उन्होंने एतराज किया तो इंटरमीडियेट बोर्ड को हिदायत की गई है कि एक ग्रौर द्र ग्रप्रैल के स्थान पर ग्रौर कोई तारीख रख दें।

श्री गोविन्दर्सिह विष्ट (जिला ग्रल्मोड़ा)—श्रीमन्, क्या इस सम्बन्ध में प्रश्न कर सकते हैं ?

भी उपाध्यक्ष-में निवेदन करूंगा कि सदस्य की समस्या हल हो गई है।

श्री गोविन्दसिंह विष्ट—क्या सरकार को मालूम है कि जब पाकिस्तान से चौधरी खलीकुज्जमा आये तो उस समय से यह ऐजीटेग्नन आरम्भ हुआ ?

श्री उपाध्यक्ष--यह प्रश्न इससे उत्पन्न नहीं होता है।

## श्रागामी कार्यक्रम के सम्बन्ध में सूचना

श्री उपाध्यक्ष—श्रव सदन के श्रागे का क्या कार्यक्रम होगा, इसके सन्बन्ध में मैं प्रयत्न कर रहा हूं। मैं समझता हूं कि श्रभी तक कार्यक्रम नहीं श्राया था। श्रपने-श्रपने प्रिजन होल से माननीय सदस्य ले लें श्रीर ३१ मार्च को नान-श्राफिशियल डे होगा श्रीर पहले से स्वोक्टत प्रस्ताव ले लिये गये हैं, जिसकी सूचना माननीय सदस्यों को दे दी गई है।

# विकास तथा नियोजन स्थायी समिति, लोक लेखा समिति तथा प्राक्कलन समिति के लिए निर्वाचित सदस्यों के नामों की घोषणा

श्री उपाध्यक्ष--विकास तथा नियोजन स्थायी समिति के लिये निम्नलिखित सदस्य निर्वाचित हुए:--

१-- स्वामी विश्वेश्वरानन्द

२---श्री ज्ञंकर लाल

३--श्री चिरंजीलाल जाटव

४--श्रो प्रतापसिंह

५--श्री हिम्मत सिंह

६—श्री उग्रसेन

७——भो शीतलाप्रसादसिह

५--श्रो विजयशंकरसिंह

६--श्रो वशिष्ठनारायण शर्मा

१०--श्री ग्रहमद बस्श

११--श्रो सुरेशप्रकाश सिंह

१२--श्रीमती राजेन्द्रिकशोरी

१३--श्रो चन्द्रिका प्रसाद

१४--श्रो रामलखन (वाराणसी)

१५--कुमारी श्रद्धा देवी शास्त्री

१६--श्रो मोहनसिंह मेहता

श्री उपाध्यक्त-- नो ह लेखा समिति है निये निम्नीलीयत सदस्य निर्वाचित हुए :--

१२--श्रोमता चन्द्रावतो १--श्रो भाक्षण्यत पालीवाल १३--धा वारमेन २ - प्राचार्यदापकार १४-- श्रासमृति ३--श्रा सारमहराय १४--भो उत्यक्षर द्वे ४ ~ -श्रो ना तय गदत निवारी १५--भः लालबहादुर (वाराणसी) १७--भा ने कराम शर्मा ५--भो गौराश करराय ६ --- राजा याववेन्द्रान दुवे ७---ना उनर्गसह १८--श्री महेशनिह १६--भा लक्ष्मणगाव कदम ५--भामगनाम भव २०--भी रामहेर्रासह ६---धा चरणांसह १०-- -आ नरे-द्रांगर भन्नारा २१--आ रघनाय महाय ११---भो इरतजा हुसेन

श्री उपाध्यक्ष --प्राक्कलन समिति म निम्निनितित सबस्य निर्वाचित हुए है---

१ -- जाना वीरेन्द्र शाह १४-- -भा विश्वस्वरीयह २--श्री मवत पांचेय १४ - न्या व नगपान १५ - - अर महा गर प्रसाद श्राया तव ३---आ चन्द्रजीत यादर १० - भा जन्मतास मिश्र ४--- श्री मोतोनान ग्राम्यो १६ - -श्रा दयरानन्यन विभव ५ - भ्यो मन्त्रियानःसह ६---भी रामायणराय १६ - -श्रा लक्ष्मणवन्त भट्ट २० - आ शिवशरणनान भोत्र स्व ७ --- श्री बिहारीनाल ८ - आ जगवार्यासह २१ - -श्रा ध्यमरशाचन्त्र पाइय ६--श्रोमती विद्यावनी बाजपेई २२ - न्ध्रा परमानन्व सिनहा २३ - श्वा हरिश्चनद्रसिह १०--भी शिवप्रसाव ११---श्री रामचन्त्र विकास २४---श्रा केलाशप्रकाश २४ - अरम अफ्फर हसन १२-- का नकतिकार १३---भी जगदोक्तरारण भववाल

२६ फरवरी, १६६० के तारांकित प्रश्न ४४-४६ से सम्बद्ध एक श्रनुपूरक प्रश्न के उत्तर के सम्बन्ध में गृह उपमन्त्री का वक्तव्य

श्री उपाध्यक्ष - सबश्री भन्ननत्त्वत्त्व द्वारा पूछ्टे गय प्रदन के सम्बन्ध में माननीय गृह मंत्री बक्षत्रस्य देखें ।

गृह उपसन्त्री (श्री रासस्वरूप यादव) - -विशान सभा का, तासरे शकवार (विनाक २६-२-६०) को हुई, बंठक में श्री अजनताल द्वारा पूछ गई ताराकित प्रश्न संख्या ४६ के जलार में अन्य बातों के साथ यह भा कहा गया था कि इटावा जिले म प्रन्न संख्या ४४ में निविद्ध बरायमों में कोई जन कांत नहीं हुई। इस सम्बन्ध म सदस्य महावय द्वारा अनुप्रक प्रकारों में यह संकेत किये जाने पर कि बड़पुरा ग्राम कीरत गिह का नगला में हुई एक उकती में एक परिचार के साल धावमी मारे गये, अध्यक्ष महोदय ने बादेश विया था कि में इस सम्बन्ध में जानकारी हासिल करके रदेटमेंट वृ। घटना के सम्बन्ध में मैंने जिलाधोश से रिपोर्ट मंगा ली है। उसके अनुसार घटना इस प्रकार है---

प्राम की रत सिंह का नगला, याना बड़पुरा, जिला इटावा म १२-११-५६ को एक नृशंत हत्याकांड हुचा जिसमें सात व्यक्ति (६ पुरव तथा १ स्त्रां) निर्देयतापूर्वक मार वाले गये तथा ४ बायल हुए। जांच से पता चला कि उक्त गांव में वो वल ये। धीर दोनों वलों में शतुता ची धीर वे एक दूसरे की जान के गाहक यें। एक वल में दूसरे वल के लोगों को मारने का बढ़पंत्र रचा ग्रौर उसके लिये मध्य प्रदेश से ४ बदमाशों को बुलाया। इन्हीं ४ बदमाश व्यक्तियों की सहायता से यह हत्याकांड हुग्रा। ४ बदमाशों में से ४ भाग गये ग्रौर एक घटनास्थल पर मारा गया। भागे हुए व्यक्तियों में से दो को चोटें ग्रायों। इस सम्बन्ध में एक मुकदमा भा० दं० वि० की घारा १४८ १४६ १३०२/३०७ ४५० १२० ग्राई० पी० सी० के ग्रंतर्गत याने में दर्ज किया गया ग्रौर पुलिस द्वारा जांच की गयी। मामला इस समय श्रा वी० एन० गुप्त, फर्स्ट क्लास में जिस्ट्रेट के न्यायालय में विचाराधीन है।

२--उपर्युंदत घटना कत्ल को थो, डकैती को नहीं। इसिलए सदस्य महोदय के प्रश्न संख्या ४६ का उत्तर देते समय यह कहा गया था कि प्रश्न संख्या ४४ निदिष्ट जरायमों में कोई जनक्षति नहीं हुई। सदस्य महोदय ने कत्ल तथा बलवों में हुई जन क्षति की सूचना प्रश्न में नहीं मांगी थो। इसिलये यह सात हत्यायें उत्तर में सिम्मिलित नहीं की गयीं।

# १६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रानुदानों के लिए मांगों पर मतदान-ग्रानुदान संख्या १६--लेखा शीर्षक २७--न्याय प्रशासन

श्री उपाध्यक्ष— ग्रब हमारे सामने जो श्रनुदान है, में सदन को सुझाव देना चाहता हूं कि श्राज एत्रोत्रिएशन बिल पर भो विचार करना है, श्रगर इन श्रनुदानों में एक श्रनुदान सेलेक्ट कर लें श्रौर वाकी श्रनुदान न लें तो दो ढाई घण्टे उस पर बहस हो जाय श्रौर पांच बजे तक एत्रोत्रिएशन बिल भी पास हो जाय। मैं श्राप लोगों के इसमें सुझाव चाहूंगा।

श्री नारायणदत्त तिवारी (जिला नैनोताल)—यह निश्चित हुग्रा था कि तीनों ग्रनुदानों के निये समय निकाला जायगा। में समझता हूं कि एक ग्रनुदान पर विचार शुरू कर दिया जाय। इस बीच में परामर्श कर लें क्योंकि ग्रकस्मात् इस प्रकार का प्रस्ताव ग्रा गया है।

श्री उपाध्यक्ष--ठीक है।

न्याय मंत्री (श्री हुकुर्मासह विसेंन)—उपाध्यक्ष महोदय, मं गवर्नर महोदय को सिफारिश से प्रस्ताव करता हूं कि ग्रनुदान संख्या १६—न्याय प्रशासन —लेखा शोर्षक २७—न्याय प्रशासन के श्रन्तर्गत १,५२,६४,६०० रुपये को मांग, वित्तीय वर्ष १६६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय।

समय कम है लिहाजा में कुछ न फहकर खामोज हो जाऊंगा जब हमारे मित्र कुछ कहेंगे तो उनको सुनने के बाद, प्रगर जरूरत होगो तो कुछ श्रर्ज करूंगा।

श्री यमुना प्रसाद शुक्ल (जिला रायबरेली)—माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय न्याय मंत्री महोदय ने जो श्रनुदान प्रस्तुत किया है उस सम्पूर्ण श्रनुदान में, मे निम्नलिखित प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं—

सम्पूर्ण अनुदान के श्रधीन मांग की राशि घटा कर एक रुपया कर दी जाय। कमी करने का उद्देश्य--नीति का व्यौरा जिस पर चर्चा उठाने का अभिप्राय है।

कार्यपालिका से न्यायपालिका का म्रलग न किया जाना, न्यायालयों में फैले अष्टाचार तथा मुकदमों के फैसलों में देर तथा सस्ती न्याय-व्यवस्था न किये जाने की नीति पर चर्चा करना।

मान्यवर, यह जो पुस्तिका "उत्तर प्रदेश ग्रांकड़ों के द्वारा सिंहावलोकन" हम लोगों में वितिरित की गई है उस हे पेज ७६ पर उन मुकदमों की संख्या दी गई है जिनका ग्रभी तक निर्णय नहीं हुग्रा। इस संख्या के ग्रन्तर्गत यह नहीं बतलाया गया है कि हाई कोर्ट में ग्रभी तक कितने मुकदमें पेंडिंग है ग्रौर उनकी संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है या कम होती जा रही है। पार साल वित्त मंत्री महोदय ने कोर्ट फीस ग्रमेंडमेंट बिल पेश करते समय यह बतलाया था कि

[धो तमनावसाव परा]

उन्त न्यायालय में इस समय ४५ हजार मकदमें पेडिंग है। स्रभी यदि मंत्री महोदय इस पर कोई यक्तव्य देने तो पत्रा नलता कि इप समय क्या सन्या है, स्राया वह संन्या बढ़ी है या का हुई है। मान्य इस, मेरा निवेदन है कि यदि देना जाय तो हाई कोई म दस दस, बारह बारह साल के मुकादमें फेसने हैं निए पद हुए हैं और इपना बकाया है कि सगर उस हो साफ कराया जाय तो को प्रतेद रहेय यहा है उस रहय स दस साल में मिटिकन से उनको साफ कर सकेंगे।

िक्सो भी वेन स न्याय के कारण मुन्यबस्या होती है और लागों के दूवय में शालि की स्थापना हीती है और न्याय न मिलने पर लागा म एक अशानित की भावना उत्पन्न होती है। यह भी हम वात तो अग्रनों के काल के पाल हिन्दू राज्य म और मगल राज्य में हम लोगों को स्थाप के लिए कहा भी नहीं बना पड़ता था। न्याय हमशा नि शलक रहा, कोई फीम उसके लिए नहीं बना पड़ा। या। इसका कारण यह या कि न्याय का वर शाना महागदाने के लिए वहीं खिल जाता है जो अग्रहाय होता है, निर्वत होता है और जिस पर कि अत्याचार किया जाता है। इसलिय निर्वत और सताय हुए व्यक्ति से लोई भा शलक तना अनिवत है। मबसे पहलें बिटिश गयनंभद ने कोई फीम ऐक्ट का निर्माण किया और जिसक दिशास मार्ड मैकाले ने बहुत कुछ लिखा है। लाई मैकाले का यह कथन था कि जेस शासन के जिसमें यह उत्तरवायत्व है कि यह पुलिस का अबल्य करे, यह चिक्तिसा का अबल्य करें और जिन लोगों के यहा कोई बीमारी हो या जिन लोगों को चार हाक परेशान किये हो, उनकी रक्षा कर और उनस कोई शल्क न ले, उसी तरह में यह भी उपनस्था होनी साहिए कि जिनकें ऊपर करवाधार किया जाय, उनकी लाय मुगत में दिया नाय और उनमें कोई फीस न ली जाय।

इस कोर्ट फीस का कारण यह बताया जाता है कि यदि न्याय-शृत्क न लिया जाय तो लोग कार्ट मकवमें दूसरों की परेशान करने के लिए वायर कर दिया करेंगे। इसके लिए मेरा निवेत यह है कि यदि मुक्तवमा कीई का्टा ही धौर निर्णय के बाद न्यायालय की मालूम हो कि मुक्तवमा का्टा है तो बाटा मुक्तवमा वायर करने ताले पर भी किमी न किमी प्रकार का जुर्माना किया जा सकता है जैसे धापने यहां बहुत से ऐक्टो में यह प्राविजन है कि धारर मुक्तवमा बाद में फ़ित्तलस साबित हो तो उसके ऊपर बाद में जुर्माना किया जा सकता है।

श्रम मेरा निवेदन है कि हाई कोट में जिसकी जजां की संन्या इस समय २४ है—वैते २६ परमानेंट और वो एंडोजनल है, लिकन २६ के बजाय २३ परमानेंट है और २ टैम्पोरी है। इन २४ जजा से यह बकाया कभी साफ नहीं हो नकार भीर दिन ब विन बढ़नी जाया। इसके निये यह भायद्वयक है कि कुछ न कुछ एंसे कुछ न कुछ एंसे कुछ न कुछ एंसे जगहीं की नेंक्या बढ़ाई जाय जिसम बकाया साफ हो गके। यह हाल ऊपर ही नहीं है नीच भी है। भी मुन्मिफ कोट में एक साम भीर इंड साल के बकाया साफ हुए है, लेकिन पहल मन्तफी में १ साल तक मक्कम पड़े रहते थे। हमारे मंत्री महीदय भी वकीत है और अवध्य के बकीत है। उनकी भली-भीत माल्म है कि अपने अवध्य बीफ कोट का काय हम विषय में भारतवर्ष में सब से अकड़ा कहा है। बही शुक्क में यह मियाद थी कि ६ महीने से ज्यादा मन्तफी में मुबदमें नहीं कुलने बाहिये। अगर ६ महीने से अधिक मुकदमें कुलने थे तो उसके लिये कोई कारण जिसाइकिंग आफसर को लिखना पड़ना था। अब ऐसा हो गया है कि ३, ३ महीने तक तारील लगाने के लिये प्रमाइकिंग आफसर को स्वीक्त नहीं मिलता।

इसी तरह में जुडिशियल आफिससँ के यहां भी यही हालन हो गई है। मुक्तमें काफी विनों तक पड़े रहते हैं। अगर किसी एक आवमी के लेत पर किसी दूसरे आवमी ने जबरदस्ती कड़ता कर लिया है तो २, ३ साल तक उसका कड़ता बना रहता है। लगान उसी अपित की बेना पड़ता है जिसके नाम बहु जेता है। बहु नाजायज तरीके से उस खेत पर काड़िज रहता है और इस तरह से नाजायज फायबा उठाया करता है। इसके लिये यह आवश्यक है कि जल्दी फैसला किया जाय। यदि जल्द फैसला हो जाय तो लोगों में जो यह मनोवृत्ति पैदा हो गई है कि दूसरे की सम्पत्ति को हड़प लें या उसकी सम्पत्ति पर ग्रिधिकार कर लें, यह मनोवृत्ति समाप्त हो जायगी।

श्रव में कुछ सुझाव श्रादरणीय मंत्री महोदय के सामने रखना चाहता हूं। उन्में से एक तो यह है कि हाई कोर्ट के जजों की संख्या बढ़ाई जाय। में श्राशा करता हूं कि मंत्री महोदय श्रपना वक्तव्य देते समय इस बात को स्पष्ट करेंगे कि इस समय हाई कोर्ट में पेंडिंग केसेज की संख्या क्या है।

दूसरी बात इस विषय में यह है कि ला कमीशन की रिपोर्ट में यह दिया है कि नियुक्तियों में इतनी देर होती है जो अधिक है। यदि किसी हाई कोर्ट में जज का स्थान रिक्त होता है तो उसका स्थान काफी दिनों तक रिक्त पड़ा रहता है। उन्होंने इस विषय में फिगर्स दिये है। १८ दिसम्बर, सन् १६५० से लेकर मार्च, सन् १६५५ तक १४२ महीने स्थान रिक्त रहे। यि हिसाब लगाया जाय तो १२ जजों के साल भर तक स्थान रिक्त रहे। पहले ब्रिटिश काल में यह श्रा कि यदि कोई स्थान रिक्त होने वाला होता था तो उसके लिये पहले से ही जजों का सेलेक्शन हो जाता था। अब जब स्थान रिक्त हो जाता है तो उसके बाद कागजी कार्यवाही शुरू होती है। चिफ जिस्टिस लिखते है, जिसके बाद चीफ मिनिस्टर की सहमित प्राप्त की जाती है। उसका परिणाम यह होता है इतने दिनों तक स्थान रिक्त पड़ा रहता है। अगर इस तरह से स्थान इतने दिनों तक रिक्त न रहते तो शायद बकाया मुकदमों की इतनी संख्या न बढ़ती, लेकिन फिर भी जिस तरह से हम और विभाग बढ़ा रहे हैं, पुलिस और हेल्थ के लिये अधिक रुपया व्यय कर रहे हैं उसी तरह यह विभाग भी ऐसा है जिसमें गवर्नमेंट को एक करोड़ से अधिक फायदा होता है। यदि इस विभाग को एक व्यवसाय न बना कर, जो एक करोड़ इससे हमको मिलता है उसी को इसमें लगा दें तो मेरा विश्वास है कि यह बकाया जल्दी ही साफ हो जायगी।

तीसरी चीज यह है कि जिस समय सेंकिड अपील हाई कोर्ट में फाइल होती है उस समय उसमें आर्डर ४१ का रूल १२ का (ए) लागू किया जाय तो ऐडमीझन के वक्त ही बहुत सी अपील जो बिलकुल फ़ीवलस होती है, जो महज इस कारण से दायर की जाती है कि वह बहुत दिनों सक काबिज रहे, वह उसी समय समाप्त हो सकती है और हाई कोर्ट को काज लिस्ट बहुत हलकी हो सकती है। एक साल के फिगर्स दिये गये हैं इसमें। १६५४ में २,७१६ मुकदमें दायर किये गये जिसमें ७२१ तो रिएडमिशन के वक्त समाप्त कर दिये गये और बिकया १६०० मुकदमें जो बचे उनमें बाद में निर्णय किया गया। ६२ परसेंट ऐसे केसेज थे जिनमें लोग्नर कोर्ट के फैसले को अपहोल्ड किया गया और १२ फीसदी मुकदमें ऐसे थे कि जिनमें लोग्नर कोर्ट के फैसले को उल्टा गया। तो ऐसी हालत में अगर ऐडिमशन के वक्त किसी अनुभवी आवसी, किसी अनुभवी जज को यह काम सुपूर्व किया जाय और वह गम्भीरतापूर्वक उन पर विचार कर ले तो उसी समय बहुत से मुकदमें समाप्त हो सकते हैं और इस तरह से हाई कोर्ट की काज लिस्ट बहुत हल्की हो सकती है।

वोथी बीज यह है कि हाई कोर्ट के जजों की नियुक्ति प्रक्सर दूसरे कार्यों के लिये हो जाया करती है। जब कभी ऐसा हो जाय तो उन के स्यान रिक्त न रखे जायं। जितने जज भादि हाई कोर्ट के किजी द्रिब्र्न आदि में लगाये जायं, उन के स्थान की पृति के लिये काई न कोई जज की नियुक्ति कर नी जाय पहले से ही तािक काम का हर्ज न हो। जो मीजूदा मुकदमें है उन का कै जला करने के लिये जजों की तादाद काफी नहीं है और इसिलये एक पैनल बना लिया जाय, कुछ और जज नियुक्त कर लिये जायं जो काम कर के बिक्या मुकदमों की सफाई कर दें। क्योंकि हमारे यहां न्याय सस्ता तो है ही नहीं, भ्रगर वह समय से भी नहीं मिलता तो जैसा कहा गया है जिल्दिस डिजेड इज जिल्दिस डिनाइड, वह एक प्रकार से न्याय नहीं भन्याय हो साता है।

अ यमनाप्रसाव शहर]

पान्नी बात भीमन्, संरोदान आफ एन्नीवयानिव और अधिदायरी की है। यह प्रवा मन १६४६ म अन्य यहां द जिनों म लाग की गयी श्री ओर उनक बाव यह १२ जिलों में श्री बढ़ायी गयी। मार्गान श्रीफ एन्नीक्यानिव और नीड़िदायरी का मतलब अगर केवल पहीं की किसी खास तरह के मक्तम एक हाकिम के यहां नाथ और दूसरी तरह के मुक्स दूपरें लाहिस के यहां, तो यह काई मार्गान नना है, यह नी मार्गान आफ जिल्लिकात है। अने एक मान्क एक तहां में के मक्तम करता है, दूसरा दूसरी तहां में यह उस तरह का केपर्मान है थीर यह से रेटान आफ जिल्लिकान है स्वरोध का साम करता है कि जिलन विश्वास आफ एक क्रूटिव और जुड़ि शियरी नहां। इनका मतलब ना यह है कि जिलन विश्वास आफिससं ही वह हाई कोई के अन्य कर्म थि जाय और उनका विश्वास महोग्री से कोई यहां म हो। आज जा बी प्रियान आफिससं ही कहां में रेटान से स्वरान है के एन डी० एम० (जे०) के अभीन हैं। लेकिन बाद में वे कमिटनर के अशीन हो जात है किसी दूसरी जगह म । माय प्रदेश में जैसा सार्यान है अभी तरह का संपर्शन यहां भी एकजीक्यित्य और जांड शियरी का होना चाहिये। जिल्लिका आपिता आफिसमं का प्रमोशन, उनका हान्सफर, उनका रिमाक्स आदि जो भी हो वे सब हाई कोई से होने साहिये और कमिटनर से उनका कोई बारता नहीं रहना चाहिये।

खंडी बात में होई में करायान है बारे म निवेषन करना जाहता हू। सर्जाप प्राफिससं हे प्रतर करायान बहुत कम है लेकिन फिर भी जिस्ता भी है. उन दूर करन ही कोशिया करनी चाहिये। प्रभी रायबर ली जिले म. हाल ही म. प्राटी कलेक्टर महोग्रम ने ६ दुपये म वो दरस्त शोशम है लगेरि। उन वरल ही ही ही कानत एक ही तो हो मौ कपय थी प्रोर दूपरे ही ८० हपये। उनका फोटो तक लिया गया भीर माननीय जीफ मिनिस्टर की मवा में भजा गया भीर दूसरे प्रत्य प्रविकारियों की में गा में भी भें ना गया। एक पेंड की लक्ष ही तो कट कर उनके घर जा चुकी थी, दूसरा पर नी नाम किया गया भीर वह ८० दुपये में नी नाम हुआ। बाव को उन महोदय हो बाकी रकम वैना पड़ी। तो अब प्रापक उन्म प्राथकारों एसा कर सकते हैं, जिनकी नीयत भी माफ नहीं है, जिनकी भावना यह हो कि हम कियी तरह में सरकारी पंत्र का वुद्धयोग करे, उनके लिकाफ मुकबमा जनना जाहिय श्रीर जनकी विकार का किया जाना चाहिये।

तूसरी सिमास में आपके सामन और देना चाहता हूं। दीवानी के बडे अधिकारी, जो अब शयबरेनी में नहीं हैं, और ओ करीब ह साम तक तहा रहें, उन्होंने हह रुपये प्रतिमास को हिमाब में पंचा कृष्टियों को रखा और ३० उपये उनकों दिय। यह १६ उपये न मालूम छ होने किस फड में कार लिये। जब इतने बड़े अधिकारी इस तरह स काम करें तो जनता को अन्वर उनके प्रति विश्वसास महीं रह सकता है। और जगह भी करणान है। छोटी छोटी जगह काफी करणान है। पेशकार की जगह तो एसी होती हैं कि अवर उनका ठेका नीलाम कर विथा जाय तो उनके कहीं उपाया नीलाम में आ जाय।

में पंचायतों के बारे में भी जुल कहना चाहता हूं। माननीय मत्री जी वकील रहे हैं, बे जानते हैं कि पहले मन्सिफों को २४० पये से घांश्रक के घांश्रकार नहीं थे। धाज धापने पंचायतों की ४०० पर्य तक के मुक्तबमों के घांश्रकार वे विये हैं घोर जसकी भी फिर घपील नहीं ही सकती। में घापकों बताऊं, वहां राम धीर रावण की शिट्टी बाल कर फैसला किया जाता है घीर मुक्तबमा खारिज कर विया जाता है। पंचायतों को ४०० क्षये तक के मुक्तबमों का घांश्रकार बेना धनुचित है।

मं, एस०बी०बीजा०, तहुतीलवार और नायब तहतीलवार जो टूर करते हे, तौरा करते है, उन हे सम्बन्ध में कह बेना चाहता हूं कि इससे कोई फायवा नहीं होता। इस समय जहां कहीं चक्रबन्धी होती है वहां हजारों नहीं लाखों गलतियां होती है। ब्राधिसर मोटरों में जाते हैं, कैम्पों में बैठ जाते हैं, और दूर हो जाता है। अगर वे घोड़ों पर बौरा करें तो उन्हें कुछ गलतियों का पता चल सकता है। माननीय मंत्री जी को याब होगा कि जिस समय माननीय काटजू साहब ला मिनिस्टर थे उस वक्त उन्होंने एक सर्कूलर भेजा था जिसमें उन्होंने लिखा था कि On account of economy यह टूर कैन्सिल किये जा रहे हैं। मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि ग्रगर टूर रहे, तो वे इस तरह कि में जायं जिससे जहां जो गड़बड़ी हो उसका पता चलाया जाय। टूर के ग्रन्दर यह होता है कि एक मुकदमा जब लग जाता है तो लोगों को दूसरे गांव से ग्राना पड़ता है। काफी परेशानी उनको होती है। इसलिये जब वे मुकदमें लगाये जायं तब वे जरूर हों। जब ग्राकिसर्स टूर करे तो वे ग्रयना काम श्रयने लिक ग्राफिसर्स को दे दे। इसलिये इस तरफ माननीय मंत्री जी को ध्यान देना चाहिये।

मं एक बात कोर्ट फीस के बारे में स्रौर कहना चाहता हूं। कोर्ट फीस बहुत बढ़ गयी है स्रौर खास तौर से रिट्स के मामजे में। कोर्ट फीस इतनी बढ़ गरी है कि उसमें नीन सौ चार सौ रुपये खर्च करने होते हैं। जो इतना रुपया खर्च करने की सामर्थ्य नहीं रखता वह दायर नहीं कर सकता है। इसलिये माननीय मंत्री जी इस पर भी विचार करें।

ग्रंत में मै यह निवेदन करूं ।। कि मुझे वह ग्रांकड़े बताये जायं कि हाई कोर्ट में बकाया बढ़ रहा है या नहीं ? उतके लिये ग्रांपने क्या प्रयत्न किया है ?

श्री हरिश्चन्द्रसिंह (जिला बदायूं)—पाननीय उपाध्यक्ष महोवय, जो प्रस्तुत अनुदान सदन में रखा हुआ है में उसका समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं। इसमें कोई शक नहीं कि जिन देशों में प्रजातंत्र रहा है उनके इतिहास से यह प्रतीत होता है कि प्रजातंत्र की रक्षा के लिए एक स्ट्रांग, इण्डिपेंडेंट और सैटिस्फाइड जुडिशियरी की बड़ी श्रावश्यकता है। हमारे मन्त्री जी ने जो बजट रखा है उससे प्रतीत होता है कि जुडिशियरी के लिए १,४२,६४,६०० रुपये का अनुदान रखा है। उसी से पता चलता है कि जेल के वास्ते १,८१,४४,६०० रुपये का अनुदान मांगा गया है। जेल के लिए जो अनुदान मांगा गया है, वह ज्यादा है और जुडिशियरी, जिस के लिए इतनी बड़ी जरूरत है प्रजातन्त्र की रक्षा के लिए वह इतनी कम है। में समझता हूं कि जुडिशियरी के साथ जितना न्याय होना चाहिए वह नहीं हो रहा है।

क्योंकि समय ज्यादा नहीं है, इसलिए में थोड़े से मुझाव ही मन्त्रों जी के सम्मुख रखंगा। में आशा करता हूं कि वह उन पर कुछ विचार करेंगे। मेरा प्रथना खयाल यह है कि जुडिशियरी जिसमें मुझे रहने का गौरव प्राप्त हो चुका है उसके साथ ऐसा बरताव किया जा रहा है, जैसा विमाता का हुआ करता है, यह में एक मिसाल देकर बतलाऊंगा। हायर जुडिशियल सर्विस को बने हुए १२ साल हो गये हैं, लेकिन अभी तक उसके पेंशन रूक्स नहीं बने हैं। मुझे स्वयं उससे रिटायर हुए करीब ६ साल हो गये हैं। मेरे साथ और मेरे से पहले जो रिटायर हुए हैं उन में से बहुत से तो मर गये हैं, बहुत से मरने वाले हैं और कुछ ही स्वस्थ बाकी रह गये हैं और शायद जब कि उसके पेंशन रूक्स बन कर तैयार होंगे तब तक बहुत से उन में से मर जायेंगे। क्या हमारे पेंशन रूक्स के बनाने की कोई जरूरत नहीं है? में यह समझता हूं कि हमारे पेंशन रूक्स बनाने का अधिकार इस सेकेटेरियट के आई० सी० एस० आफिसर के हाथ में दिया गया है जिनको कि हायर जुडिशियल सर्विस या जुडिशियल सर्विस से कोई सिम्पेयी नहीं है।

दूसरी चीज जो में रखना चाहता हूं वह यह है कि तनख्वाह के रूत्स भी १६५२ में बने ग्रौर उन के हिसाब से ऐसे रूत्स बन गये हैं जो गड़बड़ थे। उसके लिए रिप्रेजेन्टेशन किया गया, जो मंजूर भी हुग्रा, लेकिन ६, ७ वर्ष हो गये, ग्रभी तक एरियर्स नहीं मिले हैं, कागज इघर का उघर ग्रौर उघर का इघर चला जाता है। ग्रगचें गवर्नमेंट ने मंजूर कर लिया है कि रूत्स ऐबसर्ड बने हें, सही होने चाहिए, वह सही भी हो गये, लेकिन ७ वर्ष हो गये, ग्रभी तक एरियर्स ग्राफ पे नहीं मिले।

इसके बाद में एक चीज की तरफ श्रौर घ्यान दिलाना चाहता हूं। जिस्टिस डिलेड, जिस्टिस डिनाइड, श्रगर न्याय करने में देर होती है तो न्याय का महत्व हो खब्त हो जाता है। हाई कोर्ट में इस समय ४६ हजार श्रवीलों से कम पेंडिंग नहीं हैं बल्कि ज्यादा ही हैं। उन श्रवीलों [भी हरिइनन्द्रमित्]

को तय करने के निए कोई भी कदम उठाने के लिए सर कार तैयार नहीं हो रही है। जो काम हो रहा है वह बड़ो गुन्ता के साथ हो रहा है। हाई कोई में बात बात साल से अब तक अशेल पड़ो हुई तें, उनको तय करने का कोई फेनना नहीं हो रहा है। मं आशा करता हूं कि माननीय सन्त्रा जा इस बात को ओर ध्यान देंगे और उन आगोनों को तम करने के बाद अगर जरूरत न समझे जाय ती स्मक्तरें कर दिने जायं और इन अमानों के तम हो जाने के बाद अगर जरूरत न समझे जाय नी उनको लग्म कर दिया जाय। इनके गाय ही साथ में चाहना हूं कि इस समय हाई कोई में जो २६ जनेन का परनानेंट न्द्रेय है गा बड़ा कर कम में कम ३० हो जानो चाहिए। एक बात के निए में मानवाय मन्त्री जा को अन्यमाद देना चाहना हूं कि आज कल जो D. G. C. S. के एव्याइन्टम्हम हो रहे ने वह बड़े न्याय के नाथ हो एव्याइन्टम्हम हो रहे है वह बड़े उम्बा तरा जो एव्याइन्टमहम हो रहे है वह बड़े उम्बा तरा हो एव्याइन्टमहम हो रहे है वह बड़े उम्बा तरा हो रहा है।

में गवर्नमेंद्र का ध्यान एक बात को ओर भी दिनापा जाउना हूं कि हमारो गवर्नमेंद का यह बायदा या कि हर जिने में किन्द्रिक्ट जना कायम कर दाजा गा। इस ओर कुछ कोशिश भी हुई, कुछ किये भा गये, लेकिन गन दो एक वर्षों से इस तरक स्यान नहीं दिया जा रहा है। अभा बहुन से जिने जैमें - -देहरादून, पानाभोत, मिर्जापुर, हनीरपुर और जालीन वगैरह हैं जियमें किन्द्रिक्ट जजी मुकर्रर नहीं हुई है।

हाई कोर्ट जनेन का नकरंता के स्वालिन के से समझत। हूं कि गननं मेंट को एक बहुत बड़ा करना चहा का जल्दन है। एक सीन जिल का प्रारं में आत्का ध्यान मार्कित करना चाहता हूं यह यह है कि किया जनाने में जब हाई कीर्ट में २०-२१ जने ने हुआ करने ये तब उस में हायर मुंखिश्यन स्वित प्रीर प्रावित्वायन मुंबिश्यन स्वित है के कम में कम एक तिहाई जन हुआ करने ये ने किए इस समय हाई कीर्ट में २५ जन है ने कम उत्त में देन प्रावित्वायन स्वित के सीनन उत्त में समझना हूं कि मनना जा इस तरक ध्यान में कि हमारी प्रावित्वायन स्वित के सावमा भा किया प्रकार में प्रेमाधित नहीं दूर बिलक बहुत से तो बहुत सबसे स्वाल स्वत्व हुए। में भाशा करता हूं कि इस गरान गाँवन, जिलक साथ प्रानेमेंट का स्टेफ्सबरला झाटमेंट हैं, के साथ स्वाय करने का होशिया करने में ता कि यह स्वाय करने के सावो हैं। बाज बक्त कहा जाता है कि हाई कोर्ट के बोक करिएस या जन उत्तो है क्येय स्वात हैं, भाष साथ करने हैं। में समझता हूं कि यह जनका हो मुरिहिडक्शन नहीं हैं। सारका भा एक मुख्य स्थान है, प्रापका भो जुरिहिडक्शन हैं, साथ करा सराम क्रम जोर से जमायें, लाकि इप स्वित के साथ कुछ न्याय हो सके।

इस हे साथ में एक चीज और कहना चाहता हूं और वह यह कि सिविल जज जो सावे चार सौ या चार सौ तनक्षाह पाता है उस का लालों करोड़ों राये का जुरिस्थिकान है, वह सुहबर्म फैलल करता है। तो चया उन हो कोई अनाउन्स देहर उन हा मदद की जायगो, जिस सै में अपना उस ईमानवारों की, जो कि उन हो इस सर्विण के ट्रेडाशन रहो है, कायम रख सर्वेगे? मैं समझता हुं कि माननीय मन्त्रों जो इसका स्थान रखेंगे।

दूसरी जोज यह है कि पुनवमों में फैसलों में ग्रम भी काफी वेर हो रही है जिस में वेवने से पता जनता है कि लाजों के एरियर्स ग्रम भी माना है। जनतंत्र को साल रखने के लिए यह जकरों है कि मुक्तमें जल्म फैसल हों। इसके लिए जुड़िशियन ग्राफिपर्स का नम्बर बढ़ाने की ग्रस्थल ग्रावदयकता है। जैसा कि मैंने पहले कहा था कि जेन में भेगने वालो मान्य ने अपर सरकार का २ करोड़ के अपर कर्मा होता है भीर इस जुड़िशियरो पर जो कि जनतंत्र को कायम रक्षने के लिए है, उस पर उस से बहुत कम कर्म होता है। में समझता हूं कि जुडिशियल ग्राफिसर्स बढ़ाये जाये, साकि उस काम को पूरा कर समें।

इसके चलिरियत युविधियरी और एक्जोक्युदिय के सेपरेशन की बहुत भारी जरूरत है। बैदा के सम्मान, फ़्रोडम और यन की रका सभी ही सकती है यब कि देश में बड़ी भारी स्ट्रींग जुडिशियरी हो और एक्जोक्युटिव से सेपरेट हो। जिस वक्त स्वराज्य नहीं हुआ था, जिस वक्त अंग्रेजों के बंधन में हम थे ता चिल्लाया करते थे कि जुडिशियरी और एक्जोक्युटिव का सेपरेशन होना चाहिए। आज जुडिशियल मैजिस्ट्रेट मुकर्रर करके यह कहा जा रहा है कि हम जुडिशियरों को अलाहिदा कर रहे हैं, में समझता हूं कि कोरा मजाक है और लोगों को मुलावे में रखा जा रहा है। जिस को जुडिशियल मैजिस्ट्रेट कहा जाता है वह वास्तव में मैजिस्ट्रेट ही है। इसलिए जुडिशियरों को एक्जोक्युटिव से अलाहिदा किया जाय और जुडिशियल मैजिस्ट्रेट को हाई कोर्ट और डिस्ट्रिक्ट जज के कन्ट्रोल में कर दिया जाय। उनके नाम को बदल देने से काम नहीं चलेगा और केवल उसके जुडिशियल फंक्शन कर दीजिये।

इसके श्रलावा प्राविशियल जुडिशियल सर्विस ग्रौर हायर जुडिशियल सर्विस के लोगों को भी माननीय मन्त्रो जो थोड़ा सा सम्मान दें ताकि वे लोग भी ठीक रूप से सेवा कर सकें ग्रौर श्रपनी ट्रेडीशन को कायम रख सकें।

\*श्री गोविन्दनारायण तिवारी (जिला जालीन)— उपाध्यक्ष महोदय, में इस कटौती के प्रस्ताव के समर्थन में खड़ा हुग्रा हूं। ऐसा मालूम होता है कि इतने ग्रहम मसले पर सदन में कुछ कम दिलचस्पो है। इसलिए में ग्राप से प्रार्थना करूंगा कि मृझे कुछ ज्यादा समय दे दिया जाय तो ग्रापकी मेहरबानी होगी।

श्री उपाध्यक्ष--७ मिनट के बजाय १० मिनट श्राप को दे दूंगा।

श्री गोविन्दनारायण तिवारी—क्योंकि समय कम है इसलिए पहले में अपने जिले की दिक्कतों की बाबत माननीय मन्त्री जी का ध्यान ग्राक्षित करना चाहता हूं। मेरे जिला जालौन में ग्रब तक कोई परमानेंट जज कोर्ट नहीं है। मुझे यह मालूम है कि हाई कोर्ट ने लिखा गर्वनमेंट को ग्रौर गर्वनमेंट से चिट्ठी पत्री चल रही है इस बात के लिए कि जिला जालौन में एक स्थायी जजिशप स्थापित कर दी जाय। श्रभी तक वहां पर एक मूर्वेबिल कोर्ट है। जिला जालौन के लिटिगेंटेस के लिए इस बात की बड़ी भारी जरूरत है कि वहां एक स्थायी जजिशप हो जाय। वहां एक सेशन जज है ग्रौर एक सिविल जज है, मगर वहां कोई स्थायी कोर्ट न होने की वजह से ग्रगर किसो कागज को तलाश करना होती है तो हमें झांसी या हमीरपुर को जाना पड़ता है, जिसमें बड़ा भारी खर्चा पड़ता है। मेरा निवेदन है कि चूंकि हाई कोर्ट ने लिखा ग्रौर सरकार से भी चिड्ठी-पत्री चल रही है जिसको करीब द महीने हो गये, तो न्याय मन्त्री जी से मेरा निवेदन है कि ग्रगर जिला जालौन में डिस्ट्रिक्ट जजिशप न हो तो कम से कम एक परमानेंट कोर्ट वहां हो जाय।

श्रव एक सिद्धान्त की बात कही गयी कि जुडिशियरी श्रौर एक्जीक्युटिव का सेपरेशन होना चाहिए। यह सिद्धान्त हिन्दुस्तान के कांस्टीटचूशन में ही दिया गया है, इसमें कोई दो रायें नहीं हो सकतीं। माननीय मन्त्री महोदय भी मानते होंगे, लेकिन सदन की जानकारी के लिए में निवेदन कर दूं कि जब कांस्टीटचुएंट श्रसेम्बली में कांस्टीटचूशन का श्राटिकिल ५० पास हो रहा था तो उसके ऊपर कांस्टीटचुएंट श्रसेम्बली के सदस्यों ने यह कहा था कि यह सेपरेशन वर्ष के श्रन्दर हो जाना चाहिए। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने डिबंट में इन्टरवीन करते हुए कहा था कि कांस्टीटचूशन में ३ साल का लिमिटेशन रखने की जरूरत नहीं है। हम उससे पहले ही जुडिशियरी और एक्जीक्युटिव का सेपरेशन कर देंगे। कांस्टीटचुएंट श्रसेम्बली में हिन्दुस्तान के प्रधान मन्त्री ने पहले वादा किया था उसको हमारे उत्तर प्रदेश की सरकार ने श्राज तक कार्यीन्वित नहीं किया। श्रीमन्, इसमें कोई बड़ी बहस की बात नहीं हो सकती। सबसे पहले कांग्रेस के जिये ही सन् १८८६ में जुडिशियरी और एक्जीक्युटिव के सेपरेशन की मांग हुई। उसके पहले श्रग्रेजों के जमाने में भी इसके सेपरेशन की मांग की गयी थी।

<sup>\*</sup>वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[भी गोबियनाग्यण तिवागी]

परन्तु आज का इस उत्तर प्रदेश का सरकार ने उस विशा में कुछ नहीं किया। जो ए० डी० एस० (के०) है वे ही सिविल का भी काम करते हैं। ला कमीशन की रिपोर्ट की आप देखें तो उसमें भी इस बात का तर्जाकरा है कि उत्तर प्रदेश म जो सेपरेशन किया गया है वह महज नाम मात्र के लिए ही सेपरेशन है। में भी समझता हूं कि वह किसी सूरत में भी जुबिशियरी और एक्जी- क्यूटिन का सेपरेशन नहीं है।

उस सिलांसले म म यह बात बता द कि महास म बका १०७, १०६, १०६ और ११० के मुक्बमें भो बिहित्यल मिनरहेंट के सुप्दं हाते हैं. लेकिन हमारे यहा यह आदेश हैं कि एमें मक्त्वमें क्षिटी कर्नेक्टर वेलें जो कि प्रिशंटत हो। मेरो राय है कि वका १०७, १०६ के मुक्बमें जो हिएटो कर्नेक्टर के यहा ह उनका द्रावलम्ब जहां में हवाया जाय और उनका द्राय न मुद्रिशियन में तरहें 2 कर्लाट म हुआ करे। मेने वेला है कि इंग्ली क्लेक्टर के इंजलात में वका १०० के वो मुख्यमें होने हे जनका ६०, ६० पे शिया तक पड़ती है और जब बिग्टी क्लेक्टर में कहा जाता है कि इंग्ली है विन का पुराना मुक्यमा हो गया इंग्लिय गवाहियों की बिना पर इंग्ली के कि वका जल्दी होना चाहिये को हिप्टी कर्नेक्टर कहने हैं कि वका १०० के मुक्यमें फैसल करने के लिये नहीं होते हैं जब तक कि पार्टी क्यापस में नसिक्या न कर लें। इस तरह है उसकी तारील बढ़ती चली जाती है और वा-वा, तीन-लीन साल तक एमें मुक्यमें पड़े रहते हैं। वका १९० के मुक्यमों के सिल्सिले में एक नक्या होता है सिस्पण्डन का जिसे डिप्टी साहब सजूर करते हैं और किर बरागा जो से कहते हैं कि तुमा चार्जशीट सबसिट कर हो।

भी हुकुर्मासह विसेन--प्राय सदन में कोई स्रोमिफिक केस बतला वें जो वी-तीन वर्ष तक चला हो।

भी गोविन्वनारायण तिवारी--रटेंट वर्तेत्र रामप्रताव, यह मुक्तवमा जलाएस॰ की । एम ।, जासीन के यहां तीन साल पहले, यह तो जोत की बात है वकालत के लजुरबे में कि एस० बी० घां० कहते हैं कि १०० के मुकामे फैसले के लिये नहीं होंने। इसके भनावा श्रमर हम इन्साफ जनना को सरना उपलब्ध करानाहे तो सरकार का व्यादेश हाना वाहिये कि डिप्टी बलेस्टरों के यहा यह मुक्तवसे न हो। मेरी जानकारी मन्त्री जी चाहते हैं तो में बता सरुवा हू कि ५ माह पहले एक बालिल लारिज के मुकदमें में सुप्ते बहस करने का मौका मिला, बिनकुल अनकनदेरदेश केंस था, लेकिन पांच महीने में भी तहसीलवार साहब को फुमेंन नहीं मिली कि वह फेमवा उसमें वे वेते। कारण उसका यह है कि तारील मुकरेंद हुई। साइल तारील की पहुंचा तो मालुम हुआ। कि जब विकास प्रवेशनी के लिये २४ चेपये दोगे तब फैसला मृनाया जायगा। इस तरहें से जिला जालीन से विकास प्रदर्शनी के नाम पर १०,००० तपया वहां की रेबेन्यू लिटिनेन्ट पब्लिक से बसूल किया गया है। जनके दाविल नारिज व कागजात ब्रान्तगी के केसेज तहपीलवार के यहां कर्ल रहे थे। जा ब्राज तमाम तरह के काम सहसी लबार के धीर बिन्टी कलेक्टरों के बड़े हुए हैं उन्हें बन लोगां को करने दिया जाय। ग्रगर जन्में फुरेंस नहीं है तो कोई बजह नहीं है कि २ - १ हजार और डेढ़-डेढ़ हजार मुकरमें डिप्टी करीयटरीं के यहाँ पड़े हैं, उन्हें लारील बेने तक की फूर्वल नहीं है। इस लरह सी० प्रार० पी० सी० भीर रेबेम्यू के मुकाबमों को जकर वहां से धलग करना बाहिये।

ध्य अधिक सेपरेशन पर न कहकर दूसरी बाल में यह कहंगा कि इसी में यू० पी० की जनता का करवाण है कि मैजिस्ट्रेसी को हाईकोर्ट के धण्डर कर विया जाय तभी सेपरेशन सार्थक हो सकता है। इससे जो इंतजामिया मैजिस्ट्रेसी है वह ध्रपना काम धलग करेगी और जो जुडीवियल मैजिस्ट्रेसी हो वह मुकड़में करें। इस सम्बन्ध में में यह भी निवेदन कर हूं कि धानरेरी मैजिस्ट्रेसी की प्रया क्यों खलाई गई थी, धाज उसका कोई उपयोग नहीं है, इस प्रया को ध्रव धालिस्व करव करना खाहिये। ध्रप्रेजों के जमाने में सुन्न लोग उनसे इज्जत पाने के लिये धानरेरी मैजिस्ट्रेस होते थे, न उसकी कोई ट्रेनिंग

होती है न कोई एजूकेशन ही होती है । कोई वजह नहीं है कि म्रब उस प्रथा को कायम रखा जाय । इसी तरह से डिपार्टमेंटल मैजिस्ट्रेट्स हैं, केनाल के या मोटर वेहिकिल्स मैजिस्ट्रेट म्रलग है, इस तरह से म्रगर डिपार्टमेंटलिज्म म्रलग-म्रलग होगा तो इन मैजिस्ट्रेट सीज का क्या लाभ होगा ?

में ग्रब सेपरेशन की बात छोड़ कर एक वात जूडीशियल ग्रक्सरों की पे के बारे में यह निवेदन करूंगा कि ग्राज मुन्सिक व सिविल जज का बेतन ३५० से ६५० तक है ग्रौर जब मुन्सिफ से कोई सिविल जज होता है तब उसके डिजिगनेशन में तो ग्रन्तर होता है, लेकिन वेतन ग्रौर रिम्पूनरेशन में कोई ग्रन्तर नहीं होता । मेरा निवेदन है कि सिविल जज का ग्रेड ग्रलग होना चाहिये ग्रौर उस का स्टार्ट भी कुछ ग्रधिक निश्चित होना चाहिये ग्रौर तथ होना चाहिये कि उनका वेतन क्या हो । उनके काम में भी ग्रन्तर है । इसी तरह से सेशन जज ग्रौर जिला जज को बात है । सेशन जज का ग्रेड ६०० से १२०० तक है ग्रौर जिला जज का ८०० से १८०० तक है ग्रौर जिला जज का ८०० से १८०० तक है । ग्राखिर उन दोनों में ग्रन्तर कौन सा है ? सिर्फ ग्रन्तर इतना है कि जिला जज एडिमिनिस्ट्रेटिव मुक्दमे ज्यादा करेगा, उसे विभागीय मामले ज्यादा करने पड़ते हैं । सेशन जज ग्रुपील मुनते हैं, जहांतक काम की बात है दोनों कानूनी काम करते हैं । इतना बड़ा ग्रन्तर सिविल एण्ड सेशन जज के वेतन में ग्रौर डिस्ट्रिक्ट जज के वेतन में है, वह किसी सूरत में न्यायसंगत नहीं हैं । ला कमीशन की रिपोर्ट में भी इस बात का जिक किया गया है । वेसे भी एक बड़ी साधारण सी बात समझ में ग्राती है कि सेशन ग्रौर डिस्ट्रिक्ट जजेब का ग्रेड एक ही होना चाहिये ।

स्रगर स्राज हाईकोर्ट के एरियर्स की तरफ देखा जाय तो हाई कोर्ट का एक जज प्रदेश की २६ लाख स्राबादी पर पड़ता है जो बहुत कम है। हाई कोर्ट की स्ट्रेंथ कम से कम ३० होनी चाहिये जो कि रिकमेण्ड भी की गई है। १९५४ के फीगर्स स्रगर देखे जायं तो सिविल सूद्स १,५०,७२८ थे जिनका वेल्यूएशन ६,४५,७०,२८६ ६० था। फौजदारी के मुकदमे देखे जायं ३,५७,२६६ थे जिनमें मुलजिम ७,६३,६१६ इनवाल्ब्ड थे स्रौर गवाह ६,५४,४७८ थे। इस तरह से स्राप देखेंगे कि सिविल सूद्स में बहुत बड़ी रकम इनवाल्ब्ड है स्रौर बहुत से गवाहान स्रौर मुलजिम कि सिवल के सेज में इनवाल्ब्ड हैं। तो जाहिर है कि हाई कोर्ट की जो स्ट्रेंय है वह बिलकुल स्रपर्याप्त है स्रौर बढ़नी चाहिये।

श्री स्रतीकुल रहमान (जिला बिजनौर)— जनाब डिप्टी स्पीकर साहब, में मुख्तसर तौर से इस कलील वक्त में २, ४ बातें कहना चाहता हूं और कटमोशन की मुखालफत करता हूं। हमारी जुडिशियरी ऐसी है कि जिस पर जितना फखा किया जाय कम है। इन्साफ के नुक्ते निगाह से भी और रिश्वत वगैरह जैसे गुनाहों से पाक साफ होने के नुक्ते नजर से भी। फिर भी कटमोशन के मूवर ने यह बात फरमायी है कि नीचे करप्शन है। यह बात सही है। में यह समझता हूं कि जब जुडिशियल स्रफसर हमारे ज्यादातर पाक साफ है तो अगर पिनक स्रौर बार दोनों जुडिशियल स्रफसरों से ताबुन करें तो बहुत ज्यादा हद तक यह खराबी दूर हो सकती है।

कोर्ट फीस के मुताल्लिक कहा गया । मेरी मालू नात यह हैं कि जितना ऐड-मिनिस्ट्रेशन ग्राफ जिस्टिस पर खर्च हो रहा है कोर्ट फीस उससे ज्यादा नहीं है। स्कूल की फीस हो या कोर्ट की फीस हो, फीस का उसूल यह है कि जो सीवस की जा रही है उससे ज्यादा पिल्लिक से न लिया जाय । कोर्ट फीस का जब बिल पास हुग्रा था उस वक्त भी हाउस में बहस हुई थो । उस बहस में भी ग्रोर इस वक्त भी कोई यह बात साबित करने में का मियाब नहीं हुग्रा कि जो फीस ली जा रही है वह फीस सिवसेज से ज्यादा है । इससे मुझे झौर भी ज्यादा यकीन होता है कि जो कुछ मेरी मालूमात हैं, वह सही है । फीस [भी प्रतीतुल रहमान]

धौर टंक्स के फर्क को लास तौर से वाजे तौर पर समझना चाहिये। टंक्स तो एक एसी रकम हे जो कही भी लाम की जा सकती है। एक वफा पिलक सेटंक्स ते लिया गया, उसे सरकार नहरो, सड़को बगरह पर कहीं भी किसी काम के लिये ला कर सकती है। जेकिन फीस का यह उसून है जो मैंने बयान किया धौर मेरी मालूमात में फीस उसने ज्यादा नहीं है। इसलिये कोर्ट फीस के ज्यादा होने के एतराज में कोई जान नहीं मालूम होती।

एक बात सेपरेशन आफ एक्स क्यटिय एंड ज्डोशियरी के मुलाल्लिक कही गयी। यह बहुत ब्रिनियावी बात है और क्य हमारे कांस्टीट्य्शन में यह बात मीज़व है। अगर आप वेलें, जब से बागडोर कांग्रेस हुक्सत के हाथ में आई है तब में बराबर इस बात को कोशिश की जा रही है और से ।रेशन किया जा रहा है। में तसलीम करता हूं कि मुकस्मल से ।रेशन उसको माना जायगा जब हर एतजार से जुडीशियल सर्विमेज हाई कोर्ट के अण्डर आ जायं। लेकिन मौजूरा जमाने में जो इस्तजामी हालात हैं, जो दश्वारियां या परेशानियां है उनकी वजह से वह बात नहीं की गयी। लेकिन वह बात भी की जायगी क्योंकि सभी इस आइडियल से इसफाक करते हैं कि जुडीशियल सर्विमेज हाई कोर्ट के अंडर की जायं।

एक बात कैमेज के जमा होने के बारे में कही गयी। इसके मुनाल्सिक मेरा एक बहुत हुने हान्या मुझाब है। जहां तक हाई कार्ट का ताल्मुक है वहां शहाबत नहीं होती, सिर्फ बहुत होती हैं। तो श्रासानी से यह किया जा सकता है कि एक किरम के केमेज को एक जगह जमा कर शिया जाय और उनपर एक साथ बहुत हो जाय। धगर एक किरम के केमेज को जमा करने की दशाबीन की जाय तो मेरे लयात्व में कोई बुश्वारी नहीं होगी। इसमें हाई कोर्ट का काम काफी हल्का हो सकता है। इसके बाव भी धगर हाई कोर्ट के जजेज को बढ़ाने की जरूत हो, डिस्टूबट कॉर्ट्स में जड़ीशियल धाफिमसें को बढ़ाने की जरूरत हो तो यह भी बहुत जरूरी बात है किस पर स्थान बेना चाहिये। केसेज को जहां तक जल्दी करने का सवाल है इसकी हक करने के लिये जो करह भी किया जा सकता है हमें करना चाहिये। इन ग्रल्फाज के साथ में इस करमोशन का विरोध करता है।

श्री शिवशंकरसिंह (जिला बालिया) ——मानगीय उपान्यक्ष महोवय, में भाषका बहुत साभारी हूं कि भाषने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर बोलने के लिये थीड़ा समय दिया। इसमें कोई शक नहीं कि इस वक्त मुकबमी के बारे में काफी संस्था बढ़ी हुई है। अभी हाई कोट की सन् ४८ की अपीलें पड़ी हुई है जिन पर कोई निर्णय अभी तक नहीं हुआ। मुकबमें पड़े रहने से लोगों को काफी परेशानी होती है।

जब से हमारे मौजूबा माननीय मंत्री ने इस विभाग को हाथ में लिया है तब से बरावर मह कोजिश उनकी तरफ से हैं कि पुरान मुकदमों का जरूबी फैसला हो जाय। मान्यवर, में एक सुमाब देना चाहता हूं कि जो जुड़ीशियल ध्राफिसमें कमिश्नरों के नीचे ध्रभी काम करते हैं बेहतर हो कि वे हाई कोर्ट के द्वायरक्ट कंट्रीस में कर दिये जायं। क्योंकि डिग्टी कमिश्नर के मीचे रहनें में वे अपनी स्वतंत्र राय नहीं वे पाते।

इसके अलावा एक और सुमाब मुझे बेना है और वह यह कि इस प्रवेश में ताल्लुकेवारी तो करम हो गयी मगर ताल्लुकेवारी ला अभी भी प्रकालत है। यह कानून मन् १८६० में बना था। वह हिन्दू और मुसलमान बोनों पर लागू होता है। इसके मुताबिक एक ही धावनी पूरी जायबाव का मालिक होता है। यह सामन्तवाव का एक जीता जागता नम्ना है। हिन्दू सक्तेशन ऐक्ट सन् ४, में पास हो गया। उसने विषवाओं का पूरा हक दिया गया है। मगर ताल्लुकेवारी ला के हिसाब से सिर्फ एक को छोड़ कर कोई भी उस जायबाव का मालिक नहीं हो सकता। में माननीय मंत्री जी से अनुरोध कर्कगा कि जो ऐसा सामन्तवावी कानून है इसको अल्बी से जल्बी सरम किया जाय और हिन्दू हिन्दू ला से गवर्न हों और मुसलमान मुल्लिम चा से गवर्न हों। वस मुझे यही कहना है।

(इस समय १ बजकर १६ मिनट पर, श्री उपाध्यक्ष चले गये थ्रौर श्रिष्ठाता, श्रीमती चन्द्रावती, पीठासीन हुईं।)

श्री लक्ष्मीनाराणय बंसल (जिला ग्रागरा) — ग्रिष्ठात्री महोदया, जो ग्रनुदान मंत्री महोदय ने पेश किया है में उसकी ताईद में खड़ा हुग्रा हूं ग्रीर जो कटौती का प्रस्ताव मेरे माननीय मित्र यमुनाप्रसाद जी ने पेश किया है, उसके विरोध में खड़ा हुग्रा हूं। में तो यह समझता हूं कि ग्रार कटौती की जगह कोई बढ़ोत्तरी का प्रस्ताव हो सकता तो में जरूर उसकी पेश करता क्योंकि जो ग्रनुदान न्याय के लिये मांगा गया है वह उसकी जरूरतों के लिये बहुत नाकाफी है। ग्राबिरकार जो हम ऐडिमिनिस्ट्रेशन ग्राफ जिस्टिस से ग्रामदनी करते हैं वह हमें खसूसन इसी विभाग के चलाने में सर्फ करनी चाहिये लेकिन हम देखते हैं कि वैसा नहीं हो रहा है। यह ग्रामदनी बूसरे विभागों में भी खर्च हो रही है। जहां तक जुडीशियरी का ताल्लुक है इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता कि "A strong and independent judiciary is sine qua non to the success of democracy" हमारी जुडिशियरी स्ट्रांग भी है, इंडिपेंडेंट भी है, लेकिन ग्रभी वह इतने हैंडिकैंप्स में काम कर रही है कि उससे पब्लिक को जितनी राहत मिलनी चाहिये उतनी नहीं मिलती है।

श्राज हमारे न्यायालयों की इमारतों का दिग्दर्शन कराया जाय तो श्रकतीस होता है। वांचू के रेटी जो शायद सन् ५० में मुकरंर हुई थी उसने यह रिपोर्ट की थी कि बिल्डिंग ऐसी होनी चाहिये कि मालूम पड़े कि टैम्पिल श्राफ जिस्ट्स है। श्राज में श्रागरे की श्रदालतों की इमारतों की तरफ सरकार का घ्यान दिलाना चाहता हूं कि कितनी दयनीय दशा वहां की है। एक दिन में कचारी पहुंचा तो नेंने देखा कि एक त्रियाल टंगा हुश्रा है। मेंने पूछा कि क्या श्राज कोई दावत का इन्तजाम है। तो मालूम पड़ा कि एक एडिशनल कोर्ट मुकरंर हुई है, उसके लिये कमरा नहीं था लिहाजा त्रिनाल के नीचे श्रदालत होगी। तो जब यह हालत है तो क्या काम हो सकता है? गरनी का मौसम श्रा रहा है, गरम हवा चलेगी, लू चलेगी, घूप भी होगी तो भला कैसे कोई काम कर सकता है? बहां की इमारतों की हालत यह है कि कुछ को बने ६०-७० वर्ष हो चुके हैं। मैंने शायद इसी सदन में एक दफा जिक भी किया था कि वहां के बरामदों के फर्श चलते चलते इतने घिस गये हैं कि बारिश की बौद्धार का पानी जब श्राता है तो एक दरिया का सा नजारा हो जाता है श्रीर एक श्रदालत से दूसरी श्रदालत में पहुंचना मुहकल हो जाता है। मेरा श्रनुमान है, श्रगर मैं गलत होऊं तो माननीय मंत्री जी ठीक कर देंगे—श्रागरे की जजी से ४ लाख रुपये की नेट इनकम खर्चा वगैरह काट कर है, लेकिन यह श्रामदनी उस पर खर्च नहीं की जा रही है।

जुडीशियल श्राफिससं के रहने के लिये कोई इंतजाम नहीं है । जुडीशियल श्राफिससं किराये के बंगलों में रहते हैं और वहां ज्यादातर बंगले वकीलों के हैं, उनमें रहकर उनकी क्या दशा होती होगी यह तो वही जानते होंगे। लेकिन हम इतना जानते हैं कि गांव वाला सोचता है कि वह किस व हील के बंगले में रहते हैं, चलो उसी को वकील करो। यह विचार श्रगर प्रवृतिक के दिमाग में श्राता है तो यह चीज जुड़ोशियरी के लिये शोभनीय नहीं है। हमारे यहां जमीन की कमी नहीं है, जो जज का बंगला है वह काफी बड़ा है, वहां पर सब श्रद लतें बन सकती हैं श्रीर जुड़ीशियल श्राफिसर्स के लिये क्वाटर्स भी बन सकते हैं। लेकिन हमारी समझ में नहीं श्राता है कि इस श्रोर कदम क्यों नहीं उठाया जा रहा है। मुंसिफ को ३३० रुपये तनस्वाह मिलती है। श्राय उससे कैंस उम्मीद कर सकते हैं कि वह ५०, ५५ रुप क्ये के किराये के बंगले में रहकर श्रपती गुजर कर सकता है। लेकिन मकानों के किराये बहुत ज्यादा है श्रीर मकानों की बहुत कती है इसलिये मजबूरन उनको इतने ज्यादा किराये के मक नों में रहना पड़ता है। डम करते रूप उनके कैंसे ए होशि रेसी श्रात्रेगी जबकि उनको पेट भर काना नहीं मिलगा। जो तनस्वाह सबग्री किन सुड़िस्क्यरी को लिहाज से श्रीर किन्सी हो की तनस्वाह उनको पिलती है उसमें इजाफा होने की सस्त जरूरत है ताकि वह इंडियेंडेटली काम कर सकें।

[श्रो लक्ष्मीन।रायण बसल]

श्रीमत, हमारे यहां जी कातृत बते हैं वह बहुत पुराने हैं। चक्त की देखते हुए वह पराने पत्र गरे है। इन कानु में को फिर से देवने की जलरत है, मेरा मुझाव तो यह है कि एक हाई पावर करीतन महरंग हिया जाय जो इन कानुनों की वेच और तरमीमान पेश करे। कुछ कानुनों से तो पत्र लिक की बढ़ा नुकसान पहुन्द रहा है। सिसाल के तौर पर नास्ता दीवानी की दफा ४२ है। ३६ प्रते में निवित नाज अवेड नेंग ऐश्वासना। उस समय कानन यह था कि एक कोर्ट से प्रार दसरी कोट को होई डिप्री इजराय के निये जाय श्रीर कोई फरीक मर नाय तो वारिस बनाने के निरंवह दियी उसी पेरेन्ट कोई को वायस भेज से पहती थी। इसमें बहा वक्त सर्फ होता था. त्रवान्त्रत होती यी प्रोर बड़ी विक्कत होती यी। इसकी वेत्रते हुए सरकार ने दूसरा कातन सनाया कि वह अधानन निमने दियों जायाी जाकी वही श्रान्तयाचात होंगे जी पेरेंट कींट वेकिन इसमें हुन एक्स रह गया श्रीर इस हे बारे में हाई होटे की तेजवीज हुई है कि लाकी का की बिप्री धनन मुंगकी में जानी है तो गैर मन कुना नायराव से एक्नोक्यूट नहीं हो सकती इसने बहुत पी दिशिया धाल गैर मन हुना नायशाव के जिल्य बसूल नहीं हो सकती है। कुमरी और क्रापने पंचायनों को ५०० पर्य तक के क्राव्यागाम ये गण है। ५०० वप्ये तक के माम नों में बह दियी कर सकती है। अयर पत्नायत ही कोई दियी इजरा के लिये मंसिफी में जानी है तो वह पेर मत तना जायवाँव के जरियं से बसून हो सकती है। ने किन विभी की जिप्री भैर मने हुन। जायवात से बसून नहीं हो सकती है। यह कानन म कभी रह गई थी। जिल्लाना बाहियं या कि.--"The Transferce Court will also have the same powers as the Parent Court. " यहां से लक्ज (also) जहां बिया । इससे जो मतलब सरकार का का कह लाव हो गया और दूसरा मतलब हो गया। इस तरह की काननों में वामियां है। में न्यमसना हं कि सरकार इस फ्रोर कारना छन्ति । क्षत्रम उध्योगी ग्रीर जी वामियां मिनेंगी उन्हों बबरत करेने का गरीका कानायेगी।

हैं क्योर क्यार प्रमुख्य विभाग एंगा विभाग है जिससे जनरत प्रमुख्य का क्रिक्तर काम पहता है क्योर क्यार प्रमुख्यिक स्थमन ही है कि ठीक न्याय नहीं स्थितना है तो इसका त्रीजा यह होता है कि प्रमुख्यिक में सरकार के लियाफ एक भारणा पैदा ही जाती है। ब्राज इस चीज से कोई क्यार नहीं कर सकता है कि क्यारान हों का काम जिल्ली करदी कीर स्पासता ने होना चाहिये

उतना नहीं हो रहा है।

यहां कार्ट फीस भी प्रयादा है। सेर एक सित्र ने कहा कि कोर्ट फीस की प्रामरनी नार्वे से कम है, में इससे इसकाक नहीं करता है। कोर्ट फीस की धामदनी कहीं की क्यादा में ऋरिर इससे राव वंतेन्द्र का सनाफा होता है। अभी रशियन हे नीगेशन हमारे देश में प्राण वह बार एमीनियंशन धागरा में भी धाया। मेरे उत्ते बातबीत की। नेने पूर्वा कि काप के यहां काँ के कि का क्या लर्राका है। नो वह हम कर कहने लगे कि हमारे यहां कोंद्रं फीम नामिनल है। सिर्फ मनी सूर्म पर कोर्ट फीस होनी है। इत्राह से बहां क्षिप्टा विनिश्टर बाक ला, संदुल गवनेवंट भी उनके साथ ये। वहा यह भी जिल कार्या कि कहा गरीब सकदे लड़ने वालों के स्कदमें की लड़ने का बार एमीसिएमंस मुक बेनजाम करती है। बिस्टी मिनिस्टर साहब ने कहा कि बाप भी ऐसा वर्षों नहीं करते हमने कहा कि हम जकर करेंगे मगर थाप कीर्ट कीत के मामले में पहले करम उठाइने। में कोर्ड फीन को घटाने या उसकी मुकालिकन में नहीं लका हुआ हूं। में तो कहता हूं कि कोर्ट फील और ज्यादा बसूल की जाय, लेकिन शर्त यह है कि जो बसून की जाय, इस विभाग के वर्ष में सर्फ हो लाकि इसमें इम्प्रूबमेंड हो। कुछ बोर्स हे जो सरकार बड़ा झामानी से कर सकती है, जैने सेशंस में मुक्तबमें हीते हैं, उन से खटम होते हैं। फौरन हैं। उस पर बहम करती है और बहुन के लिये क्यानों की सकल चाहिये। क्यानों की नकल नहीं मिल सकती। नतीज यह हिना है कि गैर कालूक्ट खर्रित से लकल हासिल करनी पहनी है, जिसकी सब जातते हैं। वंजाब में शायब यह इंस्काम है कि लिखे बहस के बाहते मकल बार बाने के लेज के हिसाब से मिन जानी है और उसकी वे की जाती है। यह बंबज्ञाम कर विया जाय कि हर कोर्ट में टाइन्स हों श्रौर जब वह श्रदालत के लिये टाइप करें तो उसमें कार्बन लगा कर श्रौर ज्यादा कार्प। निकाल लें। उसके लिये ऐडेशनल खर्चा जो हो वह वसूल किया जा सकता है। जो उससे ऐडेशनल इनकम हो उससे ऐडेशनल टाइपिस्ट रख सकते हैं श्रौर दोनों पार्टीज को कापिया पहुंच सकती है। यह मामूली सा सुझाव है जिसको श्रगर गवर्नमेंट मंत्रूर कर ले तो करण्यान एक हद तक मिट सकता है श्रौर मुकदमा लड़ने वालों को जो दिक्कते होती है वह भी कम हो सकती है।

\*श्री सैयद जरगाम हैदर (जिला बहराइच) — ग्रक्षमोस की बात है कि ऐडिमिनिस्ट्रेशन आफ जिस्टिस जो स्टेट के तीन खास फंक्शंस में से लेजिस्लेटिव, एक्जोक्यूटिव ग्रीर जुडीशियल— ग्राज उस जिस्टिस के फंक्शन के साथ बहुत बड़ी इनजिस्टिस की गर्यी है कि उसके डिशेट को इस कदर महबूद कर दिया गया है। जहां तक इस डिपार्टमेंट का ताल्लुक हे इसके मुस्तिलिफ फंकशंस है।

इसका एक सब से बड़ा फंक्शन ड्राफ्टिंग का हे, वह लेजिस्लेशन जो हाउस में पेश होते हे उनकी ड्राफ्टिंग करना। स्रगर स्राप इजाजत दे तो इस मामले में मे गवर्तमेंट स्रौर पूरे ला डिपाटंमेंट का इम्भ*ीचनेट करना चाहता है*। उसका सबसे बड़ा सबत यह है कि हम लोगों के पास किये हुए लेजिस्लेशन्स म्राये दिन हाई कोर्ट मे म्रल्टरावायरिस हुम्रा करने है। ज्यादा इम्पीचमेट ला डिपार्टमेट का कोई हो नहीं सकता। लीगल रेमेम्ब्रेंसर, डिप्टी लीगल रेमेम्बेंसर, ऐडवोकेट जनरल ठीक तरह से कानून की निगरानी नहीं करते, ड्राफ्टिंग के बाद प्रिंसिपिल ग्राफ जस्टिस एण्ड इक्टिटी के ऊपर स्कूटनी नहीं करते। इसलिये में सुझाव देना चाहता हुं कि इस डिपार्टमेंट को डिसेन्ट्रलाइज कर देना चाहिये । इस वक्त ड्राफ्टिंग, लीगल स्कुटनी और पब्लीकेशन तीनों एक जगह पर सेटर्ड है। मेरा सुझाव है कि इसको तीन हिस्सों ड्राफ्टिंग करने वाला डिपार्टमेट म्रलग कर दिया जाय। में बांट दिया जाय। उस की स्कूटनी होनी चाहिये कि भ्राया कांस्टीट्यूशन के उसूलों के ऊपर करेक्ट है या नहीं। प्रिंसिपल भ्राफ इक्विटी एण्ड जस्टिस को वायलेट तो नहीं करता है कि जो कल हाई कोर्ट में में जो ग्राप पब्लिश कर देते हैं, उससे कितने ग्रादमी उसे जान पाते हैं, कितने उसकी देख पाते है और कितने उसके बारे में श्रपनी राय कायम कर पाते है ?

इसके बाद दूसरा सुझाव हाई कोर्ट के बारे में मुझे देना है और उसमें दो एक बातें मुझे म्रर्ज करनी है। लेखनऊ बेंच के ज़्रिस्डिक्शन के बढ़ाने का मसला भ्ररसे से भ्रवध बार एसोसियेशन एजीटेट कर रहा है। विक्त की कमी की वजह से में उसके वजहात ग्रीर ग्रसबाब का बयान नहीं करना चाहता, लेकिन यह में जरूर कहूंगा कि इस बारे में गवर्नमेंट को चीफ जस्टिस के मराविरे से जल्दी ही कोई फैसला कर लेना चाहिए। दूसरी बात जो मुझे प्रजं करनी है वह यह कि लखनऊ बेंच में परमानेंट जजेज की तादाद बहुत कम है। हर फोर्टनाइट में दो जज इलाहाबाद में लखनऊ ग्राते हैं ग्रीर एक हफ्ता मुकदमा करके लौट जाते हैं। से तकरीबन ६८ हजार रुपया साल उनके ट्रैवेलिंग एलाउंस पर खर्च करने के लिये ग्रापने बजट में प्रोवाइड किया है। बदकिस्मती से न्याय मन्त्री जी यहां मौजूद नहीं है। नेगी जी को वह ग्रपनी स्रोर से डेप्यट कर गए हैं। तो उनसे में निवेदन करूंगा कि मेरी तरफ से यह गुजारिश उनसे वह कर देंगे कि वह इस बात पर गौर करें कि इलाहाबाद से लखनऊ तक जजेज के ग्राने जाने का खर्वा जो पड़ता है, ६८ हजार राया साल उनके ट्रेबेलिंग एलाउन्स के लिये जो श्राप पे करते है, उसी में ग्रासानी के साथ दो परमानेंट जजेज का लखनऊ बेंच के लिये ग्रप्वाइंटमेंट हो सकता ये जज यहां मुस्तिकल रूप से रहेंगे। केवल चीफ जस्टिस का दौरा होना चाहिये। व<u>ह</u> भ्रायें, हपने में एक दिन रहें श्रौर लौट जायं। इस तरह से इसी खर्चे में दो जजेज बढ़ जा<u>येंगे</u> श्रौर एरियर्स के हटाने में उनसे मदद मिलेगी श्रौर श्रौर भी बहुत कुछ सहूलियत हो जायगर।

<sup>\*</sup>वक्ता ने भावण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

#### [ओ संयव जरगाम हैवर]

संदान जजों के बारे में मेरे। यह गणारिदा है कि इस बक्त तक रिवाजन की पावसं हिस्कित एक संदान जजेज की बिलकुल नहीं है कोर जब वह प्राइमाफेंगे। सेटिरफाई होते है कि कोई रिवाजन मेरिनबिल है तो ला यह कहता है कि वह उसे हाई कोर्ट को रेफर कर दे। बहुत से केंग्रत में हम जानने है कि जिसमें बिरिट्बर एक्ट सेदान जज सिटरफाइड होने हैं कि लोग्रर कोर्ट में दीक फंपला नहीं किया, लेकिन हाई कोर्ट में रेफरम करने हुए वह करते हैं। इसलिये कुछ पायमं उनहीं रिवाजन की मिलनी साहिय।

श्रीसम्देट संदान करेत के बारे में भी मुझे एक सुझाय देना है। इस वबत तरीका यह है कि एक म्सिफ जब कुछ महत पुरा कर लेता है तो एक प्रमाय की श्रीसम्देट सेवान जज बना विया जाता है। श्रीर नैय ही यह श्रीसम्देट सदान जज होता है उसकी किमिनल पावमें हो जाते हैं, साल वर्ष की राजा दे हें का श्रीयकार उसे हो जाता है बोर सकड़ क्लाम की श्रयोल हिस्पोल श्रफ करने का भी हक उसे ही जाता है। लिखन १० परसट एस मिलकों को किमिनल ला का कोई एक मार्थी स्थान है। उनकी एक वर्ष मा प्रमाय किमिनल के बारे में मिल जाते हैं। इसके लिये में एक सुझाय यह देना श्रीह ला है कि मिलकों हो। उनके लिया जहा वह केवल सिविल वर्क वर्णा परत है, कुछ किमिनल वर्क भी उन्हें वे विया जाय। कुछ किमिनल केमें भी उनके कीट में हीने पाहिये ताकि एक बाद श्रीपटलाइन किमिनल करित्य की उनके विमाग में श्रा जाय। में उनकी परिदर्भ श्रीर एकिलिटी पर कीई सरकारट नहीं कर रहा हूं। मेरा मतलब केवल इतना है कि एक व्यास पर्या की श्री एक पर्टीकृत्य साल्य झाफ ला से नावाकिक हो, इतनी वाहक पावर्य वे वेना असिक श्रीमार्थ है कि एक ऐसा सुझाय है कि जिस पर वह जहर रायान वय।

"It will thus be clear that the system of separation which prevails in some of the districts of Uttar Pradesh is only a separation in form; the substance of separation, namely the freeing of the, Judicial Officers from executive control has not been achieved."

इसिलयं मेरें। अ। पर्स इस बबल यह भी गुजारिश होगी। कि इस पर लास तीर से आप व्यान वें और कोई बजह नहीं है कि मेजिन्हेंट्स को कर्म्सीटली। हाई कोट के सवाद्विनेट न कर विया जाय। इस सिलसिल में सिर्फ एक ही बजह बलायी। जाती है गयनेमेट की तरफ से, यह वहीं बजह थी जिसकों सन् १६० में बाइ मराय की एक्जीक्यूटिव को सिल के होम में बर ने बताया था कि उससे एक्जीक्यूटिव पावर कम होंगे और ला एक आवंश पर असर पड़ेगा। उसके बारे में में आपके सामने केवल अगर ला कमीदाल की रिपोर्ट की बताऊ तो मालम होगा कि उत्ते इस बात की बताया है कि एक्जीक्यूटिव और जुडाश्वायकी के सेपरेशन में ला एक आवंर पर कोई असर गहीं होसर।

में मीजिय में जुडीशियल में जिस्हें हो बारे में यह बात शहना बाहता हू कि उनका लाट बढ़ा जराब है। एक मुस्सिफ हाई कोट का जज हो जाना है। नामब नहसीसवार वियो कस्मेक्टर हो जाता है। कान्नमों किटी कस्मेक्टर हो जाता है, लेकिन जुडीशियल मेंजिएंट १९६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--ग्रनुदान हह १ संख्या १६---लेखा झीर्बक २७---याय प्रशासन

जैना शुरू में होता है भ्राखिर तक वही जुडिशियल मैजिस्ट्रेट रहता है। यह स्टेप मदरली ट्रेटिन जुडिशियल मैजिस्ट्रेट्स के साथ नहीं है बल्कि सेगरेशन के साथ है। में माननीय मंत्री जी से गुजारिश करूंगा कि इस बारे में खासतीर से ध्यान देने की मेहरबानी करें।

(श्री यमुनाप्रसाद शुक्ल का नाम पुकारे जाने पर)

श्री राजनारायण (जिला वाराणती)—महोदय, मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है। नियम के अन्तर्गत हमारा यह व्यवस्था का प्रश्न है कि स्थानापन्न अध्यक्ष महोदय चेम्बर में बुलाकर हम लोगों से बात करते हैं। यहां सदन में भी बात करते हें और कहते हैं कि आप लोग चैम्बर में बात हमते कर लें। आज अभी सवेरे उनके चेम्बर में बात हुई और हम लोगों की आपस में यह बात तय थी कि जो भी अनुदान सदन में बहस के लिये लिया जाय उस पर हर दल के एक-एक प्रवक्ता जब बोल लें तब दूसरे दल के दूसरे लोगों को बोलने दिया जाय। सोशालिस्ट पार्टी के एक भी सदस्य को अभी तक इस अनुदान पर बोलने का मौका नहीं मिला। कई बार आपसे निवेदन किया भी, आपके सचिव को भी समझाया गया मगर मुझे अक्षेत्रस के साथ कहना पड़ता है कि न्याय जैते विभाग पर हमें अवसर नहीं मिला। इसके सम्बन्ध में आपको मालून होना चाहिये कि हम लोग हर साल भुक्तभोगी होते हैं। कोई साल ऐसा नहीं बीतता जब हम हो २, २ और ३, ३ बार जेन न जाना पड़ता हो, लोअर कोर्ट से सजा न मिलती हो, हाई केर्ट से न छटते हों। तो न्याय आज हमारे प्रदेश में माननीय मन्त्री महोदय की एक इच्छामात्र रह गया है। हम सोचते थे कि इस प्रश्न पर यहां कुछ उद्घटन करेंगे, किन्तु हमारे दल के किसी एक सदस्य को भो बोलने का मौका नहीं दिया गया। आखिर अध्यक्ष महोदय के चेम्बर में बात करने से क्या फायदा है?

श्री श्रिधिष्ठाता—यह केवल समय की कमी के कारण हो सकता है। इसमें किसी के साथ पक्षपात की कोई बात नहीं है।

श्री राजनारायण—पहले यह फैसला हुम्रा था कि जो भी म्रनुदान लिया जायगा म्रीर उस पर जितना समय लिया जायगा—म्राधा घंटा भी समय लिया जायगा तो उसमें ४, ४ मिनट का समय दिया जायगा म्रीर यदि २ घंटे का समय लिया जायगा तो उसमें एक एक म्रादमी को ७, ७ मिनट का समय दिया जायगा।

श्री श्रिषिष्ठाता—इसमें कम समय था। ग्रब समय नहीं रहा। श्रौर पार्टियों के सदस्य भी बोलने से रह गये हैं।

श्री राजनारायण —तो फिर में यह पूछना चाहता हूं कि उनसे बात करने के फैसले की क्या पवित्रता रह गई?

श्री ग्रिधिष्ठाता—मेंने कहा कि श्रौर पार्टियों के माननीय सदस्य भी बोलने से वंचित रह गये हैं। श्रव श्राप कृपया बैठ जायं। श्राप रोजाना इस तरह के प्रश्न उठाया करते हैं। श्रव सदन का समय नष्ट न करें।

श्री राजनारायण—मे श्रापसे यह व्यवस्था चाहता हूं कि उपाध्यक्ष महोदय के चैम्बर में जो फैसला हुआ उस फैसले की पवित्रता कैसे सुरक्षित होगी या वह फैसला केवल कहने के लिये होता है ?

श्री ग्रिघिष्ठाता—जंसा भी समय के श्रनुसार उचित हो सकता है वह किया जाता है। श्री झारखंडराय (जिला आजमगढ़)—एक बात मं भी कहना चाहता हूं कि प्रभी भाई राजनारायण जी ने तो बात कही है यह बात अपनी जगह पर सही है। प्राज मुबह इस बात पर चर्चा हुई ग्रीर यह निश्चय हुन्या था कि पहले हर अन्वान पर, समय जो भी निर्धाति हो जाय, हर पार्टी का एक-एक आवसी बोल लें। उसके बाद फिर जैसी श्रापकी इच्छा हो। ऐसा अक्सर नहीं हुन्या है कि कभी किसी पार्टी का सबस्य नहीं बोला हो। मेरा भी यह अनुत्रोव है कि ऐसी पद्मित का जिलना पालन हो सके उनना हम सबसे लिये अच्छा होगा।

श्री राजनारायण — में इसके विशेष में तब तक इस पर बहस होगी, सक्त का रयाग कर रहा ह क्यों कि उपान्यक महोदय के कमरे में जो मुबह बात हुई थी उसको यहां पर मान्यता नहीं किन रही है।

(तत्यद्वात मोद्यालस्ट पार्टी के सदस्य सदन त्याग कर चले गये।)

श्री समुनाप्रसाद शुक्त — मानगीय श्रीणिकार्या, महावया, जिन माननीय सदस्यों ने इस विषय पर बालने का करूट उठाया है, उन सभी ने मेरे विचारों का समयंन किया है। सिर्फ अलीकुल रहमान साहब ने यह कहा कि कोर्ट फीम से जा श्रामदनी होती है उसमें कुछ बचत नहीं होती। में उनको ला कमीशल की रिपार्ट का यह हर हे रेफर करना चाहता है जिसमें १६० द से लेकर १६०६ तक के श्राक है विये गये है श्रीर कोई साल ऐसा नहीं है कि जिसमें सकत न हुई हो श्रीर इस साल भी काफी फायदा इससे है।

में आधिक समय न ने वार माननीय मत्री जी में केवन यही प्रार्थना करना चाहता हूं कि हाई कोर्ट के जो त्रित्वनमें पास हाने हैं जिन स्मिक्तयों के फ्रांग उन पर सरकार कार्यवाही करने की कृषा करें। इसके अविश्वित मुझे और कृष्ट्र कहना नहीं है।

\*श्वी हुकुमसिंह विसेन--माननीया, मेने धवने तथाम साथियो की बातों को सुना भीर इस के यहन कि में कुछ भन्ने कल में ध्रयने वास्त्र अरगाम हेनर साहब का शक्तिया प्रवाकता हु कि भ्रांत्रियों दिन बनर के वह तशरों के नाये और कुछ बात उन्होंने हम की बतलायीं।

श्री संयव जरगाम हैदर---भाषका बजट था इस प्यांतर भाषा।

श्री हुकुमसिह विसेत—जो बाते उन्होंने कहीं है जिन पर विसार किया जायगा। लेकिन एक बात जो उन्होंने कही है कि ६०,००० राप्या भी हाई कार्ट के जजेज के टी०ए० का है ज्यानक के नियं यह निहाल दिया जाय, यह यहां रह या वहां रहे, इस सम्बन्ध में में भी यही कहना ठीक समझता हूं कि ऐसा ही नहीं सकता। सरेवस्य ऐसा काई विचार नहीं है और न ऐसा ही सकता है। गोलिन नारायण जी भी खलें गये वरना उन के इतिमनान के लिये एक बात कह वेता। हम्पोरेनी सेवाना कीर्ट आलीन में रण्या हो जायंगे, परमानेट कुछ विन भीर भाजमाइया भीर तन्नें के बाव किया जा सकता है। लेकिन जो मोबाइल कीर्ट वह अब खल्म ही जायंगे। यह मसना फाइनेंस इपार्ट मेंट के जेरे गौर है भीर वहां से फैसला ही जानें के बाव थालिरी निर्णय किया जायगा।

एक्जीक्यूटिक और जुर्किशियरी के सेपरंशन पर हमारे तमाम उधर के और इधर के सामियों ने कहा और इस पर बड़ा जोर दिया । करण्यान के बारे में भी कहा और जिले के लिये भी कहा गया । जहां तक करण्यान का सम्बन्ध है, में समझला हूं कि सभी माननीय सबस्यों को यह मान्यूम होगा कि सरकार ने एक हाई पाकर कमेटी मुकरंर की है और जिस के खेयरमेंन हमारे जिस्टिस मुकर्जी है जो हाई कोर्ट के सीनियर जज है। वह अपना काम सारे सूबे में कर रही है। उसमें आफिशियल, और नान-आफिशियल सभी मेम्बर है और वह तमाम बातें देखेंगे। करण्यान कीमें रोका जा सकता है, फीसलों में जो जिले होती है वह की रोकी जाय, इन सब बातों के बारे में वे जाक-पड़ताल कर रहे हैं में आधा करता हूं कि वह अपने पड़के मुझाव हम को देंगे और

<sup>\*</sup>वक्ता ने भावण का पुनर्वोक्षण नहीं किया।

उन सुझावों के ब्रा जाने पर सरकार उन पर विचार करेगी ब्रौर इस बात का प्रयास करेगी कि जो श्रमली कदम है वह उठाया जाय श्रौर करप्ञान की रोकथाम की जाय श्रौर उस के साथ जल्दी से जल्दी मुकदमों का फैसला हो । इसमें दो राय नहीं की हमारे हाई कोर्ट में काफी काम बकाया है । किमिनल्स के मुत्ताल्लिक जो योजना उन्होंने बनाई थी उसके मुताबिक काम करके बहुत काफी बकाया काम खत्म हुन्ना है और मै न्नाङ्गा करता हूं कि न्नागे से जो न्निमिनल्स की न्रपील दायर होंगी वे ४ महीने के ग्रन्दर फैसल हो जायेंगी । इसी तरह से सिविल की तरफ भी हमारी तवज्जह हैं श्रौर उसमें भी जल्दी की जायगी। चूंकि क्रिमिनल्स की तरफ तवज्जह देना जरूरी यी, इसलिये हाई कोर्ट ने इसको पहले लिया श्रौर उस काम को पूरा करने का भरसक प्रयत्न किया । इसके बाद, में समझता हूं, सिविल अपील्स में भी जल्दी होगी । जितनी पुरानी अपीलें है वे स्तरम हो जायेंगी। सरकार ने भी उस तरफ तवज्जह दी है श्रौर वह उससे नावाकिफ नहीं है। हम भी यह समझते है कि Justice delayed is Justice denied पहले हमारे पास २२ जज थे, श्रब २७ है जिनमें २४ स्थायी है ग्रौर ३ ग्रस्यायी है। इसके ग्रलावा ग्रगर देखा जाय तो पर जज का डिस्पोजल भी बढ़ा है। मैं श्रांकड़ों में नहीं जाना चाहता, ले किन पर जज डिस्पोजल श्रवस्य बढ़ा है। हाई कोर्ट के विकिंग डेज को भी श्रव २१० कर दिया गया है, पहले कम था। इसके अलावा कुछ और चेन्जेज भी किये गये हैं। पहले ५ हजार की वैलुएअन की अपीलें हाई कोर्ट में जाती थीं, ऐसा मेरा खयाल है, ग्रब १० हजार तक की डिस्ट्रिक्ट जज के यहां श्रपील्स होंगी। सेक्यन सर्टिफिकेट जो पहले डिस्ट्रिक्ट जज दिया करते थे, श्रव मुन्सिफे दिया करेंगे। तो इस तरह से कुछ लेजिस्लेटिव चेन्जेज भी हमने की हैं। कुछ स्माल काज कोर्ट में, कुछ ट्रान्सफर के बारे में, और इसी तरह के मामलों में भी हमने कुछ तरमीमें की हैं श्रौर हमारा यह प्रयास है कि न्याय जल्दी हो।

इसके श्रलावा एक बात श्रौर हुई है। सिंगिल जज का जूरिसडिक्शन भी बढ़ा दिया गया है। रिट पिटीशन की वजह से हाई कोर्ट के हैन्ड्स बिलकुल फुल हैं। इन सब बातों को देखते हुए हमने यह प्रयास किया है श्रौर हायर जुडिशियल सिंवस में भी पहले से इजाफा किया है। सिविल बान्च के कैंडर में भी श्रब स्ट्रेंथ २२७ के करीब हो। गयी है। पहले कम थी। सिविल कोर्ट के रिश्रागेंनाइजेशन का सवाल भी हमारे सामने है। श्रभी तो कहीं पर काम ज्यादा है, कहीं कम है। कहां पर कितने श्राफिसरान हों, इन सब बातों पर हम विचार कर रहे हैं श्रौर इसका रिश्रागेंनाइजेशन करके हम एक सुव्यवस्थित ढंग पर इसे लाना चाहते हैं तािक हमारा काम सुचारु रूप से चल सके। लेकिन श्रभी हम उस पर श्रमल क्यों नहीं करते? उसका कारण यह है कि हमने, जो एक हाई पावर कमेटी बिठा रखी है, जो इन सब बातों पर रोशनी डालेगी, उसकी रिपोर्ट का हम इंतजार कर रहे हैं। उसकी रिपोर्ट श्राने पर हम इस पर विचार करेंगे श्रौर श्रगर जरूरत होगी तो दूसरी कमेटी भी नियुक्त कर सकते हैं। नहीं तो उससे हम फायदा उठाने की कोशिश करेंगे।

श्रव जुडीशियल श्रौर एग्जिक्यूटिव के सेदरेशन के बारे में डायरेक्टिव प्रिसिपल का भी हवाला दिया गया। तो वह ठीक ही है। संविधान में वह है श्रौर उसी वजह से ग्रापके यहां शुक्श्रात भी की गयी है। में पहले ही बता दूं कि यह हमारी जो प्रेजेंट स्कीम है हम उसको परफेक्ट या कर्तई नहीं समझते, लेकिन हमारी श्रापको कुछ दिवकतें हैं—माली भी हैं। प्लान का जमाना है, वह पैसा हमें ऐग्रीकल्चर श्रौर दूसरी जगह लगाना पड़ता है। श्रगर हम इसको फुलपलेज्ड बेसिस पर शुरू कर दें तो इसमें भी करोड़ों उपये की जरूरत पड़ेगी, वह हमारी श्रापकी ताकत के बाहर है इस वक्त ऐसा करना, लेकिन यह माननीय सदस्यों को विदित है कि हमारे २० जिलों में, जिस शक्त में हो, बुरी हो या श्रच्छी हो हमने यह कर रखी है श्रौर १४ जिलों में श्रौर बढ़ाने जा रहे हैं। धीरे-घीरे सारे जिलों में यह मौजूदा स्कीम लागू हो जायगी। हां, कायदे से यह जुडीशियल मैजिस्ट्रेट बिलकुल डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के मातहत नहीं है, उनके यहां की श्रपील ए०डी०एम० जुडीशियल करता है। (व्यवधान) श्रापकी घारणा है कि ऐसा नहीं है, हमारी है कि है। लेट श्रस ऐग्री टु डिफर (Let us agree to differ)।

[क्षी हुड़ र्गमह विसेन]

मेरे एक भित्र ने कहा कि सिवित जर्जी की भक्ता विया जाय क्योंकि वह लाखों के सकते करते हैं ताकि तह ईमानवारी में काम कर मर्जे । में यह कहना चाहता हू कि हरएक का की हीं कि देख नदारी से काम करें, लेकिन यह अकरी नहीं है कि उनकी भना वियो जाये। यह मस्ता एक मर्तका उठा भो था। कि १०० रुपये उनको बिये जाय, लेकिन हाईकोर्ट ने एपी नहीं किए। इनियं हमें द्वार कर देना पदा क्यांकि हाईकार्ट का एंग्रीमेन्ट हमारे नियं जकरी था। लेकिनी समझा राह को र हमारी हमेशा से यह बारणा रही है कि जितने हमारे सिविल जज है उन्होंने हमेश र्फमानवारा से काम किया है। प्रनार बत भुन्नी मरेंगे तब भी ईमानवारी की नहीं छोड़ेंगे। गुन्य। उनम लेकर वह इंचानवारी करना घक्या नहीं समझ रे। वह ईमानवार तो हे हो ग्रोर एका उच्च न मिनने से यह बेईमान नहीं हो सकते घोष महोंगे। मेरा घनुभव है कि हमारी जुडिशियी धानेस्ट है। अनगर नाग कता करने हैं, धीर उसी पर एक्कोक्युटिय से से रेशन भी बहते हैं। कि सरकार बन्धल बिया करनो है। में वर्षों करना चाहता है कि सरकार कभी जुबेशियरीनें बकाल महीं बेली । अजट में धाप पित्रुचे तो धापको मालूम होगा कि संकड़ों बिपियां सरकारण हुई है, मुंब्लिक लिबिल अज घाँड सभी भी लरफ से। तो घगर हम बनल देते तो प्रापको एक मे बिक्री बिक्यल (ई जहीं बेली । इसलिये यह लोगों की महत्व एक गलतफहमी है। इन शर्कों ने सार में प्राचैन। करता है कि सबन हमारे इस व्यनुवान को स्वीकार करे।

भी ऊदस्य (जिला बाराणसी)—मेरा सुझाच यह है कि हाई कोर्ट की एक वेंच पूर्ण में कर बी जाय क्योंकि उक्षर के लोगों को इलाहाबाब जाने में बड़ा पैसा कर्च करना पड़ता है भीर बहुत समय लग जाता है ।

भी हुकुमसिंह विसेन-सरकार के विचार में है।

भी रामदारण यावच (जिला लक्षनक)—मेरठ साइव के पश्चिमी जिले लक्ष , से करीब पक्ते हैं इसलिये जन जिलों ही लक्षनक बैंच में लगा दिया जाय ।

भी हुकुमसिंह विसेन-अब तक हाईकोर्ट न माने तब तक हम नुख नहीं कर सकी।

भी शिवप्रसाब नागर (जिला बीरी)—क्या किसी का इलाबार है ?

भी समिष्ठाता-अड़ी का इन्तकार है, २ वजे तक ।

प्रकृत यह है कि अनुदान संख्या १६ में सम्पूर्ण अनुदान के अधीन मांग की राशि घटाकर १ रुपया कर दी जाय। कमी करने का उद्देश्य नी.त का व्योरा जिस पर चर्चा करने का अभिप्राय है।

कार्यपालिका से न्याय पालिका का श्रलग न किया जाना, न्यायालयों में फैले भ्रष्टाचार तथा मुकदमों के फैसले में देर तथा सरगा न्याय व्यवस्था न किये जाने की नीति पर चर्चा करना।

(प्रश्न उपस्थित किया गया ग्रौर ग्रस्वीकृत हुग्रा।)

श्री ग्रधिष्ठाता—प्रश्न यह है कि ग्रनुदान संख्या १६—न्याय प्रशासन—लेखा शीर्षक २७—न्याय प्रशासन के ग्रन्तर्गत १,४२,६४,६०० रुपये की मांग, वित्तीय वर्ष १९६०–६१ के लिये स्वीकार की जाय ।

(प्रश्न उपस्थित किया गया श्रौर स्वीकृत हुआ।)

### म्रनुदान संख्या ४४--लेखा शीर्षक ५७--समाज कल्याण

समाज कल्याण मन्त्री (श्री लक्ष्मीरमण स्नाचार्य)—माननीया स्रिध्ठात्री जी, में राज्यपाल महोदय की सिफारिश से प्रस्ताव करता हूं कि अनुदान संख्या ४४—समाज कल्याण—लेखा शीर्षक ५७—प्रकीण के सन्तर्गत ५०,०३,२०० रुपये की मांग, वित्तीय वर्ष १६६०-६१ के लिये स्वीकार की जाय ।

इसमें कोई कटौती का प्रस्ताव नहीं है। श्रतः मैं सदन से निवेदन करूंगा कि इस मांग को स्वीकार करें।

श्री ग्रिधिष्ठाता—प्रक्त यह है कि ग्रनुदान संख्या ४४—समाज कल्याण—लेखा शीर्षक ५७—प्रकीणं के ग्रन्तर्गत ५०,०३,२०० रुपये की मांग, वित्तीय वर्ष १६६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय ।

(प्रश्न उपस्थित किया गया श्रौर स्वीकृत हुन्ना ।)

# **ग्र**नुदान संख्या १७——लेखा शीर्षक २८——जेल

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—में राज्यपाल महोदय की सिफारिश से प्रस्ताव करता हैं कि श्रनुदान संख्या १७—जेल—लेखा शीर्षक २८— जेल के श्रन्तर्गत १,८१,४४,६०० रुपये की मांग, वित्तीय वर्ष १६६०—६१ के लिये स्वीकार की जाय।

माननीया, समय बहुत कम है। स्रतः मैं यह चाहूंगा कि माननीय सदस्य पहले चर्चा करलें स्रौर उसके बाद में जो स्रावश्यक होगा उसका उत्तर दूं।

श्री राजनारायण—में सम्पूर्ण श्रनुदान में मांग की राज्ञि १०० रु० कम करने का प्रस्ताव करता हूं।

कमी करने का उद्देश्य है—विशिष्ट शिकायत जिस पर चर्चा उठाने का अभिप्राय है— जेल मैन्ग्रल तथा जेल प्रशासन के विधान में श्रामूल परिवर्तन की मांग करना ।

श्राज बहुत दुख के साथ हमको कहना पड़ता है कि यद्यपि श्राजाद हुये १३ वर्ष बीत गये श्रौर श्रब भी श्रग्रेजी साम्राज्यश ही हुकूमत ने भारतीयों को जेल में पशुश्रों की तरह बन्द करके रखने के लिये जो जेल मैनुग्रल बना रखा था उसमें श्रामूल परिवर्तन नहीं किये गये हैं। ज्यादा श्रकसोस तब होता है जब हम यह देखते हैं कि श्राज की जेल की स्थिति बृटिश जमाने की जेल की स्थिति से कुछ मानों में खराब ही होती चली जा रही है। मैं च हूंगा कि सरकारी पक्ष के कुछ लोग

#### श्री राजनारायम्

जेलों में जाकर के वियों की है सियत से रहे तब उनकी मालूम होगा कि जब वे स्वातंत्र्य संग्राम हे सैनिक की है सियत से जेलों में जाते के उम समय उनकी क्या हालत यी और आज की जेल कैंगी है, और योगी का अनभव यहा बतानावें कि अमे बें जमाने की जेल में और कांग्रेसशाही जमते की जेल में क्या प्रनार है। योगों में महान् अन्तर है। यह से स्वाभिमान और गर्व की अनुभूति होली थी. अब कृष्ट्र एंगा लगता है कि उस स्वाभिमान और गर्व को जेल के कायवे-कानूगों ने एंगा धर बबो ना है कि बहु । स्विकत से लोग उमें कायम राज पाते है। अगर किसी शासन को जानना है तो यह बड़ा कमोटो है कि यह शासन अने के विया को किस भांति स्वता है।

कार। इस स्वरकतर न वार सारवान की समजरपा मा कोई परिवर्षन किया है ? जो बेहता लगे (का द्व- १ र यत वर प्रतन का का का इस अव भी है। व्या द्व- होने द्वाराक्षा में की व्यावस्था में परिवर्तन तथा मिनान जानन की यसन्या संया यत-पत्रिकारों के सम्बन्ध से कोई परिवर्तन यप निष्यत् का ना नरीका पहल या यहर प्रज भी है। एक बात जरूर है कि जेल में क्षित्रका 🤔 काइ फीन तम गय है। अपन के दी यह और लार का इर दमान कर सकता ह तो फीन का इस्तेमल क्यों नहीं और कारन विका भारता है े नियमी म एवं स्थित या ही नी साहिये कि प्रवार हम प्रकी बारत किर्न्ये प्राधिकारी के फीन द्वारा कारना चार पे कह सकत है सकत सम्बन्ध में हमने जेल है लिलाभाषाः भाजमन्तरिक्षत्रस्यापरपहन्नभःपात्रस्य नहीः। मर्जा जी की पत्र विकास है। अक्षांम है कि यह इस समय यहा नहीं है। उन्होंने एक सुन्नाव विया या थि। मी म र में पंत्र आयं हु उन भी एक अपह सकत्वन कर दिया जाय और तब वे उनशे अभिका कि व । का भ्यान महात्य और राष्ट्रपति की भी लिख के की रियति प्राती है। मरार करा में परान प्राविधा प्रार्ह व मार्क प्रान्य क पास्य । यह जहां न्याहम कहा भेज देगे, जो गलत है। मान नीतिय जन म लगार साथ बरन्याय ही पता ही घीर तम मालते ही कि हम मह्य मंत्री की जनते अवारत कराव या नमात्र कात्याण मर्चा की अवास कराव, अगर जेल के अधिकारी ते व्याहर को हमारी किटरी ान तक नहीं पहुच सकती है। इसम बनियादी हंग से परिवर्तन होता चार्राहरू । एक कोर्ना कर हक मानरा जाना चार्रिय कि उसके अपरे हम प्रकार के संक्षा स्वाते काल प्राथमहानी की दक्ति किया जाय ।

आगर एक एक जेल की लकर से बर्णन करने लगे तो काफी समय लग जावेगा। कैंगिंगे को पाम जी सम्बद्धार जाने हैं उन्हें ये राग्कान या जेल को स्थिकारी रिकारलाइस करते हैं। किस संविधान के मताबिक यह होता है। धभी भी नवर्तनार की धोर में निसर जाती है कि कीन शलवार कींबियों की पढ़ने के लिये विया जाय और कीन न विया जाय । शक्सर लोगे यह कहते है कि हमारे देश में घंनी सक्की बाजाबी नहीं काई है क्योंक वीलंडिकल काजादी ही सक्वी पाणी नहीं है जब तक कि ग्राधिक भीर सामाजिक स्वतंत्रता भी साथ-साथ न हो। को बिना राजनीतिक समानता अधुरी है। हम आयिक समानता की लड़ाई लड़ रहे हैं। सोशितर पार्टी लड़ रही है, कभी-कभी प्रजा सोदालिस्ट पार्टी भी लड़ती है। हमारी प्रापिक समानती की सङ्गाई सारे प्रवेश में १० मई सन् ५७ से चली। ह्रयारी मांग थी कि मलाभकर जीतों है लगाम माफ किया जाय, विश्वावित्रों की मुक्त शिक्षा है। जाय । हमारी मांग थी कि ज्याता है जयाबा कामबनी किसी क्यक्सि की १००० राग्ये से ज्याबा न हो। क्या हमारी इन बातों की लक्षाई राजनीतिक नहीं थी, श्राधिक लक्षाई नहीं थीं। निविधत मान में वह स्वतंत्रता की लगाई धीर आधिक स्वलंत्रता की लड़ाई थें। जो आधिक स्वलत्रता महात्मा गांधी के जमाने से प्रवृती रह गयी थी। उस स्वतंत्रता के निर्माण की मांग की लेकर हम मंदान में पाये हैं। की लड़ाई के लिये जो लोग जेल जाते हैं उनके साथ पदाबत, श्रांणत, निम्बनीय भीर भापत्तिवनक म्याबहार किया जाता है। में जानना चाहता हूं कि सर्वेजी राज्य हमें जितना सम्मान देता या मीर जिस प्रकार का क्लासंक्षिक्षण उस समय था, क्या उस प्रकार का माजकल है ? माज हो मुक्य मंत्री महोदय की सरकार ने जस पुराने क्लासंक्रिकेशन की तीड़ दिया है। भव तो केवत को ही अधिया है, लेकिन उनमें कहीं भें। राजनीतिक और स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने वालों का कोई नाम नहीं है। फिर हम लोग क्या है? साधारण तरीके से श्रीर कैदियों को जिस प्रकार से रखा जाता है, उसी प्रकार से हमें भी रखा जाता है। चोर श्रीर डाकुश्रों के साथ जिस प्रकार का व्यवहार होता है उसी प्रकार से हमारे साथ भी व्यवहार होता है। हम यह नहीं चाहते कि उनके साथ श्रच्छा व्यवहार नहीं। हम चाहते हैं कि उनके साथ भी श्रच्छा व्यवहार हो, लेकिन श्रगर उनके साथ श्राप नहीं करते हैं तो हमारे साथ तो की जिये। लेकिन नहीं, हमको भी पशुवत व्यवहार का शिकार बनाया जाता है जो श्रस हा है।

हर बार गर्मी के महीने में हम लोग बाहर सोने के सवाल को उठाते है। संविधान के श्रनुसार हमें श्रिवकार प्राप्त है कि हम श्रपनी इच्छानुसार कहीं भी जायं। हम वहां जाते हैं तो शांतिपूर्ण सत्याग्रह करके जाते हैं और श्रपनी इच्छा से जाते हैं। फिर हमको गर्मी में बाहर क्यों नहीं सोने दिया जाता है? जो श्रपनी राजी से जायगा वह जेल से क्यों भागेगा। लखनऊ, इस प्रदेश की राजधानी है, उसकी नाक के नीचे से नटवरलाल गिरधारी भाग जाता है श्रीर जेल के श्रिधकारी उसको रोक नहीं पाते हैं। लेकिन जो स्वतः जेल जाने वाला है, उस श्रगर भागना ही हो तो वह वहां जायेगा ही क्यों? जब कोई वीर स्वतंत्रता की लड़ाई के लिये जेल जाता है तो फिर उसको क्यों मजबूर किया जाता है कि गर्मी में वह बाहर न सोये?

श्रव यह देखा जाय कि जेलों में कितना श्राटा कुल पकाया जाता है और उसके एकाने के लिये लकड़ी कितनी दी जाती है। एक श्रादनी की जितनी लकड़ी दी जाती है उसमें पांच छटांक श्राटा तथा साढ़े सात छटांक रोटी श्रीर संख्या में ४ रोटी नहीं पक सकती। यह सरकार खुद कच्चा खाने के लिये मजबूर करती है। वह जानबूसकर ऐसा करती है श्रीर इसलिये करती है ताकि कच्ची रोटी खाकर उनका पेट रोगी रहे श्रीर वे श्रस्वस्थ रहें श्रीर सही मानों में जो स्वतंत्रता की लड़ाई के सिपाही है वे सरकार का मुकाबिलान कर सकें। मैं चाहूंगा कि समाज कल्याण मंत्री देखें कि उतनी लकड़ी में उतना श्राटा एक भी सकता है या नहीं।

स्रभी लखनऊ जेल में हम गये। मैं किसी स्रिविकारी के बारे में कुछ कहना नहीं चाहता। केवल इतना ही कहूंगा कि एक दिन हमने कहा कि रोटी लाओ भंडारे से। जब यह सुना गया कि रोटी हम खायेंगे तो हमारे लिये स्रच्छी रोटी सेंक कर लायी गयी, लेकिन वहां जो दूसरे लोगों को रोटी दी गयी वह दूसरी तरह की थी। वही रोटी जो कैदियों को मिली थी, उनसे मांग कर हमने खायी तो उस रोटी में और दूसरी रोटी के वजन में बड़ा फर्क था। क्योंकि जो रोटी हमने मंगायी थी वह स्रच्छी सेंकी गयी थी, लेकिन जो साधारण कैदियों को दी गयी थी वह स्रच्छी नहीं सेंकी गयी थी, कच्ची ही थी।

चावल के बारे में जेल मैनुग्रल में कहा गया है कि चावल का गोला हो, जिसमें वह चावल फटे नहीं। ग्रब कैसा गोला हो, कितना गोला हो, कितना पानी उसमें समाये, इसकी सरकार की तरफ से कोई व्यवस्था नहीं है ग्रौर ग्राज गीला तथा कच्चा चावल जानवरों की तरह से हमें लाने के लिये मजबूर किया जाता है।

सब्जी की क्या हालत है ? में यहां के झादर्श जेल की बात नहीं करना चाहता। मैं वाराणसी, मिर्जापुर और नैनी, इन तीनों जेलों में पिछले साल रह चुका हूं। मिर्जापुर जेल में जब में गया तो वहां रात को एक बैरक में बन्द हो गया। बैरक केसा कि बिलकुल सुनसान। बैरक के टागे की जमीन जिसे झांगन कहा जाता है उसमें बड़े बड़े जोन्हरी के पीघे खड़े थे। मैंने कहा कि यहां तो मुझे मच्छर ही काट कर खा जायेंगे जिससे मुझे मलेरिया हो जायगा। और दूसरे दिन सुबह होते-होते मुझे मलेरिया हो गया। फिर झाये सिविल सर्जन साहब जो वहां के सुपरिन्टेन्डेन्ट होते हैं। बाद में मुझे पता लगा कि यहां पर सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब की गाय के खाने के लिये चरी बोयी गयी है। हम सुबह झस्पताल से झा रहे थे तो रास्ते में एक कैदी मुंड पर चारा ले जाते हुये मिला जिससे मेंने पूछा कि कहां इसे लिये जा रहे हो तो उसने बतलाया कि सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब के यहां ले जा रहा हूं। जब सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब आये तो मैंने उनसे

|भ्यागतना । स्प

कार दिया कि यह क्या साम का तकि आकारकी गाय के वार्क के किये की यहां चरी जीवी जायबीर इस्स की सन्द्रिकाट कार कर स्वीरया प्राक्ति । यह बना का नाल के किस के ऊपर सामनीय सम्बद्ध का स्वाक्ष्य प्राक्ष्य कि कार फर ।

सार १८६ व व्यक्तिक क्षांक्ष्यान्दी नन के लिपलियों र भे कारामर्पत ने नमें था। बहांपर पर एक व वर वेवापा नारता पाति व वे हैं दर्शने काम निया नारता पा। देते प्रता के सुपरिन्तेन्द्रें से कता कि रवं रावस रवे है काम र नगाया नाय। इत पर उन्हार कहा कि ने कि सापसुरीसिर वयान से हेडा है इसी रहे प्राप्त का उन काम वे रही बणाया जा सकता। कता कि देति व कर इंग्डा वृक्ति देल्द्रारियर व वास न दक्ति बाहला है. समें साधारण बलास का की हो की सामग्रा अन्य, विकार कुने जर्न है दिनों है साम काम करते हैं। ने वा जाय। फिरएक काठी नियोद्दे स्वितित्व सर्वेत के निक्त कार दे का कि उत्तर स्वास्थ्य द्वा नहा है कि में उस काम को कर मंत्रं। मेर उनने कता कि उसे बता भेत कर देव विया काम, व्ययन में दी कार टीकरी रिट्टी ज्यावा फेक हैं ने या कि स्रोर फेक के है लो उसे में माल के में सामा कि में बटा काम कर सकता है या नहीं। स्वकित मरी बात नहीं मानी गरी। इसका भी हु इकारण है। कारण मह है कि जैन ऐडीनिस्ट्रेश मही में मी पहले था। मही बास प्राप्त मा बनना पर रही है। अनुका प्रतिकारी जी सुपिनिन्दैन्द्रेन्त है वहीं सर्वेशकों है, वहीं का बाहें कर ने नेकिन प्रस्के अवर काई प्राच नहीं प्रास्कती। संबंध पहल कांच पट की वर पर कार्येगी, उसके बाब क क नार्थर पर धारती, उसके वार भारीसकारत अन्य भार, उसके मान क्रिकी अन्यन भर भीर असके मान जेजर पर आयेगी। उसके बाद म् र्रान-ते-इ-ट से केवल यही पूछा नायमा कि यह क्या हुआ है इस पर वह कह बैगा कि हमने फर्नाफ नाकी इपटी लगायी भी भौर फनाफ नान क्यानी इपटी नहीं दी। यह भी बेला जाय कि क्रमर मही मानों में फंगा है जे वह ना वह सोविदा करेगा कि जिटी जेनर फंस जार क्मीर क्रायर वह लगका हुना ला यह उत्पर को लीना किन जा दंगे क्योर उन सबको एक कान्सपिरेसी हों भी भीर का नियम में गेंड-मीथर पर ही का बनेगी। में हर तगह की ऐसी सीजें साबित करने को तेयार हं

जहां तक जाम के वियों के काने जो माने की मुनीबन को देखें, जाहे बनारस की बात ही या किसी दूसरी जगह की बात हो, बहां पर हाई पर बहें बर विस्मान हा चते रहते हैं। प्रगर किसी को काट ने तो बब नहीं सकता। इसारत पुरानों है, बरमान के पानी प्राता है जगहें हूट कहते हैं कोई जगर कई कर ठीक करना चाह तो कहा जाता है कि सकतो कामजोर है जगर न कहना साथी छत गिर पड़ेगी, सुपरिन्देरडेस्ट कहते हैं कि इसीनियर की दिवायत है कि जगर न कहना साथी सकती भी का गिरेगी। साने हैं कि इसीनियर की दिवायत है कि जगर न कहना साथी लकती भी का गिरेगी। साने हैं कि इसी जाकर घट जायगा, धावमी वहां जाकर अवस्था हो कायगा, यानी उस के बदन में द चुमाब हो सकते हैं। वहां ऐसे जहरीने जानवर है कि आप की भी का सकते हैं, ईवबर न करें कि ऐसी मीबत थाये।

वहां की तरकारियों की बात सुनिये। जो सब से बढ़िया सब्दी होती है उस की दाली कर्त क्लास, सुपरिन्टेन्बेन्ट साहब के यहां लगाई जाती है, उसके बाब सभी दूसरे अकसरों के यहां डाली लगती हैं। वार्डर टापता रहता है, इस की कोई परवाह नहीं की जाती कि सड़ी सब्जी को खिलाकर क्या हाल होगा, खाद्य हें या श्रखाद्य है कौन देखें। मुझे तो कोई साल नहीं जाता कि जेल न काटनी प़ती हा यह सही है कि में ग्रारम्भ में सुपीरियर क्लास में रखा ज ता हूं, लेकिन जब सब के साथ ग्रन्य स थियों का माधारण क्लास दिया जाता है तो में भी सुप रियं क्लास छोड़ ना हूं ग्रौर ग्रन्य सामान्य कैदियों के साथ नीचे के दर्जे में रहता हूं। वाराणसी में ४ मास तक नीचे के क्लास में में रहा, कानपुर में जब तक श्रकेला थ सुपीरियर में रहा। वहीं मड़ी गली तरकारी मिलती है। वहां काशीफल, कुम्हड़ा ग्रौर कह, में कोई ग्रन्तर ही जेल मेंनुझल में नहीं है। एक पाव कटहल मिलता है, लेकिन वह भी छिलके के साथ ही देने है।

इसी तरह से दवा के बारे में मेरा निश्चित मत है कि जेल श्रिष्धकारियों को जेल श्रम्पताल से दवा न मिलनी चाहिये। मैं साबित कर सकता हूं कि जेल श्रिष्धकारियों के रिश्नेदारों को बनारस, देवरिया, गोरखपुर तक दवाये जाती है श्रौर रिजस्टर में लिखा जाता है कि दवा कैदियों को दी गई, मैं इस को साबित कर सकता हूं। क्यों सरकारी श्रिष्धकारियों को वहां से मुफ्त दवा मिलनी है उन की व्यवस्था श्रलग हो। क्यों हमारे यहां से दवा उन के लिये जाती है, सारी दवा गायब हो जाती है श्रौर वही १८ नम्बर मिक्सचर कैदियों को बटा करता है। इस तरह का निन्दनीय, घृणित श्रौर पाशविक व्यवहार किसी भी सभ्य समाज की सरकार श्रपने कैटियों के साथ नहीं कर सकती।

ग्रब थोडा सा सरकारी कर्मचारियों के विषय पर श्राता हूं । यह जेल मैनुग्रल है, इसमे जो फ्लैंग लगे हैं वह हमारे सारे चैप्टर मंत्री जी पढ़ें। संविधान में लिखा हुन्ना है समान काम के लिये समान तनस्वाह । ग्रसिस्टेन्ट जेलर, डिप्टी जेलर ग्रौर जेलर, कहीँ भी देखा जाय, ग्रसिस्टेन्ट जेलर और डिप्टी जेलर के काम में कोई फर्क नहीं है। सारी जेल मैनुग्रल में देखा, लेकिन कहीं कोई ग्रन्तर नहीं पाया। शैक्षिक योग्यता दोनों को देखी जाय Jail Manual, para 973(A), "minimum qualification for both cadres is intermediate." दोनों के लिये, इन्टर एक ही जिक्षा की योग्यता है। इयुटी देखी जाय "Duties in jail are executive and clerical mixed. Jailor, Deputy Jailor, Assistant Jailor have to perform these mixed duties. पैरा २० फ्रिका ऐस्ट को देखें "Both shall be competent to perform the duties of a jailor with all responsibilities. ग्रसिस्टेन्ट जेलर ग्रौर डिप्टीजेलर के जो कर्त्तंच्य ग्रौर दायित्व है वह दोनों का पालन करेंगे। "Where a Deputy Jailor or Assistant Jailor is appointed to a prison he shall subject to the orders of the Superintendent be competent to perform any of the duties and be subject to all the responsibilities of a Jailor under this Act." चाहे वह डिप्टी जेलर हो या म्रसिस्टेन्ट जेलर हो उसके भ्रन्दर वह योग्यता भ्रौर क्षमता होनी चाहिये जो सुपरिन्टेन्डेन्ट के भ्रादेशों के मातहत जैलर के कर्त्तब्यों का निर्वहन कर सके। पैरा ७५० जेल मैनुग्रल मे दिया हुन्ना है: "Both shall do locking and unlocking of jails." दोनों का कर्सच्य है कि जेल को बन्द करायें और खलवायें। ७६८ (३)में लिखा है: "Both shall be responsible for the prisoners roll call and all duties of watch and ward inside the barracks." दोनों जिम्मेदार होंगे तमाम कैदियों को देखने के किस तरह से बैरिकों में रह रहे है । पैरा ११५४ देखें "In case of leave arrangement charge of an Assistant Jailor can be held by Deputy Jailor or vice versa." छुट्टी के समय ग्रसिस्टेन्ट जेलर का चार्ज डिप्टी जेलर ले सकता है। या डिप्टी जेलर ग्रगर छुट्टी पर हो तो ग्रसिस्टेन्ट जेलर उसका चार्ज ले सकता है। पैरा ११८३ देखें "Both Deputy Jailor and Assistant Jailor can perform the duties of a Jailor." दोनों जेलर का काम पूरा कर सकते है। पैरा ११ द७ स्रौर ११८८ देखें "Both Deputy and Assistant Jailor are responsible for admission and release of prisoners. Both shall make night rounds." दोनों के दियों को छोड़ने और लेने के लिये जिम्मेदार है और दोनों रात को गश्त लगायेंगे। का मतलब है कि दोनों समान रूप से जिम्मेदार है। पैरा १२६० देखें। "Both Assistant Jailor and Deputy Jailor shall wear the same uniform.' दोनों एक सी वर्दी पहनेंगे।

[की राजनारायण]
कही भी दात्ती के कर्न व्यों में भीर भीर भीर भित्रकारों में अपनान ता नहीं है। सगर फर्क तनस्वाहमें है। यात्र इस ते कर एक -१२० कर बाने रही न से रे भीर जिल्ही ने नर १२० कर में क्रूल करताहै। यह स्वतास ता त्या है रे (कार्य स्वतास के केन से में केन से केन केने केन से केनिक जब सुपरि- रेटेन्डे-र क्या का हरना है जो बेनारा कि ती स्वीन-रेटे-डे-र ने ने वाकना रहता है जिसको क्रूला काफो प्रकार रहा है जो बेनारा कि तो स्वीन-रेटे-डे-र ने ने वाकना रहता है जिसको क्रूला काफो प्रकार रहा है मान से क्रिक्टी सुपरि- रेटे-डे-र ने ती बनाया न से एक से प्रकार प्रकार प्रकार की स्वीन हैं, सिवाय जन्म प्रदेश के।

प्य इप्रग नेरेशन प्रार्थियों है कि इश्ती न रियन् गृत्य लिये नायं प्रीन प्रसिस्टेन्ट जेलर को विये क्यान्तिक के एक इन्नियों इप्येत हो। नित्ते यो गई। स्थान नव में प्रसिस्टेन्ट जेलर्स की नियुक्ति नुई है उनस्थान फील डी प्राप्त हैन्द्र ने निर्मात है। यह में कहना चाहता है कि स्थान भाग मान्य सान कर अपवास किया नाय।

श्री ताराच्यन्य साहेश्यारी (किना संस्थर) — पेपन्तर प्रन्धान का समर्थन करने के स्विधं खबाइ प्राः र । सन सन्दर्भ कि स्वाः का प्रान्ध का के जार जैने का नजुबी भाई का जारास्य का का कि वन है इसरे को नहीं हा सक है। इस निर्धे ना नाने भाननीय सदस्य साज राज का र करी दें हा राज को स्वां सही है जिने के अने सहायय भ्यान यस।

द्वा पित्र निर्मा के एक जात और करता कि न तो निर्माण कुछ अन्यत से ज्यादा तजर का नते हैं। जब में सारत पत्र विवाद अप के कारत है तो मान ता है। कि में नो में जो इस तरह से मुबार कि मान तो है। ता में सारत पत्र विवाद अप के सारत है। ता मान तो में जो इस तरह से मुबार कि मान तो पा पा पान के का मान के सार के का मान के सार के का मान के सार साम के का मान के सार है। ता न न न साम साम के का मान के साम है मजदूरी के का में सो ए १, ७ त. ए त. १ ५ त. न व. देश को मान की मान के साम मान के का मान के साम मान का मान के साम मान मान के साम मान के साम

द्वारी तर व का साथ की विवास की स्व मिन की में का पाय देने कि कुछ इस तरह की चर्चाहै इस पृश्वित साथ कि उद्देश में वसे मुद्दें के आब एक हो देशन प्राप्त होगा घरि उनके प्रार्थनापत पह सर्वित सच्यों कि का करेगी। इस का कुड़ की सहदेशन सरकार की तरफ से संभवतः किया आयाप घरे का साथ तरि पर का में की यह बना है। जे के की भी हर ते हैं द किये मार्थे भी गाहर मा कर के फिर सर्वित पार्थते, धनवान पार्थते।

मू में नेता लगना में कि इत मन र मना मो मा आ विक, सामां जक तथा शिक्षक रियति है जसक भा-चने प्रमान का में माना की महा का लगना की माना की निवास करने के लगन लगना में में प्रमान की मित करने में जियक लगन लगना में में माना है। है कि बार बार यम साम्यों पन सामा आता है। स्था माना है से सामा सामा की मोरे इन मुझा की को स्थान में राजने हुने इन माना कि हारा लेने जाते है। स्था माना नेता में में है इन मुझा की को स्थान में राजने हुने इन माना कि सामा जिल्हा माना की तरफ से सामा या या सामा माना में में सामा कि सामा कि सामा की सामा क

एक बात पूर्वे और कहनी है। कहा गया कि कोन इस्तेमाल कौन करता है। जैने के बान्दर जो केदी (बन्दो) हैं जन्हें भी कौन इस्तेमाल करने की इजाजन दी जाय तभी कीन का इस्तेनान डोक माना जायना। तो क्या प्रथ्येक कीची की कीन इस्तेमाल करने की इजाजत दी जाय? जेल के अन्दर कोई घटना हो जाय तो फोन का इस्तेमाल अधिकारी वर्ग करते ही है, लेकिन क्या इसकी सहूलियत चाही जा रही है कि बाहर से सम्पर्क कायम करने की आजादी मिल जाय फोन के जिरये से। यदि यह मंशा है तो में स्पष्ट कहूंगा कि फिर जेल जेल नहीं रह सकती। जेल तो कुछ दूसरी ही चीज बनेगी। जो थोड़ा बहुत डर शेष रह गया है वह भी निकल जायगा। मुझे इस विषय पर कुछ ज्यादा कहना नहीं, मगर इत्तफाक से जिस अनुदान पर मैं बोलना चाहता या उस पर बोलने का मुझे मौका नहीं मिला। इसलिये में किसी तरह से उस घटना को इसमें आमिल कर रहा हं। में यह भी कहना चाहता हूं कि कोई नियम इस तरह का बनना चाहिये, जेल जाने का ही बने तो कोई बुरी बात नहीं होगी कि इस माननीय सदन में बैठ कर जब हम गलत बयानी करना शुरू करते हैं तो हम लोगों के लिये भी जेल जाने का नियम बनना चाहिये। जैसे कि उदाहरण के तौर पर में कहूं, २७ फरवरी, १९६० को इसी सदन के एक माननीय सदस्य, अववेश कुमार साहब ने एक बयान दिया और यह कहा कि क्षेत्रीय एम० एल० ए० ट्रक में पुलिस भर कर ले गये और बाड़ी के अस्पताल को उठवा लाये, यह बिल्कुल असत्य है।

श्री राजनारायण—व्वाइंट भ्राफ भ्राडंर। माननीया, माननीय ग्रवधेशकुमार जी यहां नहीं हैं श्रीर हमारे लायक दोस्त, माननीय ताराचन्द जी एक ऐसी घटना का वर्णन कर रहे हैं जिसके बारे में सदन में माननीय विचित्रनारायण जी शर्मा, मंत्रो, स्वायत्त शासन विभाग यह कह चुके हैं कि जिस प्रकार से बाड़ी का श्रस्पताल हटा कर लाया गया है वह श्रापत्तिजनक है, खेदजनक है श्रीर उसमें उन्होंने यहां तक कहा इसी सदन में कि कलेक्टर भी सस्पिशन के ऊपर नहीं रहा। मुझे उसकी पूरी जानकारी है। श्रवघेशकुमार जी ने जो बात कही है उसकी मैंने स्वतः जानकारी की है....

श्री ताराचन्द माहेश्वरी--मं व्यवस्था का प्रश्न उपस्थित करता हुं।

श्री राजनारायण——फिर यह घटना जेल विषय से संबंधित नहीं हैं। श्रगर वह जेल गये हों, वहां उनको कोई परेक्षानी हुई हो तो उस को कहें।

श्री श्रिधिष्ठाता—माननीय राजनारायण जी, श्राप श्रथने जवाब में प्रतिकार के रूप में कह दीजियेगा श्रौर माननीय सदस्य से में कहुंगी कि वह विषय पर श्रा जायं।

श्री ताराचन्द माहेश्वरी—मे विषय परही श्राऊंगा श्रौर विषय पर हूं भी। लेकिन जिस प्रकार मेरे क्षेत्र की बात कही गयी उसमें श्रगर मुझे स्पष्टीकरण का मौका नहीं दिया जाता श्रौर दूसरे माननीय सदस्य उस स्पष्टीकरण को श्राज भी कहने की इजाजत चाहते हैं, उस पर में प्राप की व्यवस्था चाहूंगा, क्योंकि मेरे क्षेत्र के सम्बन्ध में वह बात थी श्रौर क्षेत्रीय एम० एल० ए० का उस में जिक था। में जिस बात को कह रहा था सम्भव है कि श्राज के इस विषय से उसका विषयान्तर हो, लेकिन में तो निवेदन यह कर रहा हूं कि यदि इस माननीय सदन के सदस्य प्रयत्नी जिम्मेदारी को पूर्णकरेण न निभायें,हम इस तरह की बात करना शुरू करें कि उसके स्पष्टी-करण की श्रावश्यकता हो तो में नहीं समझ सकता कि हम भी मर्यादा का पालन कर रहे हैं। माननीय राजनारायण जी ने स्वायत्त श्रासन के मंत्री द्वारा की गयी चर्चा का जिक्र किया है। वह इस समय श्रनुपस्थित हैं, लेकिन में गुजारिश करना चाहता हूं कि स्वायत्त श्रासन मंत्री ने यह बात एक बड़े पैमाने पर कही थी। सम्भव है इस सम्बन्ध में मेरा श्रौर उनका पत्र-व्यवहार बले श्रौर चल रहा है, लेकिन उन्होंने क्षेत्रीय एम० एल० ए० का जिक्र नहीं किया। तो में नहीं समझता कि माननीय राजनारायण जी को उनका हवाला देने की कैसे जरूरत पड़ी।

ग्रन्त में में प्रस्तुत ग्रनुदान का समर्थन करते हुये यह निवेदन करूंगा कि सुधारों की कुछ इस तरह की घुड़दौड़ न जारी की जाय कि जिससे लोगों को जुर्म करने की मनोवृत्ति में प्रोत्साहन मिले। श्री झार खंडे राय—माननीया, भाई राजनारायण जी ने जो कहोती का प्रस्ताव पेड़ा किया है म उस की लाईद करता है। उन्होंने जिस विस्तार में श्राज भी जेलों के श्रवर जा कृत्य राया होर बदद-तानी फेनो हुई है या जा कृत्र उन्होंने प्रवने श्रनभव में या जेल का म्यायना करते या अन्य तरों हों में जानकारी हासिल की है श्रीर जितनी तफसील से सब बातें कहीं है, में नहीं चाहता है कि उनको दोहराऊं। में केवल दा एक बात कह कर ही समय का सवुष्योग करना चाहगा। भाई माहद्वरी जी ने जी तकरीर की है, में नमझता है कि वह मोजूबा नरकार के पूरे विष्टकोण के ठीक उल्ही है। इस सरकार का दिल्लोण यह है कि बंदीगृह वंड के रथान नहीं है बल्कि स्थार के रथान है। यह सरकार ने मूत का से न्वी हार किया है। उनकी पूर्ण तकरीर इसके उनदी थी। जो प्रमति हो रही है उसकी रपनार जिन्मों बहुत तेज विव्वाई पड़ा। कृत्य होते हो ऐसे लोग समाज में जिनकों या ही की रपतार नेज मालूम होती है और वह चाहने है कि समाज के राव के एने की पीछ खीचा जाय। ऐसे लोग पोरतम प्रतिक्रियावादी कहाना है। यह तकरीर भी इसी प्रकार की रही है।

माननीया, प्राज्ञादी के इतने दिनों क बाद भी इस बात की कमी का गब नाग महसुस करते है और उपर के लागे को भी करनी चाहिये कि ब्राज भी कोई पोलिटिकल बलास केंद्रियों की नहीं बन सकी है। इस में निवे प्राजादी की लड़ाई को दौरान में किलने संपर्ध हये जेलों में. श्रंडमन में, मांडले में, उस की कहानी यहा कहना नमय का दृश्ययांग करना है। वह सदन के माननीय सदरयों का बहुत कृद्ध मालूम है श्रीर इस पर कई मार अर्जा भी ही चुकी है। जो उधर बेठते हे यानी जिनकी शासन है वह सीच सकते है कि इससे हम विरोधी फायदा उठायेंगे। लेकिन इधर के छोर उधर के बेठने वालों में धवला बदली हो सकती है और उस की प्रक्रिया भारत में शुरू हो गई है। यं ताब में शुरद दिनों के लिये ऐसी गवर्नमंट बनी थी जो कांग्रेस की नहीं भी। केंगल में भी एक सरकार बूसरी पार्टी की बनी और पता नहीं १६६२ में क्या होगा? इस संविधान के मालहत और प्रजातंत्र के नियमों के जलते हुये यह पूरी संभावना है कि यहां के लोग बहाँ बैठ सकते हैं घोर बहां के लीग यहां बैठ सकते हैं। इस हालत में जिन लीगों को वैसे क्या बीखन जलानं पर्वेगं जेला कि केरल में जलाना पड़ा धीर बहुत ही गये गजरे लोगों के साथ मिलकर । सभी की मालम है कि यहिलम लीग के साथ गठबंधन की मामला है । धार जेलों में पोलिटिकान क्लास केवियों के लिये बन गई तो उसका लाभ हमी लोगों की नहीं होगा बल्कि उधर को बेडे हैं जनको भी हो सकता है और होना चाहिये। इसलिये यह एक सिद्धान्त की बात है भीर इसको सरकार को स्वीकार करना चाहिये। सम्बन्ध में सरकार जिस पार्टी के हाथ में हैं उसने भी माना था कि जब उनका राज्य होगा तो जेलों में विशिष्ट प्रकार में उन लोगों को दका जायगा जो धान्बोलनी में जेल जामेगे। मेरा बिश्वाल है कि गरकार इस पर मुकेगी भीर उदारला पुषंक इसको मालेगी।

मन इसके नियम कैसे बनाये जायं। यह विस्तार की बात है। लेकिन हिन्युस्तान में कम से कम जो इल मान्यता प्राप्त है केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार द्वारा, उनके द्वारा संजालित कान्योलनों में जो लोग जेल जाते है जनके साथ जकर ऐसा बर्ताव होना चाहिये जो धाम कैवियों से अलग हो। नीयत सब से बढ़ी जी होती है। ३०२ तल की घारा है। एक हत्यारा मतल करता है, एक व तल साम्प्रवाधिक उद्देश्य से होता है और एक तल भगतिंतह तथा प्राज्य में किया जो शहीबों में शिरोमिण रहे है। तो नीयत हो बढ़ी होती है। जेल किनिनल भौसीजर कोड और इंडियन पैमल कोड की घाराओं के अलगंत हो जाने है। लेकिन किस नीयत से घपराय होता है इस को बेब कर ही हम तथ कर सकते हैं कि किस प्रकार का कैशी है और अंग्रेजी हुकूमत में भी यह हुआ। कोई अलग कलास महों मानी गई लेकिन पाई० जी० मिजन उस समय की सरकार ने बीर स्थानीय जेल बालों ने उनके साथ धनग से क्यवहार किया। जैसे प्रलग वरतों में रजा और कुछ सुविष्यों भी बीं। वैसे प्रमल में यह हुआ है कि लेकिन कामज में, सिद्धान्त में तथा व्योरी में बानने में न जाने सरक र भी वर्गी हिचक हो जाती है। की कामजात सरकार ने पास बोलों में बारने में मुक्त रहते हैं ऐसे कैवियों में बारे में, उनमें लिखे को कामजात सरकार ने पास बोलों को बारे में मुक्त रहते हैं ऐसे कैवियों में बारे में, उनमें लिखे

रहते हैं, कोई प्रो-कम्युनिस्ट, कोई ट्रेड यूनियनिस्ट और न मालूम क्या-क्या संज्ञाएं लिखी रहती हैं। जेल में, व्यवहार में इसको वरतते हैं लेकिन लिखने में हिचक ने हैं। मैं समझता हूं कि सरकार को १२ वर्ष के बाद, हिन्दुस्तान की बदलती हुई राजनीतिक परिस्थित में, जब कि उनको भी केरल में ग्रान्दोलन चलाना पड़ा, जिसका उन्हें बड़ा गर्व है, तो ग्रब इस बात को मान लेना चाहिये। उसका लाभ जो इघर बैठे हैं, केवल उनको नहीं होगा, एक मई से राजनारायण जी जो ग्रान्दोलन चलाने वाले हैं, उनको ही नहीं होगा बल्कि उघर के पक्ष वालों को भी हो सकता है। इसलिये पोलिटिकल प्रजनर्स का ग्रलग क्लास सरकार जरूर बनाये।

श्रीसस्टेन्ट जेलर श्रौर डिप्टी जेलर के बारे में राजनारायण जी ने काफी विस्त र से कहा है। मैं चाहता हूं कि इन दो कैडरों का भे भ व जा बिलकुल कृतिम श्रौर निरर्थक है उसको मिटा दिया जाय। पुराने जमाने में जब कि हम लोग वर्षों जेल में रहे तब भी देखा है उनके कार्य में कोई भेद हों है। जेल मैनुश्रल में तो भेद है ही नहीं, रोज की जिंदगी में व्यवहार में भी कोई अन्तर नहीं है। इसका नुक्सान यह होता है कि श्रीसस्टेन्ट जेलर श्रौर डिप्टी जेलर में हमेशा हार्ट बीनग चलती रहती है। इसका श्रन्त हो जायगा श्रगर दोनों कैडरों को मर्ज करके एक कर दिया जाय। श्रीसस्टेन्ट जेलर्स में जांच-पड़ताल करके, उन्हीं में से डिप्टी जेलर नियुक्त किये जायं। इस तरह से सरकार की बचत भी होगी। मेरा खयाल है कि कम से कम सरकार का पांच हजार रुपया बचेगा। तो यह फाइनें शानल इके नोमी के दृष्टिकोण से भी श्रावश्यक है। मुझे मालूम है कि सरकार के पास इस प्रकार के प्रार्थना पत्र श्रीसस्टेन्ट जेलर्स की तरफ से श्राये हैं, लेकिन सरकार ने विचार नहीं किया। मैं चाहूंगा कि इस विषय पर मंत्री जी जरूर स्पट्टोकरण करें।

जहां तक सम्पूर्णानन्द शिविर की बात है, मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि यह एक ग्रमिनव प्रभाग है और इस प्रयोग की में प्रशंसा करता हूं हम लोगों ने बराबर महसूस किया कि जो भी कैदी जेल में जाते हैं उनकी श्रम शक्ति का दुरुपयोग होता है। व्यर्थ के काम दंड के दृष्टिकोण से लिये जाते हैं जिनसे न समाज का लाभ होता है, न उस का लाभ होता है भ्रौर न सरकार का लाभ होता है। उ के बाद एक दिशा निकाली गयी कि शिवि कर उनसे ऐसे उपयोगी कार्य कराये जायं जो हमारे देश के विकास में सहायक हों। की भूरि-भूि प्रशंसा करता हूं। में चाहता हूं कि यह प्रयोग ग्रौर विस्तृत किया जाय। एक बात है। च हे मिर्जापुर हो या नानकसागर हो, जहां पर भी यह काम ह, वहां पर काम करने की जो स्थिति है वह बड़ी सख्त है, काम भी सख्त है, लेिन सखा काम होते हुये भी जितनः सुविधायें कि वहां पर ग्रगर मामूली मजदूरों से भो काम कराया जाता तो उन्हें हासिल होती, वह सुविधायें इन बिन्दियों को नहीं हासिल होतीं। इनके साथ उस दृष्टिकोण से काम कराया जाता है कि ये बन्दा है, ये एक तरह के ऐसे व्यक्ति हैं जो किसा भी उदारता, दया या श्रच्छे भावों के पात्र हा नहीं हैं। में समझता हूं कि यह दृष्टिकोण बदलना चाहिए और किसी बांघ पर हो या कहीं प पत्थर तो इने का कार्य हो, या जो कुछ भा कार्य हो, उसमें मामूलः मजदूरों से जैसे काम कराते हैं ,उन्हें जो सुविधायें , जो सद्व्यवहार या जो अच्छे तरी हे उन्हें प्राप्त होते हैं ट्रेंड यूनियन ऐक्ट के मुता कि या लेबर ला के मुताबिक, उसी प्रकार की सुविधार्ये उनकी भी मिलन । चाहिए। इसका स्रोर में विशेष रूप से ध्यान िलाना चाहता हूं। हमकी ऐसी शिकायतें मिर्जापुर से भो और नानकसागर तथा और-और जगहों से भो मिलता रहनी हैं कि उनके साथ ममानव म ब्यवहार होता है। इसका श्रन्त होना चाहिए। केवल यह िखला कर कि कुछ मजदूरी था लिया, या इनना रुपया कमा लिया, इतने से हो कुछ हे ने वाला नहीं है। श्रगर उनके साथ दुर्व्यवहार होगा तो और कैदियों में यह प्रोत्साहन नहीं पैदा हो सकता है कि हम भी जेल के भ्रन्दर से भ्रलग हो करके खुला हवा में चलकर कुछ ग्रन्छ। काम करें ता के छूटते समय कुछ श्रामदनी भी यहां से लेकर जांये जिससे कि हमारे श्रामे के जीवन में कुछ सहू लियत पैदा हो। इन शब्दों के साथ में जो हमारे साथी राजनारायण जी ने कटौती का प्रस्ताव रखा है उसका समर्थन करता हूं ग्रौर चोहूंगा कि सरकार इन चीजों पर विचार करे।

श्री मक्तिनाथराय (जिला ब्राजमगढ़)--माननाय ब्राधिष्ठात्री महोदया, मेने भाई राजनारायण चिहुजा की बात सुना। जहां तक कि उनका यह कहना है कि मिजपूर जेल में स्वर्गरन्तेन्द्र को गाय है लिए घोस लगी यो, मक्छ करतते ये, ऐसा नहीं होना चाहिए था, इसमें कर्ड वा राम नहीं है। जेल के अन्दर वाकार खराब हो, ठाक होना चाहिए, इत खर ब हो, ठीक होनं। चाहिये इसमें भा कोई दो रायें नहीं हो सकतीं। लेकिन जब भाई राज-नागयण जाने यह कहा कि जैसे जेन बिटिश शासन काल में थी. वैसे होजेल की हानर पान भा है, ती मझे बड़ा ताज्ज्ब हुआ। माननत्या, मुझे भी सन् १९३२ में, १९४९ में, १९४२ में ग्रीर १९४३ में जेन में रहने का सीभाग्यहुआहै। सन ११२२ के जैनका बालन मुझे मालूम है कि जब तक हम जेल में रहे, यह नहीं बेला कि गृह फीमाहोताहै। जेन में छुटने के बार ही गुह देवने की नसीब हुना। सन् १६३२, ४ - और १६४३ में जेलों के अन्वर समानार पत्र हम- तिक्रम एक शब्द होता है-तिकेश्वर सं मंगाया करते थे श्रीर पढ़ते थे। काँदी चीज पढ़न या लियने की नहीं मिलती थी। इस प्रार्थना नहीं कर पाते थे। मझे था तमनद ते न की हा नत याव है कि सन् १६४२ में प्रार्थना करी यानकरों इस की तही लेकर बढ़ा संघर्ष, हुआ और उसपर गहरा लाठी चार्ज हमा। हम सकती काफी चोट आयी और बहुत काफी संघर्ष के बाद यह मी हा मिला कि हम जेल में प्रार्थे ।। कर सकत ये प्रोर हमने पार्यना की। नेकिन प्राप्त में वेणना है प्रवने प्राप्तमाह जिले की जंत में, स्वह के वक्त हैवी प्रतिवित बहुत प्राराम के साथ प्रार्थना करते हैं।

( इस समय २ वन कर ५५ सिनद पर भी उवाध्यक्ष पुनः पीठासीन हुए। )

को रोटी सन् १९३०, १९३२ और १९४२ में हमती माने को मिनती यो उसका भीर इस रोटी का कोई मुकाबिया नहीं था। तो माना बियकुत ठोक हैं, रोती बियकुत ठीक हैं। सी नतासके बियमी को पहले तीन महीने में एक पत्र मिनता था, लेकिन अब में बेलता है कि बड़े मंजे से लोग पत्र निकाले हैं, मिनले हैं और अलबार पद्धने हैं, अपनी बन्दना करते हैं। इस तरह की बीजें आज जेन के अम्बर हैं। इसलिये को जिकायन यहां पर की गई वह निर्मूल हैं।

में यह भी बेल रहा हूं कि जेल के अन्दर बहुत से धाम्य परिवर्तन हुये हैं। कदियों की किलाबें मिनली है, उनकी बहु पढ़ने हैं। मुनाकाल ठीक से होती है। एक बात में यह जरूर कहना बाहुना हूं कि हमारे जो पीनिटिकल सरवायही है जब वे जेल में जाते हैं तो उनकी प्रत्य एकता चाहिये। इसकी व्यवस्था होती चाहिये हमती वन्द इन बातों पर भी ध्यान बेना चाहिये कि अवसर बीबी को जो जेल में जाते हैं। उनमें कुछ तो है बीच ग्रस्त होते हैं। ग्री कुछ इतफाक से कोई बालवा हो गया, मईर हो गया, जीवदारी हो गई, तो इस किल्म के कैवी भी जाते हैं।

मेरा मुझाव यह है कि जो रैबीचुप्रल चोरी करने वाले, डाका डालने वाले १०६ के कैदी हैं ग्रौर कुछ ऐसे कैदी होते हैं जो फौजदारी कर के या बलवा करके या इत्तफाक से मर्डर कर के जेल में चलें जाते हैं तो ऐसे कदियों को उनसे ग्रलग रखने की व्यवस्था होनी चाहिये। जेल में यह होता है कि कोई कैदी मामूली चोरी कर के जेल में ग्राता है या कोई डाका डाल कर ग्राता है या कोई हैबीचुप्रल होता है तो इन सब को साथ में रख दिया जाता है। तो जो मामूली कैदी नात जुर्बे कार होता है वह इन केदियों के साथ रहने से पूरा त जुर्बे कार हो कर जेल से निकलता है। मेरा यह निवेदन है कि उन हैबीचुप्रल कैदियों से ग्रलग इन साधारण कैदियों को रखने की व्यवस्था होनी चाहिये।

एक चीज और है कि कैंदी जब जेल में जाता है तो उसको परिश्रम के रूप में सजा या दंड वहां पर मिलता है। में समझता हूं कि उनके मानिसक सुत्रार के लिये भी कोई व्यवस्था होनी चाहिये। हमारे यहां सब बनों में चाहे वह हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख कोई भी किसी धर्म का हो उसके ऊरर धर्म का एक मंद्रुत-सा रहता है जो उसको बुराई करने से रोकता है। तो जेल के ग्रन्दर, चाहे इसमें कुछ नैसा हो क्यों न खर्च करना पड़े, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये १० दिन में या १५ दिन में एक बार नहीं, बिल्क वहां उन कैदियों के लिये दोनों वक्त प्रति दिन कुछ प्रार्थना या उपदेश मिल सके ताकि जब कैदी जेल से बाहर ग्राये तो उसके अरर धामिक भावना का पूरा ग्रसर हो। इस तरह से कुछ बार्मिक मनोवृत्ति पैदा करने की चेव्हा करनी चाहिये।

श्रीमन्, श्रक्सर मेंने कैदियों के विषय में यह पढ़ा है कि विदेशों में कैदियों के ग्रन्दर जो ग्रय-राघ की मनोवृत्ति होती है उसका पता वहां पर बड़े-बड़े विद्वान लगाते हैं। तो हमारे यहां की-जेलों में भी जो बड़े-बड़े कैदी होते हैं ग्रीर शांतिर कैदी होते हैं उनके निये इस तरह का कुछ प्रबन्ध होना चाहिये, इस तरह का सरकार को कुछ कदम बढ़ाना चाहिये कि उनकी मनोवैज्ञानिक ढंग से जांच हो सके। मनोवैज्ञानिक ढंग से उनकी जांव की जाय ग्रीर पता लगाया जाय कि श्राखिर वह श्रमराघ की मनोवृत्ति किस प्रकार से उसमें ग्राई। इस तरक सरकार को ध्यान देने की जरूरत है।

एक चीज यह भी निवेदन करना चाहुता हूं कि जेत मैनुम्रल के मुताबिक दो कैदी ३० सेर गल्ला पीसते हैं। शायद भ्रब वह गल्ला नहीं पीता जाता। मैंने देवा है बाहर से पीत कर भ्राता है। मैं यह समझता हूं कि ३० सेर न सही १५ सेर या २० सेर गल्ला तो जल्र जेत में कैदियों से सिराया जाय। जेता कि झारखंडेराय जी ने कहा कि शायद हम को जाना पड़े पर इसलिये न शैं बिल्क इसलिये कि हाथ से पीता हुमा भ्रादा स्वास्थ्य के लिये बहुत भ्रच्छा है। तो कुछ न कुछ १५ या २० सेर गल्ला विसानें का भ्रबन्य होना चाहिये ताकि उन लोगों का स्वास्थ्य सुघरे।

एक बात मानतीय झार बंडेराय जी ने यह कही कि कांग्रेस ने लीग से गठबंबन केराला में किया ग्रीर एक नया तजुर्जी किया। मुझे इसके बारे में यह निवेदन करना है कि जहर उतार ने के लिये जहर का इन्जेक्शन देना पड़ता है। एक चीज बहां पर हुई। उस जहर को निकासने के लिये जहर का इन्जेक्शन दिया गरा। इसनें कोई दुण मानने की बात नहीं है। उन पार्टियों ने ग्रापस में निजकर उन लोगों को प्रभावित किया ग्रीर गराना काम निकाला। हर पार्टी जनता के लाभ के लिये ऐसा करती है। इन शब्दों के साथ में इस ग्रनुदान का समर्थन करता हूं।

श्री बंशीधर शुक्ल (जिला खीरी)—मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है। में श्राप के हारा मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि हमारे लखीमपुर जिले में क्या बात है कि जब हम चाहते हैं कि जेल में जा कर निरीक्षण करें तो हम को वहां जाने नहीं दिया जाता। तो वे इस बात को साफ कर दें कि मामला क्या है।

श्री उपाध्यक्ष--ग्रापका जवाब दे दिया जायगा । लिख कर भेज दें तो ग्रीर ग्रासानी होगी ।

स्राचार्य दीपड्फर (निना मरत) मान्यार, मकवल ६,१० छोटी-होडो बातो की क्षीय सरकार का ग्यान आहर करना चलना है। पहला संबाल ती जेसा माननीय राजनारायण जी न करा, स्टायक न तर प्रोर जिल्ही न तर के सम्बन्ध म, में माननीय मंत्री जी से यह प्रज कारना नात्रा ह कि उस समय तमार प्राप में करोत ४१० मतायक ननर ब्रोर १२० हिंदी जेनर हे भार उन समा का भण १४ - १-० देव बाव -= -२०० और १२०--४० २०० राज्य का हो। इसके प्रत्यान। यह दोनो सेवावे ફેલ ચીલ इत्यत्वेर्तातन है। एक करवान पर व्यन काय कर सकता है। उनका योग्यता भी एक प्रकार में समान हो है। उनका यह में प्रकार का है उसम प्राप्त महायक जेलर से प्रमोशन पा कर का रिव्यक्ति रिक्टा अन्तर का जार हो है। है हो उससे काई बतरतीबीपन नहीं होन पाला। इसक प्राास मागयक नार का नियक्ति प्राई० जी० प्रिजन्त करते है, दिएता तार को नयकिन लाक स्तरा मायांग दारा होती। कालाया कागर किल्हा कलगा का नियाकित होता है ता उनम रा ५० प्रतिकार गहायह जेसरे म्बे स्व निया आहत् है। अध्यय १०० चिटी जनर नियमत होन वान हती उन में से ५० सहायक ज्ञानर प्रमान किय जान है। स सरकार स यह प्राथना करना सहता है कि प्रकाहोग सर्विक सामायकः जनर का नियमिक लोक कायाग्य अपान हो करायो नाय क्यांकि वोनो की योगतीये समान ह फ्रोर नक वेतन का र हिंग प्याद्धन ८४ रूपय हा रला नाय फ्रोर जब वे १२० कपये पर प्राय तो प्रम वक्त उनको र रुपय का भी प्रमाधन है पर बल हुए १०० फीसवी लोगे को दिल्हान एक का पर पर प्रसादान थिया नाथा। सारमध्यता हु कि दूस प्रकार वे अपने ग्रेडको ३०० रुपय तक पहुना सम्बद्ध है। तम उनको साध्यताय एक है भी र किसमार में किसी प्रकार का कारत नहां है ता यह भगागर अन्याय होगा कि एक की नियंकित किसी विशय कथिकारी द्वारा करायो जाय क्योर दुसर को लोक सवा कायोग द्वारा क्योर उन पर इस प्रकार का प्रतिबन्ध लगाग जाय । यह अनित नहीं प्रतात होता ।

क्रियां प्रकार तूरिया प्रध्य में सरकार के सामन यह रक्षाना काहता है कि व्यवहार है जे व्यवहार का व्यवहार वा व्यवहार वा व्यवहार वा व्यवहार वा व्यवहार वा व्यवहार का व्यवहार का व्यवहार वा व्य

तीसरा मुझाब यह है, सामनीय मुख्य यही जी घोर हेल विभाग क मही जी कई बार यह कह चूके है कि धव स्वाधीन भारत में राजनीतिक के बियों को मान्यता का प्र-न नही उठती है। में यह समझता हूं कि य बात विलक्षण निराधार है। प्रव कि सरकार इस बात को जातती है, घीर जानती ही नहीं वॉस्क धपनी सकित्व में बैठकर यह कहती है कि राजनीतिक धान्योलन होते हैं, तो जब राजनीतिक धान्योलन होते हैं, सामाजिक उद्द यों का संकर, तो राजनीतिक बीधी भी ध्यद्य होंगे। यह सामाजिक प्रकर्त को संकर मामाजिक धान्योलन है, राजनीतिक धान्योलन है, तो राजनीतिक बान्यों भी जकर होंगे। इससे किसी भी प्रकार इनकार नहीं बान्योलन है, तो राजनीतिक बान्यों भी जकर होंगे। इससे किसी भी प्रकार इनकार नहीं किया जा सकता है। बानी वैसा कि माननीय बारवार राय जी ने कहा है, वे जेल घरि

<sup>\*</sup> वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

कारियों को इस बात के इन्सट्रक्शन्स भी दे देते है कि वे बन्दी किस विचाराधारा से प्रभावित है। जब ऐसा होता है तो राजनीतिक बन्दियों के साथ स्रशिष्ट प्रकार का व्यवहार नहीं होना च हिये। जेल स्रधिकारी स्वयं इस ब त को मानते है स्रौर व्य द-हारिक रूप से प्रयास भी करते हैं। वे इन कै दियों में स्रौर साधारण कै दियों में स्रन्तर मानते हैं। तो जब व्यवहार में सब कुछ है तो यह बात नियमों में भी स्रा जानी चाहिये ताकि उन के दियों के दिमाग के ऊपर जो बोझ डाला जाता है उससे उनको राहत मिल जाय। इस तरह से जो राजनीतिक बन्दियों को साधारण बिदन्यों के साथ र बा जाता है यह सर्वथा स्रनुचित है, यह नहीं होना चाहिये।

इसके म्रलावा में कुछ सहारनपुर जेल के बारे में भी कहना चाहता हूं। सहारनपुर की जिला जेल में पानी का बहुत बड़ा संकट है। मैं सरकार से यह मांग करूंगा कि वहां पर पानी का समुचित प्रबन्ध होना चाहिये म्रौर यदि सम्भव हो तो वहां एक ट्यूब वेल की व्यवस्था होनी चाहिये ताकि वहां के कैदियों को जो पानी के न मिलने के कारण बहुत भारी संकट उठाना पड़ता है वह न हो।

पांचवीं बात में यह कहना चाहता हूं कि कैदियों का स्थानान्तरण जिले के बाहर नहीं होना चाहिये। जिन कैदियों को प च-पांच, चार-व र, श्रौर तीन-तीन व एक-एक साल की भी सजा होती है उनका भी स्थानान्तरण तीन-तीन सौ मील श्रौर ढाई-ढाई सौ मील के बाहर कर दिया जाता है. जिसका नतीजा यह होता है कि वे अपने रिश्तेदारों से भी नहीं मिल पाते हैं न श्रौर ही कुछ सुविधायें पा सकते हैं जो कि उनको अपने जिले में रहने के कारण अपने सम्बन्धियों से प्राप्त हो सकती हैं। इसलिये मेरा सुझाव हैं कि कम से कम साल भर से कम सजा पाने वाले के दियों को जिले के बाहर स्थानान्तरण न किया जाय।

छठवीं बात में यह कहना चाहता हूं कि कैदियों से मुलाकात करने के लिये जो सहलियतें हैं वे भी बहुत कम हैं। उनसे मिलने के लिये जेल ग्रिधिकारियों को सातों दिन सहलियत प्रदान करना चाहिये।

जहां तक टेलीफोन का सम्बन्ध है, मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि इस व्यवस्था से कुछ अव्यवस्था हो सकती है, लेकिन आपको जेल अधिकारियों को यह हिदायतें दे देनी चाहिये कि अगर वे उचित समझें तो टेलीफोन करने की इजाजत बन्दियों को दें। इसी प्रकार अम की उत्पादनशीलता के बारे में यद्यपि सरकार सतत प्रयत्नशील है, परन्तु इस काम में अभी बहुत कम प्रचलन हो पाया है और अम की उत्पादकता के बारे में और भी सरकार को कोशिश करनी चाहिये और मैं समझता हूं कि ऐसा नियम भी बनना चाहिये कि जो बन्दी अधिक उत्पादन करके अधिक अर्जन करें उनको उनकी मुक्ति के समय अपने अम से उत्पन्न आय का भी एक अंश दिया जाय ताकि अम के प्रति उनमें एक आस्था और श्रद्धा उभरे।

इसी प्रकार जमानतों के बारे में अर्ज करना चाहता हूं कि सरकार ने एक नया प्रयोग किया कि जमानतों पर बन्दियों को छोड़ दिया जाय और उनके चाल-चलन को देखते हुए, जो जेल में उनका व्यवहार रहा है, जमानत पर उनको छोड़ दिया जाता है। में समझता हूं कि इस प्रवृत्ति में यद्यपि सरकार की तरफ से लगातार अर्डर दिये गये, एक नया नियम प्रचलित किया गया, में सरकार से अनुरोध करना चाहता हूं कि जेल जीवन में जो बाई—ऐक्सीडेंट चले गये हैं उनको जमानत पर रिहा करने की प्रवृत्ति को ज्यादा प्रोत्साहन दिया जाय और ज्यादा से ज्यादा लोगों को जमानत पर रिहा किया जाय। अनुभव बतलाता है कि जो अबतक इस प्रकार छूटे हैं उनके चाल-चलन के सुधरने में बल मिला है और अनावहयक यंत्रणाएं जो उनको मिलती थीं उनसे छुट्टी मिल जाने से उन्होंने अपनी जिम्मेदारी को भी अनुभव किया है।

उपाध्यक्ष महोदय, एक में ग्रापते ग्रौर निवेदन करना चाहता हूं कि जो प्रोबेशन पद्धति सरकार की तरफ से चालु की गयी थी १८ जिलों में ग्रौर फिर दो जिलों में ग्रौर बढ़ा दी गयी, [कास्तारं वीतकर]

उसमें आम कोवयों को जो सहित्यिते अता की गयी, में समझता है कि सरकार को भी अनुभव होगा कि इसमें उनके संधार में अधिक सहायता मिली है और इस प्रोबेशन प्रणाली को और जयादा सिस्तृत किया जाना चाहिय ब्रोर ये सहित्यतें ज्याया मृहदया की जानी चाहिये।

दन भारतों के साथ में आपके जरिय सरकार का ध्यान आकांचन करना चाहता हूं इस चीज की तरफ कि अब रायाधीन भारत में दूस पारणा क बदलन की आवदयकता है कि जल एक यत्रणा का स्थान है, जेसा कि अभी एक सदस्य बोल रहे थे, श्रीर निस्त तरह से भी बहां केंदियों के जीयन को साधारा जा सके उसी में सरकार के श्रयतनों की सफलता है।

श्री त्वानबहादुर (जिन्ता श्राराणमां) धावरणीय उपाध्यक्ष महोवय, मै भाषकी आज्ञा स यह जा प्रस्ताच हमार समाज बत्त्याण मची जी ने पश्च किया है उसका समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हु और श्री राजनारायण जी न जो बदौती का प्रस्ताय किया है उसका विशेष कर रहा है।

मान्यत्य, चाहे इस तरफ के लोग हो या उस तरफ के लाग हो, कुछ तो हम लोग साथ ही रहे हैं जलों से झौर कुछ ऐसे लोग इधर झौर उधर के हाग जो आयब जेलों को शकत भी न बेंगे हो। अध्यों के जमान की जलों की तृलना ब्राज के जमान की जेलों से की जाती है। जो लीग एसा करते हैं क्या यह अपन ह्वय पर हैमानवारी में हाथ रख कर ऐसा सोच सकते हैं? नहीं सोच सकते। मान्यवर, ब्राप भी अलों में रह है।

श्री उग्रसेन (जिला वर्णाग्या) अभी रहे हैं, गोरलपुर में ।

श्री लारतबहातुर अस जमाने की जेली में भी रहे हैं, इस तमाने की जेलों में भी रहे हैं। में तो शायब इधर जेल में गया नहीं, उधर ला बहुत जलों में रहा, शायब ही कोई सेंद्रल जेल बाकी रही हो जिसमें नहीं रहा। मेरी कास्ट्रीट्स्एसी में एक सेंद्रल जेल हैं भीर एक बिस्ट्रिक्ट जेल हैं। यह तो शायब मंत्री जी भी नहीं कहेंगे कि अंत बिलकुल स्वर्ग हो गया, लेकिन जो प्रयास उन्होंने किया है, कांग्रेस की सरकार ने हो प्रयास किय है उसकी सराहता तो उधर है लोगों को भी करना बाहियें थी।

श्री सृरथबहाबुरपाह (जिला भीरी) -- - जी हां, श्रापने किमिनला की छोड़ा है एलेक्सम में ।

श्री उपाध्यक्ष-प्राप उनको भावण करने बीजिये।

श्री स्वास्त्रवातुर — अगर छोड़ें गये तो आपकी रिकर्में बंग ते छोड़े होंगे । आर यह लोग कहेंगे तो में भी कहांगा । मान्यवर केलों की को हासत है, आप बेंगे, हमारी बरेती की कुबेनाइल केल को पायब उचर के लोगों ने बेला हो, वहां मंत्रे बेला कि केवियों को रेतवे में काम करते हैं प्रीय फिर वर्त में काम करते हैं प्रीय फिर वर्त आते है । सम्पूर्णान्य शिविष्ट को बल रहा या बाय बनाने के लिये वहां मेंते जुद बेला, वहां के कीवी बड़ें कहा ये । उनसे मेंने यह तो पृश्वा नहीं कि वह क्यों कुश है, लेकिन वह कह रहें ये कि हम बड़ी मेहनल से इस बाय को बनायंगे, बह इसमें गौरव समझते ये कि उनको भी वेश के निर्माण-कार्य में लगाया गया । राजनारायन की से से कहूंगा कि वह अब जेल जाने की समीव्यक्ति को खें है, ब्योंकि उनकी बाणी ही काफी है, उनकी बाणी से ही मंत्री जी मान जांगेंगे, उनकी बेल जाने की सब बकर साम की सब बकर सही है ।

मान्यवर, कहा गया कि जेस में श्रव भी शर्नेतिकता को स्थान विधा जाता है। शंगेजों के जमाने में भी में जनता हूं कि जेल में बड़ी शब्दी तरह से रका जाता था। शपने घर पर शगर

<sup>&</sup>lt;sup>\*</sup>वक्ता में भाषण का पुत्रवीक्षण महीं किया ।

हम ७ बजे सोकर उठते थे तो वहां पर पचासा बजने पर ही उठ जाया करते थे। तो जेल में नियमों को कुछ स्ट्रिक्ट करना चाहिये, मैं इस राय का हूं।

मिलने-जुलने के मामले में नटवरलाल को थोड़ी-सी छुट दी तो वह गायब हो गये। निवेदन करूंगा कि कुछ दफाग्रों के कैदियों को जैसे ३२४, ३२५ ग्रौर ३२३ हैं, कुछ सुविधायें दी जांय, लेकिन क्रिमिनल टेन्डेन्सी के कैदियों के साथ सख्ती होनी चाहिये। जो हैवीचुग्रल होते हैं उनसे अगर जेलर यह कहने लगें कि आपके लिये कुसी है, तो इससे उनकी आदत नहीं छूट जायगी। इसलिये मैं तो ऐसा सोचता हूं कि उधर के माननीय सदस्य थोड़ा भ्रम में हैं। में यह नहीं कहता कि उनको मार डालो या काट डालो । हम लोगों ने बहुत यातनायें सही है, हमारे खड़ो हथकड़ो लगा दो जाती थी और न मालूम क्या-क्या हालतें होती थीं । श्री मुक्तिनाथ राय जी ने सन् १६३० में जो दशा थी उसको बताया श्रौर उसके पहले क्या दशा होती होगी, हम सुनते हैं कि पिजड़ा बनाया जाता था ग्रौर कड़े बाघें जाते थे ग्रौर न मालूम क्या-क्या होता था, लेकिन ग्राज बहुत-सी सुविधायें दी गई हैं। ग्राज किताबों की, ग्रखबारों की ग्रोर चिट्ठियों की सुविधायें हैं। कम से कम इतना तो ग्राप कह ही सकते हैं कि सरकार इस ग्रोर प्रयास ग्रवश्य कर रही है। इस समय मैं यह नहीं जानता कि जेलों में कितने कैदी हैं, लेकिन यह तो हमारे सामने है ही कि उनके लिये १,८१,४४,६०० रुपये की घनराज्ञि रखी जा रही है । इस घन से उनको सुविधा पहुंचाई जायगी। मैं समझता हूं कि माननीय राजनारायण जी को इसमें कोई कटौती का प्रस्ताव न लाकर चाहिये यह था कि वह इसमें दस-बीस लाख रुपया जोड़ने का प्रस्ताव करते, तब मैं मानता कि वह जेलों में सुधार करना चाहते हैं। लेकिन जब वह कटौती करना चाहते हैं तो में कैत मानू कि वह जेलों में सुधार करना चाहते हैं, बल्कि वह चाहते हैं कि वहां ग्रीर कुछ टाइट किया जाय ग्रीर तकलीफें बढ़ें।

एक चीज में जरूर निवेदन करना चाहता हूं कि जेल विजिट्स के जो रूल बने हुये हैं उसमें कुछ परिवर्तन होने चाहिये। यही न हो कि जो एम॰ एल॰ ए॰ हों या विशिष्ट सज्जन हों उन्हीं को जेल विजिटर बनाया जाय बल्कि जो सोशल रिफार्मर हैं, वार्मिक मनोवृत्ति के या जो प्रोफेससे हैं उनको भी उसमें लिया जाना चाहिये और जेलों में थोड़े-थोड़े दिन पर लेक्चर्स प्ररेन्ज किये जाने चाहिये। मैंने सुना है कि जेलों में कैदियों की पंचायतें कायम की गई हैं और उनके थू जो सुझाव ग्राते हैं वह जेलर और सुपरिन्टेन्डेन्ट के जरिये कार्यान्वित किये जाते हैं। लेकिन ग्राजकल जो हमारी मनोवृत्ति हैं उसके लिये भी हमें कुछ करना है और जब तक हम इस भीर कैदियों को जागृत नहीं करेंग, तब तक वह हो नहीं सकती हैं। एक तरफ हमें कैदियों से यह कहना चाहिये कि उसको ग्रगर छोड़ा जायगा तो वह क्या-क्या करेगा। मंत्री जी ने जो प्रोबेशन पर छोड़ने का कानून बनाया है उसमें कुछ दिक्कत है, उसमें थोड़ी-सी ढील होनी चाहिये। ग्रगर ग्रविक

भारी कार्यवाही लिखे, फिर कल क्टर लिखे तब जाकर उसको छूट मिले। दफा ३२३ और ३२४ में जो साघारण ग्रादमी जेल जाते हैं उनके लिये नियमों में थोड़ी-सी ढिलाई ग्रौर होनी चाहिये। क्योंकि वे किमिनल लोग तो होते नहीं हैं। प्रापर्टी वगैरा पर कहा सुनी हो गयी ग्रौर शगड़ा बढ़ गया। बहुत से केसेज में तो राजीनामा भी हो जाता है ग्रौर बहुत से केसेज में उनको सजा भी हो जाती है। इसमें मंत्री जी कुछ लिबरल ब्यू लें।

पहले जब हम जेलों में जाते थे तो सीघे मुंह बात करने वाला कोई जेलर हमको मिलता न था। सन् १९४० में गाजीपुर में एक जेलर डाक्टर वीक्षित मिले थे, वे तो भलमनसाहत के साथ बातचीत करते थे, वरना सन् १९३० से ४५ तक कोई भी जेलर ढंग से बातचीत करने वाला नहीं मिला। आज तो हमारे डिप्टी मौर मिसस्टेन्ट जेलर लोगों से ठीक तरह से बातचीत तो करते हैं। माज का कैंदी यह तो सनुभव करता ही है कि हमारा भारत स्वतंत्र है सौर उसका एक |श्री ालबहावर]

परिणाम यह है कि हमारे साथ जेल में भी ध्यवहार भ्रम्छ। होता है। पहले जेलों में बक्की चलता है जाती थी, काल्ह चलवाया जाता था, भ्रब वेस कठिन काम तो बिलकुल समाल ही कर दियं गये हैं।

प्रास्ति पाप साहत स्या हे ' रशिया श्रीर सीन की जेना म स्या श्राप जानते नहीं है कि यहा क्या हाता है, तमंनी चौर उपलब्धी जेना में क्या हाता है दिया शाप यह चाहते हैं कि एटा की ता समस्यनी बन जाय नहां बहस हुआ करे। बरनी म तबीनाइन जेन की ही बण लीतिय। यहां म नव है बीठ एठ श्रीर एल-एलठ बीठ पास कर के निकार है। ध्यार धाप सरकार का सीर म तब र कर में तो श्राप्य ही श्रीर सुवार हो नायमें। माननीय राजनारायण जी में म निये उन कर मा कि ब श्रपने कटौती के प्रस्ताव को साम न न श्रीर तक में माननीय राजनारायण जी में म निये उन कर मा कि ब श्रपने कटौती के प्रस्ताव को साम न न श्रीर तक में माननीय हो सक। श्री मा ब श्रीर की पान का नाम कर वे क्योंकि उनकी ना वाणी ही काफो है। क्या कि उनकी जेन नेन जीने से इस मवन में श्रीर मवन के बाहर भी उनकी सवन मनने की नहीं मिलता है। म यही कर ब र इन श्रन सन का समर्थन करता हू श्रीर श्री में माननिश्मीयण जी में निययन करता है कि व श्रपना प्रस्ताव वापस स्व न ।

श्री भृष्यनेदाभूषण दार्मा (नित्ता इटाया) — प्रावरणीय उपायक्ष महोदय, माननीय राजनारायण जी द्वारा प्रस्तृत कटीती के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिये में लगा हुया है ।

मान्यथर, अभी माननीय मनितनाथ राय जी ने अपने भाषण में कहा था कि मे जेल मं इन्स्पेक्शन हेत् गया श्रीर वा भोजन की व्यवस्था बड़ी सुन्दर पायी। इसमें दो रावें नहीं है कि मेला में उस बब्दि से पर्याप्त सुधार हुआ है। लेकिन जेल मेतु ल जा बाबा बाबम के समाने का बना हुआ है, तो १०० वाल प्रान र, मे जाहता है कि मानतीय मंत्री जी को काहियं कि उसम धाराध्यक संशोधन ध्रवस्य कर । भाजन केविया को प्रच्छा मिलता है, तम । .. उन्हाने इंगमेक्यान में पाया, हम भी मानत है, लेकिन उनकी भूवा रखा जाता है, वयोधिक उनको बही उस समाने की लौल नाप से ५, ७ छांक विया जाता है। तो में कहता हूं कि माललीय मंत्री जी एक कमेटो बना लें और कमेटो बनाने के परच र्यहों ही जेंग्यों में आकर भीर लील कर भगन सामने ठीक प्रकार ने भार। मंद्रवा कर कैदियों की अधने हिसाब से राटी वें तो में समझता हूं यह पूरा नहीं पड़ेंगा। इसीलिये जैसा माननीय मंत्री जी चाहले हे धीर सारा सबने चाहला है कि भीजन धन्छ। ही, में समझता हूं कि सहा मानं में ईमानदारामा तरीके स ठीक प्रकार से रीटियां सेंकवा कर जैल के प्राध्यकारी केतियों की बेना भी चाहे ता नहीं वे समीरी । इनलिये उस जमाने का मेनुधान सदलना चाहियं । म ननीय मुक्तिनाय राय ने जहां और बहुत से सुखाब बिये तथा जल के भोजन की तारीफ की, बहा उन्हान दम तरह का कोई सुसाव नहः विया ि जेल मेनुझल में ग्राबदयक परिवर्तन होना चाहिये ।

मान्यवर, जेल की कावस्था चृंकि उस मेगुक्रल के हिनाब से चनती है, ठीक है। लेकिन उसके सम्बन्ध में प्रकार जो प्रांचकारी बर्ग होते है, उनमें इन प्रार की टेंडेंसी प्रा गयी है कि जो केवी बन कर जेल में धाये है उनके नाथ ऐना ही वर्ताय करें, नीचता का कावहार करें, ऐसी कुछ भावना सी उसकी बन गयी है। जो प्रकार व्यक्ति होते हैं, जो किसी घोले से प्रपराधी बन गये है जैसा कि धाज करन चन रहा है, कि कोई कह नहीं साता कि कब कीन धाराधी सक कर विधा जायना, इधर के या उधर के बेठने वाले सवस्यों को इसका पता नहीं है कि व ब कीन माननीय मंत्री की भी जेलों में पहुंच जाय, तो ऐसी स्थित में में चाहता है कि इस पर प्रवस्त कुछ विधार होना चाहिये।

<sup>\*</sup>वनता ने भाषण का पुनर्वोक्षण नहीं किया ।

इघर के तथा उधर के माननीय सदस्यों को, जिन्होंने जेल की तारीफ की है, इस बात का अनुभव होगा कि जेल में जाने के पश्चात् जो अच्छे चरित्रवान व्यक्ति होते हैं वे भी जेल अधिकारियों के व्यवहार के कारण खराब कैदियों की आदतों का अनुकरण कर लेते हैं क्योंकि वे समझते हैं कि बिना लड़ाई झगड़े के कुछ होने वाला नहीं है। सी वे आदमी की गुजर नहीं है। इसलिये उसमें भी कुछ सुवार होना चाहिये तथा दरिवर्तन होना चाहिये।

एक बात और है। जेल उद्योग परामर्शदात्री समिति जो बनी है, उसने जो सुझाव दिये है, उनमें से कुछ को माननीय मंत्री जी ने कार्यान्दित किया है और उसका अच्छा परिणाम निकला है। जैसे जेल में अम्बर चर्खा योजना से कैदियों को बड़ा लाभ हुम्रा है। मैं तो चाहूंगा कि माननीय मंत्री जी उस अम्बर चर्खा योजना को सभी जेलों में और शीघ्र से शीघ्र चालू करें तो उससे कैदियों का बड़ा हित होगा।

मान्यवर जेलों में श्रभी तक कुछ पुरानी प्रथायें श्रीर सख्त सजायें जारी हैं जैसे कि श्रभी लोगों ने चवकी के बारे में कहा है। माननीय मंत्री जीने बताया कि कि कुछ जेलों में चिवक्यां लगा दी गई है जो बिजली या इंजिन से चलती है श्रीर श्रभी दो चार दिन पहले की बात है कि श्री ऊदल के प्रदन पर माननीय मंत्री जी ने कहा था कि पैसा न होने के कारण हर जेल में बिजली या इंजन की चदकी लगाना सम्भव नहीं है। मेरा दिचार है कि श्रगर इंजन से चदकी चलाने का प्रबन्ध किया जाय तो उसमें ज्यादा व्यय नहीं है, थोड़े व्यय में ही सब जेलों में इंजन की चदकी लग सकती है। सचमुच ४-४ पसेरी हाथ की चवकी से पीसना कै दियों के बस की बात नहीं है। मेरा सुझाव है कि सरकार को चाहिये कि हर जेल में इस तरह की चिदकयां लगवा दें श्रीर हाथ की पिसाई बन्द की जाय।

श्रभी यहां डिप्टी जेलर श्रौर श्रसिस्टेंट जेलर की बात माननीय सदस्यों ने दोहराई है । सचमुच श्रगर श्राप देखें तो इनडिविजुश्रली उन दोनों की क्वालिफिकेशन श्रौर काम एक ही है, सब बातें एक ही है, लेकिन वेतन में बहुत श्रग्तर है । माननीय मंत्री जी से मैं प्रार्थना करता हूं कि वह इस श्रन्तर को दूर करें । डिप्टी जेलर्स का चुनाव न कर को जो पुराने श्रसिस्टेंट जेलर है उन्हीं को डिप्टी जेलर बनाया जाय । इससे पैसे की भी बचत होगी श्रौर, जो श्रसमानता की खाई है, वह भी दूर हो जायगी ।

इसके क्रलावा जेलों में कुछ ऐसे प्रयोग भी हो रहे है जिनमें पैसे का बहुत दुरुपयोग हो रहा है और उनसे कैदियों का कोई लाभ नहीं हो रहा है । कैदियों को जेल में नये-नये काम सिखाये जाते हैं, लेकिन जब वह जेल से बाहर म्राते हैं तो वह उनके किसी काम के नहीं होते भौर उन का वह उपयोग नहीं कर पाते । जेल के बाहर माने पर वह म्रपने निजी धन्धे में ही लगते हैं । हमारे ज्यादातर कैदी भी कृषक ही होते हैं इसलिये मावदयकता इस बात की है कि जेलों के साथ भौर जमीन लगाई जाय भौर वहां उन से भ्रदछे ढंग की खेती का काम लिया जाय, वहां सरकार प्रपने नये खेती के मनुभव करे । इससे सरकार का भी लाभ होगा भौर वह लोग भी बाहर माकर नये तरीके प्रपने खेतों में प्रयोग में ला सकेंगे । यगर किसी कादतकार को खिलौना बनाना सिखाया गया तो जेल से बाहर माकर वह गांव में खिलौने बनाकर क्या करेगा, उसे कोई लाभ न होगा । भ्रभी भी लाल बहादुर जी ने कहा कि जेल का मैनुम्रल भीर सस्त होना चाहिये । मैं श्री लाल बहादुर जी से कहांग कि जेल का सस्ती से काम नहीं चल सकता उससे जो भ्रेर खराबी ही पैदा है.गी । किसी शायर ने कहा है:

"जीतना ठीक है दुःमन को दुम्रायें देकर, ृतीच बन जाता है इन्सान सजायें देकर!"

जेल के कैरियों को हमें सजायें देना नहीं है, उनके जीवन में सुधार लाना है ताकि फिर वह जुर्म न करे। वहां एक घंटा या पीरियड ऐसा होना चाहिये कि जिस में [श्री भुवनेश बूषण शर्मा]

वहां समाज सुधारक या उपवेश वेने वाले व्यक्ति जांय श्रीर उन लोगों को बतायें कि ऐसे काम न करो जिनसे फिर जेल श्राना पड़े श्रीर इस तरह की मारल टोचिंग उनकी हो । में मंत्रों जो से नार्यना कहांगा कि वह इस पर ध्यान वें ।

दमके साथ-साथ वहां की भीज-नदावस्था के लिये एक कमेटी बनाई जाय जो बेले कि किस प्रकार वहां जाने पीनें की ठीफ व्यवस्था हो सकती है, पुरानी परिपादी के अनुसार केवी भूले रहते हैं और ठीक तरह से उन्हें भीजन वितरण नहीं हो पाता है। लीग जाते हैं नाप तील तक करते हैं। लेकिन अगर कोई माननीय सदस्य जेल में जायं और अपने ामने आटा मुलवायें और अपने सामने रोटो बनवाये और जैसी रोटी मंत्री जी चाहते हैं कि केदियों की मिलनी चाहिये, तो बेलेंगे कि जो उनके सामने रोटी बनतों है उसमें और पीरदें जो रोटो बनती है जमीन आसमान का अन्तर रहता है। इटावा जेल में इस तरह का ऐक्सपेरोमेंट हुआ था।

कहा गया कि फटौती का प्रस्ताय वयो रावा ? अगर ऐसा न करते तो सुझाव कैसे बेते ? आप रुपया बुगुना रिखये हम उसका विरोध नहीं करते । लेकिन अपने सुझाव अगर देना

चाह तो करा वे र

\*श्री प्रतापिसह (जिला नैनीजाल) — माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मुझे ट्रेंगरी बेंचेब से इस बात को सुनकर आक्ष्मयं हुमा कि यह खाज की जेल की तुलना अंग्रेजी जमान की जेल से करते हैं। जो खोपन जेल खल रही हैं, और मेरे ही क्षेत्र में खल रही हैं वे इस बात ही सराहता करना जाहता हूं। दूशरे मंत्री जी सरप्राइत विजिट करते हैं। यह बोनों यातें अच्छी हैं। लेकित जेल में की सुधार होना चाहिये इस सम्बन्ध में धार बिस्टिकोसों से सोचता हूं; एक तो जेल के अन्यर जो जन संख्या हे उसकी किस प्रकार कम किया जाय: तूसरे जेल के अन्यर जो जन शक्ति है उसका किस प्रकार से इस्लेमाल किया जाय जिससे हमारे बेंग के निर्माण में वे स्ति ले तहीं लीसरे जेल में जो अधिकारो, कर्मवारों काम करते हे उनको कौन-कोन सी सुविधायें ब्रीर वेती खाहिये और कीचे ब्राज जब सरकार रेवेन्स हंगी है तो किस तरह से इस विभाग में इकातामी की जाय। इन कार बातों पर सोजना है।

जहां तक इनो तभी का सवाल है में को बता हूं मी नि जेल्स की बढ़ाया जाय इससे हमको ३५ लाल रुपये की हर साल बचत हो। सकती है। खोटे-खोटे प्रपराधी में सजा न करके बनार जुर्माने की प्रभा शक्र की जाम तो हर साल २५ में ३५ लाल रुपये मानाना की बचत होगी, ऐसा इकानामी कमेटी में भी कहा है।

यात्र जेल के सन्दर जो ऐकाउन्दर्भ रखे जाते है उनमें बहुत मोलमाल होता है। इस-लिये मेरा नुशाव है कि जेल के लिये एक ऐकाउनद्भ श्रफतर की नियुक्ति की जाय जी जेल के सक्काम विभाग के सम्हर्गत रहे।

जहां में यो देन जैन का लारोज करता हूं यहां में आपके द्वारा एक ऐसे कार्यकी कोर सरकार का प्यान पार्किय करना जाहता हूं जो कि नेनातान जिले में हुना। बाल्यकर, जेल कार्यको एक नई व्यवस्था शुरू हो रहा है। सेवित यह पार्म यहां पर बनाया जा रहा है जहां रे १८८०-४१ से बह लोग बसे हुए हैं जो शेंद्र न हाइब कहलाते हैं, केरा मलनब वाक लोगों से हैं। इसके प्रनाया पर्वता संवत से प्राय हुए लानदान बसे हैं और बेग के विभाजन में जिनका सबस्य समाप्त हो गया यह लोग भें इस इनाके में हैं। में मंत्रों जो से पूछ्या वाहता है कि सबत में घाइबासन देने के बाद प्रीर माननीय मुक्य मंत्री द्वारा हमारे पन का लिबित उत्तर मिलने के बाद भी ऐसा व्यों किया जा रहा है दिसको जांच होगे व्याह हो व जेल कार्य का जो घाहटरनेटिय मुझाव दिया गया यहां न बना कर यहीं बनाया जा रहा है जहां से २०० परिवारों को उजाड़ा जा रहा है। ऐसा व्यों है ? स्पष्ट है कि मंत्रों जो को जिला इसर के प्रधिकारियों ने गलत सुवना

<sup>\*</sup> वक्ता में भाषण का पुनर्वोक्तण नहीं किया।

दी। इसोलिये वहां जेन फार्म बनाया जा रहा है। मान्यवर, एक ग्रोर तो सरकार श्रीं क श्रत्र उननात्रो श्रान्दोनन श्रारम्भ करतो है ग्रीर दूसरो ग्रोर किसानों का खड़ा लहुनहाती फतन को काटा जा रहा है। हमने सत्राज किया जाता है कि लैंड ऐक्का अन ऐक्ट को घारा लगाने के बाद हम फतल किसानों को काटने नहीं देते । यह कहां का नियम है ? अंग्रेजों के जमाने में किता भाजेत का स्काम के लागु करने में क्या कमा कोई ऐसी स्कोम लागुका गई जिलमें २०० परिवारों का फनल को काटा गया ? मुझे ल उज्जब हुन्ना मानन य न्नाचार्य जा ने यहां पर बयान में कहा कि खात जमोन तो इस गर्त पर दो जा रही है कि जब सरकार चाहे तब वापस ले सकतो है । यह कीन-सा नियम है ?

माननीय श्राचार्य जी के समय में मुझे दो बार जेल जाने का सीमाग्य मिला मैने देखा कि अविकार। अब एक हो क्वालिफिकेंग्रेन के आते हैं लेकिन उनका तनस्वाह वह है जो अंग्रेज के जमाने में थो।

श्राप सुवार की बात करते हैं, लेकिन जब तक जेल मैनुग्रल में सुवार नहीं होता तब तक जेज के जेनर से या अन्य अधिकारियों से हम अच्छे व्यवहार का अक्षा नहीं कर सकते । श्रंग्रेज के जनाने में बहुत कम सुना कि कैदो सुरंग लगा कर वाहर निकलने को कोशिश करता है । लेकिन ग्रब २६ जनवरो को नटवर लाल ने सुरंग लगा कर बाहर निकलने को कोशिश की लखनऊ जैन से । इसका इंक्वायरो होनो चाहिये। जो कैटो एक दका भाग चुका हो, वह फिर कोशिश करे, इसमें जरूर कुछ गोलमाल है।

श्राज इस वतंत्र देश में एक वार्डर गोरलपुर हवालात में बन्द है । इसलिये वह भूख हड़ताल कर रहा है कि उसकी जरमो मिलनी चाहिये, उसको तनस्वाह मिलनी चाहिये। एक ब्रीर तो कांग्रेस सरकार ८२ लाख रुपये की जेल दिल्ला में बना सकतो है, लेकिन दूपरो स्रोर एक वार्डर ४५ रुपये तनस्वाह स्रंग्रेज जमाने से पा रहा है **ब्रौर** उससे हम उम्मे द करते हैं कि करण्डात न करे, कैदो के भागने में मदद न करे। क्यों न करें ? जरूर करेगा।

हम यह चाहते हैं कि रिकार्नेटरी सेंटर्स बनाये जायं। मंत्री जी ने बतताया कि जुबिनाइन जेन को व्यवस्था बरेला में है। लेकिन में देखता हूं कि जिने स्तर पर छोटे-छोटे बच्चों को नौजवानों को, जवानों को पकड़ा जाता है तो कुछ दिनों तक उनको उन्हीं कैदियों के माथ रखा जाता है जो डकैता व कत्त्र करके आते हैं। छोटे छोटे बच्चों को भो अपराध होने पर भा वहां सजा मिलता है कानून के मातहत जो दूसरों को मिलतो है । मैं चाहुंगा कि गवर्नमेंट इस बात को साफ करे ।

जेलों में जो कैदियों को जनसंख्या बढ़ रही है उसके लिये दका १०७ व १०६ को समाप्त करना चाहिये । उनके कारण जेल को संख्या बढ़ता चला जा रही है। दारोगा जी जिसे चाहें बन्द कर सकते हैं। एम० एल० ए० तक को बन्द कर सकते हैं, बाद में पता चलेगा कि कौन हैं। में यह चाहूंगा कि इन तमाम चोजों की सफाई हो

में यह चाहना था कि जो हनारे यहां महिना सरस्यायें बैठी हैं, वे महिना कैरिगें के बारे में कुछ कहती, लेकिन योग्यता रहने हुए भा वे प्रयास नहीं करती । युनाइटेड प्रावित्सेज बोनेत्स जेत कमेटी को रियोर्ट से में इत सन्बन्ध में हुछ पड़ देश चहुता हूं--

"The Committee, however, strongly recommends that effective steps should be taken by Government to ensure the speedy disposal of cases in which a woman undertrial prisoner is involved. The desirability of releasing women prisoners on bail liberally may again be impressed on courts."

|श्री प्रता गीयह|

तो यह सहिनाझा के निये कहा गया है कि पुरुषा झार महिलाओं के लिये एक सा व्यवहार ह इसस तक्दाना होना चाहिये। जैन सेन्छन क निये कहा गया कि इस में सेटर का चरकर है। जिस्स स्थाप एक ऐसी कसेटो अनाय जो तरोके बताये कि जो कैंदा है के समाज के बाहर द्या कर पहले तेसा स्थान पा सका जेल से उद्योग-धन्यों को बढ़ाया।

सको आरागक हो । सर्हने का सोता सिना । वहा हुछ प्रोफेशनल कैदी है जो अपकारता स सिते रहते हैं और अकारता का प्राप्त करते हैं प्रोर अविधा से रुपया बहुत करके कहा अर्थनात्र के को है । भीता कि रह्य स्टब्यों ने कहा जब तक जल सेनुका स स्थायन नय गामा अब नक पानिष्कित जिन्नार या करने के कैदी स कोई कर नहीं होगा। दर्शात्र इस्स स्थायन को आराधन का ।

तिस रहत से दावतर सम्प्रणिनित आपन ते र रूप शर हुए हे उसी तरह से आरे अधिक कम्प्रस बद्धार जाय । लेकिन "consect in and cultivators out" बाला व्याने सरकार बदन और तिस लग्ह से २४० प्राप्तमा ता फाम बनने पर समाप्त किय जा रहते, उस रागे । इन शब्दा क साथ म इस कटोती के प्रस्ताव का समर्थन करता ह

\*श्री राजनारायण- व्याग पहला स्पाच मया जा भगवने प्रार्थित में बोहर सा समय दिया जाय राज्य राज्य ।

श्री उपारण्यक्ष - अन्न का श्रापका सन्ता क्या । अन्न का यहा प्रयाचल क्षेत्रों हो ।

श्वी रशननारायण - यहा धर निया, ऐसा में समझता हूं। तारामत्व में माहेक्यों में एक अन्ताय का समयंत हा किया, ऐसा में समझता हूं। तारामत्व में माहेक्यों में एक बात अमर कहा में उनका बचा अफानार हूं, मगर उनकी बात को मुत कर घरा परशाना और बड़ गया। । जन्होंने श्वा नीमता का पाठ विया कि इस सबन के सम्मानित सहस्य हा कि तो नीतिक है। इस सबय पहरे नहीं। में उस घटना का वर्णन नहां करना माहता मगर में उनसे खायक द्वारा पूर्या माहता है के नीतिकता के प्रदेश का यहां होने में उनसे अगर का यहां होने विवन्त होने में उनसे अगर का यहां होने में उनसे विवन्त का यहां है है को मिल प्राप्त साम का प्रदेश का। माह है है को मिल प्राप्त में यह के एत्या है कि प्राप्त का समझता का समझता यह के यह तह है।

श्री उपाध्यक्ष-- जाका यहा भाव ग्याचा जिक् न वर ।

श्री राजनारायण--मेने तो इझार को लोग पर कह विया । जो सरकारी कर्मचारी है अगर यह कहा जाय कि से उनकी बिरक्ल निन्दा ही करता हूं तो ऐसी बाल नहीं है । से ऐसे सरहारों कमंचारियों को जान ते हु छोर ऐसे जेल के अधि-कारियों को भी जानता हूं जिनसे नैसिकता हमने कम भर्त है और से मौके पर उनकी प्रशंसा भी करता हूं । सगर इसका सतलक यह नहीं हु कि जिनके बारे में सबूत को साथ सेनी अपनी वारणा है उसकी भी हम नजर अन्वाज कर वें। हम यहां किसी अर्थना का प्रदन उठाना नहीं बाहते बरना शायक हो आज कोई सेन्ट्रल जेल का सुपरिक्टेंबेंट होगा जिलके बारे में मुझे अपनी निजी जानकारों न हो जेल काटते काटते । इसलिये इस प्रदन को से खोड़ देना बाहता हूं सभी अवहों है। सालवहांदुर

<sup>\*</sup> वक्ता में भाषण का पुनर्वोक्षण नहीं किया।

सिंह जी ने हमसे ऐसा श्राग्रह किया कि राजनारायण को जेल जाने की श्रावश्यकता नहीं है वह न जायं । में निहायत श्रद्ध के साथ कहना चाहता हूं कि मेरो श्रद्ध इच्छा कभी नहीं रहतो कि में जेल जाऊं । हम जेल जाते नहीं हमें जेल ले जाया जाता है, यह फर्क है । श्रीर क्यों जेल ले जाये जाते हैं ? जब हम कहते हैं कि श्रलाभकर जोत वाले किसानों के लगान को माफ करो, बच्चों को पढ़ाई को फोस को माफ करो, जालिमाना हरकतों को बन्द करो, ब्रिट्श साम्राज्यशाहोजन्य परम्परा को छोड़ो, क्या भाई लाल बहादुर सिंह जो या दूसरे सम्मानित सदस्य यह चाहते हैं कि इन मांगों को करना हम छोड़ दें ?

श्री लालबहादुर--मेंने तो कहा था कि श्रापकी वाणी ही काफी है ।

श्री राजनारायण--प्रगर यह हो जाय तो हम जेल क्यों जायं? इसीलिये २५ नवम्बर से हम सतत प्रयत्न कर रहे हैं। दिल्ली में प्रदर्शन किया, जिलों में प्रदर्शन किया, मानतीय मंत्रोजो से सादर, साग्रह, सविनय निवेदन किया और इस सदन में भी उनसे श्चांग्रह किया कि हमारो ये मांगें हैं, जो जन-कल्याणकारी मांगें हैं. उनको मान लोजिये। मगर उनका क्या उत्तर इसी सदन में था। माननीय लाल बहादुर मिह जो याद करें, में किसो धमको से डरने वाला नहीं हूं। कौन धमकी दे रही है ? हम तो प्रार्थना कर रहे हैं कि पहली मार्च तक पूरा कर दो। लेकिन ग्रब हम विनती करते हैं और हमें जेते भेता जाता है तो हमें थोरो का वाक्य याद छाता है। भोरो ने कहा या कि जित शासन में न्याय हेत चलने वालों के लिये जेन जाना जरूरी होता है वहां पर प्रत्येक न्याय पर चलने वाले व्यक्ति के लिये सब से अच्छो जगह जेल है। जब न्याय मार्ग पर चलने पर सरकार हमको जेल ले जातो है ऐसो स्थित में हम अपने लिये सब से श्रव्छो जगह जेनवाना समझते हैं ग्रीर जेन जाने में गौरव श्रनुभव करते हैं। में समझता हूं कि इस परिस्थित में अगर कोई अपने सम्मान की रक्षा करना चाहता है तो उसको जेत्र जाना पड़ेगा। बिना जेल गर्ये, बिना ग्रन्याय का मुकाबला किये श्रीर बिना जोर जुल्म का खात्मा किये, सम्मान के साथ कोई रहने वाला नहीं है। कांग्रेस के शासन में कोई ऐसा साल नहीं बोतता जिस साल हमें जेन न काटनो पड़े । क्या हमते किसो के कं उड़ मारा है या क्या हमने कोई हिसातमक कार्यवाही को है ? ....

श्री उपाध्यक्ष-- रें समझता हूं कि काफी विषयान्तर हो रहा है।

श्री राजनारायण—जी हां, हो गया। जवाब देना था श्रीमन्, इसलिये चर्चा चलाई। हमारे साथी लाल बहादुर जो ने १६४२ की चर्चा को। में कहना चाहता हूं कि १६४२ के बाद १६४५ के समय में ग्रंप्रेजो साम्राज्यशाही के जमाने में भो काफो फर्क हो गया था। १६४२ में ग्रंखबार नहीं मिलते थे। दो, चार, पांच रूपये देकर सम्पूर्णानन्द जी को ग्रंखबार मंगाना पड़ता था और रात को दरवाजे लांघकर हम लोग ग्रंखबार सुनने जाते थे। क्या इसमें परिवर्तन नहीं हुन्ना? १६४३ के ग्राखार में हम लोगों को बाहर सोने की इजाजत मिल गई। ग्रंखबार ग्राने को भो इजाजत मिल गई। उस समय जितने ग्रंखबार मिलते थे ग्राज उतने नहीं मिल रहे हैं। एक बंदो को एक ग्रंथेजो का, एक हिन्दो का, एक उर्दू का ग्रौर पत्रिकायें मिलती थीं। मेरे कहने का मतलब यह है कि ब्रिटिश साम्राज्यशाहो को हुकूमत में भी विभिन्न व्यवस्थायें होतो रही हैं।

कांग्रेस शासन को बात ले लोजिये। श्री लालबहादुर जी के समय में हमें ४६-४७ में काशों के मजदूर श्रांदोचन में जेज काटनो पड़ी। तीसरे दर्जे के कैदियों को जो खाना मिलता था, वह प्लस चार श्राने मिलता था श्रौर हमने उस समय जेल काटी है। उन्होंने उस समय एक स्रेशल क्लास बनाई थी श्रौर उनका कहना था कि जो राजन तिक दृष्टिकोण लेकर [श्री राजनारायण]

जेल जाता है उसके लिये यह व्यवस्था की गई है। क्या वह व्यवस्था श्राज भी रह गई है? उसकों क्यों तोड़ा गया ?

श्रोमन्, धन की चर्चा की जाती है लेकिन हम कब कहते है कि हमारे निये स्वर्ग की सीढ़ी लगा दो। झारखंडेराय जी ने यह नहीं कहा, दीपंकर जी ने भी यह नहीं कहा कि आप पोलिटाकल केदियों के लिये जो वर्ग बनाये श्रीर उसके लिये जो स्थान श्रलग बनाये उसमे स्वर्ग की सीढ़ा लगा दे या मंत्रा जा जो सविधायें भोगते हैं वह हम लोगों को दी जायं। हमारा केवल यह कहना है कि अपना आर्थिक स्थित को देखकर कांग्रेसा शासन में जो हुआ ह, उसी का अनुकरण करके चिलये।

इसके श्रलाया में कहना चाहला हूं कि मूल रूप में जो जैल मंगश्रल है उसमें परिवर्तन होने चाहिंगे। हमने कटाता का प्रस्ताय इसलिये राया है कि जेल मंगश्रल में श्राधारभूत माननंत्य उग्रसेन जो को सजा हुई नो महाने की। जेल मेन प्रल की दका पर को देख लिया जाम, वह क्या है। यु० पी० जेल मेनश्रल में संबंध मे सेशन्स जज ने लिखा है कि एक मजिस्ट्रेट, इंसपेक्टर या किसा श्रकेतर को इतने बाइड पावर्स दे देना कि उसके डिस्क्रिशन में जो बात श्रायें श्रोर जो उचित सजा देना उसका समझ में श्राये, यह दे सकता है, यह ठं.क सरकार ने इराजे विरुद्ध हाई कोर्ट में प्रर्वाल की । मैं जानना चाहता ह कि क्या उत्तर प्रदेश की सरकार मंशियान का श्रादर करती है ? श्रगर श्रादर करता होती तो संशन्स जज के फोसले के सिर्लासले में वह प्रकंल में न कई होता। वह इस फेसले को मानत । जो <mark>प्रा</mark>धकार्रः जेल मं चोर्र करना चाहला है यह क्या इस जेल मंन्छल के होते हुएँ नहीं कर सकता है। श्चगर स्परिटंडेट श्रच्छा श्रा गया तो वह रोक सकता है श्रीर श्चगर श्रच्छा नही श्राया तो नहीं रोक कानपुर का जेल में हमने देखा कि ६ पमेरा रोटी रोज जेलर का गाय के लिये जाती लेकिन एक बानया सुपारिटेडेट होता सिंह श्रा गया। उसने बंद कर दिया। हर व्यक्ति पर कक्ष न कुछ मनहसर करता है। हमारा मतलब है, मूल से। हम को पत्र में सहाभिषत नहीं है। श्राज भा हमारी किलाबे नहीं मिलते हैं। हमने जेल से फिएठ भेजी, कमलापति जो को । पहले चिट्ठा कलेक्टर को गया। कलेक्टर ने कमानापति जा के पास भेजा। कमलापति जो के पास से हमारे वपतर में बापस हुई। जब उस हा सारा काम बिगड़ गया। जो समय पर काम होना चाहिए था, नहीं हुआ। इसमें मृतभत परिवर्तन नही हुआ है जिसके लिए सरकार को तार फ की जाय।

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—उपाध्यक्ष महोदय, वैसे तो उत्तर प्रदेश गरकार की जेल व्यवस्था के सम्बन्ध में एक प्रकार से श्राज सारे भारत्यर्प में प्रशंसा होती है, लेकिन कछ च जों के सम्बन्ध में निरसंकोच कह सकूंगा कि उत्तर प्रदेश में जेल के सम्बन्ध में जो स्प्रार हुए, वह संसार में श्रपने तौर पर श्रभी तक श्रकेले हैं।

जहां तक इस सम्मानने य सदन का सम्बन्ध है माननीय राजनारायण के श्रांतिरिक्त सदन के प्रत्येक माननीय सदस्य ने जेल व्यवस्था के सम्बन्ध में फछ प्रशंसा की बातें कही है। जहां तक मोजन का सम्बन्ध है या सरकार की नर्जल श्रीर दिव्योग का सम्बन्ध है, सदन के प्रत्येक माननीय सदस्य को उसके सम्बन्ध में भला भांति ज्ञात है। भोजन के सम्बन्ध में प्रत्येक माननीय सदस्य ने स्वीकार किया है कि बहुत सुधार हुआ है।

जहां तक नितियों का प्रक्रन है एक बात में बहुत स्पष्ट रूप से कह देना चाहता हूं जिसे कहने के लिए मझे विवश होना पड़ा, कि सरकार का यह निद्यत मत है कि जेलों को सधार का कार्य करना चाहिए। किसी भं। प्रकार से बदले की भावना से थ्राज समाज अपने बंदियों के साथ व्यवहार नहीं कर सकता। कितने प्रकार के दंड मानव ने लोगों को दिये, कितनं। तरह से लोगों को सूलो पर चढ़ाया, फांसी लगायो, हमारे देश में चोर के दरवाओं की प्रथा चलं। जिनके चिह्न श्राज भी कहीं न कहीं मौजूद हैं, जिनमें चोरों के सिर लटकाये जाते थे। न जाने कितने

प्रकार के दंड इस देश में चलते रहे। इस देश के एक भाग में कई प्रकार की दंड व्यवस्था है, कुछ पड़ोसा भाग मे । लेकिन कोई विशेष लाभ हुन्ना नहीं। हत्याएं भं होर्ता है, सारे ऋपराध होते हैं। दंड व्यवस्था के कारण अपराधों में कमें नहीं हो पार्य । आज वह इसके बिलकुल विपर त विश्वास करते है । अपराध केवल उन लोगों के द्वारा नहीं होते है जो अपरार्धा के रूप में जन्म लेते है। कई कोरण है। कई प्रकार की भावनाएं है, कंट्ट है, रोग हं, कुछ किमयां हैं, कुछ मानसिक श्रभिज्यक्तियां है, मनुष्य के जंदन में समाज द्वारा दी हुई कटुताएँ है, उनके कारण मनुष्य अपराध करता है। मनुष्य मजबूर हो जाता है और इसके लिए दंड ही दंड देने लगे, यदि समाज उसको केयल यही कहने लगे कि अगर इसने किसा की आंख फोड़ी है तो आंख उसकी निकाली जायगी, या इसने चौरी की है जो जिस हाथ से चौरी की है वह हाथ काट दिया जायगा, तो श्राज हम उसको स्वीकार नहीं करते। ग्रीर सच तो यह है श्रीमन्, कि मानव जीवन का इतिहास कुछ अत्यन्त हो अनर्ठी घटनाओं से भरा पड़ा है। अप्रोज से बहुत दिन नहीं हुए जबिक इंग्लैंड में कभी कभी रूमील चुराने पर या छोटी सी जेव काटने पर भी फांस की सजा होती थे। श्रीर इतिहास इस बात का साक्षी है कि जहां पर फांसी होती थी, ग्रथनार्थ को फांसी पर लटकाया जाता था वहीं पर सबसे प्रधिक जेबे कटर्त थी। तो ग्राज हम कुछ निष्कर्षी पर पहुंच चके है। ब्राज हम किसं. प्रकार मं: ब्रपराधः को बुरा घ्रादम नहीं समझते। समझते है कि वह भी समाज का एक साधारण व्यक्ति है। किन्हीं कारणों से उराने कुछ अपराध किये है, लेबिन उसको हम फिर एक सही रास्ते पर करके समाज मे ला सकते है। जंबन की जिन कटुताओं के कारण उसने श्रपराध किये यदि वह कटुताये हम उसके मस्तिष्क मे से निकाल सके ग्रीर उसको कुछ ऐसा ग्राभास दे सके कि ज वन मे केवल वह कटुता नहीं है जिसका कि उसे श्राभास मिला, बर्हिक इसके अतिरिक्त जीवन में कुछ मधु भी है, जीवन में कुछ सम्माननीय वस्तु भी है, जीवन में कुछ सच्चाई भी है, कुछ सौन्दर्य भी है, कुछ कला भी है, कुछ गृहस्थी भी है, कुछ बच्चे भे है। इस प्रकार यदि उसे व्यक्ति को हम इस सम्माननीय जीवन की ग्रोर ला सके तो यही हमारे जीवन की सबसे बड़ी सफलता होगा। इसमे न हमे पहले कभी संशय था और न हीं आज है। सौभाग्य से वह इस सदन में मौजूद है, इस प्रदेश के माननं य मुख्य मंत्री जो, उन्होंने जब इस विभाग को सम्हाला था तो उनके मस्तिएक मे इस प्रकार की घारणाये थीं ग्रीर फ्राज निइचय ही इस प्रदेश का जेल विभाग इन धारणाश्रों पर कार्य करने की पूर्र पूरी चेष्टा कर रहा है।

राजनारायण जंः ने भोजन के सम्बन्ध में बहुत चर्चा की। मैं बहुत अधिक नहीं कहना चाहता इस सम्बन्ध में। भोजन का बाते बहुत स्पष्ट है—हम १२ छटाक अनाज या रोटो देना चाहते हैं। २ छटाक भने हुए चने देना चाहते हैं। इसके अहिरिक्त हम चार छटाक सि-जयां देना चाहते हैं और एक छटाक दान देना चाहते हैं—चावल देते हैं तो वह भी देते हैं। इतना हम देते हैं और इसमें एक हमारी निश्चित नाति है कि किसी भी प्रकार से हम यह बर्दाश्त नहीं कर सकते कि कोई भी व्यक्ति कैदियों का खूराक में से फोई चोरा करें और इसके लिए में उसको और किसा क्या कर में नहीं रखना चाहता, में इस सदन के माननीय सदस्यों का सहयोग इसमें लेना चाहता है. . . . .

श्री राजनाराखण ---यह डायट र्कः फी.गर श्रापने दिन भर की बतायी या एक वक्त की?

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--मैने एक ही दफे की बतायी और एक मामूली श्रादमी के लिए बतायी जैसा कि एक एवरेज श्रादमी होता है।

श्री राजनारायण—मेरा प्रश्न यह है कि यह खूराक एक वक्त की श्रापने बतायी या दिन भर की बतायी? जेल मैनुश्रल मेरे सामने है श्रीर इसमे श्राघी छटाक दाल एक वक्त के लिए लिखी हुई है।

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य--नेते जो बनाया वर् एक छात्र दाल हो बनाया श्रीर वह मैते दोनों समय के निए बनाया है। मैंने दोनों समय का भोजन बनाया एक श्रोतन व्यक्ति के लिए।

तो श्रोमन, में यह चर्चा कर रहा था कि मेरो यह इच्छा रही है कि भोजा के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार का चौरों की बर्दाइत न किया जाय। माननीय राजनारायण जो ने कछ जिक किया कहीं पर किसो व्यक्ति का चोरोका। मैं उनमें कहना चाहता हं कि वही केवल व्यक्ति नहीं है जिन्होंने कि इन प्रकार को चोरो को देखा हो। समय समय पर कई प्रकार को बह चोरियां जेन विभाग के अन्य अविकारियों के सामने भा आती है, कष्र मेरे सामने भा आयी हैं श्रीर जब कभा उस प्रकार को कोई बात मेरे सामने प्राया या जेन के प्रत्य प्रधिकारियों के सामते श्रायो, श्रशन्य श्राराघ के रूप में उसे लिया गया श्रीर उस पर जिनता दंड सम्भव हो सकता था निवमों के ब्रन्तर्गत वह देने को चेष्टा को गई। यह। नहीं, में एक बात ब्रीर कहना चाहता हुं कि जहां तक भोजन का सम्बन्ध है कई बार कई प्रकार से प्रव्याग्यायें भी हमारे सामने ब्राई हैं। मेरे कई मित्रों ने ईंथन के सम्बन्ध में जिक्र किया। में जानता नहीं कि उनमें से कितने मित्रों को यह मालुन है कि कितने ईंधन को जरूरत है स्रोर यदि केरन कह व्यक्तियों के कहने से श्राज सदन के सामने वह यह कहने जगे कि यह ईंगन श्रायित है तो मन्ने इनका दख होगा। इस प्रदत्त को भा भैने देखा है अर्थि सोचने का चैध्टा का है। हम अपने प्रदेश में पहाड़ी क्षेत्रों की छोड़ हर प्रति कैदा तान छुदा क कोपना स्रोर ६ छुदा क ल हर्ड़ा देने हैं। क्षेत्रों में प्रति कहा है छहा के को प्रता और है छहा के लक्षा का उपन देने हैं। यह पर्याप्त है। इस ईवर्त के जॉरवे से जितना श्रवंद्वा पाता प्रकार्य जाने का बात है उसके प्रकाने में कोई कठिनाई नहीं पहना। कियो भाजेन में इय प्रधार की कोई कठिनाई मेरे सामने नहीं श्राही। हां, एक बात नकर है, एक जैन के सम्बन्ध में, जिलका नाम आज में इस सबन में लेना पसन्द नहीं करूंता, मेरे सामने ऐसा बात आई कि एक जैन अधिकारी महीवय ३ खटाक के स्थान पर २ छुटा ह को प्रनाप्रति हैवा बड़ां दे रहे हैं। उसमें जाना बनाया जा रहा है और भोजन के सम्बन्ध में कोई कठिताई नहीं है नेकिन जब मेने देखा तो मुझे यह खराज हुआ कि फारियर यह २ छटाक क्यों विया जाता है। उन्होंने कुछ कारण बनाये। इस पर विभागाय रूप से जांचे हो रही है। इसमें प्रतिक में इम सम्बन्ध में कुछ नहीं कहता चाहता, लेकिन यह जरूर कहना चाहता है कि २ छड़ा क की बना भी जन गकाने के लिये दिया गया उसने जैन में भी जन बनाया गया ग्रीर श्रब्धी उपनें कोई कि अविनाई नहीं पड़ा। तो यह कहता गाननीय सरम्यों का, यांव उन्होंने क्य जोगों के कहते से इप चोज को चर्बा इप सदत के सामते किया कि ईश्वन कर मिलता है तो तो में उनते श्रत्यन्त जिनस्र रापुर्वक यह कहना चाहंगा कि कृपया वे स्नाना राय को बदलें। वह इंथन कम नहीं मिलता है। े वह पर्यन्ति का में मिलता है श्रीर ठांक मिलता है।

यहां पर क्ष्न बहुन चर्चा श्रांसिस्टेंट जे तर श्रौर हिन्दों जे तर के सम्बन्ध में हुशा। दीवंकर जो, राज रारायगा।, भ्रते तमूरग जा ने इसका चर्चा किया। में के उन इतना कहना चाहता हूं कि शायत पूरो बात उनके सामने नहीं है। जो उन्होंने उनके सकेन का चर्चा की ८५ रुपये वालो या १२० रुपये वालो वर ठोक है। उन्होंने जो संख्या बनाई वह री ठांक है। कार्य के विभाजन के सम्बन्ध में उन्होंने चर्चा को वह भो ठोक हैं लेकिन जिस जे न मेन्य्रत के कई पराग्राफ का जिक राजनारायण जो ने किया, उसके पराग्राफ ११८३ की तरफ में उनका ध्यान श्राक्षित करना चाहता हूं:——

"The Superintendent may authorize a Deputy Jailor to perform any or all of the duties of a Jailor, and an Assistant Jailor to perform any or all of the duties of a Deputy Jailor or a Jailor."

इसका अर्थ यह हुआ। कि असिस्टेंट जेजर को स्वॉरटेंडेंट यह अधिकार दे सकता है कि वह डिप्टी जैलर का कार्य करे। असिस्टेंट जेजर दूसरा है और डिप्टो जेजर दूतरा है। जेज कार्य साधारण कार्य नहीं समझा जाता। दोनों के कार्य ग्रलग ग्रलग हैं। एक का कार्य मोटे तौर पर कर-रिकल है और दूसरे का कार्य ग्रामतौर पर एक्जिक्यूटिव है, शासिनक कार्य है। तो इन दोनों कार्यों में बहुत ग्रन्तर है। ग्राम तौर पर ग्रिसिस्टेट जेलर को क्लिरिकल कार्य करना पड़ता है ग्रौर साधारणनः डिण्टो जेलर को प्रशासिनक कार्य करना पड़ता है। दोनों को ग्रलग ग्रलग कार्य करने पड़ते हैं ग्रौर दोनों को ग्रलग ग्रलग कार्य मिलते हैं, लेकिन यदि सुविरन्टेन्डेन्ट चाहे तो ग्रिसिस्टेंट जेलर को डिप्टो जेलर का कार्य दे सकता है, डिप्टो जेलर को जेलर का कार्य वह दे सकता है। यदि मेरे मित्र के इस तर्क को यह सदन स्वेश्वार कर लेता है कि डिप्टो जेलर ग्रौर जेलर एक हो है क्योंकि सुविर्टेडेंट जेल, जिस ग्रीसिस्टेंट जेलर को डिप्टो जेलर का कार्य दे देता है, वह डिप्टो जेलर का कार्य करने लगता है, तो जेलर को सुविर्टेडेंट का कार्य दिया चा सकता है। तब तो मेरी राय में जेलर, ग्रिसिस्टेंट जेलर, डिप्टो जेलर ग्रौर सुविर्टेडेंट, सभी को एक हो ग्रेड ग्रौर स्थान में रखना चाहिये।

एक बात में स्रौर कहना चाहता हूं . . . .

(श्री राजनारायण द्वारा बोलने का प्रयत्न करने पर)

श्री उपाध्यक्ष--इस वक्त यह बात ठीक नहीं है कि श्राप बार बोले। श्राप बाद में उनको पढ़ा दंशियोगा।

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य—शेमन्, में कहना चाहता था कि इस के संबंध में एक चर्चा सौर हुई और वह थी क्यालिफि केशन के संबंध में, शैक्षिक योग्यता के संबंध में। यह सहा है कि एक जगह था कि वे इंटरमाडियेट पास हों, उच्चतर माध्यमिक योग्यता के हों। लेकिन इसके बारे में एक सरकारो ग्राज्ञा निकलो है और उसके श्रनुसार पिंक्तिक सिवस कमोशन द्वारा जो डिप्ट। जेलर लिये जाते हैं उनकी शैक्षिक योग्यता ग्रेजुएट—बो० ए०—कर दी गयी है और श्रव वह उच्चतर माध्यमिक वालो योग्यता डिप्टो जेलर के लिये नहीं है। जहां तक ग्रासिस्टेट जेलर का संबंध है, उसकी योग्यता उच्चतर माध्यमिक हो है।

एक बात का चर्चा और हुन्न। श्रौर मेरे खयाल में मेरे मित्रों के मस्तिब्क मे उसके बारे में कुछ शुबहा है श्रौर होता भो चाहिये श्रौर उसकी उन्होंने बहुत दबे हुए ढंग से, दूसरे ढंग से कहने को चेंब्दा को श्रौर इसके लिये में उनका श्रुगृहोत हूं। उनका कहना यह था कि एक पोस्ट के लिये तो पिंलक सर्विस कमोशन है, वह उनका नियुक्ति करता है, लेकिन दूसरो श्रीसस्टेंट जें तर को पोस्ट को नियुक्ति किसी एक श्रीं कारो हारा करायो जातो है। उनको सूचना के लिये में श्रापके हारा यह कहना चाहता हूं कि सचनुच हो यह प्रश्न हमारे विचार में है कि श्रीं सस्टेंट जें तर को नियुक्ति भो हम पिंलक सर्विस कमोशन हारा हो कराया करें श्रौर इसे हम कुछ श्रनुचित नहीं समझेंगे। लेकिन विभागोय रूप से यह प्रश्न श्रभो विचारणोय है श्रौर इससे श्रांवक में इस समय इसके संबंध में कह सकूं इन स्थित में में नहीं हूं।

श्रोमन्, में एक चोज और कहना चाहता हूं। यह डिप्टो जेतर जो बनाये जाते हैं उनमें ४० प्रतिशत ग्रिसिस्टेंट जेलर लिये जाते हैं। श्रगर योग्यता का प्रश्न श्राता है तो उसे हम हल कर लेते हैं। जिनको हम इस योग्य समझते हैं कि वे डिप्टो जेलर के पद पर नियुक्त किये जा सकें उनको हम उस पद पर नियुक्त कर देते हैं।

बहुत चर्चा हुन्न। इस सदन के सामने क्यांसिफि हेशन के बारे में। म्राम तौर से राजनोतिक बंदियों को एक म्राया श्रेगो बनाने के बारे में विद्यने वर्ष भो चर्चा हुई थो म्रौर मेंने श्रोमन्, उस समय भी यह जिक किया था म्रौर इस सदन के माननो। सदस्यों से म्रायहपूर्वक यह कहा था कि यदि इस संबंध में वे किसो भो प्रकार का कोई प्रयास करें म्रौर मुझे केंबिस कर सकें, तो हम इस पर विद्यार कर सकते हैं। इस संबंध में कुछ कठिनाइयां पड़ गरीं भीर में इस सदन का इस बारे में विश्वास प्राप्त करना चाहता

[श्री ल.मीरमण ग्रानार्य]

जो लोग राजनातिक यंदियों को श्रेणो की चर्चा किया करते हैं, उत्रमें से जरकार के भी कुछ लोग थे, में भा नगण्य रूप से अवने को उनमें सम्मिनित कमता है। लेकिन श्री सन, समय ने बहुत पलरा साथा प्रोर यह जो श्रवाध गरि है समय है। उस है साथ में हुए मान्यताओं में श्रारंडर पर ।। है. प्रारंथाओं में पंतर पड़ता है। मेरे मित्र शाप्तंडे राय त. इस समय यहां नहीं है, उन्होंने कि किया था इस पॉनिटिक्न जिल्लामें का एक श्रेण बना के बारे में श्रीर बहत दहना है साज जिस किया था। में उनसे हिन्दा एक है अञ्च पत्ना चाहता था कि करात्र को लान राज्य पात्र म क्या उन्होंने पोलिटिकल विभिन्नतं का कोई शलग श्रेम, बनाया ? यही नहीं में क्षेत्रन पाक्षेत्र का उत्तर उनके कार्य से हर नहीं देना चाहता. से एकदसरा प्रदेन पुष्ठवा चाल्ता हूं वभः विरोधा भाइषों से । । क्या संसार में करों। सर्वालिकिक विजित्स का श्रेमी धनगरो है े जिस से डेमोक्सेंट क्र मन्तु में, या दिनया के किया से लॉक्साहा देश में मैं पालुका चाहु स है कि व स राजनातिक बंदियों के लिये अपनय में योर्ड 'पेयर ह । प्रयार नहीं है तो भेषा उपके वारिणों पर वे लोग विचार की कर सकते . 孝 हमकी 🦠 करमें के लिये मजबूर करता चाहते हैं। में पृष्ठम चाहता हूं मानत व राजनारायण जा से, वै मक्षमे नाराजमः निहित्र करेगे, लेकिन जहां पर प्रजात । के शायन प्रभाव 🚶 यहा शासन को **बब**लने के लिक्के जनलात्रिक सिद्धान्तों की भा मान्या दी गया । यदि उनके विपरी । शासन हो ब तन का प्रयास किया जाता है, भीत उन है श्रताना हाई दू तर मार्थ श्रील्यार किया जाता है, ता 660 सा यह देश है जहां ऐसे जाता है। का सहारा मेही विया जाता है, जहां उन लोगा है जिसे स्थल पे हाई श्रेम नवारना है ?

श्री राजनारायण- कंटन म क्या हुवा

श्री लक्ष्मीरमण आचार्य — केन्द्र का जहां वक्ष प्रश्न है उसका सबसे बना कारण यह या कि बहां पर शासन के प्रांत जनता का विश्वास विन्त्रका उठ गया था। वहां पर श्रा राज-नारायण जा के रात की रहीं कर सभी भागते एक सान श्रान्योंना जनाया था। व्यक्ते पहले जनता का विश्वास था, और ज्यों है। वहां पर राष्ट्र कि का शासन नाम हथा, तान शिक्षोंना सभाव हो। या। राष्ट्रपति के अभे में शासन स्वश्यति यह च अवत्य है। गया। यहां एक दूसरो स्थिति थी। यहां के प्रयान जनता का प्रथान से भिन्न था।

तो श्रीमन्, मं यह कह रहा था कि राजनैतिक श्रेण किस को कहा जाव ग्रार किस को न कहा जाय? कीन सा बह सर का है जिस के श्रा (मार्ग किसी) को राजन निर श्रेम में परा जाय के जहां इस प्रकार के प्राक्ता श्रान्दी तन हों, सत्यागत हों बहा अवलां कि प्रमान के उनके स्वत्कार करना सम्भर नहीं ते श्रोर जब इनको सबी कार करना नमव नहीं है तो का घर नजि हों? कैबल श्राक्ता के लिये या किसा श्रान्दोलन के लिये उसे राजनित कथान्ताया का कार कर केना संभव नहीं है।

जहां तक श्रेगी रूरण का संबंध है, यह सही है, श्रेणियों में विमाणित करने का बात हमारे मस्तिक में है। लेकिन जिन श्रेणियों में विभागित करने के बात हमारे सामने है यह श्रेणी मनीवैज्ञानिक होगी। यह बेलना होगा कि किस प्रकार के बाजियों का मनीवैज्ञानिक रिथति क्या है, किस प्रकार में हम उनकी मनीवैज्ञानिक तर्रकों में समाण का एक श्रन्दा व्यक्ति बना सकें। इस प्रकार का बाते हम लोगों के मारितक में है।

जेल मैनुश्रल का भी रपष्ट रूप से जिक श्राया। उसके बारे में में यह जिक करना खाहता हूं कि जेल मेनुश्रल के सम्बन्ध में राचमुख मुख देर हुई हं। हम लोग भी इसके लिये बहुत जल्दी में है कि जितनों जल्दी हो सके इसकी बनाया जाता। लोकन हमारी एक काठनाई यह है कि जेल मेनुश्रल श्रावल भारतीय समिति से सम्बन्ध रावता है। ध्रार यह श्रावल भारतीय समिति न होती तो हम श्रपने प्रवेश के लिये श्रावण से समिति बना कर श्रपने प्रवेश के लिये इस कार्य को समित बना कर श्रपने प्रवेश के लिये इस कार्य को सम्बन्ध करें श्रावल भारतीय जेल

मैनुम्रल समिति है ग्रौर उसमें प्रत्येक प्रदेश के जेलों के उच्चतम ग्रधिकारी है। हमारे यहां के भी जेल के इन्सपेक्टर जनरल उसमें है। उसका कार्य निरन्तर चल रहा है। यह कुछ ग्रपन ढंग का एक प्रकार से टेकि कल कार्य है जिसमें ग्रांकड़ों को इकट्ठा करना पड़ता है ग्रौर कुछ ऐसे भी कार्य है जहां कि विवाद के लिये बहुत ग्रधिक गुन्जाइश है। मै इतना कह दूं कि किसी भी प्रदेश से, जेल के मामले में, सुधारों की दिशा में यह प्रदेश ग्रागे है, पांछे नहीं है ग्रौर इसलिए यहां की स्थित दूसरे प्रदेशों से कुछ भिन्न है। तो मं जहां तक जेल मैनुग्रल के कार्य का प्रश्न है, केवल इतना कहना चाहता हूं कि जेल मैनुग्रल के कार्य का प्रश्न है, केवल इतना कहना चाहता हूं कि जेल मैनुग्रल के कार्य को हम शीघ्र से यिद सम्पन्न करना चाहते हैं ग्रौर इस सदन से मै यह भी कहना चाहूंगा कि हमारे प्रदेश की ग्रोर से यिद कुछ भी प्रयास हो सके ग्रौर यह जेल मैनुग्रल बहुत जल्दी तैयार हो सके तो हमको इसकी प्रसन्नता होगी।

श्रीमन्, कुछ जिक्र किया गया जेल में खेती के कार्यों को प्रारम्भ करने के सिलसिले में, कुछ जिक्र हुग्रा जेल की इंडस्ट्रीज के बारे में ग्रीर कुछ सुधारों की प्रगति के सम्बन्ध में । एक ग्रोर तो यह कि रोकथाम की जाय ग्रीर दूसरी ग्रोर सुधारों की प्रगति ज्यादा तेज की जाय। जहां तक जेलों में खेती के कार्यों को प्रारम्भ करने की बात है, गायद माननीय सदस्यों ने बजट साहित्य को पढ़ा होगा। ४ जिलों में हम निश्चय कर चुके है कि हम जेल के कार्म बनाना चाहते है ग्रीर बजट साहित्य में जिक्र भी है कि किस प्रकार चारों जेलों के लिए हमने एक विशेष ग्रनुदान रखा है ग्रीर बरेली, वाराणसी, नैनी, फतेहगढ़ ग्रीर जिला जेल मेरठ—इन पांच जेलों में हमें तरकारी के ग्रलादा फार्म बनाने है ग्रीर इसके लिए पांचों स्थानों पर हमने कुछ भूमि प्राप्त करने की कोशिश की है ग्रीर हमारा ऐसा ख्याल है कि शायद इससे काफी लाभ होगा। ३० एकड़ भूमि प्रत्येक जेल में हमने लेने की चेट्टा की है।

इसके म्रलावा एक बहुत बड़ा कार्य हुम्रा, मुझे मालूम नहीं सदन के किसी माननीय सदस्य को उसका कितना ज्ञान है। बाननीय प्रताप सिंह जो ने उसका जिक किया। ६,००० एकड़ भूमि हमने सितारगंज, नैनीताल जिले में ली है। इस पर हम जेल की ग्रीर से खेती करना चाहते है। यह जो वर्ष हमारा गया, इसमें करीब २ लाख रुपया हम वहां पर-क्यय कर चुके है। डेढ़ सौ बन्दी हमारे वहां पहुंच चुके है श्रीर वहां पर भी एक उसी प्रकार का ग्रीपेन एयर कैम्प स्थापित किया जा चुका है जैसा कि नानकसागर में या मिर्जापुर में या ग्रीर स्थानों पर है। इस पर हमने कुछ ईख बो दी ग्रीर ऐसा हमारा खयाल है कि इस वर्ष भी, जो ग्राने वाला वर्ष है, इसमें भी हमने ग्रपने बजट में करीब १० लाख रुपये का प्राविधान किया है वहां के लिए। इस ६,००० एकड़ भूमि पर हमारा ऐसा विश्वास है कि शायद कुछ साल के बाद में, शायद ग्राले वर्ष में ७०,००० मन गल्ला तक हम पैदा कर सकें। उससे लाजमी तौर पर बहुत बड़ा कार्य होगा जेल विभाग के लिए।

इसके म्रलावा एक म्रौर भी बड़ा कार्य होगा। जैसा कि कुछ माननीय सदस्यों ने यहां विचार व्यक्त किया था, कुछ खेती के सम्बन्ध में भी कैदियों को प्रशिक्षण दे सकेंगे जिससे उनकी जीवन में प्रवेश करने में सहुलियत मिलेगी।

इसी प्रकार यहां पर जो ऋ इम प्रिरंशन कमेटी है उसकी ग्रोर से कुछ मुक्त बंदियों के लिये बहु गर्च में एक फार्म बोलने का प्रश्न है ।

जहां तक माननीय प्रताप सिंह जी ने कुछ भ्रादिमयों के निकाले जाने का जिक्र किया, मैं उसके बारे में कुछ चर्चा नहीं करना चाहता। कुछ बड़े कामों के लिए कुछ लोगों को कब्द सहना पड़ता है, जैसा कि एक्वीजीशन के सिलिसले में कुछ लोगों को भूमि से ग्रलग होना पड़ेगा, लेकिन जैसे कि जब वह स्वयं मेरे पास ग्राये थे, मेंने उनको बताने की चेष्टा की कि १,१०,००० रुपया हमने तय किया है कि जो खड़ी फस्लें है उनका फौरन मुम्रावजा उनको दिया जाय। यही नहीं, ३०,००० रुपया मुम्रावजा हम उन लोगों को उस भूमि का दे रहे है जिस पर वह स्राती है। कुल लोग है जिनके सम्बन्ध में प्रताप सिंह जी ने जिक्र किया, कुछ धारा

#### [श्री लश्मीरनण श्राचार्य]

मादि का जिक्र किया, कुछ और व्यक्तियों के बारे में भी जिक्र किया जो कि काइमीर से भेजे गये थे। मेरी यह चेक्टा है कि विभागीय रूप से प्रपर उनको भूमि वो जा सके जहा पर उनको बनाया जाय, यदि ऐसी भूमि सरकार की छोर से प्राप्त करके वो जा सके तो उसका हम प्रयत्न करे। ऐसी हमारी इन्छा है। किसी की भी ऐसी नीयत नहीं है कि किसी श्रावमी की निकाला जाय। जैसा विश्वार के हा भने श्रावमिशों की निकाल कर केदियों की बसाया जा रहा है, ऐसी बात नहीं है बिक्त हम कि हम के देव के हा भने श्रावमिशों की निकाल कर केदियों की श्री में निकाल कर। श्रीमन्, यदि दो एक मिनट श्रीर मिल जाय तो में थो ही सी और चर्चा कर दू।

श्री उपाध्यक्ष-- होई बात नहीं हु, श्राप दो मिनट ले लीजिये, इतना समय श्रामे बढ़ जायगा।

श्री लक्ष्मीरमण श्राचार्य — नां कृष्ठ दिशाया महम जो प्रयत्न कर रहे हे उस है। में चर्ची करना चाहता हूं। में यहा पर ब्रोनेन एयर केंग्स की चर्ची नहा करना चाहता। उनके सम्बन्ध में कें न रह बात कहना चाहता हूं कि डाक्टर स्लिनाई विवेश से श्रापे थे, उन्होंने यहा श्राकर रायं मझ से कहा कि संशार में जैनों के सम्बन्ध में एं। ग्यास पा कहा भी नहा है। उन्होंने मसे बनाया कि अभरीका जैने सम्बन्ध देश में, जिसला चहुत स्थार हुई है, चहा भी बावजूद देश के कि शाया एक व्यक्ति को २० पर्य प्रतिदिन सत्त्वर्ग भिन्ना है लिक्न एक केंग्से की सत्त्र्य है के श्रीर पर ५-१० श्रान से ज्यादा प्रतिदिन नहीं। जो मं श्राज गहा बोड़ा निश्चा के साथ कह सक्ष्मा कि हमार यहा उन्तर प्रदा म एक व्यक्ति की जिल्ली प्रतिदिन सत्त्र्य भिन्नी है।

(इस समय ४ वन कर २६ मिनट पर श्री श्रन्यक्ष पंदर्शन हुई ६)

उनके सम्बन्ध ने करा जा सकता है। कि क्यक्कि संश्वित को राज्य है। प्राप्त को हो। सकता है। यह के प्रांतिकिया है। प्राप्त का राग तम किता ईसी है। प्राप्त स्व हलार के प्रोप्त सामा है और उसकी प्राप्त करने में तम क्या भयंत।

श्री राजनारायण ही ने तन जीवन सं कृष्ठ श्रामा खून परिवर्तन सरन है। बात कही। से उनहा सून रा हे निर्कटना श्राहता हू कि सम्बन्ध पह श्राप रचन परिवर्तन हम लीगा ही दिन्द ने है। श्र दे हे हो महमने है दिशें हा रचायन बनाई है श्रार हमन रीजिश है। है हि हा विशेष का अवन्य उन्हों है हान मही, पहा तक कि भोजन ही व्यवस्था भी रचय है। या है हान मही। यदि भोजन की व्यवस्था हम है दिशें है हान में दे है हो। मन दी समझा शिव मी तत ह सम्बन्ध में हिर होन मा का का हम है दिशें है हाथ में दे है है। मन दी समझा शिव मी तत ह सम्बन्ध में हिर होने मह की हो है हो से मी ता का हत है जिसम वह शासिन मेर हो सह श्रीर सामहिक ही वन का उनहीं श्रीशक्षण भी हो सह श्रीर एह बहार का हम उनहीं है। वा जीवन वे जिसमें की सह श्रीर सामहिक ही वह शाहर निकल कर एक श्री हो सह हो। वस सम्बे श्रीर श्रीर श्रीर हो। वस सके ।

इन शक्दों के साथ में कहना चाहता हूं कि इस विभाग के सम्बन्ध म सवन न में। विश्वास प्रकट किया उसके लिये में प्रासारी हूं। में माननीय राजनारायण में। से वरस्वास्त करना है कि बाकई में प्रगर वह प्रश्ना कटीवी का प्रस्ताव वापिस में सकते हो तो उसकी। तहर वापस ने लें भीर इस भान्यान की स्वीकार किया जाय।

श्री अध्यक्ष---प्रश्न यह हं कि सम्पूर्ण धनवान के धर्थान मांग की राशि में १०० रुपये की कमी कर वी जाय।

(प्रदन उपस्थित किया गया और अरबीक्षन हुआ।)

भी अध्यक्ष--प्रदेन यह है कि अनुदान संख्या १७--त्रेल-लेखा द्वादिक--- वर--जेल अन्तर्गत १,८१,४४,६०० रुपये की मांग विलीय वर्ष १६६०-६१ के लिये रवीकार की जाय।

(प्रदन उपस्थित किया गया और स्वीपृत हुझा।)

## उत्तर प्रदेश विनियोग विधेयक, १६६०

वित्त मन्त्री (श्री सैयद ग्रली जहीर)—ग्रध्यक्ष महोदय, मै उत्तर प्रदेश विनियोग विधेयक, १६६० (The U. P. Appropriation Bill, 1960) को पुरःस्थापित करने के लिये सदन की श्रनुज्ञा मांगता हूं।

अरे श्रध्यक्ष—प्रश्न यह है कि उत्तर प्रदेश विनियोग विधेयक, १६६० ( The U.P. Appropriation Bill, 1960 ) की पुरःस्थापित करने के लिये सदन धनुज्ञा देता है।

(प्रक्त उपस्थित किया गया स्रोर स्वीकृत हुन्ना।)

श्री ग्रध्यक्ष--ग्रब इस विधेयक को वितरित किया जायगा।

(विधेयक वितरित किया गया।)

श्री नवलिकशोर (जिला बरेली)—श्रीमन्, मै जानना चाहूंगा कि इस विघेयक के लिये ग्राप कितना समय देने वाले हैं।

श्री ग्रंध्यक्ष--नियम १६६ के भ्रतुसार इसके लिये आधे घटे का समय है ग्रौर ५ बजे तक इनकी तीतों रीडिंग समाप्त हो जानी चाहिये। विरोच करने वालों को ७ मिनट ग्रोर बाकी लोगों के लिये ५ मिनट होंगे। इसका मतलब है कि २, ३ सदस्य ही बोल सकेगे।

श्री सैयद श्रली जहीर—श्रीमन्, में ग्रापकी ग्राज्ञा से उत्तर प्रदेश विनियोग विधेयक, १९६०, को पुरःस्थापित करता हूं।

#### (कुछ ठहर कर)

में प्रस्ताव करता हूं कि उत्तर प्रदेश विनियोग विधेयक, १६६०, पर विचार किया जाय।

इस सिलसिले में मुझे ज्यादा नहीं कहना है।

\*श्री नारायणदत्त तिवारी (जिला नैनीताल)—श्रीमन्, प्रस्तुत विधेयक द्वारा हम राज्य सरकार की ग्रीर माननीय वित्त मंत्री जी की यह ग्रिविकार दे रहे है कि वह ३,३६,५६,५३,००० रुपये के लगभग धनराशि ग्रगले वित्तीय वर्ष के लिये राज्य के विभिन्न प्रयोजनों के हेतु व्यय कर सके। इस सीमित समय में में विनियोग के सिद्धान्तों की विशद व्याख्या करके समय नहीं लूंगा वयोंकि माननीय सदन उन सिद्धान्तों को भनीभांति जानता है। मैं कुछ निवेदन ग्रवहय माननीय मुख्य मंत्री तथा माननीय वित्त मंत्री से ग्रगले वर्ष ग्रीर प्रक्रिया के सम्बन्ध में करना चाहता हूं।

उन्हें पुनविचार करना चाहिये कि वोट ग्रान एकाउन्ट ग्रगले वर्ष से निर्धारित करने हैं या नहीं ग्रीर उनके ग्राघार पर बहस करनी है या नहीं। ग्राप स्वयं भी इस बात से सहमत होंगे कि यहां जो २४, २५ दिन विवाद होता है उनमें सभी विभागों को लेने की बात होती है। ५, ७ मिनट जो मिलते हैं उनमें हम केवल क्षेत्रीय शिकायतों की चर्चा कर सकते हैं। उस समय में विभागीय कठिनाइयों ग्रौर नीतियों ग्रौर विभिन्न प्रकार की विशेष शिकायतों का विवेचन नहीं हो पाता है ग्रौर विवाद का स्तर भी उतना ऊंचा नहीं हो पाता जितना कि होना चाहिये। इसलिये वित्तीय प्रणाली पर, जिसका हमारे संविधान में समावेश है, बोट ग्रान एकाउन्ट, उस पर पुनविचार होना चाहिये। मिसाल के लिये हमने पी० डब्ल्यू० डी० लिया ग्रौर ४ दिन ही केवल हम उस पर विवेचन कर सके। नागपुर फारमूला पर चलें या बम्बई फारमूला पर चले,

<sup>\*</sup> ववता ने भाषरा का पुनर्वीक्षण नही किया।

[शो ना । यगदन तिवारी]

कि र तर सिए स्पाप्त राष्ट्र स्तार इस साम्मीर विकेचन हो स्रक्ता है। इस निपं प्रवार हमें ज्यादा नगा कि नि हो एवं प्रवित्र सम्मीर विकास कर सहा। जी असिन र सम्मय में नहीं ही सकता।

व्यक्त प्राचित्र किया वित्रक के लिय जो प्राचे परि का समय र गाउँ प्राभी बहुत ही करा है। या समय ने एक करी है आने एमने एसकी भान ही किया है ने किन उसके लिये भी कम ने करा है। दिन का समय होना ही चारिय होंगिक - प्यत्व में अपने मानो की याने की याने द्वारा एक करित कर तथा रहे हैं। में याक नियं माननीय मेंग्य में की सानियदन क्रमण किया के दिन कम संस्थापक दिन का समय राज दे।

तारा साथ दिना देश पूर्व का इता और स्मिति कमरी इस विश्वन सभा की अवस्य अन्तर साथ ना किनार सामना में सरकार की अवसी राय जना सका। अहत सी एपी जात दीता दिनाकी परकार की एन राता पड़ा देशार सहन में सरकार कि निर्मातनी का नाम नकर, नदा जनानी है "स्नकी या कामरी में जनाया जा स्वना है और उन पर फाइनेस कामर्टा अवस्य पराभक्षे उनकी देसकारी है।

प्रविधियान के सम्बन्ध में भग पूरा बात फिर यह दी बारा का नी है कि जितना प्रश्न विश्व निमान समाहित के में कार प्रिकार प्रिया जाता है तह यह विश्व निमान है। यह दिकायन सभी का रही है में रें के यह निमान यह इसके परिष्ण मा दूस बे नहीं भाग है। यह पर मह निमान की का तह है। दे के यह निमान की प्राप्त है कार नह मह निमान की प्राप्त है। यह मह निमान की प्राप्त मह प्राप्त मह प्राप्त मह निमान की प्राप्त मह निमान क

िष्युन माल यह बहा नाथा गया था कि अजल का महोता महोता है। शिष्युन मधान मजद महीत्म का १ बी है। कि आस्था कारण है कि एडिजिन्हें हिन कि ताया द्वार उनके कार्यन्त्रियन में वरों हैंदें मार देस नवें भी कारोदों काथा लेख ही रहा है। देश शिष्य में फारी का हमें कारना नातिया। इनाजन भाषा पाथमें भीर फाईनिश्यन कार्यक्रियमें हैं। निर्मान विभागों में भाषाय असे कार्यि।

नी, दें। बाल यह दें के इंग्लिंग्स अदिग्यों क्या मुंबई के असे कि सम्मान नान लग्म बिन फड़ अलाना नाहिया भान नदीन के कि सा हे न पूर्विया महिम नहीं के का कि सा है। एक नियं हम दें सान का निवास प्राप्त के कि मान कि निवास के कि सा कि स

संविष्स के बारे में सेरा मुझाय है कि विनियोग और पूनिवित्याग करते हैं 'उस समय और पहली बार जी ऐस्टीमेट्स बनते हैं 'उनसे बारे में हैं कि प्रांधक सनकेना बरनना चाहिये। जो एस्टीमेट्स एवव हों वे प्रांधक सावधानी और विधार के साथ हो। बहुत सा स्वया फारेन एक्सचें की बिना पर ३-३ और ४-४ साल तक रहा कला फारत है और विकायत होती रहती है कि फारेन एक्सचेंज नहीं मिल पा रहा है। अनः उसके बारे में पहले में ही सीच लिया जाना बाहिये कि फारेन एक्सचेंज प्रांपत कब तक हो पायेगा। बाहा है एप्रांप्रियेशन,

रिएत्रोत्रियेशन ग्रौर ग्रगले वर्ष का बजट बनाते समय वित्त मंत्री महोदय इन बातों का ख्याल रखेंगे।

यह ग्रसंतुलित बजट है, मात्रनीय वित्त मंत्री जी इस ग्रसंतुलित बजट को, जो ग्रलग-ग्रलग श्रनुदानों के रूप में पास हुग्रा है, उसके ऊपर कंट्रोल करके तथा उनके नियमों में परिवर्तन करके कंट्रोल करे तथा ग्रधिक डेलिगेशन ग्राफ पावर करें तो उसे संतुलित बजट कर सकते है।

\*श्री राजनारायण(जिला वाराणसी) --श्रीमन्, यह जो विनियोग विवेयक हमारे सामने प्रस्तुत है, इस सम्बन्ध में हम यह देखते हैं कि एक परम्परा सी चल रही है। माननीय नारायणदत्त तिवारी ने अपनी बहुत सी शंकाओं की यहां व्यक्त किया है इतलिये में उन पर नहीं जाऊंगा कि बोट स्नान एकाउंट के सम्बन्ध में क्या-क्या नवीन दिक्कतें नैदा हो सकतो हैं, मगर में इतना संकेत जरूर करूँगा कि वोट स्रान एकाउंट हो या जो प्रण लोचल रही हैं यह कायम रहे या इतनें ग्रीर कोई परिवर्द्धन, परिमार्जन हो, यह सब कुछ हो जाये, लेकिन जिस ढंग से यह सरकार काम कर रही है उससे भे नहीं समझता कि समाज का कल्याण हो पा रहा है। कुछ बौद्धिक गुलामी में जकड़ कर हम भले हो इंगलैड से कुछ ले लें, कहीं फ़ांस से कुछ लें लें, कहीं अमेरिका से कुछ ले लें, कहीं लोकसभा से कुछ ले ले, परन्तु उससे काम चलने वाला नहीं है। श्रीमन्, लगातार हमारे सामने जो रपट ग्रातो है उसमें ग्रानियमितता की बाढ़ सी होती है। ऐसे खर्चे होते है, जिसमें तखमीने का भ्रभाव है, वाउचर तथा उप-वाउचर का अभाव है, रसीद में टिकट का अभाव है। इसी सदन में ऐसे-ऐसे प्रश्न हुए है कि तीन, साढ़ें-तीन महीने तक एक-एक पार्लियामेंटरी सेकेटरी ग्रुपने जिले में श्रीर ग्रुपने निर्वाचन क्षेत्र में रहते है। यह सरकार की ओर से स्वीकारोक्ति है। तो यह हमारा घन जा कहां रहा है? कोई यहां पर ऐसा नहीं है जो न कहे कि अध्टाचार नहीं है, कोई यहां पर ऐसा नहीं है जो यह न कहें कि अनियमितता नहीं बढ़ी है, कोई यहां पर ऐसा नहीं है जो यह न कहे कि जो वैसा हम खर्च करने के लिये देते है उसमें से बहुत रुपया भ्राखिर में खर्च होते से रह जाता है। हर साल यह बात तो स्रार्षिर हम इस सरकार को क्यों कोई पैसा खर्च करने की इजाजत दें। इसलिये मैं बहुत नम्रता के साथ ब्रादरणीय सदन के माननीय सदस्यों से निवेदन करता हूं कि इस सरकार को एक पैसा भी खर्च करने की ख्राज्ञा इस सदन को प्रदान नहीं करनी चाहिये।

श्रगर श्राज हम यह व्यवधान उत्पन्न कर दें तो हम सरकार को वैवानिक तरोके से बाध्य कर सकते हैं कि वह ग्रपना गठन फिर करे। हम उन तमाम बातों को दोहराना नहीं चाहते हैं जो कही गयी हैं, लेकिन श्रीमन, क्या यह शोभा की बात है कि सभी लोग प्राचीन गौरव, प्राचीन संस्कृति, प्राचीन विभूति, इन शब्दों का यहां प्रयोग करते हे श्रौर श्राज साल भर होने का श्रा रहा है श्रौर शासक पार्टी का झान्तरिक चुनाव ग्रभी तक नहीं हो पाया है श्रीमन, श्रापने श्रखवारों में पढ़ा होगा। बीमारी की हालत में श्रापको शाक लगा होगा कि वाराणसी में तो इंडेबाजी तक हुई है ग्रौर न जाने क्या-क्या हुम्रा होगा। श्राज तो चार-चार ग्रौर छ-छ: महोने से चुनाव टलते जा रहे हैं ग्रौर चुनाव सम्पन्न नहीं हो पा रहे हैं।

फिर यह देखने की बात है कि जिस दल के आन्तरिक चुनाव में इस ढंग की बात हो रही हो उस दल की सरकार को हम ३,३६,४८,४३ २०० राये खर्च करने के लिये दे दें तो क्या हम जनता के साथ अन्याय नहीं करेगे? यह क्या लोक कल्याण की नीति पर चलना होगा? श्रीमन्, देखा जाय तो उसी शासक पार्टी के ६८ श्रादिनयों ने इस सरकार के विरुद्ध मत व्यक्त किया है। इसलिये क्यों इस सरकार को हम खर्च करने की इजाजत दें? इन शब्दों के साथ में सदन से श्राग्रहपूर्वक और प्रार्थनापूर्वक निवेदन करूंगा कि वह इस सरकार को एक पैसा भी खर्च करने की इजाजत न दे।

श्री नवलिकशोर (जिला बरेली) — प्रध्यक्ष महोदय, जो बजट हमारे सामने पेश किया गया या ग्रौर जित-जित भ्रतुदानों के लिये सरकार ने मांगें पेश की थीं उनको सदन

अक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्री नवलिकशोर

ने रजीकार किया। श्राज सरकार सदन से इस बात की श्राजा चाहता है कि उस घतराज्ञि को व्यय करने का श्रीधकार उसकी दिया जाय श्रीर उसका यह मनासिब मांग है। चूंकि समय श्रापने बहुत कम दिया इसलिये ज्यादा न कहकर में केवल दो-तान श्रावजरवंशत्स हा करना चाहता हू। मसे इस बात का लक्षा है कि यहां बजट का जो डिबेट हुआ उसका स्तर बहुत जेवा था श्रीर में सरकार से श्रीर विशेष रूप में माननीय मुख्य मया से श्रपित करूंगा कि इस बीच में जो भित्र-भिन्न दलों ने श्रीर सरकारी पक्ष ने सक्षाय श्रीर विचार यहां रखें है उन पर वह संजीवां। के साथ ध्यान दे श्रीर विचार करे श्रीर ऐसा न हो कि यहां का डिबेट केवा यही खत्म हो जाय।

बजट के सबय में बहुत सर बाते ग्रभर माननीय जितारी जर ने कही, में उनका बातों से अधिकाश में सहसत है और में भी चाहता हूं कि अनट के मीनदा तरी है में प्रामून परिवर्तन किया जाय । दुसरें। जो आज हमारा तरें को है ससे महा तरवार सामने नहीं आतं। और स्यास तरेर में जो स्वीवन्यन होता है जोशि यारत्य में श्रतरपर मन। है उसकी पर। डिटेल हमारे सामने आती चाहिये। बहुत में, बाते भेने आपने पडले भाषण में ही कह दी थी. इसिनये इस मोरो पर ज्यारा न कहें कर उनका दोहराना नहीं चाहता। में जानता है कि झामन शामशीतर। में शृद शीमया है, कृछ कठिनाइया भा है। में इस समय केवल वी कालों का लस्फ विरोधा वेता का विभाव संघ में स्थान दिशास्त्रा । आत हम बहुत ही नाज हा दोर से भानर पहें हैं। हम जानते हैं कि हमार देश भीर पदश का सीमाओं पर रशतना है, यह अर हम जाना है कि हमाने दण भ जा प्रतिक्यायादा प्रक्तिया है और का जोत. सी साम्प्रवाधिक अस्तिया है पह अर संगठन कर रहें। है किसमें हमारे देश कर प्रतिनी राजनीति म भं। हताल न हो। उस भौते पर में बहुत श्रवल के साप तिरोधा दलों के नेतात्रों में व्यवंतन करोता कि वह निवर्ता भार है।का निष्यणा कर वह सब सिर आखा पर है और भें यह भें। महस्य करता है कि किया भी देश की जनता कि सरकार का फर्ने है कि विकोधी वर्ती की भी भी भा सकार्व भाग जन पर जगावा में ज्यावा में मावसी में श्यान विया जाय और जहां तक सम्भव हो उने घर धमल भें। किया जाय ।

इसके साथ है। में किरोधा वल के साथियों से और अपन रन के सन। सदायों से अपनि कर्णात कर्णा कि आज का नियास के कियम में जैसा कि मेंने अना संकेत किया, उसमें यह भी म्तामिय है कि इस आपमं। मत्नेय, राजनीतिक वनकता और पारियों में उपर उठकर कीशिश करे कि सरकार के लिये रहीबिल्टं। मिने और विशेष तीर में भाननीय मध्य मंत्रें। जी की विद्यास ही कि उनकी सभा सवस्यों तथा वलां का विद्यास, सहयोग और साधन प्राप्त है। उनके हाथ मजबूत ही लिक यह इस हल्यान के बायज़्व प्रवेश की प्रमति के अन्ति में प्राप्त प्राप्त हो। उनके हाथ मजबूत ही लिक यह इस हल्यान के बायज़्व प्रवेश की प्रमति के अन्ति में व्यवस्था की स्थापना था, उसकी पृति के लिये वह मजान प्रयास कर गर्का। काम तीर में यह वल जिनका समाजवाद में विद्यास है उन पर तो और भा अधिक जिम्मेवारी है और उनको तो इस विशा में; और भी केट्टा करना है, बर्गीक उनको सर्वत रहता है, ऐसा न हो कि समाजवाद केवल एक नारा ही बन कर रह जाय और उसके लिलाफ जो माज प्रतिविधा-वादी श्रीक्तर्य हमारे वेश में काम कर पहीं है अस्पल हो जाय। उनमें से कोई संद्रानित्य इनसे विद्यात कहता है, कोई कुछ कहता है, ऐसा न हो कि जो गहा विशा हमने पकड़ों है उससे हम विमुल हो जायं।

इसके ग्रालावा ग्रन्त में केवल एक बात और कह कर में समान्त कक्षंगा कि इस बजट के लिये एक साल का मौका है इसलिये कोजिश इसकी की जाय कि जितने टारमेंट्स विभिन्न विभागों द्वारा नियत किये गये हैं वह सब पूरे हो जायं और मेंग्जिमम इकोनामी हो कि ग्रापर सही कोशिश की जाय तो १० फीसवी की बचत हो सकते। हैं, बशतें कि सरकार की तरफ से इस बात का एक ग्रावेश हो कि हमारे को सरकारी कमंबारों हैं खनकी क्षमता का यह भी पैमाना होगा कि वह अपने काम को कम से कम धनराशि के अन्दर पूरा कर सकें। इन शब्दों के साथ में ऐप्रोप्रिएशन बिल का समर्थन करना हं।

श्री सैयद म्रली जहीर—-ग्रध्यक्ष महोदय, यह बजट १३ फुरवरी को पेश हुम्रा था। मुख्तिलिफ विभागों के ऊपर इस दौरान में बहस होती रही। छः दिन के करीब जनरल डिबेट भी हुई जिसमें बहुत सी तकरीरें की गई भ्रौर उन सबका जबाब भी दिया गया। भ्रलग-म्रलग विभागों के बारे में भें। जो तकरोरें हुईं उनका जत्राब होता ही रहा। माननीय नारायणदत्त तिवारी जी की तरफ से बायजूद इसके यह शिकायत है कि शायद काफी वहन इस बजट पर नहीं हो सकी और वह चाहते थे कि मार्च के प्रन्दर सिर्फ वोट ग्रान एकाउन्ट ले लिया जाता ग्रौर उसके बाद, मालूम नहीं कितने दिन का उनका मंशा है, ३०,४० दिन तक बजट पर बहस क्योंकि जो हमारे रूल्स है उसके मुताबिक हमारे फर्ज हैं उतना समय देने का. में यह समझता हूं कि अगर उस वक्त को देखा जाय कि जो नेता लोगों को इस बजट के सिलसिले में तकरीर करने को दिया गया और उसी के साथ कुल वक्त जो इस पर सर्फ हुन्ना तो उसके बाद में शायद कोई ऐसी म्रहम बात नहीं रह जाती कि जो कोई माननोय सदस्य कहना चाहें वह न कह सकें। बहरहाल, तकरीर में जो बातें कही गई, जितनी **अहम बाते उसमें भ्रा सकती थीं वह सब भ्रायीं भ्रीर बहुत सी बातों का जवाब भी हुन्ना।** बहुत से ऐसे सुझाव थे जिनके बारे में सरकार की तरफ से कहा भी गया कि उन पर विचार किया जायगा। फैसला तो फौरन तकरीर के दौरान में नहीं हो सकता, बाद मे ही होता है । इन सब बातों को देखते हुए यह कहना कि काफी वक्त नहीं मिला श्रौर हम श्रेपनी इस परम्परा को बदलें इस बात के हक में कुछ नहीं कहा गया। ऐसा भी वक्त श्राता है, बाज वक्त यह हुआ है कि जिस साल चुनाव होते हैं उस साल मार्च के अन्दर श्रगर बंजट को पास नहीं कर सकते किसी वजह से तो वोट श्रान एकाउन्ट कर देते हैं, या श्रगर यह खयाल होता है कि मार्च के बाद लेजिस्लेचर बदल जायगा तो भी मुनासिब समझा जाता है कि वोट छान एकाउन्ट हो जाय और नये लेजिस्लेचर के सामने बजट छाये। मेरी समझ में कोई वजह नहीं मालून होती जिसकी वजह से यह परम्परा वदली जाय।

यह भी कहा गया कि एप्रोप्रिएशन बिल के लिये पूरा एक दिन होना चाहिये। जहां तक वक्त के ग्रलाटमेंन्ट का ताल्लुक है भ्रगर नेता विरोधी दल या उनके साथी यह चाहते थे कि इसके लिये ज्यादा वक्त हो तो जो वक्त तय हुम्रा था कि बजट फलां समय तक पास हो जाना चाहिये उसमें से ग्रगर कम करके एक दिन पूरा रखना चाहते तो हमारी तरफ से कोई एतराज नहीं होता। सवाल तो यह था कि इस बजट की जो मियाद मुकर्रर हो जाती है उसके भ्रन्दर पास करना है, उसो में ग्रलग-ग्रलग विभाग हैं, उनके मुताल्लिक भी हर चीज का तजिकरा ग्राना चाहिये। तो श्रगर- डिपार्टमेन्ट पर ज्यादा बहस करना चाहते थे तो उस पर ज्यादा वक्त लेते। इस बिल के मुताल्लिक यह तय पाया कि जो बातें पहले हो चुकी थीं उन्हीं को दोहराया गया था, इसलिये कोई ज्यादा वक्त की जरूरत नहीं समझी गयी ग्रौर ग्राध घंटे का वक्त उन्हीं की रजामन्दी से रखा गया।

यह भी शिकायत हुई कि विभागों के लिये जो रुपया दिया जाता है उनके ऊपर फिर क्यों टिप्पणी होती है, वित्त विभाग को संक्शन देने में क्यों देर लगती है? इसकी बजह में अपनी श्रोपिनिंग स्पीच में भी बतला चुका था कि श्रक्सर श्रौकात यह होता कि एक स्कीम बनती है श्रौर बन कर फाइनेन्स डिपार्टमेन्ट से उसका ऐप्रवल मिल जाता है, लेकिन उसके बहुत से डिटेल्स उस वक्त तक फाइनल नहीं होते। श्रगर हम स्कीम को रोक दें, जब तक कि स्कीम फाइनल न हो तब तक हम मंजूर न करें तो ज्यादा देर हो जाने का अन्देशा होता है। इसलिये जब स्कीम्स मंजूर हो जाती है तो इस बात को देखने की जरूरत पड़ती है कि श्राया जो रुपया रखा गया है वह मुनासिब है या नहीं, उसके लिये फाइनेन्स की संकान की जरूरत होती है कि फाइनेन्स की संकान की जरूरत होती है कि फाइनेन्स की संकान की देर से काम न रके श्रौर जहां तक हो सरावर कोशिश हो रही है कि फाइनेन्स की संकान की देर से काम न रके श्रौर जहां तक हो

भी सैयद ग्रानी जहोर सके ब्राप्रैल के महीने में जित्रनी सकीम्स कम्पतिहानि। हाउनका सारान भेतादी जाती है और बराबर होशिश करते हैं कि उसके कि से दर न होने पा।। न उसमेंद्र करता ह कि जो लास-पान बात थी उनका जवाब हा नाम। प्रार जो मा पेन हुन्ना हे उसकी सदन मंजर करेगा।

श्री श्राध्यक्ष--- प्रश्न यह ह कि उत्तर परेन शिनयोग विशेष है १६०० (The U. P. Appropriation Bill 1960) र विचार किया तथा

(प्रदन उपस्थित किया गया प्रारंगर कित हुए। )

# लंब १, २, ३ श्रीर प्रन्म्ची

संक्षिपत शीपंनाम उत्तर प्रवेश की संचित नीध में से वर्ष १६५०-िनये દર જો कुठ का विया बाना

विनियोग

१--यह ऋषिनियम उत्तर प्रवेज िनियाम यशिनमम, १८०० कहलायेगा। u- -ऐसे विकास परिस्वय नामन के पिय तो . १ भाने. १८५१ ई० को समाप्त होने बाल वर्ष र लोतर अनुनन्। रूपान - म रा हुई सवास्रो और प्रयोजनी के सर्वेष भवन पहले हतर पहले किया से में इतना रुपया विया और माम भनाया ता सकता है तो पनसचा के स्तस्भ ३,३६,४८,४४,२०० र में या हुई कतराणिया से, जिनका कुर पांत रे, ...,४६,४,४०० क (तान सा दहरींस करा प्रद्रासन नाता, विकास एकार वासी काय) होता है. व्यक्तिक न हो।

५--- इस व्यक्षितियम द्वारा जलर व्यवपाकी सांचला निवास प्रतिन धनराशियो का निकालन फ्रोर काम म लाने का भीतकार दिला नावा 👝 जारा विनियोग ३१ कार्ने, १६५१ हैं का सम्योग है। ने ग्रांत के नारण उन सेवाफ्री क्रीर प्रयोजना के लिय किया जायगा ता प्रान्तना न थिय हर्

# **प्रन**म्बी

*		निक्तमी द्वरिया । अस्य विकास स्थापिक स्थापिक					
श्चत्यान संस्था	संवाएं भीर प्रशेतन	विकास स्था ज्ञापा सर्वत्त्व	्राध्यकालान्त विकास सर्वन	मोग			
· · ·		4	f	у			
Space of 4 of		The Co	6,50	<b>8</b> 0			
8	बहर्न् जोत-१२ ही उमा धर ध्यम ::	क्षि भूद्रभाद्रका	•	, £,200			
<del>ن</del>	भू-राजस्य (मालग्भारं।)	4.88 T 6,44.	AP SEC.	. 44,08,000			
	राज्य ग्रामकारी	8 1 84 8 m	, 41 44	£ 2 , 1 3, 8 00			
*	स्टास्प · ·	E,34,000	¥,aaa	س سسب ، سسب بر سام با پار پار			

		नि	म्नलिखित घनराशिये	i से श्रनधिक
प्रनुदान संख्य <i>ः</i>	सेवायें श्रौर प्रयोजन	विधान सभा द्वारा स्वीकृत	राज्य की संचित निधि पर भारित	योग
१	२	ą	R	<u>۷</u>
		रु०	रु०	रु०
પ્ર	वन	२,८६,५३,५००	78,800	२,८६,५२,६००
Ę	निबन्धन	१८,६०,७००	२००	१८,६०,६००
৬	मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय	१,५४,७८,३००	••	१,५४,७८,३००
5	बिक्री-कर के कारण व्यय	४०,६६,५००	¥,000	४१,०४,५००
ε	ग्रन्य करों ग्रीर शुल्कों के कारण व्यय	इ,२७,इ००	२,०००	द, <b>२</b> ६,द००
१०	राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्मा- र्ण-कार्य	५,२२,० <b>८,</b> ४००	४,६३,०३,०००	१०,१४,११,५००
११	सिचाई स्थापना पर व्यय · ·	४,७८,०४,६००	8,000	४,७८,०८,६००
१२	ऋभियंत्रण (इंजोनिय- रिंग) संस्थाएं 🕠	३१,३३,४००	••	₹१, <b>३</b> ₹,४००
१३	सामान्य प्रशासन के कारणव्यय · ·	२,४६,६०,७००	१४,०७,१००	२,६०,६७,८००
१४	स्रायुक्तों (कमिश्नरों) स्रोर जिला प्रशासन का व्यय ··	३,१२,८७,७००	¥,000	<b>३,१२,</b> ६२,७००
१५	गांव सभाएं	१,६६,११,२००	<b>१,</b> ०००	१,६६,१२,२००
१६	न्याय-प्रशासन · ·	१,५२,६४,६००	२६,६१,६००	१,८२,५६,५००
१७	•	१,८१,४४,६००	२,०००	१,८१,४६,६००
<b>8</b> 5	<b>C</b>	<i>६,</i> ५४,६४,६००	X,000	६,८६,००,६००

ધ 1	, दान		र्गनम्बर्धाः	रत रत्ता ।	र रच्या व
संख्या	तः सेवापं ग्रीर प्रयोग	तन	र्वास्त्राच्याः स्वीपात्र	त्राच्या छ। उत्तर्भाव विकास सम्बद्धाः	
?	भ	. 4 2 14	الاست من المنافقة الم		· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
4 may 174 may 174	yyg megh kengg kap me ned veng erst myb ed tobbren	et as reed beed	4 4 M M M M M M M M M M M M M M M M M M	, ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	£ €2.
8 €	यज्ञानिक ३०४ सार्वाति				
	फलाप	* 4	1,05%,700		<b>*</b> • •
40	शिदाः		,		
7 8	न्तिः। सा	٠.	4,02,74,,00		****
~ ~	Cutt-12114.		. 08, 12, 0		, ts. 4
. J	कृति-सम्बन्धः । यंत्रणस्त्रीरका		C16.21, 57, 10 1	,·, ·	7 00
3 K	उर्षान ग्रान	4 %	28,28,200	w 6 *	, , , , , , , ,
4 K	पश्च -पान्त		8.6 1.34.,300		,
२७	त्रिश्वर् याजनायाः स्थानमान्यय		9,23,14,230	2 * / * / *	10,100
417	सहकारिया हे आया ऋण	र प्र	4,04,26,200	41 >	1,4 ,200
3 %	उन्हरंग		4,08,64,000	53 8	1,17,000
30	ध्रम		e, i tipe to a ca		#
4 4	परिवरत विभाग		82,850, m, 300		1 . 18 . 2 . 2
30	म्यना संसाचन शाय	रिश्व	हिंच ५५,देशक	, , ,	P. W. 1 . 5 . 5 . 5 . 5
44	लाख रसव वंगडन	*	4.4.4.800	, 1, 41 kt s	5, 4, 4 to \$ 0.0
३४ स	त्रवंजनिका निर्माण पर क्यम जो रा में पूरे किये जात	nfa	্হ, তথ্য হৰ, ইন্ন	B, Y 4, 200 1	er traftion

		f	म्निलिखित घनराशियं	ों से श्रनधिक
श्रनुद संस्य		विधान सभा द्वारा स्वीकृत	राज्य की संचित निधि पर भारित]	योग
8	2	3	8	¥.
•		रु०	च०	₹०
<b>3</b> X	यातायात के साधनों का सुधार (केन्द्रीय सड़क निधि के लेखे से वित्तपोषित)	७२,२२,४००	• •	७२,२२,४००
३६	सार्वेजनिक निर्माण–कार्य स्थापना पर व्यय	१,०१,१४,८००	१००	१,०१,१४,६००
३७	नागरिक निर्माण-कार्यों के लिये सहायक श्रनुवान	१,०४,१८,०००		१,०५,१८,०००
3 ==	वुभिक्षासहायता	३५,१६,१००	५०,०१,०००	<b>द्ध,१७,१०</b> ०
à E	प्रादेशिक ग्रौर राजनैतिक पेंशनें तथा शा के संबंधियां ग्रौ सेवकों के भत्ते	₹		<b>१९,६४,</b> ०००
Кo	बुढ़ौतो भसे छौर निवृत्ति वेतन (पेंशनें)	२,३८,६००	१३,२५,१००	२,५२,२०,७००
इ ६	लेखनसामग्री और मुद्रण	१,४०,७०,४००	₹,०००	१,४०,७१,५००
४२	प्रकीर्ण स्थय	X,XE,08,900	80,000	४,४६,१४,७००
¥ą	ध्रनुसूचित घौर पिछड़ी हुई जातियों का सुवार घौर उत्थान	२,५२,३०,१००	<b>૱</b>	२,४२,३०,४००
4.R	समाज-कस्याण	४०,०३,२००	ሂ۰۰	#0,0%,00

ag von		. निगः	तिति च मार्गाम	य स्तारिक
प्यस्ताः स्य	स्यास्य सोराप्याचाः 	ियासम्बद्धाः स्वर्षे	्रायसः स्ट सामग्रास्य	मात् ।
<del>-</del> १	,	\$	erri P	J
le		₹ 0	70	# W
ત ધ	योजना पार पुरु हरण कथ्रप्रसर्भक्ष प्रति ॥	18.48 8.460	, v	// /*
	म्हर ग्राह		logmers a or	10 Pacagoo
	राम् । 'हा या अस्ते सन्भा		-1,01 1 m 1	11,500
K ()	राजरा लेख क वाहण सिताई निर्माण—स्य काराम्पाइन	U,58,4°, 00		4. con
ಕ೮	रुषि योजनस्त्रा पर पूर्ता का नागत 💎	2,%1,00,000	8 / gr 000	1, -, 1-, 00 5
88	प्रोद्धोनिक जिस्स	9, 18, 24, 600	4 64 64 g	2 44 28 800
प्र	चात्रस्त्रनेयः कं व्यवस्थ नामस्य निमाण-कृष्य परनामनः	1 - १२,११,४०,८००	oy,nan	24,86,38,700
પ્રશ	विद्यत्याजनात्रापरपुत्रा कालामतः	4, wr , o &, & o a		er se ak, saa
પ્રવ	कृषि-श्रांभयंत्रण, सरकारः बस से मश्रों, महायसा तथा पुनर्वान्त ही योजनात्रा श्रावि पर	m, 40 m at 11 m a	1.00.000	એ, <b>ફે છ</b> ે , દ્વા જે, ના જ જ
	पूर्जा की गामन	2,88,5,6,200		
K 3	वैत्रानी की संगीश	m, a a, a a a	4%,000	E, #7,000
प्रह	राज्य-व्यापार को योजना	षे २६,७६,१३,२००	700	44,32,84,300
ሂሂ	क्यान शत्ने ऋण श्रीर श्रय ऋण	- च ३,दद, ४२,४००		<b>E,EE,</b> 64,800
	याग ः	2,85,05,5X,500	X3,40,50,400	\$, \$4,X#,Y\$, 4,4

श्री ग्रध्यक्त—प्रकृत वह ह कि खंड १,२,३ श्रोर श्रनुसूची इस विधेयक के श्रंग म न जायं।

(प्रक्त उपरिथत किया गया श्रोर स्वीकृत हुन्ना । )

#### प्रस्तावना ग्रोर शीर्षक

#### उत्तर प्रदेश विनियोग विधेयक, १९६०

३१ मार्च, १९६० ई० को समाप्त होने वाले वर्ष के व्याप के लिये राज्य की संचित निधि में से कतिपय धनराशियों। के भगतान फ्रोर जिल्लोंग का स्रधिकार देने की व्यवस्था के लिये

#### विधेयक

यह इष्टकर ह कि राज्य की संचित निधि में में २१ मार्च, १००० । समाप्त होन प्राल वर्ष के व्यय के लिये किताय अंतराणिक का ग्राह्म विनियोग का श्रीधकार दिया जाय;

श्रतएय, भारतीय गणतत्र के ग्यारहवे वर्ष में निम्तर्लिशत ग्रीसियम बनाया जाता है।

श्री श्रध्यक्ष--प्रक्रन यह ह कि प्रस्तावना स्रोर शीर्षक इस विधेयक के स्रंग माने जायं। (प्रक्रन उपस्थित किया गया प्रार स्वीकृत हुस्रा।)

श्री सेयद श्रली जहीर—श्रध्यक्ष महोदय, स्वप्रस्तात्र करता हं कि उत्तर प्रदेश विनियोग विधेयक, १६६० पारित किया जाय ।

श्री राजनारायण--म इसका विरोध करता हु।

श्री श्रध्यक्ष---प्रक्तयह ह कि उत्तर प्रदेश विनियोग विश्वक, १६६० पारित किया जाय।

(प्रक्त उपस्थित किया गया श्रोर विभाजन का माग होन पर पटी बजाई गयी, )

श्री ग्रध्यक्ष-- जब तक विभाजन हो न जाय श्रोर उसका निर्णं। न हो जाय तब तक यह सदन बठेगा यानी ५ बजे के बाद भी।

श्री नारायणदत्त तिवारी--श्रवदान सवसम्पत्ति म् स्वीकृत हुम् १, यह हमे याव रखना है।

श्री राजनारायण—सर्व सम्मति से कोई भी रवीकृत नहीं हुन्ना । वह तो स्रापसी समझौते के कारण ऐसा हुन्ना ।

श्री श्रध्यक्ष--श्राप श्रपने मत को बदल भी सकते हु।

श्री राजनारायण---- यह ठीक है, मगर हमको उन्ही काग्रेस वालो के सरीखे मत बनाइये । (घंटी बन्द होने पर )

(प्रक्त उपस्थित किया गया भौर हाथ उठा कर विभाजन होने पर निम्निनिन्नत मतानुगार स्वीकृत हुन्चा :---

पक्ष में--- १६२,

विपक्ष में --४।)

श्री श्राध्यक्ष--धन हम उठते हैं श्रीर तारीता ३१ मार्च, गुरुवा को ११ नमें फिर बैठेंगे। (इसके बाद सदन ४ नजे बृहस्पतिवार,) ३१ मार्च, १६६० के ११ वर्ज दिन तक के सिये स्थागित हो गया।)

> बेवकीनन्दन मित्यल. गांचव, विधान गंभा, उत्तर प्रवेश।

ल**ण**नकः २५ **मार्जः, १**६६० ।

#### नत्थी 'क'

#### ( देखिये तारांकित प्रक्त ११ का उत्तर पाछे पुष्ठ ६५० पर )

जिलाधीरा श्राजमगढ़ ने श्रयने ४ जुनाई, सन् १६५६ के पत्र, जिसके साथ चक्की भूसाडोही के कियानों द्वारा दिया गया प्रार्थना-पत्र प्रेषित किया था, में जिन बातो का उल्लेख निया था उनसे एक विवादग्रस्त भूभि में पेमाइश तथा श्रभिनेत कियाशों के किये जाने के सम्बन्ध से थी। उनत पत्र में जिलाधीश, देविया का ध्यान राजग्व परियर् द्वारा उन्ता क्षेत्र में उनत कियाय करने के सम्बन्ध में दिये गये श्रादेश का उल्लेख किया था तथा जिला किंश, देविया के इस सम्बन्ध में पूर्व प्रेषित पत्र, जिसमें उन्होंने यह कहा था कि उनत कार्य के निक्ति श्राय-व्यवक्त सबवी तल्मिने नेपार किये जा रहे थे, का भो उल्लेख करने हुत्रे यह प्रार्त शा की थी किए अहत तथा प्रिम्लेख कियाएं शिद्य प्रारम्भ की जाय। इसका उत्तर जिनाबीश, देविया ने ग्राने १८ जलाई, १६५६ केपत्र में यह दिया कि उनत तथा ग्रीने तब तक मां परिष्ठ तथा उन हेपत्र व्यवहार के श्रन्तान ने तथा भूमि परिच्छेशन हा का शिश्राय-व्यवहार सबवी तगा निश्च की परिच्छेशन हा का शिश्राय-व्यवहार सबवी तगा निश्च की परिच्छेशन हा का शिश्राय-व्यवहार सबवी तगा निश्च की स्वा जाया।

वसरी बात जो जिलाबीश, श्राजमगढ ने लिसी थी, बर जब तक कि उस्त विवादयस्त क्षेत्र म प्रवाद तथा श्रिक्ष कियाएं समाप्त न हो जाय, "प्रवास्त स्थिति" (Status quo) रथने के सम्बन्ध मे था। उन्हाने लिया या कि किसाना मे श्रा ल प्रावता न्यान के मालूब होता है। उत्तर मिन मे यावत स्थित न ३) रक्षा गई लया परगना यात, मलनार न बहा परताल करन के समय नय करन लिये है जिसमें किमाना को श्रावति हो सकति है तया शान्ति मगदो सकती है। उन्हान यह भा पुता । जिलान कि वका १४४ जाब्ता फीनदारी के जो से मकदमें बहा सा रह य उनम प्रवादश इत्यादि कि रायों के पूरा होने तक कार्यप्रही रोक दा जाय। जिलान प्राया, वर्यास्था न प्रवाद उत्यादि कि रायों के पूरा होने तक कार्यप्रही रोक दा जाय। जिलान प्राया, वर्यास्था न प्रवाद के प्रवाद के प्रवाद के प्रवाद के प्रवाद के कि प्रवास कि उन्हें ऐपा मालम हुन्ना है कि प्रवास परावत प्रवास के दिये जान के सम्बन्ध में जिला वा, श्राजमशह ने लिया था, जिला स्थान, देवरिया ने यह बताया कि उन्हें की का तत्कालीन परगनाधीश ने पह है है। २७-४-५८ की फसपा दे दिया था। जिस पक्ष की जल फमले में श्रापति थी उमने सेशन में श्रापील कर दी तथा तत्मम्बन्धित प्रवास जिस प्रवास के कर की भेज दी गई है।

# नत्यी 'त

. वें सेये मारोक्ति प्रज्ञ २८ का उत्तर रोख प्रज्ञ ६३४ पर

१६५६ की हाई म्कून, इस्टरमीडियेट परीक्षा में विभिन्न विषयों में उनीणं परीक्षायियों की मंक्या व प्रनिशन

भेषेती अधिती अधिती तात अदिव सम्मान्य संप्रसन्त प्रयोग रिवनोम नित्रते हुन स्था विकाम हुन				h.	महंस्त्रम्भ १६५६	T SELE						#61 *#63	177.8	ويعطير تين طريد ١٤٠٠	) 24
The state of the s		भूषे अ भूष	1 1 2000	श्लेती 'स.च.। हिन्द्रेय	मून जिल्ला प्रथम	afe fearing		respi Fresh	LE B	تروقة;	海馬	•	THE REAL PROPERTY OF THE PROPE	124	11111
1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1. (1. ) 1		,,	44		7	1 th 1	.79	h h 1	44	3.0			2.5		
** *** *** *** *** *** *** *** *** ***		700 700 77) 13)		<b>₩</b>	*** 1.5	75 +3 () #4 #4	4% 123 14 14	16 21 1.2 14*	) 2r 24 187		4 1 54 5 **	;	11 13	д) ( кь )	13 11 11
	* *	74 14 *	* 3 Jul July	14 W			% (4) (4)	*N N Ns	ξί ")	MA 1 Mag		,	٠	1 1 2	, 44 54g

# नत्थी 'ग'

(देखिये तारांकित प्रश्न ६१ का उत्तर पीछं पृष्ठ ६६१ पर ।)

#### फर्चखाबाद जिले की सदर तहसील में श्रब तक हुये चकबन्दी के कार्य की प्रगति का विवरण

१--२५३ ग्रामों मे चकवन्दी अमेटी बनी ह ।

२---२० प्राभों की खतीनी की जांच का कार्य स्प्याप्त हो चका है।

३---१०३ ग्रामों में नक्शे तरभीम किये गये।

४---१५२ प्रामों ने तस्दीक वतोनी होकर फेब्रिश्त नाबालिगान दगरा बनाई गई ।

५-- ४६ ग्रानों में पड़वाल समान्त हो चुकी है।

६--१४ ग्रामों में पड़ताल के बाद खतीनी व खसरा के उद्धरण बांटे जा चर्ये हु।

#### नत्थी 'घ'

(देखिये तारांित प्रश्न ११४ का उत्तर पीछे पृष्ठ ६६८ पर)

#### श्रलीगढ़ बस स्टेशन के कम्पाउण्ड के श्रन्दर की घटना का विवरण

दिनांक १२-२-६० की ७ बजे शाम याना बन्नादेत्री पर प्रोगेन्दर पाल विह हं उटाइम कीयर रोडवेज, श्रजीगढ़ ने तहरीरी मुचना दी कि तारी व १२-२-६० की शाम की लगमन ६ वजे श्री बलबीर सिंह, ठा० साहब निंह साकित महाबरी खुर्जा लाइन में टिकट ले रहे वे कि प्रतीहल रहमान को जेब टटोलते हुए पकड़ लिया तो श्री मुरारी लाल वर्मा कल्लक्टर, श्री बद्धा चपरामी व श्री बलबीर सिंह उसे पकड़ कर आफित में ले आये। तलाशी से उसके पास से एक ब्लेड मिला, उसने ग्रानो गलती की माकी मांगी। हम उसे सय बनेड के मारी लाल वर्मा कन्डक्टर व बद्धा चपरायी द्वारा याना भेज रहे थे कि ऋशी हुत रहमात रोते लगा, कोर यन कर विद्रही, मुत्रा, अब्दल सतार व स्वालीन कहां से आगावे। दिनी के ताम में चाह, सना के हाथे से लाठी, सत्तार के हाथ में हाकी स्वालीन के हाथ में तोड़ की बोतल थी। विद्ठी ने प्रतिकत रहमान को छोड़ने के लिये कहा। मैने वहां छोड़ने के लिये मना किया प्रान्यकार कि हम तो पलिस में देवेंगे। इतने में विजयसिंह सिपाठी श्रा गया, वे हमसे व सि गर्रा में बर्ट्स की बात करने लगे. इतने में ग्रोर श्रादमी भी श्रामवे। सत्तार ने हाकी, मुना ने लाठी चलाई जो विजय शिह सिपाही के लगी प्रोर स्वालीन ने बोतलें केरू कर मारी जिन हैं शीबें श्री जंब प्राप्त के 🐈 दु।इपर क लगे । पिट्ठी, सुन्ना, सत्तार व स्वालीन मजमें को देख कर भागे। रूपी सिनंता के सामने वाले उपपान पर सरूना मेहतर था, उसने बिट्ठी, मुल्जिस की पकड़ा। विद्वी ने उसके वेट में चार धारा स्रीर सत्तार व मुन्ना ने हाकी व लाठी चलाई। सरूपा गिर गया था जिल्हा होना में था। श्रतीकुल रहमान को पकड़े रहे। श्राहिएन रहन्छ। ने भी नागने मुल्जिमान भाग गये। भारपीट पर काब कर लिया गया था। अप तिहुल ७, भान की पकड की कोशिश की थी। कर थाने लाये।

#### नत्थी 'ङ'

# (देखिए पीछे पृष्ठ ६७२ पर) संयुक्त प्रवर समिति का प्रतिवेदन

मै, उस संयुवत प्रवर समिति का सभापति, जिसे उत्तर प्रदेश श्रिधकतम जोत सीमा-आरोपण विधेयक, १६५६, निर्देष्ट किया गया था, समिति की श्रीर से उसका प्रतिवेदन प्रस्तुत करने को प्रतिबद्धत किया गया हूं। श्रतः मै समिति का प्रतिवेदन, उसके द्वारा संशोधित विभेयक सहित प्रस्तुत करता है।

२—यह विधेयक विधान सभा मे २० भ्रगस्त, १६५६ को पुरःस्थापित किया गया। सदनों की संगुक्त प्रयर समिति को विधेयक लिस्टिंग्ट करने का संकरूप (नत्थी 'क') न्याय मंत्री ने २७ श्रगस्त, १६५६ को प्रस्तुत किया।

३--- विधान परिषद् ने संकल्प पर ४, ७ तथा ८ शितम्बर, १६५६ को चर्चा की ऋोर उपर्युक्त संकल्प पर ८ सितम्बर, १६५६, को सहमति श्रकट की । (नत्थी 'ख')

४——नियान परिषद् में प्राप्त संदेश ६ सितम्बर, १६५६, को विधान सभा भे पढ़कर सनाया गया ग्रीर दिवान सभा ने १० सितम्बर, १६५६ को संग्रत प्रवर समिति में कार्य करने के लिये अपने १६ सदस्यों को चुना तथा ११ सितम्बर, १६५६ को श्री श्रध्यक्ष ने श्री भागमूर्ति को समिति का सभापति सनो नीत किया।

५--समिति की कुल ६ बैठके हुई।

६—समिति की प्रथम बैठक कार्यक्रम निर्धारित करने के लिये २८ सितम्बर, १६५६ को हुई। इस बैठक मे समिति ने निश्चय किया कि उन संस्थाश्रों का साक्ष्य जो इस सम्बन्ध में प्रार्थना करे, ले लिया जाय।

७—सिमिति ने निम्नलिखित संस्थात्रों के प्रतिनिधियों द्वारा दिये गये साक्ष्य को उनके सम्मुख श्रंकित तिथियों मे सुना :

(१) तराई क्रथक संघ, काशीपुर (जिला नैतीताल) .. २६-१०-५६

(२) सब लॅजीज् श्राफ गवर्नमेट लेजीज, बाजपुर .. २६–१०–५६

(३) गवर्नमेंट लेजीज, बाजप्र .. २६-१०-५६ (४) इण्डियन शगर मिल्स युनियन, लखनऊ .. २६-१०-५६

प्रस्तुत किये गये साक्ष्य का सारांश इस प्रतिवेदन के साथ संलग्न है । (नत्थी 'ग')

प्रमानित ने यह भी निश्चय किया कि तराई भावर (जिला नैनीताल) के फार्मी का निरीक्षण किया जाय ग्रोर तदनुसार समिति ने २० मार्च, १६४६ को उन फार्मी का निरीक्षण किया।

६--सिमिति ने २६-१०-४६, २७-१०-४६, २८-१०-४६, ४-११-४६, ४-२-६० ६-२-६० तथा ६-३-६० की बैठकों में विधेयक पर खण्डशः विचार किया । सिमिति की कार्यवाहियों का संक्षिप्त विवरण विधेयक की इबारत के बाद छुपा है ।

१०—संयुवत प्रवर समिति का प्रतिवेदन ११ दिसम्बर, १६५६ तक प्रस्तुत किया जाना था। समिति के लिये उसका समय २१ दिसम्बर, १६५६, को ३१ मार्च, १६६० तक बढ़ाया गया।

११--सिमिति ने प्रतिवेदन पर विचार करके उसे मार्च, १६६० को स्वीकार किया ।

१२--विधेयक में समिति द्वारा किये गये मुख्य परिवर्तन निम्नलिखित हं :

(१) जहां भी ''ग्रच्छी श्रीसत प्रकार की भूमि'' इाब्द प्रयोग किये गये थे उनके स्थान पर इाब्द ''ग्रच्छे प्रकार की भूमि'' रख दिये गये श्रीर ५ रुपये प्रति एकड़ से श्राधिक

<sup>\*</sup>उत्तर प्रदेश सरकार के साधारण गजट, दिनांक २६ ध्रगस्त, १६४६ के ध्रनुपूरक भाग ७ में प्रकाशित ।

मौरूसी दर वाली भूमि को ग्राच्छ्रे प्रकार की भूमि मानने के बजाय ६ रुपये प्रति एकड़ से ग्राधिक मौरूसी दर वाली भूमि को ग्राच्छ्रे प्रकार की भूमि माना गया। यह भी व्यवस्था की गई कि ४ रुपये प्रति एकड़ से ग्राधिक ग्रीर ६ रुपये प्रति एकड़ तक मौरूसी दर वाली भूमि के डेढ़ एकड़ ग्रीर ४ रुपये प्रति एकड़ या उससे कम मौरूसी दर वाली भूमि के २ एकड़ ग्राच्छ्रे प्रकार की भूमि के १ एकड़ के वरावर समझे जायेंगे।

- (२) "परिवार" शब्द की परिभाषा इस प्रकार संशोधित कर दी गई कि उसमें जोत के धारक का तथा उसके किसी या सभी निम्नलिखित संबंधियों का, जो स्वयं प्रयने-प्रयने पृथक् प्रविकार में खातेदार न हों, समावेश किया गया:
  - (क) पत्नी या पति, जैसी भी दशा हो,
  - (ख) ग्राश्रित पिता तथा ग्राश्रित माता,
  - (ग) धारक के ऐसे पुत्र तथा पुत्र के पुत्र जो उससे पृथक् न हुये हों स्रोर उनकी पत्नी या विववा,
    - (घ) स्रविवाहिता पुत्री तथा पथक् न हुवे पुत्र की स्रविवाहिता पुत्री ।
- (३) जो यह व्यवस्था थी कि स्रितिकतम क्षेत्र का स्रवधारण करने में १५ स्रगस्त, १६५६ ई० के बाद किये गर्ने भूमि के हस्तान्तरण था विभाजन जिचार में नहीं लाये जायेंगे, उसके सम्बन्ध में यह निइच्य किया गया कि १५ स्रगस्त, १६५६ ई० के बाद के नहीं बल्कि २० स्रगस्त, १६५६ ई० के बाद के हस्तान्तरणों तथा विभाजनों पर विचार नहीं किया जायगा।
- (४) धर्नोतर वक्फ, न्यास या निबंध के श्रविकार की भूमि को ही तरह दानोत्तर वक्फ, न्यास या निबंध के श्रविकार की भूमि की भी जो १ मई, १६५६ के पहने से उसके पास याश्रवीन रही हो, श्रविकतम सीमा के श्रारोपण से विमुक्त कर दिया गया ।
- (४) पूरे वर्ष गाड़ियों के यातायात के लिये प्रयक्त होने याली फार्म की सड़कों को भी श्रिथिकतम सीमा के श्रारोपण से विमुक्त कर दिया गया ।
- (६) २० श्रगस्त, १६५६ के पूर्व निर्वाधित हो चुकी सहकारी समितियों की भूमि के सम्बन्ध में यह व्यवस्था की गई कि जो भूमि निहित होने के दिनांक से ठीक पूर्व ऐसी समितियों की जोत का भाग रही हो वह श्रतिरिक्त भूमि होते हुवे भी उराका बन्दोबस्त ऐसी सहकारी समितियों से इस शर्त पर किया जा सकता है कि वे राज्य गरकार की उसके बदले में ऐसा प्रतिकत देगी जो नियत किया जाय ।
- (७) भूमिहीन खेतिहर मजदूरों की निबन्धित सहकारी समितियों के माथ प्रतिरिक्त भूमि का जो बन्दोबस्त किया जायगा उसके सम्बन्ध में यह व्यवस्था की गई कि उनकी उतनी ही भूमि निले कि यदि वह सभी सदस्यों में बराग्नर-बराबर यांटी जाय तो किसी को ३ १/८ एकड़ से प्रथिक भूमि न मिले।
- (प) यास्तियों के सम्बन्ध में जो यह व्यवस्था थी कि अपर्य दंग ५०० क० तक ही सफता है उसको बढ़ाकर १,००० क० तक कर दिया गया।

१२—समिति ने विशेषक में जो संगोधन किये है वे प्रायः सब ही सरकार द्वारा प्रस्तुत किये गये थे ग्रतः सरकार के संगोधनों को पृथक् से नहीं छापा गया है ।

१३—-प्रमिति के सदस्य सर्वश्री महाराज सिंह भारती व हरदयान ितः तथा जयबहादुर सिंह, भी बालाल य भूप किशोर तथा नवरंग सिंह ने विमित हिप्पणियां प्रस्तृत की है जो प्रतिवेदन के साथ छापी जाती है।

> **राममू**ति यभागति । ५<mark>१-३</mark>-६०

नित्ययां १०४१

# विमति टिप्पणी

योजना श्रायोग के श्रनुसार श्रधिकतम जोत की सीमा ३० एकड़ होनी चाहिये । जहां सारे देश में ६६ प्रतिशत व्यक्ति खेती पर निर्भर हैं वहां उत्तर प्रदेश में खेती पर ७४.२ प्रतिशत व्यक्ति निर्भर करते हैं । पंजाब व राजस्थान में उत्तर प्रदेश की तुलना में प्रति व्यक्ति पीछे कहीं श्रधिक जमीन है श्रौर उन्होंने श्रधिकतम जोत की सीमा ३० एकड़ रखी है । जैसा कि दिल्ली में श्रधिकतम जोत सीमा निर्धारण विधेयक की प्रवर समिति की रपट से स्पष्ट है । इस प्रदेश में किसी भी सूरत में एक परिवार को ३ हलों को लाभप्रद जोत ने श्रधिक भूमि नहीं मिलनी चाहिये, जो श्रौसत उपजाऊ भूमि के २० एकड़ के बराबर होती है । ४० एकड़ की पीमा श्रत्यधिक है श्रौर फिर मौक्सी दर की ग्राड़ में जैसे ५० एकड़ तक ले जाना श्रौर भी गलत है । श्रॉसचित श्रौर कम उर्वर भूमि इयोढ़ी श्रयीत् ३० एकड़ तक दे दी जाय । ६ ६० से श्रधिक मौक्सी दर की भूमि उत्तर प्रदेश में नगण्य संख्या में उपलब्ध है श्रौर वह भी बड़ी जोतों में मिल नी श्रासान नहीं । श्रतः ४० एकड़ की सीमा भ्रामक है श्रौर उसे स घे ६० व ६० एकड़ समझना चाहिये । यही नहीं परिवार पंख्या प्रसे श्रागे बढ़ने पर प्रति व्यक्ति ६ एकड़ के स्थान पर ४ एकड़ मिलनी चाहिये श्रौर इसी प्रकार भूमि इससे इयाई को जो सकती है ।

जहां तक परिवार की परिभाषा का संबंध है वर्तमान परिभाषा े अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति एक परिवार बनकर ५० एकड़ तक भूमि ले सकता है और उसक लिये यह भी आवश्यक नहीं है कि उसने लिखित रूप में भूमि का बंटवारा करा लिया हो। जे बानी खानदानी समझौते के आधार पर भी परिवार का एक सदस्य स्वयं एक परिवार बन सकता है। २० अगस्त, १६४६ परिवार के बंटवारे की भ्रांतिम तिथि निश्चित करना भी अनुचित है।

भारतीय संसद ने १०-२-५६ को ग्रधिकतम भूमि सीमा ग्रारोपण विवेयक लाने की घोषणा की थी। तत्पश्चात् लोगों को ग्रथनी भूमि बचाने के लिये सतर्क होना स्वाभाविक था। ग्रतः वर्तमान विवेयक में २० ग्रगस्त, १६५६ तिथि बंटवारे की घोषित करने में कोई ग्रौचित्य नहीं। यहां एक बात ग्रौर दृष्टव्य है। उत्तर प्रदेश में वृहत् जोत-कर ग्रिधिनयम के उद्देश व कारणों में यह कहा गया था कि भूमि के बंटवारे में यह विवेयक सहायक होगा ग्रौर उसमें परिवार की परिभाषा इस उद्देश्य की प्राप्ति के हेतु जो की गई है कम से कम ग्रव सरकार का इस विवेयक में उसमें दी गई परिवार की परिभाषा से हटाना कोई ग्रौचित्य नहीं रखता।

धारा ५ की उपधारा (२) के अन्तर्गत गैर-कानूनी हस्तान्तरण की उपेक्षा मात्र से काम नहीं चलेगा वरन् यह भी स्पष्ट होना चाहिये कि सीमा से अधिक जो भूमि ली जायगी वह उसी भूमि से ली जानी चाहिये जो हस्तां रणकर्ता के पास कृषि भूमि के रूप में उपलब्ध हो । उक्त धारा की उपधारा (३) में सरकार को किये गये हस्तांतरण के स्थान पर "सरकार द्वारा एक्वायर की गई भूमि का ही" अपवाद रखना उचित होता ।

धारा ३ की उपधारा (१) में बाग भूमि को मुक्त नहीं करना चाहिये क्योंकि देशी श्राम्, महुश्रा, जामुन श्रादि के बाग लोग नहीं लगा रहे हैं। लाखों एकड़ भारी श्रामदनी देने वासे कलमी श्राम, नींबू, नारंगी व सिटरस जाति के श्रन्य फल, लुकाट, लीची, श्रमरूद श्रादि के बाग लगाये गये है जिसके कारण बांटने के लिये भूमि नहीं के बराबर रह गई है।

उक्त धारा की उपधारा (४) में निवास गृह से अनुबद्ध क्षेत्र की सीमा निश्चित होना आवश्यक है और उपधारा (६) में चाय, काफी, रबड़ की रोपस्थियां भी मुक्त नहीं होनी चाहिये। ऐसे किसानों को उक्त खेती में लाभ है और प्रोसेंसिंग में यदि कठिनाई हो, सहकारिता का सहारा लेकर उसे दूर किया जा सकता है। उपधारा (७) में जड़ी-बूटियों के उगाने का काम लाभप्रद रूप से सीलिंग के अन्तर्गत भी हो सकता है। दूसरे विधेयक में श्रोबिधियों का विवरण

नहीं दिया गया । श्रतः राज्य सरकार की इच्छा पर इस विषय को छोड़ना उचित नही । उपधारा (६) की मुक्ति भी न्याययुक्त एवं श्रेयस्कर नही । उपधारा (१०) में दी गई मुक्ति निर्र्यक एवं श्रहितकर है। सीलिंग के श्रन्तर्गत भी बहुत श्रच्छी गोशाला चलाई जा सकती है। उपधारा (१३) में भूदान यज्ञ समिति को मिली भूमि का वितरण भी सरकार अन्य भूमि की भाति कर दे तो श्रच्छा है।

उपधारा (१४) का रखना भी निर्मक एवं सारहीन है क्यों कि सरकारी समझोतों के अन्तर्गत भूमि उसकी व्यक्तिगत सम्पत्ति बना दी गई है। अतः वह सरकार के कानून से मुक्त नही और उसका लगान आदि अन्य किसानों की भाति ही लिया जाता हे। उपधारा (१५) में बंक को उसका रुपया तो सरकार चुका दे लेकिन भूमि सीलिंग से अधिक संपत्ति का कार्य विसे पत निर्मा । उपधारा (१६) में कुमकुट पालनादि का कार्य विसे पत नीलिंग के अन्तर्गत ही चल सकते हैं। मुक्ति की कोई आवश्यकता नही। भाय हा अन्य प्रयोजन की घोषणा राज्य सरकार को देना भी उचित न होगा। उपधारा (१७) वि गयक का आत्मा के विरुद्ध है। अतः निकाल दी जानी चाहिय अन्यया सरकारो पक्ष क लोग इसका दक्षयोग करेंगे। उपधारा (१८) को निश्चयात्मक होना चाहि ति ति एक निर्म्चत प्रतिशत स अधिक भूमि सड़कों के रूप में मुक्त न कराई ज सके।

फूलों की खेती पूर्णतया लाभप्रद होनेके कारण सीलिंग के अन्तर्गत ही रहनी चाहिये, इस तरह की शृद से भूम का दुरुपयोग होगा ।

धारा १६ भी निरर्थक है श्रोर हटा देन। च।हिये था क्योंकि सीलिंग के श्रन्तगंत बाग वगैरह लगाये जा सकते है क्योंकि यह भी कृषि की भाति लाभप्रद है।

विधेयक का मुख्य उद्देश्य भूमिहीनों श्रौर श्रलाभकर जोतों को लाभकर बनाने के लिये भूमि देना होना चाहिये, उसको जान-बूझकर विकृत किया गया है। परिणामस्वरूप इसकी घारायें विधेयक में प्रस्तुत की गई है जिनके द्वारा जो थोड़ी भूमि सरकार को मिलेगी उस र सरकारी फार्म खुल जायेंगे श्रौर उन फार्मों का प्रबन्धक भी पुराने भूमि मालिकों को बनाया जा सकेंगा। श्रलाभकर जोत वाले किसानों को कोई भूमि मिलेगी नहीं, वह केंचल १५ ए एड से कम भूमि का उपयोग केंचल उस दशा में कर सकेंगे जब कि उनकी राज्या १५:२० होगी श्रौर श्रपनी समस्त भूमि को मिलाकर सहकारी खेती करने के लिये तैयार होगे जो वर्तमान परिस्थितियों में संभव प्रतीत नहीं होता। भूमिहीन मजदूरों को भी कोई भूमि नहीं मिलेगी, वह भी सहकारी खेती द्वारा हो उस भूमि का उपयोग कर सकेंगे श्रौर उनके उपयंग की सीमा एक एकड़ से लेकर ३१। एकड़ तक रखी गई है जो न तो लाभप्रव होगी न सहकारिता की सम्भावनायें ही बढ़ायेंगी।

धारा २५ निरर्थंक है अतः इसे हटा देना च।हिये अन्यथा इसका वुरुपयोग होगा । जिन भूमि को एक्व।यर करने की दरस्व।रत पहले से किसी ने नही दे रखी है उसे प्रना-वश्यक रूप से नियंत्रित करके दे देना भ्रष्टाचार को बढ़ावा देना है ।

षारा २७ की उपधारा (१) ग्रवंधानिक है क्योंकि यह विधि के समक्ष भेवभाव की नीति बरतती है। जमीन के स्थान पर रुपये का हिस्सा देने पर मुक्ति प्रदान करना सर्वया श्रनुचित एवं श्रवंधानिक है।

धारा ३१ के ग्रन्तर्गत नदी के गर्भ से निकली भूमि पर केवल सरकार का प्राधिकार होन। चाहिये ग्रौर उसके बांटने में प्राथिमकता उन लोगों को वी जाय जिनकी भूमि नदी में कट चुकी है।

भारा ४५ को हटाना भी नितान्त ग्रावश्यक है ग्रन्यथा वे लोग जो ग्रव तक टेक्स देते थे उसी भूमि के स्वामी ग्रीर बृहत्-जोत-कर विधेयक की सीमा में ग्राते हुये भी टेक्स से मुक्त ही बायेंगे।

नित्ययां १०४३

चूंकि भूमि जीवनोपार्जन का साधन श्रौर राष्ट्र से ऊपर उसका स्वामित्व किसी का नहीं हो सकता, श्रतः मुग्नावजा का कोई प्रश्न नहीं उठना चाहिये श्रौर चूंकि सीलिंग के श्रन्तर्गत पर्याप्त भूमि छिषि तथा दूसरे प्रयोग के लिये छोड़ी जा रही है श्रतः पुनर्वास का भी प्रश्न नहीं उठता परन्तु वैघानिक कठिन (इयों को देखते हुये चूंकि मुग्नावजा देना ही पड़ेगा, श्रतः उसकी द्वाश कम से कम होनी चाहिये श्रौर किसी भी सूरत में एक्वायर की गई भूमि की तुलना में श्रिधक नहीं होनी चाहिये।

पक्के कुयें, नलकूप, सिंचाई की नालियों ग्रादि के संबंध में मुग्रावजा तभी दिया जाना चाहिये जब वे प्रयोग में ग्रा रही हों श्रौर कावजे का सिद्धान्त उनकी पूर्ण ग्रायु के ग्रनुसार ग्रवमूल्यन के सिद्धान्त पर होना चाहिये न कि प्रतिशत के ग्रनुसार।

उपर्युक्त प्रस्तुत तथ्यों के स्राधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि सरकार का मन्शा भूमि की सीलिंग करने का नहीं था किन्तु प्रदेश की व देश की जनता के समक्ष भूमि की सीलिंग की पुकार को भी शान्त करना था। स्रतः केवल खाना पूरी करने के हेतु इस विधयक को प्रस्तुत किया गया है। यदि यह विधयक संशोधित नहीं किया जाता है तो प्रथम तो बांटने के लि रे इस विधयक के स्रनुसार भूमि उपलब्ध ही नहीं होगी स्रौर थोड़ी-सी भूमि यदि उपलब्ध भी हुई तो उस पर सरकारी फामं बनेंगे। जनता के लये उसका मिलना इस बिल के स्रनुसार स्राध्यम सामित्र की सिक्ष्य पूर्णतः प्रतिक्रियावादी स्रौर स्रिनच्छा-पूर्वक बनाया गया है, जिसका परिणाम है कि इस पर जो खर्चा होगा वह प्राप्त होने वाली भूमि के स्रनुपात में उसके मूल्य से कई गुना ज्यादा होगा।

दिनांक २५ मार्च, १६६० ।

महाराज सिंह भारती, सदस्य, विधान परिषद्।

हरदयालसिंह, सदस्य, विद्यान सभा ।

#### विमति टिप्पणी

जोतों की हदबन्दी उन उग्रवादी भूमि-सुवारों में है जिनको श्रावश्यकता देश का राष्ट्रीय श्रान्दोलन सदा से महसूस करता चला श्रा रहा है। इसको सिफारिश काग्रेस कृषि सुघार समिति ने १६५२ में तथा उसके बाद योजना श्रायोग ने श्रपनो प्रथम श्रीर द्वितीय पंचवर्षीय योजनाश्रों को रिपोर्ट में को थो। नागपुर कांग्रेस श्रधिवेशन के प्रस्ताव ने राज्यों को काग्रेस सरकारों को यह श्रादेश दिया था कि १६५६ के श्रन्त तक इस सम्बन्ध में कानून बन जाने चाहिये।

२—स्वयं शासक दल के इन स्पष्ट ग्रादेशों तथा योजना ग्रायोग की इन बार-बार को गई सिफारिशों के बाद भो इस सम्बन्ध में ग्रब तक कानून का न बन पाना काफो खेदजनक बात है। किन्तु इससे भो श्रिधिक खेद की बात यह है कि उत्तर प्रदेश श्रिधिकतम जीत सामा ग्रारोपण विषयक, जो २० ग्रास्त, १६५६ से राज्य विधान मंडल के दोनो सदनों के विचारामान है, उन उद्देश्यों से कोसीं दूर है जिनको पूर्ति के लिये योजना श्रायोग श्रीर काग्रेस भाम सुधार समिति ने जोतों को हदबन्दों का सिफारिश को थो। राज्य के विधान मण्डल के दोनो सदना में न केयल विरोधों पक्ष के श्रापतु बहुत से कांग्रेसो विचायकों ने भो प्रारम्भिक वाद-विवाद के समय उपर्युक्त विधाक को कड़े शब्दों में ग्रालोचना को।

३—हमे श्राशा थो कि इस वाद-विवाद के बाद जब विधेयक प्रवर समिति के सम्मुख जायगा समिति के सदस्य उसके दोशों को दूर करके उसे श्रापने उद्देश्यों । श्राधि र श्रान्य बनाने को वेण्टा करेगे, इसो उद्देश्य से हम लोगों ने बहुत से संशोधन प्रवर समिति के सम्माय प्रस्तत किये। किन्तु हमे खेद है कि न सिर्फ हमारे लगभग सभा सशोधन श्रस्वोकृत कर दिये गये बल्कि विधेयक को श्रीर भो प्रतिक्रियाबादी दिशा मे संशोधित करके उसकी एक दम निर्म्थक बना दिया गया है श्रीर श्रपने घोषित उद्देश्यों को ठोफ उल्टो दिशा मे परिवित्ति कर विया गया है। ऐसी दशा में हमारे सामने केवल एक हा माग रह गया है। सिमिति के बहुमत के दिल्दकोण से पूर्णक्ष्येण श्रमहमत होने के कारण श्रयनो विमित् टिप्पणो लिख दें।

# जोतों की हद बन्दी के उद्देश्य

४--जोतों को हदबन्दी के किसी भी विश्वेयक के लिये योजना श्रायोग को भूमि मुचार उप-समिति ने निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये है जिनसे हम पूर्णतया सहमत है.--

- "(क) भूमि प्राप्त करने की व्यापक श्राकाक्षा की पूर्ति।
  - (ल) भूमि के स्वामित्व तथा प्रयोग में मौजूब उग्र श्रसमानता में कमी करना।
  - (ग) कृषिजन्य श्राय की श्रतमानता में कमी करना।
  - (घ) निजो उद्यमों मे रोजगार पाने के क्षेत्र का प्रसार करना।"

योजना स्रायोग की लंड रिफार्म पेनेल को रिपोर्ट (स्र) पृष्ठ ६६।

५—जोतों की ह्दबन्दी में इतना भूमि किसी भी हालत में प्राप्त नहीं हो सकता कि हर भूमिहोन और श्रद्ध भूमिहोन को उसको गुजर बसर के लिये काफी भूमि दा जा सके। इसिएये हमारा यह स्पष्ट मत है कि जो कुछ भो भूमि प्राप्त हो उसको भूमिहानों तथा गराब किमानां के प्रयोग के लिये ही सुरक्षित रखा जाय। किन्तु विषेयक में "श्रिष्ठकतम जोक-हित गापन" तथा "अन्य मार्वजितक प्रयोजनों" के नाम पर इस बात की गुंजाइश छोड़ दा गई है कि प्रतिग्वत भूमि के एक ग्रंश को भूमिहीनों तथा श्रद्ध भूमिहोन गरोब किसानों में यितिगत करने के बजाय अन्य कार्यों के लिये ले लिया जाय। हम समझने है कि यह गलत है ग्रीर हमारा राथ म विशेयक के घोषित उद्देश्यों को बिनकुल योजना श्रायोग की भूमि सुवार उप-समिति द्वारा निर्धारित उद्देश्यों के श्रनुहर होना चाहिए।

नित्ययां १०४५

# हदबन्दी के लागू होने का क्षेत्र

६—हमारा दृढ़ मत है कि जोतों की हदबन्दी राज्य के हर भाग में तत्काल लागू की जाय। इसके लिये ग्रावहयक है कि विधेयक में से धारा २ के उन उपलण्डों को हटा दिया जाय जिनके श्रनुसार शहरों ग्रौर कस्बों को कृषि भूमि, कुमायूं डिवोजन के बहुत बड़े भाग तथा देहरादून जिले के जौनसार-बावर क्षेत्र को हदबन्दों से तत्काल मुक्त रखा गया है। हमारा यह भा मत है कि यदि इन क्षेत्रों में हदबन्दों लागू करने में कोई कानूनों कठिनाई हो तो उसे तत्काल दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये ग्रौर इन कठिनाई को बहाना बना कर इन क्षेत्रों में हदबन्दों को ग्रीनिवित काल के लिए टाल नहीं देना चाहिये। हमारे राज्य का यह दुःखद ग्रनुभव है। नागर क्षेत्र जमोन्दारों विनाश विधेयक का ग्राधिनियम बनाने में कई वर्ष लग गये ग्रौर कुमायूं जमोन्दारों विनाश विधेयक ४-५ वर्ष बोत जाने पर भी ग्राज तक कानून नहीं बन पाया है। ऐसी हालत में यह ग्राशा नहीं को जा सकतो कि सरकार विधेयक को धारा २ के ग्रनुसार उपर्युक्त क्षेत्रों में मोतों को हदबन्दों को शोध्र लागू करेगो। इम प्रकार लम्बे ग्रमें तक जोतों को हदबन्दों को टाल देने का नतीजा यह होगा कि इन क्षेत्रों के बड़े भू-स्वामी सजग हो जायेगे ग्रौर ग्रयन। भूमि के फर्जी बटवारे करके भविष्य में हदबन्दों लागू करना निरर्थक बना देगे।

#### परिवार की परिभाषा ग्रौर फर्जो बटवारों की समस्या

७——जब से नागपुर कांग्रेस श्रधिवेशन का प्रस्ताव पास हुआ है देश भर मे बड़े भू-स्वामियों ने बड़े पैमाने पर श्र4ना जोतों के फर्जी बटवारे श्र4ने मित्रों तथा सम्बन्धियों में करने शुरू कर दिये। इन फर्जी बटवारों का उद्देश हदबन्दों से श्रपनी भूमि बचाकर उसे एक दम निरर्थंक बना देना है। श्रतएव इन फर्जी बटवारों पर रोक लगाने तथा नागपुर कांग्रेस के प्रस्ताव पास होने के बाद से हुए तमाम भूमि के हस्तान्तरणों को श्रवैध घोषित कर देने को मांग उस समय से उठ रहो है।

द--फर्जी बटवारों को रोकने के लिये परिवार को परिभाषा सही ढंग से की जानी अत्यन्त श्रावश्यक है। एक परिवार के बालिंग तथा नाबालिंग सदस्यों की कुल भूमि को चाहे वह एक खाते में हो अथवा पृथक् खातों में, हदबन्दों के लिये एक साथ शामिल माना जाना चाहिये।

६——मूल विश्वेयक तथा प्रवर मिनित द्वारा संशोधित उसके प्रारूप दोनों मे फर्जी बटवारों को रोकने के लिये ग्रावश्यक व्यवस्था नहीं को गई है। नागपुर कांग्रेस के प्रस्ताव के बाद से २० ग्रास्त, १६५६, तक हुए फर्जी बटवारों को बिलकुल नजरश्रन्दाज कर दिया गया है। २० ग्रास्त, १६५६ से पूर्व निवन्धित या कार्योन्धित किसा पारिवारिक समझौते के ग्राधीन ग्राथवा २० ग्रास्त, १६५६ को विचाराधान किसा बाद के ग्रान्तर्गत होने वाले उसके बाद के बंटवारों को भो वैध जान लिया गया है। परिवार का परिभाषा ऐसे ढंग से को गई है कि यदि उसका कोई भो सदस्य स्वयं ग्रापने पृथ हु श्रिधकार से खातेदार होगा तो उसे पृथक परिवार माना जायगा।

हम समझते है कि इन खामियों के रहते जोतों को हदबन्दी से बहुत कम भूमि प्राप्त हो सकेगी ग्रौर जो कानून भो बनेगा वह राज्य के लाखों भूमिहीन तथा श्रद्धं भूमिहीन परिवारों को स्राज्ञाश्रों के साथ ऋर उपहास होगा।

# भूमि का वर्गीकरण

१०—जोतो का हरबन्दो के लिये भूमि का उसको पैदावार के श्राधार पर वर्गीकरण किया जाना पावश्यक है। विवेयक में इस प्रकार के वर्गीकरण के लिये लगान की दरों को एक-मात्र प्राधार माना गया है यद्यपि जिन क्षेत्रों में लगान का दरें पैदावार को तुलना में बहुत कम है उनके संशोधन करने को व्यवस्था भो है। किन्तु पिछले बन्दोबस्त के बाद से मिचाई श्रयवा यातायात के साधनों के प्रसार, विकास खण्डों द्वारा उपलब्ध सुविधान्नों, प्राकृतिक परिवर्तनों, मनुष्यों के प्रयत्न अथवा उपेक्षा इत्यादि के फनस्वरूप प्रिकांश जगहों पर भूमि की पैदावार

में परिवर्तन हो गये हैं जिनके श्राधार पर लगान की दरों में परिवर्तन नहीं किये गये हैं। विधेयक में ऐसा कोई व्यवस्था नहीं है कि हर जगह पर लगान के श्राधार पर भूमि के वर्गी करण के समय पेदावार में हुये परिवर्तना को भ ध्यान में रखा जाय श्रौर श्रावदयकता पड़ने पर संशोधन कर लिये जायं। इसलिये हमारो राय में विधेयक में भूमि के वर्गीकरण के लिये का गई व्यवस्था दोषपूर्ण है।

११—किन्तु पेदावार में हुये पिरवर्तनों के म्राधार पर भूमि के वर्गी हरण में सशोधन करने का तरोका साधा-सादा म्रोर म्रासाना से समझ में म्राने वाला होना चाहिये। नक्तवादी को तरह का जटिल प्रोर परेशान करने याला नराका म्रानाने के हम खिलाफ है। इस प्रकार का तरीका म्रापनाने में न सिर्फ हदबन्द। करने में दिसयों वर्ष लग जायेगे बिलक भ्रष्टानार के कुत्रभाव से गरोब जनता का रक्षा करना म्रासम्भव हो जागा।

१२—प्रवर समिति द्वारा संज्ञोधित विशेषक से श्रच्छे प्रकार के स्वा उसे माना गया हे जिसका मोह्या लगान ६ ए० प्रति एक से श्रधिक हो। इस' लग्ह ४ ७० से पांत्रक प्रारं ६ ४० प्रति एक इका भूमि द्वित्र य श्रेण, की तथा ४ ४० या कम प्रति एक ए लगान का भीन ता र श्रेण। की माना गई हो। द्वित्र य श्रेण। का भूमि का डेढ तथा तत य श्रेण। का भीन को २ एक इ ग्राहे प्रकार का भूमि के एक एक इके बगावर माना गया है। ६ त्यांक्त यो को माना प्रथम श्रेण। का भीन के लिये ४० एक इ. द्वित्र प्रश्रेण। का भीन के लिये ५० एक इ तथा ततीय श्रेण। का भूमि के लिये ६० एक इ होगा। परित्रार के स्वरूप। का सम्पा ६० से बढ़ने पर प्रति व्यक्ति प्रथम श्रेण। का भूमि के ६ एक इ होगा। परित्रार के गतरप। का सम्पा ६० से बढ़ने पर प्रति व्यक्ति प्रथम श्रेण। का भूमि के ६ एक इ होगा। का स्वरूप श्रेण। को प्रथम के प्रवार के लिये कमका: २४, ३६ तथा ४६ एक इ भूमि दा जा सकता है। श्रतएव बडे परिवारों के लिये श्रिषकतम जोत कमका: ६४, ६६ तथा १२६ एक इ होगा।

१३——मूल विशेषक में भ्रच्छे प्रकार का भूमि उसे माना गया था जिस्सा माना लगान ५ ६० प्रति एकड़ से श्रिषक हो। ३ ६० से श्रीषक श्रोर ५ ६० प्रति एकड तह का भूमि द्विताय श्रेणों की तथा ३ ६० या कम प्रति एकड़ लगान को भूमि तताय श्रेणा का माना गई था। प्रवर समिति द्वारा स्वोक्त संशोधन का नत.जा यह होगा कि ५ ६० से ६ ६० प्रति एकड़ तह के लगान को भूमि जो पहले श्रच्छे प्रकार को भूमि माना जाता श्रव दिताय श्रेणा का माना जायगी तथा ३ ६० से ४ ६० प्रति एकड़ लगान की भूमि जो पहले द्वितीय श्रेणों की मानी जाती, श्रव तृती । श्रेणों की मानी जायगी। इसके फलरवरूप जिन खातेवारों के पास ५ ६० से ६ ६० प्रति एकड़ लगान की भूमि होगा उनकी प्रयोज्य श्राषकतम जोन का क्षेत्रफल बढ़ जायगा श्रौर उनसे प्राप्त होने वालों श्रांतिरकत भूमि कम हो जायगा।

१४—हमारो राय में ४ रु० प्रति एकड़ से श्राधिक की भूमि को पृथक श्रेणां का, २ रु० से श्रिषिक तथा ४ रु० प्रति एकड़ तक की भूमि द्विताय श्रेणों को तथा २ रु० या कम लगान का तताय श्रेणों को मानो जानो चाहिये। द्विताय श्रेणों के सवा एकड़ तथा तृतीय श्रेणां के भूमि का डेढ़ एकड़ श्रच्छा प्रकार की भूमि के एक एकड़ के बराबर माना जाना चाहिये। यांव ऐसा न किया गया तो जोतों की हदबन्दों के बाद पर्याप्त श्रितिरिक्त भूमि प्राप्त नहीं हो सकेगा, क्योंकि ६ रु० प्रति एकड़ लगान की भूमि कुल कृषि भूमि का महिकल से चौथाई भाग है, नगभग तोन-चौथाई कृषि भूमि इससे कम लगान की है श्रीर द्वितीय तथा तृतीय श्रेणी में झाती है।

१५-- प्रधिकतम जोत का क्षेत्रफल निर्धारित करते समय हमारो समझ में निम्निलिखत हो सिद्धान्तों को श्रवस्य ध्यान में रखना चाहिये था :

(क) एक श्रौसत परिवार के पास कम से कम इतनी भूमि श्रवश्य छोड़ वो जानो चाहिये कि वह एक जोड़ी बेल श्रौर परिवार को श्रमशक्ति का प्रयोग करके परम्परागत रूप से श्रावश्यक बाहरो श्रम शक्ति को सहायता से कुशलतापूर्वक खेता कर सके तथा साधारण वर्ष में इस भूमि की उपज से वह एक श्रौसत किसान के जीवन स्तर को कायम रख सके।

नित्ययां १०४७

- (ख) भूमि पर जन संख्या के दबाव, भूमि की ग्राकांक्षा रखने वाले नितान्त भूमिहीन ग्रौर ग्रद्धं भूमिहीन किसानों की संख्या, भूमि की उपलब्धि ग्रादि को ध्यान में रखते हुवे ग्रधिकतम जोत का क्षेत्रफल इतना ग्रधिक भी निर्धारित नहीं किया जान, चाहिए कि प्राप्ति मात्रा में भूमि प्राप्त न हो सके।
- १६——मूल विधेयक तथा प्रवर समिति द्वारा संशोधित विधेयक दोनों में उपर्युक्त सिद्धान्तों को बिलकुल ठुकरा दिया गया है ग्रीर केवल इस बात को ध्यान में रखकर ग्रधिकतम जोत तय की गई है कि बड़ी जोत वालों को ग्रधिक से ग्रधिक भूमि कैसे दी जाय।
- १७—-मूल विधेयक में श्रलाभप्रद जात ३१ ८ एकड़ से नीचे की जोत को माना गया है। जमीन्दारी उन्मूलन समिति ने श्रपनी रिपोर्ट में एक जोड़ी बैल से खेती करने वाले परिवार के लिये लाभप्रद जोत का कम से कम क्षेत्रफल ६१/४ एकड़ माना था। ऐसी हालत में ५ व्यक्तियों के श्रौसत परिवार के लिये श्रच्छी भूमि के १२१ '२ से श्रधिक पर श्रधिकतम सीमा श्रारोपित करने का कोई भी श्रौचित्य नहीं दिखायी देता।
- १८——िकसानों का अनुभव और देश के प्रमुख अर्थशास्त्रियों का यह स्पष्ट मत है कि १५ एकड़ से अधिक भूमि का एक औसत किसान परिवार हल वैल से परम्परागत रीति से खेती कर के कुशलतापूर्वक प्रबन्ध नहीं कर सकता। हाल में लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रमुख अर्थशास्त्री डाक्टर बलजीतींसह ने भी यही मत प्रकट किया है।
- १६—हमारे राज्य में जोतां के स्नाकार के स्नाधार पर कृषि परिवारों के वितरण के स्नांकड़े यह बताते है कि १२१/२ एकड़ से स्रधिक जोत वाले कृषि परिवारों की संख्या कुल कृषि परिवार। की संख्या का लगभग ५ प्रतिशत है। यदि इन पांच प्रतिशत परिवारों में से ५ से स्रधिक सदस्यों वाले बड़े परिवारों को निकाल दिया जाय, जिन्हें १२१/२ एकड़ से स्रधिक (३० एकड़ प्रति परिवार तक हमारी सिफारिश के स्रनुसार) भूमि दी जायगी तो यह स्रनुपात स्रौर भी कम हो जायगा। स्रतएव ५ या कम व्यक्तियों वाले परिवारों के लिये स्रच्छी प्रकार की भूमि के १२१/२ एकड़ पर स्रधिकतम जोत की सीमा स्रारोपित करने पर राज्य के केवल ३—४ प्रतिशत कृषि परिवार ही उससे प्रभावित होंगे।
- २०--हमारा ग्रनुमान है कि यदि ५ व्यक्तियों के ग्रौप्तत परिवार के लिये ग्रच्छी भूमि के १२ १ २ एकड़ पर ग्रधिकतम जोत की सीमा ग्रारोपित की गई तो ३० से ४० एकड़ ग्रितिरिवत भूमि प्राप्त हो सकेगी। इससे राज्य के साढ़े सात लाख नितानः भूमिहीन परिवारों में से प्रत्येक को ३ १ द एकड़ भूमि देने के बाद भी उन ग्रलाभप्रद जोत वाले परिवारों के लिये कुछ भूमि बच रहेगी जिनके प्रत्येक के पास ३ १ द एकड़ से कम भूमि है।
- २१—इसके विपरीत यदि ५ व्यक्तियों के ग्रौसत परिवारों के लिये ग्रच्छी भूमि के ४० एकड़ को ग्रधिकतम जोत माना गया तथा १२८ एकड़ तक की ग्रधिकतम जोत एक परिवार के लिये निर्धारित की गई तो खुद सरकारी ग्रनुमान के ग्रनुसार मुक्किल से ५–६ लाख एकड़ ग्रतिरिक्त भूमि प्राप्त होगी, जिससे उन उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो सकेगी जिनके लिये जोतों की हदबन्दी की ग्रावश्यकता है।
- २२—पांच व्यक्तियों से ग्रधिक के परिवारों को ग्रच्छी प्रकार की भूमि के लिये प्रति ध्यक्ति २ १/२ एकड़ से, जो ग्रधिक से ग्रधिक ७ १/२ एकड़ हो सकता है, ग्रधिकतम जोत की सीमा ग्रौर बढ़ाई जा सकती है। इस प्रकार द्र या ग्रधिक व्यक्तियों के बड़े परिवारों के लिये तीनों प्रकार की भूमि की ग्रधिकतम जोत की सीमा क्रमझः २०,२५ तथा ३० एकड़ हो जायगी। ग्रतिय यदि हमारी सिफारिशों को मान लिया जाय तो ३० एकड़ से ग्रधिक किसी भी परिवार के पास किसी भी किस्म की भूमि न होगी।

#### हमारे सुझाव के प्रनुसार प्रयोज्य ग्रधिकतम जोत निम्नलिखित होगीः

प्रयोज्य स्रधिकतम जोत का क्षेत्रफल (एकए) व	मे	À	•	١
--------------------------------------------	----	---	---	---

भूमि की श्रेणी	५ व्यक्तियों तक के परिजार के लिये	द्रया ऋषिक ध्यक्तियों के बड़े धरियाः के लिये
प्रच्छे प्रकारको भृति (लगान ४ रु० प्रति एकड़ से श्रधिक)	१२ १ २	१२१२। ७१२ २०
द्वितीय श्रेणी की भूमि (लगान २ रु० से	* * * *	. , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
४ रु० प्रति एकडे तक )	የሂ ሂ 5	१४ ४ म   ६ ३ म २४
तृतीय श्रेणी की भूमि (लगान २ क० या कम प्रति एकड़)	१८ ३ ४	8= 1 8   86 8 40

२३-- हमारी राय में किसी भी खातेदार को लिखित रूप में श्राज्ञ्वासन देने पर बाग लगाने के लिये श्रधिक में श्रधिक डाई एकड़ भूमि श्रीर दी जा सकती हे श्रीर इसके लिये १० एकड़ तक भूमि देने का कोई भी श्रीचित्य नहीं है।

# यंत्रीकृत फार्म

२४—विधेयक में कानून लागू होने के पहले के लगातार ३ वर्षी तक ट्रन्टर से जोती जोतों को यन्त्रकृत फार्म मान लिया गया है। माल विभाग के स्थानीय श्रिधकारियां—नरापाल, कानूनगो, तहसीलवार इन्यादि से यह प्रमाणित करवा कर कि उसका खेत ट्रेक्टरों से ३ साल से जोता जा रहा है—चाहे ट्रेक्टर उसका श्रपना हो या मांगा हुआ कोई भी खातेवार प्रपनं खेत को यन्त्रकृत फार्म घोषित करवा सकता है।

२५—पन्त्रकृत फार्म की उपर्युक्त परिभाषा ग्रभूतपूर्व ग्रोर ग्राइचर्यजनक ह क्योंकि ग्रभी तक विश्व के किसी भी देश में केवल ट्रेक्टरों से जोते खेत को ही यंत्रकृत नहीं माना गया है। किसी भी खेत पर जब तक कुल कृषि कार्यों का यदि श्राधकांश नहीं तो कम से कम काफी बड़ा भाग यन्त्रों की सहायता से नहीं किया जाता उस खेत की यंत्रकृत फार्म नहीं माना जाता।

२६—-पंत्रकृत फार्म की जो पि भाषा विधेयक में दी गई है उसके ग्रन्तगंत हमारे राज्य की श्रिष्ठिकांश बड़ी जोतें श्रा जायेंगी श्रोर बड़े खातेवार रिश्चतें देकर श्रपनी-श्रपनी जोतो को यंत्रकृत घोषित करवाने की कोशिश करेंगे, क्योंकि विधेयक ने इन यंत्रकृत फार्मी के लिये जो विशेष व्यवस्था की है वह उनके सर्वथा श्रनुकूल है।

२७—-पंत्रकृत फामों की श्रतिरिक्त भूमि पर राजकीय फामं बना दिये जायेंगे जिनके प्रबन्ध के लिये प्रबन्धक नियुक्त करने में उनके मौजूदा मालिकों (धारकों) को श्राधमान दिया जायगा। श्रमल में होगा यह कि इन फामों के मौजूदा मालिक (धारक) ध्रपने मौजूदा फामों के एक भाग के "मालिक" होंगे श्रीर बचे हुये भाग के "प्रबन्धक"। इन "प्रबन्धक-धारक" व्यक्तियों के लिये यह श्रधिक कठिन नहीं होगा कि कुल फामें का लखं सरकार के मत्ये मढ़ कर, राजकीय फामों में घाटा दिखाकर एक श्रोर तो श्रपने निज के भाग से श्रिधक मनाफा कमायें श्रीर दूसरी श्रोर राज्य के कोष से निश्चित बेतन लेते रहें। राजकीय फामों के लिये "घाटा" कोई नई चीज न होगा, क्योंकि जो राजकीय फामों श्रम तक बने हैं वे सगभग सब के सब धाटे पर चल रहे हैं।

नित्यमां १०४६

२५——इन तथाकथित यंत्रकृत फार्मों का उत्पादन राज्य के ग्रौसत कृषि उत्पादन से ग्रोधक है, इसका कोई प्रमाण हमारे पास नहीं है। ग्रातएव इन फार्मों के लिये विशेष व्यवस्था करने का कोई ग्रौचित्य हमारी समझ में नहीं ग्राता।

# हदबन्दी से छूट

- २६--१६ श्रेणियों की भूमि को हदबन्दी से विमुब्त रखा जा रहा है। बेला, चमेली या गुलाब की खेती के श्रन्तर्गत भूमि को भी हदबन्दी से बरी कर दिया गया है। हम समझते हैं कि इनमें से कम से कम कुछ श्रेणियों को, जिनका जिक्र हम नीचे कर रहे हैं, हदबन्दी से विमुक्त रखना उचित न होगा।
- ३०-- इस समझते है कि बागों के म्रन्तर्गत भूमि की भी हदबन्दी होनी चाहिये। यदि सरकार चाहती है कि बागों की काटा न जाय भ्रौर इनकी जमीन को साफ करके किसी भ्रन्य कार्य में न लाया जाय तो वह ऐसी व्यवस्था कर सकती है जिसके म्रन्तर्गत बागों की म्रितिरिक्त भूमि को केवल बाग की तरह ही इस्तेमाल करना म्रिनिवार्य कर दिया जाय।
- ३१——भूतपूर्व शासकों, जिनकी रियासतें भारतीय संघ में विलीनीफ़त हो चुकी हैं, की भूमि पर हदबन्दी लागू करने में जो वैधानिक ग्रज़्चनें पड़ेंगी उनसे हम परिचित है। किन्तु चूंकि हम जोतों की हदबन्दी को देश के हित में ग्रन्थन्त ग्रावश्यक ग्रीर ग्रनियायं सुधार समझते हैं इसलिये हमारी राय में राज्य सरकार को इन वैधानिक ग्रज़्चनों को दूर करने के लिये संघ सरकार से मिल कर ग्रावश्यक कदम उठाने चाहिये। केवल इसलिये कि कुछ वैधानिक कठिनाइयां मौजूद है, एक ग्रावश्यक सुधार सदा के लिये टाला नहीं जा सकता।
- ३२--सहकारी बैकों द्वारा बंधक ऋण के बदले में कय द्वारा श्रांजित भूमि को श्रधिकतम कोत स.मा श्रारोपण से विमुक्त कर देने का मतलब यह होगा कि उन्हें श्रन्धाधुन्ध जमीन खरीदने की श्रनुमित दे देना। इन बैकों की भूमि श्रामतौर से बिना जोते खाली पड़ी रहती है। होना यह चाहिये कि इन बैकों को भूमि क्रय करने का तो श्रधिकार हो किन्तु यदि इनके पास किसी समय श्रधिकतम जोत से ज्यादा भूमि हो जाय तो उन्हें एक निश्चित समय के श्रन्दर श्रपनी श्रतिरिक्त भूमि का बन्दोबस्त करने के लिये बाध्य किया जाय।
- ३३——विशेषित फार्मों (Specialized Farms) कुक्कुट-पालन, दुग्धशाला ग्रथवा ग्रन्य इसी प्रकार के प्रयोजनों के लिये प्रयुक्त भूमि को भी हदबन्दी से विमुक्त करने का कोई ग्रौचित्य नहीं है। इन सबके लिये ग्राम तौर से १०-१२ एकड़ से ग्रधिक भूमि की ग्रावश्यकता नहीं पड़ती। यदि इस उपखण्ड को ऐसे ही रहने दिया गया तो बहुत से बड़ी जोत वाले भूस्वामी ग्रपनी ग्रतिरिक्त भूमि को "विशेषित फार्म" घोषित कर देंगे। विधेयक में इसका भी कहीं उल्लेख नहीं है कि ऐसे "विशेषित फार्म" किसी निश्चित तारीख से पहले मौजूद होने चाहिये।
- ३४--- उपखण्ड १७ के श्रन्तर्गत सरकार यह श्रिधकार लेना चाहती है कि जितनी भूमि वह चाहे हृदबन्दी से मुक्त करके चाहे जिस व्यक्ति को दे दे। हम समझते हैं कि सरकार को इस प्रकार के व्यापक श्रिधकार श्रपने हाथ में लेने की कोई श्रावश्यकता नहीं है। किसी विशेष कार्य के लिये किसी भी भूमि पर प्रतिकर देकर कब्जा कर लेने का श्रिधकार सरकार के पास श्रन्य कानूनों के श्रन्तर्गत पहले से ही मौजूद है।

# मुग्रावजे का प्रश्न

३४——जो श्रतिरिक्त भूमि बड़ी जोत वालों से ली जायगी उन्हें भूमिधरी लगान का ४० गुना तथा सीरदारी लगान का २० गुना मुश्रावजे के रूप में दिया जायगा। यदि यह लगान मौरूसी दर से कम होंगे तो श्रन्तर का २० गुना श्रीर दिया जायगा। हम समझते हैं कि मुश्रावजे की ये दरें श्रत्यधिक हैं श्रीर हमारी राय में जमींदारी उन्मूलन के समय जिन दरों से मुश्रावजा दिया गया था वही दरें जोतों की हदबन्दी के लिये भी लागू की जानी चाहियें।

# ग्रतिरिक्त भूमि का क्या हो ?

३६—— तैपा कि हम पहले कह चुके है, हदबन्दों के बाद प्राप्त ग्रितिश्ता सूमि को केवल भूमिहोनों ग्रोर श्रद्धं भूमिहोनों में वितरण के ग्रितिश्वत ग्रोर किसी श्रन्य कार्य के लिये प्रयोग नहीं करना चाहिये। ऐसा मालूम पहता है कि हमारे देश के शासक दल को नर कृषि सुप्रार सम्बन्धों विवेश के बताते समय "सार्वजनिक प्रयोग" प्रथ्या 'नाम दायिक प्रयोजन" के नाम पर किसानों में भूमि ले लेने को बोमारों मी हो गई है। जीत चकबन्दी ग्रिविग्यम के मातहन हर गांव में सार्वजनिक प्रयोग के निये भूमि ले लेने को व्यवस्था है और श्रव ग्रिविक्त तम जीन मीमा प्रारोग विवेशक में दोबारा ग्रिविक्त भूमि के एक ग्रश्न को सामदायिक प्रयोजनों के लिये लेने को व्यवस्था को जा रही है। इसका नतीजा यह नेगा कि भिम्हिनों ग्रीर गरीब कियानों के लिये प्रयोग में ग्रा सकने वालों भूमि कम हो जायगः।

३७—-सहकारी किन्न के सिद्धान्त के रूप में प्रवा समर्थक होते हुए भारम किसा प्रकार का दवाय उपल कर किमानों को उनको स्वेच्छा के बगेर मरकारों जीव समितिया म शामिल करने के स्पष्ट रूप से विरोधी है। हम समझने हैं कि इस प्रकार में महकार। पीमितया तनाना महकारिया के सिद्धान का हत्या करना है। अतएव हमारों राप में श्रीतिराप भीम को पहले भूमिहीनों श्रीर गरीव किसानों में विनिश्च करके उनके ताम इप भूमि के पड़े कर देवा चाहियों। इसके बाद नई भूमि पाने वाले किसानों को सममा बसाकर गौर गहकारिया के लाम बताकर इन सिमितियों में शामित करने की कोशिश करना चाहिये।

३ = - उप भित प्रकार से भूमि वितरित करते समय निम्नितित्त क्रम म प्राथमान दिया जाना चाहिये--

- (क) भूमिहीन खेत मजदूर।
- (ख) श्रनाभकर सानेदार ।
- (ग) भूमिहीत खेत मजद्रों की निबन्धित सहकारी श्रीय समितिया।
- (प) अनाभकर वानेवारों को निबन्धित सहकारी कृषि सीर्भातथा।

नई पाष्त भूमि पर पाने वाले किसानों या सिमितियों को सार्धारः ग्रीधकार दे क्रिया जाना वाहिये।

#### सलाहकार उपसमिति

३६—-योजना श्रायोग को भूमि सुधार उगर्सामित की यह रण्डर सिकारिश था कि भूमि सुधार के कार्यों में प्रविक से प्रधिक जन-सहयोग प्राप्त करने का लोशिश करने पाहिये। किन्तु जिस रूप में श्राज विवेयक हमारे सामने है उससे स्वट है कि जोतों को हुद उन्दा लाग अरने के कार्य में शासक वल किसो भो दौर में किसो भो प्रकार का जन सहयोग प्राप्त करने को जरा भो इच्छक नहीं है, क्योंकि विवेयक में इसका कोई भा ध्यवस्था नहीं है।

४०—हमारो राय मे विश्वेयक मे श्रन्त मे एक तथा श्रध्याय जोड़ यर हर तहमान में ऐसी साहकार उसिमितियों के निर्माण को व्यवस्था को जाना चाहिये जिनके सदस्य सम्बन्धित तहसीन में कार्य करते वाले ममस्त राजनैतिक बलों श्रोर किसान संगठनों के प्रतिनिधि हो। नियत प्रविकारियों के लिये हर कार्य में इन सिमितियों से सलाह लेना तथा यि इन सिमितियों के सदस्य कोई जांच करना चाहें तो इसके लिये हर श्रावश्यक मुक्कि उपनक्ष करना श्राविवार्य होना चाहिये। हम समझते हैं कि जन-सहयोग हासिल करने का यह सब से उत्तम तथा व्यावहारिक तरोका होगा।

पैरा ४१ सभापति के ब्रादेशानुसार निकास विया गया।

४२—श्रपनी इस विमित टिप्पणी को प्रवर समिति तथा राज्य के माननीय विधायकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हम श्राशा करते हैं कि हमारे सहयोगी विधायकगण इन पर गम्भीरता-पूर्वक विचार करेंगे तथा उत्तर प्रदेश श्रीधकतम जीत सीमा श्रारीपण विधेयक को राज्य के लाखों भूमिहीन श्रीर गरीब किसानों की श्राशाश्रों के श्रीधक श्रनुरूप बनाने की कीशिश करेंगे। यदि दुर्भाग्य से ऐसा नहीं किया गया तो हमारे राज्य मे हदवन्सी केवल कागज पर रह जायगी श्रीर उसका कोई भी लाभ भूमि के लिये श्राकांक्षा रखने वाली राज्य की सबसे शोषित श्रीर उत्पीड़ित जनता नहीं उठा पाएगी।

79-3-60

जयबहादुरसिंह, सदस्य, विवान परिपद्

भीखालाल, सदस्य, विघान सभा

भूपिकशोर, सबस्य, विधान सभा

#### विमति टिप्पणी

मानन य श्रध्यक्ष महोदय, संयुक्त प्रवर समिति।

उत्तर प्रदेश प्रधिकतम जोत सीमा-म्रारोपण विधेयक, १६५६ ई०।

सेवा मे,

निवेदन है कि श्रापके दफ्तर से मुझको यह कापी १८ मार्च, १६६० को सायंकाल ४ बजे मिली जबकि यह वायदा था कि ११ मार्च, १६६० को मिल जायगी।

२-- उसी दिन में पटना श्रिलल भारपवर्षीय स्वतंत्र पार्टी के सम्मेलन में १६ तथा २० को शिरकत करने जा रहा था। मुझे समय पर्याप्त रूप में न मिल सका; फिर भी जो समय मिल सका उस पर विचार करके इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि यह बिल श्रमेम्बली में पैश न किया जाय इसलिये कि हमारा यह मत है कि भारत ऐसे क्षृषि प्रधान देश के लिये श्रिधकाधिक अन्न उत्पादन ही बढ़ती हुई श्राबादी को श्रन्न, वस्त्र पहुंचाने तथा बेरोजगारी को घटाने में एक-मात्र श्रीर साधन होगा।

बड़े किसानों से भूमि लेकर भूमिहीन को छोटे-छोटे टुकड़ों मे वितरण कर देने प्रथवा भूमि पाने की लालच में इन भूमिहीनों द्वारा बनायी गयी निरुत्साह सहकारी समितियों से खेती कराने में उत्पादन कार्य को भारी क्षति पहुंचेगी ग्रौर ग्रन्म का महान संकट देश पर पड़ेगा।

विनांक २२-३-६० !

म्रापका, मौरंगसिंह ।

विधेयक में मेरे मत के श्रनुसार निम्नांकित बढ़ाया या घटाया जाना श्रावहयक हः

> थारा ४ (१)—जैसा कि समिति द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है, उसके बाद निम्नांकित स्पष्टीकरण बढ़ाया जाना चाहिये—

इस स्पष्टोकरण के प्रयोजन के लिये खातेवार के परिवार के किसी धन्य सदस्य के नाम श्रमिलिखित भूमि को गणना खातेवार की जोत में उसी समय की जायगी जबकि परिवार का बहु सदस्य खातेवार के साथ मुझ्तरका इस श्रिधिनियम के प्रवर्तन के दिनांक के पूर्व लगातार तीन बर्ष से श्रयने नाम की श्रमिलिखित भूमि का प्रवन्ध करता रहा हो।

घारा ४ (२) ख--के भ्रागे का प्रतिबन्ध हटा दिया जाना चाहिये।

षारा ५ (२)—इस खंड में शब्द "२० ग्रगस्त, १६५६ ई०" के बजाय शब्द "इस ग्राधिनियम के प्रवर्तन के दिनांक" कर दिया जाना चाहिये।

थारा ५ (३) ग--बिलकुल हटा विया जाना चाहिये।

भारा ६ (१६)—में शब्द "ध्रनन्य रूप से तथा" कुक्कुट पालन के बीच में शब्द "मत्स्य पालन" बढ़ा देना चाहिये।

भारा ७—इस घारा के ग्रन्तिम शब्द "यदि तथा उसके पदसात् (क स)" बिलकुल हटा दिया जाना चाहिये।

भारा १० (२)--में शब्व "वस विन" के बजाय "२५ दिन" कर विया जाना चाहिये। **घारा १६ (२)——मे झडद ''२१ दिन'' के बजाय ''३० दिन'' कर देना चाहिये।** 

धारा २२ (१)—में शब्द "नकदी में" के बाद के शब्द "या बन्धों के रूप में श्रथवा ग्रंशतः नकदी में ग्रीर श्रंशतः बन्धों के रूप में जो भी नियत किया जाय" हटा दिया जाना चाहिये।

धारा २३ (३)——मे शब्द "श्रवधारण के दिनांक तक" के बाद शब्द "यदि धन-राशि नकदो मे देय हो ख्रोर बन्धों के मोचन के दिनांक तक यदि धनराशि बन्धों में देय हो" हटा दिया जाना चाहिये।

धारा २४ (१)--के पश्चात् निम्नलिखित प्रतिबन्ध बढ़ा देना चाहिये।

#### प्रतिबन्ध

किन्तु प्रतिबन्ध यह है कि राज्य सरकार को किसी यंत्रक्त फार्म की भूमि को राजकीय फार्म के रून में चलाये जाने का आदेश देने का श्रिधकार तभी होगा जबकि ऐसे अविश देने के दिनांक से तीन वर्ष पूर्व लगातार उस यंत्रकृत फार्म की आमदनी व मुनाफा का ख्रीसत उस फार्म के २० माल के खन्दर स्थित किसी राजकाय फार्म से कम होता रहा हो।

धारा २७ (४)--यह खंड बिलकुल हटा देना चाहिये।

थारा २६ (ख)--के पदवात निम्नांकित प्रतिबन्ध लगा देना चाहिये।

#### प्रतिबन्ध

किन्तु प्रतिबन्ध यह है कि बाग भूमि को स्रितिरक्त भूमि के रूप में व्यावहारित किये जाने का स्रादेश प्रदान करने से पहले नियन स्रिधिकारी खातेदार को नोटिस देगा कि वह नोटिस पाने के दिनांक से ३० दिन के स्रन्दर स्रापित कर सके स्रोर साक्ष्य प्रस्तृत कर सके कि वस्तुतः वह भूमि बाग भूमि है स्रोर उसकी हैसियत बाग भूमि की बद्ध नहीं हुई है।

(ख) ऐसी बाग भूमि को ग्रातिरिक्त भूमि के रूप में व्यावहारित किये जाने से पूर्व नियत प्राधिकारों के लिये बाध्य होगा कि बाग भूमि के वारक व्यक्ति को समुचित अवसर प्रदान करें कि वह व्यक्ति उक्त भूमि में ६ मास के ग्रन्दर पुनः बाग लगा सके।

नियत प्राविकारी को यह भी श्रिधिकार होगा कि समय-समय पर उक्त श्रावश्यक श्रविध २ मास के लिये बढ़ा दें किन्तु कुल ग्रविध एक साल से श्रिधिक पाने का हकदार वारक व्यक्ति किसी हालत में नहीं होगा।

दिनांक २२-३-६०।

नौरंगसिह

#### विमति टिप्पणी

बहुगत द्वारा जो प्रारूप विभेषक का बना है उससे सहमत होना कदापि सम्भव नहीं। इसी उद्देश्य से कछ कहना श्रावश्यक हो गया है। श्रन्यथा इस विधेषक पर कछ चर्चा करके श्रपना तथा श्रूपरों का समय नब्द करना है। इस विधेषक के गर्भ से लेकर जन्म होने तक बड़ी-बड़ी श्राशायें लगी हुई थीं। उन श्राशाश्रों पर केवल पान हो नहीं फिरा है बिल क्यर्थ में एक भय का वातावरण उतान कर हे सरकार के कुछ कार्यालयों श्रीर भूमि सम्बन्धा कर्मचारियों को श्रष्ट होने में सहायता मिली है। साथ ही फर्जी कागजात तथार करने तथा मुकदमेबाजी को श्रोत्साहन मिला है।

इस विशेयक को सदन में लाने का उद्देश्य बहुत ऊंचा बतलाया गया है। उन उद्देशों से मतभेद की बहुत कम गुंजायश है। परन्तु उन उद्देशों को छुने में भो यह विशेयक कानून का रूप लेकर सफल हो सकेगा, यह कठिन है। सबसे प्रमुख उद्देश्य भूमि का उन लोगों के पास पहुंचाना है जो लाखों परिवार भूमिहीन हैं तथा वह लोग भी जिनके पाम नाममात्र के लिये भूमि है। विशेयक यदि प्रवर समिति में न श्राया होता श्रीर सदन के सम्मुख श्राते ही पारित हो गया होता तो शायद कुछ लाख एकड़ भूमि श्रवश्य प्राप्त होती श्रीर वह भूमिहीनों को प्राप्त होती। परन्तु सरकार विशेयक को सदन में प्रस्तुत करते ही समय प्रवर समिति में उसे भेजने के विचार के साथ श्राई। सामान्यतः विशेयक को त्रदियों को दूर करने के लिये बहुत ब्योरे के साथ विचार करना, संशोधन परिवर्धन करना प्रवर समिति का कार्य होता है। इसो को सामने रख कर विरोधी दलों ने प्रवर समितियों में इस विशेयक को भिजवाने की चेंडटा की। विरोधो वल जहां इस भावना से प्रेरित होकर प्रवर समिति में भेजे जाने में सचेट्ट थे वहां सरकारी पक्ष इस विशेयक में जो कुछ रहा सहा प्राप्त था उसे निष्प्राण करने के लिये ले जाना चाहता था। सरकार श्रपने प्रयत्न में सफन हुई श्रोर मून विथेयक के पारित होने से जितने। भूमि प्रवितरण के लिये निकलने वाली थो उससे कई गुना कम, वर्तमान विशेयक के द्वारा जिसे प्रवर समिति ने स्थार कर मेजा है मिलेगी।

सहकारी खेती के निर्देशी भूमि प्राप्त होने का सपना विषेयक में है। इसी प्रकार गांबी के सार्वजनिक प्रशोग के निये। प्रजा सोज्ञलिस्ट पार्टी का ग्रह निश्चित्र तथा स्पष्ट मत है कि यदि सहकारो खेता को लोकप्रिय बनाना है श्रीर देश में उसके विकद्ध फैले हुए व्यापक अम को दूर करना है तो उसे उदाहरण के तोर पर पूरे प्रदेश में विभिन्न देशों में हदबन्द। द्वारा प्राप्त भूमि पर सहकारिता का सकन प्रतोग किया जाय ताकि उसको सफनता को दे वकर उस महान् कार्य की गति श्रीर बज मिल राहे। यह स्पष्ट हो सहे कि सहकारिया का श्रर्थ कोई जोर, दबावे श्रथवा वर्तमान व्यास्था से निकुष्ट व्यवस्था को स्रोर नहीं जाना है बिक पूर्णतः स्रवनं। इच्छा के सन्सार मिल कर ग्राम गों के जावन को सुपमय तथा भरा पूरा बनाने का प्रयास है। यह तो तभा हो सकता था जब कि तुरबन्दं। के बाद भूमि इतना मात्रा में उपलब्ध होता कि कम से कम प्रत्येक जिजे में बत बहा हा रे ऐते खोजे जाते हैं। यह फार्म श्रवश्य हु: भूमिह नो की मिर्ट हयत होते परन्तु उन भूमिहानों द्वारा पना हुई सह हारो समितियों को हर प्रकार से सहायता करके सरकार इन फार्मी को उत्पादन में गफन कर है सारे देश का ध्यान इस ग्रोर करतो। फिर धाज के फैले हुये व्यापक अन को दूर कर देश में कृषि व्यवस्था का एक नया शब्याय श्रारमभ होता। वर्भाग्यवैद्य ऐता परिस्थित बनाने में यह निधेनक स्रतमर्थ रहेगा। इसलिये कि स्रनेक कठिनाइयां जो इस विश्वेयक में भूमि मिजने के मार्ग में उत्पत्न का गयो है उन्हें पार करना ध्रमम्भव है। हां, इन उद्देश्यों के श्रीतिरिक्त कुछ छोटो-मोटो सफनता मिले तो इतने बड़े कदम उठाने के बाद उसका कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं है।

ग्रव में उन बातों की श्रोर ध्यान विलाऊंगा जिनके कारण श्रतिरिक्त भूमि नहीं मिल पायेगी श्रोर ऐसा श्रधिनियम बनाकर एक प्रकार से जोत-हवबन्दी को बदनाम कर विया जायगा। सब से पहले में उस परिवर्तन को सामने लाना चाहता हूं जिसे सिमित के बहुमत ने स्वीकार किया है। मूल विध्यक में ४ रुपये प्रति एकड़ मालगुजारी लगने वाली भूमि को 'श्रच्छी प्रकार' की भूमि माना गया था। उसे बदल कर श्रव ६ रु० से अधिक प्रति एकड़ मालगुजारी की भूमि को 'श्रच्छी प्रकार' की भूमि मान लिया गया है। इसी प्रकार ६ रु० से ४ रु० तक श्रथवा ४ रु० से नीचे। इस प्रकार हम वेखेंगे कि मूल विध्यक मे ४० एकड़ भूमि पर ५ रु० से श्रधिक मालगुजारी होने पर मिलती श्रीर ५ रु० से ४ रु० के बीच में ६० एकड़ तथा ३ रु० से कम पर ५० एकड़। परन्तु सिमित के निश्चय के श्रनुसार ६ रु० से ४ रु० तक ६० एकड़ श्रीर ४ रु० से नीचे ५० एकड़ भूमि मिलेगी। इस प्रकार मूल विध्यक के ४० एकड़ को श्रव यह कहना चाहिए कि ४७,७० तथा ६४ एकड़ मालगुजारी के श्रनुसार श्रधिकतम जोत की सीमा होगी। श्रीर ठीक इसी प्रकार परिवार के श्रन्य सदस्यों के लिये जो प्रस्ताव है बढ़ जायगा। मालगुजारी विभाग के श्रनुसार इस प्रकार ३ लाख के श्रासपास भूमि मिलने का श्रनुमान है। परन्तु इसके बाद जो शर्त विध्यक में है उन्हें वेखते हुये यह सपना मालूम होता है।

#### ग्रब उनमें से प्रमुख बाधाश्रों को में सामने रखना चाहता हूं:

- १-- उन सभी बागों की जमीन को मुक्त कर दिया गया है जो १ मई तक बाग की श्रेणी में ग्रा गये। ग्रीर बाद में भी बाग लगाने की सुविधा के नाम पर कुछ भूमि मुक्त की जा सकेगी।
- २—कुछ विशेष प्रकार के फार्मों को मुक्त कर देने का ग्रनियन्त्रित ग्रधिकार सरकार के हाथ में रहेगा तथा फार्मों के मालिकों को सरकारी फार्म के मैनेजर बना देने की ज्यवस्था है।
- ३—-२० ग्रगस्त, १९५९ तक के जबानी पारिवारिक समझौते से पृथक् खाता मान लेने की व्यवस्था जिसके ग्रनुसार परिवार का कोई सदस्य ग्रयने की किसी समय २० ग्रगस्त, १९५९ से पहले पृथक् कह कर ग्रयने लिये ग्रधिकतम भूमि जो नियत है प्राप्त कर सके।
- ४—केवल उक्त तीन विमुक्तियों द्वारा जितनी भूमि उचित अथवा अनुचित तरीके से वर्तमान भूमिपतियों के पास रह जायगी यह स्पष्ट हैं। इन सबका प्रभाव उसी अतिरिक्त भूमि पर पड़ेगा जिसका जिक्र मैंने ऊपर किया है कि पूरे प्रदेश में तीन लाख एकड़ के लगभग अर्थितक भूमि प्राप्त होने का अनुमान है। इस पर विचार करने के लिये प्रस्तावित खंड ४, ५ और ६ को देखने की अवस्वस्थकता है।

१५ से २० श्रगस्त की तिथि को बदल देने का अर्थ समझने में में ग्रसमर्थ रहा। मुझे सन्देह हैं कि इन ५, ६ दिनों में बड़े पैमाने पर कुछ विशिष्ट व्यक्तियों ने अपनी भूमि का निस्तारण किया है। यह व्यक्ति ऐसे हैं जिनके प्रभाव में वर्तमान शासन है। उस तिथि को न केयल यह कि १ जनवरी, १६५६ कराने में मुझे सफलता नहीं मिली बिल्क १५ अगस्त, १६५६ जो मूल विषयक में था उसकी भी रक्षा न हो सकी। यह भी एक कारण अतिरिक्त भूमि के घट जाने का है।

समिति के इस विचार से भी में सहमत न हो सका जिसके प्रनुसार प्रदेश के भिन्न-भिन्न भागों में भिन्न प्रकार से इस श्रिधिनियम को लागू करने की विधि तथा निथि सरकार के हाथ में छोड़ने की व्यवस्था है। हमारे प्रदेश में इसके कारण श्राज ऐसे भी क्षेत्र है जहां ऐसे नियम श्रीर श्रिधिनियम लागू है जो बहुत प्राचीनता की याद दिला कर परिवर्तन की पुकार करते है। परन्तु किसी न किसी कारण उन हजारों भूमि जोतने वालों के कष्ट को दूर नहीं किया जा सका जो ऐसे क्षेत्रों के रहने वाले है।

मैं यह भी नहीं समझ सका कि समिति ने इस बात को मानने से क्यों इंकार किया कि श्रतिरिक्त भूमि के निर्णय करने में उस गांव के किसी व्यक्ति को कुछ कहने का श्रधिकार दे कि वह ग्रिधिकारी के समक्ष उपस्थित हो कर कह सके। उन भूमिहीनों को यह ग्रिधिकार ग्रवक्य मिलना चाहिए जो ऐसे गांवों के हों जहां की ग्रितिरिक्त भूमि के संबंध में निर्णय हो रहा हो।

कुछ विशेष महत्वपूर्ण बातों की श्रोर ही इस समय ध्यान दिला सका हूं। श्रन्य श्रनेक ऐसे स्थान है जिनके सम्बन्ध में कहा जा सकता है, उसमें में सहमत नहीं हूं । में यह समझने में श्रसमर्थ हुं कि समिति ने मेरे इस सुजाव को मानने से क्यों इन्कार कर दिया कि २० एकड़ श्रधिकतम एक परिवार को जिसकी संख्या पांच श्रोर ३० एकड़ तक श्रधिक संख्या के परिवार होने पर भूमि की सीम। निर्धारित की जाय ताकि विधेयक के उद्देश्य की रक्षा हो सके। यह कहा जा संकता है कि शहरी ग्राय के भ्रनुपात में ग्रामीण ग्राय को रखने के उद्देश्य से ऐसा किया गया है परन्तु यह निविवाद है कि ग्रामीण श्राय शहरी श्राय के मुकाबले में श्रभी काफी दिनों तक कमे रहेगों क्योंकि इस दिशा में कोई सफल प्रयत्न नहीं हो रहा है। श्रीर प्रदेश के ग्रामीणों की स्थिति श्रवने ही देश के श्रन्य प्रदेशों से पिछड़ी हुई है। वह वर्तमान नीति के चलते श्रागे भी विछड़ी रहेगी । यदि मुट्ठीभर लोगों को प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में शहर के उद्योगपतियों की समता में लाने की चेष्टा की जायगी तो श्रयने देश का भविष्य श्रन्थकारमय होगा। उत्तर प्रदेश कृषि प्रधान देश है। ७० क्रोर ८० प्रतिशत के बीच कृषि पर प्राक्षित यहां की जन-संख्या किस प्रकार इस पूरी जनसंख्या को एक निम्नतम जीवनयापन की सविधा राज्य प्रदान कर सकेगा, यही न्राज की मुख्य समस्या है। उद्योग द्वारा गांवों को सुखी करने का सपना पूरा हो इस पवित्र विचार से किसे इंकार होगा? हमारे प्रदेश के उद्योगपति ग्रामीण धंधे जो पहले से भी थे उन्हें नष्ट कर देने पर तुले हैं श्रीर जाने-श्रनजाने सरकार उनके साथ है। फिर एक ही साधन है जिसका उचित उपयोग करके हम बहुत संख्यक वेशवासियों की कमर सोधी करने का ग्रवसर प्रवान कर सकते हैं। ग्रातिरिक्त पूंजी की विशेष श्रावश्यकता इसमें नहीं है। इसकी देविनक को ग्रामीण ग्रविक्षित वर्ग बखुबी जानता है। प्रवन यह है कि इसका सम्चित बटवारा हो तथा इसके साथ इसके उपयोग करने का ढंग बदले। फिर उत्पादन की विद्व हो और ग्रन्न संकट जैसी विपत्ति से राष्ट्र को छुटकारा मिले। २० ग्रीर ३० एकड़ को सीमा न्त्रारोपण से भी समस्या सुलक्ष नहीं जायगी। परन्तु इतनी भूमि मिल सकेगी जिससे हम उन ग्राम-वासियों की कुछ सेवा कर सकेंगे जो सैकड़ों वर्ष से दयनीय जीवन बिता रहे हैं। यदि मी मे एक का स्टैन्डर्ड कुछ कम भी हो जाय श्रीर २० या २४ को जीवनवापन का साधन मिल सके तो प्रत्येक समझवार प्रावमी दूसरे को पसन्व करेगा। यही विचार सामने रख कर में न तो १२ एक इ श्रोर न समिति की वर्तमान सोमा को पसन्व करता हूं।

उत्पादन की दृष्टि से भी १० से २५ एकड़ का श्रनुभव है कि सर्वात्कृष्ट उपज प्राप्त हो सकती है। जमींवारी उन्मूलन समिति की रिपोर्ट के ६०७ पत्त पर कृष्ठ वेशों का जिल है। श्रम्यत्र भी वेखने से यह निविवाद है कि १० से २० एकड़ की खेनी श्राधिकतम उपज वेने में ममर्थ हुई है। इसलिए इस भ्रम को बिल्कुल निकाल वेना चाहिए कि गांय के लोगों का जीवनस्तर इस विकसित श्रयंव्यवस्था में बहुत गिर जायगा। सरकार श्रोर सम्पन्न थगं एक बार यह मोने कि ग्राज कृषक को श्रपने उपज का मूल्य कैसे मिल जाय। शायव भूमि के श्रन्तर से श्रीधक प्राप्तियों उन्हें हो जायेंगी। जिस जनतंत्र का समाजवाद से नाता हो उसे यनमान विषमता को मिटाने पर ही जीवित रहना है। इसका प्रारम्भ गांवों से होगा इसमें किसी को सन्बेह नही होना बाहिये। हां, में एक बात को फिर एक बार वर्तमान शासन को याद विलामा चाहता हूं जिसे १४ श्रगस्त, १६४६ को जमींवारी विनाश के प्रस्ताव के साथ एक प्रस्ताव उद्योगों को भी हस्तगत करने के लिए विया गया था। यदि इस प्रस्ताव की श्रोर रस्तीभर भी शासन का श्राम होता तो शायव श्राज उसे भूमि सम्बन्धी विषमता वूर करने में बड़ी सहायता भिलती। वह प्रस्ताव इस प्रकार है:

"इस असेन्वली का यह मत है कि समाज के कल्याण के लिये पूंजीवाद का उसके सभी क्यों में अन्त अनिवार्य है और उसे यह विश्वास है कि उत्पादन, विनियय और नत्थियां १०५७

वितरण के मुख्य साधनों का समाजीकरण करने के लिए यथासम्भव शीघ्र से शीघ्र कार्यवाहियां की जायेंगी।"

मावजा के संबंध में जब समिति ने विचार किया मैं उपस्थित न रह सका । मुझे खेव है कि उस सम्बन्ध में विचारों में ग्रसहमत होते हुए भी मैं कुछ लिख न सकूंगा ।

> गेंदासिह, सबस्य, विधान सभा ।

२३ मार्च, १९६०

# उत्तर मतेया विधान समा

की

# कार्यधाहियों

तिः

# *ग्रनुक्रमिशाका*

षंड २१३

刄

ग्रतोकुल रहमान, श्री--

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक मे भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—-श्रनुदान संख्या १६—-लेखा शीर्षक २७—-न्याय प्रशासन । खं० २११, पृः ६८५-६८६।

भ्रधिकतम जोत सीमा श्रारोयण विधेयक— उत्तर प्रदेश ———, १६५६। खं० २११, पृ० ६७२।

म्राधिगृहीत भ्मि--

प्र० वि० — पीलीभीत उपनिवेशन योजनान्तर्गत —— । खं० २११, पु० ५३५-५३६।

ग्रधिष्ठाता, श्री---

१६६०-६१ के श्राय-व्ययक की मांगों पर विश्वादार्थ निश्चित कार्यक्रम में परिवर्तन करने पर श्रापत्ति । खं० २११, पृ० ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७-३८।

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक मे भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान---श्रनुदान संख्या ५---लेखा शीर्षक १०-वन । खं० २११, पृ० ४७५, ४६३-४६४।

ग्रनुदान संख्या ७—लेखा शीर्षक १२— मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, श्रनुदान संख्या ३१ — लेखा शिर्षकः ४७ — प्रतीणं विभाग श्रीर ४४ — उडु-यन, श्रनुदान संख्या ५२ — लेखा शिर्षक ७० — जन स्वास्थ्य संबंधी सुषार पर पूंजी की लागत तथा द२ — राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा। खं० २११, पू० ३८१, ३८२, ३८४, ३८४, ३८४।

श्रनुदान संख्या १६——लेखा शीर्षक २७—— न्याय प्रशासन । खं० २११, पू० ६६१, ६६४—६६५।

श्रनुदान संख्या १७——लेखा शीर्षक २८—— जेल । खं० २११, पृ० **१००१**।

श्रनुदान संख्या २१——लेखा शीर्षक ३८— चिकित्सा तथा श्रनुदान संख्या २२— लेखा शीर्षक ३६——जन-स्वास्थ्य । खं० २११, प० ८७३।

श्रनुदान संख्या २७—लेखा शीर्षकः
४१ श्रीर ८१-फ-विद्युत योजनात्रों की स्थापना पर व्यय तथा
श्रनुदान संख्या ५१—-लेखा शीर्षकः
८१-क--विद्युत योजनाश्रों पर
पूंजी की लागत (स्थापना व्यय को
छोड़कर)। खं०२११, पू०२७४,

### ब्रिधिष्ठाता, श्री---

म्रनुदान संख्या ३२—लेखा शीर्षक ४७—सूचना संचालन कार्यालय। खं०२११,पृ०६७४,६७८,६८८।

प्रनुवान संख्या ३४--लेखा शीर्षक ५०-सार्वजनिक निर्माण-कार्य ग्रौर ५०-क—-राजस्व से वित्त पोषित नाग-रिक निर्माण-कार्यों पर पंजी की लागत, म्रन्दान संख्या ३४--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य केन्द्रीय सउक निधि से वित्तीय सहायता, म्रनदान संख्या ३६——लेखा शीषक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य ८१------राजस्व लेखे स बाहर नागरिक निर्माण कार्यों की पूंजी कालेखा तथा ग्रनुदान संख्या ५०-लेखा शीर्षक ८१—-राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों का पंजी लेखा। खं० २११, प० ३६, ४०, ४१, ४२, ४०, ७७, ¤३, ¤४, न्न<del>द, १४-, १४१, १४२,</del> १४६, १६३, १६४।

श्रनुदान संख्या ३७—लेखा शीर्षक ४०— नागरिक निर्माण-कार्यों के लिये सहायक श्रनुदान । खं० २११, पृ● ६७३, ६७४।

ग्रमुबान संख्या ३८—लेखा शीर्षक ५४— वृभिक्ष सहायता तथा ग्रमुबान संख्या २—लेखा शीर्षक ७—भू-राजस्व (मालगुजारी) । खं० २११, पृ० ७६५, ७६८।

भ्रनुवान संख्या ४४---लेखा शीर्षक ५७--समाज कल्याण । खं० २११, पृ० ६६५।

श्रन्वाम संख्या ४७—लेखा शीर्षक : ६८—सिंचाई, नौचालन, बांध श्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, श्रन्वाम संख्या १०— लेखा शीर्षक: १७, १८ श्रौर १६— ख—राजस्व से किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण कार्य तथा श्रन्वाम संख्या ११—लेखा शीर्षक: १७, १८, १६ श्रौर ६८—सिंचाई स्थापना पर ग्यय । शं० २११, ६० १७१, १८२, १८३, १८४, १८७, १६४, १६६, १६६, २००, २०१, २०२, २०४, २०६, २०६, २१०।

कार्य-स्थगन प्रस्तावों के सम्बन्ध में सूचनाये। खं० २११, प्० १४०, १४१।

श्री गोविन्दसिंह विष्ट द्वारा नियम ५२ के ग्रन्तगंत दिये गये विषय के सम्बन्ध में जानकारी की मांग । खं० २११, पु० २६।

तारांकित प्रदन ३६-३७ से सम्बन्धित वर्जाक्तगन अनुपूरक प्रदनों को कार्यवाही से निकाल देने की प्रार्थना। खं० २११, प्० २६, २७।

नियम ५२ के श्रम्तर्गत ध्यान श्राकर्षणार्घ विषयों की सूचनायें। खं० २११, पु०२८।

नियम ५२ के मन्तर्गत ध्यान मा क्षंनायं विषयों के सम्बन्ध में सूचना। खं० २११, पु० १४१, १४२।

प्रक्तोत्तर के सम्बन्ध में श्रापत्तियां। खं० २११, पु० १३८, १३६, १४०।

भी राजनारायण द्वारा ग्रपने ग्रत्पसूचित तारांकित प्रश्न के सम्बन्ध में जात-कारी की मांग । खं० २११, पू० २८।

ग्रध्यभ्र---

प्र० वि० — सोरों नगरपालिका के — के विरद्ध प्रविश्वास का प्रस्ताव। कं० २११, पू० ७२२-७२३।

ग्रध्यक्ष, श्री---

उत्तर प्रवेश विनियोग विश्वेयक, १६६०। का० २११, पू० १०२३, १०२८, १०३३, १०३४।

१६६०-६१ के धाय-व्ययक में धनुवानों के लिए मोगों पर मतवान-धनुवान संस्था १७--लेका शीर्षक २८---जेल । कं० २११, पु० १०२२।

शनुवान संस्था ३८ लोका शीर्षक ४४, बुर्भिका सहायता तथा शनुवान संस्था २ लोका शीर्षक ७ भू-राजस्य (मालगुजारी) । सं० २११, पू० ७७१, ७७४, ७७४।

#### ग्रध्यापक---

प्र० वि० — कन्नौज के एक बालिका विद्यालय से संगीत —— को हटाना। खं० २११, प्०३२७।

#### श्रध्यापकों----

प्र० वि० — ग्रन्तरिम जिला परिषद् खीरी से पृथक किये गये—— का शेष वेतन। खं० २११, पृ० ३६४।

प्र०वि० — त्याग-पत्र देने वाले ——— का शेष वेतन । खं० २११, ५० ३५७ ।

वाराणसी भ्रन्तरिम जिला परिषद् के —— का दोष वेतन । खं० २११, पु० ६५७।

प्र० वि० — विश्वेश्वरानन्द इन्टर कालेज, श्रकबरपुर से हटाये गये —— का श्रावेदन-पत्र। खं० २११, पु० ६७०।

प्र० वि० — स्थानीय निकाय के ——— के मंहगाई भत्ते के लिये राजाज्ञा। खं० २११, पृ० ६४८।

#### श्रनशन---

सिंचाई विभाग, मिर्जापुर के ४०० मजदूरों की छटनी के कारण श्री रमापति दुबे द्वारा ——— के सम्बन्ध में नियम ५२ के श्रन्तर्गत सूचना। खं० २११, पृ० ६७३–६७४।

श्रनन्तराम वर्मा, श्री---देखिये, "प्रश्नोत्तर" ।

## श्रनुपूरक प्रश्न---

१७ फरवरी, १६६० के तारांकित प्रक्त ३-४ से सम्बद्ध ---- के उत्तर का शोधन । खं० २११, पृ० २६।

### श्रनसुचित जाति--

प्र० वि० — ग्रौद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्रों में ——— के प्रशिक्षायियों को सुविघाएं। खं० २११, पृ० ८३०-८३१।

प्र० वि० — मैनपुरी जिले के पंचायत विभाग में ——के कर्मचारी । खं० २११, पृ० ७२७-७२८। प्र० वि० — मैनपुरी जिले में ——के लोगों को बन्दूक के लाइसेन्स । खं० २११, पृ० ६६१।

प्र॰ वि॰ — ोडवेज विभाग में नौकरी के लिए ——— के उम्मीदवार । खं० २११, पु० ८४४।

# श्रनुदान--

---- से संबंधित साहित्य के समय से वितरण की मांग। खं० २११, पृ० ७४४।

### ग्रनुदान संख्या १---

१६६०–६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान——— — ——लेखा शीर्षक ४——बृहत् जोत-कर की उगाही पर व्यय । खं० २११, पृ० ७४४–७४५ ।

श्रनुदान संख्या ३---

——— लेखा शीर्षक ८——राज्य स्राब-कारी । खं० २११, पृ० ४५१–४६७ । स्रनुदान संख्या ५——

> ---- लेखा शीर्षक १०--वन । खं० २११, पृ० ४६७-५०१।

### श्रनुदान संख्या ७---

——लेखा शीर्षक १२—मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, श्रनुदान संख्या ३१—लेखा शीर्षक ४७—— प्रकीर्ण विभाग श्रौर ४४——उड्डयन, श्रनुदान संख्या ५२—लेखा शीर्षकः ७०—जन-स्वास्थ्य संबंधी सुधार पर पूंजी की लागत तथा ८२— राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा। खं० २११, पृ० ३६६–४२२।

### श्रनुदान संख्या १०---

श्रनुदान संख्या ४७— लेखा शीर्षकः ६८—सिंचाई, नौचालन बांध श्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, —— लेखा शीर्षक १७, १८ श्रौर १६—ख—राजस्व से किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण कार्य तथा श्रनुदान संख्या ११— लेखा शीर्षक १७, १८, १६ श्रौर ६८ सिंचाई स्थापना पर व्यय। खं० २११, पू० १६५-२१०, २४७-२७२।

#### श्रनुदान संख्या ११---

श्रनुदान संख्या ४७—लेखा शोर्षक ६८—

सिंचाई, नोवालन, बांध श्रीर पानी के
निकास सम्बन्धी कार्यो का निर्माण,
श्रनुदान संख्या १०—लेखा शोर्षक
१७, १८ श्रोर १६-ख—राजस्व से
किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण
कार्य तथा —— लेखा शीर्षक १७,
१८, १६ श्रीर ६८-सिंचाई स्थापना
पर व्यय । खं० २११, पृ० १६५—
२१०, २४७-२७२।

### श्रनुदान संख्या १२—

—— लेखा शीर्षक १८—श्रिभयंत्रण (इंजीयिरिंग) संस्थायें । खं० २११, पु० २७२।

## श्रनुदान संख्या १५---

श्रनुदान संख्या ४२—लेखा शीर्षक ५७— प्रकीण तथा —— लेखा शीर्षक २५—गांव सभाएं श्रौर पंचायतें। खं० २११, पृ० ५५३–६०५।

## ब्रनुदान संख्या १६---

---- लेखा शीर्षक २७--त्याय प्रशा-सन । खं० २११, पृ० ६७७-६६५ ।

## श्रनुदान संख्या १७---

——लेखा शीर्षक २८—जेल । खं० २११, पू० ६६५-१०२२।

## श्रनुदान संख्या २१---

—— लेला शीर्षक ३८—चिकि-त्सा तथा अनुदान संख्या २२— लेला शीर्षक ३६—जन स्वास्थ्य । खं० २११, पू० ८६२-६०१।

## मनुदान संख्या २२---

श्रनुवान संख्या २१—लेखा द्यावंक ३८— चिकित्सा तथा — लेखा द्यावंक ३६—जन स्वास्थ्य। खं० २११, पु० ८६२—६०१।

#### **ग्र**नुदान संख्या २७-

• लेगा शीर्षक ४१ प्रोर ८१ क-— विद्युत योजनाम्रो की रभापना पर व्यय तथा श्रनुदान संस्था ५१—लेला शीर्षकः ८१ — क-— गियत योजनाम्रो पर पंजी की लागत (स्थापना व्यय को छोड़ कर) । य० २११, पृ० २७२—३१४।

### श्रनुदान संग्या ३१—

श्रनुदान संख्या ७—लेगा शीषंक १२— मोटर गाड़ियां के एक्टों के कारण ज्यम, —— लेखा शीषंक ४७— प्रकीणं विभाग श्रीर ४४— उड़्यन, श्रनुदान संख्या ५२—लेखा शीषंक ७०—जन-स्वारध्य संबंधी सुघार पर पूंजी की लागत तथा ६२— राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा। खं० २११, पू० ३६६-४२२।

# धनुवान संख्या ३२---

---लेवा शीर्षक ४७---सूचना संचा-लनकार्यालय। खं० २११, पृ० ६७४--७०२।

### धनुवान संख्या ३४---

——लेग्या क्षीत्रंक ५०— सार्वजनिक निर्माण-कार्यो ग्रोर ५०-क--राजस्व से वित्त पापित नाग-रिक निर्माण-काया पर पूंजी की भ्रन्वान संख्या ३५--लेला शीषं र ४०--नागरिक निर्माण कार्य-केन्द्रीय सङ्क निधि विसीय सहायता, धनुबान संख्या ३६ - लेखा शीलंक ४० - नागरिक निर्माण-कार्य ग्रीर ८१ --राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा अनुवान संख्या ५०--लेका शीर्षक म् १ — राजस्य लेखे के बाहर नाग-रिक निर्माण-कार्यो का पुंजी लेखा। सं० २११, पु० ६६-६८, १४२-8 4 R 1

### श्रनुदान संख्या ३५---

**ऋनुदान संख्या ३४——लेखा शीर्षक ५०—** सार्वजनिक निर्माण-कार्य ५०--क---राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यो पर पूंजी की लागत, ——— लेखा शीर्षक ५०—— नागरिक निर्माण कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, श्रनुदान संख्या ३६--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य ग्रौर ८१--राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा ग्रनुदान संख्या ५०——लेखा शीर्षक ८१—–राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यो का पूंजी लेखा। खं० २११, पृ०३६–६८, १४२–१६४ ।

### श्रनुदान संख्या ३६——

ग्रनुदान संख्या ३४——लेखा शीषेकः ५० सार्वजनिक निर्माण-कार्य श्रौर ५०**−क−राजस्व** से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, श्रनुदान संख्या ३५—लेखा शीर्षक ५०---नागरिक निर्माण-कार्य केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता----लेखा शीषेक ५०---नागरिक निर्माण कार्य श्रौर ८१---राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा । ग्रनुदान संख्या ५०——लेखा शीर्षक द१— राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा । खं० २११, पृ० ३६–६८, १४२–१६४ ।

### श्रनुदान संख्या ३७---

----लेखा शीर्षेक ५०--नागरिक नि-र्माण कार्यों के लिए सहायक श्रनु-दान । खं० २११, पृ० ६५१-६७४।

## श्रनुदान संख्या ३८---

——लेखा शीर्षक ५४—दुर्गिक्ष सष्टायता तथा श्रनुदान संख्या २— लेखा शीर्षक ७—भू—राजस्व (माल-गुगारी) । खं० २११, पृ० ७४५— ७६५ ।

### श्रनुदान संख्या ४१—

----लेखा शोर्षक ५६---लेखनः सा-मग्री ग्रौर मुद्रण । खं० २११, पृ० ५०१-५१२ ।

### **ग्रनुदान संख्या ४२—**

----लेखा शीर्षक ५७--प्रकीर्ण व्यय तथा ग्रनुदान संख्या १५--लेखा शीर्षक २५--गांव सभाएं ग्रौर पंचायतें। खं० २११, पृ० ५५३-६०५।

### श्रनुदान संख्या ४४---

————लेखा शीर्षक ५७——समाज कल्याण । खं० २११, पृ० ६६५ ।

#### श्रनुदान संख्या ४७---

— लेला शोर्षक ६८— सिंचाई, नौ-चालन, बांध ग्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण—ग्रनु-दान संख्या १०— लेला शीर्षक १७, १८, १६—ख— राजस्व से किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण कार्य तथा ग्रनुदान संख्या ११— लेला शीर्षक १७, १८, १६ ग्रौर ६८ सिंचाई स्थापना पर व्यय । खं० २११, पृ० १६४—२१०।

## श्रनुदान संख्या ५०---

**ग्रनुदान संख्या ३४——लेखा शीर्षकः** ५०--सार्वजनिक निर्माण-कार्य श्रौर ५०–क–राजस्व से वित्त पोषित नाग-रिग निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, ग्रनुदान संख्या ३५—लेखा शीर्षक ५०---नागरिक निर्माण-कार्य केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, ग्रनुदान संख्या ३६—— लेखा शोर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य श्रौर ८१--राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा लेखा शीर्षक द१---राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पुंजी लेखा। खं० २११, पु० ३६-६८, १४२-१६४ ।

## श्रनुदान संख्या ५१---

श्रनुदान संख्या २७—लेखा शीर्षक ४१— श्रीर ८१—क—विद्युत योजनाग्रों की स्थापना पर व्यय तथा ——— लेखा शीर्षकः ८१-क—विद्युत योजना-नाम्रों पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय को छोड़ कर )। खं० २११, पृ० २७२-३१४।

### श्रनुवान संख्या ५२---

श्रनुदान संख्या ७—लेखा शीर्षक १२— मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, श्रनुदान संख्या ३१—लेखा-शीर्षक ४७—प्रकीर्ण विभाग श्रीर ४४—उड्डयन, — लेखा शीर्षक ७०—जन-स्वास्थ्य संबंधी सुघार पर पूंजी की लागत तथा द२— राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा। खं० २११, पृ० ३६६—४२२।

श्रनैतिक व्यापार निरोधक श्रधिनियम— प्र० यि० — लड़िकयों श्रोर महिलाग्रों के——का कार्यान्वयन । खं० २११,

प्० ७-६।

श्रन्तरिम जिला परिषद् (श्राजमगढ़)---

प्र० वि० — पंचायत मंत्रियों के स्थाना-न्तरण के संबंध में —— का प्रस्ताय। खं० २११, पृ० ७१७— ७१८।

प्रव वि—बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिये —— को दिये गये प्रमुदान का क्यय । खं० २११, पू० ७३५— ७३६ ।

श्रन्तरिम जिला परिषद् (खीरी)----

प्र० वि—— —— से पृथक किये गये श्रध्यापकों का दौष वेतन । खं० २११, पृ० ३६४।

श्रन्तरिम जिला परिषद् (जालौन)— प्र० वि० — का श्रनुदान । खं० २११, पृ० ७३७ ।

धन्तरिम जिला परिषद् (मेरठ)-

ग्रन्तरिम जिला परिषद् (वाराणसी)—

प्र० वि० --- के प्रध्यापकों का शेष वेतन । खं० २११, पृ० ६५७।

म्रान्तरिम जिला परिषद् (शाहजहांपुर)—

प्र० वि० — उपाध्यक्ष ——, से श्रिधिकार वापस लेने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० ७३७।

श्रन्तरिम जिला परिषदों---

प्र० वि० — — के उपाध्यक्षों के श्रिधिकारों में कमी । लं० २११, पृ० ७३३ — ७३४।

श्राराध ---

प्र० वि० ---- सन्धरापुर याने के प्रस्तर्गत धिभिन्न --- । प्रं० २११, पू० ३६२।

प्रवृत्ति --- रीनापार भाने में विभिन्न ----- । स्पंत्र २११, पुत्र ६६८।

श्रवराधीं---

प्र० थि० --- पौनाभीत जिल्ने में विभिन्न -- ---- में भति । प्रि० २११, पृ० ३६१--३६२ ।

प्रव विष --- हुण्योई जिले में विभिन्न -----की घटनायें। खंब २११, पृष् ३४३--३४४।

श्रवहृत महिलायें - - -

प्र० वि० —— ——— । खं० २११, पृ० ७२६-७३०।

ग्रगील--

प्र० वि० — नैताजी सुभायत्रन्द्र बोस का जन्म-विवस मनाने के स्तिये ———। खं० २११, पृ० ३२३-३२४।

धब्दुल रक्रफ लारी, थी-

बेलिये "प्रकृतं स्वर"।

१६६०--६१ के आय-व्ययक में अनुदानों के लिए भागी पर मतवान --अनुदान संव्या ४---पेवा शीर्षक १०---वन। खं० २११, पु० ४७१--४७४, ४६५-४६६, ४६७। श्रनुदान संख्या ४७——लेखा शोर्षक ६८—
सिंचाई, नौचालन, बांध श्रौर पानी के
निकास सम्बन्धी कार्यो का निर्माण,
श्रनुदान संख्या १०——लेखा शोर्षक
१७, १८, १६—ख——राजस्व से किये
जाने वाले सिंचाई के निर्माण कार्य
तथा श्रनुदान संख्या ११—— लेखा
शोर्षक १७, १८, १६ श्रौर ६८——
सिंचाई स्थापना पर व्यय। खं० २११,
पू० १८७—१८६, २५६—२६०।

### श्रभिनवीकरण---

प्र० वि० -- कानपुर की कुछ मिलों में ----। खं० २११, पृ० १२६-१२७।

#### ग्रभियंत्रण संस्थायें---

१६६०-६१ के म्राय-व्ययक में भ्रतुदानों के लिये मांगों पर मतदान--भ्रतुदान संख्या १२--लेखा शीर्षक १८-- ---- (इंजीनियरिंग) । खं० २११, पृ० २७२।

#### श्रभियोग---

प्र०वि० —— मद्य निषेध संबंधी ——— । खं० २११, पृ० ११५।

### श्रम्रताय, श्री---

देखिये "प्रश्नोत्तर"।

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिए मांगों पर मतदान--श्रनुदान संख्या ३--लेखा शीर्षकः द--राज्य स्राबकारी । खं० २११, पु० ४६२।

भ्रनुदान संख्या ७——लेखा शोर्षक १२—— मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, श्रनुदान संख्या ३१——लेखा-शोर्षक ४७——प्रकीर्ण विभाग श्रौर ४४——उड़ुयन, श्रनुदान संख्या ५२— लेखा शोर्षक ७०——जन-स्वास्थ्य सं-बंबी सुधार पर पूंजो को लागत तथा द२——राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण कार्यों का पूंजो लेखा। खं० २११, प्० ३८०—३८२। श्रनुदान संख्या ३८——लेखा शीर्षक ५४— दुर्भिक्ष सहायता तथा श्रनुदान संख्या २——लेखा शीर्षक ७——भू-राजस्व (मालगुजारी) । खं० २११, पृ० ७७२—७७४।

श्रनुदान संख्या ४२——लेखा शोर्षक ५७-प्रकीर्ण व्यय तथा श्रनुदान संख्या
१५--लेखा शीर्षक २५--गांद सभाएं ग्रीर पंचायतें। खं० २११, पृ० ५७०-५७२।

गन्ने के कय मूल्य से संबंधित द्र मार्च, १६६० के ग्रल्पसूचित तारांकित प्रश्न ४-६ के विषय पर विवाद। खं०२११,पृ०७०८।

### श्ररहर---

प्र० वि०—गन्ना, मूंगफली, गेहूं, मवका, ——— का उत्पादन । खं० २११, पु० ५४१।

### श्रद्धं कुम्भी मेला--

प्र० वि० —— ———, इलाहाबाद में दी गई टोन। खं० २११, पृ० १०— ११।

प्र० वि० --- ----, प्रयाग पर व्यय । खं० २११, पृ० ७१८-७१६।

## श्रलीगढ़ बस स्टेशन--

---- के खजाने की सुरक्षा के लिये पुलिस बुलाना । खं० २११, पू० १३३।

प्र० वि० --- ---- के निकट चाकू भोकिने की घटना। खं० २११, पु० ६६८।

श्रली जहीर , श्री सैयद— उत्तर प्रदेश विनियोग विधेयक, १६६० । खं० २११, पु० १०२३, १०२७, १०२८, १०३३ ।

### **ग्रत्पसूचित तारांकित प्र**श्न--

90E1

———का उत्तर न मिलने के संबंध में श्रापत्ति । खं० २११, पृ० ३६६। गन्ने के ऋय मूल्य से संबंधित म् मार्च, १६६० के———४—६ के विषय पर विवाद । खं० २११, पृ० ७०२—

## [ग्रल्पसूचित तारांकित प्रश्न---]

श्रो राजनारायण द्वारा श्रयने -----कं सम्बन्ध में जानकारी की मांग। खं० २११, पु० २८।

## श्रहपसूचित तारांकित प्रक्नों--

——के उत्तर न मिलने तथा कार्ये— सूची में फ्रिथिक प्रदन रखने के संबंध में फ्रापिता खं० २११, पृ० ३६६।

### ग्रवधेशकुमार सिनहा, डाक्टर---

१६६०-६१ के म्राय-व्ययक में म्रन्दानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदान संख्या ३८-लेखा शीर्षकः ५४- दुिभक्ष सहायता तथा भ्रनुदान संख्या २--लेखा शोर्षकः ७-भू--राजस्व (मालगुजारो)। खं० २११, पृ० ७६४-७६४।

#### श्रविद्यास का प्रस्ताव--

प्र० वि०—-सोरों नगरपालिका के ग्रध्यक्षके विरूद्ध----। खं०२११, प्०७२२-७२३।

#### श्रस्तित्व---

प्र० वि०—-प्राम समाज के पृथक----को समाप्त करने पर विचार। खं० २११, प्०३४६।

#### श्रम्पताल---

प्र० वि०--- प्राजमगढ़ सदर---- के नये भवन के लिए भूमि। खं० २११, पुरु १४४-१४५।

प्र० वि०--जिला--- उन्नाव को बढ़ाने की प्रार्थना। खं० २११, प्० ३४६।

प्र० वि०—शाहजहांपुर जिला ---में एक्सरे मशीन न होना खं० २११, प्० द३८--द३६।

#### श्रस्पतासों---

प्र० वि०--जालोन जिले के---में डाक्टरों की कमी। खं० २११, प्०३३७।

#### ध्रस्पुश्यला---

प्र० वि०--रऊकरना में---सम्बन्धी सगङ्गा। खं० २११, पृ० ६४८।

#### श्रा

श्रांख के श्रस्पताल--

प्र० वि०—इलाहाबाद में मोतीलाल नेहरू श्रस्पताल की नई इमारत तथा ——को बढ़ाने को प्रार्थना। खं० २११, पृ० ३४०।

#### श्रांग्ल भारतोय विद्यालय---

प्र० वि०--विदेशों में मान्यता-प्राप्त लखनऊ के---। खं० २११, प्०६४६-६५०।

#### श्राजमगढ़ रोडवेज क्षेत्र----

प्र० वि०---में बस कंडक्टरी के उम्मोदबार। खं० २११, पृ० ८४४।

#### श्रार्डर---

प्र० वि०—गोरलपुर नगरपालिका का स्पेशल———। ग्वं० २११, पू० ११।

#### श्रात्म हत्या---

प्र० वि०--थानों के हवालातो केंदियों द्वारा कयित---। खं० २११, प्०६४८।

#### श्रादेश---

प्र० वि०--उद्योग विभाग से सम्बन्धित सूत का स्टाक बेचने के लये---। खं० २११, पू० ६१६।

प्र० वि०--प्राम पंचायतों के निवधिन के लिये---। खं० २११, पु० २४०--२४१।

प्र० वि०—श्वनवन्दो रोकने के कथित ———। खं० २११, पु० ३६०।

## म्रानरेरी मंजिस्ट्रेट---

प्र० वि०--बुलन्दराहर जिले में एक -----के खिलाफ जिकायत। खं० २११, पू० ६७०।

### म्राफिस सुपरिण्डेण्डेण्ट---

प्र० वि०—नगर महापालिकाओं तथा नगरपालिकाओं में डेपुटेशन पर प्राये————। खं० २११, पू० ७३८।

#### श्राबकारी——

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-स्थनुदान संख्या ३-लेखा कीर्षकः द---- । खं० २११, पु० ४५१-४६७ ।

### श्राम के वृक्षों--

प्र० वि०—-गोरखपुर जिले में फलदार ----का काटा जाना। खं० २११, प्०६५६।

#### श्राय-व्ययक---

२१ मार्च, १६६० तक---पर वाद-विवाद के भाषणों का विवरण। खं० २११, पृ० ७४२-७४४।

१६६०-६१ के---को मांगों पर विवादार्थ निद्य्वित कार्यक्रम में परिवर्तन करने पर स्रापत्ति । खं० २११, प० २६-३८ ।

१६६०-६१ के---में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--विभिन्न ग्रनुदानों के लिये समय निर्धारण। खं० २११, प्० ६५१।

## श्रायल मिल्स एसोसियेशन--

प्र० वि०-- ---का स्मृति पत्र । खं० २११, पृ० १२६-१३० ।

### श्रायुर्वेदिक श्रस्पताल--

प्र० वि०—बिखरा राजकीय———— — के भवन का कथित किराया। खं० २११, पृ० ३४७।

## श्रायुर्वेदिक श्रीषघालय--

प्र० वि०—-जौनपुर जिले में बेलवार व सोनहिता में————-खोलने की प्रार्थना तथा सुजानगंज श्रस्पताल का भवन निर्माण । खं० २११, प्०३५३।

प्र० वि०—सगड़ी तहसील में————— खोलने की प्रार्थना। खं० २११, पू० ३३१।

# श्रायुर्वेदिक चिकित्सा श्रधिकारी---

प्र० वि०—- --- । खं० २११, पृ० ३६०-३६१। ब्रार्ट्स टीचरों----

प्र० वि०--इन्टर कालेजों के---का वेतन। खं० २११, पृ० ६६८।

श्रालू—

प्र० वि०-- ----सुरक्षित रखने के लिये कोल्ड स्टोरेज की ग्रावक्यकता। खं० २११, पृ० ५४३।

### ग्राइवासन समिति--

द्वितीय विघान सभा की----का चतुर्थ प्रतिवेदन । खं० २११, पृ० ६७२ ।

## 垂!

इंग्लिश स्कूलों---

प्र० वि०-- ------में भर्ती के लिये सुझाव । खं० २११, पृ० ३६४ । इंचार्ज, लेपरासी सेंटर--

> प्र० वि०---सोरी जिले के सिविल तथा------ के विरुद्ध शिकायत । खं० २११, पृ० ३३६--३४०।

इन्टर कालेजों---

प्र० वि०— ———के भ्रार्ट्स टीचरों का वेतन । खं०२११, पृ०६६८ । इंटरमीडिएट बोर्ड इम्तहान—

----के कारण मुसलमान परीक्षार्थियों को जुमा की नमाज से वंचित करने के सम्बन्ध में नियम ५२ के अन्तर्गत शिक्षा उप-मंत्री का वक्तव्य। खं० २११, पृ० ६७५।

## इंटरमीडिएट बोर्ड परीक्षा--

प्र० वि०--हाई स्कूल बोर्ड व ----को परीक्षा में ग्रसफलता सम्बन्धो ग्रावेदन-पत्र । खं० २११, पृ० ६४४-६४४ ।

### इंडस्ट्रियल कालोनी---

प्र० वि०----<sup>7</sup>----, नैनो। खं० २११, पृ० द२८।

#### इनाम---

प्र० वि०--मेघराजपुरा में दरयार्वासह डाक् को मारने वालों को----। खं० २११, पृ० ३६१। इन्दुभूषण गुप्त, श्री--देखि रे "प्रश्नोत्तर" ।

### इमारते⊸-

प्र० वि०—ित्रिबरामक बनाक की----न बन सकना। खं० २११, पृ० ८३३।

### इमारतों---

B

उग्रसेन, श्री— देखिये "प्रश्तोत्तर" ।

> म्राल्पसूचित ताराकित प्रश्न का उत्तर न मिलने के संबंध में श्रापत्ति। खं० २११, पू० ३६६।

> १६६०-६१ के ब्राय-व्ययक में ब्रनुवानों के लिये मांगों पर मतवान-- ब्रनुवान संख्या ७-- लेखा शीर्षक १२-मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, ब्रनुवान संख्या ३१-लेखा शीर्षक ४७-- प्रकीणं विभाग ब्रीर ४४-- उडु- यन, ब्रनुवान संख्या ५२-लेखा शीर्षक ७०-- जन-स्वास्थ्य संबंधी सुवार पर पूँजों को लागत तथा ६२-राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण कार्यों का पूँजों लेखा। खं० २११, पू० ३७३--- ३७६, ३७६, ३६४, ४१४-४१६, ४१६।

मनुदान संख्या ४१---लेखा शोर्षक ५६--लेखन सामग्रो ग्रोर मुद्रण। खं० २११, पु० ५०७, ५१०। म्रतुदान सख्या ४७—— नेया शोर्षक ६ द— सिंचाई, नाचालन, बाघ मार पानी के निकास सम्मी काया का निर्माण, म्रतुदान संख्या १०—— नेया शोर्षक १७, १८ मार २६— १— राजस्य से किये जाने वाले मिचाई के निर्माण कार्य तथा भ्रनुदान सम्पा ११—— गेला शार्षक १७, १८, १६ मार ६८— सिंचाई स्थापना पर व्यंष्म । खं० २११, पृ० २६८, २५६, २७० ।

गन्ते के ऋयमूल्य से सबिधत मार्च, १६६० के ग्रलासूचिन ताराकित प्रश्न ४-६ के विषय पर विवाद। तां० २११, पु० ७०४।

नियम ४२ के प्रन्तर्गत वित्रे गये विषयो के सबंघ में जानकारी। ख०२११, पु० ६४६, ५४०।

नियम ४२ के भन्तर्गत ग्यान श्राक्षंणार्य विषयों को सूचनाये। खं० २११, पू०, ३६८, ४४०।

पूर्वी जिलों में घोला वृष्टि के सबंघ में वस्तव्य की माग। ख० २११, पू० ७३६।

प्रक्तोत्तर के संबंध में आपत्तिया। सं०२११, पु०१३८।

### उत्तर प्रवेश--

प्र० वि०--- - - - तथा हिर्मीचल प्रवेश की हवबन्दी का मामला। ल० २११, पू० ३२०-३२१।

### उत्तराखंड मडल---

प्र० वि०——का निर्माण तथा ओटियों की मार्गे। ग्व० २११, पू० =२१—=२२।

प्र० वि०---का निर्माण तथा सोमा-वर्ती विधायक मध कं सुझाव। म० २११, पृ० ५३४।

उवयशंकर, श्री---

देखिये "प्रश्नोसर"।

१६६०-६१ के म्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--भ्रनुदान संख्या २७--लेखा शोर्षक ४१ ग्रौर ५१-क--विद्युत्त योजनाग्रों की स्थापना पर व्यय तथा श्रनुदान संख्या ५१--लेखा शोर्षक ६१-- क--विद्युत योजनाग्रों पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय को छोड़ कर) । खं० २११, पृ० ३०२- ३०४।

#### उद्योग---

- प्र० वि०--तोसरी पंचवर्षीय योजना-न्तर्गत----। खं० २११, पृ० ६१६।
- प्र० वि०—फरेंदा तहसील में भारी ———चालू करने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० १३२।
- प्र० वि०--बस्ती जिले के कुछ स्थानों पर भारी---चालू करने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० १२६।
- प्र० वि०—बुन्देलखन्ड में---चलाने कीप्रार्थना। खं०२११, पृ०१२४--१२५।

## उद्योग केन्द्र--

प्र० वि०—गोरखपुर देवरिया तथा बस्तो जिलों में खुलने वाले———। खं०२११,पृ० ८४१।

### उद्योग विभाग---

- प्र० वि--देवरिया जिले में----से सहायता। खं०२११,पृ०८४३।
- प्र० वि०—- संचालक, ---- के कार्यालय से कुछ कर्मचारियों का हटाया जाना। खं० २११, पृ० ८३१ -- ८३२।
- प्र० वि०——से सम्बन्धित सूत का स्टाक बेचने के लिये श्रादेश। खं० २११, पृ० ८१६।

## उपकुलपति---

लखनऊ विश्वविद्यालय के--- पर श्री कालोप्रसाद की नियुक्ति के संबंध में कार्य-स्थगन प्रस्ताव की सूचना। खं० २११, पृ० ३६७। लखनऊ विश्वविद्यालय के---पद पर श्री कालीप्रसाद की नियुक्ति के संबंध में याचिका। खं० २११, पृ० ३६७।

### उपनगर प्रमुखों---

प्र० वि०--महापालिकाओं के नगर-प्रमुखों---का वेतन, भत्ता तथा स्रागरा महापालिका कर मे वृद्धि। खं० २११, पृ० १६-२०।

उपल वृष्टि---

प्र॰ वि०--बिलया जिले में---से क्षति। खं० २११, पृ० ६२४।

#### उप-संचालक---

प्र० वि०—गोरखपुर के पशु-पालन विभाग के———। खं० २११, प्०५४५।

## उप-संचालक भ्रायुर्वेद---

प्र० वि०----के कार्यालय के कर्म-चारियों एवं भ्रायुर्वे दिक कम्पाउन्डरों का वेतन । खं०२११,पृ०६३७।

#### उपाध्यक्ष--

प्र० वि०——, श्रन्तरिम जिला परिषद् ज्ञाहजहांपुर से श्रिधिकार वापस लेने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० ७३७।

### उपाध्यक्ष, श्री---

श्चल्पसूचित तारांकित प्रश्न का उत्तर न मिलने के संबंघ में श्रापत्ति । खं० २११, प्०३६६ ।

श्रत्पसुचित तारांकित प्रश्नों के उत्तर न मिलने तथा कार्य-सुची में श्रिधिक प्रश्न रखने के संबंध में श्रापत्ति। खं०२११,पृ०३६६।

श्रागामी कार्य-क्रम के संबंध में जानकारी की मांग। खं० २११, पृ० ५५२। श्रागामी कार्यक्रम के सम्बन्ध में सूचना।

खं० २११, पृ० ६७५।

इन्टरमीडिएट बोर्ड के इम्तहान क कारण मुसलमान परीक्षािथयों को जुमा की नमाज से वंचित करने के सम्बन्ध में नियम ५२ के श्रन्तर्गत शिक्षा उपमंत्री का वक्तव्य । खं० २११, पृ० ६७५ ।

## [उपाध्यक्ष, श्री--]

- २१ मार्च, १६६० तक ग्राय-व्ययक पर बाद-विवाद के भाषणों का विवरण। खं० २११, पु० ७४२, ७४४।
- उत्तर प्रदेश श्रधिकतम जोत सीमा श्रारोपण विषयक, १६५६। खं० २११,पृ० ६७२।
- उत्तर प्रदेश जिला परिषद् विधेयक, १९५९ परसंयुक्त प्रवरसमिति द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की अवधि मे वृद्धि का प्रस्ताव। खं० २११, पृ० ८५२, ८५४, ८५६, ८५७, ८५८, ८६०, ८६१, ८६२।
  - उत्तर प्रदेश सरकार के विनियोग लेखें १६५७-५८ तथा लेखा परीक्षा प्रतिवेदन, १६५६ पर लोक लेखा समिति का प्रतिवेदन। खं०२११, पु०६७१।
  - १६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में प्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदानों संख्या १--लेखा शोर्षक ४--वृहत जोत-कर की उगाही पर व्यय। खं० २११, पृ० ७४५।
  - श्रनुवान संख्या ३--लेखा शोर्षक ८-राज्य श्राबकारी। खं० २११, पृ०
    ४५१, ४५३, ४५४, ४५६, ४५८,
    ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४,
    ४६५, ४६६, ४६७।
- श्रनुवान संख्या ५——लेखा शीर्षक १०— वन । खं० २११, प्० ४६७, ४६८, ४७१, ४६६, ४६६, ५०१।
- अनुवान संख्या ७— लेखा शीर्षक १२— मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण ज्यय, अनुवान संख्या ३१— लेखा शीर्षक ४७— प्रकीर्ण विभाग और ४४— उडुयन, अनुवान संख्या ४२— लेखा शीर्षक ७०— जन-स्वास्थ्य संबंधी सुधार पर पूंजी की सागल तथा ६२— राजस्व लेखे के बाहर राज्य के बूसरे निर्माण कायी का पूंजी लेखा। खं० २११, पू० ३७३, ३७४, ३७७, ३६०, ४०७, ४०६, ४११, ४१२, ४१४,

- श्चनुदान संख्या १२——लेखा शीर्षक १८——श्रभियन्त्रण (इंजीनियरिंग) संस्थाये। खं० २११, पृ० २७२।
- श्चनुदान संख्या १६-लेग्वा शीर्षक २७-न्याय प्रशासन । खं० २११, पृ० ६७७, ६८३।
- श्रन्दान संख्या १७-लेखा शीर्षक २८-जेल। खं०२११, पृ०१००५, १००८, १०१४, १०१५, १०१६, १०२२।
- श्रनुदान संग्या २१—लेगा शीर्षक ३८—चिकित्सा तथा श्रनुदान सस्या २२—लेगा शीर्षक ३६—जन-स्वास्थय। गं० २११, ए० ६६२, ६६३, ६८६, ६८६, ६६०, ६०१, ६६२, ६८१ ६००, ६०१।
- श्रन्दान संग्या २७ -- लेला शिषंक ४१ -श्रीर ६१ - क्ष-विद्यत योजनाश्रो की स्थापना पर ब्यय तथा श्रनदात सम्या ५१ - लेला शीषंक ६१ - क - विद्यत योजनाश्रों पर पूंजी की लागत (स्थापना द्यय की खोड़कर)। खं० २११, प्० ३००, ३०६, ३१३ ३१४।
- श्रनुवान संख्या ३२-लंलाशीयंक ४७-सूचन। संचालन कार्यालय । खं० २११, पू० ६६१, ६६३ ७०१, ७०२।
- अनुदान संख्या ३७--सोवा शोर्षक ४०--नार्गारक निर्माण-कार्यो के सिये सहायक अनुदान । खं० २११, पु० ६४४, ६४≈, ६६१।
- सनुवान संस्था ३८—लेखा शीर्षक १४-बुर्मिक सहायता तथा सनुवान संस्था २—लेखा शीर्षक ७— भू-राजस्व (मालगुजारी) । मं० २११, पू० ७४५, ७४६, ७८३, ७८५, ७८७, ७६०, ७६४।
- भनुवान संस्था ४१——लेखा शीवंक ५६—लेखन सामग्री भीर मुद्रण। खं० २११, पू० ५०१, ५०२, ५०८, ५११, ५१२।

भनुदान संख्या ४२—लेखा शीर्षक

४७—प्रकीर्ण व्यय तथा श्रनुदान
संख्या १४-—लेखा शीर्षक २४—गांव
सभाएं श्रीर पंचायतें। खं० २११,
पृ० ५५३, ५५४, ५५६, ५८५,
५६०, ५६०, ६०४, ६०४, ६०४।

अनुदान संख्या ४७——लेखा शीर्षक ६८——सिंचाई, नौचालन, बांघ ग्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यो का निर्माण, अनुदान संख्या १०——लेखा शीर्षक १७, १८ ग्रौर १६-ख—— राजस्व से किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण-कार्य तथा अनुदान संख्या ११—लेखा शोर्षक १७, १८, १६ ग्रौर ६८ सिंचाई स्थापन। पर व्यय। खं० २११, पृ० २४७, २४८, २५१, २५६, २५७, २५८, २६१, २६४, २६४, २६८, २७०, २७१, २७२।

विभिन्न ग्रनुदानों के लिये समय निर्धारण। खं० २११, पू० ६५१।

विभिन्न भ्रनुदानों पर विवादार्थ समय निर्घारण। खं० २११, पृ० ४५१।

कार्य-स्थगन प्रस्ताव के सम्बन्ध में सूचना । खं० २११, पृ० २४२ ।

कार्य-स्थगन प्रस्ताव तथा याचिका के सम्बन्ध में जानकारी की मांग। खं०२११,पृ०२४६।

कार्य-स्थगन प्रस्तावों के संबंध में सूचनार्ये। खं० २११, पु० ५५०।

गक्ते के ऋय मूल्य से संबंधित मार्च, १६६० के श्रल्पसूचित तारांकित प्रक्न ४-६ के विषय पर विवाद। खं० २११,पू० ७०२, ७०४, ७०५, ७०६ ७०६।

२६ फरवरी, १६६० के तारांकित प्रश्न ४४-४६ से सम्बद्ध एक श्रनुपूरक प्रश्न के उत्तर के संबंध में गृह उपमंत्री का वक्तव्य। खं० २११, पु० ६७६।

श्री टीकाराम पुजारी के निलम्बन को समाप्त करने का सुझाव। खं० २११, पु० ६४४, ६४५, ६४६, ६४७। तात्कालिक प्रश्नों को लिये जाने के संबंध में व्यवस्था। खं० २११, पृ० ६७४, ६७५।

नियम ५२ के भ्रन्तर्गत दिये गये विषयों के संबंध में जानकारी। खं० २११, पु० ६४६, ६५०, ६५१।

नियम ४२ के भ्रन्तर्गत ध्यान श्राकर्षणार्थ विषयों की सूचनायें। खं० २११, पृ० ३६८, ४५०।

प्रतिनिहित विधायन समिति का चतुर्थ प्रतिवेदन। खं० २११, पृ० ८४६, ८४७।

प्रदेश के ३ वर्ष के डिग्री कोर्स के संबंध में नियम ४२ के श्रन्तर्गत गृह मंत्री का वक्तव्य। खं० २११, पृ० २४२, २४४, २४४, २४६।

प्रश्नों का उत्तर न मिलने पर श्रापत्ति । खं० २११, पृ० ३६८।

प्रश्नों के संबंध में व्यवस्था की मांग। स्वं० २११, प्० ७३६।

प्रश्नों के संबंध में शिकायत्रे। खं० २११, पु० ५५०।

प्रक्तोत्तर के संबंध में श्रापत्ति। खं० २११ पृ०६४३।

बाराबंकी जिले में डकैतियों से उत्पन्न परिस्थिति पर कार्य-स्थगन प्रस्ताव की सूचना। खं० २११, पृ० ३६८।

मिलयाना शुगर मिल, मेरठ, को मिल-याना गांव की भूमि का बलपूर्वक पुलिस द्वारा कब्जा दिलाने के संबंध में नियम ५२ के ग्रन्तर्गत गृह उप-मंत्री का वक्तव्य। खं० २११, पृ० ७४०।

मिलयाना शुगर मिल, मेरठ को मिलयाना गांव की भूमि का बलपूर्वक पुलिस द्वारा कब्जा दिलाने के संबंध में नियम ५२ के श्रन्तर्गत सूचना। खं० २११, पू० ५५०-५५१, ५५२।

मिश्रिल में श्री दधीचनाय के मेले में श्रनिषकत सिनेमा शो के कारण सरकारी श्राय में कमी के संबंध में नियम ५२ के श्रन्तर्गत मुख्य मंत्री का वक्तव्य। खं० २११, पू० ५४६, ५४६।

### [उपाध्यक्ष, श्री---]

मुख्य मंत्री के विरुद्ध प्रश्नों का उत्तर विलम्ब से देने पर, विशेषाधिकार की श्रवहेलना का प्रश्न उठाने की सूचना। ख० २११, पृ० ८५०।

श्री मोतीलाल श्रवस्थी को सदन से बाहर जाने का निदेश। खं० २११, पृ० ६७२, ६७३।

ललनऊ विश्वविद्यालय के उप-कुलपति पद पर श्री कालीप्रसाद की नियुक्ति के संबंध में कार्य-स्थगन प्रस्ताव की सूचना। खं० २११, पू० ३६७।

लखनऊ विश्वविद्यालय के उप-कुलपति पद पर श्री कालीप्रसाद की नियुक्ति के संबंध में याचिका। खं० २११, पु० ३६७।

विकास तथा नियोजन स्थायी समिति, लोक लेखा समिति तथा प्राक्कलन समिति के लिये निर्वाचित सबस्यों के नामों की घोषणा। खं० २११ पु० ६७४--६७६।

सबस्यों के सबन से चले जाने पर उनके प्रक्रमों के लिये जाने के संबंध में क्यवस्था। खं० २११, पृ० ८४८।

सवस्यों को पार्टी के अनुपात तथा उनकी संख्या के अनुसार बोलने का अवसर देने के संबंध में व्यवस्था। खं० २११, पू० ८४८।

सिमितियों के निर्वाचन के संबंध में सूचना। खं० २११, पृ० ३६६।

सहारनपुर नगरपालिका द्वारा लाऊड-स्पीकरों के प्रयोग पर प्रतिबन्ध के संबंध में स्वायल शासन उपमंत्री का वक्तव्य। खं० २११, पू० ८५१, ८५२।

सहारनपुर म्युनिसिपल बोर्ड द्वारा लाउड स्पीकर संबंधित बनाये गये बाई-लाज के संबंध में कार्य-स्थगन प्रस्ताव की सूचना। खं०,२११,पू० ६४७, ६४८, ६४९। सिंचाई विभाग, मिर्जापुर के ४०० मज-दूरों की छटनी के कारण श्री रमापति दुबे द्वारा ग्रनझन के सबध में नियम ५२ के ग्रन्तगंत सूचना। य० २११, पु० ६७३, ६७४।

हाईस्कूल श्रोर इटरमीडिएट बोर्ड के इम्तहान के कारण मुसलमान परीक्षा- थियो को जुमा की नमाज से बंचित करने के सबंध में नियम ५२ के श्रन्तगंत सूचना। खं० २११, पू० ७३६।

#### उपाध्यक्षों---

प्र० वि० — ग्रन्सरिम जिला परिषदो के — के ग्राधिकारों में कमी। खं० २११, प्० ७३३ – ७३४।

उबदुरहमान, श्री-

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भनु-बानों के लिये मागो पर मतवान— भनुवान संक्या ३८—लेखा शोर्षक ४४—दुभिक्ष सहायता तथा भनुवान संख्या २—लेखा शीर्षक ७—भू-राजस्व (मालगुजारी)। खं० २११, पृ० ७४४-७४६।

## उरई-जगम्मनपुर बस सम्बस---

उर्दे शिका--

प्रविक्--- के लिये पृथक समुदान वेने की प्रार्थना। कं २११, पृष् ३३३--३३४।

### उसंला हास्पिटल-

प्र०वि० कानपुर में नेत्र विकित्सा संबंधी यंत्रों की कमी। खं० २१६, पु० ६४१-६४२।

जल्फतसिंह, श्री— वेलिये "प्रश्नोसर।"

## उल्लुखों---

प्रविक्----लितपुर बांब पर कपित ग्रह्मा। कं २११, प्रव ३१६-३२०। ऊ

ऊदल, श्री— देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

१६६०-६१ के म्राय-व्ययक में म्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-म्रनुदान संख्या. ७—लेखा शीर्षक १२—मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, म्रनुदान संख्या ३१—लेखा-शीर्षकः ४७—प्रकीर्ण विभाग भ्रौर ४४—उड्डयन, म्रनुदान संख्या ४२—लेखा शीर्षक ७०—जनस्वाथ्य संबंधी सुधार पर पूंजी की लागत तथा द२-राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा। खं० २११, पृ० ३६३-३६४। म्रनदान संख्या १६—लेखा शीर्षक

श्रनुदान संख्या १६——लेखा शीर्षक २७—न्याय प्रशासन । खं० २११, पृ० ६६४ ।

श्रनुदान संख्या २७—लेखा शीर्षक
४१ श्रौर ८१-क-विद्युत योजनाश्रों
की स्थापना पर व्यय तथा श्रनुदान
संख्या ५१--लेखा शीर्षक ८१-क-विद्युत योजनाश्रों पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय को छोड़कर कर)। खं० २११, पू० ३०४-३०५।

श्रनुदान संख्या ३८—लेखा शीर्षक ५४-दुर्भिक्ष सहायता तथा श्रनुदान संख्या २—लेखा शीर्षक ७-भू-राजस्व (मालगुजारी) । खं० २११, पृ० ७८०-७८२ ।

श्रनुदान संख्या ४७—लेखा शीर्षक ६८— सिचाई, नौचालन, बांघ श्रौर पानी के निकास संबंधी कार्यों का निर्माण, श्रनुदान संख्या २०—लेखा शीर्षक १७, १८ श्रौर १६—क—राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण कार्य तथा श्रनुदान संख्या११ — लेखा शीर्षक १७, १८, १६ श्रौर ६८—-सिचाई स्थापना पर व्यय। खं० २११, पृ० १६१—१६३।

मिलयाना शुगर मिल मेरठ, को मिलयाना गांव की भूमि का बल पूर्वक पुलिस द्वारा कब्जा दिलाने के संबंध में नियम ४२ के ग्रन्तर्गत वक्तव्य । खं० २११, पु० ७४१ ।

ऊसर भूमि--

प्र०वि०—बेलामूडी तथा बसहरा ग्रामों के बीच ———। खं० २११, पृ० ४३३।

 $\mathcal{A}_{\overline{k}}$ 

ऋण-

प्रवि०—गोरखपुर नगरपालिका को श्रनुदान तथा———। खं० २११, पृ० १५–१७।

प्र०वि०—पंडित पुरवा की खांडसारी सहकारी समिति को——— । खं० २११, पृ० ८१७।

ए

एक्सरे मशीन----

प्र०वि०——शाहजहांपुर जिला श्रस्प-ताल में——न होना । खं० २११, पृ० ६३८–६३६।

एच०टी०सी० प्रशिक्षण---

प्र०वि० में हरिजनों व पिछड़ी जातियों का मनोनयन। खं० २११, पृ० ३४८।

ए०डी०एम० (ई०)---

प्र०वि०———रखने के कारण। खं० २११, पृ० ८१४।

एफलुयेंट बोर्ड---

प्र०वि०—गोला तथा हरगांव चीनी मिलों के गन्दे पानी के प्रबन्ध के लिये ——की स्थापना। खं०२११, पु० १३३।

एल ०टी० की परीक्षा---

प्र०वि०---लखनऊ में बेसिक --- ---। स्वं० २११, पृ० ३६५।

एस॰डी॰ग्राई॰---

प्र०वि०--मुरादाबाद जिले में शिक्षा विभाग के ----। खं० २११, पृ० २५५। ग्रो

श्रोला पीड़ितों---

प्र० वि०—बस्ती जिले में——को सहायता । खं० २११, पृ० ४४६— ४५० ।

प्रोला युक्ट--

प्र०वि०--पूर्वी जिलों में ---। लं० २११, पृ० ६४२।

पूर्वी जिलों में ——के संबंध में वक्तव्य को मांग। खं० २११, पृ० ७३६-७४०।

प्रविव ----पूर्वी जिलों में----से क्षति । खं० २११, पू० २३६--२३६।

श्रो

श्रीद्योगिक श्रास्थान---

प्रविष्—उत्तर काशी जिले में— ——जोलने का ग्रादेश। खं०२११, पुष्ट ४०।

प्र० वि०—कानपुर में खनिज परोक्षण केन्द्र तथा श्रत्मोड़ा में——-खोलने की योजना। खं० २११, पृ० =४३।

श्रीद्योगिक प्रशिक्षण केंद्रों---

प्रविष्———में श्रतसूचित जाति के प्रशिक्षायियों को सुविधायें। खं० २११, पृ० ह३०—ह३१।

श्रोषधालयों----

प्रविश्व — प्राराणसो जिले के कुछ ——— के भवनों के संबंध में जानकारी। खं० २११, पृ० ३५३। क

कंडक्टरों---

प्रविव --- ड्राइवरों व--- के लिये बस स्टेशनों पर विश्रामगृह न होना। खं० २११, पू० ११८-११६।

प्रविव — मेरठ रोजवेज डिबीजन में — व ड्राइवरों की सुविधायें बढ़ाने की प्रार्थना। खं० २११, पू० ह३७ हरेहा। कत्ल--

प्र०वि०--फर्मलाबाद जिले में उक्तेतियां श्रोर----। यं० २११, पृ० ३४२,।

प्रविष्--फर्षयाम् भिने सं उक्ती च---- हे अभिष्या संव २११, प्र ३४७।

प्रविषय---वस्ता जिले में उसीतवा तथा ----। गाँव २११, पुरु २४२।

प्रविव --- शाह्युर के श्री प्रली जान का----। राव २११, पूर्व ६६६।

प्रविष्—सातापुर जिले मे ———, डाके एवं चारियां। लं० २११, पृ० ६६।

कन्या पाठशाला----

प्रविष्-ताड़ी व स्रतंई बाजारों में ----न होना। गां० २११, पृष् ६४६-६४७।

कन्हैयालाल वाल्मीकि, श्री--

वेषिये"प्रश्नोत्तर"।

कमयार फामं---

प्रष्वि०——गजकोय · · · · । यां० २११, पु० ५४५।

फमल फुभारी गीउंदा, कुमारी

१६६०-६१ के श्राय-ध्ययक में श्रन्दानों के निये मांगों पर मतदान---श्रन्दान संख्या २१---चेला शार्षक ३८--चिकित्सा तथा श्रन्दान संख्या २२---लेखा शीर्षक ३६---जन स्वास्थ्य। खं० २११, प्० ८७८-८७६।

कमलापति त्रिपाठो, भो---

१६६०-६१ के आय-व्ययक में अनुवानों के लिये मांगों पर मलावन-अनुवान संख्या ३२-लेका शविंक ४७----सूचना संचालन कार्यालय। लं० २११, पु० ६६७---७०१। प्रदेश में ३ वर्ष के डिग्री कोर्स के संबंध में नियम ५२ के ग्रन्तर्गत गृह मंत्री का वक्तव्य। खं० २११, पृ० २४२— २४४, २४५, २४६।

#### कम्पाउन्डर---

प्र॰वि॰—बाराबंकी जिले में पुराने डाक्टर व———। खं॰ २११, पू॰ ३५८।

#### कम्पाउन्डरा––

प्र०वि०--उप-संचालक, ग्रायुर्वेद के कार्यालय के कर्मचारियों एवं श्रायुर्वेदिक ----का वेतन । खं० २११.पु० ६३७।

कम्युनिस्टों की सभा--

प्र०वि०—इटावा में ———में पथराव। खं० २११, पृ० ६५३—६५४।

#### कर्मचारियों---

प्र०वि०—- स्रन्तरिम जिला परिषद मेरठ के----का स्रावेदन-पत्र। खं० २११, प० ६४१-६४२।

प्र०वि०---बरेली रोडवेज क्षेत्र के कुछ -----को टी०ए० न मिलना। खं० २११, पृ० १३३।

प्र०वि०—-रोडवेज क्षेत्र, श्राजमगढ़ में ———का बकाया वेतन व भत्ता। खं०२११,पृ० द३८।

प्र०वि०—संचालक, उद्योग विभाग, के कार्यालय से कुछ ——का हटाया जाना। खं० २११, पू० द३१— द३२।

प्र०वि०—संशोधित बजट मैनुग्रल की तैयारी तथा कुछ सरकारी ——के वेतन में वृद्धि। खं० २११, पृ० ६४०-६४३।

प्र०वि०—सोलजर्स बोर्ड के——के स्थायीकरण से संबंधित ग्रादेशु। खं० २११, पृ० ६६०।

#### कर्मचारी---

प्र०वि०--एटा नगरपालिका के निकाले गये----। खं० २११, पृ० २३--२४। प्र०वि०—्गवर्नमेट प्रेस, लखनऊ व इलाहाबाद के ग्रस्थायी———। खं० २११, पु० ८२४।

प्र०वि०—-प्रांतीय रक्षक दल के ग्रस्थायी ——— । खं० २११, पृ० १३६।

प्र०वि०—राजकीय मुद्रणालय की इमारतों में बिना किराये के ——— । खं० २११, पृ० द१६–द१७।

#### कलेक्टरियों---

प्र०वि०———के म्राउट साइडर क्लर्क्स । खं० २११, प्० ३६४।

### कलेक्ट्रेट---

प्र०वि०---द्रेजरी एवं -----के क्लर्की का वेतन। खं० २११, पू० ६६१।

#### कलेक्शन श्रमीनों---

प्र०वि०—लखनऊ में ————की नियुक्तियां। खं० २११, पृ० ६६७।

कल्याणचन्द मोहिले, श्री--

### देखिये"प्रश्नोत्तर"।

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदान संख्या २१-लेखा शोर्षक ३८-चिंकित्सा तथा भ्रनुदान संख्या २२-लेखा शोर्षक ३६-जन-स्वास्थ्य। खं० २११, प्० ८६३।

श्रनुदान संख्या ३४-लेखा शीर्षक ५०-. नागरिक निर्माण-कार्य-ग्रौर ५०– क— राजस्व से वित्त पोषित--नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत-श्रनुदान संख्या ३५--लेखा शीर्षक ५०⊢नागरिक निर्माण-कार्य-केंद्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, म्रनुदान संख्या ३६-लेखा शीर्षक पूर्व-नागरिक निर्माण-कार्य **ग्र**ीर ८१--राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा म्रनुदान संख्या ५०-लेखा शोर्षक दर्—राजस्व लेखें के बाहर नाग-रिक निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा। खं० २११, पु० १४५।

### [कल्याण चन्द मोहिले, श्री---]

श्रनुदान संख्या ४२--लेखा शीर्षक ५७--प्रकीर्ण व्यय तथा श्रनुदान संख्या १४--लेखा शीर्षक २५--गांच सभाये ग्रीर पंचायते । खं० २११, पृ० ५६६-५६७।

#### कल्याणराय, श्री--

१६६०-६१ के श्राय-व्ययक में श्रत्वानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रतदान संख्या ३८-लेला शीर्षक ५४-दुर्भिक्ष सहायता तथा श्रतुदान संख्या २-लेखा शीर्षक ७-म्-राजस्य (माल-गुजारी)। खं० २११, प० ७७१।

#### क्लकी---

प्र०वि०—-द्रेजरी एवं गले ह्रिट के --- का वेतन । खं० २११, प्० ६६६ ।

प्रविव — नियोजन कार्यालय, खोरी में ----का इंटरच्यू। खंव २११, पृव ५४०।

### वलवर्स---

प्रविष्य --- कलेक्टरियों के ग्राउट-साइडर ----। खं० २११, पु० ३६४।

### क्वार्ट र——

प्रविश्—-रामनगर नगरपालिका संबंधित ----तथा ऋण । खं० २११, पृ० ७३०-७३१।

## क्वार्टरों---

प्र०वि०--- जलनक में श्रमिक बस्ती के -----का किराया। खं० २११, पृ० १२२।

### कागजात की जांच--

प्र०वि०--गांव सभा बार के ----। खं० २११, पु० ७२४-७२४।

### कागजात बुहस्ती--

प्र०बि०---फर्रखाबाद जिले में ------, के सुकदमों तथा श्रपने निदास क्षेत्र में काम करने वाले लेखपात । खं० २११, पृ० ३४६।

### कानपुर-कालपी सड़क--

प्र० वि०-- ---पर बस दुर्घटना। खं० २११, प्० १३६ ।

#### कार्यक्रम--

श्रागामी------ के सम्बन्ध में जानकारी की मांग । र्लं० २११, पृ० ५५२।

श्रागामी-----के सम्बन्ध में सूचना। खं० २११, पृ० ६७५।

१६६०-६१ के स्राय-क्यपक का मांगों पर जियादार्थ निश्चित---मे परित्रतंन करने पर पापत्ति। य० २११, प्र २८--३८ ।

## कार्य-मृची---

श्रत्पपूर्वित तारांकित प्रश्नों हे उत्तर न मिलने तथा में श्रिथिक प्रश्न रखने के सम्बन्ध में श्रापत्ति। यह २११, पृह् २६६।

### कार्य-स्थगन प्रस्ताव--

----- तम्बन्ध मं सूचना । संव २११, पुरु २४२ ।

------ तथा याधिका के सम्बन्ध में में जानकारी की मांग। खं० २११, पु०२४६।

बाराबंकी जिलें में इक्षेतियों से उत्पन्न परिस्थिति पर---- की सूचना। खं० २११, पू० ३६८।

सखनक विश्वविद्यालय के उप-कुल-पति पद पर श्री कालोप्रमाद की निम्बित के सम्बन्ध मे———शी सूचना । खं० २११, प्० ३६७।

सहारनपुर म्यानिकासत बोडं हारा लाउड स्पोक्तर सम्बन्धित बनाए गये बाई-लाज के सम्बन्ध में ---- की स्चना। खं० २११, ० ६४७--६४८, ६४६।

# कार्य-स्थगन प्रस्तावीं--

कालोप्रसाद, श्री--

लखनक विश्वविद्यालय के उप-कुलपति
पद पर----को नियुक्ति के सम्बन्ध
मे कार्य-स्थगन प्रस्ताव की सूचना।
खं० २११, पृ० ३६७।

लखनऊ विश्वविद्यालय के उप-कुलपति पद पर----की नियुक्ति के सम्बन्ध मे याद्यिका । खं० २११, ० ३६७।

कार्का।त्रसाद पांडेय, श्री--देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

> १६६०-६१ के श्राय-व्ययक मे श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनदान संख्या ३४-लेखा शोर्षक ५०-सार्व-जनिक निर्माण–कार्य ग्रौर ५०– क–राजस्व से वित्तपोषित नागरिक निर्माण-कार्यो पर पूंजी की लागत, श्रनुदानसंख्या ३५-लेखा शीर्षक ५०-नागरिक निर्माण-कार्य, केन्द्रोय सडक निधि से वित्तीय सहायता, अनुदान संख्या ३६--लेखा शोर्षक ५०-नागरिक निर्माण-कार्य ग्रोर ८१-राजस्व लेखें से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यो की पूंजी का लेखा तथा श्रनुदान संख्या ५०-लेखा शीर्षक **८१--राजस्व लेखे के बाहर नाग-**रिक निर्माण-कार्यो का पंजा लेखा। खं० २११, पु० ६२–६४।

श्रनुदान संख्या ४७-लेखा शोर्षक ६८-सिंचाई, नोचालन, बांध श्रोर पानी के निकास सम्बन्धो कार्यो का निर्माण, श्रनुदान संख्या १०-लेखा शीर्षक १७, १८ श्रोर १६-ख-राजस्व से किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण-कार्य तथा श्रनुदान संख्या ११-लेखा शोर्षक १७, १८, १६ श्रोर ६८-सिंचाई स्थापना पर व्यय । खं० २११, पू० २०३-२०५ ।

## काशी हिन्दू विश्वविद्यालय--

प्र० वि०———के प्राक्टर को फर्स्ट क्लास मैजिस्टीरियल पावर्स । खं० २११, पु० ६४०-६४१ । कास्टम्राफ लिविंग इन्डेम्स--

प्र० वि०----। खं० २११, पृ० दर्य-दर्द।

किसान कालेज, शामली--

प्र० नि०---- के लिये गन्ने के मूल्य में कटौतों। खं० २११, पृ० ५१७-५१८।

किसानों--

प्र० वि०--चक्को भूमाडोही के----को ग्रिधकारियों के विरुद्ध शिकायते । खं० २११, प्० ६५० ।

कुम्रों--

प्र० वि०—-ग्राजमगढ़ जिले में सिचाई के----का निर्माण। खं० २११, पु० ८१७-८१८।

प्र० वि०--बदायूं जिले मे----को बोरिंग। खं०२११,प्०८४६।

कुत्तों--

प्र० वि०—निर्बल तथा मैतृक रो-पीड़ित व्यक्तियों में परिवार नियोजन को प्रभावी बनाने का सुझाव तथा लखनऊ मे---के काटने से मृत्युएं। खं० २११, पृ० ६६५ ।

कृषि बीज भंडार--

प्र० वि०----, तालबेहट के वि द्ध शिकायत । खं० २११, पृ० ४४२-४४३।

कृषि फार्म--

प्र० वि०--कानपुर जिले के----। खं० २११, पृ० ५४२ ।

प्र० वि०-गोंडा जिले में ६० एकड़ के ऊपर----। खं० २११, पृ० ५४६।

कृषि फार्मो--

प्र० वि०—भान को उपज,——का उत्पादन । खं० २११, पृ० ४४४।

कृषि योजनाम्रों---

प्र० वि०———के अन्तर्गत रोजगार मिलना । खं० २११, पृ० ५४७। कृषि रक्षार्थ---

प्रा० वि०---वितया जिने मे-----चूते मारने का कश्म । खं० २११, प० ५२१-५२२ ।

#### फृषि विभाग--

प्रविवन्स-चत्रत्रज्ञ मे-----के कार्यालयों का इमारते । खब २११, पृष् ४३६--४३७ ।

#### केन्द्रीय योजना-

प्र० वि० -- नद्रकियों का शिक्षा के लिये - --- का कार्यान्त्रयन । खं० २११, प्र० ३२५ ।

#### केशव पाडंग, श्रा- -

#### देखिये ''प्रश्नोत्तर''।

२१ मार्च, १६६० तक श्राय--व्ययक पर वार्जाववाद के भाषणीं का विवरण। ख० २११, ४०७४४।

१६६० - ६१ हे साय ज्ययक में स्रतुवानों को लिये मांगों पर मत्यान - अनुवान मंख्या ७ -- चेला बार्षक १२ -- मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, स्रतुवान संख्या ३१ -- लेला शार्षक ४७ -- प्रतीणं विभाग स्रोर ४४ -- उड्डयन, स्रनुवान संख्या ५२ -- जेला शोर्षक ७० -- जन -- स्वास्थ्य सम्बन्धा सुधार पर पूंजा को लागत तथा = २ -- राजस्य लेले के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण कार्यों का पूंजों लेला। खं० २११ पु० ३७ = - ३ = ०।

### कैलाञ्चनारायण गुप्त, श्री---

१६६०-६१ के श्राय-व्ययक में श्रनुवानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनुवान संख्या ३७--लेखा शोर्षक ५०-नाग-रिक निर्माण-कार्यों के लिये सहायक श्रनुवान। खं० २११, पू० ६४--६६०।

## कैलाशप्रकाश, श्री----

देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

### कोग्रापरेटिव बैक ---

प्र० वि०---जिला ----, ग्राजनगढ़ से देवया निकालने में ग्रनियमितता। खं० २११, पृ० ५२५-५२६। कोग्रापरेटिव सुगरगाइनरों -

प्रवित्र --- के च्यायम प्रयोगत जिले के प्रविक्त उम्बोदबार लेते पर प्राप्ति । पाँव २११, पाव ५२४-५२५ ।

### कोम्रापरेदिव सोसाइटो -

प्रवित्तः - स्थानस्टब्स्टस्ट्रिस्ट्रास्, -----, जिला रायवस्त्रा का सरक्षाव्यवस्था। स्वंत २११, प्रविद्युत्तः।

प्रवादिक स्वाद्भागित विक्रिया । स्वव हिन्द्रिक हेबनसमें । स्वव २११, प्रवादिक १३४ ।

कातप्रालिह् भवारिया, श्र देखिये "प्रश्तालर" ।

#### कोयला ---

प्रव रिव - -इश्वरा जिने में महुदों हो - - । अव २११, वृब्ध २०।

#### कोयले-

प्रकथिक - न्य्रागरेम - का कमा। व्यक्ति २११, पृक्ष ५२०।

प्रव विव -- - - का कभी क सम्बन्ध म केन्द्र में पत्र-ध्यपद्धार । स्पंव २११, पुरु ५१८ ५१६ ।

प्रव विव जानपुर जिले म - न्हीं कसो। विव २११, पूर्व ४३.-४३८।

सुल्तानपुर जिले में · · · का जितरण । सं० २११, पु० ४३३ ४३४ ।

### कोल्ड स्टोरेज

#### कोव---

प्र० वि०—विलय राज्य समयर का ——त्या बिजला न हाने को शिकायत । र्लं० २११, पु० प्रदेश

#### कशरों--

प्र० वि० -- -- - - ररमझे का मुहय निर्धारण करने को प्रायंना। व्यं० २११, पृ० १३७। ख

### खजाने को सुरक्षा--

प्र० वि०—- प्रलोगढ़ बस स्टेशन के ----- के लिये पुलिस बुलाना। खं० २११, प्र० १३३।

### खनिज परीक्षण केन्द्र--

प्र० वि०—कानपुर में — — तथा ग्रत्मोड़ा मे ग्रोडोगिक ग्रास्थान खोलने की योजना। खं० २११, पृ० द४३।

#### खयालीराम, श्री--

१९६०-६१ के थ्राय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-अनुदान संख्या २१-लेखा शीर्षक ३८--चिकित्सा तथा अनुदान संख्या २२--लेखा शीर्षक ३९-जन स्वा-स्थ्य। खं० २११, पृ० ८८५-८८६, ८०१।

#### खरीफ ग्रभियान--

प्र० वि०——— । खं० २११, पृ० ५४१ ।

## खांडसारी (उद्योग) ---

प्र० वि०—-गुड़,-------तथा राब-उद्योग पर नियन्त्रण । खं० २११, पृ० ६४५ ।

### खांडसारी का उत्पादन--

प्र० वि०———— । खं० २११, पृ० ८४५ ।

## खांडसारी कारखानों---

प्र० वि०——का लाइसेंस कर । खं० २११ , पृ० ८१६ ।

# खांडसारी सहकारी सिमति--

#### खाद्यान्नों---

प्र० वि०—प्रतापगढ़ जिले में—का भाव। खं० २११, पृ० ५३६।

### खुशीराम, श्री---

देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

१९६०-६१ के ग्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनुदान संख्या ४--लेखा शोर्षक १०-वन । खं० २११, पृ० ४८६-४६०।

श्रनुदान संख्या ३४—लेखा शीर्ष म ५०— नागरिक निर्माण—कार्य ग्रौर ५०— क—राजस्व से वित्तयोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, ग्रनुदान संख्या ३५—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य, केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, ग्रनुदान संख्या ३६—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य ग्रौर द१—राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा ग्रनुदान संख्या ५०—लेखा शीर्षक द१—राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा । खं० २११, पृ० १४६—१५० ।

### खुबसिंह, श्री---

१६६०-६१ के श्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनुदान संख्या ३४-लेखा शीर्षक ५०-नाग-रिक निर्माण कार्य ग्रौर राजस्व से वित्तपोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पुंजी की लागत, **श्र**नुदान संख्या ३५–लेखा झीर्षक ५०-नागरिक निर्माण-कार्य, केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, श्रनुदान संख्या ३५-लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य श्रौर ८१-राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पुंजी का लेखा तथा श्रनुदान संख्या ५०-लेखा शीर्षक प्रश्—राजस्व लेखे के बाहर नाग-रिक निर्माण-कार्यों का पुंजी लेखा । खं० २११, पु० ६७—६८, १४२, १४३-१४४।

श्रनुदान संख्या ३८-लेखा शीर्षक ५४-दुर्भिक्ष सहायता तथा श्रनुदान संख्या २-लेखा शीर्षक ७-भू-राजस्व (माल-गुजारी)। खं०२११, पृ० ७७४। गगाप्रमाद, श्री— देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

१६६०-६१ के श्राय-व्ययक मे श्रनुदानों के लिये मांगो पर मतदान-श्रनुदान संख्या ७-लेखा शीर्षक १२-मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, श्रनुदान संख्या ३१-लेखा शीर्षक ४७-प्रकीणं विभाग श्रौर ४४--उड्डयन, श्रनुदान संख्या ५२-लेखा शीर्षक ७०-जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुधार पर पूंजी की लागत तथा ५२-राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा। खं० २११, पू० ३६४-३६७।

गगाप्रसाद वर्मा, श्री— देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

गजटेर भ्राफिसरी--

प्र० वि०---रायबरेली जिले में पुराने ----- । खं० २११, पू० ८४१।

प्र० वि०—रीजनल ट्रान्सपोर्ट ग्राफिस, लखनऊ के—— । खं० २११, पू० १३४ ।

गज्जूराम, श्री---देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

> १६६०-६१ के श्राय-व्ययक मे अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-प्रनुदान संख्या ३४-लेखा शीर्षक ५०---सार्वजनिक निर्माण-कार्य भौर ५०-क—राजस्व से विसपोषित नार्गारक निर्माण-कार्यो पर पूंजी की लागत, श्रनुवान संख्या ३४---लेखा शीर्षक ५०-नागरिक निर्माण-कार्य, केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, भनुवान ३६--लेखा संख्या शीर्षक ४०-नागरिक निर्माण--और ६१-राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा अनुदान संख्या

४०-लेखा शीर्षक ८१-राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कायी का पूंजी न ता। गां० २११, पू० ४६-६०।

श्रन्दान संख्या ४७—लेगा शीपक ६८— सिंचाई, नावालन, बाप श्रीर पानी के निकास सम्बन्धी कायों का निर्माण, श्रनुदान संख्या १०—लेगा शीर्षक १७, १८ श्रीर १६—ल—राजस्व मे किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण— कार्य तथा श्रनुदान संख्या ११-लेखा शीर्षक १७, १८, १६ श्रीर ६८— सिंचाई स्थापना पर ध्यय । खं० २११, पू० २४६—२५० ।

गणेशप्रसाद पांडेय, श्री---

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक मे अनुदानों के लिये मागो पर मतदान-अनुदान संख्या ४२-लेखा शीर्षक ५७-प्रकीणं व्यय तथा अनुदान संख्या १४-लेखा शीर्षक २४-गांव सभाए धौर पंचायते। खं० २११, ए० ५६२-५६३।

श्रनुवान संख्या ४७—निला शीर्षक ६८— सिंचाई, नौवासन, बाध श्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, श्रनुवान संख्या १०—लेला शीर्षक १७, १८ श्रौर १६—त्य—राजस्व से किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण-कार्य तथा श्रनुवान संख्या ११— लेखा शीर्षक १७, १८, १६ श्रौर ६८— सिंचाई स्थापना पर स्थय । खं० २११, प्० १८६—१६१ ।

गणशशकर विद्यार्थी मेमोरियल इस्टर-मीडिएट कालेज

> प्र० वि० महाराजगंज क हिसाब की आंखं लं० २११, ५० ३६२ ।

गनेवाचन्त्र काछी, श्री— देखिये "प्रदनोसर" । गनेवीलाल चौधरी, श्री— देखिये "प्रदनोसर" । गन्ना--

प्र० वि०—ग्राजमागढ़ तथा बलिया की ———सोसाइटियों का फालतू ——— । खं० २११, पृ० ११६— १२१ ।

प्र० वि०----, मूंगफली, गेहूं, जौ, मक्का, श्ररहर का उत्पादन । खं० २११, प्० ५४१ ।

गन्ना सोसाइटियों---

प्र० वि०—-म्राजमगढ़ तथा बलिया ——का फालतू गन्ना । खं० २११, पृ० ११६–१२१ ।

गन्ना हड़ताल--

प्र० वि०—शाहगंज की——में सोश-लिस्टों की गिरफ्तारी। खं०२११, पु० ६६२ ।

गन्ने की ग्रधिकता---

प्र०वि०—सिसवा व देवरिया चीनी मिल क्षेत्रों में———। खं० २११, पृ० ८२३—८२४।

गन्ने की उपज--

प्र० वि०— ---- तथा खपत । खं० २११, पृ० ५४८ ।

गन्ने की बिन्नी---

प्र० वि०—जंगल वेलवा तथा देशई देवरिया केन्द्रों मे ——— रुकना। खं० २११, पृ० ८४०—८४१।

गन्ने का मूल्य---

प्र० वि०—कशरों पर——निर्घारण करने की प्रार्थना । खं० २११, पु० १३७ ।

गन्ने की ढुलाई---

प्र० वि०—सीतापुर जिले की चीनी मिलों से सम्बन्धित —— का बकाया । खं० २११, पू० ८४४— ८४५ ।

गन्ने के ऋय मुल्य--

---- सें सम्बन्धित द्र मार्च, १६६० के श्रत्पसूचित तारांकित प्रक्न ४–६ के विषय पर विवाद। खं० २११, पृ० ७०२–७०६। गबन--

प्र० वि०—बस्ती जिले की सहकारी समितियों मे——— । खं० २११, पृ० ५४३—५४४ ।

प्र० वि०—बीज गोदामों में———। खं० २११, पृ० ५२६—५३०।

गयाप्रसाद, श्री---

देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

गयूर ग्रली खां, श्री--

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनुदान संख्या ४७-लेखा शोर्षक ६८-सिंचाई, नौचालन, बांध और पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, श्रनुदान संख्या १०-लेखा शीर्षक १७, १८ श्रौर १६-ख-राजस्व से किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण-कार्य तथा श्रनुदान संख्या ११-लेखा शीर्षक १७, १८, १६ श्रौर ६८-सिंचाई स्थापना पर व्यय । खं० २११, पू० २५१-२५२ ।

गवर्नमेट टेक्निकल इंस्टोट्यूट—

प्र० वि०----, लखनऊ के विद्यार्थियों की शिकायत । खं० २११, पृ० १२६ ।

गवर्नमेंट प्रेस--

प्र० वि०——, लखनऊ व इलाहाबाद के ग्रस्थायी कर्मचारी। खं०२११, प्० द२४।

गांधी ग्राम श्रौषघालय---

प्र० वि०——का स्थानान्तरण । खं० २११, पृ० ६६५ ।

गांव सभा (बार)--

प्र० वि०—— के कागजात की जांच। खं० २११, पृ० ७२४— ७२५।

गांव समाज--

प्र० वि०——के पृथक ग्रस्तित्व को समाप्त करने पर विचार । खं० २११, पृ० ३४६ । **गाजीपुर बस स्टेशन--**-

प्र० वि०—्यूसुफपुर-कासिमाबाद वस-सर्विस, ——पर मुसाफिरखाना बनाने की योजना । खं० २११, प० १३७–१३८ ।

### गिरघारीलाल, श्री--

१६६०-६१ के श्राय-व्ययक की मांगों पर विचादार्थ निश्चित कार्यक्रम में परिवर्तन करने पर श्रापति । यं० २११, पृ० ३७-३८ ।

११ ०-६१ के स्राय न्ययक में प्राचानों के लिये जागी पर मनदान-श्रनदान संख्या १२-लेखा शीर्षक १८श्रीभयत्रण (इंजीनियरिंग) सस्याये।
खं० २११, पु० २७२।

श्रनुदान संख्या २७-लेला तिर्धक ४१ श्रौर ६१-क-विद्यस् योजनाश्रो ही र गणना पर व्यय तथा श्रनुदान सख्या ५१-लेखा शीर्षक : ६१-क-विद्युत् योजनाश्रो पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय को छोड़कर) । खं० २११, प० २७२, २७३, २७४, ३०६-३१३ ।

धनुदान संख्या ३४-लेखा शीर्षक ५०-सार्वजनिक निर्माण-कार्य भ्रीर ५०-क-राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यो पर पूंजी की लागत, अनुदान संस्या ३५-लेखा शीर्धक ५०-नागरिक निर्माण-कार्य, केन्द्रीय सड़क निधि से विसीय सहायता, ग्रनुदान संख्या ३६-लेखा शीर्षक ५०-नागरिक निर्माण-कार्य श्रीर ८१-राजस्त्र लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा भ्रनुदान संख्या ५०-लेखा शीर्षक **८१-राजस्व लेखे के बाहर नागरिक** निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा । खो० २११, पु० ३६, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, १४८, १४६-१६२।

अनुवान संख्या ४७-लेखा शीर्षक ६८-सिवाई, नौचालन, बांध और पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, अनुवान संख्या १०-लेखा शीर्षक १७, १८ स्रोर १६—स-राजम्ब से किये जाने याले सिचाई के निर्माण- कार्य तथा स्रन्दान संत्या ११—लेखा शीर्षक १७, १८, १६ स्रोर ६८—सिचाई स्थापना पर त्यय । तं० २११, ५० १६५—१५६, ६६६—२७१।

सिंच ई विभाग, मिर्जापुर के ४०० मजदूरों की ठटनी है कारण श्री रमापति दवे हारा ग्रनसन के सम्बन्ध में नियम ५२ ६ श्रन्तर्गत सूचना। एक २११, पठ ६७३, ६७४।

गिरफ्तारी--

त्रव विवन-उत्तराह र । ११० म पद्माण्डाक् २ - १९१० - , पव ६६२ ।

त्रव १४०-- व इति स्थारितः एस सह स्व श्रासम् १-- । सः १४४, प्रव ६१४-६१४ ।

प्रविव--प्राह्मन का गथा हजान में मार्जालस्टो की-- १२६ ११, प्रविध्या

ग्रं (उद्योग)--

पाठ विष-----, खाष्ट्रसारा स्वा २ व उद्योग पर नियमण । १४० - ११, पुठ ६४६ ।

गुप्तारसिंह, श्री--

देखिय "प्रक्रनोसर" ।

१६६०-६१ क श्राय- व्ययम म श्रानवानी के लिये मार्गो पर मतवान-श्रन्दान सम्या ६२-- लेखा श्रीपक ५७--प्रशीणं व्यय तथा श्रनदान सम्या १४-- अखा श्रीपंग - ४--गाय सभाय श्रीर पन्नायत । ण० २११, पु० ५==-४६० ।

## गुमनाम-पत्र---

प्र० वि०--लखनक में हाली के प्रवसर पर धमक्यों से भर ---। ख० २११, पू० ३२२-३२३।

गुलाबसिह, श्री---

वेखिये "प्रक्लोलर" ।

### गृह मंत्री--

२६ फरवरी, १६६० के तारांकित प्रक्त ४४-४६ से सम्बद्ध एक अनुपूरक प्रक्त के उत्तर के सम्बन्ध मं---का वक्तव्य । खं० २११, पृ० ६७६--६७७।

प्रदेश में ३ वर्ष के डिग्री कोर्स के सम्बन्ध में नियम ५२ के अन्तर्गत——— का यक्तव्य । खं० २११, पृ० २४२— २४६ ।

गृह निर्माण योजना (ग्रन्तर्गत)--

प्र० वि०----रोजगार मिलने का श्रतुमान । खं० २११, पृ० ७२१-७२२ ।

गेदादेवी, श्रीमती--

देखिये, ''प्रक्तोत्तर''।

गेंदासिंह, श्री--

देखियं, "प्रक्नोत्तर"।

उत्तर प्रदेश जिला परिषद् विधेयक, १९५९ पर संयुक्त प्रवर समिति द्वाराप्रतिवंदन प्रस्तुत करने की श्रविध में वृद्धि का प्रस्ताव। खं० २११, पु० ८५६।

१६६०-६१ के आय-व्ययक में अनुदानों
के लिये मार्गो पर मतदान-अनुदान संख्या ३८--लेखा शीर्षक
५४--दुभिक्ष सहायता तथा
अनुदान संख्या २--लेखा शीर्षक
७--भू-राजस्व (मालगुजारी)।
खं० २११, पृ० ७४५-७५०,
७८७-७८८।

गन्ने के ऋय मूल्य से संबंधित द्र मार्च, १९६० के अल्पसूचित तारांकित प्रक्त ४-६ के विषय पर विवाद। खं० २११, पृ० ७०५-७०६।

मुख्यमंत्री के विरुद्ध, प्रश्नों का उत्तर, विलम्ब से देने पर, विशेषाधिकार की श्रवहेलना का प्रश्न उठाने की सुचना । खं० २११, पू० ८५० ।

## गेहुं ---

प्र० वि०——तथा चावल का ऋय । खं० २११, पृ० ५२७-५२८ । गेहूं का निर्यात--

प्र० वि०--राज्य से धान व----। खं० २११, पृ० ५३५ ।

गोपाष्टमी---

प्र० वि०----को गो-हत्याये। खं० २११, पृ० ५४६ ।

गोरखपुर(डिर्वाजन)--

वि०----तथा वारापसी डिवी-जनों से पंचायत सेक्वेटरियों का हटाया जानर । खं० २११, पृ० २१--२२ ।

प्र० वि०-- ---व वाराणसी डिवीजनों मे महिला मंगल योजना के कम्म तथा कर्मचारी। खं० २११,प० २४-२५।

गोरखपुर रोडवेज क्षेत्र--

प्र० वि०----मे नियुक्तियां । खं० २११, पृ० द३६--द४० ।

प्र० वि०----मे मुश्रत्तल कर्मचारियों को बहाल होने पर वेतन । खं० २११, पु० ८३४-८३४।

गोरखपुर विश्वविद्यालय--

प्र० वि०----मे मेडिकल कालेज खोलने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० ६३७--६३८।

गोविंदनारायण तिवारी, श्री--

१६६०-६१ के आय-व्ययक मे अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-अनुदान संख्या ४-लेखा शीर्षक १०-वन। खं० २११, पु० ४८७-४८६।

अनुदान संख्या १६-लेखा शीर्षक २७-न्याय प्रशासन। खं०२११, पृ० ६८३--६८५।

भ्रनुदान संख्या ३२--लेखा शीर्षक ४७--सूचना संचालन कार्यालय । खं० २११, पृ० ६८६-६८८ ।

गोविदसहाय, श्री--

१९६०-६१ के श्राय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-अनुदान संख्या ३२-लेखा द्यीर्षक ४७-सूचना संचालन कार्यालय । खं० २११, पृ० ६९४-६९६ । [गोविन्द सन्।य, श्री--।

प्रतशन मंग्या ३४-तेया तीर्वक ४०--सप्त्रंजनिक निर्माण-धर्म ५० क-राजस्य से वित्त पोषिन नागरिक निर्माण-कार्या पर पूजी की लागत, ग्रन्दन राख्या ३५ लाया शोर्षक ५० तामिक निर्माण कार्य, हेन्द्रीय सड़क निधि है। वित्तीय सहापता, अनुवान संख्या ३६--लेखा शोवंग ५०- नागरिक निर्माण-कार्य ऋषि ६१--राजग्व लेखे से नागरिक निर्माण-कार्यो को पूंजी का लेखा तथा प्रनुदान सख्या ५०--लेखा शीर्षक ८१--राजस्य लेखें के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा। खंज २११, पु० ५१ -५५ ।

गोविवसिह विष्ट, श्री---

वेखिये "प्रक्नोत्तर"।

श्चनुदान से सर्बाधल साहित्य के समय से वितरण की मांग । खं० २११, प्० ७४४।

इन्टरमीडिएट बोर्ड के इम्लहान के कारण मुसलमान परीक्षायियों को जुमा की नमाज से वंचित करने के नम्बन्ध में नियम ५२ के श्रन्तगंत जिक्षा उप-मंत्री का वक्तव्य । खं० २११, पू० ६७५ ।

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में ऋनुवानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनुवान संख्या ४- लेखा शीर्षक १०-वन । खं० २११, पु० ४६७-४६८ ।

अनुदान संख्या २७-लेखा शोर्षक ८१
श्रीर ८१-क-विद्युत् योजनाश्रों की
स्थापना पर व्यय तथा अनुदान
संख्या ५१-लेखा शीर्षक ८१क-विद्युत् योजनाश्रों पर पूंजी
की लागत (स्थापना व्यय की
खोड़कर) । खं० २११, पू० ३०५

ब्रनदानगरमा २४-तेमा सीर्वं ह ५० --पावजनिक निर्माण हाय पोर ४०-क-राजस्य से जिल पोषित नगरिक निर्माण काया परप्जाकी लागत, ऋन राग सर ११ - ५५ - नमा क्षीयंक ५०-- गर्गारक निर्माण-कार्य, हेन्द्रीय सर्वा निवि वित्तीय महायमा पनदान सल्या ३६--नेता द्यापाः ४०-नागरिक प्रोर - १-राजस्व निर्माण-गय लागे मे बाहर नागरिए निर्माण-कार्या की पूजा हा तथा तथा ऋनुरान संख्या ४०-- नमा शोवा = १--राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यो हा पुत्रा लखा । लाव २११, पुर्व ४६ ५०, ४६, १५३ १५६।

स्रत्वान सम्या २० नमा शायक ५० नागरिक निर्माण कार्या के लिय सहायक प्रत्वान । एक २११, पक ५७३, ६७४।

श्रन्दान सम्या ३६ जला जायंक १४-- इभिक्ष सहायता तथा धनपान संख्या २ जेला जालंक ७ भू-राजस्य (मालगजारो) । लव २११ पुरु ७६७ ७६६, ७८२, ७६४।

श्रन्दान सम्या ४१ लेखा आयंक ४६-नेम्बन सामग्रा श्रार महण । या २११, पुरु ४०१, ४११ ।

श्रनवान मन्या ६२ जेला शायर ५७ प्रशाणं ग्यय तथा श्रनवान संख्या १४- चेला शायंक २५-गावसमायश्रारपद्यायत्रात्र २११, प्रदेश, ५६०-५६२ ।

विभिन्न मनवानों पर विश्वासाधे समय निर्धारण। स्वर् २११, प्र ४५१।

-- द्वारा नियम ५२ के जन्तर्गत्र दिय गर्वे विषय के सम्बन्ध में जानकारा की मांग । खंब २११, पत २० २६ ।

नियम ५२ के अन्तर्गत वित्रे तथे तिलारीं के सम्बन्ध में जानकारो। तार २११, पुरु ६४६। प्रतिनिहिन विधायन समिति का चतुर्थ प्रतिवेदन। खं०२११, पृ० ८४७। गौड़ ट्वाय फैक्टरी——

> प्र० वि०----,फनलगंज को कर्ज के लिये दरस्वास्त । खं० २११, पृ० ८४२-८४३ ।

गोरोराम गुप्त, श्री--

देखिये ''प्रश्नोत्तर''।

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक मे स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-स्रनुदान संख्या ४-लेखा शोर्षक १०-वन । खं० २११, प्० ४६१-४६३ ।

श्रनुदान संख्या ४७——लेखा शीर्षक ६८—सिंचाई, नोचालन, बांध श्रीर पानो के निकास सम्बन्धी कार्यो का निर्माण, श्रनुदान संख्या १०— लेखा शीर्षक १७, १८ श्रीर १६— ख——राजस्व से किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण-कार्य तथा श्रनुदान संख्या ११——लेखा शीर्षक १७, १८, १६ श्रीर ६८—सिंचाई स्थापना पर व्यय। खं० २११, पृ० १८२।

गीरीशंकर राय, श्री--

देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

श्रागामी कार्य-क्रम के सम्बन्ध में जान-कारो की मांग । खं० २११, पृ० ४५२।

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक को मांगों पर विवादार्थ निश्चित कार्य-क्रम मे परिवर्तन करने पर स्रापत्ति । खं० २११, पृ० ३४ ।

१६६०-६१ के आय-व्ययक मे अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-अनुदान संख्या ३-लेखा शोर्षक ८-राज्य आबकारो । खं० २११, पृ० ४६६-४६७ ।

श्रनुदान संख्या २७-लेखा झोर्षक ४१ श्रोर ८१-क-विद्युत् योजनाश्रों की स्थापना पर व्यय तथा श्रनुदान संख्या ५१-लेखा झीर्षक ८१-क-विद्यत् योजनाश्रों पर पूंजी की लागत (स्थापना, व्ययको छोड़कर)। खं० २११, पृ० ३१२। त्रनुदान संख्या ४२——लेखा शीर्षक ५७——प्रकीर्ण व्यय तथा त्रनुदान संख्या १५——लेखा शोर्षक २५—गांव सभाये स्रोर पंचायते । खं० २११, पृ० ५६०—५६३, ५६७—५६८ ।

कार्य-स्थगन प्रस्ताव तथा याचिका के सम्बन्ध में जानकारी की मांग । खं० २११, पृ० २४६ ।

नियम ५२ के अन्तर्गत ध्यान आकर्षणार्थ विषयों के सम्बन्ध में सूचना । खं० २११, पृ० १४१-१४२।

लखनऊ विश्वविद्यालय के उप-कुलपति पद पर श्री काले।प्रसाद की नियुक्ति के सम्बन्ध में याचिका। खं० २११. पृ० ३६७।

### गो-हत्याये--

प्र० वि०--गोपाष्टमी को---- । खं० २११, पृ० ५४६ ।

#### ग्राम पंचायतों--

प्र० वि०----के निर्वाचन के लिये ग्रादेश । खं० २११, पृ० २४०-२४१।

----को नवीन ग्रिषिकार । खं० २११, पृ० २३६-२४० ।

प्र० वि०--बरेली जिले मे----व न्याय पंचायतों का निर्माण न होना । खं० २११, पृ० ७३४-७३५ ।

## ग्राम समाजों--

प्र० वि०--पुरन्दरपुर तथा पिचुरली। को भूमि व जंगल देने को प्रार्थना। खं० २११, पृ० ६२८।

### ग्राम सेवक--

प्र० वि०--प्रशिक्षित----। खं० २११, पृ० १३५-१३६ ।

## ग्रेचुइटी--

प्र० वि०--वाटर वक्सं, रामनगर से
पृथक् किये गये कर्मचारियों को
प्रतिकर तथा ---। खं० २११,
पृ० ७३१।

जेलों---

त्र० वि०—न्नागर। कमिश्तरी की ——सं मांगे हुए बन्दी । खं० २१०, पु० ३५७ ।

प्र० बि०----- ने बन्दियों की संग्यः तथा साधाच की भरीद । खं० २१०, प्० ३५७ -३५८ ।

जोगाई, श्री----

बेलियं "प्रश्नोत्तर"।

भ

झारखंडे राय, थी---

वेश्यये "प्रश्नीत्तर"।

१६५०--६१ के प्राय व्यवक में पनुदानों क लिये मांगी पर मतरान-प्रतुत्रान संख्या १८-नगा गीर्षक २६ मृत्तिसा गाँ० २१०, प्र०२१७।

----- - अनदान सम्याः ५६ नामा द्यायंष ४३ - उत्रोग त्या अनुदान सम्याः ४६- -नेत्वा द्योपंत ७५-- प्रोत्योगिक विकास पर पूंजो को नामत । खं० २१०, प्० ७८०-- ७८४, ८२१ - ८२२, ८२४ ।

गृहमंत्री द्वारा असत्य उत्तर के सम्बन्ध में धिशेषाधिकार की अयहंतना के प्रश्न उठाने को सुचना। ख० २१०, प्र १११–११३।

नंनीताल जिले की सितारगंज तहमील में जेल फार्म बनाने हेत् किसानों की जमीन पर पुलिस द्वारा करजा करने से उत्पन्न परिस्थिति के सम्बन्ध में नियम ४२ के अन्तर्गत समाज कत्याण मंत्री का वक्तव्य। 'खं० २१०, पृ० ४६४।

मुराबाबाव के बर्तन उद्योग के स्याह कलम मजबूरों (engravers) की हड़ताल स उत्पन्न परिस्थित के सम्बन्ध में नियम ५२ के अन्तर्गत श्रम उपमंत्री का वक्तव्य। खं० २१०, पू० २१०।

विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री हरिप्रसाद टमटा के निधन पर शोकोद्गार । खं० २१०,पू० २६० । ट टम्बरेश्वर प्रमाद, शी -

देखिये "प्रज्ञानर" ।

१६५० ६१ म मान जाए स अनुदानों को लिय मानों पर मानदानअनुदान सरका ६६ लगा शार्वक :
४०- मांच लग्या ६६ लगा शार्वक :
४०- मांच लग्या १६ लगा शार्वक :
४५ -नेगा नावंक ०६ पण्य लन
तथा अनुदान सरका ६० पण्य लन
तथा अनुदान सरका ६० पण्य लन
तथा अनुदान सरका ६० पण्य लन
द्या अनुदान सरका ६० पण्य भूव ७१ नोच योजन तें पर पूंचा
की सरका । ५० १०, प्र

टाउन एरिया

त्रतः थिए त्रात्मनद्रशितं सः गत्न सार्वो छ। सः पारणः करन ही जानकारी । यह २४०, पूर्व ३७% ।

प्रवर्भनक रण्डलयान १० वाहर्यः साम्रामन्द्राः १ यकः २१०, प्रव ३७१ - ७५ ।

१६६०-५१ के त्राग-ट्यगर में प्रनाना के नियं मागा पर मन्द्रान-प्रनान संस्था ५४-लग्दा शीर्ष । ४०-किय सम्बन्धी विकास, श्रानिय एण श्रीर शोध, श्रन्दानसंख्या ५४-नेपा शीर्षक ४१-प्रावानन तथा श्रन्तान संप्या ४६-लेखा शीर्षक ७१-श्रीय याजनाश्री पर पूंजी की लागत । खन २१०, पुरु ५१७-५१६ ।

टीकाराम प्जारी, श्री----देखियं "प्रश्नीसर"।

> १६६०-५१ के भाग-व्ययक में भन्तानी के लिये मोगी पर मलदान-प्रनृदान संस्था १८-चेला शीर्वक ४६-गुलिस। खं० २१०, पु० १४८, २२४।

—-- अनुदान संख्या २३-- लेखा शीर्षक ४०-- छिष संबंधी विकास, अभियंत्रण और शोध, अनुदान संख्या २४-- लेखा शीर्षक ४१-- पशुपालन तथा अनुदान संख्या ४८-- लेखा शीर्षक ७१--- कृषि योजनाओं पर पूंजी की लागत। खं० २१०, प० ६४६।

--म्रनुदान संख्या २४-लेखा जीर्षक ४०-उपनिवेशन तथा ग्रनुदान संख्या २८-लेखा जीर्षक ४२-प्तहकारिता । खं० २१०,पृ० ७३३, ७३६-७३७ ।

—-ग्रनुदान, संख्या ४३-लेखा शीर्षंक ५७-ग्रनुस्चित ग्रोर पिछड़ी हुई जातियों का सुधार ग्रौर उत्थान । खं० २१०, पृ० ४१७-४१८ ।

कार्यक्रम के परिवर्तन के सम्बन्ध में मूचना । खं० २१०, पृ० ७७४ । नेनीताल जिले की सितारगंज तहसील में फार्म बनाने हेतु किसानों की जमीन पर पुलिस द्वारा कब्जा करने से उत्पन्न परिस्थिति के संबंध में नियम ४२ के अन्तर्गत समाज कल्याण मंत्री का वक्तव्य । खं० २१०, पृ० ४६४ ।

## टेक्निकल ग्रादमी----

प्र० वि०—सीतापुर हाइडिल डिवीजन में ———। खं० २१०, पृ० ८७०।

## टेक्निकल इंस्टीट्यूट----

प्र० वि०--गोरखपुर में ---- को यिश्वविद्यालय में न सम्मिलित करना । खं० २१०, पृ० ५६७ ।

## टेक्निकल एजूकेशन----

प्र० वि०--- ---- के लिये वर्किंग ग्रुप की रिपोर्ट । खं० २१०, पृ० ४७५ ।

# टेक्निकल तथा पोलोटेकनिक स्कूल----

प्र० वि०—— ——लखनऊ, का भ्राय-व्यय । खं० २१०, पृ० ४७७ । टेस्ट वर्क----

प्र० वि०-----ग्राजमगढ़ जिले मे -----पर व्यथ । खं० २१०, पृ० ५६० ।

प्र० वि०--ग्राजमगढ़ जिले में सड़कों पर ----। खै० २१०, पृ० ३०।

टोंस----

प्र० वि०—- प्राजमगढ़ जिले मे ---- पर नये पुलों के निर्माण की जानकारी । खं० २१०, प० ८७१।

ट्रांसपोर्ट परिभट कमेटी----

प्र० वि०—प्रेसीडेट, ट्रांसपोर्ट ———, लखनऊ डिवीजन, के विरुद्ध शिकायत। खं० २१०, प्०४६७।

ट्रेन डकैतियां----

प्र० वि० --- ---- । खं० २१०, पु० ५-७ ।

ठ

ठिकमा रजबहा योजना----

प्र० वि०--म्राजमगढ़ जिले की----। खं० २१०, पृ० २८३ ।

ठेके----

प्र० वि०—-श्रीरजलाल शाह ऐंड कम्पनी, बम्बई, को ----। खं० २१०, पु० ८७४।

ठेकेदार--

प्र० वि०—-इलाहाबाद फर्म के विष्णु चन्द्र राधिकाप्रसाद ---- का भुग-तान एकना । खं० २१०, पृ० २७४।

ठेकेदारों-----

प्र० वि०--हरदोई जिले के ---- का जमानत का रुपया वापस न मिलना । खं० २१०, पृ० ८६४ ।

ड

### डकैतियां——

प्र० वि०--हरदोई जिले मे ---- । खं० २१०, पृ० २६ ।

#### डकैतियों----

प्र० वि०—इटावा जिले की —— मे मृत्युर्थे । खं० २१०, पृ० ५६२ ।

#### डकैती----

- प्र० वि०—जालौन जिले में कुरीली ग्राम की ———। खं० २१०, प्० ५७३।
- प्र० वि०--मैसार की --- में नादिर मीर खाँ की हत्या । खं० २१०, पू० ३२ ।

#### डाक सेवा---

प्र० वि०—विधायकों को निःशुल्क ——मुविधा देने के सम्बन्ध में जानकारी। खं० २१०, पृ० ३६३।

#### डाक्टर----

प्र० वि०--सादुल्लानगर ग्रस्पताल में के---का न होना । खं० २१०, पृ० ३८ ।

#### डाक्टरों----

- प्र० वि०---ग्राजमगढ़ जिले में बिना---के ग्रस्पताल । खं० २१०, पृ० ५८७-५८८ ।
- प्र० वि०--सदर श्रस्पताल, खीरी, के---- के विरुद्ध शिकायतें । खं० २१०, पृ० ३८-३६ ।

### डिग्री कालेज----

- प्र० वि०--गाजीपुर में --- न खुल सकना । ंखं० २१०, पु० ४ = ३ ।
- प्र० वि०——पी० बी० कालेज, प्रतापगढ़, को ——— न बनाना । खं० २१०, पृ० ५८३ ।

## डिप्टी चीफ इंजीनियर----

प्र० वि०—श्री प्रयागनारायण ——— द्वारा गोरखपुर के सिचाई विभाग मे अष्टाचार की जांच। खं० २१०, पृ० २७०-२७२।

## डिस्ट्रिक्ट गवर्नमेंट कौन्सल----

फैजाबाद में ---- की नियुक्ति। खं०२१०, पू० ४८८।

#### डी० ए० वी० कालज----

प्र० वि०-- ----, लखनऊ, से राइफलों की चोरी । खं० २१०, पृ० ५७०--५७१ ।

#### डी० सी० एफ०----

प्र० वि०—— ——, बस्ती, के प्रन्तर्गत श्री रामसमुझ चौधरी की वर्खास्तगी तथा कुछ श्रधिकारियों के स्थानान्तरण। खं० २१०, पृ० १६४-१६५।

#### ड्म----

प्र० वि०--कोलतार ----। खंट २१०, पू० ८७१।

### ड़ाइवरों----

प्र० वि०--कानपुर रोडवेज क्षेत्र के श्रस्थाई कर्मचारियों को हटाना तथा --- का बकाया वेतन । खं० २१०, पृ० ४७४-४७४ ।

### ड्राफ्टसमैन----

- प्र० वि०—भी ग्रार० के० शर्मा,——— मैनपुरी डिबीजन, की कुछ इंजीनियरों के विरूद्ध शिकायतें। खं० २१०, पृ० ८६९–८७०।
- प्र० वि०---संडीला तहसील में चकबन्दी योजनान्तर्गत -----। खं० २१०, प्०५७८।

## ड्रेनों----

प्र० वि०—जल निकास योजनान्तर्गत सीतापुर जिले में ———का निर्माण । खं० २१०, पृ० द५द ।

त

#### तकावी----

- प्र० वि०—-फरेंचा तहसील में --- व मालगुजारी की वसूली। खं०२१०, पु० ४६३-४६४।
- प्र० वि०—मुकुंवपुर कृषि फार्म के लिये वी गई ——का मामला । खं० २१०, पृ० ५७० ।
- प्र० वि०—राज्य के विभिन्न जिलों में मालगुजारी व ——— की वसूली का स्थान । खं० २१०, पू० ४८१— ४८२ ।

प्र० वि०---सुल्तानपुर जिले में सूखा पीड़ितों को -----। खं० २१०, पृ० ३२।

### ননজ্জুলী-----

प्र० वि०—इटावा जिले में चकबन्दी कर्मचारियों की मुग्रत्तली व तनज्जुली। खं० २१०, पृ० ४६१।

### ताड़ी----

प्र० वि०—मऊरानीपुर में —— की दुकान न खोलने की प्रार्थना । खं० २१०, पृ० ४७३ ।

ताराचन्द माहेश्वरी, श्री----देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

> प्रक्तों के उत्तर पर मंत्री क हस्ताक्षर न होने पर श्रापत्ति । खं० २१०, पु० १६८ ।

> हरगांव, जिला सीतापुर, में श्रायोजित सोशिलस्ट पार्टी की सभा में पुलिस श्रिवकारियों के हस्तक्षप स उत्पन्न परिस्थिति के सम्बन्ध में नियम ५२ के श्रन्तर्गत गृह मंत्री का वस्तव्य। खं० २१०, पृ० ३८०।

### तालाबों----

प्र० वि०--घोसी तहसील के कुछ ----से पानी निकास योजना। खं० २१०, प्० २६७।

## तिरमलसिंह, श्री-----

१९६०-६१ के ग्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-ग्रनुदान संख्या २३-लेखा शोर्षक ४०-कृषि सम्बन्धा विकास, ग्रमियंत्रण ग्रौर शोध, ग्रनुदान संख्या २५-लेखा शोर्षक ४१-पशुपालन तथा श्रनुदान संख्या ४८-लेखा शोर्षक ७१-कृषियोजनाग्रों पर पूंजी की लागत । खं० २१०, पु० ५२६-५२८ ।

## तेंदू के पत्तों-----

प्र० वि०--बन विभाग बांदा क्षेत्र में ----व फलदार वृक्षों से ग्राय तथा सड़कों का निर्माण । खं० २१०, पृ० २७७-२७= । तेजबहादुर, श्री----

१९६०-६१ के आय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनुदान संख्या २०-लेखा इं.र्षकः ३६-वैज्ञा-निक विभाग और ३७-शिक्षा । खं० २१०, पृ० २९३-२९५।

#### त्याग-पत्र----

प्र० वि०-- ---देने वाले श्रध्यापकों का शेष वेतन । खं० २१०, पृ० ३५ ।

त्रिलोको सिंह, श्री------देखिये "प्रक्नोत्तर"।

#### थ

#### थानेदारों----

#### थानों----

प्र० वि०—गोरखपुर जिले के कुछ ——के श्रन्तर्गत विभिन्न श्रपराध की घटनायें। बंग २१०, पृ० ५५३–५५४।

## थानों की इमारतों----

प्र० वि० -- हरदोई जिले में --- में श्रपराध । खै० २१०, पृ० ५६१।

### दत्त, श्री एस० जी०----

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक म भ्रनुवानों के लिये मांगों पर मतदान-भ्रनुवान संख्या १८-लेखा शीर्षक २६-पुलिस। खं० २१०, पृ० १६७-१६६।

— अनुदान संख्या २०-लेखा शीर्षक-३६-वैज्ञानिक विभाग और ३७-शिक्षा । खं० २१०, पृ० ३०७-३०६ ।

### [दत, श्री एस० जी०---]

ऋनुदान संख्या २४-लेखा शीर्षक ४०-उपनिवज्ञन तथा ऋनुदान संख्या २८→ लेखा शीर्षक ४२-प्रहकारिता । खं० २१०, पृ० ७०२ ।

ऋनुदान संख्या ३०—जेखा कोर्षक ४७~ श्रम । खं० २१०, पृ० ६०८, ६१०-६११, ६१४ ।

#### दरोगा----

प्र० वि०—-सहायल थाने के →--- के विरुद्ध शिकायत । खं० २१०, पृ० २५ ।

दश्चरय प्रसाद, श्री---देखिये ''प्रश्नोत्तर''।

### दाताराम, श्री-----

१६६०-६१ के आय-व्ययक मे अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान - अनुदानों संख्या २३- लेखा को खंकः ४०- कृषि संबंधो विकास, अभियंत्रण और कोष, अनुदान संख्या २५- लेखा को खंक ४१- पशुपालन तथा अनुदान संख्या ४८- लेखा को खंक ७१- कृषि योजनाओं पर पूंजो को लागत । खं० २१०, प० ६२५-६२६ ।

### दोतदयालु शर्मा, श्री----

१६६०-६१ के म्राय-व्ययक में म्रत्दानों के लिये मांगों पर मतदान-म्रनुदान संख्या २३-लेखा शार्षक ४०-कृषि सम्बन्धो विकास, म्रभियंत्रण म्रीर शोध, म्रनुदान संख्या २५-लेखा शोर्षक ४१-मशुपालन तथा म्रनुदान संख्या ४८-लेखा शोर्षक ७१-कृषि योजनामों पर पूंजी की लागत। खं० २१०, पृ० ५००-५०२।

# दोनदयालु ज्ञास्त्री, श्री-----

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रमुदानों के लिये मांगों पर मतदान-स्रमुदान संख्या ४३-लेखा शीर्षक ५७- स्रमु-स्चित स्रोरपिछड़ी जातियों का सुधार स्रोर उत्थान । खं० २१०, पृ० ३ स्र--३ हुइ ।

## दीपंकर, ग्राचार्य----

१६६०-६१ के अ।य-व्ययक मे अनुदानों के तिये मांगों पर मतदान-अनुदान संख्या १८-तेला शोर्षक २६-पुलिस। खं० २१०, प० १४५-१४८।

—-श्रनुदान संख्या २४-लेखा शीर्षक ४०-उपनिवेशन तथा श्रनुदान संख्या २८-लेखा शीर्षक ४२-सह शारिता। खं० २१०, पृ० ६६२, ६६६, ७३७-७३६।

मथुरा नगर में डाक्टर गणपतराय का मकान पुलिस द्यारा जबरदस्ती खाली कराये जाने के सम्बन्ध में नियम ५२ के अन्तर्गत खाद्य मंत्री का वक्तव्य । खं० २१०,पृ० ७७८।

### दोपनारायण मणि त्रिपाठी, श्री---

१६६० →६१ के म्राय-व्ययक में भ्रतदानों के लिये मांगों पर मनदान-श्रनदान संख्या १८ —जेवा बोर्षक २६ —पुलिस। खं० २१०, पू० १४४।

श्रन्दान संख्या २०-लेखा शीर्षक ३६-वैज्ञानिक विभाग भीर ३७-शिक्षा। खं०२१०,प०३२६, ३३०-३३१।

श्रनुदान संख्या २४--तेला कीर्षक ४०--उपनिवेशन तथा श्रनुदान संख्या २८--लेखा कीर्षकः ४२--सहकारिता। य० २१०, पु० ६८३।

गृह मंत्री दवारा श्रमत्य उत्तर के सम्बन्ध में विज्ञेषाधिकार की श्रवहेन्तना के प्रक्त उठाने की सूचना। खं० २१०, पृ० ११३।

## वुकानों---

प्र० वि०---जीनपुर जिले में साफ्ट योक की ---- की कमी । खं० २१०, पु० १८८।

प्र० वि०-- फरेंदा तहसील में गहले की --- के एलाटमेंट के सम्बन्ध मेज शिकायत । खं० २१०, पृ० ७६४-७६४ ।

### दुर्घटनार्ये~~

प्र० वि०--प्राथली चीनी मिल की ----- । खं० २१०, पृ० ४५५-४५६।

जवाहरलाल रोहतगो, डाक्टर

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक मे ग्रनुदानों के लिये मांगो पर मतदान—ग्रनुदान संख्या २१--लेखा शोर्षक ३८-चिकित्सा तथा ग्रनुदान संख्या २२-लेखा शोर्षक ३६-जन-स्वास्थ्य। खं० २११, पृ० ८८६-८८८।

जिला परिषद् विवेयक---

उत्तर प्रदेश ----, १६५६ पर संगुक्त प्रवर तमिति द्वारा प्रतिबेदन प्रस्तुत करते को स्रवधि में वृद्धि का प्रस्ताव। खं० २११, पु० ८५२-८६२।

जी॰टो॰रोड---

प्र0 वि0—— वाराणसो——— सीवर लाइन बनान का ठका। खं० २११, पृ० ७३१—७३२।

जुडिशियल मैजिस्ट्रेट्स----

प्र०वि०———। खं०२११,पृ०८३३। जुडोशियल सर्विस——

> प्र०वि०——के अन्तर्गत परिगणित व पिछड़े वर्ग के लोग। खं० २११, पृ० ३६३।

जुमाकी नमाज---

इंटरमीडियेट बोर्ड के इम्तहान के कारण मुसतमान परोक्षायियों को———से वंचित करने के संबंध में नियम ५२ के अन्तर्गत शिक्षा उपमंत्री का वस्तव्य। खं० २११, पृ० ६७५।

जेल--

१६६०-६१ के ऋाय-व्ययक में ऋनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-ऋनुदान संख्या १७-चेला शोर्बक २८----। खं० २११, पृ० ६६५-१०२२।

प्रविव — शाहजहांपुर जिला — के स्रवीन खेती। खं० २११, पृ० ७२५।

जेलों---

प्र०वि०———के लिये निषेध समाचार-पत्र । खं० २११, पृ० १४–१५।

प्र०वि०---में मानवोचित सुवार करने को जानकारी। खं० २११, पू० १८-१६। प्र०वि०----मे हाथ से चक्की चलाना बन्द करने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० ७२६-७२७।

झ

झांर्सः माताटोला बस सर्विस—– प्र०वि०—–– । खं० २११, पृ० १३२ ।

झारखंडेराय, श्री---देखिये"प्रकास्तर" ।

> उत्तर प्रदेश जिला परिषद् विवेयक, १६५६ पर संगुक्त प्रवर समिति द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की स्रवधि में वृद्धि का प्रस्ताव। खं० २११, पृ० ६५८-६५६।

उत्तर प्रदेश शरकार के विनियोग लेखें १६५७-५८ तथा लेखा परीका प्रतिवेदन, १६५६ पर लोक लेखा समिति का प्रतिवेदन। खं० २११, पृ० ६७१।

१६६०-६१ के आय-व्ययक मे आनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-प्रनुदान संख्या १६-लेखा शीर्षक २७--न्याय प्रशासन। खं० २११, पृ० ६६२।

श्रनुदान संख्या १७-लेखा शीर्षक २८-जेल। खं० २११, पृ० १००२-१००३।

गन्ने के ऋय मूल्य से संबंधित मार्च, १६६० के ग्रत्यसूचित तारांकित प्रक्त ४-६ के विषय पर विवाद। खं० २११, पु० ७०८।

सिंवाई विभाग, मिर्जापुर के ४०० मजदूरों की छटनी के कारण श्रो रमापति दुबे द्वारा श्रनशन के संबंध में नियम ५२ के श्रन्तर्गत सूचना। खं० २११, पृ० ६७३।

श्रील का पानी--

प्र०वि०--पिसनहरी गांव की----निकालने का सुझाव। खं० २११, पू० ३५८। z

### टाउन एरियाम्रों---

प्रविष्यारेखपुर जिले की ---में जमींदारी समाध्त करने का विचार। खं० २११, प्० ६४७-६४८।

टाडन बैक---

प्र०वि०----, उन्नाव संबंधित कथित प्रार्थना-पत्र । खं० २११, पु० ५४८ ।

टो ०ए०--

प्रविष्ठ--बरेली राडवेज क्षेत्र के कुछ कमचारियों को---न मिलना। खंठ २११, पृठ १३३।

### टीकाराम, श्री--

देखिये"प्रश्नोत्तर"।

१६६०-६१ के ग्राय-व्यवक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-ग्रनुदान संख्या २७-लेखा शोर्षक ४१ श्रीर ६१-क-विद्युत योजनाग्रों की स्था-पना परव्यय तथा श्रनुदान संख्या ५१-लेखा शोर्षक ६१-क-विद्युत योजनाग्रों पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय को छोड़कर)। खं० २११, पू० २६३-२६४।

श्रनुदान संख्या ४७—लेखा शीर्षक ६८— सिंचाई, नीचालन, बांध श्रौर पानी के निकास संबंधी कार्यों का निर्माण, श्रनुदान संख्या १०—लेखा शीर्षक १७, १८ श्रौर १६—ख—राजस्व से किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण कार्य तथा श्रनुदान संख्या ११—लेखा शीर्षक १७, १८, १६ श्रौर ६८— सिंचाई स्थापना पर व्यय। खं० २११, पू० २४०—२४१।

टोकाराम पुजारी, श्री---

देखिये"प्रश्नोत्तर"।

१६६०-६१ के श्राय-व्ययके में श्रनुवानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनुवान संख्या २१-लेखा शीर्षक ३८-चिकित्सा तथा श्रनुवान संख्या २२-लेखा शीर्षक ३६-जन-स्वास्थ्य । खं० २११, पू० ८७६-८८०। अनुदान संख्या ३४--लेखा शीर्षकः ५०सार्वजिनक निर्माण-कार्य और ५०क-राजस्व से वित्त पोपिस नागिरक
निर्माण-कार्यो पर पूंजी की लागत,
अनुदान सख्या ३५-लेखा नीर्षकः
५०-नागरिक निर्माण-कार्य, केन्द्रोय
सड़क निधि से वित्तीय सहायता,
अनुदान संख्या ३६-लेखा शीर्षक
५०-नागरिक निर्माण-कार्य श्रीर
६१-राजस्व लेखे से बाहर नागिरक
निर्माण-कार्यो की पूंजी का लेला
तथा अनुदान संख्या ५०-लेखा शीर्षकः
६१-राजस्य लेखे के बाहर नागिरक
निर्माण-कार्यो का पूजी लखा। ख०
२११, पू० ६४-६५।

श्रनुदान संख्या ३८-लेखा शीर्षकः

४४-दुभिक्ष सहायता तथा श्रन्दान
संख्या २--लेखा शीर्षकः ७भू-राजस्य (मालगुजारी)। ख०
२११, पृ० ७४५।

विभिन्न अनुदानों पर विवादार्थ समय-निर्धारण। ग्वं० २११, प्० ४५१।

----- के निलम्बन की समाप्त करने का सुझाय। यां० २११, पू० ६४३--६४७।

प्रक्तों का उत्तर न सिलने पर श्रापति । वं० २११, पृ० ३६८।

मिलियाना शुगर मिल, मेरठ को मिलियाना गांव की भूमि का बलपूर्वक पुलिस द्वारा कब्जा दिलाने के सम्बन्ध में नियम ५२ के श्वन्तर्गत सूचना। खं० २११, पृ० ५५१।

टोन--

प्रविश्-मार्ख कुम्भी मेला, इलाहाबाद में दो गई ----। खं० २११, पु० १०-११।

टेविनकल इंस्टीट्यूट्स---

टेविनकल स्कूल--

प्र० वि०--तरेन्द्रतगर में----स्रोलने की प्रार्थना। खं० २११, पु० १२४।

#### देलीफोन--

प्र० वि०--गोरखपुर जिले के थानों में---लगाने की योजना। खं० २११, पृ० ३४५।

#### टेलीफोन तारों---

प्र० वि०—इटावा जिले में———— का काटा जाना। खं० २११, पृ० ३६२।

### टेस्ट वर्क--

प्र० वि०--गोरखपुर तथा देवरिया जिलों में----का मजदूरी की शरह। खं० २११, प्० ३४४-३४५।

### देस्ट वर्क्स---

प्र० वि०--देवरिया जिले में----की मजदूरी के सम्बन्ध में शिकायत। खं० २११, पृ० ३४०-३४१।

### टेस्ट वर्क्स चार्ज आफिसर्स--

## ट्रक दूर्घटना--

प्र० वि०-- बंशी बाजार की---। खं० २११, पू० ६६७।

## ट्रान्सवोर्ट आफिस--

## ट्रेजरी--

प्र० वि०------एवं कलेक्ट्रेट के क्लकों का वेतन। खं० २११, पृ० · ६६६।

#### ₹

# डकैसियां--- .

प्र० वि०---भः इसला तथा मझौली ग्राम में -----। खं० २११, पृ० ७१४--७१६। प्र० वि०--जिला रायबरेली में चोरियां व----। खं० २११, पु० ६५८।

प्र० वि०--फर्दखाबाद जिले में----। खं० २११, प्० ६६४।

प्र० वि०--फर्रुखाबाद जिले में----ग्रौर कत्ल। खं० २११, पृ० ३४२।

प्र० वि०--बस्ती जिले में----तथा कत्ल। खं० २११, पृ० ३४२।

### डकैतियों---

बाराबंकी जिले में--- से उत्पन्न परिस्थिति पर कार्य-स्थगन प्रस्ताव की सूचना। खं० २११, पृ० ३६८।

#### डकैती--

प्र० वि०—-ग्रादिलनगर ग्राम की---। खं० २११, पृ० ३४४।

प्र० वि०--फर्दखाबाद जिले में----व बारल के अभियोग। खं० २११, पृ० ३४७।

#### डाके---

प्र० वि०--तीतापुर जिले में कत्ल, ---एवं चोरियां। खं० २११, पृ० ६६१।

#### डाक्टर--

प्र० वि० -- धाराबंकी जिले में पुराने --- य कम्पाउन्डर। खं० २११, प्०३४८।

#### डाक्टरों--

प्र० वि० — जालौन जिले के ग्रस्पतालों में ——— की कभी । खं० २११, प्०३३७।

## डिग्री कालेज--

प्र० वि० --प्रत्येक जिले में ----स्रोलने की प्रार्थना । स्रं० २११, पृ० ६४८ ।

### डिग्री कोर्स--

प्रदेश में ३ वर्ष के --- के सम्बन्ध में नियम ५२ के अन्तर्गत गृह मंत्री का वक्तव्य । खं० २११, पृ० २४२-२४६। ष्डिप्टी कलेक्टरों--

प्र० वि० --- तहसोलदारों व -----फी पदोन्नित । खं० २११, पृ० १२५ डिन्डो सेकेंडरीज---

> प्र० जि॰ -- सिववालय में तीत वर्ष से श्रिविक कार्य करने वाले सेकेंटरीज तथा ----। खं॰ २११, पृ॰ १३२।

डी० सी० एक०---

प्र० वि० --- -----, स्राजमगढ़ की जांच रियोर्ट । खं० २११, पृ० ४४२।

डेपूटेशन--

प्र० वि० -- महानगरपालिकाश्रो तथा नगरपालिकाश्रों पर ---- के लिये सुपरिटेन्डेन्ट। खं० २११, पृ० २४--२६।

ड्राइवरॉ---

प्र० वि० -- मेरठ रोडवेज डिवीजन में कंडक्टरों व ---- की सुविधाये बढ़ाने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० =३७-=३=।

प्र० वि० --- --- व कन्डक्टरों के लिए खत-स्टेज़नों पर विश्राम-गृह न होना। खं० २११, पृ० ११८-११६।

त

तहसीसवारों---

प्र० वि० --- --- व डिप्टी कलेक्टरों को पदोस्रति । खं० २११,पृ० १२४ ।

ताष्ट्राष्ट्र सहकारी समिति---

प्र० वि० -- सकरार में --- का निर्माण । खं० २११, पृ० १२३-१२४।

लारांकित प्रक्त ३--४---

१७ फरवरी, १६६० के ------से सम्बद्ध भ्रतुपूरक प्रक्त के उत्तर का जोषन । खं० २११,पृ० २६। तारांकित प्रक्त ४४-४६--

२६ फरवरी, १६६० के -----से सम्बद्ध एक अनुपूरक प्रश्न के उत्तर के सम्बन्ध में गृह उपमंत्री का वक्तव्य । खं० २११, पृ० ६७६--

ताराचन्द माहेब्बरी, श्री---

देखिने "प्रक्रनोत्तर"।

१६६०-६१ के अत्य-व्ययक मे अनुदानों के लिए मागों पर मतदान--श्रनुदान संख्या १७--नेखा शोषंक २८--जेल। खं०२११,पृ० १०००-१००१।

श्चनुदान संख्या २७- — नेखा शीर्षकः ४१ श्रोर ८१- क- विद्युत योजनाश्चों की स्थापना पर व्यय तथा श्चनुदान संख्या ५१- नेखा शीर्षक. ८१- क- विद्युत योजनाश्चों पर पूंजी की सागत (स्थापना व्यय का छोड़ कर) । खं० २११, पृ० २८३--२८४।

श्रनुदान संख्या ३४--- नेखा दीर्वक ५०--सार्वजनिक निर्माण-कार्य श्रीर ५०-क-राजस्व से विस वोषित नार्गारक-निर्माण-कायौ पर पृजी की लागत, श्रतुवान संख्या ३५-- चेला जोवंकः ५०-नागरिक निर्माण-कार्य, केन्द्रीय सङ्क निषि से विसीय सहायता, धनुवान संख्या ३६--पेखा शोर्वक ५०-नागरिक निर्माण-कार्य = १- राजस्व लेखें से बाहर नागरिक निर्माण-कार्योः की पुंजी तया श्रनुदान संख्या ५०-नेखा शोधंक न१-राजस्य लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कायी का पूंजी सेखा। खं० २११, पृ० ガメーラロ 1

त्रत्वान संस्था ४२-लेका जीवंक ५७-प्रकीर्ण स्थय तथा धनुवान संस्था १५-वेका सीवंक २५-गांव सभायें श्रीर पंचायते । सं० २११, पू० ५७६-५=१। तिब्बत-भारत सीमावती भागों--

> १९६०–६१ के त्राय-व्ययक **ग्र**नुवानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रतदान संख्या ३४--नेखा शीर्षक ५०- सार्वजनिक निर्माण-कार्य श्रौर ५०-क- राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण कार्यों पर पुंजी की लागत, श्रनुदान संख्या ३५-लंखा शीर्षक ५०-नागरिक निर्माण-कार्यः, केन्द्रीय सड्क निधि से वित्तीय सहायता, श्रनुवान संख्या ३६-लेखा शोर्धक ५०-नागरिक निर्माण -कार्य ग्रौर ८१-- राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तया ग्रनुदान संख्या ५०-लेखा क्षीर्थक ८१–राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पंजी लेखा। खं० २११, पृ० ६४–६६ ।

तेजबहाद्र, श्री--

देखिये 'श्रक्तोत्तर"।

१६६०-६१ के भ्राय-ध्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-अनुदान संख्या ४२-लेखा शीर्षक ५७- प्रकीर्ण व्यय तथा अनुदान संख्या १५-लेखा शीर्षक २५-गांव सभाएं श्रीर पंचायतें। खं० २११, पृ०५८१- ५८३।

तेवूं की पत्ती--

प्र० वि०-बांदा बन खंड में------ का नीलाम। खं२११ पृ० ६३६।

तेजासिंह, श्री

१६६०-६१ के श्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतवान-प्रमुदान संख्या २७-लेखा शीर्थक ४१ श्रीर ६१-क- विद्युत योजनाश्रों की स्थापना पर व्यय तथा श्रनुदान संख्या ५१-लेखा शीर्थक ६१-क-विद्युत योजनाश्रों पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय की छोड़ कर)। खं० २११, प्० २६६-३००। त्याग-पत्र--

थ

थानेवार--

प्र० वि--कुरावली के---- के विरुद्ध शिकायत । खं० २११, पृ० ६४३ ।

थानेदारों--

प्र० वि०-- शहपऊ थाने से---- के तबादले। खं०२११,पू०३४५।

थानों--

प्र० वि०———के हवालाती कैवियों द्वारा कथित श्रास्त्रहत्या खं० २११, पू० ६५८।

द

दत्त, श्री एस० जी०---

१६६०-६१ के स्राय-व्यक्य में स्रनुदानों के लिए मांगों पर मतदान-श्रनुदान संख्या ३-लेखा द्वीर्थंक द-राज्य स्राबकारी। खं० २११, पृ० ४६२, ४६६, ४६७।

ग्रनुदान संख्या ७—लेखा तीर्षक १२— मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय ग्रनुद न संख्या ३१—लेखा-त्रीर्षक: ४७—प्रकीर्ण विभाग ग्रौर ४४—उडुयन, ग्रनुदान संख्या ५२— लेखा तीर्षक ७०—जन-स्व.स्थ्य संबंधी सुधार पर पंजी की लागत तथा द२—राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा। खं० २११, पृ० ४११—४१२, ४२२।

दधीचनाय, श्री---

मिश्रिल में ——के मे ले में श्रनिषकृत सिनेमा द्यों के कारण सरकारी आय में कमी के सम्बन्ध में नियम ५२ के अन्तर्गत मुख्य मंत्री का वक्तव्य । खं० २११, पू० ६४६—६४६।

### [दधीचनाय, श्री---|

मिश्रिल में — के मेले में ग्रनिष्कृत सिनेमा शो के कारण सरकारी श्राय में कमी के सम्बन्ध में नियम ५२ के ग्रन्तर्गत सूचना। खं० २११, पृ० ६४८।

#### दन्त डाक्टर---

प्र० वि० — लखनऊ के बलरामपुर ग्रस्पताल में स्थायी —— न होना। खं० २११, प्० ३४७।

### दर्शनसिंह, श्री---

#### ववाइयां---

प्र० वि० --- पसगवा में ग्रस्पताल की ----, दाउय तथा ते टरी इन्स्पे-क्टर। खं० २११, प्० ३५१।

# दशरथप्रसाव, श्री---

देखिये "प्रक्रनोत्तर"।

# दहगवां तालाब—

प्र० वि० — बदायूं जिले का —— । खं० २११, पु० ३६४ ।

# दहगवां प्राइमरी स्कुल--

प्र० वि० — ——, जिला दायू। खं० २११, पृ० ३६५।

### दाइयां---

प्र० वि० — पसगर्था में ग्रस्पताल की दवाइयां, — तथा सेनेटरी इन्स-पेक्टर । खं० २११, पृ० ३४१।

### दाखिल खारिज--

प्र० वि०—लहरपुर परगने में भूमिषर काश्तकारों की——की कार्यवाही। खं० २११, पू० ३५२।

# वीनवयालु शास्त्री, श्री---

 इन्टरमीडिएट बोर्ड के इम्तहान के कारण मुसलमान परीक्षायियों को जुमा की नमास से वंजित करने के सम्बन्ध में नियम ४२ के प्रन्तगंत जिला उप-मंत्री का वक्तव्य । खं० २११, पृ० ६७४।

हाईस्कूल श्रीर इंटरमीडिंग्ट बोर्ड के इम्तहान के कारण मुसलमान परीक्षायियों को जुमा की नमाज से वंचित करने के संबंध में नियम ५२ के श्रन्तर्गत सूचना । खं० २११, प० ७३६,।

### दीपंकर, श्राचार्य--

देखिए, "प्रश्नोत्तर"।

भ्रत्पसूचित तारांकित प्रश्नों के उत्तर न मिलने तथा काय-सूची में श्राधिक प्रश्न रखने के सम्बन्ध में श्रापत्ति। खं० २११, पृ० ३६६।

उत्तर प्रदेश जिला परिषद् विधेयक, १९५९ पर संयवत प्रयर समिति द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की प्रयीध में वृद्धि का प्रस्ताय । १७० २११, ५० ५५९।

१६६०-६१ के स्नाय-व्ययक मे स्नन-वानो के लिये मागो पर मतदान-**ग्रनुदान संरया ७--लेगा शीवफ** १२-मोटर गा इसी के है दो के कारम व्यस, अनदाप ३१-लंखा शीर्षक ४७--- प्रकीर्ण ४४---- उरुयन, ग्रीर विभाग श्रानुदान सम्या ५२--लेखा शीर्षकः ७०-जन-स्वास्थ्य सबंघी मुधार पर पूंजी की लागत तथा मर--राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण कायी का लेखा। खं० २११,५० ४०६-४०७।

अनुदान संख्या १७—लेला शीर्षक २८ —जेल । खं० २११, ए० १००६— १००८।

अनुवान संख्या ३ = लेखा शीर्षक ४४ - बुर्मिक सहायता तथा अनुवान संख्या २ - लेखा शीर्षकः ७ - भू-राजस्य (मालगुजारी) । खं० २११, पु० ७४२ - ७४४। श्रनुदान संख्या ४७—लेखा शीर्षक ६८— सिंचाई, नौचालन, बांघ श्रौर पानी के निकास संबंधी कार्यों का निर्माण, श्रनुदान संख्या १०—लेखा शीर्षक १७, १८, श्रौर १६—ख—-राजस्व से किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण कार्य तथा श्रनुदान संख्या ११—— लेखा शीर्षक १७, १८, १६ श्रौर ६८—सिंचाई स्थापना पर व्यय । खं० २११, पृ० २७१।

श्री टीकाराम पुजारी के लिलम्बन को समाप्त करने का सुझाव । खं० २११, पृ० ६४३, ६४७ ।

मिलयाना शुगर मिल, मेरठ, को मिलयाना गांव की भूमि का बलपूर्वक पुलिस द्वारा कब्जा दिलाने के सम्बन्ध में नियम ५२ के अन्तर्गत गृह उप-मंत्री का वक्तव्य । खं० २११, पृ० ७४१, ७४२ ।

### दीपनारायणमणि त्रिपाठी, श्री--

देखिए "प्रश्नोत्तर"।

१६६०-६१ के श्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—
श्रनुदान संख्या २७—लेखा शीर्षकः
४१ श्रीर ८१-क- विद्युत योजनाश्रों
की स्थापना पर व्यय तथा श्रनुदान
संख्या ५१—लेखा शीर्षकः ८१—
क—विद्युत योजनाश्रों पर पूंजी की
लागत (स्थापना व्यय को छोड़कर)।
खं० २११, पृ० २८७-२८६।

श्रनुदान संख्या ३२—लेखा शीर्षक ४७— सूचना संचालन कार्यालय । खं० २११, पृ० ६७८।

गन्ने के क्रय मूल्य से संबंधित द मार्च, १६६० के म्रल्प सूचित तारांकित प्रक्त ४-६ के विषय पर विवाद । खं० २११, पु० ७०८ ।

प्रवेश में ३ वर्ष के डिग्री कोर्स के सम्बन्ध में नियम ५२ के ग्रन्तर्गत गृह मंत्री का वक्तव्य । खं० २११, पू० २४५।

प्रश्नोत्तर के सम्बन्ध में श्रापत्तियां । खं० २११, पू० १३८। लखनऊ विश्वविद्यालय के उप-कुलपति पद पर श्री कालीप्रसाद की नियुक्ति के सम्बन्ध में याचिका । खं० २११, पृ० ३६७।

### दुर्योधन, श्री--

१६६०--६१ के आय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान---अनुदान संख्या ३४--लेखा शीर्षकः नागरिक निर्माण-कार्य ऋौर ५०--क—–राजस्व से वित्त पोषित नाग-रिक निर्माण कार्यो पर पूंजी की लागत, **ग्रमुदान संख्या ३५—लेखा शीर्षकः** ५०--नागरिक निर्माण-फार्य-केन्द्री य सड़क निधि से वित्तीय सहायता, ग्रनुदान संस्या ३६——लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण कार्य और =१-राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा ग्रनुदान संख्या ५०—लेखा शीर्षक ८१--राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्य का पुंजी लेखा । २११, पु० १५०-१५२।

देवकीनन्दन विभव, श्री— देखिये "प्रश्नोत्तर"।

देवनारायण भारतीय, श्री--

देखिये "प्रश्नोत्तर"।

श्रत्पसूचित तारांकित प्रश्नों के उत्तर न मिलने तथा कार्य-सूची में श्रिधिक प्रश्न रखने के सम्बन्ध में श्रापत्ति । खं० २११, पृ० ३६६।

१६६०-६१ के श्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिए मांगों पर मतदान-श्रनुदान संख्या ३--लेखा शीर्षक द-राज्य श्रावकारी । खं० २११, पृ० ४४२, ४५३, ४५४।

देवकीप्रसाद मिश्र, श्री— देखिये "प्रक्रोत्तर"

# दैवी श्वापत्तियों---

प्र० वि०--फिसलों को --- से बचाने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० ६४५-६४६ । दौरे-

प्र० वि० - सभासिववो के बुलन्दशहर के -- -- पर व्यय । खं० २११, पृ० =३०।

### द्वारिकाप्रसाद, श्री---

देखिये "प्रश्नोत्तर"

१६६०-६१ के आय-व्ययक मे अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--- प्रनु-वान संख्या ३४--लेखा शीर्षकः ५०——सार्वजनिक निर्माण-कार्य श्रीर ५०--क---राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यो पर पूंजी की लागत, ग्रनुदान संख्या ३५—लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य, केन्द्रीय सङ्क निधि से विस्तीय सहा-यता, भ्रनुदान संख्या ६---लेखा ज्ञीर्षक ५०---नागरिक निर्माण-कार्य श्रौर ⊏१---राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा भ्रनुदान संख्या ४०---लेखा शोर्षक ५१—राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यो का पूंजी लेखा। खं० २११, प० ६३— EX 1

ध

घनुषधारी पांडेय, श्री---

**बेखिये "प्रक्नोत्तर"।** 

# धर्मदस वैद्य, श्री---

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान— अनुदान संख्या ७ — लेखा शोर्षकः १२ — मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, भ्रनुदान संख्या ३१ — लेखा शीर्षक ४१ — प्रकीर्ण विभाग भौर ४४ — उडुयन, भ्रनुदान संख्या ५२, लेखा शीर्षक ७० — जन-स्वास्थ्य

सम्बन्धी सुधार पर पूंजी की लागत तथा द२—-राजस्त लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण कार्यी का पूंजी लेखा। खं० २११, पृ० ४००-४०२।

यू० पी० मोटर वेहिकिल्म रूल्स, १६४० मे प्रस्यापित सज्ञोधन । गां० २११, पृ० ६४३।

### धर्मासह, श्री---

१६६०-६१ ते श्राय वनात म प्रदानों के लिये गों पि मन्ता - श्रादान संख्या २०-- गा द्योर्व तः ४१ श्रीर ६१-५- गि ता निक्ति की स्थापना पर व्यय तथा श्रादान संख्या ४१-- नेता शीर्व ति ६१-४-विद्युन्योजनायों पर्युक्त ति लागत (स्था ना व्यय को खोड़कर) । खंव २११, प्रव २६४-२६७।

श्रनुदान संख्या ४७——लेला शीर्षक ६८— सिंचाई, नौसालन, बांध श्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यो का निर्माण, श्रनुदान संल्या १०——लेखा शीर्षक १७, १८ श्रौर १६—ख— राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण-कार्य तथा श्रनुदान संल्या ११—लेला शीर्षक १७, १८, १६ श्रौर ६८—सिंचाई स्थापना पर यय । सं० २११, पू० २५२—२५६, २६४।

धान---

प्र० वि० — फर्रखाबाद जिले मे ——— का सुख जाना। खं० २११, पृ० ६६८।

षान (का निर्यात)---

प्र० वि० — राज्य से — व गेहूं का निर्यात । खं० २११, पु० ५३५।

षान की उपज---

प्र० वि०----, कृषि फार्मों का उत्पादन। सं० २११, पृ० ५४४।

धान को गानिशीं---

प्रव बि॰ --- गोरखपुर जिले में ----का पकड़ा जाना। खं॰ २११,पु॰ ५२१। घान के बोज--

प्र० वि० -- खोरो जिले में-----की वसूलो मुल्तवो करने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० ५३८।

प्र॰ वि॰ — ब्रजमनगंज बोज भण्डार से वितरित ———को शिकायत । खं॰ २११, पृ॰ ५३१।

धारा ११०--

प्र० वि० -- इटावा जिले में भारतीय दण्ड विघान की --- के कथित मुकदमें । खं० २११, पू० ३३०।

न

नक्शा

प्र० वि० — म्रानन्द बाजार गोदौलिया का ———। खं० २११, पृ० ७३६।

नगरपालिका (श्रलीगढ़)---

प्र० वि० — ——का प्रारम्भिक पाठशालायें खोलने के लिये प्रार्थना-पत्र । खं० २११, पृ० ३४१–३४२ ।

नगरपालिका (इलाहाबाद)--

प्र० वि० --- ----का वाटर तथा हाउस टैक्स। खं० २११, पृ० ७२५-७२६।

प्र० वि० --- ---- में वापसो चुंगो का बकाया । खं० २११, पृ० ७२८--७२६ ।

नगरपालिका (एटा)--

प्र० वि० — — के निकाले गयें कर्मचारों। खं० २११, पृ० २३ – २४।

नगरपालिका (गोरखपुर)---

---- का स्पेशल श्राडिट । खं० २११, पृ० ११ ।

प्र० वि०— ---को श्रतुदान तथा ऋण। खं० २११, पृ० १५-१७।

प्र० वि०—— —— में जटाशंकर पोखरे की खराब हालत । खं० २११, पृ० ७२० । नगरपालिका (गौरा बरहज)---

गौरा बरहज----में पेय जल योजना लागू करने की प्रार्थना । खं० २११, पु० ७२१।

नगरपालिका (फैजाबाद)---

प्र० वि० -- --- के कर्मचारियों का वेतन । खं० २११, पृ० ७२८।

नगरपालिका (मऊरानीपुर)---

प्र० वि० --- ---- की जल कल योजना । खं० २११, पृ० १७।

नगरपालिका (रामनगर)--

----संबंधित क्वार्टर तथा ऋण । र्खं० २११, पृ० ७३०-७३१।

नगरपालिका (वाराणसी)---

प्र० वि० —— ——— के निर्वाचन पर ज्यय । खं० २११, पृ० २०–२१ ।

नगरपालिका (सहारनपुर)--

----द्वारा लाउड स्पोकरों के प्रयोग पर प्रतिबन्ध के सम्बन्ध में स्वायत्त शासन उपमंत्री का वक्तव्य । खं० २११, पु० ८४१-- ६४२ ।

नगरपालिका (सोरों)--

प्र० वि० -- ---- के ग्रध्यक्ष के विद्धा ग्रविस्वास का प्रस्ताव । खं० २११, पृ० ७२२-७२३।

नगरपालिकाओं---

प्र० वि० -- नगरमहापालिकाश्रों तथा
--- के डेबुटेशन पर लिये गये
सुर्गीरटेन्डेंट । खं० २११, पू०
२५-२६।

नगर महापालिकाश्रों तथा ---- में डेपुटेशन पर श्राये श्राफिस सुपरि-टेन्डेन्ट । खं० २११, पू० ७३८ ।

नगर प्रमुखों---

प्र० वि० -- --- को मुख्य मंत्रो से भेंट। खं० २११, पु० ७१६-७२०।

प्र० वि० --- महापालिकाओं के ----, उपनगर प्रमुखों का वेतन ,भत्ता तथा श्रागरा महापालिका कर में वृद्धि । खं० २११, पृ० १६-२०। नगरमहापालिका-

प्र० वि०——— के उद्यान विभाग के कर्मचारी। लं० २११, प० ७३३।

नगरमहापालिका (इलाहाबाव) --

प्र० वि० --- --- मं वापसो चुंगी का बकाया । ग्यं० २११, प० ७२८--७२६।

प्र० वि० - ---- तथा नगरपालि-काम्रों में छेपुटेशन पर माथे म्राकिस सुपरिन्टेन्डेन्ट । खं० २११, प्० ७३८।

नगरमहापालिका (वाराणसो) ---

प्रव वि---के निर्वाचन पर व्यय। खं० २११, पृ० २०--२१। नगर महापालिकान्रों --

> प्र० पि० -- ---- तथा नगरपा-लिकाम्रों के डेयुटेंगन पर लिये गरे सुपींटिन्डेन्ट। खं० २११, प्० २४--२६।

नत्थियां--

----- 1 किं २११, पू० ६६---१०४, २११---२२८, ४२३--४३६, ६०६---६१८, ७६६---८३, ६०२---६३०, १०३४--१०४७ ।

नन्दकुमारदेव वाजिष्ठ, श्री---

देखिये "प्रक्तोत्तर"।

नन्दराम, थो---

श्रागामो कार्य-ऋम के संबंध में जानकारी की मांग। खं० २११, प्०५५२।

१६६०-६१ के आय-व्ययक में श्रनुदानों के नित्रे मांगों पर मतदान-स्रनुदान संख्या ४२-जेला जीर्षक ५७-प्रकीणें व्यय तथा श्रनुदान संख्या १४-जेला जीर्षक २४-गांव सभाएं श्रोर पंचायते। खं० २११, पू० ५५६, ४४८, ५७३-५७५, ५८४, ५८५। अनुदान संख्या ४७-चेला शोर्षक ६८-सिचाई, नौचालन, बांब और पानो के निकास सम्बन्धो कार्यों का निर्माग, अनुदान संस्था २०-लेला शोर्षक १७, १८ और १६-ख-राजस्व से किरे जाने वाले निचाई के निर्माण कःपं तथा यनुदान सण्या ११ नेला शोर्षक १७, १८, १६ और ६८-मिच ई स्थापना पर व्यय । खंव २११, ग० १८३, १६५ १६७ ।

नरेन्द्रसिंह विषट, श्री--

१६६०-६१ के श्राय-ग्रंपाक की माणें पर भिन्नावार्थ शिक्ता कार्यक्रम मे परिवर्तन करने पर श्रापति । खं०२१, प्०३०।

१६६० ६१ के आय-घ्यपत में प्रा,वानों के निर्मे मांगां पर माप्रान अनुवान सम्या ५ - नेवा का खंक १०--वन । खं० २११, पु० ४६६ ४७१, ४६७,४६६ -४०१।

१७ फरवरो, १६६० हे तारांकिन प्रक्त ३-५ से सम्बद्ध अत्पूरक प्रक्त के उत्तर का शोधन। खं० २११, पृ० २९।

नल--

प्र० वि०--परायमारा ग्राम में सार्वजितिक-----नगाने का प्रार्वे गा। खं० २११, प्र० ७२६ ।

नवलिकशोर, श्री---

उत्तर प्रवेश विनियोग त्रिश्रेयक, १६६०। खं० २११, पु० १०२३, १०२४ -१०२७।

स्रतुवान संख्या ४७-लेखा शोर्षक ६८-श्विचाई, नौचालन, बांध स्रोर पानो
के निकास सम्बन्धो कार्यों का निर्माण,
स्रतुवान संख्या १०-लेखा शीर्षक
१७, १८, १६ स्रोर १६-त-राजस्व
से किये जाने वाले निचाई के निर्माणकार्य तथा स्रतुवान संख्या ११-लेखा
शीर्षक १७, १८, १६, स्रोर ६८-शिचाई स्था गा पर व्यय । खं०
२११, पु० १६७---२००।

नवीन मार्ग--

प्र> ति --- तरकारो बसों के ---। खं २११, पु० ६३४।

ागरिक निर्माण-कार्य--

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक मे ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतद न-श्रनुदान संख्या ३४-लेखा शीर्षक ५०-----—-श्रौर ५०-क-राजस्व से वित्त-पोतित नागरिक निर्माण कार्यों पर पुंजी को लागत, श्रनुदान संख्या ३५---लेखा शीर्षक ५०-----**केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय** सहायता, ग्रनुदान नंख्या ३६—लेखा शोर्षक ५०- ---- ग्रौर ८१--राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण कार्यों की पूंजी का लेखा तथा श्रनुदान संख्या ५०-लेखा शीर्षक ८१-राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा। खं० २११, पु० ३६-६८, १४२-१६४

श्रमु ान संख्या ३७-लेखा द्योषंक ५०----के लिये सहायक श्रमुदान । खं० २११, पृ० ६५१-६७४ ।

नागेश्वरप्रसाद, श्री---

देखिये "प्रश्नोत्तर "।

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक रे भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-भ्रनुदान संख्या ४-लेखा शीर्षक १०-वन । वं०२११, पू० ४८४-४८७ । श्रनुदान संख्या ४२—तेखा शीर्षक ५७—
• प्रकीणं व्यय तथा श्रनुदान संख्या
१५—तेखा शीर्षक २५—गांव सभायें
ग्रोर पंचायते । खं० २११, पृ०
५६३ ।

नामों की रजिस्ट्री— प्र० वि०—रोजगार दफ्तरों में———। खं० २११, पृ० ८३३ ।

नारायणदत्त तिवारी, श्री--देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

> उत्तर प्रदेश जिला परिषद् विषेयक, १६५६ पर संयुक्त प्रवर समिति द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की स्रविध में वृद्धि का प्रस्ताव । खं० २११, पृ० ८६० ।

> उत्तर प्रदेश विनियोग विधेयक, १६६०। खं० २११, पु॰ १०२३-१०२४, १०३३ ।

> १६६०-६९ के आय-व्ययक से श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनुदान संख्या १६-लेखा शीर्षक २७--याय प्रशासन । खं० २११, पृ० ६७७ ।

> त्रनुदान संख्या २७—लेखा शीर्षंक ४१ ग्रौर ८१—क-विद्युत योजना की स्थापना पर व्यय तथा ग्रनुदान संख्या ५१—लेखा शीर्षंक ८१—क-विद्युत योजनाग्रों पर पूंजी की लागत, (स्थापना व्यय को छोड़कर) । खं० २११, पृ० २७४, ३१२ ।

> अनुदान संख्या ३४—लेखा शीर्षंक ५०—
> नागरिक निर्माण-कार्य ग्रौर ५०-क—
> राजस्व से वित्त पोषित नागरिक
> निर्माण कार्यों पर पूंजी की लागतः,
> अनुदान संख्या ३५—लेखा शीर्षंक
> ५०—नागरिक निर्माण कार्यः, केन्द्रीय
> सड़क निधि से वित्तीय सहायता,
> अनुदान संख्या ३६—लेखा शीर्षंक
> ५०—नागरिक निर्माण-कार्य ग्रौर
> ५१——राजस्व लेखे से बाहर नागरिक
> निर्माण कार्यों की पूंजी का लेखा
> तथा अनुदान संख्या ५०—लेखा
> शीर्षंक ६१—राजस्व लेखे के बाहर
> नागरिक निर्माण कार्यों का पूंजी
> लेखा । खं० २११, प्० १४३ ।

# [नारायणदत्त तिवारों, श्री--]

श्री टीकाराम पुजारी के निलम्बन को समाप्त करने का सुझाव । खं० २११, पृ० ६४४, ६४६ ।

नियम ४२ के श्रन्तर्गत दिये गये विषयों के सम्बन्ध में जानकारी । खं० २११, पृ० ६५० ।

प्रदेश में ३ वर्ष के डिग्री कोसं के सम्बन्ध में नियम ५२ के श्रन्तर्गत गृह मन्त्री का वक्तव्य । खं० २११, ५० २४४ ।

मुख्य मन्त्री के विरुद्ध, प्रश्नों का उत्तर विसम्ब से देने पर विशेषाधिकार की भ्रवहेसना का प्रश्न उठाने की सूचना । खं० २११, पृ० ८५० ।

### नामंल स्कूल-

प्र० वि०- -मोहम्मदाबाद-गोहना का । स्रं० २११, पु० ३४७ । प्र० वि० । स्रं० २११, पु० ३४२--३४३ ।

#### निवेश---

श्री मोतीलाल ग्रवस्थी को सदन से बाहर जाने का ———— । खं० २११, पु० ६७२-६७३ ।

#### नियम ५२---

इन्टरमीडिएट बोर्ड के इम्तहान के कारण मुसलमान परीक्षायियों को जुमा की नमाज से बंखित करने के सम्बन्ध में — के श्रन्तर्गत शिक्षा उप-मन्त्री का वक्तव्य । खं० २११, पु० ६७४ ।

--- के घन्तर्गंस दिने गये विषयों के सम्बन्ध में जानकारी । खं० २११, पु० ६४६-६५१ ।

के अन्तर्गत घ्यान आकर्षणार्थ विषयों की सूचनायें । खं० २११, पु० २८, ३६८, ४५० ।

के अन्तर्गत ध्यान ग्राकर्षणार्थ विषयों के सम्बन्ध में सूचना । खं० २११, पू० १४१-१४२ । श्री गोविन्दिसिंह विष्ट द्वारा ——— के प्रन्तगंत दिये गये विषय के सम्बन्ध में जानकारी की मांग। खं० २११, पृ० २८–२६।

प्रदेश में ३ वर्ष के डिग्री कोर्स के सम्बन्ध में — के श्रन्तर्गत गृह मन्त्री का वक्तव्य । खं० २११, पृ० २४२— २४६ ।

मिलयाना गुगर मिल, मेरठ को मिलयाना गांव की भूमि का बल पूर्वक पुलिस द्वारा कब्जा दिनाने के सम्बन्ध में — के श्रन्तर्गत गृह उप-गन्त्री का वक्तव्य । एं० २११, पृ० ७४०—७४२ ।

मिलयाना शुगर मिल, मेरठ को मिलयाना गांव की भूमि का बलपूर्वक पुलिस द्वारा कब्जा विलाने के सम्बन्ध में — के अन्तर्गत सूचना। खं० २११, पू० ५५०-५५२।

मिश्रिस में वधीचनाथ के मेले में ग्रनिकृत सिनेमा शो के कारण सरकारी ग्राय में कमी के सम्बन्ध में क्यों के भन्तर्गत सूचना । खं० २११, पृ० ६४ ८।

सिंचाई विभाग, मिर्जा र के ४०० मजबूरों की छटनी के कारण श्री रमापति बूबे द्वारा श्रनदान के सम्बन्ध में के श्रन्तगंत सूचना । खं० २११, पू० ६७३-६७४ ।

हाई स्कूल धौर इन्टरमीडिएट बोर्ड के इम्तहान के कारण मुसलमान परीक्षाणियों को जुमा की नमाज से वंजित करने के सम्बन्ध में——— के अन्तर्गत सुचना । खं० २११, पु० ७३६ ।

# नियुक्तियां----

प्र० वि०—गोरखपुर रोडवेज क्षेत्र में —— । सं० २११, पू० =३६— =४० ।

# नियोजन कार्यासय---

प्रव वि० --- -- सीरी में बसकों का इन्टर व्यू। खं० २११, प्र ८४०।

#### नियोजन विभाग---

इ० वि०--गोरखपुर, देवरिया तथा
 म्राजमगढ़ जिलों में ---- के
 पुराने कर्मच।री । खं० २११, पृ०
 १२१-१२२ ।

#### नियोजन स्थार्यः समिति--

विकास तथा ———, लोक लेखा सिमिति तथा प्राक्कलन सिमिति के लिये निर्वाचित सदस्यों के नामों की घोषणा। खं० २११, पृ० ६७४— ६७६।

#### निवचिन--

९० वि०—-ग्राम पंचायतों के ----के लिये ग्रादेश । खं० २११, पृ० २४०-२४१ ।

प्र० वि०—वाराणसी नगरमहापालिका के ---पर व्यय । खं० २११, पृ० २०-२१ ।

सिमितियों के ----के सम्बन्ध में सूचना। खं० २११ , पृ० ३६६ ।

#### निलम्बन--

श्री टीकाराम पुजारी के ——को समाप्त करने का सुझाव । खं० २११, पू० ६४३–६४७ ।

#### नीलाम---

प्र० वि०—बांदा वन खण्ड में तेंदू की पत्ती का ————। खं० २११, प० ६३६ ।

#### नेताग्रों---

प्र० वि०—ग्रसरकारी प्रतिनिधियों, ग्राम एवं ब्लाक ———के लिये प्रशिक्षण योजना । खं० २११, प्०१३०-१३१।

### नेत्र चिकित्सा---

प्र० वि०---उर्सला हास्पिटल, कानपुर में ----सम्बन्धी यंत्रों की कमी। खं० २११, प्० ६५१--६५२।

### न्याय पंचायतों---

र ० वि०—बरेली जिले में ग्राम पंचायतों व ——का निर्माण न होना । खं० २११, पृ० ७३४-७३५ ।

#### न्याय त्रशासन--

१६६०-६१ के आय-व्ययक में अनुवानों के लिये मांगों पर मतवान-अनुवान सख्या १६-लेखा शीर्षक २७---। ख० २११, पृ० ६७७-६६५ ।

#### q

पंखे---

प्र० वि०--बर्सो में ---लगाना । खं० २११, पृ० ११४ ।

पंचधर्तीय योजना (श्रन्तर्गत)--

प्र० वि०—— —— उद्योग । खं० २११, पु० ६१६ ।

प्र० वि०—— ----रोजगार मिलना । र्खं० २११, प्० ८२०-८२१ ।

### पंचायत इन्स्पेक्टरों---

प्र० वि०————को ग्रधिक समय तक एक स्थान पर न रखने का सुझाव। खं० २११, पृ० ४।

### पंचायत मन्त्रियों---

प्र० वि०--ग्राजमगढ़ जिले में ---का निलम्बन । खं० २११, पृ०
७३८-७३६ ।

प्र० वि०-- --- के स्थानान्तरण के सम्बन्ध में अन्तरिम जिला परिषर्, श्राजमगढ़ का प्रस्ताव। खं० २११, प० ७१७-७१८।

### पंचायत मन्त्ररे---

प्र० वि०--विरो' जिले के ----। खं० २११, पृ० ७२३-७२४ । पंचायतराज मन्त्रियों--

प्र० वि०-- ---व सेकेटरियों की कियत बहाली । खं० २११, पृ० ७१६-७१७ ।

### पंचायत राज विभाग--

प्र० वि०—सोतापुर जिले के ---में हरिजन कर्मचारी । खं० २११,
पु० ७२४ ।

# पंचायतराज (सेक्रेटरियों)---

प्र० वि०-- ---मिन्त्रयों व सेक्रेटरियों की कथित बहाली । खं० २११, पु० ७१६-७१७ । पंबायत विभाग-

प्र० वि०—-वैतारी जिले के ----मे प्राप्तूचित जाति के कर्नवारी। ख० २११, प्० ७२७-७२८ । एकायत सेकॅटरियों---

> त्र० त्रि०--गोरषपुर तथा वाराणको दिशेजनीं से ----फाहटाया जाना। वं० २११, पृ० २१-२२।

पंचायत सेकें इरी- -

प्रव ति >---प्रदाम् जिले के ---- । व्यव २११, प्रव २६ ।

पटाले--

प्र० वि०-- बरेलं। में ---- से महिला का घावल होना । खं० २११, प्० ६४७।

पथराव--

प्र० वि०--इटावा में कम्युनिस्टों की सभा में ----। खं० २११, प्० ६५३-६५४।

पदाकरलाल श्रोवास्तव, श्री--

देखिये "प्रक्तोत्तर"।

१६६०-६१ के श्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनुदान संख्या ३७-ने आ शोर्षक ५०-नागरिक निर्नाण-कायों के लिये सहायक श्रनुदान । खं० २११, पृ० ६५२-६५३, ६६६-६७० ।

मनुदान संख्या ३८-ते वा शिर्षे ४४-दुमिन सहायता तथा प्रनुदान संख्या २-ते वा शोर्षेक ७-भू-राजस्व (माल-गुजारी) । खं० २११, पू० ७७४, ७७४-७७६ ।

प्रानी के सम्बन्ध में उपबस्या की मांग । खं० २११, पू० ६३६ ।

पब्लिक सर्विस कनीशन--

प्र० वि०—— ——— द्वारा श्रयोग्य घे(बित जिला सूचना श्रविकारी । खं० २११, पृ० ६४=-६५६ । पम्पों----

प्र० वि०--पैनपुरी में लगाये गये ---- में सम्बन्घ में शिकायत । खं० २११, पृ० ७३२-७३३ ।

परिगणित (जाति)---

प्र० वि०—फर्ष्टवाबाय जिले में पुलिस धांस्ट्रेबिचों की भनी मे——— तथा पिछड़ी जाति हे उम्मीदबार । खं० २११, पृ० १६७ ।

परिगणित (वर्ग)--

प्र० वि०—मुडोशियल गविस के धन्तर्गत ——— पिछड़े वर्ग केलंगा ग्यं० २११, प्० ३६३।

प्र० वि०—मार्तेटिंग श्रीयकारियों में ——तथा पिछड़े वर्ग के सोग। खं० २११, पू० ५४७।

परिवहन श्रायुरत कार्यालय---

प्रव वि --- --- पें लिपिकों की परीक्षा । खं २११, प्रव ५३७ ।

परिवाद ग्रिधिकारी--

प्र० वि०--कानपुर जिले के ----की विये गर्ने परिषाय-पत्र । खं० २११, पु० ३२७-३२८ ।

परिवाद-पत्र---

प्र० वि०-कानपुर जिला के परिवास ग्राविकारी की विये गर्वे ---- । खं० २११, पृ० ३२७-३२८ ।

परिचार नियोजन ---

प्र० वि०—निर्वत तथा पंतुक रोग-पीड़ित व्यक्तियों में ——की प्रभावी बनाने का सुप्ताव तथा स्वानक में कुर्ती के काटने से मृत्युएं। खं० २११, पृ० ६६५।

परिवार नियोजन केन्द्र---

प्र॰ वि०---वस्ती जिले में ---- । खं॰ २११, पु॰ ३५३-३५४ ।

### पशुपालन विभाग--

प्र० वि०——गोरखपुर के ———के उप-संचालक । खं० २११, पृ० ४४५ ।

### पहाड़ी सीमा प्रबन्ध--

प्र० वि०--सूचना विभाग के कर्मचारी द्वारा चाइ गैं ज कौसिल की ----विअथक सूचना देने की जांच । खं० २११, पृ० ८१३-८१४ ।

### पाइलेट श्रीजेक्ट योजनः---

प्र० चि॰——अर्लागढ़ जिले के लिये व्हीट फार्मिंग ———— । खं० २११, प्० ५३१—५३२ ।

#### पाठशालायें---

प्र० वि०--ग्रलीगढ़ नगरपालिका का प्रारम्भिक -----खोलने के लिये प्रार्थना-पत्र । खं० २११, पृ० ३४१-३४२ ।

### पानी---

प्र० वि०—रेलये स्टेशनो से गांध वालों को ——देने की प्रार्थना । खं० २११, प्० १७—१८ ।

### पार्टी के प्रनुपात--

सदस्यों को----स्था उनकी संख्या के श्रनुरार बोहाने का श्रवसर देने के सम्बन्ध में व्यवस्था। खं० २११, पू० ८४८।

#### पास--

प्र० वि०—विधायकों को रोडवेज बसों के ———देने की योजना । खं० २११, पृ० ३२०।

### पिछड़ी जाति---

प्र० वि०—फर्रबादाद जिले में पुलिस कांस्टेबिलों की भर्ती में परिगणित तथा ———के उम्मीदवार । खं० २११, प० ६६७ ।

### पिछड़ी जातियों--

प्र० वि०—एच० टी० सी० प्रशिक्षण में हरिजनों व——का मनोनयन। खं० २११, पृ०३४८।

### पिछड़े वर्ग--

प्र० वि०--जुडीशियल सर्विस के श्रम्तर्गत परिगणित व ---के लोग । खं० २११; पृ० ३६३ ।

प्र० थिए--मुलन्दशहर बलेवटरी में हरिजन घ ---के चपरासी । खं० २११, प्०३४७।

प्र० वि०--मार्केटिंग अधिकारियों में परिगणित तथा ---के लोग । खं० २११, प्० ४४७ ।

#### पीड़ित जनता संघ---

प्र० वि०-- ---, कंट्रहार की मांगे । एं० २११, पु० ६३३ ।

पीलीभीत उपनिवेशन योजना--

प्र० वि०—— ---- । खं० २११, पृ० ५४४ ।

पीलीभीत उपनिवेशन योजनान्दर्गत--प्र० वि०-- ---श्रविगृहीतः सूमि । खं० २११, प्० ५३५-५३६ ।

### पुनर्वासन योजना---

प्रविद--देह्रादून में गुरिस्म परिवारों की ---- । खं० २११, पू० ३४१ ।

प्र० वि० -- पूर्नी पाकिस्तान के विस्थापितों की ----। खं० २११, पु० ६४८-६४६।

### पुल---

प्र० वि०--बहा एवं सुखनी नालों पर ----बनाने की सिफारिश । खं० २११, पृ० १२८ ।

### पुलिस----

प्र० वि०—ग्रलीगढ़ बस स्टेशन के खजाने की सुरक्षा के लिये ——— बुलाना । खं० २११, पृ० १३३ ।

प्र० वि०--म्राजमगढ़ जिले में ----बढ़ाने की मांग । खं० २११, पु० ६५६।

प्र० वि०--रायबरेली में ---- के विरुद्ध हड़ताल । खं० २११, पू० ६४७-६४८ ।

### [पुलिस-]

प्र० वि०—पोतापुर में ——— द्वारा हाइडेन कर्नवारियों का गंटा जाना । खं० २११, पृ० ३३६ ।

प्र० वि०—-सोतापुर में ---- द्वारा हाइडेल कर्मवारियों के पाटे जाने को जांच । खं०२११,पु०६६०।

# पुलिस श्रधिकारियों---

त्र वि --शाहजहांपुर जिले के उच्च ---कः विधान सभा सदस्य द्वारा दो गई सूबना । खं० २११, पू० ३४७ ।

# पुलिस ग्रधिकारी---

प्र० वि०---बस्ती जिले के पुराने----। स्तं० २११, पु० १३३।

प्र० वि०--रेरठ में गजरेड ----। खं० २११, पृ० ६३७।

### पुलिस कप्तान---

प्र० वि०--पाराबंकी जिले में कुछ समय सक ---- का न रहना। खं० २११, पु० ६३६--६३७।

# पुलिस कांस्टेबिलीं---

प्र० वि०—फर्ष्याबाद जिले में--- ---की भर्ती में परिगणित जाति तया पिछड़ी जाति के उम्मीदवार । खं० २११, पू० ६६७ ।

### पुलिस थानों---

प्र० वि०--नये ---- की स्थापना । खं० २११, पृ० ६५८ ।

### पुस्तकों---

प्र० वि०—स्वतंत्रता संप्राम के संनिक तथा सरकार की भीर से ——— का प्रकाशन । खं० २११, पू० ३४६-३५०।

### पुति विभाग---

प्र० वि०————, जिला बलिया में नियुक्तियां । खं० २११, पू० ५३६—५४० ।

# पूर्वी जिली---

प्र० वि०-- ---में मोलाबृष्टि। स्रं० २११, पृ० ६४२। ---- में स्रोता-पृष्टि के संबंध में वक्तव्य को मांग । खं० २११, पू० ७३६-७४० ।

प्र० वि०-- ----में श्री नावृष्टि से अति । खं० २११, पृ० २३६-२३६ ।

# यूर्वी पाकिस्तान---

प्रव वि०-- --- हे वित्यात्तिं की पुनर्वासन योजना । खं० २११, पू० ६४८-६४६ ।

### वेड्---

प्रव वि०--परसेड़ी ग्रामसभा के हरे-भरे ---- काटने की शिकायत। खं० २११, पृ० ३४६।

#### वेवजल---

गौरा बरहज नगरपालिका में ----योजना लागू करने की प्रायंना।
खं० २११, पू० ७२१।

### प्रकाशवतो सूद, श्रीमती---

मिलयाना जुगर मिल, मेरठ, कं। मिलयाना गांव का भूमि का बलपूर्वक दुलिस द्वारा कब्जा विलाने के संबंध में नियम ५२ के झन्तर्गत गृह उप-मंत्री का बक्तव्य । खं० २११, पु० ७४१, ७४२।

त्रतापभानप्रकाशसिंह, की---वेखिये "प्रश्नोस्तर" ।

# त्रतार्पासह, थी---

देखिये "प्रक्तोसर"।

१६६०-६१ के भाय-क्ययक में भनुवानों के लिये मांगों पर मतवान-भनुवान संख्या ५-लेका भीवंक १०-वन । कां० २११, पू० ४७६-४७८ ।

श्चनुवान संस्था १७-लेका शिवंक २८-जेल । सं० २११, पू० १०१२-१०१४ ।

श्चनुवान संस्था २७-लेखा शीर्वेक ४१ और ६१-फ-बिश्चत योजनार्थों की स्वापना पर ग्यय सवा श्चनुवान संस्था ११-लेजा शोर्वेक ६१-क-विद्युत योजनार्थों पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय को छं ड़कर)। खं० २११,पृ० २७३, २७४-२७६, २८४, २८८, ३०२, ३०७-३०६।

अनुदान संख्या ३४-लेखा शीर्षक ५०-नागरिक निर्माण-कार्य और ५०-क राजस्व से वित्त पाधित नागरिक निर्माण-कार्यो पर पूंजो की लागत, अनुदान संख्या ३५-लेखा शोर्षक ५०-नागरिक निर्माण-कार्य, केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, अनुदान संख्या ३६-लेखा शोर्षक ५०-नागरिक निर्माण-कार्य और ६१-राजस्व लेखे से बाहर-नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजो का लेखा तथा अनुदान संख्या ५०-लेखा शार्षक ६१-राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा। खं० २११, पृ० १६०।

श्रनुदान संख्या ३८-लेखा शार्धक ५४-दुभिक्ष सहायता तथा श्रनुदान संख्या २-लेखा शार्षक ७-भू-राजस्य (माल-गुजारी) । खं० २११, ५० ७६४।

त्रनुदान संख्या ४२-जेला शीर्षक ५७-त्र हीणं व्यय तथा त्रनुदान संख्या १४-लेखा शीर्षक २५-गांव सभायें क्रीर पंजायतें । खं० २११, पृ० ५५७।

गन्ने के क्रा मूच्य से संबंधित द मार्च, १६६० के ग्रहासूचित तारांकित प्रश्न ४-६ के विश्वय पर विवाद । खं० २११, पु० ७०२-७०३।

सिंचाई विमाग, मिर्जापुर के ४०० मजदूरों की छटनी के कारण श्रो रमापति दुबे द्वारा ग्रनशन के सम्बन्ध में नियम ५२ के ग्रन्तर्गत सूचना । खं० २११, पृ० ६७३ । प्रतिकर - --

प्र० वि०—शटर वर्स, रामनगर से पृथक किये गर्ने कर्मचारियों की प्रतिकर तथा ग्रेचुइटी । खं० २११, प्र० ७३१।

प्रतिनिधियों----

त्रतिनिहित विश्वायन समिति---

----का चतुर्थप्रतिवेदन । खं०२११, पु० ८४६-८४७ ।

त्रतियोगिता परीक्षा---

प्र० वि०--रोडवेज दिनाग में ----। खं० २११, पृ० द३६।

प्रतिवेदन---

द्वितीय विवास सभा की आइपासन समिति का चतुर्य ----। खं० २११, पृ० ६७२ ।

प्रतिनिहित विवासन समिति का चतुर्थ ----। खं०२११, पृ० ८४६--८४७।

श्रदर्शन्:---

प्र० वि ः — इटावा जिले की ——— पर व्यय । खं० २११, पू० ६५१।

त्रशासकीय कार्य---

प्र० वि०-- ---- हिन्दी में करने का अनुराध । खं० २११, पृ० =१६-=२०।

त्रशासन कार्य--

प्र० वि०--- स्तिनापुर नगर ---- । खं० २११, पृ० ६-७ ।

प्रशिक्षण योजना---

प्र० वि०-- प्रसरकारी प्रतिनिधियों, ग्राम एवं ब्नाक नेताग्रों के लिये ----। खं० २११, पु० १३०-१३१।

प्रशिक्षायियों ---

प्र० वि०—-प्रौद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्रों में ग्रतुपूचित जाति के -----को सुविवार्ये। खं० २११, पृ० द२०--द२१।

গ্ৰহন---

ग्रत्पस्चित तारांकित प्रश्नों के उत्तर न मिलने तथा कार्य-पूर्वः ने ग्रधिक ———रखते के संबंध ने ग्रापत्ति। खं० २११, पृ० ३६६। प्रश्न ३६ ३७ --

तारांकित ---- से सम्बन्धित व्यक्तिगत श्रामूरक प्रश्नों को कार्यवाही स निकानने की प्रार्थना । यं २२११, पु० २६--२७ ।

#### प्रक्ती ---

- ----- अत्तर न मिराने को शिकायत। खं० २११, पृ० ४५०।
- ---- हे लबान में व्यवस्था का माग । ख० २११, पू० ७३६।
- -- हे संत्रंघ में शिकानत । संव २११, पूरु ५५० ।
- तात्फ लित ---- हा ि गाने है सन्दर्भ में बहरता । कि २११० पुरु १७४-८७४।
- सदगों ते साम यो गाने तने पर उनते ---- हे भिने जाने को सम्पन्त में बराया । संव २११, पुरुष्ट ४०-८४ ता।

### प्रश्नों का उत्त----

---- प मितने पर भ्रापति । रा० २११, व० ३८ = ।

# प्रश्नोत्तर

# श्रनन्तराम वर्मा, थी--

- श्रलीगढ़ नगरपालिका का प्रारम्भिक पाठशालायें खोलने के लिये प्रार्थना— पत्र । खं० २११, प्० ३४१— ३४२ ।
- श्रलीगढ़ बस स्टेशन के लजाने की सुरक्षा के लिये पुलिस बुसाना । खं० २११, पु० १३३ ।
- ग्रलीगढ़ बस स्टेशन के निकट चाकू भोंकने की घटना । खं० २११, पु० ६६८ ।

### भ्राब्द्रार रक्षफ लारी, श्री

- गोरव्यपुर जिले को समाज कल्याग कार्यों के लिये प्रनुवान । खं० २११, पु० २३ ।
- गोरखपुर जिले में फलदार श्राम के वृक्षो का काटा जाना। स्त्र० २११, प्०६५६।
- ट्राइवरो व कन्टक्टरो के लिये बस-स्टेशनो पर विश्वाम गह न होना । ख० २११, प्० ११८--११६।
- फरेवा तहसील के श्रीनगर ताल का पानी निकालने की प्रार्थना । य० २११, प्० ३३४ ।
- रोडवेज विभाग म प्रतियोगिता परीक्षा । कु० २११, पु० ८३६ ।
- सिसवा व देवरिया चीनी मिन क्षेत्रो मे गन्ने की श्रक्तिकता । य० २११, प० ८२३-८२४ ।

### श्रमरनाथ, श्री---

- उद्दे शिक्षा के लिये परक स्रगदान देने की प्रार्थना । १९० २११, पृष् ४३२-४३४ ।
- (म्रन०)—को प्रापरेतिक सपरपाउनरो क जनाय म म्रानीमद्द जिला के भ्रापिक जम्मोदयार लेने पर भ्रापति । राक २११, पठ ४२४ ४२४ ।
- खाइसारो कारण्यानी का नाइसस कर । खब २११, ५० ६१. ।
- गेहं तथा चावल का ऋखा ला० २११, प० ४२७—४२६ ।
- (प्रनुष)—गोरराप्र जिले में धान की गाड़ियों का पकरा जाना । राष्ट्र २११, पुरु ४२१।
- गोरखपुर जिले में सस्ते भनाज की दुकानें। खं० २११, पू० ५२८।
- गोरखपुर, देबरिया तथा ध्राजमगढ जिलो में नियोजन विभाग के पुराने कर्मवारी । खं० २११, पू० १२१— १२२ ।
- चीनी मिलों में गन्ने की खपत तथा चीनी का स्टाक । खं० २११, पू० १५१।

पूर्वी जिलों में ग्रोलावृष्टि से क्षति । खं० २११, पृ० २३६–२३६ ।

### इन्दुभषण गुप्त, श्री--

- धान को उपज, कृषि फार्मों का उत्पादन । खं० २११, प्० ५४४ ।
- (भ्रनु०)—-पूर्वी जिलों में श्रोलावृष्टि से क्षति । खं० २११, पृ० २३७, २३६ ।
- (भ्रनु०)——ललितपुर बांध पर उल्लुग्नों का कथित ग्रड्डा । खं० २११, पृ० ३१६–३२० ।

### उग्रसेन, श्री---

- (श्रनु०)—श्रर्द्ध कुम्भी मेला, प्रयाग पर व्यय । खं०२११,प०७१६ ।
- (श्रनु०)—–श्राजमगढ़ तथा बलिया की गन्ना सोसाइटियों का फालतू गन्ना । खं० २११, पृ० १२० ।
- (श्रनु०)—-श्राजमगढ़ महिला मंगल योजनान्तर्गत कार्य तथा कर्मचारी । खं० २११,पृ० १३ ।
- कड़सरवा तथा मझौं ती ग्राम की डकैतियां। खं० २११, पृ० ७१५–७१६।
- (ग्रनु०)—काशी हिन्दू विश्वविद्यालय क प्राक्टर को फर्स्ट क्लास मैजिस्ट्रीयल पावर्स । खं० २११, पू० ६४१।
- गोरखपुर तथा देवरिया जिलों में टेस्ट वर्क की मजदूरी की अरह । खं० २११, पृ० ३४४–३४५ ।
- गोरखपुर, देवरिया तथा बस्ती जिलों में खुलने वाले उद्योग केन्द्र । खं० २११, पृ० द४१ ।
- (श्रनु०)—गोरखपुर नगरपालिका को श्रनुदान तथा ऋण । खं० २११, पृ० १६ ।
- गोरखपुर रोडवेज क्षेत्र में मुग्रत्तल कर्मचारियों के बहाल होने पर वेतन । खं० २११, पृ० ८३४– ८३५ ।
- (श्रनु०)—गोरखपुर व वाराणसी डिवीजनों में महिला मंगल योजना के काम तथा कर्मचारी । खं० २११, पृ० २५ ।

- (श्रनु०)—गोरखपुर विश्वविद्यालय में मेडिकल कालेज खोलने की प्रार्थना। खं० २११, पु० ६३८।
- गौरा बरहज नगरपालिका में पेयजल योजना लागू करने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० ७२१ ।
- (ग्रनु०)—चक की भूसाडोही ग्रौर देवरिया का सीमा विवाद। खं० २११, पृ० ६५१।
- चीनी मिल मजदूर संघ, कटनी से समझौता। खं०२११,प०८२७।
- चीनी मिलों का उत्पादन । खं० २११, पु० ८४२ ।
- (स्रनु०)——जेलों के लिये निषेष समाचार-पत्र । खं०२११,प०१४।
- जेलों में 'मानवोचित सुधार' करने की जानकारी । खं० २११, पृ० १८– १६ ।
- (श्रनु०)---ड्राइवरों व कन्डक्टरों के लिये बस-स्टेशनों पर विश्राम गृह न होना । खं० २११, पृ० ११६ ।
- (श्रनु०)——तिब्बत-भारत सीमावर्ती भागों में विकास-कार्यों का बढ़ाना । खं० २११, पृ० ११८ ।
- देवरिया जिले में टेस्ट वर्क्स की मजदूरी के संबंध में शिकायत । खं० २११, पृ० ३४०–३४१ ।
- देवरिया तथा गोरखपूर जिलों में स्रोला-वृष्टि । खं० २११, पृ० ६४३— ६४४ ।
- पूर्वी जिलों में भ्रोलावृष्टि से क्षति । खं० २११, पृ० २३६–२३६ ।
- बस्ती जिले के कुछ स्थानों पर भारी उद्योग चालू करने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० १२६ ।
- (श्रनु०) --- बाढ़ नियंत्रण बोर्ड । खं० २११, पृ० ३२२ ।
- (ग्रनु०)——लच्छीपुर, जिला वाराणसी में कुयें से लाशें निकालने में विलम्ब होना । खं० २११, पृ० २३५ ।

### [प्रक्नोत्तर--उग्रसेन, श्री---]

(श्रनु०) — लितिपुर बांघ पर उल्लुक्यों । का कथित श्रड्डा । खं० २११, पृ० ३१६ ।

सहकारी समिति श्री कृष्ण इण्टर कालेज, बरहज के हिसाब मे गड़बड़ी । खं० २११, पृ० ४३३ ।

### उवयशंकर, श्री---

बस्ती जिले में स्रोला पीड़ितों को सहायता । खं० २११, प्० ४४६-४५० ।

### उल्फर्तासह, श्री---

बहगवां प्राइमरी स्कूल, जिला बदायूं । खं० २११, पृ० ३६५ ।

बदायूं जिले का दहगयां तालाब । खं० २११, पृ० ३६५ ।

बदायूं जिले के पंचायत सेकेटरी । खं० २११, पृ० २६ ।

बदायूं जिले में कुन्नों की बोरिंग । खं० २११, पृ० ८४६ ।

मलासा में मवेगी बेचने का रसीदी फार्म न होना । खं० २११, पृ० ३४६ ।

# ऊबल, श्री—

श्रानन्द बाजार गोदौलिया का नक्शा । खं० २११, पु० ७३७ ।

कानपुर की कुछ मिलों में श्रभिनवी-करण । खं० २११, पु० १२६-१२७ ।

(भ्रनु०)—जेलों में हाथ से चक्की चलाना बंद करने की प्रार्थना । खं० २११, प्० ७२७ ।

ताड़ी व ग्रनेई बाजारों में कन्या पाठ-ज्ञाला न होना । खं० २११, पृ० ६४६-६४७ ।

पूर्वी जिलों में घोलावृष्टि से क्षति । ख़ं० २११, पू० २३६-२३६ । पारम्भिक शिक्षा घनिवार्य करने की

बोजना । खं० २११, प्०३४४ ।

फैजाबाद नगरपालिका के कर्मचारियों का वेतन । खं० २११, पू० ७२८ ।

बड़ागांव, पिडरा तथा सिपोरा श्रस्पतालों के लिए इमारतें न होना । खं० २११, पृ० ३३४-३३५ ।

(श्रनु०) — बिक्री-कर निभाग के बर्लास्त कर्मचारियों की पुः नियक्ति। खं० २११, पु० ५३:।

रामनगर नगरपाणि हा संबंधित स्वार्टर तथा ऋण । रां० २११, प्० ७३०-७३१ ।

लखनऊ में बेसिक एन० टो० की परीक्षा । गां० २११, ५० ८६५ ।

(श्रनु०)—लब्ब्हीपुर, निला पाराणसी में कुथे से ला। निकालने में विलम्ब होना । त्र० २११, प० २३४ ।

बाटर वक्सं रामनगर से पृथक किये गये कर्मचारियों को प्रतिकर तथा ग्रेसुइटी । खं० २११, पृ० ७३१ ।

याराणसी धन्तरिम जिला परिषद के अध्यापकों का शंप वेतन । संव २११, प्र १४७ ।

वाराणसी नगरमहापालिका के नि प्रेनन पर क्या । खं० २११, पृ० २०-२१ ।

शिक्षा एवं विक्तीना प्रदर्शनी, वाराणगी के लिए स्वीकृत धन । लं० २११, पू० ६४६ ।

# कन्हैयालाल वाल्मीकि, श्री---

(अनु०) — जेलों में 'मानबोसित गुधार' करने की जानकारी । खं० २११, पु० १६ ।

बस्ती जिले के पुराने पृश्विस ग्राधकार (। खं० २११, पू० १३३ ।

# कल्याणचन्व मोहिले, भी--

मर्ख कुम्भी मेला, इलाहाबाब में बी गई टीन । खं० २११, पु० २०-११ । **भर्द्ध कुम्भी मेला, प्रयाग पर व्यय ।** ख० २११, पृ० ७१८-७१६ । इडस्ट्रियल कालोनी, नैनी । खं० २११, पु० ८२८ ।

इलाहाबाद नगरपालिका का वाटर तथा हाउस टैक्स । खं० २११, पृ० ७२५-७२६ ।

इलाहाबाद नगरमहापालिका में वापसी चुंगी का बकाया । खं० २११, पृ० ७२८-७२६ ।

इलाहाबाद में कथित विस्फोट । खं० २११, पृ० ६४७ ।

इलाहाबाद में मोतीलाल नेहरू ग्रस्पताल की नई इमारत तथा ग्रांख के ग्रस्पताल को बढ़ाने की प्रार्थना । खं० २११, पू० ३४० ।

(अनु०)—काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राक्टर को फर्स्ट क्लास मैजि-स्टोरियल पावर्स । खं० २११, पु० ६४० ।

गवनंसट प्रंस, लखनऊ व इलाहाबाद के श्रस्थायी कर्मचारी । खं० २११, पृ० ८२४ ।

नगर प्रमुखो की मुख्य मंत्री से भेंट । खं० २११, प० ७१६-७२०।

नये पुलिस थानों की स्थापना । खं० २११, पू० ६४८ ।

ने ताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म-दिवस मनाने के लिये ग्रपील । खं० २११, पृ० ३२३-३२४ ।

बुलन्दशहर के मैजिस्ट्रेट से स्पष्टीकरण की मांग । खं० २११, प० १३४ ।

बेलामूडी तथा बसहरा ग्रामों के बीच ऊसर भूमि । खं० २११, पृ० ५३३ ।

मिनिस्टीरियल सर्विस एसोसियेशन की मांगें । खं० २११, पृ० ८३३-८३४ ।

मोतीलाल नेहरू पार्क, इलाहाबाद में मालबीय जी की मूर्ति स्थापित करने की मांग । खं० २११, पृ० १३४ । राशन में भिन्नता । खं० २११, पू० ४४० ।

विधायक निवासों का बिजली का बिल । खं० २११, पृ० ३४५ ।

काशीप्रसाद पांडेय, श्री--

पूर्वी जिलों मे स्रोलावृष्टि से क्षति । खं० २११, पृ० २३६-२३६ । सुल्तानपुर जिले मे कोयले का वितरण । खं० २११, पृ० ५३३-५३४ ।

केशव पांडेय, श्री--

(भ्रनु०)—गोरखपुर नगरपालिका को भ्रनुदान तथा ऋण । खं० २११, पृ० १७ ।

बाढ़ नियंत्रण बोर्ड । खं० २११, पृ० ३२२ ।

(भ्रनु०)—हरी खाद के बीज वर्द्धन के लिये राज्य सहायता । खं० २११, पृ० ५२३।

कैलाशप्रकाश, श्री--

स्थानीय निकाय के ग्रध्यापकों के महंगाई भ ते के लिये राजाज्ञा । खं० २११, पृ० ६४८ ।

कोतवालसिंह भदौरिया, श्री---

एक बुक्तिंग क्लर्क वाले फर्रुखाबाद जिले के बस स्टेशन । खं० २११, पृ० ८३७ ।

गोरखपुर के पशु-पालन विभाग के उप-संचालक । खं० २११, पृ० ५४५ ।

छिबरामऊ व्लाक की इमारतें न बन सकना । खं० २११, पृ० ८३३ ।

प्रारम्भिक शिक्षा ग्रनिवार्य करने की योजना । खं० २११, पृ० ३४४ ।

फर्रुखाबाद जिले में डकैतियां ग्रौर कत्ल । खं० २११, पु० ३४२ ।

रोजगार दफ्तर। में नामों की रजिस्ट्री। खं० २११, पू० ८३३।

सबर तथा छिबरामऊ तहसीलों में चक्रबन्दी । खं० २११, पृ० ६६०-६६१ । [प्रदासिर—कोतवालिसह भदौरिया, श्री—] सरकारी बसों के नवीन मार्ग । खं० २११, पृ० ८३४ ।

### खुशीराम, श्री--

जिला हरिजन कल्याण म्रिधिकारी । खं० २११, पृ० ३४४ ।

भागपुर की बन विहीन भूमि तथा छीनी चौकी जंगल के भूमिहीन मवासा शिल्पकार । खं० २११, पृ० ६३६-६४० ।

### गंगाप्रसाव, श्री---

गोंडा जिले में ६० एकड़ के ऊपर कृषि फार्म । खं० २११, पू० ४४६ । गोंडा जिले में साफ्ट कोल की बुकानें ।

खं० २११, पु० ४४४।

गंगाप्रसाव वर्मा, श्री---

एटा नगरपालिका के निकाले गये कर्मचारी । खं० २११, पृ० २३-२४ ।

### गज्जूराम, श्री---

(ग्रनु०)—पंचायत ईसपेक्टरों को ग्राधिक समय तक एक स्थान पर न रखने का सुझाव । खं० २११, पू० ४ ।

बुन्देलखंड में उद्योग चलाने की प्रार्थना । खं० २११, प्० १२४-१२५ ।

लिलतपुर सब-डिवीजन में श्रावर्श हरिजन बस्तियां तथा डाक् सुरतिसह सलीता का मारा जाना । खं० २११, पृ० ६७०--६७१ ।

सकरार में ताड़ गुड़ सहकारी समिति का निर्माण । खं० २११, पृ० १२३-१२४ ।

# गनेशचन्त्र काछी, श्री---

कोम्रापरेटिव सुपरवाइजरों के चुनाव में झलीगढ़ जिले के म्रधिक उम्मीव-वार लेने पर भ्रापत्ति । खं० २११, पृ० ५२४-५२४ ।

जेलों में हाय से चक्की चलाना बन्ब करने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० ७२६-७२७ । पंचायत इन्सपेक्टरों को श्रविक समय तक एक स्थान पर न रखने का सुझाय । खं० २११, पु० ४ ।

प्रत्येक जिले में डिग्री कालेज खोलने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० ६४८ ।

बसों में पंखे लगाना । खं० २११, पु० ११४ ।

बाछेमई निवासियों की सी० ग्राई० डी० इंसपेक्टर, श्री ग्रतरसिंह के विरुद्ध ज्ञिकायत । लं० २११, पृ० ३२४ ।

मद्य निषेष संबंधी श्रभियोग । खं० २११, प० ११५ ।

सहायक विकास श्रिधिकारियों की पदोन्नित । खं० २११, पू० ५१६ ।

# गनेशीलाल चौधरी, श्री—

पंडित पुरवा की लांडसारी सहकारी समिति की ऋण । लं० २११, पु० ८१७ ।

परसेड़ी ग्रामसभा के हरेभरे पेड़ काटने की शिकायत । खं० २११, पू० ३४६ ।

मयुरा संप्रहालय में महात्मा गौतम बुद्ध की बहुमूल्य मूर्ति। लं० २११, पु० ११८।

राज्य से धान व गेहूं का निर्यात । लंब २११, पुरु ४३५ ।

सीतापुर जिले में कत्ल, डाके एवं चोरियां। खं० २११, प्०६६१।

# गयात्रसाव, श्री----

जुडोशियल सर्विस के ग्रन्तर्गत परि-गणित व पिछड़े बर्ग के लोग । खं० २११, पु० ३६३ ।

तहसीलवारों व भ्रिप्टी क्लेक्टरों की पदोन्नति । स्वं० २११, पु० १२४ ।

मार्केटिंग स्विकारियों में परिगणित तथा पिछड़े वर्ग के लोग । कं० २११, पू० ५४७ । मेरठ—-रोडवेज डिवीजन में कंडक्टरों व ड्राइवरों की सुविधायें बढ़ाने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० ८३७-८३८ ।

### गुप्तारसिंह, श्री--

जिला रायबरेली में चोरियां व डकैतियां। खं० २११, पु० ६५८।

डलमऊ तहसील कार्यालय का स्थाना-न्तरण न होना । खं० २११, पृ० ६६७ ।

रायबरेली जिले में पुराने गजटेड श्राफिसर्स । खं० २११, पृ० ८४१।

सरेनी थाने के झन्तर्गत घूसखोरी का मुकदमा । खं० २११, पू० ३३८– ३३६ ।

सहकारिता विभाग, जिला रायबरेली के सर्वश्री सूरजपार्लीसह तथा रामलखर्नीसह की गिरफ्तारी । खं० २११, पृ० ४४६ ।

# गुलाबसिंह, थी---

उत्तर प्रदेश तथा हिमांचल प्रदेश की हदबन्दी का मामला । खं० २११, पु० ३२०-३२१ ।

# गेंदादेवी, श्रीमती--

ट्रेजरी एवं क्लेक्ट्रेट के क्लर्कों का वेतन। स्रं० २११, पृ० ६६६।

# पेंदासिंह, श्री---

म्रद्धं कुम्भी मेला, इलाहाबाद में दी गयी टीन । खं० २११, पृ० १०।

(झनु०)—झलीगढ़ जिले के लिये व्हीट फार्मिग पाइलेट प्रोजेक्ट योजना। खं० २११, पृ० ५३२।

कृषि योजनाओं के म्रन्तर्गत रोजगार मिलना । खं० २११, प्० ४४७ । मन्ने की उपज तथा खपत । खं० २११, प्० ४४८ ।

गुड़, खांडसारी तथा राब उद्योग पर नियन्त्रण । खं० २११, पृ० क्ष४५ । (ग्रनु०)—गोरखपुर तथा वाराणसी डिवीजनों से पंचायत सेकेटरियों का हटाया जाना । खं० २११, प्०२२ ।

गोरखपुर में मेडिकल कालेज की श्राव-श्यकता । खं० २११, पृ० ६६८-६६६ ।

(म्रनु०)—गोरखपुर व वाराणसी डिवीजनों में महिला मंगल योजना के काम तथा कर्मचारी । खं० २११, पृ० २४-२५ ।

गोरखपुर विश्वविद्यालय में मेडिकल कालेज खोलने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० ६३८ ।

पंचवर्षीय योजनान्तर्गत रोजगार मिलना । खं० २११, प० ८२०-८२१ ।

(भ्रनु०)——सिसवा व देवरिया चीनी मिल क्षेत्रों में गन्ने की ग्रविकता। खं० २११, पू० ८२४।

(भ्रनु०)—हस्तिनापुर नगर प्रशासन कार्य । खं० २११, पृ० ७ ।

# गोविन्दसिंह विष्ट, श्री-

(भ्रनु०)-इटावा जिले की प्रदर्शनी पर व्यय। खं० २११, पु० ६५१।

(म्रनु०)--इटावा जिले में भारतीय दण्ड विधान की धारा ११० के कथित मुकदमे। खं० २११, पू० ३३०।

उत्तराखंड मंडल का निर्माण तथा सीमावर्ती विधायक संघ के सुझाव। खं० २११, पृ० ८३४।

एटा जिले के श्री रवीन्द्रकुमार को मुन्सिफी में न लेना। खं० २११, पृ० द१३।

(भ्रनु०)---- फड़सरवा तथा मझौली ग्राम की डकैतियां। खं० २११, पृ० ७१६।

(ग्रनु०)—कोग्रापरेटिव सुपरवाइजरों के चुनाव में ग्रलीगढ़ जिले के ग्रिषिक उम्मीदवार लेने पर ग्रापत्ति। खं० २११, पू० ५२४।

- [प्रश्नोत्तर-गोविन्दसिंह विष्ट, श्री-]
  - (म्रनु०)—-गोरखपुर तथा वाराणसी डिवीजनों से पंचायत सेक्रेटरियों का हटाया जाना। खं०२११, पृ०२२।
  - जनसंघ ग्रथवा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सम्बन्धित व्यक्तियों को नौकरी देने में सरकारी नीति। खं० २११, पृ० ४४५-४४७।
  - जमानिया थाने के हवालाती केंदी की मृत्यु। खं० २११, पृ० ६४६।
  - (अनु०)--जालीन जिले के ग्रस्पतालों में डाक्टरों की कमी। खं० २११, पू० ३३७।
  - (म्रनृ०)——जेलों में 'मानवोचित सुधार' करने की जानकारी। खं० २११, पृ० १८।
  - (ग्रनु०) जेलों में हाथसे चक्की चलाना बन्द करने की प्रार्थना। खंड २११, पृ० ७२७।
  - (भ्रनु०) ——तिब्बत-भारत सीमावर्ती भागों में विकास-कार्यों का बढ़ाना। स्तं० २११, पृ० ११७।
  - (ग्रनु०) नगर प्रमुखों की मुख्य मंत्री से भेंट। खं० २११, पृ० ७२०।
  - (भन्०)-पंचायत मंत्रियों के स्थानान्तरण के सम्बन्ध में भन्तरिम जिला परिषद् भाजमगढ़ का प्रस्ताव। खं० २११, पु० ७१८।
  - ( प्रनु०) प्रान्तीय रक्षक दल के कर्म-चारियों को स्थायी करने में विलम्ब। खं० २११, पृ० ४४८।
  - बरेली कालेज के बोर्ड भाफ कंट्रोल के रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए नामावली। खं० २११, पृ० ३४८।
  - (अनु०) बोर्ड की परीक्षा में विद्यापियों की असफलता में वृद्धि। खं० २११, पु० ३३२।
  - (सनु०) --- भागपुर की वन विहीन भूमि तथा छीनी बोकी जंगल के भूमिहीन मबासा शिल्पकार। बां० २११, पू० ६३६।

- (ग्रनु०)---मऊ में पालिकाष्यक्ष श्री हिफजुर्रहा का त्याग-पत्र। खं० २११, प० ११।
- (भ्रनु०)-मैलानी जंगल का है प्रेस गोदाम। खं० २११, पू० ६३६।
- (श्रनु०) -रजमुङ्ग्या भगवन्तपुर में जंगल कटयाने की शिकायत । खं० २११, पू० ६३१।
- (ग्रनु०)--राय गरेली में पुलिस के विरुद्ध हड़ताल। खं० २११, पृ० ६४७।
- (श्रनु०)-रायल होटल के नवीन विघायक निवास में चीड़ के किवाड़। खं० २११ पू० ३२४।
- (भ्रानु०) -- लखनऊ में अमिक बस्ती के क्वार्टरों का किराया। खं० २११, पू० १२२।
- (ग्रन्०)--लीसाका संग्रह । लं० २११, पु० ६३८ ।
- (भ्रनु०)- वन यातायात विकास योजना । खं० २११, पृ० ६२५ ।
- (ग्रनु०) विधायकों को रोडवेज बसों के पास देने की योजना। खं० २११, पु० ३२०।
- (अनु०) संशोधित बजट मैतुप्रल की तैयारी तथा कुछ सरकारी कमं-चारियों के वेतन में वृद्धि। खं० २११, पु० ६४१, ६४२।
- (श्रनु०) -- सकरार में ताड़ गुड़ सहकारी समिति का निर्माण। खं० २११, पृ० १२४।

### गौरीराम गुप्त, श्री---

- ग्रन्तरिम जिला परिवर्दों के उपाध्यक्षों के ग्राधकारों में कमी। खं० २११, पु० ७३३-७३४।
- गांव समाज में पृथक, ग्रस्तित्व को समाप्त करने पर विचार । कं० २११, पृ० ३४६ ।
- गोरसपुर जिले से पानों में टेलीफोन लगाने की मोजना। सं• २११, ५० ३४५।
- गोरसपुर नगरपालिका का स्पेशल धावित। सं० २११, पूक् ११।

- गोरखपुर नगरपालिका को श्रनुदान तथा ऋण। खं० २११, पू० १५–१७।
- गोरखपुर नगरपालिका में जटाशंकर पोखरे की खराब हालत। खं० २११, पृ० ७२०।
- गोरखपुर वन खंड में निर्माण कार्य तथा सस्ती लकड़ी। खं० २११, पृ० ६२७— ६२८।
- पुरन्दर तथा पिचुरखी ग्राम समाजों को भूमि व जंगल देने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० ६२८ ।
- फरेदा तहसील में भारी उद्योग चालू करने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० १३२।
- फरेदा मध्य क्षेत्र मे विकास कार्य। खं० २११, पृ० ८३८–८३६।
- क्रजमनगंज बीज भंडार से वितरित धान के बीज की शिकायत। खं० २११, पु०५३१।
- राजकीय बुनाई शिक्षण केन्द्र, श्रानन्द-नगर। खं० २११, पृ० ८२६–८२७।
- रेलवे स्टेशनो से गांव वालों को पानी देने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० १७–१८।
- विकास कार्यो पर जिलेवार व्यय । खं० २११, पृ० १२४ ।
- स्वास्थ्य विभाग की राजाज्ञाश्रों को हिन्दी में भेजने की प्रार्थना। खं० २११, प० ६५६।

# गौरीशंकर राय, श्री---

- (भ्रमु०)——उर्दू शिक्षा के लिए पृथक श्रमुदान देने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० ३३३।
- (श्रनु०)—कोश्रापरेटिव सुपरवाइजरों के चुनाव में श्रलीगढ़ जिले के श्रधिक उम्मीदवार लेने पर श्रापत्ति। खं० २११, पृ० ४२४।
- कोयले की कमी के सम्बन्ध में केन्द्र से पत्र-स्यवहार। खं० २११, पू० ५१६।

- (ग्रनु०)—जनसंघ ग्रथवा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सम्बन्धित व्यक्तियों को नौकरी देने में सरकारी नीति। खं० २११, पृ० ४४६।
- जमानिया थाने के हवालाती कैदी की मृत्यु । खं० २११, पृ० ६४६-६४७।
  - (ग्रनु०)—नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म-दिवस मनाने के लिये श्रपील। खं० २११, पृ० ३२४।
  - पूर्ति विभाग, जिला बलिया में नियुवितयां । खं० २११, पृ० ५३६- ५४०।
  - प्रान्तीय रक्षक दल के ग्रस्थायी कर्भचारी। खं० २११, पू० १३६।
  - (श्रनु०)—प्रान्तीय रक्षक दल के कर्म-चारियों को स्थायी करने मे विलम्ब। खं० २११, पृ० ४४८-४४६।
  - बिलया जिले में उपल वृष्टि से क्षति। खं० २११, पृ० ६२४।
  - बिलया जिले में कृषि रक्षार्थ चूहे मारने का काम। खं० २११, पृ० ४२१-४२२।
  - (भ्रनु०)——िबक्री-कर विभाग के बर्खास्त कर्मचारियों की पुनर्नियुक्ति। खं० २११, पृ० ६३४।
  - (अतु०)——बोर्डको परीक्षा में विद्यार्थियों को असफलता में वृद्धि। सं०२११, प्०३३२।
  - (भ्रतु०)--राज्य व्यापार योजनान्तर्गत खाद्याभ्रों के मूल्य का निर्घारण। खं० २११, प्० ५२०-५२१।
  - (भ्रनु०)—लच्छीपुर, जिला धाराणसी में कुयें से लाशें निकालने में विलम्ब होना। खं० २११, पृ० २३४।
  - (भ्रनु०)——लितपुर बांध पर उल्लुओं काकथित भ्रड्डा। खं० २११, पृ० ३१६।
  - धिकास ग्रधिकारो । खं० २११, पु० ८३७ ।
  - संचालक, उद्योग विभाग, के कायलिय से कुछ कर्मचारियों का हटाया जाना। खं० २११, पू० ८३१-८३२।

[प्रक्तोत्तर-गौरीशंकर राय, श्री-]

सहायता तथा पुनर्वास विभाग में श्री प्रमुलाल दार्शी का पुनर्नियुक्ति। खं०२११, पृ०१११–११२।

(ग्रनु०)—सूचना विभाग के कर्मचारी द्वारा चादनीज कोंसिल को पहाड़ी सीमा प्रबन्ध विषयक सूचना देने की जांच। खं० २११, प० ८१४।

(मनु०)—सोशलिस्ट पार्टी की मांगें। खं० २११, पृ० द्रशः।

(श्रतु०)—हैण्डोकापट शः रूम, श्रमीनाबाद, लखनऊ की जांच। खं० २११, पू० ११५–११६।

बल्रजीत यावव, श्री---

(ग्रनु०)—-श्रलीगढ़ जिले के लिये व्हीट फर्जिंग पाइलेट श्रं/जेक्ट यं/जना। खं० २११, पृ० ५३२।

द्याजमगद्ग महिला मंगल यं।जनान्तर्गत कार्य तथा कर्मचारो। खं० २११, पु० १२–१३।

इन्दारा में चोनी मिला की ब्रावश्यकता। सं० २११, पु० १२७-१२६।

(ग्रनु०)—-कानपुर की कुछ मिलों में ग्रामनबी-करण। खं० २११, प्० १२६-१२७।

(ग्रन्०) — जनसंघ ग्रयवा राष्ट्रीय स्वयं-सेवक संघ से सम्बन्धित व्यक्तियों को नौकरो देने में सरकारी नीति। खं० २११, पू० ४४६ –४४७।

टे विनक्त इंस्टोट पूटस सं(लने की योजना। सं० २११, पू० १३४।

(श्रतु०)--पोलीभीत उपनिवेशन योजना-न्तर्गत श्रविगृहीत भूमि । खं० २११, पु० ५३६।

(मनु०)-- बसों में पंत्रे लगाना। खं० २११, पू० ११४।

राज्य व्यापार योजना का वर्गीकरण। सं० २११,पृ० ५१६।

म्बलना के बलरामपुर प्रस्पताल में स्थायी वन्त डाक्टर महाना। खं० २११, पू० ३४७। (म्रनु०)—सकरार में ताल गृह सहकारी समिति का निर्नाण। खं० २११, पू० १२३–१२४।

सीमेंट का नया कारणाना न खुलना।
वं० २११, पृ० १३६।

चन्द्रबर्ल।शास्त्रीयह्यचारी, श्री- -

माहम्मदाबाद-गोहना का नार्मेल रक्ल। लं० २११, पु० ३५७।

सवर तहनाल में चकवन्त्री। गां० २११,

चिरंगालाल जाटक, शा---

कानपुर क्षेत्र में बिकः-कर कार्यालयों के कुत्र चपरासियों का बहाला। खं० २११, पू० ६३४ ६३५।

बिका-कर विभाग के बर्णास्त कर्मचारियों को पुननियुक्ति। खं० २११, पू० ६३३--६३४।

छंबीलाल, श्रा---

खोरी जिले में भ्वान समिति द्वारा भूमिहानीं का भूमि। लंग २११, पृष् ६६४।

जंगबहादुर वर्मा, श्री---

परिवहन प्रायुक्त कार्यालय में लिपिकों का परीक्षा। खं० २११, ० म३७।

बाराबंकी जिलें में कृश्न समय तक पुलिस कप्तान का न रहना। खं० २११, पु० ६३६—६३७।

बाराबंकी जिले में पुराने आकटर व कम्पाउन्डर। खं० २११, पू० ३४ = । बाराबंकी जिले में सहकारी समितियां। खं० २११, पू० ४४ = ।

जगवीशशरण प्रवचाल, ची---

लांबसारी का उत्पादन। सं० २११, पु० ८४५।

प्रारम्भिक शिक्षा श्रानिकार्य करने की योजना। खं० २११, पु० ३४४।

जनमाय चौबरी, भी---

वंशी वाजार की दूक-पूर्वदना। सं० २११,पू० ६६७। जगनायप्रसाद, श्री——

खीरी जिले में मालगुजारी में छूट देने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० ६६१— ६६२।

बहा एवं सुखर्ना नालों पर पुल बनाने की सिफारिश। खं० २११, पृ० १२८।

जगन्नाय लहरी, श्री--

(भ्रनु०) — उर्दू शिक्षा के लिए पृयक अनुदान देने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० ३३३।

जगपतिसिंह, श्री--

बांदा वनखंड में तेंदू की पत्ती का नीलाम । खं० २११, प्० ६३६।

झारखंडेराय, श्री--

(श्रतु०)——श्राजमगढ़ सदर श्रस्पताल के नय भवन के लिए भूमि । खं० २११, पृ० ६४५।

(भ्रनु०)—इटावा में कम्युनिस्टों की सभा में पथराव। खं० २११, पू० ६५४।

इन्दारा में चीनी मिल की म्रावश्यकता। खं० २११, पृ० १२७--१२८।

(श्रनु०) — गोरखपुर विश्वविद्यालय में मेडिकल कालेज खोलने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० ६३८।

घोसी—मभावारा सड़क पर बस सर्विस न होना। खं० २११, पृ० १३१।

(भ्रतु०) -- जनसंघ भ्रथवा राष्ट्रीय स्वयं-संवक संव से सम्बन्धित व्यक्तियों कं: नौकरो देने में सरकारी नीति। इं. २११, पृ० ४४५ -- ४४६, ४४७।

(झनु०)---जेलों में हाय से घक्की चलाना बन्द करने की प्रार्थना। खं० २११, पू ७२७।

(अनु०) — ड्राइवरों च कन्डक्टरों के लिये बस-स्टेशनों पर विश्वास गृह न होना। खं० २११, पृ० ११६।

(म्रनु०) — तिब्बत-भारत सीमावर्ती भागों में विकास-कार्यों को बढ़ाना। सं० २११, पू० ११७, ११८-११६। (झनु०)—देवरिया तथा गोरखपुर जिलों में झोला वृष्टि । खं० २११, प्० ६४४।

(ग्रन्०)—पंचायत मंत्रियों के स्थानान्तरण के सम्बन्ध में श्रन्तरिम जिला परिषद् श्राजमगढ़ का प्रस्ताव। खं० २११, पृ० ७१७, ७१८।

(ग्रनु०)—प्रान्तीय रक्षक दल के कर्मचारियों को स्थायी करने में विलम्ब। खं० २११, पृ० ४४६।

(ग्रनु०) — बसों में पंखे लगाना। खं० २११, पृ० ११४।

(म्रनु०)—मथुरा संग्रहालय में महात्मा गौतम बुद्ध की बहुमूल्य मूर्ति। खं० २११, पृ० ११८।

(ग्रनु०)—विकास खंड ग्रिषिकारियों के स्थायीकरण पर विचार। खं० २११, पृ० ६३६–६४०।

(ग्रनु०) — संशोधित बजट मैनुग्रल की तैयारी तथा कुछ सरकारी कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि। खं० २११, पृ० ६४२।

सीतापुर में पुलिस द्वारा हाइडेल कर्मचारियों का पीटा जाना। खं० २११, पृ० ३३६।

टीकाराम, श्री---

बार एसोसियेशन, बदायूं के लिये जमीन की स्वीकृति। खं० २११, पृ० ३४६।

टोकाराम पुजारी, श्री---

(ग्रनु०) — फसलों को देवी ग्रापित्तयों संबचाने की प्रार्थना। खं० २११, पू० ६४६।

(भन०) — जनसंघ श्रथवा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से सम्बन्धित व्यक्तियों को नौकरी देने में सरकारी नीति। खं० २११, पृ० ४४७।

जिला बदायूं की सदर तहसील में चकबन्दी के अन्तर्गत लिये जाने वाले गांव। खं० २११, पू० ३६१। [प्रक्तोत्तर-टीकाराम पुजारी, श्री-]

शहपऊ थाने से थानेदारों के तबादले। खं० २११, पृ० ३४५।

(भ्रन्०)—सोशलिस्ट पार्टी की मार्गे। खं० २११, पू० द१२।

ताराचन्द माहेश्वरी, भी---

उद्योग विभाग से सम्बन्धित सूत का स्टाक बेचने के लिये ब्रादेश। खं० २११, पू० ८१६।

देहरादून में मस्लिम परािवरों की पुनर्वासन योजना। खं० २११, प० ३४१।

पूर्वी पाकिस्तान के विस्थापितों की युनर्वासन योजना। खं० २११, पु० ६४६-६४६।

प्रारम्भिक शिक्षा ग्रनिवार्य करने की योजना। खं०२११, पु०३४४।

राजकीय मुद्रणालय की इमारतों में बिना किराये के कर्मचारी। खं० २११, पु० ८१६-८१७।

# तेजबाहवुर, श्री--

रौनापार थाने में विभिन्न भ्रपराथ। खं० २११, पु० ६६=।

लखनक के बलरामपुर श्रस्पताल में स्थायी वन्त डाक्टर न होना। खं० २११, प्० ३४७।

लड़िकयों की शिक्षा के लिये केन्द्रीय योजना का कार्यान्ययन । खं० २११, पु० ३२६।

सीतापुर जिले की चीनी मिलों से सम्बन्धित गन्ने की दुलाई का बकाया। र्खं० २११, पू० ८४४-८४४।

हरी खाव के बीज वर्द्धन के लिये राज्य सहायता। खं० २११, पू० ४२२--४२४।

हस्तिनापुर नगर प्रशासन कार्य। सं० २११, प्० ६-७।

# वशरयप्रसाव, श्री---

पचपेड्या में सेवा क्षंड खोलने की योजना। खं०२११, पृश्च ६३३।

### वीपंकर, ग्राचार्य--

भ्रम्तरिम जिला परिषद्, मेरठ कें कर्मचारियों का भ्रावेदन-पत्र। खं० २११, पृ० ६४१-६४२।

(भ्रानु०) — किसान कालेंज, शामली के लिये गल्ले के मूल्य में कटौती। खं० २११, पृ० ४१७-४१८।

टीकरी में सद्देबाजों की गिरफ्तारियां। खं० २११, पृ० १३१।

(ग्रन्०) — जेलो में हाथ से चक्की सलाना बन्द करने की प्रायंना। खं० २११, पू० ७२६-७२७।

(ग्रनु०) ---प्रान्तीय रक्षक दल के कर्मचारियों को स्थायी करने में बिलस्ब । सं० २११, प० ४४ ८ ।

बड़ौत तथा हिलवाड़ी में सट्टे के झारोप में गिरफ्तारी। खं० २११, प्० ⊏१४---६१४।

बड़ौत-बागपत सड़क पर मोटर बुर्घटनाये। खं०२११, ग०३४६-३४७।

(श्रमु०) — बिलया जिले में कृषि रक्षायें चूहे मारने का काम। खं० २११, पु० ४२२।

मेरठ में गजटेड पुलिस ग्राधकारी। कां० २११, पू० ६३७।

(ग्रमु०)—रजम्बिया भग नापुर में जंगल कटबाने की दिकायत। खं० २११, पृ० ६३१।

(भ्रनु०)—राज्य ब्यापार योजनान्तर्गत स्वाक्षाक्षों के मूल्य का निर्धारण । सं० २११, पृ० ५२०।

(भनु०)—संशोधित बजट मैनुभल की तथारी तथा कुछ सरकारी कर्मचारियों के बेतन में वृद्धि। सं० २११, पू० ६४९—६४३।

# बीपनारायणमणि त्रिपाठी, श्री---

(समु०) — किसान कालेज, शामली के ज़िये गच्चे के सूक्य में कटौती। कं० २११, पू० ४१७३ (ग्रनु०)—गोरखपुर विश्वविद्यालय में मेडिकल कालेज खोलने की प्रार्थना। खं० २११, पु० ६३८।

(भ्रनु०) — गौरा बरहज नगरपालिका में पेय जल योजना लागू करने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० ७२१। देवरिया जिले में उद्योग विभाग से

सहायता। खं० २११, पू० ८४३। देवरिया में हरिजन बस्ती के विस्तार की भ्रावश्यकता। खं० २११, पु०

३४३।

(श्रनु०)—पंचायत मंत्रियों के स्थानान्तरण के सम्बन्ध मे श्रन्तरिम जिला परिषद् , श्राजमगढ़ का प्रस्ताव। खं०२११, पृ०७१८।

प्रयाग में सीनियर साइकालोजिस्ट का रिक्त स्थान। खं० २११, पृ० ३४६।

भटनी छाया क्षेत्र। खं० २११, पृ० १३२।

(भ्रनु०)——ललितपुर बांघ पर उल्लुओं का कथित श्रड्डा। खं० २११, पृ० ३१६।

देवकी नन्दन विभव, श्री--

श्रलीगढ़ जिले के लिये व्हीट फार्मिग पाइलेट प्रोजेक्ट योजना। खं० २११, पृ० ५३३।

गन्ना, मृंगफली, गेहूं, जौ, मक्का, श्ररहर का उत्पादन । खं० २११, पृ० ५४१ ।

गृह निर्माण योजनान्तर्गत रोजगार मिलने का भ्रनुमान । खं० २११, पू० ७२१-७२२ ।

निर्बल तथा पैतृक रोग पीड़ित व्यक्तियों में परिवार नियोजन को प्रभावी बनाने का सुझाव तथा लखनऊ में कुत्तों के काटने से मृत्युएं। खं० २११, पृ० ६६५।

महापालिकाश्चों के नगरप्रमुखों, उपनगर प्रमुखों का वेतन, भत्ता तथा श्रागरा महापालिका कर में वृद्धि। खं० २११, प्० १६--२०। लीसा का संग्रह। खं० २११, पृ० ६३७-६३८।

विश्वविद्यालय पुनस्संघठन योजना । खं० २११, पू० ३६०।

स्वतन्त्रता समारोहों पर व्यय । खं० २११, पृ० ३४५।

देवनारायण भारतीय, श्री---

(ग्रनु०)--गोरखपुर विश्वविद्यालय में मेडिकल कालेज खोलने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० ६३८।

(श्रनु०)—जनसंघ ग्रथवा राष्ट्रीय स्वय संव त संघ से सम्बन्धित व्यक्तियों को नौकरी देने मे सरकारी नीति। खं० २११, पृ० ४४६।

(म्रनु०)—पीलीभीत उपनिवेशन योजनान्तर्गत म्रधिगृहीत भूमि । खं० २११, पृ० ५३६ ।

(श्रनु०)—बन्दियों की श्रपराधी मनोवृत्तियों में सुधार करने पर विचार। खं० २११, पृ० १०।

(ग्रनु०)——लड़िकयों ग्रौर महिलाग्रों के ग्रनैतिक व्यापार निरोधक ग्रिधिनियम का कार्यान्वयन। खं० २११, पु० ८।

सेहरामऊ जन्**बी थाना के ग्रन्तर्गत** विभिन्न ग्रपराध सम्बन्धी ग्रभियोग। खं० २११, पृ० ३५४।

देवीप्रसाद मिश्र, श्री——

कलेक्टरियों के भ्राउट साइडर क्लर्क्स । खं० २११, पृ० ३६४ ।

द्वारिकाप्रसाद, श्री---

इन्दरगढ़ थाना क्षेत्र में पुन्ना डाकू की गिरफ्तारी। खं० २११, पृ० ६६२।

फर्रुखाबाद जिले में डकेती व करल के ग्रिभियोग। खं०२११, पृ०३४७।

वाराणसी जिले में लेखपाल को जेल भेजने से पूर्व चार्जन लें सकना। खं० २११, प्०३४०।

सर्वे ध्रमीनों की नियुक्त। खं० २११, प्० ६६०। [प्रक्तोत्तर---|

धनुषधारी पांडेय, श्री---

किसान कालेज, शामली के लिये गन्ने के मूल्य में कटौती। खं०२११, पु० ४१७-४१८।

(श्रनु०)—पूर्वी जिलों में श्रोलावृष्टि से क्षति। खं०२११, पू०२३८।

(भ्रनु०)—लच्छीपुर, जिला वाराणसी में कुयें से लाशें निकालने में विसम्ब होना। खं० २११, पृ० २३४।

# नन्वकुमारवेव वाशिष्ठ, श्री---

भ्रालीगढ़ जिले के लिये व्हीट फार्मिग पाइलट प्रोजेक्ट योजना। खं० २११, पु० ५३१-५३२।

श्रलीगढ़ जिले में विकास सेवा खंड स्रोसने की योजना। खं० २११, पु० ८२७-८२८।

बिजली काटन प्राइवेट लिमिटेड मिर्स, हायरस, के अमिकों और सेवायोजकों के मध्य समझौता। खं० २११, पु० ११२--११३।

# नागेश्वरप्रसाद, श्री---

जौनपुर जिले में कोयले की कमी। खं० २११, पू० ४३७-४३८।

जौनपुर जिले में बेलवार व सोनहिता में घायुर्वेदिक ग्रौषधालय खोलने की प्रार्थना तथा सुजानगंज ग्रस्पताल भवन का निर्माण। खं० २११, पु० ३५३।

सुजानगंज यस स्टेशन के निर्माण का ग्रामोजन। खं० २११, पू० १३७।

# नारायणवस तिवारी, श्री---

ध्यसरकारी प्रतिनिधियों, ग्राम एवं ब्लाक नेताओं के लिये प्रशिक्षण योजना। खं० २११, पू० १३०--१३१।

(अनु०) — उत्तरा खंड मंडल का निर्माण तथा भोटियों को मार्गे। सं० २११, पु० ८२२। (ग्रन्०)—कानपुर की कुछ मिलों में ग्रमिनवीकरण। ल० २११, पृ० १२७।

कास्ट-ब्राफ लिविग इन्डेक्स । खं० २११, पुरु == २४-== २६।

(ग्रनु०) — तिब्बत भारत सीमावर्ती भागों में विकास — कार्यों को बढ़ाना। खं० २११, पू० ११७।

(म्रनु०)--पूर्वी जिलो में म्रोलावृष्टि से क्षति। खं० २११, प० २३६, २३८।

(भ्रन्०) — लीसा का गग्रह। ख० २११, पू० ६३८।

संशोधित बजट मैन्प्रल को तैयारी तथा कुछ सरकारी कमंचारियो के वेतन में वृद्धि। ख० २११, पू० ६४०-६४३।

### पद्माकरसाल भीवास्तव, भी---

नगरमहापालिकाम्रो तथा नगर-पालिकाम्रो के मेपुटेशन पर लिये गये सुपरिटेंबेंट। लंब २११, पूब् २४-२६।

नगर महापालिकाम्रो तथा नगर-पालिकाम्रो में बेंपुटेशन पर ग्राये ग्राफिस सुपरिन्टेंबेट। कं० २११, पु० ७३८।

(सनु०) — सहायता तथा पुनर्वास विभाग में श्री प्रभुलाल शर्मा की पुनर्नियुक्ति। सं०२११, पृ०११२।

# प्रतापमानप्रकाशसिंह, बी---

लहरपुर परगने में भूमियर काइतकारों के वालिल कारिज की कार्यवाही। लं० २११, पू० ३५२।

# प्रतापसिंह, भी---

(भनु०)—साजसगढ़ महिला संगल योजनान्तर्गेत कार्य तथा कर्मचारी। कां० २११, पू० १२-१३।

(भनु०)—उत्तर प्रवेश तथा हिमांबल प्रवेश की हवबाबी का मामला। कं० २११, पू० ३२१:

- (श्रनु०)—उत्तराखंड मंडल का निर्माण तथा भोटियों की मांगें। खं०२११, पृ० द२१, द२२।
- (भ्रनु०)—एटा जिले के निकाले गये कर्मचारी। ँखं० २११, पृ० २४।
- (श्रनु०)—कोभ्रापरेटिव सुपरवाइजरों के चुनाव में श्रलीगढ़ जिले के श्रधिक उम्मोदवार लेने पर श्रापत्ति । खं० २११, पृ० ५२४।
- (श्रनु०)—गोरखपुर तथा वाराणसी डिवीजनों से पंचायत सेकेटरियों का हटाया जाना। खं० २११, पृ० २२।
- (भ्रनु०)—गोरखपुर व वाराणसी डिवीजनों में महिला मंगल योजना के काम तथा कर्मचारी। खं० २११, पृ० २४।
- ग्राम पंचायतों को नवीन श्रधिकार। खं० २११, पृ० २३६–२४०।
- (श्रनु०)——जेलों में मानवोचित सुधार करने की जानकारी। खं० २११, पु० १८।
- (भ्रनु०) तिब्बत भारत सीमावर्ती भागों में विकास कार्यों का बढ़ाना। खं० २११, पृ० ११७।
- नैनीताल जिले में नरभक्षी चीता। खं० २११, पु० द३४।
- पीलीभीत जिले में विभिन्न ग्रपराधों में क्षति । खं० २११, पृ० ३६१ – ३६२ ।
- (भ्रन्०)—फसलों को दैवी श्रापत्तियों से बचाने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० ६४५ ।
- (भ्रनु०)—भागपुर की वन विहीन भूमि तथा छीनी चौकी जंगल के भूमिहीन मवासा शिल्पकार । खं० २११, पृ० ६३६–६४० ।
- (ब्रानु०)——मऊ पालिकाध्यक्ष, श्री हिफजुर्रहमान का त्याग-पत्र । खं० २११, पृ० ११, १२ ।
- (म्रनु०)—ं-राज्य व्यापार योजनान्तर्गत खाद्यान्नों के मूल्य का निर्धारण । खं० २११, पृ० ५२० ।

- (ग्रनु०)—रायल होटल के नवी**न** विधायक निवास में चीड़ के किवाड़ । खं० २११, पृ० ३२४ ।
- (ग्रनु०)—लड़िकयों ग्रौर महिलाग्रों के ग्रनैतिक व्यापार निरोधक ग्रिधिनियम का कार्यान्वयन । खं० २११, पृ० ८ ।
- (म्रनु०)—–विकास खंड म्रधिकारियों के स्थायीकरण पर विचार । खं० खं० २११, पृ० ६४० ।
- (भ्रनु०)—संशोधित बजट मैनुश्रल की तैयारी तथा कुछ सरकारी कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि। खं०२११, पु०६४२।
- (भ्रनु०)—सहायक विकास भ्रधिकारियों की पदोन्नति । खं० २११, पू० ८१६ ।
- (भ्रनु०)—सहायता तथा पुनर्वास विभाग में श्री प्रभुदयाल शर्मा की पुर्नानयुक्ति । खं० २११, पृ० ११२ ।
- सोलजर्स बोर्ड के कर्मचारियों के स्थायी-करण से सम्बन्धित श्रादेश । खं० २११, पृ० ६६०।

प्रभुदयाल, श्री----

पूर्वी जिलों में श्रोलावृष्टि से क्षति खं० २११, पृ० २३६–२३६ ।

बंशोधर शुक्ल, श्री-

- गोला तथा हरगांव चीनी मिलों के गन्दे पानी के प्रबन्ध के लिये एफलुयेंट बोर्ड की स्थापना । खं० २११, पु० १३३ ।
- पीलीभीत उपनिवेशन योजनान्तर्गत श्रिष-गृहीत भूमि । खं० २११, पृ० ५३५-५३६ ।
- (ग्रनु०)—भागपुर की वन विहीन भूमि तथा छीनी चौकी जंगल के भूमिहीन मवासा शिल्पकार । खं० २११, पृ० ६४० ।
- स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक तथा सरकार की श्रोर से पुस्तकों का प्रकाशन । खं० २११, पृ० ३४६–३५० ।

### [प्रश्नोत्तर--| बालकराम श्री----

शाहजहांपुर जिला जेल के स्रधीन खेती। खं० २११, पृ० ७२५।

(श्रनु०)—शाहजहांपुर जिले के श्रभाव-ग्रस्त क्षेत्रों में मालगुजारी में छूट देने का श्राद्यासन । खं० २११, पु० २४१, २४२ ।

### बिहारोलाल, श्री----

उप-संत्रालक श्रायुर्वेद के कार्यालय के कमंचारियों एवं श्रायुर्वेदिक कम्पा-उन्डरों का बेतन । खं० २११, पु० ६३७ ।

### बुलाकीराम, श्री---

हरदोई जिले में विभिन्न श्रपराधों की घटनाये । स्वं० २११, पृ० ३४३— ३४४ ।

### बेचनराम गुप्त, श्री--

सूचना विभाग के कर्मचारी द्वारा चाइनीज कौसिल को पहाड़ी सीमा प्रबन्ध विषयक सूचना देने की जांच। खं० २११, पु० ८१३—८१४।

# ब्रजनारायण तिवारी, श्री----

(श्रन्०)—कोयले की कमी के संबंध में केन्द्र से पत्र-व्यवहार । खं० २११, पृ० ५१६ ।

गोरखपुर जिले में धान की गाड़ियों का पकड़ा जाना । खं० २११, पृ० ५२१ ।

गोरखपुर में डिकल कालेज की स्नाय-इयकता । खं० २११, पृ० ६६८— ६६६ ।

चीनी उद्योग से श्राय । खं० २११, पू० द३५–द३६ ।

जंगल वेलवा तथा देशई देवरिया केन्द्रों में गस्ने की बिक्री रुकता । खं० २११, पु० ८४०-८४१।

देवरिया जिले के लेबर इन्स्पेक्टर झाफिस। खं० २११, पु० ८२४—८२४।

(म्रनु०)—मऊ पालिकाध्यक्ष श्री हिफ-जुर्रहमान का स्याग-पत्र । खं० २११, पृ० १२ । राज्य व्यापार योजनान्तर्गत लाद्याक्षीं के मूल्य का निर्घारण । खं० २११, प० ५२०-५२१ ।

राज्य व्यापार योजना पर व्यय । सं० २११, प० ५३४ ।

# भगवतीप्रसाद शुक्ल, श्री----

(स्रन्०)—विपायकों को रोडवेज बसों के पास देने की योजना । खं० २११, प० २२०।

# भगवतीसिंह विशारव, श्री--

जिला ग्रस्पताल, उन्नाय को बढाने की प्रार्थना । खं० २११, ए० ३५६ ।

तिकया में रोड्येज याकिंग श्राफिस गोलने की योजना । खं० २११, ५० १३८ ।

(श्रन्०) — रायबरेली से पलिए क शिरद्र हड़ताल । खं० २११, ए० ६४६ ।

### भजनलाल, श्री----

इटाबा जिले की प्रदर्शनी पर य्यय । कंठ २११, ए० ६५१।

इटावा जिले में चकां पर प्राधिकार । खं० २११, पु० २२६ ।

इटाबा में कम्य्निस्टों की सभा मं प्रशाय। खं० २११, पू० ६५३-६५४।

# भोग्वालाल, श्री----

उन्नाव जिले में रबारूण्य विभागान्तगंत मेटरनिटी संक्टर तथा ग्रक्त्वर के वेतन-ग्रादेश का पालन । लंब २११, पुरु ३३० ।

टाउन बेंक, उद्याय संबंधित कथित प्रार्थना-पत्र । खं० २११, ए० ५४८ ।

रककरना में सस्युवसता सम्बन्धी झगड़ा। सं० २११, यु० ६४ = ।

सी० एल० भार० डी० स्कीम से उन्नाव जिले के राजस्व में मृद्धि । खं० २११, पृ० ३३७-२३८ ।

# भुवनेशभुवण शर्मा, श्री----

इटाबा जिले में टेलीफोन तारों का काटा जाना । खं० २११, प्० ३६२ ।

- इटावा जिले **में भटतों को कोयला ।** ख० २११, पृ० ५२७ ।
- इटावा जिले में भारतीय दण्ड विधान की घारा ११० के कथित मुकदमे । खं० २११, पू० ३३० ।
- (ग्रनु०)—–इटावा में कम्युनिस्टों की सभा में पथराव । खं० २११, पृ० ६५३, ६५४ ।
- उर्सला हास्पिटल, कानपुर में नेत्र चिकित्सा सम्बन्धी यंत्रों की कमी । खं० २११, पु० ६५१–६५२ ।
- एटा जिले के श्री रवीन्द्रकुमार को मुन्सिफी में न लेना । खं०२११, पृ० द१३।
- गोपाष्टमी को गौ-हत्यायें । खं० २११, पृ० ५४६ ।
- जनसंघ ग्रथवा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से सम्बन्धित व्यक्तियों को नौकरी देने में सरकारी नीति । खं० २११, पु० ४४५–४४७ ।
- जनींदारी उन्मूलन के फलस्वरूप शेष लगान की वसूली । खं० २११, पृ० ३३१ ।
- (श्रन्०) नगर प्रमुखों की मुख्य मंत्री संभेंट। खं० २११, पृ० ७२०।
- (श्रत्०) ---पूर्वी पाकिस्तान के विस्थापितों की पुनर्वासन योजना । खं० २११, पु० ६४६ ।
- (श्रतु०)—फैजाबाद नगरपालिका के कर्मचारियों का वेतन । खं० २११, पृ० ७२८ ।
- (श्रनु०)—–बसों में पंखे लगाना । खं० २११, पृ० ११४ ।
- (श्रतुः) —— विकी-कर विभाग के बर्खास्त कर्मचारियों की पुनर्नियुक्ति । खं० २११, पृ० ६३४।
- (म्रतुः) बीज गोदामीं में गबन । खं० २११, पृ० ५३०।
- (श्रनु०)—मथुरा संग्रहालय में महात्मा गौतम बुद्ध की बहुमूल्य मूर्ति । खं० २११, पृ० ११८ ।

- (श्रनु०)--राज्य व्यापार योजनान्तर्यत बाद्याश्री के मूल्य का निर्घारण । खं० २११, पू० ४२० ।
- (श्रनु०)—सकरार में ताड़ गुड़ सहकारी समिति का निर्माण । खं० २११, पू० १२३ ।
- तिचिवालय में तीन वर्ष से भ्रधिक कार्य करने वाले सेक्रेटरीज तथा डिप्टी सेक्रेटरीज । खं०२११,पृ०१३२।

# भूपिकशोर, श्री---

फसलों को दैवी भ्रापत्तियों से बचाने की भ्रार्थना । खं० २११, पृ० ६४५–६४६ ।

### मथुरात्रसाद पांडेय, श्री---

किसान कालेज, शामली के लिये गन्ने के मूल्य में कटौती । खं० २११, पू० ५१७-५१८ ।

### भदनगोपाल वैद्य, श्री----

श्रायुर्वेदिक चिकित्सा श्रधिकारी । खं० २११, पू० ३६०-३६१ ।

### मदन पांडेय, श्री---

- श्राजमगढ़ सदर श्रस्पताल के नये भवन के लिये भूमि । खं० २११, पु० ६४४–६४५ ।
- श्रायल मिल्स एसोसियेशन का स्मृति-पत्र । खं० २११, पृ० १२६-१३० ।
- (भ्रन्०)—काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राक्टर को फर्स्ट वलास मैजिस्टी-रियल पावर्स। खं० २११, पृ० ६४०।
- गणेशशंकर विद्यार्थी मेमोरियल इण्टर-मीडियेट कालेज, महाराजगंज के हिसाब की जांच। खं० २११, पु० ३६२।
- गोरखपुर जिला सहकारी फेंडरेशन का निलम्बन । खं०२११,पृ० ४२८— ४२९ ।
- गोरखपुर जिले की टाउन एरियाओं में जमींदारी समाप्त करने का विचार। खं० २११, पृ० ६४७-६४८।

### [प्रश्नोत्तर--मबन पांडेय, श्री---]

- गोरावपुर जिले में विचित्र प्रकाश तया भयानक घड़ाका । खं० २११, पू० ३३८ ।
- (श्रन्०) ---गोरखपुर वन खंड में निर्माण कार्य तथा सस्तो लकड़ी । खं० २११, पृ० ६२७ ।
- ग्राम चायतों के निर्वाचन के लिये श्रादेश। खं० २११, पु० २४०— २४२।
- (श्रन्०) -- जनसंघ श्रथवा राष्ट्रोय स्वयं संघक संघ से सम्बन्धित व्यक्तियां को नौकरी देने में सरकारी नीति । खं० २११, पृ० ४४६ ।
- (म्रतु०) देवरियातथा गोरखपुर जिलों में म्रांला वृष्टि । खं० २११, ू० ६४४ ।
- नेता जी सुभावचन्त्र बोस का जन्म-दिवस मनाने के लिये श्रपील । खं० २११, ० ३२३--३२४ ।
- (भ्रनु०)——पूर्वी जिल्हों में भ्रोत्नावृध्टि। स्वं०२११, ० ६४२।
- (भ्रत्) पूर्वी जिलों में भ्रासावृष्टि से क्षति । खं० २११, \_० २३८।
- (म्रतु०) -- बसों में पंखे लगाना । खं० २११, पू० ११४ ।
- (श्रतु०) --- बाढ़ नियंत्रण बोर्ड । खं० २११, पु० ३२२ ।
- (भ्रनु०) -- रायबरेली में पुलिस के विरुद्ध हड़ताल । खं० २११, पू० ६४७।
- (श्रापु०) लच्छीपुर, जिला वाराणसी में कुवें से लाडों निकालने में विलम्ब होना । खं० २११, ० २३४ ।
- वन यातायात विकास याजना । र्वा० २११, ू० ६२५-६२ ६ ।
- (अन्०) पंशोधित बजट मैनश्रल की तैयारा तथा कुछ सरकारी कर्मचारियों के वेतन में बृद्धि। खं० २११, पृ० ६४२।

- (श्रनु०) -- सकरार में ताड़ गुड़ सहकारी समिति का निर्माण । यां० २११, पू० १२३।
- हेन्डीकाफ्ट शें कम, श्रमीनादाद, लखनऊ की जांच । खं० २११, ० ११५-११६ ।

### मन्नालाल, श्री----

- एटा जिले के श्रोरयीन्द्रकुमारका म्स्सिफी में न लेना। प्रं० २११, पृ० द१३।
- जनसम्बद्धयया राष्ट्रःय स्थय संयक्त संघ से सम्बद्धित व्यक्तियों की नीकरी बेते में सरकारी नीति । स्व० २११, ० ४४५ -४४७।
- पानम्यां की कथित प्राइमरी हेल्थ सून्टि। व्यंव २११, पुरु ६७०।
- पसम्पन्नां में श्रम्पताल की वधादयां, वाइयां स्था सेनेटरी इन्म्पेक्टर । खं० २११, पु० ३४१ ।
- मेलानी जंगल का हेर्नेस गंधाम । स्वंट २११, पृट ६३६ ।

# मलिलानसिंह, श्री----

- एटा जिले के श्रो स्वान्त्रकुमार की मन्सिकी में स लेना। गाँ० २११, पु० द१३।
- कुरायली के था देवार यो धिरुद्ध शिकायत । एं० २११, ू० ६४३ ।
- जनतंत्र अयवा राष्ट्राय स्थाप्त संघ्या संघ से राज्यान्त्रतः स्थापनतंति हाः नौकरी वेते में सपकारा नौति । स्थं० २११, ू० ४६५-४६७ ।

### माताप्रसाव, श्री----

- (भर०) -प्राम पंचाः लॉ के निवस्तिन की लिये भारेश । खंठ २११, पूठ २४१ ।
- जीन रूप जिल्ले में हरिकन करूपाण विभाग का कूप निर्माणार्थ प्राप्तान । खं० २११, पु० ३४७ ।

- म्कितनाथराय, श्री---
  - श्राजमगढ़ जिले में पंचायत मंत्रियों का निलम्बन । खं०२११,पृ०७३८-७३६ ।
  - श्राजमगढ़ जिले में पुलिस बढ़ाने की मांग । खं०२११, पृ०६५६।
  - श्राजमगढ़ जिले में सरिया का वितरण । खं० २११, पृ० ५४६ ।
  - श्रा जमगढ़ जिले में सस्ते श्रनाज की दुकानें बढ़ाने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० ५३० ।
  - स्राजमगढ़ रोडवेज बस स्टेशन पर लाउड स्पीकर को स्रावश्यकता। खं० २११, पृ० ८१८–८१६।
  - श्रालू सुरक्षित रखने के लिये कोल्ड स्टोरेज की भ्रावश्यकता। खं० २११, पृ० ५४३ ।
  - कन्धरापुर थाने के म्रन्तर्गत विभिन्न म्रपराघ। खं० २११, पृ० ३६२।
  - गोरखपुर तथा वाराणसी डिवीजनों से पंचायत सेक्रेटरियों का हटाया जाना। खं० २११, पृ० २१–२२।
  - गोरखपुर रोडवेज क्षेत्र में नियुक्तियां। खं० २११, पृ० ८३६–८४०।
  - पंचायत मंत्रियों के स्थानान्तरण के संबन्ध में प्रन्तरिम जिला परिषद्, स्राजमगढ़ का प्रस्ताव। खं० २११, पृ० ७१७— ७१८।
  - प्रारम्भिक जिक्षा ग्रनिवार्य करने की योजना। खं० २११, पृ० ३४४।
  - बन्दियों की अपराधी मनोवृत्तियों में सुधार करने पर विचार। खं० २११, पु० ६-१०।
  - विकास खंड श्रधिकारियों के स्थायीकरण पर विचार। खं० २११, प्० ६३६-६४०।
  - श्री ज्ञिवप्रसाद गुप्त चिकित्सालय, वाराणसी में बहरापन दूर करने के कार्य। खं० २११, पृ० ३३४।
  - सगड़ी तहसील में ग्रायुर्वे दिक श्रौषधालय खोलने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० ३३१ ।

सूखा पोड़ित क्षेत्रों में छात्रों की फीस माफ करने की प्रार्थना। खं० २११, पु० ६५२-६५३।

### मूलचन्द, श्री--

- सीतापुर जिले की हरिजन कल्याण श्रनुदान वितरण समिति। खं० २११, पु० ३४८।
- सीतापुर जिले के पंचायत राज विभाग में हरिजन कर्मचारी। खं० २११, पृ० ७२४।
- सीतापुर में पुलिस द्वारा हाइडेल कर्मचारियों के पीटे जाने की जांच। खं० २११, प्० ६६०।
- सीतापुर–हरदोई सड़क पर बस सर्विस की ग्रावक्यकता। खं०२११, पृ० १३४।

### मोतीलाल ऋवस्थी, श्री---

- (अनु०)——उर्सला हास्पीटल, कानपुर में नेत्र चिकित्सा सम्बन्धी यंत्रों की कमी। खं० २११, पृ० ६५२।
- कन्नौज के एक बालिका विद्यालय से संगीत अध्यापक को हटाना। खं०२११, पृ०३२७।
- (अनु०) कानपुर की कुछ मिलों में अभिनवीकरण। खं० २११, पृ० १२७।
- कानपुर जिले के कृषि फार्म। खं० २११, पृ०५४२।
- कानपुर जिले के परिवाद श्रधिकारी को दिये गये परिवाद-पत्र। खं० २११, पृ० ३२७-३२८।
- (अन्०)—कोआपरेटिव सुपरवाइजरों के चुनाव में अलीगढ़ जिले के अधिक उम्मोद्यार लेने पर आपत्ति। खं० २११, पृ० ५२४।
- (म्रनु०)—गवर्नमेंट टेक्निकल इंस्टीट्चूट लखनऊ के विद्यार्थियों की श्विकायत । खं० २११, पृ० १२६ ।
- (भ्रनु०)—गेहूं तथा चावल का कय। खं० २११, पृ० ५२७।

- |प्रश्नोत्तर--मोतीलाल प्रवरथी, श्री--|
  - नेता जी सभाषचन्द्र बोस का जन्म-दिवस मनाने के लिये प्रवील । व ० २११, पृ० ३२८।
  - (अत०)—अप्रासनीय कार्य हिन्दी स करन का अनुरोध। खं० २११, प० ६२०।
  - बोर्ड को परीक्षा में जिद्यार्थियों की अप्रस्कलता में बद्धि। लब्द २११,पब् २११–३३२।
  - म्दा ग्रजायवयर च प्रांग्रेम म्यूजियम, लखनऊ के भयनों का निर्माण व्यय। खं० २११, ए० ३५६।
  - (श्रन्०)—-रोजनल द्रांसपोटं श्राफिससं तथा हरबोई मोटर श्रापरेटसं के विरुद्ध शिकायते। खं० २११, पृ० ८२६।
  - (श्रनु०)——लड़िकयों की शिक्षा के लिए कन्द्रीय योजना का कार्यान्वयन। खं० २११, पु० ३२६।
  - विदेशों में मान्यता प्राप्त लखनऊ के ध्रांग्ल भारतीय विद्यालय। खं० २११, प्० ६४६-६५०।
  - (श्रनु०)—संशोधित बजट मैनुश्रल की तंयारी तथा कुछ सरकारी कर्मचारियों के बेतन में वृद्धि । खं० २११,पृ०३४१,३४३।
  - सहकारी संघ, घाटमपुर का विघटन। सं० २११, पृ० ५२६।
  - सेमिनारों पर व्यय । खं० २११, पृ० ५४३।
  - सेवा सहकारी समितियों के कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण पर व्यय। खं० २११, प्० ५४६-५४७।
  - हाई स्कूल बोर्ड व इन्टरमोडिएट की परीक्षा में असफलता सम्बन्धी भ्रावेदन-पत्र। खं०२११, पृ०६४४--६४४।
- मोहनलाल वर्मा, श्री---
  - हरदोई व बाजपुर चीनी मिलों की रिकवरी। सं० २११, पू० १३१।

- मोहनसिंह मेहता, श्री- --
  - प्रान्तीय रक्षक वल के कमंचारियों को स्थायी करन में जिल्लाचा कर २११, प्र ४४८-४४८।
- यम्नासितः श्रीः -
  - काजमाप्तर पात्रका भाग भाग राज्यस्यी के जम्मा त्यारा गाउँ १४१, पठ दहेंद्री
  - जमानित थान मा वित्त ता नरी ही सत्यास्त्र स्थ्या र १४७।
  - दाक्तली निकास सम्भाग माधा स्मिन स्वान्य इकाई यानन के खादेश। स्वरूपश्चित २४२।
  - नामंल रक्त्सा । यव २११, प्र २४२--३४३।
  - (श्रन्०)— पूर्वी जिन्हें म श्रानावृद्धि। स्व०२११,पु०६४२।
  - बिरनो थाने पर राष्ट्रधाज सकित क्रांकिस न होना, क्राजमगढ़ क्षण्य में सन कन्द्रकटरी के प्राथी। १४० २११, प्र १३४।
- यादवेन्द्रदत्त दुबे, राजा--
  - इन्टर कालंकों के आहंग टीनरों का येनन। खंब २११, एवं ६५८।
  - पुटा जिला के श्री स्थोन्द्रक्तार को मन्त्रिकी में नर्लंदा कर २११, प्र = १३ ।
  - (श्रन्०)—कोश्रापरंदिक गपरवाइ करों क चनाय में श्रलीगढ़ को श्रीधक उग्मादवार लने पर श्रापास । ल० २११, पृ० ४२४ ।
  - चोरियों के सम्बन्ध में रायबरेली म श्राकेवन-पत्र। सं० २११, पू० ६५६-६६७।
  - जनसंघ ग्रथवा राष्ट्रीय स्वयं संबक्ष संघ सं सम्बन्धित व्यक्तियों की नौकरी देने में सरकारी मीति । खं० २११, पु० ४४५-४४७।
  - (अनु०) ब्राइनरों व कम्बन्टरों के लिए बल-स्टेंजनों पर विश्वाम गृह न होना। सं० २११, पृ० ११६।

- (अनु०) तिब्बत-भारत सीमावर्ती भागों। मे विकास-कार्यों की बढ़ाना। खं० । २११, पृ० ११७।
- (श्रनु०)—–पूर्वी जिलों में स्रोलावृष्टि से क्षति। खं० २११, पृ० २३८।
- विश्वेश्वरानन्द इन्टर कालेज, श्रकबरपुर से हटाये गये श्रध्यापकों का श्रावेदन-पत्र । खं० २११, पृ० ६७० ।
- (ग्रनु०)--हैन्डीकाफ्ट झो-रूम, श्रमीना-बाद,लखनऊ की जांच। खं० २११, पृ० ११६।

### रघुवीरराम, श्री-

यूसुफपुर—-कासिमाबाद बस-सर्विस, गाजीपुर बस स्टेशन पर मुसाफिरखाना बनाने की योजना। खं० २११, पृ० १३७–१३८।

#### राजनारायण, श्री---

- स्रादिलनगर ग्राम की डकैती। खं० २११, पु० ३४४।
- (स्रनु०) स्रानन्द बाजार गोदौतिया का नक्शा । खं० २११, पृ० ७३६ ।
- (श्रनु०) -- कानपुर की कुछ मिलों में श्रभिनवीकरण। खं० २११, पृ० १३७।
- कानपुर नगरमहापालिका के उद्यान विभाग के कर्मचारी। खं० २११, पू० ७३३।
- काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राक्टर को फर्स्ट क्लास मैजिस्टीरियल पावर्स। खं० २११, पृ० ६४०– ६४१।
- (म्रनु०) --कास्ट-म्राफ-लिविंग इन्डेक्स । खं० २११, पृ० ८२६ ।
- (श्रनु०) गोरखपुर व वाराणसी डिबीजनों में महिला मंगल योजना के काम तथा कर्मचारी। खं० २११, पृ०२४।
- गौड ट्वाय फेक्टरी, फजलगंज की कर्ज के लिये दरस्वास्त । खं० २११, पू० ८४२-८४३।

- (भ्रनु०)—-ग्राम पंचायतों के निर्वाचन के लिए भ्रादेश। खं० २११, पृ० २४१।
  - (ग्रनु०) -- जनसंघ ग्रथवा राष्ट्रीय स्वयं-संवक संघ से सम्बन्धित व्यक्तियों को नौकरी देने में सरकारी नीति। खं० २११, पृ० ४४५, ४४६।
  - (ब्रनु०) -- जेलों में 'मान पे:चित सुधार' करने की जानकारी। खं० २११, पृ० १६।
- नकुड़ में विकास खंड ग्रधिकारी की जीय से लड़के की मृत्यु। खं० २११, प्० ६२३-६२४।
- (ब्रनु०)--नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म-दिवस मनाने के लिये श्रपील। खं० २११, पृ० ३२४।
- पीड़ित जनता संघ, कोटद्वार की मांगें। खं० २११, पृ० ६३३।
- पूर्वी जिलों में श्रोलावृष्टि से क्षति। खं० २११, पृ० २३६।
- (ग्रनु०)--बसों में पंखे लगाना । खं० २११, पृ० ११४ ।
- (ग्रनु०)—रजमुङ्ग्या भगवन्तपुर में जंगल कटवाने की शिकायत । खं० २११, पृ० ६३*०*, ६३१ ।
- (ग्रजु०) ——लच्छीपुर, जिला वाराणसी में कुर्ये से लाशें निकालने मे विलम्ब होना । खं० २११, पृ० २३३—२३६ ।
- (श्रनु०)——वाराणसी जी० टी० रोड सीवर लाइन बनाने का ठेका। खंड २११, पृ० ७३२।
- शाहगंज की गन्ना हड़ताल में सोशलिस्टों की गिरफ्तारी। खं० २११, पृ० ६६२।
- (भ्रनु०) सूखा पीड़ित क्षेत्रों में छात्रों की फीस माफ करने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० ६५२-६५३।
- सोशलिस्ट पार्टी की मांगें । खं० २११, पु० द१०—द१३।

### राजाराम शर्मा, श्री—

गांघी ग्राम श्रौषघालय का स्थानान्तरण। खं० २११, प्० ६६४। [प्रक्रतोत्तर--राजाराम दार्मा, श्री---]

पीलीभीत उपनिवेशन योजना। खं० २११, पृ० ५४४।

बिखरा राजकीय स्त्रायुर्वेदिक स्नस्पताल के भवन का कथित किराया। खं० २११, पृ० ३४७।

राजेन्द्र किशोरी, श्रीननी---

भ्रपहृत महिलायें। खं० २११, पृ० ७२६–७३०।

किसान कालेज, सामली के लिये गन्ने के मूल्य में कटौती। खं० २११, पृ० ५१७-५१८।

गोरत्वपुर व वाराणसी डिवीजनों में महिला-मंगल योजना के काम तथा कर्मचारो। खं०२११, पृ०२४–२५।

तीसरी पंचवर्षीय योजनान्तर्गत उद्योग। स्वं० २११, पु० ८१६।

पंचायत राज मंत्रियों व सेकेटरियों की कथित बहाली। खं० २११, पृ० ७१६—७१७।

बस्ती तथा वेयरिया जिलों में समाज कल्याण कार्यी पर व्यय। खं० २११, पु० ७३५।

बीज गोवामों में गबन । खं० २११, पू० ४२६--४३०।

महिला बन्वियों की जिलेबार संख्या। र्लं०२११,पु०२२-२३।

लखनऊ में श्रमिक बस्ती के क्वार्टरों का किराया। खं० २११, पु० १२२।

लड़िकयों भ्रौर महिलाश्रों के श्रनैतिक व्यापार निरोधक श्रिधिनियम का कार्यान्वयन। खं० २११, पू० ७-६।

राजेन्द्रसिंह यादव, श्री--

फर्क्खाबाद जिले में कागजात दुरुस्ती के मुकदमें तथा श्रपने निवास क्षेत्र में काम करने वाले लेखपाल। खं० २११, पृ० ३५६।

फर्रवाबाद जिले में पुलिस कांस्टेबिला की भर्ती में परिगणित तथा पिछड़ी जाति के उम्मीबबार। खं० २११, ६६७। रामकिकर, श्री--

हरिजन ए० डी० स्रो०। सं० २११, पु० ३५६।

रामकृष्ण सारस्यत, श्री---

(म्रन्०) गृह निर्माण योजनान्तर्गत रोजगार मिलन का म्रनमान। सं०२११, पु०७२२।

रामवास श्रार्य, श्री---

स्रोद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्रों में स्नुन्स्चित जाति के प्रशिक्षा (या को स्विधाएं। खं० २११, ए० = ३०-=३१।

कानपुर में र्यानज परीक्षण केन्द्र तथा श्रत्मोड़ा में श्रीद्योगिक श्रारथान योजने की योजना। स्वंठ २११, पुरु ८४३।

कक्कारों पर गर्ने का मृल्य निर्धारण करने की प्राथना। गर्न० २११, पृ० १३७।

रामदीन, श्री--

नगरों के हरिजनों को सहायता न मिलना। सं० २११, प० ३४५।

मेनपुरी जिल के पंचायत विभाग में श्रमुसूचिल जाति के क्षमंचारी। खंठ २११, पठ ७२७-७२८।

मेनपुरी जिले से श्रनस्थित जाति के लोगों को बस्दूत के लाद्रगेस। संव २११, एव १६१।

मनपरी में जगावे गए परना क सरवत्य में शिकायता। खंठ २११, पुठ ७२२— ७३३।

रोडवेज विभाग में नाकरी के निए अनुमूचित जाति के उम्मीययार । खंब २११, पुरु ८४४ ।

श्रम निरोक्षकों के रिक्त स्थान । गां० २११, पुरु १३४ ।

राम प्रसाद, श्री---

श्रसिस्टेंट रजिस्तार, कोग्रापरंदिव सोसाइटो, जिला रायबरेती की सुरक्षा व्यवस्था । खं० २११, पु० ३५८ ।

रायबरेली में पुलिस के बिन्दा हड़-ताल । खं० २११, प्० ६४७-६४८ ।

### रामबली, श्री--

भीरीपुर ग्राम के लेखपाल के विरुद्ध शिकायत । खं० २११, पृ० ३४५ ।

### रामलखन मिश्र, श्री--

बढ़नी तथा इटवा विकास खंडों में सिंचाई के कार्य । खं० २११, पृ० ८४३ ।

बस्ती जिले की सहकारी समितियों मेगबन । खं० २११, पृ० ५४३-५४४ ।

रामलखन सिंह, श्री---

डुमरियागंज तहसील में चकबन्दी संबन्धी निगरानियां । खं० २११, प्० ३४० ।

बस्ती जिले में डकैतियां तथा कत्ल । खं० २११, पु० ३४२ ।

### रामलाल, श्री---

बस्ती जिले में महुग्रापार ग्रौर गंगापुर ग्रामों की सीमा का मामला तथा निवासियों का पुनर्वासन । खं० २११, पु० ३४८-३४६ ।

### रामशरण यादव, श्री---

एच० टी० सी० प्रशिक्षण में हरिजनों व पिछड़ी जातियों का मनोनयन। खं० २११, पृ० ३४८।

त्रखनऊ में कलेक्शन म्रमीनों की नियुक्तियां।खं०२११,पृ०६६७।

# रामसमझावन, श्री---

जौनपुर जिले में हरिजन विद्यार्थियों को छात्रवित्त देने के संबंध में शिकायत । खं०२११, पृ०३५१ ।

# रामसिंह चौहान बैद्य, श्री--

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म-दिवस मनाने के लिये ग्रपील । खं० २११, पृ० ३२३-३२४ ।

# रामसुन्दर पांडेय, श्री---

(ग्रन्०)——ग्रन्तरिम जिला परिषदों के उपाध्यक्षों के ग्रधिकारों में कमी । खं० २११, पृ० ४३७ । ब्राजमगढ़ जिले के प्रधानाध्यापक श्री भागवतलाल व श्री सरजूसिंह के प्रार्थना-पत्र । खं० २११, पृ० ३२८-३२६ ।

श्राजमगढ़ जिले में टेस्ट वर्क्स चार्ज श्राफिसर्स कम होने की शिकायत। खं० २११, पृ० ३२१-३२२।

स्राजमगढ़ जिले में सिंचाई के कुन्रों का निर्माण । खं० २११, पृ० ८१७-८१८ ।

क्राजमगढ़ तथा बलिया की गन्ना सोसाइटियों का फालतू गन्ना । खं० २११, पृ० ११६-१२१ ।

कोयले की कमी के संबंध में केन्द्र से पत्र-व्यवहार । खं० २११, पृ० ५१८-५१६।

गोरखपुर विश्वविद्यालय में मेडिकल कालेज खोलने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० ६३७-६३८ ।

(भ्रनु०) — ग्राम पंचायतों के निर्वाचन के लिये भ्रादेश । खं० २११, पृ० २४० ।

चक्की भूसाडोही ग्रौर देवरिया का सीमा विवाद । खं० २११, पृ० ६५०-६५१ ।

चक्की भूसाडोही के किसानों की श्रधिकारियों के विरुद्ध शिकायतें। खं०२११, पृ० ६५०।

जिला कोग्रापरेटिव बैक, स्राजमगढ से रुपया निकालने में ग्रनियमितता । खं० २११, पृ० ५२५-५२६ ।

डी० सी० एफ०, ग्राजमगढ़ की जांच रिपोर्ट । खं० २११, पृ० ५४२ ।

(श्रनु०)—पंचायत मंत्रियों के स्थाना-न्तरण के संबंध में श्रन्तरिम जिला परिषद्, श्राजमगढ़ का प्रस्ताव । खं० २११, पृ० ७१८ ।

पूर्वी जिलों में भ्रोलावृष्टि । खं० २११, पु० ६४२ ।

पूर्वी जिलों में ग्रोलावृष्टि से क्षति । 'खंo' २११, पृ० २३६-२३६ ।

[प्रश्नोत्तर-रामसुन्दर पाण्डेय, श्री]--

बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिये श्राजमगढ़ श्रन्तरिम जिला परिषद् को दिये गये श्रनुदान का व्यय । खं० २११, पृ० ७३४-७३६ ।

राज्य में रेलवे लाइन बढ़ाने की श्रावश्य कता । खं० २११, पृ० ६४२ । (श्रनु०)—सूखा पीज़ित क्षेत्रों में छात्रों की फीस माफ करने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० ६४२—६४३ ।

### रामसूरत प्रसाद श्री--

- (श्रनु०)---गोरखपुर नगरपालिका को श्रनुदान तथा ऋण । खं० २११, पु० १७ ।
- (श्रनु०)—गोरखपुर वन खंड में निर्माण कार्य तथा सस्ती लकड़ी। खं० २११, पृ० ६२७-६२८।
- (भ्रनु०)—रेलवे स्टेशनों से गांव वालों को पानी देने की प्रार्थना । खं० २११, पू० १८ ।
- (श्रन्०) लड़िकयों की शिक्षा के लिए केन्द्रीय योजना का कार्यान्वयन। खं० २११, पृ० ३२६।

# रामस्वरूप वर्मा, श्री--

- भ्रठोहा परगने में चकबन्दी का कार्य रोकना । खं० २११, पू० ३५५ ।
- (मनु०)—म्रालीगढ़ जिले के लिये व्हीट फार्मिग पाइलेट प्रोजेक्ट योजना। खं० २११, पु० ५३२।
- (भ्रनु०)—इटावा में कम्युनिस्टों की सभा में पथराव । खं० २११, पु० ६५३-६५४।
- (अनु०) उर्दू शिक्षा के लिए पूथक अनुदान देने की प्रार्थना । खं० २११, पू० ३३३ ।
- (भनु०) उसंला हास्पिटल, कानपुर मॅ नेत्र चिकित्सा संबंधी यन्त्रों की कमी । खं० २११, पृ० ६५२ ।
- कड़सरवा तथा मझौली प्राम की डकैतियां । सं० २११, पृ० ७१६ ।

- गवर्नमेंट टेक्निकल इंग्टोट्यूट, लखनऊ के विद्यार्थियों की शिकायत । खं० २११, पृ० १२६ ।
- (श्रन्०)—-गवनंमेट प्रेम, लग्ननऊ व इलाहाबाद के श्रस्थायी कर्मचारी। खं० २११, ए० ८२४।
- जेलों के लिये निषेध समाचार-पत्र । गां० २११, पु० १४-१५ ।
- (श्रनु)—ितव्यत भारत सीमावर्ती भागों में विकास-कार्या का बढ़ाना । खं० २११, पु० ११७ ।
- (भ्रान्०)—प्रान्तीय रक्षक दल के कर्मचारियों को स्थायी करने में विलम्ब । लं० २११, प० ४४८-४४६ ।
- (अन्०)——घोडं की परीक्षा में विद्या-थियों की असफलता में युद्धि । खं० २११, पु० ३३२ ।
- मेघराजपुरा में दरगार्थासह हाक् को मारने वालों की इनाम । खं० २११, ए० ३६१ ।
- (म्रन्०)— रजम्हिया भगयन्तपुर मं जंगल कट शन की शिकायत । खं० २११, ए० ५२६-५३०।
- राज्य व्यापार योजनान्तमंत लाह्यान्नों के मूल्य का निर्धारण । लं० २११, पु० ४२०-४२१ ।
- (अन्०)—रायल होटल कं नधीन विधायक निवास में चीड़ के कियाड़ । खं० २११, पू० ३२४ ।
- लखनऊ में रायल होटल के विधायक निवास में खराब सामान लगाने की शिकामत । सं० २११, पु० ३४२-३४३ ।
- (अनु०) लक्षत्रीपुर, जिला वाराणसी में कुयें से लागें निकालमें में विलम्ब होना । सं० २११, पू० २३५-२३६ ।
- (अनु०)—लीसा का संग्रह । सं० २११, पू० ६३= ।

- वाराणसी जी० टी० रोड सीवर लाइन बनाने का ठेका । खं० २११, पृ० ७३१-७३२ ।
- (श्रनु०)—सहकारी संघ, घाटमपुर का विघटन । खं० २११, पृ० ४२६ ।
- (श्रनु०)—सोशलिस्ट पार्टी की मांगें । सं० २११, पृ० ८११ ।
- (श्रनु०)—हरी खाद के बीज वर्द्धन के लिये राज्य सहायता । खं० २११, पृ० ५२३-५२४ ।
- (श्रनु०)——हैन्डोक्राफ्ट शो-रूम, श्रमीना-बाद, लखनऊ की जांच । खं० २११, पृ० ११६ ।

#### रामायणराय, श्री----

- (श्रनु०)---- उर्दू शिक्षा के लिए पृथक श्रनुदान देने की प्रार्थना । खं० २११, प्० ३३३ ।
- (श्रनु०)—गोरखपुर जिले में धान की गाड़ियों का पकड़ा जाना । खं० २११, पृ० ५२१ ।
- (भ्रनु०)—-राज्य व्यापार योजनान्तर्गत खाद्यान्नों के मूल्य का निर्घारण । खं०२११, पृ० ५२० ।
- (श्रनु०)——लितपुर बांध पर उल्लुओं का कथित श्रङ्डा । खं० २११, पु० ३१६ ।
- (ग्रनु०)---वन यातायात विकास योजना । खं० २११, पृ० ६२५ ।
- (ग्रनु०)—सोज्ञलिष्ट पार्टीकी मांगें। स्रं० २११, पृ० ८११।

# रूमसिंह, श्री---

- उपाध्यक्ष श्रन्तरिम जिला परिषद् शाहजहापुर, से श्रधिकार वापस लेने की प्रार्थना । खं० २११, प्० ७३७ ।
- रजमुङ्ग्या भगवन्तपुर में जंगल कटवाने की शिकायत । खं० २११, पृ० ६२६-६३१ ।

- शाहजहांपुर जिले के स्रभाव ग्रस्त क्षेत्र
  में मालगुजारी में छूट देने का
  स्राह्यासन । खं० २११, पृ०
  २४१-२४२ ।
- शाहजहापुर जिले में कथित डिस्ट्रिक्ट डेवलपमेंट कोग्रापरेटि सोसाइटी । खं० २११, पृ० ५३४ ।

### ल क्मणराव कदम, श्री---

- ए० डी॰ एम० (ई०) रखने के कारण। खं॰ २११, पु॰ ८१४।
- कानपुर के एक मुस्लिम व्यापारी की खानातलाशी । खं० २११, पृ० ३३६ ।
- कानपुर में क्लेक्टरगंज रोडवेज बस स्टेशन की स्थिति । खं० २११, पृ० ८३७ ।
- झांसी में सब-रीजनल ट्रान्सपोर्ट श्राफिस खोलने का निर्णय । खं० २११, प्० ८३४ ।
- रायल होटल के नवीन विधायक निवास में चीड़ के किवाड़ । खं० २११, पृ० ३२४-३२५ ।
- लखनऊ सेना क्षेत्र में चोरी की रिपोर्ट । खं० २११, पृ० ३३७ ।
- लच्छीपुर, जिला वाराणसी में कुयें से लाशें निकालने में विलम्ब होना । खं० २११, पृ० २३३-२३६ ।
- विधायकों को रोडवेंज बसों के पास देने की योजना । खं० २११, पृ० ३२०।
- विलय राज्य समथर का कोष तथा बिजली न होने की शिकायत । खं० २११, पृ० ८३६ ।

### लोकनाथ सिंह, श्री---

वाराणसी जिले के कुछ श्रौषधालयों के भवनों के संबंध में जानकारी । खं० २११, पु० ३५३ ।

### विनय लक्ष्मी सुमन, श्रीमती---

उत्तर काशी जिले में श्रौद्यौगिक श्रास्थान खोलने का श्रादेश । खं० २११, प० ८४० । [प्रक्तोत्तर--विनयसक्ष्मी, श्रीमसी---]

उत्तराखंड मंडल का निर्माण तथा भोटियों की मांग । खं० २११, प० ८२१-८२२ ।

टेहरी-गढ़वाल जिले में नैलचामी, कीर्तिनगर, किलकिलेश्वर संबंधित शिक्षा संस्थायें । खं० २११, पू० ३३६ ।

टेहरी-गढ़वाल जिले में वेद्यों को सहायता। खं० २११, पू० ३६३।

नरेन्द्रनगर में टैक्निकल स्कूल खोलने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० १२४ ।

### विश्रामराय, श्री---

श्राजमगढ़ जिले में लगान में छूट । खं० २११, पु० ३५०-३५१।

श्राजमगढ़ सदर श्रस्पताल के नये भवन के लिए भूमि । खं० २११, पू० ६४४-६४५ ।

नवीन चिकित्सालय खोलने की योजना । खं० २११, पु० ६६२ ।

लालगंज तहसील में हरिजन कल्याणार्थ कथित विशेष ग्रमुदान । खं० २११, पृ० ३४१ ।

## बोरसेन, थो---

त्याग-पत्र देने वाले ग्रध्यापकों का शेष बेतन । खं० २११, पू० ३५७ ।

## वीरेन्द्रशाह, राजा---

कुवौरा, कुठौद एवं रामपुरा विकास खंडों का व्यय । खं० २११, पू० १३० ।

(श्रन्०)—गोरलपुर वेवरिया तथा ग्राजमगढ़ जिलों में नियोजन विभाग के पुराने कर्मचारी । खं० २११, पु० १२२ ।

जालौन अन्तरिम जिला परिषद् का अनुदान । खॅ० २११, पृ० ७३७ । जालौन जिले के अस्पतालों में डाक्टरों की कमी । खं० २११ पृ० ३३७ । जालौन जिले में सर्विस कोश्रापरेटिय सोसाइटियां बनने की जानकारी । खं० २११, पृ० ५३१ ।

### क्रजविहारी मेहरोत्रा, श्री---

(श्रनु०)—बन्दियों की श्रपराधी मनोवृत्तियों में सुधार करने पर विचार । गां० २११, प० ६ ।

शिवप्रसाद नागर, श्री---

श्रन्तरिम जिला परिषद्, लीरी मे पृथक किये गये श्राधापकों का शेष बतन । लं० २११, प्० ३६४ ।

(श्रन०)—श्रन्तरिम जिला परिषदों के उपाध्यक्षों के श्रापकारों में कमी । खं० २११, पु० ७३४ ।

(भ्रन्०)—भ्रद्धं कुम्भी मेला, इलाहाबाद में दी गई टीन । खं० २११, पृ० १० ।

(धनु०)— धाजमगद् तथा बालिया की गन्ना सोसाइटियो का फालतू गन्ना । खं० २११, पू० १२१ ।

खौरी जिले के पंचायत मंत्री । गं० २११, पृ० ७२३-७२४।

सीरी जिले के सिविल सर्जन तथा इंचाजं, लेपरासी सेंटर के विरुद्ध शिकायत । खं० २११, पू० ३३६-३४० ।

खीरी जिले में धान के बोज की बसूली मृत्तबी करने की प्रार्थना। ख० २११, पु० ५३८।

लीरी जिले में ला एन्ड आईर सम्बन्धी मीटिंग। सं० २११, प० ३५४।

(ग्रनु०)--गह निर्माण योजनान्तर्गत रोजगार मिलने का ग्रनुमान। मं० २११, पु० ७२२।

(भनु०)—गोरलपुर देवरिया सथा भाजमगढ़ जिलों में नियोजन विभाग के पुराने कर्मचारी। खं० २११, प्०१२२।

(भनु०)--प्राम पंचायती को नवीन समिकार। सं० २११, पुर २४०।

- (ग्रनु॰) -- जेलों के लिये निषेध समाचार पत्र। खं० २११, पू० १४।
- नियोजन कार्यालय, खीरी में क्लर्को का इन्टरव्यू । खं० २११, पू० ८४०।
- (श्रनु०) --- नेताजी सुभाष चन्द्र। ोस का जन्म-दिवस मनाने के लिये अपील। खं०२११, पृ०३२३।
- (अनु०) नंचायत मंत्रियों के स्थानांतरण के सम्बन्ध मे अन्तरिम जिला परिषद् आजमगढ़ का प्रस्ताव। खं० २११, पु० ७१८।
  - ( अनु॰ )—नीलीभीत उपनिवेशन योजनान्तर्गत अभिगृहीत भूमि । खं॰ २११, पृ॰ ५३५-५३६।
  - (प्रनु०)--मैलानी जंगल का है प्रेस गोदाम। खं० २११, पृ० ६३६।
  - (श्रनु०)—रजमुङ्गिया भगवन्तपुर में जंगल कटवाने की जिकायत । खं० २११, पृ० ६३०।
- रोजनल ट्रान्सपोर्ट श्राफिस, लखनऊ के गजटेड श्राफिसमी। खं० २११, पृ० १३४।
- लखीमपुर में श्रस्थायी सिनेमा के लिये स्वोकृति न मिलना। खं० २११, पु० ८२२-८२३।
- (श्रनु०)——लच्छोपुर, जिला वाराणसी मं कुर्ये से लाशे निकालने में विलम्ब। होना। र्खं० २११, पृ० २३४।
- (श्रनु०) लड़िकयों श्रौर महिलाश्रों के श्रनेतिक व्यापार निरोधक श्रधिनियम का कार्यन्वयन। खं० २११, पृ० ८।
- (ग्रन्०)--विकास खंड प्रधिकारियों के स्थायीकरण पर विचार। खं० २११, पृ० ६३६।
- (भ्रनु०) संशोधित बजट मेनुग्रल की तैयारी तथा कुछ सरकारी कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि। खं० २११, पृ० ६४१ — ६४२ ।

- सुचना विभाग की ''प्रोग्नेस'' पत्रिका के प्रकाशन पर व्यय। खं० २११, पु० ६६६।
- (श्रनु०)---सोझलिस्ट पार्टी की मांगे। खं० २११, पृ० ८११।
- (ग्रनु०)--हैन्डीकाफ्ट्स शो रूम,ग्रमीना-बाद, लखनऊ की जांच। खं० २११, पृ० ११५।
- शिवराज बहादुर , श्री---
  - जुडिशियल मैजिस्ट्रेटस। खं० २११, प० द३३।
  - बरेली जिले के देहाती क्षेत्र में सस्ते श्रनाज की दुकाने न होना तथा फूड ऐडवाइजरी कमेटी की मीटिंग। खं० २११, पृ० ५३६।
- बरेली जिले मे ग्राम पंचायतों व न्याय पंचायतों का निर्माण न होना। खं० २११, पृ० ७३४-७३५। जिवराजींसह यादव, श्री—-
  - पिसनहरी गांव की झील का पानी निकालने का सुझाव। खं० २११, पु० ३५८।
- शिवराम, श्री--
  - श्रफंजलगढ़ परगना निवासी लाला राजाराम की हत्या। खं० २११, प्०३६०।
  - एटा जिले के श्री रवीन्द्र कुमार को मुन्सिफी में न लेना। खं० २११, पृ० ८१३।
  - जनसंघ भ्रथवा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से सम्बन्धित व्यक्तियों को नौकरी देने में सरकारी नीति। खं० २११, पृ० ४४५-४४७।
  - जिला सूचना श्रधिकारियों का चुनाव। खं० २११, पृ० ३४६।
- शीतला प्रसाद, श्री---चक्रबन्दी वाले जिले। खं० २११, पु० ३६०।
- श्रद्धादेवी शास्त्री, कुमारी---
  - किसान कालेज, झामली के लिये गन्ने के मूल्य में कटौती। खं० २११, ५१७-५१८।

- [प्रश्नोत्तर-श्रद्धादेवी शास्त्री, कुमारी--]
  - बुलन्द हाहर जिले के एक श्रानरेरी मेजिरट्रेट के खिलाफ शिकायत। खं०२११,पु०६७०।
  - सभाराचिवों के युलन्दशहर के दौरे पर व्यय। खं० २११, पृ० =३०।
- श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, श्री--
  - स्रागरे में कायले की कमी। खं० २११, पु० ५३०।
  - (श्रतु०) -- कड़सरपा तथा मझोली ग्राम की डकंतियां। खं० २११, पृ० ७१६।
  - खरीक ऋभियान,। खं० २११, पू० ५४१।
    - (श्रुतु०)--जेलों में हाथ से चक्की चलाना बन्द करने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० ७२७।
    - तिब्बल-भारत सोमावर्ती भागों में विकास-कार्यों को बढ़ाना। खं० २११, पृ० ११६-११८।
    - प्रशासनीय कार्यहिन्दी में करने का श्रमुरोध। खं० २११, पृ० द१६--द२०।
    - (श्रनु०)--फसलों को दंबी झापत्तियों से बचाने को प्रार्थना । खं० २११, पृ० ६४५--६४६।
  - फास्फेटिक उर्वरक वितरण में छूट।
     खं० २११, पृ० ५२५।
    - (ग्रनु॰)--बलिया जिले में उपल वृष्टि से भति। खं० २११, पृ० ६२४।
    - (श्रनु०) --- बसों में पंत्रा लगाना। खं० २११, पू० ११४।
    - भूमि बंधक बैक। खं० २११, पू० ५४६।
    - (अनु०)---मऊ पालिकाध्यक्ष श्री हिफजुरहमान का त्याग-पत्र। खं० २११, पू० ११।
    - (अनु०) --- रायबरेली में पुलिस के विरद्ध हड़ताल। सं० २११, पू० ६४७।

- (अतु०) लड़कियों अरोर महिलाओं के अनेतिक व्यापार निरोधक अधिनियम का कार्यान्वयन । गां० २११, पृ० ८७६ ।
- (अनु०)-महायता तथा पुनर्वास विभाग सं श्रो प्रभनात दार्मा की पुनर्नियुक्ति। त्रं० २११, पृ० ११२।
- (प्रत०)--गोर्जालस्ट पाट(की मांगे। वं० २११, पु० ६१२।
- रोडवेज क्षेत्र, श्रामसगढ़ मं कमंचारियों का बकाया वनन व भना । खंठ २११, पुरु ८३८ ।

## श्रीपानसिंह, कुंबर---

- कानपुर कालपी सङ्ग्रापर अस दुर्घटना । व्यक्त २११, पृक्त १३६।
- कानपुर के एक म्हिलम व्यापारी की स्वानाललाशी। स्वं० २११, पृ० ३३६।
- कानपुर जिले में चूहे बढ़ने की जिलायत । व्यं० २११, पु० ५४१।
- थानों के हवालानी केंद्रियों द्वारा कथित श्रात्महत्या । खं० २११, पृ० ६५८।
- बरेली में पटाले में महिला का घायल होता। खं० २११, प्० ६५७।
- मऊ पालिकाध्यक्षः श्री हिफजरेहमान का त्याग पत्रः। त्रीव २११, पृव ११-१२ ।
- ललनऊ में होली के श्रवसर पर धर्माकयों से भरे गुमनाम-पत्र। खंब २११, प्र ३२२-३२३।
- लावनक सेना क्षेत्र में चोरी की रियोर्ट । सं० २११, पु० ३३७।
- लितितपुर बोध पर उल्लुकों का कथित प्रद्वा। र्का० २११, पु० ३१६-३२०।
- सोरों नगरपालिका को श्रध्यक्ष के विकद्ध श्रविद्यास का प्रस्ताय। सं० २११, पूरु ७२२-७२३।

सजीवनलाल, श्री---

इंग्लिश्च स्कूलों में भर्ती के लिये सुझाव। खं० २११, पृ० ३६४। चकबन्दी रोकने के कथित स्रादेश। खं० २११, पृ० ३६०।

सत्यवतीदेवी रावल, श्रीमती—— दादरी चुनाव क्षेत्र में महिला चिकित्सालय न होना। खं० २११, प्० ३५६।

सरस्वतीदेवी शुक्ल, श्रीमती--

खेरीघाट थाना के स्टेशन ग्राफिसर, श्री लखपत सिंह के विरुद्ध कार्यवाही। खं० २११, पू० ३५०। प्रशिक्षित ग्राम सेवक। खं० २११, पृ० १३५-१३६।

रोडवेज में लिये जाने वाले मार्ग। खं० २११, पू० १३६।

सरवहा ग्राम में होम्योपैथिक ग्रौषधालय खोलने की प्रार्थना। खं० २११, पु० ६६५-८६६।

सुक्खनलाल, श्री---

मुरादाबाद जिले में शिक्षा विभाग के एस० डी० श्राई०। खं० २११, पृ० ३५५।

राजकीय कमयार फार्म । खं० २११, पृ० ५४५।

मुखलाल, श्री--

श्रयाना में सेवाखंड खोलने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० ८३१।

प्लास्टिक ट्रेनिंग सेन्टर, इटावा में परिगणित जातीय छात्रों को छात्रवृत्ति मिलने में विलम्ब । खं०२११, पृ० १२५–१२६।

सुदामा प्रसाद गोस्वामी, श्री---

कृषि बीज भंडार के विरुद्ध शिकायत। खं० २११, पृ० ५४२-५४३। गांव सभा बार के कागजात की जांच खं० २११, पृ० ७२४-७२५। झांसी-माताटीला बस सर्विस। खं० २११, पृ० १३२। पिंक्तिक सर्विस कमीशन द्वारा श्रयोग्य घोषित जिला सूचना श्रिधकारी। खं० २११, पु० ६४८-६४६।

पवा निवासी श्री लाड़ले काछी की जिकायत। खं० २११, पु० ६३५- ६३६।

प्रथम तथा द्वितीय श्रेणी के विकास खंडों में प्रारम्भिक स्वास्थ्य केन्द्र। खं० २११, पृ० ८४२।

मऊरानीपुर श्रनाज मंडी में कथित क्षति। खं० २११, पृ० ५३७।

मऊरानीपुर नगरपालिका की जल-कल योजना। खं० २११, पृ० १७।

लखनऊ में कृषि विभाग के कार्यालयों की इमारतें। खं० २११, पृ० ५३६-५३७।

(श्रनु०) -- सकरार में ताड़ गुड़ सहकारी समिति का निर्माण। खं० २११, पृ० १२३।

सुरथबहादुर ज्ञाह, श्री--

(श्रन्०) -- संशोधित बजट मैनुश्रल की तैयारी तथा कुछ सरकारी कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि। खं० २११, प्० ६४२।

सूरतचन्द रमोला, श्री---

टेहरी-गढ़वाल जिले में शिक्षा विभाग के विलय राज्य कर्मचारियों का मंहगाई भत्ता। खं० २११, पृ० ३६४।

सोहनलाल घुसिया, श्री---

बस्ती जिले में परिवार नियोजन केद्र। र्खं० २११, पृ० ३५३–३५४।

हरकेश बहादुर, श्री--

ग्रनेहरा तथा मैंरोंपुर बस स्टाप। खं० २११, पृ० ८३२-८३३।

पट्टी ग्रौर रामगंज में इण्टर व साइंस कक्षा खोलने की प्रार्थना । खं० २११, पु० ३४४ ।

पट्टी तहसील में दी गई सुविघायें। खं० २११, प्० ६६६। [प्रक्तोत्तर-हरकेश बहादुर, श्री--]

प्रतापगढ़ जिले में खाद्यान्नों का भाव। खं० २११, पृ० ५३६।

प्रतापगढ़ जिले में बागों की मालगुजारी में गलत तजलीस। खं० २११, प्० ६६३।

प्रतापगढ़ जिले में मोटर दुर्घटनाये। खं० २११, प्० ३६२।

प्रतापगढ़ जिले में विकास मेलों पर व्यय। ख० २११, पु० ८४३-

हरदयालिंसह, श्री--

(श्रनु०) — फाशी हिन्दू विश्वविद्यालय कं प्राक्टर को फर्स्ट क्लास मंजिटोरियल पावर्स । खं० २११, पु० ४१ ।

ज्ञाहजहांपुर जिला ग्रस्पताल मे एक्सरे मजीन न होना। खं० २११, प्० ६३८-६३६।

शाहजहांपुर जिले के उच्च पुलिस श्रिषकारियों को विषान सभा सदस्य द्वारा दी गई सूचना। खं० २११, पृ० ३४७।

शाहपुर के श्री भली जान का कत्ल। खं० २११, पु० ६६६।

(श्रन्०) -- सोशालिस्ट पार्टी की मांगें। खं० २११, पू० ८१२।

हिम्मतसिंह, श्री---

अनसंघ श्रयवा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से सम्बन्धित व्यक्तियों को नौकरी देने में सरकारी नीति। खं० २११, प्० ४४५-४४७।

भुनकर एसोसियेशन, जिला मुलन्दशहर का रिवेट। खं० २११, पृ० १३८। बलन्दशहर कलेक्टरी में हरिजन व पिछडे

बुलन्वशहर कलेक्टरी में हरिजन व पिछड़े बर्ग के चपरासी । खं० २११, पू० ३५७ । होरीलाल यादव, श्री---

फर्रुवाबाद जिले में डकेतियां । खं० २११, पृ० ६६४ ।

फर्रेलाबाद जिले में भान का सूख जाना। खं० २११, प्० ६६६।

सरायमीरा ग्राम में गार्वजनिक नल लगाने की प्रार्थना। ग० २११, पृ० ७२६।

### प (कमागत)

प्रश्नोत्तर--- -

---के सम्बन्ध में भ्रपत्तिया । त्व० २११, पु० १३८ १४० ।

प्राइमरी गुनिट--

प्र० वि०— पसगवां की कथित ———। स्व० २११, पृ० ६७०।

प्राक्कलन समिति-

प्राक्टर----

प्र० वि०—काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के — को फर्स्ट क्लास मंजित्द्रेट पावसं । खं० २११, पू० ६४०-६४१।

प्रान्तीय रक्षक बल---

----के कर्मचारियों को स्थाई करने में विसम्ब । क्ष० २११, पु० ४४७--४४६ ।

प्रारम्भिक शिक्षा---

"प्राग्रेस" पत्रिका----

प्रविव सूचना विभाग की कां प्रश्ति पृष् प्रकाशन पर काय । कां प्रश्ति पृष् १६६ ।

### प्रोग्रेस म्युजियम---

प्र० वि०—मुर्दा श्रजायबघर व——— लखनऊ के भवनों का निर्माण व्यय । खं०२११, पृ०३४६।

## प्लास्टिक ट्रेनिंग सेन्टर---

प्र० वि०—— ———, इटावा में परिगणित जातीय छात्रों को छात्रवृत्ति मिलने में विलम्ब । खं० २११, पृ० १२८–१२६ ।

फ

#### फसलों——

प्र० वि०-- ---को दैवी ग्रापित्यों से बचाने की प्रार्थना। खं०२११, प्० ६४५-६४६।

फास्फेटिक उर्वरक---

प्र० वि०--- ----वितरण में छूट। खं० २११, पृ० ५२५।

फीस--

प्र० वि०—सूखा पीड़ित क्षेत्रों में छात्रों की ——— माफ करने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० ६५२–६५३ ।

#### फड एडवाइजरी कमेटी---

प्र० वि०—बरेली जिले के देहाती क्षेत्र में सस्ते ग्रनाज की दूकानें न होना तथा —— की मीटिंग । खं० २११, पृ० ५३६ ।

a

वंशीधर शुक्ल, श्री---

देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-भ्रनुदान संख्या ३-लेखा शीर्षक ८-राज्य श्राबकारी । खं०२११,पृ० ४५८, ४६० ।

श्रनुदान संख्या १७--लेखा शीर्षक २८-जेल । खं० २११, पू० ११०५ ।

प्रनुदान सख्या ३२-लेखा शीर्षक ४७-सूचना संचालन कार्यालय । खं० २११, पृ० ६६६ । श्रनुदान संख्या ३४—लेखा शीर्षक ५०— सार्वजिनक निर्माण-कार्यश्रौर ५०-क— राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, श्रनुदान संख्या ३५—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, श्रनुदान संख्या ३६—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य श्रौर ८१—राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा श्रनुदान संख्या ५०—लेखा शीर्षक ८१—राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा। खं० २११, पृ० ७७—७६।

श्रनुदान संख्या ३७-लेखा शीर्षक ५०-नागरिक निर्माण-कार्यों के लिये सहायक श्रनुदान । खं० २११, पृ० ६६०--६६२ ।

विभिन्न अनुदानों पर विवादार्थ समय निर्घारण । खं० २११, पृ० ४५१।

कार्य-स्थगन प्रस्तावों के सम्बन्ध में सूचनार्ये । खं०२११, पृ०१४०, ५५०।

गन्ने के कय मूल्य से संबंधित प्र मार्च, १६६० के श्रल्पसूचित तारांकित प्रक्त ४-६ के विषय पर विवाद । खं०२११, पृ०७०४, ७०८।

प्रश्नोत्तर के संबंध में स्रापत्तियां। खं०२११, पु०१४०।

## बजट मैनुग्रल---

प्र० वि० संशोधित—की तयारी तथा कुछ सरकारी कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि। खं० २११, पृ० ६४०–६४३।

### बड़ौत-बागपत सड़क--

प्र० वि०--- ---पर मोटर दुर्घटनायें। खं० २११, प्० ३४६-३४७।

#### बन्दियों----

प्र० वि०—— ——की ग्रपराधी मनो-वृत्तियों में सुधार करने पर विचार । खं० २११, पृ० ६–१० ।

#### बन्दुक के लाइसेन्स---

प्र० वि०—मैनपुरी जिले में श्रनुसूचित जाति के लोगों को ——— । खं० २११, पृ० ६६१ ।

#### बरेली कालेज---

प्र० वि०— —— के बोर्ड श्राफ कंट्रोल के रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिये नामावली । खं० २११, पृ० ३४८ ।

#### बर्वास्त वर्मचारियों---

बिकी-कर विभाग के- --की पुनर्नियुक्ति। खं० २११, पृ० ६३३-६३४।

## बलदेवसिंह, श्री----

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनुदान संख्या ४७-लेखा शोर्षक ६८-सिचाई नौचालन, बांध श्रौर पानो के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, श्रनुदान संख्या १०-लेखा शोर्षक १७-१८ श्रौर १६-क-राजस्व से किये जाने वाने सिचाई के निर्माण कार्य तथा श्रनुदान संख्या ११-लेखा शीर्षक १७, १८, १६ श्रौर ६८ सिचाई स्थापना पर व्यय । खं० २११, पु० १७८-१८० ।

# बलदेवसिंह ग्रार्य, श्री----

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-भ्रनुदान संख्या २१-लेखा शीर्षक ३८-चिकित्सा तथा भ्रनुदान संख्या २२-लेखा शीर्षक ३६-जन स्वास्थ्य । खं० २११, पु० ८८२---८५

### बलरामपुर श्रस्पताल--

प्र० वि०—लखनऊ के —— में स्थाई बन्त डाक्टर न होना । खं० २११, पृ० ३४७ ।

### बस कन्डक्टरी---

प्र० वि० प्राजमगढ़ रोडवेज क्षेत्र में के उम्मीदवार । खं० २११, प० ८४४ ।

## बस दुर्घटना---

प्र० वि०—कानप्र कालपी सड़क पर ——— । स्वं०२११,पृ०१३६।

#### बस सर्विस---

प्र० वि०—घोषी मझवारा सर्क पर ——— न होना । गं० २११, पृ० १३१।

प्र० वि०—सीतापर-हरदंदि सर्क पर ——की श्रावश्यकता । खं० २११, प० १३४ ।

#### बस स्टेशन---

प्र० वि०--एक बिक्स गलकं वाले फर्रुखाबाद जिले के --- । गाँ० २११, प्० =३७ ।

#### बस स्टेशनों---

प्र० वि०--- ड्राइयरों च फण्डक्टरों के लिये ------पर विश्वाम-गृह न होना। खं० २११, प्० ११८--११६।

#### बसों---

प्र० वि०— — में पंले लगाना । खं० २११, पु० ११४ ।

#### बहरापन---

प्र० वि०-श्री शिवप्रसाद गृग्त निकित्सा-लय, वाराणसी में --- दर करन के कार्य । लं० २११, गृ० ३३४।

### याई-लाज---

## बागों---

प्र० वि०-प्रतापगढ़ जिले में --- की मालगुजारी में गलत तज़कीस । खं० २११, प्० ६६३ ।

### बाद नियंत्रण बोर्ड--

प्रव विव — । संव २११, पुरु ३२२। बाढ़ पीड़ितों---

प्र० वि०— ——की सहायता के लिये ग्राजमगढ़ ग्रन्तरिम जिला परिषड् को दिये गये ग्रनुदान का व्यय । खं० २११, पृ० ७३५—७३६।

बार एसोसियेशन---

त्र० वि०————, बदायूं क लिग्ने जमीन की स्वीफृति । खं० २११, पृ० ३५६ ।

## बाराबंकी---

——जिले में डकैतियों से उत्पन्न परिस्थिति पर कार्य-स्थगन प्रस्ताव की सूचना । खं० २११, पृ० ३६८ ।

#### बालकराम श्री--

देखिये "प्रक्नोत्तर" ।

१६६०–६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनुदान संख्या २१–लेखा शीर्षक ३८– चिकित्सा तथा श्रनुदान संख्या २२– लेखा शीर्षक ३६–जन स्वास्थ्य । खं० २११, पृ० ८८८–८८६ ।

# बालिका विद्यालय—

प्र० वि०—कन्नौज के एक ——— से संगीत ग्रध्यापक को हटाना । खं० २११, पृ० ३२७ ।

# बिक्री-कर-कार्यालयों----

प्र० वि०--कानपुर क्षेत्र में --- के कुछ चपरासियों की बहाली । खं० २११, पृ० ६३४-६३५ ।

# बिक्री-कर विभाग---

प्र०वि०-----के बर्खास्त कर्मचारियों की पुर्नानयुक्ति । खं० २११, पृ० ६३३-६३४ ।

## बिजली---

प्र० वि०—िबलय राज्य समथर का कोष तथा —— न होने की शिकायत । खं० २११, पृ० ८३६ ।

बिजली काटन प्राइवेट लिमिटेड मिल, ---

----हाथरस के श्रमिकों ग्रौर सेवा- योजकों के मध्य समझौता । खं० २११, पृ० ११२–११३ ।

बिजली का बिल---

प्र० वि०--विधायक निवासों का----। खं० २११, पृ० ३४५।

बिहारीलाल, श्री---

देखिये "प्रक्रोत्तर" ।

बीज गोदामों---

प्र० वि०-- ---में गबन । खं० २११, प्० ५२६-५३० ।

बीज भंडार---

प्र० वि०—ब्रजमनगंज ——— से वितरित धान के बीज की शिकायत । खं० २११, पृ० ५३१ ।

बकिंग क्लर्क---

प्र० वि०—एक ——वाले फर्रुखाबाद जिले के बस स्टेशन । खंर्ू २११, प्र० ८३७ ।

बुद्धीसिह, श्री----

१९६०-६१ के ग्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनुदान संख्या २१-लेखा शीर्षक ३८--चिकित्सा तथा श्रनुदान संख्या २२-लेखा शीर्षक ३९-जन स्वास्थ्य । खं० २११, पृ० ८९२-८९३ ।

बुनकर ऐसोसियेशन---

प्र० वि०— ——, जिला बुलन्दशहर कारिवेट । खं० २११,पृ० १३८।

बुनाई शिक्षण केन्द्र---

प्र० वि०—राजकीय ——, स्रानन्द नगर । खं० २११, पृ० ६२६— ६२७ ।

बुलाकीराम, श्री---

देखिये "प्रक्नोत्तर" ।

बेचनराम, श्री--

१६६०-६१ के भ्राय व्ययक में ग्रनदानों के लिये मांगों पर मतदान-प्रनुदान संख्या ३४--लेखा शोषंक ५०--सार्व-जनिक निर्माण-कार्य ग्रोर ५०-क-राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यो पर पूंजी की लागत, श्चनुदान संख्या ३५-लेखा शीर्षक ५०-नागरिक निर्माण-कार्य केन्द्रीय सङ्क निधि से वित्तीय सहायता, श्रनुदान संख्या ३६-लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य ग्रोर ८१-राजस्व लेखें से बाहर नागरिक निर्माण कार्यी की पूंजी का लेखा तथा श्रनुदान संख्या ५०-लेखा शीर्षक ८१-राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा । खं० २११, पु० ६२-६३ ।

बेचन राम गुप्त, श्री— देखिये "प्रक्तोत्तर" ।

बेसिक एल० टी०---

प्र० वि०—लखनऊ में —— की परीक्षा । खं० २११, पू० ३६४ ।

बोर्ड श्राफ कंट्रोल---

प्र० वि०—बरेली कालेजों के —— के रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिये नामावली । खं० २११, पृ० ३४८।

बोर्ड की परीक्षा---

प्र० वि०— — में विद्यार्थियों की प्रसफलता में बृद्धि । खं० २११, पू० ३३१-३३३ ।

बोरिंग---

प्र० वि०—बदायं जिले में कुश्रों की ——— । खं० २११,पृ० ८४६ ।

व्रजनारायण तिवारी, श्री----

देखिये 'प्रश्नोत्तर" ।

गन्ने के ऋष मूल्य से संबंधित = मार्च, १६६० के ग्रत्पसूचित तारांकित प्रदन ४–६ के विषय पर विवाद । खं० २११, पृ० ७०५, ७०६। भ

भगवतीप्रसाद शुक्ल, श्री---देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

भगवतीसिंह विशारव, श्री---

देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक्त में स्रन्दानों के लिये मांगों पर मतदान-स्रन्दान संख्या ७-नग्या शीर्षक १२-मोटर गाहियों के ऐक्टो क कारण व्यय स्रन्दान संख्या ३१-लेगा शीर्षक ४७-प्रकीणं विभाग प्रोर ४४-उर्द्रयन स्रन्दान संख्या ५२-लेखा शीर्षक ७०-जन स्वास्थ्य संबंधी स्थार पर पूंजी की लागत तथा ६२-राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यी का पूंजी लेखा । खं० २११, पू० ४१२-४१४ ।

अनुवान संख्या ३४-लेणा द्योषंक ५०-सार्वजनिक निर्माण-कार्य भ्रोर ६०-क-राजस्य से विता पोषित नागरिक निर्माण-कार्यो पर पूंजी की गागत अनुवान संख्या ३५-लेखा शिर्यक ५०-नागरिक निर्माण-कार्य कंन्द्रीय सङ्क निधि से निर्नाय सहायता, अनुवान संख्या ३६-लेखा द्योपंक ६०-नागरिक निर्माण कार्य भ्रोर द१-राजस्य लंगे से बाहर वार्यस्क निर्माण कार्या की भूजी नाग नग अनुवान संख्या ५०-ला द्योपंक ६१-राजस्य लंग के बाहर नागरिक निर्माण-कार्या का पूंजी लगा। सं० २११, पु० ७३-७५ प्

भजनलाल, श्री----

देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

१६६०-६१ के बाय-ब्ययक में श्रन्वानों के लियं मांगों पर मतवान-प्रमुद्धान संख्या २१-लेखा शीषंक ३६--चिकित्सा तथा प्रनुदान संख्या २२--लेखा शीषंक ३६-जन स्वास्थ्य । खं० २११, प्र० ८७०-८७२, ६०० । મટકોં-

प्र० वि०—इटावा जिले में ——— को कोयला । खं० २११, पू० ५२७ ।

भत्ता-

प्र० वि०—महापालिकास्रों के नगर प्रमुखों, उपनगर प्रमुखों का वेतन, ——तथा स्रागरा महापालिका कर में वृद्धि । खं० २११, षृ० १६— २० ।

प्र० वि०—रोडवेज क्षेत्र, ग्राजमगढ़ में कर्मचारियों का बकाया वेतन व——। खं० २११, पृ० ८३८।

#### भवनों---

प्र० वि०—वाराणसी जिले के कुछ श्रौषधालयों के ——— संबंध में जानकारी । खं० २११, पृ० ३५३ ।

भारतीय दण्ड विधान----

प्र० वि०—इटावा जिले में ——— की धारा ११० के कथित मुकदमे । खं० २११, पृ० ३३० ।

भोखालाल, श्री----

देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

भुवनेशभूषण शर्मा, श्री—

देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-भ्रनुदान संख्या ७-लेखा शीर्षक १२-मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण, व्यय भ्रनुदान संख्या ३१-लेखा शीर्षक ४७-प्रकीर्ण विभाग और ४४- उड्डयन, भ्रनुदान संख्या ५२- लेखा शीर्षक ७०-जन-स्वास्थ्य संबंधी सुधार पर पूंजी की लागत तथा ५२- राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा । खं० २११, पू० ४०२-४०४।

अनुदान संख्या १७-लेखा शीर्षक २८-जेल । खं० २११, पू० १०१०-१०१२ । श्रनुदान संख्या ३४—लेखा शीर्षक ५०—
सार्वजिनक निर्माण-कार्य ग्रौर ५०—
क—राजस्व से वित्त पोषित नागरिक
निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत,
ग्रनुदान संख्या ३५—लेखा शीर्षक
५०—नागरिक निर्माण कार्य—केन्द्रीय
सङ्क निधि से वितीय सहायता,
ग्रनुदान संख्या ३६—लेखा शीर्षक
५०—नागरिक निर्माण-कार्यग्रौर ६१—
राजस्व लेखे से बाहर नागरिक
निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा
तथा ग्रनुदान संख्या ५०—लेखा शीर्षक
६१—राजस्व लेखे के बाहर नागरिक
निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा । खं०
२११, पृ० ६७—६६ ।

ग्रनुदान संख्या ४२—लेखा शीर्षक ५७— प्रकीर्ण व्यय तथा ग्रनुदान संख्या १५—लेखा शीर्षक २५—गांव सभायें ग्रौर पंचायतें । खं० २११, पृ० ५७६ ।

भूदान समिति---

प्र० वि०—--खीरी जिले में --------द्वारा भूमिहीनों को भूमि । स्तं० २११, पृ० ६६४ ।

भूपिकशोर, श्री----

दाखय प्रश्तोत्तर"।

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-भ्रनुदान संख्या ४२-लेखा शीर्षक ५७-- प्रकीर्ण व्यय तथा श्रनुदान संख्या १४-लेखा शीर्षक २४--गांव सभायें भ्रौर पंचायतें । खं० २११, पृ० पृ० ५६४,५६५,५६६,५६३-५६४।

### भुमिधर काइतकारों---

प्र० वि०—लहरपुर परगने में ———— वाखिल खारिज की कार्यवाही । खं० २११, पृ० ३५२ ।

भूमि बंघक बैंक---

प्र० वि०— —— । खं० २११, प्० ४४६ । भूमि-व्यवस्था नियमायनी----

जमींवारी विनाश ध्रौर----, १६५२ के भ्रधीन प्रस्थापित संशोधन । खं०२११, पू०३६७ ।

भूमिहीनो---

प्र० वि०—त्योरी जिले में भूदान समिति द्यारा —— को भूमि । स्रं० २११, पृ० ६६४।

भोटियों---

प्र० वि०—उत्तराखंड मंडल का निर्माण तथा — की मांग । खं० २११, पू० ६२१-६२२ ।

#1

सक्का---

प्र० वि०—गम्ना, मूंगफली, गेहूं, जो, ——ग्ररहर का उत्पादन । खं० २११, पु० ५४१ ।

मजदूरी---

प्र० वि०—देवरिया जिसे में टेस्ट वर्क की — के संबंध में शिकायत । खं० २११, पृ० ३४०-३४१ ।

मयुरा प्रसाद पाण्डेय, श्री---

देखिये, "प्रश्नोत्तर"।

मदनगोपाल वैद्य, श्री---

वेलिये "प्रश्नोसर"।

मवन पान्डेय, श्री---

. देखिये "प्रक्रांसर"।

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्नन्दानीं के लिये मांगों पर मतदान- -प्रन्यान संख्या ४१-- नेबा शीर्यक ५६--लेबन सामग्री सौर मुद्रण। खं० २११, पु० ४०४-४०६, ४०६।

प्रदनों के सम्बन्ध में शिकायता व्यं ० २११, पु० ५५०।

मदन माहन, था--

प्रतिनिहित विवायन समिति का चतुर्थं प्रतिवेदन। खं० २११, पृ० ८४६— ८४७।

। मथ्रा सबहालय -

प्रविष्य ---- में ग्रासा गीतम बहु की बहुत्त्य मृति। यव २११, पृष्य ११८।

न प्रनिष्ठेल- —

प्रव वि०----- स्वन्तः श्रीभवातः। स्वं २११, प्र १७४।

मन्तालाल, श्री---

बेखिये "प्रश्तं (तर"।

मलिलानसिंह, श्री---

वेलिये "प्रश्तीतर"।

१६६०-६१ के द्राय-ध्ययक म प्रनदानों के लिये माों पर मतवान प्रनदान सम्या २७---ने रा शोंकः ४१ घोर ६१-कः - नियम यः जनामा को स्थापनः पर ध्यय तथा द्रायान सम्या प्रश्---ने रा शोंगंकः ६१-कः -विया याजनामों पर प्रतिका लागत (स्थापना ध्यय कर स्थानकः)। खं० २११, प्र० २६७-२६६।

अनुवास संस्था ४७-- लंगा शीरंक ६०-- निकार नीकानन आप और पारी हे निकाय सम्बन्धी कार्यों का निर्वाण, अरुशन संस्था १०-- नेला शारंक १७, १८ और १६ ण--राजस्व से किये जाने बालें सिबाई के निर्वाण-कार्य तथा अनुवान सस्या ११-- नेवा शीरंक १७, १८, १६ और ६८ सिबाई स्थापना गर त्या। खं० २११, प्र २०१८ २०६, २४७--२४६।

मलियाना शुगर मिल -

----, मेंग्ठ का मर्यालवाना गांच की भूमि का बलपूर्वक परितस द्वारा कब्जा बिलाने के सम्बन्ध में नियम ४२ के बन्तर्गत सुबना। कं० २११, पु० ४४०-४४२।

#### मवासा शिल्पकार--

प्र० वि०--भागपुर की वन विहीन भूमि तथा र्जं नो चौकी जंगल के भूमिहीन-----। खं० २११, पु० ६३६-६४०।

#### मवेशी---

प्र० वि०—मलाक्षा में———बेचने का रसीक्षिफार्मनहोता। खं०२११,पृ० ३४६।

### महंगाई भत्त'--

प्र० वि०—-डेहरी-गढ़वाल जिले में शिक्षा विभाग के विलय राज्य कर्म-चारियों का———। खं० २११, ३६४।

## महंगाई भते---

प्र० वि०—स्थानीय निकाय के ग्रध्यापकों के———के लिए राजाज्ञा। खं० खं० २११, ६४८।

### महमूदग्रली खां, श्री---

१६६०-६१ के म्राय-व्ययक में म्रतृदानों के लिये मांगों पर मतदान—म्रतृदान संख्या ४७—-ले जा बार्जिक ६८—- सिचाई तीचान, बांध म्रोर पानी के निकासी सम्बन्धी कार्यी का निर्माण, म्रतृदान संख्या १०—-ले जा बार्जिक १७, १८, म्रीर १६-छ--राजस्य से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण कार्य तथा म्रतृदान संख्या ११—- ले जा बार्जिक १७, १८, १६ म्रीर ६८—- सिचाई स्थापना पर व्यय। खं० २११, पृ० १८५-१८७।

## महापालिका (श्रागरा)--

प्रविव — महापालिकाम्रों के नगरप्रमुखों उपनगर प्रमुखों का वेतन, भत्ता तथा —— कर में वृद्धि। खं० २११, १६ — २०।

### महापालिकाग्रों---

महावीर प्रसाद शुक्ल, श्री--

१६६०-६१ के ब्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदान संख्या ३८--लेखा ब्रार्थक ५४-- दुर्निक्ष सहायता तथा श्रनुदान संख्या २--लेखा ब्रार्थक ७--भू-राजस्व (मालगुजार्रा)। खं० २११, पू० ७७७-७८०।

जमीं दारी विताश और भूमि-व्यवस्था नियमावली, १६५२ के स्रवीन प्रख्यापित संशोधन। खं०२११,पृ० ३६७।

तारांकित प्रश्न ३६-३७ से सम्बन्धित व्यक्तिगत भ्रमुपूरक प्रश्नों को फार्य-वाही से निकाल देने की प्रार्थना। खं० २११, पू० २७।

### महावीरसिंह, श्री--

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिए मांगों पर मतदान--श्रतुदान संख्या ३४---लेखा बीर्षक ५०---नागरिक निर्माण कार्य ग्रीर ५०--क —–राजस्व से वित्त पे<sub>र</sub>िषत—–नाग-िक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत ----श्रत्दान संख्या ३५---लेखा र्शः र्वेक ५०---नागरिक निर्माण कार्य सड़क निधि से वित्तीय लेखः शं र्थक--५०-नागरिक निर्माण कार्य ग्रीर दश--राजस्य लेखे से वाहर मागरिक निर्माण-कार्यो की पूजी का लेखा तथा ग्रनुदान संख्या ५०--लेखा शीर्थक ८१--राजस्व ले बे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा। खं० २११, पृ० १५६।

श्रतुदान संख्या ४७—लेखा शीर्षक ६८—िंसचाई, नौचालन, बांघ श्रीर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्ताण श्रतुदान संख्या १०— लेखा शोर्षक १७, १८ श्रीर १६—ख राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण कार्य तथा श्रनुदान संख्या ११—लेखा शोर्षक १७, १८, १६ श्रीर ६८—िंसचाई स्थ पना पर व्यय। खं० २११, पृ० २६४, २६५। महिला--

प्रवर्धनः -- त्रेना ने पटाले पे---का धारल जाता। त्रंव २११, पूर्व ६४७।

महिष् प्रा-

त्र । २८ -- प्राच्यों ऋोग ----के श्रोतिक व्यापाण निरीतक श्रानि रिश्न पा कार्यान्यस्त । गांव २११, पुरु ७--६।

महिला चिक्तत्यालय---

महिला बन्दियों---

प्र० वि०-- ---- को जिलेबार संख्या। र्खं० २११, पू० २२--२३।

महिला मंगल योजना---

प्र० वि० —गारमपुर व वाराणसी डिजोजनों में — के काम तथा कर्मचारो । खं० २११, प्० २४-२५।

महीलाल, श्रो---

१६६०-६१ के आय-व्ययक में अनुदानों के नियं मांगों पर मतदान-- अनुदान संख्या ७-- लेला वा अंक १२-- मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, अनुदान संख्या ३१-- लेला वोर्यफ ४७-- प्रशंज विभाग और ४४-- उड़ु ान, अनुदान संख्या ५२-- लेला वीर्यफ ७०-- जन-स्वारण्य संबंगी सुगर पर पूंजी की लागत तथा द२-- राजरव ले वे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण कार्यों का पूंजा लेला। खं० २११, पू० ३८२- ३८४।

मात।प्रसाद, श्री---

बेखिये "प्रश्नोत्तर"।

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रतुवानों
के लिये मांगों पर मतवा।—श्रनुवान
संख्या ३८—लेखा शीर्षक ५४—
वृभिक्ष लहायता तथा भ्रनुवान
संख्या २—लेखा शीर्षक ७—भ्राजस्व (मालगुजारी)। खं० २११,
पु० ७६६-७७१।

मानवाचित न गर

प्रव दिव -तेरां म - - मस्ते की जातस्य । या २११, प १६-१६ ।

मान्यतातिहर, श्राह -

१६२०--१ क सा - क्रिसे स्प्रतवानीं कोई क्षुकारों के काका - प्रवान संस्था २---नेता सार्वक द्यान राज्य प्रत्याचारा । एक २११, पृष्ठ ४५८।

मार्हेदिग श्रीमकारिया -

प्रव वि -- परिगणित तथा पित्र हें याँ के नाम । या ० २११, प्रव ४४७ ।

मार्ग---

प्रविष --राष्ट्रवेत में लिए आने वाले ---। मण २११, पृष्ठ १३६।

मालगजारी--

प्र० वि०- - लीरा जिन्ते से- - - में ह्यूट येते की प्रार्थना । रा० २११, पू० ६५१ - ६६२ ।

प्रव विक--प्रतापमक जिले में बागों की ----में गलत सक्तागीम । एक २११, पुरु ६६३।

प्रव बि०--शाहत्रहांपुण जिले क सभाव प्रस्त क्षेत्र से --- छ ट जेले का श्राह्यागन। ख० २११, पु० २४१--२४२।

मालवीय जो को मूर्ति-

प्र० वि० मोतीलाल नेहरू पार्क, इलाहाबाद में रयापित करने की मांग। खं० २११, प्० १३४।

मिनिस्टीरियल सर्विस एसोसियेशन-

प्र० वि० — को मार्ग । लं ० २११, पुरु दहर-दहर ।

मिर्जापुर—

सिंचाई विभाग के ४०० मजदूरों की छटनों के कारण भी रागापति वुषे द्वारा भनदान के सम्बन्ध में निषम ५२ हें भन्तर्गत सचना। खं० २११, पू० १७३-१७४।

#### मिलों---

प्र० वि०—कानपुर की कुछ्——में स्रभिनवीकरण। खं० २११, पृ० १२६–१२७।

#### मिश्रिख---

——में श्री दधीचनाथ के मेले में ग्रनधि-कृत सिनेमा शो के कारण सरकारी प्राय में मी हे संबंग में नियम ५२ के ग्रन्तर्गत मुख्य मंत्री का वक्तव्य। खं० २११, ए० ८४८–८४९।

——में श्री ददीयनाथ के मेले में श्रनधि-कृत सिनेमा शो के कारण सरकारी श्राय में कमी के सम्बन्ध में नियम ५२ के श्रन्तर्गत सूचना। खं० २११, पृ० ६४८।

### मुग्रत्तल कर्मचारियों---

प्र० वि०—गोरखपुर रोध्वेज क्षेत्र में ——को बहाल होने पर वेतन। खं० २११, प्० ८३४-८३५।

### मुक्तिनाथ राय, श्री---

देखिए "प्रक्नोत्तर"।

१६६०-६१ के श्राय व्ययक में श्रनुदानों के लिए मांगों पर मतदान-श्रनुदान संख्या १७--लेखा शीर्षक २८--जेल। खं० २११, पृ० १००४-१००५।

श्रनुदान संख्या ३४——लेखा शीर्षक ५०— सार्वजनिक निर्माण-कार्य ५०-क--राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यो पर पूंजी की लागत, श्रनुदान संख्या ३५—लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण कार्य केन्द्रीय सङ्क निधि से वित्तीय सहायता, ग्रनुदान संख्या ३६——लेखा द्मीर्षक ५०——नागरिक कार्ये श्रौर ८१—-राजस्व लेखें से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पुंजी का लेखा तथा श्रनुदान संख्या लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कायों का पूंजी लेखा। खं० २११, पृ० ६७-६६।

श्रनुदान संख्या ४२—लेखा शीर्षक ५७— प्रकीर्ण व्यय तथा श्रनुदान संख्या १५—लेखा शीर्षक २५—गांव सभाएं श्रीर पंचायतें। खं० २११, पृ० ५६५-५६६।

मुख्य मंत्री--

---- हे विरुद्ध प्रदर्गों का उत्तर विलम्ब से देने पर, विजेषाधिकार की ग्रवहेलना का प्रदन उठाने की सूचना । खं० २११, पृ० ८५०।

प्र० वि०——नगर प्रमुबों———से भेंट। खं० २११, पृ० ७१६—७२०।

मुद्रण---

मुन्सिफी--

प्र० वि०--एटा जिले के श्री रवीन्द्र-कुमार को----में लेना । खं० २११, प्० द१३।

मुरलीघर, श्री--

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—स्रनुदान संख्या ७--लेखा शीर्षक १२--मोटर गाड़ियों के ऐक्टों के कारण व्यय, स्रनुदान संख्या ३१--लेखा शीर्षक ४७--प्रकीर्ण विभाग स्रौर ४४--उड्डयन, स्रनुदान संबंधी सुधार पर पूंजी की लागत--तथा द२--राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा। खं० २११, पू० ३६२-३६३।

श्चनुदान संख्या ४७——लेखा शीर्षक ६८——सिंचाई-नौचालन, बांघ श्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, श्रनुदान संख्या १०——लेखा शीर्षक १७, १८ श्रौर १६—ख—— राजस्व से किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण कार्य तथा श्चनुदान संख्या ११——लेखा शीर्षक १७, १८, १६ श्रौर ६८ सिंचाई स्थापना पर व्यय। स्रं० २११, पृ० १७६—१७८। सर्वा अजात्र स्वर

प्र० जिल्ला - - - - - र प्रोग्नेस स्प्रजियम ल काळ के भजनों का निर्माण व्यय। स्वल २११, पल ३५६।

### म्यलमान पराक्षावियो--

इण्टरमा। इर्ट बार्ड के इम्नहान के कारण——— हो जुमा की नमाज से ब जित करने के सम्बन्ध में नियम ५२ के अन्नर्गन शिक्षा उपमंत्री का यक्तव्य। खं० २११, प्० ६७५।

हाई स्कून और इन्टरनोडिएट बोर्ड के / इस्तरात के कारण—— की जुमा को नमाज से विचित करने के सम्बन्ध में नियम ४२ के श्रन्तर्गत सूचना। ख ० २११, पू० ७३६।

#### मुसाफिरखाना---

## मुस्लिम परिवारों---

प्र० वि०---देहरादून में-----की पुनर्यासन घोजना। खं० २११, पृ० ३४१।

## मुस्लिम व्यापारी---

प्र० वि०--कानपुर के एक----की खानातलाशी। खं० २११, प्० ३३६।

## म्ंगफली---

प्रव वि०--गप्ता,----, गेहूं, जौ, मक्का ग्ररहरका उत्पादन । खे० २११, पु० ५४१ ।

### मूलचन्व, श्री---

देखिए, "प्रक्तोलर"।

### मृत्यु--

प्र० वि०--जमानियां याते के हवालाती केंद्री की---। खं० २११, प्० ६४६-६४७।

नुतुष्ट्र में विकास खंड श्रधिकारी की जीव से सष्ट्र की----। खं० २११, पू० ६२३--६२४।

#### मेडिकल काल गे--

प्रव रिव--पारसपुर स --ही श्रायदस्यकनः । प्रव २४१, प्र १६६-१६६ ।

प्रव वि०--गाररायः । द्राः प्राप्तयः म ----पापि कापारमाः। यव २११, प्रव ६३७ ६२८।

#### मेरठ रोडवेज डिवोजन

प्र० वि०-- प कडक्तरी व कृद्धियरी को समित्रात बहाने की प्रार्थना। स्वरूपिक २११, पर १३८- ८३८।

#### मीजस्टोरियल पावगं-

काशो हिन्दू विश्वयं ग्रां लयं कं प्राक्टर को फार्ट क्लास- । खंब ४११, पुरु ६४०-६४१।

### मैजिस्ट्रेट--

प्रव वि०--वृत्तन्वशहर क --में ----प स्पष्टोकरण हा माग। त्व २११, प्रव १३४।

#### मैटनिटी मेण्टर--

प्रव विष-- उम्राय जिल म स्वास्थ्य विभागान्तर्गत---- नगा अपतुबर केवेन्त-मावेदाणापालन। गव २११, प्रव ३३०।

### मोटर प्रावरेटमं--

प्रव विव --- रोतन व द्रामगोर्ट आफिससं स्था हरदोई --- -- हेरिसक्क जिहा-सर्वे स्थव २११, प्रव ८२८ ।

## मोटर इंग्रंटनायें--

प्र० वि०---बडीय-बागयल शहर पर -----। खें० २११, पू० ३४६--३४७।

## मोटर बेहिकिस्स रूस्स, ---

यू० पी०----, १६४० में प्रत्यापित संत्रोधन। सा० २११, पु० ६४३।

### मोतीलाल प्रवस्थी---

बेलिये "प्रदनोलर"।

- २१ मार्च, १६६० तक ऋाय-व्ययक पर वाद-विवाद के भाषणों का विवरण। खं० २११, पृ० ७४३।
- उत्तर प्रदेश जिला परिषद् विधेयक, १९५९ पर संयुक्त प्रवर समिति द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की श्रविष में वृद्धि का प्रस्ताव। खं०२११,पृ० ८४४।
- उत्तर प्रदेश सरकार के विनियोग लेखें १६५७-५८ तथा लेखा परीक्षा प्रतिवेदन, १६५६ पर लोक-लेखा समिति का प्रतिवेदन। खं० २११, पृ० ६७१।
- १६६०-६१ के थ्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदान संख्या २१--लेखा शीर्षक ३८--चिकित्सा तथा श्रनुदान संख्या २२--लेखा शीर्षक ३६--जन-स्वास्थ्य। खं० २११, पृ० ८६ ।
- श्रनुदान संख्या २७——लेखा शीर्षक
  ४१——ग्रौर ८१—क—विद्युत योजनाग्रों की स्थापना पर व्यय तथाश्रनुदान संख्या ५१——लेखा शीर्षक
  ८१—क—विद्युत योजनाग्रों पर
  पूंजी की लागत (स्थापना व्यय को
  छोड़कर) । खं० २११, पृ०
  २७७, २८०—२८३, २६६।
- ऋनुदान संख्या ३७--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्यौ के लिये सहायक ऋनुदान । खं० २११,पू० ६७४ ।
- स्रतुद्दान संख्या ३८--लेखा शीर्षक १४--द्विभक्ष सहायता तथा स्रनुदान संख्या २--लेखा शीर्षक ७-भू-राजस्व (मालगुजारी)। खं० २११, पु० ७७१, ७६०, ७६२, ७६३।
- ऋनुदान संस्या ४१——लेखा शीर्षक ५६——लेखन सामग्री ऋौर मुद्रण। खं० २११, पृ० ५०२—५०४, ५०८, ५१०।

- स्रनुदान संख्या ४२——लेखा शिर्षक

  ५७--प्रकीर्ण व्यय तथा स्रनुदान
  संख्या १५--लेखा शिर्षक २५-गांव सभाएं स्रौर पंचायतें। खं०
  २११, पृ० ५५४, ५५५, ५५६,
  ५६८, ६००।
- विभिन्न अनुदानों पर विवादार्थ समय निर्धारण। खं० २११, पृ० ४५१।
- कार्यक्रम के सम्बन्ध में जानकारी। खं०२११,पृ०८५०।
- ----को सदन से बाहर जाने का निदेश। खं० २११, पृ० ६७२, ६७३।
- प्रक्तों के सम्बन्ध में क्षिकायत । खं० २११, पृ० ५५०।
- मिलयाना शुगर मिल मेरठ को मिलयाना गांव की भूमि का बलपूर्वक पुलिस द्वारा कब्जा दिलाने के सम्बन्ध में नियम ५२ के श्रन्तर्गत सूचना। खं० २११,पृ० ५५२।

## मोतीलाल नेहरू ग्रस्पताल---

प्र० वि०--इलाहाबाद में----की नई इमारत तथा श्रांख के श्रस्पताल की बढ़ाने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० ३४०।

## मोतीलाल नेहरू पार्क--

प्र० वि०-- ----इलाहाबाद में मालवीय जी की मूर्ति स्थापित करने की मांग। खं० २११, पृ० १३४।

मोहनलाल वर्मा, श्री---

देखिये "प्रश्नोत्तर"।

मोहर्नासह मेहता, श्री--देखिये "प्रश्नोत्तर"।

म्युनिसिपल बोर्ड (सहारनपुर)--

----द्वारा लाउड स्पीकर सम्बन्धित बनाये गये बाई-लाज के सम्बन्ध में कार्य-स्थगन प्रस्ताव की सूचना। खं० २११, पृ० ६४७-६४८, ६४६। य

यमुनाप्रसाद शुक्ल, श्री---

१८६०-६१ के फाय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--प्रनुदान संख्या १६--ने आ शोर्बक २७--ग्याय प्रजासन। खं० २११, पृ० ६७७-६८१, ६६२।

यमुनासिंह, थी---

देखिरे "प्रश्तोत्तर"।

यगपाल सिंह, श्री--

श्रनुवान संख्या २७--लेखा शीर्षक ४१--गौर ८१-क--विद्युत यंजि-नाग्रों पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय की छोड़ कर) खं० २११, पू० २८४-२८७।

ध्यनुवान संग्या ३४-लेवा शीर्यक ५०-निर्नाण-कार्य सार्व जनिक श्रीर ५०-15-राजरव से विता पं।धित नागरिक निर्माण-कार्यो पर पूंजी की लागत, धातुदान संख्या ३५-सेवा शं:र्यक ५०-नागरिक निर्माण-फार्य-हेन्द्रीय एड्फ निधि से वितीय राहायता, श्रनुवान संख्या ३६-लेवा शोर्येक ५०-नागरिक निर्माण-कार्य भ्रीर = १-राजस्य ले वे री बाहर नागरिक निर्नाण-कार्यों की पूजी का लेवा तथा अनुवान संख्या ५०-लेगा शीर्बफ ८१-राजस्य लेखे के बाहर नागरिक निर्नाण-कार्यों का पुंजो लेखा। खं० २११, पू० ६०-1 53

# या चिका---

कार्य-स्थान प्रस्ताव तथा-----के सम्बन्ध में जानकारी की मीग । खं० २११, पृ० २४६ । लियाक विर्देश में उपहालपित पर पर ती गाँग तर की नियार में दिया तर मा खंदरश पूद्य २५७ ।

यादवेन्द्रवत्त हुई, ६, --

देखिये "प्रशास्त्रः" ।

१६६०-६१ के भाग-ावक की मांगों पर विवाद थे निक्तिका जार्थ-का में पर्वितंत्र करते पर श्रापीत । खंब २११, पूब २४।

१६६०-६१ के स्राय-ग्याम से सन्-वानों के निवे मागी पर शतवान-स्रववान सम्या ३२-ने के जीकेष ४७-सूचना संचानना पाक्तिय । खंठ २११, प्र ५७५- ,८०, ६६५-६६७ ।

विभिन्न ग्रतवानों ये लिए समय निर्धा-रण । खं० २११, पु० ५५१ ।

युसुफपुर-कासिमायाद बत तरि स --

प्रविष्य ---- माजीपुर बस स्टेशन पर मुसाफिरणाना बनाने का योजना। खंब २११, पुरु १३७-१५८।

योजना--

प्र० वि०--पारस्थिक शिक्षा श्रीनशाये करते की----। खं० ५११, प्० ३४४।

रधुरनतेजबहादुर सिंह, श्री-

१६६०-६१ के आल-जारक में अन्वानीं के लिए मांगी पर मसवाग-अन्वान संख्या ३७-नेना कविष ४०-नाग-रिक निर्मण-पायी के निर्ध सहायक अनुवान । खें० २११, पुरु ६४६-६४८ ।

अनुवास संज्या ३८-लेखा द्यायंण ५४-दुर्भिक्ष राहायता लगा अनुवास संस्था २-लेबा वॉावंक ७-भ्-राणस्य (मालगुजारो) । सं० २११, पू० ७६३-७६४ । रघुराजसिंह चौधरी, श्री--

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रतुः दानों के लिये मांगों पर मतदान-स्रादान संख्या ३८-लेबा नांर्वक ५४-दुनिस सहायता तथा स्रनुदान-संख्या २-लेबा नांर्वक ७-भूराजस्व (पालगुजारों) । खं० २११, पु० ७५६-७५८।

रघुत्रीर राम, श्रं'--देखित्रे "प्रक्तंःसर" ।

> १६६०-६१ के स्नाय-व्ययक में स्नतु-दानों के लिये मांगों पर मतदान-स्नादान संख्या २१-लेला कोर्जिक ३८-चिकित्सा तथा स्नतुदान संख्या २२-लेवा कोर्जिक ३६-जन-स्वास्थ्य। खं० २११, पृ० ८८१-८८२।

रववीरसिंह, श्री--

१६६०-६१ के म्राय-व्ययक में म्रनु-दातों के लिये मांगों पर मतदान-म्राइशन संख्या २१-लेबा शोर्षक ३८-चिकित्सा तथा म्राइशन संख्या २२-लेबा शोर्षक ३६-जन-स्वास्थ्य। स्रं० २११, पृ० ८६६—८७०।

श्रमुदान संख्या ४२-लेबा शोर्षक ५७-प्रकीर्ग व्यय तथा श्रमुदान संख्या १५-लेबा शोर्बन्ह २५-गांव सभ यें श्रीर पंचायतें । खं० २११, पृ० ५५५ ।

स्रमुदान संख्या ४७-लेखा शोर्षक ६८ स्तिवाई, नोवालन, बांध स्रोर पानी के निकास सम्बन्धो कार्यों का निर्माण, स्रमुदान संख्या १०-लेवा शोर्यक १७, १८ स्रोर १६-स-राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण-कार्य तथा स्रमुदान संख्या १६-लेखा शार्यक १७, १८, १६, ६८-भिवाई स्थापना पर व्यय । खं० २११, पृ० १८५, २००-२०३, २७० ।

रजिस्ट्रार--

र्प्र० वि०—-प्रसिस्टेंट----कोन्रापरेटिय सोगाइटो, जिला राथबरेली की सुरक्षा व्यवस्था । खं० २११, पु० ३५८ । रजिरद्री--

प्र० वि०—रोजगार दफ्तरों में नामों की-—— । खं० २११, पू० ६३३ ।

रणबहादुर्रासह, श्री---

१६६०-६१ के स्नाय-व्यवक में स्ननुदानों के लिये भागों पर महदान-स्ननुदान संख्या ७--नेबा हार्जक १२-- महदा गाड़ियों के ऐदटों के कारण व्यव, स्ननुदान संख्या ३१--लेखा हार्जक प्रताण विभाग स्नार ४४-- उड्डयन, स्ननुदान संबंधी सुधार पर पूंजी की लागत तथा ६२-- राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा। खं० २११, पृ० ३८६-३६०।

रमापति दुवे, श्री--

सिचाई विभाग, मिर्जापुर के ४०० मज़दूरों की छटती के कारण----द्वारा ग्रनञन के सम्बन्ध में नियम ५२ के ग्रन्तगंत सूचना । खं० २११, पृ० ६७३-६७४।

रमेशचन्द्र शर्मा, श्री---

१६६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-स्रनुदान संख्या २१-लेखा शोर्बक ३८-चिकित्सा तथा स्रनुदान संख्या २२-लेखा शॉर्बक ३६-जन-स्वास्थ्य । खं० २११, पृ० ८७५-८७६ ।

रसीद फार्म--

प्र० वि०- - मलासा में मवेशी बेचने का---- होना । खं० २११, प्० ३४६।

राघवेन्द्रप्रताप सिंह, श्री---

द्वितीय विधान सभा की स्राक्त्वासन समिति का चतुर्थ प्रतिवेदन । खं० २११, पृ० ६७२ ।

राजकीय मुद्रणालय---

प्र० वि०---की इमारतों में बिना किराये के कर्मचारी । खं० २११ पृ० ८१६, ८१७ । राजवेय उपाध्याय, श्री--

गन्ते के कथ मत्य से सर्वधित व सार्च १६६० के झत्प सुचित तारावित प्रक्त ४-६ के बिषय पर विवाद । खं० २११, पु० ७०६ ।

राजमारायण, श्रो--

बेलिए, "प्रश्तोलर"।

- श्रात्मसूचित ताराणित प्रश्नों के उत्तर न मिलने तथा कार्य-सूचि में प्राधिक प्रश्न रखने के सबब ने श्रापित र्खं० २११, पू० ३६६।
- २१ मार्च, १६६० तक झाय-व्ययक पर बाव-विवाद के भावणीं का विवरण । खं० २११, पू० ७४३-७४४ ।
- खतर प्रदेश जिला परिवर् विशेयक, १६४६ पर संगुक्त प्रवर समिति द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की अविध में वृद्धि का प्रस्ताव । खंश २११, प्र ८५६-८५८, ८६१-
- छत्तर प्रदेश विनियोग विवेयक १६६०। स्रं० २११, पु० १०२४, १०३३।
- १६६०-६१ के ब्राय-व्ययक की मांगों पर विवादार्थ निश्चितकार्य-कम में परिवर्गन करने पर ब्रायसि । खं० २११, प्० २६-३०, ३१, ३२, ३३, ३६, ३७, ३८ ।
- १६६०-६१ के स्नाय-व्ययक में अनु-यानों के लिए मांगों पर मतवाम-स्मावान संख्या दे-लेवा शीर्यक द-राज्य सावकारी । खं० २११, पू० ४४४, ४४६, ४५७, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६४,
- भ्रनुवान संख्या ४-लेखा शीर्वक १०-मन । खं० २११, पू० ४६८, ४६४ ।

- श्चनवान सर्ग्या १६-तथा द्यावंक २७-न्यान भवागन । या २११, पू० १६१, ६१- ।
- अन्यस्य साथा १ तता आर्थेक २८-जेल । ता १ ४११, पा० ६६४-१०००, १००१, १०१४-१०१६, १०१७, १०००।
- अनुरान सम्या 1- व व : मा वे व ४१ और = १-क- विस्तार पान नामः की रवापना वर स्वयं तथा प्रवास सक्या ५१-लेखा शीर्षक रूट- क- विस्तत योजनाओं पर क्वी सी ताग (स्वापना व्ययं की द्वाप्टवार) । स्वर् २११, प्र २०४, ३११ ।
- सनकाम सम्पा ३--नेला शांपंक ४७-सूचना मनायन कार्यान्त्र । स्र० २११, पुरु ६७४, ६८१-६८४, ६८८, ७०१ ।
  - धनुवान सल्या ३४ लला शीरंण ४० मागरिक निर्माण-कार्य भीर ५०-क- राजस्य से विश्व धावित सागरिक निर्माण-कार्यी पर पता है। भागत, धनवान मला। ३५-लवा व्यक्ति प्रत-नागरिक निर्माण-कार्य कर्जाय सक्ष विश्व में जिलांग सहायता, धन्वान सन्पा ३५-न्यला जीवंक ४०-नागरिक निर्वाण-कार्य **८१ राजस्य लेले में आहर मार्शारक** निमणि-कार्यों का पत्री का लेगा संया प्रनवान सन्या ५०-लला वीरिक = ६-४।जस्य लले के बाहर नागरिक किर्राण-नावर्षका लीवा । सर्वे प्रश्रु, युक्त ४०, <u>ac' 6ac' 6as' 647 1</u>
- भनुवाम संख्या ४६-मोला वो रंकः ५६-लेखम सामग्री भीर महण । लंब २११, पुरु ५०२।
- अनुवान संख्या ४२ जेला शार्यक ४७--प्रकोर्ण व्यय तथा श्रनवान संख्या १४---जेला शार्यक २४---गांव सभाएं भीर पंचायते । सं० २११, पु० ४=७, ६०४, ६०६, ६०४ ।

श्रुत्दान संख्या ४७-- ने बा शीर्षक ६८-- लिचाई, नौ बालन, बांघ श्रीर पानी के निकास सम्बन्धी कायो का निर्नाण श्रुन्दान संख्या १०--ले बा शार्षक १७, १८ श्रीर १६--ख--राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्नाण कार्य तथा श्रुन्दान संख्या ११-- ने बा शार्षक १७, १८, १६ श्रीर ६८ सिचाई स्थापना पर व्यय । खं० २११, पू० २६४, २६४, २७० ।

विभिन्न श्रनुदानों पर विवादार्थ समय निर्भारण । खं० २११, प्० ४५१।

फार्य-स्थमन प्रस्ताव तथा याचिका के सम्बन्ध में जानकारी की मांग । खं० २११, पृ० २४६ ।

श्रो टोफाराम पुजारी के निलम्बन के। समाप्त करने का सुझात । खं० २११, पू० ६४४, ६४५, ६४६, ६४७ ।

तात्कालिक प्रश्नों की लिए जाने के सम्बन्ध मॅंब्यबस्था । खं० २११, प्० ६७४, ६७५ ।

तारांकित प्रश्न ३६-३७ से संबंधितः व्यक्तिगत भ्रतुपूक प्रश्नों को कार्य-वाही से निकाल देने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० २६, २७।

----द्वारा भ्रयते भ्रत्यसूचित तारांकितः प्रक्त के संग्रंग में जानकारी की मांग । खं० २११, पृ० २८ ।

नियम ४२ के श्रन्तर्गत दिये गये विषयों के संबंध में जानकारी । खं० २११, पु० ६४०, ६४१।

नियम ५२ के अन्तर्गतध्यान आकर्शगार्थ विश्वभों के संबंध में सूचना । खं० २११, पु० १४१ ।

प्रदेश में ३ वर्ष के डिग्री कीर्स के संबंध में नियम ५२ के भ्रन्तर्गत गृह मंत्री का वक्तव्य । खं० २११, पु० २४४, २४५ । प्रक्तोत्तर के संबंध में आपिता । खं० २११, पु० ६४३ ।

प्रकरितर के संबंध में ग्रापितयां । खं० २११, प्०१३८-१३६, १४०।

मिलयाना शुगर मिल, मेरठ, को मिलयाना गांव की भूमि का बल- पूर्वक पुलिस द्वारा कब्जा दिलाने के संबंध में नियम ५२ के अन्तर्गत गृह उप-मंत्री का बक्तव्य । खं० २११, पृ० ७४१ ।

लखनऊ विश्वविद्यालय के उप-कुलपति पद पर श्रो काली ग्रलाद की नियुक्ति के संग्रंग में कार्य-स्थगन प्रस्ताव की सूचना । खं० २११, पृ० ३६७ ।

सहारनपुर नगरपालिका द्वारा लाउड-स्वीक्तरों के प्रयोग पर प्रतिबन्ध के सम्बन्ध में स्वायत्त शासन उप मंत्रो का वक्तव्य । खं० २११, पु० ६५२ ।

सहारनपुर म्युनिसिपल बोर्ड द्वारा लाउड स्पांकर संबंधित बनाये गये बाई-लाज के संबंध में कार्य-स्थगन प्रस्ताव की सूचना । खं० २११, प्र० ६४८, ६४६ ।

राजबिहारी सिंह, श्री

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक के भ्रनु-दानों के लिये मांगों पर मतदान—— भ्रनुदान संख्या ३२——लेखा दीर्षकः ४७——सूचना संचालन कार्यालय। खं० २११,पृ० ६८८-६६१।

राजाराम शर्मा, श्री--

देखिए, "प्रश्नोत्तर" ।

१६६०-६१ के म्राय-व्ययक में म्रनु-दातों के लिये मांगों पर मतदान—— म्रनुदान संख्या २१——ने ता शोर्षकः ३८——चिकित्सा तथा म्रनुदान संख्या २२——ने ता शोर्षकः ३६——जन स्वास्थ्य । खं० २११, पृ० ८६१-८६२ ।

राजेन्द्रिकशोरी, श्रीमती-वेखिये "प्रश्नोसर" ।

राजें ब गुम री, श्रोमती---

१६० - ५१ के श्राय-व्ययक में श्रान-न्ना कि विभागों पर मलशन---पन पन संधा ३४- लेखा कीर्षन ५० -स.र्वजनेपा िस्मिश-पत्र श्रं र्फ्रोट ५० - फ---राजम्ब से दिल-पात्रित नागारेक निर्माण-कार्यो पर पुंजी की लागत, अनदान पंख्या ३५ ोषा शीर्षक ५०--नागरिद-े हेन्द्रस्य सङ्ग्र निधि विनाण-कर्न से विलीय सहायता, संला ३६---नेत्रा शीर्यक 父の ---नामारिक निर्माग-फार्य **८१--राजस्य ले रे से बाहर नागरिक** निर्नाण-फार्यो का पूर्ता का लेखा तया श्राहान सल्या ५०-- नेवा शार्शक ८०---राजस्य ले । के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पुंजी ा खं० २११, पु० ६४ ।

अनुवान संक्या ३७—नेवा शीर्षक ४० —नागरिक निर्माण —कार्यों के लिये सहायफ अनुवान । खं० २११, पृ० ६६४।

श्चनुदान संख्या ४७—नेता शीर्यकः ६ सिवाई, नीनालन, बांध श्रीर पानी के तिकास सम्बन्धी कार्यों का निर्पाण, श्रनुदान संख्या १०—— लेग शार्यक १७, १८ श्रीर १६—— ख——राजस्य से किये जाने वाले सिवाई के निर्माण-कार्य तथा श्रनुदान संख्या १६——लेगा शार्यक १७, १८, १६, ६८——जिवाई स्थापना पर व्यय । खं० २११, पृ० १८४-१८४ ।

### राजेन्द्रसिंह, श्री---

१६६०-६१ के ग्राय-घ्यय में ग्रन्-बातों के लिये मांगों पर मतदान— ग्रन्दान ५५७ संख्या ४२——लेखा का मंक ५७——प्रकृष्ण व्यय तथा ग्रन्दान संख्या १५——नेवा क्षीप्रक २५——गांव समाएं ग्रीर पंचायते। स्रं० २११, प्० ५६७-५८६ । राजे द िह गायप, श्री - -

देखिन्, "प्रदर'तर" ।

राज्य व्यापार यामना--

भाग्नि -- -- का पर्व रण व स्थंत २,६, व्र ५६६

प्रविष्य ---- पर व्यव । सर ५११, प्रविष्य ।

राब उद्यंग--

प्रविष्याण, साम्याची तमाः ---पर नियाण । यव ४११, पव दुरुष्ट

रामिककर, श्री---

वेगित्रे "प्रशांसर"।

रामकुमार वैद्य, श्र\*---

१६६०-६१ के स्राय-प्रयक्त में स्नवानों के लिये मागों पर मतवानस्नाग संस्था ४०- - सेगा शीर्षक
६८--सिनाई, नीतालन, बाख
स्रीर पाति के लियास सर्वेश कार्यो
का निर्माण, सनवान संस्था १०--लेखा शार्षक १७, १८ स्थीर १६--ख--राजस्य से विषये जाने वाले
सिनाई के निर्माण कार्यं तथा सनवान
संस्था ११-- लेखा शार्थकः १७, १८, १६ स्थीर ६८ सिनाई स्थापना
पर व्यय । खं० २११, ए० २६१२६२ ।

राम ग्रथ्ण सारत्यत, श्री---

बेखिए, "प्रदन्तस्"।

रामचन्द्र उनियाल, श्री---

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययम मे प्रन् बार्नो के किए मांगों पर मसदान-ग्रनुवान संख्या ५--लेल। शीर्यक १०--वन । खं० २११, पूर्व ४७८-४८०। राभ बन्द्र विकास, श्रो--

२२-०-६१ के आय-व्ययक में अनुदानों के लिए मांगों पर मतदानप्रमुदान लंड्या ४७——लेखा शीर्यक
६८——िंपचाई——नीवालन, बांध
और पानो के निकाम संबंधो कार्यो
का निर्माण, प्रमुदान संब्धा १०——लेखा शार्यक १७, १८ और १६——लेखा शार्यक से किये जाने वाले
विचाई के निर्माण कार्य तथा अनुदान संख्या ११——लेखा शोर्षक १७,
१८, १६ और ६८ सिचाई स्थापना
पर व्यय । खं० २११, पू० १७२१७५।

रामदास भ्रार्य, श्री--

देखिये "प्रश्नात्तर" ।

रामदीन, श्री--

देखिये, "प्रक्तोत्तर"।

१६६०-६१ के श्राय-व्ययक मे भ्रत् दानों के लिए मांगों पर--ग्रनुदान संख्या ३४---लेबा शंर्थक ५०---नागरिक निर्नाण-कार्य ग्रौर ५०--क--राजम्ब से वित्तरोषित--नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत--ग्रनुदान संख्या ३५ लेखा शोर्त्रक ५०--नागरिक निर्माण कार्य केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय महायत।--श्रतुदान संख्या ३६--शं र्यक ५०--नागरिक लेवा निर्माण कार्य स्रौर ८१ राजस्व लेखे से बाह्र नागरिक निर्माग कार्यों को पूंजी का लेखा तथा श्रनुदान संख्या ५०--जेवा दार्जन ८१-राजस्य लेबे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यीका पूंजा लेखा । र्षा २११, ४० १४७–१४६ ।

रामनाथ गाठक, श्री---

१६६०-६१ के स्राय-ब्ययक मे प्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदानस्रनुदान संख्या ३८--लेखा शीर्षक
५४--दुभिक्ष सहायता तथा श्रनुदान
संख्या १२--लेखा शीर्षक ७-भू--राजस्व (मालगुजारी) ।
खं० २११, पु० ७५०-७५२ ।

रामप्रसाद, श्री-देखिये, "प्रश्नोत्तर"।
रामबली, श्री-देखिये "प्रश्नोत्तर"।

राममृति, श्री--

उत्तर प्रदेश अधिकतम जोत सीमा ऋारोपण विधेयक, १६५६ । खं० २११, पु० ६७२ ।

रामलक्षण तिवारी, श्री--

१९६०-६१ के आय-व्ययक मे अनु-दक्तों के लिये मांगों पर मतदान-अनुदान संख्या ३२--लेखा द्यार्थिक ४७--सूचना संचालन कार्यालय। खं० २११, पू० ६८०-६८१।

अनुदान संख्या ४७——लेला शीर्षक
६८ सिचाई नौच लन, बांध और
पानी के निकास संबंधी कार्यो का
निर्माण, अनुदान संख्या १०——
लेला शीर्षक १७, १८, और १६
——ज——राजस्व से किये जाने वाले
सिचाई के निर्माण कार्य तथा अनुदान संख्या ११——लेला शीर्षक
१७, १८, १६ और ६८ सिचाई
स्थापना पर व्यय । खं० २११,
पृ० १६३-१६४ ।

रामलखन मिश्र, श्री--देखिए, "प्रक्तोत्तर"।

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक मे अनु-दानों के लिये मांगों पर मतदान—— अनुदान संख्या ३८——लेखा शीर्षक ५४——द्वींभक्ष सहायता तथा अनु-दान संख्या २——लेखा शीर्षक ७—— भू-राजस्व (मालगुजारी) । खं० २११, पृ० ७५८-७६० ।

श्रदान संख्या ४७——तेखा शीर्षक ६८
——िंसचाई नौचालन बांघ श्रौर
पानी के निकास सम्बन्धी कार्यो का
निर्माण, श्रनुदान संख्या १०——
लेखा शोर्षक १७, १८ श्रौर १६——
ख——राजस्व से किये जाने वाले
सिचाई के निर्माण कार्य तथा श्रनुदान संख्या ११——लेखा शीर्षक
१७, १८, १६ श्रौर ६८ सिचाई
स्थापना पर व्यय । खं० २११,
पु० २०६-२०८ ।

रामलणन्तिम्ह, अः--देशियं "प्रश्नोत्तर" ।

१६२०-६१ के स्राय-क्ययक मे स्रन्बानों के निष् मांगों पर मतवानस्रनदान संस्था ४७---लेखा शीर्षक
६८---िलाई, नौचालन, बांध
स्रोर पानी के निकास सम्बन्धी
कार्यों का निर्माण, प्रन्दान संस्था
१०--लेखा शीर्षक १७, १८ स्रोर
१६---व---राजस्य से किये जाने
बाले सिचाई के निर्माण कार्य तथा
सन्दान संस्था ११---लेखा शीर्षक
१७, १८, १६, ६८ सिचाई स्थापना
पर व्यय । खं० २११, पृ० १८३-

रामलाल, भी--देखिये ''प्रक्तोसर''।

# रामवचन यादव, श्री---

१६६०-६१ के श्राय-व्ययक में ग्रनवानों के लिए मांगों पर--- प्रनुवान संख्या ३४--लेखा द्यीर्थक ५०--नागरिक निर्माण--कार्य भ्रौर ५०--क---राजस्य से वित्त पोषित--नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत- --श्रनुदान संख्या ३५ लेखा शीर्षक ५० --नागरिक निर्माण कार्य केन्द्रीय सङ्क निधि से विलीय सहायता--श्रनुदान संख्या ३६--लेखा शीर्षक ५०--- तागरिक निर्माण कार्य ग्रौर ८१ राजस्व लेखें से बाहर नागरिक निर्माण कार्यों की पूंजी का लेखा तथा भनुदान संख्या ५०-- लेखा शीर्षक **८१--राजस्व लेखे के बाहर नागरिक** निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा। खं० २११, पु० १४५-१४७।

रामझरण यादय, श्री--देखिए, ''प्रश्नोसर''।

> १६६०-६१ के आय-ग्ययक में अनु-बानों के लिए मांगों पर मतदान—-श्रनुवान संख्या १६——लेखा शीर्षक २७—- त्याय प्रशासन । कां० २११, पु० ६६४ ।

अन्यान सरमा ४८-- रेगा झीर्षक ५४ -- दुमिक्ष सहायना सथा अन्दान संस्या २-- नेम्या झीर्षक ७---भू--- राजरब (सालगजारी) । स्वेत २११, यूठ ७६५ ।

रामसमझायन, श्री--देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

रामसिह चीहान बद्ध, श्री--वेलिये "प्रश्नोत्तर" ।

रामसुन्दर पांडेय, श्री-देखिए, "प्रक्तीनर" ।

> १६६०-६१ के स्राय-व्ययक म धनुवानों के निय मागो पर मतवान- - सनु-वान सम्या ७-- नेत्वा द्यालंक १२ -- मोटर गाड़ियों के एक्टों के कारण व्यय, अनुवान सम्या ३१- - लेखा जावंक ४३ - प्रशंग विभाग धीर ४४-- - प्रद्यान, अनुवान सबकी सुधार पर पूंजी की तागत तथा हर-- राजस्व न्यां के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा । खंठ २११, पूठ ३६०-३६२।

अनुदान संस्था २७ नेका जीवंक ४१
थीर ६१-- २० - विद्युत योजनाओं की स्थापना पर व्यय तथा अनुदान संस्था ५१--- लेका जीवंक ६१---क---विद्युत योजनाओं पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय छोड़ कर)। खं० २११, पू० ३००-३०२।

सनुवान संस्था ३७---लेका शोधंक ४० --- नागरिक निर्माण-काश्री में लिये सहायक सनुवान । कां० २११, पू० ६७२।

प्रदनों का उत्तर न मिलने की जिकायत । कं० २११, पूर्व ४५० ।

प्रक्ष्योसर के सम्बन्ध में श्रापस्थि। सं० २११, पु० १३८।

रामसूरत प्रसाद, श्री--देखिये 'प्रक्लोलर'। १९६०-६१ के फ्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--भ्रनुदान संख्या ३--लेखा शीर्षक ८--राज्य आवकारी। खं०२११,पृ०४५४-४५५।

#### रामस्वरूप यादव, श्री--

- १६६०-६१ के आय-व्ययक में ऋनुदानों | के लिये मांगों पर मतदान--- ऋनुदान | संख्या ३२--लेखा शीर्षक ४७--सूचना संचालन कार्यालय। खं० २११, पृ० ६७४।
- २६ फरवरी, १६६० के तारांकित प्रश्न ४४-४६ से सम्बद्ध एक अनुपूरक प्रश्न के उत्तर के सम्बन्ध में गृह मंत्री का वक्तव्य। खं० २११, पु० ६७६-६७७।
- मिलयाना शुगर मिल, मेरठ, को मिलयाना गांव की भूमि का बलपूर्वक पुलिस द्वारा दिलान के सम्बन्ध में नियम ५२ के श्रन्तर्गत गृह उप-मंत्री का थक्तव्य। खं० २११, पू० ७४०, ७४१, ७४२।
- मिलयाना शुगर मिल, मेरठ की मिलयाना गांव की भूमि का बल-पूर्वक पुलिस द्वारा कब्जा दिलाने के सम्बन्ध में नियम ५२ के अन्तर्गत सूचना। खं० २११, पृ० ५५१।

### रामस्वरूप वर्मा, श्री--

## देखिये "प्रक्नोत्तर"।

- **ऋ'नुदान संख्या ३४---लेखा द्यीर्षकः--**--५०--सार्वजनिक निर्माण-कार्य ग्रौर ५०--क--राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यों पर पूंजी की लागत, अनुदान संख्या ३५--लेखा शोर्षकः ५०--नागरिक निर्माण कार्य-केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, स्रनुदान संख्या ३६--लेखा शीर्षकः ५०--नागरिक निर्माण कार्य ग्रौर ८१––राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कःयाँ की पूंजी का लेखा तथा ग्रनुदान संख्या प्रे०--लेखा शीर्षकः दर्--राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों कापूंजीलेखा। खं० २११, पू० ८१-८४।
- श्रनुदान संख्या ३८--लेखा शीर्षकः ५४--दुर्भिक्ष सहायता तथा श्रनुदान संख्या २--लेखा शीर्षकः ७--भू--राजस्व (मालगुजारी)। खं० २११, पृ० ७६१।
- अनुदान संख्या ४७——लेखा शीर्षकः ६८——सिंचाई——नींचालान, बांघ और पानी के नि सि सम्बन्धी कार्यी का निर्माण, अनुदान तंख्या १०——ले ता शीर्षक १७, १८ अ.र १६—छ——राजस्व से किये जाने वाले सिंचाई के निर्माण कार्य तथा अनुदान संख्या ११——लेखा शीर्षकः १७, १८, १८ और ६८ सिंचाई स्थापना पर व्यय। खं० २११, पृ० १६६—
- प्रदेश में ३ वर्ष के डिग्री कोर्स के सम्बन्ध में नियम ५२ के अन्तर्गत गृह मंत्री का वक्तव्य । खं० २११, पृ० २४६।
- प्रइनों के सम्बन्ध में द्यिकायत्त । खं० २११, पृ० ५५१।
- मिलयाना शुगर मिल, मेरठ, को मिलयाना गांव की भूमि का बलपूर्वक पुलिस द्वारा कब्जा दिलाने के सम्बन्ध में नियम ५२ के श्रन्तर्गत गृह उप-मंत्री का वक्तव्य। खं० २११, पू० ७४१-७४२।

रामापण गग श्री--

देशिय "प्रक्रनोत्तर"।

१६-०--१ हे प्राय-व्ययक मे अनुवानों हा निर्मे मागों पर मनदान-प्रनदान सन्पा ७--नेला शीर्यकः १२-- मार गाः गों हे ऐक्टों के कारण व्यय, अनु तन महणा ३१-- लेला शीर्यकः ४७--प्रहोर्ण निभाग और ४४--प्रश्याः प्रन्यान सहया ५२-- लेला शोर्यकः ७०--जन-प्रारस्य सम्बन्धो सुत्रार पर पूंजीः ही लागत तथा ६२--एजस्य लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण शायों का पूंजी लेला। खं० २११,पृ० ३६४- ३६४।

स्रनुवान संख्या २१--लेखा शीर्षकः ३८-चिकित्सा तथा स्रनुवान संख्या २२--लेखा शीर्षकः ३६--जन-रवास्थ्य। खं० २११, पृ० ८६३-८६७, ८६३-८६४।

श्रनुदान संख्या २७——लेखा शीर्षकः
४१——ग्रीर ८१——क—— विद्युत योजनाग्रों की स्थापना पर व्यय तथा श्रनदान संख्या ५१——लेखा शीर्षकः ८१——
क——विद्युत योजनाश्रों पर पूंजी की
लागत (स्थापना व्यय को छोड़कर)।
खं० २११, पू० २८१।

गन्ने के कय मूल्य से सम्बन्धित ह मार्च, १६६० के प्रत्पसूचित तारांकित प्रक्त ४-६ के विषय पर विवाद। खं० २११, पू० ७०८।

प्रदेश में ३ वर्ष के जिसी कोर्स के सम्बन्ध में नियम ४२ के ग्रन्तगंत गृह मंत्री का यक्तव्य। खं० २११, पू० २४६।

### रायल होटल--

प्र० वि०----- हे नवीन धिधायक निवास में चौड़ के किवाड़। खं० २११, प्० ३२४-३२५।

प्र० विश्व--लखनऊ में---- के विधायक निवास में खराब सामान लगाने की शिकायत। खं० २११,पू० ३४२-३४३। । राजन में भिन्नता--

प्रव वि०----। गाव ४११, प्र प्रव ।

राष्ट्रीय स्त्रय गाम गय--

प्रव निरुम्भजन तथा । स्वान्यम्मे सर्वान्यतः व्यक्तिस्य । विकास देने में सरकारी नीता । १० २११, पुरु ४४५-४४०।

रिजेट--

प्रविश्व - बनार वृत्तीस्यक्षाः जिला बुलन्दक्षार ॥----। १००२११, पुरु १२८।

रीजनल ट्रान्मवोटं मार्फिम---

प्रव वि०----, ललनऊ के गजटेड आफिनसं। एवं २११, पुरु १३४।

रीजनल ट्रान्सवोर्ट माफिसमं--

रूमसिंह, श्री---

वें जिये 'प्रक्तोसर''।

१६६०-६१ के आय-स्ययक में त्रानवानी के लिये मांगीं पर मलवान - सन्वान संख्या ३८-- नेत्वा शीर्षकः ५४--बुभिक्ष सहायता तथा अनवान संख्या २-- नेत्वा शीर्षकः ७--५--राजस्य (मालगुजारी)। व्यव २११, प्रव ७६०-७६१।

धनुवान संख्या ४७——नेत्रा शीर्वयः ६=——रिंग्जाई——नीचालन, बाध श्रीर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यी का निर्माण, श्राचान सन्या १० लेखा शीर्वक——१७, १० श्रीर १६—व——राजस्य से किय जाने याले सिचाई से निर्माण—कार्य तथा श्रनवान संख्या ११——लेखा शार्ष १——१७, १८, १६ श्रीर ६८ सिन्नाई स्थापना पर व्यय । कं० २११, पृ० २५६— २५८ । तारांकित प्रक्त ३६-३७ से सम्बन्धित व्यक्तिगत भ्रनुपूरक प्रक्तों को कार्यवाही से निकाल देने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० २७।

#### रेलवे लाइन--

प्र० वि०---राज्य में ----बढ़ाने की श्रावश्यकता। खंठ २११, पृ० ६४२।

#### रेलवे स्टेशनों---

प्र० वि०--- ----से गांव वालों को पानी देने की प्रार्थना। ख०२११, पु० १७--१८।

#### रोग-पीडित व्यक्तियों---

प्र० वि०—निर्बल तथा पैतृक— परिवार नियोजन को प्रभावी बनाने का सुझाव तथा लखनऊ में कुत्तों के काटने से मृत्युएं। खं० २११, प्० ६६६।

#### रोजगार--

प्र० वि०—कृषि योजनाम्रों के श्रन्तर्गत ———मिलना। खं० २११, पृ० ५४७।

प्र० वि०—गृह निर्माण योजनान्तर्गत
——मिलन का श्रनुमान। खं०
२११, प्० ७२१-७२२।

प्र० वि०—पंचवर्षीय योजनान्तर्गत—— मिलना। खं० २११, पृ० ८२०— ८२१।

### रोजगार वपतरों--

प्र० वि०----में नामों की रजिस्ट्री। खं० २११, पृ० द३३।

#### रोडवेज---

प्र० वि०----में लिये जाने वाले मार्ग। खं० २११, पृ० १३६।

## रोक्रवेज क्षेत्र--(ग्राजमगढ़)--

प्र० वि०—- ----में कर्मचारियों का बकाया वेतन व भत्ता। खं० २११, पू० द३६। रोडवेज बस स्टेशन--

प्र०वि०---- स्राजमगढ़----पर लाउड-स्पीकर की ग्रावश्यकता । खं० २११, पु० ८१८--८१६ । ~

#### रोडवेज बसों---------

प्र० वि०—विधायकों को——के पास देने की योजना। खं० २११, पृ० ३२०।

### रोडवेज बुकिंग ग्राफिस--

प्र० वि०--तिकया में----खोलने की योजना। खं० २११, प्० १३८।

प्र० वि०--बिरनों थाने पर----न होना, भ्राजमगढ़ क्षेत्र में बस कन्डक्टरी के प्रार्थी। खं०२११, पृ०१३४।

#### रोडवेज विभाग---

प्र० वि०-- ---मे नौकरी के लिये श्रनुसुचित जाति के उम्मीदवार । खं० २११, पृ० ८४४ ।

प्र० वि०-- ---में प्रतियोगिता परीक्षा। खं० २११, पृ० दहा।

ल

#### लकड़ी---

प्र० वि०—गोरखपुर वन खंड में निर्माण कार्य तथा सस्ती———। खं० २११, पृ० ६२७–६२८।

लक्ष्मणराव कदम, श्री--देखिये "प्रक्तोत्तर"।

## लक्ष्मीनार।यण बंसल, श्री--

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों प मतदान--भ्रनुदान संख्या १६--लेखा शीर्षकः २७--न्याय प्रशासन। खं० २११, पृ० ६८७-६८६।

## लक्ष्मीरमण श्राचार्य, श्री---

१६६०-६१ के आय-व्ययक की मांगों पर विवादार्थ निश्चित कार्यक्रम में परिवर्तन करने पर आपत्ति। खं० २११, पृ० ३४-३६।

### [लक्मीरमण ग्राचार्य, भी---]

म्रतुदान संस्था १७—सेला शिर्षक २८—जेल। खं०२११,पु० ६६४, १०१६–१०२२।

अनुदान संख्या ४४—सेखा शीर्षक ५७—समाज कल्याण। खॅ०२११, पु० ६६५।

#### लखनक विश्वविद्यालय--

---- के उप-कुलगित पद पर श्री कालाप्रसाद को नियंक्ति के सम्बन्ध में कार्य-स्थगन प्रस्ताद की सूचना। स्वं० २११, पृ० ३६।

#### सलमोसिंह, श्री---

१६६०--६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रत्वानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रतुदान संख्या ३क--लेवा शोर्षक ५०--सार्वजनि निर्माण कार्य ग्रौर ५०— फ---राजस्व से वित नागरिक निर्माण-कार्यी पर पंजी को लागत, ऋतुवान संख्या ३५---लेवा शोर्षक ४०--नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रोय सङ्क निधि से विसीय सहायता, श्रनुवान संख्या ३६---लेवा शोर्यक ५०—नागरिक निर्माण कार्य और ६१--राजस्व सेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा श्रानुदान संख्या प्रे० -- नेता शोर्जक ८१--राजस्व लेखें के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूजा लेखा। खं० २११, पु० ६६-६७।

## लगान को बसूली--

प्र० वि० जमीवारी उन्मूलन के फल-स्वरूप शेष । खं० २११, प्० ३३१।

## लगान में छूट---

प्रव वि०—-माजमगढ़ जिले में----। सं० २११, पृ० ३५०-३५१।

#### तड़ कियों---

## लड़कियों की शिक्षा--

प्र० वि०------ के लिये केन्द्रीय यंजिता का कार्यान्वयत्। व्यं० २११, पृ० ३२६।

#### ललितपुर बांध--

प्र० वि०--- ----पर उस्तुओं का कथित भ्रद्धाः लंग २११, पृण ३१६--३२०।

#### लाइसेस कर-

त्रवि कारणारी कारणार्गे का

#### लाउड स्पीकर--

प्रविय-पाजमगढ्र रीड वेज कम स्टेशन पर---का आवश्यकता। खंव २११, प्रविध्यक्ति।

### लाउडस्पीकरॉ---

सहारतपुर नगरपालिका द्वारा---के प्रयोग पर प्रतिबन्ध के सम्बन्ध में स्वायत शासन उप मंत्री का वक्तव्य। खं० २११, प्र ६५१--६५२।

## ला ऐन्ड झाईर---

प्र० वि०--- ज़ीरी जिले में ----- सम्बन्धी मोटिंग। सं० २११, प्० ३५४।

# लालबहादुर, श्री---

श्रनुदान संख्या ३४--लेखा शोर्षक ५०--सार्वजनिक निर्माण-कार्य ग्रौर ५० ---क---राजस्व स वित्त पोषित नागरिक निर्माण कार्यों पर पुंजी की लागत, श्रतुदान संख्या ३५——लेखा शोषंक ५०---नागरिक निर्माण कार्य केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, श्रनुदान संख्या ३६—लेखा ञोर्षकः ५०--नागरिक निर्माण-कार्य ऋौर ८१--राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण–कार्यों को पूंजो का लेखा तथा ग्रनुदान संख्या ५०--लेखा शोर्षक ८१--राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा। खं० २११, पु० ७६-द१।

श्रतुदोन संख्या ४१——लेखा शोर्षकः ४६——लेखन सामग्री ग्रीर मुद्रण। खं० २११, पू० ४०७—४०८।

লাহাঁ——

प्र ०वि०—लच्छोपुर, जिला वाराणसो में कुपेंसे ——िनकालने में विलम्ब। होना। खं० २११, पृ० २३३— २३६।

लिपिकों---

प्र० वि०—-परिवर्तन श्रायुक्त कार्यालय में----की परीक्षा। खं० २११, प्० ८३७।

लिविंग इन्डेक्स---

प्र० वि०—कास्ट—ग्राफ——— । खं० २११, पृ० द२५—द२६।

लोसा का संग्रह।---

लेखन सामग्री--

१६६०-६१ के आय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदान संख्या ४१--लेखा शोर्षकः ५६------ग्रोर मुद्रण। खं० २११, पू० ५०१-५०२।

लेखपाल----

प्र० वि०—फर्ष्याबाद जिले में कागजात दुरस्ती क मुकदमों तया ध्रपते निवास क्षेत्र में काम करने वाले ----। खं० २११, पृ० ३४६। प्र० वि०--- बोरीपुर ग्राम के---- के विरुद्ध शिकायत। खं० २११, पृ० पृ० ३४४।

प्र० वि०—वराणसी जिले में ———को जेल भेजने से पूर्व चार्ज न ले सकना। खं० २११, पृ० ३५०।

लेखा परीक्षा प्रतिवेदन--

उत्तर प्रदेश सरकार के विनियोग लेखें १६५७-५८ तथा---, १६५६ पर लेखा समिति का प्रतिवेदन। खं० २११, पृ० ६७१।

लेबर इन्सरेक्टर भ्राफिस--

प्र० वि०--देवरिया जिले के---। खं० २११, पु० ८२४-८२५।

लोकनाथ सिंह, श्री--देखिये "प्रश्तोत्तर"।

लोक लेखा समिति---

उत्तर प्रदेश सरकार के विनियोग लेखें १६५७-५८ तथा लेखा परीक्षा प्रतिवेदन, १६५६ पर--- का प्रतिवेदन। र्खे० २११, प्० ६७१।

विकास तथा नियोजन स्थायी समिति——
तथा प्राकक्लन समिति के लिये निर्दाचन सदस्यों के नामीं की घोषणा
खं० २११, पृ० ६७५–६७६।

व

वक्तव्य---

इंटरमीडियेट बोर्ड के इम्तहान के कारण मुसलमान परोक्षाियों को जुमा की नमाज से वंचित करने के सम्बन्ध में नियम ५२ के अन्तर्गत शिक्षा उपमंत्री का———। खं० २११, पृ० ६७५।

२६—फरवरी, १६६० के तारांकित प्रक्रन ४४-४६ सें सम्बन्ध एक श्रतुपूरक प्रक्रन कें उत्तर के सम्बन्ध में गृह उपमंत्री का———। खं०२११, पु० ६७६-६७७।

प्रदेश में ३ वर्ष के डिग्री कीर्स के के सम्बन्ध में नियम ५२ के श्रन्तर्गत गृह मंत्री का——। खं० २११, पृ० २४६–२४६।

#### विवताच्य---

मिश्रिल में श्री वशीचनाथ के मेले में अनिष्णत सिनेमा श्रो कम के कारण सरकारी आय में कमी के सम्बन्ध में नियम ४२ के अन्तर्गत मुख्य मंत्री का———। खं० २११, प्० ८४८— ८४६।

सहारनपुर नगरपानिका द्वारा लाउड-स्पीकरों के प्रयोग पर प्रतिबन्ध के सम्बन्ध में स्वायत्त शासन उप-मंत्री का----। लं० २११, पृ० ८५१--

#### **47**—

वन यातायात विकास योजना---

प्रा० वि०-----। सं० २११, पु० ६२४-६२६।

वाराणसी (डिवीजनी)---

गोरमपुर तथा——से पंचायत सेके-टरियों का हटामा जाना। कं० २११, पु० २१-२२।

## बासुदेव दीक्षित, भी---

१६६०-६१ के श्राय-व्ययक में अनुवानों के लिये मांगों पर मतवान-प्रनुवान संख्या ३४--लंबा शोर्षकः ५०--सार्वजनिक निर्माण-कार्य ग्रीर ५०----क--राजस्व से विस पोवित नागरिक सिर्माण-कार्यो पर पूंजी की लागल, भानवान संख्या ३५--लेखा शीर्षकः ५०---नागरिक निर्माण-कार्य-केन्द्रीय सङ्क निधि से विसीय सहायता, धानुवान संख्या ३६--लेका शीर्षकः ५०--नागरिक निर्माण-कार्य और =१--राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा धनुवान संख्या ४०---लेखा शीर्षक द्ध रे---राजस्य लेखे के बाहर भागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा। सं० २११, पु० मम-६०।

विकास ग्रधिकारियों--

प्र० वि०--सहायक----की पदोन्नति । व्वं० २११, पृ० ६१६।

विकास ग्रधिकारी---

प्र० वि०———। सं० २११, प्र० ६३७।

विकास कार्य-

प्र वि०--फरेवा मध्य क्षेत्र में---। स्वं० २११, पु० ६३६-- ६३६।

विकास कार्यों---

प्रविक---तिब्बत भारत सीमावर्ती भागीं में---- को बढ़ाना। खंब २११, पुरु १६६--११८।

प्र० वि० ----पर जिलेबार ध्यय। सं० २११, पु० १२५।

विकास खंड प्रधिकानियों---

प्र० वि०-----के स्पायीकरण पर विचार । त्रं० २११, पु० ६३६-६४०।

विकास खंड शिकारी---

प्रत वि०---न कुड़ में----की जीप से लड़कों की मृत्या संत २११, पूर्व ६२३--६२४।

### विकास संडों---

प्र० ० प्रथम समा विसीय श्रेणी के में प्रारम्भिक स्वारब्ध केन्द्र । के० २११, पू० ८४२ ।

प्र० वि०—वक्ती तथा इटका——— में सिचाई के कार्य। कं० २११, पुरु स्थेर ।

विकास मेलां---

विकास सेवा सन्ध---

प्र० वि०—स्वीपद्ग जिले में—— जोलने की योजना । श्रां० २११, पु० वजरू-वर्ग ।

# विचित्र नारायण शर्मा, श्री—

१६६०-६१ के ग्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-प्रमुदान संख्या ३७--लेखा शीर्षक ५०-- नागरिक निर्माण-कार्यों के लिये सहायक भ्रनुदान । खं० २११, प्० ६५१, ६५४, ६७०-६७३ ।

श्चनुदान संख्या ४२——लेखा शीर्षक ५७— प्रकीर्ण व्यय तथा श्रनुदान संख्या १५——लेखा शीर्षक २५——गांव सभायें श्रौर पंचायते । खं० २११, पू० ५५३—५६०, ५६१, ५६८, ५६६——६०४।

सहारनपुर म्युनिसिपल बोर्ड द्वारा लाउड स्पोकर सम्बन्धित बनाये गये बाई-लाज के सम्बन्ध में काय-स्थगन की सूचना। खं० २११, पृ० ६४७-६४८, ६४६।

#### विद्यार्थियों---

प्रव विव चोर्ड की परीक्षा में की ग्रसफलता में बृद्धि । खंब २११, पृष्ठ ३३१-३३३ ।

# विद्यावती वाजपेयी, श्रीमती---

१६६०-६१ के श्राय-व्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदान संख्या २१--लेखा शीर्षक ३४--चिकित्सा तथा श्रनुदान संख्या २२--लेखा शीर्षक ३६---जन स्वास्थ्य। स्रं० २११, पृ० ८७२-८७३।

भ्रनुदान संख्या २७—लेखा शीर्षक ४१— श्रीर ६१—क—विद्युत योजनाग्रों की स्थापना पर व्यय तथा भ्रनुदान संख्या प्र१—लेखा शीर्षक ६१—क—विद्युत योजनाग्रों पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय को छोड़ कर) । खं० २११, प्० २६१—६६२ ।

# विद्युत योजनाम्रों--

१९६०-६१ के ग्राय-ध्ययक में श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनुदान संख्या २७-लेखा शीर्षक ४१ ग्रीर द१-क- की स्थापना पर ध्यय तथा श्रनुदान संख्या ५१-लेखा

शीर्षक ८१-क-- पर पूंजी की लागत (स्थापना को छोड़ कर)। खं० २११, पृ० २७२-३१४।

#### विधान सभा सदस्य-

प्र० वि०—शाहजहांपुर जिले के उच्च पुलिस श्रिषकारियों को ——द्वारा दी गयी सूचना । खं० २११, पृ० ३४७ ।

#### विधायक निवास--

प्र० वि०—रायल होटल के नवीन—— में चीड़ के किवाड़ । खं० २११, पृ० ३२४-३२५।

प्र० वि०—लखनऊ में रायल होटल के ——में खराब सामान लगाने की शिकायत । खं० २११, पृ० ३४२-३४३ ।

### विधायक निवासों--

प्र० वि०— — का बिजली का बिल । खं० २११, पृ० ३४५ ।

### विषायक संघ---

उत्तराखन्ड मन्डल का निर्माण तथा समवर्ती ——के सुझाव । खं० २११, पृ० ८३४ ।

# विषायकों---

प्र० वि०— — को रोडवेज बसों के पास देने की योजना । खं० २११, पृ० ३२० ।

### विघेयक---

उत्तर प्रदेश भ्रविकतम जोत सीमा ग्रारोपण——१६५६। खं० २११, पु० ६७२।

उत्तर प्रदेश जिला परिषद् ——, १६५६ पर संयुक्त प्रवर समिति द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की श्रविष में वृद्धि का प्रस्ताव । खं० २११, पु॰ ८५२-८६२ ।

उत्तर प्रदेश विनियोग ——, १६६०। सं० २११, पृ० १०२३-१०३४।

विनय लक्ष्मी सुमन, श्रीमती— वेखिये "प्रश्नोत्तर" । [बिनय लक्ष्मी सुमन, श्रीमती--]

१६६०—६१ के झाय-व्ययक के झनुवानों के लिये मांगो पर मतवान—झनुवान संस्या ३७—लेखा शोर्षक ५०—नाग-रिक निर्माण-कार्यों के लिये सहायक झनुवान । खं० २११, पृ० ६६३-६६४ ।

#### विनियोग लेखे--

उत्तर प्रदेश सरकार के १८५७-४= तथा लेका परीका प्रतिवेदन, १६५६ पर लोक लेका समिति का प्रतिवेदन । लं० २११, पू० ६७१ ।

विनियोग विषेपक---

चत्तर प्रवेश ——, १६६० । खं० २११, पृ० १०२३-१०३४ ।

विशेषाधिकार की अवहेलना-

मुक्य मन्त्री के विरुद्ध प्रधनों का उत्तर विलम्ब से देने पर, — का प्रधन उठाने की सूचना । सं० २११, पु० ५४० ।

विकाम गृह---

प्र० वि० इाइवरों व कण्डक्टरों के लिये बस स्टेशनों पर न होना। कं० २११, प्० ११८-११६ ।

विश्वाम राघ ,श्री----

वेलिये "प्रक्रमोलर"।

विश्वविद्यालय पुनर्तघटन योजना---

प्र० वि०---। सां० २११, पृ० ३६० । विद्वेदवर नाम इन्टर कालेज--

विस्थापितों---

पूर्वी पाकिस्तान के की पुनर्वासन योजना । सं० २११, पृ० ६४८-६४६ ।

बिस्फोट---

प्र० वि०—इसाहाबाद में कवित—— सं० २११, पृ० ६४७ ।

चौरसेन, श्री---

बेक्सिये "प्रक्लोलर"।

उत्तर प्रवेश जिला परिषद् विशेषक १६५६ पर संयुक्त प्रवर समिति द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की ग्रविष में वृद्धि का प्रस्ताव । खं० २११, प्० ६५२-६५३, ६५६-६६०,

वोरेन्द्र शाह् राजा---देखिये ''प्रश्नासर।''

वेतन--

प्रविष्याग्याग्यत्र वेते त्रालं झायापकों का जेव -----। व्यव २११, पृष् ३५७।

प्रव वि०—महापालिकाओं के नगर प्रमुखों, उपनगर प्रमुखों का ——— भला तथा बागरा महपालिका कर मे बुद्धि। लार २११, पुरु १६-४०।

प्र० वि० — सशाधित बात्र मेन्छल की तैयारी तथा कृत्र राजकारी कर्मचारियों कं — में बृद्धि । खं० २११, पृक्ष ५४०-६४३ ।

वेतन बावेश---

प्र० विश-जन्नाव जिलं में स्वास्थ्य विभागास्त्रगंत मेटर्गवटी नेक्टर तथा प्रक्तूबर के का पासन । बं० २११, प्र० ३३० ।

वंद्यॉ----

प्र० मि०---देहरी गढ़काक जिले में ----की सहायसा । अं० २११, प्०३६३।

## [व्यक्तिगतः प्रचन]

घतरसिंह, भी----

बाखेगई निवासियों की सीठ बाई० बीठ इन्लेक्टर ------के विरुद्ध विकासता। सं० २११, पृ० ३२४।

मली जान, भी-

साहपुर के <del>गा</del>ना कारण । वर्ष० २११, पू० ६६६ ।

गीलम पुत्र, महात्मा---

 जटाशंकर पोखरे, श्री--

गोरखपुर नगरपालिका में ----की खराब हालत । खं० २११, पृ० ७२० ।

दरयावसिंह, डाकू--

मेघराजपुरा में ----को मारने वालों को इनाम। खं० २११,पृ० ३६१।

पुन्ना डाकू---

इन्दरगढ़ थाना क्षेत्र में -----की गिरफ्तारी। खं०२११, पृ०६६२। प्रभुलाल शर्मा, श्रो---

भागवतलाल, श्रो--

श्राजमगढ़ जिले के प्रवानाध्यापक ————व श्री सरजूसिंह के प्रार्थना-पत्र । खं० २११, पृ० ३२८-२२६ ।

रवीन्द्र कुमार श्री---

एटा जिले के---को मुन्सिफी में न लेना । खं० २११, पु० ८१३ ।

राजाराम, लाला--

श्रफजलगढ़ परगना निवासी———— को हत्या । खं० २११, पृ० ३६० ।

लखपति सिंह, श्री —

खेरीघाट थाने के स्टेशन ग्राफिसर, ——के विरुद्ध कार्यावाही। खं० २११, पृ० ३५०।

लाइले काछी, भी---

पवा निवासी---- की शिकायत । खं० २११, प्० ६३५-६३६ ।

सरजूसिंह, श्री---

म्राजमगढ़ जिले के प्रवानाघ्यापक श्री भागवतलाल व——के प्रार्थना-पत्र । खं० २११,पृ० ३२८-३२६ ।

सुभाषणन्त्र बोस, नेताजी---

---का जन्म दिवस मनाने की भ्रामील। सं० २११, पु०३२३-३२४। सूरजपार्लासह,श्री---

सहकारिता विभाग, जिला रायबरेली के सर्वश्री——तथा-रामलखन सिंह की गिरफ्तारी । खं० २११, पृ० ५४६ ।

सूरतिसह सलीता, डाक्--

लिंतपुर सब-डिवींजन में श्रादर्श हरिजन बस्तियां तथा———का मारा जाना । खं० २११, पृ० ६७०- ६७१ ।

हिफर्जुरहमान, श्री---

मऊ पालिकाध्यक्ष---का त्याग-पत्र । खं० २११, पृ० ११-१२ ।

व [क्रमागत]

व्यय---

प्र० वि०—विकास कार्यो पर जिलेवार ——— । खं० २११,पृ० १२५।

व्यवस्था---

तात्कालिक प्रश्नों को लिये जाने के सम्बन्ध में ---- । खं० २११, पु० ६७४ ।

प्रक्तों के सम्बन्ध में ----की मांग । खं० २११, पृ० ७३६ ।

सदस्यों के सदन से चले जाने पर उनके प्रश्नों के लिये जाने के सम्बन्ध में ---- । खं० २११, पृ० ८४७- ८४८ ।

व्रजबिहारी मेहरोत्रा, श्री---देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

१६६०-६१ के आय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर—मतदान अनुदान संख्या ७—लेखा शीर्षक १२—मोटर गाड़ियों के एक्टों के कारण व्यक्त अनुदान संख्या ३१—लेखा शीर्षक ४७—प्रकीण विभाग और ४४—उड्डयन अनुदान संख्या ४२—लेखा शोर्षक ७०—जन-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुधार पर पूंजी की लागत तथा ६२—राजस्व लेखे के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा। सं० २११, प्० ४१४।

#### [वजिबहारी मेहरोत्रा, श्री---]

भनवान संख्या ३४--लवा प्र---मार्बजनिक निर्माण-कार्य और ४०-क---राजस्य सेवित पावित नागरिक निर्माण-कार्यापर पुत्रो की लागन, श्रनुवान संग्या ३५--लेखा शोर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्य केन्द्रोय सङ्क निधि से विलीग सहायता भन्तान संग्या ३६---लेवा शोर्वक ५०---नागरिक निर्माण-कार्य भ्रोर ८१---राजस्वलेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पुंजी काले वातया भ्रतुवान संख्या ५०---लेवा बोर्वेक ८१--राजस्व लेवे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का प्जोलेका। सं० २११, प्० ७४-७७। मन्दान संस्था ४२--लेला शीर्षक ५७-

प्रमुदाम संस्था ४२--लेखा त्रविक ५७-प्रकोर्ण व्यय तथा प्रमुदान संस्था १५--लेखा ज्ञोर्वक २५--गांच सभायें घीरपंचायतें । खं० २११, प्० ५६८-५७० ।

হা

### विका उप-मन्त्री---

इण्टरनोडियट बोर्ड के इम्तहान के कारण मुसलमान परोक्षायियों को जुमा की नमाज से बंचित करने के सम्बन्ध में नियम ४२ के अन्तर्गत----- का बक्तब्य । सं० २११, पृ० ६७४ ।

## शिक्षा (प्रदर्शनी)---

प्र० वि० --- एवं सिलौना वाराणसी के लिये स्वोक्तत घनः सं० २११, प्०६४६।

### शिक्षा विभाग---

प्रव विव — देहरी गढ़वाल जिले में — के बिलय राज्य कर्मबारियों का मंहगाई भला। खं० २११, प्० ३६४। प्रव विव — मुराबाबाब जिले में — के एस० बीठ शाई०। खं० २११, प्रव ३५४।

## शिका संस्थायें--

प्र० वि०---डेहरी-गढ़बाल में मैलबामी, कीर्तिनगर, किकिलेडबर सम्बन्धित ------ । सं० २११,प्० ३३६ ।

### शिबप्रसाद, श्री---

१६६०-६१ के भाग त्यक में अनुवानों को लिये मांगी पर मतवान--अनुवान संल्या २८--लेखा शीर्षक ४४-बुभिक सहायता तथा अनुवान संक्या २--लेखा शीर्षक ७-भ--राजस्य (मालगुजारी) । खं० २११, पु० ७७४-७७४ ।

गन्ने के क्रम मत्य से संबन्धित स्मार्च, १६६० के श्रत्य सूचित तारांकित श्रदम ४-६-के विक्य पर विवाद। कं० २११, प्र० ७०८।

## शिबप्रसाद गुप्त, भिक्तिसालय--

प्र० वि०--भी ----वाराणसी में बहरापन दूर करने के कार्य । खं० २११, पृ० ३३४ ।

### शिवप्रसाव नागर, भी---बेजिये "प्रक्तोसर" ।

श्रास्पसुचित तारांकित प्रश्नों के उत्तर न मिलने तथा कार्य-सूनी में श्रांचक प्रश्न रक्तने के सम्बन्ध में शापत्ति । कं० २११, ए० ३६६ ।

१६६०-६१ को ब्राय-ब्ययक में ब्रनुवानों को लिये मांगों पर मतवान— ब्रनुवान संक्या ७— लेला ग्रीमंक १२— मोटर गाड़ियों के एक्टों को कारण ब्यम, ब्रनुवान संक्या ३१—लेला ग्रीमंक ४७— प्रकीण विभाग ब्रीर ४४— जेला व्यक्ति ७०— जन स्वास्थ्य सम्बन्धी सुवार पर पूंजी की नागत तथा ६२— राजस्व लेले के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेला। ब्रं० २११, यू० ३१७-४००।

धनुवान संक्या १६—लेका प्रविक २७—न्यायालय प्रवासन । सं० २११, प्० ६६४ ।

अनुवान संस्था २१ — लेका शीर्वक ३ = -विकित्सा तथा अनुवान संस्था २२ — लेका शीर्वक ३६ — जन स्वास्थ्य । सं० ..२११, पु० अद्य-॥द्दा

अनुवान संबंधा ३२---नेका दिवंश ४७--सूत्रना संबातन बार्यासय । बं० १११५० ६६६ । भनुदान संख्या ३४——लेखा शीर्षक ५०--सार्वजनिक निर्माण कार्य श्रौर ५०---क---राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण कार्यों पर पूंजी की लागत श्रनुदान संख्या ३५——लेखा द्योर्षेक ५०—–नागरिक निर्माण-कार्य केन्द्रीय सड़क निधि से वित्तीय सहायता, श्रनुदान संख्या ३६——लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण कार्य श्रौर ५१——राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण कार्यों की पूंजी का लेखा तया श्रनुदान संख्या ५०--लेखा शीर्षक **८१—-राजस्व लेखे के बाहर नागरिक** निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा । खं० २११, पु० ३६, ४०, ४१, ४२, ५५–५६, १६३।

ग्रनुवान संख्या ३७——लेखा शीर्षक ५०—— नागरिक निर्माण कार्यों के लिये सहायक ग्रनुवान । खं० २११, पृ० ६४५ ।

विभिन्न मनुवानों के लिये समय निर्घा-रण। खं० २११, पू० ६५१।

प्रदेश में ३ वर्ष के डिग्री कोर्स के सम्बन्ध में नियम ४२ के अन्तर्गत गृह मन्त्री का बक्तव्य । खं० २११, पू० २४६ ।

प्रक्तोत्तर के सम्बन्ध में भ्रापत्तियां । स्तं० २११, पृ० १४० ।

मुलियाना शगर मिल मेरठ, को मिलयाना गांव की भूमि का बलपूर्वक पुलिस द्वारा कब्जा दिलाने के सम्बन्ध में नियम ५२ के श्रन्तर्गत गृह उप मन्त्री का वक्तव्य । खं० २११, पृ० ७४२

मिश्रिल यें श्री वधीचनाथ के मेले में श्रनिषकृत सिनेमा शो के कारण सरकारी श्राय में कमी के सम्बन्ध में नियम ५२ के श्रन्तर्गत मुख्य मन्त्री का वक्तव्य। खं० २११, प्० ८४६।

सबस्यों के सबन से चले जाने पर उनके प्रश्नों के लिये जाने के सम्बन्ध में ब्यवस्था । खं० २११, पृ० ८४७-८४८ । शिवराज बहादुर, श्री—— देखिये, ''प्रश्नोत्तर'' ।

> १६६०-६१ के आय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान—अनुदान संख्या २७—-लेखा शीर्षक ४१ और ८१-क—विद्युत योजना की स्थापना पर व्यय तथा अनुदान संख्या ५१-लेखा शीर्षक ८१-क—विद्युत योज-नाओं पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय को छोड़कर) । खं० २११, २८६-२६१ ।

शिवराजींसह यादव, श्री--देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

१६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रनुदानों के लियें मागों पर मतदान--श्रनुदान संख्या ३८--लेखा शीर्षक ५४--दुर्भिक्ष सहायता तथा श्रनुदान संख्या २--लेखा शीर्षक ७--म्-राजस्य (मालगुजारी) । खं० २११, पृ० ७६१-७६३।

शिवराम, श्री— देखिये "प्रश्नोत्तर"।

> १६६०-६१ के म्राय-व्ययक के म्रनुवानों के लिये मांगों पर मतदान--श्रनुदान संख्या ३७--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण-कार्यों के लिये सहायक ग्रनुदान । खं० २११, प० ६६६-६६७ ।

म्रनुदान संस्था ४२——लेखा शीर्षक ५७—— प्रकीर्ण व्यय तथा म्रनुदान संस्था १५ लेखा——शीर्षक २५——गांव सभायें ग्रौर पंचायतें । खं० २११, पृ० ५७७-५७६ ।

शिवशंकर सिंह, श्री---

. १६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रनुदान के लिये मांगों पर मतदान----श्रनुदान संख्या १६---लेखा शीर्षक २७--न्याय प्रशासन । खं० २११, पृ० ६८६ । दिवदारणलाल भीवास्तव, श्री---

१६६०-६१ के भाय-स्थयक के भनुवानों के लिये मांगों पर मतवान--- प्रनुवान संख्या ३४-लेखा शीर्षक ५०-नागरिक निर्माण कार्य भौर ५०-क-राजस्व से बिल पोषित नागरिक निर्माण-कार्यौ पर पूंजी की लागत धनुवान ---संख्या ३४--लेला जीर्लक मागरिक निर्माण कार्य सङ्क निषि से विलीय सहायता ---धनुवान संस्था ३६— लेला शीर्षक **४०** नागरिक निर्माण-कार्य ग्रौर ८१---राजस्व लेखें से बाहर कार्यों की पूंजी का लेखा तथा अनुवान संख्या ४०-लेखा शीर्षक = १-राजस्य लेखे के बाहर नागरिक निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा । व्यं २११, पुरु १४२--१४३ ।

धनुवान संस्था ४२-लेखा शीर्षक ४७--प्रकीर्ण व्यय तथा धनुवान संस्था १४--लेखा शीर्षक २४--गांव सभायें घीर पंचायतें । क्षं० २११, पू० ४७४-४७७ ।

घीतलाप्रसाब, भी---

बेकिये "प्रक्लोसर"।

घोषन---

१७ फरवरी १६६० में तारांकित प्रदन ३-४ से सम्बद्ध अनुपूरक प्रदन के उत्तर का---- । क्षेठ २११, पूठ २२ ।

व्यामलाल यावव, भी---

१६६०-६१ के प्राय-व्ययक में श्रनुवानों के लिये मांगों पर मतवान—शनुवान संख्या ७, लेखा शीर्षक १२—मोटर गाड़ियों के एक्टों के कारण व्यय श्रनुवान संख्या ३१—लेखा शीर्षक ४७—प्रकीण विभाग और ४४—उ १७ न स्वान्य संख्या ५२—लेखा शीर्षक ७०—जन स्वास्थ्य सम्बन्धी सुधार पर पृंजी की लागत तथा ६२—राजस्य लेखे से बाहर राज्य के बुसरे निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा। सं० २११ पृ० वेद४-वेद७।

भन्दान सम्या ३७-चेत्रा शोर्षक ४०-नागरिक निर्माण कार्या हे लिये महायक भन्दान । न्व० ४११, पृ० ६५३-६५६ ।

श्रद्धादेत्री शास्त्री, कुमारो----वेलिये ''प्रश्तासर' ।

श्रम निरोक्षशॉ---

प्रव विव ---- के निकत न्यान । स्व ० २११, पूर्व १३४ ।

अभिक बस्ती---

प्रव विव---ललनक म के क्वाटरीं का किराया माव ४११, पुव १२२।

भो नृत्य इंटर कालेज,----

प्रव वि०- सहकारी समिति -----, बरहज के हिसाब में गड़बड़ी। कां २११, पुरु ५३३।

श्रोतुष्ण गोयल, श्री --

१६६०-६१ ले बाय-व्ययस में घन्यानें में लिये मांगी पर मनवान धन्यान संस्था २७--लेखा शोवंक ४१ मीर ८१-क-विद्युत याजनाधीं का स्थापना पर व्यय तथा धनुवान संक्या ५१--लेला शोवंक ८१-क--विद्युत योजनाधीं पर पूंजी की लागत (स्थापना व्यय की खाँड़कर)। सं० २११, पू० २७४-२८०।

१६६०-६१ में माय-स्ययंत्र में मन्तानों में लिये मार्गों पर मतवान-मन्दान संस्था ४७-लेका ग्रीरंक ६=-सिवाई, नीवालन, बांब मार पानो की निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, मनुवान संस्था १०-लेका ग्रीर्वक १७, १= मीर १६-क--राजस्य से किये गये जाने वाले सिवाई में निर्माण कार्य स्था मनुवान संस्था ११-लेका ग्रीर्वक १७ १८, १८ मीर ६= सिवाई स्थापना पर म्थ्या । मं० २११, पू० १८७ । श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, श्री---

देखिये "प्रश्नोत्तर"।

उत्तर प्रदेश जिला परिषद् विघेयक, १९५९ पर संयुक्त प्रवर समिति द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की ग्रविष में वृद्धि का प्रस्ताव । खं॰ २११, पृ॰ ८५३–८५४, ८५५–

श्री टोकाराम पुजारी के निलम्बन को समाप्त करने का सुझाव । खं० २११, पृ० ६४४, ६४५, ६४६ । तारांकित प्रश्न ३६-३७ से सम्बन्धित व्यक्तिगत श्रनुपूरक प्रश्नों को कार्य-बाही से निकाल देने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० २६ ।

मिलयाना शुगर मिल, मेरठ को मिलयाना गांव की भूमि का बलपूर्वक पुलिस द्वारा कब्जा दिलाने के संबंध में नियम ४२ के अन्तर्गत गृह उप-मंत्री का वक्तव्य । खं० २११, प्० ७४१।

श्रीनगर ताल---

प्र० वि०--फरेंदा तहसील के ---- का पानी निकालने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० ३३४ ।

भीनाय, श्री---

देखिये "प्रश्नोत्तर"।

श्रीपाल सिंह, कुँवर---देखिये "प्रश्नोत्तर" ।

स

संचालक, उद्योग विभाग---

प्र० वि०--- के कार्यालय सं कुछ कर्मचारियों का हटाया जाना । खं० २११, प्० ८३१-८३२ ।

संयुक्त प्रवर समिति----

उत्तर प्रवेश जिला परिषद् विषेयक, १६४६ पर ——— द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की श्रविध में वृद्धि का प्रस्ताव। खं० २११, पू० ८४२—८६२।

संशोधन----

जनींदारी विनाश ग्रीर भूमि-व्यवस्था नियमावली, १६५२ के ग्रवीन प्रख्यापित ---- । खं० २११, प्०३६७ ।

यू० पी० मोटर वेहिकित्स रूत्स, १६४० में प्रख्यापित ———। खं० २११, पू० ६४३।

सईद ग्रहमद ग्रन्सारी, श्री--

१६६०-६१ के भ्राय-ध्ययक में भ्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-भ्रनुदान संख्या २१---लेखा शीर्षक ३८---चिकित्सा तथा भ्रनुदान संख्या २२--लेखा शीर्षक ३६---जन स्वास्थ्य । खं० २११, पृ० ८८०--८९।

म्रनुदान संख्या ३७——लेखा शिर्षक ५०— नागरिक निर्माण-कार्यो के लिये सहा-यक म्रनुदान । खं० २११, पृ० ६६७—६६८ ।

सचिवालय---

प्र० वि० — ----में तीन वर्ष से प्रधिक कार्य करने वाले सेक्रेटरीज तथा डिप्टी सेक्रेटरीज। खं०२११,पृ० १३२।

सजीवनलाल, श्री---

देखिये "प्रश्नोत्तर"।

सट्टे----

प्र० वि०—बढ़ौत तथा हिलवाड़ी में ———के ब्रारोप में गिरफ्तारी । खं० २११, पृ० ८१४–८१५ ।

सट्टेबाजों----

प्र० वि०—टीकरी में --- की गिरफ्-तारियां। खं० २११, पू० १३१।

सत्यवतीदेवी रावल, श्रीमती----

देखिये "प्रश्नोत्तर"।

सदस्यों----

——के सदन से चले जाने पर उनके प्रक्तों के लिये जाने के सम्बन्घ में व्यवस्था । खं० २११, पृ० ८४७– ८४८ ।

विकास तथा नियोजन स्थाई समिति, लोक लेखा समिति तथा प्राक्कलन समिति के लिये निर्वाचित ——— के नामों की घोषणा । खं॰ २११, पृ० ६७४—६७६ । सब-रोजनल ट्रान्स्पोरं भ्राफिस--

प्रव विष्—मांगो में —— लोलने का निर्णय । लंब २११, पृष् दर्भ ।

### सभा सचियों---

प्र० वि०-- -- के बुलन्दशहर के बीरे पर अपय । खं० २११, पृ० =२०।

#### समाचार-पत्र---

प्र० वि०—जेलों के लिये निषेष——। स्वं० २११, प्०१४—१५।

#### समाज कल्याण--

१६६०-६१ के आय-व्ययक में अनुवानों को लिये मांगों पर मतवान-अनुवान संक्या ४४-लेखा शीर्षक ५७---। सं० २११, पु० ६६४।

#### समाज कत्याण कार्यो---

प्र० वि०—नोरलपुर जिले को——— के लिये भनुवास । सं० २११, पु० २३ ।

प्र० वि० --- बस्तो तथा बेबरिया जिलीं में ----पर गया। सं० २११, पू० ७३४।

### समितियाँ---

# सम्पूर्णानम्ब, डाबटर--

भनुदान से संबंधित साहित्य के समय से वितरण की मांग । खं० २११, पु०७४४ ।

भाषामी कार्य-कम के संबंध में जानकारी की मांग । खं० २११, पू० ४४२।

उत्तर प्रदेश जिला परिवर्ध विवेधक, १६४६ पर संयुक्त प्रवर समिति वृजारा प्रतिवेदम प्रस्तुत करने की धर्माध में वृद्धि का प्रस्ताव । खं० २११, प्० ५४४, ५६१।

प्रसिनिहित विवायन समिति का चतुर्वे प्रतिवेदम । सं• २११, प्० ८४७। मिलयाना श्वर मिल, मेरठ को मिलयाना गांव की भूमि का बल पूर्वक पुलिस द्वारा कन्त्रा विलाने के सम्बन्ध में नियम ४२ के घनगंत मृनना। खंठ २११, पुरु ४४२।

मिश्रिल में श्री वशीननाथ के मेले में धनिश्रित सितेमा जा के कारण सरकारी धाम में कमी के सम्बन्ध में नियम ४२ के धन्नगंत मुल्य मंत्री का बक्तत्व । लं ०२११, प्राप्त ६४६ ।

### सरकारी बर्सी---

प्रव विव न्यां निवीत मार्ग । स्वं २११, प्रद ८३४ ।

सरस्वतो बेबी शुक्ल, भामती----बेबिये "प्रकोलर" ।

#### सरिया--

भाजमगढ़ जिले में ---- का वितरण । सं० २११, पूज ४४६ ।

सबिस को प्रापरेटिक मोसाइटियां---

प्र0 वि० जालीन जिले में --- बनने की जानकारी । सं० २११, वृ० ४३१ ।

### सर्वेभगीनों---

प्र० वि०--- --सी नियुक्ति। सं० २११, पु० १६०।

### सस्ते बनाज---

प्रव विव साजमाद जिले में सा मार्थना । की बुकार्ने बढ़ाने की प्रार्थना । का २११, युव ५३० ।

# सहकारिता विमाग (रायबरेली)---

प्र० वि०———, जिला —— के सर्वेथी सुरजवाल तिह तथा राजस्वान तिह की गिरपतारी । खें० २११, २११, वृ० ५४॥। सहकारी फेडरेशन (गोरखपुर)-

प्र० वि०—— ——— जिला ——— का निलम्बन । खं०२११,पृ० ५२८— ५२६ ।

# सहकारी संघ (घाटमपुर)--

प्र० वि०—— ———, घाटमपुर का विघटन । खं० २११, प्० ४२६।

# सहकारी समिति--

प्र० वि०-----श्रीकृष्ण इक्टर कालेज, बरहज के हिसाब में गड़बड़ी। खं० २११, पृ० ५३३।

## सहकारी समितियां---

प्र० वि०--बाराबंकी जिले में ---- । खं० २११, पृ० ५४८ ।

### सहकारी समितियों--

बस्ती जिले की ---- में गबन । ंखं० २११, पृ० ५४३-५४४ ।

## सहायता तथा पुनर्वास विभाग----

------में श्री प्रभुलाल क्षमी की पुन-नियुक्ति । खं०२११४ पृ०१११ – ११२ ।

## सहारनपुर--

----म्युनिसिपल बोर्ड द्वारा लाउड स्पीकर संबंधित बनाये गये बाई-लाज के संबंध में कार्य-स्थगन प्रस्ताव की सूचना । खं०२११,पृ०६४७--६४८, ६४६

#### साइंस कका---

प्र० वि०—पट्टी ग्रौर रामगंज में इण्टर व ——— खोलने की प्रार्थना। खं० २११, प्०३४४-।

## साइकालोजिस्ट---

प्र॰ वि०--प्रयाग में सीनियर ----का रिक्त स्थात । खं०--२११, पृ० ३४६ ।

#### सापट कोल--

प्र० वि०—गोंडा जिल में ---- की बुकानें। खं० २११, प० ४४५।

### सार्वजनिक निर्माण कार्य--

१६६०–६१ के ग्राय-व्ययक में ग्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-ऋनुदान संख्या ३४--लेखा शीर्षक ५०------ग्रौर ५०--क--राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण-कार्यी पर पूंजी की लागत, ऋनुदान संख्या ३५-लेखा शोषंक ५०--नागरिक निर्माण कार्य-केन्द्रीय सङ्क निधि से वित्तीय सहायता, ग्रनुदान संख्या ३६--लेखा शीर्षक ५०--नागरिक निर्माण कार्य ग्रौर द१--राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पूंजी का लेखा तथा भ्रनुदान संख्या ५०--लेखा शीर्षक ८१--राजस्व लेखे के बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों का पूंजी लेखा । खं० २११, पु० ३६-६८।

### साहित्य---

श्रनुदान से संबंधित ---- के समय से वितरण की मांग । खं० २११, पु० ७४४ ।

### सिचाई---

प्र० वि०--बढ़नी तथा इटावा विकासः खंडों में ---- के कार्य । खं० २११, पू० द४३ L. ..

## सिंचाई विभाग---

----, मिर्जापुर के ४०० मजदूरों की छटनी के कारण श्री रमापति दुबे द्वारा श्रनशन के सम्बन्ध में नियम १२ के श्रन्तगंत सूचना । खं० २११, प० ६७३-६७४।

#### सिनमा---

प्र० वि० — ललोमपुर में ग्रस्वाई — के लिये स्वीकृति न मिलना । खं० २११, प्० = २२ - = २३।

#### सिनेमा घो---

मिश्रित में श्री विश्वीतनाथ के मेंले में अनिश्वित — के कारण सरकारी आय में कमी के सम्बन्ध में नियम ५२ के अन्तर्गत मुख्य मंत्री का वक्तव्य । खं० २११, पू० ६४५-६४६ ।

मिश्रिल में श्री वधीचनाथ के मेले में धनिकहत — के कारण सरकारी ध्राय में कमी के संबंध में नियम ४२ के धन्तगैत सूचना। खं० २११, प्० ६४८।

#### सिविल सर्जन---

प्र० विय—व्योरी जिले के — तथा इंचार्ज, लेपरासी सेंटर के विरुद्ध जिकायत । खं०२११,पृ० ३३६— ३४० ।

## सी० बाई० डी० इन्स्पेक्टर-

प्र० वि०-बाछेमेई निवासियों की -----, श्री भत्तरसिंह के विषद्ध जिकायत। खं० २११, प्०३२४।

## सी० एस० गार० डो० स्कीम----

प्र० वि०——से उन्नाव जिले के राजस्व में वृद्धि । खं० २११, प्०३३७-३३८ ।

# सीतापुर-हरदोई सड़क---

प्र० वि० पर बस सर्विस की धावक्यकता । खं० २११, पृ० १३४ ।

#### सीताराग, काक्टर----

श्रनुवान संस्था ७—लेला शोर्षक १२— मोटर गाड़ियों के एक्टों के कारण जाय, श्रनुवान संस्था ३१—लेला शीर्षक ४७—प्रकीणं विभाग श्रीर ४४—उड्डयन, श्रनुवान संस्था ५२ संस्थाशोर्षक ७०—जन स्वास्थ्य संबंधी सुबार पर पूंजों की लागस सथा ६२— राजस्व लेख के बाहर राज्य के दूसरे निर्माण कार्यों का पूंजी लेला। खं० २११, पृ० २५६—२७२, ४१६— ४२१।

### सीताराम श्वल, श्री---

१६६०-६१ के भ्राय-ध्ययक में भनुदानों के लिये मांगों पर मलवान-भनुदान संस्था ३२-लेला शीवंक ४७-सूचना संचालन कार्यलय । खं० २११, पु० ६६१-६६४ ।

#### सीमा---

#### सीमा विवाद--

प्रव विक—संबक्त की मुलाकेही और देवरिया का — । संव २११, पुरु ६४०-६५१।

### सीमेंट का कारकाला-

प्र० विक—नया — न जुलना । व्यक्त २११, युक्त १३६ ।

#### सीवर लाइन--

### सुक्कानलाल, भी--

वेलिये "प्रश्नोत्तर"।

# सुलगी (नाले)-

प्र० विञ्च्यहाँ एवं ---- नालीं पर पुल बनाने की सिफारिका । संश २११, पृ० १२ म ।

# सुकताल, बी----

वेशिये "प्रदतीलर" ।

१९६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-स्रनुदान संख्या ४७-लेखा शीर्षक ६८-सिचाई नौचालन, बांच स्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का निर्माण, ध्रनुदान संख्या १०-लेखा शीर्षक १७, १८, स्रौर १६-ख-राजस्व से किय जाने वाले सिचाई के निर्माण कार्य स्था स्रनुदान संख्या ११-लेखा शीर्षक १७, १८, १६ स्रौर ६८-सिचाई स्थापना पर व्यय । खं० २११, पू० १८०-१८१।

### सुजानगंज ग्रस्पताल---

प्र० वि०—-जौनपुर जिले में बेलदार व सोनहिता में ग्रायुर्वेदिक ग्रौषघालय खोलने की प्रार्थना तथा —— का भवन निर्माण । खं० २११, पृ० ३५३ ।

## सुजानगंज बस स्टेशन---

# सुवामा प्रसाद गोस्वामी, श्री--

देखिये ''प्रश्नोत्तर''।

१९६०-६१ के स्राय-व्ययक में स्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनुदान संख्या ५-लेखा शीर्षक १०-वन । खं० २११,पृ० ४८२-४८४ ।

# सुपरिन्टेन्डेन्ट---

प्र० वि०—नगर महापालिकाओं तथा नगर पालिकाओं के डेपुटेशन पर लिये गये——। खं० २११, पृ० २४–२६ '

# सुरयबहादुर ज्ञाह, श्री--

वेखिये "प्रश्नोत्तर"।

गन्ने के ऋष मुत्य से संबंधित मार्च, १९६० के श्रत्पसूचित तारांकित प्रश्न४—६ के विषय पर विवाद । र्लं० २११, पृ० ७०८।

# सुलतान ग्रांलम खां, श्री---

प्रश्नोत्तर के संबंध में ग्रापत्तियां। खं०२११,पृ० १३६।

## सुवा पीड़ित क्षेत्रों---

प्र० वि०——में छात्रों की फीस माफ करने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० ६५२—६५३।

### सूचना ग्रधिकारियों---

प्र० वि०--जिला---का चुनाव। खं० २११, पृ० ३४६।

## सूचना अधिकारी--

प्र० वि०--पिंबलक सर्विस कमीशन द्वारा ग्रयोग्य घोषित जिला---। खं० २११, पृ० ६५८-६५६।

### सूचना विभाग---

प्र० वि————की "प्रोग्रेस" पत्रिका के प्रकाशन पर व्यय। खं० २११, ६६६।

प्र० वि———के कर्मचारी द्वारा चाइनीज क्येंसिल के पहाड़ी सीमा प्रबन्ध विषयक सूचना देने की जांच। खं० २११, पु० द१३–द१४।

# सूचना संचालक कार्यालय---

१६६०–६१ के श्राय-व्ययक श्रनुदानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनुदान संख्या ३२–लेखा शीर्षक ४७—— । खं० २११, पृ० ६७४——७०२।

# सूत का स्टाक---

प्र० वि०—उद्योग विभाग से सम्बन्धित ——बेचने के लिये ग्रादेश । खं० २११, पृ० द१६।

सूरतचन्द रमोला, श्री---देखाये "प्रश्नोत्तर"।

# सेकेटरीज--

प्र० वि० सिववालय में तीन वर्ष से ग्रिधिक कार्य करने वाले तथा डिप्टी । खं० २११, पृ० १३२।

### सेनेटरी इन्सपेक्टरं--

प्रव विव—पसगवां में ग्रस्पताल की दवाइयां, दाइयां तथा—— । खंव २११, पृष्ठ ३५१ ।

### सेमिनारों पर व्यय-

प्र० वि०-----। सं० २११, पू० ४४३।

#### सेवा खण्ड---

प्र० वि० — ध्रयाना में — कोलने की प्रार्थना। खं० २११, पु० ८३१। प्र० वि० पचपेष्ठवा में कोलने की योजना। खं० २११, पु० ६३३।

### सेवा सहकारी समितियों---

प्र० वि०— को कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण पर व्यय। कं० २११, पृ० ४४६-५४७।

### संनिक---

प्र० वि० स्वतंत्रता संग्राम के तथा सरकार की ग्रोर से पुस्तकों का प्रकाशन । कं० २११, पृ० ३४६-३५०।

## संयद जरगाम हेवर, भी---

१९६०-६१ के घाय-व्ययक में धनुवानों के लिये मांगों पर मतदान- प्रमुवान संस्था १६- लेखा शीर्षक २७-त्याय प्रशासन। सं० २११, पृ० ६८६-६६१, ६६२।

# सोलजर्स बोर्ड--

प्र० वि० - जै कर्मकारियों के स्थायीकरण से सम्बन्धित धावेश। कं २११, पु० ६६०।

# सोधालिस्ट पार्टी---

प्रव विय -----की मांगें। संव २११, पुरु दश्य-दश्य ।

## सोशलिस्टॉ---

प्र० वि०—गाहगंत्र की गन्ना हक्ताल में — की गिरक्तारी। कं० २११, प्० ६६२। सोहनसास मुसिया, भी--वेलिये "प्रक्तोत्तर"।

### स्टेशन प्राफिसर--

प्र० वि० चिरीघाट याने के , भी सम्पर्तामह के विरुद्ध कार्यवाही। सं० २११, पूरु ३४०।

# स्यानिक प्रश्न

### धकबरपुर--

# प्रदेहा---

-----परगने में जनजन्ती का कार्य रोकना। स्नंत २११, पूर्व ३५४।

# भनेई (बाजार)-

ताकी व जाजारों में कत्या, पाठशाला न होना। खं० २११, पु० ६४६--६४७।

# मनेहरा---

मरापुर बस स्टाप। संव २११, पुरु = ३२-=३३।

#### मफबलगढ़----

न्यरगना निवासी लाला राजाराम की हत्या। कं० २११, पू० ३६०।

### मयाना---

----में सेवाकंड कोलने की प्राचंना। कं० २११, पु० ८३१।

# शलीगढ़---

### श्रल्मोडा---

कानपुर में खनिज परीक्षण केन्द्र तथा
----में ग्रौद्योगिक ग्रास्थान खोलने की योजना। खं० २११, पृ० ८४३।

#### श्रागरे---

——में कोयले की कमी। खं० २११, पु० ५३०।

#### श्राज्ञमगढ—

- गोरखपुर, देवरिया तथा———जिलों में नियोजन विभाग के पुराने कर्मचारी। खं० २११, प्० १२१–१२२।
- जिला कोन्रापरेटिव बैंक, ——से रुपया निकालने में ग्रानियमितता। खं० २११, पृ० ४२४-४२६।
- ----जिले के प्रधानाध्यापक श्री भागवतलाल व श्री सरजूसिंह के प्रार्थना-पत्र। खं०२११, पृ०३२८--३२६।
- ---- जिले में टेस्ट वर्क्स चार्ज ग्राफिसर्स कम होने की शिकायत। खं० २११, पृ० ३२१-३२२।
- ——जिले में पंचायत मंत्रियों का निलम्बन। खं० २११, पृ० ७३८– ७३६।

- ----जिले में सरिया का वितरण। सं० २११, पृ० ५४६।
- ——जिले में सिचाई के कुओं का निर्माण। खं० २११, पू० ८१७– ८१८।
- डी० सी० एफ०, ——की जांच रिपोर्ट। खं० २११, पृ० ५४२।
- ----तथा बलिया की गन्ना सोसाइटियों का फालतू गन्ना। खं० २११, पृ० ११६-१२१।

- बिरनो थाने पर रोडवेज बुकिंग स्नाफिस न होना, ——क्षेत्र में बस कन्डक्टरी के प्रार्थी। खं० २११, पृ० १३४।
- ----महिला मंगल योजनान्तर्गत कार्य तथा कर्मचारी। खं० २११, १२-१३।
- रोडवेज क्षेत्र——में कर्मचारियों का बकाया वेतन व भत्ता। खं० २११, पु० ८३८।
- ----रोडवेज बस स्टेशन पर लाउड-स्पीकर की श्रावश्यकता। खं० २११, पृ० द१द–द१६।
- ----सदर ग्रस्पताल के नये भवन के लिए भूमि। खं० २११, पृ० ६४४-६४५।

#### श्रादिलनगर---

#### श्रानन्द नगर---

राजकीय बुनाई शिक्षण केन्द्र,——— । खं० २११, पृ० द२६–द२७ । श्रानन्द बाजार गोदौलिया——

——का नक्शा । खं० २११, पृ०७३६ । इटवा—--

बढ़नी तथा——विकास खंडों में सिचाई के कार्य। खं० २११, पृ० ८४३। इटवा—

- ----जिले की प्रदर्शनी पर व्यय। खं० २११, पू० ६४१।
- ——जिले में चकों पर श्रिधिकार खं० २११, पृ० ३२६।
- ——जिले में टेलीफोन तारों का काटा जाना। खं० २११, पृ० ३६२।
- ——जिले में भट्ठों को कोयला। स्तं० २११, पृ० ५२७।
- -----जिले में भारतीय दण्ड विघान की घारा ११० के कथित मुकदमें। खं० २११, पृ० ३३०।
- प्लास्टिक ट्रेनिंग सेन्टर—में परि-गणित जातीय छात्रों को छात्रवृत्ति मिलने में विलम्ब । खं० २११, प० ११८–१२६ ।

### [रथानिक प्रश्न-इटावा---]

——मं कम्यनिस्टो की सभा में पथराव। र्लं० २११, पृ० ६५३— ६५४।

#### इन्दरगढ---

#### इन्दारा-

—मं चीनी मिल की ग्रावश्यकता। त्वं० २११, पू० १२७—१२८।

#### इलाहाबाद--

झादं कुम्भी मेला, में वी गई टीन। स्नं० २११, पू० १०-११।

गवर्गमेंट प्रेस, सम्बन्ध क्रम्यापी कर्मकारी। सं० २११, पू० द्रन्थ।

-----में कथित विस्फोट। खं० २११, पू० ६४७।

मोतीलाल नेहरू पार्क, — में मालबीय जी की मूर्ति स्थापित करने की मांग। खं० २११, पु० १३४।

### उत्तरकाशी---

---जिले में भौद्योगिक भारपान जोलने का धावेश । कं० २११, पू० ८४० ।

#### उद्याव---

जिला भ्रस्पताल, को बढ़ाने की प्रार्थना। सं० २११, पू० ३५६।

—— जिले में स्वास्त्य विभागान्तर्गत मेटरनिटी सेण्टर तथा धनत्वर के बेतन-धादेश का पालन। कं० २११, पु० ३६०।

हाउन बंक, सम्बन्धित कथित प्रार्थना-पत्र। सं० २११, पू० ५४८। सी० एक० घार० बी० स्कीम से जिले के राजस्य में वृद्धि। कं० २११, पू० ३३७-३३८।

#### एटा-

— जिले के श्री रयोग्निक्सार को म्लिको सन लेना। स० २११, प० ५१३।

#### कटनी-

चीनी मिल मजबूर समा---- से सम-भौता। ण० २११, पु० ८२७।

#### कद्रसम्बा---

----तथा मझोली ग्राम की इकेतिया। स्व० २११, पुरु ७१५-७१६।

#### कस्रोज-

के एक बालिका विद्यालय से संगीत बाग्यापक का हटाना, स्रव २११, पुरु ३२७।

### कन्धरापुर-

### कलेक्टरगज-

कामपुर में शोबवेज बस स्टेशन की स्थिति। संव २११, पुरु ८३७।

#### कामपुर--

उसंला हास्पीटल, — मं नेत्र किकासा सम्बन्धी यंत्री की कमी। कं ० २११, पु० ६४१-६४३।

नी कुछ मिलों में सभिनवीकरण। स्रं० २११, पू० १२६-१२७।

के एक मुस्लिम स्थापारी की सानातलाती। सं० २११, पूर्व ३३६।

— में खनिज परीक्षण केन्द्र तथा म्राल्मोड़ा में म्रौद्योगिक म्रास्थान खोलने की योजना। खं० २११,पृ० ८४३।

#### किलकिलक्वर-

टेहरी-गढ़वाल में नैलचामी, कीर्तिनगर, ——सम्बन्धित शिक्षा संस्थायें। खं०२११,पृ०३३६।

#### कीर्तिनगर---

टेहरी-गढ़वाल जिले में नैलचामी, ——, किलकिलेश्वर सम्बन्धित शिक्षा संस्थायें। खं० २११, पृ० ३३६।

## कुठौद---

कुदौरा,—— एवं रामपुरा विकास खंडों का व्यय। खं० २११, प० १३०।

## कुदौरा---

——, कुठौद एवं रामपुरा विकास खंडों का व्यय। खं० २११, पृ० १३०।

# कुरावली---

## कोटद्वार---

पीड़ित जनता संघ — की मांगें। खं०२११, प्०६३३।

### खोरी--

- ——जिले के पंचायत मंत्री । खं० २११, पू० ७२३–७२४ ।
- ------ जिले में घान के बीज की वसूली मुल्तवी करने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० ५३८।
- ----- जिले में भूवान समिति हारा भूमिहीनों को भूमि। खं० २११, पृ० ६६४।

——जिले में ला एण्ड ग्रार्डर सम्बन्धी मीटिंगें। खं० २११, प० ३४४।

नियोजन कार्यालय, — में क्लर्कों का इन्टरच्यू। खं० २११, पृ० ८४०।

### खेरीघाट---

——थाने के स्टेशन म्रालिसर, श्री लखपर्तांसह के विरुद्ध कार्यवाही। खं० २११, प० ३५०।

## गंगापुर---

बस्ती जिले में महुग्रापार ग्रौर——ग्रामों की सीमा का मामला तथा निवासियों का पुनर्वासन। खं० २११, पृ० ३४८-३४९।

### गोंडा---

- -----जिले में ६० एकड़ के ऊपर कृषि फार्म। खं० २११, पु० ५४६।
- ——जिले में साफ्ट कोल की दूकानें। खं० २११, पृ० ४४५।

## गोरखपुर---

- ——के पशु-पालन विभाग के उप-संचालक। खं० २११, पृ० ५४५।
- ——जिला सहकारी फेडरेशन का निलम्बन। खं० २११, पृ० ५२८– ५२६।
- ——जिले की टाउन एरियाओं में जमींदारी समाप्त करने का विचार। खं० २११, पु० ६५७–६५८।
- ——जिले के थानों में टेलीफोन लगाने की योजना। खं० २११, पृ० ३४५।
- ----- जिले को समाज कल्याण कार्यों के लिये ग्रनुदान । खं० २११, पृ० २३।
- ---जिले में घान की गाड़ियों का पकड़ा जाना। खं० २११, पू० ५२१।
- ----जिले में फलदार श्राम के वृक्षों का काटा जाना। खं० २११, पृ० ६५६।
- ———जिले में विचित्र प्रकाश तथा भयानक घड़ाका। खं० २११, पू० ३३८।

## स्वितिक राज गाराप्ट ]

----- जिले में सरते प्रनाज की दुकाने। स्वरूप २११,ए० १२०।

वैर्वारमा तथा---- जिलों में श्रोला बृष्टि। सं० २११, ए० ६४३-६४४।

-----, देवरिया तथा बरती जिलों में जुलने वाले उद्योग केन्द्र। ल० २११, पु० ८४१।

#### गोसा---

----तथा हरगांव चीनी मिलों के गन्वे पानी के प्रबन्ध के लिये एफलुयेंट बोर्ड की स्थापना। लं० २११, पु० १३३।

# चवकी मुसाडोही---

------ श्रीर देवरिया का सीमा विवाद। कं० २११, पू० ६४०--६४१।

# क्षित्ररामञ्

सवर तथा---तहसीलों में बक्रबन्धीं। सं० २११, पूर्व ६६०-६६१।

# खिबरामऊ स्लाक---

प्रव विव स्वारते न वन सकता। संव २११, पृष्ट स्वरू।

### | खोनी चोको---

भागपुर को वन विशेष भृष्य तथा——— जंगप्त के समित्रांग स्थासा दिल्य-कार। १४० -११, पूर्व ५३६— ५४०।

### जगल कलका---

------तभा ३३६३ प्रश्निम कन्द्रां स गान की विश्वी रहाता । राठ ५१९, गाठ १,४०---१८४।

#### जमानिया--

#### जालोन--

### जीनपुर--

-----जिलों में कोयले की कमी। मं० २११, यु० ४३७--५३८।

------जिले में हरिजन विकासियों की मात्रवृत्ति देने के सम्बन्ध म शिकायत। कं २११, ५० ३४१।

### शांसी~

### टीकरी

नें सब्देवा की की गिरफ्तारियां। सं० २११, पू० १६१।

## देहरी गवुबास-

#### डलमऊ---

----तहसील कार्यालय का स्थानान्तरण न होना। खं० २११, पृ० ६६७।

### ड्मरियागज---

———तहसील में चकबन्दी सम्बन्धी निगरानियां। खं० २११, पृ० ३४०।

### तकिया--

----में रोडवेज बुकिंग म्राफिस खोलने की योजना। खं० २११, पृ० १३८।

## ताड़ी (बाजार)--

———व श्रनेई बाजारों में कन्या, पाठ-शाला न होना। खं० २११, पृ० ६५६–६५७।

### तालबेहट--

कृषि बीज भंडार,——के विरुद्ध शिकायत। खं०२११,पृ०५४२— ५४३।

### वावरी---

----चुनाव क्षेत्र में महिला चिकित्सालय न होना। खं० २११, पृ० ३५६।

# वेषकली---

——विकास खंड में प्रारम्भिक स्वास्थ्य इकाई खोलने के श्रादेश। खं० २११, पृ० ३५२।

### देवरिया---

गोरखपुर———तथा श्राजमगढ़ जिलों में नियोजन विभाग के पुराने कर्म-चारी। खं० २११, पू० १८१– १८२।

गोरखपुर तथा———जिलों में टेस्ट वर्क की मजदूरी की शरह। खं० २११, पु० ३४४—३४५।

गोरखपुर,----तथा बस्ती जिलों में खुलने वाले उद्योग केन्द्र। खं० भृ११, पु० ६४१।

चक्की भूसाडोही श्रौर——का सीमा श्रिवाद। खं० २११, पृ० ६५० ─ ६५१। ----जिले का लेबर इन्सपेक्टर ग्राफिस। खं० २११,प० ६२४-६२४।

----जिले में उद्योग विभाग से सहायता। खं० २११, पृ० ८४३।

----जिले में टेस्ट वर्क्स की मजदूरी के सम्बन्ध में शिकायत। खं० २११, पू० ३४०-३४१।

----तथा गोरखपुर जिलों में स्रोला वृष्टि। खं० २११, पृ० ६४३-६४४।

बस्ती तथा———जिलों में समाज कल्याण कार्यो पर व्यय। खं० २११, पृ० ७३५।

----हरिजन बस्ती के विस्तार <mark>की</mark> श्रावश्यकता। खं० २११, पृ० ३४३।

-----सिसवाव ----चीनी मिलों क्षेत्रों में गन्ने की ग्रिघिकता। खं० २११,पृ० द२३-द२४।

## ई शदेवरिया-

जंगल वेलवा तथा——केन्द्रों में गन्ने की बिक्रो स्कना। खं० २११, पृ० ८४०–८४१।

# देहरादून---

---में मुस्लिम परिवारों की पुन-र्वासन योजना। खं० २११, पृ० ३४१।

---में विकास खंड ग्रधिकारी की जीप से लड़के की मृत्यु। खं०२११, पूर्व ६२३-६२४।

# नरेन्द्रनगर---

----में टैक्निकल स्कूल खोलने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० १२४। नैनी--

> इंडस्ट्रियल कालोनी,----। खं०२११ पू० द२६।

## नैनीताल---

----जिले में नरभक्षी चीता। खंब २११, पृ० द३४। [स्थानिक प्रश्न-]

नंल चामी--

टेहरीगढवाल जिले मे---, कीतिनगर, कि तिकलेश्वर सम्बन्धित शिक्षा सम्बार्धे। स०२११, प०३३६।

पंडित पुरवा--

——को लाइसारी सहकारी समिति को ऋण। लंब २११, एव = १७ ।

गलपंडवा--

----में सेवा खंड लोलने की योजना। लं० २११, पु० ६३३।

पट्टो---

——— धौर रामगंज में इण्टर व साइंस कक्षा लोलने की प्रार्थना । ल०२११, पु० ३५५ ।

परसङ्गी---

——गामसभा के हरेभरे पेड़ काटने की जिकायत। कं० २११, प्० ३४६।

पवा---

——निवासी भी लाइले काछी की शिकायत । कं० २११, पू० ६३४— ६३६।

पसगर्वा---

-----की कथित प्राइमरी हेल्य यूनिट। खं० २११, प्०. ६७०।

——में ग्रह्पताल की ववाध्या, बाह्यां तथा सेनेटरी इन्सोक्टर। सं० २११, पु० ३५१।

पिडरा--

बड़ा गांव,----तथा सिघोरा घस्पतालों के लिये इमारतें न होना। कं० २११, पू० ३३४-३३५।

पिचुरस्रो---

परम्यपुर तथा — प्राम समाजों को भूमि व जंगल देने की प्रार्थना। सं० २११, पृ० ६२८। पिसनहरो--

पोलोभोन --

पुरन्दरपुर-

---तथा पिनरकी पाम समाजा हो असि व जगत इन ही पाउना। स्व० ४११, पूर्ण ४४८।

प्रतागगढ़---

——— जिल मं बागा की मानग्तारी में गलत तदालीम। तक ४११, पठ १६३।

-----(जले में मोतर यूर्यण्याय। ल० २११, पूर्व ३६२।

प्रयाग---

सर्वे कुरुशी संस्था, ——— पर स्थय। स्थंठ २११, पुत ७१६-७१६।

फजल गंज--

गौड़ तथाय फेस्टरी,-----नी कर्त के लिये बरक्यास्त । साठ २११, गुण् ६४२--६४३।

परिंदा---

### फर्रुखाबाद--

एक बुकिंग क्लर्क वाले———जिले के बस स्टेशन। खं० २११, पृ० ८३७।

——जिले में कागजात दुक्स्ती के मुकदमें तथा श्रपने निवास क्षेत्र में काम करने वाले लेखपाल। खं० २११, पृ० ३५६।

----जिले में डकैतियां। खं०२११, पु० ६६४।

----जिले में डकैतियां ग्रौर कत्ल। खंड २११, पृ० ३४२।

----जिले में डकैती व कत्न के श्रभियोग। खं० २११, पृ० ३४७।

----जिले में धान का सूख जाना। खं० २११, पृ० ६६६।

——जिले में पुलिस कांस्टेबिलों की भर्ती में परिगणित तथा पिछड़ी जाति के उम्मीदवार। खं०२११, पृ० ६६७।

### बंशीबाजार---

— की ट्रक-दुर्घटना । खं० २११, प० ६६७।

### बिखरा----

——राजकीय श्रायुर्वेदिक श्रस्पताल के भवन का कथित किराया। खं० २११, पु० ३४७।

# बड़ागांव--

——पिंडरा तथा सिघोरा श्रस्पतालों के लिये इमारतें न होना। खं० २११, प्० ३३४–३३५।

# बड़ोत-

—— तथा हिलवाड़ी में सट्टे के श्रारोप में गिरफ्तारी । खं० २११, पु० ८१४–८१४।

# बढ़नी---

— तथा इटावा विकास खंडों में सिंचाई के कार्य। खं०२११, पु० द४३।

# बदायूं---

----जिले का दहगवां तालाव । खं० खं० २११, पृ० ३६५ ।

——जिले के पंचायत सेकेटरी । खं० २११, पृ० २६।

----जिले में कुग्रों की बोरिंग। खं० २११, पृ० ८४६।

बार एसोशियेशन ——के लिये जमीन की स्वीकृति । खं० २११, पृ०३५६

#### बरहज----

सहकारी समिति श्री कृष्ण इंटर कालेज, ——के हिसाब में गड़बड़ी। खं० २११, पृ० ५३३।

## बरेली---

——जिले के देहाती क्षेत्र में सस्ते श्रनाज की दुकानें न होना तथा फूड एडवाइजरी कमेटी की मीटिंगें। खं० २११, पृ० ५३६।

——जिले में ग्राम पंचायतों व न्याय पंचायतों का निर्माण न होना । खं० २११, पृ० ७३४-७३४ ।

——में पटाखें से महिला का घायल होना । खं० २११, पू० ६५७ ।

——रोडवेज क्षेत्र के कुछ कर्मचारियों को टी०ए० न मिलना । खं० २११, पृ० १३३ ।

### बलिया---

स्राजमगढ़ तथा——की गन्ना सोसायियों का फालतू गन्ना । खं० २११, पू० ११६-१२१।

----जिले में उपल वृष्टि से क्षति । स्तं० २११, पृ० ६२४ ।

——जिले में कृषि रक्षार्थ चूहे मारने का काम । खं० २११, पृ० ४२१– ४२२।

पूर्ति विभाग, जिला में नियुक्तियां। खं० २११, पृ० ५३६-५४०।

## बसहरा—

बेलामूड़ी तथा गामों के बीच असर भूमि । खं० २११, पृ० ५३३ ।

# [स्यानिक प्रश्न--|

#### बरना - --

--- जिले की सहकारी समितियों में गबन । यं० २११, पू० ४४२-४४४ ।

------ जिले के कुछ स्थानों पर भारी उद्याग चाल् करने का बायना । गा० २११, पु० १२५ ।

--- - जिले के पुरान पुलिस ऋशिकारी। ला० २११, पूर्व १३३।

---- जिले में श्रीला पोडिरों का सहा-यता। ला० २११, पु० ४४६-४५०।

--- जिले में क्यों सियां सथा मरल। वार्व २११, पुरु ३४२।

--- जिले संपरिवार नियोजन कन्त्रः । स्वयं २११, प्रत ३५३-३५४ ।

----- तथा बेंबरिया जिलों में समाज कत्याण कार्यों पर स्यय । लग्न २११, पूठ ७३%।

#### बांबा--

नालाम । सं० २११, प्०६३६ ।

#### बाजपुर---

हरबोई च----बीर्नः मिली की रिकबरी । स्त० २११, पू० ।

# बाबमेई---

बारावंकी---

-----जिले में कुछ समय तक पुलिस कप्ताम का म रहना । र्वं० २११, पु० ६३६-६३७ ।

#### बिरन।

- यान घर रावतन कमिय धाणिस न होताः चानसम्हद्भाव स्वस् न-द्रकारा व द्रायी । गाः ५११, पुरु १३४ ।

### बारायुग- -

पास के लगपाल के विश्व शिकायत । सं -१४ पठ ३४५ ।

#### न्त्र- इंत्नस्यग्रह

- म उद्यास निराद की महिन्छ । स्थल ५१८, यूल १५४ (५४)।

### ब् नन्दशहर-

 कलक्टरामें हरिजन व पिछड़े वर्ग को अपनामा । स्वर्ण ४११, पठ ३५०।

 का में लिस्ट्रट से स्पर्णीय स्था की माना । स्था - ११, घल १३४।

 जिले के एक ब्यानर में भीजरहर के स्थिताफ विकासियास । स्थ० - ११. मु० २७० ।

स्त्रकर एमानियदान, जिला - - का रिसेंट । स्वा २११, यू० १२८ । सभामसियों हे --- क बीर पर टेप्य । स्वा २११, यू० ८३० ।

## बेलवार-- -

जीनपुर जिले से - व तो तहिना में शायुर्वेदिक श्रीप्रशास्त्र कासने का प्राथना तथा गुजानगत्र शरपताल का भवन निर्माण । त्वर २११, पुरु १४१।

## बेलामुडी- --

### भड़नी-

### भागपुर--

---- की वन विहोन भूमि तथा छोनी चौकी जंगल के भूमिहोन मवासा शिल्पकार । खं० २११, प्० ६३६-६४० ।

## भैरोंपुर--

श्रनेहरा तथा---बस स्टाप । खं० २११, प्० ८३२-८३३ ।

#### मऊ--

----पालिकाध्यक्ष श्री हिफजुर्रहमान का त्याग पत्र । खं० २११, पृ० ११-१२ ।

### मऊरानीपुर---

#### मझौली---

कड़सरवातया----प्रामकी डकैतिया। र्वं० २११, पृ० ७१४-७१६।

#### मलासा--

----में मवेशी बेचने का रसीदी फार्म न होना । खं० २११, पृ० ३४६। महाराजगंज--

गणेक्षशंकर विद्यार्थी मेमोरियल इण्टर-मीटिएट कालेज ---- के हिसाब की जांच। खं० २११, पृ० ३६२।

## महश्रापार---

बस्ती जिले में श्रीर गंगापुर ग्रामों की सीमा का मामला तथा निवासियों का पुनर्वासन । खं० २११, प्०३४८--३४९।

# मुराबाबाव--

----जिले में शिक्षा विभाग के एस० डी० प्राई०। खं० २११, पृ० ३५५।

## मेधराजपुरा--

---में दरयावसिंह डाक् की मारने वालों को इनाम । खं० २११, पू० ३६१।

### मेरठ-

——में गजटेड पुलिस म्रधिकारी । खं० २११, पू० ६३७।

# मैनपुरी---

----जिले में अनुसूचित जाति के लोगों को बन्दूक के लाइसेन्स । खं० २११, पृ० ६६१।

----में लगाए गए पम्पों के सम्बन्ध में शिकायत । खं० २११, पू० ७३२-७३३।

### मैलानी--

-----जंगल का हैप्रैस गोदाम । खं० २११, पृ० ६३६।

# मोहम्मदाबाद-गोहना---

---- का नार्मल स्कूल । खं० २११, पु०३४७।

#### रऊकरना---

----में ग्रस्पृक्ष्यता सम्बन्धी झगड़ा । खं० २११, पृ० ६५८ ।

## रजमुड़िया भगवन्तपुर---

----- में जंगल कटवाने की श्विकायत । खं०२११, पृ० ६२६-६३१।

#### रामगंज---

पट्टी ग्रौर ---- में इण्टर व साइंस कक्षा स्रोलने की प्रार्थना । खं०२११, प० ३५५।

#### रामनगर-

वाटर वर्क्स ---- से पृथक किये गये कर्मचारियों को प्रतिकर तथा ग्रेचुइटी। खं० २११, पृ० ७३१।

# रामपुरा

कुदौरा, कुठौद एवं --- विकास खंडों का व्यय । खं० २११, पृ० १३०।

# रायबरेली-

ग्रसिस्टेंट रजिस्ट्रार, कोम्रापसेटिव सोसा-इटी, जिला —— को सुरक्षा व्यवस्था। खं० २११, पृ० ३५८। चोरियों के सम्बन्ध में —— से म्रावेदन-पत्र। खं० २११, पृ० ६६६–६६७।

## [स्थानिक प्रान--रामबरेली---)

- तिला मं चोरियां व इहितयां। र्णं० २११, पू० ६४६।
- -----जिलें मे पुराने गतटेड प्राफिससें। खं० २११, पुरु ८४१।
- ---- मे पुलिस के विकक्क हड़ताल। क्लंब २११, पुब ६४७-१४८।
- सहकारिका विभाग, जिला--- के सर्वश्री सूरजपान सिंह तथा राम-लखन सिंह की गिरफ्तारी। लंब २११, पुरु ५४८।

#### रौनापार---

———पाने में विभिन्न ग्रपराघ । लं० २११, पु० ६६⊏।

#### लखनऊ---

- ---- के बलरामपुर श्ररपताल में स्थायी वन्त शाक्टर न होता। लें० २११, पू० ३४७।
- गवर्नमेंट टेक्निकल इंस्टोट्यूट ,---के विद्यार्थियों की विकासत । कंव २११, पुठ १२६।
- गवनमेंट प्रेस, —— व इत्ताहाबाद के गरवायी कर्मवारी। खं० २११, पु० ८२४।
- निर्बल तथा पंतुक रोग-पोक्टिक व्यक्तियों में परिवार नियोजन को प्रभावी बनाने का सुझाव तथा ---- में कुलों के काटने से मृत्युएं। खं० २११, पु० ६६४।
- --- में कलेक्शन धमीनों की नि-क्तियां । खं० २११, पू० १६७।
- ---- में कृषि विभाग से सार्यालयों सी इमारतें। सं० २११, पू० ५३६--५३७।
- -----में बेसिक एल० ढी० की परीकाः । कं० २११, पू० ३६५ ।

- ---- में रायल होटल के विश्वायक निवास में खराब सामान लगाने कीदिकायस। खं० - ११, पू० ३४२-३४३।

- रीमनन तृत्यपाटं श्राफियः = = = क गजटेश श्राफिसमें । य० २११, पूठ १३५ ।
- बितंत्रों स सान्यता-पास ----- के धारन मारतीय विद्यालय । खं० २११, पुरु १४६-१४० ।
- ----सेना क्षेत्र म नारी की रिपार्ट। लंक २११, पुरु २३७।
- हेरबीकापट्स जा क्रम, समोनाबाव ------ की जोबा क्रिंग २११, पुरु ११५-११६।

### लक्षीमपुर--

- ---- में भरपायी सिनेमा के लिये स्वीकृति न मिलना 1 मं० २११, पु० द२२-द२३।

# लितिपुर---

## सहरपुर---

----परगने में भूमिणर, कालकारों के वाकिल करिज की कार्यवाही। कं०२११,पू०३५२।

### लालगं ज---

--- तहसील में हरिजन कश्याणर्थं कथित विशेष धनुवान । सं० २११, पु० ३४१ ।

#### वाराणसी----

----जिले के कुछ श्रौषधालयों के भवनों के सम्बन्ध में जानकारी । खं० २११, पृ० ३५३ ।

---- जिले में लेखपाल को जेल भेजने से पूर्व चार्जन लेसकना। खं०२११, पु०३५०।

शिक्षा एवं खिलौना प्रदर्शनी --- के लिए स्वीकृत धन। खं० २११, पृ० ६५६।

श्री शिवप्रसाद गुप्त चिकित्सालय, ---- में बहरापन दूर करने के कार्य। खं० २११, पु० ३३४।

#### राहपऊ---

----थाने से थानेदारों के तबादले। स्रं० २११,पु० ३४५।

#### शामली---

किसान कालेज, ——— के लिये गन्ने के मूल्य में कटौती। खं० २११, पृ० ५१७-५१८।

## ञाहगंज---

---- की गन्ना हड़ताल में सोबलिस्टों की गिरफ्तारी । खं० २११, पृ० ६६२।

# शाहजहांपूर--

—— जिला श्रस्पताल में एक्सरे मशीन न होना । खं० २११, पु० ६३८-६३६।

---- जिला जेल के श्रधीन खेती। खं० २११, पृ० ७२५।

----जिले के स्रभाव पस्त क्षेत्र में मालगुजारी में छूट देने का स्राक्वा-सन। खं० २११, पृ० २४१-२४२।

----- जिले के उच्च पुलिस ग्रिषकारियों को विधान सभा सदस्य द्वारा दी गयी सूचना । खं० २११, पृ० ३४७।

----जिले में कथित डिस्ट्रिक्ट डेवलप-मेंट कोग्रापरेटिव सोसाइटी । खं० २११, पृ० ५३४। --- के श्री श्रली जान का कत्ल। खं० २११, पु० ६६६।

#### सकरार-

- - में ताड़गुड़ सहकारी समिति का निर्माण । खं० २११, पू० १२३-१२४।

#### सगड़ो---

--- तहसील में ग्रायुर्वेदिक ग्रौष-धालय खोलने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० ३३१।

#### सदर- -

जिला बदायूं की --- तहसील में चकबन्दी के ग्रतर्गत लिए जाने वाले गांव। खं० २११, पृ० ३६१।

---- तथा छिबरामऊ तहसीलों मे चकबन्दी । खं० २११, पृ० ६६०-६६१।

---तहसील में चकबन्दी। खं० २११, प० ६६३-६६४।

#### समथर---

विलय राज्य ----का कोष तथा बिजली न होने की ज्ञिकायत । खं० २११, प० द३६।

#### .सरदहा---

——प्राम में होमियोपैथिक श्रौषघालय खोलने की प्रार्थना । खं० २११, प० ६६५–६६६ ।

#### सरायमीरा

ग्राम में सार्वजनिक नल लगाने की प्रार्थना। खं० २११, पृ० ७२६।

## सरेनी---

⊸ थाने के श्रन्तर्गत घूसखोरी का मुकदमा । खं० २११, पृ० ३३८− ३३६।

### सिंघोरा--

बड़ागांव, पिंडरा तथा ---- अस्पतालों के लिए इमारतें न होना । खं० २११,, प्० ३३४--३३४ ।

### |स्थानिक प्रश्त--|

#### सियशः -

--- क्वेबिया चीनी मिल क्यों में ग्या को प्राथित्ता शत्क २११, प्र म-3-म-४ ।

### सीतापुर--

- -----जिले की हरिजन कत्याण अनु-वान वितरण समिलि। खे० २११, पु० २४६।
- ---- जिले के पंचायत राज विभाग में हरिजन कर्मबारी । सं० २११, पृ० ७२४।
- ------जिले में करल, डाके एवं चोरियां। सं० २११, पु० ६६१।
- -----में पुलिस द्वारा हाइब्रेल कर्म-व्यारियों का पीटा जाना । लं० २११, पू० ३३६।

# सुजानगंज---

— बस स्टेशन के निर्माण का भाषोजन। सं० २११, पु० १३७।

# सुल्तानपुर-

-----जिले में कीयले का वितरण। लं० २११, पृ० ४३३-४३४।

# सेहरामऊर जनूबी-

——याना के झन्तर्गत विभिन्न झपराध सम्बन्धी झभियोग। खं० २११, पु० ३५४।

# सोनहिता-

जौनपुर जिले में बेलवार व में प्रापुर्वे विक ग्रीविधालय खोलने की प्रार्थना तथा सुजानगंज ग्रस्थताल का भवन निर्माण। सं० २११, पू० ३४३।

#### हरगात--

गोला तथा——- भीनी मिनों के गत्हें पानी के प्रजन्म के लिए एक्ट यद ओई की रशपना। का २११, पृठ १३, ।

### हरदोई-

- ——— जिले स विभिन्न क्रपनामां की घटनामां। क्षण २११, पूर्ण ३४२— ३४४।

### हरितनाप्र---

——नगर प्रशासन कार्य। ल० २११, पुरु ६-७।

#### ह्राधरस---

## हिलवाड़ी---

महौत तथा----में सार्ट के झाराण म गिरफ्तारों। सं० २११, पूर्व ८१४-८१४।

# स | कमायत-

# स्थानीय निकाय---

प्रव विव च्या के सामायका के महंगाई भन्ने के लिए राजाला। कंव २११, प्रव ६४८।

### स्थायीकरण--

- प्रव विव सोलजर्स बोर्ड के कर्म-वारियों के सम्बन्धित कावेगा कं २११, पृष्ठ १६०।

# स्मृति-पत्र-

प्र० वि०—्यायल मिस्स एसोसियेशन भा—ा वं० २११, पृ० १२६-१३०। स्वतंत्रता संग्राम---

प्र० वि०— — के सैनिक तथा सरकार की स्रोर से पुस्तकों का प्रकाशन। खं० २११, पृ० ३४६– ३५०।

स्वतन्त्रता समारोहों---

प्र० वि०— ---पर व्यय। खं० २११, पृ० ३४५।

स्वास्थ्य इकाई---

प्र० वि०—देवकली विकास खण्ड में प्रारम्भिक——खोलने के भ्रादेश। खं० २११, पृ० ३५२।

स्वास्थ्य केन्द्र---

प्र० वि०—प्रथम तथा द्वितीय श्रेणी के विकास खंडों में प्रारम्भिक——। खं० २११, पू० ८४२।

स्वास्थ्य विभाग---

प्र० वि०— — की राजाज्ञास्रों को हिन्दी में भेजने की प्रार्थना । खं० २११, प्० ६५६।

₹

हड्ताल--

प्र० वि०---रायबरेली में पुलिस के विरद्ध-----। खं० २११, पू० ६४७, ६४८।

हत्या--

प्र० वि०—श्रफजलगढ़ परगना निवासी लाला राजाराम की——। खं० २११, पृ० ३६०।

हदबन्दी--

प्रविश्व ज्ञासर प्रवेश तथा हिमांचल प्रदेश की का मामला। खं० २११, प्रव ३२०-३२१।

हरकेश बहादुर, श्री---

देखिये "प्रश्नोत्तर"।

हरवयाल सिंह, श्री— टेबिये "प्रश्नोत्तर"। १६६०-६१ के म्राय-व्ययक में म्रनुदानों के लिये मांगों पर मद्गदान—श्रनुदान संख्या ३४---लेखा शीर्षक ५०---नागरिक निर्माण कार्य ग्रौर ५०–क— राजस्व से वित्त पोषित नागरिक निर्माण कार्यो पर पूंजी की लागत, **ग्रनुदान संख्या ३५—लेखा शीर्षक** ५०---नागरिक निर्माण केन्द्रीय सड्क निधि से वित्तीय सहायता, ग्रनुदान संख्या ३६— लेखा शीर्षक ५०—नागरिक निर्माण-कार्य ग्रौर ८१--राजस्व लेखे से बाहर नागरिक निर्माण-कार्यों की पुंजी का लेखा तथा ग्रनुदान संख्या ५०--लेखा शीर्षक ८१--राजस्व लेखें के बाहर नम्नारिक निर्माण कार्यों का पूंजी लेखा। खं० २११, पृ० 885-8831

कार्य-स्थान प्रस्तावों के सम्बन्ध में सूचनायें। खं०२११, पृ०१४०।

नियम ५२ के अन्तर्गत प्र्यान आकर्षणार्थ विषयों के सम्बन्ध में सूचना। खं० २११, प्०१४२।

मोटर भ्रापरेटर्स--- \_ \_

प्र० वि० —— रोजनल दांसपोर्ट श्राफिसर्स तथा ———— के विषद्ध शिकायतें । खं० २११, पृ० द२८–६२६।

हरिजन ए० डो० ग्रो०--

प्र० वि० --- ---- । खं० २११, पृ० ३५६।

हरिजन कर्मचारी--

प्र० वि० — सीतापुर जिले के पंचायत राज विभाग में ——— । खं० २११, पृ० ७२४।

हरिजन कल्याण ग्रधिकारी--

प्र० वि० —— जिला ——— । खं० २११, पु० ३४४।

हरिजन कल्याण भ्रनुदान वितरण समिति—प्र० वि० — सोतापुर जिले की ——— ।
स्रं० २११, प्० ३४८।

### हरिजन कल्याण विभाग--

प्रवित्त — नीनपुर जिले में — — की कृष निर्माणार्थ प्रनयान । खब २११, पुरु ३४७।

## हरिजन बरितया- -

प्र० वि० --- लिनितपुर सब-दिवीजन में प्रावर्श ---- तथा हातू सुरतिसह सनोता का मारा जाना। ख० २११, पु० ६७०-६७१।

# हरिजन बन्ती--

प्र० वि० --- वेवरिया में - --- के विस्तार को श्रावदयकता । लं० २११, पृ० ३४३।

## हरिजन विद्यापियों---

प्र० वि० — जौनपुर जिले में ——— को छात्रवृत्ति देने के सम्बन्ध में शिकायत सं० २११, पृ० ३४१।

# हरिजनों---

प्र० वि० --- एव० डी० मी० प्रशिक्षण में ---- व पिछुड़ी जाति का मनोमयन। कं० २११, पु० ३४८।

प्रविक --- नगरीं के ---- को सहा-यता न मिलना । कं० ५११, प्० १४४।

# हरिवल कांडपाल, ओ--

१६६०-६१ के भ्राय-स्थयक में भ्रतु-बानों के लिए मांगी पर मतवान--भ्रतुवान संस्था ४-- लेका शीर्वक १०-वन। सं० २११, प० ४७४--४७४।

# हरिश्चन्द्र सिंह, भी---

१६६०-६१ के प्राय-क्ययक में प्रनु-वानों के लिये मांगों पर मतवान--प्रनुवान संख्या १६--लेका शीर्वक २०-न्याय प्रशासन । बं० २११, प्०६८१-६८३।

अनुवान संवया २१—लेका शिर्षक ३८— विकित्सा तथा अनुवान संवया २२— लेका शीर्षक ३६—जन स्वास्थ्य । कां० २११, पू० ५६७—५६८ । द्मनवान सन्या ३४- - नेपा भीपंक ५०--सार्वतिक निर्माण-भागं योग ४०-- महनातर र स्राधित यो यत नागरिक निमणि-कार्यापर पर प्रता सी नागत श्चरदान नरस्या ३४ नस्या शास्त्रक प्रज नागरिक निर्माण कार्य-कन्द्राय सर्व निधि में विनीय सहायता. भागान सन्या ३. नग्य। दशार्थम नागरिक निर्माण-कार्य स्रार ८१- राजस्य राहेसे बाहर नागरिक निर्माण-कार्याः नदो पुत्री कर लग्दा नवा अनुवान सन्ता ४० द्यापिक ६१- रातम्ब ज्या स बाहर नागरिक निम्मिण -कामर्थिका प्रजी लेखा । ख० ५११, घ० ७४-७३३

## हरी लाव--

प्र० थि० - -- -- - को कीज बद्धन के मिये राज्य सहायता । व्य० ४११, पु० ४२२-४२४।

# हरोसिंह, श्री---

१६६०-६१ के आय-स्थायक अन्-बार्नी के निये सीगी पर मलवात अनुबान सल्या ३ जेग्या द्यायंक द राज्य भावकारी । सार २११, पुरु ४६५।

सनुदान सल्या ७- लेखा जीतंकः १- -मंदिर गाष्ट्रियों को गुंबरों को कारण ग्या सनुदान सल्या ३१ लेखा जी-पंकः ४७--प्रकीर्ण विभाग धीर ४४--जब्रुयन, सनुवान सक्या ४--लेखा जीतंकः ७०--जम-स्वास्थ्य मं-बधा सुधार पर प्रती की लातत सथा ५२--राजस्य लेखे को बाहर राज्य को दूसरे निर्माण कार्यों कार्यू की लेखा। वां० २११, यू० ४०७-४०॥।

मियामा शुगर मिल, मेरठ, को मिल-याना गाँव को मूर्जि का बलपूर्वक पुलिस द्वारा करका बिलाने के सम्बन्ध में नियम ५२ के श्रन्तर्गत गृह-उप-मंत्री का बक्तका १ कं० २११, पु० ७४१।

### ह्वाजाती कैदियों--

प्र० वि० — यानों के —— द्वारा कथित म्रात्महत्या । खं० २११, पृ० ६५८।

## हवालाती कैदी---

प्र०वि०-- जमानियां थाने के ----र्का मृत्यु । खं० २११, पृ० ६४६-६४७ ।

## हाईडेल कर्मचारियों--

- प्र० वि० सोतापुर मे पुलिस द्वारा ———का पीटा जाना । खं० २११, प्० ३३६।
- प्र० वि० सोतापुर में पुलिस द्वारा ——— के पोटे जाने की जांच। खं० २११, प्० ६६०।

## हाई स्कूल--

- प्र० वि० ---- व इन्टरमीडिएट की परीक्षा में ग्रसफलता सम्बन्धी श्रावेदन-पत्र। खं० २११, पृ० ६५४— ६५५।

# हाउस दैक्स---

इलाहाबाद नगरपालिका का वाटर तथा ----। खं० २११, पू० ७२५- ७२६ $\frac{r}{2}$ ।

# हिन्दी---

प्र० वि० -- प्रशासनीय कार्य----करने का भ्रनुरोध । खं० २११, पृ० ८१६-८२०।

प्र० वि० --- स्वास्थ्य विभाग की राज-ज्ञास्त्रों का ---- में भेजने की प्रार्थना । खं० २११, पृ० ६५६ ।

# हिमांचल प्रदेश---

प्र० वि० — उत्तर प्रदेश तथा ——— की हदबन्दी का मामला। खं० २११, पृ० ३२०—३२१।

# हिम्मत सिंह, श्री--

'देखिये, ''प्रश्नोत्तर''।

- १६६०-६१ के भ्राय-व्ययक में भ्रनु-दानों के लिये मांगों पर मतदान-श्रनुदान संख्या २१--लेखा शीर्षक ३८--चिकित्सा तथा भ्रनुदान संख्या २२--लेखा शीर्षक ३६--जन-स्वा-स्थ्य। खं० २११, पृ० ८७६-८७८।
- स्रनुदान संख्या ४७——लेखा शीर्षक ६८— सिचाई, नौचालन, बांध स्रौर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यो का निर्माण स्रनुदान संख्या १०——लेखा शीर्षकः १७, १८ स्रौर १६——ख——राजस्व से किये जाने वाले सिचाई के निर्माण कार्य तथा स्रनुदान संख्या ११—— लेखा शीर्षक १७, १८, १६, ६६—— सिचाई स्थापना पर व्यय। खं० २११, पृ० १८१—१८४।
- एटा जिले के श्री रवीन्द्रकुमार को मुन्सिफी में न लेना। खं० २११, पृ० द१३।

# हिसाब की जांच--

प्र० वि०-- गणेश शंकर विद्यार्थी मेमो-रियल इण्टरमीडिएट कालेज, महा-राजगंज के --- । खं० २११, प्० ३६२।

# हुकुर्मासह विसेन, श्री---

- १६६०-६१ के म्राय-व्ययक मे म्रनु-दानों के लिये मांगों पर मतदान--म्रनुदान संख्या १--लेखा शीर्षक ४--वृहत् जोत-कर की उगाही पर व्यय । खं० २११, पृ० ७४४ ।
- म्रनुदान संख्या १६——लेखा शीर्षक २७— न्याय प्रशासन । खं० २११, पृ० १७७—६८४, १६२—१६४ ।
- भ्रतुदान संख्या २१---लेखा शीर्षक ३८--चिकित्सा तथा श्रनुदान संख्या २२--लेखा शीर्षक ३६---जन स्वास्थ्य । खं० २११,पृ० ८६२--८६३, ८६४--६००।

# [हुकुर्मासह विमेन, श्री--]

अवशास्त्र स्व त्राधारक प्रविभिन्न राष्ट्रायका तथा अन्यत्त मरमा
- त्राधारक ७ म -राजस्य
(भाष्ट्रातारक) । स्व० -११, प०
०४४, ०४५, ०४१, ०४५, ०७०,

पा हाकाराम पुतारा का निवन्त का समाप नारन कास्त्राज्या याव ४११, पुरु दृष्ट्रा

नियम प्रः क भ्रन्ता । विष्यं सर्वे विषयों कंस+कम्पः मं जागकारा । मा० ४११, प्रः ६४०।

पूर्वी जिलों से प्राता-शृंदर के सम्बन्ध से वक्तव्य की माग । खं० २११, पुरुष्ठित ।

प्रदर्भों का उत्तर व मिलने की शिकायत । व्यंत २११, पूर्व ४५०।

प्रकारितर के सम्बन्ध में प्राथितयां । लंब २११, पुरु १६०।

# हेमवतीनन्दम बहुगुणा, थी---

१६६० च ६१ के झाय-व्ययक में झन्-बानों के लिए मांगों पर मतवान-झनुबान संख्या ४१—लेखा शीवंक प्र६—लेखन सामग्री झोर मुझण। खं० २११, पु० ५०१, ५०६, ५०६, ५१०, ५११।

गर्भे के कप मूल्य से संबंधित = मार्च, १६६० के झल्पसूचित लारांकित प्रतम ४-६ के विषय पर विवाद। जं० २११, पूर्व ७०६-७०१। तग्दार पत्र साः स्टब्स

अर्जन्य प्रमानानान लखनऊ र्ग गान । १४० ४११, प्रः ११४ – ११ - ।

हमेग गढाम

प्रव गिव - न्मेनानी जगत का--- । ात्र ४१% प्रव २६ - ।

हासिकार्यायक बीवा कार्य

ष्यत वित्त - सर्वा प्राप्त म ----स्पत्त सामारिता स्पत्र व्हरूम्ब

हाराजान याज्य था-याविक "पटनानर" ।

> ११६० ६१ क साय-एयक स मनवानों के लिय सामा एर सरान - मन-बान सम्पा ४ । नमा अपिक ६ -- - निकाई, नौकालम, बाध मीर पानी के निकास सम्बन्धी कार्यों का मिर्माण, मनुपान संस्था १० -- लेगा प्राथिक १७, १ = भीर ११ - म्य--पामस्य से किस माने वाने मिनाई के मिर्माण कार्य का तथा भनान संस्था ११- लेगा आर्थ के तथा भनान संस्था ११- लेगा आर्थ के स्थापना पर कार्य का न्या १५, १०, १०६।

होली- --

प्राठ थिए --- सम्मग्राम २ - -- के सम्बद्धाः गण्यामान्योगि भरेग्यनाम-यत्र । मारु २११, यु० ३२२-- २५३।

ह्योट फामिश ---

प्रविश्व --- सलागढ़ जिले क लिय ----पाइलेट प्रोजेश्ट याजना । त्व ० २११, पुरु ५३१-५६२।